1473(17)

M





বাৰতীয় সংস্কৃত, ৰাঞ্চালা ও প্ৰায় দৰ্ভের অৰ্থ ও বৃংগভি: আরব্য, গারত, হিন্দি প্রভৃতি ভাষার চলিত লক্ষ ও তাহালের অর্থ : প্রাচীন ও আধুনিক ধর্মসংগ্রদার ও তাহালের মত ও বিবাস, মকুব্যতন্থ এবং আব্য ও অনাব্য কান্তীর বৃত্তান্ত : বৈদিক, গৌরাণিক ও ইতিহাসিক সর্ক্ষজাতীর প্রাক্তিপ্রণের বিষয়ণ : বেলাল, প্রাণ, তত্ত্ব, আক্রণ, অলকার, হলোবিদ্যা, ভার, জ্যোতিষ, অক, উত্তিব, রসারম, ভূতন্ব, প্রাণিতন্ব, বিজ্ঞান, আলোগ্যামী, হোমিওগাামী, বৈদ্যুক, ও হক্ষিমী মতের চিকিৎসাগ্রণালী ও ব্যবহা, শিল্ল, ইফ্রজাল, কৃষ্ণিতন্ব, গাক্ষিক্যা প্রভৃতি মানা শাল্লের সারসংগ্রহ অকারাদি বর্ণাক্সমিক বৃহত্তিধান

সপ্তদশ ভাগ।

রোজ—বস্ত্র

১৪ নং তেলিপাড়া লেন, ভাামপুকুর, বিশ্বকোষ-কার্য্যালয় হইডে

শ্রীনগেন্দ্রনাথ বস্থ কর্ত্তৃক সঙ্কলিত ও

প্রকাশিত।

কলিকাতা

মং রামধন মিত্রের গেন, ভামপুরুর, বিবকোর থেলে
 শ্রুপ্তিজ্ঞ দাস বারা মৃত্রিত।

	~	यटना	ধর্মা	<i>i</i> - ,	ব্	শভী		6 2	र्नत	.,,		•••	•			, ,						위 의 제		
3		890	4:	***	441	69> 9 	7	238 	900	ৰাকা	টক	410	14	প্রতী	न न	पूका (थांग ।	গৰুকা —	' ৬৭৫ গঙ্গ	€¥-	७ व		ম শ্	হাৰ '
	۵	₹	•	8	¢	•	٩	F	>	١.	>>	>ર	>9	>8	>¢	>•	>1	> >	>>	₹•	. 25	२२	২৩	9.9
3	অ	.	ष		ज	4				ব	অ	=	A	প্স	4	ad.	•	S		4		4	and .	₩ **
ર	_			<u>.</u>	'ব্দা	বা	আ	আ	আ	জা	আ	আ	অ	আ	भा : 5	՝։ Կ	আ	5	· W 1			. •	ς.	আ
9	₹			₹		B	₹ \$	₹	₹ 19	₹	₹ 19	D B	R AS	\$	è	₹	₹ S	₹ B					₹	₹ 3
. 8	•					•	•		9	•	49	•	•	•		•	. •	w						•
	9					g	ঠ				ଏ	ď	g		G	G.		g		Ð			.	og.
9	4					4	щ			ક્રે	g	•	ч		•	•		•		94	&		· ·	щ.
	₹	₹	কো	*	₹	₹	₹i	a	7	কৌ	কা	퓻	₹	4	T	₹	*	奪	की	*	₹	ক	₹	₹ 1
2	•	*	41	*	ধি	₹	4	ধি		ধি	ধে	થિ	િષ	ય	•	ধে	•	থা	થર	•	થા	`•	ধৈ	ৰে :
٥.	49	গ	গি	গৈ	*	গ	গো	গা	গী	গো	গো	গ	গ	গো	গো	511	গো	গো	গৌ	•	51	গৃ	গ	গ
>>	च	घ	ঘ	ঘ	হ্যা	ঘ	ų		घ	4		¥	ঘ			च	चि	হা	ঘ		च	Ť	v	च
> ર	甲	7	=	मि	₩ ₹	व्यः	₹	क्टेम	ঙ্ভ	লা	লো	₩	Ŧ	ঙ্হা	CT	¥			দে		w		Ŧ	
20	Б	ы	ि	Ş	চো	ы	Б	51	5	চি	Б	ठ	Б	5	চি	চো	5	C5	Б	Б	75		5	চো
>8	क्रि			.55	ছে	窿	Ę	矆	(T	(™	চিছ	5	SE 1	阪		暖	স্থি		暖	暖	Ę			
36		a	জা	-	टेख	टेख		জা	खा	4	ख	জ	₹	•	4	জ	₹:	•	C	뼥	₹:	•	.	(
20	Sta				அ	₩.		அ	30		40	840	40	[39	•	40	स्क्र	<u> </u>		\$P				#
>9	5	5		টা	Ř *	টা	টা	7	টা	८छ	5	5	Ū	3	টা	To.	3	টি	Đ,	ট	TT .		টা) Se
24		6-						ð	1	C				_	•	\$1			8		81			
29		ডি 		3	3	ডো			ডা	જિ	ড		_	æ	ডে	ঞ্গ		Ø	ডা	প্ত	•		ডা	Pri
₹•	44	<u>ت</u> :	- 44	a 1	শি	atta	5 ~	6	6	4	-040		5 44		. سا	5	-	4 14			-			
3 5	୩ ୧ ଫ୍ଲ	9	ণে তী	ণ তি	ভ	ণাং তা	ণ তী	ণি তং	ণি ডি:	ণা	ণেঃ	(9 75	ণা তা	ণি তী	্ণ ভা	भार क	भा र फ	ণা জ	41	ी	41	ণ ডি	୩ =	4:
२२ २७	তু থা		খ	পা	થા	ভ। থা	थ	খ	9	ভূ পি	र्ष्ट्र श	છૃ લ્લો	থি	ચ થ	ए । चि	प्र थि	છ્ થ	জ্ থা	en ক্ৰে	ে তে	ভা	1.0	₹	তে · থি
₹8	या सी	9 191	नी मी	ेम् नि	म	्य दन	म	नी	न स्रो	CF	त्नी	ए स्	त्त्र त्त्र	Ri	मि	टेम	7	P)	থা দে	र्थ म	থা দ	q	ઇ 	।य श
₹€	र्धि	िर्ध	*	-(1	(क्षी	धि	ধা	८४	1	ध	ध	ধা	ų	श	िर्	ধা	ধা	ধা	ধি	शै	ধা	R	मू भ	न। ध
₹ ७	· `	ą	ત્રે	না	নে	₹	ন	٠ -	· ·	নং	নেঃ	٠. ٦	न	নাং	না	নো	₩. ₩	7	नी	্ৰো	 নো	নো	্ নে	Ę.
૨ ૧	ને	পা	পু		পু	প	পু	পৌ	٠,٠	_		পৌ	બ્	পৌ	পূ :	7	જુ	পৌ		পৌ				পৌ
२৮		Ą	- 1	क	,	ফ	क	ফ	ফ		को		क	ফ		1	專	ক	₹ •					₹
२३	বো	ৰ	ৰু	ব	বি	ব	ব	ব	₹	4	₫	বা	বো	ৰু	বে	ব	∙ ব	বো	ৰ	ৰ	₹		ব	বা
•	ভি	æ	1	: (4	গ ভূ	ভূ	á	Ą	₹	ভ	ভৈ	Ą	Ą	ভা	T	7	Á	Ą	ভা	Æ	¥	Ą	1	3
৩১	¥.	ম্	टेम	C	ৰ মে	ৰে যো	মূ	মা	Ą	মা	মে	মা	ম	মি	মু	মে	মা	_	• মৃ	মে	ম	মে	মা	মূ
৩২	4	घ	যা	यी	4	Ą	₹:	যা	ৰা	याः	বে	বে	বো	যো	या	যা	বো	₹	যো	যু	गै	₹	ষা	4
೨೦	বে	莽	泵	7		র	রা	রা	রো	ন্থো	রা	রা	রা	রে	রা 	#	রা	देव	देव	देश	न्न	7	মো	রী
98	ল	<u>ब</u>	শে				ল	₹ G	<u>ک</u> (ها	ग	न >	শে	লো স্ন	লা ভ	ल	ण С	লো ভ	ग		- 11	देग		7	শ
ા	Į.	₹ -	ৰি এ	ৰ		বী স	বি জ	ৰি ~*	হৈব	বা	বৈ	বে	বৈ —	বি শে	বি	ৰি সে	ৰি ~*	<u>ना</u>	ৰা	<u>ब</u>	<u>a</u>	বি	বি	বী
9	3	4	শে			4	2	শে		4	শি	9	শ বি	শে স	শ বি	শে বো	শে	4	비 (~	ભિ *	4	41	4	7
. 9	ष भ	ষ স	रू नि			ব শে	य । •ए	ষ দে	ৰ সা	্ব শৌ	ৰো ক	বে শী	नी नी	बू मर	ाप र	रिया जि	ৰ গে	र्वाः ग्र	ৰি সে	व निर	₹ ••••	_		<u>ब</u> ्
SP.			ાય ક્	C.		। ১৭ হা		ιν, ξ Έ ξ	₹ 1	হা		ΨI ₹	ণ। হা	₹	T	री	₹ E	र हा	€ •	हां हा	₹ Ze	স ল		शिर ८च्च
وه 8۰	₹1	হা	Ę	K	۲,	۲,	•	•	۲,	< 1	Τ'	۲	Τ'	र ग	হ। লে	न	≺	र। ग	*	₹1	~	हा नि	₹	दश ंग
83	খ্যা	-	-11	i a í	*	(零	*		*	ক্লি	क्रि	*	•	₹	43	কো	硺	4	47		ভং	(F)	Ą	
83	W	G				9	, W		र्मन	ৰে	कि	বান্		₹,	3	91	•	•	ন্দো	নাৎ	37	व		र ख
80	न्	¥	C			3	•	1	¥	4	নাং	र्वम्		TH	>্গ	8		3 1	E	4 1	Ħ	জ্ৰা	কা কা	
88	ত্রা	বেশ		म्	হা	*	2	ना	4	* 5	*	₹			Ħ		জ্য ।	CMI	B ITT	P	•	न्म	গ্ৰে	
8¢	ŧ	48	:প	7	! •	कू है	*5	न्।	₩5	億	•	Ę,	প্র	যা	রে	र् প			হা	হা	#	3	مأمر	। ब
8.	4	₹	:প		শা : ^১		8	Ŧ	a)t	B	ব্যা	স্থা	₹₹	ষ্প	ક	₹	1	2		₹,%	7	1	वी	4
	विषय	কাৰ ক	লিশি	नकं																				

দান্দিণাত্য লিপি, খুডীর ৮ম হ**ইভে ১৮ন নতাব্দী পর্যন্ত** ৪**র্থ তালিকার বি**র্ডি

All property All				गा	Abell (9) (*I	11"19	Salz	۳٦	740		P 1 1 1 4	* *(170 49	, , ,	O 111-1	91P	भेग भेग	•	बद्धलख्		
ই দি বি	~ ~	\sim	<u> </u>	•	াঃ চালুৰ — ^—	ग	<u> </u>	严 ~	E.	_	_			•	m f		TC BE	•	EE:	-	1911	विक्री
১ ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব ব	*:-	:	3,	۲80 4 .	2864	: >• 44	3.	# 3	F 5	116	ا	ખ્યત ચું:		£ ×	₽ž	<u>.</u>		<u> </u>		- '		-
स्था था थ				•	• `	•	9 :	•	•	>•			30		>4	>6	31	34	29 4	! •	43	.44
के हे है	> 	4 •	•	•	4		S	₹ /	₹ -	•	4	•	4	•	4	4	4		4	4	4	ख
F	२ जा		4		বা	41	আ	শ	আ								T		আ		4	ব্দা
** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	७ ₹	₹		₹					¥		¥		ŧŧ	ŧ	ŧ	₹			\$		7	
** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	8 🖻	_								_			_	_	_	_			_			
प्राच व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	4 5	€	•	_	2	4		₹ ,	,	•		-	5	8		8	•		5		ᄧ	. 6
3. 3. 8	•			E			Æ	,							₩							•
3. 3. 8	۰. ۵	.0							•				.0									
21 के का है ही हि ही ही ही है ही है ही है ही है ही है ही है है ही है ही है	, 4	٠.	4	•	4	4		4		4			ч	4	•		ve.		9		4	щ
2 2 2 3 3 3 4 4 4 4 4 4 4								8							•	•	•		•			
2)) 4	₩ì		ζ₹1	Œ	(4)	₹1	· ·	4	₩	কো	*	(*	Ŧ	₹ ₃	*	*	₽	*	₩i	•	- ₹ 1
30 ज़ जि 21 ज ज 30 31 31 31 31 32 32 33 33	પ્ર થ		-				• •			4		4									•	
25 वि	১৩ পু	পি	শে				পে	4	প	CHI	•	*	4	Ħ	প	(c ₹1		•	₹	
10 10 10 10 10 10 10 10	P) 8¢		Ą	2	বো	4		4					4	প্য	্ৰো	푯			(≢1			
Start Sta	24 🛣							₩ 6	4,4	5 🖷	Ŧ	¥	7			\$	4				4	
। । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	३७ हि	•5	টি	5	C 51	5	51	5	51		Ā			5					5		-	
3.3 के के कर क्षा की की की की की की की की की कि)1 E				-				-		-			_			10			Œ		
2. रे ि े े ि े ि े ि े ि े ि े ि े ि े ि	ार का						•	₹								10	.~					-
27 है हैं। ही है है है है हैं। है हैं। है हैं। है हैं। है							•									1						•
42 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00							-											01				
20 हार हिं हों। 18 में में न न न नि नि न सि न सि न सि न सि न सि न					_		æ							-			(0					
2.6 कि 0 </td <td></td> <td>•</td> <td></td> <td></td> <td>•</td> <td></td> <td>•</td> <td></td> <td></td> <td>•</td> <td>र्द</td> <td></td> <td></td>		•			•											•			•	र्द		
20 थां थू थू थ थां थां थां थां थां थां थां थां थां थ	રક જે	ĝ	4	4	19	19	19	4:	P	4	74	े देन	41	41	(4	4	4			41	4	41
राशी शांधा	ર જિ	তী	Q	5 36	æ	ો હ	1 3	ডি	•	ভা	ভে	। उद	ভি	তা			8	ঙ			ভ	ত
राशी शांधा		٩	4	. 4			_				ৰা	₹3					Æ	Ā	4			তি
2.5 मुँ यू न ति मुँ पू ति		_												_	_				टेड			
0. भि भे भ् भ<				_				_				_					_					
05 क क <td></td> <td>-</td> <td></td> <td></td> <td>•</td> <td></td> <td></td> <td></td> <td>•</td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td>ના</td> <td></td> <td></td> <td></td>		-			•				•										ના			
02 व व विष्युविष्या व		-1					- 1							-11	•				1			
00 क् क क क क क क क क क क क क क क क क क		3					3							3								
98 में ना स्पो में स्पो सा न न स्वां मा वि सा न में न में से																					•	
0 द दा व </td <td></td> <td>না</td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td>R1 :</td> <td>ৰ ম</td> <td>C</td> <td>না সা</td> <td>F</td> <td>र मा</td> <td>4</td> <td></td> <td>Ą</td> <td>₹</td> <td>4</td> <td>Ą</td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td>		না					R1 :	ৰ ম	C	না সা	F	र मा	4		Ą	₹	4	Ą				
७२ जू ला ना नून नि लान नि न नि नू लान नि न लान नि ७४ वा वि यु वि या य वा वि य या वि देव या छ य या य य या य ७४ नि नि लो नी न न ने ने में मूं या य या यू वि य यू ३० देव य य या या या यू या य या यू वि य यू ३० देन नि न स्टू देन नि ने स्टू देन नि ने स्टू देन नि ने स्टू देन नि ने मूं नि ३० देन नि न ने नि न ने नि नि नू ना नि ३० देन नि न ने नि न ने नि नि नू ना नि ३० देन नि न ने मिन ने नि नू ना नि ३० देव या य मूं ने स्टू कि मूं या या या या स्टू नि नू देव जा ३० दो या य मूं ने स्टू कि मूं स्टू या स्टू नि नू देव जा ३० दो या य मूं ने स्टू कि मूं स्टू के स्टू मिन् देव जा ३० दो या य मूं ने स्टू के स्टू की स्टू स्टू मिन् देव जा ३० दो या या मूं मुद्द की स्टू स्टू स्टू स्टू मिन् देव जा ३० दो या या मूं मुद्द की स्टू स्टू स्टू स्टू स्टू स्टू स्टू स्टू	৩৫ বে	ৰি									4	•	ৰা	বে		বি		ৰো	4		৷ বা	वि
७० (बा रेब पि ये पि या य वा वि य या वि रेब या छ व य या ये ये वी पेठ का छ व य या ये ये वी पेठ का छ का ये ये या ये																						
७० मि शि शि शि शि शि शि श्री श्री<																						
					_													4 1	7	4	4	ना "
as रंग स्यापित स्यापित स्थापित स्थाप स्थापित स्थाप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्					-	ા . ર /							•									
a रहा हो है है है। दिहा है है है है है के एक कि एक है। दिहा है। द																, 1						
30 लिन न्तिन नितान न नाणि निन्ति । ति ।																						
as फांचा कुरु के एक के देव काथ करू नुस्ताः जुन निन्न नृज्ञून् as के या च कन का कि कि कथ एको का एक कहिन नुदेत जाता as या च क्या कि कि कि कि कर का कि नुने जिस कि जि as का एको का का जार्थिक एक या नुचा की जन ता जा जा as (का एको का का जार्थिक के जार्थिक की की का निन्नुपूर्	-								नि ः	91	•	•				7	লা	मि	गि	7	লা	गि
se के या च का न च क्रांकि में कथ क्लांका क्ला क्रिक्त है है। so या च क्ला का स्वाधिक क्ला क्ला क्ला कि हा ला हि er क्ला क्ला का क्ला क्ला क्ला का है। so (क्ला लालूक क्ला का लाई च क्ला क्ला लालूक	8 8 B	•	3 1	₹.				(•	रेष च									7	বু		
er क्षं भूक पर्विष्ठे हैं भी का एक ध्यान् का चीर न तर दर्श है। sv cmi लानूक भी छ। जार्षि छ देन का तर्षि पर भी तर्भा प्रमुत्					4															ř	7	71
srom लालू के के छ। जार्क के देन अप प्रतिकार के लग			4	7															₩ ,	7		
				_				e mi				च व • •′	₹.									
																1 4	ζ 4		at	ı		

ধ্য ভালিকার বির্তি

	े खरमारु-गिनि	्र मृद्धः गृरं ४थ नाधावा	6 नानाषा वृः शृः २व भठाकी	o नामिक् थुः शुः ১-२इ भेठाकी	० क्षण क्षः १-०त्र मठाकी		والمراجع المراجع المرا	र नेवर कु: ०-६६ मछाबी		े वर्ष क्षः ४-७ई मठाकी	८ यनकी थुः ७-५म मछायी	> बाह्रकृष्ट षः ৮य শতাৰী		{ जगीत्मन्न गिक्ति कुः ६५५न ४	% क्लिक थुं: १-५व मध्येकी	८ वाक्ष्रिक थुः ६-५व मठासी	১ উত্য ভারত গৃ: ৮ম শতালী	प छेदकन युः अम्माठाकी स
>			>	•	>	>		>	>	>	>		>					
ঽ			2	₹	•	•	•	2	•	•	ર		ેર છ		•		•	
9				9	૭	9		૭	૭	৩	೨		૭		9			
8	8			8	8	8		8	8	8								
•				8	8	8			8									
9				t	t t		•	e e	t	ŧ	c c							
, F	•	•		•	•	•	•	•	•				· ·					
۶		•	٩	9	9	9	,	9	9	9	•	•	1		,			
٥.								•	•	`	9	·	•					
>>				۲	۲	7	۲	>	•	٠	۲				•	•	۲	•
٦२				۲		۲		۶	b						۲			
>9			۵	۵	۵	۵	৯		>	2	>	۵	۶	۵		ສ	à	
>8			٥.	•	>•	>•	>•	>•	>•	>•	>•		>•		•	>•	>•	
) ¢				>•	>•	>•					>•		÷ •		>•	>•		
20				₹•	२०	₹•	ર•	₹•	₹•	₹•	₹•		٤•		₹•	₹•		
>9				_	٥.	9•	٥.		⊙•	9.	٥٠		9 •	٥.				
22 24				8•	8• 8•	8•	8•				8• 8•		8•					
₹•	٠.				•	¢.	¢•				g•				8•			
					••	4.	•											
२ २	-					6.	••		••	٠.	••							
२०				9.	9•	9•	90		٩.		9.	9.						
₹8					90						9.							
₹€			b •		۴.	٠٠	۵.				F •		b •		۲.		٠.	b •
२७					٥٠		3.		۰۵	۶۰	۵۰							
૨ ૧		3	••	>••	>••				>	>••			>		>••		>••	
२৮									>••				>		>••		>••	
२२	२••	₹••	. २ •		₹••				२ ••	₹••	२००		2	_				२••
৩ . ৩১			8.								•••		9	000		1		
৩২			•		3	২•••	٥			8••	8••		8••	8••		4000		
೨೦				•••	,	~~~	7											
08			۹۰۰	>•••	8	8		••••	b									

			•	J 4(1	नेकांत्र	1151				
	7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1							6	سر سرای	7886
	91		নেপালের	পূৰি		٠ ک	जन .		I Boosi	011933
	F. W.	· {	^	•		6	4	(न्य	1/3	•
3	•	3	•		>	```	•	3	UC.	H BENN
•	Ł	ર			ર		ર	ર	-	BERT
•	•	•	ø		9		•	9		
8	8	8	6		8	8	8	8		
•	t		t		¢	C	¢	t		
•	•		•	•	•	9	•	•		
9	٩	٩	9		•	•	1	•		
•	۲		ь		7	۲	•	٠		
۵	>		۵		۵	۵	۵	۵		
•	>•	>•	•		>•	>•	>•	>•		
>>	२•	२०	₹•		₹•	२०	₹•	₹•		
>5	೨	9•	٥.		७•	٥.	9.	٥.		
১৩		8•	8•		8•	8∙	8•	8•		
>8	•		•			Q+	4.	•		
>¢		••	•••		••	••	••	••		
>6		9•	90		9.	9.	9.	9.		
>9			ь.		٥.	Po		b•		
24			• 4		>	>•	>•	>•		
>>		>••	>••		>••	>••	> •	3		
२०		2			२० •	2.0	₹••	२०●		
२ऽ		900		•		٥	9			
२२							800	•		-
>			9	8		•				
ર					¢	•	٩			
9							٩		>	
8		ર	૭		Œ					
•			૭	8	¢	•	٩	۲	>	•
•				8				b	*	•
٠ ٦		ર	৩	8	¢	•	٦		۵	•
•			•	_	t	_	_	4	_	
>		ર	9	8	¢	•	٩	b	>	•
2•		ર	9		_		۰	1 _	۵	•
)	ર	৩	8	¢	•	٩	6	₩	-
):):		ર	૭	8	t	•	9	ь	۵	•

化四次 医二十二

· 本本ない 記しなる これ かん

قايقه مأدوا إعرا

· (in a) is as

The second secon

<u>មត្តប្តី ដូច្នេះ ដូច្នេះ ដូចនេះ ប្រើបានប្រើបាន ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ ដូចនេះ</u>

3 * 0 0 0 3 6 3 4 5 4 6 7 6 0 0 0 0 0 0 0 0 1 8 7 7 8 7 8 7 8 9 9 9 9 9 \$

٠.



বিশ্বকোষ



সপ্তদশ ভাগ

রোঝি

রোটাস

রোজ (দেশৰ) প্রতিদিন। নিজ্য।

রোজ আফ্জান্ (নাজির), সমাট্ মহম্মদশাহের অধীনত্ব একজন থোজা। থালা সরা নামে প্রসিদ্ধ। ইনি ১৭৪৮ খুটালে দিনীর নিক্টবর্তী শাহজহানাবাহে 'বাগ নাজির' নামে প্রসিদ্ধ উদ্ধান-বাটিকা নির্দাণ করান।

রোজ বিহান্ (শেধ), একজন প্রসিদ্ধ মুসলমান পঞ্জিত ও
সাধু। ইনি তফ্নির আরাএস্নামে কোরাণের টাকা ও
সক্বং-লল্ মহারিব্ অতি কএকথানি প্রস্থাবন করেন।
১২০৯ খৃঠাকে ইহার মৃত্যু ঘটে।

রোজা, মৃসমানদিগের চলিশাই উপবাসরূপ পর্বভেদ।
রোঝান, পঞ্চাব-প্রদেশের দেরা গালি বাঁ বেলার অন্তর্গত
একটা নগর। সিদ্ধু নদের পশ্চিম কুলে দেরা গালি বাঁ
নগরের দক্ষিণে অবস্থিত। অক্ষাণ ১৭ণ উ: এবং জাবি ও ৬৮৭১৯
পূ:। মলারি বলুচ লাভির ত্মান্দার (স্পার) বহুরাম বাঁ
১৮২৫ পৃথাকে এই নগর স্থাপন করিয়া রাজধানীরূপে মনোনীত করেন। বর্তমান স্পারের প্রভিত্তিত বিচার-পূহ এবং
তাহার পিতা ও প্রাতৃশ্রের স্মাধিমন্দির কেথিবার জিনিস।
পশমী বাগ্ বা আছোদন-বল্লের জন্ত এই সান প্রসিদ্ধ।

রোঝি, বোষাই-প্রেসিডেনীর কাঠিরাবাড় বিভাগের নবানগর রাজ্যের অন্তর্গত একটা বীপ। কছেউপদাগরের নবানগর বাঁড়ির মোহানার নবানগর হইতে ৪ ফোল উত্তরে
অব্স্থিত। এবানে চারণ-রম্বীর উদ্দেশে হাপিত একটা
মন্দির আছে। কিংকেনী এইরপ, একলা নাগররাক মুগরার
প্রত্ত ইইরা একটা নীগ্রাইর পশ্চাবহুসরপ করেন। প্রাণ-

ভবে ভীত নীলগাই ক্রভবেগে আদিরা সেই চারণ-রমণীর আশ্রমে প্রবিষ্ট হইল। রাজা পশ্চাৎ পশ্চাৎ আদিরা উপনীত ছইলেন এবং সেই বুডা চারণ-রমণীকে মৃগটা দেখাইরা দিডে বলিলে ভিনি বৃগ সমর্পণে অখীরুতা হইলেন, রাজা বলপূর্বক মৃগটা বাহির করিরা নিহত করেন। ইহাতে ঐ বুঙা কুণিতা হইরা রাজাকে অভিসম্পাতপূর্বক আত্মজীবন উৎসর্গ করেন। বুডার এই অক্ষরণীর্জি ত্বরণ রাখিবার জন্ত সম্প্রটেসকভোগরি ভাষার আশ্রমসারিহিত হানে একটা মন্দির ছাপিত হইরাছিল। এই বীপের উত্তরপূর্বকোণে জ্বাবের অলমেখা হইতে ৪২ ফিট উচ্চ খেতপ্রথমনির্মিত ভাজোপরি এখানকার আলোক-বাটিকা বিভ্যান আছে। অক্ষা ২২০০২ ৫০ উ: এবং দ্রাহিত বাটিকা বিভ্যান আছে। অক্ষাত ২২৩২ ৫০ উ: এবং দ্রাহিত বাটিকা বিভ্যান আছে। আকাত বালিগর-রাজ এই আলোক-বাটিকা বিশ্বাণ করান। আকাশ পরিজ্বর থাকিলে সমুদ্রগর্জেণ স্বাহিত দুর হইতে ইহার আলোক লক্ষ্য করা বার।

রোট্ (এ) কট (অভেভোহণি দৃশ্বয়ে। পাও।২।৭৫) ইভি-বিচ্। ১ হিংল। ২ বধক।

রোটকব্রত (क्रो) বভভেগ। (বভপ্রকাশ)

রোটাল, পঞ্চাব প্রদেশের ঝিলাম জেলার অন্তর্গত একটি গিরিছর্গ ও তংপাদমূলত গওগাম। লবণপর্যন্তের যে তানে কুছান নদী নিঃস্তত হইরাছে,তাহার সমীপর্যন্তী একটা শৈলপুলে অব্যতিত। অকাণ ৩২° ৫৫ টা এবং টাখিণ ৭৩° ৪৯ পূ:। এখান হইতে ঝিলাম নগর ৫৪০ জেলা দক্ষিণপূর্য।

আফগানস্কার শেরণাছ যে সমর দিরীসিংহাসন বলপুর্বক আপহরণ করিমাছিলেন, সেই সমরে ১৪৪০ খুটাকে ভিনি গক্রজাতিকে দ্বন করিবার অভিপ্রাহে এই চুর্গ স্থাপন করেন। তিনি এই গিরিপথের সন্ধুবদেশে অবস্থিত একটা শৈলপুল পরিবেটিড করিয়া ছর্পের চতুর্দিকে প্রার ও নাইল বিস্তৃত একটা স্থানি প্রাচীর নিশ্বাণ করান। ঐ প্রাচীর শক্রর আক্রমণ হইতে হৃচ রাখিবার জন্ত হানে স্থানে আবস্থক বত ৩০ হইতে ৪০ ফিটু পর্যন্ত প্রশক্ত করা ক্রইরাছে। ইহার প্রবেশবার অভ্যাপিও পূর্ণমান্তাম বিরাজিত আছে, ক্রির্ ইয়ার প্রবেশবার আভ্যাপিও পূর্ণমান্তাম বিরাজিত আছে, ক্রির্ ক্রবেশ পাড়িরা বিশ্বন্ত হইরাছে। এই স্থানিক তুর্গভূমির পরিমাণ আন্যান ২৬০ একর হইবে। এই স্থানের প্রাকৃতিক চিত্র অভীব মনোহারী।

রোটাস্গড়, (রোহিতাস্) বালালার শাহাবাদ জেলার অন্তর্গত একটা গিরিছর্গ। সাসেরাম নগরের ১৫ জোল দক্ষিণে কোএল ও শোণনদের সঙ্গমের অদ্রে লৈলোপরি স্থাপিত। অঙ্কাণ ২৪° ৩৭´ ৩০´ উ: এবং ক্রান্তি ৮৩° ৫৫´ ৫০´ পু:।

শাহাবাদ জেলার স্থানে স্থানে প্রাচীন কীন্তির অনেক
নিদর্শন থাকিলেও প্রত্নতবাহুস্থিৎসার এর প আগ্রহের বিষর
আর কোথাও নাই। এই স্থানের প্রাচীনত্ব স্থানে নানা
কিংবদন্তী প্রচারিত থাকিলেও একমাত্র তুর্গ হইতেই উহার
অতীতকীর্তির স্থান্ট আভাগ পাওয়া যায়। স্থাবংশাবতংশ
রাজা হরিভক্তের পুত্র রোহিতাখের নামাহুদারে এই স্থানের
নাম রোহিভাখগড় হইরাছিল। পরে মুসলমানাধিকারে
ক্রমে রোহতস্গড় হইতে রোটাস্গড় নামে আখ্যাত হইয়াছে।
এখানে রোহিভাখ-মুর্ত্তি প্রতিতিত ছিল। স্থানীয় লোকে ভক্তি
সহকারে সেই দেবপ্রতিম মৃত্তির উপাসনা করিত। স্থাট্
অরক্ষেরে রোটাস্গড় অধিকার করিয়া ঐ স্থান ধ্বংস করেন।

উপরোক্ত সদাগরাপূণীর অধিপতি মহারাজ হরিশ্চন্ত হইতে তবংশীর কড জন নরপতি এই ছ্গাধিকার রক্ষা করিয় আদিয়াছিলেন, তাহার কোন বিবরণ পাওয়া বায় না। ঐতিহাসিক মৃগে ১৫০৯ খুটান্দে শেরশাহ এই স্থান অধিকার করিয়া ছগসংক্ষারে যত্নবান্ হন, কিন্তু কিছুকাল পরেই তিনি সেই স্থান পরিভাগে করিয়৷ শেরগড়ে ছুর্গ নিআণ পূর্ব্বক্তথার বাস করেন। সমাট অকবরশাহের সেনাপতি ও বালালার প্রতিনিধি রাজা মানসিংই খুটার ১৬শ শভাব্দের শেষভাগে এই ছুর্গ স্থান করিয়৷ তথার সেনালল স্থাপন করিয়াছিলেন। প্রাচীন ছর্গের সংস্কার ও নৃতন বাসভবনাদি তিনি নির্দাণ করিয়া বান। তাহার উৎকার্ণ ছুর্গালত্ব পারভভাবার লিখিত শিলাক্ষক ছুই্থানি হুইতে ভাহার আপুর্প্রিক বিবরণ বিরুত আছে।

রোটাস্গড় শৈলের বে অধিত্যকাত্মদেশে ধ্বতত্ত্রের
নিদর্শন রহিরাছে, ভাষা পূর্বণশিচমে ৪ মাইল এবং উত্তরদক্ষিণে ৫ মাইল হইবে। উহার সমগ্র পরিধি প্রায় ২৮
মাইল। ১৮৪৮ খুটাজে ডাঃ হকার এই স্থানের উচ্চতা
১৪৯০ ফিট্নিদ্ধারণ করেন।

এই পর্মতে উঠিবার ৮০টা রাজা আছে। তথ্যধ্য ৪টা বঙ্গবাট ও ৭৯টা ঘটো নামে কথিত। ছুর্গপরিক্রমার মধ্যে বজ্ঞতালি প্রাচীন কীর্তি দৃষ্ট হয়, তন্মধ্যে মানসিংহের প্রতিষ্ঠিত ছুইটা হিন্দ্রন্দর, অরঙ্গজেবের নিশ্বিত মদ্জিদ, মহাল-সরাই, নামক প্রাদাদ ও 'বারদোয়ারী' নামক রাজকার্যালয় স্থাপতাশিলের অভূত্রস্কুট নিদ্দন।

ভবিষ্যব্ৰহ্মৰণ্ড গন্ধার অন্তৰ্গত কৃছিদাসপত্তনের উল্লেখ আছে। ভৌগোলিক বিবরণাত্মারে ঐ স্থানকে গোটাস্গড় বলিয়াই অনুমিত হয়। (ব্ৰহ্মণ• ৩০৬)

রোটিকা (জা) পিটবিশেষ, চলিত কটা। ইহা ময়দা, মায়, ছোলা প্রভৃতি ঘারা প্রস্তুত হইয়া থাকে। সাধারণতঃ কটা বলিলে ময়দা ঘারা প্রস্তুত খাদ্যবিশেষ বুঝায়। ভাবপ্রকাশে—

"ভদগোধুমচুর্ণেন কিঞ্ছিৎপুষ্টাঞ্চ পোলিকাং।

তপ্তকে ত্বেদয়েৎ ক্বড়া ভূয়োহসারেহলি তাং পচেৎ ॥

নিৰৈষা রোটকা প্রোক্তা গুণানস্থাঃ প্রচন্মহে।

द्यांविका वनक्रमुक्ता दृश्यमी थाजूवर्षनी ।

বাতমী কফ্রন্গুবনী দাঁগুাগ্নীনাং এপুলিভা।" (ভাবপ্র-)
কোটিকা প্রস্কৃতপ্রনী দাঁগুাগ্নীনাং এপুলিভা।" (ভাবপ্র-)
কোটিকা প্রস্কৃতপ্রনালী—শুক গোধ্ন চূণ করিয়া জন্ধারা
কিঞ্চিং পুরু পোলিকা প্রস্কৃত করিতে হইবে, পরে উহা
ভারেয়া গরম করিয়া লইয়া প্রভূত অঙ্গারাগ্রিতে (কর্মার
আগুনে) পাক কর্থাং সেকিয়া লইলে ইহা প্রস্কৃত হয়।
ইহার গুণ বলকারক, কচিজনক, শরীরের উপচয়্মকারক,
ধাতুবর্দ্ধক, বায়্নাশক, কফ্কারক, এবং শুরু। প্রবলাগ্রি
মানবের পক্ষেইহা বিশেষ উপকারী।

যবরোটিক।—যব চূর্ণ করিয়। উক্তরণ প্রণালীতে রোটা কৈছে । ইহার গুণ—
ক্রচিকর, মধুররদ, লঘু, মলবর্দ্ধক, শুক্র ও বাভজনক, বলকারক, এবং কফরোগ, পীনস, খাস, কাস, মেহ, প্রমেহ ও
গলরোগনাশক।

মাবরোটিকা— শুক মাবকলারের চুর্ণকে চমনী বলে, এই চননী বারা বে রোটিকা প্রস্তুত হর, ভাষাকে বলভজিকা বা মাবরোটিকা কছে। গুল কুক, উষ্ণবীয্য, বাযুব্দ্ধক ও বলকারক। ইহা প্রবলায়ি মানবগণের পক্ষে প্রশন্ত। মাবকলাইরের লাইল কলে ভিজাইরা উহার তুব ফেলিয়া দিয়

त्त्रीत्व ७ कारेबा बत्ब (भयंत क्षित्रा नरेत्न छाबादक व्यमी करहा अरे व्यमीत क्षेत्र करू ७ भित्रनायक, अवर क्षिक्ष वाष्ट्रक्रमा अरे क्ष्मीत नाम सर्वादिका।

রোড় (বি) > ছবা ২ কোন।

ব্যেড়, পঞ্চাৰ ও বুক-প্রদেশবাসী ক্রবিদীবি-ভাতিবিশেষ।
পঞ্চাবের কণাল ও অবালা জেলার সীমান্তর্মকী এবং
ছারীবরের দক্ষিণছ ছবিত্ত ধাক্জালল প্রদেশে চৌরানীথানি প্রানে ইহারা বাস করে। ভারতমুক্তের অবসান সময়ে
শাগুবগণ কুরুকুল সমূলে নির্দুল করিবার আশার শেবযুদ্ধের
সমর বে ছানে সৈভসমবেত করিয়াছিলেন সেই আমীন্
গ্রামই ইহালের আদি বাসভূমি। এই ছান হইতে ইহারা
ক্রমশং পশ্চিম ব্যুনাধালের ভারদেশ, নিম-ক্রণাল ও বিন্দ
প্রভৃতি নানা জেলার বাইরা বাস করিয়াছে।

ইহার। দৃঢ়কার ও স্থালরগঠন। দেখিতে সর্বাংশে জাটলাভির অন্তর্নপ; কিন্তু শান্ত ও নদ্রপ্রকৃতিবিশিষ্ট ও কৃষি-কার্যানিরত। জাটলাভির ভার ইহারা যুদ্ধপ্রির বা প্রস্থাপ-হারী নহে।

हेरामत छैरनीं नचरक विरमव दकान वरामानाशान नारे। चात्राका-(भूक्षभक्षावधानाम द्राका नाम बाक)-দিগের ভাগ ইহারাও আপনাদিগকে ক্ষত্রির বলিয়া পরিচিত करत। পরভরাদের ভবে ভাছার। "আউর" (আর⇒ অপর) व्यांकि विनत्र। भतिकांन भारेबाहिन, अहे वक्ष कनविष अक्षी খতত্র জাতি বলির। পরিগণিক হইরাছে। যুক্তপ্রদেশের चारत्राण । अ शकारवत्र अपूर्वाकनवानी स्त्राणः वहरू अपूर ৰানেশ্বপ্ৰাক্ষানী হোড়েয়া বে দম্পুৰ পৃথকু লাভি, ভাহায় কোন যুক্তিযুক্ত আমাণ নাই। পাশ্চাভা জাভিভত্তবিদ্গণ श्र्यांकनवानी রোড়ালাভি হইডে পশ্চিম পঞ্চাববানী রোড়-দিগতে অপেকাছত স্বল্কার দেখিরা চুইটাকে পৃথক্ আতি বলিয়া কলনা করেন; কিন্ত ভারাদের পরস্পরের আচায়াদি नका क्षित উভवक्ट चित्र विदा (वाथ द्व । नामानिक चाठारत काठेनिरशत महिक देदारमत वित्मव दकान शार्थका मारे।

নোরাদাবাদবানী আমীন-প্রামীর রোজেরা বলে বে, তাহারাও ছানীর চৌহান রাজপুড়বিগের এক শাধা, সংল

হইতে এখানে আনিরা বান করিয়াছে। অণর রোড়েরা বলে বে, বোহতক জেলার থাবার কর্মীলের বলনী গ্রামই ভাষাদের আদি বানহান, আবার কেহ কের মাজপুঞ্জা হইতে ব্যাধিত বলিয়া গরিচর দিয়া থাকে।

্ ইহাদের সংখ্যানাপ্ৰাল, নাইয়া, খিটি ও জন্মান্ ঐভৃতি কৃষ্ণকৃষ্ণি পাৰ পাছে। ইহারা বিধ্বাস বিবাহ দের।

্পাহরানপুরের রোড়ের। বদে, ভারতবৃদ্ধ কালে আইক বোলবলে কৈবলথাতে ইহালের উত্ত করিচাছিলেই ইহালের বিবাহ প্রচলিত আহে। বিবাহ প্রচলিত আহে। বেবর বিবাহই প্রাণ্ড। ইহারা মংস্য, মন্য ও ছার শুক্রালির মাংস তক্ষণ করে।

বিশ্বনোরবাসী রোড়েয়া আগনাদিগতে জীরামচক্রভনর কুশের বংশধর বলিয়া পরিচিত করে। বিগত চারি শতাক পূর্বে ইহারা কর্ণাল কেলার কভেপুর-পুঞী নামক আন হইতে এখানে আসিরাছে। এই প্রাথে সৈরল্পিগের বাস ছিল। কালে নৈরল ও রোড়াদিগের মধ্যে কলাই উপান্ধিত হয়, তথন রোড়েরা নলপতি মহীটাদের অধীনে অঞ্জন বাইরা বাস-ক্রিতে বাধ্য হয়।

ইহাদের মধ্যে কোন কোন থাক আপনাদিকে তোমর-রাজপুত বংশোড়ুত বলিরা থাকে। দিলীর ভোনররাজবংশের গ্রেভাব থক্ষ হইলে ভাহারা নানাছানে বাইরা বাস করে। কেহ কেহ বলে, মোলনসমট্ অরলজেবের নাসনে উৎপীড়িত হইরা তাহারা অঞ্জ বাইরা বাস করিতে বাধ্য হইরাছে।

ইহার। বিবাহ ও অপরাপর জিরাক্সাপাদি সন্তান্ত হিন্দুবংশেরই অমুক্রণে নির্মাহিত করির। থাকে। বিধবার।
দেবরুকে বিবাহ করিতে পারে, কিছু ভাষা বিধবার ইচ্ছাধীন।
জীচরিত্র সম্বন্ধে সন্দেহজনক প্রমাণ পাইলে জাতীর সভার
অহুমোদনে ভাহাকে জাতিচ্যুক্ত করিবার ব্যবহা আছে,
কিছু পদ্মীভ্যাপের সাধারণ কোন নিরন্ধ নাই। কোন কোন
সমর অসমাজে অর্থদণ্ড দিয়া সে অলাভি মধ্যে থাকিতে
পার। কবি ব্যতীভ ইহারা টাট্ (মাহর) ও স্বভ্নী প্রস্তুভ

রোচৃ (আ) উদ্পমন্দীন। অছ্রিত হওন।
রোল, বোঘাই-এেনিডেজীর ধারহাড় জেলার অর্থত একটা
উপবিভাগ। ভূপরিমান ৩৭০ বর্গমাইন। এই উপবিভাগের
মধ্যে দক্ষিণ-মহারাই রেলপথের আলুর ও ব্যাপ্র মামক
ভানে ছইটা টেশন আছে।

২ উক্ত জেলার একটা নানার ও উপবিভাগের সদর। আনাং ১৫°৪১ তংশ উঃ এবং জাবিং ৭৫°১১ ১ পুঃ। এখানে শৈকাকুমধ্যে বনকোটিরভাঃ প্রাক্ পশ্চিমে রোমকপতনঞ।
স্থাৰতঃ নিভপুরং ছনেকঃ সৌমোহধ মান্যে বড়বানলক ॥
(নিভাতনিয়োমনি গোলাখাার)

রোমকর্গক (পুং) শশক । (বৈজ্ঞানত)
ব্রোমকর্সিজান্ত (পুং) রোমকাচার্য্য লিখিত জ্যোতিওর্ম্থ ।
রোমকাচার্য্য (পুং) একলম বিধ্যাত জ্যোতিরিন্ধ । শাকলা
সংহিতার ও বরাহনিধির ক্লত হারণরত্নে ইহার উল্লেখ আছে।
রোমকার্ম (পুং) গ্রহণারতেন । (বৃহত্বর্থ ৩)০)
রোমকুপ (পুং) রোম্পাং কুপং। লোমবিবর ।
শর্মধাপতিশ্চাক্ষালাং নদৌ ব্রহ্ম ক্ষওল্ম।

সমন্তরোমকূপেরু নিজন্মীন্ দিবাকর: ॥" (দেরীমাণ ১ জং) রোমকেশার (ক্লী) কোন্ণাং কেশরদিব। চামর। (জিভাণ) রোমগর্ত্ত (খং) রোম্ণাং গর্ত্তঃ। রোমকূপ।

রোমগুচছ (পুং) রোম্ণাং গুছ: । চমর। (ক্রিকা) স্বার্থে-

কন্। রোমগুজ্ক—চামর। (অটাধর)
রোমগুৎস (পুং) চামর। চামরী গোর পুজ্ছ।
রোমণুৎ (আ) রোমণুক্ত। পুজ্ছবিশিষ্ট।

রোমতকেরী (জী) অরোগালী। (রদ র•)

রোমত্যজ (a) লোমনাশক।

রোমদ্বীপ (পুং) কুনি। (বৈদ্যক্রি-)

রোমন্ (কৌ) বোতীতি ক (নামন্ নীমন্ বোমন্ রোমলিতি। উণ্ ৪। ১৫০) ইতি মমিন্প্রভারেন সাধু:। শরীর জাতাত্ব, চলিত বোঁরা। পর্যায়—লোম, অলল, অগ্ল, চর্মল, তন্কহ। (রাজনি০)

শরীরের রহজ স্থানে অর্থাৎ গোপনীর স্থানে বে রোম হয়ে, ভাহা স্পর্ণ করিতে নাই।

"ন সপশিরে: জীড়েত খানি খানি ন সংস্থাধং।
রোমাণি চ সহজানি নাশিটেন সদা এলেং ॥"
(কুলপু• ১৫ আং) ২ জনপদবিশেষ। ৩ তদেশবাসী।
(পুং) ৪ ভূমী।

''বানায়ৰো দশাঃ পাৰ্মা রোমাণঃ কুশবিক্ষৰঃ।"

(अ) वा वा ७ वहां छ)

রোমস্থ (পুং) উদ্ধীয়ণ করিছ। চর্মণ, চলিত স্বাবরকাটা, প্রাথিকের চর্মিত চর্মণ।

"মৃগৈৰ্বতিতরোমন্থ্টজাক্ষনভূমিবু।" (রদু ১। ৫২)
রোমপান (প:) লোমপান, অলবেশীর রাক্ষিশের।
(জিলপুরাণ ৬৮।০৯) [লোমপান দেব]

রোমপুলক (পং) রোদ্নাং পূলক:। রোমহর্ব, রোমক। রোম্বলার জী) কিজিল, চ্যাড়ল। (বৈছক্নি-) রোমবন্ধ (অ) চুলের বিনানো গড়ির বারা আবন্ধ। রোমভূমি (জী) রোম্পাং ভূমিরিক। চর্ম। (রাজনি•) द्राम्यूर्कम् (बि) दामधूक मछ क्विणिहे। (হ্লেড) ° রোমরতাসার (পং) উদর। (त्राभ्यत्क (क्री) त्राभक्ष। রোমরাজি (জী) রোদাং রাজিঃ। রোদসমূহঃ। রোদদাবি-छोद् द्वामबाको द्वामनगृह। রোমলতা (জী) লোমাং লভেব। রোমাবলিয় (হেম) (त्रांभलद्व (क्री) माख्य नवन, वर्छन नवन। ব্লোমলতিকা (জা) নাভির উপরে রমণীগণের লোকের त्रिथा ६३। রোমবং (তি) রোমন্ অস্তার্থে মতুপ্ মন্ত বং, নম্ভ লোপঃ। (ब्रामांविश्वे। রোমবল্লী (জী) কণিক ছু। আলকুনী। রোমবাহিন্ (वि) > লোম কর্ত্তনযোগ্য তীক্ষ্ণ ধারবিশিষ্ট। রোমবিকার (খং) রোমাং বিকার:। রোমঞ্চ। (হলায়্ধ) त्त्रां मिविकिया (जी) व्यामाक। Cরামবিধবংস (খং) > লোমনাশকারী। ২ উকুণ। রোমবিবর (क्रो) রোমাং বিবরং। লোমকুপ। রোমবেধ (পুং) একজন প্রাচীন এছকার। রোমশ (পুং) রোমাণি সভাভেতি রোমন্ (লোমাদিপান্দাদি शिक्शिक्षिणः भरनगठः। शा ६.२।>००) देखि भः। २ (मय। (কেম) ২ পিঞালু। ৩ কুঞ্জী। ৪ শুকর। ৫ ঋষিবিশেষ। এই ঋষির এক একটা জোম পভনে এক একটা ইঞ্লগাই **इहें छ। এই क्रांप हे होत्र यथन गमंख (त्राम পতन हहे दि, छथन** ইঁহার প্রমায়ু নাশ পাইবে। এই ঋষি ভাহার নিজের **बहे नवमायू का**निया धवर हेरा कांछ नामाछकान विविधना

প্রিক্ষ কর্মণণ্ডে বর্ণিত হইরাছে।
(ক্লী) ৬ উপস্থ। "সেহীশে যত ব্লোদশং নিষেত্রো"
(অক্ ১০৮৬১৬) 'রোমশং উপস্থং' (সারণ)
(আি) ৭ অভিশব্ধ রোম বিশিষ্ট, বাহার গাতো অভিশব

ক্রিয়া গৃছনিশাণ করেন নাই, কেবল ব্র্যাকালে ধারাপাত

নিবৃত্তির জন্ত মন্তকে কট (মাছ্র) রাখিয়া তপশ্চর্য্যা করিতেন।

(कांगवक ७) ८) हेहात विरामन विवत्न अक्षरैववर्ख श्रुताता

"হীনজিয়ং নিশ্কারং নিশ্কারে রোমশার্শসন্।" (মহ ০১)
রোমশাপাত্রা (জী) বেবভাড়গুল। বেরাভাড়া পাছ।
রোমশাফল (পুং) রোমশং কলমভ। ভিঙিল বুক। চ্যাড়েশগাছ।
রোমশাফুলিকা (জী) হরিষা। (ইবছক্ষিণ)

त्याम चाट्ट।

রোমশসিদ্ধান্ত, বোৰণমূনি-বির্তিত ক্যোতির্গ্রেক।
রোমশা (জা) রোমণি সন্তাগ্যা ইতি রোমন্ শ, টাগ্।
১ গথা বৃক্। (জাবনিক) ২ কোমশা, বৃহস্তিক্তা।
"স্কাহমত্রি রোমশা গ্রামণানিবাবিকা।"

(শক্ ১। ১২৬। ৭) ও কর্কটিকা, কাকুড়। (বৈছক্নি•) ৪ অলগদ নামক সবিষ জলোকাতেল। (স্থশত তং ১৩ জঃ) ৫ মাংসরোহণী। (বৈছক্মি•)

রোমশাতন (জী) রোমাং শাতনং। লোমের উদ্বংসন। রোমশুক (জী) রোমযুক্তং শৃকং যত। ছৌণেরক। চলিত গেটেলা। (ভাৰপ্র•)

রোম-সাম্রাজ্য, পাশ্চাত্য-সভ্যতার আদর্শক্ষেত্র স্থপ্রাচীন রোম
মহানগরী হইতে রোমক বা লাটিন জাতির সোভাগ্যোত্মতির
সঙ্গে সঙ্গে শৌর্থাও রাজতন্ত্রের প্রতিষ্ঠা-প্রভাবে রাজ্যসমূদ্দির
পরির্দ্ধি সহকারে ধীরে ধীরে যে স্থবিস্থৃত রাজ্যসম্পৎ কর্মিত
ইইরাছিল, তাহাই খুগীয় ভূতীয় শতাব্দে রোমসাম্রাজ্যসীমার চরম
বিস্থৃতি লাভ করে। খুগুপুর্ক ৮ম শতাব্দে পুরুষ-পরম্পরাশ্রুত কিংবদন্তীমূলক রাম্লাদ্ কর্তৃক পালেটাইন্ শৈলোপরি
রোমনগর স্থাপন; সেবাইন্, লাটিন প্রভৃতি বিভিন্ন পার্কাত্যজাতির পরম্পের সন্মিলন ও শক্তিবৃদ্ধি; রাজনির্কাচন ও রাজতন্ত্রগঠন; সেনেট মহাসভা ও কমিটারা কিউরিরাটা স্থাপন এবং
সিপিও, জিয়াস মরিয়াদ্ কর্ণেলিয়াদ্ সালা, জ্লিয়াদ্ সিজার
প্রভৃতি ভূদ্ধি যোদ্বৃন্দের আবিভাব ও রাজ্যজয় ইইতেই রোমসাম্রাজ্যের পতন হইয়াছিল।

ক্রটাদ্ ও কেদিয়াদের ষড়বছে ডিক্টোর দিলারের হত্যা এবং অক্টেভিয়ান্ ও আণ্টনিকর্তৃক ফিলিপি রণক্ষেত্রে উক্ত প্রজ্ঞাত ক্রপ্রয়াদী দলপতিছয়ের পরাজয় হইতে রোমে প্রজ্ঞাতয়ের প্রিভিয়ান বিলুপ্ত হয়। জগছিখাত ফ্লন্সী ক্লওপেট্রার পাণি গ্রহণোপক্ষে অক্টেভিয়ানের ভিয়িন্রী অক্টেভিয়াকে পরিত্যাগ করায় আণ্টনির সহিত অক্টেভিয়ানের মতবিরোধহেতু এক্টিয়াম্ রণক্ষেত্র ঘোর সংঘর্ষ উপস্থিত হয়। এই য়ুদ্ধে আণ্টনি পরাজিত হইলে, ডিক্টেটার দিলারের প্রকৃত উত্তরাধিকারী ও প্রাভূপোত্র (Great-nephew) অক্টেভিয়ান্ ২৭ খুইপুর্কান্ধে রোমদান্তাক্ষেত্র অধীধর হন; কিন্ধ তিনি প্রজার মনোরজনার্থ এই মহদ্ভার শ্রীয় মন্তকে না লইয়া সেনেট সভার উপর ক্লন্ত করেন। তিনিই প্রকৃতপক্ষে সান্তাক্ষ্যে ক্ষমনওয়েল্থের' পুনঃ প্রতিষ্ঠা করিয়া গিয়াছিলেন।

বাহা হউক, তাঁহার সমর হইতে ক্রমনঃই রোমসান্তালের বুদ্ধি হইতে থাকে এবং টাসিটাস্, প্রোবাস্ও কেন্স্ (২৮৪ বুটাকা) প্রভৃতি সুরাট্গণ পুর্ববিস্থত রোমসান্তালেয়র প্রান্তনীমার আপনাপন শাসনদণ্ড পরিচাশন করিরাছিলেন। এই সমরের মধ্যে রোমসান্রাজ্য কোন্ কোন্ ছাজার শাসনকালে কড়প্র পর্যান্ত ব্যাপ্ত হইলাছিল, ভাষা ইভিহানজাগে বথাছানে বিবৃত হইলাছে। সাধারণের অবগতির জভ নিয়ে সেই সভ্যাসমূহ সান্রাজ্যের বিস্তার সীমা ও দেশবিভাগের অবস্থান নির্দেশ করা গেল।

এই সাঝ্রজ্যের পশ্চিমসীমা আটুলান্টিক মহাসাগয়; উত্তরে ইংলিস চেনেল, অর্থাণসাগর, ডেন্মার্ক, বলটিক সাগর ও ক্লবসাঝ্রাজ্য; পূর্ব্বে কাম্পিরসাগর ও পারজ্যের কতকাংশ এবং
দক্ষিণে পারজ্যোপসাগর, আরব, লোহিতসাগর ও ভূমধ্যসাগরোপকূল ব্যতিরিক্ত আফ্রিকা মহাদেশ। বর্ত্তমান সমৃদ্ধ ইংলগুরাজ্যও
রোম সাঞ্জাজুক্ত হইয়াছিল।

প্রাচীন কালের বিস্তীর্ণ রোমসাম্রাজ্য যে কর্মী দেশভাগে বিচ্ছির ছিল এবং বর্জমান সময়ে কোন কোন রাজার বা প্রজ্ঞা-তম্ত্রের প্রতিনিধিবর্গের সাহায্যে পরিচালিত হইতেছে, নিমে ভাহার তালিকা নির্দেশ করা হইল—

রুরোপীর হাজ্য।

লাটিন নাম বর্ত্তমান নাম

वृष्टोनिया-हैश्न ७ ७ ७ त्यन्त्।

গালিয়া---ফ্রান্স, বেলজিয়াম, হলও ও সুইজর্লতের কতকাংশ।

হিম্পানিয়া—ম্পেন ও পর্জুগাল।

বলিয়ারিস্— বেলিয়ারিক্ শীপপুঞ্চ।

निनिवा -- निनिवा।

ইতালিয়া--ইতাগী।

রেটিয়া—স্থাইন্সর্ল ও অট্রোহান্সেরীর কতকাংশ।

ভিত্তে निरिया-जर्मण माञ्चारकात प्रक्रिगारन।

আর্মাণিয় — ভিশ্চু লানদীর পশ্চিমতীর পর্যান্ত জর্মণ সাম্রাজ্য ও পোলণ্ডের কতকাংশ এবং দীনিয়ুবের উত্তরকূল পর্যান্ত অদ্ভিয়রাজা।

পানোনির।—দানিয়্ব নদীর পশ্চিমকৃল পর্যান্ত আষ্ট্রোহালেরী প্রদেশ।

ডাকিয়া—থিস্নদীর পূর্ববেত্তী অট্টোহান্দেরী প্রদেশ এবং প্রথ ও দানিযুব নদী মধ্যবর্তী ক্রমানিয়া রাজ্য।

নোরিকাম্—দানিয়ুব নদীর দক্ষিণকুলে: ভিরেনানগর-সন্নিছিত প্রদেশ হইতে স্মাদ্রিয়াটিক্ সমুদ্র পর্যন্ত বিস্তৃত।

ইলিরিকান্—আদ্রিরাটিক্ সাগরোপকুলবর্ত্তী আষ্ট্রোহালেরী প্রবেশ, মন্টিনিগ্রো ও তুলকের কতকাংশ।

এপিরান্—প্রাস ও ইলিরিকামের মধ্যবৃতী তুরুক প্রান্থ। কর্মিকা, সার্ভিনিরা, সাইপ্রাস ও জীট্টীশ—ভূমধ্যসাগ্র মধ্যে। আকাইরা এীর বাজ ।
নাবিলোনিরা তুরুকের ক্রেলাক্র্যাল নামক তুরুক বিভাগ ।
নিনিরা নার্থির ও তুরুকের ক্রেলাক।
নিনিরা নার্থির ও তুরুকের ক্রেলাক।

নাইলিরা, লিভিলা, কারিয়া— ইবিয়ান লাগরভীরবর্তী এলিরা-মারীনর প্রদেশখ

-বিশ্ নিরা ও পাটাস্—ক্ষুক্ষসাগরের বন্দিপ ও এসিরামাইনরের ভক্তর প্রদেশ।

কার্নোনেসাস্ টোরিকা— মুরোপীর কবিরার ক্রিনিরা বিভাগ।
কলকিন্, ইবেরিরা, আনবানিরা—ককেসস্ পর্কতের দক্ষিণ ও
আন্মেণিরার উত্তর এবং ক্রকসাগর হইতে কাম্পীর
ক্রমতীর পর্বান্ত বিশ্বত তৃপগু।

ম্রিজিয়া, পিসিডিয়া, গালাসিয়া, লাইকোনিয়া, কাপাডোকিয়া
ও আর্ফেণিয়া মাইনয়—এসিয়ামাইনয়ের অন্তর্ভুক্ত।
আর্মেণিয়া —আসিয়ীয়ার উত্তর।

আসিরীরা, মিসোপোটেমিরা, বাবিলোনিরা, কান্ডিরা রাজ্য, আরাবিয়া-পিট্রিরা, সিরিরা ও পার্থিরা—লিভান্ট উপসাগরকূল হইতে পারভের পশ্চিমার্ক্ক, আরবের উত্তর ও আর্মেণিরা দক্ষিণ পর্যান্ত বিস্তৃত ভূডার।

আণ্ডিকার অভতু ক রাজা।

মৌরিটানিয়া, নিউমিডিয়া, আফ্রিকা (কার্থেজ রাজধানী), লিবিয়া ও ইাজপ্টাস্ নামক ভূমধ্যসাগরতীরবর্ত্তী আফ্রিকার উপকুল প্রদেশ। এই সকল রাজ্যভাগ বর্তমান মরোজা, আল্জিরিয়া,
টিউনিস্, টিপোলি, বার্কা ও ইজিপ্ত (মিশর) রাজ্যের ক্তকাংশ
লইয়া গঠিত হইয়াছিল।

এই বিহুত রোমসাত্রাজ্যের প্রাকৃতিক সৌল্বর্য কিরুপ ছিল এবং নদী ও পর্বতমালা কোধার ও কিরুপ ভাবে প্রসারিত হইরাছিল, তাহার সঠিক বিবরণ জানিবার উপার নাই। বর্তমান হুরোপের তত্তৎপ্রদেশে বে সকল পর্বত ও নদীমালা বিহুত দেখা যার, তখনও সেই সকল সমভাবে বিরাজিত ছিল। বিস্লবিরাস, ট্রবোলী ও এটুনা নামক আরেরগিরির অধ্যুলগম তৎকালে রোম রাজধানীকে কম্পিত করিরাছিল। ত্থাটীন হার্তুলেনিয়ম ও পশ্লিটাই নগম বিস্লবিরাসের জনত ধাতব দিল্লোবে এবং উত্ত তদ্মে পূর্ণ হইরা গিরাছিল। তুই সহত্র বৎসর ভাহার নিলর্শনমাত্র ছিল না। বর্তমান ব্যোধারাক ইমাত্রেলের খাসনকালে সেই স্থালার্যার অধ্যুলগম নাই। বর্তমান বর্ষ (১৯০৫কা সেন্টেবর) ক্ষানাত্রিরার অধ্যুলগম নাই। বর্তমান বর্ষ (১৯০৫কা সেন্টেবর) ক্ষানাত্রিরার অধ্যুলগম নাই। বর্তমান বর্ষ (১৯০৫কা সেন্টেবর) ক্ষানাত্রিরার

তংকালে ভীবন ৰটিকার ভূমধ্যসাগরোপকুলক ইভালীর আন্তলনমূহ আলোড়িভ হুইভ । সময় সময় অসমাননে এ সকল হান জনমান হইরা অধিবানিসুলের কঠ উৎপাদন করিও। চিরহন অসিক হুর্জিপাক ও চুর্জেব ঘটনারালি প্রাচীন রোমরাজ্যে বিরল ছিল না।

নেই প্রাচীন নমুদ্ধ রোমরাজ্যের বাণিল্যপ্রেকার চিন্তা করিলে মনে অক্তপুর্ব বিষয় লাগিরা উঠে। বে সমরে জলবাণিজ্যের অভ ক্রজগামী হাঁমার ছিল না, নেই সমরে রোমকপণ ভূমধ্যসাগরবন্দ কেপরিবৃদ্ধ নৌকার আলোড়িত করিরা মিসররাজ্য হইতে ভারতীর ও পারক্রদেশলাত দ্রব্যসন্তার সমুদ্ধ পথে অদেশে আনমন করিত। গথ, হূণ, ভাওাল ও বর্ষরেপণ যে সময় পশ্চিম এসিরা পাশচাত্য লাতিমাত্রেরই ভরের কারণ করিয়া ভূলিরাছিল,নির্ভীক রোমক লাতি বাছবলে সেই হর্দম এসিরা-বাসীদিগকে পদানত করিয়া অক্ত্রভাবে তুক্তকের মধ্য দিরা আপনাদের হলপথের বাণিজ্যপরিচালনা করিরাছিল। বৃদ্ধবিগ্রহে রোমকগণ যেরপ ক্ষিপ্রহত্ত ছিল, অক্তশন্তাদি প্রস্তুত কার্য্যেও তাহাদিগের তদমুরূপ স্থমিপুণভার পরিচর পাওয়া গিরাছে।

রোমরাজধানীতে ভারতীয় মণি মৃক্তার যথেষ্ট আদর ছিল,
ভাষা প্রাচীন গ্রন্থাদি পাঠে জানা বার। এই কারণে সমৃত্রগমনোপযোগী অর্ণবিধান নির্দ্ধাণে ভাষারা বিশেষ অধ্যবসার ও
শ্রম স্বীকার করিরাছিল। তৎকালে দাঁড় ও পালের ভরে সমৃত্রে
জাহাজ চলিত। কার্থেজিনীয়-সন্দার হানিবল রোম আক্রমণকালে এবং রোমসেনাপতি সিপিওর গ্রাক আক্রমণকালে এক্রপ
দাঁড়বাহী অর্ণবিধানের উল্লেখ পাওরা বার। ইতিহাসাংশে
রোমকজাতির ক্রমোন্নতির যথেষ্ট পরিচর দেওয়া হইরাছে।

ইতালীর অন্তর্গত টাইবার নদী তীরন্থ রোম (Roma) নগরী এই বিস্তৃত সামাজ্যের রাজধানী। এখানে খুইপূর্বা ২য় শতান্দ হইতে খুইার ১৪শ শতান্দ পর্যন্ত স্থাপত্য, নিয়, বাণিজ্য ও সনীতাদি কলাবিভার যে সমূহ উন্নতি সাধিত হইমাছিল, সমগ্র রুরোপের অপর কোন রাজধানীতে তাহার কোন বিষয়েই সমত্সা উন্নতি দেখা যার নাই। রোমের "কলোসিরাম্" প্রাসাদ স্থাপত্য বিভার চরম নিদর্শন। ইহা অগতের সপ্ত অন্তর্ভুত কীর্তির এক্তম।

বর্ত্তমান লগতের উরতি-বিস্তারের সলে সলে ইতালীতেও
নামা বিষয়ের উরতি সাধিত হইরাছে, কিছ এখন রোমকগণের
আর সে শৌর্যপ্রভাব নাই। এখন রোম নিজ্ঞভ। রেলকর্মের
বিস্তারে ইতালীরাজা ও রোমনগরে বালিজাঞ্রভাব অঞ্জেহত
বাহিলেও পূর্ব সমৃদ্ধির গৌরব-মৃদ্ধিকর আর কোনমাণ কার্যাই
ইয়ানীজনকালে অগ্নইত হইন্তে সেধা বার না

Server Blaten enderled a server

রোনের আধিম ইতিহাস নানা একার অতিরঞ্জিত কারনিক আগানে পরিপূর্ণ আহা হইজে সজ্ঞ নিকাশন করা কটে হুকর। বাহা হউক, এই সমস্ত পৌরাবিক আগারিকার অজ্যন্তরে অনেক জাতব্য তথা নিহিত আছে।

ক্ষিত আছে, এসিরা বাইনরের অন্তর্গত টুর নগর বিধ্বত হইবার পরে রোনের এবন প্রতিষ্ঠা হয়। বংকালে এটক বীরগণ টুর নগর অবর্গের করিয়াছিলেন, তংকালে আকাইনের ওরতে জিলালের গর্ভরাত পুর ইনিন্ (Alineus) টুর হইতে পলারন করিয়াছিলেন। তিনিই সর্ব্ধ প্রবাদ রোবে আসিরা বাসহান করনা করেন। টুর হইতে পলারনকালে তিনি বীর পুর আহ্বানিয়াক্ক, পিনেট্ন নামক গার্হয় দেবতাগণকে, এবং টুরের ত্বনবিধ্যাত পালেডিয়াম্ বা নিমার্ছা (সরবর্তী) বেবীর প্রতিম্পর্তিক সঙ্গে লইরা আসিরাছিলেন। তিনি লাটিয়ামের উপকূলে পৌছিলে, তক্ষেত্র লরপতি লাটিনান্ কর্ত্ব সমানৃত হইলেন। পরে লাটিনান্ ইনিনের সহিত বীর ছহিতা লেভিনিয়ার বিবাহ দিলেন। ইনিন্ পত্নীর নাম চিরত্বরণীর করিবার কর্ত্ব ভ্রমান লামক নগর প্রতিষ্ঠিত করিবেন।

ইনিদের সহিত বিবাহের পূর্ব্বে, লেভিনিরার ক্রট্রিরান্নিগের
অধিপতি টার্গাদের সহিত বিবাহের সম্বন্ধ হইরাছিল। টার্গাদ্
ইনিদের সহিত লেভিনিরার বিবাহে অপমানিত হইরা অবিলয়ে
ইনিদ্বে আক্রমণ করিলেন। যুক্ক টার্গাল্ ইনিদের হতে
নিহত হইলেন। ইহার তিন বংসর পরে টার্গাদের অকুচরগণ
প্রার ইনিস্কে আক্রমণ করিল। এই সমরে ইনিস্ এক্রিন
অক্রাৎ নিউমিশিরাস্ নামক ননীসলিলে অনুশ্র হইরা গেলেন।
তদববি তিনি 'ক্লিটর ইণ্ডিজেন্' বা নগর-দেবতা নামে প্রিত
হইরাছিলেন।

তাঁহার পুত্র আন্ধানিরাস বা ইউলাস্ ৩০ বংসর পরে লেভিনিরাম্ হইতে রোমের ১৫ মাইল দক্ষিণপূর্বে অধান পর্বতের
শিধরে 'জন্বা লক্ষা', বা দীর্ঘ খেতপুরী নামে এক নগর নির্দাণ
করিলেন। ক্রমে ইহা লাউরাম্ প্রদেশে একটা বিখ্যান্ত নগর
হইরা উঠিস এবং সমস্ত লাউন নগর সকলের উপরে কর্তৃত্ব
করিতে লাগিল। আন্ধানিরাসের পরে ইনিস্ বংশীর ১২ জন
রাজা এইহানে রাজ্য করেন। এই বংশের শেব রাজা প্রকাশ
নিউনিটর ও আর্নিরাস্ নামক গৃই পুত্র রাখিরা পরলোক গমন
করেন। কনির্চ আর্নিরাস্ নামক গৃই পুত্র রাখিরা পরলোক গমন
করেন। কনির্চ আর্নিরাস্ নিংহাসন অধিকার করিলেন।
জ্যেষ্ঠ নিউনিটর শারপ্রেক্সতি বশতঃ কোন বিরোধ উত্থাপন
করিলেন না।

পাহে জ্যেষ্ঠ বাভার এক্ষাত্র পুত্র রাজ্যপান্ত করে, এই

व्यानकात्, नीठानतः व्यामुखितान् छात्रातः धार्मकरुति कविरागम । এই নিষ্ঠুরাচরণে তাঁহার আশকা ছুটিন সাঃ তখন জ্যেষ্ঠ প্রাতার व्यक्षांव इरिका विवानिन्धितारक क्षाक स्वामिन्द्रवद राविकावरण वित्रकृमात्री कतिया ताथित्वन । उत्तर्भवाद्य किलि व्यामीयम वानृहा वाकित्नन। किन्न मोर्न (मनन) नामक (सक्तान केंद्रतन वह क्यां तीत गर्छ इहेंगे रमक शूत्र कविता। आंत्रुनिवान छ९-ক্ষণাৎ ইহা কানিতে পারিলেন। সিল্টিয়া কৌমার্য্রত ভলের জন্ত প্রাণ হারাইলেন। ব্যক্তর একটা হিলোলায় স্থাপিত হইরা নদীগর্জে নিন্দিপ্ত হইল ঃ তৎকালে বভার ট্রাইবার শদীর ভীরভূমি বচ্দুর পর্যান্ত প্রাবিত হইরাছিল। হিন্দোলাটা ভাসিতে ভাসিতে পালাটাইন পর্বতের পাদদেবে সংলগ্ন হইল। এইছানে একটা বস্তু আম্বীর বুক্ষের মূল লাগিরা থিন্দোলাটা উন্টাইরা গেল। এই সময়ে একটা বাবিনী সেইস্থানে জল পান বরিতে আসিয়াছিল, সে শিশু ছুইটিকে সমীপবর্তী গহররে লইরা গিরা রাখিল এবং তম্মপান করাইতে লাগিল। এতঘাতীত মার্স দেবতার বাহন কাঠঠোকরা পাখী অস্তান্ত খাত আনিরা শিওম্বাকে দিতে লাগিল।

অবশেবে একদিন কঠালাদ্ নামক রাজার এক মেবপালক এই অত্যাশ্চর্যা দৃষ্টা দেখিতে পাইল এবং লিগুবরকে তংক্ষণাং লইরা গিরা স্বীর পত্নী অকা লরেন্সিরার নিকট পালনের জন্ত অর্পণ করিল। শিশুবর রোম্লাদ্ ও রেমাদ্ এই চ্ই নামে অভিহিত হইল এবং মেবপালকের দস্তানগণের সহিত বর্ধিত হইতে লাগিল।

রাজার মেবপালকগণের সহিত নিউমিটরের মেবপালকগণের বিবাদ উপস্থিত হইল। এই সমরে কৌশলক্রমে রেমাস্কে তাঁহার পিতামহ নিউমিটরের নিকট উপস্থিত করা হইল। কিশোরবরক রেমাস্কে দেখিরা নিউমিটরের হৃদর বাৎসল্য রসে পূর্ণ হইল। বরস ও আঞ্চতি দেখিরা নিউমিটর রেমাস্কে স্থীয় দেছিত্র বলিরা সন্দেহ করিলেন। অবশেষে তাহাদের অভ্তত আখ্যারিকা গুনিরা তিনি তাহাকে স্থীর দেছিত্র বলিরা বিখাস করিলেন। অবশেষে রোম্লাস্ও পালক পিতার সহিত নিউ-মিটরের সক্ষে আনীত হইলেন।

নিউমিটর দৌহিত্রবরকে লইরা প্রাতৃরত নির্চুরাচরণের শ্রেতিলোগ লইতে সঙ্কর করিলেন। বিষয় কর্মচারিগণের সহারতার তাঁহারা আমুলিরাসের প্রাণসংহার ক্রিলেন এবং পিতাকহ নিউমিটয়কে সিংহাসনে বসাইক্রেম

রোমুনান্ এবং রেমান্ তাঁছামের পূর্ববাসস্থান টাইবার নদীতীরত্ব ব্যাহের গ্রহর সনীপে নগর্মির্ত্তাংশ সভয় করিলেন। কোন হানে নগর নির্দ্ধিত কুইত্যু, এই বিষয় সইয়া ছই নহোগরের মধ্য বাধান্ত্ৰাধ হইল। রোগুলাস্ পাল্টাইন লৈলে এবং
রেমাস্ আৰেণ্টাইন লৈলে নগৰনির্মাণের ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন। এই উভার সকটে লেকে এই ছির হইল বে, উভা ঘটনা
বেবভালিগের হারা মীমাংসিত ছইকে। এইকল ছির করিরা উভার
সহোদর প্রভ্যেকের মনোনীত ছানে দেবভার ইজিভ অপেকা
করিরা রহিলেন। সমস্ত রাত্রি অভিবাহিত হইল। উবাভালে
রেমাস্ ৩টা গুঞা লেখিছে পাইলেন। যথকালে এই সংবাদ
রোম্লাসের কর্ণগোচর হইল, তৎকালে ভিনিও ১২টা গ্রা
বেখিছে পাইলেন। প্রত্যেকেই নিজের অন্তর্কুলে দেবভা ইজিভ
করিরাছেন— এইকপ বলিভে লাগিলেন। অবশেবে মেবপালকগণের মধ্যত্বতার রোম্লালের জয় হইল।

উপরোক্ত প্রকারে রেমুলান্ দেবতার অন্থর্যহ লাভ করিয়া
নগরের দীমা নির্দেশ করিতে যাত্রা করিলেন। তিনি একটা
রেমুলানের
রাজ্যকান
করিয়া পালাটাইন পর্বতের চতুর্দিকে
(৭৭০-১১৭ বৃং পুং)
গভীর হল চিক্ত আছিত করিলেন। সেই
চিক্ট পরিত্র রোমনগরীর চতুংদীমা বলিয়া নির্দিষ্ট হইল।
তৎকালে এই নৃতন নগরদীমার নাম হইল প্রেরিয়াম্।

পালাটাইন পর্ব্বত-শিশ্বরত্ব আদিম রোম-নগরের নাম হইল
"রোমা কোরাড্রেটা' বা চতুলোগ রোম। পরবর্ত্তা কালে এই
নগরের পরিধি প্রসারিত হইলা সপ্তশৈলশিধরে সংস্থাপিত হইলাছিল। যাহা হউক, আদিম রোম নগর উক্ত প্রকারে ৭৫০ খ্রঃ
গ্রং ২১এ এপ্রিল প্রতিষ্ঠিত হইল। তৎপরে রোম্লাস্ রোমের
চতুঃসীমার একটা প্রস্তর-প্রাচীর নির্দ্ধাণ করিতে আরম্ভ করিলেন। ইংতে রেমাস্ উপহাস করিলা বলিলেন, "এই প্রকার
বালকোচিত প্রাচীর-নিন্ধাণে কোন লাভ নাই।" এই বলিরা
রেমাস্ এক লক্ষে প্রাচীর উল্লেখন করিলেন। তদ্দর্শনে রোম্দাসের ক্রোধানল অলিয়া উঠিল। তিনি তৎক্ষণাৎ রেমাস্কে
বিনাশ করিলেন এবং ঘোষণা করিলেন,—"বে ক্ছে এই প্রাচীর
উল্লেখন করিবে, তৎক্ষণাৎ তাহার পিরশ্বিক হইবে।"

যাহা হউক, রোমুলাস্-প্রতিষ্ঠিত প্রাচীরবেষ্টিত রোমে অধিক অধিবাদী হইল না। তদর্শনে রোমুলাস্ কাপিটোলাইন পর্বতশিধরে নরহত্যাকারী ও পলাতক অপরাধীনিগের জক্ত একটা আশ্রম নির্মাণ করিলেন। এই আশ্রম শীপ্রই বহুসংখ্যক চুক্রিয়াশাল অপরাধিরকে পরিপূর্ণ হইরা উঠিল। কিন্তু বংশর্ডির জন্ত তাহারা বীলোক পাইল না। কোন হানের অধিবাদিগণ উক্ত প্রত্রগণের সহিত কন্তার বিবাহ বিতে সক্ষত হইল না। অবশেষে রোমুগান কনপুর্বাক কন্তাগ্রহণের সন্ধ্র ক্রিডে লাগিলেন।

ভদমুসারে রোমুলাস্ কন্সাস্ নামক দেবভার নামে এক

বিরাট্ উৎসবের বোবণা করিয় বিলেন। হানীর লাটন ওং
সেকাইন্গণ এই উৎসবে নিমন্তিত হইল। জাহারা আনোদ ধর্ণনে
কৌ হুহলী হইয়া প্রীপু ফকভাবর্নের সহিত উৎসবক্ষেক্তেলিলে
আসিতে লাগিল। সকলে সমাগত হইলে রোমক-তুবকগণ দলবন্ধ হইয়া তাহাদের সমস্ত অন্চা কন্তাদিগকে হরণ করিয়া লাইয়া
গোল। কন্তাগণের পিতারা অপমানিত হইয়া বেলে প্রভ্যাগমনপূর্বাক রোমের বিরুদ্ধে সমরক্ষা করিলেন।

কিনানী, আণ্টেম্নি এবং ক্রাষ্ট্রেমির রাম্নামক লাটিন নগরের অধিবাসিসমূহ একে একে অর ধারণ করিলেন, কিন্ত জাহার। সকলেই রোমকগণের নিকট পরাভূত হইকেন। রোম্লান্কেনানীর রাজা আফ্রেণকে অহতে বধ করিলেন এবং গৃষ্টিত অরুসমূহ জুপিটরের পদতলে অর্পণ করিলেন।

অবশেবে সেবাইন রাজ্যের অন্তর্গত কিউরেসের পরাক্রমশ্রনীঃ
নরপতি টাইটাস্টেশিরাস্ অসংখ্য অনীকিনী লইয়া রোমের
কিল্পের বৃদ্ধ বাত্রা করিলেন। এই প্রকার বিপুল সৈঞ্জের সহিত
প্রকাত্য ক্ষেত্রে যুদ্ধ করা অসম্ভব মনে করিরা রোম্লাস্ নগরহর্গে
আশ্রর লইলেন। রোম্লাস্ তৎপূর্বে কাপিটোলাইন পর্বতের
চতুর্দিক্ স্থরক্ষিত করিয়াছিলেন, টার্শিরাস্ নামক এক সেনানীকে
তিনি কাপিটোলাইন্ রক্ষার ভার দিয়াছিলেন। কিন্ত এই
সেনানীর ক্লা টার্শিরা সেবাইন সৈঞ্জাণের মণিবদ্ধে পরিহিত
উজ্জল স্থবর্ণ কলর দেখিরা বিশ্বরাবিম্ঝা হইরা, সেবাইন সেনাপতির নিকট দৃত পাঠাইরা বিশ্বরুর্নি ক্রেমান তোমাদের
সোণার বালা সকল আমাকে দাও, তাহা হইলে আমি তোমাদিগকে নগরে প্রবেশ করিতে কোন বাধা দিব না।"

সেনাপতি টার্পিয়ার প্রকাবে সম্মত হইলেন। গভীরনিশীথে ভূষণপ্রিয়া টার্পিয়া নগরতোরণ খুলিয়া দিলেন; পিণীলিকাম্মেণীর ভায় সেবাইন-সেনা হুর্গমধ্যে প্রবেশ করিতে লাগিল। টার্পিয়া উৎকুল্লফ্লয়ে পুরক্ষার চাহিবামাত্র সেবাইন্-সৈভ্যগণ বর্বাঘাতে তাহাকে নিহত করিল। তদবধি রাজদ্রোহিগণকে টার্পিয়া-পর্কাতের শিথর দেশ হইতে নিমে নিকেপ করা হইত।

প্রদিন রোমক নৈজগণ কাপিটোলাইন উদ্ধারের ক্ষয় স্থানজিত হইল। পালেটাইন ও কাপিটোলাইন পর্বতের মধ্যবর্তী উপত্যকার ভর্মর যুদ্ধ সংঘটিত হইল। বহুক্ষণ ভীবণ সংগ্রামের পরে রোমক সৈজগণ প্রত্যার্ত্ত হইবে এমন সময়ে রোম্লান্ যুদ্ধ জর হইলে জুলিটারের নামে একটা মন্দির প্রভিষ্ঠা করিবেন — এই মানস করিলেন। তংক্ষণাৎ রোমক সৈন্যগণ বিশ্বণত্র উৎসাহে বৃদ্ধ করিতে লাগিল। এমন সময়ে বাহাদের লইরা যুদ্ধ সেই অপদ্বতা সেবাইন-ক্ষয়াগণ সময় স্থান উপস্থিত হইরা ভাহাদিগের নেতাদিগকে যুদ্ধ বিটাইবার জন্য

ুসমূরোধ করিল। রুষণীর প্রার্থনা কে স্পগ্রাহ্ন করিতে পারে ১ ্তখন সেবাইনগৰ লোমক্ষিণের স্থালক ও বওয়ন্ত্রণে আশারিত रुदेशे अबि द्यांश्यक्त रेवर्राहरू गक्क पृष्ठत द्विरागन। রোমকস্প পালাটাইন পর্বতে রোমুলাদের খালনাধীনে বাস ক্ষরিতে লাগিল। সেবাইনগণ টাইটাল টেলিয়ালের শাসনা-ধীনে কাপিটোলাইলে বাস করিছে থাকিল। উভয় রাঞা ছুই পর্বতের মধ্যবন্ত্রী উপভাকার মেনেটের অধিবেশন করিতেন। সেই ছলে পরে "কোলাম্" নির্মিত হইরাছিল। এই উভয় রাজ্য বেশী দিন স্বায়ী হইল না। কতকণ্ডলি উৎপীড়িত লাটন প্রকা কর্ত্ব টাইটাস নিহত হইলেন। তৎপরে রোম্বাস একাকী সেবাইন ও লাটনগণের উপর রাজাশাসন করিতে লাগিলেন। তিনি ৩৬ বংসর রাজত্ব করিয়াছিলেন। একদিন রোমুগাস গোটন পুল নামক স্থানের নিকটে কাম্পাস মার্শিরাস-প্রজাপুঞ পরিদর্শন করিতেছেন, এমন সময়ে স্থাগ্রহণ হইল এবং তং-পরেই একটা ভরত্বর ঝটকা সমুখিত হইল। সেই সময়ে রোমু-লাদের জনক মার্স জামিয় পুস্পকরথে রোমুলাসকে স্বর্গে লইয়া গেলেন। প্রদিন প্রাত:কালে কেহই তাঁহাকে দেখিতে পাইল না।

রোম্লাসের মৃত্যুর পরে রোমবাসীরা জ্ঞানী ও ধার্মিক ছুমা
পশিলিরাস্কে রাজা মনোনীত করিল। তিনি টাইটাস্
কুমা পশিলিরাসের
রাজক্ষাল ৭১৫ভাগ গুং শুং।
রাজকণ্ড পরিচালন করিয়াছিলেন। তিনি
রোমসাথ্রাজ্যের সর্ব্ধ প্রথম ধর্ম্মশান্তপ্রযোক্তা। ইজেরিয়া নামী
দেবী তাঁহাকে এরিশিয়ার পবিত্র প্রমোদ উদ্যানে উপদেশ
দিতেন। তদমুসারে তিনি ক্লেমেন্ন নামক তিনজন প্রোহিত
নিযুক্ত করেন। তাঁহারা যথাক্রমে জ্ল্পিটর, মার্স এবং কুইরিনাসের পূজা করিতেন। এতজ্ঞি তিনি, অল্বা ললা হইতে
জানীত ভেটার পবিত্র জ্মি সঞ্জীব রাধিবার জন্য ৪টা ভেটাল
কুমারী নিয়োজিত করেন। তৎপরে তিনি মার্সের ১২ জন
মালিআই বা প্রোহিত নিযুক্ত করেন। ইহারা ১২ পানি
মঠে পবিত্র ধর্মের পূজা ও রক্ষণাবেক্ষণ করিতেন।

নুমা তৎপরে সাত্রাজ্যের বহু হিতকর কর্ম্মের অন্তর্চান করেন।
তিনি পঞ্জিকাসংখ্যার ছারা জ্যোতিব লারের উর্নতি এবং ক্লবি
ও বাণিজ্যের উৎসাহ প্রদান করেন, সম্পত্তির সীমা নির্দারণ
করিরা তাহা টার্মিনাস নামক এক দেবতার অধীনে ন্যন্ত করেন।
এতত্তির তিনি জেনাস মামক ছিমুখ দেবতার মন্দির নির্মাণ
করেন। যুদ্দের সময় এই মন্দিরের ছার উন্থাটিত হইত এবং
শান্তির সময় উক্ত ছার অর্প্রবন্ধ থাকিত।

ছমার মৃত্যুর পরে টারাস্ ইটিলিরাস্রাজা মনোনীত হইলেন।
ইহার রাজত পাত্তির পরিবর্তে বৃত্তবিশ্রহসভূপ হিল। তথাপ্যে
আল্বা লজার কালে-নাধনই সর্বাদেশা
টারাস্ ইটিলিরাস্
প্রেন্ড বটনা। উজর নগরের মধ্যে একটা
কলহস্ত্রে এই বৃত্ত উপস্থিত হয়। উভর
নগরের সৈন্যুগণ যথম যুত্তার্থ প্রেন্ডত হইল, তথন হিল্ল হইল যে,
উভর সৈজ হইতে মনোনীত বীর্ত্তের হম্ম্যুত্ত জর পরাজর
নিশ্বিত হইবে।

রোমক সৈজের মধ্যে হোরেশিরাল্ নামক তিন সহোদর ছিল, তাহারা তিন জনেই যুগপৎ এক গর্জে জন্মিরাছিল। সেইরপ আল্বান্ সৈঞ্চলনের কিউরিরাশিরাল্ নামক এক গর্জজাত তিন সহোদর ছিল। পরম্পর এই তিন সহোদরের ছম্মুদ্ধ হইবে, এইরপ স্থির হইল। ছম্মুদ্ধে হোরেশিরাল্ প্রাত্থর নিহত হইল, কেবল একটা জীবিত রহিল, পক্ষান্তরে তিনজন কিউরিয়াশিরাল্ আহত হইল। একাকী প্রতিহন্দিরাল্ সাহত যুদ্ধ করা অসম্ভব বৃথিয়া হোরেশ কৃটকৌশল ধরিলেন। তিনি রণে ভল দিবার ভাগ করিয়া কিছু পশ্চাল্গামী হইলে, উপরোজ্ঞাতন সহোদর তাঁহাকে বিভিন্ন দিক্ হইতে আক্রমণ করিতে ছুটল। তথন হোরেশিয়াল সম্বর গভিপরিবর্তনপূর্কক একে একে তিন সহোদরকে ধরাশামী করিলেন।

রোমকগণ যুদ্ধে জয় লাভ করিল এবং আল্বান্গণ তাহাদের অধীনতা খীকার করিল। কিন্ত এই জন্মোলানের মন্ধ্য
একটা বিষম প্র্যটনা ঘটিল। যৎকালে বিজরোলানে উৎফুল
এবং নিহত প্রতিবন্ধিকরের জন্তশন্তে ভূবিত হইরা হোরেশিয়াস্
নগরে প্রবেশ করিতেছেন, এমন সমরে প্রথিমধ্যে তাঁহার ভগিনী
তাঁহাকে দেখিয়া উট্চেঃখরে কাঁদিতে লাগিল। কারণ উক্ত
কিউরিয়াশিসের এক শ্রাতার সহিত তাঁহার প্রশার হরেছিল।
রোমকবীরের ক্রোধানল প্রজ্ঞানত হইরা উঠিল। তিনি
তদ্পপ্রেই ভগিনীকে তরবারির আঘাতে নিহত করিলেন। এই
অপরাধে রোমের বিচারকগণ তাঁহাকে ফাঁসিছারা প্রাণদণ্ডের
আনেশ দিয়াছিলেন। অবশেবে দেশের সমস্ত লোক তাঁহার
ভীবন ভিকা লইয়াছিল।

ইহার পরে টালাস্ ইটিলিয়াস্ ফিডনি ও এট্রাফানদিগের বিক্লকে সুক্লোবণা করেন। আল্বান্গণ রোমকনিগের অধীনক্রপে যুক্লক্তের গমন করিল। কিন্ত যংকালে রোমক সৈন্ত
এট্রাফানদিগের সহিত ঘোরতর যুক্তে প্রবৃত্ত হইল,তখন আল্বামগণ পর্বতের অন্তরালে গ্রুছিত থাকিল। পরে রোমকসৈন্য
জয়লাভ করিলে, ভাহার। আসিয়া কণ্ট আনক্ষ প্রকাশ করিল।
এই ঘটনার বিরক্ত হইরা টালাস্ আলবা ধ্বংস করিতে আদেশ

বিলেন । আন্তান্ কৈন্যগণকৈ তিনি প্রভাগ লেইছে পাবনান করিলেন । অবল বালা আন্তান বিলাগ বিলাগিক প্রদান করিল করিল। অবল বালা আন্তানক বিলাগাক প্রদান করিলেন এবং অবশ্যাক্তিক স্লোগকিক প্রাণিবিদাশের কথাকা প্রভাগ করিল। আন্তান নামর পৃথিবীপৃষ্ঠ হইতে বিশৃপ্ত হইল। অনিবাদিশ করিলান কৈনে বানেক অবীলয় প্রদান করিল। বান করিকে লাগিল।

এই প্রকারে নানা বুদ্ধে জনগান্ত করিনা টারাক্ পীড়িত
হউলেন। অংকালে ভিনি জুপিটারের কুপালাভার্বে উপাসনাদি
জিল্লিড সালিলেন। কিন্ত জুপিটার ভাহার জাচরণে বিশ্বক্ত
হইবা বস্ত্রাবাতে ভাহার বধ্যাধন করিলেন। তিনি ৩১ বংসর
ভারত করিনাভিনেন।

টালাসের সূত্যর পর সুমার দৌহিত্র সেবাইনবাসী আকাস্
মার্লিয়াস্ রাজা মনোনীত হইলেন। তিনি সিংহাসনে আরু
হইরাই মাতামহের পনাম অনুসরণপূর্বক
আভাল মার্লিয়াস্
১৯২-৬১৭ খৃ: প্:
ভাগিলেন। কিন্তু লাটিন নগর সকলের

সহিত হুছে উচ্ছাকে পান্তিভল করিতে হইল। যুদ্ধে তিনি আনেকগুলি লাটিন নগর অধিকার করিবেন। তিনি যুদ্ধারছের পূর্বের রীতিমত দেববেবীর পূজা করিরা বুদ্ধে প্রবৃত্ত হইতেন। তিনি টাইবার নামক স্থানে এক উপনিবেশ এবং জেনিকিউলাম্ নামক স্থানে একটা দুর্গ নির্দাণ করেন। তংপরে উটেবার নামীর উপরে এক প্রকাণ্ড সেভুনির্দ্ধাণ করিরা জেনিকিউলাম্ ক্রের বহিত রোমনগরকে সংযুক্ত করেন। এই কাইনির্দ্ধিত সেভুর নাম ছিল "পন্স সাবলিসিরাস্টা। ইহার পরে তিনি একটা কারালার প্রতিষ্ঠা করেন। ২৫ বংসর রাজত করিরা আভাস্পরণোক গমন করিবেন। তংপরে প্রিছাস রাজা ক্রিকেন।

জিনি শ্রেকার (জার্র) টার্ক্টন নামে খ্যাত ছিলেন।
রোমের পঞ্চন নৃপত্তি টার্ক্টন মাতৃপক্ষে এট্রারান্ এবং পিতৃপক্ষে

ক্রিকিনান্ চার্ক্টন
ক্রিকিনান্ চার্ক্টন
ক্রেকিনান্ ক্রিক্টন নাজ্য করির নগরের একজন ধনশালী
ক্রিকিনান্ করির করিরা এট্রারানে টার্ক্টনবংশের
প্রভিত্তি করেন। ডেনারেটালের পুর জ্যের টার্ক্টনবংশের
প্রভিত্তি করিনা
ক্রিকেনারিক বিলার কর্মানিক বিবাহ করেন। ইনি অভ্যাত্ত
ক্রিকান্সকরে তাগাপরীকার কর্ম গর্মন করিলেন। উহিল্পি অভ্যাত্ত
ক্রিকান্সকরে তাগাপরীকার কর্ম গর্মন করিলেন। উহিল্পি অভ্যাত্ত
ক্রিক্টনব্রী করিকান্
কর্মনিক্টিরার বিক্টেলান্, ডংকালে টার্ক্টরের ন্যুক্টিত উক্টাব্

একটি জীগতাকী মুখে করিয়া জীতে উচিয়া চেকার ও বিজ্ঞানক।
গালে জীগবাকী উচ্চা উদ্ধান করিয়া চার্চা করিয়া জালে জালে করিয়া করিয়া জালিয়া ভাগালী ভাগালুকার করিয়া করি

া আহাহউক টার্কুইন স্বিক্ষণে আছান্ মার্লিছান্ এবং কোন-বানী আলা নাধারণের জিল্পার হইলেন। স্বাক্ষণ্ করিলের। তথ-উহিচ্ছে প্রেগণের লিক্ক ও রক্ষণ নিযুক্ত করিলের। তথ-পারর আছান্ মার্লিরানের মৃত্যু হইলে রোমনারী। একাবর্গ টার্কুইনকে সিংহাসনে বসাইলেন।

টার্ক্ ইনের রাজ্যকাপ নানাপ্রকার প্রসিদ্ধ ঘটনার পূর্ণ।
তিনি সেবাইন্গণকে পরাজিত করির। তাহাদের কলেনিরা নামক নগর অধিকার করেন এবং ইজেরিরাস্ নামক প্রাকৃত্যুত্রকে সেই ছানের শাসনকটা নিযুক্ত করেন। তিনি গাটিরাম্ প্রকেশের অনেক নগর অধিকার করিয়াছিলেন।

এই সকল কার্য জির তিনি অনেক বেশহিক্তকর কার্য্যের অন্থর্চান করিরাছিলেন। সর্ব্ধপ্রথমে তিনি কাপিটোলাইন্ ও আন্তেটাইন্ পর্বতের মধ্যবর্তী কলাভূমির অলনিকাসনপূর্বক সেবলান প্রতর্প্রথিত করিরা তথার "কোরান্" এক "সার্কাশ" নামক ছই প্রকাপ্ত অটালিকা নির্দাণ করেন। ইহার নির্দাণ-নৈপ্ণা এরূপ অন্থত যে, আজি ও তাহার একথানি প্রস্তর্থপ্ত ভানচ্যুক্ত হর নাই। ভরিম্মিত "লাকাস্ মাজিমান্" নামক রক্ত্বে নানাপ্রকার ক্রীড়াকোশল প্রদর্শিত হইত। প্রিনি বলেন বে, তিনি কাপিটোলাইন্ পর্বতশিধ্বে এক বিরাইসোধ প্রেক্ত করিরাছিলেন। এতত্তির তিনি রাজ্যের শাসনপ্রশোলীর নানাপ্রকার সংস্কার করিরাছিলেন। এই সমরে চারিজন তেইাল কুমারীর পরিবর্গ্তে ভ্রম্বল কুমারী নির্দ্ধিক হন।

টার্কু ইন নার্ভিয়ান্ টারিয়ান্ নামক জীতদানীপুত্রকে অত্যন্ত ভাল বানিতেন। এই বালকের শৈশব অভ্যুত্ত বটনামর। এক-দিন নার্ভিয়ানেয় শব্যার আগুল লাগিল। শুয়্যা দথ্য হইতে লাগিল, কিন্তু প্রজনিত অমিনিখা নিফ্রিড নিগুর একটা কেলও স্পার্ল করিল না। তদর্শনে টার্কু ইনপায়ী টানাকুইল বিশ্বিভভাবে বনিলেম, এই বালক উত্তরকালে সমাই হইবে। তদবধি ভিনি নার্ভিয়ান্কে পোষাপুত্রের ভার পালন করিছে লাগিলেন একং বীর কভার সহিত ভাহার বিবাহ দিলেন।

ভূতপূর্ব রাজা আভাদ্ মার্লিরাদের প্রকাশ বেথিলেন যে, জাবিহাতে এই জামাতা রাজনিংহাদের অধিকার করিব। তজ্জ্জ তাঁহারী রাজার ভবাহননের নিমিত্ত হুইজম লোক নিযুক্ত করিলেন। ইহাবিদের একের কুঠারাখাতে ট্রাকুমিন নাংবাজিক- ভাবে আহত হইকেন। কিন্ত আন্তান নানিবালের প্রাণৰ এই ভাতহতার কলভাত পরিছেল পারিকেন না। বৃহিনতী রাজী টানাক্ইন নাধারৰে প্রচার করিকেন বে, টার্কুইনের আবাত নাংঘাতিক নহে, তিনি অবিলাহে হুছ হইকেন। এই সমরে রাজী বীর প্রির পোরাপ্র লাভিয়ান্তে রাজভাতী নির্মাহ করিতে আবেশ করিকেন। নাভিয়ান্ত প্রভারক্তাতিশে অবিলাহে স্থান্তলার প্রিরাণর প্রভারক তাতিশে অবিলাহে স্থান্তলার প্রিরাণর হইরা উঠিলেন। কিন্তু টার্কুইনের মৃত্যু অবিক্রিম ওর বাহিলাল। বন্দন মৃত্যুস্থান লোকে জানিতে পারিল, তবন নাভিয়ান্ সিংহালনে নৃচ্ভাবে উপবিত হইরাছেন। ওর রাজা লাভিয়ান্ কেবল নাধারণের

সাধিবাদ টানিবাদ (বেন-বেন বু: পু:) নির্মাচনে সিংহাসন পাইলেন । তাঁহার কোন জারসজত অধিকার ছিল না। ইইার রাজত্বাদ পাঁরিতে অতিবাহিত হইরাছিল। পরবর্ত্তী ঐতিহাসিকগণ তাঁহাকে পাসনব্যবহার জনক বলিরা কীর্ত্তন করিরাছেন। তাঁহার সংলারাবলির মধ্যে শাসনসংলার সর্বশ্রেষ্ঠ। পূর্বে অতিলাত্য বংশগত ছিল, ইইার সমরে তাহা ধনগত হইল। তজ্জ্জু ধনোপার্জন করিলে কুলীন হইব—এই ইছা সকলের জ্বনরে বলবতী হইন। রোমের ধনতাতার শির-বাণিজ্য-ক্রিপ্রস্তুত অর্থে পরিপূর্ণ হইতে লাগিল। সার্ভিরাদ রোমকলিগকে সার্বিপ্রস্তুত অর্থে পরিপূর্ণ হইতে লাগিল। সার্ভিরাদ রোমকলিগকে সকলের ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার আত ছিলেন। তম শ্রেণীর ধনী বিলিরা আত ছিলেন। তম শ্রেণীর ক্রেনিতা । তম শ্রেণীর ধনী বিলিরা আত ছিলেন। তম শ্রেণীর লোকগণের ১২০০ মুক্রা থাকিত।

এই শাসনসংস্থারের পরে সার্ভিয়াস্ রোমলগরের সীমার্ভি
করেন। পূর্বে 'পামরিরান্' নগরের নির্দিষ্ট পথিত্র পরিধি ছিল।
এখন কুইরিনাল্ ভিরিমাল্ এবং একুইলিন্ পর্কাণ্ড সকল নগরসীমার অন্তর্ভুক্ত হইল। এই সীমায় চতুর্দিকে এক অনুত্
প্রভাৱপ্রাচীর নির্মিত হইল। ইহাকে লোকে সার্ভিয়ানের প্রাচীর
বলে। এই সমরে রোমের পরিধি ও মাইল হইল। নগরের
বহিশ্বারে এক মাইল বীর্ষ একটা প্রকাণ্ড ভূপ নির্মিত এবং
১০০ কিট বিস্কৃত ৩০ কিট গভীর একটা পরিধা থনিত হইল।
রোমের সম্রাট্বিলের শাসনকাল পর্যন্ত ভাহাই নির্দিত্ত মগরের
সীমা বনিরাছিল। এই সটনার পরে সার্ভিয়ান্ লাইলামের
অভান্ত প্রস্কেশ্ব করিবানীরিগকে রোমবানীর সহিত বিলিক এবং
সমান অধিকার প্রাচ্চ করেন।

্ৰুণ প্ৰেক্তি আঠ টাৰ্ক্ ইৰেয় ছই প্ৰেয় নহিত নাভিনানের নুই অন্তান নিবাৰ হইয়াছিল । অসমতা ছেট্টপুত্ৰ নিউনিয়ান্ নিচুত্ৰ প্ৰাক্তি, কিছ স্থানাট্ৰী অন্তান জোমনপ্ৰাকৃতি ছিলেন। ক্ষিত্ৰ আগান অভীন না ও বাছিল, অবচ ভাষার ত্রী
টারিরা অভাত অন্ত্রচতি ও উজাতিলাবিনী ছিলেন। এই
অনৃশ বিষয় বিগলের ভরানক তা উলি টারিরা বিভিন্নিরান্ বীর
ধানিরা ত্রীকে বর ক্রিপেন। টারিরা বীর বহাত্তক পতিকে
হনন ক্রিপেন। তবন জােচ ত্র নিউলিরান্ উব্ধর্জতি লয়জগরী টারিরাকে মহানকে বিষয়ে করিলেন। কেবল পারী
ও পতিহত্যার রক্ত একবিশু অক্রপাত করিলেন না।

সার্ভিনাসের প্রিরক্টা টারির পতিহত্যা এবং ভাতরবিবাহ
সম্পর্ক করিরা পিতৃইভার চেটা দেখিলেন। অবনেবে ইটা ও
লানাতা সার্ভিরাসের প্রোপনংহার করিলেন। টারিরা বংকালে
সাড়ীতে চড়িরা গৃহে কিরিভেছিল, ভাহার পিতার রক্তাকদেহ
পথে পড়িরাছিল। গাড়ীচালক তদর্শনে অবরবি সংবত করিল।
কিন্তু উপযুক্ত কলা কহিল, সিভার শবেরউপর দিরা গাড়ী চালাও।
শব্টচক্রে মৃতনেব ছির হইরা রক্তালোভ টারিরার বল্পরন্তিত
করিল। তদববি রোমের সেই পথটা শ্রুইকেড ব্লিট্র পথ
ঘলিয়া ক্থিত ইইভেছে। সার্ভিয়াসের মৃতনেহের কোন সংকার
হইল না। তিনি ৪০ বংসর রাজ্য করিরাছিলেন।

हेहाँटक लाटक अरुवाती ठोक हैन दनित्रा शिक्षेत्रात्र है। के है-বর্ণনা করে। ইনি নির্মাচনের অপেকা নাল্ প্ৰপাৰীল্ १७१-१५ ५: भू: না করিয়াই নিজে গর্বিতভাবে সিংহাসন অধিকার করিলেন। তিনি রাজা হইবাই সার্ভিরাসের সংস্কৃত কার্য্য সকল লোপ করিতে লাগিলেন। অত্যাচারে প্রভানিগকে প্রশীড়িত করিলেন। তাঁহার আঁট্রালিকা-নির্মাণের বস্তু শিল্পী ও কাৰুদিগকে বিনাবেতনে বা অৱবেতনে কাৰ্য্য করিতে বাধা কয়াই-লেন; ডক্ষন্ত অনেকে বিষ্ম হংখে আত্মহত্যা করিয়াছিল। ডৎপরে তিনি ধনীদিগকে নির্বাসিত করিয়া তাঁহাদিগের ধনসম্পত্তি হত্ত-গভ করিতে লাগিলেন। ভিনি নিজের জীবনের আশহার সর্বনা প্রহরী বেটিত থাকিতেন। কিছু লোমে তিনি ভীষণ অভাচার করিলেও বিদেশে পরাক্রমগালী রাজা বলিয়া খ্যাত হুইলেন। তিনি অক্টেভিয়াস মানেলিয়াসের সহিত খীর ক্লার ৰিবাহ দিলা শাটিয়ামে প্ৰাৰ্থ প্ৰাৰ্থ স্থাপন ক্তিলেন। তৎপরে क्षेत्रेन अन्निज्ञान्तिरगत्र नमुचिन्न ऋरत्रवा भरमण्डिता नगत्र व्यथ-কার করিয়া প্রচুর ধনরত লুঠন করেন এবং নেই অর্থে কানি-টোলাইৰ পৰ্যক্ষের শিবরে জুপিটার, জুনো এবং বিনার্জা এই ভিন বেৰভাৱ নামে, কাপিটোলিয়াৰ নামে এক বিয়াট কলিয় निर्मान करतमा भनिरतम छिकि-बमनसारमा अक्षेप मध्यक्ति অবিভ্রত নরুত পাওয়া গিরাছিল। এই শশিবর একটা ভূগর্ভত বিলানের মধ্যে অনেক পৰিত্র হয়লিকিত পুরি রঞ্জিত ছিল।

देशात नात छाडू देल दर्गिकादि नावक अक्की बार्किन नगत

বিখানবাভকতাপুর্বাক অধিকার করেন। আই নমরে এক দৈব-ষ্টমার ভিনি ব্যথিত হইলেন। এক্রিন একটা দর্শ পূলা বেনীর মধা হইতে উথিত হইয়া মুক্তিটানে নিহত বুবের আত্র ভক্তণ ক্ষিতে লাগিল। তক্ষনে টার্কুইন গ্রীন্-দেশের ভেলিফির দৈবৰাণী আনিবাৰ আৰু ভাহাৰ মুই পূত্ৰ ও ভাগনীপতিকে প্রেরণ করেন। তৎপরে আর একটা লোমবর্ণকাও সংঘটিত হটল। টার্ক ইন কথন আর্ডিরা অধিকার করিবার অন্ত বুদ্যাত্রা করেন, ভংকালে টার্ক ইন-পুত্র সেকুটাস্ কোলেনিয়ালের পতি-পদ্মাৰণা পদ্মী দুক্রেশিরার স্থীখনাশ করেন। গভীর নিশাঁথে সেষ্ট্রান্ উন্মৃক্ত তরবারি-হতে নুক্রেশিরার কলে প্রবেশ করিলেন এবং ভর দেখাইরা কহিলেন বে,"ৰদি তুমি আমার প্রভাবে সমতা মা হও তকে তোমার শিরশ্ছেদ করিব এবং ঘোষণা করিব বে, তুমি ক্রীতলাসের সহিত ব্যক্তিচারকালে তোমাকে বং করিয়াছি।" লুক্তেশিরা শিরশেহদের ভর অপেকা কলকের ভর করিলেন। দেক্টাস্ তাঁহার সতীখনাশ করিবার পরেই তিনি পতি ও পিতাকে छाकिया এই निवासन जनमारनत প্রতিশোধ नहेरछ উত্তেজিত ক্রিলেন এবং ব্যক্ত ছ্রিকাখাত ক্রিয়া কল্ডমলিন অন্তপ্ত জীবনের নীলাখেলা শেব করিলেন। এই ঘটনার রোমবাসী উত্তে-জিত হইরা উঠিল এবং সাজার ও ডৎপরিবারত্ব সমত্ত পরিজনের निकामन १७ विशन कतिल। ताका छार्क् हेन ७९काल वाहित्त যুদ্ধে বাাপৃত ছিলেন। তাঁহার ভাগিনের, এল্ডটাস্ সৈজের অধিনায়ক হট্যা টার্কু ইনের বিরুদ্ধে বুদ্ধবাতা করিলেন। সৈম্পর্গণ অভ্যচারী টার্ক ইনকে সহজেই পরিভ্যাগ করিয়া ক্রটসের অধীনভা ৰীকার করিল। টার্ইন তাড়াডাড়ি রোমে কিরিরা আসিলেন, কিছ কেহই নগর তোরণ উল্মোচন করিল না। তখন তিনি ভীত হইরা পুত্রগণের সহিত কায়েরী নামক স্থানে আগ্রহ লই-শেল। তিনি ২৫ বংসর রাজত করিরা পুত্তের লোবে প্রজাপঞ্জ-कर्क निकांतिष रहेलन।

রোমে রাজত এশাসনপ্রণালীর পরিবর্ত্তে সাধারণতত্ত্ব প্রবর্তিত হইল। রাজার নির্কাসন ও সাধারণতত্ত্বের প্রতিষ্ঠা চিরামরণীর করিবার জন্ত রোমবাসিগণ ৩০০ খুঃ পুঃ ২৪এ কেক্ডবারি "রেজি-কিউজিরাম বা কিউসালিয়া" নামক বার্বিক উৎসবের প্রপাত করিল। কিব সাধারণতত্ত্বের প্রবর্তমে শাসনপ্রণালীর কোন আমৃল পরিবর্ত্তন হইল না। সাধারণের নির্কাচনে হইজন মহামাঙলিক নির্কাহকের । উাহাবের পদ ও বংসর হারী হইল। তাহারাই সাধারণের সম্বতিক্রনে বিচার ও শাসন বিভাগে ক্রমতা চালনা করিতে লাগিলেন। ইইারা প্রিটর ও পাছে ক্রমতা নামে ভবিত হব।

४१० वः भः अत्रक्षणम् च छार्क् हेमान् स्वादननिवान् धावमः

কৃষ্ণণ নিযুক্ত হন। কিন্ত টার্কুইন-বংশোডৰ বিশ্বস্থা কৈলে-পিরাস্ পরে রোম পরিক্রাণ করিছে বাধ্য হন এবং পি-ভালে-রিরাস্ তৎপদে নিযুক্ত হন।

এই সমন্ত্র নির্মাসিত টার্কুইন এট্রাম্বানিসের লাহাব্যে মৃত্রাম্ব্য প্নঃপ্রাথির বড়বর করিতে লাগিলেন। টার্ক ইন নিজের রাজিগত (private) সম্পত্তি পাইমার প্রোর্থনা করিয়া রোমে চুইজন দৃত প্রেরণ করিলেন। কর দৃত্যাণ কএকটা রোমক ব্যবকের সহিত বড়বর করিবা টার্কুইনের রাজ্যপ্রাথির চেটা করিতে লাগিল। একজন ক্রীত্যাস এই বড়বর প্রকাশ করিবা দিল। বড়বরকারিগণের মধ্যে কলল ক্রটাসের চুই পুত্র লিপ্ত ছিল। ক্রটাস্ প্রের অপরাধ ক্রমা করিলেন না, তিনি বাতকদিগকে অভান্ত বড়বর অপরাধ ক্রমা করিলেন না, তিনি বাতকদিগকে অভান্ত বড়বর অপরাধ ক্রমা করিলেন না, তিনি বাতকদিগকে আভান্ত বড়বর ক্রমার ক্রমার ক্রমার হিলেন। তজ্জত্ব ক্রটাস্ মন্থ্যের ইতিহাসে চিরম্মরণীর হইরা আছেন।

টার্ক ইনের সম্পত্তি এই বড়বছের বস্তু আর প্রবন্ধ হইল না।
সাধারণে তাহা লুঠন করিরা লইল। টার্ক ইন বড়বছ বিফল
দেখিরা এটাজানদিগের সহারতার রোমের বিফ্লছে যুদ্ধ ঘোষণা
করিলেন। ক্রটস্ ও ভালেরিরাস্ও সৈত্ত লইয়া অগ্রসর হইলেন।
টার্ক ইনের প্রে আর্গান্ ক্রটাসের সহিত বন্দযুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল।
উভরে সাংঘাতিকরণে আহত হইয়া অর্থপৃত্ত হইতে পতিত
হইলেন। তৎপরে উভর সৈত্তের ঘোরতরমুদ্ধ আরম্ভ হইল।
জর পরাজর নির্ণন্ন কঠিন হইয়া উঠিল। অকলাৎ নিশীওসমরে দৈববাণী উট্চে:ম্বরে ঘোষিত হইল,—"রোমক্যণই জরী হইরাছে।"
এই শব্দে ভীত হইয়া এটাজানগণ পলারন করিল। ভালেরিয়ান্
ক্রটসের মৃতদেহ লইয়া রোমে ফিরিলেন। ক্রটনের জন্ত সকলে
হাহাকার করিয়া বিলাপ করিতে লাগিল। ভালেরিয়ান্ জারপরতাগুণে সর্ব্ব সাধারণের প্রির হইলেন। এইজন্ত তাহার
শগ্রিকোলা" অর্থাৎ সাধারণের প্রির হইলেন। এইজন্ত তাহার
শগ্রিকোলা" অর্থাৎ সাধারণের প্রির হইলেন।

পরবৎসর ৫০৮ খ্যা পূং, টার্ক ইন এট্যন্থানের অন্তর্গত ক্লাসিরানের রাজা লার্স পরেনার শরণাপার হবলেন। পরেনা বিরাট সৈজ্ঞলন লইরা রোমের অপর পারত্ব জেনিকিউলান্ হর্গ অবাধে অবরোধ করিলেন। সত্ত্বসূত্ব অসম্ভব বৃথিরা রোমকগণ্ড দেশোগ্রারের জন্ত টাইবার নধীর উপরিছিত সেতৃতক্ষের উভোগ করিতে লাগিল। হোরেশিরাক্ কর্লেক্ নামক এক জ্লোকিক বীর অসাধারণ বীরতে সেতৃর অপর প্রাক্তে শক্ষপ্রবেশ প্রেছ্ড ভারিতে লাগিল। সেতৃতক্ষ প্রার্থিকে রোমকর্মণ সেতৃ ভারিতে লাগিল। সেতৃতক্ষ প্রার্থিকে হোরেশিরাক্ সহলে বছল শক্ষপ্র ভীরবর্ধবের স্বরোধ টাইবার নধীতে লাক্ বিরুধ পঞ্চিলেন্দ এক

ভাইবেন,—"লিভঃ টাইবার নদ আধাকে নির্কিনে রোনে লইরা

বাঙা" অসামান্য সভরণজোশনে ভিনি শক্তর শরাবাত অভিক্রম
করিরা অন্য তীরে পৌছিলেন। এই নটনা চিরম্বরণীর করিবার

অন্য রোমের গবরেণিট ভাইার এক প্রতিমূর্ত্তি নির্মাণ করিলেন

এবং নমন্ত নিন ভিনি বভটা বাইতে পারেন, তভটা ভূমি ভাঁহাকে
প্রদান ভরিলেন। রোমের ইতিহাসে হোরেশিরাসের কীর্ত্তি

মর্পাক্তরে নিশিবত আছে।

ভৎপরে পর্দেশা ব্লোমনগর অবরোধ করেন। পাছত্রব্যের খ্যামগানী বন্ধ হওরার রোমবাসিগণ বিব্রত হইরা উঠিল। তথন মিউলিয়ান নামক এক অদেশবংসল যুবক রোম উদ্ধারের সভয় করিলেন। তিনি গুপুত্ত্যা বারা পর্নেনার প্রাণনাশের চেষ্টার कौंडांब निविद्ध श्रादन क्षित्रांगन। किंद्र किनि शर्मनांक हिनिएक না পারিরা রাজমন্ত্রীকে নিহত করিলেন। তৎপরে গুড হইরা পর্সেনার সন্মুখে নীভ ছইলে যথন পর্সেনা তাঁহাকে বন্ধণাদারক मुज़ाम् विशान कविएक हाहिएनन, कथन किनि महाज्ञवस्त पिक्न হস্ত অগ্নির উপরে স্থাপন করিলেন। হস্ত দ্যা হইরা গেল, তথাপি দৃচ্চিত্ত মিউলিয়ানের মূথে হাক্তরেখা বিলীন হইল না। তথন মিউশিরাস নিতীকভাবে পদে নাকে কহিলেন,—"আমার ন্যার ০০০ যুবৰ ভোমার গুগুহত্যার বস্তু প্রতিক্রাবদ্ধ হইরাছে, তন্মধ্যে व्यामिष्टे व्यथम। व्यन्ताना वाकि शक्त क्रांस क्रांस व्यामित्व।" ভক্রণে ভীত হইরা এবং মিউশিয়াসের সাহস ও কটস্হিকুতা দর্শনে বিশ্বিত হইরা তাঁহাকে নির্কিন্নে রোমে পৌছাইরা দিলেন। এই অন্তত কীৰ্ত্তির জন্য মিউশিরাস স্থিতোলা বা 'বামবাহ' এই আখ্যার অভিহিত হইলেন। পর্সেনা তৎপরে রোমের সহিত সন্ধি করিয়া সসৈন্যে স্বাধেশে গমন করিলেন। রোমকগণ সন্ধির প্রতিভূ স্বরূপ দশব্দ যুবক এবং দশ্টা কুমারীকে পর্সে নার নিকট পাঠাইলেন,—তন্মধ্যে ক্লিলিয়া নামী একটা কুমারী শিবির হইতে প্লায়নপূর্ব্বক সম্ভরণে টাইবার পার হইয়া রোমে উপস্থিত হয়। রোমকগণ তাঁহাকে পুনর্কার ধরিয়া পদেনার নিকট প্রেরণ করে ৷ পদেনা ভাষার প্রতিভা ও সাহসদর্শনে তাঁহাকে ও তৎসন্ধিনীদিগকে মুক্তি দিরাছিলেন।

ইহার পরে টার্ক ইন লাটন নগরসমূহত্ব ব্যক্তিগণের সহারতার তব বার রোম আক্রমণ করেন। রোমকগণ বিপন্ন হইরা একজন 'ডিক্টেটর' নিযুক্ত করিছে। কললগণ ডিক্টেটর নিযুক্ত করিছেন। ছরমানকাল এই পদ থাকিছে। ডিক্টেটরের সর্বভোর্থী ক্ষমতা ছিল। এ পঠ বিরাদ্ প্রথমে ডিক্টেটর হন। উত্তর পক্ষের সৈন্য রোমক-ব্যক্তির করিছেন। ইনের নিক্ট সক্ষিত হইল। এই ভর্তর বৃদ্ধে রোমক-প্রক্রাক্ত করিল। টার্ক ইনের প্রক্রটাইটাস হত হইলেন। ভার্ক ইন্য আগত হইরা প্রাণ লইরা প্রাণ্ডারন করিলেন।

ক্ষিত আছে কাইর ও কোলার নামক রমন রাজ্করের
অসামাত বীর্থে রোমগণ এই বুল্লে সার্যাত করিবাহিল। বুলে
রোমের অনেক এগান সেনারী হল ক্রীবাহিল। আতুবুগণ
মুক-লরের সংবাদ লইবা বে হানে উপস্থিত ক্রীবাহিলেন—
কোরামের মধ্যে সেইইলে জাহাদের সরণার্থ একটা ক্ষিত্র নির্মিত
ক্রীবাহিল এবং প্রতিষৎসর তথার উৎসব হইত।

ইহার পরে টার্কুইন রাজ্যলাভের আর চেটা করেন নাই। আতঃপর তিনি কিউনি নামক হানে পলারন করেন এবং ১৯৯৬ বঃ পুঃ অব্দে হঃখমর জীবনের পরিসমান্তি করেন।

রোমের ইডিহাসে এই ৪৮ বৎসর কেবল পোটু শিল্পান বা আজিলাতগণ এবং শ্লেবিরান বা নিম্নশ্রেণীর বিরোধে পরিপূর্ণ।
রোমের রাল্যতর সুথ হইলে শাসনপ্রণাসী হলের বৃত্ত ভিনের বৃত্ত ধনিবাদ হলের বৃত্ত ভাগিল। কমে কমে শ্লেবিরানগণ অভ্যাচারগ্রান্ত হইরা অসভ্যোব প্রকাশ করিতে লাগিল। এতভিন্ন রোমের রুপ গ্রহণ ও প্রান্তানর প্রকাশ করিতে লাগিল। এতভিন্ন রোমের রুপ গ্রহণ ও প্রান্তানর নির্মান বৃত্ত কঠের ছিল। প্রেবিরানগণের মধ্যে অনেকে ব্যান্তার পরিত্ত। রাল্যতর-বিলোপের পরে রাল্যার বে সকল সাধারণ ভূমি ছিল, ভাহাও পোটু শিল্পানেরা ইচ্ছামত ভোগ দখল করিতেন, প্রেবিরানগিগের ভাহাতে কোন অধিকার ছিল না।

এই সমত্ত কারণে উৎপীড়িত হইরা মেবিরানগণ ৪৯৪ খৃঃ পৃঃ
আলে রোমের ৩ মাইল দ্রে একটা নৃতন নগর স্থাপন করিতে সরর
করিল। কিন্ত তাহারিগকে নিরাইবার জন্ত মেনেসিরাস্ এগ্রিপা
নামক একব্যক্তি প্রতিনিধি নিয়ক হইলেন। তিনি ঈবপের
কথামালা হইতে উদর ও অন্তান্ত অবরবের গর বলিরা মেবিরাননিগকে শান্ত করিলেন। তাহারা কহিল, বদি তাহারা সর্কবিবরে
ন্তারবিচার প্রাপ্ত হর, তবে তাহারা প্রতিনির্ভ হইবে। তাহারা
ট্রিউন (ধর্মাধিকার) স্থাপন বারা আপনালের প্রতি অন্তাচার
প্রতিবিধানের চেঠা করিল।

এই সমরে শিউরিরাস্ কাশিরাস্ নামক একজন বিখ্যাত পেট্শিরান মেবিরানগণের অমুক্লে"এগ্রেরিরান্ ল"বা ক্লবিবিধি নামক এক আইন বিধিবদ্ধ করিতে চেটা করেন। এই আইনে সাধারণভূমির কির্দাণ মেবিরানগণ প্রাপ্ত হইল।

এই কালের রোম ইতিহাসে করিওলেনাস্ এবং জুল্সিরান-গণের কাহিনী ভিন্ন অঞ্চ কোন উল্লেখযোগ্য মটনা নাই।

মার্শিরান করিওলেনান্ নানক এক আহতারী পৌটুপিরান্
ব্বা মেবিরানবিগকে অত্যক্ত স্থা করিছেন। ৪৮৮ খ্রঃ পুং একবার
হুর্তিকের নার রোনের নার্যান্য এক আহাল শক্ত আইনে।

ভাহাতে প্রেবিয়ানপণ তাঁহাকে সংহার করিবার চেঠা করে, ফিছ কললগণের কৌণলে তিনি উদ্ধার পান, কিছ সেই অপ্রাধের জন্ম নির্মাণিত হইলেন। করিওলেনাল্ নির্মাণিত হইরা ভল্নিরানগণকে রোম আজ্রমণে উত্তেজিত করিলেন। তাহারা তাঁহাকে সেনাপতি করিরা রোম আজ্রমণ করিতে পাঠাইল। করিওলেনাল্ প্রবল প্রতাপে অনেক নগর সুঠনাণিপূর্কক রোম আজ্রমণ করিওলেনাল্ রোমের প্রোহিত ও প্রধান প্রধান সমান্ত ব্যক্তিগণ করিওলেনালের নিকট রোমরক্ষা করিবার প্রার্থনার গ্রাহ্রকণ করিওলেনালের নিকট রোমরক্ষা করিবার প্রার্থনার গ্রমন করিলেন। কিছ তিনি কিছুতেই কর্ণপাত করিলেন না। অবশেষে রোমের রমণীর্ক্ষ, করিওলেনালের জননী ভেটুরিয়া এবং স্ত্রী ভলাম্নিয়াকে অগ্রবর্ত্তিনী করিয়া রোমরক্ষার জন্ম করিওলেনালের শিবিরে গমন করিলেন। ইইাদিগের বিলাপে বিচলিত হইয়া করিওলেনাল্ বলিলেন — মাতঃ তুমি রোম রক্ষা করিলে, কিছ প্রতকে হারাইলে। "

তৎপরে তিনি জন্শিরানদিগকে ফিরাইরা দইরা গেলেন।
কেহ বলেন বে, জন্দিরানগণ এই কার্যের অন্ত তাঁহাকে নিহত
করিরাছিল। কেহ বলেন, তিনি বৃদ্ধকাল পর্যন্ত বাঁচিরা ছিলেন
এবং সর্কাদাই বলিতেন, "বিদেশীরদিগের মধ্যে বাসের কট বৃদ্ধ
ভিন্ন অন্ত কেহ বৃদ্ধিতে পারে না।"

৪৭৭ খৃ: পৃ: ভিয়েণ্টাইনগণের সহিত একটী মৃদ্ধ হয়, তাহাতে রোমকগণ জয় লাভ করে এবং কন্সল টাইটাল মেনেলিয়াসের আদেশে সমগ্র ভিয়াইগণ সমৃলে বিনষ্ট হয়। কেবণ উক্ত বংশের একটী মাত্র বালক রক্ষা পাইয়া উত্তরকালে রোমের ইতিহাসে খ্যাতি লাভ করিয়াছিল।

৪৫৮ খৃঃ পৃঃ একুইয়ানগণের সহিত একটা ভরত্বর যুদ্ধ হয়।
সিন্সিনেটাসের অধিতীর রণকৌশণে রোমকগণ জয় লাভ করিল।
যংকালে সিন্সিনেটাস্কে সেনাপতিতে বরণ করিতে গিয়াছিল,
তৎকালে তিনি ক্ষেত্রে হলচালনা করিতেছিলেন। তৎপরে
ভাহার পত্রী রেসিলিয়া-প্রদত্ত সামান্ত পরিছেল ধারণ করিয়া
রাজসভার গমন করেন এবং তথার ডিক্টেটর বা রোমের সর্কময়
কর্ত্তা নিযুক্ত হন। অসামান্ত প্রতিভাবলে রণকৌশলে শত্রকৈন্তা পরাজিত করিয়া কয়মাণের ভূষিত হইয়া তিনি রোমে প্রভাগমন করেন।

এই সমর এট্রায়ানগণের অধঃপতন ঘটে। সাইরাকিউজের রাজা নীরো এট্রায়ানিদগকে কিউমির নৌগুদ্ধে সম্পূর্ণরূপে পরাস্ত করেন। স্পিউরিরাস ক্যাসিয়াস্ প্রবর্ত্তিত এগ্রিরিয়ান্ আইন সইয়া পোট্র শিরান ও প্লেবিয়ানগণের মধ্যে বরাবয় বিরোধ চলিতে থাকে। পরে ৪৭১ বঃ পুঃ টিবিউন পাব্-লিলিয়াস্ ভলেরা

গণের স্বাধীনতা-বৃদ্ধি হয়। তৎপরে ৪৬২ খৃঃ পৃঃ ট্রিক্টিন কেরাস টেরেণ্টিলিয়াস আর্সা'র প্রস্তাবে দশজন ব্যক্তি লইয়া আইন প্রণয়নের জন্ম प्रमागन 84)-একটা সমিতি গঠিত হয়। কিন্তু ইহাতে sea यः गूः পেটি শিয়ানগণ অনেক আপত্তি করিলেন। অবশেষে ৮ বৎসর বিরোধের পরে তাঁহার তিনজন বিজ্ঞব্যক্তিকে গ্রীসদেশে লোল-নের আইন দংগ্রহ করিতে প্রেরণ করেন। তাঁহারা তথার হুই ৰংসর থাকিরা রোমে প্রত্যাগমন করিলেন। ৪৫২ থুঃ পু: দশব্দনের ঘারা একটী সমিতি গঠিত হইল। এই সমিতি সর্বেসর্বা হট্যা শাসনদত্ত পরিচালন করিতে লাগিলেন। ইহাঁদের মধ্যে এপিয়াস ক্লডিয়াস ও টাইটাস জেনিউশিয়াস কন্সল নিযুক্ত হইলেন। এই সমিতি দশ্টী প্রধান বিধি সঙ্কলন कतितनन, তाहारे मर्सवानि-मन्निकत्म बाहित প्रतिनेक रहेन। এই স্বাইনে রোমের উভন্ন শ্রেণীর মধ্যে স্বানেক সাম্য স্থাপিত হইল। ডিসেন্ডিরেটগণের শাসনে সকলেই সন্তুষ্ট হইয়া পুনরায় তাহাদিগকে নিযুক্ত করেন। পুর্ব্বাতন ব্যক্তিগণের মধ্যে কেবল এপিয়াস স্বপদে প্রতিষ্ঠিত থাকিলেন এবং সাধারণের প্রতি

অত্যাচার আরম্ভ করিলেন। পূর্ব্বোক্ত আইনের ১০টী ধারায়

'পাব্লিয়ান' নামক আইন বিধিবদ্ধ করেন। ইহাছারা প্লেবিয়ান-

আর ছইটী বিধি সংযুক্ত হইয়া ১২টী বিবিতে পরিণত হইল। ৪৪৯ থঃ পু: একুইস্থান ও সেবাইনগণ পুনর্ব্বার রোম আক্রমণ করিল। এপিয়াস স্বরং যুদ্ধকেত্রে না ঘাইয়া রোমে থাকিলেন। কিন্তু তাঁহার প্ররোচনার নিভাকতম সেনাপতি ডেন্টাটাস্ গুপ্তভাবে হত হইলেন। ইনি ১২০ বার যুদ্ধে জয়লাভ করিয়াছিলেন। তৎপরে এপিয়াস্ অন্যতর সেনাগতি ভার্জি-নিয়ার অলোকিক রূপবতী কন্যাকে বল পূর্বক হস্তগত করিবার জন্য নানা উপায় অবশ্বন করেন। উপায়ামর না দেখিয়া ভার্জিনিয়া স্বীয় কন্যার বক্ষে ছুরিকাঘাত করিয়া তাহার উদ্ধার সাধন করেন। এপিয়াসের এইরূপ অত্যাচারে প্রেবিয়ান গণ উত্তেজিত হইয়া উঠিল এবং দ্বিতীয়বার ভাহারা রোমনগর পরিত্যাগ করিরা অন্যত্র গিয়া বাদ করিতে লাগিল। তখন পেটি শিয়ান পক্ষ নিরূপায় হইয়া এল ভালেরিয়ান এবং এম-হোরেশিরানু নামক গুই ব্যক্তিকে প্রেবিয়ানদিপের সহিত্র সন্ধি-ম্বাপনে প্রেরণ করিলেন। ডিসেম্বর বা দশ-সমিতি বিলুপ্ত **इरेन এবং উপরোক্ত তুইবাক্তি কন্সল নিযুক্ত হইলেন। ভাঁহারা** পুনরায় আইন সংস্থার করিয়া প্রেবিয়ানদিগের অনেক স্থবিধা প্রদান করিলেন। ডিলেক্টরগণের মধ্যে এপিয়ান কারারুদ্ধ হটয়া আত্মহত্যা করিলেন এবং অন্যান্য অনেকে কেই নির্বাসিত ও কেহ হত হইলেন। তাঁহাদের ধনসম্পত্তি বাজেরাশ্ব হইল।

৪৪৪ খু: পু: রোমের শাসন-প্রণালীর পুনরার পরিবর্তন ছইল এবং ও জন "মিলিটারী ট্রিউন" বা সামরিক বিচারক নিযুক্ত হইলেন। পুর্বেক কলালগণ কেবল পেট্রিশিরান দল হইতে মনোনীত হইতেন, এক্ষণে প্রেবিয়ান দল হইতেও সামরিক বিচারক নিয়োগের ক্ষবস্থা হইল।

গ্রতদিন পর্যান্ত রোম রাজ্ঞা নির্দিষ্ট সীমাবদ্ধ ছিল। এক্ষণে রোমকগণ এই রিয়া অধিকার করিয়া তথায় এবং অস্থান্ত श्रुत छेनितिवन शानान मतानितिन कतिरान । রাজ্যপরিধি প্রদারিত হইতে লাগিল। ৩৯৪ খু: পু: রোমকগণ ভিয়াই রাজ্য একেবারে বিধবস্ত করিলেন। ভয়ন্বর যুদ্ধের পরে রোমকগণ জয়লাভ করেন। এই সময়ে দৈববাণী দ্বারা ঘোষিত হয় যে, যাহারা ৬০০০ ফিট স্লড্জ খনন করিয়া আলবান হুদের জল সমুদ্রে সংযোগ করিয়া দিতে পারিবে, তাহারাই যুদ্ধে জন্মী হইবে। তদস্থসারে রোমের ডিক্টেটর ফিউরি-য়াদ কামিল্লাদ উক্ত স্মৃত্ত্ব নির্মাণ করেন। অন্তাবধি উক্ত স্মৃত্ত্ব বিগ্নমান আছে। তৎপরে এটাস্কান রাজ্য একেবারে ধ্বংস-প্রাপ্ত হইল। এই যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া কামিলাস মহা আড়ম্বরে শ্বেতাশ্বসংযুক্ত রথে রোমে প্রবেশ করিলেন। জুনোদেবতার প্রতিমর্জি রোমে আনীত হইয়া তহপরি এক বিরাট মন্দির নিম্মিত হইল।

৩৯১ খুঃ পুঃ কামিল্লাস নির্ব্বাসিত হইলেন এবং গলগণ অসংখ্য সেনাদণ লইয়া রোমনগর ধ্বংস করিতে যাত্রা করিল। ব্রেন্নাস্ নামক গলসেনাপতি রোমকে শ্মশানে পরিণত করিবার সঙ্কর করিলেন। রোমকগণের অনেকে আসর বিপদ্ দেখিয়া নানাস্থানে পলায়ন করিল। গলগণ রোম অবরোধ করিল। আলিয়া নামক স্থানের ঘোরতর যুক্কে সহস্র সহস্র রোমসৈত্য ধরাশায়ী হইল। তথন অবশিষ্ট অধিবাসিগণ প্ররোহিত ও ভেষ্টাল কুমারীগণসহ কাপিটোলে আশ্রন্ন লইলেন। গলগণ রোমে প্রবেশ করিয়া নরহত্যায় এবং অগ্নিপ্রদানে নগর মহাশ্মশানে পরিণত করিল। কেবল মানিলেয়াসের সাবধানতায় কাপিটোল শত্রুহন্ত হইতে রক্ষা পাইল। তজ্জন্ত তিনি বীর আখায় ভৃষিত হইরাছিলেন।

অবশেষ ১০০০ বর্ণমূলা পাইরা গলগণ রোম পরিত্যাগ করিল। কিন্তু পথিমধ্যে রোমকসৈন্ত কর্তৃক আক্রান্ত হইরা ধ্বংসপ্রাপ্ত হইল। তৎপরে রোমবাসিগণ রোমে প্রত্যাগত হইল এবং পুনরার গৃহাদি নির্মাণ করিতে লাগিল। কামিলাস-নির্মাসন হইতে আসিরা পুনরার সাধারণ তন্ত্রের ডিক্টেটর নিযুক্ত হইলেন। ৩৬১ বৃঃ পৃঃ, গলগণ পুনরার রোম আক্রমণ করেন। ক্রিক্ত আর্ণোনদী তীরস্থ বৃদ্ধে মানিলিরাসের অক্ত বীরুদ্ধে রোম রক্ষা পাইল। তজ্জন্ত তিনি টকাটাস্ নামক গৌরবাহিত উপাধি পাইমাহিলেন। কিন্তু অক্তজ্ঞ রোমবাসী পরে তাঁহার নিধন সাধন করিল। এই সময়ে পেট্রিনিয়ান ও প্রেবিয়াননিগের অভ ও ভামিত্ব লইয়া পুনরার নানা গোলবােগ উপস্থিত হইল। পরে ৩৬৭ খঃ পৃঃ প্রেবিয়ানদলের এল—সেক্লটয়াস্ সর্বাপ্রথমে কস্সন্ হইলেন এবং বিচার-কার্যের জন্ত "প্রেটর" বা এক জন নৃত্রন ম্যাজিট্রেট নিযুক্ত হইলেন। কিছুকালের জন্ত প্রেবিয়ান ও পেটি নিয়ান প্রেক্ শাক্তি স্থাপিত হইল।

ইহার পরে লাটিয়ামের প্রাধান্ত শইয়া রোমের সহিত সাম-

নাইট ও লাটিনদিগের সহিত তুইটী ভীষণ যুদ্ধ সংঘটিত হয়। প্রথম সামনাইট যুদ্ধে (৩৪৩-৩৪১ খু: পু:) রোমকগণ জয়লাভ এবং সামনাইটগণ তাহাদের অধীনতান্ত্রীকার করিল। লাটিন-গণ দৃতপ্রেরণ দ্বারা জ্ঞাপন করিতে বাধ্য হইল যে, তাহাদের মধ্যে হইতেও শাসনকর্তা এবং কন্সল নিযুক্ত হইবে। কিন্ত রোমকেরা ভাষাতে আপত্তি করায় লাটিন लाहिन गक সম্প্রদায়ের সহিত যুদ্ধ উপস্থিত হইল। ७४०-७०० पुः भूः ভেসেরিস এবং টিফানাম নামক স্থানের যুদ্ধে রোমকগণ সম্পূর্ণরূপে জয়লাভ করিল (৩৪ • খু: পু:)। লাটিনগণের বার স্থানা লোক মৃত্যুমুথে পতিত হইল। এই যুদ্ধে মানেলিয়াস্ টর্কাটাস্ সামরিক নিয়মণজ্যনের জন্ম ত্রুটদের ন্তায় নিজ প্রত্যের শিরশ্ছেদ করিতে অম্লানবদনে আদেশ প্রদান করেন। ৩৩০ খু: পূ: রোমকগণ ভলসিয়ানদিগের সহিত যুদ্ধে জয়লাভ করেন। রোমকদিগের পুন: পুন: ত্রীরৃদ্ধি ২য় সামনাইঠ মহাৰুদ্ধ দেখিয়া সামনাইটগণ গ্রীকগণের সহায়তায় পুনরায় রোমের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করিল। এই যুদ্ধ ২২ বৎসর চলিয়াছিল। প্রথম a বংসর রোমকগণই জয়লাভ করিতে থাকে এবং সামনাইটগণ হতাশ্বাস হইরা যুদ্ধ পরিহারের সন্ধন্ন করে। পরে সি পণ্টিয়াস নামক একজন সামনাইট বীরের অত্যন্তত সমর-কৌশলে সামনাইট-গণের ভাগ্যচক্র ফিরিতে থাকে। তিনি "কডাইন ফক" নামক গিরিস্কটে রোমকদিগকে এরূপ ভাবে পরাঞ্জিত ও অপুমানিত করিয়াছিলেন, যাহার তুল্য ঘটনা রোমের ইতিহাদে আর পশ্চিয়াদের সমরকৌশলে রোম্যেক্ত শৈলপথে সম্পূর্ণরূপে অবরুদ্ধ হইলেন। অবশুন্তাবী বিনাশ দেখিয়া রোমকগণ বৃদ্ধিপূর্বক আত্ম-সমর্পণ করিলেন। দ্যাপূর্বক রোমসৈশ্র ও সেনাপতিদিগের প্রতি স্চ্যবহার করিলেন। কন্সলন্ধ্য ও সেনাপতিবন্ধ অন্তীকার করিলেন যে. ভাঁহার৷ সামনাইটদিগকে রোমকদিগের সহিত সর্ব্ববিষয়ে তুল্যাধিকার প্রদান করিবেন এবং ৬০০ অধারোহী প্রতিত-

শ্বরূপ সামনাইটদিগের নিকট থাকিবে। বথন এই সংবাদ রোমে পৌছিল, তৎকালে সেনেটের সম্বক্তগণ প্রতিজ্ঞাপালনে সন্মত হইলেন না; তাঁহারা বলিলেন, সেনাপতিদিগের স্বীকৃত বিষয় পালন করিতে তাঁহারা বাধ্য নহেন।

পুনরার যুদ্ধ চলিতে লাগিল। রোমের অনৃষ্ঠ আবার প্রসর হল। ৩০৪ খ্বঃ পুঃ রোমকগণ সম্পূর্ণরূপে জরলাভ করিল। এই সময়ে এট্রাকানগণও পরাজিত হইয়া সকলে রোমের অধীনতা খীকার করিল। মধ্য ইতালীর অধিবাসীরাও রোমের সহিত স্থিতি হইল। ৩০০ খ্বঃ পুঃ রোমের প্রভুষ মধ্য ইতালীতে সম্পূর্ণরূপে বৃদ্ধমূল হইয়া পড়িল।

রোমের উত্তরোত্তর উরতি দেখিয়া সামনাইটগণ পুনরায়

যুদ্ধ বোষণা করিল। গলগণ তাহাদের সাহায্যার্থ যুদ্ধ করি:ত

ভার বাননাইট যুদ্ধ

(২৯৮-২৯০ গৃ: গু:)

ভারিল। মান্ত্রিমান ও ডেসিয়ান্ নামক
কললয়য় সলৈতে রণক্ষেত্রে যাত্রা করিলেন।

ডেসিয়ান্ ভয়কর যুদ্ধ করিয়া প্রাণতাাগ
করিলেন, ম্যাক্রিমান্ জয়লাভ করিলেন। সামনাইটগণ পুনকার
রোমের সহিত একত্র মিলিত হইল।

ইহার দশ বংসর পরে এটাস্কান ও গলসৈত্যগণ ভাডিমো রদের বৃদ্ধে রোমকদিগের নিকট সম্পূর্ণ পরান্ত হইল। এক্ষণে রোসের রাজ্যসীমা দক্ষিণদিকে বর্দ্ধিত হইতে চলিল। দক্ষিণ ইতালী পূর্বের গ্রীকগণকর্তৃক উপনিবিষ্ট হইরাছিল, এই কারণে এই স্থান মাগ্না গ্রীশিয়া বলিয়া কথিত হইত। এই সমস্ত নগর-বাসিগণ লুকানিয়ানদিগের দারা আক্রান্ত হইরা রোমের সাহায্য প্রার্থনা করিল। রোমকসৈত্য তাহাদিগের সাহায্যার্থ যাইয়া বহুবৃদ্ধে ২৮২ খঃ পুং লুকানিয়ানদিগকে পরাজিত করিল এবং তথায় রোমকসৈত্য স্থাপিত হইল।

রোমক কন্সন দশথানি নৌকা লইয়া টরেন্টাম নগরের উপকঠবত্তী সমুদ্র দিয়া রোমে ফিরিতে ছিলেন, এমন সময়ে টরেন্টাইনগণ রঙ্গালয়ের উঠ অলিন্দ হইতে তাহা দেখিতে পাইয়া
অবিলম্বে সচ্ছিত হইয়া নৌযুদ্ধ তাহাদিগকে আক্রমণ করিল।
৪ খানি ছাহাছ জলময় হইল। কন্সল ভালেরিয়ান্ হত হই
কেন, অর্বানিষ্ট কেহ কেহ পলায়ন করিল। রোমের সেনেট এই
ঘটনার কারণ জানিতে ইচ্ছুক হইয়া পাই, মিয়াস নামক এক
বাজিকে দৃত প্রেরণ করিলেন। তিনি অভ্যোচিত ভাবে অপমানিত হইয়া প্রত্যাগমন করেন। টরেন্টাম্ও রোমের মধ্যে যুদ্ধ
বাবিল। টরেন্টাইন গ্রীকগণ এপিরাসের রাজা পিরহাসের নিকট
সাহায়্য প্রার্থনা করিল। পিরহাস মনে মনে সমস্ক ইতালী পরাজয় করিরা এক প্রকাপ্ত হেলেনিক সামাজ্য সংস্থাপনের সঙ্কর
ক্রিতেছিলেন। তিনি হ্যোগ উপস্থিত দেখিয়া টরেন্টান্দিগের

প্রার্থনার সন্মন্ত হইলেন এবং বৃহৎ সৈন্তাদল সংগঠন করিস্তে লাগিলেন। অবিলবে তিনি মিলো নামক এক সেনাপতিকে ৩০০০ পদাতিক সৈন্তসহ টরেন্টাম নগরে প্রেরণ করিলেন। অবশেষে (২৮১ খৃ: পৃ:) তিনি ২০০০০ পদাতিক, ৩০০০ অখা-রোহী এবং ২০টী হস্তী লইয়া রোমের বিরুদ্ধে বৃদ্ধযাত্রা করিলেন। টরেন্টামে পৌছিরা তিনি রঙ্গালয়ের ক্রীড়া কোতৃক বন্ধ করিয়া দিলেন এবং সমস্ত যুবকদিগকে যুদ্ধ শিখাইতে লাগিলেন।

রোমক কলল ভালেরিয়াদ্ নিভিনাদ্ সদৈপ্তে লুকানিয়ার মধ্য দিয়া বাত্রা করিলেন। পিরহাদ্ হেশল করিয়া সময় লইবার জন্ত রোমক কজলের নিকট পত্র লিখিলেন। কজল গর্জিতভাবে তাঁহাকে জনেলে ফিরিতে উপদেশ দিলেন। তথন পিরহাস জগতা৷ যুদ্ধ যাত্রা করিলেন। সিরিস নদীতীরে হিয়ায়িয়া
নামক স্থানে উভয়পক্ষীয় সৈক্ত সমবেত হইল। পিরহাদ্ প্রথমে
জ্ববারেইী সৈত্ত লইয়া রোমক-সৈত্ত আক্রমণ করিলেন।
রোমক 'লিজন' ভীমবেগে আক্রমণ প্রতিরোধ করিল। তথন
পিরহাদ্ পদাতিক সৈত্ত পরিচালনা করিলেন। ভয়য়য়য় যুদ্ধ
চলিতে লাগিল। ৭ বার ন্তন আক্রমণ হইল, তথাপি জয়
পরাজয় নির্ণাত হইল না। তথন পিরহাদ্ রণহতী চালনা
করিলেন। হত্তিগণের পরাক্রমে রোমক সৈত্ত বিমুধ হইয়া
পলায়ন করিল (২৮০ খুঃ পুঃ)।

পিরহাদ রোমক সৈভের বীরত্ব এবং পৃষ্ঠে অস্ত্রাঘাত চিক্ত না।
দেথিয়া বলিয়াছিলেন, "আমি এই সৈভের চালক হইলে পৃথিবী।
জর করিতে পারি।" তিনি দেথিলেন, আর একটী বৃদ্ধ হইলে
তাঁহার অবস্থা শোচনীয় হইবে। তজ্জ্ভ ইতালীবাসী গ্রীকগণের
স্বাধীনতা প্রার্থনাপূর্বক সন্ধিহাপনের জন্ত রোমে দুত পাঠাইলেন।

গ্রীক-দৃত সিনিয়াসের বক্তৃতাচ্ছটায় সেনেটের সদস্তগণ সদির
পক্ষপাতী হইয়াছিলেন, কিন্তু স্বদেশবংসল বৃদ্ধ ক্লডিয়াস
কিকাসের উদীপনাপূর্ণ বাক্যে সদ্ধিবদ্ধন ত্যাগ করিলেন। তথন
পিরহাস্ শনৈঃ শনৈঃ সনৈতে রোমের দিকে অগ্রসর হইলেন।
পরে বিপদ্ বৃষিরা শীতকালের আশ্রবের ক্ষপ্ত টরেন্টামে আগমন
করিলেন।

রোমকগণ এই সময়ে বন্দীর বিনিমর করিবার জন্য পিরহাসের নিকট দৃত প্রেরণ করিকেন। পিরহাদ্ রাজোচিত সন্মান
প্রদর্শনপূর্বক রোমক দৃত কেব্রিনিয়াস্কে অভিনন্দন করিকেন।
কেব্রিনিয়াস্ অতান্ত সত্যনিষ্ঠ এবং বিক্রমনালী বলিরা থাতি
ছিলেন। তিনি স্বংল্ডে হলচালনা করিতেন। পিরহাদ্ তাঁহাকে
হন্তগত করিতে সাম, দান, ভেদ ও দও এই চারিনীতি অবলঘন
করিরাও ক্রতকার্য্য হইলেন না। ক্রেব্রিনিয়ান মন্ত মাতলের
ভঙান্দালনেও অচলভাবে দঙার্মান থাকিলেন। পিরহাদ্

নিরুপার হইরা বলিণেন যে, রোমক বলীদিগকৈ তিনি 'সাটাণে-লিরা' বা শনি উৎসবে যোগদান করিতে অন্থমতি প্রদান করি-লেন এবং কহিলেন, 'যদি সেনেট সন্ধির প্রস্তাবে সম্মত না হন, কবে বন্দিগণ পুনরার প্রত্যাগমন করিবে।' সেনেটের সদস্তগণ অবিচলিত ভাবে সন্ধির প্রস্তাব অগ্রাহ্ করিলেন। উৎসবাস্থে রোমকবন্দিগণ পুনরার পিরহাসের শিবিরে গমন করিল।

২৭৯ খ্ব: প্:, প্নরার যুদ্ধারম্ভ হইল। আর্লাম নামক ছানের যুদ্ধে রোমক দৈল্প পুনরার পরাত্ত হইল। ৬০০০ রোমক যুদ্ধক্রে প্রাণত্যাগ করিল। পিরহাস প্রান্ত হইল। ৬০০০ রোমক যুদ্ধক্রে প্রাণত্যাগ করিল। পিরহাস প্রান্ত করি ভিন্ন লাভ হইল না। এই সমন্ত তাঁহার ছরাল্য গলগণ কর্ত্ব আক্রান্ত হওরার তিনি বিপদ্গত্ত হইলেন এবং সিসিলীবাসিগণও তাঁহাকে সাহায্যের জন্য এই সমরে আহ্বান করিল। পিরহাস্ রোমক বন্দীদিগকে সস্মানে প্রত্যুপ্ণ করিরা সন্ধির প্রার্থনা করিলেন, কিন্তু সেনেট বা মন্ত্রিলভা তাহাতে স্বীকৃত হইলেন না।

শিরহাদ্ দিদিলিতে গমন করিয়া আক্রমণকারী কাথে জিয়দিগকে পরাজিত করিলেন। কিন্তু দিদিলিরগণ তাঁহার
আত্যাচারে ব্যতিব্যস্ত হইল। অনস্তর তিনি ২৭৬ খৃঃ পৃঃ
পুনরার ইতালীতে প্রত্যাগমন করিলেন এবং অবিলম্বে
রোমকাধিক্বত লেক্রিনগর অধিকার করিয়া অর্থাভাবে পাদিকোন দেবীর মন্দিরস্থ বিপুল ধনরস্থ গ্রহণ করিলেন। তাহাতে
তাঁহার অর্থপূর্ণ একথানি জাহাজ জলময় হইয়া গেল। শিরহাদ্
পার্দিকোনের নিগ্রহ মনে করিয়া ভ্রোণ্সাহ হইলেন।

পরবংসর কন্সল এম কিউরিয়াস পিরহাসের বিরুদ্ধে যুদ্ধযাত্রা করিলেন। বেলিভেণ্টাম নামক প্রসিদ্ধ স্থানে উভয় সৈন্য সন্মুখীন হইল। পিরহাস্ নৈশ আক্রমণে জয়লাভের চেষ্টা করিলেন, কিছু তাহা বিকল হইল। ভয়ত্তর যুদ্ধ সংঘটিত হইল। ছইটী হস্তী হত ও চারিটী রোমকদিগের হস্তগত হইল। পিরহাসের সৈন্য রণেভঙ্গ দিয়া পলায়ন করিল। পিরহাস্ কতিপর অন্তরসহ গ্রীসে গমন করিলেন। আর্গস নগরাধিকারকালে একটী রমনীর ইইকাঘাতে তাঁহার মৃত্যু হয়।

অরকাশ মধ্যে টরেণ্টাম প্রভৃতি সমস্ত গ্রীকনগর রোমের অধিকারভুক্ত হইল। রোম সমস্ত ইতালীর উপরে প্রাধান্ত বিস্তার করিল। তদানীস্তন পাশ্চাত্যপ্রদেশে রোম পরাক্রমশালী বলিরা খ্যাত হইল। সকলের দৃষ্টি রোমে আরুষ্ট হইল। মিদরের রাজা টলেক্সি ফিলাডেলফাদ দৃত প্রেরণ করির। রোমের সহিত সধ্য স্থাপন করিলেন। রাজ্যবিস্থৃতির সঙ্গে সঙ্গে রোমের শাসন-প্রণালীর অনেক পরিবর্ত্তন হইল। রোমের অধিকারস্থ অধিবাসিল্প ৩ শ্রেণীতে বিভক্ত ইইল।

- (>) রোমবাসী বা রোমনগরস্থ ৩০টা বিভিন্ন জাতি।
- (২) রোমের উপনিবেশিক অধিবাসিগণ।
- (৩) রোমের অধিকার ভূক্ত মিউনিদিপাল (স্বারত্ত-শাসন) চালিত নগরসমূহ।

मिडेनिमिशान नगततामिशानत मन्त्र मरनानत्तर मन्त्र्र वि কার ছিল এবং তাঁহারা রোমবাসীর সহিত বাণিকা ও অন্তর্বিবাহের অধিকারী ছিলেন। এতত্তির মিত্র ও সহযোগী কুদ্র রাজ্যগুলিও রোমকশাসনের স্থবিধা প্রাপ্ত হইয়াছিল। চতুর্দিকে স্বাধীন রাজগণের সহিতও রোমকগণ সখ্যসতে আবদ্ধ হইয়া রাজ্যাশাসন দুঢ়তর ভিত্তির উপর সংস্থাপন করিল। সামাজিক বিধিব্যবস্থাও অনেকাংশে সংস্কৃতপ্রণালী ক্রমে প্রতিষ্ঠিত হইল। শিল্পী এবং শাবসায়িগণ নির্বাচন বিষয়ে মডামত প্রকাশ করিবার অধিকার পাইল। ক্রীভদাসগণকে কোন কোন বিষয়ে স্থবিধা দেওয়া हरेत। এर ममस्य भारतमाञ्चलाञ्च अवः मत्रकाती कार्यात भागन পরিবর্ত্তন হইতে লাগিল। তৎপুর্ব্বে পুরোহিত শ্রেণীই কেবল আইন প্রণয়ন এবং ধর্মশাস্ত্রের অমুশাসন করিতেন। কিন্তু ক্লেভিয়াস এই সময়ে সরকারী ও সামাজিক কার্য্যের অফু-শাসন সংক্রান্ত এক বিধিব্যবস্থা সম্বলিত পুস্তক প্রকাশ ক্রিলেন। ইহাতে কোন কোন দিনে ধর্মাধিকরণাদি সরকারী কার্য্য হইবে ও বন্ধ থাকিবে, তাহা স্থলরক্ষপে নির্দিষ্ট থাকিল। পুরোহিতগণের পবিত্র অধিকার মন্দীভূত হইয়া আসিল।

রাজাবিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে চতুর্দিকে উপনিবেশ স্থাপিত हरेट गांशित। ১२ है। नुष्त कां जि त्रात्मत्र भामनाधीन हरेता। লিভি বলেন, ২৭৫ থঃ পূ: মনুষ্য-গণনায় রোমনগরে ৯০০০০ পুরুষ ছিল। জীলোকের সংখ্যা নির্দিষ্ট নাই। রোমের সমৃদ্ধি শুনিয়া নানাদেশের বিষদ্বুন্দ রোমে আফিতে লাগিলেন। ক্রমে ক্রমে লক্ষী র্দ্ধির সঙ্গে সংক সরস্বতীরও রূপা হইতে লাগিল। গ্রীক পণ্ডিতগণ রোমে বাস করিতে, লাগিলেন। বিছদ্রুন্দও রোমের উদীয়মান সৌভাগ্যদর্শনে যাত্রা করি-প্রাচীনকালে দেশভ্রমণ বিভাশিকার निर्फिष्टे हिन । এই সময়ে कार्थिक त्राका প্রথম শ্রেণীর রাজা বলিয়া খ্যাত ছিল। টায়ববাসী ফিনিকীয়গণ ৮২৫ খু: পু: আফ্রিকার উত্তরে ভূমধ্যস্থ সাগরোপকৃলে এই বাণিজ্যসমৃদ্ধ ঐশ্বর্যাশালী রাজ্যের প্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন। সেমিটিক জাতীয় ছিলেন। কার্থেজের সমৃদ্ধি সামুদ্রবাণিজ্ঞা হইতে হইরাছিল। কার্থেজীরগণ ক্রমে রাজ্যব্যবসায় আরম্ভ করিরাছিল। তাঁহারা স্পোনের কিয়দংশ, কর্দিকা, সার্ডিনিয়া এবং ইতালী ও গ্রীদের কিরদংশ অধিকার করিয়াছিল। এতত্তির লাইবিয়া ও আফ্রিকার নানা স্থানে তাঁহাদের শাসনদও পরিচালিত হুইত।

ভূমবাসাগরের চতুপার্ববর্তী রাজ্যসবৃদ্ধের মধ্যস্থলে হাণিত
ইতালীরাজ্য এতকাল বরিরা শক্তি ও সমৃদ্ধি অর্জনপূর্বক রাজকীর জগতের প্রকৃতকন্ত্রম কাভ করিভেছিলেন। উক্ত
সাগরোপকুলহ রাজ্যবাসী রাজা ও প্রজাগদ সকলেই ইতালীর
শীর্ষক্রের রোমের প্রাধান্য অক্তব করিভেছিলেন। পিরহাসের
পলারন ও প্রীক্ষিপের অবিকৃত কক্ষিণ ইতালীর নগরসমূহে
রোমের আবিশত্য ও বক্ততা খীকার ইইতেই পূর্ব ভূমধ্য-জগতে
(Eastern Mediterranean world) এই ইতালীর রাজ্যের
শক্তিপ্রভা বিজসিত হইরা পড়িল। ইজিপ্র রোমের বন্ধুদ্ধ বাজা
করিরা পরস্পারে সভাব স্থাপন করিলেন। গ্রীক্ বিবৎসমাজ
এই নবোত্ত ও দিগন্তপ্রসারিতব্যাতি রোমরাজ্যের ইতিহাস,
রাজতত্র ও লাটিন প্রজাতব্রের মূল-বিষরের উরতিসাধনে
সাহাধ্য করিতে লাগিলেন। পিরহাসের প্রত্যাবর্তনের পর
রোমের পূর্বসম্বদ্ধ প্রকাপই ছিল। তদবধি পঞ্চাল বর্ব পর্যান্ত
আার রোমের ক্রেরগৃষ্ট পূর্বাঞ্চলে প্রসারিত হর নাই।

ইতালী প্রায়েখীপের পশ্চিমকুল উর্বার ও ধনজনপূর্ণ এবং পুর্বতীর অপেকা বাণিজ্যোপযোগী জানিয়া প্রথমে সেই পশ্চিম मिक अञ्जनात अश्र ठाँशास्त्र नद्मन आकृष्टे श्रेशाधिल। कात्रन এই সময়েই শক্তিশালী কার্থেজ-শক্ত সগর্কে ভূমধ্যসাগর উহেলিত ক্রিয়া ইতালীর প্রতীচ্য সীমান্ত-দার সার্ডিনিয়া ও সিদিলী ছীপে আসিয়া করাঘাত করিয়াছিল এবং তাহার নৌবাহিনী সকল পশ্চিমভূভাগের পুপ্তরত্ব উদ্ধার মানসে ও কার্থেজ নগরীর সমৃদ্ধি ুবুদ্ধির আশায় ঈ্রহা কটাকে রোমের সমুরত সমৃদ্ধির দিকে দৃষ্টিপাত করিতে করিতে জলদস্যার স্থায় সাগরবক্ষ মথিত করিতেছিল। পশ্চিম-সমুদ্রতীরে কার্থেঞ্জীর সাম্রাজ্ঞ্য বিস্তার দেখিয়া রোম ভীত হুইলেন। যভই কার্থেজীয় সমিদির বৃদ্ধি হুইবে, ততই রোমের বাণিজ্যের বিশেষ ক্ষতি অফুডব করিয়া রোমক সভা চঞ্চল হইয়া পড়িলেম। ঐ দম্যাদলের নিকট ইতালীর পশ্চিমোপকুলও নিরা-পদ নহে জানিয়া তাঁহাদের ভরের মাত্রা বাড়িয়া উঠিল। এদিকে আবার সিদিলীয় পুর্কোপকৃলত্ব সাইরাফিউন্-পতিকে গ্রীদের স্বাধীনতা রক্ষার বন্ধপরিকর দেখিয়া যুদ্ধ ভিন্ন স্বার্থ রক্ষার উপায় নাই, এই নীতিবাক্য অবলম্বন করিয়া রোম যুদ্ধার্থ উল্মোগ ক্রিতে লাগিলেন। গ্রীক ও ফিনিকীয়দিগের রণক্ষেত্র অচিরে ইতালীর শাসনকর্ত্রণণের ও ইতালীয় সমুদ্রের সর্বাময়কর ফিনিকীরগণের রুপপ্রাঙ্গণে পর্যাবসিত হইরাছিল।

রোমের বংকালে সাধারণতত্ত্ব প্রবর্তিত হয়, তথন রোম কার্থেজের সহিত সন্ধিস্ত্তে মিলিত ছিলেন। বংকালে পির-হাস্ সিসিলিতে কার্থেজের সহিত যুক্ত প্রবৃত্ত হন, তথনও কার্থেজ রোমের সহিত নৃতন সন্ধি করিরা স্থাস্ত্তে বন্ধ হইরা- किंग। विश्व वर्श्वमात्न (त्रात्मत्र जेखरत्राखत्र अतिक नर्गत्म कार्र्शक ক্ষর্বাপরবন হটলেন। সিসিলি বীপ লইরা রোমের সহিত কার্থেকর বিরোধ বাধিল। সিসিলির অন্তর্গত মেসানা নগরে বছকাল পর্যান্ত মেমাটিনি (বা মঙ্গলপুত্রগণ) নামক এক প্রবল দস্তা সম্প্রদার বাস করিত। সাইরাকিউকের রাজা হীরো ইহা-দিগকে পরাম্বর করিয়া ভাহাদের উচ্ছেনসাধনে প্রার্ত্ত হইলে ভাহারা রোমের সাহায্য প্রার্থনা করিল। রোমকগণ হীরোর সহিত স্থ্যবন্ধ ছিলেন বলিয়া হঠাৎ সম্মত হইল না। পরে কার্থেকীয়দিগকে সাহায্যার্থ প্রবুত্ত দেখিয়া রোম তাহাদিগকে সাহায্য করিতে প্রতিশ্রুত হইল। পূর্ব্বোক্ত কন্সল ক্লডিয়াসের পুত্র এপিয়াস ক্লডিয়াস সসৈতে সিসিলি যাত্রা করিলেন। ইহার পুর্ব্বেই কার্থেন্দীয় সৈন্ত মেমার্টিনদিগের সাহায্যার্থ মেসানা নগরে দমাগত হইলেন। হীরো ও রোমক সৈক্ত উপস্থিত দেখিয়া কার্থেকীয়দিগের সহিত মিলিত হইরা জলপথে ও স্থলপথে মেসানা অবরোধ করিলেন। রোমক সৈত্তও উপরোক্ত মিলিত সৈলের সহিত যুদ্ধ ঘোষণা করিল (২৬৪ খু: পূ:)। প্রথম পিউনিক যুদ্ধের আরম্ভ হইল।

কার্থেজ জল যুদ্ধের জন্ম প্রসিদ্ধি লাভ করিরাছিল, কারণ ফিনিকগণ প্রাচীনকাল হইতে সামুদ্রবাণিজ্যে প্রবৃত্ত থাকার ভারতীয় শিল্লিগণের নিকট হইতে বৃহৎ অর্ণবিষান-নির্মাণকৌশল শিক্ষা করিয়াছিল। কার্থেজের বৃহৎ বৃহৎ অনেক রণতরী ছিল, কিন্তু রোমের তাহার কিছুই ছিল না। তথাপি নির্ভীক ক্লডিম্বাস মেসানার নিকটে স্থলযুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। রোমণ্ড সৈত্তের পরাক্রমে সাইরাকিউজ এবং কার্থেজের মিলিত সৈত্ত উপয়া পরি পরাজিত হইল। ৩৬৩ খঃ পঃ রোমকসৈত্ত হীরোর রাজধানী সাইরাকিউজ আক্রমণার্থ উভোগী হইল। বহসংখ্যক নগর নৃষ্ঠিত ও বিধ্বন্ত করিয়া তাহারা সাইরাকিউসের প্রাচীর সল্লিছি হইল। হীরো অগত্যা রোমের সহিত সন্ধি করিয়া তাহার সাহায়কারী হইলেন।

রোমক-সৈন্ত হীরোর সহিত মৈত্রীস্থাপন করিরা কার্থেজীয়-গৈল্পের সহিত যুদ্ধার্থে এগ্রিকেণ্টাস নগর অবরোধ করিল। এই নগরে সিনিলবাসী গ্রীকগণের হুর্গ ছিল। রোমকগণ ২৬২ খুঃ পুঃ যুদ্ধে জরলাভ করিরা উক্ত নগর অধিকার করিল। এবত্যকারে বুদ্ধের প্রথম তিন বৎসর তাহারা জ্বরলাভপূর্বাক সিনিলির আনেকাংশ অধিকার করিরা বসিল। এই সময় কার্থেজীয় রণত্ত্বী সকল ইভালীর উপকৃল লুঠন করিয়া রোমের বিশেষ ক্ষাত করিতে লাগিল। ভদ্দনে নিরুপার হইয়া রোমকগণ জাহাজনির্মাণে সম্বর করিল। নানাদেশ লুখনে রোমের ধনভাগুরে তথন প্রচ্ব, অর্থ ছিল, অবিলব্ধে তর্গাক্রাত বৃহৎ বৃহৎ ইন্ধাছেন পূর্ব্বক কাহাজের কাধ্যারস্ত হইল। পূর্ব্বে একথানি বড় কিনিক কাহাজ চড়ায় লাগিয়। ইতালীর উপকূলে পড়িরাছিল। সেই জালর্ল সন্থাধ কাপন করিয়া শিলিগণ জাহাজনির্মাণ আরম্ভ করিল। বৃক্তকেদনের দিন হইতে ৬০ দিনের মধ্যে ১৩০ খানি আহাজ-নির্মিত হইয়া সমুদ্রতরকে ভাসিল। জবিলাধে মাঝি, কর্থার এবং নাবিক শিক্ষিত হইল। জনপথে রোমের প্রথম রণতরী চলিল।

২৬০ থু: পু: কন্সৰ কৰ্ণিলিয়াস ১৭ থানি সুসজ্জিত রগতরী बहेबा युक्तवा का कतित्वन । किन्न जिनि कार्थकीवसिरात निकरे লিপারা নামক স্থানে সম্পূর্ণরূপে পরাঞ্চিত হইয়া বন্দী হইলেন। অন্ত কন্সল ডুইলিয়াস অবশিষ্ট রণতরী সজ্জিত করিয়া পুনরায় যুদ্ধযাত্রা করিলেন। তিনি অসামান্ত কৌশলে এক নৃতন প্রথা আবিদার করেন। প্রত্যেক জাহাজে ২৪ হাত লখা এক একটা সেতু মাস্তলের সহিত রজ্জ্বর থাকিল। শক্রর জাহাজ সমীপবত্তী হইবামাত্র তিনি ঐ সকল সেতৃর প্রস্থি শিথিল করিয়া দিলেন, সেতু সকল লখিত হইয়া কার্থেজীয় জাহাজের উপরে সংলগ্ন হইল এবং অবিলম্বে শত শত স্থসজ্জিত রোনক-সৈত্য উক্ত দেতৃপথে শক্রর জাহাজে প্রবেশপুর্ব্ধক কার্থেজীয়দিগকে পরাজিত করিয়া ভাহাদের স্ববিদ্ব লুগ্ন করিল। মাইলি নামক স্থানের এই প্রসিদ্ধ জন্মদ্ধে ৩১ থানি কার্থেজীয় রণতরী অধিকত হুইল এবং ১৪ খানি বিধবস্ত হুইল। অবশিপ্তগুলি প্লাইয়া রক্ষা পাইল। ডুইলিয়াস মহাড়ম্বরে রোমে প্রবেশ করিলেন। শত শত প্রজনিত আলোকস্তম্ভে, বিচিত্র পুষ্পপতাকা শোভিতপথে এবং বীণাদিষত্রে রোম মুখরিত হইণ। যুদ্ধে অধিক্লত শত্রুর জাহাজের গলুই দ্বারা গঠিত একটা স্তম্ভ তাঁহার সম্মানার্থ ফোরামে প্রতিষ্ঠিত हरेन। উरात नाम त्रष्टाठा छछ। द्वारमत्र कालिरठानारेन মিউজিয়মে উহা অত্যাপি রকিত আছে।

ইহার কএক বংসর পরে ২৫৬ খৃ: পৃ: রোমক কললম্বর রেগুলাস এবং মানেলিয়াস্ ৩৩০ থানি রণতরী সজ্জিত করিয়া কার্বেজীর সৈত্যের বিরুদ্ধে থাত্রা করিলেন। ইহার পূর্ব্ধে প্রাচীন-কালে কোন যুদ্ধে সমুদ্রে এত রণতরীর সমাবেশ হয় নাই। পূর্ব্ধেক্তি সেতৃপথের কৌশলে রোমক-সৈন্ত কার্থেজীর জাহাজ সকলের ধ্বংসসাধন করিল। রোমকনিগের কেবল ২৪ থানি জাহাজ রেবাস ইইরাছিল। কিন্তু তাহারা ৬৪ থানি কার্থেজীয় জাহাজ দ্রবাসামগ্রীসমেত অধিকার করিয়াছিল। যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া রোমকগণ কার্থেজীয় নগরাদি পূর্ঠনপূর্ব্ধক ধ্বংস করিতে লাগিলেন। এই পূর্ঠনে তাহারা প্রচুর ধনরত্ব প্রাপ্ত হইলেন। কিছুদিন পরে শীতকালে মানেলিয়াস অর্থেক সৈন্ত লাইয়া রোমে প্রত্যাসমন করিলেন। রেগুলাস য়ুদ্ধেক্ত্বে থাকিলেন।

রেগুলাস্ প্রতিদিন কার্থেলীয় নগরাছি অধিকার পূর্বাক প্রবল-त्तर्ग कार्थरकत निर्क अ**धनत वहेरनम । का**र्थकीवर्गणं वस्त्री. অস্ব এবং পদাতিক দৈজে সুস্থিতিত হইরা বুদ্নযাত্রা করিল। এই মহাযুদ্ধে রেওলাস জন্মণাভ করিলেন। কার্থেজীরগণের ১৫০০০ সৈতা রণকোরে প্রাণ বিষক্তন করিল এবং ৫০০০ সৈতা ७ ১৮ টী इन्ही वसी इहेग। ब्रिक्षणांत्र समञ्जलन सूर्यन-भूकं क कार्थर वह विश्विष्ठ इंहेरन विश्व कार्थक कार्यक कार्यक कोनन **উडावन कतिएक नागिरनन**। किनि व्यविनास **विके**निन নগর অবিকার করিয়া লুগন করিলেন। নিউ মিডিয়গণ এই স্থােগে সার্থেনের অধীনতা অস্বীকার করিরা স্বাধীনতালাভের চেষ্টা করিতে লাগিল। কার্থেজীয়গণ হতাখাস হইয়া রেগুলাসের निक्रे निक्र आर्थना बानाइन, किंद ब्रह्ममम्ब (तथनाम जाहार उ কর্ণণাত করিলেন না। কিন্তু এই সময়ে কার্থেজীয়দিগের ভাগা স্প্রসন্ন হইনা উঠিল। স্পার্টারাজ জণ্টিপাস ৪০০০ অখারোহী, ১০০ হন্তী এবং বহু সহস্র পদাতিক সৈত্য লইয়া কার্থেজের সাহায্যার্থ আগমন করিলেন। তয়য়য় য়ৢয় উপস্থিত হইল। ৩০০০ রোমক-দৈত্ত রণক্ষেত্রে প্রাণ্ড্যাগ করিল। রেগুলাস ৫০০ সৈ'ফার সহিত বন্দী হইলেন। অবশিষ্ঠ ২০০০ সৈতা শিবিরে পলায়ন করিল (২৫৫ খ: পু:)। রোমকদিগের ত্রভাগ্য এখানে শেষ হইল না। অবশিষ্ট রোমক-দৈল সকল জাহাজারোহণে স্থানেশ ফিরিতেছেন, এমন সময় ভীষণ ঝটিকায় ছিল বিচ্ছিল হট্যা রোমের সমস্ত রণতরী এবং বিরাট সৈভাদল সমূলে ধ্বংস প্রাপ্ত হইল। ৩৬৪ খানি রণতরীর মধ্যে ৮০ খানি মাত্র কএকদল দৈলসহ রোমে পৌছিল।

রোমকগণ নিরুৎসাহ না হইয়া পুনর্কার রণতরী নির্দ্মাণের উভোগ করিল। তিনমাসে ২২০ খানি তরী নির্দ্মিত হইল। তাহারা পুনরায় জলপথে যুদ্ধাাত্রা করিল। ২৫৩ খুঃ পুঃ রোমক কন্দালগণ কার্থেজের উপকূল লুঠন ক্ষরিতে লাগিলেন। যুদ্ধে জয়ী হইয়া ফিরিতেছেন, এমন সময়ে পালিনারাদ্ অন্তরীপের নিকট এক ভীষণ ঝাকোয় রণতরী সকল ধ্বংসঞাপ্ত হইল।

রোমক দৈছ পুনরায় সিসিলিতে যুদ্ধারম্ভ করিলেন। ২০০৩;
পু: রোমক প্রোক্ষণল মেটেলাস পানার্মান্ নামক স্থানে এক
ভীবণ যুদ্ধে অরলাভ করিলেন। ২০০০০ কার্থেজীয় সৈত্ত রুণত্বে বিনষ্ট হইল। ১০৪টা হতী রোমকনিগের হত্তগত হইল। এই যুদ্ধে জয়লাভ করিবা রোমকগণ উৎসাহিত হইয়। পুনরায় ২০০ রণভ্রী নির্মাণ করিল। কার্থেজীয়গণ রোমের সহিত সন্ধি করিতে প্রস্ত হইল। রেগুলাস্ পূর্বে কার্থেজে কন্দী হইয়াছিলেন। রোমক ইডিহাসে তাঁহার বীর্দ্ধ, সত্যানিষ্ঠতা এবং ব্দেশবাৎসলা অধাক্ষরে লিখিত আছে। কার্থেন শীর বন নিজদুভগণের সহিত রেওলাদকে রোমে পাঠাইক এবং কহিল, যদি জিনি সন্ধিত্বাপন করিছে না পারেন, ভবে ডিনি পুনরার কার্থেজের কারাঝানে ফিরিয়া আসিবেন। নির্ভীক द्रिश्रमाम् मध्य रहेरामा । द्रिश्रमाम् बन्नी रहेद्रार्हम बनिक्र অবধ্যে রোমক নগর আচীরের অভ্যন্তরে বাইতে ইচ্ছা করেন মাই। বীরহুদর রেঞ্চাসতে খিরিয়া পাইবার জন্ত রোমক श्रात्मणे कार्यक्षीयमिरशय महिष्ठ मिन्नवहरून मन्नष्ठ इहेरनन। किंख द्रिक्षणाम् উटिक:यद्र कहित्नम, "आमारक शाहेबात क्र मिक क्रिया द्यारमय भावत नहे क्रियन ना, द्यारमय शोबद्दर আমার গৌরব।" সেনেটের সভ্যগণ রেগুলাসকে কার্থেজে कितिया यादेरक निर्देश कितिन और महस्य महस्य लाइक कहिन. "বিদেশে বলপূর্বক গৃহীতের শপথপালন না করিলে পাপ হয়না।" कि इ मठामक चारमवरमन द्रक्षमाम् । नत्वत्र ज्याश्यिक इर्फ्ना জানিয়াও অবিচালত ভাবে কাথেজে গমন করিলেন। কার্থে-बीग्रंगंग वित्रक श्हेंगा जीशांक नुनारम्बाद निश्क कतिन। প্রথমে চক্ষের পাতা কাটয়া জাখাকে ভাষণ রোলে ফেলিরা ব্রাথিত। পরে একটা বাব্দে শত শত তীক্ষমুথস্চীবিদ্ধ করিয়া তাঁহাকে ভাহার ভিতরে প্রবেশ করাইত। স্বদেশবংসল রেগুলাস্ অমানবদনে এই নিচুর নিগান্তন সহু করিয়া প্রাণ হারাইলেন।

এই নির্চুত্রতার বীভংস কাহিনী গুনিয়া রোমকণণ কার্থেজের ধ্বংস সাধনে ক্বতসঙ্কল হইল এবং অবিলম্পে সসৈপ্তে সিসিলির অন্তর্গত কাথেজীয় নগর লিলিবিয়াম্ অবরোধ করিল। অন্তর্গত কাথেজীয় নগর লিলিবিয়াম্ অবরোধ করিল। অন্তর্গত কার্থেজীয় রণতরী আক্রমণ করিলেন। প্রথম যুদ্ধে রোমক সৈত্র জয়লাভ করিলেও জলযুদ্ধে ক্রডিয়াসের নির্কৃদ্ধিতার রোমকসৈত্র পরাজিতপ্রায় হইল। আটিনিয়াস্ কালাটিনাস্ তাহার পরিবর্গতে রোমক কলল নিযুক্ত হইলেন। অত্যতর কলল সি-জ্নিয়াস্ ১০০টী রণতরী লইয়া লিলিবিয়ামে রোমকস্প্রেম সাহায্যার্থ গমন করিতেছিলেন। পথিমধ্যে ভীষণ করিছায় রণতরী, সমূহ বিধ্বত্ত হইল। কেবল হইথানি জাহাজ রক্ষা পাইয়াছিল। এই প্রকার দৈবছর্শ্বিপাকে ও বার রোমকরণজরীসমূহ নই হয়। তথন রোমকগণ জলযুদ্ধ-সঙ্কল পরিত্যাগ করিয়া স্বগ্রুদ্ধে মনোনিবেশ করিল।

এই সময়ে কাথেজে একজন বীরপুরুবের আবির্ভাব হইল।
ইহার নাম হামিলকার বার্কা। ইনিই ইভিহাসপ্রমিদ্ধ হানিবলের জনক। ২৪৭ খুঃ পুঃ, যখন তিনি মিসিলিতে কাথেজীয়
সৈতের সেনাপতি হইরা গমন করিলেন, তখন তিনি অতি
ভঙ্গন বরয় । তিনি সোজাহজি যুক্তকেরে না যাইরা হার্কটে
নামক পর্কতের পাদদেশ দিয়া সৈঞ্চালনা করিলেন। এইস্থানে

ভিনি এমন ফুছরচনা করিয়া বংসরকাল অবস্থান করিশেন বে, শক্রমিত্র সকলেই সেই অকুত কৌশলে বিশ্বিত ইইয়াল্ গেল। এই স্থরক্তিত বৃহ ইইভে ভিনি ক্রমে ক্রমে রোমকসৈন্তের অভিমুখে ধাবিত ইইলেন। রোমক সৈন্ত তাঁহাকে
বাধা দিতে পারিল না। হামিলকার অগ্রসর ইইলেন এবং
ভ্রেপানামের নিকটবর্ত্তা এরিক্স নামক স্থরক্তিত পার্ক্তানগরু
অধিকার করিলেন। ত্ইবংসর অক্লাপ্ত চেষ্টার রোমক-সৈন্ত
হামিলকারকে এক পদত বিচলিত করিতে পারিল না।

ত্রোমকগণ একণে ব্রিতে পারিলেন যে, জলগুরে প্রাধান্ত লাভ না করিতে পারিলে তাঁহারা কার্থেজের সহিত প্রতিব্যোগিতা করিতে পারিলেন না। ২৪২ খৃ: পু: কলল লুটাটিয়ান্ট্র কেটালট্ট্র ২০০ রণভরী লইয়া যুদ্ধমাত্রা করিলেন। হানেট্র নামক লেনাপ্রিভ কার্থেজীর রণভরীর অধ্যক্ষ ছিলেন। ইলেট্ দ্র্নামক দীপের নিকটবর্ট্টা মুদ্ধে রোমকগণ জরলাভ করিলেন। এই যুদ্ধে রোমকগণ সর্ক্রিষের স্থবিধা প্রোপ্ত হুইলেন। কারণ জলপথ বন্ধ করিতে পারিলে কার্থেজ হুইতে আর কোন সাহায্য আসিতে পারিলে না, অগত্যা হামিলকারকে সনৈতে অনাহারে: প্রোণভ্যাগ করিতে হুইবে।

কাথেজীয়গণ নিরুপার হইয়া হামিংকারকে রোদের সহিত সদ্ধি করিতে পত্র লিখিল। ২৪১ খৃ: পৃ: সদ্ধি ছাপিত হইল। তন্ধারা কার্থেজীয়গণ সিসিলির প্রভুদ্ধ এবং নিকটবর্ত্তী দ্বীপপুঞ্জের আধিপত্য পরিত্যাগ করিলেন। তাঁহারা যুদ্ধে ধৃত বন্দিগণকে কিরাইয়া দিলেন এবং প্রস্তাব হইজ যে, কার্থেজ ১০ বংসরের মধ্যে রোমকে ৩২০০ তৌল বর্ণ ক্ষতিপূরণ স্বরূপ প্রদান করিবেন। কর্সিকা ও সার্ভিনিয়া রোমের অধিকারভুক্ত হইল। রোমের দেনেট কি প্রকারে সিসিলি শাসিত হইবে, তাহার উপায়চজ্জা করিতে লাগিলেন। রোমের সহিত এক শাসনপ্রণালীতে সিসিলি শাসন অসম্ভব বলিয়া তাঁহারা সিসিলিতে সম্পূর্ণ নৃত্যন শাসনপ্রণালী হাপন করিলেন। রোম হইতে প্রতি বৎসরে নির্ম্মান্টিত একজন শাসনকর্ত্ত। বারা সিসিলির শাসনকার্ত্ত লাগিল। এইরূপে রোমসাঞ্রাজ্যের প্রথম ভিত্তিশিলার পত্তন হইল।

এদিকে হামিলকার স্বদেশে প্রত্যাগত হইরা প্রতিশোধ লইবার জন্ত বল পরিপৃষ্টি এবং স্পেন দেশে এক বিপুল নামাজ্যপ্রতিষ্ঠার আরোজন করিতে লাগিলেন। বছকাল পরে রোমে শান্তি বিরাজ করিতে লাগিল। ছমার সময় হইতে এতদিন রুণদেবতা জেনালের মন্দির্বার খোলা ছিল। রোমের ইতিহাসে বিতীর বার এই মন্দিরের ঘার ক্ষ হইল। কিন্তু অধিক দিন থাকিল না। রুণতেরীর উন্থান আহ্বানে আবার অন্তিবিলক্ষে

ন্নণ-দেৰতার মন্দির্বার উদ্বাটিত হইল। পূর্বে ৩০টা জাতি মিলিত হইরা রোমরাজ্যের প্রতিষ্ঠা হইরাছিল, এখন আর ছইটা জাতি উহাতে মিলিত হইরা সর্বানাকল্যে ৩৫টা জাতি ছইল।

আদ্রিয়াতিক সাগরের পূর্বাংলে ইন্নিরীরগণ বাস করিত।
ইহারা অবদম্মতা দারা সমৃদ্ধ হইরাছিল। ইহালের উপদ্রবে
ইতালীর উপকৃল তাগ মিরাপদ ছিল না।
ইন্নিরীয়ন বৃদ্ধ
রোমের সেনেট ইন্নিরীয়-রাজ আগ্রনের
(২২৯ বৃ: গু:)
নিক্ট দুত পাঠাইলা এই উপদ্রব নিবারণের

জন্ত প্রার্থনা করিলেন। রাজা তাহাতে ক্রক্ষেপ করিলেন না,
বরং দৃতগণ নিহত হইল। অবিলব্দে রোমক-সৈক্ত আদিরাতিক
উত্তীর্ণ হইরা যুদ্ধাত্রা করিল (২২৯ খৃ: পূ:)। সেই সমরে
আগ্রনের মৃত্যু হওয়ার টিউটা নায়ী তাঁহার বিধ্বা শন্ত্রী দিমেত্রিয়াদ্ নামক একজন গ্রীকের মন্ত্রণার রাজ্য শাদন করিতেছিলেন।
দিমেত্রিয়দ্ টিউটাকে পরিত্যাগপুর্বাক 'কর্মাইরা' নামক দীপ
রোমকদিগকে অর্পণ করিলেন। টিউটা নিরূপায় হইয়া রোমকদিগের প্রস্তাবিত সকল বিষয়ে সন্মতি দিলেন। এই প্রকারে
আদিরাতিক উপকৃল জলদস্যশ্ভ হওয়ার গ্রীকগণ অত্যন্ত সন্তই
হইয়া রোমকদিগকে ধন্তবাদ আপনার্থ দৃত পাঠাইল।

এই যুদ্ধ শেষ না হইতেই গলগণের সহিত আবার যুদ্ধ বানিল। গত ৪০ বংসর গলগণ শাস্তভাবে ছিল। আবার ইহারা উগ্রম্ধি ধারণ করিল। গলগণের পূর্বে আক্রমণ ও রোমের ধ্বংসদাধন মরণ করিয়া ইতালীবাসী প্রমাদ গণিলেন। দৈবজ্রেরা সাইবিলাইন প্রত্তক আলোচনা করিয়া কহিলেন, রোম তুইবার শক্র কর্তৃক আক্রান্ত হইবে। এবং ইহাও ঘোষিত হইল যে, তুইজন গলকে দোরামে জীবিত অবস্থায় গোর দিলে রোমের বিপদ কাটিয়া যাইবে। অবিলম্থে বিরাট্ সৈন্যদল সজ্জিত হইল। ১৫০০০০ পদাতিক ও ৬০০০ আখারোহী যুদ্ধার্থ চলিল।

ইট্রিয়ার অন্তর্গত টেলামন নামক স্থানে ভীষণ যুদ্ধ সংঘটিত হ'ইল (২২৫ খুঃ পুঃ)। ৪০০০০ গলনৈত্মের রক্তে সমরক্ষেত্র প্লাবিত হ'ইল। ১০০০০ গলনৈত্য বন্দী হ'ইল। রোমকগণ বোআই প্রদেশ হ'ইতে পো নদীর তীর দেশ পর্যান্ত অধিকার করিলেন। ২২৩ খুঃ পুঃ, রোমক কন্সল ক্লেমিনিয়াস্ নদী পার হ'ইয় অগ্রসর হ'ইলেন এবং ইনস্থারদিগকে একটী যুদ্ধে সম্পূর্ণ-রূপে পরাজিত করিলেন। এই সময়ে কর্ণিলিয়াস্ সিপিও এবং ক্লেজিয়াস্ মার্সেলান্ রোমের কন্সল নিযুক্ত হ'ইলেন। তাঁহারা ইনস্থারদিগকে ভাড়াইয়া পো-নদীর অপর তীরে রাজ্যবিত্তারের ক্রন্ত ধাবিত হ'ইলেন। মার্সেলাস্ শহতে ভিরিভোমেরাস্ নামক ইনসাবিরান সন্ধারকে বধ করিয়া তাহাদিগকে পরাজিত করি-

লেন। সিপিও তাহাদের রাজধানী মিলান অধিকার করিলেন।
তাহারা রোমের অধীনতা তীকার করিল। প্লানেনিরা এবং
ক্রিমোনার হুইটা রোমক উপনিবেশ স্থাপিত ছুইল (২১৮
খঃ পুঃ)। প্রত্যেক স্থানে ৬০০০ লোক উপনিবিষ্ট ছুইল এবং
রোম হুইতে আরিমিনিরাম নামক গলনগর পর্যাপ্ত রাজা প্রস্তুত
ছুইরা উক্ত ছান সকল রোমের সহিত সংযুক্ত হুইল। রোমের
রাজ্যপরিধি ক্রমে ক্রমে চারিদিকে প্রসারিত ছুইতে লাগিল।
উত্তরে আরস পর্বাত পর্যাপ্ত রোমের অরপতাকা উভিল।

সেই সমন্ন হামিলকার স্পেনে 'সাম্রাজ্যের ডিঙ্কি পত্তন কুরিয়া-ছিলেন। তাঁহার অভুত প্রতিভার তথার রাজ্যসীমা শীল্প বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। হামিলকারের অন্তঃকরণে রোমকদিগের প্রতি প্রবল বৈরভাব সর্বাল জাগালক ছিল ৷ তিনি স্থীয় নয় বৎসর বয়ত্ব পুত্র হানিবলকে ভারিময়ী বজ্ঞবেদী ম্পর্শ করিয়া শপথ করাইয়াছিলেন যে, যেন তিনি আজীবন রোমের প্রতি জাতবিদ্বেষ থাকেন এবং বৈরনিয়াভনে প্রাণপণ চেষ্টা করেন। ছামিলকার বালা হইতেই হানিবলকে যুদ্ধ বিভায় স্থানিকিত করিতেছিলেন। হানিবল পিতার প্রতিজ্ঞা এবং রণপাণ্ডিতা প্রভৃতি গুণের উপযুক্ত অধিকারী হইয়াছিলেন। হামিলকার স্পেনের অভ্যন্তরে ধীরে ধীরে রাজ্য বিস্তার করিতেছিলেন। ২২৮ খৃঃ পুঃ একটী যুদ্ধে হামিলকারের মৃত্যু হওয়ায়, তাঁহার আমাতা হাদ্ফবল দেনা-পতিত্ব গ্রহণ করিলেন এবং স্পেনে নিউকার্থেজ নামে এক স্থানর নগর স্থাপন করিলেন, উহার বর্তমান নাম কাটেজনা। তরুণ वग्रऋ शनिवन स्नानाग्रस्कत्र अस्य नियुक्त इहेरनन। २२५ थुः হাস্ফ্রবল একজন ক্রীতদাসকর্ত্ব গুপ্তভাবে হত হইলেন। তথন হানিবল সেনাপতি ও শাসনকর্ত্রপদ পাইলেন। হানিবলের অন্ত:-করণে সর্বাদাই রোমরাজ্য আক্রমণের ইচ্ছা বলবতী ছিল। তজ্জ্য তিনি অক্লান্ত পরিশ্রমে সৈয়াদিগকে স্থাশিক্ষিত করিতে লাগিলেন। হানিবল অন্তত প্রতিভাবলৈ স্পেন মধ্যক্ত সমস্ত জাতিদিগের সাহায্য লাভে কৃতকার্য্য হইলেন। একণে তিনি যুদ্ধের ছল খুঁজিতে লাগিলেন।

পূর্বে হাস্ডুবলের সহিত সন্ধিতে স্থিরীক্বত হইয়াছিল যে, এবো নদীর পূর্বেদীমা পর্যান্ত রোমকগণের অধিকারে থাকিবে এবং নদীর পশ্চিমপারে কার্থেজীর স্পোনের দীমাবদ্ধ হইবে। কিন্তু হানিবল এই সন্ধি অগ্রাহ্ম করিয়া ২১৯ খঃ পু: নিজ রাজ্যের বহিভূতি সেগান্টাম নগর আক্রমণ করিয়া ৮ মাস যুক্তের পরে অধিকার করিলেন। রোমকগণ মিত্র-রাজ্যের সাহায্যার্থ এতদিন ক্ছিই করিতে পারিল না। রোমকগণ হানিবলের নিকট সন্ধিতলের কারণ জিল্লাসাকরিয়া হইবার দৃত প্রেরণ করিলেন। হানিবল তাহাতে কোন

ম্পাই উত্তর দিলেন না। দিতীয়বারে রোমক-দৃত কিউ-কেবিরাস তাহার দিরসাণ খুলিরা হানিবলকে বলিলেন, "তোমরা শাস্তি বা যুদ্ধ, ইহার ভিতর কি ইচ্ছা কর"। হানিবল কহিলেন, "তুমি যাঞ্ছ ইচ্ছা তাহাই, দাও"। তাহাতে ফেবিয়াস্ বলিলেন, "তবে যুদ্ধ লও"। তথন কার্থেজীয়গণ সোংসাহে বলিরা উঠিল, "আমরা আনন্দের সহিত ইহাই গ্রহণ করিলাম।" এইরূপে দিতীর পিউনিক যুদ্ধের স্ক্রেশাত হল।

হানিবল সেগান্টাম অধিকার করিয়া শীতকালের कम्न निष्केकार्थस्य व्यक्ताशमन कत्रितनम এवः २১৮ यः शृः প্রারম্ভে বিরাট সৈত্তদল লইরা পরাক্রান্ত দিতীয় পিউনিক যুদ্ধ রোমরাজ্যের ধ্বংস সাধনের নিমিত্ত २>४-२०३ धृः श्ः श्रुन्तभर्थ याजा कत्रिर्दान। युक्तवा बां ब পুর্বে তিনি স্পেন এবং কার্থেজ রক্ষণের ফুলর ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। স্বীয় সহোদর হাসক্রবলকে স্পেন-রক্ষার ভার দিয়া একদল সৈতা কার্থেজ রক্ষার্থ আফ্রিকায় প্রেরণ করিলেন। এই সমস্ত ব্যবস্থা করিয়া তিনি ২১৮ খঃ পুঃ বসস্তকালে ৯০০০০ পদাতিক, ১২০০০ অখারোহী ও কতকগুলি হস্তী লইয়া ইতালী যাত্রা করিলেন এবং ৫ মাসের মধ্যে পিরিনীজ পর্বত অতিক্রম করিয়া রোণ-নদীতীরে উপস্থিত হইলেন। পিরিনীজ পর্বাতে অসভ্য জাতি সকলের সহিত যুদ্ধে তাঁহার অনেক সৈত দ্রাস হইরাছিল। রোমকগণ হানিবলের যুদ্ধবাত্রা শুনিয়া অবি-লম্বে একদল সৈনাসহ কন্দল পি-কাণলিয়াস সিপিওকে হানি-বলের পথ অবরোধ করিতে পাঠাইলেন। কিন্তু সিপিও মেসালিয়া পৌছিবার পুর্বেই হানিবল রোণ নদী উত্তীর্ণ হইয়া আান্ত্রস পর্ব্যতের সন্নিহিত হুইলেন। সিপিও হানিবলকে সেই স্থানে রোধ করা অসম্ভব বুঝিয়া রোমে প্রত্যাগমন করিলেন এবং তাঁহার সহোদর নেসিয়াস্ শিপিওকে স্পেন অধিকার ক্ষরিতে পাঠাইলেন। "এই কৌশলেই পরবর্ত্তী কালে রোম হানি-বলের হন্ত হইতে রক্ষা পাইয়াছিল। কারণ হানিবল স্পেন হইতে সাহায্য পাইলে রোমনগর সমলে ধ্বংস করিতে পারিতেন।

হানিবল বিরাট সৈভদলসহ নিজীকরদরে ত্রারোহ শৈলমালা এবং নিবিড় বনাস্থাদিত আরস্ পর্কতের মধ্য দিরা জ্বতবেগে ইতালীর অভিমুখে অগ্রসর হইতে লাগিলেন এবং অনতি বিল্লে সিসামাইন গলে আসিয়া পর্কত হইতে উপতাকার অবতরণ করিলেন। তাঁহার অতর্কিত ক্ষিপ্র আগমনে রোমকগণ বিমিত এবং জীত হইলেন। আরস্ পর্কতের তর্গম পথে গ্রমকালে হানিবলের বহুলৈন। ক্ষর প্রাপ্ত হইল। যথন তিনি উপতাকার আসিয়া সৈন্য সমাবেশ করিলেন, তথন তাঁহার বিরাট সৈনাদ্রলের কেবল ২০০০ প্রাতিক এবং ৩০০০ ক্ষা-

রোহী অবশিষ্ট ছিল। কিছুদিন বিশ্রাম করিয়া তিনি সৈন্য দিগের পথশ্রান্তি অপনোদন করিলেন।

এদিকে রোমক-সৈত্ত অগ্রসর হইয়া তাঁহার সমুখীন হইল। টিশিনাশ এবং টেবিয়া নামক স্থানে ছইটা ভীষণ যুদ্ধ ঘটল। হানিবলের নিউমিডিয়া অশ্বারোহীর ভীমবিক্রমে রোমক-**শৈশু ছিন্ন বিচ্ছিন্ন হই**রা পরাজিত হইল: গুরুতর্ব্ধপে আহত হইলেন। সিপিও পিছাইয়া প্লাসন্টিয়ার প্রাচীর মধ্যে আশ্রয় লইলেন। হানিবল পোনদী উতীর্ণ হইয়া যুদ্ধার্থ উপস্থিত হইলেন, কিন্তু রোমক-দৈন্য যুদ্ধে পরাব্যুথ হইল। সেই সময়ে সেম্প্রোনিয়াস্ নামক অন্যতর কন্সল সসৈন্যে সিপিওর সাহায্যার্থ আগমন করিলেন। রোমক-সৈনা সমর-সজ্জার সজ্জিত হইয়া হানিবলকে আহবান করিল। পক্ষে তুমুল সংগ্রাম চলিতে লাগিল। হানিবলের রণনৈপুণ্যে বিশাল রোমক-দৈন্য সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইল। কিন্তু শাত-কাল আগত হওয়ায়, হানিবল রোমের দিকে অগ্রসর হইতে পারিলেন না। দারুণ শীতের প্রকোপে তাঁহার বছদৈন্য বিনষ্ট হইল। একটা ব্যতীত সমস্ত হতী মৃত্যুম্থে প্তিত হইল। হানিবলের চকুর পীড়া হইয়া একটা চকু নষ্ট হইল। তথন তিনি শীত কাটাইবার জন্য ফিসালি নগরে গমন করিলেন।

সাভিয়াস এবং ক্লেমিনিয়াস এই বৎসর রোমের কন্সল নিযুক্ত হইলেন। ফ্লেমিনিয়াস্ পুনরায় সৈন্য লইয়া হানিবলের বিরুদ্ধে যাত্রা করিলেন। কিন্তু হানিবলের কৌশলে তিনি সদৈনো একটা গিরিসন্ধটে বন্ধ হইলেন, একটা ক্ষুদ্র পথের সন্ধান পাইয়া তিনি টাসিমিন হ্রদের তীরে সৈন্য সমাবেশ করিলেন। কিন্তু পশ্চাৎ হইতে শক্রর অস্তাঘাতে সহস্র সহস্র রোমক-সৈন্য প্রাণ-ত্যাগ করিল। কন্সলও প্রাণ হারাইলেন। বছসহত্র সৈন্য रेमना वन्मी कतिलन, किन्ह जाहात शक्क क्वल २००० रेमना বিনষ্ট হইল। হানিবল কেবল রোমের অধিবাসীদিগকে কারারুদ্ধ করিয়া অন্যান্য ইতালীয় সৈন্যদিগকে সম্মানে মুক্তিদান করিলেন। তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল যে, তিনি অন্যান্য কাতি-দিগের সহামুভৃতি লাভ করিয়া রোমের উচ্ছেদসাধন করিবেন, তক্ষনাই তিনি এই নীতি অবলঘন করিলেন। প্রক্লত প্রস্তাবে বচ জাতীয় লোক হানিবলের প্রতিভা এবং বীরত্ব দেখিয়া তাঁহার পক্ষপাতী হইল। কিন্তু অনেক বৈদেশিক আক্রমণ-কারীর প্রতি বিশেষ আশাস্থাপন করিল না। এই যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া হানিবল অবিলবে রোম আক্রমণ করিতে পারিতেন, কিছু তাঁহার অন্য উদ্দেশ্য ছিল। তিনি পূর্বাভিমুখে অগ্রসর হইয়া ভরবারি এবং অগ্নিমারা বছনগর ধ্বংসসাথ করিতে লাগিলেন। প্রই সমরে তাহার কেবদ ২৬০০০ পথাতিক ছিল, কিছ
রোমকপণ সহবোগী ভূপতিগলের সাহায়ে ৭০০০০০ সৈন্য
সংগ্রহ করিতে পারিতেন। হানিবন সনৈন্যে আপুলিয়ার শস্তলগ্রহ প্রবেশে গমন করিরা সুঠনাদি ছারা রোমের সহবোগি-রাজলগের সর্পনাল করিতে লাগিলেন। তাহার ধারণা ছিল, এইরপে
উপদ্রুত হইরা জনেকে তাহাকে রোমের বিরুক্তে সাহায় করিবে।
এই সমর ইদিলিয়াশ্ পলাশ্ এবং টেরেন্টিয়াশ্ ভারো কজল
নিযুক্ত হইরা সনৈন্যে আপুলিয়া প্রবেশে বারা করিলেন।
তাহাদের অহুপ্রিতিতে রোমকগণ আর একদল সৈন্যসংগ্রহ
করিয়া কমিশিয়া সেকুরিদ্ ছারা কেবিয়াশ্ মাল্পিনাশ্কে ডিক্টেটর
নিযুক্ত করিলেন। কেবিয়াশ্ কৌশলে হানিবলকে পরাজিত
করিতে মনস্থ করিলেন।

হানিবল আপিনাইন পর্কত অতিক্রম করিয়া কাম্পে-নিয়ার সমতলভূমিস্থিত সমৃত্ধ নগরাদি শুষ্ঠন এবং ধ্বংস ক্রিতে লাগিলেন। তথাপি ফেবিয়াস্ সন্মুখ-যুদ্ধে বিলম্ব ক্রিতে লাগিলেন। ফেবিয়ান কাম্পেনিয়ার গিরিস্কট অধিকার করিয়া মনে করিলেন, এই পার্বতাপথে হানিবলকে বিনষ্ট कतिर्दास । किन्न अद्भुक्ति भरत शामितन এই विभाग स्टेरक উত্তীৰ্ণ হইলেন। তিনি তংপূৰ্বে কাম্পেনিয়া পুঠন করিয়া বহ-সংখ্যক বৃষ ও গাভী অধিকার করিয়াছিলেন। রাত্রিকালে তিনি ২০০০ বুবের শুলে ছই ছইটী মশাল বাঁথিয়া সেই মশালে অগ্নি-প্রদান করিয়া, স্বীয় দৈনাগণকে ব্যাহিত রোমক-দৈন্যের অভিমুখে সেই বুষ্ণিগকে ভাড়াইতে কহিলেন। বুষ্ণণ শূলত্ব মশালালোকে জীত হইয়া চতুৰ্দ্ধিকে ছুটিতে লাগিল। রোমক-দৈন্য অসংখ্য প্রেজ্ঞলিত মশাল দর্শনে মনে ক্রিল, হানিবল অতর্কিত নৈশ আক্রমণে তাহাদিগকে বিনষ্ট করিবে। অবিলয়ে সক্ষিত হইয়া ব্যুহিত গিরিসভট পরিত্যাগ করিয়া বিপরীত দিকে ধাবমান বুমগণের পশ্চাতে অগ্রসর হইল। হানিবলও সেই স্পুযোগে নির্বিরোধে গিরিসন্কট অভিক্রম করিয়া আপুলিরার সমতলে পৌছিয়া শীতাবাদের জন্য জিরোনিয়াম নামক স্থানে শিবির সরিবেশ করিলেন। ধ: পু:) শীতকাল এই হানে অভিবাহিত করিয়া বসস্ত সমাগ্রম সমর্কজা করিতে লাগিলেন, কিন্তু থাদাদ্রবাের অভাবে তিনি এই স্থান হইতে বাত্রা করিয়া কানি নামক স্থানে স্নোমক-সৈনোর সন্মুখীন হইয়া শিবিরস্থাপন করিলেন।

পূর্ব্বাক্ত রোমক কল্সনমন ৮০০০ পদাতিক এবং ৬০০০ আধারোহী লইরা হানিবলের সন্ম্বীন হইলেন। হানিবলের পদাতিক ৪০০০০ এর অধিক ছিল না, কিছ তাঁহার ১০০০০ অধারোহী দৈনা সজ্জিত হইল। অফিদিয়াস নদীর দক্ষিণতীরে বিত্তীর্ণ প্রাপ্তরে বৃদ্ধ সংঘটিত হইল। এই কানির
যুদ্ধ স্বনিবিধাত। হানিবলের অভারোহী সৈন্য ভীমবিক্রমে বৃদ্ধ
করিতে লাগিল। রোমের বিশাল অমীকিনী একেবারে ধবংসপ্রোপ্ত হইল। রোমক-সৈন্য সম্পূর্ণরূপে পরান্ধিত হইল।

১০০০ রোমসেন্যের শোণিত-তরলে কানির সমরক্ষেত্র ভীবণ
দুশ্ধ বারণ করিল। ক সল এনিলিরাদ্, পূর্ববংসলের ক্ষাল্মনর ও ং
আখারোহা সেনাধাক মিনিউনিরাদ্, ৮০ জন সেনেটের সভ্য ও
বছসংখ্যক সেনাধাক মিনিউনিরাদ্, ৮০ জন সেনেটের সভ্য ও
বছসংখ্যক সেনাধাক অই যুদ্ধ পঞ্চম পাইলেন। অন্যতর
ক্ষাল ভারো কতিপর অধারোহী সৈন্য লইরা ভেম্পেরার
আল্রম লইলেন। বছসংখ্যক রোমক-সৈন্য বন্ধী হইল।

হানিবল এই সমরে ইচ্ছা করিলে অনায়াসেই রোম অধিকার করিতে পারিতেন। কিন্তু তিনি তাহা করিলেন না।
তজ্জনা অনেক ঐতিহাসিক তাঁহার নীতির নিদ্দা করিয়াছেন।
হানিবলের অধীনত্ব সেনানী মহর্মকা রোমে অগ্রসর হইবার
কথা বলিলে, হানিবল বলিয়াছিলেন, "তুমি অখারোহী সৈন্য
সংগ্রহ কর, আমরা ৫ নিনের মধ্যে কাপিটোলে বসিয়া ভোজন
করিব।" কিন্তু নগর অবরোধে তাঁহার সৈন্যগণ অনভ্যন্ত থাকার
তিনি তাহার আয়োজন করিতে লাগিলেন এবং আপুলিয়ায়
বসিয়া রোমের সহযোগি-রাজাদিগের গতিবিধি পর্যালোচনা
করিতে লাগিলেন। অবিলম্পে তাঁহার মনোর্থ সিদ্ধ হইল।
সামনাইটগলের অধিকাংশ আপুলিয়ান, লুকানিয়ান, এবং
ক্রাটয়ানগণ কার্থেজের পক্ষ অবলম্বন করিল। ইতালীর দক্ষিণভাগের অধিকাংশই রোমের বিরুদ্ধে কার্থেজের পক্ষাশ্রম করিতে
কৃতসক্ষম হইল। লাটিন উপনিবেশগণ কেবল দৃঢ়ভাবে রোমের
সহারতা করিতে লাগিল।

হানিবলও সহযোগী রাজাদিগকে রোমের হন্ত হইতে নিঙ্গতি পাইবার জন্ত গৈছ পাঠাইরা সাহায্য করিতে লাগিলেন। হানিবল সামনিয়াম্ হইতে যাত্রা করিয়া কাঁশোনিয়া পৌছিলেন এবং তথাকার প্রসিদ্ধ নগর কাপুয়া অধিকার করিলেন। নগরবাসিগণ বিনা বাকারারে নগরছার উল্লোচন করিয়া উলোক অভিনজন করিল। এইছানে তিনি শীতকালের জন্ত শিবির স্মিবেশ ক্রিলেন। এই পর্যন্ত পিউনিক যুক্তর আগতলা। এইকালে হানিবল স্ক্তেভাবে সাফল্য লাভ করিয়াছিলেন।

বাণিজ্ঞা-সমূহি, বিলাসবৈত্তব, শিল্প-বিপ্রানের উল্লিভ এবং
সাধারণ ঐশব্য কাপুরা নগরী সর্বাংশে রোমের সমকক্ষ ছিল।
রোমের আলকারিকগণ এবং বিখ্যাত ঐতিহানিকগণ রহভাছলে লিখিয়াছেন যে,
বিলাস বাত্যাশোলিত স্থুখন্পর্শে হানিবলের
সৈক্ষ্যণ অনেকাংশে চূঢ়তা ও উদ্ধন হারাইরা ছিল। যাহা হউক,

য়েম-সভিজ্ঞা

बारे मगरा पृष्ठ व्यापात मृजम जान धारण क्रिका । हामिनल शूर्स-নীতি অমুসরণ করিতে লাগিলেন। জোমের ক্রথোক্তিবিসের বারা রোমের ধ্যাসনাধন করাই ভাঁহার ক্রা উল্লেক্ত ভিজ।

केर नमत रहेटच द्यारमत युक्तीकिश्च नुक्रम व्यवामीटक श्रीत-চালিও হইল। রোমকাশ চতুর্দিকে সৈত পাঠাইরা দেশ কল कतिएक गार्गिरनम् । अवस्थितहार ध्यानातम् व वक्ष माना कोनन অবলঘন করিলের ৷ ভার্মেল ও লেনে নৈক পাঠাইরা ভগার হানিবলের ক্ষতি করিছে সকলে বন্ধ পরিকর হইলেন। হাত্রিকাও রেমের নহযোগীদিগের সাহায্যার্থ ইতালীর একপ্রান্ত হইতে অন্ত প্ৰান্ত পেনে আধিপতা বিভান করিতে লাগি-्राजन । २०६ पुर शून तात्र महानगत चात्रक हरेन । किरियान এবং সেত্যোনিরাস নামক কলালগয় বৃদ্ধ সকল করিতে লাগিলেন। হানিবলও টকাটা পর্বতে ব্যুহ গঠন করিলেন। এইভানে ভিনি ইতালীবাসী সাহাক্ষায়ী রাজগণের অপেকা করিতে লাগিকেন। কার্থের হইতেও অবারোহী সৈম্মের জন্ম তিনি প্রতীকা করি-লেন। এই সময়ে নোলা নামক স্থানে একটা ক্ষুদ্র যুদ্ধে তাঁহার অনেকগুলি সৈত্ত কর প্রাপ্ত হইল। টিফাটার অবস্থানকালে जिनि ठर्जिक् रहेर्ड माहाग आश्र रहेर्ड मानिस्न। गाकिस्न-পতি ফিলিপ ও সাইরাকিউজ রাজপুত্র হীরোনিমাস হানিবলের নিকট দুত পাঠাইয়া সাহায্য করিতে চাহিলেন । এই প্রকারে রোমের বিরুদ্ধে ছইটা পরাক্রান্ত রাজ্য যুদার্থ প্রস্তুত হইলেন।

२>৪ प्रः शृः क्वित्राम् अभार्यनाम् शूनक्वात कन्नन नियुक्त হইলেন। হানিবল আপুলিয়া হইতে টিফাটার গমন করিয়া কাপন্নানগরী রক্ষার উপায় দেখিতে লাগিলেন। তিনি পিউ-টোলি অধিকার করিবার সন্ধন্ন করিতেছেন, এমন সময়ে টরে-ন্টাম নগর অধিকার করিবার এক স্থামোগ হইল। ভদমুসারে ভিনি অবিলয়ে ভদভিমুখে বাতা করিলেন। রোমক-সৈন্তও উরেন্টামে পৌছিরা ছর্গরকা করিতে লাগিল ৷ হানিবল পুনরায় শীতাবাদের জন্ত আপুলিয়ার ফিরিয়া আসিলেন। ২১৩ খুঃ পূ: গ্রীমকালে সিদিশিতে বৃদ্ধ আরম্ভ হইল। একদল কার্থেনীয় নৈক্ত সিনিলিতে আনিয়া যুদ্ধ উপস্থিত করিল। রোমক-সৈঞ্জের किव्रमः भ तिनिनिष्ठ गारेन। ইতিমধ্যে উর্বেণ্টাম নগরের इटेअन अधिवानी विधानपां क्लाभूर्यक शानिवनत्क नगत्र नमर्भन क्तिएक नक्क क्रिन। किंख एर्ग मरश त्रामक-रेमक शाकात शानियम जाशामिरशंत्र किंद्रहें कतिराज भाविरमान मा।

गारेताकिউ अत ताका शिरता तामकितिगत मित्र हिर्मित। কিছ তাঁহার পুত্র হীরোনিমাস ভিন্ন প্রকৃতির লোক। তিনি রোমের বিক্রমের কার্থেকের সাহাব্য করিতে সম্বন্ধ করিয়া-ছিলেন। ১৫ মাদ রাজ্যত্বে পরে তিনি শপ্তবাতক বারা হত

হইলে সাউনাকিউজে সাধারণতত্ত্ব সংস্থাপিত হইল 🕒 বোৰ 🧐 কার্থেক উভারই ইহার আধিপত্য লাভে সমুংক্রক হই-লেন। অৰ্শেষে রোমকগণ প্রবল হওরার, হানিবলপ্রেরিক কার্থেনীর প্রতিনিধিছর এই পদাইডেস্ ও হিপোক্রেটিস্ পদাইরা লিওন্টিনি নগরে প্রস্থান করিলেন। এই সময়ে কলল মার্সেলাক্ দলৈকে নিদিলিতে উপব্লিত হইলেন (২১৪ খঃ পুঃ)। জিনি অবিদৰে দিওণ্টিনিতে হানিৰদের প্রতিনিধিংজের সহিত যুদার্থ যাতা করিলেন। এই যুদ্ধে তিনি জয়ণাভ করিয়া লিওন্টিনি অধিকার করিলেন। তিনি অধিবাসীদিগকে কমা করিলেন, কিছ ২০০০ পলাতক রোমকসৈন্যের প্রাণদণ্ড হইন। ইহাতে मिनिनिवामी रमनाशन ভीত ও विवक रहेगा পनावनश्रक्षक কার্থেজীয় প্রতিনিধি হিপোক্রেটিসের আশ্রয় দইল। সাইরা-কিউল্লের অধিবাসিগণও ঐ পক্ষ আত্রয় করিয়া কার্থেন্দ্রীয়-দিগকে নগর হার খুলিয়া দিল।

মার্সে লাস অগ্রসর হইয়া স্থল ও জলপথে সাইব্লাকিউজ অব-রোধ করিলেন। রোমকগণ প্রাচীর ভঙ্গের নিমিন্ত নানাপ্রকার যদ্র ও কলকোশলের অবতারণা করিয়াছিলেন, কিন্তু ভুবন বিখ্যাত গণিতজ্ঞ পণ্ডিত আর্কমিদিদের প্রতিভাবলে সমস্ত চেষ্টাই ব্যর্থ হইয়াছিল। অনেক ঐতিহাসিক কহেন যে, বুহৎ কাচ (আতসী)-খণ্ডে প্রতিফলিত স্থ্যকিরণ দারা তিনি রোমক্দিগের বছ সংখ্যক রণতরী দ্বধ করিয়া দিয়াছিলেন।

বৈজ্ঞানিক বৃদ্ধিবলের নিকট আমুরিক বাছবল ছার মানিল। রোমক-দৈতগণ আর্কমিদিদের আহাজ দগ্ধকারী এঞ্জিনের ভরে বিমৃঢ় হইয়া পড়িল। মার্সেলাস্ তথন इन १८० प्रकृतिक उस्त अवत्त्रां कतित्वन । রাত্রিতে যৎকালে সাইরাকিউজের তুর্গন্ত সৈন্যগণ মহোৎসকে ভোজন প্রবৃত্ত, মার্সে লাস্ অভুত কৌশলে সেই নৈশাদ্ধকার ভেদ ক্রিরা মই লাগাইরা হর্প-প্রাচীর উল্লেখন করিতে লাগিলেন এবং অতর্কিতভাবে আক্মিক আক্রমণে এপিপোলাই অধিকার করিলেন। এদিকে মহোৎসাহে নগরের অন্তান্ত আংশে লুঠন . . চৰিতে লাগিল। এপিসাইডেদ্ অবিলয়ে এই ছুৰ্গ পরিত্যাগপুর্বক আক্রাডিনা এবং ইউরেলাস হর্ণে আশ্রয় সইলেন। সাসে লাস্ ইউরেশাদ্ অধিকারপূর্বক আক্রাডিনা অবরোধ করিলেন। হিমিকো এবং হিলোক্রেটিনের অধীনত্ব কার্থেজীর সৈতা চুর্গরক্ষার্থ দুমাগত হইল: কিন্তু মহামারী উপস্থিত হওয়ার ক্রুসংখ্যক কার্থেজীর সৈন্যের মৃত্যু হইল। মার্সেলাস্ কররা করিয়া তুর্গ অধিকার করিলেন। নগরবাসিগণ তুর্গদ্বার পুলিয়া দিল। त्रांभकाग नगत मूर्फन कतिएक नागिन। संकारन द्वासकरेमका " জীবণ কোলাহলে নগায় দুঠন করিতেছিল, তৎকালে আর্কমিনিক

শ্বিভেছিলেন। একজন রোমক-দৈয় কর্ত্ব জিজানিত হইরাও
ক্রিভেছিলেন। একজন রোমক-দৈয় কর্ত্ব জিজানিত হইরাও
ক্রেমকদৈয় তাঁহার শিরুদ্ধের করিয়াছিল। মার্সোন্য তচ্ছ্বলে
ক্রেমকদৈয় তাঁহার শিরুদ্ধের করিয়াছিল। মার্সোন্য তচ্ছ্বলে
ক্রেমকদৈয় তাঁহার শিরুদ্ধের করিয়াছিলেন এবং মহাসমারোহে
ক্রেমকদের সমাধি দিরা সম্ভাপ পরিবারবর্গকে বহু ক্রম্প প্রদামপূর্কক
সাহায্য করিয়াছিলেন। আর্কমিদিনের সমাধিভত্তে ভচ্টাবিত
রৈবাপনিতের সিরাক্ত সকলের প্রতিকৃতি এবং বৃত্তস্থাতিছেনের
চিত্রাবলী অভিত ছিল।

সাইরাকিউদ্ধ প্রাচীনকালে বাণিদ্যান্তাত বিলাস-বৈভবে দিশের প্রসিদ্ধি লাভ করিরাছিল। নির্মিবলিজ ভ্রনমোহন চিত্রাবলীতে এবং রমণীদ্ধ ভাষর্থ্যর হুকুমার কার্লকার্থ্যে ইহার চিত্রশালিকা অমরাবতীর উপমা-ছল ছিল। মার্সেলাস্ নগরলুঠন করিয়া আশাতীত ধনরত্ব মণিমুক্তা প্রাপ্ত ছইলেম এবং নির্ম্লাত অপূর্ব্ধ দ্রব্য সামগ্রী সকল রোমের দেবমন্দিরের শোভনার্থ লইয়া গোলেন। ইহার পূর্ব্বে প্রাচীনকালে কেহ শিশ্লবিক্লিভ ভাম্বর্থ্য চিত্রাবলী সংগ্রহ করিতে চেষ্টা করে নাই।

রোমকদৈশ্য সাইরাকিউজ জার করিয়া অবিলম্বে সমস্ত সিসিলিতে স্থীয় আধিপতা বিত্তার করিল। কিন্তু অগুনিকে রোমের বিশেষ চুর্বটনা ঘটল। সিপিও লম স্পেনের যুদ্ধে প্রাণ হারাইলেন। ইহাঁরা স্পেনে অনেক যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া হানিবলের সহোদর হাদ্দেবলকে পরাজিত করিয়াছিলেন এবং তাঁহার ইতালী গমন প্রতিরোধ করিয়া হানিবলের সাহায্যপ্রাপ্তি বিফল করিয়াছিলেন। তাঁহারা অরানিনের মধ্যে কার্থেজীরদিগকে স্পেন হইতে বিতাড়িত করিবেন, এরপ উপায় উদ্ভাবন করিয়া-ছিলেন। কিন্তু তাঁহারা পৃথক্ভাবে যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিয়া উভয় সেনাপতিই চুইটা যুদ্ধে বুগপৎ প্রাণত্যাপ করিলেন। হাদ্দেবল একণে বিপন্মুক্ত হইয়া হানিবলের সাহায্যার্থ ইতালী গমন করিতে সম্ব্র করিলেন।

এদিকে ২১২ খৃঃ পৃং, কল্পলয়য় এপিয়াস্ ক্লডিয়াস্ এবং কিউ

ছাবিয়াস্ কাপয়া উয়ায় কয়িতে যাত্রা কয়িলেন। হানিবল

সস্বীন হইলে ভাঁহায়া কিঞ্চিৎ হটিয়া আসিলেন। হানিবল

টয়েন্টামের গুর্গলাভের জন্ম পুনরায় তথায় বাত্রা কয়িলেন।

তথায় তিনি ২১১ খৃঃ পৃঃ এয় শীতকাল য়াপন কয়েন। কলল
ছয় এই স্থাবারে কাপয়া আক্রমণ কয়িয়ায় সকয় কয়িলেন

এবং অবিলবে হই প্রেণী সৈন্যে নগয় বেয়য়া কেণিলেন।

এই সংবাদে হানিবল ক্রতবেগে রোমকলৈক্রেয় সম্বীন

ছইলেম। গুর্গছ সৈল্লগণ্ড ভিতর হইতে ভাঁহায় সাহায়্য

ছয়িতে লাগিল। বাহির ও অত্যক্তর হইতে ভাঁক্রমণ কয়িয়াও

रामिनन द्यामक-पार्टाक्षक कविष्क नाविद्यान ना। प्रथम किमि स्त्रीय अधिकात कतियांक मांत्ररम बाद्या अतिरम्भ धारः ভাবিলেন, ইহাতে কললবর রাজধানী सङ्गार्थ व्यवस्थ व्यवस्थाध ভ্যাগ করিবেন। কিন্তু ভাহাতে কোন কল হুইল না। হানিবল নলৈভে রোবের সিংহছারে জাসিরা উপভিত ছইলেনা রোমবাসী रामिनरनम् भागमत् कीक वरेरन्छ गूर्द भन्नाद्रशम् वर्षेत्र मा ভংকালে ক্লোমের আচীরাভ্যস্তরেও অনেক সৈত্ত ছিল 🕸 এরিকে साविवान सार्था अवरबार्थय विरूप गुरुवा कविवा असमन লৈভগৰ রোম বাতা করিবেন। সানিবল রোম আক্রমণে অসমর্থ হইলা চতুঃপার্থবতী স্থান স্কল পুঠন এবং অভ্যাচার করিতে গাগিলেন। অবশেবে ডিনি হতাণ হইয়া প্রত্যাগরনে वाश इंहेरनम । जिनि चीत वाहिमी त्नवाहेम अवश् नामनाहेरे প্রাদেশের মধ্য দিয়া গমন করিতে লাগিলেন। কিছু তিনি পুনর্মার কাপুরা নগরের সাহায্যার্থ গমন ক্ষাত্তে অক্ষম হইলে সেই নগর-বাসিগণ রোমকদিগের নিকট আল্ব-সমর্পণ করিল। বিজ্ঞাহিগণের প্রাণ দও হইল। সম্রান্ত ব্যক্তিগণ কারাক্রম হইলেন এবং অবশিষ্ট অধিবাসিগণ ক্রীতদাসরূপে বিক্রীত হইতে লাগিল। অতুল क्षेत्रर्ग ७ विलामदेवछवपूर्ग काणुद्रानगती महाधानात्न पत्रिगछ इहेन। (२३) थुः शृः)

তৎপরে রোমক কলল মার্সেলাস্ সালাপিরা অধিকার করিলেন। কিন্তু হার্ডেনাইএ নামক স্থানে করিবানের হিন্তু পরাজর লাভ করিল। বাই ইউক, রোমের পুনর্বার উত্তরোত্তর উরভিতে বিলোহী সহবোগিগণ পুনরার রোমের পক্ষ আত্রর করিতে লাগিল। ২০৯ শুঃ পুঃ গ্রীয়কালে সামনাইট ও লুকামিরগণ রোমের সহিত পূর্ককব্যে বন্ধ হইল। এনিকে চুর্গত্ব সৈন্তের বিশ্বাসবাতকতার টরেন্টাম নগর রোমকনিগের অধিকত হইল। ফাবিরাসের রণকৌশলে রোমকর্গণ পুন: শুন: ক্লতকার্য হইতে লাগিলেন। ক্লমিবল এবন সন্মুণ যুদ্ধে বিপাশকা করিরা মগরানি পূর্ভনপূর্কক দক্ষিণ ইতালীতে লিবির সরিবেশ করিরা হাসক্রবলের সাহাব্যপ্রত্যাশার দিন গণিতে লাগিলেন। এইরলে ২০৭ খুঃ পুঃ আনে ইতালীতে পিউমিক যুদ্ধ অবসানপ্রার হইরাছিল।

সিপিওবারের মৃত্যুর পর, হাস্ক্রবল ক্রত গতিতে সহোবরের সাহাযার্থ ইতালী অভিমূপে যাত্রা করিলেন। ২০৭ পৃঃ পুঃ বসত কালে তিনি আরস্ পর্বত উল্লেখনপূর্বক ইতালীর সমস্থানিতে অবতীর্গ হইলেন। এই বংসর রুডিরাস্ নিরো এবং এর বিভিন্নাস্ কলল নির্ক্ত হন। নিরো সসৈতে বন্দিশ ইতালীতে হানিবলের সক্ষীন হইলেন এবং লিভিনাস্ হাস্ক্রবনের গতিরোধ করিতে আরিমিনিরামে বাত্রা করিলেন। গ্লগ্র হাস্ক্রবলের গতিরোধ করিতে

করিতে লাগিল। তিনি শীর শীর ইতালীর মধ্যে গমন না कतिका मार्गिकेश अधिकारिय बना समझ महे कब्रिए नाशिस्त्रन. অবশেৰে তিনি খীয় ভ্ৰাতা হানিবলকে তাঁহার সহিত আধি য়া স্বানৈ সমিশিত হইবার স্বন্ধা মুক্ত পাঠাইলেন। কিছু সেই দূত ও সমত চিঠিপত্র নিরো কর্ত্ব গুত হইল। নিরো এই সুযোগে অবিশবে ৭০০০ সৈন্য লইবা হাসক্রবলের অভিমুখে ক্রতবেগে বাজা ভরিবেন। হানিবল এই সংবাদ পাইবার পুর্বেই কলভ্র স্থিলিত সৈন্য স্ট্রা হাস্ফ্রবলের স্থুখীন रहेराना । निरातंत्र अद्यान जपाय रानियम भूर्त्स विदूरे बानिए भारतम मा । निरता ९ विरंत २८० मारेन अथ शांक्ति। निष्ठिदारमह সহিত নিশিত হইলেন। কার্থেঞ্জীর সৈন্যগণ তাহার আগমন সংবাদ জানিতে পারিদ না। একদিন বিপ্রাম করিয়া উভয় কলবে যুদ্ধে অগ্রসর হইলেন। হাস্ফবল ছইরূপ যুদ্ধভেরী ত্রনিরা অনুমান করিলেন যে হানিবল পরাঞ্জিত হইয়ছেন এবং কন্দাৰৰ মিলিত হইৱাছেন ৷ জন্জন্য তিনি যুদ্ধে পরাবাধ হইৱা পশ্চাতে প্রত্যাবর্ত্তন করিতে লাগিলেন। কিছু রোমকলৈন্য তাঁহার অমুগমন করিল। তখন তিনি নিক্সপার হইরা মেটোরাস নশীর দক্ষিণ তীরে সৈন্য সমাধেশ করিলেন। ভুমূল যুদ্ধ সংঘটিত হইল। হাস্ক্রবল অত্যন্ত বীরত এবং রণপাণ্ডিতা প্রদর্শন ক্রিতে লাগিলেন। ভীমকর্মা হাস্ক্রবলের ভন্নাবহ যুদ্ধে সংঅ नस्य त्रामकरेनना धनानाती रहेन। भारत युद्ध कवलाएखन मञ्जावना नार प्रिवेश रामान्यम, राभिनकारतत्र भूरावत वार हानिवरमत मरहानरतत्र উभयुक्त मृङ्या नाएक छै९न्स्क हहेरन,न। তথন তিনি বজ্ঞমুষ্টিতে তরবারি হত্তে রণস্থলে ভীম পরাক্রমে শক্রসংহার করিতে করিতে সমুধ যুদ্ধে প্রাণবিসর্জন করিলেন। তাঁহার পৃষ্ঠে একটাও অন্তলেখা ছিল না। কলল নিরো হান্-জ্রবলের ছিল্ল মন্তক লইয়া বিচ্যাদ্বেগে আপুলিয়ায় হানিবলের শিবির সমীপে যাত্রা করিলেন এবং শিবির মধ্যে ছিন্নমুগু নিকেপ क्तिज्ञा होनक्रवरनत পत्रांबद्ध ও मृङ्ग होनियनरक छालन कत्रिरनन । তদ্বনৈ হানিবল মর্বভেদি বিলাপ করিরা বলিরাছিলেন, "আমি বানিরাছি, কার্থেকের চ্র্ডাগ্য আসর প্রায়।"

মেটোরাসের বৃদ্ধে রোমকৃগণ পুনরার ইতানীর আধিপত্য প্রাপ্ত ইইলেন। হানিবল সন্মুধ মৃদ্ধ বা অদেশ প্রত্যাগমন অসম্ভব মনে করিরা বিভিন্ন স্থানহিত সৈঞ্চসংগ্রহ করিরা পর্কত-পরিবৃত ফ্রটরাই নামক স্থানে দৃঢ়ভাবে শিবির সন্নিবেশ করিরা ৪ বৎসরকাল অবস্থান করিলেন। এবার পিউনিক বৃদ্ধক্তর পরিবর্তিত হইল। আফ্রিকা ও শ্পেনে বৃদ্ধ চলিতে মাগিল। পূর্বে উক্ত হইরাছে, সিপিও ২১২ ঝঃ প্র্

ध्यम्प बद्धः शाश्च इरेन्ना जन्म बन्नामरे भीर्यावीर्या ज्यान्त्र्या পরিচয় প্রদান ক্রিলেন। রোমবাসীরা তাঁহাকে দেবতার ৰরপুত্র ৰশিরা বশিরা অভিহিত ক.রভ বুজের ভতীয় বা এবং এ সম্বন্ধে তাঁহার মনেও এরূপ ধারণা ছিল যে, দেবতারা তাঁথাকে সমস্ত কার্য্যে ٠٠> ﴿ وَ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ পরামর্শ দিরা থাকেন। পরবর্তী রোমের ইতিহাস ইহাঁর উচ্ছল কীৰ্ত্তিতে উদ্লাসিত। ইনি সপ্তদশ বংসর বর:ক্রমকালে ২১৮ শ্বঃ পৃ: টিলিনাসের ভীষণ বুদ্ধে পিডার প্রাণরক্ষা করিয়া-ছিলেন। কানির রণক্ষেত্রেও তিনি ট্রিউনল্লপে যুদ্ধ করিয়া-ছিলেন। একংশ তিনি আপিরাস ক্লডিরাসের সহিত্ স্পেনে সৈঞ পরিচালনে নিযুক্ত হইলেন। এই সময়ে রোমের প্রো-ক্ষালের পদ শৃক্ত হওরায় ২৪ বৎসর বরম্ব সিপিও উক্ত পদের প্রার্থী হইলেন। ২১০ খঃ পৃঃ তিনি স্পেনে উপস্থিত হইলেন এবং দেখিলেন তদানীন্তন কার্থেজীয় সেনাপতি বার্কাপুত্র হাস্ক্রবল, জিস্গোপুত্র হাস্ক্রবল এবং মাগো এই তিন জনের মধ্যে পরম্পরে শক্রতা বিভ্যমান রহিয়াছে। কার্থেন্সীয় স্পেনের রাজধানী নিউ-কার্থেন্স অধিকার করিতে नक्त कतिरनन। अविनास छैरा छारात रखगछ रहेन। এই নগরের অভ্যন্তরে যুদ্ধোপকরণ এবং খাদ্যদ্রব্য প্রচুর পরিমাণে দক্ষিত ছিল। সিপিও নগরাধিকার করিয়া বন্দিগণের প্রতি বিশেষ সন্থাবহার করিলেন। তাঁহার বীরত্ব এবং সন্থাবহার দেখিরা স্পেন-স্দারগণ কার্থেকের পক্ষ পরিত্যাগ পূর্বক তাঁহার পক্ষ অবলম্বন করিল এবং মাণ্ডোনিয়াস ও ইভিবিলিস নামক পরাক্রান্ত রাজ্যদম সিপিওর পক্ষাশ্রম করিয়া যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হইল। হাস্ক্রবল গোরাডালকুইবার নদীতীরবন্তী বিকুলা নামক নগর সন্নিধানে সৈঞ্জু সমাবেশ করিলেন। কিন্তু এই স্থানের যুদ্ধে তিনি সিপিও ক্রুক সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। ইহার পরে ইনি হানিবলের সাহাব্যার্থ ইতালীতে যাইরা মেটোরা-সের যুদ্ধে নিহত হন। সিপিও সমস্ত স্পেন জর করিতে ইচ্চা করিলেন। পর বংসর পুনর্কার বিকুলার ভরত্বর যুদ্ধে মাগো এবং জিদ্গো-হাস্ক্রবলকে সম্পূর্ণরূপে পরাভূত করিলেন। কার্থেন্সীর সেনাপতিহয় গেড্স নামক এক প্রাচীন ফিনিকীয় নগরে আশ্রর লইলেন। স্পেনের অধিবাসিগণ রোমের জর বোষণাপুর্বক, সকলেই সিশিওর শরণাপর হইল। ভাহার। निर्णिश्व वीव्रक, विक्रंकम अन्य नम्ब-वावशास्त्र मुख शहेवा পढ़िन।

নিশিও এক্ষণে আফ্রিকান্থ কার্থেনীয়নিগকে পরান্তর করিবার সক্তম করিতে লাগিলেল এবং অবিলব্দে তথার গমন করিরা নিউমিডিয়ার স্নাক্ষণেক সহিত সভাবস্থাপন করিলেন গ নিশিওস আকার সমৃত্ধ প্রাক্ষতা এবং বৃদ্ধিতার মুগ্ধ হইরা

্সকলেই তাঁহার সহিত সধাসতে আবদ হইন। তিনি পশ্চিম নিউমিডিরার মেসালিরাবিপভির পুত্র মেনিনিসার সহিত বছড় श्रीपन कदिरमन। এইরূপে তিনি পূর্বে নিউমিডিরারাজ সাইকান্তের মিত্রতা লাভ করিলেন। কিন্তু তৎপূর্বে জিন্দুগো সাস্ক্রবলও সেই উদ্দেশ্তে ভবার গমন করিরাছিলেন। সিপিও তাঁহার সহিতও বন্ধভাবে অবস্থান করিতে গাগিলেন। জিন্-গোর সফোনিস্বা নারী এক পরমা ফুলরী ক্সা ছিল ৷ সাইফাল্প ভাহার রূপনাবণ্যে মুগ্ধ হইরা তাহাকে বিবাহ করিলেন। অগত্যা সিপিও সাইকাল্পের সাহায্য হারাইলেন। স্পেন **হ**ইতে সিপিওর **অমু**পন্থিতিতে বিষম বিদ্রোহ উপন্থিত হইল। সিশিও অবিলম্থে তথায় গমনপূর্বক ইলিটার্জিস্ নামক নগর-বাসীদিগকে ভয়ানক শান্তি প্রদান করিয়া বিদ্রোহানক নির্মাণ এবং অবিলম্বে গেড্স অধিকার করিলেন। ম্পেন হইতে লিগারিয়া গমনপূর্বক হানিবলের সাহাব্য করিতে প্রকৃত প্রস্তাবে ম্পেন সম্পূর্ণরূপে সিপিওর দিপিও ২০৬ খৃঃ পৃঃ রোমে গমনপূর্বক কন্সলপদের প্রার্থী হইলেন এবং ২০০ খ্র: পূর্ব্বাব্দের জন্ত কন্সল নিযুক্ত হইয়া আফ্রিকায় যাইয়া পিউনিক যুদ্ধের শেষ করিতে চাহিলেন, কিন্তু প্রবীণ কন্সগদ্ম তাহাতে সম্মতি দিলেন না। তথন সিপিও সিসিলি জয় করিবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন, কিন্ত সেনেট তাঁহাকে সৈম্ম দিতে অনিচ্ছুক হইলেন। অন্তত প্রতিভার শত দহস্র রোমক যুবক স্বেচ্ছাপ্রগোদিত হইয়া যুদ্ধার্থে অগ্রসর হইল। সেনেট ইহা নিবারণ করিতে পারিলেন না। সিপিও সিসিলিতে যাইয়া বুদ্ধের উচ্ছোগ করিতে এদিকে রোমে তাঁহার শত্রুগণ তাঁহাকে কিরিয়া আনিবার জন্ম সেনেটকে উত্তেজিত করিতে লাগিল। সিপিও গ্রীক-সাহিত্যে অম্বরক্ত এবং অত্যন্ত বিলাদী ছিলেন, তজ্জন্ত অনেক প্রাচীন রোমক তাঁহাকে ভালবাসিতেন না। তাঁহার শত্রুগণ সংবাদ দিল যে, সিপিও সিমিলিতে বসিয়া বিলাসলোতে ভাসিতেছেন, তজন্য তাঁহাকে অবিলবে রোমে • আহ্বান করা উচিত। কিন্তু সেনেট তাঁহাকে ফিরাইতে সাহসী না হইরা অসুসন্ধানের নিমিত কমিশন পাঠাইলেন। তাঁহারা ষাইয়া সিপিওর যুদ্ধোঞ্চোগ এবং অভিনব রণকৌশল দেথিয়া বিশ্বিত হানরে ভূরসী প্রাথসা করিলেন। তথন সেনেট তাঁহাকে ৰবেশে প্ৰত্যাগমনের পরিবর্তে আক্রিকায় হাইয়া যুদ্ধ করিতে चारतन पिरतन। ज्यस्त्रादा २०८ मृः भूसीरम निभिष्ठ निनि-প্ৰিয়াম হইতে যাত্ৰা ক্রিয়া আক্রিকার উপকূলে উটকা নামক স্থানে অবভরণ করিলেন। কার্থেকীর নৈন্য নিপিওর अर्था अण्डिकी विम्ला शम्करलब क्षीत्म পরিচালিত হইन

এবং তাঁহার স্বামাত সাইকাল সাহায্যার্থ সার্থেরের প্রক্রের ক্রিতে লাগিলেন। ২০৩ বঃ পূর রীতিমত ক্রারত হইন। মেসিনিনা পূর্বা সৌহত অহসারে সিশিওর নিক স্বব্যক্ত ক্রিলেন।

গভীর নিশীবে নিশিও কার্যেকীর শিবির আক্রমণপূর্বক অগ্নি धाराम क्रिएमन । गम्छ निवित्र खन्नीकुछ हरेग । अधिकारन कार्यभीत रेनना उत्रवाति ७ अधिमूर्य भीतम विश्वभन कतिन। शंगक्कवन पूनर्सात्र जात्र धक्नन रेमना नहेत्रा महिकारसङ् माहारण যুদ্ধার্থ প্রস্তুত হইল। কিন্তু দিশিও ও মেদিনিগায় বিলিত নৈন্য তাহাদিগকে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিল। সাইফাল্লের अभिनी मरकानिमवा विभनी इंडरमन। यिमिनिमा वह अभिन ইহার পাণিপ্রার্থী ছিলেন, একণে চিরাভিলবিত হুদরলকীকে বন্দিনী পাইরা তাহাকে সিপিওর অজ্ঞাতসারে বিবাহ করিলেন। সিপিও ভাবিলেন, পাছে এই বিবাহে মেসিনিসা খীয় খণ্ডর হাসক্রবলের পক্ষাশ্রর করে, এইজন্য তিনি উক্ত কন্যাকে তাঁহার হন্তে সমর্পণ করিতে বলিলেন। মেসিনিসা সফোনিসবাকে ষ্থার্থ ভাল বাসিয়াছিলেন, স্বত্তরাং তাঁহার অঙ্কানী হইয়া সে যে বন্দিনী হইবে, তাহা তাঁহার সহু হইলনা। তিনি প্রণয়িনীকে বিষ প্রদান করিলেন। এইরূপে সকেনিসবার ছর্ডাগ্যের শেষ চইল। কার্থেজীরগণ সিপিওর পরাক্রমে ব্যক্তিব্যস্ত হইয়া রোম হইতে আসিবার জন্য হানিবল ও মাগোর নিকট দূত পাঠাইল। হানিবল সুদীর্ঘ ১৫ বংসর কাল ইতালীতে যুদ্ধ করিয়া ইতালীর এক প্রান্ত হয়ুতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত অধি-কার করিয়াছিলেন। হানিবলের স্বদেশগদনে রোমকগণ মহা আনন্দিত হইল। হানিবলের সহিত যুদ্ধে রোমক্দিগের ৩০০০০ সৈন্য বিনষ্ট হইয়াছিল, ধনসম্পৎ কড যে পুষ্টিত হইয়া-ছিল, তাহার ইয়ন্তা করা হুকর। রোমকগণ তৎপুর্বের এতাদুশ যুদ্ধপ্রতিভা নয়নগোচর বা কর্ণগোচর করে নাই।

অবিতীয় পিতৃতক্ত পুত্র পিতার আঞ্চাপালনের জন্য বে
মহাব্রতের উদ্যাপন করিয়াছিলেন, তাহার কিয়দংশ পূর্ণ করিয়।
দীর্ঘ নিঃখান ফেলিয়া হানিবল জাহাজে উঠিলেন। তিনি
কার্থেজে উপস্থিত হইবা মাত্র কার্থেজীয়গণ পুনরায় নববলে
বলীয়ান্ হইয়া উঠিল। কিন্ত হানিবল বর্ত্তমান অবহা পর্যালোচনা করিয়া বৃদ্ধ অপেক্ষা সন্ধির অন্তাবের অন্তমোদন করিলোন। কিন্ত যুদ্ধোন্মন্ত কার্থেজীয় সৈন্যগণ রোমক-সেনাপতি
সিপিওর সন্ধির সর্ত্তে শীক্ষত হইল না। হানিবল শ্বয়ং সিপিওর
সহিত সাক্ষাৎ করিয়া কোন কোন সর্ত পরিবর্তন করিছে বলিলোন, কিন্ত সিপিও তাহা গুনিলেন না। অগ্রুতা বুদ্ধের
বৃহ্ব গুং পুঃ, জেমা নামক শ্বানে উত্তর সৈন্যের ভর্তর
সৃদ্ধ উপস্থিত হইল। হানিবল অকুত রশকৌশল প্রেদ্ধিন

50]

করিতে লাগিলেন, কিন্ধ বে পথারোধীর অমিত বিক্রমে তিনি त्तामक ताका दिव जित्र कतिवाहित्तन, अकरन जाहांता हिन मा। ভজানিত বহসংখ্যক ৰুণমাতক সিশিওর অভত ধীরতে অভর্মণ্য হইরা গেল। নিহত সৈনিকের রক্তকোতে শোণিত নদী প্রবা-হিত হইল। বোরতর মুহের পরে সিপিও অরলাভ করিলেন। २००० कार्ट्यभीत रेनरमात्र हिन्न मृत्य स्थापन कीवन मुख बाउन कतिन। २६००० कार्यकीय क्ली इटेन। हानियन फाउ-কটে প্রাণ রক্ষা করিলেন। মেদিনিলা ভাঁহার অক্সবন্তী হইলেন। পুনৰ্কার বৃদ্ধ অসম্ভব বৃদ্ধিরা কার্থেকীরগণ সন্ধির প্রস্তাব করিল। সিশিও সন্ধির সর্ভ পূর্ব্বাশেক্ষাও কঠোরতর করিলেন। কিছ কার্থেকর উপায়ান্তর ছিল না। ২০১ খ্বঃ পৃঃ স্থিপত্র বান্দরিত হইল। কার্থেনীরগণ আফ্রিকার স্বাধীন ভাবে রাজ্য स्त्रिष्ड थाक्तिन। डाँशामत्र जन्माना नमस्य जिथकात्र विनुश ছইল। ইহাও দ্বিরীকৃত ছইল যে, তাংবার রোমের আদেশ ৰাজীত বুদ্ধ বিগ্ৰাহ করিতে পারিবেন না এবং রণহন্তী সকল রোমক্লিগকে দিবেন। স্কেলিনিলাকে তাঁহারা নিউমিডিরার

রাজা বলিয়া স্বীকার করিবেন এবং ক্ষতিপুরণ স্বরূপ ১০০০

রোপ্য মুজা ৫ • বৎসরের মধ্যে রোমকে প্রদান করিবেন।

এইব্রুপৈ রোম বাছবলে পশ্চিম প্রদেশের সার্ব্যভৌম অধিপতি বলিয়া স্বীকৃত হইলেন। রাঞ্চাসীমা দিন দিন পরিবর্দ্ধিত হইতে চলিল। রোমকগণের রণতরী ভূমধাস্থ সাগরে অকুতোভরে বিচরণ করিতে লাগিল। বিশাল স্পেন-রাল্য রোমক শাসনাধীন হইল। এবং তদানীস্তন প্রাচীন ৰগতে রোমের সাধারণতত্ত সর্বাপেকা পরাক্রান্ত বলিয়া নর্কভোভাবে স্বীকৃত হইল। এই যুদ্ধের পরে রোমের রাজ্য পরিবি এসিরাথত্তেও বিশ্বত হইরাছিল। দিখিলয়ী আলেকসান্দরের উত্তরাধিকারিগণ কর্ত্তক সংস্থাণিত গ্রীক রাজ্যগুলির অবস্থা অভ্যন্ত শোচনীর হইরাছিল। যে দিরীরা রাজ্য সিদ্ধনদ হইতে ইন্সিয়ন সাগর পর্যস্ত বিভূত হইন্না-ছিল, তাহার অনেক প্রদেশ স্বাধীনতা অবলম্বন করিয়াছিল। এসিরা মাইনরের রাজগণ সিরীয়ার শাসন অগ্রাঞ্জ করিরা স্বাধীন ছইয়াছিলেন। ফ্রাইজিয়া এবং গালেনিয়ার গলগণ প্রবল হইয়া-ছিল। মাইপিরা নামক নৃতন রাজ্য স্থাপিত হইয়াছিল, ইহার রাজধানী পার্গামাস্। পার্গামাসের রাজা জাটালাস বিভীর পিউ-নিক যুদ্ধের সময় রোমের সহিত মিত্রতা স্থাপন করিয়াছিলেন।

এই সময়ে ৩র অন্তিওকাস্ সিরীরার রাজা ছিলেন, তিনি পার্থিয়ান্দিগকে পরাজিত করিয়া"এেট"বা মহারাজ আখ্যা পাইয়া-ছিলেন। এই সময়ে টলেমীবংশীর গ্রীক্ রাজগণ নিসরের সিংহাসনে উপবিষ্ট ছিলেন। ইইারাও পিরহাসের স্ময়ে দৃত

পাঠাইরা রোবের সহিত সধাসতে আবন্ধ হইরাভিলেন : কিন্ত २०६ कः शुः ४४ हिलमीत कुछा रखनात वानकमञ्जाद हेरनमी धिरिक्तित तिःशात्रत चार्ताश्य करवन। দিরীরা ও মাকিদনের আক্রমণ আশহা করিরা রোমক-সেনেটের সাহায্য প্রার্থনা করিয়াছিলেন। ইঞ্জিরনসাগরে রোডলের সাধারণতত্র সামুদ্রবৃদ্ধে অধিতীর বলিরা বিবেচিড ছিলেন, এই বাধারণ তত্ত্বও মাকিদনের আক্রমণ আলভার রোমের সহিত নিত্রতা করিরাছিলেন। মাকিদনিয়া এই সমরে প্রাচ্যকগতে পরাক্রমনালী রাজ্য বলিরা পরিগণিত ছিল। স্থক নরপতি ৫ম ফিলিপ ইহার শাসনদও পরিচালন। করিতেছিলেন। তিনি २२० थुः शृः >१म वरमत वद्यम भिःशमत चारत्राहण करत्रन । গ্রীদ্দেশে তাঁহার রাজ্য বিহৃত ছিল। কিন্তু তৎকালে গ্রীদে 'একিয়ানলিগ্' ও 'ইভোলিয়ানলিগ্' নামে ছুইটা নুতন সম্প্রদায়ের অভ্যুথান হইয়াছিল। আপেন্স এবং স্পার্টা তথন পর্যান্ত স্বাধী-নতা বৃক্ষা করিতেছিলেন। কিন্তু পূর্ববগৌরব এখন ছারাবশিষ্ট হইন্না পড়িরাছিল। যথন প্রাচ্য ও প্রতীচ্য দেশের এইরূপ অবস্থা, তৎন রোমের সহিত মাকিদনের প্রতিহন্দিতা আরম্ভ হইল।

পূর্ব্বেই উক্ত হইরাছে যে, ছিতীর পিউনিক যুদ্ধকালে
মাজিদনপতি ফিলিপ কার্থেজের পক্ষ হইরা রোমের সহিত শক্ষতাচরণ করিরাছিলেন। দিমেত্রিরাদ্ নামক একজন বিশ্বাসমাতক গ্রীকবিলোহী ইলিরীর প্রদেশ হইতে রোমকগণকর্তৃক
বিভাড়িত হইরাছিল। সে ফিলিপের রাজসভার যাইরা
রাজার বিশেষ প্রিরপাত্র এবং পরামর্শদাতা হইরাছিল। ফিলিপ
সর্ব্বাদার আজাবহ থাকিতেন। দিমেত্রিয়াদ্ যুবক ফিলিপের

অন্ত:করণে জিণীয়া বলবতী করিয়া দিয়া म।किएनीय गित्रीय রোমের বিরুদ্ধে উত্তেঞ্জিত করিয়াছিলেন। ও গালেশির বছ (२७८-२४४ मृ: गूः) ২>৪ খু: পু: ফিলিপ কএকথানি রণভরীর সাহায্যে অবিক্রম অধিকার করিরা আপলোনিরা অবরোধ করেন। কিছ রোমক-সৈন্য আগমন করায় প্রত্যাবর্তন করিতে বাধ্য হন। हैराद्र शद्र जिन वरमत जात स्मान घटना नाहे। शर्त २১১ थः পু: বংকালে 'ইডোলিরান্ লিগ্' রোমের সহিত বন্ধ স্থাপন क्त्रिन, उथन जाहाता किनिएभन्न विरमद विदाशकाक्त इहेन। এই সময়ে 'একিয়ানলিগু' ফিলিপের লহিত মিলিত হইল। ইতো-নিল্লানলিগ্ৰ জাগভ্যা ফিলিপের সহিত সন্ধি করিতে বাধ্য হইল। এই সময়ে রোম আফ্রিকার বুদ্ধে যাাপৃত থাকার রোমকরণও ২০৫ খৃ: পৃ: किनिপের সহিত সন্ধি করিল। এই প্রকারে टाधम माकिननीत्र गुरुवत्र व्यवनान ब्हेन । क्यि केटन्नभूकरे **७९कारम दुक्षित्र।हिरमन रय, এই मिक्क शाबी स्वेटर ना। जिलि**छ ৰংকালে আফ্রিকার প্রাসিভ কেমার বুড়ে লিপ্ত ছিলেন, ভংকালে কিলিপ হানিবলের নাহাব্যার্থ ৪০০০ সৈন্য পাঠাইর। হিরাভিলেন। জিনি ইন্সিয়ন সাগরে প্রাধান্য লাভ করিবার জন্য সমস্ত গ্রীদ্ খবলে আনায়ন করিছেছিলেন। জজ্ঞনা রোড্দের माराजग्रह এवः भागीमारमज जाना चारीज्ञामरक चित्रास ব্দাক্রমণ করিলেন। ইহারা উভরেই রোমের সহিত মিক্তা-পত্রে বছ ছিলেন। ফিলিপ বুদ্ধ আরভের পূর্বে সিরীয়ারাজ অত্তিওকাদের সহিত সন্ধি করিরাছিলেন। স্থতরাং রোম নিশ্চিত্ত থাকিতে পারিশেন না। এই প্রকারে ভিতীরবার बाकिननीत युक्त आवश्व इहेरल (२०० पु: शु:) किलिश প্রথমে আথেন্স আক্রমণ করিলেন। তাহাতে কলল সালপেনি-দ্বাস পলবা কএকথানি রণতরী সইরা আথেনের সাহায্যার্থ আসিলেন। ফিলিপ ক্রোধান হইরা আথেন্সবাসীদিগের উপর ভরানক অত্যাচার করিতে লাগিলেন। কিন্তু প্রকাশ্র যুদ্ধ সংঘটিত হওরায় কোন পক্ষই জয় পরাজর লাভ করিতে পারি-रमन ना। शनवात्र शरत छिनियान कन्मन नियुक्त इरेरनन (১৯৯ খঃ পুঃ)। তিনিও ফিলিপের কিছু করিতে পারিলেন না। তৎপরে ১৯৮ খঃ পৃঃ ক্লেমিনিয়াস্ কন্সল নিযুক্ত হইয়া নবো-ছ্মমে যুদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। তিনি অবিলম্বে থেসালী অধিকারপূর্ব্বক কোসিস এবং লোক্রিসে শীতকাল কাটাইলেন। পরবংসর ১৯৭ খু: পূ: শিনো-সেফালে বা 'কুকুর মন্তক" নামক স্থানের যুদ্ধে বিতীয় মাকিদনীয় যুদ্ধের অবসান হইল। রোমক-গণ প্রথমে বিষম বিপদগ্রস্ত হইয়াছিলেন, পরে ইতোলিয়ান অস্বারোহী সৈনোর ভীম বিক্রমে রক্ষা পাইলেন। সাফিদনীর সৈনাও (phalanx) অমিতবিক্রমে যুদ্ধ করিতে লাগিল। ৮০০০ মাকিলনীয় সৈনা হত এবং ৫০০০ বন্দী হইল। কিন্তু রোমকপক্ষে ৭০০এর অধিক সৈনা ক্ষয় হয় নাই। ফিলিপ অগত্যা সন্ধি করিতে বাধ্য হইলেন। ১৯৬ খু: পু: সন্ধিপত্র সাক্ষরিত হইল। ইহা বারা ফিলিপ গ্রাসদেশ হইতে সৈত উঠাইরা শইলেন। বণ্ডরী সকল রোমকলিগকে প্রদান করিলেন এবং রোমের অভ্যমতি ব্যতীত কোন দেশের সহিত মিত্রতা করিবেন না বলিয়া প্রতিক্ষা করিলেন। যুদ্ধের ব্যব্ন শ্বরূপ ১০০০ মুদ্রা (ब्रामकिनशक ध्यमान कतिरमन।

ক্লেমেনিরাস্ গ্রীকরেশকে অবিলয়ে রোমের শাসনাধীন করা সক্ষত নর মনে করিরা গ্রীসের খাধীনতা ঘোষণা করিলেন। পরে ৫ বংসর গ্রীসে অবস্থানপূর্বক শাসনশৃন্ধলা সংস্থাপন করিরা অরোলালে মহাসমারোহে রোমে প্রত্যাগমন করিলেন গ্রহং সর্ব্বজন কর্তৃক বিপুল সন্ধান প্রাপ্ত হইলেন। এই সমরে লিরীরারাল অভিওকান্ প্রসিগা মাইনর অবরোধ করিরা গ্রীস আক্রমণের উদাম করিতেছিলেন।

अप्रिक औरमङ केरजानियामश्रम खेळका सम्राक्त किनिश छ व्यक्तिकामारक त्यारमञ्जू विकास केरसम्बद्ध कार्या । क्रिक কিলিপ পুনরার রোমের বিক্লাভ অভ্যাথান করিতে সাহসী **ब्हेरनन ना । अस्तिश्वान् এवः मिर्वन् बेरक्रानिश्चानविश्वत आर्थ-**नाव नवाज रहेरलन । अरे नमरत रामियन चानन रहेराज निर्सा-নিত হুইয়া নিরীয়ার রাজ্যভাষ উপস্থিত হুইছেন। কারণ তিনি পুনরার রোমের বিরুদ্ধে অভ্যথানের উত্যোগ করার তত্ততা रात्ने छाहारक निर्माणिक करतन। निर्दीतातांक महासाम হানিবলকে অভিনন্দন করিরা সেনাপতিছে বরণ করিলেন। অভিওকাৰ ১৯২ খুঃ পূঃ খেৰালীয় স্থপ্ৰসিদ্ধ দিমেতিয়াৰ লমক ত্বক্ষিত হর্ষে উপস্থিত হইলেন। ১৯১ খৃঃ পূঃ রোমকগণ তাঁহার বিরুদ্ধে বুদ্ধ ঘোষণা করিল। কন্সল এসিলিয়াস মেত্রিও থেসালী যাত্রা করিলেন। অভিওকাস থার্দ্রোপলি নামক গিরিপথে শিবির সরিবেশপুর্বক রোমক-সৈঞ্জের মধ্যত্রীদে যাইবার পথ আটকাইয়া রাখিলেন। কিন্তু রোমকগণ আর একটা গিরিসম্ভটের সন্ধান পাইয়া ক্ষেই পথে অবিল্য সিরীয় সৈজের পশ্চান্দেশে আদির। উপন্থিত হইল। তাহাতে সিরীর সৈম্ভ রণে ভঙ্গ দিয়া পলায়ন করিল। অন্তিওকাদ গ্রীদ-বিজয় নিক্ষণ মনে করিয়া এশিরায় স্বরাজ্যে প্রস্থান করিলেন। ১৯০ খঃ প্র: হানিবলব্বেতা মিপিও আফ্রিকেনাসের ভ্রাতা এল-সিপিও এবং সি লেলিয়াস কলল নিযুক্ত হইলেন। এল-সিপিও অস্তি-ওকাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধে ঘাইবার প্রার্থনা করার, সেনেট জাঁহার कार्यामकका नवस्त निसंहान बहेबा नवकि सन नाहै। किन्द সিপিও আফ্রিকেনাস্ ভ্রাভার সঙ্গে যাইবেন শুনিয়া সেনেট পরে অনুমতি প্রদান করিলেন।

এদিকে অন্তিওকাস্ এক বিরাট্ সৈল্লল সংগঠন করিরা
পার্গামাস্ রাজ্যে দুঠন ও অত্যাচার করিতেছিলেন। রোমকসৈল্য হেলেস্পক্ত অতিক্রম করিরা তাঁহার সন্মুখীন হইল।
সিপাইলাস্ পর্কাতের পাদদেশে মাগ্নিসিরা নামক স্থানে যুক্ক
চলিল। রোমকদিগের লোকভরত্বর বীরত্বে অদিকিত সিরীয়সৈল্য একেবারে ধ্বংস পাইল। ৩০০০ সিরীয়-সৈত্তের
রক্তে যুক্কক্রের রঞ্জিত হইল। রোমকদিগের কেবল ৪০০
মাত্র সৈল্ভ হত হইরাছিল। অন্তিওকাস্ গত্যন্তর নাই
ব্রিরা সন্ধির প্রার্থনা করিলেন। রোমকাণ সর্ত করিলেন যে,
(১) তিনি টরাস্ পর্কাতের পশ্চিমত্ব সমন্ত প্রদেশ রোমক্রিগকে
প্রদান করিকেন অর্থাৎ তিনি কেবল এসিরা নাইন্রের রাজা
থাকিবেন, (২) ১১ বংলরের মধ্যে ১৫০০০ ব্রুলা ব্রুক্তর ক্রি
ব্রুল্ব অ্রুলান করিকেন, (৪) এবং হানিবলকে রন্দী

করিরা রোমকনিগের হতে সমর্শণ করিবেন। অভিওকান্ নিরুপার হইরা সভিপত্তে থাকর করিবেন। ইানিবন বেগতিক দেখিরা তৎক্ষণাৎ ক্রীভরীপে প্লাইন করিবেন, তৎপরে তিনি বিধাইনিরার রাজ-সভার গমন করেন।

यान जिलिख चकून धनगणाम् नरैवा महानमादबाटर चवपृथ ছালরে রোমে প্রবেশ করিলেন। তাঁহার অপ্রম বেমন আক্রিকা बाद कतिवा'वाकित्वनाम्' छैनावि नारिवाहित्नन, छिनि छवस्ववरत ্ এসিরা মাইনর জন করিরা'এসিরাভিকাদ' উপাধি লাভ করিলেন। একণে রোমকর্গণ বিভোহী ইতোলিরাদদিগকে শান্তি দিতে वर्षवान इहेरनम । ১৮৯ थुः शृः रूजन कानिखत्रान् माविनिधत ্ত্রীলে গ্রনপূর্বক ভত্রতা প্রসিদ্ধ নগর এদ্বেশিরা অধিকার कतित्वत । ইতোলিয়ানগণ নিক্পার হইয়া সদির প্রার্থনা করিল। সন্ধির সর্ভ অনুসারে ভাহারা স্বাধীনতা হারাইয়া সর্বতোভাবে त्त्रात्मत्र अधीन रहेन अवरे वृत्त्रत्र वात्र चत्रभ ८०० हातनहें अनान করিল। এই রূপে প্রাসিদ্ধ ইতোলিয়ান্লিগের ক্ষমতা ধর্ধবীক্বত হইল। নোবিলিওরের সংখ্যাসী কলল মানলিয়াস্ ভল্সো একণে এসিয়ামাইনরের সন্নিহিত রাজ্য সমূহে শান্তিহাপনের জন্ম প্রেরিত হইরাছিলেন। কিন্ত তাঁহার জনরে বিজিগীযা এক অর্থলালসা বলবতী হইয়া উঠিল, তব্জগু তিনি সেনেটের আদেশের অপেকা না করিয়াই একেবারে গালেশিয়ানদিগের সহিত খুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। তৎপূর্ব্বে কোন কন্দাল সেনেটের বিনামুমতিতে যুদ্ধ করিতে সাহস করেন নাই। মানলিয়াদ্ প্রবল বিক্রমে গালেশিয়ন্দিগকে পরাজয়পুর্বক প্রভৃত ধনরত লাভ করিলেন। কিন্তু রোমকগণ এখন এসিয়ার বিজিত প্রদেশে কোন মুখ্য শাসনপ্রণালী প্রবর্তন ছারা রোমের অধীন করিলেন না। ভাঁহারা পার্গামাসের রাজা ইউমিনসকে চার্সোনিভ, মাইসিয়া এবং লিভিয়ার শাসন ভার প্রদান করিলেন এবং কেরিয়ার অধিকাংশ রোডিয়ান সাধারণতত্তের অধীনে স্থাপন कतिरनन । माननित्रान् ১৮१ थुः शुः महानमारतारक द्वारम প্রবেশ করিলেন। বিপ্যাত ঐতিহাসিক্গণ রোমের এই সমস্ত যুদ্ধবিগ্রহকে (স্থলতান মালাদের ভার) কেবল অর্থলুপ্তনের আছতের পছা বলিরা নিন্দা করিয়াছেন।

হৎকালে রোমকগণ এসিরা থণ্ডে কুদ্র কুদ্র যুক্ষে বিপুল অর্থ লুঠনে ব্যাপ্ত হিলেন, তৎকালে পশ্চিম যুরোপে উপরোক্ত লাকি-দিবারিরাণ এবং শেনীর বৃদ্ধ হইরাছিল। ইতালীর উত্তরে পো নদীর (২০-১৭- বৃ: পু:) তীরবর্তী বৃদ্ধবিশারদ গল এবং লিগারিও লাতিগণ হামিলকার নামক অন্য এক কার্থেকীর দেনানীর উত্তেজনার রোমের বিক্লকে অন্ত ধারণে সক্ষত হইরাছিল। ২০০

ৰৃঃ পৃঃ পদগণ রোমাধিকত প্লাবে কিলা ও তৎসৱিহিত কএকটি श्वाम मुक्रेमशृक्षक युद्ध रवावना कक्रिन। त्रामकनन धारे शाक्रिका বর্ষর জাতিগণকে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিতে মনত্ব করিবেন। व्यवस्य रभा मनीव छेख्त्रकृ हेमञ्च्यात्र कवर जित्नामनिशंश भदाबिक হইরা বঞ্চভা স্বীকার করিল। পরে ১৯১ ধৃঃপুঃ কর্ণিলিয়াস পি-সিশিও বো-আইগণকে সম্পূৰ্ণক্লপে পরাজিত করিলেন এবং বালক ও বৃদ্ধ ব্যতীত সমন্ত যুবকদিগকে তরবারি মুখে নিহত করিলেন। এই সমন্ন হইতে দিসাল্পাইনগণ সম্পূর্ণরূপে রোমের अधीन हहेन। এই পাर्सछा खाछिनिगरक प्रमान द्राधिवात कना বোনোনিয়া এবং বোলন নামক স্থানে চুইটা উপনিবেশ সংস্থাপিত হইল এবং বড ব্লান্তা নিশ্বাণ দাবা ঐ সকল স্থান বোমের সহিত সংযুক্ত হইল। ১৮০ খু: পু: কন্সল ইমিলিরাস্ লেপিডাস্ এই প্রকাণ্ড পথ নির্দ্ধাণ করেন। কিন্তু লিগারিরান্দিগকে পরাজয় করিতে আট বৎসর লাগিরাছিল। কারণ ইহারা প্রকাশ্ত ভাবে বুদ্ধ না করিয়া পর্বত গছবরে ও বনান্তরালে পুরুষ্টিত থাকিত। এই সকল যুদ্ধে রোমের রাজ্যনীমা আপিনাইন পর্বভঞান্ত পৰ্যাম্ভ বিস্থৃত হইয়াছিল i-

সিপিওকর্ত্তক স্পেনদেশে অধিকারের পরে তথার রোমক-শাসন প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল। স্পেনদেশ উত্তর ও দক্ষিণ এই ছুইভাগে বিভক্ত ছুইজন রোমক প্রিটর বা মাজিট্রেটকর্ত্তক শাসিত হইরাছিল। কিন্তু উত্তর ও পশ্চিমে অনেক যুদ্ধপ্রিয় জাতি তথনও রোমের অধীনতা স্বীকার করে নাই। মধ্যে স্পেনের কেল্ডিবেরিয়ানগণ, পর্ত্তগালের লিউসেটেনিয়ান্গণ, এবং কেন্টেব্রিয়ান ও গালেশিয়ানগণ তথন পর্যান্ত স্বাধীনভাবে রাজত্ব করিতেছিল। রোমকগণ শান্তিস্থাপনের জন্ম পরাক্রান্ত চারিদল দৈশু রোমে রাখিয়াছিলেন এবং ইহাদিগের ব্যয়-নির্বাহার্থ অধিবাসিদিগের নিকট হইতে সর্বাপ্রথমে করগ্রহণ-প্রথা প্রবর্ত্তিত হয়। রোমকশাসন স্পেনে স্থায়ভিাবে বন্ধমূল হইতেছে দেখিয়া অধিবাসিগণ বিদ্রোহী হইল। কন্সল এম্ পোর্সিয়াস কেটো বিজ্ঞোহদমনের জম্ম স্পেনে প্রেরিড ছইলেন (১৯৫ वृ: शृ:)। ममस्य (एन রোমের বিরুদ্ধে अञ्चर्शातन कतिया। কিন্তু কেটোর শাসন-কুশলভা এবং রুশনৈপুণ্যে পুনরার রোমক-শাসম দৃঢ়ীকৃত হইল। কেটো যেরপ নরহত্যা করিয়াছিলেন ভাষা গুনিশে ভীত হইতে হয়। তিনি নগর্মাংস ও নর্হত্যায় ব্যতান্ত গৌরব অন্নত্তব করিতেন। কিন্ত তাঁহার নিষ্কুর ও मुम्प्रम्यावहारतः मकरनहे स्तारमत्र मानस्म वित्रकः हहेता केंठिनं। ভংগুরে কলণ সেড্যোনিয়াস প্রাকাসের শান্তিমরী নীতিতে ন্দোনবাদিগণ পুনরায় রোমক্লাসনের অন্তর্মন্তী হইডে লাগিল (३१३ थुः शूः)।

এই সমরের রোমের 'কনষ্টিটিউশন' বা শাসনব্যবস্থা অভি-সংক্রেপ বলা উচিত। পূর্বের প্লিবিরান পিট্রি শিরান পক্ষের বিরোধ ব্যাপার উল্লিখিত হইরাছে। এখন রোমক-শাসনপ্রণালী প্লিবিয়ানগৰ সকল বিষয়েই খেটি শিয়ান-७ रेगळसग्डा দিগের সমকক্ষতা লাভ করিরাছিলেন। ৰিতীয় পিউনিক যুদ্ধের পর হইতে উভয় দলে আর কোন বিরোধ ঘটে নাই। কারণ প্রতি বৎসর ছইজন কলল এবং ছইজন দেশর প্লিবিয়ান পক্ষ হইতে নিয়মিভন্নপে নির্মাচিত হইতেন। পেটি শিরানদিগের কোন কোন কার্যনিক উৎকর্ব ভিন্ন অন্ত কোন স্থবিধা ছিল না। প্রত্যেক রোমবাদী ভিন্ন ভিন্ন সরকারী কার্যা করিবার পরে কন্সল হইতে পারিভেন। কিছ যাহারা নিমতন পদে কার্য্য করিতেন না, তাঁহাদের গুণাধিক্য शांकिरमञ्ज कष्मम इंट्रेंग्ड शांत्रिएम मा। সিপিওর নিয়োগবিষয়ে এই নিয়মের ব্যভিচার ঘটরাছিল। ১৭৯ খু:পু: 'লেক্স আনালিদ্'নামে এক আইন প্রণীত হয়, তন্ত্-সারে 'কোয়েইরশির' বা নিয়তম মাজিটেটু পদে অধিষ্ঠিত ব্যক্তির বয়স ২৮ বৎসর নির্দিষ্ট হয় এবং তদুর্দ্ধতর ইডাইলশিপের ৩৭, প্রিটরশিপের ৪০ এবং কন্সল পদের জন্ম ৪৩ বংসর বয়স নির্দিষ্ট ছটল। যাঁহারা উক্ত পদে ক্রমান্ত্রে কার্য্য করিতেন তাঁহারাই যথাকালে কদাল পদের প্রার্থী হইতে পারিতেন। উপরোক্ত মাজিটেটগণ গুটভাগে বিভক্ত ছিলেন—রাজচিহণালক্ষত কিউরিউল যথা কলল, প্রিটর ইত্যাদি এবং নন-কিউরিউল মাজিট্রেট বা ডিক্টের প্রভতি।

- ১। কোরেষ্টরগণ রাজ্যের বেতন প্রদানের এবং রাজস্ব-সংগ্রহের কর্ত্তা ছিলেন। তাঁহারা রাজস্ব ম্মাদার এবং সাম্বিক ও দেওয়ানী কার্য্যের কর্মচারীদিগকে বেতন দিতেন। তাঁহাদের ম্মধীনে কোষাগার থাকিত।
- ২। ইডাইলগণ ঠিক পাব্লিক ওয়ার্কন্ ডিপার্টমেন্ট বা সরকারী পৃর্ত্তকার্যের নির্কাহক ছিলেন। ইহাদের ছেবাবধানে সরকারী অট্টালিকা-নির্শাণ ও মেরামতাদি হইত, পথ প্রস্তুত, নর্কামা নির্শাণ প্রভৃতি সমস্ত কার্য্য ইহাদিগের অধীনে থাকিত। এতদ্বির ইহারা প্রনিদের পরিরক্ষক ছিলেন। সরকারী ক্রীড়া কৌতুক, আমোদপ্রমোদ ও উৎস্বাদি ইহাদিগের পরিচালনে নির্কাহিত হইত।
- ৩। প্রিটর ও কলল (বা রাজকীর ম্যাজিট্রেট) প্রিটরগণ সেনেট-সভা আহ্বান, ব্যবহার-শাক্তপ্রণরন এবং সামরিক শাসন বিকরে অধিকারী ছিলেন। প্রত্যেক প্রিটরের ৬ জন পিউর থাকিত। প্রথমে সিবিল বিচার বা নাগরিক বিচার-কার্য্যের জন্ত একজন প্রিটর নিযুক্ত হইতেন। ২৪৬ খ্বঃ পুঃ হইতে অভ

একজন প্রিটর নিরোগের ব্যবস্থা হর। ইনি বৈদেশিক শাসনের বিচার-নির্বাহক ছিলেন। কিছ ২২৭ খা পা সিসিলি ও সার্ভি-নিরা-শাসনের জন্ত জন্ত ছইজন প্রিটর নির্ক্ত হল। পরে ১৯৭ খা পা শোনের জন্ত আর ২ জন প্রিটর নির্ক্ত হইলেন। এই থাকারে প্রিটরের সংখ্যা ৬টা হর, তর্মধ্যে ছইজন রোমের ও অপর চারিজন বিদেশত রাজ্যের।

- ৪। কলাগাণ উচ্চতম মাজিট্রেট ছিলেন। তাঁহারা রাজ্যালাসন ও সামরিকবিভাগের পরিচালক ছিলেন। তাঁহারা সেনেট আহ্বান এবং সাধারণ সভার অধিবেশন করিতে পারিতেন। তাঁহারাই লেনেটের সভাপতিরপে কর্ত্ব করিতেন। এতহাতীত সাধারণের সম্বতিক্রমে ইহাঁরা সৈপ্তবিভাগের সর্ব্যাহলেন। তাঁহারাই প্রকৃত প্রস্তাবে সৈপ্তগণের দশুমুণ্ডের কর্ত্বাছিলেন। তাঁহারাই প্রকৃত প্রস্তাবে সৈপ্তগণের দশুমুণ্ডের কর্ত্বাছিলেন। তাঁহারের প্রত্যেকের অধীনে ১২ জন লিক্টর থাকিত। উপরোক্ত মাজিট্রেটগণ প্রতি বংসরেই নৃতন করিয়া নির্বাচিত হইতেন। ইহাঁদের ক্রমিনে ক্রমণ কথন প্রোক্তমাল ও প্রো-প্রিটরগণ নির্ক্ত হইতেন। সাধারণ তল্পের পরবর্ত্তিকালে কন্সলগণের শাসনকাল ফুরাইলে তাঁহারাই প্রো-ক্রমণরূপে বৈদেশক শাসনকর্তা নির্ক্ত হইতেন।
- ৫। বিতার পিউনিক যুদ্ধের পূর্ব্ধ পর্যান্ত ডিক্টেটরনিপের বিশেষ প্রচলন ছিল। কিন্তু রোমের প্রাধান্তর্য্তির সঙ্গে সঙ্গে এই অসাধারণপদের তত আবশুকতা হইত না। তবে কন্সলগণ কোন যুক্তবিগ্রহের সমর ডিক্টেটরের ক্ষমতা প্রাপ্ত হইতেন।
- ৬। সেন্সরগণ—প্রত্যেক ৫ বৎসরে ছুইজন সেন্সর নিযুক্ত হইতেন। কিন্তু ১৮ মাসের অধিক কেহ উক্ত পদে কার্য্য করিতে পারিতেন না। ইহাদিগের কার্য্য বিশেষ প্রয়েজনীয় ও দায়িছ-পূর্ণ ছিল। ইহাদিগের কার্য্য ৩ ভাগে বিভক্ত ছিল—
- (১) ইহাঁদের সর্ব্ধাপ্তথম কার্য্য মান্ন্র্য গণনা এবং তৎপরে ইহাঁরা গণনাতালিকা প্রস্তুতপূর্ব্বক প্রত্যেক অধিবাসীর সম্পত্তির মূল্য নির্দ্ধারণ করিতেন, আনকর ও রাজস্বনির্দ্ধারণের জ্বন্তই সম্পতির মূল্য নির্দ্ধারিত হইত। পরে সম্পত্তির পরিমাণ অন্থসারে অধিবাসিগণের শ্রেণীবিভাগ হইত। পূর্বে উক্ত হইয়াছে যে, সার্ভি-য়াদ্ টালিরাদ্ এই প্রথা সর্ব্বপ্রথমে প্রবৃত্তিত করিয়া যান।
- (২) সেন্দরগণের ছিতীয় কার্য্য অধিবাসিগণের চরিত্র ও বাবহারের প্রতি দৃষ্টি রাখা। এ বিবরে তাঁহারা নিজের কর্ত্তব্য জ্ঞানের উপর নির্ভর করিতেন, কাহার অন্তরোধাদি ও প্রশংসাপত্র মানিতেন না। তাঁহারা ব্যক্তিগত ও সাধারণ অসহাবহারের জন্ত শান্তি বিধান করিতেন। ইহাঁদিগের শাসন মতে সকলেই প্রাচীন রোমকের জাতীর ধর্মরক্ষা করিতে বাধ্য

ছিলেন। তলমুসারে সকলকেই বিবাহিত জীবন বাপনপূজ্যক বিলাদিতা ত্যাগ এবং নিতাচার করিতে বাধা ক্ষতিন। তেক্ট্ অনুচু তাবে থাকিয়া বিলাসে এবং অবিভাচারে জীবন বাপন করিতে পারিতেন না। শৈলিয়পূর্ণ উচ্চতেক্সি গোকতে নির প্রেশীতে আমরন, সেলেটের সক্তপ্যকে দোবের অভ প্রীক্ষণ, এবং সাধারণকে রাজকীয় ছবিধা ইইতে ব্যক্তি করিতে পারিতেন।

(৩) এতহাতীত ইহারা সেনেটের পরামর্প মতে রাজ্যপান-নের ও রাজখনগুরুহের ব্যবস্থা করিছে পারিতেন। পূর্তকার্য্যের উল্লিডিকরণার্থ ইইানিসের হতে নির্মিষ্ট পরিমাণ টাকা থাকিত। ভাহারারা বড় বড় রাজপ্র নির্মিষ্ঠ হইত।

त्मरमहे ।

সেনেট প্রথমে একটা ক্র মন্ত্রিসভা মাত্র ছিল, ক্রি ক্রমে ক্রমে ইহা রাজ্যের পাসন্ধরের একমাত্র পরিচালক হইরা উঠে।
মাজিট্রেটগণ কেবল সেনেটের কার্ক্রারক্রণে পরিণত হন।
১০০ সদত্য লইরা সেনেটসভা গঠিত ক্রেট । বিশেষ কারনে কোন
সদত্য অন্তিযুক্ত না হইলে সকল সভাই আজীবন সভারপে
নির্কাচিত হইতেন। ক্রিড এই সভাপদ পুরুবাছক্রমিক
হইত না। প্রত্যেক ৫ বংসর অন্তর নির্কাচন হারা শৃত্য
সভ্যের পদ পূর্ণ হইত। সরকারী মাজিট্রটগণের মধ্য হইতেই
অধিকাংশ সভ্য নির্কাচিত হইতেন। স্নাক্রনীতিবিভার
প্রাবীণার ও বিজ্ঞতা লাভ করিতে না পারিলে কেহ সেনেটের
সভ্য হইতে পারিতেন লা।

সেনেটের সর্কাভাম্থী ক্ষমতা ছিল। সেনেটের ক্ষমতি হইলে কোন কোন আইনে সাধারণের সন্ধতি গৃহীত হইত। কিছু অনেক বিষরে সেনেট সাধারণের সন্ধতি ব্যতীত আইন প্রচলন করিতে পারিতেন। যুদ্ধবিগ্রহ বিষরেও সেনেটের নির্দেশ অন্থসারে কললগণ কার্য করিতেন। পররাষ্ট্রের সহিত যুদ্ধ ও সন্ধিয়ালন বিষয়েও সেনেটের সার্কাভৌম প্রভাব ছিল। এতিজির কমিশিরা কিউরিরাটা, কমিসিরা টেবিউটা পপ্লি প্রভৃতি কএকটী সাধারণ সমিতিও সমরে সমরে গঠিত হইরাছিল।

ह्यात्मत बाकास्त्रिक बदरा ।

মাজিহনীর বুছের পরে রোমে নানা বিবরে নানা পরিবর্জন ঘটরাছিল। এসিরাখণে অবলাভ করিবার পর হইতে রোমের লাতীর চরিত্রে বিবিধ পরিবর্জন লক্ষিত হইতে লাগিল।
ইহার পূর্বে রোমকগণ উভয়নীল, পরিপ্রমী, ধর্মভীক এবং সংবত-চরিত্র বলিরা অগতে বিখ্যাত ছিলেন। মিভাচার তাঁহাদের প্রধান ওপ ছিল। বড় বড় মাজিট্রেটগণ পূহে প্রভ্যাগত হইয়া অহতে ইলচালনা করিতেন একং কলল ও সেলরগণ দ্রম্মবিদ্ধ সাহস্থাতা অহতে সম্পাদন করিছে কুটিড হইডেন মা। সাহিত্য ও নিমে রোমকনিগের অনুমাদ ছিল না। জোন কোন বিষয়ে ভাহারা উচ্চত ও নিষ্ঠমগ্রহুতি ছিল।

বিদ্ধ আর্থের এবনি বহিলা যে, এসিরাবতে অর্থাতিপূর্বক অনসকর হইবানাত্র রোমের ভাতীর চরিত্রে মহাপরিবর্তনের লক্ষণ প্রাকৃতিক হইরা পড়িল। ধারারা ভ্যাগ্রেই ধর্মা বিলিরা আনিছেন, গুলিরা অর্থ পাইরা ভোগ্রেই প্রমান ধর্ম বিলিরা বিবেচনা করিছে লাগিলেন এবং ইল্লির্মুখনেই মল্লাভোগের চরমোৎকর্ম মনে করিরা ভংসাধনে প্রাকৃত্ত হইলেন। সিপিও আজিকেনাস্ এবং ক্রেমিনিরাস্ গ্রীক শিল্প ও সাহিত্যের রসাম্বাদন করিছে ভাল বাসিতেন, কিন্তু সাধারণ ব্যক্তিকর্ম গ্রীকগণের বিলাসবাসনা ও দোবের অন্তক্তরণ করিছে লাগিলেন। ধারারা অহত্তে রকন করিতেন, তাহারা পাচক নিযুক্ত করিলেন। পাচকের সংখ্যা আন বলিরা পাচক মহার্য হইরা উঠিল এবং অন্নাহিনেই স্নোমক নরনারীর নৈতিক চরিত্রে সানা দোব স্পূর্ণ করিল।

वाकारमनिदान वक्ष्य ।

কোন লাতির উত্থান-পতনের সলে সলে—লাতীর চরিত্রের উর্জি অবনতির সলে সলে—লাতীর দেবদেবীগণের উর্জি ও অবনতি হইরা থাকে। দক্ষিণ-ইতালী হইতে বেকাস্ নামক মনিরা ও মদনের অধিচাত-দেবতা রোনে ছাপিত হইলেন। মনিরাবোগে মদনচতুর্দনী প্রতের অনুষ্ঠান হইতে লাগিল। ক্রেমে ক্রমে গৃহে গৃহে মনিরা ও মদনদেবতা বেকাসের পূজা বাপ্ত হইরা পড়িল। ছণিত ও গৃহিত ব্যভিচারের প্রোত দেবপুলার অল বলিরা উচ্চরবে উন্নোমিত হইল। শেষে পঞ্চমকার তাত্তিক পূজা সামাজিক শৃন্ধলার গওীরেথা উন্নত্তন করিতে লাগিল। তথন সেনেটের চৈতক্ত হইল। ব্যভিচারিগণ প্রাপদতে দণ্ডিত হইল—দেবতাও রোম হইতে নির্কামিত হইলেন।

বিদাসলোভ অন্ত প্রধানীতে প্রবাহিত হইল। বড় বড় বড় বদালরে অন্তর্নীড়ার আবোদ সপ্তরে উঠিল। নরহত্যা কৌতুকহাক্তের চরমসাধন বলিরা গণ্য হইল। এট্রায়ান্গণ সূর্কে আত্মীরক্তনের অভ্যাইক্রিরার উৎসবে বনিগণকে বলিরান করিরা আমোদ উপভোপ করিতেন। এই প্রথা ২৬৪ খ্র: পৃঃ রেরের প্রচলিত হর। কিন্তু তথন কেবল অভ্যাইক্রিরার উহার প্রচলিত হর। কিন্তু তথন কেবল অভ্যাইক্রিরার উহার প্রচলন ছিল। শেবে ধনর্ভির সঙ্গে ইডাইল বা পূর্তকর্মচারির্মণ সাধারণ ক্রীড়াগার নির্মাণ করিনেন। এই হানে মাডিরেটর বা অন্তর্কীড়ক্দিগের ক্রীড়া হক্ত, ভারা স্করেন ও নিষ্ঠ্যপ্রথার পরাকার্টাপ্রকাশক।

বীর্যকাশ বড় বড়ু খুছব্যাপার এবং বিশাসের আবর্জনে ক্লবকসমালের অবলভি ঘটিল। ক্রীভদাসপ্রধার প্রবর্জনে প্রাধীন প্রমজীবিগণ অলাভাবে কট পাইতে লাগিল। এইরপে দরিপ্রের সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। বৃদ্ধে করীকৃত ব্যক্তিগণের সংখ্যাবিক্যে ক্রীভদাস প্রচুর পরিমাণে পাওরা গাইতে লাগিল। বড়লোকের ক্রবিক্ষেত্রে ক্রীভদাসেরা কর্বণ করিতে লাগিল। এই প্রকারে রোম্বাসী ক্লবক ও প্রমজীবিগণের অরসংখান করা কঠিন হইরা উঠিল। 'ভোট' দিরা অর্থপ্রাধি ব্যক্তীত ভাহাদের অন্ত কোন উপার অবলিট বাহিল না। তজ্ঞপ্র ঘিনি বেশী টাকা দিতে পারিতেন, তিনিই সকল 'ভোট' পাইতে লাগিলেন।

এই সমরে যে সমন্ত প্রসিদ্ধ বাজি রোমের জাতীর চরিত্র এবং প্রাচীন গুণাবলী অকুর রাখিতে প্রয়াস পাইয়াছিলেন, তন্মধ্যে এম-প্রোর্শিরাস-কেটো সর্ক্তথান। পূর্কে ইহার কথা কিছু বলিয়াছি। কেটো প্রাচীন রোমের আদর্শ চরিত্র व्यवः व्यवकान महानुक्त । वानाकारन इन्होनना व्यवः विविध বারিনে তাঁহার স্বাস্থ্য প্রতাল ছিল। তিনি ধনীর সম্ভান ছিলেন, কিন্তু তাঁহার প্রানাদের অনভিদূরে বিখ্যাত্বীর কিউরিরাস ভেন্টাটাসের কুটার ছিল। বিশাসবিবেবিতা এবং স্ক্রিকতার অস্ত ডেন্টাটাস্ রোমের গৃহাত্তানীয় বলিয়া লোকমুৰে কীৰ্ত্তিত হইতেন। তাঁহার স্থ্যাতিভ্রমণে কেটোর व्यक्तं क्रांति एक होतिया वर्गावनीय व्यक्तिकीया वर्गवेकी हहेग। जनवर्षि जिनि विमानवर्षन अवर नमाठावराज सामीयन शीक्क इहेलान । ১৯৮ वृः पृः देनि गार्डिनियात्र क्रिकेय इहेशा शरम करत्न। छवात्र छिमि रवेत्रन छार्द कार्या कत्रित्राहिरगन, ভাতা আদৰ্শহানীয়। ভিনি পৰোচিত বিলাস এবং গাঁভীৰ্য্য পরিত্যাগপূর্বক क्षक्रम मार्क क्छा भीविमाहितन। আপালাত বিচারের বারা কিনি নকলের প্রশাসাভাকন হইরা-হিলেন। কুদীন (ছব) গ্রহণকে কিনি বহাপাপ স্বরূপ বিবেচনা করিরা হ্রবথোর মহাজননিগতে বিশেষ পাত্তি প্রধান করিতেন। ১৯৫ খৃঃ প্র ইনি কলন নিযুক্ত হইরা প্রাচীন হৈরদের গোতীর-বর্ষের প্রকশানের জন্ধ প্রাণ্যপনে চেন্তা করিতে লাক্ষিকান।

ं अरे गंगांत द्वारमं अरु अशूर्स योजा वरिता । १३६ ब्रा श्रः व्ययम निष्टिनिक गुरुषत्र नगरत हि विष्टेन अनितान्वर्द्धक दिनान-ভাপিয়া" নামে এক আইন বিধিবছ হইয়াছিল, তদত্বসায়ে কোন রোমজনমনী অন্ধ ভাউজের অধিক প্রবর্ণ ব্যবহার, বিচিত্রসঞ্জিত बच्च भतियाम धावर मेर्गटबन्न वाहिटन व्यववश्राममा खण्डि कार्या क्तिएं भातिएंक मा। धक्क श्रीमवर्गन भन्नाकत्त्र कार्थरकत ধনতাঞ্জার বুঠন ক্রিয়া সাধারণ কোবাগার কীত হইরাছিল, कुछतार विनामिनी द्वायमीयविनीशन अकरन दक्क चारेन हरिछ क्तिवात अछायार्थ इट्डेंबन हैं विकेटनत मिक्छ आर्थमा कतिराम । ইটারা উক্ত আইনমুক্তিকরণের প্রভাব করিলেন, কিছ ভাহাদের সহযোগিখন তাহার বিরোধী হইলেন। রোমকর্মণী-গালের ধর্মধট রোমে হলছুল পড়িরা গোল। বৎকালে সমস্যাগণ সক্ষিত হইরা কোরামে গমন করিবেন, তৎকালে রম্ণীগণ প্রত্যেকপথ অবরোধ করিয়া অবস্থান করিতে লাগিলেন। সকলে তখন তাহাদের প্রার্থনার সমত হইলেন, কিন্তু কেটোর সংযতজনত্তে কোন বিলাসিনীর বিলোল কটাক বিশ্রম উৎপাদন कतिएक शारिन मा । किस श्रीदानाय ननमाकूरनहरे अब रहेन । ভাঁহারা বিচিত্ররঞ্জিত বল্লে সক্ষিতা এবং স্বর্ণালভারভূবিতা হইয়া चक्रम् (वडाहर्ष्ड नागित्नम् ।

এই সময়ে গিপিও আফ্রিকেনান্ এবং নিপিও এসিয়াটিকান্
ছই সংহানের অনেকের বিরাগভাজন হইরা উঠিলেন। কেটোর
প্ররোচনার নেভিয়ান্ নামক একজন ট্রিকিন কনিষ্ঠ সিপিওর
নামে পৃতিত অর্থের অপবাবহার সবঁদে অভিযোগ আনয়ন
করিলেন। তিনি হিসাব প্রস্তুত্ত করিয়া ট্রিকিনগণের হতে
প্রদান করিতে ঘাইবেন, এমন সমস্ত্রে তাহার অগ্রজ সিপিও
আফ্রিকেনান্ হিসাব-পত্র ৭৩ বছ করিয়া হিডিয়া ফেলিলেন।
এবং রাগাবিত হইরা কহিলেন—"যে কোটি ফোল আনিয়া
কোরাগার পূর্ব করিয়াছে, কএক সহল টাফার জন্ম তাহার
নিকট হিসাব গ্রহণ।" কিন্তু তাহার এই গহিত ব্যবহারে
কনেকে বিরক্ত হইল এবং এই অপরাধের বিচারে কনিষ্ঠ সিপিও
ভক্তর জরিমানা দিতে আদিই হইলেন। তাল্ভাবৈ কারাক্র
হইবেন, ইহাও প্রচারিত হইল। যক্ষ ট্রিকিনের রক্ষিবর্গ
কনিষ্ঠ সিপিওকে ধরিয়া কারাগারে ক্রিরা হাইভেছিল, জ্যেন্
সিপিও তবন ব্যবনকারী কর্মানারির হত হুইতে প্রতিয়েক

ছিনাইরা সইলেন। এই রাজলোহিতার জন্ত তাঁহার গুলতর কণ্ড হইত, কিছ প্রসিদ্ধ প্রাকাদের বৃদ্ধিবলে প্রবং বৃত্তিকৌশলে ক্রিষ্ঠ সিশিও বৃত্তি পাইলেন।

<u>-পুনরার টি বিউনগণকর্তৃক সিপিও আজিকেনান্ অভিযুক্ত</u> হটলেন। বংকালে ভাঁহাকে অভিযোগের বস্ত প্রশ্ন বিজ্ঞান। করা হইন, তিনি ভাহার উত্তর না দিয়া রোমের সাধারণভত্তের জন্ত তিনি বে অভ্ত কর্ম করিরাছেন তাহা ক্ষেত্রীতাবার वर्गना कतिए गांशिरनम । वक्कणा त्यव ना बहेर छहे अका बहेग। পত্নবিম বিচারপঞ্জিগণ বিচারাসনে উপবিষ্ট হইয়। সিপিওর নিকট অভিযোগের উত্তর চাহিলেন। সিপিও উচ্চকর্চে বলিতে লাগিলেন, "বে ভুবনবিধ্যাত জেমার বুছে আমি হানিবলকে প্রাজিত করিয়াছিলাম, অন্ত ভাহার সাধংসরিক শ্বভি-দিন! বড়ই আশ্চার্য্যের কথা যে, অন্ত আপনারা সেই গৌরবাহিত युक्तित्म काशिटिंगाल याहेबा त्वर्जानित्वत्र केटमत्थ ध्यान ना দিয়া যুদ্ধকেতাকে শইরা প্রশ্নোত্তর ক্রিজ্ঞাসা করিতেছেন!! আপনারা অবিলবে যাইয়া দেবতার নিকট প্রার্থনা করুন, যেন রোমভূমি সিপিওর ভার ভূবনবিখাতে পুত্র ভবিষ্যতে প্রস্ব करत्र।" मिभिअत এই উদীপনাময়, বাক্যে বিচারালয়য় সমস্ত ব্যক্তি ভাঁহার সঙ্গে সঙ্গে কাপিটোলে ঘাইয়া দেবারাধনা করিতে नाशिन। विठात्रक धकाकी विठातामरन विमिन्ना त्रशिरमन। এই প্রকারে সিপিও বিচারালয়ের নিয়ম শৃত্রণ পরিহার করিয়া অক্লতজ্ঞ রোম পরিত্যাগপুর্বক লিটার্ণাম্ নামক স্বীয় পরীভবনে গমন করিলেন। রোমের সম্পর্কবিরহিত হইয়া এইস্থানে শহুখামলা কাননকুম্বলা ভূমিতে তিনি অবশিষ্ট জীবনযাপন করিয়াছিলেন। ১৮৩ খু: পূ: তাঁহার মৃত্যু হর। তিনি মৃত্যুকালে বলিয়াছিলেন যেন অক্তজ্ঞ রোমের ক্ষেত্রে তাঁহার দেহ সমাহিত না হয়।

হানিবলও এই বৎসর মানবলীলা সম্পন্ন করেন। যংকালে সেনেট হানিবলকে হনন করিবার চেটা করেন (সিরিয়ারাজের কহিত মুক্ত) সিপিও কেবল সেই আদেশের প্রজ্যাহার করিরাছিলেন। মিপিও আত্মিওকাসের সভার হানিবলের সহিত যে কথোপকথন করিরাছিলেন, তাহা ইতিহাসপ্রসিদ্ধ। মিপিও হানিবলকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "কাহাকে আপনি প্রেট্ঠ সেনাপতি বলেন ?" হানিবল কহিলেন, "কিংজিরী আলেকসাল্পর"। সিপিও কহিলেন, "তাহার ছিতীর কে ?" উত্তর হইল পিরহাস্।" প্রকার সিপিও কহিলেন "তৃতীর কে ?" হানিবল কহিলেন "বরং আমিই তৃতীর সেনাপতি"। সিপিও বিমিত হইরা কহিলেন, "ববি আপনি আমাকে পরাজর করিতেন, তবে কি হইতেন ?" হানিবল হাসিরা উত্তর দিলেন, "আপনাকে পরাজর করিতেন, তবে কি হইতেন ?" হানিবল হাসিরা উত্তর দিলেন, "আপনাকে পরাজর করিতেন, তবে কি হইতেন ?"

আমি আলেকসালার ও গিরহাস্ অপেন্ধা উক্ততর সোপানে আরোহণ করিতে পারিতাম।" তাঁহারা উত্তরে উভরুকে লাইরূপে বৃথিতে পারিরাছিলেন। পূর্ব্বে উক্ত হইরাছে, হানিবল বিধাইনিয়ার রাজসভার বাস করিতেছিলেন। কিন্তু স্থোনে রোমক্সিগের আগমন সন্তাধনা বৃথিয়া বিবশানে প্রাণতাগ করেন।

व्यहे ममत्त्र २৮८ थुः शृः, त्करी मिनाद्वत्र श्रमाध कतिवा व्यनिष्क इस अवर ज़ारम नानाविध मध्यारत्रत्व व्यवर्कन करत्रत्। বিলাসিভানিবারণের জন্ত ডিনি বিলাসপণ্যের উপরে গুরুতর এতহাতীত তিনি সেনেটের অনেক क्य कांशन करतन। অবর্ত্তা সভ্যানিগকে বিদ্বিত করেন। কিন্তু বরোবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার রক্ষণশীলতা হ্রস্বীভূত হয়। তক্ষম্ভ ডিনি গ্রীক সাহিত্যের আলোচনায় মনোনিবেশ করেন। তিনি নিজে এক-बन बेजिहानिक এবং विशां वका हिल्ला। फिरमाविनिन धवः থুকিডাইড্সের এছ পাঠ করিয়া রাজাদিগের প্রতি তাঁহার বিলাতীর মুণা জন্মিরাছিল। যথন পার্গামাসের রাজা ইউমিনস রোমে আগমন করিয়া সেনেটকর্ত্ত অভিনন্দিত হইয়াছিলেন, কেটো ভাষাতে কুদ্ধ ও বিরক্ত হইয়াছিলেন এবং দ্বণাকুঞ্চিত मूर्थ विद्याहित्नन, "ब्राकाता माश्मानी दिःखक वित्नव" (kings are naturally carnivorous animals) এত্যতীত চিকিৎসক্দিগের প্রতি তাঁহার বিজাতীর ঘুণা ছিল। কারণ তাঁহাদের অধিকাংশই এীক ছিলেন। কেটোর চরিত্র প্রাচীন রোমকদিগের সর্ব্বতোভাবে আদর্শস্থানীয় ছিল। কিন্তু ক্রীত-দাসগণের উপর তিনি নৃশংসরূপে নিষ্ঠুর ছিলেন।

তৃতীয় মাকিলনীয় যুক। রোম পশ্চিম রুরোপে প্রাথান্ত সংস্থাপন ও এসিয়ার পশ্চিমাংশে প্রতিনিধিত্ব করিয়া শান্তির আশার কাল কাটাইতেছিলেন, এমন সমরে পুনরায় যুক্ক বাধিল। ১৭৯ খুঃ পুঃ মাকিলনপতি ফিলিপের মৃত্যু হইলে তৎপুত্র পার্সিয়াস্ সংহাসনে আরোহণ করেন। ফিলিপ রুক্ত লিউনিক বুক্ত যুত্তার পূর্ব্ধ হইতে রোমের সহিত পুনরায় (১৭৯-১৯৬ খুঃ পুঃ) বুক্কের আরোজন করিয়াছিলেন। পার্সিয়াস্ বধন রাজা হইলেন, তথন তাঁহার কোবাগার ধনপূর্ণ। বিপুল সৈঞ্জন্মগ্রহের নিমিন্ত এসিয়ার রাজগণ, এইলগন, ইরিরিন্রান্ এবং কেন্টিকজাতি সকলের সহিত সংখ্যহাপন করিয়াছিলেন। রোমকগণ এ সকল আরোজন লক্ষ্য করিতেছিলেন। এই সমরে পার্সিয়াস্ রোমের মিত্ররাজ্ব পার্গামাসপতি ইউমিন্সের প্রাণ্নাশের চেটা করায় ১৭২ খুঃ পুঃ প্রেকাক্ত যুক্ত উপস্থিত হুইল।

পার্মিয়াসের অধীনে প্রকাঞ্জ সৈঞ্চল সক্ষিত্ হুইল, ওড়িসিয়া-

রাজা কোটিয় তাঁহার অধান সহার হইলেন। রোমকসৈঞ্জ বুদ্ধারত করিল। কিন্ত প্রথম তিনবৎসর রোমক্রণ বিশেষ কিছ করিতে পারিলেন না, বরং পার্নিয়ানই অনেকাংশে জয়লাভ ক্রিতে লাগিলেন। এইজন্ত নানাজাতি আসিরা পার্সিয়াসের रेनक्टबन वर्षिष्ठ कतिएक नाभिन। व्यवस्थित ১৯৮ युः शुः त्राम হুইতে কন্সল এমেলিয়াস্ পলাস্ বুদ্ধার্ম প্রেরিত হুইলেন। উভয় সৈক্তদল পিড না নামক ছানে সমুখীন হইল। ভীম আক্রমণে পার্দিরাস প্রথমে পেরা ও পরে আন্ফোপোলিস্ এবং তথা হইতে **সেমোলে দে পলারন করিলেন। किन्छ অবলেবে ধরা প**ড়িরা রোমকগণ প্রথমে তাঁহার প্রতি काकामभूव कविरममः। विराग्य जन्मवायहोत्र कतिब्राष्टिरमा। द्रामकर्गण माकिबनीबात्र বিপুল ধনভাণ্ডার লুঠন করিলেন, কিন্তু সাকিদনীয়া অবিলংখ রোমক-শাসনের অন্তর্ভুক্ত হইল না। মাকিলনীয়া ৪ ভাগে বিভক্ত হইল এবং উহার অর্দ্ধেক রাজ্য রোমের জন্ত मिर्फिड इटेन। अ नमात्र त्नात्मे अनामात्क अनितान ताकान्द অধিবাসিগণের প্রতি শান্তি-বিধান করিতে আদেশ করিলেন। ৭০টা স্থরম্যনগর তিনি এপিরাস রাজ্যের পরিণত করিলেন, অগ্নি এবং তরবারি নিপ্দিগত্তে ক্রীড়া করিতে লাগিল। লক্ষ লক্ষ অধিবাসী স্ত্রীপুত্রের সহিত অকারণে নির্দয়-রূপে নিহত এবং ১৫০০০ দাসরূপে বিক্রীত হইব। প্রাচীন সুসমুদ্ধ এপিরাস্নগর অগষ্টাসের সমন্ন পর্যান্ত মহামাশানে পরিণত ছিল।

১৬৭ খু: পু: পলাস ইতালীতে উপস্থিত হইলেন, তিনি বিপুল ধনভাগুার আনিয়া রোমের কোষাগার পূর্ণ করিলেন। তৎপরে ওদিন প্রয়ন্ত মহাড্মবে বিরাট সমারোহ সহকারে তাঁহার বিজয়োৎ-সৰ সুস্লার হইল। বিজিত মাকিদনীররাজ পার্দিরাস তাঁহার জরপতাকা ধরিয়া সঙ্গে চলিলেন। ইহার পর প্রবল পরাক্রান্ত মাকিদনীরপতি পার্দিরাস কারাক্রক হইরাছিলেন. তিনি অবশিষ্ট জীবন আলবার বাপন করেন এবং তাঁহার পুত্র আলেকসান্দর কেরাণীগিরি করিয়া উদরায়ের সংস্থান ক্রিয়াছিলেন। মাকিদনীয়া অন্ন ক্রিয়া রোম ভূমধ্যসাগরের পূর্ব-উপকৃলেও সার্বভৌম প্রাধান্ত লাভ করিলেন। তদানীস্তন শরাক্রমশালী সমাট্রগণও রোমের নামে কম্পিত ও শন্ধিত হইতে বাগিলেন। অন্তিওকাস্ এপিফেনিস্ মিসয় আক্রমণের উচ্ছোগ ক্রিতেছিলেন, কিন্তু রোমের নিষেধাঞ্জার আর তিনি মিসর জরে সাহসী হইলেন না। বিধাইনিয়ার রাজা প্রসিরাপ মুক্তিসভকে চীরবাল পরিধান করিরা রোমের প্রাভুত্ব শিরোধার্ঘা করিলেন। পার্গামানপতি ইউমিন্সের রাজ্যের কিয়দংশ রোমকগণ অধিকার ক্ষরিলেন। এই সমরে রোম গ্রীক্ষমগর সকলের বাধীমভা হরণ করিরা রোমকশাসনের অন্তর্ভু করিলেন। আবলতর একিয়ান্লিম পার্সিরাসের প্রকাবন্ধনের ক্রম্ভান্তিক ক্রিলেন। > হাজার
সম্রান্ত একিয়ান্ >৬ বংসরকাল রোমে ক্র্মান্টিলেন, জখন কেবল
১৬ বংসর পরে যখন ভাঁহারা মুক্তি পাইরান্টিলেন, জখন কেবল
৩০০ মাত্র ক্রীবিভ ছিলেন। অবশিষ্ট ৭৮০ অরান্ট্রিক অভ্যাচারে
আপত্যাগ করেন। এই ঘটনার বিরক্ত হইরা অনেকে বিজ্ঞাহী
হইরা উঠিল। ভরুগ্যে আজিখান্ নামে একজন হাসীপুত্র
আপনাকে পার্সিরাসের বংশধর বলিরা পরিচর দিরা মাকিদনীরার
সিংহাসন দাবী করিলেন (১৪৯ খ্যু: পূ:) এবং ফিলিপান্স নাম
গ্রহণপূর্বক সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। প্রাথমে ইনি
অনেকাংশে সকলতা লাভ করিরাছিলেন। রোমক প্রিটর জ্ফেশিক্তরান্ত্রিক বির্ভিত্র হালেন। কিন্তু এবং বন্ধী হইলেন।
করিতেই মেটালান্কর্তুক ইনি পরাজিত এবং বন্ধী হইলেন।

আজিঙ্কাদের ক্ষণিক ক্লডকার্য্যভার একিরান্গণ উত্তেজিত হটরা উঠিল এবং ম্পার্টা আক্রমণ করিল। কিন্তু ১৪৭ খু: পু: ছইজন রোমক কমিশনার এই বিষয়ের মীমাংসার ভাত গ্রীসে কিন্ত অবিশবে করিছ প্রভৃতি স্থানে প্রেরিভ হইল। বিদ্রোহ ঘটিল। স্পার্টা একিয়ানগণকর্ত্তক আক্রান্ত হইল। কমিশনারগণ পলাইয়া প্রাণ রক্ষা করিলেন। তথন সেনেট এकिश्रान-निरंगत्र विकरक युक्त त्यावना कतिरनन, त्यांनान नरेमत्छ গ্রীদে পৌছিলেন, একিয়ান্-দেনাপতি ক্রিটোলস যুদ্ধকেত্রে উপস্থিত হইতে সমর্থ হইলেন না। পরে ভার্পিলা নামক স্থানে क्षु ७ वन्त्री श्रेरणन । ७९भरत्र जिन्नाम् अकिन्नान्-मिरगत्र व्यक्षि-নায়ক হইয়া করিছ নগরে সৈঞ্জগণকে স্পর্কিত করিয়া किছुकान युक्त हानाहरनम । कन्नन मान्यियान कतिष्ठ ज्ञबरताध कतिरागन । ডियाम পরাজিত হইয়া প্রায়ন করিলেন, অধিকাংশ অধিবাসীও পলায়ন করিয়া প্রাণ রক্ষা করিল। মান্মিয়াস্ নগরে **अट्यान** श्रृक्षक व्यवनिष्ठ श्रुक्षकान्यक छत्रवाक्रि मृद्ध निरक्षन क्रितिन এবং স্ত্রীলোক ও বালকগণকে জীতদাসরূপে বিক্রয় করিবেন। তৎপরে তিনি প্রাচীন করিছনগরের বিপুল ধনরত্ব লুঠন করিয়া नगरत अधिधान कतिराग । कतिष्ठ नगरत आहीन शृथिवीत শিরৈখার্য পরিপূর্ণ অভিতীয় চিত্রশালিকা ছিল। সমস্তই প্রভিয়। ভদ্মস্তুপে পরিণভ হইল। ভূবনবিখ্যাত করিছ বিধ্বন্ত হইরা গেল। গ্রীস স্বাধীনতা হারাইরা রোমকশাসনের অন্তর্ভু জ হইল।

ছানিবলের নির্বাসনের পর কার্থেনীরগণ ২০১ খ্বঃ পূর্বাংক্রের সন্ধি অন্ত্রারী কার্যা করিরা আসিতেছিলেন। স্থার্থেকীরগণ পদ পিউনিক বুল ও রোমের সহিত সন্ধির সর্ভ বঞার রাখিয়া কার্থেকের ধাংসমাধন (১৫৬-১৪৬ খৃঃ পুঃ) খনেশীর বিসুখ্র সৌরবের পুনক্ষার করিভেছিলেন। ভক্ষত্র চাঁহারা রোমক সেনেটের চকুঃশূল হইরা পড়িলেন। সেনেট বৃদ্ধে হল ক্ষেত্রণ করিছে লাগিলেন।
কটনাক্রের নিউমিডিরার রালা মেনিনিরার সহিত কার্থেরীরগণের বিরোধ হইতে লাগিল। কিন্তি রোনের মিক্ররাল ছিলেন।
তক্ষম্য কেটো কার্থেরকে ধরংস করিরার ক্ষম্য করিলার বৃদ্ধ বোরগার পরামর্শ দিলেন, কিন্তু সেনেট ভারতে সুমন্ত হইলেন না।
তথন কেটোপ্রাম্থ ক্ষ্যাক্রমন দুভ কার্থেরের ক্ষার্থা লানিতে
তথার গনন করিলেন। মাধ্যের বনতঃ কার্থেরের ক্রার্থা
গেথিরা কেটো গারেজালার ব্যথিত হইলেন এবং কার্থেরধন্যসের
নিমিত্ত রোমবাসীকে প্নঃ পুনঃ উত্তেলিত করিতে লাগিলেন।
ক্ষার্থেরে রোমবাসীকে প্নঃ পুনঃ উত্তেলিত করিতে লাগিলেন।

কার্বেণীরগণ রোমে দুত প্রেরণ করিয়া সেনেটের সমত্ত কথার সমতি প্রদান করিল এবং সেনেটের আনেশালুসারে ৩০০ সমাত কার্থেজীর যুবককে প্রতিভূষরপ রোমে রাখিতে সমত হইল। সেনেট তাহাতেও তুপ্ত হইলেন না, পুনরার হলাবেবণ করিতে লাগিলেন এবং তাঁহারা কার্থেজে গমন করিয়া কার্থেজীয়বিগকে তাহাদের সমত্ত অন্ত্র পদ্র রোমক্রিগের লিবিরে সমর্পণ করিতে কহিলেন। কার্থেজীয়গণ তাহাতেও সম্মত হইল এবং ২০০০০ অন্তর্শন্ত ও ২০০০ প্রাচীরভঙ্গ ও নগরাবরোধ করিবার এক্সিনাদি সমত্তই রোমক্রিগকে সমর্পণ করিল। তাহারা ভাবিল রোমক্রগণ তাহাদের অন্ত্রশন্ত্রাদি লইয়াই কান্ত হইবেন। কিন্তু রোমক্রগণ তথন কহিলেন— "তোমরা কার্থেজনগর পরিত্যাগ করিয়া অক্সন্থানে যাইয়া বাস কর—কার্থেজ বিধবত হইবে।"

নিৰ্দোষ কাৰ্থেজীয়গণ তখন হতাশ ও নিৰুপায় হইয়া বীরের ম্পার মরিতে সম্বল করিল। অবিলম্পে নগরছার রুদ্ধ করিয়া তাহারা সমস্ত ইতালীয়দিগকে নিহত করিল এবং এই অস্তার শক্রর সহিত যুদ্ধ করিতে ক্রন্তসম্বন্ধ হইয়া অদেশবৎসল কার্থেনীয়দিগকে উত্তেজিত করিতে লাগিল। কর্মকারগণ দিবারাত্র অন্তনির্মাণ করিতে লাগিলেন, রমণীগণ কেশচ্ছেদন্পুর্বাক ধছুকের গুণ নিশ্বাণে নিরতা হইলেন, আবালর্দ্ধবনিতা খদেশবাৎসলাের মোনমাত্রে দীক্ষিত ও প্রণোদিত হটরা অবিরাম অরূপিকা করিতে লাগিল। কার্থেজ যেন একটা প্রকাণ্ড আর কার্থানায় পরিবৃদ্ধ হইল। নগরবাদী ৭০০০ নরনারী যুদ্দশিক। করিতে লাগিলেন। ইমিলিরাস্ পলাসের জ্যেত্রপুত্র কর্পেলিয়াস্ সিপিও সলৈত কার্থেকে ধনন করিলেন। হাসভুবল নামক এক নিৰ্বাসিত সেনানী কাৰ্থেৰীৰ সৈঞ্জের অধিনায়কতা প্ৰচণ कतिरागन । कार्थजीवितरांत इटेंडी चाक्रमान तामकरेनच हिन-ভিন্ন হইল, কেবল সিপিওর রুপ্রেলিলে সৈম্ভবল ধ্বংসমুখ হইডে ক্রকা পাইল। সিপিও মিশর অধিকার করিয়া কার্থেকের ৰাজ্ঞাদির সংগ্রহ-পথ অবরোধ করিলেন। কার্থেঞ্জীরগণ অধিভীয় ৰীব্ৰছে আত্মৰকা কবিতে দাগিল এবং অবিদাৰে ১০ মাৰ্থভৱী নির্ম্বাণ করিয়া অলপথে সমরসজ্ঞা করিল। তক্ষর্নমে ছোমকগণ ভীত হইবেন, সিপিও প্রমান গণিলেন। অবশেষে ও দিনের অবিশ্রাক্ত বৃদ্ধের পর রণতরীসমূহ বিনষ্ট হইল ৷ তথন সিপিও मुम्बार कार्यक करताथ कतिराम ध्वा दा मकरमञ्जू बाजिद अक्कारत स्थन-बमात अधिकात्रभूर्वक कार्यकात छेळ आहीत चैत्रक्त कतिन। नगत मध्य क्षत्रविषात्रक मुस्त्रत अखिनग्र হইতে লাগিল। পাছাভাবে অধিবাদিগণ শ্বমাংস ভক্ষণপূৰ্বক রোমকসৈত্তের হক্ত হইতে নগররকা করিতে লাগিল, সর্ব্বত্রই অন্তৰ্মান কৰিব ও ভীষণ যত। প্ৰত্যেক বাৰপথে সপ্ৰতৰ প্রাসাদের ককে ককে কার্থেকের নরনারী অভূতপূর্ব অনুষ্ঠচর অন্ত্রক্রীড়া ক'ররা প্রাণত্যাগ করিতে লাগিল। বন্ধির লেলিহান জিহবা শিরৈখণ্যবিমণ্ডিত স্থচাকভাস্বর্থাবিশোভিত সহস্র সহস্র শ্রেণীবন্ধ সৌধমালা ভন্মসাৎ করিয়া ফেলিল্য নরনারীর রক্ত-শ্রোতে সমুদ্র পর্যান্ত ভীষণ রক্ততরঙ্গে প্রবাহিত ছইতে লাগিল। সিপিও অঞ্পূর্ণ নয়নে এই ভয়াবহ দুখা দেখিয়া হোমারের ইলিয়াড হইতে শ্লোক আর্ত্তিপূর্ব্বক ("সে দিন আসিবে যথন পৰিত্ৰ টুয় বিধ্বস্ত হইবে") কহিতে লাগিলেন, 'হায়! একদিন রোমের ভাগ্যেও এই অভিনয় ঘটিবে।।' ৫০০০০ কার্থেনীয় নরনারী সপ্তমদিন অলিভশাধা হত্তে করিয়া সিপিওর নিকট জীবন ভিক্ষা করিল। সিপিও তাহাদিগকে ক্রীতদাসরপে বিক্রম করিলেন। হাস্ড্রল ইস্কালেপিয়াসের মন্দিরে আত্মরকা করিতে লাগিলেন। পরে তিনি ভীত হইর। সিপিওর নিকট আশ্বসমর্পণ করেন। কিন্তু তাঁহার বীরপত্নী নিভীক্ষদয়ে অঙ্কের শিশুসম্ভানদিগকে একে একে বহিন্দ্র আছতি দিয়া শেষে আপনাকে পূর্ণাছতি দিয়া স্বদেশবাংসল্য-যজ্জের পরিসমাপ্তি করিয়াছিলেন। এই সাধ্বীরমণী পভিপুত্রের শোকানলে দগ্ধ হইয়া অগ্নিতে জীবন বিসৰ্জ্ঞন করিবার পূর্বে রোমের প্রতি যে অবস্ত অভিদম্পাত করিয়াছিলেন, ভাহা ৫০০ শত বৎসর পরে ফলিয়াছিল। এই প্রকারে ঐশ্বর্যাশালী বিশাল কার্থেজ মহাকাশানে পরিণত হইল। অভাপি ভাছার ধ্বংসাবশেষ দর্শকদিগকে সেই অভ্তপুর্ব্ব ভরাবহ ঘটনার ভীষণ-চিত্র স্বরণ করাইয়া দের।

১৪৬ খৃ: পৃ: জ্লাইমানে কার্থেক বিধবত হইল। সিপিও রোনে প্রত্যাগমন করিয়া মহাসমারোহে বিজ্যোৎসব সম্পন্ন করিবেন এবং তিনিও হানিবলজেতা সিপিওর স্লায় আফ্রিকেনাস্ উপাধি ধারণ করিবেন। অবশিষ্ট কার্থেজরাকা আফ্রিকা নামে রোমক-শাসনের অধীন হইল। প্রাচ্যবাণিজ্যের প্রধান কেক্ত করিছ এবং প্রাতীন্ত বাদিজ্যের নিলর কার্থেজ এই ছই বাদিজ্যপ্রেমান নগর রোমকগণকর্ত্তক বিনাই ছইল। এই সমর হইতেই
ক্রোম বিজিতনেশ সকলে সাত্রাজ্যের স্ত্রপাত করিতে লাগিলেন।
এই সমরে স্পোননে তথার শান্তিমর শাসন প্রবর্তিত হইরাছিল।
ক্রিড ১৫০ থঃ পৃং সেগেডা নগরের অধিবাসিগণ নগর প্রাচীর
নির্মাণ আরম্ভ করিলে রোমকগণ ভাহাতে
শ্বেরীর বৃভ
(১৫০-১০০ খঃ পুং) বাধা প্রাণান করিলেন। ডজ্জন্ত স্পোন
বহ্বর্বব্যাণী বৃদ্ধের স্ত্রপাত ইছল।
কেন্টেবেরিরগণ সেগেডার পক্ষাবদ্ধন করিল। কালবিয়াস

নোবিলিওর যুদ্ধে তাহাদিগের কিছু করিতে পারিলেন না। পরে ক্লডিরাস মার্সেলাস ভাহাদিগকে পরাজিত করিরা সন্ধিতাপন कतिरलन । তৎপরে সাল্পিসিয়াস গল্বা লিউসিটানিয়া আক্রমণ করিলেন, কিন্তু তিনি স্পোনিরার্ডগণকর্ত্তক বিশেষরূপে পরাজিত হইলেন। পরে লিউসিনিয়াস্ লুকালাস্ তাঁহার সহংগাণী হইরা পুনরায় লিউসিটানিয়া আক্রমণ করিলেন। কিন্তু তাহারা সন্ধির জন্ত গলবার নিকটে দৃত প্রেরণ ক্রিলেন। তখন গলবা লিউসিটানিয়দিগকে অভয়দানপূর্বক সপরিবারে তাঁহার শিবিরে আদিতে আদেশ দিলেন। তাহারা তাঁহার কথার বিশ্বস্ত হইয়া সপরিবারে আগমন করেন। শিবিরে পৌছিবামাত্র গলবা বিশ্বাস্থাতকতাপুর্ব্বক অমাত্র্যিক অত্যাচারে তাহাদিগকে সপরিবারে তরবারিমুথে প্রেরণ করিলেন। বছসংখ্যক নির্দয়রূপে হত হইল। কেবল ভিরিয়েথাস ও সম্ভান্য কএকজন পলাইয়া প্রাণরক্ষা করিল। ভিরিয়েথাস রোমক-দিগের এই নুশংসব্যবহার ও বিশাস্থাতকতার প্রতিশোধ লইতে বদ্ধপরিকর হইলেন। তিনি প্রথমে মেবপালক ছিলেন, পরে ডাকাতি করিরা জীবিকা নির্মাহ করিতেন। কিন্তু রোমকদিগের এই অত্যাচারে তিনি স্বদেশবাংসলো প্রশোদিত হইয়া উঠিলেন। লক লক ব্যক্তি তাঁহার অধীনে যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত হইল। ভিরিদ্বেখাস্ রোমকদিগের সহিত প্রকাশ্ত বৃদ্ধ পরিত্যাগ করিয়া খণ্ড বছ আরম্ভ করিলেন, তাঁহার বিক্রমে রোমকলৈর বছবুদ্ধে পরাজিত হইল। পরে ১৪৫ শ্বঃ পুঃ রোম হইতে কেবিয়াস্ মান্ধিমাস্ তাহাদের সহিত বুদার্থে প্রেরিত হইলেন। তিনি ভিরিরেথাসকে বিশেষরূপে পরাজিত করিলেন। এই যুদ্ধ নিউমান্টিয়ান বুছ নামে খ্যাত।

বাহা হউক, ভাহাতেও বৃদ্ধের বিরাম হইল না, একদল রোমক-সৈত্ত উত্তর-স্পোদে কেন্টিবিরদিপের সহিত এবং অত দল দক্ষিণ-স্পোদে ভিরিরেখান্ ও লিউসিটেনিয়ার সৈত্তের সহিত বৃদ্ধ ক্রিতে লাগিলেন। ১৪১ বৃং পৃং ভিরিরেখান কেবিরাসকে

धक्की शिविनकरके रह कतिहा विक्रियन श्रेष कह कहिरलन । क्षित्रांन् जेनावादत्रहीन क्षेत्रा जित्रिद्वशान्त विवताबद्धान चीकात्रपूर्वक निव कतिता भतिज्ञां भारेतान । किन्त त्मात्महे धारे निक धार कतिरनन मा। प्रनन्नात सूद भावस इरेन। व्यवस्थात्व कित्रित्त्रभोत्तव मुकाटक स्थानिवार्कत्रन हीनवन हहेवा गफिन। छ९मात्र क्मित्रान् अठीन् धर नकन द्वारम माविद्यानन করিলেন। কিন্তু কেল্টিবেরিরনিলের সহিত, তথন্ত বুদ্ধের निवृद्धि रहेन ना । >७१ वृद्ध शृद्ध हिनिवान मान्तिमान विदेशा-কীইন গৈছকর্ত্ব বেটিত ছইলেন, এক গডান্তরহীন হইরা তাহাদের সহিত সৃষ্টি করিলেন। কিন্তু সেনেট এই সৃষ্টি জগ্রাছ করিলেন। অবশেষে ১৩৪ খুঃ পুঃ সিশিও আফ্রিকেনাস্ পোনে প্রেরিত হুইলেন। সিপিও তাহাদিগের নগর অবরোধ করিলেন। স্পেনীয়নৈন্য ভীমবিক্রমে নগর রক্ষা করিতে লাগিল। অবশেবে থাখাভাবে বছসংখ্যক লোক শ্বমাংস খাইরা জীবনধারণ করিল এবং পরিলেবে আত্মসমর্পন করিল। সিপিও নগর প্রাচীর नमञ्जिम कविया अधिवानी निगदक नानक्रत्भ विक्रम कविदनन ।

নিউমান্টাইন যুদ্ধের সময়ে রোমে ভীষণ সমাজ-বিপ্লবের স্ত্রপাত হইল। পুর্বেষ উক্ত হইরাছে যে, ক্রীতদাদের প্রাহর্ভাবে রোমের ক্রবক ও প্রমজীবি-সমাজ অধ:-প্ৰথম দাসযুদ্ধ পতনের শ্ৰোতে পতিত হইয়াছিল। (३७४- ३७२ थ: शू:) পক্ষান্তরে ক্রীভদাসগণ্ড নির্দয় ব্যবহারের অধীন হইরা ধ্বংস্থায় হইতেছিল। বিভাডিত দাসগণের জীবিকার্জনের কোনরূপ উপার ছিল না। সিসিলিতে দাসসংখ্যা সর্ব্বাপেকা অধিক হইয়াছিল। তথায় এরা প্রদেশের ভূস্বামী ডেমোফিলাস দাসগণকে অত্যস্ত নির্দানন্তে পান্তি দিয়া-ছিলেন। তাহাতে প্রায় ৪০০ ক্রীতদাস ইউনাস নামক এক সিরীয় ক্রীতদাসের নেতৃত্বে মিলিত হইয়া এরা আক্রমণ ও ভীষণ অত্যাচার সহকারে নগরবাসিগণকে নিহত করিল। ইউনাস মন্তকে ब्राक्रमुकु धावन क्विमा निःशामान चारबाहन क्विरमन । मःवान পাইয়া ৭০০০ দাস আসিয়া তাঁহার দলপুষ্টি করিল। রোমক প্রিটরগণ একদশ সৈম্ভদহ ভাহাদের বিরুদ্ধে ধার্বিত হইলেন. কিছ দাসগণের বিক্রমে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। অবশেষে ১৩৪ शुः शुः क्कान कान्छित्रान् क्रिकान् छाहात्तत्र नहिष्ठ युकार्थ প্রেরিত হইলেন। কিছ তিনি দাসগণকে পরাজিত করিতে क्षत्रमर्थ इहेरनम । क्षत्रानात २७२ थुः शृः क्षमण मिश्रिनियोग युट्य গমনপূর্বক টরোমেনিয়াম্ এবং এয়া আক্রমণ করিয়া বিজ্ঞোহী দাসগণকে পরাজিত করিলেন। ২০০০ নাস হত এবং অবশিষ্ট কুশাখাতে বিনষ্ট হইল। ইউদান বন্দী হইরা রোমে প্রেরিত हर्राजन। किन्त भिष्मात्था कार्यात मुक्ता रह।

এ সমরে রোম এসিরাখন্তের এক কাকাভ রাজ্য লাভ করিলেন। পার্থানাসের রাজা জানুনান কিলোমেটর অপুরকা-বহার সূত্যকালে আপনায় বিশাসাক্ষ্য ক বিশুল বনচাণ্ডার तिरात नाम गानगब कतिक विराम (100 क्य पूर)। किस তাহার পিতা অরিটোনিকান জাইনাতে বিষয় গোলাবার উপভিত করিলেন। ছোক্ত কলক নিবিনাল জেলাস্ তথ্যসূত্র পরাজিত नर्ष्ठ रहेत्सम् (३०० कुः गृः)। किन्त शत वश्मत चित्रिते। निकान बादक रेनकक कि नवाकित क क्वीकृत क्वेरनम धारा পাৰ্শবিদ্যালয় অনিয়া নামে ছোময়াল্যের অভত্ত হইল (>२> वः गः)। यह मनदा इद्यान, व्यनिमा ७ व्यक्तिका वह ভিন মহাবেশে রোমের রাজাপরিধি প্রদারিত হইল। এই প্রভাও बाबा अक्न > है। बालान विकक बहेन। > निनिनि । २ मार्फि निवा ७ कार्निका । ०-३ त्नारमत्र हुई व्यातन । ৫ गुनिवा निमान-शिमा । ७ माकिममित्रा ७ अकिता । १ **देति**तिकाम् । ৮ जाकिका (कार्यक)। > এসিরা (পার্গামান)। > । টাননালপাইন গল বা প্রভিন্সিরা। রোমের সাধারণতত্র এই বিশাল রাজ্যলাভ করিলেন বটে, কিছ খনবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে বিলাসবৃদ্ধিতে রাজা-সমুদ্ধি নট হইতে লাগিল। রোমের রাজ্যশাসনবিবরে আভ্য-ভরিক বিপ্লব সমূখিত হইতে লাগিল। রোমবাসী যে ভাদেশ-বাৎসল্যপ্রভাবে দিখিলর করিতে সমর্থ হইরাছিলেন, একণে সেই ধর্ম ভোগবিলাসে পরিণত হুইল। তাঁহারা ত্যাগের ধর্ম ছাডিয়া ভোগের ধর্ম্মে রভ হইলেন। বীরব্রভ রোমকগণ অসি ছাডিয়া বাঁলী বাজাইয়া গান করিতে শিখিলেন।

রোমের এই বিষম অন্তর্বিপ্লবের সময় টাইবেরিরাস ও কেরাস প্রাকাস বিশেব প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন। এই রুই সহোদর বিখ্যাত সেন্দ্রোনিয়ান গ্রাকালের পুত্র এবং হানিবলজেতা সিপিও व्याक्रिक्नारमम सोहित । देहारमम बननी कर्निनम भूजिमगरक সর্বভোডাবে সুশিক্ষা প্রদান করিরাছিলেন। তব্দুস গ্রাকাস ভ্ৰাত্ৰয় তদানীৰন বোদক যুবকসমাজে শিকা ও সভ্যভাৱ উচ্চ नमयी व्याख स्टेबाहित्मन। टेटाएम ब्याह है। हेरवित्रवान রাজালের গুণে মুর্ম হইরা সেনেটের প্রধান সমস্ত এশিরাস ক্রডিরাস উাহার সহিত খীর কল্পার বিবাহ দিরাছিলেন। আবার টাইবেরিয়ানের ভাগনী নেত্যোনিয়ার সহিত কনিষ্ঠ নিশিও আফ্রিকেনানের বিবাহ হইম্বছিল। স্থতরাং এই ত্রাভবর শিক্ষা ও কৌনীয় উভৰ সুন্দৰ্শেই হোমের সমাজে শ্ৰেষ্ঠ বলিয়া অভিহিত ছইতেন। টাইবেলিয়াস ১৩৭ খ্যা পাঃ কোরেটর পরে নিযুক্ত হ**ন। এট্রিরার মধ্য দিরা বাভারাত সমরে তিনি রোমের ক্ল**বক সম্মান্তবের চুদ্দা ও অধঃপতন অবলোকন করিয়া ভাষার সংখ্যরে बारमानियान करतन । जनस्माद्य छिमि ३७७ बुर मु: के विकास প্ৰের প্রার্থ হইরা উক্ত প্রে নিযুক্ত হন। তিনি ওক্সমিনী काबात कृतककूरणत पूर्वमा त्मातिहरू कामाहित्सम ध्वयः ८०१ श्रः পুঃ প্ৰাৰ্থিত পিসিনিহাস বা "ক্ৰিস্বভীৰ আইন" সংভাৱ ক্রিয়া বিবিশ্বত করিতে প্রার্থনা করিলেন। সেনেটের বিজ্ঞ ও নেশ-হিতৈতী সভাগৰ এবং সাধাৰৰ ব্যক্তিৰৰ্গ ভাঁহাৰ প্ৰস্থাবিত चारित्वत्र चक्रुत्मावन कव्रित्मन, किन्ह त्मत्नत्वेत्र त्व मक्न मछा कृषाशिक्षमीत महिक मन्त्र क धरा माकारिकरी हिर्मन, জাৰালা টাইবেরিলালের বিক্তম আগতি উত্থাপনের নিমিত অক্টে-ছিরাস নামক এক সকত নিযুক্ত করিলেন। অস্টেভিরাস प्रेट्टिबियालय मध्यादात विकटक मधायमान स्टेटमन। उथन টাইবেরিয়াস অক্টেভিয়াসকে প্রচাত করিতে মনস্থ করিলেন এবং তজ্জ্ঞ সাধারণের 'ভোট' বা সন্মতি গৃহীত হইল। ৩০টা জাতির মধ্যে ১৭টা প্রথমে অক্টেভিরাসের পরচ্যতি পক্ষে ভোট দিল। পরে অটাদশ ভোট অক্টেভিয়াসের বিরুদ্ধে দীছাইল। তখন অধিক ভোটের বলে টাইবেরিরাস সেনেটের উপবেশনমঞ্ হইতে অক্টেভিয়াসকে বলপুর্বাক স্থানান্তরিত করিতে **আছেল** করিলেন। ইহাতে গ্রাকানের শত্রুপক্ষ অভান্ত উত্তেজিত হইরা উঠিল এবং তাঁহাকে রাষ্ট্রবিপ্লবের পক্ষপাতী বলিয়া অভিযুক্ত করিতে চেষ্টা করিল।

যাহা হউক "ক্রবিসম্মীর আইন" তৎকালে গ্রাবর্ত্তিত হইল। তথন গ্রাকার প্রস্তাব করিলেন বে, পার্গামারের রাজার দানপত্রে রোম বে বিপুল ধনভাঞার প্রাপ্ত হইয়াছেন, তাহা কুষককুলের সাহাব্য এবং ক্রবিভাগুরিত্বাপনের জন্ত ব্যবিত হউক। व्यक्तित्व व्यक्तिम् त्मरमध्येत्र मध्यमिरगत व्यथिकारत रखक्तिन করিলেন। প্রাদেশশাসন এবং কোষাগারের ব্যবস্থা সম্পূর্ণরূপে তাঁহাদের বিবিষদ্ধ অধিকার বলিরা বিবেচিত হইত। কিন্ত প্রাকাসের এই প্রভাবে সম্রান্ত ধনিসম্প্রদার বিরক্ত হইয়া উঠি-লেন। এদিকে প্রাকালের ট্রিক্টিন পদের সময় লেয় হইবার উপক্রম হইল, কিন্তু ভিনি পরবর্ত্তী বংগরের বর্ত্ত প্রার্থী হইলেন। কিছ ধনিগণ চুইবংসৰ উক্ত পদে থাকা আইন-বিৰুদ্ধ বলিয়া খোর অভিবাদ করিতে লাগিলেন। টাইবেরিয়ান খীর পুত্রকে কোনে করিয়া সাধারণের সহাত্ত্বতি প্রার্থনা করিকেন, সকলে ভাঁহাকে সাহায্য স্বরিজে ক্রজিপ্রভ হইল এবং পাছে ভাঁহার জীবন হানি হয়, এইজন্ত সকলে সমস্ত রাত্রি তাঁহার বাটী বকা করিতে গাগিল। পর দিন ভূপিটারের মন্দ্রির সমক্ষে কাপি-টোলে পুনরার বিচার-স্মিভির অধিবেশন হই ল। সিপিও स्मिनिका केक्ट्रिविकारमञ्जू ल्यानमार्थन क्या करवा कविएक गाणि-লেন এবং লেনেটের প্রভাবিগ্রেক উত্তেজিত ভাবে কহিতে লাগিলেন,—"প্রাকাশ রাজাশাতের চেটা ক্রিতেকেন। বাহারা

পবিত্র সাধারণত্তর রক্ষা করিতে চাহেন, ভাঁহারা আমাকে আর্থারণ করুন।" তাহাতে দেনেটের সভ্যগণ ও অভিজ্ঞান্তগণ সকলেই সেনেট গৃহের বেকের পারা ভঙ্গ করিরা ও লাঠা লইরা টাইবেরিরানের পক্ষা সকলকে আক্রমণ করিলেন। ট্রিবিউনের সভ্যগণ টাইবেরিরানের সহিত পলারনপূর্বক কুণিটারের মন্দিরে আগ্রন লইলেন। কিন্তু মন্দিরে প্রবেশকালে টাইবেরিরান্ পড়িরা গোলেন এবং উথানের সমরে শক্রপক লাঠার আবাতে ভাঁহার মাধা ভালিরা দিল ও তৎক্ষণাৎ ভাঁহার মৃত্যু হইল। ভাঁহার পকীর ৩০০ ব্যাক্তি শক্তাবাতে গভাল্ব হইল। ভাঁহারের মৃতদেহ টাইবার নদীর অলে নিকিপ্ত হইল।

এই প্রকারে কোনে দর্মপ্রথমে আন্তর্জাতিক বিবাদ বা গৃহ-বুদ্ধের পুত্রপাত হইল ৷ রোদের রাজাকে নির্কাদন করিবার পরে এরপ ঘটনা পূর্বে আর উপস্থিত হয় নাই। রোমের অভিযাত সম্প্রদার এইরূপে বর্ণাত করিলেও তাঁহারা প্রাকাস-প্রবর্ত্তিত "এগ্রেরিরান" আইন রহিত করিতে সাহসী হইলেন না। প্রাকাসের পদে কার্বো নামে একজন নিযুক্ত হইলেন। এই সময়ে গ্রাকাদের ভগিনীপতি কনিষ্ঠ দিপিও আদ্রিকেনাদ স্পেন হইতে প্রত্যাগত হইয়া স্থানকের মৃত্যুতে বিশেষ সম্ভোবপ্রকাশ করিলেন। ভাহাতে সাধারণে ভাঁহার প্রতি বিরক্ত হইল। সিপিও একণে সাধারণের হিভার্থে প্রবর্ষিত এগ্রেরিয়ান আইনের বিপক্ষতা করিতে লাগিলেন এবং প্লিবিয়ান সম্প্রদারের অধিকারে হস্তক্ষেপ করিতে লাগিলেন। গ্রাকালের পদস্থ কার্বো কোরামে দাঁডাইরা তী বভাষার দিশিওকে প্রজাপক্ত বলিয়া তির্ম্ভার করিলেন। দিপিও পুনর্কার গ্রাকাদের মৃত্যুতে আনন্দ প্রকাশ করিবামাত্র সন্মিলিত প্ৰজাবৰ্গ উত্তেজিত হইয়া বলিল, "অত্যাচারীকে দুর করিয়া দেও"। পরদিন প্রাতঃকালে দেখা গেল, সিপিওর মৃতদেহ শ্যার পতিত রহিরাছে, কার্বো দিপিওর প্রাণসংহার করিরাছেন বলিরা অভিজাতগণ সন্দেহ করিতে লাগিলেন। কিন্তু এই সংবাদে ধনিসম্প্রদারণণ ভীত হইলেন। কার্বো এই সমূত্রে সমস্ত ইভানীবাসীকে সভানির্ম্বাচনে সন্মতি দিবার অধিকার প্রদানে কড়সভর হুইলে অক্সান্ত স্থানের অধিবাসীরা ১২৬ খু: পু: রোমে সমাগত হইল। কার্বোর প্রভাব বার্থ ক্রিবার অভিপ্রারে টুবিউন কুনিরাস্ পেরাস্ রোমের প্রবাসি-গলকে অবিলবে ব্যাম পরিত্যাগ করিয়া ক্ষাত্র ঘাইতে আদেশ করিলেন। কিন্তু টাইবেরিরাস্ প্রাকাসের কনিঠন্রাভা কেরাস্ প্রাকাস ইহার প্রতিবাদ করিলেন। তিনি, কার্থো এবং ভারাদের অন্তান্ত বন্ধুগণ ইভালীবাসার পক্ষে নির্বাচনাধিকার অবানে ৰঙণারকর হইবেন। পোরাস্ ইহার প্রতিভূলভাচরণ ক্ষতিত লাগিলেন দেখিৱা ইতালীবাসিগণ উত্তেজিত হইরা উঠিল

এবং ক্লেকিনি নামক স্থানের অধিবাসীরা অন্তব্যরণ করিল। কিন্ত প্রিটার প্রশিমিরাস্ অধিদাবে সেই বিজ্ঞান্তব্যন ক্রিলেন (১২৫ বা পুঃ)।

এই नमन रहेटछ नाधान्न व्यक्त क्या क्यांना आकारनत गृहि चोक्टे रहेग । किमि नार्किमिन्नान मानत्म निस् चाकिन्ना ३२६ मा পুঃ অক্তাং রোবে কিরিয়া আসিলেন এবং ১২৩ খুঃ পুঃ টি বিউন নিবৃক্ত হইলেন। তিনি সাধারণের বিভার্থে সেনেটের ক্ষতা ধর্ম করিয়া সমাজ ও রাজ্যপাসনের আমৃল সংভারে মনোনিবেশ করিলেন। পরিস্রেগণের উর্ভির আরু এবং রোম ও রোমবাসীর হিতার্থে কেরাস প্রাকাস অনেকগুলি আইনের পাও নিপি প্রস্তুত করিরা ভাষা বিধিবত করিরাছিলেন। তিনি ৰীয় প্ৰাভাৱ এগ্ৰেরিয়ান বিধি পুনঃ, প্ৰবৰ্তিত করিয়া সাধায়ণের অভ্যন্ত প্ৰিন্ন হইরা উঠিলেন। ভজ্জভ ভিনি ১২২ খুঃ পুঃ পুনরার টি বিউন নিযুক্ত হইলেন। এই সমরে কালভিয়ান ক্রেকান কলল নিযুক্ত হইরা কেরানের সহারতা করিতে লাগিলেন। তাহাতে কেয়ান আকান নমত ইতালীবানীকে রোমের ভার নির্মাচনাধিকার প্রদান করিলেন। সেমেট গ্রাকানের প্রতিপৃত্তি দেখিয়া তাঁহায় বিৰুদ্ধে লিভিয়ান্ ভাুুুুুুানান্ নি নামক একজন ধনী সদস্তকে নিযুক্ত করিবেন। ভালাস প্রথমে গ্রাকালের মতাত্ববর্ত্তী হইরাই কার্য্য করিতেছিলেন। কিন্তু কেরাস্ আফ্রিকার উপ-নিবেশ্বাপনে পুমন করার, অবসর বুঝিরা ডাসাস অনেক লোককে কৌশলে কেয়াসের বিক্লাক্ত উত্তেজিত করিলেন। কেয়াস গ্রাকাস্ যখন রোমে ফিরিলেন, তথ্ন আর পূর্বের ভার সাধারণের সহামুভূতি পাইলেন না। তিনি ও তাঁহার বন্ধ ক্লাকাল পুনৰ্বাদ্ৰ 🔁 বিউন নিগুক্ত হুইবার চেঠা করিলেন, কিঙ তাহাতে কুতকার্য্য হইলেন না। তাঁহার শক্রণক প্রাধান্তগাড कतिन धदः कलन नियुक्त रहेन। ३२३ थः शः क्यारनत দক্রণক প্রাধান্তলাভ করিরাই গ্রাকান-প্রবর্ত্তিত জাইন সকল রহিত ক্রিড শারিলেন এবং সেনেটের অভিযাত সভাগণ গ্রাকাস এবং ক্লাকাস্ক সাধারণভৱের শক্ত বলিরা ঘোষণা ক্রিলেন। এমিকে কন্সলম্ব ডিক্টেটবের ক্ষমতালাভ করিমাই গ্রাকাস ও ক্লাকাসের বিরুদ্ধে সাধারণকে উত্তেমিত করিলেন। ক্লাকাসও সহযোগী প্রাকাদের সহিত মিলিত হইলা অক্লধারণ করিলেন। এই প্রকারে গৃহবিবাদের প্রপাত হইব। তখন কল্যবহু স্পত্নে আন্তিন্টাইনে ক্লাকাস্থ্ৰে আক্ৰমণ ক্রিতে অগ্রসর হইদেন। ক্লাকাদ খীর পুত্রকে সন্ধির মত দেনেটে भाक्रीहरणन । क्रि**ड** ग्लामा क्रिक्स क्रिक्स वर्ष क्रिस्टिंगन । ভৎপরে কলনগণের আক্রমণে স্থাকান হত হুইলেন এবং প্রাকান অকারণ নরহত্যা হইতে বিরত হইরা একজন বিষয় জডোর

জরণাত করিরাও যুদ্ধার্থ রোমে অগ্রসর হইল না, কারণ দেশ জর করা তাহাদের উদ্দেশ্ত হিল না। কিন্তু সমগ্র ইতালীবাসী উক্ত যুদ্ধের সংবাদে ভরে কম্পিত হইতে লাগিল।

রোমকগণ এই বিপদের সমঙ্গে মেরারাস্কে ভৃতীরবার কলল নিযুক্ত করিবেন (১০৩ খুঃ পুঃ) ৷ কিন্ত বাধাবরগণ ইতালীর **बिटक अध्यमन ना इंडेना त्यादन अदिन कविना मुर्फन ७ तम्यक्टर**म প্রবৃত্ত হইল। এদিকে মেরারাস্ এক নৃতন সৈঞ্জনল সংগঠন করিরা তাহারিগকে স্থাপিকিত করিতে লাগিলেন এবং সৈত্ত-विकारन विविध मध्यात ध्ववर्कन कत्रिरणन । भरत ১०२ थुः शृः মেরারাস্ ৪র্থ বার কব্দল নিযুক্ত হইলেন। এই সময়ে সিধি গণ পুনরার গলপ্রদেশে বাত্রা করিল। মেরারাস সসৈত্তে তথায় উপস্থিত হইলেন এবং এই স্থান স্থাক্তিত করিবার অভ ভূমধ্য-সাগর হইতে এইছান পর্যান্ত একটা খাল খনন করাইলেন। বাবাবরগণ ছইদলে বিভক্ত হইরা ইতালী বাতা করিল। টিউটন-সৈত্র মেরারাসের অভিমূথে ধাবিত হইল। একুই সেক্সটিআই নামক স্থানে ভীষণ যুদ্ধ সংঘটিত হইল। মেরায়াসের স্থানিকিত সৈক্তদল পূর্ব্বে গুপ্তভাবে পূজারিত ছিল। টিউটনগণ সেইস্থান निया शमनकारन खीमरवर्श स्त्रामकरमञ्जक कृक आक्रांख रहेन। रेममाथस्टर्गात अथत कित्रां व्यवज्ञांग्य युक्त कित्रां स्वयं हरेन मा। নত্বা মেরায়াস সনৈক্ত বিধ্বন্ত হইতেন। রোক্রের উত্তাপে টিউটন সৈত্র পলায়ন করিল। তথন রোমকসৈত্র তাহাদিগকে বীভংসভাবে আক্রমণ করিয়া সংহার করিতে লাগিল। যাহারা অবশিষ্ট থাকিল, তাহারাও অস্ত্রাঘাতে আত্মহত্যা করিতে লাগিল। গোলকটন্ত তাহাদের রমণীগণ পতিপুত্রের পরাজয় দর্শনে শাণিত অত্রে শিশুসন্তানদিগকে সংহার করিয়া আত্মহত্যা করিতে লাগিল। নরশোণিতের প্রোত বহুকোশ-দূরবত্তী ভূমধ্যদাগরে যাইয়া মিলিত হইল। মেরারাল যুদ্ধ জন করিয়া শিবিরে ফিরিবেন. এমন সমরে অখারোহী দৃত আসিয়া সংবাদ দিল বে, তিনি ৫ম वात कन्नन नियुक्त इहेग्राह्म ।

এনিকে সিখিনাগ বঞ্চাল্রোতের ভার আরস্ পর্মত হইতে
ইতালী অভিমুখে ধাবিত হইল। তাহারা টিউটনগণের ধ্বংসবার্তা
অভ্যাত থাকার তাহাদের সহিত মিশিত হইবার আশার মিলানের
মধাবত্তী ভার্সেলি নামক ছানে শিবির সন্নিবেশ করিল। ১০১ খৃঃ
পৃঃ ৩০এ জুলাই লোকভর্ত্বর যুদ্ধ উপস্থিত হইল। মেরারাসের
কূটকৌশনে সিখিনাগ পরাজিত হইল। ভাহাদের ১৪০০০ সৈভ
রণক্ষেত্রে ধরাশারী হইল এবং ৬০০০০ সৈভ বন্দীকৃত হইরা
ক্রীভলাসরূপে বিক্রীত হইল। কিছু শোর্যাভালিনী সিখি রম্পীগণ
ভাহাদের পতিপুজের ভার বন্দী হইল না। ক্টিবদ্ধ শাণিত
ছুরিকাবাতে লক্ষ্ লক্ষ্ রম্পী আছহত্যা করিল। মেরারাস্ এই-

রূপ অসামান্ত প্রতিভাবলে এবং অভ্তপূর্ব রণকৌশলে রোমের সৌভাগ্য-স্ব্যাকে রাহগ্রাস হইতে রক্ষা করিবেন। রোমবাসী দেবারাধনাকালে তাঁহার পূলা ও তর্পণ করিতে বিশ্বত হইল না। তিনি রোমের ভৃতীর উদ্ধারক্তা বলিয়া লোকমুখে কীর্তিত হইলেন। পরে মেরায়াস্ অপূর্ব আড়বরে বিরাট সমারোহে বিজয়োৎসব সমাধাপূর্বক গৌরব দৃশুচিতে রোমে প্রবেশ করিলেন এবং ৬৯ বারের জন্ত কদল নিযুক্ত হইলেন। ইতঃ-পূর্বে এত সন্থান কোন রোমবাসী প্রাপ্ত হন নাই। বড় বড় ঐতিহাদিকগণ বলেন বে, এই যশংস্থ্যের মধ্যাক্ষকালে মেরায়াসের মৃত্যু হইলে বড় ভাল হইত, তাহা হইলে সেই যথোরবির অত্তগমন রূপ তুর্দ্ধিন অবলোকন করিতে হইত না।

এই সমরে সিসিলিতে ভরত্বর দাসবিল্রোহ উপন্থিত হইল। চারিবৎসরব্যাপী এই যুদ্ধে দেশের বিষম অনিষ্ট ঘটিল। শুকালাস্ ও সার্ডিলিয়াস্ কন্ধার অধীনে বিতীয় দাসযুদ্ধ (১০৩-১০১ ধৃ: গু:) ছইদল রোমকদৈশু দাসদিগের পরান্তিত হইল। সালর্ডিয়াস্ নামক এক দৈবজ্ঞ স্থীয় অসামাশ্র প্রতিভায় অবিলম্বে ২০০০ পদাতিক ও ২০০০ অশ্বারোহী সৈত্ত স্থলিকিত করিয়া লইলেন এবং ট্রাইফন नाम धात्र भृक्षक महा एचरत त्राक्ता ভिरुष्क मन्भन कतिरागन। এদিকে দাসগণ ছুইদলে বিভক্ত হুইল এবং আথেনিও পশ্চিম দলের রাজা হইয়াও ট্রাফনের প্রাধান্ত স্বীকার করিলেন। টাফনের মৃত্যুর পরে আথেনিও দাসরাজ হইলেন। একুই-শিয়াস্ সিসিলিতে প্রেরিত হইলেন। তিনি যুদ্ধে জ্বয়লাভ করিয়া স্বহন্তে আথেনিওকে রোমের আন্ফিথিয়েটারে সিংহ-শার্দ্দের সহিত যুদ্ধ করিতে নিযুক্ত করিলেন। কিন্তু তাহার। হিংশুজন্তর সহিত যুদ্ধ করিয়া নিষ্ঠুর রোমবাসীর চিত্তবিনোদন অপেকা আপনারা পরস্পরের অন্তাঘাতে আন্ফিথিয়েটারে বিনষ্ট हरेन (२२ थु: भू:)।

এই সময় রোমের শাসনপ্রণাণীতে পুনরার বিপ্লবের স্চনা উপস্থিত হইল। মেরায়াস্ শাসন ও সৈপ্তবিভাগে একাধিপতা করিবার সভার করিতে লাগিলেন, কিন্তু তাঁহার শাসনক্ষমতা ও বক্তৃতাশক্তি আদৌ ছিল না। তজ্জপ্ত সাটার্নিনাস্ ও মিরায় নামে ছইজন বাগ্মীকে হস্তগত করিয়া ক্ষার্যাসাধনে প্রবৃত্ত হইলেন। সাটার্নিয়াস্ ট্রিকিন পদে নিযুক্ত হইলেন এবং এগ্রিরিয়ান আইন প্রবর্তনপূর্বক গল প্রদেশের ভূমিপত সকলকে মেরায়াসের সৈক্সগণকে বিভাগ করিয়া দিতে ইজা করিলেন। এই আইনের একটা সর্ভ ছিল বে, যদি এই আইন সর্বাসভিক্রমে বিধিবছ হয়, তবে সেনেটের সন্ত্যাপা উহা পালন করিতে শণথবছ হইবেন এবং বিনি অস্থতে

ক্ষিকেন তিনি স্থক্ত পদ হইছে বহিষ্ণত হইবেন। মেটালাস্
নেরায়াস্ উভ্নের কেনেটরগণ স্ক্সেলভিতে এই "প্রেলাবিনি"
গ্রাহণ ক্রিলেন, কেবল মেটেলাস্ আপ্রন প্রতিশ্রুত গণপ
পালন করিতে চাহিলেন না। এই প্রেল মেটেলাস্ ও
নেরারাবের পক্ষীরগণের মধ্যে ফোরডর মনোবার উপস্থিত
ইইল। বিরোধিদলের অত্যাচারে জনাচারে রোমরাঞ্রধানী
ভীবণ মুর্ত্তি ধারণ করিল। এইরূপ রাইবিপ্রবে কিছুলাল
ফাতীত হইবার পর, প্রধান প্রধান নেতৃবর্গের পলাধিকারকাল
সংক্ষেপ হইরা আসিল। তথন সকলের পুনর্নির্কাচনে ব্যন্ত
হইরা পড়িলেন। নির্কাচনস্ত্রে ঘোরতর দালা হালামা
ঘটতে দেখিরা সেনেট কলল মেরারাস্কে বিরোধিদলের বিরুদ্ধে
দণ্ডারমান হইরা রাজ্যরকা করিতে আবেশ করিলেন, তথন
সাটার্ণিরাস্ ও মৌনিয়া হতাশ্নিত্রে আত্মসমর্শন করিতে বাধ্য
হইলেন। সেনেট তাহানের রাজলোহিতার বিচার করিবার
ক্ষেপ্র সাধারণ লোকে তাহানিগ্রেক বিরিয়া নিহত করে।

সেনেটের সহিত বিবাদে, প্রজাদলের পরাজয়ে এবং
নেরারাস্কে ছর বার কন্সল পদনানে, প্রজাবর্ধের আধিকারহাসের সঙ্গে সঙ্গে, রোনীয় প্রাচীন প্রজাতদ্রের অনেক পরিবর্জন
হইয়া গেল। মেরারাসের ৬ বার কন্সল পদপ্রাপ্তি সেনেটের
অন্তুমোদিত উপর্গুপরি নেতৃপরিবর্জনের অন্তরায় হইয়া
দাঁড়াইল। এই দীর্ঘকাল নেতৃত্বে মেরায়াস্ সাটার্ণিনাস্-প্রবর্তিত
সাময়িক সংস্কারপন্ধতির অন্তুকরণ করিয়া এক এক জন
সেনাপতির অধীনে সাধারণ সেনাদল নির্কু করিলেন।
ঐ সকল সেনাদল আপনাপন সেনাপতি বা অধিনায়কের বাক্য
মান্ত করিবে। সাধারণ সেনাদলের মধ্যে বংশাভিমান বা অর্থগরিমার কোন্সই স্বাডয়া থাকিবে না। বিস্তৃত রোম-চম্বা
দিক্সন' (Legious) ইইতে সম্পূর্ণ বিতৃতে রহিল।

খং পূর্ব ১০ অবল এনিরাখ্য গি, কটিনিরান্ ক্রকাস্
অবলা প্রজার রক্ষ শোবণ করিরা রোমীর ধনান্তসমাজকে
কলন্ধিত করেন। তাঁহার এই রুণিন্ধ অত্যাচারবার্তা রোমকসমিতিতে নওলীর ছইল। অর্থবানের অত্যাচার-বন্দনচেটা
ধনহীন রোমক প্রজানাধারণের মধ্যে ক্রকণ আনরন করিল।
রাজনীতির আনুলনংকার আরগ্রক ছইল বটে, বিত্ত ধনশাণী
ক্রেনিক রাজপুলবর্গনের বিক্রে নতানান হইয়া আর্থাপরিচালনা
কর ক্রেনিসাধ্য হইল না। যুদ্ধ ও করের একমাত্র সহযোগী
ইতালীরগণ শ্রিমতান বিত্রভাগালে আবদ্ধ থাকিরার পর একণে
রোল-বর্গনিকের শ্রুতি একর সিলিবার বাহা প্রকাশ করিলেন,
ক্রিনিসাধ প্রসাদক্ষণ তাঁহাদিগকে সভাসমিতির অথিকার
বার প্রিতে পরাশ্রম হুইলেন, ক্রমণাই রখন তাঁহারা বুরিকেন

ত্যে, এই সোমীর নৈত্রতার কেবল হাটেনত বোজার রুদ্ধি ও প্রশের বোজার হাস হসতেছে এবং উহাদের কলিয়া শৈক্তিত রাজাসমূহের ক্ষুসভোগে তাহাদিগকে বিভিত্ত করিয়া বোমক-গবনেটই একাধিশতা বিভাগ করিতেছেন; ক্ষুম্ম ক্রোমের সন্দেহে রোমের রাজশক্তি থকা করিবার জন্ম উল্লিয়া রোমের বিশ্বভাচরণে প্রবৃত্ত হইলেন।

মার্কদ্ কাল্বিয়াদ্, সেয়াদ্ প্রাকাদ, সাটার্শিনাদ্ প্রস্তৃতি ৪০ বংশর ধরিয়া ইতালীরগণকে সন্মিলনের আবা দিয়া আসিয়াছিলেন, কিন্তু তালারা তাহা কার্য্যে পরিণত করিতে পারেম নাই। বতবারই ইতালীরগথ আথন্ত হইয়া রোমে নমবেত হইয়াছিলেন, ততবারই তালার কললের কঠোর আবেশে নিগৃহীত হইয়া রোম হইতে বিতাড়িত হইয়াছেন। এই সকল অসন্তাবহারে ইতালীয়দিগকে উত্তেজিত দেখিয়া টুরিউন্ মার্কাদ্ নিভিয়াদ্ ভুলাদ্ সহত্তে সংল্পানর ভার গ্রহণ করিলেন। তিনি সেনেট-সভায় রাজবিধি সংল্পারের প্রস্তাব উথাপন করিলে সন্তাভ সভ্যাদায় (· quentrian order) স্বাজবে তাহায় উপর ক্রোধে অগ্নিশ্রমা ইইয়া উঠিলেন। ভুলাসের প্রতাবিত বিধিগুলি সাধারণে গৃহীত হইলেও সেনেট তাহা অগ্রাছ করিলেন, ভুলাদ্রকে ইতালীয়দিগের সহিত বড়্যন্তে লিশ্র ও রাজন্রোহী বশিয়া সেনেট-সভা বোবণা করিলেন। সভাগৃহ হইতে স্বগৃহে প্রতাবর্ত্তনকালে ভুলাদ্ গুপ্ত বাতকের হত্তে নিহত হইলেন।

ভুসাসের গুণ্ডহত্যায় ইতালীবাসিগণ সেনেটের বিরুদ্ধে উত্তেজিত হইয়া উঠিল। তদানীস্তন ট্রিবউন ক্ষিউ-ভেরিগ্রাস্ বড়যন্ত্রকারীদিগের শান্তিবিধান নিমিত্ত একটা সমিতি গঠন করিলেন। এই সমিতির বিচারে বছসংখ্যক ষড়যন্ত্রকারী প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হইল।

ইতালীবাদীদিগের নির্কাহনাধিকার লইরা এক মহাযুদ্ধের
প্রাপাত হইল। এই যুক্তে ইতালাবাদী অভিজাতসন্তানায়ের
ত লক্ষ লোক যুক্তে প্রাণত্যাগ করিয়াছিল। ৯৫ গুং পুং লিদিনিয়াস্ ক্রেলান্য-প্রবর্তিত আইন অন্থলারে
বাদিন ক্ত্র প্রাণী ইতালীবাদী রোমবাদীর লমন্ত
(১০০-৮ খুং পুং) অধিকার হইতে বঞ্চিত হইলেন। ভাহাতে
সমগ্র ইতালীগণ উত্তেজিত হইয়া এবং মার্দিয়ান্, পেলিগুরিয়ান্,
মেরিউলিনিয়ান্, ভেটিনিয়ান, সাবেলিয়ান্, পিলেগুরিয়ান্,
মেরিউলিনিয়ান্, ভেটিনিয়ান, সাবেলিয়ান্, পিলেগুরিয়ান্,
মার্কিল, আপুলিয়ান্ ও লুকানিয়ান্ প্রভুতি পরাজ্ঞাক, জাতির
সহিত দলবহু হইয়া রোমের প্রাংশসাধনের ক্ষ্প্ত এক্ত্র নিলিত
হইয়া অন্তবারণ করিলেন। ইকালের মধ্যে মার্দিজাতি অধিনায়ক্ত্র
প্রহণ করার উক্ত বুক্ত মার্দিক বুক্ত বিলিয়া কথিত হয়। এই সংয়ে
লাটিনগণ কোন পক্ষে বোগনান না করিয়া নিরপেকভাব ধারণ

করিবাছিলেন। স্মিলিত ইভালীরগণ, রোমবালিগলের সহিত সমতাবে নির্কাচনাধিকার না লাইবার জ্ঞানার ইতালীকেনে এক মৃতন রাজবানী স্থাপন ও রোমনগর বিধ্বত করিতে নকর করিত। পালিগুলাতির বাল্পাই ক্ষিলিকা নামে বোমিত হইল। এখানে ৫০০ সম্বাস্থ পাতিত এক সেনেট ও এসেরি প্রাভিত করিল। এই সাধারণভারের প্রতি বংগর রাইকা ক্ষ্মল এবং ১২ জন প্রিটর নির্কা হইতে লাগিলেন। সিলোপগেডিরাল্ নামক একজন নার্সিরান্ ইহার প্রথম ক্ষ্মলা নির্কা হইবান।

वान-क्रुनियान निकत वारः क्रीहिनान क्रकान तार्मय क्रानन मियुक हरें व वृक्षार्थ या का कतिरमें । स्वताहाम् ७ अर्पनिवान् श्राहा कार्यात्मत्र असीम् इहेंबा गुँबार्य मन्बिक वेहेरमम्। असम प्रमुद्र गार्निया अवगां छ केतिए गार्निग । क्रिनिवान स्कार्न स्ववद गृद कतिवास विभाक्ति हरक हरा हरेंद्रमन अरेश भौमित्री कमन কেটো যুক্ত জয়লাভি করিলেন। কিন্তু রোমকলণ চিত্ত হারাইলেন। ना। वित्नवं पृष्ठांत्रं महिन् युक्तानमा कतिका तमतात्राम् अ नाजाः केंद्रात क्षेत्र क्ष्मणनियात, काटम्नथियात, मानि अस् ७ मक्रमणटक পরাতৃত করিলেন। যোরায়াসের পরিচালনার রোমকদৈত সুর্কিতভারে অবহান করিতে নাগিল। এই সমূরে রোমকগণ विभाग आनंदा क्रिया क्रिया क्रियाम मिस्ट्र भरामें अक्राद्र 'লেক্স জুলিক্স'নামে এক আইন প্রচলিত ক্লবিলেন (৯০ খংপুঃ)। ভদমুসারে রোমের পক্ষে বিশ্বস্তভাবে যুদ্ধকারী ও শাস্ত প্রজাবর্গকে রোমবাসীর সহিত সমভাবে নির্ব্বাচনাধিকার (Franchise) দিবার ব্যবস্থা হইল। এই ঘটনার রোমের পক প্রবল হইয়া উঠিল, এবং মুদ্ধের হিডীর বংসরে রোমকলৈভ কৃতকার্যাতা লাভ করিতে আরম্ভ করিল। लिलियान द्वारवा अवर ल्लानियान क्टिंग कन्नन नियुक्त बहुया युद्धास्त्र श्रम कवितनम । युद्धत शावत्य क्रिंगत मृकुा श्रीतन (बारकरेमक शैनवन स्टेन ना। (क्टिंगेड (लंकेनोक माहा धारन পরাক্রমে যুক্ত করিছে লাগিলেন। তাঁহার যশংস্থাের প্রথর কিরণে নেরারাদের খাতি দক্ষ প্রভ হরুরা উঠিল। তিনি মার্সিরা-সেনাপতি মিউটিলাস্কে প্রাক্তি করিয়া বভিয়েনাম্ নামক পুর্কিত চুর্গ অধিকার করিলেন।

এনিকে পশ্পিরাস্ ব্রীব্রে উত্তর ইতালীতে অরলাত করিতে লাগিলেন। প্রবল যুদ্ধের পরে আছালাম নগর অধিকৃত হইল। বিপক্ষপণের অধিকাংশ অপ্রত্যাগপুর্বক অধীনতা স্বীক্ষর করিল। নেট সমরে ৫: টিরাস নিল্ডেনাস এবং পেপিরিরাস কার্বে নামক দিবিউন্নর "লের মৌটিরা-পেপিরিরা" নামক আইন প্রশারন করেন (৮৯ খা: পা:)। ইহাছারা বে কারণে যুদ্ধের উৎপত্তি

ইবিয়াহিল; সেই কাৰ্যন বিলাই বাইলা স্ক্রোং ক্রিকাংশ বিজ্ঞানী সহবাদী পুনার রোগের প্রকাবন্দ ক্রিকাণ এই মুদ্ধে ইতালীর সম্ভান্ত ক্রিকাভ সম্ভান্ত আন নির্মাণ ইইয়াহিলা ক্রিকাভ সামের তার ক্রিকাভ সভান্ত এবং ক্রিকাভ ১০টা
ইতালীবালী হাতি রোমরালীর ভার বিক্রাচনাবিকার প্রাপ্ত
ইইলা উত্তরে পেতাল ইইতে ক্রিকা বিক্রাচনাবিকার প্রাপ্ত ইইল।
ইহার পরে নামনাইট ও প্রানিরান্ত্রণ কির্মাণ পাঁতির রোমের বিক্রাচন্ত্রণ করিয়াহিল। সামনিব্রল্ রণক্রেরে সালা উভর প্রেকাভন্ত করিয়াহিল। সামনিব্রল্ রণক্রেরে সালা উভর প্রেকাভন্ত করিয়াহিল। করিরা বিকেন। তৎপরে সমত ইতালী রোমের প্রেকাভন্ত বীকার্যপূর্ণক স্থিতিত ইইল।

এই অন্তর্বির্বের (The Social war) অবসাম হইলেও রোমে লার্ডি হালিত হইল লা। পূর্কতন কলহন্দ্রের পুনরার বাদবিস্থান চলিতে লানিল। স্থানিকার-প্রাপ্ত নবীন ইতালীর সম্প্রদার রোমক সদভবগের বাদবিকার-প্রাপ্ত নবীন ইতালীর সম্প্রদার রোমক সদভবগের বাদবিকা উপলব্ধি করিছা ঘোরতর প্রতিবাদ করিতে লাগিলেন। সদভবগের খোর প্রতিহন্দিতার সেনেট সভা বিহত ইইরা পড়িরাছিল। সাম্প্রদারিক বাদবিস্থান, পরস্পরে শক্রতা এবং প্রকালীবার্নের চিরন্তন প্রান্তর বাধে করিপুর্ণ ইইরাছিল। অর্থানাল ও জরাভাব হেতু সমস্ত রোমক প্রজাবর্ণ করের মুখ চাহিতে চাহিতে বংগ পথে আলিয়া নিপ্তিত হইল। প্রভার এই সর্কান্য রাজ্যের সকল প্রেণার লোককে সংক্রমণ করিরাছিল।

এই গোলবোগের শাভি হইতে না হইভেই মিথি ছেভিনের विकृत्क युक्त त्वांवना कर्ता हरेन । এই ममस्त्र প्रकारमञ्जू ताका ৬ মিখিলেভিস বা ইউটেরের সহিত রোমের মুক্ত অনিবার্য্য হইর। উঠিল। পূর্বাযুদ্ধে সালা যেরপ প্ৰথম আন্তৰ্জাতিক পরাক্রম এবং রণপ্রতিভা প্রদর্শন করিয়া-ছিলেন, তৰ্মুদারে মিৰিনেভিক বুরে गाधावरण छोडारकरे कमन निवृक्त कविरमन (🕉 बुः शृः)। কিছ সপ্ততিপর বৃদ্ধেনাশতি দেৱায়াসু উক্ত প্রের মন্ত প্রাণ-পূপে চেটা করিতে লাগিলেন। এতদাতীক জিনি ক্লালুগিসিয়াস क्रकात्र नामक अक्रबन वक्रुखाकूनन अवा क्यबानानी क्रिकिस्टक वृत्कत नृष्टिण धमत्राप्तत व्यत्नाचन व्यतन्त्रम् स्वाप्तक कतितः बीव উरमक निषित अध्युम नहां छहादन क्विएक मानिहन्न। সাল্পিলিয়ান্ সেরায়ান্কে নির্দ্ধিয়েরভিক্ত মুক্তের ক্ষমিনার্কত প্রধান ভরিবার বস্ত এক নৃতন আইন প্রবর্ধন করিবেন। সেলেটের मछाश्व देश निवादन कतिवाद छेरम्रड "काहिनिदान" त्यामना कति- বিদ্ধ বলিয়া বিধিত হিল। কিছু নাল্লিনিয়ান্ বলপ্ৰক উহা
দ্বহিত কলিতে কতন্ত্ৰ হইলেন। তিনি বীদ্ধ অধীনত্ব ত সহত্ৰ
হলিছিত অন্তনীকৰ লইছা একটা "আন্তি-নেনেট" দল
সঠন কলিলেন এবং ইহাবিদেন্ন সাহাব্যে তিনি বলপ্ৰক কলল্পিনেক কোৱাম হইতে বহিন্ত কলিয়া দিলা নিজ্
অভীত সাধ্যম উভত হইলেন। পশ্লিয়ান্ পলায়ন কলিলেন।
তাহার প্র এবং সামান কামাতা কুইতান নিহত হইলেন।
সামা নিজে কোৱামেই নিক্টবতা দেয়াগালের গৃহে আশ্রম
লহরা রকা পাইলেন। এবং আন্তেম তরে তীহাখা প্রেলিক
"আইলিয়াম্" প্রত্যাহার ক্ষিতিন।

সান্না রোম পরিভাগেপুর্মীক কাম্পিনিরার অন্তর্মত মোলা নামক ভাগে অবভিত খীয় গৈলদলের পৃথিত বিশিত হইলেন। अमिरक नामिनियान । अपनामान । त्राम अधिकाम क्रियान । स्त्रायाम विथि निष्क युद्धक क्लान नियुक इंस्टेनन धवः সালার সৈল্পালের নেতত গ্রহণ করিতে নোলার লোক প্রেরণ করিলেন। কিছু মেরারাস্ প্রেরিস্ত প্রতিনিধিগণ সালার সৈত্যগণের ইটকাঘাতে হত হইল। তথন সালার দৈশুগণ তাহার আদেশারুসারে রোমের বিহুদ্ধে যাত্রা করিতে সন্মত হট্ল। সালা সলৈতে রোম অধিকার করিতে চলিলেন। टोत्रांत्राम छारात्र गण्डिताथ क्त्रिएक मामा करे। क्त्रिएमन, কিন্তু সকল চেষ্টাই বিকল ছইল। সালা রোমে প্রবেশ করিলেম, স্বীয় মেরায়াস পুত্র ও সমুচরবর্জের পহিত পলারন कतित्वन। नाहा त्वाम व्यक्षिकात कतित्वन वर्ती, किन्द मगत नुष्रेमभुद्धक आधवानीतिगरक मिर्ड कतिराम मा। সালপিসিরাস, স্বীর ক্রীতনাসের বিশাসবাতকভার বরা পড়িরা ় হত হইলেন।

নেরারাস্ জাহারে চড়িরা অন্তরা এবং তথা হইতে
দক্ষিণ ইতাদীতে গদন করিলেন। কিন্তু তাঁহাকে ধরিবার
ক্রন্ত অবারোহিগণ চকুর্দিকে প্রেরিড হইল। মেরায়াস্
প্রের দহিত হুগন অরপ্যে অবেশ করিরা বৃদ্ধকেটিরে রাক্রিযাপন
করিলেন। তাঁহার পুত্র বিপরে অভিভূত হইল, মেরায়াস্ আবতচিত্রে এই বলিয়া পুত্রকে জরলা নিলেন যে, তিনি সপ্তমবার
রোমের কন্সল হইবেন, ইরা বৈষ্ণ্রগণ গণনা করিরাছিল। মিন্টার্নি
নামক স্থানে অবারোহিগণ তাহাকের পশ্চাবতী হইলে তাহারা
সম্প্রে লক্ষ্ণ প্রবাদিপক করিয়া এক ফাহারে উঠিলেন।
ক্রির আহাকর লোক সকল তাহাদিগকে লিরিস্কার মোহানার
ভীবণ করলে নিক্ষেপ করিয়া সেল। ক্রিড তথার ধরা পভিয়া
কিন্টার্গির মালিটেইটগণ কর্ডক করিয়ার হুইলেন। রোমের

আদেশ শাইরা তাঁহারা মেরারাস্কে বর করিবার সক্তর করিলেন। किंड कररे मंत्रात्राम्यक वध क्तिएं मार्थी स्ट्रेंग मा। अवस्थित ध्येक क्रीडमान क्रिनिट्रा ब्याबामरक वस करियान क्रम कानागारत व्यायम क्रिन । किन्न त्यात्र अक्कातात्र्य काताशृह्य क्रिकासरम्ब চকু: অলভ প্রবীপের স্থার রখি বিকিরণ করিতে লাগিল, ক্তমর্শনে বাতক বিশ্বরে ভত্তিভ ব্ইলে, দেরারাস গভীর বরে কহিলেন. "তুমি কি কেরাস মেরারাসকে হত্যা করিতে সাহসী হইবে"। উচ্ছ বৰ্ণে ঘাতক ভটবারি কেলিয়া পলায়ম করিল। ভবন মিন্টার্ণির মাজিট্টেইগণ ব্যাপর্যণ হইরা পোভারোহণে মেরারাস্কে শাক্রিকার প্রেরণ করিবেন। তথার উপস্থিত হইবামাত্র ভত্ৰতা প্ৰিটন্ন নেৰুট্টলিৱাৰ ভাষাকে নে ছানে ভাগি ক্রিতে আদেশ করিলেন। ভয়ন্ত্র মের্মান্নাস পুতকে ব্লিরাছিলেন-"দৃত তুমি প্রিটয়কে বাইয়া বল যে, মেরারাদ্ পলারনপর ভ্রয়া कार्याक्षत्र स्वरंगावरनात्वत्र छेनात्त्र छैनिविष्टे चारहन ।" छर्नात्त শেরারাস পুত্রের সহিত মিলিত হইরা কার্সিনা বীপে কিছুদিন भित्रांशाम क्रिक्सं।

এই অবসরে রোমের রাজনৈতিক ঘটনাশ্রোত ভিন্ন প্রাণালীতে প্রবাহিত হইল। এই সময়ে ৮৭ খৃঃ পৃঃ সিল্লা এবং অক্টেভিয়াস্ কলল নিযুক্ত হইলেন। সালাও কলল নির্কাচন-যাপার সমাধানাতে উক্তে বর্ষের প্রথমেই প্রসিরার প্রস্থান ক্রিলেন।

শালা জন্মত করিলেন বটে, কিন্তু ভাহাতে রোমকসভা বিশেষ লাভবান হইলেন না। যথন তাঁহারা দেখিলেন যে রাজ-কীর নেতৃবর্গের অন্থুমোদনে যে কাথ্য সম্পন্ন হুইভ, এখন ভাহা নৈষ্ঠাগণের অন্তৰলেই সকল নির্বাহিত হুইতে পারে এবং সেনাদলও তাহাদের অধিনায়কের আদেশ ব্যতীত আর কিছই মাল করিত না, তথন তাঁহাদের মনের থারে বুচিল। সালার রোমত্যাগের অবাবহিত পরেই কন্সল সিন্না সালপিলিয়াসের প্রস্তাবিত ৩৫টা ক্রাভির মধ্যে সমভাবে নির্বাচনাধিকার বিধি প্রচলন করিতে কুভসম্বন্ন হইলেন। যে সমন্ত নৃতন নাগরিক এই বিষয়ে অভি-মত দিবার অভা ফোরানের সন্মধে সমবেত হইয়াছিলেন, সিলার প্রতিযোগী অষ্টেবিয়াস তাহাদিগকে নিহত করিলেন। দিল छैनातास्त्र मा विश्वित्र नगाहरनम এवः त्रामीत्र निकटम स्थानित्री আপ্রর চাহিলেন। সেনেট তাছাতে কললপদযুক্ত করিলে जिनि कारण्यित्रात्र रानातृमारक कार्यादर्गत विश्वाप नारभव কথা জ্ঞাপন করিয়া উত্তেজিত করিলেন। দেখিতে দেখিতে সহত্র সংস্র গোক সামার ভার তাহার প্রাক্তসরণ ক্ষতিত আল্ল-नत्र हरेग । निक्षेपछ। देखनीय मध्यमाप छह नागविक्वणात बाँशीरत वित्नव क्या हरेबाहित्नम । छाहाबा मिन्नात बम्बक

হইরা, সৈত্ত ও অর্থ সাহায্য পাঠাইলেন। এদিকে সারার অক্যান্তরে রোম হইতে পলারিত দেরারাস্ এক সহস্র নিউমিডিরা অধারোহী সেনা কইরা ইটুরিরার উপনীত হইলেন। তথার, তাঁহার দকত্ব প্রাচীন বোদ্ধুক তাঁহার ছত্রতলে যাইরা সংমিলিত হইল। অরকাল মধ্যেই তিনি ৬ সহস্র সেনা সংগ্রহ করিরা কেনিকিউলাম অবরোধ করিলেন ও পরে রোমের প্রবেশহারের সন্মধে বিরার সহিত মিলিত হইলেন।

্দানেট প্রথমে যুদ্ধর্থ প্রস্তুত ইইলেন, কিন্তু চুর্স্ট্রশতঃ
আধিককণ যুদ্ধ করিতে পারিলেন না। কাজেই পরাভব স্থীকার
করিতে ইইল। সিলা পুনরার কজল পদ লাভ করিলেন এবং
রাজনোহিতাদভে নির্বাসিত মেরায়াস্পুন্স্ঠীত ইইলেন।
তথ্য নিলা ও নেরায়াস্প্রস্তুত্রামনগরে প্রবেশ করিলেন।

মেরায়াস্ নগরে প্রবেশ করিরাই তাঁহার প্রতিহিংসা পিপাসা
শাস্ত করিলেন। প্রসিদ্ধান্মী আন্টোনিয়াস্ ও আর্ট্রবিয়াস নিহত
হইলেন। বিবেষিল্লের রক্তপাতে রোম-রাজ্পথ রঞ্জিত হইল।
এই ভরাবহ হত্যাকাণ্ডে রোম ভীবণমূর্ত্তি ধারণ করিয়াছিল।
এবার শক্রশৃষ্টা রোমে মেরায়াসের অপক্ষীয়গণ তাঁহাকে এই
বৃদ্ধাবস্থার ৭ম বার কন্সলপদে বরণ করিলেন, কিন্ত কএক সপ্তাহ
রাতীত জিনি ঐশ্বাসস্ভোগ করিতে পারেন নাই। ৪৬ খুই
পূর্ব্ধাব্দের প্রারম্ভেই তাঁহাকে ভবলীলা শেষ করিতে হয়। সিয়া
উহার পর ও বংসর কাল পূর্ণ প্রতিপত্তির সহিত রোমশাসন
করিলেও বাস্তবিক পক্ষে রোমের শাসনসম্পর্কীয় উয়াতর পথ
সমাক্ রুদ্ধ হইয়াছিল। তিনি সালার আগমনভরে সর্ব্ধনাই
শক্ষিত ছিলেন। এই জন্ম ৮৬ খুঃ পুঃ কন্সল ভালেরিয়ান্
ফ্রাকাস্ সালাকে স্কানভ্রেই করিবার অভিপ্রায়ে প্রেরিত হন,
কিন্ত মূর্ভাগ্যক্রমে তিনি স্বীয় সৈত্র ছারা নিকোমিডিয়া নামক
স্থানে নিহত হন।

কৃষ্ণসাগর-তীরবর্ত্তী এসিয়া-মাইনরের মধ্যে মিথি দেতিসের
সমৃকিশালী রাজ্য অবহিত ছিল। ৫ম মিথি দেতিসের গুপ্তহত্যার
পরে ষষ্ঠ মিথি দেতিস্ ১২শ বংসর বয়সে সিংহাসনে আরোহণ
করেন। ইনি শার ও শার পাণ্ডিত্যে ভ্বনপ্রথম মেশি লেভিক
বৃদ্ধ (৮৮-৮৪ শং পুঃ)
তীহার বিশেষ বৃংপত্তি ছিল। তিনি
ক্রমে ক্রমে শীর বাহবলে চারিদিকে রাজ্যসীমা বাড়াইতে
আরক্ত করিলেন। এই সময়ে বিথাইনিয়ার রাজা ২য়
নিকোমিডসের মৃত্যু হইলে তংপুত্র ওয় নিকোমিডাস্ সিংহাসনে
আরোহণ করিলেন; কিছু মেথি দেতিস্ উক্ত বংশীর অঞ্চ এক
জনকে সিংহাসন দিতে কৃতসক্তর হইয়া একদল সৈঞ্জ প্রেরণ
করিলেন। তাহাতে ওয় নিকোমিডস পলাইয়া রোমের শর্মপালয়

হইলেন। রোমকগণের সাহায্যে নিকোমিডাস্ পুনরার স্বাজ্য প্রাপ্ত হইরা রোমকগণের প্ররোচনার মিথিনেতিসের রাজ্য আক্রমণ করিলা পরাজিত করিলেন এবং বিধাইনিরা হইতে তাডাইরা বিলেন। তদনস্তর তিনি ফ্রিজিয়া ও গালেসিরা অবিকারপূর্বক এসিরাত্ব রোমক প্রদেশ আক্রমণ করিলেন। কলল একুইলাস্ মিথিনেভিসের হতে বন্দী হইলেন।

তৎপরে মিথিনেতিস্ পার্মামাস্ অধিকারপূর্কক আধিক্ষত প্রদেশসথাত্ব সমস্ত ইতালী ও রোমবাসীদিগকে বধ করিতে আজা দিলেন। তর্মস্পারে ৮০০০ রোমক একদিনে নিহত হইল। মিথিনেতিসের জরলাতে গ্রীসবাসিগণ বিদ্রোহী হইরা রোমের অধীনতা অত্মকারপূর্কক তাঁহার সাহায্যার্থ অগ্রসর হইল। এমন সমরে সালা সসৈম্ভে গ্রীসের অন্তর্গত এপিরাসে আগমন করিলেন এবং আথেন্দ ও পিরিয়াস্ অবরোধ করিলেন। সালা অর্দিনের মধ্যে আথেন্দ অধিকার ও লুঠন করিলেন।

মিথি দেতিসের সৈক্তাধ্যক্ষ আর্চেলাস্ বিশাল সৈত্তদল লইয়া বিওটিয়ার সাল্লার সন্থ্যীন হইলেন। চেরোনিয়া নামক স্থানে ভয়ত্বর যুদ্ধ হইল। কিন্তু এই সময় এক নৃতন বিপদের স্ত্রপাত হইল। মেরায়াস্ পক্ষীর ব্যক্তিগণ ভালেরিয়াস ক্লাকাদকে একদল দৈক্তসহ গ্রাসে মিথি দেতিস ও সাল্লার সূচিত ষুগপৎ যুদ্ধ করিতে প্রেরণ ক্রিয়াছিলেন। ফিস্থিয়া নামক সেনা-পতির ষড়যন্ত্রে ক্লাকাস্নিহত হইলেন। পরে ফিস্বিয়া সেনাপতি হইরা মিথি দেভিদের বিরুদ্ধে কএকটা যুদ্ধ করিরা তাঁহাকে পরাস্ত করেন (৮৫ খঃ পুঃ)। এদিকে অর্কোমেনাস্নামক, স্থানের যুদ্ধে সালা আর্চেলাস্কে সম্পূর্ণরূপে পরাজিত করিলেন। তথন মিথি দেতিস নিরুপায় হইয়া সন্ধির প্রার্থনা করেন (৮৪ খঃ পু:)। তদমুসারে মিথি দেতিস্ এসিয়া থণ্ডের বিজিত প্রদেশ সকল রোমকদিগকে প্রত্যর্পণ করিলেন এবং ৭০ খানি স্থসজ্জিত রণতরী রোমকদিগকে দিলেন ও যুদ্ধের ব্যয়ম্বরূপ ২০০ টালেন্ট প্রদান করিলেন। সালা সন্ধি স্থাপিত করিয়া মেরায়াস পক্ষের প্রেরিত ক্লাকাসের হত্যাকারী সেনাপতি ফিবি রাম বিরুদ্ধে সৈন্য চালনা করিলেন। তাহাতে ফিছিরার সৈত্রগণ তাহাদের সেনা-পতিকে পরিত্যাগপূর্বক সানার আশ্রয় গ্রহণ করিল। ফিম্বিরা আত্মহত্যা করিলেন: সাল্লা তখন ইতালী-বাত্রার উদযোগ করিতে লাগিবেন। সালা এসিলা-বিজয়কালে অপরিমিত ধনরত্ব সঞ্জ করিয়াছিলেন। এতদ্বাতীত তিনি বৃদ্ধে ব্যাপত থাকিয়াও গ্রীস ছইতে টিওস নগরের 'এপেলিকন' নামক বিরাট গ্রন্থালয় রোমে আনরন করিয়াছিলেন, ঐ পুস্তকালরে আরিইটল এবং থিওফ্রাষ্টা-সের গ্রন্থনিচর স্থরক্ষিত ছিল।

৮০ খঃ পৃ: ব্যস্তকালে ৪০হাজার সৈন্ত এবং বহসংখ্যক পারিবদসহ সালা রাণ্ডুসিরামে অবতীর্ণ হইলেন। তথন এল-সিপিও
এবং নোর্থানাদ্ কলল ছিলেন। সিলা ও সিসাল্পাইন গলের
প্রোকলস কার্থো সালার সহিত বৃদ্ধার্থ সৈল্প সংগ্রহ করিতেছিলেন। কিন্তু সিলা নিজ বিলোহীলৈক্তের হাজে নিহত হইলেন।
মেরারাসের পক্ষ নেতৃহীন হইলাও সালার প্রতিরোধের
নিমিত্ত আরোজন করিতে লাগিলেন। ২০০০০ সৈল্প
মেরারাসের পক্ষে যুদ্ধ করিতে অন্তধারণ করিল। কিন্তু
সালা কেবল মাত্র ৪০০০০ সৈল্পদহ রাণ্ডুসিরামে উপস্থিত
হইলেন। কিন্তু মেরারাস্পন্দীর সৈল্পদল অধিনায়ক এবং
স্থানিকা অভাবে কাপুরা, টিনাম ও প্রিনেটির যুদ্ধে পরাজিত হইলা
ছত্রভক্ল হইল।

কন্সল নোর্থানাস কান্সিনীয়ার রণক্ষেত্রে পরাজিত হইয়া রোডদ খীপে প্রস্থান করিলেন। সাল্লা কাম্পিনীয়ার শিবির সন্ত্ৰিবৰ কবিলা বৃহিলেন। এদিকে কাৰ্বো ও কনিষ্ঠ মেরায়াস **८तारमद कमान नियुक्त इंहेरनन। ४२ थुः शुः नाजात्र रेनर**खद সহিত কনিষ্ঠ মেরায়াসের সাক্রিপোর্টাস্ নামক স্থানে যুদ্ধ হইল। মেরায়াদ্ পরাস্ত হইয়া প্রিনেটি নামক স্থানে আশ্রয় লইলেন। **প্রিনেষ্টি উদ্ধারের জন্ত ২টা যুদ্ধ করিলেন। এই সময়ে প্রশিশ এবং** কাৰ্বো মেটালাদ সালার পক্ষ হইরা কার্বোর সহিত যুদ্ধ করিতে नाशितन । माहा निर्सिवास त्रास्य व्यवन क्रियन । कार्या পরাঞ্জিত হইরা আফ্রিকার পলাইলেন। কিন্তু সামনাইট ও লুকানীয়গণ সাল্লার বিরুদ্ধে যুদ্ধার্থ রোমের অভিমুখে ধাবিত হইল। কলিনগেট নামক স্থানে ভীষণ যুদ্ধ খটিল। সামনাইট-দেনাপতি পণ্টিয়াস্ ক্রানের অন্তত বীরত্বে পরাভূত ও নিহত হইলেন। কাম্পাস মার্শিয়াস নামক রককেতে সালার নৃশংস चारमान वह मध्य मामनाइँ এवः मुकानियान विमर्गागत भित्रत्कत माथिक इहेन। এই चंपेनाम जिलाहि कुर्गक रेमछान আয়ুসমর্পণ করিল, কনিষ্ঠ মেরায়াস্ আত্মহত্যা করিলেন। লুকানিয়ানগণ নির্দয়ভাবে হত হঠল। সালা এখন ইতালীর সর্বাময় কর্ত্তা, তিনি মেরারাস্ পক্ষীয় যাবতীয় ব্যক্তির ছিল্লমুগু আনিতে আছেশ প্রচার করিলেন ও পুরস্কারের লোভ তদতুসারে ভীষণ লোমহর্ষণ দক্তের অভিনর इटेट गार्शिम। २०० माना प्रमाण, १७ वन कमान, २७०० বিচারক, এবং ১৫০০০ রোমবাসীর শোণিতল্রোতে রোম বীভংস দক্ত ধারণ করিল।

এই লোকভর্তর নৃশংস কার্য্যের সময়ে সালা রোমের ডিক্টেটর বা সার্ব্যভৌম কর্ত্তা হইলেন ৷ কলল-নির্বাচন বিলুপ্ত হইল, ভাহাতে রোমে সালার যথেজাচার শাসন প্রচলিত হইতে

राषित्रा ৮১ थुः शृः हृहेजन कष्मण नियुक्त इहेरानन । कि**द** मान्ना অনির্দিষ্টকালের জন্ম ডিক্টেটর রহিলেন। প্রকৃত প্রস্থাবে রোমের সাধারণতত্র শাসন তিরোহিত হইরা ব্যক্তিগত যথেকা-চারের প্রতিষ্ঠা হইল। সালার স্বর্ণময় অধারোহি-মুর্ভি সেনেটে ভাপিত হইন। এই সমরে সামা শাসনপ্রণালী লওভও করির। নানাপ্রকার পরিবর্ত্তন করিয়াভিলেন। তিনি তাঁহার **সৈভারি**গকে নানাম্বানে জারগির দিয়া অধিবাসীদিগকে বিভাঙিভ করিলেন এবং ১০০০০ জীতদাসকে কর্ণিলিও নামে রোমের ৩০টা জাতির অন্তর্নিবিট করিলেন। ৭৯ খুঃ পুঃ পর্যান্ত সালা শাসনপ্রশাসীর নানা পরিবর্ত্তন করিয়া হঠাৎ বিশাল রোমসামাজ্যের রাজদণ্ড পরিত্যাগপূর্ব্বক প্রব্রজ্যা পরিগ্রহ করিলেন এবং স্বীয় জীবনের ও শাসনকালের নিকাশী হিসাব প্রস্তুত করিতে লাগিলেন। १४ पुः भृः ७० वरमञ्ज वहतम माज्ञा भगनमत्ता गमन करत्न। সালার আদেশ অভুসারে কাম্পাস মার্শিরাস নামক স্থানে তাঁহার শবদ্ধ করা হইরাছিল। তাঁহার স্বর্চিত একটা কবিতা তাঁহার শ্বতিতত্তে উৎকীর্ণ ছিল, তাহার মর্শ্ম এই যে, "মিত্রের উপকার ও শক্রর অপকার সালা শতধারে পরিশোধ করিয়াছিলেন।" তৎপ্রবর্ত্তিত শাসনের মধ্যে সেনেটের পুনর্গঠন, প্রাদেশিক শাসন-ব্যবস্থা এবং কৌজদারী আদালতের সংস্থার, তাঁহার প্রতিভার পরিচারক। সেইগুলি রোমে ভারী হইয়াছিল।

সালার মৃত্যুর পরে চারিদিকে বিশুঝলতা উপ্রত্তিত হইল। তিনি কৃষককুলকে নির্দান করিয়া সৈঞ্জিগকে আর্গির দিরা-ছিলেন। সেই দক্ষ লোক একণে উত্তেজিত হইতে লাগিল। সাল্লার সহবোগী ইমেলিয়াস্ লেপিডাস্ সাল্লা-প্রবর্ত্তিত শাসনব্যবস্থার মুলোচ্ছেদ করিতে সম্বন্ধ করিলেন, কিন্তু তাহাতে অক্লডকার্য্য হইয়া এটাস্কান বিজোহীদিগের সহিত মিণিত হইয়া রোমের বিরুদ্ধে অস্ত্রধারণ করিলেন। সামার লেপ্টেনান্ট কেটালাস মালভিয়ান সেতু নামক স্থানের যুদ্ধে লেপিডাস্কে পরাজিত করিলেন। মেরারাস পক্ষীয় শাসনকর্ত্তা কিউসাটোরিয়াস ম্পেন দেশে স্বীয় প্রাধান্ত স্থাপন করিতে চেষ্টিত ছিলেন। ৭৯ খঃ পু: মেটালাস ভাঁহার বিরুদ্ধে যুদ্ধার্থ প্রেরিত হইয়া পরাজিত ও অবশেষে প্রো-কন্দল পদে উন্নীত হইয়া পশ্লি (গ্রেট) স্পেনে প্রেরিত হইলেন। সাটোরিয়াস অনেক যুদ্ধে পশ্পিকে পরান্ত করিলেন। ছুইবর্ষ পরে সার্টোরিয়াস্ স্বীয় বিজ্ঞোহী সৈক্ত পার্পার্গাকর্ত্তক গুপুভাবে নিহত হইলেন। পার্শার্গাই ভাবিদ্না-ছিলেন যে, তিনি পশ্পিকে পরান্ত করিবেন। কিন্তু প্রথম যুদ্ধেই তিনি পশ্লিকর্ত্তক পরাজিত ও বন্দীকৃত হইলেন। পশ্লি অবি-লবে স্পেন জয় করিয়া ইতালী বাত্রা করিলেন। এই সমরে রোমে বিষম বিপদের স্থচনা হইল। ম্পার্টাকাস নামক এক

প্রেসিয়ান্ জীতদাস যুদ্ধে বন্দিরূপে ধৃত হইরা কাপুরার অন্তক্রীড়া-গারে (Gladiator's training school) শিক্ষিত হইভেছিল। আন্দিথিয়েটারে এই অক্সক্রীভূকগণ পরস্পরকে বধ করিয়া রোমক-দর্শকনিগের শোণিত পিপাসার ৭৩ ধৃ: পৃ: স্পার্টাকাস্ ৭০ জন অন্তক্রীড়কের সহিত ব্যারামমন্দির হইতে প্রায়ন করিয়া বহু অমুচরবুদ্দের সহিত বিস্থবিয়াস্ পর্বতে আশ্রয় লইরা দলপৃষ্টি করিয়াছিলেন। বতুসংখ্যক अञ्चलीकृष । क्रीक्साम अविनय स्मार्टीकारमत्र मनकृतः हरेन। ছই বৎসরের মধ্যে স্পার্টাকাস্ ৭০ হাজার সৈগুসংগ্রহপূর্বক সমগ্র দক্ষিণইতালী অধিকার করিলেন (৭২ খু: পূ:)। কদ্সল-षत्र পুন: পুন: ভাঁহার নিকট পরাজিত হইলেন। ম্পার্টাকাস সমগ্র ইতালী নুষ্ঠন করিতে আরম্ভ করিলেন। সেনেট এই বিষম বিপদের সময় (৭১ খু: পূ:) প্রিটর ক্রাসাস্কে ৬ নল সৈত্যের অধ্যক্ষ করিয়া যুদ্ধক্ষেত্রে প্রেরণ করিলেন। পুকানিরার পৈটিল্লা নামক স্থানে স্পার্টাকাদের সৈত্তের সহিত ক্রাসাদের ভয়ন্বর যুদ্ধ হইল। স্পাটাকাস্ প্রাজিত ও আপুলিয়ার নিহত হন। বন্দীকৃত ও হাজার সৈতা কাপুয়া হইতে রোম পর্যান্ত রান্তার হুই পার্দ্ধে শ্রেণীবদ্ধভাবে শূলে আরোপিত হুইল। অবশিষ্ট সৈষ্য সকল পশ্পি কর্ত্তক বিনষ্ট হইয়াছিল। পরে পশ্পি ও ক্রাসাস্ উভয়ে কন্সল পদের প্রার্থী হইলেন। নিয়মান্তুসারে তাঁহারা উক্ত পদের যোগ্যপাত্র না হইলেও সেনেট জাঁহাদিগকে কন্দাল নিযুক্ত করিলেন। ৭১ খৃঃ পৃঃ ৩১ এ ডিসেম্বর পন্পি कर्याद्वारम महामभारतारह त्त्रारम श्रादन कतिरनम । हेहाँ रामत्र কার্য্যকালে সামার শাসনব্যবস্থা অনেকাংশে পরিবর্ত্তিত হইল। এই সময়ে অরেশিয়াসকটা লেক্স অরেশিয়া নামক আইন প্রবর্তন করেন।

সালা এসিয়া হন্টতে ইতালীতে প্রত্যাগমন করিবার পরে রোমক সেনাধ্যক্ষ মরেনা আটেলাসের প্ররোচনায় মিথুদেতিসের রাজ্য আক্রমণ করিবান। তাহাতে মিথিদেতিস্ রোমীয় সেনেট সমক্ষে মরেনার নামে সন্ধিলভ্যনের অভিনিত্তীর মিণিদেতিক ব্যাপ উত্থাপন করিয়া প্রতিবিধানের আশা করিতে লাগিলেন, কিন্তু কোন ফল হইল না, বরং মরেনা উত্তরোত্তর মিথিদেতিসের রাজ্য আক্রমণ করিয়া তাহাকে ব্যতিবাস্ত করিয়া তুলিলেন। তথন নিরুপায় হইয়া মিথিদেতিস্ একদল সৈল্পসংগ্রহপূর্কক হেলিস্ নদীর তীরে মরেনাকে আক্রমণ করেন। তাহাতে মরেনা পরান্ধিত হইয়া ক্রিজিয়ায় পলাইয়া বান। তথন মিথিদেতিস্ কাপাডোকিয়া প্রত্তি স্থান অধিকার করিয়া লন। এই সমরে ৮২ খ্ব: প্রং গ্রাধিনিয়াস্ সালার আদেশে এসিয়ায় গমন করিয়া মরেনাকে

যুদ্ধ ত্যাগ করিতে বলেন, তনমুসারে মিথিনেতিস পূর্ব্ধসদ্ধির সর্ত্তামুসারে কাপাডোকিয়া পরিত্যাগপূর্ব্ধক স্বরাজ্যে প্রত্যাগমন করেন। এইরূপে দ্বিতীয় নিথিনেতিক যুদ্ধ সমাপ্ত হয়।

কিন্ত মিথি দেতিস্ রোমকদিগের ছণ্ডিসন্ধি স্থানিতে পারিয়া গোপনে যুক্তর আরোজন করিতে লাগিলেন। মেরায়াস্পক্ষীয় সেনাপতিগণ,স্পেনের সাটোরিয়াস্ ও বহুশতজ্ঞলন্ত্যু তাঁহার দলে মিলিত হইল। এই সময়ে মিথাইনিয়ার রাজা ৩য় নিকোমিডস্

স্তৃত্যকালে সমস্ত রাজ্য রোমের সাধারণ
মিণিদেতিক যুদ্ধ তদ্রের নামে অর্পণ করিয়া যান। কিন্ত (१৪-৬) শৃঃ শঃ) নিকোমিড্সের নাইসা নামী স্ত্রীর গর্ভজাত সম্ভানের সিংহাসনপ্রাপ্তি বিষয়ে মিণ্ডিদেতিস্ সাহায্য করিতে লাগিলেন। এই স্ত্রে ভীষণ যুদ্ধ বাধিল।

রোমক কলল লুকালাস্ এবং অরিলিয়াস্কটা তাঁহার বিরুদ্ধে যুদ্ধার্থ প্রেরিত হইলেন। মিথি দৈতিস্ প্রথমে সমস্ত বিথাইনিয়া অধিকার করিলেন, অবশেষে কটা কালচেডন নামক স্থানের যুদ্ধে মিথি দৈতিস্কে পরাজিত করিলেন এবং তাঁহাকে মিজিকাস্ নামক স্থানে অবরুদ্ধ করিয়া থাত্তসংগ্রহপথ বন্ধ করিলেন। তথন তিনি স্বীয় রাজ্যে প্রস্থান করিতে বাধ্য হইলেন। কিন্তু লুকালাস্ তাঁহার ক্ষমুসরণ করিয়া পুনরায় তাঁহাকে পরাজিত করিলেন। মিথি দৈতিস্ স্বীয় জামাতা আর্মেণিয়াপতি টাইত্রেন্সের মিলিত সৈম্ম লইয়া রোমক-সেনাপতি কেরিয়াস্কে সম্প্রেরেপ পরাজিত করিল। তৎপরে ৬৭ খৃং পুং রোমকসেনাধ্যক্ষ ট্রিয়ারিয়াস্ জেলানামক স্থানে ভয়বর যুদ্ধে পরাজিত হইলেন। রোমক শিবির ও যুদ্ধভাণ্ডার শক্রর হস্তগত হয়।

এদিকে লুকালাদের বিপক্ষণণ রোমে প্রাধান্ত লাভ করার তাঁহারা লুকালাদ্কে রণক্ষেত্র হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইতে আদেশ পাঠাইলেন। তাহাতে লুকালাদের দৈন্তগণ বিদ্রোহী হইয়া উঠিল। এই স্ববোগে মিপিনেতিদ্ ও টাইগ্রেন্দ্ উভয়ে প্ররাম পন্টাদ্ ও কাপাডোকিয়া অধিকার করিলেন। লুকালাদের বিপক্ষণণ তাঁহার পরিবর্তে মেব্রিওকে কন্সল নিযুক্ত করিয়া যুক্তক্ষেত্র পাঠাইলেন। কিন্তু তিনি যুক্তে শক্রপক্ষের কিছুই করিতে পারিলেন না। মিথিনেতিদ্ ৬৭ খৃঃ পুং প্ররাম স্বীর সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। এই সময়ে পল্পি মিথিনেতিক যুক্তের দেনাপতি নিযুক্ত হওয়ায় লুকালাদ্ স্বপদ্ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য ইইলেন।

এই সময়ে ভূমধাসাগরে অলদস্যাগণের অত্যন্ত উপদ্রব বৃদ্ধি পাইয়াছিল। সিরীয়া, সাইপ্রাস্ এবং ক্রীতদ্বীপের লোক সকল প্রধানত: এই কার্য্যে লিপ্ত ছিল। তাহারা বাণিজ্যপোত পুঠনদারা বহুধনরত্ব সঞ্চর করিয়া ছিল এবং একসহত্র রণত্রী এবং বছসংখ্যক স্থশিকিত সৈতা ও নাবিক লইয়া অব্যক্ত প্রাক্রান্ত হইয়া উঠে। ইহারা এই সময়ে অটিয়া বন্দরে কএকথানি রোমক জাহাজ দ্ব্ব করার এবং
ললদ্যাদিগের
সহিত যুদ্ধ
আণ্টোনিয়াদের ক্তা ও পুত্রকে হরণ করার
মার্ভিলিয়াদ্ ইহাদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে

রোম হইতে প্রেরিত হইলেন। ৬৭ খু: পু: ট্রিউন গেবিনিয়াস্ "লেক্স—গেবিনিয়া" নামক এক আইন প্রবর্ত্তন করিয়া ভূমধ্যসাগরের যুদ্ধাদি নির্বাহের জন্ত একজন সর্বাময় শাসনকর্ত্তা নিয়েগের নিয়ম করিলেন। তদমুসারে ২০০ রণ-তরী যুদ্ধার্থ সজ্জিত হইল। পশ্পি এই সমস্ত রণতরীর অধিনারক হইয়া যুদ্ধার্থ গমন করিলেন এবং ৩ মালের মধ্যে জলদস্থাগণকে जम्मुर्गक्रत्थ भवार कवित्वन। २००० **क्वम्या वसी हरेन**— কিন্তু পশ্পি ইহাদিগকে বধ না করিয়া এসিয়া মাইনর ও অভাত স্থানে উপনিবেশ স্থাপন করাইলেন। তৎপরে পশ্পি সিলিসিয়া নামক স্থানে জলদস্যগণের স্থারক্ষিত হর্ভেত হুর্গ সকল ধ্বংস করিলেন। ৬৬ খৃঃ পৃঃ ট্রিউন মানিলিয়াদ্ লেক্স মানিলিয়া নামক আইন প্রবর্তন করিয়া পশ্পিকে মিথিদেতিক যুদ্ধের অধ্যক্ষতা অর্পণ করিলেন। সিসিরো এবং জুলিয়াস্ সিজর পম্পির পক্ষ সমর্থন করিয়াছিলেন। সংবাদপ্রাপ্তি মাত্র #পম্পি এসিয়ায় যাইয়া লুকালাসের নিকট হইতে সেনাপতিত্ব গ্রহণ করিলেন এবং কৌশলে পার্থিব নরপতিকে হস্তগত করিয়া সদৈত্যে মিথি দেতিসের বিরুদ্ধে স্থলপথে যাত্রা করিলেন। মিথি দেতিস সন্ধির প্রার্থনা করিলেন। কিন্তু পশ্পি সন্ধির প্রস্তাবে সন্মত इहेलान ना। उथन भिथि पिछिन् आर्त्यानियात्र श्रमायन कत्रित्मन, এবং পশ্পি কর্ত্তক সম্পূর্ণরূপে পরাক্তিত হইলেন। পরে সিনোরি-য়াদের হুর্ভেন্ন হুর্নে থাকিয়া তিনি পুনরায় দৈশুসংগ্রহ করিলেন। কিন্তু এইবার জামাতা টাইগ্রেনস্ তাঁহার সাহায্য করিলেন না। মিথি দেতিস্ নৈভসহ বন্দোরসের নিকটবতী স্বীয় রাজ্যে •পলায়ন করিলেন।

পশ্পি তাঁহার অমুসরণ না করিয়া টাইগ্রেন্স্কে আক্রমণ করিলেন। টাইগ্রেন্সের পুত্র পিতার বিরুদ্ধে বিদ্রোহী হইরা পশ্পির পক্ষ অবলম্বন করিলেন। সেই সঙ্গে আর্মেণিয়ার নগর সকল পশ্পির বক্সতাস্বীকার করিল। নিরুপায় টাইগ্রেন্স পশ্পির নিকট আত্মমর্শণ করিলেন। পশ্পি তাঁহার প্রতি সদম ব্যবহার করিয়া ৬০০০ টালেন্ট প্রার্থনাপূর্ব্ধক তাঁহাকে আর্মেণিয়ার রাজা বালিয়া স্বীকার করিতে চাহিলেন। সিরীয়া, ফিনিসিয়া, সিলিশিয়া ও কাপাডোকিয়া রোমকদিগের অধিক্রত হইল। পশ্পি আর্মেণিয়াবিজয় সমাধাপূর্ব্ধক উত্তর্দিকে নিথিন দেতিনের অন্সরণে বাত্রা করিলেন। পথিমধ্যে আইবেরিয়ান

ও আলবেনিয়ানদিগের সহিত তাঁহার মুদ্ধ হইব। উভর জাতিই পরাজিত হইয়া রোমের বশুতা সীকার করিল (৩৫ খু: পু:)। কিন্ত মিথি দেভিসের অহসরণ কট্টসাধ্য ভাবিয়া কিরিয়া আসিয়া পণ্টাসে রোমকশাসন প্রতিষ্ঠিত করিলেন। তৎপত্নে পশ্পি সিরিয়ারাজ্যের ধ্বংসাবশেষ মধ্যে যে সকল স্বাধীন রাজ্য উদ্ভূত হইয়াছিল, সেই সমস্ত অধিকার করিতে লাগিলেন। অন্তিওকান্ এসিয়াটিকান্ রাজাচ্যত হইলেন, এবং তাঁহার রাজ্য অধিকৃত হইল। এই প্রকারে সমন্ত সিরীয়া এবং তৎসমীপবন্তী দেশসমূহে রোমকশাসন প্রতিষ্ঠা করিয়া ৬৩ খৃঃ পৃঃ পশ্পি किनिकिया ७ भारनेखिन ध्यापर गांजा केंद्रिरनेन। এই সময়ে হিকানাস্ ও অরিষ্টোবুলাস্নামক পালেন্তিনের পুরোহিত নরপতি-বর অন্তর্গু কে ব্যাপৃত ছিলেন। পশ্পি হির্কানাসের পক্ষ অবলঘন করার অরিপ্রোবুলাদ্ অবিলম্থে আত্মসমর্পণ করিলেন। কিন্তু রাজা পরাজিত হইলেও জেক্তরেলমবাসী য়িত্দী প্রজাবর্গ রোমক অধীনতা স্বীকার করিল না। তিন মাস অবরোধের পরে জেরু-জেলম অধিকৃত হইল। পশ্পি সেই পবিত্রতম মন্দিরে (Holy of Holies) প্রবেশ করিলেন। তৎপূর্কে পবিত্র গ্রিছদী পুরোহিত ব্যতীত কোন মহুষ্য এই স্থানে পদক্ষেপ করিতে পারে নাই। পশ্পি হির্কানাসকে পুরোহিত-সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করিয়া অরিষ্টবুলাস্কে বন্দী করিয়া স্থোমে যাত্রা করিলেন। এই সময়ে তিনি মিথি দেতিসের মৃত্যুসংবাদ পাইলেন। মিথি দেতিস মৃত্যুর পূর্ব্বে বিরাট সৈভাদল সংগঠন করিয়া হানিবলের ভায় ইতালী আক্রমণের সঙ্কর করিতেছিলেন, এমন সমরে তাঁহার মৃত্যু হইল। তাঁহার পুত্র ফার্ণালেদ কিছু দিন বিপক্ষত। করিয়াছিলেন। পরে তিনি বন্ফোরাদের রাজা হইয়া রোমক অধীনতা স্বীকার করিলেন, ডিওটেরাস্ গ্যালেশিয়ার, এবং এরিও বার্জেনাস কাপাডোকিয়ার করদ রাজা হইলেন। পশ্পি বিজিত প্রদেশে ৩৯টী নৃতন নগর প্রতিষ্ঠিত করিলেন। এই সময়ে রোম-রাজ্যসীমা স্থদুর পূর্বে বিস্তৃত হইয়াছিল।

বহি:প্রদেশে রোমের বিজয়বৈজয়ন্তী উড্ডীন হইলেও রোমে বিশেষ কোন উন্নতি সাধিত হয় নাই। গেবিনিয়ান্ ও মানিলিয়ান্ আইনের ন্বারা সেনেটের ক্ষমতা থর্ম হইয়াছিল। সাধারণপক্ষ আপনাদের অবনতি উপলব্ধি করিয়া ক্রাসাদের মুথাপেক্ষী হইলেন। এই সময়ে সাধারণ পক্ষের মধ্যে রোমে জ্লিয়াস্ সিজারের প্রতিভা পরিব্যাপ্ত হয়। তিনি রোমে প্রাধান্ত লাভপূর্বক গৌরবের সোপানে অবিরোহণ করিতে ছিলেন। তিনি ১০০ খ্যঃ প্রেম গ্রহণ করেন এবং পশ্লি আপেক্ষা ছয়বৎসর বয়ঃকনিষ্ঠ ছিলেন। তাঁহার পিতৃবসা জ্লিয়ার সহিত বিখ্যাত মেরায়াদের পরিণয় হইয়াছিল। সিজার নিজে সিয়ার কল্পা ক্লিলয়ার

পাণিগ্ৰহণ করিবাছিলেন। সারা নিকারের প্রতিভা দেখিব। বলিরাছিলেন যে, একদিন ক্ষতিকাত সম্প্রদারের প্রাধান্ত এই वानक इष्टेंग्ड द्वनीकृष्ठ इष्टेरन। निकात রোমের তৎসাময়িক বকৃতাশক্তিতেও বিশেষ প্রাসিদ্ধিলাভ করিয়া আভাছবিক ইডি-হান (৬৯-৬১^{খু: পু:)} ছিলেন। তিনি রোডদের আলফারিক-দিগের নিকটে বাগ্মিভা শিক্ষা লাভ করিয়াভিলেন। আপলো-নিরাস তাঁহার অধ্যাপনা করিয়াছিলেন। মেরারাসের পক পুনক্ষীবিত করাই সিঞ্চারের আন্তরিক বাসনা ছিল। স্বীর ज्ञमान्निक वावहादा जिनि नाधात्रागत थित्रभाव हरेत्राहित्न। 👐 খু: পু:, তিনি কোরেষ্টরের পদলাভ করেন, কিন্তু এই সময়ে ভংগত্তী কর্ণিলিয়া এবং মেরারাসের বিধবা পত্নী ক্রলিয়া প্রাণত্যাগ করেন। এই শোকাবত ঘটনায় তিনি সাধারণ পক্ষকে সংখাধন করিরা কোরামে ওজবিনী ভাষার এক বক্ততা করেন। তিনি গেবিনিয়ান ও মানলিয়ান আইনের একজন প্রধান পুর্রূপোষক ছিলেন। ৬৫ খঃ পৃঃ ভিনি মেরারাসের প্রতিমূর্ত্তি গোপনে রাত্রিবোগে কাশিটোলে প্রতিষ্ঠিত করেন। পূর্বে এই প্রতিমূর্ত্তি সালা কঠক বিনষ্ট হইরাছিল। ভাহাতে সাধারণপক আনন্দাতি-শব্যে উত্তেজিত হইরা সিজারের জরধ্বনি করিল। কেটালাস এই ঘটনা নেনেটের গোচরে আনরন করিলে সেনেট উত্তেজিত 🖛ন-সাধারণের বিরুদ্ধে কিছু করিতে পারিলেন না। এই প্রকারে সিজার মেরারাস, সিল্লা এবং সাটার্ণিনাস্ প্রভৃতি সাধারণ পক্ষের বীরগণের বিশুপ্ত স্থতির পুনরুখাপনে বছপরিকর হইলেন।

এই সময়ে মার্কাস টালিরাস্ সিসিরো সিলারের সহবোগিরূপে অভ্যুথিত হইলেন। সিসিরো ১০৩ খ্বঃ প্রঃ আর্পিনাম্ নগরে জয়গ্রহণ করেন, এবং স্বীর অসাধারণ প্রতিভাবলে ২৫ বৎসর ব্বনে সেল্পরোসিরাসের প্রাণদপ্তাজাকালে ডিক্টেটর সালার বিরুদ্ধে ওল্পিনীভাবার বহুতা করিরা সাধারণকে চমৎকৃত করিরাছিলেন। ৭৯ খ্ঃ প্রঃ তিনি রোম পরিতাগপূর্বক আথেন্স ও এসিরামাইনরে বাইয়া অলভার ও দর্শনশাস্ত্র অধ্যয়ন করেন। পরে রোমে প্রত্যোগমন করিয়া তিনি ভ্বনবিধ্যাত এবং সর্বপ্রধান বান্ধী বলিয়া থাতি লাভ করেন। ব্যবহারজীবি-সম্প্রদারের প্রেসিছ বান্ধী হর্টেন্সিয়াস্ ও কট্টা তাহার নিকট নতলির হইলেন। বৈবেশিক হইলেও প্রতিভাবলে সিসিরো ৭৬ খ্ঃ প্রং কোরে-ইরের পদলাভ করেন। তৎপরে তিনি সিসিলিতে গমন করেন। ৬৬ খ্ঃ প্রঃ তিনি প্রিটরের পদলাভ কালে ভ্বনবিধ্যাত বাক্শক্তির অপুর্ক ব্যারামে লোকারণ্যকে স্বস্থিত করিয়াছিলেন।

এই সমরে রোমে কাটালাইনের বড়বদ্রের বিশেব আন্দোলন চলিডেছিল। অক্তাম্ভ শত্রুপক্ষের সহিত রোম নগরকে অধিবাসী সমেত ধ্বংস করিবার ক্ষম্ভ ডেঙাল-কুমারীদিগের সহিত বড়বছ ক্রিতেছিলেন। কাটালাইন অরেলিয়া অরেষ্ট্রনা নামী এক গণিকার প্রণরদাভার্থ স্বীয় পত্নী ও পুত্রকে স্বহন্তে হত্যা করেন। তাঁহার রোমধ্বংসের বড়বন্ধ সিসিরো কর্তৃক প্রকাশিত এবং দিসিরোর বক্তার বড়বন্ধকারিগণ প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হয়। ৬৩ খু: পুঃ সিসিরো কন্সল পদলাভ করেন। সেই সময়ে এক-नित्क है विक्रेन क्लान कृषिमच्चीत्र এक चारेन विधिवद्य कत्रिवात cost। পाम এवः अञ्चलित्क कांगानाहरूनत्र विजीत वज्य नुजन বিপৎপাতের হুচনা করে। সিসিরো কাটালাইনের বিরুদ্ধে অভিযোগ করিরা ৮ই নবেম্বর জুপিটরের মন্দিরে সেনেটের সদক্ষগণকে শইয়া এক সভা করেন। ষড্যন্ত্রকারিগণ এবারেও প্রাণদক্তে দণ্ডিত হয়। কাটালাইন এই সময় সৈম্প্রসংগ্রহ-পূর্বক রোম আক্রমণের চেষ্টার ছিলেন। ৬২ খৃঃ পুঃ তাঁহার সৈন্যের সহিত কন্দল সৈন্যের বৃদ্ধ হয়। কাটালাইন পরান্ধিত ও নিহত হন। সিসিরোর বৃদ্ধিবলে রোম এই বিপদ হইতে মুক্ত **হইল। তজ্ঞনা কেটো তাঁহাকে "রোমের পিতা" বলিয়া** অভিহিত করিলেন। সমস্ত দেবমন্দিরে সিসিরোর কল্যাণে পজা প্রদত্ত হইল। কিন্তু বড়যন্ত্রকারিদিগকে বিনা বিচারে প্রাণদণ্ডের জন্য অনেকে সিসিরোকে অপরাধী স্থির করিল।

৬২ খ্ব: পূ: পশ্লি এদিয়া-বিজয় সম্পন্ন করিয়া ইতালীতে উপস্থিত হইলেন। ৬১ খ্ব: পূ: ৩০এ সেপ্টেম্বর তিনি মহা সমারোহে বিরাট বিজ্ঞােংসৰ সম্পন্ন করিলেন। পশ্লির বিজ্ঞয়-রথের সম্মুখে বন্দীকৃত রাজগণ পদত্রক্তে চলিতে লাগিলেন।

পশ্পি রোমে আসিয়া উভয় সম্বটে পড়িবেন। অভিজ্ঞাত পক্ষ বা সাধারণপক্ষ, কোন্ পক্ষ অবলম্বন করিবেন, তাহা স্থির করিতে পারিলেন না। তবে অভিজ্ঞাতপক্ষের বিষেষদর্শনে তিনি সাধারণপক্ষ আশ্রয় করিলেন। তিনি এসিরার যুদ্ধে বিশিষ্ট সেনাপতিদিগকে জায়গীরদানে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ ছিলেন, এক্ষণে সেনেটে তাহার প্রার্থনা করিলেন। কিন্তু সেনেট তাঁহার প্রার্থনা-পুরণে অসন্মত হইলেন। তথন পশ্পি কৌশলে স্বীয় প্রতিজ্ঞা পুরণের চেষ্টা করিতে লাগিলেন। এই কারণে তিনি ক্রাসাস ও সিঞ্চারের সহিত মিত্রতা স্থাপন করিলেন। সিঞ্জার এই সময়ে ম্পেন এবং লিউসিটানিয়ার যুদ্ধে জয়লাভ করিয়া রোমে প্রত্যাগত হইরাই কন্সল পদলাভ করিলেন। পশ্পি, সিল্লার ও ক্রাসাস, রোমের এই প্রসিদ্ধ ব্যক্তিত্তরের সহযোগিতা প্রথম "টায়ান্তিরেট" নামে খ্যাত। প্রক্লুত প্রস্তাবে এই তিন ব্যক্তিই একণে রোমের मार्खाकोम नाइक रहेश केंद्रिलन। किन्न वर्कमारन हेर्हानिश्व মধ্যে সিক্লারের প্রাধান্ত সর্ব্বাপেকা অধিক ছিল। সিক্লার কলন পদ লাভ করিয়া পশ্পির প্রার্থনা পূরণ করিলেন এবং কাশ্পিনিয়া প্রদেশের প্রচুর ভূমিখণ্ড পশ্লির সেনাদিগকে বিভাগ করিয়া ছিলেন। সিন্ধারের মধ্যস্থতার সেনেটও পশ্লির এসিয়াবিজ্ঞার-কার্য্যের সমর্থন করিতে বাধা হইলেন। তৎপরে সিজ্ঞার পশ্লির সহিত বন্ধুতা চিরস্থায়ী করিবার জন্ম নিজের একমাত্র প্রহিতা জুলিয়াকে পশ্লির সহিত বিবাহ দিলেন। সিন্ধার ক্রেমে সকল পক্ষের প্রিয়পাত্র হইয়া উঠিলেন। সিন্ধার রোমসাম্রাজ্ঞার প্রাথান্থালাভের জন্ম সেনাবল বৃদ্ধির উপায় দেখিতে লাগিলেন, তক্ষন্থ তিনি গলপ্রদেশের শাসনকর্ত্ত প্রার্থনা করিলেন, এবং ট্রিকীন ভোটনিয়াসের অম্বক্লতায় তিনি সিসাল্পাইন গল ও ইল্লিরিকাম প্রদেশের শাসনভার ৫৮ হইতে ৫৪ খৃ: পৃ: পর্যন্ত প্রাপ্ত হইলেন। এইস্থানে তিনি এক স্থবিশাল সৈন্যালল স্থশিক্ষিত করিতে লাগিলেন। যে গলগণ এক সমরে ইতালীর বহু অনিষ্ঠ সাধন করিয়াছিল, তিনি তাহাদিগকে দমন করিবার আশা মনে মনে পোষণ করিতে লাগিলেন।

উক্ত এয়মীর-সমিতি বা টায়াস্তিরেট সিসিরোকে আহ্বান করিলেও সিসিরো তাঁহাদের দলে মিলিত হন নাই। এই সূত্রে ট্রিবিউন পি, ক্লডিয়াস্ সিসিরোর শক্রতাচরণ করিতে চেপ্তা পাই-লেন। ৬২ খৃ: পৃ: সিজারের স্ত্রীর "বোনাডিয়া" ব্রতোপলক্ষে পুরুষের প্রবেশাধিকার নিষেধসত্ত্বেও ক্লডিয়াস্ রমণীর বেশে এই ত্রীদলে প্রবেশ করিয়াছিলেন। ক্লডিয়াসের অভিযোগ সম্বন্ধে সিসিরোর সাক্ষাদানই উভয় পক্ষের বিরোধের কারণ। বিচারক-গণের অবিচারে ক্রডিয়াস্ মুক্তি লাভ করেন। ক্রডিয়াস্ একণে এক আইন প্রণয়ন করিলেন যে, যাহারা বিনা-বিচারে রোমবাসীর প্রাণদও করিয়াছে, তাহারা নির্বাসিত হইবে। সিসিরো তজ্জ্ঞ ৫৮ খ্র: প্র: রোম পরিত্যাগপুর্বক গ্রীদে গমন করিলেন। এই কার্য্য সম্বন্ধে ক্রডিয়াষ্ট্রায়ান্তিরগণের পরামর্শ গ্রহণ করেন নাই। পুর্বে পম্পিকণ্ডক কারাক্তর টাইগ্রেনসূকে মুক্তিদান করায় পম্পির সহিত তাঁহার বিরোধ উপস্থিত হইল। পশ্পি ইহার প্রতিশোধ শইবার জন্ম সিসিরোর পুনরাহ্বানের জন্ম চেপ্তা করিতে • লাগিলেন। সেনেট পশ্পির প্রার্থনা পূরণে ক্রতসম্বন্ন হইয়া এই বিষয়ে সাধারণের মত জিজ্ঞাসা করিলেন। অধিক সংখ্যক ব্যক্তিই সিসিরোর পুনরাগমনে সম্মতি জ্ঞাপন করিল। **जनस्मा**रत क्षेत्र रा**रल्डेयत ६१ थुः शृः** मिमिरता स्त्रारम शनार्शन করিলেন। তাঁহার কল্যাণ কামনায় জুপিটরের মন্দিরে পূজা প্রদত হইল। সিন্ধার ৫৮-৫০ খু: পৃ: পর্যান্ত গলপ্রদেশে রোমকশাসন বন্ধমূল করিতে নানা যুদ্ধ বিগ্রহে লিপ্ত থাকিয়া সমগ্র ট্রান্সালাইন গলে, রাইন নদীর অপর তীরে এবং বুটেনে রোমক আধিপত্য বিস্তার করিতেছিলেন। বুটেন এতদিন পর্যান্ত রোমকদিপের অজ্ঞাত ছিল। সিজার ৫৮ খৃ: शृः द्गार्किष्ठारे नामक अगिषगरक विताने नामक शानत

যুক্ত পরাজয় করেন। এই সময়ে গলগণ অরিওভিটাস্
নামক জর্মণ রাজার বিক্লকে সিজারের সাহাব্য প্রার্থনা করে।

সিজার তাঁহাকে পরাজয়পূর্কক রাইন নদী পর্যান্ত রোমের
রাজ্যসীমা বিস্তার করেন। ৫৭ খুঃ পূর্কালে মধ্য ও উত্তর গলের
বেলগাও সম্প্রদার সিজারের বিক্লকে ও লক্ষ সৈক্ত লইরা যুকার্থ
প্রস্তুত হইরা রোমক প্রাধান্ত স্থীকার করিল। নার্ভাই
নামক বেলজিক জাতি সিজারের সঙ্গে ভরত্বর যুক্ত করিরাছিল।

সিজারের বিপল বিক্রমে জয়লাভ করিলেন। ও লক্ষ নার্ভাই
সৈক্রের রক্তলোতে রণভূমি প্রাবিত হইরাছিল। ৫৬ খুঃ পুঃ
সিজার রুটানী প্রদেশে ভেনেটি জাতির বিক্লকে অভিযান
করেন এবং তথা হইতে ক্যালে ও বোলন প্রদেশের
সমীপবর্তী মরিনি ও মেনাপাই জাতিগণের হর্ভেন্ত হুর্গ সকল
অধিকার করেন।

এই অভিযানে সিজার রাইন নদীর তীরবত্তী কেল্টিক জাতির সহিত যুদ্ধে লিপ্ত হন। এই যুদ্ধে জর্ম্মণগণ সিজারের নিকট সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইলেন। জয়লাভ করিয়া সিজার দশদিনের মধ্যে একটা সেতু নির্মাণ করিয়া ee षु:शृ: तिकादात রাইন নদী অতিক্রম করিলেন এবং 'কোলন ও সেলামী নামক স্থানের অধি-বাসীদিগকে পরাজিত করিয়া গলে প্রত্যাগমন করিলেন। সিজার এই সময়ে রুটেন আক্রমণ করিবার সম্বন্ধ করিয়া ক্যালের निक्टेवर्खी देवियाम् नामक शान काशास्त्र हिंगा माउँथरणात्रमध নামক স্থানে অবতরণ করিলেন। রুটনগণ ভীম বিক্রমে যুদ্ধ করিয়াও পরাজিত হইল। বাসন্তিক ক্রান্তিপাতের পূর্বে সিজার গলমূথে যাত্রা করিলেন। সিজারকর্তৃক জর্মণদিগের পরাজ্য এবং चूनुत्रवर्त्ती वृट्डेन विकायमःवान्यवन्त सामकान चाला व উৎসাহিত হইয়া উঠিলেন; কিন্তু কেটো তাঁহার তীব প্রতিবাদ করিয়াছিলেন।

এইবার সিজ্ঞার ৫টা সিজ্জন লইয়। বৃটেনে উপস্থিত হইলেন।

রঃ গৃংগুং সিলারের বৃটনগণ মিডলসেক্স এবং এসেক্স প্রদেশের

রে অভিযান। অধিপতি কাসিভেলানাসকে সেনাপতি
করিয়া যুক্ষার্থ অগ্রসর হইলেন। বৃটনগণ উপগ্যুপরি করেকটী

যুক্কে সিজারের নিকট পরাজিত হইল। সিজার কিংসটনের
সিল্লারের নিকট পরাজিত হইল। সিজার কিংসটনের
সিল্লারের নিকট পরাজিত হইল। সিজার কিংসটনের
করিলেন। তথন কাসিভেলানস্ সন্ধির প্রেজ্ঞাব করিলেন।

সিলার বৃটনদিগের নিকট বার্ষিক কর ধার্য্য করিয়া গল মাত্রা
করিলেন। এই সমরে গলে ছার্ভিক দেখা দিল, অন্নপ্রীড়িত

এবুরোনস্প্ত নার্ভাইগণ বিদ্রোহী হইয়া উঠিল। তাহারা রোমক

শিৰির আক্রমণ করিণ বটে, কিন্তু সিম্পারের সহিত বুদে नवाकिक रहेवा भनावन कविन। किंद नीवर विद्यारी रहेवा স্বাধীনতা লাভের চেষ্টা করিছে লাগিল এবং বছসংখাক রোমকeo पु: পু: সিজারের সৈক্ত সংহার করিল। সিজার সিসায়াইন গল হইতে চুই দল সৈম্ভ সংগ্রহপূর্বক গল-গণকে পরাজয় করিয়া পুনর্কার খবণে আনয়ন করিলেন। अर्जनग्रन ग्रनमिटग्र माहाया कतात्र निकात भूनतात्र ताहेननमी উদ্ভীর্ণ হইরা অর্মাণ্ডিগকে পরাজর করিলেন। গলগণ श्रूनबाब ध्यवगरवरंग स्त्रामकिमरंगत्र विकरक षक्षधात्रण कतिग। ea पु: পু: निवादत्तव ভার্সিংগেটোরিক নামক একজন প্রসিক बीत भगिरगत स्मानीतर्भ निकारत्र विक्राप ममत्रमञ्जा कतिरागन। हेर्दात প্রভাপে ও चरमनवारमाना সিঞ্জারের ৬ বংসরবাপী গলবিদ্ধর নিম্বল হইবার উপক্রম হইল। দিলার অদমা উৎসাহে ও প্রবল পরাক্রমে যুদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। ভার্সিংগেটোরিক্স গলপ্রদেশের প্রসিক্ষ নগরাদি ধ্বংস করিয়া সমস্ত দেশকে মরুভূমিতে পরিণত করিতে আরম্ভ করিলেন। এভারিকাম নামক অবশিষ্ট ছর্ভেগ্র তুর্গ ও স্থরক্ষিত নগর সিজার অবরোধ করিলেন। অধিকারপুর্বক সিঞ্জার নগরবাসী আবাল-বৃদ্ধ-বনিতাদিগকে নিহত করিলেন। অবলেধে ভার্সিংগেটোরিকা বর্গাঙী প্রদেশের এলেসিয়া নগরের হুর্ভেন্ত ছুর্নে আশ্রয় লইলেন। বছসংখ্যক গলসৈত্র রোমকদৈত্রকে পরিবেষ্টন করিল। এই বিপদে সিজার অত্যম্ভত সাহদ, রণপাণ্ডিতা ও অতুল বীরত্বে গলদৈস্ত ছিন্ন ভিন্ন করিয়া দিলেন। এলেসিয়া সিজারের অধিকৃত হইল। ভার্সিং-१९८७ विश्व वन्तीकृष्ठ इंडेरनन । धडे मःवास स्त्राम स्त्राम स्त्राम स्त्राम সদক্তগণ পুনরায় ২০ দিন পর্যান্ত দেবমন্দিরে মাঙ্গলিক ক্রিয়ার অত্তান করিলেন।

এই আ ভ্যানে সিজার সনস্ত গলদেশ স্ববশে আনরনপূর্কক তথার রোমকণাসন প্রতিষ্ঠিত করিলেন এবং প্রত্যেক প্রেলেশে শাসনব্যবস্থা ও রাজস্ব নির্দ্ধারিত্ত করিয়া রোমে প্রত্যাগদনের সম্ভব্ন করিলেন। এই প্রকারে ১ খং পু: শিলারের ১ম শক্তিবান

সাম্রাজ্যের সীমা উত্তর্মাকে বহুদ্র পর্যান্ত
বিশ্বত করিলেন। বহু সংখ্যক অসভ্যজাতি পরাজিত
হটরা শিক্ষা ও সভ্যজার আলোক পাইয়াছিল। সিসিরোর
নির্ব্বাসন ছইডে স্নোমে প্রভ্যাগত হইয়া পূর্ব্বপ্রকৃতি
এক্ষণার ভ্যাগ করিলেন। ভিনি এক্ষণে সেই ট্রায়স্ভিরেটের
পক্ষ অবলম্বন করিতে লাগিলেন। পশ্পির প্রভাব ক্রমে ক্রমে
হাস হইডেছিল। কারণ ক্রাসামের সহিত ভাঁহার মনোমালিছ

ঘটিরছিল। এদিকে সিজারের বিপক্ষাণ ভাঁহাকে ক্ষযতাত্যুত ব্যাবের লাভান্ত- করিতে চেষ্টা পাইতেছিলেন। এই সমরে কিন্দ ইভিহাস সিজার রোমে উপস্থিত হইরা লুকা নামক (৫৭-৫০ গৃঃ পৃঃ) স্থানে পশ্লি ও ক্রাসানের সহিত প্নরায় মিলিত হইলেন। সিজারের প্ররোচনার পশ্লি ও ক্রাসান ২য় বার যুগপৎ কলন নিযুক্ত হইলেন এবং ট্রেবোরাস্ প্রবর্ত্তিও আইন অন্ত্রারে পশ্লি স্পোনের এবং ক্রাসাস্ সিরিয়ার শাসনভার প্রাপ্ত হইলেন। এই সমরে পশ্লি মর্শ্বরপ্রস্তরে এক বিরাট রক্ষালর নির্দাণ করাইলেন। এই রক্ষালরে ৪০০০ দর্শক স্বছন্দে উপবেশন করিয়া সিংহ হন্তী প্রভৃতি জন্তর অদ্ধৃত ক্রীড়া সন্দর্শন করিতে গাণিলেন।

৫৪ খ্বঃ পৃঃ ক্রাসাস্ পার্থিয় রাজগণের সহিত বৃদ্ধ করিবার
জক্ত সিরিয়ায় গমন করিলেন। কিন্তু নির্ক্তি রুলতঃ ২০০০
রোমক তাহাদের হল্তে পরাজিত ও হত হইল। তাঁহার ছিল্লমৃত্ত পার্থিয়রাজ অরোভেসের রাজসভায় প্রেরিত হইল।
ক্রাসাসের মৃত্যুতে পশ্পি ও সিজার রোমের অবিনায়ক থাকিলেন।
অনতিকাল মধ্যেই তাঁহাদের মধ্যে বিরোধের স্টুচনা হইল।
সিজারের কল্তা এবং পশ্পির পদ্ধী জ্লিয়ার মৃত্যু হওয়ায় উভয়ের
সম্বদ্ধকেত্ত তম হইয়া গেল। সকলের মূথে সিজারের গলবিজয়কীর্ত্তি পশ্পির অসম্ভ হইয়া উঠিল। তথন পশ্পি ডিক্টেটরের
পদলান্ত পৃর্ধক সার্বভৌম আধিপত্য লাভের চেষ্টা দেখিতে
কাগিলেন।

এই সময়ে বিষম অরাজকতা উপন্থিত হটল। মাইলো কন্সলপদ লইয়া ক্লডিয়াসকে নিহত করিলেন। উত্তেজিত সৈহাগণ অশ্বিপ্রদানে সেনেটগৃহ জন্মীভূত করিল। সিসিরো ও সেনেটের সদস্তগণ মাইলোর অত্যাচার হইতে অব্যাহতি পাই-বার জন্ত পশ্পিকে একমাত্র কন্সল নিযুক্ত করিলেন। মাইলো অভিযুক্ত হইরা বিচারে মেসালিয়া নামক স্থানে নির্বাসিত হইলেন। সিঞ্জারের কক্ষা জুলিয়ার মৃত্যুর পর পশ্পি মেটালাস সিপিওর ক্তা কর্ণিলিয়ার পাণিগ্রহণ করেন। चलदरक व्यविनास महायांगी कस्मन नियुक्त कद्रितन। কিছ তিনি সিজারকে কন্সলপদের প্রার্থী জানিয়া, এক আইন করিলেন যে, স্বয়ং উপন্থিত না হইলে কেহ কোন সরকারী পদের প্রাথী হইতে পারিবে না এবং কেহা সরকারী কার্য্যে **প্রাবেশের তারিথ হ**ৈতে **৫ বংসরের অধিক কোন** প্রাদেশের भागनकर्का थाकिएड शांत्रियन मा। शांला (मरनरहेद महक्रशांवर মন্তাত্ববন্তী হইরা চলিতে লাগিলেন। সেনেট এই আদেশ প্রচার করিলেন যে, সিম্মার অবিলম্বে তাঁহার শাসনকর্ত্ত পরিত্যাগ করিবেন। কারণ তাঁহার নির্দিষ্টকাল অতীত

ইইরাছে। ইহার পর সেনেট পার্থির যুদ্ধের ভাপ করিরা তাঁহার হাই গিজন সৈস্ত চাহিরা লইলেন। পরে তাঁহাকে পূন: পূন: প্রভার। সৈস্তাধ্যক্ষতা পরিত্যাগ করিতে বলিরা পাঠাইলে, সিজার তথন উত্তর ইতালীর রাজেরা নামক হানে অবস্থিত থাকিরা পরোক্তরে গিবিলেন, "বদি পশ্লি সৈস্তাধিপত্য পরিত্যাগ করেন, তবে আমিও করিব।" এই সমরে পশ্লির খণ্ডর সিণিও আজ্ঞা দিলেন বে, "বদি সিজার নির্দিইদিনে সৈস্তাধ্যক্ষতা ত্যাগ না করেন তবে তিনি রোমের শক্ষ বলিয়া বিবেচিত হইবেন।" সেনেট নবনিষ্কু কজলদিগকে ডিক্টেটরের ক্ষমতা প্রদান করিলেন বটে, কিন্ত ট্রিউন আল্টোনিয়াস্ ও কাসিও এই বিরুদ্ধ আদেশের প্রতিবাদ করিয়া রোম হইতে বিতাড়িত হইলো। পরে তাঁহারা ছল্মবেশে রাভেরার সিজারের শিবিরে উপস্থিত হইরা সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। ইহাতে পুনর্কার আন্তর্ভাতিক যুদ্ধ বাধিয়া উঠিল। সেনেট পশ্লিকে বৃদ্ধের সেনাপতি করিলেন।

সিঞ্জার সেনেটের দৃঢ়দক্ষর দেখিরা সৈগুসমাবেশপূর্ব্বক সৈগুদিগের মত জিজ্ঞাসা করিলেন। সৈগুগণ একবাক্যে তাঁহার আদেশ পালনে প্রতিজ্ঞা করিল। ইতালীর উত্তর সীমা ক্লবিকন

নদী অতিক্রম করিয়া ডিনি আল সংখ্যক আহর্জাতিক বা সৈতা লইয়া ইতালীর অভিমুখে ক্রতবেগে तृहयुष् (४३--88 ષ્: পુ:) অগ্রসর হইলেন। অনায়াসে আরিমি-নিয়াম নগর হস্তগত হইলে নগরবাসিগণ সিজারের পক্ষাবলম্বন-श्रक्षक छाँशास्क नगतवात्र थूनिया मिन। निकारतत्र लाक-त्रश्रकणां श्राप्त करम करम मकन नगत्रहे औहारक विना गुरक আত্মদমর্পণ করিল এবং তাঁহার যুদ্ধাতা যেন বিজয়োৎসবের ভার প্রতীয়মান হইতে লাগিল। সিজারের এই জৈএযাতার রোমবাসিগণ ভীতি-বিহবল হইয়া পড়িলেন। সিজার বিজয়লাভ করিতে করিতে পিদেনাম্ ছাড়াইরা কর্ফিনিয়ামে পৌছিলেন। এই স্থানে পশ্পির পক্ষীর ডমিসিয়াস্ অহেনোবার্বাস্ একদল সৈল্লসহ অবস্থিত ছিলেন। তিনি সসৈত্তে বছসংখ্যক সেনেটের সমস্ত এবং কভিপন্ন প্রসিদ্ধ ব্যক্তির সহিত বন্দী হইলেন, কিন্তু সিজার তাঁহাদের প্রতি কোনরূপ নির্ভূর ব্যবহার করিলেন না, তাহাতে সাধারণে সিঞ্চারের প্রতি অতান্ত অন্তরক হইরা উঠিল।

সিজারের পুনঃ পুনঃ পুনঃ বিজয়লাভে পশ্লি এবং সাধারণ তত্ত্বের প্রতিনিধিগণ তরে কিংকর্জবাবিমৃত হইরা পদ্ধিলেন। পশ্লির সৈক্ষগণ তাঁহাকে পরিত্যাগপুর্বক সিবারের দলভুক্ত হইল, এই সমক্ত কারণে পশ্লি ভাপুক্ষতাপুর্বক পলারন করিতে সকর করিলেন। সন্ধার অভকারে পশ্লি গোপনে রোম পরিত্যাগ করিলেন। তরে তিনি কোষাগার হইতে অর্থ পর্যন্ত লইতে

পারিলেন না। কন্সলগণ, মেনেটের সমস্ত সকল এবং বছসংখ্যক বিশ্বাত ব্যক্তি পশ্দির সহিত প্রায়ন করিলেন। রোমবাসিগণের মধ্যে বাহারা প্লাইতে অক্ম হইলেন, তাহারা সালা ও মেরা-য়াসের ৰীভংসকাহিনী পুনরায় আগতপ্রায় মনে করিয়া ভয়বিহবল হইয়া পড়িলেন। এদিকে পশ্লি পলায়নপূর্বাক প্রথমে কাপুরা, পরে তথা হইতে ব্রাণুসিরামে উপস্থিত হইলেন। সিঞ্চার এই সংবাদ পাইরা অবিলয়ে পশ্পিকে গুড করিবার জন্ম ব্রাণ্ডুসিয়াম অবরোধ করিলেন। কিন্তু পশ্পি অনুচরবর্গের সহিত কৌশলে জাহাজে আরোহণপুর্বক গ্রীসে পলায়ন করিলেন। জাহাজের অভাবে সিঞার তৎকালে তাঁহার অনুসরণে ক্ষান্ত থাকিলেন: স্থতরাং দিলার তথা হইতে রোমে প্রত্যাগমনপূর্কক ৩ মাস মধ্যে সমগ্র ইতালীবিজয় সম্পন্ন করিলেন। সিঞ্জার রোমসাম্রাঞ্জাদাসনের সর্কামর প্রাভূ হইয়া উঠিলেন। কেবল ট্রিউন মেটালাস তাঁহাকে পবিত্র ধনভাগুরে হস্তকেপে বাধা প্রদান করিয়া ছিলেন। তত্তির নির্কিবাদে সিঞ্জার শীঘুই রোমের অভিতীয় অধীশ্বর হইয়াছিলেন। সিজার লেপিডাসের উপরে রোমরকার এবং আন্টোনিয়াদকে সৈশুদ্র ই'তালি রক্ষার ভার দিয়া পশ্পিপক্ষীয় সেনাপতিদিগকে পরাজয় করিতে স্পেনদেশে যাত্রা করিলেন এবং কিউরিওকে ও ভালেরিয়াসকে সিসিলি ও সার্ডিনিয়া রক্ষা করিতে পাঠাইলেন। তাঁহারা উভয়ে উক্ত গুই স্থান অনায়াসে অধিকারপূর্বক পশ্পিপক্ষীয় সেনাধ্যক্ষ-দিগকে আক্রমণ করিবার জন্ম আফ্রিকা যাত্রা করিলেন। কিজ কিউরিও পশ্পির সহযোগী মরেটিনিয়ার রাজা জুবার সহিত যুদ্ধে निश्च श्रेलन।

এদিকে শিজার মাসেণিয়ায় জাসিয়া দেখিলেন, সেই হানের
অধিবাসিগণ অধীনতা স্বীকারে অসমত। তথন শিজার ট্রেবানিরাস্ ও ক্রটাস্কে উক্ত হান অবরোধ করিতে আজ্ঞা দিয়া সসৈতে
ক্রেনারা করিলেন। পিলার ক্রেকোনান্ট্রয় আফ্রিনিয়াস্ ও
পেট্রয়াস্ সিজারের বিক্রছে ইলরেডা নামক হানে বিশাল সৈতদল
সজ্জিত করিলেন। শিজার অন্তুত রণকৌশলে তাঁহাদিগকে পরাজিত
করিলেন। উভর লেপ্টেনান্ট গতাস্তরহীন ইয়া আয়সমর্পণ
করিলেন। সিজার তাঁহাদিগকে মুক্তিদানপূর্মক তাঁহাদের
সৈল্লদলকে নিজ সৈত্তত্বক করিয়া লইলেন। সিজার তথন পশ্চিম
ক্রেনার বিক্রছে যাত্রা করিলেন। ভারোগ্র অবিলয়ে
পরাজিত হইয়া কর্ডোবা নামক হানে আয়সমর্শণ করিলেন।
এইরপে ৪০ দিনে সমগ্র প্রেনা দেশ লয় করিয়া শিকার গলে
উপস্থিত হইলেন। মাসেলিয়া নগর এ পর্যান্ত অধিকৃত
হর নাই। কিন্তু সিক্রারের আগমনসংবাদে ভীত হইয়া তুর্গবাসিগণ অবিলয়ে আয়সমর্শণ করিল।

এদিকে সিম্পারের অমুপশ্বিতিতে লেপিডাস্ নবপ্রবর্ত্তিত এক আইন অমুসারে তাঁহাকে ডিক্টেটর নিযুক্ত করিলেন। কিন্ত সিঞ্চার ১১ দিন মাত্র এই সম্মানার্ছ পদ লাভ করিরাই স্বেচ্ছায় छेरा পরিত্যাগপুর্বাক কন্দল নিযুক্ত হইলেন। সার্ভিলিয়াস ভেটিয়া তাঁহার সহিত কন্সল পদ পাইলেন। কিন্তু সিন্সার ১১ দিন মাত্র ডিক্টেটেরে পদ অলম্ভত করিয়া অনেক হিতকর আইনের অনুষ্ঠান করিয়াছিলেন। উত্তমর্ণ ও অধমর্ণদিগের স্তবিধার জন্ম তিনি এক আইন প্রণয়ন করেন। তৎপরে সালার "প্রসক্রিপ্ শন" অমুসারে যে সমস্ত ব্যক্তি নির্কাসিত এবং সম্পত্তি-চ্যুত হইরাছিল, তাহাদিগের পুত্রাদিকে আনয়নপুর্বাক পূর্বা-সম্পত্তি প্রদান করিলেন এবং আরদ পর্যান্ত সমন্ত প্রজাবর্গকে রোমবাসীর স্থায় সমভাবে নির্বাচনাধিকার প্রদান করিলেন। তৎপরে তাঁহার সমস্ত সৈত ব্রাণ্ডসিয়ামে সমবেত হইলে, সিজার ৪৯ খঃ পৃঃ ডিসেম্বর মাসে পশ্পির অহসেরণে প্রবৃত্ত হইলেন। এদিকে পশ্পি গ্রীদ, মিদর এবং এদিয়া থণ্ডের নানারাজ্য হইতে বছসংখ্যক সৈতা সংগ্রহ করিলেন। বিবুলাদ তাঁহার সেনা-পতি হইলেন। নিভীক বীর সিন্ধার তথাপি সসৈত বা গুসিয়াম হইতে এপিরাদ্ যাত্রা করিলেন। জাহাজের অল্লতানিবন্ধন সিন্ধার প্রথম-বারে কেবল মাত্র ১৫০০০ হাজার পদাতিক এবং অখারোহী লইয়া এপিরাসে উপস্থিত হইলেন। এসিরাসে পৌছিয়া পুনরায় দৈত্ত আনিতে তিনি জাহাজ পাঠাইলেন, কিন্তু বিবলাস এই সমস্ত জাহাজ পথি মধ্যে ধৃত করিলেন। ত্রা প্রসিয়ামত্ব সেনাদলের আগমন অপেকানা করিয়া সিজার যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন। ক্রমে ওরিকম ও এপলোনিয়া অধিকার-পুর্বক সিজার পম্পির আশ্রয়ন্থান ডির্হাটিয়াম অভিমুখে অগ্রসর হইলেন। আপ্সাস নদীর উভয় তীরে সিজার ও পশ্পির সৈতা সকল সজ্জিত হুইল। সিজার অবশিষ্ট সৈত্যের জনা এরপ छिविध हरेलान त्य, এकपिन ब्राजिएं छिनि এकांकी क्षा नोका-যোগে আদ্রিয়াতিক সমুদ্রের মধ্যদিয়া ব্রাপ্রসিয়ামে যাত্রা করিলেন। অবংশবে আন্টোনিয়াস অবশিষ্ঠ সৈন্য লইয়া সিজারের সহিত মিলিত হইলেন। পশ্পি বহু সৈন্যসন্ত্রেও সিজারকে আক্রমণ করিতে সাহস করিলেন। সিজার অল্পাত্র সৈন্য লইয়া পরিথা খননপূর্ব্বক পশ্লিকে বেষ্টন করিলেন। অক্সাৎ পশ্লি শিবির হইতে নিক্রান্ত হইরা অতর্কিত আক্রমণে সিঞ্চারের কএকদল সৈত্র ছিন্ন ভিন্ন করিলেন। তখন সিঞ্জার অগত্যা সে স্থান পরিজ্ঞাগ-পূर्क्क (थमानी गांजा कतिरान । (थमानीत अखवर्ढी कार्मिनाम বা কার্সিলিরা নামক স্থানে ভরত্বর যুদ্ধ সংঘটিত হইল। ৪৮ খৃ: পু: ৯ ই আগষ্ট বহুদৈন্য থাকিলেও সিঞ্জারের বিপুল বিক্রমে পশ্লি मण्युर्वज्ञात्म भन्नाव्यिक इहेरनन । भन्नित्र विभूनविनामदेवस्वर्भुर्व

ধনভাণ্ডার ও নিবিরাদি সমত্তই সিঞ্চারের হস্তগত হইল। পশ্পি তথ্যোৎসাহ হইরা কএকটা বন্ধুর সহিত পলারন করিলেন। অবশিষ্ট সৈন্য এবং সেনাপতিদিগের প্রতি সদ্যবহারপূর্ব্বক সিঞ্জার তাহাদিগকে স্বদলভূক্ত করিয়া লইলেন।

এইরূপে স্বীর ভূজবলে সিজার উত্তর-পূর্ক ও পশ্চিম রোমসাম্রাজ্যে একাধিপত্য স্থাপন করিয়া স্বহত্তে স্ব্রহৎ শাসনদণ্ড
পরিচাপনা করিয়াছিলেন। তিনি যে কূটনীতিবলে রোমের শাসকসমিতিসমূহের সংস্কার ও পরিবর্তন করিয়াছিলেন, সেই
অসাধারণ প্রতিভাবলেই তিনি বিজিত নবরাজ্যসমূহের সীমান্তপ্রদেশে শান্তিরাপন করিতে বছবান্ হইলেন। এই সীমান্ত পানেন
কন্ধরিকর হইয়া তিনি আবক্তনীয় হুর্গাদি নির্দ্ধাণে অগ্রসর হয়েন,
কিন্তু রোমের হুরদূইজ্বমে তিনি সে সীমান্তভিত্তি দৃঢ় করিয়া
যাইতে পারেন নাই। অপরের হত্তে তাহার সমাধাভার অর্পণ
করিয়া তাঁহাকে অকালে ইহলোক হইতে বিদায় লইতে হয়।
তাঁহার বাহবলে অক্ষ্ম রোম-সাম্রাজ্য পূর্কে য়ুফ্রেটিস্ নদীতীর
ও ককেশস প্রদেশ, উত্তরে রাইন্, দানিউব ও এলব্ নদী এবং
পশ্চিমে আট্লাণ্টিক মহাসাগর পর্যান্ত বিস্তুত হইয়াছিল।

তিনি প্রাদেশিক শাসনকর্ত্তাদিগের কার্যাকাল কমাইয়া হানীয় অর্থভাপ্তার লুপনের পথ রোধ করেন। তিনি আশা করিয়াছিলেন যে, অগাষ্টাস্ এই পথায়বর্ত্তী হইয়া তাঁহার প্রবর্তিত পছতির অন্তক্ত্বতা করিবেন; কিন্ত দৈবছর্ক্সিপাকে অগাষ্টস্প্রতিক্ল গতিতে ফিরিলেন। তিনি স্বাধিকার দান (franchise) দারা সাম্রাজ্যভিত্তি দৃচ রাখিতে মানস করিলেন। প্রাদেশিক শাসনকর্তৃগণকে রাজ্যমের অংশাধিকার এবং ট্রাম্সপেডেন গলদিগকে রোমবাদীর অধিকার অর্পণ করিয়া সমগ্র ইতালীয়ে রোমকাধিকারভূক্ত করিয়া লইলেন। এতদ্ভিন্ন তিনি সমগ্র ইতালীয় প্রাদ্বোধিক একরপ স্বায়ত্তশাসনপছতি বিস্তার করিয়াছিলেন। তাঁহার উত্তরাধিকারিবর্গ ক্রমশ: ঐ সকল প্রথা বিভিন্ন প্রেদেশে পরিবার্থ করিয়া একটী বিস্কৃত সাম্রাজ্যের পত্তন করিছে থাকেন।

তে থ্ট পূর্ব্বান্দে পারদগণ কর্তৃক কড়্ছির যুদ্ধে ক্রাসাসের হত্যার প্রতিশোধ লইতে এবং পারদরাজশক্তি থর্ক করিতে সিজার স্থীর বিজয়বাহিনী লইরা রগবাত্রার আরোজন করিলেন। প্রজাতরীয় সম্ভান্ত অভিজাতবর্গ পূর্ব্বে সিজারকর্তৃক অপমানিত ও লাছিত হইয়া মরমে মরিয়াছিলেন। এই বুদ্ধের আড়ম্বর দেখিয়া তাঁহাদের জর্বাক্টাক্ষ আরও যেন কুটিল গতিতে কিরিতে লাগিল। তাঁহারা দগ্রহান্দের সিজারের সর্ব্বনাশ করিতে অগ্রসর ইত্তান। যে দিন সন্ধার সক্ষর সিজার পূর্ব্বান্ধ্বিজরে গমনার্থ প্রস্তুত্বা অগ্রসর হইতেছেন, সেই সমরে ক্রটান্প্রস্থ

লাধিত অভিলাতগণ তাঁহার সমক্ষে আদিয়া উপনীত হইল। বিশাস্থাতক ক্রটাস্ সিম্লারের কঠোর বক্ষে ছুরিকা বসাইরা তাঁহাকে ইংজন্মের মত এই ভবধাম হইতে অন্তর্কৃতি করিল। (১৫ই মার্চ্চ, ৪৪ খঃ পুঃ)। এইদিন হইতে অন্তর্কৃতি করিল। কর্তৃক এতিরাস্ রণক্ষেত্রে আন্টনির পরাভব তারিথ (২রা সেন্টেম্বর ৩১ খঃ পুঃ) পর্যান্ত রোমসাদ্রাক্ষ্যে ঘোরতর অরাজকতা বিরাজ করিয়াছিল। অসংখ্য নরম্প্রপাতে রোমরাজ্য জনহীন মকপ্রান্তর সন্শ লক্ষিত হইয়ছিল। শৃগালাদি শবকুক্ অন্তর্গণের বিকট চীৎকারে এবং শবরাশির পৃতিগক্ষে রোম শ্রণানসন্প্রতিৎসন্ত্রে পরিপূর্ণ হইয়া জনসাধারণের ক্ষর অন্তিত করিয়া দিয়াছিল। সেই শাসনশৃত্যাপরিপুত্ত চতুর্কিশ বর্ষ কাল কি ভয়ানক, তাহা রোমের ইতিহাসপটে সম্পূর্ণরূপে চিত্রিত রহিয়াছে।

সিজারের প্রতিনিধি আণ্টনি আত্মাঘাপূর্ণ রাজনীতি অবলম্বনে রোমের প্রাচীন শাসনপ্রতির প্রলর্মাধনে অগ্রসর হইলেও, সিসিরো তাঁহার প্রতিম্বন্দিভাচরণে পরাত্ম্ব হন নাই। তিনি অদম্য উৎসাহে স্বীর ওজম্বিনী বক্তৃতাছারা সেনেট পুনর্গঠন করিতে প্রয়াস পাইতে লাগিলেন। সাধারণ প্রজাবর্গ ওপ্রাদেশিক শাসনকর্তৃগণ প্রাচীন নীতির পক্ষপাতী হইরা আণ্টনির অবলম্বিত শাসনপ্রথার ঘোরতর প্রতিবাদ করিতে লাগিলেন। সেনেট-মন্দিরে অথবা ফোরামে সিসিরোর বক্তৃতা ও সাধারণের প্রতিবাদ সেই পরিবর্ত্তিত ঘটনাম্রোভকে ভিন্ন গতিতে ফিরাইতে পারিল না। এইরূপে বিক্লম্ব পক্ষরের প্রতিপক্ষতার প্রার বর্ষকাল অতীত হইরা আসিলে, ৪০ খ্বঃ পুর্বান্ধ্বের প্রারম্ভে পুনরার অন্তর্জিপ্রবের স্ট্চনা হইল।

উক্ত বর্ষের শরৎকালে আন্টনি ১৭টী লিজন্ সৈগুদলের অধিনায়ক হইরা ইতালী আক্রমণের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। সকলেই এই অভিনৰ অভিযান ব্যাপারে ত্রস্ত হইরা উঠিল। তাহার উপর ঐ বৎসরের অক্টোবরের শেষভাগে আন্টনি সেনেটের প্রতিবন্ধকতা অগ্রাহ্ম করিরা সহবোগী লেপিডাসের সাহাব্যে বিংশতিবর্ষীয় কনিষ্ঠ অক্টেভিরান্কে কন্সল মনোনীত করিরা বিতীয় ত্রম্বীর-সমিতি সংগঠন করিলেন। ইহাতে সাধারণের ভরের মাত্রা অধিকতর পরিবর্ধিত হইল। এই সমিতির

শাসনকার্য্যও তদম্ব্রপে আচরিত হইরাছিল। সিজারের স্থার সদর ব্যবহারে প্রজাপ্তরেক শ্রীতিপূর্ণ ক্রবরে বাস করিতে না দিরা অন্বদীরগণ সালার স্থার কঠোর শাসনপ্রধার অবলঘন করিলেন। অনস্তর প্রেস্কিশ্নন জাহির করিরা তাঁহারা সিনিরো-প্রমুধ অভিজাতবর্ণের ব্যুসাধন করিরা আত্মপক্ষ স্বৃঢ় করিণেন। পরবংসর আন্টনি ও অক্টেডিয়ানের মিলিড সৈন্যের সহিত কিলিপিতে ক্রটান্ ও কেনানের বৃদ্ধ নংঘটিত হইল। এই বৃদ্ধে ক্রটান্-পরিচালিত নাধারণভব্রপকীর নেনাবলের পরাভব ঘটিলে নাধারণভব্রের পূর্ব্বতন পদ্ধতি-প্রতিষ্ঠার শেষ আশা বিন্তু হইরা গেল।

৪০ খঃ পূর্বাবে উক্ত বিজয়ী সেনানায়কছরের মধ্যে মনো-বাদ উপস্থিত হর, কিছু বাঙুসিয়ামের সছিসর্কে উজরে এক্ষত হওয়ার সেই ভরাবহ বিহেববহি প্রধূমিত হইরাই নির্ব্বাণিত হইরা বার এবং রোমরাজ্য অসংখ্য নররক্তপাতরূপ কলছ-কালিমা হইতে পরিত্রাণ পার।

এই সমিলন হইতেই উভরের মিত্রতাহ্ব ক্রমশাই হাদৃ হইতে থাকে। আন্টনি অক্টেডিরানের ভগিনী অক্টেডিরার পাণিগ্রহণ করিরা আত্মীরতা দৃঢ় করিরা লইলেন। তথন সেই জরমীরসভ্য নিরোক্তরপে রোমসাম্রাজ্য বিভাগ করিরা আপনাপন বার্থপহা উন্মুক্ত করিরা লইলেন। আন্টনি রোমসাম্রাজ্যের সমগ্র পূর্বাংশ স্বীর আর্জাধীন করিলেন, অক্টেডিরান্ ইভালী ও সমগ্র পশ্চিমাঞ্চলের শাসনকর্ত্ব প্রাপ্ত ইলেন। এবং লেপিডাল্ আফ্রকার বিজিত প্রদেশসমূহ গ্রহণ করিরা সম্ভূষ্ট থাকিতে বাধ্য রহিলেন।

ইহার পরবর্ত্তী যাদশ বংসরে যথন আন্টনি অলোক-সামান্ত। স্বন্ধরী ক্লিওপেট্রাকে আছে স্থাপন করিরা আপনাতে আপনি মুগ্ধ হইরাছিলেন এবং সেই অধব্যাল্লর খোরে প্রাচ্য-অগতের সমৃদ্ধিরাশি ও বিলাসবৈভবপূর্ণ একটী স্থবিস্কৃত সাম্রাক্তা স্থাপন করিয়া রোমক-দ্বনন্ন ঈর্বাতরকে আলোড়িত করিতে মন্ত ছিলেন: তথন প্রতীচা প্রদেশে তাঁহারই প্রতিযোগী অক্টে-ভিয়ান ধীরে ধীরে শীর শক্তিবৃদ্ধিমানসে সেনাদল সংগঠন করিতে বন্ধপরিকর হুইলেন। তাঁহার প্রতিযোগী টুায়ান্তির-ষরের মধ্যে তিনি ৩৬ খু: পু: লেপিডাস্কে আফ্রিকা হইতে কিসিআই (Circeii) প্রদেশে নির্মান্তিত করেন। মুগুরণ-ক্ষেত্রে পরাজিত সেষ্ঠাস্ পশ্পিয়াস্ বারা প্রভূত ধনরত্ন সঞ্য করিয়া স্থানীর পোকের ভীতির কারণ হইয়াছিলেন। অক্টে-ভিনান লেপিডাস্-বিজয়ের অব্যবহিত পরেই তাঁহাকে সমূলে **ध्वःम कविद्यान । ७४ थुः शृः श**न्त्रिवादमत्र मृज्य हत्र, जनविध অক্টেভিয়ান পশ্চিম সাম্রাজ্য ভাগের একমাত্র অধীশ্বর হইলেন। তাঁহার রাজ্পজ্জির কণ্টক স্বরূপ আর অন্ত প্রতিহন্দী রহিল না।

অচিরে তাঁহার ও আণ্টনির শক্তিপরীকার স্ববোগ উপস্থিত হইল। স্থবালসাপুর আন্টনির স্বেচ্ছাচারিতা কর্মবীর অক্টেভিয়ানের মনোমত হইল না। ৩২ খুঃ পূর্বাব্দে আন্টনি অমাস্থবিক অত্যাচারে ও ব্যক্তিচারিতার রোমক্ষাত্রেরই হুদরে আর এক দারণ শেলাবাত করিলেন। তিনি মিশর- সিংহালন সমুজ্জনকারিটা টলেমিক্সা বীরালপা ক্লিওপেট্রের সনোমোহনকপে মুগ্ধ হইরা তাঁহাকে আজালিনী করিবার জক্ত স্থীর সামাল্য বিনিমর করিতে কুন্তিত হইলেন না। কাম প্রবৃত্তির কৃতদাসকপে তিনি আপনার অমৃল্য জীবন রাজকুমারীর চরণতলে বিকাইলেন। তাঁহাতে কারমন সমর্পণ করিরা প্রণয় ভিক্লা চাহিলেন। শেবে বিবাহবন্ধনছেদন করিরা আপনার প্রিয়তমা পত্নী অক্টেভিরাকে বিসর্জন করিলেন। একদিকে আন্টানি যেমন জীবনপণে প্রাণের আরাধ্য প্রণয় প্রতিমা লাভ করিলেন, অপরদিকে তেমনি তিনি অক্টেভিরার অপমানে ও ক্লুবে তদ্প্রাভা অক্টেভিরানের হাদরে দারুণ প্রভিহিংসাবহ্নি প্রজ্বলিত করিলেন। অক্টেভিরান স্থীর ভগিনীপতি আন্টানিকে সমুচিত দণ্ড দিতে প্রস্তুত হইলেন।

এই কুকর্মের জন্ম সেনেট আন্টনিকে সেনানায়কত্ব হইতে বঞ্চিত ও পূর্ব্ধ-দামাজ্যের আধিপত্য হইতে পদ্চাত বলিয়া খোষণা করিলেন এবং রাজী ক্লিওপেট্রর বিরুদ্ধে রোমক অভিযান প্রেরণে আদেশ প্রচার করিলেন। তদমুসারে অক্টেভিয়ান রোমকবাহিনীর অধিনায়ক হইলেন। ৩১ খু: পু: ২রা সেপ্টেম্বর অভিয়াস রণক্ষেত্রে উভয় পক্ষে ঘোর সংঘর্ষ উপস্থিত হইল। আণ্টনি যুদ্ধে পরাভূত হইয়া প্রাণ লইয়া পলাইয়া গেলেন। কিন্তু শক্তহত্তে সন্মানবক্ষায় অসমর্থ হইয়া তিনি ও ক্লিওপেটা আত্মহত্যা করিয়া ইহজীবনের ভার হরণ করিলেন (৩০ খু: পু:)। তদনস্তর রোমকদৈয়া ২৯ খু: পুর্বাব্দের মধ্যে সমস্ত প্রাচ্য ভূভাগ বশীভূত করিয়া লইলেন। আক্টেভিন্নান বিজয়বৈজয়ন্তী উড্ডীন করিয়া রোমে প্রত্যা-वृद्ध इटेटनन, महानुमाद्राद्ध विक्रापारनव नुमाहिल क्रिटनन। ভদনন্তর তিনি এই সুদীর্ঘকালব্যাপী অরাজকতার অবদান দিন জ্ঞাপনার্থ জেনাসের (Janus) মন্দির্ঘার অবরুদ্ধ করিয়া দিলেন। অতঃপর রোম-সামাজ্যের স্থাসন বন্দোবত্তে কিছুকাল অভিবাহিত করিয়া তিনি পরবর্ত্তী বর্ষের শেষ-ভাগে একটী অমাত্মবিক রাজশক্তির প্রকৃত পত্তন করিয়া লইলেন। ৪৩ খ্রঃ পু: রোমের কন্সল হইয়া ট্রায়াস্তির অক্টেভিয়ান সহযোগিবরের সহিত যে শাসনদও খীর হতে গ্রহণ করিয়া রোমসাম্রাজ্য-শাসনে অগ্রসর হইয়াছিলেন, এতদিনের পর ২৮ খঃ পুঃ শেষ-ভাগে তিনি এককই পূর্ণ প্রভাবে ও ধর্মবলে সেই শাসনদও পরিচালিত করিরা প্রকৃত গ্রমে ন্টের প্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন।

এতিটার রণকেত্রে আণ্টেনির দর্শ_ইর্ণকারী ডিউেটার সিজারের ভাতৃপোত্র আউডিলাস্ সিজার একণে রোমবাসী জন সাধারণের পূজার বস্ত হইলেন। প্রার বিংশতি বৎসর্বাাপী মুক্তবিগ্রহে ও রাইবিগ্রবে রোমকগণ একরূপ জর্জবিত হইয়া উঠিরাছিলেন। শাসনবিশৃথালার রাজ্যমর নানা জনাচার হচিত হইরাছিল। এই সকল বিপৎপাতনিবারণােদেশে এবং রোমসাব্রাজ্যের মৌলিকত্ব ও হারিত্বক্ষার নিমিত্ত সাধারণ লাকে সাগ্রহে অক্টেভিরাস্কে আহ্বানপৃত্বক রাজপদে নিয়োণারের ব্যবস্থা করিলেন। তাহারা মুক্তক্তের বলিলেন, একছার্ত্রাণিড্যের পূর্ণপ্রভাব অক্ট্র রাখিরা এবং সাধারণ তদ্তের সক্ষাননা ও শাসনপদ্ধতি রক্ষা করিয়া রাজকার্য্য পরিচালনার কঠোর ভার, তিনি ভিন্ন গ্রহণ করিবার আর ছিতীয় নাই। সমগ্র রোমসাম্রাজ্যবাসী আজ অকপ্টেহ্বদরে ক্রতজ্ঞতা প্রকাশপূর্বক আপনার শিরোদেশেই রাজমুক্ট পরাইতে ইচছুক। তথন অক্টেভিয়ান্ সেনেটের অভিমতে রাজাসন গ্রহণ করিলেন। সেনেট তাঁহার মহাম্নতবন্ধ কক্ষ্য করিয়া তাঁহাকে "অগাইস্" নাম প্রদান করিয়াছিলেন।

মহতী শাসন-শক্তি, উদেশ্রসিদ্ধিবিষয়ে গান্তীর্যময়ী দৃঢ়তা, স্থতীক্ষ বিচার-বিবেক এবং সর্বকার্য্যে অসাধারণ কৃটবৃদ্ধি ও অদম্য উত্তম প্রভৃতি সন্প্রণে ভূষিত হইয়া তিনি সাধারণের পূজ্য- হইরাছিলেন। তিনি আমিরিকিয়া নগরের একটা নগণ্য পরিবারে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। তাঁহাদের বংশোপাধি অক্টেভিয়াস, তাঁহার পিতামহ ভিলোটু নগরের একজন সামান্য নাগরিক বিলয়া গণ্য ছিলেন। পরে তাঁহার খুলতাত তাঁহাকে দত্তক গ্রহণ করিলেন, তিনি তাঁহার বংশগত সিজার উপাধি প্রাপ্ত হন। তদবধিই তিনি ইতিহাসে অক্টেভিয়াস্ সিজার নামে পরিচিত হইলেন। পুর্বক্ষিত ডিক্টোর সিজারের ন্যায় তাঁহার রক্ত-পিপাশা বলবতী ছিল না। বরং তাঁহার অপেক্ষা কোমলতর হৃদয় লইয়া তিনি সাধারণের হৃদয়ে স্বীয় উচ্চাভিলাবের পরাকাঠা প্রদর্শন করিয়া গিয়াছেন।

২৮-২৭ খৃ: পৃ: পর্যান্ত অগাইদ্ রাজতক্তে উপবিষ্ট থাকিয়া প্রজাতত্ত্বের পূন্দ্ধ-প্রতিষ্ঠাদহকারে তদস্করণেই রাজ্য শাদন করিয়াছিলেন এবং প্রাদেশিক জনপদসমূহে খণ্ডরাজ্য স্থাপন-পূর্বাক স্বয়ং সেই সকল রাজস্তবর্ণের অধিনায়ক হইয়া সার্ব্বভৌম আধিপত্য বিস্তার করেন। তাঁহার প্রবর্ণ্ডিত এই রাজ্যশাসন-প্রণালী অনুসারে (Constitution of princepate) রোমসাম্রাজ্য ২৭ খৃষ্ট পূর্বাহ ইত্তে ২৮৪ খুষ্টান্দ পর্যান্ত শাসিত হইয়াছিল।

এক বংসর এই বিরাট সামাজ্যের অধীখর হইরা তিনি মনে মনে পূর্ববর্ত্তী অধিনারকবর্গের সার্বভৌম আধিপত্য স্বরণ করিরা ব্ঝিলেন বে প্রজ্ঞার মনোরজ্ঞনই প্রেরোধর্ম। স্বেছা-চারিভার দাস হইরা প্রজাবর্গের বিছেবভাজন হওরা নিভাস্ত গহিভ কর্ম, ইহাতে আপনার অদৃষ্ট অশুভ সংঘটনেরই সন্তাবনা স্বতরাং বাহাতে প্রজাবৃদ্ধ স্করেও ও নির্বিরোধে কাসবাপন করে

ভবিষের লক্ষ্য রাখাই রাজার একমাত্র কর্ম। এইরূপ বিচার করিয়া অগষ্টদ স্বেচ্ছায় রাজসিংখ্রীদন ত্যাগ করিলেন এবং যে ন্দলৌকিক শক্তিপ্ৰভাবে তিনি ৪৩ খৃষ্ট পূৰ্কান্দ হইতে রোমের শাসন দণ্ড ধারণ করিয়া আসিতেছিলেন, তাহা "রোমের সাধারণ অজাপুজের ও সেনেটের সদস্তবুলের কর্তৃত্বাধীনে সাধারণতত্ত্বে ভারার্পণ করিলাম" বলিয়া "বয়ং অবদর গ্রহণ করিলেন। তদম্বলে পুনরার রোমরাজ্যে দেনেট,এদেমব্রি ও মালিট্রেসির কার্যা প্রবর্ত্তিত হইণ এবং অক্টেভিয়ান রোমের "বাধীনতাদাতা" (Restorer of Common wealth and Champion of freedom) বলিয়া বিযোষিত হইলেন। কিন্তু তিনি প্রকৃতপক্ষে রোম-সাম্রাজ্যের শাসনদণ্ড ৪৩ খুষ্ট পূর্ব্বাব্দ হইতেই গ্রহণ করিয়া-ছিলেন। উক্ত বৰ্ষে ডিনি "Imperium" শক্তিতে ভূষিত ছিলেন। তৎপরে ৩০ থ: পৃ: সাধারণের সন্মতিতে "Imperator" विनिम्ना गृहीज हन। जननखत २१ चुः शूः हहेराज ३० थृ होन পর্যান্ত "Proconsulare imperium" শক্তিধারণ করিয়া তিনি সামাজ্যের প্রকৃত অধিনায়ক সমাটের তুলামর্যাদ হইয়াছিলেন। ২২ খ: পু: তিনি "Cura annonae" এবং লেপিডাসের মৃত্যুর পর ১২ খৃ: পু: তিনি "Pontifex maximus" পদলাভ করিয়া একাধারে ধর্মা, অর্থ, কাম ও মোক্ষের পূর্ণ প্রভাব লইয়া বিভ্যমান ছিলেন। রাজ্যশাসন সম্পর্কীয় শ্রেষ্ঠ পদে আসীন হইয়া তিনি বিবিধ সংস্কার ছারা রাজ্যের কুশলতা স্থাপন করিয়া-ছিলেন। তিনি রাজ্যের প্রজাবর্গের ক্ষেত্রজাত দ্রব্যাদির হিসাব লইতেন এবং যাহাতে রোমরাজ্যবাদী জনগণ অন্নবিনা মৃত্যুমুখে পতিত না হয়, তদ্বিয়ে বিশেষ লক্ষ্য রাখিতেন। ইহাদ্বারা তাঁহার ধর্ম, অর্থ ও কার্য্যে সাধারণের বিশেষ স্থবিধা ঘটিয়াছিল। পণ্টিফেক্স মাক্সিমান্ হইয়া তিনি বিভাশিক্ষার উন্নতিকলে মান-সিক বৃত্তিনিচয়ের ক্র্রিদানম্বারা লোকের মোক্ষমার্গও স্থসংস্কৃত করিয়া দিয়াছিলেন। তাঁহার স্থাসম্বন্ধ এই শাসনপ্রণালীকে লোকে "Maxims of Augustus" বলিত। ডাইওক্লিসিয়ানের রাজত্বলাল পর্যান্ত এই নীতিকুশল প্রণালীতেই রোমরাজ্য শাসিত হইয়াছিল। জুলিরাস্ সিজার বাছবলে রোমবাসীর চিত্ত ভীতিবিজ্ঞড়িত করিরা যাহা করিতে পারেন নাই, অগ্টাস সিজার অনারাসে শাস্তি ও সহিষ্ণুতাবলে তাহা স্থসম্পন্ন করিয়া গেলেন। তিনি লোকের চিত্তবিনোদনার্থ যে রাজপদ একদিন ভুচ্ছ করিয়া প্রজাতত্ত্বের প্রভাববৃদ্ধির জন্ত সেনেট ও এসেমব্লির হল্ডে যে শাসন ভার অর্ণ করিয়াছিলেন, পক্ষাস্তরে তাহারাই তাঁহাকে অতি-রিক্ত শক্তিদান করাইলেন। কেবল মাত্র "কমিসিয়া" जीरांत्र बीवक्यांत्र त्राव्यविधिक्षणत्रत्न अधिकात्री हिल्लम, किञ्च ভাঁহার উত্তরাধিকারী টাইবেরিয়াসের রাজ্যকালে এই ব্যবস্থাপক

সভা ছইটী মাত্র আইন প্রবর্ত্তন করিরাই ক্লান্ত হইরাছিলেন। তাহার পর ঐ সভার ক্ষমতা হ্রাস হর।

ষ্ণাষ্টাদ্ স্থীবিতকালে যে সকল বিষয় কার্য্যে পরিণত করিরা যাইতে পারেন নাই, তাহার চিরপোষিত শেষজীবনের সেই আশাগুলির নিশাদনভার স্থীয় উপযুক্ত দত্তকপুত্র টাই-বেরিয়াদের উপর হাত করিয়া যান। তিনি স্থীর দত্তককে পূর্বাব্রেই রাজশক্তির প্রতিভা দান করিরাছিলেন। আইন প্রবর্তন ও প্রচলিত-বিধির সংকারাধিকার (Censorial and tribunitian) লাভ করিরা অবধি টাইবেরিয়াদ্ রাজসরকারে যথেষ্ট প্রতিপত্তি বাড়াইয়া লইয়াছিলেন, অগাইাসের শ্বীবংকালে তাহার কার্য্যে প্রতিবাদ করিবার জন্ম একজন লোকও দঙায়মান হইতে সাহস করে নাই।

পিতার এই অমান্থবিক শক্তি ও প্রভুষ দেখিরা টাইবেরিয়ান্
শীর শক্তি আয়ত্ত করিতে চেষ্টা করিলেন। ক্রমশংই তিনি লাজিক
ও মদগর্কে মত্ত হুইরা পড়িলেন। নির্চুরতা, অত্যাচার, শঠতা,
কপটতা প্রভৃতি তাঁহার অঙ্গের আতরণ হইয়া উঠিল। তিনি
শীয় শক্তি অক্ষ রাথিতে চেষ্টা পাইলেন। অগাষ্টাদ্ যে রাজশক্তির পরাকাষ্টায় প্রজাতয়ের অধীশ্বর্মপাত করিয়াছিলেন,
তাঁহার পুত্র টাইবেরিয়াদ্ শীয় লাজিক বৃদ্ধির বশবর্তী হইয়া
প্রজাতয়ের সমস্ত শাধিকার লোপ করিলেন। দেখিতে দেখিতে
ক্মিসিয়া, মেজিট্রেশী,কন্সল, প্রিটর, ইডাইল, ট্রিউনেট, কুইইর
প্রভৃতি পদ বা তৎপদাভিষিক্তের কার্য্য নাম মাত্র রহিল, কেহ
পূর্ক্মত আপনাপন ক্রমতা পরিচালন করিতে সমর্থ হইলেন না।

টাইবেরিয়াসের মৃত্যুর পর ৩৭ খুষ্টাব্দে কালিগুলা সাম্রাঞ্যা-ধিকার প্রাপ্ত হন। তিনি হর্কান্ত, কোপনস্বভার, গর্কিত ও জ্ঞানপৃত্য উন্মাদপ্রকৃতির লোক ছিলেন। তাঁহার পর ৪১ খু ষ্টান্দে यथाकरम निर्कां क्रियाम, ८३ थृष्टीत्म नत्रिभां निरता, ৬৮ খৃ: অ: গালবা, ৬৯ খৃষ্টাব্দে ওথো এবং পশুপ্রকৃতিক নিষ্ঠুর অত্যাচারে আমোদ প্রিয় ভিটেলিয়াস রোমের রাজপদ অধিকার করেন। তদনস্তর উক্ত বর্ষের শেষকালে ভেল্পেসিয়ান মসনদে আরোহণ করিয়া ইতাদীয় নগরবাসী এবং পশ্চিম-সাম্রাজ্ঞাবিভাগের প্রদেশবাসী লাটন জাতির মধ্য হইতে সেনেটের সভ্য মনোনীত করিবার আদেশ প্রচার করিলেন। ইহাতে রোমক সেনেটের শক্তি অনেকটা বিশ্বত হইয়া পড়িল। তাহার পর ৭১ খু ষ্টান্দে ভাইন্টান, ৮১ খৃ টান্সে কাপুরুষ ডোসিটিয়ান্, ৯৬ খু টান্সে নের্জা, ৯৮ ब्होरम हिजान ७ ১৭९ ब्होरम हाजियान वर्धाकरम त्रास्त्रत রাজপদ অবন্ধত করেন। তাঁহার। সকলেই ভেল্পেসিয়ানের প্রবর্ত্তিত প্রথার অনুসরণ করিয়া রোমীর সেনেটের প্রবল প্রতাপ ধর্ম করিরাছিলেন। রোমকগণ স্বেচ্ছার ও সজ্ঞানে যে গবর্নেন্টের অন্থ্যোগন করিয়া একজনের হতে সমস্ত রাজ্যভার সমর্পণ করিলেন, তাঁহাদেরই অভ্যানারে ভাষারা অবরে দ্বণা প্রকাশ করিলেও, বাহিরে ভোষামাদ করিতে বাধ্য হইরাছিলেন, কিন্তু তাঁহারা শতান্ধ-সূপ্ত স্বাধীনভাস্থতি একবারে বিশ্বত হইতে পারেন নাই।

অগাষ্টানের পর হইতে হাজিরান পর্যান্ত রাজগণের অধিকার-কালে রোমের বাহু আড্মর অনেক পরিমাণে বর্দ্ধিত হইরা-ছিল। এই সমর হইতেই প্রিন্দেশনণ ব্যতীত রোমের অপরাপর मानकनिक द्वान इदेख थाक। अशाहीन, छोटेरवित्रवान् छ क्रियान मुखाँ बाद्यत भागनकारण त्राव्यक्ति ও भागनकर्ष् সর্বতোভাবে তাঁহারের উপরই প্রস্ত ছিল; কিন্তু বধন অভাত শাসকলক্তি শিথিল হইলা পড়িতে লাগিল, তথন রোমরাজ্যের একটা আমূল পরিবর্তন অবশুভাবী হইরা উঠিল। অগাষ্টান্ ও টাইবেরিরাস্ কুটনীতিবলে ও নির্শিপ্তভাবে যে রাজ্পক্তির প্রভাব প্রদর্শন করিতে গোপনে গোপনে চেষ্টা পাইতেছিলেন, কালিগুলা, ক্লডিরাস্ ও নীরো সেরপ-শ্রুপ্ত প্ররাস স্থাার সহিত পরিত্যাগ করিয়া প্রকাশ্ত ভাবে শাসনকার্যে, রাজস্ববিভাগে, সামরিক বিভাগে এবং বৈদেশিক দ্বাজ্যশাসন-সম্পর্কে প্রিন্সে-পের সর্কামর কর্তৃত ত্থাপন করিলেন। নিগেট, প্রিফেক্ট, প্রোকিউরেটর ও মুক্তিপ্রাপ্ত দাসগণ (Freedmen) তাঁহাদের অধীনে গ্রুমেণ্টের স্থার্য্য পরিচালনা করিতে আদিষ্ট হইলেন। এইরপ শক্তিবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে প্রিক্ষেপের মর্য্যাদাও সাধারণ অপেকা উচ্চতর ছয়ে হাপিত হইল। তিনিই ক্রমে প্রকৃত রাজ্যেশ্বর হইরা উঠিলেন।

অগান্তান নীনহীন প্রজার ভারে অপেক্ষাক্ত কুরে অট্রালিকার বাস করিবা সামান্ত ও সরপভাবে জীবন অতিবাহিত করিবা গিরাছেন; কিন্তু পরবর্তী শাসনকর্ত্বগণ প্রশ্বাসদে মন্ত হইরা সে সরলতা পদমর্যাদার উপযুক্ত বলিরা বিবেচনা করিলেন না। উল্লোল সকলেই রাজার ভার জাকজমকের পক্ষপাতী হইরা পড়িলেন। নীরোর রাজত্বলালে তাহা পূর্ণমাত্রার প্রকাশ হইরাছিল। রোমক-সমাটের রাজবর্গানির্বাহের আবক্সবীর ও উপবােদ্য সমুদার ক্রবা রাজসরকারে বিরাজ করিতেছিল। তাহার মন্তের রাজভবন রক্ষা করিত। তিনি পারিবদবর্গে পরিবেটিত হইরা সমাটের জার সগর্কে বিচরণ করিতেন এবং তাহার প্রান্তির জার সগর্কে বিচরণ করিতেন এবং তাহার প্রান্তির ক্রান্ত ওংপরবর্তীর গাণ্বা ও ক্লাবীরবংশীয় ভেল্পেরিয়ান প্রভৃতি সম্রাট্গণ, ট্রাজান, হাজিয়ান ও আব্টোনিনাস্বর সে ক্রপ্রস্কার অভ্নতা ব্রাক্ষান ও আব্টোনিনাস্বর সে ক্রপ্রস্কাহর অভ্নতা ব্রাক্ষান

নিমজ্জিত না হইরা অপেকারত সরলভাবেই জীবনবাপনের চেষ্টা করিরাছিলেন। কালিওলা বা নীরোর নাার ভাঁছারা ष्मञ्जात्र रजाबारमामश्चित्र हिरमन ना। जाँशास्त्र धरे नत्रम ७ সদয়ভাবের পরিবর্তনে লোমে একটা নুতন বুগের পুরুপীত হইল। সামরিক ও রাজকীর শাসন পুর্ণভাবে প্রতিষ্ঠিত হইরা উচ্চতর সোপানে আরোহণ করিল। কালিওলা ও নীরো প্রথমে সেমা-বিভাগ কর্ত্তক "ইম্পারেটর" বলিরা সম্মানিত হইরাছিলেন এবং পরে দেনেট তাঁহাদের সেই শক্তিদান করেন। অকমাৎ রাজ্য-শাসকরন্দের এই ভাবপরিবর্জনে রোমে কোন ভাবান্তর শক্ষিত না হইলেও, রোমবহিন্তু তি প্রদেশে তাহার যথেষ্ট আভাস দেখা গিয়াছিল। স্পেনে শিক্তনকর্ত্ত গাণ্বার সন্মাননা হইতেই রোমে নৃতন যুগের অবভারণা হইল। তথন হইতেই প্রকৃতপক্ষে প্রিন্সেপদিগের নির্মাচনসন্মতি নিম্মন হইতে গৃহীত না হইলেও বন্ধতঃ তাঁহাদের অভিমতেই রাজা রাজশক্তিসম্পন্ন হইতেন এবং তাহা রক্ষার অন্য তাঁহাকে সম্পূর্ণরূপে সৈন্যবুদ্দের উপর নির্জন্ন করিতে হইত। এইরূপে বর্মাণ ও সিরির শিক্ষনের অভিমতাহুসারে ভিটেলিয়াস্ ও ভেলেসিয়ান সম্রাট্রপদে অধিষ্ঠিত হইরাছিলেন। ডোমিসিয়ান বোদ্ধ বেশে সগর্বে সেনেটে প্রবেশ করিয়া খীর রাজ্যকালের সামরিক প্রভাব (Military character) জ্ঞাপন করিয়া যান। সম্রাট্ নের্ভার দত্তক বিখ্যাত বীর ও অন্বিতীয় যোদ্ধা ট্রাঞ্চান হইতেই সামরিকবিভাগের সর্ক্ষয় কর্ত্তা বা "ইম্পারেটর" পদ প্রাচীন শাসনপদ্ধতির প্রিম্পের শক্তিকেও অতিক্রম করিরাছিল।

সমাট্ হাদিয়ানের পর যথাক্রমে আন্টোনিনাস্ পায়াস্ (১৩৮ শ্ব: জঃ), মার্কাস্ উরেলিয়াস্ (১৬১ শ্ব: জঃ), মার্কাস্ জান্টোনিনাস্ (১৬১ শ্বঃ জঃ), কোমাডিয়াস্ (১৮০ শ্বঃ জঃ), থাটিনায় (১৯২ শ্বঃ জঃ), ভিভায়াস্ জ্লিয়ানাস্ (১৯৩ শ্বঃ জঃ), এবং সেন্টিমিয় সমভেয়াস্ (১৯৩ শ্বঃ জঃ) রোমক্সিংহাসনে উপবেশন করিয়া য়াজকার্য্য পরিচালনা করিয়াছিলেন। তাঁহারা সকলে টাইরান্ট নামে অভিহিত ছিলেন।

গাল্বা, ভিটেলিরাস্ ও ভেম্পেসিয়ান্ সম্রাট্পদে অভিবিক্ত হইরাই স্ব স্বন্ধভূমি হইতে রোমে প্রবেশপূর্কক সেনেটের অভিমত গ্রহণ করেন। ট্রাজান ও হাজিয়ান ভিন্ন প্রদেশ জাত ছিলেন। তাঁহাদের মধ্যে ট্রাজান সম্রাট্ পদলাভ করিয়াও এক বৎসরের মধ্যে রোমনগরে প্রবেশ করেন নাই; কিছ হাজিয়ান সেনেটকর্তৃক অভিনন্দিত হইবার পূর্কে সিরিয়ার "ইম্পেরিয়াম্" গ্রহণ করিয়াছিলেন। ভক্তর তিনি সেনেটের সমক্তে বিনীতভাবে ক্ষমা প্রার্থনা করিতে বাব্য হন। ট্রাজান ও মার্কাস্ প্ররেশিয়াসের দিগন্ত-নিনাদিক বিশ্বরুকীর্ষি স্থবন্দোবন্ত ও প্রতিষ্ঠাত্যোতক হুইরাছিল; স্ত্তরাং আবশ্রক বোধে রোম হইতে ভিন্ন হানে রাজপাটপরিবর্ত্তনের ব্যবহা হুচিত হয়। এতেটামিটিয়াস্ ব্যতীত ভেম্পেনিয়ান হইতে ঔরেলিয়াস্ পর্যান্ত নরপতিবর্গ সেনেটের সহিত একবোগ হইয়া অতীব শুক্তর রাজকার্য সমুদায় সম্পাদন ক্রিডেন। কিছু কালক্রমে এই দর্শনশান্ত শিক্ষার প্রভাবে যখন রোমকগণের মানসিক শক্তি পরিবর্ধিত হইল, তখন তাঁহারা জ্ঞানাম্পীলনে প্রবত্ত হইয়া সময়ামুক্তপ একটা সংস্কৃত রাজকীয় শাসনপ্রতির (Imperial System of government) আবশ্রকতা উপলব্ধি করিলেন। তদমুসারে তাঁহারা একমাত্র সমাটের হত্তেই সমগ্র শাসনপ্রণালী কেন্দ্রীভূত করিয়া রাখিলেন। হাদ্রিয়ান্ এ বিষয়ের উদ্যোক্তা ছিলেন। তাঁহার এই অভীইসিনির দারা রাজ্যের শাসন বিভাগের সমৃহ উন্নতি সাধিত হইবার আশা ছিল; কিছু তাহা না হইয়া বরং তদ্বারা সামাজ্যপক্তির অনেক ছাস ঘটিয়াছিল।

মার্কাদ্ ঔরেশিয়াদের মৃত্যু হইতে ডাওক্লিসিয়ানের সিংহাসনাধিকার পর্যান্ত শতাব্দকালে ১৮০-২৮৪ খু: আঃ) রোমের প্রাচীন অগামান-পদ্ধতির সমাক্-বিলয় সাধিত হইয়াছিল। পর্টিনক্স সেভেরাস আলোকসান্দার মাক্সিমাস ও বাল্বিনাস্ এবং টাসিটাস্ প্রভৃতি সমাট্গণ সেনেট কর্তৃক রাজপদে নির্বাচিত হইলেও সেভেরাস আলেকসান্দার ব্যতীত তাঁহাদের মধ্যে অপর কেহই লিজনের আবশ্রকীয় আমুগত্যলাভ করিতে পারেন নাই। খুষ্টীয় ৩য় শতাব্দের রোমক সম্রাট্রগণ প্রধানতঃ সেনা-সভ্যের নির্ম্বাচন দ্বারাই মনোনীত হইতেন। এই সকল সম্রাট-গণ সীমান্তপ্রদেশবাসী নগণ্যব্যক্তির সম্ভান। তাঁহারা ঐশর্যা-গর্কে মন্ত হইয়া পরের মর্ম্মবেদনা ব্রিতে সমর্থ হইতেন না। অত্যাচার ও নিষ্ঠুরতা তাঁহাদের অঙ্গের আছরণ হইরাছিল। অমামুবিক অত্যাচারে তাঁহারা সাধারণকে ক্রিয়া আপন আপন পাশবপ্রবৃত্তি চরিতার্থ করিতেন। এই সকল নীচপ্রকৃতিক नुপতিগণের নিকট সেনেট সর্বাদাই অপদন্ধ, লাঞ্চিত ও বিড়বিত ছইতেন। হাঁহারা রাজ্যশাসনের উপযোগী এবং সদাচারী ও দয়াবান ছিলেন, তাঁহারাও সেনেটকে গ্রমেণ্টের কার্য্যে হস্তক্ষেপ করিতে দিতেন না। সেপ্টিমিরাস্ সেভেরাস্ আফ্রিকাবাসী ছিলেন। সেনেটের নিকট হইতে অভিমত (Formal Confirmation) না লইয়া তিনি রাজকার্যাভার গ্রহণের পথ প্রদর্শন করেন। রোমে থাকিয়াই তিনি "প্রোকস্পল" উপাধি ধারণ এবং ফোরামে উপবেশনপূর্বক শাসন ও বিচারকার্য্য সমাধা না করিরা প্রাসাদ-প্রাচীরের অভাররেই সেই সকল কার্যা সমাধানের বাবস্তা করিয়া ্ছিলেন। অবশেষে ভিনি প্রিটোরিয়-রক্ষিদলের প্রিফেক্টকেই <u> नदाटें व व्यथ्यन द्राव्यक्षंग्रातिक्र</u>े निर्दाक्षिक क्रिया यान।

ইহাতে তাঁহার অসীম প্রভূষের পরিচর পাওরা যার। তাঁহার শিলাফলকে তিনিই প্রথমে সম্রাটকে, "dominus" শকে উন্নিধিত করেন।

২৪৯ খুষ্টাব্দে ডিসিয়াসের অভ্যানর ও রোমসাম্রাজ্যাধিকার ररेए आमत्रा नानिसून ध्वतारिष्ठ धारमनम्बुष्ठ क्वक्कन स्रमकः সম্রাটুকে উপযুগিরি রোমসিংহাসন অলম্বত করিতে দেখিতে পাই। সেই নরপতিগণের রাজ্যকাল হইতেই রোমসাম্রাজ্যের দামরিক ও রাজকীর শুক্তির পূর্ণপ্রতিষ্ঠা হয় এবং ক্রমশঃই তাহা উত্তরোভর বর্দ্ধিত হইতে থাকে। সেই সময় হইতে "ইন্সিরিয়াল" ও "নেনেটোরিয়াল" প্রদেশ বিভাগ বিলুপ্ত হয় এবং রাজকোব ও সম্রাটের নিজম্বের পার্থকা ঘূচিয়া যায়। जमनखत रात्मवेत्रभग मामविक ও त्राक्षकीयकार्या चाधिकात-বিচ্যুত হন। যাহা কিছু অবশিষ্ট ছিল, বিখ্যাত বীর ঔরেলিয়ানের (২৭০-২**৭৫ খু: আ:)** যদ্ধে তাহা সম্পন্ন হইল। তিনি রাজা-मानत्नत्र कर्छात्र मण बहरल गरेशा श्राठीन श्रवात्र नम्पूर्ग विमय সাধন করিলেন। তিনি স্বীয় অধিকারকালে রোম-গর্থমেন্টে ডাইওক্লিসিরানের অন্তকরণেই রাজ্ঞ্লক্তির পরাকাঠা প্রদর্শন कतिवाहित्नन এवः श्रीहा अन्यभनमम्दित ममृद्धि असूकव्यभूक्तक তিনি স্বীয় রাজসমৃদ্ধির গান্তীর্য্য বৃদ্ধি করিয়াছিলেন।

পূর্ব্বেই লিখিত হইরাছে যে, জ্লিরাদ্ সিজার রোমসাস্ত্রাজ্ঞা সীমা বৃদ্ধি করিয়া, নামা বিষয়ে সংকার সাধন করিয়াছিলেন; কিন্তু মৃত্মূহ যুদ্ধবিপ্লয়ে বিপর্যন্ত রোমীয় জগতের শাস্তি বিস্তার

রোমসাঞ্রাজ্যের সংক্ষেপ ইতিবৃত্ত করিয়া থান নাই।
সংক্ষেপ ইতিবৃত্ত মহাত্মভব অগাষ্টাস্ ধীরপাদবিক্ষেপে
স্থবন্ধিবলে সেই কার্য্য সমাধা করিয়া থান।

রোমীর প্রজাতত্ত্বের নির্মাচিত দেনাপতির্ন্দ এবং স্কার দক্ষিণ ও পশ্চিম ভূভাগ জয় করিরা যাঁন, হুতরাং আফ্রিকার মক্তরেশ ও আটুলান্টিক মহাসমূদ্র ভিন্ন রোমরাজ্যসীমা আর অধিক বিস্কৃত হইতে পারে নাই। সিজ্ঞার গলরাজ্যজয় করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহার ভ্রাতৃপুত্র অগান্টাসই এই সকল জনপদে হুসম্বদ্ধ শাসনপত্ততি বিস্তার এবং রাজশক্তির পত্তন করিয়াছিলেন এবং সেইরূপ রাজকীর বিধিতেই তিনি রোমরাজ্য-সীমারকার তৎপর হইরাছিলেন।

২৫ খৃ: পৃ: নিউমিডিরারাজা প্রাচীন আফ্রিকা প্রাদেশের অন্তর্ভুক্ত, এবং তৎসংলগ্ধ ইজিপ্রজনপদ একটা স্বতন্ত্র প্রেদেশরণে পরিগণিত হয়। স্পেনের উত্তর-পশ্চিমাংশবাসী অসভ্য পার্ক্ত্য-জাতিকে জন্ন ও লুসিটানিরার শাসন বিস্তার করা হইরাছিল। ২৭ খৃ: পু: আগাষ্টাদ্ আকুইটানিরা গলডুনেন্সিদ্ ও বেলজিকা প্রদেশ রাজ্যভুক্ত করিরা ইউল্লাইন্ হইতে জ্বর্ণসাগরতীর পর্যান্ত

রাজাসীমা বিস্তার করেন। তৎপরে তিনি তাহার দক্ষিণন্ধিত মিসিয়া (৬ খৃ: অ:), পানোনিয়া (১ খৃ: অ:), নোরিকাম্ (১৫ খৃ: পু:), রিটিয়া (১৫ খৃ: পু:) ও গালিয়া-বলজিকা প্রভৃতি প্রদেশ অধিকারপূর্ব্বক স্থশাসন প্রতিষ্ঠা বারা শান্তিস্থাপন করিতে চেষ্টা পান। > প্টাবে ভেরুসের পরাক্ষরের পর, তিনি রাইন অতিক্রম ক্রিয়া সন্মুধে অগ্রসর হন নাই, তাঁহার বংশধর টাইবেরিরাস্ শিল্ভা টিউটোবার্নেসিসের বিপত্তির প্রতিশোধ শইয়া অশ্বানিকাদ্কে প্রত্যাবৃত্ত ছুইতে আদেশ প্রদান করেন **এবং ১৭ बृशंदम উ** इत्र नामिछेदवत्र मार्कामति अदारात्मत्र ताका মাবোবোভুরাদ্ সহিত সন্ধি করিয়া তিনি স্বীর পিতার নির্দিষ্ট আত্মপক স্থরক্ষার বন্দোবন্তে মনোনিবেশ করিয়াছিলেন। তদমু-সারে রাইন নদীতীরে, উত্তর ও নিম বর্ণাণিতে, দানিযুব সীমান্তে এবং পানোনিয়া ও মিসিয়ার চারিদিকে রোমীর শিক্ষন প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। রা**জ্যরকা**রের নিরো**জিত লি**গেটগণ ঐ সকল সেনাদলের অধিনারক হইতেন। স্পাবশ্রক-মতে স্থানে স্থানে ছাউনাঁ ও দৈনিকোপনিবেশ স্থাপিত হইরাছিল। নদী-বক্ষে ছিপে চড়িয়া সেনাদশ অহরহ: গমনাগমন করিয়া আততায়ী শত্ৰু অথবা বিদ্ৰোহী প্ৰজার মনে ভীতি উৎ-পাদন করিত।

অগাষ্টাস্রোমসাত্রাজ্যের শাস্তি ও সমৃদ্ধি প্রতিষ্ঠা করিয়া যান। পরবর্ত্তী সমাট্গণ সকলেই স্থানক ছিলেন, তাঁহারা অপ্রতিহতপ্রভাবে রাজ্যণাসন করিয়া গিরাছেন। গেয়াস, ক্লডিরাদ্ ও নীরো হর্ক্ জিবশতঃ ও অত্যাচারনিবন্ধন রোম ও ইতালীবাসীকেই উত্তাক্ত করিয়াছিলেন। রাজ্যের অপর কোন স্থানে তাঁহাদের স্বেক্সাচারিতার বীক্ত অভুরিত হয় নাই। নীরোর মৃত্যুর পর, প্রতিছম্বী সমাট্গণের বিরোধন্দনিত যুদ্ধে রোম-সামাজ্যের যে সকল ক্ষতি হইয়াছিল, ভেসেসিয়ান তাহার ক্ষতিপূরণ করিয়া যান। ওথো, ভিটেলিয়াস্ ও ভেম্পেসিয়ানের পরস্পার যুদ্ধের অবসরে ৬৯-৭০ খৃষ্টাব্দে সিভিলিসের বিদ্রোহ উপস্থিত হয়। ট্রাজাস্ হাদ্রিয়ান্ ও আন্টোনিয়াস্বয় ব ব অসা-ধারণ শক্তিবলে রোমসাম্রাজ্যের বিশ্ববিজয়িনী শক্তির পুনরাবির্ভাব করিতে সমর্থ না হইলেও, স্থশাসন ও শাস্তিস্থাপনে পারদর্শী হইয়াছিলেন। ক্লডিয়াস্ বুটেন জয় করিতে অগ্রসর হন। আগ্রিকোলা (৭৮-৮৪ খু: অ:) তথাকার উত্তর দেশ অয় করিয়া "शक्तियान्-आठीत" बाता द्यामकाधिकात निर्देश कतिता यान। ১০৭ খুটানে বর্ষরজাতির আক্রমণে ভীত হইরা ট্রাজাস্ নিয় দানিযুব প্রদেশে অভিযান করেন এবং ডাকিরারাজ ডুসে-বালাস্কে পরাজিত করিয়া তাঁহার রাজ্য হস্তগন্ত করিয়া লন। क्षत्रवि २८७ बृष्टीम भग्रेष डेक अलम त्रामाधिकारत हिन। সম্রাট্ ,ট্রাজান ,জারাবিরা-পিট্রিয়া প্রাদেশ রোমসান্ত্রাজ্যভূক্ত ক্রিয়াভিলেন।

মার্কান্ ঔরেলিয়াসের রাজস্বকালে (১৬২-১৭৫ খঃ) নার্কোন্
মরি প্রভৃতি অসভ্যজাতি সীমান্ত হইতে দলে দলে আসিরা রোমসাম্রাজ্য আক্রমণ করে। তাহারা ধীরে ধীরে উত্তর দানিযুব
প্রেদেশ অতিবাহন করিয়া ক্রমশং রিটিয়া, নোরিকাম ও পানোনিয়া
প্রেদেশ লুগ্ঠন ও বিধরত্ত করিয়া আরুল্ অতিক্রমপূর্ক্ক ইতালী
প্রান্তে আসিয়া সম্পন্থিত হইল। এই বৈদেশিক বর্করনিগের
সহিত রোমরাজ্যকে চতুর্দ্দশ বর্ষ যুদ্ধ করিতে হয়।

রোমের স্থদুর পূর্ব্বপ্রান্তেও এরপ যুদ্ধবিগ্রহ চলিয়াছিল। পার্থিয়া, আর্মেণিয়া ও ইউফ্রেটিস্ তীরবর্তী প্রদেশে রোমের রাজ-নৈতিক সম্বন্ধ স্থপ্ৰতিষ্ঠিত হইয়াছিল। ট্ৰাকান যে সকল স্থান অধিকার করিয়া যান, হাদ্রিয়ান তাহা রক্ষা করিতে অসমর্থ হইয়া পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হন; কিন্তু সেপ্টিমিয়াস্ সেভারাস্ পুনরায় সীমান্ত প্রদেশে রোমীয় প্রভাব বিস্তার করিয়া পূর্কা-বস্থার অনেক পরিবর্ত্তন ঘটান। ১৮০ ধৃষ্ঠাব্দে মার্কাদ্ ঔরেলাদের মৃত্যু ঘটে। তদবধি ২৮৪ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত উপযুর্গপরি যুদ্ধবিগ্রহ ও শাসনবিশৃথলার রোমসাম্রাজ্যে একটা খোর বিপর্যায় উপস্থিত হয়, কিন্তু সেপ্টিমিয়াস সেভেরাস, ডেসিয়াস্ ক্লডিয়াস, ঔরেলিয়ান ও প্রোবাস্ প্রভৃতি রণহর্মদ সমাট্গণের কঠোর শাসনে তাহা ধ্বংসমুখ হইতে অব্যাহতি পায়। কিন্তু স্থবিশাল রোমসাম্রাজ্যে রাজকীয় শক্তির স্থব্যবস্থা-সংস্থাপনার্থ বিশেষ কোন নৈতিক পছা অবল্যিত হয় নাই। খুষ্টীয় ২য় শতাবেদ কাৰ্যাত: ও অংশত: যাহা কিছু সাধিত হইয়াছিল; ধৃষ্টীয় ৩য় শতাব্দে রোমসামাজ্যভুক্ত বিভিন্ন প্রদেশে শাসনকর্তা বা লিজনের অধি-নায়কগণের পরশারের প্রতিষ্কিতার যে ভয়াবহ ধারাবাহিক বুদ্ধবিগ্ৰহ সম্ হুলাছন, ভাহাতেই রোমসাম্রাজ্যের বিধি-বন্ধ গ্রন্থি সমূহ শিধিল হইয়া যায়। ঐ সকল প্রতিদ্বন্ধী সেনাপতি-গণ রাজমুকুট শিরে ধারণ করিবার জন্ম বোরতর যুদ্ধে লিগু ছিলেন। २১১ चृष्टीस्य সেভেরাসের মৃত্যুর পর হইতে ২৮৪ **ब्रिटीस् जो अक्रिमिय्रात्नेत्र त्राक्यात्त्रारंग भर्यास्य किंडू कम २७ जन** সমাট অগাষ্টাদের সিংহাদনে উপবেশন করিয়াছিলেন। উহাদের মধ্যে কেবল মাত্র তিনঞ্জনের অতীব শোচনীয় মৃত্যু হইরাছিল। ডিসিরাস গথজাতির সহিত যুদ্ধ করিয়া নিহত হন, ভালেরিয়ান্ মুদ্র পূর্বপ্রান্তে কারাগারে নিকিপ্ত হইরা অন্ধার মধ্যে কলুষ-পূর্ণ জীবনের অবসান করেন এবং ক্লডিরাস্ সেই ছর্দিনের মহা-मात्रीए७ कीवन हात्राहेरनन ।

রাজমুকুট-আহরণোদেশে জনসংক্ষরকারী এই সকল অভি-মানী সম্রাট্পণ "টাইরাণ্ট" নামে পরিচিত হইরাছিলেন। কোমোডাদ্ নিজ বুদ্ধিলোবে ও অত্যাচারিতার ক্রমশ: রাজ্যে বিশূঝলা ঘটাইলেন। প্রথমে তিনি পিতার সমৃদ্ধ সেনাদল লইরা কিংকর্জবাবিমৃত হইরা পড়েন। এই সময়ে তিনবংসরকাল তিনি খীর পিতার বিশ্বস্ত পূর্বতন রাজকর্মচারীনিগের ঘারা রাজকার্য্য পরিচালনা করিয়া লইতেন। কিন্তু অচিরে তিনি পারিষদবর্ণের প্রেরোচনার উৎসরের পথে প্রেরিত হইলেন। মত্যানান ও বেখ্যাসক্তি দোবে তাঁহার জীবন কলছময় হইয়া উঠিল মিতেছবিক্ততির সঙ্গে তিনি ঘোর অত্যাচারী হইয়া পড়িলেন। চারিদিকে তাঁহার লক্রদলেশ জীবননাশের চেষ্টার কিরিতে লাগিল। তাঁহারাই ভগিনী লুসিয়াদ্ ভেক্রদের বিধবা পত্নী ও ক্রডিয়াদ্ পম্পিরেনাসের ঘিতীয়-পরিণীতা রমণা লুসিয়া ভ্রাতার প্রাণনাশের ষত্যর করিতে লাগিলেন। আদ্বিথিয়েটার হইতে প্রাসাদে প্রত্যাবর্ত্তনকালে সম্রাট্ কোমোডাস গুপ্তবাতকের হত্তে নিহত হইলেন। ১০৯খঃ অং ৩১ ডিসেবর লুসিয়া নির্কাসিত হইলেন।

কোমোডাসের মৃত্যুতে সাধারণে শোকপ্রকাশ না করিয়া সাধারণের রাজধানীর প্রিফেক্ট পার্টিনাক্সকে তৎপদে অভিষিক্ত করিতে যুক্তিযুক্ত বিবেচনা করিল। তথন অন্ততম কন্সল সোসি রাস্ ফাল্কো তাঁহার প্রতিযোগী হইয়া সিংহাসনাধিকারে প্রশ্নাস পান। পার্টিনাক্সের অভ্যাদরে তিনি সদলে বিধ্বস্ত হইয়াছিলেন।

কোনোডাদের মৃত্যুর ৮৬ দিন পরে (১৯৩ খু: অ: ২৮এ মার্চ) ৩শত "প্রিটোরীয় গার্ডস্" নামক রক্ষিসৈন্ত অলক্ষিতভাবে প্রাসাদ আক্রমণ করিয়া পার্টিনাক্সকে নিহত করে। তদনন্তর তাহারা নগরপ্রাচীরত্ব উচ্চভূমে দাড়াইরা উচ্চমূল্যে রোমসামাজ্য বিক্রয করিতে থাকে। অবশেষে ও সম্রাটের খণ্ডর সার্ভিয়াস সাল-পিসিয়ানাস ও প্রসিদ্ধ ধনী সিনেটর ডিডিরাস্ জুলিয়ানাস্ক্রেতা-রূপে অগ্রসর হন। সেই দিনে সেইক্ষণে ডিডিয়াস প্রত্যেক সৈত্যকে চইশত পাউও মুদ্রা দিবার অঙ্গীৰাটী রাজপদ গ্রহণ করেন। তৎকালে এই রক্ষি-সেনাদল অর্থলান্ডের আশায় জুলি-त्रानामत्क ठात्रिमित्क (वष्टिक कतित्रा नगत मत्था महेन्रा ठिनन) কিন্তু সাম্রাজ্যের কেন্দ্রস্থানে সন্নিবেশিত প্রিটোরীয়-গার্ডস দলের এইরূপ অস্তায় অত্যাচার সাধারণের অন্তরে অসম্ভোষায়ি জ্ঞালা-ইয়া দিল এবং ক্রমে ক্রমে তাহা রোমের স্বপূরপ্রান্তে বাইয়া উপনীত হইল। তখন বুটেন সিরিয়া ও ইলিরিকামস্থিত রোমীয় সেনাবুল প্রিটোরীর সেনাদলের পার্টিনাক্স হননরূপ ঘণিত ব্যবহারের জন্ত শোকপ্রকাশ করিলেন এবং এই অসহপারলব অর্থ বৃক্তিযুক্ত বলিরা স্বীকার করিলেন না। তথন তাহারা স্ব স্ব সশক্ত অধিনায়কের অধীনে পরিচালিত হইরা উপরোক্ত হত্যা-कार्रीमिशत्क मखिरधान कब्रिएक अधानत रहेग। ब्रुटिनशिक নিজনের নারক ক্লোভিরাস্ আল্বিনাস, সিরিরার সেনাপতি ও পিন্সেয়িয়ান্ নাইগার এবং পানোনিয়া মেনাগলের অধাক সেন্টিনিয়ান্ সেভেরান্ পার্টিনায়ের মৃত্যুর প্রতিশোধ লইতে আসিরা পরক্ষরে পরক্ষরের প্রতিযোগী হইরা সিংহাসন পাইবার আশায় যুক্তর আরোজন করিলেন। সুগ্ডুনাম্ রগক্ষেত্রে হেলেস্পন্ট ও সাইলিসিয়ার যুক্ত এবং বৈজয়ঝী নগর অবরোধকালে ভীষণ যুক্তে আল্বিনান্ ও নাইগার-পরিচালিত প্রতিপক্ষ রোমকসৈত্য নায়ক্ষহ নিহত হইল। ধরা নররক্তে রঞ্জিত হইয়া উঠিল। বীরাঞানী সেন্টিনিয়ার সেভেরাস্ এইয়পে শক্রপক্ষ নাশ করিয়া সিংহাসন অধিকার করিয়াহিলেন। বিধ্যাত নীতিবং পাণিনিয়ান্ তাঁহার অধিকারকালে মোটিনাসের পর প্রিটোরিয়ান্ প্রিফেউ" হইয়াছিলেন। উক্ত পাপিনিয়ান্ ব্যতীত, তয়ংশীয়গণের অধিকারকালে পলাস্ ও উল্পিয়ান্ নামক অপর ছইজন ব্যবহারবিং সমুভূত হন। তাঁহাদের লেখনী হইতে জানা যায় যে, তৎকালে রোমের রাজনীতি পূর্ণতা প্রাপ্ত হয়াছিল।

প্রথমা পদ্ধীর বিয়োগে সেভেরাস্ এমেসাবাসী জুলিয়া ডোল্মা নামী এক রমণীর পাণিগ্রহণ করেন। ঐ রমণী রোমসাম্রাজী হইসাও এবং নানা সদ্প্রণে ভৃষিতা হইলেও চরিত্রহীনতার যথেষ্ট পরিচয় पिया गियाएक। **এই ताकगरियीत गए**ई काताकाला ७ ग्रिका নামে ছইটা চরিত্রহীন ও পাশবপ্রকৃতি প্রতিমৃত্তির আবির্ভাব হয়। ২০৮ খৃষ্টাব্দে যষ্টিপরবৃদ্ধ সেভেরাস্ পুত্রন্বয়কে সঙ্গে লইয়া বুটেনবিজ্ঞরে গমন করেন। কিন্তু রণজ্ঞয় করিয়াও তিনি পুত্র-ছয়ের অসম্বাবহারে ভগ্নমনোরথ হন। কারাকালা তাঁহার শেষ দিনে তাঁহাকে গোপনহত্যার বড়যন্ত্র করেন। বিশ্বন্ত লিজনের সতর্কতায় তিনি রক্ষা পান। সেভেরাস কঠোর শাসনপ্রথার বশবর্ত্তী হইয়া পুত্রকে নানাক্লপ পীড়ন করেন ও ভয় দেখান। তাহাতেও পুত্রের চরিত্র সংশোধিত হইল না দেথিয়া তিনি অব-শেষে ৬৫ বর্ষ বয়সে ১৮ বৎসর রাজত্ব করিয়া ইয়র্ক নগরে চির-শান্তি ধামে গমন করেন। মৃত্যুকালে তিনি স্বীয় পুত্রন্বয়কে সৈম্বাদলে সমক্ষে বলিয়াছিলেম যে, ভোমরা এই সেনাসভেত্তই পুত্র ; কিন্তু হর্ভাগ্য পুত্রবন্ধ পরস্পরে মিল রাখিতে পারে নাই।

সমাটের মৃত্যুর পর, সৈঞ্চদল প্রাত্ত্ররকে রোমের সম্রাট্ বলিয়া যোষণা করিলেন। তথন তাহারা অর্জনির্জ্জিত কালিডোনীয়-দিগকে শান্তিয়্পে পরিত্যাগ করিয়। পিতৃক্বত্য সমাপনাস্তে রাজ্জভক্তে উপবেশনার্থ রাজধানী অভিমূখে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। গল ও ইতালী অভিক্রেম করিতে না করিতেই উভয় প্রাতার মনোবিবাদ ঘটিল। এমন কি সেনেট ও সাধারণ প্রজাবর্গ তাঁহাদের বক্ততা শীকার করিলেও তাঁহারা পরস্পরে মুখ দেখানদেখি করিতেন না, স্কতরাং পিতার আদেশ মত তাহারা রাজ্যাবিভাগ করিয়া লইলেন। জ্যেষ্ঠ কারকালা মুরোপ ও পশ্চিম

লাক্তিকা প্রদেশ পাইলেন এবং গেটা এসিরা ও মিশর প্রদেশ লইরা আলেকলাপ্রিয়া ও ক্ষতিওকৈ বাজধারী হাপন করিলেন। তুইটা কেন্দ্রে রাজপাট প্রতিষ্ঠিত ইওরার পুররার আন্তর্জাতিক বিবাদের প্রপাত হুইর । বুরোশীর সেনেটর রোনে রহিলেন এবং এবিরাবাসী প্রতিষ্ঠিতাবার সমাটের পদাহসরণ করিলেন। যুক্ত অবভারার ইইরা উঠিলে যাতা জ্লিরা উভরের করনা বার্থ করিবার অভিপ্রায়ে উভরতে অগ্তহ অবহানপূর্বক প্রতিশনের চেঠা শান ; কিন্তু কারকারার ব্যুর্ভ্রে সেইবানেই ওপ্রবাতক-দিপের হুত্তে গেটা জীবন হারান।

প্রাতাকে শমনসদনে প্রেরণ করিরা ক্ষারাকারা প্রাণের ক্ষাশকা জানাইরা সেনার্ক ও বেবমন্দিরের সমক্ষে জীবন ভিক্ষা চাহিলেন। সেনেট ও সেনাদলকর্তৃক আখন্ত হইলে তিনি বথা-রীতি মৃত সম্রাটের সংকার করাইরা ২১২ খুর্নীকে একেশ্বর ক্ষীশ্বর হইলেন।

গেটার মৃত্যুর একবংশর পরে জিনি রাজধানী পরিত্যাগ করিরা পূর্ববিজ্ঞাণীর প্রদেশসমূহের শান্তিবিধানার্থ তদ্দেশে গমন করেন। তাঁহার শাসনে পূর্ব্বরাজ্যে অত্যাচার ও অনাচার-জ্যোত প্রবাহিত হইরাছিল। আলোকসান্ত্রিয়ার ভীবণ হত্যা-কাণ্ড সাধিত হইল। ওপিলিয়াদ্ মাক্রিনাশ দেওয়ানী (civil) বিভাগের এবং আড্ডেন্টাদ্ সামরিক বিভাগের সর্ব্বময় কর্ত্তা হইলেন। সমাটের আত্মজারিতাই তাঁহার কাল হইল। তাঁহার অনাচারে সেনাদলও ক্রমশং তাঁহার পক্ষ ত্যাগ করিতে লাগিল। মাক্রিনাশ ভবিষায়াণীর বশবর্ত্তী হইয়া সাম্রাজ্ঞ পদলাভে সচেষ্টিত রহিলেন। ২১৭ খুটাব্রের ৮ই মার্চ্চ এডেসা হইতে কড্ছিতে তীর্থ্যাক্রাকালে কারাকালা মার্সিয়ালিদ্ নামক জনৈক শরীর-রক্ষীর হস্তে নিহত হইলেন।

কারাকারাক্তমূত্যর পর তিনদিন পর্যান্ত রোম সিংহাসন রাজশৃত্য থাকে। তৎপরে শ্রেটপ্রিকেক্ট আড্ডেন্টাসের অভিমতে
সকলেই মাক্রিনাশক রাজপদে অভিষিক্ত করেন; কিন্তু তিনি
অতি অরকাল মধ্যেই স্বীর দশমব্বীর পূত্র ভারাডুমেনিরানাস্কে
আক্রিনিনাস্ নাম ও রাজোপাধি দান করিরা রাজসিংহাসনে
অভিবিক্ত করিলেন। তাহার অভিপ্রার ছিল বালকের মোহনমৃত্তিতে মুদ্ধ করিরা সেনার্জের বিভহরণপূর্কক স্বীর সংশরপূর্ণ
সিংহাসন স্থান্ত করিবেন। তিনি এই উক্তেশ্তের বশবকী হইয়া
রাজমাতা ক্লিরা ডোলার ভগিণী ক্লিরা মিসাকে অভিওকের
রাজপ্রানাদ হইতে বহির্গদনের আদেশ দেন। এই রবণী বছধনরত্ব ও স্থার সোইমিরান্ ও মামিরা নার্ক্তি বিশ্বকা কন্তাছরকে
সঙ্গে লইরা এমেনার উপনীত হন এবং অপকশ শিরোধার্য্য করিয়া
ভ্রন্মা সোইমিরানের পূত্র বাসিয়ানাসকে স্বাট্ করিয়া কারা-

কার্মার বিবাহিতাপুরীগর্জনাত পুত্র বনিয়া বোষণা করেন।
সেনাদল মিসার ধনে পুত্র হইয়া বাসিয়ানাসকে অন্তিওকদ্
নামে সমাট্ বলিরা গ্রহণ করিল। গাক্রিনাস কাঁকরে পঞ্চিলেন।
কুচক্রে পঞ্জিরা তিনি অন্তিওকের অপুরবর্তী ইন্মির মুক্রে পরাজিত
হইলেন। তাহার সঙ্গে, পুত্র ভিরাডুমেনিরানাসের অপৃষ্ট বিচূর্ণ
হইয়া গেল। পর্ক্রমিত্র সকলেই বিজেতার ছত্রতলে সমাগত হইল।
কারাকারার ক্রিত পুত্র বাসিয়ানাস্ এমেসার স্বর্জনান্তের দেবমৃত্রির নামান্ত্রসারে ইলাগাবালাস্ অন্তিওকাস্ নাম ধারণ করিয়া ইন্মির
বুদ্ধ হইতেই রোমসামাজ্যেশর হইক্রে (খৃ: আ: ২১৮, গই ক্র্ন)।

সোইমিয়াসের পুত্র রাজা হইলেন এবং মামিয়ার পুত্র আলেক-मान्तात्र छाड्रोत मरुरयाणिकारण त्राव्यमःभारत পतिচामिण स्टेरज লাগিলেন। কিন্তু নবাসমাট্ মাস্তুত প্রাফ্লার ঈর্বার কাতর इरेश व्यानविमारनत ८० भाम । व्याप्तित्राम् भार्कम् नन বালক আলেকদান্দারের প্রাণরক্ষার বস্তু অগ্রসর হন। একদিন এই প্রিটোরিয়া গার্ডস দল তাহাকে রাজপথে আনিয়া নিষ্ঠুররূপে हजा करत (२२२ शुः घः > भार्क)। स्मामन भाकिनारमत প্রাণনাশকারী ১৭শ ব্রীর আলেকসান্দারকে সিংহাসন দান করেন। তদমুসারে আলেকসান্দার সেভেরাস নাম গ্রহণপূর্বাক সমাট্ হন। আলেকসান্দার গুর্ভাগ্যবশতঃ পারস্ভাভিযান হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া রাইন নদীতীরে স্বীয় সেনাদল সমবেত করিলেন এবং মাক্সিমিন নামক একজনকে নৃতন সেনাদল গঠন ও তাহা-দের শিক্ষার ভার দিলেন। ঐ ব্যক্তি ক্রমে প্রধান সেনানায়ক পদে উন্নীত হইরাছিলেন। এই সমরে সম্রাটের চরিত্রদোবে ও অত্যাচারে উত্তরোত্তর প্রপীড়িত হইন্না সৈঞ্চদশ ষড়যন্ত্রপূর্ব্বক তাঁহার জীবন নাশ করিল এবং তদ্দণ্ডেই তাঁহারা মাক্সিমিনকে (২৩৫ খঃ অঃ ১৯এ মার্চ) সম্রাটপদে আরোহণ করাইল।

মাজিমিন্ট্রেন্সবাসী সামাপ্ত ক্ষবকসন্তান উচ্চপদে অভিষিক্ত হইয়া বেছ্ছাচারী 'টাইরান্টের' জায় সাধারণের সর্কস্থ পূর্গনে মানস করিলেন। অর্থলোভের বশবর্ত্তী হইয়া তিনি দেবমন্দিরের পূজা-ব্যর ছাস করিয়া ও প্রতিমার সঞ্চিত অর্থ লইয়া আপনার উদর-প্রণের চেটা পাইলেন। তাঁহার এই ধর্মনাশকর সূঠনকার্য্যে সমগ্র সাম্রাজ্যবাসী ও সেনার্দ্দ উদ্ধৃত হইয়া উঠিল। থিসভুস্ নগরে আফ্রিকার প্রোক্ষল গডিয়ানাসের অধীনে বড়বক্রকারী দল সম্রাটের ধ্বংস্সাধন করিল।

অনীতিপরবৃদ্ধ গর্ডিরানাস্ অনিক্ষাসম্ভেও বিদ্রোহী মধ্যে লিও হইরা বীর পবিত্র জীবন আন্তর্জাতিক বিপ্লবজনিত রক্তপাতে কলুবিত করিকেন। বৃদ্ধ গর্ডিরান সিংহাসনে অধিনিত হইরা সদ্বৃত্তি সহকারে রাজ্যশাসন করিতে লাগিলেন এবং তাঁহার পুরু কনিষ্ঠ গর্ডিরান্ বীরম্ব ও দৃঢ়তার সহিত্ত ভাহা রক্ষার তৎপর কার্থেল নগরে তাঁহালের রালগাট প্রতিষ্ঠিত ইবল । প্রিটোরীর গার্ডন্-সেনার্থনের নারক ভিটালিয়ানালু নগরর কার অন্ত নিবৃক্ত ইবলেন । তিনি স্বীর জ্বতাাচারিতার সমাটের প্রিরপাত্র ইবরা নেনেট ও নগরবাসীর উপর কর্তৃত্ব হাপন করেন । প্রজাবিমারে তাঁহাকে জীবন হারাইতে হবল, তথন গর্ডিয়ান্বর অর্থলোডে সেনাললকৈ বন্ধভূত করিয়া আত্মপক্ষ হল্ করিয়া রাখিলেন; কিন্ত ইহাতে বিশেব কোন ফলোনর হবল না। ২৩৭ খূটালের ওরা জ্লাই মৌরিটানিয়ার শাসনকর্তা কালিলিয়ানাল্ অর্কিত কার্থেল প্রক্রেশ আক্রমণ করিলেন। কনিষ্ঠ গর্ডিয়ান্ রণক্ষেত্রে নিহত হবয়াছেন ওলিয়া বৃদ্ধ করেন।

এদিকে গর্ডিয়ান্বয়ের মৃত্যুতে আমন্দাশ্রণাত করিয়া রোমীয় সেনেটররগণ মাজিমাস্ ও বাল্বিনাস্কে একএ সম্রাট্পদে বরণ করিলেন। মাজিমাস্ রাজশক্রর বিক্লে মৃদ্ধার্য্য লিপ্ত রহিলেন এবং স্থান্থী ও কবি বাল্বিনাস্ রাজবিধির প্রভাব-বিস্তারে বর্লান্ হইলেন। মাজিমাস্ সৌরমতীয় ও জর্মণ জাতিকে পরাজিত করিয়া সেনানায়কদের বন্ধেই পরিচয় দিরাছিলেন। কিন্ত বরণ এই সমাট্রয় বিজয়োৎসবে মন্ত হইয়া দেবমন্দিরসম্হে প্লাবানে ব্যস্ত ছিলেন, তথন অক্ষাৎ একটা জনসক্র সেই স্থাণান্তি তক্ত করিয়া চীৎকার করিয়া বিলিল যে, "গর্ডিয়ান্ বংশধরকে লইয়া তিনজন সমাট্ নির্কাচন করা হউক।" সমাট্রয় অয়সেনা লইয়া তাহাদের গতিরোধের র্থা চেষ্টা পাইলেন, তাহারা বৃদ্ধ গর্ডিয়নের পৌত্র এবং কনিষ্ঠ গর্ডিয়ান্বের তাতুস্ত্র গর্ডিয়ান্কে সিজার নাম দিয়া সর্ক্রসমক্ষে সম্পৃত্বিত করিল। এই বিরোধ উপশ্যমিত হইলে রোম আয়রক্ষার জন্ত প্রস্ত হইয়াছিলেন।

রণজ্বী উত্কতস্থভাব মাশ্বিমাদের সহিত বিশাল রোমসামাজ্যে স্পাসন বিস্তারকালে বাল্বিনাশের মনোমাশিক্স উপস্থিত হইল। সমগ্র নগর কাপিটোলাইন্-ক্রীড়ার উন্মন্ত হইরাছিল। সমাট্রর রাজ অন্তঃপ্রের নিভ্তকক্ষে বিশ্রামন্থ অন্তব করিতেছিলেন, এমন সময়ে একদল প্রিটোরির গার্ডস্ রাজপ্রাসাদে প্রবেশ করিয়া সেনেটের নির্বাচিত সমাট্ররের অন্ধ রাজাভরণশৃষ্ঠ ও ওত্বিথও করিয়া ফেলিলেন (৩২৮ খ্রঃ ১৫ই জুলাই)।

এইরপে একে একে ছয়য়ন ছর্ভাগা সম্রাট্ কএকমাসের
মধ্যে বিদ্রোহী প্রজামগুলীর হত্তে জীবন প্রদীপ নির্বাপিত করিল,
গর্ভিয়ান্ প্রজাপ্ত্রের অন্তর্গ্রেছে রাজতক্তে উপবেশন করিলেন
বটে, কিন্তু জাঁহার মাভার অন্তর্গৃহীত খোলা তাঁহার বাল্যবরলে
বিত্তর আধিপত্য করিতে লাগিলেন। ভাহারা প্রজাবর্গের প্রতি
স্বভাচারপ্রারণ হইরাও নিশ্চিক্ত হইল ন। অবলেবে তাহারা

বালক সমাটের হুই চকু আৰু করিরানিল, তথন (২৪০ খুঃ আঃ)
সমাট্ প্রাণ্ডরে প্রধান মন্ত্রীর নিকট পলাইরা প্রাণ্ডিকা
চাহিলেন। তাঁহার বিখন্ত পরামর্শনাতা ও প্রিটোরির-প্রিকেট
মিসিথিরাস্থমাটের পক হইরা মিসোপোটেমিরা-আক্রমণকারী
পারক্রপতিকে পরাশিত করেন করি বেই ঘটনা অরণ রাখিবার
লগ্ন তিনি ২৪২ খুটাকে অক্রিসের মন্দির্বার খ্লিরা
নিলেন।

পার্দ্রনৈভকে বিভাড়িত করিরা স্রাট্ ভাহাদের পশ্চাভাবিত হইলেন এবং ভাহাদিগকে ইউক্রেটিস্ভীর হইতে টাইগ্রীন্
সীমান্ত পর্যন্ত ভাড়াইরা দিয়া সেনেটকে স্বীর সচিবের প্রথর
বৃদ্ধির পরিচর জ্ঞাপন করিলেন্ । কিন্ত অকরাৎ মিসিধিরাসের
বৃত্তাতে সম্রাট্ গর্ডিরানের সমৃদ্ধির অবসান হইল। তিনি
আরব-দেশআত প্রসিদ্ধ দক্ষা ফিলিপ্কে প্রিক্রেই পদে নিরোগ
করিরা আপনার মৃত্যু আপনিই ডাফিরা আনিলেন। ফিলিপ্
সামাজালাতে প্ররাসী হইরা সৈক্তগণকে সম্রাটের বিহুত্বে উত্তেভিত করিতে লাগিলেন। উত্তেজিত সৈঞ্জনল আবোরাস্ নদীতীরে
তাঁহার মন্তক দেহবাই হইতে বিচ্যুত করিরা অবিনারক ফিলিপকেই রোমসাম্রাজ্যের অধীশ্রর করিলেন।

ফিলিপ পূর্বনেশ হইতে রোমে আসিয়া রাজনিংহাসনে উপবিষ্ট হইলেন। তিনি রোমবাসীর অন্তর হইতে খীয় নীচ-বংশোন্তবতা লোপ করিবার জক্ত পবিত্র ক্রীড়া-সমূহের প্রচলন করিবেন। অগাষ্টাসের পর ক্রডিয়াস, ডোমিসিয়ান্ ও সেভেয়াস রাজীত আর কেহ এই ক্রীড়ার প্রবর্তন করেন নাই। তাঁহার রাজত্ব কালের ২৪৯ খুটাকে মিসিনার লিজনদিগের মধ্যে ঘোর-বিদ্রোহ উপস্থিত হয়। মারিনাস্ নামক রাজাত্বগৃহীত জনৈক সেনাপতি বিদ্রোহিদেলের নেতৃত্বগ্রহণ করেন। তথন সম্রাট্ ডিসিয়াস্ নামক জনৈক সেনেটরকে বিল্রোহ্লমনে প্রেরণ করিলেন। তিসিয়াস্ অনিজ্ঞাসবেও রীজাদেশে সেনাদলের শাসনভার গ্রহণ করিলেন, কিন্তু মিসিয়ার লিজনসমূহের অন্তরোধে রাজবিক্তরে অন্তরোধার গ্রহণ করিলেন, কিন্তু মিসিয়ার লিজনসমূহের অন্তরোধে রাজবিক্তরে অন্তরোধার স্বলে অন্তর্যার হইলেন এবং ভেরোণার যুজে কিলিপ্কে পরাভ্ত করিয়া ডিসিয়াস্কে রোমীয় জগতের সম্রাট্র রিলয় মনোনীত করিলেন।

ডিসিরাস্ কএকমাস নির্বিদে রাজত করিরাই সীমান্ত আক্রমণকারী গথ-লাভিকে দশুবিধানার্থ দানিয়ব তাঁরে উপনীত হইলেন।
এদিকে এক দল ডাকিরা-প্রদেশ নূঠন করিরা অগ্রসর হইতে
লাগিল এবং মিসিরার অভতম রাজধানী মার্সিরানোপোলিস্
অবরোধপূর্ক্ত্রুক্ররগণ বহু অর্থ অধিকার করিরা লইল। গথসেনাগতি নিভা ডিসিরাস্কে সন্তে অঞ্চসর ইইডে সেখিরা

भगादन कतिरमन । भवगम भन्तार कृषिया त्यारम्य निक्रवेस्डी হিমান পর্যতের পাদমূলত ফিলিপোলোলিল সুসর অবরোধ করিল। ডিসিরাস তাঁহাদের অমুবর্তন করিয়াও বুর্বরসৈক্তের ভরে অগ্রসর हरेरान ना। नक्तन **अक्ति अक्ट्रार** नेंडांटेंब निवित्र चाक्रमण कतिन, त्रामकरेनक क्रुबंड्ड व्हेटन किनिर्नारभानिन শক্র হতগত হইল। ডিসিয়াস্ নবীন উভান্র সহিত পুনরায় নৈগুদল গঠন করিবা আভতারীবিগকে শাতিদানে ও রোমের প্রণগগোরৰ উদ্ধানে গঢ়েটিত হইলেন; কিন্ত এবার তিনি রোমক্ষাভির অবনভির প্রধান কারণ ব্রিতে পারিলেন। উৎকোচ-প্রহণরপ মহাকলমস্পিলে তথন সমগ্র গ্লোমই নিমজ্জিত, ভাহাদের মন্তিদ অর্থনাল্যায় বিষ্ণুত এবং রীতি-নীতি হীনাবস্থা-পর। সরাট্ এই জাতীর অবনভির আমূলসংখ্রের জভ ভালেরিয়ানকে নিযুক্ত করিলেন। গণ জাতির উপর্তুপরি আক্রমণে উত্তাক্ত হইরা তিনি এই জাতীয়-কালিমা উন্মূলন করিতে অবসর পাইর্লেন না। সিসিরা প্রদেশের ফোরাম ट्रोट्यानियारे नामक नगत नातिथा ॐखत्रभटक गुक्त चरिन। नवारें। সপুত্র এই যুদ্ধে নিহত হইলেন।

রোমীয় লিজন তথন ভশ্নমনোরথ হইরা ডিসিরাসের পুত্র ইউলিয়ানাস্কে সমাট্ করিলেন (২৫১ খুঃ আঃ ডিসেরাসের) এবং গাল্লাস্ তাঁহার হইরা রাজকার্যা পরিচালন করিতে নিযুক্ত হই-লেন। তাঁহারা গণ-শক্রের বিহুছে অন্ত্রধারণ করিতে অসমর্থ হইরা অর্থদানে তাহাদিগকে বশীভূত করিলেন। এই ছর্দিনের সময় অক্সাৎ ইউলিয়ানাসের মৃত্যু হয়। লোকে গালাসের প্রতি সন্দেহকটাক্ষ নিক্ষেপ করিলেও বিশেষ কোন আপত্তি উপাপন করে নাই। তাহারা তাঁহার সদ্প্রণে মোহিত হইয়া তাঁহাকেই সমাট্পদে অভিষিক্ত করিল।

গথ-হত্তে রোমক প্রভাব থর্ক ও বর্তমান সম্রাটের দৌর্কল্য অবগত হইরা নৃতীন বর্করসম্প্রদার পার্কাতীর প্রোতের স্থার রোমসাম্রাজ্যে উপনীত হইল। পানোনিরার লাসনকর্তা এমি-বিয়ানাস্ রাজার নিশ্চেই ভাবকে উপেক্ষা করিরা অরং সেনাদল লাইরা বহির্গত হইলেন এবং বর্করদিগকে যুদ্ধে পরাজিত করিরা রানির্ব নদীর অপর পারে ভাড়াইরা দিলেন। এমিনিরানাসের অহুত বীরম্ব দেখিয়া সেনাদল সেই রণজ্যেতেই তাঁহাকে সম্রাট্ বলিরা বোষণা করিল।

ন্মাট্ গাল্লাস্ এই সংবাদ পাইয়া বিজ্ঞোহিসেনাদলকে ও সহযোগীকে সমূচিত শাস্তি দিবার অন্ত স্পোলেটো-রগক্তেত্র উপনীত হইলেন। তথন গাল্লামের পন্দীর সেনাদল এমিলিয়া-লালের বনবীর্থ্যের কথা শ্রবণ করিলা তাঁহারই স্থান্ত্রণখন করিল। নাল্লাস্ ও ভাহার পুত্র ভোলুনিরানাস্ বেনাদলের হস্তে নিহত উক্ত বর্বের মে মাসে এমিলিরানান রাজ্ঞসমাস লাভ করিলেন।
তিনি সেনেটের হস্তে শাসনবিভাগের ভারাশি করিয়া বরং রোমরাজ্য রক্ষার অভিপ্রায়ে উত্তর ও পূর্কদিকে বর্মরজাতির বিরুদ্ধে
সৈনাশত্য গ্রহণ করিরা যুদ্ধ যাত্রায় অগ্রসর হইলেন; কিন্তু তাঁহার
এ উদ্দেশ্য কার্য্যে পরিণত করিতে হর নাই। কারণ গালাস্
ইতিপুর্বেই ভালেরিয়ান্কে সৈলসংগ্রহার্থ গল ও জর্মনিতে প্রেরণ
করেন। ভালেরিয়ান দণবল বইয়া প্রভ্যার্থ্য হইলেন।
উভ্যার সংবর্বের পূর্বের সেনাহত্তে এমিলিরানাস্ নিহত হইলেন
(২০০ বঃ অঃ আগষ্ট)।

সেন্সর ভালেরিয়ান্ বাষ্টবর্ষ বয়ঃক্রমে সামাজ্যেশ্বর হইলেন;
কিছ পুত্র গারিয়েনাসের হতে রাজকার্যের ক্রতক ভার অর্পণ
করিয়া নিশ্চিন্ত রহিলেন। ইহাতে রাজ্যমর বোর বিশৃথালা
ঘটিতে লাগিল। ফ্রাছস্, গখ, আলেমরি ও পারসিকগণ উপর্যুপরি রোমসাম্রাক্তা আক্রমণ করিলে রাজা শ্বয়ং ব্রুয়র্থ প্র্বাভিমুথে
সসৈত্তে অগ্রসর হইলেন, গারিয়েনাস্ রাইন তীরে ছিলেন।
সেনাপতি পস্থাস ফ্রাছাস্দিগকে পরাজিত করিয়া গলরাজ্য
রক্ষা করিলেন এবং আলেমরিদিগকে রোমীয় প্রজাবর্গ পরান্ত
করেন। বর্ষরজাতিকে পরান্ত করিয়াও গারিয়েনাস্ বিশেষ
সন্তই হইতে পারেন নাই; কারণ তৎকালে সেনেট মহাষড়বয়ে
লিপ্ত ছিলেন, তিনি মিলান নগর সারিকটে সহক্র আলেমরি-সৈত্ত
পরাভূত করিয়া মার্কোয়রি-রাজতনয়া পীপার পাণিগ্রহণ করেন।

যথন গথজাতি বন্ধানোতের ভায় গ্রীসের প্রদেশসমূহ ধ্বংসসাধনে প্রবৃত্ত ছিল, তথন পারস্তরাজ সাপুর গুপুভাবে আর্মেনিয়াপতি পুক্রকেনিহত করিয়া তদ্ধিকারভুক্ত প্রেদেশ বীর রাজ্যসীমাভুক্ত করেন। ইহাতে আর্জকরাক্ষনের পুত্র কুক্ত হইরা ইউক্রেটিস নদীর উভর তীর মক্তুমে পরিণত করেন। ভালেরিয়ান্
ভাহার প্রতিবিধানার্থ ইউফ্রেটিস্ তীরে উপনীত হইকেন। নদী
অতিক্রম করিবামাত্রই পারস্তসমাট্ শাহ সাপুরের সৈভদন্
ভাহাকে পরাজিত ও বন্দী করিল (২৬০ খু: জ:)। এই সময়ে
বিখ্যাত বীর ডিমোজেনিস কাপাডোকিয়ার রাজধানী সিজারিয়ারক্ষায় ব্যাপ্ত ছিলেন। শাহ সাপুর অখারোহণ করিয়া রোমকস্ত্রাটের কণ্ঠদেশ প্রদলিত করিয়াহিলেন। পরে ভাহার চর্মে
ধড় পুরিয়া পারস্তবিজ্ঞরের কীর্মি ব্রুপ রাজপথে স্থাপন করেন।

গারিয়েনাস্ পিতার মৃত্যুতে মনে মনে আনন্দিত হইলেন।
ভিনিই এংন রাজছ্তাবিশ। ভাহার বাছিভাগুলে, কবিছপাঠে, উভানগারিপাটো এবং উৎক্রই পাঁচকভার সকলেই
ভাষার উপর প্রতিভিনেন, কিন্তু ভাষার ভাষা নীচপ্রস্থৃতির

नमाष्ट्रे चात्र त्रामित्रशासम् कनकिछ कृत्र नाहे। छोहान धहे विशेन तामा जननः देवानित्कत्र विश्रांक वीखरत आकात्र शातन ক্রিল। বর্ষরগণ রোমরামারা আলোড়িত করিতে লাগিল। আনেক্যান্তিরার আন্তর্জাতিক বিপ্লব সমুপস্থিত হইল। সিসিলি-ৰীপে দহাম্পের প্রাহ্রতাৰ জয় রাজকর রহিত হইরা গেল। रेरगीतियात्र हित्वित्रानाम् त्राक्टपारिकाठन कतिएक नागिरनन । बाननवर्व यावर जन्माग्रज अरेक्सन विवाद विवाद अर्थन नवर्ध-ব্যাপী মহামারীতে রোমনগর ধ্বস্তপ্রায় দেখিয়া তিনি বিমর্ব হইরা পড়িলেন। আলেকনান্তিরার প্রার অর্দ্ধাংশেরও অধিক লোক হর্ভিক্সেই প্রকোপে পড়িরা প্রাণত্যাগ করিল। তথন সেনাবৰ্গ "বেজ্ঞাচারী রাজার পাপে রাজানই" জ্ঞান क्तित्रा नानियूव ननीकृत्न छेटत्रश्नात्मत्र मछत्क त्रावमुकूष्टे পরাইরা আড্ডার স্থকেত্রে গারিরেনাস্কে পরাভূত করিল। গভীর রাত্রে গুপ্তচরের দারা তাঁহার নিধন-দাধন হইয়াছিল (२७৮ वृ: चः २०० मार्চ)। मृञ्जाकारन नशाउँ, चीय जाज-পরিচ্ছন ও বেশভূষা পাভিয়ার দেনানায়ক ক্লড়িয়াস্কে অর্পণ कतिका दाळल्लास्तित वावडा कतिका याम। हेब्रितिश्राम् नौगारस्वत अधिनात्रक क्रिज्ञाम् त्राकिनिःशामान উপবিষ্ট হইলেন। মিলান হস্তগত ও উরিওলাস নিহত হইলে जिनि रमनामन मःस्नादत প্রবৃত হইরাছিলেন, किन्छ ११थ ও বর্ষর-জাতির সহিত সৌরমতীয় ও অত্যান্ত কর্মণজাতি কল ও স্থলপথে যুদ্ধ করিয়া রোমদাশ্রাজ্য বিধ্বস্ত করিতে ব্যাপৃত হইলে, ক্লভিয়ান্ সলৈতে তাহাদিগকে বিমুখ করেন। পুনরায় নাইসাদের যুদ্ধে ক্রডিয়াস যুদ্ধবিভার যথেষ্ট পরিচর দিরাছিলেন।

এই সময়ে সমাটের প্রধান শক্র টোটুকান্ পশ্চিমাঞ্চলে ও জেনোবিরা পূর্বপ্রবেশে রাজ্যন্থাপন করিতে চেষ্টা পান। প্রথমে তাঁহাদিগকে দগুবিধানার্থ সম্রাট্ বিশেব দৃত্প্রতিজ্ঞ হন নাই। অতঃপর তিনি মিসিরা, ধ্রেস ও মাকিডোনিরার বৃদ্ধে জয়লাভ করিরা গোরবের তুক্লুকে আরোহণ করিতে না করিতেই মড়কের রোগে আক্রান্ত হইয়া শিরমিরাস্ নগরে প্রাণত্যাগ করেন। মৃত্যুসজ্জার তিনি ঔরেলিরান্কে রাজতক্ত দানের অভিমত প্রকাশ করিলেও, তাঁহার প্রাতা কুইন্টিলিরান্ ১৭ দিনের জন্ত আকৃইলেইয়া নগরে রাজক্তক দিরে ধারণ করিরাছিলেন। উরেলিরানের ওভাগমনে শক্রকণ দানির্থ নদীর পরপারে বাত্রা করিল।

শির্মিরাস্-নগরবাসী ক্রবকসন্তান দামান্ত সৈনিক হইতে আনুষ্টতক্রে জুক্তিবাসের অনুগ্রহে সামান্তাপদ লাভ করিলেন। তাঁহার রাব্যানালের ও বংসর, ৯ মাসের মধ্যে "পথিক যুদ্ধের" অবদান হইরাছিল। আর্থানাভি ক্রতক্ষেত্রের উপত্রু শাভিলাভ

করিল। একুইটেন প্রকেশের শাসনকরা টেট্রকান্ রাক্ত্র লাভের প্রবাদে বিজ্ঞানী হইরা প্রক্রেনিরানের বিক্তরে বৃদ্ধনক। করিলে সমাট সদলে উপত্তি হইরা ভারাকে বন্দী করিলেন। আন্টোনিনানের প্রাচীর হইতে হার্কিউলিল্ কর পর্যন্ত সম্লাট শারিবিভার করিরা নিশ্চিত হইলেন (২৭১ বঃ)।

অতঃপর উক্ত বর্ধেই তিনি পামির। ও পূর্ব্বরাব্দেরে অধীষরী কেনোবিরার বিক্তে অন্তচালনা করেন। ঐ রাজকুলকামিনী ক্ষপে ওপে সমল্কতা ছিলেন। গ্রীক্, সিরীয় ও মিশর ভাষায় তাঁহার বর্ধেই বৃংপত্তি ছিল। তাঁহার খামী বীরপ্রেই ওডেনেথাস্ সেনেটকর্ত্ব সিরিরার শাসনকর্ত্ব লাভ করেন। কেনোবিয়া খামীর মৃত্যুর পর একক রাজ্যশাসন করিয়াহিলেন। পারভ্রাজ এমন কি, রোমসম্রাট্ গালিরেনাসের সেনাপতিও তাঁহার হত্তে পরাভূত হয়। এই সমরে তিনি খীর রাজ্যসীমা বিধিনয়া-সীমান্ত হততে ইউক্রেটিস-তীর পর্যন্ত বিত্তার করিয়াহিলেন। শভ্রনালী মিসর-রাজ্য তাঁহার রাজ্যভূক্ত হইয়াছিল।

সমাট্ ওরেলিয়ান বিথিনিয়ায় আসিয়া পৌছিলে সকলে তাঁহার বশুতাপীকার করিল। স্থান্কিরা ও তিয়ানা পদানত হইল। জেনোবিয়া যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইলেন। অস্থিওক ও এমেসার যুদ্ধে (২৭২ খু: খা:) পরাজিত হইয়া জেনোবিয়া পুনরায় ডুতীয়-বার যুকার্থ উদবোগ করিতে লাগিলেন। তাঁহার মিদরবিজয়ী সেনাপতি জাবদাস ও তিনি স্বয়ং রণকেত্রে সৈম্ভচালনা করিয়া-ছিলেন। এদিকে সম্রাটের বিশ্বন্ত সেনাপতি প্রোবাস একটা বাহিনী লইয়া মিশর জয় করিলেন। তথন রাণী জেনোবিয়া রাজধানীর হুর্গ মধ্যে আশ্রম লইলেন। তৎকালে পামির। নগরীর সমৃদ্ধিগৌরব রোমের সমকক ছিল। সম্রাট্ পামিরা অবরোধ করিবেন। পারস্থপতি সাপুরের মৃত্যুতে বিশৃথলাহেতু সাহাব্যলাভের সম্ভাবনা নাই বুঝিয়া এবং মিশরভয়াস্তে প্রোবাস্কে সদলে সমাগত দেখিলা জেনোবিলা প্লাৰ্ন করিলেন; কি অর্সরণকারী সেনাদলের হত্তে ধৃত হইরা তিনি সমাট্ সকাশে আনীত হইলেন। সমাটু রাণীর প্রতি বিশেষ সদয় ব্যবহার ক্রিয়াছিলেন। সম্রাট্ রণজ্বর ক্রিয়া প্রত্যাবৃত্ত হইতে না হইতেই পামিরাবাসী জনসাধারণ বিলোহী হইরা রোমকশাসনকর্তা ও ছুৰ্গন্ধ দেনাদলকে নিহত করিল। এই সংবাদে সমাট্ পুনরায় পামিরার প্রত্যাগমন করিয়া নগর ধ্বংস করিলেন এবং বৃদ্ধ বৃদ্ধা, যুবক্যুবতী ও বালক্বালিকা তাঁহার কঠোর আদেশে নিধনপ্রাপ্ত हरेन। এथान हरेए अञाजू हरेजा जिनि मिन्द्रिक विद्याह नमन करत्रमः। नम्पणि-सार्याम् निर्ण रमः।

বিলরগোরবে উমত হইরাও সন্ত্রাট ্ ককী রাজানিগের প্রতি অস্তবহার করেন নাই। জেনোবিয়াকে ভিনি টিভোগীর क्यानवारिकात नवस्रत त्रका कतिवाहित्तन। धाँशति क्या-গণের সহিত সম্ভান্তবংশীর রোমকগণের বিবাহ দিরাছিলেন। টেট্রকাস ও তাঁহার পুত্র পুনরার রাজসম্পদ্ ভোগ করিতে अधिकाती इरेबाहित्नम । शूर्सानित्यत्र विद्यार प्रमम ও विভिन्न ন্থান বিজয় করিয়া তিনি সমগ্র রোমনাম্রাজ্যে শান্তিবিধান করিয়া-ছিলেন। অভঃপর সমাট ২৭৪ খঃ আ অক্টোবর মাসে ভালে-রিরানের কারারোধের অবমাননার প্রতিশোধ বইতে পারভ-विकास काक्सिसान करवन । এই সমরে তিনি স্থীর खरेनक সেকে-होतीब व्यवधा व्यक्ताहोटन छ लाकात नर्सवहत्रां वित्रक हरेगा তাঁহাকে জীবননাশের ভয় দেখাইলেন। তথন উক্ত রাজকর্মচারী প্রাণরকার মন্ত আরও কতকগুলি রাজকর্মচারীকে বদলে ভুক্ত ক্রিরা লইলেন। সম্রাট্ ভাহাদিগকেও ভর দেখাইবার অন্ত অপ-মাধিমণে বিচামে নিহত ব্যক্তিবর্গের এক তালিকা স্বহন্তে প্রস্তুত कतिया मकनत्क त्मशोहितनः। वाहात्रा छाहा नवनरगाहत्र कतिन, ভীহারাই বুঝিল-সম্রাট্ আমাদের প্রাণনাশের জন্ত এই ভয়াবহ স্থতি জাগাইরা দিতেছেন। তথন তাহারা বড়বর করিয়া সমাটকে বিদ্রিত করিবার উপার দেখিতে লাগিল। বৈজন্তী इहेट्ड हिताक्रियात **आ**श्रमकारण २१६ च्हेरिसत **आध्या**ती মাদে সমাট্ স্বীয় বিশ্বন্ত সেনাপতি মুকাপোর হল্তে নিহত হই-লেন। রোমবাসী এতদিনে একজন উদারচেতা রাজকুমার ও যুদ্ধ-বিশারদ সেনা প্রতি হারাইলেন।

সেনাদল ও সেনেট যথন সমাটের অযথা মৃত্যুর কারণ বৃথিতে পারিলেন এবং আপনাদের ক্ষতি উপলব্ধি করিলেন, তথন তাঁহারা সেই কপট ও বিশ্বাস্থাতক রাজকর্ম্মচারীকে যথোচিত লান্তিবিধান করিলেন। লিজনদল খোষণা করিলেন "একের পাপে ও বছলোকের প্রলোভনে আমারা প্রিয়তম সম্রাট্কে লোকান্তরে প্রেরণ করিয়াহি; তাঁহার মর্লোকে দেবগণ পার্থে স্থান হউক এবং আপনারা তাঁথার পদে একজন উপযুক্ত অধীশ্বর নিয়োগ কর্মন" (২৭৫ খ্টাল, ওরা ক্ষেক্রয়ারী)। তৎপরে সেনাদল তাহাদের মধ্য হইতে একজন সেনানায়ককে রাজপদ দানের জন্ত অন্থ্রোধ করিল। ৮ মাস বিচারের পর রাজতক্ষে উক্ত বর্ষের ২০ শে সেপ্টম্বর সর্ক্রম্মতিক্রমে প্রধান সেনেটের টাসিটাস্ ৭৫ বর্ষ শ্বন্সে সিংহাসনে আরোহণ করিলেন।

সমাট্ থারেলিয়ান মৃত্যুর অব্যবহিত পূর্ব্বে আলানী নামক শক জাতির সংবাপে পারক্তবিদ্ধরের প্রস্তাব চালাইতে ছিলেন। জকমাৎ ওাঁহার মৃত্যু ঘটার পারক্রবাত্রা রহিত হইল দেখিয়া এবং রোম অরাজক জানিয়। বর্মরুগণ রোমসীমাজে জাসিয়া উপনীত হইল। আলানীগণ সদ্ধির নির্দারিত অর্থনাজে বঞ্চিত হইতা পন্টাদ, কাপাডোকিয়া,সাইলিসিয়া ও গালাসিয়া প্রাদেশ অধিকার করিল। তথন টাসিটাস্ আলানীদিগের সহিত পূর্বসন্ধিসর্ত্ত পূরণ করিরা অপরাপর দকজাতীর আক্রমণকারীদিগকে পরাভূত ও রাজ্য হইতে বিতাড়িত করিলেন। বৃদ্ধবর্গে অনভ্যন্ত যুর বিগ্রহে অসাধারণ পরিশ্রম করিয়া তাঁহার স্বাস্থ্যভঙ্গ হইল। তিনি ৬ মাস ২০দিন রাজত্বের পর কাপাডোকিরায় দেহত্যাগ করিলেন (২৭৬ খুটাকে ১২ এপ্রিল)।

টাসিটাসের প্রাতা ক্লোরিয়ানাস সিংহাসনে উপবিষ্ট হইলেন বটে, কিন্তু পূর্ববিভাগের প্রসিদ্ধ সেনাপতি প্রোবাস্ তাঁহার প্রতিহন্দী হইয়া উঠিলেন। তিন মাস সম্রাট্পদে অভিবিক্ত থাকিয়া উক্ত বর্ষের জ্লাই মাসে ক্লোরিয়ানাস্ স্বীয় উদ্ধত সেনা-রুল্পের হত্তে টার্সস নগরে নিহত হন এবং ইল্লিরিকামবাসী ক্লমকসন্তান সেনাপতি প্রোবাস্ তরা আগন্ত সম্রাট্নির্কাচিত হইলেন। সৈভগপ আফ্রিকা, পন্টাস, রাইন, দানিমুব, ইউফ্রিটিস্ ও নীলনদের তীরবর্ত্তী প্রদেশে তাঁহার বীরম্ব দেখিয়া পূর্বের্হ তাঁহার প্রতি প্রদাবান্ ছিলেন। তাহারা তাঁহাকে মান্ত ও ম্পর্কাঞ্জাপক অগাইাস্ উপাধি দান করিল।

স্তব্যেলিয়ানের মৃত্যুর পর, রোমের শক্তগণ সম্রাট্দিগকে বশহীন স্থানিরা মন্তকোন্তোলন করিতেছিল। অগান্তাস প্রোবাস তাহাদের গর্ব্ধ থর্ক করিবার জন্ম সেনেটের হত্তে রাজ্যশাসনভার সমর্পণ করিয়া স্বরং তাহাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধযাত্রা করিলেন। রিটিয়া-বাদিগণ, সৌরমতীয়জাতি ও ইসৌরিয়ান্জাতি তাঁহার নিকট পরাজয় স্বীকার করিল। কোপ্টাস্ও টলেমে-প্রদেশের নগর-সমূহ এবং জর্মনির অন্তর্গত ৭০টী সমূদ্ধিশালী জনপদ তিনি বর্ষর জাতির হস্ত হইতে উদ্ধার করিয়া তদ্দেশবাসীদিগকে কঠোর অত্যাচার হইতে পরিত্রাণ করিয়া গিয়াছিলেন। তাঁহার অধীনস্ত ও প্রোকিউলাস্ বিদ্রোহী হইলে তিনি ২৮১ খুষ্টান্ধে তাহাদিগকে বিশেষ শিক্ষা দিয়া রাজ্যের স্থশুমলা স্থাপনে যদ্ধবান হইলেন। এই সময়ে তিনি কৃষিকার্য্যের স্বিশেষ উন্নতিসাধন করিয়াছিলেন। ভিনি বেতনভোগী দেনাদ্ব-পালনের অনাবশ্রকতা জানাইলে. ২৮২ খুটাব্দের আগষ্টমাদে তাহারা বিদ্রোহী হইরা রাজমুও ষিখণ্ডিত করিয়া ফেলিল। পরে তাহারা মর্ম্মণীড়িত হইরা মুক্ত সমাটের বিজয়কীর্ত্তিহাপনোন্দেশে কতকগুলি শ্বতিস্তম্ভ গ্রথিভ করিরাছিল।

নিজনের আবেদন-মতে প্রিটোরীর-প্রিক্ষেষ্ট কারুস্ १०বৎসর বরঃক্রমকালে রোমসাম্রাজ্যের অধিপতি হইলেন। তাহার কারিনাস্ও নিউমেরিরাস্ নামক পুত্রের তথন প্রোচাবস্থার উপনীত। এই রণনিপুণ সম্রাট্ রাজতত্তে উপর্বৈশন করিরাই পুত্র কারিনাস্কে সিজার উপাধি দিরা গলের বিদ্রোহ-শান্তি করিতে প্রেরণ করিগেন এবং বরং রোমক জাতির চিরপোবিত পারক্ত-বিজ্ঞরাশা হলরে পোবণ করিয়া. পুত্র নিউমেন্নিরান্কে সঙ্গে লাইরা পারক্তনামাজ্যনীমান্তে উপলীত হইলেন। কিন্তু সন্ধি হইল না। সমাট্ কেলস্ মিলোগোটেমিয়া ছারখার করিয়া নিপিউকিয়া ও টেলিকোন্ নগর অধিকার করিগেন। তর্মনার ভাইগ্রীন নদীতট পর্যান্ত খীর বিজ্ঞর্কেকারী লইয়া যান, এই সমরে পারসিকগণ সদলে ভারতনীমান্তে আসিয়া আত্মরকা করেন। রোমকগণ আশা করিয়াছিলেন, পারক্তসামান্তের পতনের সঙ্গে মাজর ও মিলররাজ্য রোমের পরানত হইবে এবং শকপ্রভাব ধর্ম হইয়া রোম মৃত্তি পাইবে, কিন্তু অক্সাহ ২৮৩ খুটাকের ২৫এ ভিনেম্বর বজাবাতে সম্রাটের মৃত্যু হওয়ার তাহালের সে আশাভরসা লগু ইইয়া গেল।

সৈশ্বগণ কেন্দ্ৰবপুত্ৰ নিউমেরিরান্ ও কারিনাস্কে একবোগে সম্ভাট্ করিলেন। কিন্তু বজাঘাত নিবন্ধন কেন্দ্ৰের মৃত্যুতে ঈশবের কোন মনে করিয়া রোমকগণ আর তাইগ্রীস্ অভিক্রম করিলেন না। তাহারা পারসিকদিগের পদামুসরণ পরিত্যাগ করিয়া রণক্ষেত্র হইতে প্রত্যাবন্ত হইলেন।

কারিনাস্ গালিক বুদ্ধে জরলাভ করিলেও তাঁহার ব্যভিচারিপ্রকৃতি তাঁহাকে সাধারণে ত্বণিত করিয়া তুলিল। তিনি ইলিরলিক্সা চরি চার্থ করিবার জন্ত কএক মাসের মধ্যে ৯টা রমনীকে
পদ্ধীকে বরণ করিয়া পুনর্কার ত্যাগ করিলেন। তিনি কুসঙ্গীদিগের মধ্য হইতে একজনকে পরামর্শদাতা ও মন্ত্রী নিযুক্ত করেন।
একজন জালিয়াত তাঁহার নাম-বাক্সরের অধিকারী হইল। তাঁহার
রাজত্বে আমোদপ্রমোদ, নৃত্যুগীত, ব্যায়াম, ক্রীড়া, সার্কাস ও
আক্রিধিয়েটারে জৈবিক ক্রীড়া সমুদর সমাহিত হইতে গাগিল।
এই সমরে রোম হইতে প্রায় ৯শত মাইল দূরে নিউমেরিয়ানের
মৃত্যু ঘটে (২৮৪ খুটাকে ১২ই সেপ্টেমর)।

ক্ষেষপুত্র নিউদেরিয়ানের মৃত্যুর পর, সকলে মন্ত্রিবর আপোরকে রাজতজ্ঞের আকাজ্জী দেখিয়া তাঁহাকেই বড়যন্ত্রকারী ও সন্ত্রাটের হত্যাকারী বলিয়া ছির করিলেন। সম্রাটের শরীর রক্ষিদলের সেনাশতি ভাইওক্লিসিয়ান্ ছর্ক্তের বিচারভার গ্রহণ-পূর্কক প্রায়শ্চিত্তক্ষরণ তাঁহার বক্ষে বীর তরবারি আমৃল বসাইয়াদিলেন।

কারিনান্ এখন একমাত্র অধীখর হইবেন। তিনি রোম-সাম্রাজ্যের অতুল ঐশব্য বলে বলীরান্ হইরা সৈপ্তসামন্ত কইরা ডাইওক্লিসিরানের বিকতে বৃদ্ধের আরোজন করিলেন; কিন্তু নিজের পাপেই নিজের শক্তি ও জীবন হারাইলেন। মিসিরারাজ্যের অন্তর্গত বার্গান্ধ লগন্ত লবীনে পূর্ব ও পশ্চিম সেনানলের অধি-নারক ডাইওক্লিসিরান্ধ ভ কারিনান্ধ বা সেনানল সমবেত করিলেন। পারতপ্রত্যাগক বেলারল রণ্ডির ছিল। তাহাবের বৃদ্ধ করিতে হইল না। কারিনাস্ নিরের গাগ প্রবৃত্ত চরিতার্থের লক্ষ বে ট্রিউনের গরীর সতীব অপবর্ধ ক্রিরাহিলেন, সেই ব্যক্তিই গোপনে ২৮৫ খুটাকের মে নানে শিরির মধ্যে তাঁহার প্রাব সংহার করিল। এই ব্যক্তিচারী রাজার মৃত্যুর সঙ্গে সজে অপ্রবিশ্বের শান্তি হইল এবং ডাইওল্লিনিয়ান রাজমুকুট ধারণ করিলেন।

ভাইওক্লিনিরান্ রাজ্যণ হতে নইর। অগান্তান্ ও মার্কান্
আন্টোনিনানের প্রাত্ত্বরুপপূর্কক রাজ্যনায় নির্কাহ করিছে
মনস্থ করিলে । উভস্পের মান্ত্রিনিচর
ভিত্র দিকে প্রবাহিত হইবেও কথনও স্ক্রাট্র্যের মধ্যে মনোবাদ
উপস্থিত হর নাই।

ডাইওফ্লিসিয়ান রোমসামাজ্যেকে শক্রপরিবেটিত দেখিরা ইহার চারি অংশেই এক একজন সমকক সমাটু রাথা আবস্তুক বোধ করিলেন। তদত্সারে তিনি স্বীয় রাজ-শক্তিকে পুনরায় চুইভাগ করিয়া গালেরিয়াস্ ও কনম্ভান্দিয়াস্ নামক সেনাপতিছয়কে সমান ভাগ করিয়াদিলেন। তাঁহারা রাজসন্মানের ছিতীয় স্থান (Second honours of the imperial purple) नाड করিলেও আপন আপন নির্দিষ্ট বিভাগে পরস্পরে সমান শক্তি-সঞ্চালন করিতে সমর্থ ছিলেন। কনন্তান্দিয়াপ স্পোন, গল ও র্টেনের শাসনভার পাইলেন, গালেরিয়াস্ দানিযুবতীরবর্ত্তী প্রদেশের শাসনকর্তা হইলেন, মাক্সিমিয়ান ইতালী ও আফ্রিকা প্রদেশে অধিকার বিন্তার করিলেন এবং বরং ডাইওক্লিসিয়ান থেস, ইজিপ্ত ও এসিয়াত্ব ধনধান্তপূর্ণ রাজ্যসমূহের শাসনভার শইয়া নিশ্চিম্ভ রহিলেন। তাঁহারা প্রত্যেকেই স্ব স্থ বিভাগের সমাট্ বলিয়া পুলিত ছিলেন; কিছ ভাঁহাদের মিলিত শক্তিই সমগ্রামনাত্রাক্রে প্রত্তার করিয়াছিল। ডাইওরিসিয়ান্ গালেরিরাস্কে এবং মান্ধিমিরাস্ কনস্কান্সিরাস্কে ক্তাদান করিয়া এবং উভরকে সিজার উপাধি দিয়া পরস্পরে আত্মীয়তা ञ्चमुक् कत्रियां महेरमन ।

ভাইওক্লিসিরান্ আন্থালিনাস্-বংশীর একজন সিনেটরের ক্রীতদাসপুত্র। তিনি বৃদ্ধি ও বাহুবলে অতুল সম্পত্তির জ্ঞবীশর হইলেন। রাজা হইয়া একবর্ষ পরেই ২৮৬ খুরীক্ষে তিনি মাজিমিরান্কে বীর সহযোগী করিয়ালন। তৎপর্যক্তী বর্ষে তাহারা বাগাভীবাসী বিদ্রোহীদিগকে দমন করেন। এই সমর হইতে রোম-সাত্রাজ্যের চতুর্দিকে বিদ্রোহবৃদ্ধি ক্ষম্মিলিভ হইয়া উঠে। বর্ষর-জাতি, রোমকনৈত, রাজ্য-সংগ্রাহক্ষণ ও স্বয়ং রাজ্যেরদিগের অপূর্ক অত্যাচারে প্রণীড়িত গলস্বাতি বিদ্রোহী হইরা উঠিল।
পন্টান্ উপকৃলে ফ্রান্থতপনিবেশিকরণ দ্রায়ার্তি অবলম্বন করিল।
আফ্রিকা, গ্রীন্ত এসিয়ার উপকৃলে অহরহঃ লুঠন চলিতেছিল।
এরূপ বিশুখল অবলায় কুলোঁ। নগরে অবস্থিত মেনাপীর সেনাধ্যক্ষ
কারোসিয়ান্ ইংলিন্প্রণালীঃ উত্তরণপূর্কক রুটেন অধিকার
করিল (২৮৯ খঃ অঃ)।

ডাইওক্লিসিয়ান্ও মাজিমিয়ান্হতাশ হইলেন, কিছ পুনরায়
সিধারহরের সহযোগিতা লাভ করিয়া তাঁহারা নববলে বুটেন
আক্রমণ করিলেন। কনন্তালিয়াস্ এই অভিযানে নায়ক
হইয়াছিলেন। ২৯২ খুটাব্বের বুলোঁ নগরের মুকে কারৌসিয়াস্ পরাজিত হইল এবং তাঁহার কতক সৈতা আস্বসমর্পণ
করিল। অতঃপর কনন্তালিয়াস্ নৌযুদ্ধের আয়োলন করিতে
লাগিলেন। ইভাবসরে মন্ত্রী আলেটাস্ রাজাকে নিহত করিয়া
২৯৮ খুটাব্বে বুটেনাধিকার লাভ করিলেন। রোমক প্রিফেক্ট
আস্ক্লিপিওডাস্ রণতরী লইয়া আলেটাস্কে আক্রমণপূর্কক
নিহত করিলেন। কনন্তালিয়াস্ বুটেনবাসীকে রাজভক্ট
দেখিলেন।

ভাইএক্লিসিরান প্রোবাসের স্থায় রোমসামাজ্যন্তিত্তি দৃঢ় করিতে সংকর করিরা সীমান্তবিত চুর্গাদি স্থরক্ষিত করিলেন। ইজিপ্ত হইতে পারস্থ পর্যান্ত শিবির সরিবেশিত হইল। অন্তিক্তক, এমেসা ও দামান্তাসে অন্ত্রাগারে স্থাপিত হইরাছিল। এই-রূপে সামাজ্য স্থান্ট হইলে গণ, ভাগুল, গেপিডি, আলেমরি প্রেভৃতি বর্করজাতিগণের বলদর্প হত হইল এবং তাহারা রণক্ষেত্রে প্রাণ বিসর্জন করিল। আলেমরিগণ লালে ও বিলেনিসার মৃদ্ধে কনন্তান্দিরাসের হন্তে পরাজিত হইল। গলবাসী আলেমরি জাতির উপদ্রব হইতে রক্ষা পাইল।

রাইন্ ও দানিয়ুব সীমান্ত স্থশাসিত হইল; কার্পি, বান্তাণি ও সৌরমতীরগণ ভিন্ন ভিন্ন স্থানে উপনিবেশ স্থাপন করিয়া শান্তিমর শীবন অতিবাহন করিতে আদিপ্ত হইলেন। দক্ষিণ বিভাগে টৌ মূরজাতি বিজ্ঞাহ ঘটাইল। জুলিয়ান্ কার্থেজে এবং আকিলিয়াস্ আলেকসান্তিরার রাজহত্র ধারণ করিলেন। ক্রেমাইস্গণ পুনরার মিশর দুর্পন করিয়া বিধ্বত্ত করিতে লাগিল। ভাইওক্লিসিয়ান আলেকসান্তিয়া আক্রমণপূর্বক অভিযানের স্ত্রপাত করিলেন। বৃশিরিস্ ও কোপ্টোস্ বিধ্বত্ত হইল। এই অভিযানে ডাইওক্লিসিয়ান পিথাগোরস, সলোমন ও হার্মিস গুজ্তি পণ্ডিতগণের গ্রন্থ ভন্মীভূত করিয়া কিমিয়াবিভার ইতি-হাসের অনেকটা লোপ করিয়া গিয়াহেন।

মিশর-বিজ্ঞরাত্তে তিনি পারতবিজ্ঞরে যাতা করিলেন। রোম-সামাজ্যের চতুর্বিভাগের সমবেত বাহিনী তাঁহার সাহায্যার্থ

প্রেরিত হইবার ব্যবস্থা হইল। গালেরিয়াস্ সঙ্গে সর্জে চলিলেন। অন্তিওকে ছাউনী করিয়া তাঁহারা মিসোপোটেমিরার প্রান্তরে উপনীত হইলেন। উপযুগিরি তিনটী বুদ্ধে রোমীর সেনা পরাত্ত হইরাও নিম্নত্তম হইল না। তাহারা পুনরার জীমবেগে আক্রমণ করিল। আর্নেণিয়ারাজ ভিক্লিছেভিদ্ ইউক্রেটিস্ নদী मखत्रनभूर्सक व्यभन्न भारत भनाग्रन कत्रित्नन। এक्रिक भारत-রিয়াস নববলে আর্শ্বেণিয়া আক্রমণ করিলেন। পারস্তপতি জয়-গৰ্কে মন্ত ছিলেন, এজন্ত পূৰ্ক হইতেই যুদ্ধের বিশেব আয়োজন করেন নাই। পারস্থরাজ নারশেষ নানাম্থান হইতে সৈত সংগ্রহ করিয়াও কোন শৃত্বলা স্থাপন করিতে পারিলেন না। যুদ্ধে অসমর্থ হইরা তিনি মিসিরার মকদেশে প্রায়ন করিলেন। গালে-রিবাস তাঁহার পদ্মী ও পুত্রকে বিশেষ যদ্ধের সহিত ও সসন্মানে वर्गक्ट वका कतियाहित्तन। अवत्मत्य मित्र প্রস্তাব হইল। পারজরাজ রোমের বখাতা স্বীকার করিলেন এবং ইম্বিলিন, জাবনিসিন্, আর্জানিন, মোক্সিন ও কার্দ্রন প্রদেশ এবং ইবেরিয়ার রাজকর্তৃত্ব রোমসম্রাটের হক্তে প্রদান করিয়া বন্ধুত্ব সূত্রে আবদ্ধ হইলেন। তিরিদেতিস্ও পিতৃসম্পদ লাভ করিলেন।

রোমরাজ্যকে নানাবিপদ্পাত হইতে রক্ষা করিয়া তিনি ৩০৩ খুষ্টাব্দের ২০এ নবেম্বর একটা বিজয় মহোৎসবের অফুষ্ঠান করেন। এই সময়ে তিনি ছই মাস মাত্র রোম রাজধানীতে থাকিয়া স্বীয় বিভাগীয় রাজধানী নিকোমিডিয়ায় ৩০৮ খুষ্টাব্দে উপনীত হন। এই দীর্ঘ যাত্রায় তাহার স্বাস্থ্য ভক্ত হয়। তথন তিনি অধীনস্থ সোনাগণকে এবং প্রজা-সাধারণকে নিকোমিডিয়ার প্রশস্ত প্রান্তরে সমবেত করিয়া বলিলেন, "রোমমুকুট স্বেছার ত্যাগ করিয়া আমি অবশিষ্ট জীবন নির্জ্ঞানে বাস করিতে ইচ্ছা করি।" তদনশুর তিনি ডালমেসিয়ার অন্তর্গত সলোনা নগরে গমন করিলেন (৩০৫ খু: >লা মে)। ঐ দিনেই জাহার সহযোগী অস্ততম স্রাট্ মাক্সিমিয়ান্ ভাহার মিলান রাজধানীতে ঐক্লপ ভাবে ঘোষণা দিয়া স্বয়ং সুকানিয়া নামক গণ্ডগ্রামে যাইয়া নিশ্চিত্ত হইলেন।

ডাইওক্লিসিয়ান্ ও মাঝিসিয়াম্ রাজকার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ করিবার পর, রোমরাজ্যে পুনরার বিশুখলা ঘটিতে লাগিল। কনন্তাসিয়ান্ ও গালেরিয়ান্ সর্বময় কর্তৃত্ব লাভ করিলেন বটে, কিন্তু স্থাসন প্রতিষ্ঠা করিতে পারিলেন না। গালেরিয়ান্ ও কনন্তাসিয়ান্ পূর্বমত অগাষ্টান্ উপাধি ধারণ করিলেন এবং গালেরিয়ান্ স্থীয় ভাগিনেয় মাঝিমিন্ ও ইতালীয় সেনামায়ক সেভেরসকে সিজায় করিয়া চারিবিভাগে রাজ্য শাস্নের বাবয়া বেখিলেন। কিছু তাঁহার আশা বিশেষ ক্লব্তী হইল না। পশ্চিম বিভাগে কনন্তাভাইন এবং আফ্রিকা ও ইতালীতে

শাব্দেণ্টিরান্ বিজ্ঞানী হইরা তত্ত্বদ্বাক্ত্য অধিকার করিরা বনিলেন।
কালেডোনিরার বর্জরদিগকে পরাস্ত্ত করিরা সম্রাট্ কনন্তালিরাস্
কালকবলে নিপতিত হইলেন (৩০৬ খৃ: ২৫০ জুলাই)।
তথন গালেরিরান্ রাজ্যের বিভ্রাট্ উপলব্ধি করিরা তাঁহার পুত্র
কনন্তান্তানিকে সিজার উপাধিসহ তবিভাগের কর্তা করিলেন
এবং পূর্কক্থিত সেভেরাসকে অগাইাস উপাধি দিলেন।

কনন্তান্তাইনের এরপ সোভাগ্যবৃদ্ধিতে ইবঁরা মান্ধিমিয়ানের পুত্র এবং গালেরিয়াসের জামাতা মাঝেন্টিয়াস্ রাফেল্টগুলাভের আখাসে উক্ত বর্ষের ২০এ অক্টোবর উৎকৃত্তিত রোমকগণকে খণলে আনয়ন করিয়া রোম-নগরে বিদ্রোহধ্বজা উজ্জীন করিলেন। প্রত্যের প্রতি মেহাধিক্যবশতঃ হৃদ্ধ মান্ধিমিয়ান্ বিদ্রোহিপক্ষ অবলম্বন করিলে অনেকেই প্রদাপূর্বাক তাঁহার ছত্রতলে আসিয়া উপনীত হইল। সমাট্ সেভেরাস্ খীর সহযোগীর পরামশাহিসারে সদলে রাজধানী অভিমূধে অগ্রসর ইইলেন। নগর্মার কৃদ্ধ এবং সৈত্যনগুকে তাঁহার পক্ষ ত্যাগ করিয়া মান্ধিমিয়ানের পক্ষাবলম্বনে উত্যত দেখিয়া তিনি রাভেয়ায় পলাইয়া গেলেন। এখানে মান্ধিমিয়ানের অধীনস্থ সেনা তাঁহাকে আক্রমণ করিল। সেভেরাস্ বন্দী ও নিহত হইলেন। অনস্তর বৃদ্ধ মান্ধিমিয়ান্ আয়স্পর্বাতমালা অতিক্রম করিয়া ৩০৭ খুটান্দের ৩১ মার্চ্চ দরবারে কনন্তান্তাইনকে আহ্বানপূর্ব্বক অগান্টাস উপাধি ও স্বীয়কত্যা ফ্রীকে দান করেন।

সেভেরাদের নিধন সংবাদ পাইরা রোমবাসীকে দগুবিধানার্থ গালেরিয়াস ইল্লিরিকাম হইতে সসৈতে যাত্রা করেন। নার্ণি-নামক স্থানে উপনীত হইলে সৈত্যগণ তাঁহার পক্ষ ত্যাগ করিয়া শত্রুপক্ষে যোগদান করিতেছে দেখিরা তিনি পলায়ন করিলেন। এই সময়ে রোমসামূ। জ্যে জন সম্রাট্ (মাক্সিমিয়ানের অধীনে কনন্তাস্তাইন ও মাক্সেণ্টিয়াস এবং গালেরিয়াসের অধীনে লাইসিনিয়াদ্ ও মাক্সিমিন) রাজ্যশাসন (৩০৮ খঃ)। বৃদ্ধ সমাট্ মাঞ্জিমিয়ান খীর পুত্রের জন্ত সমগ্র পশ্চিমবিভাগ হস্তগত করিতে বড়বন্ধ করিলেন, কনস্তাস্তাইন ফাৰজাতিকে পরাম্ভ করিতে রাইন নদীতটে অগ্রসর হইলে বুদ্ধ সমাট অর্থদানে সেনাদলকে বশীভূত করিতে চেষ্টা পান। কনন্তা-ন্তাইনের জন্মদৃপ্ত দৈন্তের দমক্ষে যুদ্ধ করিতে অসমর্থ হইয়া মাক্সিমিয়ান মার্শাএল নগরে আশ্রয় লইলেন। বিপক্ষার নগর অবরোধ করিলে নগরবাসী তাঁহাকে শত্রুকরে সমর্পণ করে এক কনন্তান্তাইনের আদেশে ৩১০ ব্টান্পে কেব্রুরারী মাসে ভাহারা তাঁহাকে বমালয়ে প্রেরণ করে। ইহার এক বৎসর পরে ৩১১ খুটান্দের যে মানে অত্যধিক পানদোবে পীড়িত হইয়া গালেরিয়াস ভবলীলা লেব করেন।

গালেরিয়াবের মৃত্যুতে আধান্ত লইরা নিসিনিয়াস ও মাঝিমিনের বিরোধ ঘটে। অবশেবে মাঝিমিন প্রাচ্য বিভাগের এসিরা বঙ্গ এবং নিসিনিয়াস য়ুরোপথও অধিকার করিয়া নন। হেলেস্পন্ট ও বেলুসীর বন্দরাস, উভরের অধিকারসীমা নির্দিষ্ট থাকে। এই সময়ে রোমসামাজ্যের উরতিবিধান জন্ত নিসিনিয়াস ও কনভাভাইন একমত হইলেন, কিন্তু মাঝিমিন ও মাঝেনিটরাস্ একবোগ হইরা গোপনে আন্তর্জাতিক বিশ্লবের কুটিল করনা পোবণ করিতে লাগিলেন।

সয়াট্ মহান্মা কনতান্তাইন ১ম, ৩০৬ ও ৩১২ খু ইান্দে আছা ও আলেমরি-লাতিকে সম্পূর্ণরূপে নির্ভিত করেন। তৎপরে ৩১৫ খু ইান্দে তিনি ইতালীবানীর বিক্লের বৃদ্ধ বোষণা করিয়া তুরিপ রপক্ষেত্রে তাহাদিগকে পরাত্ত করিয়াছিলেন। অতঃপর তিনি তেরোণা অবরোধ করেন। মান্ধি টিরাসের সেনাপতি করিসিয়ান্ পাম্পিয়ানান্ নগররকার ত্রতী ছিলেন। উভরপক্ষে ঘারতর যুদ্ধের পর পম্পিয়ানান্ পরাজিত হইলেন। কনত্তা-তাইন স্বীর বাহিনী লইয়া রোমের নিকটবরী সেক্স-ক্ষরা নামক স্থানে আসিলেন, তথন সমাট্ স্থপনিজার স্থা ছিলেন। শত্রুকে অক্সমাৎ নগর সমূথে উপনীত দেখিয়া তিনি যুক্সজ্জা করিলেন। তাঁহার অধীনস্থ সেনাদল তাঁহাকে ত্যাগ করিল, তথন তিনি মিল্ডিয়ান সেতু পার হইয়া পলাইতে উত্তত হইলেন। সমবেত জনতা তাহাকে নদীর জলে ফেলিয়া দিল। বর্ম্মভারে তিনি অতল জলগতে নিমজ্জিত হইয়া গেলেন। তাঁহার বংশীর সক্ষলে বিলয়ী সমাটের আদেশে নিহত হইল।

সমাট্ কনন্তান্তাইন একণে সহযোগী লিসিনিয়াসের সহিত বীয় ভগিনী কনন্তান্দিয়ার বিবাহ দিবার উন্তোগ করিলেন। ৩১৩ খৃষ্টাব্দের মার্চ্চ মানে উভরে মিশান নগরে সমবেত হইলেন। বিবাহোৎসবে ব্যাপৃত থাকিতে থাকিতেই উভরকেই পুনরায় রণক্ষেত্র গমন করিতে হইল। কনন্তান্তাইন ফ্রাঙ্কজাতির ঔকত্য নিবারণার্থ রাইন-তটে গমন করিলেন এবং লিসিনিয়াস্ বিল্রোহী মাল্লিমিনের দর্শন্ত্র বৈজ্ঞান্তনগর অধিকার-পূর্বাক্ত উক্ত বর্বের ১৩ এপ্রিল ভারিখে হিরাক্লিয়ার পরস্পারে সম্বুণীন হইলেন। মাল্লিমিন পরান্ত হইরা নিকোমিডিরায় পলাইয়া মান। এথানে তাঁহার মৃত্যু হয়।

০১৪ খৃষ্টাব্দে কনন্তান্তাইন ও লিসিনিরাস্ রোমীর জগতের একমাত্র অধীধর হইলেন। সহযোগী সন্ত্রাট্ছর বলদর্শে উত্তেজিত হইরা একাধিপত্য লাভের আশার পরস্পরে যুক্তবিগ্রহে মাতিয়া উঠিলেন। কনন্তান্তাইনের অক্ততম ভগিনীপতি বাসিয়ানাস্ সিলার উপাধি লাভ করিয়া ইতালীর শাসনভার প্রাপ্ত হইলেন। ইহাতে লিসিনিরানের হল্বে বিধেষবহিং জনিয়া

উঠিল। তিনি তাঁহার অধিকারে আন্তর্ম আনীয়াবীরিগাকে অপর স্থাট্যরের অধিকারে বিচারার্থ প্রভাগন করিছে আবীকৃত হুইলেন। এই প্রে বাের যুদ্ধ বাবিল। ৩১৫ ব টাকে ৮ই অত্যাবর পানোনিয়ার অন্তর্গত কিবালির লগন সন্নিকটে বাের সংঘর্ষণের পর, নিনিনিয়ান্ পরাজিত হুইয়া ঢাকিরা হুইতে প্রেস পলায়ন করিকেন। শেবােক ছানের মার্জিয়া রপক্ষেত্রে বিতীয় যুদ্ধ সংঘটিত হুইল। নিনিনিয়ানের সেনামল এবারও রাত্রির অন্তকারে পলায়ন করিল।

ছইবার উপর্গাপরি পরাধরে গিসিনিরাস্কে শ্রীন্ত দেখিরা কনভাতাইনের দরা হইল। তিনি সন্ধির প্রভাব বারা উভরের মনোমালিভ দ্র করিলেন এবং ব্দের কতিপূরণ্যরূপ পানোনিরা, ভালমাসিরা, ভাকিরা, মাকিলোনিরা ও গ্রীস প্রদেশ পশ্চিম সান্ত্রাজ্ঞাংশ ভূক করিয়া লইলেন। ক্রীম্পাস্ ও কনিষ্ঠ কনজাস্থাইন পশ্চিমের সিজার নিষ্কা হইলেন। এবং কনিষ্ঠ গিসিনিরাস প্রক্রাজ্যের সিজার সিলার পদ পাইলেন।

এই ঘটনার ৮ বংসর পরে, ৩২৩ খ প্রান্ধের ওরা স্থলাই কনতাস্থাইন সহযোগী গিসিনিরাসের সর্বানা সাধনে উছাক্ত হইলেন। হেব্ৰুদ্ৰদী উত্তরণপূর্বক তিনি ভীমবেগে খীন্ন পক্রকে আক্রমণ করেন। निनिनिष्ठाम् आज्ञात्रकाष्ठ अनमर्थ हहेवा दिक्कि छर्ग मत्या व्यान्तव नहेलन। किन्न त्रिशास व्यवकृष হইয়া পুনরায় কালসিডনে ও পরে নিকোমিডিয়ায় পলায়ন করিলেন। অবশেষে ভগিনী কনন্তান্তিয়ার প্রার্থনায় সমাট্ কনন্তান্তাইন স্বীয় ভগিনীপতি লিসিনিয়াসের নিকট হইতে রোমদান্তাক্তের অধিকার কাডিয়া দইলেন। তাঁহার অধীনত শাসনকর্তা মার্টিনিয়ানাসকে ঐ সঙ্গে অন্তর্হিত করা হইল। निनिम्मित्र (धरमानानिका नगरत नकत्वमी त्रहितनन, भरत त्राक-ফ্রোহিতার অপরাধে ভিনিও শমনভবনে প্রেরিত হইলেন। ডাইও-ক্লিসিয়ান স্থশাসনবাবস্থার জন্ম যে রোমসাম্রাজ্য চারিভাগে বিভক্ত कतिता यान, त्रहे मिन हरेएड ७० नदमत्र भारत ७२८ थ होएस द्याम-সাম্রাজ্য পুনরার একছ্জাধীন হইল। রাজ্যবিভাগগুলির একীকরণ-ফলে ও রাজকার্য্যের স্থবিধার জয় তিনি স্বনামে কমগুরিনোপল নগরী স্থাপন স্বরিলেন এবং আলেকসান্দার নেডেরাস রে খুষ্ট ধর্মের প্রশ্রের দিয়া গিরাছিলেন, তিনি ভাহার সম্যুক্ত প্রতিষ্ঠা করিয়া গেলেন।

সমট্ কনন্তাভাইনের হুই পদ্ধী ছিল। প্রথমা মিনার্ডিনার গর্ডে একমাত্র ক্রীম্পান্ এবং বিতীর পদ্ধী ক্ষার গর্ডে কনন্তা-ভাইন ২ন, কনভাজিন্নান্ ও কনন্তাল ক্রমগ্রহণ করেন। কনতা-ক্রিয়ান্কে সিজার উপাধিনহ গলপ্রদেশের শাসনভার অর্পন করার ক্রিম্পানের ক্রম্যে বিবেববহি প্রজ্ঞান্ত হইরা উঠে। এই স্বরে রাজার জীবননাশের সন্ধরে বন্ধরন্তারী বিশিল্প বিশাস খৃত ও
নিহত হন। নরাট কনভাতাইন ১ম, তাঁহার জীবনে বিশে ও বিংশ
বার্থিক রাজ্যতোগোৎসব সমাপন করিরা ৩৩৭ খুঁটান্দ, ২২মে,
নিকোমিডিরার আকুইরিরন্ প্রাসানে দেহত্যাস করেন। তলমন্তর
তাঁহার কঠার গর্ভজাত পুত্ররের রাজ্যাধিকারী হন। জ্যেষ্ঠ কনভাতাইন্ নৃতন রাজ্যানী; কনভাত্মিরান্ খেল ও পুর্মবৃত্তী জনপদ
সম্পার এবং কনভাত্ম ইতালী, আফ্রিকা ও ইরিরিকান্ লাভ
করেন। এই সমরে নারশেবের পৌত্র ও ইরেরিকান্ লাভ
করেন। এই সমরে নারশেবের পৌত্র ও করিরাও পারতপ্রাচ্য রোমসাত্রাজ্য অধিকার করিরা অকীর শাসন-প্রভাব বিভাব
করিতেছিলেন। কনভাত্মিরান্ প্রোণপণে বৃদ্ধ করিরাও পারতপতিকে হারাইতে পারিলেন না। ৩৪৮ খুটান্দে শিলাড়ার বৃদ্ধে
রোমকগণ পরাজিত ইইরা পলারন করিল। এই সমরে ভারতীয়
সৈত্যগণ পারত্যরান্তের সহারতা করিরাছিল।

ইত্যবসরে মদদেগেটার অধীনে শকগণ পারক্তের পূর্বভাগ লওভও করিতেছিল। পারভারাজ উপায়াস্তর না দেখিরা রোম-সম্রাটের সহিত সন্ধি করিলেন। এদিকে ভ্রান্তল্রোহী কনস্তান্তাইন ক্রিষ্ঠ প্রাতা ক্রম্ভান্সের ঐশ্বর্যো উর্বাপরতন্ত্র হুইরা তদ্রাক্রা আক্রমণ করেন। তাঁহার আগমনে ভীত কনন্তান্সের প্রেরিত ইলিরীয় সেনাদল পলায়নপর হইয়া একদিকে কনন্তাস্তাইনকে ছলে ভুলাইয়া লইয়া যায় এবং গোপনে তাঁহাকে সদলে হত্যা করে (७८० थु: मार्क)। ইहात ठिक नभवर्ष भरत ७६० थुष्टारल মার্মেণ্টিয়াস নামক জনৈক রাজজোহী মার্শেলিয়ানাসের উত্তেজনায় কনতান্সকে নিহত করেন। কনতান্দিয়াদ্ মাগ্লেণ্টিয়াদ্কে অব্যা-হতি দিলেন না। ব্রাতুলোহের সমূচিত শাক্তি দিবার জন্ম পারভাষত্ত পরিহার করিরা তিনি ভেটানিওর সহিত মিলিত হইতে বাসনা করিলেন। ভেটানিও সদলে উপনীত হইলে তাঁহার পক্ষীর সেনা-দল কনন্তান্দিয়াসের পক্ষ অবলঘন করিল, তখন তিনি সম্রাটের বখ্যতা স্বীকার করিতে বাধ্য হইলেন এবং প্রুসার সম্বর্গদিরূপে কালাভিপাভ করিতে বাধ্য রহিলেন। সিলিউকাস্ পর্বতের সমীপত্ব বুৰে মায়েণ্টিরাস্ ৩৫৩ খুষ্টাব্দে নিহত হন।

৩৫০ খুঁইান্দে কনন্তানিরাস্ একক ছত্রপতি হন। ৩৫১
খুঁইান্দের এই মার্ক তিনি গালাসের সহিত বীর কলা কনন্তান্তিনার
বিবাহ দিয়া তাঁহান্দে রাজকীয়লার্য্যের হ্ববন্দোবন্তের জল নিরোগ
করেন। ৩৫৩ খুঁইান্দে কনন্তানিরাসের রাজ্য নিকটক হইলেও
গালাসের অভ্যানার ও আধিপত্য দিন বিন বাড়িতে লাগিল,
ভূকানি সত্রাট্ তাঁহার ক্ষমতা ধর্ম করিতে উভত ইইলেন।
ভিনি কৌশনে বীর ভনরার প্রাণসংহার করিরা জামাতাকে,
বিলানে সাকাতের আকাত্রণ জানাইরা বার্যানিও নামক সেনাপতির সাহার্যে তাঁহাকে পেটোভিও নামক স্থানে করী করিবেন।

ভ্ৰমন্ত্ৰ পোলা নামক হালে কারাব্র করিরা জীহাকে তববর্গা হইতে হক্ত করিরা দেন। এই সনতে জিলি প্রাভূপ্রবের
নকলকেই প্রার নিহত করেন, কেবল সারাজী ইউনিবিবার
ন্ধান্তার ভ্লিরান্ আথেল নগরে নির্মানিত হইরা জীবনাতিপাত করিতে আনিই হইলেন। কিত এখানে তাঁহাকে জ্বিক
কাল বাস করিতে হর নাই। ইউনিবিবার জন্মরোধে তিনি
কনজালিরাসের তলিনী হেলেনাকে বিবাহ করিয়া নিজার
উপাধিসহ আরস্ পর্কজ্ঞের জলর পার্বর্ত্তী প্রেবেশের শাসনভার
প্রার্ত্ত নাকাং করিতে হর। এখানে মাত্র ২৪ বিন থাকিরা
ভিনি গ্রন্তাল্যালালাসনে বহির্গত হন। (৩৫৫ প্র: জঃ)

তংগ-৫৯ খুৱালে সম্রাট্ট কনজালিরাস্ পূর্কবিভাগ পরিন্দানে আসিয়া কাদি, সৌরমজীর ও বিমিগান্তিন্ প্রভৃতি জাতিকে বলে আনম্বন করেন। শেবাক্ত বর্বে তাঁছাকে পারজ্বার্ক সাপুরের বিরুদ্ধে যুক্ত করিছে হর। এই বুক্তে বক্তে বাণবিদ্ধ হইরা তাঁহার প্রেম মৃত্যু ঘটে, তাহাতে জিনি কতিপুরণস্বরূপ আমিদা নগর লইরা ধ্বংস করেন। ইহাতে রোমকগণ উত্তেজিত হইরা তাঁহার বিরুদ্ধে পুনরায় যুক্ত ঘোষণা করে। এই সময়ে বর্করগণ পারজ্বরাক্তর পক্তাগা করার তাঁহার বলহাস ঘটে। ৩৬০ খুটান্দে রোমকগণ শিলাড়া ও মিসোপোটেমিয়া অধিকার করে এবং জীর্থা যুদ্ধে পরাজিত হইরা পারজ্বপতি পলারন করেন। অতঃপর সম্রাট্ কনজালিয়ান্ স্বীর সেনাপতির কার্ব্যে বিরক্ত হইরা স্বরং লানিয়ুব তীর হইতে পূর্কাভিমুধে রওনা হইলেন। বেশান্ত-ত্র্গ্র আর্রোধকালে বর্বাঞ্চু সমাগত দেখিয়া রোমক সম্রাট্ সনলে অক্তিপ্রক প্রত্যার্ত্ত হইরা ছাউনী করিলেন।

রাজনৈতিক বিশৃথকার নিপ্তিত হইরা সম্রাট্ কনন্তান্সিরাস্ ক্রান্থ আলেমরি প্রান্থতি অব্যণির অসক্তা অধিবাসির্ন্দকে গল-রাজ্যের অধিকাংশ প্রদেশ ছাড়িরা দিতে বাধ্য হইলেন। এই সমরে নামালাত্রবিদ্ অ্লিরান্ গলের শাসনকর্তা হন। ইনি যুর্বিভার পাঙ্কিত্য লাভ না করিলেও ৩৫৭-৩৫৯ খুটাব্দের মধ্যে ক্একটা যুদ্ধে অর্থণির বর্ষরিগিকে পরাত্ত করিয়া রাইন নদীর অপর পার পর্যন্ত রোমরাজ্যবীমা বিভার করিয়াহিলেন।

ভূলিরানের এই প্রতিভাও নৌভাগ্য সমাটের চকুংশৃল
ভূইল। তিলি অবিলবে তাঁহার নিকট আবেশ পাঠাইলেন যে,
ব্রিনিউনের নিকট ভোষার চারিটী নিজন পূর্কাক্তন পাঠাইবে।
এই সংবাদে নেমাবল উত্তেজিত হইল। ভাহারা পারভাজতিবানের জভাবিক কঠ সভ করিতে চাবিল না। ভাহারা সমাটের
জাবেশ উপেলা করিয়া ভূলিরানের লভ জীবন উৎসর্গ করিতে
ব্রিকিভ-হইল। ভাহারা স্বাট্ ভবনে ভোলনাতে রাজিকালে

পরামর্ক করিবা জাপ্তবে ও উত্তেরে রাজপ্রালাদ বিবিধা "জুলিয়ান भगोटीन्" माम উछात्रान्यूर्सक बोदस्टर हीरकात कबिएड गानिन। আমাতে ভাহারা বলপুর্বাক সাল্যাস্থাকে আবেশ করিরা कृतिहान्त्र नगवात्म श्रिया जानिम ध्यर निश्हानत्न वनाहेया ভাঁহাকে নব্ৰাট্ট-বলিয়া ঘোষণা ক্রিল। এই প্রেড উভরপক্ষে বোর বৃদ্ধ বাঞ্জি। জুলিরান্ ৩৬১ খু টাব্দে বাজিল নগরের সন্নিকটে খীর সেনাধল ছই ভাগে বিভক্ত করিয়া কেনাপতি त्मविकारक त्रिविद्या ଓ त्माविकारमञ्ज मधा निवा ध्वरः त्याकिवान ও জোভিনাস্কে সাম্য স্থিকিন ক্রিয়া উত্তর ইতালীতে বাইতে आदरभ अतिरनन । छन्नखन छिनि चन्नर नानियुव ननी वरक বিপুলবাহিনী বাহিরা নিরমিরামে আসিরা উচ্চাদের সহিত একত্র সমবেক্ত হইলেন। এমিকে কনতালিরাস খীর বাহিনী गरेवा भ्रथभूष्ठित च्यक्तिक क्लांच रहेवा भ्रक्तिन, नाक्रण পরিশ্রম ও ছাশ্চিন্তানিবন্ধন স্বান্থ্যকল হওরার মোপ্রকীন্ নগর শিবিরেই ডিনি পীড়িত হইরা পড়িলেন। ২৪ বংসর রাজত্ব ভোগ করিয়া ৪৫ বৎসর বয়সে এই রোগে তাঁহার মৃত্যু ঘটে। মৃত্যুর পূর্ব্বে তিনি যুবক জুলিয়ানকে সম্রাট্ মনোনীত कविदा यान।

স্থিয়ান রাজাসনে আলীন হইয়া গ্রমেন্ট সংক্রান্ত নানা বিষয়ের সংস্থারে প্রবৃত্ত ; হইলেন। তিনি পূর্বাতন পৌত্তলিক मठारमधी हित्मम, ऋफताः थृष्टीमम-च्यासत्र छौहात्र अधिकात-কালে বিশেষ প্রশ্রের লাভ করিতে পারেন নাই। সালেমের প্রাচীন মন্দির-সংস্থারাত্তে পারভ-বিজয়ে অগ্রসর হটয়া-ছিলেন। মাওগামালকা ছুর্গধ্বংলের পর পারসিকগণ হতাল হইলেও রোমক-সৈঞ্চের বিপক্ষতাচরণ করিতে ছাড়ে নাই। ৩৬০ খুষ্টাব্দে ২৬এ জুন জুলিয়ান শ্বয়ং রণক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইলেন। বিপক্ষ-সৈঞ্জের নিক্ষিপ্ত বড়লা ভাঁহার বক্ষত্তল বিশ্ব হইলে ভিনি মূর্জিত হইয়া পঞ্চিলেন। ভিনি অখপুটে আরোহণ করিরা পুনরার রণক্ষেত্রে চলিলেন. কিছ চিকিৎসক্পণ ভাহার মৃত্যু আসর জানিরা তাঁহাকে সে কার্যা হইতে বিরত করিলেন। মৃত্যুর শয্যার তিনি দার্শনিক-শ্রেষ্ঠ প্রিস্থাস ও মারিমাসের সহিত আবার প্রকৃতি সম্বন্ধ বিচার করিরাছিলেন।

ভ্লিরানের মৃত্যুর পর রোমীর সৈজের অধিনেতা বীরবর জোভিরান নেনারলের আগ্রহে রাজপদ প্রহণ করিলেন, কিন্তু তাঁহাকে অধিক দিন স্থপাগ্রাজা ভাগে করিছে হর নাই। ৩৯৪ বৃষ্টাব্দের ১৭ই কেব্রুয়ারী ক্ষণারিকিত পানতোজন-নিষক্ষন নাগাল্পানা নগরে তাঁহার মৃত্যু হয়। তাঁহার মৃত্যুর পর রোমকসারাজ্য দশদিন কাল প্রভুশ্ভ থাকে। নির্বাচনক্রমে ভালেনিট-

নিয়াল্ ২৬শে ফেক্সারী সরাত্পদ লাভ করেন । ক্লিনি উক্ত বর্ধের মার্ক মানে বীর আতা ভাবেক্সকে কন্তাভিনোপল রাজ-ধানীসহ রাজ্যভাগ সমর্পণ করিলেন এবং বরং নিলানে থাকিয়া ইরিরিকাম্, ইতালী, গল প্রস্তৃতি পাল্টাতা-রাজ্য শাসন করিতে লাগিলেন । এই সময়ে ৩৬৫ খুঠাক্সের সেপ্টেম্বর মানে জ্লিরানের নিকটান্মীয় প্রোক্লোপিয়াসের বিলোহ এবং তৎ-সামরিক জর্মণ যুদ্ধ উাজাকে বিশেবরূপ বিত্রত করিয়া ভূলে। শেষাক্ত বুদ্ধের সময় প্রেন্থর্কার অন্তর্গত ব্রেগেসিও নগরে বীয় লুঞ্চনির সৈক্তর্পনী বিনীর্ণ হইয়া য়ায় এবং তাহাতেই তাহার মৃত্যু বটে (৩৭৫ খুঃ নবেম্বর)। তাহার আতা ভালেন্স আরও তিন বংসর কাল প্রাচ্য সিংহাসনে আসান থাকিয়া ৩২৮ খুটাক্ষে গ্লান্সমরে পরাত হইয়া শ্রুহতে নিহত হন।

ভালেণ্টিনিয়ানের মৃত্যুকালে, তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র গ্রাসিয়ান্
ট্রুল্ প্রাসাদে অবহিত ছিলেন। তিনি রাজপদের অবিকারী
হুইলেও সেনাদল ব্রেগেসিও রণক্ষেত্রে তাঁহার বৈমাতের ভাতা
ম্য ভালেণ্টিনিয়ান্কে রাজা বলিয়া ঘোষণা করিল। তথন
গ্রাসিয়ান্ চারি বংসর বয়য় কনিষ্ঠ ভাতাকে বিমাতার তহাবধানে
নিলান নগরে রাখিয়া য়য়ং আয়স্-বহিভূতি-প্রদেশ শাসনে
অগ্রসর হন। ৩০৫-৬৮৩ খুইান্স পর্যান্ত গ্রাসিয়ানের, ৩৭৫-৩৯২
গর্যান্ত ভালেণ্টিনিয়ানের এবং ৩৬৪-৩৭৮ খুইান্স পর্যান্ত
ভালেন্সের রাজ্যকাল। স্ত্রাং ৩৭৫-৩৭৮ খুইান্স পর্যান্ত
ভালেন্সের রাজ্যকাল। স্তরাং ৩৭৫-৩৭৮ খুইান্স পর্যান্ত
ভালেন্সের জীবদ্দায় পূর্কবিভাগে রোমজাভির প্রান্তভাব অক্র
ভালে উহার মৃত্যু ইইতেই প্রকৃত প্রভাবে রোমদাত্রাজ্যের
অধংপ্রকৃত করনা করা যায় ১

গণ জাতির হস্তে ভালেন্দের মৃত্যুর পর, পূর্ক-রোমরাজ্য উৎসক্ষপ্রায় দেখিয়া সমাট, গ্রাসিয়ান্ বীয় খুলতাতের সাহায্যার্থ আসিয়া সমুপদ্বিত হইবোন। তিনি আসিয়াই খুলতাতের মৃত্যুসংবাদে ব্যথিত হইয়া ভাবী বিপদ্ধ নিবারণার্থ বুটেন ও গলবিক্ষভার নির্কাসিত পুত্র পিওডোসিয়াস্কে সমাটপেরে মভিবিক্ষ করেন। ৩৯২ খুটাক্ষে ২য় ভালেণ্টিয়ানের মৃত্যুর পর ১ইতে ৩৯৫ খুটাক্ষ পর্যাক্ত ১ম পিওডোসিয়াস্ রোম সাম্রাক্ষের এক মাত্র অধীবর ছিলেন। এই সময়ে, ভিলিগণ, আট্রোগণ, ভাঙাল, সংয়বী, আলানী ও হুণ প্রভৃতি বর্ষর জাতি রোমসামাজ্যের বিভিন্ন হান বিপর্যক্ত করিয়া কেনিরাছিল। সামাজ্যের বিভিন্ন হান বিপর্যক্ত করিয়া কেনিরাছিল। সামাজ্য স্থাসন-প্রতিষ্ঠা দ্বে পাকুক, ইহাদের সহিত যুদ্ধবিগ্রহে বলক্ষর হইয়া রোমক্সাতি ক্রমশঃই হীনতেলা হইয়া পড়িতেছিলেন।

আর্কোগাউদ্ নামক জনৈক রেনাপতি ৩৯২ প্রীক্ষে তালে টিনিয়ান্কে হত্যা করিয়া রয়ং ইউজিনিয়ান্ নাম ধারণ-পূর্বক পশ্চিম সাথাজ্যের অধীখরত্ব লাভ করেন। রাজ্যাপহারক ইউজিনিয়ান্কে পরাভূত করিয়া পিওডোসিয়াস্ রোমের এক-ছুলাধিপতি হইলেন। তিনি প্রীনেধর্মের পক্ষপাতী হইয়া পৌত্রবিকধর্মের অবসাদ ঘটাইয়াছিলেন। ৩৯৫ প্রীক্ষের ১৭ই জাহুরারী মিলান নগরে স্বাট্ পিওডোসিয়াসের প্রাণ্বায়ু বহির্পত হয়। তাহার হই পূত্র, জ্যেষ্ঠ আর্কেডিয়াস্ পূর্করাজ্ঞাগ লইয়া কনজাত্তিনাপলে রাজপাট স্থাপন করিলেন একং কনিষ্ঠ ওনোরিয়াস্ পশ্চিম বিভাগের অধীখর রহিলেন।

ত্রত খৃষ্টান্দে ওনোরিয়াস্ পশ্চিমরাজপাটে উপবিপ্ত হইলেন বটে, কিন্ত ভাঁহার রাজকীয় প্রতিভা না থাকার রাজ্যে ঘোরতর বিশুখানা ঘটিতে লাগিল। আফ্রিকার গিল্ডোর বিদ্রোহ, আলারিক ও রাদাগাইসাসের ইতালী আক্রমণ, জর্মাণকর্তৃক গলরাজ্য উৎসাদন, ষ্টিলিকোর ও ক্লিনিয়াসের বড়যন্ত্রে গথজাতির পরাভব, আলারিকের মৃত্যু, কনন্তান্তাইনের অভ্যাদর ও পতন, ষ্টিলিকোর হত্যা প্রভৃতি কারণে রোমসাত্রাজ্যের উত্তর্জ্যের বল-ক্ষয় হইতে থাকে।

ওনোরিরাপের পর হীননীর্যা নিয়োক্ত কয়জন রাজা পশ্চিমসামাজ্য-সিংহাসন অলক্কত করিয়াছিলেন। ৪২৪ থ টাব্দে ৩য়
ভালেন্টিনিয়ান্ রাজাসনে উপবেশন করেন। তৎপরে য়ণাক্রমে

৯৫৫ থ টাব্দে মাল্লিমাস্, উক্ত বৎসরেই অবিতাস্, ৪৫৭ থ টাব্দে

নেজরিয়ানাস্, ৪৬১ থ টাব্দে সেভেরাস, ৪৬৭ থ টাব্দে এছিমিয়াস,
৪৭২ থ টাব্দে ওলিব্রিয়াস, ৪৭০ থ ঃ আঃ গ্লিসেরিয়াস্, ৪৭৪ খ টাব্দে
ক্লিয়াস্ নেপোস্ এবং ৪৭৫ খ টাব্দে রোম্লাস অগাটালাস্
পশ্চিম রোমসামাজ্যে অধিষ্ঠিত হইলেন। শেবোক্ত সমাট্ পরে
৪৭৬ খ টাব্দে প্রজাতয়ের হত্তে রোমরাজ্যের শাসনভার অর্পণ
করিলে পশ্চিনসামাজ্য বিল্প্ত হয়। এনোরিয়াসের শাসনভাল
হইতে অগাটালাসের আধিপত্য পর্যান্ত আটিলা ও হুণজাতির
উপশ্রবে সমগ্র পর্যান্ত বাদ্বান্ত অপেক্লা খ টব্দুর্যান্তর প্রান্তর অভ্যানরে অভ্যান্তর অপ্রান্তর অপ্রান্তর অব্যানর অভ্যান্তর শাসন-মমিতির অপেক্লা খ টব্দুর্যান্তর প্রান্তর বাড্রান্তর উরিয়াছিল। পোপ গ্রেগরি দি গ্রেট বা ২ম
এর সমর ধর্মান্তির রাজ্বান্তিকে অভিক্রম করিল।

[পোপ শব্দে বিভূত বিবরণ দেখ।]

মহাত্মা পিওডোসিয়াসের পুত্র আর্কেডিরান্ ৩৯৫ বুঁটানে পুর্ববিভাগের শাসনাধিকার প্রাপ্ত হইরা ৪০৮ খুটাক পর্যান্ত রাজ্যশাসন করেন। এই সমরে গাইনাসের বিজ্ঞোহ সংঘটিত হয়। তৎপরে তাঁহার পুত্র ২র থিওডোসিয়ান্ ৪০৮ হইছে ৪৫০ খুটাক এবং মাসিরান্ ও আর্কেডিরান্-তনরা কুলচেরিরা ৪৫০ হইছে ৪৫৭ খুঁটাৰ পৰ্য্যন্ত রাজ্যশাসন করেন। উদনন্তর নিরোক্ত রাজ্যপ রোমীর সিংহাসন অগভ্যুত করিয়া গিরাছেন—

नोम प्डाम

- ১ শিও ১ম ৪,৭—৪৭৪
- २ निस्र ३ 898 898
- ত জেনো ৪৭৪ -- ৪৯১, ইনি ২র শিওর পিতা।
- ৪ আনাইাসিয়ান্ ৪৯১—৫১৮ ইনি সাইলে উয়ারি উপা-ধিতে পরিচিত ছিলেন।
- चाडिन् >म वा (आर्ड "€>৮—€२१
- ७ काहिनियान १२१-६७१, हेनि काहित्मत लाजुन्य ।
- ৭ জাটিন্ ২র বা কনিষ্ঠ ৫৬৫—৫৭৮, ইহার অধিকারকালে ইস্লাম-ধর্মপ্রবর্তক সংখ্যানের জন্ম হয়।
- ৯ মরিদ্ «৮২ ৬০২, ইনি কাপাডোকিরাবাসী অবশেষে গুপ্তশক্ত কর্তৃক নিহত হন।
- ১০ ফোকাদ্ ৬০২—৬১০, শেষোক্ত বর্ষে শক্রহন্তে নিহত।
- ১১ হিরাক্লিয়াস্ ৬১০—৬৪১
- ১২ হিরাক্লিয়াস্ (২য়) ৩৪১—৩৪১, ইনি ১১ সংখ্যকের পুত্র, কনন্তাস্তাইন নাম গ্রহণ করেন।
- ১৩ হিরাক্লিওনাস্ ৬৪১—৬৪১, ১২ সংখ্যকের ভ্রান্তা, নির্বাসিত হন।
- ১৪ কন্ত্রান্স (২র) ৬৪১—৬৬৮, হিরাক্লিরাস্ কনন্তান্তা-ইনের পুত্র।
- ১৫ কনন্তান্তাইন্ ৪র্থ ৬৬৮—৬৮৫, উপাধি প্রগোনেটাস্।
- ১৬ জাটিনিয়ান্ (২র) ৬৮৫ রাজ্যাধিকার, ৬৯৫ খৃটাজে নির্কাসিত ৭০৫ খৃটাজে পুন: রাজ্যপ্রাধি ও ৭১৫ খুটাজে নিহত।
- ১৭ লিও ভিয়ান্ ৬৯৫ খ্টালে শাসনাধিকার ও ৬৯৮ খ্টালে রাজ্য হইতে বিতাড়িত।
 - ১৮ আঞ্চিমার টাইবেরিরাস্ ৬৯৮ খৃত্তাকে রাজ্যাধিকার ও ৭০৫ খৃত্তাকে রাজ্যচ্যত।
- ১৯ ফিলিপিকান বার্ডেনিন্ ৭১১ খ্টালে রাজ্যারোহণ ও ৭১৩ খ্টালে নিহত।
- ২০ আনাটাসিরাস্ (২র) ৭১৩ খৃটাকে সিংহাসম্প্রাপ্তি, ৭১৬ খৃটাকে রাজ্যচ্যুত ও ৭১৯ খৃটাকে শক্ত-হতে নিহত।
- ২১ থিওডোসিরাস্ (তার) ৭১৬ খৃঠান্দে রাজ্যপ্রান্তি, কিন্ত ৭১৮ খুঠান্দে প্রকার মনোরঞ্জনার্থ সিংহাসনজ্ঞার।

- २२ निष (अ) १४৮—१८३, हेनि हेरनोतीय समनानीत भूख।
- २० क्नडाडाहेन् (६म) १८५ १९८।
- ২৪ লিও (৪র্থ) ৭৭৫-- ৭৮০, ইছার উপাধি 'ছাল্লারে' ছিল।
- ২৫ কনজান্তাইন্ (৬৪) ৭৮০ প্টাব্দে মাজা ইরেণের সহ-বোগে রাজ্যশাসন করেন, অবশেবে ৭৯৭ খ্টাব্দে শুপু বাতকের হত্তে নিহত হন।
- ২৬ ইরেনে ৭৯৭—৮০২, ২৫ সংখ্যকের মাতা, শেষোক্ত বর্ষে রাজ্যবহিষ্কত হন।
- २१ निरमस्मात्राम् ४०२-४००
- ২৮ টোরেসিরাস্ ৮১১ খুটাব্দে রাজ্যাধিকার, ২৭ স খ্যকের পুত্র। উক্ত বৎসবেই স্বেক্ষার রাজ্যত্যাগ করেন।
- २२ माहेरकन ৮>> थ्हारक त्रामाधिकात ७ ৮>० थ्हारक त्रामागुरु ।
- ৩- লিও (৫ম) ৮১৩ খৃষ্টাব্দে সিংহাসন অধিকার এবং ৮২- খৃষ্টাব্দে গুণ্ড-শক্রুর হত্তে নিহত। ইনি আর্শেণিয়লাতীয় ছিলেন।
- ৩১ মাইকেল (২য়) ৮২০—৮২৯, ইনি 'দি টামার্র" বা তোত্লা বলিয়া বিধ্যাত ছিলেন।
- ৩২ থিওফিলাস্ ৮২৯—৮৪২
- ৩০ মাইকেল (৩য়) ৮৪২ গ্ ষ্টান্দে রাজ্যাধিকারপ্রাপ্ত হইয়।
 স্থলীর্থ রাজ্যশাসন করিয়। ৮৬৭ গ্ ষ্টান্দে নিহত হন।
- ৩৪ বাসিল ৮৬৭—৮৮৬, ইনি 'মাকিলোনিয়' বলিয়া পরিচিত।
- ৩६ नि ९ (७) ৮৮७ ৯১১, हैनि 'नार्नेनिक दनिया' शांछ।
- ৩৬ আলেকদানার ৯১১—৯১২, ইনি ৬১ বিওর ভ্রাতা. ভ্রাতৃপুত্র কনন্তান্তাইন ৭মের সহিত মিবিত হইয়া রাজ্যশাসন করেন।
- ৩৭ কনকাডাইন্ ৭ম 'পোফ হিরোজেনিটাস্' ৯১১ খৃ টাজে রাজ্যাধিকার, কিন্তু পিতামহ রোমানান্ কর্তৃক ৯১৯ খৃ টাকে রাজ্যচ্যত, অবলেবে ৯৫৫—৯৫৯ খৃ টাক পর্যান্ত পুনরায় সিংহাসনগ্রান্তি ও রাজ্যশাসন।
- তদ, ৩৯, ৪০, ৪১, রোমানাস্ (১ম) বা লেকাপেনাস্ এবং তাঁহার তিন প্র খৃটোফার, টকেন ও কনভাভাইন্
 ৮ম, ইছারা বথাক্রমে ৯১৯, ৯২১ ও ৯২৮ খৃটাবেশ
 শাসমাধিকার প্রাপ্ত এবং ৯৪৪ ও ৯৪৫ খৃটাবেশ
 রাজ্যচাত।
- ৪২ রোমানাস্ (২র) বা (কনিষ্ঠ) ৯৫৯—৯৩৩, ইনি ৬৪ কন-ভাতাইনের পুত্র।
- ৪৩ নিসেকোরাস্ (২র) বা (কোকাস্) ৯৬৩ খু টাকে রাজতক্তে উপবিত্ত এবং ৯৬৯ খু টাকে গুলু বাতকের হতে নিহত।

40

88 बर्ग किंगिएकन् ३७३--३५६

৪৫ ৪৬ বাসিল (২য়) ও ক্লকান্তাইন (৯ম) ৯৭৬—১০২৫ এবং ক্লকান্তাইনু রক্ষ, পরে ১০২৫-১০২৮ খ্ঃ।

৪৭ রোমানাস্ (আ) ১০২৮—১০০৪, ইনি 'আর্পাইরাস্' বণিয়া শরিচিত।

৪৮ মাইকেল (৪ব) ১০৬৪—১২৯১, ইনি 'পাল্লাগোণীর' বিশাল বিশাভ।

৪৯ মাইকেল (৫ম) ১-৪১ বৃষ্টাকৈ রাজ্যারোহণ করেন ও ১-৪২ থৃটাকে রাজ্য বিভাড়িভ হন। ইনি 'কালাফেট্' বলিলা প্রাসিষ্ট ছিলেন।

eo es क्षिरि धवः कमछाराष्ट्रिम् (5•म) 5•82-->•88 ।

হুহ পিওডোরা ১০৫৪—১০৪৬, ইনি সম্রাট্ জোই'র ভগিনী।

৫৩ মাইকেল (৬৪) > ০৫৬ খুটালে রাজ্যাধিকার প্রাপ্ত হন এবং >০৫৭ খুটালে উহা পরিত্যাগ করেন। ইহার জন্ম নাম ব্রাটিওটিকাস্।

এ৪ আইলাক্ (১ম) বা কোয়েনাস্ ১০৫৭ খৃষ্টাব্দে রালপদে
 নিরোগ এবং ১০৫৯ খৃষ্টাব্দে বেচ্ছার রাজ্যত্যাগ।

কনতাত্তাইন্ (১১খ) বা (ভুকান্) ১০৫৭—১০৫৯, ইনি
আইজাকের সহিত একবোগে রাজত্ব করেন, ইহার পর
১০৬৭ ধৃ টাল পর্যান্ত রোমসাদ্রাজ্যে বৈদেশিকের
আক্রেমণক্তনিত খোর বিশৃত্বলা আসিরা সমুপদ্বিত হয়।

৫৬ ইউডোকিরা ও রোমানাস্ (৩র) ১০৬৭-১০৭১।

ধন মাইকেল ৭ম (বা আল্রোনিকাশ্ ১ম) এবং কনভান্তাইন (১২শ) একবোগে ১০৭১ বৃঃ অঃ।

৫৮ মাইকেল ৭ম, উজ বর্ধেই একেশব সমাট্ হন।
১০৭৮ শৃষ্টাবেল তাঁছাকে বেজার সিংহাসন পরিত্যাগ
করিতে হয়।

৫৯ নিসেকোরান্ (৩ব) বা (বোটানিরেটিন্) ১০৭৮ খুটান্দে সাম্রাজ্ঞাপদ্রোধ্যি ও ১০৮১ খুটান্দে নিংহাসনচ্যতি।

७० जालिकात्राम् २म वा (ट्लालमान्) १०४५-- १२२४।

७) क्रम क्लास्माम् >>>৮-->>৪०

७२ बोक्स्बन स्वाद्यमान् ३२४०--३५०

৩৩ জালেজিয়াস্ (২র) বা (কোজেনাস্) ১১৮০ খুটান্সে রাজ্যাধিকার, কিছু ১৯৮০ খুটান্সে রাজ্যায়ত ও নিহত।

৬৪ আজোনিকান্ (১ম)ুকোরেনান্ ১১৮৩ খুণাকে রাজ্য-প্রাপ্তি ভিচিচ্চত খুটাকে শক্তক্তে নিহত।

৬৫ আইজাক্ ১ম (আজেলাস্) ১১৮৫ খুটাকে রাজ্যাধিকার ও ১১৯১ খুটাকে রাজান্ত ; কিছু ১২০৩—১২০৫ খুঃ পর্যাক্ত পুমরার রাজ্যশাসন। এই সমুবে হিন্দুয়ানে বাসরংশীর পাঠানসর্বার কুৎব উদীন্ কর্তৃক বিস্নী-রাজধানীতে পাঠানপাসন অভিক্রিত বস্তু ১

 আলেক্সিলন্ (তর) আজেলান্ ১১৯৫ খুটাকে সিংহান সনারোহণ ও ১২০৩ খুটাকে রাজাচ্যুতি এবং ১২০৫ খুঃ পুনর্কার শাসনভারপ্রাপ্তি।

৩৭ আলেরিরান্ (এর্ব) আক্রেনান্ ১২০৩ খুটাবে পিত। আব্রেনানের সহবোগে রাজ্যশানন করেন, কিন্তু অচিরে ১২০৪ খুটাবে নিহত হম।

আলেরিরাস্ (৫ম) রা আরেলাস্ মৌজু ক্লে ১২০৪
পুরাক লিংহাসনাধিকার এবং ঐ সমরের অব্যবহিত
পরেই শক্রকর্ত রক্ষিত যাতকের হতে জাঁহার জীবননীলা শেব হয়।

ক্ষতাভিনোপদের লাট্যজাতীর স্কাট্যুক্ত।

৬৯ বল্ডুইন্(১ম) ১২০৪—১২০৬, ইনি ক্লাণ্ডার জাতির একজন কাউন্ট বলিরা পরিচিত ছিলেন।

१० (हन्त्री)२०७-->२>७

१> भिष्ठेत्र कृष्टित >२>१-->२>৯

१२ त्रवार्षे >२>२->२२४

৭৩ বল্ডুইন্ (২য়) ১২২৮ খুইালে রাজ্যাধিকার লাভ করিয়া
১২৬১ খুটাল পর্যন্ত রাজ্যশাসন । অবলেবে মাইকেল
পেলিওলোগাস্ কর্তৃক উক্ত বর্বে তাঁহাকে রাজ্য হইতে
বাহির করিয়া দেওরা হয় ।

এই সময়ে নিস্-নগরে রাজধানী স্থাপন করিয়া চারিজন মাত্র গ্রীক্সপ্রাট্ রোমসান্তাজ্যের কডকাংশ স্বভন্নভাবে শাসন করিতে থাকেন:—

থিওডোর লাক্ষারিস্ (১ম) ১২০৩—১২২২ খু:। জন ডুকাস্ ডালেসিস্ ১২২২—১২৫৫। থিওডোর ডুকাস্ লাকারিস্ ১২৫৫—১২৫৯।

জন নাথারিদ্ ১২১৯ খুটাজে সিংহাসন লাভ করেন এটে, কিন্ত তাহাকে অধিক দিন রাজ্যৈপথ্য ভোগ করিছে হর নাই। ১২৬০ খুটাজে তাহাকে রাজ্যতাত করিছা গেলিওলোগাদ্বশীর নরপতিগণ রোমসাঞ্জ্য প্রভাব

শেলিওলোগাস্কশীর ত্রীক্সভাট্পণ।

 ক নাইকেল ১২৬- খুৱান্দে রাজা হন। ১২৬১ খুৱান্দে
তিনি কনভাভিনোপদ জয় করিয়া ১২৮২ খুৱান্দ পর্যক্ত য়াজাশায়ন করিয়াছিলেন।

१६ जारबानिकाम् (२५) ३२৮२--३७०२, महिएका धहे

সময়ে ১২৯৫ — ১৩২০ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত ইছার সহযোগি-রূপে রাজ্যশাসন করেন।

পশ্চ আক্রোনিকাস্ (তয়) ১৩.৮ ও পরে ১৩৩২ খুটালে ত্ই-বার রাজপদ পান। শেষাক্ত বর্ষ হইতে ১৩৪১ খুঃ পর্যায় ইনি রাজ্বত্ব করিয়াছিলেন। ইনি তুর্কজাতির সহিত যুদ্ধে পর্য়জ্ব ও আহত হন। এই সময় হইতে তুর্কসামাজ্যের প্রভাব বিকার ও প্রতিষ্ঠা হয়। ১৩৪১ খৃষ্টালে তাঁহার মৃত্যুর পর ভদীয় দ্বিতীয়া পদ্মী আনের গর্জজাত সন্তান জন পেলিওলোগাস্ রাজসিংহাসনের উত্তরাধিকারী হইয়াছিলেন।

৭৭ জন (১ম) ১৩৪১—১৩৯১, রাজ্যাধিকার কালে ডিনি নবমব্বীর বালক ছিলেন। এই জন্ম রাজ্মাতা আন রাজাপরিচালনার্থ স্বীয় স্বামীর পরমহিতৈষী বন্ধু জন কান্টাকুজেন্কে রাজপরিদর্শক (Regent) নিযুক্ত করেন। উক্ত বর্ষে তাঁহার প্রভাবদর্শনে ঈর্ষাধিত হইয়া শত্রুপক্ষ তাঁহাকে রাজদ্রোহী ও ধর্মদ্বেধী বলিয়া ঘোষণা করে এবং তাহারা তাঁহার মাতাকে কারারুদ্ধ করিলে তিনি ডেমোটিকা নগরে স্বীয় মস্তকোপরি রাজচ্ছত্র ধারণ করিলেন: কিন্তু তাঁহার সেনাদল অচিরে তাঁহাকে পরিত্যাগ করার তিনি অসভ্য সার্কীয় জাতির নিকট আশ্রয় গ্রহণ করেন। এদিকে নোসেনাপতি আপোকোকাস ও ধর্মাধ্যক अन (John of Apri, the Patriarch) রাজ্যের দণ্ডমুণ্ডের কর্তা হইলেন। রাজ্যে অত্যা-চার ও অনাচার-স্রোভ প্রবাহিত হইল। নোসেনা-পতি নিহত হইলেন। রাজ্যময় ঘোর বিশৃখলা উপস্থিত দেখিয়া রাণী আন কাণ্টাকুজেনের নির্বাসন-দণ্ডাজ্ঞা রদ করিবার জন্ম ধর্মাধ্যক জনের নিকট প্রার্থনা করিলেন, পক্ষান্তরে জন তাঁহাকে রাজ্ঞা ও ধর্মচ্যতির ভয় দেখাইলেন। এই গোল-যোগের অবসরে কান্টাকুজেন সদলবলে উপস্থিত इटेग्रा कन्छाखित्नाभन व्यवत्त्राथ कत्रितन । त्राखी আন সংবাদ পাইয়া তাঁহার পদানত হইলেন। আক্রমণকারী স্বীয় কন্তার সহিত রাজকুমার জনের বিবাহ দিলেন এবং শ্বরং তাঁহাদের অভিভাবক रुहेरनम् (১७८१ श् ड्राप्स)।

> এইরণে ছর বংসর অত্যাচারের পর কান্টা-কুলেনের শাসনে রাজ্যমধ্যে শান্তিছাপিত হইল। কিন্তু আব্রোনিকাসের বংশধর আর রাজা রহিল মা;

কোশলে কান্টাকুজেনই রাজ্যের হইলেন। তথন জন স্বীয় অধিকারপ্রাপ্তির আশায় বিল্রোহাচরণে প্রের্ড হইলেন, কান্টাকুজেনের অস্থ্যইতি মুরোপবাসী তুর্ক দেনাদল তাঁহাকে পরাজিত করিল। তথন কান্টাকুজেন বালক-রাজের সহিত পুনর্মিলনের আশা অয় জানিরা স্বীর পুর্র মাথিউ কান্টাকুজেনের সহ্যোগে রাজ্যশাসন করিতে বাসনা করিলেন। ১৩৫৫ খঃ তিনি রাজ্জ্বার্য হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া স্বীর পুরের হত্তে শাসনভার অর্পণ করেন; কিন্তু মাথিউ কান্টাকুজেন ১৩৫৬ খৃ ইাক্সে সিংহাসন ত্যাগ করিতে বাধ্য হন।

৭৮ মামুএল ১৩৯১--১৪২৫।

৭৯ জন (২র) মাজ্এলের সহিত ১৩৯৯ খৃ টাব্দে শাসনভার গ্রহণ ও ১৪০২ খ টাব্দে রাজ্যত্যাগ করেন।

৮১ জন (৩য়) ১৪২৫—১৪৪৮।

৮২ কনস্তাস্তাইন্, ১৪৪৮ খৃষ্টাব্দে সাম্রাজ্যসিংহাসনে আরোহণ করেন এবং ১৪৫৩ খৃষ্টাব্দের ২৯মে তুর্কসেনা কর্তৃক কনস্তান্তিনোপল অবরোধ ও জয়কালে নিহত হন। রোমসামাজ্যের অধঃপতন।

সমাক সমুরত রোমকজাতির উন্থমে এতকাল ধরিয়া ধীরে ধীরে যে বিস্তীর্ণ রোমসাম্রাক্তা পরিপ্তষ্ট হইয়া সমগ্র সভাব্বগতকে আলোকিত করিয়াছিল, যাহার স্থবিমল সভাতা ও বীরম্বপ্রতিভার অসভ্য বর্ষরগণ এবং সমৃদ্ধিসম্পন্ন আসিরীয়, পারস্ত প্রভৃতি জনপদবাসিগণ রক্তলোতে ধরা রঞ্জিত করিয়াও পরাভূত হইয়াছিল, সেই স্থমহান রাজতল্পের কিরুপে বিলর্গাধন ঘটিল, রোমের রাজচরিত্র ও ইতিরুত্ত আলোচনা করিলে তাহার একটা পূর্ণ-চিত্র প্রকাশিত হইতে পারে। «অমাগুষিক অত্যাচার ও অসীম বীরত্বে রোমীয় নেডুবর্গ রাজপদাভিষ্তিক হইয়া প্রজাসাধারণের প্রাণে যে ভর সমুৎপাদিত করিয়াছিলেন. তাহাই রোমসাম্রাজ্যের ভিত্তি স্থৃণ্ড করিরাছিল। সিপিও সাল্লা ও সিজারের অভুত বীরত্ব ও রণজয়কালীন নৃশংসু দরহত্যা তাৎকালিক সুসভাও অন্ধ-সভা লাতিসমূহের উপর আধিপত্য বিস্তারে সমর্থ হইরাছিল। তত্তপরি রোমের রাজনৈতিক প্রভাব-পূর্বতন সেনেট, এলেরি, কমিদিরা ও মাজিট্রেদি প্রভৃতি রাজকীয় বিধিবলে—অধিকৃত রাজ্যমধ্যে স্থশাসন প্রতিষ্ঠা ক্রিলেও তন্তদ্বিভাগের শাসনকর্ত্ত্বণ প্রজার সর্বায়পুর্ঠনে বিরত থাকিতেন না। তাঁহারা রোমের অক্সর প্রভাপ প্রজাবর্গকে বিশেষরূপে জানাইরাছিলেন। তাংকালীন সমগ্র সভ্যক্তগৎ রোমকজাতির ভরে সর্বাদাই কম্পিত ও বিচলিত হইরাছিল।

ু সম্রাট্ট অগাষ্টাদের রাজবিধি পরিবর্ত্তন ছইতে রোমসাম্রাজ্যে শান্তিরাক্য প্রতিষ্ঠার আশা সমূদিত হইলেও, প্রকৃতপক্ষে **অরাজকতা ও অ**ত্যাচার **ভিন্ন আর কিছুই দে**খা যার নাই। কারণ তথার রাজবংশ পরন্পরাগত ছিল না। বীরতপ্রতিভার লক্ষপ্ৰতিষ্ঠ সেনানায়কগণই অধিকাংশ স্থলে সম্ৰাট্ পদে নির্মাচিত হইতেন। বার্ত্বকৃত্ত বা অপর কোন কারণে ভাঁহার সামর্থারাহিত্য ঘটিলে অর্থলোপুপ সেনাসম্প্রদায় ভাঁহাকে দ্বাস্কাত বা নিহত কদিলা একজন প্রতিভাবান নবীন বীর সেনানারককে তৎপদ্ধে বুরুণ করিত। কথন কথন তাহারা অর্থের লোভে সম্রান্তবংশীর ধনিসন্তানগণকে বাঞ্জসিংহাসনে বসাইতে বিকৃত্তি করিত না। রাজসিংহাসনের এইরপ ছরবন্ধা দেখিয়া সমাট্গণ ধনলালসার স্বতঃই স্বেচ্ছা-চারী "Tyrant" ছইয়াছিলেন। পরস্ক তাঁহারা লুঠনোন্দেশে मर्खनारे वृक्षविश्राद निष्ठ थाकिएजन এवः छाराएतत्र व्यथीनञ्च <u>শেনাবৃন্দও রাজ্যজ্বরাস্তে ধনাপছরণের আশার উদ্লপ্ত হইয়া</u> প্রাণপণে যুদ্ধ করিয়া বীরদের পরাকাষ্ঠা দেখাইত। বর্তমান সভাজগতে যুদ্ধসময়ে বা যুদ্ধাবসানে যে সকল ক্ষুত্ৰম অত্যা-চারের কথা ওনা বায়, রোমীয় যুদ্ধের তুপনায় তাহা অতি সামান্ত, সে সকল কাহিনী গুনিতে শরীর রোমাঞ্চিত ও মন কলুবিত ছটছা উঠে ৷ কার্থেজ ধ্বংস, সাইরাকিউজের পতন এবং এসিয়ান্ত বিভিন্ন প্রদেশ বিজয়ান্তে যে অত্যাচার প্রোত প্রবাহিত হইরাছিল, তাহা অমাত্র্ষিক ! নররত্তে রোমীয় জগৎ (Roman world) ও ভূমধাদাগর রঞ্জিত হইরা ভরাবহ নরহতাার ভীষণতম দুখা প্রকটিত করিয়াছিল।

রোমরাজ্যের এই নিদারুণ আধিপত্যকালে ষ্টোইক্, প্লেটোনিষ্ট, আকাডেনিক্ ও ইপিকিউরিয়ান্ প্রকৃতি বিভিন্ন দার্শনিক
সম্প্রদারের অভ্যুদ্ধর হয়। তাঁহারা অর্থনিক্সা ও জীবহিংসা বিসর্জ্ঞন
দিরা জীবান্থার মঙ্গল কামনার শান্তির্থের উদ্দেশে প্রধাবিত
ইইয়াছিলেন। সংসারের ঘোর ঝঞ্চাবাত হইতে অপস্থত হইয়া
ভাঁহারা য়াজাকাজ্ঞা ত্যাগ করিলেন এবং একজন সম্রাট্
মনোনীত করিয়া তাঁহার হতে সমগ্র সাম্রাজ্যের শাসনভার
সমর্পন করিয়া তাঁহার নিশ্চিত্ত মনে আপনাপন জ্ঞানচর্চার
কালান্তিসাত করিতে লাগিলেন। টোইক্গণ বৈশেষিকের ভায়
আগবিক ও ভৌতিক সিন্ধান্তে (Contemplation of original
matters) মন্ত রহিলেন, প্লেটোর শিব্যসম্প্রদার আত্মার অবি
নশ্বরত্ব (Immortality) প্রতিপাদনে সচেটিত হইলেন, আকাডেনিক্সন সাংখ্যের ভার প্রভাজীভূত কগতের বন্ধসভা বীকার
কা করিয়া তর্ক ও মীমাংসার সাগরে নিমজ্জিত (Lost in scepticism) ইহিলেন এবং এশিক্টিরীর সম্প্রদার চার্বাকের মতাছ-

সারী হইয়া পরমেশ্বরে ঐশীশক্তি আরোপ করিতে অস্বীকার (denied the providence of a supreme power) করিলেন। তর্কে পাড়িয়া বা সিদ্ধান্ত করিতে গিয়া ঈশ্বরের অন্তিত্ব অস্বীকার করিলেও তাঁহারা কথন দেবমন্দিরের অব্যাননা করেন নাই। রোমীর মাজিষ্টেট্গণও এই দার্শনিক শিক্ষার ফলে দেশ, কাল ও পাত্রভেদে কুসংস্কারের ছায়া লইয়া কার্য্য সম্পাদন করিতে আরম্ভ করেন। বলবতী অর্থ-লালসা निवसन छौंशत्रा प्रवमिक्तानि मुक्रेन ७ ध्वःम कत्रित्व कथन দেবমুর্দ্তি ধ্বংস করিতে প্রয়াস পান নাই, কেবলমাত্র তাঁহারা দেব-অঙ্গ হইতে আভরণগুলি থুলিয়া লইতেন। তাঁহারা দেবপ্রতিমা সমক্ষে নরহত্যা নিবেধ করিয়া যান। ফ্রাবিয়বংশীয় রাজগণের শাসনকালে বিভিন্ন সম্প্রদায়ের ধর্ম্মনিরে উপাসকগণের প্রদত্ত উপহারসমূহ রক্ষার স্থবন্দোবন্ত হইয়াছিল। স্পতরাং বলিতেই হইবে যে, জ্ঞানবৃদ্ধির সুহকারে হর্দ্ধর্য ও নৃশংস-প্রকৃতি রোমক-গণের ফারের কোমল ও কমনীয়তা আশ্রয় করিয়াভিল। সেই উগ্র ও প্রচণ্ডপ্রকৃতির রোমকগণ ক্রমশ: নরহত্যাজনিত পাপপত্তে নিমজ্জিত হইয়া আপনাদের আত্মা কল্বিত করিতে বিরত হইলেন। তাঁহারা ভার্জিল, সিসিরো প্রভৃতির জ্ঞানগর্ড উপদেশ অফুসরণ করিয়া তাঁহাদের ভাব ও ভাষাফুশীলনে নির্ভ রহিলেন। চিত্তের শাস্তি হেতৃ আর তাঁহারা যুদ্ধবিগ্রহে চিত্ত বিক্বত করিতে চাহিলেন না। এতদ্বির ব্যবসা বাণিজ্যে অতুল ঐশ্বর্য্যসম্পন্ন হইয়া তাঁহারা প্রাচ্যসমৃদ্ধি হৃদয়ে পোষণ করিতে-ছিলেন। স্থসম্পদে মত্ত হইয়া তাঁহারা অলস হইরা পড়িলেন এবং তজ্জ্ঞ ক্রমশ:ই জাতীয় উগ্লম হারাইতে লাগিলেন। রোমীয় নগরবাসীর অপরিমিত সমৃদ্ধিরাশি অবলোকন করিয়া বৈদেশিক বর্ষরগণ উপর্যুপরি সেই সকল স্থান ধ্বস্ত করিয়াছিল। ইতালী আলভগলিলে নিমজ্জিত হইলেও গল, স্পেন, বুটেন প্রভৃতি যুরোপীয় প্রদেশসমূহ শক্তিহীন হন নাই, তথাপি তাঁহারা অর্থের দাস হইয়াও রোমকঞাতির গৌরবরকা করিতে সমর্থ হন নাই। ঐতিহাসিক গিবন্ লিখিয়াছেন:--But though the tranquil and plentiful state of the Empire was felt and confessed by the provincials as well as the Romans, though the latent causes of decay and corruption might escape the eye of contemporaries, yet Rome was gradually declining and slowly verging towards descolution. A secret poison had been introduced by the long peace and lethargic inactivity into the bowels of the Empire. Military spirit no longer existed; the fire of enterprise was extinguished, and the commanding genius of Rome forsook the polluted

habitations of a luxurious and effeminate people. The improvement of arts, whilst it refined, had gradually enervated the country; the splendour of their cities served only to allure the impending rapacity of hardy race of Barbarians.

জ্ঞানোন্নতিসহকারে রোমরাঞ্চগণের হৃদরেও অঞাতি-প্রিরতার প্রভাব বৃদ্ধি হইরাছিল। সমাট্ হাদ্রিয়ান ও আণ্টো-নাইনদ্র দ্যাপরবশ হইয়া হতভাগা ক্রীতদাস ভাতির মুক্তি বিধান এক্ত নৃতন রাজবিধির প্রচার করেন। তৎকালে প্রভূগণ স্বস্থ ক্রীতদাসগণের উপর অ্যথা অত্যাচার করিত। এমন कि. তाशांतत सीयनमुका नकगर श्राप्त रेष्ट्राधीत हिन। রাজাম্বশাসনের আশ্রর লাভ করিয়া তাহারা সকলেই মাজিটেটের বিচারাধীন হইল, সাধারণ লোকে ভাহাদের উপর কোন আধিপত্য করিতে পারিল না। তাহারা মুক্ত হইয়া রাজামুগ্রহ-লাভের আশায় বিশেষ বিশ্বস্তভাবে দিনপাত করিতে লাগিল। অনেকে পারিতোধিক স্বরূপ রাজপ্রদত্ত ভূমি পাইয়া গণামান্ত হইয়া উঠিল। শিক্ষাগুণে কেহ কেহ রাজনৈতিক সমিতিতে স্বীয় প্রভুর পার্দে উপবেশন করিবারও অধিকার লাভ করিয়াছিল। এইরূপে ক্রীতদাসগণ হস্তচাত হওয়ায় সম্বাস্ত রোমকগণ হীনবীর্য্য হইয়া পড়িয়াছিলেন। রাজ্যলিপা ও পরস্পারে প্রতিঘন্থিতা আর তাঁহাদের মনকে উঘ্দ করে नाई। अनुष्टेहत्क ও প্রতিভাবলে যিনি যথনই রাজমুকুট শিরে ধারণ করিবার অবসর পাইয়াছিলেন, তিনিই তথন সময়েটিত ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন। সামাজাভিত্তি স্থণ্ট রাথিতে কাহারও তাকুশ আগ্রহ উপস্থিত হয় নাই।

সমগ্র সাম্রাজ্যে কাব্য ও সাহিত্যের উন্নতি প্রয়াদে পূর্ব্বোক্ত সম্রাট্রের যথাসাধ্য পোষকতা করিয়াছিলেন। স্থান্তর বুটেন রাজ্যের উত্তরোপকুলবন্তী প্রদেশ অলঙ্কার-শাস্ত্রাধ্যয়নের কেন্দ্রন্থান হইয়া-ছিল। দানিয়্ব ও রাইন্ নদীর কুলে হোমর ও ভার্জিলের ওজ্ববিনী গীতি প্রতিধ্বনিত হইত। গ্রীকগণ পদার্থবিছা ও জ্যোতির আলোচনার শীর্ষস্থান অধিকার করিয়াছিলেন। টলেমি ও গালেনের নাম আজিও প্রাচ্য ও প্রতীচ্যজগতে তাহার স্থৃতি জাগাইতেছে। শুসিয়ানের কবিছপ্রতিভা আর নাই। পূর্বপ্রস্কেব্যবের সেরূপ অসাধারণ প্রতিভা লইয়া আর রোমে কেহ জন্মগ্রহণ করেন নাই। শোক্টিগণ স্বক্রার ছান অধিকার করিয়াছেন।

ধুঞ্জির ভৃতীর শতাব্দের মধ্যভাগে উৎসাহসক্ষার পাশ্চাত্য রোমক জাতির মধ্যে অবসাদ ও অধংগভন লক্ষা করিরা পূর্কাঞ্চলবাসী শিক্ষিত ক্রীতদাস লঞ্জিনাস্ বলিরাছিলেন;— "In the same manner (says he) as some children always remain pigmies, whose infant limbs has been too closely confined; thus our tender minds, fettered by the prejudices and habits of an unjust servitude, are unable to expand themselves, or to attain that well proportioned greatness which we admire in the the ancients, who living under a popular government, wrote with the same freedom as they acted." (Gibbon Chap, I.)

এইরপে দর্শন ও কাব্যামোদে বতই লোকের মন মাজির। উঠিল, ততই তাহারা পূর্বপূর্ণবাগের শোর্যবীর্ঘ ছাড়িরা কোমলা কলাবিভালমূহের আশ্রর গ্রহণ করিতে বাধ্য হইল। রোমকলাতি মহুবাসমালের নির্দিষ্টত্তর হইতেও অধঃপতিত হইল। অল্পের সহারতা ব্যতীত আর তাহাদের মাধা তুলিরা রাজ্যসমালে মূধ দেধাইবার উপার রহিল না।

জ্ঞানসাগর উত্তরণ-কামনায় বৈশেষিক সেতু অতিক্রমপূর্ব্যক আত্মতত্ববাদরূপ ভেলায় আরোহণ করিয়াও রোমকগণ এক-বারে পৌত্তলিকভার আশ্রয়-বন্দর ছাড়িয়া দিভে পারে নাই। তাহারা যেমন জাতীয় ইউদেব জুপিটারের (বুহম্পতির) প্রজা-প্রচারমানদে ও বিজিত রাজাসমূহে তদেবের উপাসক বৃদ্ধি সহ-কারে মন্দিরাদি স্থাপনে বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন, তদ্ধপ ভিরধর্মী পুর্য্যোপাসক পারসিকগণ মিথের উপাসনা-বিস্তার কামনায় পাশ্চাত্য জনপদে আধিপত্যস্থাপনে সচেষ্টিত ছিলেন। অত্রমজদের শিধাসম্প্রদায় তৎকালে জ্ঞানালোকের বিমল্ডম জ্যোতি লাভ করিয়া জগতের অন্ততম সভা গ্রীক ও রোমক প্রভৃতি পাশ্চাত্য জাতির মধ্যে সেই জ্ঞানজ্যোতি বিকিরণ করিতে নিরম্ভর চেষ্টা করিতেছিলেন। পক্ষান্তরে উদ্ধৃতস্বভাব জ্বপিটার-পূজক রোমকসম্প্রদার বাছবলে তাঁহাদিগকে বশীভত করিরা অধর্মের প্রচার-সম্বন্ধ পোবণ করিম্বইছিলেন। এইরূপ গুটটী ভিন্নধর্মাক্রাক্ত পরস্পার-বিরোধী জাতির অধর্মপ্রতিষ্ঠাপ্রসঙ্গে ঘোর সংঘর্ব উপস্থিত হইয়াছিল।

উচ্চশিক্ষাপ্রাপ্ত ও সমাক্ সমূরত পারসিক্গণের সহিত উপর্যুপরি বৃদ্ধে রোমকগণ উত্তরোভর বলকর করিরাছিলেন। চিরশক্রতা পোবণ করিরা তাঁহারা উত্তরেই আত্মপক রক্ষা করিতে সমর্থ হন নাই। পারসিক্দিগের বীর্য্যবল ও ধর্মবল অপনরমের সক্ষে রোমক্লাতিরও আত্যন্তরিক প্রভাব ও ধর্মবাণতা ক্রমশংই হীনতের হইরা পড়িতেছিল। এমন সমরে রোমাধিক্বত পালেন্তিন ভূমে খুইধর্মের প্রতিষ্ঠাতা মহাত্মা বীত্ত আত্মবাদ প্রচার করিরা ধনলিন্দ্র রোমকগণের হাদরে শান্তিবারি ঢালিরা দিলেন। সমাট্ কনতান্তাইন ১ম ও থিওতোসিরাস্থ ইধর্মের বিমল প্রভিত্তালাত করিরা পোত্রিক্তার জনাচার বন্ধ করিলেন। বেব-

লিপিবদ্ধ রহিয়াছে।

[b.]

মঞ্জানগরে ইস্লাম্ ধর্ম্মের অভ্যানর। প্রবর্ত্তক মহম্মদ যেরূপে প্রতিহিংসা ও প্রতিছন্দিতা উল্লব্দন করিরা স্বীয় পুণাধর্ম প্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন, তাহা রোমক ও মুসলমানজ্বাতির ইতিহাসে

মহম্মদের মদিনার পলায়ন হইতেই ইস্লামধর্মের প্রতিষ্ঠা। রাউ্ত্রিরিরের মধ্যে মহম্মদীয়গণ অন্ত্রধারণপূর্ব্বক আপনাদের প্যাগদ্বরকে রক্ষা করিয়াছিলেন। তাঁহারা আপনাদের ইস্লামধর্মে অবিশ্বাদী বা বিরোধীকে শত্রবলে পদানত করিতে কুষ্টিত হন নাই। অচিরে আরববাসী পবিত্র ইস্লামধর্ম গ্রহণ করিল। স্থযোগ্য আলী ধর্মপ্রক ও সম্প্রদায়ের অধিনায়ক হইলেন। ক্রমে আরবীয় ও সায়াসেনগণ ধর্মবলে ও নবীন উল্পাম পারস্ত, সিরিয়া, মিশর, আফ্রিকা ও স্থদ্র স্পেনরাজ্য অধিকার করিল। হতবীয়্য রোমকগণ ইহাদের সমরে পরাজিত হইলেন। থৃ টান্দিগকেও এই সময়ে নানা নির্যাতন ভোগ করিতে হইয়াছিল।

মহশ্বদ ও মুসলমান দেখ। মুসলমানসাম্রাজ্য বিস্তারের সঙ্গে প্রতিভাশালী থলিফাগণের আবির্ভাব ঘটিল। থলিফা স্থলেমানের রাজত্ব সময়ে আরবগণ ৭১৬ খুষ্টাব্দে কনন্তাস্তিনোপল অবরোধ ও ফ্রান্স আক্রমণ করেন। ওদাইদ ও আব্বাসাইদবংশীয় থলিফাগণের মুসলমানগণ জ্ঞান ও স্থাবৈখ্যা বৃদ্ধি করিয়াছিলেন ওমার ও হারুণ-অল্রসিদের বীরত্ব ও প্রতিভার পরিচয় ইতি-हाम विनामकर्प विवृত আছে। थिनकागर्पत्र ভোগविनामहे মুসলমান প্রভাবের কাল হইল। অর্জিত সাম্রাজ্যের নানা স্থানে নানা বিশৃশ্বলা ঘটিল। স্থানে স্থানে থলিফার অধীনস্থ শাসনকর্তা বা সেনাপতিগণ স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র রাজপাট স্থাপনে যত্নশীল হইলেন (৭৮১ হইতে ৯৯০ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত)। দেখিতে দেখিতে বিস্তীর্ণ রোমসাম্রাজ্য থও থও মুসলমানরাজ্যে পরিণত হইল। এই সময়ে অর্থাৎ ধৃষ্টীয় ১০ম শতাব্দে তুর্কজাতি মহাপ্রভাব-সম্পন্ন হইয়াছিলেন। তাঁহাদের বলবীর্ঘ্যে রোমস্মাট্রণ পুনঃ পুন: বিপর্যান্ত হইয়া শ্রীভ্রষ্ট হইয়া পড়েন। সাল্জুকবংশীয় তুর্কসর্দার তুঘরাল্বেগ ও জাফর পারত জ্বয় করিয়া পলিফাগণের महत्यां शिष्ठा क्रिक्ट नाशित्नन । म्रामान आज्ञ आर्मनान् গ্রীক্সাত্রাঞ্জী ইউডোসিয়াকে পরাস্ত করিয়া রাজ্বও হস্তগত এবং উক্ত সাম্রাঞ্জী ও সম্রাট্ট রোমানাস্ ডাইওজেনিস্কে বন্দী क्तिराम (১०७८ थु:)। छ९भएत ১०१२ चुडीरस मानिक भारु এসিরামাইনর ও জেরুজালেম অধিকার করিয়া বসিলেন। ইহার পরে খুষ্টার ত্রেমাদশ শতাব্দের প্রারম্ভে মোগলসন্দার চেপিস্ থাঁ ও শেষভাগে তৈমুরলক রোমসাম্রাক্তা পুঠন করিয়া লণ্ডভণ্ড করিয়া দিলেন। তদনস্তর ১৪৪৮ খুষ্টাব্দে তুর্ক হল্ডে রোমসমাট

মন্দিরে বলি রহিত হইয়া গেল। মন্দিরে পূজা ও উৎসবের আরোজন হইত বটে, কিন্তু তাহাতেও বিশ্বাস বা হাদরের আগ্রহ ছিল না। পৌতলিকপূজা ও আরাধনা ছাড়িয়া বথন তাহারা জ্ঞানমন্ন পরব্রজ্ঞের উপাসনা করিছে নিখিল, তথন তাহারা প্রহত সত্যধর্মের আগ্রহ লাভ করিল। ক্রমে তাহারা হিংসা-বেষ ভূলিল। পরস্বাপহরণ বা পরের জীবন-নাশ করিরা অতুল ঐপর্যের অধিপতি হইতে আর তাহারা অভিকৃতি প্রকাশ করিল না। বিমল শুর্গীর আনন্দ লাভ করিরা তাহারা ইচ্ছামরেরই ইচ্ছাধীন হইয়া রহিল। ক্রমে তাহাদের চিত্তবৃত্তি জড়ের ভ্রায় নির্ক্ষিকার ও নিশ্চেষ্ট হইরা একমাত্র ধর্মারেবংগই ব্যাপ্ত রহিল। বাহারা পূর্ব্ধ হইতেই ক্রম্বায়হথে মত ছিলেন তাহারাও এপিকিউরিয়াসের "নাচ গাও পান কর প্রফ্রিত মন।" রূপ ধর্মতব্রেরই অন্থসরণ করিয়া চলিলেন।

খুষ্ঠার ৮ম শতাব্দের শেষভাগে সমাট্ সালিমেনের অভ্যুদয়ে ও তাঁহারই সহাত্ত্তিতে সমগ্র মুরোপ ভূমে খুইধর্ম প্রচারিত হইয়াছিল। খুইধর্মের এই অমিত-প্রভাব পশ্চিম সাম্রাজ্যে যতদুর বিস্তারলাভ করিয়াছিল, পূর্বাঞ্চলে ততদুর পারে নাই। রোমকগণ পৃষ্টধর্মে আস্থাবান্ হইয়া ক্রমশঃই আপনারা ধর্ম-স্রোতে ভাসমান হইলেন। রোমুলাস্ অগাষ্ট্লাসের ৪৭৬ খুঃ রাজাসন ত্যাগ হইতে যতই প্রজাতন্ত্রের প্রসার বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, ততই নবধর্মে দীক্ষিত খুটান্সম্প্রদায়ের আধিপতা রোমে বিভূত হইয়া পড়িল। ধুষ্ঠান্রোমক প্রজারুদ স্থানিকা-গুণে লৌকিক-রাজ্যে রাজার পরিবর্তে ধর্মগুরুকেই আধ্যাত্মিক জগতের সর্বাময় কর্ত্তা করিয়া তুলিলেন। ধর্মপ্রচার ও বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে ক্রমে তিনি রোমক-সমাজে 'রাজগুরু' বলিয়া পুঞ্জিত হইলেন। রোমের পোপ খুটান্জগতের রাজচক্রবতী হইয়া বিভিন্ন প্রাদৈশিক নূপতিবর্গের উপর আধিপত্য চালাইতে লাগিলেন। তিনিই নরপতির পতি; রোমের সার্বভৌমত্ব তাঁহার কর্ত্তলগত। তিনি ইচ্ছা করিলে ধর্মবিধি-লজ্মনকারী রাজাকেও রাজ্যচাত করিতে পারিতেন। এমন কি, স্থপুর ইংল্ডের রাজা বা রাণী একসময়ে পোপের শাসনে ধর্মসীমা विष्कृ (Excommunicated) विनया त्याविष्ठ रहेया-ছिলেন। भारीतिक वरणत घरणका अकरण त्रारमत मानिक বা নৈতিক বল অধিক পরিক্ষ্ট হইয়াছিল।

[খুষ্টান, যীও ও পোপ শব্দ দেখ।]

এই নৃতন ধর্মবলে রোমকগণ প্রকাশ্তে হীনবল না হইলেও ধর্মাভিব্যক্তির কোমলভার ভাহারের উদামচিত্তর্ত্তিসমূহ শিথিল ও নিত্তেজ হইরা পড়িল। বৃদ্ধবিদ্ধার ভাঁহারা সম্পূর্ণরূপে জনভাত্ত ও জাশিক্ষিত রহিলেন। এমন সময়ে ৫৭০ ধুটালে ক্ষভাতাইনের মৃত্যুর সক্ষে সংক্র রোমমান্তারের ক্ষ্যান কটে।
[পারত, তুরুত, ক্ষভাতিনোপন, সিরীয়া প্রভৃতি শলে বিভৃত
বিষয়ণ স্টেব্য।]

ঞ্জিকে ঘ্রোণ ভ্রাণেও গ্রীক, ফ্রাছ, বুলগেরীর, হাজেরীর, ক্রব, লবর্জন, নর্গাণ প্রভৃতি জাতি সভ্যতালোকে ক্রমনাই উরতিনার্গে আরোহণ করিতেছিলেন। বুটার ৯ম, ১০ম ও ১১শ শতাক শুইবর্গের প্রাধান্ত (the reign of the gospel and the enuren) বৃশগেরিরা, হাজেরী, বোহেনিরা, সাক্রনি, ডেনমার্ক, নরওবে, স্ইডেন্, গোলও ও ক্রবিরার প্রতিষ্ঠা লাভ করে। এই বিভিন্ন বর্জর্জাতি শুইবর্গের জ্যালোক পাইরা প্রাচার হইতে বিরত হয়।

্ৰুটধৰ্ম্মের দীক্ষাগুণে আড়েক জান্তি বা বিভিন্ন নদের দর্দারগণ রাজা বা কহাল্প উপাধিতে সন্ধানিত হইরাছিলেন। তাঁহারাও
পক্ষান্তরে আপনাপন অধীনত্ব প্রাঞ্জা বা প্রতিকেশিবর্গের মধ্যে
কার্যালিক মত বিস্তার করা ধর্মকর্শের অন্তর্ভুক্ত বলিরাই মনে
করিরাছিলেন। হলাইন্ হইতে কিন্দাও পর্যান্ত বিভিন্নসাগরোপকুলে বস্তুতঃ ধর্মরুদ্ধ সংঘটিত হইরাছিল। গুরীর ১৪শ শতাবে
লিও্রানিয়াবাসী জনসপের গুইধর্মে দ্বীকা হইতে পৌন্তনিক্তার
রাজত বিন্তুর হর। জানবৃদ্ধি সহকারে নর্মাণ, হাজেরীর ও
ক্ষিরাবাসী বিভিন্ন জাতির পরত্ব-স্কুনপিপাসা বিলর পার এবং
ধর্ম্যাজকগণের বত্বে মুরোপভূষে রাজবিধির প্রতিষ্ঠা সহকারে
শান্তিমর ধর্মরাজ্য প্রতিষ্ঠিত হর। প্রাদেশিক শাসনকর্ম্বগণ
রাজা উপাধি মাত্র লইরা রাজকার্যা নির্কাহ করিতে থাকেন।

রোমনগর ও ভারার প্রমূতর।

রোমনগরই রোমসাম্রাজ্যের প্রধান রাজধানী। সুরোপের অন্তর্গত ইতালী রাজ্যে প্রবাহিত টাইবার নদীর কুলে সমুদ্রতট হইতে প্রার ২৪ মাইল দূরে অবস্থিত। অকা• ৪১• ৫৩ ৫২ তঃ প্রবং দ্রাঘি ২২• ২৮ ৪০ পু:।

টাইবার নদীর উভরক্লবর্তী ক্রমোচ্চ নির পার্কত্য প্রদেশোপরি এই নগর হাপিত। এখানকার ভূতক আলোচনা করিরা
দেখিলে স্পষ্টই উপলব্ধি হর বে, এই স্থান এক সমরে একটা
স্থবিত্তীর্থ সাম্ত্র-প্রান্তরে পর্যবসিত ছিল। কালে সম্ত্রের সেই
পনিমর বেলাভূমি নিকটবর্তী কোন আরেরগিরির কর্যুগগমে ও
গলিত থাতব্যাবে পরিব্যাপ্ত ইইরা ইভক্ততঃ অসমানভাবে
বিক্রিপ্ত কুপরালিতে সমাভালিত ইইরা পড়ে। পরে তাহাই
বিভিন্ন প্রভর-ভরে রূপান্তরিত ইইরা এক একটা পতলৈলে পরিপত হয়। এইরূপ কতক্রপানি শৈলালিকরে ও তাহার সাহ্মর
ভূজাণে ইভিহাস-প্রসিত্ত রোক বহানগরী প্রতিষ্ঠিত ইইরাছিল।
নগরমধ্যবর্তী সমন্তর্গ প্রান্তর্গর ভূসর্তত্ব অধ্যান ওক্ষনও

লাব্তিক বীৰক্ষর প্রভরীভূত ক্ষাল বিষয়ান বেশা বাছ। উহার যারা প্রতিগর হয় কে, মগন্তনারিক্যে এক নকরে জাত্যর-গিরি ক্ষাহিত ছিল। একলে ঐ আরেশ্ব-পর্যন্তের রাত্যপ্রাব রহিত হইরাছে।

লাগো বাজিবাণো ও রোমের নিকট্ আলবান্ উললশ্রেণীর বংগ্য কডকওলি আরেরণিরির মুখ (Orakena) গৃত্তিগোচর হয়। ঐ সকল পর্কাত হইতে অপেকারুত কার্যুনিক
বৃল্যেও বাস্কাদি ও ধাতবনিঃপ্রাব নির্মাত হইরাছিল। অনুসর্কান
ভিত্ত তর মুখপাত্র, কোন্ধ থাডুলির্মিত পরালি ও মরক্তাল
ভাষা প্রমাণ করিতেছে। প্রব্যাক ক্রাাবি ভুলাক্তর (ইএির
প্রমাণ করিতেছে। প্রব্যাক ক্রাাবি ভুলাক্তর (ইএির
প্রমাণ পরিতেছে। প্রব্যাক ক্রাাবি ভুলাক্তর (ইএির
প্রমাণ প্রবিশ্ব পর্কালিক লেখা যার। এই পাভাশ্রোত
লাভা প্রবাহের কথ্যে নির্মাক্ত লেখা যার। এই পাভাশ্রোত
(ইটিবের কর্যাবিনার পর্যান্ত বিভার করিরাছিল। ক্রোম-ল্লাবের
অন্তর্গত ৯ বা ১০টা পর্কাভ বান্তা, তার ও প্রভার্ক নির্মাণ
(conglomerated sand and ashea) গারিত। ক্রুতব্যবিদ্যাণ প্রমাণ প্রভার-প্রমেক 'কুফা' বলিয়া ক্রিকেণ
করিরাছেন।

রোমনগরের ভূষিভাগ সাধারণতঃ ডিনভাগে বিভক্ত;—

> টাইবার নদীর বারত্বে অবস্থিত সমতল ও উপত্যক্তা ভূমি।

উহা সমূক্রসৈকডক গলিসর আন্তরে পূর্ণ, ২ উক্ত সমতলক্ষেত্রাপরি আধ্যের-গিরিকাত লৈলমর ভূভাগ এবং ও টাইবার নদীর
দক্ষিণকূলে জনিফিউলান্ ও ভাটিকান্ পর্বতমালার মধ্যবর্ত্তী
সাহ্মর সমতল ভূপও।

প্রাচীনতমকালে এই স্থান সমুক্রগতে ছিল। এখনও এখানে ভাহার বহতর নিলন্দি রহিয়াছে। স্থানর স্থাবর্ণ বালুকারেণ্ এবং মুদ্রাওপ্রতাগেবোদী খেতবুসর সৃদ্ধিকা ভাহার প্রমাণ ও প্রধান উল্লেখবোগ্য বস্তু। জনিকিউসান্ পর্যতপ্রেদীতে প্রচুর পরিমাণে হরিলায়র্ণের বালুকারাশি বিভ্যান থাকার উহা স্থানপর্যত (Golden hill) নামে ক্থিত হটরা থাকে। এখনও ঐ পর্যতিশিক্ষর মোল্টোরিও বিভাগের B. Pietro মির্জার স্থানপ্রতির (Monte d' Oro) উল্লেখ রহিয়াছে।

উপরোক্ত তিনপ্রকার আরেরকর (Volcanic deposits)
ও পলিমর কৃমি (Alluvial deposits) অতীত আবেকাইন্ ও
পিছির শৈলমালার মধ্যে একপ্রকার চূলাপাধরের কর পৃষ্টিলোচর
হয়। পূর্ববর্ণিত তৃকা বা তিউহা শৈবকর কনি বিভিন্ন লমরে
বিভিন্নরূপে গঠিত হইরাছে। আবেরসিলি উল্লানিত কানুলা ও তেনতর্ম নীর্বকাল কলবাবুর প্রকোপে এবং উপরিক্রেক লালিত প্রতর
পদার্ববন্ত্রের চাপবিস্তের কোবাও ক্রমারণ ক্রেয়ন্ত্র, প্রতরে

(Soft and friable rocks) পরিণত হইরাছে এবং কোষাও বা উপরোক্ত কারণে বাসুকণার বিশেষ কোন পরিবর্তন ঘটে নাই।

পালেটাইন শৈলের সমীপদেশে বে সকল অগ্নিমন্ন রক্ষবর্ণ ভদ্মরানি নিপতিত হইরাছিল, সম্ভবতঃ তাহা একটা বনমালার উপরে নিক্ষিপ্ত হইরা থাকিবে, কারণ সেই দ্বা ভদ্মরানির প্রদাহে বিমাদিত ও দায় হইরা বৃক্ষকাঠ কয়লায় পরিণতি পাইরাছে, এরপ প্রচুর নিদর্শন সেইয়ানে পাওয়া বার। এই সকল তৃহা পর্বাতের স্থানে হানে এইরপ পাপুরে করলায় তার বিয়াদিত আছে। কোথাও কোথাও করলাকারে পরিণত দায় বৃক্ষণাথাদিও সাবরবে স্থরক্ষিত দেখা বার। রোম্লাসের প্রসিদ্ধ রোম-প্রাচীর এইরূপ প্রত্তর (conglomerate of tula and charred wood) গঠিত। উহার "ছালি কাকি" (.Scalce caci) বিভাগে বৃক্ষাবরবের পূর্ণ নিদর্শন বিভ্যমান মহিরাছে।

পাশ্চাত্য-সমৃদ্ধির কেন্দ্রস্থল এবং পাশ্চাত্য-সম্ভাতার মুকুট-মণি রোমরালধানী সেই প্রাচীনতম যুগ হইতে কতই প্রাকৃতিক ৰিপৰ্যায় সভ করিয়াছে, ঐতিহাসিক যুগে প্রভাতকালীন অঙ্গণোদরের স্থার রাজ্যোরতির ক্রমবিকাশ-সমূদ্ধির কৃতই বিৰ্ত্তন ঘটরাছে, তাহার একটারও মূলচিত্র অভিত করা কঠিন ব্যাপার। প্রাচীন রোমসামাজ্যের বাণিজ্য-সমৃদ্ধির পরিবৃদ্ধি এবং রাজাশাসন-শ্রীবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে রোমরাঞ্ধানীর কড পরিবর্ত্তন ও কত সংস্থার সাধিত হইয়াছিল, তাহা একমাত্র Forum Romanum, Velabrum, Campus Martius (বর্ত্তমান রোমের বছজনতাপূর্ণ অংশ) এবং বিভিন্ন উপত্যকাদির প্রতি লক্ষ্য করিলেই সমাক্ উপলব্ধি হইতে,পারে। একসময়ে বে উপত্যকাৰলী জলাভূমিপূৰ্ণ ও হুৰ্গম ছিল (Diouys. ii. 50, Ov. Fast, vi. 401), পরবর্ত্তিকালে তাহাই জলরাশিপরিশুভা सूत्रमा श्रासदत भैगावनिष्ठ इदेशाहिन। श्रामेन त्रामतात्मात স্থাপত্যবিভার শ্রেষ্টতম নিদানভূত ভূগর্ভস্থ বলপ্রণালীর (Cloace) দারা ঐ সকল দূষিত জলরাশি নিম্বাশিত হইয়া সেই-श्वानत्क कृषित्कञ ও উष्टान উপবনাদির উপযোগী করিরাছে। (Varro Ling. Lat. , IV. 149)। একসময়ে চূড়াবিলখী বে শৈল্পিরসমূহ গ্রামাণিতে সমাজ্ঞাণিত ছিল এবং প্রত্যেক পর্বত-বিধরবাসিগণ আপনাপন গ্রামাদি রক্ষার্থ যে পর্বতের অভ্যাচনেশে এক একটা গ্রামাছর্গ (Village forts) স্থাপিত করিয়াছিলেন, ভাহারা তৎকালে শত্রুর আক্রমণ হইতে আপনা-দিগকে নিরাপদ রাখিবার জভ সেই পর্বতিগাত গুরারোহ ও ছর্গন ক্রিতে চেষ্টা পাইয়াছিলেন। অপেকাক্তত পরবর্তিকালে বখন **াঠ সৰুল গ্রামবাসিগণ পরস্পরে ভেদ্ভাব ভূলিতে শিধিল এবং** । সমগ্র রোম গ্রামণীগণের সামান্ত্রিক শাসনগণ্ড উল্লেখ করিয়া এক রাজকীর শাসনশৃত্যলার (Government) বলবর্তী হইল, তথন হইতেই রোমনগরীর একটা প্রাকৃতিক বিপির্যার সংঘটিত হইতে লাগিল। যে শৈল্মালা স্বীর প্রাকৃতিক বৈশিষ্ট্যে পরম্পর বিরোধী অধিবাসী প্রজার্কের আত্মরকার উপবােদ্ধী হইয়াছিল এবং নিরুপদ্রব থাকিয়া নির্মিয়-বাসের প্রত্যাশার যে সকল পার্ম্বত্যাশার বে সকল পার্ম্বত্যাশার বে সকল পার্ম্বত্যাশার করেয়াছিল; এক গবর্মেন্টের শাসনাধীন হওয়ার সেই সকল পার্ম্বত্যভূমি আর পরম্পার বিদ্ধির রাখা যুক্তিযুক্ত বিবেচিত হইল না। শ্রেণীবদ্ধ স্থাপ্ত সমুদ্ধিতে একণে রোমনগরকে ভূষিত করাই গবর্মেন্টের উদ্দেশ্ত হইল। তাহারা অভীই কার্যাসাধনে স্থাপত্যবিদ্ধার পরাকার্য প্রদর্শনে অগ্রসর হইলেন। তাহাদের এই অন্ত্রুক কীর্ন্ধি (gigantic engineering works) জগতের ইতিহানে একটা অন্যাধিক ঘটনা।

এই সমরে রোমবাসীর উৎসাহে অভ্যুক্ত পর্বাতশিষস্থলি সমতল হইরা বাসযোগ্য অধিত্যকার পরিণত এবং হুর্গম চূড়া ও পর্বাতগাত্রগুলি কাটিয়া হুগম চালু ও সোপানন্তরে পর্যাবসিত হইরাছিল। পরে ঐ সকল স্থানও কর্ত্তিত হইরা রোমীয় কীর্ত্তি-নালার বিভূবিত হর। ভেলিয়াশুলের সমতলীকরণ (levelling) এবং ট্রাঞ্জান-ফোরামনির্দ্ধাণার্থ তথাকার পর্বাতসামু উৎখনন (Excavation) রোমীয় বাস্থবিভার (Engineering) চরম নিম্মান্ত্র।

মধ্যব্দেও (Middle ages) এই বাস্কবিষ্ণার প্রভাব সমভাবে বিজ্ঞমান ছিল। পৃষ্টীর ১৪শ শতাব্দে কাম্পাস্ মার্লিরাসের
সীমানা হইতে কাপিটোলাইন্ আর্কের (Capitoline Arx)
প্রবেশার্থ আরা কিওলীর অন্তর্গত সেন্ট-মারিয়া পর্যান্ত স্থানীর্ঘ সোপানশ্রেণী বিশ্বন্ধিত করা হইয়াছিল। কারণ ইহার পূর্ব্বে
উপরোক্ত ফোরামের পার্খদেশ ঘ্রিয়া ভিল্ল এইস্থানে আদিবার
আর অন্ত পথ ছিল না। মধ্যস্থলে কতকগুলি সরল পর্ব্বভচ্ডা
দণ্ডারমান থাকিয়া গমনাগমনের পথ রোধ করিয়াছিল।

মধ্যুগে রোন্সাম্রাজ্যমণ্ডলের স্থাপত্য-নিকেতনে বে সোভাগ্যরেখা সম্দিত হইরাছিল, আজিও তাহা সমস্রোতে ভাসমান রহিয়ছে। বর্তমান রোমগবর্মেন্টের ১৮৮৬ খৃষ্টান্দের "piano regolatore" নামক প্রস্তাবাল্লসারে স্থাপত্যকার্য্য ধীরে ধীরে স্থাসপার হইতেছে। মধ্যুগ্রে যে শৈলচ্ছা ভালিয়া সমতল অধিত্যকার পরিণত এবং প্রণালীপথে ছির-জল প্রবা-হিত করাইয়া যে উপত্যকাশ্বলি সাধারণের বাসবোগ্য করা হইরাছিল, বর্তমান প্রবিভাগীর বিশদ-ব্যক্তার তৎসমুদারই একটা সম্পূর্ণ সমতল প্রাক্তরে (uniform level) পর্যাবসিত করিবার আরাস হইতেছে এবং ভত্তপরি আনেরিকারেশের নগর-সমূহের অভুকরণে বৃক্তপ্রেণীসজ্জিত দাবার ছকের (Cheekboard plan) ভার প্রশস্ত চতুছ রাস্তার দারা নৃতন রোমনগর গঠনের করনা স্থাসিক করা হইতেছে।

প্নংপ্নং অঘিসংযোগে রোমনগরী ভরীভূত ও বিধবত হওরার, ইহার প্রান্তগীমা নই হইরা গিরাছে; স্থতরাং প্রাচীন রোমরাজধানী কোন্ স্থান হইতে কোন্ স্থান পর্যান্ত বিভূত ছিল, তাহা নির্দ্ধান করিবার কোন উপার নাই। অঘির ঘারা ভরীভূত স্থানবিশেবের ঐরপ ধবতত্প এবং অপরাপর কারণে বিধবত প্রাচীন নির্দর্শনসমূহ কোন কোন স্থানে ৪০ ফিট্ নির ভূসর্ভ মধ্যে দৃষ্টিগোচর হইরা থাকে। উপত্যকাদির মধ্যবর্তী স্থানে ঐরপ ধবতকীর্তিরই অধিক পরিচর পাওরা বার। প্রস্কৃতভ্ববিদ্যাণ বহু চেষ্টা সন্থেও উহার প্রকৃত ভব্য নির্দশে পরাযুধ হইরাছেন।

ু বর্ত্তমান রোম অপেকা প্রাচীন রোমে শৈত্যের আধিকা ছিল। তৎকালে রোমনগরের মধান্থলে ও চতুস্পার্থবন্তী স্থানে মালেরিরাজরের প্রকোপ অভাস্ত কম ছিল, কিন্তু এখন ভাহা পূর্ণমাত্রার প্রাহ্রভূতি হইরাছে। রোমের উপকৃত্তিত হাদ্রিরানের উত্থানাবাস (villa of Hadrian) এবং তন্নিকটবর্ত্তী অপরাপর নিকুঞ্জকানন যাহা একসময়ে স্বাস্থ্যপ্রদ স্থান বলিয়া কীর্ত্তিত ছিল, তাহা এক্ষণে অত্যন্ত অস্বাস্থ্যকর বলিয়া সাধারণে বোষিত হটয়া থাকে। প্রাচীন কালে একমাত্র স্থপ্রণালীবদ্ধ জলই নালীর জন্ত কাম্পানার (Campagna) স্বাস্থ্য-খাতি প্রদিষ্ক ছিল। ঐ স্থান তৎকালে বছলনপূর্ণ থাকার স্থানীয় স্বাস্থ্যোত্নতির নানা উপায় অবলম্বিত হইয়াছিল: কিন্তু তাহা বলিয়া যে তৎকালে আদৌ অররোগের প্রাত্রভাব ছিল না, একথা বলা ষায় না। পালেটাইন ও অক্তান্ত শৈলচুড়া ফেব্রিস দেবীর উদ্দেশে স্থাপিত বেদীসমূহ এবং একুইলাইন্ পর্বতোপরি মেফাইটিসের স্বতি ও সম্মানার্থ প্রদত্ত উপবন দর্শন করিলে স্বতঃই মনে রোগ-প্রাবল্যের উদ্বোধন করিরা দেয়। পৃতীয় ৪র্থ শতাব্দ হইতেই রোমের জনসংখ্যা ক্রমশ: বর্দ্ধিত হইতে থাকে। তৎপূর্বে ঐ স্থান নিতান্ত অস্বাস্থ্যকর ছিল বলিয়াই অনুমিত হয়। Monografia di Rome (vol iii, 1878.) পাঠে জানা যার যে, উক্ত শতাবে রোম-নগরে প্রায় ২৫ লক লোকের বসতি ছিল। সেই মহাসমুদ্ধিশালী রোমসগরীও তৎ-কালে ভত্নপ্ৰোণী সৌধমালার বিভূষিত হইরা সমগ্র সভ্যঞ্গতে রোমসাদ্রাজ্যের কীর্ন্তিগৌরব বিকাশ করিরাছিল।

ভংকালে রোমনগায়ে Tufa, Lapis. Albanus, Lapis Gabinus, Silex, Lapis Tiburtinus, Pulvis Puteolames. (pozzolana) প্রভৃতি প্রস্তুরে মন্ত্রানিকাদি, নির্মিত ব্টরাছিল। বিটুরিবাস্, মিনি প্রাকৃতি স্ব স্থ প্রত্থে এই সকল প্রান্তর ও তাহার গাঁথ নীর মসলার বিবরণ লিপিব্র করিয়াছেন।

স্থাপৰ ও পালা-পোড়া ইষ্টকেরও তৎকালে ৰথেই বাবহার ছিল। আবার কোন সমরে প্রাচীন রোমের কোন প্রাসদ্ধ অট্টালিকা বা প্রাচীর ইটকে নিশ্মিত হয় নাই, কেবল প্রাচীর, খিলান ও গৃহতৰ প্ৰভৃতি ক্ফৌট্ (concrete) ক্রিভেই কালে লাগিত। গৃহতল হুদুঢ় করিবার বস্ত কুচা ইট, পাধর ও সিমেণ্ট-বিশেষের বাবহার ছিল। রোমকগণ সিমেণ্ট প্রান্থত করিতে বিশেষ পারদর্শিতা লাভ করিরাছিলেন। প্রাচীন গ্ৰহাদি পাঠে জানা বায় যে, tectorium, opus albarium. Structura testucea প্রভৃতি নামধের সিমেণ্ট, প্রভারা (Stucco) । श्रीथनित्र मनना (Mortar) छांशास्त्र बाबाहे উद्भुष्ठ रहेड्डाहिन। - मृत्खाथ-हूर्ग वा स्वत्रकिहूर्ग ७ शास्त्रानामा नामक नान वानुत छात्र जात्मविश्वित निःव्यायम भगर्थावेत्नत्वत বারা প্রস্তত সিমেন্টবং মসলার তাহারা গৃহতলের মর্শ্রর-প্রস্তর আটিয়া লইড। প্রাচীরাদির উপর প্রায় ৫ ইঞ্চি পুরু ও রা ৪ ত্তবক পলস্তারা (Coats of stucco) দেওয়া হইত। প্রথমে পোজোলিনা ও চুণ এবং সর্কোপরি শ্বেডমর্শ্মর-প্রস্তর চূর্ণের (Opus albarium) মস্থপ পালিশ দিয়া বিচিত্র বর্ণচিত্র সম্পাদন করিয়া শইত। কোন কোন মর্শ্বরপ্রস্তরনির্দ্বিত **জ্ঞাটালিকার এইরূপ হক্ষ বেতমর্মরচূর্ণ পলস্তারার বাবহার দেখা** গিরাছে। বিটু বিয়াস লিখিয়াছেন যে, মসলা ও পল্ডারার জন্ত এখানে সমুদ্র ও নদীকুলভাত এবং ভূমিজ (pit-sand) वानुकारे वावश्रुष्ठ रहेन्नाहिन ।

খুই পূর্ব্ব ১ম শতাব্দে সর্বপ্রথমে রোমনগরে মর্ম্মরপ্রক্তরের প্রচলন হর। বিখ্যাত বাগ্মী ক্রেনান্ গ্রীক্-ভোগবিলাদের রনাবাদনে উৎস্ক হইয় ৯২ বৃ: পূর্ব্বাব্দে বীর পালেটাইন্ শৈলছ্
প্রানাদে হাইমেসিরান্ মর্মারের ক্তন্ত প্রথিত করিরাছিলেন।
ভাঁহার এই বিলাসবশবর্তিভাকে উপহাস করিয়া প্রান্দির প্রজাতরাগ্রী মং ক্রটাস্ তাঁহাকে 'Palatine Venus' নামে অভিহিত করিয়াছিলেন। তৎপরে ৫৮ খুইপূর্ব্বাব্দে এমিলিয়াস রাউরাসের কার্চনির্ম্মিত রলমঞ্চের ৩৬০টা ক্তন্ত ও 'সিনা'র নিয়ভাগ গ্রীক্দেশীর মর্ম্মরপ্রস্তরে নির্মিত হরমাছিল। ইহার কিছুকাল পরে,
সম্রাট্ অগাইালের শাসনকালে মর্ম্মরপ্রস্তরের আদর সর্ব্বত্ব
বিক্ত হইয়া পড়ে। কি সাধারণ ও সম্লাক্তরের গৃহ, কি রাজকার্য্যালর বা প্রাসাদ সকল খানেই চাক্চিক্যমন্ত্রী, মন্ত্রণ মর্ম্মর

গুড়াদি নির্মাণার্থ এথানে প্রধানতঃ বেতমর্দ্ধর প্রান্তরেরই অধিক প্রচলন ছিল।। এ প্রান্তর্মমূহ পাত্রবর্গের ঈষৎ পার্থকা

चन्नारत ज्ञानविरमस्य १४० १४० नार्यः शतिक्रिक, क्लिं जारमञ् वा प्रात्मक नामाप्रमादत छेरा ठाविकी विनिष्ट विकारन विकक हहेबाइ। > जुना ननीखीत चांच Marmor Lunense, —দোগনা ডি টেরার করিছিয়ান ক্ষম্বলি এই প্রকরে নির্দিত। ২ আপেলের নিকটবর্ত্তী হাইবেটাল লৈললাত Marmor Hymettium .- किरबानीय S. Pietrus क्यापनि जन S. Maria Maggiore विकासकार अस्त कर वार टाक्स स्टेटर খোৰিত হইরাছিল 🖟 ইহার গাতে গুরুর 😘 নীলবর্ণের সরু লক্ষ ক্রেখা আছে। সুনার ধর্মার পাধর অপেকা ইহার সানা অনেক ক্ষেটা। ৩ আখেল বগরের নিক্টছ পেটেলিকান পর্বভন্নত Marmor Pentelicum, - ইয়ার দানা করা ও পরিকার কেত-ক্র্যা ভেটিকানের ক্রমার অগাইাসের সাক্র-গ্রেতিস্থি এই প্রাক্তরে করিত হর। ভারবেরা বেকার্ডি বা বস্থবাস্তি খোরাই ভবিৰাৰ ভঙ্গ এই দেশীর দর্শবের আৰুর করিব। থাকে। ৪ পেরোস बीटनंत्र समान Marmor Parjum,—देशांत्र शहन Orystal পাধতের কার।

এতজ্ঞি সেই প্রাচীনকাসে রোমনগরে নানাবর্ণের মর্ম্মর প্রস্তরের ব্যবহার দেখা বার, তল্মধ্যে প্লিনি, ট্রাবো, ট্রাটিরাস্ প্রস্তৃতি বর্ণিত নিরোক্ত নর প্রকার মর্ম্মরই প্রধান। রোমের কোন্কোন্কান্কান উক্ত নরটা প্রেণীর কোন্কোন্বর্ণের প্রস্তর প্রধিত হইলাছিল, তাহার নাম ও নিদর্শন অতি কংক্ষেপেই উল্লিখিত হইল।

> Marmor Numidicum & M. Libyonm wiels মূৰ্যুৱের বর্গ উচ্ছল ও গাচ হরিদ্রাবর্ণ, কোন কোন স্থলে কমলা-জেবুর স্থার লোহিতাভও দেখা যার। কনন্তান্তিনের প্রসিদ্ধ विशास मध्यक की खर्ख ७ शाहियात्मय कीएक निवर्णन प्रशिक्षात्म । a M. Ourystium सर्वादात वर्ष नवुक ও नाना मिलिक कृष्टि বালের ভার। কটনার দলির ক্তম্ভে ইচা এথিত আচে। o.M. Phrygiam & M. Synnadicum केंदर अध्या, किंद वर्व लाव त्वस्थी करेएक क्रमणः नात्मव चाविकायकः। वस्या मरशः निष्युत्तनः एकांबांगाना चाटकः। ध्येतान Atya धाव अक्किक উशास्त्र प्राथान क्रिन, छात्रा चाकिश्व प्रश्चित्रहा (Siat. Site. i, 5, 86. 1 S, Lorenzo fuori Mura & S. Paoli fuori स्टब देशव अस्ति विस्थान । 8 M. Iasium क्रकां जान, ওলিভ কলের ভার ক্রভ ও নারা রঙের চক্রবিশিষ্ট। গ্রীকোঞ্চানিন ७ पृत्राच व्यक्षिम मिलारक देशांक निवर्णन दारी गामान । € M.Chium বর্ণ আরাশিরাম-মন্দরের জার, কিছ অপেকারত উচ্চল। বাসি-াণিকা কুনিরা ও বেন্ট পিটার্স মন্দিরে এই প্রেক্তরের পাটাভন ও सञ्जाम मिर्चिक रचना गांत । . . Basso artifica अरफक आव केन्द्रम् मान्यम् । S. Prassedes केन्द्र (की अस Rospigliosi Ossino dell' Auroran >२ किए केल प्रदेश एक आहे केलान মৰ্মানে নিৰ্মিত ক্ষমানিল। ৭ Nero antico বা M. Tannarium न्यांका बारबाद हिनातान अखदील व्हेरक नमानीक, Ara. Ocele নীৰ্মায় উপাসনাভাবে (Ohoir) ইয়ায় নিবৰ্ণন আছে। b Lapis Atracius—(शराणिय जार्जिक जारे कि नावक शांत পাওৰা বাব ৷ বৰ্গ-বৈচিত্ৰানিবত্তন ভাপতাকাৰ্য্যে ইতাৰ নমধিক ननायत्र। (नोगर्व वानिनिकात्र (Lateran Basilica) २० ही कड अकर (मार्केड निक (niches in the nave) अनि অই ভ্ৰম্ভনৰ প্ৰভাৱে গাঁডি : > The oriental Alabaster र्च onvx नायक मर्चन जाकर, प्रामाद्यांत ए जीवनक-कीकार्यो ধেবিদ নামক অনপদের নিকট হইতে রোমে জানীত रहेताहिन । हेरा चार्यच्यक अवर छारांत महश्च महश्च नवहरूत চক্রাবলী ও ভরলাতিত ভরবেখা (Marks of wavy strata) ৰুট হইবা থাকে। পালেটাইন লৈলে এবং কারাকারার সাকালারে के अच्छात्रत्र निवर्णन आहि। अञ्चित्र मानामात्र (Grapite and basalts) পাথৰ শ্ৰেণীর মধ্যে আলেকসান্তিৰাভাত Opus Alexandrinum, লাগিডিয়োনিয়াজাত Lapis Lacedæmonius ar L. pyrrho paecilus & L. psaroaius नामक (गाहिक्यर्ग अखरत्रहरू अधिक वायहात त्रवा यात ।

ঠা সকল প্রান্তব লটয়া স্থাপতাকার্যো যে সকল নিম্নবিচ্ছার আৰোগ হইয়াছে, ভাহা পৰ্যালোচনা করিলে বোধ হয় যে, ব্লোম-নগরে তিনটা বিভিন্নগুণে তিনটা বিভিন্নদেশীয় বা জাতীয় ক্ষাপভ্যবিভার সমাদর বাডিয়া ছিল। রোমনগর কাপনের প্ৰথম ক্রেক শতাক ধরিছা বে সকল অট্রালিকা নির্দ্তিত ও ভাষতে বে সকল কাম্মিক স্থাপতাকোশল চিত্রিত ক্রীরাছিল ভংসমুদারের গঠন ইট াম্বান-ধরণের : ভংপরে রোমে ঞ্রীক রঠন-প্রশালীর প্রকর্ষন হয়। সেই প্রাচীনতম কালে রোমকরাজগণ পালেটাইন শৈলোপত্নিত্ব ৰন্দিরাদি এবং অপরাপর ভানের ৰ্মনিরাদি নির্বাণকরে গ্রীক্ষেণীর ভাষর নিবৃক্ত করিয়াছিলেন। বৃষ্ণ ভাগতাবিদ্যাণের বিষ্ট হইতে রোমক্ষণাও প্তাপতাবিদ্যা অভ্যাস করে। ক্রমে ভাহারা <mark>আতীর উন্</mark>তির সজে সজে স্থাপতাবিদ্যা-বিবয়ক নানা শ্ৰীবৃদ্ধিসাধন করিয়া জাতীয় জীবনের গৌরববর্ডক রোমীরভাগতা (Roman ambitecture) নাৰে খতত্ৰ শিৱৰিভাৱ প্ৰবৰ্তন করেন। প্ৰত্নপূৰ্ব চৰ শভাবে বিট্ৰিয়াস ও সি-বিউটিয়াস; নীলোয় ছাজাকাৰে কেভেয়াস ও বেলার এবং ভোমিনিরানের রাজ্যকাল্যে ভারিছিয়াল প্রভতি নত্ত্ত আংগলনগরে স্থাপতালির দিকা করিয়া অভাতির मत्त्राच्या कडिवाकित्वर । विश्वविद्यात अवित्र-धार्मास्वरत

রোমকদিগের বিশেব গুণপনা না থাকিলেও, ইঞ্জিনিরারী কার্ব্যে জাহারা বেশ স্থাক ছিলেন। এই কারণে ছাপডাডাঙারে জত্যরকালের মধ্যে নৃতন ও বিশুদ্ধ রোমীর-প্রথার পূর্ণ বিকাশ ঘটে।

প্রথমে তৃকান্তরের Opus quadratum পাধরে রোম্লালের আচীর প্রথিত হইরাছিল। ভংপরে প্রেট্ট সার্কির প্রাচীরে অপেক্ষাকৃত কঠিন Peperino প্রস্তারের গাঁথনী চলিরাছিল। খুটপূর্ব ২র শতাবে কর্মর প্রস্তারের স্থান বৃহাদির নির্মোভানশানার্য travertine প্রস্তারের ফার বৃহাদির নির্মোভানশানার্য travertine প্রস্তারের ফারিন, খিলান প্রস্তৃতি নির্মাণ কটতে থাকে, পরে খুইপুর্বা প্রথম শতাব্যের মধ্যভাগে ভেম্পেনিরান্ মন্দিরের ও কোলোসিউম্ (Colusseum) নামক কগছিথাত অট্টানিকা প্রস্তৃতির গৃহভিত্তিও কেওরাল নির্মাণ কার্য্যে এই প্রস্তর প্রভৃত পরিমাণে ব্যবহৃত হইরাছিল।

উপরোক্ত বিভিন্নশ্রেণীর প্রস্তরসমূহ একত্র গ্রথিত করিতে রোমক রাজমিল্লিগণ বে মসলা ও সিমেন্ট ব্যবহার করিত. ভাহা অমুধাবন করিলে বিশ্বিত হইতে হয়। একপ্রকার পাথরের প্রাচীরের বা গৃহভিত্তির কোন স্থানে শুরুভার আবশ্রক ছইলে, তাহারা সেই স্থানে তদমুরূপ গুরুছের পাথরই বসাইত। পুৰ্ক্ক্থিত কোলোসিয়াম প্ৰাসাদে চাপের আবশুক্তা নিবন্ধন গার্থিকৌশলে ঐক্লপ অনেক জটিলতা দৃষ্ট হইয়া থাকে। এডব্রির সেই সমরে ইটক গাঁথনীর পরাকার্চাও প্রদর্শিত হইয়া-किन। २१ ब्रेडेश्कारिक शाहिअन ज्यानासित गृहकरन व्याव দেওৱালবিশেষে মশার বসাইবার জন্ত ত্রিকোণাকার ইষ্ট-ক্ষের পাটাতন বা অমি করা হইরাছিল। সেভারাসের সমরে ৰ ভংপরবর্ত্তী কালে স্লাবীর যুগাপেক্ষা কুদ্রাকার ইপ্টক ব্যবহৃত হটরাছিল, ঐ কুদ্র ইটকের গাঁথনি মদলার গুণে এতাদৃশ ষ্টভব্ন হইরাছিল যে, অভাপিও তাহার নিদর্শনগুলি প্রত্নতব্বিদ্-লাৰে চিত্তাকৰণ করিছে সমর্থ হইরাছে। নিরে ইট্রকনির্শ্বিত কীর্ত্তিশ্রলির একটা সংক্ষিপ্ত ভালিকা প্রদত্ত হটল :---

क्राविष हेहेक-मान বাষ কুলিয়াস সিকারের রোট্টা 88 약: 약: >⊪• हेकि এগ্রিপ্তার পাছিওন >#+ টাইবেরিরাসের প্রিটোরীরশিবির 31-34e मीरबाद कनश्रवानी •₹ >->10 টাইটালের স্বানাগার >1. ডোমিনিয়ানের প্রাসায ٦. >10 ু হাত্রিয়ানম্বত ভিনাস ও রোমের মন্দির ১২৫ 📡 নেভেরাসের আদাদ **উন্মেলী**ৰ প্ৰাকার ' 31-340

মনলা ও নিমেন্ট দারা মর্শার্থান্তরের গাঁখনী ব্যক্তীভ রোমকেরা অভাভ গাঁথনির উপরও বর্ণরের পাত (Marble liuing) बनारेए बानिए। धाहीन Concord मिन्दान গর্ভগৃহের তুলানিশ্বিত অভ্যন্তর ডিভিগ্রাচীর স্থরঞ্জিত নর্ম্বর দারা ছুসন্দিত করিবার বস্তু ভাহারা নানা জব্যের মিভিড প্রভারা প্রস্তুত করিরা দেওরালের গারে লাগাইরা দিত। 🐧 concrete coment backing লাভা, কুচাইট, মন্ত্রণত, ভফাৰত ও ট্রাজাটাইন প্রকৃতি ক্রবোর মিশ্রণে (স্বর্ধাৎ মিল্লির খরে মাহা কিছু থাকিত, ভাহাই একত করিরা) উহা প্রস্তুত হইত। কখন ক্থন গৃহভিত্তি অথবা প্রাচীরাদি এই মিপ্র মসলার পরিমাণমত ঢালাই করিয়া লইত। তদনস্তর ঐ পল্ভারার উপর মুর্যুর-পাত বসাইরা আঁক্ডীবুক্ত থাতব বন্ধনী (Clumpes of metal, hooked at the end) ছারা দেওরালগাতে সংলগ্ধ করিয়া দেওরা হইত। ৬৪ খুষ্টানে নীরোর রাজফভালে অরি-সংযোগে সমগ্র নগর ভত্তীভূত হইলে তিনি নগরবৃহিঃপ্রাচীর महनमहिक नेमार्थ (Fireproof materials) यात्रा निर्मारनव জন্ত একটা বিধি প্রবর্তন করেন, তাহাতে পোড়া ইট অধবা পেপারিণো পাথরে গাঁথনীর হাবস্তা হয়। তৎকালে পাকা রাজা নির্মাণেরও যথেষ্ঠ প্ররাস চলিয়াছিল। লাভা-সমুক্ত দুদীভূত বেসান্ট পাথরের চতুছোণ টুকুরা কাটিরা তন্থারা রাজা বাঁধান হইরাছিল। উহার উপরিভাগ বৃদ্ধাকার এবং **উভর পার্বে** থান কাটিয়া বারিপাভত বা গৃহনি:স্ত জলধারাগ্মনের প্রোনানী প্রস্তুত হর। সেই প্রাচীন ফীর্ত্তির নিদর্শন অস্তাপিও **শনিমন্দিরে**র সন্মুখন্থ Clivus Capitolinus নামক স্থানের ক্তকাংলে বিভাষান আছে।

রোমরাজধানী হইতে বিভিন্ন প্রদেশে গমনাগমনের স্থাবিধার্থ প্রাচীন রোমক-সমাজ এরপ কএকটি প্রবৃহৎ রাজা নির্দাণ করিয়াছিলেন। ঐ সকল রাস্তা যে যে স্থান দিরা রোমের প্রসিদ্ধ প্রাচীরগুলি ভেদ করিয়া গিয়াছে, তত্ত্বং স্থানে এক একটা প্রবেশবার নির্শ্বিত ছিল। ঐ সকল ডোবগরার ভর ও বিধবত হইলেও তাহাদের নিদর্শন একবারে দৃষ্টিবহিত্ব ত হয় নাই। সেই প্রাচীন কালে বিভিন্ন প্রানেশে গমনার্থ সর্বসমেত ১৯টা রাজা ভত্তদদেশাভিমুধে প্রদারিভ হইরাছিল। ভন্মধো আপিয়া, লাটনা, লবিকানা, টাইবারটনা, নোমেন্টানা ক্লামিনিরা, গাবিনা উরেলিয়া, পট্রেন্সিন, আইরেন্সিন্ ও আর্ডিরাটানা প্রভৃতি বারটা রাস্তা প্রধান। টাইবার নদী অভিক্রম করিয়া পশ্চিম ও পশ্চিমোভরাভিমুখে গিয়াছে, সেই সেই পথের সন্মূপে নদীর উপর এক একটা নেতু নিৰ্শ্বিত হইরাছিল।

উপরে বে রোমের সীমান্ত প্রান্তিরের উদ্রেখ করা হইরাছে করণে রোমক ইতির্ভের জনরিক্ষা রোমুলানের কবিত প্রাচীরের (Wall of Bouadins) নিকর্পনই সর্বাদেশক আচীন। তৎপরে রোমপতি সার্বিরাদ্ টালিরানের প্রবৃহৎ ও অন্চ প্রাচীর (Wall of Servius Tullius) উল্লেখবোগ্য। এই অতীত কীর্ত্তির ব্যক্তিনি কর্মানিক অধুনা ভূমিগর্ভ হইতে বাহির হওরার সাধার্ত্তের মৃত্তি ক্লাকর্ত্তাক করেনীর ও প্রোবাশ্য প্রাচীর (Wall of Aurolius and Probus) নির্ন্তিত হয়। তদনন্তর ৮০০ খুইালের মধ্যে প্রবিধাত ওরেনীর ও প্রোবাশ্য প্রাচীর (Wall করেন। তৎপরে ১০০০ ইতিত ১০৪০ খুইালের মধ্যে নবীর পশ্চিমক্লবভাঁ। ভাটিকানান্ ও জেনিকিউলান্ পর্কাত পরিবাদ্য ব্যাস্থাট্যণ এক স্বন্ত ও স্থাইৎ প্রাচীর নির্দ্তাণ করাইরা নগরের পশ্চিমপূর্ণক রোমস্থাট্যণ এক স্বন্ত ও স্থাইৎ প্রাচীর নির্দ্তাণ করাইরা নগরের পশ্চিমপূর্ণক করিবাছিলেন।

স্থাপত্যবিভার প্রভাব-বিভারের বঙ্গে সঙ্গে রোমকগণ

ক্রিরিক্সিরও যথেই উরতিসাধন করিয়াছিলেন। রোমক-প্রকাতত্ত্ব
ও রাজতত্ত্বের আধিপত্যকালে রোমনগরে যে সকল অন্তত্ত
কীর্ত্তিক্ত স্থাপিত হইরাছিল, তাহার ভরাবনিই নির্দান অভাপিও
স্থলকিত থাকিরা প্রাচীন নিরের গৌরব জ্ঞাপন করিতেছে।
এতত্তির মৃতিকাভ্যম্বর হইত্তেও প্রকা ও রাজতত্ত্বীর উক্ত বুগছরের
পূর্ক্বত্তা ফালেরও যথেই নির্মিদর্শন পাওয়া গিয়াছে। ঐ সকল
দ্বরের প্রাচীনত নিরুপণের কোন বিশেব প্রমাণ পাওয়া যার না।

श्वारिकोरेन ও এक्ट्रेनिनाम् विखारितत्र मास्तीत्र धाठीरतत्र দ্মীপে ও তলদেশে প্রাচীন ব্রোঞ্জ নুগের চক্মকী নির্দ্ধিত যুদ্ধান্ত ও চাক্লচিত্ৰসম্বলিত বিশেষ বিশেষ মুৎপাত্ৰ নিহিত ছিল। ১৮৭৪ খুষ্টাব্দে একুলাইন পর্কতোপরিত্ব স্কুরুহৎ গাল্লিরেনাস-খিলানের সন্নিকটে মৃত্তিকা মধ্য হইতে একটা প্রাচীন সমাধি-প্রাঙ্গণ (neoropolis) আবিষ্ণত হইয়াছে। উহাতে প্রাচীন ফিনি-कीत वा हें प्राचानमिरगत नाना ध्रकात निज्ञपूर्व नमाधिएछ छ मुद्रशाकांनि यद्यष्ठे शक्तिमार्ग विश्वमान আছে। কতক্তালি দথ মুৎপুত্তলির প্রতিক্ততি মিশর, আসিরীয়া, প্রভৃতি প্রাচ্য জনপদসমূহের প্রাচীন পুত্নীর অভ্নকরণে নিশ্বিত বলিয়া অনুমিত হয়। এই সকল নিঘৰ্শন দেখিলে স্টাই প্রতীয়মান হর বে, ইতিহাসোক্ত প্রাচীন রোমকজাতির পুর্বেও এখানে আর একটা প্রাচীনতম ভাতি বাস করিত। ডিওন কেসিরাসের শেখনী হইতে জানা যার, 'রোমা কোরাড্রাটা' স্থাপিত হইবার পূর্বে পালেটাইন শৈলে আরও একটা নগর বিভয়ান ছিল।

প্রাচীনযুগের কীর্ত্তি ও বৃতিচিক্সমূদের বিশেব উল্লেখ নিআরো-

জন ; কেন না, ভাহার কোন ধারাবাহিক ইতিহাস উত্থানের উপান্ধ নাই। নোক্ষকাতির ইতিবৃত্তের প্রারম্ভ হইতে বে স্বল কীণ স্বৃতির নিদর্শন অভাপি রক্ষিত রহিরাছে, অথবা প্রায়ন্ত তত্ববিদ্গণের চেঠার সৃত্তিকাগর্ভ হইতে আবিষ্কৃত হইরাছে কিংবা কিংবাজীপরস্পার বা ঐতিহাসিক আখ্যান বাহা আজিও লোক-সমাজে প্রচারিত রাখিরাছে, নিমে ভাইারই সংক্ষিপ্র বিবরণ উল্লিখিত হইল; ঐ সকল পবিত্র অভীত কীর্তিসমূহের প্রভ্যেকটীর আমূলর্ভান্ত সকলন করিতে এক একথানি স্বন্থহৎ গ্রন্থ হইরা পড়ে।

भारतक्षेत्रिय रेनामानिक कीर्तिनिवर्णम ।

সর্বপ্রথমে পালেটাইন্ শৈলোপরিত্ব রোমা-কোরাড্রাটার 'রোম্লানের প্রাচীর' উলেখযোগ্য। এই প্রাচীর-পরিবৃত্ত বিত্বত ভূগগ্রের মধ্যে কিউরি ভেটারিস্, সেশেলাম্ লাহাম, ফোরাম রোমানাম্, নগরধার, ভূগিটার ভিউরের মন্দির, সার্কাস্ মাক্সিমাল, প্রভৃতি বিভ্যান রহিয়াছে। ভদনস্তর রোমীয় রাজমূরে (৭০০ হইতে ১০৯ গুইপুর্ব্বাজ) সাক্ষীয়ালের প্রাচীর প্রবং হুর্ম (agger of Servius), ভূগর্ভত্ব-জলনালী (cloace), টালিরানাম্ বা মামেটাইন কারাগৃহ (Tullianum or Mamertine prison), বক্ষরপ্রাচীর (the great quay wall) প্রভৃতি প্রতিতিত হর। কোরাম্ রোমানাম্ ও তাহার চতুর্দিকে যে কঞ্জিট পরিত্র মন্দির ও অট্টালিকানির চিক্ বিভ্যান আছে। নিরে তাহার নাম্যাত্র উদ্ধৃত করা গেল:—

I Basilca Julia, ইহার নিকটে Tabernæ Veteres নামক দোকানপ্রেণী ও তাহার অদূরে Tabernæ Argentariae বা সেকরাপটা এবং Tabernae Novæ, 2 Altar of Saturn, 3 Altar of Vulcan, 4 Curia of Diocletian, 5 Comitium, 6 Original and existing Rostra, 7 Grescostasis, 9 Basilica Porcia, Basilica Æmilia, 10 Temple of Janus, 11 Umbilious Romæ, Milliarium, 12 Temple of Saturn, 13 Vicus Jugarius, Vicus Tuscus, 14 Temple of Castor (এখানে সেনেট ও ত্রিবিউনাল সভার অধিবেশন হটত) ইহারই পার্বে Tribunal Aureliam প্রতিষ্ঠিত। 15 Temple of divus Julia, Temple of Vesta, 16 The Regia or the residence of the pontifex maximus. 17 Palace of Caligula, 18 Atrium Vestee, 19 Arch of Fabius, 20 Temple of Faustina, 21 Temple of Concord, 22 Temple of Vespesian, 23 The Perticus xii. Deorum Consentium 24 Arch of Severus.

25 Temple of Jupiter Victor, 26 Statue of Oybela, 27 Temple of Jupiter Stator, 28 Demus Tiberians, 29 House of Livia 30 Palace of Augustus and Area Apollinis, 31 Temple of Victory, 32 Flavish Palace, 32 Demus Gelotiana, 33 The great Stadium, 34 Hadrian's Palace 35 Palace of Severus, 36 Vetia and Germalus, 37 Summa Sacra Via নামৰ প্ৰের বাবে অগান্তান বাবা সংক্ত Ædes Larum & Secollum Larum. 38 Velabrum,

काशिक्षांनाहेन न्यानाशिक्ष वाहीन कीर्कि ।

1 Temple of Jupiter Capitolianus, 2 Tabularium, 3 Forum Jullia 4 Forum of Augustus, 5 Forum Pacis, 6 Forum Nerva, 7 Forum of Trajan. 8 Trajan's column, 9 Temple of Trajan, 10 Temple of Fortuna Viritis, 11 Porticus Octavise, 12 Temple of Neptune 13 Temple of Venus and Rome. এই সকল মন্দিরের সংস্পর্লে আরও অনেকগুলি মন্দির আছে। উহা-দের প্রত্যেক্টীতে ভিন্ন ভিন্ন দেবমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত দেখা বার।

কিলিয়ান শৈলন্থিত ধ্বন্ত ন্ত,পরালি পর্যাবেক্ষণ-পূর্কক বুন্সেন প্রভতি প্রত্নতত্ত্ববিদগণ এখানকার অট্রালিকাদির বেরূপ পরিচর প্রদান করিয়াছেন তাহাই প্রকৃত বলিয়া সাধারণে গৃহীত হই-রাছে। নিমে তাহার সংক্রিপ্ত ইতিবৃত্ত প্রদত্ত হইল :--> ভেটি-টিয়াসের প্রাসাদ বেস্থানে নির্শ্বিত ছিল, তচপরে সম্রাট কোমোডাস একটা সংস্কৃত ও পরিবর্দ্ধিত প্রাসাদ নির্মাণ করাইরাছিলেন। প্রাসাদ হইতে স্থবিখ্যাত 'কলোসিয়াম' বাটকান বাতানাতের জক্ত সুভঙ্গ ছিল। এখানকার মিনার্জা-মেডিকার মন্দিরের গঠন দেখিরা মনে হর, উহা কোন সমরে কোন প্রাচীন প্রাসাদের त्रामाशास्त्रत्र व्यरमवित्मद हिन । ये त्राम छवतम मिनार्छ। स्वरीत একটা প্রতিমূর্ত্তি ছিল, পরবর্ত্তিকালে তথার সেই মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা क्रिया (मरीत नाध्मरे मिन्दात्र नामकत्रण स्टेबाट्स) এडित শালাষ্টের বাসভবন, সম্রাটু টাইবেরিরাস্ ক্লভ সেনানিবাস (Praetorian camp), ২৭ খুষ্ট পূর্বাব্যে এগ্রিয়া বিনির্দ্মিত अञ्जानक 'Pantheon' ध्यानाम वा (मवमन्मित्र ও छंৎनानग्र স্থুবৃহৎ থালান (Thermae of Agrippa) এবং Firemen's barracks, Golden House of Nero ও জুলিয়াস সিজার প্রতিষ্ঠিত Septa Julia প্রভৃতি সারও বহুতর স্ট্রালিকার निवर्णन शांख्या शिवादक्। त्यरवादक ग्रंटक् व्ययस्य Comitia Conturiatan मछा-निर्याह्नार्थ नगडिश्रम् (vote) क्व रहेफ। शतका नमाहेशराज बाजकारण के बारन की छान-विकरतंत्र गुक्का रहा।

রোদের প্রাচীন ক্রীড়ামগুপ ও রক্ষানর ন্যুট্র বিষরণ প্রসক্ষনে উলিখিত হওরার এখানে আর বিশেবরূপে আগোনচিত হইল না। সার্কান্ মান্সিমান্, সার্কান্ স্লামিনিরান্, কালিগুলার সার্কান্, হান্তিয়ানের সার্কান্ প্রভৃতি দুইাগুলালে বিরচিত এম, এ মিলিরান্ লেপিডানের রক্ষালরের উল্লেখ করিছেম। ১৬—১২ খুইপ্রান্ধে পশ্চি প্রস্তর্নীনির্ভিত রক্ষমক প্রতিষ্ঠা করেন। তিনান্ ভিকুল্পের মন্দিরের সহিত এই রক্ষালর সংলগ্ধ ছিল। ইহার পর মার্সোনের রক্ষমক ১৩ খুইপ্রান্ধে বিরচিত হর। এত্তির ক্লোনিরশ্ প্রভৃতি বিভিন্ন আন্দিখিরেটারের নির্দান রোমরাম্বানীতে দৃটিগোচর হইরা থাকে। [রক্ষালর বেখ।]

প্রাচীন কীর্ত্তির গৌরববর্জক হইলেও আমরা রোদের ইতত্ততঃ বিভিন্ত খিলান, তত্ত, সমাবিত্তত ও সেতু প্রভৃতির বিভ্ত আলোচনা করিলাম মা। ১৯৬ ধৃ ইপূর্জাকে কোরাম ন বোরারিরাম ও সার্কাস মাজিমাসের বিভ্ত ভোরব্রার (Triumphal Arches) স্থাপিত হইরাছিল।

প্রান সম্পানের অভ্যানরে প্রার ৪র্থ হইতে ১২ শ শতাক मत्था नानाकात्न व हेथर्य-मन्तित প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। क्ट्रीकात গোলাকার ধর্মনদির রোমের তাৎকালীন স্থাপত্যশিলের চরম নিদর্শন। ইহার পর অর্থাৎ ১২০০ হইতে ১৪৫০ খু होस পর্যান্ত রোমীর শিরের সমাক্ উমতি সাধিত হর। এই সমরকে ঐতি-হাসিকগণ কসমতিবৃগ (Era of Cosmati) বলিরা থাকেন। কারণ ঐ যুগে কস্মতিবংশীয় ৭ জন উপযুক্ত কারিকর বংশামুক্রমে রোমের নানা মন্দির স্বন্ধ শিরচাতুর্যো পূর্ণ করিয়া গিরাছেন। রোমের ধর্মান্দির সন্মুখন্ত মঞ্চপ (Campanili) ও ধর্মবাঞ্জ-গণের প্রাসাদগুলি একবারে শিরনৈপুণাহীন নহে। দেশীর শিরের পরাকাভাত্তরপ সম্টি নিরোর রাজ্যকালে মোটিয়াস লটারানাস্কত 'লেটারন্ প্রাসাধ'—নির্বিত হর। (সম্রাট ক্মস্তাস্তাইনের রাজ্যকালে ভেটিকান প্রাসাদ গ্রেহর পত্তন হইরাছিল। পরে আছুমানিক ১২০০ খঃ পোপ ৩র ইনোলেন্ট **७ भटत** >२११ — >२৮० थ होत्स ७व नित्कानाम वह य**ट छे**हान আকার পরিবর্ত্তিত করিয়াছিলেন ;) কুইরিনাল-প্রাসাদ-ইহাই বর্তমান ইতালীপতি ইমাতুএলের রাজভবনক্সেল গুলীত रहेबाटह । ১৫৭৪ व्होटन एव त्यानवी ज्ञामिनिक <u>ल्लाकि</u>डव বারা উহার কার্যারম্ভ করান, কিন্তু পরবর্ত্তী পোপগুণের অধি-কারে স্টানা ও মদার্গা নামক স্থপতিদিলের বারা উত্তান কার্যা नवांचा रुव ।

স্থোরেটাইন বুগ।

১৪৫০-১৫৫০ গৃত্তীক্ষ পর্যন্ত রোমের ক্লোরেন্টাইন বুগ।
এই সমরে মিনো লা কিলোলে বা Mino di giovanni,
Bramante, Baldassare Peruzzi প্রভৃতি প্রসিদ্ধ স্থপতিগণের আবিজ্ঞার ইইরাছিল। ইহাদের জীবদ্ধশার রোমীর-শিল্প
ক্লাবিদ্যার শীর্ষদান অধিকার করে। ইহার পর জিগ্নোলা
(১৫০৭-১৫৭০), স্কার্লো মদাণা (১৫৫৬-১৬০১), বার্ট্রিনি
(১৫১৮-১৯৮০), কার্লো ফণ্টানা (১৬০৪-১৭১৪ খুঃ) প্রেভৃতি
ক্লাজিগণ স্থাপত্যবিভার উৎকর্ব সাধনে অপ্রসর হইলেও
ভাহা রক্ষা করিতে সমর্থ হন নাই। তথন রোমবানী স্থাপত্যসৌল্ব্রা বিশ্বত হইরা মাইকেল আজিলোর চিত্রনৈপ্রণ্য মোহিত
হইতেছিলেন। তৎক্তে স্থক্ষ রাক্ষেন, কনিষ্ঠ আণ্টানিও
হা সালালোকাক্, সান্ধোভিলো প্রভৃতি চিত্রকরগণ (artist)
আন্ত মানামত করনা চিত্রে প্রাসাদ নির্দ্বাণ করার প্রাচীন স্থাপত্য
ভিত্রের অবসাদ ঘটিয়াছিল।

वर्खमान युग ।

ক্লোরেন্টাইন্ যুগের জবসানে ধারে ধারে কএকজন স্থপতির জভাদর ঘটিলেও চিত্রবিদ্যার প্রাধান্য ও উৎকর্ষতা নিবছন রোমক স্থলশিল্লের পরিবর্তে স্ক্র কলাবিদ্যার আশ্রর গ্রহণ করিবলা। সঙ্গাঁত শাস্ত্রের ও চিত্রবিদ্যার যথেষ্ট আদর বাড়িতে লাগিল। নানা বাছ্যম্ম প্রস্তুত করিয়া রোমকগণ মোহন বাশরী নিনাদে জনসাধারণের চিত্ত হরণ করিয়া লইলেন। আর কেহ প্রাচীন স্থাপত্য শিল্লের পক্ষপাতী রহিলেন না। এই সময়ে যে সকল অট্টালিকা নির্দ্ধিত হইয়াছিল; তাহা ক্ষণকার ও শ্রীহীন।

খুইায় ১৭শ ও ১৮শ শতাব্দে রোমকদিগের পছল্দ করিবার শক্তি লোপ পার। এই সমরে Cosmati বা Renaissance বুগের শিরচাত্র্য্য আলে অট্টালিকাদি পরিপোভিত করে নাই—সামাজরূপে অট্টালিকাদি প্রথিত হইলেও তাহাতে বাসিলিকাসমূহের সরল গাজীর্য্য রক্ষিত হর নাই। ১৯শ শতাব্দে উহার কতক পরিবর্তন দৃষ্ট হইতেছে। ১৮৭০ খুইালে রোমরাজ্ঞধানীক্ষপে পুনর্গহীত হইবার পর, রাজকর্মচারিগণ স্থাপতাশিরের উন্নতিসাধনে বন্ধপরিকর হন। কোসোপরি স্থাপিত Cassa di Risparmio নামক প্রালাদ ও টাইবার নদীতীরম্ভ ক্রকটী অট্টালিকা প্রালাক্ষিত হইরাছে। পিরাজ্ঞা নিকোসিরার একটী অট্টালিকা রামান্টের পালাজ্ঞা গিরোল প্রালাদের এবং বিপ্রত হেটেল ভিনিসের একটী শুন্দর প্রালাদের অফ্রনপ প্রাণার বিশ্বেত হইরাছে। এতিজ্ঞার ব্যালাদের অফ্রনপ প্রাণার বিশ্বেত হইরাছে। এতিজ্ঞার বর্তমান রাজপুরুষগণনের বড়ে

S. Paolo fuori le Muraর বাসিদকা প্রভৃতি প্রাচীন কীর্তির জীর্বসংস্কার সাধিত হুইতেছে।

এখানকার নিউজিয়ন ও চিত্রমন্দির (galleries) দেখিবার জিনিস। নিউজিয়ন গৃহে ভাঙ্কর নির্মনেপুণাপূর্ণ প্রতিস্ক্তিসমূহ এক চিত্রমন্দিরে নানানেশীর স্থলসিত চিত্রাবলী অন্ধিত রহিয়াছে। বিভারতির প্রতিজ্ঞাস্থতক এখানে কর্মী স্থান্দর পাঠাগার নির্মিত ইইয়াছে। প্রতালার দেখ।

ছামবিধি ও সাহিতা।

রোমক্জাতি সভ্যতামার্গে আরোহণ করিরাই সভ্যজাতির গৌরবজ্ঞাপক কতকপ্তলি রাজবিধির প্রবর্ত্তন করিরা বান, উহাই ইতিহাসে "Roman Law" নাম পরিচিত। প্রথমে পেট্র-সিরান, গ্লিবিয়ান ও ক্লারেন্ট এই তিনটা বিভাগে রোমকলিগকে বিভক্ত করিরা রাজশাসনপ্রথা প্রচলিত হইরাছিল। যথন রোমীর সৌভাগামার্গুও বিমলজ্যোতিতে মধ্যগগনে আসিরা সমুপস্থিত হইয়াছিল, তথন আগান্তাস্কুন্তিত রাজনীতি রুরোপীর সমগ্র সভ্য জগৎকে আলোকিত করিতে সমর্থ হইয়াছিল। কমিসিরা, ট্রিউন, মেজিট্রেসি, প্রেটর, কুইইর প্রভৃতি রাজবাবয়ামুসারে রোমরাজ্য শাসন করিয়াছিলেন। সেই রোমীয় জ্রিম্পুত্তক আজিও সংস্কৃতরূপে সমগ্র মুরোপীয় সভ্যজাতির শাসনপ্রকৃতিতে বিরাজিত রহিয়াছে।

রাজবিধিপ্রণয়ন সাপকে রোমীয়-সাহিত্যের (Roman Literature) অভ্যাদর হয়। খৃষ্টপূর্ম ২৪০ হইতে ৮০ অব্ধ মধ্যে লিভিয়াস আন্তোনিকাস, নিভিয়াস, প্রোটাস, ইয়িয়াস, পোর্সিয়াস, কেটো, টেরেন্স, লুসিয়াস, প্রভৃতি আবিভূতি হইয়াছিলেন। বিভীর বুলে অর্থাৎ ৮০ হইতে ৪২ খৃষ্ট পূর্ব্বান্দের মধ্যে সিনিয়ো, সিব্লার, হটেনিয়াস, ও সালাই, স্ক্রেসিয়াস্ ও কাটুলাস্ প্রভৃতি প্রেসিছ বান্মিগণ ক্ষমগ্রহণ করিয়া রোমীয় সাহিত্যের উরভি সাধন করিয়া বান। তদনস্তর অগাইান যুগে (৪২ খৃ: পৃ: হইতে ১৭ খৃ: অ:) তার্ক্রিল, হোরেন্স, টাইবুলাস, প্রোপার্সিয়াস, ওভিন্ন প্রভৃতি ক্রকবি ও ঐতিহাসিক লিভি প্রায়্ত্র ভ্রন। ইহার পর ১৭—১৩০ খুইান্সের মধ্যে টাসিটাস্, ভূতিনাল, সেনেকাছয়, সুকান, কুই নিলিয়াস্, মার্লাল, ভালেরিয়াস্, মার্লিয়াস্, মার্লাল, ক্রিমাস্ক্রিমাস্, স্লালাররাস্, মার্লিয়াস্, মার্লাল্য, ক্রিমাস্ক্রিমাস্, স্লালার, প্রিনি প্রভৃতি বহু ঐতিহাসিক, পদার্থ-বিন্দ, করি সাহিত্য লেখক ক্ষমগ্রহণ করিয়াছিলেন।

ট্রাজান ও হাজিরানের রাজ্যাবসানে রোমক-সাহিত্যরও একরণ অবসান ঘটে। ক্জিনালের মৃত্যুর পর বৃষীর ২র শতাব্দে ক্লেটেনিরান্ অলান গেলিরান্; ৪র্থ ও ৫ম শতাব্দে ডোনেটান, নার্জিরান্ ও মাক্রোবিরান্ নাহিত্যভাগুার অলম্বত করিয়াছিলেন।

ক্রোনহরণ (जी) হরিভাল। (রনেরসারন•) **(ज्ञाब्दर्व (११)** जाबार स्वः । : क्षाबाक । া ি "বেশপুন্দ শরীরে মে রোমহর্বন্দ জারন্তে।" (গীড়া ১া২৯) **दिश्रक्ष**ण (ज्ञी) त्राज्ञाः वर्षगः। > त्रामाण । (व्यवह) प्राचन द्वांतर स्वंगर स्वादः। (वि.) २ त्वामाक्क्यः। "नःवानिमम्द्रविनमङ्ख्यः सामर्थनम् ।" (नेखा ১৮।१८) (११) ७ २७, हेनि ब्रामस्टरवन्न भिरा। [®]অক্স তে সৰ্বন্ধোষাশি বচনা ছবিভানি বং। ৰৈপায়লক ভগৰংশ্বতো ৰৈ রোমহর্বগঃ। ভৰন্তমেৰ ভগবান্ ব্যালহার খবং গুড়ো ।" (কুৰপু > খা:) ्[स्त्रांमहर्वेष भेग (४४ ।] ৪ বিভীতকরক। (বৈশ্বক্ষনি •)

রোমাঞ্চিত। রোমাধ্য (রী) রোম ইতি আখ্যা বক্স। শান্তবুলবণ। द्वाचाक (११) ताबार चकः **छ**न्गमः। तामस्र्व। हेरा একটা সান্বিকভাব।

ব্লোমহ্যিত (নি) রোমহর্ব লাভার্থে ইডাচ্। সলাভপুরক,

"ক্তম্ভঃ বেদোহণ রোমাঞ্চঃ শরক্তকোহণ বেপপুঃ। বৈবর্ণ্যমশ্রপার ইত্যাথে সান্ত্রিকা: নৃতাঃ 🗷 (সাংদং অ১৬৬) হর্ষ, অমুক্ত ও ভয়ামি হইতে রোমাঞ্চ হইয়া থাকে। "হর্বাছুতভরাদিভ্যো রোমাঞো রোমবিক্রিয়া।" (সাহিত্যদ• ৩ পরি•)

রোমাঞ্কী(ন্) (পুং) নাগভেদ। বোমাঞ্চিকা (স্ত্রী) রোমাঞ্চ উৎপাছদেনাস্তান্তা ইতি রোমাঞ্চ-र्ठन्। क्लखीवृका (वाक्रनि•) রোমাঞ্জিত (বি) রোমাঞ্চ: বঞ্চাতোৎক্ষেতি, রোমাঞ্চ (তদত সঞ্জং তারকাদিভা ইতচ্। পা (়া২৷৩৬) ইডি ইতচ্। জাতপুলক, রোমাঞ্বিশিষ্ট, পর্যায়—ছষ্টরোমা। (ত্রিকা•) "স চ শান্তিৰ্গতে ৰহেন পৰিভূত্তেন চেভসা। হৰবোষাঞ্চিততত্ব: প্ৰবিবেশালমং গুৱো: ॥"

(মার্কণ্ডেরপু• ১০০।২০)

রোমান্ত (খং) হত্তের উপরিভাগ। ব্রোমান্ত্রীস্কুর (পুং) জরবিশেব। হামজর। এই করে প্রতি त्वांमकूरण हाम निर्मेष्ठ हरेना थाटक। हेराए कर ७ भिरखन আধিক্য এবং কান ও অক্লচি হয়। "রোমকুপোরতিব্যা রোগিণাঃ ক্**ষ্**ণিভ্রজা:।

কাৰ্যারোচকৰংকুকা রোমান্ড্যো অরপূর্বিকা: 1" (মাধ্রনি•) <u>(ज्ञास्त्राली (जी) (जातार जानी-व्यक्तिमा) वदःगित । (अस्माना)</u> द्याबार जानी। २ द्यामावनी।

"নিৰিনিংক্ষেপস্থানভোগনি জিলাৰ্মিৰ বভা নিৰিভা। লোভৰতি তব তনুদরি অবনভটাছুপরি রোমালী।" (वाकागराम्ही ०००)

(ज्ञांभाग् (प्र) ज्ञागविभिष्ठे हे ज्ञागन्-मान्। शिक्षान्। (त्रामान् विक्रेभी(म्) (प्र) त्रामान् विव विक्रेनी व्यक्त क्लावन-লেশপ্ৰসিদ কু**ভী**ঞ্জ। (রাজনি•)

হরাহাবলী (জী) রোমাং আবলী 🖟 নাভির উর্জ লোমশ্রেণী, পর্য্যার—ক্ষোমলভা, রোমালী, লোবদান্ধি। এই রোমার্শী বৌৰলের আরম্ভে হইরা থাকে।

"मीताकीत्रम्भाभका व्यवगरदाः मीति क्यूनस्त्रवरताः শ্রোত্রে লয়নিদং কিবৃৎপলনিত্তি জাতৃং করং ছন্ততি। নৈৰালাভুৱশক্ষা শলিমুৰী রোমাৰ্লীং গ্লোহডি প্রাস্তাসীতি মূল্য সধীমবিদিতপ্রোণীভরা পৃক্তুতি 🗗 (রুসমঞ্জরী) **(ज्ञीयां अनुक्रमा (ज्ञी) सामाजवर क्रमपञाः। विक्रिवेद्री पूर्ण**ः রোমোদগতি (ত্রী)রোমাং উদদত্তিঃ উদদন:। রোমাঞ্চ। **(त्राट्यामग्रेश (प्र) (त्रावान्त्रभमः । (त्रामाक । ८व्राट्याट्यम** (प्रः) स्त्राताम्खनः। स्त्रामाक। "ক্ষুন্ধ্রোৰোডেদস্তরলভরভারাকুলদৃশো ভরোৎকশোভূকজনযুগভরাসকস্প্রভাঃ 🗗 (প্রবোধচজ্রো 🕒 ১ 🖼 •) 🕟 রোশ্বিল্লবেক্ষটবৃধ, তর্কভাষাভাৰপ্রণেতা। রোয়াফ (আরবী) গৃহের ছাদ। (দেশল) গৃহের চতুলার্শহ চত্তর। বোর্যণ (क्री) অভিশয় শব্দ, ভীষণ শব্দ। রোক্তক (क्री) জনপদভেদ।

বোরদা (জী) क्रम-यঙ্রোরদ-জ-টাপ্। অভিশন রোদন। Cরাল (পুং) > পানীয়ামলক। (শক্ষত) ২ ক্ষাত্রগুরী। ৩ ভাগীশপত্র।

(রাল্ডেব (পুং) একজন চিত্রকর। (কথাসরিৎসা • ৫০।৩৭) ব্রোজ্বর্ প্র) রোতীতি র-বিচ্, রেটি কুম্মন্ সন্ সর্তি স্থানাৎ স্থানান্তরং গচ্ছতীতি রো-লখ-অচ্। এমর। (ত্রিকা_ল) (ब्राम्थम (ब्री) बेह्य।

(त्रामनाहे (शावनी) कारनाक्यानाव बादका ।

ব্লোপন আব্লা (বেগম), মোগলসমাট শাহলহানের কনিষ্ঠা कक्का। ১৯৬৯ बुढाएस मिक्कीतासधानीएकरे छात्रात मुख्य हत्र এবং পাহজাহানাবাদের স্বরচিত্ত রোপন স্বারা উভানে জাহার गमाधि विश्वमान चाटक्।

द्रांगन छ स्कोला ब्रख्य कन, नगरे सरका शास्त्र जयग्रीक <u> अक्यन अमत्रोहः। देशत्र अकल नात्र आक्रम ही हिन ১१२२ थः</u> मिडी बामधानीव त्याणवारी ब्यूबाब जिल्हें त्यात्नवी मन्जिप तिर्वात स्त्राहेबाहित्सम्। स्वाहश्याः ३१२६ स्ट्रीटन हेनि मुनन- মানগণের শিক্ষার্থ দিল্লীর কালিপাড়ার নিকটে মস্ক্রিম্ব নির্মাণ করান। উচা রোশন উন্দোলা মসক্রিশ্ নামে থ্যাত ও সোণার পাত দিরা মন্তিত ছিল। এই বিজ্ঞামন্দিরের ছাদে দীড়াইরা পারক্তপতি নাদিরশাহ দিলীবাসীর "হত্যাকাপ্তসাধন করিতে আদেশ দিরাছিলেন। ১৭৩২ খুরাকে রোশন উদ্দোলার দুকু বটে। রোশন উদ্দোলা (নবাব), হার্ম্বরাবাদের নিক্রামের প্রাতা, ইনি স্থান্দিত ও স্বাচারী ছিলেন। ১৮৭০ খুঃ তাঁহার মৃত্যু হব। শর্মানচৌকী (পারশী) সানাই প্রস্তুতি বন্ধ্রায়ে ঐক্যাতান বাদন। নহবৎ বেমন এক্ছানে পাটাতনের উপর বসাইরা বাদিত হর, রোশনচৌকী সেইরপ বর্ষাত্রা বা দেব্যাত্রার সন্মুধ্বে একটা চৌকীতে বাজাইতে বাজাইতে গমন করে। রাজারা বিশ্রামার্থ অন্তঃপ্রে গমন করিলে সেই গৃহহর চতুর্দিকে রোশনচৌকী বাজান হয়।

বোশেনাবাদ, বালালার ত্রিপুরাজেলার অন্তর্গত একটা ভূসপারি। ভূপরিমাণ ৫৮> বর্গমাইল। ৫০টা পরগণা লইয়া এই বিভাগ গঠিত। পার্জভাত্তিপুরার রালা ইহার অধিকারী। ইংরাজগবর্মেন্টকে বার্ষিক ১৫৩৬> ্ টাকা রাজ্য দিতে হয়।
রোশেনীয়া, মুসলমানধর্ম-সম্প্রদারভেদ। বরাজিদ্ আন্সারী নামক জনৈক মুসলমান সাধু ইহার প্রবর্জক। তিনি পীর-ই-বোশান নামে আফগান সমাজে পরিচিত ছিলেন।

বয়াজিদ কান্দাহার সীমান্তর্বতী কানিগুরম জেলার বুমুদ্-বংশীয় আফ্গান জাতির মধ্যে আবহুলা নামক একজন বিঘান ও স্বধর্মনিরত মুসলমানের পুত্ররূপে জন্মগ্রহণ করেন। পিতার যদ্ধে উপযক্ত শিক্ষা লাভ করিয়া তিনি গর্বিত হইয়া উঠিলেন এবং অর্থচিন্ডায় অখব্যবসারী হইয়া সমরকল রাজ্যে গমন করেন। এহান হইতে হিন্দুস্থানে প্রত্যাবর্তনকালে কালিঞ্জরে মোলা স্থলেমানের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। তখন হইতেই তাঁহার ধর্মবিশ্বাস পরিবর্ত্তিত হইতে থাকে। পিতা পুত্রের এই অধর্মাচরণে ক্রম হইরা তাঁহার গাত্রে অস্ত্রাঘাত করেন ও পুত্রকে ইসলামধর্মের আদেশসমূহ পালন করিতে প্রতিশ্রুত করাইরা লন, কিন্তু তাহাতেও পুত্রের বিক্লুত চিত্ত পরিবর্তিত হর না। কভত্বান আরোগ্য হইবামাত্র তিনি জন্মভমি পরিত্যাগ করিরা নিন্গহর নামক ছানে আসিয়া ধর্মত বিভারে প্রয়াস পাম। তিনি হুমায়্ন পাতশাহের পুত্র মীজা মহত্মদ হেকিমের সমসামরিক ছিলেন। মোগলসমাট অকবর শাহের সমকালে ১৪৯ হি: ডিনি প্রাধান্তলাভ করিরা ৰীয় ধর্মত ছাপন করেন। বাঁ দৌরান ইহার পূর্বে কাবুলে মীর্জা মহক্ষৰ হেকিমের সভার মিঞা বরাজিদের সহিত বিচারে ত্বংকালীন মুসলমান সাধুগণকে পরাত্ত হইতে দেখিয়াছিলেন।

व्यवान, वशासिन भाठेगानात्र वर्गविष्ठामध निका करतन नाटे, কিছ পূর্বজন্মের স্কৃতিগুণে দর্শনাদির মীমাংসাত্র জীহার ক্ষাত্রে ছিল, তিনি কোরাণের প্রসিদ্ধ বাক্যসমূহের অতি সরল ব্যাখ্যা করিয়া সাধারণকে বঝাইয়া দিতেন। তাঁহার প্রতি-কথার জ্ঞানগর্ভ উপদেশ বিরাজ করিত। তিনি 'আত্মবাদ' প্রচার করিয়া গিরাছেন। তাঁহার মতে বে হিন্দু আত্মার স্থন্নপ ব্ৰিয়াছে, সেই ব্যক্তি মুসলমান স্বপেক্ষা পূজা। যে ব্যক্তির আত্মন্তান উপস্থিত হয় নাই এবং যে আত্মার অবিন-খরত্ব ত্রীকার করে না, সে অজ ; স্থতরাং সেই অহতারবিসূত্ বাজির ঐশিক ঐশর্যোর কোন অধিকার নাই। ঐরপ অজ ও জীবনাত ব্যক্তির বংশধরেরাও ধখন মৃতবং আচরণ করিবে, তথন জীবিত ৪ জানীরাই ঐ সম্পত্তির প্রক্লত উত্তরাধিকারী বলিরা গণ্য হইবে। এই সংস্কারের বলবর্ত্তী হইরা তিনি অনেকগুলি অজ্ঞলোকের প্রাণ সংহার করিতে আদেশ দিয়া ছিলেন এবং তিনি ও তাঁহার পুত্র চতুইর প্রথমে দল্লাবৃত্তির দ্বারা আমীর ওমরাহ প্রভৃতি ধনাত্য মুসলমানগণের যথাসর্কান্ত হরণ করিয়াছিলেন। লব্বসম্পত্তির এক পঞ্চমাংশ তিনি একস্থানে সঞ্চয় করিয়া রাখিতেন এবং আবক্তক মতে স্বীয় বিশ্বস্ত অক্রচরবর্গের মধ্যে বিতরণ করিতেন।

দস্যবৃত্তিতে লিপ্ত থাকিলেও বরাজিদ্ বা তাঁহার পুত্র চতুইর কথনই ধর্মপথন্তই হন নাই। তাঁহারা সংযমী ও জিতেন্দ্রির ছিলেন, কথনও কোনরূপ কুকার্য্যে নিরত হন নাই। তিনি একেখরোপাসনাকারীর ধনলুঞ্চন বা তাহাকে কোনরূপ অযথা পীড়ন করিতেন না। তিনি এই সময়ে ইন্লামধর্মের ক্রিয়কর্মের্ব বিশেষ আত্থাবান্ ছিলেন। নিত্য ৫ বার 'নমারু' করিতেন। এমন কি, একেখরে বিখাসী ভিন্ন অস্ত কাহারও হত্তে নিহত পশুমাংস ভোজন করিতেন না। তিনি এক্দিন আপনার পিতা আবহুলাকে বলিলেন যে, পরগম্বর মহম্মনবণিত সরিয়াৎ রাত্রির স্তার, তরিকাৎ তারকার স্তার, হকিকৎ চক্রের স্তার এবং মারিকৎ হর্য্যের স্তার। আত্মাকে উজ্জল করিবার মারিকং ভিন্ন আরু উপার নাই। ইনলামধর্মের সরিরাৎ বা পঞ্চাল সাধন মুসলমানমাত্রেরই কর্ত্ব্য। নিত্য ঈশ্বরের নামজপ্, ভজনগান এবং তসবিরা ও তহনীল্ করা মুসলমানমাত্রেরই কর্ত্ব্য।

বরাজিদ্ রচিত কএকখানি উপদেশ গ্রন্থ পাওরা বার।
উহা আরবী, পারদী, হিন্দী ও পেশু (আফ্গানী) ভাবার
লিখিত। তাঁহার "মক্ওদ-অল্-মুমেনিন্" গ্রন্থ আরবী ভাবার
রচিত। ঐ গ্রন্থে লিখিত আক্রু, পরম পিতা পরমেখর মিঞাঞী
অব্রাইলের বারা তাঁহাকে ঐপ-প্রেম জ্ঞাপন করিরাছিলেন।
তাঁহার 'ধারর-অল্-রিঘান্' নামক গ্রন্থানি উপরোক্ত চারিটা

ভাষার লিখিত। ইহাতে বয়াজিদের প্রাতি শবং পরমেশবের উপলেশের কথা আছে। হাল্নামাথানি তাঁহারই ধর্মমতের ইতিবৃত্ত। এই ধর্মমত অনেকটা স্থাকিমতের অভুরূপ।

বরাজিদের এই অভিনব ধর্মতে বিশ্বস্ত হইরা বলে বলে আফগানগণ তাঁহার শিব্যম্ব গ্রহণ করিল। কাব্ল, কান্দাহার, রুক্তব্য প্রত্তি প্রদেশবাসী তাঁহার নত গ্রহণ করিরা একটা শক্তিসম্পন্ন আফগান সম্প্রদারের স্বষ্ট করিল। সেই উদ্ধৃত সাম্প্রদারিকগণ তদানীজ্ঞন সমূহ মোগদসান্তাক্তর বিক্লছাচরণ করিতে কুন্তিত হর নাই। সম্রাট্ অক্বরণাহের রাজম্বনাল হইতে শাহজহানের সমৃদ্ধির অবসান পর্যন্ত রোলোনিরাগণ দিরীখরের প্রতিপক্ষতাচরণ করিরাছিল। বরাজিদের লীবিতাব্যার এই সম্প্রদার শক্তির শীর্ষ-সীমার উপনীত হর। তথন তাহারা ধর্মগুরু বরাজিদকে আপনাদের অধিনারক করিরা অক্রব্রের শান্তিমর রাজ্যের শান্তিজ্ঞ করিরাছিল। আফগানিভানের অন্তর্গত ভাতাপুরে তাঁহার সমাধিমন্দির বিশ্বমান আছে।

বরাজিদের ওমারশেও, কামালউদ্দীন, নুরউদ্দীন ও জেলালউদ্দীন নামে চারিপুত্র এবং কামালখাতুন নামে কল্পা ছিল।
মিঞা বরাজিদের মৃত্যুর পর জলালউদ্দীন ধর্মগুরু হইরা গনিতে
উপবেশন করেন। ১০০৭ হিজিরার তিনি গিজনী অধিকার
করিলে অকবর-প্রেরিত সেনাপতির হত্তে নিহত হন। তাঁহার
মৃত্যুর পর ওমারশেওর পুত্র মিঞা আহাদাদ্ গদীতে উপবেশন
করেন। তিনি ১০৩৭ হিজিরার জাহালীরের সেনাপতির হত্তে
নবাগড় তুর্গে নিহত হন। তাঁহার শিষ্যমগুলী আহাদ্ বা ঈশ্রের
অবতার বলিরা বিশাস করিতেন।

অতঃপর আহাদাদের পুত্র আবহন কাদের গদীতে আরোহণ করেন। তিনি শাহজহানের সভার বিশেব সমানৃত হইরাছিলেন।
১০৪৩ হিজিরার তিনি কালকবলে পতিত হইলে পেশাবরে সমাধিত্ব হন। ইহার পর মোগলের বড়বত্তে একে একে বরাজিদবংশ লোপ পার। শাহজাহানের রাজত্বলালে নুর-উদ্দীনের পুত্র মীর্জা দৌলভাবাদ রুদ্ধে নিহত হন। জালাল উদ্দীনের এক পুত্র করিষদাদ মোগল-সেনাপতি সৈরদ খার কৌশলে ১০৪৮ খুটাকে ভবলীলা শেব করেন এবং অপর পুত্র আল্লাদাদ্ খা রিদিধখানি উপাধি সহ দাক্ষিণাভ্যের ৪ হাজারি মন্স্ব্লার হন। ১০৫৭ হিং ভারতে উহার মৃত্যু ঘটে।

রোষ (পুং) কব্-বঞ্। ১ ফোষ।

"মুক্সি কিং মানবতীং ব্যবসায়াদ্ বিশুশমন্ত্যবেগেতি।

বেহতবং পরসাধিং সাবের্ঞ্জ রোব-উন্মিবতি।"

্ (আহ্যাসপ্তশতী ৪৪৯)
স্থোষ্ণ (পুং)রোহতি ভঙ্কীল: কব (কুণ্মঞ্জার্থভাশ্চ। পা

তাং।১২১) ইতি যুচ্। ১ পারন। ২ কেমবর্বশোপন। (মেনিনী)
৩ উবরভূমি। (ত্রি) ৪ ক্রোধন।
রোধণতা (ত্রী) রোবণত ভাবং জন্টাপ্। রোবণের ভাব বা
ধর্ম, ক্রোধ।
রোধময় (ত্রি) রাগব্জ।
রোধানরোহ (গুং) জীতিপ্রদর্শন।
রোধানরোহ (গুং) দেবাস্থর বৃদ্ধনালে দেববোদ্ভেল।
রোধন্ (ত্রি) ক্ব-ইনি দ রোবব্জ, কর।
রোক্ত্ (ত্রি) ক্ব-ইনি দ রোবব্জ, কর।
রোক্ত (ত্রি) ক্ব-ইনি দ রোবব্জ, কর।
রোক্ত (ত্রি) ক্ব-কৃন্। ১ অক্রন্ত্র। (ত্রি) ২ রোহনীর।
"কেন রোহনারম্প দেধ্যাসং" (শুরুবক্ত ১০০১)
'রোহং রোহনীরম্বর্গং' (বেদনীপ ০)
রোহক (গুং) ক্ব-বৃন্। ১ প্রেজভেদ। (ত্রি) ২ রোঢ়া।
"নিনীবানীমন্ত্রমিতং কুব্ং রাকাঞ্চ ক্রভাং।

"সিনীবাদীমন্থতিং কুহং রাকাঞ্চ প্রবজাং।
বোজ্যাণি চকুর্বাহাণাং রোহকাংক্তর কন্টকান্ ॥"(ভার॰ ৮।৩৪।৩২)
রোহ্গ (পুং) পর্বাতভেদ। (কটাধর)
রোহ্ণ (ক্লী) রোহত্যনেনেতি ক্লহ-করণে দ্যুট্। > শুক্র।
(রাজনি৽) ২ জন্ম। ও প্রাহর্জাব। (পুং) রোহত্যমিরিভি

ক্লছ অধিকরণে লুটে। ৪ পর্বাভবিশেব, পর্য্যার—বিদ্রান্তি।

"অপারপুলিনস্থলীভূবি হিমালরে মালরে

নিকামবিকটোরতে হরধিরোহণে রোহণে।

মহত্যমবভূধরে গহনকন্দরে মন্দরে

ভ্রমন্তি ন পতন্তাহো পরিণতা ভবৎকীর্ত্তরঃ॥"

(রাজেন্রকর্ণপু• ৫২)

রোহণাদ্রুহম (পুং) > চন্দনর্ক। ২ মলরাগুরু। (বৈশ্বক্ষনি)
রোহণা, মধ্যপ্রদেশের বর্দ্ধাজেলার অন্তর্গত একটা নগর।
আক্ষাণ ২০ ৩২ ৩০ উ: এবং দ্রাঘিণ ৭৮ ২৫ পুঃ। নগরের
সন্মুখে একটা ক্ষুদ্রনদী প্রবাহিত আছে, উহাতে সমর সময়
ভরানক বল্লা হর বলিরা, তীরভূদে একটা বিভ্বত বাধ আছে।
ঐ বানুকামর তীরে প্রতিসপ্তাহে হাট বলে। প্রতিবংসর
মাঘমাসে এখানে একটা মেলা হর। শতাব্দ পূর্বে রুঞ্জী
সিন্দে নামক জনৈক ব্যক্তি এথানকার হুর্গ নির্দাণ করান।
তিনি হারদরাবাদ ও ভোঁস্লে গ্রমেন্ট হুইতে ২০০ শত
আর্বরোহীসেনা পালন করিবার অলীকারে এই নগর নির্দ্ধ
ও এলাচাদি চাসের উল্ভান আছে।

রোহৎপর্বা (স্ত্রী) বিন্নপ্রা। (রাজনি॰) রোহতক (রোহিতক), পঞ্চাব প্রদেশের হিসার বিভাগের অন্তর্গত একটা বেলা। তথাকার ছোটলাটের শাসনাধীন। জন্ধান ২৮০১ন হিইতে ২৯০১৭ ডিঃ এবং আছিন । ৭৬০১৭ হিইতে ৭৭০৩- পুঃ মধ্য। ভূপরিমাণ ১৮১১ বর্গমাইল।

পোহানা, ঝাজর, শাঁপলা ও ক্লোহতক নামক চারিটা উপবিভাগ লইয়া এই জেলা গঠিত। ঝাজর, শাঁপলা ও রোহতক তহদীলের সংযোগের মধ্যক্ষে ফুজানা ও মহরাণা নামক সামস্তরাজ্যবন্ধ অবস্থিত। রোহতক নগরে জেলার বিচার-সহর প্রতিষ্ঠিত।

বমুনা ও শভক্ত নদীর উপত্যকা দেশকে বিচ্ছিন্ন রাখিয়া বে বিভ্ত অধিত্যকা ভূমি বিভ্নান রহিরাছে, তাহারই ঠিক্ নধ্য-স্থলে এই জেলা অবস্থিত। এখানকার প্রাকৃতিক সৌল্পুর্য্য-শোভা সাধারণের চিন্ত হরণ করিতে পারে না। তবে পার্ব্বত্য ভূমের ক্ষুদ্র জলনে বহুশ্কর, হরিণ, খরগোস এবং বহুকুট, পেরু প্রভৃতি পশু ও পক্ষী প্রভৃত পরিমাণে বিভ্যান থাকার মুগরাপ্রিয় শিকারীদিগের বিশেষ আনন্দবর্দ্ধক হইরাছে।

পূর্বে এই স্থান প্রাচীন হরিরানা রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত ছিল ज्या त्मरे श्राठीन कारन ममुक्तिमानी महीम मगत्रहे हेरात्र श्राधान বাণিজ্যকেন্দ্র ছিলু বুলিয়া সাধারণের বিখাস। প্রসিদ্ধ সাহাবুদীন খোরী ভারতবিজয়কালে এই স্থান অধিকার ও ধ্বংস করেন। তদনস্তর ১২৬৬ খন্তাব্দে উহা পুনরার সংস্কৃত হয়। কিছু উক্ত বংসর হইতে ১৭১৮ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত এই স্থানের কোন ঐতি-হাসিক প্রসিদ্ধির কণা গুনা যায় নাই। শেষোক্ত বর্ষে সম্রাট্ ফরুথসিয়ার সমগ্র হরিয়ানা বিভাগ খ্রীয় মন্ত্রী রুকন্ উদ্দৌলাকে দান করেন। অমাত্যপ্রধানও পক্ষান্তরে এ সম্পত্তি ফৌজদার খাঁ। নামক এক জন বেলুচী ছানবাসী ওমরাহকে দান করিয়া ১৭৩২ খ্য: আ: তাঁহাকে ফরুক নগরের নবাবী মদ্নদে অভিষিক্ত করিলেন। নৃতন নবাব রাজতত্তে উপবেশন করিয়া বর্তমান হিসার, রোহতক ও গুরগাঁও কেলার কতক অংশ এবং পাতিয়ালা ও ঝিন্দ রাজ্যের কৃতক অংশ শাসন করিতে থাকেন। তাঁহার পুত্র ১৭৬০ খুটান্দ পর্যান্ত উহা নির্বিরোধে ভোগ করিয়াছিলেন। তদনস্তর দিলী সামাজ্যের অধংপতনের সলে তাঁহারও অদৃহ-চক্র ভালিয়া পড়িল আলমগীর-হত্যায় ও সম্রাট শাহ আলমের নাম মাত্র সিংহাসনাধিকারে রাজ্যে অরাজকভার লকণ স্থাচিত হইতে লাগিল। পরবর্তী বৎসরে পাণিপথ রণক্ষেত্রে মহারা है-শক্তির জধঃপতনের সঙ্গে মোগলশক্তিও হতবল হইল। ফুড়খনগরের নবাব প্রতিপাদকের গুরুবন্ধার আপনাকে চুর্দ্দশা-গ্রন্থ বলিরা অনুযান করিলেন। তিনি সামর্থা**হী**ন হ**ইরা** নাম মাত্র মসনদের শোভাবর্জন করিতে লাগিলেন। এই সমরে সোভাগাবেৰী শিথসদারগণ দহাবৃত্তি ও অর্থলালনা ছাড়িরা রাব্য জরপূর্মক রাজপাট স্থাপনে মনোনিবেশ করেন, ভাহাতে উভৱোতর নবাৰ বিপৰ্যত হইরা আবলেকে ১৭৬২ প্টালে ভরতপুরের আটলন্দার অরাহির লিংহ_া কর্ক রাজ্যবহিছত হইরাছিলেন।

ইহার পর প্রার ২০ বংসরকাল উত্তর ভারতের অরাজকতানিবছন হরিয়ানায় মানারপ বিশুশলা আলিয়া সমুপন্থিত হয়।
নবাব কৌজলারের পৃঞ্জ কিছুকালের অন্ত গৈতৃক সম্পতি অধিকারপূর্থাক প্রার রাজ্যশাসনে প্রেরত হন। অতঃপর নজফ্বাঁ এই স্থান অন্ত করিয়া আপনার জনৈক অন্তরকে দান
করেন। তাহার পর সর্ফানারাজ্ঞী বেগম সমন্তর আমী
গুরাল্টার রিন্টার্ডট্ ইহার কতকাংশ ভারণীর প্রের ভোগ
করিতে থাকেন। ১৭৮৪ বৃহাক্তে মহারাষ্ট্রগণ এই সকল
বিশৃত্যলা হইতে রাজ্যরক্ষা করিতে সমর্থ ইইলেন বটে, কিত্ত
ক্ষেপ্ত নিক্লে-রাজশক্তি শিথদিগকে লমন করিতে পারিলেন না।
শিখাণ উপর্যুপরি আক্রমণ করিয়া হানীয় অধিবাসির্দ্ধকে
উত্তাক্ত করিয়া তুলিল। অবশেষে সিন্দেরাজ হরিয়ানা বিভাগের
অধিকাংশ কৈথাল ও বিন্দের সর্দারকে সমর্পণ করিয়া উপদ্রবের
হত্ত হইতে পরিআণ লাভ করিলেন।

ইত্যবদরে সোঁভাগ্যাবেষী সৈনিক জর্জ টমাস হরিরানার অপরার্দ্ধ হতপত করিয়া একটা জলপথ হাপনান্তর অরং রাজ্য শাসন করিতে লাগিলেন। তিনি ঝাজরের নিকট জর্জাগড় নামক হানে ও হিসার জেলার হাঁসিতে চুইটা তুর্গ নির্মাণ করাইয়া আপনার অধিকার স্থান পরিচালিত মহারাষ্ট্রদল টমাস্কে রাজ্য হইতে বহিন্নত করিয়া দেয়। তৎপর বর্ষে ইংরাজ সেনাপতি হওঁ লেক শতক্র হইতে শিবালিক পাদমূল পর্যাপ্ত ইংরাজশাসনভুক্ত করেন।

এই সমরে কৈথক ও বিন্দের শিথসদিরিগণ এই জেলার উত্তরাংশ অধিকার করিরাছিলেন। ইংরাজ্ঞরাজ ঝান্সরের নবাবকে কন্দিণ, লাজি ও বাহাছরগড়ের নবাবকে গশ্চিম এবং কুজানার নবাবকে মধ্যতাগ শাসনার্থ ভাগ করিরা দেন। শেবোজ শনাব শিথ ও ভট্টজাতির উপর্গুপরি আক্রমণে উত্তাজ হইয়া রাজ্যশাসনে অসমর্থ হইলে ১৮১০ খুটালে সেই রাজ্যে অভ্যাজ হারা ভাগনাথ ইংরাজনৈত্ব প্রেরিত হয়। এই সমরে বর্জমান জেলার কএকটা পরগণা ইংরাজের অধিকারভুক্ত হইরাছিল। ১৮১৮ খুটালে কৈওল-রাজের মৃত্যুর পর এবং ১৮২০ খুটালে বিন্দের স্থালের নিকট কতক ভূতাগ কৌশলে হত্তগত করিরা রোহতক জেলা গঠিত হয়। শেবোল বিভাগ করিই হিসার ও শির্বা বিভাগ রোহতক হইতে বিভিন্ন এবং ১৮২৪ খুটালে পাণিপথ (রর্জমান কর্গাল) জেলা শতর লাক্রভুক্ত করা হয়।

১৮০২ খৃষ্টাব্দ পর্যান্ত দিলীরাজধানীত্ব ইংরাজ রেসিডেন্টের অধীনে একজন প্ৰিটিকাল এজেন্ট এম্বান শাসন করিতে থাকেন। পরে উহাকে যুক্তপ্রদেশের সাধারণ রাজ্বনিরমের শাসনাধীন করা হয়। ১৮৫৭ খুষ্টাব্দের সিপোহী বিজ্ঞোহের সময় **এই ब्बिना है:तोबताब्बत रुख्कां क्य बंदः करूप नगत, यायत,** ও বাহাতরগড়ের নবাবত্রয় শুরগাঁও হিসারবাসী বিভিন্ন মুসল-মান সম্রদায়ের সহিত মিশিত হইরা এইস্থানে আধিপত্য করেন। পরে শির্বা ও হিসারের ভট্টসর্দারগণ তাঁহাদের সহিত মিলিত रुरेल जारात्रा त्रारुक बाक्तमण ७ मूर्जन करत्रन। पित्नी रेश्तात्मत হন্তগত হইবার পর পঞ্চাবী সেনাদলের সাহায্যে ইংরাজরাজও এখানে শান্তিস্থাপন করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। ঝাঝর ও বাহাছর-গড়ের নবাবছর ধত হইরা ইংরাজবিচারে দণ্ডিত হইলেন। দিল্লী-নগরে ঝাঝরপতির ফাঁদী হইল। তাঁহার আত্মীয়গণ লাহোর নগরে বন্দী রহিলেন। ঝিন্দ, পাতিয়ালা ও নাভা রাজবিদ্রোহের সময় ইংরাজরাজের সহায়তা করায় পারিতোধিকস্বরূপ কাঝর রাজ্ঞসম্পত্তির ভাগ পাইলেন। ইহার পর রোহতক পঞ্চাৰগব-মে ন্টের অধীন হয় এবং ১৮৬০ থ ষ্টাব্দে বাঝর কেলার কতকাংশ রোহতক জেলার অস্তর্ভ হয়।

এখানকার মধ্যে রোহত, ঝাঝর, বতানা, গোহনা কালানোর, মহীম, বেরী, বাহাছরগড়, বরোদা, মগুলানা, কান্হোর, সিংহী, ঝড়খণ্ডা প্রভৃতি নগর প্রধান। রোহতক সদরের লোকসংখ্যা প্রায় ১৬ হাজার।

ব্যবসা বাণিজ্য ও কৃষিকার্য্যের যথেষ্ট উন্নতি দেখা যায়।
ভারাচারা ও ভপ্পাদারী নামে কৃষ্টী জমি জমার প্রথা আছে।
যে সকল প্রজারা কৃষিকার্য্য করে না, ভূমাধিকারী তাহাদের উপর্
একটী স্বতন্ত্র কর ধার্য্য করিয়া থাকেন। উহাকে "কমিনি"
বলে। অনার্ষ্টি জন্ম এখানে প্রায়ই ছর্জিক্ষ দেখা দিরা থাকে।
১৮২৪, ১৮৩০, ১৮৩০, ১৮৩০, ১৮৩০-৬১ ও ১৮৬৮-৬৯ খৃষ্টাব্দে
এখানে কুর্জিক্ষ উপস্থিত হয়। শেষোক্ত বর্ষে এই জেলায় প্রায়
৯০ হাজার লোকে অনাহারে ও মহামারীতে কালকবলে পতিত
হয়, তাহার উপর গোমহিষাদি বিনষ্ট হওরায় প্রজাবর্গকে খিলেষ
ক্ষতিগ্রন্থ হইতে ইইয়াছিল।

১৮৭৭-৭৮ খু টাব্দে পুনরায় ছর্ভিক দেখা দেয়। এবার জলাভাবে বাস পর্যন্ত জলিরা বার। স্ক্তরাং গোমহিবাদি থান্তাভাবে মরিতে আরম্ভ করে। ছর্জ্ব জাট, ভাট ও মুসলমান প্রজাবর্গ অরুক্তে পীড়িভ হইক্স দহাবৃত্তি অবলঘন করিল।
কুত্র ভাকাইভিতে পরিভ্ন্ত না হইরা অবলেবে জাটগণ বাদ্নীর বাজার নুঠন করিল। এই নমর লোকের ছর্জ্পা এক্সণ হইয়াছিল বে, ভাহারা এক পরসার জন্ত উট্রবিক্রয় করিতে এবং একবেলার

কটার অস্থ একটা গোন্ধ বেচিতে কুঞ্চিত হর নাই। একে একে জেলার সকল গো মহিব নই হইরাছিল। ৩৬টা জাতির মধ্যে ৩৪টা জাতি প্রার লোপ পাইল, রহিল এক কলাই আর ব্যবসারী। বাহার বাহা ছিল একজন ছুরি বসাইয়া তাহা আত্মসাৎ করিরা লইল এবং অপর পণ দিয়া পালার গ্রায়গণ্ডা ওজন করিরা ঋণগ্রস্ত অধিবাসিরুদ্ধকে ফাঁকি দিল।

২ উক্ত জেলার একটা তহনীল। ভূপরিমাণ ৫৮৭ বর্গমাইল। এখানে বিলক্ষণ ইকুর চান আছে।

🗢 🛡ক জেলার প্রাচীন নগর ও বিচার সদর। দিলী হইতে হইতে ৪২ মাইল উত্তরপশ্চিমে হিসার যাইবার পথে অবন্থিত। জক্ষা∙ং৮°৫৪ উ: এবং ক্রাঘি॰ ৭৬°৩৮ পূ:। এই নগন্ন জতি প্রাচীন, কিন্তু হু:খের বিষয়, ইহার সেই প্রাচীন ইতিহাস উদ্বারের উপার নাই। বর্ত্তমান নগরের অনুরে উত্তর্নিকে रथाक्त्रारकाठे नाम ज्ञारन वह व्याठीनरकत्र निवर्नन रवश यात्र। এক সময়ে এই স্থান যে বিশেষ সমৃদ্ধিশালী ছিল, ধ্বন্ত স্ত্রপগুলি তাহা সপ্রমাণ করিতেছে। কিংবদন্তী 🐗 🗱 ১১৬০ খুটাবে দিল্লীখর পৃথীরাজের রাজডকালে এই সৌন্দর্য্যন্তই নগরের পুনরায় জীর্ণসংস্কার হইয়াছিল; মতান্তরে প্রকাশ খুষ্ট পু: ৪র্থ শতাব্দের মধ্যভাগে ঐ স্থান সংস্কৃত ও সমৃদ্ধিসম্পন্ন হইয়াছিল। মোগল সাম্রাজ্যের অধ:পতন সময়ে এই স্থান উত্তরোত্তর ভিন্ন ভিন্ন সন্দারের অধীনে হস্তান্তরিত হয়। ১৮২৪ খুষ্টাব্দে ইহা ইংরাজাধিকত একটা জেলারূপে পরিগণিত হইতে थारक। जनविध छैहा है दामाधिकारत्रहे त्रहिमारह। বৎসর অক্টোবর মাসে এখানে একটা ঘোড়ার মেলা হয়।

রোহতকী, উত্তরপশ্চিম ভারতবাসী বেণিরা জাতির একটী শাধা।

রোহতাঙ্গ (রোহিতাক), পঞ্চাব প্রদেশের হিমাণর শৃলোপরিছ
 একটা গিরিসফট। কর্ণাল জেলার অবস্থিত। অক্ষা• ৩২°২২ ২০

উ: এবং প্রাবি৽ ৭৭°১৭'২০ পুঃ। এই পথ লাহলের অন্তর্গত
কোকসর হইতে কুলু বিভাগের পলচান্ পর্যান্ত গিরাছে। এই
পথের সর্ব্বোচ্চ স্থান সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ১৩ হাজার ফিট্ উচ্চ।
পথের উভয় পার্ববর্তী পর্বতমালা ১৬ হাজার ফিট্ উচ্চ
প্রাচীরের স্থার রহিরাছে। উহার মধ্যে প্রায় ২০ হাজার ফিট্
উচ্চ এক একটা শৃল উন্নত মন্তব্দে দীড়াইরা আছে। স্থলভানপুর ও কাওরা হইতে যে প্রশন্ত পথ লেহ্ ওর্নার্থক্ল গিরাছে,
তাহা এই রাভার উপর দিয়া চন্দ্রা ও ভাগা নদীর উপত্যকা
দেশ অতিক্রম করিরা বারালাচার পড়িরাছে। ভিলেম্বর মান
বাতীত সকল সমরই এই রাভা গমনাগমনের উপযোগী থাকে।
রোহস্ত (পুঃ) ক্লছাদিভি ক্লছ (ক্লিন্দ্র্জীবিপ্রাণিছ্য:

्त्रिनानिषि। উन् ७२२१) देखि कार्। २ तुक्तरकन। २ तुक्तमाता। (केक्सन)

রোহস্তী (ত্রী) কহ-বচ্., বিশ্বাৎ শ্রীব্। স্ব লাভাচের। ২ বজামাত্র।
রোহরি, (বোহজী) বিশ্বপ্রদেশের নিকারপুর জেবার অন্তর্গত
একটা উপবিজ্ঞান। ক্যেহিছান বাইরা ইহার ভূপরিমাণ
৫৪১০ বর্গমাইল। ইহার পশ্চিম ও উত্তরে বিশ্বনাণী, উত্তরপূর্বন
ভূপ্তি বহারপালয় ও জরশালমীর রাজ্য এবং দক্ষিণে ধরেরপুরজ্বো। মীরপুর নগর ইহার বিচার বদর।

বেজিন্তান নামক মন্ধ্ৰপ্ৰদেশ ও শিকারপুরের সমতল প্রান্তর লইরা এই বিভাগ গঠিত। মধ্যে মধ্যে বনমালাপরিশোভিত নিতিশলভেণী বিরাজিত। ঐ পর্বাভগুলি বাসুকান্ত,পমাতা। কালবলে গৃঢ়পুঠ ও অর্ণামপ্তিত হইরা ছানীর শোভাবর্জন করিতেতে। একসময়ে সিদ্ধনদী ঐ সকল গওগৈলের পার্ছ দিরা অরোর নগর পর্যান্ত বিভূত ছিল। পরে কোন প্রাকৃতিক পরিবর্ত্তনে স্রোজোগতি ব্ধর শৈলের মধ্য দিরা ফিরিয়াছে। সম্ভবতঃ সিম্প্রাক্তিক বালুকারাশির বিকারেই ঐ শৈলমালার উৎপত্তি। বৈজিতান বিভাগের রেন্ নদী একসময়ে মূল-সিদ্ধরূপে থরত্রোতে প্রবাহিত ছিল। একণে মন্দগতি হওয়ায় উহার পরিসর কমিয়া গিরাছে এবং উভর পার্ম বালুকাপূর্ণ মরুপ্রাস্তরে পর্যাবসিত হইয়াছে। এতজ্ঞির চাসবাসের স্কুবিধার্থ এখানে কএকটা কাটা-খাল আছে, তন্মধ্যে পূর্বনারা ১৩ মাইল, नुष्ठि ১৬ महिन, व्यद्भात ३७ महिन, वहत्र २७ महिन, ম্মু ৩২ মাইল, কোরাই ২৩ মাইল, মহারো ৩৭ মাইল ও **तिक्रा २७ मार्डेन नमा। এই नकन थान हरेरे** ज्ञानीव ভূমাধিকারীরা আবার ৫৭টা খাল কাটিয়া স্ব স্থ এলাকা মধ্যে লইরা গিরাছেন। এখানে দহরি (২০ মাইল লখা), গরবার (> महिन नवा), कारनज्ञ (> महिन नवा) ध्वर ठच्यान (২০ মাইল লখা) নামক কয়টী বিভূত বাঁধ আছে।

এখানে মৃত্যান্ত, কার্পাসবন্ধ ও চুণের বিভ্নত কারবার আছে। ঘোট্কী ও ধরেরপুর ধর্কি নগরে উৎকৃত্ত কর্সি, নজনান, কাচী ও রন্ধনগাত্র প্রেছত হইরা থাকে। রোচরি হইতে নানাবিধ খল্ঞ, সাজিমাটা, চুণ, ভৈল, পদম, রেশমীকাপড়, নীল ও খালোগবোদ্ধী কলাদি বিভিন্ন হানে রপ্তানী হইরা থাকে। নর্থ ওলেন্তার্গ হৈট রেলপ্রের রোহরি, সন্দি, পানো-অফিল, মহান্দের, বোট্কী, শিরহদ্-মীরপুর, ধরেরপুর-ধর্কি ও রেহতী-ট্রেসন এই উপবিভাগে বিভূত থাকার ছানীর বাণিজ্যের বিশেষ ছবিধা হইরাছে।

ত উক্ত কোর একটা, নগর। পিছুনদের পশ্চিমকুলে একটা পর্কতসাত্তর উপরি অবস্থিত। অকান ২ ৫ ৪২ তি: এবং জাবিত ৬৮° ৪৬ পূ:। প্রবাদ ১৯৯৭ পুঠাকে সৈরদ ক্ষমন্ উদীন পাহ এই নগর হাপন করেন। মুসলমানগণের আধিপত্তের সমর এখানে অনেকগুলি মস্বিহ নির্মিত হয়। তরুধ্যে ১৫৬৪ খুটাকে সজাই অকবরশাহের অবীনস্থ শাসনক্তা ক্ষতে বা নানা পির ও কার্কতার্ত্য-সম্বিত ক্ষা-মস্বিদ এবং ১৫৯০ খুটাকে মীন্ন মুশাম পাহ ইনগাহ্ মস্বিদ্ প্রতিষ্ঠা ক্রাইরা হিলেন।

১০৪৫ খুটান্দে স্থানীর কল্ছোরা-রাজ মীর মহমদ খীর বন্ধ্ খরেরপুরাধিপতি মীর আলীমুরাদের নিকট হইতে পরগদ্ধর মহমদের একগাছি লাজির চুল পান। তিনি নেই দেবস্থতি-রক্ষার্থ নগরের উত্তরাংশে "বার-মুবারক" নামক এক চতুকোণ ধর্মজ্বন নির্দাণ করান। ঐ মন্জিদের মধ্যত্তে চুলী ও পারা-বিমক্তিত একটা খুপ কোটার সেই ঋশ্রুকেশ স্বদ্ধে রক্ষিত আছে। প্রতিবৎসর চৈত্রমাসে ঐ কেশ দেখাইবার সমর এখানে একটা ক্ষুদ্র নেলা বসে।

১৮৫৫ খুষ্টাব্দে এথানে মিউনিসিপালিটা স্থাপিত হয়।
তদধি এথানে বাস্থ্য ভাল হইরাছে। নর্থ ওরেষ্টার্প প্রেট্ট রেলপথ বিতারে বাণিজ্যের বৃদ্ধিসহকারে নগরেরও সৌন্দর্য্য ও সমৃদ্ধি বৃদ্ধি পাইরাছে। রেলপথ গমনার্থ নগরের সমুথেই সিদ্ধবক্ষে একটা স্থান্মর লোহ-সেতু নির্মিত হইরাছে। কলিকাতা হইতে কন্নাটীবন্দর গমন করিতে হইলে রোহরির মধ্য দিয়া গমন করিতে হয়। রোহরির অপর পারে সিদ্ধবক্ষক চরের উপর পীর থালা থিজিরের পীঠন্থান আছে। ঐ স্থানে হিন্দু ও মুসলমান একত্র সূক্ষা দিয়া থাকে।

রোহস্ (রী) উচ্চ আদেশ। (রুক্ ৬।৭১।৫)
রোহসেন (পুং) মৃক্কটিক নাটকোক ব্যক্তিজেল।
রোহা, বোঁৰাই প্রেসিডেলীর কোনাবা জেলার একটা উপবিভাগ।
ভূপরিমাণ ২০০ বর্গমাইল। এই সহকুমার অধিকাণে ছানই
পর্যভমর ও জললার্ড, কেবলমাত্র ভূওলিকা নবী প্রবাহিত
উপত্যকাপ্রাদেশই ক্র্যোপাবোগী ও উর্জর।

২ উক্ত উপবিভাগের প্রধান নগর। রোহা-অন্তমী নামে
পরিচিত। কুগুলিকা নদীর বানকুলের নোহানা হইতে ১২ ক্রোক্
দ্রে রোহানগর অবহিত। ইহার অপরতীরে অন্তমী প্রাম।
অকা- ১৮*২২ হি উ: এবং স্তাবি- গণ্ড ২২ প্রাঃ। এই চুইটা
স্থানই রোহা নিউনিনিপানিটার অধীন। রোহার শক্তভাগ্তার
হইতে বোহাই নগরে চাউনাদি সরবরাহ হইরা থাকে।
১৬গণ পুটাকে অরোগেন্ এই স্থানকে "Bathemy" নামে

উল্লেখ করিরা গিরাছেন। তৎকালে ইহার বাশিকালযুক্তিও বংশ্বট ছিল।

সোহার, বোদাই প্রেনিডেলীর ক্ষপ্রানেশের অধার বিভাগের
অন্তর্গত একটা প্রধান বন্দর । অধার নগর হইতে ১২ মাইল
পূর্ব্বে অবহিত । ১৮১৮ মুখ্রীকে ২ হালার মণ বোমাই লাহাজানি
এই বন্ধরে অনারানে আনিজে পারিত, কিন্তু একলে সমুক্তটের
অবহা পরিবর্তিত হওরার বাণিজ্যের অনেক হান হইরাছে।
সেইলম্ভ হানীর ক্র হুর্গ পরিভাক হওরার ভ্রাবহার পতিত
রহিরাছে। এপানে একটা নৃতন বাধ নির্দিত হওরার হানীর
পানীর জলের বিশেব স্ববিধা হইরাছে।

রোছি (পুং) রোহতীতি ক্ব (দ্পিবিক্হীতি। উণ্৪০১৮) ইতি ইব্। ১ বীজ। ২ বৃক্ষ। ৩ ধার্মিক।

ব্যোছিক (পুং) বনরোধি মানক মৃগ, বনরোধ। ৩৭—ইছার মাংস হিত ও বশকর, যাত ও শ্লেঘবর্দ্ধক। (অত্রিস• ২২ অ•) ব্যোহিকাপ্রিয় (পুং) মহাকরঞ। (বৈছক্তনি•)

রোহিণ (পুং) রোহতীতি কহ (কহেন্চ। উণ্ ২।৫৫) ইতি ইনন্। ১ কালভেদ, দিবাভাগের নবম মুহুর্ত্তের নাম রোহিণ। এই সমরের মধ্যে একোদিষ্টশ্রাদ্ধ করিতে হয়। কুতপমুহুর্ত্তে শ্রাদ্ধ আরম্ভ করিয়া রোহিণকালের মধ্যে শেষ করিবে।

"আরভ্য কৃতপে প্রাক্তং কুর্য্যাদারোহিণং বৃধঃ। বিধিজ্ঞো বিধিমান্থায় রৌহিণন্ত ন লব্দরেং ॥" (প্রাদ্ধতন্ত) ইহার নামান্তর রৌহিণ্ড লিখিত আছে।

(পুং) ২ ভূতৃণ। ৩ বটর্ক । ৪ রোহিতকর্ক । (রাজনি •) • শাক্ষলদীপত্ব পর্বতবিশেষ। (মৎসাপু • ১২১।৯৬)

৬ কট্ফলবুক্ষ। (রক্সালা)

রোহিণি (ত্রী)রোহিণীনক্তর। (শঙ্গরয়া॰)

রোহিণিকা (ত্রী) রোহিণ্যের স্বার্থে কন্টাপ্, হুস্ক। কোপাদি ছারা রক্তবর্গা ত্রী। (ক্টাধ্র)

রোহিণিনক্ষন (গু:) রোহিণীপুত্র, বলরাম।

রোছিনিসেন (গ্রং) রোহিনী নক্ষরের চড়র্দ্ধিকে কর্বন্থিত ভারকামগুলী।

রোহিণী (ত্রা) কহ-ইনন্, গোরাদিষাৎ ভীব্। ১ ত্রী-গৰী।

শ্বীত্যা নিব্কারিষ্ডীঃ তশ্বরা-রিগৃত্ব পারীস্ভরেন ভালুনোঃ।

विक्रियात्रास्त्रीन द्वारियैः शत्र-

क्तिकर निषदको **इंस्कः न त्याक्रदः ॥"** (याच ३२।३०)

২ তড়িং। ৩ কটুভরা। ৪ সোনবন। ৫ মহাবেতা।
(বৈভিক্ররনাণ) ৬ লোহিতা। (বেদিনী) ৭ জিনদিগের
বিভা বেশীবিশেন। (হেম) ৮ কাশ্রী। ১ হরীভবী।

১০ দর্শিক। (রাজনিও) ১১ কণিকরণ কর্তুলাকার বিরেচনে প্রশন্ত হরীভকী। (রাজবং) ১২ বজুবেবের ভার্তা, ইনি ক্রপণারী প্রভিন্ন কংলে কর্মগ্রহণ করেন। ইহার পুত্র বলরান (হরিবংশ) ১৩ প্রভিক্তা। (ক্যক্তিকাপুত) ১৫ নববর্ষীরা ক্তা।

"শাষ্ট্ৰৰ্থা ভৰেদেশারী সৰবৰ্থা চ রোহিনী।" (উৰাহতক্ষ)
১৫ পঞ্চৰ্থায়া ক্ষ্টাকেও রোহিনী কছে, রোনীবিশের রোগনালের জন্ত এই কুমারীকে পূজা করিবার ব্যবহা বেধিতে
পাওয়া বার।

"রোহিণী পঞ্চবর্গ চ বড়্বর্গ কালিকা দ্বভা।"
(দেশীভাগত ৩২৬।৪২)

"রোহিনীং রোগদাশার পূজরেছিধিবরর:।"
(রেবীভাগ• ৩া২৬া৪৮)

রোহিণীকে পূজা করিতে হইলে নিরোক্ত করে পূজা করিতে হর।

মত্র—"রোহরতী চ বীজানি প্রাগ্তন্মসক্তিনি বৈ।

যা দেবী সর্বভূতানাং রোহিণীং পুজরাব্যহন্ ॥"

(দেবীভাগ• তাংভাতে)

এই কুমারীপুজার মানাবিধ ত্থসম্পাদ লাভ হইরা থাকে।
১৬ হিরণ্ডকশিপুর কলা। (ভারত ৩/২২০/১৮) ১৭ অখিনী
প্রভৃতি সপ্তবিংশ নক্ষত্রের অন্তর্গত চতুর্থ নক্ষত্র। পর্যার—
রোহিনী, বানী। এই নক্ষত্র শক্টাকার এবং পঞ্চারাত্মক,
ইহার অধিটাত্রী দেবতা ব্রহ্মা, এই নক্ষত্রে ব্ররাশি হয়।

রোহিণী নক্ষত চল্লের অভিশর প্রিরতমা, চল্লের সপ্তবিংশতি পত্নী হইলেও চল্ল রোহিণীর নিকট থাকিডেন, নক্ষত্রপত্নীগণ ইহাতে অসভট হইরা দক্ষের নিকট এই বৃত্তান্ত বলেন, দক্ষ ইহাতে কৃষ্ক হইরা চল্লকে অভিশাপ দেন, রোহিণীর জন্ত চল্ল দক্ষের অভিশাপে যক্সরোগাক্রান্ত হন। (কালিকাপুত)

এই নক্ষত্র উর্জ্বপ, সর্বলাতি, শতপদ চক্রান্থসারে এই নক্ষত্রে নামকরণ হইলে এই সক্ষত্রের চারিপালে "ও, ব, বী, বু" এই চারিটা অক্ষর আদি নাম হইবে।

"কৰ্কটি! শকুলায়তো নতো মধ্যমাসভৰতি প্ৰজাপতে। পক্তে গৰুকুপক্লিটিকা নিঃহতাঃ হৃদ্ধি। সিংবলগ্ৰভঃ ॥"
(কালিদাসফুত সাজিলগ্ৰনিঃ)

পাচটা নক্ষরকৃত শক্টাকার রোহিণী নক্ষর আকান গথে . মন্তক্ষের উপর প্রকাশিত হইলে, নিহেলরের ভিনম্ভ ৩৮ পদ অতীত হইরাছে ভির করিতে হইবে !

वरे नक्ता क्य रहेल बांड नानक, कूनन कूनीन, क्रांक्राक, ननी, नानी च जांतक रहेश बांक्य (क्यांक्रवक) আটোন্তরী মতে এই নক্ষত্রে কর্ম ব্রীক্রে ক্রের করা এবং বিশোন্তরী মতে এই নক্ষত্রে কর্ম ব্রীক্ত চন্দ্রের দলা হর। নক্ষত্রের পরিমাণাদি আহুলারে ভৌগান্তভাবি নির্মণ করা বাইতে পারে।

ভাত্র মানের ক্লাইনীতে ভবাৎ অসাইনীর দিন সোহিনী
নক্তরে বোল হইলে জর্মীবোল হইরা বাকে। এই রোহিনী
নক্তর স্বান্তিভাল পাইরা বালি প্রান্তিনেও থাকে, ভাষা হইলে
ব্যক্তিন স্বোহিনী বাকে, ততক্তন উপবান ক্রিতে হয়। রোহিনী
বাক্তিত পারণ ক্রিতে নাই। [জ্যাইনী দেব]

SE शनदर्शन ट्राज

্ইহার নিধান ও চিকিৎসার বিষয় ভাবপ্রকাশে এইরপ সাবিত আছে। প্রসারোগ ১৮ প্রকার, ভাহার বরের রোহিনী ৫ প্রকার।

নিদান—দ্বিত বায়, পিজ, কক ও রক্ত গলদেশই মাংসকে
দ্বিত করিরা কঠরোধকারী মাংসাত্র উৎপাদন করিলে
তাহাকে রোহিনী রোগ কহে। এই রোগে আরহ রোগীর
জীবন মই হইরা থাকে।

বাতৰ রোহিনীর সক্ষণ— বাতৰ রোহিনীরোগে জিহবার চারিদিকে অতিশর বেদনাবিশিষ্ট কঠরোধকারক, মাংসাত্র উৎপন্ন হল এবং রোগী গুল্প প্রভূতি বাতল্পনিত উপদ্রবসমূহে পীতিত হইনা থাকে।

গিওল লক্ষণ—পিও লগু রোহিণীরোগে মাংসাল্ব শীর উলাত হর, এবং অতিশর দাহ ও পাকযুক্ত হইরা গাকে, ইহাতে রোগীর অতি প্রবদরেগে লর হয়। ক্ষলসক্ষণ—ক্ষ লগু রেইংনীরোগে নাংসাল্ব ওক, স্থির ও অরপাকবিশিষ্ট হর, এবং কঠলোত লগু হইরা থাকে।

সন্নিপাতজ ক্ষণ—জিনোবজ নোহিনী রোগে উপরি উক্ত তিনটা নোবের সমত লক্ষণই প্রকাশ পাইরা থাকে প্রবং জাংসাত্র গভীরণাকী হয়, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইকে এই রোগ প্রতিবিধ্য হইরা থাকে, প্রান্তই ইহাতে জীকনের হানি বটে।

রক্তম গদশ সক্তমত রোহিনী রোগে নিহাবুল কোটক বারা পরিস্থত এবং শিতক রোহিনীয় তান সদশ হইরা বাবে, এই রোগ সাধ্য।

তৈলোবিক লোক্ষ্মি রোগ বোক্ষম ক্ষমন; সভঃ নত করে, কক্ষ বোহিনী তিনঃ বিনেয় ক্ষেন্, গৈছিক ছোহিনী ও কিনেয় সংখ্য ও বাতক রোহিনী ৭ বিনেয় ক্ষেত্র জাবন নত ক্ষিয়া থাকে। ইহায় চিকিৎসা—সাধ্য রোহিনী রোক্ষে মন্তর্ভনাক্ষ্ম, বনন, মুস্পান, গাধুনধারণ এবং নতা হিতকারক। বাতকা রোহিনী রোলে রক্তনাক্ষণ করির। দৈছব বারা প্রতিনারণ করিবে।
এবং কিঞ্চিৎ উক্ত সেহ বারা প্র- প্র- গ্রুণ গর্প করিবে।
শিক্ষল রোহিনী রোগে রক্তনোক্ষণ করিবা প্রিরন্তুর্গ, চিনি ও
বধু নিলিত করিবা বর্বণ এবং প্রাক্ষা ও পরব কলের ভাগবারা
কবল করিতে হইবে। ককল রোহিনীতে গৃহধুন, গুরু, শির্মনী
ও করিচ চূর্যবারা প্রতিনারণ করিবে।

বেত অগরাজিতা, বিভুল, নতী, ও নৈকবারা তৈল পাক করিয়া নতা ও কবল করিলে কবল রোহিনী রোগ প্রাণতি হয়। পিডজাদিভেনে পিডাদিনাশক ঔবধ ব্যবহারে ঐ সকল কবল নিরাক্ত হইয়া বাকে।

(ভাবতা রোহিণীরোপটি)

১৫ শরীরের বর্তম্য (জ্বত শারীরহা**-** ৪ **জ**•)

১৬ অধ্যের মুধরোগভেদ। (জরনত ২৯ অ॰)

১'ণ অলচর পন্ধিবিশেষ। (চরক শুক্রছা। ২ণ অ॰)

(वि) अम्बून।

"নৈব হ্রস্থা ন মহজী ন ক্লশা নাপি রোহিণী। নীলকুঞ্চিত-কেনী চ তরা দীর্যায়্যহং স্বনা^ত (ভারত ২।৬১।৩৩) রোহিণীকান্ত (পুং) রোহিণ্যাঃ কান্তঃ। রোহিণীপতি চক্র।

রোহিণী চন্দ্রতে (ক্লী·) বছবিশেষ। রোহিণীচন্দ্রশয়ন (ক্লী) বছবিশেষ।

রোহিণীতনর (খং) রোহিণাক্তনর:। রোহিণীর পুত্র। বলরাম। রোহিণীতীর্থ (ক্লী) তীর্থন্ডেন।

রোছিণীজ (স্নী) রোহিণী ভাবে ছ। রোহিণী নক্ষত্রের ভাব বাধর্মা (শতপথরা• ২াসহাও)

রোছিণীপতি (শং) রোহিণ্যাঃ পতিঃ। চক্র। (হেম) ৳ ২ বশ্ববেৰ। ৩ বৃষভা‡

রোছিণীপ্রের (প্রেটিপান প্রিরঃ। রোহিণীপতি।
রোছিণীভব (প্রে) > রোহিণীর পুরু, বলরাম। ২ বৃধ্বাহ।
রোছিণীযোগ (প্রে) রোহিণা বোগঃ। রোহিণীনক্ষের
বোগ, ক্মার্টমীর দিন রোহিণী নক্ষর হইলে রোহিণীবোগ হর,
এই রোহিণী নক্ষরের বোগ হইলে ভাহাকে ক্রম্ভীবোগও
কহে। [ক্রমার্টমী দেশ]

द्राहिनीद्रमन् (गूर) कारिना बननः। > वृत्रकः। (बाजनि -) २ वज्रस्य । ७ छ्या।

রোহিণীবল্লভ (গুং) বোহিণ্যা ক্লভঃ। > চ্ছে। ২ বহুদেব। রোহিণীত্রভ (দী) বজ্ঞভা।

রোহিশাশ (পুং) রোহিশা শশঃ। ২ চছ । ২ বছনের।
রোহিশীকো (পুং) রোহিশীনক্ষের চমুর্কিকে করহিত্ত
নক্ষরক্ষ।

রোহিণীছত (গুং) রোহিণ্যাঃ হচ্চঃ। > রোহিনীর পুঞ্জ, বনদান। ২ ব্যবহ।

রোহিণের (१६) মৌহণের, বর্ষভ্যানি। (রাজনি) রোহিণ্যক্টনী (ঝী) রোহিণীর্জা অন্তনী। রোহিণী নক্ষর্জা ভারক্ষাইনী, ক্যাইনীর দিন রোহিণীনক্ষরের বোগ হুইনে

छारास्य त्रारिगाडेमी करह।

"ক্কাটনাক রোহিণ্যাবর্জরাক্তেনং হরে:। কার্ব্য বিভাগি সধান্য হক্তি পাগং ত্রিক্তালন্॥" (গকড়পু• ১৩২ অ•) [ক্রাটনী শব্দ বেখ]

রোহিণ্যাদ্যন্ত (রী) শুবাধিকারে ক্লডৌবধবিশের। (চরক চিকি- ৫ মান্)

রোছিৎ (পাং) রোহতীতি ক্লব্ (ক্তুক্বিবৃধিতা ইতি ত। উণ্ ১১৯১) > প্রা। (মেদিনী) ২ বর্ণজ্বে। ও মৎসাজ্বে, ক্লই মাছ। "ক্কুণিডকরা মৎতা রোহিজং বলপুরং বিনা।" (বৈদ্যক্ষ) মৎত্যমাত্রই ক্ষক ও পিডবর্ছক, কিছু রোহিত ও মল্পর্যাছ ক্ষক ও পিডবর্ছক নহে। ও প্রামুগ।

"মন্ত্ব্যরাজার মর্কটঃ শার্দ্ লার রোহিং" (গুরুব**র্** ২৪।৩০)

'একো রোহিৎ গব্যঃ' (বেদদীপ৽)

(ত্রি) ৪ রোহিতবণবিশিষ্ট।

"(त्राहि९क्षावा स्थमर" (अक् ১।>••।>७)

'রোহিৎ রোহিতবণা' (সারণ)

(জী) ৫ মৃগী। ৬ লতাভেদ। ৭ বড়বা।

"वृक्ष्मास्करी तरथ रित्रिष्ठा स्मर्वा त्रांश्रिकः" (बक् ১१১८।১২)

'রোহিতঃ রোহিচ্ছলাভিধেয়াক্ষীয়া বড়বাঃ' (সায়ণ)

৮ নদী। 'রোহন্তি আভিবীকানি জক্ষণেন হি বীকানি প্ররোহন্তীতি তথাক।' (নিঘন্টু ১৮৮০) এই অর্থে এই শব্দ নিগমে প্রারহ বহবচনান্ত প্ররোগ আছে, এই কম্ব এই শব্দ বহবচনান্ত।

রোহিত (রী) কহ-(কহেরণ্ড লোবা। উণ্ ৩৯৪) ইতি ইতন্। ১ বৃত্য। ২ রক্তা। ৩ বন্ধু শক্তবহুঃ

"ৰিল্পতোহশনিমেবাংশ্চ রোহিতেশ্রখন্থি চ।
উদ্ধানির্বাতকেকুংশ্চ জ্যোজীংব্যুচাবচানি চ ॥" (সন্থ ১।৩৮)
(পুং) ঃ মীনবিশেষ, রোহিতমংশ্র (Labris Robita)
ফুইমার।

"ইরীশো বিতদীক্ষে বাচাবাচানগোচর:
রোহিতো নো হিতঃ প্রোভো নদগুরো নদগুরোঃ প্রিরঃ ॥"
ইহার নদশ—এই বংজ হক্ষণ, শতবুক, ভুক্দিদশ
বৈতর্ধ এবং বকু বৃত্তাকার ও লোহিতবর্ণ, নংজের মধ্যে ইহা
শ্রেষ্ঠ। তাল কর্মুক, বদকর, বাতনাশক এবং বীর্থবর্ধক ।

"इकः পৰী বেতকুদিৰ বংকো

বঃ ত্ৰেকোঁখনো গোহিতবুত্তবক্তঃ।
কোকং ৰন্যং রোহিতভাপি মাংসং
বাতং হতি মিগুৰুয়াতিবীৰ্যান্।" (রাজনি॰)
ভাব-প্রকাশ হতে পর্যার ও ওপ—

রকোদর, রজর্ণ, রজান্দ, রজণক্তি, রুকণক্, ক্রুপ্রের্ড ও রোহিত, এই মংজ ব্দল নংজ অংশকা প্রের্ড। অন্-ওক্রবর্ত্তক, অর্কিজরোগনাশক, জবংক্ষার সংবৃত্ত, মধুবরস, বাহুনাশক ও কবং শিক্তবারক। (ভাবঞ্র-)

হারীতে গিখিত আছে বে, এই মংস্ত শৈবাদ ভোজন করে এক স্বান্তবিদ্ধ বদিরা হীগনীর ও সমুগাক।

"শৈৰালাহারভোলিয়াৎ স্বপ্নত চ বিকৰ্মনাৎ। রোহিতো গীণনীয়ল্চ লযুণাকো মহাবলঃ॥"

(शतीष ३।३३ पर)

ৎ স্থনামধ্যাত হরিশ্বস্ত রাজারপুত্র। (দেবীভার্গ- ৭।১৫।১৫)

৬ মৃগতের। ৭ রোহিতকর্ম । (মেদিনী)

৮ অগ্নিবোটক।

"রোহত্তি আরোহত্তি রখং বহস্ত্যাদিবনিতি রোহিতঃ"

(निष्कु २।३६)

» त्रक्कवर्गः (बि) > न्नक्कवर्गविभिष्ठे।

"নমো রোহিতার স্থপতরে বৃক্ষাণাং পডরে ন<mark>য</mark>়ং"

(४३वर्ष ३७।३३)

> नगीएका। (रेक्सर्ति ६८।६)

রোহিতক (পুং) রোহিত এব খার্থে কন্। (Amoora Robitaka syn Andersonia Robitaka) বৃক্ষবিশেব, দাড়িসপূলক নামক কনামখাত বৃক্ষ। এই কৃষ্ণ হুই প্রকার, খেত ও রক্তবর্ণ। চলিত রোয়া, ররনা, কড়ার। পর্যার রোহী, সীহলক্ষ্ণ, দাড়িমপূলক, রোহীতক, রোহিণ, কুলাক্ষলি, নাড়িমপূল, নরাপ্রস্থন, কুটলাক্ষলি, বিরোচন, লাজনিক। ত্বপ্রস্থন, ক্রনার, শীড়ার, রুমি, রুল, সীহা ও রক্তনেএরোগানাক। (রাজনিক) ২ হরিণবিশেব। ও কুল্ছবৃক্ষ। ৪ বেশভেষ। [রোহতক দেশ।]

ত কুমুছবৃক । ও বেশজেন । (তারত ক দেব।) ব্রোহিত্যকারন্ধ (क्री) স্থানজেন। (ভারত উলোগণ•)

রোহিত্তকৃট, পর্মতভেষ। (জৈনহরি ৫১।১১১)

রোহিতকুল (রী) ক্ষণদচ্চে। (পক্ষণিশ্রা• ১৪৮০)২২) রোহিতকুলীয় (রী) নামভেদ।

রোহিতগিরি (গং) পর্মাতক।

দ্বোহিতপুর (রী) রোহিতক নগর। হক্তিকরের পুর রোহিতক এই নগর প্রতিষ্ঠা করেন। [মোটাল্যক্ত দেব।]

রোহিতবং (অ) রকাকবৃক। (লট্টারণ সঞ্চঃ) রোহিতবস্ত্র (क्री) নগরভেব। (ললিভবি•) ব্ৰোছিতা (ত্ৰী) রোহিত-টাপ্, (বৰ্ণাৰন্থৰাভাভোপধাতো ন:। পা ৪।১।৩৯) ইতি পাক্ষিকো ভীৰ্, ভকারত নকারাদেশত ন। রাগাদি ছারা রক্তবর্। পক্ষে ভীব্ও ভছানে ন করিয়া রোহিণী পদ হয়। 'রোহিণী রোহিভা রক্তা লোহিনী লোহিভা চ সা।' (অটাধর) রোহিতাক (গ্রং) রক্তচকু:। রক্তলোচন। রোহিতাঙ্গ, দেশভেদ। [রোহতল দেখ।] রোহিভাঞ্জি (অ) রক্তচিহ্বিশিষ্ট। রোহিতাশ্ব (পুং) রোহিতোহবো বস্ত। > অগ্নি। ২ হরিশক্ত ক্লাকার পুত্র। (মেদিনী) রোহিতিকা (রী) রোহিভো বর্ণোহতাতা ইতি রোহিত-ঠন, টাপ। রাগাদি বারা রক্তবর্ণ। (কটাধর) রোহিতেয় (পুং) রোহিত এব স্বার্থে চ। রোহিতবৃক্ষ। "প্লীহারী রোহিতের: তাৎ রক্তপুলান্চ রোহিত:।" রোহিদশ্ব (পুং) অগ্নি। (ধক্ ১।৪৫।২) রোহিন (পুং) অবশ্যং রোহতীতি ক্লহ আবশ্যকে ণিনি। ্১ রোছিভকরুক। ২ অখথরুক। ৩ বটরুক। (মেদিনী) রোহিলখণ্ড, যুক্তপ্রদেশের ছোটলাট ৰাহাছরের অধীন একটা শাসনবিভাগ। বিভাগীর কমিসনের কর্তৃত্বাধীন। অক্ষা २१'७६ इहेए २२'६४ डि: धवः माधि १४'२ इहेएड

এখানে সর্কামেত ১১৩২৭ থানি গ্রাম ও নগর আছে, তয়ধ্যে বরেলীর জনসংখ্যা লক্ষাধিক, শাহজহানপুর প্রায় ৭৫ হাজার, মোরদাবান ৬৭ হাজার, আমরোহা ৩৬ হাজার, বৃদাউন্ ৩৪ হাজার, গিলিভিৎ ৩০ হাজার, চন্দোসী ২৮ হাজার, শস্কল ২২ হাজার, নাগিনা ২০ হাজার, নজিবাবান ১৮ হাজার, তিলহার ১৫ হাজার, বিজ্ঞনোর ১৫ হাজার, কোরকোট ১৫ হাজার, পাসাবান্ ১৫ হাজার, আওনলা ১৩ হাজার, কিরাতপুর ১৩ হাজার, সরাইতর্গী ১১ হাজার ও চাঁকপুর প্রায় ১১ হাজার । এই ১৮টা প্রধান নগর বাতীত আরও ২৮টা ক্ষে নগর আছে। নগরসমূহে স্থানীয় বাণিজ্যের প্রভাব নিতান্ত মন্দ নহে। আউধ-রোহিল-খণ্ড ও কুমায়্ন-রোহিলখণ্ড রেলপথ এখানে বিভূত থাকার স্থানীয় ব্যবসার বিশেষ স্থাবিধা হইরাছে।

৮০ २৮ शृ: मधा। भूभविमान ১०৮७ वर्गमारेन। विकासोत्र,

মোরাদাবাদ, বুদাউন, বরেলী, পিলিভিৎ ও শাহদ্বহানপুর জেলা

ইহার অন্তভূ কে।

রোহিলা আফগান জাতি এক সময়ে এই বিস্তৃত বিভাগে বাস করে এবং তাহারা স্বকীয় বীর্যা-বলে এইস্থান অধিকার স্বরিরা আক্সান শাসন বিতার করিরাছিল। তদব্ধি এই স্থান রোহিলাও নামে আখ্যাত হর। ছর্ত্বর রোহিলাজাতির বীরপ্রকৃতি ও মুক্তবিগ্রহের পরিচর রোহিলা শঙ্কে এবং বিভাগীর ইতিরুত্ত প্রতি জেলার তত্তরামক শংল বিবৃত্ত হইরাছে।

রোহিলা (রোহেলা), ভারতবাসী আমগান (পাঠান) ভাতির একটা শাখা। ইহারা প্রধানত: যুক্তকৈ আক্সাননামে পরিচিত। দিলীতে পাঠান-আধিপত্যকালে ভারতে আসিয়া ইহারা নানা রাজ্যে ছড়াইয়া পড়ে। সেই সমরে আন্দর্গান-সন্দারগণ জারগীর বা শাসনকঠন কইয়া দ দ প্রাধান্তন্থাপনে বছবান ছিলেন। পঞ্চাবের পেশবার বিভাগে ভারতাক্রমণকারী কএকদশ আক্গাম উপনিবেশ স্থাপন করিলেও, ভারতের অক্সান্ত স্থানে আফগানগণ বসবাস করিবার শ্রবিধা পাম নাই। ১৫২৩ খুটান্দে মোগল-সম্রাট্ বাবরশাহ বখন ভারতে রাজ্পাট স্থাপন করেন, তখন ্হইন্ডে জরজ্জেবের শাসনকাল পর্যান্ত ভারতে পাঠানদিগের ৰিশেব. প্ৰাত্নৰ্ভাব ছিল। প্ৰতিষ্ঠাপন্ন ও প্ৰতাপশালী বোদা রাজ-পুত বা হিন্দু-রাজ্যগণের শাসনসময়ে আফগানগণ মন্তকোভোলন করিতে পারে নাই। অরদক্তেবের মৃত্যুর পর, মোগল-প্রভাবের উত্তরোত্তর অবসান হইতে দেখিলা সুঠন হারা धनाहत्रागत क्रिडोप्र या मिनिकत्रिक् नाच्छत जानाम मान मान আফগানজাতি পার্বত্য-অধিত্যকা ছাড়িয়া কর্মারেষণে ভারতে আসিয়া পদার্শণ করিল। চূএকজন রাজকার্য্যে নিয়োজিত इरेलि अधिकाः भरे मञ्जात्रि बाता जीविकार्क्यन करियाहिन।

হিন্দুখানবাসী এই আফগানস্থাতি তৎকালে রোহিলা নামে পরিচিত ছিল। হিন্দুগণ কেন তাহাদের রোহিলা নাম দিরাছিলেন, তাহার কারণ নির্দেশ করা যায় না। পশ্বভাষার রোহশন্দে পর্বত এবং রোহেলাই শন্দে পর্বতবাসী বুঝায়। এতদ্বির তারিখ্-ই-শাহী ও ফিরিন্তার আফগানস্থানের অন্তর্গত রোহ্ নামক জনপদের উল্লেখ পাওরা যায়। ঐ স্থান স্থাত ও মালোর হইতে ভক্তরের অন্তর্গত শিবি নপর পর্যন্ত এবং হাসন-আবদাল হইতে কাবুল পর্যন্ত হিল। সন্তবতঃ এই রোহ্ নামক জনপদ বা পার্বত্যপ্রদেশ হইতে সমাগত আফ্-গানস্থাতি ভারতে রোহিলা নামে পরিচিত হইয়াছিল। উত্তর-ভারত অপেকা দক্ষিণতারতে বিশেবতঃ হায়দরাবাদে আফগান উপনিবেশিকগণ "রোহেলা" নামে কথিত হইয়া থাকে। উত্তরভারতবাসী আফগানজাতি সাধারণতঃ পাঠান নামেই পরিচিত।

অরলকের মৃত্যুর পর মোগলসাম্রাজ্যে বিশৃথলা বটিলে, নানাস্থানে নেতৃগণ আপন আপন প্রতৃত্ব-সংস্থাপনে সচেষ্ট ছিলেন। এই সমরে উত্তর-পশ্চিমপ্রকেশবাসী আফগানগণ শক্ষাবৃত্তি ভারা উদর পূরণ করিতে ছিলেন। সৌজাগ্যাবেরী আক্যানসেনানী রাউদ মোগদসরকারে ক্রীতর্বাসরূপে নিযুক্ত থাকিয়া বীর সদ্পণে প্রতিষ্ঠালাভ করেন। অবশেরে সেই বাজিবীর প্রভু শাহ আলম্কে নিহত করিরা কাতিহর নামক স্থানে প্রাথান্তলাভের ক্রযোগ কেথিতে লাগিলেন। এই সমরে তাঁহার প্রক্ষবকারে বিমোহিত হইরা আক্যানগণ তাঁহার বলীভূত ও ঘলভূক্ত হইতে লাগিল। রাউদ প্রথমজীবনে সূর্ভনকালে একটা জাট-বালককে অপহরণ করিরা লালনপালন করেন। ক্র বালকের নাম আলী মহম্মদ। আলী প্রতিপালক রাউদকে নিহত করিরা বরং আক্যানসম্প্রদারের অধিনেতা হইলেন এবং বীর সাহস ও কার্য্যতৎপরতাগুণে শীর্রই কাতিহরের সর্ক্ষমর কর্তা হইরা উঠিলেন। তিনি বহুণত আফ্যান যোজাকে স্বকার্যে নিয়োগ করিরা আপনার বলর্ছি করিয়াছিলেন।

দিলীর রাজসরকারের ছরবছা দেখিরা ১৭৩৯ খুটাব্দে নাদিরশাহ মোগলসম্রাটের গর্ম আরও ধর্ম করিলেন। তাহাতে আলী মহন্মদের ক্ষমতা আরও বাড়িরা গেল। জনেক শিক্ষিত আফগানসেনা ও সেনাপতি তাঁহার পক্ষে আসিয়া যোগ দিল। মহন্মদ এইরূপে বলীয়ান্ হইয়া ভাবী প্রতিযোগীর বিরোধের আশক্ষা অপনোদনার্থ বীর খুল্লতাত রহমৎ থার সহিত মিলিত হইলেন। রহমৎ তৎকালে রোহিলখণ্ডের সর্মপ্রধান আফগানস্দার, তিনি আলীর নিকট হইতে কিছু আয়গীর লইয়া তাঁহার সহযোগে কার্য্য করিতে স্বীকৃত হইলেন। রহমতের পিতা শাহ আলম্ বাদললৈ আফগান। তিনি কান্দাহার ত্যাগ করিয়া কাতিহরে আসিয়া বাস করেন। ১৭১০ খুটাব্দে রহমতের জন্ম হয়।

১৭৪০ খুটান্দে রোহিলখণ্ড নামক স্থাব্থ দেশভাগ আলী
মহম্মদের অধিকারভুক্ত হর এবং সম্রাট্ তাঁহাকেই তথাকার
শাসনকর্ত্তা বলিরা স্বীকার করিতে বাধ্য হন। ৫ বংসর
নির্কিরোধে রাজ্যশাসন করিবার পর ১৭৪৫ খুটান্দে
অবোধ্যার স্থবাদার সক্ষরজ্ঞজের সহিত তাঁহার যুদ্ধ বাধে।
এই সমরে সম্রাট্ মহম্মদশাহ উজীরের পক্ষাবলখন করার
আলীমহম্মদ বস্তুতাশ্বীকার করিতে বাধ্য হন। তিনি নজরবন্দিরূপে দিলীতে রক্ষিত হইলেও তাঁহার অধীনত্ব তুর্দ্ধর্ব
আফ্রগানগণ ক্রমশাই অভ্যাচার ও উপদ্রব আরম্ভ করিল।
তথন সম্রাট্ আলীকে সরহিন্দের শাসনকর্ত্ত্ব দান করিয়া
তাহাদিগকে নিশ্বিস্ত করিলেন।

১৭৪৮ খুটানে আৰম্বালীর ভারতাক্রমণে হ্রযোগ পাইরা আলীমহন্দ্র পুনরার রোহিলখণ্ড হন্তগত করিয়া লইলেন এবং অভি সতর্কতার সহিত রাজ্যশাসন করিতে লাগিলেন। শাসন- শৃথনা অনুদ করিবার অভ্যন্ত কাল পরেই ১৭৪৯ খুঠাকে ভিনি কালগ্রানে নিপভিত হন। তথন তাঁহার জাের ও মধ্যম প্রক কর্মজ্বা থাঁ ও আক্রেরা থাঁ আবদালীর সহিত কালাহার যাত্রা করিরাছিলেন। অভ্যাং অপর নাবালক চতুইরের উপর রাজ্যভার না দিরা আলী খীর খুরতাত রহমং থাঁকে 'হাফিল' অর্থাৎ রাজ্যের প্রধান অভিভাবক ও রহমতের জ্ঞাভিজাতা হতীবাঁকে সেনাপতি করিয়া যান।

আলীনহমদের মৃত্যুর পর, তাঁহার বিখ্যাত সেনাপতি ও विक्रमोरत्रत्र जानगीतमात्र माजित या कुछीयात्र क्छारक विवाह कतित्रा नाजित উদ्দोना नामश्रहगर्शक विकासीत चण्ड वाक्नभाषे द्वाभन कतिरमन। मधा अखरक्षिीएक वक्रमदरमीव আফগান কাএমজন ফরখাবাদে খীর প্রভাব বিস্তার করিয়া আফগানশাসন বিভার করিরাছিলেন। এই সময়ে উঞ্জীর সফ্ৰারজন তাহাদের দর্শ থর্ক করিবার মানসে প্রথমে সেনা-পতি কুতব উদীনকে প্রেরণ করেন। হণ্ডী খা-পরিচালিত রোহিলার হতে কৃতবের পরাজয় ও প্রাণবায়ু বহির্গত হইলে সফলর কাএমজন্দের সহায়তার ১৭৫০ খুটান্দে রোহিলখণ্ড আক্রমণ করেন। বলাউনের যুদ্ধে হাফিজ রহমৎ ও হতী খাঁর হত্তে কাএমজন নিহত হইলে তিনি আর রোহিলখণ্ড আক্রমণ না করিয়া কাএমের পুত্র আদাদ খাঁকে ফভেরাবাদে আক্রমণ করেন। এ যুদ্ধে বিশেষরূপে অপমানিত, লাঞ্চিত ও পরাজিত হওয়ার দফদর প্রাণ লইয়া পলায়ন করেন এবং আফগানগণ আলাহাবাদ পর্যান্ত লুগ্ঠন করে।

এই অপমানে কৃষ্ণ হইরা সফদর মহারাষ্ট্রসেনাপতি মলহর-রাও হোলকর ও জয়ায়াসিন্দের সাহায্যে পুনরার রণক্ষেত্রে উপ-স্থিত হইলেন। আক্ষণ থা রহমৎ ও হণ্ডীথার সাহায্য লাভ করিয়া যুদ্ধার্থ প্রস্তুত হইতে লাগিলেন। ১৭১৫ পুটালে মহারাষ্ট্রসেনা রোহিলথণ্ডে প্রবেশপূর্বক আক্ষনথাকে পরাজিত করিল। আক্ষন থা পুনরার কক্ষণাবাদ সিংহাসন পাইলেন।

এই সমরে কর্জ্বা থাঁ, আবহুলা থাঁ, হাফিজরহমৎ ও ছণ্ডী থাঁর মধ্যে রাজাবিভাগ লইরা গোলযোগ ঘটিল। অবশেবে চারিজনেই আলীর সম্পত্তি বিভাগ করিয়া লইলেন। ১৭৫৪ খুইান্দে
মন্ত্রী গালীউন্দীন্ক র্কৃক সম্রাট্ আন্দাদশাহের রাজ্যচ্যুতি এবং সক্ষরজলের মৃত্যু ও হলা উন্দোলার অযোধ্যা-মসনদ্ প্রাপ্তিতে রোহিল্লা
জাতির অগৃইরবি ক্রমশংই তিমিরাবৃত্ত লইরা আসিতে লাগিল।
১৭৫৬ খুইানে আবদালী ৩র বার ভারত আক্রমণ করিলেন।
এবার তিনি পূর্কক্থিত নাজিব উন্দোলাকে দেনাপতি ও প্রধান
মন্ত্রী করিয়া গেলেন। গালি উন্দীনের এ ক্ষরতান্ত্রাস ভাল লাগিল
না, তিনি মহারান্ত্রীরের সহবোগে তাঁহার সর্ক্নাশে সমুত্ত

ছইলেন। ১৭৪৮ গুটালে মহারাট্র-বেনা রাজিক উল্পোল্ডিক বোহিলপথেও ডাড়াইবা দের । ইনেকেন স্বস্থান্ত কা হইবা স্পর্কের ডাহারা ১৭৫৯ গুটালে বাজিয়ক্ষে স্বস্থান্ত ক্রিকেন হাফিল-রহমণ ও অভাভ রোছিলা প্রনিক্রের স্বর্গটিনিগের বভিনোধ ফরিতে অসমর্থ হইবা ক্রমা উল্পোলার পাহান্ত আর্থনা করেন। উক্ত বর্বে মবেয়র বাসে ক্রিকিক ক্রেনাক্রের নিক্ট পরাভ ইইবা মহাবাটীয় কর্ম প্রাম্থনা বার।

ক্ষান্ত্রীন্দ্রেকর গলাইবার আহও ভারণ ছিল। ১৭০০
ভ্রাবের দেশ্টেরর মানে আবলালী এর্ব বার ভারতাক্রমণার্থ
গলাবে প্রাণি করেন। পরাব তৎকালে মহারাট্র অবিকারে
ছিল্ব রাজ্যরকার্থ মহারাট্রগণ রোহিলাদিগকে ছাড়িরা আবলাক্রীর সন্থান হইবার উল্বোগনেবিতে লাগিলেন। ১৭০০ খুটাকে
ভারলালী নাজিব উলোলা, হাফিল রহমৎ ও অল্লান্ত রোহিলা
স্পারণণ সমবেত হইরা দিল্লী অভিনুখে অগ্রসর হইলেন। ওই
ভাল্লারী ১৭০১ খুটাকে পাণিপথবৃত্তে মহারাট্রশক্তি বিধ্বত
হলৈ আক্রমণাহ আবদালী বিজ্ববোবণাক্তে শাহ আলম্কেই
দিল্লীর সম্লাট্ন মনোনীত করিরা নাজিব উলোলাকে প্রধান মন্ত্রী ও
জ্বলা উলোলাকে উলীর করিরাছিলেন। তিনি হাফিল রহমৎ ও
জ্বতী থাঁকে বথাক্রমে এতাবা এবং আগ্রা ও কাল্পী প্রদেশ দান
করিলেন। অস্লান্ত রোহিলা স্পারণণ অন্তর্বেদীর মধ্যবর্ত্তী প্রদেশ
ভোগ করিবার অধিকার পাইলেন। এই সমরে কঞ্জবংসর
মাত্র রোহিলাগণ শান্তিমর স্থবাজ্য ভোগা করিরাছিল।

১৭৬৪ খুটালে ক্রজা উদ্দোলার সহিত ইংরাজের বিরোধ ঘটে এবং ১৭৬৫ খুটালে বজারের যুক্তে তাহা কতকটা হুগিত থাকে। ১৭৬৯ খুটালে আফগানগণ পুনরার এতাবা ও দোরাবের মধ্যবর্ত্তী জেলা সমুদার আজমণ করিলে ক্লাইবের মনে নালা কুচিন্তার উদর হইতে থাকে,কিন্ত ১৭৭০ খুটালে নাজিব উদ্দোলার মৃত্যুতে তংপুত্র জাবিতা থা রাজা হইলেন বটে, কিন্তু রোহিলা জাতির লর্জ জনেকাংশে থকা হইরা গেল। উক্ত বর্বেই রোহিলাখণে হুতীখার মৃত্যু হওরার রোহিলাগণ আর মহারান্ত্রীর গতিরোধ করিতে পারিল না। ১৭৭১ খুটালে তাহারা দশবর্ব পরে পুত্ররার দিল্লী আক্রমণ করিল। জাবিতা খা বিপদ্ নিক্টবন্ত্রী জানিরা রাজ্য ছাড়িরা পদারন করিলেন। উক্ত বর্বে ২৫এ ডিলেবর মহারাট্রের সহিত একটা চুক্তি করিরা স্ব্রাট্ট নগরে প্রবেশ করিলেন।

১৭৭২ খুটাকে মহারাষ্ট্রকল রোহিলখণ্ড আক্রমণ করিকেন। লাবিতা থা ও হাফিজরহমৎ প্রাকৃতি রোহিলা সর্ফারগণ এবং জরং কুলা উদ্দোলা মহারাষ্ট্রার সেনার গতিরোধ করিছে জনমর্থ হই-কোন। মহারাষ্ট্রকল পাণিপথবৃত্তের প্রাতিহিংসালক্ষিমার্থ রোহিল- পঞ্জ উৎসাধিত করির। অবোধ্যাবৃদ্ধনে অঞ্চলর হুইলে উলীর
প্রবা উদ্দোলা কলিকাভার ইংরাজগবর্নেটের সাহাব্য প্রার্থনা
করেন ও রোহিলপঞ্জ বিভাগের কডকাংশ ক্ষিপুরণ সরুপ
ইংরাজহতে স্মর্শন করিবার আলীকার করেন। তব্যুস্থারে
সভার প্রেসিডেন্ট কার্টিরারের আনেশে সরু রবার্ট বেকার মধ্যক
হইরা নহারাই, রোহিরা ও ক্রলা উদ্দোলার সন্মিননের চেঠা পান।
উক্ত বর্বের ২০০ মে পর্যন্ত সন্ধির প্রাক্তান চলিল, কিন্তু বিশেব
কিন্তু হইল না। বর্ধারতে মহারাইার্যল গলা পার না হইরা
কিরিয়া গেল। রোহিরাপণ এবং কারিতা বা পাইপুরে বাইরা
রাজ্যে প্রবেশ করিলেন। উন্ধীর বেকার সাহেবকে বাইরা
আবোধ্যার চলিলেন।

এদিকে হেরিংস মাজ্রাক হইতে আসিরা উক্ত বর্বের এপ্রিল মাসে বালালার গবর্ণ র হইলেন। মহারাব্র, রোহিলা, উজীর ও মোগলসত্রাটের পরস্পরের স্বার্থ ও সম্বন্ধ রক্ষা করাই তাঁহার মূল করান হইরা উঠিল। মহারাব্রগণ রোহিলথও পরিত্যাগে স্বীকৃত হইরা রোহিলথও আক্রমণে বিরত থাকিলেও তদেশে শান্তি হাপিত হইল না ৷ রোহিলাদিগের মধ্যে গৃহবিবাদের স্কান হইল। রোহিলাস্দার স্দার থা বিরুত্ব মৃত্যুতে তাঁহার প্রাণ উত্তরাধিকার লইরা গোলবোগ উথাপন করিল। হাফিজ্বর্যাও উরাধিকার লইরা গোলবোগ উথাপন করিল। হাফিজ্বর্যাও ইনারং থা পিড়ার বিরুদ্ধে অন্তর্থারণ করিলেন। এই সমরে অক্সতম রোহিলা সন্ধারণা ক্রমংশই কর্মপ্রাপ্ত হইতে লাগিলেন, সন্দার শেখ কবীর ভবলীলা সম্বরণ করিলেন, ফ্রথাবাদের মূজ্যক্রমক্ষ অকর্মণ্যতানিব্রুদ্ধ হইরা পড়িলেন এবং আবিতা থা স্বজাতির সহাস্কৃত্তি হারাইরা কিংকর্তব্যবিস্থা হইলেন। তিনি বিরীশ্বরের প্রধান মন্ত্রিকের আশার ১৭৭২ খুটাক্রের ক্লাই মানে মহারাব্রুদ্বেল মিলিত হইলেন।

উত্ত বর্ষের শেকভাগে মহারাত্রীরগণ দিলীপ্রবেশ করিলে, নজক খাঁ বিশেষ চেটা করিরাও আত্মরকা করিতে পারিলেন না। মহারাত্রীরগ তথন আর প্রকাঞ্জক্ত সমান্তিক কোনরপ সন্মান না দেখাইরা তাঁহার নিকট হুইতে আলাহারাদ ও কোরা প্রদেশ বিজ্ঞির করিরা সইলেন। এই সংবাদে তীত হুইরা ক্লা উদোলা ইংরালগবর্মেন্টকে সাহায্যপ্রার্থনাপূর্কক পত্র লিখিলেন। কোড়া ও আলাহারাদ লইরা ইংরাজের সহিত যুদ্ধ বাধিবার সন্ধাবনা দেখিরা মহারাত্রীর-সেনাপ্রিক হাক্সিরহ-বতের সহিত স্থিলিভ হুইবার আপার গল্পা পার হুইরা রোহিলখণ্ড প্রবেশ করিলেন।

হাবিশারত্যতের সহিত মহারাইবলের সন্ধির প্রভাব চলিতে দেখিরা হেষ্ট্রংস চিন্তাসুক্ত ক্ইলেন। তিনি আমোধ্যার উদ্দীরের পক্ত ও ইরোকের স্বার্থ সংস্কেশার্থ সেনাপতি সমৃত্যনাট রেকারের

चरीत्न धक्वन है:वास्तिष्ठ ध्यत्रन क्त्रित्नन। भराताद्वेतिनारक রোহিলথও হইতে তাড়ানই মুখ্য উদ্দেশ্ত রহিল। দেনাখ্যক বেকার ক্লা উদ্দোলার সহিত সর্ভ দাব্যত্ত করিছা হুই দল ইংবাজ, ছরণল সিপাহী ও একলল কামানবাহী লৈক লইবা ১৭৭৩ খুটাব্দের মার্কমানে অবোধ্যা হইতে রোহিলখণ্ড অভি-मूर्य याजा कतिरामन। जारवाशास रमनामम ও हरेसांकरमञ्ज द्राहिनामिगटक नाहांचा कतिरव जानाहेता, ज्ञूजा-फेटकोना हाकिज রহমৎকে পত্র লিখিলেন এবং মহারাব্রীরগণের বিক্লকে বুক্রবোষণা করিতে রুডসভর হইলেন। এ প্রস্তাবে হাকিন্ত রহমৎ সন্মত रहेरनन ना ; जिनि साविजा वा अ मराता है-शकावनवन कतिरनन ৰেখিরা সেনাপতি বেকার সদলে রামঘাট অভিমুখে অঞ্চনর হইলেন। এইস্থানে নদীর অপরপারে মহারাষ্ট্রগণ সদলে অবস্থান করিতেছিলেন। হান্দিল রহমৎ শঠতাপূর্বাক এতদিন মহারাষ্ট্র বা স্থজার দলে বোগদান করেন নাই, মহারাষ্ট্রসেনাপতি আর বিলম্ব না করিয়া বলপূর্ব্বক তাঁহাকে বশীভূত করিবার চেষ্টা পাইলেন। মহারাট্রগণ নদী পার হইয়া হাফিজ রহমতের লিবির-সন্মুখস্থ রোহিলাহর্গ আক্রমণ করিলেন, কিন্ত ইংরাজের সহিত যভার্থ প্ৰস্তুত হইলেন না।

এদিকে ২১ মার্ক্ত হাফিল রহমৎ উপারশৃক্ত হইরা স্কলার প্রভাবে সম্মতিদানপূর্বক তাঁহার দলে আসিরা বোগ দিলেন। ইহাতে মহারাব্রগণ পশ্চাণপদ হইলেন। কএকবার আক্রমণের ভর দেখাইরা তাহারা ইংরাজ ও স্কলাকে উৎকৃত্তিত করিয়াছিলেন, অবশেবে মে মাসে দান্দিণাত্যে মহারাব্র-দর্দারগণের পরশার বিরোধ উপস্থিত হওরার, তাহারা বাধ্য হইরা উত্তরভারত ত্যাগ করিল। তাহাতে উন্ধীর ও ইংরালের অদৃইন্দরী স্থপ্রসরা হইলেন এবং মহারাব্রগজি জন্মের মত লোপ পাইল। এই ভীবণ বিবাদে মহারাব্রীর সন্দারগণ ছিন্ন ভিন্ন হইরা পড়িলেন। তাহারা একত্র বে লক্ষাধিক অধারোহী সেনা ও ১০ কোটা তলা রাজত্ব আদার করিরা মহারাব্র-দান্তার পত্তন করিতেছিলেন, তাহাই সকল সন্দারগণ বিতাপ করিরা লইরা নিশ্বিত্ত হইলেন। এই সমন্ব হইতে মহারাব্র-শক্তির অবসান ঘটে।

এই বৃদ্ধিগ্রহে উন্ধীরের বিগন্ধণ বার হওরার তিনি রোহিলাদিগের নিকট হইতে প্রাপার্তার নাবী করিবা পাঠাইলেন।
হান্দিল রহমৎ অর্থপ্রেলানে অবীকৃত হওবার, তাহার বিক্তে
বৃদ্ধবোৰণা করিবার আনেশ হইল। কিছ ক্ষলা প্রথমে বৃদ্ধ করিরা
রাজকোব শৃষ্ঠ করিতে চান নাই। ভখন হেটিংস বারাণসীর
সন্ধি অস্থনারে তাহাকে ৫০ লক নিয়ার্তার আলাহাবাদ ও
কোরা বিক্রম করিকেন। সভঃপর রোহিলানিগ্রকে ভাতাইবার

ৰংশাৰত চলিতে লাগিল। উনীয় ভাষাতে সায় নিলেন বটে, কিড সৈচনাহার্য করিতে চাহিলেন না।

১৭৭৪ বৃটাকে কুলা মহারাইদিগকে হোরাব হইজে ভাড়া-ইরা নিরা জাবিতা বাঁ ও অভাভ রোহিলা সন্ধারগণের সহিত মিজতা স্থাপন করিলেন। কিন্তু অচিরেই **তাঁহার মনের গতি** কিরিল। ভিনি রোহিলাবিগকে দমন করিবার অভিগ্রাহে পুনরার হেটিওসের সাহাত্য প্রার্থনা করিলেন। সেমাপত্তি বেকারের উপর বধারীতি আদেশ থেরিত হইল। দেখিতে দেখিতে ইংরাজনৈত অবোধ্যাপ্রাত্তে উপনীত হইল। কর্ণেল চাশ্দিরালের নিকট সন্ধির প্রভাব পাঠাইরাও হাকিজ রহমৎ-প্রার্থিত অর্থনানে অলম্বডি ভাগন করিলেন। তথ্ন বৃদ্ধ অবগ্রস্তাবী হইরা উঠিল। উক্ত বর্ষের ২৩এ এপ্রিল লাইজহান-পুর জেলার মিরাণপুর কটিরার বৃদ্ধ বাধিল। রণ্যক্ষেত্রে হাফিলরহমতের সঙ্গে প্রার ছই সহল রোহিলা প্রাণবিস্থান করিল। ইহার পর ক্যক্ত্রা থা রোহিলাদিগের নেতৃত্বগ্রহণ করিলেন বটে, কিন্ত যুদ্ধে অসমর্থ হইরা রামপুর, তরাই ও অবলেবে গড়বালের পর্বভিসামুদেশে পলাইরা আত্মরকার্থ সন্ধির প্রকাব পাঠাইলেন। স্থুনমাসে ইংরাজ ও উলীরসৈত্ত পর্বভ-শীমাত্তে আসিরা উপস্থিত হইল দেখিরা ভরে ভিনি সন্ধির সর্ভে अञ्चरमापन कवित्तन ।

ইংরাজনৈত্র ও উজীর তদনত্তর নেই হান ত্যাগ করিলে পাঁচ সহত্র রোহিলা বৃইয়া ফরজুলা রামপুরে আসিরা রাজ্যপাসন করিতে লাগিলেন এবং অবশিষ্ট রোহিলানৈত্র সর্দার সহ রোহিলথও পরিত্যাগ করিলা জাবিতা বার এলাকার আসিলা বাস করিল। এই বৃদ্ধে রোহিলাজাভির উপর বে অত্যাচার হইরাছিল, তাহা মহামতি বার্কের ১৭৮৬ বৃষ্টাব্দের ৪ঠা এপ্রিল তারিখের বক্তৃতার ও লর্ড মেকলের বিবরণীতে বথাবধ বিবৃত হইরাছে।

রোহিশা, বোষাই প্রেসিডেলীর কাঠিরাবাড় বিভাগের জুনাগড় রাজ্যের অন্তর্গত একটা গগুপ্রাম। সমুদ্রতট হইতে একগোরা দ্রে ও উনানগরের ৪ জোশ পূর্বে অবহিত। পালিতানা রাজবংশের মধ্যে এইরপ একটা আচার দৃষ্ট হর বে, বখন কোন স্পার গরিতে আরোহণ করিবেন, তখন তিনি তাঁহার কোন পূর্বপুরুষকর্তৃক বিজিত এই রোহিশা নগরী হইতে একথও প্রেত্তর লইরা বাইবেন। ইহার ১৪০ জোশ উত্তরে 'চিআসর' নামক একটা স্ববিভূত বাধ। ইহার চারিমিক্ জাঠানকাৰি পরিশোভিত।

রোহিশাল। বোষাই প্রেসিডেনীর কার্টিরাবাড় বিভাগের গোহেদবার্ট প্রাভয় একটা সামস্বরাজ্য। এধান্তার নর্থারের ক্নাগড়ের নবাব ও বড়োবার নাইকোরায়কে কর
দিরা থাকেন।
রোহিষ (ক্নী) > ককুন, গলকুন। কিনী আগিরাবাস।
(গুং) ২ রোহিকমুখা ত রক্তরিক । (করবত)
রোহীতক মুক্ত (ক্নী) ক্রতাবধ্যিকে। এই ওবং বিবিধ
বন্ধ ও মহবা ইহার প্রক্রতব্যালী—যুক্ত ৪ নের, কাথার্থ
রোহীতক স্থাল ২৫ পদ, কুল ওঠা ৩২ পদ, পালার্থ জন
এশ নের, শেব ১৪ নের ২ পদ। ক্যার্থ শিস্কান্দ, চই, চিডামুল্, ওঠ প্রত্যেক স্পন, রোহীতক ছাল ৫ পদ, পাকের জন
১৬ নের। পরে ব্রাবিধানে এই ব্রুড পাক করিবে। এই
ব্রুড শান করিবে মীহা ও ওল প্রভৃতি বিবিধ রোগ আভ

প্রাপমিত হরা (ভৈবজারত্বাৎ সীহাবরুদধি»)

মহারোহীতকল্পত। প্রস্তাপ্রধানী নত ৪ সের, কাখার্থ রোহীতক ছাল ১২।০ সের, কুল ওঁঠা ৮ সের, কল ১২৮ সের, শেব ৩২ সের। ছাগছর ১৬ সের। ক্যার্থ জিকটু, জিকলা, হিলু, যমানী, ধনে, বিট্লবণ, জীরা, ক্রকলবণ, বাছিমবীজ, বেবদার, প্রন্থান, রাধালগণার মৃল, ববকার, কুছ, বিছল, চিতামূল, হবুরা, চই ও বচ প্রভ্যেকে ২ তোলা, পাকের জল ,১৬ সের। বথাবিধানে পাক শেব করিরা নামাইতে হয়। এই স্থতের মাত্রা ॥০ জানা হইতে ছই বা তিন তোলা। জাল্পান মাংসরস, যুব ও ছর প্রভৃতি। এই স্থত বিশেষ ক্রকলর এবং ইহা সেবনে দীহা, যক্রং ও তজ্জান্ত শুল, ক্রকশ্ল, হচ্ছুল, পার্বশ্ল প্রভৃতি বিবিধ রোগ জান্ত প্রশমিত হইরা থাকে। গ্রাহা যক্রদধিকারে ইহা একটা উৎকৃষ্ট স্থত। (ভৈষজারক্লাও শ্লীহায়ক্লমিও)

রোহীতকলোহ (রী) গুরুধবিশের। প্রস্তুতপ্রণালী— রোহীতক হাল, বিকট, বিজলা, বিজল, মুতা, চিতামূল, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক সমভাগ; এই সকল দ্রব্যের সমান লোহ। এই সমত্ত উত্তমদ্ধপে মর্দন করিরা প্রথধ প্রস্তুত করিতে হইবে। অস্থপান লোবের বল বিবেচনা করিরা দ্বির করা আবশ্রক। ইহা সেবনে শ্লীহা, দ্বগ্রমাদ ও শোষ বিনষ্ট হয়।

(তৈবজারদ্ধা• শ্লীহাবস্থদধি•)

त्राही कर**लाइ** (ही) ग्रीशिषकात लोहरूम ।

প্রস্তত প্রণালী—রোহিতক, ওঁঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, বিড়ক্স, চিডা, ও মুডা এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং এই সকলের সমান লোহ একএ মিশ্রিত করির। ইহা প্রস্তুত করিতে হইবে। মাত্রা ও অকুপান রোগের বলাবল অকুসারে ছির করিতে হইবে। এই উবধ্যেবনে অগ্রমাস ও বরুৎরোগ ভাল হর। (রুদেক্সসার্স্তুত সাইটারোগাধিত)

রোহীভকাদ্যচূর্ণ (ज्ञी) চুণৌবধবিশের। প্রস্তুত্রপাদী— রোহীডক ছাল, বৰকার, চিরভা, কট্কী, মুতা, নিশাবল, আতইচ, ওঁঠ, প্ৰত্যেক চুৰ্ণ সমস্তাগ, এই বন্ধুল উত্তনন্ত্ৰণে চুৰ্ণ করিয়া একত্র বিভিন্ত করিবে। এই ঔষধের মাত্রা ৮ মারা। অমুপান শীতন জন। এই ঔষধ সেবনে সম্বন্ন মতুৎ পীড়া উপশ্যাত হয়। (ভৈষ্ক্যরন্তা• প্লাহাযভূদধি•) রোহীতকারিক (পুং) দর্মিষ্ট উবধবিশের। অছভঞানানী-तारी**एक हान २२३० त्मन, कन २६७ त्मन, त्मन ७**८ तात्र । এই কাৰ উত্তমৰূপে ছাকিয়া লইয়া ইহাতে ২৫ সের শুড় শুলিয়া पिए रहेरव, भरत शहेकून >७ भन, भिभून, भिभूनपून, इहे, চিতামূল, ওঁঠ, গুড়ম্বৰু, এলাইচ, ডেলপত্ৰ, হরীতকী, বছেড়া ও আমলা প্রভ্যেক > পল পরিমাণ চূর্ণ করিরা উহাতে নিক্লেপ ৰবিতে হইবে। ইহা একটা ভাঙে করিয়া ভাহার সুধ উত্তম-ন্নপে বন্ধ করিয়া এক মান কাল রাখিয়া দিতে চ্ইবে। এক মাস পরে এই সকল দ্রব্য উত্তমন্ধপে আলোড়ন করিয়া ছাকিয়া লইতে হইবে। এই সন্ধিষ্ট স্বৰ্দ্ধ ছটাক পরিমাণে স্বেন ক্রিডে হয়। এই শবিষ্ট দিবাভাগে ২ বার বা ৩ বার সেবনীয়। ইহা সেবলে প্লাহা, গুৰা, উদরী প্রভৃতি বিবিধ রোগ প্রশমিত হয়। (ভৈষ্ম্যরম্বা॰ প্লাহাযক্রদধি•)

রৌক্স (বি) কন্ম-জণ্। কন্মনির্থিত। স্থাপনির্থিত।

"বজোপনীতং দেবক্ষ গুড়েত রৌক্ষে চ কুরলে।" (মন্ত ৪। ৩৬)
রৌক্ষিণের (গুং) চ কন্মিনীগর্ভসম্ভব। ২ প্রান্তায়।
রৌক্ষারণ (গুং) কন্মের সোত্রোপত্য ক্ষিতেল।
রৌক্ষারণ (গুং) কন্মের সোত্রাপত্য ক্ষিতেল।
রৌক্ষারণ (গুং) কন্মের সোত্রাপত্য ক্ষিতেল।
রৌক্ষারণ (গুং) কন্মের সোত্রাপত্য ক্ষিতেল।
ক্রেক্যারণ (ক্রী) ক্ষান্ত ভাবং কন্ম-ব্যঞ্। ক্ষান্তা, কর্ম্মণতা।
ক্রেক্যান্যান্তালাবন্ধ তৈলং বচ্চাত্রকং ক্ষুতা।
ক্রেক্যান্যান্যান্ত ক্ষান্তাত্রমন্বিকান্।

(দেবীপু• মহানবমীলানঞ•)
রৌচনিক (ত্রি) > রোচনাধারা রঞ্জিত। হরিক্রান্ত। ক্লী) ২ বন্তমূলে অহিবৎ কঠিন মদ।

রোচ্য (পুং) কচেরপভাষিতি কচি-বাপ্। কছবিশেব, রোচ্য মন্থ। কচি প্রকাপতির পুত্রের নাম রোচ্য।

"রোচ্যাদরতথাক্তেংপি মনবং সংপ্রকীর্ন্তিভাঃ। স্বচেঃ প্রজাপতেঃ পূত্র রোচ্চাে নাম ভবিশুভি ॥"

(বংজপু 🖙 🐃)

রোচ্য জরোগশ মস্ত, এই মধন্তরে স্থপর্বা প্রভৃতি বেবজা, ইজ দিবস্পতি এবং ধৃতিমান্, অধ্যর, তববর্ণী, নিজ্পত্বক, নির্মোহ, অন্তপা, নিভাক্সা, চিজনেন, বিচিত্র, নরক্সা, নির্ভাব্য, কৃচ, স্থানেজ, ক্রবৃদ্ধি ও স্থরত এই সকল মন্তপুত্র। (মার্কডেম্প্রাণ) ২ বিষকাঠনও। (হেম) রোট্ডেনমিভি জন্। ৩ সম্বর্জনের।

"ব্যক্তিপ্রেটো খণৈর কো ক্কসাবর্দিকে প্রতে। দিশামরভ্যবিরদং রোচাং প্রকা মধ্যোভক:॥"

(মার্কণেরপু• ১০০/৩৯)

ব্রেটি, জনাধর। ভাষি পরব্যা সক্ষ সেট্। লট্রেটিভি। লোট্রোটজু। লিট্ করোট্র সুড্ জরোটং। শিচ্ রোটরভি। সুঙ্ অক্রোটং।

রোড়, জনাদর। জ্বাদি পরজৈ সক্লেট্। লট্রোজ্তি। পুড, জরোড়ীং।

(त्रोष्ट्रीत, (११) विद्याकत्रग-नच्यानाम्राह्म ।

রোদ্র (রী) করতেবং বা করে দেবতা বক্ত করে-আণ্। প্লারাদি রদের অন্তর্গত রদিনেশ, পর্যার উপ্র। এই রস ক্রোধের
আশ্রঃ। এই রদের বিবর সাহিত্যদর্শণে এইরূপ বর্ণিত
হইরাছে,—এই রদের ছারিভাব ক্রোণ, রক্তবর্ণ, ইহার
অধিষ্ঠানী দেবতা করে, শক্র ইহার আলবন, শক্রদিগের চেটা,
উদ্দীপন, মৃষ্টিপ্রহার, পতন, বিক্রভাকেদ, অবদারণ, সংগ্রাম ও
সম্রমাদি হারা এই রস উদ্দীপ্ত হইরা থাকে। ক্রবিক্লেপ,
ওঠনির্দিংশ, বাহুক্টোটন, তর্জন, আত্মাবদানকথন এই সকল
এই রদের অন্তর্গাণ আক্লেপ, ক্রুরসন্দর্শনাদি, উগ্রতা,
বেগ, রোমাঞ্চ, স্বেদ, বেপণু, মন্ততা, বোহ ও অমর্বাদি ইহার
ব্যতিচারিভাব।

র্মান্তঃ ক্রোধঃ ছারিভাবো রজো ক্রাধিনৈবতঃ।
আলখনং রিপুত্তর তচেটোদ্দীপনং মতন্ ।
মৃতি প্রহারপতনবিস্থতচেদাবদারগৈলৈও।
নংগ্রামসন্ত্রমান্তিরতোদ্দীথির্ভবেৎ ক্রোচা ॥
ক্রবিভলাতনিদ ংশবাছন্দোট্দতর্জনাঃ।
আশ্বাবদানকথনমার্বোৎক্ষেপণানি চ ॥
আহতাবভথাক্ষেপক্র রসন্দর্শনাবরঃ।
উপ্রতাবেপরোমান্তবিদ্বেশধবো মনঃ।
আহামর্বাদরশ্চাত ভাবাঃ হার্ব্যভিচারিলঃ॥" (সা॰দ৽গাংতং)
রৌত্ররসের সহিত হাত, পূজার ও ভরানকরসের
ক্রিকার।

সহিত বিরোধ।

"রৌজত হাজপুলারভয়ানকরসৈরপি।

ভরানকেন শাঁকেন তথা বীররস: বৃতঃ ঃ"(সাহিত্যদ ও ৩২৪২)

(পুং) কলভারনিতি কজ-অন্। হ স্থাতেকা, পর্যাধ কর,
ক্রেমান, ভোড, আতপ। (অমর) ইহার জন-কটু, জন,
ক্রেমান, ভোড, আতপ। গাঁহ ও বৈশ্যভনক এবং চন্দ্রোগবর্তন। (রাজ্য-)

ব্যোভিবে রোজের পটা নাম বেশিকর লাওরা নাম । এটার, পিলল, রোজ, বোরাখ্য, কালনংক্রিড, ক্ষমিনারা ও হত এই পটা রোজ।

প্রতিবংসর একএকটা রোদ্র অবিপঞ্জি হুবীরা বাহক।
বেরণ, রালা, মত্রী গুড়েতি প্রতিবংসর এক একটা হুইরা বাহক,
তত্রণ এই সত্ত রোদ্রের মধ্যে এক একটা হুইরা বাহক, জ্যোন
বংসর কোন রোদ্র অবিশক্তি হুইবে, ভাহা গণনা বারা ছির
করিতে হয়।

"ৰঠর: শিকলো রোজো বোরাখাই কালনক্ষেত্র:।"
ক্ষিনানা হতো রোজঃ নও রোজাঃ অকীর্তিভাঃ ॥"(ক্যোডিং)
কোন কোন এছে 'হক্ত' এই নাম কলে আগবাহ এই নাম
দিখিত আছে।

এই রোজের ফল এইরাপ লিখিত আছে,—বে বংলর পিলল রোজ হর, সেই বংলর প্রালাকর, বক্তরাগ ও লাকি পিডরোগ ও বাদবদিগের নানাবিধ রেশ; অসি নামক রোজ হইলে প্রশাদি পিডরোগ ও বাদবদিগের নানাবিধ রেশ; অয়ি নামক রোজ হইলে উন্তাপ থারা পৃথিবী ওকা এবং জীবসন্হের নানাবিধ রোগ; রোজনামক রোজে চিডোবেগ, নালা গোগ ও এগানি পীড়া; বোরনামক রোজে—অতিশর উত্তাপ এবং বহুবিধ রোগ; কালনামক রোজে জীবসকল উত্তাপে অভিশর পীড়িত এবং ব্রণাদি নানাবিধ রোগ তোগ করিরা থাকে।

ত হেমন্ত গড়। (ব্ৰুছ্ক) ৪ যম। (ধরণি) ৫ কার্ডি-কের। (ভারত ১০৬৮)১৩)(ত্রি) ক্লল-আণ্। ৬ তীব্র। "অরম্রিগাদ্যালিরাঃ বড়্ড্রো নবলোচনঃ। ভশ্বপ্রহরণো রেক্তিঃ কার্ডান্ডক্যমোপনঃ॥"

(বিজয়রক্ষিতথৃত হরিবংশবচন) ৭ ভীবণ। (মেদিনী)৮ কন্দ্রসম্বন্ধী। ৯ ক্ষন্তের উপাসক।

শশিকলো রোজনানা চ ফালরপা: আনাক্ষর্।

শর্পনে বছরোগা: ভাব সর্বাধীনসমূহক:

কঠরো রোজনানা চ বোরবৃত্তক কাররেব।

কণানিশিভযোগক নানাক্রেক্তরো কৃপান চ

ক্ষামনানা বলা বর্বে রোজ্যা কর্মনি মাজনা।

উভাপেন কিতিহ করেব নরাপাং রোগলো করেব।

রোজনানা নহারোজো বজাকে চ ভবেবৃত্তকর্।

চিভোবেসং ত্রপং কুরারানারোপন্যবিভন্তর ।

ক্রামনানা নহারোজো বোরবৃত্তক কাররেব।

উভাপেন নদা দক্ষং নানারোপন্যবিভন্তর ।

কার্মনানা বহারোজ উভাপে প্রিয়ান সন্যা

নানারোক্যান্যবিভ্না বহারোজ উভাপে প্রিয়ানং সন্যা

নানারোক্যান্যবিভ্না ত্রপাধি কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্না ত্রপাধি কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্নার ব্যাধিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্নার অধ্যানিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্নার অধ্যানিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্নার ব্যাধিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্নার ব্যাধিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্রার ব্যাধিক কর্মন করেব।

ব্যাধিক্যান্যবিভ্রার ব্যাধিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্যান্যবিভ্রার ব্যাধিক কর্মন করেব।

ক্রামনিক্সান্যবিভ্রার ব্যাধিক কর্মনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক কর্মনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্র ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ্রার ব্যাধিক ক্রামনারান্যবিভ

১০ বৃহস্পতি বৃষ্টিসংবৎসরের অন্তর্গত চতুঃপঞ্চালং বর্ব।
১১ কেতুভেদ। ১২ অপদেৰতাতেদ। এই অর্থে রৌজ্ঞান্দ
বৃহ্বচনাত্ত। ১০ আতিবিশের। ১৪ আজানক্ষর। ইহার
অধিচাত্তী দেবতা ক্ষয়। এই ক্ষম্ত রৌজনামে অভিহিত।
১৫ সামভেদ্য ১৬ শিক্ষাক্ষয়।

(त्रीसकः (त्री) क्रांसन कृष्टः क्रस-((क्रूनांनापिट्याः द्रकः । शांवाप्रकः कृष्टः । असन्वर्धकः कृष्टः ।

রৌদ্রেকর্মন্ (ঝি) রৌজং কর্ম বস্ত। ভীবণকর্মা, রৌজকর্ম-কারী। (রী) ২ ভীবণ এইক্সণ কর্ম।

রেন্দ্রিগণ, ক্লিড-জ্যোডিবোক গণডেন। এই গণে কম হইলে নেই ব্যক্তি প্রতিদিন পাপাচারী হর। (কোটাপ্রদীপ)

রোদ্রেতা (জী) রোদ্রক্ত ভাব: তল টাপ্। রোদ্রক, রোদ্রের ভাব বা ধর্ম।

द्रिक्तिमर्गन (बि) द्रिक्त मर्गनः यद्य। छीरगाङ्गि । द्रिक्तिशानी, देवनमध्यमात्रास्त्रमः। (इरिजा॰ २।१७)

রোদ্রপাদ (হী) রোক্ত নক্ষত্রবিশেবত পাদং। আদ্রানক্ষত্রের পাদভেদ।

রৌদেমনস্ (ঝি) রোক্রং মনোবস্ত। ভরানক মনোবৃক্ত। নিষ্ঠরচিত্ত। ক্রুর।

রোদ্রোগ্র (তি) ক্রড ও অগ্নিস্বভীর।

রোদ্রোয়ণ (খং) রুদ্রের গোত্রাপত্য।

রোদ্রাশ্ব (পুং) পুরুর পুত্র ও তর্মশীর একজন রাজা।

রোদ্রি (পুং) ক্ষদ্রের গোত্রাপতা।

রোদ্রী (জী) রোজ-ভীপ্। > রুজজ্জা। (মেদিনী) ২ চণ্ডী।

মহামারা চামুগুদেবী করুনামক মহাদৈত্যকে বিনাশ করিয়া

यहाद्रोजी এই नात्म विशां हरेग्नाहित्नम ।

"এক এব মহাদৈত্যো ক্লক্ষত্তেই মহামূধে।

স চ মারাং মহারোঞীং রোরবীং বিসসর্জ হ ॥° ইত্যাদি।

(বরাহপু• ত্রিশক্তিমা•)

द्रो**जीकां**व (११) म्टलब धर्म।

রৌধ (পুং) রোধভাশভ্যং রোধ (শিবাদিভ্যোহশ্। পা ৪।১।১১২)

ইতি অণ্। রোধের অপত্য।

त्रीशांकिक (बि) क्यांनिशनमण्डीव।

(त्रीश्रुत (बि) अधित्र-मन्। अधित्र नवचीत्र।

(त्रोभा (ही) क्रभारमव व्यम्। क्रभा, क्रभा। (त्राविन•)

চলিত দ্বপা বা দ্বপো। ইহা একটা খনিজ পদার্থ এবং আই থাতুর মধ্যে গণ্য। এই থাতু হইতে নানাদ্রপ অলভার ও ঔবথাদি প্রান্তত হইরা থাকে। সাম্বিক দৌর্মল্যক্রমিত রোগে আযুর্কেদ মতে স্বর্ণ বা লৌহবোর্গে রৌপান্টিত ঔবধ

প্ররোগের বিধি আছে। ডাক্তার এষার্স ন ঐ ঔষধের উপ-কারিডা সক্ষয়ে প্রশংসা করিরা গিয়াছেন।

এই ধাতু নানাছানে নানা নাবে পরিচিত। হিন্দী, বালগা, মরাঠা, দক্ষিণী, ওজরাটা ও ভোটে—টাদী, রূপা ও রুমা; দিছু প্রদেশ—ক্ষপো, তামিল—বেরী, বেওি; তেলও—বেরী, কাণাড়ী—বেরী; আরব—ক্ষা, ক্ষিলা; পারত—সিন, হক্রাহু; সংস্কৃত—বেত, রুজত, রৌপা; দিলাপুর—পেটা, রিছি; ক্রজ—নোরে, চীন্—বিন, পেকিন্; মলর—পেরাক্, শলকা; ববরীপে—শলাকা; মলরালম্—রিরাকি; তুর্কী—বৃন্মুন্; ইংরাজী—Silver; দিনেমার—Solva; ওলন্মাক—Silver; ক্ষ্মি—Silber, ক্রাসী—Argent, ইতালী—Argento, লাটিন্—Argentum; পোলিস্—Srebro; পর্জু গীজ—Prate; ক্ষ্য—Serebro, স্পোন—Plate; ক্ষ্মেডিস্—Silfver, হিক্ত—কেনেক্।

কি প্রাচ্য কি প্রতীচ্য ক্ষণতে বহু পূর্ককাল হইতেই রূপার আদর ও ব্যবহার চলিরা আদিতেছে। ক্ষুক্সংহিতার (৮।২৬।২২) এবং বৈদিক ব্রাক্ষণাদির্গেও ক্ষবিগণ হুর্ণ ও রৌপ্যের ব্যবহার ক্ষানিতেন। পুরাণাদি এবং মবাদি হুতিতে রূপার উদ্রেখ দেখা বার। হুতিকারগণ ব্যক্তার পক্ষে শূদ্রের নিকট রৌপ্যদান-গ্রহণের ব্যবহা দিরাছেন। ইহাতে ভাঁছারা পতিত হইবেন না। এই সকল রম্ন তৎকালে ব্যাক্ষণগণ দেবসেবার ক্ষন্ত নির্দিষ্ট রাখিয়াদিতেন। [রক্ষত দেখ]

প্রতীচা ভূমেও প্রাচীনকালে রপার প্রচলন ছিল। মোজেনের লেখনীতে তাহা বিবৃত রহিরাছে। খুইংর্ম পুত্তক বাইবেল গ্রাছের জেনেসিস্ বিভাগে (xx.16) প্রথমে রূপার উল্লেখ পাওয়া বার। উক্ত বিভাগের xxiii. I5, জংশে রূপার বাণিজ্যপ্রভাবের কথা আছে। জহুরার (vi 18-19) লিখিত আছে "এই সকল অভিশপ্তা বন্ধ হুইতে সর্কানা দ্রে থাকা কর্তব্য; কিন্ত বুর্ণ বা রৌপ্য বাহা আছে এবংলোহ ও পিন্তল নির্মিত পাত্রাদি ভোগবিলানের সম্পত্তিরূপে সঞ্চর না করিরা দেবার্থে নিরোগ করাই সর্ক্তোভাবেই উচিত।" বাত্তবিক বাইবেল গ্রন্থের বহু পূর্কবর্তী সংহিতা রুগ হুইতে আদ্বাধর্ম্মকেরী নানাছানের হিন্দুগণ এই আচার বেদবৎ পালন করিরা আসিতেছেল।

খনিতে দ্বপা কখন মূলধাতৃদ্ধপে, কখন বা ক্লোদিল্, সাল-কাইড্ মিপ্ৰণে অথবা সীসক, খপ', বসান্ধন, সেঁকো ও ভামাদি-বোগে বিশ্ৰধাতৃদ্ধপে ৰেখিডে পাওৱা বাব। ঐ বিপ্ৰধাতৃদ্ধি বে প্ৰথাৰ পরিকার করিতে হব, সেই প্ৰণাশীকে ইংরাজীতে Process of Amalgamation বলে। পরিকৃত রোণা চাঁদি নামে অভিহিত। ইহাতে খাদ (Alloy) খোগ দিরা সাধারণতঃ
মুদ্রা ও অবজারাদি প্রান্তত হইরা থাকে। কথন কথন কোন
ভিন্ন পদার্থের সহযোগে (Afficted by re-agents) উহার
প্রান্তি পরিবর্জন করিরা উহারারা অক্যাবছের কার্য্যের উপবোধী
অন্তানি (Surgical instruments) ও রসায়নকার্য্যের
আবস্থানীর পাত্র-বিশেষ প্রান্তত করিতে দেখা যার।

ভারতবর্বের নানাস্থানে, বিশেবতঃ কর্ণুলজেলা মধুরা ও মহিত্বর প্রদেশে এবং লাসা, সানাষ্টেট্,মার্ডাবান্, আসাম, কোচিন-চীন, যুনান্, ফিলিপাইন শীপপুঞ্জ প্রভৃতি স্থানে মিশ্র অবস্থার ক্রপা পাওরা গিরাছে।

রোপ্যের দর সকল সময়ে সমান থাকে না। পূর্কে রূপার দর অধিক ছিল, কিন্তু আমেরিকাতেও সোণা ও রূপার থনি আবিষ্কৃত হওরার পর হইতে রূপার বালার নরম পড়িরাছে। ১৯খ শতালীর প্রারক্তে ১ তোলা (১৮০ গ্রেণ) সোণার দাম ১৫ বা ১৬টা তুল্যমান রোপ্যমুলা থার্য ছিল, কিন্তু ১৮৭০ হইতে ১৮৮০ খুষ্টাব্দের মধ্যে ২০ তোলা রূপা == ১ তোলা সোণার দাম চড়িরাছিল, পরে এক সমরে ২৭, হইতে ২৯, কোল্পানীর মূলার ১ তারি পালা সোণার দাম হইরাছিল। সোণার বালার প্রারির থাকার একলে রূপার দর জনেকটা ছির হইরা পড়িরাছে। ইংরাজরাজ্যের প্রচলিত ২২০/০ রোপ্যমুলার সভ্রেণ গিণীর ১ তারি অর্থাৎ পালা ১৫, তথার ১ থানি গিণী। মুসলমানরাজ্যবাবের রাজ্যে প্রচলিত সিক্তা মূলার তুলনার বর্ত্তমান মূলা /০ এক আনা কম।

ইংলপ্তের ৩য় এড্ওরার্ডের শাসনকালে রূপার দাম কম
ছিল। রাণী এলিজাবেপের রাজ্যকালে তাহা প্রার দিওণ
বাড়িরা বার। তৎপরে মেরিকোও পেকরাজ্যে রূপার থনি
বাহির হওয়ার ক্রমশ: দর নামিতে থাকে এবং ১ম চার্গসের
রাজ্যসমরে তাহা এলিজাবেপির যুগের এক্ছতীরাংশ মূল্যে
বিক্রীত হয়। এইরূপে ইংলপ্তেও টিউডরগর্পের রাজ্যকালের মধ্যভাগে রূপার যে দর ছিল, তাহার পাঁচ আনা
আন্যাল দর বলবং থাকে এবং ক্রেসির সমরকার দরের অর্থেক
হইনা বার।

পূর্বেই উল্লেখ করিরাছি বে, ইংলতে মধ্যবুগে রূপার দর
অধিক ছিল। তৎকালে > ওঁল সোণা > ওঁল রূপার বিনিমরে পাওরা বাইত। ১৭৯২ গুটাবে আনেরিকার ব্তরাবো
ডলার মূলা আচলিত হওরার উহার পরিষাণ > : >৫ অর্থাৎ

> ১৫টা অর্থভনার পরিষিত প্রকটা রৌপাডলার নির্দারিত হর।
আনেরিকার এই ন্তন বিধিতে স্থপার দর অত্যধিক বর্ষিত
ছক্তে দেখিরা ১৮০৩ খুটাবে ক্রানীগণ কাত মূলা প্রচনন

करतन । ভारार कतानी-वजी काछिन क्रमात नाम क्यारिया উरात्र शतियान > : >en- कृतिवा त्या । क्रोहाटक वाबादत » স্থাৰ খেলা চলিতে লাগিল। ১০টা ওলার পরিমিত রুগা দিরা কেই ১ ডলার পরিমিত সোণা ক্রম করিছে লারিত না। मूजांबरणंत्र भन्न देश "Standard coin" वा आहणिक मूजान्नरभ গৃহীত হওরার লহজেই লোকে ১৩টা ডলার মুদ্রাবিনিষরে মর্শমুক্তা ক্রম করিতে পারিল। এই রৌপ্যমুক্তার কর্মচারীদিগের বেজন দিবারও বেশ স্থাবিধা হইল। কারণ খাঁটিমপা ১৫ ডলার পরিমাণ ও ১৫টা উপারমূলার মূল্য অনেক বতর হইল। লোকের বরে যত ক্লপা ছিল, তাঁহারাও টাকশালে আনিরা ठाँविज्ञणात्र यूका ग्राइया गरेटनम, देशए वाजादा द्वीणा-মুদ্রার অধিক প্রচলন হইল। ত্রবাদি ক্রের করিবার পক্ষেও त्रोभागुमात्र आत्रासनीत्रण अधिक खेशनिक इहेर्छ नाशिन। কেন না একটা স্থামূলা না ভালাইলো অথবা ভন্ম লোর এবা ক্রম না করিলে অর্ণমূলার বিনিমর সহজ্ঞসাধ্য ছিল না। **रत्रोगाम्जात धार्माम এই अञ्चित्रा अगरनाविक इंडेन वर्छ.** কিন্তু স্বর্ণমূল্রার প্রচলন অনেক কমিয়া আসিল।

রূপা ও সোণার মৃণ্য আইনমতে ধার্য করিরা আমেরিকার যুক্তরাজ্যে উক্ত উভরপ্রকার মৃত্যার বিনিমরই সাব্যস্ত করা হইল। কিন্তু ঋণ পরিশোধ কালে অর্ণমুদ্রাদানে ক্ষতির আধিক্য দেখিরা তাঁহারা এই bi-metallic system রহিত করিরা দিলেন এবং সমগ্র অর্ণমুদ্রা ক্রান্সে প্রেরণ করিলেন। করাসীরাজসরকারে পূর্ব ইতৈই রূপার দর কম (under-valued) ধার্য হওয়ার, তাঁহারা আমেরিকার bi-metallism প্রথা অবলম্বন করিতে বাধ্য ইইলেন। স্থতয়াং তাঁহারা দেশের রৌপায়ুল্যা আমেরিকাকে প্রত্যাপ্ত করিলেন।

আমেরিকা হইতে বর্গ হানান্তরিত হইতে দেখিরা তদ্দেশবাসীরা ১৮০৪ খুটান্দে প্নরার উত্তরপ্রকার মূলাপ্রচলনের
প্রভাব করিলেন। তর্গুলারে রূপার রর ১ : ১৬ থার্য হইল।
ইহাতে প্নরার গোল বাধিল, রাজ্য প্নরার রৌপ্য বা রৌপ্যমূলাপুত হইল এবং বর্গসূলা তাহার হান অধিকার করিল।
১৮৫৪ খুটান্দ পর্যন্ত আমেরিকার টাকলালে একটাও রূপার
মূলা প্রস্তুত হর নাই। ১৮৭০ খুটান্দ পর্যন্ত আমেরিকার

Statute Book নামক রাজবিধিতে ক্ল্রান্দে সোলার সমম্ল্য
(silver a legal tender equally with gold) ব্যলিরা
নির্দিষ্ট থাজিলেও বিশেব কোন কল হর নাই, কারণ তৎ
পরবর্তিকালে লোগারপার দর বাজারে উটিতেতে ও নামিতেতে।
কর্মপার্যন্ত ১৮৭০ খুটান্দের পর কর্মিকার ক্ল্যান্ডরার প্র

অট্রেলিয়ার অর্ণধনি আবিষ্কৃত হওরার পর হইতে অর্ণ ও রৌপ্যের বাজারে যুগ-প্রশন্ন ঘটিরাছে।

শোষিতরপা রূপার পাত বা রূপানি (Silver leaf) नाथात्रगठः **आयु**र्स्वनभा**रत श्रेवशार्थ श्रादा**ंग इटेग्रा थारक। হেকিমগণ আমলকীকলের (Pnyllanthus Emblica) সহিত রূপার পাত অবীণ অথবা শার্ষবিক দৌর্ক্লন্যজনিত রোগে সেবনের ব্যবদ্ধা দিয়া থাকেন। যোককছগোষরোগে (Conjunctivitis) Argentum Nitrus > গ্ৰেণ জলে মিশাইয়া कञ्चल पिरल উপकात पर्र्त। जाना अधिक त्याथ इटेरल यञ्जभाद्यान লবণজ্ঞল লাগাইয়া দিলে বেদনার উপশম হয়। কচ্ছপ্রদেশের ভূজনগরের স্থপ্রসিদ্ধ চিকিৎসক বেরেন সাহেব সায়ুর বলকারক র্বষ্টক্রপে রোপাভন্মের উল্লেখ করিয়া যান। উহার প্রস্তত-প্রণালী-একভাগ দেঁকোবিষ অন্ধগ্রেণ নেবুর রস ও।/• ভাগ রূপার পাত খলে উত্তমরূপে পেষ্ণ করিয়া বটকা প্রস্তুত করিবে। পরে তাহা নববন্ধ ও মৃত্তিকা ছারা লেপন করিয়া অগ্নিতে দগ্ধ করিবে। যথেষ্ট উদ্ভাপে অভ্যন্তরন্থ ঔষধ ভন্মীভূত হইলে তাহাকে পুনরায় লইমা ঐ রূপে বস্ত্র ও মৃত্তিকালেপন দারা চতুর্দশবার দথ করিলে রৌপ্যভন্ম প্রস্তুত হয়।

রাসায়নিক প্রক্রিয়া হারা রূপার অনেক পরিবর্তন সাধিত হয়। রূপার বাসন বা খেলানা প্রস্তুত করিতে ক্রার বিশেষ কার্য্য করে। নাইট্রিকএসিড্র রূপার উপর বিশেষ কার্য্য করে, হাইড্রোক্লোরিক ও উত্তপ্ত সাল্ফিউরিক এসিড্ এবং উত্তপ্ত লবণজ্ঞল ও একোয়া-রিজিয়া কতক পরিমাণে রূপান্তর ঘটাইতে সমর্থ।

নাইট্রকএসিডে বাজারে দ্ধপা (Commercial silver) ছুবাইলে বিশুদ্ধ দ্ধপা পাওয়া যায়। পাত্রে যে হাইড্রোক্লোরিক এসিড্ থাকে, তাহা জাল দিলে ক্লোরাইড্ অব সিল্ভার বাহির হয়। রাসায়নিক প্রক্রিয়ায় রূপার যে কয়টী মিশ্রপদার্থ আবিদ্ধত হইয়াছে, নিমে তাহার একটী তালিকা দেওয়া গেল,—

Suboxide of silver, Molybdate of Suboxide of silver, Protoxide of silver, Peroxide of silver, Sulphide of silver, Sulphide of silver, Sulphide of silver, Iodide of silver, Sulphate of Silver Nitrate of silver বা Luner caustic. এতভিন্ন রোপা হইতে triphosphate, pyrophosphate, metaphosphate, Carbonate, borate, chlorate, monochromate, bichromate ও arseniate প্রভৃতি লবণ বাহির ইইয়া থাকে !

ঔষধাদি প্রস্তুত করিতে হইলে শোধিত রোপ্যের জভাবে কান্তলোহ দেওয়া যাইতে পারে। "স্বৰ্ণনথবা রৌপাং মৃতং ৰত্ৰ ন শভাতে।
তত্ৰ কান্তেন কৰ্মাণি ভিৰক্ ক্যাৰিচক্ষণ: ॥" (ভাৰপ্ৰ•)
(ত্ৰি) ২ রৌপাবিশিষ্ট।
"বৰ্ণরোপ্যায়সৈ: শৃক্ষ: সঙ্লাং সর্বাতো গৃকৈ:।"
(ভাগবত ৪।২৫।১৪)

রোপ্যাগিরি, প্রাচীন বিদেহরাজের অন্তর্গত একটী শৈল। রোপ্যমায় (ত্রি) রোপ্য-স্বরূপে মন্নট্। রোপ্যদারূপ, রোপ্যনির্শিত।

রৌপ্যমূদ্রা, (Silver coinage) রৌপ্য ধাড় হইতে প্রস্তুত রাজচিহ্নান্ধিত রৌপাচক্র বা চতুদোণ থও। ইহা মূদ্রা বা তত্তা নামে রাজাদেশে কার্যাব্যাপারে বিনিমন্ত্রন্ত্রপ গৃহীত হইতে থাকে। ইংরাজরাজতে বর্ত্তমান যেরূপ রৌপ্যমূদ্রা বা টাকা = যোল আনা বা ২৪টা ভান্তমুদ্রা প্রচলিত আছে,মুসলমান অধিকারে সেরূপ সিক্কা প্রভৃতি মূল্রা ছিল, ঐ মূল্রার পরিমাণও স্বতন্ত্র। প্রাচীন হিন্দুরাজ-গণের অধিকারে নানারূপ স্বর্ণ ও রৌপ্যমূলা প্রচলিত ছিল। ভারতবর্ষে বিভিন্ন রাজগণের অধিকারে ছেনী কাটা বা ছাঁচে ঢালাই যে नकन मूजा প্রচলিত হইয়াছিল, তাহার সকলগুলিই কিছু কিছু খাদ মিশ্রিত। ১৮৬৮ খুষ্টাব্দে সার্জ্জন মেজর সেকল্টন (Surgeon Major Sheklton) এক থানি পত্রিকায় ১০২ প্রকার স্বর্ণ মোহর, ৩২ প্রকার হুণ বা পাগোড়া, ১ প্রকার অর্দ্ধপাগোড়া, ২৪ প্রকার সোণার ফানম্ (পরিমাণ ২.৬ হইতে ৫-৯ গ্রেণ) ও ২১ প্রকার বৈদেশিক স্বর্ণমূলা, এবং রোপ্যের মধ্যে ৪৫৬ প্রকার রূপী, ২৩ প্রকার আধুলী, ৬ প্রকার ফানম ও > है। मामड़ी मूमात्र थालित भार्थका निर्द्धन कतिता गान।

আবৃলক্জলের লেখনী হইতে জানা যায় যে, ১৫ ৪২ খুণ্টাব্দে হ্যায়ুনের নিকট হইতে দিল্লীসিংহাসন অধিকার করিয়া শেরশাহ প্রথমে ভারতে অনামে মুদ্রাহণ করেন। ঐ শেরশাহী মুদ্রার এক পৃষ্ঠে ইস্লামধর্মের নিশানা ও অপর পার্মে ভারতে আরব-দেশীর রূপার দর্হাম্, অর্ণ দিনার ও তামার ফুলাস্ প্রচলিত থাকে। পাঠান ও মোগলের আধিপত্য বিস্তারের সঙ্গে সকল মুদ্রাও এদেশে আনীত হয়। প্রাচীন হিন্দু ও শক্রাজগণের নামাহ্বিত মুদ্রা সেই বিপ্লবের দিনে একরূপ লোপ পাইয়াছিল। [বিশ্বত বিবরণ মুদ্রাত্ব শক্ষে দেখ।]

সমাট্ অকবর পাহ শেরপাহীমূলার সংশ্বার করিয়া চতুকোণ রৌপা জালালীমূলা প্রচলন করেন। উহার ওজন ১১।০ মাষা। ইহাকে 'চারি-ইয়ারী' মূলাও বলিত। কারণ ইহার চারিকোণে মহমদ, আব্বকর, ওমার ও ওস্মানের নাম এবং কিনারায় জালীর নাম থোদিত ছিল। তৎকালে ভারতের নানাস্থানে नानाज्ञल मारालिज्ञमां। अठनिष्ठ थाकांत्र मूजाविटनटवत्र धकन-निर्फारनम रड़रे अञ्चिश हिन। अक्षानक कानअङ् अक्रकः শাহের রাজ্যকানের বছসংখ্যক পরিষার স্বর্গ ও রৌপামূলার **अंकन वहेन्रा > ६-६ ८०१० मार्वात्र शक् धार्या करत्रन। प्रार्था**९ এক একটা বিশুদ্ধ রোপ্যমূলা ১৭৪.৪ গ্রেণ পরিমাণে অকবর-শাংহর বারা নির্মিত হইরাছিল। কাহালীর, শাহলহান ও অরক্জেবের সময়ে যে সকল মুদ্রা অন্ধিত হইয়াছে, ভাহার পরি-মাণও ১৭৫ গ্রেণ। মহমদশাহের রাজমকালে স্থরাট, দিলী, আক্ষণাবাদ ও বাঙ্গালায় ঐরূপ ওজনের মুদ্রাই ঢালাই रहेशाहिल। अञ्जाः सामनाधिकात्त्रत्र आक्वती, बाहाबीती. भारखरानी, जानमणित्री, मरत्रमभारी, जाजनभारी, भारजानमी (১৭ १२ थु:) मूमा একরপই ছিল। महाরाहु ও पश्चाम्छ हिन्तू-রাজাধিকত প্রদেশে মোগলসমাট্গণের নাম রাখিরা খতত্ত্ব মুদ্রাহণ চলে। ইংরাজের আধিপত্য-বিস্তারের সঙ্গে প্রচলিত মুদ্রারও অনেক পরিবর্তন সাধিত হয়। নানাছানে নানারপ মুদ্রা প্রচলিত থাকার ও দ্রবাবিনিমরে মুদ্রার মূল্যবিদ্রাট্ ঘটার ইংরাজকোম্পানি ১৭৯৩ খুষ্টাব্দে ৩৫ ধারা বারা শাহআলমের রাজত্বকালে ১৯ বর্ষে সিকামুদ্রার সহিত দিল্লীর প্রাচীনমুদ্রার সমান করিয়া লন। মোগল সম্রাট্গণের স্থরাটী মূড়ার পরিমাণ ১৭৮-৩১৪ গ্রেণ ছিল। উহাতে ১৭২-৪ গ্রেণ বিশুদ্ধ রূপা থাকায় উহার মূল্য দিল্লী মূলার সহিত সমান ছিল। পরে ১৮০০ খুষ্টাব্দে স্থরাটী মূদ্রা ১৭৯ গ্রেণ ওজন ১৬৪-৭৪ विकक क्रभाम भूनताम छालाहे हम । ३৮२२ बृष्टीएम हेष्टेरिखमा কোম্পানীর ডিরেক্টারগণ বোম্বাই ও মাক্রান্সের মোহর ও টাকা ১৮০ গ্রেণ ধার্য্য করিয়া ঢালাই করান। ১৭৮৮ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত আর্কটী টাকা ১৭০ গ্রেণ বিশুদ্ধ দ্ধপায় প্রস্তুত হইত, তৎপরে ১৬৬-৪৭৭ গ্রেণ বিশুদ্ধ বা ১৭৬-৪ গ্রেণ ওল্পনে ঐ টাকা প্রস্তুত হয়। পরে ১৮০ গ্রেণ ওজনই চলিত হয়।

ইইইভিরা কোম্পানী ক্লিকাতার প্রথমে যে সিক্কা মুদ্রা ।

ঢালাই করেন, তাহার এক পৃষ্ঠার "হমি-ই-দিন্ই-মহন্দ্রদ, সরা-হি ফলসউলা সিক্কা জাদ বরহক্ত কিস্বর শাহজ্ঞালম বাদশা" এবং এবং অপর পৃষ্ঠে 'মূর্শিদাবাদ' ও মোগলসমাট শাহজ্ঞালম বাদশাহের 'সোভাগ্যাশালী রাজ্যের ১৯শ বর্ব' অন্ধিত হয়। পশ্চিম-ভারতের ফরুথাবাদ, বারাণসী ও সাগর নগরের টাকশালে যে মুদ্রা প্রস্তুত হয়, তাহার এক পৃষ্ঠে একপ নাম ও উন্টাদিকে 'কর্পথাবাদ' নগর এইক্লপ মূলাকণ আছে। মাক্রাজ ও বোষাই মিন্টের টাক্রাল্প জ্বানের নামের পরিবর্তন ঘটিয়াছিল। ১৮৪০ পৃষ্ঠাক্ষে অন্ধিত মূলার এক পার্শে রাণী ভিক্টোরিরার মৃকুটহীন মৃত্তির মুই খারে Queen Victoria লেখা এবং উন্টাদিকে

One Rupee এক রূপেরা। সিপাইী বিজ্ঞাহের পর ভারত ইংরাজ-সাম্রাকাভ্নত হইলে ১৮৬২ খঃ যে রৌপাস্ত্রা প্রচলিত হর, ভাহাতে ভারতসম্রাক্ষী ভিক্টোরিরার মৃকুট মণ্ডিত আবক্ষ মৃর্তির পার্বে Queen Victoria এবং উন্টা পিঠে One Rupee Iudia 1862 লেখা হইরাছিল।

পূর্ব্বেই উল্লেখ করিরাছি যে, ১৬ আনার এক টাকা হয়।
কিন্তু রূপা বা ভাষার আনা মূলা হয় নাই। তামার আরু আনা
বা চুই পর্যা, এক প্রসা, আরু প্রসা ও পাই প্রসা প্রস্তুত হইরাছিল। উহাতে সিংহ ও ইউনিক্রণ মূর্ত্তি এবং Auspicia regis at Senatua Anglae লেখা ছিল। উহার অপর পার্বে 'East India Company—Hulf anna, লো পাই' লেখা থাকে। ঐ ভাত্র মূলাগুলির পরিমাণ—

ডবল পরসা—২০০ গ্রেণ (Troy)

এক পয়সা—১০০

অৰ্দ্ধ পরসা— ৫০ " "

পাই পয়সা—৩০ঃ 🗼

বাঙ্গালার প্রথমে যে স্বর্ণমোহর প্রচলিত ছিল, তাহাতে ৯৯। তাগ সোণা ৮০ থাদ দেখা যায়। ১৮ খুষ্টাব্দের ১৪ ধারা <u>ष्यक्रमारत 👍 मांगा ७ २५ थान मिनाहेवात्र वावका हत्र ।</u> ১৮৩৫ খুষ্টাব্দে ১৭ বিধিতে ঐ খাদ ধার্য্য করিয়া ৩০ টাকা মূল্যে এক ধানি ডবল মোহর, ১৮০ গ্রেণ ওজনের ১৫ টাকা মূল্যে মোহর, ১০ টাকা মূল্যে হু মোহর এবং ৫ টাকা মূল্যে হু মোহর প্রস্তুত করিয়াছিলেন। ১৮৭০ খুষ্টাব্দের ২৩ নং মুদ্রাধারা (Indian Coinage Act XXIII of 1870) রাজবিধি রূপে গৃহীত হইয়া ঐক্লপ মোহরাঙ্কাই প্রচলিত হয়। কেবল ডবল মোহরের মূল্য ৩২ টাকা ধার্য্য থাকে। মুদ্রার পরিমাণ মোহরের দ্বিগুণ অর্থাৎ ৩৬০ গ্রেণ ও ৯১৬ ৬৬৬ কস্ (touch)। মূর্শিদাবাদে বে আসরফি মুদ্রা প্রচলিত ছিল, তাহার পরিমাণ ১৯০-৮৯৫ গ্রেণ (troy) সিন্দে ও হোলকর-রাজ প্রাচীন উজ্জারিনীতে রৌপ্যমুদ্রা চালাইতেন। হায়দরাবাদে আসফ্জাণী রাজবংশের অনুধিপত্য কালে সামসিরি ও হালী সিকা ও তামার ঢেবুরা চলিত^{ক্}ছিল। ত্রিবাঙ্করে ফানন্ ও চক্রন্ মূলা চলিত।

আসামে ছই প্রকার রোপ্যমুলা প্রচলিত আছে। তন্মধ্যে
একটার ওজন ৫৯৯ গ্রেণ ও অপরটা ৫৮৯৫ গ্রেণ। এরপ বৃহৎ
মূলা পৃথিবীর আর কোন দেশে নাই।
রোপ্যায়ণ প্রং) রূপ্যের গোত্রাপত্য।
রোপ্যায়ণি প্রং) রূপ্যের গোত্রাপত্য।
রোম্ (ক্রী) ক্রমারাং লবণাকরে ভবং, ক্রমা-অণ্। শাস্করিলবণ।
(অমরটাকার রামাপ্রম)

রোমক (রী) শান্তরিলবণ। রুমনদী হইতে এই লবণ জন্ম, এই জন্ম ইহার নাম রৌমক ইইরাছে।

শাকন্তরীয়ং কথিতং শুড়াখ্যা রৌমকন্তথা।" (ভাবপ্রত)
রৌমকীয় (ত্রি) রোমক চড়ুর্ অর্থের্ (ক্লশাখাদিভাল্কণ। পা
৪।২।৮০) ইতি ছণ্। > রোমকদেশবাসী। ২ রোমকদেশ।
০ রোমকদেশের অদুরন্তব। ৪ রোমকদেশ ইইতে নিরন্ত।
রৌমলার (ত্রি) রোমণদেশবাসী বা রোমণসন্তব। (পা০ ৪।২।৮০)
রৌমলার (ত্রি) রোমণ চড়ুর্ অর্থের্ (ক্লশাখাদিভাল্ফণ্।
পা ৪।২।৮০) ইতি ছণ্। > রোমল দেশবাসী। ২ রোমণভব।
০ রোমলদেশের অদুরন্তব। ৪ রোমল দেশবাসী। ২ রোমণভব।
০ রোমলদেশের অদুরন্তব। ৪ রোমল দেশবাসী। ২ রোমণভব।
০ রোমক্র্বিণ (ত্রি) রোমহর্ষণ সংমৃক্ত।
রৌমহর্ষণিক (ত্রি) রোমহর্ষণ সংমৃক্ত।
রৌমহ্র্বিণি (প্রং) রোমহর্ষণ ঝ্রির গোত্রাপতা।
রৌম্যারণ (ত্রি) রোমগ্রন্তার্গির ০ পা০ ৪।২।৮০)
রৌম্যারণ (ত্রি) রোমগ্রন্তার্গির ১০০১৭) বছবচনপ্রয়োগে
অধ্যির অনুচর অপদেবভাবিশেবকে ব্র্থার।

ব্যোর্ব (পং) ক্লক্ষ ভবিশেষত্বভায়মিতি ক্লক-অণ্। > খোর।

২ নরকবিশেব, রোরব নরক। (মেদিনী) এই নরক ছই
হাজার যোজন বিস্তৃত। এই নরক অতি ভয়ানক, যাহারা কূটসাক্ষী এবং মিথ্যাবাদী, ভাহাদের এই নরক হইয়া থাকে।

"রৌরবে ক্টদাক্ষী তু যাতি যশ্চানৃতী নর:।
তত্ত স্বরূপং বদতো রৌরবত্ত নিশাময়॥
যোজনানাং সহত্তে দ্বে রৌরবো হি প্রমাণত:।
জাহুমাত্রপ্রমাণস্ক তত্ত্ব শ্বং স্কৃত্তরম্॥" ইত্যাদি।
(মার্কপুণ পিতাপুত্রনামাধ্যায়) [নরকশব্দে দেখ]

(তি) ৩ চঞ্চল। ৪ ধূর্ত্ত। বেলর। (শব্দরজা॰) রুরো-মুগতেজদমিতি, অণ্। ৬ মৃগস্বনী।

"কাষ্ণ রৌরববান্তানি চন্দাণি ব্রহ্মচারিণঃ। বসীররাম্পুর্কেণ শাণকোমাবিকানি চ॥" (মহ ২।৪১)

রে রী) ৭ সামভেদ। (এত জা ০০১৭)
রে বিব্ শেবধর্মপ্রবর্তক আচার্যভেদ। অভিনবগুপ্ত ইহার
নামোলেথ করিয়াহেন।

ব্রোরবক (ক্লী) রুক্ণণা কৃতং (কুলালাদিভো বৃঞ্। পা ৪।০। ১১৮) ইতি ক্লক-বৃঞ্। কৃত্র কর্তৃক কৃত। ব্রোক্রকিন (পুং) কৃত্রকপ্রবর্তিত সম্প্রদারভেদ।

রোক্সকন্ । পুং) ক্ষকত্যবাওত সত্যাধারতেও।
রোক্সকন্ (পুং) আত্ত্বদর্শগপ্রণেতা বাচস্পতির প্রাত্তী ও
প্রমোদের পুত্র। ইনি একজন অভিতীয় পণ্ডিত ছিলেন।
রোহিক (ত্রি) ক্ষহ ইব (অকুল্যাদিভাইক্। পা এ।৩)১০৮)

ইতি ইবর্থে ঠক্। ক্রহের ক্লার; ক্রহতুল্য।

রেছিণ (क्री) রোহিণমেব স্থার্থে অণ্। দিনমানের নবম মুহুর্ত্ত, একোদিইপ্রাদ্ধে পূর্ববাহ্নকালে একোদিইপ্রাদ্ধ আরম্ভ করিয়া রোহিণকাল লজ্জ্বন করিতে নাই, জ্বর্থাৎ ঐ সময়ের মধ্যে প্রাদ্ধ সমাপন করিতে হইবে। যদি সঙ্গব মুহুর্ত্তের পর রোহিণ পর্যান্ত তিথিলাভ হয় এবং পর দিন তিন মুহুর্ত্ত পর্যান্ত ঐ তিথি যদি থাকে, তাহা হইলে পূর্ববিদনে প্রাদ্ধ হইবে। কিন্তু উভয় দিন যদি সঙ্গব মুহুর্ত্ত লাভ হয়, তাহা হইলে কিন্তু পরদিনে প্রাদ্ধ হইবে।

"ততত্ত পূর্ব্বদিনে সঙ্গবাৎ পরং রৌহিণপর্যন্তং তিথেল'তে পরদিনে মুহূর্ত্তক্রমাত্রে তত্তিথিলাভে পূর্ব্বদিনে প্রাক্ষ:।"(প্রাক্ষতত্ত্ব)

(পুং) রুহ-ইনন্ স্বার্থে অণ্। ২ চন্দন রুক। (ত্রিকা৽)

রোহিণক (ङ्गी) সামভেদ। (লাট্যা॰ ১।৬।৩৫)

রৌহিণায়ন (পু:) রোহিণত গোত্রাপত্যং রোহিণ অধাদিত্য: কঞ্। পা ৪।১।১১০) ইতি অপত্যার্থে কঞ্। রোহিণের গোত্রাপত্য।

রৌহিনি (পু৯) > সামভেদ। ২ রোহিণের গোত্রাপতা।
রৌহিনেয় (পুঃ) রোহিণ্যা অপত্যমিতি রোহিণী (শুল্রাদিভাশ্চ।
পা ৪।১।১২২) ইতি চক্। > বলদেব, (ভারত ১।১৯২।১৯)
২ ব্ধগ্রহ। (অমর) ৩ পুরুষোত্তমন্তিত তীর্থপঞ্চকের অস্ততম
তীর্থবিশেষ। পুরুষোত্তমে যাইয়া পঞ্চতীর্থ করিতে হয়,
পুরুষোত্তমন্ত পঞ্চতীর্থ করিলে তাহার পুনর্জন্ম হয় না।

শার্কণ্ডেরে বটে কৃষ্ণে রৌহিণেয়ে মহোদধৌ। ইক্রতায়সরঃ স্নাত্বা পুনর্জন্ম ন বিছতে ॥" (তীর্থতত্ত্ব)

(क्री) ২ মকরত মণি। (রাজনি॰) (ত্রি) ৩ গোবৎস। (মেদিনী)

রৌহিণেশ্বরতীর্থ (ক্লী) তীর্থভেদ। রৌহিণ্য (পুং) রোহিণের গোত্রাপত্য।

রোহিত (ত্রি) > রোহিতমংস্থ সম্বন্ধীয়। ২ রোহিতমমূর পুত্র। ৩ ক্লফের পুত্রভেদ।

রৌহিতক (ত্রি) রোহিতক কাষ্ট্রসমূত।

রৌহিত্যায়নি (খং) রৌহিত্যের গোত্রাপত্য।

রৌছিদৠ (পুং) বস্তমনার বংশধর। রোহিদখের গোত্রাপত্য।
রৌছিষ্ (ক্লী) রোহতীতি ক্লহ—(ক্রেইজিল্ট। উণ্ ১।৪৮)
ইতি টিষচ, ধাতোশ্ট বৃদ্ধিঃ। কতৃণ, রোহিষতৃণ, পর্য্যায় দেবক্রয়, সৌগন্ধিক, ভৃতীক, ধ্যাম, পৌর, শ্রামক, ধৃপগন্ধিক।
খণ—ভিক্ত, কটুপাক, হায়, ও কঠব্যাধি, পিন্ত, অল্ল, শূল, কাস
ও জরনাশক। (ভাবপ্রাণ)

(পুং) ২ মৃগবিশেষ। (অমর) ৩ রোহিতমংশু। (অজয়পাল)
রোহিষী (ত্রী) রোহিব-ভীপ্। ১ মৃগী। ২ দুর্কা। ।
(সংক্ষিপ্তসার উণাদিবু•)

(त्रीही (बी) बी मृग।

ल

উন, লকার। ঘবর্গের ভৃতীর এবং ব্যঞ্জনবর্ণের অস্টাবিংশ বর্ণ।
ইহার উচ্চারণহান দত্ত। এই বর্ণ উচ্চারণে অভ্যন্তর প্রযন্ত,
জিহবাগ্র হারা দত্তমূলের ইবং ম্পর্ল, এইজন্ত এইবর্ণের ইবং
ম্প্রতা, বাহ্পুরফু সংবার, নাদ ও যোব, অল প্রাণ।

বঙ্গভাষায় ইহার লিখনপ্রণালী-

ৰামদিক্ হইতে দক্ষিণ দিকে তিনটা কুণ্ডলী করিয়া উর্জাধো-ভাবে একটা রেথা করিলে এই অক্ষর হইয়া থাকে, এই তিনটা কুণ্ডলীতে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর এই ত্রিশক্তি অবস্থিত আছেন।

"কুণ্ডলীত্ররসংযুক্তা বামাদকগতা ঘণং।
পুনর্ক্ষণতা রেখা তাল্ল নারায়ণং শিবং।
ত্রহ্মশক্তিশ্চ সন্তিচেৎ ধ্যানমন্ত প্রচক্ষতে॥" (বর্ণোক্ষারতন্ত্র)
ইহার নাম বা পর্যায় চন্দ্র, পূতনা, পৃথী, মাধব, শক্র,
বলায়্ল, পিণাকীশ, বাপেক, মাংস, থড়্ণী, নাদ, অমৃত, দেবী,
লবণ, বারুণীপতি, শিখা, বাণী, ক্রিয়া, মাতা, ভামিনী, কামিনী,
প্রিয়া, জালিনী, বেগিনী, নাদ, প্রত্যয়্ম, শোষণ, হরি, বিশ্বায়্মা,
মন্দ্র, বলী, চেতঃ, মেরু, গিরি, কলা ও রস। ।

ইহার ধ্যান—

"চতুত্ লাং পীতবন্ধাং রক্তপকজলোচনাম্।

সর্বান বরদাং তীমাং সর্বালকারভূষিতাম্॥

যোগীল্রসেবিতাং নিত্যাং যোগিনীং যোগরপিণীম্।

চতুর্ব্বর্গপ্রদাং দেবীং নাগহারোপশোভিতাম্।

এবং ধ্যাত্বা লকারন্ত তর্মন্তং দশধা জপেং॥" (বর্ণোকারতন্ত্র)

এইরূপে ধ্যান করিয়া লকার দশবার জপ করিতে হয়।

এই লকার কুণ্ডলীত্রমাংযুক্ত, পীত বিহালতাকার, সর্ব্বরজ্পায়ক, পঞ্চদেব ও পঞ্চ প্রাণময়, তিশক্তি ও ব্রিক্রিম্ময় এবং

আন্থাদি তত্ত্বের সহিত এই বর্ণকে হাদরকেশে ভাবনা
করিতে হয়।

"লকারং চঞ্লাপান্তি কুগুলীত্রয়সংযুত্ম । পাতবিহালতাকারং সর্ব্রম্প্রদায়কম্।

শুলতন্ত্র: পৃত্ন। পৃথ্। মাধব: গত্রবাচক: ।
বলাসুত্র: পিণাকীশো ব্যাপকো মাংসদজ্ঞেত্র: ।
বজনী নালেহযুক্ত দেনী করণং পৃথিবীপতি: ।
পিধাবালী কিয়া মাতা ভামিনী কামিনী ক্রিয়া ।
ক্রালিনী বেদিনী নাদঃ প্রছায়: পোবণো হরি: ।
বিধায়য়য়ৌ বলী চেতো দেয়পিরিকলারদ: ।" (তর্লায়)

পঞ্চলেষময়ং বৰ্ণং পঞ্চপ্ৰাণময়ং সদা ।

বিশক্তিসহিতং বৰ্ণং ত্ৰিবিন্দুসহিতং সদা ।

আন্তাদিতবসহিতং হৃদি ভাবন্ন পাৰ্কতি ॥" (কামধেন্থতন্ত্ৰ)

মাতৃকাভাবে এই বৰ্ণ — ক্কুদ্ দেশে ভাস করিতে হয় ।
কাব্যের আদিতে এই পন্দের প্রয়োগ করিতে নাই, প্রয়োগ
করিবে বিপত্তি ঘটিয়া থাকে ।

"ব্যসনক লবে।" (বৃত্তবন্ধা তীকা)
ল, (রী) লীয়তেহত্ত্রেতি লী অভিধানান্নিরূপপদেহপি ড:।
> পৃথিবীবীজ। 'লমিটি পৃথীবীজাং' 'লং' এই মন্ত্র পৃথিবীর
বীজ। ভূতগুদ্ধিকালে এই মন্ত্রধারা ছাস করিতে হয়। ২ অদ্
ধাতুর অহ্যবদ্ধবিশ্ব। "অদ্ লৌ ভক্ষণে", এইস্থলে ল অহ্যদ্ধ
অর্থাৎ "ইৎ"বিশেষ, কেবলু অদ্ধাতৃই ব্যাইবে। ৩ ছদ্দঃশাস্ত্রোক্ত
লঘু সংজ্ঞক গণবিশেষ। ছন্দের লক্ষণে লকার বলিতে একটী
লঘু বর্ণ ব্যাইবে।

*গুরুরেকো গকারন্ত লকারো লঘ্রেকক:।" (ছন্দোম•)
(প্ং) ৪ ইন্দ্র। ৫ মেদিনী)
লাও (ইংরাজী Law শব্দ) রাজবিধি, আইন।
লাই (হিন্দী) নেওয়া। প্রহণ।
লাওন (দেশজ) > গ্রহণ। ২ অবনত হওন।
লাওয়াজিম্ (আরবী) আবশ্রুকীয় বন্ধ। গৃহের আদ্বাব্।
লাওয়াজিম্ (আরবী) আবশ্রুকীয় বন্ধ। গৃহের আদ্বাব্।
লাওয়ান (দেশজ) > চাত্রীপূর্বক ভূলাইয়া আনয়ন। ২ তোষামোদহারা মতান্থর্তন করণ। ৩ মনোরঞ্জক বাক্যে রমণীকে
কুপথে প্রবর্তন।
লাক্ (দেশজ) > রেশমী হত্ত।
লাক্, রুসোপাদান, আদ্রুরসাম্বাদন। চুরাদিও পরিমেও সকও
দেট্। লাট্ লাকরতি। লোট্ লাকয়ত্ত। পূঙ্কুলীলকং।
লাক্লাক্ (দেশজ) মুধ্ব্যাদানপূর্বক জিহ্বাকম্পন হুরো অব্যক্ত
শব্দ।

লক্চ (পুং) লক্চ বৃক্ষ। (শক্ষরত্বাও)
লক্তাই, বলের পার্বত্যত্তিপুরার অন্তর্গত একটা নিক্লিশ্রেণী।
পার্বত্য অধিবাসীদিগের দেবতা বিশেষের নাম হইতে এই পর্বতর নামকরণ হইরাছে। ইহা পার্বত্য ত্রিপুরার উত্তর্গিকে
ক্রমাগত প্রসারিত হইরা শ্রীহট্টের সমতলক্ষেত্রে মিশিরাছে।
গিরিশৃক থেল্পুই ও সিম্ বাসিরা বথাক্রমে ১৫৮১ ফিট ও

১৫৫৪ কিট্ উক্ত। এই পাৰ্কত্য ভূভাগে বাঁস ও শালবন আছে। বৰ্তমান মানচিত্ৰে ইহা লাকতারাই নামে লিখিত।

লকবল্পী, মহিত্বর-রাজ্যের কদ্র জেগার অন্তর্গত একটা তালুক।
ভূপরিমাণ ৫০৪ বর্গ মাইল। ৭৯৯ খানি গ্রাম লইরা এই উপবিভাগ গঠিত। চল্লজোগ ^{শ্ব}ন নাবাব্দন শৈলমালা এই উপবিভাগের দক্ষিণাখনে বিশ্বত আছে। বাবাব্দন শৈলের সর্ব্বত এবং বনমালা-সমাকীর্ণ জাগের উপত্যকায় কাফিচাবের বহু বিভ্ত উদ্যানরাজি বিরাজিত দেখা যায়। পশ্চিমাংশে ভ্রানদীর উভর কুলে লকবলী গ্রাম পর্যান্ত বিভ্ত শাল ও সেঞ্চণ বন।

২ উক্ত উপৰিভাগের অন্তর্গত একটা গগুগ্রাম। অক্ষণ ১৩° ৪২' ৪০' উ: এবং দ্রাঘি ৭৬° ৪১' ৪০''। রাজা বক্তমুক্ত রাম্মের স্থপ্রাচীন রাজধানী রত্নপুরী ইহার সন্নিকটেই অবস্থিত। যেদেপলী নগরে বিচার সদর প্রতিষ্ঠিত জাছে।

লকার (গুং) ল-স্বরূপে কার:। লস্বরূপবর্ণ, লকার এই অক্রর। "অনুকূলাং বিমলালীং কুললাং কুশলাং মুশীলসম্পরাং।

পঞ্চলকারাং ভার্যাং পুরুষ: পুণ্যোদরাল্লভতে॥" (উন্তট)
লাকি, পঞ্চাবপ্রদেশের বনুজেল।র এঁকটা তহলীল। ভূপরিমাণ
১২৬৯ বর্গ মাইল। অক্ষাও ৩২° ১৬ ইইতে ৩২° ৫১ উ:
এবং দ্রাঘি° ৭০° ২৫ ১৫ ইইতে ৭০° ১৮ ৪৫ পু: মধ্য।
কুরাম ও তোটী-বিধোত উপত্যকার দক্ষিণ প্রান্তর লইয়া এই
তহলীল গঠিত। এখানে মারবাত্ নামক একটা জাতির বাস
আছে। তাহাদের প্রাধান্তহেতু পার্মবর্তী স্থানবাসী লোকে
ইছাকে মার্কাৎ বিভাগ বলিয়াই উল্লেথ করিয়া থাকে। কিন্তু
লাকি নগরে রাজকীয় সদর প্রতিষ্ঠিত থাকায় সর্কারী বিবরণীতে
উহা লকি নামে গৃহীত হইয়াছে।

এই স্থান বালুকাপূর্ণ বলিয়া ক্ষষিকার্য্যের বিশেষ স্থবিধা নাই।
গঞ্জীলা প্রভৃতি পর্বভগাত্রবাহী কএকটা স্রোভবিনী ভিন্ন
এখানে ভালরূপ জল সরবরাহ হয় না। অধিকাংশ নদীতেই
বর্ষা বাতীত অপর ঋতুতে জল থাকে না। কেবল বালুময়
জলখাত পতিত থাকে মাত্র। যেখানে বালুর মাত্রা কম, সেই
খানে অধিবাসিগণ একত হইয়া বাস করে। উহাই এক একটী
গ্রামরূপে গণ্য। বর্ষার সময় জলপ্রবাহ গ্রাম সন্নিকটস্থ নিম্নভূমে
সঞ্চিত হইবার জল্প গ্রামবাসিগণ নালা কাটিয়া দেয় এবং সেই
খাতে বাধ দিয়া জল বাধিয়া রাখে। অনেক গ্রামে তাহারা
এক একটী ক্রে প্রমিণীও কাটিয়া লয়, কিন্ত বালুকাময় মৃত্তিকায়
তাহা অধিককাল স্থায়ী হয় না। তথন অধিবাসিগণ একমাত্র
গঞ্জীলা নদী হইতে অথবা ১০ হইতে ১৫ মাইল পর্যান্ত দ্রবর্ত্তী
পর্বত মধ্যত্বিত জলধাত বা প্রমিণী হইতে জল আনমন করিয়া
থাকে। গাধা বা বলদের পুঠে জলের মশক চাপাইয়া রমণীরাই

জল আনে, কখন কখন তাহারা নিজেও হিছু বিছু সলে লয়।

२ উक्त ब्बनांत्र এकी नशर अवर मार्काए वा निक उरुनीरनक গম্ভীলা নদীর দক্ষিণকূলে এড্ওয়ার্ডসাবাদের ১৬ ক্রোশ দূরে অবস্থিত। অক্ষা° ৩২°৩৬ ৪৫´´উ: এবং দ্রাব্দি° ৭০°৫৭´ পুঃ। এই নগরের অপর পারে পূর্বভন ঈশানপুর নগর ছিল। ১৮৪৪ থুটাবে শিথগবর্মণ্টের রাজখনংগ্রাহক ফতে খাঁ তিবানা এধানে ত্বৰ্গ হাপন করিয়া ধীরে ধীরে তাহার পার্বে একটা নগর প্রতিষ্ঠা করেন। গম্ভীলা নদীর প্রবল বস্থার নগরভাগ জলপ্লাবিত হওরার এবং কুরম ও গম্ভীলা-সলমস্থ পাড়ি-জাত মশকের দৌরাত্ম্যে স্থানীর রাজকর্ম্মচারী ঐ রাজধানী পরিত্যাগ শ্রেম: বিবেচনায় ১৮৩৪ খুষ্টাব্দে অপর পারস্থিত বালুকাপূর্ণ উচ্চ বেলাভূমে নগর পরিবর্ত্তন করেন। এখানে शृद्ध गीगायन, त्थारमानत्थन ७ देनम्बन्धन नाम जिन्ही গ্রাম ছিল, ঈশানপুরের অধিবাসীরাও পরে নৃতন নগরে আসিয়া সমবেত হয় এবং কয়টী গ্রামের লোক একত হওয়ায় একটী সমৃদ্ধিশালী নগর গঠিত হয়। মিউনিসিপালিটীর অধীন থাকায় এই নগর অপেকাত্তত শ্রীসম্পন্ন।

লকি, দিক্সপ্রদেশের করাচী জেলার অন্তর্গত একটী গিরিস্রেণী। [লখি দেখ।]

লেকি, বোদাই প্রেসিডেন্দীর শিকারপুর জেলার একটা নগর।
[লখি দেখ ।]

লকু । পুং) লক্যতে ইতি লক স্বাদে + বাহলকাছ্চঃ। বৃক্ষবিশেষ। চলিত ভছরা, মাদার। পর্যায় — লিকুচ, শাল,
ক্যায়ী, দৃঢ়বকল, ভছ, কাশ্য, শুর, স্থূলস্ক। ইহার গুল-তিক্ত, ক্যায়, উষ্ণ, লঘু, কণ্ঠদোষহর, দাহজনক ও মলসংগ্রহকারক।

ভাবপ্রকাশমতে পর্যায়—ক্ষুপ্রনস, ডহ। আমগুণ—উঞ্চ, গুরু, বিইন্থকর, মধুর, অয়, ত্রিদোবর্দ্ধক, রক্তকর, গুক্র ও আমিনাশক, চক্ষ্র অহিতকর। স্থপকগুণ—মধুর, অয়, বায়ুও পিতবর্দ্ধক, কফ ও অগ্নিবর্দ্ধক, কচিকর, ব্বা গু বিইন্তক।" (ভাবপ্র•)

লকুচপ্রাম, বিশ্বপাদমূলত্ব একটা প্রাচীন গ্রাম।

(ভবিষ্যব্ৰহ্ম ধ° ৮।৬২)

লকুট (পুং) শশুড়।
লকুটিন্ (ত্তি) শশুড়-হত্ত। শশুড় শইরা গমনকারী।
লকুল (পুং) শ অক্রের অন্প্রাস্ফুরন্ন শহল।
লকুলিন্ (পুং) মুনিবিশেষ।
লকুলার্ (ত্তি) শকুলসম্বীর।

লক্ষা (আরবী) ১ বিস্তৃতপুদ্ধ পারাণততেল (Funtailed pigeon)।

২ লকা পাররার মত ফিট্ফাট্ অর্থাং নির্গুণ ব্যক্তিকে ব্যার।

লকাপাররা (দেশল) কপোততেল। ইহাদের পুদ্ধ প্যাথম

ধরা মর্রপুট্রের মত। বর্ণ নানা প্রকার দেখা বার।

লক্ষ্ ক্ (পুং) রাজতরন্ধিনী-বর্ণিত ব্যক্তিভেদ। (রাজতর্গ ৮/৪০৪)

লক্ষ্যে (ত্রি) রক্তবর্ণ, লাল।

লক্ত্ৰক (পুং) রক্তেন রক্তৰপেন কারতীতি কৈ-ক রস্ত লখং, বা লক্যতে হীনৈরাখাছতে অনুভূরতে লক কর্মণি ঞ, ততঃ স্বার্থেকঃ। ১ অলক্তক, মালতা।

শ্রপ্রকৃত্যা দক্তকরসপ্রাথ্যে তদ্রসবর্জিতৌ।

তথৈব রেজতুত্ততাকরণৌ পদ্মবর্জনৌ ।" (রামারণ ২।৩০।১৩)
২ জীর্ণবন্ত্রপণ্ড, চলিত-নেকড়া, পর্যার —কর্ণট, নক্তক। (ভরত)
লক্তেকর্ণমন্ (পুং) লক্তং রক্তবর্ণং করোতীতি রু-মনিন্। রক্ত-বর্ণ লোধ্র। (শক্ষচন্ত্রিকা)

লক্তনচন্দ্র (পুং) রাজতরনিশীবর্ণিত ব্যক্তিভেন।

(রাজ্তর° ৭।১১৭৪)

লক্ষ্ক, ১ দর্শন। ২ আছে। চুরাদি ও উভর পক পেট্।

নাট্ লক্ষ্ডি-তে। লোট্-লক্ষ্ড্-তাং। নৃঙ্ অননক্ষ-ত।
লক্ষ্কে (ক্লী) লক্ষ্যতীতি লক্ষ-অচ্। ১ বাজা। ২শরবা, লক্ষীভূত।
"মৌলান্ শান্তবিদঃ শ্রান্ লক্ষলন্ কুলোদগতান্।
সচিবান্ সপ্ত চাষ্টো বা প্রকুর্নীত পরীক্ষিতান্।" (মহু ৭।৫৪)
ত পদ। ৪ চিক্ল। ৫ সংখ্যাভেদ, লক্ষসংখ্যা, একশত
হাজার লাক্, দশ অযুত সংখ্যা।

"তক্তৈকাদশভিমিত্রৈঃ সহাষাতৈর্তন্ত চ। লক্ষমভাধিকং দেব বর্ক্কতে বরবাঞ্জিনাম্॥"

(কথাসরিৎসা

৪৩া১০৯)

সংখ্যাভেদ অর্থে লক্ষণন ক্লীব ও স্ত্রী এই ছই নিদ্দই হইয়া থাকে।

লক্ষ্ক (ক্লী) লক্ষ্ডীতি লক্ষ-ধূল্। লক্ষণের নিমিত্ত অর্থ-বোধক লব্ধ।

"ষানৃশার্থন্ত সম্বন্ধবিত শক্তর যন্তবেং।
তত্র তলককং নাম তচ্ছক্তিবিধুরং বদি॥" (শব্দশক্তিপ্রে॰)
লক্ষণ (ক্লী) লক্ষাতেংনেনেতি লক্ষ-লুট্। যহা লক্ষেরট্চ।
উণ্ থাণ) ইতি নপ্রতারস্তন্তাভাগমশ্চ। > চিহ্ন। ২ নাম।
(মেনিনী) লক্ষাতে জ্ঞারতেংনেনেতি লক্ষণ। যাহাঘারা
জানা বার, তাহাকে লক্ষণ কহে। এই লক্ষণ বিবিধ ইতরভেদামু• মাপক ও ব্যবহারপ্রবোজক। (স্তার্মন্ত)

"কুত্তিতিসমাসানামতিধানং নিরামকন্। লক্ষণক্নভিজ্ঞানাং তদভিজ্ঞানস্চকম্ ॥" (ৰোপদেব) কৃৎ, তছিত ও সমাসের নিরামক অভিধান এবং অনভিজ্ঞ-দিগের অভিজ্ঞানস্চকই লক্ষণপদৰাচ্য। লক্ষে লক্ষার্থের অভিনিবেশকে লক্ষণ করে। সমাস্কৃতি অসমানজাতীর ব্যব-জ্বেদ্ধ লক্ষণার্থ।

"সমানাসমানজাতীরব্যবচ্ছেরে কন্দণার্থ:" (সাংখ্যতন্তকা •) ৩ দর্শন। (পুং) ৪ সোমিত্রি, সন্ধাণ। ৫ সারসপন্দী। (শব্দরত্বা°) ৬ চামচ। (দিবাা° ৫১৩১৫)

৭ রোগবিনিশ্চারক শারীরিক চিহাদি। অর বা কোনরূপ ব্যাধি হইলে মন্থ্র শরীরে ক্তকগুলি চিহ্নের বিকাশ
হইরা থাকে। সেইগুলি লক্ষ্য করিরা চিকিৎসক ঔবধাদি
প্রেরোগ করিরা থাকে। শারীরিক, মানসিক, আগত্তক ও
সহজ্ঞভেলে রোগ চারি প্রকার। ইহাদের লক্ষণও খতত্র।
ইংরাজীতে ইহাকে (Symptoms) বলে।

लक्कनक (गूः) नक्कनव्यः।

লক্ষণ্ড্র (অ) লক্ষণং জানাতীতি জ্ঞা-ক। লক্ষণবেত্তা, যিনি লক্ষণ অবগত আছেন।

লক্ষণভ্ (ক্লী) লক্ষণভা ভাবং দ্ব। লক্ষণের ভাব বা ধর্ম। লক্ষণলক্ষণা (ন্ত্রী) লক্ষণভোদ। [লক্ষণা দেখ] লক্ষণবৃহ (ত্রি) লক্ষণং বিভাতেহভা মতুপ্ মন্ত বং। লক্ষণবিশিষ্ট,

লক্ষণসন্মিপাত (পুং)> অঙ্কণাত। ২ দ্রব্যবিশেষে কোন চিচ্চ বা নিশানা অন্ধিতকরণ।

লক্ষণা (ক্নী) লক্ষ্ণিকেরট্চ। উণ্ও। ৭) ইতি ম-স্তন্তাড়াগমন্চ, লক্ষণমন্তান্তেতি অচ্, ততটাপ্। ১ হংসী। ২ সারসী। ও অপেরোবিশেষ।

"অস্থিকা লক্ষণা ক্ষেমা দেবী রস্তা মনোরমা।"

(ভারত ১৷১২৩৷৫৯)

৪ শক্যসম্বন।

नक्रगयूकः।

তাৎপর্য্যের অমুপপত্তি হেতু (তাৎপর্য্যের বোধ হয় না, এই জ্লন্ত) শক্যার্থের যে সম্বন্ধ তাহাকে লক্ষণা কছে।

"লক্ষণা শক্যসম্বন্ধতাৎপর্য্যাহ্বপণতিতঃ।" (ভাষাপরিচ্ছেন)
কেবল শবার্থ ধ্রিয়া অর্থবোধ বা শাব্দবোধ করিতে ইইলে এ
আনেক হলে তাৎপর্য্যের উপপত্তি হয় না, অর্থাৎ তাৎপর্য্য
বোধ হয় না, এইজয়্ম লক্ষণা শীকার করিতে হয়। লক্ষণা
শীকার করিলে তাৎপর্যবোধের জম্ম আর কোন কট্ট হয়
না, অতিসহজেই এই লক্ষণাশক্তিবলে তাৎপর্য্যের বোধ ইইয়া
থাকে। সিকাস্তম্পর্বাবনীতে লিখিত আছে বে, "গঙ্গারাং ঘোষ
ইত্যাদৌ গলাগদত শক্যার্থে প্রবাহরূপে ঘোষভাবরাইলপভিছ্কাৎ-

পর্যাত্মপণতির্বা যত্র প্রতিসন্ধীরতে তত্র লক্ষণয়া তীরতা বোধঃ,

সা চ শক্সবৰ্মপা, তথাহি প্ৰবাহম্পশক্যাইবন্ধক জীৱে গৃহী-তথাং তীয়ত শ্বনণ ততঃ শাক্ষবোধঃ" (দিছাতক্তাবনী)

· পূৰ্ব্বেট বলিয়াছি: ভাৎপঞ্চাৰ্ত্তহাৰৰ অভ পক্ষান্তৰের নাম লকণা। এখন ইহার উদাহরণ ছারা দেখা ছাউক। গেলারাং বোৰ: অভিবন্ধি পলাতে বোৰ বাস করে, এই একটা বাক্য, गर्बी सनितन धार्वाशिमद जनसभारक वृदात । প্রবাহময়ন্ত্রলে কোৰ বাস করিছে পারে না, লোক ভূমিতেই বাস করিয়া থাকে, জলে বাস করা অসম্ভব, অভএব এই স্থলে শনার্থের কোন প্রাতীতি হর না, গলার বাস করে, ইহাতে কোন অর্ধ বোধই হুইল মা, অভএব ইত্যাদিরপ স্থলে অর্থবোধের ৰম্ভ সক্ষণাশক্তি স্বীকার করিতে হয়। সক্ষণা স্বীকার করিলে অনায়াসেই তাৎপর্যার্থের বোধ হইরা থাকে। 'গলার ঘোষ वान करत' এই मन चित्राष्टि, जनमत्र शनात्र वान वसन अनस्वत, তথন গলার সমীপে কি আছে ? ইহার অনুসন্ধান করিলে প্রথমেই তীর দেখিতে পাই, অতএব গদা শব্দের অর্থ সক্ষণা-দারা গঙ্গাতীর বলিলে আর কোন গোল থাকে না, এবং ইহাতে তাৎপর্যোরও উপপত্তি হয়; অতএব এইস্থলে তাৎপর্যোর উপপত্তি হওয়ায় শাক্ষােধরও কোন ব্যাঘাত হইন না। অত্তএব এইন্থলে গলাতীরে শক্যসম্মরপা লক্ষণা হইল। এই-রূপ যে যে স্থলে তাৎপর্য্যার্থ ধরিয়া অর্থ প্রতীতি হইবে, তথায় লকণা হইবে ৷

শক্ষণক্তিপ্রকাশিকার লিথিত আছে যে,

"জহৎস্থার্থাহজহৎস্থার্থা নির্মচাধুনিকাদিকা:।
লক্ষণা বিবিধান্তান্তিল ক্ষকং স্থাদনেকথা ॥" (শক্ষশক্তি৽)

শক্ষশক্তিপ্রকাশিকার মতে এই লক্ষণা জহৎস্থার্থা, অজহৎস্থার্থা, নির্মচা ও আধুনিকাদিভেদে অনেক প্রকার।

সাহিত্যদর্শণে লিথিত আছে যে,—

"মুখ্যার্থবাধে তদ্যুক্তো যরাস্থোহর্থা প্রতীয়তে।

রুচ্চে: প্রয়োজনাদ্বাসৌ লক্ষণাশক্তিরপিতা ॥"

(সাহিত্যদ৽ ২০১০)

যে হলে মৃথ্যার্ধের বাধ হইরা তদ্যুক্ত অর্থাৎ মৃথ্যার্থযুক্ত হইরা রুঢ়ি (প্রসিদ্ধ) বা প্রবোজনসিদ্ধির জন্ম যে শক্তি ছারা অন্ত অর্থের প্রতীতি ছয়, তাহার নাম লক্ষণা।

শংলর তিনপ্রকার শক্তি—লক্ষণা, ব্যঞ্জনা ও অভিধা। এই তিন প্রকার শক্তি হারা সকল স্থলেই অর্থবোধ হইরা থাকে। অর্থবোধের জন্ত এই তিন প্রকার শক্তি বদি স্বীকার না করা বার, তাহা হইনে কিছুতেই সকল স্থলে অর্থ প্রতীতি হয় না। এই জন্ত শক্ষণাত্রবিদ্ পণ্ডিতগণ শক্ষের তিন প্রকার শক্তি বদি স্বীকার করিরা-

ছেন। অভিধা ও ব্যক্তমার বিষয় অভ্যাপ্ত আছবা । এইছলে লক্ষপার বিষয় কিছু লেখা হইডেছে। লক্ষ্যাপতি অভ্যাপ পতি বালা বোধ হইরা থাকে। বজার বাহা লক্ষ্যা, জাহাই মূল করিয়া বে শক্তি বারা ঐ মূল অর্থের শ্রেডীভি হইবে, সেই স্থলেই লক্ষ্যা হইবে।

"বাচ্যোহর্থোহভিষয়["]বোধ্যো দক্ষ্যো বন্ধবয়া মত:। ব্যক্ষো ব্যস্কনরা ডাঃ স্মান্তিত্রঃ শব্দস্থ শব্দয়ঃ ।"

(সাহিজ্ঞাদ• ২৷১১)

কাব্যপ্রকাশে লক্ষণার লব্ধ্ব এইরূপ লিখিত আছে— "মুখ্যার্থবাবে তল্বোগে রুচিডো২থ প্রয়োজনাং। অভ্যোহর্থো লক্ষ্যতে বং সা লক্ষ্যা রোণিতা ক্রিয়া ॥"

(কাব্যপ্রকাশ ২০১)

মুখ্যার্থ্যের বাধা হইলে তাহার যোগে প্রাসিদ্ধ শব্দের বা প্ররোজনসিদ্ধির জন্ম যাহা দারা অন্ত অর্থ লক্ষিত হয়, তাহাকে লক্ষণা কহে। "না শব্দস্থার্শিতা স্বাভাবিকেতরা ঈশ্বরাস্থ্যাবিভা বা শক্তির্ক ক্ষণা নাম" (সাহিত্যদ ২ পরি)

শব্দ সম্বন্ধে অর্পিত স্বাভাবিকেতর অর্থাৎ স্বাভাবিক হুইতে ভিন্ন, বা ঈশ্বরাহন্তাবিত শক্তিবিশেষই লক্ষণাপদবাচা। কেহ কেহ বলিতে পারেন, এই লক্ষণা পণ্ডিতগণ-কন্ধিত, কিন্তু বাস্ত-বিক তাহা নহে—এই শক্তি স্বাভাবিকী ও ঈশ্বরাহন্তাবিতা। বিহুলগণ শব্দের শক্তি কন্ধনা করিলেই যে তাহা প্রহণীয় হুইবে তাহা নহে। লক্ষণা অবিধা ও ব্যঞ্জনা এই তিনটী শক্তি ঈশ্বরাহ্ম-ভাবিতা হুইরাছে। অতএব এই শক্তি হারা তাৎপর্য্যার্থের প্রহণ করিতেই হুইবে। ইহা স্বীকার না ক্রিলে কিছুতেই সকল স্থলে তাৎপর্য্যার্থের বোধ হুইবে না।

'ক্লিঞ্চা সাহসিকঃ' কলিঞ্চ সাহসিক, এই বাক্য বলিলে কলিঞ্চ শব্দ দেশবাচক, কলিঞ্চ বলিলে কলিঞ্চ দেশকে ব্যার, কলিঞ্চদেশ সাহসিক, এই অর্থ সক্ষত হয় না, অতএব এইছলে 'কলিঞ্চদেশ সাহসিক' এই মুখ্যার্থের কাধা। এই হলে কলিঞ্চকে যোগ করিয়া কলিঞ্চ শব্দে কলিঞ্চদেশবাসী এইরূপ অর্থ করিলেও অনারাসেই প্রয়োজন সিদ্ধির জ্ঞা যে অর্থ প্রতীতি হয়, সেই অর্থগ্রহণ করিতে কেন না হইবে, অতএব এই হলে লক্ষণাশক্তি বারা কলিঞ্চ শব্দে কলিজ্বদেশবাসী লোকসমূহ সাহসিক ব্যাইতেছে, এবং সেই লক্ষণাশক্তি বলেই এখানে এরূপ অর্থ প্রতীতি সহকারে বক্তার প্রায়োজন সিদ্ধি হইতেছে। অতএব এইছলে লক্ষণার বারা প্রয়োজন বিদ্ধি হওয়ায় ইহা প্রয়োজনসিদ্ধির উদাহরণ ব্যিতে হইবে।

রচির উনাহরণ—'কম্মণি কুশনঃ' কর্মেতে কুশন, এইছলে কুশন শব্দের মুখ্যার্থ কি ? 'কুশং নাতি ইতি কুশনঃ' বিনি কুশ- শ্রহণকারী ভিনিই কুশন, ইহা ভিন্ন কুশন শব্দের ভার একটা ভার ক্রক, এই অর্থটী রচার্থ, এই রচার্থ নিছিন্ন ভঙ্গ কুশগ্রহণকারী এই মুখার্থের বাবা জরাইরা নক্রশাখন্তি হারাই কল এই অর্থের গ্রহণ হইন এবং ইহাতে জনারানেই তাৎপর্যার্থেরও নিছি হইন। কর্মবিবরে দক্র এইরুণ ভার্থবিধ হওরার রচি বা প্ররোজন নিছি হইনা তাৎপর্যার্থের বেধ হইনারে।

নাট্র সিভি ও প্ররোজনের সিভির জন্ত সক্ষণা স্বীরুত ছই-রাছে, অর্থাৎ সক্ষণা স্বীকার না করিলে রকার্থেরও সিভি হর না এবং প্ররোজনের সিভি হর না। অভঞ্জ এই ছুই ছুইটা বিশেব প্রারোজন সিভির জন্ত ইহা স্থীকার করা হইরাছে।

এখন ক্লচ্ন শব্দের বিবর একটু আলোচনা করিরা দেখা বাউক। সভেতবৃক্ত নামকে ক্লচ্চ করে। যে নাম প্রকৃতি প্রত্যানের অর্থ অন্থারে প্রবৃত্ত হর না, সম্পারের অর্থ অন্থারে প্রবৃত্ত হর না, সম্পারের অর্থ অন্থারে প্রবৃত্ত হর, তাহাকে সভেতবৃত্ত ক্লচ্চ করে। বাহার বৃংপত্তিগভ্য অর্থ গৃহীত না হইরা সম্পারের অর্থ অলীকৃত হর, তাহাকে সভেতবৃত্ত ক্লচ্চ করে। বেমন গো প্রাভৃতি শব্দ। গম্ ধাতৃর অর্থ গতি বা গমন, ভোস্প্রত্যারের অর্থ কর্ত্তা। স্থতরাং গোশব্দের বৃংপত্তিশক্ষ অর্থ গমনকর্তা। এই অর্থ অন্থারের গোশব্দের প্ররোগ হর না, কারণ তাহা হইলে গমনকর্তা। মন্থানিতেও গোশব্দের প্ররোগ হইতে পারে এবং শ্রম ও উপবেশন অবহার অর্থাৎ বে অবহার গমনক্রিরা থাকে না, সেই অবহার প্রকৃত গোতে গোশব্দের প্ররোগ হইতে পারে না।

এই ছুইটা দোবের যথাক্রমে দার্শনিক নাম অভিব্যাপ্তি ও অব্যাপ্তি। অভিব্যাপ্তি—অভিশ্ব সম্বন্ধ বা অভিব্রিক্ত সম্বন্ধ। সম্বন্ধবোগ্য হলকে অভিক্রম করিরা অপ্তাপ্ত সম্বন্ধ হওরা উচিত, ভাহাকে অভিক্রম করিরা অক্তের সহিত সম্বন্ধ হউলে অভিব্যাপ্তি দোব হর। সম্বন্ধবোগ্য হলকে অভিক্রম করিরা বলাতে এইরূল বুবিতে হউবে না বে, সম্বন্ধবোগ্য হলে আদৌ সম্বন্ধ থাকিবে না। সম্বন্ধবোগ্য ছলে সম্বন্ধ থাকিরাও সম্বন্ধর অবোগ্য হলেও বলি সম্বন্ধ হর, ভাহা হউলেই অভিব্যাপ্তি দোব হইরা থাকে।

উক্ত ছলে রুংপত্তি অনুসারে গমনশীল গো পণ্ডতে গো শংৰার প্ররোগ হইবার কোনও বাধা হর নাই, অথচ গমনশীল মনুবাানিতেও গো দাবের প্ররোগ হইতে পারিতেছে। গমনশীল মনুবাানি গো শালের সবাদের বোগাখল নাহে। এই • আবোগ্য খলে সবাধ হইতেছে বলিয়া অতিব্যাবিলোৰ বাইতেছে। অব্যাপ্তি শালে অসবাধ মুখার। কোন অবের সহিত পালের সবাধ থাকিবে মা, ইয়া অন্তর্ধ। স্কারণ যে খলে সবাধ থাকা উচিত, নে হলে সময় না থাকিবেই অসময় বৃথিতে হইবে।
বেমন ন্যান বা উপনিত গো শগুও লো বৃথিত কাষ্ট্র কাষ্ট্র

কোন কোন প্রভাগ জিলা করিবার বোগ্য পর্যন্ত ব্রার বটে, কিন্তু প্রকার জৈলা করিবার বোগ্য পর্যন্ত ব্রার না। সাধারণতঃ জিলাকর্তাকেই ব্রিলা থাকে। এছলে ডোস্ প্রভাগ অর্থাকির ব্রার না। করিবার বোগ্য পর্যন্তই কুরিলা থাকে। এছলে ডোস্ প্রভাগ করিবার বোগ্য পর্যন্তই ডোস্ প্রভাগের অর্থ, ইহা মানিরা লইলে আপত্তি হইতে পারে বে, বে পাচক ব্যক্তি বে সমরে পাক করে না, সে সমরেও ভাছাকে পাচক বলা বার। কেননা তৎকালে পাক না করিলেও ভাছার পাক করিবার বোগ্যভা আছে। এইলপ শলান বা উপবিষ্ট গো পশু ভৎকালে গমন না করিলেও গমন করিবার বোগ্যভা ভাহার রহিলাহে বলিরা শর্মাদিকালেও গোশকের প্রেরোগ হইতে পারে। মুভরাং গো-লক্ষ বৌগিক হইলেও অব্যান্তিদোব হইতেছে না, এভছত্তরে বক্তব্য এই বে, উক্তরূপে কথকিৎ অব্যন্তিদোবের পরিহার করিতে পারিলেও কিছুতেই অভিব্যান্তিলোবের পরিহার হইতে পারে না। মুভরাং গো লক্ষ রচ্ছ ইহা বীক্যের করিতে হইবে।

গমনকর্তা এই অবরবার্থ (গমধাতু ও তোদ্ প্রভারের কর্থ)
গোলন্দের বাংপতিনিমিত্ত মাত্র, কিন্তু প্রবৃত্তিনিমিত্ত নহে। গোলন্দের প্রবৃত্তিনিমিত্ত গোড় জাতি। যে কর্থ অবলম্বন করিয়া শন্দ্র বাংশর হর, বা শন্দের বাংপত্তি অন্থলারে বে কর্ম্প পাওরা যার, তাহাকে বাংপত্তিভিমিত্ত এবং বে কর্ম্প আবলম্বনে শন্দের প্রবৃত্তি কর্মাং প্রেরাগ হর, তাহাকে প্রবৃত্তিনিমিত্ত বগে। অতএব গোড়জাতি বা গোড়জাতিবিশিষ্ট ব্যক্তিতে গোলন্দের প্রেরাগ হর বলিয়া ঐ কর্মে গোলন্দের সম্ভেত করীকার করিতে হইরাছে, ঐ সভ্রেত গোল্প এই বর্গবিশীগত গোলন্দের ঘটক, গম্ ধাতু বা ভোল্ প্রত্যারগত নহে। পাচক শন্দ্র যৌগিক রচ নহে। কারণ পাচক এই বর্গবিশীর কোন কর্মবিশ্ববে সম্ভেত লারাই। অবরব সভ্রেত কর্মাং প্রবৃত্ত্ প্রত্যারের সম্ভেত ভারাই গাককর্ত্তারূপ কর্মের অবগতি হইতে পারে। সমুনারের সম্ভেত ত্বীকার করিবার কোন কারণ নাই। এইজন্ত লাকেক শন্দ্র রচ্বারার করিবার কোন করিবার নাকেক নারণ নাই।

পূর্ব্ধে যে সংক্ষতের উরেধ করিরাছি, ঐ সংক্ত কুই প্রকার আবানিক ও আধুনিক। বে সংক্ষত অনাছিকাল চুলিরা আনিতেতে, বাহা নিত্য, তাহা আআনিক এবং বে সকেত আনাধিকাল চলিয়া আনিতেত্ত না, কাগনিশেৰে প্ৰবৰ্তিত হইয়াছে, তাহা আধুনিক। আআনিক সকেতের অপর নাম পরিতার। বাং পবয়াদি সকেতে আলানিক সকেতের অপর নাম পরিতার। বাং পবয়াদি সকেতে আলানিক প্রকেত শক্তি অহুলারে যে শব্দ যে অর্থ প্রতিপাদন করে, অনাধিকাল হইতে দেই খব্দের সেই অর্থে প্রতিপাদন করে, আর্থনিক সক্তেত বা পরিতারা অহুলারে যে শব্দ যে অর্থ প্রতিপাদন করে, সে অর্থে সে শব্দের অনাদিকাল হইতে প্রেরাগ হর না। কেননা আধুনিক সক্তেত বা পরিতারা ব্যক্তি বিশেবের ইফ্রাফ্র্যারে প্রবর্তিত হইরা থাকে। পরিতারা হাটি হইবার পর্যের পারিতারিক অর্থবাধ একান্ত অসক্তব।

[क्रष्ट्र भक्त (पर्य ।]

এইরপ রুচ্নল সিদ্ধির অস্থ লক্ষণা স্বীকৃত হইরাছে। গোশল বৃংপত্তিলভ্য অর্থ গমনশীল মহাবাদিকে না বুঝাইরা গোপত এবং কুশলনকে কুশগ্রাহী অর্থ না বুঝাইরা দক্ষ এইরপ অর্থ প্রতিপাদন করিতেছে। এইরপ বে যে হলে রুচ্শব্দের সিদ্ধি হইবে, তথার লক্ষণা হইবে। প্রয়োজন সিদ্ধির বিবর পূর্বের অভিহিত হইরাছে।

সাধারণ ভাবে লক্ষণার লক্ষণ বলা হইল। এই লক্ষণা আবার নানা প্রকার। সাহিত্যদর্শণ, কাব্যপ্রকাশ ও সরস্বতী-কণ্ঠাভরণ প্রভৃতিতে ইহার বিষয় বিশেষভাবে পর্য্যালোচিত হইরাছে। উপাদান লক্ষণা ও লক্ষণলক্ষণা প্রভৃতি ভেদেও এই লক্ষণা অনেক প্রকার।

"মুখ্যাৰ্থক্তেতরাক্ষেণো ৰাক্যাৰ্থেছ্বরসিন্ধরে। ভালান্মনোহপ্যুপানানাদেযোপানানলক্ষণা॥" (সাহিত্যদ ২।১৪) ৰাক্যাৰ্থে অন্বয়বোধের জন্ত অর্থাৎ বাক্যের অর্থবোধক অন্বয়-সিন্ধির জন্ত যে স্থান্থের ইতর অর্থের গ্রহণ হয়, সেই স্থলেই ইহা মুখ্যার্থের উপাদান হেতু হইয়াছে, এইজন্ত ইহাকে উপাদানলক্ষণা বলা হয়।

"অর্পনং স্বন্ত বাক্যার্থে পরভাবয়সিদ্ধরে। উপলক্ষণহেতুদ্ধানেবা লক্ষণলক্ষণা॥" (সাহিত্যদ॰ ২০১৭)

বে স্থলে পরের (ভিন্নার্থের) অবয়সিদ্ধির অস্থ মুখ্যার্থ নিজের
অর্পণ অর্থাৎ স্বার্থপরিত্যাপ করে, তথার এই লক্ষণা হয়। এই
সক্ষণা উপলক্ষণ হেতুই হইরা থাকে। এই ক্স ইহার নাম
লক্ষণলক্ষণা। এই লক্ষ্মণা সারোপা ও অধ্যবসানা ভেদে ছিবিধ।

"আরোপাধ্যবসানাজ্যাং প্রত্যেকং তা অসি বিধা।"

(সাহিত্যদ• ২।১৬)

এইরূপে লক্ষণা সকল চন্ধারিংশন্ভেদযুক্ত। "তদেবং লক্ষণা ভেদাশচন্ধারিংশন্মতা বুধৈঃ।"(সাহিত্যক্ ২।২১)

এই সকল লক্ষণার ভেল শব্দ ও শব্দ বিদ্ধা আলোচিত
হইরাছে। [শব্দ ও শব্দ ভি দেখ]
লক্ষণা (লখনা), বৃক্ত প্রদেশের এতাবাজেনার ভর্মানা ভহনীলের
অন্তর্গন্ত একটা নগর। অক্ষা ২০°০৮ ৫৫ উ: এবং জাবি
৭৯°১১৩০ পূ:। নগরনীয়ে রাজা বলোবত লিংহ C. 1: ৪'র
প্রাসাদ বিশ্বমান আছে। উক্ত মহাত্মা নগরে একটা কর্মনেলার
প্রতিষ্ঠা করেন। তাহার আরে এখানে কালিকালীর
মন্দির প্রতিষ্ঠিত হয়। নগরের পরিজ্ঞ্জ্মতা রক্ষার্থ কর
আলারের ব্যবহা আছে। এখানে ঘৃত ও তৃলার বিশ্বত কারবার
চলিয়া থাকে। এখানে পূর্বে তহনীলী কাহারী ছিল। ১৮৬০
খুৱাকে ভর্মানার তহনীলি হানাক্ষরিত হওরার, পূর্বের কাহারী
গৃহে একটা বিশ্বালর প্রতিষ্ঠিত হইরাছে।

লক্ষণাদ্ৰান, মধ্যপ্ৰাদেশের সিওনীজেলার একটা তহসীল।
ভূপরিমাণ ১৫৮০ বর্গমাইল। ২ উক্ত ভহসীলের অন্তর্গত
একটা গণ্ডগ্রাম।

লক্ষণালোহ (क्री) ঔবধবিশেব। প্রস্তুতপ্রণালী—লক্ষণান্দ্, হিন্তব্রপালীন, মুতা, অবগন্ধান্দ্র, ত্রিকটু, ত্রিফলা, বিড়ল, চিতামূল, মুতা, অবগন্ধান্দ্র প্রত্যেকে ১ তোলা, লোহ ১২ তোলা, এই সকল উত্তমরূপে মর্দান করিয়া এই ঔবধ প্রস্তুত করিবে। অমুপান মৃত্তু প্রধ্য এই ঔবধনেবনের পর চিনির সহিত হুগ্ধ পান বিধেয়। এই ঔবধনেবনে জীদিগের ক্যা-প্রস্তুত্র বিনুত্ত হুইয়া পুত্রপ্রস্তুত্র ব্যাহানিকরণাধিকারে ইহা একটা উত্তম ঔবধ। (ভৈষ্ক্যর্ম্বাণ ব্যাকীকরণাধি

লক্ষণিন্ (বি) > লক্ষণ বা চিক্যুক্ত। ২ লক্ষণজ্ঞ। লক্ষণীয় (বি) লক্ষণা ছারা জ্ঞাতব্য বা বোধব্য।

লক্ষেন্প্রে (ত্রি) উরুদেশে চিহ্ন বা লক্ষণযুক্ত। (পা॰ ৪।১।৭॰) লক্ষণ্য (ত্রি) ১ লক্ষণযুক্ত। ২ লক্ষণার্ছ। ৩ দৈবশক্তিসম্পন্ন আনুর্প পুরুষ। (দিব্যা° ৪৭৪।২৭)

লক্ষদত্ত (পুং) রাজভেদ। (কথাসরিৎসা[°] ৫০।৮)

লক্ষপুর (ক্লী)প্রাচীন নগরভেদ। (এ ১৩৯)

লক্ষ্যসিংহ (রাণা), মিবারের এক জন রাণা। বীরবর হামিরের পৌত্র ও ক্ষেত্রসিংহের পূত্র। তিনি আত্মমানিক ১৩৮৩ খৃ ষ্টাক্ষে পিতৃসিংহাসনে সমার্ক্ষ্য হন। রাজ্যশাসন ভার প্রহণ করিয়াই তিনি পিতৃপুরুবনিগের পদাধায়সরণ করিয়াই বিজ্ঞাবিলাসম্বধ উপভোগ করিবার নিমিত অধ্যম মারবার রাজ্যের উপর দৃষ্টি নিক্ষেপ করিবার নিমিত অধ্যম মারবার রাজ্যের উপর দৃষ্টি নিক্ষেপ করিবার নিমিত অধ্যম মারবার রাজ্যের উপর দৃষ্টি নিক্ষেপ করিবান। তিনি বিজ্ঞাগড়ের পার্কাত ছর্ম অধ্যমার-পূর্কাক ধ্বংস করিয়া কেলিলেন এবং বীর বিজ্ঞাকীর্ত্তির অক্ষয়তন্ত করপ তত্ত্বপরি বেদনোর হুর্গ নির্দ্ধাণ করাইলেন। এই সময়ে তাঁহার অধ্যক্ত ভীল অধ্যেশের অন্তর্গত জাবুরা নামক স্থানে

রোপ্য ও টনের থনি আবিষ্ণত হয়। তিনি বছ বত্নে ঐ থনিজ রোপ্য উত্তোলন করিলা খীর রাজ্যের সমৃদ্ধি গৌরব শত খণে অর্থিত করিলাছিলেন।

আনত্তর রাণা লক অবর রাজ্যের অন্তর্গত বর্গরাচলনিবাসী
শালগ রাজপুতদিগকে পরাজিত "অ বশীভূত করিরাছিলেন।
সম্রাট্ মহম্মনশাহ লোধী এই সমরে রাজপুতনা আক্রমণ করিলে
রাণাগক তাঁহার বিরুদ্ধে আর ধারণ করেন। বেদনোর হুর্গ
সক্ষ্য মৃস্নমান সেনার সহিত রাজপুত সৈভের যোর সংঘর্ব
উপস্থিত হয়। ইহাতে বহু সংখ্যক পাঠানসেনা ভূপতিত হইল
এবং অবশিষ্ট পরাজর শীকার করিরা প্লারন করিলা।

লক্ষের রাজ্যকালে বিধর্মী মুসলমানগণ হিন্দুর পবিত্র তীর্থ গরাধান আক্রমণ করে। ধর্মক্ষেত্র গরাপুরী মুসলমান কবল হুইতে উদ্ধার করিবার মানসে তিনি সাসৈক্তে তৎপ্রকেশাভিমুখে ধাআ করিলেন। এই বৃদ্ধাআর সঙ্গে রাজার তীর্থধাআও উদ্দেশ্য ছিল।

তিনি স্থণীর্থ কাল রাজ্যস্থ সজ্ঞোগ করিরা বার্থক্যের চরম
সীমার উপনীত হইরাছেন এমন সমর মিবারের ভাবী রাণা
চণ্ডকে জামাতৃত্বে বরণ করিরা মারবারণতি রণমর বিবাহের
প্রস্তাবসহ নারিকেল প্রেরণ করিলেন। তৎকালে চণ্ড রাজসভার উপন্থিত ছিলেন না। কার্য্য-ব্যপদেশে খানাস্তরে যাইতে
বাধ্য হইরাছিলেন, স্কুতরাং বৃদ্ধ রাজা রণমলের রোবোৎপাদনের
ভরে স্বয়ং সেই নারিকেল গ্রহণ করেন। সেই কল্পার গর্জে মুকুলজীর জন্ম হয়। মুকুলজী পঞ্চমবর্ষে পদার্শন করিলে রাণা তাঁহার
উপরে প্রজাপালনভার প্রদানপূর্কক স্বয়ং বানপ্রস্থ অবলম্বন
করেন। তাঁহার রাজ্যভারপরিত্যাগের পর পূর্ব্ধ প্রতিশ্রুতি মত
জিতেন্ত্রির বীর চণ্ড বালক মুকুলের পক্ষ হইরা রাজকার্য্য নির্মাহ
করিরাছিলেন।

লক্ষ্ বৃদ্ধকালোচিত ধর্মপ্রতাচরণে সম্বন্ধ করিরা সনাতন হিন্দুধর্ম্মের বিক্ষচাচারী ইস্লাম ধর্মাবলম্বিগণের বিক্তে গরাধামে
গমন করিলেন। এখানে মুসলমান-হত্তে তাঁহাকে জীবন উৎসর্গ
করিতে হর।

মহারাণা লক্ষ শিয়োরতির বিশেব সহারতা করিরা যান।
আলাউদীন বিজাতীর বিবেবে বে মিবার রাজ্য শব্দানভূমে পরিণত করিরাহিলেন, রাণা জাবুরার আকরলর উপসত্ত হইতে সেই
মরুপ্রেবেশ অমরাপুরীসদৃশ এক নগরী নির্দ্ধাণ করিলেন। লোকমনোহর সৌধমালা ও বন্দিরনিচর মিবারবক্ষ পরিশোভিত করিয়াভিল। তিনি বহু অর্থবারে একটা ক্ষর প্রাসাদ নির্দ্ধাণ করাইরা
হিলেন। এতবাতীত তিনি একেখরের উপাসনার জন্ত একটা
কুরুহৎ ভল্নমন্দির ভাসন করেন। উহা এবনও বিভ্যান

আছে। স্থানীর গোকের জলাভার বুর করিবার জভ তিনি উচ্চ প্রাচীর পরিবেটিড কএকটা দীর্ষিকা নানা ক্রিয়া রাজ্যের সৌন্দর্য্য কর্মন করেন।

ভাষার অনেকথনি সভান সভতি ছিল। চথাই ভাষার মধ্যে সর্কা জ্যেষ্ঠ ; কিছ তিনি পিছুদিংহাসন প্রাপ্ত হন নাই। অধুনা অথগা, গালোর ও আরাবরীর নানা প্রাভ্যাসী সুগাবং ও হুলাবং বংশীর সর্কারগণ সক্ষের বংশার বলিরা পরিচিত।

লক্ষা (ত্রী) লক্ষতীতি লক সচ্-টাপ্। লক, রণার্তলংখ্যা, একশতহালার। (মেরিনী)

लकांखभूत्री (बी) थातीम ननतरण्य।

লক্ষিত (বি) শব্দ-জ। > আলোচিত। ২ গৃই।

"दिः नाविका निकल्प्संटक्कृत्

ভানেব দামৰ্বভয়া নিজগু:।" (রখু १।৪৪)

ও অভিত। ৪ লক্ষণাশ্ৰর। **৫ লক্ষণা শক্তিবারা** বোধিত অর্থ। ৬ অসুমিত।

লক্ষিতব্য (তি) নির্দেশ্য।

লক্ষিতলক্ষণা (ত্রী) লক্ষিতে লক্ষণা। লক্ষণাভেদ, বে ছলে
লক্ষিতার্থে লক্ষণা ইয়, তাহাকে লক্ষিতলক্ষণা কহে।

[गक्तना भक्त (मध :]

লক্ষিতা (ত্রী) লব্দ-জ, ত্রিরাং টাপ্। পরকীরাত্তর্গত নারিকা-ভেদ, এই নারিকা প্শেকনীভাবনিপ্লা। উদাহরণ---

> "যত্তং তত্তং বতুরাৎ তদপি বা ভূরাৎ যত্তবতু তত্তবতু বা বিষদন্তব গোপনোপার: ॥" (রদমঞ্জরী)

"পরপতি রতিচিক্ চাকিতে বে নারে। লক্ষিতা করিয়া কবিগণ বলে তারে।

আজি প্রভূ দেশে এলে, বতিচিছ কিলে পেলে,

সোহার্গ পড়ুক মরে সতিপনা হরিলে। তুমি এলে বার্তা পেরে, দেখিতে আইছু ধেরে,

আছাড় থাইন্থ পথে সে তন্ত্ব মা করিলে ॥

মুখে বল দস্তচিছ বুক বল নথে ভিন্ন,
আনুধানুবেশ দেখি বুঝি লভা ধরিলে।

নষ্ট হই, ছষ্ট হই, ভোমা বিনা কার নই,

কলন্ধ এড়াবে নাহি সেজন না মরিলে ॥"

(ভারতচক্র-রনমন্ত্রী)

লক্ষীসরাই (সন্ধীসরাই), বালালার স্কেরজেলার অন্তর্গত একটা রেলটেসন। এধানে ইট ইন্ডিরা রেলপথের কর্ড ও 'লুপ' লাইন মিলিত হইরাছে। কলিকাতা হইতে এই স্থান ২৬২ মাইল। এধানে কিউল মধীর উপরে একটা স্থানর সেড়ু নির্মিত আছে। সেড়ুর পশ্চিম পার্থে ল্যি-নুমাই নগ্রঃ वर्डवाटम मध्यमप्रीहे-बरमम क्रिकेन-ब्रारमम बनिहा मिथिक

महाको, व्य थाराभा पर्वाप अवनि स्वया ७ मना ।

्राप्टो तप।] मकान् (में) गमप्रकारम् सम्बद्ध देखि वा गम-मनिन्। > हिरः। "महतिकासम्बद्धाः देशकाणमानि द्रमाः ৰবিন্দলি ছিমাংলোল্**ৰণন্তীং** তলোতি। देशविक्यात्माका क्रांत्मालि परी কিমিৰ হি মধুরাণাং মঞ্ডলং নাম্বন্তীনাস্ 🗗 (শকুন্তলা ১ জ০) २ व्यथाम । (चनव)

लकान (ही) > हिस् (नवदण) २ नाम । (पत्रक) লক্ষীরভাভেতি লক্ষী পামাধিতাৎ ন, লক্ষা অক্ষেতি গণহত্তেগাড়ং বোধাং। (ত্রি) ৩ শ্রীবিশিষ্ট। (পুং) লক্সণমজ্ঞান্তেতি অর্শ আদিভাদচ। ৪ সারস। (হেম) ৫ জীরামত্রাতা, স্থমিকানন্দন। ७ कुक्रवाक कृर्यग्राथरनत्र शूज ।

লক্ষাণ, রামারণোক্ত একজন অধিতীর বীর ও রযুকুলতিশক জীৱামচক্ষের ক্ষমিষ্ঠ বৈষাক্ষের প্রাতা। স্থামিতাগর্ভসম্ভূত বলিয়া তিনি সৌমিত্রি দামেও খ্যাত। লভাযুদ্ধে তিনি ইক্সবিজয়ী মেখনাথকৈ নিহত করিয়াছিলেন।

অধ্যান্মরামারণে লিখিত আছে যে, অতিশয় স্থলকণবিশিষ্ট ছিলেন বলিয়া লক্ষণ এই নাম চইয়াছিল।

"ভরণাধ্রতো নাম লক্ষণং লক্ষণাবিতম।

শক্তম্ম শক্তহন্তারমেবং গুরুরভাষত ॥"(অধ্যাত্মরামা° ১।৩।৪৫) রামায়ণের বালকাতে লক্ষণ রামচক্রের অপর প্রাণের ফ্রায় विज्ञा উक्त बहेब्राइक । ब्राम अभावनन क्वित्न अभविष्ठे बहेरजन. গমনোম্বত হইলে পশ্চাদগমন করিতেন, শরান হইলে পাদদেশে উপবেশন করিতেন, তিনি আত্তম ছায়ার ভার ভাতার অসুগামী ছিলেন। রামের প্রসাদ ভিন্ন কোন উপাদের খাজে তাঁহার তৃত্তি হইত না। রাম যথন অখারোহণে মুগয়ার বাতা করেন, অমনি শব্দণ ধছুর্হত্তে ভাঁহার শরীররকা করিয়া বিশ্বস্ত অফুচরক্সপে তাঁচার পশ্চাঘতী হইতেন। বে দিন বিখামিত্রের সঙ্গে রাম তাভকাদি রাক্ষ্যবধক্ষরে নিবিড় বনপথে বাইতেছেন, সে দিনও কাকপক্ষর দল্প সলে চলিয়াছেন। শৈশবদুখাবলীর এই স্কুল চিত্রের মধ্যে আত্মহারা লক্ষণের প্রাভৃত্তকির ছবি भोनजाद कृष्टिया **केंद्रियाद्य। अहे नगरत दनशर्थ शांध**-ত্রব্যের অভাবহেত মহাযুনি বিশ্বামিত্র বালক্ষয়কে অনাহার-**क्रिया अभारतामनार्थ अवकी मह्यान करतन। अमनसन् केल्य** হাড়ার গোত্যাশ্রমে উপনীত হইরা অহলা উভারাতে রাজবি বন্দতননে আসিলেন, হরধমুভলাত্তে রাম সীভার এবং नम्बन देखियात नाविधास महित्यम स्टिकार अर्ड शक्तांत करूर ७ स्वारक्ष् मार्टर हरे भूव करका करता है ।

द्वारमञ्जू अक्टिक्कमध्यारम मकरमहे अक महस्रामधासाहमञ्जू अस बाब क्ट्रेंटक, किंद क्यातह पूर्ण व्यक्ताक्युरुक कथा नाहे, नीवरंद बाट्सड हाबाब क्रांच मध्यन शन्हाक्ते। चित्र संय प्रकारी बाकार कार बामिएकन, चकिरवर नार्यात क्रकी हरेता नर्वा अधान गम्बद्धम कर्त्रमध घरेवा यगिरमा, "सामि सीवन ध तासा क्षांबाब क्षक्र कामना करि।" धरे क्या अवस्य बारवर विध আৰম্ভের "প্রবর্জনের" লক্ষ্যনের গওবর নীয়ৰ প্রায়ুলভার ব্রক্তিয়াত रहेवा फेंडिन। फिलिक फाकारी किरमन सका, फ्यांनि डाट्सर व्यक्ति एक च्यान क्रिय काम क्या क्या क्या क्या क्या त कि रेक्टकरी अकिरवाहतारकोव्यन क्षेत्र प्रोवस्थर मृजूरपूर्गा वसरानामा अनारेरनन, प्रायम मुर्कि नश्मा देखारगात श्रीरक ভূষিত হইরা উঠিল। সন্মণ তখন অভিমাত্র ক্রম্ভ হইরা বালাপূর্ণ নয়নে প্রাভার পশ্চাৎ পশ্চাৎ বাইতে লাগিলেন।

এই অক্তাৰ আদেশ তিনি সম্ভ করিছে পারেন নাই। রাশচন্ত্র বাহাদিগকে অকুষ্টিতচিত্তে ক্ষমা করিরাছেন, লক্ষণ তাঁহা-দিগকে ক্ষমা করিতে পারেন নাই। রামের বনবাস হুইয়া তিনি কৌশল্যার সন্থার অনেক বাধিতভা করিয়াছিলেন, অবশেষে क्ष रहेश जिनि नम्ख परवाशाभूती नहे कतिए हारिवाहितन। তিনি রামের কর্তবাৰ্দ্ধির প্রশংসা করেন নাই, এই গহিত ভাদেশ পালন ধর্মসক্ত নহে, ইহাই বুঝাইতে চেষ্টা করিয়াছিলেন।

শক্ষণ বলে চলিলেন। এই আত্মতাগী দেবতার জভ কেই বিলাপ করিল না। এমন কি, স্থমিতাও বিলাহকালে পুত্রের अञ्च कम्पन करवन नारे, छिनि गृह अश्व विश्वकर्त्र नम्मगुरक बनिवाहितन, 'यां वर्ग, चाह्नमारन वरन यां व वां वरक मनदायत शास तमिल, गीजांदक आमात स्नाह मान कतिल. ध्येरः बनारक कारबाधा। बनिज्ञा शुगा कत्रिक ।' क्रमिखा मक्रुगरक वनभगत वांधा ना विज्ञा बद्धः छै।इद्धिक त्यन कर्षवाभागत्नद्व सक्ष আগ্রহসহকারে স্বরাধিত করিয়া দিলেন।

আরণ্যজীবনের বাহা কিছু কঠোরতা, ভাহার সম্ধিক ভাগ লক্ষণের উপর পড়িরাছিব,—কিংবা ভাহা তিনি আছ্লানসহকারে মাধার তুলিরা লইয়াছিলেন। গিরিসার্রদেশের প্রশিত ব্যাতক-রাজি হইতে কুমুন্চরন করিবা রামচন্দ্র নীভার চুর্কুক্তনে পরাই-ভেন; গৈরিকরের বারা নীজার ক্ষম ললাটে জিলক রচনা করিয়া বিভেন; পদ্ম ভূলিয়া শীড়ার সহিত মন্থাকিনীতে অব-গাহন ক্ষিতেন, কিংবা গোৰাব্রীতীরত্ব বেডসকুলে সীভার, উৎসতে মতুক বকা করিয়া ক্লবে নিজা বাইতেন। আর এনিকে स्मेन महारी पनिय शहा बृद्धिका धनम कहिला पर्वनाना निर्वान

ক্রিকেন, - ক্রমণ্ড পরতহতে - পালবাধা - কর্তন করিকেন, ক্ৰনও বা মহিব ও বুবের ক্রীব সংগ্রহ করিরা আরি আলিবার ব্যবহা করিতেন। কথন শীতকালের ভুষারমলিন জ্যোৎখার শেষরাত্রিতে ববগোধুমাক্তর বনপদার নাল-দেব মলিনী-শোভিত সর্সীতে কলস লইয়া ভিনি জল ভুলিভেন। ক্ষনও চিত্রকৃটপর্কতের পর্ণশালা হইতে সরসীডটে বাইবার পথটি চিহ্নিত করিবার জন্ত ডিনি পথে পথে উচ্চ তরুশাখার চীরবণ্ড বন্ধ করিয়া রাখিতেন। কথনও বা ভিনি কোমল দর্ভাত্ম ও বৃক্ষপর্ণ বারা রামের শব্যা প্রস্তুত করিরা অপেকা ক্রিভেন, ক্থনও বা দেখিতে পাই, তিনি কালিনী উত্তীৰ্ণ হইবার অন্ত বৃহৎ কাঠগুলি শুৰু ও বন্ত ও বেডসলতা ছারা অ্পংবত্ত করিরা মধ্যভাগে জমুশাখা ছারা সীতার উপবেশন জন্ম ম্মধাসন রচনা করিভেছেন। এই সংঘদী মেহবীর আভূসেবার ভাঁহার নিজস্তা হারাইরা কেলিয়াছিলেন। রামচক্র পঞ্বটীতে উপন্থিত হইয়া লক্ষণকে বলিয়াছিলেন.—"এই স্থন্দর ভঙ্গরাজি-পূর্ণ প্রদেশে পর্ণশালা রচনার অস্ত একটা স্থান পুঁজিয়া বাহির করিয়া লও।" লক্ষণ বলিলেন, "আপনি যে স্থানটি ভালবাদেন, ভাহাই দেখাইরা দিন, সেবকের উপর নির্বাচনের ভার দিবেন না।" প্রভূদেবায় এরপ আত্মহারা ভূত্য কু রাপি দৃষ্ট হয় না। রামচন্দ্র স্থান নির্দেশ করিয়া বিলে লক্ষণ ভূমির সমতা সম্পাদন क्रिया धनिज्ञास्य मृक्षिकाथनान श्रवस रहेराना ।

আর এক দিন ক্রঞ্সর্শসন্থল গভীর জরণ্যে জনশন ও পর্যাটনক্লিই সীতার স্থলর মুধধানি একটু হত এ দেখিয়া রাম-চন্দ্রেরও সেই তু:খময়ী রজনীর কঠ অসম্থ হইয়া উঠিল, তিনি লন্ধাকে অবোধ্যার কিরিয়া যাইবার জন্ম বারংবার বলিতে লাগিলেন, "এ কঠ আমার এবং সীতারই হউক, তুমি ফিরিয়া যাও, শোকের অবস্থার সাজনাদান করিয়া আমার মাতাদিগকে পালন করিও।" রাদের এববিধ কাতরোজিতে তু:খিত হইয়া লন্ধ্য বলিলেন—"আমি পিতা, স্থমিত্রা, শক্রয়, এমন কি স্থর্গও তোমাকে ছাড়িয়া দেখিতে ইছা করিনা।"

এইখানে দ্বাননভগিনী শৃণণথা আসিরা রামের প্রেম-ভিগারিণী হইলে রাম তাহাকে লক্ষণের সমীপে প্রেরণ করেন। সংব্দী, জিতেজির ও অনাহার্কিট লক্ষণের রমণীপ্রেম আদৌ ভাল লাগে নাই। তিনি স্পাণধার নাক কাণ কাটিরা তাহার নির্ক্ষতার প্রকার দিলেন। স্পাণধার প্রার্থনার রাক্ষন-সেনাপতি ধরদ্বণ আসিরা উপস্থিত হইলেন। উভর প্রাতার লাণিত শরে রাক্ষসকুল নির্দ্ধা হইল। স্পাণধার বাক্যে নীভার রপলাবণ্যের কথা ভনিরা দ্পানন স্ববাপর ও কুছ হইরা নীভারর ক্পাব্যন। স্বান্থর্কস্বধারী নারীচ রামশ্রে নিহত হইল। ব্যক্ত মরিল, জটার্ মরিলার লক্ষণ নিঃলকে সমানির্ল থনল করিরা কার্চ আহরগপুর্ত্ত করি ও জটারুর সংকার করিলেন। বিবারাত তাঁহার বিশ্রার ক্রিল না—বনে আসিবার সমর তাই ডিনি বলিরা আসিরাছিলেন—"দেবী জানকীর সক্ষে আপনি গিরিসাছদেশে বিহার করিবেন, জাগরিত বা নিক্রিভই থাকুন, আপনার সকল কর্ম আমিই করিরা লিব। খনিত্র, পিটক এবং ধহর্ততে আমি আপনার সজে সজে কিরিব।" বনবাসের শেব বংসর বিপদ্ আসিরা উপস্থিত হইল; রাবণ সীতাকে হরণ করিয়া লইয়া গেল। সীভার লোকে রাম ক্ষিপ্রথার হইয়া গড়িলেন, প্রাতার এই লাক্ষণ কট্ট দেখিরা লক্ষণও লাগলের মত সীতাকে ইতন্ততঃ পুঁজিরা বেড়াইতে লাগিলেন। রামের ক্ষম্পুঞ্জার তিনি বারংবার গোদাবরীর তীরভূমি খুঁজিয়া আসিলেন।

অতঃপর দতুনামক শাপগ্রস্ত থকের নির্দেশামুলারে রাম লক্ষণের সহিত পল্পাতীরে স্থতীবের সন্ধানে গেলেন। তথন হনুমান স্থাীবকর্ত্ক প্রেরিড হইয়া সেধানে উপস্থিত হইলেন व्यवः काहारमञ्ज भित्रकृत विकामा कतिरमन । हनुमान मध्य छ आमरतत्र मिर्क विनातन, "आपनाता पृथिवीकरत मन्नात्र. আপনারা চীর ও বছল ধারণ করিরাছেন কেন ? আপনাদের বুতান্নিত মহাবাহ সর্বভূষণে ভূষিত হইবার যোগ্য, সে বাহ ভূষণ-হীন কেন ?" এই আদরের কণ্ঠশ্বর গুনিয়া লক্ষণের চিরফ্র ছ: ব উচ্ছ, সিভ হইয়া উঠিল। যিনি চিরদিন মৌনভাবে স্বেহার্দ্র-হৃদয় বহন করিয়া আসিয়াছেন, আব্দ তিনি স্নেহের ছৃদ্দ ও ভাষা রোধ করিতে পারিলেন না। পরিচয় প্রদানের পর তিনি विगटनन — "मञ्जूत निर्द्भर" आक आमता स्वीरिवत भन्नाभन হইতে আসিয়াছি। যে রাম শরণাগতদিগকে অগণিত বিভ অকুষ্টিতচিত্তে দান করিয়াছেন, ত্রিলোকবিশ্রুতকীর্ষ্টি দশরণের জ্যেষ্ঠ পুত্র আমার গুরু সেই জগৎপূজা রামচন্ত্র আজ বানরাধি-পতির শরণ লইবার জন্ম এখানে উপশ্বিত। সর্বলোক বাঁহার আত্ররনাভে কুতার্থ হইত, বিনি প্রজাপুঞ্জের রক্ষক ও পালক ছিলেন, আৰু তিনি আশ্রয়ভিকা করিয়া স্থগ্রীবের নিকট উপস্থিত। তিনি শোকাভিত্বত ও আর্ত্ত, স্মগ্রীব অবশ্রুই প্রসন্ন হইয়া জাঁহাকে শর্ণ দান করিবেন।"--বলিতে বলিতে লক্ষণের চিরনিক্স অঞ্ উচ্চুসিত হইরা উঠিল, তিনি কাঁদিরা মৌনী ছইলেন। রামের গুরবস্থাদর্শনে শক্ষণ একাস্করণে অভিভূত হইরাছিলেন, তাঁহার দৃঢ়চরিত্র আর্দ্র ও করুণ হইরা পঞ্চিরাছিল। অশোকবনে হনুমানের নিকট শীতা বলিরাছিলেন, লক্ষণ আমা অপেকা রামের নিয়ত প্রিয়তর। রাবণের শেলে বিদ্ধ লক্ষণ বেদিন যুদ্ধক্ষেত্রে মৃতক্ষ হইয়া পড়িয়াছিলেন, সেদিন রাম আহত শাবককে ব্যামী বৈদ্ধনে রুমা করে, ক্রিক্রিক নেইকা আন্তলিরা বনিরা আছেন ;— রাবনের অক্সন্থা বা রানের পৃথ্যকে ছিল
ভিন্ন করিছেছিল, সেনিকে দৃক্ষান্ত বা ক্রিছেছিলেন । অনন্তর
বানরসৈত লক্ষণের রক্ষণের রাক্ষণ করিছেছিলেন । অনন্তর
বানরসৈত লক্ষণের রক্ষণের রাক্ষণ করিছেছিলেন । অনন্তর
বানরসৈত লক্ষণের রক্ষণের রাক্ষণ করিছেছিলেন । অনন্তর
বানরসৈত লক্ষণের রক্ষণের রাক্ষণ করিছিলে তিনি বৃত্তে প্রত্ত কইলেন এবং রাবণ পৃষ্ঠভক্ষণিরা রক্ষিরা গোলে মৃতকর রাভাকে অতি
ক্র্নোমলভাবে, আজিলল করিয়া রাম বলিলেন, "তুমি যেরপ বনে
আমার অক্ষণমন করিয়াছিলে, আজ আমিও তেমনি বমালরে
ভোষার অক্ষণমন করিয়াছিলে, আজ আমিও তেমনি বমালরে
ভোষার অক্ষণমন করিয়। ও বন্ধ পাওয়া বাইতে পারে, কিন্ত এমন দেশ
লেখিতে পাই না, যেধানে জোনার মত ভাই, মরী ও সহার
পাওয়া বাইবে। এখন উঠ, নয়ন উন্মালন করিয়া আমার
একবার দেখ; আমি পর্কতে বা বন-মধ্যে শোকার্ড, প্রমন্ত
বা বিষপ্প হইলে, তুমিই প্রবোধবাকো আমার সাক্ষনা দিতে,
এখন কেন এইরপ নীয়ব হইয়া আছ ১"

রামারণী যুক্তে বীরবর শক্ষণ বিশেষ বলবীর্য ও সাহসিকভার পরিচর দিরা গিরাছেন। সহবোগী সেনাপতিরপে যুক্ত করা ব্যতীত তিনি বীর ভূকবলে অতিকার, ইক্সজিং প্রভৃতিকে স্বরং শ্বনভবনে প্রেরণ করিয়াছিলেন। মেষনাদ নিধনে তাহার ক্লতিও ছিল। চতুর্দশবর্ষ অনাহারী ও জিতেক্সির না হইলে ইক্সজিংকে কেহ নিধন করিতে পারিবে না এইরপ বর ছিল। শক্ষণ বনবাসকালে সেই ব্রত পালন করিয়াছিলেন। তাড়কানিধনকালে বিশ্বামিত্রপ্রথম্ভ মন্ত্রই তাহা অনশনক্ষেশ নিবারণের সহার হইরাছিল।

রামের আজ্ঞাপালনে লক্ষণ কোনকালে ছিক্জি করেন নাই. স্থারসঙ্গত হউক বা না হউক, দল্লণ সর্মনা মৌনভাবে তাহা পালন করিয়া গিরাছেন। রক্ষোকুলের বিনাশসাধন ছইলে যে নিম রাম সীতাকে বিপুল সৈম্প্রসংঘর্ষের মধ্য দিয়া শিবিকা জ্যাগ করিরা পদত্রকে আসিতে আজা করিলেন। শত শত দৃষ্টির ,গোচরীভূত হইয়া সীতা লজ্জার বেন মরিয়া যাইতে ছিলেন, ত্রীড়ামরীর সর্বাদ কশ্পিত হইতেছিল। বন্ধণ এই দুল্ল দেখিয়া ব্যথিত হইলেন, কিছ রামের কার্য্যের প্রতিবাদ করিলেন না। যখন সভীত্ব পরীকার সমর সীতা অভিতে প্রাণবিসর্জন দিতে কৃতসংক্রা হইয়া বন্ধণকে চিতা প্রস্তুত করিতে আদেশ করিলেন,—তথ্ন লক্ষণ ছামের অভিপ্রায় বুরিয়া সম্বলনেত্রে চিতা প্রস্তুত করিলেন, কিন্তু কোন প্রতিবাদ করে নাই। ভ্রাত-মেতে তিনি **খীয়-সন্তিমণুত হইয়া গি**য়া-हिटनन। मीजादक উद्धात कविद्या वाम व्यवसायात व्यक्तिया লক্ষণ আতৃভক্তিবশতঃ তাঁহার মাথায় ्राक्षा रहेरनन ।

ছত্ৰ ৰবিবাহিলেন ৷ তিলি বাজকাৰে প্ৰাভাগ সহাৰতা কৰি-एक । विश्ववित शास अवस्त्रा नीवास उत्रियसप्रक नत्यर-क्रमक बराना केवाशन कक्रिक पाव कीशांक कावान विवास পরামর্শ করেব। জায়ণ এই গুরুতার লইবা পর্যারাধ্য জীতা-দেবীকে ৰাজীকির আপ্রেমে ত্রাধিয়া আদেন ৮ এই সময় হাইতে লক্ষণের চিত্তবিক্রতি ঘটে। অব্যেধ ক্ষেদ্র সময় ভিনিই মহা-बुनिव बाक्षम स्ट्रेंट्ड नीडालबीट बानबमार्च अमन करतन। গীতার পাতালগুরেশের পর, এক্দিন কালপুরুর জাসিরা সামচন্দ্রের সহিত দাব্দাৎ করেন। ঐ সমরে বল্লগাগ্রহে কাহাকেও আবেশ করিছে বিবে না অনুমতি দিয়া বাম লন্ধণকে ছারপাল-ৰূপে ক্লা করেন। অক্সাৎ রোবমর্তি চর্কানা আনিয়া রামের সাক্ষাৎ জন্ত অপ্ৰসন্ন হইলে ডিনি আদেশ জানাইরা তাঁহাকে নিরম্ভ করেন, কিছ মুর্বাসার শাপের ভয়ে জ্যোষ্ঠের নিকট প্রবেশাধিকারের অভুমতি শইবার জন্ত গৃহে প্রবিষ্ট হল। প্রতিজ্ঞাবন্ধ রাম লক্ষণকে বর্জন করিলে, তিনি সরবুসলিলে जीवन विमर्कन करत्रन।

অধ্যান্দরামায়ণের মতে লক্ষণ "শেষ" নাগের অবতার।

লক্ষণের চরিত্রে আছম্ভ পুরুষকারের মহিমা দৃষ্ট হয়। একদা লক্ষ্ণ রামকে বলিয়াছেন, "জল হইতে উদ্ভূতমীনের স্থায় আপনাকে ছাড়িয়া আমি এক মুহূর্ত্তও বাঁচিতে পারিব না।" বনঝসাজা অত্যন্ত অস্থায় এবং রামের পিত-আদেশ-পালন তিনি ধর্মবিক্ল বলিয়াই মনে করিয়াছিলেন। তাহাতে রাম লক্ষণকে বলিয়াছিলেন, "তুমি কি এই কার্য্য দৈবশক্তির कन वनिया मत्न कतिरव ना ? व्यातककार्या नष्टे कतिया यनि কোন অসংকল্পিত পথে কার্যাপ্রবাহ প্রবর্ত্তিত হয়, তবে তাহা रेमरवत्र कर्षा विनन्ना मरम कतिरव। स्मर्थ, किरकन्नी जिन्नमिन्हे আমাকে ভরতের ভার ভাল বাদিয়াছেন, তাঁহার ভার अनुनानिनी महरकूनकाण ताक्रपूजी जामारक नीजाना कतिवात অন্ত ইতর ব্যক্তির ন্থার এইরূপ প্রতিশ্রতিতে রাজাকে কেন্ট্ বা आवस कतिरवन । देश म्लंडे रेन्ट्रव कर्षे. देशांक मास्ट्रवंत एकान হাত নাই।" পদ্মণ উভরে বলিলেন, "অতি দীন ও অশক্ত याकितार दे दिवद मारार निता थाक. शुक्रमकात बाहा बाराता দৈবের প্রতিকৃলে দণ্ডারমান হন, তাঁহারা আপনার স্থার অবসন रहेता भएकृत ना । युक् वास्तिवाहे मर्वाहा निर्याखन खाश्च हन-"মুছর্হি পরিভূরতে।" ধর্ম ও লড্যের ভাগ করিরা পিছা যে বোরতর অভার করিতেছেন, ভাহা কি আগনি ব্রিতে পারিতে-ছেন না ? আপনি দেবতুল্য, ঋষু ও দান্ত এবং দ্বিপুরাও আপ-নার প্রাথগো করিয়া থাকে। এমন পুত্রকে ভিন্সি কি জাগরাধে বলে ভাড়াইরা বিভেছেন ৷ আপনি বে ধর্ম পানন করিতে

ভার্ম, এ বর আনার নিকট নিভান অবর আনীয়া মনে হর।
আীর বনীতৃত হইরা নিরপরাব প্রত্যে কনবান কেত্রা—ইহাই কি
সভ্য, ইহাই কি ধর্ম গুলার আনই বাহবলে আননার অভিবেদ সম্পাদন করিব। বেশি, কাহার সাধ্য আনার কভি প্রভিরোধ করে ? আন প্রথমকারের অফুল বিরা উলান বৈক্তভীকে আনি করেল আনিব। বাহা আলনি দৈবসংজ্ঞার অভিহিত করিভেছেন, ভাহা আপনি অনারাসে প্রভাগান করিভে পারেন, ভবে কি
নিমিত তুদ্ধ অভিকিৎকর দৈবের প্রাধ্যা করিভেছেন ৪"

শক্ষণের এই ওল্পবিভাপুর্ণ পুরুষণাভিয়াজিতে করতের
মত করণরসের বিশ্বতা ও ব্রীলোকস্থলত ধেদপূর্ণ
কোমলতা নাই। উহা সভত দৃদ্ধ, পুরুষোচিত ও বিপানে নিউলি ।
কোমলতা নাই। উহা সভত দৃদ্ধ, পুরুষোচিত ও বিপানে নিউলি ।
কোমরপ অবহাবিপর্যারে লক্ষণ নমিত হইরা পড়েন নাই।
বিরাধরাক্ষণের হত্তে সীতাকে নিঃসহারভাবে পভিত দেখিরা
রামচক্র শহার, আল মাতা কৈকেরীর আশা পূর্ব হইল" বলিরা
অবসম হইরা পড়িলেন। লক্ষণ প্রাভাকে ভদবহু দেখিরা ক্রুষ
সর্পের স্থার নিখান ত্যাগ করিরা বলিলেন—"ইক্সভুলা পরাক্রাত্ত
ইইয়া আপনি কেন অনাথের স্থার পরিতাপ করিতেছেন।
আরেন, আমরা রাক্ষণকে বধ করি।"

শেলবিদ্ধ লক্ষণ পুনজীবন লাভ করিরা কথন দেখিতে পাইলেন, রাম তাঁহার শোকে অধীর হইরা সজলচক্ষে স্ত্রীলোকের
মত বিলাপ করিতেছেন, তখন তিনি সেই কাতর অক্ছাতেই
রামকে এরূপ পৌরুবহীন মোহপ্রাপ্তির জল্ল তিরন্ধার করিয়াছিলেন। বিরহের অবস্থার রামের একান্ত বিহুবলতা দেখিরা
তিনি ব্যথিতচিত্তে রামকে "আপনি উৎসাহশুল্ল হইবেন না"
"মাপনার এরূপ দৌর্কাল্যপ্রদর্শন উচিত নহে" "পুরুবকার
অবলধন কর্মন" ইত্যাদিরূপ উপদেশ দিরা বলিরাছিলেন—
"দেবগণের অমৃতলাভের ক্লার বহু তপক্তা ও ক্লচ্ছ্রনাধন করিরা
মহারাজ দশরথ আপনাকে লাভ করিরাছিলেন, সে সকল কণা
আমি ভরতের মুখে শুনিরাছি—আপনি তপক্তার কলত্বরূপ।
বিপিদে পড়িরা আপনার ক্লার ধর্মাত্মা সভ্ করিতে না
পারেন, তবে অরুস্থ ইতর ব্যক্তিরা ক্রিরণে সভ্ করিবে ৮"

রামের জাতসারে হউক বা অজ্ঞাতসারে হউক, বে কেই অক্সার করিরাছে, লক্ষণ তাহা ক্ষমা করেন নাই, এ কথা পূর্বেই বলিছি। দশরবের ওপরাশি তাহার সমন্তই বিদিত ছিল, ক্রোধের উভেজনার তিনি বাহাই বলুন না কেন, দশরথ বে প্রশোকে প্রাণত্যাল করিবেন, এ কথাও তিনি পূর্বেই জন্মান করিরাছিলেন, তথাপি তিনি দশরথকে বনে বনে ক্ষমা করেন নাই। স্থবর বিধারকালে বধন লক্ষণকে জিল্লানা করিতিল, কুমার, শিতৃস্কালে জাপনার কিছু বক্ষরা আছে কি ?"

জ্বন লক্ষণ বলিনেন, "রাষ্ট্রক বলিত্র, বানকৈ তিনি কেন বনে গাঠাইলেন, নিরণরাধ জ্যেতপুত্তকে ক্ষেত্র মার্কিটাগ করিলেন, ভাষা ক্ষামি বহু চিন্তা করিবাও বুনিকে স্থামি মাই। ক্ষামি মহা-রাজের চরিত্রে শিহুত্বের কোন নির্দেশন স্থোক্তিক পাইতেছি না। ক্ষামার প্রাক্তা, বন্ধু, ভর্জা ও পিতা, সকলই মানক্ষাধ্যে।"

ে ভন্নভের প্রভি ভাঁহার গভীর সন্দেহ ছিল। কৈন্দেরীয়া পুত্র ভরত বে মাডার ভাবে অভুপ্রাণিত হইবেন, এ সবছে ভারার অটল ধারণা ছিল, ক্ষেত্র রামের তর্থ স্নার তরে তিনি ভয়তের প্রতি কঠোরবাক্য আছোগে নিবৃত্ত থাকিছেন। কিন্তু বধন ৰটাৰছকেশকলাপ অলখনকুশ ভন্নত দানের চন্নণ প্রান্তে পড়িয়া ধুলিপুটিভ হুইবেন, ভখন লক্ষ্মটাহাকে চিনিতে পারিয়া সলজ-দেহণরিতাপে ক্রিয়বাণ হইলেন। ['] এক্সিন শীতকালের রাত্রে বড় তুবার পড়িভেছিল, শীভাধিক্যে পক্ষিগ্ন কুলারে গুট্টত হইরা-ছিল, ভরতের জঞ্চ সেই সমন লক্ষণের প্রাণ কাঁদিয়া উঠিল, তিনি রামকে বলিলেন — এই তীত্র লীত লক্ত করিলা ধর্মান্দা ভরত আপনার ভক্তির ডপস্যা পালন করিতেছেন। রাজ্য, ভোগ, মান, বিলাস, সমস্ত ত্যাগ করিয়া নিয়তাহারী ভরত এট জীবণ শীভকাশের রাত্রিতে মৃত্তিকার শরন করিতেছেন। নিয়ম পালন করিয়া প্রভাহ শেষরাত্রিতে ভরত সর্যুতে অবগাহন করিয়া থাকেন। চিরস্থগোচিত রাজকুমার শেষরাত্রের তীত্র শীতে কিন্ধপে সরবৃতে স্থান করেন।"

এই লক্ষণ পূর্বে ভরতের প্রতি অভিজোধ প্রকাশ করিরাছিলেন। কিছ বেদিন বৃক্তি পারিলেন, তিনি বনে বনে যুরিরা রামের যেরূপ সেবার নিরত, অবোধাার মহাসমৃদ্ধির মধ্যে বাল করিরাও ভরত রামভন্তিতে সেইরূপ কুচ্ছুলাখন করিতেছেন, সেই দিন হইতে তাঁহার হয় এইরূপ সেহার্ক্র ও বিনম্র হইরা পড়িরাছিল। কিছ তিনি কৈকেরীকে কখনই কমা করেন নাই, রামের নিক্ট এই ধিন ব্লিক্রাছিলেন, "দলরও বাহার স্থানী, নাধু ভরত বাহার প্রা, সেই কৈকেরী এরূপ নিঠুর হইলেন কেল।"

শরৎকাল উপদ্বিত হইল, কিছ প্রতিশ্রুতির অন্থারী উদ্যো-গের কোল চিছ না পাইরা রাম স্থ্রীবের প্রতি কুছ হইলেন,— প্রামান্তবে রত মূর্ব স্থ্রীব উপকার পাইরা প্রত্যুপকারে অবহেলা করিতেছে। রাম লক্ষণকৈ স্থ্রীবের নিকট পাঠাইরা বিলেম— বন্ধকে কীর কর্তব্যের কথা স্বরণ করাইয়া উল্লোপে প্রবর্তিত করিবার জন্ত বে সকল কথা কহিরা নিলেন, স্কর্মব্যে ক্রোধস্চক করেকটি কথা ছিল—

'বে পথে বালী গিয়াছে, সে পথ সন্থটিত হয় নাই ; স্থপ্ৰীৰ, বে প্ৰতিজ্ঞা কৰিয়াছ, ভাষাতে স্থাতিঠ হও, স্বালীয় পথ স্কুন্ সরণ করিও না ।' কিন্তু লন্ধণের চরিত্র জানিরা রাম একটা "পূনক" কুড়িরা লন্ধণকে সাবধান করিবা বিলেন। আজ সেই মিধ্যাবাদীকে বিনাশ করিব, বালীর পুত্র জনদ এখন বানরগণকে লইরা জানকীর অবেবণ করুন।"

লক্ষণের তীক্ষ অক্লারবোধ সামের কথার প্রশমিত হয় নাই। তিনি স্থাীবকে জুম্বকঠে ভর্ণননা করিয়া রোবন্দুরিভাধরে ধন্ন লইয়া দাঁড়াইয়া ছিলেন। ভয়ে বানরাধিপতি তাঁহার ক্ঠবিলম্বিত বিচিত্র ক্রীড়ামাল্য ছেদনপূর্বক ভখনই রামচক্রের উদ্দেশে বাত্রা ক্রিলেন। এতাদুশ তেজমী বৃবক্কে তেজমিনী সীতা যে ক্ষঠোর বাক্য প্রারোগ করেন, সে কঠোর বাক্য তিনি কিরুপে সম্ভ করিরাছিলেন, তাহা জানিতে কৌতৃহল হইতে পারে। মারীচরাক্ষ্য রামের স্থর অনুকরণ করিয়া বিপন্নকঠে "কোথা রে লন্ধণ" বলিয়া চীৎকার করিয়া উঠিল। সীতা ব্যাকুল হইয়া তখনই লন্ধণকে রামের নিকট যাইতে আদেশ করিলেন। লন্ধণ রামের আদেশ লব্দন করিয়া যাইতে অসম্মত হইলেন এবং মারীচ যে ঐক্লপ স্বর্বিক্লতি করিয়া কোন ছরভিসন্ধিসাধনের চেষ্টা পাই-তেছে, তাহা সীতাকে বুঝাইতে চেষ্টা করিলেন। কিন্তু সীতা তথন স্বামীর বিপদাশকায় জ্ঞানশূস্তা, লক্ষণকে সাশ্রনেত্রে ও স্ক্রোধে "তুমি ভরতের চর, প্রচ্ছর জ্ঞাতিশক্র, আমার লোভে বামের অনুবর্ত্তী হইয়াছ, রামের কোন অভভ হইলে আমি অনিতে প্রবেশ করিব।" এ কথা গুনিয়া লক্ষণ কণকাল छछिछ ও विशृष्ट इटेग्रा माँ पृष्टिया त्रिश्लन, त्कार्थ ও नष्काय তাঁহার গণ্ড আরক্তিম হইয়া উঠিল। তিনি বলিলেন—"দেবি! তুমি আমার নিকট দেবতাশ্বরূপা, তোমাকে আমার কিছু বলা উচিত নহে। স্ত্রী-লোকের বৃদ্ধি স্বভাবত:ই ভেদকারী; তাহারা বিমৃক্তধর্মা, ক্রুরা ও চপলা। ভোমার কথা তপ্তলোহশেলের মত আমার কর্ণে প্রবেশ করিতেছে,—আমার নিশ্চরই মৃত্যু উপস্থিত, চারিদিকে অগুভলকণ দেখিতে পাইতেছি"-এই বলিয়া প্রস্থান করিবার পূর্ব্বে সীতাকে বলিলেন, "বিশালাকি! এখন সমগ্র বনদেবতারা তোমাকে রক্ষা করুন।'' ক্রোধক্ষুরিতা-ধবে এট ৰলিয়া শক্ষণ রামের সন্ধানে চলিয়া গেলেন।

লন্ধণের পুরুষোচিত চরিত্র সর্বাত্ত সভেম, তাঁহার পৌরুষদৃথ্য
মহিমা সর্বাত্ত অনাবিল,—তাত্র শেকালিকার ভার অনির্মান ও
অপবিত্র। সীতা কর্তৃক বিন্দিপ্ত অলভারগুলি অগ্রীব সংগ্রহ করিয়া
রাখিরাছিলেন, লে সকল রাম এবং লন্ধণের নিকট উপস্থিত
করা হইলে লক্ষণ বলিলেন, শ্রামি হার ও কেনুরের প্রতি লক্ষ্য
করি নাই, অতরাং তাহা চিনিতে পারিতেছি না। নিত্য পদবন্ধনাকালে তাঁহার নৃপ্রবৃদ্ধ দর্শন করিয়াছি এবং ভাহাই চিনিতে
লারিতেছি।" কিন্দিন্তার গিরিশ্বহাছিত রাক্ধানীতে প্রবেশ

করিয়া সিয়িবাসিনী রমনীগণের নৃশ্র ও কার্কীর বিলাসমুখরনিক্ষন তনিয়া লক্ষণ, চরিত্রবান্ নায়ু পুরুবেরাই এইরূপ
লক্ষা দেখাইতে পারেন। বধন মদবিহুলগানী নমিতাল্যাই
তারা তাঁহার নিকট উপস্থিত হইল,—তাহার বিলাল শ্রোণীমালিত কার্কীর হেমপ্রে লক্ষণের সমুধে মুছতর্মনিত হইরা
উঠিল, তখন লক্ষণ লক্ষার অধানুধ ইইলেন। এইরূপ হই
একটী ইন্সিতবাক্ষে পরিব্যক্ত লক্ষণের নায়ুদ্ধের ছবি আমান্তের
চক্ষের নিকট উপস্থিত হর। তখন প্রকৃতই তাঁহাকে দেবভার
ভার পূলার্হ মনে হর।

লক্ষাণ, কএকজন গ্রহকার ও পশুত। ১ শুরুবংশটীকা-রচয়িতা। ২ চূড়ামণিসার, দৈবজ্ঞবিধিবিলাস ও রমলগ্রছ নামক তিন খানি ক্যোতিগ্র ম্বপ্রণেতা। ৩ পরমহংসসংহিতা-রচরিতা। ৪ সমস্তার্ণবপ্রণেতা। ৫ বৈশ্বক্রোগচন্দ্রিকা বা যোগচক্রিকা নামক গ্রন্থ-রচন্ধিতা। ইনি দছের পুত্র এবং নাগ-নাথ ও নারারণের শিষ্য। 🔸 মহাভাষ্যাদর্শপ্রণেতা। পাঠকের পুত্র। ৭ প্রামৃতভরঙ্গিণীধৃত একজন কবি। ৮ মুচ্ছ-কটিকটীকা-প্রণেতা লল্লা দীক্ষিতের পিতা ও শঙ্কর দীক্ষিতের পুত্র। লক্ষাণ্ > একজন হিন্দু মহারাজ ছিলেন। কোসামন্থ শিলাফলকে ঐ সম্বত উৎকীর্ণ দেখা যায়। ২ কচ্ছপঘাত বংশীয় একজন রাজা বছলামনের পিতা। ইনি খুষ্টীয় ১০ম শতাব্দীর শেষ ভাগে বিদ্যমান ছিলেন। ৩ বাঞ্চালার সেনবংশীয় একজন কার্ত্ত রাজা। রাজা কেশব সেনের পৌত্রও নারায়ণের পুত্র। ঐতি-হাসিক আবুলকজল এই নারায়ণকে "নৌজেব" নামে ও সেন বংশের শেষ স্বাধীন রাজা বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন।

লক্ষাণ আচার্য্য, ১ চঙীকুচপঞ্চশতীপ্রণেতা। ২ জগদ্মোহন নামক জ্যোতিপ্রস্থি-রচন্নিতা। ৩ পাছকাসহস্র, বিরোধপরিহার ও বেদার্থবিচারপ্রণেতা।

*লাক্*মণকবচ (ङ्री) > শক্ষণের স্থতিজ্ঞাপক ভোত্রভেদ। ২ ধরণীবিশেষ।

লক্ষ্মণ কবি, ১ ক্লক্ষ্বিলাসচম্পুরচয়িতা। ২ চম্পুরামারণ নামক গ্রন্থের যুদ্ধকাপ্তপ্রণেতা।

লক্ষাণকুগুক (क्री) তীর্থভেদ।

লক্ষাণগড়, রাজপুতনার জরপুর রাজ্যের শেখাবতী জেলার অন্তর্গত একটা নগর। জরপুর রাজ্যের অধীনস্থ সামন্ত শীকর বংশীর সন্ধাররাপ্ত রাজা লক্ষণসিংহ কর্তৃক ১৮০৬ পুষ্টাব্দে এই নগর স্থাপিত হয়। এই নগর স্থর্গাদি বারা পরিরক্ষিত এবং জরপুর নগরের অন্তক্ষণে নির্মিত। এখানে ধনী মহাজনদিগের ক্রেকটা স্ক্ষর স্ক্ষর অট্টালিকা আছে। লক্ষ্মণগড়, রাজপ্তনার আগবার সামস্ক-রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর! আগবার নগর হইতে ২৩ বাইল দক্ষিণপূর্ব্ধে অবস্থিত। পূর্বেধ এই হান তৌর নামে পরিচিত ছিল। রাজা প্রতাপ সিংহ হর্গনির্মাণাত্তে এই হানের নাম পরিবর্তন করেন। নজক বা এই হর্গ অবরোধ করিরাছিলেন।

লক্ষাণ শুপু, কান্সীরবাসী একজন লৈব-দার্শনিক। উৎপদ ও ভটনারারণের শিবা। তিনি ৯৫০ শুটাকে বিদ্যমান ছিলেন। লক্ষাপচন্দ্র (পুং) কীরগ্রামের একজন হিন্দু সামন্তরাজ। উপাধি রাজানক। ইনি ত্রিগর্ভ (জালক্ষর)-রাজ জরচন্দ্রের ক্ষধীনে রাজার করিভেন। ইহার মাতা লক্ষণিকা ত্রিগর্ভ-রাজপুলব ক্ষরচন্দ্রের কলা। কীরপ্রামের শিববৈদ্যমাধ মন্দিরে ইহার প্রশান্তি উৎকীর্ণ দেখা বার।

লক্ষাণঠাকুর, মিথিলার একজন রাজা। মহারাজ শিবসিংহের পূর্বপুরুষ।

লক্ষ্মণতীর্থ, প্রাণোক্ত একটা প্রাচীন তীর্থ। এই নদীর প্তসলিনে অবগাহন করিলে অপের প্ণাসঞ্চর হইরা থাকে। নারলপুরাণ উ ৭৫ অধ্যারে এই তীর্থমাহান্মা বর্ণিত হইরাছে।

ইহা দক্ষিণভারত-প্রবাহিত প্রসিদ্ধ কাবেরী নদীর একটা দাখা। কুর্গ রাজ্যের ব্রহ্মাগিরিসন্নিহিত কুর্ছিগ্রামের পার্থ-দেশ হইতে সমৃত্যুত হইরা উত্তরপূর্কাভির্থে মহিস্কররাজ্যের মধ্য দিরা সাগরকটে নগর সমূথে কাবেরীসদমে মিশিত হুইরাছে। এখানে নদীবক্ষে গটা বাধ বাধিরা জ্বলপ্রশালীযোগে দক্তক্ষোদিতে জ্বলস্ববরাহ করা হইরা থাকে। এই সকল বাধের মধ্যে হানাগোদ বাধই প্রধান।

উৎপত্তি-ছান হইতে পর্বতবক্ষে কির্দুর অতিক্রম করিয়া আসিলে ব্রদ্ধগিরিতে একটা স্থ্রহৎ জলপ্রপাত দৃষ্ট হয়, ঐ প্রপাতই প্রসিক্ষ সন্মণতীর্থ নামে প্রসিদ্ধ। এথানে প্রতিবংসর মাঘমাসে নানোপদক্ষে বহু তীর্থবাত্রীর সমাগম হইরা থাকে। বে পথ দিরা এই তীর্থে আসিতে হয়, তাহা অতীব বিম্মনাবহ। পথের রক্ষিণপার্থের ছরারোহ পর্বতেশৃদ্ধ এবং বামপার্থে স্থগতীর মনীবাত। এতত্তবের মধ্যবর্ত্তী স্থঁড়ি-পথে বাত্রিগণ গমনাগমন করিয়া থাকে। অস্তমনত্ত হইলেই পতনের সন্তাবনা। বীত্তৎস দৃশ্ভ ভিকুক ও সন্তাসিকৃক্ষ পথের থাকে হানে হানে তীর্থ-নাত্রিগণের আয়ও ভরোৎপাক্ষনের কারণ হইরা থাকে।

লক্ষণালাস, অংকভাষা-সারমন্ত্রী-প্রণেডা মাধবদেবের পিডা।
লক্ষণাদেবি, তর্কভাষা-সারমন্ত্রী-প্রণেডা মাধবদেবের পিডা।
লক্ষ্মণাদেশিক, এক্ষম প্রশিক্ষ ভারিক গণ্ডিড। বারের রাজণ
বিষয় জাচার্যের পৌত্র ও জীককের পূত্র। ইনি কার্ডবীর্যার্জ্যবীগদানপ্রতি, কুওমগুণবিধি, ভারাপ্রবীণ, শারদাভিদক,

শব্দার্থচিন্তামণিনামী শারদান্তিলকটাকা ও তন্ত্রপ্রবীপ নামে ভারা-ক্রেবীগটাকা প্রণয়ন করেন।

लक्का निक्रित्तिम्, जैननर्गरणाजकपविठातः, विकर्णवाम ७ नातनरश्रह नामक वाकित्रश्राद्धारणा ।

লক্ষণনায়ক, জনৈক নায়কগদার। ইনি ১৮১০ খুটাকে বাশ্বটের অন্তর্গত পরশ্বাড়া নামক ছানে একটা ক্ষপদ স্থাপন করিয়াছিলেন।

লক্ষণপণ্ডিত, সারচন্দ্রিকা নামে রাধ্বপাণ্ডবীর টাকা ও সন্ধি-মুক্তাবলী-রচরিকা।

লক্ষ্মণপতি, গৌরীলাতকপ্রণেতা।

লক্ষাণপ্রাসূ (ব্রী) লক্ষণত প্রস্থর্জননী। স্থবিত্রা। (শবর্ত্বা) লক্ষ্মণভট্ট (পুং) গীতগোবিন্দটীকা-প্রণেতা।

লক্ষ্মণভট্ট, > কাব্যপ্রকাশতীকাপ্রণেতা চঞ্চীরাসের একজন
স্থান্থ। গ্রন্থকার স্থীর টীকার বন্ধবরের পাণ্ডিত্যের পরিচর
দিরাছেন। ২ পখরচনা ও রন্ধনালাপ্রণেতা। ৩ মহাভারতটীকা-রচিরতা। ইনিই সন্থাবত: ভারতভাবদীপ প্রণেতা মীলকণ্ঠের গুরু। ৪ হোত্রকরক্ষমপ্রণেতা নারারণভট্টের পুত্র।
ইনি বাছেলসর্দার রামা ভাবসিংহদেবের অন্ধ্যতান্থসারে উক্ত
গ্রন্থধানি সন্থান করেন। ৫ আচাররন্ধ, আচারসার, গুরুশতকটিরণ ও গোত্রপ্রবরন্ধরচিরতা। রামক্কণভট্টের পুত্র, নারারণভট্টের পৌত্র ও রামেশ্বর ভট্টের প্রপৌত্র। ৬ লক্ষ্মণভট্টীর নামক
বেদাস্তগ্রহ্বরিতা।

লক্ষাণমাণিক্য, বালালার অসিদ্ধ বারভূঁরার একজন, ভূশুরার ইহার রাজধানী ছিল, ভূম্যধিকারত্ত্তে ইনি মেঘনার পূর্ববর্তী অনেকগুলি পরগণার উপর সীর আধিপত্য বিস্তার করিয়ছিলেন।

ৰাজালার এই ভূঁষাবংশের প্রান্তার ও প্রতিষ্ঠাপ্রদাদ পুরুষপরম্পরার নানারপ কিংবদঙ্কী প্রচলিত ক্লাছে। ঐ সকল
অন্তুসরণ করিলে জানা যার যে, আদিশুরবংশীর বন্ধক্ষার্যুক্তনীসমৃহত রাজা বিষম্ভর রাম» চট্টপ্রামের অন্তর্গত সীতাকুণ্ডতীথোন্দেশে যাত্রা করিরা পথিমধ্যে রাত্রি হওয়ার মেঘনার একটা
চোরাবালুর চরে নজর করিয়া দেই রাত্রি তথার বাসের
বন্দোবন্ত করেন। রাজা নিপ্রাবহার স্থান দেখেন যে,
ভগবান্ যদিতেছেন, "তুই বে স্থানে অভ্ন নিপ্রিত রহিয়াছিল,
তাহার চতুর্দিক্ছ সমুদার স্থানেরই তুই একমাত্র অধীবর হইবি।"
রক্ষনী প্রভাতে নিপ্রাভলের সঙ্গে শক্ষেই তিনি স্থানবিরণ
আলোচনা করিয়া উহাকে ঈশ্বের আব্দেশ যদিরাই প্রহণ

এবানশ্ব নিজের নাজত, ইবি আদিশুনবাদীর কারয় সম্ভাব । এবদও জুল্রা পরবর্গার জীরাদপুর আদে এই বাদীর আদেক ব্যক্তিকালয়ের বাস আছে।



করিলেন এবং সেই স্থান অধিকারে ক্রন্তস্কর হইরা অরুণোদরেই রওনা হইলেন। প্রভাতে ভিনি প্রশাস্ত নদীবকৈ
দিঙ্নিরপণ করিতে না পারিয়া ভ্রমক্রমে ইভন্ততঃ পুরিয়া
বেড়ান। এইজগ্র তিনি সেই স্থানের নাম ভূলুয়া রাখেন।

প্রবাদ, ১০ই মাঘ অথবা ১২০০ খুঠানেদ এই ঘটনা ঘটে।
তৎপূর্বেই মহন্মদ-ই-বধ্ তিরার থিলিজি বালালা আজ্রনণ
করেন। প্রবাদ-বর্ণিত কালনির্ণরে আহা ছাপন না করিরাও
আমরা লন্মণমাণিক্যের বংশলতা হইতে জানিতে পারি বে,
রাজা বিশ্বভারের ১১শ প্রক্ষে রাজা লন্মণমাণিক্য প্রান্তভূতি
হইরাছিলেন। বিশ্বভারের মৃত্যু ও লন্মণের জন্ম এতচ্ভারের
মধ্যে ৩৫০ বংশর।

এদিকে ঐতিহাসিক প্রসাণেও জানা যায় যে, ১৫৮৬ थष्टीत्म हक्किशिशिक ब्रामा कम्मर्थनावावन मीविक हित्नन। রাজা লক্ষণমাণিক্য তাঁহারই সমসামন্ত্রিক। কন্দর্পনারায়ণের মৃত্যুর পর, বালক রামচক্র রায় রাজা হন। বালক রামচক্রকে লক্ষণমাণিকা বিশেষ তুচ্ছতাচ্ছিলা করিতেন। এই শ্লেষোক্তি চন্দ্র-ছাপে রামচক্র রায়ের কর্ণে উপনীত হইলে তিনি ক্রোধে অধীর হইয়া ভুলুয়া আক্রমণার্থ রণতরীসমূহ সক্ষিত হইতে আদেশ দেন। তদমুদারে তাঁহার দলবল অস্ত্র শস্ত্র লইয়া মেঘনা অতিক্রম করিয়া अवः इन्यात्र छेखीर्ग इटेग्रा ताका नम्मगटक मःवान दशत्र कतिन। ভুলুয়ারাজ কোন আশকা না করিয়া প্রতিবেশী রাজার সম্বর্জনার্থ च्याः উপश्विष्ठ इटेरानन, जाँहात मतीत्रत्रकी श्राहतिमन क्रिट्टे সঙ্গে আসিল না। শত্রুর নৌকায় আরোহণ করিবামাত্রই তিনি বন্দিভাবে চম্মুখীপে আনীত হইলেন। এথানে কারাগৃহে অবস্থানকালে একদিন রামচক্র তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করেন। ঐ সময়ে লক্ষ্ণমাণিক্য তাঁহাকে নিষ্ঠুররূপে আহত করায় তিনি त्कार्य अधीत इटेग्रा मन्त्रागत প्रागितनारमत आरम्भ श्रात করেন। রাজাদেশ অচিরেই প্রতিপালিত হইল।

[বিছত বিবরণ বারভূঁরা শব্দে দেখ।] লক্ষ্মণমাথুরকায়স্থ, শক্ষণোৎসব ও বৈজসর্কস্থ নামক বৈছক-

এছ প্রণেতা। অমরসিংহের পুত।

লক্ষনণরাজনেব (গং) চেনীরাজ্যের কলচ্ডিবংশার একজন রাজা।
কেন্তুরবর্ধ ১ম যুবরাজনেবের পুত্র। পিতার মৃত্যুর পর ৯৫০
খুষ্টান্দে পিতৃসিংহাসনের অধিকারী হন। ইনি রাজকভা রাহড়ার
পাণিপীড়ন করেন। তদীয় তনয়া বোছানেবীর সহিত পশ্চিমচালুকারাজ বিক্রমাদিত্যের বিবাহ হয়। রাজ্ব-দৌহিত্র ২য় তৈলপ
৯৭৩-৯৯৭ খুষ্টান্দ পর্যান্ত প্রভূত প্রভাবের সহিত রাজ্যশাসন
ক্রিয়াছিলেন।

विनइति-स्नक इडेट काना यात्र त्य, त्राका नन्त्रशताकतनव

কোলনাধিপতিকে পরাজিত করিয়া পশ্চিমপ্রদেশ জয় করিতে গমন করেন এবং গুজয়াতে সোমেখরণিজের উপাসনা করিয়াছিলেন।

লক্ষ্মণবন্দ্যোপাধ্যায়, একজন বালালী কৰি। ইনি সম্ভবতঃ
বশিষ্ঠকৃত অধ্যান্মরামারণের বলাহবাদ সম্ভবন করিরাছিলেন।
এই রামারণ গ্রন্থের ছইশতবৎসরের প্রাচীন পূঁথি পাওয়া গিরাছে।
লক্ষ্মণবালাক্তাচার্য্য, ছারপ্রকাশিকা নারী জীভাষাটীকা-রচরিতা।
লক্ষ্মণশান্ত্রিন্, অমরকোষব্যাখ্যাপ্রণেতা। বিষেশ্বর শান্তীর পুত্র।
লক্ষ্মণসাহত, শতকোটীমপ্তলপ্রণেতা।

লক্ষনণ্সেন (পুং) বাঙ্গালার সেনবংশীর একজন রাজা। বল্লাল-সেনের পুতা। ইহার সময়ে মুসলমানসৈত্য বাঙ্গালা আক্রমণ করে। যাজ্ঞববদালীপকলিকাপ্রণেতা শূলপাণি, হলার্ধ, পশুপতি, জয়দেব ও ধোরীকবি তাঁহার সভা উজ্জল করিরাছিলেন। এই সকল পণ্ডিতগণের সহবাসে তিনিও একজন স্থকবি হইয়া উঠেন। পদ্যাবলীতে তাঁহার রচিত কতকগুলি কবিতা উদ্ভ হইয়াছে। প্রাচীন তামলিপিতে তিনি দক্ষিণাদ্ধিবিজয়ী বলিয়া উল্লেখ দেখা যায়। মহন্মদ-ই-বখ্তিয়ারের আগমনে উৎকোচগ্রাহী পণ্ডিতগণের প্ররোচনায় বৃদ্ধরাজা কিরপে রাজ্য ছাড়িয়া জগয়াথ-দর্শনচ্ছলে পলাইয়া যান, তাহাও সাধারণের অবিদিত নাই। কুলশাস্ত্রে তিনি কুলপদ্ধতিসংকারক বলিয়া প্রসিদ্ধ।

[সেনরাজবংশ দেখ]

লক্ষ্মণসোম্যাজিন্, সীতারামবিহারকাব্যপ্রণেতা। ওর্গন্টি-শঙ্করের পুত্র।

লক্ষ্মণস্থামিন্, বাশীরস্থ মনিবে প্রতিষ্ঠিত লক্ষণ-মূর্তি। (রাজতর° ৪।২৭৬)

লক্ষ্মণা (স্ত্রী) লক্ষণমন্ত্রক্তা ইতি অর্শ আদিখানচ্, টাপ্।
> খেতকটকারী। (রাজনি॰) ২ সারসী। ৩ ওষধিভেদ। (মেদিনী)
পর্য্যার — লক্ষণাকল, পুত্রকলা, পুত্রদা, নাগিনী, নাগাহার,
নাগপত্রী, তুলিনী, মজ্জিকা, অপ্রবিশ্বছেদা, পুছেদা। গুণ—
মধুর, শীতল, স্ত্রীবদ্ধাতানাশক, রসায়ন, বলকর ও ত্রিদোষনাশক। (রাজনি॰)

২ মদ্রাধিপত্তির এক কন্সা। (ভাগবত > । ধদা ৫৭)

ও ছর্বোধনের কন্তা, এই কন্তা যথন স্বয়ম্বরা হয়, তথন শ্রীকৃষ্ণপুত্র সাম্ব এই কন্তাকে হরণ করিয়া বিবাহ করেন।

"দুর্য্যোধনস্থতাং রাজন্ লন্ধণাং সমিতি**জ্ঞরঃ**।

স্বরম্বরম্বামহরৎ সাম্বো আম্বতীস্থতঃ 🗗 (ভাগবত ১০০৮০১)

৪ জবাগাছ। ৫ মৃচুকুন্দবৃক্ষ। (বৈশ্বকনি৽)

লক্ষণাচার্য্য (পুং) গ্রন্থকারভেদ। [লক্ষণ আচার্য্য দেখ।] লক্ষ্যণাজটা (স্ত্রী) লক্ষামূল। न कारोनि छात्रा अभू त, बरेनक कवि। हैनि क्लार्में जन भिश ছিলেন। ক্ৰিকগাভরণে ইহার রচিত প্লোক উদ্ভ আছে। ল ক্মণাবতী, বাঙ্গলার প্রাচীন রাজধানী। ইহার অপর নাম গৌরু। গোড়েশ্বর মহারাজ লক্ষণদেন (মতান্তরে সেনবংশীর শেব রাজা লছমণিয়া) গৌড় রাজধানীর নানাবিধ সংস্কার नायन क्तिया "नन्त्रगावजी" नाम त्राचित्राहित्नन । उৎপत्रवर्जी মুসলমান ঐতিহাসিকগণও এই নগরকে "লখুনোতী" নামে উল্লেখ করিরা গিয়াছেন। ১২৪৩ খুষ্টাব্দের কিছু পরে মিন্ছাজ এই নগরে বাস করিয়াছিলেন। লক্ষণাবতীর তোরণনার এবং অস্থান্ত হিন্দু ও মুসলমান কীর্ত্তির নিদর্শন স্বরূপ অন্থাপি ঘাহা গৌড়রাজধানীতে বিভ্যমান আছে, তৎসমুদায়ের সংক্ষিপ্ত বিবরণ গৌড় শব্দে আলোচিত হইরাছে। বর্তমান প্রত্নতত্ত্ববিদ্গণের অধ্যবসায়ে এই প্রাচীন জনপদের লুপ্ত ইতিহাসের জনেকাংশ বল্লালসেন ও লক্ষণসেন প্রভৃতি সেনবংশীয় রাজগণের জীবনেতি-বুত্ত আলোচনার সঙ্গে সঙ্গে উল্যাটিত হইতেছে, তাহার বিভূত বিবরণ বাঙ্গালার ইতিহাসে বিরুত হইবে।

[গৌড়, বাঙ্গালা ও সেনরাজবংশ দেখ]

লক্ষাণোর (ত্রি) [লকণোর দেব।] লক্ষাণ্য (পুং) লক্ষণপুত্র। (ঋক্ এত গ১০) লক্ষাবীথী (ত্রী) লক্ষ্যপথ।

লক্ষ্মী (স্ত্রী) লক্ষ্যতি পশুতি উদ্যোগিনমিতি লক্ষি (লক্ষে মুট্ চ।
উণ্ ৩০১৬০) ঈপ্রতায়ো মুড়াগমশ্চ। ১ বিষ্ণুপল্পী। পর্যায়
পরালয়া, পরা, কমলা, শ্রী, হরিপ্রিয়া, ইলিরা, লোকমাতা,
মা, ক্ষীরান্ধিতনয়া, রমা, জলধিজা, ভার্গবী, হরিবয়ভা, হ্যানিতনয়া, ক্ষীরসাগরস্থতা। (কবিকয়লতা)

ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণে লন্ধীর উৎপত্তির বিষয় এইরূপ লিখিত আছে,—কোন সমরে নারদ নারায়ণকে লন্ধীর উৎপত্তি ও পূজাদির বিষয় জিজ্ঞানা করিলে তিনি বলিয়াছিলেন যে, ফ্টের অগ্রে রাসমণ্ডলম্বিত পরমান্ধা শ্রীক্ষকের বামভাগ হইতে লন্ধীদেবী উৎপন্ন হন। তিনি অতিশন্ন স্থন্দারী ও তপ্তর্কাঞ্চনবর্ণান্তা, তাঁহার অক্ষমকল শীতকালে স্থন্ধনক উক্ত এবং গ্রীয়কালে শীতল, কটিদেশ ক্ষীণ, স্তনহর কঠিন ও নিত্ব অতি বিশাল। এই দেবী স্থিরবোবনা এবং তাঁহার বর্ণশাতচম্পকত্লা। তাঁহার মুধমণ্ডল শারদীর কোটি পূর্ণচেক্রের প্রভাকে পদ্মকেও তিরহার করে। এই দেবী উৎপন্না হইরাই সহলা ঈশরের ইচ্ছান্ন করে। এই দেবী উৎপন্না হইরাই সহলা ঈশরের ইচ্ছান্ন তুই রূপে বিভক্ত হন। এই উত্তর মূর্ভিই রূপে, বর্ণে, ডেজে, বর্লে, প্রভার, বশ্লে, ক্ষুত্রে, ভ্রনে, গ্রেণ্, হান্তে, দর্শনে, ব্যক্তি, মধুরস্থরে, শীতিতে ঠিক সমান। এই ভূই মূর্ভি

রাধিকা ও লন্ধী। ক্লেকর বামাংশ্নকৃতা মূর্ব্তি লন্ধী এবং দক্ষিণাংশসমূতা দেবীই রাধিকা। রাধিকা উৎপন্ন হইরাই প্রীকৃক্ষকে কামনা করেন। পরে লন্ধীও ক্লফকে প্রার্থনা করেন। পরে লন্ধীও ক্লফকে প্রার্থনা করেন। প্রিকৃক্ষ প্রার্থিত হবরা উভয়েরই অভিলাব পূরণ করিরাছিলেন। তথন প্রীকৃক্ষ দক্ষাংশ হইতে ছিভুক্স ও বামাংশ হইতে চতুভুক্ত এই চুইভাগে বিভক্ত হন। পরে ছিভুক্ত মূর্ব্বিতে ক্লফ রাধিকাকে গ্রহণ করেন এবং বীর চতুভূক্তি নারারণমূর্ব্বি লইরা লন্ধীর প্রার্থনা পূর্ণ করিলেন। লন্ধীদেবী নিম্ম দৃষ্টিতে সমূদর বিশ্ব লক্ষ্য করেন বলিয়া ভিনি দেবীগণের মহতী—্র এই ক্লফ্ট মহালন্ধী নামে খ্যাভা। এইরূপে ছিভুক্ত ক্লফ রাধিকাক্ষয় এবং চতুভূক্তি নারারণ লন্ধীকান্ত হইরাছিলেন।

জ্রীকৃষ্ণ রাধিকা ও গোপগোপীর সহিত গোলোকে থাকি-ু লেন এবং চতুরুজ নারায়ণ লক্ষীদেবীর সহিত বৈকুঠে গমন করিলেন। ক্লফ ও নারায়ণ উভয়েই সর্বাংশে ভূল্য। এই শন্মীদেবী ওদ্ধসৰস্বৰূপা। বৈকুণ্ঠধামই তাঁহার পূর্ণাধিষ্ঠান নির্দিষ্ট হইল। তিনি প্রেমে নারায়ণকে আবদ্ধ করিয়া সকল त्रमगीशरगत्र अथाना रहेरनन। এই नन्त्रीरनवी हेरऋत मन्निकं-রূপিণী স্বর্গলন্দ্রীরূপে, পাতালে ও মর্ত্তো রাজগণের নিকট রাজলন্দ্রীরূপে, গৃহিগণের গৃহে গৃহলন্দ্রীরূপে, কলাংশ ছারা গৃহিণী ও সপ্পদ্রূপে, গোগণের প্রস্থৃতি স্থরভিরূপে, যক্তকামিনী দক্ষিণারূপে, ক্ষীরোদসাগরের ক্সারূপে, চক্রত্র্যমণ্ডলে, রুদ্ধে, ফলে, নৃপপত্নীতে, দিবান্ত্রীতে, গুছে, সমস্ত শভে, বল্লে, পরিষ্কৃত-স্থানে, দেব প্রতিমাতে, মঙ্গলঘটে, মাণিক্যে ও মুক্তা প্রভৃতিতে শোভারপে অবস্থান করিতেছেন। যেথানে যেথানে সামান্তরপও শোভা দেখিতে পাওয়া যায়, তথায় লন্মীদেবী অব্দ্বিতা ব্দানিতে হইবে; কারণ লক্ষীদেবীই একমাত্র শোভার আধার। তাঁহার অবস্থান ব্যতীত শোভা থাকিতে পদরে না। দলীদেবী যেখানে বিরাজিত থাকেন না, তাহা হতঐী হইয়া থাকে।

লন্দ্রীদেবী প্রথমে বৈকুপধামে নারায়ণ কর্তৃক পুজিত হন।
পরে ব্রহ্মা ও মহাদেব তাঁহাকে পূজা করেন। অনস্তর
ক্ষীরোদসাগরে বিষ্ণু, ভারতে স্থারস্ত্র মন্থু, মানবেল্লগণ, ঋষীল্র-গণ, ম্নীল্লগণ, সাধুগৃহিগণ ও পাতালে নাগগণ বথাক্রমে তাঁহার
পূজা করিয়াছিলেন। পূর্বে ব্রহ্মা ভাত্রমাসের শুক্লাষ্ট্রমী হইতে
সমস্ত পক্ষ ভক্তিপূর্বক তাঁহার পূজা দিরাছিলেন, তদবধিই
বিলোক মধ্যে সেই পদ্ধতি প্রচলিত রহিয়াছে।

চৈত্র, পৌষ ও ভাত্রমানে শুদ্ধ ও মন্ত্রজনক দিনে বিষ্ণু ভাঁহার পূজা করেন, পরে ত্রিলোকবাসীও এই তিনমানে লক্ষীদেবীর পূজা করিয়া পার্কে। মন্ত্র পৌষমানের সংক্রান্তিদিনে প্রাকণ-মধ্যে লক্ষীর পূজা করেন, জেনে ইহাও জগতে প্রচারিত



হর। পরে রাজেল, মদশ, কেরার, বদদেব, তুবল, এব, ইন্দ্র, বলি, কল্পপ, দক্ষ প্রভৃতি সকলে তাঁহার পূজা করিয়াছিলেন।

এইরপে সেই সর্বস্থাৎস্বরূপিনী সকল ঐবর্থ্যের অধিষ্ঠাত্রী
ুনবী দল্লী সর্বাল সর্বাল সর্বাল কর্তৃক বন্দিত ও পূলিত
হইতেছেন। ক্লীবেবী বৈকুঠে পূর্ণভাবে এবং চরাচর ব্রহ্গাণ্ডে
অংশভাবে বিল্লানিত আছেন।"

নারৰ নারারণের নিক্ট লল্পী দেবীর উৎপত্তি প্রভৃতির বিবরণ শুনিরা তাঁহার মনে একটা মহা সংশর উপস্থিত হর, এই সংশর নিবারণের জন্ত তিনি ভগবানের নিক্ট প্রশ্ন করেন যে, 'লল্পীদেবী রাসমগুলে আবির্ভূতা হন, কিন্তু গোকে তিনি সিন্ধৃতনরা নামে কিরপে খ্যাতা হইলেন ? সাগরমহন করিরা বেবগণ কিরপেই বা গল্পীকে লাভ করেন ? আপনি আমার এই সংশর নিরাকরণ করিরা ক্তার্থ করুন।'

তথন ভগবান্ নারদের প্রশ্নে উবদ্ হান্ত করিরা কহিলেন, নারদ! পূর্বে ছর্কাপা মূনির অভিশাপে দেবরাজ, দেবসমূহ ও মর্ত্তাবাসী সকলে প্রীন্ত্রই হইলে লন্দীদেবী কট হইরা পরম ছংখিতান্তঃকরণে অর্গাদি পরিত্যাগপূর্বক বৈকুণ্ঠ-ধামে গমন করিরা মহালন্দীতে লীন হইলেন। একদা দেবরাজ ইন্দ্র অতিশব্ধ কামোলন্ত-ভাবে রক্তাকে লইয়া পূলারে প্রবৃত্ত ক্রিলেন। এমন সময়ে অকমাৎ ছর্বাসামূনি শহরকে পূজা করিবার জানশৃত্ত অবহার তাহাকে প্রশাম করাতে মহামূনি ছর্বাসা ভখন জানশৃত্ত অবহার তাহাকে প্রশাম করাতে মহামূনি ছর্বাসা ভখন জানশৃত্ত অবহার তাহাকে প্রশাম করাতে মহামূনি হর্বাসা ভখন জানশৃত্ত অবহার তাহাকে প্রশাম করেন এবং বলিরা দেন বে, এই পূল্প সকল পাপনাশক ও সকল প্রকার মঙ্গলনিদান। ভিনি আরও বলেন বে, যিনি ভাক্তপূর্বক প্রীহরির চরণে নিবেলিত এই পূল্প মন্তকে ধারণ না করেন, ভিনি অগণের সহিত শ্রীন্তরই হন।

ইস্ত তথন জুতিশন্ন কামোন্মন্ত ছিলেন, তাঁহার কর্ত্তবাকর্তব্য বোধ ছিল না। স্থতরাং হর্কাসা প্রস্থান করিলে পর তিনি ভ্রম-কলতঃ ঐ পূপা লইমা ঐরাবতের মন্তকে প্রান্থান করেন। ঐরাবত ঐপুপা মন্তকে ধারণ করিরাই ইস্তকে পরিত্যাগ করিয়া বনে গমন করিল, ইস্তা তৎক্রপাথ স্থক্ষনগণের স্থিতি প্রীভ্রই হইল, ইস্তকে প্রিন্তি ছইতে দ্বেখিরা রক্ষাঞ্জ তথন তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া গেল, তথন ইস্তের চমক ভাষিল।

ইক নিরানকভাবে অমরাবতীতে গমন ক্রিলেন। অনুরাবতীতে যাইরা তিনি পুরী অনুরাবতী নিরাক্তমন্ত, শক্তমন্ত প্রিপূর্ণ, নীনভাবাপর এবং বহুরাম্বর্কীর্কিই বেশিকেন, প্রে
দ্ভর্বে সমত স্কাভ প্রক শ্রিরা বেশিকেন সহিত্যকার বিকট গমন ক্রিকেন। একা সম্বাহ স্ভাভ প্রবিশ্ব বিভাগ ক্রিকেন।

ইক্রকে কহিতে লাগিলেন, বেবেক্স! তুমি আমার প্রপৌত্র,
নিরন্তর প্রীর আপ্ররে তুমি উজ্জ্বনা দীরি ধারণ করিয়াছিলে,
তুমি লন্দীসদৃশী পচীর ভর্তা, "তথাচ সর্বালা তুমি পরস্তীতে লোভ
করিরা থাক, পূর্বে তুমি গৌতমের অভিশাণে ভগাল ইইরাছিলে, পুনর্বারি লজ্জাবিহীন হইরা পরস্তীরমণে লোভ
করিরাছ। যে পরস্তীরমণ করে, তাহার প্রী ও বশ নই হর।
ইত্যাদিরকেল ইক্রকে তিরন্তার করিরা লোকপিতামহ বন্ধা ইক্রকে
কহিলেন, এখন ভগবান্ বিক্রকে আরাধনা কর, তাহা হইলে
তিনি তোমাকে পুনরার লন্দীপ্রান্তির উপার নির্কারণ
করিরা দিবেন।

অনস্তর ইক্ত অতি কঠোর-ভাবে নারারণের উদ্দেশে তপভারস্ত করিলেন। নারারণ ইক্তের তপভার সন্তই হইরা গান্ধীকে সিদ্ধানক্তার্মণে জন্ম লইতে আদেশ করিলে দেব ও দানবগণ মিলিরা সমুদ্র-মহন করিরাছিলেন। এই সমুদ্রমহনে ইক্ত সম্পৎস্বরূপিনী লন্মী লাভ করেন। নারারণের আজ্ঞার তাঁহার নিজাশে হইতে সিন্ধকভারপে লন্মী প্রাচ্ছতি হন। সমুদ্র হইতে উৎপন্ন হইরা লন্মী দেবগণ প্রভৃতিকে বরদান করেন, লন্মীর রূপায় ইক্ত রাফুজা ও শ্রীযুক্ত হইরাছিলেন। তথন সকলে মিলিরা লন্ধী দেবীর স্তব করেন। (ব্রহ্মবৈর্বর্জস্ত ৩৩-৩৬ অত)

লন্দীচন্দ্রিত।

শন্মী কোন্ কোন্ ছানে অবস্থান করেন এবং কোধার বা অবস্থান করেন না, তাহার বিষয় প্রাণাদিতে এইরূপ বর্ণিত হুইরাছে;—এই লন্মীচরিত্র পরম পবিত্র, বিনি ভক্তিপূর্বাক প্রবন্ধ করেন, তাঁহাঁর অশেব প্রকার কল্যাণ সাধিত হয়। লন্মী দেবী সমুদ্র হুইতে উৎপন্ন হুইলে পরে অভিনা, মরীচি প্রভৃতি অবিগণ তাঁহাকে পূজা ও তব করিরা বলিয়াছিলেন, মাতঃ! আগনি দেবতাদিগের গৃহে ও মর্ত্তালোকে গমন করুন। অগ-অননী লন্মী মুনীক্রদিগের সেই বাকা গুনিরা তাঁহাদিগকে কহিলেন, আমি ব্রাহ্মণদিগের অস্থমতি ক্রমে দেবগণের গৃহে ও মর্ত্তালোক গমন করিব। হে মুনীক্রগণ! ভারত মধ্যে আমি ঘাহাদিগের গৃহে গমন করিব। হে মুনীক্রগণ! ভারত মধ্যে আমি ঘাহাদিগের গৃহে গমন করিব, তাহার বিষয় প্রবণ কর ।—

আমি পৃথাবান ক্লীডিজ গৃহত্ব এবং রাজাবিগের গৃহত হির ভাবে থাছিল তাহাদিগকে পুরের ভার প্রতিপালন করিব। ভাল দেবতা, মাডা, শিডা, বাছব, অভিধি এবং পিতৃলোক বাহাদিগের প্রতি কই থাকেন, আদি ভাহাদিগের পুরুহ গ্রমন ভরিব না। বে ব্যক্তি সর্বান চিডা করে এবং পরা ভরতীত, লক্ষাত, বে অভি পাডকী, বে বলপ্রতা বা অভিলয় ক্লাণ; লেই সকল পালিঠের গৃহত্ব পরাক্তি ভারিব না। বে ব্যক্তি দীকা কর্মন নাই, বে নামকি লোকনীভিড, ব্যক্তি, বে

সর্বনা সীর বশীভূত, যাহার স্ত্রী ও মাতা বেকা, যে ব্যক্তি কটু ভাৰী, নিরস্তর কলহ করে, যাহার গৃহে নিরস্তর কলহ হয়, যাহার সূহে ত্রীলোক প্রধান, তাহাদের গৃহে প্রবেশ করিব না। বে ব্যক্তি হরিপুলা ও হরির গুণ কীর্ত্তন করে না, অথবা যাহার হরির প্রশংসা করিতে ইচ্ছা নাই, যে ব্যক্তি ক্সা-বিক্রয়, আত্ম-বিক্রয়, ও বেদ-বিক্রর করে, যে নরহত্যাকারক, হিংসক, তাহাদিগের গৃহ নরক তুলা, তথার আমি যাইব না। যে ব্যক্তি কার্পণ্য-নোবে দূষিত হইরা মাতা, পিতা, ভার্য্যা, গুরুপত্নী, গুরুপুত্র, অনাথা, ভগিনী, ক্লা এবং আশ্রয়রহিত বাদ্ধ্বদিগকে পোষণ না করিয়া সর্বাদা ধনসঞ্চয় করে, আমি কদাচ তাহাদের নিকট গমন করিব না। যে ব্যক্তির দন্ত অপরিষ্ণত, বন্ত মলিন, মন্তক ৰুক্ষ, গ্ৰাস ও হাত বিৰুত এবং যে মন্দৰ্ভি মৃত্ৰ-্বিষ্ঠা ত্যাগ করিবার সময় মৃত্রাদি ত্যাগ-কর্তাকে দর্শন করে, যে ব্যক্তি আর্দ্রপদ ধুইয়া শয়ন করে বা চরণ না ধুইয়া শয়ন করে, পুষ বস্ত্রহীন হইয়া নিদ্রা যায়, সন্ধ্যাকালে বা দিবাভাগে শয়ন করে, তাহাদিগের গৃহে আমি কথনও চরণ অর্পণ করিব না। যে ব্যক্তি অত্যে মন্তকে তৈল প্রদান করিয়া পশ্চাৎ অস্ত অঙ্গ ম্পর্শ করে বা গাত্রে তৈল প্রদান করে, তৈল মর্দন করিয়া যে বিষ্ঠামূত্র-ত্যাগ, প্রণাম বা পুষ্প চয়ন করে, যে ব্যক্তি নথ ছারা তুণ ছেদন এবং ভূমি খনন করে, যাহার গাত্রে ও পদে মলা থাকে, তাহারা আমার রূপা পায় না। যে ব্যক্তি জ্ঞানপূর্ব্বক আত্মনত কিংবা পরদত্ত ব্রাহ্মণের রুত্তি বা দেবতার বুত্তি হরণ করে, তাহার গৃহে ঁজামার স্থান নাই। যে মন্দবৃদ্ধি, শঠ, দক্ষিণাবিহীন, ইয়জ্জকারক, পাপী এবং মন্ত্র ও বিষ্ঠা ছারা জীবিকানির্বাহ করে, যে ব্যক্তি গ্রাম্যালী, চিকিৎসক, পাচক ও দেবল, যে ব্যক্তি ক্রোধবশতঃ বিবাহকর্ম বা অস্ত ধর্মকার্য্যের ব্যাঘাত করে এবং দিবাভাগে মৈথুন আচরণ করে, আমি এই সকল ব্যক্তির গৃহে গমন कति ना ! (उन्नरिक्छ्यू । गर्गम्थ । ३७, २१ व्य ।)

পদ্মপুরাণে লিখিত আছে যে, একদা কেশব মেরুপৃষ্ঠে
প্রথাদীনা লদ্মীকে জিজাসা করিয়াছিলেন যে, দেবি! তুমি
কোন স্থানে নিশ্চল হইয়া অবস্থান কর, লদ্মী তত্ত্তরে বিষ্ণুকে
এইরপ বলিয়াছিলেন—

"মেরপূর্তে সুখাসীনাং লক্ষীং পৃচ্ছতি কেশবঃ । কেনোপারেন দেবি স্বং নৃণাং ভবতি নিশ্চনা ॥

- শ্রীরুবাচ।

গুক্লা: পারাবতা বত্র গৃহিণী যত্র চোজ্জগা।
আকলহা বসতির্বতি তত্র কৃষ্ণ বসামাহম্।
খাজা: স্বর্ণসদৃশী: তপুনা রক্তোপমা:।
আর্টেখবাতৃষং যত্র তত্র কৃষ্ণ বসামাহম্।

যে হলে শুরুবর্গ পারাবত সকল থাকে, যে হলে সৃহিন্দী স্থানী ও কলহ-হীনা, তথায় আমি অবস্থান করি। বে বে হলে ধান্ত প্রবর্গনিস্থা এবং ত পুল রলতবর্গ, অর তুষরহিত অর্থাৎ পরিস্থান্ত আমার অবহিতি জানিবে। যাহারা প্রিরবাক্যভাষী, বুজোপদেবী, প্রিরদর্শন, অর প্রলাপী এবং অদীর্ক্স্মী, যাহারা ধর্মনীল, জিতেনির, বিভাবিনীত, অগর্কিত, জনামুরানী ও যাহারা পরোপতাপী নহে, আমি সর্কাশ এই সকল প্রথম অবহান করি। বাহারা দীর্ঘকাল ধরিরা স্থান ও ক্রত ভোজন করে, স্থগত পূব্দ পাইরা প্রাণ করে না, নয়া-জীকে দর্শন করে না, সেই সকল পূব্দ আমার প্রিয়। যে পুরুবে ত্যাগ, সত্য ও পৌচ এই তিনটী মহাওণ আছে, তিনি আমার প্রিয়।

আমলক ফল, গোমর, শৃষ্ম ও শুক্র বন্ধ, পশ্মেৎপল, চন্দ্র, মহেশ্বর, নারায়ণ, বহুদ্ধরা ও উৎসব-মন্দির এই সকল ছলে লক্ষ্মী নিত্য অবস্থান করেন।

যে সকল স্ত্রী গুণভজিযুক্তা, পতির আক্রান্থবর্ত্তিনী, এবং পতির ভূকাবশেষ ভোজন করে, সদা সন্ত্রন্তা, ধীরা, গ্রেরবাদিনী, সোভাগ্যযুক্তা, লাবণ্যময়ী, প্রিরদর্শনা, ভামা, মৃগান্ধী, স্থশীলা, পতিব্রতা এই সকলগুণযুক্তা স্ত্রীতে আমি সর্ব্বদা অবস্থান করি।

পৃতি ও পর্যাধিত পুল্পাল, বছব্যজ্জির সহিত শয়ন, ভ্রাসনে উপবেশন এবং বিনি কুমারীগমন করেন, লন্ধী তাহাকে দ্র হইতে পরিত্যাগ করেন। চিভাঙ্গার, জন্ধি, বহি, ভন্ম, (ঘন্দ, গাভী, তুষ, গুরু এই সকল দ্রব্য পাদ দারা সংশ্পর্শ-কারী লন্ধীহীন ইইয়া থাকে।

(ঋনপু • লশ্বীকেশবসংবাদে লন্দ্রীচরিত্র)

গরুত্পুরাণ ১১৪ অধ্যায় এবং মার্কণ্ডেয়-পুরাণ প্রভৃতিতেও এই লক্ষীচরিত্র বিশেষরূপে বর্ণিত হইরাছে। বাহুল্যভরে তাহা এই হলে লিখিত হইল না।

লক্ষীপূজার ব্যবস্থা।

স্বর্গে দেবগণ কর্ত্বক লক্ষী পৃঞ্জিত হইরাছিলেন, এইজন্ত ভারতেও তিনি লোক কর্ত্বক পৃঞ্জিত হইরা থাকেন। পৌষ, চৈত্র ও ভাত্র এই তিনমানে লক্ষীপূলার বিধান আছে। বিষ্ণু এই তিনমানে লক্ষীপূলা করিরাছিলেন, এইজন্ত এই তিন মানেই লক্ষীপূলা বিধের। এই তিনমানে কে তিনবার পূলা হইরা থাকে, চুলিত কথার তাহাকে লক্ষীর 'ধন্দপূলা' পূলা করে। লক্ষী পূলা করিরা তচ্চদেশ্রে হবিশ্বাশী হুইরা নির্মাণানন ক্রিডে হয়। ইহাকে,চলিত কথার 'পান্নী' কহে।

ভূত্রপক্ষে বৃহস্পতিবারে শারীপুলা করিতে হর। ওক্লপন্দীর বৃহস্পতিবারে ওক ডিপিনক্ষের বদি বোগ না হয়, কইনে রবি ও সোমবারে পূজা করা যাইতে পারে, এই পূজার বৃহস্পতিবার মৃথ্য এবং রবি ও সোমবার গৌণ। বৃহস্পতিবারে বদি পূর্ণা অর্থাৎ পঞ্চমী, দশমী বা পূর্ণিমা তিথি হর, তাহা হইলে ঐ তিথিতে পূজা করাই বিশেব প্রশস্ত। ইহার মধ্যে আরও এক টু বিশেব আছে বে, পৌরমাসে দশমী, চৈত্রমাসে পঞ্চমী এবং ভাদ্রমাসে পূর্ণিমা তিথি বিশেব উপযোগী। তিথি প্রতিপদ, একা-দশী, বন্ধী, চতুর্ণী, নবমী, চতুর্ণদশী, আরোদশী, অমাবতা ও অন্তর্মা তিথিতে লক্ষীপূলা নিষিক। সংক্রোন্তি, প্রথমমাস, অপরাক্ষলান, আহম্পর্শ দিন, ও রাত্রিকালে এই পূলা করিতে নাই। শ্রবণা, ধনিষ্ঠা, শতভিষা ও পূর্বভাদ্রপদ এই চারিটা নক্ষত্র ও বৃক্ষপ্রস্কে কথন পূঞা করিবে না।

একটা আচকবাত পূর্ণ করিয়া তাহা, নানাভরণভূষিত করিবে, পরে ঐ আচক হুগদ গুরুপুশারার পূলা করিতে হয়। এই পূলার পৌষমাসে পিটক, চৈত্রমাসে পরমার এবং ভাত্রমাসে পিটক ও পরমার এবং নানাবিধ উপহার বারা পূর্বমূথে পূজা করিতে হইবে। যিনি যথাবিধানে এই লক্ষীপূজা করেন, তিনি ইহলোকে নানাবিধ হুথসোভাগ্য ভোগ করিয়া অন্তকালে বিজ্ঞলোকে গমন করিয়া থাকেন। লক্ষীদেবীর পূজা জীলোকে করিবে, এইকপ বিধান দেখিতে পাওয়া যায়। যে হুলে লক্ষীপূজা হইবে, তথায় ঘণীবাত্ত করিতে নাই। ঝিন্টী ও কাঞ্চন পূক্ষারা লক্ষীপূজা করিবে না। প্রবারা লক্ষীপূজা বিশেষ ওভজনক। *

 "পৌষে চৈত্রে তথা ভাছে পুরুরেয়ু: খ্রিয়: খ্রিয়সৃ। সিংছে ধতুবি মীনে চ স্থিতে সপ্ততুরজনে। প্রতাদং পুদরেরজীং শুরুপক্ষে শুরোদ্ধিনে। নাপরাহে ন রাত্রো চ নাসিতে ন ত্যাহম্পুশি 🛭 वान्त्रादेशय समावाः विकाशक सिवःस्टकः। क्रामिकाः जशहेमाः कमनाः देनव श्वरत् । ন পুজরেৎ শনে। ভৌমে ন বুধে নৈক ভার্গবে। পুলবেত্ ভরোবারে চাঞাণ্ডে রবিদোমরো: ১ শুক্লবান্নে হি পূৰ্ণ। চ বক্লেন বদি লভ্যতে। क्ष्य भूका। कू कमना धनभूखविवर्षिनी ह न कृष्णिर अथस्य मानि स्निव कृष्णितिक्वनम् । म बन्तार वाषात्रव छा देमव बिन्तीर अमानाबर ह পোৰে চ দশমী শস্তা চৈত্ৰকে পঞ্চৰী তথা। মতত্তে পূর্ণিম। জেরা শুরুবারে বিশেষতঃ 🖡 व्याष्ट्रकः शास्त्रप्रमूर्तः नामास्त्रगस्वितन् । च्चिक्किक्रभूष्मन क्रम्भक्कि व्यभूक्षप्तर । भोरव कु शिष्टेकः बनाव शत्रवात्रक किस्तरक । শিষ্টকং পরমারক নতত্তে তু বিলেষতঃ 🛭

এই গন্ধীপৃজার গন্ধী, নারারণ, ও কুবের এই তিনজনের
পূজার বিধান দেখিতে পাওরা যার। এ দিনৈ সরস্থাীর পূজা
এবং সরস্থাী পূজার দিনও গন্ধীপূজা হইরা থাকে।
রন্ধবৈর্ত্তপুরাণে গন্ধীদেবী স্বেতবর্ণা বিলিয়া কীর্ত্তিত ইইরাছেন।
"বেতচম্পক্বর্ণাভা স্থপৃভা মনোহরা
শরৎপার্ব্ধগকোটীন্দুপ্রভাপ্রজাদিতাননা॥"
(ব্রন্ধবৈর্ত্তপুও প্রকৃতিথণ ৩৫ অণ)

কিন্তু অক্ত ছলে ইনি গোরবর্ণা বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন।
বে ধ্যানে কন্মীপূজা হইয়া থাকে, সেই ধ্যানামুসারে ইনি
গোরবর্ণা।

ধ্যান—

"পাশাক্ষমানিকান্তোজহুণিভির্বাম্যনৌম্যরোঃ।
পুলাসনস্থাং ধ্যারেক্ত প্রিরং কৈলোক্যমাতরম্।
গৌরবর্ণাং হ্ররপাঞ্চ সর্বালকারভূষিতাম্।
রৌল্পল্লব্যগ্রকরাং বরদাং দক্ষিণেন তু॥"
স্বন্দপ্রাণোক্ত ধ্যান—
"হিরণারর্ণাং হরিণীং হ্রবর্ণরজ্ঞজ্ঞজম্।
চক্রাং হিরণ্ময়ীং লক্ষীং জাতবেদসমাবহাম্।
গৌরবর্ণাক্ত দিভূজাং সিতপল্লোপরিস্থিতাম্।
বিকোর্বকংস্থলস্থাঞ্চ জগচ্ছোভাপ্রকাশিনীম্॥"
'শ্রীং লক্ষ্যৈ নমঃ' এই মত্তে পূজা করিতে হয়। পরে লক্ষ্যী,
পল্লালয়া, পল্লা, কমলা, শ্রী, শ্বতি, ক্ষমা, ভূষ্টি, কান্তি, মেধা,
বিভ্যা, রমা, শ্রুতি, হরিপ্রিয়া, বিক্নপ্রিয়া ও নারামণপ্রিয়া

ইহাদিগকে লক্ষীবীজ্'-'জীং' এই মত্ত্রে পূজা ও লক্ষী নারায়ণ

এবং বৃহস্পতি কুবের ইহাদিগেরও পূঞ্জা বিধেয়।
"ধ্যারেদান্তাং সদা দেবীং পূঞ্জাকালে বিশেষতঃ।
ততঃ পূঞ্জাদিকং কুর্যাৎ শ্রীং লক্ষীং নম ইড়াচা।

শুক্রবারসমানুক্তা নজন্তে পূর্নিমা শুজা।
কমলাং পূজ্জেজ্জ পূর্বজ্জির ন বিব্যুতে ।
একেন কমনোনের কমলাং পূজ্জেগ্রনি।
ইহলোকে ক্রথং প্রাণ্য পর্য কেলবং রজেং ।
প্রান্থী পূজ্জেল্পাং পশ্চিমান্নসংস্থিতান।
সকপূলাধূপনীপনৈবেল্যান্ন্যপাচারকৈঃ ।
সক্ষর্পার্তি রজেণ প্রক্রোবাহরেলনা।
জিল্পে লাত ইতি বাজ্যাং পূশ্দেরাবাহরেভতঃ ।
স

म क्षणांकं विकाशः मननी पश्चित् है । संक्षणांकं विकाशः मननी पश्चित् है । संकाशि रुक्त कि नकीश्नाः म नावत्व ३ (काकक्षिका) শন্ত্রী: পরাশর পরা কমলা শ্রীপু তিঃ কমা।

তৃষ্টি: পৃষ্টিত্তথা কাত্তির্মেধা বিভা রমা শ্রুতিঃ॥

হরিপ্রিরা তথা বিষ্ণো: প্রিরা নারারণক্ত চ।

এতাভিঃ সপ্তদশভির্শনীবীজাদিনার্চরেৎ॥

শন্ত্রীনারারণাভাাক নমোহন্তেন প্রপুকরেৎ।
ধীবণক কুবেরঞ্চ পৃজরেতদনস্তরম্॥" (ক্ষমপু • শন্ত্রীচ •)

তন্ত্রপারে শন্ত্রীর মন্ত্র ও পৃজাদির বিবর এইরূপ বর্ণিত

হরীচেছ।

"অথ বক্ষো প্রিয়ো মন্ত্রান্ শ্রীসোভাগ্যফলপ্রদান্।
বক্তাঃ কটাক্ষমাত্রেণ ত্রৈলোক্যমণি বর্জতে ॥" (তন্ত্রসার)
'গ্রীং' এই একাক্ষর বীজই লক্ষ্মীর মন্ত্র, এই মত্ত্রে পূজা
করিলে নানাধিব স্বথসোভাগ্য লাভ হইরা থাকে।

পূজাপ্রণালী — প্রাতঃক্তত্যাদি সমাপন করিরা পূজা প্রণালী অন্তুসারে পীঠন্তাসাদি সকল কর্ম করিবে। পরে লন্ধীর ধ্যান করিক্সা পীঠপুজাদি করিতে হইবে। ধ্যান যথা —

"কাস্তা। কাঞ্চনসন্ধিতাং হিমগিরিপ্রবৈশন্তর্ভিগবৈদ-ইত্তোৎক্ষিপ্রহিরগ্রাম্তবটের বিচানানাং শ্রিমন্। বিভাগাং বরমজ্ঞায়্মভয়ং হত্তৈঃ কিরীটোক্ষলাং কৌমাবন্ধনিত্দবিদলিতাং বন্দেহরবিদ্দস্থিতান্॥" এই ধানে যথাবিধানে পূজা করিয়া বিসর্জনাদি কর্ম সমাপন ক্রিবে। লক্ষ্মী মন্ত্রের প্রশুরণ বাদশ লক্ষ জপ।

মন্ত্রান্তর—'ঐং শ্রীং ব্লীং ক্লীং' এই লন্দ্রীর মন্ত্র চতুবর্গ ফলপ্রদ।
এই মন্ত্রে পূজাদি করিলে স্থানোভাগ্যাদি সম্পদ্ লাভ হয়।
ইহা ভিন্ন 'নম: কমলবাসিজৈ স্বাহা' এই দশাক্ষর মন্ত্রও সকল
স্বাভীত্র সিদ্ধিপ্রদ।

মহালন্দ্রীমন্ত্র—'ওঁ ঐং হ্রীং শ্রীং ক্লীং হেলা জগৎপ্রস্থতিত নম:' এই দানশাক্ষর মত্ত্রে মহালন্দ্রীর পূজা করিতে হর।

এই দকল পূজার পদ্ধতি ও নিরম তন্ত্রপারে বিশেষ ভাবে বর্ণিত হইরাছে, বাহলাভরে তাহা লিখিত হইল না। (তন্ত্রপার) তন্ত্রপারে লন্ধীদেবীর তব ও কবচাদির বিষয় বির্ত হইরাছে, বিনি প্রতিদিন লন্ধীদেবীর তব ও কবচ পাঠ করেন, তাঁহার দরিক্তা থাকে না এবং নানাবিধ ক্থব-সোভাগ্য লাভ হইরা থাকে। [শ্রী দেখ।]

আধিনী পূর্ণিমার দিন কোজাগরী লল্মীপূজা ও কার্তিকী
অমাবস্তার দিন দীপারিতা লন্মীপূজা হইরা থাকে।

[দীপাৰিতা ও কোজাগরী শব্দে বিশেষ বিবরণ এটবা]

২ ছুৰ্গা।

শ্বতিঃ সিদ্ধিরিতি খাতা শ্রিরা সংগ্ররণাচ্চ বা। ক্ষীর্বা কলনা বালি ক্রমাৎ সা কাত্তিকচাতে ॥" (বেবীপু॰ ৫৫৯°) ত সম্পতি। ৪ শোতা। ৫ শক্তোবধ। ৬ বৃদ্ধিনামেবিধ।
৭ ফলবান্ বৃক্ষ। (মেনিনী) ৮ সীতা। ৯ বীরপত্নী।
(শন্ধরত্বা•) ১০ ফলপ্যিনী। ১১ ছরিত্রা। ১২ শমী।
১৩ দ্রব্য। ১৪ মুকা। (রাজনি•) ১৫ মোক্ষপ্রান্তি।
(চণ্ডীটাকার নাগেশভট্ট) ১৬ প্রয়। ১৭ বেডজুলসী।
১৮ মেবশ্লী। (বৈভক্নি•)

লক্ষী, একজন বিছৰী ত্ৰীকৰি। [লন্ধীদেবী দেখ।] লক্ষীক (ত্ৰি) লন্ধীবস্তা। সোভাগাযুক্ত।

লক্ষীক্বচ, ধারণীর মদ্রৌবধভেদ। আগমসার, কুর্মপুরাণ ও কন্দপুরাণে ইহার বিষয় শিখিত আছে।

লক্ষ্মীকান্ত (পুং) লক্ষ্যা: কান্তঃ। ১ নারারণ। ২ কলোলেশ-লক্ষীকান্ত নামক দেবতান্ডেদ।

লক্ষীকান্ত স্থায়স্ত্ৰণ (ভটাচার্য), রথপছতিপ্রণেতা। ইনি কঞ্চনগরাধিপ রাজা গিরীশচন্ত্রের প্রার্থনাস্থ্যারে প্রার ৬৫ বংসর পূর্বে এই গ্রন্থানি রচনা করিয়াছিলেন।

লক্ষীকুমার তাতাচার্য্য, শবুভাবপ্রকাশিকা ও সারচজ্রিকারচায়তা।

लक्षीकृलार्गव (११) ज्याज्य।

লক্ষীগৃহ (ক্রী) শক্ষাঃ গৃহং আবাসহানং। ১ রক্তোৎপল। ২ শক্ষীবেশ, লক্ষীর আলয়।

লক্ষীচন্দ্র মিশ্র, শৈবকরক্রমপ্রণেতা।

লক্ষ্মাজনার্দিন (পুং) লক্ষ্যা সহিতো জনার্দনঃ। শালগ্রাম-শিলা বিশেষ। ইহার লক্ষণ—একছারে চারিটী চক্র বিছমান, নবীন নীরদতুল্য অর্থাৎ থোর ক্লক্ষবর্ণ এবং বনমালারহিত শালগ্রাম শিলাকে লক্ষীজনার্দন কহে।

"একছারে চতুশ্চক্রং নবীননীরদোপমম্। শন্মীজনার্দনো জ্ঞেরো রহিতো বনমালরা ॥"

(ত্রন্ধবৈবর্ত্তপু• প্রস্কৃতিখ• ও দেবীভাগ• ৯।২৪।৫৯) ২ শন্মী ও নারায়ণ।

লক্ষ্মীতাল (পুং) শন্ধীযুক্তবাশ: । > শ্রীতাশবৃক্ষ । (রাজনি •) ২ তাশভেদ, তৌর্ঘাত্রিকের পরিক্ষেদবিশেষ।

> "ৰৌ লো পূৰৌ বিরামাত্তৌ দলৌ পূ-দবিরামক:। বিরামাত্তৌ জ্বতোঁ লক্ষ্ডতৌ লকুবিরামক:॥"

(নদীতদামো • লদ্মীতাল)
লক্ষ্মীত্ব (ক্ষী) নদ্মীতাৰে ত্ব। নদ্মীর ভাব বা ধর্ম। সৌন্দর্য, ঐথর্য।
লক্ষ্মীদন্ত, > সহমচজিকাটীকা ও হিরাজনীশিকাটীকা-রচম্মিতা।
২ পাশুবচরিতকাব্যপ্রণেতা। নদ্মীনারারণের পুত্র।

লক্ষ্মীদন্ত আচার্য্য, আকাশনিরপণ নামক ভারগ্রহ, বচনভূষণ (বেগান্ত) এবং পদার্থদীপিকা ও সংগ্রহ নামক ব্যাকরণগ্রপেতা। লক্ষীদান (পুং) যোগশতকগ্রন্থপ্রণেতা।

লক্ষ্মীদাস, > অনুমান-লক্ষণপ্রণেতা। > যোগশতক নামক গ্রন্থ-কর্তা। ০ কেরলবাসী একজন কবি। ইনি শুকসন্দেশ কাব্য রচনা করেন। ৪ ভাররাচার্যাক্সত সিদ্ধান্তশিরোমনি গ্রন্থের গণিত-তন্থচিস্তামনি নামক প্রসিদ্ধ টীকাকার, বাচম্পতি মিপ্রের পুত্র ও কেশবের পৌত্র। ইনি ১৫০১ খুপ্তাব্দে বীর গ্রন্থ সমাপন করেন।
লক্ষ্মীদেব, মন্থের সমসাম্যাক্ষ একজন পণ্ডিত। শ্রীকণ্ঠচিরত কাব্যে ইহার উল্লেখ স্মান্থে।

লক্ষীদেবী (স্ত্রী) মিথিলারাজ চক্রসিংহের মহিবী। লছিমা ও লখিমা নামে প্রসিদ্ধ। বিবাদচক্র প্রভৃতি গ্রন্থপ্রণেতা মিসরুমিশ্র ও মিতাক্ষরা-টীকারচিয়তা বালস্কট্ট তাঁহার আশ্ররে প্রতিপালিত হন। রাণী ব্যাং পণ্ডিতদিগের যত্তে মিতাক্ষরাব্যাখ্যান নামক প্রসিদ্ধ মিতাক্ষরা-টীকা রচনা করেন।

লক্ষীধর, ১ একজন কবি। প্যাবলীতে ইঁহার উল্লেখ আছে।

২ দ্রাবিড্বাসী জনৈক ব্রাহ্মণ। ভোজপ্রবন্ধে ইহার বিষয়
বর্ণিত হইরাছে। ৩ অলঙ্কারমুক্তাবলীপ্রণেতা। ৪ চক্রপাণিকাব্য
ও নলবর্ণনকাব্যরচন্নিতা। ৫ পিঙ্গলটীকাপ্রণেতা। বৃত্তরত্নাকরাদর্শে
ইহার নামোল্লেখ আছে। ৬ শ্বতিকরক্রম বা গৃহস্থকাওরচন্নিতা।
৭ গণিতপ্রদীপপ্রণেতা। ইনি নাগনাথের ভ্রাতা ও নিম্পদেবের
পুত্র। ৮ বড়্ভাষাচন্দ্রিকা-রচন্নিতা; ইনি কোওভটের শিষ্য
এবং যজ্ঞেশ্বর ভট্টের পুত্র। ৯ ইষ্টিকারিকা-প্রণেতা। শ্রীকঠের
পুত্র ও বিভাধরের পোত্র। ১০ বিক্দ্রবিধিবিধ্বংস নামক প্রস্থের
রচন্নিতা। মল্লেবের পুত্র ও বামনের পোত্র।

লক্ষ্মীধর আচার্য্য, নামচিন্তামণি, স্থায়ভান্কর ও ভগবরাম-কৌমুদীরচয়িতা। বিট্ঠলাচার্য্যের পত্র। অনস্তানন্দ রঘুনাথ যতি ও শ্রীরুষ্ণ সরস্বতীর নিকট ইনি শিক্ষা সমাপন করেন। লক্ষ্মীধর কবি, স্থাইছতমকরন্দ ও স্থায়মকরন্দ-রচিয়িতা। লক্ষ্মীধর দেশিক, আনন্দলহরীটীকাপ্রণেতা।

লক্ষ্মীধর ভট্ট, > কুওকারিকা-রচয়িতা। ২ ক্লত্যকলতরু-প্রণেতা। ইনি কান্তকুজাধিপতি রাজা গৌবিন্দচন্দ্র দেবের মন্ত্রী ও মহাসন্ধিবিগ্রাহিক হৃদয়ধরের পুত্র। দানকলতরু, রাজধর্ম-কলতরু ও ব্যবহারকলতরু নামে ইহার রচিত আরও তিনধানি ধওগ্রন্থ পাওয়া যায়। উহা সম্ভবতঃ উক্ত কুত্যকলতরুরই অস্তর্ভক।

লক্ষ্মীধরসেন, একজন বৈশ্ব পশুত। কাকুৎস্থানেনের পুত্র ও সাজ সেনের পৌত্র। তব্যচন্দ্রিকা নামী চিকিৎসাসংগ্রহটীকা প্রণেতা পিবদাসনেন ইহার প্রপৌত্র।

লক্ষীনরসিংহ, > বিলাস নামক ব্যাকরণ প্রণেতা। বিশেষণবর্ববর্ধ্য নামক ছায়শাস্ত্রপ্রণতা।

लक्कीनाथ (श्रः) विकृ। लक्कीनाथ, श्राभागार्कनम्बन्ध क्रियंजा।

লক্ষীনাথ ভট্ট, পিৰলাৰ্থপ্ৰদীপপ্ৰণেত। রার্ম ভট্টের পুত্র ও নারারণের পৌত্র। ১৬০০ খৃষ্টাব্দে উব্ত গ্রন্থ সমাপন করেন। ২ একজন পণ্ডিত। বৃত্তমৌক্তিকপ্রণেতা চক্রশেথর ইহার পুত্র। লক্ষ্মীনাথ মিশ্রা, লীলাবতীটীকা ও সিদ্ধান্তশিরোমণিটীকা নামক হুইধানি টীকা ইহার রচিত বলিয়া প্রকাশ।

লক্ষ্মীনাথ শৰ্মান্, শিশুপালবধব্যাখ্যা রচয়িতা। নারারণ শর্মার পুত্র ও বংশীধর শর্মার পৌত্র।

লক্ষ্মীনারায়ণ, > উপশমার্য্য, কাশীন্তোত্র, ক্ষাইক, দেব্যাইক,
নীরাজনপত্যালিলকণবিবিজি, পাংগুলাবৃত্তিপ্রকাশ, প্রাতঃস্মরণাইক, ভারতীনীরাজন, মঙ্গলদশক, মদনমুখচপেটকা, রামচক্ষ্রপঞ্চনশী, রামপঞ্চদশীকরলতিকা, বিদ্ধাবাদিনীদশক, বিশ্বেষরনীরাজন, বিশ্বুনীরাজন, শঙ্করাইক, শিবদশক, শিবস্তোত্র, পূর্যাষট্টপদী প্রভৃতি গ্রন্থপ্রণেতা। ২ তত্তপ্রকাশিকাব্যাথ্যা নামক
বেদাস্তগ্রন্থর্যার ৩ দারাধিকারিক্রমপ্রণেতা। ৪ লযুসংগ্রহ্
নামক জ্যোতিগ্রন্থর্যারতা। ৫ শ্রুতবোধটীকাপ্রণেতা।

লক্ষ্মীনারায়ণ, কুর্গরাজ্যের দেওয়ান। ইনি জাতিতে ব্রাহ্মণ।
১৮৩৭ খুটানে তালুপ্রদেশবাসী গৌড়গণ বিজ্ঞোহী হয়। ক্রমে
সেই বিজ্ঞোহবছি দক্ষিণ-কাণাড়া হইয়া কুর্গরাজ্যে বিস্তারলাভ করে। এই সময়ে অভ্রম্বর নামক একজন রাজ্য্রোহীর প্ররো-চনায় দেওয়ান লক্ষ্মীনারায়ণ ইংরাজের শক্র হইয়া উঠেন। কিন্তু বিশ্বস্ত কুর্গসেনার সাহায্যে শীঘ্রই দেওয়ানজীর উভ্নম ব্যর্থ হয়।

লক্ষনীনারায়ণ (পং) লক্ষ্যান্তিতো নারায়ণ:। শালগ্রাম-শিলা-বিশেষ। ইহার লক্ষণ,—যে শালগ্রাম শিলার একদ্বারে চারিটী চক্রা, ঘোর কৃষ্ণবর্ণ ও বনমালাবিভূষিত, অর্থাৎ বনমালা চিক্ত্যুক্ত। "একদ্বারে চতুশ্চক্রাং বনমালাবিভূষিতম।

নবীননীরদাকারং লক্ষীনারাত্রণাভিধম্ ॥" (ব্রন্ধবৈবর্ত্তপু •) লক্ষী ও নারায়ণ।

লক্ষীনারায়ণ ন্যায়ালক্ষার, ব্যবস্থারত্বমালা নামক দীধিতি-কার। নবদীপের স্থাসিদ্ধ নৈয়ায়িক গদাধর তর্কবাগীশ ভট্টা-চায্যের পুত্র।

লক্ষীনারায়ণ যতি, জারাম্তরচয়িতা বাসতীর্থ বিল্র গুরু।
লক্ষীনারায়ণ (রাজা), কোচবিহারের একজন রাজা। বালগোলানীর পুত্র ও নরনারারণের পৌত্র। ইনি রাজা মানসিংহকে

>০০ হি: সম্বর্জনাপূর্কক স্বরাজ্যে লইয়া বান। ১৬১৮ গুটাস্ক
পর্যান্ত ইনি রাজসিংহাসন অলক্কত ক্রিয়াছিলেন।

লক্ষীনারায়ণত্রত, বতবিশেষ। লক্ষীনিবাস, শিষ্থিতিবিশী নারী মেঘদ্ভটীকাপ্রণেভা। রাম্বপ্রভাস্থরির শিব্য ও শ্রীরন্সের পুতা। ইনি ১৪৫৮ খুঁইান্সে উক্ত এম্বরুদা করেন।

লক্ষীনিবাস (পং) শল্পাঃ নিবাসঃ। লল্পীর নিবাসছান। লক্ষমীনৃসিংহ (পং) লল্পীযুতো দ্সিংহঃ। শালগ্রামশিলাবিশেব। শক্ষশি—ছিচক্র, বিস্থৃতান্ত ও বনমালাবিভূবিত, এই শালগ্রাম গৃহীদিশের পক্ষে বিশেষ ওওপ্রেম।

"বিচক্রং বিস্থৃতাভঞ্চ বনমালাবিভূবিতম্।
লক্ষীনৃসিংহং বিজ্ঞাং গৃহিলাঞ্চ অধপ্রদশ্॥" (ব্রন্ধবৈবর্ত্তপ্
লক্ষীনৃসিংহ, ১ পর্কতোবিলাস মামক সভানিধিবিলাসের
টীকাকার। ২ অনন্দ-সর্কাশ ভাল-রচরিতা। নৃসিংহাচাধ্যের প্র।
৩ অমলানন্দক্ত বেদান্তক্ষতক্ষর আভোগ মামক টীকা ও তর্কলীপিকা প্রণেতা। কোও ভটের পুর।

লক্ষীনৃসিংহ কবচ, (ফ্রী) ধারণীয় মন্ত্রৌবধবিশেষ। লক্ষ্মীনৃসিংহ ভট্ট, একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। রমণদার রচয়িতা খ্রীপতির পিতা।

লক্ষ্মীপৃতি, ১ একজন প্রদিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্। ইনি ইন্ট্রদর্পণোদাহরণ, জাতকচিন্তামণি, কৈমিনিস্ত্রটীকা, ধ্ববন্রন্ধ, নীলকঞ্জীটাকা,
পল্যকোষপ্রকাশ, পারাশরী-টীকা, মকরন্দ্রারিণী, মুহুর্ত্তসংগ্রহটীকা,
শক্ষুবিচার, শীত্রবোধটীকা, ষোড়শযোগবাাখ্যান, সম্রাড়্যন্ত, সারণী,
হিল্লাল্পীপিকাটীকা প্রভৃতি গ্রন্থ প্রথমন করেন। ২ নৃপনীতিগর্ভিত নামক বৃত্তকার। ৩ শিক্ষানীতি নামক কাব্যপ্রণেতা।
৪ প্রাদ্ধরদ্ধরচিন্তিতা। ইনি ইক্সপিতির শিষ্য। ৫ ছন্দোনাম বিচরণাপ্রণেতা রামচক্রের শুকু।

লক্ষ্মীপৃতি (পুং) লক্ষ্মাঃ পতিঃ। ১ বাস্থদেব। ২ নরপতি, রাজা।
"অথ ক্ষমানেব নিরস্তবিক্রমশ্চিরার পর্যোগি স্থখন্ত সাধনম্।
বিহার লক্ষীপতিলক্ষকার্ম্কং জটাধরঃ সন্ জ্হধীহ পাবকম্॥"
(কিরাত ১া৪৪) ৩ লবক বৃক্ষ। ৪ পূগা।

লক্ষ্মীপাশা, বাজালার ফশোহরজেলার অন্তর্গত একটা গওগ্রাম।
• মধুষতীর তীরে অবস্থিত। এধানে রাটারশ্রেণীর বহু কুলীন
ব্রাহ্মণের বাদ আছে।

লক্ষ্মীপুত্র (পুং) লক্ষা: পুত্র: > কামদেব। ২ বোটক।
ত কুন। ৪ লব। ৫ (দেশজ) ধনবান্ ব্যক্তি। লক্ষ্মীপুত্র (ক্লী) প্রাচীন নগরভেদ।

লক্ষ্মীপুর, নাল্রান্ধপ্রেসিডেন্সীর বিজাগাপাটান্ জেলার অন্তর্গত একটা পিরিপন বা বাট। সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ও হাজার দিট্ উচ্চ। জ্বালা ১৯° ৬ উ: এবং প্রাধি ৮৩° ২০ পৃঃ। এই পথ দিয়া পার্কতীপুর হুইতে জন্মপুর বাধরা বার।

লক্ষ্মীপুর, একটা প্রাচীন ঘেৰতীর্থ। প্রদাওপ্রাণে লক্ষ্মীপুর-মাহান্দ্যে এই তীর্ষের বিবরণ দিখিত আছে। লক্ষ্মীপুষ্প (গ্রং) লক্ষীযুক্তং সৌন্ধর্যবিশিষ্টং পুন্দবিধীয় । ১ পদ্মরাগমণি । (ক্লী) লক্ষীপ্রিবং পুন্দিং । ২ পদ্ধ । লক্ষ্মীপুঞ্জা (গ্রী) লক্ষাঃ পূঞা । ১ লক্ষীদেবীর পূঞা । ২ প্রর্ড-বিশেষ । [লক্ষীশন্ধ দেখ ।]

লক্ষীপেঁচা, পেচকলাতীয় ক্ষ্মাকার পক্ষিতেদ (Birlx flummea)। ইহাদের গাত্রবর্গ ছরিলারঞ্জিত সিন্দ্রবর্ণ ও মধ্যে মধ্যে ছাপ আছে। [পেচক শব্দ দেখ।]

লক্ষীয়াল (গুং) গাঁলাং ভনজং কলং যত। বিষয়ক (রাজনি॰)
লক্ষীবাল (দেওয়াদ), একজম দিখসদার। সিজ্প্রদেশে
দিখাধিকার প্রতিষ্ঠিত ইইলে তংপ্রদেশ শাসনার্থ নানাস্থানে
শাসনকর্তা নিম্নোগের ব্যবহা হয়। সাবদমল ও মূলরাজ
যে সময়ে মূলতান প্রদেশের শাসনকর্ত্ত লাভ করেন, সেই
সময়ে লক্ষীমল উত্তর-দেরাজাতের শাসনভার প্রাপ্ত ইয়াছিলেন।
ভংগরে তাঁহার পুত্র দৌলত রায় উক্ত প্রদেশ শাসন করেন।
লক্ষীয়জুস্ (রী) মজভেদ।

লক্ষীয়া, বাদালায় প্রবাহিত ব্রহ্মপুত্র নদের একটী শাখা।

মরমনসিংহ জেলার উত্তরশীমান্তবর্তী তোক গ্রামে মূল নদকে
পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণাভিদুধে মেখনা-ধলেধরীসকমের অদ্রে
ধলেধরীতে আসিয়া মিলিত হইরাছে (অক্ষা° ২৩° ৩৪' উ: ও
ক্রাতি° ৯০° ৩৪' পু:)। ঢাকা জেলার প্রসিদ্ধ নারারণগঞ্জ বন্দর
এই নদীর কুলে অবস্থিত। এই নদীর জল পরিছার ও স্থালিতল,
উত্তর তীরে বমরাজি বিরাজিত থাকার তটশোভা বিশেষ
মনোহারিণী হইরাছে। বংগরে পাঁচ মাস মাত্র এই নদীতে জ্বার
ভাটা থেলে। এক মাত্র একদালা নামক স্থানে এই নদী পার
হওয়া যার। বর্ত্তমানে ব্রহ্মপুত্রের স্থানে ছানে চর পড়ার এই
মদীর জলপ্রোত্রও একাত্ত অভাব ঘটিতেছে।

লক্ষ্মীর্মণ (পুং) লক্ষ্মাঃ র্মণং। নারারণ। লক্ষ্মীবং (পুং) লক্ষ্মীঃ শোভাহত্তাত্তিতি মতৃশ্, মন্ত ব:। ১ পনসরুকা। (শন্মালা) ২ বেতরোহিউর্কা। (রাজনি॰) ৩ বিষ্ণু। (ভারত ১৩।১৪৯। ৫২) (ব্রি) ৪ খ্রীযুক্তা। ৫ ধন-বান। প্রার-শক্ষণ, শ্রীল, শ্রীমান।

"লেবে ধরাভরাক্রান্তে লেবে বিশ্বস্তর: শ্রিরা। লন্ধীবক্তো ন পগুতি হঃলহাং পরবেদনাম্।" (উভট) ৩ অপ্রথবৃক। (বৈশ্বক্রমিন)

লক্ষীবতী, মৌধরীয়াল ঈশানবর্মায় মহিবী।
লক্ষীবির্দাদেব (গৃং) মানবের পরমারবংশীর একজন হিল্পালা।
রাজা বশোবর্মার পুত্র। ইনি রাজাাপহারী অভ্যবস্থার নিকট
হইতে মানবরাজ্যের কতকাংশ বিদ্ধির করিরা নইরা স্থানে
রাজপাট হাপন করেন। ১১৪৪ খুটাকে ইনি উজ্জারনী-সিংহালনে

অধিষ্ঠিত ছিলেন। ইহার মৃত্যুর পর পুত্র হরিশ্চক্র ও পরে পৌত্র উদয়বর্মনেব সিংহাদন অধিকার করেন।

लाक्सी বল্লভ (পুং) লক্ষ্যাঃ বলভঃ। ১ বিকু। ২ প্রাচীন গ্রছ-কারভেদ।

লক্ষীবস্তি (জী) পদ্মপুশ।

লক্ষীবহিষ্কৃত (ত্রি) ধনহান। ঐশর্যাশৃষ্থ। চলিত কথায় 'লক্ষীছাড়া' বলে।

লক্ষীবৃদ্ধি, একজন মহারাষ্ট্র ভূমাধিকারিণী। ইনি ১৮৫৭ পুঠান্দের বিদ্রোহের সময় চান্দার বিদ্রোহী দলপতি বাবু রাওকে কৌশলে ধৃত করিয়া ইংরাজকরে সমর্পণ করেন। [চান্দা দেখ।]

লক্ষীবার (পুং) রহম্পতিবার—ঐ দিন লন্ধীর পূজা প্রশস্ত। লক্ষাবিলাস তৈল, বাতব্যাধিরোগের ঔষধবিশেষ। প্রস্তুত-व्यनानोः, - मिक्का, टात्रकाठकी, टार्यनाक, भत्रनकार्क, रााधी (शक-**फ्रवावित्मय**), वह, खवाकवृत्कत्र छान, खड़चक्, शक्त इन, नहीं, হুরীতকা, বহেড়া, আমলা ও মুতা প্রত্যেক ২ পল ; এই গন্ধকক দারা তিল তৈল ৪ দের প্রথম পাক করিবে। পরে জটমাংসী, मुत्रामाश्मी मना, हन्भक्ष्यून, श्रियन, खड्यक्, (गेंटिना, बाना, কুড়, মরুবকপুপা, পিড়িংশাক প্রত্যেক ২ পল এবং গন্ধবিরাজা. कुम्पूर्तार्थाती, नशी, नानुका खल्का প্রত্যেক > পল ; ইহার ছারা দ্বিতীয় কম পাক করিবে। অতঃপর এলাইচ, লবঙ্গ, শিলারস, মেতচন্দন, জাতীপুষ্প, থাটাশী, কাঁকলা, অগুরু, লতা-কস্তুরী, কুম্কুম্ প্রত্যেক ৪ তোলা, মুগনান্ডি ২ তোলা, কপুর > তোলা বা ৬ মাধা ৪ রতি এই সকল দ্রব্য দ্বারা তৃতীয় কল্প পাক করিবে। পাক সাঙ্গ হইলে তৈল হইতে খাটাশা উদ্ধৃত করিয়া উত্তমরূপ শিলাপেষিত করিয়া তৈলে মিশ্রিত করিয়া দিবে। অন্তবিধ—বিবাদি পঞ্চপল্লব কাথ দারা প্রথম কর্ম্ব পাক করিবে, গন্ধানু দারা দিতীয় কর্ম এবং ষ্পণ্ডরু ধূপিত গন্ধবারি দ্বারা তৃতীয় কন্ধ পাক করিবে। এই তৈলেও গন্ধ দ্রব্য সকল শোধন করিয়া লইতে হইবে। ইহা ব্যবহারে বিবিধ বাতবাাধি প্ৰশমিত হয়। ইহা মহাস্থগদ্ধি তৈল নামে খ্যাত।

উল্লিখিত সমস্ত দ্রব্য দ্বিগুণ পরিমাণে তৈলে দিরা পাক করিলে উহাকে লক্ষীবিলাস তৈল কছে। (ভৈষজ্যরত্না° বাতাধি°) লক্ষ্মীবিলাসরস (পুং) ঔষধবিশেষ। প্রস্তুতপ্রণালী;—অভ ৮ ভোলা; পারদ, গদ্ধক, কর্পুর, জৈত্রী, জারফল প্রত্যেক ৪ ভোলা; র্হ্মারকবীল, সিদ্ধিবীল, ভূমিকুমাওমূল, শতমূলী, গোরক্ষচাকুলেমূল, বেড়েলামূল, গোকুরবীল ও ছিল্লবীল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক ২ ভোলা করিয়া লইতে হইবে। পরে এই সকল দ্রব্য উত্তমক্রপে চূর্ণ করিয়া একত্র পানের রসে মাড়িয়া ৩ গুলা প্রমাণ বটী করিতে হইবে। অনুপান চুগ্ধ, দ্ধি ও কাঁজি প্রভৃতি। এই ঔষধদেবনে দকল প্রকার জর, প্রমেহ, নাড়ীব্রণ প্রভৃতি বিবিধ রোগ আন্ত প্রশমিত হয়। (ভৈষজারত্বা• জরাধি•)

২ কাসাধিকারে ঔষধবিশেষ। প্রস্কুতপ্রশালী;—পারদ, ছরিতাল প্রত্যেকে ছই ভাগ, ধর্পর, বন্ধ, কাস্তলোই, অল্র,
তায়, কাংস্থা, গৰুক এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক ৮ তোলা
লইয়া উত্তমরূপে মর্দন করিয়া কেণ্ডরের রুসে ভাবনা
দিবে, পরে উহা কুলখকলারের রুসে ৭ বার ভাবনা
দিরা এলাচি, জাতীফল, তেজপাতা, লবন্ধ, যমানী, জীরা,
ত্রিকটু, ত্রিফলা প্রত্যেকে এক একভাগ মিশাইয়া চলক
পরিমাণ বটিকা করিয়া ছায়ায় শুকাইতে হইবে। অমুপান
লীতলজল। এই ঔষধসেবনে সকল প্রকার কাস আশু প্রশান
মিত হয়। ঔষধসেবনকালীন পথ্য—মংস্থা, মাংসা, ছয় ও
রিয়্লভোজন। শাক, অয়, ভাজা ও পোড়া জিনিস নিষিদ্ধ।
এই ঔষধ ক্ররতাস, খাস, হলীমক, পাণ্ডু, শোগ, শূল, প্রমেহ,
ও অর্প প্রভৃতি রোগেও বিশেষ উপকারক।

(রসেন্দ্রদারস কাসাধি)

৩ বাতব্যাধিনাশক ঔষধবিশেষ। প্রস্ততপ্রণালী;—কৃষ্ণঅন্ত, পারদ, গন্ধক, বেড়েলা, নাগবলা, শতমূলী, ভূমিকুয়াও,
কৃষ্ণধৃত্ববীজ, হিজলবীজ, বৃদ্ধদারকবীজ, গোক্ষুরবীজ, ভালের
বীজ, জাতীফল, জৈনী, কর্পুর প্রত্যেকে ২ তোলা; স্বর্ণভন্ম
২ মাঘা এই সকল দ্রব্য একত্রে উত্তমরূপে মর্দন করিয়া
চণক পরিমাণ বটী করিতে হইবে। অন্তপান ত্রিকলার জল
বা দোবের বলাবল অন্ত্রসারে হির করিতে হইবে। এই ঔষধ
পৃষ্টিকারক, বলকর এবং বাতবাাধি, কুষ্ঠ, পাওু, প্রমেহ
প্রভৃতি রোগনাশক। (রসেক্রসারসক বাতব্যাধিরোগাধিকাক)

৪ রসায়ন ও বাজীকরণ রোগাধিকারে ঔবধবিশেষ। প্রস্তুত-প্রণালী—রুঞান্রচূর্ণ ৮ তালা, পারদ, গদ্ধক, কর্পূর, জায়ফল, জৈত্রী; রদ্ধনরক শীক্ষ, ধৃত্তুরবীক্ষ, ভালের বীক্ষ, ভূমিকুয়াও, শতমূলী, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, গোক্ষর, হিজ্বলবীক্ষ, প্রত্যেকে ২ তোলা, এই সকল জব্য একত্র চূর্ণ করিয়া পানের রসে মর্দ্দন করিয়া তিনরতি পরিমাণ বটী প্রস্তুত করিতে হইবে। এই ঔবধ সেবনে ঘোর সমিপাত, অষ্টাদশ প্রকার কুষ্ঠ, বিংশতি প্রকার প্রমেহ, নাড়ীত্রণ প্রভৃতি রোগ প্রশমিত হয়।

ঔষধ সেবনানস্তর হুয়, দিরি, মাংস, স্থরা প্রান্থতি পানে কাম-বৃদ্ধি ও বৃদ্ধ যুবার স্থার হয়। কদাচ শুক্রন্ম ও লিল শিথিল হয় না। মন্তহন্তীর স্থার বলী হইয়া নিতা শত ক্রীসংসর্গে সুক্ষম হয়। নেত্রের ভেজোবৃদ্ধি হইয়া থাকে। মহাস্থা নারদের উপদেশে জগৎপতি ভগবান্ বাস্থদেব এই রস সেবনে লক্ষ নারীর বল্লন্ড হইয়াছিলেন। (রসেক্রসারসণ রসারনাধিকাণ) লক্ষীবেষ্ট (পুং) লন্ধীয়কো বৈষ্ট:। শ্রীবেষ্ট নামক হুগদ্ধ দ্রব্য, সবলনির্থাস। (রাদ্ধনি•) চলিত তার্পিন্ (Turpentine) লক্ষ্মীশ (পুং) লন্ধ্যা: ঈশ:। > বিষ্ণু। ২ ঐশ্বর্থাশালী ব্যক্তি। ৩ আদ্রবৃক্ষ।

লক্ষ্মীশ সূরি, জৈনস্বিজেদ। পরমারাধ্যের পুত্র ও মন্ত্রদেবতা-প্রকাশিকা নামক গ্রন্থরাজ্য বিষ্ণুদেবের পিতা।

লক্ষীভোষ্ঠা (গ্রী) হলপদ্মিনী। (বৈত্তকনি•)

লক্ষ্মীশ্বর সিংহ, মিথিলার একজন রাজা। ইনি উবাহরণ নাটকপ্রণেতা হর্ষনাথের প্রতিপালক ছিলেন।

লক্ষীস্থ (পুং) > লক্ষীর প্রিয়পাত বা বরপুত। ২ রাজা বা ধনীবাক্তি।

লক্ষীসনাথ (ত্রি) রূপ ও ঐশব্যশালী।

স্ক্রাসাগর সূরি, জৈনস্বিভেদ। ইনি ১৪০৮ খুটান্দে জন্মগ্রহণ করেন, ইহার শিশু শুবশীল গণি পঞ্চশতীপ্রবন্ধদন্দ ও নাতৃ-পঞ্চাশিকা প্রভৃতি গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন।

লক্ষ্মীসিংহ, রঙ্গপুরের একজন রাজা। রাণী কমলেধরীর পুত্র। (দেশাবলী)

লক্ষমীসিংহ নরেন্দ্র, আসামের ইক্রযংশবংশীয় একজন রাজা। ১৭৫১ খুষ্টান্দে সিংহাসন্চাত হন।

লক্ষ্মীসমাহবয়া (স্ত্রী) লক্ষ্যা সহ আহ্বন্ধে যখা:। সীতা। (শবরু) লক্ষ্মীসহজ (পুং) লক্ষ্যা সহ জাতঃ ইতি জন-ড, ক্ষীরান্ধিজাত-ছান্ত তথাজং। চন্দ্র। শব্দর্শা•)

लक्सीमृद्ध (क्री) धीरङ। [धीरङ प्रथ]

লক্ষ্মীদেন (পুং) কথাসরিৎসাগরবর্ণিত ব্যক্তিভেদ। (৬৬।১৭৩) লক্ষ্মীন্তে(ক্র)) লক্ষীদেবীর স্তব।

লক্ষেমশ্বর (লন্ধীশ্বর), বোদাই প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ-মরাঠা এজে-স্পীর মিরাজরাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা ১২° ৭´ ১০″ উ: এবং ৭৪° ৩০´ ৪০ পু:। এথানে কএকটা প্রাচীন দেবমন্দির বিশ্বমান আছে।

লক্ষ্যারাম (পুং) লক্ষ্যা আরাম:। বনভেদ। (শব্দমা॰)
লক্ষ্যা (ক্লী) লক্ষ্যতে ধদিতি লক্ষ-গাৎ। শরবেধ স্থান। পর্য্যার—
লক্ষ্যা, শরবা, প্রতিকার, বেধা, বেধ। (ত্রি) ২ দর্শনীর। ও ব্যাজ।
রোমাঞ্চলক্ষ্যেণ স গাত্র্যাষ্টিং

ভিশ্বা নিরাক্রামদরালকেশ্র: ॥'' (রবু ৬। ৮১)

৪ অমুমের। ৫ লক্ষণাশক্তি ছারা বোধ্য অর্থ।

"অর্থো বাচান্ত লক্ষান্ত বাদশ্চেতি ত্রিধামত:।"(সাহিত্যদে ১০)
বাচা, লক্ষ্য ও বাদ এই তিন প্রকার অর্থ যে দ্বলে লক্ষণাশক্তি দারা প্রতীত হর তাহাকে লক্ষ্য করে। [লক্ষণান্দ দেধ]
লক্ষ্যক্তম (ত্রি) ২ যে অজ্ঞাত প্রণালীদারা উদিষ্ট বস্তর আকার

ও ইন্সিত উপদক্তি হয়। ২ কাব্যোক্তিতে অনির্দেশ্রবোধক জ্ঞান, যাহা প্রকাশ করিবার আবশ্যক থাকে না।

লক্ষ্যুত্ত্ব (রী) > চিহ্নার্শীলন জ্ঞান। ২ দৃষ্টার্বধারা যে জ্ঞান লক্ষে।

লক্ষ্যতা (খ্রী) লক্ষ্যত ভাবং তন্টাপ্। লক্ষ্যের ভাব বা ধর্ম, লক্ষ্য ।

লক্ষ্যভেদ (পুং) চিহ্নিভয়ান বিচ্ছিন্নকরণ। অর্জুন আকাশ-মার্গে স্তন্ত মৎক্ষচিহ্ন চক্রপথে বিদ্ধা করিয়াছিলেন।

লফ্যুবীথা (স্ত্রী) শক্ষ্যাবীথী। > মহুষ্যজীবনের উদ্দেশুসাধক পছা। ২ ব্রদ্ধলোকমার্গ, দেব্যান পথ।

লক্ষ্যবেধিন্ (ত্রি) চিহুবিদ্ধকারী।

লক্ষ্যস্থ (তি) নিদ্রার ভানকারী।

লক্ষ্যন্ (ত্রি) লক্ষ্যং হরি হন-কিপ্। > লক্ষ্যভেদকারী। ২ তীর। লথ, গতি। ভাদি পরক্ষে সক সেট। লট্ লথতি। ইদিং লথি লথধাতু লমতি। দুঙ্জলমীং।

লথ তার (থান্-লথ তার), বোদাইপ্রেসিডেন্সীর কাঠিরাবাড় বিভাগের অন্তর্গত একটা দেশীর সামস্তরাজ্য। অক্ষা• ২২° ৪৯´ হইতে ২২° উ: এবং দ্রাঘি• ৭১° ৪৬´ হইতে ৭২° ৩´ পৃ:। থান্ ও লথ তার নামক ছইটা ভূসম্পত্তি ও আন্ধানাবাদ জেলার কএকটা গ্রাম লইরা এই রাজ্য গঠিত। ভূপরিমাণ ২৪৭ বর্গমাইল।

এখানে নদী বা শৈল নাই। অধিকাংশস্থানই সমতল অথচ পর্ব্বতসায়ন্থিত উপলথতে পূর্ণ। তুলা ও শত্যাদির চাসই অধিক। ধের ও বোরাশ্রেণীর মুসলমানগণ স্থানীয় কার্পাস হইতে একপ্রকার মোটা কাপড় প্রস্তুত করে। থানের কুন্তার জাতির মুৎ-শিল্প প্রশাস্থানে জার বিভ্না প্রাত্তিত এথানে আর ব্যন্ত প্রাত্তিব প্রাত্তিব নাই। স্থানটী বেশ স্বাস্থ্যপ্রদ।

এখানকার সর্দারগণ তৃতীয়শ্রেণীর শামস্ত বলিয়া গণা।
১৮০৭ থৃষ্টাব্দের সন্ধিনতে ইহারাও ইংরাজরাব্দের অধীনতা
শীকারে বাধ্য হন। বর্জমান সন্দার ঠাকুর কর্ণসিংহজি (১৮৮৪)
ঝালাবংশীয় রাজপুত। ইনি স্বরং রাজকার্য্য নির্বাহ করিয়া
থাকেন। ইহার সেনাসংখ্যা ৪০০। ইনি স্বরাব্ধ্যে পণ্যস্রব্যের
কোন শুরু গ্রহণ করেন না। জুনাগড়ের নবাব ও ইংরাজরাজকে
কর দিতে হর।

লথন্দৈ (লক্ষণদই), বালালার প্রবাহিত বাঘমতীনদীর একটা
শাথা। নেপালের পর্কতমালা হইতে উদ্ভূত হইরা ইতার্বা গ্রামের
সরিকট দিয়া মুল্ল:করপুরলেলার মধ্যে প্রবাহিত হইয়াছে।
শৌরান্ ও বাসিয়াড় নামক ছইটা জলধারায় পুটকলেবর হইয়া
দক্ষিণাভিম্বগতিতে য়ারবল-ম্ল:করপুর রাস্তার ৭৮ মাইল
দক্ষিণে বাবমতী নদীতে মিলিত হইয়াছে। উক্ত রাস্তা নদ

উপন্নিত্ব লোকসেত্র উপর দিয়া পিয়াছে। বর্বাকালে এই নদীতে দীতামাঢ্ হী পর্যান্ত নোকাবোগে বাধরা বার। রাজাপতি, হুম্ডা, বেলাহী, পেরপ্র ও রাজ্যও নীলক্ষী এই নদীর ভীরে অবস্থিত।

লখ নোর, রেছিলগণের রাক্ষার রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। পূর্বে এই হান কাটারিরা জাতির রাজধানী ছিল। বর্ত্তমান কালে শাহাবাদ নামে প্রসিদ্ধ হইরাছে। এথানে প্রাচীন কীর্তির অনেকগুলি ধ্বস্ত নিদর্শন পড়িয়া আছে।

লখ নোক্তা (শশ্বণাবকী), যুক্ত প্রনেশের শাহারণপুর জেলার নাকুর তহসীলের অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর। একণে ধ্বংসাবস্থায় পতিত ও শ্রীন্তই। অক্ষা ২৯° ৪৬´ উ: এবং জাবি° ৭৭° ১৬´ পৃ:। প্রাচীন কীর্ত্তির নিদর্শনস্বরূপ একটা ভগ্রহুর্গ এখানে বিভাষান আছে।

এই নগর ও তাহার উপকণ্ঠন্থিত পাঁচথানি গ্রামে পূর্ব্ব হইতে তুর্কজাতির একটা উপনিবেশ ছিল। বছকাল বলবীর্য্য ও সমূদ্ধি-হীন হইরা তথার বসবাস করিলেও, খুঁটার ১৮শ শতাব্দের শেষভাগে তাহারা ক্রমশ: দলপুষ্ট হইরা শক্তিসঞ্চারে প্রয়াস পায়। ১৭৯৪ খুঁটাব্দে শাহারাণপুরের মহারাষ্ট্রীয় শাসনকর্তা বাপু সিন্দে তাহাদের উদ্ধৃত্য দমনে বন্ধপরিকর হন। অবশেষে জর্জ টমাসের অধীনে প্রেরিত সাহায্যকারী সেনাদল উপনীত হইরা তুর্গপ্রাচীর ভঙ্গ করিলে তুর্কগণ আত্মসমর্পণ করিতে বাধ্য হর।

লথ হা গুরি, বালালার ত্রিহতজেলার প্রবাহিত একটা ক্দুল নদী।
লথাত, আসামপ্রদেশের প্রীহটজেলার সীমান্তহিত একটা
গণ্ডগ্রাম। প্রসিয়া শৈলের পাদমূলে অবস্থিত। এখানে প্রতি
সপ্তাহে হই দিন হাট বলে। পার্মত্য থশ ও সন্তেল জাতি
তৃথার পর্মতজাত নানাদ্রব্য লইয়া আইসে।

ল্থি, বোদাই-প্রেসিডেন্সীর সিদ্ধ্রপ্রদেশান্তর্গত একটী গিরিপ্রেণী।
বস্চন্থানের হালা বা ব্রাহই পর্বতপ্রেণীর সহিত সংযোজিত।
ইহা প্রায় ৫০ মাইল লঘা। উচ্চতা ১৫০০ হইতে ২ হাজার
ফিট্। অক্ষাঁ (মধ্যের) ২৬° উ: এবং দ্রাঘি০ ৬৭° ৫০ পূ:।
এই পর্বতে অনেকগুলি উষ্ণ প্রস্তবণ আছে। সেবান্ নগর
সারিধ্যে এই পর্বতাংশ ক্রমশ: সিদ্ধনদের সমতল বেলাভূমিতে
পরিণত ইইরাছে। পর্বতিবক্ষে স্থান বিশেষে সীসক, রসাঞ্জন
ও তাত্র পাওরা যার।

লেখি, দিছুপ্রাদেশের করাচীজেলার সেবান উপবিভাগের অন্তর্গত একটী গণ্ডগ্রাম। দিছুনদের পশ্চিমকুলের অনুরে ও লখি-গিরিসহটের প্রবেশপথে অবস্থিত। দিছু, পঞ্জাব ও দিল্লী রেলপথ লখিনগর হইলা গিরিপথের মধ্য দিল্লা গিরাছে। এখানে উক্ত রেলপথের একটা প্রেসন আছে। এখান হইতে প্রাক্তি ধারাতীর্থ ছই মাইল। ঐ উক্ত প্রচ্নবণে গ্রমনার্থ প্রাণস্ত রাক্তা আছে।

লখি, সিদ্ধানেশের শীকারপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর।
আকা ২৭° ৫১´৩০ উঃ একং ত্রাধি ৩৮° ৪৪´পুঃ। এই নগর
হইতে সিদ্ধ, পঞ্জাব ও দিল্লী রেলপথের কক্-অংসন ৩৬০ মাইল
মাতা। এই নগর বহু প্রাচীন। বন্ধন কর্ত্রনান শিকারপুর বিভাগ
কনমালার সমাজ্য়ে তথন সিদ্ধান্তবেশের প্রসিদ্ধ বর্দ্ধিকা ও
লখানা বিভাগের প্রধান কেন্ত্র ব্লিরাই লখি-নগর প্রিসাণিত
ছিল। এখন সে সৌন্ধান্ধ অনেক নই হইরা গিরাছে।

লখিমপুর, আসামপ্রদেশের পৃর্বসীমান্তহিত ইংরাজাধিকত একটা জেলা। ব্রহ্মপুত্রনদের উজ্জ্ব তীরবত্তী ভূতাগ লইয়া গঠিত। অক্ষা ২৬° ৫১ হইতে ২৭° ৫৭ তঃ এবং দ্রাঘি ৯৩° ৪৯ হইতে ৯৬° ৪ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ১১৫০০ বর্গমাইল। ইহার অধিকাংশস্থানই জললাবৃত ও পর্বতময়। মধ্যে মধ্যে পার্বত্যজাতির বাস আছে। ইংরাজরাজের বর্তমান জারীপে বাসধাোগ্য ভূমির পরিমাণ ৩৭২৩ বর্গমাইল নির্দিষ্ট হইয়াছে। ডিক্র নদী ও ব্রহ্মপুত্র নদের সক্ষমন্থলে অবস্থিত ডিক্রগড় নগর ইহার বিচার সদর।

এই জেলার উত্তর সীমায় দফ্লা, মীরী, আবর ও মিশ্মী লৈলশ্রেণী; পূর্ব্বে মিশ্মী ও সিদ্ফো-লৈলমালা, দক্ষিণে পাটকৈ পর্বত ও নাগালৈলের অববাহিকাপ্রদেশ এবং পশ্চিমে দরঙ্গ ও শিবসাগর জেলার প্রান্ত-প্রবাহী মরা-মরণাই, দিহিন্দ ও দিসঙ্গনদী। উত্তর ও পূর্ব্বপ্রান্তিতির শৈলমালায় তত্ত্বামীয় পার্বত্যজাতির বাস থাকায় অভাপি পর্বতপ্রান্তে ইংরাজাধিকারের সীমা নির্দিষ্ট হয় নাই। দক্ষিণসীমা লইয়া ইংরাজার্জি ও বন্ধ-গ্রব্দেণ্টর বন্দোবত্ত হইয়াছিল। এখন ব্রহ্মরাজ্য ইংরাজাধিকত হইলেও তদ্দেশ্বাসী বহুসংধ্যক পার্বত্যজাতি আজিও স্বাধীনভাবে পর্ব্বত্বকে বিচরণ করিতেছে।

বন্ধপুত্রনদের উভর তীরবর্ত্তী সমতল প্রান্তর শ্রামল শশু-ক্ষেত্র মণ্ডিত। ইহার উত্তর, পূর্ব ও দক্ষিণ সীমার চূড়াবিল্যী পর্বতসমূহ বনমালার বিভূষিত হইরা আলাম-উপত্যকার এই শ্রেষ্ঠ স্থানকে নানা মনোরম দৃশ্রে পরিপূর্ণ রাধিরাছে। ব্রহ্মপুত্র নদ নানাশাখা বিস্তারপূর্বক হিমালয়-কন্দর পথে নির্গত হইরাই আলাম-উপত্যকা বিণোত করিরা নিরাভিমুখে প্রধাবিত হইরাছে। নদীক্লবর্তী স্থানসমূহ স্ববিস্তৃত ধাঞ্চক্ষেত্র পরিপূর্ণ। বাশবন ও ফলবৃক্ষ পরিবেটিত গ্রামসমূহ সেই শ্রামল প্রান্তরের মধ্যে মধ্যে বিরাজিত থাকিরা গ্রামবাসী প্রজাবর্গের স্থাসমূদ্দির পরিচর প্রদান করিভেছে। ব্রহ্মপুত্রনদই এখানকার প্রধান। বর্ধার সময় এই নদে সদিয়া
পর্যান্ত স্থানার যাতায়াত করে, কিন্তু অস্তান্ত ঋতুতে ডিব্রুগড়
পর্যান্ত যায়। ঐ সময়ে কুজ কুজ নৌকাগুলি "ব্রহ্মকুণ্ড"তীর্থ
পর্যান্ত গমন করিতে পারে। দিবঙ্গ ও দিহঙ্গ নামক শাধানদীয় হিমালয়পাদনি:কৃত হইয়া এখানে ব্রহ্মপুত্রে মিলিড
হইয়াছে। দিহঙ্গই তিব্যাতের প্রসিদ্ধ ৎসানপু নদী। এতত্তির
স্বর্ণশ্রী নব-দিহিন্ধ, ডিব্রু, বুড়ী-দিহিন্ধ, তিজ্বরাই নদী ও
লোহিতনদী ব্রহ্মপুত্রের কলেবর বৃদ্ধি করিয়া এই জেলার মধ্যে
প্রবাহিত আছে।

ক্ষিকার্য্যের উন্নতি ও বৃদ্ধির জন্ম এখানকার কোন নদী বা জলায় বাঁধ দেওয়া হয় নাই। প্রাচীন আসামরাজগণ রাজ্যের মঙ্গলার্থ যে সকল স্থান বাঁধ দারা রক্ষা করিয়াছিলেন, তাহাই অভাপি সেইভাবে রক্ষিত আছে। উহার কোন কোনটী সামান্ত-রূপে সংস্কৃত হইয়াছে মাত্র। বন্থবিভাগের উৎপদ্ধ দ্রব্যের মধ্যে "রবার" নামক প্রসিদ্ধ সুক্ষনির্যাসই প্রধান। এতদ্ভিন্ন রেশম, মোম ও নানাবিধ ওবধি পাওয়া যায়। হন্তী, গণ্ডার, বন্তমহিব, মিপুন নামক বন্তগোরক, হরিণ ও ভল্লক প্রভৃতি পশুও নানা জাতীয় পক্ষী বনপ্রদেশে স্বচ্ছকে বিহার করিতে দেখা যায়।

ব্রহ্মকুগু বা পরগুরামকুগু এথানকার প্রধান তীর্থ। এথানে ব্রহ্মপুত্রের একটা শাথা প্রবাহিত। প্রতি বৎসর বহু তীর্থ-যাত্রী পর্ব্বতোপরিস্থ এই তীর্থসন্দর্শনে আসিয়া থাকে। নিকটম্ব প্রাসিদ্ধ দেও ডুবি (রাক্ষসকুগু)—একটা গভীর পর্ব্বতগছবর। দিসক্ষ নদী যেথানে নাগাশৈল পরিত্যাগ করিয়াছে, সেইস্থানে অবস্থিত।

এই স্থানের ইতিবৃত্ত অনেকাংশে আসামের ইতিহাসের সহিত * সংশ্লিষ্ট। আসাম অধিকার-মানসে পূর্ব্বাঞ্চলবাসী রাজ্ঞতবর্গ ব্রহ্মপুত্র বাহিয়া প্রথমেই লথিমপুরে প্রবেশলাভ করিয়াছিলেন। কিংবদন্তী এই, বাঙ্গালার পালরাজগণ এক সময়ে এতদেশে প্রভাববিস্তারপুর্বক হিন্দু-উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন। তৎপরে বাঙ্গালার বারভূঁয়ারাজগণ আত্মকলহে প্রশীড়িত হইয়া বিবাদবিরহিত এই নিবিড় প্রদেশপ্রাস্তে আসিয়া আর একটা উপনিবেল স্থাপন করেন। অত্যাপি বাঁলকাটা ও লখিমপুরনগর-সন্নিহিত দীর্ঘিকাদ্বয় তাহাদের কীর্ত্তিম্বরূপ বিশ্বমান রহিয়াছে। শানবংশীয় চটিয়াগণই প্রথমে পূর্ব্ব হইতে আসাম আক্রমণ করে। তাহারা বারভূঁয়াদিগকে এথান হইতে তাড়াইয়া দিয়া স্থবণশ্রী নদীতীরে বাস করিয়াছিল; কিন্তু এই রাজ্যসভোগ তাহাদের অনুষ্টে অধিক কাল ঘটে নাই। পুষীয় ত্রয়োদল শতাব্দে আহম ৰাজগণ আসাম অধিকারপূর্বক প্রাধান্ত স্থাপন করেন। চুটিরা-জাতি ঐ সময়ে কিছুকালের জ্বন্ত আপনাদের প্রভাব অকুর রাখিতে চেষ্টা করে, কিন্তু অক্নতকার্য্য হইয়া পার্শবন্তী দরক্ষকোর পলাইরা আইনে। এথানে তাহারা বে স্থানে বাস করিয়াছিল তাহা অভাপি চুটিয়া নামে পরিচিত।

এই আহমগণও শানজাতীয়। তাহারা পোল-রাজ্যের পার্লজ্যের পার্লজ্যে ভূভাগ হইতে দলবলে অগ্রসর হইয়া পশ্চিমান্ডিমুখে আসামে আসিরা সমুপস্থিত হর এবং বলসঞ্চর করিয়া ক্রমে একটী হর্জর্ব জাতি হইয়া উঠে। এই সমরে তাহারা বাহুবলে উদ্পৃথ হইয়া ব্রহ্মপুত্র প্রবাহিত উপত্যকাভূমে আপনাদের আধিপত্য বিস্তার করে। মোগলসম্রাট্ অরঙ্গলেবের প্রেরিত সেনাপতি মীরজুয়াকে তাহারা পরাভূত করিয়া বলসীমান্ত হইতে তাড়াইয়া দের। এই বংশীয় মহাপ্রতাপাবিত রাজা রুদ্রসিংহের শাসনকালে আসামরাজ্যে শান্তি ও সমুদ্ধি বিরাজ করিয়াছিল।

[আহম ও আসাম দেখ।]

রাজা গৌরীনাথের রাজ্যকালেই লখিমপুরে আহমবংলের শাসকশক্তির লোপ হয়। হর্কাল রাজা গৌরীনাথ বিজ্ঞোহিদলের ষড়্যল্পে পড়িয়া রাজাচাত ও নিম আসামে নির্বাসিত হন। **जननञ्जत भक्क भक्कीरम्रता स्मर्थ ममुद्ध नामधानी ध्वय कतिया स्मर्थ** এই সময়ে মোয়ামারিয়া বা মরনজাতি ব্রহ্মপুত্র নদের দক্ষিণকূলে স্বাধীনতা স্থাপন করিয়া স্থাপনাদের প্রভাব বিস্তার করে এবং থম্তীরা সদিয়া-বিভাগ পুর্গন করিয়া উৎসাদিত করিতে থাকে। সেই অরাজক রাজ্যে কোনরূপ শৃত্রুলা স্থাপিত হয় নাই, রাজ্যাপ-হারক বড় গোঁসাঞী কিছুতেই স্থাসনব্যবস্থা করিতে পারিলেন না। প্রভাবর্গ উপদ্রব ও অত্যাচারের হস্ত হইতে পরি নাণ পাই-বার জন্ম রাজ্য ছাড়িয়া প্লায়ন করিল। অবসর বৃথিয়া ব্রহ্মরাজ উপযুৰ্বপরি লথিমপুর আক্রমণ করিলেন,যুদ্ধবিগ্রহে আরও জনক্ষর ঘটিল। জনশৃত্ত প্রজাবর্গ নিরুপায় হইরাও লথিমপুর নগরের मणूर्थ भूनतात्र युकार्थ आरम्राकन कत्रिन, धर्क्ष अक-निरम्भत সমকে হতবল আসামীগণ দাঁড়াইতে পারিল না। তাহারা পরাত হইয়া পলাইতে চেটা করিল, কিন্ত বিজেত্দল পশ্চাদ্ধাবিত হইয়া ভাষাদের সমূলে নিহত করিল।

১৮২৫ খুটান্দে ওদ্ধসৈত্য লখিমপুর হইতে বিতাড়িত হইল বটে, কিন্তু লখিমপুরের অনৃষ্টে অত্যাচারশ্রোত সমভাবে প্রবাহিত হইতে লাগিল। ইংরাজরাজ নামে মাত্র আসাম প্রদেশ অধিকার করিলেন। তাঁহারা তথনও এতদ্দেশে স্থশাসন ব্যবস্থা করিতে পারেন নাই। ডিব্রুগড় উপবিভাগের অন্তর্গত মটকবিভাগ তৎকালে দেশীর সর্দারের অধীনে শাসিত হইত। ১৮৩৯ খুটান্দে বৃদ্ধসদ্দারের মৃত্যুর পর, তাঁহার বংশধরগণ ইংরাজরাজের প্রস্তাবমত রাজ্যশাসন করিতে অস্বীকৃত হওরার পদ্যুত হন। এই বংসরে ইংরাজরাজ উত্তর-লখিমপুর ও শিবসাগর-বিভাগ রাজ্য প্রবন্ধর সিংহের নিকট হইতে কাভিয়া লন। কারণ ঐ রাকা

রাজ্যশাসন্তে অকর্মণ্য ছিলেন এবং তাঁহার অধীনত্ব কর্মানিবর্গ অবধা অত্যাচারপূর্বক করসংগ্রহ করিয়া প্রজাবর্গ প্রণীড়িত করিছেল। এই অন্নাক্ষভার মধ্যে পার্মজীর অসভ্যজাতিরা দলে দলে অবতীর্ণ হইরা প্রাক্ষভার মধ্যে পার্মজীর অসভ্যজাতিরা দলে দলে অবতীর্ণ হইরা প্রাক্ষভার্য করেল। এই সময়ে সন্ধিয়া-নগরে একজন ধন্তী সন্ধার ছানীর শাসনকর্তারণে প্রাক্ষভার্য পরিচালনা করিছে থাকেন। ১৮৩৫ খুটান্দে ইংরাজরাজ একজন সেনানারকের অধীনে সদিয়া নগরে একলন সিপাহী খাপন করেন। উহার চারবৎসন্ত্র পরে অক্সাৎ একলন পার্মজীর খন্তীগণ পর্কত হইতে সমতলক্ষেত্র অবতীর্ণ হইরা ইংরাজসনানী ও পলিটিকাল একেট মেজর হোয়াইট্সহ সিপাহীদিগকে নিহত করে। ভবন ১৮৩৯ খুটান্দে ইংরাজরাজ আসামপ্রদেশের পূর্ণ-শাসনভার গ্রহণ করিয়া পার্মজীর শক্রর আক্রমণ নিবারণের বিধিষত চেটা করেন। ভদবধি এথানে শান্তিরাজ্য হাপিত হয়।

আবর, আহম, নক্ষণা, কাছাড়ী, খম্তী, কুষী, লালস, মিলসুরী, মটক, চুটিরা, মিকির, মিশমী, মাগা, নেপালী, রাজা, সাঁওডাল, শিল্পো প্রভৃতি অসভ্যঞ্জাতি এই জেলার পার্বডা- প্রানেশে বাস করে । ঔপনিবেশিক হিন্দুর মধ্যে ব্রাহ্মণ, রাজপুত, কারত্ব, আগরবালা বেণে ও কলিতা (ইহারা অসভ্য ও পার্বতীর আসাম-রাজগণের পৌরোহিভ্য করিত, বর্তমানকালে সকলেই ক্ষিতৃত্তি অবলম্বন করিরাছে । ইহারা এথানে সংশ্রুষ্বিরা গরিগণিত।) প্রভৃতি জাতি বিভ্যান আছে।

এই স্থল্ব পূর্মপ্রান্তে ইন্লামধর্ম বিভৃতি লাভ করে
নাই। মোগল-সমাটের অধিকারকালে মুসলমান সৈশ্য আসামপ্রাদেশে প্রবেশ লাভ করিলেও জলবায়ুর প্রকোপ সভ্ করিতে না
পারিরা এতকেশ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য ইইয়াছিল। আহম
রাজগণ রাজস্মুদ্ধি বৃদ্ধিমানসে করেক ঘর মুসলমান কারিকর
রাজধানীতে আনরন করিয়া স্থাপন করেন, ঐ সমঙ্গে ঢাকা
নগর হইতেও করেক ঘর মুসলমান লোকাদদার লখিমপুরে
আসিয়া বাস করে; উহারা সকলেই ফরাইজী মতাবলম্বী। মরন
বা মোরামারীগণ কর্তমান সমরে বৈক্ষবধর্শে দীক্ষিত হইয়াছে।
শক্তিউপাসক আসাম-রাজগণের অত্যাচারে এই বৈক্ষবসম্প্রদারের মধ্যে কএক বার বিল্লোছ উপস্থিত হয়। অবশেবে
বৈক্ষবগণেই প্রাধান্ত লাভ করে।

এখানকার অধিবাসীদিগের অবস্থা নিভাত বন্দ নহে। লবণ, অহিফেন প্রকৃতি কএকটা দ্রব্য ব্যক্তীন্ত ভাষারা আপদা-দের আবগুকীর সকল দ্রব্যই পরিপ্রমধারা প্রশ্নত করিরা লইতে পারে। কার্পাস-বল্লাদি ব্যতীত প্রধানকার লোকে রেশদীবিত্র বর্ন করে। এখানে চই প্রকার রেশম প্রস্তুত হয়। উহার কীট এড়িরা ও মুগা নামে প্রাসিক। স্ত্রীলোকেরাই প্রধানতঃ রেশমীকাপড় প্রস্তুত করে। পুরুষরা বাগানে পোকা পালন কার্য্যে ব্যস্ত থাকে। এতদ্যতীত ক্রবিকার্য্য ও সরিবা হইতে তৈল প্রস্তুত করা পুরুষদিগের অপর আর একটা প্রধান কার্য।

এধানকার চা-বাগানে উৎক্ষ্ট চা প্রস্তুত হইয়া থাকে।

ঐ চা এবং কার্পাস বস্তু, মুগা ও এপ্তি-রেশনের কাপড়, মাটির
বাসন, পাচী, মাতুর, রবার ও মোম এছান হইতে প্রভূত পরিমাণে
বাঙ্গালার রপ্তালী হইয়া থাকে। সদিয়ার গবমেণ্টেয় ভয়াবধানে
প্রতিবংসর একটা মেলা অমুটিত হইয়া থাকে। কলিকাতা
হইতে ধুবড়ী, ডিব্রুগড় ও কাছাড় বাভারাতের কল্প রেলপথ
বিস্তুত হইয়াছে। ঐ রেলপথে এবং হীমার ও নৌকাবোগে
নকীপথে এথানকার বাণিজ্য চালিত হইতেছে।

২ উক্ত কেলার উত্তরত্ব একটা উপবিতাগ, উত্তর-লবিষপুর নামে খ্যাত। ভূপরিমাণ ৭৭৫০ বর্গমাইল। ইহার উত্তরে কক্লাও মীরীশৈল এবং দক্ষিণে ব্রহ্মপুত্র নম। লখিমপুর নগর ইহার সদয়।

৩ উত্তর-লখিমপুর উপবিভাগের অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। সুবর্ণজীননীর গড়িরাজান শাখার কুলে অবস্থিত। অকা। ২৭°১৪ ৫ উ: এবং ক্রাঘি ১৪°৭ ১০ পু:। এথানে ইংরাজ-রাজের একটা ছাউনী আছে।

লখিমপুর, অবোধা প্রদেশের থেরী জেলার একটা তহনীল।
আকা ২৭°৪৭'১৫" উ: ছইতে ২৮'২৯'৩০" উ: এবং প্রাথি
৮০°২০' হইতে ৮১°৪' পৃ: মধ্য। ভূ-পরিমাণ ১০৭৮ বর্গমাইল।
খেরী, শ্রীনগর, ভূর, পৈলা ও কুক্ড়া-মৈলানী পরগণা ইহার
আন্তর্তাঃ

২ থেরীজেলার প্রধান নগর ও লখিমপুর তহলীলের সদর।
উল নদীর দক্ষিণকুলে > মাইল দুরে অবস্থিত। অক্ষা ২৭°
৫৬ ৮৫ উ: প্রবং প্রাধি ৮০° ৪৯ ২০ শৃ:। এই নগরটী
বাণিজ্যবাহল্যাহেত্ খিশেব সমৃদ্ধিসম্পান।

লখীপুর (শশীপুর), আসানের গোরালপাড়া জেলার দক্ষিণত্ব

একটা গগুলান। গারোলৈলের উত্তরপাদন্ত অবস্থিত।

অলা ২৬° ২΄ ৫৺উ: এবং দ্রাঘি ৯০° ২΄ ৫০৺ পু:। এখানে

নেচপাড়ার প্রাসিদ জমিদারের প্রাসাদ বিজ্ঞমান। ইনি হানীর

বাদক ও বালিকা বিভাগরের বারভার বহন করিরা আসিতেহেন।

লখীপুর (শলীপুর), আসামপ্রবেশের কাছাড় জেলার পূর্ব
দিক্ত একটা গগুলান। বর্মাক্ ও বিরী নদীর সক্ষম্বলে অবস্থিত।

শ্রামপ্রান্তে মণিপুর-মহারান্তের প্রকটা কাছারী আছে।

লাখেরা, লাকা বা গালা হইতে চুরি প্রস্তৃতি অস্কার ও কোনা

প্রস্তৃত্বারী লাভিবিশেষ। সন্তর্মতঃ সংস্কৃত লাকাকার প্রস্কুত্ব

অপভ্রংশে লখেরা শব্দের উৎপত্তি। এই জাতির উৎপত্তি সহছে নানাপ্রকার কিবেনন্তী প্রচলিত আছে। ইহারা আপনাকিগকে পটবাস জাতির অন্তভম শাখা এবং তাহাদের স্থার কারছজাডি হইতে সমূতুত বলিয়া স্বীকার করে। অস্ত একটা উপাধ্যান হইতে काना वात्र त, शार्कजीत विवाहकारन, स्वानिरमय महारमब হিমালয়-ক্সার হত্তের বলর প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত পার্ক্তীয় গাত্রমল লইয়া এই জাতির সৃষ্টি করেন। এই জয় ইহারা দেববংশী নামেও খ্যাত আছে। আর একটা উপাখ্যান হইতে জানা যায় যে, শ্রীকৃষ্ণ গোপীদিগের বলর প্রস্তুত করিবার জ্ঞন্ত এই জাতির স্থষ্ট করেন। তাহাতে প্রসঙ্গক্রমে বর্ণিত আছে যে, ইহারা প্রথমে যত্নংশীর রাজপুত ছিল। পাশুবদিসের বিনাশসাধন মানসে কুরুরাজ যে জতুগৃহ নিশ্বীণ করাইরাছিলেন, ইহান্না সেই গৃহনির্মাণ-কার্য্যে হুর্য্যোধনের সহারতা করার নিন্দিত ও দমাজনুত হয়। ভদববি ইহারা সেই পালার ব্যবদা ছারাই बीविकानिकां कतिराज्य ।

ইহাদের মধ্যে বিধবাবিবাহ প্রচণিত আছে। ইচ্ছা করিলে ইহারা বিবাহবন্ধনও ছেদন করিতে পারে। সকলে মন্ত ও মাংস থায়। বিহার অঞ্চলে ইহারা লহেরী আতি বলিয়া প্রসিদ্ধ।

লগা, ১ থঞ্জ। ২ গতি। ভাদি পরীম । থক্কার্থে অক গতার্থে সক । সেট্। লট্লগতি। লিট্ললাগ। লুট্লগিতা। লুঙ্অলগীং। ণিচ্লগয়তি। ইদিং লগি লগধাতু লট্লকতি। লগড় (ত্রি) চাক। (ত্রিকা)

লগতে (পুং) বেদাঙ্গজ্ঞোতিষপ্রণেতা জ্যোতির্ব্বিদ্ভেদ। লগধ এইরপ নামও পাওয়া বার।

লগরি, পার্মতীয় জাতিবিশেষ।

লগা (দেশজ) বাঁশের ধ্বজা, নদীতে নৌকা চালাইতে ইহা ব্যবহৃত হয়। কোনস্থানে নৌকা বাঁধিতে হইলে লগা পুতিরা ভাহাতে নৌকা বাঁধা হইয়া থাকে। লগার মাথার "আঁকসী" বাঁধা হয়।
লগালিকা (স্ত্রী) চারিচরণাত্মক ছন্দোভেদ। ইহার প্রতি চরণে
চারিটী অক্ষর। প্রথম ও তৃতীর বর্ণ গুরু এবং অপর তুইটী লবু।
ফ্রাণিত (ব্রি) লগ-কর্মণি কে। সঙ্গযুক্ত, চলিত লাগা।
লগী (দেশজ) লগা।

ক্রাপ্ত ড় (পুং) দও, চলিত লাঠা, বংশাদিমর দওকে লগুড় কহে।
(অমর) ২ লোহমর অক্তভেদ। (স্নভূতি)

ইহার আঞ্জতি ও পরিমাণাদির বিষয় গুক্রনীতিতে এইরূপ ুলিখিত আছে।

শনগুড়ঃ সুন্ধপাদঃ ভাৎ পূণ্ংশঃ ছুলনীর্থকঃ। লোহবদ্ধাগ্রভাগদ ক্রমদেহঃ সুন্ধীবরঃ। দ্রপাকারো দৃচাদশ্চ তথা ক্তব্রোল্লতঃ।
উথানং পাতনকৈব পেবণং পোখনং তথা
চতত্রো গতরতত পঞ্চনী নেছ বিভ্রতে।
দৃদ্ধান্ত: শতিবর্গতেন যুধ্যেত শতুবিঃ ॥" (শুক্রনীতি)

লগুড়ের পানবেশ হুক্, জংশ পূথু এবং শীর্ব স্থুল হুইবে, ইহার অপ্রভাগ লোহবারা বন্ধ, স্থপীবর ও হুবন্ধেই, নতের ফ্রার আফুতিবিশিষ্ট, অল অভিনূচ এবং পরিমাণ চুইরাত। নৃচ্কার পদাঠি ককল এইরূপ লগুড়ের বারা শত্রুদিগের সহিত যুদ্ধ করেব। উত্থান, পান্তন, পেবণ ও পোধন ইহার এই চারি প্রকার গতি।

लुह्न (समझ) महा । मन्नर्क।

লগ্ন (क्री) লগতি কলে ইতি লগ লক্ষে (ক্ষুন্ত ধ্বান্ত গা গ । ২ । ১৮) ইতি নিপাতনাং লালুং। রালিদিগের উদর ।

অহোরাত্রের মধ্যে যাদল রালির উদর হয়, স্কুত্রাং অহহারাত্রে

যাদলী লগ্ন ক্ষিত হইরাছে। 'রালিনামূদ্যো লগং' (দীপিকা)

অতিদিবারাত্রের মধ্যে যথাক্রমে যাদলী রালির উদর হইরা
থাকে। ঐ এক এক রালির উদিতকালের মানকে লগ্নমান কহে।

পৃথিবী ৬০ দত একবার আপনার কক্ষে আবর্ত্তন করে। ইহাকেই পৃথিবীর আছিকগতি বলা যার। এই এক আছিকগতিবশতঃ পৃথিবী মেবাদিক্রমে খাদশটী রালি অভিক্রম করে। সতরাং ইহাঘারা সহজেই বুঝা যার বে, একরালি অভিক্রম করিতে প্রায় ৫ দণ্ডকাল লাগে, কিন্তু স্ক্রমণে গণনা করিতে হইলে সকল লথের লথমান সমান হর না, ইহার কারণ পৃথিবীর আকাশ সম্পূর্ণ গোল নহে, সেই জন্তু লথমানের ক্লান বৃদ্ধি হইরা খাকে। প্রথার উদরকালে যে লথের উদরকারে এবং প্রথার অন্তর্গমনকালে যে লগের উদর হর, ভাহাকে অভলগ্ধ কহে। এই লগমান সকল দেশে সমান নহে।

কলিকাতা ও তাহার পদিনত্ব দেশসমূহের অন্ননাংশ-লোধিভ লগমান—

ৰাশি	দ• শ• বি•	য়ালি ৰং পং বিং		
মেৰ	8191.	प्र मा	≰ 1 0 9/1 ∞	
বৃষ	8 1 65 1 80	বৃশ্চিক	4 80 40	
মিপুন	6 25 8+	ধক্ত	4139140	
कर्केंग्र	418+12+	मक्त्र	8 00 2.	
লিং ছ	61001.	क्र	0.1 69 1 .	
কক্ত	612010	मीन	01891.	

বঙ্গদেশের বিভিন্ন স্থানের অরনাংশশোধিত লগ্নমানের তালিকা।

द्यानित्र नाम।	নবন্ধীপ, বৰ্ষমান, চাকা ও তংস্ত্ৰ সমপাভস্থিত পূৰ্বপাশ্চিম দেশের লগুমান।	মুরদিদাবাদ ও তাহার সম- ফুএ পাভিহিত পুর্বাপশ্চিম দেশের লয়মান।	চট্টথাম'ও ভাহার সমস্ত্র- পাভফ্তি পূর্বপশ্চিম দেশের লগুমান।	রঙ্গুর ও তাহার সমস্তর- পাতফ্তিত পূর্বপশিচম দেশের লগ্নমান।	কুচবিহার ও উৎসমস্ত্র- পাত্যিত্ত পূর্বপাশিচম দেশের লগ্রমান।
	দ° প° বি°	দ° প° বি°	দ° প° বি°	দ° প° বি°	দ° প° বি°
মেৰ	81 616.	8 4 95	81 1 8	81 २।०७	e146145
त् य	8183189	8 88 8	٥ ﴿8 ٤	8 । 8% । २৮	8144145
মিপুন	६ । २৮ । ८৯	@ 25 86	4120128	¢ २२ २२	@ 2 · 2 >
কৰ্কট	¢ 18010¢	4 8 8)	4 8% 8.	৫। 88। ७२	¢ 180 100
সিংহ	৫। ७७। २२	¢ 1 00 1 00	€ ७ २ 8	(10910)	4185189
কন্তা	¢ ₹≈ 8•	4 40 •	€ २৮ २•	६।७७।२•	६।७৮।२ ०
তুলা	8 8 9 8 0	¢।७৮।>€	¢ ७8 २•	६।७३।२१	६।७৮।১७
বৃশ্চিক	8187100	8 8 • 8 5	६। ७३। २६	¢ 89 89	€ 18b 10b
ধন্থ	41291 2	¢159120	६। ३७। ७२	@ 20 20	६ ।२२।२৮
মকর	७। ६१। ७	8100180	8 । ७६ । २७	८। ७ २। २७	€ ७६ २७
কুম্ভ	8 8 2 8 3	0166189	0166126	016616	0169180
मीन	0 89 20	७। 8७। ৯	७। ८१। ७৯	0189180	७। ७।8•

এই তালিকার যে লগ্নমান লিখিত হইল, এই সকল লগ্নমান যে সকলকালেই সমভাবে থাকিবে, তাহা নহে। প্রেগ্র অন্তর্মগতিবলতঃ ইহার পরিবর্তন হইয়া থাকে। ৬৬ বৎসর ৮ মানে প্র্যা এক অংশ সরিয়া যায়, স্তরাং লগ্নমানেরও কিঞ্চিৎ প্রভেদ হইয়া থাকে। প্রতিবৎসরের পঞ্জিকায় অয়নাংশ-শোধিত লগ্নমান দেওয়া হয়, তাহা দেখিয়া লগ্নমান দ্বিয় করা হইয়া থাকে। ৬৬।৮ মাস পরে স্ব্যা এক অংশ সরিয়া গোলেও এই লগ্নমান অন্ত্রসারে লগ্ন স্বিয় করিলে প্রায়ই ঠিক হয়। সামান্ত ২০১ পলের তারতম্য হইতে পারে।

প্রাচীন লগ্নমান-

রামোগবেদৈর্জ্বলিস্ত মৈত্রৈর্বাণোরদৈঃ পঞ্চলসাগরৈক । বাণঃ কুবৈদৈর্ক্তিরেছেযুক্তিঃ ক্রমাৎ ক্রমান্মেবতুলাদিমানম্॥"

				(6-311 55 11 4		
		म• •			₩• প•	
(मर्व,	मीन	O 89	কর্কট,	ধন্তু	¢ 8•	
বুৰ,	क्छ	8179	কর্মট, নিংহ, কঞ্চা,	বৃশ্চিক	¢ 85	
मिथून,	মকর	¢ 1 %	কম্বা,	তুলা	¢ 1 2>	

প্রাচীন লগ্নমানের সহিত বর্ত্তমান কালের লগ্নমানের কভ পার্থকা হইয়াছে, তাহা প্রেণজে তালিকা দেখিলেই অনায়াসে ব্রিতে পারিকেয়।

লগ্ননিরপণপ্রণালী—কোন নির্দিষ্ট সময়ের লগ্ননিরপল করিতে হইলে অর্থাৎ কোন একটী বালকের জন্ম হইলে কিংবা কোন ব্যক্তিকর্তৃক একটী প্রশ্ন করা হইলে বালকটীর কোন লগ্নে জন্ম হইয়াছে অথবা কোন লগ্নে প্রশ্ন হইয়াছে, ইহা জানিতে হইলে নিয়াক্ত প্রণালী অন্থসারে লগ্ন স্থির করিতে হয়।

লগ্ন ছির করিতে ছইলে প্রথমে সেই দিনের রবিভূক্তি ছির করিতে হয়। সাধারণা রবিভূক্তি অর্থে রালিমান বা লগ্নমানের যত অংশ রবিকর্তৃক ভূক্তি ছইয়াছে, বা যতখানি অংশ রবি ভোগ করিরাছেন। রবি এক এক মাসে এক এক রাশিতে অবস্থিতি করিয়া ছাদশ মাসে ছাদশটী রাশি ভোগ করে। যে মাসে যে রাশিতে ক্র্যা উদিত হয়, তাহার সপ্তমরাশিতে রবি অন্ত যায়। যেমন বৈশাথমাসে ক্র্যের মেবরাশিতে উদয় ও তাহার সপ্তম ভূলা, তাহাতে অন্ত হয়। ক্র্যা প্রতাহ রাশির কিঞ্চিদংশ

ক্রিয়া অপ্রদর হইরা যালাতে রাশির **গীৰাৰপ্ৰৱে**শে উপনীত হর। এইরংশ সমন্ত রাশিটী রবিকর্তৃক ভুক্ত হইরা থাকে, স্থোর পূর্বোক্ত প্রকারে প্রভাহ রালির কিছু কিছু ক্রিয়া অগ্রসর হইতে যে পরিমিডকাল অতিবাহিত হয়, ভাহাকে স্থাব্যর দৈনিক রবিভূক্তি কছে। উদর-লগ্নের রবিভূক্তিকে উদর-রবিভূক্তি এবং অন্তল্যের রবিভূক্তিকে অন্ত-রবিভূক্তি বলা হর।

न्ध्रमानरक मारमत निन-मरशाबादा इतन कतिरन नक छात्र-ফলই দৈনিক রবিভুক্তি হইবে। অন্ত উপান্ন বারাও রবিভুক্তি জ্ঞানা ধার, কিন্তু এই উপায় বালাই পুলুরূপে রবিভুক্তি ত্বির হইরা থাকে।

"লয়নগুপলং দিল্লং ভৎসংখ্যা ক্রমভঃ পলম। বিপল্প রবের্ভোগ্যমেবং করনমন্তভে 🗝 (শীপিকা)

লগমানের দশুপলকে বিশুণ করিয়া ভাষার দশুকে পল থ্যবং পলকে বিপল করিলে দৈনিক রবিভক্তি ছির হইবে। যেমন শুমুষ লগ্নমান ৪।৭ পুল, ইহার বিশুগ ক্রিলে ৮।১৪ পুল হইবে, এছলে ৮ দশুকে পল করিলে ৮ পল ১৪ বিপল लैनिक त्रविज्ञकि रहेरव, हेरा द्वित कत्रिएछ रहेरव। এই य নিষম বলা হইল, ইহা ৩০ দিন মাস ছলেই ঠিক হল্ম হয়। মাসের কমিৰেশীতে সময়েরও একট তকাৎ হইরা থাকে।

রবিভৃত্তি হির করিবার আরও একটা নিয়ম আছে। न्मग्रक विखनः कृषा नगनीयुखना पिटेनः। যষ্টিভাগেন দশুক শেষক পলমুচাতে।।" (জ্যোভি:সারসং)

ৰে মাসের যে শশ্বের বতদিনের রবিভূক্তি গণনা করিতে इहेर्द. (महे नश्चकनरक विश्वन कतित्रा श्वनकनरक माम्मत्र क्रिकी দিনসংখ্যাদারা পুনরার গুণ করিরা ৩০ দিয়া ভাগ করিবে, পরে ভাগফলকে দও ও ভাগাবনিষ্ঠকে পল মনে कैंब्रिए इहेरव। এইরূপে প্রাপ্ত দণ্ডপদ মভীষ্ট দিনের রবিভূক্তি হইবে।

এইব্রুপে রবিভূক্তি ছিন্ন স্করিরা দিবাভাগে স্বন্ধগ্রহণ করিলে বা প্রস্ন হইলে উদর লয়ের রবিভূক্তি জানিতে হয় এবং রাত্রি-कारन बना वा श्रम स्टेरन अखनरवत त्रविस्कि जाना जावस्थक। **এইक्ट**न निर्मिष्टेनिरनत छैनत वा चल गरबत त्रविकृष्टि वाटम गरबत অবশিষ্টভোগ্য অংশ বাহা থাকিবে, তাহার সহিত পন্ন পর লন্নের मान क्रमान्द्र त्वांश कतिरव, यथन राथा गरित त देहे वश्रांशांपि সমষ্ট্রকৃত লক্ষমানের মধ্যে শেব লক্ষের দশুপলাদির মধ্যে অন্ত-मिहिक व्हेबारक, धावर त्मव नत्यंत्र भूटक् नत्यंत्र वक्षभगानित्व অতিক্রেম করিয়াছে, তথন জানিবেন যে, উক্ত শেষ লগ্নটীই इटेनए अब दिन जा वर्तार केंक्र जाबरे बचा वा अब स्टेबार. बुविष्ठ स्ट्रेष।

अकृति क्रेमाञ्चल निरम हिरा केळमझरना निरम् हे स्टेरन। XVII

১২৯৯ गारगत २२८म रेकार्ड बाजि अ बहिसाब धारूठी निखन सम হইরাছে, ঐ শিশুর কোন লগ্ন হাইবে, ইরাক্টীয়ের করিতে **ब्हेरन व्यथरम प्रविज्**कि चित्र कतिएक **इहेरन। रेकाई** सारम বুবরাশিতে পর্য্য উদর এবং বৃশ্চিক রাশিতে অভানিত হুইরাছেন। वरे भिष्म प्राविकारण क्या रुअप्राप्त क्षणम्य स्ट्रेरफ श्रीरफ रहेरन। मिनाकारम अन्य रहेरन मिनानम अनः प्राणिएक अञ्चलक्ष ধরিতে হয় ইহা পুরুষ্টে বলা হইরাছে।

वृष्टिक नरभन्न माम १। ४०। १० विश्रन, वी जात्नत देखाई মাস ৩২ দিনে শেব হইবাছে, শ্রুতরাং উক্ত লয়মানকে ৩২ দির। ভাগ করিলে প্রভাক বিনের রবিভক্তি প্রাপ্ত হওরা বাইবে। এক मार्टित विमन्द्रशा यक रहेब्राइड, त्नाई न्द्रशा होता केक दिविक রবিভূক্তিকে **ঋণ করিলে সেই বিলের রবিভূক্তি** পাওরা রাম। **এই इटन देशमिक प्रविकृष्ठि वान मिल्ला मिटलायन अपनादत मध्याम** হির করা বাইতে পারে।

वश---

रेपनिक इतिकृष्टि • 1 > • 1 1 अन् कृतिनक इति-कृकि २२ जग छातिथ=०। ६৪। ६৮। ६६ अञ्चलन। धे मिन ইংরাজী ৬। ৩৭ মিনিট গতে সূর্য্য-- অক্ত গিয়াছেন, অভএব রাত্রি ৯ টার সমর জন্ম ছইলে ২। ২৩ মিনিট রাত্রির সমর জন্ম হইয়াছে, ত্বির করিতে হইবে। এবং ইহাকে দশুপলাদিতে পরি-ণত করিলে ৫। ৫৭। ৩০ বিপল হইবে। স্থতরাং ঐ সমর রাত্রি-জাত দশুপলাদি হইবে।

পূর্ব্বোক্ত নির্মায়ুসারে বৃশ্চিক সগ্রমান ৫ : ৪০ : ২০ ছইডে উक्त २२८म टेकार्ड जात्रिरथत्र त्रविकृक्त ७। €8। €৮।8€ वान निर्म ১। ৪৫। ২১। ১৫ বৃশ্চিক লথের অবশিষ্ট ভোগ্যমান থাকিবে. তাহার সহিত পর পর বর্ষমান যোগ করিতে হইবে। এইরূপে বোগ ক্রিভে ক্রিভে ব্ধন দেখিতে পাওরা বাইবে বে, সমষ্টাকুড শগ্নদানের মধ্যে যে রাশিতে জাত দশু পতিত হইরাছে, তথন সেই রাশিতে শগ্ন হইরাছে ত্তির করিতে হুইবে। যদি বন্দিক গারের অবশিষ্ট ভোগ্যমানের মধ্যে জাত গতের সমর পতিত হইড, তাহা হইলে ইহার পরবন্ধী লগ্নমান আর বোগ कतिएक हरेरन मा।

এ ছলে বুশ্চিকভোগ্য লয়মান-->। ३६। २১। ১৫

श्युर्वधयान---(। ५१ । २० । ०

मम्हि—१। २ । 85 । 5¢

পূর্বে ৫। ৫৭। ৩০ বিশল আডম্ম নিলীত ক্রিয়াছে। বুল্ডিকভোগ্য লয়নান অভিক্রম করিয়া গ্রন্থ স্থামানের মধ্যমান্তি- কালে আতক ভূমিই হওরার ধমুর্কায়ে তাছার জন্ম হইরাছে ছিরীকৃত হইল। যদি জাতক রাত্রি ৯ টার সময় না জন্মিরা রাত্রি ২ টার সময় জন্মগ্রহণ করিছে, তাহা ছইলে পর পর লগ্নমান জন্মশং যোগ করিতে হইত ।

এইরপ নিরমে লয়ন্ত্রি করিতে হর। দিবাভাগে জন্ম হুইলে পুর্যোদরকাল হুইতে ধরিরা লয় স্থির করিতে হয়।

লগাছির না হইলে জাতকের ফলাফল কিছুই নিণীত হর না, এইজন্ত বিশেষ যরসহকারে লগ্ন নিরূপণ করা আবশুক, লগ্ন নিরূপিত হইলে নিংসক্ষেহ শাল্লোক্ত ফল ফলিয়া থাকে। আনেক জ্যোতির্বিল্ লগ্নের প্রতি বিশেষ লক্ষ্য না করিয়া ফল নির্ণর করিরা থাকেন, কিন্তু সেই ফল কিছুতেই মিলে না। এইজন্ত শাল্তে লগ্নপরীক্ষার বছবিধ উপায় নির্দিষ্ট হই-রাছে, অতিসংক্ষিপ্ত তাবে ইহার বিষয় আলোচিত হইতেছে।

অনেক সময়ে এইরূপ ঘটনা হইরা থাকে যে, যথন কোন শিশু জন্ম গ্রহণ করে, তথন সেখানে ঘটকা যন্ত্র না থাকার অথবা নিশ্চিতরূপে সময় নিরূপণ করিতে না পারায় আয়ুমানিক সময় ধরিরা লগ্ন হির করা হয়, কিন্তু আয়ুমানিক সময় ধরিরা যে লগ্ন নিরূপিত হয়, তাহা প্রকৃত কি না, তাহা পরীক্ষার নানা উপায় আছে। যথা—

সন্দেহসগ্ৰপথীকা।

বৃষ, কর্কট, ক্সা, বিছা, মকর ও মীন ইহার অন্ততম লগ্ন ছইলে ধাত্রী দধবা এবং প্রস্ততি দিবল্লা হইয়া প্রস্তত হয়; মেষ, মিপুন, সিংহ, তুলা, ধয় ও কুম্ভ ইহার অন্ততম লগ্ন হইলে ধাত্রী বিধবা এবং প্রস্তি একবল্লা হইয়া প্রস্তত হইয়াছে জানিতে হইবে।

"যুগো চ সুধবা ধাত্ৰী ক্ষযুগো বিধবা স্থতা। ক্ষযুগাদ্বস্ত্ৰমযুগাং যুগাদ্যুগাং ক্ৰমান্ধ ধৈঃ॥ (বুহজ্জাতক)

লাভকচন্দ্রিকায় বর্ণিত হইরাছে বে, নেব, সিংহ ও ধমু লয়ে লয়ে হুইলে স্তিকাগৃহ বাটীর পূর্বভাগে ও স্তিকাগৃহের শ্লীলোকসংখ্যা ৫ জন; ক্সা, রুব ও মকর লগ্নে স্তিকাগৃহ বাটীর দক্ষিণাংশে ও স্ত্রীলোকসংখ্যা ৪ জন; কুন্তু, তুলা ও মিপুন লগ্নে স্তিকাগৃহ বাটীর পশ্চিমাংশে ও স্ত্রীলোক সংখ্যা ৭ জন; মীন, কর্কট ও বৃশ্চিক লগ্নে স্তিকাগৃহ বাটীর উত্তরাংশে ও স্ত্রী-লোকসংখ্যা ৩. ৬ বা ৭ জন জানিতে হইবে।

নেষ, কর্কট, তুলা, বিছা ও কুজ ইহাদের মধ্যে একটী জন্মলগ্ন
অথবা লগ্নের উদিত নবাংশ রাশি স্বরূপ হইলে বাস্তবাটীর
পূর্বদিগ্ভাগে; বহু, মীন, মিথুন ও ক্তা লগ্ন হইলে
উদ্বর্গদিকে; ব্রুণ লগ্ন হইলে পশ্চিমদিকে; সিংহ ও মক্র লগ্ন

হইলে ৰান্তর দক্ষিণভাগে 'স্ভিকাগৃহ হইবে। স্থিরলয়ে জন্ম হইলে স্তিকাগৃহের একটা নার; ন্যান্ত্রক লগে তুইটা নার, এবং চরলগে হইলে বহু নার হর। বৃহক্ষাতকে আরও উক্ত হইরাছে যে, কেন্দ্রন্থিত বলবান্ গ্রহ যে দিকের অধিপতি, স্তিকাগৃহের নার সেই দিকে নির্ণয় করিবে। কেন্দ্রন্থিত বহু গ্রহ বলবান্ হইলে বছনার হয়, আর যদি কেন্দ্রে গ্রহ না থাকে, তাহা হইলে জন্মলাঃ হইতে রাশিদিক্ অন্ত্র্পারে স্তিকাগৃহের নার নির্ণয় করিবে।

মেব ও ব্যল্গের প্রতিকাগৃহের পূর্বভাগে, মিথুন লগ্নে জারিকোণে, কর্কট ও সিংহলগ্নে দক্ষিণভাগে, ক্সাল্গে নৈশ্তিকোণে, তুলা ও বৃশ্চিক লগ্নে পশ্চিমভাগে, ধমূর্লগ্নে বায়কোণে, মকর ও কুন্তলগ্নে উত্তরভাগে এবং মীনলগ্নে ঈশানকোণে শিশুর প্রস্ব ও শ্যান্তান নিরূপণ করিতে হয়।

শিশুর মন্তক পতন দারা লগ্ন রাশির যে দিক্, সেই লিকেই
শিশুর মন্তক পতিত হর, অর্থাৎ মেব, সিংহ ও ধছু লগ্নে পূর্ক্বশিরা; ব্যা, কছা ও মকর লগ্নে দক্ষিণশিরা; মিথুন, তুলা ও
কুন্ত লগ্নে পশ্চিমশিরা; কর্কট, বৃশ্চিক ও মীন লগ্নে উত্তর্মিরা
হইরা ভূমিষ্ঠ হর। কোন কোন মতে লগ্ন্য গ্রহ অথবা লগ্নাধিপতি গ্রহ যদি বলবান্ হর, তাহা হইলে সেই গ্রহের যে দিক্ সেই
দিকে প্রস্বগৃহ বা প্রস্বগৃহের দার এবং শিশুর মন্তক পতন
নিরূপণ করিতে হইবে। আবার কোনও মতে লগ্নের দাশাংশপতির দিক্ হইতে স্তিকাগ্রহের দার নিরূপিত হয়।

রাখ্যাধিপ গ্রহের স্থিতি অনুসারে লগ্নপরীক্ষা।—চক্র যে রাশিতে থাকেন, সেই রাশির অধিপতি গ্রহ জন্মকুণ্ডলীচক্রে যে রাশিতে অবস্থিতি করেন, সেই রাশিতে অথবা সেই রাশির পঞ্চম বা নবম রাশিতে করেন গর্ম হইবে। এই নিরম প্রায় অধিকাংশ স্থলেই মিলিডে দেখা বার। চক্র রাখ্যধিপতির অবস্থিতি স্থান হইতে উক্ত যে ৬টা স্থানে অন্মলগের সম্ভাবনা লিখিত হইল, ইহার কোনরূপ ব্যতিক্রম হইলে পূর্বাপর রাশিভেই লগ্ন হইয়া থাকে।

"চক্ররাশ্রবিপো ষত্র তত্ত্রিকোণমথাপি বা। তৎসপ্তমং ত্রিকোণং বা জাতলগ্রমুদান্তম্॥"

রবিন্থিত নক্ষত্র অমুসারে গগ্নপরীক্ষা।— যদি দিবা ছই প্রন্তরের
মধ্যে জন্ম হয়, তাহা হইলে রবি যে নক্ষত্রে আছেন, সেই নক্ষত্রে
অর্থাৎ সেই নক্ষত্রখনিত বে রাশি অথবা রবিন্থিত নক্ষত্র হইতে
সপ্তম নক্ষত্রে বে রাশি হয়, সেই রাশি জন্মলগ্ন হয়। দিবা
হই প্রহরের পর সভ্যা পর্যান্ত রবিভোগ্য নক্ষত্র হইতে ছাদশ
সক্ষত্রঘনিত বে রাশি সেই রাশিই জন্মলগ্ন হয়। স্ক্যার পর

রাত্রি ২ প্রাংবের মধ্যে জন্ম হইলে রবিভোগ্য লক্ষত্র হইতে
লপ্তপশ বা উনবিংশ নক্ষত্র এবং রাত্রি ছুই প্রহরের পর ক্র্যোদরের
পূর্ব্ধ পর্যান্ত চতুর্বিংশতি নক্ষত্রবটিত যে রাশি তথার লগ্ধ হইবে।
চক্ষরাশ্রধিপ ও রবিভোগ্য নক্ষত্র এই যে ছুইটী নিরম ক্ষিত হইল,
এই ছুইটী নিরমান্ত্রসারে প্রারই লগ্ধ নিরূপণ করিতে দেখা যার।
ব্যবং এই অন্থলারেই লগ্ধ প্রারই দ্বির হইয়া থাকে।

"ব্যমিদ্ধে স্থিতে। ভাস্কাদেৰ সপ্তমেছপি বা।
বাবদিপ্ৰহরং জ্ঞেরং পশ্চাদ্বাদশতে পুন: ।
সপ্তদশতে তু রাত্রৌ যাবদ্বামো ভবেদ্বরম্।
চতুর্বিংশতিতে পশ্চাজ্ঞাতশ্বমুদাক্তম্॥" (বৃহজ্ঞাতক)

জন্মলয়ে যদি শীর্ষোদর হয়, তাহা হইলে গর্ভস্থ শিশু মৃত্তক বারা, প্রেটাদর হইলে পাদ বারা এবং উভয়োদর হইলে হয় থার।
প্রস্তুত হইয়া থাকে। আর জন্ম লয়ে যদি গুভগ্রহের দৃষ্টি বা বোগ থাকে, তাহা হইলে স্থেপ এবং পাপগ্রহের দৃষ্টি বা বোগ থাকিলে কটে প্রদান জানিতে হইবে। ইহাতে মনিখনামে এক জ্যোতির্বিদ্ বলেন যে, লয়পতি বা লয়ের নবাংশপাত যদি বক্রী হয়, অথবা যদি কোন বক্রী গ্রহ লয়ে থাকে, তাহা হইলে বিপরীতভাবে অর্থাৎ হয়পদাদি বারা গর্ভস্থ শিশু প্রস্তুত হয়। বৃহজ্জাতকের টীকাকার ভট্টোৎপল বলেন যে, শীর্ষোদয় লয়ে গর্ভস্থ শিশু উর্দ্ধেদয় ইয়া প্রস্তুত হয়। ব্রহজ্জাতকের টীকাকার ভট্টোৎপল বলেন যে, শীর্ষোদয় লয়ে গর্ভস্থ শিশু উর্দ্ধেদয় ইয়া প্রস্তুত হয়।

মেষ, বৃষ বা সিংহ ইহার অভ্যমত লগে যদি জন্ম হয়, এবং বদি তাহাতে শনি বা মঙ্গল থাকে, তাহা হইলে গর্জন্থ শিশু নাড়ী-বেষ্টিত হইরা প্রস্তুত হইরাছে জানিতে হইবে। লগের উদিত নবাংশ যে রাশির স্বরূপ হইবে, সেই রাশিতে জাতকের যে অঙ্গনির্দ্ধিত হয়, সেই অক্টেই নাড়ীবেষ্টিত ছিল জানা যায়। জন্ম-লয় রাশি ও লগের নবাংশ স্বরূপ য়াশি এই উভরের মধ্যে যে রাশি বলবান্ হয়, সেই রাশির সঞ্চরণ স্থানে প্রস্বস্থান কয়না করিতে হইবে। লয় বা নবাংশ রাশি চরসংক্ষক হইলে গৃহহর বাহিরে, প্রস্বাবে, প্রিমধ্যে বা পরকীয় স্থানে প্রস্বাব হিয় করিতে হইবে।

স্বিরুসংক্ষক রাশি ইইলে স্বগৃহে, স্বসম্পর্কীয় আস্মীরগৃহে, প্রস্ব কয়না করিতে হইবে।

নীপ্ৰস্থি নারা লয়ের অংশ নিরূপণ।—সেহমর চক্র বনি রাশির
আরন্তে থাকেন, তাহা হইলে প্রদীপে তৈলপূর্ণ ছিল, সেইরপ
মধ্যভাগে থাকিলে প্রনীপে অর্কতৈল এবং শেবভাগে থাকিলে
প্রদীপে স্বর্মতৈল ছিল জানা বার। কেহ বলেন, চক্রের পূর্ণাপূর্ণবস্কেনে তৈলছিতি নিরূপণ করিতে হয়। কিন্তু বদি প্রদীপের বর্তি
কেবল মুদ্ধ হইতেছে এইরূপ হয়, তাহা হইলে ব্রিতে হইবে
ক্রেরে সারন্তে প্রথমভাগে ক্রম হইরাছে। সেই বর্তির অর্দ্ধেক

ৰশ্ব হইলে লয়ের মধ্যভাগে এবং বার্ত্তি অধিকাংশ বন্ধ হইলে শেব-ভাগে জন্ম হইরাছে, দ্বির করিতে হইলে।

শগ্ৰই স্বাতকের শরীর, এইবস্ত বিশেবরূপে শগ্নপরীকা স্বাবক্তক। স্বাতকের পিত্রিটি, মাত্রিটি, সীর্মিটি প্রভৃতি বারাও শগ্ন নিরূপিত হইরা থাকে। স্বাতকের লগ্নে কি বিবন্ধ চিন্তা ক্রিতে হর, ভাহার বিবর এইরূপ নিশীত হইরাছে।

শ্বীরবর্গাক্কতিলক্ষণানি যশোগণহানস্থাস্থানি।
প্রবাসতেক্ষোবলহর্বলাণি কলানি লগ্নন্থ বদন্তি সন্তঃ ।
তনো রূপক ক্ষানক্ষ বর্ণ কৈব বলাবলম্।
শীলং বৈ প্রকৃতিকাথ তল্পনারিরীক্ষরেং ॥
আরোগ্যপূলা গুণমানহত্তমাযুর্বরোলাতিরশেষসথাং।
ক্লোক্বতী সক্ষণরূপবর্ণাতভাগিনেরত ব্যুগুনৌ তাং ॥
আরুতিঃ প্রকৃতির্দোবা গুণা গুণবরোরসাঃ।
পুংস্তীচেপ্তাব্যবন্ধ গুণা গুণবরোরসাঃ।
পুংস্তীচেপ্তাব্যবন্ধ গুণা গুণবরোরসাঃ।
পুংস্তীচেপ্তাব্যবন্ধ গুণা গুণবরোরসাঃ।
পুংস্তীচেপ্তাব্যবন্ধ গুণা গুণব্যবিদ্যা ।
বক্তবাং দৈববিহুবা প্রাচীনমূনিসন্মতাং ॥"

(পরাশর, শস্কুহোরা ইত্যাদি)

লগে দেহের পরিমাণ, রূপ, বর্ণ, আরুতি, শরীরচিছ, বলং, গুণ ও নিগুণ, স্থুপ ও হংপ, প্রবাস ও স্বদেশবাস, সবল ও হর্ম্বল, জ্ঞান, চরিত্র, স্বভাব, আরোগ্য, প্রশংসা, মান, ইন্দ্রিয়-নিগ্রহ, বরোমান অর্থাৎ আয়ুর স্থুল পরিমাণ, জাতি, ক্লেশ, ভাগিনেয়বণ্, পংগ্রীবিচার, চেষ্টা, কটু, লবণ ও তিজাদিরস, পিতামহী, মাতামহ, পুত্রের ভাগ্য, শক্রুর মৃত্যু, বৈষ্ণ, শ্রাভঙ্গীর মাতা, পিতামহের সম্পত্তি, স্বদেশভাগ্য ও বিদেশভাগ্য, মন্তক, স্তিকাগার ও কীর্ত্তি এই সকল চিন্তা ক্রিতে হয়। অর্থাৎ এই সকল বিষয়ের ওভাওভ চিন্তা ক্রিতে হইলে লগ্ন হুইতেই দেখিতে হয়।

আতকাশকারে উক্ত হইয়াছে যে, লগ্ন ও লগ্নপতি উভরই বলবান্ হইলে লগ্নভাবোধ ফলের বৃদ্ধি এবং চুর্বল হইলে ফলের হানি হইরা থাকে। এইরূপ অস্তান্ত ভাবস্থলেই ভাবরাশির ও ভাবপতির ওভাওত অনুসারে ওভাওত করনা করিতে হইবে।

শ্ৰৱলয়াধিপৌ স্থাতাং বলাধিকতরৌ যদি।
তৎকলানাং প্ৰবৃদ্ধি: স্থামীনো হানিকর: স্বৃত: ।
এবং ভাবের সর্কের্ ভাবভাবেশরোর্বলাৎ।
ততো জনুবি বক্তবাা হানিবৃদ্ধিশ্চ কোবিদা: ।"
(জাতকাল্যার)

এক লথের উপরই সমস্ত ভাবকলের নির্ভন্ন করে, লগ্নের গোলবোগ হইলে সমস্ত কলেরই গোল হইরা থাকে। এই-জন্ম লয়ই সর্বাপেকা বিশেষ ভাবে চিন্তনীয়। লয় ছির না হইলে জাতকের জীবনের ওভাওও নির্ণীত হর না। লগ্ন হইতে রালিচক্রের হাদল গৃহকে হাদল লগ্ন কছে, হবা—লগ্ন, ধন, সোদর, বন্ধ, প্রার, পানী, নিধন, ধর্ম কর্মা, আর ও ব্যর এই হাদল গৃহকে হাদল লগ্ন কছে, হবা ধন লগ্ন, সোদর লগ্ন, বন্ধ লগ্ন ইত্যাদি। কিন্তু রালিভে রবির উদর কালরপ লগ্নই প্রধান। উহাকেই প্রধান লক্ষ্য করিরা অক্তান্ত বিবর চিন্তা করিতে হর। লগ্নতাবকলবিবরে অতিসংক্রেপে আলোচনা করিরা দেখা বাউক।

"বদ্বদ্ভাবপতিবিঁলগুডবনাৎ ষ্ঠাইরিংফোপগং।
ভাবাদ্ভাবপতির্বারাইরিপুগন্তভাবনালং বদেং ॥" (দীপিকা)
বে বে ভাবপতি লগ্ন হইতে অথবা ভাবহান হইতে বঠ,
আইন ও বাদলে থাকে, তাহা হইলে সেই সেই ভাবোধ ফলের
হানি হর। অতএব কোন ভাবের গুভাগুড বিচার করিতে
হইলে দেখিতে হইবে বে, সেই ভাবপতি লগ্ন হইতে এবং
সেই ভাবহান হইতে কোথার আছেন, যদি উভর হান হইডেই
গুড হান হিত হন, তাহা তদ্ভাবফলের সম্পূর্ণ গুড এবং
গুডাগুড হান বোগে ফলেরও গুডাগুড করনা করিতে হব।

বৃহজ্ঞাতকের টীকাকার ভটোৎপদের মত এই বে, কেবল বর্ত্তরান ভিন্ন অন্ত হানস্থ শুভগ্রহ ভাবর্ত্তিকর হইরা থাকেন। বর্ত্তর অশুভগ্রহ অশুভগ্রহ অশুভগ্রহ হইরা থাকেন। লগ্ন হইতে বঠা, অইম ও বাদশ স্থান চুঃস্থান,এই স্থানস্থিত গ্রহ বা এই ভাবপতি অশুভগ্রদ হইরা থাকেন। অভ্যাব গ্রহণিগর বঠাইম ও বাদশ সম্বন্ধ হইলেই ফলের ন্যুনতা করনা করিতে হইবে। ইহার মধ্যে বিশেব এই যে,—

"অরাতিত্রণয়োঃ বঠে চাইমে মৃত্যুরন্ধুরোঃ। ব্যরত দাদশহানে বৈপরীত্যেন চিন্তুনমু।।" (দীপিকা)

পূর্ব্বে বলিয়াছি যে, শুভ ও বামিগ্রহের যোগে গুভফল হইরা থাকে; কিন্তু বঠ, অষ্টম ও বাদশ হানসম্বন্ধ বিশেব বিধি এই যে, উহা বিপরীতক্রমে চিন্তা করিছে হর, অর্থাৎ শুভগ্রহ এই হানে থাকিলে অশুভ এবং অশুভগ্রহ থাকিলে শুভ হইরা থাকে।

বাদল লগ্নরিটি।— মেব লগে যদি জন্ম হইরা লগে চন্ত্র, মলল এবং মকর ভিন্ন জন্ত কোন রাশিতে শনি ও রবি থাকে, তাহা হইলে জাতবালকের ভিন দিন মধ্যে মৃত্যু হর। যদি বুব লগ্নে জন্ম হয় এবং ঐ লগ্ন বৃহল্পভি বা শনি হইতে ঘটলানে থাকে, জর্ধাৎ শনি ও বৃহল্পভি ধলুরাশিতে থাকে, আর জন্তমন্থানে মলল থাকে, ভাহা হইলে জাতকের চতুর্দশ দিনে মৃত্যু হয়। মিথুনলগে জন্ম হইরা কর্কটে শনি, সপ্তমে রবি থাকিলে মিথুনলগেরিটি হয়। কর্কটলগ্নে জন্ম হইরা তুলার বা কুত্তে যদি বৃহল্পভি থাকে এবং রাহ

বা মদল কর্তৃক দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে কর্কটলয়রিটি; বলি সিংইলরে লয় হয় এবং চক্র লয়ে অবছিতি করে ও মকর তির অল্প রালিতে লনি ও রবি থাকে, তাহা হইলে সিংহলয়রিটি, বলি ক্লালয়ে লয় হয় এবং ঐ লয়ে চক্র আর বৃহস্পতির কেক্রেপনি থাকে, তাহা হইলে ক্লালয়রিটি, তুলালয়লাত ব্যক্তির বর্টে ওক্র এবং লয়ে চক্র থাকে, তাহাতে তুলালয়রিটি, বৃল্টিকলয়লাত ব্যক্তির কর্কটে চক্র, ধছল মলাত ব্যক্তির সেবে চক্র ও সিংহে রবি, ক্রুলয়লাত ব্যক্তির চতুর্বে চক্র বা ক্লা অথবা তুলার ওক্র, মীনলয়লাত ব্যক্তির লয়ে চক্র ও বৃশ্চিকে শনি থাকিলে এই সকল লয়রিটি হয়। এই সকল রিটি হইলে লাতকের মৃত্যু হইরা থাকে।

প্রত্যেক নয়কে পুলা করির। বড়্বর্গ করা হইরা থাকে, এই বঢ়্বর্গ বথা —লগ্ন, হোরা, দ্রেকাণ, সপ্তাংশ, নবাংশ, বাদশাংশ, ও ঝিংশাংশ। ইহা ভিন্ন লগ্নের ক্ষুটসাধন করিলে আরও পুলা হর। ক্ষুট ব্যতীত অংশ পুলা হর না। সিংহলনে কল্প প্রহণ করিরাছে বলিলে ক্ষুটসাধন করিলে সিংহলগ্রের কভ অংশ কভ কলার কলিয়াছে, ভাহা জানা বার। [ক্ষুটসাধন দেখ]

नइकन-पि तमर, निश्ह वा श्रम्न प्र हय, जात त्नहें श्वातन यपि রবি থাকে, তাহা হইলে জাতক গৃহস্থ, ধর্মপালক, বন্ধুবর্ণের হিত-काती, উक्कल, वनवान, कर्जुषालिमानी, कमानीन, मानी, छेनांत्रहिल, माञ्चिक ও উচ্চাভিলায়ী হয়। किन्त कर्की, किरता जुना नश्न इंटरन चात्र थे नत्यत्र ৮ र्वरत्नत्र मत्था त्रवि चवश्चि कत्रितन वक्तककू, নেত্ররোগ ও শির:পীড়া হয় এবং জাত ব্যক্তি প্রায় আত্মাহী, ম্বুণার্হিত ও পুত্রহীন হইরা থাকে। ঐ রবির উভর পার্বে কিংবা উহার সপ্তমে শনি ও মদল থাকিলে জাতক জন্নাযুও ভাহার পিড়রিটি হয়। যদি মেব, রুষ, কিংবা কর্কট লগ্প হয়, ভগার পূৰ্ণ বা বলবান চন্দ্ৰ থাকে, তাহা হইলে জাতক স্পপনান, প্ৰিয়-দর্শন, গুণবান, ধনী, গর্কিত ও ভাগ্যবান্হর। উক্ত ভিন রাশি সপ্তমে কোন ওভগ্রহ না থাকিলে মানব মলিন, অসুস্থ, ভ্রমণদীল, কীগদেহ ও অবস্থার পরিবর্তন অর্থাৎ কথন হ্রাস বা কথন বৃদ্ধি প্রাপ্ত হর। ঐ চক্রের উভর পার্ষে কিংবা উহার সপ্তমে শনি ও মকল থাকিলে জাতক অৱায় ও তাহার মাতৃথিটি হয়।

ওতগ্ৰহ দৃষ্ট হইরা মলন সারে থাকিলে লাভক তেলবী, উপ্রখনতাবসক্ষর, সাহসী, বলবান, দাভিক ও বীরস্কার হর এবং ঐ মলনের সপ্তমে বৃহস্পতি থাকিলে সেই লাভক ঐবর্থা-দালী ও রাজসদৃশ হর। কিন্তু পাসদৃষ্ট হইলে ইহার বিপরীত হইরা থাকে। অর্থাৎ লাভক কলহাপ্রিয়, কভশারীর যা কক্ষোব- ৰিশিষ্ট, জুরচেষ্টায়িত, ইন্দ্রিয়াসক, ক্রোদী, মদ্যমাংসপ্রির, চঞ্চল, বিকলাঙ্গ, মলিন, উদর বা দস্তরোগী ও অর্শাদি গুরুরোগী ইয়া থাকে।

লগ্নে বিশেষতঃ মিথুন ও কক্সালগ্নে বৃধ অবস্থিতি করিলে জাতব্যক্তি মেধাবী, প্রিরংবদ, স্মচত্রের, মিইভাষী, বন্ধবর্গের হিতকারী, কোতৃকী, ধনী, সম্বক্তা, বণিক্ বা শান্তবেত্তা হয়। কিন্তু লগ্নন্থ বৃধ শনি বা মঙ্গলের দ্বারা দৃষ্ট হইলে জাভক, বাচাল, মিথাবাদী, মন্দমতিসম্পন্ন, শঠ, অবিশ্বাসী, প্রবঞ্চক, কপটছদয়, চোর বা উন্মাদ হয়।

মকর জিন্ন অন্ত কোন লগ্নে রহম্পতি অবস্থিতি করিলে জাতক বৃদ্ধিমান, স্থাস্থামূরত, বিবিধ শাস্ত্রজানসম্পন্ন, সন্ধ্রদেষ্টা, লোকপ্জা, রাজসম্মানিত, ভাগাবান্ ও ঐম্বর্গালী হর।

লগ্নে শুক্র থাকিলে জ্বাভক বিলাসী, শুণবান্, স্থন্দরী স্ত্রী অথবা বহু ললনাযুক্ত, শিব্রশান্ত্রবিশার্দ, সঙ্গীত ও কাব্যশান্ত্রপ্রিম, সদালাপী ও প্রফ্রাচিত্ত হয়। যদি তুলা লগ্ন হয় এবং ভাহাতে শুক্র থাকে, আর কুন্তুরাশিতে বৃহস্পতি থাকে, ভাহা হইলে পুরুষ স্থন্দর এবং তাহার স্ত্রীগণ সর্ব্বাঙ্গস্থানরী হয়। কিন্তুলগ্রন্থ শুক্র প্রশাস্ত্রক বা তৎকর্ভুক দৃষ্ট হইলে মানব নীচসঙ্গ-প্রিয়, নীচামোদরত, অপবায়ী, ক্রীভাসক্ত ও পরস্ত্রীরত হয়।

যদি তুলা, ধয়, কুন্ত বা মীনরাশি লয় হয়, আর লয়ে শনি থাকে, তাহা হইলে জাতক দীর্ঘায়্ব; ঐশ্বর্যাশালী ও বহু লোকপ্রতিপালক হয়। মতান্তরে ব্ব, মিগুন বা কন্তালয়ে শনি
থাকিলে উক্ত প্রকার ফল হইয়া থাকে। ঐ শনির সপ্তমে
বৃহস্পতি থাকিলে মানব পরম ঐশ্বর্যাশালী হয়। কিন্তু লয়গত
শনি অন্ত রাশিতে থাকিলে মানব কান্তিহীন, অশোভন, দন্তর্ক,
সর্বাণ ব্যাধিপীড়িত, নীচাশয় ও স্থাবিহীন হয়। মেয় হইতে
কন্তা পর্যান্ত এই ৬ রাশির মধ্যে কোন রাশি লয় হইলে এবং
রাহ তথায় থাকিলে মানব অন্ত গ্রহরিষ্ট হইতে মুক্তি লাভ
করে, ইহার বিপরীত হইলে রাহ্ অন্তভ্কলপ্রদ হয়। কেরু
লয়ে থাকিলে লয়াধীন কল হ্রাস হইয়া থাকে। লয়ন্থিত গ্রহ
বেরুপ কলপ্রদ হয়, তক্রপ লয়াধিপতি দ্বারাও ফল নির্ণয়
করা বায়।

লগাধিপফল—লগাধিপতি লগে অবস্থিতি করিলে জাতক ভাগ্যবান্, রিপুজরী, বহু পরিজনযুক্ত ও বীর বন্ধবর্গের প্রেষ্ঠ হর। লগাধিপ দিতীর স্থানে থাকিলে মহুষ্য বীর বন্ধ ও পরিপ্রম দারা ধনোপার্জন করে। লগাধিপ তৃতীর স্থানে থাকিলে জাতক দান্তিক, অভিমানী, ভ্রাতা, জ্ঞাতি বা প্রতিবাসীর বলভাপর এবং ভ্রমণরত হইরা থাকে। চতুর্থ স্থানে থাকিলে জাতক পিতৃ-সম্পত্তি, উত্তম বাহন, উত্তম বাসন্থান ও ভূমিলাভ করে এবং

त्नहें वाक्ति श्राप्त क्रविकार्या नकनकान हम । नमाधिन नक्तम हातन থাকিলে মানব সন্ততিযুক্ত, ক্রীড়াসক্ত, অলস, বিলাসপ্রির, কলনাশক্তিবিশিষ্ট ও বুজিমান্ হয়। লগ্লাধিপ বর্চে থাকিলে তদ্দত্ত পীড়া, শত্ৰুবৃদ্ধি বা বধ-বন্ধন হয়, কিন্তু গুডগ্ৰছনৃষ্ট ছইলে মাতৃল বা পিতৃব্যমারা উপকৃত হইবার সম্ভাবনা। লগ্নাধিপ সপ্তম স্থানে থাকিলে যৌৰনাবস্থায় একাধিক স্ত্ৰীলাভ, বাসস্থানের পরিবর্ত্তন, বিদেশ যাত্রা ও শক্রবৃদ্ধি হয় এবং জ্বাতক প্রায় নিজ বুদ্ধিদোবে স্বীর জনিষ্ট সাধন করে এবং কোন ব্যবসা ছারা ভাহার ধন ও প্রতিপত্তিলাভ হয়। লগাধিপ অট্ন স্থানে থাকিলে মানব क्रम, व्यज्ञास, त्नांकार्स, ज्यांस्, ७ मर्कना विभनाभन रहा। किस ল্যাধিপতি গুভ ও বলবান্ হইলে ক্লীখন বা কোন সম্পত্তি লাভ হইয়া থাকে। লগ্লাধিপ নৰম স্থানে থাকিলে জাতক ভাগাৰান, বিখান, শাল্তাসুরাগী, ধার্মিক বা পোতবণিক্ হয়। সমাধিপ দশম স্থানে থাকিলে মাস্ত, উচ্চপন, কার্য্যসফলতা ও কোন সমাজের প্রাধান্ত লাভ হয়। লগাধিপ একাদশ স্থানে থাকিলে বছ মিত্র, প্রচুর অর্থাগম, উৎসাহ, বৃদ্ধি ও উত্তম বাহন হয়। লগাধিপতি वानम ज्ञारन थाकिरन छ्डीवना, वस्त्रसम्बद, अन, निर्वामन, कीन-(नर, भाक ७ धक्र मक रहा।

দ্বিতীয়পতি লয়ে থাকিলে মহুব্য ধনী ও সৌভাগ্যলালী হর। তৃতীয়াধিপতি লগ্নে থাকিলে বছ ভ্ৰমণ ও বাসস্থানের পরিবর্তন বটে এবং জাতক পরিজন বেষ্টিত, কুলশ্রেষ্ঠ ও পরাক্রমশালী হয়। ত্তুর্থাধিপতি লয়ে থাকিলে বন্ধবাহন ও স্থাবর সম্পত্তি লাভ হয়। পঞ্মাধিপতি লগ্নে থাকিলে জাতক বুদিমান্, বিভালুরাণী, পুত্র-বান, বিলাসপ্রিয়, প্রাফুরচিত্ত ও বীয়বংশের ভূষণ স্বরূপ হয়। বঠাধিপতি লগ্নে থাকিলে মানব ক্লেশবুক, শক্ৰদারা পীড়িত, অলায়ু, কিংবা বঠাধিপতি গ্রহনত পীড়াখারা পর্কানা অস্তত্ হর। নপ্তমাধিপতি লগ্নে থাকিলে জন্নবন্নসে বিবাহ, বাণিজ্যকুশল ও বিদেশ বাত্রা হয়। অন্তমাধিপতি লগ্নে থাকিলে বিপদ্, শোক, অলার, বা সেই গ্রহাছখারী দীর্ঘহারী পীড়া হয়। নবমাধিপতি লগ্নে থাকিলে জাতক ভাগ্যবান, বৃদ্ধিমান, ধর্মপরায়ণ, বিভা বা বাণিজাছারা ধনী ও বহুত্রমণশীল হয়। দশমাধিপতি লয়ে থাকিলে মানৰ ক্ষমতাশালী, গণ্য মান্ত ও কীৰ্ত্তিশালী হয়। একাদশাধিপতি লয়ে থাকিলে প্রচুরপরিমাণ আর, বছমিত্র ও পদে পদে উৎসাহ বৃদ্ধি হয়। যাদশাধিপতি লয়ে থাকিলে অপব্যরী, সভত বিপদা-পর ও অরায় হর।

লগ্ন ও লগ্নপতি কৃষ্টগ্রহ ধারা বেষ্টিত হইলে জাতক সৌন্তাগ্য-শালী ও বশ্বী হয়। এইরূপ প্রশালীতে লগ্নের স্কল বিচার করিতে হয়। (দীপিকা, জাতককৌ। ইত্যাদি)

(পুং) নগ-ক মিপাতমাৎ সাধুঃ, বছা নস্ত্-ক ত্ৰন্ত মহং।

ং অতিপাঠক। পর্যার—আতজের, অতিপ্রক, তৃত । (জটারর)
(ত্রি) ৩ সক্ষ। ৪ লক্ষিত। (বেলিনী)
লগ্নকক্ষণ, বোষাই প্রাদেশের চিইপাবন প্রাহ্মণাল বিবাহ
কালে বর ও কন্তার হাতের ক্ষিতে যে কৃত বাধিয়া দেওয়া যায়।
লগ্নকাল (প্রং) লগ্ধন্ত ক্ষাতে যে ক্ষাত্মির।
লগ্নপ্রত্ (প্রং) > চ্চুলংমিই। ২ লগ্ধন্তি প্রহ।
লগ্নপিন (ক্নী) লগ্ধন্ত দিনং। লগ্ধের দিন, নিবাহদিন, যে
দিনে বিবাহলগ্ধ ছির হইয়াছে, তাহাকে লগ্ধনিন কহে।
লগ্নদিরি (প্রী লগ্ধে নক্ষ্মাদির দৃষি।
লগ্নদিবী (জী) প্রাণবর্ণিত প্রস্তরময় গাভী।
লগ্নপেত্র (ক্নী) লগ্ধন্ত পত্রং। বিবাহের দিনছিরক্ষরেশ।
বিবাহের সমন্ধ ছির হইলে বিবাহের দিন ও বে লগ্ধ ছির ক্রা
হয়, তাহাকে লগ্পত্র ক্রেণ্ড।

"লগপত্ৰ করিয়া নারদ মূনি যার" (জারদাম°)
লগ্নত্বল, লগ্নবিশ্বে জন্মহেতু জীবের শুভাশুভ ফলভোগ।
লগ্নবেলা (জী) লগ্নভ বেলা। লগ্নকাল, লগ্ন সময়।
লগ্নায়ু (ক্নী, লগ্নের পরিমাণান্মসারে নির্দিষ্ট জাযুকাল।
(ফলিত জ্যোতিব।)
লগ্নাহ্ (পুং) লগ্নদিন, বিবাহদিন।
লগ্নিকা (জী) লগ্নিকা, চলিত নেঙ্টা জীলোক।
লগ্নিকাকাম, মঠডেদ। (বৃহলীল•২•)

লগুবৃগ্ (দেশজ) যে সকল ধ্যজানি দৃঢ় নহে, উচা করিলে হেলিয়া ছলিয়া পড়ে, তাহাকে লগ্বগ্ করা কহে। লগুবৃগীয়া (দেশজ) কোমল, যাহা দৃঢ় নহে। লঘু, লঘি লঘধাড়ু, > শোষণ, অন্ধীকরণ। ২ গভি, গমন।

ত ভোজননিবৃত্তি। লোষণার্থে জাদি পরিং স্ব ক সেই। গত্যুর্থে জাদি আত্মনে । লই লঙ্গতি-তে। লিই ললঙ্গ-ভেষ। লুই লভিষ্যতি । লুঙ্ অলঙ্গীৎ, অলজ্জিইং । সন্ লিলভিষ্যতি -তে। বঙ্ লালভ্যুতে । যঙ্গুৰ্ লালঙ্ভিষ। ৪ দীপ্তি। লঙ্গুৰাদি। লই লভ্যুতি । নুঙ্ অললভ্যুৎ।

লঘট্ (পুং) লক্ষতে মধ্যস্থানসন্দৃষ্ট্র। উদ্ভরন্থানে প্ততি প্লুতং ইতস্ততে গদ্ধতি বা লক্ষ্ম (লক্ষ্মেন লোপন্ড। উণ্ ১। ১৩৪) ইতি অটি, নলোপন্ড ধাডোঃ। ১ বায়ু।

লঘটি (গ্ৰং) লঘ-গতৌ-আট, ইদভাব:। বারু। লঘস্তী (ত্রী) নদীভেদ। লঘ্যারি, অসভাজাতি বিলেব।

লেবিত্র, অপ্রবিশের। বৈশশ্পারনোক্ত ধলুর্কেলে ইহার আকার, প্রকার ও কার্যকারিতা সম্বন্ধ এইরূপ নিখিত আছে। শিল্পি ভূগকারং তাৎ গৃঠে শুরু প্রা শিত্য।
তামং পঞ্চাল্পিরাসং সাজহত্তসমূলতন্ ।
ৎসরুণা শুরুণা নজং মহিবাদি নিকর্তনন্।
বাহররোভ্যোক্ষেপৌ ক্ষিত্রে বন্ধিতে মডে।।" (ধমুর্বেদ)
কাবিত্রের কারা ভূগ অর্থাৎ কোলকুলো, পূর্বভাগ ছুল ও
শুরুভারযুক্ত, সমুখ্তাগ তীক্ষ, বাস পাঁচ অভূলি ও বর্ণ কাল।
ইহার মুট অতি বৃহৎ এবং ইহার বারা মহিব প্রভৃতি কর্তিত
করা বার। ছই হাতে উঠান ও প্রহার, এই ছই ক্রিয়া ভির
ইহার ভৃতীয় ক্রিয়া নাই।

লাবিমন্ (পুং) লাবোর্ডাবঃ লঘু (পৃথাদিন্তা ইমনিজ্বা পা ৫।১।১২২)
ইতি ইমনিচ্। ১ লঘুড়। ২ অণিমাদি ঐমর্থ্যের অন্তর্গক

ঐমর্থ্যবিলেয। সাধনা ছারা এই ঐমর্থ্যলান্ড হইয়া থাকে।

"ততোহণিমাদিপ্রাহ্জাবঃ কায়সম্পদ্ধানভিবাত্ত ।"

(পাভঞ্জাদ বিভৃতিপা ৪৬)

বোগিগণ সংযম সিদ্ধিবারা ক্ষিত্যাদি পঞ্চতুত জয় করিতে পারিলে তাহাদিগের অণিমাদি অষ্ট ঐশ্বর্যার সিদ্ধিলাভ হইয়া থাকে। লঘুখকে লখিমা বলে, যে ব্যক্তির লখিমা শক্তির সিদ্ধি হয়, সেই ব্যক্তি তুলার স্থার লঘু হইতে পারে এবং তাহার ক্ষলাদির উপরে অনারাসে বিচরণ করিবার শক্তি ক্ষমে। ও অবহুমত্ত। ৪ হুস্তর।

"অগ্রে শবিমা পশ্চাৎ মহতাপি বিধীরতে নহি মহিয়া। বামন ইতি ত্রিবিক্রমমভিদ্ধতি দশাবতার্বিদঃ ॥"

(আর্য্যাসপ্তশতী 🖦)

জবিষ্ঠ (ত্রি) অরমনরোরেষাং বা অতিশরেন লবুং, লঘু-ইঠ। অতিশর লঘুথ্ক:। ব্যাকরণোক্ত প্লেষাত্মক প্রয়োগভেদ। বিদয়মুখমগুনে দীতা ও রাবণের উক্তি প্রভুাক্তিতে সপ্তমাক্ষর বর্জন দারা
"দশবদনমানি" "হাতা যুখি" ও "উতৈঃ পদম্" শব্দে লঘুছের মাত্রাঃ
পুর্ব পরিক্ষিত্ ইইরাছে।

লখিন্ঠসাধারণ গুণনীয়ক, অছবিশেষ (Least Common multiple)।

লক্ষীয়স্ (ত্রি) অন্তমনলোরেষাং বা অভিশবেন লক্ষু লঘু-জন্মসূন্। অভিশন্ন লঘুক্ষযুক্ত।

"ন বৈ সমৃক্ষিং পালরতে লগীয়ান্

যবাং সমানেষ্যতি রাজপুত্রি।" (ভারত ২। ৩২। ১৯)
লয়ু (রী) সক্ততেহনেনতি গজা (গজিবহুংহাান লোপক। উণ্
১। ৩০) ইতি কু, গাডোল লোপক। ১ শীর। ২ কুফাঙজ ।
(মেহিনী) ও গামজ্জক। (রাজনিন) ও হতা, অধিনী ও
পুডানক্র, এই তিনটা নক্র গ্রুপন।
"গমুহতাবিনপ্রাঃ পদ্যরতিজ্ঞানভূষণক্যান্ত্র।"(রুহংগ° ১৮ : ৯)

 कान शतिमान विटनव । शक्तनकन शतिमान कान्यक नव् কতে। পঞ্চলাঠা পরিমাণ কালে এককণ হর। **"কণান্ পঞ্চিতঃ কাটাং লঘুতা দশ পঞ্চ।** লঘূনি বৈ সমায়াতা দল পঞ্চ নাড়িকা: "" (ভাগ° ৩)১১।৭) (पूर) ६ ज्ञानाग्रामवित्नव। যে স্থানে প্রাণায়ামের নিয়মামুদারে বাদশ মাত্রায় প্রাণায়াম হয়, ডাহাকে লঘু প্রাণায়াম ক্রুছে। ইহাতে পূরক, কুম্বক ও রেচক এই ভিনই হইবে। "লঘুমধ্যোত্তরীয়াখ্যঃ প্রাণারামক্রিধোনিতঃ। তন্ত প্ৰমাণং বক্ষ্যামি তদলৰ্ক পৃণুৰ মে 🛭 পথুৰ দিশীমাজন্ত বিশুপঃ সূতু মধ্যমঃ। ত্রিগুণাভিত্ত মাত্রাভিক্তরম: পরিকীর্ডিত:লা (सर्वरखद्मर २३। ১७-১৪)् (वि) ७ अधक, धक्रपरीन। "ভূণাদপি লঘুস্তৃলস্তৃলাদপি চ ভিক্ক:। ন নীতো বাৰ্না কমাদৰ্থপ্ৰাৰ্থনশ্বরা #" (উভট[্]) ৭ মনোজ্ঞ। ৮ ইষ্ট। ৯ নিঃসার। (মেদিনী) "শ্রতা রাম: প্রিয়োগন্তং মেনে তৎসঙ্গমোৎস্ক:। মহার্ণবপরিক্ষেপং লক্ষায়াঃ পরিথালঘুম্।" (রঘু ১২। ৬৬) ১० बाकितरणोक मरकाविरमय, नच्माका, च, हे, छै, स, अ >কার এই সকল বর্ণ লঘু। "ছম্মো লঘু: দীর্ঘো গুরু:" সংযোগের शृद्धि यमि नष्रवर्ग शांक, जाहा हरेल छक्न हम । ३> इन्म:-भारताक नयूर्गणराज्य। इत्मन नक्षर्य 'न' এই मन शांकितन তিনটী লঘু, 'ভ' শব্দে আদিগুরু এবং শেব ছটী লঘু, 'ঘ' শব্দে আদি লঘু, 'অন' আদি ও শেষ লঘু, 'র' লঘু, 'ন' প্রথম হইটী লঘু 'ত' শেষ লঘু 'ল' একটী মাজ লঘু বুঝাইরা থাকে। मञ्जिकक्रिक्षणपून्त नकारता छानिकः शुनतानिनप्रैः। জো গুৰুমধ্যগতো **রলমধ্য: দোহন্তে কৰিতোহন্ত**লঘূ**ত্ত:** ॥ গুরুরেকো গকারন্ত লকারো লঘুরেকক:।" (ছন্দোম°) ১২ রোগমুক্ত। (রাজনি°) রোগ শরীর হইতে মুক্ত **रुहेरल भन्नीत्र लघु रुहेन्ना शास्त्र । ১७ ताबु ७ व्यक्षि अगरहल ।** (মুশ্রুত) ১৪ আকাশগুণভূরিষ্ঠ। (খ্রী) ১৫ পূজা নামক ঔষধি। **পिफ्रिनाक। (अमिनी)** লঘু আচাৰ্য্য, ত্ৰিপ্রস্করীভোত বা ত্রিপ্রাভোত, দেবীভোত ও লবুক্তৰপ্ৰবেশভা। লঘুণপ্ৰিত নামেও প্ৰসিদ্ধ। লঘুক্কোল (গং) বৃহুজেন (Pimenta Acris) कुष्क्र (ग्ः) **अक्रवीत्रकः**। (देशस्त्रिकः) লঘুক ট কী (ত্ৰী) শব্দাৰ, শব্দাৰতীশতা (Mimosa pudica)। लाश्कर्कञ्जू (पूर) कृमियतत्र, त्याकेकृत "Zizyphus)। (रिक्किनि") क्ष्युक्वी (जी) बुक्त, बुर्गा । (दिक्कनि॰) सन्नाजी-द्यानद्यन ।

मधुकांग्न (पूर) नेप्र कारक वर्ज । 🕏 बाम । (बि.) २ फ्लनबीवन लचुकान्मार्थाः (११) नयः कान्नर्यः । ंक्व्येक्नर्यः । (त्राजनि •) लशुरकोमूनी (जी) वतनतायक्छ निकास्टकोमूनीय नःकिछ ব্যাকরণগ্রহ। লঘুক্রেম (মি)ক্রজগরন। (মব্য)ক্রভপারবিক্রেশ। লঘু জিরা (জী) ক্ষাবা তৃত্ব কার্যা। "অজায়ন্ধে কৰিপ্ৰান্ধে প্ৰভাতে মেবড়করে। দম্পত্যো: কলহে চৈব বহুবারত্তে লযুক্রিরা॥" लघुशहिका (जी) नयूपिका। क्य पहा, नर्गाव-चाननी। লঘুথর্তন্ন (क्री)প্রাচীন বংশভেদ। খনতর গচ্ছ। [জৈনশন্ম দেখ] লখুগুঙ্গাধর (পুং) উদরামর রোগে প্রযোজ্য চূর্ণক (ঔবধ) ভেদ। लघुन्न (पूर) नपूर्वनः । अविनी, भूता ७ रखानकव । "উত্রঃ পূর্কমঘান্তকাঞ্চবগণত্রিণ্যুত্তরাণি স্বভূ-র্কাতাদিতাহরিত্রয়ং চরগণঃ শ্রান্থিহতা লঘুঃ ॥" (দীপিকা) লঘুগর্ম (পুং) লঘুর্গর্গ ইব। ত্রিকন্টকমৎক্ত, গর্গর মৎক্ত, চলিত গাঁগড়া মাছ। (হারাবলী) লঘুগোধুম (পুং) ছত্ত্বগোধ্ম, ছোট গম। গুণ-- দ্বিদ্ধ, গুৰু, ব্যা, কফর, আমদোষকর, মধুর, বীর্যা ও পুষ্টিকর। (রাজনি•) लघुठमान (ज्ञी) को छो छन्न । (रेवणकनि०) লঘুচিত্ত (এি) লঘু চিত্তং যক্ত। কুদ্রচিত্ত, ত্র্বলচিত্ত। লঘুচিত্ততা (স্ত্রী) চঞ্চলমনার ভাব ধর্ম। চিত্তের হৈর্যাহীনতা। लघु ि छ । भागित म (जि) त्रामीयथ विराग्य। লঘুচিভিটা (স্ত্রী) লঘুনির্ভিটা। মৃগের্বাঙ্ক, ছোট কাকুর (Colocynth) + লঘুচেত্তস্ (ত্রি) শবু চেতো যত। কুন্রচিভ, নীচাপর। লগুচ্ছদা (ব্রী) মহাশতাবরী। (বৈত্তকনি॰) लघुट्राइन्ह्र (जि) नरक वांश कांग्रे वा ध्वःनै कन्ना बान । লঘুজঙ্গল (পুং) লাবকপন্দী। (ত্রিকা•) লখুতর (আ) অভিনয়, চলিত হাল্কা। লঘূতা (জী) লবু ভাবে তল্-টাপ্। লবুৰ, হীনতা, কুলৰ, অর্ড, লঘুর ভার বা ধর্ম। न्यूपरही (बी) गयुः क्वा नखी। क्वनडीर्क। छाउँ नखी। (ভাবপ্রত) [দক্তী দেখ।] লঘুতুন্দুভি (পুং) লঘুর্ছ নৃভিঃ। বাছভেদ, ত্রগড়বাছ। (পর্যন্ত্রি ল্মুদ্রাক্ষা (ত্রী) নহু: কুলা লাকা। কাকনীলাকা। (রাজনি-) किन्मिम् । লঘুৰারবতী (ত্রী) বর্তমান বারবভী নগরী। লখুনাভনগুল (क्री) মণ্ডলাম্বক চক্রডেন। अपूर्णामम् (ही) नव् नव्यर्गप्तर माम यक्ष । अवह । (नस्ट॰)

লঘুভোজন (ফী) বাহা সহজে ও অলসমরের মধ্যে পরিপাক

लचूनांत्राग्रत्गांश्रिनश्रं, डेशनियद्धमः। लघुनक्षम्ल (जी) वच् क्लः नक्ष्माः। क्षम्भवन्नान्न, শালপনী, পৃশ্লিপনী, বৃহতী, কণ্টকারী ও গোকুর এই ৫টা লঘুপঞ্চমূল। এই পাচন-লঘু, স্বাহ্ন, বলকর, পিত্তানিলনাশক, নাত্যুঞ্চ, বৃংহণ, গ্রাহক, অর, খাস ও অশ্বরীনাশক। (ভাবপ্র৹) লঘুপণ্ডিত (পুং) একজন নৈরান্ত্রিক। ইনি লঘুপণ্ডিতীয় নামক शाप्रभाषा व्यनद्रम करद्रम । [नवू व्याठार्ग्य ८२५ ।] স্পৃত্রক (পুং) > ক্রভ পতনশীল। ২ হিতোপদেশোক কাক। লঘুপত্রক (পুং) লঘুনি পত্রাণি বহু কপ্। রোচনী, খণ্ডা-'রোচনী। (শব্দচ॰) লবুপত্রফলা (জী) লঘু উছদরিকা। (রাজনি॰) ল্পুপ্রি (রী) লগুমি পত্রাণি বঙ্গাঃ ভীব্। অরথবৃক্ষ। (রাজনি°) লঘুপরাশার (পু:) শ্বতিশারভেদ। ল্মুপ্ণী (রী) > ম্র্রা। ২ শতম্লী। (রাজনি•) লযুপাক (পুং) লখু: পাক: যন্ত। পাকে লখু, যাহা শীদ্র পরি-পাক হয়, ভাহাকে লঘুপাক কহে। লঘুপাকিন (তি) চীনাধান্ত, চিনে ধান। (পর্যারমৃ৽) লঘুপাতিন (তি) > শীঘ পতনশীল। ২ কাক। লযুপাণ্ডুরপুষ্পক (পুং) দ্বীপান্তর খর্জ্বিকা! (বৈছছনি •) লবুপিচ্ছিল (পু:) লঘু: পিচ্ছিল:। ভূকর্ম্ব দারক, কাঞ্চনগাছ। লেখুপুলস্তঃ (পুং) পুলস্তাকৃত ধর্মশারভেদ। লঘুপু প্প (পুং) লঘ্নি কুদাণি পুশাণি যন্ত । ভূমিকদৰ । (রাজনি৽) ল্যু প্রায় (তি) অরচেষ্টা আলম্বপ্রিয় বা কুঁড়ে। লঘুফল (পুং) লঘু উহন্বর, ছোট ভূমর। (বৈছকনি॰) ল ঘুবদর (পুং) লঘু: ক্জো বদর:। কুদ্র কুল, মেটোকুল। পর্য্যায়—কুন্ধুকল, বহুক্র, কুন্মপত্র, ফুম্পর্শ, মধুর, দরহার, শিখি-প্রির। প্রকলন্ত্রণ – মধুরাল, কফবাতনাশক, ক্লচিকর, লিগ্ধ, ঈষৎ পিতান্তি, দাহ ও শোষনাশক। (রাজনি৽) लघुरानद्गी (हो) ज्यमत्री। (तासनि॰) লঘুবুদ্ধপুরাণ (ক্রী) শলিতবিস্তর গ্রন্থের একথানি সংক্রিপ্ত বিষরণ। লঘুব্যাস, বৃতিবল্লভ নাটক-রচন্নিতা। লঘু বাক্ষী (জী) লঘু: কুজা রাক্ষী। কুজরাক্ষী। পধ্যায় জলোডবা, বুদ্মপত্রা। (রাজনি৽) লঘুভন্টী (স্ত্রী) চিঞ্চেটক, চলিত চেঁচকো। (বৈশ্বকনি•) লঘুভব (পুং) > নিমপদ। । নিরুষ্ট জন্ম। লবুভাগবভ (हो) ভাগবভপুরাণের একখানি চুর্বক। লযুভাব (११) > शन्का। २ श्रम्बरीन। ७ महस्रमाधा। ল ঘুভুজ (ত্রি) লঘু লঘুণাকদ্রবাং ভূঙ্কে ভূজ-কিপ্। ১ লঘু-পাক্সবা ভোজনকারী। ২ অনভোজী।

नपू कुड़ा

হর, এরপ পথা আহার। ল্যুম্ভ (পুং) ল্যু: কুলো মছ:। কুলাগ্নিমছ, চলিত ছোট গনিরারি (Premna spinosa)। (রাজনি॰) लघूमांश्म (प्रः) नय् वतः मारमः यञ्च । (ताकनि •) जिब्दिन-পন্দী। (ত্রিকা•) लघूमांश्मी (जी) शब्मांशी, एक कठामांशी। (त्राक्रनि॰) লঘুমুত্র (ক্লী) বীৰগণিতোক্ত অন্ধবিশেষ (The lesser root of an equation)। ২ যাহার আরম্ভ প্রাঞ্জ । लघू मृलक (क्री) नघू मृनः यञ्च कन् । इत्र मृनक, तनभानम्नक । লঘুয়ম (পুং) যয়োক্ত শ্বতিবিশেষ। লঘুরাশি (পুং) অভ্নাজ্ঞাক্ত রাশি বিশেষ, বছরাশির বিপরীত। লঘুল্তা (ব্রী) > কারবেলক, উচ্চে গাছ। व्यनस्थम्म (रिक्सक्नि) লঘূলয় (ক্লী) नष् भोधः नीव्रत्व ইতি नी-অচ্। ১ বীব্ৰণ মূল ॥ (অমর) ২ পীতোশীর। (বৈদ্যকনি৽) ল্যুবাস্স (ত্রি) পরিচ্ছর ও হক্ষবাসপরিধানকারী। ল্যুবিক্রম (পুং) দ্রুত গমন। লঘুবিষ্ণু (পুং) বিষ্ণু-কথিত শ্বতি বিশেষ। लघुतुद्धि (वि) नीठ कार्यापनकी। निक्षे कीवनदृखि। লঘুবেধিন (ত্রি) শীঘ্র বেধকারী। বেধকার্য্যে স্থনিপুণ। লঘুশ্মী (স্ত্রী) শমীবৃক্ষভেদ। লঘুশৃত্য (পুং) কুদ্রশঙ্খ, ছোটশাঁক। (বৈছকনি ।) লঘুশান্তিপুরাণ, ক্র উপপ্রাণভেদ। लघू भिवश्रुतान, डेनश्राग्टल । লঘুশিখরতাল (পুং) সঙ্গীতোক্ত তানভেদ। লঘুসত্ত্ব (তি) শঘুপ্রক্ষতিক। শঘুচিত। लघुमन्किल् (जी) नच् मना कनः यद्याः मा नयुमनाकना। লবৃহধরিকা, ছোট ভুমুর। (রোজনি॰) लघुमात्र (वि) नयुः अतः नाता यद्य । अतनात्रयुकः । लघू सुमर्भन (क्री) व्यायूर्व्यत्माक कृत्र्वी वश्यक्षम । লঘুস্থান্তা (ব্রী) চঞ্চলতা। বাহারা একস্থানে **অ**ধিক সমন্ম থাকিতে পারে না। লঘুহস্ত (পু:) লয়: क्रिअकाती হত্তো বছ। শীব্রবেধী, যিনি অতিক্রত বাণক্ষেপ করিতে পারেন। "ভূব: **ধড়াপ্রহারেণ লঘুহন্তো দ্বিধাক্রো**ৎ॥" (কথাসরিৎসা৽ ৪২।১৩৩) লমুহস্ত্তা (ত্রী) পর্বস্তভ ভাব: ভল্-টাপ্। সমূহস্তভু, লমুহত্তের ভাব, ধর্ম বা কার্য। শীত্র বাগক্ষেপ। ক্ষিপ্রকারিতা।

লঘুহস্তবৎ (ঝি) লঘুহত সন্শ। ব্দিপ্রকারী। লঘুহারিত, হারিত পবি-প্রবর্তিত দ্বতিশারতেন। লঘুহানয় (ঝি) চক্ষল চিত। অছির মতি। লঘুহেমতৃগ্ধা (ঝী) লঘুর্হেমছগ্ধা। লঘুহ্বরিকা, ছোট-ডুমুর। (রাজনিন্)

লমুকরণ (ক্নী) > হাল্কা কয়ণ, কমান। ২ গণিডোক আছ-বিশেষ।

লবৃক্তি (ত্রী) শব্ং উজি:। শব্দধন, অরক্থন। লব্যুখান্তা (ত্রি।) সহজে উখান সমর্থ। ২ উত্তম বাহাসম্পন্ন (Good-health)। (দিবার্গ ১৫৯১৩)

লখুতুখরিকা (ত্রী) ছোট ভূমুর। (রাজনি•)
লখুঞ্জীর (রী) অঞ্চীরভেদ।
লখুঞ্জি (গুং) অঞ্জিবি-প্রবর্ধিত খতিভেদ।
লখুজি (গুং) অফিখনি-প্রবর্ধিত খতিভেদ।
লখুজি (ত্তি) লখুং আনলো বছা। ১ আন আনলকুত।
(গুং) ২ অন-আনলা।

লঘুনিন্দরস (পুং) রসৌবধবিশেব। প্রস্তুতপ্রশালী--শারা, গছক, লোহ, বিব, অত্র প্রত্যেক ১ ভাগ; মরিচ ৮ ভাগ, সোহাগা চারিভাগ, ভ্রুরাজ ও অন্নবেতদের রসে সাতবার ভাবনা দিয়া ২ রতি পরিমাণ বটী করিছে হইবে। অকুপান পাণের রস। এই ঔবধ সেবনে শাপু, অক্লচি, মন্দাধি, গ্রহণী, অর ও বাতপ্রেরাগে আও প্রশমিত হয়।

(तरमळमात्रमः भाकुरदाशाधिः)

২ বাতব্যাধি রোগোক্ত ঔষধবিশেষ। প্রস্কৃতপ্রশালী—পারা, গন্ধক, লোহ, অন্র, বিব প্রত্যেক একভাগ, মরিচ ৮ ভাগ.
সোহাগা চারিভাগ, ভূলরাজ ও দাড়িনের রুসে প্রভ্যেকটী পাঁচ
বার ভাবনা দিয়া দাড়িনের কাবে বটা প্রস্কৃত করিতে হইবে।
জন্মপান দোষ জন্মপারে ছিন্ন করিতে হয়। এই ঔষধসেবনে ন্রম ও দাহের সহিত বাতব্যাধি বিনষ্ট হইরা থাকে।

(রনেজ্রদারস - বাতব্যাধিরোসাধি -)

লবার্ষ্যিসিদ্ধান্ত (পুং) আর্যাসিদ্ধান্তের সংক্রিপ্ত গ্রন্থ।
লবালিন্ (ত্রি) লবু জরং লবুপাকং দ্রবাং বা জন্নাতি জল-পিনি।
লব্ডাজী, অরভোজী, বাহারা লবুপাক দ্রব্য ভোজন করে।
লব্ডাজীর (ত্রি) লব্ং আহার: বসা। লবুভোজী, বিনি জর
আহার করেন। (পুং) ২ লবু ভোজন।
লব্ধী (ত্রী) লব্-ভীপ্র > লাধবর্জা, জতি ক্রা।
২ পাননভেব। ও প্রা, পিডিংলাক। ঃ ইতিকোজী।
লক্ষ্য (পুং) ব্যক্তি বিলেব। (পালিনি গ্রাম্ম্য)
লক্ষ্যক, মন্দের লাতা। পূর্ণ নাম আগ্রারণ (বিক্টারিভা)

লক্ষটকটা (ত্রী) > হুকেন রাজনের মাজা ও বিদ্রাৎকেশের করা।
(রামারণ গাঙাংও) ২ বছাার করা।

লক্ষা (নী) সমকেংসামিতি রম্ বাহলকাং কঃ দ্বস লকা (উণ্ এ৪০) টাপ্। সকঃপুরী, রাবণের রাজ্য।

লোভিংশান্তমতে এই লখা পৃথিবীর মধ্যভালে ক্ষরস্থিত। "লভাভমধ্যে বমকোটিরজাং প্রাক্পশ্চিমে রোমকপদ্ধনক।" ক্ষরতাত সিদ্ধপুরং সুধেকসেইয়োহধ বাম্যে বড়বানলক।"

(निकाजनित्रायनि)

অনিপ্রাণে লিখিত আছে বে, গ্রাপ্রী ত্রিংশং বোজন বিত্তীর্ণা, এই পুরীর প্রাকার সকল অবলিস্থিত। দক্ষিণসকুত্রের তীরে ত্রিক্ট-নামে একটা পর্কত আছে, ঐ পর্কতের শিখরে মধ্যম সমুত্র সমীপে ভঠা বছনিন পরিত্রম করিরা ইক্রের কর এই পুরী নির্দাণ করেন। এই পুরীতে পক্ষিগণও গ্রমন করিতে সমর্থ মহে। স্বাক্ষ্যগণ অবে এই পুরীতে বাস করিত। রাক্ষ্যেরা অমরাবতী সদৃশ এই স্কানগরী প্রাপ্ত হইরা ভরাদক হুরাধর্ব হইরাছিল।

"ত্রিংশদ্বোজনবিত্তীপাঁং অর্থপ্রাকারভোরপান্।
দক্ষিণভোরবেতীরে ত্রিকৃটে নাম পর্কতঃ ।
শিবরে তক্ত শৈলক মধ্যমার্থিসারিখনা।
শতত্রিভিক্ত ছল্লাপাঁং টছছিলাং চতুর্দ্ধিশম্যা
শত্রার্থ মংকুতা পূর্কং প্রেম্বাং বছরৎসারে:।
বসভ তত্র হর্জবাঃ অংশং রাক্ষসপূক্ষাঃ ॥
সভাছদাঁং সমাসাভ শত্রুপাং শত্রুস্থনাঃ।
ছরাধ্বা ভবিবাত্তি রাক্ষনৈবাত্তির্ব্তাঃ।"

(व्यक्षिण्- क्लिनमर्नम मामाधास)

রামারণে লিখিত আছে বে, দক্ষিণনাগরের তীরে জিকুট নামে একটা পর্কত আছে, তাহার নিখরে সমরাবাতীর প্রার বিশালা লভানামে একটা পুরী আছে। ঐ রম্পীরা পুরী ছেরমর প্রাকার ও পরিখার পরিবৃত এবং ভোরণ সক্ষল ক্ষর্প ও বৈদ্ধ্যানগিবার রচিত ও সকল স্থান বর্ত্তমন্ত হুলজ্জিত। রাজ্তলাদিগের বাসের জন্ত বিশ্বকারী অভি মরসহকারে এই পুরী নির্মাণ করেন। রাজ্সগণ এই পুরীতে বাস করিরা অভিশর ছর্ত্বর বাজ্যগণ এই পুরী পরিত্যাগ করিরা পাতালে আশ্রব গ্রহণ করে। ফিছুদিন এই পুরী রাজ্যপ্ত অবস্থার থাকে।

পরে কুলের বিশ্রবার আবেশে লভাপুরীর অধীবর হটরা তথার অবস্থান করিতে থাকেন। পরে রাশ্ব বধন তপোবলে বলীরান্ হটরা উঠিল এবং জাবিতে পারিল ছে, লভাপুরী আমাবের পুর্কাশিকুশ্বকরে নিবাশকুরি। প্রথম রাবণ এই পুরী ছাড়িরা দিবার কল্প কুবেরের নিকট এক দ্ত প্রেরণ করেন। কুবের রাবণেব্ল ভরে ঐ পুরী ত্যাগ করিরা যাইলে রাবণ লক্ষার ক্ষণীবর হন। (রামারণ উত্তরকা•)

'উপনিবেশ' শক্তে লছার বর্তমান অবস্থিতি নিরূপণ করিবার
জন্ত বংকিজিং প্রমাণপ্রেরোগ উদ্ধৃত করা হইরাছে। রামচক্র
কপিনৈক্ত সজে লইরা সীতা উদ্ধারের জন্ত লছার গমন করিয়াছিলেন। নেই লছা কোথার ? তাহার বর্তমান নাম কি ? সেই
লছাপুরীর উৎপত্তি এবং তাহার প্রাচীন ও আধুনিক ইতিহাস
সক্তে নিরে বথাসন্তব প্রমাণ উদ্ধৃত হইল;—

বর্ত্তমান দেশীর ও বিদেশীর ভৌগোলিকগণ একবাক্যে বলেন, এখন বাহাকে আমরা সিংহল বা সিলোন বলি, তাহারই প্রাচীন নাম লকা। কিন্তু এই সিভান্ত সক্ষত বলিরা বোধ হর না। অতি পূর্বকাল হইতেই আমাদের পুরাণাদি-শান্ত্রকারগণ লক্ষা ও সিংহলকে হই স্বতম্ভ বীপ ব্লিরাই জানিত্তন। মহাভারত ও পুরাণাদিতে তাহা বিশেবভাবে বর্ণিত আছে।

"সিংহলান্ বর্ষরান্ মেন্ডান্ যে চ লছানিবাসিনঃ।"

মুহাভারত বন ৫১ অ:, ২২ শ্লো°।
"লন্ধা কালাজিনালৈও শৈলিকা নিকটান্তথা ॥ ২০
ঋষভাঃ সিংহলালৈও তথা কাঞীনিবাসিনঃ ॥" ২৭

মার্কণ্ডেরপুরাণ ৫৮ অধ্যার।

এতভিন্ন ভাগৰত ৫।১৯।৩০, বৃহৎসংহিতা, ১৪।১৫, প্ৰভৃতি প্ৰাচীন গ্ৰন্থে লকা ও সিংহল তৃইটী স্বতন্ত্ৰ দীপ বলিয়াই উল্লিখিত হইয়াছে।

রামারণে দক্ষিণদেশীর স্থানাদির উল্লেখকালে লিখিত আছে—
মলর পর্কতের পরে তাত্রপণী নদী, এই নদী সাগরে মিলিত
হইরাছে। এই নদী উত্তীর্ণ হইরা পাঞ্ডানগর, এই নগরের
পুরহার স্থবর্ণনির্দ্ধিত। পরে সাগরের নিকটে উপস্থিত হইবে,
সমুদ্র পার হইরা সাগরের মধ্যে অগন্তানিবেশিত মহেক্স পর্কাত
হেখিতে পাইবে। অপর পারে শত্যোজন-বিস্কৃত অতিশর
প্রভাযুক্ত একটি দ্বীশ আছে, এইখানে রাবণ বাস করে।
হথা—

মলব্ৰক্ত মহোজদ:॥

দ্রক্ষ্যথাদিত্যসভাশমগন্ত্যমূধিসভ্তমন্ ।
ততত্তেনাভ্যন্তভাতাঃ প্রসমেন মহান্থনা ॥
ভাম্রপর্নীং প্রাহন্ত্রটাং তরিবাথ মহানদীম্ ।
না চন্দনবনৈশ্চিত্রৈঃ প্রচ্ছরহীপধারিশী ॥
ভাত্রেব ব্বতী স্বান্তং সমৃদ্রমবগাহতে ।
ভত্তো হেমমন্ত্রং ধিবাং মৃক্যামণিবিভূধিতম্ ॥

যুক্তং কপাটং পাঞ্জানাং গভা ক্রক্সাথ বানরা:।
ততঃ সমূদ্রমাসাম্ব সম্প্রধার্যার্থনিশ্চরম্ ॥
অগন্ত্যেনান্তরে তত্র সাগরে বিনিবেশিতঃ।
চিত্রসামূনগঃ শ্রীমান্ মহেক্রঃ পর্বতোত্তমঃ ॥
ভাতরপময়ঃ শ্রীমান্ অবগাঢ়ো মহার্ণবম্।
বীপক্তভাপরে পারে শতবোক্ষনবিত্তঃ॥
তত্র সর্ববান্থানা সীতা মার্গিতব্যা বিশেষতঃ।
তে হি দেশান্ত বধ্যক্ষ রাবণক্ষ হুরান্থনঃ।"

किकिकाकि। ७ १२ मः। ১६--२६ ह्याः। মলয় পর্বতের বর্তমান নাম পশ্চিমঘাট, এই পর্বতের যে ন্থান হইতে তাম্রপণী উৎপন্ন হইয়াছে, সেই স্থানকে এখনও অগস্তানি বলে। (Caldwell's Dravidian Grammar. Intro.p.48) তাম্রপণা নদী তিনবেলী প্রদেশের মধ্য দিয়া সাগরে মিলিত হইয়াছে। এই নদীর তীরে সমুদ্রের নিকটে বে পাঞ্যনগর স্থাপিত ছিল, ভাহাকে প্রাচীন আরব্য ও গ্রীক ভৌগোলিকগণ 'কোলকে' ও 'কোএল' এবং নিকটস্থ সাগরকে কোলকিকদ্ 🛊 বলিতেন। সমুদ্র পার হইয়া মহেক্ত পর্বত। ইহাই সিংহল ছীপের বর্তমান মহিস্তল পর্বত বলিয়া বোধ হয়। ষে সময়ের কথা লেখা হইতেছে, বোধ হয় তৎকালে তাত্রপণী নদী-প্রবাহিত ভূমিথও দক্ষিণাংশে আরও অনেকটা বিস্তৃত ছিল। এই নদী অভিক্রম করিয়াই সিংহলছীপে যাইতে হইড, এজন্ত সিংহলদ্বীপকে পৌরাণিককালে তাম্রপর্ণ বলিত। গ্রীদের প্রাচীন পুরাবিদ্গণ বলেন, পাণ্ডানগর মৃক্তা আহরণ জন্ম প্রসিদ্ধ ছিল। কিন্তু মহাভারতের মতে, সিংহলছীপে লোকে মুক্তা আহরণ করিত। রাজস্ব-যজ্ঞকালে সিংহলছীপের লোকেরাই রাজা যুধিষ্টিরকে মুক্তা উপহার পাঠাইয়াছিলেন।

"সমুদ্রসারং বৈদ্ধ্যং মুক্তাসজ্যান্তবৈব চ।
শতশশ্চ কুথাংক্তত্ত সিংহলা: সমুপাহরন্॥"

मणां १४ १०७।

রামারণেই আবার অপর স্থানে লিখিত আছে, হন্মানাদি
বানরগণ সীতাবেষণ করিতে করিতে দক্ষিণদেশ অতিক্রম
করিরা এক অক্তাতপূর্ব্ব পর্বতগছরের উপস্থিত হয়। এই স্থানের
নাম ঋক্ষবিল। ইহার চারিদিকেই হুর্গম পর্বতশ্রেণী। বানরগণ
এইস্থানে আসিয়া ক্লান্ত ও পথভ্রান্ত হইল। (তাহারা পূর্ব্বে
স্থানির নিকট গুনিয়াছিল, মংহক্র পর্বতের পরে, সমুদ্রের
পরপারে রাবণনিবাস লছাবীপ; বিদ্ধ এই স্থানের বিবর তাহারা
পূর্বে কথন অবগত হয় নাই।) অনেক অমুসন্ধান করিতে

কোলকিকস্ নাগরের বর্তনান নাম মারার উপসাগর। (Lassen.)

করিতে এই ভয়ন্বর গন্ধর মধ্যে এক বোজন গমনের পর তাহারা এক রমণীর স্থান দেখিতে পাইল। সেই স্থানে নীল, বৈদ্ধা মণি ও পরিনী সকল পতঙ্গললে পরিবৃত্ত রহিয়াছে, রজত ও কাঞ্চননির্মিত বিমানসকল শোভা পাইতেছে, মুক্তালোলে সমারত স্থবর্ণবাক্ষয়ক্ত হেম ও রজতনির্মিত গৃহসকল বিপ্রমান রহিয়াছে (ইত্যাদি।) তাহারা জনতিদ্বে একজন তপ্রিনীকে দেখিতে পাইল। এই তপ্রিনীর নিকট হইতেই সকলে জানিতে পারিল,—

"ময়ো নাম মহাতেজা মারাবী বানরর্বত।
তেনেদং নির্মিতং সর্বাং মারয়া কাঞ্চনং বনম্॥
পুরা দানবম্থ্যানাং বিশ্বকর্মা বভূব হ।
স তু বর্বসহস্রাণি তপত্তপুঃ মহাবনে ॥
পিতামহাদরং লেতে সর্বামেশরক্তদা ॥
উবাস স্থিতং কালং কঞ্চিদ্মিন্ মহাবনে।
তমপ্রসি হেমারাং সক্তং দানবপুলবম্ ॥
বিক্রম্যবাশনিং গৃষ্ণ জ্বানেশঃ পুরন্দরঃ।
ইদক্ষ ব্রন্ধণ দত্তং হেমারৈ বনমৃত্তমম্ ॥"

किक्का ६> मः। > -- > ६ त्या ।

মহাতেজা মারাবী ময়দানব মারাবলে এই কাঞ্চনময় বনভূমি
নির্দ্ধাণ করিয়াছেন। তিনি পূর্ব্বে দানবদিগের বিশ্বকর্মা ছিলেন।
তিনি এই মহাবনে সহস্রবর্ধ তপস্তা করিয়া পিতামহ ব্রহ্মার
নিকট হইতে বরস্বরূপ ঔশনন-রচিত সর্ব্বপ্রকার শিল্লশাত্র
লাভ করেন। এইরূপে তিনি সর্ব্বশক্তিসম্পন্ন ও স্বস্ট ভোগ্য
বিষয়ের ভোকা হইয়া কিছুকাল স্থথে এই বনে বাস করেন।
সেই সময়ে হেমা নারী ক্ষক্ষরাতে আসক্ত হওয়ায় দেবয়াজ
ইক্স বজ্প দ্বারা তাঁহাকে নিহত করিয়াছিলেন। তৎপরে ব্রহ্মা
ক্রেমাকে এই অমুন্তম বন প্রধান করেন।

মহাবংশ নামক পালিগ্রন্থের মতে সিংহলবীপের একটি বিভাগের নাম ময়। বর্ত্তমান আদমশূল বা শ্রীপাদশৈল ও তরিকটয় স্থান ময়রাজ্যের অন্তর্গত বলিয়া অনেকে অসুমান করেন। (Tennent's Ceylon, Vol. I. p. 337 n.) বলিও মহাবংশে সিংহল, নাগরীপ ও তাত্রপর্ণ এক বীপের পর্যায় বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে, কিন্তু এই বৌদ্ধমত অনেকটা অসকত বলিয়া বোধ হয়। কারণ প্রথমেই মহাবংশপ্রণেতা সিংহল এই নাম কুইয়াই পোল বাধাইয়াছেন। তিনি বংলন, প্রের্থ এই স্থানের নাম সিংহল ছিল না, বলরাজকুমার বিজয়- সিংহ এই বীপ লয় করিলে তাঁহারই নামাসুসারে এই স্থানের নাম সিংহল ছিল না, বলরাজকুমার বিজয়-

হানকে সিংহল বলিড, ভাহা বহাভারতের অনেকহলেই উক্ত হইরাছে। এ ছাড়া ভারপর্ণ (সিংহল) ও নাগরীপ বে চুইটি বভর, ভাহা সকল প্রাণ পাঠেই জানা বার।

রাম কশিনৈন্ত সঙ্গে সাগরতীরে উপনীত হইবার পর নল ১০০ বোজন পরিমিত সেতৃ নির্মাণ করিয়াছিল। ইহাতে জানা বাইতেছে, সেই সমুদ্রতীর হইতে গছায় বেণাভূমি ১০০ বোজন অর্থাৎ ৪০০ ক্রোণ।

কেই কেই বলেন, রামেখরদীপ হইতে সেতু জারন্ত হইরাছিল, এবং বর্ত্তমান জাদ্দ্র ব্রিজকেই কেই কেই নল-নির্মিত সেতু বলিরা উল্লেখ করেন। কিছু উই। জাধুনিক লোকদিগের করনামাত্র। রামেখর দ্বীপ হইতে নলসেতু ইইতে পারে, কিছু বর্ত্তমান জাদ্দ্রবিজ্ঞকে জাদ্দ্রা নলসেতুর নিগশন বলিতে প্রস্তুত্ত নহি। যে সকল সন্ধীর্ণ কান সেই নলসেতুর প্রস্তুর্থও বলিয়া জনেকে মনে করেন, সে গুলি সমুদ্রপ্রোতে তুলীক্রত বালি জথবা বেলেপাথর (Sandstone) মাত্র। ভূতব্ববিদেরা পরীক্ষা করিরা দেখিরাছেন, ঐ থও সকল নিতান্ত জাধুনিক সমরে গঠিত। (Ouden Nieuw Oost Indien, Ch. XV. P. 218.) ইছার নিকটেই সমুদ্রের ক্তর্নালিল মধ্যে বিত্তর প্রবাদ দেখা যায়। কালে প্রবাদসমূহ ঐ থও সকলে মিলিত হইরা দ্বীপাকারে পরিগত হইবে।— জনেকের মতে পূর্কো সিংহলদীপ ভারতবর্বের সহিত মিলিত ছিল। বিশেষতঃ বর্ত্তমান রামেখর দ্বীপ হইতে সিংহলের বেলাভূমি >•• যোজন নহে।

খুঁইার ৫ম শতাব্দে পালিগ্রন্থ মহাবংশ প্রথম রচিত হয়।

ঐ মহাবংশের মতে সিংহলের অপর নাম লক্ষা। কিন্তু ঐ
সমরে (খুটের সপ্রম শতাব্দীতে) প্রসিদ্ধ চীনপরিব্রাহ্ণক
হিউএন্সিরাং সিংহল-বীপে গমন করেন। তিনি সিংহল
বীপকে লক্ষা বলেন মাই। তিনি লিখিরা গিরাছেন--"সিংহল
বীপের দক্ষিণ-পূর্ব্ধে একটি পর্বত আছে, ঐ পর্বতকে লোকে
লক্ষা বলে। সেখানে যক্ষ প্রভৃতি বাস করে।" স্থতরাং স্বীকার
করিতে হইবে বে, হিউএন্সিরাংএর সমরেও সিংহল-বীপকে
কেহ কেহ লক্ষাহীপ বলিত না। সিংহল-বীপের স্থান্তর দক্ষিণ-পূর্ব্বে
লক্ষা নামে একটি সামান্ত পর্বত থাকিলেও সমগ্র সিহলকে
আমরা রামারণোক্ত লক্ষা বলিতে পারি না। সিংহলে সক্ষাপাহাড় আছে শুনিরাই কেহ যদি সিংহলকেই লক্ষা বলিতে চান,
তাহা হইলে অনেকে কান্মীরের অন্তর্গত লক্ষা বীপকে অনারাসেই
রাবণের লক্ষা বলিতে পারেন। কিবল একটি নামের মিল
পাইলে প্রাচীন অনপ্রাদির অবস্থিতি নির্মণিত হইতে পারে

^{*} J. A. S. Bengal, Vol. XXXV. pt. i. p. iii,

না। সেই সেই স্থানের স্কৃতৰ, চতুংগীকাও উৎপন্ন ক্রম্যাদির সহিত ফর্কনান নির্দিষ্ট স্থানাধিক স্কৃতক্রাদির সৌসাগৃত ইইলে তবে সেই সেই আটীন ক্রমপ্রাদির স্কৃতক্টা সন্ধান পাওয়া বাইতে পারে।

আমরা গড়া-সহজে পুর্বেই বনিরাছি বে, আমানের প্রাচীন শারীর মডাছসারে কড়াও কিংবল ছুইটি খড়র বীপ। এখন বেধা বাউক, কোন স্থানকে আমরা লভা বনিতে পারি।

শঞ্জিপ্রানে নিথিত আছে—

ক্রিপের্বাজনবিত্তীর্নাং পর্বপ্রাকারভারণাম্।

ক্রিপের্বাজনবিত্তীরে ত্রিকুটো নাম পর্বতঃ এ

ক্রিবরে ডক্ত শৈষক মধ্যমেংকুধিসরিধৌ।

প্রতিভিক্ষ কুপ্রাপাং উর্জিল্লাং চতুর্বিন্ম্॥

প্রতাধি মৎকৃতা পূর্বং প্রব্যান্বহ্বৎসরিঃ।

ক্রম্ভ তর ভূর্জবাঃ স্বধং রাক্ষসপুদ্রবাঃ॥"

ৰন্ধিশ সাগরের তীরে ক্রিকুট নামক পর্যন্ত আছে সেই পর্যন্তের মধ্যম শিখরে সাগরের নিকটে ৩০ বোজন-বিশ্বীর্ণা অর্থ-ক্রাকার ও ভোরগারিশোভিত সহাপ্রী। এই পুরী পক্ষি-সিম্পেরও চুর্গম। পুর্কাকারে ইন্তের সক্ত বহু বংসর ধরিরা ক্রমন্তে আমার (বিশ্বকর্মা) হারা নির্মিত হুইয়াছে। হে চুর্জ্ব রাজকাণ । সেই হানে প্রথম বাস কর।

রামারণেও লিখিত আছে,—
"বন্দিণভোদধেতীরে ত্রিকৃটো নাম পর্যকঃ॥ ২২
ছবেল ইতি চাপ্যক্তো বিতীরো রাক্সনেবরাঃ।
শিখরে তত্ত শৈলত মধ্যমেহবুলসরিতে ॥ ২৩
শক্রেরপি কুআপে টভজিরে চতুর্জিনি।
ত্রিংশল্যেজনবিতীর্গা শত্যোজনমারতা ॥ ২৪
ঘর্ণপ্রাকারসংখীতা হেমতোরপসংবৃতা।
নরা লভেতি নগরী শক্রাজ্পেন নির্মিতা ॥" ২৫

(উত্তরকাও ৫ম সর্ব ৷)

হে রাক্ষনগণ । বিশ্বনাগরের তীরে ত্রিক্ট নামক পর্বাত এবং ভাহার মত আর একটি অবৈল নামক পর্বাত আছে। সেই শৈলের মধ্যম শিখর বৈখননূল, বিশেবতঃ পাষাণ সকল চারিদিকে বিকীপ ছতরার, উহা পকীদিগেরও হুর্গম। আমি (বিশ্বকর্মা) সেই শিখরে ইল্রের আবেশে লছা নির্দ্ধাণ করিরাছি, ঐ নগরী ত্রিশবোজনবিত্তত, একশত বোজন আরত, বর্ণপ্রাকার-শোভিত এবং হেমমর ভোরণে পরিবৃত্ত।

আবার অপর হানে লিখিত আছে,— শিশরন্ত ত্রিকৃটক প্রাংও চৈকং দিবিস্পৃশ্য । সমস্তাৎ পুশসংক্রম মহারক্তসন্থিতন্ । चकरवाकमिकीर्गः विभनः ठाकमार्गमम् ।

निविद्धाः कम् । निवदः नदः वावगणानिकाः ॥

नगरवाकमिकीर्गः किरान्द्रवाकमभावकः ।

मा भूतेः शास्त्रवेदकरेकः भाकृत्राच्यमभिक्तिः ॥

मकाक्तमः नारान वाक्रकः ठ शाक्रवः ।

व्यामदिकः विभारेनकः नवः भत्रम्ह्रिकः॥

(লছাকাও ০৯ দর্গ।)

যাহার মহোচ্চ শিধর আফাল শর্প করিরাছে, সেই ত্রিকৃটপর্বত পূলসমাজ্য হওরার স্থবর্গনর বলিরা বোধ হইরা থাকে ।
সেই গিরি শতবোজন শিকীর্গ বিষদ চারদর্শন, ভাহারই শিধরে
রাবণপালিতা লঙাপুরী। সেই লঙাপুরী দশবোজন বিতীর্ণ
এবং বিংশতিবোজন আরত। সেই নগরী পাঞ্রবর্ণ মেঘসদৃশ
স্থবর্ণ ও রজত প্রাসাদ এবং বিমানসমূহে বিভূবিত।

রামারণের যতে লঙার নির্মিথিত উদ্ভিদ্ কল্মে--"চম্পকাশোক্বকুনশালভালসমাকুলা।
ভমালপনসকলে নাগমালা-সমাকৃতা।
ভিত্তালৈরক্ট্নেনীলৈঃ সপ্তপশৈঃ স্বপৃদ্দিতেঃ।
ভিত্তিকঃ ক্পিভারৈক পাটলৈক সমস্তভঃ।"

(नद्राका ७ ৩৯ দর্গ।)

চল্লাক, অন্ধোক, বকুল, শাল, তাল, তমাল, পমল, নাগ-কেশর, হিবাল, অর্কুল, কলম, সপ্তপর্গ, ডিলাক, কর্ণিকার ও পাটল।

ভাৰরাচার্য্য লিথিয়াছেন,---

"লভাপ্দেহক্ন্য যদোদর: তাং
তথা দিনার্ছং বদকোটপ্র্যান্।
অথকা সিভাব্দেহকাল:
তালোমকে রাতিদলং তদৈব ॥
বংগাক্ষরিভাঃ কৃত্তুর্থতালে
আচাং বিশি ভাল্ বনকোটিরেব ।
ভতত পশ্চার ভবেদবভী
লাকৈৰ ভতাঃ কক্তি প্রতীচ্যান্॥"

গোলাধ্যার ৩।৪৪--- ৪৬।

বধন গভার ক্রোদর হর, তখন (তাহার নক্ষই জংশ পূর্কে) করবাটিতে মধ্যাক, সিজসুরে ক্রোড় এবং রোমকশন্তনে বিজ্ঞান রাজিকান। বনকোটি উজ্জনিনীর ঠিক পূর্কে নক্ষই জ্ঞানে ব্য়ে অবস্থিত, আবার গভা প্রনক্ষেটির ঠিক পশ্চিনে, উজ্জনিনী পশ্চিনে নত্ত।

२० **चनप्रशासकः स्वाक्तिनं भाषकः गर्दारम् ७००००** जाम**्यादकः** २००७ । १००० व्याप्तिकारम् "বট্জিশেত সহস্ৰাণি লয়াদেশঃ **প্ৰকীৰ্তিত**।" াত্ৰ (কুমারিকাখণ্ড ৩৭ জয়ার)

ত্র্যাসিদ্ধান্তের মতে — শব্দা ভারতবর্বের একটি মগর। শ (প্র্থাসিদ্ধান্ত ১২। ৩৯)

ব্রদাওপুরাণের মতে—বববীপের পর মলরবীপ, এই মলর নামক বীপের অন্তর্গত পর্কতের সাহুদেশে লভাপুরী।

"তথাচ মলর্মীণং মেরুমেব সুসংস্কৃতম্।
মণিরত্নাকরং কীতমাকরং কমলস্য চ দ্ল
অনেক্যোজনাবিত্তে চিত্রসাত্মলরীগৃহে।
তস্য কৃটভটে রুম্যে হেমুপ্রাকারভারণে ।
নির্যাহ্বহবিচিত্রা হর্ম্যপ্রাসাদমালিনী।
শতবোজনবিত্তীর্ণা ক্রিংশল্যোজনমার্কা ।
নিত্যপ্রমুদিতা কীতা লল্লা নাম মহাপুরী।
সা কামরূপিণাং স্থানাং বাক্সানাং মহাপুনাম্।
আবাসো বলদ্প্রানাং তিদ্যাক্ষেববিধিবার্ ॥"

(ব্ৰহ্নাণ্ডে অনুষদপাদে ৫৩ অ:।)

সাধারণে লছাকে **স্বৰ্ণনছা ব্**ণিরা **থাকেন। রামারণে** এক-স্থানে লিখিত আছে,—

"বত্ববস্তো ববদ্বীপং সপ্তরাজ্যোপশোভিতম্। প্রবর্ণনপ্যকন্বীপং স্থবর্ণনরমণ্ডিতম্॥" কিঃ ৪০।৩০

উক্ত শ্লোকের হারাও জানা বাইতেছে, যবনীপের কাছেই স্থবর্গ ও রূপ্যকরীপ। অতএব ব্রহ্মাপ্তপ্রাণের সহিত রামারণের বিশেষ ঐক্য হইতেছে।

স্ব্যাসিদান্তে লক্ষা ভারতবর্বের একটি নগর বলিরা উলিথিত হইয়াছে। পূর্বকালে ভারতমহানাগরীর বীপগুলিও ভারতবর্বের মধ্যেই গণিত হইত । ব্রহ্মাণ্ড প্রত্তি পুরাণে লিথিত আছে,—

"জঙ্গৰীপং যবনীপং মলবাদীপমেৰ চ।
শৃদ্ধানীপং কুশানীপং বরাহনীপমেৰ চ॥ ১৪
এবং বড়েতে কথিতা অনুনীপাঃ সমস্ততঃ॥ ৪১॥
ভারতনীপদেশে বৈ দক্ষিণে বছবিস্তরঃ।"

(ব্রহাওপুরাণ ৪৮ জঃ)

অতএব ব্ৰহ্মাগুগুৱাণের মতাত্মসারে মনরবীণের অন্তর্গত নত্মাগুরী বলিলে, পৌরাধিক মতে তাহা ভারতবর্ব ছাড়া নহে। স্থৃতরাং প্র্যাসিদ্ধান্তের সহিত অনৈক্য হইতেছে না।

হবৰীপকে এখন সকলে "বাবা" বলিরা থাকেন। ভারতমহা-সাগরে এই বীগটীর অবস্থিতির বিবর অনেকেই অবগত আছেন, তাহা বলা অনাবশ্রক।

তবে বৰটাণের নিষ্টেই বে শছা ছিল, ভাহার কতকটা আভাস পাওয়া বাইডেছে। আবার ক্রমাঞ্চালা নির্দেশ ক্ষিতেহে, গ্রাপুরী মগরবীথের অন্তর্গত । একণে পূর্ক-উপবীপের অন্তর্গত ভামদেশের সক্ষিপত্তি বিত্তীর্প কৃষিওতকে মগর
আরোবীশ বলে, উহা যববীপের পশ্চিমে: অবস্থিত। এখানকার
মগরকাতির প্রাচীন ইতিহাস পাঠে জানা বার, ভাহারা ক্ষানা
বীপত্ব মেনভাব নামক তামে পূর্কে থাকিত, উহা ভাষ্যের আদিবাসভাব এবং ঐ তামকে ভাহারা মগর ব্যক্তি।

এই নলবজাতির ভাষা এখনও সুমাত্রা প্রভৃতি বীপ ক্রতে আব্রেলিয়া এবং পশ্চিমে মাদাগাদার পর্যান্ত প্রচলিত রহিরাছে।। ভারতনহানাগরের বীপনমূহে প্রার এক ভাষা প্রচলিত থাকার সহজেই বোধ হর এই মলসভাবী জ্ঞি নেশীর বিভিন্ন জাভিগণ পূর্বে একজাতি ছিল, কেই আনভাবিদ্যান্ত থাকিয়াও কালজমে সভ্য হইরাছে, কেই বা সভ্য হইরাও প্রভার অবস্থাতেনে নিতান্ত অসভ্য হইরা পঞ্চিরারে।

এই মলরভাবী আভিগণ রক্ষ: বা রাজ্য আভি রলিরা রামারণাদিতে উক্ত হটরাছে। এখনও ব্যবীপের নিকটবর্তী রোরিসবীপে এক প্রকার কর্মালার ভীবণ রুক্ষবর্ণ অসজ্যভাতি বাস করে, ই ভাহাদের সক্ষদকেই রক্ত হু বলিরা বাকে। ভাহাদের অভাবও রাজ্যনের মন্ত। ু ঐ বীপের মধ্যেই লরাজ্যক নামে নামে একটা নগর আছে, এই নামটিও সংস্কৃত নরাজ্যক্ষ শব্দের বিক্নত পাঠ বলিরা সহজ্যেই অস্থমিত হয়। এই এইপের নিকটেই এখনও রাম, লন্ধণ, নীল ও মল প্রাকৃতি রামারণোক্ষ বীয়গণের নামায়সারে করেকটি ক্ষম্ত ক্ষম্ত বীপও রহিরাছে।

বাহা হউক ব্রহ্মাওপুরাণের মতাত্মসারে বীক্ষত হইতেছে
মলরের মধ্যেই লছাপুরী। রামারণের মতে, এই মলরের নাম
ক্ষবর্ণ-বীপ, উহার বর্তমান নাম ক্ষমাত্রা।

বর্ত্তমান মানচিত্রে দেখিতে পাই, ক্মাত্রা ধীপের উত্তর পূর্ব্বাংশে পর্বতের সাম্বদেশে ও সর্দ্রের নিকটে 'সোনীলংকা' নামক একটি নগর রহিরাছে, উহা "অর্ণলভা" শব্দের অপপ্রংশ বলিয়াই বোধ হর। আবার এই ধীপের অন্তর্বাত্তী হীরক অন্তর্গুপের (Diamond Pt.) নিকট একটি বন্ধরকে এখনও

^{*} Crawfurd's Indian Archipelago, Vol II. p. 371-2 থ্রীসদেশীয় প্রাচীন ভৌগোলিকগণ এই মলয়কেই Chersonesus Area আর্থাৎ বর্ণশ্বীপ বলিতেন।

⁺ English Cyclopaedia, Vol. xi. p. 656.

[‡] English Cyclopaedia (Geography), Vol. II. p. 1045; III, 704,

⁵ সংস্থৃত রক্তাশব্দের আকৃত রূপ।

শ্ব সরাজক প্রথম অর্থও রাজ্য । রাজ্যার একজন নেনাসভিয় নামও সরাজক ।

'গছা' বলে। এবাঁনও এই বীপের উত্তরপশ্চিমাংশে কাঞ্চনগিরি (Golden Mr.) রহিরাছে। ইত্যাদি প্রমাণের বারা বোধ হইণেছে, রামারণাক্ত 'লভাপুরী' অথবা 'প্রবণ্ধীপ' বর্ত্তমান স্থমাত্রাবিপে বুরাইড। স্থমাত্রা, ববছীপ ও ক্লোরিস বীপের দক্ষিণপশ্চিমে প্রবাহিত বিস্তীপ সমূদ্রকে এখনও এখানকার বৃদ্ধী জাতিরা 'লভাই' সাগর বলিয়া থাকে। এতদ্বারাও লভার ক্তকটা স্থান নির্ণন্ধ হইতে পারে। বহুবার ভূমিকম্প ও আমের-গিরির উৎপাত প্রভৃতি প্রাকৃতিক বিপ্লবে স্থমাত্রার দক্ষিণত্ব বিস্তীর্ণ সমূদ্রগর্ভণারী হইরাছে, প্রাচীন লভারাজ্যের সেই অংশই সম্ভব্য গ্রাই' সাগর নাবে পরিচিত হইরাছে।

ৰবিও এই স্থমাত্রাদীপে ছিল্পুজাতি এখনও বাস করেন না, ববিও ছিল্পিবিত মন্দিরাদির কিছুমাত্র ধ্বংসাবশের দৃষ্ট হয় না, কিংবা ইতিহাসেও লিখিত নাই, কিন্তু এমন অনেক প্রমাণ আছে, বন্ধারা আমরা মুক্তকর্গে বীকার করিতে পারি যে প্রীরামচন্দ্রের আগমনের পর হইতে ভারতবাসী হিল্পুগণ বর্ণলাভের আশার এই স্থানে আগমন করিতেন। স্থমাত্রার মধ্যমূল হইতে প্রাচীন হিল্পুরাজগণের নানা শিলালিপি আবিষ্কৃত হইরাছে, ভাহাতেও হিল্পু-প্রাধান্তের যথেষ্ট নিদর্শন রহিরাছে।

এই দ্বীপে এখনও মদল, ইন্দ্রগিরি, ইন্দ্রপর ইত্যাদি হিন্দুক্রেলন্ত সংস্কৃত নাম নগর ও নদীবিশেবে রহিরাছে। এখন
মলরজাতি বে স্থানকে আপনাদিগের আদিজন্মভূমি বলির। গৌরব
করিরা থাকেন, পৃথিবীর অপর সকল স্থান অপেকা বে স্থানে
সমধিক ক্রবর্ণ উৎপর হইত, এখনও সেই স্থর্ণমন্ত্রী ভূমির নিকট
দিল্লা ইন্দ্রগিরি নামে নদী প্রবাহিত হইতেছে। উক্ত নামগুলি
পাঠেও স্পাইই হাণরক্রম হর, বে এক সমরে হিন্দুগণ এই স্নমাত্রাবীলে আসিরা উপনিবেশ করিরাভিলেন।

এই ৰীপে অ্লকেশ্বর নামক:শিবলিঙ্গ বিদ্যমান আছেন।
(সহাদ্রিখণ্ড ১৯১৪)

"ভবিষাত্তি কলো কালে দরিপ্রা নৃপানানবা:।
তেহতা অর্ণন্ত লোভেন দেবতাদর্শনার চ ৪৪০
নিত্যাক্রণাসমিষ্টি তালু। রক্ষাকৃতৎ তর্ম ॥"৪১ নাগরকও ১৪আ:
বাম অর্গায়োগণ করিলে পর তৎপুত্র কুল লভার আগসম করিলাছিলেন,
ভাষাত নাগরকও উল্লিখিও হইলাছে। [নাগরকও ১৮৮ আ: ১০.৯২
লোক কেব]। এই সমাজার পাবেই ক্ষপৎ নামে একট বাপ আছে, উহা
লাক্ষাক্রাক ক্ষপ্ত বিশ্ব বিশিষ্ট অ্লুডিড ৪৪।

হ শাখা। ৩ শাকিনী। ৪ কুলটা। (মেদিনী) ৫ গান্তবিশেষ। পর্যায়—করালত্রিপুটা, কান্তিকা, ক্ষণাত্মিকা। ইহার
খণ—ক্ষচিকর,শীতল, পিন্তনাশক, বাতকারক ও গুরু। (রাজনি॰)
লক্ষা (দেশকা) কু-মরিচ। [লক্ষামরিচ দেখ।]
লক্ষাদাহিন্ (পুং) লক্ষাং দহতি ভজীলং দহ-ণিনি। হন্মান্।
লক্ষাদ্বীপা, ভারত মহাসাগরন্থিত একটী দ্বীপ। রামারণোক্তরাক্ষসপতি রাবণ এখানে রাজ্য করিতেন। [লক্ষাদেখ।]
লক্ষাধিপতি (পুং) লক্ষারা অধিপতি:। রাবণ। (জটাধর)
লক্ষানাথ, লক্ষাদ্বীপের অধিপতি। রাক্ষরাজ রাবণ। অর্কচিকিৎসা ও নিব্দসংগ্রহ নামক হুইখানি বৈশ্বকগ্রন্থ তিনি রচনা
করিয়াছিলেন বলিয়া প্রসিদ্ধি।

লক্ষাপিকা, লক্ষায়িকা (খ্রী) প্রা, চলিত পিড়িং শাক। (শব্দর্যা•) সভোপিকা পাঠও পাওরা যার।

লক্ষামরিচ, অনামপ্রসিদ্ধ কুপবিশেষ। ইহার ফল বা বীজকোষ 'লঙ্কা' নামে প্রসিদ্ধ।

ভারতবর্ধের সমতলক্ষেত্রে, কাশ্মীরের নিয়তর শৈলমালাসমূহে এবং চক্রভাগা-প্রবাহিত উপত্যকা ভূমির ৬৫০০ ফিট্
উচ্চ স্থানেও এই বৃক্ষ উৎপন্ন হইতে দেখা যায়। পর্ব্যক্তরাত
লল্প সভাবতঃই বেশী ঝাল হইরা থাকে। কাশ্মীরের পার্বতঃপ্রদেশে ৭ প্রকার লল্পা দেখিতে পাওয়া যায়। দৈর্ঘ্য, গঠন
ও বর্ণ হারা উহাদের পার্থকা উপলব্ধি হয়। বালালারও ৫টা
বিভিন্ন জাতীর লল্প জবেয়। কিন্তু পার্বতীয় লল্পার ভার ভাহা
ঝাল হয় না। লক্ষার আফ্রতি প্রধানতঃ লন্ধা, কতকগুলি
চেপ্টা, চৌকা, বক্রাকার, তীক্ষমুখ, দিচ্ছিদ্রক, মস্প্ণগাত্র বা
অমস্থ গাত্রবিশিষ্ট, বর্ণ প্রায়ই লোহিত, তবে কোন কোন
স্থানে বেত, হরিদ্রাবর্ণ অথবা লাল, সব্দ্র সাদা বা হরিদ্রাবর্ণ
যুক্তও দেখা যায়।

ভারতের বিভিন্ন স্থানে এবং য়ুরোপীর রাজ্যসমূহে লঙ্কামরিচ বিভিন্ন নামে পরিচিত। হিন্দী—মট্টল, বাল্লন্দ, লালমিরিচ, মর্চা, মির্চ্, গাছমিরচ্; বাল্লালা—লালমরিচ, লঙ্কামরিচ, গাছমরিচ; ভোট—হন্দ-ক্ষমণা; কুমায়ুন—মাটিংসা-বঙ্গক; কান্দীর—মির্কুভ-আ-বঙ্গুন, মির্চ-বাঙ্গুম; গুর্জ্জর—লালমিরিচ, মর্চ্; কছ্ক-মির্চ্; মরাঠী—মির্লিঙ্গা; তামিল—মিলগাই, ম্বাগাই, মোর্র্রে, মোরাগু; তেলগু—মিরপাকর, মেরপুকাই; মলবার—কপু-মোলেগু, কর্মল-মেলক; কণাড়ী—মেনিদিনা-কারি; সংস্কৃত-মরিচফলম্; আরব—ফিল্ফিলে, অহনুর; পারত্ত—ফিল্ফিলে-হ্বর্থ, পিল্পিলে-হ্বর্থ; শিলাপুর—মিরিন, রত-বিরিশ; বন্ধা—নায়ুনি, না-বোপ; ইংরাচী—Chilly. করালী—Poivre de Guinée, poivre du Brésil,

ক্রওভিপ্রাণে ইহাই 'কাঞ্নপার' নামে মলরবীপের মধ্যেই উক্ত ফ্রাছে। "তথা কাঞ্নপারত সলয়তাপরত হিঃ" একরাও ৫০ কা:

[†] প্রান্ত্রন পর হইতে এই লছাইপে অনেকেই বর্ণলাভাশার গমনাগমন করিতেন। অব্দ্রাপের নাগরণওোজ নির্লিখিত বচনের দারা ভাহা কছকটা প্রমাণিত হইতেছে।

d' Inde. এবং অন্তান্ত রাজ্যে—Red pepper ও chilly বা Chilensis প্রকৃতি নামে পরিচিত।

উত্তিপ্তবের Solanaceæ বিভাগের Capsicum শ্রেণীমধ্যে বৈজ্ঞানিকেরা লক্ষাফলকে অস্তর্ভুক্ত করিয়াছেন। ইহার আত্মাদ বাল ও কটু। চৈ, গোলমরিচ প্রভৃতি যেরূপ থাছাদির ঝাল-আত্মাদ বৃদ্ধি করিতে বাজনাদিতে দেওয়া বার, সেইরূপ লভাও রন্ধনকালে ব্যঙ্গনাদিতে বাট্না বা কোড়ংরূপে ব্যবহৃত হইয়াথাকে। এই কারণে ইহা বেণেতি মসলার মধ্যে গৃহীত হইয়াছে।

উদ্বিদ্বাণ্য বিশ্বাস—লক্ষা আমেরিকার প্রথমে উৎপর হইন্ত। দক্ষিণআমেরিকার চিলিবিভাগে প্রথমে লক্ষা দেথা গিরাছিল, ভদবধি উহার ইংরাজি নাম চিলি হইরাছে। ইহার উৎকট কটুত্ব দারণ শীতের স্থায় তীত্র বলিরাও হয় ত Chill শব্দ হইতে Chilly নামকরণ হইয়া থাকিবে; কিন্তু অধিক সম্ভব চিলিদেশ হইতে প্রথমে উহা ভারতীয় হীপপুঞ্জে সমানীত হয়। এই হীপপুঞ্জ প্রাচীনকালে লক্ষা ও মহালক্ষা নামে প্রচারিত ছিল। সেই লক্ষাহীপ হইতে উহা ভারতে আইসে বলিয়া উহা এবানে লক্ষা নামেই থ্যাত হইয়াছে। ১৬৩১ খুইাকে Bontius চিলি ও ব্রেজিলদেশকাত লক্ষার উল্লেখ করিয়াছেন। (Jac. Bontii, Dial. V. p. 10.) ফরাশীরাজ্যে প্রচলিত লক্ষার নামনৃষ্টে বোধ হয় যে, গিনি, ভারত ও ব্রেজিলই এককালে লক্ষা উৎপাদনের প্রধান স্থান বলিয়া গণ্য ছিল।

১৭৮৭ খুঠানে মি: হোভ বোদাই প্রনেশে লবা উৎপন্ন হইতে দেখিরাছিলেন। বিদেশকাত এ দ্রব্য ভারতের পশ্চিমপ্রাপ্তে প্রভ্রুত পরিমাণে উৎপন্ন হইতে দেখিয়া তিনি কৌতৃহল প্রকাশ করেন নাই। তৎকালে গোরা প্রদেশে যে মরিচ উৎপন্ন হইত, ভাতা সাধারণে গোরাই-মরিচ নামে পরিচিত ছিল।

খুনীয় ১৬ল শতালে মুরোপে প্রথম লন্ধার চাস হয়। তাঁহারা বলেন, উহার পরবর্ত্তিকালে ভারতে লন্ধা আমদানী। হইয়াছিল। সম্ভবত: পর্ত্ত গীন্ধ নাবিকগণ ওয়েই-ইপ্তিজ্ হইতে ভারতীর খীপপ্রেঞ্জ ও পরে ভারতে আনিয়া থাকিবেন, কিন্তু এ মীমাংসা যুক্তি-সঙ্গত নহে, কারণ যে হিন্দুগণ এক সময়ে হ্রমাত্রা, যব, বলি ও লন্ধা প্রভৃতি খীপে উপনিবেশ স্থাপন করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন, তাঁহারা কি আমেরিকার সন্নিক্টবর্ত্তী মহালন্ধা-খীপন্ধাত 'লন্ধা' নামক এই উদ্ভিজ্ঞ ভারতে আনম্বন করেন নাই ? গোল মরিচের স্তায় কটু জানিয়া তৎকালীন সংস্কৃত গ্রন্থকারগণ স্থ স্থ প্রহে উহাকে "মরিচ" নাতির অবত্র্তি বলিয়াই গ্রহণ করিয়া ভিত্তিলন এবং অধিক সম্ভব গোলমরিচের স্তায় সন্তর্ণসম্পন্ন মহে দেখিয়া উহা তৎকালে অনাস্ত ইইয়াছিল। তাই বৈস্কক্রায়ে ক্রমারিচ নামে ইহার উল্লেখ দেখা যায়। লন্ধানীপ্রভাত বলিয়া

ইহা লছা বা লছামরিচ নামে পরিচিত। আহুর্বেন শাল্লে ইহার গুণ--কোপন, বিনাহী, অর্ণায়িকর, অমকর, গুরুপাক, বিট্টী ইত্যাদি। [মরিচ শব্দ দেখ।]

শ্বাচানের জন্ত মৃত্তিকার বিশেব সার দিবার আবশ্রক জনের
না। কোদাশ বারা মৃত্তিকা ধনন করির। উহা সামান্ত ভাবে
সার সংযুক্ত করিলেই যথেষ্ট হর, পরে ঐ ক্ষেত্রে শ্রেণীবন্ধভাবে
মেরুপৃষ্ঠাকারে মৃত্তিকারালি উভোলিত করিরা তাহাতে গাছগুলি
রোপণ করিতে হর। প্রথমে একস্থানে বীজ ছড়াইরা গাছ উৎশাদন করা হইরা থাকে। ৪ ইঞ্চি হইতে ৬ ইঞ্চি পর্যান্ত চারা
বড় হইলে রোপণ করাই নিরম। চারাগুলি ১৯০ বা ২ ইণ্ড
অন্তর পুতিরা সেই ক্ষেত্রে উদ্ভমরপ জলসেক আবশ্রক এবং
ক্ষেত্রে অপর কোন আগাছা না জন্মে তবিবরে বিশেব পুটী
রাধা উচিত।

উপরে লছার জাতিবিভাগের উল্লেখ করা হট্মাটে। ইংরাজীতে যাহাকে Red Pepper বলে, ভাহার বৈজ্ঞানিক নাম Capsicum annuum এবং राजानाम छेटा नान शास्त्रपति विनिया श्रिमिक। ज्यात अकृति जाि C. frutescens इंद्रात हेरबाजी नाम Chilly, Gout pepper, Cayenne pepper, Spur peoper। এই জাতীর লছার গাছগুলি ঝোপা ঝোপা এবং লছা উপরোক্ত শ্রেণী অপেকা কুল্রান্ততি। বার্লালা ও উত্তরপশ্চিম প্রদেশে ইহা গাছমরিচ প্রভৃতি নামে পরিচিত: किन श्मानव आमर् "थर्गानि", मनवान्य "ठरव-लारबाक हीना মরিচ ও লদামের।", শিলাপুরে "বাস মিরিশ' নামে খাতি। দক্ষিণ আমেরিকা, বাঙ্গালা, উড়িকা ও মাক্রাজ প্রেসিডেন্টাতে এই জাতীয় লন্ধা প্রভৃত পরিমাণে উৎপন্ন হইরা থাকে। ইছাই আমাদের দেশে চীনে লকা বা ক্র্যাম্থী লকা বলিয়া খ্যাত। C. grossum (अंगीत नदा राजानात ও रिन्यूहार्स कामताजा नदा वा कांक्रि नक्षा वनिवा भाग । देश अधिनव बान । क्रवार्कता এই জাতীয় লঙার চাস করে না। কোন কোন উদ্ভানে সংখ্র বশবভাঁ হইরা উত্থানপালক এই লক্ষার গাছ রাণে। ইহার ফল-গুলি সিন্দুরের স্থায় গাঢ় লোহিতবর্ণ, দেখিতে ঠিক রাম্ববেগুণের मछ। बाल्य छेश्रछा प्रथिता लाटक हेहात्क काँहा वा वाक्षमा-पिटि पित्रा थात्र ना । यूटबाशीयश्र थायरे व्यक्तत्र व्याहाद्व व्यक्ता বীজ বাহির করিরা অভাত্ত মদলা তন্মধ্যে পুরিয়া এই লছা ভিনি-গারের মধ্যে ভুবাইয়া রাখে। বাঙ্গালীরা "আম্তৈল" প্রভৃতি फाहारत नवा छिजारेबा बारथ। C. minimum वा C. fastigiatum शास्त्रत छात्र कृताकात एव विनेता शामी नका मध्य প্রসিদ। এতত্তির বদরী ফল বা বটফলের কার লালবর্ণ ও গোলাকার আর এক প্রকার লছা দেখা যার। উহাকে লোকে বোঁচ কলের নামার্থীনারে বুঁচিলঙ্কা বা কুলে লঙ্কা বলে। চন্ত্রমণি-লঙ্কা নামে ছোট লঙ্কার আর একটা প্রেণী লেখা বার।

কাচা, পাকা, তক্না ও আচারে ভিজান সকল প্রকার कदारे लाटक थाया। राजनाभित्र दान ७ जाहात्राभित्र शक् दृष्टि ক্রিছে লভার ব্যবহার অধিক হয়। বাজালার লভার কাথ হইতে ৰোলা**খনের ছার** একপ্রকার দ্রবা প্রকৃত হটরা থাকে। ইহার স্কুৰোৰ কাল। স্কুলেকাড 'কাম'ৰা'কেলির' দহিত ইহা মিশাইয়া श्राष्ट्रिक कियान लाटन । देश्नाट । नकाटनवटमञ्ज यदथेहे नमानज ক্লাছে। প্রকৃষা লকা চেঁকিতে কুটিরা ও জাঁতার পিষিরা **পারে বার্ট্র ছ'কিবা বোতলে** রাখিলে নট হয় না। কারি প্লাউড়ারের সঙ্গে এই লঙ্কার্চ্প ব্যবস্থৃত হয়। নিয়োক্ত দৃষ্টাস্ত ষ্টতে ১৮৪৮ খুটালে ইংরাজজাতির লক্ষাপ্রিরতার যথেষ্ট পরিচর भाउन वात :- "Try a chili with it, Miss Sharpe,' said Joseph, really interested. 'A chili ?' said Rebecca, maping. 'Oh yes!' . . . 'How fresh and green they look,' she said, and put one into her mouth. It was hotter than the curry; flesh and blood could bear it no longer."-Vanity Fair, ch. iii.

दिश्वकक्षाद्य महा क्-मंत्रित मार्ग्य श्रीमद्या हेश शीलन. ক্ষরিকর ও বলবর্ত্বক। বেদনাযুক্ত স্থানে লক্ষা বাটিয়া প্রলেপ ब्रिटन तर है जान नान इटेश डिटर्र अवः त्वस्ता नान करता। আলজিকা বাড়িলে অথবা জিকামূলে কাঁটা হইলে সেই স্থানন্তয়ে লকা ঘসিরা বা টিপিরা ধরিলে উপকার দর্শে। সামরিক বা গুষিত গলকতরোগে লভাসিভ জলের কুলকুচা অথবা কিহবামলে জল রাখিয়া কুলকুল করিলে কেদনার উপশম হয়। চিনি ও কতিলা **স্হযোগে লছার লোভেঞ্জন প্রস্তুত ক্রিরা সেবন করিলে** স্বরভন্নদোষ বিদ্বিত হয়। গায়ক ও বক্তাদিগের এই লোলেঞ অতি প্রিয়। ইহা ম্যালেরিয়ানাশক ও গলগগুনিবারক। কুকুরের কামড়ানি ব্দতে ও সর্পদন্ত স্থানে লছা বাটিয়া প্রলেপ मिट्रण विवनान करत । महाकाशरतारा (Delirium Tremens) ২০ প্রেণমাত্রা দেবনে কল দর্শে। গলক্ষতে একবোডল কলে ৪ **ভাষ-সভা সিদ্ধ করিরা সেই জন লাগাইলে ক্ষতত্তান গুকাই**রা আইলে। পাঁচভার নারিকেলতৈলে উত্তমরূপে লছা চোরাইয়া नाशहित्न चारवामा हव। चनीर्गदारा दाउँहिनि, नवा ७ ७ है সমভাগে পেৰণপূৰ্ত্বক ৰটিক। প্ৰস্তুত করিয়া সেবন করিবে। বিস্টচিকারোগগ্রন্থ রোগীকে অহিকেনমিশিত লছার কাথের সহিত হিন্দুবীক মিশাইরা শ্বর মাত্রার থাইতে দিলে উপকার कर्म। अरबहे देखिक दीशशूरक आंत्रक्रकरत्न (Scarlatina) এটরপ একটা শন্ধার কাথ প্রান্ত করিরা সেবনের ব্যবস্থা আছে। চা ধাইৰায় চামচের ছই চামচ লভাচুৰ্ও ছুই চামচ লবণ থলে উত্তমন্ত্রণে পেবণ করিয়া তাহাতে এক পাইণ্ট (Pint) উত্তথ্য জল ঢালিরা দিবে। ঐ জল দীতল হইলে কার্পাসবত্রে ছাঁকিরা তাহাতে পুনরার অর্জ পাইণ্ট মাত্রা তিনিগার মিশাইরা লইবে। প্রাপ্তবর্গ্তের পক্ষে চাপামের > চামচ প্রতি ৪ ঘণ্টা অস্তর। বালকগণের বরুস ও রোগের বলাবল বিবেচনা করিরা ব্যবতা করা কর্ম।

১৮১৬ খুঁটাকে অধ্যাপক Bucholz ও Braconnot লছা (capsicum) হইতে রাসায়নিক বিশ্লেষণ ছারা Capsicin নামক একটা পদার্থ আবিকার করেন। ইহাই লছার সার বা কটুছ (acridity)। Capsiacinএর দানা বর্ণহীন C9 H14 O2; ২৯° সেণ্টি উত্তাপে গলিয়া হার এবং ১১৫°C উত্তাপে উপিতে থাকে।

লক্ষারি (পুং) রামচক্র।

লঙ্কারিকা (ত্রী) পিড়িংশাক।

লক্ষাবতার, সমস্বভন্তরত প্রসিদ্ধ বৌদ্ধগ্রহভেদ।

লক্কালিজ, বৃক্তেদ (Euphorbia Tirucalli) !

লক্কান্থায়িন্ (পুং) লকাবং তিঠতীতি হা-ণিনি। বৃক্ষবিশেষ, লকাসিজ। (শন্ত) লকারাং তিঠতীতি। (ত্রি) ২ লকা-বাসী, বাহারা লকার অবস্থান করে।

লক্ষেশ (পুং) नहाর। ঈশः পতি:। রাবণ। (ত্রিকা•)

লক্ষেশ্বর (পু:) > রাবণ। কালাগ্রিকজোপনিবৎ, প্রাকৃত কাম-ধেছ ও শিবস্তৃতি নামক তিনধানি গ্রন্থ ইহার বিরচিত বলিয়া প্রকাশ। লিকানাথ দেখ। বি স্কারীপত্ব শিবলিক্ষতেন।

লক্ষেশ্বরস (পং) কুঠরোগাধিকারে রসৌষধবিশেব। প্রান্তত-প্রণালী—পারদ, অন্ত, তাত্র, গৰুক, হরিতাল, লিলাজতু, অরবেতদ এই দকল তিন দিন মর্দান করিরা ২ রতি প্রমাণ বঁটা প্রেল্কত করিতে হইবে। অনুপান—মধু ও গ্লত। ইহা ভিন্ন ফ্রিকলা, মঞ্জিচা, বচ, পাটলা, মূলা, কট্কী ও হরিদ্রাকাথ অন্তপানেও দেবন করা বাইতে পারে। এই ঔবধদেবনে কুঠরোগে বিশেব উপকার হয়। (রসেক্রসারদ কুঠরোগাধি) লক্ষেশ্বনারিকেতু (পং) অর্জ্বল। "লক্ষেশ্ব বাারিঃ হন্দান্দ স কেতুর্বস্ত সং" (ভারত ৪)২২১৪ রোকে নীলক্ষ্ঠ)

লক্ষোপিকা (জী) প্ৰা। (শন্বরা•)

লকোয়িকা (জী)পুৰা। (শক্ষয়া•)

मुख्यी (जी) व्यवतित वाश्यरकर ।

ल्झ (पूर) नवजीजि नम-भरजी-पाठ्। > नम। २ विष्ण्, स्रात्र, উপশভি। (यमिनी)

लक्ष (रामक) गरक नरमञ्जू क्रमंत्रः नरक ।

লঙ্গক (খ্য) উপপতি। কার।

লঙ্গতারাই, পার্কত্য ত্রিপুরারাজ্যের অন্তর্গত একটা গিরিশ্রেণী। ইহার প্রধান শৃল কেলপুই ১৫৮১ এবং সিম্বাসিরা ১৫৪৪ কিট্ উচ্চ। [লক্বাই দেখ।]

লঙ্গদন্ত, একজন প্রাচীন কবি।

লক্ষ্যুল (দেশজ) > শুলাভেদ (Lonicera quinquelocularis)।

২ জীলোকদিগের একপ্রকার অলকারভেদ, ইহা কর্ণে কিংবা
নাসিকায় ব্যবহৃত হয় ও লবক ফুলের স্তায় প্রস্তুত হইয়া থাকে।
লক্ষর (পারসী) লোহনির্মিত বড়লীর স্তায় বক্রাকার শলাকাভেদ। সমুদ্রবক্ষে অথবা নদীতে পোত আট্কাইয়া রাথিবার
নিমিত্ত আবশ্রুক। প্রধানতঃ ইহাতে বড়লীর ফলার তায় ছইটী
বা চারিটী বৃহদাকার বক্র শলাকা একক্র গাঁথা থাকে। এক
একটী জাহাজের লক্ষর ৫০।৬০ মণ পর্যান্ত ভারি হয়। ইহার
এদেশে প্রচলিত নাম লোভড় বা নোভর।

লক্ষরীন্, আসাম প্রদেশের থসিয়া পর্কতের অন্তর্গত একটী সামন্ত-রাজা। ইউ-বোর নামক একজন সন্ধার এথানকার অধিকারী। চূণের কারবার জন্ম এথানে যে চূণাপাথর উত্তোলিত হয়, তাহার শুক্তগ্রহণ্ট ইহার প্রধান রাজস্ব। ধান্ম, ছোলা, লন্ধা ও হরিদ্রা এথানকার প্রধান কৃষিজাত দ্রবা। এথানে কয়লার থনি আছে।

লক্ষল (ফ্রী) > লাগল। ২ লাগল নামক জনপদ।

লঙ্গাই, আসামের প্রীহট জেলার অন্তর্গত একটা নদী। আসামসীমার বাহির হইতে উত্তুত হইয়া প্রথমে উত্তর ও পরে উত্তরপূর্বগতিতে পার্ব্বতা ত্রিপুরা ও লুসাইশৈলের মধ্য দিয়া এই জেলার
মধ্যে আসিয়া পৌছিয়াছে। এখানে দক্ষিণপূর্ব্বাভিমুখে প্রবাহিত
হইয়া করিমগঞ্জের নিকট শরমা বা বরাক নদীয় কুলায়ারা শাগায়
মিলিত হইয়াছে। এই নদীয় উভরকুলে জায়ল (Lagerstræmia Flos-Reginæ) ও নাগেশ্বর (Mesua ferrea) রক্ষের
বন আছে। এই বনভাগের একস্থানে গ্রম্পের হাতী
শ্বিবার ধেদা আছে।

লঙ্গিম, লঙ্গিময় (তি) সংযোগের উপযুক্ত। লঙ্গুল (ফ্লী) লাঙ্গুল। (উজ্জ্বল)

লঙ্গুলিয়া, দক্ষিণভারতের মধ্যপ্রদেশ বিভাগে প্রবাহিত একটা
নদী। সংস্কৃত নাম লঙ্গল এবং তেলগু ভাষার নাঞ্চল নামে
কবিত। গোগুবানা পর্কতের কালাগুী নামক স্থানের নিকট
হুইতে উদ্ভূত তিনটা পার্কাত্য কলধারার সন্ধম হুইতে এই নদীর
উৎপত্তি। অনস্কর দক্ষিণপূর্কাভিমুখে ক্ষরপুর রাজ্যের মধ্য দিয়া
প্রবাহিত হুইরা মাল্রাক্স-প্রেসিডেন্সীর বিশাধপত্তন ও গঞ্জাস
কোর ভিতর দিরা চিক্ষাকোলের দক্ষিণে সমুদ্রে পড়িরাছে।
এধানে নদীবক্ষে ২৪টা খিলানস্ক্র একটা স্ক্রুর সেতু নির্মিত
আছে। ঐ সেতুর উপর দিরা "গ্রেট্ ট্রাক্সোড্" নামক রাজা

চলিয়া গিয়াছে। ১৮৭৬ পৃষ্টান্দের জীবণ ঝটিকার সেজুর বিশেষ ক্ষতি হইয়াছে। এই নদীর তীরে শিলাপুর, বিয়াদ, রারগড়ড (রারগড়), পার্কতীপুর, পালকোণ্ডা ও চিকাকোল নগর জ্ববিছত। সালুর ও মকুবা নামক ছুইটা শাখা নদী ইহার ক্লেবর পৃষ্ট করিডেছে।

লাক্র, যুক্ত আবেশের গড়বাল জেলার অন্তর্গত একটা গিরিছর্গ।

এখন ভ্রাবন্তার পতিত। অক্ষা ২৯° ৫৫ উ: এবং জ্রাবি°. ৭৮°

৪০ পু:। এইজান সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৬৪০১ ফিট্উচ্চ। এখানে
জনসরবরাহের স্থবিধা না থাকায় ঐ হুর্গ পরিতাক্ত হইরাছে।

ল্ভ্যক (ত্রি) ২ অতিক্রমকারী। ২ নিয়মভঙ্গকারী। ৩ সীমা-বহিগামী।

लख्यन (क्री) मञ्च-मृष्ट्र। উপবাস।

"জরে লভ্যনমেবাদাবুপদিষ্টমূতে জরাৎ।

ক্যানিলভয়কোধকামশোকভামোদ্ধবাং ॥"(চক্রপাণি জরাদি°)
নবজরে প্রণমে লজ্মন দিতে হয়। তাহা দারা বাতপিত্ত কফের পরিপাক, অগ্রির দীপ্তি, শরীরের লঘুতা, জরের উপশম এবং ভোজনে ইচ্ছা জন্মিরা পাকে। বাতজজরের; তম, ক্রোধ, শোক, কাম ও পরিশ্রমজনিতজ্ঞরে; ধাতুক্ষরজনিতজ্ঞরে এবং রাজযক্ষজনিতজ্ঞরে লজ্মন বিধেয় নহে। যাহারা বায়্প্রধান, ক্ষার্তি, তৃষ্ণার্ত্ত, মৃধ্শোব্যুক্ত, এমযুক্ত এবং বালক, বৃদ্ধ, গভিণী বা গ্রন্থলে এই সকল ব্যক্তির্ও লজ্মন কর্ত্তব্য নহে।

লজ্মনবিহিতজ্জরেও অধিক লজ্মন বারা ছর্বল কওয়া বিধের নহে। বিশেবতঃ অধিক লজ্মন বারা অছিসভিতে বা সমস্ত শরীরাবরবে বেদনা, কাশ, মৃথশোষ, ক্ষুধানাশ, অরুচি, তৃষ্ণা, শ্রবণেন্দ্রিয় ও দর্শনেন্দ্রিয়ের ছর্বলতা, মনের চঞ্চণতা বা ল্রান্তি, অধিক উদ্পার, মোহ, অন্নিমান্দ্য প্রভৃতি নানাপ্রকার উপদ্রব উপস্থিত হয়। উপযুক্ত পরিমাণে যথারীতি উপবাস দেওয়া হইলেই সম্যক্রপে মল, মূত্র ও বায়ুর নিঃসরণ, শরীরের লঘুতা, ঘর্মনির্গম, মুথ ও কর্গপরিকার, তন্তা ও ক্লান্তির নাশ, আহারে ক্রিচি, একসময়ে ক্ষুধাতৃষ্ণার উদয়, অন্তঃকরণের প্রসর্গতা এবং বিশুক্ব উল্লার প্রভৃতি উপকার প্রাপ্ত হওয়া যার। (স্ক্লেড)

২ প্লবন, চলিন্ড ডিকান। শাল্কে লিখিত আছে বে, অগ্নি লক্ষন করিতে নাই।

"न ठाबिर नञ्चत्वज्ञीमान्त्नाभमशामग्रः कृति ।

ন চৈনং পাদতঃ কুর্যাৎ মুখেন ন ধমেছু ধঃ #"(কুর্মপূণ উপবি• ১৫ অ॰) ত অতিক্রম ঃ

শন চাপাধর্ম: ছদ্যাণ বস্তপদ্ধীকভা নৃণাং। ত্রীণামধর্ম: হমহান্ ভর্তু: পূর্বন্ত সকলনে ৪" (ভারত ১।১৬৯।৩৬) ৪ আবের গতিভেদ, আবের প্রত গতির দাম সকলন। "অন্তজ্ঞাপি বৰংশক্ত শব্দনা ক্রিয়তে হি যা।
তাং নালং ক্রিয়ঃ সোদৃং কিং পুনঃ পিতৃষারণুম্।"
(মার্কণ্ডেরপু• ১৩৪।৩০)

ল্জ্যন্ক (িএ) > पश्चाता नज्यन করা যার। ২ সেতু। (দিব্যা° ৩৪৽।২২)

ল্ড্যনীয় (এ) শঙ্খ-জনীয়ন। শঙ্খনের যোগ্য, শঙ্খনার্হ, শঙ্খনের উপযুক্ত।

ল্ভ্রনীয়্তা (ত্রী) লঙ্গনীর-তল্টাপ্। লঙ্গনীয়ের ভাব বা ধর্ম, লঙ্গনীয়ত্ব, লঙ্গন।

ল্ভবাল্ভিয় (দেশজ) > লাফালাফি। ২ পুন: পুন: প্রাচীর উল্লেখন। ৩ গুলোগ্সি।

লাডিহত (ত্রি) লঙ্ঘ-ক্ত। স্কুডলঙ্ঘন, যিনি লঙ্ঘন করিয়াছেন। লঙ্ঘ্য (ত্রি) লঙ্ঘ-যং। লঙ্ঘনীয়।

লছ, বন্ধ, চিহ্। ভাবি° পরদৈ শেক সেট্। বট্ বছতি। বিট্ববছে। সূঙ্ অবছীং।

लक्ष्मन् (हिन्नि) नन्त्र।

লছমন্গড়, রাজপুতনার জরপুর রাজ্যের শেথাবতী জেলার অন্তর্গত একটী নগর। শীকর-সর্দার রাও রাজা লক্ষণসিংহ কর্তৃক ১৮০৬ খুরালে এই নগর প্রভিষ্ঠিত হয়। [লক্ষণগড় দেখ।]

লছ্মন্জি, থন্দভাষার একথানি বাাকরণপ্রণেতা। লছ্মিচাঁদ, কুমায়্নের চাঁদবংশীয় একজন রাজা।

লছমিনারায়ণ, বারাণদীবাদী একজন ঐতিহাদিক। ইনি খল-এ-রাণা নামক এক ডজকিরা প্রণয়ন করেন।

লছ্মিরাম, একর্মন হিন্দু কবি। ইনি স্বীয় কবিছণজ্বির জন্ত স্থার উপাধি লাভ করেন।

লছ্মিবাই, বরদারাজ মলহররাওর মহিনী। ১৮৭৪ খুঠানে ই হার একটা পুত্র জন্মে। ঐ পুত্র রাজ্যের উত্তরাধিকারী বলিরা গৃহীত হয়।

লাছিমাদেবী, মিধিলার একজন রাজমহিবী। [লল্লীদেবী দেখ]
লক্ষ্, ১ ভংগলা। ২ দীপ্তি। ৩ লক্ষ্য। ৪ ভর্জন। ভাদি
পরদৈশ সক দেউ। লক্ষার্থে অক আমানে । দীপ্তার্থে অক ।
লট্ লক্ষ্য। ইদিং লক্ষি লক্ষ্যভুলপ্ততি। লিট্ ললার,
ইদিংপক্ষে লল্প। নৃত্ত্বলকীং, অলগ্রীং।

नक्कार्थ नहें — नक्षरः । निहे (नत्म । नृहे निक्छ। मृह् क्षनिक्ष । मन् निनिक्षरः । यह नानकाछ। यह नृह् नानकिः । निह् नाक्षरिः । नक्षरः । नन्तकः । निक्छा।

লক্ষিয়তে। অবজিটা লল-অবস্থ চুরাদি। ভাষণা পরত্যে অক সেট্। লট্ লজয়তি। লক্ষ-জ। লক্ষিত, লগ্ন। লক্ষকারিকা (আঁ) ললং লক্ষাং করোতীৰ ক্ব-গুল, টাপ্ অভ ইত্বং। লক্ষালুল্ডা। (শক্ষালা)

লজর, গার্মত্য জাতিভেদ। (দেশজ) নজর, দৃষ্টি। লজবর্দ্দ, বদাক্দানের অন্তর্গত একটা নগর।

লজ্জক (জী) > বনকাপাসী Guesypium। ২ ব্রাহ্মণপ্রেণী ভেল। (সভা• ২।৫১৫)

লভন্তনী (ত্রী.) শঙ্কাপুকা। (রাজনি°)

লভ্জা (ত্রী) শব্জনমিতি লস্ক ত্রীড়নে (গুরোশ্চ হল:।
পা ৩।৩।১০৩) ইতি অ টাপ্। অন্তঃকরণর্ভিবিশেন,
ব্রীড়া, অস্থচিত কর্ম করিলে পরে জানিতে পারিবে এই যে ভয়।
চলিত লাঞ্জ, পর্যায়—মন্দাক্ষ, হ্রী, ত্রপা, ত্রীড়া, অপত্রপা, মন্দাস্ক,
লক্ষা, ব্রীড়ন । (শব্দর্ভা°)

"লজ্জা ভিরশ্চাং বদি চেভদি ভাদসংশরং পর্বভরাজপুত্র্যাঃ। তং কেশপাশং প্রসমীক্ষ্য কুর্যুর্ব্যালপ্রিয়ত্তং নিথিলং চমর্য্যঃ॥" (কুমারস° ১।৪৮)

ং শক্ষাপু। (রাজনি°) ও বরাহক্রাস্তা। (চক্রদ°) লক্ষ্যাকর (অি) শক্ষাব্দনক। লক্ষ্যাস্থিত (অি) শক্ষয়া অধিতঃ। শক্ষাযুক্ত।

লক্ত্রাপ্রদ (ত্রি) লক্ষ্যদানকারী।
লক্ত্রালু (পুং ত্রী) লক্ষ্যের অত্তীত্যর্থে আলু:। স্বনামখ্যাত ক্ষুপবিশেষ। (Mimosa pudica) লক্ষ্যকতীলতা।
ভিন্নদেশীয় নাম—হিন্দী—ললালু, লক্ষ্যকতী; বালালায়—
লালক, লাজ্কীলতা, লক্ষ্যবতী; কুমায়ুন—লালবান্ত্রী; পঞ্জাব—
লালকন্ত্রী; পন্ত—ঝান্দ; মরাঠী—লালালু, লালারি; শুর্ক্তর—
লালালু-খবামুনি; তামিল—তোতলবড়ি; তেলগু—পেন্সনিজাকন্ত্রী, অওপত্তি; কণাড়ী—মৃত্পভ্বরে; ব্রন্ধ—তক্রুম্; সংস্কৃত—
বারাহক্রান্তা, লক্ষ্যানু, পর্যায়—রক্তপানী, শমীপত্রা, প্রভা,
খনিরপত্রিকা, সন্তোচিনী, সমলী, নমন্বারী, প্রসারিন্দ্রী, সপ্তপানী,
খনিরী, গগুমালিকা, লক্ষ্যা, লক্ষ্যিরী, স্পর্ণলক্ষ্যা, অন্তরোধিনী,
রক্তমূলা, তাত্রমূলা, সম্বন্তা, অক্সবিকারিকা, মহাভীতা, বশিনী,
মহৌবধি।

ভারতের উষ্ণপ্রধান দেশমাত্রেই, বিশেষতঃ নিম্ন বলে এই গাছ প্রভৃত পরিমাণে জলো। তথার রাস্তার উভর পার্ব ই সপুলা কজাবতীর জলনে সমাত্ত দেখা বার। বদি কোন পথিক ঘটনাক্রমে সেই বনের মধ্য দিয়া গমন করে, তাহা হইকে তাহার পশ্চারাগে সমস্ত পত্রই অবনত হইরা সুদিরা পড়ে।
তাহার পশ্চারাগে সমস্ত পত্রই অবনত হইরা সুদিরা পড়ে।
তাহার পশ্চারাগে, শাক্তন, পিডাভিসার, শোক, লাহ, শ্রম, বাস,

ত্রণ, কৃষ্ঠ ও কফনাশক। (রাপ্তনি°) ভাবগ্রকাশমতে—শীন্তন, তিক্তন, কবার, কফপিতনাশক, রক্তপিত, অতীনার ও বোমি-রোগনাশক।

Ainslie वर्णन, यनवात्र छेशकृनवात्री शाधतीत राजनात्र ইহার শিকড়ের কাথ পান করে। করমণ্ডল **উপকৃলবাসী** বাইতীজাতি অর্শ ও ভগন্দর রোপে ইহার শিকড়ের কাথ এবং হই বা ভভোধিক পরিমাণ ছদ্ধের সহিত দিবাভাগে ইহার পত্রচূর্ণ দেবন করে। পরি ইহার রস লাগাইয়া দিলে **উপকা**র দর্লে। পঞ্জাব প্রদেশেও পূর্কোক্তরপে লজ্জাবতীর মূল ও পত্রের ব্যবহার আছে। কুসংস্কারাপন্ন লোকে নির্দিষ্ট ঋতুতে পত্র ও শিকড় তুলিয়া দের। মূলোৎপাটনের গুড মুহুর্ত্তে ভাহারা একটা উৎসব সম্পন্ন করে। ঐ মাসের প্রথম সপ্তাহে যে মূল উৎপাটন করা হয়, তাহা পিতত পীড়ায় ও অরাদিতে উপকারক। বিতীয় সপ্তাহে উত্তোলিত পত্রমূলাদি কামলা, অর্ল প্রভৃতি রোগে এবং তৃতীয় সপ্তাহের भूनांचि कूर्छ, राज्य ও मांभड़ी त्त्रारा (Seab) दिर्गय कनाग्यक কোন্ধণ জেলায় ইহার পত্র বাটিয়া কোরণ্ডের উপর দিবার ব্যবস্থা আছে এবং ইহার রদ সমমাত্রায় ঘোড়ার মৃত্রের সহিত মাড়িয়া যে অঞ্জন প্রস্তুত হয়, তাহা চকুপক্ষের ত্বগ্রোগে (cornea) नात्राहेम्रा पित्न वित्नय कन नान करत्र। ত্বগুপরি লেপন করিলে প্রথমে জ্বালাবোধ হয় এবং সেই স্থান লাল হইয়া ফুলিয়া উঠে। তথন ঐ স্থানে নৃতন বেদনা কল্মে এবং পরে ঐ পূর্ব বেদনা নাশ হইরা থাকে। ক্লোটকাদিতে তুলার সহিত ইহার পত্ররদ নিষিক্ত করিয়া ক্ষতমধ্যে পুরিয়া দিলে উপকার দর্শে।

রাসায়নিক পরীক্ষার ঘারা জ্ঞানা গিয়াছে যে, সজ্জালু লতার সরু সরু শিকড়ে শতকরা ১০ ভাগ tannin থাকে। হীরাকসের (Salt of iron) সহিত মিশ্রিত করিলে উৎকৃষ্ট কালি শ্রেষ্ঠত হয়।

২ লক্ষালুভেদ। [ছয়িকা শব্দ দেখ] (ত্রি) লক্ষা অন্তার্থে আলু। ৩ লক্ষাশীল, চলিত লাজ্ক।

লভদ্ধাবৎ (ত্রি) লব্দা বিভাতেংভ মতুপ্মত বং। লক্ষাযুক্ত। ত্রিরাং শ্রীপ্।

लक्जानील (बि) नक्का धर नीनः रक्षः। नक्कायुकः। नाक्रः। जिज्ञाः गेल्।

लङ्काभृग्र (बि) निष्कं मा।

लच्छाहीन (बि) राशंत गव्या माहे। गव्याप्त ।

ল্ভিড়ত (ত্রি) নব্দাবৃক্ত।

লক্ষিতভাব, এহগণের বড্ভাবের অন্তর্গত এক ভাব।

"পুঅগেইগড: বোটো রাহ্বুজো বঞ্চ ডথা।
রবিদন্দকুলৈর কো লজ্জিতো এই এব র ।" (ফলিড জ্যোডির)
কোন এই যদি লগ্ন ইইতে পঞ্চন গৃহে রাহর সহিত বিলিড
ভাবে অবহান করে, অথবা রবি কিংবা শনি বা নললের সহিত
মিলিড ইইরা লগ্নাদি বাবল জান মথ্যে বে কোন হানে অবহিত
হয়, ভাহা ইইলে সেই এই লজ্জিত বলিরা বিখ্যাত ইইরা থাকে।
বে নল্লের পুত্র (পঞ্চম) হানে লজ্জিত কোন এই থাকে,
ভাহার সকল সম্ভানই নই হয়, কেবল একটামাত্র জীবিত থাকে।
লাভিত্রেরী (ত্রী) শক্ষানুকা। (রাজনি°)

मिक्किका (बी) नम्बानुका नका। नाक्का। (बाबनि°)

लक्ता (जी) नव्या। (मनतप्रा')

লঞ্চা (ব্রী) ১ উপহার, উপঢ়োকন। ২ উৎকোচ।

লম্পুন (রী) শতকে (Eleusine coracuma)

লঞ্জা, ভাসন, দীপ্তি। অদততুরাদি পরতৈর অভানেটা লট্ নক্ষতি। লঙ্জন্লথং।

লপ্তা (গং) লঞ্জতি শোভতে ইতি লঞ্চ-আচ্। ১পদ, চরণ। ২ কছে, কাছা। ৩ পুছে, লেজা। ৪ আনিলো। ৫ লাম্পট্য। ৬ লন্ধী। ৭ স্ৰোত।

লঞ্জিকা (খ্ৰী) লন্ধয়তি শোভতে ইতি লন্ধ-ধূন্, টাপ্ অভ ইছং। গণিকা, বেখা। (হেম)

ল্ট, ২ বাল্য। ২ উক্তি। ভাদি পরবৈ অক উজ্জার্থে সক দেট। লট্ লটভি। লোট্ লটভূ। লুঙ্ অলটাং।

লট (পুং) লটতি যথেজ্যা বদতি লট্-অচ্। ১ প্রমানবচন, অনবহিত হইয়া বাক্যকথন। ২ দোব। (বিশ্ব) ও পাগল। ৪ নির্কোধ। ৫ চৌর।

লটক (পুং) লটভীতি লট্ (জুন শিলিসংজ্ঞরোরপূর্বজ্ঞাপি। উপ্২। ৩২) ইতিজ্ন্। ছল্ন, অসাধু যাজি।

লটকন, তকজাতীয় পাক্ষভেদ (Psittacus minor)

ল্টপূর্ণ (ফ্লী) লটমূগ্রং পর্ণমন্ত । ওড়ম্বর্ । (রাজনি °)

লট্, বাাকরণোক্ত সংখ্যাবিশেষ। ব্যাকরণমতে লটের ১৮টা বিভক্তি আছে, ইহার মধ্যে ৯টা পরদৈশন এবং ৯টা আত্মন-পদ। এই লট্ বর্তমানকালবোধক, 'বর্তমানে লট্' বর্তমান-কালে লট্ বিভক্তি হইরা থাকে। মুগ্ধবোধমতে ইহার নাম কীও কলাপমতে বর্তমানা। [ধাতু দেখ।]

লট কান (দেশল) > বৃক্ষবিশেব (Bixa orellate) ক্রীকার ক্লের বীলে একপ্রকার লাল রঙ্গ পাওরা বার। উহাকে 'দটকানের রঙ্গ' বলে। বুলাইরা দেওন। ৩ কাঁসি দেওন।

लाउँ थाउँ (शिमी) > पद्मात्रात्म याहा निकाहरवाना महरू । २ विक्रिक

লট্পটিরা (দেশজ) > গোলমালযুক্ত। ২ বাছা সহজ্ঞসাধ্য নহে।
লাট্পটি (দেশজ) > অব্যক্ত শক্তেদ। ২ বৃহৎ বন্ধ পরিধান
করিলে থড়মড় শক্ত ছর বলিরা লোকে বলে 'বড় কাপড় লটপট
করে'। ৩ দীর্ঘ জিলবিভ ও পরস্পরের সংস্পর্লে অব্যক্ত শক্ত করি। "লট্পট জটাজ্টলাল"। ৪ বেদনার বন্ধণার ছট্কট্
বা এপিট ওপিট পড়া। যেমন কাটা ছাগলের মন্ত লটপট
কো'ছে।

লটাপাটি (দেশৰ) পরস্পারে বিবাদকালে বাছতে অভাজড়ি করিরা ভূমিতে পড়ন। ২ ঝুটাপুটি।

কাটু আ, লাটু ক্থুরে (দেশজ) লালাট। (লোচা পুরুষ) লাটু (পুং) হর্জন। (শাদররা°) লাটুনভাটু, একজন প্রামীন কৰি।

লাট্ব (গং) লটতীতি লট (অল্রুমিবিটীতি। উণ্ ১ ৷ ১৫১) ইতি কন্। জাতিবিশেষ, নেটুয়া, এই জাতি সম্বরজাতি। ২ রাগভেদ। ৩ তুর্লম ৷ (উজ্জ্ব)

भागे का (खी) गरें।।

লট্ব (স্ত্রী) লট্ব-কন্-টাপ্। > করঞ্জভেদ, চলিত নাটাকরঞ্জ।
২ বাগ্যভেদ। ৩ পক্ষিবিশেষ, গ্রামচটক পক্ষী। (মেদিনী)
৪ কুন্তন্ত্র। ৫ ভ্রমরক। ৬ শিলী। ৭ তুলিকা। ৮ দ্যুত।
"লট্বা তু তুলিকা থ্যাতা লট্বা দ্যুতেংপি দৃশ্যতে।" (ব্যাড়িরন্তরেনী)
৯ চুর্বকুন্তন। ১০ ছণ্টরিত্রা স্ত্রী। ১১ মিট্ট থাগ্যন্তবাবিশেষ।
লাটুরা (হিন্দী) লম্পটশন্দের অপভংশ। বাঙ্গালায় লটুয়া বলে।
লাডু, ১ বিলাস। ২ উৎক্ষেপা। ৩ উপসেবা। ৪ বীঞ্গা।
৫ উন্নত্বন, পীড়িতীভাব ও উৎক্ষিপ্তাভাব। ৬ ভাষণ। বিলাসার্থে
ভাদি পরীমে সক সেট্। ভাষণার্থে চুরাদি পক্ষে ভাদি
পরীমে সক সেট্। উপসেবার্থে চুরাদি গরীঞ্গার্থে চুরাদি
আন্মনে ক্ষেপার্থে অদস্ত চুরাদি । উন্নত্বনার্থ ভাদি পরীক্ষা
সক সেট্। লাট্ লড্তি। লোট্ লড্ড্ । লিট্ ললাট।
লুঙ্ অলড়ীং। চুরাদি লট্ লাড্রতি, লুঙ্ অলীলড্ং। চুরাদি
আন্মনে লট্ লাড্রতে। লুট্ অলড্টি। উপসেবার্থে লট্
লাড্রতি।

লড়ক (পুং) জাতিবিশেষ।

লড়চড় (দেশজ) বিভিন্ন প্রকার, পরিবর্তন, অভারপ। যথা— কথা যেন লড়চড় হয় না। ইত্যাদি।

लड़न (क्री) गड़-गाउँ। न्यासन, प्रांगन।

ल्फ्न (प्रमंख) यूक वा कृष्टि कार्या।

লড়হ (ত্রি) > মনোজ্ঞ। স্থলর (ত্রিকা") ২ স্থাতিবিশেষ। লড়হচনুদ্র, একজন প্রাচীন কবি।

ল্ডা (দেশজ) ১ যুদ্ধকার্যা। ২ কম্পন।

লড়াই (দেশৰ) যুদ্ধ।
লড়াক (দেশৰ) বোদ্ধা।
লড়াক কুকড়া (দেশৰ) বে সকল কুকুড়া লড়াই করে।
লড়াক কুকড়া (দেশৰ) নড়াচড়া, সঞ্চলন।
লড়ান (দেশৰ) ২ নড়ান। ২ যুদ্ধ করান।
লড়ালড়ি (দেশৰ) পরস্পার যুদ্ধ।
লড়ি (দেশৰ) গাঠি, যাই।

লড়োলে (লাটোল), বড়োদা রাজ্যের বিজ্ঞাপুর উপবিভাগের অন্তর্গত একটা নগর। গাইকবাড়ের শাসনাধীন।

লডড (ত্রি) ছর্জন। (ত্রিকা৽)

माउपु (पूर) माउपु क, माउपु ।

লভড়ুক (পুং) পিষ্টকবিশেষ, চলিত লাড়। গুণ— হর্জন্ম ও গুরু।

"তৈলেন হবিষ পকং ভবেৎ চুর্ণঞ্চলভ্ডুক:।" (শব্দচ •)
স্থত বা তৈলম্বারা পক হইয়া চুর্ণ হইলে লভ্ডুক হয়।

मण्डू (कश्वत, निविनिन्न एक । (निव° ४८। ১। ৯)

লড়্বড় (দেশজ) নড়্বড়, অস্থির, অস্থায়ী।

লাপ্ত (ক্লী) লাপ্তাতে উৎক্লিপাতে ইতি লাপ্ত-ঘঞ্। পুরীষ, চলিত ল্যাড়।

"সমেধমানেন সরুঞ্বাছনা নিরুজবাযুশ্চরণাংশ্চ নিক্ষিপন্। প্রস্থিনগাত্রঃ পরিবৃত্তলোচনঃ পপাত লঙং বিস্জন্ কিতৌ ব্যস্থঃ॥" (ভাগ৽ ১০।৩৭।৮)

লেশুন, ইংলণ্ডের রাজধানী। টেম্নদীর তীরে অবস্থিত। প্রাসাদত্ল্য নানা অট্রালিকায় ও কলকারথানায় এই নগর বিভূষিত রহিয়াছে। [ইংলণ্ড ও র্টেন্দেখ।]

লগুভুঞ্জ (দেশজ) ১ নষ্ট, ধবংস। ২ লুটপাট।

লগু জ (ফরাসী শব্দ) কণ্ডু জ্বাত, ইংরেজজাতি, কণ্ডনজাত।

"পূর্বান্নারে নবশতং ষড়শীতিং প্রকীর্ত্তিতা:।

ফিরকভাষরা তন্ধান্তেষাং সংসাধনাৎ ভূবি ॥

অধিপা মণ্ডলানাঞ্চ সংগ্রামেম্বপরান্ধিতা:।

ইংরেজা নব ষট্ পঞ্চ লণ্ড ক্লান্টাপি ভাবিন:॥"

(মেকতন্ত্র ২৩ প্রকাশ)

ল্কা (ন্ত্রী) লততি বেইরতে বাজমিতি লত পচাছচ্ টাপ্।
শাধাদিরহিত ঋজ্ চাদি, বততী। পর্যায়—বলী, বলি, বেলি,
শ্রুতি। লতা যদি শাধা ও পত্রসমার্ক্ত, হয়, ভাহা হইলে
তাহাকে প্রতালিনী কহে, ইহার পর্যায় বীক্লধ, গুলিনী, উলপ।
(অমর) অমাবক্তার দিনে লতা ও বীক্লধ ছেদ করিতে কাই,
করিলে প্রক্ষহতার পাত্রক হয়।

শ্বশ্ অসিরহোরাত্রে পূর্বং বিশতি চক্রমা:। ততো বীক্ষণ্ম বসতি প্রস্নাত্যর্কং ততঃ ক্রমাং॥

```
লতানন
       ছिनछि वीक्रप्श यन्न वीक्रप्रशस्य निनाक्रसः।
        পত্ৰং বা পাতরত্যেকং ব্রন্ধহত্যাং স বিশাতি ॥"
                                   ( विकूश्र शाव्य भार ।
       ২ শাখা। ৩ প্রিরন্থ। ৪ পূকা, পিড়িংশাক। ৫ অশনপর্ণী।
   🖜 জ্যোতিয়তী। ৭ লতাকত বিকা। ৮ মাধ্বীলতা। ৯ দুর্কা।
   ১০ কৈবর্ত্তিকা। ১১ সারিবা। ১২ বৃহতী। (রাজনি-)
    ১७ च्य्मत्री नात्री, जीत्नाकमाळ।
         <sup>क</sup>नग्राः পরলতাং পশ্রন্ অযুতং যন্ত সাধকः।
         প্রজপেৎ স ভবেৎ শীঘ্রং বিভারা বল্লভ: স্বরং ॥"
                                      (তর্দার খ্রামাদা•)
       ১৪ অপ্সরোবিশেষ। (ভারত ১।২১৭।২•)
       ১৫ শ্বেতসারিবা। ১৬ শ্বেতযুথিকা। ১৭ জাতীফুলের গাছ।
   ১৮ রক্তপটল গাছ। (বৈশ্বকনি॰) ১৯ মেরুর কলা ও ইলা-
   ব্রতের পত্নীভেদ। ২০ ছন্দোভেদ। ইহার চারিটা চরণ। প্রতি-
   চরণে ১৮টী অকর। ১, ২, ৩, ৪, ৫, ৬, ৮, ১১, ১৪, ১৭ গুরু
   ও ভদ্তির লঘু।
লতাকর (পুং) নর্তুনকালে নর্ত্তবীগণের হন্তবিক্তাসভেদ।
ল্ডাকদম ( দেশজ ) ল্ডাবিশেষ ( Urtica naucliflora )
লতাকরঞ্জ (পুং) লতারূপ: করঞ্জা। করঞ্জবিশেষ ( Guilandina
   Bonduc)। হিন্দী-কণ্টকরেজ। সংস্কৃত পর্য্যার-ছম্পর্ণ,
   वीताथा, वज्जवीअक, धनमाकी, कन्टेकन, कूरवत्राकी। हेरात्र
   পত্ৰগুণ-কট, উষ্ণ, কফ ও বাতনাশক। বীজগুণ-দীপন,
  পথ্য, শৃল, গুলা ও বিষনাশক। (রাজনি॰)
ল্ভাকস্ত রিকা (স্ত্রী) লভারপা কন্তুরী, তহুৎ গছহাৎ, ততঃ
  স্বার্থে কন্। লভাকস্ত্রী, সংস্কৃত পর্য্যায়—কটু, দক্ষিণদেশজা।
  ইহার গুণ-ভিক্ত, স্বাহ্ন, বৃষ্য, শীতল, লমু, চক্ষুর হিতকর,
  শ্লেমা, তৃষ্ণা ও মুধরোগনাশক। (পথাপথাবি॰)
লতাগৃহ ( খ্ ক্লী ) নতানিৰ্শ্বিতং গৃহং। নতাৰারা প্রস্তুত
  গৃহ, লতা দারা যে দর প্রস্তুত করা যায়।
न्डाकी (जी) कर्की मृत्री। (देशकनि॰)
লতাজ্বিহ্ব (পু:) নতেব জিহ্বা ষষ্ঠ। সর্প।( শব্দা•)
লতাভূমুর ( দেশল ) ভূমুর বৃক্তেদ ( Ficus vagans )।
```

ল্ভাতরু (পুং) শতেব দীর্ঘতরু: । ১ নারদ বৃক্ষ । ২ ভালবৃক্ষ ।

ৰাজাতাল (গুং) হিন্তানরক, হেঁতানগাছ। (রাজনি॰)

পর্যাার তাক', অথকর্ণ, কুলিক, বছ, দীর্ঘ। (রাজনি॰)

লভানন (গ্ৰং) নৃত্যকাশীন হওকিচাসভেদ।

লতাদ্ৰুম (গুং) লভেৰ ক্ৰমঃ দীৰ্মবাং। লভাশাল, সংস্কৃত

(শক্ষমালা) ৩ শালর্ফ্ব। (ত্রিকা॰) ৪ পুশলভিকাভেদ, ভঙ্গ-

```
লতান্ত (क्री) > পুল। ২ লভার ডগা।
 লতাপনস ( গং ) শভারাং পনসমির কলমত। ফল-লভা
  বিশেষ, চলিত ভরমুজ। পর্যায় চেলাল, চিত্রকল, ছুখান,
   রাজতেশিব, নাটাত্র,। সেহ। (ত্রিকা•)
লতাপকটাডুমুর ( দেশল) ডুমুরভেদ (Ficus hederacen) ম
লভাপৰ্ণ ( গ্ৰং ) বিষ্ণু।
লতাপণী ( ত্রী ) > তালম্লা। ২ মধুরিকা, মউরি। ( বৈশ্বক্রি ।
লতাপুৰা (ত্ৰী) লভাপ্ৰভানা পুৰা। সমুদ্ৰাৰা, চলিত
  পিড়িংশাক। ( শক্ষা• )
ল্ভাপ্রভানিনী (গ্রী) শভাপ্রভানোহত্তভেতি ইনি। শাখা-
  প্রচরবর্তী লতা। পর্যায়—বীরুধ, গুলিনী, উলপ, বীরুধা, বরুধ,
  প্রতানা, কক। ( क्रों। १३)
ल्डाफल (क्री) नजाताः कनमञ्च। भटीन।
        "বান্ত,করকারবেল্লত বার্ত্তাকুন্ত গুভপ্রদা।
        লতাদলক ওতনং সর্বাং সর্বাত্র নিশ্চিতম ॥"
                      ( ব্রহ্মবৈবর্ত্তপু॰ শ্রীক্লকজ৽ ১০২ জ• )
লতারহতিকা (ত্রী ) বৃহতীনতা। (পর্যায়মু৽)
ল্ডাভদ্রে ( ত্রী ) শতয়া ভদ্রা যন্তা:। ভদ্রালী বৃক্ষ। ( শক্ষমান )
ল্ভাভবন ( দ্লী ) লভানিৰ্দ্মিতং ভবনং। লভাগৃহ।
ল্ডাম্উয়া (দেশক) গুলভেদ। (Achyranthee alternifolia)
লতামণি (পং) লভাসদৃশো মণি:। প্রবাদ। ( ख्रिका• )
লতামগুপ ( খং ) লতাগৃহ।
ল্ডামুরুৎ (ত্রী) নতারাং মঙ্গুৎ বস্তা:। পূঞ্জ। ( শন্বর্ত্তা• )
ল্ভামাধবী (জী) শতাপ্রধানা মাধবী। মাধবীলভা।
লতামাল ( দেশৰ ) শতাবিশেষ ( Uvaria Fornicata )।
লভামুগ (পুং) শাখামৃগ, বানর।
লতাম্বন্ধ (রী) শনাভেন।
লাভায়ন্তি (জী) লভা বটিরিব। মন্ত্রিটা। (পলমা°)
लाजायातक ( ११) नजाबार याव हैव यक कन्। धावान।
লতারস্ম (পুং) শতেব রস্মা যন্ত। সর্প। (হারাবলী)
ল্ভার্ক (পুং) লতা অর্ক ইব তীত্রা বন্ত। হরিৎপলাও,
  তুক্রম। (অমর)
লতালক (পুং) হবী। (বিকা°)
লভালয় ( পুং ) শভানির্শ্বিতঃ আনর:। শভাগৃহ।
ল্ডাবলয় (পুং) > শতাগৃহ। ২ বিনি হতে ৰদয়াকারে গভা
  জড়াইরাছেন।
লতাবুক্ষ ( পুং ) শলকী বৃষ্ণ । ( রাজনি°.)
मुलाट्यके ( प्र ) मण्डाबः चारवाडी विडेक्ष क्या वाक्रमञ्जूकात
  রতিবন্ধের অন্তর্গত ভূতীয় প্রকার রক্তিবন্ধ।
```

লভা নামে প্রসিদ্ধ।

चानिक्सरका।

"বাহভ্যাং পানবৃগ্যাভ্যাং বেইনিক্স ক্সিন্ত রমেও।

গর্লিকতা চনং বেচুনী গ্রভাবেটোগ্রেক্সচেতে এ" (রতিমধ্রী)

২ পর্যতবিশের। এই পর্যক্ত বার্থনাগরীর দক্ষিণদিকে অবহিত।

"দক্ষিণভাং লভাবেটা পালবর্গে বিরাজতে।
ইন্তকেতৃঃ প্রতীকাশং পালিকভাং তথা কুপঃ ॥" (হরিব° ১৫৫।১৬)
লভাবেন্টিভ (পুং) ১ লভাবেটা। ২ আলিকনভেদ। (এ)
০ লভাবেরা বেটিত।

मजारवर्ष्टिकक (क्री) नजारवन व्यष्टिकः व्यक्तिः यद्य । कन्।

ভিত্ত কং পীড়িতকং সতাবেষ্টিতকং তথা।' (শন্মাণ)
লতাশস্থ্য প্রে প্র) সতাশালবৃদ্ধ। (অদ্ধাণ)
লতাশন্থ্য প্রে) শালবৃদ্ধ। (শন্ধ্যপ্রণ)
লতাশন্থ্য প্রে) শালবৃদ্ধ। (শন্ধ্যপ্রণ)
লতাশিল, নামরুপের অন্তর্গত একটা গিরি। (ভবিষ্যব্রন্থ ওচহচ)
লতালাধন (রু) সভরা সাধনা। তর্জ্যেক সাধনবিশেষ।
এই সাধনের প্রধান অধিকরণ স্ত্রী, এইরন্থ ইহাকে সভাসাধন
করে। এই সাধনের বিষয় তত্তে বর্ণিত হইরাছে—এই
সাধন করিতে হইলে একটা স্ত্রী আনিরা প্রথমে যথাবিধি
ইউদেবীর পূলা করিরা ঐ স্ত্রীর কেশে শত, কপালে শত,
সিন্দুরুর্গতিশ শত, ছই তনে চই শত, নাভিবেশে শত এবং
ঘোনিলেশে শতবার ইউম্ভ জপ করিবে, পরে উথিত হইরা
প্রায় তিনশত জপ করিতে হয়। এইরুপে সহম্রন্প করিবে
ইউম্ব সিন্ধ হইরা থাকে।

অভপ্রকার—মহারাত্রিতে একটা অভুমতী নারী লইরা তাহার বােনিদেশে ইউনেবতাকে পূজা করিয়া লগ করিতে হইবে, এই-রূপে তিন দিন পূজা ও লগ বিধের। তিনশত করিয়া লগ করিতে হর, পর পর দিবস হইতে ৬০ করিয়া অধিক লগ বিধের। গরে চক্রবান্ত্রে অটোত্তর শতলপ করিয়া নবপুশাললি দিয়া পুনয়ার আটোত্তর পত লগ করিতে, তৎপরে পূর্বাহৃতি দিয়া আবার আটোত্তর শত লগ করিতে হইবে। এইরূপে লগানি করিলে ইউমর সিভ হয়। এই মত্রে সিভি লাভ করিলে ধনবান্, বলবান্, বাা্মী এবং বােবিৎদিগের প্রির হয়া ধাকে।

শ্বভারাঃ সাধানং ৰক্ষ্যে শৃথ্য হরবারতে ।
পাতং কেবে পাতং ভাবে পাতং বিন্দু রুমগুলে ॥
গুনহন্দ্রে শতহন্দং পাতং নাতৌ মহেবরি ।
পাতং বোনৌ বহেশানি উপার চ শভরেরন্ ॥
এবং লশশতং অস্ত্র্যা সর্বানিতীধরো ভবেৎ ॥
ব্যাপ্তাং সংগ্রবজ্ঞানি সাধানং ভূবি ব্রুল্ডন্ ।

রজোহধন্বাং সমানীয় তপ্ৰোনো বেইজেবতাম্ ।
প্লবিজা মহারাজৌ ত্রিনিনং প্লবেক্সফুম্ ।
শত্রেরঞ্চ বট্ ত্রিংশদধিকং প্রত্যহং কপন্ ।
জততাং নরভিঃ পূর্কং চক্রবজ্যে জপেন্বুরঃ ।
জততাং নরভিঃ পুরুপ্রেলেটোত্তরং শতম্ ।
ডতঃ পূর্ণাছতিং দল্পা জপেনটোত্ররং শতং ।
ধনবান্ বলবান্ বাগ্মী সর্ক্রোধিৎপ্রিয়ন্তরঃ ।
বোড়লাহেন চ ভবেৎ সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ ॥"
(মারাজ্ঞ ১২ল পটন)

এই সাধনের বিষয় জন্তনাকরে ১৬শ পটল এবং গুপ্ত-সাধনতত্ত্ব এর্থ পটলে বিশেষ ভাবে বর্ণিত হইয়াছে। বাছল্য-ভয়ে তাহা জার লিখিত হইল না।

লৈডিআম (দেশৰ) আমলতিকা (Willough bein edulis)।
এই লডার বে আমফল উৎপন্ন হয়, তাহার আবাদ বুক্তর আদ্রের
ন্তার নতে।

লভিকা (স্ত্রী) শতা।

"ইয়ং সন্ধা দ্রাদহম্পগতা হস্ত মলয়াং-ভদেকাং দদগেহে বিলয়বতি নেবামি রজনীম। সমীরেণোক্তৈবং নবকুস্মিতা চৃতগতিকা-ধ্নানা মুর্ধানং নহি নহি নহীত্যের কুক্তে ॥" (উভ্ট)

লাভু (পুং) না-কড় (উণ্ ১)৭৮)
লাভোলগম (পুং) নভাষা উলাম:। অবরোহ। (বিকা+)
লাভিকা (বী) নত-মাতে (কৃতিভিনিনতিভা কিং। উণ্
অ১৪৭) ইতি তিকন্টাপ্। গোধা। (উজ্জান)

লেখিল্লা, যুক্ত এদেশের গালিপুর জেলার অন্তর্গত একটা গগুগ্রাম।
কাষানিলার > মাইল দক্ষিপূর্বে অবস্থিত। এপানে প্রাচীনকের
নিদর্শন স্বরূপ ২৬ ফিট্ উচ্চ একটা স্বস্তু আছে। ঐ ক্যন্তের
কিরোদেশ নানা শিরনৈপ্যাপুর্ণ। যাখার বে ছইটা নারীমুর্তি
হাপিত ছিল, তাহা ভগ্ন হওরার একণে স্বস্তের পার্ছনেশে
রক্ষিত হইরাছে।

লদ্মী (ঝী) একজন বিছ্মী শ্লীকবি।
লদাক, কাঝীরের পূর্বাংশভিত একটা প্রদেশ। মৃহারাজের
অধীনস্থ একজন শাসনকর্তার হারা পরিচালিত। [লাদক দেখ।]
লমী (দেশজ) ননী, নবনীত, মাধন।
লদ্মীর, যুক্তপ্রদেশের দেহ্রাল্ন জেলার অন্তর্গত একটা শৈলা-

প্রদার, যুক্তগ্রেণের বেব্রাদ্ন জেলার অন্তর্গত একটা লৈলাবাস। এই নগরে ইংরাজরাজের একটা হাউনী আছে।
ন্যুল্ণুট বইতে ৭৪৫৯ কিটু উচ্চ, হিমালবের নাহলেশে অবস্থিত।
অক্ষা ২০০৭ বিভাগ উচ্চ একা ত্রাদিও ২৮% ৩০% পুঃ। সম্রানী
শৈল্যালার সন্তর্গত হইবাধেও ইহা ক্ষক্ত ক্ষাইনেক মালিক্লেটের

শাসনাধীন। এই বধর ১৮২৭ খুঠাকে নীড়িত ইংরাজ-সেনার
বাংঘাবাসরপে পরিগণিত হব। দক্ষী নগর ও লাজার
এখন একটি নগর বলিয়া গণ্য। [বস্থাী দেখা]
লালোরা, ব্জ প্রদেশের গাহারাশপুর জেলার ক্ষুকী তহলীদের
অন্তর্গত একটী নগর। ক্ষুকী হইতে ২৪০ জোশ দক্ষিণপুর্বে
অবহিত। অক্ষা ২৯°৪৮ তঃ এবং জাবি ৭৭°৪৮ ২৫ পৃংঁ।

অন্তৰ্গত একটা নগন । ক্ষচুকী হইছে ২৪০ ফ্ৰোণ দক্ষিণপূৰ্বে অবস্থিত । অকা° ২৯°৪৮ জঃ এবং জাঘি° ৭৭°৪৮/২৫ পৃং"। এই নগনে পরিধা-পরিবেটিত একটা প্রাচীন দুর্গ আছে। উক্ত পরিধা এখন নগনের আবর্জনা বারা ভরাট করা হইছেছে। ছর্ক্ব সর্কার রামদরান সিংহের ভলর লাতীর আত্মীয় বজনের এধানে বাস। সিপাহী বিজ্ঞোহের সমর ঐ গুজুমুগণ বিশেষ অন্তঃচার করার নগর ভত্মীভূত করিরা দেওয়া হয়।

ব্ৰুপ্, ভাৰ, কথন। ভৃষি পরদৈ সক সেট্। নাই ক্লাভি।
লোট্ লণড়। লিট্ ললাপ। পৃঞ্ অলাপীং, অলপীং।
লুট্ লণিডা। লুট্ লণিয়াডে। সন্ লিলপিয়াড। যঞ্
লালপাডে। ৰঙ্লুক্ লালিঙা। লিচ্ লালয়ভি। লুঙ্
অলীলপং। অপ + লপ = অপলাপ, অপহন। আ + লপ =
আলাপ, আভাৰণ। অহ + লপ = অহলাপ, প্নং পুনং হ্বন।
প্ৰ + লপ = প্ৰলাপ, নির্ধক ক্থন। বি + লপ = বিলাপ,
প্রিদেবন। লং + লপ = সংলাপ, প্রম্পার কথন। আই + লপ =
অম্লাপ, বারবোর ক্ষম।

লেপন (क्री) লপ্যতেজনেনেতি লগ করণে লুট্। ১ মুখ। ভাবে লুট্। ২ ভাবণ, কথন।

°প্ৰকটরত্তি রাগমধিকং লণসনিদং বক্তি মাণসাহচতি। প্ৰোণরতি চ প্ৰতিপদং দৃতিককত্তেব ৰয়িতভ ॥"

(আর্যাদপ্তদতী ৩৮১)

'গুৰুজেৰ দ্বিত্ত লগনং গভাৰণং গলে বৰনন্' (ভট্টীকা)
লাপিত (ক্লী) লগ-জাবে জঃ। ১ কন। (ব্লি) ২ কথিত।
বাগিতমভান্তীতি জচ্ । ৩ বচনবুজ। (অথর্ক- ৪:০৬।৯)
লাপিতা (ব্লী) দালি কা নাম পঞ্চীকেন। (ভারত লানিপর্ক)
লাপেটা (বেশল) পরন্ধারে সংগ্রহ করিরা বছন। সহবুজ।
লাপেটা (বেশল) করির চিত্রকার্যাবুজ বিদানা বিশেব।
লাপেটাকা (ব্লী) পবিত্র ক্রীর্থান্ডেন। (ভারত বনপর্ক)
লাপেত (পুং) বালরোধের অথিকানীবেষভান্তেন।(পার্যার্যাক্ত সালিকা) (ব্লী) গাভজবাবিশেব, লালী।

अभिकार गर्निया वृद्धीर मर्क्यार नविन किरनर ।

ভবিৰ্ কনীক্তি জড়েৎ লক্ষ্মরিস্থিক। । নিহৈনা নজিকা ক্ষাভা ক্ষান্তক ক্ষান্তক্

্পজিকা কৃষ্ণী পুৱা বন্ধা শিক্তবিদ্যালয় ন' (ভাৰতা -) প্ৰস্তুত প্ৰশালী—কৃষ্ণ শ্ৰমিকা (গ্ৰমা) ক্ষিত্ৰসকলে জাজিয়া হুছে শর্করা ও কৃষ্ট সমিতা নিজেপ ক্ষিত্রত কৃষ্ট্রে । পরে উন্থা আল নিরা বনীভূত ক্ষলে ভাষাতে লগক ও প্রবিচাধি নগরা নিতে হয়, অনক্ষর ইহা অসির ক্ষলে মালাইকে হয়। এইকাণ প্রণানীতে প্রস্তুত ক্ষলে তাহাকে লগিকা করে। গুল-কুছেগ, বলকর, বৃহা, পিড ও কার্নাদক, বিশ্ব, প্রেরবর্ত্তক, বলপাক ও কচিকর। এই পাত্রবাদক প্রক্রপার মোহনভোগ কলা রাইতে পারে। মোহনভোগ ক্লী নিরা প্রস্তুত ক্রিতে হয়। লালী সম্ভিত (গোধুসচূর্ণ) নিরা প্রস্তুত ক্রিবার বিধান আহে।

লম্পু (রী) বূর্চ, দাড়ি (ছাগলপ্রকৃতির)। (ছালো°রা° ১৬/১/৩৮) লম্পু মিন্ন (বি) কূর্চবৃক্ত (ছাগামি)।

ল্ব, ১ এংশন। ২ শক। জাকি আজনে সক পকাৰে জক দেই। এই ধাজু ইনিং, লাবি নৰধাজু লট্ নৰভো নাট্ নৰজভি তে। লাট্ নৰজভি । পিচ্ নৰজভি তে। লুড্ অলাবিট। আজন রণ । বি + লব = বিলব, বিলবকরণ। আ + লব = আজবন, আজার। লক্ক (ত্রি) লভ কর। প্রাপ্ত, বাহা লাভ করা হইরাছে।

"অলক্ষেব নিজেত লক্ষ্য রচ্ছেবশক্ষাৎ। ব্যক্তিং বর্ত্তাং লম্যক বৃদ্ধ তীর্তের নিজ্জিপ। ।" (ভিতোপ') ২ উপার্জিত।

লক্ষ্য (বি) প্রাপ্ত । বিলি গাইরাছেন।

লক্ষকাম (ত্রি) অভীউনিছ। বাহার বাহা পূর্ণ হইরাছে। লক্ষকীর্ত্তি (ত্রি) বশবী। অভিভাবান্।

ল্**জাচেত্য (ত্রি) প্**নঃপ্রাপ্তচিত । বিনি প্নর্কার জানগাড করিরাছেন ।

लक्कम्मन् (वि) व्यक्तिकः। सम्बद्धनः।

লব্ধনত্ত (পুং) বাক্তিবিশেষ। (ক্থাসরিৎবাঁ খলচ)

नक्ष्यन (बि) धनवान्।

লক্কনামন্ (বি) नकः माम यत्र । খ্যাতনামা, বিখ্যাত ব্যক্তি ।

লক্ষমাশ (গ্ৰং) প্ৰাপ্ত বস্তৱ দাশ । শূৰ্বধনের বিনাশ। লক্ষপ্রতিষ্ঠ (বি) লক্ষা প্রতিষ্ঠা কেন । বিনি প্রতিষ্ঠা লাভ ক্ষিয়াছেন, বিধ্যাপ্ত ব্যক্তি।

ল্বক্সশন্ত্রন (জি) সংগাত্তে অর্ণণ। 'লব্বত ধনত সংগাত্ত্র প্রতি-পাদনম্'(মতু ৭।৫৬ কুরুক)

লক্ষলকে (ত্রি) অভিসৰিত বন্ধ প্রাপ্তি। যিনি নাজ্য বন্ধ লাভ করিবাছেন। শরবোর ভেগনার্থ প্রাপ্ত বানারি

मञ्जयद्भ (जि) मकः वरता स्पर्म। विनि वर्षमाण विज्ञारकम, वत्रशासाः

লক্ষবৰ্ণ (মি) গৰা বৰ্ণা বৰণাংদি কেন । "পশ্চিত্তৰ "" "কলু সৰমণি সৰ্বৰ্ণভাক্ ডং বিজ্ঞান কুমৰে সংগ্ৰাক্ষণম্ব"(রমুব"১৯২১) লক্ষবিদ্য (ত্রি লক্ষা বিশ্বা বেন। পঞ্জিত, বিনি বিশ্বালাত ক্ষিরাছেন। লক্ষব্য (ত্রি) লভ-তব্য। লাভার্ছ, লাভের উপযুক্ত। "লক্ষব্য-বর্ধং লভতে মনুষ্যঃ" (হিজোপাদেন)

लंकभक (जि) गक्नाम। शाख।

লব্ধসিদ্ধি (বি) শন্ধা সিদ্ধিং বেম। বিনি সিদ্ধি লাভ করিরাছেন। লব্ধা (ব্রী) লভ-জ-টাপ্। নারিকাভেদ।

'ধণ্ডিতোৎকটিতা দল্ধা তথা প্রোবিতভর্ত্বা। কদহান্তরিতা বাসসজ্ঞা স্বাধীনভর্ত্বা ॥' (জটাধর)

এই লকা শংল বিপ্ৰলকা বুঝিতে হইবে: [বিপ্ৰলকা দেখ]
লকা সুষ্ঠা (মি) লকা অমুক্তা বেন। যিনি অমুক্তা লাভ
করিয়াছেন।

লক্কাবকাশ (ত্রি) লক্ক: অবকাশ: যেন। যিনি অবকাশ প্রাপ্ত হইয়াছেন।

লক্কাবসর (ত্রি) যিনি কার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ করিরাছেন, অর্থাৎ পেন্সনপ্রাপ্ত।

লব্ধি (ন্ত্ৰী) শভ-ক্তিন্। > শাভ, প্ৰাপ্তি। ২ গ্ৰহণ।

লেকোদয় (ত্রি) লক্ষ: উদয়ঃ উৎপত্তির্যন্ত। ১ জাত, উৎপন্ন। (কুমারস° ১।২৫) ২ বিনি সৌভাগ্য অর্জন করিয়াছেন।

লব্ধিম (এ) প্রাপ্ত , উপার্জিত। (ভট্ট ৭।৬৫)

লেভ, প্রাপ্তি, লাভ। ভাদি আত্মনে সক আনিট্। লট্
লভতে। লোট্ লভতাং। লিট্লেডে। লুট্লকা। লুট্
লগ্যতে। লুঙ্জলক, অলপাতাং, অলপত। সন্লিপতে।
যঙ্লালভাতে। যঙ্লুক্লালভীতি, লালকি। ণিচ্লভয়তি
লুঙ্জললভং। আ+লভ আলাভ, স্পান্ধ। উপ+লভ
ভউপলিকি, অহুভব। উপ+আ+লভ ভংগনা। সম্+
আ+লভ = স্পান্, অহুলেপন। বি+প্র+লভ ⇒ বিপ্রলভ,
প্রভারণা, বঞ্না।

লভন (क्री) প্রাপণ।

প্রভাস (প্রং) লক (মতাবিচমীতি। উপ্তা১১৭) ইতি অসচ্। ১ বাজিবদ্ধনরক্ষ্। ২ ধন। ৩ যাচক। (উচ্ছল)

নভ্য (ত্রি) লভ্যতে ইতি লভ (পোরহুপধাৎ। পা ৩০১৯৮)
ইতি বং। ১ ছাব্য। (অমর) ২ লব্বব্য, লাভের বোগ্য।

"নারমান্ধা প্রবচনেন লভ্যোন নেধরা বহুধা-ভ্রুতন।

কমেবৈৰ বৃগ্তে তেন লভ্যক্তিৰ আন্ধা বিবৃগ্তে তন্ং ছাং॥"

ক্ষেবেৰ বৃগ্তে তেন শভাৰত্তৰ আন্ধা বিবৃগ্তে তন্ং স্থাং ॥"
(মুপ্তকোপনি• অহাত)

্লাম্ক (পুং) রমতে ইতি রম (রমেন্নত লোপঃ। উণ্২।৩০) ইতি কুন্রত লজং। ১ বিড্গ, জার, উপপতি। ২ তীর্থশোৰক। (উজ্জ্ব) ৩ বিলাসী।

্লেমান, বোৰাই প্ৰেসিডেন্দীর আন্ধনগর, ধারবাড় প্রভৃতি

বেলাবাসী জাতিবিশেব। চারণ-বঞ্জারি নামে প্রসিদ্ধ। রাজস্তনার মারবাড় প্রদেশ হইতে এধানে আসিরা বাস করিরাছে। ইহা-দের মধ্যে চাবন হোলকর, মধু, পবার, রতবার ও সিল্পে প্রভৃতি উপাধি দৃষ্ট হর। বর ও পাত্রপক্ষের উপাধি সমান হইলে ইহারা বিবাহ দের না, ভব্তির বিবাহ সম্বন্ধে আর কোন বাধা নাই। ইহারা হিন্দু, সকলেই টিকিরাখে, কিন্তু বেশভূষা ও পরিছেলাদি বড়ই অপরিছের। এমন কি, সপ্তাহে হুই বারের অধিক পরিধেয় বস্তু ত্যাগ করেন না।

গোকুলাইমী: শিমগা, দশেরা ও দিবালী উৎসবে ইহারা বিশেষ সমারোহ করে। বিবাহকার্য্যে গ্রামস্থ যোবীরাই ইহাদের পুরোহিতের কার্য্য সম্পন্ন করিরা থাকে। বিবাহ ও অস্ত্যোষ্টি ভিন্ন ইহাদের মধ্যে জার অক্সতম সংস্কার নাই। বিধবা-বিবাহ ও বহুবিবাহ প্রচলিত জাছে। সন্তানাদি হইলে প্রস্তুতির ৪০ দিন অশোচ থাকে।

বিবাহসম্বন্ধে পাকা করিবার সমর বরের পিতাকে কন্সার হত্তে ১০ হইতে ১০০ টাকা, জামা, কাপড় বা ঘাঘরা ও ১টা হইতে ৪ টী য়াঁড় দিয়া থাকে এবং কন্সার পিতার নিকট হইতে বর একথানি উড়ানি ও পাগড়ী পায়। বিবাহের দিন বর क्छानदा योत्र, वत्रयोज मदन योत्र ना। दक्वन এक्टी वा ছইটীমাত্র লোক সঙ্গে যায়। যাত্রাকালে প্রথামত বরকে ধর্ম-গুরুর প্রণামী স্বরূপ ১টী টাকা উড়ানির কোণে বাঁধিয়া লইতে হয়। বস্তুত: তাহাদের কোন ধর্ম গুরু নাই, উহা সংস্থারমাত্র। বর কল্ঞাগৃহে উপস্থিত হইলে কল্ঞাকর্তা পাত্রকে সম্ভাষণপূর্বক গৃহে বসার এবং ব্রাহ্মণ আসিরা সম্প্রদান কার্য্যে ব্রতী হন। বথারীতি সিন্দুরদানাদি সমাপ্ত হইলে দেবতা ও গুরুজনদিগকে প্রণাম করিয়া বর ও কন্তা বাসরগৃহে গমন করে। তদনন্তর উপস্থিত আত্মীয়েরা নাড়ু ভক্ষণ করিয়া গৃহে যায়। বর খণ্ডরালয়ে গুই তিন মাস বাস করে। বর পিভৃগৃহে সন্ত্রীক উপস্থিত হইরা বিবাহের ভোল দে**র**।

বিবাহিত পূরুষ বা রম্পীর মৃত্যু হইলে ইহারা শব দাহ করে।
অবিবাহিত ব্যক্তিমাত্রই সমাহিত হইরা থাকে। অন্ত্যেষ্টিক্রিরা
সমাপনান্তে সকলে লান করিরা বল্পরিধানপূর্কক গৃহে
ফিরিরা আইসে। মৃত্যুর পর আজীর অঞ্চনের অশৌচ হর
না। তৃতীর দিনে আতিকুটুবের ভোজ হর। কোনরুপ
শ্রাহাদি হর না। সামাজিক কোন বিবরের মীমাংসা করিতে
হইলে আতীর পঞ্চারতের হত্তে তাহা নির্কাহিত হইরা থাকে।
লামেতাঘাট, বর্জনা জীরবর্জী নৈলভেছ।

লম্ভন্, কাব্দের অন্তর্গত একটা প্রবেশ, সংস্কৃত নাম সম্পাক ও সুক্ষা (বেশ্বিদী) [সম্পাক বেখা]

লম্ব (গ্ৰং) জাতিবিশেষ। লম্পক (শুং) किन-সম্প্রদারভেদ। [শৈল দেখ।] লম্পট (ত্রি) ধিড্গ, উপপতি। "অংথতরাত্রবীন্মৈবং যন্তপি স্ত্রীরু লম্পট:। তথাপি ন স হৃঃথেহতিল্লী কা ভাতথাবিধঃ ॥"(কথাসরিৎ ৪৭।১০১) ২ আসক্ত। "যথৈহিকমুশ্মিককামলপাট: স্থতেবু দারেবু ধনেবু চিস্তরন্ ॥" (ভাগ • ১।১৫ জ •) ৩ কামুক, লোজা। क्ष भा (जो) > मगत्राज्य । २ जनभग्राज्य । লম্পাক (গুং) ১ লম্পট। ২ পুরাণোক্ত দেশভেদ। অপর নাম সুরও। (ভারত দ্রোণপর্ব ১১৯।৪২) ভারতের উত্তরপশ্চিম দীমান্তে অবস্থিত ও কাবুলের অন্তর্গত বর্তমান লম্খন প্রদেশ ে প্রানীম লম্পাক জনপদ বলিয়া অনুমিত হয়। ৩ পদ্মনাভক্ত **স্বরণাক্তভ**দ। **अञ्ञा**ष्टिह (পুং) প্টহবান্ত। (হারাবলী) লম্ফ (পুং) প্লুডগজি, চলিত লাক্। লম্ফ বান্ফ (দেশজ) লাফান ঝাপান, অভিশন্ন আন্দালন করা। लम्फन (क्री) नाकान। লম্ব (পুং) नषण्ड ইতি नবি অবস্রংসনে অচ্। ১ নর্ত্তক। ২ অঙ্গ। ৩ কাস্ত। ৪ উৎকোচ। প্রামৃতং ঢৌকনং লম্বোৎকোচঃ কোশলিকামিষে। উপাচ্চারঃ প্রদা নন্দা হারো গ্রাহ্হারনেহপি চ ॥' (হেম) ৫ অঙ্গভেদ। 'চরলম্বর্গমাভেদা: পাটকোহকাদিচালনে।' (भन्ममाना) 🗢 ক্ষেত্রাদিতে লম্বমান রেথা বা স্ত্র। ত্রিভূ**জক্ষে**ত্রের লম্মানরেথা, লব্দলরেথার উপরে ঠিক থাড়া হইরা যে রেখা থাকে। °বিভূজে ভূজরো যোগন্তদনন্তরগুণোভূবাহতো লক্ষ্যা। ষিস্থা ভূক্রণযুতা দলিতাবাধে তল্পো: ভাতাং 🛭 चार्वाशीज्ञकराजात्रस्त्रम्गः व्यकावराज गयः। नम्खनः ভূমार्कः म्लटेः जिज्ञ्दक कनः छवित ॥" (नीनावर्जी) ৭ দৈত্যবিশেষ। (হরিবংশ ৪৩ । ২২) (ত্রি) ৮ দীর্ষ। "দূরতঃ শোভতে মূর্থো লব্দাটপটারুডঃ। তবিচ্চ শোভতে মূর্বো বাবং কিঞ্চির ভাষতে ॥" (চাপকা) > नवमान। "পাডেডাছরমংসার্শিতলমহার:।" (রবু 🗣। 👀) > ब्लाजित्वाक विव्वत्त्रथात्र नमोखन्नत्त्रथात्कः। >> मृनि-্রেডদ i ১২ জ্যোতিষোক্ত গ্রহদিগের গতিভেদ। क्रम्बक (পুং) नव-वार्थ क्व् । > नव । २ वहतिनव । ৩ জ্যোতি-

लंखकर्न (पूर) गत्ने कर्गी यक । अहात्र । २ व्यक्तिपृष्ट्य ।(विक्रिती) ও রাজস । ৪ হত্তী। ৫ খেনপন্দী। (রাজনি[°]) ও শক্তি ধরগোর। "লম্বৰ্ণ: শৃশ: শৃলী লোমকৰ্ণো বিলেন্দ্ৰ:" (ভাৰঞ্জী) नषः कर्षः कर्षशं । १ मीर्षः भावः। (बि) ৮ छन्तृकः, मीर्ष कर्विनिहे । "লবোদৰোঁ। সৰক্ৰীস্তথা লৰপৰোধরা: ॥" (ভারত ৯।৪৬।৩৪) লম্বকেশ (পুং) লবঃ কেশ ইবাপ্রভাগো বস্ত। দীর্ঘাপ্রবৃক্ত क्र्भमत्र विष्ठेत्र। "छि६एकरमा छरवर उन्हा नवरकमन विहेतः। निक्तिगावर्खस्य जना वामावर्खकः विदेतः॥" (नःकान्नजन) विवाहकारण वरतत छेनरवनरमत कछ विहेत्र विर्कृ इत्र। क्छक् अनि कूना नहेन्ना खाहान वाधारण नामायर्ख नामिन्छन (आफ़ाइट्रेट्न) त्वहेन कतिया व्यक्षश्री निरम्भः विरक नवमान कतित्रा निरम विदेत रुत्र। [बिहेत रुप] (बि) २ शीर्परक्मात्रुकः। লম্বকেশক (থং) মুনিভেদ। লম্বজঠর (অ) গৰোদর, লবা পেটা। लश्वकिञ्च (वि) बाक्तमण्डन। লম্বজ্যা, লম্বজ্যকা (ত্রী) জ্যোভিবোক্ত জ্যা-রেখাভেদ। Sine of co-latitude लखन्छ। (जी) नवा पछा हैव कनानि वर्णः। > रेनःहनी भिन्नगी। (त्रांब्यनि) (बि) २ बृहक्तननविभिष्ठे। **मध्य**न (क्री) नवल्ड हेडि नव-न्राष्ट्र। > नास्थिनविक क्रिकानि, নাভিদ্যবিত্তার, পর্যার ললস্তিকা। (অমর) ২ অবলম্বন, আশ্রর। ও ঝোলান, দোলন। ৪ আশ্ররগ্রহণ। (পুर) नप-न्। ६ करु। (भन्ति°). লম্বপয়োধরা (ত্রী) > गरमान छनग्रूक জী। ২ কলাছচর মাতৃভেদ। লন্থবীজা (জী) नदानि वैज्ञानि रक्षाः। সৈংহণী/পর্মণী। (রাজনি°) लश्चमान (वि) नव-भानह्। नवात्रमान वश्व। लखत (प्रमञ) > व्याप्रवत । २ हैश्ताबी number मस्त्रत व्यवस्थ । मश्रम्भिष्ट् (वि) नदा किक् रकः। विभूगनिष्यः। লন্ধ। (ব্ৰী) > শন্ধী। ২ গৌরী। ৩ ভিজতুৰী। (মেদিনী) ৪ দক্ষকভাবিশেব। (হরিবংশ) ৫ স্থাৰরবিবের অন্তর্গত পত্ত-বিব। (স্ক্রভক্র°) । হিমালর্ক্সা। "ততন্ত্ৰাক্ৰচ: প্ৰস্থা দেবীম্বামখাত্ৰবীৎ। গছৰ নৰে শীখং খং বাণ সংরক্ষণং কুক ॥" (হরিবংশ) (रमनम) ७ मीर्च। লম্বাংগ, ল্যোভিৰোক সকাংশ রেখা বিশেষ। ইংরা**নী**তে हेहारक Complement of latitude वा Co-latitude बरन।

(बाक शक्तमत्वांग।

लखाई (प्रत्य) नवमान । वाकार ।

লম্বাই চৌড়াই (নেশৰ) > দৈৰ্ঘ্যে আছে বিছত। ২ বেশী বাগাড়ৰা

লম্বাকাটা ছরিণাবাটানা (সেশৰ) ফুডজে। লম্বাক (পুং) মূনিজে।

লন্থানটীজাম (দেশৰ) বৃক্তেন। (Eugenia claviflora) লন্থানি, বোৰাই প্ৰেদিডেন্সীয় ধারবাড়জেলাবাদী ভ্ৰমণশীল জাতিবিশেষ।

লেন্ত্ৰামুধা (বেশন) বাহার মুধ একটু লবা অর্থাৎ নীর্ঘ।
লন্ত্ৰালন্ত্ৰি (বেশন) সোলাক্ষন। সমান লবমানভাবে।
লান্ত্ৰিকা (বী) লবতে বা লবা-ধূল্টাণি অত ইক্ষ। তাল্
ক্রিকা, চলিত আলন্তি, পর্যার ঘণ্টিকা, স্থান্তবা, গলগুণ্ডিকা,
অলিন্তিকা, অলিন্তিকা। (প্ররম্ভা°)

मिकारकांकिमा (बी) (मवजारक्म।

लिम्निन् (वि) नवयुक्तः। नविछ।

লম্বিত (ত্রি) শব-জ্ঞা ১ অংশিত।

"স্বদ্ধরচুষনলবিতকজ্ঞলমূজ্ঞলর প্রিরলোচনে।" (পীতগোবি° ১২। ১৮) ২ মাংস। বৈষ্ণকনি॰)

লিছিয়া, পঞ্জাবপ্রদেশের বুসাহর রাজ্যের অন্তর্গত একটা গিরিপণ।
কুনাবর হইতে ক্রমণ: উত্তরে হিমালরপৃষ্ঠ অতিক্রম করিরা
গিরাছে। অক্ষাণ ৩০°১৬ উ: এবং জাঘি৽ ৭৮°২০ পূ:। এই
স্থান সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৭ হাজার ফিট্উচ্চ।

লম্বুক (পুং) > নাগভেদ। ২ জ্যোতিবোক্ত পঞ্চল বোগ। লম্বুষ্| (স্ত্রী) সাতনল হার।

লেছোদর (পুং) লখম্দরং বহা। ১ গণেশ। (অমর) ২ নৃপ-বিশেষ। (ভাগবত ১২। ১। ২২) (ত্রি) ও ঔদরিক, পেটুক।

"ভতো লখোদরেণেত্য পুংসারোপিতবাছক:।

সম্পাদিত: স যাতত্ত্বনং কেশরিণীক্বতে ॥''

(কথাসরিৎসা° ৩• । ১০২)

লেন্থেন্ঠি (গুং) লখ ওটো যক্ত, ওখোঠনো: সমাসে ইতি অকার-লোপেন সারু:। > উট্ট। (রাজনি') (ত্রি) ২ লখমান ওঠবুক্ত। ৩ ক্ষেত্রপাল দেবতাবিশেষ।

"বুগান্তো বাহুককাথ সংবাচী। বসবন্তথা।"

(প্রয়োগনার ব্দেত্রপানপ্র°)

লক্ষেতি (পুং) > উট্ট। (জিৰা°) (জি) ২ দীৰ্ঘ ওটবিশিষ্ট। লক্ষ্য (পুং) > দাভ।

লম্ভক (ত্রি) প্রাপক।

লক্তন (ক্নী) গভি গভধাড় লুটে। ১ প্ৰতিগভ। ২ ধানি। ্ও লাহনা।

ল্ক্তা (বী) লঙি লড-অচ্ টাপ্। বাটপৃথলা। (হারাখণী)

লস্তাড়ি, দান্দিণাত্যের আর্কটকিভাগবাসী এক প্রমণশীল জাতি। লস্কুক (বি) নিত্যগ্রাহী, যে প্রতিদিন প্রহণ করে। লয়, গতি। ভাদি আন্তনে সক' সেট্। লট্লয়তে। পুঞ্

লয়, গতি। ভাগি-আছেনে°সক°সেট্। লট্লয়ডে। কুঙ্ অসমিট।

ল্বে (পুং) নী-আচ্। > বিনাশ। ২ সংশ্লেষ। ৩ প্রানয়।
বেদান্তসারে নিখিত আছে যে, অথও বস্তু অক্সখন করিয়া
চিত্তবৃত্তির বে নিজা, তাহাকে লয় কচে।

"অখণ্ডবন্ধবদম্বনেন চিত্তবৃত্তেনিদ্রা" (বেদান্তসা°)

স্বাধিনী-টীকা-মতে—এই লয় হুই প্রকার, প্রথম প্রকার লয় বথা—শমদমাদি জাইটি যোগাহুঠান হারা নির্বিকরক সমাধিতে পরমানন্দকরপ ব্রহ্মে চিন্তবৃত্তির লীনতারূপ যে অবহা, তাহাকেলর করে। অভিশন্ন উত্তপ্ত লোহতলে ক্ষিপ্ত জলবিন্দ্র ক্লায় অর্থাৎ ঐ লোহপাত্রে জলনিক্ষেপ করিবামাত্র তাহা যেরূপ ওক হইরা বার, সেই রূপ বোগালাদির অমুঠানে নির্বিকর সমাধিলাভ হইলে চিন্তবৃত্তির ধর্ম্ম হুখোদি হইতে পারে না। জল যেরূপ লোহাগ্রিতে গুকাইয়া যায়, তত্রপ চিন্তবৃত্তিও পরমানন্দত্রক্ষে লীন হইরা যায়, মতরাং চিন্তবৃত্তিই যথন লীন হইরা গেল, তথন চিন্তের বৃত্তি যে বিকেপাদি তাহা আর উপস্থিত হয় না। মৃষ্ঠাবহার স্থায় আলস্থাদিতে চিন্তবৃত্তির বাহ্ম শলাদিবিষর গ্রহণ করিতে না পারিয়া প্রত্যক্ আত্মম্বরূপে অনবভাসন হেতু চিন্তবৃত্তির যে গুকীভাব, তাহাই দিন্তীয় লয়, তামদিক বে কোন বিকার হারা চিন্তবৃত্তি যথন গুক্ম বা কড় হইয়া থাকে, তথনই এই লয় হয়।

৪ তৌর্যাত্রিকের সাম্য, নৃত্য নীত ও বাছাদির যে সমতা তাহাকেও লয় কছে। যে খলে নীতাদি সমতা পার, নীতবাঞ্চাদির তাল বা সমান সময়। সলীতদামোদরে দিখিত আছে যে, হুদর, কণ্ঠ ও কপাল এই তিনস্থলে লয়ের ছিতি। কোন কোন পশুতের মতে, লয় ৪০ প্রকার, ভগবান্ একমাত্র লয়ের বশীভূত এবং জনার্দন ইহাতে লীন আছেন।

লর যথা—ছিপদী, বলতিকা, ঋল্লিকা, ছিরপণ্ডিকা, ৰামক্রব, ছিরা, থগুধাবা, ফড়কক, অন্তটিকা, কলতিক, থপ্তক, থরিক, চতুরত্র, অর্জচতুরত্র, নর্জক, আত্র, বল্লী, উলালনা, অবক্রষ্টা, নল্মদটী, কাদৰ, চর্কারী, বল্লী, মিত্র, অর্জবনিতা, অতিচিত্র, সময়, বলিত, অর্জদল, আবিদ্ধ, টঙ্কবক, চিত্র, বিচিত্রিক, আত্রী, বিক্তথাবা, মুকুল, বিলোলক, রমণীর ও করকন্টক, এই ৪০ প্রকার লয়। (সলীতদামোঁ

অব নরা: ক্রিছিভি: কর্তাহিভি: কণালছিভিরিভি লয়য়য়:। অপয়ে ড়ৄ—
বিপদী ভাবনভিকা বয়িকা ছিয়বাটিকা।
বামকব্যভব্রি: বঙ্গাবা কর্তৃক্র: ।

(ত্রি) ৫ আবরণায়ক।

"यहां बदायकः नदः ज्यामूहः नदः बद्धाः।

बुद्बाख त्नाक्त्याहाखाः निज्याहिरनयान्य ॥"(कांश >>।२६।>६)

(রী) ৬ লামজক। (ভাৰপ্র°)

জায়ন (ক্নী) > ৰিশ্ৰান, পান্তি। ২ ৰাটা, বিশ্ৰামন্থান। ৩ আশ্ৰন-গ্ৰহণ।

লায়পুত্রী (ত্রী) লয়ত পুত্রীব। নর্জকী। (শক্ষরত্বা^{*})
লয়যোগ (পুং) তত্ত্বাক্তনাধন যোগভেদ। (প্রাণভো^{*} ২৪০।১।১)
লয়লীমজনু, পারভোপাখ্যানোক্ত নারক নারিকাভেদ। ইহাদের
প্রেমের চিত্র অবলঘন করিয়া বাদালা ভাষার ক্রকখানি
গ্রন্থ রচিত হইরাছে।

জ্যাদা, বাজানার ছোটনাগপুর বিভাগের অন্তর্গত একটা দৈল-শ্রেণী। সিংহত্ম জেলা পর্যন্ত পূর্ম্ব-পশ্চিমে বিস্তৃত।

লায়ারস্ত (পুং) লয়ক আরস্তো যাথ। নট। (ত্রিকা॰)
লায়ালন্ত (পুং) লয়মানধতে ইতি লখ-অণ্। নট। (ত্রিকা॰)
লারাবর, মধ্যভারতের ভোপাল এজেন্সীর ধার ও দেবাস্রাজ্যের
অস্তর্গত একটা বিভাগ। ভূপরিমাণ ৩০ বর্গমাইল। ১৮৮০
খুষ্টাব্দে স্থানীয় জায়্পীরদার রামচন্দ্র রাও পোবারের মৃত্যুর পর,
ভাহার ভাতুপুরকে মাসিক বৃত্তিদান করিয়া ঐ সম্পত্তি ধার ও

দেৰাস্রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত করিয়া লওয়া হয়।

লারেক্স (বর্ড Sir John Lawrence Bart. K.C.B) ভারতের একজন ইংরাজ রাজ প্রতিনিধি। ১৮৬০ খুটাকে অকজাৎ ধর্মশালার লর্ড এল্গিনের (Alexander Bruce Earl of Elgin and Kincardine) মৃত্যু হওরার এবং ওহাবী নামক মৃসলমান-সম্প্রদারের বিজেছিতার বড়্যন্ত লক্ষ্যু করিয়া লগুনত্ব মন্ত্রিকাভার ভরজীতচিত্তে মহামতি সরজন লরেক্ষকে ভারতের গ্রন্থির জেনারল ও ভাইদ্রর নিযুক্ত করিয়া পাঠান। তদমুসারে ১৮৬৪ খুটাকের ১২ই আছ্য়ারী কলিকাভার পদার্পণ করিয়া লর্ড লরেকা রাজকার্যাভার গ্রহণ করেন। ভারতে আসিয়াই তিনি

ক্ষতিক। ক্সতিক: বঙ্ধক: বৃদ্ধিকত্ব। ।
ক্ষিতক্ত্মশ্ৰেহ ক্ষত্বশ্ৰেহণ নৰ্তক: ।
আগ্ৰ: বঠু ফালনাবকুটা নক্ষটীতাপি ।
কাৰ্যক্ৰমী বটা মিশ্ৰাহৰ্তনিতা ততঃ ।
আতিচিত্ৰ: সময়ক বলিভোহৰ্তনিতাতো ।
আধিছত ট্যুবক্ততিক্ৰিটিত্ৰকো ।
আতি বিশ্বতালি চুমুক্লাহ্য বিলোক্ষ: ।
সম্পূত্ৰতিক্ৰ ক্ষক্তক্সংক্ৰম: ।
ক্ষাহিংক্ৰ ক্ষক্তক্সংক্ৰম: ।
ক্ষাহিংক্ৰিব প্ৰোক্ষা লয় বিশ্বাহন: ।
সংগ্ৰহণ ক্ষেত্ৰ ক্ষাহন্ত বাবে নাৰ্যাহন: ।
সংগ্ৰহণ ক্ষাহন্ত বাবে নাৰ্যাহন: ।

আৰালা অভিবানের অবসান বেগিয়া কডক নিশ্চিত্ত হইলেন, কারণ তৎকালে চীনের আন্তর্গতিক বৃদ্ধ ও ধর্মোক্ত ক্লুস্ল্যান-গণের বিজ্ঞোহিতা ইংরাজের বাণিজ্যমার্থের অভ্যার ইইরাছিল। তিনি উক্ত বর্বের অভ্যাবর মাসে মহাসমারোহে লাহোরে বরবার করির। ও শত রাজ্ভবর্গে পরিবৃত হইরা ভারভরাজ্যে শান্তি বিধান করিয়াছিলেন।

এই সমরে বালালা-গবর্মেন্ট ভোটান লাভির উপদ্রেবে
বিশেবরূপ উভ্যক্ত ইইরাছিলেন। এই রুর্ব্ ভ ন্ম্যুলিগকে দমন
করিবার অভিপ্রান্ধে ভিনি মালকারার, ডাক্সফোর্ড, রিচার্ডসন্,
গান্ধ্, পিউ প্রকৃতি লেনানারকের অধীনে ইংরাজনোনালকে
নানার্দ্ধিক ইইডে ভোটাম আক্রমণ করিতে আদেশ বিলেন।
তদমুলারে ইংরাজনৈক্ত ভোটান অভিমূপে প্রধাবিত হইল।
নানাহানে বুহু করিরাও ভোটানরাশী ইংরাজ-বাহিনীকে পরাত্ত
করিতে পারিল না। অবশেবে ভাহারা ইংরাজের সহিত সন্ধি
করিল। ইংরাজ-রাজ ভোটানের দেবরাজের যে সকল প্রান্ধেপ
ভারতদীমাত্তক্ত করিয়া লইলেন, ডক্কক্ত তিনি ভোটান-পভিকে
বার্বিক ২৫ হাজার টাকা বিতে বীকৃত হন। ইহা হইতে
রক্তক্ষরকারী ভোটানবুরের অবসান হর।

এই সমরে ১৮৬৫ খুট্টাব্দে প্রধান সেনাপতি সর হিউরোজ পদত্যাগ করেন এবং তৎপদে সর উইলিরম্ রোজ মান্সফিল্ড কে, সি, বি, নিযুক্ত হন। ইনি শতক্র, পজাব, সিণাহীবিজ্ঞাহ ও ক্রিমির যুদ্ধে বিশেষ বীরম্ব প্রদর্শন করিরাছিলেন।

উক্ত বৰ্ষেই রাজপ্রতিনিধি লরেন্দ পঞ্জাৰ ও অযোধ্যার প্রজা-রুল্লের স্বার্থিরন্দার বন্ধবান্ হইরাছিলেন। ১৮৬৬ শৃষ্টান্দে উড়ি-ব্যার মহা ছর্জিন্দ উপস্থিত হর এবং ক্রমলঃ ৪ শত মাইল দৈর্ঘ্য ও ৭০ মাইল প্রস্থা স্থানে বিস্তৃত হইরা পড়ে। মাল্লান্ডের লাট হারিশ এই সমরে বিশেষ বলাক্সভার পরিচর দিয়াছিলেন। এই মহামারীতে প্রায় ৮ লক্ষ লোক কালকবলে নিপ্তিত হইরাছিল।

এই সমরে ১৮৬৭ খুটালে মহিন্তররাজের রাজ্যাধিকার লইরা মহিন্তরে গোলমাল উপত্তিত হয়। মহিন্তররাজ উপযু ্রপরি আপনার প্রার্জনা জানাইরা লওঁ ভালহোঁসী, কানিং, এল্পিন্ ও লারেলকে আবেদন পাঠান। লরেল ধীরভাবে ও বিচক্ষপতার সহিত লে কার্য্যের মীমাংসাভার ভারতসচিবের (Conservative Secretary of State for India) ছত্তে সমর্পন করেন। ভারতসচিব মহিন্তররাজের লভকপ্রেকে রাজ্যের কর্তৃত্ব লান করিতে ধীরুত হইরাছিলেন। তাহার অধিকারকালে মিলর ও আবিসিনীর বৃত্তে ভারত হইতে দেশীর সেলারল স্বন্ধর পাকিতে প্রস্থিতিনিধি

লখ্নো নগরে একটা রাজদরবাজের অন্তর্ভান করেন। তাহাতে তথাৰা এই উত্তরপশ্চিম-ভারতবানী তালুকদার, অমিদার ও অবোধ্যার প্রজানাধারণ ভারতেশরী তিক্টোরিলার প্রতি স্থাননা ও ইংরাজ গমর্মেন্টের প্রতি স্থাক্তজির চরম নিদর্শন প্রদর্শন করিবাছিল।

এই বৎসত্ত্বে ক্ষরাজ-স্নোগতিগণ নধ্য এসিয়ার বোধারা-রাজ্যে ও উল্বেকিছান প্রদেশে আসিয়া তথাকার আমীরকে আশ্রম দান করের। আমীরপুত্র বিজ্ঞাহী প্রজাবর্গের সহিত बिनिष्ठ रहेन्ना निष्कृतिःहात्रम अधिकारत तरहे हिल्लन। ক্ষমেনার আত্রমপ্রাপ্তিতে স্বীয় রাজপদ স্বৃঢ় করিয়া আমীর ক্লভক্ততা স্বরূপ ক্র্যদিগকে বোধারার স্থান দান করিলেন। ক্লবের আগমনে ভারতের বিপদের কারণ হইবে জানিরা লর্ড লরেন্স আফগানপতি ও ইংরাজমিত্র দোন্ত মহন্মদের পুত্র শের-আলীকে কাবুল-সিংহাসনে বসাইয়া ইংরাঞ্জাতির ও রাজ্যের মঙ্গলবিধানে তৎপর হইলেন। শের-আলী রাজ্য হইতে বিতাড়িত হইলেন এবং একজন আফগানরাজপুঙ্গব রুষসেনাদলে মিলিত হইয়া রাজ্যাধিকারে বড়্যন্ত করিতে লাগিলেন। এই দারুণ গোলঘোগের সময় মহামতি লবেন্স বিশেষ গান্তীর্ঘ্যের সহিত নিরপেক্ষতা অবলম্বন করিয়াছিলেন, তাঁহার এই নিরপেক রাজনীতিকে রাজনীতিজ্ঞেরা "as masterly inactivity" বলিয়া প্রাশংসা করিয়া থাকেন।

তিনি ভারতে প্রথার স্থর্ছির জন্ম থাল বিস্তার করিয়া
বান। তৎকালে তিনি ভারতের সর্বত্র থালবিস্তারের (complete
canalisazation of India) প্রস্তাব করিয়াছিলেন, কিন্তু
তাহা বহুবোটী টাকা ব্যর্মাধ্য হওয়ার এবং রাজকোব হইতে
অর্থের সঙ্গান না হওয়ায় সে প্রস্তাব স্থগিদ হয়। তাঁহার
আাদেশে ভারতের গ্রমে ত স্কুল সমূহে বাইবেল গ্রন্থ পাঠ্যপুস্তকরূপে ব্যব্হত হইয়াছিল।

১৮৩৯ খুটাব্দে তিনি ভারতের প্রতিনিধিদ্ব ত্যাগ করির।
, ২৭শে মার্চ তারিখে বুটেনরাজ্যে কিরিরা যান। ভারতসামাজী
তাহাকে (Baron Lawrence of the Panjab and Grately
in the county of Southamton) মর্যাদা এবং নানাবিধ
মাক্তহক উপাধি ও পারিভোষিক প্রদান করেন। ১৮৭৯ খুটাব্দে
তাহার মৃত্যু ঘটে।

লারেক্স (সর-হেনরী), একজন ইংরাজ সেনাপতি। তিনি
সিপাহীবিদ্রোহকালে, অযোধ্যার বিদ্রাহিদলের সহিত বৃদ্ধ
করিরা বিশেষ বীরত্ব প্রদর্শন করেন। লখ্নৌ অবরোধকালে
ও চিন্ততের বৃদ্ধে তিনি ইংরাজের স্বার্থরকার জন্ম আত্মোৎসর্গ
করিরাছিলেন। চিন্ততের যুদ্ধে বিদ্রোছিদল জারলাভ করিরা

বীরদর্পে রেসিডেন্দী আক্রমণ করে। তাহাদের একটী গোলা হেনরী লরেন্সের কক্ষমধ্যে প্রবিষ্ট হয়। ভাহার আঘাতে ভঠা জুলাই তাঁহার মৃত্যু কটে। लर्फ (हेरताको) > धनाग्र वाख्यित मन्त्रानगरहक डेमिरि। ২ মহাপ্রভু, খুইণর্মপ্রথর্জক যীওখুই ইনি Lord, the saviour অর্থাৎ মহাপ্রভু ও পরিত্রাতা বলিরা খুটানসমাজে পুজিত। ৩ পরমপিতা পরমেশ্র। मर्फ शास्त्र , अक्बन देश्ताबरमनाপতि। [शाक्तिथ।] लर्फ (लक, अक्बन हेरबाबरमनाभिष्ठ। [रनक राष ।] লাক্র, গতি। ভারি পরবৈ সক সেট্। লট্লক্তি। নুঙ্ अनक्तो९। निष्मनर्का। नुष्मिक्छा। লল, ঈশা। অনতচুরাদি° উভর° সক° সেট্। লট্ ললর্ডি, লালয়তি-তে। लल िल्ह्य (पूर) ननहीं जिल्ला रक । 🕻 छेट्टे । २ कुकूत । (ত্রি) ৩ হিংল্র। (মেদিনী) ৪ চলদ্রসনাযুক্ত। ^কতাবচ্চ প্রকটীভূর ভগবান ভৈরবাক্তি:। উদ্তাসিল নিজ্জিক: কৃষা ভ্রমারমভ্যধাৎ ॥"(কথাসরিৎ"১০৬।১২৭) लल (जि) न ५ में पु एक न। > विनामयुक्त । २ छेना इविभिष्टे । ৩ জিহ্বাক্রিয়াবিশিষ্ট। ৪ জক্ষণবিশিষ্ট। ৫ উৎক্ষেপবিশিষ্ট। ललमञ्जू (प्रः) मन ९ ठनमप् रख । > निम्लाक । (खंठा धत्र) ললন (ফ্রী) লল-লাট্। > কেলি। (হেম) ২ চালন। (নাগোজীভট্ট) "ৰীপিচর্মপরিধানা শুক্ষমাংসাতিভৈরবা। অতিবিস্তারবদনা জিহুবা ললনভীষণা॥" (দেবীমাহাত্মা) (পুং) ললাতে ঈপ্যাতে ইতি লল-কর্মণি লাট । ৩ বাল। 8 जान। ৫ (প্রিয়ান। (রাজনি•) ললনা (স্ত্রী) শশরতি ঈশতি কামান লল-লাট্-টাপ। কামিনী। "রতিলুলিতললিতললনা ক্লমজললববাহিন মুছর্যতা। শ্লণকেশকুস্মপরিমলবাসিতদেহা বহস্তানিলাঃ ॥" (কলাবি ।।) २ नात्रीएकन। ७ बिक्सा। (स्मिनी) ८ इस्माएकन। এই ছম্পের ২, ৩, ৭, ৮, ১০, ১১ জ্বজ্বর শুরু, ভ্রির বর্ণ ল্ডু, এই ছন্দের প্রতি চরণে ১২টা করিয়া অক্দর আছে। এ অন্ত প্রকার ছন্দোভেদ, এই ছন্দের প্রতি চরণে ১২টা করিয়া অকর व्याह्म, जनार्था २, ७, ७, १, ४, ३, ३०, ३১ वर्ग शक्, छिन्न मध्। ৬ গাথাভেদ। ललनां श्रिय (क्री) नननानाः श्रियः । > द्वीरवय । (अक्रनि •)

(११) २ कन्य । ७ कामिनीवझक, जीविरगंत्र व्यत्र ।

ललखिका (डी) ननत्स्रायं चार्यं कन्। > नाष्ट्रिनवरुष्ठिकापि.

সংস্কৃত প্রায় লখন, নাভিত্তবিভহার। ২ গোধা। (প্রমাণা)

लम्बिका (जी) गगना।

*ज्ञा*कां क (प्रः) महन ।

ব্যলাট (ক্লী) লগং ঈপাং অটভি জ্ঞাগরভি জট-জণ্ । অব্রব-বিশেষ, চলিত কপাল। সংস্কৃত প্র্যায়--জনিক, গ্লেধি,মহাভূম, নাম, ভাল, কুপালক, অলীক, নুলাটক। গ্ৰন্থপুৰালে লিখিত স্মাছে যে, যাহাদের অলাট উন্নত; বিপুল ও বিষম, তাহারা নির্থন ध्वरः वाहारमत्र नगाउँ व्यक्तकाह्मक, काहाता धनवान । धहेन्नन ্ভজিবিশাল হইলে ধার্শ্বিক ও:শিক্ষাল হইলে পাপকারী, শ্বন্তিকাদি--বেখা ও উন্নতশিরা থাকিলে মনবান; সংবৃত হইলে কুপণ, ও खेब्रफ रहेरन नृत अवः निम्न रहेरन नानकाती रहेका शास्त्र। শলাটের উপরি বাহার জিনটা রেখা আছে, তাহার শতবর্ব পরমায়, এইরপ চারিটী রেখা থাকিলে ৯৫ বংষর পরমায়ু ও ারাজা, রেখানা থাকিলে ৯০ বংসর পরমায়ু, রেখা ছিল্ল ডির হুইলে পুংশ্চল, কেশান্ত পর্যাক্ত থাকিলে ৮০ বংসর পরমায়ু, a, ७, १ वा वहरत्रथा थांकिरण ८० वश्मत्र, बक्क स्वेरण ४० वश-সর এবং ক্রলগ্লগামী রেখা হইলে ৩০ বৎসন্ন এবং বামদিকে ্বক্রের্থা হইলে বিংশভিবৎসর প্রমায়ু হইরা খাকে। রেধা ः কুদ্র হইলে অলায়ু হয়। 🛊 (গরুড়পু•)

नामुजितक छ हेरात वित्मय विवतन वर्गिष्ठ हरेब्राह्म, वैशिता ্সামুদ্রিকশান্তে অভিজ্ঞ, তাঁহারা ললাট দেখিয়া মানবে আয়ুও শুভাশুভ প্রভৃতি নির্দেশ করিতে সমর্থ ইইরা থাকেন। न्नल हिक (क्री) जनांहित्यव ननांहि-कन्। ১ প্রশন্তলনাট। (শ্বরতা°) ২ লবাট্নাত্র (ধ্নঞ্র)

শ্রলাটন্তপ (মি) শব্দে তপতীতি শ্রলটন্তপ (অর্থাললাটয়ো-प्रिलिख्याः। अवाज्यस्य १०००) हेखि अत् मृस्। > नगाँव-ভাপক, লগাটভাপকায়ী 1 ২ প্র্যা 1

"হবিভূ জামেদবতাং চতুৰ্বাং মধ্যে ললাটস্তপসপ্তসপ্তি:।"(রঘু ১৩।৪১)

* "छन्नरेनर्विभूरेन: मृत्युन नारेडेविवरेमकथा । निर्देश धनवद्यकं व्यर्दक्ष्ममृत्येनंत्राः । व्याहार्गाः छंखिनिनारेनः निवरिनः गांगकाविनः । 👣 তাতিঃ শিরাভিন্স স্বন্ধি কাদিভির্য নেম্বন্না: 🛭 निरेत्रमं मार्टिव शर्श क्त्रकर्यत्र ठाख्या । सरकुरे उन्छ बाजारे हैं क कृतन। छे प्ररेक्त् नी: ब নাৰ্ট্টাপ্ত চা-ছিল্মে রেখাঃ স্থাঃ শভৰ্মিশান্ । প্ৰপদ্ধ ভাততভূতিয়ার: গকনবভাব । অন্তেখনায়ুর বভিবিভিন্নাভিন্দ পুল্চলাঃ। কেলাল্লোপগভাজিক অক্টিডাাবুৰ ছে। ভকে ঃ পঞ্জি: সপ্তভি: বড়্ভি: পঞ্চান্ত্তভিত্তপা। क्रवादिएमक वजाविद्यानम् क्रमप्रेत्राविद्यः इ ি 'বিশেতির'লবরাতিরায়ু:স্তাতিরলকর্। रा काल अस मुक्ताकाल विश्व करते होते अवस्थित व^तः (वास्कृते कर कर)

नन्छिश्रत (ही) नगत्रक्या (शाक्षश्रमः) 👵 **लला छे एल** क (क्री) क्लान । ললাট্রেথা (ত্রী) কপালের রেখা। ললাট্রেখা। **এ**রার আছে বে, বিধাতা ভাতকের বটা ভাগন্ধ-বাসরে ভারীৎ ১ বিনের ্দিন রাজে লগাটে অক্স নদ্হের ওভাওত নিধিয়া <mark>বিরা থাকেন</mark>। ललां हो एक (बि) नमाट है सकिया पत्र। निव। जिल्लार कीन्। হৰ্গা। (ভারত সভাপর্ক) ललां हिका (बी) ननारहे खरनाश्मकातः (क्रननाहार क्रमनकारतः। পা ৪। ৩। ৩৫) ইভি কন্। স্পানিরচিত স্লাটাভরণ, ক্পালের গহনা। পর্যার প্রথাক্ত। (অমর) ২ ললাট্য চন্দা। পর্যায় শৃথচেটী। (পন্মায়াণ) ও জিল্ল। "ভৰা অভূত্যৱনা পিতৃণ্ হে ললাটকা চলনগ্ৰয়াককা। ন জাতু বালা লভতেম্ব নিবু ডিং-ভূবারসংঘাতশিলাতলেখণি ।" (ভূমার ৫। ৫৫) ज्ञाति ज्ञ (वि) केळ क्लावर्क । ললাটেন্দুকেশ্রী, উড়িকার কেশরীবংশীর একজন রাজা। [डिफ्या त्रथ ।] ललां है। (वि) ननां है नवकी है। ললাম (দী) বড় বিবালে কিপ্, তম্ ক্মতি প্রায়োডীতি ক্ম-গতে অনু দৃস্য সম্বং। ১ চিহ্ন। ২ ধ্ৰক। ৩ শুক। 8 ध्रांगा । १ कृषा, कृष्ण। "পৌত্ৰন্তৰ শ্ৰীললনাললামং এটা ফুরং কুরুলমপ্রিভানাং।" (ভাগ° ০। ১৪। ৯৮) ७ वानिशः १ शूखः । ৮ फूत्रमः । ३ व्यकानः । (स्रक्तिः) অখনলাটে অক্তবৰ্ণচিহ্। >> গৰানির লকাটচিহ্। ७२ चटचंत्र कृत्न। यह भन भूर क्री यह क्रे निन्हे इत्र । "ললামোহনী ললামাপি প্রভাবে পুরুবে ধাল্লে ।

শ্ৰেষ্ঠভূবাপুঞ্ পূলপুক্ত চিকাৰলিবির্ ॥" (রত্তীকার নজিনাপয়ত বাদব)

(🗓) ১७ तमा, 🚈 🕯 🕆 "नगरेमर्रपिक्षिप् कः नर्यानगरदेश् विश রাজাং মধ্যে মহেদানঃ শান্তভীরভ্যবর্তত #'(ভারত ৭৷২২৷১৩) ललाञ्चक (ही) भूरतास्क्यमाना ; मनार्टेगमित नवसास स्रामा । শ্ভিটাৰ মাল্যং প্ৰা: সমুৰভাগে ভাজং স্বাট্টপৰ্যভাষ্টাৰজং ব্যক্তাৰজং তিলক্ষিৰ ইতি ইৰাৰ্ডে का । (क्षत्रक)

ললামগু (গুং) শিল্প।

ल्लामन् (जी)ननाव।

"व्यथान**भरवन्**रम**् १३७ रोगसिमक्रम्**। कृपासिकदारायम् सर्वासः स्वति स्वतासः स्वति । ২ পুরুষ। (রম্বটীকার মন্ত্রিনীথম্বত বাধব)
ললাম্বৎ (ত্রি) হন্দর অলম্বত ।
ললামী (ত্রী) কর্ণভূষণবিশেষ, কামের গহনা। পর্যার উৎক্রিটিকা। (শক্ষালা)
ললিত (ক্রী) গল-কা। ১ প্লারজাবল ক্রিয়াবিশেষ। স্কুমার-

রূপে জনেত্রাদির জিলান সহিত ক্রচরণাদির ক্লবিস্তাস।

"ক্রনেত্রাদিক্রিয়াশালিস্কুমারবিধানত:।

ছব্দশারদ্ধিভাসকল্পা লনিতং বিছঃ ॥" (অমরটাকা ভরত) স্কুমারদ্ধে অস্ববিভাস সম্প হইলে তাহাকে লনিত কছে। "কুমারাদ্বিভাসে মক্ত্পা লনিতং ভবেৎ।" (ভরত)

উজ্জননীলমণিতে লিখিত আছে, বে ছলে অলসমূহের বিক্তাসভালি অকুমার এবং জ্জবিলাসাধি বারা মনোহর হয়, তথার ললিত হইরা থাকে।

"বিস্তাসভলিরলাণাং ক্রবিলাসমনোহর।।
স্রক্ষারা ভবেদ্ বত্র ললিতং তচ্দীরিতম্।" (উচ্ছলনীলমনি)
"সক্রভলং করন্দিলরাবর্ত্তনৈরাপতত্তী
সা লিম্পন্তী ললিতললিতা লোচনতাঙ্গনেন।
বিস্তত্ত্বী চরণকমলে লীলরা স্বৈরবাতেনিঃশলা চ প্রথমবরসা নর্তিতা পদলাকী ।"(অমরটীকার ভর°)
(পুং) লল্যতে ইপ্লতে ইতি লল কর্মনি ক্ত । ২ রাগবিশের।
ই রাগ প্রোড:কালে গান ক্রিতে হর। ইহার রূপ—এই রাগ

এই রাগ প্রাত:কালে গান করিতে হর। ইহার রপ—এই রাগ প্রক্টিত সপ্রজ্ন (পুল্মাল্যধারী, যুবা, অভিশ্ব গৌরবর্ণ, লোচনারী অলস, (ভাবে চলচল) বিলামবেশে বিভূষিত হইরা প্রভাতকালে গৃহ হইতে বিনির্গত হইতেছেন।

"প্রকৃষ্ণক্ষমাল্যধারী ব্যাতিগোরোহলসলোচনঞী:। বিনিঃসরন্ বাসগৃহাৎ প্রভাতে বিলাসিবেশো ললিতঃ প্রদিষ্টঃ॥" গানসময়—

°গ্রাতর্গেরান্ত দেশাগো ললিভ: পটমঞ্চরী। বিভাষা তৈরবী চৈব কামোদা গোগুকীব্যুদিঃ"(সলীতদামোঁ) (ত্রি) ও স্থব্দর, মনোহর, মনোজ।

শ্বৰ ডাছ বিবাহকৌভুকং ললিজং বিজ্ঞত এৰ পাৰ্থিবঃ।"(রঘু ৮।১) ৪ ঈশ্বিত। (মেধিনী) ৫ চলিজ। (বিশ্ব)

নলিভক (जी) প্রাচীন তীর্যভেষ।

ললিত কাস্তা (ত্রী) গলিতা কাস্তা চ। মঙ্গলচতিকা, হর্গা। লোকে মঙ্গলন্দামনার এই বেবীর পূজা করিরা থাকে।

"বৈবা গণিতকান্তাখ্যা দেবী মন্দদচন্তিকা। বরণাতরহন্তা চ ছিত্তুলা গৌরগেহিকা । রয়কৌবেরবন্তা চ শ্বিতবক্ত্রা গুডাননা। নবরৌক্মবন্দ্রা চার্কালী দণিতপ্রেকা ॥" (ভিথিতক) ললিত চৈত্য (পুং) চৈত্যভেদ। ললিত তাল (পুং) সনীতের ভালভেদ। ললিত পদ (আ) > স্থানর পদমুক্ত। ২ ছন্দোভেদ। এই ছন্দের প্রতিচরণে ১২টা করিরা অক্ষর আছে। তন্মধ্যে ১, ২, ৩, ৪, ৬, ৭, ৯, ১০ বর্ণ গুরু, ডাব্রের বর্ণ লবু।

ললিতপুর (য়ী) নগরভেদ। (য়াজতর্মন্দী ৪/১৮৭)
ললিতপুর (লালিতপুর), যুক্তপ্রেদেশের ইংরাজাবিকৃত একটা
কো। বাঁসি-বিভাগের অন্তর্গত ও ওথাকার ছোটলাটের
লাসনাবীন। ভূপরিমাণ ১৯৪৭ বর্গমাইল। আকা ২৪°৯০
হইতে ২৫°১৪'উ: এবং জাঘি • ৭৮°১২'২ • হইতে ৭৯°২'১ হ'
প্: মধ্য। ইহার উত্তর ও পশ্চিমে বেভবা (বেত্রবভী) নদী,
দক্ষিণপশ্চিমে নারায়ণ নদ, দক্ষিণে বিদ্যাচল ঘাটমালা ও সাগর
জেলা, বক্ষিণপূর্বে ও পূর্বে উদ্ধ্রোজ্য ও ধ্যান নদী। এবং
উত্তরপূর্বে বামুনী নদী। ললিতপুর নগর ইহার বিচার সদর।

বুন্দেলথঞ্জের পার্ক্ত্য প্রদেশ লইয়া এই জেলা গঠিত। সেই জেনোচ্চনির পার্ক্ত্য ভূমিভাগে বেত্রবতী ও যামুনী, নদী প্রবাহিত। দক্ষিণের বিদ্যাচল-শীমান্তর্বতী প্রদেশ ক্মমালাসমাচ্চ্যে লালবর্ণের কছর পূর্ণ ভূমিভাগে চাসবাদের বিশেষ প্রবিধা হয় না। মধ্যে মধ্যে ক্ষরণ পালমাটি দৃষ্ট হয়; উহা স্থানবিশেবে মোড়িও মার নামে খ্যাত।

এই সমগ্র জেলাই নদীমালার পূর্ব। বিজ্ঞাপাদনিঃস্ত নানা গিরিনদী পর্বতগাত্রবিধোত করিয়া এই জেলার মধ্যদিয়া য়মুনা নদীতে মিলিয়াছে। ঐ সকল ক্ষুদ্র কুদ্র প্রোত্তিনী এই জেমোচ্চ-নিয় অববাহিকার মধ্যদিয়া প্রবাহিত হওরায় সমগ্র জেলাটী বৈন নদীসমূহে সমাচ্ছয় হইয়া পড়িয়াছে। প্রধানতম নদীর মধ্যে বেত্রবতী, ধসান ও ধমুনা উল্লেখবোগ্য।

নদী ভিন্ন এখানে অনেকগুলি বড় বড়বাঁধ ও দীর্ঘিকা আছে।
তর্মধ্যে তালবেহাত সর্বাপেক্ষা বড়, উহার জলকর প্রার ৪৫৩
একার। ধোরীসাগর, হুধী, বাড় প্রভৃতি কতকগুলি প্রাচীন।
দীর্ঘিকা আজিও স্থানীর কীর্ত্তির পরিচয় দিতেছে। স্থানীর বনমালার মধ্যে বালাবহৎ ও লক্ষণজীর বন উল্লেখবোগ্য। এখানে
সহারিয়া নামে এক পার্বাভাজাতির বাস আছে। ভাহারা বনজাত মহুরা, চিরোজী, লাক্ষা, মধু, মোম, গাঁদ ও অক্সান্ত মৃলাদি
নিকটবর্ত্তী কারাদিতে আনিয়া বিক্রের করে। এই সকল বনে
ব্যার, চিতা, ভল্ক, হারনা, নেকড়ে, বনবরাহ, বলকুমুর ও শান্তর,
চিতল, চৌশিলা প্রভৃতি হরিণ দেখিতে পাধেরা বার।

লণিতপুরের আচীন কোন ইতিহাস নাই, পুর্বে এবানে অসভ্য গোঁড় জাতির বাব ছিল। এখনও বিদ্যালৈলমালার চূড়া-দেশে নেই পার্বতালাভির প্রতিষ্কিত দেবলন্দিরাদি নেই অভীভ স্থৃতির পরিচর প্রধান করিতেছে। বর্ত্তমান সমরেও পর্বান্ত প্রান্ত-স্থিত কএকটা গ্রামে এখনও গৌড়জাতির বাস দেখা হার।

পরবর্ত্তিকালে এথানে আর্ব্য উপনিবেশ স্থাপিত হইলে সেই
গৌড়গণ ক্রমণঃ হিল্পর্যে আস্থাবান্ হইরা ভাহারই অন্ত্রাগী
হর এবং অতি অরকাল মধ্যেই তাহারা শিক্ষা ও সভ্যতা গুণে
সমূরত হইরা উঠে। তাহাদের স্থাপতাবিভার পরিচর স্বরুপ
আঞ্জিও অট্টালিকা ও অলনালীসমূহ এথানে বিশ্বমান রহিরাছে।
ভাহাদের অধংপভনের পর মহোবার চন্দেলবংশীর রাজগণ এখানে
আধিপত্য বিত্তার করেন। বাল্পা ও হামীরপুরে তাঁহাদের রাজধানী
ছিল। তংপ্রসলে এই রাজবংশের সংক্ষিপ্ত পরিচর বিবৃত
হইরাছে। [বাল্পা ও হামীরপুর দেখ।]

খুঁইীর ঘাদশ শতাব্দের শেবভাগে এই চল্লেল রাজবংশের অধঃপতন ঘটে। তথন এই জনপদ ক্ষুত্র ক্ষুত্র সামন্তরাজগণের শাসনাধীন হর। ঐ সামন্তরাণ দিল্লীর মুসলমান-রাজগণের প্রাথান্ত স্বীকার করেন নাই। তাঁহারা সম্পূর্ণ স্বাধীনভাবে রাজ্য শাসন করিরাছিলেন। খুঁইার ১৪শ শতাব্দে হর্মব ব্লেলা জাতি এই প্রদেশ আক্রমণ ও অধিকার করে। তাহারা প্রথমে কাঁসীতে ও পরে সমগ্র ব্লেলগণওে আপনাদের প্রভাব বিভার করিরাছিল।

বর্ত্তমান ললিতপুর জেলা চলেরীর বুলেলরাজ্যের অন্তর্গত এবং এখানকার রাজবংশ রাজা ক্ষত্রপ্রতাপের বংশধর। ১৭০২ चुहोस इहेट >१४४ थुट्टोस नर्गाष्ठ ठवः नोत्र नत्रस्म तासा हत्स-न्नीरक त्राक्षक कतित्राहित्नन। এই स्वरीर्थ भागनकात्नत मस्य দিলীর মোগলসমাট্রগণও মধ্যে মধ্যে এইস্থানে আধিপত্য বিস্তার করিয়াছিলেন। অবশেষে নবম রাজা রামটাদ তীর্থযাত্রা উপলক্ষে অবোধ্যার গমন করিলে, তাঁহার অন্তুপঞ্চিত লক্ষ্য করিরা মহা-রাষ্ট্রীয়গণ এই প্রদেশে প্রভাব বিস্তার করেন। কিন্তু তাঁহারা অধিক দিন এদেশে প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে পারেন নাই। ১৮০০ শৃষ্টাব্দে তৎপুত্রকে তাঁহারা অধিকাংশ সম্পত্তির উত্তরাধিকারী कविएक वाधा हन । हेरांत्र छूटे वर्शत मत्था करेनक क्रमाएकात প্ররোচনার রাজকুমার গুপ্তভাবে নিহত হন এবং তাঁহার লাভা मृत्र**ाहला**म जिल्हामान व्यक्षित्राहण करत्रम । जिनि केस्हु अन ध्वरः শাসনকার্যো অকর্মণ্য ছিলেন। তাঁহার অধীনত্ব ঠাকুর সামস্ত-গণ পূর্ব্বাভ্যত পূঠনপ্রবৃত্তির দাস হইরা পার্থবর্তী রাজ্যসমূহে উপদ্ৰব করিতে থাকে। রাজা স্রপ্রক্ষাদ কিছুতেই তাহাদিগকে ৰশে রাখিতে পারিলেন 🚛 উপর্গাপরি এইরপ আক্রমণ ও কুল করিতে করিতে বধন তাঁহারা ১৮১১ খুটাকে গোরালিয়ার শীমাতে উপস্থিত হইরা সিন্দেরাজের প্রজাবর্গের উপর অভ্যাচার ু, আর্ড করিবেন, তথন গোরালিরারপতি ভাহার প্রতিহিংসা নাধনে অগ্রনর হইলেন। মহারাজের আনেশে নিজে-নৈত চলেরী আক্রমণ করিল। গোরালিরর-নেনাপতি জিন্ বান্তিতে (Jean Baptiste) সদলে অগ্রনর হইরা কোট্রাইম্বী, রাজবাড়া ও লনিতপুর হুর্গ অধিকার করিলেন। মূরপ্রহলার ঝাঁদীতে পলাইরা গেলেন, কিন্তু তাঁহার দেনাপতিগণ নগররকার অপ্রদর হইলেন। কএক সপ্তাহকাল অবরোধের পর তীমবেগে মুক্ত করিরা চলেরী-নৈত আত্মনরপণ করিল। একজন ঠাকুর নামত্তের বিবাসবাভকভার চলেরী শত্রুহত্তগত হইল। দেখিতে রেখিতে ভালবেহাৎবাসীও নিজে রাজকরে আত্মনরপণ করিলেন। নিজে মহারাজ তথন সেই প্রাদেশের শাসনভার গ্রহণ করিরা কর্ণেল বান্তিত্তেকে তথাকার শাসনকর্ত্তা নিরোগ করিলেন।

গোরালিরার-মহারাজ অহকেশা করিরা পূর্বতন আরণীরনারদিগকে তাঁহাদের আরণীর ফিরাইরা দিলেন এবং রাজা মূরপ্রহলাদ বীর ভরণপোবণের জন্ত ৩১ খানি গ্রাম পাইলেন।

ইহার পর ৩২ বংসর কাল এই আদেশে শান্তি বিরাজিত ছিল। সিন্দেরাজের নির্দিষ্ট শাসনপ্রণালীতে এখানকার লাসনকার্য্য নির্দ্ধিরে সম্পাদিত হইতে লাগিল, কিন্তু অক্সাং বৃদ্দেলাগণ পূর্ব্ধরাজকে নারক মনোনীত করিয়া বিদ্রোহী হইয়া উঠিল। তখন সিন্দেমহারাজ পুনরার কর্ণেল বাস্তিতেকে রাজ্যে শান্তি বিধানার্থ প্রেরণ করিলেন। তাঁহার বন্দোবভায়সারে ললিত-পুররাজ্য তিন ভাগ হইল। একভাগ রাজা মূরপ্রহুলাদ পাইলেনও সুইভাগ সিন্দেরাজের রাজ্যভূক্ত রহিল, রাজা মূরপ্রহুলাদ পাইলেনও সুইভাগ সিন্দেরাজের রাজ্যভূক্ত রহিল, রাজা মূরপ্রহুলাদ পাইলেন তুইভাগ সিন্দেরাজের রাজ্যভূক্ত রহিল, রাজা মূরপ্রহুলাদ পাইলেন তুই ব্রাজ করিতে করিতে ১৮৪২ খুটাজে খীর কলহপূর্ণ জীবনের অবসান করিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর তৎপুত্র মর্দ্দন-সিন্হে রাজা হইলেন। উক্ত ঘটনার ছুই বৎসর পরে মহারাজপুর-রুদ্ধের অবসানে সিন্দেরাজ গোয়ালিয়ার-সেনাদলের ভরণ পোষণ-ব্যরভার-বহনের জামিন শ্বরূপ ইংরাজ-রাজ-করে চন্দেরী-রাজ্যের নিজ অংশ সমর্পণ করিলেন।

ইংরাজগবর্মেন্ট ঐ সম্পত্তি লাভ করিয়া উহাকে একটা বতত্র জেলারপে গঠিত করিয়া লইলেন, কিন্তু সন্ধির মর্যাহ্মলারে সিন্দে মহারাজের প্রভুত্ব অকুর রাখিতে ও প্রজাবর্গের বাধিকার রক্ষা করিতে ইংরাজগবর্মেন্ট স্বীকৃত রহিলেন। সিপাহীবিজ্ঞাহ পর্যন্ত এই প্রজাব মতে কার্যা চলিয়াছিল। বাণপুররাজ মর্দন-সিংহ আপনার সম্মানহালে হংখিত হইরা এই সমরে ব্লেলা-স্দারদিগকে ইংরাজরাজের বিক্তমে অভ্যুখিত করেন। ১৮৫৭ খুটাকের ১২ই জুন ভারিখে রাজা মর্দন সিংহ বিজ্ঞোহিবলে পরিবৃত হইরা বাঁলী ও গোয়ালিয়ার বিজ্ঞোহীবিজ্যের সহিত বোগদান করেন। এইজ্বপে কছনত বিজ্ঞোহীবিজ্যের প্রহত

हिर्द्राद्यत्र द्यनीत्र अन्तरं क्ष्ममानात्रक्तः भारक आमहन केत्रित होका मूर्केनिंगरह जानमार्कि चानगुरप्रत वासीन द्राका বলিয়া ঘোষণা করিলেন। তিনি ইংরাজ-গ্লাভের সহিত যুদ করিবরি মানসে বার্ণপুরে কামান অন্ততের অন্ত একটা কারবানা ভাপন করেন। বুলি জননঃ সাগর জেলার উত্তরাংশে আপনার व्यक्तिक विकास क्रिक्टिएट के स्मिन्त हैर प्राव्यवस्थित कि े धोक्टिं निर्मित्न मा। १५६५ वृहेर्टमत कार्याती मारम নেমাপতি সর হিট রোজের অবীনত নেমাদল ভাঁচাকে আক্রমণ করির পরাও করিল। রাজা মর্দদসিংহ বদব্যিরার बूटक भन्नाकिछ इंदेश हत्मत्री अखिमूरच भनादेश आमित्नम । মার্চ্চ মাসে ইংরাজ-গৈত ভাঁহাকে ললিভপুর হইতে বাণপুর ও ভালবহৎ অভিমূৰে শুক্তাননি করিতে বাধা করিল। রাজার পর্যাঞ্জরে অধীনক সেনীদিল ভীত হইরা শান্তভাব ধারণ করিল। के नमरत्र शोत्राणित्रदेवत्रं विद्यारणमनार्थ हरेत्राज-रेनक हरन्त्रती পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হওয়ায় বিজ্রোহিদল পুনরায় চন্দেরী-রাজা হতগত করিয়া লইলেন। অতঃপর উক্ত বর্ষের অক্টোবর मार्ग देश्ताकरेगेश भूनताय ननिष्मुत साक्तमन कतिन। पुरमाना-গণ তীমবিক্রমে বুদ্ধ করিরাও আত্মরকা করিতে পারিল না। ' অবশেষে তাহারা ললিতপুর ইংরাজদিগকে ছাড়িয়া দিল। এই বিজ্ঞোত্তর সময় বুন্দেল ঠাকুর সন্দারগণ পরস্পরের প্রতি বিভেষ-ভাব প্রকাশ করিয়া আপনাদের সর্কনাশ সাধন করিল। সিপাঁহী বিল্রোহের পর এখানে শান্তি স্থাপিও হয়। অশিক্ষিত সঁদারণণ ইংরাজগবর্মেন্টের কঠোর শাসনে নিয়ন্তিত হইয়া শান্তিময় জীবন বহন করিতে বাধ্য হইল। তদব্ধি আর এবানে কোনরূপ গোলযোগ ঘটে নাই।

এই জেলার প্রায় প্রত্যেক গ্রাম ও নগরের দিকট ঠাকুর
সন্ধারদিগের নির্মিত বাসভবন ও হুর্গ দৃষ্ট হর। সকল
ছর্গের অবিফাংলই ধ্বংসাবস্থার পভিত। ১৮৫৮ খুটান্দে ললিতপুর-বিজয়ের পর সেনাপতি সর হিউ রোজ উহার অনেকভলি
ভালিরা দেন। এখন আর ঐ ঠাকুরেরা পথিকের নিকট
অর্থা কর আলার করিতে পারেন না। বিজ্ঞানৈলপ্রেণীর সমুর্মিত শৃষ্টের অনেকভলি প্রাচীন মন্দিরের ক্রমোবনের দৃষ্ট হর।
ঐ ভলি প্রাচীন গোঁড় অধিবাসীদিগের কীন্তি। কর্তমান জৈন
অধিবাসির্কের উদ্বোধি এখানে একটা স্থচার মন্দির

২ উক্ত জেলার অন্তর্গত একটা তহসাল। ললিউপুর, বংশী, ভালবেহাৎ ও বালাবেহাৎ প্রগণা ইহার অন্তত্তি। ভূমিমাণ ১০০২ বর্গমাইল।

্ঠ উক্ত জেলার প্রধান নগর ও বিচার স্বরণ স্বাসী

হইতে লাগর বাইবার পথে সন্ধান নদীর পল্টিম ক্লে অবছিত।

এই নদী বামুনী নদীর একটা শাখা। রাণী ললিতা দেবীর
নামান্থসারে এই নগরের নামকরণ হইরাছিল। প্রবাদ — একদা
রাজা ক্ষেলসিংহ জলোদরীরোগে আক্রান্ত হইরা সপত্নীক অবোধ্যার তীর্থাত্রা করেন। বর্তমান ললিতপুরের সরিধানে আলিরা
রাজা ও রাণী রাত্রিবাস করিলেন। রাত্রে রাণী প্রশ্ন দেখিলেন
বে, "নিকটবর্ত্তী জলাপর হইতে কাই (Conferve) উজোলন
করিরা ভক্ষণ করিলে রোগ আরোগ্য হইকে।" তদক্লারে
প্রোতে রাজা রাণীর স্বপ্লাদেশ পালন করিলেন। রাজা রোগমুক্ত হটলেন। তিনি রাণীর স্বপ্লের রুতজ্ঞতা রক্ষা করিরা
রাণীর নামান্সারে সেই স্থানে পলিতাপুর নগর স্থাপন করিলেন।
এখনও রাজার প্রেডিটিত "স্থ্যেকস্নাগর" বিভ্রমান রহিরাছে।

এখানকার একটা মসজিকে হিন্দুকীর্ত্তির নিদর্শন দেখিয়া মনে হর যে, মুস্কমানগণ হিন্দু মন্ত্রিকিটনে সামাক্ত পরিবর্তন মারা মসজিকে রূপান্তরিত করিয়াছেন। এই মন্দিরে নাগরী অকরে একথানি শিলাককক উৎকীর্থ আছে। তাহাতে ১৪১৫ সম্বৎ দৃষ্ট হয়। উক্ত কলকে পাঠানরাজ ফিরোজ শাহ "রাজাধিরাজ-পতে শ্রীস্থরতান পেরোজশাহী" নামে বর্ণিত হইয়াছেন। অধিক সন্তব, মালবের খিলজিবংশীর রাজগণ হিন্দুকীর্তি নাশ করিয়াছিলেন।

ললিতপুরাণ (জী) বেছিগুরাণভেষ। [ললিতবিতর দেখ] ললিতপ্রহার (পুং) জয় প্রহার।

লালিভিলালিভ (🏚) অভি হুদার।

ললিতলোচন (ত্রি) স্থানরচন্ধ্য। (ত্রী) বিভাধর বাণদন্তের ক্ঞা। ললিতবনিতা (ত্রী) স্থানী ত্রী।

লালি তবিস্তর (পং) বুদদেবের (শাকাসিংক) জীবনচরিতবিষয়ক ক্রপ্রাচীন বৌদগ্রহতেল। [গাথা দেখ।]

ললিতবৃহে (পং) > বৌদদতে নমাধিভেন। ২ দেবপুত্রভেন। ৩ বোধিসবভেন।

ললিতা (জী) শনিত-টাপ্। > কন্ত্রী। ২ দারী ৷ (রাজনি•) ৩ নদীবিশেষ। কালিকাশুরাণে লিখিত আছে—

প্রাকালে ব্রহ্ম-নন্দন বশিষ্ঠ নিমিরাজার লালে দেইটান এবং রাজর্থি নিশিও বশিষ্ঠশালে দেইটান হল। তথন বশিষ্ঠ ব্রহার উপাদেশে কামরূপলীঠে সম্ফাচনে কঠোর তপোহমুক্তান করেন। বিফ্ তপভার তুই হইরা ভাঁহাদে বর দেন, বশিষ্ঠ এই ব্রব্রজাবে অনুভকুও নামে এক মহাকুও বিশ্বাপ করেন, এই কুতের পূর্কে লালিতা নামে মনোহারিণী ও বন্ধিকালাসকগামিনী এক নদী আছে, সহাবেষ এই নদীকে অবভাৱিত করেন। ব্রেশাথ মানের অক্লাভূতীরার দিন এই নদীকে বান করিলে শিবকোক- আবি হর। গণিতানদীর পূর্বাতীরে ভগবান্ নামে এক পর্কত
আহে, এই পর্কতে ভগবান্ বিষ্ণু শিক্ষমণে বিরাজিত আছেন।
বাহারা গুরুষাধানশীতে লণিতামান করিয়া এই পর্কতে, ভগবান্
বিষ্কুর পূজা করে, তাহাদের ইহলোকে নানাম্লথ ও পরলোকে
বিষ্কুবোকে গতি হইয়া থাকে। (কালিকাপু ৮১ অ॰)

বৃহদ্দীলতদ্ভের ২০ অধ্যারে এই তীর্থের বিষয় বর্ণিত আছে।
২ গোলীবিশেষ। এই গোলী শ্রীরাধিকার দধী। শ্রীমতী
রাধিকার প্রধানা অন্তস্পীর মধ্যে একজন। গোলোকে
রাসমণ্ডলে শ্রীমতী রাধিকার লোমকূপ হইতে এই সকল গোলীর
উৎপত্তি হয়। (ব্রক্ষবৈবর্ত্তপূ০)

পন্মপুরাণে পাতালখণ্ডে লিখিত আছে বে, বিনি ললিতা, তিনিই চুগা এবং রাধিকা, ইহাতে কোন ভেদ নাই।

"বা হুগা সৈব ললিভা ললিভা সৈব রাধিকা। এতাসামস্তরং নান্তি সভ্যং সভাং হি নারহ॥"

(পদ্মপু• পাতালখ• রাসলীলা)

ত রাগিণীভেদ। সঙ্গীতদামোদরের মতে এই রাগ মেঘ-রাগের পত্নী।

"ললিতা মালসী গোড়ী লাটী দেবকিরী তথা।
মেঘরাগত রাগিণ্যো ভবন্তীমাঃ স্থমধ্যমাঃ ॥" (সলীতদামোদর)
হন্মগুতে এই রাগিণী হিন্দোলরাগের পত্নী, সোনেশ্রমতে
বসন্তরাগের পত্নী। এই রাগিণী বথা—স, গ, ম, ধ, নি, স।
অথবা স, রি, গ, ম, প, ধ, নি, স ইহা প্রথম। ধ, নি, স, গ,
ম, ধ ইহা ছিতীয়। ইহার স্থরণ ও ধান—

"রিপুবর্জ্যা চ ললিতা ঔড়বা সত্রয়া মতা। মূচ্ছনা গুদ্ধমধ্যা ভাৎ সম্পূর্ণাং কেচিদ্চিন্নে। বৈবতত্রয়সংযুক্তা শিতীয়া ললিতা মতা॥

- Wa

প্রাকুলসংক্ষেমান্যকণ্ঠ স্থগোরকান্তির্থ বতী স্থগৃষ্টি:। বিনিম্বসন্তী সহসা প্রভাতে বিলাসবেশা দলিতা প্রদিষ্টা ॥

(সদীতরত্বাকর)

ললিতাতন্ত্র (রী) তরভেদ।
ললিতাতৃতীয়াত্রত (রী) বোবিদ্বতভেদ।
ললিতাদিত্য (পুং) কানীবের কর্কোটবংশীর একজন বিখ্যাত
রাজা। ইহার উপাধি মৃত্যাপীড়া চুর্যুক্তবর্ধনের পুত্র। মহারাজ
ভারাপীড়ের পর নিংহাননে আরোহণ করেন। মহারাজ চত্রাপীড় ইহাকে চীনসবাট্ন করেন সভার দুভরূপে পাঠাইরা
ছিলেন। ইনি কনোজরাজ বশোবর্দাকে পরাজিত করিরাছিলেন। ৭২০-৭৬- থুটাক পর্ত্তিভ্ ইনি রাজ্যশাসন করেন।

ললিতাদিত্য (२४), কাখীরের একজন রাজা। [কাখীর দেখ।] ললিতাদিত্যপুর (ক্নী) দলিতাদিত্যকর্ত্ব প্রভিত্তিত নগরতের। ললিতাপঞ্চমী (স্ত্রী) আখিন মানের ওক্লাপক্ষমী ভিথি, এই দিলে দলিতাদেবীর (পার্মতী) পূজা হইরা থাকে। ললিতাশীড় (পুং) কাখীরেরাজ দলিতাদিত্য।

ললিতাপুর, আচীন নগরভেদ। এখানে দলিতাদেবী বিরাজিভ আছেন। (বৃহদ্ধীল- ২২)[ললিতপুর দেখ।]

ললিতাব্রত (क्री) ব্রতভেদ।

ললিতায়ন্তী (জী) বডভেন।

ললিতাসপ্তা (ত্রী) ললিতাখা সপ্তমী। ভাজমানের স্কল্পসপ্তমী বতবিশেব, এই সপ্তমীডিখিতে ঐ বতের অফ্চান করা
হর, এই বস্তু ঐ বতের নাম ললিতাসপ্তমীব্রত, ইহাকে কুড়ানবতও কছে।

লালিখ, আটীন জনপদতের। (মার্ক- ৫৭৩৭) বামনপ্রাদে (১৩৩৮) নলিল এবং অপরাপর প্রাদে কণিল পাঠ দৃষ্ট হয়। লালিখ (পুং) জাতিবিশেষ।

ললীতিকা (ত্রী) তীর্ঘদে। চলাজনপদে অবস্থিত।

(ভারত আচ৪।১২৬)

লল্যান (রী) জনগদভেষ। (রাজভন্ন- ৬।১৮৩)

शङ्ख (पूर) ब्यां किर्बिन्दका । महाध्या ।

লল্ল, বিধাননালাপ্রণেতা। চুণ্টিরাজ গলোপাধ্য নামে আৰু
একজন প্রতিকার দৃষ্ট হর। তাঁহার রচিত মৃতপত্নীকাধান,
অর্গহারেটসত্রপ্রান্ধা ও হৌত্রসামান্ত গ্রন্থ কেথিলে বোধ হয় বে
উভরেই এক স্যক্তি।

লক্ল, জ্যোতিবরত্বকোৰ, গণিতাখ্যার ও গোলাখ্যার এবং নিয়ধীবৃদ্ধিদ-মহাতত্র নামক জ্যোতিপ্র'ছ রচরিতা ত্রিবিক্রম ভটের পুত্র।
ভাররাচার্য্য নিছান্তনিরোমণিতে শেবোক্ত গ্রহের উল্লেখ
করিরাছেম।

লক্ল(ছন্দ), হিন্দবংশীর একজন রাজা। মণ্ডণের পূত্র ও বৈর-বর্ণার পৌন। ইহার মাডা অণহিলা চুলুকীবরবংশীর ভিলেন। লক্লবারাস্মৃত (পুং) > লক্ল এবং বারাহের পুন। ২ সক্ষ্যু-সমুক্তরপ্রদেতা।

লক্লাদীক্রিত, কৃষ্কটিকটীকা-রচরিতা। সন্মণের পুত্র এবং শবর বীন্দিতের পৌত্র। ইনি ১৮২১ খুঠাকে উল্প প্রস্থ রচনা করেন।

লালিয়াশাহী, ভাগুলের পাহিবংশীর একজন বিশু রাজা। ইইার অপর নাম কমন্ত। উন্ভাজপনে ইহার রাজধানী ছিল। রাজ-তরন্ধিতে (৫)১০০) বর্ণিড আছে, মহারাজ প্রভাকরদেকের মন্ত্রী নোপানবর্গা ইহার পুত্র ভোরনাবকে নিকোননাচ্যুক্ত করিয়া- ছিলেন। খোরাসানপতি আমক ইবন্তসেইর স্বসামরিক (৮৭৪--৯০১ খঃ) ছিলেন।

मह्यक्रोलाल (११) अवसन अइकात।

न्य (ही) न्-व्यन्। ३ काकीशनः (भन्छ) २ नयमः ।
क नामक्करः । ६ केवरः । (नूरः) नवनमिक्तिः म्-व्यन्। ८ तमः ।
"व्यक्तिकादिवद्यन्दिकक्षमान्त्रभीक्षनान् वादिनवान् वमक्ति।"

(त्रष् ১७।७७)

 বিনাশ। ৭ ছেলন। ৮ কালভেল। অটাদশ নিমেবে এক কাটা, এই কাটার এক লব।

'कहानन निरमवाख कांक्षा कांक्षाबद्धर नदः।' (दश्म)

৯ পক্ষিভেদ, লাবানামক পক্ষী। (রাজনি॰) > কিক্সম।

১১ পক্ষ । ২২ গোপুদ্ধকোম । (রযুটাকার মরিনাথধুত বৈজরতী)

২২ রামচক্রের পুত্র । রামারণের উত্তরকাতে লিখিত
আছে বে, রামচক্র সীতাদেবীর গর্ভাবস্থার লোকাপবাদভরে ভীত হইয়া তাঁহাকে বর্জন করিতে লক্ষণের প্রতি
আদেশ দেন, লক্ষণ সীতাকে লইয়া গিরা বাল্মীকির তপোবনে
রাখিরা আইসেন । সীতা বাল্মীকির আলরে বমজ হইটী

সন্তান প্রস্করকে ক্রিয়োচিত সংস্কৃত করিয়া রামারণ গান
শিক্ষা দেন । লব ও কুশ রামচক্রের সভার রামারণ গান করিলে
রামচক্র তাঁহাদিগকে পুত্র বলিয়া জানিতে পারিয়া প্রথম্বকে
গ্রহণ করেন । (রামারণ উত্তরকাণ) [সীতা ও রাম শব্দ দেখ ।]

লবক্র প্রং) ২ ছেদক। ২ জব্যভেদ।

লবঙ্গ (ক্লী) বুনাতি শ্লেয়াদিকমিতি লু (তরত্যাদিভাশ্চ। উণ্
১০১৯) ইতি অলচ্। অনামধ্যাত বণিক্দ্রন্তেদ। (Caryophyllus aromaticus=Cloves) হিন্দী—লোঙ্, লোজ,
মহারাষ্ট্র ও কলিজ—লবজকলিকা, লবিল; তামিল—কিরম্বের,
কিরাঘু, ইলবজ-অল্লু, কর্মবাল্লুইক্রম্বু; তৈলল—লবজল্,
জ্রাবিড়—লবঙ্,। মলমালম্—ছঙ্কি, শিলাপুর—বরল; পারভ—
মেথক্; বালালা—লল্ল, লবল। সংস্কৃত পর্যার—দেক্ত্র্ম,
জ্রীপ্রক্র, ক্রিপ্রস্কা, লবলক্লিকা, দিব্য, শেথর, লব,
জ্রীপুন্দা, কচির, বারিসম্ভব, ভ্লার, গীর্ঝাণকুর্মা, চন্দনপুন্দা।

এই বৃক্ষ মালাকা দ্বীপে প্রভৃত করে। ওলনাক বণিকেরা ব্যন আব্দ্ধনা দ্বীপে লবলের চাস একচেটিরা করিতে সচেই ছিলেন, তথন কোন স্থবোগে দক্ষিণভারতে ও অভান্ত গ্রীন্থবান স্থানে উহার চাস বিস্থৃত হইরা পড়ে। বাজারে বাণিজ্যার্থ আনীত বে লবক আমরা দেখিতে পাই উহা উক্ত বৃক্ষের মূল-ক্লিকামাত্র।

केंद्रम गात्रकुक वृद्धिकात्र गवन त्वांगन कताहै निवन । धानाम

বধারীতি মৃত্তিকার পাট করিয়া ১২ ইঞ্চ অস্তর এক একটা ফল পুতিতে হর। ৫ সপ্তাহের মধ্যে গাছের কলা বাহির হইরা থাকে। ঐ সময়ে গাছের উপর আতপতাপ না লাগে, এই-রূপ ভাবে আচ্ছাদন দেওয়া আবশুক। সময় মত জমিছে কল না দিলে গাছ নষ্ট হইবার সম্ভাবনা। গাছ ৪ ফিট স্মান্দাক बढ़ हरेल এक এकी खेंगारेबा ७० फिर्ट खड़त পুভিতে हन । ৰালুকামৰ অথবা আগ্নেন্ন-লৈলোদগারিত মৃষ্টমে রোপণ করিলে ইহার ফল অধিক হয়। বুক্সরোপণের ছব বৎসর পরে ফল হইতে আরম্ভ হর এবং ১২ বৎসর পর্যান্ত পর্যাপ্ত পরিমাণে লবন্ধ উৎপন্ন হইয়া থাকে। তদনস্কর বক্ষের প্রোঢ়াবস্থা। ঐ সমরে এক একটী বুকে বৎসরে /৩ হইতে /এ• পর্যান্ত ফুল পাওরা বার। তৎপরে ক্রেমশ: কমিতে থাকে। স্থমাত্রা ছীপে প্রায় এক বৎসর অন্তর ফুল হয়। সেধানে ২০ হইতে ২৪ বৎসর পর্যন্ত গাছ জীবিত থাকে। ঐ সময়ে গাছের भक्रवश्राम कित्र विक्रित रहेगा श्रीजंडे रहेगा यात्र। आयत्रना **पी**रभ ১২ হইতে ১৫ বৎসর পর্যান্ত গাছের ফুল ধরে না। তার পর প্রাচুর ফুল হয়। ৭৫ হইতে ১৫০ বৎসর পর্যান্ত ফল হুইডে দেখা যায়। এই কারণে প্রতি ৮ বংসর অন্তর তথায় লবলের চাস হইয়া থাকে। তাহাতে ফুলক্লিকার ব্রাস উপলব্ধি হয় না।

मूनकनिकाश्वनि डेब्बन नानवर्ग हरेरानरे वृक्त हरेरा जुनिया লওয়া হয়। হাতে করিয়া এক একটা কলিকা উত্তোলন করাই প্রকৃষ্ট উপায়, কারণ তাহা হইলে ফুল নষ্ট হইবার কোন ভয় থাকে না। উচ্চ ডালে যে ফুল থাকে, তাহা ভিড়িয়া লইবার জন্ত একস্থান হইতে অন্তত্তানে লইয়া যাইবার উপযোগী সিঁডি ব্যবহৃত হয়। অনেক সময় গাছের নিমে কাপড বিছাইয়া ব্ৰকোপরি বংশবৃষ্টি দ্বারা আঘাত করা হইরা থাকে। এই প্রথার গাছের ডালপালা ভালিয়া গাছ নষ্ট হওয়ারই সম্ভাবনা। ইহার পর উত্তোশিত কলিকাগুলিকে নির্মিত প্রণালীতে ওকাইরা কটাশেবর্ণ (Brown) হইয়া আসিলে ধলিতে ভরা হর। স্থমাত্রা দ্বীপে মাহরের উপর কলিকা বিছাইয়া সূর্য্যভাপে গুকান হইয়া থাকে. কিন্তু অস্তান্ত ছানে চেটাইর উপর মাতুর বিছাইয়া তহুপরি লবন্ধ-কলিকা ছড়াইয়া দেয় এবং তাহাঁই মৃতু জন্মির উত্তাপে রাখিরা কলিকাগুলিকে ধৃমনিষিক্ত বা খেলবুক্ত করিরা লয়; किंख এই धूमनिविक कतिवात शृद्ध कथनहै गत्रम जान निक कतिया नव ना । गथन नवकश्वनि अनुनद्दाव मध्य हिनिदन छानिया यात्र. जथनहे जाश वानित्कात्र छेनात्वानी हहेता शास्त्र।

লবদের কনিকা ও ভাহার বোঁটা জলে চোঁরাইলে এক প্রকার স্লগত তৈল পাগুরা বার। উহা বর্ণহীন এবং কথন কথন নাবাল হরিতাবর্ণের হইতে ধেখা বার। স্লগতি জন্য (perfumery) এবং বদা, সাবান ও মডের গন্ধুন্ধি করিতে উহা সাধারণতঃ ব্যবহৃত হয়। অর্থগরাক্যে কার্কালক এসিডের সহিত উহা মিশান হইরা থাকে। ৪ ঔষ্ণ লবল তৈল এক গালন স্পিরিটে মিশাইয়া লইলে লবলসার (essence of cloves) প্রস্তুত হয়।

বেনকুলেন, পিনাং, আষদ্ধনা ও আঞ্জিবর আত লবক্ষই লব্বেংকুই। ঔবধার্থ বে সকল লবক ব্যবহৃত হন্ন, তাহা উগ্রগছ-বিশিষ্ট ও তীত্র কটু এবং নথাগ্র ছারা পেবণ করিলে তৈল বাহির হইরা থাকে। ভারতবর্বের বাজারে বে সকল লবক পাওরা ছার, উহা পুরাতন বৃক্তরাত, উহা বিশেষ কোন কার্ব্যে লাগে না। আফ্রতি, বর্ণ ও আভ্যন্তরিক তৈল পরীক্ষা করিলেই লবকের প্রেটেদ সহজে নির্ণীত হইতে পারে।

লবন্ধ উত্তেজক, বায়ুনাশক ও উৎকট গ্ৰন্থক। দীর্থকালহারী উদরাময়ে, পাকহালীর বেদনার ও গর্ভাবহার নিরতিশর
বমন হইতে থাকিলে ইহা বিশেব উপকারক। ডাঃ ঐলসি,
শারীরিক অবসরতা ও অজীর্ণ রোগে দিবসে হই বা তিনবার
লবঙ্গের কাথ সেবনের ব্যবহা দিরাছেন। তাঁহার মতে
আর্দ্ধ পাইণ্ট উত্তপ্তজনে ১ ডাম লবকচ্ব সিদ্ধ করিয়া
ভাহার ১ বা ২ ঔল প্রতিবার সেবনীর। মারবিক দৌর্মলো
ও অগ্রিমান্দ্যে চিরতা ও লবঙ্গের কাথ বিশেব উপকারপ্রদ।
ইহাতে পিপাসা, বমন, উদরাগ্ধান ও পেটের বেদনা উপশম
হর। গেঁটেবাত, নিরঃপীড়া ও দস্তশ্ল স্বক্ষতিল গাগাইলে
উপকার দর্শে। হেকিমী মতে ইহার ৩৭—উত্তেজক ও প্রেমনাশক, বিবনাশক ও মন্তিক সিগ্ধফারক। ইহা চক্ষুরোগে
হিত্তিক, হ্রদরের বাডনা-নিযারক, বলকর ও প্রিমিক।

ভাত্রপাত্তে অথবা পাথরে পদ্মম্থু গইরা লবল বিসরা চক্ষের পাভার গালকে করিরা প্রদেপ দিলে চক্ষের জলপড়া ও বোজকছগোষ (Conjunctivitis) নিবারিত হয়। লবদ প্রদীপের শিথার পূড়াইরা ভক্ষণ করিলে খুস্খুনে কাসি বিদ্রিত হইরা থাকে। ব্যক্তনাধিতে গরম মদালার সলে ও পাণে লবক সিদ্ধ করিরা থাইবার ব্যবহা বালালার অধিক প্রচলিত।

ইংরাজী ভৈষজ্যভবে লবস্ব-তৈল-বিশেষ Oleum Carysphylli নামে পরিচিত। রাসারনিক প্রক্রিয়ার বিশেষ পরীকা ছারা ইহাতে Eugenol হা Engenic acid, Salicylic acid, Caryophyllic acid, Carmufellic acid ও সামাজ নাজার taunic acid পাওরা সিরাছে।

প্রতিবংসর ১১০৯৮৪১ টাকার স্বন্ধ আঞ্জিবর, আদেন ও ভারতীর বীপপুঞ্জ হইডে বালালা, বোঘাই, ও মাস্তাবে ক্ষান্দানী হয় এবং প্রতিবংসর এখান হইডে ক্লায় ৩৬৭২৪৯ होका मृत्गात गर्वक देश्मक क इंडेनक, क्रकर (हेट्ट्रिनहेन्त्वके), धनिवाद कृतक, चार्यन, क्रांक क चडाड स्वरण प्रधानी हहेता थारक।

বৈশ্বক্ষতে ইহার গুণ—শীতন, ডিজ, কটু, নেত্রহিতকর, দীপন, পাচন, কচিকর, কফ, শিশু ও অহ্ননোধনাপক, ডুঞা, হর্দ্দি, আগ্নান, শুন, আগুবিনাশক, কাল, খান, হিল্লা ও ক্ষরনাশক। (ভাবপ্রত রাজনিত)

শ্বিরহানগদস্থা তাপিনী কাপি কামিনী।

গবকানি সমূৎস্কা গ্রহণে রাহবে দলৌ ॥" (উডট)
লবক্ষক (রী) গবক খার্থে কন্। লবক । (বস্বর্জা°)
লবক্ষকন্পাত্রী (রী) গদু ভাগীনগর। (বৈছকনি°)
লবক্ষকলিকা (রী) শনক। (রাজনি°),
লবক্ষলাত্রা (রী) প্রশাতাবিশিট।

শ্লনিত্নবন্ধলতাপরিশীলনকোমলমগ্রীরে।
মধুকরনিকরকরভিতকোকিলভূলিতভূগভূতীতে ॥" (জনবেশ)
২ রাধার সধী বিশেষ।

লবঙ্গাদি (পু:) অধীর্ণাধিকারে ঔবধবিশেষ। প্রস্তুতপ্রণালী— লবল, তঁঠ, মরিচ ও সোহাগা একত্র সমভাগে উত্তমরূপে চূর্ণ করিবে। পরে ইহা অপামার্গ ও চিভার রুসে ৭ বার ভাবনা দিবে। অধির বলাবল অনুসারে উপযুক্ত মাত্রায় এই ঔবধু সেবন করিলে অধীর্ণরোগ আও প্রশমিত হয়। (রুসেক্সনারস অধীর্ণাধি)

ভৈষ্মার্থাবলীতে ইহার মাত্রা এক রতি নির্দিষ্ট আছে। लवक्राप्तिहर्न (क्री) धार्नीरवांगाधिकारवाक हूर्त विधविरनव। **এই हुर्न यह ए बृहम्एअस छूटे अकात। अञ्चल अनानी**— दत्तनदलानि हुर्ग-नगन, जाणारेह,, मूथा, द्वन् है, जाकनादि, মোতরদ, जीता, धारेक्न, लाध, रेख्यव, वाना, धाम, त्यक्रधुना, काञ्चापुत्री, निश्रम, चँठ, बहाकाखा, यवकाब, रेमसब्बाबन छ র্যাপ্তন এই দক্ত দ্বব্য সম্ভাগে লইয়া উদ্ভমন্ত্রণে চূর্ণ ও মিল্রিড করিবে। এই চূর্ণের মাত্রা ১০ রতি হইতে ২০ রতি, অনুপান फड्रामक, यर् या छांभछ्य। এই চূর্ণ সেবনে অधिमान्या, গ্রহণী ও অভীসার প্রভৃতি উদররোগ আশু প্রশমিত হয়। वृरुव्यक्तारिहर्न-नद्भ, चाफरेह, मुखा, शिशून, मजिह, देनस्व, रद्या, धान, क्षे एम, कुछ, अप्रिजी, आप्रकम, क्रुक्कीवा, महन লব্ণ, রুমান্তন, থাইফুল, মোচরুম, আকুনাদি, তেলপত্র, ভালীল-পৰ, নাগেৰর, চিতামূল, রিট্লবণ, তিতলাউ, বেলওঁঠ, ওড়ছক, এলাচ, পিপলমূল, বনবমানী, বমানী, বরাজান্তা, ইত্তরেব, ওঁঠ, वाफिम करनत हान, वरकात, निमहान, त्यकपूना, नाहिकात, गमुजस्मा, मारागात वरे, वामा, कृष्टेक मुलात हान, आवहान, भागशान, कोबी, भव, त्योह, शबक अ शावम आछारक সমভাগ চূর্ণ। এই সকল এবা উদ্ধনরশে চূর্ব করিরা একতা মিজিত করিবে। অমুপান মধুও ততুলোদক। ইহা সেবনে গ্রহণী, অতীসার ও প্রদর প্রভৃতি রোগ নই হর।

অন্তবিধ — লবল, জীরা, রেণুক, সৈক্ষ, ওড়ংক্, তেজপত্র, এলাচি, বনবজানী, বনানী, সুবা, ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, ওল্ফা, আকনাদি, চিরতা, গোক্র, জৈত্রী, ভারফল, দারহরিত্রা, নলদ (অটারাসৌ), রক্তচন্দন, মুরামাংসী, শটা, মউরী, মেথি, সোহাগার বই, রক্তনীরা, ববকার, সাচিকার, বালা, বেলওঁঠ, কুড়, চিতা-কুল, লিপুলমুল, বিড়ল, ধনে, পারন, ক্রত্র, গক্ষ ও লৌহ প্রত্যেক সমভাবে চুর্ল ও মিশ্রিত করিয়া লইবে, মাত্রা এক মাবা হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমণা অর্কভোলা পর্যান্ত বাড়াইতে ছইবে। এই চুর্ল অভ্যন্ত অগ্নির্ভিকারক ও গ্রহণীরোগনাশক। ইহা ভিরা অন্তান্ত উদররোগেও বিশেষ উপকারী।(ভৈষক্ররমাণ্ডাইণীরোলাগািশি)

৩ প্রীরোগাবিকারোক উবধভেন। প্রস্তুত প্রণালী—লবল, লোহাগার খই, মুণা, ধাইকুল, বেলভাঁঠ, ধনিরা, জারকল, খেড-ঘূনা, গুল্ফা, দাড়িমকলের ছাল, জীরা, দৈবন, মোচরল স্থান্দির্ল, রলাজন, অন্ত্র, বল, বরাক্রান্তা, রক্তচন্দন, গুঁঠ, আতাইচ, কাকড়া-দুলী, ধনির ও বালা প্রত্যেক সমতাগ চুর্ণ করিরা দিশ্রিত করিবে। অনুণান ছাগহ্য। গর্ভাবহার সংগ্রহগ্রহণী অতিসার, জর ও আমরক্তাতিসার হইলে ইহা প্রেরোজ্য। এই চুর্ণ ভূলরাজরুসে ভিজাইরা তিমদিন ভাবনা দিতে হর।

৪ গুলরোগাধিকারোক্ত ঔষধভেদ। প্রস্তুতপ্রণালী—লবঙ্গ, তেউড়ীমূল, দন্তীমূল, যমানী, তঁঠ, বচ, ধনিয়া, চিতামূল, ত্রিফলা, পিপুল, কট্কী, প্রাক্ষা, চই, গোলুর, যবকার, এলাইচ, বনযমানী (অজমোলা) ও ক্রৈয়ব সমভাগে চূর্ণ করিয়া ২ তোলা পরি-মালে উক্ত গুলের সহিত সেবন করিবে। ইহাতে সকল প্রকার গুলা, শ্রেণ প্রভৃতি বিনষ্ট হর।

লবঙ্গাদিমোদক, অগ্নিমান্দ্যরোগাধিকারোক ঔষধভেছ।
(চিকিৎসাসার°)

লবকাদিবটী, অমিশাল্যরোগাধিকারোক ঔবধভেদ। প্রস্তত-প্রণালী—লবদ, তঁঠ, মরিচ ও সোহাগার ধই প্রভ্যেক সম্ভাগে চূর্গ করিয়া লইয়া এরং অপামার্গ ও চিতাম্লের কাথে ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ রাজ্য প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবনে প্রভ্ত মাংলাদি আদি ইবল থাকে। (ইভবজ্যরত্বা অভিনাল্যাদি) লবলাদিবটী (মী) অধীপরোগাধিকারোক ঔবধবিশেব। প্রভ্তপ্রণালী—লবদ, আতীক্ষ্য মুন্দ, কুড, সাধানীরা, কাল-ব্যক্তি, এলাচি, দালচিনি, সোহাগা, ক্ছিড্ছ, মুণা, বচ, ম্মানী, বিট্লবণ, লৈহবল্ব, ক্রিকাড়েক এবজ্যুর্গ, পারা, গ্রুক, লোহ, ক্রম্ব প্রত্যেক করিবা পাণের

রূসে মর্দন বরিরা বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপাদ উঞ্চল। ইহা সেবনে গ্রহণী, আমদোব, পেটবেদনা, প্রবাহিকা, জর, ককজনিত-শৃল, কুঠ, অর, পিন্ত, প্রবলবায়, মন্দায়ি ও কোঠগতবাড প্রভৃতি আন্ত প্রশমিত হয়। (রুসেক্সার্গ অজীর্ণরোগার্ধি) লবট (পুং) কাশীরহ একজন প্রসিদ্ধ ব্যক্তি।

(রাজতরন্ধিণী ধামণভ,২০৪)

লবন (ক্লী) পুনাতি জাডামিতি লু-নন্দ্যাদিয়াৎ প্যু, পুৰোনরাদিয়াৎ াক্ষ। কাররসকুক ত্রব্য।

বিছিন্ন ছানীর নাম। হিন্দী—লোগ, নমক, নূন, লবণ, নিমোক; বোছাই—নমক, নিমক; মরাঠী—মীঠা, ভর্জন — মিঠু, তানিল—উর্মু; তেলগু— লবণম,উর্মু; কণাড়ী—উর্মু, সলরালম—উর্মু, লবণম; ব্রদ্ধ—ল; শিলাপুর—লুগু; আরব—মিলালুল মাজিন, পারক—নমক, নমকে, গুর্দানি, ছমকে তারাম্; যব—উরা; দীন—রেন; ইংরাজী—Sea-salt, common salt, table-salt, করালী—Sel Commun, sel de Cuisine, sel Marin; জর্মণ—Chlorantrium Kochsalz, দিনেমার ও স্কইডিস্—Salt, ইতালী—Chloruro-di-Sodio, Sal commune, শেল—Sal.

ভারতে প্রধানতঃ ছই প্রকার লবণের ব্যবহার দেখা যার। প্রথম সাদা লবণ (Sodium Chloride) এবং ছিতীর ক্লকল্বণ বা বিট্লবণ। বিট্লবণে সাধারণ লবণের ভাগ থাকিলেও উহাতে অস্তাস্থ জব্যের মিশ্রণ থাকার উহা অনেকাংশে ভেবল-খণ্যুক্ত হইরাছে। স্থানবিশেবে ঐ খ্রণের অনেক ভারতম্য লক্ষিত হয়। সাধারণতঃ বিট্লবণে Sulphuret of iron পাওয়া যার। অনেক হলে ক্লোরাইড্ ও কার্কনেট অব সোডিয়াম্ উত্তর করিয়া ভাহাতে আমলকী ও হরীতকী মিশাইলে বে খণ পাওয়া যার, বিট্লবণে প্রথমানতঃ সেই খণ থাকে।

হিন্দৃত ব্যবাভীতভাগ হইতেই গ্রণের ব্যবহার জানি-ভেন। অধনকৈ ব্যবহার, আবলারনভৌত্তর হা১৯।২৪, ছান্দোগ্য উপ্রিক্ত এ১৯।৭, লভপথত্রান্দণ ১৪। ৫।৪।১২, আবলারনগৃত্যক ক্রিক্তা১০, গোভিল হা৩১৩ প্রভৃতি প্রাচীন গ্রহে গ্রপের ব্যবহার দেখা বার। মহাস্নি ক্ষতে ব্যব্ত আর্বেশপারে গ্রপের নিরোক্ত ক্রটী ভেদ নির্দেশ ক্রিয়াহেন।

ইলেড দিবিত আছে বে, সৈত্বৰ, সামুত্ৰ, বিট, সৌবৰ্চ্চল, হোমক ও উত্তিৰ প্ৰত্তি লৱণ সকল পৱ পছ ক্ৰান্তে উক্ত, বান্ত্ৰ-নাশক, এবং ক্ষম ও পিছকর এবং পূর্ব্ধ পূর্বক্রেমে নিয়, আছু ও মলস্ত্রের সক্ষমকর। সৈত্তব, ব্যক্ত, বিট, পাক্য, সাছার, সামুত্র, পভিত্র, ববকার, উহকার ও অব্যক্তিকা প্রভৃতি লক্ষবর্ম। ইহাদের গুণ লবণরস, পাচক ও সংশোধক। ইহা ছারা রসসর্ক্রের বিরেরণ এবং শরীরের ফ্রেছ ও শৈথিক্য সাধিত হয়।
ইহা সকল রনের বিরোধী উক্তগুবুক্ত ও মার্গবিলোধক এবং
সকল পরীরাংশের কোমলভাসাধক। এই রস অধিক্যান্তার
সেবন করিলে গার্টের কণ্ডু, মওলাকার ত্রণ, শোক্ষ, বিষর্গভা,
মুখে ও নেত্রে ত্রণ, রক্তপিত, বাভর্ক্ত, পুরুব্বহানি ও অল্লোদ্যার
প্রভৃতি পীড়া হয়।

শৈষ্য লবণ---চকুর হিউক্র, মুখপ্রির, রুচিকর, লঘু, অন্নি-রুষ্কিকর, বিশ্ব, মধুররদ, রুবা, শীতল, লোবনাশক এবং উক্ত দকল লবণ অংশকা উৎকৃষ্ট ও ফলদারক।

সামুদ্র লবণ-পরিপাকে মধুর, অমতি উঠা, অবিলাহী, ডেনফ, ঈবং নিল্প, শুলনাশক এবং নাতিপিত্তবৰ্ত্তন

সৌবর্চন লবণ—পরিপাকে লঘু, উষ্ণবীর্ব্য, বিশন, কটু, গুল্ল, শুল ও বিবন্ধনাশক, মুখপ্রিয়, প্রবৃত্তি ও কঠিকর।

রোমক (পাংগুলবণ)—তীক্ষ্ণ, অভিশব্ধ উষ্ণ, স্ত্রীনংসর্গ-লক্ষিত্র বর্জনকর, পাকে কটু, বায়ুনাশক, লঘু, বিসালী, পুল্ল, মলভেদক ও মূত্রকর। ওত্তিদ্লবণ লঘু, তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, হুদর ও প্রেমসক্ষয়কর, বায়ুর অহলোমকারী, তিক্ত, ও কটু। ওটিকালবণ ক্ষ্ণ, বায়ু ও ক্রমিশান্তিকর, লেখনকর, পিত্তবর্জক, অগ্নিকর, পাচক ও ভেদক। উষকার (ক্ষারম্ভিকাসন্ত্ত লবণ)—ইহা বাল্-কের অথাৎ বাল্কালাত পর্বতের মূলদেশত্ব আকর হইতে উৎপল্ল, কটু ও ছেদনকর। [এই সকল লবণের বিবন্ধ তত্তদ্শালে বিশেষ বিবরণ দ্রুষ্টবা।]

এই সকল লবণের মধ্যে সৈছব, সৌবর্জন, বিট্, সাম্প্র ও সাজার এই পাঁচটাকে পঞ্চলবণ কছে। একলবণ বলিলে সৈছব, সচল ও বিট্, চতুলবিণ বলিলে সৈছব, সচল, বিট ও সাম্প্র এবং পঞ্চলবণ বলিলে পুর্বোক্ত পাঁচটা বৃবিতে হইবে। চরকে কিন্তু পঞ্চলবণ হলে সাজার লবণের পরিবর্তে উত্তিদ লবণ সুহীত ভইরাছে। (স্প্রতে স্কর্তা ৪৬ আ০)

সংশ্বত প্রছে বেমন সৈদৰ অর্থাৎ সিদ্ধপ্রবেশবাত পার্কত্য লবণ ('Book-Salt'), সামৃত্র অর্থাৎ স্বর্থোডাণে ওক সম্প্রভগতা লবণ বা কর্কচ, রোমক অর্থাৎ সমানদীলসভাত এবং
লাকভানী বা লাভর প্রথলাত লবণ, পাংতল ও উবাহত অর্থাৎ
লবণাক্ত মৃত্তিকা হইতে উৎপন্ন লবণ, বিটুলবণ, সৌবর্কল বা
সোক্তল অর্থাৎ কালামিনক, ওটিল অর্থাৎ রেহা বা কালর
কালণ এবং ভটিক প্রভৃতি লবণের উল্লেখ আছে, সেইরণ
ব্রহান র্নামন-বিজ্ঞানে সাধান্ত লক্ত্রণ উল্লেখ বাধানণতঃ
ক্রিবলার সাম্বন-বিজ্ঞানে সাধান্ত । উল্লেখ লাধানণতঃ

Rock-Salt ও Sea Salt নাবে পরিচিত। কিছু ভারতে ভৱিন Marsh Salt ও Earth salt নামে আরও চুইটা শ্রেণী-ভেদ নির্দীত হইয়াছে।

ভারতবাদী জনসাধারণ থাতরবাের সহিত প্রথমিতঃ যে কর প্রকার দবণ বাবহার করে, নিরে ভাহার একটী ভালিকা দেওরা সেল:—

- > পঞ্জাৰী-সৈত্ৰৰ (লাহোরী ও সৈত্ৰৰ-লবণ)—ইহা সিত্ত্ৰনদের কন্দিপদিকে উৎপন্ন হয়। "কোহাটী" ও নিমক-স্বত্ত নামক লবণহর সিত্ত্বনদের পশ্চিমোত্তরভাগে পাওরা বার । এতত্তির হিমালর প্রদেশের মতিরাল্য হইতে আর একপ্রকার লবণের আম্বানী হইরা থাকে।
- দিলীর "অ্লভানিপুরী" লবণ—ইহা দিলীর লবণাক্ত মৃত্তিকা বনি (Pit-brine salt) হইতে প্রস্তুত হর'।
- শাভরণবণ—রাজপুতনার শাভিত্রবের জল ইইতে প্রভত হইরা বাকে।
- ৪ দিল্লাবণ—রাজপ্তনার দিল্বানা বিভাগের মৃত্তিকা

 হইতে প্রভাত হয়।
- কৌশিরা-লবণ--রাজপুতনার পশত্রা (পচবর্ত্তা) নামক ছানের মৃত্তিকা হইতে উৎপন্ন। মধ্যভারতেও এই লবণ প্রচলিত।
- ৬ কলোড়ী-লবণ--রাজপুতানার কলোড়ীপ্রদেশের মৃত্তিকাজাত।
- বরাগড়া-লবণ—বোৰাই প্রেলিডেনীর অব্যাত-বিভাগে
 প্রবৃত্ত হয়।
- ৮ কোৰণী-লবণ--বোৰাই-উপকৃসভাত।
- ৯ কর্কচ ও বনবার (কর্কচ) লবণ—মাস্রাজ উপকৃলে প্রান্তত হইরা থাকে।
- পলা (পাংগু)-লবণ—বালালার সমুলোপকৃলে বে লবণ নাধা-রণতঃ প্রস্তুত হয়।
- >> থারি (কার) লবণ—লবণাক্ত মৃত্তিকা হইতে বে লবণ প্রস্তুক করা হয়।
- >ং পাক্ৰা বা নিমক্-শোর—সোরা (Salkpetre) হইডে ৰে লবৰ পাওৱা বার।
- ১০ নেক্রক্লী অর্থাৎ লিভারপুল-লবণ—ইংলও, জন্দী ও
 জ্ঞালরাল্য হইতে বে লবণ ভারতে আমদানী হইরা থাকে।
 উহা গ্রেমানভঃ Liverpool Sult নামে কথিত। বর্ত্তনানকালে এই পরিষ্ণত লবণ ভারতবাসী জনসাধারণের
 ব্যবহার্য হইরাছে। তবে কোন কোন খানে কর্বচ ও
 সৈতবের প্রচলন আছেও সোজা-হিন্দু ও হিন্দু-বিধ্বাসণ
 সৈতবের প্রচলন আছেও সোজা-হিন্দু ও হিন্দু-বিধ্বাসণ
 সৈতবের প্রচলন করিয়া থাকেন।
- ১৪ क्षर ती-गरन-निरहनवीरन **धावक स्व**र्

- >৫ অর্ণিয়াপ্রী-লবণ—লোহিতসাগরের উপকৃলে প্রস্তুত হইরা থাকে।
- > । আদেন-লবণ---আদেন নগরের নিকট প্রস্তুত হয়। এই লবণ প্রায় প্রতিবংসর ৩০ ছাজার টন্ স্মামদানী হয়।
- ১৭ মন্বট ও মন্বটুসেদ্ধা—পারক উপসাগর উপকূলে প্রস্তত।
- ১৮ লেন্চা লবণ--ভিব্বতদেশে উৎপন্ন।
- ১৯ মণিপুর প্রভৃতি কুদ্রদেশজাত বিভিন্ন প্রকার লবণ।

এই সকল লবণ ভারতে প্রচলিত থাকিলেও লিভারপুল সহর হইতে যে 'Cheshire Salt' কলিকাতা, চট্টগ্রাম, রেকুন ও ব্রন্ধের প্রসিদ্ধ বন্দরে আমদানী হয়, তাহার পরিমাণ সর্ব্বাপেকা অধিক।

ভারতবর্ষের ভূতত্ব আলোচনা করিলে, মৃত্তিকান্তর বিশেষে লবণের অবস্থান নির্ণয় করিতে পারা বায়। ভূতত্ববিদ্ ব্লানফোর্ড ও মেড্লিকোট — কোহাট, কাঙ্ডা, বাহাত্রমেখল, মণ্ডি, লবণপর্মক ও হিমালয়-সন্ধিতি লিবালিক পর্মতভাগে প্রচুর লবণের অন্তিক লক্ষা করিরাছিলেন। তাঁহারা ইওসিন বা নিউম্লিটক্সরে-সিলিউরীয়-যুগন্তরে, পেলিওজোইক্-ন্তরে, জিপ্সাম্-ন্তরে এবং প্রাচীন ও আধুনিক টার্সিয়ারি-যুগন্তরে সৈদ্ধব লবণন্তর (beds of rock-salt) প্রাপ্ত হইরাছিলেন। এখনও কোহাট প্রভৃতি স্থানের লবণ-খনি হইতে সৈদ্ধব লবণ উত্তোলিত হইতেছে।

যুগান্তরীয় মৃৎস্তর হইতে প্রাপ্ত লবণ ব্যতীত ভারতের বিভিন্ন স্থানের সাগরোপকুলে ও ব্রন্তীরে স্থানীয় লোকের ব্যবহারার্থ যে সকল লবণ প্রস্তুত হইয়া থাকে, তাহার সংক্ষিপ্ত পরিচয় নিমে প্রান্ত হইল ;---

মান্ত্রাজ-এই প্রেসিডেন্সীতে পূর্ব্ধে সমুদ্রের লবণ-জল বাল্লাকারে পরিণত করিয়া লবণ প্রস্তুত করিত। স্থানবিশেষে লবণাক্ত মৃত্তিকা অথবা ক্ষায়জ ভন্ম জলনিষিক্ত করিয়া সেই লবণাক্ত জল হইতে লবণ প্রস্তুত করিয়া লইত। শেষোক্ত প্রথা একবারে পরিত্যক্ত হইয়াছে। প্রথমোক্ত প্রণালীতে যে লবণ প্রস্তুত হয়, তাহাই স্থানীয় লোকে ব্যবহার করিয়া থাকে। এডিয়ির বোষাই হইতে কতক লবণ এথানে আমদানী হয়।

বালালা—পূর্ব্ধে মেনিনীপুর ও বংশাহর ক্রেলার লবণ প্রস্তুত্বর প্রধান কারখানা ছিল। বেহার, ভাগলপুর ও মুদ্দের বিভাগে কতক পরিমাণ লবণ উৎপন্ন হইছে। কলিকাভার সন্নিকটবর্ত্তী সোরার কলসমূহে সোরা হইতে লবণ বাহির করিয়া শুরুরা হইছে। উড়িয়ার এখনও প্রয়োত্তাপে লবণজ্বল শুরুইয়া লবণ প্রস্তুত্ত হইয়া থাকে। পূর্বের ক্রিমে উভাপ বারাও পালা-লবণ প্রস্তুত হইছে।

বেরার—এথানে লোণার-ছদের লল ক্ইতে এবং আকোলার অন্তর্গত পূর্ণা বিভাগের লবণজলপূর্ণ কূপ ক্ইতে লবণ ভৈরারী। হইত। এখন আর এখানে লবণ প্রস্তুত হর না।

রাজপুতনা—শাস্তরহদ, দিন্বানাহ্রদ ও কাচোর-রেবাদা হুদের জন হইতে প্রভূত লবন প্রস্তুত হইরা থাকে।

বোষাই—সমুদ্রের লবণজ্ঞল স্থেগান্তাপে শুকাইয়া উপকৃল-দেশে বহুপূর্ব হুইতেই লবণ প্রস্তুত হুইরা আদিতেছে। কাষে উপসাগর তীরে, কচ্ছের রূপপ্রদেশে ও দিল্পপ্রদেশে এবং ঠানার লবণ প্রস্তুতের কারথানা (Thank selt-works) আছে। ইংরাজরাজ্ম লবণের বাবসা একচেটিয়া ক্রিবার অভিপ্রারে কাষের নবাবকে বার্ষিক ৪০ হাজার টাকা ক্ষ্তিপূরণ স্বরূপ দিয়া ঐ লবণের বাবসা রহিত ক্রিয়া দেন।

পঞ্জাব—এথানে প্রধানতঃ সৈদ্ধন লবণই উত্তোলিত হয়।

সিদ্ধনদীর অপর পারে বরুজেলার কোহাট ও কালাবাগ প্রবং
লবণগিরিতে (Salt-range) প্রভৃত সৈদ্ধর উৎপর হয়।
কালাবাগ ও লব্দগিরির সৈদ্ধর সিলিউরীয় যুগন্তরীয়, কাঙড়ায়ও কোহাটে মণ্ডিন্তরের (Mandi deposits) অমুরূপ।
এতত্তির এথানে গুরগাঁও জেলার লবণাস্বাদযুক্ত কুপজল হইতে
লবণ প্রস্তুত হইয়া থাকে। উহা শাস্তর-ভ্রদজাত লবণ
হইতে নিরুষ্ট।

যুক্ত প্রদেশ—লনগাক্ত কুপবারি হইতে এই বিভাগের নানা-ছানে লবণ প্রস্তুত হয়; কিন্তু ইহা অপরাপর স্থানজাত লবণের ন্থায় বিশুদ্ধ নহে। এথানকার লবণে Sodium Sulphate, magnisium sulphates, sodium carbonate ও nitre মিশ্রিত দেখা যায়। বুলন্দাহর ও মুক্তঃকরনগরে দামান্ত পরিমাণ লবণ প্রস্তুত হয়।

আসাম—লবণাক্ত কুপ এবং জোরহাট ও সদিয়ার লবণ-প্রভ্রবণ হইতে প্রভূত পরিমাণ লবণ প্রস্তুত হয়। কাছাড়, মণিপুর ও চট্টপ্রামের পার্স্কত্য প্রদেশেও এক্নপ কৃপের লোণাজন হইতে লবণ প্রস্তুত হইন্ন থাকে। অশিক্ষিত ও অর্দ্ধ সভ্য-জাতিরা বাশের চোলে লবণজন মূটাইরা লবণ প্রস্তুত করে।

ব্ৰহ্ম-পেশুর টার্সিরারি বৃগত্তরীর পর্বতসমূহে বহুলত লবণ-প্রাম্বরণ আছে। উহা হইতে স্থানীর লোকে লবণ প্রস্তুত করে। আকারাৰ হইতে মার্শ্ব ই পর্যন্ত সমুদ্রোপকৃলে সমুদ্রজল হইতে সামুদ্র লবণ প্রস্তুত হর।

ভারত গবমেন্ট লক্ষের বাণিজ্য একচেটিয়া করির।
১৮৮২ খুটালে লবণের প্রাজিমণ ২০০ টাকা ওক ধার্য্য করেন.।
খুটীর বিংশশতাব্দের প্রারম্ভে ঐ শুক্তের হার ২১ টাকার কম
হর। বর্ত্তমান সমরে ১৯০৬ খুটালে কলিকাতার বাজারে

৴৽ আনা সের লবণ বিক্রন্ন হইতেছে। পূর্কহারে প্রতি সের

৴>৫ লবে বিক্রন্ন হইত। তথন প্রতি মণের ৩৮৮ শ্লা
নির্দিষ্ট ছিল। বর্ত্তমান হারের লবণ উহা অপেকা প্রান্ন

১ টাকা কম হইরাছে। পূর্কহারে ভারতের নানাস্থানে
বৈরূপ হারে লবণ বিক্রন্ন হইত, নিমে তাহার তালিকা
দেওরা গোল—

ছাদের নাম টা আ পা ছাদের নাম টা আ পা

बिरो লাহোর কামরূপ <u>মূলতান</u> ক্লিকাতা ক্রাচী >8 কটক স্কুর বোদাই পাটনা স্থরাট কাণপুর মীরাট হোসঙ্গাবাদ ব্যুপুর জববলপুর আবু আকোলা লাখ নৌ সিকন্দরাবাদ **দীতাপুর** মহিত্মর শিমোগা ইন্দোর গোয়ালিয়র মাক্রাজ > 3 বেরেলি

মুসলমান-রাজগণের অধিকারকালে লবণের উপর গুক-আদারের ব্যবস্থা ছিল। ১৮০৩ খুষ্টাব্দের ৩৮ ধারা অমুসারে ইংরাজ-গবর্মেণ্ট সর্ব্বপ্রথম প্রতি মণ (৮২% পাউও) লবণের উপর ১ টাকা শুদ্ধ ধার্য্য করেন। ক্রমে প্রতিমণের শুক ্তাত তিন টাকা চার আনা পর্যান্ত উঠে। ১৮৮২ খুটাব্দে অক্যান্ত প্রদেশ অপেক্ষা বাঙ্গালার লবণগুর অধিক বর্দ্ধিত হইরাছে দেখিয়া ভারতরাজ-প্রতিনিধি ভারতের সর্ব্বত্রই সমান গুৰু গ্রহণের ্ব্যবস্থা করিরা প্রতিমণ ২॥• ধার্য্য করেন ; কিন্তু শীমান্ত প্রদেশে গোলমাল ঘটিবার ভয়ে কোহাট ও মণ্ডির লবণ-খনির উপর তিনি কোন কর ধার্য্য করেন নাই। কেবল কোহাট-খনি হইতে যে লবণ আকগান দীমাত্তে যাইত, ভাহার প্রতি মণ (শিকা ওজন=>•২ পাউও) ঃ• আনা ধার্য্য হইরাছিল। মণ্ডির धनिकां छ देव-सर्वात्र जनत्मा अधिक एक निर्मिष्ठ बहेबाहित। किंद्र है:ब्राकी नदन चरनका छाहां छ जानक कम । नदानंत्र এहे · अक्शार्गात जन है:बाक-गरम के तन्त्रित ताना, नकात अ अभिनात-দিগীকে ক্তিপুরণ অন্ধণ রাজবের কডকাংশ মকুব করিয়া দেন।

বাণিজ্য ও কারবার ক্ষপ্ত ভারতে যত প্রকার লবণ প্রচলিত আছে, ভারত গবর্নেন্টের রাজবিবরণীতে তাহার একটা তালিকা দৃষ্ট হয়। ঐ সকল বিভিন্ন প্রাকার লবণ বিভিন্ন শ্রেণীতে নিবদ্ধ হইয়াছে:—

- > থনিজ বা সৈত্ৰব লবণ (Rock-salt)—কোহাট, মণ্ডি প্ৰভৃতি স্থানের থনি হইতে এই লবণ বিক্রেয়ার্থ নামাস্থানে আমলানী হয়।
- ২ ছদ ও কৃপজ লবণ (Lake and Pit salt)—শান্তর, দিদ্বানা, পচভদ্রা ও দিলীর লবণের কারধানার ইহা প্রেড হর।
- ত সামূল লবণ (Sea salt ও Pit salt)—ভারতের সমূলোপ-কুলবর্ত্তী বিভিন্ন স্থানে প্রস্তুত হইয়া থাকে।
- ৪ আনৃপ লবণ (Marsh salt)—লবণাক্ত জল ছইতে উৎপন্ন। দিলী প্রভৃতি হানের লোণামাটী থুড়িরা লওরার যে খাত হইরাছে, দেইল্লপ খাত-জল হইতে প্রস্তুত।
- ৫ থাড়িজ লবণ (Swamp salt)—সমুদ্রোপক্লবর্তী জলথাড়িসমূহের লবণাক্ত কর্দ্দম হইতে গৃহীত। সমুদ্রজল ঐ সকল
 থাড়িতে প্রবেশ করিরা আর বাহির হইতে পান্ধ না, পরে
 বভাবত: গুকাইরা মাটির উপর দানাকারে নিপতিত থাকে।
 উহা বিশুদ্ধ। উহাতে প্রায় ৯৭ ভাগ Chloride of sodium থাকে।
- ৬ ক্ষিতিজ্ব-লবণ (Saline efflorescence) বর্বা শ্বতুর পর স্থানবিশেষে নূন ফুটিয়া উঠে। যে স্থানে এরপে লবণ ফুটিয়া উঠে, সেই সকল স্থানে কখন বৃক্ষাদি জয়ে না। এই জাতীয় লবণ উত্তর-পশ্চিমপ্রাদেশে ধরিয়ার, লোণহা, রেহ্ ও কল্লার-সোরা (সোরার কলে যে মাটিতে সোরা শুকান হয়, সেই মৃত্তিকা হইতে প্রস্তুত) বলে।
- ৭ ক্ষারলবণ (Earth salt)—হিন্দুস্থানে ইহাকে খারি নিমক বলে। গোয়ালিয়ার, পাতিরালা ও মধ্যভারতে এই লবণ উৎপর হয়।
- ৮ নিমক সোর (Saltpetre salt)—সোরা হইতে যে মিল্র-লবণ প্রস্তুত হয়।

উত্তর ও পশ্চিম-ভারতে যতগুলি লবণধনি আছে, তংসম্হের মধ্যে ঘেরূপ তরে লবণ অবস্থিত থাকে, তাহা বিশেষ
আলোচনার জিনিষ। এই সকলের মধ্যে লবণগিরির তরসম্হ বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। এই শৈলমালা ৭১°০০ হইতে
৭৩°০০ দ্রাঘিমা পূর্বে এবং ৩২°২৩ হইতে ৩০° উত্তর জ্বলাংশ
মধ্যে অবস্থিত। নিজুলাগর ঘোরাবের অধিত্যকান্ত্রমি ও কোহিস্থানবিভাগ লইরা লবণনৈল গঠিত। ইহার একপ্রান্তে বিলাম
নদী ও জ্বলরপ্রান্তে নিজুনন। প্রায় ১৫২ মাইল বিস্তীর্ন এই
সার্ক্ত্যপ্রদেশে মেরুপ স্থান্তীর ভরে লবণরাশি নিহিত রহিরাছে

ানিয়ে সাধারণের অবগতির অন্ত	ালই প্ৰক	লক্তর <u>সাম</u> বাত
केष् ७ वरेग-	ş, 151	1 *
हा नाम । अस्तु कुल्लाको की	Sept.	चटता यनच
কর্তমান গঠিত কর—	. 1	. 19
Debris of gypsum	•••	३६० कि ं
- চুণাশালয় জন - ১	₹	
Nummalitie limertone	•••	२०० क्रिके
ব্যুলান্তর		
Coat glumebab marl	éą.	२० विक्
বেলে পাধরত্তর—		
. Green sandetone	; •••	*** (PI)
Blue marl		३२८ विष ्
Red andstone	***	*** ()
্লবণন্তর		
Upper layer of white g	урепт	्षि हे
Brick red marl		১৩০ কিট
Brown gypsum	•••	३८० कि ं
Lower layer of white g	урвана	२०० किंग्रे
Salt marl and salt	•••	৬০০ কিট্
এই শবণগিরিবিভাগে প্রং	গ্ৰনভঃ মে	ও-ধনি, বাৰ্চ্চ-ধনি
কালাৰাগ-খনি ও নুরপুর খনি হ	্ইডে সৈদ্ধ	ৰ লবণ উত্তোলিও
रहेवा बाटक।		

কোহাটের প্রথমর আদেশ সিদ্ধনদের পশ্চিমে অবস্থিত।
আকা
৩২°৪৭ হইতে ৩৩°৫২ উ: এবং স্তাবি
৭০°৩২

হইতে ৭২°১৮ পু:। এখানে কুটা, মান্সিন, নড়ি, খরক ও
বাহাত্তর-খেল নামক কানে খনি আছে। ভারতের প্রায় ৬০
হাজার বর্গমাইল হান এবং কাকাহার, বাল্ধ ও প্রথমি প্রভৃতি

ভুভাগে এই লবণ প্রচলিত।

মণ্ডির গবণথানি হিনালছদেশের মণ্ডিরাজ্যে অবছিত।
আলা ৩২° উ: এবং লাখি ৭৭° পৃ:। গুনা ও লাল নামক ছানে
ছুইটা থনি আছে। ইংরাজরাজ্যে মণ্ডি-লবণ বিক্রের হর বলিয়া
মণ্ডিরাজকে ইংরাজ-সরকারে কার্বিক কর অরপ লবণের লজাংশ
বিতে হর। এডবিল Delhi salt works, Sambhar saltluke, Didwana sait marsh, Pachbadra salt works,
Luui and Falodisalt ও Tibet or Leucha salt নামে
কডকণ্ডলি বিশিষ্ট ছানীয় লবণের প্রচলন দেখা কর।

এতবির জার্থেটে সার্ক্ষিণার প্রাত্তি আরও কতকওণি লবণ (Sodium salts:) ঔবধার্থে ব্যবস্থত ক্ষরা থাকে। ঐ সকলের বিবরণ ভক্তং শঙ্গে মুক্তিয়। [কার ও সেরার বেখা]

वाजाबाद जनन वाबहरूत वानाकी।

জনপের বাণিজ্য ইংল্লাভ গবরেণ্ডের **অহতে পরিচালি**ভ হইতেহে: ভাঁহাদিগের অভুবতি ভিন্ন কেই লবণ প্রস্তুত করিলে তৎক্ষণাৎ সে রাজ্যারে রভিত হর। ক্রাডেশে বে সকল লবণ প্রস্তুত হুইরা খাছে, তৎসমুখার ইংরাজনাল ক্রম করিয়া গইরা, আট বা তভোধিক গুণ মূল্যে তাহা প্রজাদিলের ব্যক্ষারার্থে বিক্রের করেন । এই একচেটিয়া বাশিক্সে গবর্মেন্টের বার্ষিক প্ৰায় ও কোটি টাকা লভ্য হইয়া থাকে। এই সকল কাৰ্যা-সম্পাদনার্থ ভাঁহারা বিপুল অর্থব্যর করিয়া বহু সংখ্যক স্বার্যালয় সংস্থাপন ও অনেক কর্মচারী নিযুক্ত করিয়াছেন এবং ভাছাদের स्थानम बन्न हात्न हात्न करनक हरताबनाबशुक्रव नियुक्त बाह्य । বলদেশীর লবণের কারবামার ব্যবস্থাপক সাহেবেরা কলিকাভার অবস্থিতি করেন এবং ভাঁহারা বেখানে একত হইরা মন্ত্রণা করেন, ঐ গৃহ "দ'টবোর্ড" নামে খ্যাত। অধীনস্থ সমত্ত কার্যালয়ে একই নিরমে কার্য্য সম্পন্ন হইরা থাকে। বাহুলাভরে সকল স্থানের লবণপ্রস্তুতপ্রশালী না লিখিয়া কৈবল প্রস্তুত বিষয়ে প্রশিদ্ধ তম্পুকেরই উল্লেখ করিলাম।

তম্পুক নগর কলিকাতার ২২ ক্রোশ দক্ষিণে রূপনারারণ নদীতটে অবস্থিত। পূর্ককালে এই নগর সমৃদ্ধ ও বাণিজ্ঞা-কার্য্যে বিখ্যাত ছিল; সম্প্রতি সে খ্যাতি পুথপ্রার; কেবল নাম মাত্র অবলিষ্ট আছে। কিন্তু লবণ সম্বন্ধে এই নগর সামান্ত মহে। এখানে বে কুঠি আছে, তাহা হইতে প্রক্তি বৎসর ১০০ লক্ষ্য মণ লবণ প্রস্তুত হয় এবং উহা হইতে কোম্পানির প্রায় ২৫ লক্ষ্য টাকা লাভ হইরা থাকে।

ভম্পুকের সমরকুঠীর অধীন পাঁচটা কার্যালয় নির্দিষ্ট আছে. ভন্মধ্যে ভম্লুক, মহিবাদল, জলামুঠা, আরলাবাদ ভূম্জুড়ের আড়লই প্রধান ও বিলেব বিখ্যান্ত ; আবার প্রত্যেক আড়লের অধীনে কুল কুত্র কার্য্যালর আছে। এই সকল হজায় দারোগা, কার্যালম্বের মাম "হলা"। মোহরবু, আমল্যার, জেল্যার প্রাকৃতি ভিন্ন ভিন্ন নামবিশিষ্ট व्यानक क्यांकर्का नियुक्त शांदक ; छाहाना कर्तिक मात्र हरेएछ বৰ্ষার প্রারম্ভে পর্যান্ত লবল প্রান্তত সম্বন্ধীর কার্য্য নির্ফ্ত থাকে। কার্ডিক মানের আরম্ভে লবশসমিভির (সন্ট-বোর্ড) সাহেবেরা কোন আড়কে কড লবণ প্রস্তুত করা কর্মনা ভাহার পরিমাণ নির্দিষ্ট করিয়া বেন । সেই পরিমাণেয় নাম "ভার্যার্"। ঐ ভারদান অনুসারে এতোক হদার কার্যকারকেরা নিজ নিজ হুমার সম্ভর্গত এজানিগকে ভাকাইরা কে কভ পরিমাচণ" লবণ আছত স্বারিকে ও কি প্রকারে কুলা স্কৃতিৰ, ভাষা নির্দ্ধারিত ্ৰুক্তে অৰহ ভবিবল্লপূৰ্ণ এক অৰু বৃক্তিভ কাগৰ কেওবা হয়। এই নির্দারণ-ক্রিয়ার নাম "সওলাপত্র" এবং বে কাগজে তাহা
লিখিত হর তাহার নাম "হাতচিটা"। বে সকল বাজিরা
এইরূপে সওলাপত্র দ্বির করিরা হাতচিটা লর, তাহারা "মলক"
নামে খ্যাত। লবণ-প্রস্তুত্তের কার্য্যে অত্যর লাভ। ত্রত্তরাং
কেবল এই কার্য্যে কেহই দিনপাত করিতে পারে না, মলকী
মাত্রেই লবল প্রস্তুত করা বাতীত ক্রবিকার্যাও করে, পরস্তু
ক্রী উভর কার্যাও তাহাদের লান্মিন্তা দ্র হয় না, সকলেই বিপূল
খণগ্রত্ত অত্যক্ত দরিদ্রা।

ত্মলুকের লবণ তত্রতা ভাগীরথী, হলদী, টেলরাখালী, রারখালী প্রভৃতি কএকটা নদীর জলে প্রস্তুত হয়, স্কুরাং লবণ
প্রস্তুত-করণের কার্যালর সকল ঐ নদীতটে নির্দ্ধিত আছে।
মলসীরা বথোপযুক্ত হান নির্দিষ্ট করিয়া তাহা চারি জংশে
বিভাগ করে। তাহার প্রথমাংশের নাম "চাতর"; উহা সর্বাপেকা রহৎ এবং তাহাতে লবণের মৃত্তিকা প্রস্তুত হয়;
বিতীয়াংশের নাম "কুরি" অর্থাৎ কুশু; লবণাক্ত জল রাখিবার
জন্ম উহার প্রয়োজন; তৃতীয়াংশের নাম "মাদা" অর্থাৎ লবণ
ছাঁকিবার হান; চতুর্থ "ভূঁরি ঘর" অর্থাৎ লবণ পাক করিবার
প্রহ; এই অংশ-চতুষ্টরের সমষ্টির নাম "থালাড়ি" বা "মলদ।"
এইরূপ এক এক থালাড়ির জন্ম হই তিন বিঘা জমির

পুর্ব্বেই কথিত হইয়াছে যে,থালাড়ির অস্তাস্থাংশ হইতে চাতর বৃহৎ : ভজ্জন্ম এক বিঘা বা ততোধিক স্থান আবিশ্রক হয়। মলঙ্গীরা তাহা অতি সাবধানে পরিষার করে, তথা হইতে কয়েক অক্ললীপরিমিত মৃত্তিকা খনন করিয়া তাহার মধ্যে মধ্যে ও চতর্দিকে বাঁধ দিয়া ঐ স্থান তিন অংশে বিভাগ করে। তৎপরে ঐ ক্ষেত্রত্তর খনন করিয়া তত্তপরি মই দিয়া ভূমি চৌরস করিয়া লয়। ঐ চৌরাস করা ভূমি ৮৷১০ দিবস রোক্রে গুকাইলে তাহার উপরিভাগের মৃত্তিকা, ইষ্টক-প্রাচীরে লোণা লাগিলে বে প্রকার চূর্ণ জন্মে ভদ্রূপ, চূর্ণ হইয়া যায়। চূর্ণ প্রস্তুত হইলে ভত্নপরি পাঁচ ছব্ন জন মনুষ্য ইতন্ততঃ প্ৰমণ করিরা সেই সমন্ত উভ্যান্তপে দলিত করে, পরে এক সপ্তাহ তাহা রৌদ্রে তক হইলে ঐ স্কূর্ণ খুব্তীদারা চাঁচিয়া একত্র করে। অনন্তর কোটালের জলে চাতর সিক্ত থাকিলে ও রোদ্রের সাহায় পাইলে লবণ-মৃত্তিকা উত্তমরূপে উৎপন্ন হয়। অপর বক্তার অলে চাতর থেতি হইলে তথা কাৰ্ত্তিক বা অগ্ৰহারণ মানে অত্যন্ত বৰ্ষায় বা কোরাসায় অথবা মেঘে আকাশ দৰ্মদা আছের থাকিলে দবণোৎপত্তির িহানি জন্মে। পৌৰ ও মাৰ মানে জোরারের জলে জুরি নামক কুও সকল পরিপূর্ণ না ছইলে লবণ-প্রাক্তত-কার্য্যের হানি ঘটে। একটা কুরি নির্মাণ করিছে চারি কার্চা ভূষির আবস্তক। ঐ

ভূমিতে ৫ কি ৬ হন্ত গভীর এক হান্ত দৈর্ঘ্য ও এক হাত প্রস্থ একটা গর্ভ খনন করিয়া এক পরোনালী বারা কোন কোন দদীর দহিত দংযুক্ত করিলে উক্ত জুরি প্রস্তুত হয়। কোটালের निवम छेक नामा निजा मनीत नवशाष्ट्रक कृति পत्रिभूव स्टेटन, मनजीता नाना क्रम कतिता नगरप्त थे यन ग्रमा करता। वर्षाकारन জুরি বৃষ্টির জলে পরিপূর্ণ হইরা থাকে; কার্জিক-মাসে সেই জল সেচনপূর্বাক স্থারি পরিষার করে। কোটালের লবণাপু ধারা তাহা পুরণ করাই লবণ-প্রস্তত-করণ কার্য্যের এক প্রধান উপাদান; সাৰধানে এই স্বার্থটী সম্পন্ন না হইলে সকল প্রম বার্থ হইবার সম্ভাবনা। চান্তর জোলারের জলে সিক্ত করিয়া রোদ্রে ওকাইবার নাম "দাজন"। স্বার্জিক মানে চাতর প্রস্তুত করিলে ক্রমাগত তিন মান ভাহাতে লবণ-মৃদ্ধিকা করিতে পারে, মাথের শেবে বা ফাব্তনের জারত্তে ভাহা পুনরায় জোরারের জলে সিক্ত করিয়া খনন না করিলে ও ভত্নপরি ভত্ম ও মাদার অকর্মণা মৃত্তিকা না ছড়াইরা দিলে ভাহাতে লবণ-मृखिका উखमक्राल काम ना।

থালাড়ির তৃতীয়ালের নাম মাদা; এই মাদা প্রস্তুত করি-বার জন্ম মলদীরা বাদশ হস্ত পরিধি ও ৪৪০ হস্ত উক্ত এক মৃত্তিকা জুপ প্রস্তুত করিরা তহুপরি ১৪০ হস্ত গজীর ও ৫ হস্ত পরিমিত মালসাবরব এক গর্ম্ভ খুঁড়িয়া রাথে এবং মৃত্তিকা, ভন্ম, বালুকাদি বারা তাহার তল এইরূপ স্থান্ট করে বে, ভাষা জলের অভ্যে। তদনস্তর তাহার তলে "কুড়ি" নামক একটী মৃৎপাত্র স্থাপন করিয়া এক বংশ-নল বারা তাহার সহিত স্তুপের সরিকটক্ষ এক প্রকাশ জালার সংযোগ করিয়া দেয়। ঐ জালার নাম "নাদ", এবং তাহাতে ৩০।৩২ কলস জল ধরিতে পারে।

চাতরে লবণ-মৃত্তিকা প্রস্তুত হইলে মললীরা প্র্যোক্ত কুঁড়ির উপর বংশনির্দ্ধিত একথানি ছাকনি ও তহুপরি কিঞিং ওড় রাখিরা ঐ মৃত্তিকার মাদার গর্ড পরিপূর্ণ করিয়া পাদ ঘারা তাহা উত্তমরূপে চাপিরা দের ও ক্রি হইতে কলনী কলনী লবণ-লগত তহুপরি চালিতে থাকে। এইরপে ক্রমায়রে ৮০ কলন লগ চালিলে তাহা লবণ-মৃত্তিকা-খৌত করিয়া ক্রমাণ বংশনল ঘারা নাদে আসিরা পতিত হয়, কিন্তু তংলমুমার জল লবণ-মৃত্তিকা হইতে পৃথক্ হয় না। উক্ত ৮০ কলন জলের ০০।৩২ কলন মাত্র নাদে আসিরা পড়ে, অবশিষ্ট ঐ জল মৃত্তিকার সহিত সংলগ্ন থাকে। নাদে জল পড়া রহিত হইলে মললীরা ঐ লবণ-জল এক পৃথক্ কলনীতে রাখিরা দের এবং মানার-খৌত মৃত্তিকা চাতরে নিক্লেপ করিবার জল স্থানান্তরে রাখিরা নৃত্তন লবণ-মৃত্তিকা লিয়া ঐ ধাদার পূর্ণ করিবার জাভিন্তারে পুনরার নৃত্তন স্থান ই ক্রিতে আরম্ভ করে।

লবণ কলে দিবার বরের নাম স্কুন্রি বর; তাহা চাতরের সরিকটেই নিশ্মিত হয়। তাহার দৈর্ঘ্য পরিমাণ ২৫। ২৬ হাত, uat श्रष्ट १ वा ৮ श्रष्ट । मन्त्रनेमार्ट्य थे पत्र **उ**डतन्त्रित দীৰ্য, এবং তাহার দক্ষিণ ভাগাণেকা উত্তর ভাগ অধিক উচ্চ করিয়া নির্দ্ধাণ করে টুড়াহার কারণ এই যে দক্ষিণ ভাগ তাহাদিগের আবাসস্থান, তাহা অধিক উচ্চ করিবার প্রয়োজন নাই, কিন্তু উত্তর-ভাগে লবণজালের উত্তন নির্মাণ করিতে इब ; ख्याख-धूमनिर्गमत्नद्र निमिख छैश छैळ ना कतिरन शृहमत्था অৰ্থিতি করা কঠিন হইরা উঠে। উক্ত উন্থন মৃত্তিকাছারা নিশ্রিভ হয়; ভাহা তিনহত্ত উচ্চ। ঐ উননের উপরিভাগে কর্দম দিয়া ততুপরি হুই শত বা হুই শত পচিশটী মিছরির কুন্দাকার ছোট ছোট মৃৎপাত্র স্থাপিত করিতে হয়; ঐ পাত্রের নাম "কুঁড়ি", ভাহার প্রভােকটীতে দেড় সের জিনিস আঁটে। তৎসমূলায় উত্তনের উপর কালায় স্থাপিত করিলে বে অবরব হর, তাহা পার্বে গ্রাদশিত হইল; মলঙ্গীরা তাহাকে "ঝাঁট" এবং যে মৃৎপিতের উপর ভাহা স্থাপিত করে, ভাহাকে "वाँ किक्क" करह ।

উমুনে অগ্নি প্রজ্ঞানিত করিলে কর্দম শুক্ষ হইয়া তত্রস্থ সমস্ত কৃড়ি-পাত্রের এক পিও হইয়া উঠে। চারি পাঁচ বা ছর ঘণ্টাকাল তাহাতে নালের লবণ-জ্ঞাল পাক করিলে ছই ঝোড়া লবণ প্রস্তুত হয়। ঐ ঝোড়া উমুনের পার্ষে হাপিত থাকে, এবং তাহা হইতে যে

জল নি:সত হয়, তাহা ঝোড়ার নিয়য় ত্তাের উপর পড়িয়া
লবণের ছল-পিগুরপে পরিণত হয়। ঐ লবণ-পিণ্ডের নাম
"গাছা-লবণ" > অন্ত লবণাপেক্ষায় তাহা বিশেষ নির্মাল; কিয়
মলঙ্গীরা ঐ লবণ কোম্পানিকে না দিয়া অনায়ালে গোপনে
অক্তকে বিক্রেয় করিতে পারে বলিয়া গাছা-লবণ প্রস্তুত করণের
নিষেধ আছে।

লবণপাকের অস্ত আর একটা নাম পোর্জান। কার-ধানার এই পোক্তান শব্দটীরই ব্যবহার হইরা থাকে। ছই ঝোড়া লবণ পোক্তান হইলে কোম্পানীর আদলদার নামক কর্মচারী আসিরা ভাহা কার্চ্চে মুদ্রা (মোহর) দারা চিহ্নিত করিরা দের। ঐ মুদ্রার নাম আদল, ঐ আদল হইতে আদল-দার নাম শৃষ্টি হইরাছে।

লবণের মোহর হইলে উহা মললীর থটিতে রাধা হর,

তথার একদিন ও একরাত্রি থাকিরা শুকাইলে গোলাঘরের

কৃতিকার উপর অপুণাকারে রাধিরা দের। দশ কি বার দিন

গোলাঘরে রাথির। পরে বাহিরে আনিরা গোলাঘরের সক্ষুথে গুপাকার করিরা রাথে। ঐ গুণের নাম "কহির কাঁড়ি"। ১০।১৫ দিন ঐ কাঁড়িতে থাকিরা লবণ শুক্ত হইলে পর পোক্তান দারোগা আসিরা উক্ত লবণ মললীর নিকট ইইতে ওজন করিরা লয় ও উক্ত পরিমাণ মললীর হাতচিঠার তুলিরা দের। লবণ গুজন করিবার সময় ওজনদার (করাল) অনবরত নিমোক্ত প্রকার নৃত্ন পদ বলিতে থাকে,—

"রামগোপালে পঞ্জে মাল দিতে হবে পঞ্জে ॥ অল্দি চলো ভইয়া রে । এক পাও দিতে হবে পঞ্জে"॥

পোক্তান-দারোগা কর্ত্ব লবণ ওজন হইকে তথন তাহা কোম্পানির হইল। তাঁহারা ঐ লবণ ঘটনারারণপুর নামক স্থানে আনরন করিয়া আপনাদিগের গোলা পূর্ণ করেন; অবকাশ-মতে তাহা লবণবিক্রেতাদিগকে আপনাদিগের নির্দিষ্ট মূল্যে বিক্রম্ন থাকেন। মলদীরা কোম্পানির নিকট লবণের মূল্য আড়দ্দ তেদে মণ করা। ৮০ আনা বা।৮০০ আনা করিয়া প্রাপ্ত হইয়া থাকে; পরে কোম্পানির ঐ লবণ ৩০৮০ বরিয়া বিক্রম্ন করিয়া থাকেন। স্বতরাং ক্রম্বিক্রের মূল্য কর্মকর্তাদিগের বেতন ও অস্তান্ত সমস্ত ব্যম্ন ব্যতীত তাঁহারা মণ করা অন্যুন ২॥০ টাকা লাভ করিয়া থাকেন।

লবণ, অন্তর্বিশেষ। রামারণে লিখিত আছে, — সত্যর্গে দৈত্যবংশে লোলার মধুনামে একপুত্র জল্মে, এই মধু মহাদেবের উদ্দেশে কঠোর তপশ্চরণ করিয়া এক শুললাভ করে। মহাদেবের শুলপ্রাপ্ত হইয়া মধু অভিশর বলীয়ান্ হয়। কিন্তু মধু দৈববলে বলীয়ান্ হইয়াও পরমধার্মিক ছিল, কাহায়ও কোন অনিষ্টাচরণ করিত না। পরে মধু পুনর্কার তপশ্চরণ করিয়া এই শুল যাহাতে বংশপরম্পরাক্তমে থাকে, মহাদেবের নিকট এই বর প্রার্থনা করে, কিন্তু মহাদেব তাহাকে এই বর না দিরা তাহার জ্যেষ্ঠপুত্র এই শুলপ্রাপ্ত হইবে, এইবর দেন।

বিধাবস্থার কল্পা অনলার গর্ভে কুন্তীনসী নামে এককলা হয়।
মধু কুন্তীনসীকে বিবাহ করিলে দ্বনীর গর্ভে লবণের ক্ষম হয়।
ক্রমে লবণ অতিশন্ন ত্র্কৃত্ত হইয়া উঠিল। মধু পুত্রকে ত্র্কিনীত
দেখিয়া রুপ্ট ও শোকাবিষ্ট হইয়া তাহার হল্তে শূল দিরা ইহলোক
পরিত্যাগ করিল। লবণ এই শূলপ্রভাবে ত্রিলোকের অবধ্য
হইয়া পড়িল। লবণের ভীবণ অত্যাচারে শীড়িত হইয়া
ধ্বিগণ রামচক্রের শরণাপত্র হন। তথন ভগবদবতার
রামচক্র ইহাকে বধের ক্ষম্ভ ভরতকে আদেশ করিলে শ্রুম
বর্ষা তাহাকে বধ করিবার ক্ষম্ভ প্রার্থনা করেন। শ্রুম্বের

প্রার্থনার রামচক্র ভাষাকেই লবণবধার্থে প্রেরণ করেন।
"লবণের হত্তে শূল থাকিলে দেবদানবাদি যে কেই যুদ্ধার্থ ভাষার
সম্মুবে উপস্থিত হইবে, সেই ভন্মীভূত হইরা যাইবে" শক্রন্ন
ইহা অবগত হুইরা: বধন ভাষার হত্তে শূল ছিল না, সেই সমন্ন
ভাষার সহিত যুদ্ধ করিয়া ভাষাকে নিংভ করেন। শক্রপ্রের
হত্তে লবণ নিহত হইলে দেবগণ ভাষার ভূরনী প্রশংসা ও
ভদীর মন্তকোপরি পূপার্টি করিয়াছিলেন।

পরে দেবগণ তৎসমীপে উপস্থিত হইয়া তাহাকে বর প্রার্থনা করিতে বলেন, তথন শত্রুত্ব দেবগণের নিকট এই বর প্রার্থনা করেন, "দেববিনির্ম্মিত এই লবণাস্থরের মনোহারিণী মধুপুরী (মথুরা) অবিলব্দে জনসমূহে পরিপূর্ণা হউক" দেবগণ ভাহাই হইবে, এই বর দিয়া প্রস্থান করেন। পরে শত্রুত্ব এই নগরীতে ঘাদশবর্ষকাল অবস্থিতি করিয়া অবোধ্যা নগরীতে প্রত্যাবৃত্ত হন। (রামায়ণ অবোধ্যাকা প্রত-৮৪ অন্)

২ রাক্ষসবিশেষ। (মেদিনী) ও সমুদ্রবিশেষ, লবণ-সমুদ্র। এই সমুদ্রের উৎপত্তিবিবরণ ব্রহ্মবৈবর্ত্ত-পুরাণে এইরূপ আছে,— শ্রীকৃষ্ণের ঔরসে বিরজার গর্ভে সপ্তপুত্র হয়। বিরজা এই স্পুপুত্রের সহিত অবস্থিতি করিতেছিলেন, একদা বিরঞ্জা भुकारत चामकाविजा हहेगा औहतित महिष्ठ भूनताम विहात ক্রিতেছিলেন, এমন সময় তাহার কনিষ্ঠপুত্র অপের ভ্রাতৃগণ কর্তৃক পীড়িত হইয়া ভয়ে তথায় জননীর ক্রোড়ে আগমন করিল। হরি নিজপুত্রকে ভীত দেখিয়া বিরজাকে ত্যাগ করিলেন। বিরঞ্জা পুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া তাহাকে সাম্বনা করিতে লাগিলেন, ইত্যবসরে শ্রীকৃষ্ণ বিরজাকে ত্যাগ করিয়া শ্রীমতী রাধিকার নিকট গমন করিলেন, বিরজা পুত্রকে সাম্বনা করিয়া প্রিয়তম হরিকে নিকটে দেখিতে পাইলেন না, তখন বিরজা শৃঙ্গারে অভৃপ্রমনা হইয়া অতিশয় রোদন করিতে লাগিলেন এবং পুত্রের প্রতি অতিশব্ন কুদ্ধা হইয়া তাহাকে শাপ দিলেন যে, তুমি লবণ সমুদ্র হইবে, কোন প্রাণী স্মার তোমার জনপান করিবে না, অপর পুত্রগণ ইকু প্রভৃতি সমুদ্র হইবে। বিরজার শাপে ভাহার কনিষ্ঠ পুত্র লবণ সমুদ্র হইরাছিল। বিরন্ধার সপ্তপুত্র সপ্তবীপে সপ্তসমূত্রে পরিণত हरेबाहिन। (उक्ररेववर्छभू॰ श्रीकृष्णस्त्राय॰ ७ स॰)

(ত্রি) লবণেন সংস্কৃষ্ট লবণ-ঠক্ (লবণাৎ ঠক্। পা ৪।৪২৪) ইতি ঠকোনুক্ ধৰা লবণো রনোহত্যদিরিতি অর্শ আছচ্। ৪ লবণরসক্ত। ৫ লাবণার্ক। লবণ, চট্টলের অন্তর্গত একটা গওগ্রাম। (ভবিব্যবন্ধণ ২০।৪৫) লবণকিংশুকা (ত্রী) মহাজোতিয়তী। (রাজনি°)

জবণক্ষার (গুং) লবণস্য কার: । লোণার কার। (রাজনি°)

ল্পবর্ণখনি (পুং) লবণাকর, লবণের খনি, বেয়ান হইতে
লবণের উৎপত্তি হয়।
লবণজ্ঞল (অ) লবণং জলং যদা। ১ লবণসমূল। (র্রী) লবণং
জলং। ২ লবণাজ্ঞ জল, লোণাজল। ৩ লবণমিশ্রিত জল।
লবণজ্ঞলিখি (পুং) লবণসমূল। (ভাগবত ৫।১৭১১)
লবণজ্ঞলনিখি (পুং) লবণসমূল। (রামায়ণ ৫।৩১।৩২)
লবণজ্ঞলনিখি (পুং) লবণসমূল। (রামায়ণ ৫।৩১।৩২)
লবণজ্ঞা (ত্রী) লবণসা ভাবঃ তল্টাশ্। লবণের ভাব বা
ধর্মা, লবণদ্ব, লবণাজ্ঞা, লবণরসমূজ।
লবণভূণ (র্রী) লবণরসবিশিষ্টং তূণং। তূণবিশেষ। চলিত লোণা
যাস। সংস্কৃত পর্যায়—লোমতূণ, তূণায়, পটুতৃণক, অয়কাও।
গুণ —অয়, কবার, জনত্থ্যনাশক, অয়বৃদ্ধিকর। (রামানিং)
লবণত্রেয় (র্রী) লবণস্য অরং। অবিধলবণ, সৈদ্ধব, বিট, সচল।
লবণত্বেয় (র্রী) লবণস্যাবিত। লোণা।

ल्यनबर्य (क्री) विविध नवन, महन ७ रेमक्व। লবণনিতা (ত্রি) প্রতিদিন শবণরসাম্বাদনশীল। (শব্দ চ°) ল্বণ্ট্ৰেম্ম (জী) লবণনিৰ্মিতা ধেছা। দানাৰ্থ লবণাদি-নির্মিত ধেছ। বরাহপুরাণে এই ধেছদানের বিধান এইরূপ আছে—মহীতল প্রথমে গোমরাদি হার৷ উত্তমরূপে লেপন করিয়া তাহার উপর কুশচর্শ আন্তরণ করিতে হইবে, ঐ চর্ণের উপর যোড়শপ্রস্থ পরিমাণ লবণের হার৷ একটা করিভ ধেম প্রস্তুত করিবে। চারিপ্রস্থ বারা ইহার বংস প্রস্তেত করিতে হয়, ইক্ষ্ড বারা এই ধেমুর পাদ, স্থবর্ণবারা মুখ ও শৃক, রৌপ্যমারা পুর, গুড়মারা মুথ, ফলমর দত্ত সকল, শর্করা ৰারা জিহবা, গন্ধদ্রব্যে আণ, রম্বৰারা নেত্রবন্ধ, পত্রবারা কর্ণবন্ধ, নৰনীত ৰারা তান, ক্রেগারা পুচ্ছ, তাম্রময় পৃষ্ঠ, কুশমর রোম, কাংস্যের বারা লোহনীপাত্র করিবে ; পরে এই ধেমুকে ঘন্টাভরণে ভূবিত করিতে হয়। তদনস্তর স্থগন্ধ পুষ্পাদি বারা যথাবিধানে পূজা করিয়া এই ধেমুকে যুগাবন্তবারা আচ্ছাদন করিয়া ব্রাহ্মণকে দান করিবে। সংক্রান্তি, গ্রহণ, ব্যতীপাতাদিয়োগ ও উত্তম-कारण मान करा विरधत्र। यथाविश्वारन रश्च मान कतिया हेशत দক্ষিণা স্থবৰ্ণ দিতে হয়। দানাত্তে এই মন্ত্ৰ পাঠ করিবে-

"পূর্ব্বোক্তেন বিধানেন স্থণক্যা কনকেন তু।
ইমাং গৃহাণ ভো বিপ্র কল্পরূপে নমোহন্ত ডে ।
বসজ্ঞা সর্ব্বভূতানাং সর্ব্বদেবনমন্ত্রতা।
কামং কামছবে কামা ক্ষারধেনো নমোহন্ত ডে ॥"
(বরাহপু৽ বেতোপা• স্বশ্বেস্থমা•)
বধাবিধানে এই স্বপ্ধেম্ব কান করিলে ইহলোকে বিবিধক্ষুপ ও অক্তকানে ক্ষালোকে গতি হইরা থাকে।

শ্বৰণধেশ্বং ৰক্ষ্যামি তাং নিৰ্বেধ মহীপতে।
অন্থলিথে মহীপৃঠে ক্ষকাজিনকুশোদ্ধরে ।
ধেশ্বং গৰণমন্তীং ক্ষকাজিনকুশোদ্ধরে ।
বংসং চতুজী ব্যক্তির ইক্ষ্পালাংশ্ব কারবেং ।
সৌবর্ণমূঞ্জাদি ক্ষরা রৌপামরান্তথা।
মূবং গুড়মরং ভন্যা বস্তাং কলমরা নূপ ॥
জিক্বাং শর্করা রাজন্ আবং গ্রুমরে তথা ।
নেত্রে রক্ষমরে কুর্যাৎ কর্ণে । পত্রমরে তথা ।
ব্যক্তির শৃক্ষোটোচ নবনীতমরাং তনাং ।
শ্বেপুক্রাং তারপৃঠাং দর্ভরোন্ধাং পর্যবিনীম্ ॥
কাংল্যোপলোহাং ব্যক্তের বণ্টাভরণভ্বিতাম্ ।
মুগঙ্গুল্পুণ্টপন্ত পুজরিত্বা বিধানতং ।
আচ্ছান্ত বস্ত্রব্যান ব্যক্ষণার নিবেদরেং ॥" ইত্যাদি।

বেরাহপ্ত খেতোপাথ্যানে লবণধেকুমা°)
লবণপান্তন, চট্টলের অস্কর্গ ত একটা নগর। (ভবিষ্যবন্ধর্মণ ১৫।১৪)
লবণপাটলিকা, লবণপালালিকা (ত্রী) লবণের থলী।
লবণপুর (ক্রী) নগুরভেদ।
লবণভেদ (পুং) লবণক্ষার, লোণার ক্ষার। (বৈছকনি°)
লবণমন্ত্র (পুং) লবণ উৎসর্গকালীন মন্ত্রবিশেষ।
লবণমেন্ত্র (পুং) মেহরোগবিশেষ। এই মেহরোগে রোগীর
লবণত্ত্র্য প্রস্রাব্য হয়। (স্প্রুত নি° ৬ অ॰)
লবণমন্ত্র (ক্রী) ঔষধপাকের জন্ত লবণপূর্ণ যন্ত্রবিশেষ।
ভিক্ত ভক্কাহীনং চেৎ যন্ত্রং ডমক্ষকাছরম্।

ভদ্যয়ং লবগৈ: পূর্ণং লবণাধ্যমিতীরিতম্ ।" (বৈছক)
ভমরুকাষর উদ্ধাদেশে জলহীন করিয়া উহা লবণদারা পূর্ণ
করিলে এই বন্ধ হইবে।

লবণবর্ষ, কৃশবীপের অন্তর্গত বর্ষভেদ। (নিজপুণ ৪৬।৩৬) লবণবারি (অ) শবণজন, লবণসমুদ্র।

ল্পুবণ্ব্যাপ্ত (ত্রী) অবের অত্যন্ত লবণভক্ষণজনিত পীড়া-বিশেষ।

"প্রভৃতং লবণং বস্য ভোজনে বাজিনো ভবেৎ। কেবলং বাততশ্চাস্য ব্যাপৎ স্থমহতী ভবেৎ ॥" (জন্নদ• ৬° অ•)

আৰ সকল বদি প্ৰভূত লবণ ভক্ষণ করে, তাহা হইলে ৰায়ু কুপিত হইয়া ভাহার স্থমহতী পীড়া হইয়া থাকে, এই পীড়াকে লবণব্যাপৎ করে।

श्राप्त (प्रः) नवगंतागत । (बिका•) श्राप्त (श्री) बन्भवरण्यः। श्राप्त (श्री) मूनार्किया-मून्य-वृश्य । > नवीरण्यः। २ वीरितः। (মেদিনী) ও মহাব্যোতিক্ষতী। (রান্ধনি•) ৪ চুক্রিকা। ৫ চাকেরী, আমরুল। ৬ লবণশাক।

লাবণাকর (পুং) লবণসা আকরঃ। লবণের খনি, বে স্থান হইতে লবণের উৎপত্তি হয়।

লবণাখ্যা, চট্টগ্রামের অন্তর্গ ভ একটা লাবণ-প্রস্রবণ।
লবণাচল (পং) লবণনির্দ্ধিতঃ অচলঃ। লানার্থ লবণাদিনির্দ্ধিত
পর্কাত। লবণের পর্কাত প্রস্তুত করিয়া লান করিতে হর,
ভাষাকে লবণাচল কহে। মৎস্যপুরাণে এই পর্কাতলানের
বিধান আছে।

"অথাতঃ সংপ্রবক্ষামি লবণাচলমূত্তমম্। বৎপ্রদাতা নরো লোকং প্রাথোতি শিবসংযুতম্ ॥" ইত্যাদি। (মৎস্যপু॰ ৭৭ অ॰)

বোড়শ দোণ পরিমাণ লবণ লইয়া ভাহার পর্কাত করিছে হইবে, অর্থাৎ পর্কাভানেরে স্থাপিত করিতে হইবে, এই পরিমাণ লবণে প্রস্তুত করিলে তাহা উত্তম, যদি কেই ইহাতে সমর্থ না হয়, তাহা ইইলে তদর্দ্ধ পরিমাণ হারা করিলে মধ্যম, ইহাতেও অশক্ত হইলে ভাহার অর্জপরিমাণ হারা অধ্যম পর্ব্বত প্রস্তুত করিবে, কিন্তু বিস্তৃহীন ব্যক্তি দ্রোণ পরিমাণের উর্দ্ধ যথাশক্তি ভাহার হারা এই পর্বত করিতে পারিবে। যে পরিমাণে পর্বত প্রস্তুত হইবে, তাহার চতুর্থভাগের হারা বিক্ষন্ত পর্বতে হইবে। পর্বতদানের বিধানাম্পারে স্বর্ণাদি হারা ব্রহ্মাদি ও লোকপালাদি নির্দ্ধাণ করিয়া যথাবিধানে তাঁহাদের পূজা করিয়া দান করিতে হইবে। দানের সমন্ত্র এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়। মন্ত্র যথা—

"সৌভাগ্যরসসন্থতো যতেহিয়ং লবণো রস:।
তদাক্ষকদেন চ মাং পাহি পাপায়গোত্তম ॥
যশ্মানয়রসাঃ সর্কো নোৎকটা লবণং বিনা।
প্রিয়ঞ্চ শিবরোর্মি তাং তশ্মাৎ শাস্তিপ্রদো ভব ॥
বিষ্ণুদেহসমূত্ত্ব যশ্মানরোগ্যবর্জনম্।
তশ্মাৎ পর্কাতয়পেণ পাহি সংসায়সাগরাৎ ॥"(মৎক্তপু ৭৭ অ°)
এই ময়ে ব্রাহ্মণকে দান করিবে। এই পর্কাত দান করিয়া
দক্ষিণাদান ও ব্রাহ্মণজোজনাদি করাইতে হয়। এইয়প বিধি অফ্লন্সারে যিনি লবণপর্কাত দান করেন, তিনি ইহলোকে বিবিধ প্রথসোর্বানি লবণপর্কাত দান করেন, তিনি ইহলোকে বিবিধ প্রথসোতাগ্য ভোগ করিয়া উমালোকে কয়কাল বাস করেন, তৎপরে
মৃক্তিলাভ করিয়া থাকেন। (মৎক্রপু ৭৭ অ°)
লবণা্দ্যমোলক, লবণবোগে গ্রন্থত মোদকৌবধবিশেষ। ইহা
উদরাময় ও অগ্নিমান্দ্যরোগে হিতকয়। (চিকিৎসালায়) ১ ক্রিবাণাস্তক্ত (গ্রুং) লবণাপ্রক্রেকা

বধ করিরাছিলেন। (রবু ১८।৪٠)

লবণীকি (থং) লবণসমূদ্র। (মার্কণ্ডেরপু° ৫৪।৭) লবণাকিজ (ফ্রী) লবণাকৌ লবণসমূদ্রে জায়তে ইতি জন-ড। শসামুদ্র-লবণ। (রাজনি°)

লবণামুরাশি (শ্রং) লবণভ অখুরাশি:। লবণসমুদ্রের জল-সমূহ। (রযু ১২।৭•)

स्यत्न । अर्) नवनक्षव । अपूछ ।

ल्युगात (क्री) नवभक्तात्र, लागात्र कात्र।

লবণারজ (ক্রী) লোণার ক্ষার। (রাজনি°)

ब्नवनार्नव (पूर) नवनम्रम । (त्रामा १))

লবণালয় (গ্ং) লবণত আলয়:। লবণাহ্নের আলয়, মধুপ্রী।
শক্র লবণাহ্রকে বধ করিয়া এই নগর মধুরা নামে আখ্যাত
করেন। (রামা° ৪।৪১।৩৪) { লবণ দেখা]

ক্রাবণাশ্ব (পুং) ভারতবর্ণিত জনৈক ব্রাহ্মণ। (ভারত বনপর্ক) ক্রাবণিমন্ (পুং) লবণস্ত ভাবঃ (বর্ণস্চাদিভ্যঃ ব্যঞ্চ্ পা ৫।১।-১২৩) ইতি ইমনিচ্। লবণের ভাব বা ধর্ম।

লবেণোক্তম (ক্লী) লবণের উত্তমং। সৈন্ধব, সর্পপ্রকার লবণের মধ্যে সৈন্ধব সর্পোৎক্ষ্ট।

লবণোক্তমাদিচুর্ণ, অর্শোরোগে বিশেষ উপকারক ঔষধভেদ।
প্রস্তাতপ্রণালী: — সৈদ্ধবলবণ, চিতামূল, ইক্রম্বন, যবের তণুল,
ডহরকরঞ্জবীব্দ ও বোড়ানিমের ছাল প্রত্যেকের সমভাগ চুর্ণ
একত্র করিয়া উত্তমন্ধপে মিলাইয়া লইবে। ঔষধের মাত্রা ২ মাষা
পরিমাণ। ইহা তত্ত্বের সহিত গান করিলে অর্শোরোগ আরোগ্য
ছয়। (ভৈষঞ্জারক্তা অর্শোরোগাধিকার)

লবণোত্তমাদ্য চূর্ণ (क्री) অর্ণোরোগাধিকারে চূর্ণে বিধবিশেষ।
প্রস্তুতপ্রণালী— সৈদ্ধব, চিত্রক, ইক্সবেব, করঞ্জমূল ও মহাপিচ্মর্দ্দমূল, এই সকল মূলের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা লইয়া একর
উত্তমরূপে চূর্ণ করিলে এই ঔষধ হয়। এই ঔষধের পরিমাণ
৮ মাষা, অনুপান বোল। অর্ণোরোগে ইহা বিশেষ উপকারী।

(চক্রদন্ত অর্শোরোগাধি°)

"লবনোত্ম (ক্লী) লবণাছত্তিষ্ঠতীতি উদ্-হা-ক। লোণার ক্ষার। লবনোত্মা (স্ত্রী) হ্রস্ব জ্যোতিমতী লতা, ছোট লতা, ফট্কী। লবনোৎস (পুং) নগরভেদ। (রাজতর ১৩০০১)

লবণোদ (পুং) লবণং উদকং ষষ্ঠ, উত্তরপদন্ত চেত্যুদকতো-দ্যাদেশঃ। লবণসমূল। (অমর)

লবণোদক (ত্রি) > শবণমিশ্রিত জন। ২ সমুস।

लवर्गामधि (भूः) नवगममुख । (द्रामाः ४।१८।১७)

लातुन (क्री) न्-जारव कृष्। (इसन। (अवत)

জ্বাৰী (জী) > ফলকুক্বিশেষ। (Anona Reticulata) লোপা, পৰ্যায় —গ্ৰাম্বজা, অগ্ৰিমা। (পৰ্কচ°) लवनीय (वि) नृ-यनीयत्। (इमनीय।

লবস্য (পু:) জাতিবিশেষ। (রাজতর॰ ৭।১২৪১)

লবরাজ (খ্:) কাশীরন্থ একজন ব্রাহ্মণ। (রাজতর° ৮।১৩৪৭)

लवली (जी) नवर तिभः नाठीिं ना-क, গৌরাদিছাৎ ভীব্। কলবুক্ষবিশেষ, চলিভ নোরাড়। পর্যায়—প্রুগক্ষ্না,শক্ষু, কোমল-

বৰলা। ফলগুণ-ছত, সুগৰি ও কফবাতনাশক। (রাশ্বনি°)

लवव९ (बि) क्नश्राष्ट्री।

ल्यभ्रम् (व्यरा) अध्य अध्य । मृहर्स्तत अध्य ।

লবাক (গং) শবাৰ্থং ছেদনাৰ্থং অকতীতি অক-অচ্। ছেদন দ্ৰব্য। (উ**জ্জ**ৰ)

लবাণক (পুং) नृष्ठात्वरत्नाति नृ (आगत्ना-नृ-प्-मिकिशाঞ্জাः। উণ্ ৩৮৩) ইতি আगক। দাত্রাদি ছেদনদ্রব্য।

লাবি (আ) প্রতেহনেনেতি পু (আচই: । উণ্ ৪।১:৮) ই । ছিত্র। লবিক্র (ফ্লী) পুরতেহনেনেতি পু (আর্তি-পু.ধু-পুখনসহচর ইত্র: । পা ৩২।১৮৪) ইতি ইত্র: । দাত্র।

ल्टव्रिनि (प्रः) अंविष्डम । (मःक्षात्राकोम्मी)

লব্দরিয়া, সিদ্ধাদেশের, শীকারপুর জেলার অন্তর্গত একটা তালুক। অক্ষা ২৭°১৫ হইতে ২৭°৩১ উ: এবং দ্রাঘি° ৬৮°২০ হইতে ৬৮°২০ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ২০৭ বর্গমাইল।

২ উক্ত তালুকের একটা নগর। এখানে ছইটা কৌজদারী আদালত আছে।

লব্বি, শ্রীপালকণাপ্রণেতা। লব্য (তি) ছেদনযোগ্য।

ল্বব্য়, মাজ্রাজ ও বোৰাই-প্রেসিডেন্সীবাসী মুসলমান জাতিবিশেষ। মলবার উপক্লেও ইহাদের বাস আছে। ইহারা
আরব ও পারতদেশীর ঔপনিবেশিক মুসলমানগণের সন্তান।
অধিক সন্তব, গৃহীর ৭ম শতাব্দে ইরাকের শাসনকর্তা হাজাজ্-ইবন্
যুক্তকের অত্যাচারে উত্তাক্ত হইয়া তদেশবাসী আরব ও পারসিকগণ এদেশে আসিয়া বাস করে। এতদ্বির যে সকল আরব
ও পারতদেশীর মুসলমান বিশিক্ পশ্চিমভারতের বাণিজ্যের জভ্ত
সর্কাণ ভারতে যাতায়াত করিত, তাহাদের অনেকেই এ স্থানের
অধিবাসী হইয়া পড়ে। ঐ বিশিক্সম্প্রাণার গৃষীয় ১৬শ শতাব্দের
প্রারম্ভ পর্যান্ত দক্ষিণ-ভারতে প্রাথাভ্ত বিস্তার করিয়াছিল।
পর্ক্তপ্রান্ত বিশ্বদশের প্রভাবে উক্ত মুসলমান বিশিক্সম্প্রাণারের
বাণিজ্য ক্রমশংই ধর্ম হইয়া আইসে। ভারতবাসী ঐ সকল
মুসলমান-বংশধরগণই বর্তমানে লব্বর নামে পরিচিত। ইহারা
প্রধানত্য মনবারী ও হিন্দুহানী ভারার কথা কহিয়া থাকে।

ইহাদের মুখাকৃতি ও কৃষ্ণবর্ণ চকু দেখিলে অনুমান হর বে, নানা বৈদেশিক রক্ষের সংমিগ্রণে এই ক্ষান্তির উৎপত্তি। ইহারা বভাবত: কুদ্রকায়, কিন্তু বলিষ্ঠ গঠন। আচার-ব্যবহারে বেশ পরিকার পরিচ্ছন। চর্ম, মূকা, মূকাবান্ পাশ্বর, চাউল ও নারি-কেল বিক্রেয়ই ইহাদের আতীয় ব্যবসা।

ইহারা সাফা ই সম্প্রানার তুর্জ ও স্থানীমতাবলগী। ধর্মকর্মে ইহানের বেশ আহ্বা আছে। অধিকাংশ লোকেই চর্মের ব্যবসা করিয়া থাকে। অবসার অভ তাহারা স্থান্ত সিংগ্লখীপে গমন করে।

লশা, শিরবোগ। চুরাদি" পরদৈ অক' সেট্। লট্ লাশরতি।
নুত্ অলীলশং।

লেশ্যন (क्री) অভাতে ভ্রাতে ইতি অল (অলের্লণচ্। উণ্ ৩০৫৭)
ইতি উনন্, লশাদেশত ধাতোঃ, রহন। পর্যার—মহৌবধ, গ্রান্ধন,
অরিষ্ট, মহাকদ্দ, রমোনক, রমোন, ক্লেফ্রন্থন, ভূতন্ন, উর্গান ।
ত্তপ - অয়রস হারা উন, গুরু, উফ, কফবাতনাশক, অভিচি, ক্লমি,
হল্রোগ ও শোফনাশক, রমারন। (রাজনি) ভাবপ্রকাশে
লিথিত আছে যে, যথন পক্ষীরা গর্মান্ধন ইরাজ ইন্দ্রের নিকট
হটতে অমৃত হরণ করিয়া গর্মান করেন, তথন ঐ অমৃত হইতে
এক বিশু অমৃত ভূমালি নিপতিত হয়, ঐ ভূপতিত অমৃতবিশ্
হইতে লগুনের উৎপত্তি হইয়াছে। এই লগুন মধুর, লবণ, তিক্তা,
কটু ও ক্লার এই পঞ্চরসযুক্তা, কেবল ইহাতে অয়রস নাই।
'রমেন উনঃ' অর্থাৎ অয়রস হারা উন বা অয় এইজ্ঞা পণ্ডিতগণ ইহার 'রসোন' এইরপে নাম নির্দেশ করিরাছেন। ইহার
মৃলে কটুরস, পত্রে তিক্রস, নালে ক্রায়রস, নালের অগ্রভাগে লবণরস এবং বীজে মধুর রস।

লগুন---মাংসবর্দ্ধক, শুক্রবর্দ্ধক, শ্রিম্ম, উক্ষবীর্য্য, পাচক, সারক, কটুমধুর রস, কটুবিপাক, তীক্ষ, ভগ্নসদ্ধানকারক, কণ্ঠ-শোষক, গুরু, পিন্ত ও রক্তবর্দ্ধক, বলকর, বর্ণপ্রসাদক, মেরাজনক, চক্ষুর হিতকারক, রসায়ন, হুন্দোগ, জীর্ণজ্ঞর, কুক্ষিশূল, বিবদ্ধ, গুরু, অভ্নমিন্দা, কাম, বাদ্ধ, আন্দোধ, কুন্ত, অভ্নিমান্দ্য, রুমি, বাদ্ধ, খাস ও ককনাশক। লগুনসেবনকারী বাক্তির পক্ষে মগু, মাংস এবং অমুদ্রব্য হিতজনক; কিন্তু ব্যায়াম, প্লৌদ্র, ক্রোধ, আত্যন্ত জ্বল, চুগ্ধ ও গুড় বিশেষ অহিতজনক। লগুন ভোজনকারীর এই সকল দ্রব্যভোজন বিশেষ নিষ্কি। (ভাবপ্রত)

ধর্ম্মণান্ত মতে, লগুন ভক্ষণ বিশেষরূপে নিবিদ্ধ হইরাছে, সূত্রাং দ্বিজাতিদিপের ইহা অভক্ষা। ব্রাক্ষণ, ক্ষত্রির ও বৈশ্র এই ক্রিজাতি কদাপি লগুন ভক্ষণ করিবেদ না।

"গণ্ডনং গৃঞ্জনং চৈব পদা ধুং কবকানি চ। অভক্যাণি বিজাতীনামমেধ্যপ্রভবাপি চ।" (মন্ত্র ধার) গণ্ডন, গৃঞ্জন, পদাপু, কবক ও অমেধ্যপ্রভব অর্থাৎ বিঠাদি-ভাত বর বিজাতিদিগের অভক্য। কুলুক্তট্ট এই প্লোকের টাকায় নিধিয়াছেন বে, 'বিজ্ঞাতি গ্ৰহণং শৃক্তপৰ্গু নাসাৰ্থং' বিজ্ঞান্ত পদৰারা পর্যাদাসার্থ অর্থাৎ অপ্রশাস্ত্রাথি বুঝাইতে শৃক্তও ভক্ষণ করিবে না; যদি করে, তাহা হইলে বিশেব দোবাবহ হইবে না, ইহাই ভাৎপর্যার্থ। লগুন বিজ্ঞাতিদিগের অভক্ষা, শুদ্র বিজ্ঞাতি মধ্যে পরিগণিত নহে, অভএব শৃদ্র লগুন ভক্ষণ করিতে পারিবে, ইহা শাল্পের অভিমত নহে।

মন্থ ও যাজ্ঞবদ্ধা উভরের মতেই যদি কোন দিলাতি জ্ঞান-পূর্বক লগুন ভক্ষণ করেন, তাহা হইলে তিনি পতিত হইবেন। জ্ঞানতঃ ভক্ষণ করিলে তাঁহাকে কেবল চাক্রামণ এবং জ্ঞানপূর্বক ভক্ষণ করিলে চাক্রামণাদি করিরা পুন:সংক্ষার জ্ঞাবশ্রক, নচেং তিনি জ্ঞাবহার্য্য ও পতিত থাকিবেন।

"ছত্ৰাকং বিজ্বরাহঞ্চ লগুনং প্রাম্যকুকুট্ম্। পলাপুং গৃঞ্জনবৈশ্ব মত্যা অধ্যা পতেদ্বিজঃ ॥ অমত্যৈতানি বজ্জধ্যা ক্বত্যে লাভপনং চরেও। যতিশ্চাক্রায়ণং ৰাপি লেষেৰূপবনেদহঃ ॥"

(मसू ८। २२-२०, योख्डब्स्) १० ३। २१७)

[भनाषु भरम (मथ।]

লশুনাতাতিল, কর্ণরোগে উপকারক ঔষধভেদ। প্রস্তুত-প্রণাগী—তিল তৈল ১ সের, ছাগহ্ম ৪ সের। করার্ণ—লশুন, আমলা, ও হরিতাল মিলিত ২ পল। ইহা কর্ণরাজ্মে দিলে ব্যবিরতা নিবারিত হয়। (ভৈষজ্যরাজা°)

লাশূন (পুং) রসেন উনঃ, রস্য লক্ষং, প্রোদরাদিছাৎ সস্য শঃ অকারলোপশ্চ। লশুন।

লেষ, > কান্তি। ২ ইচ্ছো। ৩ ম্পৃহা। ৪ শিলবোগ। ভাূদি উভত্ব পক্ষে চুরাদি পরবৈ অক'। ম্পৃহাও কান্ত্যের সক সেট্। লট্ লম্ভ অলমীং অলামীং। অলম্ভি লুট্ লম্ভি। চুরাদিপক্ষে ণিচ্ লাম্মতি। মুঙ্ অলীম্মং। সন্ লিল্মিম্ভি-তে। মঙ্ লাল্মতে। মঙ্কুলাল্মতে। মঙ্কুলাল্মতে। অভি+লম্ভ অভিলাম।

ল্যন্ (রী) বাছন। ল্যন্বিতী (রী) প্রাচীন নগরভের। ল্যুন্ (পুং) ক্রন্।

लस्यारम्वी, बाक्क्झार्लमः। जनम् नाम नजीरम्बी।

লাম্ব (থং) লাষরতি নৃত্যে শিক্ষ যুনজীতি লব (সর্কনিস্থেদ-রিবেতি। উন্-১।১৫৩) ইতি বন্প্রতারেন সাধুং। নর্তক। (উজ্জন)

লুল, > লেবণ। ২ জীড়া। ও শিরবোপা। ভালি পরত্রী

অক সেট্। শিরবোপার্থে চুরাদি। পরত্রিও অক। সেট্।

লট্ লস্তি। নিট্ লনাসা। সূত্ অলসীও অলাসীও।

पूर्वािंगिरक विष् वात्रप्रिः । वृङ् व्यतीत्रपरः । छे९+नतः = छेहाति,

त्रप्र् + नतः = त्रम्रहाति, पर्षिः । वि+ वतः = विनातः ।

त्रित्रकः (प्रः) नर्खकः । निष् ।

त्रित्रकः (खीः) नर्ग्वीिंगित्र वतः चित्रकः । (हात्राः)

त्रित्रकः (खीः) नर्ग्वीिंगित्र वतः चित्रकः । (हात्राः)

त्रित्रकः (खीः) नर्ग्वीिंगित्र वतः चित्रकः । विवाः।

"লালারাং পিচ্ছলা থ্যাতা লসিকা লাসিকা তথা ॥" (শব্দচ°) লেসীকা (ত্রী) > ইক্রস। ২ ছঙ্মাংসমধ্যগত রস।

"লদীকা উদকবিশেষং, যথাহ চরকঃ—ষত্তু মাংসম্বসন্তরে উদকং তল্পদীকাশনং লভতে" (বিজয়রন্দিতক্ত প্রমেহরোগবাা') লাস্ জ্র, ব্রীড়া। ভাণি আস্থান অক' সেট্, নিষ্ঠায়ামনিট্। লট্ লজ্জতে। লঙ্ অলজ্জিই।
লাট্ লজ্জাতে। কঙ্ অলজিই।
লাট্যেরকে (ক্লী) নগরভেদ।

লক্ষর, অর্ণবপোতাদি-পরিচালক কর্মচারিভেদ।

লক্ষরপুর, উত্তরবলের অন্তর্গত একটা বিভাগ। মুসলমান অধিকারে পুটিয়া ভূম্পত্তি এই নামে অভিহিত ছিল। মুর্নিণ-কুলী ধাঁর সমরে ১৫টা প্রগণা লইয়া এই বিভাগ গঠিত হয়। রাজস্ব ১২৫৫১৬ টাকা।

শক্ষরী, বৈশ্বব-সম্প্রদায়ভেদ। ইহারা রামাৎ সম্প্রদায়ের অন্তর্নিবিঠ। রামানন্দীদের মত ইহারা তিলকে সিংহাসন করে, কিন্তু তাহাদের মত বক্তবর্ণ শ্রী না করিয়া খেতবর্ণ শ্রী (উর্জ্বন্তর্যু মধ্যরেখা) ধারণ করিয়া থাকে। অযোধ্যায় এই সম্প্রদায়ী বৈশ্ববদিগের একটা আন্তানা আছে। এই সম্প্রদায়ী বৈরাগীরা কথন কখন সাম্প্রদায়িক তিলকের পরিবর্তে ললাট-দেশে গোপীচন্দন, কখন বা সমগ্র মুখমগুলে আপন আপন ইচ্ছা-মত রামরজোনামক মৃত্তিকা বিশেষ লেশন করিয়া থাকে। ইহাদের অস্তান্ত আচার-প্রকরণ রামানন্দীদিগের মত। [রামাৎ দেশ।]

লস্ত (ত্রি) লস-ক্ত। ১ ক্রীড়িত। ২ শিরযুক্ত। লস্তক (পুং)ধন্তকের মধ্যভাগ। (জমর)

लेखिकिन् (পুং) बखरकारखारखि वखक-हेन्, धरुः। (भनमाना) लच्छ्ये (ব্ৰী) বড় হটী। (শতপধব্ৰা ওথা এবং)

লস্বারী, (নাসবারি), রাজপুতনা আলবার-রাজ্যের সন্তর্গত
একটী গগুগ্রাম। রামগড় নগর হইতে ৪ ক্রোল দক্ষিণপূর্বের
এবং আলবার রাজধানী হইতে ১০ ক্রোল দক্ষিণপূর্বের অবহিত।
আকা ২৭°০০ ৩০ ডি: এবং দ্রাঘি ৭৬°৫৪ ৪৫ পু:। এই
হানে ১৮০৩ বৃষ্টাব্দে বিধ্যাত লস্বারীর বৃদ্ধ হয়। এই বৃদ্ধে
ইংরাজের হত্তে প্রসিদ্ধ মহারাই শক্তির পরাত্তব ঘটে।

মহারাষ্ট্র-সৈভ গোপনে অগ্রসর হইতেছে সংবাদ পাইরা কেনাপতি লও লেক ভাহাদের গতিরোধ করিবার অভিপ্রারে অখারোহী সেনাদল লইরা গভীর রজনীতে এই গ্রামে আসিরা উপনীত হন। ১লা নবেম্বর হাই ললে যোরতর যুদ্ধের পর, ইংরাজপক্ষের পরাক্ষর অবশুভাবী দেখিরা লওঁ লেক প্রত্যাবর্ত্তন করেন। ঐ পদাভিক সেনাদল তাঁহার সাহায্যার্থ উপনীত হইলে, তিনি কএক দণ্ড বিশামের পর পুনরার যুকার্থ রণক্ষেত্র অবতীর্ণ হইলেন। এবার সিন্দে সৈন্ধ তাঁমবিক্রমে ইংরাজ-দিগকে আক্রমণ করিল। মহারাই সৈত্য পেব পর্যান্ত যুদ্ধ করিরা ভারতে গোরব রক্ষা করিরাছিল; অবশেষে তাহারা বহু সৈন্ত করে তীত হইরা রণক্ষেত্র পরিত্যাগ করিল। ৭১টা কামান ও রলহাদি লাভ করিরা ইংরাজ কোম্পানী রণজয়ী হইলেন।

লহড় (ক্নী) > কাশ্মীরের অন্তর্গত একটা জনপদ। বর্ত্তমান লাহোর বলিয়া অন্তমিত হয়। ২ তদেশবাসী। (বৃহৎস• ১৪।২২) লহনা (দেশজ) বাকী পড়া বা ধার পড়া টাকা (Outstanding)। লহর (পুং) > জাতিবিশেষ। ২ কাশ্মীরাস্তর্গত লোহর জনপদ। লহর (দেশজ) জলপ্রণালী। নহর।

লহরা, উড়িব্যার অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর। পাল-লহরা রাজ্যের রাজধানী। [পাল-লহরা দেখা।]

লহরি (রী) (রী) মহাতরজ। পর্যায়—উলোল, কলোল। (হেম)
"সরিত ইব যন্ত গেহে শুষ্ঠি বিশালগোত্রজা নার্যাঃ।
কারাত্বেব সত্পাতি জলনিধিলহরিষু জলদ ইব।"

(আর্যাসপ্তশতী ৬১৪)

লাহার, মধ্যভারতের গোয়ালিয়র রাজ্যের অন্তর্গত একটী হুর্গাধিষ্টিত নগর। সিদ্ধ নদের দক্ষিণকূলের ৩ ক্রোল পূর্বে অবহিত। অক্ষা ২৫°১১'৫০' উ: এবং জাঘি° ৭৮°৫৯'৫' পূ:।
১৭৮০ খৃষ্টাকে ইংরাজসৈত্য এই হুর্গ আক্রমণ করিলে উত্তর্ম
পক্ষে ঘোরতের যুদ্ধ হয়। তথন হুর্গ মধ্যে ৫০০ সেনা রক্ষিত
ছিল। কর্ণেল পপহাম হুর্গাবরোধের পর হুর্গের উপর গোলা
বৃষ্টি করিতে থাকেন। এই সংঘর্ষে কিল্লালার ও তাঁহার কয়
জন অন্তর মাত্র জীবিত ছিলেন। সেনাদল প্রাণের মমতা না
করিল্লা রণক্ষেত্তে প্রাণ বিস্কল্পন করিলাছিল।

লহারপুর, অনোধ্যা প্রদেশের দীতাপুর জেলার অন্তর্গত একটা পরগণা। ভূপরিমাণ ১৯২ বর্গমাইল। লহারপুর নগরের ২ মাইল পশ্চিমে অবস্থিত কেশরীগঞ্জ নামক নগর এখানকার প্রধান বাণিজ্যকেন্দ্র। এই পরগণার মধ্যভাগে ১০ হইতে ৩০ ফিট্ উচ্চ একটা অবিত্যকা ভূমি বিশ্বিত দেশা বার। এ উচ্চ ভূমির উদ্ভরাংশ তরাই নামে খ্যাত। এখানকার মৃদ্ধিকা ক্ঠিন 'বাটিরাড়'। উহার দক্ষিণভাগের ভূমি উর্বায় 'দোমাট'।

মোগল-সম্রাট অক্ষর শাহের রাজ্যকালে রাজা টোডর

মল ১০টা তথা লইরা এই 'পরগণার গঠন করেন। গোড় ও জানবার রাজপুতগণ এখানকার বছাধিকারী। ১৭০৭ খৃটান্দে মোগল-সমাট্ অরজন্তের মৃত্যুর পর, রাজ্য অরাজক দেখিরা গোড়রাজ চক্রনেন গীতাপুর আক্রমণ করেন। তাঁহারই বংশধরগণ এই সম্পত্তির অধিকারী। ছানীর জানবার রাজপুতগণ কুণী পরগণার সৈন্দ্র গ্রাম হইতে এখানে আসিরা বাস করার সৈন্দ্রীনামে খ্যাত হইরাছে। ইহারা গোড়রাজবংশের পূর্ব্বে এখানে সমাগত হইরাছিল।

২ উক্ত পরগণার প্রসিদ্ধ নগর। ঘর্ষরনদ-তীরবর্তী মলা-পুর নগর ঘাইবার পথে অবস্থিত। অক্ষা ২৭°৪২'৪৫'উ: এবং জাঘি ৮০°৫৬'২৫'' পু:। এই নগরে প্রায় ১১৫০০ লোকের বাস আছে। তন্মধ্যে হিন্দু ও মুস্লমান আধাআধি।

এই নগরে ১৩টা মসজিদ, ২টা মুসলমানের সমাধিমন্দির, ৪টা হিন্দুদেবদন্দির ও ২টা শিথদিগের মন্দির বিভ্যমান আছে। রবি-উদ্-সানি মাসে এখানে একটা মেলা হর এবং মহাসমারোহে মহরম-পর্ক নির্কাহিত হইরা থাকে। ১৩৭০ খুটান্দে সমাধিমন্দির সন্দর্শনে আসিয়া এই নগর স্থাপনপূর্কক স্থনামে প্রতিষ্ঠিত করেন, উহার ৩০ বৎসর পরে লহরী নামক একজন পাসী এই নগর অধিকার করিয়া উহার লহারপুর নাম দেন। ১৪১৮ খুটান্দে কনোল হইতে প্রেরিত মুসলমান সেনাপতি শেখ তাহির গালি পাসীদিগকে সমূলে নিহত করিয়া এই স্থান অধিকার করেন। ১৭০৭ খুটান্দে গৌড় রাজপুতগণ মুসলমানদিগকে নগর হইতে তাড়াইয়া দিরা আপনারা রাজ্যশাসন করিতে থাকেন। সমাট্ অকবর শাহের রাজ্যস্চিব ও সেনাপতি রাজা টোডর মল্ল এই নগরে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন।

লক্ল (লাহল), পঞ্জাবপ্রদেশের কাঙড়া জেলার অন্তর্গত
একটা উপবিভাগ। জক্লা• ৩২°৮ ইইতে ৩২°৫৯ উ: এবং
দ্রাঘি• ৭৬°৪৯ ইইতে ৭৭°৪৬ ৩০ প্: মধ্য। ভূপরিমাণ
২২৫৫ বর্গমাইল। উত্তর-পশ্চিমে বিভ্ত চমা পর্বতমালা ও দক্ষিণপূর্ব্বে কঞ্জামগিরিমালার মধ্যবন্ধী উপত্যকাভূমি লইরা ইহা
গঠিত। ইহার উত্তর-পশ্চিম সীমার চম্বাশৈল। উত্তর ও পূর্বে
লাদকের অন্তর্গত রূপস্থ উপবিভাগ, দক্ষিণপশ্চিমে কাঙড়া ও
কুলু এবং দক্ষিণপূর্বে শ্লিভি বিভাগ।

হিমালরের সাল্লেশস্থিত এই উপজ্ঞাকা ভূমি গওলৈলে পরিপূর্ব। তাহার মধ্যদিয়া ভূষারমপ্তিক হিমালিথর-বিগলিত চন্দ্রা ও ভাগা নামক নদীবর পার্কাত্য বেলা ভূমি ভেদ করিয়া ধরত্রোতে প্রবাহিত রহিয়াছে। ঐ নদীবর বড়-লাচা গিরিসকটের চালু প্রদেশে সমৃশ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৬৫০০ কিটু উচ্চহান ইইতে

উড়্ত হইরা তাওী গ্রামের নিকট মিলিত হইরাছে, পরে চক্রতাগা নামে চম্বার মধ্যে প্রবেশ করিয়া পঞ্জাবের সম্তল ক্ষেত্রে প্রবাহিত হইরাছে।

এই নদীঘরের অববাহিকা প্রদেশের উভর পার্থেই চিরত্বারাবৃত ও সমুয়ত হিমালয়শিওর বিরাজিত রহিয়াছে। দেখিলে
বাধ হর যেন সেই ভয়াবহ ও বনমালা-সমাচ্চর পর্কাতকশার
ভেদ করিয়া নদীঘর এই ক্ষুদ্র উপত্যকা মধ্যে প্রবাহিত হইতেছে।
বড়-লাচা গিরিপথ সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৬২২১ কিট্ উচ্চ এবং
তাহার উত্তরপূর্কে যে সকল শৈলমালা সমূয়ত শিরে দণ্ডায়মান রহিয়াছে, উহারাও ১৯ হইতে ২১ হাজার ফিট্ পর্যন্ত
উচ্চ। এই নদীঘর পরিবেটিত ভূথওেও একটী বিভূত পর্কাতপঙ্কি দৃষ্ট হয়। উহার শিথরদেশও বরকে আর্ত।
দক্ষিণদিকের শৃক্টী ২১৪১৫ ফিট্ উচ্চ। এই স্থানের চভূম্পার্থে
প্রায় ১২ মাইল স্থান ব্যাপিয়া বরক জমিয়া থাকে, ঐ বরফরাশি
ধীরে ধীরে বিগলিত হইয়া চক্রা ও ভাগার কলেবর পৃষ্টি
করিতেছে।

এই পার্কাত্য উপত্যকার অধিকাংশ স্থানই লোকালয়শৃত্ম। মহুষ্যের বাসোপধোগী নগর বা গ্রামাদি দেখিতে
পাওয়া যায় না। গ্রীয়কালে কুলুবাসী রাথালেরা এই
বিভাগে মেষচারণে আসিয়া থাকে। তৎকালে তাহারা
আপন আপন বাসোপধোগী গৃহাদি নির্মাণ করিয়া থাকে।
হিমালয়ের পুপ্সমালমণ্ডিত পার্কাতীয় শিথরের সৌন্দর্যারাশির
মধ্যে রাথালদিগের কুটীরগুলি বড়ই মনোরম। এইরূপ
কতকগুলি কুটীর যেথানে আছে, সেইখানেই এক একটী
নদীপ্রবাহিত, মধ্যে মধ্যে লামা বা বৌদ্ধ সয়্যাসীদিগের স্থতিরক্ষার্থ প্রতিষ্ঠিত কোণাকার গৃহ ও বৌদ্ধস্থারামাদি স্থানীয়
বভাল্ভের মধ্যভাগে দণ্ডায়মান থাকিয়া সাধারণের চিত্ত আকর্ষণ
করিতেতেত্ব।

চক্রাতীরবর্ত্তী কোক্সার হইতে ভাগাতীরে অবস্থিত দার্চা পর্যান্ত প্রারই বাসোপযোগী স্থান নাই। এই উপত্যকাভূমের ' নিমভূভাগে অর্থাৎ সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে প্রার ১০ হাজার ফিট্ উচ্চ স্থানে মানবজ্ঞাতির বাসোপযোগী গ্রামাদি দৃষ্ট হয়। ১১৩৪৫ ফিট্ উচ্চ অধিত্যকাভূমে কাঙ্শের নামক গ্রাম অবস্থিত। ইহাপেক্ষা উচ্চ স্থানে আর কোন প্রাম নাই। রোহ-তঙ্গ ও বারলাপ গিরিপথ দিরা লাদক ও ইরারথন্দ বাইবার প্রান্থত পথ এই উপত্যকাদেশে বিভ্ত রহিরাছে। এখনও বণিকেরা এইপথ দিরা যাতারাত করে।

বিখ্যাত চীনপরিব্রাজক হিউএন্সিরাং খুটীর ৭ম শতাজে এই স্থান পরিদর্শনে স্থাগমন করেন। পূর্কালে এখারে ্ৰবৌদ্ধৰ্শের প্রাহর্ভাব ছিল এবং এইস্থান তিব্বতরাজ্যের - ক্ষম্ভর্গত ছিল। খৃষ্টীয় ১০ম শতাব্দে ভেটিরাক্ষ্যে রাইবিপ্লব সমুপস্থিত হইলে এই স্থান তিবৰতীয় অধিকার হইতে বিচ্ছিল্ল ছঁই রা শাদকের শাসনভূক্ত হয়। কোন্ সময়ে এই স্থান ভিকাতীয় অধিকার হইতে মুক্ত হইয়া স্বাধীনতা গাভ করে, তাহা জানি-ৰ্ব্যন্ন উপান্ন নাই। তবে ১৫৮০ খুরীবেদ লাদকের শাসনপদ্ধতির লংকারসংঘটনের পূর্বে যে এই ঘটনা ঘটরাছিল, ভাছাতে কিছুমাত্র সদ্দেহ নাই। কিছুকাল এইস্থান ঠাকুরসামস্তগণের अधीत भाति इरेग्नाहिन। श्रामीय डिक न्यान्त्रांश नकत्वरे চ্ছারাজকে কর দিতেন। এখনও এ সন্দারদিগের ৪।৫টা কংশ তৎপ্রদেশ শাসন করিতেছে। তাঁহারা পূর্কপুরুষদিগের এ সম্পত্তি জায়গীরদাররূপে দথল করিয়া আসিডেছেন। শৃষ্টার ১৭০০ অব্দে রাজা জগৎসিংহের পুত্র বৃধসিংহের রাজস্কালে ইহা কুনুরাজের অধিকারভূক হয়। রাজা অংগংসিংহ মোগল-বুধিসিংহের অধিকার হইতে ১৮৪৬ খুটান্দ পর্য্যন্ত লাহল কুলু-রাজের অধিকারে থাকে। ভদনস্তর উহা ইংরাজরাজের শাসনাধীন হয়।

এখানকার অধিবাদীদিগের মধ্যে ঠাকুর উপাধিধারী সামস্তগণই প্রধান। ইহার আপনাদিগকে রাজপুত ব্লিয়া পরিচিত করিলেও ভূটিয়া বা ভিবৰতীর রক্ত ইহাদের শরীরে প্রবাহিত রহিয়াছে। কুনেত নামক পার্ম্বত্য জাতি ভারতীর ও মঙ্গোলীয় জাতির মিশ্রণে উৎপর। ইহারা সকলেই বৌদ্ধশ্ববিশ্বী হইলেও বর্তমান ঠাকুরদিগের উদ্যোগে এথানে শীরে ধীরে হিন্দুধর্মের প্রতিষ্ঠা হইতেছে। নিমতম উপত্যকা-ভাগে কএকখর ব্রাহ্মণ-ধর্ম্মাজকের বাস আছে, কিন্তু অধিকাংশ স্থলেই পুরোহিতেরা উভয় ধর্মান্বিত। অনেক স্থলেই তিব্বতীয় প্রাথার ধর্মচক্র দৃষ্ট হয়। পর্কতোপরি অনেকগুলি বৌদ্ধর্মঠ **প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে। তথ্যধ্যে চজা ও ভাগা নদীর সলমহলে** অৰ্শ্বিত গুরুপ্তাল-মঠই প্রধান। এখানকার অধিবাসীরা মন্ত্রণারী ও লম্পট। কিলাং, কার্দোল ও কোলল গ্রামই এখানকার প্রধান বাণিজ্যন। অধিবাসীরা পশম, সোহাগা, পৰ্দত্ত, ছাগ, ভেড়া ও বোড়ার ব্যবসা শইরা জীবিকা নির্মাহ করে। এখানে অভিশন্ন শীত বিভ্যমান। চৈত্রমানে কার্কোলের माञ्च छान ८६° F, देवारंड ८३° F, ध्वयः व्याधिरम २३° F, ক্ষেপ্রায়ে ক্রমণঃ কম হইতে থাকে।

সাহিক (পুং) ব্যক্তিভেল। [লংহাড় দেখ।]
সাহেল্ডু (পুং) পাশিহ্যক ব্যক্তিভেল। (পা হাওকে)
সাহেল্ডু (পুং) ৯ ব্যক্তিভা। ২ ডক্কশ্বরণণ। (হুববারণ্ডক ওাও))
XVII

লা স্থাহণ। २ नान। अपादि" পরতৈর" সক" অনিট্। লট্ লাভি। লিট্লনো। স্ত্অলালীং

লাইৎ-মাও-দো, আসামের ধনিরা-পর্বভ্রমালার অন্তর্গত অক্টা সিরিলেণী। সমুলুগৃষ্ঠ হইতে ৩৩৭৭ কিটু উচ্চ।

লাইরা, (লেহিরা), বধ্যপ্রদেশের স্বলপ্র কোর অন্তর্গত একটা ভূ-সম্পতি। স্বলপ্র নগর হইতে ৮॥। কোশ উত্তর-পূর্বে অবহিত। লেহিরা গগুগ্রাম (অক্ষা° ২১°৪৪ উ: এবং ক্রাদি° ৮৪° ১৭ পু:) এথানকার প্রধান বাণিজ্যকেন্দ্র। সমগ্র সম্পতির ভূপরিবাণ ৪৬ বর্গমাইল।

লেছিরা-সর্কার কোন বুদ্ধে স্থলপুররাজের সহায়তা করিরাহিলেন। তলস্থারে ১৭৭৭ খুটালে স্থলপুররাজ লাহিরার
বর্তমান সন্ধারবংশের সেই পুর্নপুরুষকে এই সম্পত্তি দান করেন।
এই সন্ধারগণ গৌড্জাতীয়। ১৭৫৭-৫৮ খুটান্দের সিপাহীবিজাহে
এখানকার সন্ধার শিবমাথ সিংহ ইংরাজরাজের বিস্তুদ্ধে বোগদান
করেন নাই। ১৮৮৪ খুটান্দে তাঁহার নাবাদক পুত্র কুলাবন
সিংহ জারগীরী-মন্নদে অধিষ্ঠিত হন।

লাউ (দেশৰ) অলাবু।

লাউমাচা (দেশৰ) লাউগাছ উঠাইবার বংশমঞ ৷

লাওবা, আসামবিভাগের ধনিরাও জরতী পার্কতা জেলাছরে অবহিত একটা শৈলপ্রেনী। সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ৪৪৬৪ কিটু উচ্চ। লাও-বের-সাৎ, ধনিরাও জরতী-পার্কতা জেলার অবহিত শৈলভের। ইহার সর্কোচ্চ গৃল সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ৫৪০০ কিটু। লাও-সিক্লিয়া, আসামের ধনিরাও জরতী পার্কতা বিভাগে অবহিত একটা গিরিমালা। ইহার সর্কোচ্চশিধর সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ৫৭৭৫ কিট্।

लांक् (प्रमम, गक भरमत्र जनज्ञःम) गक ।

লাক্সাম, অিপুরার অন্তর্গত একটা গওঞাম। এই ছানে আসাম-বেলল রেলপথের একটা জংসন আছে।

লাকাদোল, আসামপ্রদেশের লয়ন্ত্রী শৈলমালার দক্ষিণে লবছিত একটা প্রামা। এই স্থান সরমার শাখা হরিনদীতীরবর্ত্তা বোরঘটি হইতে ৬ মহিল দূরে ও সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ২০০০ ফিট্ উচ্চে অবহিত। এখানে একটা কুল্ল করলার খনি আছে। এই খনি হইতে উভোলিত করলা প্রায় ইংরাজী উৎস্কৃত্ত করলার অন্তর্ভা ইংরাজগবনে ট এই খনির অভাধিকারী। লাকাদোল, হইতে কুলীটানা গাড়ীতে খোরঘাটে আনিয়া করলা নোকা বোরাই হইত। তাহাত্তে অনেক খরচ পড়ে বলিরা এখন করলা উভোলনকার্ট্য বল্ল ইইরাছে।

লাকাবাদর, বোধাই প্রেসিডেন্সীর কার্টিরাবাড়-বিভাগের নালাবাড় আছন্থ একটা ক্ষুল নামন্ত-যাজ্য। ভূ-পরিবাণ ৫ বর্গ- মাইল। এথানকার সন্ধার বড়োদার গাইকবাড়কে বার্বিক ১৫৯ টাকা ও জুনাগড়ের নবাবকে বার্বিক ২৪ টাকা সাক্ষর দিরা থাকেন।

লাকিনী (জী) যোগিনীজেন । ভল্লে এই ৰোগিনীর বিবর
বর্ণিত আছে। ছপোংসবপদ্ধতিতে 'লাং লাকিনীভ্যো নমঃ'
এই মন্ত্রে পূলা করিতে হয় ।

লাকুচ (অ) শক্চ-বৃক্তৰ।

লাকুটি (পুং) লকুচের গোত্রাপত্য।

লোক (জি) লাক বা লক্ষী শলের অপপ্রয়োগ।

লাক্ষকী (বী) গীতা।

"রাথব তে ইয়ং সীতা হারকেশত কল্পিনী। বিকোহৰতারমাত্রত লল্পীগ্যা কমলালয়। ।। লক্ষণা কমলা দাজে। যতাঃ সা লাক্ষকী মতা। ।। এবং শতসহস্রাণামীখরী রাধিকাধিকা ॥"

(পদ্মপুরাণ উত্তর্থও ৫৫ অধ্যান)

লাক্ষণ (ত্রি)) সক্ষণসম্বনীয়। ২ সক্ষণবিৎ। লাক্ষণি (পুং) সক্ষ্ণুর গোত্রাপত্য।

লাফ্রান্ত (বং) লক্ষ্পমধীতে দেবা বা লক্ষণ (কতুক্থাদিস্ত্রান্তাৎ ঠক্। পা ৪।২।৬০) ইতি ঠক্। > লক্ষণাভিজ্ঞ,
লক্ষণবেক্তা। ২ লক্ষণা শক্তি ছারা প্রতিপাদক অর্থ।
'লক্ষণয়া প্রতিপাদক: লাক্ষণিকঃ' (সাহিত্যদ°) লক্ষণাত্মক
রৃত্তিমৎ পদত্তই লাক্ষণিকছ। 'লক্ষণাত্মকরৃত্তিমৎ পদত্তং
লাক্ষণিকছে। 'লক্ষণাত্মকরৃত্তিমৎ পদত্তং
লাক্ষণিকছে। বিভক্তিতত্ত্বার্থবাদে লিখিত আছে
বে, শব্দ ৬ প্রকার শক্ত, লাক্ষণিক, রুঢ়, বোগরুঢ়, বৌগিক,
ভ যৌগিকরুচ়।

"শক্তো লাক্ষণিকো রুঢ়ো যোগরুড়ণ্ড যোগিকঃ।
ক্ষতিৎ যোগিকরুড়ণ্ড শব্দঃ যোড়া নিগন্ততে #"
(বিভক্তিত্বার্থবা°) [লক্ষণা দেখ]

লোক্ষণ্য (ত্রি) লক্ষণবিং।
লোক্ষা, কামরূপের দক্ষিণে প্রবাহিত একটা নদী। (কালিকাপুণ
১৭ জঃ) রামপালের দক্ষিণেও এই নদী প্রবাহিত। (দেশাবলী)
লোক্ষা (ত্রী) লক্ষ্যতেহনরেতি লক্ষ (গুরোল্ড হলঃ। পা এতা>০৩)
ইতি অ-টাপ্ যন্ধা-বাহলকাৎ রাজতেরপি সং' কপিলিকাদিখাং বা লত্বং (উণ্ এ৬২) রক্তবর্ণ বৃক্ষনির্যাস বিশেষ, চলিত
লাহা, গালা। সংস্কৃত পর্যার—রাক্ষা, জতু, যাব, অলক্ত, ক্রমামর,
খদিরিকা, রক্ষা, রক্ষমাতা, পলক্ষা, ক্রমিহা, ক্রমব্যাধি, অলক্ষক,
পলালা, মৃদ্রিণী, দীপ্তি, জন্ধকা, গন্ধমাদিনী, নীলা, দ্রবরুসা,
পিতারি।

विक्रि (मण गाका विक्रि नाम श्रीकिष्ठ। हिन्मी-गाका,

লা, লাহা; বালালা—গালা; গুলরাত—লাক্; তামিল— কোবুরুকী; তৈলল—কোন্দক, লভুক, লভ্; মলরালম্— জন্দু; ব্রন্ধ—থেলিজ্ক্; শিলাপুর—লন্দ; মহারাট্র—লাধ্; কলিল—অরপ্ত।

আশনা, বট, মহরা, পলাশ প্রভৃতি বৃক্ষ-ছকে লাক্ষাকীটের (Coccus lucca) অবস্থানহেতু যে রক্তবর্ণ নির্দ্যাদ উৎপন্ন হয়, তাহাই লাক্ষা বা গালা নামে পরিচিতঃ কেহ কেহ বলেন, লাক্ষাকীট বৃক্ষবিশেষের ছক্ ভক্ষণ করিয়া যে মল ত্যাগ করে, তাহাই জলবায়ু ও বুকের রসগুণে লাক্ষায় পর্যাক্সিত হয়। এই লাক্ষা বা গালা উৎপাদনের জভ্য ভারতবর্ষের স্থান-বিশেষে চাস হইতে দেখা যায়। তত্তৎস্থানের অধিবাসীরা এक तुक हहेटल नाका कींग्रे नहेशा व्यापत तृतक हाफ़िया रमग्र, (महे कींग्रे हहेरछ वृक्षप्रतक न्छन कींर्प्रेत छेदशक्ति हहेरछ थारक। क्रमनः এই নৃতন की देवः न वृक्तरक हा देवा किला। यथन नाका-কীটে বুকের আপাদ-মন্তক আচ্ছন্ন হয়, তথন আর বৃক্ষটী দজীক शांदक ना, वद्रः द्रमहीन इश्वाद जाहाद প्रकानि यदिया यात्र এवः শুঁড়ি হইতে সমগ্ৰ পল্লবাদি লাক্ষামলে আবৃত হইয়া মলসংযুক্ত হরিদ্রাভ লোহিত বর্ণে রঞ্জিত হইয়া উঠে। লাক্ষাপালনকারি-গণ উপযুক্ত সময়ে ঐ লাক্ষামল স্থপরিপক হইয়াছে জানিয়া ভাহা ভাঞ্চিয়া বান্ধারে বিক্রন্ন করিতে আনে। ঐ লাক্ষা দেশীয় ৰাণিজ্যের একটী পণ্যদ্রব্য মধ্যে গণ্য। উহা হইতে নানাপ্রকার থেলানা প্রস্তুত হইয়া থাকে। থেলানা প্রস্তুত করিবার পূর্বের উহাকে জলে ভিজাইয়া রাখিতে হয়। তাহাতে সেই জল ক্রমশং লাল হইয়া উঠে। সেই লোহিতবর্ণ জল শুকাইয়া গাড় হইলে পর যে লাল রঙ্ তলার জমে, তাহা পুনরার ওকাইয়া লইলে 'Lac dye' প্রস্তুত হইয়া থাকে। তাহাই বাণিজ্ঞা-দ্রব্যরূপে বাজারে বিক্রীত হয়। আমাদের দেশের অলক্তক নামক কার্পাদ-পত্র (তুলার পাত) এই লাক্ষার রক্ষেই প্রস্তুত।

ময়লাযুক লাক্ষাকে সাধারণতঃ লোকে থাম্লাথ বা লাক্ষার থামি কলে। লাক্ষা ভিজাইরা পরিস্কৃত করিবার পর উহা এক ' একটি কুদ্র বীজের স্তার চূর্ণ হইরা যায়। উহা লাক্ষানা বা Seed-lac নামে পরিচিত। এই দানাগুলি অগ্নির উত্তাপে দামান্ত পরিমাণ রক্ষন যোগে গলাইরা বে পাতগালা (Shell-lac) প্রস্কৃত হয়, বালালার ও হিল্পুলনে তাহা চাপ্ডা-গালা বা চাঁচ্-গালা বলিয়া প্রসিদ্ধ। বোভামের স্তার কুল্ ও গোলাকার মোটাগুলি বড়া-গালা বা Button-lac নামে প্রচলিত আছে।

ভারতবর্ধের স্থানবিশেষে লাক্ষার উৎপত্তি ও পরিমাণ মতন্ত্র। পশ্চিমবলের ও আসামের পার্ব্বত্য-গ্রাদেশে এবং মধ্যপ্রাদেশের নানাস্থানে প্রচুর গালা ক্ষরে। বৃক্তপ্রাদেশে তদপেক্য আনেক কম। পঞ্জাব, বোষাই ও মান্ত্রাজ বিভাগে তত অধিক জবৈম না। ব্রক্ষের কোন কোন স্থানে পর্যাপ্ত ও কোন কোন স্থানে অল্ল উৎপদ্ধ হয়। শ্রাম, সিংহল, পূর্বভারতীয় শীপ-প্রিক্লের কোন কোন দ্বীপে এবং চীনসামাজ্যে অল্লবিশুর লাক্ষা জিমিয়া থাকে। ঐ সকলের মধ্যে শ্রাম, আসাম ও ব্রন্ধ-দেশজাত লাক্ষাই সংক্ষাৎকৃত্ত।

মইকংহিতা ও মহাভারতে লাক্ষার উল্লেখ আছে। প্রর্যোধন কর্তৃক পঞ্চপাগুবের জতুগৃহদাহকথা কাহারও অবিদিত নাই। তৎকালে উত্তর-পশ্চিম ভারতে লাক্ষার যে বছল প্রচলন ছিল, তাহা এই সূর্হৎ অট্টালিকা-নির্মাণেই উপলব্ধি করা যায়। এই অতুগৃহই তৎকালীন লাক্ষা-শিল্পের (Lac-industry) প্রকৃষ্ট নিদর্শন।

ভারতীয় লাক্ষার ইংরাজী নাম Lac এবং লাক্ষাজাত দ্রব্য-শুলি Lacquer ও Lackered ware" নামে পরিচিত. ইতিহাস অনুসরণ করিলে জানা যায় যে, ভারত হইতে এই দ্রব্য আরবীয় বণিকদিগের ছারা স্থপুর পশ্চিম এসিয়াখণ্ডে नीं इंटेंड। उंशिता এই ज्या नाथ, नारमट्रे विक्रय क्रिएडन। আফুমানিক ৮০-৯০ খুষ্টাবে পেরিপ্লাদের লেখনী হইতে জানা যায় যে, Ariake দেশের মধ্য হইতে বহু প্রকার লাক্ষাজাত দ্রব্য পশ্চিমোপকুলস্থিত Barbarikē বন্দরে লোহিত-সাগরের আমদানী হইত। উক্ত গ্রন্থকার অলক্তক বর্ণেরও (Lac-dye) উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। Ælian-ক্লত প্রাণিতত্ত্ব (২৫০খুপ্টান্দে) লাক্ষাকীটের উল্লেখ আছে। তিনি লিখিয়াছেন, ভারতীয়গণ বৃক্ষে ঐ কীট পালন করে। তাহারা উহা যথাসময়ে ধরিয়া ৰ্ষ্ট্য করে এবং সেই গুঁড়া জলে ভিজাইয়া যে রঙ্পায়, তাহাতে গৈরিক বসন ও জামা প্রাভৃতি রঞ্জিত করিয়া থাকে। ঐরপ রঞ্জিত বস্ত্রাদি তৎকালে পারশুরাজনমীপে বিক্রন্নার্থ প্রেরিত হইত। (Nat. Animal Vol IV. 46) शार्मिया वरनन त्य, प्याववीय বণিক্গণ লাক্ষাকে 'লাক্ স্নুমুত্ৰী' বলিতেন, অধিক সম্ভব, পেগুজাত লাক্ষা প্রথমে সুমাত্রার বাণিজ্ঞাভাণ্ডারে আনীত হইত। উক্ত দ্বীপের বন্দর হইতেই মারবীয় বণিক্গণ উক্তদ্রব্য ক্রয় করি-তেন বলিয়া তাহারা উহাকে লক্স্মুহী নামে অভিহিত করিয়া-ছিলেন ৷ ১৩৪৩ খুষ্টাব্দে Della Decima (III 365), ১৫১০ খু: (Varthema, 238), ১৫১৬ খুটাবে Barbosa, ১৫১৯ খুটাবে Correa প্রভৃতি গ্রন্থকারগণ ভারতীয় এবং পেঞ্চ, মার্ত্তাবান্ ও করমওল উপকূলজাত লাকার উল্লেখ করিয়াছেন। গার্সিয়া ১৫৬৩ খুষ্টাব্দে পত্রাদি জাটিবার জন্ত গালার বাতি এবং আবুল कम्मन चार्रेन्-रे-चक्रवेदीएठ शानाव शानिरनव कथा निरिवा-হেন ৷ উক্ত শতাৰে ভ্ৰমণকারী শিন্সোটেন (Liuschoten)

মলবার, বাদালা ও দাব্দিণাড্যের লাক্ষার বিষয় বর্ণনা করিয়া গিরাছেন।

উত্তরপশ্চিম প্রাদেশের গড়বাল জেলার বিস্থৃত বনভূমে ও व्यत्याशांत मिक्निश्र्विविভाগের বনরাবিতে প্রাচুর লাকা क्राया। মুক্তাপুরের গালার কারখানায় অবোধ্যানাত লাকারই অধিক আমদানী হইয়া থাকে। পঞ্চাবে সামান্ত মাত্রায় গালা উৎপন্ন हत्र। मिक् अत्मर्भ हात्रमतावातमत अत्रशाविकारण त्य शामा स्मरमा. তাহার অধিকাংশই স্থানীয় প্রসিদ্ধ খেলানাদি নিশ্মাণ-কার্য্যে ব্যবহৃত হয়। মধাপ্রদেশের পার্ক্তা ব্নভূমে যে পরিমাণ গালা উৎপন্ন হয়, ভাহার ছারা স্থানীয় লোকে গালার চটী প্রভৃতি প্রস্তুত করিয়া থাকে। উহার অধিকাংশই রেলগণে চালিত হইয়া কলিকাতা ও বোখাই সহরে আনীত হয় এবং তলা हरेएक कारास्क **द्यापार हरे**जा बूरतारल यात्र। संशाखारमा वारह-লিয়া, রাজহোড়, ভিরিষা, কুকু, ধায়ক, নহিল ও ভোই প্রভৃতি অসভ্যকাতিরা এবং স্থানীয় নিম শ্রেণীর মুসলমানগণ লাকা সংগ্রহ করিয়া পটুরাদিগের নিকট বিক্রেয় করে। লাক্ষাবৃত বুক্ষপল্লব যাহা বনাস্তরাল প্রদেশ হইতে সহরে বিক্রমার্থ আনীত হয়, তাহাকে লাকাদণ্ড বা Stick-luc বলা যায়। মহিন্দুরে এবং ত্রন্ধরান্দ্যের শানষ্টেট ও উত্তরত্ত্বনবিভাগে প্রচর লাকা উৎপন্ন হয়। এখান ইইতে লাক্ষাদণ্ড কলিকাতায় আনীত হয়, পরে তথা হইলে চাঁচগালা প্রস্তুত হইয়া মুরোপে রপ্রানী হটয়া থাকে।

ভারতবর্ষের মধ্যপ্রদেশপাত লাক্ষার বৈদেশিক বাণিঞ্চাই প্রধান। তবে বাঙ্গালা, আসাম ও ব্রহ্মদেশ হইতে তদ্ধানা তবে বাঙ্গালা, আসাম ও ব্রহ্মদেশ হইতে তদ্ধানা তবেক অল-পরিমাণে লাক্ষা দেশান্তরে প্রেরিড হয়। দেশার লোকের ব্যবহারার্থ কতক পরিমাণ এদেশে থাকে। বাঙ্গালার বীরভূম, ছোট-নাগপুর ও উড়িয়াবিভাগে বিভর লাক্ষার চাস আছে। সিংহভূম, পুরুলিয়া ও হাজারিবাগ হইতে প্রতি বংসর অনেক লাক্ষা কলিকাতার আমদানী হয়। বাঙ্গার অন্তর্গত সোণাম্বী, ঝালিলা প্রভৃতি স্থানে বড়াগালা এবং মৃত্রাপ্রে চাঁচ্গালার কার্থানা আছে। কলিকাতার উপকঠে গাণেট গালা প্রস্তুতের চুইটী কার্থানা দৃষ্ট হয়। অধুনা চুইটীই যুরোপীর বণিক্ ধারা পরিচালিত।

বাকালার বৎসরে ছইবার গালা সংগৃহীত হইয়া থাকে। প্রথম কার্ত্তিক হইতে পৌব পর্যান্ত এবং দিতীরবারে বৈশাধ ও জ্যৈষ্ঠ মাস পর্যান্ত। সময়ের তারতম্যান্ত্সারে ইহা কুন্তমী, রদিণ, বৈশাধী, জলচালা প্রভৃতি বিশেব বিশেব নামে প্রাসিদ্ধ।

বনে দাবানল, জনাবৃষ্টি জথবা অত্যধিক কুরারা হইলে লাকা-কীট নষ্ট হইরা থাকে। এত্তিক শিশীলিকা মাত্রই ইহাদের বিলেষ অপকারক। ইহারা বৃক্তে উরিরা লাক্টানীটের খ্রী-কোটর-(Female cell)গুলির মধ্যে প্রবিষ্ট হর এবং ক্রমণঃ তত্তপরি হুত প্রমিষ্টরসসম্পন্ন যোমকং সাবাছাল বাইডে আরম্ভ করে। তাহাতে কোটরছ কীট পরিপ্রেই হইতে না হইডেই বায় ও উত্তাপের প্রধর্মভার মই হইবা বার। বে বৃক্তে পিগ্ ভা ধরে, সে গাছের গালা আর প্রই হইতে পারে না। এতভিন্ন Galleria ও Tinea প্রেণীর আরও গুই প্রকার কীট ইহাদিগের অপকার করে। উহারা কেবল স্ত্রী-লাক্ষাকীটের রভের অংশ ও শিশু কীট গুলিকে বাইবা বাকে।

রাসারনিক পরীকা ছারা লাক্ষার বিভিন্ন প্রার্থের সমাবেশ নিৰ্নীত হটৱাছে। ঐ সকল পদাৰ্থে বিশেষ বিশেষ গুণ থাকার এবং উহা স্বতন্ত্র স্বাহের কার্য্যে ব্যবস্থত হয় বলিয়া,উহা এত অধিক আগ্রহের সহিত পণ্যস্তব্যরূপে বাজারে বিক্রীত হইরা থাকে। অধ্যাপক হাচেট্ বিল্লেষণ দারা দেখিরাছেন বে,পল্লবম্ভিত লাক্ষার (Stick lac) ৬৮ ভাগ রখন, ১০ ভাগ রঙ, ৬ ভাগ মোম, ে। ভাগ আটাবং পদার্থ, ৬॥ তাগ মাড় ও ৪ ভাগ ধুলাওঁড়া ইত্যাদি আছে। লাকাচূর্ণে (Beedlac) ৮৮° রন্ধন, ১২॥• রঙ, ৪॥ মোম ও ২ ভাগ আঠা এবং চাঁচ গালার (Shell-lac) ৯০ ভাগ রন্ধন, ॥০ ভাগ রঙ্, ৪ ভাগ মোম এবং ২ ৮ ভাগ नांहरत्। स्त्रनमध्कीत्र भनार्थ थात्क। छन्छात्रत्छात्रत्वन वरमन, চাঁচগালার রজন নামক পদার্থ আলকোহল ও ইথারে দ্রবীভূত হয়। আবার ঐ ধুনাবৎ পদার্থের কতকাংশ আল-त्काहरम अवीकृष्ठ हम्न, किन्त हैशारत हम्न मा। छेहा माना वाद्य । উহাতে লাক্ষাকীটের বসা (unsaponified fat) এবং ওলিক ও মার্গরিক এসিড আছে। কতক পরিমাণে মোম ও laccine পাওয়া যায়।

গালার পাত প্রস্তুত করিবার প্রণালা।—প্রথমে প্রবমণ্ডিত লাক্ষাগুলিকে জাঁতার পিবিয়া চূর্ণ করিছে হর, তদনস্কর বড় কাটিকূটা বাছিরা কেলা হর। পরে সেই লাক্ষা থওগুলি ক্রমশ: ফল-বীলের স্থার ক্ষুত্রতম করিবার জন্ম তিন বা চারিপ্রকার জাঁতার উপর্গপরি পেবিত ও চূর্ণ করিরা ছাঁক্নী দিয়া ছাঁকিয়া লওরা ছইয়া থাকে। এইয়পে ছাঁকিতে ছাঁকিতে বখন কেবল গালাচুর্ণ মেজের উপর পড়ে এবং কাটিকূটা ছাঁক্নীতে আলাহিদা থাকে, তখন সেই কাটিকূটা কেলিয়া দিয়া লাক্ষাচুর্ণগুলি উঠাইয়া স্ত্রীলোকেরা কুলার ঝাড়িয়া পরিষার করে। কুলার পরিকার করিবার সময় আবর্জনামিশ্রিত লাক্ষাচুর্ণগুলি একধারে রাখিয়া পরিকার লাক্ষার নামান্তলি পাচ্চগালা প্রস্তুত্র জন্ম সরাইয়া রাথে এবং ঐ আবর্জনামিশ্রিত অপরিকার লাক্ষাচুর্ণ চুড়ীওয়ালালের নিকট বিক্রম করে। ভাষারা উহা

গলাইৰা ভারতীর ব্যশীগমণৰ হতাবহার প্রস্তুত ক্রিয়া থাকে।

অতঃপর সেই পরিষ্ণত বানাগুলি কুইরা একটা লব্দান নলের মধ্যে প্রিয়া অলে কচ্পান হইরা থাকে। নলের ভিতর লল থাকার গালার রঙ ফুমশা জলে মিলিত হইরা লালিবর্ণ থারণ করে। এ দানাগুলি উন্তর্ভের জল-আলোড়নে চুর্গ হইরা কুদ্র হইতে কুদ্রতম দালার গরিগত হয় এবং বর্ণপার্থ (Colouring matter) একবারে লাকা হইতে বিযুক্ত হইয়া পড়ে। তথন সেই রিলি অল থিতাইবার জয় একটা বড় চৌবাছ্রার মধ্যে ২৪ ঘন্টাকাল রাঝা হয়। নীল গাঁজাইবার মত চৌবাছ্রার ভলে রঙ্গ সঞ্চিত হইলে একটা ছিন্তপথে উপরের জল চালিত করিয়া চৌবাছ্রার বাহির করা হইয়া থাকে। পরে সেই সঞ্চিত রিজ্প পদার্থ উত্তমহ্রপে ছাঁকিয়া একটা পাতে রাধা হয়। এ য়ানে উহা ওকাইয়া গায় হইলে ডাহাকে বর্কীর আকারে থও থও করিয়া কাটিয়া রোজে প্রবার ওকাইয়া লওয়া হইয়া থাকে। উহাই বাণিজ্যের গাল্-ডাই'নামক পণ্যত্রয়।

উপরোক জ্লংগত লাক্ষাকণাই "Seed-lac" নামে পরি-চিত। উহাকে আর্ত পাত্রে বাংশোদ্ধাপে তরল করিয়া লইরা পাত্রগাত্রন্থ উত্তপ্ত নালীপথ দিয়া রজন মিশ্রিত করা হয়। তাহা হইলে অভ্যক্তরন্থ লাক্ষা আরপ্ত তরল হইয়া পড়ে। উহা আর পাত্রের গাত্রে কান্ড্যাইয়া ধরে না, বরং অগ্নির উত্তাপে থাকিয়া সূটতে সূটতে কিছুকাল পরে ঐ রক্ষন উপিরা যায়।

পূর্বকথিত ভাণ্ডের চারিপার্থে দ্যানিশ্বিত কতকগুলি নল সজ্জিত থাকে। উহার শিরোদেশ ৪৫° কোণে বক্র। উহাদের ভিতর ফাঁপা এবং অভারেরে নিরম্বর উষ্ণ জল রাথা হয়। তাহার তাপ অতি সামান্ত, কারণ অধিক তাপ হইলে গালা ঈষৎ ঠাওা হইতে পার না. স্থতরাং জমিতেও পারে না, আবার একবারে ঠাতা হইলে গালা শীঘ দুঢ় হইরা যাইবার সম্ভাবনা। ঐক্লপ অবভার ভাষাতে ভরল গালা লাগাইয়া টানিলে সহজেই। তাহা 🗴 দন্তান্তত্তে আটকাইরা হাইবে। অতএব নির্মিত উদ্ভश्चल के प्रचान कामा थिन भून स्ट्रेल, अक्षम गुक्ति कनात পেটোতে খানিকটা গ্ৰিত গালা লইয়া একটা অস্কের শিরোদেশে লাগাইয়া দেয়। গোলাকার ও মন্তণ ঐ দত্তের উপর সমানভাবে উত্তাপ প্রাপ্ত হইরা গালা সরল ও পাতলাভাবে ছডাইরা পড়ে. ভখন একবাজি আনারস, ভাল বা নাবিকেলপত ছই হাতে চুই কোণে ধরিরা নলের মাথা ছইতে লেই ভরল গালা টানিরা ৰাভাইতে থাকে। থালাৰ উদ্ধাপ ও তরলতা কমিবা বাহতে ক্ষমণ: ওকাইরা আসিলে উপরের মোটা অংশটুকু তালিরা

কৌনরা দিলা অবশিষ্ট চাদরের ভার পাতলা অংশটুকু একটা
দণ্ডের উপর ঝুলাইরা দেওরা হয়। ঐ দণ্ড সাধারণতঃ স্ত্রীলোকেরাই ধরিরা থাকে। তাহারা সেই গালা কাপড়ের ভার
ঝুলাইরা সেই স্থান হইতে অভ একটা গৃহে দণ্ডসহ
র্যাকের মধ্যে শ্রেণীবদ্ধ আকারে সক্ষিত করিরা রাখে। এই
ভানকে 'Drying shed' বা গুকাইবার বর বলে। উহা
ক্তকাংশে তামাক-কুঠার (Drying-houseএর) মত। পর
দিন সেই গুক গালার পাত ভালিরা বাল্লের মধ্যে পুরিরা নানা
ভানে বিক্ররার্থ প্রেরিত হয়।

কণিকাতার হাতিবাগানে অধিকাকুমারের গালার কল প্রাসিদ। বুরোপে তাহার O. C. C. মার্কা গাণেট গালার বংগই আলর ছিল। স্থাপ্রসিদ বণিক রেলীব্রাদার ঐ কল কিনিরা গলইন্ সাহেবকে বিক্রম করেন। উহা এখন উন্টাভিন্নিতে হানা-ত্তরিত হইরাছে। কলিকাতার উত্তরউপকঠিছত এজিলো ব্রাদারের ক্লেণ্ড গাণেট গালা প্রস্তুত হয়। দম্দমার নিকটে পিট্রোক্টনো ব্রাদারের বড়া গালার একটা কারখানা আছে।

গাঁলার রঙ্ চিরপ্রসিদ্ধ। পদতলে আল্তামাখা হিন্দ্রালার বড়ই আলরের জিনিস। মুর্শিলাবাদ, রঘুনাথপুর প্রভৃতি হানে রেশনী বল্লের প্রতা আল্ডার রঙে রঞ্জিত হইরা থাকে। এই আল্ডা চর্দ্ররোগেও বিশেব উপকারী। পারে পাঁকুই বা হাজা হইলে অথবা গারে চুলকনা হইলে তাহার মুখে আল্ডা শুলিরা গাছ রঙ্ টিলিরা দিলে উপকার দর্শে। হিন্দুর আর্কেদ-শাল্তে লাক্ষাদি-তৈলে ইহার ভেষল গুণ উল্লিখিত হইরাছে। ইহার বর্গ সর্কাপেকা আদরণীর। কাপড় হোগান ব্যতীত পূর্কে এই বর্ণের সাহায্যে অপরাপর রঙ্ প্রস্তুত করা হইত, ইহার রঙ্ পাকা।

গালা হইতে চুড়ী, ছড়ি, নানা গহনা এবং বাগানাদি অতি
মনংকার বেলানা দ্রব্য প্রস্তুত হইরা থাকে। কুন্ননী গালার
প্রস্তুত গলার হার ঠিকু গিনি-সোণানির্মিত হারের জার বোধ
হয়। একটা কলকুলপরিশোডিত উল্লান-বাটকা প্রস্তুত করিতে
ইচ্ছা হইলে সহরেই গালার হারা সাজান হাইতে পারে।
গালার উপর বেখানে বে রঙ্ লাগান আবক্তক, তাহাও ঠিক
সেইখানে দেওরা বার এবং উহার গাল পালিসের জার
কন্তুপ ও চাক্চিকানালী হইতে পারে। বালালার সোণানুধী ও
লাললা প্রস্তুতি স্থানে গালার অলভার ও বেলানাদি প্রস্তুত
ইউ। কলিকাতা সহরেও কোন কোন ক্রিগর গালার বেলানা
ক্রিডেছে। পঞ্জাব, সিদ্ধ ও পাক্ষণভবে প্রসিদ্ধ
বালার ব্যালার কার্থানা (Lac-turnery) আছে। কারক্রিলার প্রস্তুত্ব প্রানার ব্যার্থানা (Lac-turnery) আছে। কারক্রিলার প্রস্তুত্ব প্রানার ব্যার্থানা (Lac-turnery) আছে। কারক্রিলার প্রস্তুত্ব প্রানার ব্যার্থানা (Lac-turnery) নামে

অভিহিত। অপর হাঠের উপর গালা জনাইরা ভাহাকে বে কোন কাঠের আকারে পরিণত করা বার। কানীতে নারা বাঁথারিতে স্ভার গাঁট বাঁধিরা চীনা বাঁশের লাট প্রান্ত করিছে দেখা বার। এইরণে স্কর স্ফার বার, কুলনারী, টেপারা প্রাকৃতি ভূতৈরারী হয়। স্থালভারাদিতে গালা ভরিবার প্রচলন আছে।

ভারতীর লাকাকার হইতে জাপানী লাকালির খতর।
তাহারা কাঠের উপর গালার পারিবর্তে Rhus Vernicifers
নামক ব্যক্তর আটার পালিস দিরা থাকে। গালার পালিস
খতর। আল্কোর্হলে চাঁচ গালা, ধূন্থারাপী, লোবান্ ও কুইমুক্তনী বোগ করিলে গালার পালিশ প্রভাত হর। সাধারণতঃ
বার্ম, আলমারী, বরজা জানালা প্রভৃতিতে ইহা লেপন করিরা
চাক্চিক্য সম্পাদন করা হইরা থাকে।

সাক্ষা ও সাক্ষারতের বাণিজ্য পূর্কাপর সমভাবে চলিরাছিল।
১৮৬৫ ঘৃষ্টাব্দে চাঁচগালা অপেক্ষা লাক্ষাবর্পের লাম বিপ্রপ
বাড়িরা উঠে। এই সমর নীলের চাস চলিতেছিল, নীলে
রতের উৎক্রই অমি হওরার লাক্ষারতের পরিবর্জে তাহাই যাবহাত
হততে থাকে। নীলের আ্ষারে লাক্ষারতের হতালর বাড়িরা বার।
১৮৭২ খুটাক্ষে উহার লয় এক্ষারে কমিয়া যার। ১৮৭৪
খুটাক্ষের ২৭এ নবেশ্বর ভারত-গবর্মেন্টের বিজ্ঞাপনে উহা
রগুনীর তালিকা হইতে উঠাইয়া পেওরা হয়। কারণ ওপম
মুরোপীর বাজারে উহার বিক্রের না থাকার আলৌ ওক্
আলারের সভাবনা ছিল না। এখনও লাক্ষার বাণিজ্য
চলিতেছে। বুটেনরাজ্যে ও আ্রেমির্কার ব্জ্বাল্যে প্রভৃত
গালা রগুনী হইরা থাকে। ফ্রান্স, অষ্ট্রারা, কর্মণি, ইতালী,
অ্রেলিরা, বেলজির্মন, চীন, ব্রেট্নেটল্মেন্ট্র, স্পেন ও হলও
রাজ্যেও বালালা হইতে লাক্ষা রগুনী হইরা থাকে।

সমূদ্রগর্জে বে তাড়িড-বার্জাবহ-তার পরিচালিত হইরাছে, তাহার উপর লাক্ষার আত্তরণ দেওরা হয়। কারণ জ্বল ও মৃত্তিকা সংবোগে গালা নই হর না। স্থতরাং তাহার অভ্যত্তরত্ব তারও নই হইতে পার না।

ইবার ঋণ--কটু, ভিজ, ক্যার, রেল্ল, নিজরোগ, লোক, বিবদোব, রজনোব ও বিবদজ্জনাশক এবং বলকর।

ভাৰপ্ৰকাশ মতে, গাজা বৰ্ণকর, শীতদ, বলকর, বিশ্ব, লয়ু, কক, শিত্ত, জল, হিলা, কান, জর, ত্রণ, উরক্ত, বিনৰ্গ, কৃষি, ও কুষ্ঠ-রোগনাশক। (ভাৰপ্র°) ভৈষল্যবন্নাবদীতে নিবিদ্ধ আছে বে, গাজা নৃতন প্রহণ করিতে হইবে এক উহা বেন মৃদ্ধিকাদি-বোৰবির্নিত হয়।

"नाका ह नृष्टना बाहा मृष्टिकाविदिवर्क्किता" (रेक्स्वानवा")

২ শতপত্ৰী। ৩ সেবতী। (ভাৰপ্ৰ°)

লাক্ষাগুণ গুলু, আয়ুর্কেদোক ঐবধবিশেষ। প্রস্তুতপ্রণালী—
লাক্ষা, হাড়জোড়া, অর্জ্জুন্ছাল, অর্থগন্ধা, গোরক্ষচাকুলে প্রত্যেক
এক তোলা এবং গুণু গুলু হ তোলা একত্র মর্দন করিরা লইবে।
ভগ্ন হানে ইহার প্রবেপ দিলে ভগ্ন ও স্থানচ্যুত অহির বেদনা
নিবারিত হইরা অঙ্গ সকল বজ্লের গ্রার দৃঢ় হর।

কেছ কেছ বলেন, উক্ত পাঁচ প্রকার চুর্ণের তুল্য পরিমাণ ভগ্ অলু মিশাইলে যথেষ্ঠ হর।

লাক্ষাত্র (গং) লাক্ষোৎপাদকতক:। পলাশ রুক। (শনমা°)
লাক্ষাতিল (লী) লাক্ষাদিভি: পকং তৈলং। পকতৈলবিশেষ,
লাক্ষাদি দারা এই তৈল প্রস্তুত্ব য়, এম্বন্ত ইহাকে লাক্ষাতৈল
কহে। এই তৈল দ্বিধি স্বন্ধ ও বৃহৎ। প্রস্তুতপ্রণালী—

স্বরলাক্ষাতৈল — সমপরিমাণ লাক্ষা, হরিদ্রা ও মঞ্জিষ্ঠা ঘারা তৈল পাক করিয়া পাক শেষ হইলে উহাতে গদ্ধপুর মিশাইয়া নামাইতে হয়। এই তৈল দাহ, শীত ও জরনাশক। (স্থবোধ)

২ বালরোগাধিকারে তৈলভেন। প্রস্তাপ্রণালী—তিল তৈল ৪ দের, লাক্ষার কাথ ৪ দের, দধির মাত ১৬ দের। কর্কার্থ—রালা, রক্তচন্দন, কুড, মুথা, অর্থগন্ধা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, ভলফা, দেবদারু, ষ্টিমধু, মুগরামূল, কট্কী ও রেণুক মিলিত ১ দের; এই দকল কন্ধ দারা যথাবিধানে তৈল পাক করিতে হয়। এই তৈল মর্দ্ধনে বালকের জ্রাদির উপশম হয় ও বলর্দ্ধি পায়।

(ভৈষদ্ধ্যরত্না• বালরোগাধিকা•)

অভাবিধ—কৃটিত লাকা ৩ শরাব, জল ১৬ শরাব, ২১ বার দোলাযমে পরিশ্রত করিরা ১৬ শরাব গ্রহণ করিবে। অথবা লাকা ৮ শরাব, জল ৬৪ শরাব, পাক করিরা শেষে ১৬ শরাব গ্রহণ করিতে হইবে। পরে তিলতৈল ৪ শরাব, লাকারস বা কাথ ১৬ শরাব, দধিমন্ত ১৬ শরাব, করার্থ গুল্ফা, হরিদ্রা, মূর্কামূল, কুর্চ, রেণুক, কটুকী, যষ্টিমধু, রামা, অখগনা, দেবদার, মুন্তা ও রক্তচন্দন প্রত্যেকে ২ তোলা, যথাবিধানে পাক সিদ্ধ ইলৈ কপুর, শিলারস ও নথী প্রত্যেকে ২ তোলা করিয়া উহা মিশ্রিত করিতে হইবে। এই তৈল জরাদি রোগনাশক। (রসবং) লাফালিতৈল, জররোগে উপকারক তৈলোবধবিশেষ। প্রস্তত্রেণালী—মূর্ক্তিত তিলতৈল ৪ সের, পুরাতন কাঁজি ২৪ সের; কথার্থ—লাহা, হরিদ্রা, মঞ্জিটা মিলিত ১ সের। এই তৈল-মর্দনে জর এবং তজ্জনিত দাহ ও শীত নিবারিত হর।

মহালাক্ষানি তৈল নামে ইহার আর একপ্রকার তৈল প্রস্তত হইরা থাকে। প্রণালী—মূর্ক্তিত তিলতৈল ৪ সের, লাক্ষার কাথ ১৬ সের (লাক্ষা ৮ সের, ৬৪ সের জলে নিষ্ক করিরা শেষ ১৬ সের।) দধির মাত ১৬ সের। ক্রার্থ—শুল্ফা, হরিদ্রা, মূর্বা- মূল, কুড়, রেণুক, কট কী, ষষ্টিমধু, রাসা, অখগন্ধা, দেবদারু, মুথা, রক্তচন্দন প্রত্যেক ২ তোলা। পাক সমাপ্ত হইলে কপুর ২ তোলা, শিলারস ২ তোলা, ও নধী ২ তোলা ঐ তৈলে মিশ্রিত করিবে। এই তৈল মর্দদে বিবম-জ্বরাদি নানারোগ বিনষ্ট হয়।

লাক্ষার ছয় গুণ জলে অর্থাৎ ১৮ সের জ্বলে ৩ সের লাক্ষা কুটিয়া নিক্ষেপ করিবে। তদনস্তর ঐ জল দোলাযদ্মসাহায্যে পরিপ্রাবিত করিয়া সেই জল ১৬ সের গ্রহণ করা যাইতে পারে, উহার অবশিষ্ট ভাগ পরিত্যাগ করা কর্ত্ব্য। অথবা ৮ সের লাক্ষা ৬৪ বিরুদ্ধের জলে পাক করিয়া তাহারই এক পাদ কাথ ঔষধ-প্রস্তুকালে প্রয়োগ করা যাইতে পারে।

(ভৈষজ্যরত্না৽ জ্রাধিকা•)

লাক্ষাদিবর্গ (পুং) স্কল্লেজ লাক্ষাদি গণভেদ। এই গণ যথা — লাক্ষা, রেবত, কৃটজ, অখমার, কট্ফল, হরিদ্রা, দান্ধ-হরিদ্রা, নিম্ব, সপ্তচ্ছদ, মালতী ও ত্রায়মাণা। (স্কল্লত স্ত্র-৩৮অ-৩) লাক্ষাতাতৈল, ম্থরোগে হিতকর ঔষধবিশেষ। প্রস্তুত-প্রণালী—তিলতৈল ৪ সের, লাক্ষারস ৪ সের, হুল্ল ৪ সের, থদিরের কাথ ১৬ সের। ক্রার্থ—লোধ, কট্ফল, মঞ্জিষ্ঠা, পল্লকেশর, পল্লকার্ঠ, রক্তচন্দন, উৎপল, যষ্টিমধু, প্রত্যেক ১ পল। এই তৈলের গণ্ডুষ করিলে,দালন, দন্তচাল, দন্তমাক্ষ্ক, কপালিকা, শীতাদ, মুথদৌর্গন্ধা, অক্ষচি ও মুথের বিরস্তা নই হইন্না দন্ত্র সকল স্বস্তু হয়।

লাক্ষাদ্বীপ, দক্ষিণভারতের মলবার উপক্লের অদ্রবর্ত্তী একটী
দ্বীপপ্ঞ । ভারতমহাসাগরে অবস্থিত। অক্ষা ১০° হইতে
১৪° উ: । এবং দ্রাঘি ৭১°৪০ হইতে ৭৪ পু: মধ্য। ভারত
উপক্ল হইতে প্রায় ২০০ মাইল ব্যবধান। ১৪টা দ্বীপ লইয়া
এই দ্বীপপ্ঞ গঠিত। উহার ১টাতে লোকের বাস আছে।
২টাতে আদৌ বসতি নাই এবং ৩টা কেবলমাত্র সাগরজলের উপর ভাসমান রহিয়াছে। ইহার উত্তরাংশ দক্ষিণকণাড়ার কলেন্টারের অধীন এবং অবশিষ্ট দক্ষিণভাগ কোরন্রের
আলীরাজার শাসনাধীন। উহা মলবার জেলার একটা অংশ
বলিয়া পরিগণিত।

এখানে একত্র বহুসংখ্যক দ্বীপ থাকায় লক্ষদ্বীপ শব্দ হইতে লাক্ষাদ্বীপ শব্দের উৎপত্তি ইইয়াছে। সম্ভবতঃ একসমরে মালদ্বীপ ও লাক্ষাদ্বীপপুঞ্জ একযোগে শ্রেণীবদ্ধভাবে গঠিত ইইয়াছিল।
তথন লোকে কুদ্র কুদ্র লক্ষ্মীপ দেখিরা উহার নাম লাক্ষাদ্বীপ
রাখে। আবার অনেকে বলেন, প্রবালসমষ্টিযোগে এই দ্বীপের
উৎপত্তি। প্রবাল ও লাক্ষার আক্রতিগত সাদৃশ্র দেখিরা লোকে
ইহাকে লাক্ষাদ্বীপ বলিরা থাকে। অধিক সম্ভব, আরবীর বিশ্বিগণ

বৃহকাল হইতে লাকার বাণিজ্যের জন্ত মলবার উপকূলে যাতারাত করিত। তাহারা লাকার নাম হইতেই এই দ্বীপের নাম লাকাদ্বীপ বলিরা বোষিত করিরা থাকিবে। ১৫১৬ খুষ্টান্দে বার্বোলা লাকাদ্বীপকে মলনদ্বীপ ও মালবীপকে পলনদ্বীপ শব্দে অভিহিত করিয়া গিয়াছেন। তুহফং-উল-মজাহিদীন্ গ্রান্থে ইহা মলবার-দ্বীপপ্রান্ধ বলিরা বর্ণিত হইয়াছে।

নিমে বর্তমান দ্বীপপুঞ্জলির নাম প্রদত্ত হইল,---मिकिन कनाड़ा वा आभीनमीवि बीलावनी-লোকসংখ্যা আমীনি বা আমীনদীবি २०७० CEC OTTC £99 কদম ₹8¢ কিল্ডান 92. বিত্রা (বসবাস নাই) **टकान्न**न्त्र श्रीभावनी — অগত্তি 3096 ক্বরন্তি 2222 অন্দ্রোথ २৮৮৪ কালপেণি >>> ८५८७ मिनिकार (मैनक) न्द्रश्ली (दनवान नारे)

মিনিকোই দ্বীপবাসীরা লাকাদ্বীপবাসীর স্থায় মলয়ালম্ ভাষার কথা কয় না। ইহাদের কথিত ভাষার লাকাদ্বীপি ভাষার অনেকটা পার্থকা ও মালদ্বীপবাসীর ভাষার সহিত অনেক সাদৃশ্য দেথিয়া এই দ্বীপকে মালদ্বীপপুঞ্জের অন্তর্ভুক্ত করা হইয়া থাকে।

ইহার প্রত্যেক দ্বীপগুলিই প্রবালসমষ্টির সংযোগে উৎপন্ন।
সকলগুলিই সমৃদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১০ বা ১৫ ফিট্ উক্ত এবং
ভূপরিমাণ ২ হইতে ৩ বর্গমাইল। ইহাদের চারিপার্ধেই
প্রবালন্ধ পর্কতিশিধর দৃষ্ট হয়। পূর্কাংশের প্রবাল গিরি
পশ্চিমের অপেক্ষা কম। পশ্চিম দিকে উহা ৫০০ গল হইতে
কোন কোন স্থানে এক মাইলের তিন পোন্না ভাগ পর্যান্ত
বিছত। এ স্থানের স্বন্ধ-গভীরতা নিবন্ধন লাল 'লেগুণের' মভ্ত
দ্বির। এমন কি, ভীষণ ঝটিকার সমন্ন সেই জলে নির্ভরে ক্যার
(নারিকেলের ছোবড়া) ভিজান যাইতে পারে। ভাসিরা
দাইবার কোন ভর থাকে না। ভ্রারের সমন্ন এই দ্বির ভাগ
লাল পূর্ণ থাকে, ভাটা পড়িলে থাতের মধ্য দিরা লাল ক্রমশঃ
নিকাশ হইরা বার। তথন উহার উপরি ভাগ তক দেখার
এবং সেই নালী দিরা দেশীর বড় বড় নৌকাগুলি চালিত হইরা
লেগুণের বন্ধরাংশে বেখানে অধিক লল আবন্ধ থাকে, সেই

আংশে সরিয়া আইসে। উক্ত বীপসমূহের পশ্চিম ভাগে বেরপণ প্রেশন্ত প্রবালন্ধ গিরি বিভ্যমান, পূর্ব্বভাগে সেরপ নাই। সেদিকের উচ্চ পর্বতগাত্র একেবারে সমুদ্রগর্জে নামিয়া গিরাছে।
ভূতবের আলোচনা বারা জানা যায় বে, পশ্চিম অপেকা
পূর্বাকি অনেক পূর্বে গঠিত হইয়াছে। এইজ বীপপুঞ্জের
প্রত্যেকের উপরি ভাগে চুণা পাথর বা প্রবালন্ধার দৃষ্ট হয়।
উহার উপর কথন জল উঠে না। ঐ তার ১ হইতে ১॥০ ফুট
পর্যান্ত মোটা। ইহা খনন করিলে নিয়ে বালুমাটী পাওয়া যায়।
কোদালে করিয়া ঐ বালুকা ভূলিয়া ফেলিলে সেই গর্জ্ব
জলে পূর্ণ হইয়া পড়ে। এইরূপে কুপ, তড়াগ ও পুছরিণাদি
কাটিয়া জল উৎপন্ন হইলে কয়ার ভিজান হইয়া থাকে।

এখানে প্রভূত পরিমাণে নারিকেল বৃক্ষ জন্ম। অস্থ কোন প্রকার সবজি সেরপ উৎপদ্ধ হয় না। ইন্দুর ব্যতীত অস্থ কোন চতুম্পদ পশু নাই। ইহারা নারিকেলের পরম শক্র। কচ্ছপ ও মংস্থ প্রচুর পাওয়া যায়।

প্রায় সার্দ্ধ বিশতাব্দ কাল এই বীপপুঞ্জ কোরন্য-রাজ্যের শাসনাধীন রহিয়াছে। ১৫০০ খুটাব্দে কোলত্তিরী-রাজ ক্ষপ্রসিদ্ধ চিরকল এখানকার সন্ধারকে জায়গীর স্বরূপ দান করেন। ইহার অনেক পরে মালবীপের স্বল্ভানের নিকট হইতে মিনিকোই বীপ অধিকার করিয়া লওয়া হয়। ১৭৮৮ খুটাব্দে উত্তর বীপ-বাসিগণ বিজ্ঞোহী হইয়া রাজার অধীনভাপাশ ছিল্ল করিয়া মহিস্থররাজের বখ্যতা স্বীকার করে। ১৭৯৯ খুটাব্দে কণাড়া বিভাগ ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর করতল গত হয়, তদবধি এই সকল দ্বীপ কোরন্রের নবাব-জাদীকে আর প্রত্যপিত হয় নাই; কেবল তাহার রাজব্মের ২২০০ টাকা ইংরাজরাজ কমাইয়া দেন। সেই সমর হইতেই এই বীপমালার হুইটা বিভাগ হইয়াছে।

১৮৫৫ ইইতে ১৮৬০ খুপ্টান্দ প্রান্ত দক্ষিণ দ্বীপাংশের থাজনা বাকী পড়ার উহার রাজস্ব-সংগ্রহের জন্ম ন্থানী নিযুক্ত হয়। তদনন্তর ১৮৭৭ খুপ্টান্দে পুনরার রাজস্বের জনাদার ঘটলে উক্ত বিভাগ মলবারের রাজস্ব-সংগ্রাহকের (Collector of Malabar) জ্ববীনে ছাপিত ইইরাছিল। ইহাতে প্রজাবর্গের মধ্যে জ্বসম্ভোষ্ ঘটে। ইংরাজ গ্রমেণ্ট উত্তর বিভাগে এবং কোরন্রের জ্বালী রাজা শীর অধিকৃত বিভাগে উৎপর ক্যারের উব্ভ ইইতে রাজস্ব জাদার করিয়া থাকেন। তাহারা উভরেই প্রজাবর্গের নিক্ট নির্দিষ্ট মূল্যে ক্যার থরিদ করিয়া উপকৃলন্ত বাজারে উচ্চ মূল্যে বিক্রম করেন। মূলধনবানে যাহা লভ্য হয়, ভাহাই উভরে রাজস্ব বাদে বাণিজ্যের সভ্যাংশ বলিয়া গ্রহণ করিয়া থাকেন। আলীরাজা শ্বয়ং যে জ্বংশ শাসন করেন, ভাহার জন্ম ইংরাজ গ্রমেণ্টকে বার্থিক ১০ হাজার টাকা পেস্ক্স দিরা থাকেন।

ইংরাজরাজনাসিত কণাড়ার অধীন বীপতানে করারের মূল্যের বৃদ্ধি বা হাস হর মাই। ইংরাজ-কর্মারী চাউল ও লগদ চাকা বিরা উহার মূল্য পরিলোধ করিবা কেন। আলীরাজার অধিকৃত ভূতাগে তাহার ঠিক বিশরীত। তথাকার বেশীর কর্মারগর্শকরারের মূল্য কর্মরা রাজার গহিত নানা গোলবোগ উবাপিত করে। ভাহাতে রাজার একচেটিরা বাপিজ্যের বিশেব ব্যাবাত বটে। মারিকেল, কড়ি, কছেপের বোলা প্রভৃতি ক্রব্যে রাজার একচেটিরা বাপিজ্য বাশিজ্য চলিতেছে।

কণাড়ার অধীন বীণসন্থ একজন সন্মাজিট্রেট ও মুনসেংকর বাবা এবং কোরন্ত্র-বীপাল্ল আমীন্দিসের অধীনে পরিচালিত হুইতেছে। এখানকার অধিবাসিগণ শান্তিপ্রির। কোন বার্ত্তিসন্ধান উপস্থিত হুইলে তাহারা গ্রামন্থ অধ্যক্ষের নিকট ভাহার মীমাংসা করিবা লব।

অধিবাদিগণ সকলেই মুসলমান। উপকৃলবাসী মাণিলাথিগের ভার তাহারাও পূর্বে হিল্ ছিল। তাহাদের মব্যে এইরূপ একটা কিংবদন্তী আছে বে, ভাহাদের পূর্বপ্রবণণ থার্মিক
প্রধান রাজা চেরমান্ পেরুমলের অন্থমনার্ম মলরাল হইতে
কর্মান্ডিমুখে অভিবান করেন। পথিমধ্যে এই বীপে আট্ কাইরা
ভাহাল তথা হইলে তাহারা এখানে উঠিত বাধ্য হয়।
বাভবিকই এখানকার অধিবাসীরা প্রথমে হিল্ ছিল। আছুয়ানিক ভিন শত বর্ব পূর্বে তাহারা ইসলাম ধর্মে বীক্ষিত হইরাছে। তথাপি তাহারা লাভিগত কএকটা চিরক্তন প্রথা বিসর্জন
করে নাই। তাহাদের কন্তারাই পিতৃসম্পত্তির অধিকারী হইরা
থাকে। প্রক্রেরা বাণিল্য বাপদেশে অথবা রাজকর্মের অবের্তুন
মলবার উপকৃলে আলিরা থাকে। বালকেরাও পিতার সঙ্গে
বিষ্ণেশে আইনে। এই কারণে বীপসমূহে রমণীকুলেরই বাহল্য
গৃষ্ট হয়।

রমনীগণ নির্ভরে নগরে বিচরণ করিয়া থাকে। নৌকা-চালন ব্যতীত তাহারা ত্রী ও পুরুবের অন্তর্ভের বাবতীর কার্য সন্পালন করে। কেছ মাধার বোমটা দের না। তাহালের কবিত ভাবা মলরালম্ কিন্ত আরবীর বর্ণমালার তাহারা লেখা পড়া করে। মিনিকেটি বীপের ভাবা মালবীনী ও মলরালম্-মিশ্রিত।

লাক্ষাপ্রসাদ (বং) নাকারাঃ প্রসাদে। বারাং। পটিকা লোৱ। (রার্বনি•)

লাক্ষাপ্রসাদন (পুং) নাকাং আনাবরতীতি আনব-নিচ্ রা। রজনোত্ত, পর্বার জনুক, পটকা, পটী । (ভারতাং)

ক্লাক্সারস (গুং) সাকারাঃ রসঃ। সাকারস বা কাব। সাহার রস। প্রস্তুত প্রশাসী— "बङ् खलमांखना जाको स्वाजासञ्ज्ञश्रीहरू ।

জিনপ্রধা পরিলোব্য সাক্ষারসন্ধিক্ষ বিহুঃ 🗝 (পরিক্ষাবাঞ্জ ২ ৰ•)

বে পরিমাণ সাজা ভাছার ৬ ৩৭ জন নিরা নোলাবত্ত জিসন্তবার পরিক্রত করিবা গইলে ভাহাকে লাজারন করে গ

লাক্ষাবটা (জী) উৰধবিশের। প্রভতপ্রণালী—লালা, ভেলা, ব্যানী, খেত অপরাজিতার ছাল, অর্কুন কল ও পুন্দ, বিভল, মান্দিক ও ওপ্রথম এই সকল জ্বা একজ চুর্ল করির। বটা প্রভত করিবে। এই উবধ গৃহে বান্ধিলে সর্ল মৃথিকাদি দুরে পালারন করে। (সংস্কেসারসং পাশুরোগাবিকাং)

<mark>লাক্ষাবৃক্ষ (পুং) কোনাত্ৰবৃদ্ধ, চলিত জনপাই গাছ।</mark> ২ পনান বৃক্ষ। (রাজনি•)

লাক্ষিক (এ) গাকাসৰ্থী। ২ গাকাভাৰ।

লাক্ষেয় (পুং) শব্দের গোতাপভা।

লাক্ষণ (পুং) > সন্ধণের গোত্রাপত্য। ২ সম্মণার্কসব্বীর। লাক্ষ্মণি (পুং) সন্ধণের গোত্রাপত্য।

লাক্ষাণের (পুং) > সন্মণের গোত্রাপত্য। ২ বালাগার সেন-বংশীর একজন রাজা। [সেনরাজবংশ বেধ।]

লাক্ষ্যিক (বি) লক্ষ্যমনীতে বেদ বা (ক্ৰন্তুক্থাদিক্ত্ৰাস্থাৎ ঠক্। পা ৪।২।৯০) ইভি লক্ষ্য-ঠক্। বিনি লক্ষ্যাজ্যাস করেন বা বিনি ভেদ করিতে পারেন।

লাখ, ১ শোষণ। ২ ভূষণ। ৩ সামৰ্যা। ৪ নিবারণ। ভালি । পরবৈ অফ সেট। সট্ লাখডি। নিটু ললাখ। সূঙ্ আলাখীং। নিচ্ লাখরডি। সূঙ্অললাখং।

मार्थ (रामक) गमभस्त्र चनदर्भ ।

লাখনো (লখনো, লজে), আবোধ্যা প্রদেশের ক্ষিণনরের অধীন একটা বিভাগ। বৃক্তপ্রবেশের ছোটলাটের পাসনাধীন। অকা- ২৬°৬ ইইজে ২৭°২১ ৫ জি: এবং জাবি- ৮০°৭ ইইজে ৮১°৫৬ পু: মধ্যে। লাখনৌ, বারাবাদী ও উপাও জেলা লইরা এই বিভাগ ঘটিত। ইহার উত্তরে হার্দেই ও দীতাপুর জেলা, পূর্কে বরাইচ ও গোঙা জেলা, দক্ষিণে কৈলাবাদ, স্পতানপুর ও রারবরেলী জেলা এবং পশ্চিমে গলানহী। ক্তৃ-পরিমাণ ৪৫০৪০৫ বর্গ মাইল। এখানে স্ক্রিন্নেক ১৮টা নগর ও ১৬৭৬টা প্রাক্তিয়

লাখনো, ব্জঞানের অভাত একটা জেলা। ভ্যাভার ছোট-লাটের শাসনাধীন। অভাত ২৬°৩০ ইইডে ২৭°৯০০ উ: এবং আবি০ ৮০°৪৪ ইইডে ৮১°১৫'০০ পুঃ মব্য। ভূপারিমাণ ৯৮০৬ বর্গ মাইল। ইহার উভরে হাবে হি ও দীভাপুর, পুংর্জ বারাবারী, যভিবে রারবরেলী এবং পিভিন্ন উপাও জেলা। লাখু দৌ দগর ইহার বিচার-সহর। এই জেলার অধিকাংশ দ্বানই উর্কার ও শ্রামল শক্তে পরিপূর্ণ।
মধ্যে মধ্যে গ্রাম ও বনমালাবিরাজিত বিস্তীর্ণ প্রান্তরসমূহ রণক্ষেত্রের অতীতস্থতি বহন করিয়া সাধারণের হৃদয়ে বীরকীর্তির
উল্লেখন করিয়া দিতেছে। স্থানীয় নদীমালার বালুকায়য়
সৈকতভূমি ভূর নামে এবং অয়ুর্কার লোণাজ্বমি উষর নামে পরিচিত। গোমতী ও সাইনদী শাখা প্রশাধা বিস্তারপূর্কাক এখানে
প্রবাহিত আছে। তন্মধ্যে বেহতা, নাগবা, লোনী ও বাকা
নদীই প্রধান।

এখানকার বিশেষ কোন প্রাচীন ইতিহাস নাই। সাহাব্-উদ্দীন্কর্তৃক বিজিত (১৯৯৪ খঃ) প্রসিদ্ধ কনোজরাজ জয়টাদের রাজত্বকালের পূর্ব্বে লখ্নৌ নগর প্রতিষ্ঠিত হয় নাই। এই বিভাগে ঔপনিবেশিক রাজপ্তগণের আগমনপ্রসঙ্গ আলোচনা করিলে জানা যায় যে, মুসলমান আক্রমণের পরই এখানে নানা রাজপুত শাথার বসবাস ঘটিয়াছে।

মুসলমান জাতির অভ্যুদয়ের পুর্বে জানবার, পরিহার, ও গৌতমগণ এখানে আসিয়া বাস করিয়াছিল। জানবার জাতির ইতিহাস ভর ও বহরাইচ জাতির সহিত সংমিশ্রিত। গৌতমদিগের প্রাচীন কিংবদন্তী অন্তুসরণ করিলে জানা যায় য়ে, তাঁহারা কনোজরাজবংশের সহিত সংশ্লিষ্ট এবং বাঈজাতি এদেশে আসিয়াও কনোজরাজের প্রাধান্য স্বীকার করিত। পণবার ও চৌহান রাজপুতগণ দিল্লীখরের অধীনে এই প্রদেশ আক্রমণের জন্ম আসিয়া নানাহানে উপনিবেশ হাপন করে।

পাঠান-রাজগণের আক্রমণে ও রাজ্যজরে গৃহত্রই হইয়া
ধর্ম্মনাশভয়ে অনেকানেক রাজপুত পরিবার এথানে পলাইয়া
আইসে এবং তাহারা ক্রমশ: এক একটী স্থান অধিকারপূর্বক
তথাকার প্রভূ হইয়া পড়ে। মোহল, লালাগঞ্জ ও নিঘোহান
পরগণায় আমেঠীয়া ও গৌতমগণ এইরপে প্রভূত্বলাভ করিয়াছিল। খুঁইয় ১৬ল শতাব্দের মধ্যভাগে শেবগণ আমেঠী পরগণা
হইতে আমেঠিয়াদিগকে তাড়াইয়া দিরা আপনারা প্রভূত্ব বিস্তার
করে। তাহাদের অধীনে ইকোনাবাসী জানবারগণ এধানে
আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিল।

বাঈ ও চৌহানগণ বিজ্নোর অধিকার করে। তদনস্তর বাঈগণ কাকোরী অধিকার করিয়া আপনাদের প্রভাব বিতার করিয়াছিল। জানবার ও রাইকবাড়গণ মোহন-ওরস্ নামকত্বানে আসিয়া বাস করে। অতংপর নিকুন্ত, গাহরবাড়, গৌতম ও জানবারগণ মলিহাবাদ পরগণার ক্রমণং বিভূত হইয়া পড়ে। প্রণবার ও চৌহানগণ মহোনা আক্রমণ ও অধিকার করিবার প্রক্রার করে। তদনস্তর ভাহারা কুসী হইতে কল্যাণী নদীর উত্তর তীর পর্যান্ত ভূতাগ

অধিকার করিয়াছিল। পরে বাঈগণ ভাছাদের নিকট হইতে দেবা অধিকার করিয়া লয়।

ইহার পর মুসলমানদিগের অভিযান আরম্ভ হয়। ১০৩০ খুঠান্দে সর্বপ্রথম সৈয়দ মসাউদ্ এই হান আক্রমণ করেন, কিন্ধ তিনি এখানে মুসলমানপ্রভাব বিস্তার করিতে পারেন নাই। তবে কোন কোন পরগণার প্রাচীন নগরাদিতে মুসলমানগণের ভয়প্রার কীর্তি নিদর্শন দেখিয়া মনে হয় যে, তিনি যে যে ছান দিয়া এই জেলা মধ্যে গমন করিয়াছিলেন, তথার তাঁহার অফ্চরগণ কর্তৃক মহল্লাদি নির্মিত ইইয়াছিল। মোহনলালগন্ধের নগ্রাম ও অমেঠী গ্রামে তিনি ছাউনী করিয়া সদলে কিছুদিন বাস করেন। স্থিখ নগরে তাঁহার সদর ছিল। সেনাদল ছাউনী পরিত্যাগ করিবার পর, সন্তবতঃ আর সদর হইতে তথার আসিয়া বাস করিতে সাহসী হন নাই।

অনন্তর শাহাবৃদ্দীনের অধিকারকালে ১২০২ খুষ্টান্দে থিল্ড্রীপুলব মহল্পদ-ই-বণ্ তিয়ার এই স্থান আক্রমণ করেন। উাহার সাময়িক কোন মুসলমানকীর্ত্তি এখানে নাই। অধিক সম্ভব, তিনি মলিহাবাদের নিকটবর্তী বখ্ তিয়ার নগর প্রতিষ্ঠা করিয়া এই নগরে একটী পাঠান উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন। কিন্তু সেই পাঠানগণ কাকোরীর বাঈ-রাজা সাখ্নার বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিয়া এখানে পাঠানপ্রভাব বিস্তার করিয়া অক্তন্ত্র উপনিবেশ স্থাপন করিছে পারে নাই।

থৃষ্ঠীর ১৩শ শতাব্দের মধ্যভাগ হইতেই এথানে মুসলমানের উপনিবেশ প্রতিষ্ঠিত হয়। ঔপনিবেশিকের মধ্যে প্রগণার ফ্রন্মনীরবাসী শেখগণ ও সলিমাবাদের সৈরদগণই প্রথম।

*তদনস্তর কিদ্বাড়ার শেখগণ আসিয়া প্রভাব বিতার করে।
ইহার পর, অভাভ মুসলমান-সম্প্রদার কুর্সী ও দেবার মধ্য দিয়া
এথানে আসিয়া নানাম্বানে বাস করিয়াছিল। এখানে প্রবাদ
এইরূপ যে, ঐ মুসলমানগণ সত্রিধ্ হইতে এখানে আইসে।

সত্রিথ হইতে মুসলমানগণ উপর্গ্রার এই জেলার নানাহান আক্রমণ করিরাও ছারী প্রভুত্ব লাভ করিতে পারে নাই।
তাহারা সালর মসাউদের সেনাপতি শাহ বেগের অধীনে প্রথমে
দেবা নগর আক্রমণ করিরা ক্রমশং লাখনৌ অভিসংথ
আসিরা মন্তিরাওন পর্যান্ত অগ্রসর হইয়াছিল। এখানে
শাহবেগ ছিল্পুগণের নিকট পরাভূত ও নিহত হন। নিকটবর্ত্তী
একটা গ্রামে তাহার সমাধিমন্দির বিভ্যান আছে। উহার
চূড়ার উচ্চতানিবন্ধন লোকে উহাকে নৌ-গলাপীর বলিরা
অভিহিত করে। অনত্তর, এখানে সুসলাম শালনকর্তা
নির্ক্ত হইবার পর, ক্রমশং দেবাস, কুর্সী ও ক্রাধুনো হইতে
কাকোরী পরপণা পর্যন্ত বিভ্তে স্থানের গ্রামাধিতে সুসমুসানের

উপনিবেশ ঘটে এবং ডাহার। ক্রমণ: ক্রম এক বিবাদ অধিকার করিয়া ততন বিভাগের অহাধিকারী ক্রমায় গ্রহীত হয়।

হানীর প্রবাদ হইকে জালা বাল বে, রাজপুত ও বুসলমান উপনিবেশিকগণের পূর্বে একালে জর, অরুধ্ ও পালী নামক নিয়প্রেণীর কএকটা আজিছা বাল ছিল। অবোধানর প্র্যাক্ত্রী রাজগণের প্রজাক শিবুল ছাইলে, জরগণ এই প্রদেশ লুঠন করে। এখানকার ক্ষত্র আরুপে আর্থাক্ত্রিগল তপালার নিরুত পাকিতেন, এইজভা কোনা কোনা কনা হানীর লোকের নিরুত পাকিতেন, এইজভা কোনা কোনা কার্যাক্তি হইলেও সেই সেই থবির লামে সাধারণে প্রসিক রহিয়াছে। মন্তিওয়াঙন্—মণ্ডল খবির মামে, বোহন—মোহনগিরি গোলামীর নামে, জগোর অগদেব যোগীর নামে এবং দেবা—দেবল খবির নামে খাতে হয়। জরনল্যগণ সেই সকল খবির আপ্রস ক্রিরা খুটীর ১২শ শতান্দে সই মনীর তীর পর্যন্ত বিক্তাপ জালান শুটার ১২শ শতান্দে করিয়াছিলেন।

ইহাল্প কিরাত নামক পার্কজ্যজাতির স্থার তরাই এদেশ হইতে এখানে জাগমন করে। এখনও তর্জিহির জন্ধাবশেষ এখানকার নামা গ্রামে নিপতিত রহিরাছে। কনোজ-রাজবংশ অধংপতনের পূর্কে ভরনিগকে উৎসাদন করিতে প্ররাস পাইরা-ছিলেন। রাজা জর্টাদ অলা, উদন ও বণাকর রাজপুত জাতির সাহায্যে বিজনোরের নিক্টছ নাখবদ আক্রমণ করেন। তিনি এখানকার পাসীরাজ বিগ্লীকে পরাজিত করিয়া সম্বার ও দেবা পর্যান্ত অগ্রসর হন। পাসী ও অর্থগ্রণ মজিহাদ এবং কাকোরী ও বিজ্নোরের দক্ষিপে সইতীরবন্তী সালৈনী পার্টিক জানিপত্য বিভার করিয়াছিল। ইহারই পূর্কে ভরজাতির অধি-

পানী ও অন্নথ্ গণ এখানকার আদিক অধিবানী। ইকারা হর্ছর ও মহাপ। অভান্ত অধিবানীকে মহাপাদে ভূলাইয়া ভারাদের সর্বাত্ত অধ্যান্ত অধ্যান্ত মহাকের সর্বাত্ত অধ্যান্ত অভান্ত সক্ষেত্ত পূর্বন্ধপর ঐক্যা একটা কিংবদন্তী প্রচলিত আছে। ৯১৮ খুটাকে রাজা ভিল্পকান ইইডেই এখানে ডররাজবংশের প্রভাব বিভূত হয়। বরাইচ নগরে ভাঁহান্ত: রাজ্যখানী ছিল। ভিনি দিল্লীপতিকে পরাভূত করিয়া নির্মী অধিকার করেন। ভাঁহার বংশে ৯ জন রাজা দিল্লী ইইডেই অব্যোদ্ধান্ত পর্বাত্ত পরিত্ত করিয়া নির্মী অধিকার করেন। ভাঁহার বংশে ৯ জন রাজা দিল্লী ইইডেই অব্যোদ্ধান্ত পর্বাত্ত পরিত্ত রাজ্যখাসন করিয়াছিলেন। এই কর্মেনর রাজা গোবিক্ষ টাবের মহিবী ভীমাদেবী রাজ্যখালন করিয়া ১০৯৩ খুটাকে কুলুই সমান্ত খীয় সম্পত্তি আপন ধর্মপ্রক হরগোবিক্ষকে লান করিয়া নান। উক্ত ছরগোবিক্ষরে বংশ ১৫শ প্রকর প্রাত্ত এখানে রাজ্য করেন।

नाथ तो नगत ७ तनावान, कारकाती, मनिवाबान ७ व्यटमी **এशामकात धाराम मगद्र ७ वाक्किएक्ट**। त्रवि, पात्रिक ७ হৈমন্ত্রিকামি নানা শশু এখানে উৎপন্ন হইরা থাকে। নৌকাপ্তথ এখনিকার বাণিজ্ঞা বড চলে না। অধিকাংশই রেলপথে ও পাকা রাঝার গোলকটে পরিচালিত হইডেছে। শীতাপুর, ফৈলাবাদ ও কাণপুর যাভারাতের কম্ম বে পাকা রাভা আছে. खेरा थात्र • मठ मारेन नषा, এত दिन कूनी, त्रवा, जूनठान-পুর, গোঁদাইগঞ্জ ও আমেঠী হইয়া স্থলভানপুর: মোহন-লালগঞ্চইয়া রাম্বরেলী; সই নদীর ফুলর সেতু পার হইয়া মোহন ও উণাও জেলার রম্মলাবাদ ও মলিহাবাদ হইতে হার্দোই জেলার শান্তিল্য নগর পর্যাস্ত বিস্তৃত। এই সকল রাডা ধরিয়া লাখ্নো নগরে আসা যার। এত দ্বির কএকটা রাস্তা এখান হইতে অস্থান্ত জেলার প্রধান প্রধান নগরে গিয়াছে। তন্মধ্যে মহোনা হইতে কুৰ্দী ও দেবা অভিক্ৰম করিয়া বারাবান্ধী পর্যান্ত. শৌসাইগল ও মোহনলালগল হইয়া কাণপুরের রাজবন্ধ পর্যন্ত বনি সেতু হইতে মোহন ও ওরুদ পর্যান্ত, সই নদীর পাকা পুল পার হইয়া মোহন-ওরাসের উত্তর হইতে বহিমাবাদ পর্যান্ত এবং লাখ্নৌ হইতে বিজনৌর পর্যান্ত কয়টা রাভা প্রধান। জেলার উপরোক্ত কয়টী রাস্তাই উত্তমরূপে বাধান। বর্ধাকালে পথ ধারাপ হর না। সকল ছানেই ুন্দীর উপর পাকা দেতু মিশিত আছে।

অবোধ্যা-রোহিলগত-রেলপথ এই জেলার মধ্যে বিস্তৃত।
ইহার জিনটা শাথা পূর্ব্ব-দিশপশিচম ও উত্তরপূর্ব্বে গিরাছে।
একটা লাখনো হইতে বারাবাদী ও থব্বরা-তীরবর্ত্তী বহরামঘাট
শব্দক গিরা কৈলাবাদ হইতে বারাগদী পর্যান্ত আসিরাছে।
ক্ষান্ত পিরা কৈলাবাদ হইতে কাণপুর এবং শেবোক্রটা কাকোরী
ক্ষান্ত বারাধানী পর্যান্ত আসিরাক্র শাহক্ষান্ত বার্বাদি লগর হইরা হার্বেই নগর অভিক্রমপূর্ব্বক শাহক্ষান্ত বার্বাদি লগরই স্বিশ্বের প্রসিদ্ধান এথানকার
বাশিজ্যের লখনো লগরই স্বিশ্বের প্রসিদ্ধান অপরাপর নগরে
ক্ষান্ত বাশিজ্যকার্য্য পরিচাণিত হইরা থাকে।

লথ্নী সহর ব্যতীত কাকোরী, মলিহাবার, আনেঠী, বিজনীর, চিনহাট, আমানীগঞ্জ, ইত্তোঞ্জ ও গোঁসাইগঞ্জ নগরে বিউনিসিপালিটী হালিত হওরার নগরের তীর্ষিসাধিতহইরাছে। ১০০১, ১৮০৬-১৮০৬, ১৮০০, ১৮০৬, ১৯০৬, ১৮০৬, ১৯

ত উক্ত জেলার উপবিভাগের অন্তর্গত একটা পরগণা লাখনো সহরের চতুপার্থ লইরা গঠিত। ভূপরিমাণ ১৬৫ বর্গ-মাইল। লাখনো নগর বাতীত এই পরগণার মধ্যে উলারিরাওন্, জগ্গম, চিন্হাট্, মহাবল্লিপুরওধাবাড় নামে পাঁচটা নগর আছে। লাখনো (লেশের রাজধানী। লেগাতী ননীর উত্তরকূলে অবহিত। অক্ষা ২৬°৫১'৪০" উ: এবং জাখি ৮০°৫৪'১০" পৃ:। কলিকাতা হইতে এই নগর ৬১০ মাইল এবং বারাণসী হইতে ১৯৯ মাইল দ্রবর্তী। নগর ভাগ ও সেনানিবাসের লোকসংখ্যা সর্কসমেত প্রায় ২ লক্ষ ৮০ হাজার। নগরের ভূপরিমাণ ১৩০ বর্গমাইল এবং সমৃদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৪০৩ ফিট্ উক্ত।

ইংরাজাধিকত ভারতীয় নগরসমূহের মধ্যে ইহা চতুর্থ।
সৌধমালা ও বিপণিসৌন্দর্যো ইহা অপরাপর নগর অপেকা
মনোরম; কেবল কলিকাতা, মাল্রাক্স ও বোদাই সহর
ইহার স্থাপত্য বৈভবকে অতিক্রম করিয়াছে। মুসলমান-রাজতের শেষ সময়ে ইহা উত্তরপশ্চিম ভারতের রাজধানীয়পে পরিগণিত হইয়াছিল। ইংরাজাধিকারে আসিবার পরও এথানে

তবিভাগীর বিচার সদর প্রাভিত্তি থাকে। এবানে সভ্যতা ও উন্নতির পরাকাঠা যথেইই বিভাগ আছে। সদীতবিভাগর, ব্যাকরণ-শিকাসমিতি ও ইস্লামধর্ণের আবোটনার কন্ত কঞ্চটা সাম্মানরিক বিভাগর অভাপি স্থানীর সমৃত্তির পরিচর নিতেছে।

গোমজী নদীর উভর তীরভূমি নালা সৌধমালার পরিবৃত ইওরায় নগরের সৌন্দর্য্য অতীব মনোরম হইরাছে। নগরসীমা অতিক্রম করিলে, নবীতীরে দ্রবাপী উন্থানবাটিকাসমূহ ছানীয় সৌন্দর্ব্যের মাত্রা আরও বর্দ্ধিত করিতেছে। নগরের পারাপার ইইবার কর উভরতীরম্পনী চারিটা সেভু গোমতীবক্ষে ভাসমান আছে। উহার ছইটী ছানীয় মুসলমান রাজগণের মতের এবং ১৮৫৬ খুটান্দে ইংরাজাধিকারে আসিবার পর, ইংরাজরাকের উন্থোগে অপর ছইটী সেভু নির্দ্ধিত ইইরাছিল। নদীবকে নবনির্দ্ধিত সেভু অভিক্রম করিলে আর জ্যোৎলালোকে সমুদ্ধাসিত মর্দ্মরালিভ হ্বরাছ হর্ম্যা ল্পীক্ষে সমাণ্ড উন্থানবাটকাই সাধারণের মনোরঞ্জক ইইয়া উঠে। এইরূপে কভরতুর নদীবক্ষে অভিক্রম করিলে নবাব আসক্ উন্দোলার প্রাচীন



লাধ্নো দেছু

প্রস্তরসৈতৃ দৃষ্টিগোচর হয়। উহারই বামভাগে মহিন্ডবন হর্ণের স্কর্হৎ প্রাচীর, তাহার অভ্যন্তরে লক্ষণ টিলা নামক প্রাচীন নগরভাগ। ইহারই পার্ধদেশে নানা অট্টালিকাদি-পরিশোভিত আসক্ উদ্দোলার প্রতিষ্ঠিত প্রাস্থ ইমামবাড়া। এখান হইতে কিছুদ্রে ইতিহাসপ্রসিদ্ধ জমা-মদ্জিল উচ্চচ্ছা ছুলিয়া মেন নগরভাগ পরিদর্শন করিভেছে। ইহারই সন্নিকটে নদীয় তীরে রেসিভেন্সী ভবনের ভয় প্রাচীর। তথাকার স্থতিকৃশ প্রিলারেরাহক্ষা ও ইংরাকের বীর্থকাহিনীর পরিচয়

দিতেছে। এই স্থিষ্ঠ প্রাঙ্গণের সন্মুখভাগে নদীনৈকতোপরি ছালিত ছুরমঞ্জিল নামক বিখ্যাত প্রাসাদ। ঐ প্রাসাদোল পরিছ স্থানর ছুর স্থালোকে প্রভাবিত হুইয়া দ্রয়ানবাসীকেও প্রাসাদ্ভভার ঔজলা প্রদর্শন করিতেছে। ইহারই কিছু দ্রে বামদিকে হুইটা মসজিদ। উহারই সধ্য দিরা কৈসরবাগ নামক প্রাসাদ। এখানে অবোধ্যারাজকবের সিংহাসনচ্যুক্ত বংশক ধ্রগণ বাস করিতেন।

মোগল-নারাম্ব্যের শেব সময়েও অবোধ্যার উজীরবংশের প্রাধান্তসময়ে, লক্ষ্ণী রাজধানীরণে প্রতিষ্ঠা লাভ করে। উক্ত মুসলমান রাজবংশ যথাক্রমে রোহিলখণ্ড, আলাহাবাদ, কাণপুর, গালিপুর ও এই বিভাগে শাসন বিস্তার করিরাছিল। তাহার পূর্বে সরাদৎ খাঁর বংশপরশার এই নগরে আধিপত্য বিস্তার করে। তাহার পূর্বে এখানে ব্রাহ্মণ ও কারস্থগণের প্রভাব বিস্তৃত ছিল। মাজ্জ্বিন জ্বনপ্রের প্রাকারমধ্যন্থ লন্ধণটালা নামক উচ্চভূমিই সেই প্রাচীন জ্বনপ্রের নিদর্শন। প্রবাদ, এই স্থানে অবাধ্যারাল্প রামচন্তের প্রাক্তা, লন্ধণ শেষনাগের পবিত্রতীর্থের নিকটে স্থনামে লন্ধ্যপুর নগর স্থাপন করিয়াছিলেন। সেই পবিত্রতীর্থের উপর মোগলস্ক্রাট্ অরঙ্গজ্বে একটা মস্বিদ্ধান করেন, কিন্তু লন্ধণপুরের পবিত্র স্থতি আজিত্ত লক্ষোবাসীর চন্দ্র ছাইতে অপকৃত হয় নাই।

শেখ বা লখ নৌর শেখজাদা নামে প্রাসিক মুস্লমান রাজ-খংশই প্রথমে অযোধ্যা জয় করিয়া এথানে প্রতিপত্তি লাভ করেন। তদনস্তর রামনগরের পাঠানগণ গোল-দর্বাজা পর্যান্ত মুসলমান শাসনদও পরিচালিত করিয়াছিলেন। ইহার ঠিক পুর্ব্বেই শেখ-দিগের অধিকারসীমা। তাঁহারাই ধ্বস্ত প্রায় মঞ্জিভবন চুর্গ নির্ম্মাণ করাইয়াছিলেন। ক্রমে ঐ চুর্বের চতু-স্পার্শ্বে জনস্মাগ্ম হইতে থাকে। মোগলস্মাট অকবরশাহের রাজত্বসময়ে উহাই লাখ্নৌ নামে প্রাসিদ্ধি লা করে। রাজা টোডরমলের জরিপ-বিবরণীতে গোমতী-তীরবর্তী সমৃদ্ধির উলেধ षाष्ट्र। षाहेन-हे-चक्रत्ती পार्छ जाना यात्र त्य, এशान मूनन-মান সাধু শেখ মীনা শাহের সমাধিমন্দির ছিল, লোকে তাঁহার পূজার জন্ম এথানে আসিয়া ভজনাদি করিত। তৎকালে এখানে বছসংখ্যক ব্রাহ্মণের বাস ছিল, সমটি অকবরশাহ তাঁহা-দের কুষ্টিবিধান জন্ত লক্ষ টাকা দিয়া বাজপেয় যজ্ঞের অন্মন্তান করেন। তাঁহার পূর্মে এইস্থানের বিশেষ কোনরূপ সমৃদ্ধি क्ति ना। ठाँदात डेम्ट्यारण ও পরে সয়ामर आमी थाँ ও जामक् উष्मोनात ज्ञथावमात्य এই नगत्त्रत উত্তরোত্তর প্রীবৃদ্ধি সাধিত হইয়াছিল। প্রাচীন নগরভাগ যেথানে বর্ত্তমান চক ও চকের সংলগ্ম নগরের দক্ষিণাংশ সম্রাট্ অকবর শাহ বিশেষ যতে নিশ্মাণ করান। তব্বির তিনি অস্তান্ত স্থানের অঙ্গ-সোইব সম্পাদনার্থ বিশেষ অর্থব্যয় করিয়াছিলেন। তৎপুত্র মীর্জা দেলিম শাহ (জাহানীর) বর্তমান হর্ণের পশ্চিমপার্থে মীর্জমণ্ডি क्षांभन कतिबाहित्नम । जनसङ्घत व्यत्याधा-त्रांव्यवः त्मत्र भूटर्स আর কোন মোগলসম্রাষ্ট্ই প্রাসাদাদি স্থাপন হারা এই नगरतत উৎकर्य-माथन करतन नाहै।

নৈশাপুরের স্থপ্রসিদ্ধ পারসিক বণিক্ সরাদৎ থাঁ বাণিজ্ঞা-ব্যপদেশে ভারতে উপনীত হইরা যুদ্ধ ব্যবসারে স্বীর সৌভাগ্য কর্মান করিয়াছিলেন। তিনি মোগল-সম্রাটের অন্ধ্রাহে ১৭৩২ খুষ্টাব্দে অবোধ্যার শাসনকর্তা নিযুক্ত হন এবং লাখ্নে।
নগরে স্বীর রাজপাট-স্থাপন করেন। তদবধি অবোধ্যার এই
স্থাধীন রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হয়। এই বংশই পরে অবোধ্যার
উঞ্জীর-বংশ বলিরা খ্যাত হইয়াছিল।

সরাদতের বংশধরগণ রাজ্যসমূক্তিতে গৌরবাথিত হইনা লাখনো নগরী বিচিত্র চিত্রসম্পন্ন নানা অটালিকার ভূষিত করিরাছিলেন। স্বদং স্থাদার সরাদৎ খাঁ মছিভবনের পশ্চান্তাগে একটা সামান্ত অটালিকার বাস করিতেন। হুর্গের দক্ষিণ-পশ্চিমে যেখানে ইংরাজরাজের জন্ত্রাগার (ordulance stores) প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে, সেই স্থানে এখানকার সেথরাজ্ঞ-গণের নির্দ্ধিত হুইটা স্থপ্রাচীন অটালিকার নির্দ্ধন পাওয়া যায়, সয়াদৎ খাঁ স্থাদার হইয়া আসিয়া উহার একটা ভাড়া লন। তিনি মাসে মাসে উহার নির্দ্ধি ভাড়া দিতেন, কিন্তু তাহার বংশধরগণ আর অধিকারীদিগকে ঐ অটালিকার কোনরূপ থাজানা দেন নাই। সফ্রের জঙ্গ ও স্থজাউদ্দোলা ঐ অটালিকার একখানি বন্দোবন্তী খত লিখিয়া মাসিক ভাড়া ধার্য্য করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু তাহারা তাহা কার্য্যে পরিণত করেন নাই। অবশেষে নবাব আসফ্ উদ্দোলা ঐ অটালিকার রাজসম্পত্তি বলিয়া বাজেয়াপ্ত করিয়া লন।

সন্থাদং খাঁ প্রথমে যখন এখানে আসিয়াছিলেন, তথন সেখগণ উপর্যুপরি তাঁহার প্রতিষ্কিতাচরণ করিতে কাতর হন নাই, অবশেষে তাঁহারা সেই বীরবরের বলবীর্য্য দেখিয়া নিজে নিজেই বশীভূত হইতে বাধ্য হন। মৃত্যুর পূর্ব্বে সন্থাদং শীর শক্রকুল নির্মাণ করিয়া আযোধ্যাবিভাগে একটী স্থাধীন জনপদ প্রতিষ্ঠা করিয়া যান। বৃদ্ধবন্ধসেও তাঁহার বলবীর্য্যের কিছুমাত্র ছাস ঘটে নাই। হিন্দুগণ তাঁহার যুদ্ধকোশলে পুরাজিত ও তীত হইতেন। প্রসিদ্ধ হিন্দুবীর ভগবস্ত সিংহ শীচি তাঁহার সহিত হন। তাঁহার অধীনম্ব সেনাদল ও অধ্যক্ষের শিক্ষাগুণে তৎকালে বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিল।

তাঁহার স্বামাতা ও উত্তরাধিকারী নবাব সফ্দরক্ষ (১৭৪০ খুটান্বে) দিল্লীতে উত্তীরপদে নিযুক্ত ছিলেম। তিনি বাইসবাড়ার হর্ম্ব বাঈজাতিকে ভীত রাখিবার জন্ম নগরের ৩ মাইল দক্ষিণে জলালাবাদ হর্ম হাপন করেন এবং লক্ষণ-পুরের প্রাচীন হর্মের পুন:সংস্কার করিয়া মন্তিভ্যন নাম দেন। ঐ হর্ম বাটিকার চূড়াদেশে একটা মংজ ছাপিত থাকার উহা মন্তিভ্যন বা মটাভ্যন নামে খ্যাত হর। তিনি নগরগাত্রবাহী নদীবকে হুইটা সেতুনিস্মাণের উদ্বোগ করিয়াছিলেন, কারণ ডংপুত্র অবা উদ্দোলা (১৭৫৩ খুঃ) বক্সার বৃদ্ধের পর, কৈবাবাদেই বাস করিতেন। ডিনি লাখ্নৌ লগরে না থাকার নগরের কোনরূপ সেটিব সাধিত হয় নাই।

অধাধাার এই নবাববংশের প্রথম জিনজন রাজাই বাজা ও প্রাসিক রাজনৈতিক ছিলেন। তাঁহারা ইংরাল, মহারাষ্ট্র ও রোহিরা এবং দিলীর প্রধান প্রধান অধান অমাজাদিগের বিজ্ঞাকে মৃদ্ধ করিরা বিশেব খ্যাতি অর্জন করিরাছিলেন।
নিরন্তর ব্রবিগ্রহে লিপ্ত থাকার তাঁহারা রাজ্যশাসন ব্যতীত রাজ্যের স্থাপতাশিরের কোনরূপ ঔৎকর্ম সাধন করিতে পারেন নাই। কেবলমাত্র সামরিক বিভাগের উপযোগী ছর্মালা, কৃপসমূহ ও সেতু প্রভৃতি নির্মাণে তাঁহারের চিত্ত আরুই ছিল।

চতুর্থ নবাব আসক্ উন্দোলা হইতে লাখুনোর রাজনৈতিক ি চিত্ৰ পরিবর্ত্তিত হইল। তিনি ইংরাজরাজের বন্ধত্ব লইয়া स्थी इहेरमन। हेरब्राब-स्माब माहार्या जिनि द्वाहिन्यक অধিকার করিয়া বারাণদী পর্যন্ত আপনার শাসন বিস্তার कतिएक महाडे इटेरनम। धटेकरण मम्ब मध्य कतित्र তিনি মনে মনে স্বীয় শক্তির শুরুত্ব উপলব্ধি করিয়া লইলেন এবং বিশেষ উদ্ভদসহকারে ও বছল অর্থব্যয়ে নানা সেতু ও মদজিদ এবং লাখনৌ সহরের গৌরবকীর্ত্তি ও স্থাপত্য-विश्वाद अकृष्टे निषर्भन अनिष हैमामवासा नामक आनाप ক্লাপন করিয়াছিলেন। এই প্রসিদ্ধ মট্টালিকা দিল্লী ও মাগ্রার ইমামবাড়ার স্তায় বাঁটা মুদলমান ধরণে গঠিত না হইলেও 'ক্লমিগুরবাজা' নামক মসজিদের সংলগ্ন থাকার সৌন্দর্যোর পরাকার্চা লাভ করিবাছে। ইহার গঠন সাদাসিধা ও গাস্তীর্ঘ্য-পূর্ব, ইহাতে গ্রীক ও ইতালীর গঠনের খনেক দৌসাদৃত আছে। ১৭৮৪ শ্বন্থানের মহামারীতে অরাহারক্লিই প্রকাবর্গকে পারি-প্রমিক বিয়া তবিনিমরে এই ইমান্বাড়া নির্শিত হইরাছিল। ख्यांच, चत्नक माञ्चर्गण नगत्रवानी वर्षाणात्व हेमामवाजा-নির্দ্ধাণকার্ব্যে যোগদান করিয়াছিলেন। ভাঁহাদের পারিপ্রমিক নাজীর রাত্তে প্রধান করা হইড, কারণ দিবাভাগে একত্র বেতন লইতে আসিলে অপরের চিনিবার সভাবনা ছিল। এ अविशिकात अविशे अरकाई 201 किहे × दर किहे नवा, উহাতে প্ৰাৰ এক কোট টাকা ব্যৱ হয়। এই গৃহের দেওবালে চাকুচিকাশাৰী ও প্ৰকাশন্য বে সকল চাকশিল চিত্ৰিত হইয়া-हिन, अक्ट (क्रम फ्रांस्त क्रिमाज बरिवाटक, मृत्तवरा शान-এই আ অপজত হইতা সাধান্তবের ন্ট বহিত্ব ছইবা পড়িবাছে। স্থান ক্ৰীবাৰ মধ্যে থাকাৰ ইংবাৰবাৰ একংশ ভাহাতে क्षामि ब्रक्शन वावज्ञा समित्राटक्त । स्वात्कार्यम विवय धरे (व, আইলিকার কাঠের কোনত্রণ বিভ্ন খোরিত হর নাই। কাওঁসন সাহেব ইহার খিলানাদির বিশেব প্রেশংসা করিবা সিরাচেন।

ইমানবাজা ব্যতীত রুনীদরবাজাও আসক্ উর্লোলার একটা প্রধান কীর্তি। তৎপরে হুর্গের পশ্চিমন্থ নদীতীরবর্তী বৌলং-থালা নামক প্রানাদ। উহাই পরে ইংরাজরাজের রেনিডেলীজে পরিপত ইইরাছিল। গোমতী-তীরবর্তী এই প্রবৃহৎ অধীনিকা লাখ্নোর একটা গৌল্লাকা। নবাব সরাদং আসী কর্ হংবল নামক প্ররুধ্য প্রানাদে আপনার বাসত্বন স্থানাত্তিত করিলে, এই অট্টাশিকার ইংরাজ রেনিডেশ্টের বাসত্বন নির্দিষ্ট হর। নগরের যহিতাগে ও নদীর অপরপারে নবাব আসক্ উলোলা-প্রতিষ্ঠিত বিবিয়াপুর নামক প্রানাদ। নবাব বাহাছর মুগরার বহির্গত হইলে প্রথমে এই গ্রাম্য-ভবনে আসিরা বাস করিডেন। এতারির নগরের অপরাপর স্থানেও এই নবাবের উদ্যোগে নির্নিত আরও অনেক অট্টাশিকা বিভ্যান আছে। সেগুলির গঠনপারিপাটা ও দৃশ্ত-গান্তীর্ঘ্য লাখ্নে) নগরের মহন্ত আপন করিডেছে।

এই সমরে সেনাপতি ক্লড্ মার্টন্ Martiniere নামক ক্রপ্রেশির বিভালর ত্থাপন করেন। উক্ত ত্র্বং উভানবাটিকা সম্পূর্ণরপ ইতার্ক্তা পিরে বিনির্দ্ধিত হইরাছিল। পাছে মুসলনানরার ও অট্টালিকা হত্যাত করিরা লন, এই তরে তাহার মধ্যে ত্থাপরিতার অহি সমাহিত করা হর, কিছ সিপাহীবিদ্রোহের সমর : মুসলমানগণ সেই সমাধি খুঁজিরা অহিজালি বাহিরে ছড়াইরা কেলে।

व्यानक् फेरकोनात दावक्कारण नाथ भी-वावकत्वात कांक-जगरकत गीर्वनीयांव स्त्रीक स्टेबाहिन, धारे नयदत दालानीयांव वृद्धि नरकारत ताबरयत्रक सर्वड वृद्धि पवित्राहित, अयाव আস্ফ উদ্দোসা বীর ব্যাজ্তা ও জাক্তমক্ষের ব্শব্রতী হুইরা রাজকোবে সন্ধিত সেই প্রভুক্ত রাজস্ব প্রাচ্যসমূদ্ধির উপক্রণ-সংগ্রহে ব্যব্ন করিরা গিরাছিলেন। পাশ্চাক্তা ঐতিহাসিকগণ बरनम रा, ब्र्रांटिश वा क्षात्रक्वर्य व्यानक् केरकोलात श्रीत्रवस्त्र ৰীৰ্জিবলাণের সমক্ষতা দেখাইতে কোন রাজাই এতাধিক ব্দর্থবারে বরাব্যে হাপভাগৌরৰ সন্পাদন করিতে পারেন নাই। তাঁহার উচ্চাতিলাৰ জাঁহাকে লাধারণ নীয়ার বহিত্তি করিয়া-हिन । ७९ काणीन अतिह प्रत्नानवान हिन् प्रवकान वा निकास বাহাতে হকী বা হীরকাদি সম্পত্তিকে জাহার ভার ঐবর্থানান না रहेरल शांदबन, कविवाद कीशांत्र विराय नामा हिना। क्रीहांत्र বিখ্যাত পুত্ৰ উজীয় জানী ৰীয় (বিনি নিঃ চেরিয় মুদ্যাপরাধে हुनाव हर्ष बनी बाकिया करनीता तत्वहत करहम) क्लिक नमा-রোহে তিনি বয়বারীছিপের সঙ্গে ১২শক বৃদ্ধী পাঠবিরাছিলেন।

তাঁহার যুবক পুত্রের গাত্রে তৎকালে প্রার ২০লক টাকার হীরা-কহরতের অলভার শোভিত হইরাছিল।

তাঁহার এই অত্ন সম্পত্তি তিনি বে ভারতীর প্রধার রক্তন্থান বারা সংগৃহীত করিরাছিলেন, তাহা Tennant এর বিবরণী পাঠে জানা বার। তিনি বধ্নৌ সমমে লিধিরাছেন—
"I never witnessed so many varied forms of wretchedness, filth and vice," অর্থাৎ এরূপ ভীষণ পাপকলক্ষ্ণালিমালিপ্র নগরী আমি আর কুরাণি দেখি নাই। তৎকালে খোলামিঞা আল্মানের শাসিত প্রদেশ ভির আসম্ উদ্দোলার অধিক্বত সমগ্র অবোধ্যারাল্য আশানভূমে পরিণত হইয়াছিল।

জাসক্ উদ্দোলার পুত্র সরাদং আলী খাঁ (১৭৯৮ খুঁঠান্দে)
ইংরাজরান্দের আহগত্য খীকার করিয়াছিলেন। তিনি ইংরাজসেনার আশ্ররছায়ার নির্বিছে নিত্রিত থাকিয়া ঐশ্ব্যক্তথের
তোগবিলাস খার দেখিতেছিলেন। সরাদৎ পূর্বপুরুষদিগের স্থায়
বলবীর্যে জাতীয় গৌরবের পুরীসাধন না করিয়া ভোগবিলাসে
উন্মন্ত হইয়াছিলেন। তিনি ইংরাজকরে খীয় সম্পত্তির
আর্ক্রেখাশ সমর্পন করিয়া অবলিষ্ট লইয়াই আয়্রান্তির পথে
অগ্রসর হইলেন। মন্জিদ্, কুপ, ছর্গ, সেতু প্রভৃতি নির্দ্ধাণ বারা
রাজ্যের শীর্কি সাধন না করিয়া তিনি ক্রান্তিনাসের জয়্
উপয়্পিরি কএকটা প্রামাদ নির্দ্ধাণ করান, ঐ প্রামাদগুলি
উত্তরোত্তর নৃতন ভাবে ও নৃতন প্রণালীতে গঠিত হইয়াছিল।
তৎপরবর্তী রাজানিগের অধিকারকালেও ঐরূপ প্রামাদনির্দ্ধাণেরই প্রয়াস বাড়িয়াছিল। অট্টালিকার অধিকাংশ স্থলেই
মুরোপীয় স্থাপিত্য-শিরের অয়ুকরণ দৃষ্ট হয়।

বে সয়াদৎ খাঁ ও তাঁহার বংশধর্বর সামান্ত একটা বাসভবনে থাকিরা এই সোঁভাগ্য অর্জন করিরাছিলেন; ইমামবাড়া,
চক্ ও বাজারাদির প্রতিষ্ঠাতা জাকজমকপ্রির যে আসফ্ উদ্দোলা
একটা মাত্র প্রাসাদ লইয়া সভ্ত ছিলেন, সেই বংশে সয়াদৎ
আলী বছসংখ্যক প্রাসাদ নির্মাণ করিয়া ভোগবিলাসের পরাকাষ্টা দেখাইয়া গিয়াছেন। এই বংশে নশীর্ উদ্দীন্ হাইদার
অপরিমিত অর্থবারে রাজপরিবার ও রাজমহিবীগণের ক্ষন্ত
কএকটা অত্যুৎক্ত প্রাসাদ প্রস্তুত করাইয়াছিলেন। তাহার
বিবাহিত-পত্নীগণ ব্লু প্রাসাদে বাস করিতেন, তাহা ছত্রমজিল
নামে খ্যাত। কৈসর-পসদ্দ ও অক্সান্ত আনহরে তাহার রক্ষিতা
রমণীবৃদ্ধ হান পাইরাছিল। শাহমজিল নামক প্রসিদ্ধ ভবনপ্রাস্ত্রণ তাহার কৌত্রল উদ্দীপনার্থ বন্ত পশুসমূহ রক্ষিত
হইয়াছিল। নবাব স্বয়ং ফর্হংবল, হকুর বাগ্র, বিবিদ্বাপ্র
ও অক্সান্ত প্রাসাদে বাস করিতেন। ওরাজিদ্ আলী শাহ ৩৬০
জন রমণীকে পত্নীধে বরণ না করিয়া আপ্রিতারকেশ বীর বেগম

মহলে রক্ষা করিরাছিলেন। উহাদের প্রত্যেকের জন্ত প্রাসাদ তুলা অট্রালিকা নির্দ্ধিত হইরাছিল।

সরাদৎ আলী খাঁ ফর্হৎবল্প নামক প্রমোদভবন নির্দাণ করাইয়া রাজপ্রাসাদ পরিবর্ত্তন করিয়াছিলেন। তিনি হিন্দ-গণের বাসবিভাগের (হিন্দু টোলার) পূর্বাংশ হইতে দিল্থুস পর্যান্ত নগরবহি:প্রান্তে কতকগুলি কুদ্র কুন্ত প্রাসাদ নির্দ্ধাণ করাইয়াছিলেন। ঐ গুলি বর্ত্তমান সেনানিবাসের উত্তরাংশে অবস্থিত। উহাৰাগ নদীকূল, নগর ও তাহার চতুপার্থবন্তী স্থানের সৌন্দর্য্য দ্বিগুণ পরিবর্দ্ধিত হইরাছিল। তৎপরে ওরাজিদ वानी नहीजीरत रेकनत्र-वांग नामक नमनकानरन स्वर्पत्री সদৃশ নানা শিলপূর্ণ অত্যুৎকৃষ্ট অট্টালিকা নির্মাণ করাইয়া তাহাই স্বীয় বাসভবনরপে পরিণত করেন। তিনি পূর্কোক্ত জেনারল মার্টিনের নিকট হইতে এই প্রাসাদের নদীতীরবর্তী কডকাংশ ক্রন্ত করিয়া লন। পরে বছ অর্থবায়ে সেই স্থরমা হর্ম্মোর সংস্কারসাধন করিয়া তাহাকে অভিনব ও স্বীর অভিলয়িত প্রাসাদে পর্যাবসিত করিয়াছিলেন। উহার রাজদরবার গৃহ, অর্থাৎ যেথানে স্থবিস্থৃত নানা শিল্পনৈপুণ্যমণ্ডিত রাজসিংহাসন প্রতিষ্ঠিত ছিল, উহা লালবার ছারী বা কসর্ উষ্ স্লতান নামে পরিচিত। ওরাজিদের রাজছকালে লখনে। নগরী চিত্র-বৈচিত্রের চরম সীমা প্রাপ্ত হইয়াছিল। এই মুসলমান-রাজবংশ ইংরাজরাজের আফুগত্য স্বীকার করেন এবং যে সময় হইতে শুখুনো নগরে ইংরাজ রেসিডেণ্ট থাকিবার ষাবস্থা হয়, তৎপরবর্তিকাল হইতেই কোন নবীন নবাবের বাজ্যাভিষেক সময়ে ইংরাজ-রেসিডেন্ট আসিয়া তাঁহাকে সিংহাসনে বসাইতেন এবং এই প্রদেশে তাঁহার রাজপক্তির প্রাধান্ত-জ্ঞাপনার্থ তাঁহাকে রাজনন্তর দিতেন।

সন্নাদং আলী খাঁর পুত্র গান্ধি উদ্দীন্ হাইদার ১৮১৪ খুটান্ধে আঘোধার রাজপদে অভিধিক্ত হন। তিনিই এ বংশে প্রকৃত রাজনার্দের অধিকারী হইয়াছিলেন। তিনি খীর পিতার অফ্রেটিত মোতিমহল গণ্ডুজের চতুপার্ছে নোতিমহল প্রাসাদ নির্দ্ধাণ করান। নদীর প্রাচীন নৌকা-সেতুর উভর তীরবর্তী মুবারক মন্ত্রিল ও শাহ মন্ত্রিল নামক প্রাসাদ তাহার আগ্রহে সংস্কৃত হইয়াছিল। এই শেরোক্ত প্রাসাদে তিনি রোমক-স্মাট্গণের স্থায় হরস্ত বস্তু পশুদিগের রণকোতুক সন্দর্শন করিতেন। লখ্নো-রাজবংশের অবসান পর্যন্ত এই প্রাসাদে ভরাবহ পাশব বৃদ্ধ সংঘটিত হইয়াছিল। এতিজন গান্ধি উন্ধীন্ হাইয়ার চীনি-বাজর, প্রপ্রসিদ্ধ ভ্রমন্ত্রিল কলান্ ও তৎপশ্চাতে 'হত্রমন্ত্রিল খূর্দ্ধ' নির্দ্ধাণ করাইয়াছিলেন।

তাঁহার সমাধির অভ তিনি গোমতীতীরে শাহ নজফ্ নামে

একটা মন্দির নির্দ্ধাণ করাইরাছিলেন। তাঁহার বাল্যাবছার তিনি ঐস্থানে বাস করিতেন, তাহার উপর তাঁহার দিতা ও মাতার জন্ত হুইটা সমাধিমন্দির স্থাপন করেন। জনসরবরাহের স্থবিধার্ক তিনি একটা থাল কাটাইতে চেষ্টা পান। উহার নিদর্শন নগারের পূর্ব্ধ ও দক্ষিণে রহিরাছে। অর্থাজার বলভঃ তিনি উক্ত কার্য্য সম্পাদন করিতে পারেন নাই। তিনি করম্নস্থল অর্থাৎ মহম্মদের পদচিক্ষাপিত কুত্রিম স্তুপোপরি একটা স্ব্রহৎ অট্টানিকা নির্দ্ধাণ করিরাছিলেন। পূর্বে একজন মুসলমান ঐ পদচিক্ষ আরব হইতে এদেশে আনরন করেন। তিনিই উহা উচ্চ ভূমে স্থাপন করিরা উহাকে একটা মুসলমান তীর্ষক্রপে ঘোবিত করিরা যান। গাজ্ঞি উন্ধীনের আগ্রহে উহার মাহান্ম্য বাড়িরা উঠে। ১৮৫৭ খুটান্দের দিপাহীবিল্যাহের সমর ঐ প্রত্তর স্থানাস্তরিত হয়, তদবধি উহা আর কদম্রস্থল মন্দিরে প্রতিষ্ঠিত হয় নাই।

গান্তি উদ্দীনের পুত্র নাসির উদ্দীন্ হাইদার ১৮২৭ খুঠান্দে পিতৃসিংহাসনে অভিষিক্ত হইরা রাজকার্য্য পরিচালন করিতে থাকেন। জ্যোতিঃলান্তে ঐকান্তিক আসক্তি বশতঃ তিনি বছ অর্থবারে 'তারাবালী কোঠা' নামক একটা বেধালর স্থাপন করেন। বিখ্যাত ইংরাজ জ্যোতির্ব্বিদ্ কর্ণেল উইল্কল্প তাঁহার কর্ম্মচারিরপে নিযুক্ত থাকিরা উক্ত বেধালরের যন্ত্রাদির পরিদর্শন করিতেন। ১৮৪৭ খুঠান্কে কর্ণেল উইল্কল্পের মৃত্যুর পর, ওরাজিদ্ আলীশাহ এই বেধালর বদ্ধ করিরা দেন, সিপাহীবিদ্রোহের ঘোর-বিম্নবে বিজ্রোহীদিগের উপদ্রবে উক্ত বেধালরন্থ যন্ত্রাদি নই হইরা বার। বিজ্রোহিদ্যালর নেতা ও পরামর্শদাতা ফৈজাবাদবাসী মৌলবী আক্ষাক উল্লাশাহ সেই সমরে এখানে আসিয়া বাস করেন। তিনি বিজ্রোহীদিগকে উৎসাহদানার্থ ইহার প্রাঙ্গণ মধ্যে সমর সময় এক একটী সভার অসুষ্ঠান করিতেন।

নাসির উদীন হাইদার উপরোক্ত বেধালর ভিন্ন ইরাদৎ নগরে একটী মহতী 'কারবালা' নির্মাণ ক্রাইয়াছিলেন, উহার মধ্যে তাঁহার মৃতদেহ সমাহিত বহিয়াছে।

নাসির উদ্দীনের মৃত্যুর পর, তাঁহার খুরুতাত মহন্দ আগীশাহ ১৮৩৭ পুর্তাবে সিংহাসনে আরচ হইরা খীর কীর্তিতম্ভ
হসেনাবাদের ইমামবাড়া প্রতিষ্ঠা করেন। ইহা ছই ভাগে
বিভক্ত। লাখনৌ চুর্গের প্রসিদ্ধ রুমী দর্বাজা ছাড়িয়া গোমতীতীরবর্তী প্রশন্ত পথ দিরা এই ইমামবাড়ার বহিঃপ্রালণে
আসা যায়। এই হানে রাস্তার একটু পশ্চিমে দীড়াইয়া দেখিলে
। দক্ষিণদিকে আসক্ উদ্দৌলার ইমামবাড়া ও ক্মীদর্বাজা এবং
কামভাগে হসেনাবাদের ইমামবাড়া ও ক্মা বস্ত্রিগাচর
ছয়। এই কয়্টী অট্টালিকার সমাবেশ বেধিয়া অনেক স্থাণত্য-

বিং মুক্তকঠে বলিয়া গিয়াছেন হে, স্থাপত্যশিরের এক্সপ অত্যংক্ত নিদর্শন জগতে অভি বিরশ।

রাবা মহমদ আলীশাহ খীর ইমামবাড়ার খানুনিবার জন্ত হত্রমঞ্জিল হইতে হর্গমধ্য দিরা ইমামবাড়া পর্যান্ত একটা প্রশন্ত পথ বাহির করিরা দেন। এই পথের ধারে তাঁহার বজে একটা দীর্ঘিকাও কাটা হইরাছিল। তিনি দিলীর জুমামস্জিকের অপেন্দা অধিকতর উৎকৃত্ত প্রণালীতে সনির্দ্ধিত ইমামবাড়ার পার্বে একটা মস্জিকের পত্তন করিরাছিলেন। অকালে তাঁহার কৃত্যু হওরার, তাহার নির্দ্ধাণকার্য্য সমাধ্য হয় নাই। তদবধি উহা অর্ক্তপিত অবস্থার নির্দ্ধাণকার্য্য সমাধ্য হয় নাই। তদবধি উহা অর্ক্তপিত অবস্থার নির্দ্ধাণের উদ্বোগ করিরাছিলেন। উহার চারিখণ্ড নির্দ্ধিত হইবার পর তিনি মৃত্যুমুখে পতিত হন, তাহাও ঐরণে অসমাধ্য হইরা বহিরাছে।

তদনন্তর লাখ্নোর চতুর্থ রাজা আম্লাদ্ আলীপাহ
(১৮৪১ খুটাজে) কাণপুর পর্যন্ত পাকারাতা, হলরৎ গজের
খীর সমাধিমন্দির ও গোমতীর লোহদেতু নির্দাণ করান।
রাজা গাজি উদীন্ হাইদার এই সেতু ইংলও হইতে আনরন
করিবার আদেশ দেন। উহা এখানে পৌহিবার পুর্কেই তাহার
মৃত্যু ঘটে। তাহার পুত্র নাসির উদীন্ রেসিডেগ্নীর সমুখে
উহা স্থাপনের চেষ্টা করিরাছিলেন, কিন্তু নদীগতে তত্ত নির্দাশ
সহজ্পাধ্য না হওরার সে প্রতাব স্থাতি থাকে। অবলেধে
আমলাদ আলী তাহার প্রতিষ্ঠা করিরা থান।

অযোধ্যারাজবংশের শেবরাজা ওরাজিদ্ আলীশাহ ১৮৪৭ হইতে ১৮৫৬ খুটাল পর্যান্ত লাখ্নোসিংহাসন অলক্কত করিরা-ছিলেন। তাঁহার নির্মিত কৈসরবাগ নামক প্রমোদোখান নগর মধ্যে সর্বাহৃহ ও মনোক্ত অট্টালিকা হইলেও অমার্ক্তিত কচিনিবন্ধন উহার নির্মিতা বলিয়া তিনি সাধারণের নিকট প্রশংসাভাজন হইতে পারেন নাই। ১৮৪৮ খুটালে উহার কার্যারন্ত এবং ১৮৫০ খুটালে উহার নির্মাণকার্য্য সমাধা হয়। উহাতে প্রার ৮০ লক্ষ টাকা ব্যয় হইমাছিল।

বেধালরের সন্থক উত্তরপূর্কবার নিরা প্রবেশ করিলে দর্শক প্রথমে জিলোখানা নামক প্রাসাদবার অভিক্রম করিবেন। এই প্রানাদ হইতে রাজকীর বারোৎসব সাধিত হইত। এই স্থান হইতে দক্ষিণে ফিরিয়া একটা আক্রাদিত বার অভিক্রম করিলে চীনিবাগে আসা বার। এখানে চীনে কাচের পারাদিতে উন্তানভাগ অলম্ভত করিয়া রাখিরাছে। তথা হইতে নগ্নাম্বৃতি রমণীমূর্তিপরিশোভিত একটা প্রবেশবার অভিক্রম করিলে হজরংবাণে উপনীত হওরা বায়। ঐ নগ্ন প্রতিক্রমিস্কৃত্ব অটাদশ শতাব্দীর অনার্শিকত মুরোপীর ক্রচিপ্রস্তুত। চল্লক্ষ্ম করিলে

নাজীবালী, বার্যারী এবং খাস র্কাদ বা খালণাত্ মনিল। এই বার্যারীর বেজে একসমরে রৌপ্যমন্তিক ছিল। বারণাহমনিল সরাবং জ্বালী থার প্রতিষ্ঠিত ছবলৈও গুরানিক আলী পাত তারা আপনার নবপ্রানারচিলের অকর্তুক করিরা লন। উহার বাসভাগে আর কভকবালি লাইালিকা আছে, তর্মান রামজার-জার আলিক উল্লেখবাগা।
স্বার গুরানিকা আলী ও লক্ষ টাকা মূল্যে উহা কের করেন। এই আটালিকার প্রধানার্গের ও রাজমহিবীরা বাস করিতেন। বিশাইবিজ্যোত্বের লমর এই প্রানাধে থাকিরা উহার একজন ওবেগম বিল্লোহিদলের সাহায়ার্থ সরবারের অস্কান করিবাছিদেন। ইংরারই পার্বান্ধ আভাবলে ইংরার্যাব্দী রক্ষিত হইমাছিল।

ইহার পার্যন্থ রাজার ধারে মর্মর এজনে বাধান একটা বৃক্ষ-ভালে মেলার দিন নবাৰ ককিরের জ্ঞার হরিজারজিত পরিজ্ঞানে অবস্থান করিতেন:

পূর্কদিকের সাধীনার সক্ষ টাকা বারে নির্নিত হইরাছিল।
উহা অভিক্রম করিরা আসিলে কৈসরবাগের প্রাকৃত উভানআলপ দেখিতে পাওরা বার! ইহার চারিদিকে রাজান্তঃপুরকামিনীগণের প্রাসাদ। এই প্রাসাদ-প্রাক্তণে প্রতিবৎসর ভাদ্র
নালে একটা ঘেলা হর, ভাহাতে লাখ্নোবাসী সকলেই স্মবেত
হইরা থাকে। ইহার পর প্রস্তরনির্নিত বার্বারী, উহা একণে
রক্তমকে পর্যাবসিত হইরাছে। পশ্চিমের সাধীনার অভিক্রম
করিলে "কৈসর-পসন্দ" নামক প্রসিদ্ধ প্রাসাদ। উহা
মাসির উন্ধীন্ হাইদারের মন্ত্রী রৌশন উন্দোলা কর্তৃক্
বিনির্নিত হইরাছিল। উহার উপরিভাগ অর্ক্ত্রোলাকার অ্থব্রন্ধানির প্রির্নিত্র নির্নিত বার্বারী
করেন, তৎপশ্চাৎ আর একটা জিলোধানা অভিক্রম করিলে
পুনরার রাজপধ্যে সমুপ্রিত হওরা বার।

সাধ্নে ইংরাজ অধিকারে আসিরার পর, এখানকার স্থাপতাশিরের গৌরবজাপক আর কোনরপ অটালিকাই কির্মিত হর নাই। কএকটা বাতবা চিকিৎসালর, বিভালর ও রাজকার্যালর মাত্র নির্মিত হইরাছিল। বলরামপুরের মহারাজ সন্থ বিভিজ্পবিধ্ধ কৈ নি এস্ আই রেনিডেন্সীর পার্বে একটা ইাস্পাতাল প্রক্রিটা করিরাছেন।

উপরোক্ত ইমানবাড়াবর, ছবনজিপ, কৈসরবাগ ও অবোধ্যার রাজক্ষণধরগণের অভাত আসাব বাতীত এবানে সরাবৎ আসী থা, মুনিব্লাবি, সক্ষব আবী বাহ ও বাজি উনীন্ হাইবাবের সমাধিনজির স্থাপতাশিক্ষের পরাক্ষার্ক্ত করিবাতে। এত্তির অনেক তথি উভানবাচিকা, হাওয়াবাল্য, সেকাজির, মন্ত্রির ও ধনাতা নগরবাসীবিগের বাসভবনও ছাপভালিরে পরিপূর্ণ। এটার ১৮ল শভাবের ছণিড রাপভারুতি ইংলও বইতে দ্রীকৃত হইলে ভারতে আন্ধান্ধা প্রবেশ লাভ করে এবং ভাহারই কর্ম্বর প্রতিকৃতিসমূহ ভোগবিনাসলোপুণ মুসলমান-রাজগণের পরাপ্রের পরিবৃদ্ধি প্রোপ্ত হয়। প্রেয়তবালুসন্ধিৎস্থ কার্ভানন এই নগরের স্থাপভাশিক্ষের উল্লেখ করিয়াছেন;—
"No caricatures are so ludicrous or so bad as those in which Italian detail are introduced."

১৮৫৬ খুটানে १ই কেব্রেয়ারি ইংরাজরাজ অযোধ্যাপ্রদেশ ইংরাজসাত্রাজাভূক্ত করিয়া লাখ্নের রাজা ওয়াজিদ্ আলী শাহকে কলিকাতার জানিয়া গলাতীরবর্তী মৃচীখোলা নামক ছানে নজরবন্দিরূপে রাখিয়া দেন। উক্ত বাসভবনেই খুটীর ১৯শ শতান্দের শেব ভাগে লাখ্নের শেব নবাবের গ্রোণবারু বহিগত হয়।

সিপারীবিজ্ঞার।

মিরাট নগরে সিপাহীবিদ্যোহবহ্নি প্রজ্ঞানিত হইবার মাস্বর পরে, ১৮৫৭ খুটাব্দের ২রা মার্চ সন্তেন্ত্রী লরেজ নবাধিক্লভ ব্যাধ্যা প্রদেশের চিক্ত কমিশনার নিযুক্ত হন। সেই সময়ে नाथ ्ती इर्त ७२ मरश्यक हेरबाब मनावन, अकवन मुद्रानीय कामानवाही रेन्छ, १म मःशक सनीय क्यांद्वाही रानावन धवः ১৩म, १४म ও १> गरश्य एम्मीम शर्माक त्मामन जबर सगत गन्निक्छ इटेनन ज्ञानीय टेर्स्स्नाब भगाष्ट्रिक, अकतन गामनिक श्रीन रामा, इरेनन मिनीय कामानवारी ७ अक्पन कायांशांत ইরেওলার পদাতিক অবস্থান করিতেছিল। মোট কথায় ভংকালে তথার ৭৫০ জন ইংশ্বাজ ও প্রান্ত ৭০০০ ভারতীয় নেনা ছিল। এপ্রিল মাসের প্রারম্ভেই দেশীর সিপাচীছিগের মধ্যে বিষেষভাব পরিলক্ষিত হয়। ঐ সমূহে জাতিনালের অপরাধের অভিলোধ স্বরূপ নিপাহীগণ ৪৮ নংখ্যক পদাভিক দলের সার্জ্ঞনের গৃহ জালাইরা দের। সন্ধৃ ছেনরী লরেক উপস্থিত বিপদের আশকা করিয়া ব্যেসিডেন্সী অরন্ধিত করিবার ও খাছাবি সংগ্রহের ব্যবস্থা করিয়া লইলেন। ৩০বে এপ্রিল कांत्रित्थ १व मध्याक ऋत्यायात्र हेरतक्षमात्र त्मनावन त्यान्यमा বিভিত জানিরা কাট্ডিব, কাটিছে সন্ধীকার করিল। তথাপি माना व्यद्धांक्रमात्र कारांत्रिशस्य श्रमतात्र शारितः सानिया द्वीकित्रक क्रियामाकाशाम्यत वांच कत्रा हरेता। अत्रा त्व छात्रिय दरन्ति गरतम विद्यारी रातात्रम् प्रकार स्त्रिक गुला ক্ষরির অন্তির অত্যাত্ত কাড়িয়া দুইতে আহেব গুচার ক্রিকের। क्षारकरे तारे भारतनक कार्य रहेश।

ा अने त्य पाकिर्वित त्सवी वातक अवसे प्रकार पतिस

माधातन लाकरक हिन्दुशनी ভाষার বুঝাইরা দেন যে, ইংরাজ-শাসন হিন্দু ও মুসলমানের পকে বিশেষ হিতকর; স্বতরাং সকলেরই ইংরাজনাসনের ক্রক্ষপাতী হইয়া তাহারই অমুগানী ৰ ওয়া কৰ্ত্তৰ্য। উক্ত তারিখের পরদিন প্রভাতে মিরাটের হত্যা-कार खत्र मश्वाम नाथ रनी नगरत जामिया श्लीक्रिंग, এशारन रमनी-দলের মধ্যে বিপ্লবের স্চনা হইতে লাগিল। ১৯শে তারিধে সর হেনরী লরেন্স অযোধ্যাস্থ সেনাদলের সর্ব্বময় কর্তৃত্ব লাভ করিয়া বেসিডেন্সি মধ্যে যুরোপীর নরনারী সংস্থাপনপূর্বক চুর্গ এবং মচ্ছিভবন সুরক্ষার ব্যবস্থা করিলেন। ৩০শে মে রজনীতে नाथ्रा नगरत विरामारी रमनामरनत समग्रनिहि अभि श्रम উদ্গীরণ করিতে লাগিল। ৭১ সংখ্যক সেনাদলের ও অঞ্চান্ত দলের কতকগুলি লোক একতা হইয়া অধ্যক্ষগণের বাঙ্গালায় अधि अनानभूर्सक जानारेबा मिन এवः गृरम्थि राक्तिवर्गत्क নিহত করিল। পরদিন প্রাতে রুরোপীয় সেনাদল তাহাদিগকে আক্রমণ করিয়া হটাইয়া দিল। কিন্তু ৭ম সংথ্যক অখারোহিদল বিদ্রোহিদলে যোগ দিয়া একত্র দীতাপুর অভিমূথে প্রস্থান করিল। ১২ই জুন পর্যান্ত লাখ্নৌ নগর ইংরাজ অধিকারে থাকিল বটে, কিন্তু অযোধ্যার অপরাপর অংশ বিদ্রোহীরা व्यक्षिकात कतिया नहेन।

১১ই জুন সামরিক পুলিশ ও দেশীয় অখারোহী বিদ্রোহী সেনাদল প্রকাশ্রে ইংরাজদিগের প্রতি গোলাবর্ষণ করিতে লাগিল। প্রদিন দেশীয় পদাতিক দল তাহাদের সহিত যোগ দিয়া নগর ভাগ আলোড়িত করিয়া ফেলিল। ২০এ জুন ক্রাণপর বিদ্রোভিদলের হন্তগত হইয়াছে সংবাদ পাইয়া সিপাহী-গ্রণ উৎফুল হইয়া উঠিল। ২নএ জুন ৭০০০ হাজার বিদ্রোহী ফৈলাবাদ পণে অগ্রসর হইরা বেসিডেন্সীর আট মাইল অদরবর্ত্তী কিনহাট গ্রাম আক্রমণ করিলে সর হেন্রী লরেজ যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইলেন, কিন্তু তিনি শক্রর সন্মুখে অধিক-ক্ষণ থাকিতে না পারিরা পরাজর স্বীকারপূর্বক প্রত্যাহত ছইলেন। তিনি শত্রুপক্ষের বল অধিক দেখিরা মচীভবন পরিত্যাগ করিয়া রেসিডেন্সীর বলপুটি করিতে তথার সমস্ত रेजक नमरवक कतिरामम । >मा क्मारे भक्तमम (त्रनिरक्षमी অবরোধপূর্বক গোলাবর্বণ করিছে লাগিল। ২রা শত্রুপক্ষের একটা গোলা সর হেনরীর শরনকক্ষে প্রবিষ্ট হইরা তাঁহাকে আছত করিল। সেই আখাতের বন্ধণার অন্থির হইরা তিনি ভঠা ভারিখে পঞ্চৰ প্রাপ্ত হইলেন। তথন মেজর বাছস, সিভিল বিভাগের ও ব্রিসেভিয়ার ইন্মিন্ সামরিক বিভাগের অধ্যক্ষ इंहरनन । २०७ जूनारे नक्तर्भ भूनतात हैरताजिनगटक चाकमन ভবিল। প্রদিন মেলর বাছদ্ নিহত হইলে, ব্রিসেডিরার। ইন্মিদ্ সর্ব্যয় কর্ত্রা হইলেন। ১০ই ও ১৮ই আগষ্ট ভারিথে উপ্যুগিরি গুইবার আক্রমণ করিরাও পক্রমল ইংরাজনিগকে বিপর্যান্ত করিতে পারিল না। রেসিডেক্সীছিত ইংরাজনিগও পুন: সাহাব্যলাভের আশার ক্রমণই হতাশ হইরা পড়িতেছিলেন। এমন সমরে আউট্রাম ও হাবেলকের আগমন বার্ত্রা শুনিরা তাঁহারা কিঞ্চিৎ উৎফুর হইরা উঠিকেন। ২২শে সেপ্টেম্বর হাবেলক আলমবাগে উপনীত হইরা তথাকার বিদ্রোহীদিগকে বিপর্যান্ত করিলেন এবং ২৫এ পর্যান্ত পক্রনি দিগের সহিত ধতার্ক্র করিতে করিতে বীরদর্পে ২৩শে রেসি-ডেক্সীর হারদেশে আসিরা সমুপছিত হইলেন। তৎপূর্কেই পক্রপক্রের আক্রমণে জ্বোনারল নীল নিহত হইরাছিলেন। শক্রমল ইংরাজের বলহীনভার পরিচয় পাইরা পুনরার নগর আক্রমণ করিল, আউট্রাম ও হাবেলক বিশেষ বিচক্ষণভার সহিত দিবারাত্র যুদ্ধ করিয়া নগররক্ষার নিযুক্ত ছিলেন।

অক্টোবর মাস পর্যান্ত ইংরাজগণ বিশেষ বীরছের সহিত আত্মরক্ষা করিতে লাগিলেন। ১০ই নবেম্বর সর কলিন কাম্বেলের অধীনস্থ দেনাদল কাণপুর হইতে আলমবাগে আসিরা উপনীত হইলে তিনি কলিকাতার উপনীত হইয়াই লাখ্নৌ উদ্ধারমানদে নানাস্থান হইতে সৈক্সাংগ্রহের ব্যবস্থা করিয়া-हिल्लन। ১२हे नरवचत्र जिनि नम्स्ल व्यालमवांश व्यात्कमन করিলেন। ক্ষণকাল যুদ্ধের পর শত্রদল পরাস্ত হইল। তদনস্তর তিনি দিলপুদ প্রাদাদ অধিকারপূর্বক মার্টিনেয়ার অভিমুখে অগ্রসর হইলেন। এখানে কামানাদির বারা স্থরক্ষিত হইরা বিদ্রোহী সিপাহী দল অবস্থান করিতেছিলেন। উক্ত স্থান অধিকার করিয়া তিনি খাল উত্তরণপূর্বক ১৬ই তারিথে শক্রদলের প্রধান কেন্দ্র সিকেন্দরাবাগ আক্রমণ করিলেন। এখানে উভয় পক্ষে যোরতর যুদ্ধের পর বিদ্রোহিদল পরাজিত रुरेन। हेरताकरमना पूर्ण अधिकातात्व नयवरण वनीयान् रुरेता মোতিমহল পর্যাপ্ত অপ্রাসর হইলে হাবেলক রেসিডেন্সী হইতে বৃহির্গত হইয়া ভাহাদের সৃহিত সদলে মিলিভ হইলেন।

এইরপে বিজয়ী বিভীয় সাহায্যকারা সেনাদল লাখনৌ
নগরে উপস্থিত হইলেও ইংরাজের পক্ষে নগর-রক্ষা
অসম্ভব হইরা উঠিল। তথন সর্ কলিন্ কাবেল শফেপক্ষের
প্রতিপক্ষতাচরণ হরুছ বিবেচনা করিরা ইংরাজ পুরুষ,
রফরী ও বালকবালিকাদিগকে এখান হইতে উদ্ধারপূর্বক
কাণপুরে লইরা কলিকাভার পাঠাইতে মনস্থ করিলেন।
ভদমুসারে তিনি ২০এ নবেষর সদলে অওলের ইইলেন।
রেনিডেকী পুনর্বার শক্ষের হত্তগত হইল। পথিষধ্যে সর হেনরী
হাবেলকের মৃত্যু হওরার আলমবাপে ভাহার সমাধি হয়।

সকলেই কাণপুর অভিমূপে চলিলেন, কেবল সর্ জেমস্
আউট্রাম ৩২০০ সৈতা লইরা আলমবার্গ রক্ষা করিছে লাগিলেন, তিনি নগর উভাবের আশা পোষণ করিরা প্রধান সেমাপতির আগমন প্রতীক্ষা করিতেছিলেম। এই সমরে অবসর
ব্বিরা বিদ্রোহিণন নগরের চকুংসামা বিরিয়া কেলিল এবং আয়রক্ষার জতা চারিণিক্ অস্টু করিছে লাগিল। প্রায় ৩০ হাজার
শিক্ষিত সিপাই। ও ৫০ হাজার ভলা তিয়ার একত্র ইইয়া নগরের
চারি,নক্ষের প্রায় ২০ মাইল স্থান আছেয় করিয়াছিল। তাহাদের
নিকট ১০০ কামান ছিল।

সচলচ খুটানের হরা মার্ক সর কলিন কাবেল পুনরার লাগ্নৌ আভমুথে যাত্রা করিলেন। তিনি দিলখুস অবিকার করিয়া মার্টনিয়ার রক্ষার কল্প কামান সক্ষিত করিয়া লাইলেন। এই রিগোডয়ার ফ্রাল্পন লাইলা সমুপান্থিত হইলেন, আউট্রাম তথন সদলে গোমতী অতিক্রম করিয়া ফ্রৈনাদ অভিমূথে যাত্রা করিলেন। এই সমরে সিপাইদিল দক্ষিণপূর্ব হইতে তাহাকে আক্রমণ করে। এক সপ্তাই কাল বোরতর মুক্রের পর (ফ্রইন্টতে ১০ই প্যান্ত) সিপাইদিল পরান্ধিত হইল। ইংরাল্পন একে একে তাহাকের সমন্ত স্থরক্ষিত স্থানই অধিকার করিয়া ছইলেন। সিপাইদিল লাগ্নে ছাড়িয়া প্লায়ন করিল। তথন সেনাপতি কাম্বেল অযোধ্যার সেনাদলকে বিভক্ত করিয়া তাহার সংখ্যারকায্যে এতী হইলেন। উক্ত বর্ষের ১৮ই অক্টোবর লও কানিং সরীক এখানে আসিয়া ধ্বন্ত নগরের প্রাংশ্রম কাণ্য সন্দেন করিল।ত

এই নগরে নানা প্রকার শিশ্পের বাণিজ্য পরিচালিত হইতেছে, তর্মধ্যে সরি, রেশম ও লহরতের কার্যাই প্রসিদ্ধ। ক এক থর কাশ্মীরীবণিক্ এধানে শাল প্রস্তুত্তের কার্যানা স্থাপন করিয়াছে। কাচের বাসন ও কাগজ প্রস্তুত্তের কল প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। কতেগঞ্জ, দিখিজন্তগল্প, সন্নাদংগঞ্জ, শাহপঞ্জ, চিক্মণ্ডী ও নথাস্ প্রভাতে থানের বিস্তৃত হাটে খানীর শস্তুত প্রানের বিস্তৃত হাটে খানীর শস্তুত থানের বিস্তৃতি প্রস্তুতি প্রস্তুত্তি প্রস্তিত্তি প্রস্তুত্তি প্

শিক্ষাবিভাগে মাটিনেরার ব্যতীত লাখ্নোর কানিং কলেজ প্রসিদ্ধঃ বিভাগীর কমিননর শেবোক্ত কলেজের সভাপতি। এতান্তর আমেরিকান মিসনের অধীনে ৭টা ও ইংলিস চার্চ নিসনের অধীনে ৫টা বিভাগর আছে। হিন্দুর্নীদিগের বাছ্যবন্ত্র ও সলীতশিক্ষার কল্প এবানে অনেক ওভাবের অধীনে বিভাগর পরিচালিত ক্ইভেছে। লাখ্নোর দেশীর রক্তবক্ত সাধারণের আদরের জিনিস। ঐ রকাশরের অভিনীত প্রকল্প ভারত-বাসী ইংরাজগণের জীবনী লইবা সাধারণতঃ রচিত। লাখ্পতি (দেশৰ) > ধনশালী ব্যক্তি। যিনি লক্ষ্যুৱার অধিকারী।

শেন, তিনি নগর উদ্বাধের আশা পোষণ করিরা প্রধান সেনা্রুলাথ ব্রাজ (আরবী) নিকর ভূমি ক্রির কোন থাজনা দিতে
পতির আগমন প্রতীক্ষা করিভেলিন। এই সময়ে অবসর

लांश् द्रांकी (भावनी) नाश्दाकक्क स्मि।

লাথেরী, বোষাই প্রেনিডেন্সীবাসী আতিবিশেষ। লাক্ষা হইতে চ্ডি প্রভৃতি গ্রন্থত করাই ইহাদের উপজীবিকা। তাহারা বলে বে, তাহাদের পূর্ব্ধপুরুষণণ মারবাড় হইতে আত্মননগর, ধারবাড় প্রভৃতি দাক্ষিণাতোর প্রধান প্রধান মগরে আদিয়া বাস করিয়াছে। সকলেই হিন্দুধর্মাবলম্বী। তাহাদের মধ্যে শ্রেণিগত কোনরূপ বিভাগ নাই। এক উপাধিবিশিষ্ট বাজির মধ্যে আহাম প্রদান চলে না। বালাজীর প্রতিস্থিতি ও তিরুপতির বাজোবা মৃথিই তাহাদের প্রধান উপাশ্র দেবতা। বিবাহাদিতে ভাহারা মন্তপান করে।

ৰমণীগণ ও ৰালকেরা পুরুষের সহিত একতা চুড়ি প্রস্তুত করে। ভাহারা স্থানীয় কুনবিদিগের অপেকা সামাজিক मधामात्र डेक এवः बाक्रनिम्हात्र चारमका हीन । जिम्हा, महन्त्रा, निवानी, এकाननी ও निवताजि शद्य हेशता उभवागानि कतिया থাকে। কাতকর্ম ও অস্ত্যেষ্টি ব্যতীত তাহাদের আরু অন্ত কোন সংখ্যার নাই। জাতকর্ম অনেকটা উচ্চ হিন্দুর মত। বিবাহকার্যো রমণীরা মারবাড়ীভাষার গান করিয়া থাকে। ব্রাহ্মণ আসিয়া সম্প্রদান করে। সিন্দ্রদানই বিবাহের বিবাহাত্তে বর কন্তাকে স্বগৃহে লইয়া বায় প্ৰধান অন। এবং সাম্মীয়কুটুম্দিগকে একটা ভোজ দেয়। বালিকাবধ अভ্যতী হইলে তিন দিন অশৌচ থাকে। চতুর্থ দিনে ভাহার গাত্রে হরিদ্রা লেপন করিয়া উষ্ট কলে দান করান হয়। পরে ब्रम्भीता व्यानित्रा रानिकांत्र ब्काएं ठाउँन, नातित्कन, नक्ष कन ও পাণ দিয়া থাকে। তদনস্তর সে স্বানিসহবাস করিতে পায়। একৰৎসরের অনধিক বর্ব বয়স্ক শিশুদিগের মৃত্যু विम्ति काशनिशत्क श्विता स्मता; कपूर्व नकत्नतहे शाहक ব্যবস্থা আছে। মৃতের পুত্র বা নিকট আত্মীয় দাহাস্তে ক্ষোরকুর্দ্ধ कतियां ७६ हत । तारे पिन ता चहत्व शांक करत मां। त्कांन আন্মীরের বাটাতে খিচুড়ী খাইরা থাকে। তৃতীয়দিনে ভাহারা মুতের জন্মরাশি একত্র করে এবং দ্বি ও ত গুল থার। স্ব্রিনে ভাহারা ব্রাহ্মণ ডাকিরা মৃডের উদ্দেশে গৃহে বসিরা পিঞ্চ এবং ৰামণাহে আশ্বীর কুটুৰ্দিগকে একটা ভোজ দেৱ। ছব মানে ৰাক্সাদিক প্ৰাছে ও বৎসৱাছে বাৎসন্তিক প্ৰাছেও ভাহাৱা স্কাভি-জ্ঞোল বিবা বাকে। মহালয়া পক্ষেও ভাহায়া পিভূগণের উদ্দেশ্যে क्षांक करतः। बाजीवे शकावक शांबाक्षिक विवासक विश्वाकि

করিরা থাকে। তাহাদের মধ্যে বাল্যবিবাহ, বছবিবাহ ও বিধবা-বিবাহ প্রচলিত আছে।

লাগ লাগ, পক্ষিবিশেষ (Oiconia alba)।

লাগা (দেশৰ) > কোন জব্যের সহিত মিলিভ হওরা । বিস্থাদ করা।

नाशाहि (प्तनज) मः वान भर्गसः।

লাগাইদ্ (হিন্দী) সেই সমর পর্যান্ত।

লাগাইল (দেশজ) নিৰ্ট পৰাত্ত। ঠিক্ পশ্চাতে। হেরাছেরি। লাগাও (দেশজ) > বেত্রাঘাতের আজা। ২ মারা। ৩ পার্বস্থ। লাগান (দেশজ) এক ব্যক্তির নিকট অন্ত ব্যক্তির নিন্দাবাদ

শুনিরা নিশিত ব্যক্তির নিকট ভাহা কহা।

লাগানঘাট (দেশস্থ) মলীর যে ছানে নৌকাদি বান্ধা হয়, সাধারণ লোকে যে স্থানে নৌকা হইতে উঠিরা ও নামিরা ঘাতা-য়াত করে, তাহাকে লাগান-ঘাট, ধেরাঘাটা বা পারঘাটা কহে।

শাহাগাম (পারদী) অধ্যক্ষরজ্ঞ।

লাগালাগি (দেশজ) একজনের কথা আর একজনের নিকট বলা। কোন লোকের একজনের কুৎসাদি শুনিয়া আবার ভাহার

निक्रे प्रहे कथा वना।

লাগুড়িক (তি) > লগুড়ব্ক । ২ প্রহরী।

লাগোয়া (দেশজ) পাৰ্যস্থিত।

লাব, শক্তি, সামর্থা। ভাৃদি° আক্সনে° অবক° সেট্। লট্ লাঘতে। লিট্ ররাঘে। লুট্ রাঘিতা। লুঙ্ অবাণিই। ণিচ্লাঘরতি। লুঙ্ অললাখং।

লাঘরকোলস ংপুং) কামলা রোগের প্রকারভেদ।

লাঘ্ব (ক্লী) লংগাজাব: কর্ম্ম বা (ইগস্তাচ্চ লবুপ্র্বাং। পা ৫। ২।১৩১) ইতি অণ্। ১ আরোগ্য। (রাজনি°) ২ লবুড, লবুর ভাব। ৩ অরম্ব। ৪ ক্লৈবা।

(養料有 8> | >9)

লাঘবায়ন (গং) গ্ৰহকৰ্কভেন। ইনি একথানি শ্ৰোভত্ত ও ভাহার ভাল্য প্ৰণয়ন করেন।

लाचिक (बि) मःचित्र।

^দলাকাকায়নি (পুং) লন্ধর অপত্য টি (পা[°] গাসমূচ৮)

লাক্ষারন (প্রে) নবের সোত্রাপত্য ৷ (পা° ৪৮১৮৯)

লাক্ষল (গৃং) শক্ষতীতি লগি গতে বাহুদ্দাৎ কলচ্। (গুছিত থাজোঃ। উণ্ ১ ৷ ১০৮) খনামধ্যাত ভূমিকর্মণমন্ত্র। পর্যান্ত হল, সোলারণ, মীর, হাল, শীর। (ভারত) ২ লিল। (ত্রিকণ) ত প্তাবিশেষ। ৪ তালবুক। ৫ গৃহধান। (ত্রেকিনী) লাক্তলক (পু:) লাক্তনাকার ভগলনহছেদ বিশেব। ভগলনহরোগ হইলে অন্তর্নার লাললের ভার যে ছেদ করা হর, তাহাকে লাক্তন কহে। "কুটা সহিতঃ হলাকার: পার্বহয়ে, বস্কে: স সন্দুর্ণ-হলাকার:"(বাভট উ°২৮ অ°) স্ক্লেড মডে, ছই পার্ব সমান-ভাগে ছেদ করিলে ভাহাকে লাক্তনক কচে।

"ৰাভ্যাং সমাভ্যাং পাৰ্যাভ্যাং ছেলো লাক্লকো মভঃ।'²

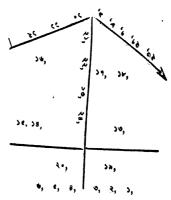
(হুশুত চি॰ ৮ জ •)

লাকলকী (ন্ত্রী) नावनीक्প, বিবলাসূলিরা।

লাঙ্গল গ্ৰহ (পুং) লাঙ্গণং গৃদ্ধাতি (শক্তিলাজলাঙ্গণটিডোমর-ধটধটীধকু:যু। পাও।২।১) ইত্যক্ত ৰাৰ্ত্তিকোক্ত্যা জচ্। কৃষক।

লাসল গ্ৰহণ (क्री) লাজলধারণ।

লাঙ্গলচক্র (ক্লী) লাঙ্গলাকারং চক্রং। ক্বরিকার্য্যের গুভাওভ-জ্ঞাপক চক্রবিশেষ। এই চক্রাহ্মসারে গণনা ক্রিলে ক্ববিকার্য্যে গুভ বা অগুভ হইবে, তাহা জানা যার।



লাঙ্গলের আরুতি অভিত করিয়া ঐ রূপে নক্ষত্রবিভাস করিয়া গুভাগুভ নির্ণয় করিতে হয়।

"পালপং দণ্ডিকাৰ্পযোজ্ ব্যুসমন্তিম। দণ্ডিকাদি লিখেৎ ভানি দিনেশাক্রান্তভাদিতঃ ॥ দণ্ডিকাৰ্ল্যুপানাং বিষিশ্বানে ত্রিকং ত্রিকম্। বোজু ব্যোক্ত ক্রিক্টেঞ্চৰ মধ্যে পঞ্চাগ্রকে বিকম্ ॥ দণ্ডত্বে চ গবাং হানির্পক্তে স্বামিনো ভ্রুম্। লক্ষ্রীগাললযোক্তে স্যাৎ ক্লেত্রায়ন্তদিনক্র কে ॥"

(ন্যোভিন্তৰ)

এই চক্র নাজনাকার করিতে হইবে, এই মস্ত ইহার নাম নাজনচক্র হইরাছে। যে দিন গণনা করিতে হইছে, সেই দিন প্র্যাক্রান্ত নক্ষত্র ধরিরা গণনা করিবে। নক্ষত্র সক্ষ ব্যাস্থানে বিস্তাস করিরা দেখিতে হইবে বে, সেই দিনের নক্ষত্র কোন স্থানে আছে, যদি দণ্ডে থাকে তাহা হইলে গোছানি,
মৃণত্ব হইলে আমিভর, লাজন ও বোক্তে হুইলে লন্ধীলাভ হর।
ক্লতরাং লাজন ও বোক্তি শ্বিত নক্ষত্রে ক্লেকর্ম করিলে
ক্রিকার্য্যে গুডফন হইরা থাকে।

লাক্সলদণ্ড (পুং) নালনত দণ্ডঃ। নালনের জীন, পর্যার জীনা, জীবা। (শক্ষরজা°)

লাক্লপদ্ধক (পুং) > বলরাম। (ত্রি) ২ লাজল যাহার বংশচিহু। লাক্লপদ্ধক্তি (ত্রী) লাজলন্ত পছডিঃ। লাজলরেখা, চলিড নিরাল। পর্যায়—শীতা, নীতা। (শব্দর্শা)

লাক্সলফাল (পং রী) লালনের অগ্রভাগত্ব লৌহকলক।

लाक्रलाचा (वि) विश्वाकृतिया नामक क्रकालन ।

লাঙ্গলাপকর্ষিন্ (তি) > नाङ्गन অপকর্ষণকারী। (পুং) ২ বৃষ।

লাকলায়ন (পং) লাকলের গোত্রাপত্য।

नाञ्चलाञ्चरा (जो) नाचनिया क्रा

लाञ्चल (पूर) नावनी।

লাক্সলিক (প্ং) নাল্লবং আঞ্তিরভাতেতি। নাল্ল-ঠন্। স্বাবর্ষিকভেদ। (হেম)

লাকলিকা (ত্রী) লাকলমিবাকারোহস্কাজা ইতি ঠন-টাপ্। লাকলীবৃক্ষ। (শক্ষরজাণ)

> "ক্রলাঙ্গলিকামূলং হিজ্জলন্ত তথৈব চ। তেন ব্রণমূখং লিশুং শল্যো নিঃসর্তি ক্লণাৎ ॥"

(গঙ্গড়পু• ১৯২ **অ**°)

লাঙ্গলিকী (ত্রী) নালল-ঠন্-ঙীব্। বৃক্ষবিশেষ। নালনিয়া, চলিত বিবলাগলিয়া, পর্য্যায়—অগ্নিশিখা, অগ্নিজালা, নালনিয়া, নাললী, গৈরী, দীপ্রা, হলিনী, গর্ডঘাতিনী, অগ্নিজহনা, ইন্দ্রপূপা, অগ্নিম্ধী, বহিশিখা। ইহার গুণ—কুষ্ঠ ও ছইরণনাশক।(রাজনি) লাঙ্গলিন্ (প্রং) নালনমন্তাভেতি নালন-ইনি। ১ বনরাম। (শক্ষার্মণ) ২ নারিকেল।

"নারিকেলো দৃঢ়ফলো লাজনী কুঠেশার্ক:।

তুলস্কক্ষণাশ্চিব তুগরাল: সদাফল:।" (ভাবপ্র°)

ত সর্প। (শষ্ট)(বি) ৪ লাজনবিশিষ্ট।
"ভবাদীং পিজলো গার্গান্তিজটো নাম বৈ ছিল:।
কভর্ত্তিব্নে নিভাং ফালকুফাললাললী।"(রামারণ ২০২।০০)
বিষাং ভীব্। ৫ নদীবিশেষ। (মার্কণ পু॰ ৫৭।২৯)

বাঙ্গলী (ত্ত্ৰী) লাজলাকারোহতান্তা: ইতি লাজল-জচ্-ত্তীব্। লাজলাকার পূন্দ, জলজদাকবিশেব। এই শাক জলে জজে এবং ইহার পূন্দ লাজলাক্ততি, চলিত কাঁচড়া শাক। পর্যার— শারণী, ভোষপিয়লী, শকুলাবনী, জলাকী, জলপিয়লী, পিত্তলা, ভাষাদিনী, মংতগন্ধা, কলিকারী। (রাজনি°) ২ শালপর্ণী। "দ্বিরা বিদারীগন্ধা চ শালপর্ণান্তমত্যপি।

লাগলী কলসী চৈব ক্রোষ্ট্রপুছে। গুহা মতা ॥"(গরুড়পু৽ ২০৮অ০) লাগ্রনীশা, শিবলিগডেদ। (সৌরপুরাণ ৬অঃ)

লাঙ্গলীয়া (জী)(এডি পররূপং। পা ৬।১।৯৪) ইতি স্থত্ত বার্ডিকোন্ডা; নাধুং। জব শব্দ পরে লাঙ্গলন্দের অফারটা লোপ হইরা এই শব্দী দাধু হইরাছে। লাঙ্গলের জবা বা দশু।

লাক্সল (ক্লী) পুছে। (অমরটীকা সারস্থ•)

লাকুল (ক্নী) লল (ধর্জিপিঞ্জাদিড্য উরোলচৌ। উপ্ ৪।৯০)
ইতি উলচ্, বাহলকাং বৃদ্ধিত। পশুদিগের পশ্চাহর্তী লখমান লোমাগ্রাবরর বিশেষ, চলিত লেজ। পার্যার—পুচ্চ, লুম, বালহত্ত, বালধি, লকুল, লাকুল, লুলাম, আবাল, লঞ্জ, পিচ্চ, বাল। (জটাধর) গোলাকুলের জল মন্তকে দিলে পাপ বিনষ্ট হয়। এই জল তীর্থজনের ভার পবিত্র।

"নাঙ্গলেনাদ্ভং ভোরং মৃদ্বা গৃহ্লাভি যো নর:। দর্মতীর্থফলং প্রাণ্য দর্মপাপৈ: প্রমৃচ্যতে॥" (বরাহপু•) ২ শেফ। (মেদিনী) ও কুশূল।

লাকুলিন্ (পুং) প্রশন্তং লাকুলমন্ত্যভেতি লাকুল-ইনি।
> বানর। ২ ঋষভ নামেবিধ।

লাঙ্গুলিয়া, মধ্যপ্রদেশে প্রবাহিত একটা নদী। সম্ভবতঃ ইহাই প্রাণোক্ত লাঞ্চলিনী নদী(?)।

লাঙ্গুলীকা (খ্রী) নাঙ্গুলাফতিরস্কাঞা ইতি নাঙ্গুল-ঠন্। পুলিপ্নী। (রান্ধনি•)

লাঞ্, বল্ল, চিহ্ন। ভালি পরত্মৈ সক সেট্ন লট্লাহ্ছি। দুঙ্অলাহীং।

লাজ, ১ ভংগন। ২ ভর্ন। ভাৃদি° পরত্থৈ সক্° সেট্। লট্ শাজতি। শুঙ্জনাজীং।

লোজ (ক্লী) লাজ-জচ্। ১ উধীর। (মেদিনী) ২ ভৃষ্টধান্ত। চলিত ধই, সকল ধান ভাজিলেই যে ধই হয়, তাহা নহে। কনকচুর প্রভৃতি কএক প্রকার ধান আছে, তাহা ভাজিলেই ধই হয়।

"বেৰাং স্থান্ত গু লান্তানি ধাঞ্চানি সতুষাণি চ।

ভূষাণি ক্টিভান্থাৰ্কালানীতি মনীবিদঃ ॥" (ভাবপ্ৰাণ)

বে সকল থান্তে তওুল আছে, সেই সকল সতুব-থান্ত ভাজিলে কৃটিরা বে জক্য প্রস্তুত হর, তাহাকে লাজ এবং চলিত কথার ঘই কহে। তথ[়] মধুররস, শীতবীর্যা, লযু, অগ্নিসলীপক, মলমুত্রের অরতাকারক, কক্ষ, বলকারক; পিত, কফ্, বমি, মতীসার, লাহ, রক্তহোব, প্রমেহ, মেদ ও লিপাসালালক। (ভাবপ্রত)(পুং) লাজ-জচ্। ২ আন্তেও্ল। (মিনিনী) জিতপ্র (ক্নী) লাজকুত তর্পণ। লাচন্ত্র স্ক্

লাজতর্পণ (রী) নামকৃতং ভর্শণং। নাধশক কৃত্ব ভর্শাহিশের।

"नारवयार्क्तिङः कामः नित्रमः ज्याविष्य । শর্করামধুসংযুক্তং পারদেরাজতর্পণ্ম্ " (ভাবপ্র° জরচি॰) দাহ ও বমিতে রোগী অতিশর কাতর হইলে শর্করা ও মধুসংৰোগ করিয়া লাজভর্পণ প্রয়োগ করা বাইতে পারে। ধই উত্তমত্রপে চূর্ণ করিয়া ইহা প্রস্তুত করিতে হয়।

লাক্সপেয়া (নী) লাজেন কতা পেরা। খইরের মণ্ড। "লাব্দপেরা প্রনন্ত্রী তু ক্ষামকণ্ঠন্ত দেহিন:।

क्षु कामानित विनाक्किरतानिनी॥" (ताक्षव) লা জভুক্তে (পুং) লাজস ভক্ত:। খণিভক্ত, খইরের ভাত। গুণ---नव्, नीठन, अधिनौशिकत, मधुत, वनकत, निजा ও कृतिकत, ক্ষ ও পিত্তনাশক এবং ত্রণশোধনকারী।

"লাজভক্তো লঘু: শীতশ্চামিদীপ্রিকরো মধু:। বুষ্যো নিজাক্ষচিকর: কঞ্চপিত্তবিনাশক:। ত্রণশোধনকারী সাচ্বিভি: পরিকীর্ত্তিত: ॥" (বৈশ্বক্নি•)

लोक्काल (प्रः) नोक्छ मणः। बहेरात मणः। লাজবর্ণ (ত্রী) লাজত বর্ণ ইব বর্ণো বতাঃ। অসাধ্য লুতা-ীবিশেষ। (সুশ্রুত করহা• ৮ অ•)

লাজশ[স]ক্তু (ন্ত্রী) লাজভ শক্তঃ। ধইরের ছাতু, ধই উত্তমরূপে চুর্ণ করিলে লাজশক্ত হয়।

লাজহোম (ফ্লী) লাজদারা ক্বত হোমবিশেষ।

लां का (तो) नाम-पक्-छान्। > व्यक्त । २ कृष्टेशाम, थरे। পর্যায় — অক্ষত, অক্ষতা। গুণ - তৃষ্ণা, ছর্দি, অতীদার, প্রমেহ, टमन ও ककनानक, काम ও পিরোপণমক, অগ্নিকারক, লব ও শীতল। ইহার মওগুণ-অগ্নিকারক, দাহ, তৃষ্ণা, জর ও অতীসারনাশক, অশেষ দোষনাশক ও আমপাচক। ইহার পেয়া-खन-कामकार्श्वत समगानक, क्या, क्या, मानि, तोव ना छ কুক্মিরোগনাশক। (রাজনি•) (পুং) ও ভূমা।

লাঞ্জন (ক্লী) লাছ-পুট্। > নাম। ২ চিছ। (মেদিনী) "দিবাপি নিষ্ঠ্যতমন্ত্ৰীচিভাষা

বালাদনা বিছতলাছনেন।" (কুমার ৭৩৫)

लाञ्चक (पनव) नव्यानीन।

(পুং) ও রাণীধাস্ত। (রাজনি¹) কোন কোন পুস্তকে লাহুনী এইব্লপ পাঠান্তর দেখা যায়।

লাপ্তি, মধ্যপ্রদেশের বালাঘাট জেলার বুর্হা তহসীলের অন্তর্গত একটা নগর। জকা ২১°৩০ উ: এবং জাখি ৮০°৩৫ পূ:। এই নগরের চারিদিক্ পুষ্রিণী ঘারা পরিবেটিত এবং উত্তরাংশ গভীর ৰূপলে সমাজ্ঞাদিত। ঐ বনাস্তরাল মধ্যে একটা প্রাচীন শিব্যন্তির ও কতকভাল ধান্ত অটালিকান্ত প বেখা বার। তাহা व्याहीम नामि नगरतम भवरनय विनम्नार मरन रम। जनारन XVII

একটা হুৰ্গ অসংস্কৃত অবস্থার পতিত রহিরাছে। সম্ভবতঃ ১৭০০ খুটাব্দের নিকটবন্তী কোন সময়ে গোঁড়-রাজগণ ঐ ছর্গ নির্দ্ধাণ করাইয়াছিলেন। এ হুর্গ পরিখার প্রান্তভাবে লাঞ্চাই নামে কালীমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত একটা দেবালয় আছে। উক্ত দেবীমূর্ত্তির नामाञ्चनाद्वर এই नगद्वत नामकत्व इहेब्राट्य।

লাট (গং) দেশবিশেষ। বর্ত্তমান গুলরাট প্রদেশের প্রাক্তভাগ। **"দদৌ তদৈ সপ্তায় প্রতি**। বীরবরায় চ।

লাটদেশে ততো রাজাং সক্রণটিযুতে নূপ ॥"(ক্থাসরিৎসা°৭৮।১১৯)

নর্ম্মদানদীর মোহানা ও মহী নদীর তীরত্ব গুজরাত এবং খান্দেশ বিভাগ লইয়া এই প্রাচীন জনপদ গঠিত ছিল। প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থে ইহা লাট নামে প্রসিদ্ধ। মুসলমান ভৌগোলিক মহাণী (A D. 940 Vol. 1. 881), অল্ বিরুণী (A D 1020 in Elliot. I. 66) এবং টলেমি AD. 150, VII. ii. 63), পেরিপ্লাস প্রভৃতি ইহাকে শাড়, লারিদ বা লারিয়াক নামে উল্লেখ করিয়াছেন। তাঁহারা এই জনপদের স্থাননিগর সম্বন্ধে নানা স্থানের নাম নির্দেশ করিয়া थारकन। व्यविक्रनी, व्याद्वा कामा ও हेवन् रेमग्रम वर्णन (व, ঠানা ও সোমনাথ পত্তন লইয়া এই লাটদেশ গঠিত হয়। মুসলমান বণিক স্থালেমান কাম্বে উপসাগর হইতে মলবার উপকৃষ পর্যান্ত সাগরাংশকে লাটসমুদ্র বলিয়া লিখিয়া গিয়াছেন। মহুদী হৈম্ব, স্থপার, ঠানা ও **অফ্রান্ত** নগর লইয়া লারিয়া (লাট) প্রদেশের সীমা নির্দেশ করিয়া যান। বর্ত্তমান প্রত্নতত্ত্ববিদ্গণের সিদ্ধান্ত অ্রাট, ভরোচ, কৈরা ও বড়োদার কতকাংশ শইরা এই লাট দেশ গঠিত হইয়াছিল।

এই স্থানের অধিবাদিগণ লাট (লাড়) জাতি নামে পরিচিত। ইহারা অন্হিলবাড়রাজের অধীন ছিল। কোন কারণে তাহাদের প্রতি অসম্ভূষ্ট হইরা রাজা কুমারপাল লাটদিগকে রাজ্য হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দেন। তদবধি তাহারা ভারতের নানা ভানে যাইয়া বাস করিয়াছে। রাজপুতনার মরুদেঁশে, বেরারের মৈকের বিভাগে এখনও এই জাতির বাস আছে। তবে ভাহারা আর সেরপ স্থবিস্থত ভাবে ও প্রাচীন নামে পরিচিত नरह। देशात्रा नकरनदे हिन्तू, व्यावात्र व्यरनरक रेकनशर्त्रा । গ্রহণ করিয়াছে। রাজপুতনার লাড়গণ ব্যবসা-বাণিজ্যে লিপ্ত আছে, বেরারের লাড়েরা রেশমী বত্র বরন করে। বিখ্যাত ভ্রমণকারী টাভার্ণিয়ার মলবার উপকূলে এবং পুনবার্ণ সিংহল দ্বীপে লাড়ী নামে এক প্রকার পাকান ধাড়ব মুদ্রার প্রচলন দেখিরাছিলেন। সম্ভবতঃ ঐ মূলা হুপ্রাচীন লাট দেশে প্রচলিত ছিল এবং পরে সেই নামের অপত্রংল কাড়ী নামে থাত হইরাছিল। [আর্থাবর্ত ও লাহরী বন্দর দেখা]

২ বন্ধ। (মেদিনা) ও জার্গভূষণাদি। (শব্দর্জা॰)
লাটি (ইংরাজী Lord শব্দের অপজ্ঞংশ)। বাঙ্গালায় লাট
সাহের অর্থে গ্রব্পর-জেনারল এবং ছোট লাট সাহের অর্থ লেক্টেনানট গ্রব্পরকেই ব্যায়। কথন কথন সাম্প্রিক ও
রাজকায় বিভাগের প্রাক্তনিবিষয়কে অলীলাট সাহের ও মৃর্কী
লাট সাহের বর্গা হয়। হিন্তুলীরা চিফ্জাষ্টিস্কে লাট জাষ্টি
সাহের এবং লও বিশপ্কে লাট্ পাক্রিং সাহের বংগন। ১৮২৪
খুটান্ধে বিশপ হেবার লাট সাহের ও লাট পাত্রি শব্দের উল্লেখ
ক্রিয়া গিয়াছেন।

দেশার ভাষায় লাট শব্দে লর্ডের ন্থায় স্থানস্চক অর্থ ও প্রকাশ করে, যেমন, বাবু যেন লাট। কথন কথন লাট শব্দ শ্লেষায়াক অর্থে বাব্বত ২ইয়া থাকে; যেমন, মেরে লাট কেরের দিব।

লাট (ইংরাজী Lot শক্ষ)। নিলামের সময় উচ্চ মূল্য বিক্রার্থ-রবাসমূহের বিভাগ।

লাটি (হিন্দী ও সংস্কৃত) গুন্ত। উত্তরপশ্চিমভারতে বহু প্রাচীন কাল হইতে কতকগুলি প্রস্তুরক্ত বিরাজিত রহিয়াছে। প্রাচীন কীন্তির আদেশ বলিয়া ঐগুলি বিশেষ বিখ্যাত ও সাধারণের আদেরের আনিস। ইংগ ভিন্ন এই সকল গুন্তের উপর অতি প্রাচীন অকরে যে সকল ইতিবৃত্ত উৎকীর্ণ রহিয়াছে, তাংগ প্রত্রু-তর্ববিদ্যাণের বড়ই চিত্তাকর্ষক, তাংগারা বহুপরিশ্যমে ও আলো-চনা দারা ঐ সকল লি,প্র্যাল। পাঠ করিয়া উহার প্রকৃতত্ত্ব নির্ণয় করেয়া নিয়াছেন। মহামাত জেমস্ প্রিন্দেশ প্রথমে এই বর্ণমালা আবিহার করেন। উহা এখন লাট বর্ণমালা (Late Charater) বলিয়া পরিচিত।

ভারতবর্ষের বিভিন্ন জনপদে এইরূপ লাট-ভন্ত উন্নতমন্তকে দণ্ডায়মান আছে, তন্মধ্যে আলাহাবাদের লাটই স্থপ্রসিদ্ধ। ঐ ভ্রের একপার্থে গুরাজবংশের সামায়ক অক্ষরে এবং অপর পার্থে বৌঠসথাট অশোকের প্রশন্তির অনুরূপ অক্ষরে থোদিত নিপি উৎকীর্ণ হইয়াছে। দিল্লীর লাটের লিপির সহিত কটকের থৌলীনিপির ও গির্পরের পার্ব্বভালিপর বর্ণমালার অনেক সান্ত্র্যালার অন্তক্ষর নালার অন্তক্ষর এতাহাতে কপন্ধাগিরির সেমিতিক অক্ষর-মালার অন্তক্ষর পার্পিও নৃই হইয়া থাকে। ঐ লাটে ২৩টী মাত্র প্রোক্ত উৎকীর্ণ আছে। তাহাতে ভারতবর্ষস্থিত অনপদাদির বিভাগ ও ভাহার নাম, ওৎকালীন রাজবংশের বিবরণ এবং পারভ ও শক্ষাতির বিবরণ লিখিত হইয়াছে। হত্তিনাপুরে চক্রখনার রাজগণের রাজধানী প্রতিষ্ঠিত হইলেও এবং মনুসংহিতা বা মহাভারতে শ্রনেন (জেলার) বিশেষ কোনরূপ উল্লেখ না থাকিনেও আম্রা এই লাট হইছে জানিতে পারি যে, খুইপুর্ব্ব

তম্ন শতাৰে বৌক্ষন্ত্ৰট্ন অশোকের রাঞ্ছকালে এই আলাহাবাদ ভূতাল একটা প্রাসিক স্থান বলিরা গণ্য হট্যাছিল।

২ ভিতরী লাট— গাঞ্জিপুর জেলার অন্তর্গত একটা কছ। উহাতে আলাহাবাদ লাটের অন্তরূপ রাজবংশের পরিচর ও বংশ-তালিকা বিভাগন আহে।

ও দিল্লীলাট - ক্লিরোজন্ত নামে পরিচিত। পাঠানরাজ্ঞ ফিরোজ তোগলক (১৩৫১-১৩৮৮) ইহার শিরোভাগে স্বর্ণময় একটী কলদ লাগাইয়া দেন। তদবধি উহা স্বর্ণলাট বলিয়া খ্যাতি লাভ করিয়াছে। পূর্ব্বকালের ম্প্রাসিদ্ধ ভারতীয় রাজধানী সমগ্র দিল্লী বিভাগে ইহাপেক্ষা আর কোন প্রাচীন নিদর্শন নাই। ইহাই কৌটল্য বিষয়ের অন্তর্ভুক্ত একটী অন্তুত কীর্ত্তিন্ত। পূর্ব্বকাল হইতে এই ক্তম্ত সম্পদ্দে নানা কিংবদন্তী প্রচলিত ছিল,—হিনুগণ উহাকে ভীমসেনের গদা, মুসলমানেরা সম্রাট্ ফিরোজের সমণবৃত্তি এবং কেছ কেছ উহাকে মহাক্সা আলেকসান্দারের পূর্ববিজয়ন্ত্রতন্ত্র এবং টম কোরিয়েই প্রভৃতি প্রাচীন ইংরাজ ভ্রমণকারিগণ উহাকে অশোকন্তন্ত বিলয়াই জানিতেন। পরবর্ত্তিকাকের ম্রোলীয় প্রত্বত্ত্বিন্গণের চেটার উহার প্রকৃত পাঠ উদ্ধৃত হওয়ায় সাধারণের অন অপনোদিত হইয়াছে।

ঐ ত্তম্ভ পূর্বের যমুনার অপর পারে সালোরা জেলার শিবা-লিক পাদমূলত্ব থিজিরাবাদের সন্নিকটে ছিল। পরে উহা দিল্লী-ছারের বহিন্তাগে আনিয়া স্থাপিত করা হইয়াছে। ডাঃ কানিংহাম বলেন যে, ঐ স্তম্ভ প্রাচীন জ্ঞান রাজধানীর কোনস্থানে ছিল, চীনপরিব্রাহ্মক হিউএন্সিয়াং উহার পার্ঘবত্তী থৌদ্ধবিহার ও বুদ্ধ-শ্বতি সংগুক্ত সন্রাট্ অশোকের সমকালীন স্ববৃহৎ ত,পের উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। স্থানীয় প্রবাদ, উক্ত প্রাচীন জনপদ হইতে এই স্তম্ভ শক্টসাহায়ে থিজিয়াবাদে আনীত হয়, পরে তথা হইতে নদীবকে নৌকার উপরি স্থাপিত করিয়া নৃতন দিল্লী রাজধানী किरत्राञ्चावारम मर्थानीण इहेग्राहिल। आस्मानिक ১.৫% शृहीस्म ফিরোদ্ধশাহ হিন্দুর মুধে উহার নিশ্চলতা অবগত হুইয়া বহু অর্থ-বায়ে উহাকে দিল্লীতে আনয়ন করেন। তিনি উহার শিরো-দেশ খেত ও ক্লফবর্ণ প্রস্তারে ফ্লোভিত করিয়া স্থাকলস স্থাপন করিয়াছিলেন। তৎকালে উহা মিনার জরিন নামে প্রাসদ্ধ ছিল। ১৬১১ धृष्टीत्म উইলিয়ম ফিঞ্ দিল্লী নগরে আসিয়া ইংগর স্বর্ণময় কলস ও অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি চুড়ার উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন। তাঁহার মতে উহার নিম্ন কএকতলের উপরিভাগ ভীম-সার প্রস্তরস্তম্ভ বলিয়া কথিত।

ইহা অক্সান্ত অশোকতন্তের ন্তার গাঢ় লালবর্ণ প্রকরে গঠিত। উচ্চ ৪২ ন্দিট্ ৭ ইঞ্চ। উহার উপরিভাগ ৩৫ ফিট্ উৎক্রুট পালিশ-বুক্ত ও মহণ,নিমভাগ বস্থদে। উহার পরিমাণ প্রায় ৮ শর্ড মণ।

এই স্তম্ভগাতে ছইটা প্রধান ও কতকগুলি কুদ্র কুদ্র লিপি উৎ-কীৰ্ণ আছে। তন্মধ্যে খুটপূৰ্ব্ব ৩ন্ন শতান্দের শেষভাগে বৌদ্ধসমাট্ আশোকের প্রশন্তিই সর্কাপেকা প্রাচীন। উহা পালী অকরে निविज । উरात वर्गमाना ভातजीय वर्गमानात मर्सा शाहीन निपर्मन, এখনও উহার অফরাবগী পরিছার খোদিত রহিয়াছে, কেবল মাত্র ছএকটী স্থানে পাথরের চটা উঠিয়া যাওয়ায় সেই স্থানের লিপি নষ্ট হইয়াছে। উহার শেষভাগে একটা ছত্রে সমাট অশোকের এইরূপ অনুজ্ঞা উৎকীর্ণ আছে:--"ধর্মের রক্ষা ट्रिक लिलाअरखानित এই निलायनक छे९कीर्ग कत. यन ইহা আবহমানকাল বিশ্বমান থাকে।" উহার উপরিভাগের চারিপার্বে চারিখানি ও নিমে একথানি শিলালিপি দেখা যায়। পুর্বমুখী কলকের শেষ দশ ছত্র ও অক্তান্ত ফলকগুলির লিপি এই দিল্লীন্তন্তের পার্থকা জ্ঞাপন করিতেছে । দিতীয় একথানি ফলকে চৌহানরাজ বিশাল (বিগ্রহ) দেবের বিজয়বার্তা উৎকীর্ণ রহিয়াছে। উহা পাঠে জানা যায় যে, তিনি হিমাদ্রি হইতে বিশ্বাগিরি পর্যান্ত সমুদায় ভূভাগ একছ ত্রাধীন করিয়াছিলেন।

চৌহান-রাজবংশের গৌরবজ্ঞাপক এই লিপি চুইথণ্ডে বিছক। উহার অর্জাংশ প্রাচীন অংশাকলিপির উপরে এবং শেষার্দ্ধ তাহার নিমে উৎকীর্ণ। উভন্ন লিপিথণ্ডেই ১২২০ সংবৎ লিথিত আছে। নিম্বথণ্ডের বর্ণমালা আধুনিক সংস্কৃত। উহাতে লিথিত আছে, শাকস্তরীরাজ বিশালনেব ১১৬৯ খুটান্দে এই শিলাফলক নৃতন থোদিত করিয়া দেন। ঐরপ আর একটা লাটস্তম্ভ মীরাট হইতে আনীত হইয়া দিল্লীনগরে হাপিত হইয়াছিল। সমাট্ অশোক তাঁহার স্কপ্রসিদ্ধ অন্থণাসন রাজ্ঞান্দের প্রচারার্থ যে সকল শুদ্ধ স্থাপিত করিয়াছিলেন, তাহাতেই পরব্রী রাজ্ঞ ও বৈদেশিক ভ্রমণকারিবর্গ আপন আপন বীরক্ষীন্তি উৎকীর্ণ করিয়া গিয়াছেন, তাহাদের আর নৃতন শুম্ভ নির্মাণের কষ্টভোগ করিছেত হয় নাই।

৪ দিল্লীর লোহস্তম্ব নস্ক্রিদের মধান্ত্রেল স্থাপিত। উচ্চতা ২২ ফিট্ এবং ব্যাস ১৬ ইঞ্চ। প্রস্তুত্ত্ববিৎ প্রিলেপ উহাকে সুধীর তর বা চতুর্থ শতাব্দে নির্মিত বলিয়া অন্থ্যান করেন। উহার গাত্রন্থ লিপি "কনোন্ধী নাগরী" ও অস্তান্ত মিল্লবর্ণনালার লোহ-গাত্র খোদিত। ইহাতে হতিনাপুর-রাজ্যাপহারক রাজা ধব এবং বাহ্লিকাদি জাতির উল্লেব থাকার উহাকে খুটীর পঞ্চম শতানীয় পরবর্ত্তী বলিয়াই মনে হয়।

নগমবোধ—বম্নাতীরবর্তী একটা তীর্থস্থান, দিল্লী হইতে
কএকমাইল দক্ষিপে ছাপিত। চাঁদ কবির বিবরণী হইতে
জানা যার বে, চৌহানরাজবংশের গৌরবপ্রকাশক একটা ভঙ্ক
এথানে বিজ্ঞমান ছিল। কালবণে উহা নাশ প্রাপ্ত হইরাছে।

ও বারাণদীস্থ অংশাকের প্রাশন্তিবৃক্ত ন্তন্ত। উচ্চতা ৪২ ফিট্
৭ ইঞ্চ। ইংলর গাত্রে নানা প্রকার কারুকার্য্য আছে।

৭ গাজিপুরওছ — গাজিপুরে স্থাপিত একটা বৌদকস্ত । উহার বর্ণমালা পূর্ণসংক্ষত নহে, এই কারণে সাধারণের পঞ্চে সহজ্ঞবোধা নহে। ইহার গাত্রে যে শিলাফলক খোদিত আছে, তাহা জ্ঞালাহাবান, দিল্লী প্রভৃতি শুশুর ছায় বৌদ্ধপ্রভাপরি স্থাপিত হইরাছে। উহাতে গুপুরংশীয় সমুদ্রগুর ইইতে যুবরাজ মহেক্রগুপ্রের নাম পাওয়া যায়।

৮ রূপবাস-শৈগস্তম্ভ — ভরতপুর রাজ্যের রূপবাসবিভাগের একটা গণ্ডশৈলোপরি স্থাপিত। ইহা বেলেপাথরে নির্মিত এবং অসম্পূর্ণ অবস্থায় নিপতিত রহিয়াছে। উহার বৃহৎ হুইটার একের উচ্চতা ৩৩। ি ফিটু এবং অপরচীর ২২। ি ফিটু।

৯ ধোলীস্তম্ভ — কটকের ধোলীগ্রামে অবস্থিত। ইহাতে লাটবর্ণমালা এবং মধ্যে মধ্যে বলজীও সিওনী লিপির অক্ষর-মালা দৃষ্ট হয়। উড়িষ্যা-বিভাগে যে সকল অপোকস্তম্ভ প্রতি-ষ্ঠিত আছে, তৎসমুদায়ই বেলেপাথরে গঠিত।

১০ জ্নরগুন্ত-ইংহাতে গুইখানি শিলাফণক উৎকীর্ণ আছে। নানাঘাটের ভঙোপরি উৎকীর্ণ লিপির সহিত দিল্লী-ভঙ্কের ও গির্ণর পর্বতন্ত শিলাফলকের সৌসানৃভ আছে। গির্ণরের পার্বত্য-লিপিকে জেমদ্ প্রিন্সেপ্ন পালি বলিয়া অনুমান করেন।

गाउँ मिशि।

মহামতি কর্ণেল টড্রাজস্থানের প্রাচীন কীর্ত্তি ও স্তম্ভগোদিত निश्मिमाना मिथिया मुक्ककार्थ विनियाहितन, "प्याध हेन अह, প্রয়াগ, মেবার, জুনাগড়ের শৈণমালা, বিজ্লী ও আরাবল্লী শিথরে স্থাপিত শুস্থানির, পর্ব্বতগাত্রণোদিত শিপির এবং ভারতের সর্বার প্রতিষ্ঠিত জৈন ও বৌদ্ধান্দিরাদিতে উংকীর্ণ শিলাফলকসমূহের প্রক্লত ভব অবগত হইতে পারিলে, অবশুই আমরা ভারতবর্ষের প্রাচীন ইতিবৃত্ত আলোচনা করিতে অগ্র-সর হইতে পারি।" সেই মহৎ সন্ধলে এতী হইরা মহামতি জেমদ প্রিন্দেপ্ গভীর গবেষণার গহিত ভারতীয় প্রত্যাম-শীলনে যত্নবান হন। তিনি প্রথমে লাটলিপি উদ্ধারে ক্লত-সম্ভল্ল হট্যা পর্যাবেক্ষণ করিতে করিতে বৃথিতে পারিলেন যে, উহা পালী ও সংস্কৃত ভাষার মিশ্রণে গঠিত। উহার বিশেষা ও অপরাপর পদশুলি পালিবিভক্তি ও প্রভারযোগে সাধিত এবং ক্রিয়াপদগুলি প্রায় সংস্কৃত হইতে গৃহীত হইয়াছে। ভিল্সা ন্তাক্তেও গুপ্তবংশীর ফলকাদির অত্মনপ ভাষার প্রয়োগ আছে: তিনিই প্রথমে ভিণ্সা স্তম্ভের সংখ্যানিরূপণ ছারা ভালনির্ণার

সমৰ্থ হইবাছিলেন। বৌদ্বতভাদিতে প্ৰবিভাস ধারা কাল্যান বৰ্ণিত দেশা বাম।

লাটলিপির অকরমানা প্রাচীন ব্রাক্টীলিপি ভিরু আর কিছুই
নহে। গুভোপরি ভিরু অন্তর ঐরপ বর্ধমানা দুই না হওরার উহা
লাটলিপি বলিরাই প্রেসিছ। আক্সানস্থানের কপর্মীগিরির
বর্ণমানা উহা অপেকা কিছু বৃহৎ এবং প্রাচীন নেমিভিক-ধরণে
অভিত; কিন্তু কটক, নিত্তী, আলাহাবাদ, বেভিরা, মুলটিরা ও
রাধিরা প্রভৃতি শ্বাক্তীর ব্যক্তীর ব্যক্তী।

উপরে যতপ্রালি নাটডভের কথা বিবৃত হইন, তৎসমুদারের আফতি ভিন্ন ভিন্ন। কোনটা চতুছোল, কোনটা পলকটা, কোনটা বা কোনকার গোল, ঐ সকলের মধ্যে দিল্লীর ফিরোজভঙ্ক নামে পরিচিত লাটই সাধারণে স্থপরিচিত। উহা একটা উচ্চ জটালিকার উপরি হাপিত। বে স্থানে এই ভক্ত গৃহছাদে সংস্থাপিত হইরাছে, তথার উহার পরিধি ১০৪০ কিট্; উহার ৩৭ কিট্ মন্ত্রপাংশ একথও কঠিন গোলাকার প্রভাৱে গঠিত। ইহার উপরের লাটলিপি বছপ্রাচীন এবং নিম্নেশে অপেকাঞ্চত পর্বর্তিকালের সংস্কৃত অক্ষরে খোরিত আর একখানি শিলাকলক উৎকীর্ণ আছে।

অধুনা বৌদ্দরাট অপোকের প্রতিষ্ঠিত বে চতুর্দ্দটী লাটকল আবিষ্ঠত হইলাছে, ভাহাতে যে সকল রালাফ্শাসন বিবৃত
আছে, সাধারণের অবগতির জন্ম নিয়ে তাহা উদ্ভ হইল:
---অপোকের অবগতির জন্ম নিয়ে তাহার বিবয়।

১ম--- ৰাছাৰ্থে বা বজ্ঞাৰ্থে পশুহিংসার নিবেধ এবং ধর্মনীতির পরিবছার্থ আদেশ।

ইর-নরাঞ্জানর আরুর্কেবশিক্ষা প্রচার ও বিনামূল্যে হৃঃছ্
প্রঞারর্গের চিকিৎসাব্যবদ্ধা, পথপার্থে কৃপথনন ও বৃক্ষরোপণ।

তর-প্রারণশীর রাজস্বকালের স্বাধশবার্বিক সমারোহপ্রচার ও পঞ্চমবার্ধিক রাজান্তগত্য বা রাজস্বিক্রিপ্রনর্শন।

৪র্ব – প্রিরদ্ধীর রাজত্বালের বিগত বাদশবার্বিক রাজ্য-শাসনের সহিত বর্তধান নির্বিরোধ রাজত্বের সামজত প্রচার।

व्य—त्वोद्धश्रवं थातावार्थं श्रवं श्रवः ।

৬৯ পতিবেৰৰ, রাজ্যরক্ষ, ধর্মান্তক্রণ প্রভৃতি প্রে বাজিবিশেষকে নিযুক্ত করিয়া রাজ্যের মূলল ব্যবহাপ্রচার।

গ্ৰ--বিভিন্ন ধর্মসভাবারের মত পার্থক্যের সামলত সাধন করিয়া ঐক্য-মত স্থাপনে যালায় আগ্রহজাপন।

৮ম – পূৰ্ববন্তী হাজগণের পার্থিব ভেল্লবিলানের সহিত দীয় নিরীয় আবোদের পার্থিয়ানির্দেশ ও পবিষ্ঠিত সামুপুরুষ সন্দান, ডিফালান ও বর্মপ্তর অভূতি মাননীরগণকে ব্যাবোদ্য স্থাননা লানের অভ্তা। ১২—বৰ্ণ ও নীতিবিবহন কৰা, ধৰ্মনাল, বৰ্ণনেৰীৰ অৰ্থ, ভিক্কবিপাকে দান, সৰ্বভানে বৰা ও অফলনবিংগৰ তাতি মাজেক কলনিৰ্দ্ধেশ ও ভাষাৰ কৰিবাজা সৰ্বে আবেশপ্ৰচাৰ।

১০ন—'বশো বা কিভি বা' বাছের নীনালো, জনিতা সংসারের অবিভাজনিত গর্ভের প্রত্যাধ্যান ও নীবস্থৃতির প্রকৃষ্ট পদানির্দেশ।

্ ১১ল—থোলী ও গির্ণর প্রশন্তিতে বর্ণিভ "ধর্ণই ঈশ্বরের সর্ক্ষপ্রেষ্ঠ দান।"

্রংশ—বৌত্তধর্মে অবিবাসীদিসের প্রতি সান্থনরে মতা-তিবাজি।

১৪শ—সমগ্র অনুশাসনের সারমর্শ্ব ও সংক্ষিপ্ত উপদেশ।
লাট্ট(লাড্), কোরাণোক্ত অপদেবতাতের। মহর্মদের সমরে
বামিরা ও কোরেশ লাতি এই বেবতার উপাসনা করিত।
লাটক (পুং) লাটলাতিসববীর।

লাট ডিগুীর, একজন প্রাচীন কবি। কেমেক্সমত স্থান্তিতিলকে ইহার উল্লেখ আছে।

লাটাচার্য্য, একজন প্রনিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিত। লাটিকা (ত্রী) রীতিতের। বৈদতী, পাঞ্চালী, গৌড়ী ও লাটকা এই চারিপ্রকার রীতি। মোটাম্টি রচনাপদ্ধতিকে রীতি বলা বার।

> শ্লাটা তু রীতিবৈদ্ভীপাঞ্চাল্যোরস্করান্থিতা ।" (সাহিত্যদর্পণ ১।৬২৯)

বৈদর্ভী ও পাঞ্চালী রীভির মধ্যন্থিতা বে রীভি ভাষাকে লাটী কহে। তাৎপর্যা এই বে, কেবল বৈদর্জী রীভি অমুসারে রচনা না হইরা ইহার মাঝানাঝি ভাবে যে রচনা হইবে, তাহাই লাটীরীভি। বৈদর্ভী ও পাঞ্চালী এই উভর রীভিরই নিরম অমুসরণ করিয়া যে রচনা, তাহাই লাটী-রীভি। কাহারও কাহার মতে ইহার লক্ষ্

"मृद्धभवनमानञ्चनावृत्तिकर्व देर्गर्न हाजिक् विके।।

উচিডবিশেৰণপুরিতবন্তভাসা ভবেলাটা #

(সাহিত্যদ° > পরি°)

এই বীতিতে নৃহন্ত পদবিজ্ঞান হইবে, স্পথ্য নীৰ্থনজ্ঞান বছল ও নৃত্তবৰ্ধ কৰিক না বাজে এবং উচিত বিলেব বালা বজ বিজ্ঞান হইবে এই নীতি হইবে। এইরূপ ভাবে বিলেবণ প্রারোগ করিতে হইবে বে, বর্ণনীর বস্তব নহিজ্ঞ জাহার নকতি বাজে। স্কৃতিবিধ নক্ষ্য"গোড়ী ভবন্নবল্প জাৎ বৈদ্বালী স্থিতিক্রমাঃ

পাকানী নিজভাবের নাটা কু বৃহত্তিঃ শবৈঃ হ'(কাইডেবেং এপরিং) ক্ষমবাদস্ক রচনা কইবে বৌদী ইতি, বালিকান বিজয় হইলে বৈদৰ্ভী, মিশ্রভাবে পাঞ্চালী এবং মৃহ পদবিস্থাস করিলে লাটী রীভি হর। উদাহরণ যথা—

"সরমূলরতি মুদ্রাভঞ্জনঃ পদ্মিনীনা-মূলরসিরিবনালী বালমন্দারপূন্দা। বিহরবিধুরকোকহন্দ্ববৃদ্ধবিভিন্দন্ কুপিতকপিকপোলক্রোড়ভাশ্রস্তমাংসি ॥"

(সাহিত্যদ° ৯ পরি°)

লাটাকুপ্রাস (গৃং) অন্প্রাস অলম্বারভেন। ইহার লক্ষণ।—
"শব্দার্থরোঃ পৌনক্ষক্তং ভেলে তাৎপর্যানাত্রভঃ।
লাটান্থপ্রাস ইত্যুক্তোহন্ত্রাসঃ পঞ্চধা মতঃ ॥"

(সাহিত্যদ• ১০।৬৩৮)

তাৎপর্যাহসারে শব্দ ও অর্থের পোনকক হইলে এই অলভার হর। এই অলভার লাটজনপ্রির বলিয়া ইহার নাম লাটাহপ্রাস হইয়াছে। উদাহরণ---

"মেররাজীবনয়নে নয়নে কিং নিমীলিতে। প্রভা নির্জিতকলপং কলপ্রশগং প্রিরুম্॥"

(সাহিত্যদ৽ ১০ পরি•)

লাটায়ন (পুং) লাট্যান্বন। লাটিম (দেশজ) ক্রীড়নকভেদ, ছেলেদের একপ্রকার ধেলাইবার জিনিস।

नांगिय (बि) नांग्क ।

লাটেশ্বর, পশ্চিমভারতত্বিত একটা শৈবতীর্থ।

लाष्ट्रि (शिमी) नारिम।

লাট্যায়ন (পুং) শ্রোতস্বপ্রণেতা ঋষিভেদ।

লাঠামাছ (দেশৰ) মংক্তভেদ (Nandus murmoratus)।

लाठि (प्रमब) गश्रफ, रामग्रह ।

লাঠিয়াল (দেশজ) যাহারা লাঠি থেলে। লাঠিবাজ।
লাঠি, বোৰাই প্রেদিডেন্দীর কাঠিরাবাড় বিভাগের গোহেলবাড়
প্রাক্তম্ব একটা সামন্ত রাজ্য। অক্ষা ২১°৪১ হইতে ২১°৪৫
৩০ এবং জাবি ৭১°২০ হইতে ৭১°৩২ পৃ: মধ্য। ভূপরিমাণ
৪৮ বর্গমাইল। এখানকার কতক স্থান গগুলৈলে পূর্ণ এবং
আবিলিপ্তাংশে ক্রফবর্ণ মৃত্তিকা দৃষ্ট হয়। ঐ উর্জার মৃত্তিকার ভূলা,
ইকু ও কলাই শশু প্রচুর জন্ম। নিকটবর্ত্তী ভাবনগর বন্দরে
এখানকার পণ্য ক্রব্যের ক্রম বিক্রম্য হইরা থাকে।

ভাবনগর-রাজবংশের প্রতিষ্ঠাতার মধ্যমন্রাতা শার্ল জী হইতে এথানকার সর্দারবংশের প্রতিষ্ঠা হর। এই বংশীর এক জন ঠাকুর-সর্দার দামাজী গাইকোরাড়কে বীয় ক্লা সমর্শন করেন। ভিনি বিবাহের বৌতুক্তরণ বীয় ক্লাকে ছভারিনামক ভূমপাতি দান করিরাছিলেন। উক্ত সম্পতি একণে দামনগর নামে খ্যাত। গাইকোবাড়রাজ নামালী এই সম্পতিলাভের পর বীর খতরের নিকট হইতে
রাজকর গ্রহণ রহিত করিরা দেন। তদবধি এখানকার নর্দারগণ
উক্ত সম্পতি প্রার নিকর ভোগ করিরা আনিভেছেন এবং
গাইকোবাড়রাজকে প্রতিবর্ধে একটি করিরা অব পাঠাইতে
বাধ্য আছেন। তাঁহার বার্ষিক রাজস্ব ১৯০০ টাকা, তর্জাধ্য
তিনি বড়োদার গাইকোবাড়কে এবং কুনাগড়ের নবাবকে একবোগে ২০০৭ টাকা কর দিয়া থাকেন। তাহাদের নত্তকগ্রহণে
অধিকার নাই। জ্যেষ্ঠ পুত্রই পিতৃপদের অধিকারী। এথানকার
সর্দার বাপ্তা (১৮৮৪ খুঃ) গোহেলবংশীর রাজপ্ত। ইনি
ইংরাজ-রাজসরকারে ৪র্থ শ্রেণীর সামস্করণে গণ্য। ইনি খীর
রাজ্য মধ্যে কোন প্রকার পণ্যস্তব্যের শুক্তগ্রহণ করেন না।

২ উক্ত সামস্তরাজ্যের আধান নগর। অক্ষা ২১° ৪৩ বং উ: এবং দ্রাখি ৭১°২৮ ৩০ পৃ:। ভাবনগর-গোণ্ডাল-রেলপথের ধোরান্ধী লাখা এই রাল্য মধ্য দিয়া গিয়াছে। নগরের অর্কজ্যোল দূরে ঐ রেলপথের একটি ঠেসন আছে। এখানে ধর্ম্মলালা, চিকিৎসালয় ও বিদ্যালয় বিদ্যালন আছে।

লাড় (কেপ) অদস্তচ্রাদি পরত্মৈ সক সেট্। দট্ লাড়রতি, লুঙ্ অললাড়ং।

লাড়, বোদাই-প্রেসিডেন্দীবাসী জাতিবিদের। দক্ষিণ গুলরাতী নামেও পরিচিত। সম্ভবতঃ ইহারাই স্থ্রাচীন লাট-জনপদ-বাসী লাটলাতির বংশধর। ইহাদের মধ্যে প্রবাদ আছে বে, উত্তরভারত হইতে তাহাদের পূর্বপূক্ষণণ দক্ষিণভারতে আসিরা বাস করিরাছে। ক্লফ ও পাপুরক এবং তুলজাভবানী ও বেলমা ইহাদের প্রধান উপাত্ত দেবতা।

ইহারা দৃঢ়কার, বলির্চ ও সুন্দর গঠন। দেখিতে অনেকাংশে শিশ্দিবিগের মত। চকুর্ব রুহৎ, তকপন্দীর স্থার নালা উনত, ওর্চরর পাতলা এবং মুখারুতি প্রগোল। আঁচার ব্যবহারে উচ্চ শ্রেণীর হিন্দুর মত ও বেল পরিকার পরিছের। ইহারা মতুগান বা মাংল ভোজন করে না। অধিকাংশই নিরামিযালী। হথের জন্ত সকলেই গোমহিব পালন করিয়া থাকে। জীলোকেরা যাঘরা করিরা অথবা পন্চাতে কাছা দিয়া কাপড় পরে। আতিথাসংকার প্রভৃতি সকল নদ্ভাই ইহাদের মধ্যে বিশ্বমান আছে, কিন্তু সকলেই বিশেব আলক্তবির। ইহাদের ক্রিরা আব্রু নিতান্ত মন্দ নহে। আতর প্রভৃতি গন্ধ ক্রব্যবিকারই ইহাদের প্রধান উপালীবিকা।

ইহাদের মধ্যে নাম ব্যতীত বংশগত আচ কোন উপাধি দৃষ্টি হর না। প্রের বিবাহ অংশকা করার নিবাহেই অধিক খরচ হর। কারণ ঐ সমরে আমাতাকে বৌতুক ক্ষমণ টাকা দেওরা হইয়া থাকে। ইহারা সকলেই থার্দ্ধিক, ব্রাক্ষণের প্রতি সকলেই বিশেষ ভক্তিমান্। বিবাহাদি কার্য্যে ব্রাক্ষণেরাই-পৌরোহিত্য করে। পণ্টরপুর ও তুলমাপুরে দেববর্গনে যার এবং হিলুর প্রধান প্রধান সকল পর্কাহেই উপবাসাদি করিরা থাকে। বারাণসীতে ইহাদের ধর্মপ্রক্রের বংশ আছে। তাঁহারা জাতিতে গোসাবি(গোসাই)। তাঁহারা সমর সমর দাক্ষিণাত্যে শিব্যদিগতে মন্ত্র দিতে আসিরা বাঁকেন। অন্ত জাতির শিব্য প্রহণ করেন না।

বালকের জন্মের পর মাভিচ্ছেদ করা হইলে প্রস্তিকে নান করান হয়। পঞ্চাদিবের বন্ধীপূজান্তে আত্মীর ও বন্ধুবাজব-গণকে ভোজ দেওয়া হয়। ত্ররোদশ দিনে সকলে বালককে ক্রোড়ে লয় এবং ঐ দিনেই আতবালকের নামকরণ হইরা থাকে। উহার পর তিনমাস পর্যন্ত প্রতি সোমবারে প্রস্তি বন্ধীনেবীর পূজা করে। এইরূপে তিনমাস অতীত হইলে প্রস্তি প্র লইয়া নিকটবর্ত্তী কোন দেবালরে গমনপূর্কক দেবতাকে পুত্র সম্পর্শন করায় এবং দেবতার তৃত্তিবিধান জন্ম পান ও কদলী দিয়া পুত্র কোলে লইয়া খরে ক্রিয়া আইসে।

ঐ দিন হইতে বিবাহ পর্যস্ত আর কোনরূপ সংস্থার নাই।
বিবাহের পুঞ্চিন "দেবস্থতা", ঐ দিনে কুলদেবতার পূজা দেওরা
হয়। বিবাহদিনে বর ও ক্লাকে হরিলা মাথাইয়া মান করান
হইয়া থাকে। বিবাহের সময় বর ও ক'নেকে একত্র বসাইয়া
যাজক ব্রাহ্মণ মন্ত্রপাঠ করে এবং তাহার মাথার সিন্দৃর্মাথা চাউল
হড়াইয়া দিলেই বিবাহকার্যা সম্পন্ন হইয়া যায়। বিবাহাতে
একটা ভোজ হয়।

ইহারা মৃতদেহ সমাহিত করে এবং দশদিন মাত্র অশৌচ পালন করিয়া থাকে। পাঁচ দিন হইতে অরোদশ পর্যান্ত মৃতের প্রেডক্লডা হর। শেব দিনে জ্ঞাতিকুটুদের ভোজ হইবার পর সকল চুকিরা যার। ইহাদের মধ্যে পরম্পরে বেশ মিল আছে। সামাজিক কোন গোলবোগ ঘটলে জাতীর প্রধান-গালের বিচারে ভাহার নিশান্তি হইরা থাকে। ভদপেকা গুরুতর জপরাধের নিশান্তি গুরুর বারাই হর। বদি কেহ এই বিচার লক্ষন করিয়া কার্য্য করে, ভাহা হইলে ভাহার জাতিচ্যুতি ধটে এবং দপ্তস্করপ দশ টাকা দিলে পুনরায় স্বঞ্জাতিসমাজে আসিতে পার।

লাড় কসাব, বোৰাই-প্ৰদেশবাসী মুসনমান-শ্ৰেণীডেন। ভেড়া ছাগ প্ৰভৃতি নিহত করিয়া বিক্ৰম করাই ইহাদের জাতীয় ব্যবসা। ইহারা পূর্বে হিন্দু ছিল। মহিত্তবরাক টিশুস্থলতানের (১৭৮৫-১৭৯৯ গঃ) প্রভাবে সকলেই ইস্গামধর্মে বীক্ষিত হইয়াছে। স্ত্রী ও পুরুষদিগের বেশভূষা স্থানীয় হিন্দুদিগের মত। কোন কোন পুরুষ কেবল মাত্র দক্ষিপকর্থে একটা বড় কাপবালা ঝুলাইরা থাকে। স্থীলোকেরা পুরুষের জপেকা কুলারী, তাহারা রাভার বাহির হইতে কজা বোদ করে না। স্বজ্বন্দে দোকানে বসিরা মাংস বিরুষ করে। ইহারা মিতবারী, কর্মঠ, চতুর ও বিনয়ী, কিন্তু স্বভাষতঃ কিছু অপরিকার ও অপরিক্রা।

ইহারা আপনাদের সমাজেই বিবাহাদি করে। 'পার্টিক' নামক নির্বাচিত সমাজের অধ্যক্ষের আদেশ সকলেই পালন করিরা থাকে। কোনরূপ সামাজিক গোলমাল উপস্থিত হইলে পঞ্চারতে তাহার নিম্পত্তি হয়। পঞ্চারতে দোবীর অপরাধ সাবাস্ত করিলে, পার্টিল তাহাদের ইচ্ছামত অর্থদণ্ড করিরা থাকেন। ইহারা হিন্দুদেবদেবীর প্রতি বংগ্রু ভক্তি দেখাইয়া থাকে। হিন্দুর দেবতার পূঞাদিতে এবং পর্কোংসব পালন করিতে ইহারা বিশেষ সমারোহ ওউপবাসাদি করে; কেহই গোমাংস ভক্ষণ করে না। কাজির দারা বিবাহকার্য্য ও সমাধি সম্পাদন ব্যতীত অস্তান্ত সকল বিষয়েই ইহারা হিন্দু থেথার অন্ত্যুসর করিয়া থাকে। ইহারা কোরাণ বা কল্মা পড়ে না অথবা মস্প্রিদে বায় না। অত্যান্ত মুসলমান-সম্প্রদারের সহিত একত্র ভোজন করিতে ইহারা হুণা বোধ করে।

লাড়খান, একজন মুসলমানরাজ। ইনি অনঙ্গরন্ধপ্রণেত। কল্যাণ মল্লের প্রতিপালক।

लाफुरानी, वाषार-अल्पनानी जािजित्मव। त्राजा क्यात्रशान-কর্ত্তক দক্ষিণ-গুজরাতের লাটদেশ হইতে বিভাড়িত হইলে ইহারা সম্ভবত: এথানে আসিয়া বাস করে। ইহারা হিন্দু। ইহাদের মধ্যে অগস্ত্য, ভরন্বাঞ্জ, গর্গ, গৌতম, জমদন্ধি, কৌশিক, কাশ্রপ, নৈজব ও বিশ্বামিত্র গোত্র প্রচলিত। अथवा এक भनवीयुक वाकित मधा हेशामत विवाह इत्र ना। ইহারা প্রত্যহ ন্নান ও কুলদেবতার পূজা করিয়া থাকে। এতত্তির তুলমাপুরের ভবানীদেবী, সাতারার অন্তর্গত সিদ্দনাপুরের মহাদেব, পণ্টরপুরের বিঠোবা প্রাভৃতি দেবতীর্থে ইহারা স্চরাচর গমন করে। ইহাদের লৌকিক আচার ব্যবহার ও নেশভূষাদি স্থানীয় ব্রাহ্মণগণের মত। ইহারা পরিষ্কার পরিচ্ছের, কর্মঠু আতিথের ও চতুর। চাউল, কাপড় ও নানা মসলা বিক্রয় করাই ইহাদের জাতীর ব্যবসা। গ্রামবাসী লাভগণ জনেকেই कृषिकार्य। वर्षमान नमस्य ज्यानरक निकालास क्रिया গ্রমেন্টের অধীনে কর্ম করিতেছে। স্ত্রীলোকেরা পুরুষ্বিগর সহিত আপন আপন দোকানে বিজের কার্য্য করিয়া থাকে। তহাতীত তাহারা গৃহস্থালীর সকল কর্মই করে।

ইহারা স্থানীর প্রাক্ষণগণের অপেকা স্বাক্তে নীচ এবং কুন্বি-দিগের অপেকা উচ্চ। নেশন্থ প্রাক্ষণগণ ইহাদের সকল কাঠে।ই পৌরোহিত্য করেন। হিন্দুর সকল দেবদেবীর পূঞ্চার ইহাদের বিশেব ভক্তি দেখা বার। ইহারা হিলুর সকল পর্মাই পালন এবং প্রাতিবংসর প্রাবণী পোর্নমাসীতে (নারিকেলপূর্ণিমা নামে ব্যাড) সকলে জনাও বা মক্তুরে পরিধান করিরা থাকে। বাল্য-বিবাহ ও বছবিবাহ ইহাদের মধ্যে প্রচলিত আছে, কিন্তু বিধ্বাধিকাই নিষ্কি। বালকের অষ্ট্রমবর্বই উপনরনের প্রশক্তকাল। ১৫ হইতে ২০ বংসরের মধ্যে বালকের বিবাহ দেওরা হয়। বিবাহের মন্ত্র বিশক্ত, সংস্কৃত নহে। উহা দেশীর ভাষায় অনুদিত। ইহারা শবদাহ করে। ১০ দিন মাত্র জপোচ থাকে। তদনস্তর প্রাজীর পঞ্চারতের হারা নিশ্বন্তি হইরা থাকে। জপরাধী ব্যক্তির অর্থদগুই ব্যবহা। কথন কথন সে জাতিভোজ দিরা পরিত্রাণ পার। লাভ্সূর্ব্যবংশী, বোঘাই-প্রদেশের ধারবাড়-জেলাবাসী নিমপ্রেণীর জাতিবিশেষ। ছাগাদি নিহত করিয়া বিক্রম করাই ইহাদের জাতীয় ব্যবসা। ইহারা অগুদ্ধ হিলুগ্ননী ভাষায় কথা কয়।

ইহাদের মধ্যে কোনরূপ শ্রেণীবিভাগ নাই। পুত্র জন্মিলে নাভিচ্ছেদের পর ইহারা জাতবালকের মুথে কএক বিন্দু রেড়ীর তৈল ঢালিয়া দের এবং পঞ্চমদিনে একটা ছাগহত্যা করিয়া আত্মীয় স্বজ্পনকে ভোজ দিয়া থাকে। এরোদশ দিনে জাতাশোচান্তে সকলে বালককে ক্রোড়ে লয় এবং নামকরণ করে। তাহার পর বিবাহ পর্যান্ত আর কোনে সংস্কার নাই। বিবাহের দিন বর ও কন্তাকে একটা উচ্চ বেদীর উপর বসাইয়া গ্রাম্যজ্যোতিষী কল্যা সম্প্রদান করেন। মন্ত্রপাঠকালে তিনি উভরের মন্তকোপরি হরিজারঞ্জিত চাউল ছড়াইয়া দেন। তদনস্তর বর ও কল্যা পরস্পরের কপালে হরিজা মাথাইলে প্রোহিত বর্জিকা জালিয়া উভয়কে নীরাজন করেন। বিবাহান্তে আত্মীয় স্বন্ধনের ভোজ হইয়া থাকে।

মৃত্যুর পর ইহারা শবদেহ মান করাইয়া উপবিপ্রভাবে রাখিয়া দেয় এবং নৃতন বল্প পরিধান করার। তার পর তাহাকে পুস্পানাল্য ও অলকারাদিতে স্পোভিত করিয়া সমাধিকেত্রে লইয়া সমাহিত করে। তৃতীয় দিনে ইহারা সেই কবরে আসিয়া হয় ঢালিয়া দেয়। যদি কোন অভতদিনে মৃত্যু হয়, তাহা হইলে সেই বাজীয় সকলে তিনমান কাল ঐ গৃহ পরিত্যাগ করিয়া অভ্যন্ত্র বাজীয় বান করে। তৎকালে ঐ বাটীতে চাবি দিয়া মায়দেশ ইহামা-কাটা ছড়াইয়া য়াবে। ইহামের বিশাস এই বে, অভত্তনকলে মৃত্যু কল্প বে ধাের হয়, তাহা ঐ বাটীতে থাকিলে গৃহছিত অপর য়াজিকে নিঃসন্দেহই স্পূর্ণ করিতে পারে।

ইহাদের মধ্যে বালাবিবাহ ও বছৰিবাহ প্রচলিত আছে।
বিধবাহিবাই নিবিছ। সামাজিক কোন বিবরের মীমাংসা
পঞ্চারতের ছারাই নিশালিত হয়। বহি কেই তাহাদের বাক্য
অমাজ করে, ভাহা হইলে সেই ব্যক্তি সমাজচুত হইরা থাকে।

ইহারা ধার্মিক, ধর্মকর্মেও ইহাদের মন্তি আছে। বেলগান-কেলার সম্পৃত্তি নগরত্ব বেল্লআ দেবীতীর্থে এবং নবলগুতের মুসলমান সাধু দবল-মালিকের সমাধি-সক্ষর্পনে ইহারা আসিরা থাকে। ব্রাহ্মণাদির প্রতিও ইহাদের ভক্তি আচলা। বিবাহাদি ক্রিরাকর্মের বাহ্মণেরাও বাহ্মকৃতা করে। ইহাদের কোন ধর্ম-গুরু নাই।

नाष्ट्रा (तनक) चात्नाप्त ।

লাড়ালাড়ি (দেশৰ) ছানান্তরিত করণ।

লাড়ি (গ্ৰং) পাণিনীয় জৌড়াদি গণোক্ত একটা শব্দ। (পা ৪।১।৮০)

লাড়ু (নেশল) কডচুক, কডচুক শব্দের অপত্রংশ।

लार्भी (जी) कूनोंग जी। (स्म)

ला९ (शिमी) गाथि।

লাতব্য (পুং) বিক্রমোর্কশীবর্ণিত রাজপুররক্ষিভেদ।

লাতি) (দেশন) পদাঘাত।

লাথি 🕽 (দেশন) পদাঘাত।

লাথালাথি (দেশজ) পরস্পরে পদাঘাত।

লাদ্থ (লদাক্), কাশীর-মহারাজের অধিক্বত হিমালয়সীমান্তবর্তী একটা বিভাগ। ইহা কাশীরের পূর্কাংশে স্থাপিত
এবং একজন শ্বতম্ব শাসনকর্তার ধারা পরিচালিত। হিমালয়শৈলের চিরত্বারারত শৈলশৃলে অবস্থিত থাকায় ইহার সীমা
নির্দেশ করা শ্বকঠিন। এইস্থান দিয়া দিয়ুনদ ও তাহার শাথাপ্রশাধাসমূহ প্রবাহিত থাকায় ইহাকে দিয়ুনদের উপত্যকা
ভূমি বলা ধায়। অক্ষা ৩২° হইতে ৩৫° উ: এবং দ্রাঘি
৭৫° ২৯ হইতে ৭৯°২৯ পূ: মধ্য।

রপস্থ ও নিওএ। নামক মধ্যভাগের ছইটী জেলা, হিমালংহর ছুমারারত প্লসমূহ এবং জনপ্ত কুএন্প্নের অধিত্যকা ভূমি ও লিন্বিথলের পার্কাতা প্রান্তর লাইয়া এই বিভাগ গঠিত হইয়াছে। ডাঃ কনিংহামের মতে জানস্বর সহ ইহার ভূপরিমাণ ৩০ হাজার বর্গমাইল।

হিমালর পর্বতের মধ্যাংশবর্তী স্থবিদ্বত শৈলপৃঠে হাপিত
হওরার ইহার জনতানিরপণ করা স্থবিদ্ধ উক্ত মহাঝার
গণনাম্পারে এথানকার লোকসংখ্যা ১৬৮০০০, কিন্তু মূরক্রফ্ট
১৬৫০০০ ও ডাঃ বেলিউ ২০০০০০ সংখ্যা নির্দেশ করিরাছেন। লাদকের বর্ত্তমান ইতির্ভ-সবলরিতা এক্ ভুর ১৮৭৩
খৃষ্টাব্দের আনমস্থমারি মতে লোকসংখ্যা ২০৬০১। ডাঃ বিলিউ
ও মিঃ ভু একই বংসরে এরপ লোকসংখ্যার পার্বক্য নির্দেশ
করিরাছেন দেখিয়া মনে হর যে, সম্ভবতঃ মিঃ ভু নির্দিট
জ্বলাহরেরই লোকসংখ্যা গ্রহণ করিরাছিলেন।

লাদকের ভার পৃথিবীর আর কোথাও এরূপ উচ্চ ভানে

মহবার বাস নাই। এখানকার অধিত্যকা ও উপত্যকামাত্রই সমূলপৃষ্ঠ হইতে ৯০০০ ও ১৭০০০ কিটের মধ্যবর্তী এবং তর্মধ্যবর্তী অনেকগুলি পর্বতিশৃক্ত ২৫ হাজার ফিটের কম নর। এখানে সিদ্ধ এবং তাহার সায়ক, নিওব্রা, চান্চেদমো ও জানকর শাধা প্রবাহিত। পার্বত্য খাতবিশেব লবণজলে পূর্ণ, তর্মধ্যে পালকোল ও জোমোরিরি প্রধান।

এই জনপদের প্রাকৃতিক পরিবর্তন ও অসাধারণ ত্যার-শীতল হিমালর শিরে স্থাপিত হইয়াও এখানে গ্রীয়ের মাত্রা অভাধিক বলিয়া বোধ হয়। দিবাভাগে এখানে দারুণ উঞ্চতা এবং বাজিতে মর্পাডেদী লৈতা। শীতের আধিকা এবং বায়র ক্লকভানিবন্ধন এখানে বিশেষ কোন ফগলাদি উৎপন্ন হয় না। ন্থানীয় ত্বারুমপ্তিত শৈল্পন ব্যতীত এথানে আর কোন विषरत्रहे लाक् जिक शोमार्यात गांखीया পतिनिक इत्र ना, কেবল মাত্র প্রস্তানিগয়জাত বাড়ি, কএকপ্রকার ফলবক্ষ ও কোন কোন কলাই স্থানবিশেষে জন্মিতে দেখা যায়। এই প্রদেশের উত্তরপূর্ব্ব অধিত্যকায় এবং পর্ব্বতের ঢালু সাহুদেশে मत्मा मत्मा बनमाला मृष्टे इम्र। किन्तु मारे वृक्ष्णिल आग्रहे পত্রীন এবং সেই স্মতি কোন প্রকার সব্জিই উৎপন্ন হয় না। এখানকার বহা জন্তর মধ্যে কিয়াস নামক বহা-গদভ, (अका, कांशन, शंतराधि 9 Marmot এवः शंकीत मरशा केंशन, পেরু, পার্টি জ ও বাল-হাঁস প্রধান। পালিত পশুর মধ্যে সচরাচর পনিযোড়া, গৰ্মভ, গোরু, ছাগল, ভেড়া ও কুকুর দেখা যায়। লানকবাসীর পালিত ভেড়ার লোমে শাল প্রস্তুত হয়। ঐ লোম প্রধানতঃ কাশ্মীর, নেপাল ও ইংরাজাধিকত ভারতে প্রেরিত इहैया थारक। ३৮८० थुट्टोर्स छाः कनिःशंभ नामक श्रेट्ड কাশ্মীরে ২৪০০ মণ পশমের রপ্তানীর বিষর উল্লেখ করিয়াছেন। এখানকার ছাগই সাধারণের বিশেষ উপকারে লাগে। ঐ সকল বুহদাকার পার্বতীয় ছাগলের হ্রম তাহারা পান করে এবং ছাগলের পৃষ্ঠে পণাদ্রবাসমূহ চাপাইয়া স্থানান্তরে লইয়া যায়। কনিংহাম একদিন ঐরপ ছয় হাজার ছাগপুটে শাল, পশম, সোহাগা ও গদ্ধক প্রভৃতি পণাদ্রব্য বহনের উল্লেখ করিয়াছেন। गानकवानी वर्गिक मच्चमाग्र के मकन सवा नहेन्रा भार्काकाभाष দক্ষিণপশ্চিম প্রদেশভাগে অবতরণ করিত।

এগানে যে সকল দ্রবা উৎপন্ন হর, তাহার মধ্যে পশম, সোহাগা, গদ্ধক ও শুক ফলাদি প্রধান। ঐ সকল দ্রব্য তাহার। কাশ্মীর ও নিকটবর্জী হিন্দুস্থান, ইরারকন্দ, খোটান এবং উত্তর ও পুর্কে তিব্বতীয় প্রদেশভাগে বিক্রয়ার্থ লইরা যায়। ঐ সকল দ্রবাবিক্রয়ে তাহাদের যথেষ্ট লাভ হয়। ভাহারা সেই মূল্যের বিনিমরে ভারত হইতে কাশ্যিবলা, কীচা চামড়া, পরিষ্কৃত চর্মা, নানাপ্রকার শস্তা, বন্দুক, কামান ও চা প্রভৃতি দ্রব্য এবং চীনসাম্রাক্ষ্য হইতে ছাগ ও ভেড়ার পশম, চা, অর্ণরেপু, রূপা, নানারূপ প্রাচীন মূলা, রেশম ও চরস প্রভৃতি দ্রব্য আমদানী করিয়া থাকে। এই প্রবেশের মধ্যবন্ধী রূপম্ম জেলার আসিতে চুইটা উৎকৃষ্ট পথ আছে। রূপম্ম হইতে বড়ালাচা গিরিসঙ্কট দিয়া ইংরাজাধিকত ভারতে উপনীত হওয়া যায় এবং পরঙ্গ-ঘাট দিয়া লাহল ও সিমলার শৈত্যাবাসে যাতায়াতের স্ম্বিধা হয় বলিয়া অনেক ভ্রমণকারী বণিক্ ঐ পথে ভারত হইতে রূপম্ম ও সিমলা প্রভৃতি স্থানে গমন করিয়া থাকে। লাসা-নগরবাসী চা-ব্যবসান্ধিগণ লে প্রেদেশে গমনকালে রূপমূর মধ্য দিয়া যাতায়াত করে।

এখানকার অধিবাসিগণ লাদ্ধি নামে পরিচিত। ইহারা বৌদ্ধধর্মাবলম্বী। ইহাদের থকাক্বতি ও দৃঢ় গঠন দেখিলে কদর্যা তুরাণীয় জাতির শাথাভুক্ত বলিয়াই মনে হয়। ইহার। সাধারণতঃ নির্বিরোধী। দলবদ্ধ হইয়া একত্র গ্রামে বাস করে. চাসবাসই তাহাদের প্রধান উপজীবিকা। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৯৫০০ নাগাদ ১৩৫০০ ফিট্উচ্চ স্থানে ইহাদের বাস আছে। ইহারা সর্বদাই মনের আনন্দে বিভোর; কোন বিশেষ কারণে, মদিরাদি মাদকদ্রব্য বা চঙ্গপানে উন্মন্তপ্রায় না হইলে ইছারা ক্থনও কাহার সঙ্গে বিবাদ করে না। ইহাদের বেশভ্যার বিশেষ পারিপাট্য নাই। পশমনির্দ্মিত চোগা, পায়জামা, কোমরবন্দ ও পায় মোটা জুতা ব্যবহার করে। পুরুষেরা এবং স্ত্রীলোকেরা ঘাদরার স্থায় এক প্রকার অঙ্গরাথায় সর্বাঙ্গ আবৃত করে, স্কন্ধ-দেশে দলোম চৰ্মচ্ছদ ও মন্তকে কড়ি বা শামুক দ্বারা অলম্ভ ত বস্ত্র আচ্ছাদন করিরা থাকে। ঋতুর পরিবর্ত্তনামুযায়ী ইহাদের বেশপরিপাট্য বা কোনরূপ পার্থক্য লক্ষিত হয় না। সকল লাদথী পরিবারেই অন্ন বিস্তর কৃষিক্ষেত্র রাথে। এথানে যবেরই অধিক চাস হয়। কোথাও কোথাও নিমুক্তমিতে গম ও कनार दोना हम। यनकृष्ध यव निष्क किन्नमा हेहाता थाहेटल ভালবাসে। চঙ্গ নামক মদ্য সাধারণের প্রিয়। অপেক্ষাক্ত ধনবান ব্যক্তিরাই চা পান করিয়া থাকে। ইহারা স্বল্কায় ও কর্মাঠ। অনারাসেই বড় বড় বোঝা উচ্চ পর্কতোপরি। শইরা যাইতে পারে। জীলোকেরা পুরুষের স্থায় বলিষ্ঠ ও কর্ম্মপটু। हेहारमत गरश व्यवस्त्राध अथा नाहै। हेहात्रा हेक्हामक स्थानारन বিচরণ করিয়া বেড়ায়। ধনবান্ ব্যক্তি ভিন্ন সাধারণতঃ রুমণী-দিগের একাধিক স্বামী দৃষ্ট হয়। ইহাতে তাহারা কোন দোষ বিবেচনা করে না। সম্ভবতঃ প্রত্যেক পরিবারের নির্দিষ্ট পরিমাণ ভূমি থাকার, তাহার উৎপর শভাদি হইতে ইহারা আপন আপন পরিবারদিগকে লালন পালন করিতে গারে

না। এই বার রম্পীগণও বছসামিকর্তি অবস্থন স্বরিতে বাব্য হইরারে।

আর প্রত্যেক গ্রামেই এক একটা বোহমঠ বা বিহার
আহে। প্রত্যেক গ্রামের অদ্বে একটা ক্ষনশৃশ্ব শৈলপুলোণরি

ঐ বঠগুলি হাপিও। ঐ সকলে প্রারই এক বা ফুইটা লামা
এবং কখন কখন বহুসংখ্যক বৌহবতি বাস করে। এখানকার
মঠাধিকারী উপাধ্যারের কখন অভাব ঘটে না। ছানীর
অধিবাসীর মধ্যে এক এক পরিবারের বাসক পর্যারক্রমে ঐ বত
গ্রহণ করিয়া থাকে। মঠে ব্রহ্মচর্য্য অবলখন করিয়াই তাহারা
বিভাতাস করে। পর্বতগাত্রখোদিত স্বরহৎ বৃদ্ধমূর্তি, প্রতরক্রুপ, শিলাক্ষলকোৎকীর্ণ প্রাচীর এবং অভাভ পবিত্র প্রভিত্রতি
দেখিলে খতই মনে হর বে, এখানে ধর্ম পূর্ণপ্রভাবে বিভ্যমান
রহিয়াছেন।

খুঁটার ৪র্থ শতাবে চীনগরিবান্ধক কাহিয়ান ফিএ-ছ শৃংক এই জনপদের বিষরণ প্রকাশ করিয়াছিলেন। সিনি Akhassa Begio নামে এখানকার অধিবাসিরক্ষের কতক ইতির্ভ প্রদান করিয়াছেন। খুঁটার ৭ম শতাবে চীনপরিবান্ধক হিউএন্সিরাং এই স্থান পরিম্বর্ণন করিয়া এখানকার বৌদ্ধস্ঠাদির উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন।

পূর্বে এই ছান স্থাসিক ভোটরাজ্যের অন্তর্ভুক্ত ছিল, তৎকালে একজন রাজকুমার স্বাধীনভাবে এই প্রদেশ শাসন করিতেন এবং লাদার প্রধান লামা এথানকার বৌদদিগের মধ্যে সর্কপ্রেষ্ঠ গুরুত্বপে পৃত্তিত হইতেন। খুরীর ১০ম শভাবে বখন স্থাই গুরুত্বপানাজ্য অন্তর্বিপ্রবি বিভক্ত হইরা পড়ে, তখন প্রান্তনীমাছিত জনপদসমূহ এক একটা স্বাধীন রাজ্যরূপে পরিপ্রিত হইরাছিল। তৎকালে পাল্গ্যিগোণ এখানকার রাজাছিলেন।

খুটার ১৭শ শতাব্দের শেবভাগে ফার্ডোর সর্দার শেরখালী এইছান খাক্রমণ করিছা মঠ, মন্দির ও বিহারাদির বাবতীর হন্তাশিকিত পুথিসমূহ অন্ধিবোগে ভন্নীভূত করিছা দেন। তদবধি এখানকার ইতিহানে একটা স্থীর্থ অবচ্ছেদ মন্দিরাছে। এখন এছাভাবে ভাহার একটা স্থায়ও উদ্ধারের উপার নাই।

রাজা নিউলে নানগালের রাজকালে লাবকরাজ্যের
আনেক আঁবুর্ডি সাধিত হর। তিনি মোগলস্থাট্ লাহালীরের
সাহায্যগ্রাপ্ত করিরা লাবকী জাতির
বলবীর্ব্যের পরাকার্ত্র আবর্দন করিরাছিলেন। ভবনভার নোক্পো
ও লাবকী লাতির মধ্যে উপর্পুপত্তি কএকটা বৃদ্ধ সংঘটিত হর।
ভারশেরে নোক্পোরণ গরাজিত হইরা পুশার্ম করে। ঐ সমরে
ক্রোর্বানী মুস্বান্সক লাক্ষীনিক্তে নহার্ভাক করিয়াছিল।

নোক্পোগণ তৎকালে বাসের বস্ত ক্লবোধ, বিভাগ প্রাপ্ত বইরাহিলেন। মুসলমানগণের সাহাব্যলাভের ক্রভক্তা প্রকাশার্থ
সম্ভবতঃ সেই সময়ে গাদক্রাজ ইস্লামধর্শে দীক্ষিত ব্ইরাহিলেন এবং তদবধিই তাঁহারা কাশ্মীররাজকে রাজকর দিরা
আসিতেহেন।

১৮২२ चुडीट्स मृत्रक्रक है नामक शतिमर्नातम आश्रमम करत्रम । **७९कारन गान्ता वा नानरकत भागमकता है: बाजबारकत्र** অধীনতা স্বীকার করিতে মনত্ব করেন, কিন্তু লাদকের তৎকালীন সমূদি দেখিয়া তিনি সেই প্রভাব কার্য্যে পরিণত করেন নাই। ১৮৩৪ খুটালে কাশ্ৰীমনান্দ গোলাৰ সিংহ খীয় প্ৰসিদ্ধ দোগ্ৰা সৈত্ত সইয়া লাদক্ আক্রমণ করেন। সেনাপতি জোরাবর সিংহ এই বোদ্দলের নারক হইয়া বথাক্রমে ছইটা অভিযানের পর, লাগক ও বল্ডি প্রদেশ অধিকার করিয়া লন। জয়লাডে শ্ৰুতি হইরা শিথসেনাপতি ক্লোধ্ আক্রমণ ক্রিলেন, কিছ এই বৃদ্ধে কোন ফল লাভ হইল না। সমবেভ চীন ও লোক্লো সেনার সহিত যুদ্ধে এবং দারুণ পার্কত্য শীতে শিখসৈত সমলে নিহত হইল। উক্ত বৰ্বে আফগানস্থানে একদল ইংবাল-নৈছত ঐরপে বিপর্যান্ত ও নিহত হয়। ইংরাজ-সৈম্ভের পঞ্চাববিজ্ঞছের পর, কাম্মীর ও তদধীন প্রদেশসমূহ ইংরাজরাজের হন্তগত হয়। ১৮৪७ युट्टोस्मत २७३ माटर्कत मिक व्ययमादत है दांक ग्वटर्मन्द्र পুনরার ইহা গুলাব সিংহকে প্রতার্পণ করেন।

১৮৬৭ খুঠালে ইংরাজ-গ্রমেন্ট এখানকার বাণিজ্য বিবরণ সংগ্রহ করিছে Dr Cayleyকে লাদকে পাঠাইরা দেন। ১৮৭০ খুঠালে কাশ্মার মহারাজের সহিত ইংরাজরাঞ্জাতিনিধি পর্জ মেও'র একটা সন্ধি হর। তদলুসারে এখানকার বাণিজ্যকার্য্য পরিদর্শনার্থ একজন ইংরাজ ও একজন দেশীর ক্ষিসনর নিরোগের ব্যবস্থা হয়। তাহারা উত্তরে একযোগে এই কার্য্য নির্বাহ করিয়া আসিতেছেন। (Dr Aitchison কৃত Trade Products of Leh 1874, নামক গ্রন্থে এখানকার পণ্যপ্রব্যের স্থবিস্তুত বিবরণী প্রদক্ত আছে।)

লাদ্বা, পঞ্চাবগ্রবেশের অবালা জেলার পিপ্লী তহনীলের অন্তর্গত একটা নগর। পিপ্লী হইতে রনৌর বাইবার পথে অবহিত। অকা" ২৯°৫৮'৩০ "উঃ এবং জাবি" ৭৭°৫ পৃঃ। ইহা পূর্বে একটা সামতরাজ্যের রাজধানী ছিল। ১৮৪৬ বুটাড়ে শিখকুরের সমর এবানকার স্কার রাজা অজিৎসিংহ বিস্তৃশ আচরণ করার, উক্ত সম্পতি বাজেরাও হইরাছে। এবন্ধ ছুর্গ ও রাজ্ঞাসার এবং অভাভ প্রধান প্রধান অইটিকিলা বিক্লমান আছে। নিউনিসিপানিটার জবীন বাজার স্পারের স্কাস্বভির কোনকার রাগ হর নাই।

লান্ত (পুং) তত্রেক্ত সভেততেশ, এই শব্দ বলিলে 'ব' বুঝার।.
লান্ত ক্রম্ম (পুং) জৈনমতে দেবগণভেম। (লৈনহরিবংশ ৯০)
লান্দীথানা, আনগানহানের অন্তর্গত শ্বাইবার-পাস" নামক
প্রানির গিরিপথের একটা অংশ। এরূপ কঠিম ও তুর্গমন্থান
আর কুরাণি দৃষ্ট হর না। পূর্জমূবের কদম নামক স্থান হইতে
এই হান ২০ মাইল এবং পশ্চিম বুঝ হইতে ৭ মাইল। গিরিসভটের এই হলেই কাম্মীধামা নামক গ্রাম। অক্ষা '০৪°০ উ:
এবং ত্রাখি ৭১°০ পুং। সমুক্রপৃষ্ঠ হইতে ২৪৮৮ ফিট্উন্ত।
এই গিরিপথের সর্ব্বোক্ত শৃল লান্দীকোটাল ৩০৭৮ ফিট্উন্ত।
এই গিরিপথের সর্ব্বোক্ত শৃল লান্দীকোটাল ৩০৭৮ ফিট্উন্ত।
এখানে একটা হুর্গ আছে। খাইবার গিরিপথ দিরা ইংরাজনৈত্র
গমনকালে এ হুর্গে আশ্রম লইরা থাকে। হুর্গ-পরিধার নিমন্ত্
ব প্রস্থুমে একটা সরাই আছে। শ্রমণকারিগণ এবং বিশিক্গণ
গমনাগমনকালে এ হুনে থাকিরা আহারাণি করেন।

লালীকোটালন্থ ইংরাজরাজের একজন কর্মচারীর (Political officer) অধীনে এই সকট মক্ষিত হয়। পার্কত্যজাতি হইতে গৃহীত একটা সেনাদণ (Irregular Levies) এই স্থান রক্ষা করিতেছে। লালীকোটালের অদ্বে পিস্গাহ্ নামক পর্কতশৃস। বিগত আফগানবৃদ্ধের সময় এই শিথরে আরোহণ করিয়া স্থানীয় ইংরাজকর্মচারী জালালাবাদ পর্যন্ত আফগানস্থানের সমতলক্ষেত্র পর্যাবেক্ষণ করিরাছিলেন।

লালীকোটাল অভিক্রম করিয়াই গিরিপথের পরিসর ক্রমলংই কমিরা গিয়াছে, সেই কলরমূথেই লালীথানা গ্রাম। তথা হইতে কএক মাইল অগ্রসর হইতে আফগানস্থানের সমতলক্ষেত্রে আসা যার। আফগানসীমান্ত-রক্ষিগণ বণিক্লিগতে এই সন্থটমূথে আনিয়া দিলে ইংরাজরাজের রক্ষিত ইরেগুলার লেভি নামক সেনাদল তাহাদের লালীথানাত্র ইংরাজ অধিকারে আনিয়া ছাড়িরা দেয়।

লাক্র, পাণিনীর আবাদিগণোক্ত একটা শব্দ। (পা° ধা৪।২৯)

मान (पूर) नन-एक । क्यन, ननन ।

न्नोभिन् (वि) नप-पिनि। कथननीन।

स्नान्तर (वि) नगर७ हेडि नग-गए। क्थमीत्र।

मारक (तनक) गफ।

लाहि (सम्ब) > गफा । २ चतर्गान ।

লাক।, মধ্য প্রনেশের বিনাসপুর-জেলার অন্তর্গত একটা অমিনারী সম্পত্তি, ভূপরিমাণ ২৭২ বর্গমাইল। ৯৩৬ খুষ্টান্স ক্ষতিত এখান-কার অমিনারবংশ এই সম্পত্তি অধিকার ক্রিতেছে। স্থানীর অধিকারী কুন্বার বংশীর।

লাফাগড়, মধ্য প্রদেশের বিলাসপুর জেলার **অন্তর্গত একটা** গিরি-হর্গ। বিলাসপুর নগর হইতে ২৫ মাইল **উত্তরে লাকালৈলো**পরি ছাপিত। জকা° ২৬°৪১´ উঃ এবং প্রাধি৽ ৯১°৮´ পৃঃ। সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে এইস্থান ৩২০০ ফিট্ উচে। হুর্গের চারিপার্বের অধিত্যকা-ভূমির পরিমাণ ৩ বর্গমাইল। একণে উহা কুল্ল জলনে আর্ড হইরাছে।

এই সুখনীতস অধিতাকান্ত্রে এক সমরে ছত্রিলগড়ের হৈহর-বংশীঘরান্দগণ বাস করিতেন। পরে তাঁহারা রন্ধপুরে রাজধানী। পরিবর্ত্তন করেন। এখনও হুর্গ ও ভাহার প্রাচীরাদি অভগ্ন-অবস্থার রহিরাছে।

लाक्तां लाकि (जन्म) नामारेता त्रकान ।

লাভ (পুং) গভ-করণে অঞ্। মূলধনের অধিক উপার্জিত ধন। পর্যায়—কল, লভা, র্জি। (শব্দর্জা•)

"প্ৰথঃখে ভয়ক্ৰোধৌ লাভালাভৌ ভবাভবৌ।

যত্র কিঞ্চিত্তপাভূতং নমু দৈবতা কর্মা তৎ ॥" (রামায়ণ ২।২২।২২)

২ প্রাপ্তি। সপ্তপ্রকার ধর্মাজনক বিভাগমের মধ্যে একপ্রকার।

"সপ্তবিত্তাগমা ধর্ম্মা দায়ো লাভঃ ক্রন্মো জন্ম:।

প্রয়োগ: কর্মযোগশ্চ সৎপ্রতিগ্রহ এব চ ॥" (মমু ১০)১১৫)

লাভিক (পুং) লাভ স্বার্থে কন্। লাভ।

लाङ्गिका (जी) नाष्ट्रत रेक्श।

লাভলিপ্সু (ত্রি) লাভ করিতে ইচ্ছুক।

লাভবং (অ) লাভ: বিগতেংগু মতুপ্ মন্ত ব:। লাভবৃক্ত, লাভবিশিষ্ট।

লাভস্থান (ফ্লী) : লাভত্ত স্থানং। জ্ঞাতবালকের তদাদি
দাদশভাবের মধ্যে লগ্গাবধিক একাদশ স্থান, এই স্থানে লাভের
বিষয় বিচার করিতে হয়, এই জন্ম ইহাকে লাভস্থান কহে।
বিষয়িদাদ লাভস্থানে নিম্নিধিত বিষয় চিন্তা করিতে ব্যিয়াছেন—

"গজাশ্বধানবস্তাণি শ্বধাকাঞ্চনকন্তকাঃ।

আযুর্বিভার্থনাভঞ্চ লকরেরাভলগ্নত:॥" (ষ্টাদাস)

হতী, অধ, যানবাহনাদি, উত্তমভূষণাদি, শ্যাা, ধনরত্নাদি, কন্তা, আয়ু, বিভা ও অর্থলাভ এই সকল বিষয় লাভত্বানে অর্থাৎ লগ্নাবধিক একাদশ ছানে চিন্তা করিতে হয়।

লাভা (ক্রী) বভ-ণাং। বাভ। (শবর্দ্ধা•)

লামকায়ন (পৃং) > সমকের গোত্রাপত্য। (পা• ৪।১।৯৯) ২ আচার্যান্ডের।

লামকায়নি (গুং) শমকের গোত্রাপতা।

लामकांश्रमिष् (११) नामकांश्रम नायायाती।

লামজ্জক (মী) বীরণমূল। [বীরণ শব্দ দেখ] ২ উশীরবং শীতচ্চবিত্পবিশেষ। পর্যায়—স্থনাল, অমৃণাল, লব, লবু, ইটিকাপথিক, শীন্ন, বীর্থমূল, অসাপর। তথ—হিম, তিজ, বাত, পিত্ত, তুকা, বাহ, শ্রম, মুর্জা, রক্তা ও অরনাশক। (রাজ্মি°) লামা (ব্'লামা), তিব্বত্ব বৌদ্বতিভেদ। তাঁহানের বধ্যে সর্বত্রেঠ বৌদ্বল্যাসী দলই লামা নামে পরিচিত। মোললীরগণ বৌদ্বত্রের বীন্দিত হইরা তিব্বত্ব শ্রেঠ ধর্ম্ববান্দককে এই নামে অভিহিত করিরাছিলেন। তিব্বতীর ভাষার ব্'লামা শ্রেকর মর্থ শ্রেঠ এবং মোললীর দলই শব্দে সমুদ্র বুঝার।

রাজা থিপ্রোঙ্গদে-ৎসান্ (৭২৮-৮৬ খুৱান) ভিন্নভীয় বৌদ্বতিদিগের মধ্যে শ্রেণ্টবিভাপ করিয়া তাঁছাদের আচার व्यवशत्र अनानी निकातिक कत्रिया एवं। कारन त्रहे आहीन পদ্ধতির বিলোপ ঘটে এবং শৃষ্টীর ১৫শ শতাব্দের প্রারম্ভে বর্ত্তশান ধর্মপদ্ধতি সম্পূর্ণ পৃথক্ ও স্বাধীনভাবে গঠিত হয়। ছঞাসিদ্ধ লামা ৎসেন্থাপা ১৪১৭ খুষ্টাব্দে লাসা নগরীতে গাংল্ছন সভ্যারাম স্থাপন করেন এবং বরং সেই মঠের সর্বশ্রেষ্ঠ অধাক্ষ হন। সাধা-রণে তাঁহাকে বিশেষ শ্রদ্ধাভক্তি করিত, এই জন্ম তিনিও সকলের উপর মহতী শক্তি সঞালম করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। তাঁহার প্রতি লোকের এরপ অচলা ভক্তি জন্মিরা ছিল যে. তাঁহার সন্তানসম্ভতিদিগকেও তাহারা সেই দেবাংশ-সমৃত্ত বলিয়া বিবেচনা করিত। সেই বিশাসবলেই, তাঁহার পুত্রপৌদ্ধ-গণ অত্যাপি দেই মঠের অধ্যক্ষ হইরা রহিয়াছেন; কিন্তু লাসা নগরের সর্বভাষ্ঠ বৌদ্ধধর্মাচার্যা দলই লামা এবং ত্যিলহুণপোর পঞ্চেন্-ঝন্-পোছের ধর্মপ্রভাব সাধারণের চিত্ত আকর্ষণ করিলে, পুর্ব্বোক্ত গাঃ-ল্লন্ মঠাধিকারিগণের সমস্ত প্রতিপত্তি নষ্ট হইয়া যায়। শেষোক্ত লামান্বয়কে দেবাংশে অবতীর্ণ জানিয়া তাহারা দেবতারপে পূজা জ্ঞান করে।

দলই লামা সাধারণের নিকট থানী বোধিসক চেন্রেশীর আংলসভূত বা তাঁহারই অবতার বলিরা গৃহীত। তাহাদের বিশ্বাস, বোধিসক চেন্রেশী থখন যে মন্থবোর দেহে প্রবিষ্ট হইরা ধরাধামে অবতীর্ণ ইইতে ইচ্ছা করেন, তখনই তিনি স্বীয় শরীর ইইতে একটী অপুর্ব্ব ল্যোতিঃ বিকাশ করিরা তাহাই সেই মন্থবোর দেহে দেবভাবের আবির্ভাব হইরা থাকে। তাহাতে সেই মন্থবোর দেহে দেবভাবের আবির্ভাব হইরা থাকে। পঞ্জেন্-অন্-পোছে নামধের লামা চেন্রেশী বোধিসন্ধের পিতা অমিতাভের অবতার বলিরা প্রিত।

কিংবদন্তী আছে, ৎসোন্থাপা তাঁহার চুইটা প্রধানতম বিব্যক্ত পুনঃ ক্ষম-পরিপ্রহ করিরা বৌদ্ধর্মের পবিপ্রতা রক্ষা ও পরিপালন ক্ষম আদেশ দেন। তিনিই প্রথমে তাঁহাদের আচার্য্যমর্থাদার পার্থক্য ও প্রোধাম্ম নির্দেশ করিরা দেন ভদক্ষনারেই উপরোক্ষ দেবাংশসভূত লামান্তরের উৎপত্তি অটিরাছে। আবরা Coomeর বংশতালিকা হুইতে জানিতে

পারি বে, গেছন্ প্রুব্ (জন্ম ১৩৮৯ খুঃ, মৃত্যু ১৪৭৩ খুঃ) স্বর্জন প্রথমে গ্যেল্য খন্-পোছে উপাধি গ্রহণ করিরাছিলেন। অঞ্চাশি দলই লামাও সেই উপাধিতে পরিচিত আছেন; হুভরাং ইহামারা স্প্রিই অহমান হর যে, গেছন্ গ্রুই প্রথমে স্প্র লামারণে নাধারণের নিকট গৃহীত হইয়াছিলেন; शाःल्बन् मञ्चा-ब्राय्यत मठीयाक परमान्याभात वः मध्य धर्म-बरहन् छक मर्यामा गांछ करत्रन नाहै। >884 शृष्टीत्म जिनि जित्ते नहुन्-পোর হুবৃহৎ সম্বারাম প্রতিষ্ঠা করিয়া যান। উক্ত[্]মঠের উপাধ্যারই সম্ভবতঃ পঞ্চেন্-ঋন্-পোছে নাম ধারণ করিরা मनहें नामात्र साब चीत्र धेनी लेकि विकारत হন। তিনি আপনার দৈবশক্তি সাধারণকে জ্ঞাপন করিরা পূর্ণ মনোরথ হইলেও, দলই লামার ভার ধর্মরাজ্যে তাঁহার তারুশ প্রভাব বিস্কৃত অথবা তদধিক্বত ভূভাগে তাঁহার বাকা বা উপদেশ ততদূর দেববাক্যৰং সমাসিত ও প্রতিপাশিত হয় নাই। কেবলমাত্র ডিফা হভুমে দলই লামার জার ভিনি লমভাবে त्राक्रमकिविकारत मधर्य इहेत्राष्ट्रियन।

৫ম গোল্ব-ঋন্পোছে লথক লোব জল গাাম্ৎসো উচ্চাভিলাবী ছিলেন। তিনি ভোটরাজের সহিত বিরোধকালে কুকু-নোর
নামক হুদতীরবন্তী কোবোৎ-মোললীয়দিগের নিকট দ্ত প্রেরণ
করিয়া ভোটরাজধানী দিগাচী আক্রমণার্থ তাহাদের সাহায্য
প্রার্থনা করেন। দিগাচীয় ভোটরাজের সহিত তাহার যুদ্ধে
মোললীয়গণ তিবত অধিকার করিয়া লথক লোব জলকে
সমর্পণ করেন। ১৬৪০ খুষ্টাব্দে এই ঘটনা ঘটে। স্প্তরাধ
তৎকাল হইতেই সমগ্র তিববত রাজ্যে দলই লামার অধিকার
(temporal government) বিস্তৃত হয়।

পূর্বেই উরেধ করিষাছি বে, লামাগণ বোধিসবের অংশসম্ভূত।
তিব্বতীয়গণের বিধাস, তাহাদের কেহ কেহ নমদেহে ভূতলে
অবতীণ, কেহ বা স্থগীর জ্যোতিঃ লাভবারা • অংশাব্তাররূপে
পূজিত। বৌদ্ধন্দশাত্র-প্রসিদ্ধ বোধিসবুপণ বেরূপ সংসার-ধর্ম
পরিত্যাগপূর্বেক প্রক্রলাত্রত অবলম্বন করিয়াছিলেন, এই
লামাগণও তদমুকরণে প্রাচীনতম বৌদ্ধাত(ভিক্স্)দিগের
সক্ষ্য, শ্রমণের ও অর্ছং-ধর্ম পালন করিয়া থাকেন। মঠবিহারিণী
বৌদ্ধভিক্ষ্ণীগণ লামাদিগের সহিত সমধ্যাম্থনীগনে রত থাকিলেও
সাধারণের চক্ষে সেক্ষণ সন্ধাননার সহিত গৃহীত হন না। তাহারা
সাধারণে উপাসক বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকেন।

সংসারধর্মনিরত গৃহিব্যক্তির যদি পবিত্র বৌদ্ধধর্মে বিশ্বাস থাকে, তাহা হইলে তাঁহারা ধার্মিক গৃহত্ব বিল্রা কথিত হন। ধর্ম্মোপদেশ প্রবণে তাঁহাদের ক্ষিকার আছে। তাঁহারা পঞো-পদেশ পালন করিয়া সংসার-কার্য্য-নির্ম্মাত্ত করিলে 'উপাসক বা

[🌲] ভিনাতভাবার পঞ্চবর্তী 'ব' অসুকার্য।

উপাসিকা', ত্রন্ধচর্যাবলখন না করিলে 'প্রিত্তকর্মা' (স্ৎসান-নৃত্যাদ) এবং চারিটী উপদেশ পালন করিলে ঞেন্-খো বা ঞেন্-না নামে অভিহিত হইরা থাকেন।

ধর্মপ্রাণ ডিফাতীয় সমাজে লামাগণ পার্থিব ও আধ্যাত্মিক শক্তির আধারভূত এবং সর্ব্বসম্পদের ভোগাধিকারী জানিরা-সাধারণে সেই আচার্যাপদের প্রার্থী হইরা থাকে। এই কারণে তদ্দেশবাসী অধিকাংশ লোকেই বাল্যকালে সংসাদ পুর্বে জ্লাঞ্চলি দিরা লামার শিষ্যত্ব গ্রহণ করে। পক্ষা**র্যন্ত, রাজুগতি**ল ও ধর্ম-শক্তিবলে অহুপ্রাণিত এই আচার্যাগণ লামাপ্রপ্রাধী বালক্দিগের উপর যথেচ্ছ অর্থদণ্ডও (বৃৎস্থন প্রাণ) করিছা খাকেন। শিক্ষা-নবিশী কালে তাহাদিগকে যথেষ্ঠ কারিক ক্লেল কোর করিতে হয়। এই সকল অমান্থবিক কঠোরতা সন্তেই ক্লিব্ৰতবাসী প্ৰত্যেক গুচ্ছই আপন আপন প্রথম বা প্রিয়তম পুরুষে লামাপদে নিয়োগ করিবার অক্ত তথাকার মঠে পাঠাইরা দেন। তাহাদের অক্তাক্ত সস্তানসন্ততিরা বিবাহিত হর এবং গৃহত্তের ভরণপোষণার্থ নানা কার্য্যে ব্যাপত থাকে। বাহার প্রথম পুত্র ব্যতীত অপর পুত্রও লামা হইবার জন্ত আগ্রহ প্রকাশ করে, সেই ব্যক্তি ছই বা ততোধিক পুত্র পাঠাইতে পারে। এই কারণে বৌদ্ধপ্রধান ভোটভাজ্যে প্রতি ছব বা আট জনের মধ্যে একটা লামা হইরা পড়িরাছে। সিকিমে ঐরপ ১: ১০ জন, লাদকে ১: ১৩, ভোটানে ১: ১০, ম্পিভিডে ১: ৭, সিংহলে ১: ৩০ বেমায় ১: ৩-, এবং উত্তর এসিরার কালমক জাতির মধ্যে ১৫- হইতে ২০০ তামুতে ১টা মাত্র লামা বিশ্বমান দেখা যার।

সাগিন্ট্ইট, ডা: কনিংহাম, ডা: কাবেগ, দুরক্রফট, মিড্ট্
ছক্ প্রাকৃতির তিবত ও লাদক এমণ বিবরণী পাঠ করিলে জানা
বার বে,তিবত রাজধানী লাসা নগরীর বাদশটী মঠে এবং তাহার
সন্নিহিত ভূতাগে প্রায় ১৮৫০০ লামা আছে। পশ্চিম তিবত
বা লাদক বিভাগের বর্ত্তমান জনসংখ্যার প্রায় ৬টাংশই লামা।

সাধারণ সন্ন্যাসাশ্রমে পারমার্থিক উৎকর্ম সাধনের জন্ত > শিব্য বা শিক্ষানবিশ, ২ বীক্ষিত শিব্য । ইহারা প্রোহিতপথপ্রাপ্ত এবং ৩ মহামান্ত আচার্য্য বা ধর্মপ্রক পহাধিকারী হইবার ব্যবহা আছে । ভারতীর বৌহসমাজে শ্রমপের, শ্রমণ বা ভিক্ত এবং হবির বা উপাবান্ত প্রভৃতি পদ দৃষ্ট হব ; তিকাতীর লামা-সম্প্রদার মধ্যেও সেইরপ সামান্ত বালক কইতে মহামান্ত আচার্যপদ লাভ করিবারও চারিটী ক্রম আছে । ভাহাদের শিক্ষানবিশকাল চইভাগে বিভক্ত ।

> 'গে-ঞেন' বা উপাসক। ধর্মজীবন অভিনাহনের অভি-প্রাবে বাহারা মঠে প্রবেশপূর্বক শিক্ষাকার্য্যে ব্রজী হয়। এই উপাসক বিবিধ,—পক্ষ-মহাপাতক প্রিক্সালপুর্বাক্ত বর্মবভাত্ত- বর্জনকারী ব্যক্তিমাত্র এবং ২ স্বাগাল্রমাবলনী নিবা। শেবেজি শ্রেণীর মধ্যে যাহারা ১০টা উপদেশ পরিপালন এবং সাম্প্রদারিক পরিজ্ঞাদি পরিধানপূর্বক এই ধর্মপথের পথিক হইতে প্রস্তুত হন, তাঁহারা 'রক্ষাঙ্ড' নামে খ্যাড। মোল্লেরা তাহাদিগকে কাবি, বন্দি, বন্দ বা বত্তে বলে। কালমাকগণ তাহাদিগকেই মানি বলিরা থাকে।

২ গো-ংবুল বা শিক্ষাজীকনের প্রাথমিক পর্যার। এই সমরে ভাহাদিগকে ৩৬টা ধর্মনিরম পালন করিতে হর। মঠের অপ-রাপর গোকের নিকট ভাহারা তথন কর্মকটা উপধর্মাধ্যক্ষ বলিরা বিবেচিত, কিন্তু বৌদ্ধতির ভার সন্মানিত নহে।

ত গে-লোক—ধর্মাচার্য্য ও ভিক্স। ২৪ বৎসর বরন্ধ না হইলে কেহই এই প্রমর্থ্যালা পাইবার অধিকারী নহেন। এই সমরে তাহারা প্রকৃত লীক্ষিত-যতি বলিরা গণ্য হর। এরপ অবস্থার তাহাদিগকে ২৫০টা নিরম রক্ষা করিতে হর।

৪ খান-পো--মঠাধাক বা উপাধাার। ইহাই লামা-সন্নাস-ব্রতের চরম সীমা; কারণ 'ধান পো'ই নিক্ষিত, দীক্ষিত ও যতিদিগের প্রকৃত শুরু। তিনি এক্ষণে উপরোক্ত সাম্প্রদায়িক বিভাগতবের শিক্ষকতাকার্য্যে ব্রতী থাকিবেন। কেবলমাত্র থাঁহারা ঐশীশক্তির ধারা অমুপ্রাণিত বা বোধিসবাবতার, 'চুতৃক্ত', এবং আচার্য্য-দেব বলিয়া বাজ-ক্তিতে ভূবিত এরপ লামাই খান-পোদিগের উপর রহিলেন। বাস্তবিক, ইহারাও পূর্ব্ধ-ক্থিড উপাধ্যার বা শুরু ভিন্ন আর কিছু নহেন। বহু প্রাচীনকাল হটতেই এই রাজ্বপক্তিসম্পন্ন দেবরূপী ধর্মবাজকগণই লামা বা আচার্য্য বলিয়া সন্মানিত হইয়া আসিতেছেন। অক্সাম্ভ মঠাধিকারী হইতে তাঁহার পার্থক্য নির্দেশ জন্ত তাঁহাকে শ্রেষ্ঠ লামা (Grand Lama) नात्म अधिहिक क्या हरेया शातक। त्करण वड বড় মঠেই এক এক জন খান-পো থাকেন ৷ নিকটম্ব কুন্ত লামান্তান ও মন্দিরাদির পরিদর্শকরূপে তাঁহারা তথাকার ঘারতীয় कार्यामि नर्यातकन कतिवा शास्त्रम, छाँशासद वह नम कछकारम কাথলিক বিশপদিগের মত।

লামার দীকা-প্রবালী।

বেপুন্ন, সেরা, গা:-ল্যন ও তবিল্ছন্গো প্রভৃতি ভোটরাজহ ক্পানিক সন্থাসাপ্রমে বে প্রণালীতে (গো-লুগ্-প) সামা-লিয় গৃহীত হইরা থাকে, নিম্নে ভাহার সংক্ষিপ্ত পরিচম্ব বিবৃত হইল। তিকাতের অভান্ত মঠাখাক্ষগণও ঐ সক্ষ মঠের আচরিত প্রথা অনুসরণ করিয়া কার্য্য করিয়া থাকেন।

বে বালককে (ব্ৎসন্-ছউড্) শিকামাজা লালা জরিবন বলিয়া মনত করিয়াছেন, সে বীল ভবনে আইন বংগছ(ছল ছউডে বাল পর্যাক্ত) জাল বাল করিবে, ক্তি সেই লমতে সে করে বাইরা বিভাত্যান করিতে পারে। মঠে বাইরার সমর আহান্দে মন্তব্দে লাল বা হরিলাবর্ণের টুলি নিরা রাইডে হর। এখানে পাঠাত্যানকালে নিফাভিলানী ছাত্রকুল নিফাল্লেণে উত্তরোজ্য উক্তপ্রেণ্ডিতে উত্তীত হইলা থাকে। ঐ প্রেণ্ডিগলি ভাষা, গো-২ন্-উল্ ও গে-লোঙ্ অর্থান বর্ধাত্রকে নিফালমিশ-লিক্ষা, বীন্দিত শিরা একং বভি। ভাছারা যৌক্ষভিলানর অধিকারী হইলা লিফাফিডাগীয় কোন একটা বিশেব বিভানের উন্নতিলাধনে বর্পুণ্য হইতে পারেন।

অনেক বালকই প্রধান মঠে বা সক্ষারামে দারা-পদ ও ভদহরপ শিক্ষালাভার্থ প্রবিষ্ট ইইবার পূর্ব গ্রান্যকুজমঠে প্রাথমিকপাঠ শিক্ষা সমাপন করিরা থাকে এবং দীক্ষালাভের সমর মঠে আসিরা সমাগত হব । সিক্লেমর পেনিওকছি মঠে এবং মিন্দোলিলের নিঙ্মা-সভ্যারামে যেরূপ প্রথার বালক্ষিগকে শিক্ষা দেওরা ইইরা থাকে, নিয়ে ভাছাই প্রকাশিত ইইন।

উক্ত মঠন্বয়ে কোন বালক শিকার্য আসিরা উপস্থিত হইলে, প্রথমে তাহাকে তাহার পিতার নাম, কুলমর্যালা ও প্রমর্ব্যাল জিজ্ঞাসা করা হয়। কোন কোন মঠে পিতা বনবাৰ হইলেই ভাহায়। ভনয়কে মঠে রাখিরা দের, কিন্তু সাধারণতঃ দকলঞ্চলিই আবল্লক। বালকের আভিজাত্য পরিজ্ঞাত হুইবার পর, তাহার পারীরিক বল পরীক্ষা করা হয়; কেন না, ভাছার শক্লীর চুর্বল হুইলে সে কথনট এতাদশ কঠোর ব্রতপালনে সমর্থ হইবে না। প্রথমে তাঁহারা বালক খঞ্ল, বধির, মৃক বা তোভ্লা কি না, তাহা ভালকপে भन्नीका करत्न। यनि वानक बाजविक त्योर्कनगानि कान माय-মক্ত হয়, তাহা হইলে লে কথসই মঠে প্রবেশ করিতে পার দা। লারীরিক পরীকার উপযুক্ত বলিরা নির্বাচিত হইবার পর. বালকের পিছা বা অভিভাবক মঠত কোন বভি বা লামার সিকট ৰীর পত্রকে রাধিরা আইনেন। যে যতি বালকের পঞ্জির্লক अ क्रेभामंत्री हत, जिमि क्षांबर जैशात निक्छ चाचीत। राजान এটক্রণ কোন নিকট আত্মীরের অভাব ঘটে, সেইখানে বালকের কোমা-ফল বিচার করিয়া মঠত কোন বৃদ্ধ বভিন্ন ছবে বাল-ক্ষেৰ ভারার্থন করা হয়। তখন নেই বৃদ্ধ বৃদ্ধিই বালকদিগের উপরেষ্টা হন। ওলন হতে সম্পূর্ণকালে নাসকের পিতা প্রভিক্তে সম্ভান প্রাণনার্থ বিদ্ধু টাকা, গাড়সামগ্রী ও মড क्षित्रा कारकन । क्षणविद्यास वर्षि क्षेत्रा क्षित्रात्र शार्वका कारक । দিবিয়ের শেষিকাছি সমারাচ্য আম গোড়ালা টাকা এবং (क्विएम अन्न एकमिनी नुसा किए देव । क्वि'क्य कर्ठ १०० काम बंदान तरका रहेश बादन।

্রান্ত্রন্ধান্ত করিব বিষয় করিব

ৰতিরা প্রবেত হইরা ব্লিরা বাক্সে, নেই গৃহে বালককে
আনিরা স্কলের সমূবে তাহার ক্রপারিকা এবং তাহার পিতার
এবত উপহারাদিপ্রাধির কথা জানাইরা প্রথান ব্ভিন্ন বা
প্র-ছগ্রনের নিক্ট বালককে নিয়তে নিরোগ করিবার ক্রাপেল
প্রার্থনা করেবা। শ্রেট-যতি এবিবরে জন্মোদন করিকো এ
বালক শিক্ষাধিরতা গৃহীত হর।

বিকানবিশ ক্ষরতার থী বালকের কেশ ছাটিয়া দেওরা হয়। क्यन रन निकटकत क्यीरन सांधातन वान পরিধান করিয়া পাঠা-ভ্যাস করিতে পার। ক, ধ ও প হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমণঃ সে কএকবানি কুত্র কুত্র ধর্মগ্রছ কঠছ করিয়া লয়। এতহাতীত তাহকে নীতি-উপদেশ ও ব্যাকরণের কতকাংশ শিক্ষা এবং তাহার চরিত্র সংশোধনার্থ এই সমরে ভাতাত্ত-নশবিধ হৃদ্রুর্ণ, নীচলব্যের লক্ষ্ণ, সভ্যের উদ্দেশ্য ও বাক্যকথন প্রণালী বিষয়েও নানারপ উপদেশ দেওরা হঠরা থাকে। এই পাঠ্যাবস্থার প্রথম বৎসরে বালকের পিতা বা আত্মীরবর্গ মাসে একদিন মাত্র দেখিতে चाहरमन এবং निकरकत राउन ও वानरकत शाताकी धन्न भिन्ना ভাহার। কতদুর শিক্ষাপ্রান্তি হইরাছে জানিয়া চলিয়া যান। এই-ৰূপ অবস্থাৰ চুই বা ভিন বংসর মধ্যে বালৰ আবশ্যকীয় সকল পাঠ্য কণ্ঠহ এবং ভাহা পুনঃ পুনঃ জাবৃত্তি করিতে জন্তান্ত হইলে শিক্ষ তাহাকে গে-৭ব্-উদ্ পলের উপযুক্ত জানিয়া প্রধান বডির (শিগ্য-মুগন্) নিকট প্রবেশাধিকার প্রার্থনা করিয়া পাঠান। দর্থত পাঠাইবার সময় বালককে একথানি উওরীয় ও > - টাকা পাঠাইতে হয়। প্রধান যতি পুনরার ভাহার শারীরিক ও মানসিক শক্তির পরীকা লন, তদনস্তর ভাহাকে গে-ৎয্-উল পদের উপযোগী জানিয়া তৎপদে নিরোগার্থ একখানি জামিন-নামা লিখাইয়া বৃদ্ধাকুলির ছাপ দিয়া লন। পরে শাখা- 🛪 বিশেষে শিক্ষা সমাধানার্থ শিক্ষক খীর ছাত্রকে তথাকার প্রধান बर्माशास्त्र (केशाशांत्र) निक्षे गहेता यान । 🙆 केशाशांत्र क তৎকালে প্রাণামী স্বরূপ ১১ টাকা ও একথানি উত্তরীর বিতে হয়।

ভঙ্গ শিব্যালনে উপাধ্যানের সমকে উপানীত হইলে উপাধ্যার ভঙ্গক এই করটা আর করেন। "লামা-ধর্ম গ্রহণ করিতে ইহার রলবতী ইছা আছে কি না ? এ বালক ক্রীতলাস, ধনী কিবো সৈনিকর্তিধারী কি না ? ইহার বংশমধ্যালা কিরপ, কেই ইহার এই ধর্মপ্রহণে আপত্তি উত্থাপন করিরাছে কি ? এ কথম বুলের আন্তারনের অবহেলা করিরাছে ? জলে বিব চালিরাছে বা পর্মভান্তরাল হইতে পক্ষীনিগকে চেলা মারিরাছে ?" ইভ্যাদি। উপরোক্ত প্রমান্তরের বর্ধাবধ উত্তর পাইরা সম্ভই হইলে উপাধ্যার ভাহাকে অধীত পাঠ্যগ্রহ্মসমূহের আন্তানুত্তিক পাঠ আর্তি করিতে কলন। নির্বাহার্য নালকের নেরা ও বিরহাতি প্রশ্

মুগ্ধ হইলে মঠের নাম-তালিকার ঐ শিব্যের ও গুরুর নাম লিখিয়া
বুজাঙ্গুলির ভাপ দিরা রাখেন এবং বালককে একথানি উত্তরীর
পারিতোবিক দেন। তদনতার ভাহাকে শাকাম্নির সংসারত্যাগ
ও সর্যাসাশ্রমগ্রহণকালীন বাসধারণের অফুরূপ লাল বা হরিদ্রারন্ধিত বন্ধ পরিধান করান হর। বালক উপাধ্যারের পরীক্ষার
লামা ধর্মগ্রহণের অভ্নপ্রোগী হইলে ভাহাকে মঠ হইতে ভাড়াইরা
দেওরা হর এবং ভাহার শিক্ষক দওনীয় হন। উপাধ্যার তাহাকে
ব্রোহাত করেন এবং ঐ শিক্ষক মঠে আলোক আলাইবার জন্ত
ক্রেক সের মাধ্ম দিতে বাধ্য হন।

উপাধ্যারকর্তৃক অন্ন্যাদিত হইলে, শিক্ষক প্নরায় ঐ বালককে
লইরা মটস্থ 'ঞাল্-ডো' বা শ্রেষ্ঠ লামার নিকট লইরা যান এবং
তাঁহাকেও একগানি উত্তরীর ও একটী টাকা প্রণামী দিয়া স্বীয়
বক্ষবা জ্ঞাপন করেন। শ্রেষ্ঠ লামা তাহাকে মঠবালের অধিকরে ও স্থানদানপূর্কাক পুনরার, একথানি থাতার তাহার নাম
ণিখিয়া রাখেন। এই বালক যদি ভবিষ্যতে কোন অপরাধ
করে, তাহা হইলে সে ও তাহার গুরু দণ্ডনীয় হইয়া থাকে।

জাল্ডো-লামা কর্ত্ত্ব নাম লেখা হইবার পর, সেই বালক
ড়াপা পদাভিষ্টিত হইরা মঠে জিরিয়া আইসে। অবস্থামুসারে সে
সেই মঠের অপরাপর সহাধ্যায়ীদিগকে চা পান করাইয়া থাকে।
যদি সেখানে ভাহার কোন আর্মার না থাকে এবং খাঞাদি রন্ধনের
অস্থাবিধা ঘটে,তাহা হইলে মঠের ভাগুরে হইতে সে খাঞাদি পায়।
ভাহার আর্মারেরা খাঞ্চিসাবে যাহা কিছু পাঠাইয়া দেন,
ভাহা ভিনভাগ করিয়া ভাহার একভাগ মঠ-ভাগুরে গৃহীত হয়
এবং অবশিপ্ত হইতে সে ডোল্-গগ, ব্র্ম-ঠাব্স, গ্রুন, জানপার,
বাব-্সর, স্গ্রা-লুগ্র প্রভৃতি যভির উপযোগী বন্ধ, পানপার,
মরদার থলি ও একছড়া মালা পায়। অভংগর প্রব্রন্ধারত
অবলন্থন করিয়া সে যত দিন না সয়াসিবং আচারাম্ছান করিতে
পারে, তভাদন সে গেংযুল বা শ্রমণপদ পায় না এবং মঠের ধর্মকায়্যে যোগ দিবার অধিকারী হয় না।

ড়াপা পদাভিষিক্ত বালক কর্মনিষ্ঠায় পারদর্শী হইয়া ধর্মকার্য্যে লিপ্ত হইবার আশার মঠাবিকারী শ্রেষ্ঠলামাকে (দ্গেলদেন্-খু-ঋন্-পোছে) খীয় অভিলাব জ্ঞাপন করেন। ঐ সময়ে
ভাহাকে একথানি উত্তরীয় ও সাধ্যমত অধিক টাকা (পূর্ব্বাপেকা
বেনা) প্রধানী দিতে হয়। শ্রেষ্ঠ লামার অভিনন্দন অস্থসারে সে
গেংমূল-পদলাভ করিরা থাকে। বালককে গেংমূল পদাভিষিক্ত করিতে একটা দিন নির্দিষ্ঠ হয়। সাধারপতঃ 'উপোসপ' বা
উপবাদদিনই প্রশত্ত। ঐ দিনে ভাহার মত্তক মুওন করিরা দেওয়া হয়। কেবলমাত্র মধান্ত্রেল একটা শিধা থাকে। ভদনত্তর ভাহাকে সজ্বের প্রধান প্রকোষ্ঠে উপাধ্যারের সন্মুক্ত আনিরা সন্ন্যাসীর বেশধারণ করান হয়। একটী মন্ত্র পাঠের পর, শ্রেষ্ঠ লামা অথবা মঠাধ্যক্ষ লামা তাহার সন্ন্যাসাশ্রমের একটী বতপ্র নামকরণ করেন। তৎপরে ঐ বালক সন্ন্যাসধর্ম বেচ্ছায় ও সানন্দে গ্রহণ করিরাছে জানাইলে মঠাধিকারী বা দীক্ষাকার্য্যের সমর উপস্থিত লামা সেই শিখা কাটিরা দেন। তথন সেই গেৎবুল ৩৬টা ধর্মোপদেশ ও ৩৬টা নিরম পালন করিতে বাধা হয়। সে প্রধান লামাকে নরদেহী বৃদ্ধ বলিয়া জ্ঞান করে এবং তাঁহার কথিত "আমি বৃদ্ধ, ধর্ম্ম ও সভ্যের আশ্রম গ্রহণ করিলাম।" এই মহামন্ত্র তিনবার উচ্চারণ পূর্ক্ত অঙ্গীকার করিলে সংস্কারকার্য্য সমাধা হইয়া যায়। সংস্কার-সমাধানাস্তে সে লামাকে একথানি কাপড় ও ১০টা টাকা প্রণামী দেয়। এখন হইতে সেই গেৎবুল লামাপ্রদন্ত নাম ও উপাধিতে মঠমধ্যে পরিচিত থাকে।

ইহার পর তাহাকে সজ্যের দালানে আনিয়া 'মঠের সহিত তাহার বিবাহরূপ' একটী প্রক্রিয়ার অন্তর্গন করা হর। তথন তাহার মাণার টোপর এবং হস্তে প্রজ্ঞলিত ধূপ থাকে। তদনস্তর তাহাকে নির্দিষ্ট আসনে বসান হয়। যে বৌদ্ধ যতি এই সময়ে তাহাকে যতিধর্ম্মের রীতিনীতি প্রভৃতি শিক্ষা দেয় তিনি ব-গ্রাগ্ নামে অভিহিত। বক্সাচার্য্য-সম্প্রদায়ভুক্ত তাদ্ধিক-বৌদ্ধাচার্য্য-গণের এই দীক্ষাপ্রথা কতকতা নেপালী "বাঁঢ়া"দিগের মত।

[নেপাল দেখ |]

যতিরূপে দীক্ষিত এবং তৎসাম্প্রদায়িক সমুদায় কর্ম্মে অধিকারী হইলেও, সে ড়াপা বা ছাত্র বলিয়া গণ্য হইয়া থাকে। এ
সময়েও প্রায় ৩ বংসর কাল তাহাকে বিছাভ্যাস করিতে হয়।
তদনস্তর সেই বালক যতিধর্মের 'ঋগ্-ছ'উন' শিক্ষাকাল অতিক্রম
করে। তাহার পর সে বতস্ত্র বাসের অন্ত একটী কুড় প্রকাষ্ঠ
পায়। এইরূপে শিক্ষার পারদর্শিতামুসারে সে পর্-পা ও
গো-লোঙ্ (পূর্ণ যতি) পদে উন্নীত হয়। তিক্তীয় প্রধান
প্রধান সক্ষারামের অধ্যক্ষ যতিরাই কেবলমাত্র কামা উপাধি
লাভ করিয়া থাকেন।

ঋগ্-হ'উন পদাসীন হইলেও সে শিক্ষাকাল অতিক্রম করিতে পারে না। এখন হইতে তাহাকে কঠোর পরিশ্রমের সহিত ধর্মশাল্রাদি অধ্যয়ন করিতে হয়। শাল্রালোচনা ব্যতীত সেই শিব্য কোনরূপ শিন্ন বা চিত্রবিভা অভ্যাস করিতে পারে। তখন পাঠে অবহেলা করিলে তাহাকে বেত্রাবাত করা হইরা ধাকে। এই সময়ে যে আচার্য্য গেংবুলকে বৌহুধর্মের গৃঢ়-রহস্ত উত্তেদন করিরা দেন, তিনি 'ং'স-বৈ-লামা' নামে ঐ বালুকের নিকট চিরদিন পৃত্তিত হন। এই সময়ে প্রান্থই তাহাদিগকে পরীকা করা হইরা ধাকে।

একটা সন্বারামের অস্কর্ত্ত প্রভ্যেক মঠেই এক একজন ধর্মাচার্য্য থাকেন। তাঁহারা তথার শ্রেষ্ঠ-লামার পদে অধিষ্ঠিত।
হ্রের, বিনর ও অভিধর্ম নামক ধর্মণাথার একটা বিবরে
পারদর্শিতা লাভ না করিতে পারিলে কেহই লামা পদ পান না।
লামাদিগের মধ্যে যিনি বত অধিক প্রজ্য। এই কারণে গেংখ্ল-গণও স্ব উপাধ্যারের অধ্যাপনার এক একটা বিবরে পারদর্শিতা
লাভ করিয়া থাকেন। প্রত্যাহ পাঠের সময়ে ঘন্টা-শন্ম হয়।
এ শন্ম ভনিয়া তাহারা পাঠ গৃহে গিয়া পাঠাভ্যাস করে এবং
বীয় আচার্য্যের নিকট নৃতন পাঠ লয়। এইরূপে আবশ্রুতীর
পাঠ সমাপ্ত হইলেই তাহাদের পরীক্ষা লওয়া হইয়া থাকে।
প্রথমে এক বৎসর পরে এবং তদনন্তর এক বা হই বৎসর পরে
পরীক্ষা গৃহীত হয়। এই হুইটা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হওয়া পর্যান্ত
ভাহাদিগকে চা প্রস্তান্ত ও সভ্রের বৃদ্ধ যতিদিগের আজ্ঞাবহন
করিতে হইয়া থাকে।

পরীক্ষাকালে প্রত্যেক সক্ষারামের সর্বন্দ্রেষ্ঠ উপাধাায় ও ছতিগণ একটা প্রকোষ্ঠে সমবেত হন। তথার সকলেই নিস্তব্ধ ভাবে বিদিয়া থাকেন এবং তাহার মধ্যত্তলে গেৎবুল দাঁড়াইরা স্থীর নির্দ্ধিই পাঠ আর্ত্তি করে। যদি সে কোন স্থান ভূলিয়া যায়, তাহা হইলে তাহার পাঠ শ্বরণার্থ অপর একজন তাহার পার্দ্ধে দাঁড়াইয়া দেই স্থানবিশেষ ধরাইয়া দেয়। প্রথম পরীক্ষায় সমস্ত পাঠ্য-পৃত্তকগুলি এইরূপে আর্ত্তি করিতে প্রায় ৩ দিন লাগে এবং প্রত্যেক দিনে সেই বালক নয় বার বিশ্রাম করিতে পায়। ঐ অবসরে সে পরবর্ত্তী গ্রন্থথানি পুনরায় দেখিয়া লইতে পারে।

যে সক্স যুবক এই পরীক্ষার উত্তীপ হইতে না পারে, ভাহাকে বিশেষ লাঞ্চনার সহিত ঐ গৃহ হইতে বাহিরে আনিয়া 'ছ'ওদ্ খুনদ্পা' উত্তম-মধ্যম প্রহার করিয়া থাকে। যদি এক বালক উপ্যুণিরি তিন বংসর পরীক্ষার অন্মুণ্ডীণ হয়, ভাহা ইইলে ভাহাকে মঠ হইতে বাহির করিয়া দেয়। কেবলমাত্র ধনী সম্ভানেরাই এয়প স্থলে অধিক অর্থনও দিয়। কেবলমাত্র ধনী সম্ভানেরাই এয়প স্থলে অধিক অর্থনও দিয়। মঠে লামাপদ প্রার্থী থাকিয়া বিদ্যাভাগে করিতে পারে। নির্ধনীপ্তেরা এয়প অবস্থার ধর্মজীবন অভিবাহন করিতে প্রয়াসী হইলে সাধুচেতা গৃহীরূপে দিনপাত করিতে পারে; কিন্তু ভাহাকে সভ্বারামের কোন কোন মঠের দাস্থান্তি করিছে হয়। যদি সে পরে পার-দর্শিতা লাভ করে, ভাহা হইলে ভাহাকে কোন গ্রাম্য মঠের লামাচার্য্য করিয়া দেওয়া হয়। কিন্তু তথন সে লামার ভার মর্যাধার্ক হইলেও ভংশদাধিকারে প্রকৃত অধিকারী নহেন।

উপরোক্ত পরীক্ষা অপেক্ষা ছাত্রসক্ষের পরম্পর বিচার বড়ই

মনোরম। উহাতে ছাত্রের শিক্ষা কিরূপ চইরাছে তাহা বিশেষ ভাবে পরীক্ষিত হইয়া থাকে। জিকাতের স্থপ্রসিদ্ধ দে-পুল, তবিল্ছুণ্পো, সের ও গাংল্দন সজ্যারামে সময় সময় এরপ বিচার-সভা আহত হইরা থাকে। এ স্থলে প্রার ৪ হইতে ৮ হাজার পর্যান্ত বৌদ্ধ-যতি সমবেত হয়। ইহাকে তিকাতীয় ভাষায় 'মংযান-ঞিদ' বলে। শিষাগণ ধর্মপান্ত ও ধর্মতত্ত্বের সারমর্শ অবগত হইরাছেন কি না, তাহা এই বিচার সভার আলোচিত হয়। যেস্থানে এই সভা হয়, তাহা শালগাছের শুর্ট ও পাথর দিয়া যেরা। বৌদ্ধযতি ভিন্ন অপর লোকের তথার প্রবেশ নিবেধ। উহার মধ্যস্থিত সর্কোচ্চ প্রস্তরাসনে স্থাবদ্-ম্গোন্, তরিষের কুস্রাসনে ম্থান্-পো এবং তদপেকা নিয়তম নির্দিষ্ট আগনে প্রধান গায়ক উপবেশন করে। তাহার চতুর্দিকে সাতভাগে বিভক্ত দর্শকরন্দের বসিবার হান। প্রশ্ন-কারী হরিদ্রাবর্ণের উষ্ণীব পরিশোভিত হইয়া দর্শকমওলীর সমক্ষে কর্যোড়ে স্বীয় প্রশ্ন উত্থাপন করেন। সমবেত ছাত্র-মণ্ডলীর মধ্যে যে কেহ ঐ প্ররণ্ডলির সমাক উত্তর দান করিতে পারে, দেই ছাত্র লামার আদেশে উক্ত শ্রেণাতে উন্নীত ब्हेग्रा थात्क।

বংসরের মধ্যে গ্রীয়, শরৎ, শীত ও বসন্তকালে চারিবার এই বিচার-সভা আহত হইরা থাকে। এইরূপে হাদশবর্থকাল শিক্ষা করিয়া প্রথিত বলিয়া পরিচিত হুহতে পারিলে, অন্তত:পক্ষেশ হুইতে চতুর্বিংশতি বর্ষের পর গেৎষূল্ স্বীয় অধ্যবসায়বলে গে-লোভ্-পদ প্রাপ্ত হন। গেংঘুল হুইবার সময় যেরূপ প্রথার অহুসরণ করিয়া উপাধাায় ও শ্রেন্ন লামার অভিমত গ্রহণ করিতে হুইয়াছিল, এবারও ভাহাকে সেইরূপ করিয়া মঠের তালিকায় নাম লিথাইয়া প্রকৃত যতি হুইতে হয়। যে যতি স্বীয় অধ্যবসায় বলে প্রকাশ্র বিচার-সভায়, অথবা মঠের প্রধান পরীকায় উন্তীর্ণ হুইতে পারেন তিনিই বৌদ্ধ-ধর্মতব্বের শ্রেষ্ঠ উপাধি লাভ করিয়া থাকেন। উপাধি প্রাপ্তির পর তিনি সকল প্রকার আচার্য্মর্য্যাণা লাভের অধিকারী হন।

গে-বে এবং রব্-জম্-পা বৌহধর্মের শ্রেষ্ঠ উপাধি। গে-লোঙ
শিক্ষা বলে 'গে বে' হইরা কোন এক বৈজ্ঞানিক তরালোচনার
নিযুক্ত থাকিতে পারেন, কিন্তু যতদিন না তিনি ঐ পদে
উন্নীত হইবেন; ততনিন তাহাকে ধর্মশান্তই আলোচনা করিতে
হইবে। গে-বে উপাধি প্রাপ্ত অনেক বৌদ্ধর্যতি তিক্কত, মোল-দিরা, আম্লোও চীন-রাজ্যের গবর্মেন্টের পরিদর্শনে পরিচালিত
সভ্যারামের প্রধান লামা বা দ্বাবস্-ম্গোন্ পদে অতিবিক্ত
আছেন। যাঁহারা মঠাচার্যের পদগ্রহণ করেন না,
তাহারা মঠে থাকিরা তম্পাত্ত অধারনে রত হন। পরে তম্বখারের

ৰক্ষ্যমান পরীক্ষার উত্তীর্ণ হুইছা সর্বাঞ্চলান্ত লাঃ ল্যুন্ নক্ষায়াদের 'বুপ' পদ লাভ করেন।

রষ্-অন্-প পরীকার উত্তার্গ ছাত্রের সাধার্থে লামা বলিরাই গৃহীত। তাঁহারা প্রকাশ্রহালে প্রকাশে বের্থর্লের উপলেন নিরা থাকেন। তিবাতের বাবন্দী ফেনির স্বারাম ব্যতীত অন্ত কোন মঠাধ্যকের এই উনারি বার্থ্যনার অবিকার নাই। দেবাংশসভূত লামাগণের অন্ত নির্দ্ধিন নির ও কার্যাবলীতে তাঁহাদের অধিকার আছে। রাজশক্তিধারী ঘলই লামা এরপ ছাত্রদিগকে 'ছ'ওজে' ও 'পত্তিত' উপাধি নিরা থাকেন। এতহত্তরের মধ্যবত্তী উপাধির নাম লো-ৎস-ব। 'রব্-অম প' ও 'ছ'ওজে' উপাধি প্রার সমান। ইহারা তৈ-জী বলিরা স্বানিত। স্তত্রাং দেবাংশসভূত লামা-দিগের নিরে ঘথাক্রমে খান্-পো, ছ'ওজে এবং রব্-অম-প পদাধিকারিগণ মর্য্যাদাসম্পর। ছ'ওজে ও রব্-অম্-প শ্রেণী হইতে খান্ পো নির্বাচন হট্যা থাকে। কোন কোন মঠে খান্-পো'র সহকারিরূপে ছ'ওজে নিযুক্ত দেখা যার। ছোট ছোট মঠে প্রধান লামার কার্য্য ছ'ওজে বা রব্-অম-প-দিগের হত্তে ভাত্ত আছে।

রমো-ছে ও মো-ফ নামক মঠে ভোজবিয়া ও ভৌতিকবিয়া লিক্ষার জন্ত অত লাখা প্রতিষ্ঠিত আছে। বাহারা এই বিম্যালরে থাকিয়া এই বিজ্ঞানের গৃঢ় রহস্তের মর্শ্ম অবগত হইরা পরীক্ষার উত্তীর্ণ হন, তাহারা ওগ্-রম্-প নামে অভিহিত। উাহারা আর্কেন, রসারন, ভূততব প্রভৃতি আলোচনা করিয়া থাকেন। শৈবসন্তানারের স্থার তাঁহারা বেশভূবা ধারণ করে। সম্ভবতঃ তান্ত্রিক কাপালিক-মত অন্থসরণ করিয়াই এই সম্প্রাক্তিত তান্ত্রিক কাপালিকে। এই প্রেনির অজ্ঞ ব্যক্তিরা ওগ্-লা ভবিবাদ্রকা বলিয়া পরিচিত। তাহারা ঝাড়ন, কুকন ও ভূতনামান প্রাকৃতি কার্যা দেখাইয়া থাকে।

মঠের শাসম বাবছা।

এক একটা স্বরুৎ সক্ষারাম সহস্র সহস্র বৌদ্ধতি বাস করে। একটা স্থানিরম-সম্বদ্ধ শাসনপ্রশালী ব্যতীত উহার কার্য্য-পরস্পার স্থানিকলী নির্কিরোধে নির্কাহ করিবার কর্ম একটি শাসনতর প্রতিষ্ঠা করিরা লইরাছেন। তথার একরপ রামত্তরই বিদ্যানান দেখা বার। এই পদ্ধতি পরিচালন কর্ম পরিকর্শক রূপে কএকজন কর্মচারী নির্ক্ত আছেন। ভীহারা ভাষাকার হিসাব দেখকের কার্য্য করেন এবং আক্রেক্সক্ত ক্লম্ম ছাত্র-সক্ষেরও অপরাধান্তরূপ ক্ষতিবিধান করিরা বাক্ষেন।

कू ता, रूग-कू व्यक्षि जेनाविशात्री त्यबाद्यकृतीक मामात्राहे

এই সকলের সকালাভানর একলাত্র কর্তা। বোলগাঁর বৌৰ
সভানারে তাঁহারা প্রিলিমন নামে ব্যান্ত। কোন জোন সভ্যারামে থান্-পো বা উপাধ্যানই অধ্যক্ত। এই সকল থান্-পো
দলই লামার অনুমতিক্রমে বা প্রাকেশিক লামা-প্রেয়ানগণের
আন্দেশাতুলারেই নির্ক হইরা থাকেল। তাঁহারা একক্রমে
সাভবংসর মাত্র একটা মঠের অধ্যক থালিতে সাজেন। তাঁহাদেশ্ব অধীনে নিরোক্ত কর্মাচারিগথ মঠের ফ্রন্ড্রমা ও ক্রন্সাসন
স্বল্প করিতে ব্যাণ্ড আছেন। তাঁহারা দকলেই বঠখাসী
বিভিনিগের অভিনতান্ত্রনারে নির্বাচিত এক সকলেই নির্দিট
ক্র্যান্ত নিরোক্তিত পদের মর্যান্তা রক্ষ্যা করিতে বাধ্য।

- লোৰ্-পোন্বা জন্ধাপক--ইনি সজ্জারাষের ধর্ম ও বিভা-পিকার পরিদর্শক।
- २ इन्-म्रा- क्वांबाध्यक ७ बांबाजी।
- ও ঞের-প বা পিয়-ঞের—ভাণ্ডারী।
- ৪ গো-কো এবং ঝাল্নো—হাকিম ও কেনাখ্যক। ইহারা গুই ব্যক্তি, পুলিল কর্মচারির ভার ইতততঃ প্রহরীরূপে পরিভ্রমণ করেন এবং মঠবাসিগধের হোবস্থলের কিচার করিয়া থাকেন। ইহাদের সহকারীরূপে গুই জন হগ্-কের আছেন।
- উথ-দ্দে—প্রাধান গান্তক।
- ফু-ঞের—ধর্মালরের গরিচারক।
- ৭ ছ'ব্-দ্রেন্-বলদানকারী।
- ৮ অ-ম--- চা-সর্বরাহকারী।

ইহা ভিন্ন প্রভাবে মঠেই সম্পাদক ও পরিন্নর্পক্ণাণ, পাচক্ষাল, প্রবৃক্ষী, অভিথি-সংকারক, হিনাবরক্ষক, কর্সংগ্রাহক, চিকিংসক, চিত্রকর, বণিক্-যতি,ভূতের রোঝা ও সাক্ষ্য-দশুরাহী প্রভৃতি নিযুক্ত আছেন।

সভবারামসমূহের কার্যাবালী হানিবলে পরিচালিত করিবার বাজ বাতর বাজর বিদ্ধান নির্দিষ্ট হাইবাছে। দে-পুল সভবারাম ৭৭০০ বভি বাস করেন। জাহারা ব্লো-গ্লাল-মিড, স্গোন্মঙ,ব্লে-বঙ্গ ও স্থগদ্প নামক চারিটাবিববিভালরের অধীন। প্রত্যেক বিভালরই এক একজন উপাধ্যারের কর্মুখে পরিচালিত। বভিনাণ প্রাদেশিক ও জাতীর বিভালাহ্লাহে বিজ্ঞি মঠাবাসে হান পাইরা বালে। সেই বিজ্ঞি ক্রেন্টাঙ্গ বাসাগুলি ক্র্মৃথ্য বালি বালে। সেই বিজ্ঞি ক্রেন্টাঙ্গ বাসাগুলি ক্র্মৃথ্য বিদ্ধান ক্রিকা ক্রেন্টাঙ্গ বাসাগুলি ক্র্মৃথ্য বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকা ক্রিকাণ ক্রিকা ক্রেন্টাঙ্গ বালাহ্লার প্রত্যুক্ত করেন বিভাল ক্রেন্টাড়া অবং বিভাল ক্রেন্টাড়ার আর্থ্য বালাহ্লার ব্যব্ধ ক্রিকার অব্যাহ্ণ বিশ্ব ক্রিকার ক্রেন্টাড়ার অব্যাহ্ণ ক্রেন্টান্মন্টানার ব্যব্ধ ক্রেন্টার বালাহ্নার ক্রেন্টান্ম বালাহ্রার বাল্যাহ্নার বাল্যাহ্নার বাল্যাহ্নার বাল্যাহ্নার বাল্যাহ্নার বাল্যাহ্নার বাল্যাহার বাল্য

শের সঞ্চারামে ১১০০ ষতি বাস করেন। তল্মধ্যে বরেরা, স্ভগ্স-প শাদ্-প বিভাগরের প্রত্যেকের অধীনে এক একটা শাধাসমিতি আছে। গাঃ লদ্ন্ সঞ্চারামে ৩০০০ বৌদ্ধ যতি পাকেন। ব্যঙ্-র্থনে ও ষর-ৎসে নামক ছুইটা শাধা বিভাগর ইহার অন্তর্ভুক্ত এবং তৎ সংস্পর্শে বাসা আছে। তিষিল্মুণপোর প্রেসিদ্ধ সঞ্চারামে তিনটা 'ত-ৎবন্ধ' বা বিভাগর আছে। তদধীনে প্রায় ৪০টা ধমৎবন বা শিষ্যাবাস দেখা যায়।

বঙ্গের প্রানিক পরিব্রাজক শ্রীযুক্ত রায় শরুক্তর দাসবাহাত্র স্থপ্রসিদ্ধ তবিলয়্ণপো সজ্বারাম পরিভ্রমণ করিয়া তাহার বথাযথ বিবরণ সংগ্রহ করিয়াছেন। (উহা তৎসম্পাদিত Jour. Bud. Text. Socy. India IV. p. 14 (1893) as Journey to Lhasa and Central Tibet নামক গ্রাম্থে বিশদরূপে বিবৃত আছে।) শেষোক্ত গ্রন্থের ৭৬পৃষ্ঠার লিখিত আছে--তু-ধন প্রদেশ-বাসী ত্বিলহুণপোর একজন দেবরূপালত্ক নবীন লামা ১৮৮১ श्रुहोत्मत ১৫ই ডিসেম্বর উপবাস ও পর্ব্বদিন জানিরা বৌষ্বতি-দিগের জু-খন্ৎসন্ পদলাভের ইচ্ছা করেন। তদমুসারে তিনি কুন্-খাব লিক হইতে পঞ্চেনকে নিমন্ত্রণ করিয়া পাঠান। তিনি উক্ত সঙ্ঘারামের মধ্যস্থ ৩৮০০ যতির প্রত্যেক ব্যক্তিকে এক টাকা, শ্রেষ্ঠ লামাকে উপহার ও প্রণামী এবং লামাবিস্থালয়ে (College of Incarnate Lamas) বিস্তর অর্থ দান করিয়াছিলেন। পঞ্চেন্ আসিলে সকলে বাড়োল্মসহকারে তাঁহাকে অভার্থনা করিয়া মঠের প্রধান প্রকোষ্টে লইয়া আদেন। তিনি এই উপাসনা-গুহে (ংসো-ধন্স) আসিরা বেদীর উপর উপবিষ্ট হইলে এই উৎসবের ক্রিয়াকাও আরক্ক হয়। তাহা সমাধা হইতে রাত্রি ১০টা হয়। তৎপরে ভোজাদ্রবা, মাল্য ও অপরাপর দ্রবা লইয়া হতিগণ স্ব স্ব মঠাবাদে ফিরিয়া আইদেন। এই যঞ সমাপনের পর উক্ত নবীন লামা তৃষিল্ছুণপো সভ্যারামে শিক্ষা-নবিশন্ত্রপে থাকিয়া পাঠান্ত্যাস করিতে খাঁট্রিন। পরে তিনি পরীকা দিয়া লামাপদ লাভ করিয়াছেন। তিনি এদেশে তবিলামা নামে স্বাডে। সম্প্রতি তিনি বৌষ্টীর্থদর্শনোপলকে ভারতবর্ষে আগমন করিয়াছিলেন।

উপরোক্ত সজ্বারাম-সংলিপ্ত ছাত্রাবাসসমূহে ছই জন করিরা লামা থাকেন। তাঁহাদের মধ্যে জােষ্ঠ লামাই ছাত্রাবাসসংলগ্ন মঠের পরিদর্শক ও মন্দিরের পূজক এবং ছাত্রমগুলীর উপদেরা। করিষ্ঠ লামা কেবল ভাগুরিগৃহের তত্বাবধানে ব্যাপৃত থাকেন। বৃদ্ধি তাঁহাদের জধীনত্ব মঠের কােন ছাত্র জসদাচরপ করে, তাহা ইইলে তাহারা দগুলীর ইইরা থাকে। প্রতি বৎসর এই ছই কর্মচারীর পরিবর্জন হয়। এই সকল কর্মচারিনিরাগকালে স্বতন্ত্র প্রক্রিয়ার জন্মগ্রান হইতে দেখা বার। প্রভাব প্রভাত সময়ে অর্থাৎ ৪টার সময় একজন বালক মিলিরের চূড়ায় উঠিয়া ছ্হোস্বল্ গান করে। ঐ গীত প্রভ হইবামাত্র ছাত্রাবাসস্থ ছাত্রমপ্তণী লয়া পরিত্যাগপূর্বক জাগিরা উঠে এবং স্ব স্থ আবাসস্থ হণ্টাশন্ধ করিয়া সকলকে প্রবৃদ্ধ করে। তদনস্তর ভাহারা মুখ ও হত্তপদাদি প্রক্ষালন করিয়া রাত্রিবাস পরিত্যাগপূর্বক ধৌতবত্র পরিধান করে ৮ পরে মাথার জ্লা-গন্ ঢাকা দিয়া এবং হরিজাবর্ণের টুলি মন্তকে দিয়া একটা বাটা ও মরদার থলি হত্তে লইয়া ভাহারা ভাগারীর নিকট ময়দা আনিতে বার। পরে ভাহারা মন্দিরের প্রাক্ষণে প্রণত হইয়া মঠপ্রদক্ষিণ করে এবং কেহ কেহ মঞ্জীমন্দিরে বাইয়া ওম্-য়্র-প-ৎচ-নিট্নর পাঠ করিয়া থাকে।

বেলা ১টার সময় মিগ্-ৎ সৈ-ম লামা লিগ্ পিম ভোতা উচ্চস্বরে গান করিতে থাকেন। তথন ছাত্রগণ সেই ছানের ৰারদেশে আসিয়া শিরে হরিতাবর্ণের উঞ্চীব ধারণ করিয়া সমস্বরে সেই স্তোত্র গান করে। কিছুক্রণ পরে হত্তিল আসিরা দার পুলিরা দিলে তাহারা মলিরে প্রবেশপূর্কক পরস্পর মুখোমুখি করিয়া যথাযোগ্য আসনে উপবেশন করে ও মাথার টুপি খুলিয়া রাখে। তৎকালে তাহাদের থলি ও বাটা হাঁটুর নীচে লুকান থাকে। অতঃপর প্রধান গারক কর্তক দেবপদাশ্রমণীতি গীত হইবার পর, কনিষ্ঠ মঠপরিদর্শক হরিল্লা-উঞ্চীয় মাথার দিয়া দণ্ডার্মান হইয়া লোহনপুৰারা স্তম্ভগাত্রে আঘাত করিলে ছাত্রগণ জল ধাবার খরে যাইয়া চা পান করে এবং ভাছার পর পুনরার ফিরিয়া আসিয়া স্ব স্থাসনে উপবিষ্ট হর। এই জলখাবার ঘরের মতন্ত্র ব্যবস্থা আছে। যে প্রণাণীতে ছাত্রগণ চা পান করে বাহুলাবোধে তাহা এথানে উল্লিখিত হইল না। চা ৰণ্টনকাৰ্য্য পরিদর্শনার্থ ৫ জন কর্মচারী নিযুক্ত আছে। গুই জন জদপোন রাজ্বত চা-পরিবেশক ও পরিদর্শক, একজন মঠাধ্যকের चापिष्ठे ठा-वर्ग्टरनत्र कर्चकर्छ। এवः ध्रुटेबन म-म ও এकस्रन পরিদর্শক ঠব গ্যোগ্রি দূপোন পো ও তদবীন ২৫ জন পরিবেশক অহরহ: এই কার্য্যে ব্যাপুত রহিয়াছে। মঠস্থ যতিগণ দিবসে তিন ৰার (প্রত্যেক বারেই ৩ বাটী) চা খাইতে পার। অধি-कारण ठा'हे हैं।गांद्र श्राश्च। कान कान धनी वाकि. श्रामिक मामनक्कां ७ हीरनत्र मञ्जाहे विस्मय विस्मय मिरन नामामिशस्क চা পান করাইয়া থাকেন। লামামঠের বে কটাছে চা'র জল গ্রম হয়, ভাহাতে প্রায় ২০০ মণ জল ধরে।

মঠের প্রচলিত প্রথা উলব্দন করিলে, কোন প্রকার অসোজন্ত বা অসম্ভবহার প্রকাশ করিলে অথবা ব্রহ্মচর্চ্চ ভল্ করিলে প্রতিনোক্ষরিধি অসুসারে ভাহার বিচার ও সালা হইরা থাকে ৷ সামান্ত অপরাধে জিরন্থার বা লাগুনা হারা অব্যাহতি পায়, কিন্তু যদি কোন বাজি একই অপরাধ বারংবার করে; ভাহা হটলে অপরাধ গুরুতর বলিয়া গণ্য হর এবং অপরাধীর ভদত্বরপই শাসন হইয়া বাজে। বলি কোন ছাত্র উপর্গুপরি মগুণান বা চুরি করে,ভাহা হইলে সেই অপরাধীর শিক্ষক ও ছা মাবাস-পরিপর্শক বিচারসভার সমবেত যতিমগুলীর সমক্ষেনিক্ষাভালন হইয়া বাজেয় । পরে ছইজন লোকে ঐ ছাত্রের পায় দড়ি বাধিয়া মন্দিরের বাহিরে লইয়া বায় এবং তাহার দক্ষিণ ও বাম পার্শে উপর্গুপরি বেরাঘাত করিতে থাকে। এক সমরে ভাহার উপর প্রায় সহজাধিক বেরাঘাত হয়, ভদনস্তর তাহাকে মঠের সীমাবহির্ভাগে টানিয়া কেলিয়া আইসে। যাহারা বেজরায় ব্রহ্বর্গা ভঙ্গ করিয়া মঠ পরিত্যাগ করে, তাহারা বন্লোক নামে থাতে।

মঠের বহি: প্রদেশেও লামাদিগের প্রভাব বিশ্বত আছে। কোন ব্যক্তি কাহার উপর অহিতাচরণ করিলে হেই-হো-সঙ্গ বা কপালে রুক্তবর্ণ রেখাধারী গেকোর লামাগণ মঠগোচীরের বহিন্তালে আসিয়া সেই চুর্ব্বভূকে দমন করিতে পারেন। এই গেকোর লামাগণ মঠাধাক অপর প্রতিযোগিছরের সাহায্যে লামা বা ব্রহ্মচর্ব্যাপ্রমের নিয়ম রক্ষা করিরা থাকেন। এই লামাগণ প্রাচীন বৌদ্ধসন্ন্যাসীদিগের ছায় স্থপশৃহাবর্জিত নহেন। সন্ন্যাসীর ফ্রায় তাঁহারা অর্থলাল্যা ও ভোজনলিপ্সা ত্যাগ করিতে পারেন নাই। সাধারণ লোকে তাঁহালের ভোক্তা এবং চঙ্গ, চা প্রমৃতি পানীয় যোগাইতে যোগাইতে উৎকৃষ্টিত হইয়াছেন। গে-লুগ-প প্রভৃতি তিকাতীয় প্রধান সন্থারামের অধীনে অনেক ভদম্পত্তি আছে। উহার আয়ে তাঁহাদের ব্যয়ভার চলিয়া থাকে। এতদ্বির শরতের শক্তকর্ত্তনকালে বহুণত লামা মঠের বাহির হইরা ভিক্ষা করিয়া শশু এবং চা, নবনীত, লবণ, মাংস প্রভৃতি ভরণপোষপৌষোণী দ্রবাদি সংগ্রহ করিয়া ভাণ্ডার পূর্ণ করেন। কোন কোন লামা পুতুল গড়িরা বা প্রতিমূর্ত্তি কাটিরা, ছবি আঁকিয়া, কোষ্টা প্রস্তুত করিয়া, বুজরুকী দেখাইয়া, চিকিৎসা कतिया ও थाए। क्रका भित्रा नाना छेशादा व्यर्थ त्रक्य कतिया मर्छत यात महनान कतिया शास्त्रन । या मकन नामा जानून व्यथत वृद्धि-मन्नाम अथवा পश्चिष्ठ नरहन, छोहान्नाहे मर्राज अश्वास कार्या করেন। কেছ কেছ বাণিজ্যে লিপ্ত হইরা প্র্যারামের ঐশ্বর্যা वृद्धि कृतिशा शास्त्रन । এই সকল धन्द्रीहायीशंग वावना वानास्त्रन ত্ব গ্রহণ করিতে কুট্টিত হন না। বাস্তবিক পক্ষে তাঁহারা স্মবাবদারী এবং দেশের মহাজন বলিরা পরিগণিত।

ভারতীয় বৌদ্ধানের বেশভ্বাদি ভারতীয় কচুতলির অন্ত্র কুলে নির্মিত হইরাছিল। যখন বৌদ্ধার্ম ভিব্বত প্রভৃতি তুবারমর প্রদেশে বিভার লাভ করিল, তখন হইতেই বেশ দূষার পরিবর্তন ঘটিতে থাকে। তিকাতীর লামা বা বৌদ্ধযতিগণ দারুণ শীত ও মশকদংশনাদি শারীরিক পীড়াদারক
যত্রণা হইতে পরিত্রাণ পাইবার অস্ত জুতা, মোজা ও গারবস্ত্র প্রভৃতি শীতপ্রধান দেশের উপযোগী করিয়াই নির্দাণ
করেন এবং ক্রমশং তাহার পরিচহরতার দিকে দৃষ্টি পড়ে।
প্রাচীন বৌদ্ধগণের চীরবাস ও বর্তমান লামাদিগের জপমালা,
শিরমাণ, আল্খালা, কোমরবন্দ, (ছাটজামা, চোগা, ডোরাকাটা
পশ্মী জোকবা, ইজার, পারজামা এবং জুতা প্রভৃতি আবশ্রকীয়
উপাদানসমূহের তুলনা করিলে বুঝা যার যে, বর্তমান মূগে বৌদ্ধধর্মে কি বিল্লব উপস্থিত হইরাছে।

তিব্বতীয় লামাগণ শিরোদেশে যে বিভিন্ন প্রকার উষ্ণীয় শোভিত করেন, তাহার প্রায় সকলগুলিই ভারতীয় অনুকরণে গঠিত, কএকটী মাত্র চীন ও মোঙ্গলীয় ধরণে নির্মিত দেখা বায়। তিব্বতীয় লামাগণের বিশ্বাস এই যে, লামা-ধর্মমতের প্রতিষ্ঠাতা বৌকভিক্ষু পর্মসন্তব এবং তাহার সহযোগী শাস্তর্মিকত খুইায় ৮ম শতাব্দে ভারত হইতে যে শিরস্তাণ পরিধানপূর্বাক ভিবতে পদার্শণ করেন, তাহারই আকৃতি অনুসারে বর্ত্তমান টুলীগুলি গঠিত হইয়া থাকে। পঞ্চেন্ত্রন্দ্র নামক লাল উষ্ণীয় দিয়া স্বয়ং শাস্তর্মিকত তিব্বতে আমিয়াছিলেন। গেল্গ্ল্প বাতীত ভিবতের সর্ব্বত্রই ঐ টুলীর প্রচলন ছিল। উহা ভারতের শীতপ্রধান দেশে ব্যবহৃত তুলার 'কাণ ঢাকা' টুলীর মত। হেসাঙ্গলাপ সেই লাল বর্ণ-টুলীর পরিবর্ত্তে হরিদ্রাবর্ণের উষ্ণীয় (ব-সের) প্রচলন করিয়া যান। উহাই গেলুগ্ল্প সম্প্রদারের পরিবিদ্ধ ।

মঠবিংনিণী বৌদ্ধভিক্ণীগণ পশমী বন্ধ বা লোমের দারা প্রস্থাত একপ্রকার শিরন্তাণ ব্যবহার করেন। সম্প্রদায়ভেদে উহা লাল ও রুঞ্চবর্ণের হয়। সিকিম, ভোটান ও হিমালয়ের প্রাক্তমনক জনপদে বৈখানে রৃষ্টপাত হয় না, সেই সকল প্রদেশবাদী বৌদ্ধলামগণ গ্রীমকালে খড়ের টুপী পরিধান করিয়া থাকেন। কেহ বা জাদৌ টুপী পরেন না। চীনবাদীর ছায় উহারা টুপী খুলিয়া আগস্কককে অভিবাদন করেন, এই কারণে দেব-মন্দিরে প্রবেশকালে কেহই মাধায় টুপি রাখেন না, কেবলমাত্র ক্রকটী ধর্মকার্যে টুপি পরিধানের বিধি আছে।

তাঁহাদের গাত্রবন্তেও উক্ত ছই প্রকার বর্ধ দেখা যায়।
গো-লগ্-প সম্প্রদারের আচার্যাগণ কুকুমর্ম্নিত হরিদ্রাবাদ
ধারণ করেন। বদি কেই গো-লৃগ্-প আচার্য্যের নিক্ট কোন
উপটোকন দিতে আন্দে, তাহা হইলে দে প্রিশ্নপ হরিদ্রাধাদ
পরিধান করিতে পারে, তাহা হটলে মুখনীর হর। প্রাচীন বৌছদিগের

সব্ঘটি, অন্তর্বাসক ও উত্তরাস্কাটির স্থিত ভিষ্মতীর লামা-দিগের জান, নম জার ও ব্ল গোম নামক গাত্রবাদির অনেক সৌসানুশ্র আছে। এতন্তির শাক্ত ও বৈঞ্বদিগের ফ্রায় তাহারা माना छल करत। व मानाव २०५ ही नाना थारक व्यक्त छेहात ছই পার্শ্বের হতে ১০টী করিয়া 'সাক্ষী' রাখে। ১০৮ বার মালা-জপের পর এক একটী সাক্ষী ধরিরা ভাহারা মন্ত্রসংখ্যা নিরূপণ করে। এইরূপ ছই দিকের ১০×১০ সাক্ষীতে তাঁহাদের ১০৮০০ জপসংখ্যা হয়। এই সকল মালা দানাও বিভিন্ন প্রকার হইয়া शारक। नर्का श्रधान ভिषिनामात निकृष्टे मूका, চूनि, शाहा, নীলা, প্রবাল, কটিক প্রভৃতি মূল্যবান প্রস্তরে নির্মিত মালা দেখা যার। এতদ্বির সম্প্রদায়ভেদে ও দেবারাধনা বিশেষে मानात्र माना पृथक् इटेग्रा शांत्क। ता नृग् भ मन्त्रानात्र माधा ছরিল্রা বর্ণ কাষ্টের মালা প্রচলিত। তম-দিন পূজার লাল চন্দন-কার্চের এবং ছ-রণী উপাসনার খেতশঙ্খের মালা, তাব্রিক উপ-দেবতাগণের পূজায় কদ্রাক (Eleocarpus Janitus), সাপের হাড়ের মালা, অবলোকিতের পূজার কটিকের মালা, পদ্মসম্ভবের ও তাম দিনের পূজায় প্রবাল এবং বজ্রভৈরবের উপাসনায় নুকরোটি ব্যবস্ত হইয়া থাকে।

লামারা যথন মালা জপ করেন না, তথন তাহা গলায় বা দক্ষিণ হত্তে জড়াইয়া রাথেন। মালা-জপের সময় প্রত্যেক দানা ধরিবার অর্থ্যে তাঁহারা ওম্প্রণব উচ্চারণ করেন, পরে দানা ধরিয়া মনে মনে মন্ত্র পাঠ করিতে থাকেন। ভিন্ন ভিন্ন দেবতার জপমন্ত্র বিভিন্ন। এই সকল লামাগণ সচরাচর আরও কএকটী দ্রব্য ব্যবহার করিয়া থাকেন। তন্মধ্যে ভজনচক্র, বজ্বদণ্ড, ঘণ্টা, করোট-নির্দ্মিত ঢকা, ধঙ্কনী, কবচ, পুথি ও অলকার প্রধান। তবিল হুণপোর প্রধান লামা সময়ে সময়ে জহরতাদি গঠিত কণ্ঠহার ধারণ করেন। কাহার কাহারও ভিক্নাপাত্র ও সয়য়সকণ্ড আছে।

তিক্ষতবাসী লামাগণ ধর্ম্মের জন্ত প্রাণ বিস্পান করিলেও কর্ম্মকাণ্ডে তাঁহাদের বিশেষ আসক্তি দৃষ্ট হয়। মঠবাসী যতি, গ্রাম্য প্রোহিত, গুহাবাসী তপঃপরারণ লামা ভিক্ষ অথবা রুষি-বাণিজ্ঞাদি কর্ম্মে লিপ্ত লামাগণ পৃথক্ পৃথক্ কার্য্যে ব্যাপৃত থাকিয়া জীবনবাত্রা নির্কাহ করিতেছেন। এই বিভিন্ন শ্রেণীর লামাদিগের নিতাকর্মপ্রতিও স্বতর।

লামানগরীর পোভল পর্বাত্তর শ্রেষ্ঠ লামাসন্থারামে বৌদ্ধ-যতিগণ বে প্রথা অবলম্বনে বৈনিক কার্য্য সমাধা করিয়া থাকেন, ভাহাই নিমে ক্ষেত্রভাবে উদ্ধৃত হইন,—

রাত্রিকালে বর্ধনই নির্মাতন হইবে, তথনই বভিগণ শ্ব্যাত্যাগ
 করিরা বাব্দেন । পরে গাত্রোখানপূর্বক পরিজ্ঞল পরিধান করিয়া
 ক্ষেত্র ক্ষরে গৃহমধ্যত্ব কেন্দ্রীয় সমক্ষে তিনবার দেবোদেশে

প্রণাম করিবেন। তদনস্তর কীবনযাত্ত্যানির্কাহের উপায় প্রার্থনা করিরা বৃদ্ধ ও বোধিসবদিগের উদ্দেশে শুব এবং সঙ্গে সঙ্গে স্ক্র-প্রন্থ তাহ হইতে কএকটা মন্ত্র পাঠ করিবেন। স্তম্ম ও মন্ত্র পাঠান্তে "ওঁ প্রেচরগণর দ্রী দ্রী আহা" মন্ত্র তিনবার পাঠ করিয়া যতিগণ আমু পদতলে পুতু প্রদান করিবেন। তাহাদের বিম্বাস, দিবা-ভাগে ভূপৃঠে ভ্রমণ ক্ষম্ম যে সকল জীব পদদলিত হইরা পঞ্চম্ব প্রাপ্ত হয়, এই মন্ত্রবলে তাহারা অমরাবতীর ইন্ত্রপুরে দেবরূপে ক্রমা পরিগ্রহ করিয়া পাকে।

এই সকল দেবারাধনার পর, যদি রাত্রি প্রভাত হইতে श्विक विनय थाटक. जाहा हहेटन ताहे या भनताय मयामाही हरेग्रा निजा बाहरू भारतम, किन्ह यनि छुटै वा ठावि मण वाकी থাকে. তাহা হইলে তিনি আর নিদ্রিত হইকেন না, সেই স্বর-কাল "স্বোন লম্" ভজনগীতি বা মন্ত্র পাঠ করিয়া রাত্রি যাপন कतिराय धारा चारी धारित हरेला यथन मकरन सारशाधिक हरेरायन. তথন তিনিও শ্যা তাাগ করিয়া শৃত্যধানি ও শিক্ষাধানি পর্যান্ত আপনার বেল পরিধানাদি কার্য্যে ব্যাপ্ত থাকিবেন। শিক্ষা-ধ্বনি হইবামাত্রই সকলে অ অ মঠকক পরিত্যাগ করিয়া 'দে'।-ব্ছল' নামক প্রন্তর মণ্ডণে উপাসনার্থ সমবেত হইবেন। ঐ সকল প্রস্তরাসনে দণ্ডায়মান থাকিয়া তাঁহারা "ওঁম অর্থং চার্থং বিমনবে ! উৎস্থা মহাক্রোধ হংকট্" মন্ত্র পাঠপুর্বক মনের পাপ ও কলুষাদি চিন্তা করিবেন। উহার দারা তাহাদের চিত্তপাতক বিদ্রিত হইয়া থাকে। তদনন্তর স্থগ্র পা নামক কারমৃতিকা বা সাবান যোগে স্ব স্থ তাম ঝারিত জল ছারা হস্ত পদাদি প্রকা-লন করিবেন। হস্তপদের স্থান বিশেষ প্রকালনকালে তাঁহারা विट्रंग विट्रंग मन शार्थ कतिया थात्कन । मुथानि ध्यक्तां गत्नत পর শৌচ দেহে জাঁহারা হত্তে মালা লইয়া জ্বপ করিতে করিতে তারা দেবী ও মন্ত্রশীর উদ্দেশে মন্ত্র পাঠ করেন, সমন্ত্র থাকিলে কেহ কেহ স্ব সুণাধিষ্ঠাত্রী দেবতার স্বতি পাঠও করিয়া থাকেন।

এই সকল কার্য্য সমাধান করিতে প্রার ১৫ মিনিট সময় লাগে। তাহার পর বিতীর বার শত্থাবনি হইলে গে-লোভ বভিগণ মন্দিরদারের সমক্ষে যাইরা এবং গেংবুলেরা মন্দিরসমূপত্ব প্রাকণে দীড়াইয়া দেবোদেশে প্রণাম করেন। তাহার পর মন্দিরদার উন্মৃক্ত হইলে একে একে সকলেই মন্দিরে প্রবেশ করেন। ঐ সমরে দগুহতে গেকো বারপথে দগুরমান থাকেন। সকলে নিজ নিজ মাছরে শ্রেণীবদ্ধভাবে ও মর্ব্যাদান্তরপে বৃদ্ধের জার আসনপিড়ি হইরা উপবিষ্ট হইলে ভৃতীরবার শত্থাবনি হর। তথন সকলে সমস্বরে ঐ সমরকার কএকটী মিন্দিট যার পাঠ করেন। তাহার পর চা গান করেন। চা পান করিবার পূর্কে অধ্যক্ষ লামা সমবেত সকলের করিত হাকা উচ্চারণ করিবা আপন আপন চা-

পানপাত্র বাহির করেন। বঠছ শিক্ষানবিণ বা কোন ভূতা চা
ইন্নীলরা নিরা বার। পানের পূর্ব্বে বভিগণ অভূলী বারা হুই কোঁটা
ভূমিতে নিক্ষেণ করিরা বৃদ্ধ, অপরাপর মেবভা ও পিতৃপুরুবিগকে
নিবেদন করিরা পরে বৃদ্ধ পান করেন। মিটার ও মাংসভোজনের
সমরেও ঐরপ নিবেদনমন্ত্র-পাঠের ব্যবহা আছে।

সাধারণের ভৌতৃহল নিবারণার্থ নিমে কেবলমাত্র ময়গুলির ভাবার্থ উদ্ভূত হইল,—

চৰ্য চৰ্য লেছ পেরাধি গুণযুক্ত এই আত্মাধনধুর ভোজা ज्ञवा आमन्ना शामी वृद्ध ७ वर्गव त्वाधिमवनिगत्क निर्वयन স্বরিতেছি। তাঁহারা এই খাছোপরি করণা বিভার করুন। **"अम् चः इः।"** जननसन्न वशक्तिमः "अम् अन वस्र निविष्य चः द्वरः। अम् नर्का युक्त ताथितक वस्तुरेनविष्ठ चाः हर। अम् तिव **डाकिनि श्रीश्चांभाग अभित्रवात वस्रतेनविकः व्यः हरः।" कृटक्यंद्रतत्र** উদ্দেশে—"ওম্ অগ্রণিও অসিড্য: আহা। ওম্ হারিতে মহা ৰজ্বিকিণি হর হর সর্বাপাপবিমোক্তি আহা" ইত্যাবি। জীবমাংস হুইলে জীবহিংলা ও জন্মাংল জন্মণ আছে পাপন্দালনের নিমিত্ত এবং পশুর অর্গকামনার "ওম্ অবির খেচর হুং" মন্ত্র পাঠ করা হইরা থাকে। তদনত্তর মঠ ভাগুরে থাছদ্রব্যপ্রদাতার মঙ্গণ-কামনার এই মন্ত্র পঠিত হর-"নমো! সমস্তপ্রভরাগার ভথাগতার অবসুতে সমাক্র্কার নমো মঞ্জিরে। কুমারভূতার বোধিস্বায় মহা স্বায় ! তদ্বথা ! ওম্ রলভে নিরভনে জয়ে জয়ে লকে মহামতরক্ষিণলৈ পরিশোবার আহা।" ইহার পর ভাঁহারা আরও কতকংশি স্থতি পাঠ করিয়া থাকেন। ঐ শুলি ধর্ম, নির্বাণ, চিন্তামণি, করতঙ্গ, মঙ্গণ ও প্রবৃত্তিনিবৃত্তির প্রার্থনা মাত ।

চা-পানের পর, ধর্মাছবেদকগণের অর্চনা, স্বিরগণের প্লা, মণ্ডলার্পন, তৈরব এবং তারা, দেম-ছোগ্ ও সন্তত্ন প্রভৃতি কুলদেবতাগণের প্লা বথাক্রমে অন্তর্ভিত হব। এই সকলের পূলা সমাধান করিতে অনেক সমর লাগে বলিরা মধ্যে মধ্যে চা পানের বিধি আহে। কুলদেবতার পূলাকালে মধ্যে মধ্যে মৃত ব্যক্তির প্রেতান্থার এবং পীড়িতের রোগমুক্তি-কামনার নাম "কু-রিক্" পূলা। অনন্তর অবলিট কুলদেবতাগণের পূলা সমাথ করিরা তাহারা চা ও ভূপ পান করেন। তাহার পর সকলে পেবরা তাহারা চা ও ভূপ পান করেন। তাহার পর সকলে পেবরা তাহারা চা ও ভূপ পান করেন। তাহার পর সকলে পেবরা ক্রিনা তাহার পান করেন। বাহার করিরা তাহার ভালা করিরা প্রতিক্র করেন এবং একে একে মন্দিরের বাহির হইরা অ অ প্রক্রের বাহির হবন।

গৃহে আসিরা তাঁহারা আপন আপন অতীই বন্ধ অপ ও কুল-বেষভার পূজা করেন। তাহার পর উক্ত বেষভারিগতে ভোঁস বিরা

थारकम । পृजाकारण "एकनम्ख" पूत्रशिता मकरण ममत्र मिक्रभण করিয়া লর। এই সময়ে শুর্কাদেব আকাশচক্রে দৃষ্টিপথারচ হইলে তাঁহারা স্ব স্থাকোর হইতে বাহির হইরা ছই হস্ত উত্তো-লনপূৰ্বক "ওম্ মরীচীনাং স্বাহা" মন্ত্ৰ পাঠপূৰ্বক ভডি গান করেন। তদনত্তর প্রাভে বেলা নর্টার সময় বধন স্থ্যালোকে দিগন্ত উত্তাসিত এবং আডপ তাপে শীতল বাৰু অপেকাক্বত উত্তপ্ত হইলে পুনরার একবার **শব্ধ**ধনি হইয়া থাকে। তথন मर्ठवानी नकन नज्ञानीहे मनजानार्थ निर्मिष्ट श्वारन नमन करवन এবং শৌচ কর্মাদি সমাধানাত্তে প্রাক্তাবৃত্ত হন। ছিতীর শৃত্যধানি হইলে সকলে পাঠার্থ প্রস্তৱপ্রাঙ্গণে সমবেত হইরা থাকেন। ঐ সমরে যদি বৃষ্টি পড়ে তাহা হইলে সকলে একটী বিস্থৃত কক্ষে আসিরা পাঠ করেন। পনের মিনিট পরে ভৃতীর শব্ধবনি হইকে সকলে তথা হইতে মন্দিরে ঘাইরা পুনরার উপাসনার প্রবৃত্ত হন। বিপ্রহরের পর পুনরার শব্দনাদ হইলে তাঁহারা ঐক্রপে প্রথমে প্রাদণে ও পরে মন্দিরে সমবেত হইরা উপাসনা করেন। এই সমরে তাহার! তিনবার চা পান করিতে পারেন।

অভংপর সকলে আহম কক্ষে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া জুতা পুলিরা অভীষ্ট দেবতার পূজা ও ভোগ দান করেন। তাহার পর মঠের ভৃত্য আসিরা তাঁহাদের খান্ত সামগ্রী দিরা যার। ঐ থান্থ দ্ৰব্য হইতে কিছু কিছু তাহারা পিতৃপুরুষগণকে এবং হারিতী ও তাঁহার পুত্রদিগকে অর্পণ করিরা আপনারা ভক্ষণ করেন। তার পর যতিরা কতকক্ষণ পর্যান্ত নিজ নিজ কর্ম্মে ব্যস্ত থাকেন। বেলা ওটার পর, তাঁহারা চতুর্থবার মন্দিরে সমবেত হন। 🗗 সমরেও পূর্বের মত তিনবার শব্দধনি হইয়া থাকে। এবার দেবতাদিগকে ভোগদানের সময়ে তিনবার চা ধাইয়া গুহে কিরিরা আইনেন। শিক্ষানবিশ ও পার-পা যতিগণ এই সমরে বরে আসিয়া পাঠাভ্যাস করিরা থাকেন। বেলা ৭টার সময় পঞ্মবার সাত্মসন্মিলন হয়। ঐ সময়ে ভিনবার শৃথ্যনাদের পর সকলে পূজাদি সমাপন করিয়া ওবার চা পান করেন এবং ভদনস্তর গৃহে প্রত্যাবৃত্ত হন। রাত্রিকালে বিজীয়বার যন্টা নিনামিত হইলে শিক্ষানবিশ ও বীক্ষিত বতি সম্প্রদায় স্ব স্ব স্বধ্যাপকের নিকট ধর্মগ্রহ পাঠ ও আবৃত্তি করে। ভূতীর বার ক্টা নিনাবিত চ্ইলে সকলে ওইতে বার।

কিঙ্-না সন্থানারের মঠসমূহে প্রায় এরূপ প্রাণাই আচরিত হইরা বাবে। পার্থক্যের মধ্যে ভঙ্গং সাধ্যানারিক মঠে সকল সময় শৃথধনি হর না। বেলা ৮টার সমর শৃথক্তী বাজিলে সকলে মন্দিরে সমবেত হইরা প্রাণি উৎসব সরাণন করেন এবং ভগার বসিরা চা ও রুড়ি বান। প্রাতে ১০টার সমর চীনবেশীর ইক্তি বাবিত হর। ঐ সমরে সকলে সন্ধারামের স্বান্থ্য করেন সমবেত হইয়া ভোজন করেন। সকলেই ভোজান্রব্য দেবতাদিগকে নিবেদন না করিয়া থান না, বৈকালেও তাঁহারা শব্ধবিন
শুনিয়া একত্র সমবেত হন ও চা পান করেন। তদনস্তর টীন
চক্ষা নিনাদিত হইলে সকলে চক্ষ মন্ত পান করিতে পান।
এই সমরে মহাকালের পূজা এবং তাহার পর সাধারণের
মক্ষলকামনায় দেবপূজা হইয়া থাকে। সন্ধার সময়
১০৮টা প্রদীপ আলিয়া তাঁহারা স্কঙ্ব-বাগ্ পূজা সমাধা করেন।
শুরু পদ্মসভবের পূজাই ঞিঙ্-মা সাম্পাদিক মঠের প্রধান
অঙ্গ পদ্মসভবের পূজাই ঞিঙ্-মা সাম্পাদিক মঠের প্রধান
অঙ্গ। এথানকার যতিরা দিবসে নয়বার চাও থাত্ত পান।
সান্ধ্যসন্মিলনের পর চক্কানিনাদে আর একবার বতিগণ একত্র
আহ্ত হইয়া থাকেন। রাত্রিকালে একত্র হইয়া তাঁহারা অয় ও
মাংস ভক্ষণ করেন।

গ্রাম্য পুরোহিতগণ সম্পূর্ণরূপে লাসার মহামঠের অন্তকরণ করেন। তবে পূজা ও কর্মকাণ্ডের অন্তচানে কতকটা পার্থক্য দৃষ্ট হয়। রাত্রিকালে নিদ্রাভলের পর ভন্তনকালে অনেকে হঠ-যোগ অভ্যাস করিয়া থাকেন। বাহাদের রাত্রে নিদ্রাভল হয় নাই, তাঁহারা প্রাতঃকালে মুখাদি প্রকালনের পর উপরোক্তরূপ আচারাম্মন্তান করেন। তদনস্তর দেবার্চনা, প্রেতার্চনা ও ভোগ দিয়া তাঁহারা চা মুড়ি প্রভৃতি দারা জলযোগ করেন। বেলা হটার সময় সকলে উদরপূর্ত্তি করিয়া আহারাদি করিয়া থাকেন। সদ্ধ্যা ছয়টার সময় তাঁহারা পুনরায় কুলদেবতা প্রভৃতির পূজা ও স্তবাদি পাঠ করেন। রাত্রি ৯টা হইতে ১০টার মধ্যে তাঁহারা শয়ন করিয়া থাকেন।

তপংপরায়ণ লামা যোগীদিগের ঐরপ ক্রিয়াকাণ্ডের অন্ধ্রঠান নাই। তাঁহারা পর্বতগুহার মধ্যে থাকিয়। নিরস্তর
ক্ষিরচিন্তায় নিময় থাকেন এবং প্রাক্ত সন্ন্যাসীর পালনীয়
আচারাম্প্রঠান করিতে বাধ্য হন। এই যোগাভ্যাস তিন মাস তিন
দিন ধরিয়া করিতে হয়। ঐ সময়ে 'মূলযোগ স্লোন গো'র
চারিশাথাই তাঁহারা লক্ষবার জপ করেন এবং আশ্রমে ভিক্ষামন্ত্রপাঠকালে লক্ষবার দেবোক্রেশে নত হইয়া থাকেন। তাঁহারা
ক্রেয়ান-মতাবলম্বী এবং সন্ন্যাসীর হঠযোগসাধনকারী। ইঁহারা
সিদ্ধিলাভের আশার এই কার্যাস্ক্রান করিয়া থাকেন।

পশ্চিম ভোটরাজ্যবাসী অধিকাংশ লামাই বাণিল্য ও শিল্প লইরা ব্যাপৃত। তাঁহারা ক্ষেত্রকর্বণ ও ধাজ্ঞাদি বিক্রন্ন করিরা হাহা লাভ করেন, তৎসম্বারই মঠের জ্বল্প ব্যবিত হইরা থাকে। জনেকে মঠের লামাদিগের পরিধের বান প্রস্তুত কর্মণাভিপ্রারে মর্জি, মৃচী ও চিত্রবিভাদি শিক্ষা করিরাছে। ক্রেহ্বা প্রামে প্রামে ভিক্ষা করিরা মঠের ভাগ্রার পূর্ণ করিতেছে। লামাণণ প্রধানতঃ চাউল, হুখ, নবনীত, স্থপ, চা ও মাংস খান। মাংসের মধ্যে ছাগ, ভেড়া, ও চমরী গো ভাহাদের সেবনীর, মংস্ত এবং কুর্টমাংস নিবিছ। গে-লোভ্গণ কোনরপ মাংসই ভক্ষণ করেন না। তাঁহারা সম্পূর্ণরূপে ব্রহ্মচর্য্যাব্রম্মন করিরা থাকেন। তবিল্হুণপোর প্রধান লামা মাংস ভক্ষণ করেন। প্রসিদ্ধ লাসা-মঠের লামাগণ সাধ্প্রস্থাতিক, তাঁহারা মন্ত্রপান করেন না। অহান্ত ছানের লামাদিগকে চল্ল মন্ত্রপান করিতে দেখা যার, লাসা-মঠের লামারা ভূতাদির ভৃত্তির কন্ত মন্ত উৎসর্গ করিরা থাকেন।

লামাধর্শ্বের উৎপঞ্জি।

কিন্নপে ও কোন্ সময়ে ভোটরাজ্যে বৌদ্ধর্শের প্রতিষ্ঠা-সহ তন্ত্রমতপ্রস্থত এই লামাধর্শের উৎপত্তি, স্থিতি ও প্রতি-পত্তি বিস্তারশাভ করিরাছিল, তাহার বিশেষ বিবরণ সংগ্রহের উপায় নাই। খুটীয় ৭ম শতাব্দে এখানে প্রকৃত পক্ষে বৌদ্ধ-ধর্মের বীজ উপ্ত হইলেও তিক্বত-জনপদবাসিমাত্রই বর্কারতার খোর অন্ধকারে আছের ছিল। ভোটরাজ প্রোঙ্-ৎক্তান্ গস্পো (৬৩৬-৪১ খুঃ) স্বীয় ভূজবলে চীন-রাজ্যের পশ্চিম সীমা পর্যান্ত জর করিয়া একটা বিস্তৃত রাজ্য জয় করিয়াছিলেন। থজ-বংশীর চীনসমাট থৈৎ হল শীয় ক্লা বেনছেলের সহিত তাঁছার বিবাহ দিয়া মিত্রভাপাশে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। চীন ইতিহাসে ভোটরাজ স্রোঙ্ৎসান গশ্পো ছিৎস্ক পৃঙ্সান্ নামে পরিচিত। ৬৪১ খুষ্টাব্দে এই ঘটনা ঘটে। ইহার ফুইবৎসর পুর্বে তিনি নেপালরাজ অংশুবর্ত্মার কন্তা ক্রকুটী দেবীর পাণিপীড়ন করেন। উভয় রাজক্তাই বৌদ্ধর্দ্মে বিশ্বাসী ছিলেন। স্থতরাং পত্নী-দিগের অন্মরোধে রাজাও অচিরে বৌদ্ধর্মাসক হইয়া পড়েন। কোন কোন গ্রন্থকার বলেন যে, তিনি বৌদ্ধ-थर्प्स मैक्किल हरेया शास्त्र वोक्साक्क्लाक विवाह करतन। তিনি শীয় মহিবীদ্বয়ের সাগ্রহ প্রার্থনায় এবং তিব্বত রাজ্যে বৌদ্ধর্ম বিস্তার কামনার বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থ সংগ্রহৈ ক্লভসংকর হন। ভাঁহারই উদ্বোগে ভোটরাজ্যে বৌদ্ধ ধর্মাচার্য্য আনরনের ব্যবস্থা ঘটিরাছিল। ভারত, নেপাল ও চীন-রাজ্যের নানাস্থানে ভোট-রাজদৃত গমন করিয়া গ্রন্থাদি সংগ্রহকার্য্যে ব্যাপৃত ছিলেন।

ভাহার আদেশে বে দ্ত ভারতে আসিরাছিল, ভাহার নাম থোন্মি সন্তোট। এই ব্যক্তি ৬০২ খুটানে ভারতে আগমন করেন এবং ৬৫০ খুটানে ভোট রাজ্যে ফিরিয়া বান। তিনি ভারতে থাকিয়া আদ্ধা নিশিদত্তের এবং পণ্ডিত দেববিৎ সিংহের (সিংহবোব) নিকট বৌদ্ধর্মনাক্র অধ্যয়ন করিয়া ছিলেন। খদেশ-বাআকালে তিনি বছ শত বৌদ্ধরাছ সঙ্গে লইয়া বান। তিনি উত্তর ভারতীয় কুটিল কর্মালা মিশ্রিত বে অক্সরে পৃথিপানি লিবিয়া লইয়াছিলেন, সেই অক্ষরে তিব্বতীয় ভাষার ব্যক্তিরণ প্রেণরন করিয়া প্রচার করেন। কেবল তিব্যক্তীয় বর্ণমালার স্বরনামঞ্চত ১ ছ তিনি নেই স্পন্ধরনায়র আবস্তুত ক্ষম স্পত্তকপ্রতি চিছ আবিষার করিয়াছিলেন। ইহাই পরবর্ত্তি-কালে ভিষ্যতীর বর্ণমালা বলিয়া পরিচিত হয়।

ধোর্মি বৌদধর্ম্মাহের অস্থবাধ কার্য্যে জীবন অভিবাহিত করিলেও, আক্ ভ ধর্মপ্রচারক বা বৌদ্যভিরশে আপলাকে আভিটা করিছে পালেন নাই; কিছ রাজা আভ-২নন্ পশ্লো বৌদধর্মের অভিটাতা বলিয়া বোধিনত্ব অবলোকিতের অবভার-রূপে প্রিভ হইয়াছিলেন। তাঁহার পরী চীনরাজগৃহিতা বেন্ছেল অবলোকিতের পরী তারাদেবীর নামে বেতালিনী তারা এবং নেপালরালকতা ক্রুটী তারা দেবী বলিয়া পৃঞ্জিতা হন। ক্রুটী তারার বর্ণ নীল এবং মৃত্তি অতীব ভীনপা। তিনি অহরহং বীর ব্রপত্নী বেনছেলের সহিত কলছ করিতেন বলিয়া তাঁহার উত্রবৃত্তি ক্রিত হইয়াছে।

আহ্মানিক ৩০০ খুইাকে রাজা লোঙ্-ৎসন্ গাম্পো পরলোক গমন করিনে তৎপৌত্র বজ্ঞান্ত মঙ্গ-ৎসন রাজার বৌদ্ধর্ম্মাঞ্জক দ্গরের প্রতিনিধিছে রাজ্য শাসন করেন। উহার পরবর্তিকাল হইতে ডিব্লুডে কুনংখারাজ্য় ভূতোপাসক বানান ধর্ম্মের প্রভাব র্ছি হয়। প্রায় শতান্ধ পরে উক্ত বংশে রাজা থি-লোঙ্-দেংসানের রাজ্যকালে প্ররায় বৌদ্ধর্ম প্রাথান্ত লাভ করে। চীনস্মাট্ ৎছল-ৎসোলের পালিতা কল্পা হিন্ ছেলের গর্ডে এই রাজকুমারের জন্ম হয়। বৌদ্ধর্মে মাতার আসক্তিবশতঃ পুত্রও বৌদ্ধর্মে দীন্দিত হন। তিনি কুলপুরোহিত ভারতীয় বৌদ্ধর্যিত শাস্ত্র-রিক্লিত হন। তিনি কুলপুরোহিত ভারতীয় বৌদ্ধর্যিত শাস্ত্র-রিক্লিতের পরামর্শ জন্মারে ভারতবর্ষ হইতে শুরু পন্মসম্ভবকে জানিতে দৃত প্রেরণ করেন। পালার্ম বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াহিলেন। প্রবাদ, গুরু পন্মসভ্যব শাস্তর্মন্তরের ভারনিই। নালন্দা মঠে তারিক বোগাচার্য্য শাখায় বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াহিলেন। প্রবাদ, গুরু পন্মসভ্যব শাস্তর্মিতের ভাগনী মন্দারবাকে বিবাহ করেন।

রাজার আহ্বানে উৎকুল হইরা প্রস্তুত্ব নেপাল রাজ্য মধ্য
দিরা তিকাতে যাত্রা করেন। ৭৪৭ গুটান্দে তিনি রাজধানীতে
উপনীত হইরা রাজসভাশে যাত্রা বিবরণ প্রভাশ করিয়াহিলেন।
পবি মধ্যে তিনি কিরুপ ডাকিনী ও যক্ষিণাগণের প্রভাব ধর্ম করিয়াহিলেন, ডাহাও রাজস্মীশে নিবেছন করিয়া বলেন বে,
তাহারা বৃদ্ধের প্রভ্রম বীকার করিরাহে, আর কাহারও
অপকার করিবে না। আনিও ডাহারিগাকে অভ্যা বিরা বলিয়াহি
বে, তোমরাও আমার আহেশে পূজা ও বলি পাইবে। ই ইয়াডে
শাইই ব্রা বার বে, ভারতের অর্থ-সভা ও অসভা লাভিকৈ
বৌহধর্মে দীক্ষিত করিডে প্রহাস পাইরা বর্ধন বৌহারারার ক্রিনান্না

প্টরা এডই যোহাভিভূভ ব্টরা স্বহিরাহে বে, ভাহাদের স্বধর रहेटफ धरे कुमाकातम् कृष्य बाँचेका जनारमानिक कतिमा मिक्सान-মুজি ও প্রতীত্য-নমুৎশানরণ মহাধর্মধীক ভাহাতে বপন করা নিভারত হলত ব্যাগার, তখন তাহারা সেম্মণে পুরা নেই সকল ভীৰণদুত্ত অসলেৰতাদিগৰে অক্সত কেবলপে গণ্য করিয়া শন দেবাঃ ক্টিনাশকাঃ" বাক্যের নার্বক্তা রক্ষা করিতে প্রহান गांदेरनम । छारांत्रा ध्यातंत्र कतिएक माशिरनम, "धरे मकन শিশাচ, যক, ভাকিনী, বোগিনী প্রভৃতি বুদ্ধের মঙ্গলমর করণায় मनकाती गाँक विगर्कन कतिया अकरन कीरवत महन कामनाव প্রবৃত্ত হইয়াছেন। তাঁহারা আর জীবের অপকার করিবেন না। বরং ৰাহাতে জীবসক্ষের মঞ্চ ও সুক্তিলাত হয়, তাহিবয়ে সহারতা করিবেন; স্নতরাং তাঁহারা সাধারণের পৃষ্ণ্য, তাঁহাদেরও বলি দেওরা কর্জব্য।" এইক্সপে বেমন ভারতে বৌদ্ধ-ভাত্তিক-ৰুগে সাধারণের চিত্তবৃত্তি আকর্ষণ করিবার অভিপ্রায়ে দুশবাত-শালনী হুৰ্গা, লোলরসনা করালবদনা কালী, বিক্ষারিডনেত্র ৰিন্নপাক, রক্তবৰ্ণা ভীষণসূখা শীতলা, ফরালদংখ্রী বারাহী প্রভৃতি দেব দেবীর আবিভাব হইরাছিল, বৌদ্ধ শুরু প্রসন্তব্ঞ ভিন্সতে উপনীত হইয়া কুসংস্থারাচ্ছন ভিন্সতবাসীকে পূর্বতন ধর্মে বিশ্বন্ত রাখিলা তাহাদের জ্বরে বুদ্দের প্রাধান্ত স্থাপনপূর্বক বৌদ্ধশাবীক বপন করিয়াছিলেন। এই পৌত্তলিকমিপ্রিত বৌদ্ধর্ম সুলধর্মের সহিত মিলিত হইয়া লামা (ব্লম) বা বিদ্ধর্ম নামে গ্রাসিদ্ধি লাভ করিল। ভিকাতীয় ভাষায় লা-ম শক্ষে পর্ম পুরুষ বুঝার; বুজুই পরম পুরুষ অর্থাৎ বাঁহার মহীয়লী শক্তি-প্রভাবে অপকর্মা ভূডগণও বশীভূত হইরা দাধারণের মদলার্থে প্রশোদিত হইরাছিল। সেই পর্ম-পুরুষার্থ ক্রমে শ্রেষ্ঠ মঠাখ্যক উপাধ্যায় মাত্রে ও বৌদ্ধতি সাধারণে আরোশিত হইল।

ভক পদ্মসভবের নিকট বৌহনবের প্রকৃত মর্দ্র ও প্রভাব অবগত হবরা এবং তিকাতীয় প্রাচীন ভৌতিক ক্রিরাকাণ্ড-ভলিতে তাঁহার সবিলেব আহা দেবিরা রাজা থি-প্রোঙ্-দেবনন তথ্যবর্তিত লামা বা প্রেট ধর্মের পঞ্চপাতী হন। তাঁহারই আগ্রহে এবং উৎসাহে ৭৪৯ খুইাকে তিকতের নম-বাস্ মপরের প্রথম বৌহনঠ প্রতিষ্ঠিত হবল। উহা মগ্রের ওপঞ্চপুরীর স্থ্রেনিক বৌহনঠর অভ্যন্তর হবল। উহা মগ্রের ওপঞ্চপুরীর স্থ্রেনিক বৌহনঠর অভ্যন্তর নির্দিত হর, স্বরং গদ্মসভব ঐ সঠের ভিত্তিপ্রতর স্থাপন করেন। বিভিন্ন নাইরাক্তিত প্রতিটাকার্যের ভক্ষর বর্বেই প্রথমে লামানক্রাব্রের প্রতিটা হর প্রবং লাভ্যনিক তথাকার প্রথম আচার্য্য বা জনাধ্যার হবরা প্রয়োক্ত বর্ষাক্রমে প্রতিষ্ঠানিক করিবাহিকেন। ভিনি প্রকৃত ভালার ব্যাম আচার্যান করিবাহিকেন। ভিনি প্রকৃত ভালার বাব্য আন্তার্যান ব্যামিক করিবাহিকেন। ভিনি প্রকৃত ব্যামিক করিবাহিকেন। বিভিন্ন প্রকৃতি ব্যামিক করিবাহিকেন।

নাগাৰ্জুন, ওভন্ন, জীববা ও জানগর্ড প্রান্থভিদ্ধ ভাগ ডিনি বিতর সম্মান্তভূক ছিলেন বলিনা তাঁহাদের ধারণা।

ভিন্তত্বাসিগণ এই নৰপ্ৰবৰ্তিত লামানতকে ধৰা বা বৌদ্ধধৰ্ম বলিয়া থাকে; কিন্ত প্ৰকৃতপক্ষে ভাহাতে প্ৰকৃত বৌদ্ধধৰ্মের ছামানাত্ৰ বিভাগন আছে। ভাত্ৰিক বীরাচারে উহা
সম্যক্ কপে বিগ্লাবিত। নানাদেবভার উপাসনা এবং ভৌতিক
ক্রিরা ও ভৌজবিভা দেই প্রাচীন স্কৃত্য ধর্মতন্ত্রকে আশ্রর
ক্রিরা ভাহাকে নবভাবে গঠিত করিয়াছে। এই ধর্মবিবাসিগণ "নঙ্ প" এবং বাহারা এই মভবহিভূতি ভাহারা
"প্যি ডিঙ" নামে কথিত।

উপাধ্যায় শান্তরক্ষিতের পর "পল বঙ্ন" আচার্য্যের আসন ত্রহণ করেন; প্রকৃত প্রভাবে "ব্য বুগ্ জিগ্ন্" সর্ব্ধপ্রথম দীক্ষিত লামা হইয়াছিলেন। শিক্ষানবিশ শিবাগণের মধ্যে লামা সগোর বৈরোচনই সর্ব্বাপেক্ষা স্থপণ্ডিত হইয়াছিলেন। তিনি লামা-সমাজে বুছের প্রাভা ও সহচর আনন্দের অংশাবভাররূপে সন্মা-নিত। বৈরোচন ভিববতীয় ভাষার অনেক সংস্কৃত গ্রন্থের অন্থ-বাদ করিয়াছিলেন।

শুক্ত পদ্মসন্তব লামাবর্দ্ধ প্রতিষ্ঠা ও প্রচারপ্রসঙ্গে যে সকল আচারাস্থ্রীন বিধিবন্ধ করিরাছিলেন, তাহা জানিবার উপার নাই। তৎসম্প্রদারভুক্ত পঁচিল জন শিব্য তাঁহার তিরোধানের কএক শতাব্দ পরে তৎপ্রবর্ত্তিত প্রকৃত ধর্মমত ও পদ্ধতি বলিয়া যে সকল গ্রন্থ সকলন করিরা গিরাছেন, তাহা সম্ভবতঃ তৎকালীন আচারবিমিশ্রিত বলিরাই বোধ হর। তবে আদি পদ্ধতি অসুস্তত এবং ভৌতিকবিন্তাসমাপ্রিত ক্রিঙ্ক্ত্-ম-শ সম্প্রদারের আচার পদ্ধতি লক্ষ্য করিলে সহজে উপলব্ধি হর যে, পর্মীন্তব তাঁহার জন্মভূমি উত্তান এবং কান্দ্রীরে প্রচলিত বোর তারিক ও ভোজবিন্তাপ্রস্তুত মহাযান-সম্প্রদারের বৌদ্ধতই স্থাপন করিরাছিলেন। তাহাতে মরমুলক শৈবধর্ম ও ভূতোপাসক বোন-পা ধর্ম মিপ্রিত ছিল।

ভক্ত পদ্মসন্তবের বে পঞ্চনিংশতি শিব্য ছিলেন, তাঁহারা সকলেই ভৌতিক ও ভোজবিভার পারদর্শী। তাঁহারা মন্তবলে ভূতগণকে বন্দীভূত করিরা তিবাত ভূমে তৎপ্রবর্তিত ধর্মাহাপনে বন্ধপরিক্য হন। তিবাতবাসী বৌদ্যপ পদ্মসন্তবের অসামান্ত তিরোধান ও জাঁহার ভোজবিভাপ্রভাব সক্ষা করিয়া তাঁহাকে বিত্তীয় ব্যৱহাণ পূলা করিয়া আনিতেছেন। এবনও প্রাচীন লামান্তবার্থিকের মঠে জাঁহার আট প্রকার মূর্তির উপাসনা ভূইয়া থাকে। তিবাতবারীর বিধাস, ভক্ত পরসন্তব সম্বরে সম্বরে বিভিন্ন মূর্তির বিধাস, ভক্ত পরসন্তব সম্বরে সম্বরে বিভিন্ন মূর্তির বিধাস, ভক্ত পরসন্তব সম্বরে সম্বরে বিভিন্ন মূর্তির বিধাস, ভক্ত পরসন্তব সম্বরে সম্বরে বিভার মূর্তির বিধাস করিয়াছিলেন।

वाना कि काक अध्यन के दीवांद हरे जब क्रमहतक विगाह

উৎসাহে ভিনতে দামাধর্ম অপ্রতিষ্ঠিত হইয়া উভয়োজন বিভন্ত হইয়া পড়িল। বোন-পা ধর্মান্রিড ভিকভেষানী আচরিত व्यथांव गामक्रमाथक धर नरीन मरणत व्यक्तिकती ना रहेता वतः রাজার ভরে তাহার পোবকতাই করিয়াছিল। ভাহারা ব্রিয়া-हिंग दर और बट्ड विश छारियात्र कान कात्रन माहे, अधिकड ইহাতে নুক্তন শক্তি সকান্নিত হইয়াছে। তাই শক্ত্যাত্মক নৰধৰ্মে क्सिक्समी अञ्चल रक्सात्र नागावर्च मेवह शृह ७ वृद्धिवास হইল। বিশ্ব শিক্ষাবলে ভিক্ৰত্বাসী বতই মানসিক উন্নতি সাধন ক্ষিতে লাগিল, তছই ভাষারা লামাধর্ম-সংখ্যরের আবশুক্তা অমুন্তৰ করিল। আনবুদ্ধির সজে সলে ধর্মপদ্ধতিরও সংখার হইরাছিল; এই কারণে ভিকাতীয় বৌদ্ধর্মের ভিন্টী যুগ নিরূপণ করা যার। ১ম আদি সুগ অর্থাৎ রাজা থি-ছোঙ দেৎসনের রাজ্যকালে লামাধর্মের প্রান্তির্ভা হইতে বৌদ্ধদিগের তাড়না পর্যান্ত। ২র মধ্যবুগ বা লামাধর্মের সংস্কার কাল পর্যান্ত এবং তর বর্তমান লামা ধর্ম বা খুটীর ১৭ল শতালে ধর্মাচার্য্য ললই-লামার প্রাধান্ত ও রাজতবিস্তার কাল।

৮২২ প্রীবে উৎকীর্ণ গাসানগরীর সাটবান্তের অন্ধুশাসনপাঞ্জু জানা যার বে, ভিব্বত ও চীনবাদিগণ ভিনটা পরম পুরুষ এবং পবিত্রচেতা সাধুসাণ ক্র্য্য, চক্র, গ্রহ ও ভারাগণের উপাসনা করিতেন। উহাই প্রকৃতপক্ষে ভথাকার আদি-সামার্গের নিদর্শন ব্লিয়া গণ্য করা যায়।

৭৮৬ খুটাকে থি শ্রোড্ দেৎসনের মৃত্যুর পর তৎপুত্র মৃথিৎসান পো রাজা হন । ইনি রাজ্যাধিকারের পর বিষ্প্রয়োগে
নিহত হইলে তদীর ভ্রাতা সদ্ ন লেগ্স্ সিংহাসনে আরোহণ
করেন। ইনি বৌদ্ধার্মবিজ্ঞারার্থ ক্ষলশিলাকে তিকাতে আনয়ন
করিরাছিলেন। তৎপুত্র রালপছন ৮১৬ খুটাকে (মতান্তরে
খুটার ৯ম শতাব্দের শোভাগে) সিংহাসনে আরুচ্ হন।
ভাঁহার রাজ্যকালে নাগার্জ্বন, বস্থবন্ধ ও আর্যাদেবের প্রাসিদ্ধার ও ধর্মগ্রহসমূহ ভোটভাবান্ধ অনুদিত হর। এতত্তির
তিনি ভারতবানী কএকজন বৌদ্ধাতিকে ধর্মগ্রহসমূহের
অত্যাক্ষার্যে লিপ্ত করিয়াছিলেন; তন্মধ্যে স্থবিরমতির শিব্য
জিনমিত্র, নীলেজবোধি, স্বরেজবোধি, প্রজাবর্মনি, লানশীল এবং
বোধিমিত্রের নাম উল্লেখবোগ্য।

রাজা রালগছনের বৌদ্ধর্পাছরাগে ইবাপরতর হইরা তলীর কনিঠ প্রাতা লঞ্জ-লর্ম বৌদ্ধর্পারেরী হইরা পড়েন এবং ৮৯০ পৃঠানে বীর প্রাতানে নিহত করিরা বরং নিহেন্দ্র রুজনত করেন। তিনি রাজপণারত হইরা সালাদিলের উপর ববেছ অজ্যাচার করিতে থাকেন, এমন কি, ডিনি মন্ত্রির ভারত বহনে করিয়া সামান্যানীদির্গনে জীব্রিংসাভারী ক্লাইর ভার্য করিতে বাধ্য করাইরাছিলেন। তাজন তাঁহার আদেশে অনেক বৌজগন্ধ জন্মনাৎ চইরাছিল।

স্থাধর বিষয়, তাঁহার বৌদ্ধার্মে বিদেষ বছকালস্থায়ী হর নাই। তাঁহার রাজ্যকাল তৃতীয়বর্ষ অতিক্রম করিতে না করিতে লালুঙ-বাদী লামা পাল-দোর্জে মুখোদ প্রভৃতি ভয়াবহ বেশভূষা পরি-ধান করিয়া তাঁহাকে নিহত করেন। লামা পাল দোর্ফে বাউলের স্থায় কিন্তুত কিমাকার বেশভুষায় সজ্জিত হইয়া রাজপ্রাসাদের সমক্ষে আসিরা নৃত্য করিতে থাকেন। রাজা কৌতূহলাবিট হইয়া সেই মুর্ত্তি দর্শন করিতে আসিলে তিনি তাঁহাকে বাণবিদ্ধ করেন। পরে রাজসৈত্র তাঁহাকে ধৃতকরণ মানসে পশ্চাদাবিত হইলে তিনি একটা কৃষ্ণবর্ণরঞ্জিত অখপুষ্ঠে আরোহণ করিয়া নদী সম্ভরণপুর্বকে পলাইয়া যান। জলমগ্ন হওয়ায় অখের ক্রতিম গাত্রবর্ণ বিধ্যেত হইয়া মূলবর্ণ বাহির হয় এবং তিনি জাহার ছন্মবেশ ফেলিয়া দিয়া নৃতন খেতবন্ত্র পরিধান করিয়া অপর পারে উঠেন। কুসংস্কারাচ্ছন্ন তিব্বতবাসী তাঁহাকে অপর ব্যক্তি মনে করিয়া অথবা দৈবশক্তিসম্পন্ন জানিয়া আর তাঁহার পশ্চাৎ অফু-সরণ করে নাই। তীরের আঘাতে রাজা পঞ্চত্ব পাইবার কালে বলিয়াছিলেন যে, "বৌদ্ধর্ম উৎসাদনরূপ পাপপক্ষে লিপ্ত হইবার পুর্ব্বে তিন বৎসর অগ্রে কেন আমাকে নিহত করা হয় নাই।" রাজা লঙ্ দর্শের মৃত্যুকালীন এই বাক্ষে বৌদ্ধর্শে ভাছার বিশ্বাস দেখিয়া তাঁহার বালক পুত্র আর লামাদিগের প্রতি বিরুদ্ধাচরণ করিতে সাহদী হন নাই। স্কুতরাং লামাগণ ধীরে ধীরে আপ-নাদের নষ্টশক্তি পুনরুদ্ধার করিয়া প্রতিপত্তি বিস্তার করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন।

খুইার ১১শতাব্দের প্রারম্ভে ভারতের নানাস্থানে বিশেষতঃ কান্দ্রীর হইতে কএকজন বৌদ্ধতি তিব্বতপরিদর্শনে আগমন করেন। তাহাদের মধ্যে স্থৃতি, ধর্মপাল, সিদ্ধপাল, গুণপাল, প্রজ্ঞাপাল এবং প্রজ্ঞাপারমিতার অমুবাদক মৃভূতি, প্রীশান্তি প্রভৃতি ঘতিগণের নাম উল্লেখযোগ্য। তাহার পর ১০৩৮ খুইান্দে লামাধর্মসংকারক স্থপ্রসিদ্ধ বৌদ্ধতি অতীল তিব্বতে পদার্পণ করেন। তিনি লামাগণের নিকট "জো-বো-র্জে-দ্পাল-ল্দন্ অতীল" নাম্মী পরিচিত ও দেবতার ভার স্থানিত।*

• ভালতে তিনি নীপকর বীজ্ঞান নামে পরিচিত ছিলেন। তাঁহার পিতার
নাম ফলাগন্ত্রী এবং মাতার নাম প্রভাবতী। ভোট-ইভিবুওলতে বালানার গোড়লাল্যের অন্তর্গত বিক্রমণ্যের রাজবংশে ৯৮০ খুটাক্লে
তাঁহার কর হয়। তিনি ওবওপুরিবিহারে আনিয়া বৌহবতি-বর্ষে নীক্ষিত
হইয়াহলেন। অ্বর্ণবীপ বা অ্বর্গ-নগরের খৌছাচার্য্য ক্পরিচিত চক্রকীর্তি,
নহাবোধিবহারের উপাধার মতিবিভর এবং মহাসিলি নারোর নিকট
ভিনি নহাবানসত ও বহাসিথি অভ্যাস করিছাহিলেন। তিবওবা্যাকালে

অতীশের প্রধান শিব্য ড়োম্-টোন্ সংস্কৃত কদম-সম্প্রদায়ের প্রধান মোহস্ত হইরাছিলেন। উহাই সাদ্ধি ত্রিশতান্দের পরে তিব্বতের স্থপ্রসিদ্ধ গে-লুগ-প সম্প্রদায়ে পর্যাবসিত হইরা তরামেই প্রতিষ্ঠিত হয়। অতীশের প্রবর্ত্তিত বাদম-প সম্প্রদায়ের অসুকরণে অর্দ্ধ সংস্কৃত কর-শু্য-প এবং শক্য-প সম্প্রদায়ের উৎপত্তি হইরাছিল।

থুইীয় ১১শ শতাব্দের শেষভাগে লামাধর্ম তিব্বতে দৃঢ়মূল হইয়া প্রতিষ্ঠিত হইলেও শক্য প্রভৃতি স্থানে তাহার প্রতিযোগী সম্প্রান্তমমূহ উদ্ভূত হয় এবং তাহারা স্বতন্ত্রভাবে পারমার্থিক মণ্ডল স্থাপন করিয়া আপনাদের পৌরোহিত্য শক্তি বিস্তার করিতে থাকে। ধর্মবাজকগণের শক্তিবৃদ্ধিসহকারে স্থানীয় সন্দারগণের শক্তি ব্রাস হইতে থাকে। সেই স্থ্যোগে চীন ও মোললজাতি তিব্বতের নানা স্থানে আসিয়া প্রতিপত্তি বিস্তার করে।

থুটায় ১২০৬ অবে থাকনমোগল বংশধর জ্বেন্থিজ্ (জেলিন্) থা তিব্বত অধিকার করেন। তাহার বংশধর প্রদিক্ষ চীন-সম্রাট্ খুবিলই (কুব্লাই) থা বর্বর অশিক্ষিত ও অসভ্য-প্রধান চীন ও মোললীয় রাজ্যে একটা সন্ধর্মপ্রতিষ্ঠার উদ্দেশে প্রসিদ্ধ শাক্যের শ্রেষ্ঠ লামাকে (শাক্য পণ্ডিত বলিরা পরিচিত) স্বীয় রাজ্যভায় আহ্বানপূর্ব্বক স্বয়ং বৌদ্ধর্ম্ম গ্রহণ করেন। তদবধি উহা একটা ন্তন শক্তি প্রাপ্ত হইয়া রাজধর্মক্রপে সর্ব্বত প্রচারিত হইতে থাকে।

খুবিলাই থা স্বীয় ধর্ম্মোপদেষ্টা শাক্যপণ্ডিতকে লামাধর্ম-

তিনি মগধ্যে বিক্রমশিলা সজ্বারামের অধ্যাপক-পদে নিযুক্ত থাকেন। রাজা মহীপালের পুত্র নয়পাল উছোর সমসাময়িক।

১০০৮ খ টামে লামা নগ-৭ভোর সহিত যথন তিনি নারি থোহ'র পথে তিবাতে আইদেন, তথন উাহার বরঃক্রম বারী বংসর। তিনি এখানে আসিরা লামা-ধর্মের সংক্রারকার্য্যে এতী হন। ১০০২ খ টামে লামানগারীর নিকটবর্ত্তী গ্রেডাঙ, সক্রারামে তাঁহার দেহাবসান হয়। লামানগারীর নিকটবর্ত্তী গ্রেডাঙ, সক্রারামে তাঁহার দেহাবসান হয়। লামানভের সংক্রারকার্য্যে লিশ্ব হইয়া তিনি অযত-প্রতিপাদক কর্যানি প্রস্থ সক্রলন করেন, নিম্নে তাহাদের নাম প্রণ্ড হইল:—বোধিপথপ্রদীপ, চর্যাস্থ্যেক্প্রদীপ, সভ্যবরাক্তার, নাম প্রণ্ড হইল:—বোধিপথপ্রদীপ, চর্যাস্থ্যক্রপীপ, সভ্যবরাক্তার, কর্মামিসান্দেশ, সংগ্রহ-পর্জ, কর্মানিশিল, বোধিসত্তরক্রার্যান্তর, স্বার্থস্ক্রাপ্রদেশ, সহা্যানপথসাধনবর্ণসংগ্রহ, মহা্যানপথসাধনবর্ণসংগ্রহ, স্থার্থসমূতরোপ্রেশ, কর্মানিসভরপরিবর্জ, লোভোভর সপ্রক্রিধি, ভক্তরাক্রম, চিত্তাৎপাদ্দেশ, কর্মানিসভরপরিবর্জ, লোভোভর সপ্রক্রিধি, ভক্তরাক্রম, চিত্তাৎপাদ্দেশ, কর্মানিসভরপরিবর্জ, লিক্লাস্ক্রন্তনভিন্নর (স্বর্ণবিপাধিপতি রাজা বর্ণ্যপান, দীপকর ও ক্মলহে বে ধর্ম্মিক্লা হিলাছিলেন, ইহাই ভাহার সার্বর্জ প্রত্তির প্রতিভা পাঠান। তিকতে ইনি বেধিসভ মঞ্জীর অভভার বর্ণরা পুরিভঃ।

মঙলের সর্বল্রেট গুলুপদে অভিবিক্ত করিয়া তাহাকে চীনরাজপৌরোহিত্যের প্রকার বরূপ ভিকাতরাজ্যের শাসনকর্তৃত্ব দান করেন। তদনত্তর ১২৩১ খুটান্দে তাঁহারই যদ্ধে
উক্ত পণ্ডিতের প্রাতৃপ্ত মডিগবল (ভোটনাম লোদোই গাল্২বন্) ফাস্ন্-প উপাধি সহ শ্রেট ধর্মাচার্ব্যের পদে প্রতিষ্ঠিত
হন। ইনি রাজামুগ্রহে রোমক পোপের স্থার শক্তিসম্পর
ইইরাছিলেন্।

সমাট্ ব্রিলাই বাঁ লামাধর্মের উরতিসাধনার্থ বছ
পরিপ্রমে ও অর্থব্যরে মোজলীয়ার নানান্থানে এবং পেকিন্
নগরে সর্ব্যাপেক্ষা বৃহৎ একটীমাত্র সজ্যারাম প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। তাঁহারই উৎসাহে শাক্য-পণ্ডিত মতিধ্বক পণ্ডিতমণ্ডলে সমাবৃত হইয়া লামাধর্মের প্রসিদ্ধ কর-শুরে গ্রন্থ মোজলীয় ভাষায় অনুবাদ করেন।

পরবর্তী মোগসসমাট্গণের অধীনে শাক্য-পুরোহিতগণের রাজকীর প্রাধান্ত ক্রমশ:ই বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয় এবং তাঁহারা প্রতিহুন্দী লামাসম্প্রদারের বিরুদ্ধাচারী হইরা তাঁহাদের উপর অত্যাচার করিতে আরম্ভ করেন। ১৩২০ খুষ্টান্দে তাঁহারা দিকুলের স্থপ্রসিদ্ধ কর-খ্য-প সক্রারাম ভ্রমীভূত করিয়া ফেলেন। ১৩৬৮ খুষ্টান্দে মিলরাজ্ঞবংশ চীনসাম্রাজ্য-সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন। উক্ত বংশীর সম্রাট্গণ শাক্য-পণ্ডিতদিগের ক্ষমতা থক্র করিবার উদ্দেশে কর-খ্য-প দিকুল ও ক-দম-প-ৎবল সক্যা-রামের আচার্যাত্ররকে ভদস্ক্রপ শ্রেষ্ঠ পৌরোহিত্য শক্তি দান করিরাছিলেন।

খুঁহীর ১৫শ শতাব্দের প্রারম্ভে লামা ৎসোঙ-খ-প অতীল-প্রবৈজিত সংস্কৃত-লামাধর্মের পুনঃসংদ্ধার সাধন করিরা উহাকে গোঁলুগ-প নামে পরিচিত করেন। এই সম্প্রদার উত্তরোজর প্রীর্দ্ধি লাভ করিরা ভিকাতে প্রচলিত অক্তান্ত সম্প্রদারকে হীনতের করে এবং পাঁচ পুরুবের মধ্যে এই সম্প্রদারের প্রধান ধর্মধার্মক ভিকাতের পুরোহিতরাল বলিরা বিধ্যাত হন। উক্ত সাম্প্রদারিক প্রধান ধর্মাচার্ব্য আজিও সেই সম্বানে ভূবিত আছেন।

গানা থনোভ-খ-প'র প্রাতৃপুত্র গেনেন-ডুব্ উক্ত সন্থানারের প্রধান ধর্মানার্থ্য (Grand Lama) হন। তিনি সাধারপের নিকট অবতাররূপে গৃহীত হইয়াছিলেন। পরে উাহার পর্কন প্রকার অধ্যান প্রেটি লামা বোধিসক অবলোকিতের বিশ্বসক্ষাতি প্রাপ্ত বিলোক বিলোকত ব্যবহা ১৯৪০ বৃষ্টাকে প্রান্তবাক অপ্রিপ্তা ভিক্তাত কর করিয়া পর্কন লামানার্থ্য অপ্-বর্ধ-সৌ-সক্ষেক বাল করেন। ত্যবৃত্তি হল। ১৯৫০ বৃষ্টাকে বালের শামানার্থ্যপন্ত বুলিত হল। ১৯৫০ বৃষ্টাকে

চীন্দ্রাট্ ভাষাকে ভিন্নভের অধিরাজ বলিরা বীজারপূর্বাক মোলগীর 'বলই' (সমুদ্র) উপাধি বান করেন ; ভদবি
রুরোপীর পরিবাজকগণের নিকট ডিনি এবং ভাঁহার বংশধরগণ
বলই-লামা বলিরা পরিচিত হইরাছেন। ভিন্নভীর ন্বাকে
ভিনি গল্-ব-রিণ-পোছে লামে অভিহিত।

১৯৪৩ খুটান্দে ডিনি লাসানগরের সন্নিকটে লৈলোপরি হুপ্রসিদ্ধ পোতন প্রাসাদ-মন্দির স্থাপন করেন। ভিন্সভের অপরাপর লামা সাক্রানান্তিকগণ তাঁহাকে ও তথ্যপ্রর-দিগকে অবলোকিতের অবতার বলিয়াই খীকার করিয়া থাকেন। কিন্তু রাজশক্তিপ্রাপ্ত লামা ওগ-বঙ শেবজীবন শান্তিভে অতিবাহিত করিতে পারেন নাই। প্রভূত্বাপনে উদান আকাজনা এবং মাণুজাতির বিজ্ঞোহে প্রাপীড়িত হইরা ভিনি লীলাবসান করেন। বর্চনামা চীনসমাটের আদেশে নিহত হন। তদনস্তর তিনি খহতে তিব্বতের কর্ত্ত্ব গ্রহণ করিয়া সমগ্র রাজ্যে ধর্মনীতি ও রাজনীতির নামঞ্জত বিধান করিরা তথাকার মোহস্ত-নিরোগের ব্যবস্থা দেন। কিন্তু গে-লুগ্-প স্ভালার পঞ্ম লামার প্রণোদিত প্রথার দিন দিন উরতি লাভ করিতে থাকে। এ সময়ে কএকজন মাত্র চীনরাজকর্মচারী ভিকাতে উপস্থিত থাকিলেও এই সাম্প্রদারের লামাচার্য্যগণ প্রাক্তত পক্ষে রাজ্যের অধীশ্বর বলিয়া গণ্য ছিলেন এবং সকল সম্প্রদারভুক্ত লামাগণ তাঁহাকেই প্রধান বলিয়া গণ্য করিছেন।

এই লামাধর্ম ক্রমণ: তিবত অতিক্রম করিরা ল্রলেশে বিভূত হর। বর্তমান সমরে উহা পদ্চিমে য়ুরোপীর ক্রেস্স্ হইতে পূর্বে কামশ্ছাট্কা এবং উত্তরে বুরিরাৎ সাইবেরিরা হইতে দক্ষিণে সিকিম ও মুন্-নান্ পর্যন্ত বিভূত হয়। এই স্থবিভূত ভূতাগে লামাধর্ম বিভূত হইলেও, তথাকার অধিবাসিসংখ্যা নিতার্তই কম; কিছু সক্লেই লামাকে রাজা ও ধর্মগুরু ব্লিরা মান্ত করে।

সমগ্র তিকতরাজ্যের লোকসংখ্যা ৪০ সজের অধিক নতে। উহিদের মধ্যে অনেকে লামাধর্শোপাসক, পূর্ক-ভোটবাসিগণ বোন্ ধর্মসেবী এবং কতকাংশ উভরধর্মই মানুকরে। বোন্ ধর্মচারিগণ লামাধর্মের পূর্চপোষকতা করিতে বিশ্বত হন না।

হুরোপে কালবাক্ তাভার জাতির বাসভূমি তল্গা নদীতীর পর্যক্ত লালাধর্ণের পেব দীনা। তোরগোৎ জাতির প্রপা-রনের পরেও ঘুরোপের ক্বরাজো তল ও বৈক লদীর ক্থা-বর্তী হালে ২০ হাজার বর কালবাক্ ভাভারের বান ছিল। ভাহাদের মধ্যে আরি লক্ষ্ণ লোক লানাধর্ণে বিশ্বত ব্যালিছে। উক্ত পলারনের পর হুইতে ভাহার আরি বেবক্সী প্রেরিছত লানাকে শ্রেচ-লারা বলিয়া স্বাল বা ভাহার আন্তর্কন পালন করে না এবং কখনও কোন উপটোকনাদি পাঁঠার না;
টাহানের মধ্যে এক শ্রেষ্ঠ প্রেরিছত আছে। আজিও তিনি
গোপনে তাহাদের ধর্মরক্ষার বাবস্থা দিরা আসিতেছেন।
আভাপি তল্গাতীরে তাঁহার ধর্মপক্তি বিভারিত হইতেছে।
কালমাক্গণের শ্রেষ্ঠ-প্রেছিত আজিও লামা নামে প্রিত।
দলই লামাকে সর্বশ্রেষ্ঠ বিলিরা প্রহণ না করিলেও ক্ষণবর্মে প্রের নির্কাচিত এক শ্রধান লামার উপদেশাভ্নারে তাহারা আপন
ধর্মরক্ষা করিভেছে।

रें जितृष्ठ अञ्चलवर्ग कतिरम जाना यात्र रय, शृर्ट्स अमृत छन्शा-তীর পর্যন্ত দলই লামার অধিকার বিভুত ছিল। তাঁহার নিকট অন্তিদগ্রন্ত অনেক বৌদ্ধ-পুরোহিত বৎসর বৎসর তাঁলাকে লাসা-নগরীতে রাজকর পাঠাইতেন। के नकन नामा-शूरवाहिल একণে স্বাবিনার নামে পরিচিত। তোরগোৎদিগের পলারনের পর হইতে আর স্বাবিনারগণ ঐ কর পাঠান না। অবশিষ্ট উন্নদের (Ulluse) স্বাধিনারগণ এখন বিভিন্ন চুফালে বিভক্ত। ১৮০৩ খুষ্টা-ন্যের বিবরণী হইতে জানা যার যে, কালমাক্জাতির জনসংখ্যার দশমাংশ পুরোহিতপ্রধান হওয়ার এবং তাহারা স্বজাতি-সন্নান্ধে প্রভাব বিভার করিয়া ভাষাদের অর্থে প্রতিপালিভ হইত विनिहां क्रवशंवरम के ३५०५ थ होट्स ध्वथान-नामा क्रद्यानम्टकत्र সাহাব্যে উক্ত অযৌক্তিক প্রভাব ধর্ম করিয়া দেন। পুর্বে হুষ্ট ও অলস লোকে অর্থোপার্জনে অক্ষম হইয়া এই পুরোহিত-সম্প্রদারের আশ্রয় শইত এবং ধর্মপ্রাণ নিরীহ বৌদ্ধ কাশমাক্-দিগের নিকট হটতে বঁশের ভান করিয়া অর্থ সংগ্রহ করিত। इस्व-नवर्ष्म के महत्व महत्व व्यक्त्यम भूरताहिलक मन्त्रमात्र हहेरल বিতাড়িত করিরাছিলেন। ক্রবদায়াজ্যের আদমস্মারি इंडेट कामा गांत रा, उथात ४२ हाकात किर्किक, ১১৯:७२ कानमाक ७ ১৯٠٠٠ वृद्धिषार नामाधर्यामकी विश्वमान आह्य। অপরাপর স্থানের লামা ও লামাচারী বৌদৰভাদায়ের তালিকা পুর্বেই উলিখিত হইয়াছে।

নেপালে গোর্থান্সাতির প্রান্ত্র্জাবে শৈবহিন্দুধর্ম প্রচারিত কর। তাহারা অনেকাংশে বৌদ্ধেরী হইলেও, অধিকাংশ নেপানীবেশ্বিই লামান্তাবলবী। বর্ত্তমান ভোটান (ভোটান্ত) জনপদে লামাধর্ম পূর্থমান্ত্রার বিরাজিত। তথাকার তাসিম্পন জেলার ৬শত, পূর্ণাথার ৬শত, পারোজেলার ৩শত, তোজসোরে ৩শত, টাগ্নার হর শত, ও বন্দীপুরে (অন্দিপুর) ২শত লামা-প্রোহিত আছে। এ ছাড়া স্থানে স্থানে পর্কতিশ্বহা মধ্যে অসংখা লামাসন্ন্যাসী এবং মঠে বৌদ্ধতিস্থানী দেখা বার। মঠবাসী ভিন্ন প্রার্থ হালার লামা-পুরোহিত রালকর্শে ও ব্যবসাবাধিজ্যে নিশ্ব বহিনাছেন।

সিকিমে লামামতই রাজধর্ম। তথাকার লামা ও সাধারণ লোকের বিখাস, ধর্মাত্মা পদ্মসন্তব (গুরু রিম্-বো-ছে) লামামত-ছাপনার্থ তিবতে গমনকালে এই জনপদ দিরা যাত্রা করিয়া-ছিলেন। খুটীর ১৭শ শতাব্দের লামাপরিব্রাজক ন্হা-ৎস্থন-ছেখো তিবত হইতে সিকিমে আগমন করেন। তাঁহার বিবরণী হইতে জানা বার যে, তৎকালে তদ্দেশবাসীরা অজ্ঞানাক্ষারে নিমজ্জিত ছিল, সন্তবতঃ তাঁহার আগমনের পর সিকিমবাসী লামাধর্মে দীক্ষিত হয়। তিনি এখানে পরিত্রাণকর্ত্তা ধর্মাত্মারেপ পুজিত হইয়া থাকেন। •

খুঁটীর ১৭শ শতাব্দের শেষভাগে ল্হা-ৎস্থন ছেবোর মৃত্যুর পর হইতে সিকিনে লামাধর্ম ক্রেমণা বিস্তারলাভ করিতে থাকে এবং অতি অরকাল মধ্যেই বৌদ্ধবিত ও সক্ষারানে সিকিমরাক্ত্য আছের হইস্কাপড়ে; স্থতরাং সিকিমবাসীর সভ্যতা ও সাহিত্যে এবং লেপ্ছা কাতির বর্ণমালার উৎপত্তিকাল লামাধর্মের সাহাব্যে পরিপুট হইরাছে বলিরা গণনা করা যায়। সিকিনে ক্রিড-ম-প ও কর-জ্ঞা-প (কর-ম-প) সম্প্রদায়ের প্রভাবই অধিক। তথার চুক্-প সম্প্রদারের কোন মঠ দৃষ্ট হয় না।

পূর্বেই উল্লেখ করিয়াছি যে, তিববতে লামাধর্মের বিস্তারের সঙ্গেল সঙ্গে তাহার কতকগুলি সাম্প্রান্থিক বিভাগ গঠিত হয়।
ভারতীর মহাযান ও তান্ত্রিক বৌদ্ধ মত এবং ভোট-জনপদস্থ
প্রাচীন বোন্ ধর্ম একত্র করিয়া তথাকার লামামতের উৎপত্তি
ঘটে। ৭৪৭খু ইাব্লে ওগোন বা উদ্মানবাসী গুরু পল্নসন্তবের চেপ্টার
পরিবর্দ্ধিত হইলেও তাহা সেরূপ প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে পারে নাই।
৮৯৯ খু ইাব্লে রাজা লঙ-দর্ম বৌদ্ধর্মের উচ্ছেদকামনার বৌদ্ধদিগের প্রতি বিশেষ অত্যাচার আরম্ভ করেন। সেই সময়ে
তিবতে প্রতিষ্ঠিত বৌদ্ধ মত ক্রমশংই হীনপ্রত হইতে থাকে।
তৎপরবর্ত্তিকাল হইতে মহান্ত্রা অতীলের শুভাগমন পর্যান্ত
লামাধর্ম আর কোনরূপ পৃষ্টি প্রাপ্ত হয় নাই। ১০৫০ খু ইাব্লে
অতীশ ও তাহার শিষ্য ব্রোম্ন্ত্রাঙ্ কলম-প সম্প্রদার স্থানন
করিয়া আদি লামাধর্মের সংস্কারক বলিয়া পৃজিত হন। এই
শাধামতাবলধী স্প্রপ্রিক লামা ৎসোন-থ-প ১৪০৭খুটাকে পাংল-

ক্ছা-ংখন হেখে বিলপপ্ক তিকত ভ্ভাগের কোলবু জেলার ংসঙ্গো (ব্রহ্মপুত্র) উপত্যকার ১৫৯৫ খুটাজে জন্মগ্রহণ করেন । তিনি তথা হইতে
সিকিম আসিবার সময় পথিমধ্যবর্তী নানা বৌদ্ধ সন্ধারাকে উপনীত হইল। ১০৪৮
খুটাজে গালানগরে সমুপত্তি হন । এবাইন ব্যথম বলই-লামা তথ্-যতের
সহিত ভাহার সাক্ষাৎ হর । তিনি ভারতীর বৌদ্ধাহার্য সহাত্তা ভীনমিত্রের
অবভার বলিয়া থানিছ । বর্তমান পোনিভক্তি সন্ধারাকের প্রতিভাগা ভিক্সি-ল-কো ভীহারই অবভারতাক করিয়াহিলেন ।

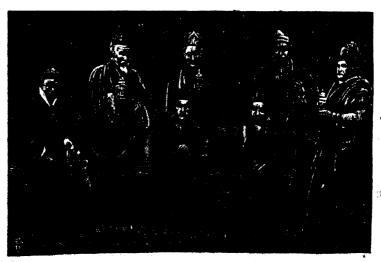
নন সম্পানাম স্থাপন করিয়া বৌদ্ধ ধর্মের বিস্তারে মনোযোগী হনা ১৬৪০ খুটান্দে উহাই তিব্বতের পারমার্থিক-মঞ্জলমপে পরিগণিত হইরা সংস্কৃত গেল্গপ (কদম-প শাখান্তর্কু) সম্প্র-নাম এতিটা লাভ করে। ১৬৪০ খুটান্দ হইতে এই পারমার্থিক মঞ্জেখর বর্ত্তমান সময় পর্যান্ত সাম্প্রদারিক মত ও আপনার প্রভাব সম্ভাবে রক্ষা করিয়া আসিতেহেন ।

১০৬২ থৃ ষ্টান্থে ক্রিঙ্-ম শাখা প্রতিষ্ঠিত হয়। উহা ১০শ শতাব্দের শেবভাগ পর্যান্ত নানারূপে সংস্কৃত হইনা পরিশেষে ক্রিঙ্-ম-প সম্প্রদাররূপে প্রাধান্ত লাভ করিরাছে। পৃষ্টার ১৫শ শতাব্দের শেবার্দ্ধ হইতে ১৭শ শতাব্দের মধ্যভাগ পর্যান্ত এই সম্প্রদারের শাখান্তরূপে যথাক্রমে ওর্গোন-প, বোর্ক্সে-তক্-প, মিন্দোলিন্-প, ঙ-দক্-প, কর্তেক্-প ও, ল্হা-ৎ্র্ন-প প্রভৃতি লম্প্রদারের স্ষ্টি হইরাছে। এই সকল সম্প্রদার ক্রিঙ্-ম-প বা প্রাচীন অন্তঃস্কৃত লামা মতসম্বন্ধীয় শাখা বলিয়া ক্রিঙ্-ম-প বা

১০৭২ খৃষ্টান্দে শাক্য মোন্ যে শাঝা প্রবর্তিত করেন, তাহা শাক্য-প শাঝা নামে সমভাবে প্রশার লাভ করিয়াছে। তাহা হইতে খৃষ্টায় ১৩শ শতান্দের মধ্যভাগে জোনঙ-প শাঝার উৎপত্তি হয়। খৃষ্টায় ১৭শ শতান্দের মধ্যভাগে তারনাথ জোনঙ-প শাঝার মতপ্রাধান্ত হাপন করেন। খৃষ্টায় ১৫শ শতান্দের প্রথমার্কে শাক্যপ শাঝা হইতে নোর-প নামে আর একটা শাঝা গঠিত হয়, কিন্তু তাহা প্রাধান্তলাভ করে নাই।

খুঁটীয় ইঁ১শ শতাবের শেবজাগে মন্-প ও মিল-রন্-প করখ্যা-প শাখার পত্তন করিরা বান। লামা বগ্-পো-ল্হর্জে উস্ক লাআদারিক মত প্রতিষ্ঠা করিরা লাধারণে উহার প্রবর্তকরপে পরিচিত হইরাছিলেন। অস্থমান ১১৪২ খুটাক্ল হইতে ১২২০ খুটাক্লের মধ্যে কর-খ্যা-প সম্প্রদার হইতে পৃথক ও লংক্কভাবে হিকুন্-প, কর্মপ এবং প্রাচীন বা উত্তর চ্ক্-প (১১৬০ খুঃ) শাখার উৎপত্তি হয়। পরিশেবে ১২১০ খুটাক্লে উক্ত চ্ক্-প শম্প্রদার হইতে সংস্কৃতভাবে মধ্য ও লক্ষিণ ভোটান্তের চ্ক্-প এবং প্নরার ১২২০ খুটাক্লে উক্ত ভোটান্ত চ্ক্-প হইতে আধুনিক বা লক্ষ্মি চ্ক্-প শাখার উত্তব হইরাছিল। খুটার ১২শ শতাক্ষের শেবভাগে কিছুন্-প শাখা হইতে তল্ন-প নামে আর একটা খতর শাখার উৎপত্তি হয়। কর্প্য-প ও শাক্যপ সম্প্র-দারাপ্রিত শাখাপ্রি অর্ক্যংক্ত-লামামত বলিরা প্রসিদ্ধ।

বর্তমান সময়ে কোন কোন সামা গুরু পল্লসন্তবের গুহার পূরাদিত প্রাচীন ধর্মগ্রছের দোহাই দিয়া যে সকল শাখা মত প্রচার করিতে চেঠা পাইতেছেন, তৎসমূদ্য "তের-ম" বা গুরুর অভিব্যক্ত সাম্প্রদায়িক মত ঞিঙ-ম-প সম্প্রদায়ের অক্তর্কুক বিলরা গৃহীত হইয়া থাকে। ইহাতে শামানী বোন্-প ও ভূতাদির উপা-সনার সহিত বিশুক্ত শামা মতের সমবর সাধিত হইয়াছে। উপ-রোক্ত বিভিন্ন সম্প্রদায়ের প্রতি পরম্পর পূথক্। তাহাদের পরিছিল ও শির্লাণ অনেকটা বিভিন্ন। নিম্চিত্রে তাহা বিবৃত্ত হইল।



ৰোজসনাৰা শে-ৱাৰ্। কৰু ভা নাৰা। নাৰা উপোন্-গা-ংসো । কিঙ্-বা নাৰাছর।

শক্তানা। কর্মনানা।

্টিপ্রোক্ত সম্প্রদারসমটির বিভার ও প্রতিঠানহকারে । সামাধর্মরাজ্যে অসংখ্য মঠ ও সক্ষারানের প্রতিঠা হর। ঐ সক্ষ বিভিন্ন শাধা-সন্মানৰ ও তবন্ত কু ত বিভিন্ন নঠানিক বিবর্গণ এবং তত্তসতপ্রতিঠাত্বিগের জীবনেভিত্ত সম্বলন বাৰুল্যনোধে লিপি- বছ হইল না। সাংসারিক, অলোভন ইইতে নির্ণিণ্ডভাবে অবস্থান করাই বৌক্ষতিদিগের প্রধান কর্ম, কেন না ভাষা ছইলে উাহারা নিন্দিন্ত মনে ক্ষরের উপাসনা করিতে পালের; এই কারণে তাঁহারা নির্কাশ ও প্রলোভদশ্ভ বিজন প্রদেশে আসিয়া বাস করিয়া থাকেন। এ সকল বাসভূমিই বৌক্ষিণের সক্ষারাম বা মঠ নামে খাভ। লামাধ্যবিভারকমে ভিষ্যত রাজ্যে এবং ভংপার্মন্থ চীন, মোলগীর, ক্ষম প্রভৃতি বিভিন্ন দেশে নানা সক্ষারাম ও মঠ প্রতিষ্ঠিত ইইরাছে। এ সকল স্থান ভোটভাষার পোন-প (নির্কাশ স্থান) নামে পরিচিত। নিমে ক্রেকটী বিভিন্ন দেশীর প্রস্থিত সক্ষারামের নামমাত্র উচ্ ত ইইল,—

फिक्व - कवित्रहू गरेशा, भाषा, मिरमाणिक, शैमिम् (नावक्), সঙ ও ছো-লিঙ্, পন্ম-যঙ-ৎসে (পেমিওক্সছি), ভ-ক-ভবি निंड, का-मंड, न-जंड, पार्किनिंड (मार्किनिंर), प्रशेष, त्रि-গোন, তৃ-পুঙ্, এন্-চে, ছব্-দে, ফেনজঙ, কচো-পল-রি, মণি, त्म-त्मान, वह शह, व्हन-९८म, सम-९८म, ९ळून-शिह, त्रव्-निङ, सूर्-निङ (म-कि)-निङ। এই छनि ছान्ति नामासूनात्त्र প্রসিদ। এভন্তির সম-বাস্, গাংল্লন, দে-পুন্দ, সের্-র, নম্-গ্যাল-ছোই-দে, রমো-ছে ও কর্মক্য, দেবেরিপ-গর, জন-লছে, इमनमतिन (১१२२ कृषे উচ্চে), लोका-नुख-लाख, भाका वा শন্ধ্যা, র-দেল, তিল-গো, ফুন্-ংযোগ্স্মিড, সম-দিও (১৪৫১২ ফিট্ উচ্চ), দি-কুল (ব্ৰি-খঙ্,) খিন্-গ্ৰোল্ মিঙ (মিন্দোরিল), सार्ख-मग्, मृशन्-ति, यान्, अन्न का-वड, नम्-का-छ-(थाक्, कहूह, गान-रित, तर्क, छावम्राना, कार्र्शक, बिहरत लाटक गू, मत-भूक लाक-भूक, समारतन्त्रम, कू-भ-त्रीम, कान्-तम्, (ভा-नून, इम्नक, कान्-न, मर्जान्, त्रिन-एइन-ত্মন, ৎদেনচুক্, গ্যাপুন্, গিলিন্ ও দেয়ু প্রভৃতি প্রধান প্রধান কএকটা সঙ্ঘারাম বিদ্যমান আছে। সমগ্র তিক্তের মঠাশ্রম वा मञ्चातीम महेशा गर्गमा स्वित्न धात ७ हासात हहेता। এই সকল প্রসিদ্ধ সভ্যারাদের পার্ষে পবিত্র ছোর্ডেন (চৈডা বা গুপ) এবং মেনবোড (শ্বভিক্ত) বিব্যমান দেখা মার।

চীন—বুন-হো-কৃত বা প্রসিদ্ধ পেকিন-স্কারান, বু-তৈ-বান,
কৃষ্ম (প্রথানে ক্রম্ব বেডচলন বুল আছে। প্রবাদ থা বুল
ংসোড-খ'পার অবাকালীন নিংলাবিত রজে উৎপদ হইরা
ছিল। উহার প্রভাগতের মূর্তি অভিত আছে। পাল্টাভা
প্রয়তদ্ববিং হব্ থ পত্র প্রবেশণ ক্ষরিরা লিখিরাহেন বে,
উহার পত্রে ডিক্সডীর বর্ণনালা বিভ্রম্ভ রহিরাহে। প্রই
আনস্থানিক ব্যাপার উপেক্ষার বিষয় ক্ষেই।) প্রবং লোবো-ধ ও নামক প্রবং বলির।

শোলগীরা তুর্গা কুরেন্ ও ছারানাথ্যনির এখালে ভ হাজার বৌদরভি এবং কুকু-জোভুন বিভাগের হটার সভারানে আর ব ২০ হাজার সামার বাস আছে।

সাইবেরিরা—বৈকাশ হ্রেরে নিকটবর্তী পেলিংজিন্তের উত্তর-পশ্চিমে অবন্ধিত একটী সক্ষারাম। একানকার বঠাচার্য্য ব্রিরাইনিপের মধ্যে বাল্সো পতিত সালে পরিচিত।

স্রোপ—ভল্গা নদীতীরবর্তী কালমাক্ ভাভারনিগের দঠি 'চুকর'
নামে কথিত। উহা সাধারণত: তাঁবুডেই নিশ্বিত হইর।
থাকে। এ সকল তাপু প্রধানত: তুইভাগে বিভক্ত:—বে
হানে পুরোহিতগণ বাস করেন, ভাহার চুকর্ন্-ওএর্গা
এবং বেখানে দেবমূর্ত্তি ও ধর্মসংক্রান্ত চিত্রাবলী স্ক্রিড
থাকে, ভাহা দিতানী বা বৃচ্ছান্ন্-ওএর্গা নামে প্রসিদ্ধ।
এক একটা চুকর মধ্যে শতাধিক পুরোহিত থাকিতে
দেখা যার।

লদাক্ বা ছোট তিববত—ছেমি বা হীমিস, লম-বুর ক্ষ, ম্থো-মিগু (তুর্কিহানের মানচিত্রে খোৎলিক্মঠ), থেগ্-ছোস, কোর দলোগ্স, বম্ লে, মধো, স্পিণ্গ; শের-গল, কিয়-লঙ, খেংগে, কর্ম ছব্-লিঙ, পোয়ি ও পঙারি।

নেপাল—এখানকার নিম্ন উপত্যকার কোন সভ্যারাম দৃষ্ট হর না। উত্তর্নিখর্জী অধিত্যকাবিভাগে আছে কি না তাহাও জানিবার উপার নাই। এখানকার বৌদ্ধতীর্থ-সমূহে কতকগুলি লামার বাস আছে।

ভোটান--ভাবি-ছো-দ্সোদ, পুণ-থাও, উ-র্গান-ংসে, বাক্রো, বাহ, ভান্ছোগ-র্লন, জে-হ-লি, সম-স্থিন, থা-ছাগ্স-র্গন-থা, ছাল্-ছুগা, কালিমশোদ, পেছোদ প্রভৃতি। ভোটানের অহালামা ধর্মাজ ও দেবরাজ ভাবিছোদ্সক্ষ সক্ষারামে বাস করেন।

নিকিম—সন্তেশিত, হব-খি, শেষিগ্রাছি, গণ্টোক, তবিদিল, লেমন্, মিন্টিন্শোল, জলোল, মদি, রম-থেক্, ফচল (কোক্ত), কেউলটোল, কেউলপেরি, লছুল্, তলুল (পো-কুঙ), একিছি, কেক্সল, কডেকি, গলিল (পোনিঙ্) ননগল (গাভ-ল্গঙ) শুরুত, লছুল, ল্লন্-থ্নে, সিনিক্ (শ্লিব্রু), মিলিম (গ্ল্গোন্), নিজ-থেম, থ্সগ্-নেস, লাভেন, নিজোল, ক্সল (কপ্ন্রিল), নোরিল (গ্ল্-মিঙ্কু), সম্ভি (ম্প্নিল), গাবিলা শেল বিভল্), সঙ্গ ল্ভান্।

এই সকল সক্ষাৱাৰবাদী বৌহুবভিগণ ভিৰাতীয় বিভিন্ন সম্মাধানকে আগ্ৰন কৰিবা আপন আপন নাম্মাধানিক মত বুকা কৰিবা আনিতেহেন। বৰ্ষসম্মাধান লাক্ষ্য অনুনাৰে উহাবের আন ও ব্যৱহাৰণ উকীৰ বেখা বাব। নিক্তিয় কুক্তভানি মঠ আছে, তাহার অধিকাংশই ঞিঙ্-ম সম্প্রদায়ভূক। কেবল
নমছি, তাধিদিঙ্গ, সিনোন ও ওঙ মোছে সক্ষারামে ওদক প এবং
কতেকি ও দোলিঙ্গ মঠে কতেকি-প শাধামত বিভারিত
দেখা যায়।

পূর্ব্বকথিত সজ্বারাম ও মঠ বাতীত তিব্বতের নানাস্থানে মন্দির বিরাজিত আছে। ঐ সকলের মধ্যে লাসানগরীর স্থবৃহৎ মন্দিরই সর্ব্ধপ্রধান। মন্দিরের দার হইতে গর্ভপীঠ পর্যান্ত স্থানে সানে নানা দেবমূর্ত্তি দেখা যায়, তক্মধ্যে ছার-পালগণের আকৃতি অতীব ভয়াবহ। লামারাজ্ঞার পশ্চিম দিকপুতি বিরূপাক্ষ, দক্ষিণ দিক্পতি বিরূধক, ভূতগণের ঈশ্বরী দেবীমূর্ত্তি, হাদশ তান্ মা ভৃতিনী মূর্ত্তি, ব্লপাণি মূর্ত্তি; পুর্ব্বদিকপতি গতরাই এবং উত্তরদিক্পতি যক্ষেশ্বর বৈশ্রবণ; যম, অগ্নিবায়, বরুণ, যক্ষ, রক্ষঃ, সোম, ব্রহ্ম, ইক্স ও ভূপতি মাসক দশলোকপালমূর্ত্তি প্রভৃতি দেবচিত্র বিশায়প্রদ। এতত্তির ত্থায় অমিতাভ, অমিতায়:, নাগার্জ্বন, মঞ্শী, সমস্তভ্র, একাদশশিরস্ক, অবলোকিত, নারো, একবিংশ তারামূর্ত্তি, পদ্ম-সম্ভব, শান্তরক্ষিত, অতীশ, বজ্রধর, মরপ, মিল-রঃ প, শাকাবৃদ্ধ, অক্ষোভা, অমোঘসিদ্ধি, বৈরোচন, রত্নসম্ভব,মরীচী বা বারাহীমূর্ত্তি, বজ্ঞাভেরবম্র্টি, হয়গ্রীবম্র্টি, বিভিন্ন শক্তি (কালী) মূর্তি, বিভিন্ন ডাকিনী, যক্ষিণী, গদ্ধর্ম, অসুর, কিরর, মহোরগ, গরুড় প্রভৃতি অসংখ্য বৃদ্ধ, বোধিসৰ, বৌদ্ধাচার্য্য, কুলদেবতা, গ্রাম্যদেবতা এবং ডাকিনী, ভৃতিনী ও তান্ত্ৰিক হিন্দু-দেবদেবীমূর্ত্তি তিব্বতীয় লামা সমাজে পুজিত দেখা যায়।

লামাগণ পিতৃপুরুষগণের প্রেভোদিট শ্রাদ্ধ ও পিওদানাদি
বিশেষ ভক্তিসহ করিয়া থাকে। তাঁহারা যমরাজকে নরকের
অধিপতি বলিয়া বিখাস করেন। সঞ্জীব, কলাস্ত্র, সভ্যাট,
রৌরব, মহারোরব, তাপন, প্রতাপন ও অবীচি নামক ৮টা অগ্নিময় এবং অর্কাদ, নির্কাদ, অতত, হহব, অহব, উৎপল, পদ্ম ও
পুত্ররীক নামক ৮টা শীতময় ও তদ্ভিয় পৃথীপৃষ্ঠে, পর্কতে,
মরুদেশে, উষ্ণ প্রস্রবণ ও হুদাদিতে প্রায়্ব ৮৪ হাজার নরক
নির্দ্ধিত আছে। এই সকল নরক 'লোকাস্তরিক' নামে কথিত।
নয়ক হইতে উচ্চে এবং সিতবন হইতে নিম্নে তাঁহারা প্রেতলোক
কর্মনা করিয়া থাকেন।

লামারতিগণের মৃতদেহ ধ্যানিব্দের জার আসনে বসাইরা
সমাধিত্ব করা হর। বে স্থানে তাঁহাদের সমাধি হর, ঐ স্থান
তীর্থরণে গণ্য হইরা থাকে। নির্মেণীর লামাগণের দেহ দাহ
করা হর এবং সেই ভক্ত বা অন্থি সমাধি দিরা ভক্তপরি এক একটা
বৃদ্ধসূত্তি স্থাপিত করিরা দের। সাধারণ ব্যক্তির মৃত্যুতে ঐরপ
কৌন উৎস্বই হয় না। কোন কোন স্থলে তাঁহারা মৃত্যুত

পর্কতোপরি লইয়া ফেলিয়া আঁইসেন। স্থানে স্থানে স্ভানে বিলানান আছে। মোললীর লামাগণ কথন কথন মৃতদেহ প্রোথিত করেম ও তছপরি
প্রেত্তরখও স্থাপন করিয়া জন্মমৃত্যুর সংক্ষিপ্ত ইতিহাস লিখিয়া
রাবেন। কখন বা শীতপর্কতিশিধরে ফেলিয়া দেন। মাংসালী
পক্ষী পশু প্রভৃতিকে সেই শবদেহ ভক্ষণ করানই তাঁহাদের
উদ্দেশ্র। স্থানিকেন।
শিশু সন্তানাদির মৃত্যু হইলে শিতামাতা পথের ধারে ফেলিয়া
দেয়। শিশুতিতে দাহ, সমাধিত্ব বা নদীর জলে ভাসাইবার
নিরম আছে। মৃত্যুর পর প্রেতের মঙ্গলকামনায় তাঁহারা
মত্র পাঠ করেন। একমাত্র লাল উক্ষীবধারী সামানি গে-লোভ
লামারাই বিবাহ করিতে পান।

তিব্যতীর বৌদ্ধর্মের অপরাপর বিবরণ পরিব্রাজক বৌদ্ধা-চার্য্যগণের জীবনী প্রদক্ষে এবং বৌদ্ধর্ম্ম, প্রজীত্য সনুৎপাদ, ভবচক্র, ভৌতিকবিছা, ভোজবিদ্ধা ও তিব্বত শব্দে সংক্ষিপ্তভাবে বিবৃত হইয়াছে, স্মভরাং এখানে পুনরার উল্লিখিত হইল না।

[उउ९ मस (मध ।]

সাধারণের অবগতির জন্ম নিমে তিব্বতের কএকটা প্রসিদ্ধ সজ্যারামের মঠাধাক্ষ প্রোষ্ঠ আচার্য্য লামাগণের বংশতালিকা ও তাহার সংক্ষিপ্ত ইতিবৃত্ত প্রাদত্ত হইল:—

>	मगर	লামা-বংশ	ŧ
---	-----	----------	---

मः श्रा	নাম	দাবির্জাৰ	ও ভিরোভাবকাল	
>	দ্গেছন গুৰ্প	১৩৯১	১৪৭৫ খু টাৰ ণ	
ર	দ্গোছন ৰ্যাম্ৎযো	>89€	>480	
૭	ৰ্সোদ্ নম্স্	>489	>449	
8	যোন্ তান্	>6436	3 %>9	
¢	ঙগ ৰঙ ব্লোব্সন্ গ্যম্থ	বা ১৬১৭	>७৮२ প্রথম'দলই'	
•	ৎষঙৰ দ্বান্স গ্যন্ৎযো	७७५०	>90%	
9 *	द्रम् अन् "	>9.6	>966	
۲	सम् म्लन ,,	>966	>500 E	
۵	লুঙ তেগিংন্ "	>4.6	>F>4	
٥٠	ৎৰ্ণ খ্মস্ "	2F2#	১৮৩৭	
>>	ম্থদ্ গুৰ্ "	3209	Shee	
> २	ফ্রিন্লস্ "	7260	* >646	
30	থ্য্ ব্ভান "	3694	— ৰৰ্তমান	

এই বংশের প্রতিষ্ঠাতা মহালামা গেছন গুরু শ-ছোর নিকট কোন স্থানে ক্রপ্রহণ করেন, পরে ডিনি ভবিল্ ছুণপো সক্ষারাম স্থাপন করিয়াছিলেন। বর্ষ লামা চরিত্রলাবে রাজ্যচ্যুত ও নিহত হইলে তাভাররাজ গিরির বাঁ পোতলের মঠের অধ্যক্ষপদে ছগ্লোরিলাস ভগ্বঙ্ বেবে গাঁলথবোক্তে নিরোগ করেন, কিব আচিরে রটনা হইল বে, লিখক লগরে লেপুল সভ্যারামের একজন বৌহযভির পুত্ররূপে কললা পামে বঠ লালা জন্মপরিগ্রহ করিরা-ছেন। তথন চীলসারাট্ ঐ বালককে কারাক্ত করিরা ১৭২০ মুঠান্দের যুদ্ধ পর্যন্ত জাভার-রাজের নিরোজিত লামান্দেই লাসা মগরীর ধর্মপঞ্চপবে নির্ক্ত রাখেন। ১৭২৮ খুটান্দে হত্যাপরাধে ভিনি ভোটরাজকে পদ্যুত্ত করেন এবং ছোতিন সভ্যারামের কেশরী রিন্পোছে তাঁহার পদে অভিবিক্ত হন। ইহার কিছু পরে তিনি পুনরার বীর শক্তিবারা প্রাধান্ত অর্জন করিয়াছিলেন ক্রম্ব তাঁহার রাজস্বকালের ১৭৪৯ খুটান্দে চীনরাজপক্তি তিবত হইতে অপক্তত হইরাছিল।

নবম, দশম, একানল ও বাদশ মহালামা বাল্যাবস্থাতেই ব ব অভিভাবক কর্তৃক কৌশলে বিষপ্রয়োগ অথবা ঘাতক্যারা গোপনে নিহত হন। শেবোক্ত লামা ১৮৬৬ খুষ্টান্দে ত্রয়োদশ বর্ষীয় বাদক ছিলেন। ১৮৭৪ খুষ্টান্দে তিনি কালকবলে পতিত হইলে ১০শ লামা থুষ্-ৎসান্ তৎপদ অধিকার করেন।

च्थातिक "जावि"-नामावरम ।

- খুগ-প ল্ছদ্ ৎদদ্—ত নগ সজ্বারামের একজন বৌদ্ধ্যতি।
- २ माका गखिल (১১৮२-১२৫२ युः)।
- ० यून् रहान (फारब्यान (>२४८->०१७ गृ:)
- ৪ খদ্গুৰ গেলেগপালক্ষপা (১৩৮৫---১৪৩৯ খৃ:)
- शतकन् (माननम क्लार्श्य किर्मखर्गा (১৪৩৯—১৫•৫)
- ७ (तन्त्र भ लाखन् (ताक गूत (১६०६— ১६१०)

উপরি উক্ত বৌদ্ধতি বা লামাগণ 'তবি' বা 'তাবি' লামা নামে প্রাকৃষি লাভ করিয়াছিলেন কিনা বলা বায় না। কেননা তাইল্চ্লাপোর প্রসিদ্ধ সম্বারাম খৃষ্টার ১৫শ শতাব্দের প্রথম-ভাগে প্রতিষ্ঠিত হয়। স্থতরাং উক্ত ভালিকার শেব চুইজন লামাকেই তৎসামরিক বলিয়া গণ্য করা বাইতে পারে। "পঞ্চেন্ রিন্পোছে উপাধিধারী নিয়োক্ত লামাগণই প্রক্কত ভাবি-লামারপে সর্বার পুলিত ছইয়া শীকেন।

	क्षत्र पृष	ভিৱেছ	11व
> लारबङ ছোन् का ग्रानन्दन	>645	১৬৬২	कुः ।
২ ,, যেল দৃগল মঙ পো	3660	2909	
७ ,, मृशन न्त्रम् (स्टर	>900	>95.	
। र्छ छाम পहि जिम	משר נ	>> 48	
ৎ বেণ্ণালালন ছোস্ক্যি	2248 Jan	>>>	
•	>>>> QR	שלשו	बृडीएक
ক্ষেত্ৰায়ী মাদেৱ শেবে ছিনি ৰ			

শাকাসাত্রদারিক লামাচার্গগণ ।

> শাক্য ব্লঙ্গো ১২ ওদ্-লের-সেঙ্গে

१ वष-व्रञ्ज >७ कून्तिन्

৩ বন্-করপো ১৪ দৌন,চৌদ-দুপন

৪ ছাঙরিন্য়্য়াম্প > ং বোন-ব্ৎস্থন

র্ফার্ড ১৬ ওদ্-সের সেওগেছেয়

७ यह-वड >१ र्गान्-व-महर्रा

৭ ছঙ দৌর ১৮ ছঙ-ফ্যঙ্গ দ্পল

৮ অভ লেন ১৯ সোদ-নম-দ্পল

৯ লেগদ্প-দ্পল ২ গ্যব্-ব-ৎসন পোয়েক

১ পেঙ-গে দ্পল ২১ ৰঙ্-ব্ৎস্থন।

>> ७म् टब्ब्र म्लन

এই মঠাচার্য্যগণ অত্যাণিও "শাক্য পন্ ছেন্" নামে পরিচিত ।
ভোটানের মঠাচার্য্য মহালামাগণ কর-গুল্প সম্প্রদারের দক্ষিণছক্-প শাধার অন্তর্ভুক্ত। এই ভোটানীগণ শতাব্যর পূর্কে
বালালার উত্তরশীমা কোচবিহার আক্রমণ করে। ভোটানীদলে কতকগুলি তিববতীয় সৈন্ত ছিল, তাহাদের অধিনায়ক
ছপগণি বেপকুন নামক একজন লামা ক্রমশঃ সেনাদিগের উপর
আধিপত্য বিতার করিয়া ধর্ম্মরাজয়পে গণ্য হইলেন। তাঁহার
দেহত্যাগের পর তদীয় আত্মা লাসানগরীর যে বালকের দেহে
প্রবেশ করিয়াছিল বলিয়া সাধারণের বিশ্বাস ইইয়াছিল, তাহাকে
ভোটানে আনা হয়। এই লামাবতার 'রিন্পোছে' ও 'ধর্ম্মরাজ'
নামে পরিচিত। বালক লামা রাজনও পরিচালনের অন্ত যে
অভিজ্ঞাবক নিযুক্ত করেন, তিনিই দেবরাজ নামে পরিচিত।

क्षिणित्व मामाग्रांभन ।

১ ঙগ বঙ্ৰম গাল হদ ঝোম দোৰে।

২ "ঝিগ্মেদতগিস্পা।

৩ ,, ছোস্ কিয় গ্যাল ম্ৎসান।

৪ " ঝিগ মেদ্ হঙ্ক পো।

< ,, শাক্য সেও গো।

,, वस घाउन् नीन म्रवान ।

१ ,, दशन कि। व्ह सूर्ग।

৮ ু, বিগ মেদ ভূগিস্ প (বিভীয়বার অবভীণ)

» , के के लान्

> , अबे वे रहान ग्रीम

(ভোটানের মহালামা ১৮৯২ গুটাকে)

এই ১-জন লামাৰডারের স্বভক্ক জীবনী আছে। প্রথম লামা বিবাহিত ছিলেন। তিনি মবালামা লোনম গাঞ্চরাক্স শনসামরিক। অবশিষ্ট লামাগণ ব্রহ্মহার্যাবল্বী। ধর্মরাজ গ্রীমকালে তবিছো হুর্নে অবস্থান করেন। ঐ প্রাসাদ প্রস্তর-নির্ম্মিত এবং সাত তোলা উচ্চ। এখানে প্রার ৫ শত বৌদ্ধ্যতির বাস আছে। নেপালবাসী লামাদিগের উপর ইনিই কর্তৃত্ব করিয়া খাকেন। গোর্থা গবমেন্ট ভাছার বিরোধী নহেন।

খব্দপ্রবেশবাসী মোললীরদিগের প্রধান ধর্মাধ্যক্ষ উর্গ্য-কুরেন নামক স্থানে বাস করেন, তাঁহারা জেৎস্থন-দম্প নামে পরিচিত। খব্দবাসী মোললগণের বিশাস বে. স্থপ্রসিদ্ধ ঐতিহাসিক লামা তারনাথ তাহাদের জেৎস্থন্ দম্পদিগের শরীরে পুন: পুন: অবতীর্থ হইয়া ধর্মবিস্তার করিতেছেন। মোললীয়দিগের উর্গ্য সক্যারাম প্রথমে শাক্যসম্প্রদায়ভূক্ত ছিল, পরে উহা গে-লুপ সাম্প্রদারিক মঠাশ্রমে পরিণত হইয়াছে।

সমাট্ কন্দ-হি'র রাজ্যকালে (১৬৬২-১৭২৩ খৃ:) পীত নদী তীরস্থ কোকৌ-খোতোন নগরে ধর্মাচার্যা ক্লেৎস্থন-দম্প বাস করিতেন। ঐ সময়ে কাল্মাক বা সি.উথ জাতির সহিত খব্দিগের বিরোধ উপস্থিত হয়। খব্দগণ পরাভূত হইয়া চীন-রাজের আশ্রয় গ্রহণ করে। তথন কালমাকগণ চীনসমাটের নিকট জেৎস্থন দম্প ও তাঁহার ভ্রাতা রাজকুমার তুম্ভেতু খাঁকে প্রত্যর্পণ করিবার প্রার্থনা জানাইলেন। সমাট্ উভয় ভ্রাতাকে কাল্মাক্দিণের হল্তে প্রতার্পণ করিতে অস্বীকৃত হইলে, তাহারা দলইলামাকে মধ্যন্ত মানিলেন। দলই লামা বা তাঁহার প্রতি-নিধি বিচার করিয়া উক্ত রাজকুমারদ্বয়কে প্রত্যর্পণের আদেশ করিলেন, ইহাতে সমাটের সহিত কালমাক্ জাভির যুদ্ধ বাধিল। এই সময়ে একদিন সম্রাটু জেৎস্থন দম্পের সহিত দেখা করিতে যান এবং তৎকর্ত্তক অপমানিত হইয়া তাঁহার শিরশ্ছেদ করিতে कारमन रमन। এই ঘটনার ধরণে বিদ্রোহী হইরা উঠে এবং **ভেৎমুন দম্প তাঁহার অকারহণত্যার** প্ৰতিহিংসাসাধনাৰ্থ অবতীণ হইয়াছেন বলিয়া ঘোষণা করেন। চীনসমাট্ বিদ্যোহের স্কুচনা দেখিয়া দলই শামার শরণাপর হইলেন। তাঁহার বিচারে দ্বিরীক্ষত হইল যে. দ্বেংফন দম্পের পরবর্তী অবতারগুলি ভিজ্পতেই হুইবে। পদ্ধবাদিগণ এ সময় হুইতেই বদেশপ্রেমিক শ্ৰেষ্ঠ পুরোহিত হইতে ৰঞ্চিত হইল।

একৰে মধ্য বা পশ্চিম তিবাত হইতেই সাধারণতঃ তেংহন দশ্যের অবতার আবিত্ত হইরা থাকেন। বর্তমান তেংহন কল লাকানগরীর বাবারের নিকট অবতাহণ করিরাছিলেন। তিনি আচার্য তারিকার ৮ম হানীর ক্লীতিনি বেশুল সকারামে গেলুল্প লামা-শিকাবিকাশে তারিই হন, ক্লিড তিনি পঞ্ম বর্ষে পদার্পণ করিতেই বছেরা তাহাকে উর্বায় লইরা বার, সতে এক অন বেশুক লামার শিক্ষকরণে গ্রম করেম।

অবতাররূপে পূলা পূর্ব্বোক্ত ধর্মাচার্য্যগণ ব্যতীত তদপেকা হীনপ্রকাবসন্দার আরও কতকগুলি লামাচার্য্য আছেন, ভাঁহারা জ্যোতিঃপ্রাপ্ত বা দেহান্তরধারী বলিয়া পুলিত। এই প্রেণীর লামাচার্য তিব্বতে ৩০টা, উত্তর মোললীরার ১৯টা, দক্ষিণমোললীরার ৫৭টা, কোকোনোরে ৩৫টা, ছিরামদো প্রর্কেছ্বনে ৫টা এবং গেকিনে ১৪টা আছেন। এ সকল দেহান্তর-প্রবিষ্ট লামার মধ্যে পশ্চিম-তিব্বতের সেওছেন রিণপোছে, বঙ্জিন্ লোপ, বিল্লুঙ, লোছেন, কিয় জর তিভি, দে ছন জলিগ, কঙ্লা ও কোঙ এবং থামবিভাগে তু, ছন্লো লোক্তে প্রভৃতি প্রধান।

পেকিনের লামামওল তিববতীর ভাষার ছঙ্-দ্ম (লাক্য ?)
বলিরা কথিত এবং এধানকার লামাচার্য্য রোল পহীর অবতাররূপে পূজিত। সম্রাট্ কল-হি'র রাজদ্বলালে ১৬৯০ হইতে
১৭০০ প্রতাবের মধ্যে তিনি দৈবশক্তিসম্পন্ন হইরাছিলেন।
সম্রাট্ তাঁহার প্রতি বিশাসনিবন্ধন ভাহাকে মধ্য মোল্লীয়ার
ধর্মাধ্যক্ষ পদ দান করেন।

বাদকের অবতীর্ণ লামাগণ কু-বৌ নামে পরিচিত। ১৮৯৩ খুটান্দে যে লামাবতার ছিলেন, তাঁহার বয়স ২৬ বংসর। ইনি ১৪শ বর্ষকাল তিব্বতে থাকিয়া বিভাজ্যাস করেন। লামাচার্য্য তালিকায় ইনি সপ্তন্দ।

যন্দোক ছণতীরত্ব সক্ষারামে একজন বৌদ্ধ রমণী আচার্য্যাণী পদ পাইয়াছেন। তিনি বক্সবারাহীর অবতার বলিয়া সন্মানিত। মিঃ বোগল্ তাঁহার সাক্ষাৎ লাভ করিয়াছিলেন।

লামাচার্য্যগণ দেহত্যাগ করিবার সময়, স্থ স্থ পুনর্জন্ম প্রকটন করিয়া যান। তাঁহারা কোন্ গ্রামে ও কোন্ পরিবারে জন্মপরিগ্রহ করিবেন, তাহাও নির্দেশ করিরা থাকেন: কিন্তু ৰৰ্জমান সময়ে সেই লামাবতারের নির্কাচন ও পরীকা স্বতন্ত্র প্রথার গৃহীত হইরা থাকে। মৃত লামাচার্য্য কি নামে অবতীর্ণ হইতে পারেন, প্রথমে ১১৭ জন বিভদ্কচেন্ডা লামা একতা হইয়া তাহার নাম নির্দারণ করিয়া লন। নামনির্দেশকালে ভজনা ও পজা হর। বতগুলি পবিত্র নাম তাঁলাদের মনে উঠে, তাহাই ভাঁহারা এক এক খণ্ড কাগজে লিখিয়া একটা স্বর্ণপাত্তে রাখেন, পরে তাঁহারা সকলেই ভোত্রগান করিতে করিতে ৩১ম হইতে ৭১ম দিন পর্যান্ত তাহার মধ্য হইতে থাকিরা থাকিয়া এক একথানি কাগজ উঠাইরা লন। ঐ কাগজগুলির মধ্যে নৰ অবভারের নাম পাওয়া বায় ৷ পেকিনরাজ "নঁ ছুতে"য় ভবিষয়াণী বিশাস করিরা মহালামা নিরোগ করিরা থাকেন। নামাচার্য নির্বাচন-প্রণালীর গৃঢ় রহত ও ভাহার প্রকৃত তলের মর্লোদ্ঘাটন অনাবস্তৰবোধে উকুত হইন না।

লায়ক (গুং) সংশ্ध।

লার্কানেল, পশ্চিমবালানার পার্কান্ত প্রদেশবাসী প্রসিদ্ধ কোল-লাতির একটা শাখা। ইহারা অতিশর চুর্ক্রব। বিলান দেখ।] লার্থানা, বোৰাই-প্রেসিডেলীর সিদ্ধ্রপ্রদেশের শীকারপুর জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। লার্থানা, লব্দরিরা, কমর, রতদেরো ও সিজাবল নামে এটা তালুক লইরা গঠিত। ভূপরিমাণ ১৮৯৪ বর্গমাইল।

ইবার উত্তরদীমার থিলাতের থার অধিক্ষত প্রদেশ, পূর্বে সিল্প ও শক্তর নদী এবং শীকারপুর উপবিভাগ, দক্ষিণে ও পশ্চিমে মেহর, থেলাৎ এবং থীরথর পর্বত্যালা। থীরথর পর্বতের নিকটবর্ত্তী স্থান ভিন্ন অপর সকল স্থানই সমতল। এই বিস্তীর্ণ সমতল প্রান্তরে দৃষ্টি আকর্ষণকারী কোনরূপ প্রাকৃতিক শোভা নাই; কেবলমাত্র সিল্পনদ ও পশ্চিম নারানদী এবং নারা হইতে গার-থাল পর্যান্ত ভূভাগ শ্লামল শক্তক্ষেত্র পরিপূর্ণ। এখানেই ধনজনপুর্ণ গ্রামাদি আছে, অপর সকল স্থান "কালর" বা লবণমর উবর ভূমি। সিল্পুক্লের বালুকামর প্রদেশের স্থানে স্থানে বাব্লা প্রভৃতি বৃক্লের ক্ষু জলল দৃষ্ট হয়।

এখানে অনেকগুলি খাল আছে। উহার জলেই স্থানীয় চাসবাদের প্রবিধা হইয়া থাকে। ঐ সকল খালের কতকগুলি স্থানীয় জমিদারদিগের যত্ত্বে এবং কতকগুলি ভারত গবমে টের বায়ে সাধিত হইয়াছে। গবমে টের খালের মধ্যে পশ্চিম নারাই সর্ব্ধ প্রধান, উহা ৩০ মাইল লম্বা ও প্রোয় ১০০ ফিট্ প্রস্থ। এতদ্তির গার-(২২ মাইল, ৮০ ফিট্), নৌরঙ্গ (২২ মাইল-২০ ফিট্), বীরে-জ্ব-কুর (২৭ মাইল ও ৪৮ ফিট্) এবং ইলেনবাহ ২৩ মাইল লম্বা। জমিদারী খালের মধ্যে শাহজিকুর এবং দাতেজি কুর ২২ মাইল এবং মীর্থাল ২০ মাইল লম্বা।

লার্গানা এথানকার প্রধান নগর ও বিচার সদর। এথানে লানীয় প্রাচীন কীন্তির নিদর্শনস্বরূপ একটী পুরাতন কেলা, শাহাল মহন্মদ কল্ছোরা এবং তাঁহার প্রধান মন্ত্রী শাহ বাহরার সমাধিমন্দির বিদ্যমান আছে। শাহাল মহন্মদের পৌত্র আদম শাহ একজন প্রসিদ্ধ ফকির ছিলেন। তাঁহার বংশধরগণ পরে সিদ্ধপ্রদেশের অবীশ্বর হন।

রতো দেরো ও কছর নগর এখানকার জ্বস্তুতম প্রধান নগর ও প্রসিদ্ধ বাণিজ্যদ্বান। ১৮৪৭ খুষ্টাব্দে মেজর গোল্ডন এখানকার জরিপ ও রাজস্থের বন্দোবস্ত করেন।

- ২ উক্ত উপবিভাগের অন্তর্গত একটা তালুক। ভূপরিমাণ ২৯০-৬ বর্গমাইল।
- ০ উক্ত উপবিভাগের প্রধান নগর। গারধানের বন্ধিণকূলে। জবহিত। অকা৽ ২৭° ৬০´ উ: এবং ক্রাঘি৽ ৬৮° ১৫´ পু:।

এই স্থানের প্রাক্ততিক সৌন্দর্য্য অতীব মনোরম দেখিয়া ইংরাজ-ভ্রমণকারিগণ ইহাকে সিন্ধুপ্রদেশের নন্দনকানন (Eden of Sind) বলিয়া বর্ণনা করিয়া থাকেন। এপানে ৩টা বাজার ও কতকগুলি রাজকার্যালয় আছে। তালপুর মীর রাজগণের অধিকারকালে পূর্বকিথিত হর্গ অস্ত্রাগাররূপে ব্যবহৃত ছিল। ইংরাজাধিকারে আসিবার পর হইতে উহার কতকাংশ হাসপাতাল ও কতকাংশ কারাগৃহরূপে ব্যবহৃত হইতেছে। শাহ্বহারার সমাধিমন্দির ও পূর্ব্বোক্ত হুর্গ এখানকার প্রাচীনত্বের পয়িচায়ক। লার্থানী (লাড়খানী), রাজপুতনার প্রসিদ্ধ দহ্যসম্প্রদায়। শু ষ্টীয় ১৯শ শতাব্দের প্রারম্ভে উহারা দ্রস্থাবৃত্তির ছারা বিশেষ প্রস্তিপত্তি লাভ করিয়াছিল। ক্রমে পেন্ধারি ও কজক দস্তা-সম্প্রদায়ের স্থায় একটা স্থপ্রণালীবদ্ধ দলগঠন করিয়া তাহারা নিকটবর্তী জনপদবাদীর ভীভির কারণ হইয়া উঠিয়াছিল। এই দলে প্রায় ৫ শত অখারোহী দক্ষ্য সৈত্য এবং বহু সংখ্যক পদা-ভিক ও লাঠিয়াল ছিল। তাহারা যথন ভীমবেগে কোন স্থান আক্রমণ করিত, তথন তথাকার অধিবাসিবর্গ ঘরবাড়ী ছাড়িয়া পলাইত। লার্থান্ মারবাড় রাজ্যের সীমান্তন্থিত শম্ররাজের অধীনস্থ ৰস্তরামগড় ভূভাগ জয় করিয়া ক্রমশ: একটী কুদ্র সামস্ত রাজ্য বিস্তারে অগ্রসর হইয়াছিলেন। উক্ত দস্তরামঞ্চড় ব্যক্তীত এই দত্মসম্প্রদায় নত্মল তপ্লা ও ৮০টা মোজা লাভ করিয়াছিল। এই দম্যুসম্প্রদায়কে শাস্ত রাখিবার জন্ম নারবাড় ও বিকানের-রাজ তাহাদিগকে অনেকগুলি মৌজা প্রদান করেন।

লোল্ (পারদী) > রক্তবর্ণ। ২ রৌপ্য। ৩ ক্ষুদ্র পক্ষিবিশেষ। (Fringilla Amendava)

লাল উদ্দীন্, নাজিবাবাদের নবাব ল্রাতা। ইনি ১৮৫৭ খুষ্টাব্দে সিপাহীবিদ্রোহে যোগদান করিয়াছিলেন বলিয়া ১৮৫৮ খুষ্টাব্দে এপ্রিল মাসে ইংরাজরাব্দের বিচারাধীন হইরাছিলেন। লাল (পুং) ১ একজন জ্যোতির্বিৎ ও স্থপ্রসিদ্ধ পণ্ডিত। দেবী-

দাসের পিতা, কাঞ্চকুক্ত ইহার জন্মস্থান। ২ একজন লুসাই দল-পতি। ইনি ইংরাজ বিপক্ষে যুদ্ধ করিয়া বিশেষ বীরত্তের পরিচর দিয়াছিলেন। (অি) রক্তবর্ণ।

লালক (ত্রি) গালনকারী, বন্ধকারক। (পুং) একজন হিন্দ্ রাজা। ই হার পৌত্র হথিসিংহের ক্স্তাকে কলিজরাজ থারবেল (ভিগ্রাজ) বিবাহ করেন।

लालकञ्च, त्नांश्किन कवकाजीत शक्तिस्क्य (Ardea purpurea)।

लाज्कप्रदी (लगज) बक्रक्पदीव क्र । लाज कवि, दुल्लगथकाती अक्जन हिल्कि।

लालका होता (लनक) (प्रवासरका (Quercus armata)

লাল্কেপূরিয়া (দেশজ) গুলজেন, রক্তকেশ্র।
লাল থাঁ, ভারতের একজন স্থানিত্ব গারক। ইনি দিলীখর
অকবর শাহ ও জাহাদীর বাদশাহের সভার বিদ্যমান ছিলেন।
১৬০৯ খুঠানে ইহার মৃত্যু হয়।

লালখানি, উত্তরপশ্চিমভারতবাসী মুসলমান-সম্প্রদারভেদ।
ইহারা পূর্বের রাজপুত ছিল, পরে ইস্লামধর্মে দীক্ষিত হইরা
আপনাদের সন্দার লাল খার নামাত্মারে "লালখানি" নামে
পরিচিত হইরাছে।

ইহারা আপনাদিগকে রাজপুতনার অন্তর্গত রাজোড়ের বড় ভজরবংশীয় ঠাকুর-সামম্ভ কুমার প্রতাপসিংহের বংশ্ধর বলিরা খীকার করে। কুমার প্রতাপসিংহ মহোবা-যুদ্ধে দিলীখর পৃথীরাজের সহায়তা করেন। যুক্ষাতা কালে তিনি পথিমধ্যে শীনাক্সতির বিদ্রোহ দমনকার্য্যে কৈলা ও আলীগড়ে ডোর-রাজের সাহায্য করার রাজা সানন্দচিত্তে রাজকভার সহিত তাঁহার বিবাহ দেন এবং পুরস্কার বা বৌতুক স্বরূপ তাঁহাকে वूनमगदात निक्षे ১৫· थानि धाम नान करतन । **উ**क्ट প্রতাপসিংহের অধন্তন একাদশ পুরুষে রীকা লালসিংহ ক্ষন্মগ্রহণ করেন। মোগলসমাট্ অকবরশাহ লালসিংহের বীর্যা ও রাজভক্তি দর্শনে প্রীত হইরা তাঁহাকে খাঁ উপাধি দান করেন। তদবধি এই রাজবংশ লালথানী নামে পরিচিত হয়। লালথানের পৌত্র ইতিমৃদ্রায় মোগলসমাট অরঙ্গজেবের রাজত্কালে ইস্লামধর্মে नीकिक हन। देकिम तात्र दरेरक मध्य भूक्य अध्यन नहत्र আলী থাঁ ও তাঁহার ভ্রাতুপুত্র দূদে থাঁ বুলন্দসহরের কুমোনা क्टर्न शांकिया देश्ताकरमनात्र विकटक युक्त कतियाहित्मन । जांशात्रा পরে আপনাদের অধিকৃত প্রদেশ হুর্গাদি দারা স্থরক্ষিত করেন। ইংরাজরাজ পরে এই সম্পত্তি আলীমর্দন খাঁ নামক এই বংশের একজনকে দান করেন। একণে ছিতাবী, পহাস্থ ও ধর্মপুর প্রভৃতি স্থানে এই সামস্তবংশ বিশেষ প্রতিষ্ঠার সহিভ বাস করি-তেছে। ইহারা এখনও আপনাদের হিন্দুমর্য্যাদা ভূলিতে পারেন নাই। कুমার ও ঠাকুরাণী উপাধি এবং বিবাহ কার্য্যে হিন্দু পদ্ধতি অন্তাপি ইহাঁদের মধ্যে প্রচলিত আছে। ছিতারীর শাধাবংশ বর্জমান সময়ে গোঁড়া সুসলমান বলিয়া পরিচিত হইবার চেষ্টা করিতেছেন।

অনেকে ইহাদিগকে নৌ মুস্দিম নামেও অভিহিত করে।
ইহাদের আচার অহুঠান হিন্দু ও সুস্দমান উভর পছতি-বিলভিত,
ইহারা ইস্লামধর্মে দীক্ষিত ঠাকুরবংল জিল অক্ত কাহারও সহিত
পুত্রক্তাদির আদান প্রদান করে না। বিবাহকালে কুলমর্যাদা
ও মোত্রাদির উপর লক্ষ্য রাখে। বিবাহ, কর্ম ও মৃত্যু সংকার
মুস্ক্যানদিগের মত। বিবাহে কালি পৌরোহিত্য করেন এবং

শবদেহ সমাধিত্ব হয়। কেইই কল্মা পাঠ বা 'সিৰ্হা'
করে না। ইহারা হিন্দ্র দেবদেবীরও পূজা বিরা থাকে। হিন্দ্
কাতিকুটুবের বিবাহাদি সামাজিক ক্রিয়ার বোগদান করে এবং
পৃথক্ আসনে উপবেশন ও পৃথক্ হানে ভোজনালি করিতে পার।
লালকুমারী, দিনীবর আহান্দর শাহের এক প্রিরতমা রক্ষিতা
রমণী। নর্তনীক্লে ইহার জন্ম। বয়:প্রাপ্ত হইরাও লালকুমারী
বেশুার ক্রায় প্রকাশ্ত হানে নৃত্যাণীতাদিতে সমাগত অভ্যাগতবৃন্দকে পরিতুই করিত। মোহনক্ঠনিংসত স্থলনিত সলীত ও
অতুলনীর রূপমাধুরীতে বিমুদ্ধ হইরা জাহান্দর শাহ ইহার পদতলে
আছ্জীবন বিক্রয় করেন। তাঁহারই অন্তর্গহে এই বেশ্রা
রাজকুলালনারূপে পরিগণিত এবং তাহার বংশ রাজপুল্বগণের
নিকট বিশেষ সন্মানার্হ হর। এমন বি, জনেক সমর লালকুমারীর আত্মীরেরা ওমরাহদিগকে অব্যাননা করিরা অব্যাহতি
লাভ করিয়াছিল।

লালথলিশা, একপ্রকার ধণিশা লাছ। (Trichogaster Inlian)
লালগঞ্জ, বালালার মূজ্যকরপুর জেলার হাজীপুর তহনীলের
অন্তর্গত একটা নগর ও বাণিজ্যকেন্দ্র। গণ্ডক নদীর পূর্বাতীরে
অবস্থিত। অক্লা৽ ২৫° ৫১′ ৪৫″ উ: এবং দ্রাঘি৽ ৮৫° ১২′
৫০″ পু:। এখান হইতে চামড়া, তৈলগন্ত, নোরা প্রভৃতি
দ্রব্য প্রভৃত পরিমাণে রপ্তানী হইয়া থাকে। নগরের এক
মাইল দক্ষিণে যে গঞ্জঘাট হইতে মালপত্র নৌকা-বোঝাই হর,
তাহা বসস্তব্যট নামে খ্যাত।

লালগঞ্জ, যুক্ত প্রদেশের গোরক্ষপুর জেলার অন্তর্গত একটা কুদ্র নগর। কুয়াছ নামক একটা কুদ্র নদীতীরে অবস্থিত। গোরখ-পুর-দেনানিবাস হইতে অলতানপুর যাইবার রাভা এই নগর দিরা গিরাছে। এখানে একটা অন্দর বাজার আছে। অক্ষা ২৬° ৪০ উ: এবং ৩২° ৫৬ পুঃ।

লালগঞ্জ, যুক্ত প্রদেশের মীর্জাপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর।
গালের উপত্যকার তারাঘাট লৈলের সাহদেশে অবস্থিত। জ্বলা
২৫° ১´উ: এবং দ্রাঘি• ৮২° ২৫´ পূ:। এথানে একটা বাজার
আছে। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে এই স্থান ৫০৪ ফিট উচ্চ।

লালগঞ্জ, অবোধ্যা প্রদেশের রারবরেনী জেলার নাল্মৌ তহনীলের অন্তর্গত একটা নগর। অকা০২৬° ৯´৫´ ট: এবং দ্রাহি
৮১° ০´ ৪৯´ পূ:। এই নগরে নিকটবর্তী স্থানের শন্তাদি
বিক্ররার্থ নপ্তাহে তুইবার হাট বনে। পূর্ব্বে এথানে ডহনীলী নদর
ছিল। ১৮৭৬ খুষ্টাব্দে ভালা নাল্মৌ নগরে স্থানান্তরিত হুইরাছে।
লালগড়, বালালার দিনালপুর (?) জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডপ্রাম। এখানে একটা প্রাচীন নীরন্থান বিভ্রমান আছে।

(ভবিষ্য বন্ধ ৪৮/১২৫)

লাল্গরাণিয়া (দেশল) বৃক্ষভেদ (Dioscorea purpuria)
লালগলা, উড়িবা প্রবেশে প্রবাহিত একটা নদী। স্বরপ্র
সামস্তরাস্তার উত্তরাংশে (স্ক্রাণ ১৯° ৩৫' উ: এবং জাদি • ৮৩°
১৮' পৃ:) উত্ত হইরা স্বরপ্র ও বিজ্ঞাগাণাটম স্বেলার মধ্য দিরা
প্রবাহিত হইরা বলোপদাগরে (স্ক্রাণ ১৮° ১২' উ: এবং জাদি •
৮৪°) পতিত হইয়াছে।

লালগুলি, বোষাই প্রদেশের চেল্লাপুর উপবিভাগের একটা প্রসিদ্ধ জলপ্রপাত। চেল্লাপুর নগর হইতে ৮ মাইল উত্তরে কালী নদী প্রায় ৩০০ ফিট্ উচ্চ স্থান হইতে নিয়াভিমুখে নিপতিত হইতেছে। এই প্রপাতপার্বে একটা প্রাচীন হর্গ আছে। স্থানীর প্রবাদ, গোঁড় স্পারগণ হর্দান্ত শক্র বা বন্দীদিগকে সুর্গের ছাদ হইতে এই গভীর জলস্রোতে নিক্ষেপ করিত।

লালেন্ত্রক, উত্তরভারতবাদী ভলি জাতির প্রজিত দেবতাভেদ। ইনি রাক্ষদ আরণ্ড-কিরাত নামে পরিচিত।

লালগোরি, পকিবিশেষ (Himantopus Candidus)
লাজগোলা, বালালার মুর্শিনাবাদ জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। পল্লানদীর কুলে অবস্থিত। ইহা একটা স্থানীর বাণিজ্ঞাকেন্দ্র বলিয়া পরিগণিত।

नान्यज़ी (तनम्) खग्रास्त ।

লালক, আদামের পার্কতবাদী জাতিবিশেষ। [আদাম দেখ।] লালচুম্ব্র (পুং) ভাষালীলাবতীপ্রণেতা।

জ্যাল্টাদ, উত্তরপশ্চিম-প্রদেশবাসী একজন হিন্দু কবি। ইনি পারক্ত ভাষার একখানি দিবান্রচনা করেন। ১৮৫২ খুটান্দে ইহার মৃত্যু হয়।

लाल ((तनव) गानमा ।

লাল্টাদা (দেশৰ) কুদ্ৰমৎভবিশেষ। এই মৎভ অতি স্থাদ। লাল্চিতা (দেশৰ) রক্তচিতা।

लाल्চिय़ा (प्रमण) > नानमा । २ त्रकाछ ।

लान्टिक्र्या (तनम) मरक्रित्नर, त्रक्रवर्ग टिक्सामाइ।

লাল্যাউ (দেশল) রক্তবর্ণ ঝাউগাছ।

লালভরু লতা (দেশল) লতাভেদ (Ipomæa quamoclit)।
লালদল, যুক্ত এনেশের বিজনৌর জেলার অন্তর্গত একটি গগুগ্রাম
আলা ০ ২৯° ৫২° উ: এবং ক্রাবি ০ ৭৮° ২০´ পৃ:। এখানে ১৭৭৪
খুটালে রোহিরাসন্দার কৈক্রা খা তেজুনার যুক্তে ইংরাজসেনার
নিকট পরাজিত হইরা আশ্রর লাভ করেন। ইংরাজ ও অবোধ্যারাজনৈয় তাঁহান্ন পশ্চাছাবিত হইলে তিনি উপারাক্তর না দেখিরা
এই শ্বানে ইংরাজের সহিত সন্ধি করিরাছিলেন।

লালদর্বাজা, উত্তরপশ্চিমপ্রদেশের শাহারাণপুর ও দেহরাদ্ন দেশার মধ্যবর্তী শিবালিক গিরিমালাত্ম একটা গিরিপথ ৷ সমুজ-

পৃষ্ঠ হইতে ২৯৩৫ ফিট্উক্তে স্থাপিত। অকাণ ৩৩° ১৩´ উঃ এবং ক্রাবিণ ৭৭° ৫৮´ পৃঃ।

লালদাস, আগবারবাসী মেওলাতীয় একজন সাধু। লালদাসী
নামক বৈক্ষব-সম্প্রদার প্রবর্ত্তক ; ১৫৪০ গুষ্টাকে বিভ্যমান
ছিলেন। তিনি কিছুকাল ধাওলীধুব, বাজোলী ও গুরুগাঁও
জেলার ডোড়ী প্রামে বাইরা স্বমত প্রচারের চেষ্টা পান। বান্দোলীতে বাস কালে তাঁহার এক পুত্রের মৃত্যু ঘটে। তথায়
তাঁহাকেও সমাহিত করা হয়। ১৬৪৮ খ্টাকে তাঁহার মৃত্যুকালে
তাঁহার এক পুত্র ও এক কঞা লীবিত ছিলেন।

লালন (ক্লী) লগ-ণিচ্-ল্যাট্। অত্যন্ত মেহকরণ। প্রেমপূর্ব্বক বালকদিগের আদরকরণ, চলিত লোহাগ।

"লালনে বহবো দোষাস্তাড়নে বহবো গুণা:।

তত্মাৎ পুত্রঞ্চ শিষ্যঞ্চ তাড়রের তু লালরেৎ॥" (চাণকা)

लान्नि हिंद्रा (तम्ब) ब्रक्कवर्ग नटिनाकविटनम ।

লালনপালন (क्री) লালন এবং পালন, যত্নপূর্বক প্রতিপালন, ভরণপোষণ।

লালনীয় (তি) লল-ণিচ্ অনীয়র। লালনার্ছ, লালনের যোগ্য। লালপুঁই (দেশক) রক্তপৃতিকা।

লালপুর, বালানার পুর্নিয়া জেলার অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা° ২৫° ২৯´ উ: এবং দ্রাঘি৽ ৮৭° ২০´ পৃ:। পূর্নিয়া নগর হইতে ২১ মাইল উত্তরপশ্চিমে অরস্থিত।

লালপুর, যুক্ত প্রদেশের মোরাদাবাদ জেলার অন্তর্গত একটা গগুগ্রাম। মোরাদাবাদ হইতে আল্মোরা বাইবার পথে অব-ন্থিত। জক্ষা ২৯° ৫ উ: এবং দ্রাঘি • ৭৮° ৫৪ পু:।

লালপুর, শুলরাত প্রদেশের কাঠিরাবাড় বিভাগের হালর জেলার অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা° ২২° ১২´ উ: এবং ফ্রাঘি॰ ৭৪° ৬´পৃ:।

লালপুর, যুক্তপ্রদেশের কাণপুর জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। কত্যেড় সেনানিবাস হইতে কাণপুর আসিবার পথে অবস্থিত। অক্ষা° ২৩° ৪৭'উ: এবং দ্রাঘি• ৮০° ৯'পু:।

লালমণি, অল্লন্থাকর ও মৃহর্ত্তদর্শণপ্রণেতা।

লালমণি ত্রিপাঠিন, পরিভাবাদিরোমণি ও বিবাদকৌমুদীনামক ব্যাকরণপ্রণেতা।

লালমণি ভট্টাচার্য্য, নির্ণরসারক্ষরিভা।

লাল্মণির হাট, বাদানার রদপ্র জেনার অন্তর্গত একটা নগর ও প্রসিদ্ধ বাণিজ্যস্থান। এখানে পাট, তামাক প্রভৃতি দ্রবা পর্যাপ্ত পরিমাণে বিক্রমার্থ জানীত হইরা থাকে।

লালমাই, বালানার পার্কত্য ত্রিপুরা জেলার অন্তর্গত একটা গওলৈন। কুরিলা নগরের ৫ মাইল পশ্চিমে ও উত্তরদ্বনিশে ১০

বিস্তৃত। এই শৈলশ্রেণী কোধাও ১০০ ফিটের অধিক উচ্চ नटर। हेरात अधिकाः म मान गंजीत वनमानाममाध्या। श्रांत प्रांत विभूत्रावानी क्यं धार्यात्र हान संदत्त । अभारत लोह ও রৌপ্য ধনি আছে। ইংরাজ-গবমে न २১ हाजाর টাকার মরনামতী ও লালমাই শৈল ত্রিপুরারাঞ্চকে বিক্রের করেন। এই শৈলপৃঠোপবি লক্ষাবৃত ছানে একটা প্রাচীন চুর্গ ও কতক খনি প্রতার প্রতিমৃর্ত্তি নিপতিত আছে। ভাকরখোদিত প্রান্তর চিত্রের মধ্যে নাগ ও বরাহৰুর্ত্তি দেখিরা মুরোপীরগণ অমুমান করেন যে, ঐ সকল ধ্বস্ত নিদর্শন পর্বাতবাসী অসভ্য অহিন্দু জাতিরই কীর্ত্তি, কিন্তু ত্রিপুরা রাজধানী কুমিলার এতাদল নিকটবর্ত্তী স্থানে স্থাপিত থাকার স্পষ্টই অনুমান হয় যে, উহা ত্রিপুরারাজবংশের কোন প্রাচীন রাজারই কীর্ত্তি, মূর্ত্তি শেষ-লাগের এবং বরাহ অবভারের প্রতিপাদক। ভারতের স্থদুর পূর্বের পার্বতাবিভাগে যখন প্রথম হিন্দুধর্ম বিস্তৃত হয়, তখন সম্ভবত: ঐ হুর্গ ও দেবালয়সমূহ স্থাপিত হইরাছিল। ত্রিপুরার বৈষ্ণবধর্ম্মের প্রতিষ্ঠাপ্রসঙ্গে শাক্তধর্মের বিলোপ সাধিত হয়, বোধ হয় সেই সময়ে ত্রিপুরাবাসী শক্তি উপাসনার সেই পূজা স্থান পরিত্যাগ করে এবং ক্রমশহ তাহাই জন্মলে আরুত হইয়া यात्र। मञ्जरा এই শৈলশিখরে লালমাই নামক শক্তিমূর্তি ও তাঁহার মন্দির প্রতিষ্ঠিত ছিল। কালে সেই মন্দির ও দেবসূর্ত্তি নষ্ট হইয়া গিয়াছে। কিন্তু আঞ্চিও দেবীর নামে ঐ পৰ্বতপীঠ ঘোষিত হইতেছে। কেহ কেহ বলেন ত্রিপুর-রাজকুমারী লালমাইর নামামুসারে এই পর্বতের নামকরণ হইয়া থাকিবে। অত্মান হয়, উক্ত রাজকলা খনামে পর্কতো-পরি দেবমন্দির ও ছুর্গাদি স্থাপন করিয়া থাকিবেন। তাঁহারই ষেই কীর্ত্তির নিদর্শন নানা প্রস্তর-প্রতিমূর্ত্তি আজিও ইতন্তত: বিক্লিপ্ত রহিরাছে।

লালমাটী, (হিন্দী) মৃত্তিকাভেদ। চলিত কথার গেরিমাটী বলে। সংস্কৃত পর্যায়—গৈরিক মৃত্তিকা। ভূতরের বেধানে গ্রিন্টোন (greenstone) অর্থাৎ চূর্ণিত ট্রাপরক্ (traprock) থাকে, তাহার উপরেই প্রধানতঃ লালমাটী পাওয়া যার। বর্জমান ও রাজগৃহের হানে হানে লাল মাটী দেখা যার, উহা গৈরিক মৃত্তিকা হইতে স্বতন্ত্র। আমাদের দেশে প্রবাদ আছে—"বর্জমানের রাজামাটী।"

লালমূনিয়া, ক্ষ ম্নিয়া পন্ধিচন (Estralda amandera) লালমূৰ্বা (পাছনী) শুৰভেদ।

লাল্লকামরিচ (দেশৰ) লবা (Red pepper)। আল্লভাকদম (দেশৰ) শতিকাডেদ (Urtica globultore) লাল্বাকাা, নাদানার ত্রিছত জেলার প্রবাহিত একটা শাখানদী। আনৌরী প্রানের নিকট বাষমতী নদীতে আসিরা মিলিত হইরাছে। বর্বার সমর মূর্পা পর্যান্ত এই নদীবকে নৌকা গমনাগমন করিতে পারে।

লালয়িতব্য (ত্রি) লগ-ণিচ্-তব্য। নালনের বোগ্য। লালবহু (ত্রি) লালা।

লালবাঁধ, বালালার মলভূমির অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর।
 এখানে একটা প্রাচীন হর্গ ও দেবমন্দিরাদির ধ্বংদাবশেষ
বিভয়ান ছিল। (দেশাবলী)

লালবাগ, মুর্শিদাবাদ জেলার একটা উপবিভাগ। ইহা মুর্শিদাবাদ বাদ সদরবিভাগ নামেও পরিচিত। অক্ষা° ২৪°৬′২৬ হইতে ২৪°২০ উ: এবং দ্রাঘি° ৮৮°৩′৫৫ হইতে ৮৮°৩২′৪৫ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ২৫০ বর্গমাইল। মাহারাবাজার, শাহনগর, ভগবান-গোলা, সাগরদীঘী, মহিমাপুর ও আসনপ্তথানা ইহার অস্কর্ভুক্ত। লালবাগ, (হিন্দি ও পারসী) ভারতীয় মুসলমান-রাজগণের প্রেসিক্ক প্রমোদোভান। প্ররাগ মণির ভায় ইহা সর্ব্বদাই উল্লাসে প্রদীপ্ত থাকিত বলিয়া উহার নাম লালবাগ হইয়াছে। ক্রমে এই উভ্যানবাটিকার চারি ধারে লোকালয় স্থাপিত হইয়া ভাহা এক একটা ক্ষুদ্র নগরে পরিণত হইয়াছিল। দাক্ষিণাত্যের আক্ষদনগরে ও বঙ্গল্বে ঐক্রপ সৌধমালাসভূল ক্ষুপ্রসিক্ক উভ্যান-নগরী বিভ্যমান আছে।

লালবাগ, থান্দেশ জেলার অন্তর্গত একটা নগর। সৌধমালা ও বাণিজ্য সমৃদ্ধিতে এই নগর পূর্ব।

লালবাজার, বাঙ্গালার দিনাজপুর জেলার অন্তর্গত একটা বন্দর। লালবাহাজুর, মহিমতোত্র ও শুত্রকুত্যপ্রণেতা। ইনি লাল পণ্ডিত নামেও পরিচিত।

লাল্বিছুটি (দেশৰ) রক্তবর্ণ বিছুটী। লালবিহারিন, গরিভাবেন্দ্শেধরটীকাপ্রণেতা।

লালবেগী, ঝাড়্দার মেহ্তর সম্প্রদারভেদ। ইহারা মুসলমান বলিরা পরিচিত, কিন্তু কেহ অক্জেদ করে না। নিষিত্ব শুকর-মাংস ভক্ষণে ইহাদের কোল কোন বিধাই নাই। মুরোপীয় রাজপুরুষ অপবা বণিক্দিগের গৃহে এবং সিপাহীবারিকে ইহারা প্রধানতঃ ঝাড়্দারের কাহ্য করে। পরিছার পরিছেল থাকে বলিরা অপরাপর ভুত্তারা ইহাদিগকে ক্যাদার বলিয়া ডাকে।

ইহারা রুরোপীর মনিবের উদ্ভিষ্ট প্রব্য এবং সকল প্রেকার
মন্তিরা পান করিরা থাকে। মৃতদেহ স্পর্ল করিতে ইহারা অগুচি
বোধ করে। ইহার্টেদর আচরিত ধর্ম ও ক্রিরাপম্বতি অনেকাংশে
হিন্দু ও মুসলমান রীতির অমুবারী। মুসলুমানগণের ক্লার ইহাদের
মধ্যেও এক রুমা রুমণী ঘটকী হইরা পার্ক্তিও পারীর বিবাহসম্বদ্ধ
হির করে; কিত্ত "কানীন্" বা বিবাহের চুক্তিপত্র না লিখিরা ইহারা

একরার দের, তাহাতে বিবাহিত পত্নীকে ভাগবাসিবার ও গাসন-পাুলন করিবার এক পুনরার বিবাহ করিরা বিতীরপত্নী করে না আনিবার অলীকার থাকে।

বিবাহের প্রাণিদ ইহারা "খদুরী" উৎসব ও সুসলমান সম্মানরের আচরিত অভাভ কর্ম সম্পন্ন করে, কিন্ত ঐ সমরে ইহারা আচার্য্য আমার্থ ভাকে না। বরের গৃহে কভাকে আনিরা বিবাই বেওরা হইলে পঞ্চারতকে ১০০ সিকা এবং কভার গৃহে ইইলে ।৴০ আনা দেলামী দিতে হয়।

কোন কোন গালবেদী রমজান পর্বে উপবাস করে, কিছ অধিকাংশ লোকেই তাহা পালন করে না। ইহারা মস্জিদে অবৈশপূর্বক উপালনা করিতে পায় না।

रेरामत जाउगरे ज्ञार चलता । मूत्रनमास्मत्र 'निर्मिष्ट नमाधि-ক্ষেত্রে ইহারা মৃতদেহ গোর দিতে পারে না। মধ্যে অথবা জনমানবপরিশৃষ্ঠ কোন অমুর্বার ভূপতে ইহারা শব লইরা গিরা প্রোথিত করে। মৃতদেহ সমাধিত্ব করিবার পূর্কে ইহারা পাঁচখানি বল্লে সেই দেহ আর্ড করে, গুই বাহর নীচে হুইখানি কুমান বাঁধে, মন্তকে একখানি কুসাৰা বা গামছা জড়াইয়া দের এবং ভাহার পর একথানি "খির্কা" (জামা विटमय) भन्नारेवा गस्बन्न मरश्र व्याभन करतः। भरत् के करत् মৃত্তিকা ছারা পূর্ণ করিয়া তত্তপরে একখানি চাদর বিস্তার করিয়া रमग्न, উহাকে "मून का ठामत" वरन। धे वरतात्र ठात्रि कारन চারিখানি অশুক্র কার্চ পুঁতিয়া আশুন লাগাইয়া ভদ্মশাৎ করে। ইহার পর মুসলমানদিগের আচরিত যাবতীয় সৎকারপ্রথারই অহুষ্ঠান করে। মৃত্যুর পর চার দিন পর্যান্ত মৃত ব্যক্তির গৃহে কোনরূপ আলোক বা অগ্নি প্রজ্ঞলিত করা হয় না। ঐ চারি দিন তাহারা প্রতিবেশী বা কোন আত্মীয়ের গৃহে ভোজনাদি করিরা থাকৈ। পঞ্চম দিনে ইহারা মৃত্তের গৃহ সন্মুখে এক থালা স্থপারী রাথিয়া ভত্নপরি ফুল দিরা ঢাকা দের এবং সেই দিনে স্বজাতীর ব্যক্তিগণকে সাহবান করিরা ভোজ দিরা থাকে।

ইহারা হিন্দুর অনেক পর্কাই পালন করিয়া থাকে এবং অনেক বিবরে হিন্দুর আচারগছতি অন্ত্রসরপ করিয়া কার্য্য করে। বিবালী ও হোলী পর্কে ইহারা বিশেষ সমারোহ করিয়া থাকে। ঐ সমরে ইহারা আপনালের আফিপুক্ষ বালকেগের উদ্দেশে মৃত্তিকা হারা পক ওবেঅবুক একটা মসজিব বা স্বাধিমন্দির আপন করিছা ভাহার সক্ষে মুর্দী বলি এবং উহার নামে পোলাও, সরবং ও মিষ্টার প্রকৃতি উৎস্থী করিয়া পুরা দেব।

ঐতিহাসিক ক্রিরট বলেন, ইহাদের উপাত আদিপুরুষ বা কুলবেষতা লালবেল সভবতঃ উভরপতিন ভারতীর লালভর (রাক্ষ্য আরণ্ড কিরাভ) হইবেদ। ক্রিরারাধনীবাসী লালবেশীরা লীর অহরকেই (চিন্তিরা সাধু সৈরদ শাহ ভ্ছর) লালবেগ বলিরা অন্তমান করেন, পঞ্চাবের কামারগণ বেমন হজরৎ ঘাউদ ও রছর-গণ বেমন সীর আলী রঙরেজের পূজা করে, সেইরপ তথাক্তার মেধরেরা লালপীর বা বাবা ফকিরের উপাসনা করিরা থাকে।

লাগবেদীরা ইন্লামধর্মে দীক্ষিত হইবার পরই কোন মুসল-মান সাধুকে আপনাদের কংশপ্রবর্জক বলিরা গণ্য করিয়া আসি এ তেছে। উত্তর-ভারত হইতে ইহারা বালালার কর্মান্থেবণে আসিরা বাস করিয়াছে।

লালবেগী, ৰাসানার জিহত জেনার প্রবাহিত একটা নদী। লালবেড়েলা (দেশক) সক্তবেড়েলা।

লালবেহারী দে, (রেভারেও), ইংরাজী শিক্ষিত এক জন বল সন্তান। তিনি খৃষ্টধর্মের আশ্রের গ্রহণ করিয়া রেভারেও উপাধি লাভ করেন। ইংরাজ-গ্রমেন্টের স্থাপিত হগলী কলেজের ইংরাজী অধ্যাপকের পদে নিযুক্ত থাকিয়া তিনি খীর জীবন অতিবাহিত করেন। গোবিন্দসামন্ত ও বালালার গর গাথার (Govinda Samanta, a Bengal Peasant life ও Folktales of Bengal) নামক গ্রহ্মর তাহার ইংরাজী জ্ঞান ও রচনাশক্তির চরম নিদর্শন। এত্তরির তাঁহার স্কলিত আরও কএকথানি অ্লপাঠ্য ইংরাজী গ্রহ আছে। ১৮৯৪ খৃষ্টান্দে তাঁহার মৃত্যু হয়।

লাল্শর্করাকৃদ্দ (দেশজ) শকরকৃদ্দ আনু।
লাল্শাক (দেশজ) রক্তশাক।
লাল্শোকে (দেশজ) রক্তশাক।
লাল্শোকে (দেশজ) গাল্যোপ্রোগী শাক্বিশের।
লাল্শারা (দেশজ) গাল্যবর্গের স্থানাযাস।
লাল্শার্পি (পুং) লাল্যা।
লাল্শার্পি করা (দেশজ) প্রশক্তেদ। (Cama Indica)
লাল্যা (স্থা) লন্মত্তেত (জঃ প্রত্যরাং। পা তাতা>০২)
ইতি জ, টাপ্। ১ মহাভিলাব। (জমর) ২ উৎস্ক্রা।
ত বাচ্ঞা। (মেদিনী) ৪ দোহদ। 'দোহদং দৌর্দং প্রার্শিং প্রার্শি সাল্যা স্তি মালিত্ব।' (দেম) • লোল্য।

(আ) ৬ লোলুগ। "তরিন্ মুহুর্তে প্রস্কারীণামীশান-সন্দর্শনালগানান্।" (কুষারণাং৬) লোলসাত, রালপুতনার জরপুর রাজ্যের বৌধা জেলার অক্সতি একটা নগর। এথানে প্রায় ৯ হালার লোকের বার্ক আছে। লোলসাবনী (দেশল) ভরতেদ (Trianthoma oboordata) লালসাহ্বাজ, এক জন সুল্লমান মহাপুরুষ। সেহ্বানে উহার স্মাধিনজির বিভ্যান আছে। সুল্লমানগণ প্রায়ই এই প্রিত্ত তীর্ষ সক্ষানে আলিরা থাকে। ১০০৬ খুটাকে উক্ত মন্দির ও তাহার চূড়া নির্দ্ধিত হইরাছিল বলিয়া সাধারণের ধারণা। ১৬৩৯ খৃ ষ্টান্দে তর্থান রাজবংশীর মীর্জা জানি এই সাধুর উদ্দেশে আর একটা স্থরহৎ সমাধিমন্দির নির্দ্ধাণ করেন। সিদ্ধান্ত মীর করম আলী থা তালপুর ইহার ছার ও চূড়ার ওবেজ রূপার পাত দিরা মুড়িরা দেন। এই মন্দিরে আরবী ভাষার উৎকীর্ণ কএকথানি শিলাফলক আছে।

লালসিংহ (রাজা), এক জন শিধসদ্দার। তিনি রাণী চাঁদ কুমারীর প্রেরপাত্র ছিলেন। এই হত্তে রাজসরকারে তাঁহার প্রেতিপত্তিও অক্ষ হইরা পড়িরাছিল। রাজা জবাহির সিংহের মৃত্যুর পর, ১৮৯৪ খুটান্দে তিনিই প্রধান মন্ত্রীর পদ প্রাপ্ত হন। সিপাহীবিজোহের পূর্কে তিনি কিছুকাল আগ্রা নগরীতে নজর-বন্ধিরপে বাস ক্রিরাছিলেন।

লালসিংহ (গং) এক্তন প্রসিদ্ধ ল্যোতির্বিদ্। লালসীক (ফ্লী) পিচ্ছিল। (শব্দর্যা)

লালা (গ্ৰী) লল—ণিচ্ অচ্ টাপ্। মুখডবজল, চলিত নাল্।
পৰ্য্যায় -- স্থানিকা, স্থানিকা, স্থানিকা, মুখন্তাব। (রাজনি*)
"হীনচ্ছেদাং ডবেছোপো লালানিদ্রান্তমন্তমঃ।" (স্থান্ত ৪।২২)
লোলা, উত্তরপশ্চিম ভারতবাসী কামহজাতির সন্মানস্চক উপাধি।

কথন কথন বিভালমের শিক্ষক, কেরাণী বা হিসাব রক্ষকনিগকে সম্ভ্রম প্রদর্শনার্থ লালাজী বলিয়া সম্বোধন করিতে দেখা যার। লালা জয়নারায়ণ, চণ্ডীকাব্য ও হরিলীলাপ্রণেতা। ইনি

লালা রামপ্রসাদের পুত্র। [রামপ্রসাদ দেখ।]

लालां । (वि) > ननाउंत्रस्कीय ।

লালাটি (পুং) ললাটের গোত্রাপত্য। (সংস্কারকৌ°)

লালাটিক (ত্রি) ললাটং পশুতীতি ললাট (সংজ্ঞারাং ললাটকুরুটো পশুতি। পা ৪।৪।৪৬) ইতি ঠক্। প্রভূর কপালদশী,
কার্যাক্ষিম, যে ভৃত্য ক্রোধ ও প্রশাদাদি চিক্ক জ্ঞানের জন্ম
প্রভূর ললাট অবলোকন করে। "লালাটকঃ সদালতে প্রভূতাবনিন্দিনি।" (অজয়) (পুং) ২ আল্লেবণবিশেষ। (ত্রি)

ত ললাটসম্বন্ধী। বথা প্রাধিক লালাটিকী

लालांगे (जी) नवांगे।

লালাঠকুর, আহিকসংকেপ-রচন্নিতা বামদেবের প্রতিপালক।
লালাভক্ত, (জি) > লালা-ভোজনকারী। ২ নরকভেদ।
আহারা দেবভা, পিভূগণ ও অতিথিকে ভোজা বস্তু নিবেদন না
করিন্ধীভোজন করে, ভাহারা এই ঘার নরকে গমন করে।
লালামিক (জি) ললামপ্রাহী, লৌন্দর্যগ্রাহী।

লালামিক (।) ললাম্প্রাহা, সোল্যাপ্রাহা।
লালামেই প্রং) লালাম্থ মেহতীতি মিহ-লচ্। প্রমেহ
বিশেষ। এই মেহরোগে লালার ভার ওক্ত ব্রু, এই
্লভ ইহাকে লালামেহ, কহে।

45

"লালাভ পুৰ্তং মৃত্ৰং লালানেহেন পিছিলম্।" (ভাৰপ্ৰ°)
[প্ৰমেহ রোগ শব্দ দেখ]

লালায়িত (ত্রি) লালা-"নমন্তপো বরিবঃ কঞ্চাদিন্তাঃ ক্রিতৌ" ইতি-কা, লালায়-ক্ত। লালাখিশিষ্ট, কাতর। অত্যন্ত কাতর হইলে মুখ হইতে লালাশ্রাব হইতে থাকে।

लालावायु, अरुका अनिष वालामी माधु ७ भत्रम देवकव। মূর্নিদাবাদ জেলার কান্দী নগরের অ্প্রসিদ্ধ উত্তররাটীয় কারস্থ ভূম্যধিকারী হরেক্লক সিংহের বংশে তাঁহার জন্ম। কলিকাতার উত্তর উপকৃষ্ঠিত পাইকপাড়া গ্রামে তাঁহাদের একটি বাসভবন আছে। এইজ্জ তাঁহারা পাইকপাড়ার রাজা বলিয়া খাত। লালাবাৰ--- অতুল ঐশ্বর্যোর অধিপতি ছিলেন এবং বীর ধর্ম-জীবনে পরহুঃখে কাতর ২ইয়া মুক্ত হল্তে অর্থবার করিতেন বলিয়া লোকে ভাহাকে লালাবাবু বলিয়া সংখাধন করিত। ভাঁহার পিতামহ দেওয়ান গলাগোবিন্দ সিংহ ভারতপ্রতিনিধি ওয়ারেন ट्षिरमत भागनकारम देहे देखिया काम्मानीत एम अयान नियुक्त হন। গলাগোবিদ্দের পুত্র প্রাণক্তক (পরে দেওয়ান) স্বীয় জ্যেষ্ঠতাত রাধাগোবিন্দের (বলেশ্বর নবাব সিরাক্স উদ্দোলার প্রধান রাজ্স্ব-সংগ্রাহক) তত্মাবধানে থাকিয়া বিষয়কর্মে বিশেষ দক্ষতা লাভ করেন। তিনি পিতৃসম্পত্তির অধিকারী হইয়া খীয় স্বভাবলাত দয়ার্ক্রতানিবন্ধন যথেষ্ট উদারতার পরিচয় প্রদান कतियाहित्यन ।

এই মহাহভবের প্র দেওয়ান রুক্চন্দ্র সিংহ ওরফে লালাবার পিতার স্থায় সদ্গুণশালী ছিলেন। প্রথম জীবনে তিনি বর্জমান ও কটকের কলেক্টারীর দেওয়ান হইয়াছিলেন। পরে তাঁহার বিষয়তৃক্ষা ক্রমশংই নির্বাপিত হইয়া আইসে। শুনা যায়, একদিন সন্ধ্যাকালে তিনি বীয় প্রাসাদোপরি বায়েসবনার্থ পদচালনা করিতেছেন, এমন সময়ে জদুরত্ব রক্তরুত্ব হইতে এক রক্তনিনী তারত্বরে বলিয়া উঠিল, "ও বেলা গেল গেল বাস্না শুলা জালিরে দে।" সাধকের প্রাণ অকত্মাৎ ঐ কথায় চমকিয়া উঠিল। রক্তকের ব্যবহারের কলার বাস্না ভাহার মনে হইল না, তিনি মনে করিলেন কে বেন তাঁহাকে বিষয়মদে মন্ত দেখিয়া বিজ্ঞপ করিয়া বলিতেছে, "সয়য় অতিবাহিত হইয়া চলিল, বাস্না শুলি আলাইয়া দাও।" তথন তাঁহার ক্রদরে দাবায়িলগ্র বৃক্ষা-ভাত্তরত্ব কীটের পীড়ায় স্থায় বিষম আলা উপস্থিত হইল। তিনি বৈরাগ্যাবল্যন করিলেন।

বৈরাগ্যোদর এইবৈ তিনি বিবর-ভোগদালসা পরিত্যাগ করিরা পশ্চিমাঞ্চল তীর্থবাজার বহির্গত হন। এখানে আসিরা প্রতি তীর্থেই তিনি শীর গাঁদশীলতার যথেষ্ট পরিচর দিরা গিরাছেন। বুন্দাবনে আসিরা ভিনি রাজপুতনার মর্ম্ন-প্রতারে একটি স্বর্হৎ মন্দির প্রতিষ্ঠা করেন। উহা
অভাপি 'লালাবাব্র কুঞ্ল' নামে পরিচিত আছে। রাজপুতনায়
মর্ম্মপ্রস্তার ক্রম করিতে আসিরা তিনি করেকটি রাজকীর কার্য্যে
বিব্রত হইরা পড়েন, পরে তাহা হইতে নিয়্নতি লাভপূর্মক
প্রনার বৃন্দাবনবাসী হইরা ঐকান্তিকচিত্তে ভগবান্ নারারণের
ধ্যানে নিয়ত হন। বৃন্দাবনবাসীর বিধাস, তিনি আফ্রিকের
সাক্ষাংলাভ করিরাছিলেন, কথন কখন প্রেমোক্রাদে তাহার
মোহন ময়লী ধ্বনি প্রবণ করিরা ব্যুনাকৃলে প্রধাবিত হইতেন।

বৃন্দাবন-বাসকালে তিনি মধুরা জেলার অন্তর্গত "রাধাকুও" নামক তীর্থের চতুর্দিক্ বেভপ্রান্তরসোপানদারা বাঁধাইর।
দিয়াছিলেন। শ্রীফ্লকের চরণধ্যান করিয়া বৃন্দাবনেই তিনি
দেহত্যাগ করেন। যে স্থানে তাঁহার সমাধি হইয়াছিল, ব্রন্ধানীরা
তাহা একটি তীর্থ বিলিয়া যাত্রীদিগকে দেখাইয়া থাকে।

তাহার মৃত্যুর পর ত্রীয় বাদকপুত্র দেওরান শ্রীনারারণ-সিংহ ঐ সম্পত্তির অধিকারী হন।

লালাবিষ (পুং) नानाबार विवः यञ्च। লুতাদি, ইহাদিগের নানার বিষ।

লালা <u>অব (প্ং) ১ লালা-নিংসরণ। ২ ল্</u>ডা, মাৰুড্সা। লালা <u>আবি (প্ং)</u> লালাং আবয়তীতি জ্র-ণিচ্-অণ্। ১ উর্ণনাভ। (ছেম) (বি) ২ লালাকারক।

"লালাপ্রাবী স বিজেয়ঃ কণ্ণমান্ শৌবিরো গদঃ।" (স্ক্রুত ২।১৬) লালাপ্রাবিন্ (ত্রি) লাল-প্রাবকারী।

लालिक (११) महिव। (१६म)

লালিত (ত্রি) যাহাদিগকে লালন করা হইরাছে। (ক্লী) ২আফলাদ, উল্লাপ।

লালিতপুর, যুক্তপ্রদেশের একটা নগর ও জেলা। [ললিতপুর দেখ] লালিত্য (ক্রী) ললিত-ব্যঞ্। ললিতের ভাব বা ধর্ম, ললিত-গুণবিশিষ্ট।

শগন্ধি থাক রকোম লামলপদৈর্লালি ভালী লাবতী । শ (লীলাবতী)
লালি য়াদ, কাঠিরাবাড়-বিভাগের ঝালাবার প্রান্তত্ব একটা
সামস্ত রাজ্য ও ভদবীন গওগ্রাম, ভাবনগর গোণ্ডাল রেলপথের
চূড়া প্রেসন হইডে ১৯০ মাইল উত্তরপূর্কে অবস্থিত। বর্তমান
সম্পত্তির হুই জন অংশীদার। তাহারা ইংরাজগবর্মে ন্টকে বার্বিক
৩৬২, টাকা কর বিরা থাকেন।

লালী, একজন করাসী সেনাপতি। সমগ্র নাম কাউণ্ট লাণী টেরেওল। ফরাসী রাজাধিকত ভারতীর ক্রানেশসমূহের প্রধান সেনাপতি হইরা ইনি ১৭৫৮ বৃষ্টাব্দে ভারতে প্রার্শণ করেন। ইহার পিতা সর জিরার্ড ও'লালী আর্থপ্রবাসী হিলেন। লিমা-রিক্ যুদ্ধে বিশেষ বীরত্ব দেখাইরা তিনি করাসী সেনার অধিনারক

হইরাছিলেন। ভিনি ভূপাকার সামরিক বিভাগে ধাকিয়া "আইরিশ জিগেড়" নামক নেনামল সংগঠন করেন এবং তাঁহার পুত টমান আর্থার এফ বংসর বরনেই (১৭০২ খঃ) ফরাসী সেনাদলের আহিভেট্ পদে মনোনীত হন। ৪৩ বৎসর বর:ক্র**ম** কালে (১৭৪৫ খু:) তিনি খীৰ জোঠতাত কাউন্ট ডিল্লোর পরিচালিত ত্রিগেড বেনাদলের অধিনারকত্ব লাভ করিরা ফণ্টিনর রণক্ষেত্রে অমিত বিক্রমের পরিচর দিরাছিলেন। অটল ইংরাজ-ৰাহিনী ভাঁহাৰ আক্ৰমণ-বেগ সম্ব করিতে নাঁ পারিয়া পরাজিত হয় এবং সেই দিন হইতেই ফরাসী সৈজের রণপাণ্ডিত্য-খ্যাতি স্থপ্রতিষ্ঠিত হয়। অতঃপর লালী ক্ষযুদ্ধে বিশেষ বীর্ঘ দেখাইরা খীর খণে করাসী রাজপুরুষদিগের চিতাকর্ষণ করিয়াছিলেন। তৎপর তিনি ফরাসী সেনাপতি Marshal Saxcএর অধীনে যেরপ যুদ্ধকৌশল ও কার্য্যভংপরভার পরিচয় দিরাছিলেন, তাহাতে তিনি এই বীর পুরুষকে প্রকৃতই ফ্রান্সের ভারী সেনা-নায়ক (Marchal de France) জ্ঞান করিয়া মনে মনে শ্রম্ভা করিতে অবসর পাইয়াছিলেন।

ইহারই কিছু পরে ১৭৫৬ খুষ্টাব্দের ৩১এ ডিসেম্বর চুয়ার বংসর বয়সে তিনি এসিয়াস্থ ফরাসী অধিকারসমূহের (French possessions in the East) প্রধান স্বোধ্যক হইয়া ভারতদীমাত্তে আদিরা উপনীত হইলেন। তিনি নীতি-তন্ত্রের পক্ষপাতী ছিলেন। ভারতে আসিয়া সেই স্বভাবসিদ্ধ নীতিমার্গের অন্নসরণপূর্বক ডিনি ভারতীয় ফরাসী সেনাদলের निका ७ मः द्वादकार्या उठी हहेराना। এই ममरद्र मनगर्व्स এবং স্বীয় শক্তিপ্রাধান্তে মন্ত হইরা তিনি যথেষ্ট হঠকারিতার ও শক্তিচালনার পরিচর দিরাছিলেন। তাঁহার বীরত ও দান্তিকতা অচিরে ভাঁহাকে অবনতির পথে আনিয়াছিল। ভারতে স্মাসিয়া তিনি রাজনীতিবিশারদ ডুঁপ্লের সাম্যবাদ বিসৰ্জন দিলেন এবং রাজা শ্রেজা সম্বন্ধ কাপন করিবার উদ্দেশে করাসীর অধিকৃত প্রদেশসমূহে খীর প্রভাব বিভার মানসে, অজাবর্গের উপর কঠোর শাসন প্রবর্ত্তিত করিলেন। যাহা স্পূৰ্ণ করিলে পরীর অণ্ডচি হয়, এরপ নিবিদ্ধ বন্ধও ব্রাহ্মণকে वहन क्यारें एक अथवा मृज्ञविश्वत महिक कांश्वितरू वका গাড়ী টানাইতে বাধ্য করিরাছিলেন। এইরপ বথেজ্ঞকাও লক্ষ্য করিরা De Layrit ও মন্ত্রিসভা (Council) তাঁহার অস্থৃতিত কার্যাবলির নিকাবাদ করিয়া যথেষ্ট প্রতিষ্ঠাদ করি-লেন। তাহাতে ভিনি বিল্লজ হইরা তাঁহাদিগকে উৎকোচপ্রাহী অপরাধে অভিবৃক্ত করিলা ভাহাদের প্রতি ভক্নবোদী ব্যবহারে क्रकनका रहेरनमः

শাস্ত্রালে যুক্কালে মাজাজ নগরের সন্মুৰে আসিরা ভাঁহার

অধীনস্থ সেনাপতিগণ তাঁহার ব্যবহারে বিশেষমণে উদ্ভাক্ত হইয়া-ছিলেন। তাঁহারা মুণার সহিত তাঁহার আদেশ উপেকা ক্রিয়া মাজাৰ আক্রমণে বিরত হইলেন। তিনি প্রত্যেক সেনাকর্তৃক ত্মণিত ও লাজিত হইলেন এবং তাঁহার উপর বিজ্ঞাহী সেনাদলও শ্বীয় নৌবাহিনীকৰ্ত্তক পরিত্যক্ত হইবা আপনাকে বিশেবন্ধণে অব-মানিত বোধ করিতে লাগিলেন। উপস্থিত বিপদ্ হইতে উদ্ধার-লাভের আশায় তিনি বাধা হইয়া বুশিকে বুদ্ধের অধিনায়কপরে वत्र कतित्रा युकार्थ अधमत्र इटेंटि आत्मन नित्नन। विस्तियान রণক্ষেত্রে কর্ণেল কুটের নিকটে ডিনি সমূলে পরাঞ্জিভ ছইরা-ছিলেন। অতঃপর বিদ্রোহী সেনারুদ্দ ও অভ্যাচারী প্রভাবর্গের মধ্যে থাকিয়া তিনি পুঁদিচেরী রক্ষার দৃত্যক্ষর হরেন। ক্রমণঃ থান্তাভাবে যথন গুৰ্গবাসীর জীবনকাল ফুরাইতে লাগিল, (১৬ই জামুয়ারী ১৭৬১ খৃ:) তথন তিনি আত্মসমর্পণ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন !

এই অবরোধকালে করাসি-সৈত্ত ও নগরবাসিগণ হতী, অখ, উট্র প্রভৃতি নিহত করিয়া তাহাদের মাংস দ্বারা উদর পূর্ত্তি করিত। এমন কি, তৎকালে ২৪ টাকা মূল্যে একটী দেশী কুকুর ফরাসীদিগের থাভ সামগ্রীরূপে বিক্রীত হইরাছিল।

তিনি ফ্রান্স রাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হইলে, তাঁহার ভারতীয় কার্য্যাবলির তন্তামুসন্ধান ও বিচার আরম্ভ হয়। তাহাতে তিনি রাজদ্রোহী ও সেনাপতিবৃন্দের উপর অবথা অত্যা-চারী বলিয়া প্রতিপন্ন হন। ভজ্জন্ত তাঁহাকে মর্লার গাড়ীতে বদাইয়া প্রকাশ্র রাজপথে লইয়া বধাভূমিতে আনয়ন করা হইয়াছিল। তথার তিনি তারস্বরে চিৎকার করিয়া বলিরাছিলেন, "অগদীখর বিচারক্দিগকে ক্ষমা করিবার জন্ত তাঁহাকে যথেষ্ট অনুগ্রহ দান করিয়াছেন। যদি তাহাদিগের সহিত পুনরায় সাক্ষাৎ আমার সম্ভব হইড, তাহা হইলে আমি क्थनहै (म कार्य) कविछाम मा।" अहै कथा विभवात भव कस्लाम স্থাসিরা ভাঁহার শেষ কার্য্য করিয়া গেল।

लाली (प्रभव) भेवर नानवर्गपुक । याशास्त्र नात्नव व्यापक व्यापक व्यापक लालीनमी. जागात्म व्यवाहिङ अक्टी नमी। मिश्रवन गहिङ मिनिक इहेबारक। प्रका॰ २४ कें: वार लाविः ३८ > त्र्र्स আৰরবাডির বালভূমি বঙ্গলারত পর্মতথও হইতে উহুত।

লালীল (পুং) অদি। (তৈতিরীর আরু ১০।১।৭) मामुका (जी) कर्रशहरूप।

লালুনন্দলাল, একলন কবিওরালা। ইহার রচিত অনেক **"**কৰি' গাল পাওৱা বাৰ ১

लाटनद्र-टकार्ड (नानात्मत्र स्ग), यूक-अस्तरनंत्र यूनमगरद ে কেলার অন্তর্গত একটা গ্রপ্তরাম। অন্তর্গত ১৮১৩০ উঃ এবং। লাব্ণালর্মন, লাব্ণালর্মতন্ত্র ও শক্ষপ্রদীপ প্রশেক।

আৰি॰ ৭৮°৭ পূ:। ধানগঞ্ছইডে মীরাট থাইবার পথে অব-ছিত। এখানে একটা ভয় হগ ছিল। लाला (बि) नन-निष्-गर। नाननीत्र, नाननार्थ। লাব (গং ত্রী) পক্ষিবিশেষ, লাওয়া। ইহার মাংসপ্তণ-লঘু, কটু, मनवद्दकात्रक, चाह्र, मीजन, ও जिल्लायनामक। (बाजव°) ভাৰ প্ৰকাশমতে ৩৭—অधिकत, निध, মেলবৰ্দ্ধক, উক্ষবীৰ্য্য, बाब्नानक, नच्, किरनाविक्य, नीजन, क्न्रतांग ও तक्तिक-রোগনাশক। (ভাৰএ°)

লাবক (গ্ৰং) লাৰ এব স্বাৰ্থে কন্। ১ লাবপন্দী। পৰ্য্যায় লগুজালল। (जिका॰) मूनाजीजि मू-४ म् । २ व्हमकः।

"যথা প্ৰাগ্ৰাপক: কেত্ৰী পালকো লাবকন্তথা।"(মাৰ্ক°পু•৪৬।১৬) लांदन (बि) नदग-व्यम् । नदग बाज्ञा मरवृष्ठ, य दल्पत्र नदग ছারা সংকার করা হয়।

'नार्शिकः नाधिकः नर्शिन धिकार नःष्ठकः क्रमार । नवर्गामका आगूनकः नावगिक्यूनविकि। উनचिज्योनचिएकः नवर्ग छोखु नावगम् ॥' (इस) (वि) २ नदग मच्की। "न मार পরিভবরেব স্বাং বেলাং সমুপাক্রমন্। ক্লেদয়ামাস চপলৈর্লাবণৈরক্ষ বিভাবৈ: ॥" (হরিবংশ ৫৩।২০) (রী) ৩ নক্ত। (রত্নমালা)

नाविनिक (वि) नवन-र्रव्यः। नवन बाज्ञा मःक्रुष्ठ, नवरनामक ছারা সংস্কৃত। (হেম) ২ লবণ সম্বন্ধী। (পুং) ৩ লবণবিক্রেতা। "লীলরৈব স্থতনোত্তলয়িত্বা গৌরবাঢ্যমপি লাবণিকেন।"(মাঘ১০।৩৮) (क्री) ৪ লবণপাতা।

लाविना (क्री) नवन-याञ्चा > नवनव, नवरनत्र ভाव वा धर्म । লবণা দ্বিত্তে যভেতি লবণঃ অর্পাদিদাদচ্তত ভাবঃ मृष्गं क्यार्थ या थ्। त्रोन्पर्यावित्यव, , भन्नी दन्न काश्चि, চাক্চিক্য। ইহার লক্ষণ---

"মুক্তাফলেযু ছায়ায়াক্তরলম্বনিবান্তরা। প্রতিভাতি যদকেষু তল্লাবণ্যমিহোচ্যতে ॥" (উক্লানীলমণি) মৃক্তাফলের মধ্যে ছায়ার তর্গতার স্থার অঙ্গে বাহা প্রতি-कांठ रह, ठारांटक नावना करह। महीतावहरवत्र एव व्यङ्गेडे **ट्योम्बर्धा, का**हारकहे नावना वरन ।

"নীতিভূমিভূজাং নতিও প্ৰতাং হীরলনানাং ধৃতিঃ ৰম্পত্যো: শিশৰো গৃহস্ত কৰিতা বুঙ্কে: প্ৰসাদো গিরাং। লাবণ্যং বপুষঃ স্বৃতিস্থ মনসা পাতিবিজ্ঞ ক্ষমা শক্তন্ত দ্ৰবিশং গৃহাভাষৰতাং আছাং সভাং মঞ্চন্দ্ ॥" (অমর্সিংহ) ৩ শীলনৈপুণ্যাবি।

লাবণ্যার্জিত (हो) গাবগোন অর্জিতন্ । বিবাহকাগীন খণ্ডর ও পাণ্ডড়ী কর্তৃত প্রবেরবিশেব। বিবাহের নমর খণ্ডর ও শান্ডড়ী বে ধন বৌতুক সমশ কেন।

> "दीका गडक रदक्षिकः बाह्य या चंत्रस्तर या। नामस्यानिकः बच्चानिकारिकक्त्राटक ॥"

> > (বিৰাষ্টিভাৰণিগ্ৰভ কাডায়নৰচন)

লাবা, পঞাৰজনেপৰ বিলাম্ জেলার অন্তর্গত একটা নগন।
ক্ষেত্রত এক পর্বতের উভরে অবহিত। অকাণ ৩২°৪১'৪৫'

তঃ একং প্রাথি ৭১°৫৮'০৬'' পূ:। ইহা একটা হুবৃহৎ 'আবান্'
প্রাথ বলিরা কথিত। ইহার চকুলীনাহিত কুটার লইরা ভূপরিবাব ২০৫ বর্গনাইল।

লাবা, রাজপুতনার অন্তর্গত একটা দেশীর সামন্ত-রাজ্য। তু-পরিমাণ ১৮ বর্গনাইল। জরপুররাজ কোন সমরে তাঁহার কোন নিকট আগ্রীরকে লাবার সামন্ত্রপদ প্রদান করেন। পরে মহারাষ্ট্র-সর্কার আমীর বাঁ লাবা অধিকার করিরা তথাকার ঠাকুরকে মহারাষ্ট্রের পদানত করিরাছিলেন। উহার পর লাবার ঠাকুরপণ তোজের সামন্তরাজের অধীন হইরা পড়েন। ১৮৪৭ বুটাকে ইংরাজগ্বরেক্টি এই অধীনতাপাশ ছির করিরা দেন।

লাবা নগর ভোষের ১০ ক্রোণ উত্তরপূর্বে অবস্থিত।
লাবা (বী) লাব-টাপ্। পজিবিশেব, পর্যার লাবক, লাব, লব।
লাবাড়া, ব্জ-প্রদেশের বীরাট জেলার অন্তর্গত একটা নগর।
নীরাট সমর হইতে ৬ ক্রোণ উত্তরে অবস্থিত। এখানে মহলসরাই নাবে একটা স্কর প্রানাব বিভ্যান আছে। এই প্রানাবসংগর স্ববিস্তুত উভান একণে ভগ্গাব্ছার পতিত। মীরাট নগরের
নিকটছ স্থীর প্রাক্ত-বীর্ষিকার প্রতিষ্ঠাতা বণিক্সের ক্রাইরাসিংহ অন্থান ১৭০০ খুটাকে এই অট্টালিকা নির্মাণ করাইরাছিলেন।

লাবাণক (পং) নগৰনাবোর নিকটবর্তী জনপাতেন।
লাবাক্তক (পং) বাহিতেন। (ছালতং ১৬ অ')
লাবিক (পং) নালিক, মহিন। (হেন)
লাবিকু (পং) নালিক, মহিন। (হেন)
লাবিকু (পং) নালিক, মহিন। (হেন)
লাবুরান, ভারতীর বীপথুনের অভ্যত একটা কুল বীপ।
ব্যিও বীপের উত্তর্গর বীপথুনের অভ্যত ওকটা কুল বীপ।
হার বিদ্যু উত্তর্গর বিশ্বাকর কর্ম এবং ভারতীর সম্ব্যুত্ত।
ইহার বিদ্যু উত্তর্গর বিশ্বাকর বিশ্বাকর কর্ম এবং ভারতীর সম্ব্যুত্ত।
ব্যার ১৬ মহিন এবং এবং ও আইল। সম্ব্রুতীরকীর কুপুন্তর্গর ও রেলগরের উন্যুপ্তির তর হেবিরা অক্তর্গর বিদ্যুত্ত।
বিশ্ব ও রেলগরের উন্যুপ্তির তর হেবিরা অক্তর্গর্গর বে,
উক্ত ভরেই এই বীপ গুঠিত।

এখানে কর্মার খনি আছে। তাহাতে উৎক্ট কর্মা পাওরা বাব। হানে হানে অবিভঙ্ক পৌহের খনি মূই হর। বীপ্রাদীরা সেই লোহ গ্লাইরা পাত্রাহি প্রস্তুত করে। পূর্ব ভারতীর বীপপুঞ্জে ইংরাজের বে বহুল উপনিবেশ আছে, ভাহার বংগ ইহা সর্বাপেকা কুল। ১৮৪৬ পৃটাব্দে ইহা ইংরাজের হতে সমর্শিত হইরাছিল।

লাবুর্দ্ধনে, এক জন করানী শাসনকর্তা। ইনি খুটার ১৮শ
শতাকের নথ্যতাগে তারত মহাসমূদ্রছ করানী অধিকারনমূহের
শাসনকর্তা হইরা পূর্বাদেশে আগবন করেন। তিনি তারত
উপকৃলে করানীবাহিনী আনিরা মাজ্রাক্ত অধিকার করিবাছিলেন।
লাবেরণি (গং) গবেরণির গোত্রাপত্য।
লাবেরণীর (বি) গাবেরণির গোত্রাপত্য।

नाया (बि) न् गर। द्या, द्यन्त्वागः।

লারুক (ঝি) গব-উকন্। গৃগু, লোভী। লাল (পুং) লগ-বঞ্। ১ নৃত্যমাত্র। ২ রীদিগের নৃত্য।

"মদনজনিতলানৈ দৃষ্টিপাতৈকু নীক্ৰান্।

তনভরনতনার্য্য কামরতি শ্রেণাতান্॥" (অতুসংহার ৬।৩১) ২ বুব। (পল্চ॰)

লাস (দেশৰ) > শব। ২ আটা। (হিন্দি) ৩ নিরুট জমি।
লাস, আফগানহানের হিরাট বিভাগের নিকটছ একটা প্রদেশ।
সিন্তানের উত্তরে অবহিত। কামরান্ বধন লাস নগর আক্রমণ
করেন, তথস এখানকার হুর্গবাসী সেনাগণ গথেট বীর্ত্বের
পরিচর দিরাহিদ।

লাস, বস্চহানের অন্তর্গত একটা প্রেদেশ। আরব্যোপসাগরের উপকৃলে অবস্থিত। সিদ্ধনদের 'ব'বীপভূমি ও হালাপর্কতমালা বারা ইহা নির সিদ্ধপ্রদেশ হইতে বিজিল হইরাছে। এই সমুল্লোপফুলবর্তী প্রদেশ লব্দে প্রোর ১০০ নাইল এবং প্রাছে ৮০ বাইল।
ইহার উত্তর সীনার বালবান পর্বাভ প্রব্যাল্য, পূর্বো ও পশ্চিমে
উত্তর্ভুত্ত পর্বভ্রমালা এবং বন্দিশে ভারত মহানাগর। এথানকার,
লাসনবর্তা ভাম (সর্কার) নামে খ্যাত।

এবানে বাবেটি, সাব্যা, আছ্বা, ওলোড়, জলারিও,
কথা, ওলা, ব্লা, হুলাবি, বেব, ব্লোনা, ওব্ডা, মুখর, বরাডিরা,
নেরী, বীরা ব্নোর, বলা, বাওরা, জোর, মুন্দি বা ব্নিন্ধ, কগবল,
ওকর, সল্ম, হোরমারা প্রছুতি ভাতির বাস আছে। জানোড
আতির বাসভী বাবের একটা বাব বইতে আনস্থাবান সমুদুত।
নোবনিনী এবাসকার আন্তান বানিআনগভঃ। ইরার কিছু উভনে
ব্যোক্তিন সমার। উহাই হানীর রাজ্যানী বলিরা করা। জনানে
ক্রান্ত প্রাচীন হ্যান্ড মুক্শানানি বাবেরা বিনারে। জানানে
ক্রান্ত প্রাচীন হ্যান্ড মুক্শানানি বাবেরা বিনারে। ক্রান্ত

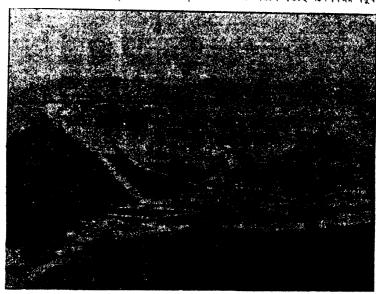
বাণিজ্য প্রচলিত ছিল। মেক্রান ও সিছু প্রবেশে মুসলমান্ সমাগনের সমকালে এখানে সম্ভবতঃ আর্ববাদী মুসলমান বণিক্গণ উপনিবেশ স্থাপন করিয়া থাকিবেন।

লাসক (রী) লসতীতি লস-ধূল। ১ মট্রক, চলিত মট্রকা।
(গং) ২ লাজকারী। ৩ মর্র। ৪ লসক। ৫ বেট।
৬ দীপ্রিকারক। "নবজলকণ্ডেকাছীততামাদধান:

কুল্পনভানাং লাসক: পাদপানাম্।" (ঋতুসংহার ২।২৬)
লাস কী (রী) লাসক-ডীষ্। নর্ত্তকী। (অন্তর্গ শীলাসা, (Inhansa) হিমালারের উত্তরপার্দ্ধর স্থবিভৃত তিব্বত-রাজ্যের রাজ্যানী। এই জনপদ ভোট ভাবার খাছন্-প বা ভ্রার প্রদেশ নামে অভিহিত। আবার তিব্বতীর ভাষায় লহা শব্দের অর্থ দেব এবং সা শব্দে বিশ্রাম-নিক্তেন। লাসা অর্থাৎ দেবস্থান। স্থতাং লহাসা বা লাসা শব্দে দেবস্থানই বুঝাইরা থাকে*।

এই নগরবাসী জন সাধারণ বৌদ্ধ। বৌদ্ধ লামাচার্য ও বাজি
প্রাকৃতি ধর্মকর্মনিরত থাকিরা এখানকার মঠে কবছান করিরা
থাকেন। ভারতবাসীর পূজ্য ও প্রসিদ্ধ বুদ্ধাক্তার শাকার্মনির
প্রসাদে এখানকার ধর্মমঞ্জল আজিও খৌদ্ধার্মের উদার মন্ত
পালন করিরা আলিতেছে, তবে বর্তমান আমাধর্মের পার্কাতা
জাতির বোন্-পা ধর্মের জনেক প্রভাব ওতপ্রোত ভাবে মিলিত
হইরা রহিরাছে। এই নগরে তিকাতের সর্কপ্রধান লামাচার্যা
শিলইলামাশ রাজন্তির সম্পার হইরা রাজনত্তের প্রভাবে ধর্ম্মরাজ্য
ও কর্ম্মরাজ্য করিরা আলিতেছেন। [তিকাত ও লামা দেখ।]

বর্ত্তমান লাসা নগরীর উত্তরে শৈল শৃলোপরি পোতদ গুদ্ধা নামক দলই লামার রাজপ্রাসাদ অবস্থিত। উহার গঠন-বৈচিত্র্য এবং তথাকার অপর চুইটা প্রসিদ্ধ সম্বারামের প্রস্তুত প্রণালী পর্যাবেক্ষণ করিলে স্বতঃই মনে বিশ্বর সমুৎপাদিত হর।



ৰশইলামার গোডল আসাদ।

দ্দই দানা এখানকার রাজ্যশাসন-কার্য্যের এবং ধর্মরকা ও প্রচার-বিবরের সর্কান্য কর্তা হইলেও এই নগরে চীনরাজের দুইজন ক্ষন বা রাজন্ত বাস করেন। তাঁহাদের পরামর্শমতে সাসাপতি হলই সামা বাবতীর রাজ্তীর কার্য্য নির্কাহ করির বাক্ষেন। সাসাবাদী উক্ত চীন-রাজকর্মচারিছরের অধীনে বস্তু-হে নাবে দুইজন প্রধান সেনাপতি আছেন। তাঁহারা য ছ সাম ও স্থানার্য্যাহে ভিজ্পভরাজ্যের ফ্রশাসন ব্লোবতের জন্ত সক্ষণ বিবর্গই পরিক্ষিন ক্ষরিরা থাকেন। বস্তুহের নির্কাশ চীনকর্মচারিকর কোন্য নাবে ব্যাত। তাঁহারা সেনাবিভাগের বেতনদাতা বন্ধী ও ইংরাজনেনাবিভাগের এড্জুটেন্ট ও কোরা-টটার-দাটার জেনারলের ভার কার্য করেন। একজন নপুহে ও একজন কোপুন দীবার্টাতে থাকিরা তিব্বতীয় নেমানলের কাধারণ পরিদর্শকের কার্য করিয়া থাকেন।

এই ছই কৰাগায়ী বা দেনাধাকের নিত্রে ভিনজন ক্রিভে বর্ত্ত আছেন। ভাঁহারা চীনজাতীর এবং এক একটা দেনাবিভাগের নাবক নাত্র। ইহাবের নধ্যে একজন বীবাইটেড ও অপুরু এক কন নেপান নীনাভবর্তী টিভ রি নগরে নাকৈ অব্যক্তি থাকিয়া ভিনত নীনাভ সকা করিভেছেন। উক্ত দেরানারকত্রের

এছতছবিত্ হক্ বলেন, নানা দকে বেজছবি বুধার। বোলনীয়াব "বোজেত বৌত" বা কর্মীয় বেবনীয় এবং ছেবু লানাবৰ ইপ্লাকে দেবনার মলে।

অধীনে ও জান চীনজাতীয় 'তিজুপুন্' বা 'নন্কমিসন্ডু অফি দার' আছেন। এত থিয় তি বৰত রাজ্যের সামরিক বিভাগে আর কোন চীন কর্মচারা নাই। রাজকীয় শাসন ও বিচারবিভাগীয় ধাবতীয় কাথা তি বৰত বাসী ভল্লোক হারা পরিচালিত হইয়া গাকে। সম্প্র ভিবতে চীনরাজের প্রায় ৪ হাজার সেনা আছে। ভাহার মধ্যে লাসানগরে ২ হাজার, দীবাচ,তে ২ হাজার, গ্যান্থ গৈতে ৫০০ শত ও টিভ্রিতে ৫ শত মাই।

লাসিকা (জী) गामारखाछ। ইতি गाम-ঠনু। নর্তকী। অমার) लांत्रिय (जि) गप्त पिनि । नर्कक । क्रियाः छीय् । नापिनी । লাসেন (Lussen), জর্মণরাজ্যবাদী একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত ও শব্দবিৎ। স্পোতিষ, বিজ্ঞান প্রভৃতি বিষয়ে তাঁথার অসাধারণ বাৎপত্তি ছিল। তিনি ১৯শ শতাব্দের প্রারম্ভে বিগুমান ছিলেন। সংশ্বত, আরবী, পারসী, গ্রীক্, হিঞ্জু, সাটিন প্রভৃতি প্রাচা ও প্রতীতা ভাষাসমূহ আলোচনা করিয়া তত্তদেশের প্রাচীন গ্রন্থাদি এবং ভারতীয় শিলালিপি ও আসিরীয় কোণাকার লিপি হইতে প্রছত্তর উদ্ধার করিয়া তিনি জগদাসীকে স্বীয় গবেষণায় চমৎকৃত করিয়াছিলেন। ভাঁহার রচিত যে গ্রন্থগুলি সে সময়ে মুদ্রিত হট্যা যুরোপে প্রচারিত হইয়াছিল, নিমে তাহার একটা তালিকা দেওয়া গেল:—Commentario Geographica atque Historica de Pentapomia Indica 3539 খুষ্ঠান্দে, বর্ নগরে; Die Altpersischen, ১৮০৬ খুষ্ঠান্দে, কায়েল নগরে; Die Taprobane Insula ১৮৪৪ পৃষ্টাব্দে, Indische Alterthum Skunde বা ভারতীয় প্রত্যত্ত্ব— ১৮৪৭ হইতে ১৮৬১ খুষ্টাৰ মধ্যে ৪ খণ্ড মন্ত্ৰিত ও প্ৰকাশিত হয়।

এডরির তিনি গভীর অমুসন্ধিৎসাবলে তদানীস্থন আবিষ্কৃত কোণাকার শিলাকলকসমূহ ইইতে ৩৯ প্রকার বিভিন্ন বর্ণমালা নিরূপণ করিয়া সাধারণের সংক্ষে তাহার একটা তালিকা উপস্থিত করিয়াছিলেন এবং যে করপ্রকার লিপি তৎকালীন সুরোপীয় প্রস্কৃতক্ষিণ সমাজে প্রচলিত ছিল, তাহার অনেক ফলকাদি তিনি অসুবাদ করিয়া সাধারণের বোধগম্য করিতে প্রমাস পাইয়াছিলেন।

লাক্ষোটনী (জী) > আক্ষোটনী। ২ বেধনিকা। (রারমুক্ট) লাক্য (ক্নী) লস (অহলোর্গং। পা অসাস্থ টিড গৃং। স্নতা। ২ তোর্গাতিক। (মেদিনী) ভাবাশ্রর ও তালাশ্রর নৃতা। ভাব ও তালের সহিত বে নৃত্য তাহাকে লাভ কহে। (ভরত) সঙ্গীতনারায়ণে শিখিত আছে বে, স্ত্রীগণ বে নৃত্য করে তাহাকে লাভ কহে।

"প্:নৃতাং তাওবং প্রাহ্: স্ত্রীনৃত্যং লাজমূচ্যতে।" (সঙ্গীতনারারণ নার্দস') "সভোগবেহচাতুই এই বিলাক্সনোহরৈ:।

রাজনাং রময়ামাস তথা রেমে তথৈব স:।"(ভারত ১১৯৮১০)
সাহিত্যদর্শনে বাজের দশবিধ অন্ধ বর্নিত হইরাছে—

"গেরপদং হিতপাঠ্যমাসীনং পূজগন্তিকা।
প্রক্রেদকন্তিগুড়ক সৈদ্ধবাধাং হিগুড়কম্॥
উত্তযোত্তমক্লাক্তকে প্রত্যুক্তমেব চ।
লাক্তে দশবিধং হেতদলমুক্তং মনীবিভি: এ"(সাহিত্যদ ভাবত ৪)
মনীবিগণ—গেয়পদ, হিতপাঠ, আসীন, পুজগন্তিকা,
প্রচ্ছেদক, ব্রিগুড়, সৈদ্ধবাধা, হিগুড়ক ও উত্তমোত্তমক এই
দশবিধ লাক্তের অন্ধ নির্দেশ করিয়াছেন।

পুং) শাভ্যব্যভাতি সাফ্ত আচ্। ৪ নর্ক। (শাক্রা) লাস্থিক (কী) লাভ্যবে স্বার্থে কন্। নৃত্য। (শাক্রা) লাস্থা (বী) শাভ্যমন্ত্যভা ইতি লাভ্য-অচ্-টাপ্। নর্কী। (শাক্রা) লাহা (দেশজ) লাকা। লাভ্লা, পাজাবের কাঙড়া জেলার অন্তর্গত একটা উপত্যকা ও

উপবিভাগ। [লহল দেখ।]
লাতেরী (লাহেরা), বেহারবাসী জাতিবিশেষ। লাকার চুড়ি
(লাহ কা চুরি) প্রস্তুত করিয়া বিক্রয় করা ইংদের জাতীয়
ব্যবসা। ইহারা একটা শ্বতপ্র জাতি নহে, নিম শ্রেণীর বিভিন্ন
সম্প্রদায় হইতে গঠিত। এই অভিনব বৃত্তি অবলম্বনে "লাহা"
হইতে ইহারা লাহেরী নামে অভিহিত হইয়া থাকে। গঙ্গানদীর
উত্তর ও দক্ষিণকূলে বাসনিবন্ধন ইহাদের মধ্যে ত্রিহুতিয়া ও
দক্ষিণিয়া নামে হুইটা শ্বতপ্র থাক আছে। নুরী জাতির একটা
শাথা গালার গহনা প্রস্তুত করে বলিয়া ভাহারও লাহেরা শ্রেণীর
একটা থাকরুপে গণ্য হইয়াছে। [লাথেরী দেখা] ক

ইহাদের মধ্যে কাশী ও মছরিরা নামে ছইটী গোত্র বা শ্রেকভার বিবাহ দেয়। বরঃপ্রাপ্ত পুত্রকভার বিবাহ হইলে কোন দোষ হয় না, কিন্তু বালাবিবাহই প্রশন্ত। বিবাহ-প্রথা স্থানীয় সাধারণ হিলুদের মত্যু, কেবল বরের পিতাকে তিলকদানের ব্যবস্থা নাই। ইহাদের মধ্যে বছবিবাহ প্রচলিত আছে। প্রথমা স্ত্রী বন্ধ্যা হইলে পুরুষ হিতীয় দার পরিগ্রহ করিতে পারে।

বিধবারা সাগাই মতে বিবাহিত হয়। এরপ স্থলে দেবরকে
বিবাহ করাই যুক্তিসিদ্ধ, কিছ বিধবা রমণী তাহার ইচ্ছামত অল্প পুরুষকেও বরণ করিতে পারে। স্ত্রী অসচ্চরিত্রা হইলে পঞ্চারক্তের সমক্ষে তাহার অপরাধ প্রমাণিত বা সাব্যক্ত করাইর। স্থামী ভাছাকে ত্যাগ করিতে পারে। স্বজাতির মধ্যে যদি কেছ কোন রমণীকে কুপণে লইরা যায়, তাহা হইলে সে স্বীয় সমাজের প্রধানদিগকে ভোজ দিয়া অব্যাহতি পাষ, কিন্তু ভিন্ন-সম্প্রদায়ের অপর পুরুষে আসক্ত হইয়া যদি ঐ রমণী পাপপত্তে লিপ্ত হয়, তাহী হইলে তাহাকে সমাজ হইতে দূর করিয়া দেওরা হইরা থাকে

বেহার প্রদেশের প্রকৃষ্ট হিন্দুর মধ্যে পুত্রকন্তার উত্তরাধিকার মিতাক্ষরা মতে প্রচলিত আছে। ইহারা মুখে সেই মত অনুসরণ করিলেও কার্যতঃ পঞ্চারতের আদেশেই যথাকর্ত্তব্য নির্দ্ধারণ করিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে পঞ্চাবের "ভূড়াবন্দ" প্রথা প্রচলিত দেখা যায়। তাহাতে স্ত্রীসংখ্যান্থসারেই স্বামীর সম্পত্তি বিভক্ত হয়, অর্থাৎ প্রথমা স্ত্রীর যদি একমাত্র পুত্র জায়ে এবং দ্বিতীয়া স্ত্রীর যদি একমাত্র পুত্র জায়ে এবং দ্বিতীয়া স্ত্রীর প্রথমার একমাত্র পুত্র অর্জাংশের অধিকারী হইবে এবং দ্বিতীয়ার সন্তামগণ অপরার্দ্ধ সমভাগে বাটন করিয়া লইবে। সম্পত্তিবাটনকালে বিবাহিত ও নিকা-পশ্লীর কোন রূপ পার্থক্যঞ্থাকে না।

ইহারা আপনাদিগকে গোঁড়া হিন্দু বলিয়া জানে। ভগবতীকে আরাধা দেবী জানিয়া তাঁহারই উপাসনা করে,

কুঁজিন্ত হিন্দ্র অপরাপর দেবতাকে অবজ্ঞা করে না। ত্রিহতীয়
রোহ্মণগণ ইহাদের বিবাহাদি কর্মে যাজকতা করেন, তাহাতে
তাঁহারা সমাজে নিন্দনীয় হন না। বন্দী ওগোরাইয়া নামক গামা
দেবতাকে প্রত্যেক গৃহস্বই পূজা করে। তাহাতে রাহ্মণের
পৌরোহিতা আবশুক করে না। এই তুই দেবতাকে গৃহক্তাই
ছাগ, তুম্ব, কুটী ও মিষ্টালাদি নিবেদন করিয়া দেয়।

ইহারা সমাজে কোইরী ও কুমা, দিগের সমশ্রেণী বলিয়া বিবে-চিত ক ব্রাহ্মণেরা ইহাদের জল স্পর্শ করিয়া থাকেন। গালার চুড়ী ও ধেলানা প্রস্তুত ব্যতীত ইহারা চাসবাস করে।

গঠিত। ইহার উত্তর পশ্চিমে গুজরান্বালা, উত্তরপূর্ব্বে অমৃত্সর দক্ষিণপূর্ব্বে শতক্ষ নদী এবং দক্ষিণপশ্চিমে মন্টগোমরি জেলা।

সমগ্র পঞ্জাব প্রদেশের ৩২টি জেনার মধ্যে লোকদংখ্যাত্মনারে ইকা ভূতীর এবং ভূমির পরিমাণাত্মনারে একাদশ স্থানীর। ইকা চারিটি অতন্ধ তহনীলে বিভক্ত। শরণপুর তহনীল ইরাবতী নদীর বহিভূতি প্রদেশ লইয়া গঠিত। দক্ষিণশকিমার্কের চূনিরান তহনীল ইরাবতী ও শতক্রর মধান্ধনে অবস্থিত, কহন তহনীল শতক্রন কুলে বিস্তৃত এবং উত্তরপূর্বার্কের লাহোর তহনীল ইরাবতীতট হইতে শতক্রতীরবর্তী কহর উপবিভাগ প্রয়ন্ত পরিবাধ্য।

এই জেলার প্রাকৃতিক সৌল্প্য বড়ই মনোরম। শতক্র হইতে ইরাবতী এবং তথা হইতে রেক্না-দোয়াব নামক শস্তস্থূর অন্তর্কেদীর মধ্যস্থল পৃথান্ত এই জেলা বিস্তৃত। শতক্র, ইরাবতী ও দেখ নামক নদীত্রর প্রভৃত স্থুমিষ্ট জল বহন করিয়া এই জেলার অবিকাংশস্থান, বিশেষত: উক্ত নদীত্রয়প্রবাহিত অববাহিকা ও উপত্যকা প্রদেশ উর্বর করিয়া তুলিয়াছে। ঐ শ্রামল শহুকেত্র-সমূহ যেন সমান্তরাল বন্ধনীর স্থার উপত্যকাভূমের স্থানে স্থানে এক একটী গণ্ডশৈল বেষ্টন করিয়া আছে। প্রত্তেমান্ত্র উর্বরতার সাবারণের নিক্ট স্পার্চিত রহিয়াছে।

শতদ্র ইরাবতী নদীর মণ্ডবেশ মাঁঝা নামক অধিত্যকা বা উচ্চভূমি অবস্থিত। উহা একসময়ে শিথকাতির আদি বাস-ভূমি বলিয়া প্রাসিক হিল। দেই বিশ্বত প্রদেশের উত্তরাংশ উক্তর শস্তক্ষেত্রপরিশোভিত রহিয়াছে, কিন্তু তাহারই দক্ষিণাংশ ক্রমণঃ ক্ষীণকলেবর হইয়া অমুর্বার মরভুমে পরিণত হইয়াছে। উহার मर्काटन मामाछ माजात्र चाम कात्म बढ़े, किन्छ भारत ना নদীতে জল নাথাকায় তত বেশা তৃণ গজায়না। বৰ্ষা ভিন অফাত ঋতুতে তথার যে তৃণ ও গুলাদি বিরাজিত থাকে, তাহা ভক্ষণ করিয়া উট্টগণ জীবন ধারণ করিয়া থাকে। বর্ধার জলে সেই সকল তুণ সঞ্জীব হইশা আবার বাড়িতে থাকে। তথন সেই স্ব্রহৎ তৃণপূর্ণ প্রান্তর গ্রাদির চারণার্থ ব্যবশ্বত হইয়া থাকে। মধ্যে মধ্যে এক একটা গগুগ্রাম দৃষ্ট হয় বটে, কিন্তু এই উচ্চভূমির व्यक्षिकाः न हात्नरे श्राठीन श्रूक्तिनी, कृत, नगत्र ও हुर्गानित श्रवन्त নিদর্শন নিপতিত দেখিয়া অমুমান হয় যে, এই অধিত্যকা ভূমিতে এক সমরে একটা হ্রসমূদ্ধ জাতির বাস ছিল। সেই জাতীত গৌরবস্থতি আজিও ভগ অটালিকাসমূহ বহন করিয়া আসি-তেছে। শতক্র নদী হইতে কিছু দ্রে পূর্বপশ্চিমে বিছত একটা উচ্চ বাঁধ দৃষ্ট হয়,উহা এই'মাঁঝা' ভূমির দক্ষিণনীমা নির্দেশ করি-তেছে। এই বাধ হইতে নদীতীর পর্যান্ত যে ত্রিকোণাকার উর্বরভূমি পভিত রহিয়াছে, ভাহা হীতার নামে থাাত। ইরাবতা নদীর প্রিময় ক্লাংশে নানা হৃক্ষ এবং ফল ও ফুল জ্যিতে

দেশা যার। তাহার উত্তরপশ্চিম অভিমূখে দেখ নদী তীর পর্য্যস্ত বিস্তীপ ভূপণ্ড জন্মনারত।

উপরোক্ত নদীসমূহের অববাহিকা প্রদেশ এবং থালপ্রবাহিত স্থান ব্যতীত এই জেলার আরু কোথাও পর্যাপ্ত শশু
উৎপর হয় না। জলের অভাবই তাহার একমাত্র কারণ।
বেখানে কুপ থনন করিয়া জল পাওরা যায়, অথবা থাল হইতে
বা অন্ত কোন করিয়া উপায়ে শশুক্তে জলসেচন করা যায়,
তথার অভাশু জেলার সমান শশু উৎপাদন করিতে পারা যায়;
কিন্ত বিশেষ চেটা করিলেও তথায় শিয়ালকোট, হসিরারপুর বা
ভালজরের ভার শশুভাৎপাদন করা যায় না।

हेतावर्छी नमी এई जिनात मधा निम्ना अवः नाटहात नगरतत স্মিকট দিয়া প্রবাহিত। মধ্যে মধ্যে ইহার জ্বলগতি পার্ক্তা ভূমিতে বাধা প্রাপ্ত হইয়া নানা শাথা-প্রশাথায় বিভক্ত হইয়াও পুনরায় কিছু দুরে আসিয়া পরম্পরে সন্মিলিত হইয়াছে। শতদ্রু ও বিগাশা নদী একণে জেলার সীমাস্তভাগে পরস্পরে মিলিত হইয়া প্রবাহিত রহিয়াছে। এক সময়ে উহা স্বতন্ত্র শাথায় এই জেলার মধ্যে প্রবাহিত থাকিয়া সিন্ধনদে মিলিত হইয়াছিল। এখনও মাঁঝার পূর্ব্বোক্ত বাধের নিকট বিপাশা নদীর পূর্ব্বতন খাত দৃষ্ট হয়। গ্রামবাসীদিগের মধ্যে কিংবদন্তী আছে যে, ১৭৫০ থষ্টাব্দে কোন অনৈসর্গিক কারণে এই নদীর গতি পরি-বর্তিত হয়। লোকে বলিয়া থাকে, বিপাশা নদীর প্রথবস্ত্রোত প্রবাহিত হইয়া এইস্থানে তপস্থানিরত শিথগুরুর কুটীর ভাসাইয়া লইয়া যায়। সাধকপ্রবর তাহাতে কুপিত হইয়া অভিসম্পাত করেন। তদবধি তৎপ্রদেশে বিপাশার গতিরোধ হইয়াছে। কম্ব ও চুনিয়ান নগর এবং বছসংথাক প্রাচীন গগুগ্রাম এই পুরাতন নদীগর্ভের পার্ষে অবস্থিত।

চাসবাসের স্থবিধার জন্ম এই জেলার চকুদিকে থাল কাটিয়া ভূমির উর্পারতাশকি বৃদ্ধি করা হইয়াছে। তদ্মধ্যে নানা শাখা বিস্থৃত বড়িদোরাব থাল বিশেষ উল্লেথযোগ্য। ইহা শতক্র হইতে আরম্ভ করিয়া লাহোর নগর ও মিঞান্ মীরের সেনানিবাসের মধ্য নিয়া প্রবাহিত হইয়া নিয়াজবেগের নিকট ইরাবতীতে সংযুক্ত হইয়াছে। ইহার কস্থর শাখা ও সোত্রাওন শাখা পুনরায় ঘ্রিয়া শতক্রতে মিশিরাছে। মোগলসম্রাট্ শাহজহানের প্রসিদ্ধ স্থাতি জানীমর্দ্দন খাঁ এখানকার হস্নী খাল কাটাইয়াছিলেন। উহা পুর্বে শালিমারের বিখ্যাত উদ্যান ও কোয়ারার জল সরবরাহ করিত, কিন্তু এক্ষণে বড়িদোরার খালের কলেবর পুষ্ঠ করিভেছে। এতব্রির কটোরা, খান্বা ও সোহাগ নামকু তিনটী খাত শতক্রর গর্ভ হইতে কাটাইয়া মাঁঝা ও উক্ত নদীর মধ্যবত্তী ব্রিকোণাকার ভূমিভাগে জলগান করা হইতেছে।

এথানে কীকর, সিরীষ, তুখ, ঝন্দ, বান, ফুলাহি, করীল, শিশু, আম্র, বকাইন, আমলতা, বর্ণা, পিপুল, বট প্রভৃতি বৃক্ষ প্রধানতঃ জন্মে। বনভাগে অস্তান্ত নানালাতীর বৃক্ষ এবং নেক্ডে চিতা, নীলগাই, বনবরাহ ও হরিণাদি পশু এবুং নদীতীর প্রভৃতি হানে নানালাতীয় পক্ষী বিচরণ করিতে দেখা বায়।

বহু পূর্বকাল হইতে এই জেলা আর্যা-সভাতার কেন্দ্রস্থল
ছিল। এখনও জনশৃত্য বনাস্তরাল-প্রদেশত্ব ধ্বস্ত নগর এবং
কুপত্যগাদি তাহার পরিচয় প্রদান করিতেছে। এ সকল
প্রাচীন কীর্ত্তি অপেক্ষাক্ত উচ্চভূমে অবস্থিত থাকায় অনুমান
হয় যে, তৎকালে এখানকার জলরাশি অপেক্ষাকৃত উচ্চ স্তরে
প্রবাহিত ছিল এবং অধিক সম্ভব তৎকালীন ফুশিক্ষিত ও সভ্যদেশবাসিগণ স্থকৌশলে আপনাদের প্রতিষ্ঠিত নগরাদিতে জ্লান
নয়নে সমর্থ হইয়াভিলেন। এশনও সেই প্রাচীন আর্যাসভ্যতার কএকটী মাত্র নিদর্শন এখানে পরিলক্ষিত হইয়া থাকে।

এই জেলার ইতিহাস লাহাের নগরের ইন্টির্ভের সহিত সর্কাতাভাবে সংযুক্ত। উক্ত নগরের নামান্সারেই এই জেলার নামকরণ হইয়াছে। আফগানস্থান পর্যন্ত বিস্তৃত একটা স্থপ্রশক্ত রাস্তার উপর অবস্থিত হওয়ায়, এই নগর মাকিদনবীর আব্রেক্ট-সালারের ভারতাক্রমণের পূর্ব্ব হইতেও পাশ্চাত্য বৈদেশিক শক্ত হস্তে আক্রান্ত হইয়াছে। পঞ্চন্দের সহিত গান্ধারাজ্যের সমন্ধ মহাভারতাদি প্রাচীন গ্রন্থে বির্ত দেখা যায়। ইস্লামন্ধর্মতাত রোধ করিবার জন্ত এক সময়ে এই নগরে হিন্দ্ধর্মের একটা প্রবল কেন্দ্র স্থাপিত হইয়াছিল। তদনস্তর গজনীরাজ্বংশ এখানে রাজধানী স্থাপন করিলে, ধীরে ধীরে মুসলমানক্সা উপনিবেশ স্থাপন করিতে আরম্ভ করে। অতঃপর মোক্সামারিত্বন গ্রাক্তিলেন বিজ্কালের জন্ত এখানে রাজপাট স্থাপন করিয়াছিলেন।

মহারাজ রণজিৎ সিংহের অভ্যাদরে এই স্থান উন্নতির উচ্চ-তর সোপানে আরোহণ করিতে আরম্ভ করে এবং ক্রেমে উহা পঞ্চনদ রাজ্যের রাজধানীরূপে পরিগণিত হয়। বর্ত্তমান সময়ে উহা ইংরাজাধিকৃত একটা স্প্রিকৃতি প্রদেশের বিচারসদর্রূপে *প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে।

মাকিদনপতি আলেকসান্দার যে সমরে ভারত আক্রিমান করেন, সেই সমরে লাহোর জনপদের প্রসিদ্ধির বিশেষ কোরু পরিচর পাওরা যার না। খুইীর ৭ম শতাব্দে বখন চীন-পরিবাজক বৌদ্ধতীর্থ পরিদর্শনে ভারতবর্যে আগমন করেন, তখন জিনি এই স্থান অতিক্রম করিরা জালদ্ধরে উপস্থিত হইরাছিলেন। তথ-কালে লাহোর নগর আন্ধাধর্মের কেব্রস্থান ছিল। উক্ত শতাব্দের শেষভাগে যখন মুসলমানগণ সর্বপ্রথম ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন, তখন লাহোর নগরে আক্রমীর রাজবংশের এক্রম রাজা

রাজ্য করিভেন। সেই সময় হইতে প্রায় ভিন শভাব্দ কাল এধানকার হিন্দুরাজগণ মুসলমান আক্রমণ হইতে পঞ্নদ আলেণ রকা করিরা আদিতেছিলেন। বৃষ্টীর ১০ম শভাকের শেবভাগে গজনীপতি হুলতান সবজ্ঞগীন প্রবল বছার ভার খীর বিপুল भूगनमानवाहिनी गरेबा हिन्दुवानविकात अध्यत्र हन। गारहाबताक ক্ষমপান মুসলমানসেনার হতে পরাজিত হইরা হতাশহদরে অমি-কুঙে প্রাণ বিসর্জন করেন। ইহার কিছুকাল পরে গজনীরাজ হুৰতান মান্ধ ভারতৰ্গনে আসিয়া পেশাবর সন্নিকটে জয়-পালের পুত্র জনদ্বপালকে পরাস্ত করিয়া সদলে জগ্রসর হন এবং পঞ্চনদের সমীপত্ব জ্বজান্ত প্রদেশ জব্ব ও পুঠন করিয়া বছ ধনরত্ব শক্ষপূর্কক স্বরাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হন। অনদ্রপাদকে স্বয় করিবার অয়োদশবর্ব পরে ভিনি পুনরায় ভারতে আসিয়া লাছোর অধিকার করেন। তদবধি ঐ স্থান কোন না কোন মুসলমান-রাজবংশেরই অধিকারে থাকে। শিপজাতির অভ্যূদয়ে এথানকার মুসলমান-রাজবংশ হীন প্রভ হয় এবং শিথসর্দারগণ এই স্থানে আধিপত্য বিস্তার করিয়া ক্রমাররে রাজাশাসন করিতে থাকেন। পঞ্জাব-दकनेती महाबाक त्रशंकिए जिल्हा जमक नारहात जाकथानी निथ-্রগীরবের পরাকাষ্টা প্রদর্শনু করিয়াছিল।

স্বাতান মাজুদের অধন্তন আটজন গজনীরাজের রাজত্বলোল লাহোরনগর মৃস্বামান রাজ-প্রতিনিধির ছারা শাসিত হইরাছিল। ১১০২ পুঠালে সেলজুক্-(তাতার) গণ গজনীর স্বাতানকৈ পরাজয় করিলা তাঁহার সিংহাসন অধিকার করিলে, তিনি ভারতে প্লাইয়া আইসেন। তদবিধ মহম্মদ ঘোরীর ভারতবিজয় পর্যান্ত লাহোর নগর উক্ত রাজবংশের এবং ভারতীর মুসলমান-সাম্রাজ্যের রাজধানীরূপে পরিগণিত হইতে থাকে। মহম্মদ ঘোরী ১১৯০ পুঠালে দিলী অধিকারপূর্ক্ষক তথার রাজপাট ও রাজধানী হানান্তরিত করেন। ধিল্লী ও তুগলকবংশীর পাঠান রাজগণের রাজস্বলাল লাহোর নগরের উল্লেখবোগ্য কোন পরিবর্তন শাধিত হর নাই।

কুত্র-१ খুটালে মোগলী সর্দার তৈম্ব ভারত আক্রমণ করেন।
কুঁহার একজন সেনাপতি অরং এই নগর পূঠন করেন।
তৎকালে লাহোর সম্পূর্ণরূপে শ্রীহীন হইরা গড়িরাছিল। ১৪৩৬
কুটালে বহুলোল লোলী ভারত-সাত্রাজ্যের জ্বীবর হইরা লাহোর
আক্রমণ ও অধিকার করেন। তাঁহার পৌত্র স্থলভান ইত্রাহিম
লোলীর রাজ্যকালে এখানকার আক্রান পাসনকর্তা রাজ্যেহাঁহী
হেরা মোগল-সত্রাট্ বাবর পাহকে ভারতাক্রমণে আমন্ত্রণ করিলে,
কাবর ১৫২৪ খুটাকে লাহোরপ্রাক্তে আসিরা উপনীত হন।
লাহোরেক্ত নিকটে ইত্রাহিনের সেনাগলের সহিত বাবরের বৃদ্ধ

হর। বাণর ইত্রাহিমকে পরাস্ত করিরা লাহোরদগর লুঠন করিরাহিলেন।

১৫২৬ খৃ টাব্দে বাবর পুনরার ভারত আক্রমণ করেন। পানিপথের প্রসিদ্ধ বুদ্ধে পাঠানরালকে পরাস্ত করিয়া তিনি দিরী অধিকারপূর্বক ভারতে মোগল-দান্তাক্তর প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। ভারত সামাজ্যে এই রাজবংশের প্রভাব স্থপ্রতিষ্ঠিত হইবার সক্ষেত্র লাহোর নগরের শ্রীরৃদ্ধি সাধিত হর। মোগলসমাট্ গণের রাজপ্রাসাদ এবং রাজপুলবগণের নানা শিরসম্বিত অটালিকা ও স্যাধিমন্দির প্রভৃতি অভ্যাপি মোগলকীর্ভির গৌরব জ্ঞাপন করিতেছে। [লাহোর নগর দেখ।]

১৭০৮ খৃষ্টাব্দে পারক্ষপতি নাদির শাহ অপ্রতিহত গতিতে এই জনপদের মধ্য দিরা ভারতে আগমনপূর্বক মোগলরাজশক্তিকে পদদলিত করিরাছিলেন। তাঁহার অকলাৎ আক্রমণ ও বিজয়-লাভ সন্দর্শন করিয়া বলবীর্যাসম্পন্ন শিখলাতি স্থাপনাদের জ্বারে অভাখানের এক অভিনব আশা সঞ্চারিত করিতে লাগিল। 🖦 इन नानरकत्र धर्ममञ भूर्य्सेट छाहारतत्र हानत्र नृष्मृन हहेग्रा সমগ্র পঞ্চাবে ধীরে ধীরে একটা জাতীয় শক্তি বিস্তার করিয়া-ছিল। শিধগণ সেই ধর্মজের অত্বলে ক্রমণঃ একভাবদ ও বলবপ্ত হইয়া বৈদেশিকের পদাখাত অসম্ভ জ্ঞান করেন এবং সাগ্রহে সকলে বৈদেশিক রাজার অধীনতাপাশ উচ্ছেদের প্রয়াস তাঁহারা প্রথমে দক্ষর ভার দলবন্ধ হইরা ইতন্তত: দুর্গন দারা ধনরত্ব সঞ্চয়পূর্বকে পঞ্চাবের এক একটা প্রদেশে সন্দাররূপে শাসন বিস্তার করেন। পরে তাঁহারা পরস্পরে সঝি-লিত হইয়া চুই বা ভিনটী মিশ্লে এক একটী শক্তিপুঞ্জ সংগঠন-পূর্বক প্রবল শক্রর আক্রমণ হইতে খদেশ রক্ষা করিতে অগ্রসর হইরাছিলেন। [পঞ্জাব ও শিখ দেখ।]

১৭৪৮ খ্টাবে হ্রাণী সন্ধার আন্ধণাই আরেলালী লাহোর আক্রমণ করেন। এই সমরে মুসলমান শত্রুগাণের উপযুস্পরি আক্রমণ ও লুঠনে লাহোরনগর ও তাহার চতুশার্থবর্তী হান উৎসর যার এবং জনশৃত্ত হইরা পড়ে; শিখগণ এই সমরে বথেই বীরত্ব প্রদর্শন করিরাছিলেন। ১৭৬৭ খ্টাবে আন্ধন লাহ শেববার ভারত পুঠন ও বিজয় করিরা খনেশে প্রত্যাগমন করেন। ভাহার পর প্রার ৩০ বংসর কাল লাহোর নগরে আর কোনন্ধশ জত্যাচার ও জবিচার ঘটে নাই এবং উভত শিখসভ্রানার এই সমরে কোনরূপ বৃত্তবিপ্রহে ক্লিট্ট না ইইরা বরং ক্রমণঃ বলপুট ইইভেছিল। সমগ্র লাহোর জেলার তৎকালে ভলী বিশ্লের ভিন জন সন্ধার আগন আগন প্রভাব বিশ্বার্থ করিয়াছিলেন।

স্থান্ত প্রীম্মে শিশস্থার রশবিৎসিংহ আক্সাস-আক্রমণকারী ক্ষাস পাহের নিকট হইতে পাহের সম্পৃত্তি লাভ করিলা

খীর বাজ কর প্রতিষ্ঠার সভার করেন । এককে জিনি খীর কুছি ও জুজবলে সমগ্র পঞাব প্রবেশের আমীবরপাদে উরীভ কইরা "পলাব কেশরী নহারাজ রপজিও সিংব" বসিরা বিলোবিত ইইরাছিলেন জাঁবার বিপুল উভবে জ বীরজপ্রতিজ্ঞার অর্জিত এই পঞ্ননন্দ্রাজ্ঞার তবংশধরগণের পাবজ্ঞাভিত্র জভাবে এবং গৃহবিপ্পবে অচিরে জানত প্রাথ হল। তবংশধরগণের শাবজাভিত্র জাহাবের বুটাশ শাসন্ধিকার জারত কইল। বিশ্বজাবিদ্যার ভারত কইল। বিশ্বজাবিদ্যার ভারত কইল।

পঞ্জাৰ-অবেশ-শাসমক্ষ্মে ১৮৪৬ খৃষ্টাম্বের ডিসেম্বর মাসে
ইংরাক্ষাক্ষ লাহোর মুগরে প্রতিনিধিসভার (Conneil of
Regency) প্রতিষ্ঠা করেন এবং ইংরেল রেসিডেন্টই প্রক্নতপ্রক্ষে ভৎকালে লাহোরের প্রধান শাসনকর্তা হইয়াছিলেন।

উল্লিয় অনভিমতে কোন শিখসন্ধারই রাজ্ঞাশাসনস্ক্রোস্ত কোন
কার্যাই সম্পাদন করিতে পারিতেন না। ১৮৪৯ খৃষ্টাম্বের ২৯এ
মার্চ বিতীর শিখ্যুদ্ধের অবসান হয়। যুবক মহারাক্ষ দলীপ
সিংহ ইংরাক্করে লাহোর রাজ্যের শাসনভার সমর্পন করিয়া
অবং রাজ্যপদ ত্যাগ করেন। তদববি এই জেলার শাসনকার্যা
ইংরাজের শাসনপ্রশালীতে পরিচালিত হইতেছে।

[अक्रांतिरह, नदानहान तिरह ७ वनीय तिरह (मर्थ ।] ১৮৫९ ष्डारम निभारी विद्याद्य नमञ्ज अधानकात मिळान्-মীর সেনাবাসের দেশীয় সেনাদল বিদ্রোহী হইয়া লাহোর চুর্গ আক্রমণের ষ্ড্যন্ত করে। সৌভাগ্যক্রমে তাহাদের গুপ্তকল্পনা व्योग गर्दार्भ के कामिएक भारतम । देश्ताकरम्माभिक छथाकात्र ইংরাজ-কামানবাহী ও পদাতিক সেনাদলের সাহায়ে সেই বিদ্রোহী দেনাদলকে বশীভূত করিয়া তাহাদের নিকট হটতে অন্ত শন্ত কাড়িয়া শম। তাহাতে তাহাদের পোবিত আশা বার্থ হইলেও লাহোর রাজ্যের বিদ্রোহ্বন্ধি উপশমিত হর নাই। দীর্ঘকাল-बाभी मिलारी-विद्यारस्त ममन् ज्याकान नियंग्यक मरशा मरशा ইংরাজরাজকে দশঙ্কিত করিরা তুলিয়াছিল। উক্ত বর্বের জুলাই मार्ग मिकान-मीत्रक २७ मःशाक देवनीय श्रवाणिक वन विकाशी हरेंबा क्यक कर जिनाना बकरक निरुष्ठ करत यादः वाष्ट्रा मधुनिष्ठ ধুলিরাশির মধ্য দিরা গোপনে পলাইরা যার। অযুক্তস্রের एजपूरी क्रियमत मिः कुभाव-भतिहानिक धक्वन हैरतासराना हेबाव्छी नगीलाउँ छाहारवब मधुशीन हरेबा यूद करत । यह बुरु तिनीय भवां जिक्तान मन्पूर्वकरम विभवां क स्व । जवनखत विद्वी-নগরের অধঃপতন পর্যন্ত ইংরাজরাজ লাহোর রক্ষার বেশ ত্তৰন্দোৰত ক্ষিত্ৰাছিলেন। দিলী বাৰধানী ইংবাৰের পদানত হইল দেখিয়া এখানকার বিজ্ঞাহী বল ইংবালেয় বলবীয়া ও বীবৰ দেখিয়া ভঞ্জিত ও আসমুক্ত হইয়া পড়ে ৷ ভছৰ্ত্তি এখানে আর কোনরপ বিপদের সূচনা হয় নাই।

লাহোর নগন্ধ ও মিঞান্দীর-বোলাবাজার, ক্ষর, ছুলিরন পার্র, জ্ঞাকর্ণ, রাজা জল ও প্রকাশহ নগর এখানকার অর্থস্ট বাণিলাহান। খুদিয়ান্ ও পরপুরে মিউনিলিসালিটা থাকিলেও লোকসংখ্যা সর্বাপেকা অর। প্রয়েন্ট বাহারো এবং দেশীর বোকের যত্ত্বে প্রতিষ্ঠিত বিভাগর বাতীত এই সকল নগরে আমেরিকান বাধিত মিসন, চার্চ মিসনরি সোনাইটা ও জেনানা মিশন শিকা-বিতার ও খুইপর্মগ্রাহারকরে বিভাগর প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। ১৮৬৩ খুঠাকে লওন রিলিজস্ টুক্ট সোনাইটার সহবোগে পঞ্চাব রিলিজস্ টুক্ট সোনাইটার এখানকার আর্ণাক্ষানী বালারে একটা পুতকাগার হাপন করিয়াছে।

ইংরাজরাত্ব পঞ্চাব বিভাগে স্থাশিকা ও স্থাশিক বিভারে প্রবাসী হইরা স্থানে স্থানে বথারীতি রাজকর্মচারী নিয়োগ করিয়াছেন। শিকাবিস্তারপ্রসঙ্গে তাঁহারা পঞ্জাব ইউনিভার্সি নি প্রতিষ্ঠা করেন। गारहात नगरतत अतिकारीम करमञ्ज. গ্ৰমেণ্ট কলেজ, ট্ৰেনিং কলেজ, নৰ্মাল বিভালয় সমূহ, ন্ধুল অব্-আর্ট (চিত্র বিত্যালয়), ল' মুদ্র, জেমানা-মিশনের व्यशैत ७ वारमित्रका अमृतिरहेत्रिमान मिर्मानम व्यशैतन পরিচালিত বিভালয়সমূহ, চার্চমিসনারি সোসাটীর কর্তৃতাধীনে রক্ষিত দেওঁম্বনস ডিভিনিটি মূল এবং রুরোপীর দেশীয় বালকবালিকাদিগের শিক্ষার্থে নানা বিভালর এই ইউনিভার্মিটীর নিয়মাধীনে চলিতেছে। কম্ববিভাগে ১৮৭৪ খ্র অ: একটা শ্রমজীবী বিল্লালয় (School of Industry) স্থাপিত হয়। উহাতে এখনও কাৰ্পেট ও বস্ত্ৰবয়ন, সলমা চুমকীর কাল্প, দক্ষির কাৰ, চৰ্ম ও ধাতুর শিরচাতুর্য প্রভৃতি শিক্ষা ছেওয়া হয় ঃ এডত্তির মেডিকাল কলেজ, মেওহাস্পাতাল, ভেটারিনারি কুল (পণ্ডচিকিৎদার বিভালর) ও লুনাটিক এদাইলাম (পার্ট্টলা-গারহ) এখানকার রোগবিজ্ঞানবিক্ষার বিশেব উপযোগী হইয়াছে।

এই জেলার অধিবাসীদিগের মধ্যে জাট জাতির সংখ্যাই অধিক। উহারা প্রধানতঃ কবিজীবী। উহারের প্রার্থ নর আনা ভাগ অর্থাৎ ৮০ হাজার লোক পূর্বাপুরুষহিগের আচরিত হিন্দু বা শিখধর্ম পালন করিছেছে এবং অবশিষ্টাংশ ইস্লায়ুধর্মের আত্রর গ্রহণ করিরাছে। অপরাপত্ত অধিবাসিগণ হিন্দু ইইনেও মুস্বমানজ্ঞান্তির সাহচ্চা হেছু অনেকাংশে আপনাদের বর্ধ-কর্মে মুস্বমানজ্ঞান্তির সাহচ্চা হেছু অনেকাংশে আপনাদের বর্ধ-কর্মে মুস্বমানজ্ঞান্তির শাখা ইস্লামধর্মবীক্ষিতের বংশবর বলিরা পরিচিত হইরা বহিরাছে। এই শেবোক প্রেণীর মধ্যে হহরা, অরাইন, রাজপ্ত, ভুলাহা, অরোরা, করি, কুষার, তর্বান, মন্তি, তেলী, বিন্বার, রাজপ্ত, মোটা, কুলো, বোবী, নাই, লোহার, বিরাসী, স্বানা, খহরন, নোগার, ভজর ও বোরারা লাভিই

উল্লেখনোগ্য। ইহাদের মধ্যে বিন্ধু ও নুনন্দান শ্রেণী বেখিও পাওরা বার। প্রকৃত মুন্ননান্দদেশর মধ্যে শেষ, খোলা, ভাষীদেরর নৈরদ, পাঠান, বল্টী ও মোগদই প্রধান। ইহারা সকলে নিরা, গুরি বা গুহাবী বভাবদকী।

ক সকল অধিবানীর মধ্যে নির্কাশিকাংশই স্কৃষিজীবী। কতকাংশ শিকা ও সভ্যতাগুলে রাজকার্যে অথবা অব্যাপনা কার্যে নির্কাশাহে । নিরক্তর প্রাল্প গৃহকর্মে নিরন্ত থাকির। অববা পরের হাসক অবশ্বন করিরা জীবন অভিবাহিত করে। অপেকান্তত বনী লোকে ব্যবসা বাণিক্য অবশ্বন করিরা কেহ বা সউনিরি করিয়া দিনপাত করিতেতে।

এপানে রবি 'ও ধরিফ হুই প্রকার শহুই উৎপন্ন হর। তর্মধ্য গম, যব, ধান্ত, জোয়ার, বঞ্রা, মন্ধা, ছোলা এবং তৈলশন্ত ও অস্তান্ত শস্ত প্রধান। তুলা, ভামাক ও শণ এবানে পর্যাপ্ত উৎপন্ন হয়। এই সকল শশু নৌকাপৰে, রেলপথে এবং যানা-রোচণে নানা দুরবর্তী ছালে রপ্তানী হইরা থাকে। সিদ্ধ-পঞ্লাব-দিল্লী এবং ইণ্ডাস্ ভেলী রেলপথ দিল্লা এই স্বেশার প্ণাদ্রব্য রার্বিন্দ হইরা করাচী বন্দরে সমানীত হইরা থাকে। অপর দিকে নদান পঞ্জাব ষ্টেট্ রেলপথ পেশবার ও উত্তর পশ্চিম সীমান্তে এখানকার মাল পত্র লইরা ঘাই-তেছে। প্রাণ্ডটাক্ষরোড নামক পথ ইন্নাবতী ও শতক্র নদীর ্দেত অতিক্রম করিয়া লাহোর নগর হইতে উত্তরাভিমুখে পেশ্বার প্রান্ত গিরাছে। ঐ পথে এবং জেলার অপরাপর নগর-সংযুক্ত পৰে এবানকার পণ্যন্তব্য গোলকটে নিরন্তর যাতায়াত कतिराज्य । समिटे ७ धारमामनीय करनव मरना अधारन आय, क्मनात्नव, जूर्यकन, कून, नकांठ, धत्रवृत्ना, त्रवात्रा, ज्ञानात्रम, ক্লাসা, দাড়িম, সরবতী মেবু ও ক্মণী প্রচুর পাওরা যার।

২ উক্ত জেলার একটা তহসীল। বড়িলোগাবের উক্তরপূর্ব-বিভাগ লইয়া গঠিত। ভূপরিমাণ ৭৪॰ বর্গমাইল। অক্ষা ৩১°১৩ ৩০ হইতে ৩১°৪৪ উ: এবং জাবি ৭৪°২'৪৪ হইতে ৭৪°৪২' প্:। এখানে ৭টা খানা, ৪৯০ রেগুলার প্রিশ ও ৩২২ জন-প্রাঞ্জ সৌধার আছে।

লাহোরনগর, পঞ্চাব প্রবেশের রাজধানী ও নাবোর বিভাগের হিলেও এবং জাবি° ৭৪°২১´ পৃঃ) অর্ক্রিক। প্রাচীন লাবোরনগরের করেনাবলেবের উপর বর্ত্তবাদ নগর হাগিত হইলেও এখন ভাহার সক্লাক প্রাচীন করিতে পারে নাই। অভাগি ইতন্তভঃ বিভিন্ত নানা প্রাচীন নিম্পন্ন অতীত শ্রন্তির ক্রিডিয়ালা সাধারণের নবনগরে সম্বিভ রবিরাহে।

नार्शक मनरत्र र शामिन रेकिन्ड क वात्रक्ष नगरक वानिक

কোননাশ পৰিশেব প্ৰমাণ পাওৱা ৰাখ্ন নাই। বানীর হিন্দুসংশর কিংববতী অনুসরণ করিলে জানা বার যে, রামারণোক্ত অবোবার্ধিপতি প্রীরান্চন্দ্রের রাজভকালে লাহোর জনপর ক্তেকালে প্রানিজ্ঞান করিয়াছিল। তাহার ছই পুত্র গব ও কুণ শ্বন্ধ নামার্কারে লবাবাড় ও কুণর নগর ছাপন করিয়া তদেশে আসনাক্ষেপাসনবিভার করিয়াছিলেন। উহাই পরে লাহোর ও কুনুর লামে
খ্যাত হয়। কোন কোন প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থে এই খান লবারণ (লবারণ্য) নামে উরিধিত হইরাছে।

উপরোক্ত কিংবদর্ভী ব্যতীত লাহোর নগর প্রতিষ্ঠার আর **टकानक्रण धामान नाउन्ना यात्र मा। ज्यारमक्रमान्यारवर मममामग्रिक** विजिहानिकान धेर सम्भारतत कानक्रभ উল्लেখ कतिया गाम भाहे. ष्यथेया वाह्मिक-यवनवः नीव (Græco Bactrian) ब्राह्मशर्देशव প্রচলিত কোন প্রকার মূলা এখানকার থকে জুপ মধ্য হইতে আজিও বহিৰ্গত হয় নাই। এই সকল লক্ষ্য ক্রিলে সহজেই অফু-मिठ रह त्य, ভाরতেতিহাদের প্রাণমিক অবস্থার লাহোর নগরের কোনরূপ স্থানির পরিচয় ভারতবাদী অবগত ছিলেন না। খুটীর ৭ম শতান্দের প্রারম্ভে বৌধ-ধর্ম্মতত্তামুসদিৎস্ত চীম-পরি-ব্রাজক হিউএন্সিরাং স্বীয় ভ্রমণর্ডান্তে এই নগরের সমৃদ্ধির উল্লেখ করিয়া গিয়াছেল। তাহাতে ৰোধ হয় যে, খুটার ১ম হইতে ৭ম শতাব্দের মধ্যে লাহোর নগর শ্রীসমৃদ্ধিপূর্ণ থাকিয়া সাধারণের নয়ন আরুষ্ঠ করিয়াছিল। দেশীয় হিন্দুরাঞ্গণ এবং প্রাচীন মুসলমান-রাজগণের অধিকারকালে লাহোর নগরের প্রাথমিক অবস্থা কিরূপ ছিল, তাহা লাহোর জেলার ইতিহাসে ক্তকাংশে বিবৃত হইয়াছে। ष्मासभीत बांबवरनीय এक सन চৌহানরাজপুত এখানে রাজ্য করিতেন। তথংশীয় জরগাল ও অনক্পালের শাসনকাল পর্যন্ত এই স্থানে হিন্দুরাক্সপ্রভাব প্রতিষ্ঠিত ছিল। ভদনস্তর যথাক্রমে গলনী 🔉 মোরীবংনায় মুদ্রমান স্থলতানগণ পঞ্চনত বিজয়ের পর এখানে রাজধানী স্থাপন করেন। ভাঁহারা যে সক্ষ ক্রৌধমালার এই নগর বিভূবিত করিয়াছিলেন, তাহাদ অধিকাংশ একাণে ধ্বস্তাব্দার পত্তিত।

মোগল-সরাট্গণের রাজ্যকালে লাহোর নগরের বীমা পরিবৃদ্ধিত এবং নানা কর্ত্ত অট্টালিকার ইহার শ্রীসম্পানিত হইরাছিল, মোগলরাজ হুমায়ুন, অক্বর শাহ, জাহাজীর, পাহ জহান ও অরল্পের এবানকার স্থাপতা শিরের প্রাক্তান্তা সম্পানন করিরাছিলেন। তাহাদের অধিকার্কাণে লাহোর সগরের ইতিহানে প্রকৃতসক্ষে স্পর্ণ উপস্থিত ইইরাছিল।

সন্নাট্ অক্ষর এথানন্ধার জর্মের আকার পরিবঞ্জিত করিয়া ভাষার সংকার সাধন করেন। জিনি এই নগুরের চতুর্দ্ধিকে বে প্রাচীর নির্মাণ করাইয়াছিলেন, ভাছার কভকাংশ জভাপি বিভ্রমান আছে। মহারাজ রণজিংনিংছ দেই প্রাচীরই বর্তমান প্রাচীরের মধ্যে গাঁথাইরা লম। হিন্দু ও মুসলমান-শিরের অসংখ্য নির্দশন অকবর পাহের প্রতিষ্ঠিত লাহোর হুর্গে বর্তমান দেখা বার। বর্তমান সমরে হুর্গের স্থানবিশেবে পরিবর্তন করিতে পিরা ভাছার কভকাংশ বিলোপ প্রাথ ইইরাছে। মহাত্মা অকবর শাহের রাজ্যকালে লাহোর নগরে জনতার বৃদ্ধিন সহকারে নগরের পরিসরও বর্দ্ধিত হর। বেখানে বহুসংখ্যক লোকের বসতি হইরাছিল, ভাছাই বর্তমান লাহোর নগর বলিরা খ্যাত রহিরাছে। প্রাচীন নগর-প্রাচীরের বহির্ভাগত্ব বর্তমান জনশৃত্ব প্রদাশে প্রকণে স্বৃত্বং বাজার এবং বহুলোকের বসতি ভাইরা একটা উপকর্ষ গঠিত হইতেছে।

মোগল-সমাট্ জাহালীর সময় সময় এখানে আসিয়া বাস

ছরিতেন। তথন লাহোর নগর সমৃদ্ধিতে ভূষিত ছিল।
এখানে থাকিয়া তাঁহার পুত্র খুক্র পিতার বিক্লকে অসি ধারণ

করেন। জাহালীরের রাজত্ব কালে "আদিগ্রছ"-সভলরিতা

শিশগুরু অর্জুনমল এখানকার কারাবাসে থাকিয়া জীবন বিসর্জন

করেন। মোগলরাজপ্রাসাদ ও রণজিৎ সিংহের ভজনমন্দিরের

মধাত্বলে ধর্মার্থ জীবনদানকারী ঐ পিখগুরুর সমাধিমন্দির

বিভ্যান রহিয়াছে। বাদশাহ জাহালীর এখানকার স্থাসিছ

থাব্গা (বিশ্রামনিকেতন), মোতি মসজিদ ও আর্ণাকালীর

সমাধিমন্দির নির্দ্ধাণ করান। জাহালীরের প্রাসাদ ইরাবতীতীরে অবভিত।

শাহতা পদ্ধীতে নির্মিত জাহালীরের ভজনাগার লাহোরের একটা প্রধান ভ্বণ। মুসলমান-রাজগণের ও শিথদিগের উপদ্রেবে ঐ স্থাসিক সমাধিভবন একণে প্রীন্তর্ভ হইরা পড়িরাছে। উক্ত মন্দিরের সমাধিভবের উপরিদেশে মর্ম্মরপ্রতারনির্মিত বে স্থাসিক গব্দ ছিল, বাদশাহ অরজন্মেব তাহা ভালিরা ছানা-ভরে লইয়া যান। জাহালীরের প্রিয়তমা পদ্ধী ন্রজহান ও শ্রালক জাসক খাঁর সমাধিমন্দিরের মর্ম্মর-প্রান্তরসমূহ এবং নানা বর্ণের মীনার শিরকাকসমূহ শিখদিগের হারা গৃত্তিত হওরার উহা স্ক্তেভাবে প্রীশীন হইরা য়হিয়াছে।

উপরোক্ত জাহালীর-প্রাসাবের পার্যবেশ তৎপুত্র পাহস্কহান বাগবাহ অপেকাল্পত কুলাকার আর একটা প্রাসাদ নির্মাণ করাইরাছিলেন। এখন ঐ প্রাসাবের শিরণোভা বিভয়ান আছে। উহার মর্মরপ্রতারগুলির উপর এক প্রকার কঠিন চূণকাম আচ্চাদিত থাকার শিখগণ এবে পভিত হইরা সেই মর্মর-গুলি উঠাইরা লইডে পারে নাই। উক্ত সন্তাই, "ধাব্গা" গ্রাসাবের বামপার্থে বারিকের ভার গুলীর্থ অট্টালিকাপ্রেন্ট নির্দাণ করাইরাছিলেন। উহার মধ্যভাগে 'সমান বৃক্ক' নামে একটা অইকোণ হর্গ আছে। তাহার মধ্যপ্রালণের বিছ্ত চাদনী নানা মূল্যবান্ প্রভাবে খোদিত পুস্মালাদি নির্চাত্ত্যি পূর্ণ। উহা নর লক্ষ টাকা বারে নির্দ্ধিত হইরাছিল বলিরা সাধারণে "নোলাখ্" নামে প্রাসিক। উহারই পার্বে "শিল্ মহল" নামক প্রাসাদাংশ। মহারাজ রণজিৎসিংহ ঐ স্থানে বসিরা বৈদেশিক ও সামস্তরাজগণকে জভ্যর্থনা অথবা তাঁহাদের প্রেরিত দুতদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিতেন। ঐ গৃহে বসিরাই তাঁহার প্র দলীশ সিংহ ইংরাজ-গ্রমেন্টের হত্তে পঞ্জাবের রাজ্যভার সমর্পণ করিয়াছেন। এই কারণে উহা ইংরাজের বিশেষ আদরের জিনিব হইরাছে।

অরঙ্গলেবর চিরপ্রসিদ্ধ অত্যাচারে উৎকৃষ্টিত হইরা লাহোর-বাদী ক্রমশঃ নগর ছাড়িরা পলারন করে। তাঁহার রাজ্যাধিকারের পূর্বে জাহানাবাদ (বর্তমান দিল্লী) নগর স্থাপনকালেও কতক (রাজকর্মচারী ও রাজান্তগৃহীত ব্যক্তি) লাহোর নগর শৃত্ত করিয়া তথার ঘাইয়া বাস করে। জাহানাবাদ-প্রতিষ্ঠার পর মোগলসম্রাট্ গণ গ্রায়ই লাহোর-রাজধানীতে পদার্পণ করিতেন না, স্থতরাং সম্রাটের স্থানত্যাগে এই নগরের ভাবী উন্নতির আশা ক্ম জানিয়া ধীরে ধীরে অনেক নগরবাদীই লাহোর ভ্যাগ করিতে বাধ্য হইরাছিলেন।

১৮৪৬ খুটান্দে লাহোর নগরে ইংরাজরাজের Council of Regency সভা প্রতিষ্ঠিত হর এবং ১৮৪৯ খুটান্দে মহারাজ দলীপ সিংহ ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর হল্তে পঞ্জাবের শাসনভার অর্পণ করিয়া রাজসিংহাসন ত্যাগ করেন। তদবধি লাহোর ইংরাজাধিকত পঞ্জাব-প্রদেশের রাজধানীরূপে গণ্য হইরা আসিতিছে। পক্ষান্তরে ইংরাজরাজপুরুষগণও এখানকার শ্রীবৃদ্ধিন্যাধনে বছুশীল হইরা জন্মশঃ নগরভাগের উর্লিড বিধান ক্রিতেছেন।

১৮৪৯ খুটাব্দে ইংরাজাধিকারে আসিবার পরও এই নগরের চতুপার্থবর্তী ছান ভর অট্টালিকার তুপরালিতে পরিবাাপ্ত ছিল। পূর্বতন র্রোপীরদিগের বাসগৃহ নগরের বন্ধিপত্ব নিরভূমে প্রাচীন গোরাবাজারের চারিদিকে খ্যাপ্ত ছিল। পরে ক্রমশঃ উহা পূর্বক্র বিভূত হর এবং বে ছান পূর্বে ধ্বতগ্রাহ জট্টালিকার ও জ্বনুলে সমাজাহিত ছিল, ক্রমে সেই সকল ছাম নামাবিব সৌধনালার সমাজ্ব কইরা পড়ে। ভদনত্তর প্রতি বংসরে ন্তন জট্টালিকারি বিনির্বিত ক্রমা নগরের ন্তন জ্বনিকারে ন্তন জ্বনিকারি বিনির্বিত ক্রমা নগরের ন্তন

বর্তমান লাহোর নগর প্রার ৬৪০ একর কমি কইবা ব্যাস্ত আছে। উহা পূর্বে প্রার ৩০ কিট্ উচ্চ ইউক্যাচীরে পরি- বেটিত এবং তাহার চতুস্পার্থে পরিধা ও নগররক্ষণোপবোণী ছগ বুকুকাদিও বিনির্দ্ধিত হইরাছিল। পরে ঐ পরিধা ভরাট করিরা দেওরা হর এবং পূর্বভন ু০ ফিট্ উচ্চ প্রাচীর ভয় হওরার সংস্কারকালে উহার চতুর্দিকে ১৬ ফিট্ উচ্চ প্রাচীর এথিত হইরাছে। প্রাচীরের চতুস্পার্থিত পরিধার পরিবর্ধে এক্ষণে নানা জাতীয় বৃক্ষপূর্ণ উন্থানে পরিশোভিত হইরা নগরের চতুর্দিক্ বেষ্টন করিতেছে, কেবল মাত্র উত্তর্দিকের কতক স্থান থালি আছে।

ইরাবতী নদীর পশিমর সৈকতোপরি এই নগর স্থাপিত হইরাছে। নগরের বপ্রস্থানের বহির্ভাগে একটী পাকা রাজা নগরকে
বেষ্টন করিয়াছে। ঐ পথ দিয়া প্রাচীরগাত্রস্থ ১৩টী দারপথে
নগরে প্রবেশ করা যার। নগরের উত্তরপূর্ককোণে প্রাচীন
নদীখাত পর্যান্ত বাহোর ছুর্গ বিস্তৃত। ছুর্গের সমুধস্থ ময়দান
দক্ষিণ ও পূর্কদিকে বিস্তৃত বহিরাছে।

লাহাের নগরের রাতাগুলি সরু ও বক্রাকার হওরার এবং
তথাকার অটালিকাগুলি উরত মন্তকে ও শ্রেণীবদ্ধভাবে বিলম্বিত
থাকার নগরের কোনরূপ শোভা সম্পাদিত হর নাই। ঘেঁসা
ঘেসী বাড়ী থাকার রাতাগুলি স্বভাবতঃই দেখিতে কদর্য্য,
কিন্তু মোগলসমাট্যাণের রাজ্যকালে যে সকল অত্যুৎকৃষ্ট ও
শির্মনপুণ্যসম্বিত প্রবৃহৎ অটালিকা নির্মিত হইয়াছিল,
তাহা স্থানীর সাধারণ অটালিকাদির স্থাপত্যশিরের অভাব
ঘুচাইয়া চিত্তবিনাদনে সমর্থ হইয়াছে। মোগলকীর্তির মধ্যে
নগরের উত্তরপূর্ককোলে স্থাপিত 'মরলজেবের মস্জিদ ও
রণজিৎ সিংহের সমাধিমন্দির বিশেবরূপে উল্লেখযোগ্য। মস্জিদের খেত মর্ম্মর নির্মিত গুম্বেজ ও চূড়াক্তগুলী; রণজিতের
সমাধিমন্দিরের বারাপ্তা ও গোল ছাদ এবং অপব্যবহৃত ও
অপবিত্রীকৃত মোগলপ্রাসাদের সম্মুখদেশ ভারতীর স্থাপত্যশির্মেনান্দর্যের উৎকৃষ্ট নিদর্শন।

নগরপ্রাচীরের বহির্ভাগে লাহোরী খারের সমুথে একটা রাস্তা দক্ষিণাভিম্থে আসিরাছে। উহা আর্গাকালী বা সদরবাজার রাস্তা নামে থাত। ঐ পথ দেশীর নগরভাগ রুরোপীর নিবাসের ও আর্গাকালীর পূর্বতন সেন্তানিবাসের সহিত
সংযুক্ত। লাহোর নগরের রুরোপীর বিভাগে রাজকীর কার্যালরসমূহ, আদালত ও ষ্টেলনচার্চ্চ বিভ্যান আছে। আর্গাকালী
হইতে পূর্বাভিম্থে লরেক্স উন্তান ও গ্রমেণ্ট হাউদ্ পর্যায় প্রায়
ত মাইল বিকৃত হানে বুরোপীরগণের বে নৃতন বসতি হইরাছে,
তাহা ডোনাল্ডটাউন বাবে পরিচিত। হানীর ছোটলাট সরু
ডোনাল্ড মাক্লিওডের নামান্ত্রনারে ঐ নগরের নামকরণ হয়।

মণ (Mall) নামক প্রাণত রাজা এই রুরোণীর নগরজাগের
মধ্য দিরা আর্ণাকালী পর্যান্ত গিরাছে। এই রাজার উত্তরাংশে
রেলটেসন ও রেলওয়ে কর্মচারীদিগের বাসস্থান এবং উহার
দক্ষিণে মুজক নামক নগরোপকঠে রুরোপীরগণের বাসভবন
দৃষ্ট হয়।

লাহোর নগরে নিম্নোক্ত কয়টা রাজকীয় ও শিক্ষাবিভাগীয়
প্রধান অটালিকা দৃষ্ট হয়; তয়৻ধা পঞ্জাব-ইউনিভার্সিটা ও সেনেট
হল (দেশীয় রাজা ও নবাবর্জের চাঁদায় প্রতিষ্ঠিত), ওরিএন্টাল
কলেজ, লাহোর গবর্মেন্ট কলেজ, মেডিকাল ছুল, সেন্টালট্রেনিং কলেজ, ল'ছুল, ভেটারিনারী ছুল, লাহোর হাইছুল, মেও
হাসপাতাল, মিউজিয়য়, রবাট্স ইনিষ্টিটিউট্,লরেজ ও মন্টগোমরী
হল এবং এগ্রিহটিকালচারাল সোসাইটা গৃহ দেখিবার সামগ্রী।

এথানকার প্রস্তুত রেশমিবক্ত, শাল, সোণালী ও রূপালী সাঁচ্চা করি, ধাতব পাত্র, পাথরের ধেলানা ও শক্তাদির বিভ্ত কারবার আছে। রেলপথে করাচী বন্দরে আনীত হইরা আনেক মাল পত্র পোত যোগে বিদেশে রপ্তানী হইরা থাকে। কলিকাতা, অম্বালা, পেশবার, মূলতান ও দিল্লী প্রস্তুতি ভারতের প্রস্কেন্দর আবশ্রক মত তদ্দেশবাসিকর্তৃক প্রবাদি প্রেরিত হইতেছে। স্থানীর এবং র্রোপীর বণিক্সমিতির অর্থসমাগমের সচ্ছলতা নিবন্ধন এথানে বেলল ব্যাহ্ব, আগ্রা ব্যাহ্ব, সমলা ব্যাহ্ব ও এলায়েন্দ ব্যাহ্ব অব্ সিমলা প্রস্তুতি আনেকগুলি ব্যাহ্ব প্রতিষ্ঠিত আছে।

লাহোরিবন্দর, বোৰাই-প্রসিডেন্সীর সিদ্ধ প্রদেশের করাচীর অন্তর্গত একটা প্রাচীন ও প্রসিদ্ধ বন্দর। সিদ্ধ নদের পশ্চিমান্তি-মুথে প্রবাহিত বাবিয়ার নামক শাখার বামক্লে অবস্থিত। অক্ষাংহ°০২ উ: এবং জ্রাঘি° ৬৭°২৮ পু:। পিতি মোহানা হইতে ১০ ক্রোশ অদ্রে অবস্থিত। সমুদ্রের এই খাড়ির মুখে মুন্তিকা গড়ার থাতের গভীরতা ক্রমশঃ কমিয়া আসিতেছে। একণে পণ্যদ্রব্যবাহী ক্র্ম ক্র্ম পোত সকল সেই খাড়ি দিরা বন্দরে আসিতে পারে না। মর্ণটন বলেন, ১৬৯৯ খঃ অন্দে ইহা সিদ্ধ্র্পরদেশের একটা প্রসিদ্ধ বন্দর বিলিয়া পরিগণিত ছিল এবং ২০০টন বোঝাই এইরূপ পোতগুলি অনায়াসে এ বন্দরে প্রবেশ ক্রিয়া মাল পত্র লইরা যাইত। অইাদশ শতান্মের শেষভাগে এখানে ইংরাক্র বণিক্রিগের একটা ক্রমী প্রতিষ্ঠিত ছিল।

এই স্থানের প্রকৃত নাম লাড়ী-বন্দর, কারণ ইহা প্রাচীন লাট বা লাড়দেশের অবস্তৃ কি বলিরা ঐরপ নামকরণ হয়। পরে মুসলমান ঐতিহাসিকগণ উহাকে পঞ্জাবের নিক্টবর্তী জানিরা লাহোর নগরের নামাত্মসারে উহার লাহোরী বন্দর নাম দেন। ১০৩০ খুটাকে জাল্বিকণী এই নগরকে লহরাণী এবং ১৩০৩ খৃষ্টান্দে ইবন্ বতুতা লাছরি নামে উল্লেখ করিরা-ছেন। তারিব, ই-তাছিরি নামক ইতিহাসে লিখিত আছে, ১৫৬৫ খৃষ্টান্দে ফিরিলীগণ "লাছোরী বন্দর" আক্রমণ করে। ১৬১৩ খৃষ্টান্দে সেন্দাবারি, ১৬৬৫ খৃষ্টান্দে থেবেনে এবং ১৭২৭ খৃষ্টান্দে আলেক্সান্দার হামিন্টন এই নগরকে লোরে বন্দর ও লাভিবন্দর বলিরা উল্লেখ করিরাছেন। ইবন্ বতুতা বলেন, তিনি আমীর আলাউল্ মূল্কৈর নিকট গুনিরাছেন যে, ওৎকালে এই খানের বার্ষিক রাজস্ব ৬০ লক্ষ্ টাকা আদার ইইত।

লাফু (পুং) শহের গোত্রাপত্য।

লাহায়নি (পুং) ভূজ্ব গোরাপত্য। (শত রাণ ১৪। ছাও ১) লি (পুং) ১ লান্তি, ক্লান্তি। ২ ক্লন্তি, ধ্বংস। ও শেব। ্বঃসমতা। ৫ হতালখারভেদ।

লি, একজন চীন দার্শনিক। খৃষ্টপূর্ব ৫ম শতাব্দের শেবভাগে
কর্থাৎ কনকুচির প্রার শতাব্দ পরে বিশ্বমান ছিলেন। তিনি
ক্যানোরতিবিষয়ে যে মত বিস্তার করিরা যান, তাহাই পরে চীনসামাজ্যের বৌদ্ধধর্মবিভারের পরিপোষক ইইয়াছিল।

 ছ্মির প্রছঞাপক মানভেদ। ২৯০ গজ বা ইংরাজী মাইলের বঁটাংশ। চীনপরিব্রাজক হিউএন্সিয়াং এই দৈর্ঘ্যমানে ভারতীয় নগরাদির দুর্গ্ব জ্ঞাপন করিয়াছেন।

লি, প্লাবের কাঙ্যা জেলায় প্রবাহিত একটা নদী।[পিতি দেখ।]
লিও, পলাবপ্রদেশের বসহর রাজ্যের অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম।
ঝাবারের অন্তর্গত পিতি ও লিপক নদীর সক্ষমন্তলে পিতিরে
দক্ষিণকুলে একটা গণ্ড শৈলোপরি স্থাপিত। অক্ষা°৩১°৫৩
উ: এবং ক্রাঘি॰ ৭৮°৩৭ পৃ:। গ্রামের পূর্কাংলে শৈলশিখরোপরি
একটা ভাগ্রগের নিদর্শন আছে, সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ৯৩৬২ ফিট্
উচ্চ। এখানকার অধিবাসিগণ ভোটজাতীয় ও বৌদ্ধর্শাবলম্বী।
লিকুচ (রী) লক্যতে আম্বান্ধতে ইতি লক-বাহলকাৎ উচ্
প্রোদরানিদ্যাশিকং। ১ চুক্র। রোজনি৽) ২ ভহ। ভেহরা
কল। গুণ—পিত্রেয়বর্জক।

"পিক্সেরপ্রকোপীণি কর্কছুলিকুচান্তাপি।" (চরক ক্রন্থা" ২৭জ০) (পুং) লকুচ। (স্থান)

লিকুচি, একজন পণ্ডিও। ইনি শিবস্তৃতিপ্রণেতা নারায়ণ পণ্ডিতের পিডা।

लिका (जी) निशा। (ननतका°)

লিক্ষা (জী) দিল-গভৌ বাহণকাৎ শ, সচ কিং । (উণ্ ৩)৩৬)

> মৃকাও, চলিত লিকি। পথায়—লিকা, নীকা, দীকা,
দিকিকা। (শন্ধায়া)

"বৃহপাদাশ্চ স্ক্লাশ্চ মৃকা লিক্ষান্ড নামতঃ।" (বাভট নি॰ ১৪অ॰) ২ পরিমাণবিশেষ।

'ৰাণান্তরগতে ভানৌ যন্চাপুদ্ প্রতে রজ:।

্ৰৈডশত্ভিভবেলিকা নিক্ৰিষড়্ডিশ্চ সৰ্বপঃ ॥' (শব্দচ •)

ব্যার আল্লেক প্রাদিতে পতিত হইলে বে কুল কুল রজাকণা দেখিতে পাওয়া বার, তাহাকে অণু কহে, চারিটা অণুতে এক শিক্ষা এবং ৬ শিক্ষার এক সর্বপ হর।

লিফ্রিকা (খ্রী) লিকা। (শবর্ত্বা৽)

লিখ, গতি। ভাৃদি° পরদৈ° সক° সেট। এই ধাতুইদিং। লট্ লিঋতি। লুঙ্জলিঋীং।

লিখ, লেখন, অকরবিস্থাস। তুদাদি পরকৈ সক সেই।

নট্ লিখতি। নিট্ লিলেখ। লুট্ লেখিতা। লুট্ লেখিয়তি।

লুঙ্ অলেখীং, অলেথিষ্ঠাং অলেথিষ্:। সন্ লিলিথিষতি,

লিলেথিষতি। যঙ্ লেলিখ্যতে। নিচ্—লেথয়তি। লুঙ্
অলীলিখং। উদ্+লিখ=উল্লেখন, কর্ষণ। বি+লিখ=
বিলেখন, ভেদ।

লিখ (ক্রি) শিখতীতি শিখ (ইগুপধক্ষেতি। পা ৩। ১। ১৩৫) ইতি ক। লেখক।

লিখন (क्री) লিখ-লাট। ১ লেখন, লিপি। বিধিলিপি অথওনীয়, বিধাতা যাহা অদৃষ্টে লিখিয়াছেন, তাহা থওন করিবার কাহারও সাধ্য নাই।

"যন্ত যদ্লিখনং পূৰ্বাং যত্ৰ কালে নিদ্ধণিতম্। তদেব থণ্ডিতুং রাধে কম্যে নাহঞ্চ কো বিধিঃ ॥ বিধাতুশ্চ বিধাতাহং যেবাং যদ্লিখনং ক্লতম্। ব্ৰহ্মাদীনাঞ্চ কুডাণাং ন তৎ থণ্ডাং কদাচন ॥" (ব্ৰহ্মবৈবৰ্তপূণ্ড শ্ৰীক্ষক্ষম্মখণ ১৫ অণ্ড)

লিথা (দেশজ) লিখনকাৰ্যা। লিথাবৎ (হিন্দী) > হস্তলিপি। ২ লিখিত দলিলপত্ৰ। লিথিখিল্ল (পুং) মন্ত্ৰ।

লিখি, বোষাই প্রেসিডেনীর মহিকাছা এজেনীর অস্তর্ভুক্ত একটা কুল্র সামস্ত রাজ্য। এথানকার সন্দারগণ ঠাকুর উপাধিধারী মুক্বানা কোলীবংশোত্তব। ইহারা ইংরাজরাজ অথবা কোন দেশীর রাজ্যকে কর দেন না। জ্যেষ্ঠপুত্রই রাজ্যাধিকার পাইরা থাকে। ইংরাজ গ্রমেণ্টির অন্নাদিত শক্তকগ্রহণের কোন ব্যবস্থাপত্র বা সন্দ্রিহাদের নাই।

লিখিত (ক্নী) লিখ-ভাবে জ্ঞা > লিপি। ২ লেখন। (ভরত) লিখ—কর্মনি জ্ঞা (ক্লি) ৩ লিখিত প্রাদি। "প্রমাণং লিখিতং ভূজিম সামিক্তিকি কীর্ভিভ্ন।"

(বিভাক্তামূত বাজক্তা)

৩ ধর্মশান্ত্রের প্রবোধক ক্ষিতেদ। ইনি বে সংহিতা প্রশান করিরাছেন, তাহাকে শিখিতসংহিতা করে। এই সংহিতা উনবিংশসংহিতার মধ্যে একখানি

শগরাশরব্যাসশন্ধলিবিতা দক্ষগোত্তমৌ।

শাতাতপো বশিষ্ঠন ধর্মপাত্ত প্রবিদ্ধানী "(প্রান্ধতা বাক্সবদ্য)

শিকৃপুরুষনিগের প্রান্ধকালে ধর্মপার্তীপ্রযোজক এই সকল
ক্ষির নাম উচ্চারণ করিতে হয়।

লিখিতরুদ্রে, একজন প্রাচীন বৈরাকরণ। রারমুক্ট ইহার মত উক্ত করিয়াছেন।

লিথিতন্মৃতি, একথানি প্রাচীন স্থতি। বাক্সবদ্য প্রভৃতি ইঁহার উল্লেখ করিয়াছেন।

লিখ্যা (ন্ত্রী)> কীটবিলেবের ডিব। ২ পরিমাণবিলেব, লিকা পরিমাণ। [লিকা শব্দ দেখ।]

লিগা, গতি। ভাদি পরদৈ সক নেট। এই ধাড় ইদিং।

লট্লিকতি। নিট্লিলিক। লুঙ্ অলিকীং। নিগ—চিত্ৰণ,

চিত্ৰক্রণ। চুরাদি পরদৈ সক নেট্। লট্লিক্রতি, লুঙ্
অলিলিকং।

লিগ্ (ইংরাজী) ভূমির দ্রস্থজাপক পরিমাণভেদ (League)। তিন মাইলে ১ লিগ্ হয়।

লিগু (ক্লী) লিক্ষতি বিষয়াৎ বিষয়ান্তরং গচ্ছতি লিগ (ধক্লং-কুপীর্নীলকুলিগু। উণ্ ১৷০৭) ইতি কুপ্রত্যরেন সাধু। ১ মন। (উজ্জ্জ্ল) (পুং) ২ মুর্থ। ৩ ভূপ্রদেশ। ৪ মুগ। (নানার্থরক্লমালা)

লিঙ্, ভিঙ্ ভেদ। পাণিনিতে ধাতুর উত্তর লিঙ্এই ১৮টা প্রতায় হয়, তর্মধ্যে পরকৈপনী ধাতুর উত্তর পরকৈপন, আন্ধনেপদী ধাতুর উত্তর পরকৈপন, আন্ধনেপদী ধাতুর উত্তর আন্ধনেপদ এবং উভয়পনী ধাতুর উত্তর আন্ধনেপদ ও পরকৈপদ এই ছইই হয়। এই বিভক্তি যথা, পরকৈপদ—যাৎ, যাতাং মৃদ্। যাদ, যাতং, যাত। যাং, যাব, যাম। ঈত, ঈরাতাং, ঈরন্। ঈথাদ, ঈরাথাং ঈথবং। ঈর, ঈবহি, ঈমহি। এই ১টা করিয়া বিভক্তি ভিনটা পুরুষে বিভক্তা, প্রথমপুরুষ, মধ্যমপুরুষ ও উত্তমপুরুষ। এই এক এক পুরুষ একবচন, বিবক্তম ও বছবচনক্রপে বিভক্ত। যথা—যাৎ, যাতাং মৃদ্। ইহা পরক্রপদের প্রথমপুরুষ এবং যাৎ এক বচন, যাতাং মৃদ্। ইহা পরক্রপদের প্রথমপুরুষ এবং বাং এক বচন, যাতাং বিবচন ও মৃদ্ বহুবচন বলিয়া আনিতে ছুইবে। লিঙ্কে সাধারণতং বিধিলিঙ্ করে। বিধি অর্থে শাতুর উত্তর বিধিলিঙ্ হয়। বিধি বিবিধ—প্রবর্তবিধি ও নিবর্তবিধি।

্রিলের বিষয়ণ থাডুললে বেথ।]
লিক্স (ক্লী) নিলাতে জনেন ইতি নিল-বঞ্ । 'পুংনি বঞ্চপ্'
ইতি নির্মেখনি অভিধানাৎ ক্লীবনিলবং। > চিহ্ন।

"ৰেম লিলেন যো দেশো যুক্তঃ সমুশ্লক্ষাকে ।
তেনৈৰ নাৰা তং দেশং ৰাচ্যমান্ত্ৰনীবিশঃ ॥"খ্ৰাৰত ১৷২৷১২)
২ অন্থান । ৩ সাংখ্যাক প্ৰকৃতি ।
"তত্ৰ জনামনগৰুতং হংখং প্ৰায়োতি চেতনঃ প্ৰকৃষঃ ।
লিক্তাবিনিবৃত্তেভ্ৰমান্তঃখং স্বভাবেন ॥" (সাংখ্যকা" ৫৫)
সাংখ্যমতে মূল প্ৰকৃতিই লিল এবং প্ৰকৃতির বিকৃতিকার্যপ্র
লিল্প লাবে কথিত ।

*হেত্মদনিত্যমব্যাপি সক্রিয়মনেকমাশ্রিতং লিকং।
সাবরবং পরতপ্তং ব্যক্তং বিপরীতমব্যক্তম্॥" (সাংখ্যকা" > •)
কিকৃতি তাহার প্রকৃতিতে শীন হয় বলিয়া তাহাকে লিক
কহে। সাংখ্যতত্তকীমূদীতে লিখিত আছে বে 'লবং গছতীত্তি লিকং' লয়প্রাপ্ত হর বলিয়া উহাকে লিক কহে। [প্রকৃতিশব্দ দেখ]

৪ বাপা। ৫ বাক্ত। ৬ পুংখানি।

"একা শিলে গুনে তিল্লকথৈকত্র করে দশ।
উভয়ো: দপ্ত দাতবাা মূদ: গুদ্ধিমতীপাতা॥" (মহু ৫।১৩৬) >
৬ সামর্থা।

"যাবতামেব ধাতূনাং লিঙ্গং র্রাট্গিতং ভবেৎ। অর্থ-চবাভিধেয়ন্ত তাবদ্ধিগুণবিগ্রহঃ॥" (তিথিতন্ত্র)

৭ শেক। পর্যার — শিল্প, অরক্তম, উপত্ব, মদনাজুশ, কল্প-মুবল, মেহন, শেকস্, মেচু, লাজু, ধ্বজ, রাগলতা, ব্যক্ত, লাজুল, সাধন, সেফ, কামাজুশ। (জটাধর)

তত্ত্বে লিখিত আছে বে, লিজমূলে স্বাধিষ্ঠান নামক স্বৰ্দ্ধন প্ৰ আছে, এই পল্লে বকার আদি করিয়া লকার প্রীক্তিত্ব বৰ্ণ থাকে।

"মৃলাধারে ত্রিকোণাণো ইচ্ছাজ্ঞানক্রিয়াস্থাকে।
মধ্যে স্বয়স্থালিক্স কোটিস্থাসমপ্রভম্ ॥
ভবাতে হেমবর্ণাভাং ব স বর্ণচতুর্দালম।
তদুর্ক্ষেমিসমপ্রথাং বড়্দলং হীরকপ্রভম্ ॥
বাদি লাক্ত বড়্বর্ণেন যুক্তঞ্চাধিষ্ঠানসংক্রকম্।
স্বশব্দন পরং লিকং স্বাধিষ্ঠানং ততো বিহু: ॥" (তত্ত্ব)

লিকের গুভাগুড লক্ষণ সামুদ্রিকে এইরূপ বর্ণিত হইরাছে;—লিক বড় হইলে দীর্ঘজীবী, ক্ষুদ্র হইলে ধনী এবং হুল হইলে নিঃসন্তান ও দরিদ্র হর। লিক বামদিকে নত হইরা থাকিলে মহয় নিঃসন্তান ও নির্ধন, দক্ষিণদিকে বক্র হইরা থাকিলে প্রবান্ ও নির্দিকে নত হইরা থাকিলে দরিদ্র হর। লিক ক্ষুদ্র হইলে মানব পুত্রবান্, লিরাবিশিষ্ট হইলে ক্ষ্মী এবং ছুলগুছিন্ক হইলে প্রাদি নানাবিধ ছ্বসম্পান্ত্র হর। দীর্ঘলিক হইলে দরিদ্র, ছুললিক হইলে আর্মহীন, ক্র্যুবনিক হইলে ভাগাবান্ এবং ল্বানিক হইলে ভাগাবান্ এবং লব্বনিক হইলে রাক্ষা হর। লিক

কঠিন ও কর্কশ হইলে পরস্ত্রীরত; নিদ ক্লফবর্ণ, ফ্ল বা রক্তবর্ণ হইলে স্থা, পরস্ত্রীগামী ও ক্লামিনীজনপ্রির হয়। কুল বা রক্তবর্ণ নিদ্ধ হইলে মন্থব্যের উদ্ভব্য স্ত্রী, রাজ্য ও স্থ্ সম্পদ্ধ ইয়া থাকে।

৮ শিবমৃর্জিবিশেব, শিবলিজ। হিন্দুমাত্রেরই এই লিজপুজা অবশু কর্ত্তব্য। শাল্রে শিবলিজপুজার অনস্ত ফল ক্থিত হইরাছে। এমন কি ব্রাহ্মণের শিবলিজপুজা না করিরা জল-গ্রহণও করিতে নাই।

মহাদেব কিজস্ত এই শিল্পরূপ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, তাহার বিবয় পালোতরে এইরূপ নির্দিষ্ট হইয়াছে,—

"বেৰিমাহং দিলপ্ৰেষ্ঠ কন্তবিপুরহস্তকঃ।
কন্মাদিগাইকং ক্লপং প্ৰাপ্তবান্ সহ ভাৰ্য্যনা।
বোনিলিকস্থকপঞ্চ কথং ভাৎ স্থমহাজ্মনঃ।
পঞ্চবক্ৰ শুতুৰ্কাহুঃ শূলপাণিজিলোচনঃ॥
কথং বিগহিতং ক্লপং প্ৰাপ্তবান্ দিলপুক্ষ।
এতৎ সৰ্কাং সমাচক্ৰ মিত্ৰাবক্ষণনন্দন॥"

(পদাপু° উত্তর্থ° ৭৮ অ°)

দেবাদিদেব মহাদেব ভার্য্যার সহিত এই বিগর্হিত রূপ কেন প্রাপ্ত হইরাছিলেন, দিলীণ বলিঠের নিকট এই প্রশ্ন করিলে, ভগবান্ বলিঠদেব ইহার উত্তরে বলিয়াছিলেন যে, পূর্ব্ব-কালে স্বায়জুব মন্বস্তরে মন্দরপর্কতে ঋষিগণ এক দীর্ঘদত্রের অন্তর্চান করেন, সেই যজে সকল মুনি সমাগত হইলে মুনিগণ পরস্পারে কালোচনা করিয়াছিলেন যে, বেদবিদ্ আন্ধাদিগের মধ্যে কোন্ দেবতা পূজা, তাহা আগনারা নির্দেশ করন। তথন ঋষিগণ সকলেই একবাক্যে বলিয়াছিলেন, আমাদের এই সংশ্রচ্ছেদ করি-

বার জস্ম ব্রহ্মা বিষ্ণু ও মহেখরের নিকট গমন করা কর্ত্তব্য। অনস্তর তাঁহাদিগকে অবলোকন ও প্রণাম করিলে যিনি বিশুদ্ধ সম্বপ্তণ-अधान विषया त्वाध इहेरव, अञ्चिष्ट आभाष्यत शृक्षनीय इहेरवन । তथन अधिशंग ममत्वे हरेबा अधिम किनारम त्मवामित्मव महा-দেবের নিকট গমন করিলেন। ঋষিগণ ছারদেশে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন বার রুদ্ধ, নিদ জারদেশ রক্ষা করিতেছে। তথন श्विशिश निम्तिक कहिरलन, छूमि शीध शिक्षा महारमवरक स्थामापिरशत्र আগমনবৃত্তান্ত নিবেদন কর। আমরা প্রণাম করিবার জন্ম উপ-স্থিত হইয়াছি। নন্দি তখন পক্ষ বাক্যে অবজ্ঞার সহিত অমিত-তেজা: শ্বিগণকে কহিলেন, তোমাদের যদি জীবনের ভর থাকে. ভাহা হইলে এখনই প্রস্থান কর, দেবাদিদেবের সহিত সাক্ষাৎ হইবে না, তিনি দেবী পার্ব্বতীর সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। নন্দি এই কথা বলিলে ঋষিগণ বছদিন তথায় অবস্থান ক্রিলেন. তথাচ তাঁহার সাক্ষাৎ লাভ হইল না। তথন প্রবল তপোদৃপ্ত মহর্ষি ভৃগু অতিশয় ক্রোধপরায়ণ হইয়া মহাদেবকে নিম্নোক্ত ন্ধপ শাপ প্রদান করেন, "হে শঙ্কর ! তুমি নারীসঙ্গমে প্রমন্ত হইয়া আমাদিগকে অবমাননা করিয়াছ, স্থতরাং যোনিলিকস্বরূপ তোমার মূর্ত্তি হইবে। তোমার নিকট ব্রাহ্মণগণ উপস্থিত হই-রাছে, তাহা তুমি জানিতে পার নাই, এইজ্ঞ তোমায় নিবেদিত জল, অন্ন, পুষ্প, পত্র প্রভৃতি সকলই অগ্রাছ হইবে এবং ব্রাহ্মণগণ ভোমার পূজা করিবে না, যদি পূজা করে, তাহা হইলে অত্রন্ধণাত্ব প্রাপ্ত হইবে। ভত্মলিদান্তিধারী যে সকল লোক ক্ষুভক্ত হইবে, তাহারা পাষ্ডত্ব প্রাপ্ত হইবে।" ভুগু এইরূপ শাপ দিয়া মুনিদিগের সহিত ব্রহ্মলোকে ব্রহ্মার নিকট গমন क्त्रिलम ।

"এবম্কতততত্বং কৈলাসং মুনিসভম:।
জগাম বামদেবেন যতাতে বৃষভধবজ:॥
গৃহহারম্পাগমা শহরত মহাত্মন:।
শৃলহত্তং মহারৌজং নন্দিং দৃষ্ট্যাত্রবীন্দিজ:॥
সংপ্রান্তো হি ভৃগুর্বিশ্রো হরং জষ্টুং ক্ররোভমম্।
নিবেদয়ত্ম মাং শীত্রং শহরার মহাত্মনে॥
তত্ত তহচনং শ্রুমা নন্দিঃ সর্বাগণেবর:।
উবাচ পরুষং বাকাং মহর্ষিমমিতৌজসম্॥
অসারিধাঃ প্রভোতত দেবা ক্রীড়তি শহর:।
নিবর্তত্ম বিরুত্মিজ্বিল॥
এবং নিরাক্কতত্তেন তত্তাভিক্রহাতসাঃ।
নহুনি দিবসাত্তনিন্ গৃহহারে মুনীবর:॥
ততঃ ক্রোধসমাবিষ্টো ভৃগুং প্রোবাচ শহরম্।
বিনইত্মসারক্রো মাং ন জানাতি শহরঃ॥

 [&]quot;মহন্তিরার্য়াখ্যাক্ত: হ্যয়লিকে ধনী নরঃ।

আপতাছহিতো লোকে বুললিকে বিপর্বারঃ
মেচ্রে বামনতে চৈব হুতারাহিংতা কবেব।

অক্রেন্ডকথা প্রবান্ কাবে গারিকাং বিনতে হবঃ।

আরে ডু কনরো লিকে নিবানেহব হুলী নরঃ।

ভুলরান্তি লিকে কবেব পুরালিসংযুক্ত: ।

লীবলিকেন বারিকাং ছুললিকেন বিশ্বঃ।

ভুললিকেন সৌভাগাং ছুললিকেন ভুগতিং ।

কর্মান্ত চ সবা বানীং নিব্বো ভবতি ক্রমন্ত ।

ভুললিকেন হুলোব বক্তনিকেন ভুগতিং।

পরস্থীং রমতে নিকাং নারীবাং বারতো তবেব ।

ভুলনিকেন মক্তেম নারীবাং বারতো তবেব ।

ভুলনিকেন মক্তেম নারীবাং বারতো তবেব ।

ভুলনিকেন মক্তেম নততে চোডনালনান্।

ভ্রাল্যাং হুপ্ক বিভাল্যাং ক্তেকারাং গতির্কবেব ।" (সানুব্রিক)

নারীসক্ষমত্তাহসৌ বন্ধান্ধামবমস্থতে।
বোনিলিক্সকলং বৈ রূপং তন্ধাৎ ভবিত্ততি॥
বান্ধাণ মাং ন জানাতি তমসা চাপ্যুপাগতঃ।
ক্ষাব্রন্ধাপরো ন প্রোহসৌ বিজ্ঞানান্
তমার জলমন্ত তলৈ দত্তং হবিতথা।
নির্মাল্যমন্ত চাগ্রাহং ভবিষাতি ন সংশবঃ॥
এবং শপ্তা মহাতেজাঃ শন্ধাং লোকপ্রিতন্।
উবাচ গণমত্যুগ্রং নুন্দিং শ্লভ্তং নূপ॥
ক্ষাভত্তাশ্চ বে লোকে ভন্মনিলাহিধারিলঃ।
তে পাষগুড্মাপরা বেদবাহা ভবিত্ত বৈ॥"

(পদাপু • উত্তরধ • ৭৮ অ°)

নিঙ্গপুরাণপাঠে জানা যায় যে, দেবর্ধি নারদ কলেদেবের প্রিত্র তীর্থক্ষেত্রসমূহ সন্দর্শন করিয়া তত্তৎস্থানে নিঙ্গপুরু। করিয়াছিলেন। (১।১২) ঐ নিঙ্গ কি, এবং কেনই বা তাহা সংসারে সকলের পূজ্য হইয়াছে, তাহা স্তের অভিব্যক্তিতে স্পষ্টই প্রতীয়মান হয়।

"শপ্রজতহং সাক্ষাৎ শপ্রজ্ঞপ্রকাশকম্।
বর্ণাবয়মব্যক্তলকণং বহুধা স্থিতম্॥
অকারোকারমকারং স্থূলং সূক্ষং পরাৎপরম্।
ওক্ষাররপম্থক্রং সাম জিহ্বাসমথিতম্।
যক্ত্র্বেদমহাত্রীবমথর্কহৃদয়ং বিভূম্।
প্রধানপুরুষাতীতং প্রলয়োৎপত্তিবর্জ্জিতম্।
তমসা কালরুদ্রাখাং রজসা কনকাগুলম্।
সাক্রেন সর্বলং বিফুং নিপ্ত গছে মহেশ্বরম্।
প্রধানাবয়বং ব্যাপ্য সপ্তধাধিষ্ঠিতং ক্রমাৎ।
পূলং বোড়শধা চৈব ষড়্বিংশকমজোত্তবম্।
সর্প্রতিষ্ঠাসংহারলীলার্থং লিক্সলিণ্ম।
প্রশম্য চ বথান্তারং বক্ষে লিজ্ঞারবং গুড়ম্॥
প্রশম্য চ বথান্তারং বক্ষে লিজ্যেবং গুড়ম্॥

(निष्मभू भूक् > । ১৮-१०)

এই লিকরপ সাধারণতঃ হই প্রকার। নিজিম ও নিওঁপমর নিব অলিক এক্ক্রেকাৎকারণরপ নিবই লিক। এই অলিক
নিব হইতে লিক নিবের উৎপত্তি; তিনি মুল, ক্ষ্ম, ক্ষমরহিত,
মহাভূতদ্বরূপ, বিশ্বরূপ ও জগৎকারণ। লিক বলিলেই নিবসম্বন্ধীয় লিক ব্রিতে হইবে। (লিকপু° ৩।১-১০) আবার
উক্ত প্রাপের সপ্রকল অধ্যারের ৫ প্লোকে প্রধানং লিক্সাখাতং
লিকী চ পরনেধরঃ।" বচন দৃত্তে অন্থ্যান হর বে, লিকই প্রধান
এবং সেই প্রধানের প্রকৃতি বা নিবশক্তি বিশেবকেই লক্ষ্য
করিরা বহেবরকে লিকী প্রবাচ্য করা হইরাছে। উক্ত

অধ্যানের অপরাপর কথা প্রসক্তে ব্রহ্মা ও বিভূর বিরোধ ভ্রমনার্থ শতসংখ্যক কালানলসদৃশ লিক্ষালী মহাদেবের আবিভাবের কথা আছে (১৭।৩১-৩২)। লিক্ষাপ দর্শনে বিভূ ও
ব্রহ্মা বিহবল হইরা পড়িলেন। তথন অকলাই ওঁকার বাণী
সম্বিত হইল। এই ওকারের তাৎপর্য কি ভাহা নিয়োক্ত প্রোকে বিরুত হইরাছে—

"অস্ত নিদানভূষীক্ষমকারং বীজিন: প্রভো:। উফারবোনৌ বৈ ক্ষিপ্তমবর্দ্ধত সমস্তত: ॥" ৬৪

অর্থাৎ বীজি মহেশর লিল হইতে অকার বীজ উৎপন্ন হইল,
এবং তাহা উকারক্রপ যোনিতে নিক্ষিপ্ত হইনা চতুর্দিকে বৃদ্ধি
পাইতে লাগিল। এই শ্লোক বিশেষভাবে পর্য্যালোচনা করিলে
স্পাইই বুঝা যান্ন যে, লিলই স্পাইশক্তির পরিচারক। এই শিবশক্তির উত্তরসাধক লিলমূর্ত্তিতে যেমন শিবপূজা বিহিত
হইনাছে, সেইরূপ শক্তিবোধক যোনিমূর্ত্তিতেও শক্তিপূজার
ব্যবহা দেখা যান্ন।

"পীঠারুতিরুমাদেবী শিক্ষরপশ্চ শঙ্কর:। প্রতিষ্ঠাপ্য প্রযন্তেন পূক্ষয়ন্তি সুরাস্থরা: ॥"

(লিকপু ও উত্তর্প ১১।৩১)

উক্ত অধ্যায়ের ৩৭ হইতে ৪০ প্লোকে লিখিত আছে বে, ব্রহ্মাদি দেবগণ, ঐশ্বর্যাশালী রাজগণ, মানবগণ ও ম্নিগণ সকলেই শিবলিকের পূজা করিয়া থাকেন। ভগবান বিষ্ণুপ্ত ব্রহ্মার বরপুত্র রাবণকে নিহত করিয়া সমুদ্রতীরে বিশেষ ভক্তির সহিত বিধিবৎ লিজারাধনা করিয়াছিলেন। লিলার্জনা করিলে শত ব্রহ্মগবধজনিত মহাপাতক বিলুরিত হয়।

একবিংশ অধ্যায়ের ৭৯—৮৩ প্লোকে লিখিত আছে বে, আলিহোত্র, বেলাধ্যয়ন, বহুলক্ষিণক যজ্ঞাদি লিবলিদার্চনার এক কলাংশেরও সক্ষুণ্য নহে। দিবসে একবার্মাত্র লিদার্চনকারীও সাক্ষাৎ রুদ্র বলিয়া কথিত। লিবপূর্বার ধর্ম অর্থ কাম ও মোক্ষক প্রাপ্তি ঘটে।

নিকপ্রাণের পূর্বভাগে ২৫-২৭ অধ্যারে শিবপুলার স্থান নির্বাচন ও পূজোপকরণাদির বথাযথ বিবরণ নিপিবছ হইয়াছে। শক্তি বিনা শিবপুলা করিতে নাই। একমাত্র শিবনিল পূলার শিব ও শক্তি উদ্ধরের পূলা বনিরা প্রাণে ও তত্ত্রে তৎপূলার বিধিই কীর্ষ্তিত হইরাছে ।

"লিল্লেবী বছালেবী নিজং সাক্ষাৎ ব্রেছয়ঃ।

তল্পে সংপূলনাত্রিতাং দেবী বেবক পুলিতৌ।"

(প্রাণ্ডোইবীরুক নিজপুরাণ্যচন)

আৰাঃ নিজাৰ্চনততে অভিহিত হইবাহে বে,— "পঞ্জিং দিনা বহেপানি গ্ৰেভছা তক্ত নিশ্চিতনু। লিলপুলা এবর্তন ও লিলেংপজি বিষয় বিভিন্ন পুরাণে বিভিন্ন রূপ বর্ণিত হইরাছে। বামনপুরাণের ৬ট অধ্যায়ে লিলেংপজি-প্রকরণে লিখিত হইরাছে, ক্রন্ধা লিবলিলমূর্জি ধারণ করিরা স্বীয় উপাসনা প্রচার জল্ল শৈব, পাশুপত, কালবদন ও কপালী নামে চারিটা লৈবসম্প্রদায় প্রবর্তিত করেন। বলিচপুল্ল শক্তি ও তাহার শিশ্য গোপায়ন প্রথম শৈব, তপস্বী ভারমাঞ্জ ও তাহার শিশ্য গোপায়ন প্রথম শৈব, তপস্বী ভারমাঞ্জ ও তাহার শিশ্য সোমকাধিপতি রাজা শ্বযুত পাশুপত, আপত্তম্ব ও বক ক্রাণেশ্বর নামক বৈশ্র কালবদন, ধনদ ও তাহার শুদ্রবংশায় শিশ্য কন্দোলর কপালী হইরাছিলেন, ইহাতে স্পাইই বুঝা যায়, লিলো-পাসনাপ্রসলে কালে শৈবসম্প্রদারে চারিটা শাথাবিভাগ ঘটিয়া-ছিল এবং চারিজন প্রধান যোগী ঐ বিভিন্ন মত প্রচার করেন।

কন্দপুরাণে বিদ্ধান্দের বৃৎপত্তি সম্বন্ধ বিথিত আছে;
"আকাশং বিদ্ধাতাতঃ পৃথিবী তক্ত পীঠিকা।
আব্যাং সর্বাদেবানাং ব্যনালিক্ষ্টাতে।" (কন্দপু°)
"গেহে বিক্ষরং নার্চ্চাং শাবগ্রামন্ত্রং তথা।
বে চক্রে দারকায়ান্ত নার্চ্চাং ক্র্যান্তরং তথা।
অভক্যং নিবনির্দ্ধাব্যাং পত্রং পুশাং ফ্রাং জলন্।
শাবগ্রানিশ্যাবাগাৎ পাবনং তদ্ভবেৎ সদা।"

আকাশ শব্দে লিঙ্গ এবং পৃথিবী তাহার পীঠিকা। ইহা সকল দেবতার আলার। ইহাতে সমন্ত লয়প্রাপ্ত হয় বলিয়া ইহাকে লিঙ্গ কহে। একগৃহে লিঙ্গায়র পূজা করিতে নাই, এইরূপ শালগ্রাষ শিলাধ্যেরও পূজা নিষিদ্ধ। শিবের নির্দ্ধাল্য গ্রহণ করিবে না, কিন্তু শালগ্রাম শিশার যোগে নির্দ্ধাল্য গ্রহণীয়।

লিঙ্গশন্দে সাধারণতঃ শিবলিঙ্গই ব্রুষয়। দেবাদিদেব মহাদেব হিন্দুঞ্গতে কি কারণে শিক্ষরণে প্রকটিত হইয়াছিলেন এবং কেনই বা হিন্দু প্রধান ভারতভূমে তাঁহার প্রতিষ্ঠা ও পূজা প্রচারিত হইয়াছিল, লিঙ্গপুরাণ, শিবপুরাগ্ধ ও পাল্লোভরগণ্ডে ভাহার যথাযথ বিবরণ লিপিবছ রহিয়াছে। হিমালয় ইইতে দিংহল পর্যান্ত স্থবিত্তীর্ণ ভারত-সাম্রাজ্যে আনুড়াই হাজার বর্ষের পূর্ব্ব হইতে এই লিঙ্গম্ভির উপাসনা প্রচলিত দেখা যায়।

মন্থসংহিতায় শিবশক্তি ভদ্রকালী এবং বিক্লুপক্তি শ্রীর উল্লেখ আছে (মন্থ ৬৮৯)। উক্ত গ্রন্থের ৩০০০-১৫২ শ্লোকে বছ যাজক ও দেবলদিগের নিন্দাবাদ এবং দেব-প্রতিমার (মন্থ ৯০২৮৫) প্রেশক থাকায় মনে হয়, উহা রচিত হইবার পূর্বে প্রতিমাপুলা প্রবর্তিত হইরাছিল। রামায়ণ ও মহা-ভারতের প্রসল্লাধীন আখাদ্বিকা ঐভরেম্ব (৮৮২১-২৩) ও শতপ্রাক্ষণে (১৩)৫০৪০) থাকায় এবং মন্থতে রাম ও

> শক্তিসংবোগমানে কর্মকর্তা সদাশিব:। অতএব মহেশানি পুলরেছিবলিককর্ «

ক্ষের নামোরেখনা দেখিরা অহমান হর বে, মহুসংহিতাখানি অপেকারুত প্রাচীন। মহুসংহিতা-কালে দেবগণকে স্বতাহতি দিবার বিধি ছিল, এখনকার স্তার পূজ্যচন্দনলিপ্ত নৈবেছারি দানের ব্যবহা ছিল কি না বলা যার না। যে বিষ্ণু ও লিব মমু-সংহিতা-সঙ্কলনকালে পদ ও বলের অধিষ্ঠাতা বলিয়া পূজিত ছিলেন, রামায়ণ, মহুভারত, প্রাণ ও তদ্রাদি গ্রন্থে তাঁহাদের মহিমা পরিবর্দ্ধিত হইয়াছে; তদবধি তাঁহারা প্রাংপর পরমেশ্বর রূপে পূজিত হন।

রামারণ (৭।৩১।৪২) ও মহাভারতে সৌপ্তিক পর্কে ৭ম জঃ
শিবলিক্ষের পরিচর জাছে। রাজতর্ত্তিনী (১।১৯৪ ও ২।১২৯-১৩০) পাঠে জানা যার যে, জলোক (Seleukos) রাজার জাধিকারকালে বিজয়েশ্বর, নন্দীশ ও ক্ষেত্রজাটেশ নামক শিবলিক্ষের পূজা প্রচলন ছিল। স্থতরাং স্বীকার করিতে হইবে যে, বৃদ্ধদেবের পূর্ক হইতেই ভারতবর্ষে লিঙ্গপূজা প্রচলিত ছিল। খৃষ্টপূর্কে শককুষণ ও খরোঞ্চী রাজগণের সম্বীপ্র লিকোপাসনার যথেও আদের হইয়াছিল। গুপুরাঞ্জগণের শিবভক্তি কাহারও অবিদিত নাই। তাহাদের মুদ্রার স্বীজিত বৃষ, ত্রিশূল ও শিবশক্তি সিংহবাহিনী প্রভৃতির প্রতিরূপই তাহার সাক্ষ্যদান করিতেছে।

কেবল উত্তরভারত বলিয়া নহে, দক্ষিণভারতেও খুইপূর্ব্ধ ৫ম
শতানে লিঙ্গারাধনা প্রচারিত ছিল। ট্রাবোর বর্ণনা হইতে
জানা যায়, পাও্যরাজ রোমকসমাট, অগাইাসের সভায় দৃত প্রেরণ
করেন, খুইপূর্ব্ব ৩৫ • হইতে ২>৪ অন্দ মধ্যে পাও্য ও চোলরাজ্য
এক হইয়া যায়। উভয় রাজ্যের প্রথমকার ভূপতিগণ লিজস্বাপক
ও নিবভক্ত ছিলেন *। দাক্ষিণাত্য হইতে শৈব ধর্মফোত খুষ্টীয়
৫ম শতানে যবহীপ ও বালিহীপে স্থপ্রতিষ্ঠিত হয়। তথাকার
প্রথমন নামক হানে হইশত অপেকা অধিক দেবমন্দির এবং
শিব, হর্মা, গণেশ, স্থ্য প্রভৃতির পাষাণময় ও পিত্তলময় প্রতিমৃত্তি অভাপি বিভ্যান আছে।া [যব ও বালি দেখ।]

গ্রীক্ ভৌগোলিক আরিয়ান্ কন্তাকুমারীর বর্ণনাস্থলে লিথিয়া-ছেন, কুমারীনামী দেবীর নামে ঐ স্থানের নামকরণ হইয়াছে।

[•] former Sonnerat forestern,—The lingam may be looked upon as the phallus or the figure representing the virile member of Atys, the well-beloved of Cybele, and the Bacchus which they worshipped at Heiropolis. The Egyptians, Greeks and Romans had temples dedicated to Priapus, under the same form as that of the lingam. The Israelites worshipped the same figure, and erected statues to it."

[‡] Vide Journal of the Indian Archipelego, vol. iii.

ছগার একটা নাম কুমারী। স্মারিরানের সমস্ব (২র খুটান্সে) তথার ঐ দেবীর একটা প্রতিমূর্ত্তি ছিল। সম্ভবতঃ দান্দিণাত্য-অসেদ্ধ কোন শিবলিদেরই উহা শক্তি হইবেন।

অগৎস্টির আদিভ্তা প্রকৃতিপুরুষাত্মিকা উৎপাদিকা লক্তিই স্টেতিতত্বের মূল উপাদান আনিয়া শৈবগপ হরঘার্বতীর লিলপক্তিকেই জীবোৎপত্তির মূখ্য কারণ বলিয়া
নির্দেশ করিয়া পাকেন। যোনি ও লিলের অর্থাৎ প্রকৃতি
ও পুরুবের সলমেই স্টে সাধিত হয় বলিয়া তাহারই
চিহ্নস্বরূপ লিলমূর্ত্তি সংগঠিত হইয়াছে। একটী মললময়
ইচ্ছার প্রণোদিত হইয়া পরমপিতা অগতের হিতসাধনার্থ
ক্রেক্তিপুরুষ্সঙ্গনে স্টেকার্য্য আরম্ভ করেন। সম্ভবতঃ
প্রকৃতির উপাসকগণ সেই লিলক্রপেই শিবত্ব আরোপ করিয়া
থাকিবেন। তদবধি শৈবসম্প্রদায় সেই লিলক্রপী যুগ্মমূর্তিই
শিব নামে উপাসনা করিয়া আসিতেছে।

প্রাচীন ভারতবাদীরা সেই স্প্রিক্টিভিলয়কারী অবায়ায়ার নিরাকারত্ব অপনোদন করিয়া ক্রমে লিঙ্গরূপে তাঁহার সাকারত্ব কয়না করিয়া আসিতেছেন এবং তাহাই ক্রমণঃ জগদাসীর উপাস্ত বলিয়া গৃহীত হইয়াছে। শুধু ভারতে নহে, স্প্রাচীন চীন, এীক ও রোমকজাতির মধ্যেও লিঙ্গোপাদনা প্রচলিত ছিল। * রোমকদিগের মধ্যে "প্রিয়াপস্" এবং গ্রীকগণের মধ্যে "ফালাদ্" নামে লিঙ্গমৃতিসমূহ পরিচিত ছিল। তিব্বতীয়দিগের উপাস্ত লিঙ্গমৃতিশ্রেল চীনভাষায় হবঙ্-হি-ফুহ্নামে কথিত। ইদ্রাইলগণও পূর্ব্বেলঙ্গপৃক্তা করিত। মঞ্জায় যে মঞ্জের লিঙ্গমৃত্তি আছে, তাহা এক সময়ে ইস্রাইলগণের উপাস্ত ছিল। ভবিয়প্রাণে ব্রাহ্মপর্ব্বে এই মঞ্জের লিঙ্গের উল্লেখ পাওয়া যায়।

বাইবেল পাঠে জানা যায়, রেহোবোরামের পুত্র আণা তাহার মাতা মায়াকাকে লিল সমকে বলি দিতে নিষেধ করিয়া-ছিলেন। পরে তিনি কুক হইরা ঐ লিলস্তি ভাঙ্গিয়া দেন (1 Kinga xv. 18)। বিহুদীগণ সোৎসাহে লিকরণী দেবতা বেল্ফেগোর গুপ্তমন্ত্রে দীক্ষিত হইতেন। মোয়াবীয় ও মদিনাবাসিগণ কেগোর পর্বতিথিত এই লিলেরই উপাসনা করিতেন করেতেন তাহাদের উপাসনাপকতি সর্ব্বতেভাবে মিলরীর্মিগের বেলফেগোর উপাসনাপকতির অন্তর্ক্ষপ ছিল। বুলা-(Judah)বাসিগণ পর্বতেশৃঙ্গত্ব বন ভাগে এবং স্বর্হৎ বৃক্ষ-ভলে দেবদন্দির ও দেবস্থি প্রতিষ্ঠা করিয়া পরম পিতার অপ্রির-ভলে হব্দাহিলেন। বাল (Baal) তাহাদের উপাত ছিল

এবং লিজাকার প্রভারতভাই উাছার মূর্ত্তির চিহুত্বরূপ গৃহীত হইরাছিল। তাহারা এই দেবতার বেলী সমক্ষে ধূপ ধূমা জালাইত এবং প্রতি জমাবতার সেই লিজমূর্ত্তির সমুখন্থ এই ব্রত্তন্মতি হিন্দুর সম্বত্তি হিন্দুর সম্বত্তি প্রতিব্যাধান বালেশ্বর নিবলিঙ্গসমূর্থন্থ ধর্মারূলী ব্র-মূর্তির জানুরূপ। মিশরীয় ওসিরিস্ মূর্তির এপিলের সহিত্ত ইছার বথেই সাদৃশ্র আছে। পাশ্চাত্য লেথকগণ ভ্রমক্রমে ঐ ব্যম্তিকে নিবায়তের নন্দী। বিলিয়া উল্লেখ করিয়া থাকেন। কেহ ক্রেছ উহাকে নিবের বাহন বলেন।

কর্ণেল উড বলেন, আরবীয় দেবমূর্ত্তি লাত বা অন্হাভের সহিত হিন্দুর লিকমূর্ত্তির যথেও সানৃশু আছে। রোমক্লাতির প্রভাববিত্তারের সহিত এই লিলোপাসনা ও মূর্ত্তিপ্রতিষ্ঠা ফ্রান্দা-রাজ্যে বিস্তৃত হয়। নিস্মেস্ নগরীর প্রসিদ্ধ সার্কাসগৃহে, ইতালীর স্থপ্রাচীন ধর্মমন্দিরসমূহে, টোলোস্ নগরের গীঞ্চায় এবং বৃদ্দার কএকটা ধর্মমন্দিরে অভাপিও ঐ শিবলিকমূর্ত্তি বিভ্যান দেখা যায়।

রাজস্বানের ইতিবৃত্তে মহাত্মা টড় লিলোপাসনার তত্ত্ব নির্ণয়-প্রসঙ্গে লিখিয়াছেন,-মিশর, গ্রীক, রোমক, এমন কি, খুষ্টান-দিগের দ্বারা বংশপরম্পারা ক্রমে শিক্ষপুঞ্জা সাধিত হইলেও গ্রীক phallic শংশর ব্যুৎপত্তিগত কোনরূপ পরিক্ষাট অর্থ নিরাক্লড হয়। অধিকসম্ভব, দেবভাষা সংস্কৃতের জনম্বিতা আদি আর্ঘ্য-ভাষা হইতেই এই শব্দের বাৎপত্তি সিদ্ধ হইয়া থাকিবে। সর্ব্ধ-সিদ্ধিপ্রদাতা ফলেশ শব্দে ঈশ্বরের লিক্স্ক আরোপ ক্রিরা গ্রীক ফালাশ, শব্দের উৎপত্তি করনা করিলে শব্দার্থের প্রকৃতি-প্রত্যন্ত্রসাধ্য কোনরূপ বৈষম্য ঘটে না, বরং তাছা হইলে ওসিরিসের সহিত শিবলিক্ষের অভান্ত বিষয়ে অনেক সামঞ্জন্ত সাধিত হইতে পারে। উভয় দেবতাই নদীর অধিষ্ঠাতী। ওসিরিস যেমন ইথিওপিয়ার অন্তর্গত চন্দ্রলৈলনিঃস্ত নীল-নদের (Nile) অধিষ্ঠাতা, ঈশরও সেইরূপ সিন্ধুনদ (ইহার অপর নাম নীল-ফিরিস্তা) ও চন্দ্রগিরিনিঃস্থত গঙ্গার পতি। এই চন্দ্রগিরিভ্রারারত কৈলাসশিথরে শিব পার্বভীসহ বিবাজিত বলিয়া পুরাণে বর্ণিত হুইয়াছে। গ্রীকবাসী মিশরীয়দিগের নিকট হইতে, অথবা তাহাদের অনুরূপ উপারেই এই ফলেশ শিক্ষপুঞ্জার

W. Taylor's Ex. & Analy. of Mack. Manus, and Jour. Roy. As. Soc. vol III. & 202-218.

[#] ছাক্ষিণাতে। শিৰ্থাছন বুণের অপর একটা নাম ননী।

[&]quot;छेनुकर वृषकर त्रिव मात्रा ननी असीर्विछ:।" (निकार्क मरुद्ध २५ महेन)

[†] মুতাৰ্ক্তর লেখনী হইতে জানা বার বে, বিপারীর দেখনা ওসিরিল্ সঞ্চত্তিই লিজন্মণে বিরাজিত (with the Principus exposed) ছিলেন। Ptah Sokari সৃত্তিও বিরাপ আকারে অধর্শিত ইইয়া থাকে। এইরূপ লিজমূর্ত্তি সকল তংকালে Ptah Sokari Osiri নাবে খ্যান্ত ছিল।

পদ্ধতি প্রাপ্ত হইয়া থাকিবেন। তাহায়া কলের আকারে কিলমূর্থি
দাপন অথবা কথন কথন সেই কলকেই দেবতারূপে পূজা
করিতেন। ইহাতে স্পষ্টই উপলব্ধি হয় বে, সংশ্বত সকল
ফলেশ (ফল+ঈশ) হইতে গ্রীক Phalins শব্দ গৃহীত
হইয়াছে। ফাল্কনে নবপল্লব, পূলা ও কলভারে অবনত
বৃক্ষরাজি যথন ধরিত্রীকে নবাশ্বরে ভূবিত করিয়া শোভা দান
করে, তথন জগদ্বাসী আপনাপন ইউদেবতাকে অভীষ্ট ফলপূলানে তৃষ্ট করিতেন। আবহমান কাল হইতে ফাল্কনমারে
এই পূলোৎসব বিহিত হইয়া আলিতেছে *।

বাসস্তীদেবীর (Goddess of the Spring Saturnalia) এই ফাল্পন মহোৎসব, গ্রীক্লিগের ডাইওনিসেরাসের স্থাগো-সিয়া উৎসব, মিসরের ফাল্লিকা (Phulles) এবং হিল্পুছানের ফল্গুংসব বা হোলিকার সহিত যথেষ্ঠ সাদৃশ্য আছে। বসস্তোৎস্বরের পর ফাল্পন মাসে লিবরাক্রিতে পর্ব্বে এবং চড়ক সংক্রান্তিতে নিবকে বিহুফল, নারিকেল প্রভৃতি ফলনানের বিধি আছে। [মদনমহোৎসব ও বসস্তোৎসব দেখ।]

আর্গাঞ্জাতির ও ভারতীয় আর্থাসমাজের প্রথমারক লিঙ্গপূজার চিরন্তন পক্ষতি, উৎপত্তি ও বিত্তারের সমাক্ ইতির্ভ বিল্পু
ছইয়া মিশরবাসীর ভায় ক্রমশং কিংবদন্তীমূল হইয়া পড়িতেছে।
পরবর্ত্তিকালে লিজাদি মহাপুরাণে এবং তদ্ধাদি শাস্তে লিজার্চন
বিধি শতক্রভাবে ও তৎসাময়িক রীতি অনুসারে লিপিবক
হইয়াছে বলিয়া অনুমিত হয়। সেই আদিম উপাসনাপক্ষতির
কক্তকাংশ অর্থাৎ লোকিক ও কৌলিক আচারাদি যে উহাতে
গৃহীত হয় নাই, এরূপ সিদ্ধান্ত করা কোন ক্রমেই মৃক্তিসিদ্ধ
নহে। রাজা কাছিশ্ পৌত্তলিক ধর্ম্মের বিরোধী হইয়া
পুরোহিতদিগকে দণ্ড দেন এবং পবিত্র এসিস্ ধ্বংস করেন।

The sriphala is accordingly presented to all the votaries of Iswara and Isa on the conclusion of the spring festival of Phalguna, the Phagasia of the Greeks, the Phamenoth of the Egyptians and the Saturnalia of antiquity, a rejoicing at the renovation of the powers of nature, the empire of heat over cold—of light our darknes." Tod's Rajasthan, Vol. 1, p. 603.

সেরপ কঠোরাচার অবশ্যন করিরাও তিনি নিলোপাসনা উচ্ছেদ করিতে পারেন নাই। পরবর্ত্তিকালে প্রীক্ ও রোমকজাতি নীলনদের অববাহিকা প্রদেশ জয় করিরা মিশরীর দেবমগুলী রক্ষা করিয়াছিলেন। তাঁহারা ভক্তিচিত্তে সেই সেই দেবতার বলির সংকার করিরা তাহা ছাপত্যশিরে পরিলোভিত করেন • ।

খৃষ্ঠানধর্মের অভ্যাদরে এবং প্রভাববিস্তারে ক্রমশ: পাশ্চাত্য জনপদবাদিগণ পৌত্তিক উৎসব ও আড়ম্বর পরিত্যাল্য করিতে অভ্যাস করিল। নীলনদের দেবিসভ্য, রোমের দেবলোক এবং আথেক নগরীর দেবসমাজ কিছুতেই খৃষ্ট-ধর্মের গৌরব অতিক্রম করিতে পারিল না। পারিপাটাহীন ও আড়ম্বরশৃত্ত উপাসনার লিপ্ত হইয়া ভত্তদেশবাসিগণ পৌত্তিকিক উপাসনার হতাদর করিল। দেবতা ও মন্দিরাদি অনাদরে ভূমিসাৎ হইয়া গেল। বিরোকিলাস কর্জ্ক আলেকমান্দ্রিয়ার দিরাপিদের মন্দিরসমূহ ধ্বংস হয়। কালে মেন্দিসের ওসিরিস্মন্ধিও লিক্তপ্ত ইইয়া খৃষ্ট ধর্মমন্দিরে প্র্যাবসিত হইয়াছিল।

এই সকল আলোচনা করিলে নি:সন্দেহে বলা যাইতে পারে যে, জগতের আদিকারণস্বরূপ প্রকৃতিপুরুষাত্মক লিক ও যোনিই জীবোৎপত্তির অবান্তর কারণ জানিয়া জগছাসী জাতি-মাত্রই পরমণিতা মহান ঈশ্বরের সেই মুখ্য শক্তির উপাসনা করিতে থাকে। প্রাচীন আর্য্যসমাজে সমাদৃত ও পঞ্জিত সেই মহেশ্বরের শিক্ষর্তি আর্য্য জাতির প্রতীচ্য ও প্রাচ্য উপনিবেশে ক্রমণ: বিস্তার লাভ করিয়াছিল। সম্ভবত: এই কারণেই জাবতীয় ও রোমীয় লিক্ষমূর্ত্তির এত অধিক সৌসাদ্র পরিলক্ষিত হইয়া থাকে। প্রাচীন হিব্রুগণ যে "বাল" দেবতার উপাসক ছিলেন, তাহা ভারতীয় বালেখরের অভিন্ন লিম্ন ভিন্ন আর কিছুই নহে। वाहेरवनशरहर धरे निक्मिक् Chiun वा निष्टेन नारमहे ऐक হইরাছে। ভারভবাদী হিন্দুমাত্রই এই মুর্ত্তিকে শিব, শিউ, প্রভতি শব্দে উল্লেখ করিয়া থাকেন। व्यक्तीत्रमान रत्न (व, पृष्ठेशर्त्वत वहशूर्ट्स व्यष् ଓ भाकषीरशत আর্থাসমাজে শিব্লিজের উপাসনা প্রচলিত ছিল। প্রাচীন ভারতীর আর্যান্ডাভি বে সমরে শিবলিক্ষের উপাসনাপ্রভি অব-

[&]quot;I have derived Phallus from Phalisa the Chief fruit. The Greek, who either borrowed it from the Egyptions or had it from the same source, typified the fructifier by a Pine apple the form of which resembles Sitaphala, * *. In like manner Gouri the Rajpoot Ceres is typified under the coco-nut or sriphal, the Chief of fruit or fruit sacred to Sri or Isa (Isis), whose other elegant emblem of abundance the Canacampa is drawn with branches of palmyra, or coco-tree gracefully pendent from the vase (cumbha).

[&]quot;Isis and Osiris, Serapis and Canopus, Apis and Ibis adopted by the Romans, whose temples and images yet preserved, will allow full scope to the Hindu antiquary for analysis of both systems. The temple of Serapis at Parsouli is quite Hindu in its ground plan."

Tod's Rajasthan vol 1, 606 n.

Ezekiel xvi. 17. Amos. v. 25-27. পাঠে জানা বাছ বে,
 ৯০০ খুট পূৰ্ব্যাৰেও বৰ্তমান শিবলিক মুৰ্ভিছে লিজোপানবা ও কপাত্তে ভিত্তকবারণ প্রচারত ছিল।

পত ছিলেন, সেই সমরে হিক্রগণও বাল কেবের নিকরণ উপাসনা ক্ষিডেন ; ক্রি কোন সময়ে এবং কাহার ছারা এই নিলোপাসনা ভারতে অথবা অনুর পশ্চিম য়ুরোপ খণ্ডে প্রচারিত হইরাছিল. ভাষা জানিবার উপার নাই। পাশ্চাতা প্রত্নভাষ্টেশর ধারণা, যথন হিক্রমাতি অথবা শ্রীক ও রোমক্রিগের মধ্যে প্রথমে নিলোপাসনার প্রভাব দেখা যার, তখন অবস্তই স্বীকার করিতে হইবে বে,ভারতবাসী উহা প্রাতীচ্যের নিষ্ট হইতে গ্রহণ করিয়া-ছেন। কিন্তু এ কথা কতনুর যুক্তিসিদ্ধ তাহা সহজেই অনুমান कता वात्र। यसन त्राम्-नामात्वात्र छेपान इत्र नारे, यसन वील-चंडे जारनी अन्त्रशतिश्रव करत्रन माहे, वांहेरवन श्राहत शहना बहेता-ছিল কি না সন্দেহ, তথন হইতেই ভারতে আঘ্য সভাতালোত-পূর্ণশক্তিতে প্রবাহিত ছিল। বুদ্দর্শিণের শতাক বুদের প্রতিকৃতি বৌদ্ধদিগের যত্নে সমগ্র অব্যুবীশে এবং উত্তর-পশ্চিম এসিয়া থণ্ডের নানাস্থানে প্রভিষ্ঠিত ও পৃত্রিত হয়। ললিতবিন্তর হইতে জানিতে পারি বে বৃদ্ধের পূর্ব্ধ হইতেই শিব, विकृ ७ रूपाभूमा धार्मिक हिन। टेनव, देवकव ७ मोत्रिमिरशत নিকট বৌদ্ধেরা মুর্স্তিগঠন শিক্ষা করিয়া থাকিবে। [শিব দেখ।]

আমেরিকা মহাদেশের পেরুভিয়া নামক স্থানে 'রামগীতোয়া' মহোৎসব এবং তথাকার নূপতিবংশের সূর্য্যবংশোদ্ভবতার
প্রবাদ প্রচলিত আছে। ঐ স্থলের মধ্যবর্ত্তী কতকগুলি জাতির
ভাষায় ঈশরের নাম সিব্। আসিয়ার অন্তর্গত ফ্রিজিয়া নামক
জনপদবাসীয়া সেবা বা সেবাজিয়াস্ নামক দেবতার উপাসনা
করে। ঐ দেবোপাসকগণ দীক্ষাকালে সর্পঘটিত কএকটী
অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন। মিশরবাসীয় বাকাস্ (ব্যাদ্রেশ ?)
ভিয় অপর একটী দেবতার নাম সেব্, সেব্বা বা সোবক্ দেথা
যায়; এই নামসাদৃশ্র এবং সর্পগত প্রক্রিয়াদি অন্তথাবন
করিলে, আমাদের ব্যালমালবিভূষিত ও ব্যাত্রাম্বর্পরিহিত শিবের
কথাই মনে পড়ে।*

পাশ্চাত্য পশ্চিতগণের বিধাস, বিষ্ণুর উপাসনাপদ্ধতি প্রাচীন তাতাররাজ্য (শাকরীপ ?) হইতে ভারতে সমানীত হইরাছে; কিছু সৌভাগ্যের বিষর, তাঁহারা শিবপুলা সদ্ধে এরূপ কোন একটা অন্তুত মীমাংসার উপস্থিত হইতে সমর্থ হন নাই। তাঁহারা বলেন যে, খুইলুমানের প্রথম হইতেই এই শিবোপাসনা-পদ্ধতি সিদ্ধুসৈকত হইতে রাজপুতনার মধ্য দিরা আর্যাবর্তভূমে বিস্তার লাভ করে। কালিদাসের বর্ণনা হইতে জানা বার যে, খুইপুর্ব প্রথম শতাবে উজ্জারনী নগরে মহাকাল এবং ওচারে-

ব্যারর মহোৎস্থা সাধিত হইত। মুসলমান আক্রমণের পুর্বেও হিন্দুরাজগণের অধিকারে ঐ স্থানে নিজোপাসনা প্রথল ছিল। তথ্যকার বিন্দুখর্শ নামক শিবনিক অতি প্রাসিদ্ধ।

আমাদের দেশে এক থণ্ড লখনান গোলাকার বা কোণাকার প্রান্তরন্তন্ত লইরা সাধারণতঃ শিবলিক গঠিত হইরা থাকে। উহার নিয়ভাগ অপেকারুত হুল ও আসন নামে অভিহিত; বক্ততঃ এই আসন রাধিবার আবশুক নাই। স্তন্তের মধান্তলে কোবার আকার বোনিপট্ট বা গোরীপট্ট হাপিত। উহা হুল-বিশেবে প্রণালিকা বলিরা গৃহীত। এই গোরীপট্ট পার্কতীর বোনি বা মূলপ্রকৃতির শ্রী-চিক্ল এবং উহা ভেল করিরা তহুপরিস্থ উর্জারত শলাকা বা রপ্তমূল পুরুদের লিল বলিরা বিবেচিত। একবোণে এতস্কুভর্মই, অথবা বোনিপট্টের উপরিস্থ পুটেক্ট শিবলিক নামে কথিত; এই কারণে প্রধান প্রধান শৈবপীঠে আসন না রাধিয়াই বোনিপট্টের উপর লিক স্থাপিত দেখা যার।

ভারতবর্ষে প্রায় অন্যূন আট কোট লোক শিবলিদের পূজা করিয়া থাকে। হিমালরের অত্যুক্ত শৃল বদরিকাশ্রম ও পশুপতিনাথ হইতে স্থান বন্ধিশার সেতৃবন্ধ পর্যার পর্যারকাশ করিলে অসংখ্য শিবলিল নয়নপথে সমুদিত হইবে। গলার উভয় কুলে বিশেষতঃ বারাণসীক্ষেত্রে ও বালালার মন্দির-প্রতিষ্ঠার সলে সলে লিলমুর্জিয়াপনের বাহল্য দৃষ্ট হয়। বারাণসীর বিশেষরাদি মন্দির, উড়িয়ার ভ্রনেশ্বর, সেতৃবন্ধেরামেশ্বরমন্দির, সোমনাথের সোমনাথমন্দির এবং বালালার অন্তর্গত বৈক্তনাথ এবং কাল্না নগরে বর্জমানরাজের প্রতিষ্ঠিত ১০৮টা মন্দির শৈবকীর্ত্তির নিদর্শন। এতত্তির কাঞ্চীপুর, জন্মুন্ন কেশ্বর, ভিরুমনলর, চিনম্বরম্ ও কালহন্তী প্রভৃতি স্থানে প্রসিদ্ধ ও স্প্রাচীন শৈব কীর্ত্তি দেখিতে পাওরা বার।

শিবপুরাণ (৩৮ অধ্যার) এবং নন্দি উপপুরাণে শিব বলিতেছেন যে, 'আমি সর্ব্ধরাণী, কিন্তু সৌরাষ্ট্রে—সোমনাথ, ক্ল্ঞাতীরছ শ্রীশৈলে—মলিকার্জ্বন,উজ্জারনীনগরে—মহাকাল,ওজার,ও অম-রেখর, চিতাভূমে—বৈজ্ঞনাথ, দক্ষিণে সেতুবক্তে—রামেখর, বারা-ণসীক্ষেত্রে—বিশ্বেখর, গোমতীতীরে—এব্যক, হিমালয় পুঠে— কেলারনাথ,লারক্বনে—নাগেশ,শিবালরে—ঘৃণ্রেশ,ডাকিনীতে— শ্রীমশন্তর প্রভৃতি বিশেব বিশেব মূর্জিতে আমি বিশ্বমান আছি।'

১০২৪ খুটান্দে বা ৪১৫ হিজিরার প্রশাসন মাজুদ গল্পনীতে জানিরা সোমনাথ নিজ ধ্বীসে করেম। ১১৫২ শকে প্রভাতান আন্তামান্ উজ্জিনীর মহাকাল বৃত্তি ভালিরা দিলীতে লইরা বান। হিমালরত্ব কেদারতীর্থে জন্তাশি হিন্দুতীর্থবাত্তী সমন করে। দিলিপে রাজমহেন্দ্রীর অন্তর্গত প্রাক্ষারাম তার্থে জীমেশ্বর মৃত্তি

Serpent and Siva worship and Mythology in Central America, Africa and Asia, by Hyde Clarke. p, 10-11.

বিশ্বমান, উহা পুরাণোক্ত ডাকিনীছিত ভীমশন্তর বলিরা উক্ত।
নর্মানীরে ওভারমান্তাতা নামক স্থানে ওভার শিব বিভ্যমান।
কাশীতে বিশেষর, বৈজনাথে ও সেতৃবন্ধে রামেশ্বর অভাপি প্রিত
হইরাছেন। অধ্যক, ঘূশেশ, ও নাগেশ লিক কোথার কিরপে
অবস্থিত আছেন, তাহার কোন নিদর্শন পাওরা বার নাই।

গ্রীক ঐতিহাসিক আরিরানের বর্গনায় জানা বার বে,
মাকিদনবীর আলেকসান্দার পঞ্জাবপ্রাক্তে শিবপূজা ও শৈবোৎসব
দেখিরা গিরাছিলেন। তাহার বহুপূর্ক হইতেই উত্তরপশ্চিমভারতে
শৈবসম্প্রদারের প্রাক্তর্ভাব ঘটিরাছিল। খুটার ৩র শতান্দীতে মুদূর
পূর্বে আনাম ও কলোজে শৈবপ্রভাব বিভূত হইরাছিল। খুটার
১০ম বা ১১শ শতাবে দান্দিশাতো নিল বা ফলোপাসক শৈবসম্প্রদারের পূন: প্রাক্তর্ভাব হয়। তাঁহারা বৌছদিগকে উৎসর
করিয়া ভারতে হিন্দুপ্রাধান্ত ত্বাপনকরে শৈবধর্ম্বের প্রতিষ্ঠা
করেন। এই বৌছশাক্তবিরোধ ভারতীর হিন্দু-ইতিহাসের একটা
প্রসিদ্ধ ঘটনা।

দাক্ষিণাত্যের তেলিল রাজ্যে তিলিল বা ত্রিমূর্ত্তি, ইলোরার গুহার ও অক্সান্ত স্থানে চৌমূর্ত্তি বা চতুর্মুখ, মধুরাসরিহিত স্থানে পঞ্চমুখ এবং উদরপুরের উত্তরন্থিত ইতিহাসপ্রাসিক একলিজনাথ মুর্ব্তি জারতের বিভিন্ন সাম্প্রদায়িক শিবলিক্লের নিদর্শন।

একলিক মূর্ত্তি একখণ্ড নলাকার অথবা কোণাকার প্রস্তবে গঠিত। এরপ কোন কোন লিলের চারি পার্ছে এবং উর্দ্ধদিকে চারিটী বা পাঁচটী মুখ খোদিত করিয়া চতুমুখি বা পঞ্চমুখ শিবমূর্ত্তি ক্ষিত হইয়াছে। এতত্তির অগণিত মূর্ত্তিবিশিষ্ট আরও কএকপ্রকার শিবলিদ দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে। তন্মধ্যে শেবলিন, কোটাখর প্রভৃতি উল্লেখযোগ্য। একটা স্থরহৎ প্রস্তর-**ঁপ্তত্তে সহস্র হইতে লক্ষাধিক কুদ্র কুদ্র লিল খোনিত ক**রিয়া উক্ত মূর্ত্তিবন্ন গঠিত হইরাছে। সিন্ধুনদের পূর্বভাগে এরূপ একটা क्लांगियत शिक्षत कथातीन मिलत अवः स्त्रीताहेकनशाम त्यव-গিলের কএকটা মূর্ত্তি ও মন্দির বিশ্বমান আছে। গ্রীস ও মিশর-রাজ্যে ব্যাকান্ (Bacchue) দেবের চক্রপীঠস্থ যে সকল লিক্ষ্রি আছে, ভাহার সহিত কোটাখরের বথাবধ সাদৃশ্র দৃষ্ট হয়। ব্যাকাসকে ব্যান্তেশ শব্দের অপভ্রংশ বলিয়া গ্রহণ করিলে হিন্দুর ব্যান্তেশ শিবমূর্তির অভ্যকরণে ব্যাকাসের শিলমূর্তিহাপনার করনা করা বাইতে পারে। বেহেছু উভা মূর্ডিই সর্বভোভাবে এক এবং गांबायत्रगति। धातीन छानभूत्य (वर्डमान वांद्राझी नामक হানে) বোনিচক্রে প্রামামাণ প্রকটা লিকসূর্ত্তি হালিত আছে। ये युर्ड पार्छपत्र महारम्य नारम शाख। यह जीर्यगायी कोकृरम भवन रहेवा विक्रम व्यवगायशात्रिक वह वार्क्षेत्रकीर्वह निवन्ति नकर्पत जानिया थाएक ।

পূর্বকালে দিলোপাসনা কেবল ভারতবর্ষ মধ্যে আবদ্ধ ছিল না। এখান হইতে প্রান্ন ১৮ শত ক্রোশ পশ্চিমে মিশর দেশে ওদীরিস্ দেবের দিলপুলা বিশেবরূপে প্রচলিত ছিল। ওসীরিস্ তথাকার একটা প্রেচ দেবতা বলিরা পরিগণিত। এই ওসীরিস্ ও তাঁহার ভার্য্যা আইসীস দেবীর সহিত লিব ও শক্তির আনেক বিবরে ঐক্য দেখা যার। ভশ্পবতী বেমন বিশ্বরূপা, আইসীস দেবীও সেইরূপ পৃথিবীরূপা। তর্মোক্ত শক্তিবন্ধ যেমন ত্রিকোণাক্তি, আইসীস্ দেবীর পরিচারক সেইরূপ একটা ত্রিকোণ্যন্ত্র ছিল। লিব যেমন সংহারকর্তা, ওসীরিস্ সেইরূপ প্রাণসংহারক বমস্বরূপ। শিবের বাহন ধর্মরূপী ব্ব ব্যমন পূজনীর, ওসীরিস্ দেবের এপিস্ নামক বৃষ্ণ্ড সেইরূপ তাঁহার অংশস্বরূপ বিলয়া পৃত্রিত।

পাশ্চাত্য জগতে প্রচলিত একটী উপাধ্যান হইতে জানা যায় বে, ব্যাকাদ দেব ভারতবর্ষ হইতে গুইটী বুষকে মিশর দেশে লইয়া যান, তাহারই একটীর নাম এপিস্। শ্বিও ওসীরিস্ উভর দেবতারই শিরোভূষণ দর্শ। শিবের হস্তে যেমন ত্রিশূল, ওদীরিদ্ দেবের হত্তে দেইরূপ একটা ত্রিফলকযুক্ত দণ্ড বিলম্বিত দেখা যায়। মিশর দেশের ওসীরিদ্ দেবের অনেক পাযাণময় প্রতিমৃর্তির সহিত ব্যাত্মস্পরিহিত শিবমূর্তির সাদৃশ্য রহিয়াছে। মি: উইলকিন্স রুত প্রাচীন মিশরবাসীর ইতিহাসে ওসীরিস দেবের চর্মাপরিধত প্রতিরূপ বিশ্বমান আছে। শিবপ্রিয় বিশ্ব-বুক্ষের ভার তাঁহার একটা প্রিয় বুক্ষ ছিল, এই বুক্ষের পত্র বিৰপত্ৰের মত ত্রিধা বিভক্ত। কাশীধাম যেমন মহাদেবের প্রধান তীর্থ,—মেন্ফিস্ নগরও সেইরূপ ওদীরিস দেবের সর্বব্যেষ্ঠ মাহাত্মকেতা। গ্রন্ধ দিরা বেমন শিবের অভিবেক कत्रा इहेग्रा थात्क, किनिदीर अभीतिम एएरवत्र भीठेष्ट्रात्मक्ष সেইরূপ প্রতিদিন ৩৬০ পাত্র হয় অর্পণ করা হইত। মহাদেবের সহিত ওসীরিস দেবের বিভিন্নতা এই যে শিব খেতবর্ণ, ওসীরিস कुकर्वा किन्द महाकान नामक निवमृर्खिवित्नव कुकर्वा । এ ছাড়া ভারতের নানা তীর্থে কটিপ্রস্তরনির্দ্মিত ঘোর ও উচ্ছল क्रकावर्णत निविधिक विश्वमान स्मर्था यात्र।

ভারতবর্বের নিবলিক পূজার ভার মিলরদেশেও ওপীরিস্ দেবের নিকপূজা অতি প্রবন ছিল। এই পূজাবিস্তার প্রসক্তে এইরূপ একটা কিংবদন্তী আছে যে, টাইফন্ নামক দেবতা মন্ত্রণাপূর্বক ওপীরিসকে নষ্ট করিরা তাঁহার দেহকে খণ্ড খণ্ড করেন। এই অণ্ডভ সমাচার প্রাপ্ত হইরা তাঁহার ভার্যা আই-সীস্ দেবী সেই সমক্ত দেহখণ্ড সংগ্রহপূর্বক বিশেব বিশেব হানে

 [&]quot;वर्गणानः सर्वारणकारिक्तः पुत्रवर्गणम् । विज्ञास्य प्रकारोद्या वर्द्वाणीवमूष्यः निक्तम् ॥" (ज्ञानाम्)

প্রোধিত করিরা রাখেন। কিছ তিনি নিজনেশ না পাইরা প্রতিবৃত্তি নির্দ্ধানপূর্থক তাহার পূজা ও মহোৎসব প্রচলিত করেন।।

মূলর দেশের হানে হানে তও নামে এইরূপ একটা নিজবৃত্তি দেখিতে পাওরা গিরাছে। ইহা এ দেশীর বোনিনিজের
প্রতিজ্ঞাপ । তারতবর্বীর শান্তকারেরা বেমন শিবনিজকে শিবের
ক্ষিশক্তির বিজ্ঞাপক বনিরা উল্লেখ করিরাছেন, মিশর দেশীর
ইতিহাস্বিৎ পণ্ডিতেরা ওসীরিস্ দেবের নিজপ্লার বিব্রেও
ক্ষবিক্য সেইরূপ মীমাংসা করিরা গিরাছেন।

ধর্মতন্ত্রামুসকিৎযু বাঁদ্ কেনেডি এ দেশীর লিক উপাসনার সহিত মিশর দেশীয় লিকপুজার ছইটা শিবরে পার্থক্যনির্দেশ করিয়াছেন। তিনি বলেন, মিশর দেশের স্তায় ভারতবর্ষে লিজ-মর্ত্তির গ্রাম্যাত্রা বা নগর্যাত্রা প্রচলিত নাই!। তাঁহার একথাটা নিভান্ত অমূলক। বালালা দেলে চৈত্রোৎসবের সমরে সন্মাসীরা সমারোহপূর্বক জলাশয় হইতে শিবলিককে পূজার ছলে আনয়ন করে, পরে মুক্তকে করিয়া গ্রামস্থ লোকের গৃহে গৃহে শইয়া বার এবং নির্দিষ্ট স্থানে স্থাপনপূর্বক তাঁহার অর্চনাদি করিয়া থাকে। বছদিন হইতে উড়িয়ার ভূবনেশ্বক্তেতে চৈত্রমাসে শিশ্বাঞ্বের চৈত্রমালে নবন্ধীপে শিবের বথযাতা চলিয়া আসিতেছে। विवाह नात्म এकी मत्हादनव इत्र, छाहात्छ महात्मव বাঞ্ডাণ্ডাদি সহকারে মহাসমারোহপূর্বক ভগবতীর বাটীতে याजा करतन, এवः विवाहकिया मन्नान हहेरन, उथा हहेरछ चीय মন্দিরে প্রত্যাগত হন। এই উপদক্ষে সাত আট ক্রোশ হইতে ष्यत्नक लाक नवहीर पानिया थारकन। रकरनि मारहर আরও বলেন যে, ওদীরিদের লিকপুজার স্থার শিবলিকের অৰ্চনায় মছপানাদি প্ৰচলিত নাই। ব্যবহার প্রচলিত নাই বটে, কিছ বীরাচারীরা অপ্রকাশ ভাবে কুলাচারের অনুষ্ঠান সহকারে শিবলিকের অর্চনা করিয়া

থাকেন। বোগদারে এবিবরের প্রভিপোষক কলাই প্রায়ানুত বিশ্বমান আছে।

ব্রীক্ষেশেও এক সমরে লিজপুলা অভি প্রবল ছিল।
ভথাকার নগররাজির প্রার প্রভ্যেক পথেই ব্ছমজির ও লিবলিক্ম্রিণ প্রতিষ্ঠিত ছিল। উক্ত লিক্সমূহের মধ্যে ক্একটা
প্রধান ও প্রসিক লিক্ষের উদ্দেশে সময় সমর নানা অত্নতানের
সহিত এক একটা উৎসব সম্পন্ন হইত। ব্যাকাস্ লেবের
কেলিফোরিরা নামক মহোৎসবে তথাকার লোকেরা মেবচর্দ্দ
পরিধান ও সর্বাজে মনীলেপন এবং একটা ক্ষমির্ব কার্রনতেও
চর্দ্মলিক বন্ধন করিয়া পথে পথে নাচিরা বেড়াইত। ব্যাকাসের
প্রে প্রারেপালের উৎসব কুৎসিত ও বীভৎভব্যাপার। তাহার
প্রধান প্রধান মহোৎসব কেবল ব্রীলোক বারাই সম্পাদিত
হইত। ঐ রমণীমগুলী তাহার অর্চনাকালে গর্দ্দত বলি দিত
এবং মন্ডাদি বিবিধ উপচারে পূলা করিয়া নৃত্য গীত ও বাভসহ
তাহাকে পরিত্রও করিত।

ব্যাকাস্ ও প্রারেপানের পূজা এবং মহোৎসব প্রসঞ্জে তদেশবাসীর কুৎসিত আচার ও অম্প্রচানাদি সক্ষ্য করিলে বেশ প্রতীয়মান হর বে, অনুর মুরোপ মহাদেশেও বহুকাল পূর্ক্ষে তব্রোক্ত বীরাচারের অম্প্রক্ষপ আচার প্রচলিত ছিল। আমাধের দেশে চড়ক-পূজার সময় ধূলিক্রীড়া ও বাণকোঁড়োর সময় সর্য়াসিগণ এবং গ্রামন্থ অপরাপর লোকেরা নীলোৎসবের গ্রামন গাত্রে ধূলি, কর্দম, মসী, চূর্ণ প্রভৃতি সর্বালে লোপন করিয়া প্রামের মধ্য দিরা নানা কুৎসিৎ ব্যবহার করিতে করিতে গ্রমন করে। এতহুভদ্ম দেশবাসীর এই আচার এতই লজাকর, বে তাহা কোনক্রমেই ভক্রপালনাদিগের দর্শনীর নহে।

আবেনিরাসের লেখনী হইতে আমরা জানিতে পারি যে, গ্রাকবাসিগণ ব্যাকাস্ দেবের মহোৎসব বিশেবে ১২০ হত দীর্থ একটা স্বর্ণমর লিলমূর্তি বহন করিয়া লইরা বাইতে। আলেক-সাক্রিরারাজ টলেমি এই উৎসবের অন্তর্ভান করিয়াছিলেন। (Athenaeus, lib. v.)

[†] এই বটনা হইতে হিন্দুপান্ধোজ বন্দের বড়বল, বিনা নিমন্ত্রণ সতীর

• পিলালের সমন এবং লিবের নিজাল্লবণে সতীর দেহত্যাগ, সকলই মনে পড়ে।

পরে শিক্ষক্ষিত সেই সতীদেহ বিকৃষ্ট্র স্থান চক্র সাহাব্যে ০১ বংগু

বিকক্ষ হয়। সেই সতী-জল হইতে ০১ পীঠের উৎপত্তি। এবনও কামলেশে
বোনিপীঠ বিধামান। ঐ সকল সতীপীঠের পূলা ও উৎসব প্রচলিত আছে।
লানিনা ওসীয়িসের জলবওওলি বতর পীঠন্নণে গৃহীত ইইলাছিল কি না

এই পাল্টাতা উপাধ্যানে সতী পতিকে লঙ্গার বিপর্যার সাধিত হইলাছে।

কাম-জন্মের সমর রতি কামদেবের জন্ম সংক্রম্ম ক্রমিলাছিলেন বটে; সভবতঃ

নিব-প্রস্থাধীনে এই মুইটি উপাধ্যানের সহবেশ্যে বিশ্বীর উজ্জ কিবেন্ত্রী

বিশ্বত হইলা বাজিবেন

Vans Kennedey's Researches into the nature and affinity of Ancient and Hindoo Mythology, p. 805.

 [&]quot;বাণলিকং সদারাধাং বোলিনাং বোলনাধনে ।
কৌলিকানাং কুলাচারে পশ্বাং শক্তনিপ্রতে ।"
বাণলিকতোত্তেও এই বিবয়ের অসক আছে—
"পরিকাণার বোলিনাং কৌলিকানাং বিয়ার চ ।
কুলাকনানাং ককার কুলাচাররতার চ ।
কুলককার বোলার করে, নারারণার চ ।
বর্ণাক্রমন্তার বোলেনার নারারণার চ ।
বর্ণাক্রমন্তার বোলেনার নারারণার চ ।

⁽ প্ৰকাশন বৃত বেণিনার্থন) + G. A. St. John's Hist. of the Manners and Customs of ancient Greece, Vol I. p. 411.

প্রাচীন ফিনিকীয়া রাজ্যেও (কানানরাজ্য) অতি জ্বর্থ-ভাবে লিলপুলা প্রচলিত ছিল। লুসিয়ানের বর্ণনা হইতে ब्राना यात्र, त्रितिवात्र এकটी स्टब्हर मन्मिद्ध ७०० कामम् (१) फैक লিক ছিল। প্রাচীন আসিরীর ও বাবিলন রাজ্যবাসীরা ৩০০ হস্ত দীর্ঘ লিক্সার্টি নির্দ্ধাণ করিয়া উপাসনা করিত। বাবিলন হইতে ए मकन পिछनिर्मिष भूताजन निषम् वि व्याविकात रहेशारह, তাহা অবিকল ভারতীয় শিবশিলের অফুরপ#। খুটীয় ৭ম শতাম্বে চীন-পরিব্রাক্ত হিউএন্সিয়ং কাশীধামে আসিয়া ১০০ ফিট উচ্চ ভাস্রময় শিবলিক এবং ন্যুনাধিক ৬৬ হস্ত দীর্ঘ একটা পিত্তলময় শিবমূর্ত্তি ও ২০টা অব্দর মন্দির দেথিয়া গিয়াছেন। [কাশী দেখ।] কোন কোন প্রক্লতত্ত্বিদ্ বিশেষ প্রমাণ প্রয়োগ সহকারে প্রতিপন্ন করিয়াছেন যে, পুর্বাবে খুষ্টানদিগের মধ্যেও একরপ লিম্পূজা প্রচলিত ছিল, এখনও ইতালীর রোমান কাথলিক সম্প্রদায়ে তাহার অন্ধবিশেষ বিশ্বমান আছে কি না, তাহা বিশেষভাবে আলো-চনা করিলে বুঝা ঘাইতে পারে। মিশরদেশীয় প্রথম খুষ্টানগণ লিক্ষাকৃতিমূলক পুর্ব্বোক্ত 'তও' নামক বস্তু গলে ধারণ করিতেন। পূর্বতন খুষ্টানদিগের অনেকানেক সমাধিমন্দির বা ক্তম্বে ঐ তওমূর্ত্তি অকিত আছে। ঐ তও-লিঙ্গ পরে ক্রেশ-চিছে রূপান্তরিত হইয়াছে কি না বলা যায় না। ভারতীয় হিন্দুদিগের এবং পাশ্চাত্য খুষ্টান্দিগের মধ্যে বিকোপাসনার দামঞ্জ লক্ষ্য করিয়া মূর দাহেব লিখিয়াছেন,---

"This last lingering relic of a very ancient rite—Phallic, Lingaic, or Ionian, as one may be differently disposed to view it—in Christendom, has been thought to deserve a separate and somewhat lengthy discertation. I have compiled such a one from sources not mentionable, with a running commentary showing its close correspondence with existing Hindu rite"—Moor's Oriental Fragments, p. 147.

ভারতে শিবলিকপৃষ্ধার চারি বর্ণেরই সমান অধিকার আছে। শিবলিকের মধ্যে পার্থিব শিবলিকপৃষ্কাই বিশেব প্রাণন্ত। ইহা ভিন্ন, অর্ণ, রক্ষত, ভাত্র, ফটিক ও পারদাদির লিন্দ নির্মাণ করিরা পূকা করিবাক্ষ বিধান দেখিতে পাওয়া বার।

লিলমহিমা—লগতে যে সকল পুণা কার্য্য আছে, তাহার মধ্যে শিবপুতা প্রধান, অধ্যেধ ও বাজপেরাছি বক্ত অপেকা শিবপুতার অধিক কল হইরা থাকে। যথা— "অধ্যেধসহত্রাণি বাজপেরশতানি চ।
মহেশার্জনপুণান্ত কলাং নাইন্তি বোড়শীম্ ॥"(মণ্ডলুং ১৬প°)
শিবলিক পূজা করিলে যে কল হর, অগ্নিহোক্লাদি যক্ত
ভাহার কোটি ভাগেরও এক ভাগ নহে। যিনি শিবলিক
পূজা করেন, তিনি সকল পাপ হইতে মুক্ত হইরা থাকেক। এই
জগতে জীব নানা ঘোনিতে অস্তমণ করিরা একমাত্র শিবলিক
পূজার বারাই মৃতি লাভ করিরা থাকে।

"অগ্নিহোত্রান্তিবেদাশ্য যজ্ঞাশ্য বহুদক্ষিণা:।

শিবলিলার্চনস্থেতে কোটাংশেনাপি তে সমা: ॥

হিছা ভিছা চ ভূতানি হিছা সর্ক্ষমিদং জগং।

যজেদেবং বিদ্ধপাক্ষং ন স পাপেন লিপ্যতে॥

অনেকজন্মসাহস্রং ভ্রাম্যমাণশ্য জন্মন্থ।

কং সমাপ্রোতি বৈ মুক্তিং বিনা লিলার্চনং নরং॥"(স্কল্পুরাণ)

লিলপুরাণে লিখিত আহে বে, একমাত্র শিবলিলপুজনে
চতুর্বার্গ ফল এবং অষ্টেশ্বর্য্য সিদ্ধি হইয়া থাকে।

ভ্রব্যার্ক ফল এবং অষ্ট্রেশ্ব্য সিদ্ধি হইয়া থাকে।

অস্বাহন বে স্বর্গ, মর্ত্য ও পাতাল প্রভৃতি স্থানে বে সকল দেবতা আছেন, একমাত্র শিবপূজা ক্রিলেই সেই সক্কল দেবতার
পুক্রা হইরা থাকে।

"শিবস্থ পৃজনাদেবি চতুর্ব্বগাধিপো ভবেং।
কঠিম্বর্যায়তো মর্ত্ত্যঃ শক্তুনাথস্থ পৃজনাং ॥
বরং নারায়ণেনোক্তং যদি শক্তুং প্রপৃজরেং।
বর্গে মর্ত্ত্যে চ পাতালে যে দেবাঃ সংস্থিতাং সদা।
তেষাং পূজা ভবেদেবি শক্তুনাথস্থ পৃজনাং ॥" (শিলপুরাণ)
কদ্পুরাণে শিখিত আছে যে, শিলার্চন বাতীত যাহার কাল
কাতীত হয়, তাহার মহা অমলল হইয়া থাকে। একদিকে সকল
প্রকার দান, বিবিধ যাগ যজ্ঞাদি আর একদিকে শিলপুলা এই
উভয়ই তুলা। শিলারাধনা ব্যতীত যাগ যজ্ঞাদি বিকল হইয়া
থাকে, এতএব শিলপুলা ভূক্তিমুক্তিপ্রদ ও বিবিধ পাপনাশক,
শিবশিলারাধনাবলে অস্তকালে শিবসাযুল্জা লাভ হইয়া থাকে।

"বিনা লিলার্চনং যন্ত কালো গছেতি নিত্যশং।
মহাহানির্ভবেত্তন্ত তুর্গতন্ত তুরান্দ্রনং॥
একতঃ সর্বদানানি ত্রতানি বিবিধানি চ।
তীর্থানি নিম্নমা যজা লিলারাধনমেকতঃ॥
ন লিলারাধনাদন্যৎ পুরা বেদে চতুর্দু পি।
বিভতে সর্বদারাগানের এব স্থানিন্দিতঃ॥
ভূতিমুক্তিপ্রদং ক্রিট্রু বিবিধাপরিবারণম্।
পুরুষিয়া নরো নিত্যং শিবসাযুজ্যমার্ম্মার্মাৎ॥
সর্ব্বমন্তং পরিত্যক্তা ক্রিয়াজাল্মশেষতঃ।
স্ক্রমন্তং পরিত্যক্তা ক্রিয়াজাল্মশেষতঃ।
স্ক্রমন্তং পরিত্যক্তা ক্রিয়াজাল্মশেষতঃ।
স্ক্রমন্ত্রী বিধান্ লিজমেকং শ্রেপুজরেং॥
তত্তা পরমন্ত্রা বিধান্ লিজমেকং শ্রেপুজরেং॥
(ব

Jour Roy. As. Soc. of Great Britain and Ireland, Vol. 1, p. 91-92,

লিঙ্গার্চনতত্ত্ব মতে, লিঙ্গপুঞা ব্যতীত অন্ত পূজানি নিফল হইরা থাকে, এই অন্ত যে কোন পূজানি করিছে হইবে, ভাহার প্রথমে লিঞ্গপুঞা করিতে হয়।

শসক্ষপৃদ্ধান্ত নেবেশি নিজপৃদ্ধা পরং পদম্। ধিলঙ্গপুদ্ধাং বেনা দেবি অঞ্চপৃদ্ধাং করোতি বং ॥
বিফলা তম্ম পূলা ভাদত্তে নেরকমান্ন্যাৎ।
তন্মানিকং মহেশানি প্রথমং পরিপৃদ্ধবেৎ ॥"

(শিশার্চনতন্ত্র ১ প°)

যে রাজ্যে শিবপুজা হয় না, সে রাজ্য পতিত বলিয়া স্থির করিতে হইবে, সেই স্থানে বাস করিতে নাই।

মংশ্যক, স্বন্ধুরাণ, বীরমিত্রোদয়, লিক্পুরাণ, শিবপুরাণ, স্থতি ও তন্ত্র প্রভৃতি সকল ধর্ম্মণান্ত্রেই শিবলিক পূজার অবশ্রকর্ত্তবাতা প্রতিপাদিত হইয়াছে, এই জ্ঞা ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্ব, শুদ্র এবং সৌর, গাণপত্য ও বৈশুব প্রভৃতি সকলেরই শিবলিক পূজা অবশ্রক্তব্য । শিবপূজা না করিয়া জল গ্রহণ করিলে প্রত্যারভাগী হইতে হয়, অতএব সন্ধ্যা বন্দনাদির স্থায় শিবপূজা নিত্যকর্মা । স্থতিনিবন্ধকার রঘুনন্দন অষ্টাবিংশতি স্থতির মধ্যে আফ্কিত্ত্রে পার্থিব শিবলিকপূজার: অবশ্রক্তব্যতা প্রতিপাদন করিয়া পূজার মন্ত্র ও বিধি ব্যবস্থাদি নির্দিষ্ট করিয়া দিয়াছেন । বাছলাভ্রের তাহার প্রমাণাদি উক্ত করিলাম না ।

ভারতের প্রায় দর্কত্রই পার্থিব শিবলিকপূজার ব্যবহার দেখিতে পাওয়া যায়, ইহা ভিন্ন যে সকল স্থলে অনাদি লিক বা প্রতিষ্কিত লিক দেখিতে পাওয়া যায়, তাহা পাষাণ্ময়।

যে সকল দ্রবা ছারা লিঙ্গ নির্মাণ করা ঘাইতে পারে, তৎ-সম্বন্ধে গরুত্পুরাণে এইরূপ লিখিত আছে—

"কন্ত বিকায়া ছো ভাগো চন্তারশ্চননন্ত চ।
কুৰুমন্ত এয়ন্টেব শশিনা চ চতুঃসমম্॥
এতবৈ গদ্ধনিকন্ত ক্বছা সংপ্রা ভক্তিতঃ।
শিবসাযুজ্যমাপ্রোতি বদ্ধভিঃ সহিতো নরঃ॥" (গরুড়পুরাণ)
গদ্ধনিক — ছই ভাগ কন্ত বিকা, চারি ভাগ চন্দন এবং তিন
ভাগ কুৰুম ইহা হারা লিক্স নির্দাণ করিলে ভাহাকে গদ্ধনিক
কহে, এই লিক্স ভক্তিপুর্বাক পূজা করিলে শিবসাযুজ্য লাভ হয়।

পূষ্পমর লিক—নানাবিধ স্থগদ পূষ্প দারা লিক নির্মাণ করিলে তাহাকে পূষ্পমর লিক কছে। এই লিক পূজা করিলে পৃথি-বীর আধিপত্য লাভ হর এবং আন্তেগ্রাধিপতি হইরা থাকে।

গোশক্লিল—(গোবরের শিব) আছে কশিল বর্ণ গোমর হারা লিল নিশ্বাধ ক্রিরা পূজা করিবে, এই লিলপুলনে ঐবর্য্য লাভ হয়। এ ছিবকে একটা প্রবাদ প্রচলিত আছে বে, বাহার লগু লোবরের শিবপূজা করা হয়, তাহার মৃত্যু হইরা থাকে। গোবরের শিবপূজার একটু বিশেষ এই যে, মৃত্তিকাপভিত্তু গোবরের ধারা শিল নির্মাণ করিতে নাই।

রজোমর লিজ-রজ: বারা লিজ নির্মাণ করিরা ভাহার পূজা করিলে বিভাধরত এবং তৎপরে শিবসাযুজ্যলাভ হইরা থাকে।

যবগোধ্মশালিজ— যব, গোধ্ম ও শালিজ তপুলের লিজ নির্মাণ করিয়া পূজা করিলে এ,পৃষ্টি ও পুত্রাদিলাভ হইয়া থাকে।

সিতাথগুমর লিক্স—সিতাথণ্ডে লিক নিশ্মাণ করিয়া পূজা করিলে আরোগ্য লাভ হয়।

লবণজ্ঞলিক—হরিতাল ও ত্রিকটু লবণের সহিত মিশ্রিত করিয়া লিক নির্ম্মাণপৃথ্যক পূজা করিলে উত্তম বশীকরণ হয়।

লবণজনিক সৌভাগ্যপ্রদ, পার্থিবনিক সকল কামনাসিদ্ধিদ, তিলপিটোথ লিক অভিলাবসিদ্ধিদ, তুরোখ লিক মারণনীল, ভ্রময় লিক সর্বকলপ্রদ, গুড়োথ লিক প্রীতিবর্দ্ধন, গদ্ধয়য়লিক গুণদায়ক, শর্করাময় লিক স্থথপ্রদ, বংশাভ্রনির্ম্মিত লিক বংশকর, গোময়লিক সর্বরোগপ্রদ ও কেশাছিসস্তব লিক সর্বপ্রক্রানাশক। এ ছাড়া দ্রুমোভ্রত লিক দারিদ্রপ্রদে, পিষ্টময় লিক বিভাপ্রদ, দধিত্র্যোন্তব লিক কীর্ষ্টি, লক্ষী ও স্থপ্রদে, ধান্তক্র লিক ধান্তপ্রদ, কলোথ লিক ফলপ্রদ, ধাত্রীফলজাত লিক মুক্তিপ্রদ, নবলীতজাত লিক কীর্ত্তি পোভাগ্যবর্দ্ধক, দুর্ব্বাকাতলিক অপমৃত্যুনাশক, কর্প্রজাত লিক মুক্তিপ্রদ। ক্ষোভণ ও মারণ কার্য্যে পিষ্টময় লিক প্রশন্ত।

অয়য়য়য়ঀিজ লিক সিজিপ্রাদ, মৌজিক লিক সৌভাগ্যপ্রাধ,
য়র্ণনির্দ্মিত লিক মহামুজিপ্রাদ, রাজতলিক ভৃতিবর্দ্ধক, পিত্তল ও
কাংস্তজ লিক সামান্ত মুক্তিপ্রাদ; অপু, আয়স ও সীসকজাত লিক
শক্রনাশক; মিশ্র অপ্টধাতুনির্দ্মিত লিক সর্ব্ধসিদ্ধিপ্রাদ, অপ্টলোহজাত লিক কুঠরোগনাশক, বৈদ্য্যমণিজাত লিক শক্রদর্শনাশক,
ফাটিকলিক সর্ব্ধকামপ্রাদ। উপযুক্ত ধাতু ও দ্রব্যাদি হারা
লিবলিক নির্দ্মাণ করিয়া পূজা করিলে ঐ সকল ফল লাভ
হইয়া থাকে ।

* "কার্যাং পূস্পায়াং লিকং ক্রপজনসাথিতত্ব।
নবধণ্ডাং ধরাং ভূজ্বা প্রেশোহবিশতিপতির্ভবেং ।
রজোভিনির্দ্রিতং লিকং বং পূর্রতি ভক্তিতঃ।
বিদ্যাধরণদং প্রোণ্য পল্টাছিবসমাে ভবেং ॥
শ্রীকানো পোশকুলিকং কুরা তজ্যা প্রপূল্পরেং ॥
বচ্ছেন কাপিলেনেব সোমরেন প্রকলরেং ॥
কার্যাং যক্তিসমা লিকং ববগোধুমশালিকার।
শ্রীকামণ পূর্তকামত পূর্তকামতার্জকেরং ॥
সিভাবত্যসাং লিকং কার্যাবারোগাবর্জনর্।

পূর্ব্বে যে সকল লিঙ্গপুজার কথা লিখিত হইরাছে, তাহার
মধ্যে কলিকালে তামাদিনির্দ্ধিত লিঙ্গপুজা করিতে নাই। বথা—

"তামলিকং কলৌ নার্চেং হৈত্যক্ত সীনকত চ।
রক্তচন্দনলিক্ত শব্দকাংতারসং তথা ।

তৃষ্টিকামন্ত সকতেং লিঙ্গং পিত্তলসম্ভবন্ ।

কীপ্তিকামো যজেরিতাং লিঙ্গং কাংতলমূত্তবন্ ।

শক্রমারণকামন্ত লিঙ্গং লৌহমরং সদা।

সদা সীসমরং লিজমাযুকামোহর্চেরেররঃ ।" (মংক্রস্কে মহাতত্ত্র)

তামনির্দ্ধিত লিঙ্গ, রৈত্যে, সীসক, রক্তচন্দন, শব্দ, কাংত,
লৌহ এবং সীসকনির্দ্ধিত লিঙ্গ কলিকালে পূজা করিলে মহা এশ্ব্যা

লাত হয়।

ৰভে লৰণজা লিখা ভালতিকটুকাৰিতৰ্ ৷ भवायुष्ठमधः निकार **मः**भूका वृक्षिवर्कनम् । লবণেন চ সৌভালাং পার্ধিবং সর্বকামদন্ ১ কামদং ডিলপিট্টোবং ডুবোখং সরণে শ্বতম্ । छत्यायः श्वनमः छुनि भक्तायः स्थ्यमम्। यः नाष्ट्रतायः यः नक्तः शावतः प्रकारतात्रवर् । क्माड्रिज्डयः निजः तर्रागञ्जविमानमम्। কোতণে মারণে পিইসভবং লিক্ষমুভ্রমণ্ । দারিক্রদং ক্রমোডুডং পিটং সারস্বতপ্রদর্। मधिष्टरकाढ्यः नित्रः कीर्डिनन्तीय्थ्यपम् ॥ श्राच्याः श्राच्याः निकः करनाथः कननः छरवः । भूष्णायः निवारकानावृष्ट्रेका वाजीकालां**ड**वन् । नवनीरणाह्यः शिक्षः कीर्खिमोणागायद्वनम् । मृत्राकाश्यम् ड्राम्यम् ज्ञानिवात्रवम् । क्रभू ब्रमण्डवः निजाः ठनाः देव ज्वित्रम् जिनम् । অরক্ষান্তঃ চতুর্ব । তু জেরং সামান্তসিদ্ধির । यहामू कि अपः देहमः त्राक्षकः कृष्ठिपर्कनम् । बादक्षेः उथा काःकः गृत् नामाधम् कियम् । जभूतीतावनः निष्णः भज्नाः माभरत हिष्म् । कीर्खिनः कारकबर शिक्षः बाबाउर मुक्किनम् । গৈত্বলং ভুক্তিমুক্তার্থং মিজজং সর্কাসিজিলস্ ঃ निज्नाः मूक्टब निकः नृजाः व्याप्तनायम् । रेएमका मकारमाक्क आश्रात भूकातर भूमान् । **क्षि**व्यक्षः पञ्चनः निकरः निकासः नर्गानिकान् । थाजूकः धननः जाकाकाज्ञकः (कात्रजिक्ति । जिल् (नीरहोहरनांचक स्काकांमस न्यारहर । কাভিকামত সততং নিজং কুছুৰসভবৰ্। (चठाश्वनम्बूकः यहाय्किविवर्कमन्। श्रद्भागकिनः निकः कृषाकनम्बूष्णम् ॥"

(মংক্রম্ক, মাতৃকাকেণ্ডর)

"পারদক্ষ মহাভূতি সোন্তাগ্যার চ মোজিক্ষ্।" (পরপ্রাণ)

কিল নির্মাণপূর্কক ভাহার সংস্কার করিরা পূলা করিতে হয় ।
কেবল পার্থিব লিলের সংস্কার করিতে হয় না । নিরোক্ত প্রাণালী

অন্থসারে সংস্কার করিবে। রোপার বা বর্ণনির্মিত লিল বর্ধপাত্রে তিন দিন ছয় মধ্যে রাশিরা দিতে হইবে। পরে

ব্যোক্ষকং যজামহে' ইত্যাদি মন্ত্র ছারা মান করাইরা কালকল্রের পূজা করিবে, পরে বেশীতে বোদ্দশ উপচার ছারা পার্মতীর
পূজা বিধের। তৎপরে ঐ পাত্র হইতে লিল তুলিরা গলাজবেল

তিন দিন রাখিয়া দিতে হয় । পরে বংগাবিধি সংস্কার অর্থাৎ
প্রেছিটা করিয়া ঐ লিল স্থাপন করিতে হইবে।

"সংস্কারং সংপ্রবক্ষ্যামি বিশেষ ইহ যন্তবেৎ। রৌপাঞ্চ স্বর্ণালক্ষ স্বর্ণপাত্রে নিধার চ॥ ভন্মান্তবোল্য তরিলং হন্ধমধ্যে দিন্ত্রম্। আদকেণ মাপরিদ্ধা কালকজং প্রপৃত্তরেৎ॥ বোড়লে নোপচারেণ বেছান্ত পার্ববতীং যক্তেও। ভন্মান্তবোল্য তরিলং গলাতোরে দিনত্রম্। ভততো বেদোক্তবিধিনা সংস্কারমাচরেৎ স্থাঃ॥"

> (মাতৃকাভেদতন্ত্ৰণ পটল) চা ২ তোলা বা ২ তোলা

পার্থিব শিবলিকপৃত্ধনে মৃত্তিকা ২ তোলা বা ২ তোল। পরিমাণ লইয়া তাহার দ্বারা লিক নির্মাণ করিয়া পূজ। করিতে হয়।

শিলদপ্রমাণং দেবেশ কথয়ত্ব ময়ি প্রভো।
পাথিবে চ শিথাদো চ বিশেষো যত্ত যো ভবেৎ ॥
মৃত্তিকাতোলকং গ্রাহ্মথবা তোলকদ্বয়ম্।
এতদক্তম কুর্বীত কদাচিদপি পার্কতি ॥"

পার্থিব নিঙ্গপুজনে মৃত্তিকান্ডেদের ব্যবস্থা দেখিতে পাওয়া যায়। নিঙ্গ নির্মাণ কালে ব্রাহ্মণ শুক্রবর্ণ মৃত্তিকা, ক্ষত্রিয় রক্তবর্ণ মৃত্তিকা, বৈশ্ব পীতবর্ণ মৃত্তিকা এবং শৃদ্র কৃষ্ণবর্ণ মৃত্তিক।

(মাতৃকাভেদতন্ত্র ৭ পটল)

ছারা লিক্স নির্মাণ করিয়া পূজা করিবে। যে ছলে ঐরপ মৃত্তিকার অভাব হইবে, তথার বিভিন্ন বর্ণের মৃত্তিকা হারা লিক্স নির্মাণ করিলে দোষ হইবে না।

"हरूर्या পार्थिवः निषः मृश्मा (छानम পार्काछ ।

শুক্লং রক্তং তথা পীতং ক্লক্ষণ পরমেশ্বরি । শুক্লর ব্রাহ্মণে শুক্তং ক্লব্রিনে রক্তমিশ্বতে। পীতত্ত বৈশুক্তাতে ক্লাৎ ক্লকং শুদ্রে প্রকীর্তিতম্।

্বিলার্চনতন্ত্র ৩০°)
লিন্দ নির্মাণ করিতে হইলে লিন্দের কেন্দ্রী বিভার ও পুরিমাণ
শান্তে নির্দিষ্ট হইরাছে সেইরূপ বিভার ও পরিমাণ করিতে ইইবে

ত্রি

অক্যাভতম্ ।"



লিক্সের দ্বিশা বেদী এবং তদ্ধ পরিমাণ বোনিপীঠ করিতে হুইবে। নিদ্ধ অনুষ্ঠ প্রমাণ করিতে হুইবে। কিন্তু পাবাণাদি নিদ্ধ নির্মাণ করিতে হুইলে ছুল করিতে হুইবে। রন্ধাদি ধাতু-নির্মিত নিদ্ধ স্থলে পরিমাণ ইচ্ছাত্মকপ হুইবে।

শীলকত বাদ্যিন্তার: পরিণাহোহপি ভাদৃব:।
লিকত বিশুলা বেদী বোনিন্তদর্কসমিতা ॥
কুর্বীভাকৃঠিতো দ্রবং ন কদাচিদপি ক্ষচিং।
রক্ষাদিশিবনির্দাণে মানমিজাবশার্ডবে।
শিলাদৌ চ মহেশানি স্থলঞ্চ ফলদারকম্।
অকুঠমানং দেবেশি যথা হেমাদ্রিমানকম্।

(লিকার্চনতত্র ও তত্রান্তর)

লিক স্থলকণযুক্ত করিতে হর। অলক্ষণ লিক অণ্ডভকর, এই জন্ম উহা পরিত্যাগ করা বিধের। লিকের দৈর্ঘাদীন হইলে শক্র বৃদ্ধি হইরা থাকে। পরিমাণের ছব্ব দীর্ঘ করা উচিত নহে। যোনিপাঠ এবং মন্তকাদিহীন করিয়া লিক করিবে না। তাহাতে নানাবিধ অমক্ষল হইয়া থাকে। পার্থিব লিকে স্বাস্কৃত পর্মাণ লিক নির্মাণ করিয়া পূজা করিবে।

শিলদং স্থলকণং কুর্যাৎ তাডোলিদমলকণম্।
দৈর্ঘাহীনে ভবেদ্যাধিরধিকে শত্রুবর্ধনম্ ॥
মানহীনে বিনাশঃ ভাদধিকে চ শিশুক্রঃ।
বিত্তারে চাধিকে হীনে রাষ্ট্রনাশো ভবেদ্ধবম্ ॥
পীঠহীনে তু দারিজ্ঞাং শিরোহীনে কুলক্রঃ।
ব্রহ্মসূত্রবিহীনে চ রাজ্ঞাং রাষ্ট্রক্ষ নশুতি।
তন্মাৎ সর্ব্বেষ্ট্রেন লিকং কুর্যাৎ স্থলকণম্ ॥"

(মাতৃকাভেদত° ৭ প°)

"ষাষ্ঠপর্কমানত কথা লিঙ্গং প্রপ্রবাহে।
মৃদাদিলিঙ্গঠনে প্রমাণং পরিকীপ্তিতম্॥" (বট্কর্মানীপিকা)
এক লিঙ্গ পূজা করিলে দেব ও দেবী এই উভয়েরই পূজা
করা হইরা থাকে। লিঙ্গের মূলে ব্রন্ধা, মধ্যদেশে ত্রিভূবনেশ্বর
বিষ্ণু, উপরে প্রণবাখ্য মহাদেব অবস্থিত। লিঙ্গবৈদী মহাদেবী
এবং লিঙ্গই সাক্ষাৎ মহেশ্বর। অভএব লিঙ্গপূজার সকল
দেবভার পূজাই হইরা থাকে।

"মূলে ব্রহ্মা তথা মধ্যে বিষ্ণুক্তিভ্বনেশর:।

কলোপরি মহাদেব: প্রণবাধ্য: সদাশিব: ৪

নিজবেদী মহাদেবী নিজং সাক্ষারহেশর:।

তয়ো: প্রপুজনান্নিতাং দেবী দেবক পৃজিতৌ ॥" (নিজপুরাণ)
পারদ-পিঁরুলিজপুজার বিশেব প্রদংসা দেখিতে পাওয়া যার,

যখন পারদ নিজ নির্দাণ করা হয়, তখন নানাপ্রকার বিদ্ন

হাটবার সন্থাবনা। এই জন্ত সেই সমন্ত শাস্তি স্বভায়ন করা

আবশ্রক। পকার দলে বিষ্ণু, আকার অর্থে কালিকা, রকার দলে শিব, এবং দকার ব্রহ্মা, স্বভরাং পারদ শলে ব্রহ্মা, বিষ্ণু মহেবর ও কালিকা ব্রিতে হইবে। অতএব ব্রহ্মবিষ্ণুশিবামক পারদ লিক বিনি পুঝা করেন, তিনি শিবতুলা হইরা থাকেন এবং ধন, জ্ঞান ও অণিমাদি ঐবর্যা লাভ করিরা থাকেন। যদি জীবনকালে এক দিনও পারদ লিক পুঝা করা যার, তাহা হইলেও উক্তর্মপ কল হইরা থাকে।

"পকারং বিফুরপঞ্জাকারং কালিকা স্বন্ধং।
রেকং শিবং বকারঞ্জ জন্ধরণং ন চান্তথা ॥
পারদং পরমেশানি জনবিজুশিবাস্থকম্।
বো যজেৎ পারদং লিকং স এব শহরোহব্যরঃ॥
আক্রম মধ্যে বো দেবি একদা যদি প্রক্রেঃ।
স এব ধক্তো দেবেশি স জানী স চ তস্থবিং॥
পারদে শিবনির্দ্মাণে নানা বিন্ধং যতঃ প্রেরে।
অতএব মহেশানি শান্তিস্বন্তায়নকরেং॥
"

এই যে সকল লিজের বিষর বলা হইল, এই সকল লিজ নির্মাণ করিতে হয়, ইহা ভিন্ন নর্মদাদি নদীতে এক প্রকার লিজ পাওয়া যায়, তাহাকে বাণলিজ কহে। এই লিজ ছুক্তিমুক্তি-প্রদায়ক। নর্মদা, দেবিকা, গলা, যমুনা প্রভৃতি পুণ্য নদীতে বাণ-লিজ সকল আছে, ইক্রাদি দেবগণ এই লিজের পুজা করিয়া-ছিলেন। স্বয়ং মহাদেব এই লিজে সর্ব্বাণ অবস্থিত আছেন।

"বাণলিকং তথা জ্ঞেয়ং ভূকিমুক্তিপ্রদায়কম্। উৎপজ্ঞিং বাণলিকভ সক্ষণং শেষতঃ শৃণ্॥ নশ্মদাদেবিকায়াঞ্ গলাযমূন্যোভথা। সন্তি পুণ্যনদীনাঞ্চ বাণলিকানি বন্ধুথে॥ ইক্রানি পূজিতান্তক্ত তচিক্তে বিহিতানি চ। সদা সমিহিতস্তক্র শিবঃ সর্বার্থদায়কঃ। ইক্রালিদানি তান্তাহঃ সামাজ্যার্থপ্রদানি চ॥"

(বীরমিত্রোদম্পুত কালোত্তর)

বাণনিক পূজা করিতে হইলে তাহার বেদিকা করিরা তাহার উপর এই লিঙ্গ হাপন করিরা পূজা করিতে হর। তাম, কটিক, বর্ণ, পাবাণ, রক্ত বা রৌপোর বেদি করিবার বিধান আছে।

"ভাষ্ট্রী বা ক্ষাটিকী স্বাণী পাবাণী রাজতী তথা। বেদিকা চ প্রকর্ত্তবাা তত্র সংস্থাপ্য পৃত্তরেৎ ॥"

(হেমাদ্রিগ্রত বচন)

নর্ম্মদাদি পুণ্যনদী হইতেঁ বাণশিদ্ধ উত্তোদনপূর্বক পরীক্ষা করিয়া পরে সংস্কার করিবে। পরীক্ষার নিরম—প্রথমে তুলাদণ্ডে একদিকে বাণশিদ্ধ, অপরদিকে তণুল সমান করিয়া দিয়া এঁকবার ওজন করিবে। পরে আবার ঐ তণুল হারা ওজন করিলে যদি ঐ তপুল অধিক হয়, তাহা হইলে ঐ কিল পৃহস্থিগের পৃথানীর। ওজন ৩, ৫ বা ৭ বার করিতে হয়। বদি তুলার প্রত্যেক বারই বদি সমতা হয়, অর্থাৎ এক ওজনই থাকে, তাহা হইলে ঐ কিল জনে কেলিরা নিতে হইলে। তপুল অনেশলা বদি কিল অধিক হয়, তাহা হইলে ঐ কিল উদাসীনন্দিগের পক্ষে হিতকর।

"ইত্যেতন্ত্রকশং প্রোক্তং পরীকাতন্ত্রকোবিলৈ:। ব্রি:সপ্তপঞ্চবারং বা তুলাসাম্যং ন জারতে। তলা বাগং সমাখ্যাতং শেবং পাবাগসন্তবন্।"
(বীর্মিত্রোদর্থত স্লোক)

'কুলাকরণত তপুলেন,অপরতুলাদির তপুলা বছধিকাঃ স্থান্তগ তামিলং গৃহিণা পুলামবধার্যাং লিলফেনধিকং তদোদাসীনপুলাং তদিতি কিংবদস্তীতি হেমাদিগত লক্ষণাক্রান্তম্।'

"সপ্তকৃত্যস্ত্রশার্কার বৃদ্ধিমেতি ন হীয়তে। বার্ণালিক্ষমিতি খ্যাতং শেষং নার্ম্মমুচাতে॥ ব্রিপঞ্চবারং যহৈত্ব তুলাসাক্ষাং ন জারতে। ভলা বার্ণং সমাধ্যাতং শেষং পার্বাণসস্তব্ম ॥"

(স্তসংহিতা)

বাণসিজ কি না এইরূপ প্রণালী অনুসারে পরীক্ষা করিয়া ভাহার সংস্কারপূর্ব্বক পূজা করিবে।

শিলপুলাবিধি। বাণলিল পূজা করিতে হইলে প্রথমে সামান্ত পূজাপদ্ধতিক্রমে গণেশাদি দেবতা পূজা করিয়া বাণলিলকে লান করাইতে হইবে। পরে নিম্নোক্ত ধ্যান পাঠ করিয়া মানসোপ-চারে পূজা এবং পুনরায় ধ্যান করিয়া পূজা করিতে হয়। পূজা যথাশক্তি বোড়শাদি উপচারে করা যাইতে পারে। ধ্যান—

ওঁ প্রমন্তং শক্তিসংযুক্তং বাণাখ্যক মহাপ্রভন্।
কামবাণাধিতং দেবং সংসারদহনক্ষমন্।
শৃলারাদিরসোলাসং বাণাখ্যং পরমেধরম্।"
এই ধ্যানে পূকা ও জপাদি করিয়া তাব পাঠ করিতে হয়।
বাপলিলপুকার আবাহন ও বিস্ক্রেন নাই।

বাগণিক বছ প্রকার,—আগ্নেয়ণিক, বাম্যণিক, নৈও তিলিল, বারুণিক, কুবেরণিক, রোজনিক, বৈক্যবিক, অর্কুনিক, মৃত্যুপ্তরণিক, নীলক্ষ্ঠ থিক, মহাদেবণিক, অল্লিক, ত্রিপুরারি-গিল, অর্কনারীখন শিক ও মহাকাল শিক প্রভৃতি। ই হাদের প্রত্যেকটার পৃথক্ পৃথক্ লক্ষণ শাল্পে নির্দিষ্ট হইরাছে, সেই লক্ষণ বারা উক্ত শিক হির্ম করিতে হয়। বাণলিকের গুভা-গুভ লক্ষণ বিশেব করিয়া পরীক্ষা করিয়া লইনে হয়।

নিদ্যালিছ—বাণ্লিছ কর্মল হইলে প্রনারাদিকর, চিপিটা-কার অর্থাৎ চেপ্টা হইলে গৃহভঙ্গ, এক পার্বাহিত হুইলে পুজধারাদি থনকর, শিরোদেশ ফুটিত হইলে বাধি, নিদ ছিজ হইলে বিদেশগদন, এবং লিলে কর্ণিকা থাকিলে ব্যাধি হর, ক্ষেত্রাং এই সকল দোবযুক্ত বাশনিদ্ধ পুজা করিছে নাই। ইহা ভিন্ন তীক্ষাগ্র, বক্ষশীর্ব, এবং অ্যন্ত (ত্রিকোণ) নিদ্ধ পরিবর্জনীর। ইহা ভিন্ন অতি মূল, অতিক্লশ, স্বন্ন ও ভ্ৰণবৃক্ত নিদ্ধ গৃহী পূজা করিবে না, এই নিদ্ধ বাহারা মোক্ষার্থী ভাহাদের পক্ষে হিতকর।

"কর্কশে বার্ণনিলে তু পুত্রসারক্ষরো ভবেং।

চিপিটে প্রিতে তদিন্ গৃহভগ্নো ভবেদ্ধবন্॥
একপার্যন্তিতে বাংল ব্যাধির্মরণমেব চ॥

ভিত্রনিলেহর্কিতে বাংল বিদেশগমনং ভবেং।

শিরদি চ কর্নিকাং দৃষ্ট্য ব্যাধিমান্ আরতে পুমান্॥
তীক্ষাগ্রং বক্রনীর্যক ক্রাপ্রলিকং বিবর্জনেরং।
অতিস্থলকাতিকৃশং স্বরং বা ভূষণান্থিতম্॥
গৃহী বিবর্জনেরভাদৃক্ তদ্ধি মোক্রাপিনো হিতম্॥" বীর্মিজোদর
ভভনিক—ঘনাভ ও কপিল বর্ণ লিক্ক বিশেষ ভভ, এই নিক্রপ্রার গুভ হইরা থাকে। লঘু বা ছুল কপিল বর্ণ লিক্ক গৃহী
কদাপি পূজা করিবে না। ভ্রমরের স্তার ক্রঞ্বর্ণ লিক্ক সশীঠ জ্বপাঠ
বা মন্ত্র সংস্কার রহিত হইলেও তাহা গৃহস্থ পূজা করিতে পারে।

"অর্থদং কপিলং লিজং ঘনাভং মোক্ষকাজ্জিল:। লঘু বা কপিলং স্থলং গৃহী নৈবার্চ্চরেৎ কচিৎ॥ পৃত্তিতব্যং গৃহস্থেন বর্ণেন ভ্রমরোপমম্। তৎসপীঠমপীঠং বা মন্ত্রসংস্কারবর্জ্জিতম্॥" (বীরমিত্রোদর)

বাণলিকের আকার পদ্মবীক্ষের সদৃশ। এই বাণলিক ভূক্তিও মৃতিপ্রেলায়ক। পক অব্ ফলের জায় ও কুকুটাও সমাকৃতি বে লিক তাহাও বাণলিক নামে থ্যাত, এই লিকও পৃক্ষার বিশেষ প্রাপত। মধুবর্ণ, শুক্ত, নীল, মরকত মলির বর্ণ এবং হংসভিবের আরুতিঘিলিট বে লিক, তাহা স্থাপনে প্রাপত। এই লিক নর্মালি নদী জলে পর্কাত হইতে স্বরংই উত্ত হন। স্বভরাং নদী হইতে তুলিয়া আনিয়াই সংখ্যার করিয়া পূলা করিছে পারা বার। পূর্কে বাল তপালা করিয়া মহাবেরের নিকট বর লইয়াছিল বে, ডিনি সর্কাল পর্কাতে লিকরণে আবিত্রত থাকিবেন, এইজভ জগতী তলে ঐ লিক বাণলিক নামে থাতে। একটা বাণলিক পূজার করিলে বহলিক পূজার কলবাভ হয়।

"প্ৰজন্ম কৰাকারং কুকুটাওসমাকৃতি। ভূকিম্কি-প্ৰবংশৰ বাগলিলম্বাজ্তন্ । প্ৰজন্মলাকারং কুকুটাওসমাকৃতি । 'প্ৰশতং নাৰ্থবং লিলং প্ৰজন্মলাকৃতি। মধুৰ্গং তথা গুৰুংনীলং মরক্তপ্ৰতন্ । (হেমাজিখত পুরাণবচন)

হংগতিখাকৃতি পুন: হাপনারাং প্রশক্ততে।
বরং সংস্রবতে লিকং গিরিতো নর্ন্নাতটে ।
আবিরাসীৎ গিরৌ তত্র লিকরূপী মহেখর:।
বাগলিকমপি খ্যাতমতোহর্ধা কগতীতলে।
অস্তেবাং কোটিনিকানাং পূজনে বং কলং ভবেং।
তৎ কলং গভতে মর্জ্যো বাগলিকৈকপুজনাং।

লিক্ষ নির্ম্মণ করিতে হয়। 'ওঁ হরায় নমং' এই মন্ত্রে এক তোলা বা ছই তোলা মৃত্তিকা লইরা 'ওঁ মহেশ্বরায় নমং' বলিরা অকুষ্ঠ পরিমিত লিক্ষ নির্মাণ করিতে হইবে। মৃত্তিকা সমান তিন ভাগ করিয়া উপরের ভাগে লিক্ষ, মধ্যভাগে গৌরীপীঠ এবং শেষ ভাগ ধারা বেদী অর্থাৎ আসন প্রস্তুত করিতে হয়। উপরের ভাগকে লিক্ষ, মধ্যভাগকে গৌরীপীঠ এবং নিয়ভাগকে বেদী কহে। ছই হাতের মধ্যে যে কোন হত্ত ধারা লিক্ষ নির্মাণ করা যাইতে পারে, এক হত্ত ধারা লিক্ষ নির্মাণ করাই প্রশন্ত । নিতাম্ভ অসমর্থ হইলে ছই হত্ত ধারাও লিক্ষ গড়ান যাইতে পারে। এই-রূপে নির্মাণ করিয়া একটী কুল গোলাকার মৃত্তিকা লিক্ষের মস্তকোপরি দিতে হইবে। ইহার নাম বক্স। অপরে লিক্ষ নির্মাণ

করিয়া দিলে পুত্রক শিবের গাত্রে হাত দিয়া 'ওঁ হরায় নম:' ও

'ওঁ মহেশ্বরায় নমঃ' এই মন্ত্র পড়িবে। পূজার সময় শিবলিকের পিণাক উত্তরদিকে করিয়া বিশ্বপত্তের উপর বসাইতে হয়।

मामाज পূজाविधि अञ्चादि आमन कि, जनकि, गरनमामि

প্রভৃতি দেবতা পূজা করিয়া লিঙ্গপূজা করিতে হইবে। পূজার

সময় ললাটে ভন্ম বা মৃত্তিকার ত্রিপুণ্ড এবং গলদেশে রুদ্রাক্ষ-

माना शांत्रण विदश्य ।*

পার্থিব লিদপুজা-পার্থিব লিদপুজা করিতে হইলে প্রথমে

পরে শিবের ধ্যান করিতে হইবে। ধ্যান বথা—

"ওঁ ধ্যারেক্সিঃ মহেশং রজতগিরিনিভং চারুচজ্রাবতংসং
রক্সাকরোজ্ঞানাধ্যং পরগুমৃগবরাজীতিহন্তং প্রেসমন্।
পদ্মালীনং সমন্তাৎ অতমমরগগৈর্যাত্মকৃতিং বলানং
বিষাজং বিষবীজং নিধিলভয়হরং পঞ্চবকু: ত্রিনেত্রম্।"

এই ধ্যান পাঠ করিরা মানলোপচারে পূজা করিয়৷ পরে ধ্যান
পাঠ করিয়৷ শিবের মন্তকে ফুল দিতে হইবে। পরে 'ওঁ পিণাকধৃক্ ইহাপজ্ঞ, ইহাপজ্ঞ, ইহ তিঠ ইহ তিঠ, ইহ সারিধেহি, ইহ
সারিধেহি, ইহ সারিক্ষাম্ম ইহ সারিক্ষাম্ম, অত্রাধিঠানং কুক মম
পূজাং গৃহাণ।' এইরূপে আবাহনাদি করিবে। আবাহনী প্রভৃতি
পাচনী মুলা দেখাইয়া আবাহনাদি করিতে হয়। পরে 'ওঁ শূল-

পাণে ইং হ্রপ্রতিষ্ঠিতো ভব' এইব্রংশ গিক্সপ্রতিষ্ঠা করিয়া 'উ পশুপতরে নুমঃ' এই মত্তে তিনবার শিবের মন্তকোপরি কল বিরা শিবের মন্তকের বন্ধু কেলিয়া দিয়া ভত্বপরি চারিটা আডপ ভঙ্গল্ কিতে হর। পরে পাডাবি দশোপচার হারা পূকা বিধের। 'উ এতৎ পাডাং ওঁ নমঃ শিবার নমঃ।'

"रेममर्गाः ও नमः निवात नमः" रेखामिक्तरम नाम, अर्गा, व्याठमनीत, संधूतक, जानीत, शक, शून, विवलज, धून, मील ७ निर्वामि मिटिंड इहेरव। निर्वत आर्था कना ७ বিৰপত্ৰ দিতে হয়। পরে শিবের অষ্টমূর্ত্তির পূঞা করিতে হয়। পূর্ব্বদিকে-এতে গন্ধপুলে 'ওঁ সর্ব্বার কিতিমূর্ত্তরে নমঃ' ঈশান-কোণে 'এতে গৰুপুলো ওঁ ভবার জলমূর্ত্তরে ন্মঃ' উদ্ভৱে 'এতে গৰপুলে ওঁ কজার অগ্নিমূর্ত্তরে নমঃ' বায়ুকোলে 'এতে গৰপুলে ওঁ উগ্ৰায় বায়ুমূৰ্ত্তমে নমঃ' পশ্চিমে 'এতে গৰুপুলো ওঁ জীমার আকাশমূর্ত্তয়ে নম:' নৈথাতে 'এতে গছপুন্পে ওঁ পণ্ডপত্তরে যজ-মানমূর্ত্তরে নমঃ' দক্ষিণে 'এতে গৰুপুলো ও মহাদেবার সোমমূর্ত্তরে নম:' অগ্নিকোণে 'এতে গৰপুলে ও ঈশানার সুর্যামূর্ত্তরে নমঃ' এইরপে অষ্টমৃত্তি পূজা করিয়া বথাশক্তি লপ ও গুঞাতি গুঞ্ মন্ত্রে জপ ও বিসর্জ্ञন করিতে হইবে। তৎপরে দক্ষিণকরের রুদ্ধান্তুষ্ঠ ও তৰ্জনী যোগ করিয়া তন্থারা বন বন শব্দে দক্ষিণ গাল বাছ করিতে হয়। এই সময় মহিয়া তাব প্রভৃতি শিবের ভাবকবচ পাঠ করা আবশ্রক। অসমর্থ হইলে অভাবপক্ষে ২।১টী লোকও পাঠ করা বিধেয়। পরে নিয়োক্তময়ে প্রণাম করিতে হইবে :

মত্র—ওঁ নমস্বভাং বিরপাক্ষ নমতে দিব্যচকুবে।
নম: পিণাকহন্তার দশুপাশাসিপাণরে।
নমক্রৈলোক্যনাথার ভূতানাং পতরে নম: ॥
বাণের্বার নরকাণবতারণার জ্ঞানপ্রদার কর্ম্পামর্মাগরার।
কর্প্রকুন্দধবলেকুজ্টাধরার দারিত্যত্বংগদহনার নম: শিবার ॥
নম: শিবার শাস্তার কারণত্ররহেতবে।
নিবেদরামি চান্ধানং স্বং গন্ধি: গরনেশ্বর ॥
নমতে স্বং মহাদেব লোক্ষানাং স্কর্মীর্বর্ম।
পুংসামপূর্শিমানাং কামপুরামরান্ত্রিপম্॥

এই মত্রে প্রণাম করিরা দক্ষিণহত্তে অর্ছাজন গ্রহণপূর্বক নিয়োক্ত মত্রে আত্মসমর্গন করিরা নিবের মন্তকে একটু জন দিতে হইবে।

মত্র বথা—'ইড: পূর্কাং প্রোণবৃদ্ধিকেহধর্মাধিকারতো জাগ্রৎ-স্বশ্নসূত্যবহাত্র মনসা বাচা হন্তাভাগে পত্তামূদরেণ শিরা বং-স্বতং বংক্তং বছক্তং তৎসর্কাং শ্রীশিবার স্বাহা, মাং মনীরং সক্তনং সমাক্ শ্রীশিবচরণে সমর্শরে।'

 [&]quot;বিনা ভত্তালিপুঙে প্ৰিনা কলাজনালৱা।
 বিনা মালুনপজেশ নাৰ্চকেৎ প্ৰতিকং শিবন্।"
 XVII

এইরপে আন্ত্রসমর্পণপূর্কক রুডাঞ্চলি হইরা ক্ষমা প্রার্থনা করিতে হইবে।

"ওঁ আবাহনং ন জানামি নৈব জানামি পৃত্তনং। বিদৰ্জনং ন জানামি ক্ষমত্ব পন্নমেশ্ব ॥"

এইরপে ক্ষমা প্রার্থনা করিরা বিসর্জন করিতে হর। ঈশান-কোণে জলের বারা একটা ত্রিকোণ মণ্ডল করিয়া পরে সংহার-মুদ্রা বারা একটা নির্মাল্য পূস্প লইরা আত্রাণ করত ঐ ত্রিকোণ মণ্ডলের উপর দিতে হর, এই সময় চিন্তা করিতে হয় যে, পূজিত কেবভা আমার হুৎপন্ম মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। পরে 'এতে গছপুস্পে ওঁ চণ্ডেবরার নমঃ' ওঁ মহাদেব ক্ষমন্ব' বলিয়া শিব লইরা ঐ মণ্ডলের উপর কাত করিয়া দিতে হয়।

প্রস্তরমর শিবলিলপুলায়—আবাহন, বিসর্জন ও গঠনাদি
নাই। পূলাপ্রণালী সমন্তই পূর্বরূপ, কেবল মানের সময় 'ওঁ নম:
শিবার নম:' মন্তে মান করাইতে হইবে। জলে শিবপুজা
করিলে আবাহন ও বিসক্ষ্ণাদি নাই। ধ্যান পূর্বেই দেওয়া
হইরাছে। 'ঠো বাণেশ্বরায় নম:' এই মন্ত্রে উপচারাদি দিতে হয়।
সকল পূলে শিবপুজা করিতে নাই। মল্লিকা, মালতী, জাতী,
শেকাদিকা, জবা, বকুল ও কটি টগরপুলা নিষিদ্ধ।

বাণলিক পূজার পর নিমোক্ত তব পাঠ করা বিধেয়, তব যথা,
"বাণলিক মহাভাগ সংসারান্তাহি মাং প্রভা ।
নমতে চোগ্রহ্মপার নমতেংব্যক্তযোনয়ে ॥
সংসারকারিণে তুভাং নমতে ক্লেরপর্ত্ ।
প্রমন্তার মহেক্লার কালরূপার বৈ নমং ॥
দহনায় নমস্তভাং নমতে যোগকারিণে ।
ভোগিনাং ভোগকর্ত্তে চ মোক্লাত্রে নমোনমং ॥
নমং কামপ্রণাশার নমং ক্লেরহারিণে ।
নমো বিশ্বস্থাতে চ নমো বিশ্বর্রপিণে ॥
বাণভা বরদাত্রে চ রাবণভা ক্লরার চ ।
রামভাত্রহার্থার রাজ্যার ভরতভা চ ॥
মূনীনাং যোগদাত্রে চ রাক্লানাং ক্লার চ ।
নম্ভভাং নমন্তভাং নমো নমঃ ঃ"

ইত্যাদি।

শিবপুরাণে বাদশটা জ্যোতির্নিজের উদ্রেখ আছে, এই জ্যোতির্মিজ সকল লিক হইতে শ্রেষ্ঠ। এই বাদশ জ্যোতির্নিজের মধ্যে কাশীক্ষেত্র প্রধান। এই স্থলের বিষেধর নামক লিক প্রথম, বদরিকাপ্রমে কেদারেধর, শ্রীশৈলে মল্লিকার্জুন নামক লিক ও তীমশবর লিক, ওকারে অমরেশ, উজ্জানিতি মহাকালেধর, স্থরাটে নোমনাথ, পারনীতে বৈছনাথ, উত্তদেশে নাগমাথ, শৈবাবে স্থবমেশ, বক্ষগিরিতে ত্রাম্বক এবং সেডবছে রামেধর

নিক এই হাদশ জ্যোতিৰ্নিক, এই জ্যোতিৰ্নিক স্থৰ্শনপূজনাদিতে ইহ ও পরলোকে অশেষ কল্যাণসাধন হইয়া থাকে।* লিঙ্গক (পুং) নিজেন কায়তীতি কৈ-ক। কপিথ বুক। लिक्रज (औ) निकिनी गठा। (त्राक्रिनि°) -লিস্পুঠমরাম, শৃদাররদোদর নামক মিশ্রভাণপ্রণেতা। লিঙ্গতোভদ্ৰ (ক্লী) > তদ্বোক্ত মন্ত্ৰাত্মক চক্ৰভেদ। ২ দীধিতিভেদ। লিঙ্গত্ব (ক্নী) শিঙ্গত ভাবঃ। শিঙ্গের ভাব বা ধর্ম। लिक्नरमञ् (पूर) रुक्तरमञ्, निक्रभंत्रीत । লিঙ্গদাশত্রত (ক্নী) বতভেদ। লিক্লধর (ত্রি) চিহ্নধারণকারী। গুণবান্। "ধর্মাৎ পরিচ্যুতো রামো ধর্মলিঙ্গধরণ্ট সন্।"(রামা° ০।১৬।২०) "সুহারিকধর" (ভাগ • ৭।৫।১৮) লিম্বধারণ (ক্লী) বংশ বা ধর্মসম্প্রদায়ের পার্থকাস্ট্রক চিহ্নাদি ধারণ। লিক্সধারিন (তি) > চিহ্নধারিমাত্র। ২ যাহারা শিবলিক ধারণ শৈব বা জন্মসম্প্রদায়ভুক্ত সাধুরা গলদেশে অথবা বাহুতে মহাদেবের লিঙ্গমূর্ত্তি ধারণ করিয়া থাকে। लिक्नशादिशी (जी) निमिषद्र माध्याप्रती मृद्धिएक। লিঙ্গনাশ (পুং) লিঙ্গং ইন্দ্রিয়শক্তিং দৃষ্টিং নাশয়তীতি ২ নেত্ররোগবিশেষ, নীলিকা নামক নেত্ররোগ। ইহাকে চলি ক্পায় তিমির, বা ঝাপ্সা বলে।

পটলং বা গতে লিক্ষনাশো জান্নতে"

• "কুত্র কুত্র স্থলে লিকং ভবেজ্যোভিশ্বায়ং ভব।

শীশকর উবাচ।

"কাচে উপেক্ষিতে তৃতীয়ং চতুর্থং

व्यागाष्ट्रांनः व्यवकामि कांनीत्कवः मम विश्वन्। তত্র বিষেধরং নামা জ্যোতির্লিকং ভবিষ্যতি ॥ বৰবিকাশ্ৰমে পুণ্যে বিভীয়ং লিজমুভমৰ। কেদারেশমিতি থাতিং মম জানীছি স্বস্ত্রতী ण्**डीतः विकि मिलकः और्णाम मिलकार्क्यम** । চতুর্থং শুণু মন্তবং ভীমশকরমূত্তমং। ও द्वारत समहत्रमक शक्यः निव्यवीदित्वन्। **श्रेष्ट्राव्यक्तिकाः यहंक महाकारमञ्जर हन्नम् ॥** शोत्रहेगाः सामनाशक मध्यमः **निक्रमीति**ङम् । পারল্যামন্ট্রমং লিঙ্গং বৈদ্যনাথং সমীরিতম 🛭 लेख চ नवमः निजः नागनाचः स्मञ्जूकः। শৈবালে হ্ৰমেশঞ্চ দশমং লিক্ষমীরিতর 🛭 একাদশং जक्षशित्रो खायकः माममुख्यम । সেতে। রামেবরং निक्रः चाननः পরিকীর্তিভব্ 🛔 रेगानि खाछिसिमानि जुक्तिम्किथनानि व। অপুগ্ৰহার সংক্ৰীই কৰিভানি ভবাঞ্জঃ :"(শিষপু উত্তর্ধ ও জঃ) লোৰ ভূতীয় বা চতুৰ পটল প্ৰাপ্ত হইলে এই রোগ উপস্থিত হয়।

স্থাপতে এই রোগ সম্বন্ধে এইরূপ পরিচর পাওরা বার—দৃষ্টিবিশারদ পশুতেরা বলেন বে, মানবের দৃষ্টি পঞ্চাতের গুল
হইতে সমূত্ত, বাহুপটল অবার ডেজ কর্তৃক আর্ড, শীতলপ্রাক্তিবিশিষ্ট এবং থডোডের বিন্দুলিক্ষরে নির্মিত মস্রদলপরিমাণে বিবরাক্তি দোষ সকল বিগুণ হইরা শিরাসমূহের
অভ্যন্তরে গমনপূর্বাক দৃষ্টিশক্তির হাস করিয়া থাকে। দোষ
চতুর্ব পটলে অবন্ধিতি করিলে তিমিররোগ হয়। ইহাতে এককালে দর্শনিশক্তির রোধ হইলে লিজনাশ করে। এই রোগ
অতিগভীর না হইলে চক্র, স্বর্যা, বিহাৎ ও নক্ষত্রবিশিষ্ট
আকাশ দেখিতে পাওয়া যায় এবং নির্মালতেজ ও জ্যোতিঃপদার্থ দৃষ্টিগোচর হয়। লিজনাশরোগের এই অবস্থাকে
নীলিকাকাচ কহে।

এই লিঙ্গনাশরোগ বাতাদি দোবে ছাই হইরা নানাবিধ হইরা পাকে। লিঙ্গনাশরোগ বায়ুকর্জ্ক জারিলে সকল পদার্থ অরুণ বর্ণ, সচল ও আবিল দেখায়। পিত্ত কর্ত্ক হইলে আদিতা, থজ্যেত, ইক্রধন্থ, তড়িৎ ও ময়ৢয়পুচ্ছের ভাায় বিচিত্র নীল অথবা ক্রফবর্ণ দৃষ্ট হয়, অথবা সমস্ত জলমাবিতের ভাায় দেখায়। রক্ত কর্ত্ক জারিলে সমস্ত রক্তবর্ণ ও আক্রকারময় দেখায়। কফজন্ত এই রোগ জারিলে—সমস্তাই বৈতবর্ণ ও স্লিগ্ধ দেখায়। সিয়িশাত কর্ত্ক হইলে সকল পদার্থ হয়িত, ক্রফা, প্র প্রভৃতি বিচিত্রবর্ণবিশিষ্ট ও বিত্যাতের ভাায় বোধ হয়। সকল পদার্থ ই দিধা বা বছধা দৃষ্ট হয়, অথবা রুয়, দীর্থ, বা জ্যোতিঃ অরুণ দৃষ্ট হয়া থাকে।

দিজনাশরোগে ছয় প্রকার বর্ণ হইরা থাকে। বাযুজরোগে দৃষ্টিমগুল রক্তবর্ণ, পিত কর্তৃক পরিমারিরোগ বা নীলবর্ণ, স্নেমকর্তৃক ক্ষেত্রবর্ণ, শোণিত কর্তৃক রক্তবর্ণ এবং সরিপাত কর্তৃক বিচিত্রবর্ণ হয়। পরিমারিরোগে দৃষ্টিমগুলে রক্ত জল্প অরুণবর্ণ মগুলাকার স্থানকাচ জায়ে, অথবা সমস্ত মগুল ঈবংনীলবর্ণ হয়। এই রোগে কথন কথন আপনা হইতে দোব কায় হইরা দৃষ্টি-শক্তি প্রকাশ পায়। (স্ক্রেণ্ড উত্তরত নেত্ররোগাধি)

[ইহার চিকিৎসাদির বিবর নেত্ররোগশব্দে দেখ।]
২ বিজ্ঞ নাশঃ। ক্ষাদেহের বিনাশ, মোক্ষ। "বহুর্যথা
ুবোনিগতন্ত মৃর্ডিন বৃশ্ভতে নৈব চ বিজনাশঃ।" (বেডাখডর
উপ' ১১২০) বিজনাশঃ ক্ষাদেহত বিনাশঃ।' (শহর)

ে ৩ হাৰতৰ বোগ। শিলোখানশক্তির রাহিত্য। ৪ পরিগৃত মর্ব্যাদক চিহ্নাদির বিশর।

বিক্লপরামর্শ (বং) ভারোক লক্ষ্মনির দীমাংবার একার-

তেজ। বেমন ধ্মত, ধ্মচিক্ট অগ্নির উলোধক। ধ্মচিক্রের অপ্নান বারা অগ্নি প্রতিপাদিত হইরাছে বলিরা উহা লিক্পরামর্শে সিদ্ধ হইরাছে বুঝিতে হইবে।

লিক্ষপীঠ (রী) মন্দির মধ্যে যে চন্ধরোপরি দেবলিক প্রাভিত্তিত থাকে, উহাকে গর্ভণীঠও বলা যার। (রাজতরক্ষিণী ২০১২৬)
লিক্ষপুরাণ (রী) মহর্ষি বেদব্যাসপ্রণীত একথানি পুরাণ প্রস্থ।
ইহার বিশেষ বিবরণ পুরাণ শব্দে লিখিত হইরাছে।

[পুরাণ দেখ।]

লিঙ্গপ্রতিষ্ঠাবিধি (পুং) শিবাদি লিজ্বাপনপ্রতি।
লিঙ্গভট্ট, জনৈক অমরকোবটাকা-রচন্নিতা।
লিঙ্গমাহাত্ম্য (জী) দেবলিজের মহন্ব। পুরাণাদিতে জীর্বজ্ঞাক
তন্তদ্যানের দেবলিজের মহিনা কীর্ষিত হইরাছে। জন্দপ্রাণের
অবন্তিথওে ইহার বিশেব বিবরণ পাওরা যায়।

লিঙ্গমূর্ত্তি (পুং) লিজরপা মৃষ্টির্যক্ত। শিব। লিঙ্গমূসুরি, অমরকোষণদবিবৃতিপ্রণেতা। বন্ধলকামর ভট্টো-পাধ্যারের পুত্র।

লিঙ্গব্যোগ (পুং) শিক্ষত রোগ:। শিক্ষের রোগ, উপন্ধশরোগ, চলিত গরমির পীড়া।

> "হন্তাভিঘাতারখদস্তবাতাদধাবনাদত্যুপসেবনাদ্বা। যোনিপ্রনোষাত ভবস্কি শিল্পে পঞ্চোপদংশা বিবিধোপচারে:॥ (ভাবপ্রা উপদংশরোগাধি•)

লিঙ্গদেশে হন্ত, নথ বা দন্ত বারা অভিবাত হইলে, শিরপ্রকালন না করিয়া অপরিকার রাখিলে, অতিরিক্ত স্ত্রীপ্রসঙ্গ
করিলে, দ্বিত ঘোনিতে উপগত হইলে এবং অস্তান্ত নানাপ্রকার
অপচার বারা শিরদেশে বাতিক, রৈমিক, সামিপাতিক ও রক্তক
এই পাঁচ প্রকার উপদংশ রোগ হয়। [উপদংশরোগ শব্দ দেখ।]
লিঙ্গালেপ (পুং) রোগভেদ।

লিঙ্গবং (ত্রি) > চিহ্নযুক্ত। (ভাগ গাহাহ৪), নিলোপাদক বা পিবলিগধারী পৈব সম্প্রদায়ভেদ। অধিকসম্ভব এই নিস্তবং শব্দ হইতে দান্দিণাভ্যের নিসায়ত সম্প্রদায়ের নামকরণ হইরাছে। লিঙ্গবর্দ্ধ (পুং) নিসং বর্দ্ধতীতি বৃধ-নিচ্-অচ্। > কণিখ-বৃক্ষ। (শব্দচ°) ২ নিস্তবৃদ্ধিকরণ, নিসের বর্দ্ধন। গমড় পুরাণে নিবিত আছে—

"কটুতৈলং ভল্লাভকং বৃহতীফলদাড়িমন্।
বকলৈঃ সাধিতং লিপ্তং লিকং তেন বিবৰ্দ্ধতে ॥ অপিচ—
কুঠনাবনরীচানি জগলং নধুপিন্নলী।
অপানাগাৰপদা চ বৃহতীনিতসৰ্বপাঃ ॥
বৰাতিলং সৈদ্ধৰণ পাণিকোষ্ঠানং শুভন্।
লিলবাহতদানাক কৰ্ণবোধ দ্বিফুল্ডবেং ॥" (গ্ৰুকুপুণ ১৮ জ)

কুষ্ঠ, মাব, মরীচ, তগর, মধুপিপ্ললী, অপামার্গ, অখগদা, বৃহতী, সিতসর্থপ, যব, তিল ও সৈদ্ধব এই সকল দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া লিল ও অনাদিতে মর্দ্দন করিলে উহার বৃদ্ধি হয়।

लिइन वर्ष्क्र (वि) नित्त्रत वृद्धिकत्रण।

লৈক্বৰ্দ্ধিন্ (অ) > শিক্বৃদ্ধি। ত্ৰিয়াং ভীপ্। শতাভেদ (Achyranthes Aspera)।

লৈক্সবিদ্ধিনী (ত্রী) লিকং বর্দ্ধরতীতি বৃধ্-ণিচ্ ইনি, ঙীপ্। অপামার্গ। (শব্দচ°)

্রিক্সবিপর্য্যয় (পুং) ব্যাকরণোক্ত পুংস্ত্র্যাদি লিক্ষের পরিবর্তন। চিক্লের বৈপরীত্য।

বিষ্ণু বৃত্তি (পুং) লিঙ্গমেব বৃত্তির্জীবনোপারো যক্ত। জীবিকার্থ জটাদি চিছ্গারণ। পর্যায়—ধর্মধ্বজী।

"জীবিকাদিনিমিত্তন্ত যো বিভর্ত্তি জটাদিকম্।

ধর্মধ্বজা লিঙ্গরভিদ্ব য়ং তত্র নিগছতে ॥" (শব্দরত্না•)

লিঙ্গবেদী (ব্রী) দেবমূর্ত্তি স্থাপনের চত্তর।

लिक्न×ারীর (क्री) शिक्रतम्ह। হক্ষশরীর, মৃত্যুদ্ধরা বাহার ধ্বংস হয় না। [প্রকৃতি শব্দ দেও।]

লিক্সশান্ত্র (ক্রী) ব্যাকরণোক্ত শব্দসমূহের লিকাদিনির্ণায়ক নিয়মা-বলী। ২ ব্যাকরণ গ্রন্থভেদ।

লিঙ্গসন্ত্তা (স্ত্রী) লভাবিশেষ, নিদ্ধিনী।

লিঙ্গস্থ (পুং) লিঙ্গে ব্রন্ধচর্য্যে তিষ্ঠতি স্থা-ক। ব্রন্ধচারী।

"ন সাক্ষী নৃপতি: কাৰ্য্যো ন কাৰুককুণী**ল**বৌ ।

ন শোরিয়ো ন শিক্ষো ন সঙ্গেভো বিনির্গতঃ #" (মহু ৮।৬৫) 'লিক্ষঃ একচারী' (কুলুক)

लित्रह्मी (जी) भ्का।

লিঙ্গাগ্র (ফ্লী) মেদ্রাগ্রভাগ।

লৈক্সাকুশাসন (ক্লী) > লিক্সব্যবহারপ্রণালী। ২ ব্যাকরণোক্ত শ্বাদির লিক্সনিরূপণার্থ যে নিয়ম বিহিত হইরাছে।

লিঙ্গায়ৎ, দক্ষিণ-ভারতের স্থপ্রসিদ্ধ শৈবসম্প্রদায়। নিজম্র্তির উপাসনা তাঁহাদের ধর্ম এবং স্বর্ণ বা রোপ্য কোটায় কবচরূপে স্বর্ণ বা প্রস্তরনির্ম্মিত শিবনিজম্র্তি বাহতে বা গলদেশে ধারণ তাহাদের প্রধান কর্ম। এতব্রিয় তাঁহাদের মধ্যে বিবাহ, অস্ত্রোষ্ট প্রভৃতি বিবয়েও নানাক্ষণ বিভিন্ন আচারশৃদ্ধতি প্রচলিত আছে।

দাক্ষিণাতোর দিলারং সম্প্রান্থ ভারতের নানাছানে জলম, নিল্লধারী, লিলধ্র, লিল্লখর, নিল্লমং প্রাকৃতি নামে পরি-চিত। তাঁহারা বীরাচারী শৈব। গলদেশে বা বাহতে দিলধারণ ও তাঁহার উপাসনাদি বাডীত তাঁহারা বিশেষ কোন ধর্মন্দ্রিত কমুসরণ করেন না। তাঁহাদের মধ্যে জাতিতেদ নাই। ব্রাহ্মণদিগকে তাঁহারা জাতিশ্রেষ্ঠ বলিয়া স্বীকার করেন না। কৃষিকার্য ও বাণিজ্ঞাপরিচালনই তাঁহাদের জীবিকার্জনের একমাত্র অবলম্বন। তাঁহারা সাম্প্রাণয়িক পদ্ধতির বাহ্ম ক্রিয়াকাও বিশেষ শ্রদ্ধার সহিত সম্পাদন করিলেও, নীতিসম্পর্কে
তাঁহাদের বিশেষরূপ উচ্ছ্ অলভা দৃষ্ট হয়। বেদ ও ব্রাহ্মণে
তাঁহাদের কোনরূপ আহা নাই।

লিঙ্গায়ৎ

পূর্ব্বে উক্ত হইয়াছে যে, দক্ষিণভারতে শিবলিঙ্গের উপাসনা
প্রচলিত ছিল। তথাকার বর্ত্তমান লিঙ্গোপাসক সম্প্রদার লিঙ্গারৎ
নামে প্রসিদ্ধ। কল্যাণপত্তনের অধিপতি বিজল রাজার সময়ে
ঐ অঞ্চলে জৈনধর্মের সমধিক প্রাহুভাব ছিল। ১১৬০ খুটাব্বের
পর, বাসব নামক এক ব্রাহ্মণকুমার জৈন ধর্ম্মত নিরসন
করিয়া শিবপূজা প্রচার উদ্দেশে দাক্ষিণাত্যভূমে জঙ্গম-সম্প্রদার
প্রবর্তিত করেন। মহারাষ্ট্রের অন্তর্গত বেলগাম্ জেলার
মধ্যবর্তী ভাগোয়ান গ্রামে এক শৈব ব্রাহ্মণ-বংশে তাঁহার জয়
হয়। তিনি স্বীয় মতবিস্তার ও তৎসংক্রান্ত নানাকার্য্য সাধন
করিয়া ১১৬৮ খুটাব্বে পরলোকে গমন করেন। বাসবপ্রাণে
তাঁহার চরিত্র সবিশেষ বর্ণিত আছে। জঙ্গমেরা উক্ত পুরাণ ও
সাম্প্রদায়িক অন্যান্ত গ্রন্থায়মারে তাঁহাকে শিবান্থচর নন্দীর
অবতার বলিয়া বিশ্বাস করেন।

উক্ত পুরাণে লিখিত আছে যে, উপনয়নের সময়ে স্থ্যো-পাসনা করিতে হয় বিলিয়া বাসব বাল্যকালে ্যুক্তোপবীত্র-গ্রহণ করিতে অস্বীকার করেন এবং বলেন, 'আমি শিব ভিন্ন অন্ত শুক্তর উপদেশ গ্রহণ করিব না। পরে তিনি স্বীয় মত-প্রতিপোষক একটী অভিনব উপাসক সম্প্রদায় প্রবর্ত্তিত করিতে প্রবৃত্ত হন।'

বাসব হিন্দু ধর্ম্মের অন্তর্গত সূর্য্য, অগ্নি ও অস্থান্ত দেবদেবীর পূজা, জাতিভেদ, মরণান্তর যোনিভ্রমণ, ব্রাহ্মণেরা ব্রহ্মসন্তর্গান এ ও জাদ্মা, তাঁহাদের স্বতন্ত্র প্রভাব ও অভিসম্পাতের আশহা, প্রায়দ্যিত, তীর্থভ্রমণ, স্থানবিশেষের মাহাদ্ম্য, স্ত্রীলোকদিগের অপ্রাথান্ত ও অপদস্থতা, নিকট সম্পর্কীর কন্ত্যার পাণিগ্রহণ-প্রতিবেধ, গঙ্গাদি তীর্থজ্ঞল সেবন, ব্রাহ্মণভোজন ও উপবাস, শৌচাশৌচ, স্থলক্ষণ, কুলক্ষণ, অন্ত্যেক্টিক্রিরার আবশ্যকতা প্রভৃতি বিষর ভ্রমান্মক বিলিরা অগ্রাহ্ম করেন এবং তাহা পরিবর্জ্জন করিতে আদেশ দেন।

তিনি ক্র ক্র নিলম্র্রি প্রবাভ করিরা ত্রী ও পুরুষ শিষাগণের হত্তে ও গলদেশে বারণ করিতে উপদেশ দিরাছিলেন। তাঁহার মতে ওঁম, শুরু, নিজ, ও জলম এই চারিটা প্রমেধর-কৃত প্রিত্র পদার্থ। নিলারতগণ ঐ নিল ব্যক্তিরেকে বিভৃতি ও ক্রপ্রাক্ষ নাম্ক শৈবচিক চুইটা ধারণ করেন। এই প্রজ্ঞারের মধ্যে ব্রী পুরুষ উত্তর লাভিরই ওঞ্চপদান্তহণের
অধিকার আছে। বীকাকালে ওঞ্চ নিব্যের কর্ণজুহার মর্রোপালেল
লান করেন এবং ভাষার পলালেলে কিবো হত্তে লিলমূর্তি বাঁথিরা
কেন। গুরুর পক্ষে মন্ত, মাংস ও ভাষার ব্যবহার নিবিদ্ধ।

বাসব নিজ সম্প্রদারের মধ্যে বিধবাবিবাহ প্রচলিত করেম ! এই বিধবাবিবাহের জিরাপন্ধতি শ্বতর। ইহাতে বিশেব ধরচ নাই। পাত্র বিধবাকে ১ হইতে ১০ টাকা দিলেই সম্বন্ধ হির হইরা বার। এই সমরে বিধবা কল্পাকে স্বামিগৃহ হইতে পিত্রালরে আসিরা বিবাহ করিতে হয়। প্রামাধ্যক্ষিণের প্রের প্রথম বিবাহে ২০০, টাকা লাগে; কিন্তু ঐ পুত্র বদি বিধবাবিবাহ করে, তাহা হইলে ১ হইতে ১০০, টাকা পর্যন্ত ধরচ হয়। এই বিবাহের উদ্দেশ্ভ ভাল থাকিলেও, তদ্দেশ-প্রচলিত ক্তক-শ্বলি কুৎসিত প্রথা ইহাকে শার্ত ক্ষম্ভ বলিরা তুলিয়াছে। দক্ষিণাপথের দক্ষিণ-পশ্চিমাক্ষণে বিবাহের পর, প্রী শীর শ্বামীর সহবাস না করিরা ইচ্ছামত শ্বভাল প্রদরে শাসক্ষ হয়। ক্রম্বারত এই প্রণিত প্রথার শ্বন্ধ্যর করিয়াছে।

বাসব শবদাহপ্রথা পরিত্যাগ করিরা বীর সাম্প্রদারিকদিগকে সমাহিত করিবার ব্যবদা বিরা বান। সহমরণেচ্ছু সতীদিগকে তিনি জীবিতাবহার প্রোথিত করিবার প্রথা প্রবর্ত্তিত
করেন। তীর্থবাত্রানিবেধাদি এবং জীবিত-সমাধি প্রভৃতি
তৎপ্রতিষ্ঠিত কতকওলি কদর্য্য নিজ্ঞিও কঠোর উপদেশ পালনে
জ্ঞাক্ত হইরা তৎসম্প্রদারী শিব্যেরা জার তাহা পালন করে না!
বরং তাহারা একণে শিবরাত্রাদি শিব্রত পালন এবং শ্রীশৈল,
কালহতী প্রভৃতি প্রসিদ্ধ শৈবতীর্থে গমন করিরা থাকে; দাজিপাত্যের কোন কোন নিবমন্দিরে তাহাদিগকে পূজারি কার্য্যে
নিশ্বত দেখা বার! কান্ধিত কেদারনাথ লিকের পাঙারা জলম।
প্রোহিতগণের জলম উপাধি হইতেই সাম্প্রদারিকগণ জলম
নামে অভিহিত। বারাণারীর বে স্থানে তাহারা বাস করে,
জারা কলমবাতী নামে খাতে।

অনেকেই ভিকাষারা শীবিকার্জন করে, কোন কোন ভিকুক হতে ও পরে বার্কী বাঁবিরা পথে পথে প্রমণ করিরা বেড়ার। গৃহত্ব লোকে নেই বভীকানি তানিরা তাহাদিগকে গৃহত্ব আহ্বান করে অথবা পথে আর্নিরাই ভিকা দিরা বার। হানে হানে এই সম্প্রভারের এক একটা মঠ জাছে। ঐ মঠে জনকে পরিচারক বন্ধপ অবস্থিতি করে। মঠবামীরা কডকওলি পিয় রাধেন এবং মৃত্যুকানে ভাহাবের মধ্যে এক ব্যক্তিকে আপনার জিল্লাবিকারী তির করিরা বান। ক

Wide Buchanan's History of Mysore, vol. I. and Jour. Roy. As. Soc. Vol V. pt 1. art. 6th.

বিশিশ-ভারতের কর্ণটি-প্রবৈশে এই গ্রাস্থানার প্রার্থিত হইরা ক্রমণা মহারাই, ভলরতে, ভার্মিল ও ভেলভ দেশে বিশ্বভ হইরা পড়ে। কিন্তু আর্থানের এই স্থানারের সেরুপ প্রাথান্ত হালিও নাই। ভবে কালী প্রভৃতি প্রসিদ্ধ শৈবতীবের হানে হানে এই সাধ্যমারিক সাধুসুক্রনিগের স্বালন ক্রেনিভে পাঙরা বার । এই সম্প্রান্তিক সাধুসুক্রনিগের স্বালন ক্রেনিভ পাঙরা বার । এই সম্প্রান্তিক আন্ত কোনও একটা দাবা বালালার অভ্বতি বৈভ্রমাণ অকলে আসিয়া বাস করিয়াছে। ভাহারা ক্রমণিল বারা সক্রীভূত হইরা সুব-বিশেবকে সঙ্গে লইয়া বেড়ায়। এদেশের লোকে ঐ গোলকে বিভ্রমাণ্ডির বাঁড় বলে।

তেলৰ, কণাড়ী প্ৰভৃতি ভাষায় এই সাম্প্ৰদায়িক নতের আনক এছ বিভ্নান আছে। নেকেন্ত্ৰী সাহেবের স্তুগৃহীত প্রক-ভালিকার বাসবেবর প্রাণ, প্রভৃতিনি নীলা, বার্ট্টিনীলামৃত, বিরক্তার কাব্য প্রভৃতি প্রছের পরিচর পাওরা বার্ট। উত্তর পশ্চিম ভারতে নীলক্ত রচিত বেলাকস্মভাবাই এই সম্প্রদারের এক বানি প্রামানিক এছ।

মতপ্রবর্তক বাসবের উপদেশাস্থসারে জাডিডেন, পৃংত্রী-ভেন, বান্ধপক্তিরভেন এবং বেনানি শান্তবাক্য প্রামাণ্য
বিশিয়া গৃহীত না হইলেও ভাহাদের মধ্যে প্রকৃত পক্ষে জাভিগত,
সম্রোদারগত ও সমাজগত বা বাণিজ্যগত নানা পার্থক্য
দেখা বার ।

ধর্মপ্রথর্জক বাসবের আদিই উপনেশ পাসন করিয়। তাহারা আতিগত ও সমাজগত অথবা সম্প্রদারগত সকল তেদ-জ্ঞানই বিসর্জন দিয়াছে। আর্থানীবিদিগের আদি ধর্মগ্রছ বগ্নেকাদি সংহিতা তাহারা বেমন বিবাস বলিয়া বীকার করে মা, রামাণিগের প্রতিও তাহাদের সেয়শ তক্তি বা প্রমা নাই। নিজায়ত রাম্মণ-ভনয়গণ আরাধা নামে সমাজে পরিচিত থাকি-শেও শ্রু প্রেমীর নিজায়ত সন্তানগণ তাহাদিগকে সেয়প সন্তাননার চক্তে বেখে না। আরাধা নিজায়তেরাই প্রধানতঃ সংস্কৃত শার্মচর্চা করিয়া বাকেন। এতাইয় সামাজ তক্তা ও বিশেষ তক্ত নামে তাহাদের মধ্যে ইইটা খতর বিভাগ দৃষ্ট হয়।

সামাভ তত্তের সহিত সামাভ নিজারতবিগের যথেই প্রতেদ
আছে। এই শেবোক্ত সন্দান্তির পরশারের বিভাগগত স্থানাজিক মর্যায়া ও লাতিতের সন্দার্গতাবে বিভাগন আছে। বিশৈব
তক্তগণ সর্বতোভাবে বৃষ্টান্ পিউরিটান্দিগের মৃত। ভাঁহারা
আতিতের রানে না। ভাইারা কবর্চ মধ্যে পুরিরা, গণনেশে
বে নিজ বারণ করে, ভাইা জরিগণ্ নামে পরিচিত। নিবের
এই বৃর্তি কাম নিজ ও মন্দির মধ্যে হানিত মৃত্তি স্থাবর্ত্ত লিবের
ভানে কবিত। ভাইাবের ব্যানার্ভিতে আভিসভ পার্বভাবিচার রহিত হইনেও, অসরাগর হিন্দু সম্প্রবিত্ত ভাইা-

ě,

দের মধ্যে আতীয়তার গোঁড়ামী অধিকতর পরিলক্ষিত হয়।

এতরিবছন তাহারা অতর্জাবে ব্যবসা বাণিজ্যে নিপ্ত থাকিরা
আপনাপন ধর্মকর্ম পালন করে, কথনও বিভিন্ন সাম্প্রদারিক
লোকের সহিত মিলিত হইরা আহারাদি করে না। মাস্তাজের
দেশীর সেনাবি গাগে লিকারৎ সম্প্রদারী বিরল। তাহারা
নিরামিষাশী, কথনও ভোজনার্থে হস্তব্য পশু বিক্রম করে না,

এমন কি স্বীয় প্রভুক্তৃক্ আদিষ্ট হইলেও উহা বাজার হইতে
ক্রম্ম করিয়া আনে না।

তাহার। মন্ত্রদাতা গুরুকে যথেষ্ট ভক্তি ও নাগু করে।
ওঁম, গুরুক, লিল ও জলম ভিন্ন তাহাদের ধর্ম কর্ম্মের আচরণীয়
আরু কিছুই নাই। ব্রহ্মণ্যধর্মের আচরিত পৌরোহিত্যে তাহাদের
কির্মাল নাই। ব্রহ্মণ্যরা পাছে গ্রাম মধ্যে আসিয়া বাস করে,
এই ভব্রে তাহারা গ্রাম মধ্যেও কুপাদি খনন করে না। ঘাটপ্রভা
নদীর অদ্রবত্তী কালাদগি নগরের নিকটবত্তী একটা গ্রামে ইহার
নিদর্শন পাওয়া যায়। তথাকার লোক্টেরা গ্রামমধ্যে কুপ বা
তড়াগ খনন না করিয়া ঘাটপ্রভার জল ব্যবহার করিয়া থাকে।
সাম্প্রায়িকস্বাত্র্যানিবন্ধন প্রতিম্র্তি-উপাসক পৌতলিক ব্রাহ্মণ
যাক্ষকগণের প্রত্তি ভল গ্রহণীয় নহে বিচার করিয়া ভাহারা এই
বিহের করনা করিয়াছে।

দাক্ষিণাতোর সমগ্র মহারাইরাজ্যে বিশেষতঃ কণ্টিকবিভাগে এই সম্প্রদায়ের অধিক বাস আছে। তাহারা লিক্ষোপাসনা ভিন্ন অন্ত কোন দেবতাই পূজা করে না; কিন্ত হিন্দুর অপরাপর দেব-মৃত্তি প্রতিষ্ঠিত মন্দির, মুসলমানের মস্জিদ, অথবা খুষ্টানের গিজ্জার সন্মুথ দিয়া গমনকালে, তাহারা শিবের উদ্দেশে প্রণাম করিয়া থাকে। ভাহাদের বিশাস, ঐ সকল ধর্মগৃহে স্বয়ং মহাদেব লিক্ষরণে বিয়াজিত আছেন।

বাম বাহতে অথবা গলদেশে কৌটায় করিয়া লিক্সমূর্ত্তি ধারণ এবং কপালে 'জ্বাছলেপন সাম্প্রদায়িক পুরুষ ও রমণীগণের প্রধান কর্ম। তাহারা সাধারণতঃ আতিথেয়ী ও মিতবায়ী, ধীরপ্রকৃতি, কর্মঠ ও স্থসভা। সকলেই বাণিজারাবসায় জীবন পাত করে। তাহাদের মধ্যে জাতিগত শ্রেণীবিভাগ নাই, কেবল গলকর, হিল্মীরে, জীরে, জীরেশল, কালে, মিতকর, পরমালে, ফুটানে, বৈকর ও বীরকর নামে কর্মটী উপাধি আছে। ভির ভির উপাধিগত ব্যক্তির মধ্যেই আদান প্রদান হইয়া থাকে। পুরুষ ও রমণীগণের নাম প্রধানতঃ হরপার্কেতীর নামেই রাথা হয়। সকলেই গৃহে কণাড়ী এবং বাহিরে মরাঠী ভাষার কথা কহিয়া থাকে। বেশভ্রা মরাঠীদিগের ভায়, সকলেই নিয়ামিবাশী। তাহাদের প্ররোহিত জলম নামে থাতে। এই পুরোহিতদিগকে তাহারা বিশেষরূপ ভক্তি করিয়া থাকে।

পুত্রবধ্ গর্জিনী হইলে ভাহাকে তাহার পিত্রালয়ে পাঠাইয়া দেওয়া হয় এবং সেইপানেই সে প্রসব করে। বালকের জন্ম হইবার পর, ধাত্রী নাভিরজ্জু ছেদন করিয়া দিলে, পুত্রের জন্মবার্ত্তা তাহার পিত্রালয়ে পাঠান হয়। সংবাদ পাইয়া জাত বালকের পিতা স্বীয় আয়ীয়, বয়ু বায়ব ও প্রতিবেশীদিগের গৃহে পাণ ও চিনি পাঠাইয়া থাকে। প্রথম, তৃতীয় বা পঞ্চমদিনে মাতার গলদেশে এবং জাত বালকের মাথার বালিসের নীচে একটী লিঙ্গ রক্ষা করা হয়। পঞ্চমদিনে সয়া কালে স্তিকাগৃহের এক কোণে একটী চতুলোণ ঘর আঁকিয়া তাহাতে চাউল, ময়দা ও বালুকা হাপন করে, পরে তাহার উপরে একথণ্ড কাগজ্ঞ ও একটী কলম এবং তাহার নিমে নাভিকর্ত্তন ছুরিকাথানি রাথিয়া দেয়। তাহাই ষটাদেবী জানিয়া প্রস্তি প্রণাম করিয়া থাকে।

ষষ্ঠ রাত্রে তাহারা একটা রোপ্যানির্মিত পার্ব্বতীমূর্ত্তি স্থতিকাণ্
গৃহে কার্চের চৌকিতে স্থাপন করে। তদনস্তর ধাত্রী তাহার
সম্মুথে ফুল ছড়াইয়া দেয় এবং কপুর ও ধূনা জালাইয়া থাকে।
প্রস্থতি সেই দেবীমূর্ত্তিকে পূজা ও প্রণাম করিবার পর, স্থতিকাণ
গারের সম্মুথে জঙ্গমকে আনিয়া উক্ত চৌকীতে বসান হয়।
বাটার গৃহকত্রী তথন একথানি থাকে পুরোহিত্তের পদন্বর প্রকাণ
লন করিয়া দেন। সেই পাদোদক পরে বাটার সকল ঘরেই
ছড়াইয়া দেওয়া হয় এবং সকলে পান করে। ভোজনাস্তে দক্ষিণা
লইয়া জঙ্গম বিদায় হ্রা
ক্রারের প্রস্ত হইলে হাদশ দিনে
এবং পুত্র জন্মিলে ত্রেরোদশ দিনে জাত বালকের নামকরণ
হইয়া থাকে। নামকরণ দিনে পাঁচটা সধবা স্ত্রীলোক (এয়ো.)
আসিয়া বালকের নামকরণাস্তে সমবেত কুটুন্বর্মনীগণের সহিত
একত্র ভোজন করে।

অশৌচান্তদিনে প্রস্তি নানান্তে নিকটস্থ কোন মহাদেবমন্দিরে পুত্রসহ গম্ন করিয়া থাকে। তাহার পর পূত্র কোলে
করিয়া সে পৃতদেহে গৃহকর্মে লিপ্ত হইতে পারে। ছয় মাসে
অন্ধ্রশাশন দিবার বিধি আছে। এক বৎসর বয়সে শিখা রাথিয়া
জাত বালকের মন্তক্মুগুন করিয়া দেওয়া হয়। বালিকা হইকে
তাহার মাতৃল আসিয়া সমুধের কেশাগ্র ছাঁটিয়া দের। ইহাই
সম্ভবতঃ তাহাদের চূড়াকরণ।

বালক পঞ্চম বৎসরে শ্লাদাপ করিলে তাহাকে বিভালরে পাঠান হইরা থাকে এবং হাদশবর্ষে তাহাকে শৈব মন্ত্রে দীকা দিয়া স্তোত্রাদি পাঠ করিতে শিক্ষা দেওয়া হর। বালিকা বোড়শ-বর্ষীর না হইলে কথনই শিব-মন্ত্র অভ্যাসের অধিকারিশী হয় না শ্র্রালিকার ৮ হইতে ১২ বৎসর এবং যুবক্দিগের ১২ হইতে ২৫ বৎসরে বিবাহ হইরা থাকে। বালকের পিতাই প্রথমে কন্তাকর্তার নিকট বিবাহের প্রস্তাব পাঠান। বরক্তা, জলম

ও বরপকীর নিকটান্মীরেরা কঞ্চাগৃহে বাইরা বিবাহ লক্ষ হির করিয়া আসেন। কথা পাকা হইলে, তাহারা কঞ্চাকে নব বন্ধ ও অঙ্গরাখা পরিধান করাইয়া তাহার মুখে চিনি দের এবং কঞ্চা-কর্তা অতিথিদিগের হন্তে পাণ দিয়া বিদায় দেন।

জন্ম বা স্থানীয় আচার্য্য ব্রাহ্মণগণের সহিত পরামর্শ করিয়া বিবাহের ওভ দিন ধার্য্য হয়। ঐ দিনে বরগৃহে ও কঞ্চালয়ে একটা চাঁদোরা পাটান হইরা থাকে। কম্মাগৃহে বিবাহের জয় একটা বেদী বা মগুপ বাঁধা হয়, ঐ বেদীর উপর সিশূর চিত্রিত চারিটী সাদা মাটীর ঘটী পাচ থাকে উপরি উপরি সাজান थाटक। वत्र ज्यादाहरण वाश्वामि महकादत्र मनरम कञ्चागृरह গমন করে। তথন কল্লাপক্ষীয়েরা বরকে শইয়া যায় এবং উভয়কে হরিদ্রা মাণাইয়া পরস্পরের বস্তাঞ্চলে গাঁইট বাঁধিয়া দেয়। তদনস্তর তাহারা সেই নবদম্পতীকে শইয়া নিকটত্ব महारम्परमित्र अनाम कत्रारेश जारन। जारात शत्र निर्मिष्ठे চতুকোণ শিলার মধ্যভাগে স্থাপিত কার্চের চৌকীতে তাহা-निगरक प्यानाहेबा वनान हव। छेहात हाति क्लार हाति छ সন্মধে একটা পিতল কলস জলপূর্ণ থাকে। অনস্তর বর ও কলা জন্মের সাহায্যে সন্মুখন্থ বৃষভবাহন শিবমূর্ত্তি পূজা সমাপন করিলে, জঙ্গম বিবাহের মন্ত্র পাঠ করিতে থাকেন। ঐ সময়ে আত্মীয়েরা সকলে উভয়ের মস্তকের উপর চাউল ফেলিতে থাকেন। জন্ম কঠক বিবাহমন্ত্র পাঠ সমাধা 🗱 লে বর ও কন্যা উভয়ে সন্মুখন্ত শিব ও নন্দীকে প্রণাম করে। তথন হইতেই তাহারা স্বামিস্ত্রীব্লপে পরিগণিত হয়। অতঃপর কলাকর্তা বর ও ক'নেকে উপরোক্ত বেদীতে বসাইয়া স্বীয় জামাতার হত্তে একটা তামা (তাম্রনিশ্বিত কল্স) ও পিত্তলের থাল (পিতালী) উপহার দিয়া থাকে। ভাহার পর জ্ঞাতি কুটুম্ব ও বর্ষাত্র-গ্রের ভোজ হয় এক একটা পাণের খিলি লইয়া সকলে চলিয়া খার। বিবাহের পর দিন উভয় পক্ষে নমন্বারী বত্তের উপহার বিমিময়ের পর বরক্তা পুত্রবধূ সঙ্গে লইয়া গৃহে প্রত্যাবৃত্ত হন এবং নৱবণু সন্দর্শনার্থ আগত বন্ধবান্ধবকে পাণ দিয়া বিদায় করেন।

কোন লিলায়তের মৃত্যু সময় উপস্থিত হইলে, আত্মীয় অজনেরা মরণাপর ব্যক্তির আথার ওভকামনায় ভিন্দানান করিয়া থাকে। ঐ ব্যক্তির প্রাণবায়ু দেহত্যাগ করিলে গৃহস্থ অপর আত্মীরেরা সেই শবদেহ একথানি কাঠচৌকীর উপর বসাইয়া তাহার পৃষ্ঠদেশ গৃহপ্রাচীরে ঠেসাইয়া রাথে এবং তুই জনে ছই পার্ছে ধরে। তার পর সেই চৌকীর চারি- জিকে বালের বেড়া দিরা উহার চারি কোণে চারিটী কলাগাছ বাধিয়া দের এবং ঐ বেড়ার তিন দিক্ রালাবস্তে আচ্লানিত করিয়া শবসহ ঐ কাঠচৌকী গৃহের বাহিরে আনে। এথানে

শীতন জলে দান করাইয়া ঐ মৃত ব্যক্তিকে নববন্ত পরিধান করার। তাহার কপালে, বন্ধে ও বাছতে ভত্ম মাথাইরা तम्ब्र थवः कर्शतम् भूभमानात्र ऋत्नाण्डिक सदत्र। जननस्त्र একটা প্রদীপ আলিয়া তাহার মুখমওল ও শরীরে আরতি সমাপন कतियां ठाति करन त्नारे ट्रोकी यस कतिया नमाधिरकरता नरेता যায়। শবের সমূথে এক জন জলম মৃত্যু হ: শথ ও হাটাধ্বনি এবং অপরাপর স্ত্রীপুরুষগণ তাহার পশ্চাতে "হর, হর, মহাদেব" শব্দে চীৎকার করিতে করিতে গমন করে। সমাধিক্ষেত্রে উপনীত হইয়া তাহারা সেই বাঁশের বেড়া খুলিয়া ফেলে একং যে স্থানে শবদেহ প্রোথিত করিতে হইবে, সেই স্থানে অল ছিটা-ইয়া চারি হাত গভীর একটা গর্জ খনন করে। ঐ গর্জে ভাহার। শবদেহ স্থাপন করিয়া ভাহার গলদেশ হইতে পুর্বায়ত লিক খুলিয়া লইয়া হন্ত তালুতে রক্ষা করে এবং লেই লিলোপরি বিৰপত্ৰ দিয়া মৃত ব্যক্তির নিকটান্মীয় স্বীয় সাধ্যামুসারে শবদেহ লবণ দারা আচ্ছাদিত করিয়া উপস্থিত ব্যক্তিগণের সাহায্যে পুনরায় দেই গর্ত্ত মৃত্তিকা ছারা পূর্ণ করিয়া থাকে। তৎপরে সেই গর্তের উপর এক থণ্ড প্রস্তর স্থাপন করা হয়, জলম সেই প্রস্তবে দাড়াইয়া প্রেতের মঙ্গলকামনায় মন্ত্র পাঠ করিতে থাকেন। মন্ত্র পাঠ শেষ হইলে জন্ম সেই প্রন্তরনির্দিষ্ট স্থানে বিৰপত্ৰ দিয়া পূজা করেন। অবশেষে সকলে মৃত ব্যক্তির গ্রহ প্রত্যাবৃত্ত হইয়া যে স্থানে ঐ ব্যাক্তর মৃত্যু ঘটিয়াছে, তথাকার প্রজ্ঞানত ত্বীপ বহিং সন্দর্শন করিয়া স্বাস্থ গৃহে চলিয়া যায়, তথন अभील निवाहेबा (मडबा इब्र)

ইহা ভিন্ন তাহাদের শোকপ্রকাশের আর কোনরূপ ক্রিয়াই
পরিলন্ধিত হয় না। সমর্থ হইলে তাহারা মৃতের সমাধির উপর
লিঙ্গ ও নন্দী সমেত একটী সমাধিস্তস্ত নির্দাণ করাইয়া থাকে।
তৃতীয় দিনে তাহারা আরীয় অজনকে একটী ভোজ দেয়,
বাৎসরিক শ্রাদ্ধ দিনে তাহারা ঐরূপ আর একটা ভোজ দিয়া
থাকে,তদ্ধির মৃতের প্রেতান্থার উদ্দেশে আর কোন কর্মাই করেনা।
তাহাদের সামাজিক দলাদলি পঞ্চায়ত হারা নিম্পত্তি হইয়া থাকে।
লিঙ্গার্চন (ক্লী) লিঙ্গপুজা।

লিঙ্গার্চ্চন্তস্ত্র (ক্লী) তন্তভেদ। ইংগতে শিবলিঞ্চের উপাসনা-প্রতি বিয়ত আছে।

লিঙ্গালিকা (ঝী) কুদ্র মৃথিক, পর্যায়—দীনা। (হারাবলী) লিঙ্গিন্ (ঝং) লিজমন্তাভেতি ইনি। ১হন্তী। (জাটাধর) (ঝি) ২ ধর্মধন্দী, কপট ধার্মিক।

"व्यनिन्नी निन्नदर्यन त्या निन्नभूभन्नीदि ।

স লিকানাং হরেদেনং তিথ্যগ্যোনো চ গছতি॥" (কুর্মপু° ১৫ ছ°)
৩ বাসনাশ্রয়।

"তেনাভ তাদৃশং রাজন্ শিক্তিনো দেহসভবন্। প্রথম্পানস্কৃতোহর্বো ন ননজাই, নিজ্জি ॥" (ভাগ° ৪।২৯।৩৫) সম্যাসাদি চিক্ষারী।

লিজিনী (ত্রী) দিল-ইনি, জীপ্। সভাবিশের, হিন্দী পঞ্জিরির, পর্যার—বর্ষপত্রী, ঈবরী, শিববিদ্ধিলা, অরজু, নিদসভ্তা, নেসী, চিত্রকলা, চাঞালী, নিদলা, বেবী, চঞা, আপডভিনী, শিবলা, শিববদী। ইহার ঋণ—কটু, উঞ্চ, হুর্গভ, রসারন, সর্বসিদ্ধিকর, ও রসনিরামক। (রাজনি°)

> ২ সন্মাসাদি চিত্ধারিণী। ধর্মধন্দী জী। "লিদিনীং গুরুপত্নীঞ্চ সংগাত্রামধ পর্বস্থে।

কৃষ্ণত সন্ধরোকাশি গছতে। শীবিতক্ষর: ॥" (ক্লক্ষত ৪।২৪)
নিজিবেশ (পুং) অজিন, দও ও পানপাত্র প্রভৃতি সন্ধানাপ্রমাচারীর চিকা।

লিচ্ছবিরাজবংশ, ভারতের একটা প্রাচীন রাজবংশ। নেপাল হইতে আবিহ্নত লিচ্ছবিরাজ জননেবের শিলালিপিতে বর্ণিত আছে—

শ্ভীমত, দর্পততো দশরধঃ পুত্রৈন্চ পৌটারঃ সমং রাজ্যেষ্টাবশরান বিহার পরতঃ শ্রীমানভূরিচ্ছবিঃ ॥"

উভ্ত প্রমাণ হইতে জানা বার বে, প্রাক্রেনিছ প্রাক্রেনীর দশরবের অধ্যান আইন প্রবাহ নিজ্বি জন্ম গ্রহণ করেন, তাহা হইতেই নিজ্বিবংশ সমূহত।

এই লিছ্ৰবি শব্দ প্ৰাচীন সংস্কৃতে নিছ্ৰবি, নিছিৰ্দ্বি এবং পালিভাষার লিছ্কবি নামে ব্যবহৃত। মুম্বসংহিতার মতে—

"কলো মলত রাজভাৎ ব্রাত্যারিছিবিরে চ। নটত করণতৈব খণো ত্রবিড় এব চ।" (>•।২২)

অধাৎ ত্রাত্য ক্ষত্রির হইতে স্বর্ণা ভার্যার (দেশতেদে বিভিন্ন নামে) বল্প, মল, নিজিবি, নট, করণ ও প্রবিড় কাতির উরব। বিশ্ব পালিগ্রাহ্ উৎপত্তি অক্ত প্রকার। পালিগ্রাহ্ মতে কালীরাক্ষের পূকাবলী নামে এক মহিবী ছিলেন, ভিনি একটা মাংস পিও প্রসব করেন। সেই মাংসপিও লইরা কোন প্রবাজন নাই ভাবিরা ধাত্রী আসিরা গলার কলে কেলিরা গেল। গলার প্রবল প্রোত্তে ভাসিতে ভাসিতে সেই মাংসপিও বিধা বিভক্ত কইল এবং ভাহাতে একটা বালক ও একটা বালিকা দেখা নিল। ক্ষমৈক কবি ভাহাবিগকে কল কইতে ভূসিরা আমিরা লালনপালন করিতে লাগিলেন। উভন্ন শিও হবি বা সূর্ভিতে কোন রকম ভেল ছিল মা, একারণ ভাহারা নিজ্ববি নাম পাইল।

এবেশে সাধারণে ন হামে ল উচ্চারণ করে; বেমন 'নবীন' হানে 'লবীল' 'নৌকা' হালে 'লৌকা'। ঐক্সপ নিজ্ঞবি হানে পাণি নিজ্ঞবি হইবাছে। অতি পূর্বাদান কোশন ও মিথিনার নিছেবি ক্ষত্রিরগণ অতিশর প্রবন হইরা উঠিরাছিলেন। এই বংশেই জৈনদিগের শেব তীর্থকর মহাবীর ও বৃদ্ধ শাকাসিংহ আবিভূতি হন। মিথিনা অঞ্চল নিছেবিগণ এক সমর এতই প্রবন হইরাছিল বে, মিথিনা রাজ্যও একসমরে নিছেবি নামে পরিচিত হইরাছিল। নিছেবি-বংশ বৈশিক্ষক্ষবিবী।

জ্ঞানবীর তীর্থছর ও বৃদ্ধদেবের আবিষ্ঠাব হওরার এবং উাচাদের সাম্যবাদে জন সাধারণে ব্রহ্মণ্যধর্মের প্রতি আস্থাপুত্ত হটয়া পড়ায়, বৈদিক ও স্বার্গ্ত ব্রাহ্মণগণ প্রায় সকলেই লিচ্ছবি জাতির উপর বিবেশ্ভাব প্রকাশ করিতেন, সেই কারণেই তাঁচাতা প্ৰবৰ্মীকালে নিজ্ঞবিশাসিত মিধিলার অংশ বিক্তি ভরাজা' বলিরা আখাত করিরাছিলেন। লিচ্ছবিভক্ত পালিগ্রন্থকারগণ বেদ ভাষার উদ্ধরে বর্জিভরাজ্যের ভিন্নরূপ নামোৎপত্তি খীকার করিরা গিয়াছেন। পালিপ্রহের মতে, বে পবি পূজাবলীর পুত্রকস্তাকে আনিয়া লিছকি নাম দেন, কিছু দিন পরে তিনি প্রতিপালন করা কটজনক মনে করিয়া শিশুবরকে একজন গৃহস্থকে অর্পণ করেন। গৃহস্থ তাহদিগকে অতিয়ত্ত্বে পালন করিতে লাগিল। ভাছারা ৰড হইরা অপরাপর বাসক বালিকার সহিত খেলা করিত। লিচ্চবি পিডমাড্ডীন বলিরা, তাঁহাদের সলিগণ তাঁহা-দিগকে 'বিজ্ঞান্তক' অর্থাৎ কেলানে বলিয়া ডাকিত। উত্তর-কালে সেই 'বজ্জিতকোঁর বংশধরগণ ৩০০ বোজন বিস্তৃত একটা পরাক্রমণালী রাজ্য ছাপন করিল। সেই রাজ্যই 'ৰজ্জি' (অর্থাৎ বর্জিত) আখ্যা পাইরাছিল। তাছাই মিধিলারাজ্যের অধিকাংশ।

দিক্ষবিদিগের এক শাখা বৈশালীতে, এক শাখা নেপালপ্রান্থে মিথিলার এবং এক শাখা পৃশপুর বা পাটলিপুর অঞ্চলে
বিত্ত হইরা পড়িরাছিল। বৈশালী শাখার মহাবীর বামী, ও
নেপালপ্রান্থে শাকাশাখার বুছদেব আবিভূতি হইরাছিলেন।
মন্থুলংহিতার এই লাতি রাত্য অর্থাৎ সংলারহীন ক্ষত্রের বলিরা
চিহ্নিত হইলেও সকল প্রাচীন লৈন ও বৌদ্ধগ্রহ হইতে তাঁহাদের
উপানরম সংলারের পরিচর পাওরা বার। আলকু শত শত
প্রাচীন বৃদ্ধৃত্তি বজোপবীত চিহ্নিত রহিরাছে। পর্বর্তিকালেও
নেপালের প্রবল পরাক্রান্ত লিচ্ছবি রাজ্যপণ্ড সকলে বিতত্ত
ক্ষত্রের বলিরাই পরিচিত হইরাছেন। এতজ্বারা মনে হয় বে,
সম্প্রাহিতারাকালে লিচ্ছবিগণ রাত্য ক্ষত্রির বলিরা নির্দিষ্ট
হইলেও ওংপরবর্তিকালে সংলারানি লারা তাঁহারা বিতত্ত
ক্ষত্রের ইন্ধুল্লছিলেন। নচেৎ অধনেধ্যক্তরারী পরন রাজ্যকত
অধ্যান্ত সমুস্কুপ্তরা আপনাকে লিচ্ছবিরাজক্তার গর্জসাত্ত
বলিরা পৌরবাহিত বোধ করিবেল কেন ?

লিছবিগণ নাধান্বণভন্ন প্ৰিন্ন ছিলেন। কোন কোন বৌধ-

গ্রাহ্ম বিজ্ঞ রাজ্য ৭৭০৭টা কুদ্র রাজ্যে বিভক্ত এবং অধিপতিগণ আবীন বলিয়া বর্ণিত হইরাছে। বহি:লক্র উপস্থিত হইলে সকলে সম্মিলিত হইয়া এরপ সিংহনাদ করিতেন বে, তাহাতে সমস্ত উত্তরভারত স্বস্থিত হইত। এ কারণে মগধের মহাবল গরাক্রান্ত সম্রাট্পণ ও তাঁহাদের সহিত বিবাদ করিতে সাহসী হইতেন না। স্মিলিত লিক্তবিরাজ্যের শাসনবিধিব্যবহাপনের জন্ত বৈশালী নগরে একটা মহাস্তা ছিল। সেই মহাস্তা যাহা ব্যবস্থা করিতেন, তদমুবর্ত্তা হইরাই সহস্র সহক্র কুদ্র লিক্তবিরাজ্য স্থানিত হইত।

লিছেবি-স্মাজের ইতিহাস আলোচনা করিলে মনে হইবে উাহাদের কেহ জৈন, কেহ বৌদ্ধ, আবার কেহ কেহ পূর্ব্যপুর্যা-চরিত জ্বাণী ছিলেন।

মগধপতি বিধিসার বৈশালীর লিজ্জবিরাজকুলে বিবাহ করিয়াছিলেন। বৃদ্ধদেব মগধপতিকে 'সেচনক' নামে এক প্রকাও হন্তী এবং অষ্টাদশরত্বপচিত একছড়া হার প্রদান করেন। বিশিদার দেই হতী ও হার প্রিয়তম কনিষ্ঠ পুত্র বেহল্লকে দিয়া-ছিলেন। তাহাতে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র অজ্ঞাতশক্র পিতা ও কনিষ্ঠ ভ্রাতার প্রতি বড়ই অসম্ভষ্ট হইয়াছিলেন। তাহারই ফলে বন্ধনির্ব্বাণের ৮ বর্ষ পুর্ব্বে পিতাকে বিনাশ করিয়া অজাতশক্র নগধ সিংহাসন কলন্ধিত করেন। আত্মরক্ষা করিবার জন্ম বেহল্ল বৈশা-লীতে গিয়া মাতামহকুলে আশ্রয় লইলেন। তথন জাতীয় একতা-সূত্রে সন্মিলিত মাতামহকুলকে কি রূপে শাসন করিবেন, অঞ্জাত-শক্র সেই ভাবনার কাতর হইলেন। বৌদ্ধদিগের মহাপরিনির্কাণ-स्ट विश्विष्ठ खाएए-निक्तार्भत्र खह्मकाल शृर्क वृक्तरस्य यथन ताजगुर्वत निक्षेवसी गृधकृषे পर्वत्य व्यवहान कतिराजिहारान, সেই সময় মগধরাজ অজাতশক্র তাহার প্রধান ত্রাহ্মণমন্ত্রী বিশা-করকে ডাকিয়া জানাইলেন, মিল্লিন। আপনি ডগবানের নিকট গ্রমন ক্রুন, তাঁহাকে জানাইবেন বে, মগধরাজ প্রবল পরাক্রম-भानी निष्क्विमिशतक ममत्न छै९ भाउँन कवित्वन । अश्वान छनिया कि वरमन, जाश विस्ति कतिया मान दाविया स्नानाहरवन। টোচার কথা অ**গু**থা হইবার নহে ।'

মন্ত্রিবর বৃদ্ধ সনীপে আসিরা অভিবাদনপূর্থক সমস্ত নিবেদন করিলেন। তাঁহাকে উত্তর দিবার পূর্যেই তগবান আনন্দকে বলিলেন, 'তুমি জান, বজ্জি (লিছ্বিগণ) সর্বাদা সাধারণ সভার লমবেত হইরা একভার সহিত সকল বিষয় সীমাংসা করেন। তাঁহারা বয়োবৃত্তের প্রতি উপবৃত্ত সমান দেক্ষইরা থাকেন। তাঁহারা প্রাচীন প্রধাপনি নই করিতে বিমুখ ও প্রাচীন প্রথা সম্মানের সহিত গ্রহণ করেন। নারীজাভির প্রতি তাঁহারা কথন অভ্যাচার করেন নাই। গাঁহারা চৈভোর সন্ধান ও পূজা ব

कत्रिया शास्त्रन । विरमयक: काईएकिशस्त्र वर्ष्ट्रे मखान ७ वका कतिया थात्कन !" जानम উछत्र कतित्तन, "हा छशवान ! जानि এ সমস্তই জানি।" বৃদ্ধ তথন পুনৱার জহিলেন, "ডাই কেইই ভাহাদিগকে বিনাশ করিতে পারিবে না।" পরে তিনি দ্বান্ধন্তীকে শক্ষা করিয়া উত্তর করিলেন, হে ব্রাহ্মণ। আমি বৈশালী-मगतीक्टि नात्रम्मन टिएडा शांकिवात नमत्र निष्क्विविकारम स्व সাতটা উপদেশ দিয়াছিলাম, যতদিন তাঁহারা সেই সকল উপদেশ যত্নের সহিত পালন করিবে, তত দিন কেহই তাঁহাদিগকে ধ্বংস क्तिए भातिरव ना, एक मिन छाशासत छेखरबाखत भीत्रिक হইবে।' রাজমন্ত্রী ফিরিয়া আসিয়া মগধপতিকে বুদ্ধবাক্য জানাইল। মগধপতি আপাতঃ বিবাদে কান্ত হইলেন। উক্ত घंडेनात किंद्र मिन भटत तुष्करमय देवनांनी याजा करतम । छिनि গঙ্গাতীরত্ব পাটলী • গ্রামে আসিরা দেখিলেন যে, লিচ্ছবিদিগকে উৎপীড়ন করিবার অভিপ্রান্তে বিশ্বাকর ও সিদ্ধ নামক মগধরাজের প্রধান মন্তিম্বর এক ছুর্গ নিশ্মাণ করাইতেছেন। বৈশালীতে আসিয়া আত্রপালীর উত্তানে কিছুকাল অবস্থান क्तिरलन । निष्क्रविश्व परन परन जानिया छाहारक पर्नन क्रिया কতার্থ হইল। ভাঁছাদিপের সমক্ষেই বুন্ধদেব প্রকাশ করেন যে, আর ভিন মাস অতে তিনি কুশীনগারে মহানির্বাণ লাভ করিবেন। তৎপরে বৃদ্ধ বৈশালী পরিত্যাগ করিয়া কুশান-গরাভিমুখে অগ্রসর হটলেন। লিছেবি ক্ষত্রিয়গণ তাহাদের প্রাণ অপেকা প্রিয়তম বৃদ্ধকে চির্নিনের জ্বন্ত কেমন করিয়া विभाग भिरवन १

তাহার। উচ্চঃখরের কাঁদিতে কাঁদিতে সকলেই বৃদ্ধের অমুগ্যন করিতে লাগিলেন। বৃদ্ধদেব তাহাদিগকে ফিরিয়া যাইতে বলিলেন, কিন্তু তথাগতের এ নিদারুণ আদেশ তাহারা রক্ষা করিতে পারিলেন না। 'এ দেহ ক্ষণস্থারী, সকলকেই মরিতে হইবে' এইরূপ বৃঝাইর্রা বৃদ্ধ আবার ফিরিতে কহিলেন। কিন্তু ভক্ত লিচ্ছবিগণ কিছুতে নিবৃত্ত হইলেন না। সমুখে এক গভীর নদী আসিয়া পড়িল। তথন নদী অতিক্রম করিতে অসমর্থ হইয়া লিচ্ছবিগণ আর্তনাদ করিয়া উঠিলেন। বৃদ্ধদেব মধুর বাক্যে তাহাদিগকে সান্ধনা করিয়া তাহার জীবনের একমাত্র সমল ভিক্ষাপাত্র দিয়া লিচ্ছবিগণ বৈশালীতে ফিরিয়া আসিলেন এবং এক প্রকাণ মন্দির নির্মাণ করিয়া তম্মধ্যে সেই পবিত্র ভিক্ষাপাত্র রক্ষা করিলেন।

কুৰদেবের পরিনির্ন্ধাণের পর তাঁহার দেহাবলেব লইরা তুমুলযুদ্ধ বাধিবার প্রপাত হইরাছিল। এ সমর কুশীনগর পাবার মন্ত্র-ক্ষত্রিররাজগণের অধিকারভুক্ত। তাঁহারা ঘোষণা ক্রিলেন কুর গাটগান্তর্গ হইচেই কালে বিবনিস্কাত গাটলীপুদ্ধ ক্ষরীর স্তর্ট। যে, ভগবান্ যথন আমাদের অধিকার মধ্যে দেহ বিসর্জন করিরাছেন, তথন আমরাই দেহাবলেষ পাইবার একমাত্র অধিকারী। এদিকে বৈশালীর লিছেবিরাজগণ, মগধপতি অভাতশক্র, অলকাপুরের বালেয় ক্ষত্রিয়গণ এবং উট্ট্রবীপের ব্রাহ্মণগণ দেহাবশেষ পাইবার জ্ঞা মরারাজিবিগের বিরুদ্ধে উপস্থিত। অবশেষে জোণ নামক এক বৌদ্ধ ব্রাহ্মণের পরামর্শে ভগবানের দেহাবশেষ ৮ ভাগে বিভক্ত হইল। লিছেবিগণ তাহার এক ভাগ পাইলেন। তাঁহারা সেই অপার্থিব পদার্থ মহাসমারোহে বৈশালীতে আনিরা তাহার উপর এত বৃহৎ তুপ নির্মাণ করিয়া দিলেন।

অথকথা নামক পালি বোজগ্রছে লিখিত আছে, যতদিন ভগৰান্ ধরাধামে ছিলেন, ততদিন অজাতশক্র লিছবিগণের কিছুই করিতে পারেন নাই। মগধরাজমন্ত্রী বিশ্বাকর বুদ্দের নিকট লিছবিদিগের সাধারণতন্ত্র অবগত হইয়া তাঁহাদিগের মধ্যে ভেদ ঘটাইবার হ্রবোগ পুঁজিতেছিলেন। পরিনির্কাণের তবর্ষ পরে বহুকাল চেষ্টার পর তিনি ক্রতকার্য্য হইলেন। তাঁহার কৃটনীতিগুণে লিছবিদিগের মধ্যে আন্মকলহ উপস্থিত হইলে জ্বজাতশক্র লিছবিরাজ্যে গিয়া বৈশালীনগর ধ্বংস করিলেন এবং তিন শত লিছবিরাকে স্পরিবারে বন্দী করিয়া রাজগ্রেছ ফিরিলেন।

অঙ্গাতশক্রর নির্যাতনে লিচ্ছবিরাজগণ জন্মভূমি পরিত্যাগ করিয়া কেহ নেপালে, কেহ তিবতে, কেহ বা লাদকে আশ্রয় লইলেন। পরে সেই সেই স্থানে এক একটা লিচ্ছবিরাজবংশের প্রতিষ্ঠা হইল।

বৌদ্ধগ্রছের মতে মগধপতি নাগালোকের ঔরসে লিছবিক্সার গতে স্থ্যনাগ (প্রাণোক্ত শিশুনাগ) রাজার জন্ম। তিনি মাতামহকুলের কিছু পক্ষপাতী ছিলেন। তাঁহারই যত্নে বিথাত বৈশালী নগরী পুনর্নির্দ্ধিত হইয়াছিল। তৎপুত্র কালাশাকের সময়েই বৈশালী নগরে দিতীয় বৌদ্ধ মহাসমিতি আহত হয়। যাহা হউক, মগধসমাট্গণের প্রতাপে আর লিছবিরাজগণ একতাস্ত্রে সন্মিলিত হইতে পারিলেন না। তন্মধ্যে যিনি একটু প্রধান হইয়া উঠিতেন, মগধপতি তাঁহার সহিত বৈবাহিক্সত্রে আবদ্ধ হইয়া তাঁহাকে আপনার করিয়া লইডেন;—বলিতে কি এই রাজনীতি মগধপতিগণ পুরুষপরস্পারায় রক্ষা করিয়া আসিয়াছেন। বরাবর মগধরাজ্যের সহিত সম্বন্ধ স্থান বিরাজনগণ পাটলিপুত্রের সভায় বিশেষ সন্মানিত ছিলেন;—এই কারণেই বাধ হয় পাটলিপুত্রে অধিষ্টিত শ্বপ্তসমাট্ সমুদ্রশ্বর্থ লিছবিরাজক্ষার গর্জে কর্মা বলিয়া আপনাকে গৌরবাহিত মনেকরিয়াই নিজ মুদ্রার শিক্ষবের ইত্যাদি স্বতি রাধিয়া গিরাছেন।

(नशाल निष्कृति-त्राक्ष दःम ।

পূর্ব্ধে বিদিয়াছি, মগধণতি অঞ্চাতশক্তর নির্য্যাতনে লিছবিগণ নেপালেও পলাইয়া গিয়াছিলেন। নেপালে গিয়াও তাহারা
আধিপতা বিতার করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। এই স্থান হইতে
লিছবিরাজগণের বহুতর শিলালিপি আবিষ্কৃত হইয়াছে। তয়াধ্যে
স্থাসিদ্ধ পশুপতিনাথের মন্দিরের ঘারদেশে উৎকীর্গ ২য় জয়দেব বা
পরচক্রকামের শিলালিপি হইতে জানা যায় যে, স্থাসিদ্ধ রঘুবংশে
এখানকার লিছবিরাজগণের জন্ম। লিছবির বংশে স্থাপুশ নামে এক রাজা পুশপুরে (পরে পাটলিপুর) থাকিতেন, তিনিই নেপালে আগমন করেন। মহাপরিনির্ব্যাপ্যত্তেও লিখিত আছে, তগ্রান্ বৃদ্ধদেব যথন পাটলিপুরের নিকট দিয়া যান, তৎকালে মগধরাজমন্ত্রী বিশ্বাকর লিছবিদিগকে উৎপীত্ন করি-বার জন্ম এখানে হুর্গ নির্ম্মাণ কয়াইতেছিলেন। এই হুর্গ নির্ম্মাণের পর যে লিছবিপতি স্থাপুশ বিতাজিত হইয়াছিলেন, তাহাতে সন্দেহ নাই।

উক্ত জয়দেবের শিলালিপিতে লিখিত আছে যে, স্থপুপোর পর ২০জন রাজা ক্রমান্তরে রাজত্ব করিয়া গেলে তৎপরে স্থপ্রসিদ্ধ জয়দেব নামে এক নূপতি আবিভূতি হইলেন। ইনিই নেপালের লিছেবি ইতিহাসে প্রথম জয়দেব নামে খ্যাত।

ধর্মদেবের ঔরসে মহিনী রাজ্যবতীর গর্ভে নিদ্ধলঙ্ক শারদীয়
শশাক্ষসদৃশ স্থানর রাজা মানদেব জন্ম গ্রহণ করেন। নেপালের
চঙ্গুনারায়ণের মন্দির্বারে এই মানদেবের ৩৮৬ সংবতে উৎকীর্ণ
একথানি শিলালিপি আছে। প্রস্কুত্ত্ববিদ্ ফ্লিট সাহেব এই
আছ গুপ্তসংবৎজ্ঞাপক বলিয়া ছির করিরাছেন। কিন্তু মানদেবের লেথমালা আলোচনা করিলে উহা কোন। মতেই এত
আধুনিক বলিয়া মনে করিতে পারি না। তিনি আপন গ্রন্থে
সমুদ্রগুপ্ত প্রভৃতি প্রথম গুপ্তসমাট্দিগের যে সকল শিলালিশি
খুষীয় ৪র্থ ও ৫ম শতান্দীর লিপি বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন,—সেই
সকল আদিগুপ্তলিপির বর্ণবিক্লানের সহিত উক্ত মানদেবের

^{*}Fleet's Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol.p. 182.

লিপির বিশেষ পার্থকা নাই, উভর লিপি মিলাইলে এক সমরের বিলিয়া গ্রহণ করিতে কাহারও সন্দেহ থাকিবে না। উত্তর-ভারতে গুপুসমাট্দিগের পূর্ক হইতে যে সকল 'সংবং' নাম নামধের লিপি প্রচলিত ছিল, তাহা প্রধানতঃ 'দকসংবং' জ্ঞাপক বিলিয়া পুরাবিদ্গল খীকার করিয়াছেন। এরপ হলে আমরাও মানদেবের উক্ত লিপিথানি ৩৮৬ শক সংবংজ্ঞাপক অর্থাৎ ৪৬৪ খুটান্দের বলিয়াই গ্রহণ করিলাম। লিপির বর্ণবিক্যাস হারাও মানদেবকে খুঁরীয় ৫ম শতালীর লোক বলিয়া গ্রহণ করিতে কেইই আপত্তি করিবেন না।

নেপালের পার্বতীয় কংশাবলিতে লিখিত আছে যে, ভারত হইতে বিক্রমাদিত্য নেপাল জয় করিতে গিরাছিলেন। সমুদ্র-অথের পিতা ১ম চক্রপ্তপ্ত বিক্রমাদিতা উপাধিতে ভূষিত ছিলেন। স্বয়ং সমুদ্রগুপ্ত প্রস্নাগের স্বপ্রসিদ্ধ স্তম্ভলিপিতে ^बिष्क्रितिराहिञ्च भहारनगाः कुमात्ररमगामुरशत्रच भहातास्राधि রাজনীসমূদ্রগুপ্তত্ত" ইত্যাদি পরিচয়ে স্থপরিচিত। অধিক সম্ভব চক্রগুপ্ত ভারতসাম্রাজ্ঞা অধিকার করিবার পর শৈবধর্মপ্রচার. ব্রাহ্মণ্য-প্রাধান্তস্থাপন ও দিখিজয় উপলক্ষে নেপাল যাত্রা করেন। তৎকালে নেপালে বৃদ্ধভক্ত বৃষদেব অধিষ্ঠিত ছিলেন। লিচ্ছবিপতি ১ম গুপুসমাটের নিকট যদ্ধে পরাজিত ও আপনার কলা বা আত্মীয়া कुमात्राप्तवीरक প্রদান করিয়া আত্মগত্য করিতে বাধ্য হইয়া-চক্রগুপ্ত বিক্রমাদিত্যের প্রভাবে নেপাল-রাজ-কমার শৈবধর্ম স্বীকারের সহিত শঙ্করদেব নাম গ্রহণ করিয়া-ছিলেন। নেপালের পার্ব্বতীয় বংশাবলিতেও লিখিত আছে যে, মানদেবের পিতামহ শঙ্করদেব পশুপতিনাথের ত্রিশূল প্রতিষ্ঠা কবিরাছিলেন। পশুপতিনাথের মন্দিরের উত্তর দারে এক প্রস্তরবেদির উপর প্রায় ১৪ হাত উচ্চ শঙ্করদেবের প্রতিষ্ঠিত সেই ত্রিশুল বিশ্বমান। সেই প্রস্তরবেদিকার মানদেবের সময়কার ৪১৩ (শক) সংৰতে উৎকীৰ্ণ খোদিত লিপি রহিয়াছে। এই निभि भार्क स्नाना यात्र त्य, सत्रवर्षा नृभिष्ठ मानत्मव ७ स्थार्ट्य হিতার্থ জয়েশ্বর নামক লিকপ্রতিষ্ঠা করিয়া তাঁহার সেবানির্বাহার্থ 'অক্ষরনীবী' অর্থাৎ চির্ম্নায়ী সম্পত্তি দান করিয়াছিলেন।

মানদেবের পর তৎপুত্র মহীদেব সিংহাসন লাভ করেন।
মহীদেবের পুত্র বসস্তদেব। কাটমাপুর লগনতোলস্থ ল্গালদেবীর মন্দির হইতে বসস্তদেবের ৪৩৫ (শক) সংবতের লিপি
আবিক্বত হইরাছে, এই শিলাফলকের উপর শব্দচক্র চিল্তিত
থাকায় বসস্তদেবকে বিক্রুভক্ত বলিয়া মনে হয়। ২য় জয়দেবের
শিলালিলিতে ইনি 'শান্তারিবিগ্রহ' ও 'উদ্যান্তসামন্তবন্দিত'
ইত্যাদি বিশেবণে বিশেষিত হইরাছেন। বসস্তদেবের পুত্র উদয়দেব। ২য় জয়দেবের লিপি মতে, উদয়দেবের পর তহংশীয় ১৩

জন রাজ্য করেন। এই এরোগণ নৃপতির নাম পাওরা যার নাই। তল্মধ্যে কেবল নাত্র জ্বনেব নামক এক রাজার নাম বাহির ইইরাছে। এই জবদেবের সময়ে মহাসামস্ত আংগুবর্লার অভানর। নেপালে বর্ত্তমান কালে জল বাহাহর যেমন কতকটা সর্কো হইরা পড়িয়াছিলেন, জবদেবের পর আংগুবর্লা কতকটা সেইরূপ কর্তৃত্ব লাভ করিয়াছিলেন।

আংশুবর্মা প্রথমে মহাসামন্ত বলিয়া পরিচিত হইলেও তিনি আনেক শ্রেষ্ঠ নরপতির সহিত আগ্রীয়তাহতে আবদ্ধ ইইয়াছিলেন। তাঁহার ভগিনী ভোগদেবীর সহিত শুরুসেন-নৃপত্তির বিবাহ হয়। আংশুবর্মার শিলালিপিতে লিখিত হইরাছে যে, তাঁহার ভগিনী শ্রুসেন-মহিষী ভোগদেবীর গর্ভে রাজা ভোগবর্মা জন্ম এচণ করেন। ভোগদেবী নিজ পতির পুণ্য কামনায় (দেবপাটনে) শ্রুভোগেশ্বর মৃত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন।

ভোট ও চীনের ইতিহাস হইতেও আমরা জানিতে পারি যে, ভোট (তিব্বত) দেশের প্রাসিদ্ধ নৃপতি স্রোন্ৎসন্ গম্পো ৬৩৭ খৃষ্টাব্দে নেপালপতি অংগুবর্মার ক্সা ক্রকুটী দেবীকে বিবাহ করেন; আজও ভোটদেশে ক্রকুটী দেবী প্রিত হইতে-ছেন। [লামা দেখ।]

অংশুবর্দ্মার সময়েই লিছেবিকুলে নরেক্রদেব ও তংপুত্র লিব-দেব আবিভূতি হন। নেপালে গোলমাঢ়িটোল হইতে লিবদেবের এক পানি লিলাফলক পাওয়া যায়। তাহাতে ৩১৬ বা ৩১৮ সংবং আছিত আছে। এই লিপিতে মহাসামস্ত অংশুবর্দ্মার প্রসঙ্গ থাকায় ঐ লিপিকে আমরা খুয়ীয় ৭ম শতাশীর বলিয়া আনায়াসেই গ্রহণ করিতে পারি। গুপ্তসন্সাট্দিগের সহিত নেপাল রাজগণের বছকাল হইতে সম্বন্ধ ছিল, এরূপ স্থলে উলা গুপ্ত সংবংক্রাপক বলিয়া স্বীকার করিলেও ৩১৯ + ৩১৮ = ৬৩৭ খুপ্তাকের সমসামিরিক হইয়া পড়ে।

লিছবিপতি শিবদেৰের সহিত মৌপরিপতি ভোগবন্ধার ক্যা ও মগধপতি মহারাজ আদিত্যসেনের দৌহি দ্রী শ্রীমতী বংসদেবীর বিবাহ হয়। সেই বংসদেবীর গতে লিছবি-কুলকেণ্ডু পরচক্রকাম উপাধিধারী ২য় জয়দেব জন্ম গ্রহণ করেন। এই ২য় জয়দেবের শিলালিপি হইতে জানা যায় যে তিনি গৌড়, ওড়ু, কলিজ ও কোলপতি ভগদত্তবংশায় শ্রীহর্ষদেবের ক্যা রাজ্যমতীকে বিবাহ করেন। তিনি শিলাকলকে তাগী, মানধন, বিশালনয়ন ও সৌজস্তরয়াকর বলিয়া পরিচিত হইয়াছেন।

ংয় জয়দেবের খণ্ডর ঐ ইর্ছবদেবকে লইয়া বছদিন হইতে গোল চলিতেছিল। ভগদত্তবংশীর রাজগণ প্রাণ্জ্যোতিষে (আসামে) রাজত্ব করিতেন। খুঁটার ৭ম শতাক্ষে বাণ্ডট্ট হর্ষ-চরিত রচনা করেন। তিনি এইরূপ পরিচন্ত্ দিরা গিয়াছেন— "নরকো নহায়নো হস্তামরে তগদত্ত-ব্রজনত্ত-পুলান প্রতাত্তির বৃত্য সরমহিতের মহৎ স্থান স্থানা দেব প্রপোত্তো মহারাজ তৃতি-বর্মণ পৌত্রন্দ স্থান দেব প্রতাতি কাম মহারাজাবিরাজ জল্জে তেল চ প্রগৃহীত নামে দেব প্রতাতি কাম মহারাজাবিরাজ জল্জে তেল চ প্রগৃহীত নামে। দেব প্রতাতি কাম বিরাষ প্রতাতি কাম বিরামাণ শক্তনে তিরা তীয় ইব কুমার: সমভবৎ।"

(শ্রীহর্শচরিত ৭ম উল্লাস)

নরক মহাস্থার বংশে ভগদত, বন্তুদত্ত, পুশাদত প্রাকৃতি বহ মহীপাল রাজত করিবান্ধ পর (ঐ বংশে) মহারাজ ভৃতিবর্মার প্রাপৌত্র, চন্দমুথ বর্মার পৌত্র এবং কৈলাসবাদী দেব শ্রীস্থলবর্মার পুত্র স্করবর্মা নামে মহারাজাধিরাজ জন্ম গ্রহণ করেন। এই স্করবর্মোর ওরসে মহাদেবী শ্রামাদেবীর গর্ভে শাস্তম্বর পূত্র ভীন্ন-সদৃশ ভাস্করের স্থায় তেজস্বী ভাস্করবর্মা কুমার জন্ম গ্রহণ করেন।

চীনপরিবাজক হিউ এন্ সিয়ং এই ভাদ্ধরবর্মাকে রাহ্মণবংশীয় বিথিয়া এমে পতিত হই মাছেন। আন্চর্যাের বিষয় পাশ্চাত্য আনেক প্রাবিদ্ও চীনপরিবাজকের অনুসরণ করিয়াছেন। মহাভারতে ভগদত্ত ক্ষরিয় ধীর বলিয়া পরিচিত। বর্মা উপাধিও ক্রিয়-নির্দেশক। এরপ হলে বাণভট্রে অনুবর্তী ইইয়া আমরা নিঃসন্দেহে প্রাগ্জ্যোতিধ-রাজ্বংশকে ক্ষরিয় বলিয়াই গ্রহণ করিবাম।

ভাষরবর্গা একজন অতি পরাক্রান্ত ও ধার্মিক নরপতি ছিলেন। সমাট্ হর্ষবর্জনের মৃত্যুর পর তাঁহার বন্ধুপুত্র আদিতাসেন মগনে মহারাজাধিরাজ উপাধি গ্রহণ করিলে সেই স্থাগে ভাষর বন্ধার বংশধরও গোড়, ওড়, কলিঙ্গ ও দক্ষিণ কোশল অধিকার করিয়া একজন রাজচক্রবর্তী হইয়া ছিলেন। এই সময়ই ভগদত-বংশীয় কামদ্রপপতিগণ গোড়াড়ু কলিঙ্গকোশলপতি" বিগ্লা প্রসিদ্ধি লাভ করিয়া থাকিবেন। লিছেবিপতি ২য় জয়নেবের শ্বন্তর ভগদত-বংশীয় হর্ষদেব উক্ত ভাররবর্ম্মার পুত্র অথবা পৌত্র ছিলেন। তৎকর্ত্বক গোড়োড় কলিঙ্গবিজয় কিছু অসম্ভব নহে। আসামের তেজপুর হইতে আবিষ্কৃত ভগদত্তবংশীয় বনমালবর্গনেবের তাম্রশাসনে উক্ত শ্রীহর্ষদেব শ্রীহরিম নামে শ্রেসিদ্ধ হইয়াছেন । ২য় জয়দেবের সহিত শ্রীহর্ষদেব কিরূপে সম্বন্ধ স্থাত আবিষ্কৃত ভাররহ্বান ব্যাক্রিক স্থাতিন স্থাতিন কর্মান্ধ বন্ধান স্থাতিন কর্মান্ধ কর্মান্ধিত শ্রীহর্ষদেব করিসের সম্বন্ধ স্থাতিন স্থাতিন করিতে আহে—

"অঙ্গন্তিয়া পরিগতো জিতকামরূপ:
কাঞ্চী গুণাঢাবনিতাভিঙ্গপাক্সমান:।
কুর্কান্ সুরাষ্ট্রপরিপালনকার্যাচিত্তাং
য: সার্কভৌমচরিতং প্রেকটীকরোতি ।"

উক্ত শ্লোকটীর হার্থ পাকিলেও উহা হইতে ইহাও জানা যায় যে, ২য় জয়দেব অঙ্গ, কামরূপ, কাঞ্চী ও স্থরাষ্ট্রদেশের রাজগণকে জয় করিয়া রাজচক্রবত্তী হইয়াছিলেন। কামরূপ জয়কালেই সভবত: তিনি কামরূপপতি হর্ষদেবের ক্তার পাণিগ্রহণ করিয়া ছিলেন। ২য় জয়দেবের পর শিচ্ছবিবংশীয় আর কোন্ রাজা নেপালের সিংহাসন অলক্ষত করিয়াছিলেন, তাহা জানিবার উপায় নাই। পার্ব্বতীয় বংশাবশীতে কতকগুলি নাম থাকিলেও সাময়িক শিপির সহিত তাহার পৌর্বাপর্য্য রক্ষিত না হওয়ায় গহীত হইল না।

অধিক সম্ভব, ২য় জয়দেবের পর লিচ্ছবিবংশধরগণের প্রভাব ক্রাস হইয়া পড়ে এবং তাঁহাদের অধীন ঠাকুরীবংশীয় সামস্তগণ শেষে নেপালের আধিপত্য লইয়া বসেন।

লিচ্ছবি-সংবং।

নেপাল হইতে মহাসমান্ত অংশুবর্ম্মা, লিচ্ছবিপতি ২র শিবদেব ও ২য় জয়দেবের যে সকল শিলালিপি পাওয়া গিয়াছে, তর্মধ্যে জংশুবর্মার নামান্ধিত শিলাফলকে ৩৪, ৩৯, ৪৫ ও ৪৮ সংবৎ, ২য় শিবদেবের শিলাফলকে ১১৯, ১৪৩ ও ১৪৫ সংবৎ এবং ২য় জয়দেবের শিলাফলকে ১৫

পণ্ডিত ভগবান্ লাল ইক্সজী, প্রসিদ্ধ প্রেত্তব্বিদ্ বৃহ্লর ও
ফ্লিট্ সাহেব অন্ধণ্ডলি শ্রীহর্ষসংবং জ্ঞাপক বলিয়া নির্দেশ করিয়াচেন! কিন্তু আমরা এই মত সমীচীন বলিয়া মনে করি না।
কারণ নেপালে সমাট্ হর্ষদেবের প্রভাব কোন কালে যে গিয়া
ছিল, তাহার সম্পূর্ণ প্রমাণাভাব। নেপালপতিগণের তাঁহার
সহিত কোন কালে সমন্ধ গটে নাই। এরপ স্থলে নেপালপতি
হর্ষসংবং ব্যবহার করিবেন, তাহা সম্ভবপর নহে। উত্তরভারতে শকাধিপত্য বিভারের সহিত সর্ব্বত্র শক্সংবং প্রচলিত হইয়াছিল। এইরপ গুপ্তসমাট্ কর্তৃক নেপালবিজয় ও
লিভ্বিরাজগণের সহিত সম্বন্ধহেতু তথার গুপ্তসংবং প্রচাবিত
হওয়া কিছু বিচিত্র নহে। কিন্তু কনোজপতি হর্ষদেবের প্রবর্তিত
সংবং নেপালে প্রচলিত ইইবার পক্ষে সেরপ কোন স্থবিধা
ঘটেনাই।

৬-৬ খুগীদে হর্বসংবঁৎ আরস্ত। এরপন্থলে অংশুবর্ণার অন্তিত্ব শীকার করিতে হয়। ৬০৭ খুগ্রীদে বিনপরিব্রাক্ত হিউএন্ সিন্ধ: নেপালে যাত্রা করেন। তাঁহার বর্ণনা হইতে জ্বানা যায় যে তৎকালে অংশুবর্ণার রাজ্যাবসান ঘটিয়াছিল। † চীন-পরিব্রাজকের উদ্ভি হইতেও আমরা অংশুবর্ণা প্রভৃতির অহুত্তিনি হ্র্বসংবংজ্ঞাপক বলিয়া গ্রহণ করিতে পারিলাম না। আমাদের

Journal of the Asiatic Society of Bengal,
 Vol. IX. p, 768.

⁺ Beal's Si-yu-ki, Vol. 11. p, 18.

বিশাস, উহা কোন পরাক্রান্ত লিচ্ছবিরাজের প্রবর্ত্তিত অল। উপ-যুক্ত অন্নসন্ধান ও আলোচনা হইলে সেই বাজার নাম ও বিৰয়ণ পরে বাহির হইতে পারে।

लिए, वाक्तरभन्न भरताकार्थरवाधक विख्किनः आएक । লিট্য, অন্ন চিন্তা করা। নিটাভি।

লিদর (লদর), পঞ্চাব-প্রদেশের কান্দীর রাজ্যের অন্তর্গত একটা নদী। বিভন্তার শাখারপে প্রবাহিত। কাশ্মীর উপ-ত্যকার উত্তরপূর্বে সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৪ হাজার ফিট্ উচ্চ হইতে নিৰ্গত। অকা° ৩৪°৮ উ: এবং দ্ৰাঘি° ৭৫°৪৮ পূ:। ক্ৰডপাদ-বিক্লেপে পর্বতের ঢালু প্রদেশ অতিক্রম করিরা কাশ্মীর উপ-ভাকার ইহা ধীরগতি প্রাপ্ত হইয়াছে এবং অক্ষা ৩০°৪৫ উ: वादः जावि १६° २६ शद्य हमनामवात्मत ६ मार्डेन निकरन ঝিলাম নদীতে আদিয়া মিশিরাছে।

লিধু, ব্যাকরণোক্ত নামধাতুর সংজ্ঞাভেদ। শিঙ্ক ও ধাতু ব্ঝাইতে সংক্ষেপে "লিধু" এইরূপ প্রয়োগ হইয়া থাকে।

লিন্দু (পুং) পিচ্ছিল। (ছান্দোগ্য উপ° ৪।১৪)

লিন্সোটেন, (Jan Hugo Van Linschoten) এক জন পাশ্চাত্য ভ্রমণকারী। ইনি ১৫৮**%->**৫৮৯ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত ভারতে থাকিয়া একথানি ভারতবর্ষবিবরণী সম্বলন করেন। ঐ গ্রছ-থানি "Voyages into the East and West Indies" নামে খ্যাত। উহাতে তৎকালীন পর্ত্ত গীঙ্গ ও ওলনাঞ্চ বণিক্-গণের পরস্পর বিরোধবৃত্তান্ত এবং ভারতজাত বৃক্ষ ও খনিজ ধাতু প্রভৃতির পরিচয় স্থচারুরপে বির্ত আছে।

লিপ্, উপদেহ। ২ বৃদ্ধি। ৩ লেপন। তুদাদি উভয় সক[°] অনিট্। লট্লিম্পতি-তে। লিট্লিলেপ, লিলিপতুং, निनित्न। नृष् ्नश्चा। नृष् ्तन् अवि-त्वः। नृष् अनि-পং. অনিপত, অনিপ্ত। অনিপাতাং, অনিপ্, সাতাং অনিপম্ভ, व्यनिश् मञ् , मन निनिश्मिष्ठ-एछ । यङ् निनिशास्त्र । यङ् नुक् लालिशि। निष्तानिष्ठ । नृष् भनौनिष्र । अव + निष्न व्यवत्त्रभ, गर्का । व्या + निभ = व्यात्त्रभन । केशत्त्रभ, त्त्रभन ।

লিপ (পুং) নিম্পতীতি নিপ-ক। নেপনকর্তা।

लिलि (जी) निल (इंखनधार किए। छन् ८१३३३) रेडि हेन् न ह किए। निविष्ठ वर्ग ; भग्रीव्य-निविष्ठ, व्यक्तवराष्ट्रान, निवि, লিখন, লেখন, অক্ষরবিস্তাস, লিপী, লিবী, অক্ষররচনা, লিপিকা। (শবরত্বা°)

"অরং দরিদ্রো ভবিতেতি বৈধনীং

 निशिर नगाउँ श्रिंबन इं आधारीम्। মুবা ন চক্রেংলিতকলপাদণঃ প্রাণীর দারিক্রদরিক্রতাং নৃপঃ ॥" (নৈৰধ ১।১৫)

তত্ত্বে লিখিত আছে বে, লিপি পাঁচ প্রকার, বধা মুক্রালিপি, শিল্পলিপি, শেখনীসম্ভবা লিপি, শুগুকালিপি ও বুণলিপি।

"মুদ্রালিপিঃ শিল্পলিপির্লেথনিসম্ভবা।

শুক্তিকা বৃণসভূতা দিপর: পঞ্জা দৃতা: ॥" (বারাহীভর) এই সকল বিভিন্ন প্রকার লিপির উৎপত্তি-বিবরণ দেবনাগর শব্দে আলোচিত হইরাছে। তারতবর্বের নানা স্থানে এবং স্থানুর পশ্চিমে বাবিলোনীয়, আসিরীয়, কাল্দীয়, মিসর ও পুর্বেচীন প্রভৃতি রাজ্যে বহু প্রাচীনকাল হইতে বিভিন্ন প্রকার লিপি প্রচলিত দেখা যায়। তক্মধ্যে ভারতীয় লাটলিপি, বাবিলোনীয় ফলকলিপি, আসিরীর কোণাকার লিশি ও মিশরীর হাইরোমি-ফিক্ বর্ণ-লিপিই সর্ব্ধপ্রাচীন। [দেবনাগর ও বর্ণমালা দেখ।] লিপিকর (গং) দিশিং করোডীতি দিশি-রু (দিবানিশেতি। পা ৩।২।২১) ইতি ট। ১ লেখক। (অমরটীকা) যিনি লিপি প্রস্তুত করেন। ২ খোলাইকর। ৩ লেশক।

লিপিকা (ত্রী) নিপিরেব স্বার্থে কন-টাপ্। নিপি। (नक्षत्रप्ताः) লিপিকার (পুং) নিপিং করোতীতি ক্ল-মণ্। নেধক, নিপি-কারক। (অমর)

লিপিন্তর (আ) স্থলেখক।

লিপিত্যাস (পুং) লেখনী ছারা মসীবোগে পত্রাদিতে বর্ণবিদ্যাস। লিপিফলক (পুং) যে পত্তে শেখা যার। প্রস্তর তাম্রপত্র বা বুক্ষপত্রাদি যাহাতে লিপি স্থাস করা হইরা থাকে।

लिशिमाला (जी) निशीनाः माना। निशिश्रह, त्रशास लिश বা অক্সরবিস্তাস শিক্ষা দেওরা হয়। (ললিভবি •)

लिश्रिमक्ता (जी) निशिक प्रत्नाशरगानी यह वा अवानि।

लिनी (बी) निनि इमिकात्रामिछि छीव्। निनि। (भस्तप्रा•) लिश्व (बि) निभ-कः। > छक्किछ। २ क्रुड्टनभन, भर्गाम्---দিয়, বিশিম্পিত, চর্চিত। (জটাধর)

"তরিপ্তান্দেলথগুণ্ট চম্বারো বিহিতান্তথা।"(কথাসরিৎসা^{*}৪।৪৮) ৩ মিলিত, সংযুক্ত, বন্ধ। ৪ বিবদিন্ধ। (মেদিনী)

লিপ্তক (পুং) লিপ্ত এব স্বার্থে কন। বিবাক্ত বাণ। (অমর) লিপ্তাহন্ত (অ) রক্তাক বা ব্রন্দিত হন্ত।

লিপ্তা (ত্রী) জ্যোতিযোক ৬০ ডিগ্রীর একাংশ, এক মিনিট। লিপ্তাক্ত (তি) বাহার শরীর স্থগৰ দ্রব্যাদির বারা লেপা হইয়াছে लिशिका (जी) निरंशव चार्थ कन्। मण्ड।

"বৈশ্বন্ত চতুর্থোহংশ: প্রবণাদৌ লিপ্তিকাচতৃষ্ণ অভিক্রিৎ"

(সংক্রতাম্ভাণ)

लिल्ला (जी) नक् किका नष्-नन्, च-छान्। देखा, अखिनाव. লাভ করিবার ইচ্ছা।

"লিপাং চক্রে প্রস্নাত, মণিরত্বে প্রমন্তকে।"(ইরিবংশ জন্বত)

XVII

লিপ্সিডব্য (তি) নিপ্র-ভব্য। নাভার্ছ, নাভ করিবার উপযুক্ত।

লিপ্ত (তি) गर्के, सिक्कः गङ्गन, সরস্তাহः। সাভ করিতে ইচ্চুক, পর্যার গৃঃ, সর্কন, ভৃষ্ণক, সুক, অভিনার্ক, লোল্প, লোল্ড। (হেম)

"छे श्रे खनानः निष्णू नारमकः का कर्वरगीवथम्॥"

(क्थानिवरना° २८। ১১৯)

লিপ্সু তা (জী) নিপ্সু-তল্-টাপ্। নিপ্সুর ভাব বা ধর্ম, লাভ ক্রিবার ইচ্ছা।

লিপ্সা (এ) পাইতে বাহনীয়। যাহা লাভ করিতে খতঃ ইছা লয়ে।

লিবি (ত্রী) নিপ-ইন্, বাহনকাৎ পশু বন্ধ:। নিপি। (অমর) লিবিকর (গুং) নিবিং করোতীতি ক্ল-(দিবাবিভানিশেতি। পাত।২।২১) ইতি ট। নিপিকর।

লিবিক্ষর (পুং) নিবিং করোতাঁতি ক্ল-ট, পুষোদরাদিষাৎ বিতী-যারা অনুক্। নিপিকার। (অমরটীকা ভামনীকিত)

লিবা (ত্রী) निবি রুদিকারাদিতি ভীষ্। নিপি। (শব্দর্ম)) লিবুজা (ত্রী) নতিকা।

নিম্প (পুং) দিশ্বতীতি দিশ্ব-(অন্নপ্রদর্গাৎ দিশ্ববিন্দতি। পা৩।১।১৬৮) ইতি শ। লেপনকর্তা।

लिष्लि (पूर) विष् ्ग, नष्लि । (हातावनी)

লিম্পাক (क्रो) নিশ্কবিশেষ, পাতিলের। গুণ—স্বডি, স্বাচ, নাত্যম, অন্নকচিকর, বাতশেমহর, হৃত্য, ছর্দিনাশক, ঈষৎ পিতত্তবর্ধক। (রাজব°) (পুং) নিশ্কবৃক্ষ, পাতিলেব্র গাছ। ২ ধর। (শশব্দা)

लिप्लि (श्रः) निनि।

লিম্রা, বোদাই-প্রেসিডেন্সীর গোহেলবাড়প্রান্তর একটা ক্ষুদ্র সামন্ত রাজ্য। একংশ এই রাজ্য তিন জন আংশীদারের মধ্যে বিভক্ত হইরাছে। বার্ষিক রাজন্ম ২৫ হাজার টাকা, তন্মধ্যে বড়োদার গাইকোবাড়কে বার্ষিক ৯৩৪ এবং জুনাগড়ের নবাবকে ২৭৮ টাকা রাজকর দিতে হয়। নিম্রী নগর শোণগড় হইতে ৯ জোশ পশ্চিমোন্তরে অবস্থিত। ভাবনগর গোঙাল রেলপথের ধোরাজী শাখার জানিয়া টেসন এই নগর হইতে ১॥০ মাইল দুরে অবস্থিত। নগরভাগ সমৃদ্ধিশশার।

লিম্রী, (শিষাড়ী), বোষাই প্রেসিডেন্সীর গুজরাত-বিভাগের ঝালাবারপ্রান্তত্ব একটি দেশীয় সামস্করাজা। জকা° ২২°৩০´ ১৫ঁ হইতে ২২°৩৭´১৫´ পু: এবং জাবি° ৭১°৪৪´৩০´´ হইতে ৭১°৫২´১৫´´ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ৩৪৪ বর্গমাইল। এখানে সর্ক্রসমেত ১টা নগর ও ৪৩টা গ্রাম আছে। এই স্থান স্থভাবতঃই সমতল। বালুকাময় ভূমিভাগে চাস-বাসের বিশেষ স্থবিধা হয় না। স্থানে স্থানে ব্লফ ও লালবর্ণ মৃতিকা দৃষ্ট হয়। ঐ স্থানে তুলা এবং অক্সাল্প নানাজাতীয় শশু উৎপন্ন হইরা থাকে। এথানে ভোগবতী নামে একটা ক্ষুদ্র নদী প্রবাহিত, গ্রীমকালে উহার জল লবণাক্ত হয়। সময় সময় নদীতে বল্লা আসিয়া স্থানীয় শশুদির বিশেষ ক্ষতি করে। এথানকার সামস্তরাজ অর্থের পরিবর্ত্তে শশুদি হারাও রাজকর গ্রহণ করিয়া থাকেন। এই স্থান উষ্ণপ্রধান হইলেও বিশেষ স্বাস্থ্যপ্রদ। লিম্রী নগরে এক প্রকার মোটা কাপাস বস্ত্র প্রস্তুত্ত হয়। ভাবনগর-গোণ্ডাল রেলপথ বিস্তৃত হইবার পূর্ব্বে এখানকার উৎপন্ন দ্রব্যাদি ধোলেরা বন্দর হইতে বিভিন্ন স্থানে প্রেরিত হইত।

শিশ্বী রাজ্য কাঠিয়াবাড় বিভাগের মধ্যে দ্বিতীয় শ্রেণীর সামস্তরাজ্য বলিয়া গণা। এথানকার দর্দার ইংরাজ-গ্রমেন্টের সহিত ১৮০৭ পৃষ্টান্দের সন্ধিত্তরে আবদ্ধ। জ্যেষ্ঠ পুত্রই রাজসিংহাদনের অধিকারী, কিন্তু দত্তক গ্রহণের জন্ম তাঁহারা কোন সনন্দ পান নাই। ঠাকুর সাহেব ঘশোবস্ত সিংহজী ফতে-সিংহজী ঝালাবংশীয় রাজপুত। ইনি রাজকোটের রাজকুমারকলেজে শিক্ষাপ্রাপ্ত হন। ১৮৭৬ পৃষ্টান্দে বয়:প্রাপ্ত হইয়া ইনি শাসনশক্তি লাভ করিয়াছিলেন। পলিটিকাল এজেন্টের বিনা পরামর্শে ইনি স্বীয় অপরাধী প্রজাতৃন্দকে প্রাণ্যতে দণ্ডিত করিতে পারেন।

রাজার বার্ধিক রাজস্ব ২২১৩৭ ্ টাকা। তন্মধ্যে ৪০৫৩ ্ টাকা ইংরাজরাজকে ও জুনাগড়ের নবাবকে কর দিতে হয়। রাজা প্রণ্য দ্রব্যের উপর কোনরূপ কর গ্রহণ করেন না। তাঁহার উৎসাহে এখানে ১৭টা বিভালয় স্থাপিত হইয়াছে।

২ উক্ত সামস্ক রাজ্যের প্রধান নগর। ভোগবতী নদীর উত্তর কুলে অবস্থিত। অক্ষা ২২°৩৪ উ: এবং দ্রাঘি ৭১°৫৩ পূ:। এই নগর পূর্বেধ ধনজনপূর্ণ ও সমৃদ্ধিসম্পন্ন ছিল। এথান-কার প্রাচীন ছুর্গাধি এক্ষণে ভয়াবস্থায় নিপতিত।

লিম্বভট্ট (পুং) একজন সংস্কৃতজ্ঞ পণ্ডিত। 🚧 প্রনন্দ প্রবন্ধ-প্রণেতা নারায়ণের পিতা।

লিন্তু, নেপাল ও সিকিনের সীমান্তবাসী আতিবিশেষ। পার্কত্য কিরাত জাতির একটা লাখা বলিয়া গণ্য। বৌদ্ধর্মাবলখী হইলেও ইহারা অনেকাংশে ব্রহ্মণ্যধর্মেবী। ইহারা দৃঢ়কার, বলির্চ ও কর্ম্মঠ; গো, শৃকর ও পালিত পশুপক্ষিরকা এবং পার্কতা ভূমে শক্তাদি উৎপাদন ভিন্ন ইহারা অভ্য কোন কার্যাই করে না। অধিকাংশ সময়ই ইহারা আলভ্যে দিনুপাত করিয়া থাকে। ছেঁচা বালের বেড়ার উপর বন আলা ও এলাটী গাছের পাতা দিরা ইহারা আপনাপন বাসগৃহ নির্মাণ করে। দার্জিলিকের সমীপবাসী লিছ্সণ অতিরিক্ত মন্ত পান করে এবং দেবোদ্দেশে উৎস্ট পশুমাংস ভোজন করিয়া থাকে। ইহাদের বিশ্বাস, বলিরূপে নিহত পশুর প্রাণবার্ই দেবতার গ্রহণীয় এবং তাহার মাংস্পিও মন্তব্যেরই উপভোগা।

ডাঃ কাবেল ইহাদের ভাষার জিহ্বামূলীয় ও তালব্য বর্ণের আধিক্য লক্ষ্য করিরা বলিরাছেন, লেপ্ছা জাতির ভাষা অপেকা লিমু ভাষাই অধিক্তর শ্রুতিমধুর। ভারতীর ও তিব্বতীর ভাষার সহিত উক্ত ভাষার অনেক সাদৃশ্র দেখা যার। লেপ্ছা-দিগের নিক্ট ইহারা ছুল নামে পরিচিত। ইহাদের শারীরিক গঠন অনেকাংশে মোললীয়।

লিশ, > তৌচ্ছা, অনীভাব। ২ গতি। দিবাদি আছানে আক আনট্। গতার্থে তুদাদি পরতৈ অক আনট্। লট্লিলেশ দিলিশে। দুট্লেষ্টা। লট্লেকাতি-তে। দুঙ্ অলিকং-ত। সন্ নিলিক্জি-তে। যঙ্লেলিখাতে। যঙ্ল্ক্ লেলেটি; নিচ্লেশরতি। দুঙ্ অলীনিশং।

লিম্ব (পুং) লম-কর্তরি বন্, নিপাতনাৎ সাধুং, উপধায়া ইছং।
নর্তক।

লিসরি, হিমালয়-পর্বত প্রাপ্তবাসী জাতিবিশেষ। মিথুন-কোটের অদ্রন্থ গুর্চানি শৈলের নিকট লিসরি শৈলে ইহাদের বাস। ইহারা গুর্চানি জাতির একটী শাথা বলিয়া পরিগণিত হইলেও তাহাদের অপেকা বলহীন। ১৮৫০ ও ১৮৫২ খুষ্টান্দে তুইবার এবং ১৮৫৩-৫৪ খুষ্টান্দে উপয়াপরি আটবার ইংরাজ সৈপ্ত ইহাদিগকে আক্রমণ করিয়াও পরাজিত করিতে পারে নাই।

लिह, आश्वामन, लिहन। स्वामि उँ उप मक सिन्। निष्
लिह, नीष्ट्र, निहांड, लिकि। नीष्ट्र। लाष्ट्र लिह्न, नीष्ट्र,
लहानि, नीष्ट्राः। निष्ट्र निकांद्र, निहींउ। नष्ट्र स्विन्यद्र,
स्वीष्ट्र। निष्ट्र निकांद्र। नृष्ट्र लिहां। नृष्ट्र स्विन्यद्र,
स्विन्यद्र स्विन्यद्र, विन्यद्र, निनिःस्ट्रः। नृष्ट्र स्विन्यद्र स्वाम्य स्वामि स्व

অলেষত, অলাসত। সন্ লিলীবভি। বঙ্ লেলীয়তে।

যঙ্লুক্ লেলরীতি, লেলেডি। চুরানি পক্ষে লাপয়তি, লাররতি। ভূানি পক্ষে লয়তি।

लीका (जी) इत्यम्बिकमाती। ^{क्र}िक्निक (क्रांठ हेन्न् ब्रमाती।

लोका (जी) निका। (भनतका॰)

লীক্ষা (জী) শিকা। (শবর্ত্তা•)

লীন (এ) দী-জ (ওদিতক। পা ৮।২।৪৫) ইতি নিষ্ঠাতক্ষন। ১ লয়প্রাপ্ত। ২ রিষ্ট।

"দিবাকরাদ্রক্ষতি বো গুরুত্ম লীনং দিবাভীতমিবাদ্ধকারম্।
কুদ্রেন্থপি নুনং শরণং প্রপায়ে মমন্তম্টেচঃ শিরসামতীৰ ॥"

(कुमात्रन[°] ১। २১

লীলা (ত্রী) লয়নমিতি লী সম্পদাদিছাৎ কিপ্, লিরং লাতীতি লা-ফ। > কেলি। ২ বিলাস। ও পুলারভাব চেষ্টা। (মেদিনী) ৪ খেলা। (বিশ্ব)

"লীলাবিদধতঃ কৈরমীশরক্ষাত্মমাররা ॥" (ভাগৰত ১।২।১৮)

৫ নায়িকাদিগের প্রিয়তমের সমাগম লাভ না হইলে স্বচিত্ত-বিনোদনের জন্ত প্রিয়তমের বেশ, গতি, দৃষ্টি, হাত ও ভণি-তাদির অমুকরণের নাম লীলা।

"অপ্রাপ্তবন্ধভসমাগমনারিকারাঃ

স্থাঃ পুরোহয় নিজচিত্তবিলোদবৃদ্ধা।
 আলাপবেশগতিহাক্তবিলোকনালৈঃ

প্রাণেশ্বরামুক্তিমাক্থর স্থি লাশা। " (অমর্টীকার ভরত) ৬ ভগবানের ক্রীড়া বা কার্য্যাবলীকে লালা কহে। চলিত প্রবাদ আছে যে,—

"ভগবানের বেলা লীলাবেলা,
পাপ লিখিছে মানবের বেলা।"
প্রকট ও অপ্রকটভেদে ভগবানের লীলা দিবিধ।
"প্রকটা প্রকটা চেতি লীলা দেশং দিখোচাতে।" (পদ্মপুরাণ)
ভগবান অবতীর্ণ হইরা বাল্যক্রীড়া বার্পদেশে যে সকল
অলোকিক ক্রিয়া প্রদর্শন করিয়া থাকেন, তাহাই প্রকট লীলা,
এবং যে লীলা অব্যক্ত থাকে, তাহাকে অপ্রকট লীলা বলা যায়।
শ্রীভাগবতামৃতে শ্রীক্রকের উভরবিধ লীলার এইরূপ পরিচয় আছে—

"সদানকৈঃ প্রকাশৈঃ বৈদীলাভিন্চ স দীব্যতি।
তবৈকেন প্রকাশেন কদাচিজ্ঞগদকরে॥
সহৈব কপরীবারৈর্জন্মাদি কুরুতে হরিঃ।
ক্রুক্তভাবান্মসারেশ দীলাখ্যাশক্তিরেব সা॥
তেবাং পরিকরাশান্ধ তং তং ভাবং বিভাবরেৎ।
প্রপঞ্চপোচরছেন সা দীলা প্রকটা শুডা॥
অভ্যাদ্পর্কটা ভান্তি তাদৃভাত্তদগোচরাঃ।
তব্র প্রকটাশার্মানেব ভাতাং গ্যাগ্রেমী ৪

লীলাব্যক্ত (মী) বদ্বাদার শরকেন।

গোকুলে মনুৱাবাক বাৰকাৰাক নাকিনঃ : বাৰুৱা ভৱাপ্ৰকটা-কুৱা কুলৈৰ সন্ধিকাঃ 🗗 (বীকাগৰভানুত) १ करणांट्य । देशक जारकी करने, ब्यायाक करान 5. 8. 1. >+, >c & >+ वर्ग क्षक क्षक का, s, s, s, >, >>, >2, >a, >c वर्ग गयु । शीलांकवल (क्री) गीलांबर क्यान्त्। क्रीकानव। (स्वर ७७) मीमांकद (ग्रे) सम्बद्धि । मीमाक्रम् (ग्रः) स्नार्य भाग। লীলাখেল (कि) জীয়াশ্বল। ছিলাং টাপ্। ছলোডেন। উহার क्षाकाक प्रदान ३६की कक्षत्र कारह, नकन छनिरे छन । **जीकाशांद्र** (जी) गीमार्वर चांशांदर। गीमांश्रह, कीणांश्रह। जीजांग्रह (जी) दरनारत। मीमारगर (ही) कीपागांत। जीजांक (बि) हक्त वा निवंदा क्रीएक्कू जदवूक। (वृवानि) नीनाइत्स् अक्लम श्राहीम कवि। লীলাজন, (নৈর্থন) বালালার হাথারিবাগ জেলার প্রবাহিত একটা নদী। গরাধামের ওফোপ ৰন্ধিণে যোহনার সহিত মিলিত হইরা ফল্প নামে গলার মিলিত হইরাছে। लीलांहल (११) जनभरक्तः [नीनांहन तथ।] লীলাভমু (বী) শীলাপ্রকটনার্থ গুডনেহ। लीलांजाञ्जून (ही) कीशंक्यन, नीनांक्यन। लीलाम्स (बि) त्यकात्र क्यीकृष्ठ। मीमान्द्रेन (मी) कोव्यावह मुखा। लीलांसि (११) नीनांस्न। लीलांश्य छहे. गांकिशांकावांनी बर्टमक करि। करीळाळ्ळावत्व देशात जिल्लाम माह्य । जीक्नाभाग्न (ही) गीनार्थः नवः। जीकारमन। लीलाशर्वक (११) गीनावन। लीलाख (जी) नीनाकरन। লীলাভৱণ (মী) পদ্মালার মির্শ্বিড অলছার। लीलांबलुया (प्रः) बच्चन्त्री महरा। महराकात क्लि महरा मरह व्यवेशन रहराक्षणिनिते। लीलांबद्ध (वि) गीनांबक्दल महरे। गीनांबद्धन। লীলামাত্র (चरा) বেলিভে বেলিভে। लीलामाञ्चितितार (बि) > स्वरंती नहस्र। २ विस्कः। लीलाञ्चल (जी) गीगानवः। (क्यांत्रविक्तां- २७। ७৯) नीलाञ्चर (११) काकिवित्नव। [मीलाव्य दाव।] লীলারতি (জী) জীড়া लीलांद्रविक्य (क्री) **नीनांक्यन**ः

লীলাবভার (পুং) শীশাঞ্চদার্থ বিভূর ব্যক্তার। লীলাবং (এ) দীদা বিজ্ঞান্ত মতুপ্মত মা। দীদা-বিশিষ্ট, ক্রীড়াবুক। नीनावछी (बी) नीनावर-क्रियाः धीव्। > व्यनिवृक्ताः। ২ বিনাসৰতী। ৩ পুলারভাৰচেঙাৰিভা। ৪ খেলাবিশিষ্টা। এ বিখ্যাত জ্যোতির্বিদ ভান্ধরাচার্য্যের পদ্ধীর নাম দীলাবতী। वरे गीगावछी वक्षानि महत्वष्ट व्यन्त्रन करत्रम, छाहात्र नामछ শীলাবতী। শীলাবতীমললাচরণ লোকের টাকার গণেশ লিখিরাছেন বে.---"গোদাবরীতীরনিবাসিন: বহারাইদেশোরবভ প্রভানরা-ठार्याञ अव्वर्क: ऋश्विता नीनावजी विवर्गविकश्वनत्रञ्च छार नरेव-লীলাৰত্যা লীলাৰতীমিৰ" (লীলাৰতীটীকার গণেৰ) ভাষরাচার্যাও শীলাবতী নামে একথানি অম্বগ্রহ প্রেণরন করেন। ঐ গ্রাছের মললাচরণ প্লোক এইরপ লিখিত আছে---"প্রীজিং ভক্তকনশু যে কনমতে বিশ্বং বিনিম্নন শ্বভ-তং বুলারকবৃদ্ধবন্দিতপদং নথা মতলাননম। পাটীং সদৃগণিতত্ত বচ্মি চতুরপ্রীতিপ্রদাং প্রক্ষটাং गःकिथाक्त्राकामगामगर्भमागिष्णगीनावष्ठीम ॥"(गीनावष्ठी) ৬ অবিক্ষিৎ নূপতির স্ত্রী। (মার্কঞ্চেরপু• ১২৩)১৭) ৭ বেঞ্চাবিশেষ। (মৎক্রপুরাণ) ৮ স্থারগ্রন্থ বিশেষ। "দ্ৰব্যং নাকুলমুক্তলো গুণগণঃ কৰ্মাধিকং প্লাঘ্যতে লাভিবিন্ন ডিমাগতা ন চ পুন: লাখ্যা বিশেব দ্বিতি: । সম্মান সহলো ভণাদিভিবরং বতান্ত সংগ্রীভৱে गाँचिमानवरक्यक्यंक्रमना **द्येशावनीनावर्**षे॥" (अक्षत्रिक्ष) লীলাবধৃত (बि) বছদে বিচয়ণীল। লীলাবানী (রী) কলকেনির নিষিত প্ররিশী। लोलांट्राम्बन (ही) गीगागृर। লীলাশুক (গুং) ভক্তক্ৰি বিষয়দলের নামান্তর। नीमोगांश (बि) मरकगांश। वांदा चवरदगांत निनात क्यां यात्र । লীলাস্বাদ্মপ্রিয় (গ্রং) ডান্তিক আচার্ক্তভেষ । একি (হর্না) ভক্তগণের মধ্যে কুপরিচিত। শক্তিরভাকরে ইহাছ উল্লেখ আছে। नीटनाष्ट्रांच (की) नीनार्वकृष्टानः। (वक्त) শব্দৰ মানসমূহতি মেৰ্বি-আডনেবিভয় ৷ मकीका गर्यटेननक गीरनावांगर झालाविकाम् ।" (कवान्यिस्ताः). मी(मार्श्यकी (बी) स्टबारका। नेरांत व्यक्ति इत्रत्य ३४की क्यानी सारक ।

লুআড়ি (দেশৰ) বৃক্ষবিশেষ। (Phylanthus longifolius) লুই (দেশৰ) লোমধারা প্রস্তুত বন্ধডেদ। স্থনামপ্রসিদ্ধ পশ্মী বস্তু।

লুকু (পুং) নোপ, বাফরণের সংজ্ঞাভেদ, নৃত্ ও নোপে প্রভেদ আছে।

লুক, ক্লম্ভ প্ৰত্যৱভেদ। এই প্ৰত্যৱবোগে ধাতৃত্ব বিশেকাক্লপ হইয়া থাকে।

জুকা [ন] (দেশক) গোপন।

লুকা (লুবা), আসাম প্রদেশে প্রবাহিত একটা ক্ষুদ্রনদী।
পর্কাওগাত্র-বিধোত কতকগুলি সরিংমালার প্রইকলেবর হইরা
ইহা উত্তর-কাছাড় ও লর্ম্বী শৈলবিভাগের মধ্য দিরা প্রবাহিত
হইরাছে। ল্বন্ধীর পার্কাত্যজেলা অতিক্রম করিরা ইহা
জ্ঞীহট্রজেলার মূলাগুল গ্রামের নিকট স্থরমা নদীতে মিলিত
হইরাছে।

লুকাচুরি (দেশজ) বালকদিগের জীড়াবিশের। ইহাতে এক-জন চোর সাজিরা অপর সঙ্গীদিগকে খুঁজিরা বেড়ার।

লুকিবিদ্যা (ত্রী) > গুপ্তবিষ্ঠা। ২ রহস্তপূর্ণ ভৌতিক প্রক্রিরা। লুকোলুকি (দেশল) পুনঃ পুনঃ গোপনের ছলনা।

লুকায়িত (ত্রি) শুক-কারত যত তাদৃশ ইবাচরতীতি শুকার-কিপ্ততঃ ক্ত। অন্তর্হিত।

मुर्कश्वत (क्री) जीर्थएम।

লুখাসী, বুন্দেলগণ্ড বিভাগের অন্তর্গত একটা দেশীর সামন্তরাজা। ভারতগ্রমেণ্ট ও মধ্যভারত এজেনীর তত্বাবধানে
পরিচালিত। ইহার দক্ষিণাশিক হইতে দক্ষিণপূর্বাসীমা পর্যাত্ত
ছত্রপুর রাজা, এবং পূর্বা, উত্তর ও পশ্চিমাংশ হামীরপুর রাজ্য
নারা পরিবেটিত।

ইংরাজরাজ বধন ব্লেলখণ্ডের আধিপত্য লাভ করেন, তথন এখানকার সর্দারেরা ১১ খানি প্রামের অধিকারী ছিলেন। তিনি বধারীতি ইংরাজরাজের আছগত্য স্বীকার ও বলোবতীপত্রে আছর করার বীর সম্পত্তি ও সামস্তপদ লাভ করিরাছিলেন। ১৮৫৭ খুরাজের সিপাহীবিদ্রোহের সমর, এখানকার সামস্ত সন্ধারসিংহকে ইংরাজরাজের প্রতি বিশেব অন্তর্মক্ত দেখিরা বিদ্রোহিদল সুবাদী সুঠন করিরা বহু ক্ষতি করিরা ছিল। রাজা বিদ্রোধীর অত্যাচার সক্ত করিরাও অবিচলিত ভাবে ইংরাজের পক্ষ সমর্থন করিরাছিলেন। ইংরাজরাজ উহার এই রাজতজির প্রকার অরপ তাহাকে রাও বাহাছর উপাধি, রাজপরিছদ এবং ২ হাজার টাকা আবের একটি জারনীর দান করেন। এতিরে সনন্দের বারা তাহাকে দত্তক গ্রহণেরও অধিকার দান করা হয়। তাহার পোত্র রাও বাহাছর ক্ষেত্রসিংহ ১৮৮৬ খুটাকে পৈতৃক রাজপনে অধিটিত ছিলেন। তাহার নাবালক অবহার ইংরাজ গবর্দেণ্ট রাজকার্য্য পরিচালন করেন। ঐ সমরে পূর্বাসী রাজ্যের বথেষ্ট উরতি সাধিত হইরাছিল। রাজক্ম প্রার ১০ হাজার টাকা।

কান্শী হইতে জব্দগুর বাইবার পথে কান্শী হইতে ১৩ জোল দক্ষিণে পুদাসী নগর অবস্থিত। এখানে একটা স্থান্দর বাজার আছে। নগর মধ্যে রাজপ্রাসাদ ও হুর্গ স্থানিত। ঐ হুর্গে রাজার ৯০ জন প্রাতিক সৈত্ত এবং ৭টা স্থানান ও কামান-বাহী সেনাদ্য বাস করে।

লুক্ল (পুং) মাজুনুল বৃন্দ, চলিত ছোললনেবৃন্ন গাছ। (বৈদ্যক্ষি •)
লুক্লমাংস (ক্লী) মাজুনুলমাংস। (বৈজ্ঞক্ষি •)

*ज्*काञ्च (हो) माञ्जूकाञ्च। (तरजङ्गादगः)

লুকুষ (পুং) ছোলন লেবু। (রত্নমা•)

লুচি (দেশল) গোগ্মচ্প (মরদা) জলে মাথিরা ও পিণ্ডাকৃতি
করিরা চাকী ও বেলন সহবোগে বেলিরা যে চক্রাকার মরদার
পাত উত্তপ্ত স্বতে ভালা হর, তাহাই দুচি। ইহা উৎকুই খাছ
বলিরা গণ্য। গরমলুচি লবণ যোগে ভক্ষণ করিলে রক্তামাশর
আরোগ্য হয়।

লুচ্চা (পারদী) > কামুক। ২ পরত্রীগানী। ৩ বেশাদি বারা রমণীর চিন্তহরণঞ্চরদী।

লুচ্চাপনা (গারনী) কায়কের হাবভাব বা কার্য। এই অর্থে নুচ্চাম ও নুচ্চামী শব্দেরও প্ররোগ হইরা থাকে।

লুক্ত, দীথি। চুরাদি পরতৈ অক নেট্। এই ধাড় ইদিং। লট্ লুঞ্জতি। লুঙ্ অফ্লুঞ্ধ।

লুক্, ১ অপনরন, অপসারণ। জ্বাদিও পরতৈও সকও সেই। লুক্তি। নিট্লুক্। সুট্লুক্তা। নুঙ্অনুকীং।

লুঞ্জিতকেশ (গুং) জৈন সাম্প্রনারিকজেন। তাহারা ঔষধানি বোগে মাধার কেশ ও গাঞ্জনোম নই করিরা কেলে বলিয়া এইরূপ নামকরণ হইরাছে।

লুট্, বিলোড়ন। ভাবি-, গজে বিবাধি- পরত্যৈ- সক- দেই ।
নট লোটভি। বিবাধিপকে নুটাভি। নিট লালাই, নুনুইজুং।
নূট লোটভা। নূত্ অলোটাৎ, অনুটৎ। বিচ লোটবভি।
নূত্ অনুনুটং। নূট অভিবাত। ভাবি- আজনে- সক-

त्रहें। महे लाग्रेट । मूहे लाग्निका । मूह जालाग्रिका वानुष्ट् — इ्.कि, चनस्यु क्रोया। क्रिया नवत्य नवन तार्। धरे शाष्ट्र देविर। नार्रे मुन्दिकि। नूद् चानुनि रि। धारे चार्थ চুরাবি॰ পরবৈ । কক সেউ। । লট্ কুন্টরতি। বৃত্ অবৃস্টং। न् हे (दिणक) मूर्वन मदस्य क्षणकरने । शतकाभरतन । म्हेशहि (अनम) मुकेन। লুট্ পুটান (বেশৰ) গোলে পড়া। বিপৃথগার মধ্যে হাভড়ান। मुद्धा (प्रमान) २ ग्रांगिष् । २ ग्रेम क्या । मुद्रोस ((तमन) > मुक्रेमकार्य। २ ध्नात विनृष्ठिछ कत्रण। **লুটিয়ারা** (দেশৰ) ডাকাইত। পুটেরা। লুটা (দেশল) > গোলাকার প্তার শিশু। ২ জড়ান বস্ত্রথণ্ড। লুটীস্কৃটী (দেশৰ) গোলযোগ। বিশৃষ্ণা। **লুটের দ্রেব্য** (দেশৰ) নুষ্ঠনহারা লব্ধ পদার্থ। লুঠ, ১ উপৰাত। ২ আলন্ত। ৩ তের। ৪ থাড়ন। ৫ প্রতীকাত। 🕶 লোট। উপযাতার্থে ভার্দি৽ পরবৈদ্ব৽, প্রভীযাতার্থে আন্মনে চৌব্যার্থে চুরাদি পরত্বৈ লোটার্থে জুদাদি পরত্বৈ উভ সেট্। শট্ শুঠজি, লোঠজে, শুঠজি। শুঙ্ জলোঠীৎ, चनूनुष्ठेर । সূঠন (क्री) প্ঠ-ভাবে পাট্। ভূমিতে অখের প্নঃ প্নঃ শ্রমোপহনন, চলিভ লোটা, গড়াগড়ি দেওয়া, পর্যায় (वज्ञन। (जिकां•) লুঠনেশ্বরভীর্থ (क्री) তীর্ঘদে। ইহাকে পুঠেবর বা পুকেবর তীর্থও কছে। হেমচজ্র এই তীর্থের নাম উল্লেখ করিরাছেন। সুঠিত (বি) পুঠ-জ। মৃহমূ হ: ভূমিডে পরাবৃত্ত হওরা। শ্রম-শান্তির জন্ত যে সকল আৰ ভূমিতে বারবোর গড়াগড়ি দের, ভাহাকে দুঠিত কহে। পর্যার বেল্লিড, অপার্ড, পরার্ড। (হেম) "লিলাকলাপো পৃঠিতঃ কিমঞ্জনগিরেবরং। কিষ্তাকালকরাজ্বমেবৌব: পতিভো ভূবি ॥" (कथामनिरमा• >•२। ११) লুড়, ১ মছন, আলোড়ন। ২ বংর্ডি। ৩ লেব। মছনার্থে—

লুড়, ১ মহন, আলোড়ন। ২ সংবৃতি। ৩ মেব। মহনার্থে—
ভাবি পরবৈ নক নেট, সংবৃতি ও মেবার্থে তুলানি পরবৈ ।
লট্ লোড়ভি। সূট্ লোড়িভা। লুড় আলোড়ীং, ক লোড়ভ,
লিচ্ লোড়ভি। আ+লুড় আলোড়ন। বি+লুড় — বিলোড়ন। তুলানিপকে লুট্ লুড়ভি। লুড় অল্ডীং।
লুড় বুড়ে (বেশল) ভবাডের (Cascaria glomeraca)
লুড় বুড় (বেশল) এবিছ অবিছ নিটার বেড়ান।
লুড়া (বেশল) উপলব্ধ।
লুণ্ (বেশল) স্বন।
লুণাবাড়, বোলাই প্রেরিজেনীয় অব্যাভ প্রবৃত্তির বেবাকার।

পলিটিকাল একেলীর অন্তর্ভুক্ত একটি দেশীর সামস্তরাজ্য ।
ইহার উত্তর দীমার রাজপুতনার অন্তর্গত হলরপুর সামস্ত রাজ্য,
পূর্বে রেবাকাছার অন্তর্গত তঁব ও কছানা রাজ্য, দক্ষিণে পক্ষ
মহলের অন্তর্গত গোধ্ডা উপবিভাগ এবং পশ্চিমে মহীকাছার
ইদর রাজ্য ও রেবাকাছার অন্তর্গত বালাদিনোর রাজ্য । অক্ষা
২২°৫০ হইতে ২৩°১৬ উ: এবং ক্রাবি° ৭৩°২১ ইইতে ৭৩°৪৭
পৃ: মধ্য । ভূপরিমাণ ৬৮৮ বর্গমাইল । এথানে দর্বসমেত
১টি নগর ও ১৬৫টি খানি গ্রাম আছে ।

মহীনদী এই রাজ্যমধ্যে প্রবাহিত। মধ্যে মধ্যে বিভৃত বাঁধ আছে। কুপাদি ধনন করিয়া তথাকার লোকে চাসবাস করে এবং তাহাই হানীর জলাভাব দ্রীকরণের এক মাত্র উপার। শুজরাত হইতে মালব পর্যন্ত একটি বিভৃত পথ লুণাবাড় নগরের পার্ছ দিরা গমন করার এখানকার বাণিজ্যসমূদ্দির বথেষ্ট উরতি হইয়াছে। গম, কলাই এবং সেগুণ কাঠ এখানকার প্রধান বাণিজ্য জ্বয়। শুজরাতের অভ্যান্ত হানাপেকা এই হানের জলবায়ু অপেকাকৃত শীতল। জর ভিন্ন এখানে সাধারণতঃ অভ্যান্থ বাধি দৃষ্ট হয়্ব না।

অন্হিলবাড়পভনের-রাজপৃত রাজবংশ হইতে এখানকার রাজবংশ উৎপন্ন। প্রবাদ, এই রাজবংশের পূর্বপূর্বকাণ ১২২৫ খুটান্দে বীরপুর নগরে রাজধানী হাপন করিরাছিলেন। তদনন্তর ১৪০৪ খুটান্দে ঐ বংশীর কোন রাজা গুণাবাড়ে রাজপাট পরিবর্ত্তন করেন। অধিক সন্তব, গুজরাত প্রদেশে মুসলমান-রাজগণের প্রভাব বিশ্বত হইলে, তাঁহারা রাজ্যভ্রট হইরা মহীনদী অতিক্রমপূর্ব্ধক এখানে আসিতে বাখা হন। অতঃপর এখানকার সামস্তরাজগণ গাইকোবাড় ও সিন্দেরাজের অধীন সামস্তর্কের রাজ্যশাসন করিতে থাকেন। ১৮১৯ খুটান্দে ইংরাজগবর্মেন্ট সিন্দেরাজের কর্তৃত্ব অন্থ্যোদন করিরাছিলেন। ১৮২৫ খুটান্দে স্পাবাড় মহীকাছার পলিটিকাল এজেলীর অন্তর্ভুক্ত হর। ১৮৩১ খুটান্দে সিন্দেরাজ পঞ্চমহল জেলার সহিত এই রাজ্যের শাসমকর্তৃত্বও ইংরাজগবর্মেন্টের হত্তে সম্বর্ণণ করেন।

মহারাণা বধং (ভক্ত) সিংহ্নী ১৮৮০ বৃষ্টাবে রাজ্যাতিবিক্ত হন। তিনি সোলাছীবংশীর রাজপুত। পলিট্ছাল এজেন্টের বিশেব দছ্মতি ব্যতীত তিনি খীর অপরাধী প্রজানিগকে প্রাণ-বতে বভিত করিতে পারেন। ইংরাজরাজের নিকট হইতে তিনি মাজস্চক ক্ষী তোপ পান। জ্যেষ্ঠ প্রক্ষই রাজ্যাবিভারী হইর। বাকেন। রাণার বভক্রহণের ক্ষমতা নাই। মোট রাজস্ব ১৯২২৬০১ টাকা, তরংগ্য ইংরাজরাজকে ও ক্যোলার গাইজোবাড়কে বাধিক ১৮০০০ টাকা বিতে হয়। রাজনৈজকলো ২০৪ কম। প্রবাদে ১২টী বিভালর আছে। ২ উক্ত সামস্বরাজ্যের প্রধান নগর। স্থা ও প্রাচীরাধি বারা পরিরক্ষিত। মহী ও পনাম নহীর সক্ষমের ছই জোশ পূর্কে এবং পনাম তীর হইতে অর্ছ জোশ উত্তরে অবস্থিত। অকাশ ২৩°৮'৩০' উ: এবং লাখি ৭৩°৩৯'৩০' পৃ:।

১৪৩৪ খুটান্দে রাণা ভীমসিংহঞী এই নগর গুডিছা করেন। স্থানীর প্রবাদ, এক দিন রাধা মহীনদী উত্তরণ করিয়া সুগরায় বহিৰ্মত হন। ঘটনাচক্ৰে বনপথে শক্ষ্যন্তই ছইরা তিনি খীর नन **कांक्रा हरेबा भएक्न। अल्ली ममागरव**्य**नावकारत** भथ হারাইরা তিনি নিকটছ এক সাধুর আশ্রেমে উপনীত হন। রাজা বেই বোগনিরত **দাধু সমক্ষে উপনীত হই**য়া সুসুল্লৰে তাঁহাকে প্রশিপাতপূর্বক কুটারের একপার্বে দ্ঞারমান রহিলেন। সাধু বোগবলে রাজার দৈশুতা জানিতে পারিয়া মনে মনে তাঁহার সাধুতাকে ধন্তবাদ দিলেন এবং যোগভদ হইলে ব্লক্সাকে আসন পরিগ্রহ করিতে আদেশ করিয়া বলিলেন—তোমার ও তোমার বংশধরণণের অনৃষ্ট বড়ই স্থ-প্রসন্ন; ভূমি এই ৰনে একটী নগর স্থাপন করিরা রাজ্যশাসন কর। কল্য প্রভাবে এই স্থান হইতে পূর্কাভিদুবে গমন করিয়া বেধানে তোমার সন্ম দিয়া একটা শশক গমন করিতে দেখিবে, সেই ছানেই নগর হাপন করিবে। রাজা সর্যাসীর বাকাাছ-সারে পথ অতিবাহিত করিয়া পার্ষস্থিত গুল্মপতাভ্যন্তর হইতে একটা শশক নিৰ্গত হইতে দেখিলেন এবং বল্লমের -আঘাতে ভাহাকে সেই স্থানেই নিপাত্তিত করিলেন। সেই ছানেই পরে ভিনি রাজপ্রাসাদ নির্মাণ করান। যোগিবর বুণে-ব্দের উপাদক ছিলেন। রাজা দেই সাধু ও দৈবতার প্রতি **७ कियान् बरेबा नगरबब नाम नुगावाफ् ब्राप्यन ।** नगरबब मबक्नी খারের বহির্ভাগে আজিও সুপেখরের মন্দির বিশ্বমান আছে।

খৃটীর ১৯শ শতাব্দের প্রারম্ভে এই নগর গুলরাত ও মালবের বাণিজ্যসমূদ্ধিতে পূর্ণ হইরা উঠে। ঐ সমরে এখানে উৎকৃষ্ট অন্ত্রশন্ত্র প্রন্তত হইত। বোদে-বড়োলা-মধ্যতারত রেলপথের গোধ্ডা শাখার শেব ষ্টেলন শেরা নগর হইতে সুণাবাড় পর্যন্ত একটা পাকা রাজা আছে, এই পথে এখানে করেলখানা, বিভালর ও চিকিৎসালর আছে।

সূথিরা (বেশ্বর) ১ ক্ষরভের। (Portulace oleracea) ২ স্থাব্যবসারী।

मुन्हे, बरबा, क्रोरा। इरावि॰ शक्त वृत्ति॰ शर्देव॰ शक् शहे गुन्हेवि, शक्त गुन्हेवि। श्रुट् बगुन्हेद, शक्त बनुद्धे रे। मुन्हेक (ग्राः) श्रुटेवीवि गुन्हे-वृत्। ३ शास्त्रित्व। इतिष्ठ नक्षित्व। লুকী (খ্রী) পুক-অঙ্-টাপ্। পুঠন। (শক্ষয়া।)
লুকীক (খুং) পুকীতি পুক-(জ্ব-কুউপ্কঃ বাজন্।
পা ভাষানতে) ইতি কন্। ১ চৌর।
লুকীকী (খ্রী) পুকাক-বিভাং তীপ্। খ্রীচৌর।
লুকীক (বি.) পুঠভাঁতি পুঠ-বৃদ্। ভোরকারক, পুঠনকারী, চার্কিভ পুঠরা।
"বে চৌরা বহিনা হুটা গ্রদা গ্রামপুঠকাঃ।

"ঘে চৌরা বহিনা হাইা গারদা গ্রামন্থকা:।
নারমেরাননে তে বৈ পাতাত্তে পাতকাবিতা: ॥"(পল্লপ্-পাতালধ্-)
লুপ্তন (রী) পুঠ-সূটে । পুঠন, পুঠ করা।

িহরণং নুষ্ঠনং তৰ্থ তৎপদ্মীনাং নরাধিশঃ।"(দেবীভাগ• ৫।১।১৮)

र गंड़ागड़ि (मधन।

मूर्छ नहीं (जी) नहीं एक।

मूर्छ नहीं (जी) नृष्ठे - चंड्र चित्र । गृष्ठेन। (भवत्रक्ष) ।

मूर्छ कि (गृष्ठ) नृष्ठे - चंड्र न्। > कांक। (जिका॰) र तात्र।

"विद्यार्श्विमातिकांगार खननगंभाष्टिकदां जीनकत्रः।

বত্র বিরাজতি রজনীতিনিরণটপ্রকটসূর্চাক: ॥" (কলাবি । ১।৩) সুষ্ঠি (ত্রী) বহার্তি। অপহরণ। সুষ্ঠী (ত্রী) সূঠন, সুট হওরা।

লুণ্ড, চৌর্য। চুলাদি॰ পরত্রৈ॰ লব্দ সেট্। লট্ লুগুরতি লুঙ্জনুলুগুৎ।

নু (ক্রি) পৃথী সার্থে কন্, তত্তীপ্। > ভারসারিশী।
(হারাবনী) একত্র বেটিত নেবলোমাদি, দেবলোমাদি একত্র
ক্রিরা বে দলার মত হর, তাহাকে পুঞ্জিকা ক্রে। চলিত
ইহাকে মুড়ি কহে।

িনেছবঞ্জ ছভাভ্যকং ভাত্রভালনমাভপে। প্রভারস্থা পঠং ভত্মশক্ষ সমাহরেৎ ।

তাত্ৰতালনে খতং সৈৰবং নৰা রোজে তথা কৰা বেননোন-ন্তিকরা ঘট্টা নলগ্ৰহং কৰা তেন অক্ষরেং।" (তৈৰজারত্না॰) লুগ্ডী (গ্রী) ভারসারিণী। (আকা॰) লুখা, কুহন, বধাও ক্লো। জ্বাহি॰ পরবৈশ লক্ষণ সেট্ট্ লুছভি।

পুর্ অপুরীং।
পুর্কু, (গানজ্), চীন ও ভারতনীয়াত্তবাদী পার্মভীর লাতি
বিশেষ। নৌকিরাং নামক হানে পশ্চিমে কুরুজু নামক হানে
ইহানের বাস। আচার বাবহারে ইহারা সম্পূর্ণ বর্মার।
কতকভানি কাটের গুটা পানাগালি পুরিজা ভাহারা গুরু নির্মাণ
করে। থাআবি সবকে ভারারে বিশেষ বিচার নাই। বাধারণতঃ তাহারা চিতাবাব, হাগল, বেঁকুনিয়াল প্রায়ুক্তি প্রভাগন
আপনাদের গাত্র আবৃত করে। বোভারা চর্মান্তরীই সেরাজানন
করে, কিছ গুরুজ্ব ভ আক্তীর স্কার্যাক ক্ষানির বৃদ্ধ পরিধান

করিরা থাকে। রাহারা খৃষ্টধর্মের আশের লাভ করিরাছে, ভাহারা চীনবাদীর অন্তন্ত্রণ পরিক্ষম পরিধান করিতেছে।

ইহাদের গাত্রবর্ণ পাখবর্জী অপরাপর জাতি হৈইতে অপেক্ষারত রুক্তর্ব। মাধার ভাহারা চীনবাসীর জ্ঞার দড়া বিনাইরা বড় চুল রাখে। বুদ্ধ কার্য্যে ভাহারা হ্রনিপুল। পার্থবর্তী দেশ-বাসীদিগকে, বিশেষতঃ বুন্-নান্ জাতিকে নিরস্তর উপদ্রবে উৎক্তিত করিতে ভাহারা কাতর হর না। বড় চুরি, বড়পা ও ধনুকও ভাহাদের এক মাত্র অস্ত্র। আসাম সীমান্তহিত থামতী জাতির বাসভূমি হইতে ভাহারা ঐ সকল অস্ত্রাদি লইয়া যায়। চীমরাজকে ভাহারা কোন কর দের না অথবা ভাহার রাজপজ্জির কামুক্ত বলিলা বীকার করে না; কিন্ত চীনরাজের আদেশ পাইলে ভাহারা বেজার সুঠনের লোভে যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইরা থাকে। ভাহাদের মধ্যে প্রারু ১২ শত ছর্দ্ধর্ব বোদ্ধা আছে। ভূতাদির ভূরিসাধনার্থ ভাহারা যুর্নী বলি বিরা থাকে।

সূথিয়ানা, পঞ্চাব গ্রেদেশের অন্তর্গত একটা জেলা। ছোট লাটের লাসনাবীন। ইহার উত্তরে শতক্র নদী, পূর্ব্বে অবালা জেলা, দক্ষিণে পাতিরালা, বিন্দা, নাতা ও মালের কোট্লা সামস্তরাজ্য এবং পশ্চিমে কিরোজপুর জেলা। জ্বলা ৩০°৩৩ হুইতে ৩১°১ উ: এবং জাবি ৭৫°২৪ ৩০ হুইতে ৭৯°২৭ পৃ: মধ্য। ভূপরি-মাণ ১৩৭৫ বর্গমাইল। সরমালা, সূধিরানা ও জগরাওন্ তহসীল লইরা এই জেলা গঠিত।

এই জেলার সর্কাত্র সমতল। কোথাও একটা গওলৈল দৃষ্ট হর না। নদী না থাকার জলকট বিলেবরপে অন্তত্ত্ব হয়। দক্ষিণনীমার শতক্র নদীর একটা প্রাচীন থাত আছে, তাহার নিকটবর্তী হান অপেকারত উর্কার। বর্ধাঞ্চতে বিশেবতঃ বৃষ্টিপাতের পর এই থাত পূর্ণ হইরা উঠে। গ্রীছের সমর জলাতাবে তাহা ওকাইরা বার। অখালা হইডে সর্হিন্দ-খাল এই জেলার প্রাণিশে প্রবেশ করার হানীর জলাত্ত্বাব কডকাংশ বিদ্রিত হইরাছে। ঐ থালের অপর ছুইটা শাখা জেলার পশ্চিম পরগণা-সর্হে প্রনারিত থাকার চাসবানের বিশেব হ্রবিধা ঘটিয়াছে। জেলার অধিকাংশ হানই বালুকামর মন্ত্রন্দণ। মধ্যে মধ্যে সৃত্তিকাপূর্ণ ভূমিথও স্লাবল শতে পরিবৃত্ত হইরা হানীর শোভা সম্পান্ন করিডেছে।

এখানে বছৰুৰসভূদ দেৱপ গভীর বনপ্রবেশ নাই। শতক্রর প্রাচীন গর্জ সমীপবর্জী 'বেং' বিভাগ ব্যক্তীত কেলার আর কোথাও কুলকিরা, শিশুলালীকট, লখধ প্রকৃতি বড় বড় গাছ বেখা বার না, কেবল প্রভ্যেক প্রামের প্রকৃতিউতি এক একটা লখধ ও বট বেখিতে পাওরা বার। পাছের অভাব বৃর করিবার কক্ষ এখন রাভার উত্তর পার্বে বড় ভাতীর ব্যক্তমুহ্ রোপিত

হইতেছে। এখানে স্থানবিশেষে মৃত্তিকা হইতে কাঁকর উদ্বোশিত হর। উহা রাতার ছড়াইরা দেওবা হর। কাঁকর পোড়াইরা চুণ প্রস্তুত হর, তাহা বিক্রীত হইরা থাকে।

বর্জমান স্থিয়ানা নগর খুটার পঞ্চলশ শতাব্দের অধিক প্রের্ক গঠিত হয় নাই, কিন্তু এই জেলার অন্তান্ত হানে অনেক প্রাচীন নগরের ধ্বংসাবশেব দেখিরা মনে হয়,ঐসকল নগর বহকাল প্রের্কে প্রেসিদ্ধ ছিল। কালসহকারে ও দৈবছর্জিপাকে তাহা ধ্বংসমুখে নিপতিত হইক্ষেত্র । বর্তমান লুধিয়ানা নগরের সন্নিকটে স্থানত নামক ছানে একটা স্থান্ত বিভূত ও ইউক্লিম্মিত অট্টালিকাদিপূর্ণ প্রোচীন নগরের ধ্বংসাবশেব দৃষ্ট হয়। ঐ ধ্বন্ত ন্তু প্রাশি আজিও তাহার প্রাচীন সমৃদ্ধির পরিচয় দিতেছে। ভারতে ম্সলমান সমাগমের পূর্বে ঐ জনপদের গৌরব ও কীর্ত্তিকলাপাদি ধিয়র ধীরে অন্তর্হিত হইয়াছিল। তদপেক্ষা পূর্বতন হিন্দু-রাজধানী মৎস্তবাট নগরীর পূর্বসোক্ষরের নিদর্শন মাত্র পরি-রাজধানী মৎস্তবাট নগরীর পূর্বসোক্ষরের সমৃদ্ধির পরিচয় আছে।

মুসলমান অধিকারে এই স্থানের রাজকোটের রাজপুত রার-বংশ প্রবল ছিলেন। পরে ইস্লাম্ধর্মে দীক্ষিত হইরা রাজান্মগ্রহ-ভাজন হন। ১৪৪৫ খুটান্দে এই রাজবংশ দিল্লীর সৈরদ রাজ-বংশের নিকট হইতে এই প্রদেশ জারগীর স্বরূপ প্রাপ্ত হন। ১৪৮০ খুটান্দে দিল্লীর গোদীবংশীর রাজগণের উত্যোগে পৃধিরানা নগর স্থাপিত হর, পূর্ব্বোক্ত স্থনেত নগরীর ইউকাদি লইরা মুসলমানগণ এই নগর পত্তন করিয়াছিলেন, অনেক অট্টালিকায় আজিও জি-অজুলিচিক্ত্বক স্থনেত নগরীর প্রাচীন ইউক দেখিতে পাওয়া বার। *

সম্রাট্ বাবর শাহ কর্ত্ক লোদীবংশের অধঃপতন সাধিত হইলে, এই নগর মোগলরাজবংশের অধিকৃত হয়। তদব্ধি ১৭৬০ খুটান্ধ পর্যান্ত উহা মোগলবাদশাহগণের শাসনাধীনে থাকে। তৎপরে রাজকোটের রারবংশ প্নরার উক্ত নগরের শাসনাধিকারী হইরাছিলেন।

শোগল অধিকারে এই স্থান দিল্লী স্থার সর্হিন্দ্ সরকারের অন্তর্ভুক্ত ছিল। রাজকোটের রারবংশ তৎকালে এই জেলার পশ্চিমাংশের ইজারাদার ছিলেন। মোগলসাম্রাজ্যের অধ্যপতনে মোগলরাজশক্তি হতবল দেখিরা রার রাজগণ স্থাবীনতা অবল্যন করেন। তাঁহারা এই জেলার বর্তমান অধিকৃত বিভাগ ও কিরোজপ্রের ক্তকাংশ লইরা একটা স্বত্তর রাজ্য স্থাপন করিরাভিশ্যন।

> १७० বৃটাকে শিধপণ সরহিক্ কর করেন। তৎকালে কঞ্জকন ক্যে ক্যে শিধস্থারের হতে এই কেলার পশ্চিনালে নিশ্তিত হইরাছিল। বৃটার ১৮শ শতাকের শেবতাগে রারকোট- রাজনিংহাসনে বালক রাজাকে উপবিষ্ট দেখিরা শিথসর্ছারগণ রাজকোটরাল্য আক্রমণ করেন। ঐ সমরে রাজকোটরাল্য উপা-রান্তর না দেখিরা সোভাগ্যাঘেরী ভারতীর সামন্তরাল্প কর্জ টরাসের সাহায্য ভিক্ষা করিরাহিলেন। ১৮০৬ পুষ্টালে মহারাল্প রণজিৎ সিছ নদ অভিক্রম করিয়া এই বিভাগের অপরাপর শিথসর্জারদিগকে পরাল্পর করেন। ঐ সমরে রাজকোটের রার-বংশের অধিকৃত রাজ্যও রণজিতের করকবলিত হইরাহিল। রণজিৎ সিংহ রাজকুমার ও তাঁহার হুইটা বিধবা মাভার ভরণ-পোবণার্থ হুইটামাত্র গ্রাম দান করিয়াহিলেক

১৮০৯ খৃষ্টাব্দে রণজিতের তৃতীর অভিযানের পর, ইংরাজগবর্মে ন্টের সহিত পঞ্চাবপতির যে সদ্ধি হর, তাহাতে রণজিৎ
শতক্র পার হইরা আর অধিক রাজ্য হস্তগত করিতে পারেন নাই।
উক্ত সদ্ধির পর, ইংরাজরাজ স্বাধিকাররক্ষণমানসে পৃধিরানার
একটি নেনানিবাস রাপন করেন। তৎকালে ঐ নেনাবাস
ঝিন্দরাজ্যের অধিকার মধ্যে স্থাপিত হওরার, ইংরাজগবর্মে ন্ট
ক্ষতিপূরণ স্বরূপ ঝিন্দরাজ্যকে কর দিতে বাধ্য হইরাছিলেন।
১৮৩৫ খৃষ্টাব্দে ঝিন্দরাজবংশের প্রকৃত উত্তরাধিকারীর অভাবে
সুধিরানার চতুসার্থবর্ত্তী কতক্স্থান ইংরাজাধিকারে আইনে,
তাহা হুইতেই বর্ত্তমান সুধিরানা জ্বেলার উৎপত্তি।

১৮৪৬ খুষ্টাব্দে ১ম শিখযুদ্ধের অবদানে লাছোর রাজ্যের क्फकाः म এই स्निगात व्यक्तक कतिया गुप्ता हत्र। उनविध এই নগরের উত্তরোত্তর ত্রীবৃদ্ধি হইতে থাকে। অতঃপর শিখ-कां जि भारतकां व भारत कतिल है रताक गबर्स के २४८८ चुड़ी स्म এখানকার সেনানিবাস উঠাইয়া লন। ১৮৫৭ খুটান্দের সিপাহি-বিজ্ঞোত্তের সময় স্বরসংখ্যক সেনা শইয়া এথানকার ডেপুটা কমিশনর দিল্লী অভিমূথে যাত্রাকারী জালম্বর্য বিজ্ঞোহী সেনাদলের গভিরোধ করিতে চেষ্টা পান। কিছু সিপাহী-मरनत निकृष जिमि मन्त्र्राश्चर भवाकि हरेशहितन। ১৮৭২ খুষ্টানে কুকাসভাদায়ের কভকগুলি ধর্মোন্মন্ত ব্যক্তি রাজনোহী হইরা এখানে বোরতর অনিষ্ট করে। ইংরাজ-त्राक त्रहे विद्धादिनगदक याथानयूक नावि नित्रा छाशासत्र धनन्छि द्रायितःहरक है द्रावाधिक्रक ব্ৰহ্মবাজ্যে বন্দিরূপে <u>(श्रम् क्रान्) निष्कु भक्षांत, विज्ञी दानभथ ७ नत्रिक</u> ধাল বিস্তারের সঙ্গে এথানকার শান্তি ও সমৃতি উত্তরোত্তর বৰ্ত্তিত হইরাছে। ১৮৩৯-৪২ বৃতীকে প্রথম আফগান বৃদ্ধের পার কাবুল রাজ্য হইছে বিভাড়িত খুলতান শাহস্কার বংশধরেরা এই নগরে বাস করিতেছে।

পুর্বাদা, জগরাওন্, রারকোট, মচ্ছিবাড়া, ধারা ও বহুলোলপুরু নগরে সাধারণতঃ এধানকার বাণিজ্ঞার্ক পরিচালিত হয়।

XVII

অধিবাসীবিদের মধ্যে হিন্দু ও মুন্তমান লাট লাভিই প্রবাদ। রাজপুত, ওলর, কালীর প্রভৃতি বিভিন্ন স্থানবাদীর সংখ্যাও নিভাস্ত কম নহে। ব্যবসারীপ্রেক্ষিয় মধ্যে ক্ষমী ও বেশিরার সংখ্যাই অধিক।

এখানে পশ্মী কাপড়ের প্রভৃত কারবার আহে। শাল, মোলা, বভানা, রামপুরী চারর প্রভৃতি নানাপ্রকার পশমী বস্ত্র এবং খেল, নুবী, গাব্দশ প্রভৃতি বিভিন্ন রক্ষের কাশান বস্ত্র এখানে প্রভৃত হইরা বিক্রীত হর। এতরির আসবাব, গাড়ী ও কামান বন্দ্র প্রভৃতি প্রভৃতের লভ্ভ এখানে বড় বড় কারখানা আছে। পাকা রাভার ও রেলপথে প্রধানভঃ এখানকার বাণিজ্য-কার্যা পরিচালিত হইরা থাকে।

- ২ উক্ত কেলার অভগত একটি তহনীল। ভূপরিমাণ ৬৭৮ বর্গমাইল। অক্ষা ৩০°৪৫(২০" হইতে ৩১°১' টঃ এবং ত্রাবি॰ ৭৫°৫০'০০" হইতে ৭৬°১২' পু: মধ্য।
- ত উক্ত জেলার প্রধান নগর ও বিচার সগর, শতক্রনদীয় দক্ষিণ উচ্চকূলে বর্তমান নগীখাত হইতে ৪ ক্রোশ গৃরে অবস্থিত। জক্ষান ৩০° ৫৫ হৈ "উঃ এবং ক্রাখিন ৭৫° ৫০ তি পুঃ। এখানে সিদ্ধ-পঞ্জাব-দিল্লী রেলপথের একটা টেসন থাকার স্থানীর বাণিজ্যের বিশেষ ক্রিখা ঘটরাছে।

নগরের উত্তরাংশে প্রাণত প্রান্তরে এখানকার কেরা অবহিত। সিপাহীযুদ্ধের পর ঐ স্থান পরিকার করিরা একটি বিত্ত ময়লানে পরিণত করা হইরাছে। দিরীর লোলী রাজ-বংশের কুস্থক ও নিহল নামক হই জন রাজকুমার ১৮৪০ খুট্টাকে এই নগর স্থাপন করেন। ১৭৬০ খুট্টাকে মোগল রাজসরকার হইতে ইহা রারকোটের রারদিপের অধিকারে আইসে। ১৮শ শতাকের শেবভাগে রপজিৎসিংহ এই নগর অধিকার করিরা বিক্রের রাজা ভাগসিংহের হত্তে অর্পণ করেন (১৮০০ খুট্টাক)।

শতক্রপ্রাহিত সামন্তরাজ্যসর্হের পণিটিকাল-এজেন্ট জেনারল অন্তাননী এই নগর বধন করিরা অহারী সেনাবাস হাপন
করিরাহিলেন; কিন্তু ভারত-প্রক্রেক্ট এই অবৈধ আচরণের
ক্রিভিগ্রেশস্করণ বিন্দরাজকে উপযুক্ত অর্থান করিরাহিলেন।
১৮০৪ ব্রান্দে বিন্দরাজকেশধরের প্রকৃত উন্ধরাধিকারীর অভাবে
ভাষার রাজ্য ইংরাজ-গবর্দে ন্টের শাসনভূক্ত হর। তবর্ধি এই
নগর ইংরাজ-সেনার একটা কুল্ত ছাউনীরশে পরিসাণিত ছিল।
১৮৫৪ ব্রান্দে এখান বইতে সেনাধন অন্তার পরিচাণিত হর,
ক্রেল এক্ষণ মাত্র সৈক্ত হর্পরক্ষার কল্প রহিরাছে।
বুসলমান সাধু শেশ আব্দুল কাহিনর-ই জ্লানীর পরিত্র ভার্তির আগ্যন করেন। এখানে প্রতি বংশর একটি নেলা
হর। ঐ সমর বহু বিন্দু ও সুল্লনান ভার্বারী এখানে দদৰেত ব্টয়া থাকে। এখানে দুন্দমাল, গঠান ও কানায়ী-দিনের বানই অধিক। কানীয়ীনগ ক্ষেত্রত ১৯০ লক টাকার পান প্রস্তুত করে।

সূপা, ২ ছেদন, উদ্দেশন। ২ লোপ। জুবানি উজন সক।

আনিট। সট্ পূন্ধতি জে। কিই ক্লোপ, নৃন্দে। নৃট্
লোগা। নৃট্লোপ জকি জে। নৃত্জন্প, অনুধ, অনুধ,
নাভাং, অনুপ্ৰভা ক্ৰি-কিলে। নৃত্জনুপন, বাহুনীকরণ। নিবানি
পরবৈশ আৰু নেট্। নাট্ নুন্দ্তি। নিট্লুলোপ, নৃট্
লোপিভা। নৃট্লোপিকভি। নৃত্জনুপণ। নন্ নৃনুপ্সতিজে। নুলোপিকভি, সুনুপিকভি। বত্-লোনুপাতে। সুপ্
ধাতুর উত্তর ভাবনহা অর্থে বঙ্হর। বঙ্নুক লোলোভি।
পিত্লোপ্রভি, নৃত্জনুপণং, অনুলোপং। অব+
নুপ্ ভ্রু, হেল।

मून् (गः) नृन् एएत-किन्। लान।

লুপ্ত (দ্লী) লুপ-জ্ব। > চৌৰ্য্যধন, চলিড লোভ। (শন-বন্ধান) (জি) ২ লোপযুক্ত।

"পরিবৃত্তনাভিল্পুত্তিবলিক্সামন্তনাগ্রমণলাকি।
বহুধ্বলক্ষমেরেখং বপুন' পুরুষারিভং সহতে ॥"
(আর্যাসপ্তশতী ৩৩০)

কুপ্তবিসর্মতা (ত্রী) সাহিত্যদর্শগোক্ত দোবডেন।
"বর্ণানাং প্রভিক্ষত্বং দুপ্তাহত বিদর্শতে।
অধিকন্যনক্ষিতপদতাহতের্ত্ততা ॥"

(সাহিত্যদ• १। ६०१)

বিসর্গের লোপ হইরা এই দোব হর, এইজন্ত ইহার নাম সুপ্রবিসর্গতা হইরাছে। 'গভা নিশা ইমা বালে' এইছলে সমস্ত হলে বিসর্গের লোপ হওরার এই দোব হইরাছে।

मृरुखान्य (वि) उनमान्छ।

मृ(अंभिम् (.वी) डेनमानवाद्यस्य । हेराद नक्य-

"পুঝা সামাজধর্মাদেরেকজ বনি বা বছো:। জন্মাণাং বাহুপান্দানে শ্রোজার্থী সাপি পুর্ববং ॥"

(সাহিত্যদ > । ৬৫১)

বেখানে উপমান বা উপমেরের সামার ধর্মাদির এক বা হুইটা বিবরের লোপ করিবা সাধর্ম্ম হয়, তথার এই অলভার হয়। [উপমা শব্দ দেখ]

লুব্র (বি) পূড-জা। আকাজনী, আকাজনবুক, পর্যায় গুয়ু, গর্জন, অভিনার্ক, ড্কক্। (অময়)

> "বুজো বশনি নছৰে তীক্তঃ পালাক্ষকতঃ। মূৰ্থঃ পৰাগৰাদেৱু ন চ পাল্লেবু বোৰ্ডকৰ ॥"

> > (क्यानविश्मा । ११ । ००)

লুক্ক (পুং) পুৰ এব মাৰ্বে কন্। ১ ব্যাব। (অবর) ২ লস্ট। "নিম্বতিনাম পশ্চাব্ৰাভধা বাজি পুরস্কন:।

বৈশসং নাম বিষয়ং সৃষ্ধকেন সময়িতঃ ॥" (ভাগার্য ৪।২৫।৫৩) পুরুতা (স্থী) সৃষ্ঠ ভাবং তণ্-ট্গেণ্। সুষ্কের ভাব বা ধন্ম-সৃষ্ধ, সোভ।

লুভ, গান্ধ্য, আকাজ্ঞা, লোভ। নিবাদি৽ পর্যাহি নক বেট্।
লট্ লুভাভ। নিট্ লুলোভা লুনুভতুঃ, নুলোভিও। নুট্
লোকা, লোভিভা। লট্ লোভিয়ভি। নুড্ অনুভং। সন্
লুল্ভিয়ত। আলাভিয়ভি। যঙ্ লোল্ভাভে। যঙ্লুক্
লোলোকি। পিচ্—লোভয়ভি। নুঙ্ অলুনুভং। লুভ—
বিমোহন, আকুনীক্রণ। তুলাদি৽ পর্যাহি অক সেট্।
লট্ লুভভি। নিট্—লুলোভ। নুঙ্—আলোভীং, অলোভিয়ং অলোভিয়ং।

লুভিত (ঞি) শুভ-ক্ষ। > বিমোহিত। ২ বিরক্ত। লুছিকা (ঝী) বাছবন্ধভেদ।

লুম্বিনী (স্ত্রী) রাজকদ্বাজের। ইহার নামে একটা বিহার নির্মিত ছিল। (ললিভবিস্তর)

লুরিস্থান, পারতের অন্তর্গত একটা প্রেলেশ। কার রাজ্য সীমা হইতে পশ্চিমে কর্মাণ্শা পর্যন্ত বিষ্ত । অক্ষা ৩০° হইতে ৩৪°৫ ডি:। ইহার মধ্য দিরা দিজকুল নামক নদী প্রবাহিত। ঐ নদীর দক্ষিণছিত বধ্ তিরারীর পার্কত্য ক্ষেত্র পুরি-বৃজ্পুর্ক এবং আসিরীর প্রান্তর পর্যান্ত বিষ্ত নদীর উত্তর পুরি-বৃজ্পুর্ক নামে খ্যাত।

এই বিস্তীণ ভূখণ্ডে পুর নামক একটা পার্কাত্য জাতির বাস আছে। তাহাদের মধ্যে কোঘিলু লেক ও খুর্দ নামে করটা লাখা আছে। কিছ শীডকালে ডাহারা পর্কাতকক পরিত্যাগ করিবা দিক কুল অথবা আসিরীর সমতল প্রান্তরে অবতীর্ণ হয় এবং তথাকার ভূকিছানের সীমান্তহিত প্রমণকারী আরব ও ভূকিজাতির সহিত তাহারা এরপভাবে মিশিরা থাকে বে, দেখিলেই তাহাদিগকে আরবীর অথবা ভূকিজাতীর নহে। তাহারা মহম্মদ এবং তাহারা আরব বা ভূকিজাতীর নহে। তাহারা মহম্মদ এবং তাহার প্রবিভিত কোরাণ শাস্তকে মান্ত করের মা। তাহারা এক মাত্র বাবা বৃক্র ও অপর সাত্রটি পবিত্রাক্ষাকে উপাসনা করিরা থাকে। তাহাদের ক্ষমেক্সকাতির গাছারের বিশ্বনি পাওরা বার। ভাহাদের মধ্যে শক্ষাতির উপান্ত মিণ্ড অমাহিলা দেবতার উপাসনা দৃই হর। এ পূজার অন্ত তাহারা রাত্রিকানে সম্বত্তর উপান্ত মিণ্ড অমাহিলা দেবতার উপাসনা দৃই হর। এ পূজার অন্ত তাহারা রাত্রিকানে সম্বত্তর ইয়া ভোছিক আহারাদির অন্তর্ভান করিবা বাকে।

स्ति सहर वा छेवत विकारण त्यत् त्या त्यमात निगामितम,

নিলক্ল, আমলহ্ ও বালধেরিবে (বালগ্রীব) আমক চারিটি লাখার বাস আছে। উহালের মধ্যে প্রথমেকে ছুইটি লেক লাখা সমূত্ত এবং লেবোক্ত ছুইটী লুর বলিরা থাকে। শিলা-শিলে ও দিল্ফুল্দিগের মধ্যে প্রায় ৩০ হাজার বরের বাস বেখা বার। শিলাশিলেগণ অভিশর পরাক্রমশালী ও যুদ্ধবিভার স্থমিপুণ। সহজে ভাহাদিগকে বল করা বার লা।

বর্ত্তমান কালর বংশের প্রতিষ্ঠাতা আলা বহুবার আনেশে আমলাহগণ খনেল পরিত্যাগ করিয়া কার রাজ্যে উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছে। তদবধি তাহাদের সংখ্যা করিয়া করে ইইয়া পড়িয়াছে। আলামহখ্রদের মৃত্যুর পর তাহাদের অনেকে উপনিবেশ পরিত্যাগ করিয়া অদেশে চলিয়া বায়। কিছ তাহারা আর পূর্ববং বীর্যাশালী নহে। ত্রমণকারী De Bode পার্দিপোলিন প্রান্তরহ ইত্তাখর পর্বতপাদমূলে আমলাহ শাখার একটি বিতাপের বান দেখিয়াছিলেন। তিনি তাহাদিগক্ষে বীত্তংস ভৌতিক আচারের উপানক বলিয়া বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। তাহারা কোন রাজপত্তিক বস্তুতা বীকার করে না, কিছ মিষ্ট কথায় তুই করিয়া বে কার্য্যে তাহাদের ব্রতী করা বার, তাহারা অনারানে তাহা পালন করিয়া খাকে।

নুর শাখাও অপর কাহারও অত্যাচার বা উৎপীড়ন সহ করিতে চাহে না। বদি কোন রাজা ভাহাদের উপর বলপ্ররোগ করে, তাহা হইলে তাহারা তদণ্ডেই তাঁহার বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিতে অগ্রসর হর। বালগ্রীব শাখার মধ্যে প্রায় ৪ হাজার ঘর লোকের বাস আছে। তাহারা বিশেব অত্যাচারী ও হর্মব। পার্ধবর্তী অনপদবাসীদিগকে তাহারা নিরস্তর উৎপীড়িত করিয়া থাকে।

প্ত-ই-কোহ বা জাগ্রোস শৈলবাসী ল্রজাতির একশাথা কইলি নামে পরিচিত। তাহাদের মধ্যে খুর্দ, দিনারবেদ, স্থহোন, কলহর বদ্রাই, ও মকি নামে করটি বিভাগ আছে। খুজিন্তান প্রদেশেও কেইলি জাতির বাস আছে। ঐতিহাসিক রলিনসনের মতে, এই জাতির মধ্যে >২ হাজার বর লোক আছে; প্র্-কোহ এবং পুত-ই-কোহ বাসীরা বিখ্যাত দক্ষা। তাহাদের উপক্রবে প্রমণকারী, ব্যবসায়ী অথবা তীর্ধ্যাত্রিগণ নিরাপদে গমনা-সমন করিতে পার না। পবিকের নিকট একটি কপর্দক থাকিলেও তাহারা অকৃতিতিতিও গ্রহণ করে, কথন কথন তাহাদিগকে শমন সদনে প্রেরণ করিরা তবে নিশ্চিত্ত হয়। সমগ্র প্ররিত্তানে প্রায় হ হাজার ক্রীবারোহী ও ২০ হাজার বন্দুক্ধারী সেনা আছে, এই সক্ষা পার্কতীর সৈক্ত আবস্তুক হইলে এক্ত্র হইরা আতত্যারীকে আক্রমণ করিরা থাকে।

ি ফেইলিগণ বধ্ডিরারীদিলের জার নররজে ধরা কসুবিত করিতে ও পাপপতে লিও হইতে চাহে না ি ভাহারা অপেকা- হত সত্য ও বরাস্। পেব্-কোহ ও পুত-ই-কোহ গর্মজনানী ব্যতীত বৃক্তিপু ও খোরেনবাদের মধ্যবর্তী হক্ আবরের ব্যিকাশি ও বেইরানেবেনেগ নামে চুইটি জাভির বাস আহে। ভাষা লেক শাখা সমুৎপন্ন।

জুজ, বিলোড়ন। ভাবি• পরতৈ• সব• সেট্। ল**ট**্লোলভি। পুত্বলোজীং।

সুলাপ (পং) গুলাজে ইতি স্ল বিমর্জনে ভিলাদিরার আছ্, পুলাং আলোডীতি আপ-অণ্ । মহিব।

শমহিবো বোটকারিঃ ছাৎ কানরণ্ড রজ্বলাঃ।
পীনবদ্ধঃ রক্ষকারো পুলাপো নববাহনঃ।" (ভাবঞ্জু)
লুলাপাকৃন্দ (পুং) গুলাপাঞ্জিরঃ কন্দা, মধ্যপদলোপিকর্মধান।
মহিবকন্দা (রাজনিন)
লুলাপাকান্তা (র্মী) পুলাপাছ কালা। মহিবী। (রাজনিন)
লুলায় (পুং) মহিব।
লুলাত (ত্রি) সুল-জ। আন্দোলিত।

'ব্ৰেক্ষোলিভত্তরলিতো পুলিভান্দোলিভাবপি।' (ভূরিপ্রয়োগ) ২ বিকীণ। (ভাগৰত) ২।৬৫।১৯) ও ব্যাস্তা।

"ন ম বিভাৰতে দেবী শোকাশ্রনুলিভাননা।"(দাসা^{*} ২া৬৪)১৯) ৪ মান।

"প্রাতনিজ্ঞতি যথা যথাস্থলা পুলিভনি:সহৈরদৈ:।

নামাতরি মুদিতমনাতথা তথা সাদরা শ্বাং॥"(স্থার্যাসপ্রশতী)

৫ উন্মূলিভ। (ভাগবত ৩। ১৯।২৪) ও শক্তিত।
(ভাগবত ৪।৯।১০) ৭ বিধবত।

"যেংসংপিতৃঃ কুপিতহাসবিদ্ ভিত্র-

বিন্দু (জাতেন পুলিতা: পড় তে নিরন্ধ: ॥"(ভাগৰত ৭।৯.২৩)
পুবানা, মধ্যভারতবাদী ক্রবিনীৰী লাভিবিদের। ক্ষেত্রকর্মণ এবং
শন্ত বপন, কর্ত্তন ও বহন তাহাবের প্রধান কার্য। ভালরাত প্রদেশ হইতে তাহারা ধন্দিশভারতের নানাহানে এবং প্রধান বিভাগের ইরাবতীতটে বাইরা বাল করিয়াছে। ভাহারা শান্ত ও নির্কিরোধ এবং শুম্রশ্রেশী মধ্যে পরিগণিত।

লুন (পং) ব্যৱস্থা কৰিছেন, ১০০৫-৩৬ ক্জ-ন্তন্ত্ৰকা। লুনাকুপি (পং) আটান ৰবিজেন। (পঞ্চনিংভাৰণ ১৭১০০) লুষ, তেম। ভাষিৎ পরকৈৎ সৰুৎ নেট্। গট্লোৰভি। লুছ, আলোৱীং। হিংসার্থে পুষ' এই বাড় সৌত্রধাড়।

পূষ্ভ (পুং) রোবতীতি রূব হিংসাদাং (রুবেরিরুব্চ: উন্ ২ । ১২৪) ইতি অভচ্, সুবাবেশন্চ ধাডোঃ। মন্তর্জী।

লুসাইপর্বভমালা, ভারতের উত্তরপূর্বসীমাভত্তিত একটা পার্কতা এনেশ। আসাম এবেশের কাছাড় জেলার বৃত্তিশ হইতে চট্টথাম দেবার পূর্ব দীলা পর্যন্ত বিকৃত । এই পার্কত্য বিভাগের পূর্কদিকে ত্রন্ধরাজ্যের অন্তর্গত একটা প্রবিভৃত পর্কত-মর ভৃথও। উহার মধ্যক্ষে কোন্কোন্ লাতির বাস আছে, তাহা আলিও লানা বার নাই। কোন ল্রমণকারী সেই বন্মালাপূর্ণ ও বল্ল জন্তসভুল পার্কাতাপথে অগ্রসর হইরা হর্দ্ধর্য পার্কাতীরগণের সহিত মিশিতে সাহসী হন নাই।

এই লুসাই পর্কতে নানা বস্তু জাতির বাস আছে। তক্মধ্যে বলবীর্ঘাসম্পন্ন কুকী ও পুসাই জাতি সমধিক সাহসী। তাহারা ইংরাজরাজের বিরুদ্ধে অন্ত ধারণ করিতে ভীত হয় না। কুকী-দিগের বস্তবিক্রম ও তীরের অব্যর্থ সন্ধান ইংরাজসৈত্ত আসাম ক্ষান্ত উপশন্ধি করিয়াছিল। ১৮৭১-৭২ খুটানে লুসাই অভিযানে ইংরাজ সেনাদলকে যেরূপ বিত্রত হইতে হইয়াছিল, তাহা ইতিহাসপাঠকবর্গের অবিদিত নাই।

এই পর্বতবাসী আদিম লাতি প্রধানতঃ লুসাই নামে পরি-চিত। পর্বতের অংশবিশেষে বাসহেতৃ তাহারা ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় অভিধা প্রাপ্ত হইয়াছে। ঐ নামগুলি প্রধান স্পার্দিণের নাম হইতে গৃহীত হইয়াছে। সুসাই পর্বতের সর্ব্বোত্তরভাগে অর্থাৎ মণিপুর ও নাগালৈবের কোইরেরিং জাতির বাস। তাহার দক্ষিণাংশে কুপুই জাতি. ইহারা মণিপুররাজের প্রজা বলিয়া পরিগণিত ছিল। ইংরাজ-রাজ মণিপুর হন্তগত করিবার পর ইহারা ইংরাজগবমে ন্টের अधीन रुरेग्नारह। काहारज़त निक्रान्य পर्साठलाता প्रकृत সুসাইদিগের বাস। ঐ সুসাইগণ তিনটী প্রধান প্রধান সর্দারের অধীন ও তিন্টী স্বতন্ত্র নামে পরিচিত। চটুগ্রাম সীমান্তে এই দুসাইজাতির যতগুলি শাধার বাস আছে, তাহাদের मत्था रहोत्नात्र, माहेनू ७ धक्रत्नावागगहे ध्वथान। हेहात्रा সৰুলেই ভ্ৰমণশীল, কথনই এক স্থানে বাস করে না। শক্র-পক্ষীয়ের আক্রমণ নিবন্ধন, অথবা ভূমির উর্ব্বরতাদি সম্বন্ধে অস্থবিধা বোধ করিলে তাহারা বাসভূমি পরিত্যাগ করিয়া चष्ट्रस्य अञ्च श्रात्न राहेश तात्र करत । मूत्राहे त्रीभारत जनत्रव এইরূপ যে, ব্রহ্মরাজ্ঞার পূর্ব্বক্থিত পার্ব্বত্য প্রদেশবাসী সোক্তি জাতির আক্রমণে ও উপদ্রবে প্রাপীড়িত হইয়া লুসাইগণ পর্বতের পূর্বাংশ পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণাভিমুথে ইংরাজা-धिकारत नीमान धारात भागिता পिएवारह।

আসাম-দীমান্তবাদী অক্সান্ত পার্কাত্য জাতির সহিত দুসাইদিগের অনেক বিষয়ে পার্কায় লক্ষিত হয়। তাহাদের মধ্যে
এক এক জন সন্ধার থাকে। ঐ সন্ধারবংশ পুরুবায়ক্রমে
ভাহাদের রাজপদের অধিকারী। প্রত্যেক দুসাই-গ্রামেই এক
এক জন 'লাল' থাকে। তাহারাই দলের নেডা হইয়া বিপক্ষের
লহিত যুক্ক করে। লাল সন্ধারগণ সাধারণতঃ কোন রাজবংশ-

সমৃত্ত, গ্রন্থা সাধারণ ইচ্ছাপূর্বক তাহাদের আদেশ মান্ত করিরা থাকে এবং তিনিই গ্রামের হর্তাকর্তা বলিরা বিবেচিত। এই সকল লাল সর্দার সীমান্ত হইতে লুঠন করিরা যত অধিক অর্থ সংগ্রহ করিতে পারে, তাহার দলে তত অধিক অন্তরসংখ্যা বর্দ্ধিত হয়। সর্দারেরা অবস্থামুসারে ক্রীতদাস রাধে, তাহারা এই সকল লোককে যুদ্ধকালে বিপক্ষপক্ষ হইতে বন্দী করিয়া আনে। ক্রীতদাস ব্যতীত গ্রামন্থ অপরাপর প্রক্লাবর্গও আপন আপন পরিশ্রমলব্ধ অর্থর কতকাংশ সন্দারকে ভাগ দিরা থাকে।

শুসাইগণ জ্বন্ধ কাটিয়া ঝুম প্রথার ধাষ্টাদির চাস করিয়া থাকে। যুদ্ধবিগ্রহ ও বহুগণগুলিকার তাহাদের অহাতম উপজীবিকা। তাহারা গয়াল নামক বহু গোরু, পার্ব্বতীয় ছাগ, শৃকর ও অহাত্ম গৃহপালিত পশু পালন করে। ঐ গ্রাল ভাহারা দেবপুজার উৎসর্গ করিয়া থাকে।

পুরুষেরাই গৃহস্থালীর যাবতীয় কর্ম্ম করে। তাহারা ধদির, গাঁদ, হন্তিদস্ক, বনজ তুলা ও মোম লইরা পর্ব্বতপ্রস্থিত ইংরাজাধিকত নগর বা বাজারে বিক্রয় করে এবং তৎপরিবর্ত্তে চাউল, লবণ, তামাক ও পিডলের বাসন, কার্পাস বস্ত্র এবং রৌপ্য কিনিয়া লইয়া যায়। তাহারা পুরী নামক এক প্রকার মোটা কাপড় প্রস্তুত্ত করিয়া আপনারা পরে এবং তাহা বাজারেও বিক্রম্ম করিতে আনে। ক্রীলোকেরা অলম্কার পরিতে ভাল বাসে। কর্ণালম্ভারের পক্ষপাতী হইয়া রমণীরা কর্ণের নিম্নস্থ মাংসথওে হন্তিদস্ত বা গোলাকার কার্ন্তথে পুরিয়া রাখে। এই ছিদ্র সময় সময় এয়প বাড়িয়া পড়ে যে, তাহাতে তাহাদের মুথাকৃতি কদাকার দেথা যায়। পুরুষেরা দৃঢ়কায় ও মাংসল, কিন্তু তাহাদের মুথাকৃতি সর্ব্বদাই বিরক্তিকর ও উগ্রভাববাঞ্লক।

বহুকাল হইতে লুসাইজাতি ইংরাজাধিকার মধ্যে আসিয়া দস্তার্ত্তির পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়া আসিতেছে। লুগুনকালে তাহারা অসংখ্য নরহত্যা করিয়া তাহাদের মৃত্ত কাটিয়া লইয়া যাইত। অস্তোষ্টিক্রিয়ার সময় নরম্প্রদানে প্রেতামার সদ্গতি হইবে, এই ল্রান্ত বিশ্বাসের বলবর্ত্তী হইরা তাহারা এরূপ অমামুধিক অত্যাচারে ব্রতী হইত। কাছাড়, প্রীহট্ট, ব্রিশুরা, চট্টগ্রাম, পার্কত্য ব্রিপুরা ও মণিপুরের অধীনস্থ সামস্ত রাজ্যসমূহে তাহারা সময়ে সময়ে দলে দলে নামিয়া আসিয়া নররতে ধরা প্লাবিত করিয়াছিল। ১৭৭৭ খুটাকে ভারতের সর্ক্রপ্রথম গ্রবর্গ জেনারল ওয়ারেগ হেটানের রাজম্বকালে কুকীদিগের এইরূপ প্রথম উপদ্রবের কথা ওনা বায়। তৎকালে চট্টগ্রামের একজন সন্ধার কুকীদিগের অত্যাচার হইতে শীর প্রফারক্ষণে অসমর্থ হইয়া ইংরাজপ্রতিনিধির নিকট এক্ছল সিপাহী সেনার সাহায় প্রার্থনা করিয়াছিলেন। ১৮৪৯ খুটাকে

কাছাড় সীমাতে আসিরা একখন সুসাই স্বাধীন জাতিবর্গ

কর্ত্ব আক্রান্ত হইরা ধরাক্ নদী অভিক্রেমপূর্বাক্ উত্তরনিকে
বাইরা বাস করিতে বাধ্য হয়। ঐ সুসাইনল লাভভাব ধারণ
করিয়া এখন ইংরালরাজের প্রজা মধ্যে গণ্য হইরাছে। ঐ
সকল সুসাইলল অভাণি পুরাত্ম কুকী' নামে অভিহিত।

১৮৬০ খুটাৰে তাহারা পুনদার ত্রিপুরা জেলার নামিরা
১৮৬ জন বালালী গ্রামবাসীকে নিহত করে এবং প্রার
শতাধিক লোককে বন্দী করিরা লইরা বার । ইংরাজ গবরে ক
এই উপত্রব-দমনার্থ সমর সমর সিপাহী সেনালল প্রেরণ করিতেন
বটে, কিন্তু পার্কত্যপথ ছরারোহ হওরার ও শত্রনল পর্কত
গহরুরে সুকাইতে অভ্যন্ত থাকার সিপাহী সেনা তাহাদের
পশ্চাৎ অন্থগমন করিরাও বিশেব কোন ক্লসাধন করিতে
পারে নাই।

সীমান্ত প্রদেশে লুসাই জাতির উপদ্রবের শান্তিবিধান করিতে না পারিরা ভারত-গবমে ন্ট বিশেষরূপ উৎকট্টিত হটরা পড়ি-লেন। ১৮৬৯ খুটান্ধে ভাহাদের বিক্লছে একটা অভিযান প্রেরিড হইলেও কার্য্যতঃ কোন ফল হইল না। পার্ক্ষতা প্রদেশ শক্রর জগমা জানিরা এবং ইংরাজনৈক্ত ভাহাদের পশাদ্ধাবিত হইয়াও কিছু করিতে পারিতেছে না দেখিরা, লুসাই মল ক্রমণঃ পর্দ্ধিত হুইরা উরিল। ১৮৭১ বর্তাব্দের জামুরারী মাসে তাহারা বিভিন্ন দলে বিভক্ত হইরা কাছাড়, প্রীহট্ট ও ত্তিপরা ভেলার এবং ডদানীন্তন স্বাধীন মণিপুর রাজ্যের নানা প্রাম আক্রমণ করিল। কাছাড়ে একদল হোলোল আলেকজান্তা-পুরের চারাগান বুর্চন করে। উভরপক্ষের বিরোধে চা-কর ইংবাল-অধাক নিহত হন এবং তাহার ক্যা মেরি উইকেটার ৰন্দিভাবে অপকৃত হন। নণিরার খাল থানার প্রহরীদিগের স্থিত আর এক সুসাই দলের ছইদিন ধরিরা যুদ্ধ হয়। অবশেবে রণজরী হইয়া লুসাইগণ খনরত, বন্দুক, কামান ও বছসংখ্যক क्नीरक विनव्यात गरेवा ध्यक्तां करव ।

এই সংবাদ পাইরা ভারত-প্রতিনিধি নর্ড মেও বিশেষ
উত্তেজিত হইরা পড়েন। তিনি সুসাই-উপদ্রব হইতে ইংরাজনীমান্তগ্রেশে নিছ-উক্ করিবার অভিগ্রোরে বুছবারার আরোজন
করেন। ভবস্থনারে প্রধান সেনাপতি নর্ড নেপিয়ারের অধীনে
ক্রেন। ভবস্থনারে প্রধান সেনাপতি নর্ড নেপিয়ারের অধীনে
ক্রেন। ভবস্থনার প্রধান সেনাপতি নর্ড হেইবন গোর্থা,
চুইবন প্রাবী ও চুইবন বলবেনীর প্রাতিক সৈক্ত, চুইবন
কর্মন ও প্রকাশ পর্যভ্রমী পেণাবরী সৈক্ত সন্জিত হইন।
ক্রেনারন বুর্টিয়ার কার্যাজ্পথে প্রবং জেনারন ব্রাটননো চট্টপ্রাম
ক্রেন্ড ভক্ত বাহিনী ছুইভানে নইরা অপ্রদর হুইডে অপ্রদর হইরা
নেনারন উক্ত বর্বের নবেবর মানে শিক্ষার হুইডে অপ্রদর হইরা

ভিগাই-মুখ নামক হানে গুলাই পর্বন্ধে প্রবেশ করিল। ভাহারা

১১০ মাইল পর্যান্ত বনভাগে অগ্রসন্ত হইরা পুরাই জাভিজে পুনঃ
পুনঃ বুছে বিপর্যান্ত করিরা কেলে। চইপ্রানের বাহিনীও ঐরপে

৮০ নাইল অগ্রসর হইরা পুনাই সর্ভারনিগকে বন্ধে আমরম
করিরাছিল। পুনাই সর্ভারণে ইংরাজের আহুগন্তা খীকার
করিলে, সেলাবিভাগের অরিপকারিগণ প্রান্ত ও০০০ বর্গনাইল

হান ক্রিকোপমিতি প্রথার অবধারিত করিরা লইরাছিলেন,

এই সমর হইতে চইপ্রাম ও কাছাড়ের সংবোগ পথ পরিষ্কৃত

হয়। চাকর-কভা মেরি উইকেটার ও প্রান্ত করিরা

করান-কভা মেরি উইকেটার ও প্রান্ত আহাক্তির্বাধনপ্রকাব বন্ধনদশা হইতে মুক্তি প্রান্ত বহু । এই বুছে ইংরাজপক্ষে বিশ্বিক কতি হর; পর্বান্ত অবহান কালে বহুসংখ্যক

সৈন্ত বিশ্বিকারোগে আক্রান্ত হুইরা প্রাণত্যাগ করে।

এই বৃদ্ধের পর হইতে লুসাই জাতি শাস্তাব ধারণ করিরাছে। তদব্ধি ভাহারা সমতল ক্ষেত্রবালী জমগণের সহিত
নির্কিরোধে বাণিজ্য চালাইরা আসিতেছে। এই বাণিজ্যবিভার বাপনেশে তিশাই-মুখ, লুসাইহাট ও বালুরাচারা
নামক্যানে তিনটী প্রসিদ্ধ হাট স্থাপিত হইরাছে। ঐ
তিনটী নগরই পর্বভগাত্রবাহী এক একটা নদীতটে অবস্থিত।
ঐরপে চট্টগ্রামলীমাজেও দেমাগিরি, কসলল ও রালামাটী নামক
স্থানে বাজার খোলা হইরাছে। লুসাই সন্ধারগণের সহিত
এক্ষণে সন্থাবের সহিত বাণিজ্যকার্য্য পরিচালিত হইতেছে।

১৮৮৩ বটালে চট্টগ্রামের পার্মতা সীমান্তে লুসাইকল রালামাটী নদীতে সিপাহীদিগের চুইখানি নৌকা আক্রমণ করে। একলন নিপাহী আহত ও একলন নিহত হয়। তাহার। নৌকান্থিত অর্থ ও বল্লাদি পইরা পলারন করে। সুসাইজাতি ভাছাদের চিরশক্ত হোলোদ লাভির উপর ইংলালরালের বিবেবদৃষ্টি মাকর্বণাভিত্রারে নেনুমাভিকে এই মত্যাচার করিতে উত্তেমিত করিরাছিল বলিরাই অনেকের ধারণা। ইংশ্লাজরাজ গোপনে এই সংবাদ জানিতে পারিরাও ভাহাতে বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারেন নাই। এই বিরোধী জাতি হইতে জ্বাছতি লাভের জাশার তাঁহারা কেবল সীমান্তখিত থানার বলর্ডি করিরা এবং ইংরাজ-शकीत श्रामवानीमिशटक वसूक ७ वाक्स मान कतित्रा आचतकाते উপার নির্দেশ করিরা বিরাছিলেন। ১৮৮৪ গুটাব্দে জান্তরারী বাসে চট্টগ্রাম পার্কতা গ্রেমেনের ডেপুটা কমিননার রালামাটীতে একটা বছৰাৰ ও মেলার অন্তর্ভান করেন। ভাষাতে প্রার সকল নুসাই স্থায়ই স্থাপত হইরাছিলেন, ক্ষেণ ছুইজন মাজ প্রধান হেউলোজ সর্দার উপস্থিত হয় নাই। উক্তনরে আসাম ও চট্টপ্রার-দীনাকে দুলাইদিলের পুলরাক্রমণের ভবার উঠে, কিছ ভাহার। আর উপত্রৰ ক্ষিতে সাহসী বর সাই। ক্রিকিবছ বেব।] मूह, गार्क, नारकका। खाति । सब्देव । नाह । वानि । नहें मारकि। नृहं चनुकर।

न्, क्या कावि केवन वस् व्यक्ति से स्वारि, स्वीरक।
निक् न्नीतार, स्वेकन नक व्यक्ति, स्वीरक। निर्-न्नार,
न्न्रव। न्रे निर्माकि क्या व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति ।
सर्वारक नर्ने न्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति ।
सर्वारक नर्ने न्यक्ति व्यक्ति ।
सर्वारक विष्यक्ति ।
सर्वारक विष्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति ।
सर्वारक विष्यक्ति विष्यक्ति ।
सर्वारक विष्यक्ति विष्यक्ति ।
सर्वारक विष्यक्ति विष्यक्ति ।

পুক্ত ক্ষিপ্ত ক্ষম, পভ রখং। রক।

শৃক্তা ক্ষিপ্ত প্রাতীতি প্রাহণকাং তন্, গুণাভাবক। ১বীটবিবেৰ, চলিত মাক্তবা। পর্যার—তত্তবার, উর্ণনাত, মর্কটক,
মর্কট, পুতিকা, উর্ণনাত, শনক, তথ্যবার।

শনুভাতস্থনিকস্কন্ধার: শৃস্থানর: পতৎপত্যা:। পথিকে ডফিরঞ্লপিহিতমূথে রোমিতীব সখি।"
(আর্য্যানপ্রমণ্ডী ৫০৪)

২ রোগবিশেব, ইহার পর্যার—মর্ম্মরণ, বুরু। (রাজ্বি॰)
লুডার লংশন অন্ত বিবে এই রোগের উৎপত্তি হর বলিরা
ইহা লুডারোগ নামে কথিত। এই রোগ বর্ণনা প্রসঙ্গে বৈত্যশারে
লুডার (মাকড্সা) উৎপত্তি, লংশন এবং ঔষধাদির
বিবর নির্দিষ্ট হইরাছে। একলা রাজা কিখামিত্র বশিষ্ট
সুনির আপ্রমে গমন করেন, তথার বশিষ্টের সহিত
কথোপকথন সমরে বশিষ্ঠ বিধামিত্রের প্রতি অভিশর কুপিত
হম। তথন বশিষ্ঠলেবের কপোলদেশ হইতে তীক্ষ তেজোবিশিপ্ত
বর্মবিশু সকল পতিত হইতে লাগিল। গাভীর নিমিত্ত বে
হিন্ন ভূপরাশি ছিল, সেই ভূপরাশিতে বর্মবিশু পতিত হইরা
কিবিধ প্রকার মহাবিববিশিপ্ত জরম্বর লুডা উৎপন্ন হইল। মূনির
বেজবিশু সকল ভূপরাশিতে পতিত হইরা এই কীট জন্মিন্না
হিল, এই কম্ব ইহালিগের নাম লুডা হইরাছে।

এই প্তার বিব অভিশর ভরানক। মলমুভি চিকিৎসক
ইয়ার গতি সহসা বুঝিতে পারে না। বিব আছে কি না
এরণ সংশব উপছিত হইলে, এইরপ ঔবধ সেবন ফরাইতে
হইবে বে, বাহাতে অঞ্চ কোন দোব না জরে। বিবার্থ
রোগীর পক্ষেই ঔবধ প্রেপ্ত। বিষয়ীন শরীরে ভ্রথবোর ঔবধ
প্ররোগ করা অভ্যতিত। অভ্যত্তব বিব আছে কি না, আরো
নিশ্চর রূপে আনা আবঞ্জক। ইয়া নিশ্চর না আবিরা
ঔবধ প্ররোগ করিকে রোগীর শীক্ষনাব্রেক সভাবনা।

বেরণ অভ্যাত উৎপতি বইলে জোন আতীর বৃদ্দ, তাহা জানা বার না, নেইরণ পূর্তাবিদ পরীক্ষে বিজীপ বইবা-নাত্র কোন্ লাডীর পুঝার বিব জাহা নির্বিভ করা রার, না।

ARM ...

अथम तित्न नदीरद कशूनुक क्षत्रादश्यीन, मधनाकांद : क जालाहे वर्गविभिष्ठे । धरे सक्न नक्ष्म रह्म 🎼 हिन्देश विदल : टनहें नक्ष्म মওলাকারের মধ্যমূল নির ও চতুর্দিকের অক্তাণ কুলির ক্রিটে এবং বে রূপ বর্ণ হয়, ভাহা স্পট্ট জানা বায়। তৃতীয় দিনে কোন্ জাতীৰ পূতার বিষ তাহা জানা যার ৷ চতুর্থ দ্রিনে বিবের প্রকোপ হয়। পঞ্চমধিন হইতে বিরের থাকোপ জন্ম বিকার त्रकन अमिरक शांक। यक्षेत्रिक विक नश्चातिक हरेता नकन মর্ম্মরান আয়ৃত করে। সিগুমধিনে বিদ অত্যন্ত রুদ্ধি ও সর্ম্বন শরীরে ব্যাপ্ত হইরা প্রাণ নাশ করে। এইরূপ স্থরাত্তের মধ্যে প্রাণনাশ হওরা কেবল লুতার তীক্ষ বিষেই ঘটিরা থাকে। বে সকল লুভার বিধ মধ্যমবীর্ঘবিশিষ্ট, ভাহাদিগের দংশনে সপ্তরাত্ত্রের অধিককালে প্রাণনাশ হয়। যাহাদিগের মন্দ্রিষ, ভাহাদের দংশনে একপক কাল মধ্যে মৃত্যু হয়। এই সকল कांत्रण मर्भन व्यथता भंतीरद विव मृश्मक्षं रूखदा व्यविध सङ्ग्रभूर्वक বিষনাশক ঔষধ প্রয়োগ করা আবশুক। লালা, নখ, মৃত্র, দংট্রা, রজঃ, প্রীষ ও ভক্ত এই স্থাপ্রকারে লৃতার বিষ নিঃস্ত হয়। এই বিষ তিন প্লেকার বীর্যাবিশিষ্ট, উগ্র, मध्य ४ मना।

ল্তার গালা হারা এই সকল লক্ষণ হয়, ইহাতে কণ্ড এবং এই হান কঠিন, অন্ন বেদনাবিশিষ্ট ও অন্নমূল অর্থাৎ বাহার মূল অধিক ভিতরে প্রবেশ না করে এরপ হর। নথের দংশনে ফুলিয়া উঠে, কণ্ড ও পূলালিকা (ক্ষুদ্র লাড়) জন্মে এবং এই স্থান হইতে অমিলিথার ভান্ন উভাপ উঠিতে থাকে। মূত্র কর্তৃক দ্বই স্থানের মধ্যত্বল ক্ষ্ণবর্ণ হর এবং অন্তর্ভাগ রক্তবর্ণ ও বিশীণ হইনা থাকে। দংট্রা হারা দংশনে দইস্থান কঠিন ও বিবর্ণ হর এবং পরীরে মঞ্জল (চাকা চাকা দাগ) জন্মে ও এ সকল মঞ্জল প্রসারিত হর না। ল্ভার রক্ষণ প্রীর ও শুক্রের সংস্তরে পক্ষ পিল্কলের ভার জ্যেটক ক্ষেত্র।

সাধারণতঃ লৃতার বিব ছই প্রকার, কইসাধ্য ও অসাধ্য।
অসাধ্য লৃতাবিবে কোনরূপ চিকিৎসা করিবে না, ইহাদিগের
বংশনে চিকিৎসার কোনরূপ ফল হর না, এই জল্প উহা অসাধ্য।
ক্রিমগুলা খেতা, কপিলা, পীতিকা, অলিবিরা, মূরবিরা, রক্ষা ও
কলনা এই আট প্রকার পুতাবিব কইসাধ্য। ইহাদের বংশনে
মন্তকের যাতনা, কপু, ও দঠভানে বেলুনা হর এবং বাজনেরকল্প আভান্ত বেগি করে।

সৌবর্ণিকা, লাজবর্ণা, জালিনী, এপ্রণারী, হুন্সা, আমিবার্না, কাকাপ্তা ও মালাপ্তবা এই আই প্রকার লুডাবিব আলাধ্য। ইবারিগের বংশনে বইছাল ক্ষত ও তাহা হুইতে ব্রক্তনিঃস্থলা বর্ষ। বেব, বাহ, অভিসার ও সমিশাত বছ ক্ষতাভারোল করে, বিবিধ আকার বিনিট দীড়কা ও বৃহদাকার কণ্ডল সকল হয় এবং রক্ত বা ভাষবর্ণের আরভ ও কোমল শোক সকত অভিয়া ক্রমণঃ অসারিত হয়।

ল ভাবিৰের চিকিৎসা ৷

নিৰ্ভণা দংশন করিলে সেই দুইছান হইতে ক্লুক্ট শোলিত নিঃস্ট হয় এবং ব্যিরভা, নেজহরের দাই ও দৃটির কণ্যতা কলে, ইহাতে অর্কন্ল, হরিদ্রা, নাকুলী, পৃত্তিপশিকা এই সকল ক্রম্য নত, পান ও দুইছানে মর্থন করিলে উপকার হয়।

খেতার দংশনে কণ্ডুযুক্ত খেতলীজ্কা, ভজ্জ্জ দাহ, মূদ্ধ1,
ও জার হয় এবং সেই সকল পীড়কা প্রসারিত ও ক্লেশযুক্ত হয়
ও ভাহাতে অভিশর বঙ্গা হইতে থাকে। ইহাতে চন্দন,
রালা, এলাইচ, মেণ্ডা, নল, অশোভ, কুই, বেণানূল ২ ভাগ, ও
চক্র এই সকল দ্রব্য একর বাটিরা প্রদেশ দিলে আরোগ্য হয়।

ক্পিনার দংশলে দইহান ভাত্রবর্ণ হর, অপ্রসারণীক পীড়কা জন্মে এবং মন্তকের ভার, দাব, তিমিররোগ ও এম এই সকল উপত্রব জন্ম। ইহাতে পদ্মকার্চ, কুঠ, এলাচি, কর্মা, অর্জ্জ্নকুক্ষের দক্, অপামার্গ, দ্র্মা, রান্ধী, ইপের মূল ও শালপর্ণী এই সকল ত্রব্য একত্র পরিমিত মাত্রার সেবন করিবে।

অলিবিবের দংশনে দটজানে রক্তবর্ণের সংগ্রন হর ও এই মণ্ডলে সর্বপাকার পীড়কা জন্মে, এবং তালুশোব, ও দাহ এই ক্লটটা উপদ্রব হর। ইহাতে প্রিরন্ধু, কুট, নেণামূল, অশোক, বালা, গুল্ফা, শিয়লী ও বটের অঙ্কুর, এই সকল দ্রব্য একত্র ক্রিয়া প্ররোগ করিবে।

মৃত্রবিবের বারা দটবান পচিরা ক্রেমণা প্রাসারিত হর ও তাহা হইতে রুঞ্চবর্ণ শোনিত নিঃস্থত হইতে থাকে এবং কাস, খাস, বমি, মৃহ্বা, অর ও লাহ এই সকল উপদ্রব ঘটে। ইহাতে মনঃশিলা, এলাচি, ব্রষ্টমধ্, কুষ্ঠ, চন্দম, পদাকার্চ, মধু ও বেশাস্ল একত্র সেবন করিবে।

রক্তন্তার বিষকর্ত্ব গ্রহণানে পাব ও ক্লেমবৃক্ত পাণ্ডবর্ণ পীড়কা জন্মে এবং তাহার অন্তভাগ রক্তবৃক্ত হইরা রক্তবর্ণ হর, ইহাতে বালা, চন্দন, বেগাম্ল, পশ্লকাঠ এবং অর্জ্নবৃক্ষ, শেল্র, ও আল্লান্ডকের তৃত্ব একত্র করিয়া প্রারোগ করিবে।

কসদার বিবে নষ্টকান হইতে শীক্তন ও পিছিল কবিরসাব হর এবং কাস, খাস ও উপত্রব জন্মে, পূর্ব্বোক্ত রক্তান্তার বিবের ভার এই বিবের চিকিৎসা করিবে।

কুঝার বংশনে প্রীবেদ গ্রহিনিট আর রক্ত নিংস্ত হয়।
ব্রুর, সৃদ্ধা, বাহ, বাহ, কাল ও বাল এই সকল উপত্রব
ক্রে। ইহাতে এলাইট, চক্র, বাধা ও চলন এই সকল এবা
ক্রাক্রাধি নামক অসহ সহরোগে সেক্স ক্রিব। অনাধা

ন্তাবিবের খনে রোগির জালা শরিত্যাপ করিয়া চিকিবর করিবে।

অরিবর্ণার বংশনে অভিনর বাহ ও স্থানকানির আর বর্ধ এবং অর, কওু, রোমাঞ্চ, বাহ ও পরীরে কোটকের উৎপত্তি এই সকল উপান্তব হয়। ইহাতে পূর্বোক্ত কুফার বংশাল বেল্লা প্রতীকার কবিত হইরাছে, ভারত্তরণ চিকিৎসা করিবে। ভারতিকার কবিত হইরাছে, ভারত্তরণ চিকিৎসা করিবে। ভারতিকার কবিত হরাত্তরে ক্রিনিল্লালী সকল প্রবাধিকার ক্রিক্তিব সকল প্রবোগ কর্তব্য। ক্রিনিল্লালীও সকল প্রকার পূতাবিবে বিশেষ উপাক্ষী।

অসাধ্য স্ভাবিষের বিবর এইরূপ বর্ণিত হইরাছে।
সৌবর্ণিকার নংশনে নইস্থান স্থানিরা উঠে, ভাছা হইতে কেনাব্জ আমিবগন্ধবিশিষ্ট আমাধ নির্সাত হর, এবং অভিশর খান, কান, জর, সূর্জা ও ভূকা এই সকল উপদ্রব উপস্থিত হর। জানিনীর দংশন অভিশর তয়ানক, বীরিষান্ ও বিদীর্ণ হয় এবং অভখান, অভিশর তমানৃষ্টি ও তালুলোব এই সকল উপদ্রব হয়।

এণীপদের দংশনের আকৃতি কুঞ্চিলের ভার। ইহাতে
চ্চা, মূর্ত্বা, অর, বমি ও কাস প্রাকৃতি উপত্রব করে। কাকাঙার
দংশনে দইবান পাঞ্ ও রক্তবর্ণ হর, অভিশব বেদনা করে,
চারিদিক্ বিশীর্ণ হইরা যার এবং দাহ, মূর্ত্ত্বা প্রাকৃতি উপত্রব হর।

অসাধ্য লুতাবিবের চিকিৎসা কালে লোব ও তাহার প্রকোপ বিবেচনা করিয়া চিকিৎসা করিবে, কিছ সকল অবস্থার **(इमन क्**त्रिट्य ना। य नक्न नुष्ठांत्र विष नांश, छोहांक्टिगंत्र লংশনমাত্র বৃদ্ধিপত্র নামক শক্তের ছারা ঘটছান ছেবন করিবা তুলিরা কেলিবে এবং জাববোর শলাকা জরিতে তথ করিরা সেই স্থান দ্যা করিবে। রোগী বভক্ষণ নিবেধ না করে, ভভক্ষণ বন্ধ করিতে থাকিবে, মর্শ্বভাল লা হইলে লুডার বংশনে কর কুলিরা উঠিলেই দইছান কর্ত্তন করিরা কুলিরা লওয়া কর্ত্তব্য। किन दानीत यनि वह रह, जाहा हरेरन पहेहान वर्जन कतिरव না। কর্তিভয়ানে মধুও দৈশ্ব সহবোগে নিয়লিখিত অগদ रननम क्तिरव। जनम वया-धितकु क्तिका, कूर्ड, मिर्का ७ बहिनम् अरे मकन जया अक्ष कतिता बहेशान अरमन विरक हरेटर । अथवा क्षांत्रानका, बहैन्यू, जान्या, नीतकारकानी, रेक्नून, इतिकृषा थ, ध लाक्त वरे कवकी जवा वश्नरावाल পান করিব। অর্ক প্রভৃতি কীর্বিশিষ্ট রুক্ষের অংকর শীক্ষ কাথ বারা সেবন করাও কর্তব্য। উপত্রব সকল সোর অঞ্জানে विवय खेरायत बाजा व्यक्तियाम क्या जावनका मन्त्र, जानम भागासन, गान, वृत्र, भारतीएन, स्वमातार, वसन स विद्य-**छन और नक्ष्मक त्यार पाइनाटा राज्यात क्या केल्क । आर्टनीका**न ৰাৱা মন্তামোদন ক্ষাত কিবেৰ। ('ক্ষাতক্ষ্ম দেখা 🕍

० निर्वामक। । १९७० हे अस्ति ।

পূতাতন্ত (বী) গুলারক্ষা । মুকার কর, নাক্ষনার কাম । পূতামকটক (পুং) । শাসকার্তনীক্ষেত্র । ২ আরবলেশীর ইবিকাপুল, পূরীণ

न्जाति (११) क्यांव विकिश्यक्तमी क्रां (बार्वान') न्जिया (बी) क्रिका विकिश्यक क्यां आणि व्यक्ति। वर्षका (विकास)

সূৰ্য (বি শ্বিক বৈধি পূঁক (বাৰিজা: । পা ৮/২/৪৪) ভিন্ন ।
ক্ষিত্ৰ নৰীজাং অশিশাভপূৰ্বং বহতসূন: শিলিনাভানত ।"
(কুনান ৩ ৷ ৬১)

সুনক (পুং) সুন এব বার্থে কন্। ২ তেনিড। ২ পণ্ড। (নেবিনী) সুনি (ত্রী) প্-ডিন্ন (বলারবাধিভারভিনিউন্তবতীতি বক্তবাং। পা৮। ২। ৪৪) ইভাত কার্ডিকোজন ডক্ত না। ১ হেন। ২ বীহি।

লুনী, পুন পৰাৰ্থ। (বোপদেশ ৩) ৬১ প্ৰেছ এই উপন্ন নাবিবাছেন।

नूम (जी) नृतरक रेकि न्-वाहनकार मक्। वाल्ना (जनत) नूमियिय (प्रः) नृत्व नाल्ट्रन विवयक। वृक्तिकावि। (द्व्यः) नूमियवन् (जना")

সূব, ১ খণ। ২ ভেষ। চুরাবিং পরত্রৈ সকং সেটু। স্ট্ প্রবৃতি। সূত্ অস্কুক্র

नूरुष्ट्रम् ७ (११) (बीक्टल्म् ।

ক্রে (দেশজ) কুকুমকে ডাকিয়া কোন জব্যানি বেশাইরা বিবার সময় এই শব্দ ব্যবস্থাত হয়। "ফু ডু লে" এই শব্দে লও বা এইশক্ষ বুমার।

লেই (নেশন) ভাগ এবাবিশের, তুলট কাগন এড়ভি প্রস্তুত ক্ষিমার বাড় ভেড়ুলের বীজের নেই প্রস্তুত করিলা ভাগতে ক্ষামাইতে হয়। বর্ষা ভণিরা অগ্নির উভাগে নিম্ন করিলে বে ভারণ পদার্থ উৎপদ্ধার্ম, ভাগতেশও দেই করে।

লেইরা, গঞাব আনেনের দেরা ইস্মাইল ধান্ জেলার অন্তর্গত এইবটা অহসীল। অকাত ৩০°৩৫/৪৫ হইছে ৩১°২৫ টা এবং বার্থিত ৭০°এ৯ হইছে ৭১°৫২'৩০ পুনু মধ্যে। কুপরিবাণ ২৫২৮ বর্মনাইল।

এই বান বাস্কানত উপত্র কৃতিন্ত নিয়-প্রবাহিত প্রবেশাংশ প্রারই কৃত্যক। এই উক্ত কৃত্যিত গোচারণ ভিত্র অগর কোনজন কৃত্যিতা সন্মানিক কৃত্যা। বাস্কানর শ্বনা ভূমিতে কৃত্যানন কৃত্যি হানে কানে কান্তির ক্ষানিক ক্ষানিক। ভূমিতে কৃত্যানন কৃত্যি হানি কানে কান্তির ক্ষানিক ক্ষানিক। ভূমিতা নিয় শ্বনিক। বা নিয়নিক ক্ষানিক ক্ষানিক। অধিক পরিমাণে ভাল হব কটে, কিছ নিয়নিক ক্ষানিক। तक्षण होन आविष्ठ मा नहिरण व्यक्ति सम्बन्धिक है। व्यक्ति विष्यात व्यक्ति सम्बन्धिक स्थापन

ং উক্ত কোৰাৰ অন্টা কৰাৰ আৰু উপানিজানোৰ জ্যোৱ সৰৱ।

সিন্ধন্দৰ প্ৰাচীন বাজের ড্লান্ডেন অবক্তি কৰীৰ পতি
পানিকৰ্তন ব্যৱহাৰ অকলে বৰ্তনাৰ মনীগৰ্ত আই কাজেৰে কভক
পশ্চিনে প্ৰবাহিত ক্ইভেছে। অকাত ৩০-ছিচ্ এলং
বাবিং ৭০-ছিচ্ছিত পুঃ মধ্যে। নিউনিনিগানিটা থাকাৰ
নগরের প্রাচীন সৌলর্ফের বিশেব হালি হল নাই, বলং উভারোভ্য
প্রিয়তি সাহিত্ত ক্ইভেছে।

খুটার ১৯০শ শভাবে দেরাগালী বাঁর থাসিছ দীরহাণীবংশীর বস্তুজাতীর সর্পার কমাল বাঁ সভবছঃ এই নগরের
ব্যতিষ্ঠা করেন। তাঁহার বংশগরগণ থাার বিশ্বভাক্ষকাল এই
নগরের চতুশার্থবর্তী হানে শাসন বিষ্ণার করিরাছিলেন। এই
হানই তথন তাঁহাবের রাজধানীরপে পরিগণিত ছিল। পরে সিদ্ধ প্রবেশনের কন্তোরাবংশীর রাজগণ কর্তুক তাঁহারা ছাবিভাক্ত্যভ হন। ১৭৯২ খুটাকে মহন্তক বাঁ সংলাজ নানগেরার রাজপাট পরিবর্তন করেন। শিগ-শাসনাধিকারে এই নগরে চতুশার্থবর্তী ভূজাগের শাসনক্ষেত্র প্রতিষ্ঠিত হইরাছিন। ১৮৪৯ খুটাকে ইংরাজরাল এই নগর অধিকার করিরা এখানে সেইরা জেলার বিচারসম্মর ছাগন করিরাছিলেন। ভ্রমভ্রর ১৮৬১ খুটাকে সেই জেলা ভালিরা ভক্র সহ কেইরা ভহনীর বেরাইস্নাইল বাঁর অভন্ন ভ ইংরাছেন আফ্গানছালের সহিত এই প্রার্থেশর বাবজীর বাণিলা এই নগর হইতেই পরিচালিত হইরা থাকে।

रमञ्जू (स्नि) नित्र।

(तार) रक्षांच, देशक ।

লেটো (লোক) ১ বছৰুছ । ২ ইবুৰ ভেন, নেচে ইখুর। লেটোসন্ন্যাসী (-লোক) - নিগদন সন্নাদি-সভালার।

লেক (গং) সাধিকতে । লেকড়া (লেক) বজা টুবুর

(नकृषिक (११) क्षेत्रकार

লেক বৃত্ত, সালাৰ প্ৰকেশের ক্ষাইটোৰগ্ৰাছ ও সভাগির গীনাৰহিত একটা গ্ৰহ্মান। জী হালে একটা হাই লাহে। কৰাৰ পৰ্বক্ৰানী ক্ষা ক্ষেত্ৰক ভাঙ্কি প্ৰক্ৰান্ত ক্যাণি বিকৰ ক্ষাৰে সাবে।

CONT (21) Protes ble former (a con) a cong fafri (
male from the constraint of the cong fafri (
const (31) Fredhis former (
fafri altres of the fafrical services

(21) Fredhis former (
fafrical services of the cong fafrical services

(22) Fredhis former (
fafrical services of the cong fafrical services

(23) Fredhis former (
fafrical services of the cong fafrical services of the co

ইহার গঞ্গ—

"গর্কদেশাক্ষরভিজ্ঞা সর্কশান্তবিশারকঃ। লেখকা কৰিতো রাজ্ঞা সর্কাধিকরবের বৈ ছ লীবোপেতান অসম্পূর্ণান সমলেশিগভান সমান। কক্ষরান বৈ নিধেং বন্ধ কেবলং স বরঃ প্রভঃ ॥ উপারবাক্যকুশনঃ সর্কশান্তবিশারকঃ। বহুববিকা চালেন লেখকা ভান্তগৃত্তম ॥ বাক্যাভি প্রারত্বতো দেশকালবিভাগবিদ্। কনাহার্টো নূলে ভক্তো লেখকা ভান্তগৃত্বম ॥"

(ম্বেপু ১৮৯ অ')

বিনি সকল দেশের অক্ষয়ভিক্ষ এবং সর্ক্ষণান্তার্থনর্নী, ভিনি রাজার সকল অধিকরণয়লে লেখক হইবেন ৷ বিনি অক্ষয় সকল সমানভাবে সমানশ্রেণিতে উত্তরয়পে লিখিতে গায়েন, অর্থাৎ সে সকল অক্ষর লিখিবেন, ভাহা সমান হইবে, পঙ্জি ঠিক থাকিবে, এবং অক্ষয় সকল দেখিতে অক্ষয় হইবে, ভিনিই লেখকশ্রেচ ৷

চাৰভাসংগ্ৰহে বেখকের লক্ষণ এইরপ বর্ণিত হইরাছে।
"সক্ত্রকণ্ইীভাবোঁ ব্যক্তো জিতাকর:।
সর্কালারসমালোকী প্রকটো নাম বেখক: ॥" (চাণকাসংগ্রহ)
বিনি একবার ববিনেই তাহার কর্ম গ্রহণ করিতে পারেন
এবং তাহা গুনিরাই বিগুডভাবে ফ্রুড ও ফুম্পট রূপে লিখিতে
সমর্ব এবং সর্কালারপার্লনী, তিনিই উত্তম লেখক।

রাজলেথকের লক্ষণ---

"প্রবীশো মরণাভিজে রাজনীতিবিশারক:।
নানালিশিজো দেধাবী নানাভাবাদম্বিত: ।
মরণাচতুরো বীমান্ নীতিশারার্বকোবিক: ।
স্বিবিগ্রহচেদজো রাজকার্ব্যে বিচক্ষণ: ॥
সদা রাজহিতাবেরী রাজসারিবিসংহিত: ।
কার্য্যাকার্য্যবিচারকা সভ্যবাদী বিতেরির: ॥
বরপবাদী ওরাজা ধর্মজো রাজধর্মবিং ।
এবমানিকলৈর্ফ: স এব রাজনেবক: ।
স্পাত্রইভকাবেরী স এব রাজনেবক: ।
স্পাত্রইভকাবেরী স এব রাজনেবক: ।
প্রক্রিকলার্বী সভতং স্পবিবাসক্ষক: ।
স্পাত্রইভকাবেরী স এব রাজনেবক: ।
বিবের জভিজ, মেধাবী, মানা ভাবার পভিজ, নানা প্রকার বিশিব
ক্রিক্তে, রাজকার্য্যে বিচক্ষণ, সর্বার্যাভার হিভাভিনাবী,
এবং রাজার মনীশে ক্রিকিত, কর্ম্যে ও অকর্ম্যে বিবরে বিনের

পরাপরক্ষিতার নিধিত আছে বে, বেশার্থনা কার্যার্থ কার্ড।

্র্তিপ্রকানশি কার্য্যন্ লেখারুড্রে বিচক্ষপায় (* (পরাপরসংক্ষিত্র ১৮ ছ*)

"তচীন আক্রান্ড ধর্মজন বিপ্রান্ মুলাকরারিভার। লেখকানশি কারহান লেখকত হিতৈবিশঃ॥" (বৃহৎপরাণর নং ২০ । ২০)

বৃহৎ পরাশবের এই বচনাস্নাবে বিধান কারত্ই দেশক
হইবে। গুরুনীভিতে নিখিত আছে বে--
"গণনাকুশলো বস্তু দেশতাবাঞ্জেবিৎ।

"গণনাকুশলো বস্তু দেশভাবাঞ্জভেষ্বিৎ। অসক্ষিমনগুঢ়ার্থং বিলিখেংন চ দেখকঃ॥"

(知時引後 2 | >90)

যিনি গণমাকুশন, দেশভাষার প্রভেষারিতে অভিজ্ঞ এবং নিঃসন্দেহ ও সরগভাবে নিখিতে পারেন, ভিনি লেখক হইবেম। ভিন্ননীতির মতেও কারছ লেখক হইবেম।

> "গ্রামণো ত্রাক্ষণো বোজ্যঃ কারছো লেখকতথা। তব্দগ্রাহী তু বৈজ্ঞা হি প্রতিহায়ক্ষ পাদলঃ ॥" (গুক্রনীতি ২ । ৩২০)

গ্রামণতি ব্রামণ, কারস্থ লেখক, ওক্ন্যাহী রৈশ্ব এবং প্র প্রতিহার হইবে।

মহাভারতের লেখক গণেশ। ব্যাস মহাভারত রচনা করিরা গণেশকে ইহা লিখিতে বলেন, গণেশ ইহা ওনিরা বলিরাছিলেন বে, যদি আমার লেখনী কণবালও নিবৃত্ত না হর, ভাহা হইলে আমি ইহা লিখিতে পারি। ভাহাতে ব্যাস বলিরাছিলেন, ভাহাই হইবে, বিত্ত ভূমি না বুবিরা লিখিতে পারিবে না।

"ক্ৰছৈডৎ প্ৰাহ বিছেলো বৰি যে লেখনীকণন্। লিখতো নাৰভিঠেত ভলা ভাগ লেখকো হুহুন্। ব্যালোহপুৰাচ ভং দেবমবুছা নালিখ কচিই। উমিত্যুক্তা গলেশাহলি বছুব কিল লেখকঃ।"

(कांत्रक रे । र्रापान)

লেখন (দী) নিব-নাট । ১ ছর্মন । ২ ছর্মবন্ত্ । ৩ সকর-বিভাগ, চলিত কোবা, সকর নাজান । তত্ত্বে নিবিত স্মান্তে হে, স্থানতে নিবিডে নাই ।

"म कृत्मे विनित्थर वर्गः मझः न शूककः नित्यर ।"(विनिनीशक्षक)र) २. ज्यानामा । (कावा") (शूर) ७ वान् । (बाह्मिन")

লেখনপড়ন (দেশদ) দেশ ও পড়া। লেখনি (মী) ক্লন। [দেখনী কেন।] লেখনিক (গং) দেশন নিমান গৈ। ২ নেখানেক। এ শ্যাক মানা নেকক। তামক নামা লেকচ। (মেনিনা)

XVII

े हुक, मकावादी, बिरकतिया, यहनवादी, विकासकाय, बार्निक छ

ब्रायनबङ्गान वरे नक्न चन्यूक कवि बाबार स्मान वरेयन।

লেখনিকা (বী) বীচিনকর।
লেখনী (বী) নিগতেংনরা নিগ-কুট্ট-তীপ্। নেগন-নাগন
বয়, চনিত কলন, পর্যায় বর্ণজুমিকা, বর্ণজুলী, কলন, অকর-ভূনিকা, করাজন, চিত্তক। (প্রবন্ধা:)

লেখনীর গুডাওতের বিষয় এইরাণ লিখিত আছে, বাঁণের কলম প্রেয়ত করিরা ভাষারে লিখিনে অওজ ভারনির্নিত কলনে লিখিনে উরজিলাত, প্রবর্গনির্নিত কলনে মহতী লল্লী-আড, রুজালের কলনে মতিবৃদ্ধি ও চিজ্রভাঠের কলনে লিখিনে ধনধাজানি লাভ হর। হৈছে কলনে লগীলাভ এবং কাংভের কলনে লিখিলে বন্ধব হয়। কলন আট অসুলি পরিমাণ কলনে লিখিনে না, ভাষাতে আয়ু কর হয়।

শ্বংশহচ্যা লিখেবৰ্ণং ডক্ত হানির্ভবেশ্বন্ধ ।
ভারহচ্যা তু বিভবো ভবের ডংকরো ভবেং ॥
মহালক্ষীর্ভবেন্নিভাং জ্বর্ণত শনাকরা।
বুহরপত হচ্যা বৈ বভিরুদ্ধি জ্বলারতে এ
ভখা জানিবিবর্গে বি পুরেশোরিধনাগরঃ।
বৈজ্যেন বিপুলা লক্ষীঃ কাংজেন মরণং ভবেং।
জারাক্রপ্রমাণেন বশাক্ষ্যেন বাথবা ॥
চত্রক্সসহচ্যা বা যো লিখেং পুতকং গুডে।
ভত্তমঞ্সসংধ্যে তু স্ব্রাষ্ট্র্গতি বৈ দিনে ॥
(যোগিনীভন্ন ৩ পটন)

২ থটিকা, চলিত পড়ি, পড়ি দিরা লেখা বার, এইজয় ইহাকে লেখনী করে।

"ৰাটকী কঠিনী বালি লেখনী চ নিগছতে।" (ভাৰপ্ৰ")
সরস্বতী পূজার দিন লেখনীপূজা করিতে হর।
লেখনীয় (বি) লিখ-জনীরর্। > লেখ্য, লেখিতব্য।
"বেহনো লেখনীয়ক রোপনীরক স বিধা।" (কুক্ত ৬০১৮)

"মেহনো শেখনীয়ক রোপনীয়ক স আধা।" (ছালত ৬০১৮)
লেখপত্র (ক্লী) > চিঠি। ২ বিবরসংক্রান্ত শেখাপড়ার কাগজ।
লেখপত্রিকা (ব্লী) লিখিত আবস্তবীয় কাগলপত্র।
লেখকভিলেখলিপি (ব্লী) লেখনপ্রধান্তের। (গণিতবিত্তর)
লেখকভ (গং) লেখের দেবের খবতঃ প্রেঠঃ, লেখ-বরতইবেতি বা। ইলা (খনর)

(मधनात्मणहादिम् (वि) गवनारमः। (मधानविष्ताः ১०२।२७०) (मधहाद्वः (११) (मधः स्वष्टिः चन् । शवनारमः।

"निगृहर म नृगक्त म्परायर शमक्तर।"

(क्यांनक्रिना द। ५६)

टिम्बर्शतक (११) रम्बरात कर बार्ज कन्। शक्ताहरू। टिम्बर्शितन (वि.) रमक स्वक्ति स्मिति। सम्बाहरू। লেখা (বী) নিখাতে ইতি লিখ বাহনকাং জন্মগ্ । কিলিন,
পঙ্কি । ২ রেখা । সন্ধোরিকাং ।
লেখাধিকারিন্ (গ্রং) রাজকর্মারিকেছে । ইনি মুপ্তরখানার
সম্পাদক (Secretary)।
লেখাভা (গ্রং) পাণিয়কে ব্যক্তিকের । বছবছনে ভরংশধরগণ
ব্যায় । (পা ৪ । ১ । ১২৩)
লেখাভা (বী) নিবাধিগণে উক্ত আচীন রক্ষীভেন । (পা
৪ । ১ । ১২৩)

লেথাৰ্ছ (পুং) দেখে অৰ্ছ:। > জীআনত্ত্বন্ধ (রাজনি°) (নি) ২ লেখনবোগ্য, নিধিবার উপযুক্ত।

লেখাবলম্ (প্রেরী) মহিতর্ভ ৷

লেখিন্ (জি) > অন্ধন। ২ লিখন। জীরাং ঞীপ্। ৩ চামচ, হাতা। লেখিত (জি) লিখ্যতে বং লিখ পিচ্-জা। অপ্রের নারা লিখিত।

লেখ্য (বি) লিখ-পাৎ। > লেখিতব্য, লেখনীর, লেখনযোগা।

২ ব্যবহারীক ক্রিরাপাদাক। মিডাক্ষরা ও ব্যবহারতত্ত্ব
প্রভৃতিতে ইহার বিশেষ বিবরণ বর্ণিত আছে। লেখ্য ছিবিধ,
শাসন ও কানপদ। ইহার মধ্যে ক্লানপদ আবার ছিবিধ—
স্কর্তক্তে ও অন্তহত্তক্ত, সংস্করত অসাক্ষিক, আর পরহত্তকৃত স্যাক্ষিক।

শ্যাপ্রতং লেখাং নির্মণাতে। তর লেখাং দিবিধং শাসনং জানপদক। জানপদমভিধীরতে। তক্ত দিবিধং স্বহত্তক্ষ্ণ-হত্তক্তক্তি। তর স্বহত্তক্তমসান্দিকং স্মান্ত্রক্ত স্থান্দিকং।" (বাবহারতর) ছরমাস সমরের পর ব্রান্তি হইতে পারে, এই স্কান্ত বিধাতা স্কর্মস্টে করিয়াছেন, এই স্কার ছারা পরে লিবিদা রাধিলে, তাহাকে লেখা ফছে।

> "বাথানিকেন্দি সমত্রে আবিঃ ক্ষোরতে বক্তঃ। ধাতাক্যাধি স্টানি প্রায়ন্তাক্সতঃ প্রা॥ দেখার বিবিধং প্রোক্তঃ সম্মান্তক্তরখা। দ্যাক্ষিকং সাক্ষিয়ক বিশ্বিক বিশ্বতিক্ষরোঃ॥"

> > (ব্যবহারতবাহত বৃহস্পতি)

বাজনবাসংহিতার এই মেবোর নিবর এইরপ বিভিত্ত
আহে, উর্জাপ ও অবন্ধ পালনার স্মান্তিকামে কৃতি ও
নদমানি নিবরের বে কাবরা করিবেন, জনিবাংকালে
নিব্তানি নিবরন জাহার বৈপনীতা না মাই, এইজা এই
সকল নিচার্থটিত নালিবুজ সেজাখন বাজক করিবে। জালাখে
কাবনেই ধনীর নাম বিভিত্ত ক্ষরে এক এ সেলা বর্ণ
মান, গাদ, নিন, নাম, জাতি, গোল, জালাভাতিক (জাবাং
কাবনিক বাক্তি পালাখনকাক্ষেত্র ব্যালাভিক্ত কা

আবার্থনিদ ইত্যাধি) ও নিম্ন পিতৃনামাধি হারা টিহিত হওরা আবস্তব । অনব্যর তাহাতে ব্যক্তিত বিবর গিছিত হইবে।

অসমর্থ আদি অমুকের পূত্র, অমুক ইহার উপরে বাহা লিখিত হইল, তাহা আমার সম্মত। এই কএকটা কথা অহতে লিখিতে হইবে এবং এই লেখাপত্রে সাক্ষিণ্য পিতার নাম লিখিরা লিখিবে বে, আমি অমুক এই বিষরের সাক্ষী হইলাম। সাক্ষিণ গণ সংখ্যার ও গুণে সমান হইবে। অন্তব্য গেথক আমি অমুক্রের পূত্র অমুক্ খণী ও ধনীর প্রার্থনামুসারে ইহা লিখিলাম।

ৰাকী ভিন্নও সহত্তনিধিত লেখা প্ৰমাণ হইবে। কিছ কলাৎকার বা লোভপ্ৰদৰ্শন ও ক্রোধাদি প্রকাশ দারা নিপাদিত প্রমাণ হইলে ঐ লেখা প্রমাণরূপে গৃহীত হইবে না। লেখা-লিখিভ ঋণ তিন পুক্ষবের দেয়। ঋণগৃহীতা যদি পরিশোধ ক্ষরিতে না পারেন, তাহা হইলে ভাহার পুত্র বা পৌত্র পরিশোধ করিবে।

লেখ্য দেশান্তরত্ব, কলক্ষরণিখিত, নই, সুথাকর, অপক্ত, আর্থিত, বিদলি, দগ্ধ কিংবা ছিন্ন হইলে অক্ত^{**}লেখ্যপত্র করিতে পারিবে। নিজ নিজ হতাক্ষর, বৃক্তি, তত্তৎসাক্ষিনির্দেশাদি-ক্রিয়া, অসাধারণ 'শ্রী' কারাদি চিল্ল, অবী প্রতার্থীর চিরাগত অপ্রান্ন ও অপ গ্রহণরূপ সম্বন্ধ এবং এতং সংখ্যক অর্থপ্রাপ্ত্যুপার এই সক্তল হেতু সংদিধ লেখ্যপত্রের গুদ্ধি হইবে।

অধমর্থ সমরে সমরে যে ধন অর্থণ করিবে, তাহা ঐ লেখ্যের পৃষ্টে লিখিয়া রাখিবে অথবা উত্তমর্থ ঐ লেখ্যের পৃষ্টে নিজ ক্তাক্তরে প্রাপ্তি শীকার করিরা রাখিবে। সমত ঋণ পরিশোধ ক্তাক্তরে প্রাপ্তি ছিল করিরা কেলিবে, কিংবা গুড়ির নিমিন্ত লক্ষিশোধস্যাক করিব।

(মাঞ্জবকাসংহিতা ২ অ°)

বিষ্ণাহিতার নিথিত আহে বে, লেখা ত্রিবিধ রাজসান্তিক,
লসান্তিক ও অসান্তিক। এই বেখাকে বর্তমান দলিল বলা
ভাইতে পারে। রাজার নিয়ানীরে রাজার নিযুক্ত কারছ
নিথিত এবং বিচারণান্তির হন্ত শালানি চিক্তুক্ত বে লেখা
ভাইতে রাজসান্তিক করে। (এই রাজসান্তিক দলিল বর্তমান
ভাইতে রাজসান্তিক করে। (এই রাজসান্তিক দলিল বর্তমান
ভাইতে রাজসান্তিক লাভিগরের ক্তানিখিত লেখা সসান্তিক। পরক্তানিখিত লেখা অসান্তিক। এই লেখা বলপূর্বক হৃত ইইলে
ভাইতে অবানাল হইতে এবং হলপূর্বক হৃত ইইলে
ভাইতে অবানাল হইতে এবং হলপূর্বক হৃত সকল লেখাই
ভাইতে বিভিন্ন, ক্ট্রনান্ত্রী প্রান্তি, অথবা প্রবিক্ত এবং কর্মান্ত্রই,
ক্রান্তিক কর্মান্ত্রী বান্তিতি, অথবা প্রবিক্ত এবং কর্মান্ত্রই,
ক্রান্তিক ক্রেক্তিক লেখা স্বান্তিক হ্রত্নেও অবানাল।

্ডাৰ প্ৰীলোক, নামল, গমাৰীৰ, মত, উময়, জীৱ, এবং ভাছিত

ব্যক্তির কৃত বে লেখ্য ভাষা অধ্যান । দেশাচারের ক্ষানিক্ষর, ক্ষান্ত হরেচিকে চিকিত, অনুপ্রক্রম বর্ণনালার্ক্ত হবোধাবাজিক ক্ষেত্রাণ। তৎক্ত বর্ণ চিক, ও প্রায়র, বৃক্তি এবং লেখাছিত নিধনপরিপাটীর ছার নিধনপরিপাটী এই নুক্ত বারা সক্ষিম লেখা সক্ষমাণ ক্ষরে। লেখক বা অধ্যাণিরি বা সাক্ষী বানি করে এ লেখা আমার নতে, তাহা হইলে ভাষাবিশ্যের অক্ষানির বারা লেখ্য সক্রমাণ হইবে। বেখানে ক্ষীয় ধনী, সাক্ষী কিংলা লেখক মুক্ত হয়, সেই হলে সেই লেখা ভাষানিগের বহয়েনিক বারা সক্রমাণ কটবে। (বিক্লাংহিতা ৭ জঃ)

লেখ্যপৃত (ঝি) > চিত্রিভাই বিশিক্ত। ৩ অভিত। লেখ্যচূর্ণিকা (ঝী) দেখাত চুর্ণিকা। তুর্নিকা। (শকর্ত্নাণ) লেখ্যপত্র (পুং) লেখাং শেখাইং গুরুং অস্য। ১ ভালবুক। (ভাৰপ্রণ)(মী) ২ শেখনীয় প্র।

লেথ্যময় (ঝি) > আলেখাৰ্জ। চিজিত।
লেথ্যস্থান (ফী) লেখ্যত স্থানং। লেখ্যের স্থান, শ বেখানে
লেখা হর, চলিত দপ্তরখানা, আছিল। পর্যার আহুক্টী।
লেট, বর্ণবছর জাতিজেন।

লেশু (द्री) গুখ, চলিন্ত ল্যাড়।

"উৎসদর্শন বৃহজ্ঞেশ্বং সূত্রক ভরষাপর।"(রন্ধবৈ শ্রীকৃত্রক ২২ খা) লেপু (দেশন) গুড়বিহীন।

লেড (পং) অঞাবিশ্। [নোড রেব।]

লেদ্রা (ত্রী) নগরজেব। (রাজ্ডর° ১৮৭)
লেপ্র, গতি, গমন। জ্বাধি° আত্মনে নক নেট্। নট
লেপতে। বুট্ নেশিতা। নিট্ নিলেশে। বুঙ্ আনেশিষ্ট।
লেপ (পং) নিশ-বঞ্ । ১ নেশন।

"कृतिर्विक्षाटक कामार वास्त्रार्वनटगाकरेमः।

লেপদাছলেখনাৎ দেকাদেখাগ্নার্জনাও॥"(মার্কণ্ডেরপু°৩৫।১৫)
২ ভোজন। (মেনিনী) লিপাতেছবেন্নেডি। ৩ সুধা,
চলিত কলিচণ। (বিশ্ব)

লেপ্ক (গং) লিশ্সতীতি লিপ-ৰুল্। > জাতিবিশেষ।
পৰ্যায় পলগঞ্জ, লেপী, লেপাকং। (হেম) (বি) ং লেপনবারী।
লেপ্ ছা, হিমালয়-পর্যাতপূর্ণানী আতিবিশেষ। দিকিন, পূর্বানেপাল, পশ্চিমভোটান ও লার্জিলিক নামক পর্যাতালে এই
পার্বাত্ত আতির বান আছে। তথা নাধারণতঃ লেপুরা আতির
বাসকৃতি বলিরা কীর্বিত। ঐ স্থানের প্রের্থ প্রায় ৬০ আইবা। ইরারা
কোট আতীর, নেপালে নেবার ও সপ্রাণের আতি প্রবং জোটালের দেকা আতির সহিত ইবারা বিশেবভাবে নারিক। স্কুলাকতি
ও অবরবানির গঠন পর্যাক্তেশ করিলে ইরারিক্তরে সের্কি নামান
নীর আতির শারাসকৃত্য বলিয়াই বিবেটিক কর্ম।

এই লেপছা জাতির মধ্যে রোল ও থাবা নামে তুইটা থাক আছে। প্রথমোক্ত লেপছা সম্প্রদার আপনাদিগকে সিকিমের जानिम अधिवानी विनदा चीकांत करता नाधातरगत्र विचान. ৰামাগণ চীনসাম্ৰাজ্যের অস্ত্ৰগত ৰাম প্ৰদেশ হইতে এখানে সাসিয়া বাস করিয়াছে। কিংবদন্তী এই-প্রায় আড়াই শতবংসর शृर्क्त व्यवीर निकटन योदधर्यविखाद्वत्र शत्र वोद्यनामागग निकिमक्रमनारमञ्ज अक्ष्मम द्राक्षा निक्साहन कत्रिवात्र क्रम्म छेक ধাম প্রাদেশে দুভ প্রেরণ করেন। থাখারা রাজা নির্বাচিত করিয়া প্রিক্টিক ডিনি ও তাঁহার আত্মীরগণ এখানে আদিরা বাস ক্ষিরাছিলেন। ভাঁহাদেরই বংশধরগণ এখন পূর্বতন বাসহানের নামে এখানে পরিচিত রহিয়াছে, বাস্তবিক পক্ষে তাঁহাদের মধ্যে ঞাতিগত 🖛 পার্থকা নাই। উভর থাকের পরস্পরের মধ্যে অবাধে আপান প্রেম্বান হইরা উভারে একণে একটা জাভি বলিরা পণ্য হটরাছে। বর্তমান জাতিতত্ত্বিদগণ বলেন বে, চুইটা নোলগীর উপনিবেশ শান্তারক্তনে সিকিনে আসিরা বসতি করার সম্ভবতঃ এই নামপার্থকা ৰটিয়াছে।

ভাঃ কাৰেণ ভিৰুত্বাত্ৰা উদ্দেশে সিকিমে অবস্থানকালে এই জাতির আকৃতি প্রকৃতি সম্বন্ধ বে বিবরণ প্রদান করিরাছেন, ভাহা পাঠ করিলে এই জাতির আচারনীতি সম্যক্ উপলব্ধি চইতে পারে। লেপ্ছাগণ ধর্মাকৃতি, সাধারণ দৈর্ঘ্য ৪ ফিট্ ৮ ইঞ্চি, কদাচ ৫ ফিট্ ৬ ইঞ্চি লখা লোক দেখা হার। পুরুবের অস্কর্মণ রমণীগণও ধর্মাকার। লেপ্ছারা দৃঢ়কার, বলিষ্ঠ এবং বিস্তৃত্বক্ষ, দেহে মাংলের আধিক্য হেতু ভাহালের গঠন স্থবলিভ ও কমনীয় ছইরাছে। গাত্রবর্ণ হথের স্তার সাদা, চকুর্বন্ধ কর্ণারত, চলিত কথার বাহাকে পটোলচেরা বলে। শীতপ্রধান হানে বাসনিবন্ধন তাহাদের গওবর, প্রমন কি, সর্ম্বন্ধরির গোলাপের স্তার গক্তাভ হইরা থাকে। মুখাকৃতি মোললীয় চল্লের চেপ্টা ও গোল প্রবং নাক ধালা না ছইলে ভাহাদিগকে সর্ম্বাস্ক্রন্দর বলা বাইত।

লেপ্ছা ত্রী ও পুরুষদিগের মধ্যে এই সৌন্দর্যপ্রভা এতই বলবতী বে, সহত্তে তাহাদের মধ্যে পার্থকা নির্দেশ করা যার না। অবর্বাদির ক্ষবণিত গঠন, মাথার মধ্যন্থানে দীঁতি, আলগাল্লার ভার পরিভেদ, নরনকোণে বিমল হাভরেখা, বিমান চুল ও কমনীর অভাব দেখিলে বাত্তকিই ব্বক্ষিগক্তেও ব্বতী বলিরা এম হর। প্রাথবরত্ব পুরুষ ও রুমনীদিগের মধ্যেও প্রার ক্রমণ, বিশেবের মধ্যে এই বে, পুরুষের মাথার একটা বিনানী ও জীলোক্ষিগের মধ্যে ছইটা বা তিনটা বিনানী থাকে।

ইহারা খভাৰতঃ অপরিকার। গ্রীর ও দীতের সময় ইহারা কথনই গাঁব খোঁড় করে না। এই সমরে ইহাদের গাত্রে প্রচুর মরলা অরে। তথন ইহারা কাছে আসিলে এবপ্রকার ভেপ্সা গদ্ধ পাওরা ধার। বর্ধান্ধালে বধন বারিপাত হইতে থাকে, তখন ইহারা কার্য্য উপলক্ষে বাটীর বাহিরে আসিলেই ঐ গাত্র্যল ধৌত হইরা বার। এই সমরে ইহানের শরীর হর্গদ্ধহীন হর এবং কমনীর কান্তির সহিত রূপপ্রভা উথলিরা উঠে। ধর্মজীকতা ও লোকরঞ্জ্তা-খণে ইহানের এই সৌন্দর্য্য আরও বৃদ্ধি পাইরাছে।

পার্থবর্তী স্থানবাসী ভোটিয়া, লিমু, মুর্শ্মি ও গুরুক প্রভৃতি জাতি অপেকা লেপ্ছাদিগের জ্ঞানবৃদ্ধি অধিক। বিনরাদি সদ্পুণে ইহারা অপরের চিত্ত সহজেই আরু করিতে পারে। কখন ইহারা স্থাতির সহিত বিবাদ করে না। অক্সাং কোন কারণে ক্রোধের উদ্রেক হইলে, ইহারা রাগিয়া উঠে বটে; কিছ সময়ান্তরে ইহাদিগকে সেই অস্তায় ক্রোধের কারণ নির্দেশ করিয়া ব্যাইয়া দিলে, ইহারা পরিতাপ করে। ইহাদের সকলের নিকট ভোজালী নামক ছুরিকা থাকে বটে, কিছু ক্রোধের উল্লেক্ষ হইলে কখনও কাহারও বক্ষে বসার না। আহার, বিহার, বাক্যালাপ ও পানাদি বিবরে ঘার সামাজিকতা দৃষ্ট হর। ইহারা পর্কত্রাত ফলমূল ও শাকশব্দী থাইতে বরং ভালবাসে, তথাপি কাহারও অস্তার ব্যবহার সন্থ করিতে চাহে না। দার্জিলিকে ইহারা ইংরাজের আদালতে আসিয়া বিচার-প্রার্থী হয়।

উপরোক্ত শ্রেণীবিভাগ ব্যতীত ইহাদের মধ্যে বংশগত কর্মটা বিভাগ আছে, উহা পর নামে প্যাত। তাহার মধ্যে বর্ষুক্রপুরো ও অনিনপুরো বংশীরগণ দর্মাণেকা দল্পনিত এবং সিঙ্মুঙ্জ, তিলিনমুক্ত, রলোমুঙ্জ, তার্ছুক্রমক্ত, মুঙ্গুট্মুক্ত, নামজিন্তবৃঙ্জ, পূক্রোম ও সদমি নামক অপর আটটা পর সমাজে অপেকারুক্ত হীনমর্ব্যাদ বলিরা গণ্য। উপরোক্ত বর্ষুক্রপুরো ও অদিনপুরোরা নিরোক্ত আটটা পরের মধ্যে আদান প্রদান করে না। পকান্তরে অপর ৮টা পরের লোকেরা পরক্ষানি প্রদান করে না। পকান্তরে অপর ৮টা পরের লোকেরা পরক্ষানি বিবাহ দিরা থাকে। ইহাদের মধ্যে এক পরের মধ্যেও বিবাহ হইতে দেখা বার। ক্ষম কথম মামেরা, চাচেরা প্রেডি প্রথার ৩ বা ৪ পুরুষ বাদ দিরা বিবাহ সম্বন্ধ ছির করে। যেখানে পাত্র শিত্রণ দত্তক সম্বন্ধক হর, সেই খানে মরপুক্রব বাদ চিরা বিবাহ ত্বানে নারপুক্রব বাদ চিরা বিবাহ সম্বন্ধ ছির করে।

বিবাহকালে দামারাই পৌরোহিত্য করে। ছই জন বন্ধুর পত্নী আদিরা বিবাহকালীন অপরাপর আরোজন ও ক্রিরালি সম্পন্ন করিরা থাকে। বালিকারিগের প্রথানতঃ ১৬ হইতে ১৮ বংসরের মধ্যে বিবাহ হয় প্রবং ব্যক্তরা অর্থসমূলন করিছে পারিলেই বিবাহিত ছইডে পাছে। ক্রাপন দিবার শক্ষি থাকিৰে অন্নৰন্ধনিই বিবাহ ছন্ন, নচেৎ ঐ ব্যক্তি অৰ্থসংগ্ৰহ ক্ষিনা বন্ধনকালে বিবাহ ক্ষিতে পারে। ক্ষাপণ ৪০১ ছইতে ১০০১ টাকা লাগে।

বিবাঁহের পূর্বে কয়া ভাহার মনোনীত ভার্বিপতির সহিত
একত্র আহার বিহার করিতে পারে। এই অবস্থার সহবাসাদি
দোব ঘটিলেও ভাহার। কিছু মাত্র বিধা করে না। কয়া যদি
গর্ভবতী হইরা পড়ে, ভাহা হইলে ঐ ব্যক্তি ভাহাকে বিবাহ
করিতে বাধ্য, কিছু যদি কোন কারণ বপতঃ সে ঐ কয়ার
পাণিগ্রহণ না করে, ভাহা হইলে সে কয়ার পিভাকে কভিপ্রণ
স্বরূপ কিছু অর্থনও দিয়া নিয়ভি পার। ঐ কয়ার সহিত অপরের
বিবাহ হইলে কয়ার পিতার আর পণ পাইবার আশা থাকে না।

সাধারণ বিবাহে কস্তার পিতা পাত্রের নিকট একজন পিব (ঘটক) পাঠাইরা খাকে। বিবাহের প্রস্তাব পাত্রের পিডা, কর্ত্তপক্ষ, অথবা শ্বরং পাত্র কর্তৃক অমুমোদিত হইলে পিবু কন্তার পিতার নিকট হইতে ৫১ টাকা, ১০ সের মউরা মদ ও একথানি উত্তরীয় বক্ত লইরা পাত্রকে দিরা আসে, উহাতেই বিবাহ সম্ম পাকা হইরা যার। অতঃপর লামাকর্ত্ত নির্দিষ্ট ওভদিনে প্রথমে কন্তালয়ে ও পরে বরগৃহে বিবাহের অঙ্গবিশেষ সম্পাদিত हा। विवादित मञ्ज छन्न विश्विष किंह नाहै। याहा चाहि, তাহাও অতি সামাল। বর ও কলাকে একথানি আসনে উপ-বেশন করাইরা লামা তাহাদের উভ্তেরর গলদেশে এক একখানি রেশমের উডালি বাঁধিরা দের। পরে "মালাবদল" স্বরূপ তাহা-রই বিনিমর হইরা থাকে। তদনস্তর ভাহাদের মাথার চাউল ছড়াইরা দেওরা হয়। ইহার পর বর ও ক্সা একপাত্রে ভোজন ও মউরা মন্ত পান করে। প্রথমে কম্ভালরে পরে তথা হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া বরের বাটীতে এইরূপ ক্রিয়ার পর বিবাহকার্য্য শেষ হইয়া থাকে। বিবাহাস্তে জ্ঞাতিকুটুম্বের ভোজের পর केलिक्टि मकरन मानम्हिर्द्ध जानन जानन गृहर गमन करता। কভা তিন দিন মাঞ্জান্তাৰে থাকিয়া এক মাসের জন্ত

বে ব্যক্তি কল্পাপন দিতে অসমর্থ, সেও বিবাহ করিতে পারে, কিন্তু যত দিন না তাহার ঐ পণের টাকা পোধ বায়, তত দিন ভাহাকে খীর খণ্ডরালরে থাকিরা বণ্ডরের আদিই কর্ম করিতে হর। ঐ সমরে সে তাহার বিবাহিতা পদীকে খীর গৃহে দইরা বাইতে পারে না।

বছবিবাহ ও বছসামিকবৃত্তি ইহাদের মধ্যে প্রচলিত দেখা বার। বিধবা রমনীগণ স্বেচ্ছামত বিবাহ করিতে পারে, কিব কি রমনী বীর দেবর ভিন্ন অপর ব্যক্তিকে বিবাহ করিলে, দেবর ক্রি প্রাভজারার গর্ভজাত অক্সীর স্বভানস্বতিদিগকে পালন

ক্রিয়া থাকে এবং ভ্রাভুজারার বিতীর স্বামীর নিক্ট হইতে পূর্ব প্রদত্ত কল্পাণ আদার করিরা লর ৷ বিধ্বাধিবাহকালেও প্ৰভিম্ভ বিবাহক্ৰিয়া সম্পাদিত হইতে পারে, কিছু অধিকাংখ-क्टनहे नामा छेछदत्र विवाहमःवान मूट्य त्वावना कतिता निरनहे বিবাহ হট্যা যার। দম্পতীর মনোগত ভাব বিষম ছট্যা উঠে. ভাষা क्रेटन निवृत्तिगरक जाकारेबा विमःवारमञ्ज कांब्रन निर्द्शन मह-कारत मीमारणा बाता शत्रप्लातत मरनामाणिक मृत कतिवात रहें। হইরা থাকে। উপর্যাপরি ছই বা জিন বার এইরূপ চেঠার পর বলি जांशास्त्र मानव मा रव, जांश हरेल जांशास्त्र विवाहकारन বে দামা থাকে,ভাঁহাকে ডাকাইয়া ডাঁহার অন্তমতিক্রমে ঐ বিবাহ-বন্ধন ছিল করিয়া লেওয়া হইয়া থাকে। তথন এ জী স্বামিগ্রহ ত্যাগ করিয়া শিত্রালয়ে চলিয়া আইলে এবং ঐ স্বামীকে কভিপুরণ স্বরূপ পুনরার স্বীয় পদ্ধীর শিভাকে কিছু অর্থদণ্ড দিতে হয়। জী বাজিচারিণী হইলে পঞ্চারত ভাহার বিচার করিবা উপপতিকে অর্থনও করিরা থাকে। যদি পঞ্চারতের বিচারে স্ত্রীর্ সভীত্তানি প্রকাশ হর, তাহা হইলে স্বামী ভাহাকে ভ্যাগ করিতে পারে। এই পদ্মীত্যাগের নিমিত্ত ভাহাকে কভিপুরণ স্বরূপ পদ্মীর পিতার रूट व्यर्थमान कतिए इत मा, वतर त्म चम्ख व्यमहातानि भन्नीत গাত্র হইতে উন্মোচিত করিয়া লইরা ভারাকে গুরু হইতে বহিন্নত করিয়া দের। এইরূপ ব্যক্তিচারদোষ্ঠ্রটা ত্রীও পুনরার বালিকা কল্লার বিবাহপদ্ধতি অমুসারে বিবাহিত *হইতে* পারে।

বিবাহপ্রথার এইরূপ বিপর্যার হেতু ইহাদের মধ্যে উত্তরাধি-কারের বিশেষ কোন বিধি নাই। পঞ্চারতগণ ;জাতীর অধামত মৃত ব্যক্তির পুত্র বা ক্যাদিগকে পৈতৃক সম্পতির বেরূপ বিভাগ মীমাংদা করিয়া দেন, সাধারণে তাহাই গ্রাহ করিতে বাধ্য, কেহ তজ্জ্ম রাজ্বারে উপনীত হয় না। যদি কোন ব্যক্তির একাধিক পুত্র থাকে, ভাহা হুইলে সকল পুত্র সমান অংশ পায়, তবে বিধবা মাতা ও অবিবাহিতা ভগিনীগণ থাকিলে জােষ্ঠ পুত্রকেই পালন করিতে হয় বলিয়া জােষ্ঠ পুত্রই সর্ব্বাপেকা অধিক ভাগ পাইরা থাকে। আবার পুত্রদিগের মধ্যে বাহারা রাজকার্য্যে নিযুক্ত, তাহারা অস্তান্ত ভ্রাতৃগণ অপেকা অধিক সম্পত্তি পার। কনিষ্ঠ ভ্রাতা জ্যেষ্ঠের সম্পত্তির অধিকারী হইতে পারে না, তবে বনি পঞ্চায়ত অনুগ্রহ করিয়া তাহাকে অংশ দের, ভাষা ইইলে সে সম্পত্তির অংশভাগী ইইতে পারে। ইহাদের মধ্যে মৃত্যুকালীন দানপত্র লিখিয়া দিবার ব্যবস্থা নাই, ভবে মুমুর্ ব্যক্তি অন্তিম শ্যার শারিত থাকির৷ স্বীয় সম্পত্তির অংশ বাহাকে বেরূপ দিতে হইবে, পঞ্চারতের সমক্ষে সেইরূপ ইচ্ছা প্রকাশ করিলে, প্রকারত মুক্ত ক্যক্তির ইচ্ছা অভসারে কার্যাসম্পাদন করিতে বাধা থাকে।

পূর্ব্বেই উল্লেখ করিয়াছি বে, অবিবাহিতা কন্তাগণ পিতার মৃত্যুর পর জ্যেষ্ঠ প্রাতার বারা প্রতিপালিত হইরা থাকে। এ কন্তা-দিপের বিবাহ না হওরা পর্যন্ত, প্রাত্বর্গ অথবা বিবাহিতা কন্তারা পিচুলপ্রতির উত্তরাধিকার পাইবে না। পূ্র্রাদি না থাকিলে বিবাহিতা কন্তাই পিচুলপ্রতির অধিকারিণী হইবে, কিন্তু ঐ সম্পত্তিলাভের পর পিত্রালয়ে বাস করাই ইহাদের জাতীয় বিধি। সাধারণতঃ এই নির্মে উত্তরাধিকারিছ নির্দিষ্ট হইলেও, অনেক সমরে পঞ্চারতের অভিপ্রারান্থসারে কার্য্য পরিচালিত হইরা থাকে।

বর্তমান সমরে অধিকাংশ লেপ্ছাই বৌদ্ধর্মের আশ্রর গ্রহণ করিলাছে, তুলাপি ইহাদের মধ্যে সামানী প্রাচারের অভাব নাই। ইহারা পর্মতাংশ বিশেষ ও তথাকার স্রোত-चिনীদিগকে রোগাদি অমন্দলের উৎপাদক আনিয়া পূজা করে। ভুষারাবৃত কাঞ্চনজন্ম পর্বতেকে ঝড়, ভুষার, বৃষ্টি ও বর্ফ পাতের একমাত্র অধিষ্ঠাত্রী দেবতা এবং শাকা বৃদ্ধের শিক্ষাগুরু বলিয়াও উপাসনা করিয়া থাকে। এ পর্বভগাত্রন্থ ভ্রাররাশি পুর্যোত্তাপে বিগলিত হইরা সময় সময় ইহালের বাসভূমি ও শহাকেত্রাদি পরিপ্লাবিত করে। এতদ্বির এদেগেঙপু, পালদেন. লহামো, লাপেন রিন্-পোছে, গেঙ্পু-মালেও ঞাগ্পু ও বস্ত্রমা প্রভৃতির উপাসনাকালে ইহারা মাংস, মহরামদ, ফল, তণুল, পুষ্প ও ধূপধূনা প্রভৃতি গন্ধর্যা দিয়া পূজা করিয়া থাকে। ইহারা চিরেঞ্জী বা লছেন-ওঁম-ছুপ্-ছিমৃকে মহাদেব বলিয়া শ্বীকার করে। তাঁহার পত্নীর নাম উমাদেবী। অধিক সম্ভব সিকিমে বৌদ্ধর্মাবিস্তারের পূর্কো ইহারা এই শঙ্করমূর্ত্তি ও উমাদেবীর উপাসনা করিত। লিামা দেখ।

বৌদ্ধধা সন্ধানীয় ক্রিয়াকলাপে তিববতীয় লামাগণই ইহাদের যাজকতা করে। ইহাদের মধ্যে কেহই লামাধা গ্রহণ
করে নাই। অনেকে ভৌতিক বিদ্ধা অভ্যাস করিয়া "বিজুরা"
(ওঝা) ইইয়াছে। ভূতপ্রেতাদি অপদেবতাগণের প্রকোপ
উপশ্যনার্থ ইহারা নানা ভৌতিক ক্রিয়া কলাপের অবতারণা
করিয়া থাকে।

ইহারা প্রধানতঃ শবদেহ পূর্ক্মুখী রাখিয়া কবর মধ্যে গোর দের। সমাহিত করিবার পূর্কে তিন দিন ঐ মৃতদেহ গৃহে বসাইরা রাখে এবং তাহার সন্মুখে নিরম মত ভোলাদি স্থাপন করে। গার্ক্তমধ্যে মৃতদেহ স্থাপনের পূর্কে উহার চতুর্ফিক্ পাথর দিয়া দেরা হর, পরে তর্মধ্যে শবরকা করিয়া চাপা দেওয়া হইয়া থাকে এবং তাহার উপর একটী গোলাকার পাথরের ক্তম্ক স্থাপন করিয়া তহুপরি নিশান দেওয়া হয়। রোল-দেপ্ছাগণ মৃত্যুর একমাস পরে ওঝা ডাকাইয়া প্রেতের

শান্তি ও মঙ্গলকামনায় একদিন শ্রাদ্ধ করে। ঐ সময়ে একটী বস্থু গোরু বা ছাগ মারা হয় এবং সকলে মউরা পান করিরা নেশার বিভোর হইরা থাকে। ইহারা ঐরপে বাৎসরিক শ্রাদ্ধও সম্পন্ন করে। নবশস্তু ছেদনের সময় প্রত্যেক গৃহক্ষর্তাই পিতৃ-পুরুষগণের উদ্দেশে নৃতন তণুল, মউরা ও নানা প্রকার খাত্মস্বা সজ্জিত করিয়া উৎসর্গ করিয়া থাকে।

উচ্চশ্রেণীর থাখা লেপ্ছাগণের মধ্যে শবদেহ দাহ করিবার্ত্তী প্রথা আছে। দেহ ভত্মীভূত হইবার পর, শবের দগ্ধ অস্থি সকল চূর্ণ করিয়া নিকটবন্ত্রী কোন নদী বা জোয়ারের জলে ভাসাইয়া দেওয়া হয়। এই সম্প্রদারের মধ্যে অবস্থা বিশেষে শ্রাদ্ধ প্রক্রিয়ারও তারতম্য আছে। ব্রহ্মচারিণী রম্ণীদিগের শ্রাদ্ধপাও স্বতন্ত্র।

সিকিম রাজ্যের এক্ষচারিণী এক রমণীর প্রাচ্চে থেরূপ প্রক্রিয়া অবলম্বিত হইয়াছিল, তাহা নিয়ে বিবৃত হইল;—

প্রান্ধকালে মৃতার একটা প্রতিকৃতি নির্মাণ করিয়া তাহার সন্মুপে একখানি মেজের উপর নানা খাত সামগ্রী, অপর এক থানিতে তাহার ব্যবহার্যা দ্রব্যাদি এবং তৃতীয় টেবিলে ১০৮টী পিত্রলের প্রদীপ সারি দিয়া সাজাইয়া রাখা হইয়াছিল। উষ্টীয-ধারী ও রক্তামরপরিহিত অনেকগুলি লামা ঐ সময়ে কএকদিন ধর্মান্দরে সমস্বরে স্থোত্রাদি পাঠ করিয়াছিলেন। তার পর পেমিওঙ্গছি সঙ্ঘারামে আনিয়া ঐ প্রতিকৃতিকে বেদীতে বসান হয় এবং তিন দিন প্রেতের মঙ্গল কামনায় উপরোক্তরূপ স্তোত্রাদি পাঠ হইয়া থাকে। শেষ দিনে মৃতার আত্মীয় ও বন্ধ বান্ধবগণ বন্ধ, অর্থ ও থাজাদি উপহার যাহা পাঠাইল, তাহা ঐ প্রতিকৃতির সম্মুখে সাজাইয়া দেওয়া হয়। ঐ সময়ে মঠের প্রধান লামা সেই মূর্ত্তির সন্মুপের আসনে উপবেশন করিয়া তত্তদেশে প্রদত্ত প্রবাদি ও দাতার নাম জ্ঞাপন করিরা থাকে। সন্ধার সময় ব্রন্ধচারিণীর সমক্ষে চা ও মউয়া পানপাত্রপূর্ণ করিয়া দেয় এবং লামারা আসিরা ঐ সময়েই মৃত্তির সমকে চা ও মউরা পান করে। তার পর কে । ব্যক্তির বা রমণীর পরিচিত ও আত্মীয়েরা সেই স্থানে উপস্থিত হুইরা প্রেডাত্মার উদ্দেশ্রে সেই মর্ত্তিকে সাষ্টাঙ্গে প্রণিপতি করিয়া থাকে এবং তাহার বস্তাঞ্চল চুম্বন করিরা তাহাকে চিরদিনের মত বিদায় দিরা আইসে। ঐ সময়ে সমবেত লামাগণ প্রেতাস্থার বিদায়কামনায় সর্কোচ্চস্বরে ন্ধতি পাঠ করিতে আরম্ভ করে এবং প্রেধান লামা স্বীয় আসম হইতে গাত্রোখান করিয়া একটা মেন্সের নিকট আসিয়া কএকটা খপ্ত প্রক্রিরা সাধন করেন। রাত্রি ৯টা বাজিলে স্কৃতিপাঠ সমাপ্ত হয়। তথন প্রধান শামা আপনার আসন সমকে **দণ্ডায়মান হইয়া একটা স্থীর্ঘ বক্তৃতা করিরা থাকেন।** ভাহার

মর্শ্ব এই বে, "তোমার তবপারে পদনের ক্রবিধার্থ ধাবতীর প্রক্রিরাই ক্ষয়ন্তিত হইল। একনে তুমি ক্ষকেলে একাকী ধর্মরাজ বদের নিকট গুমন ক্রিতে পার।" ইহাই তাহাদের বৈতরণী-পারের বাবস্থা বিলতে হইবে।

ক্রধান লামার বক্তব্য শেষ হইলে, অপরাপর লামাগণ আঁসিয়া সেই মুর্ত্তিকে বর্গুইন করিয়া কেলে। ঐ সমরে অপ-রাপর লোকে শম্ম, শিক্ষা, ঢাক, করতাল প্রভৃতি বিবিধ বিকট বাত্ত করিতে করিতে মঠের বাহিরে আসিয়া মৃতব্যক্তির আত্মাকে অন্ধ্যারময় স্থানে লইয়া নিক্ষেপ করণানন্তর পুনরায় মঠমধ্যে ফিরিয়া আইসে।

পুর্কেই বলিয়াছি, লেপ্ছাদের মধ্যে কোনরূপ জাতিবিচার नारे। यादाता त्नशानताचा मत्या हिम्मूताकात व्यथीतन বান করে, তাহারা সেইরূপ রাজনিয়মের বশবর্তী হইয়া আপন আপন ধর্ম পালন করে। নেপালে ইহারা গোহত্যা করিতে পারে না। দার্জিলিকে কিন্তু ইহারা গো শৃকর প্রভৃতি যাবতীয় পশুমাংসই ভক্ষণ করে। বনমধ্যস্থ মৃত পশাদিতে ইহাদের অরুচি নাই। মৃত হস্তীর পচা মাংস ইহারা বিশেষ আদরে ভক্ষণ করিয়া থাকে। এতদ্বির পর্বতঙ্গাত ফল, মুল, চাউল ও ময়দার রুটী প্রভৃতি তাহাদের ভক্ষা। চাউল, ও ময়দার জন্ম ইহারা ধান্ত, গোধুম, যব, ভুটা প্রভৃতি শভের চাদ করিয়া থাকে। এই চাউল, ভূটা বা মউয়া হইতে ইহারা মন্ত প্রস্তুত করিয়া পান করে। যথন কোন দূর স্থানে গমন করে, তথন ইহারা বাঁশের চোকায় মদ লইয়া যায়। পথিমধ্যে বালের চোলায় চাউল সিদ্ধ করিয়া ভোজন করিয়া থাকে, কিন্তু ঘরে থাকিলে সাধারণত: লৌহ কড়াতেই ভাত রাঁধে। খালাদি সম্বন্ধে ইহাদের বিশেষ কোন পারিপাটা নাই।

লেপন (ক্লী) লিপ-লাট্। লেপ, চলিত লেপা।

"বৈশাখন্ত সিতে পকে তৃতীয়াক্ষমগজ্ঞেতা।

তত্ৰ মাং লেপদেশ্ললেপনৈরতিশোভনন্॥" (তিথিতব)

গোময়াদি দারা দেশক লেপন বিক্লিল ইহলোকে বিবিধ
ক্ষা ও প্রলোকে কালাভ হইয়া থাকে। প্রাণাদি ধল্লাক্রে
লেপনের বিশেষ প্রশংসা লিখিত আছে—

শৃণু তৰেন মে দেবি লিপামানত বং ফলম্।
সর্কং তে ৰুথবিষ্যামি যথা প্রাপ্নোতি মানবঃ
গ্রেম গৃহ বৈ ভূমে মম বেশ্লোপলেপরেও।
স্থানি তত্র যাবস্তি পদানি চ বিলিম্পতঃ
গ্রেম কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান
বিলিম্পান দিবি মোদতে।
বিলিম্বান বর্মানি লিপাতে মম কর্মান্ত
গাত্রে লেপথাদান, গাত্রে চন্দনাদি লেপন। স্ক্রাতে

নিখিত আহি বে, নানের পর লেপন বিধের, এই লেপন অংশ প্রয়োগ করিলে সৌজ্বলা এবং দেহের লাবণা বৃদ্ধি হয়। ইহা বেহের দৌর্গদ্ধ ও প্রমনাশক। বে সকল অবস্থায় মান নিবিদ্ধ, দেই অবস্থায় লেপন্ত নিধিদ্ধ।

ত্বপদ তিন প্রকার, দোষ ও বিষনাশক এবং বর্ণাকর।
ইক্ত আবার ২ প্রকার, প্রদেহ ও আলেপ। ইহার মধ্যে
আলেপ পিত্তনাশক এবং প্রদেহ বাতরেমনাশক। লেপ রাত্রিকালে নিষিদ্ধ। কিন্তু ত্রণাদিতে লেপ দিতে হইলে রাত্রিকালেও
দেওয়া যাইতে পারে।

ै (नायर क्रा विषश वर्ता (न भरें क्वर जिथा मङ: ।

ৰৌ তক্ত কথিতো ভেদৌ প্রলেহাথ্য প্রকেইকো ॥" (স্কুঞ্চ)
ভাবপ্রকাশে লিখিত আছে বে, প্রতিদিন গাতে আমলকাঁ
লেপন করিয়া নান করিলে বলিপলিত রোগ হইতে মুক্ত হইয়।
শত বংসর কাল জীবিত থাকিতে পারা যায়।

যানের পর পরিষ্কৃত বস্ত্র পরিধান করিয়া প্রগন্ধি জব্য দ্বারা গাত্রে লেপন করিবে। শাতকালে চন্দন, কুদুম এবং ক্ষণাগুল এবং ক্ষনাশক। গ্রীয় ও শরৎ কালে চন্দন, কপুরি ও বালা মিপ্রিভ করিয়া লেপন করিবে, ইহা প্রগন্ধি ও অভি শাতল। বর্ধাকালে চন্দন, কুদুম এবং কস্তুরী মিপ্রিভ করিয়া লেপন করিবে, কারণ এই লেপ উষ্ণও নহে, শাতলও নহে।

উপযুক্ত পরিমাণে লেপন প্রয়োগ করিলে পিপাসা, মুদ্র্যা, হুর্গন্ধ, ঘর্ম ও দাহ বিনষ্ট হয় এবং সোভাগ্যা, তেন্ধ, বর্গ, প্রীতি ও বল বৃদ্ধি হইয়া থাকে। স্নানের অযোগ্য ব্যক্তির পক্ষে লেপন নিষিদ্ধ। স্নান না করিয়া লেপন প্রয়োগ করিবে না।

এই লেপন ককর, নেদোনাশক, শুক্রজনক, বলকারক, রজ-বর্জক এবং চর্দ্ধের প্রদর্গতা ও কোমেশতাকারক। মূথ লেপ ছারা চকু ছির, গগুংল স্থূলতর এবং বদন ছুল, কমনীয়, বাদ ও পীড়করহিত ও কমল সৃস্প হটয়া থাকে। ৢশরীর-লেপনের পর ভূষণ পরিধান বিধেয়। (ভাষপ্র পূর্কাধ°)

ফুলতে নিখিত আছে, লেপ তিন প্রকার, প্রলেপ, প্রদেহ ও আলেপ। ইহার মধ্যে শুদ্ধ হউক বা না হউক, শীতল বা অর হইলেই তাহাকে প্রলেপ কহে। উষ্ণ অথবা শীতল, অনেক বা অর এবং শুদ্ধ এরূপ হইলে প্রদেহ, এই উন্তন্ধ প্রকারের মধ্যবভী হইলে তাহাকে আলেপ কহে।

রক্তপিত্ত জন্ম রোগে আলেপ বিধেয় এবং বাতশ্রেমজন্ত রোগ হইলে অথবা তথা অস্থির সংযোগ করিতে হইলে অথবা ব্রণের শোধন বা পূরণ করিতে হইলে বা ফুলা স্থানে বেদনা হুইলে প্রদেহ বিধেয়। ক্ষৃত বা অক্ষৃত এই উত্তয় স্থানেই প্রদেহ ব্যবহার করা যায়। যাহা কত স্থানে প্রয়োগ করা যায়, তাহাকে নিরুদ্ধা লেপন আছে, ইন্ধা যারা এণের প্রাব রুদ্ধ ও প্রথ কোমল এবং তাহা হইতে প্তিগছুত্বক মাংসনির্গম হইয়া থাকে। যে লোফ ক্ষাব্রের বারা দ্ম করা না হয়, তাহার পকে আলেপ হিতকর। যে এবা ভক্প বা পান করিলে দ্রীরের অভান্তরহ যে লোবের শান্তি হয়, সেই এবং এবের আলা ও চুলকনাও নির্ভ হয়। দ্রীরের ছক্ সংলোধন ও এণের লাহা লান্তি করিতে হইলে ক্যালেপনই প্রধান উপায়। ইহা হারা মাংস ও রক্ত সংলোধিত হয় এবং লোফের চুলকনার লান্তি হইয়া থাকে। শ্রীরের মর্মন্থানে বা গুজ্ত্বানে যে সকল রোগ ক্ষাব্রে, তাহার সংলোধনের নিমিত্ত আলেপন বিধেয়।

আলেপন প্রস্তুত করিতে হইলে পিন্তজ্নন্ত রোগে সকল আলেপন দ্রব্য মিলিয়া যে পরিমাণ হইবে, ভাহার বোড়শ ভাগের ছয় ভাগ স্নেহ্ন দ্রবা (মৃত তৈলাদি) সংযোগ করিতে হইবে। বায় জ্লা রোগে চারি ভাগ পরিমাণে এবং শ্লেমজ রোগে অর্ধ্ব পরিমাণ সংযোগ করিয়া প্রযোগ করিবে। মহিষের চক্ষ আর্দ্র হইলে যে পরিমাণ উচ্চ হয় (ফুলিয়া উঠে), শরীরের আলেপও সেই পরিমাণ বেধবিশিষ্ট (পুরু) হইবে। আলেপন রাত্রিকালে প্রযোগ করিবে না এবং যে পর্যান্ত ত্রণ হইতে উত্তাণ নির্গত হইতে থাকে, সে পর্যান্ত ভাহাতে শাঁতল আলেপন প্রযোগ করিবে না। করেণ রাণ্য উষ্ণতা নির্গত না হইলে সেই উষ্ণতা বন্ধ থাকিয়া প্রশের মধ্যে বিক্তিভাব জন্মার।

শরীরে প্রদেহ লেপন করিতে হইলে দিবাভাগে লেপন করাই হিতকর, বিশেষতঃ পিত্তম, রক্তম ও অভিঘাত জন্ম অথবা বিষ জন্ম রোগে দিবাভাগেই লেপন করা কর্তবা।

যে প্রবেশ পূর্ব্ধ দিন প্রস্তুত করা থাকে, তাহা কদাচ বাবহার করিবে না। কারণ সেই প্রবেশ গাঢ় হইয়া যায় এবং তাহা প্রয়োগ করিলে উক্তা, বেদনাও দাহ জন্ম। প্রবেশবের উপর প্রবেশ দিবে না। যে প্রবেশ একবার শরীর ছইতে মোচন করা যায়, তাহা পুনর্কার শরীরে প্রয়োগ করা কর্ম্কব্য নহে। ইহা ওছ হওয়া প্রযুক্ত অকর্মণা হইয়া পড়ে। (স্কুত্ত স্ক্রন্থা ১৯ অং)

২ ফুলা, কলিচুগ। ৩ ভোজন। (পুং)৪ তুকুক নামক গছনুবা। (রাজনি°)৫ সিহলক, শিলাবদ।

লেপাপেশীছা (দেশজ) দেয়াবাদির গাত্রাদি হইতে কোন লগ উত্তম রূপে মুক্তিয়া কেলা।

লেপিন্ গং) নিশ্বজীতি লিপ-ণিনি। > লেপক। (আ) ২ লেপকঠা, লেপবিশিষ্ট। লেপ্য (বি) নিশু-নাৎ। তলপ্তনীয়, লেপ্তব্য।

"শৈলী দাৰুময়ী লোহী লেপ্যা লেপ্যা চ সৈকতী।

মনোমরী মণিমরী প্রতিমাষ্টবিধাশম্বতা॥" (জুগাব০ ১১।২৭।১২)
লেপ্যকুত (পুং) লেপ্যং করোতীতি ক্-কিপ্ট তুক্ চ। লেপ্ত ।
লেপ্যনারী (ত্রী) ১ অগুক্চন্দনচর্চিত রম্ণী। লেপ্যত্রী।

২ প্রস্তর বা মৃদাদি দ্বারা নির্দ্ধিত রমণী মৃঠি।
লেপ্যনায়ী (ত্রী) লেপ্য-মন্ত, ঙীপ্। কাঠাদি ঘটিত প্তলিকা,
পর্যায় অঞ্জলিকারিকা। (হেম)

লেপাযোষিৎ (ব্রা) লেপানারী।

লেপ্যস্ত্রী (জী) লেপা জী। স্থগদ্ধর বালিপ্তা জী। (শন্দরক্লা•) লে ফাফা (স্থারবী) খাম, যাহার মধ্যে চিঠিপত্র প্রিয়া দেওয়া হয়।

লেম (হিন্দী) ১ একতা। ২ হ্রমিলন। ৩ স্থাব, সম্প্রীভি।
লেম্রো, নিমরক্ষের অন্তর্গত একটা নদী। আরাকান প্রদেশের
উত্তরস্থ অসলার্ত শৈলমালা মধ্যে ইহার উৎপত্তি। পর্বত্বক
অবতরণকালে এই নদী শৈলগাত্রবাহী নানা স্রোতোমালার্ম
পৃষ্টকলেবর হইয়া আকায়াব জেলার সমতলক্ষেত্রে পড়িয়াছে ৳
পরে তথা হইতে সম্লোভিম্থে প্রবাহিত হইয়া নানা শাথা
প্রশাধা বিস্তারপূর্বাক হান্টাস্বি নামক সাগরোপকুলে সম্লবক্ষে
মিশিরাছে।

লে-ম্যোৎ-হ্যা, এক্ষরাজ্যের ইরাবতীবিভাগের বেসিন জেলার অন্তর্গত একটা নগর। বেসিন বা ঙ্গা-বুনা নদীতটে অবস্থিত। অক্ষা • ১৭°৩৪ (০ ডি: এবং দ্রাঘি • ৯৫°১৩ ৪ • পু:। নদীতে বতা হইলে এই নগরের পথঘাট সময় সময় ৩ ফিট্ জলে দুবিয়া যায়।

লেয় (খং Leo) সিংহরাশি। (জ্যোতিস্তর) লেয়াকিং (আরবী) > গুণ। ২ সামর্থা। ৩ দুক্ষ। ৪ কুশলবৃদ্ধি। লেয়াকিতী (আরবী) ১ দক্ষতা, নিপুণতা। ২ যোগ্যতা। লেল্য়া (স্ত্রী) কম্পুমুনা।

লোলিহ (বি) লিহ বিছ, বঙ্ লুক্, লে ক্লিছ-মাচ্। পুন: পুন: লেহন।
লোলিহান (পুং) পুন: পুনরভিশরেন বা লেটাতি লিহ-যঙ্,
শানচ্ বা। > শিব। (শন্তর জা•) ২ স্পা। (হেম)(তি)
৩ পুন: পুন: লেহনকর্তা।

"গপ্তজিহ্বাননং কুরো লেলিহানো বিদপতি।"(ভারত ১/২৩০/৫)
লেলিহানা (জী) তত্ত্বাক্ত মূলাবিশেষ। মুখ বিবৃত করিরা
অধ্যেমুখে জিহ্বা পরিচালিত করিবে, এবং উভর হত্তের মুট্ট
উভর পার্যে হাপন করিলে ভাহাকে ক্লেলিহান মুলা কহে। **
এই মুলা তারাপৃঞ্জার প্রশন্ত।

অন্ত প্রকার—তর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা সমভাগে

আধায়থ কক্সি। আনার্মিলাকে বৃদ্ধান্তি কিছিল করিয়া কমিষ্ঠাকে সরলভাবে রামিলে এই লেলিহান মূলা হয়। এই মুলাজীবস্তানে বিশেব প্রশস্ত।

"বক্রং বিতারিতং কথাপ্যধোজিকাঞ্চ চালরেং।
পার্যন্তং মৃষ্টিযুগলং লেলিহানেতি কীর্তিতা ।
এবাতারারাধনেক্তা লেলিহা বক্তব্যা—
যোনিম ঘোণরং সেন্দ্র্বণ্য কুর্চ্চং ক্রমান্তিহং।
ব্যীলানি চোচ্চরেয়ারী মুজাবন্ধনমাচরেং ।
তর্জনীমধ্যমানামাঃ সমং কুর্যাদধোম্বন্।
অনামারাং ক্লিপের্ ছাং ঝলীং ক্লা কনিষ্টিকান্।
লেলিহা নাম মৃদ্রেয়ং জীব্লালে প্রকীর্ত্তিতা ॥" (তর্জনার)

লেলা (তি) গাঢ় সংলিপ্ত।
লেবার (সুং) অগ্রহারভেদ। (রাজতের ১৮৮৭)
লেবোল, যুক্তপ্রদেশের কুমায়ন জেলার অন্তর্গত একটা গিরিশেলী, হিমালয়-পর্কাতের অংশ বলিয়া পরিগণিত। অক্ষাণ
৩০°২০ উ: এবং দ্রাঘিণ ৮০°৩৯ পৃং। এই গিরিশাপা বিয়ান্
ও ধর্ম উপত্যকার মধ্য দিয়া বিস্তৃত আছে। পর্কাতের উপর

দিরা একটা পথ অপর নিকে গিয়াছে। ঐ সঙ্কটের সর্কোচ্চ স্থান সমূলপৃষ্ঠ হইতে ১৮৯৪২ ফিট উচ্চ এবং চিরকুবারার্ত। লেশ (পুং) লিশ-যঞ্। কণা। (অমর)

"এষ তে রাজধর্মাণাং লেশ: সমন্থবর্ণিত:।"(ভারত ১২।৫৮।২৫) লেশোক্ত (ত্রি) ১ সংক্ষেপে বর্ণিত। ২ আভাস কথিত। লেশ্যা (ত্রী) দীপ্তি, আলোক।

লেফব্য (ত্রি) ১ নাশবোগ্য। ২ ছিন্নকরণোপবোগী।
লেফবু (পুং) লিশুতে ইভি লিশ্-বাছলকাৎ তুন্। লোই।
শ্বেথ যো আন্ধান্ কুটঃ পরাভবতি সোহচিরাৎ।
যথা মহার্থবে ক্ষিপ্ত আমলেই বিনশুতি।"

(अक्राइ २०१०८।२७)

লেফ্ তু (পুং)লেষ্ট্, হস্তি হন-ঢক্। লোষ্ট্রতিদন। (শব্দর্যাণ)
লেফ্ ভেদন (পুং) লেষ্ট্, ডিনন্তীতি, ভিদ-পূট্। লোইডঙ্গসাধন মৃদদর, পর্যার কোটীশ, লেষ্ট্রম, লেষ্ট্রডেদী, চূর্ণদণ্ড।
লেসিক (পুং) হন্ত্যারোহক, পর্যার কটিরোহক। (শব্দমাণ)
লেহ্ (পুং) লেহনমিতি লিহ-থঞ্। আহার, ভক্ষণ। পর্যার—
বাদন, রসন, ব্দন, ব্দনি। (রাজনিণ) লিহ-বর্মণি থঞ্। ২ রস।
"পচেরেহং সিডা ক্লোক্র পলার্জ্যুড্রাবিতম্।"
(ক্লুক্ত ১।৪৪) লেট্টাতি লিহ-থঞ্। (ত্রি) ও লেহনকর্তা।
"দক্তেহং মধুনো লেইহর্দাবৈক্লগ্রৈর্থণ গিরিঃ।" (ভট্ট ৬৮২)
৪ অবলেহ, চলিভ জটা। লোবের বলাবল জন্থসারে হানক্লিশ্বে জবলেহ প্ররোগ বিধের। জবলেহ প্রারই উর্জ্জক্রসত

রোগ নট করে, এ কারণ করি সারংকারে করে। এই অবল্পের অটাল ও চতুরক প্রকৃতি ভেনযুক।

অটালাবলেহ — কার্যকল, পুরুষ্ট্র, অভাবে কুড়, কাকড়াশ্লী,

মান্নিচ, পিপুল, ওঁঠ, ছরালভা এবং শুল কুক্ষজীরা এই সকল
চূর্ণ করিয়া মধুর সহিত লেহন করিতে হয়, ইহাকে অটালাবলেহ
কহে। ইহা লেহন করিলে সারিপাত, হিকা, খাস, কাস এবং
কর্মরোগ উপশম হয়। কফ্প্রধান সারিপাতে ইহা আদার রসের
সহিত প্রয়োগ করিবে। মতাজ্বরে—লেহিক মধুর সহিত বা
আদার রসের সহিত সেবন করিলে তন্ত্রা ও কাসযুক্ত লারণ
মোহ বিন্দ্র হয়।

চত্রজাবলেহ—সিদ্ধ আমলকী পেষণ করিয়া দ্রাক্ষা ও ভঁঠের সহিত মিলিত করিয়া মধুর সহিত লেহন করিলে খাস, কাস, মৃদ্ধতি ও অরুচি নষ্ট হয়। (ভারপ্রত মধাধ•)

দ্রব ও কন্ধ প্রস্তুত করিতে হইলে বেরূপ ভাগ নির্দিষ্ট আছে, অবলেহের ভাগ তক্ষপ স্থানিবে।

"লেহে যত্রান্তি যো ভাগো নির্দ্ধিষ্টো দ্রবক্ষন্নোঃ। তত্রাপি পাদিকঃ কৃষ্ণ দ্রব্যাৎ কার্যো বিন্ধানতা॥" (বাভট) [স্ববলেহ শব্দ দেখ।]

লোহ, গঞ্চাবপ্রনেশের কাশ্মীর রাজ্যের অন্তর্গত লাদশ্ রাজ্যের প্রধান নগর। সিদ্ধনদের উত্তর কৃল হইতে ১॥ ০ ক্রোশ দূরে অবস্থিত। অক্ষা ০ ৩৪°১০ উ: এবং দ্রাঘি০ ৭৭° ৪০° পূ:। এই স্থান সিদ্ধন্দ ও পার্থবর্ত্তী পর্যাক্তমালার মধান্থিত সমতল প্রাক্তবাপরি স্থাপিত। নগরের চারিদিকে প্রাচীর, ঐ প্রাচীর পর্যাক্তমাত্র পর্যান্ত বিস্তৃত। তাহার স্থানে গোলাকার চূর্গবাটিকা নির্দ্দিত আছে। কাশ্মীররাজ গোলাব সিংহ এখানকার রাজাকে রাজাচ্যুত করিয়। এই স্থান কাশ্মীররাজাভুক করেন। লাদথ্বেথ।

নগরের দক্ষিণ-পশ্চিমে একটা হুর্গ আছে। প্রাচীন রাজ-প্রাসাদ ত্রিতল ও সামাগ্র ধরণে গঠিত হইলেও উহার কার্চ্চ-নির্ম্মিত বারাগুদি দেখিবার সামগ্রী। চীন, তাতার ও পঞ্জাব-প্রদেশের বাণিজ্যকেন্দ্র বলিয়া পর্বতবক্ষন্থিত ফুবারব্যাপ্ত এই নগর সাধারণের বিশেষ পরিচিত। এখানে শালনির্মাণার্থ পশম বিক্রেয়ের বিশ্বত কারবার চলিয়া থাকে। একটা বেধালয় এখানে শ্বাপিত আছে।

লৈহন (ক্লী) লিহ-পুটে। জিলাছারা রসাম্বাদন, চলিত চাটা। প্র্যার—জিলাম্বাদ। (হেম)

প্রত্যা, বালালার দরভালা জেলার অন্তর্গত একটা গঞ্জাম।

মধুবন হইতে বহেরা ঘাইবার পথে অবছিত। পঞ্জোল নীলকুঠার অধীনে এধানে একটা নীলের কারখানা গাকার হানীয়

নমৃতি বাহিন্দ্র করিবারে ও এই প্রবাদের অবনাচৰ কটা বৃহদাকার
দীর্ঘিকা আছে। তরজে বোড়দৌড় নামুক্ত দীর্ঘিকা চুই মাইল
বিস্তুত। এই দীর্ঘিকার তীরে প্রায় ১৫ বিঘা লমি ব্যালীর
ইইকত্প পড়িয়া আছে। উহা এখন জনলে আর্ড। হানীর
প্রবাদ, ত্রিহুডরাজ শিবসিংহ ঐ হানে বাস করিতেন, ঐ তুপ
ভাহারই প্রাসাদের বাংসাবশেষ মাত্র।

(लहाई (जनन) मतनात कारे।

लिहिन् (बि)> लिहर्क्डें। २ लिहनकाती।

লৈছিন (পুং) লিহ-বাহণকাদিনন্। টহণকার, চলিত সোহাগা, সোহাগার থৈ। (হম)

"আহারং বড়্বিধকোব্যং পেরং লেহং তথৈব চ। ভোজাং জক্ষাং তথা চর্ব্যাং শুরু বিদ্যাদ্ বথোজরুম্ ॥"(ভাবপ্র°) (ব্রি) ৪ দেহনীর, দেহনবোগ্য।

"তভনানাবিধং ভক্যভোক্যলেছাদি ৰড্রসম্।

षिरासक्षर यूङ्क्तितः পপু: পানমধোত্তমম্ ॥"(কথাসরিৎসা° ৪৫।২৩०)

লৈখ (পুং) লেখের গোত্রাপত্য। (পা[°] ৪।১।১১২)

লৈখাভের (গ্ং) লেখাত্র বা লেখাত্রর গোত্রাপত্য।

লৈগবায়ন (পুং) লিখন গোতাপতা।

লৈগব্য (পুং) লিশুর গোতাপভা।

লৈক (রী) নিজমধিকতা কতো গ্রন্থ ইতি নিজকেনমিতি বা নিজ-অণ্। নিজপুরাণ। পুরাণ দেখ।]

"बारकर कोन्डर छथा रिनंबर रेनवर कामर छरियद **छ।**"

(পান্নোতরপত ৩৪ আ:)

(कि) २ निमनवकीत ।

লৈন্দিক (জি) > নিদসৰ্থীর। ২ নিদ বা প্রতিস্তি-নির্মাণ-ভারী।

লৈজিকী (খী) ব্যন ও বিরেচনের শোধনবিশেব।(চক্রন-ব্যনাধিক) লৈজী (খী) > শিলিনী লতা। (রাজনিক) ২ নিজসবছিনী। লো (পুণ) থলো শকার্থ। নিরশ্রেণীর খ্রী জাতিকে ডাকিবার শক। লো-জাজিম (জারবী) জাবগুকীর প্রবাদি।

লোক, নর্পন, অবলোকন। ২ নীপ্তি। ভূদি আন্তনেও

সকও সেট্। নীপ্তার্থে চুরাদি পারীপে অকও সেট্। নট্
লোকডে। নিট্ সুরোকে। সূট্ লোকিডা। সূত্ আলোকিউ। চুরাদিপকে নট্ লোকরিড। সূত্ অস্লোকং।

অব+লোক = অবলোকন। আ+লোক = আলোকন, নর্মন।
বি+লোক = বিলোকন।

লোক (বং) লোকতে ইভি লোক-বঞ্জ ভ্ৰন, গুলাক ৭টা, সংবলোক, ভূলোক, ভ্ৰনেটিক, শ্বলোক, মহলোক জন-লোক, তপোলোক ও সত্যলোক।

"ভূড়্ব: স্বৰ্দ্মহলৈৰ জনক তপ এব চ। সত্যলোকক সধ্যৈতে লোকান্ত পরিকীর্ত্তিতা: দ্রু (অন্তিপ্•) [বিশেষ বিবরণ তত্তৎ শক্ষে দেখ্]

সুশ্রতে লিখিত আছে বে, লোক ছই প্রকার স্থাবর ও জলম। বৃক্ষ, লতা ও তৃণ প্রভৃতি স্থাবর এবং পশু, পক্ষী, কীট, মহুবা প্রভৃতি জলম। এই স্থাবর ও জলম রূপ লোক্ষর উষ্ণ শীত গুণভেলে পুনরার আয়ের ও সৌম্য এই ছই প্রকারে বিভক্ত। অথবা ক্ষিতি, জল, অগ্নি, বার্ ও আকাশ এই পঞ্চত ভেলে পাঁচ প্রকারে বিভক্ত। এই লোক্ষরের মধ্যে ভূতের উৎপত্তি চারি প্রকার—যথা বেদল, অগ্রন্ম, উদ্ভিক্ষ ও জরার্জ্ঞ। একমাত্র পুরুষ এই সকল লোকের অধিচাতা।

(সুশ্রুত প্রস্থা• ১ অ৽)

বাঁহারা পুণ্যকারী তাঁহাদিগের উত্তমলোক এবং বাঁহার।
পাপকারী তাহাদিগের অধমলোকে গতি হইরা থাকে। পুণ্যাত্মাদিগের জন্ত নানাপ্রকার অতি বিচিত্র ও পবিত্র লোক আছে।
এই সকল লোক কামমর অতি বিচিত্র।

"এবং বিভজ্য রাজ্যানি পুরা প্রোক্তানি বানি চ।
লোকাংশ্চ বিদধে দিব্যান্ দদাবথ পৃথক্ পৃথক্ ॥
কন্তচিৎ প্র্যসকাশান্ কন্তচিষ্টেনির্ম্বলান্।
কন্তচিদ্ধিয়াবিজ্যোতান্ কন্তচিচ্চক্রনির্ম্বলান্।
নানাবর্ণান্ কামমরাননৈকশতবোজনান্।
সতাং স্ক্রতিনাং লোকান্ পাবনার চ সংস্থিতান্।"
(অলিপু• বরাছ-প্রাহর্ভাব নামাধ্যা•)

২জন। (অমর)

লোককণ্টক (্বাং) > মন্দ লোক। ২ দোধী ব্যক্তি। ৩ লছে-শ্বর রাবণের নামীৰীয়।

লোককথা (ত্ৰী) প্ৰচলিত প্ৰবাদ, কিংবদন্তী। ২ নীভিমূলক গঞ্চ। লোককৰ্ত্ব (পুং) গোকত কৰ্ত্বা ৮ ১ বিষ্ণু। ২ শিব। ৩ ব্ৰহ্মা। লোককম্পু (ত্ৰি) মানবের জীতিকর।

লোককল্প (ত্রি) > জগৎ সদৃশ বা অন্তর্মণ । ২ জগৎছিডির তুল্য:। লোককান্ত (ত্রি) লোকানাং কান্তঃ। লোকপ্রিয়, জনপ্রিয়ঃ

> "লোককারং প্রিরং পুরুং কুপটীরাম্বরং বনম্। প্রাহিতং পঞ্জান্তো নেহন্ত মুধরং কিং ন বীর্যাতে ॥"

> > (लाः वामावन २। ०৮। ७०

ত্রিরাং টাশ্। লোককান্তা, লোকপ্রিরা। ২ বাভি নামক ঔবধ। লোককার' (পুং)লোককর্তা। একা, বিষ্ণু ও শিবকে ব্যার র

(लाककृष् (जि) > रहिमात्री। रहिम्ही। २ म्हामात्री। লোককুছু (তি') স্টক্রা। লোকক্ষিৎ (তি) বৰ্গগামী, আকাশচারী। লোকগতি (ত্রী) শীবনবাত্রা। লোকগাখা (ত্রী) লোকপরস্পরাশ্রত গাখা। লোকপ্রক (পুং) বগৰানীর উপদেষ্টা আচার্য্য। লোকচকুস্ (দী) লোকানাং চকুরিব। ১ হর্ষ। ''লোকপ্রকাশক: শ্রীমান্ লোকচক্র্য হেশ্বর:।'' (স্ব্যান্তব) ২ লোকদিগের চকুঃ, জনসমূহের লোচন। লোকচর (এ)> জীব। ২ জগৎত্রনগকারী। লোকচরিত্র (क्री) জীবনবাতা। মানবের জীবনেভির্ত্ত। লোকচারিন (তি) লোকচর। (लाक्जननी (जी) ननी। লোকজিৎ (পুং) লোকং বিভবানিতি বি-বিপ্তৃক্ চ। > বুদ। (ত্রি) ২ লোকজেতা। "বং কামং কামরতে তমাগারতি তহৈ তল্লোকজিদেব" (শতপথবা । ১৪।৪।১।৩০) লোকজ্ঞ (ত্রি) মানবতবদর্শী। লোকজ্যেষ্ঠ (তি) > नরশ্রেষ্ঠ। ২ বৃদ্ধভেদ। লোকতত্ত্ব (ক্নী) মানবতৰ। লোকভন্ত্র (क्री) ৰগতের ইভিবৃত্ত। লোকতদ্ (অব্য) লোকাম্রুপ। পূর্ব্বোক্তরূপ (ভাগব° ৪।২৪।৭) লোকতৃষার (গং) লোকে তৃবার ইব। কপুর। (রাজনি) লোকত্রয় (क्री) স্বর্গ, মর্ব্য ও রদাতল। **(**लांकमञ्जक (बि) श्रवक्षक। লোকভার (ক্লী) স্বর্গছার। লোকছারীয় (দী) শামভেদ। লোকধাত (গং) লোকত ধাতা। নিব। লোকধাত (পুং) বৌদ্ধমতে, জগতের স্ক্রংশবিশেব। लाकनाथ (प्रः) लाकानाः नाथः। [₩]> त्क। (विका°) "লোকে ভগবতো লোকনাথাদায়ভ্য কেচন। ৰে জন্তবো গতক্লেশান্ বোধিসন্থানবেহি তান্ #" (রাজ তর° ১।১৩৮) २ बका। (भक्तका°) ७ विकृ। ८ निव। "অবিক্ষন: সন্ প্রভব: স সম্পদাং স লোকনাথ: পিতৃসন্মগোচর:। স ভীমরণঃ শিব ইত্যুদীর্ঘাডে দ সন্তি বাধার্থাবিদঃ পিণাকিনঃ ॥" (कुमाब्रमखर) (ब्रि) ६ लाट्च्य टाजू। (त्रामात्रम २१००/२७) ७ भात्रम।

্লোকনাথ. > অবৈভযুক্তাগায়রচরিতা। ২ মন্ত্রকালপ্রণেতা।

🌣 মলোহরা নারী রাম।রণটীকারচরিতা i 🦈

লোকনাথ চক্রবর্তী, কর্ণপ্রহত অলভারকীভাভের টাকা ও

লোকনাথ ভট্ট, হক্ষাভ্যন্ত নাৰক প্ৰেক্ষ্ট্ৰপ্ৰাণেত।
লোকনাথৱস (পং) দীহারোগাধিকারে উৰ্থনিবেৰ, লোকক্ষাধ্যম ও বৃহজোকনাথ বন তেবে ইহা চুই প্ৰকার। প্ৰজ্ঞুকপ্রণাগী—পারা, গছক, অন্ত, প্রভ্যেক এক ভাল, লোহ ছইভাগ,
তান্ত হইভাগ, কড়িভন্ম ছরভাগ, এই সকল ক্রব্য এক্স করিরা
পাণের রসের সহিত মর্কন করিরা গলপুটে পাক করিবে।
শীতল হইলে চুই রভি পরিমাণ এই ঔবধ সেবন করিরা পিপুলচুর্গ ও মধু, বা গুড় ও হ্রীভকী কিংবা গোমুন্ন ও গুড়ের সহিত
জীরা সেবন করিবে। এই ঔবধ সেবন করিলে বৃহুৎ, প্লাহা,
উদরী, গুল্ম ও শোথনাশ হর।

ব্হলোকনাথরস—পারদ একভাগ ও গন্ধক হুইভাগে কক্ষণী করিবে, একভাগ অন্ত উহার সহিত মিশাইরা শ্বতকুমারীর রসে, পরে বিগুণ তামা ও লোহ মিশ্রিত করিরা কাকমাচীর রসে পুন: মর্দন করিয়া গোলক করিবে। পরে গন্ধক ২ ভাগ ও কড়িত্রম ২ ভাগ জনীরের রসে মর্দন করিয়া, ম্যাবরের মধ্যে ঐ ঔষধ গোলক রাথিয়া দিবে; তদনস্তর উক্ত ম্যাহয় শরাবসম্পূট করিয়া উক্ত শরাবের সন্ধিয়ান পোড়ামাটী, লবণ ও ললে লেপিয়া গল্পটে পাক করিতে হইবে। শীতল হইলে ছয়য়তি পরিমাণ বটা প্রস্তুত করিতে হয়। এই ঔষধ পিপুলচ্প, মধু, হরীতকীচ্প, গড়, লোমান বা গোম্ব অন্থগানে সেবন করিলে বয়ুৎ, প্রাহা, উদরী, শোথ, বাত, অঞ্জালা, কামটা, প্রত্যঞ্জিলা, কাসর, অগ্রমান, শ্ল, ভগলনর, অগ্রমান্য ও কাস আশু প্রশমিত হয়। (রসেক্সনারনং শীহ্যফ্রাধি)

অতিসার রোগাধিকারে রসৌষধ বিশেষ। প্রস্তাপ্রধাণী—রসিন্দ্র একভাগ, গন্ধক চারিভাগ, কড়ির মধ্যে পুরিরা সোহাগা দারা মুখ বন্ধ করিরা দিবে, পরে ইহা মুৎপাত্রে রুদ্ধ করিরা পুটপাকে পাক করিবে, এই ঔষধের মাত্রা ৪ রতি। ইহা মধুর সহিত সেবা এবং ৬৪, আতইচ, মুতা, দেবদারু ও বচ ইহাদের কষার অন্থানে দেবন করিবে সর্কবিধ অতীসার রোগ আও প্রশমিত হর। (রসেক্রসারস° অভিসাররোগাধি) লোকনাথ শর্ম্মা, অমরকোষটাকা পদমন্ত্রীপ্রধেতা।

লোকনিন্দিত (ত্রি) লোকের নিন্দিতঃ, জননিন্দিত, বিনি জনসমাজে নিন্দিত।

লোকনেত (পুং) লোকানাং নেতা। > শিব। ২ জম-সমাজের প্রভূ। সমাজপতি।

লোকপ (গ্ৰং) লোকপান। লোকপক্তি (ত্ৰী) সমম, খ্যাভি, বশঃ।

লোকপতি (গুং) গোলানাং পতিঃ। বিছু । (ছাগ্ৰ ২।৪।২০) জনসমালের পতি অর্থাৎ পালক।

লোকপুথ (গ্ৰং) সাধারণ পথ বা উপায় । 🦠 লোকপছড়ি (বী) চিন্তৰ পছা। **लाकशाम (ग्र) मानाम् गानवजीकि गान-निह्-वन्**। > त्राष्ट्रा (रुनायूप) २ त्रिक्नान । ''লোমান্মর্কানিলেক্সাণাং বিভারত্যোর্থমভ চ। **पडीनार लाक्नानामार क्यूबांबहरण वृधाः।" (मञ् ०।३७)** ৩ শিৰা ৪ বিয়ুগ লোকপালক (প্ং) লোক্ড পালক:। লোকপান। (স্ত্রী) লোকপালক ভাবঃ তল্টাপ্। লোকপালভা লোকণালম্ব, লোকণালের ভাব বা ধর্ম, লোকণালের কার্য্য। লোকপিতামহ (পুং) একা। লোকপুণ্য (রী) প্রাচীন নগরভেদ। (রাজভর• ৪।১৯৩) लाकशुक्रम (११) बकाखराव। লোকপুঞ্জিত (অ) গোকের প্রিডঃ। ধনপুঞ্জিত। जनगराज गाउ। লোকপ্রকাশক (পুং) লোক্ত প্রকাশক:। প্র্যা। ''লোকপ্রকাশক: শ্রীমান লোকচকুর্মাহেশর:।'' (স্থান্তব) লোকপ্রকাশন (পুং) পর্য্য, যিনি অগৎকে আলোক দান করেন। লোকপ্রভায় (পুং) জগনাথ, চিরপ্রসিদ (আচারাদি)। (माकश्रमीश (शः) वृद्धाः । লোকপ্রবাদ (পুং) লোকে প্রবাদ:। অনপ্রবাদ, অন-সমালে প্রচলিত প্রবাদ। লোকপ্রসিদ্ধি (ত্রী) খাতি। (मिक्वसू (पूर·) > निव। २ प्र्या। লোকবাদ্ধব (গং) গোকানাং বাদ্ধবঃ। ১ হর্ষ্য। (স্কটাধর) २ क्रमम्बद्ध वर्षे । লোকবাছ .(পুং) লোকাৎ লোকসমাভাৎ বাহঃ। সর্বাচার-बर्क्कित । ''ब्लाक्वाक्क वाकिशवाबीहात्रवर्क्कितः।" (क्रोशिक्) লোকবিন্দুসার (রী) হুগ্রাচীন চতুর্দশ জৈন প্রার শেবাংশ। লোকভর্ত্ত (পুং) কমসাধারণের অল্লবাডা। लाक्संब (বি) शमाविकाती। शमवानी। (मक्टनथडा° १।২।১৮) লোকভাষন (ত্রি) কগতের মকলবর্ডনকারী। (ভাগ° ৩১৪।৪•) (लाकक्षांविन् (बि) वर्गरक्काः (त्रामि 8। 88। 89) লোকম্য় (জি) ছানময়। জগদাধায়। (ভাগ° ২।৫।৪১।) লোকম্য্যাদা (ত্রী) > চিরন্তন পছতি। ২ ব্যক্তিবিলেবের সম্বাননা। লোকমাত (ত্রী) লোখানাং বাভা। > বারী, ক্রবা। २ लाद्कन्न क्ननी। "প্রতিষ্ঠাকান: পুরুষো রোমনী লোকমান্তরো।" (ভাগৰত ২।এ৫) (लाकमार्ग (११) > व्यव्यविख्यां । १ नागांक्य शहा ।

लाक्रभुन (a) > क्नकानी । र नर्सनामी । "लाक्रभुदेनः পরিমলৈ: পরিপুরিতভ কাশ্রীরক্ত" (ভাষিশীবিলান) জ্রিয়াং लाकरशृंगी-- रेडेकाएडम । ताकरशृंगी, সহকারে এই ইটক ছারা বজ্ঞীর বেদী নির্মাণ করিতে হয়। (বাজসনেম্বসংহিতা° ১২।৫৪) লোক্যাত্রা (ত্রী) লোকানাং বাজা। সংসারধাতা, জীবন। লোক্যাত্রাবিধান (ক্লী) (Political Economy) সংসার-বাত্রানির্বাহের বিধিদর্শক নীতিশান্তবিশেব। লোক্যাত্রিক (ত্রি) জীবনযাত্রা দৰ্শীয়। লোকরক্ষ (খং) রাজা, নরপতি। লোকরপ্রন (क्री) লোকত রঞ্জনং। লোকের প্রীতিসম্পাদন. লোককে সম্ভষ্ট করা। লোকরব (গং) জনরব। লোকলেখ (গং) রাজবিজ্ঞপ্তি। (अवत्राह्म) (प्रः) लाकानाः लाठनमिव । > प्र्यः । (अवत्रकाः) (क्री) ২ লোকের চন্দু, জনসমূহের লোচন। ''সোহশ্বন্তৎপাাঞ্চণাতেন যন্ত্রেণেবেরিভঃ শরঃ। জগাম কাপ্যতিজ্বাদলক্ষো লোকলোচনৈ:॥" (क्थानविष्ना[°] >৮। ৯२) (ल्क्ष्यह्म (क्री) बनवर। লোকবৎ (ত্রি) লোক সনুদ। লোকবর্ত্তন (ক্লী) মহুবাচরিত্র। রীভি-নীভি। লোকবাদ (পং) লোকভ বাদ:। লোকপ্রবাদ, জনশ্রুতি, যাহা সচরাচর লোকে বলিয়া থাকে। (लोकवार्छ। (वी) क्रमत्रव। লোকবাছা (ত্রি) > লোকবহিছু ভ, জাচারভ্রষ্ট। ২ লোক-বহনীয়। ৩ জাভিচ্যুত। লোকবিক্রেষ্ট (জু.) যে ছলে লোকসমূহের বিক্রোশ হয়। लाकविष्टि। "পরিভাজেদর্থকামৌ বৌ স্থাভাং ধর্মবর্জিভৌ । धर्मभागान्यरशामकः (नाकविक्केटमव 5 ॥" (मञ्ज 813 9%) 'लाकविक्टेर यव लाकांगार विद्वानः' (कूड्क्) লোকবিজ্ঞাত (बि) বিখাত, লোক লানিত, প্ৰসিদ্ধ। (माक्विम् (११) व्राप्तम । **(लाक्विक्कि (बि) लाक्निक्कि, क्रनम्**रहत्र निक्षे विस्त-ভাৰাপর। **"অনা**রোগ্যমনার্য্যম**র্থ্যপর্কাঞ্চাতিভোজন**ম্ । मन्त्रार लाकविक्किः छत्राचर नतिवर्कत्वर ॥" (यष्ट्र शहर)

(लाकविशि (ग्रः) > एविनक्ष । २ वगरकत्र निवका ।

লোকবিনায়ক (পুং) লোকে বিনায়ক ইব। এহৰিলেব। ইহারা রোগের অধিঠাতা বলিরা ক্রিড।

শ্বন্দথ্যবাদরো বে চ আর্যাক্তাসকাষর: ।
কোনারান্তে ভূবি জেরা বে চ লোক্বিনারকা: ।
সহস্রশতসংখ্যাতা মর্জ্যলোকবিচারিণ: ॥
(অরিপ্-)

লোকবিন্দু (আ) > शानकाती। । २ मृक्ति वा **यारीनकाधारा**। লোকবিক্রেক্ত (আ) বিশাত।

লোকবিশ্রুতি (ত্রী) লোকে বিশ্রতিঃ। জনশ্রুতি, কিংবনতী। লোকবিসূর্ব (গুং) কাংখুট। প্রজাসর্কন।

লোকবিস্তার (গং) লোক্বাাগৃতি।

লোকবীর (গ্রং) পৃথিবীয় শ্বপ্রসিদ্ধ বীরর্ষণ। এই শব্দ বহুবচনাত।

লোকবৃত্ত (ক্লী) > অৱ ক্ৰোপক্ধন। ২ নৌৰিক জাচার। লোকবৃত্তান্ত (পুং) > সম্বাচরিত্র। ২ জীবনের ঘটনা-নিচর। প্রাচীন ইতিহৃত্ত।

লোকব্যবহার (পৃং) সাধারণে প্রচলিত রীডিনীভি। লোকব্রত (ক্লী) মহন্যসমান্তের প্রচলিত ক্রিরাপছতি। লোকশ্রুতি (ব্রী) > জনক্রতি, কিংবদন্তী। ২ খ্যাতি, প্রসিদ্ধি। লোকসংব্যবহার (পৃং) বৈদেশিক বাণিক্য।

লোকসংস্থৃতি (ত্রী) অনৃষ্ট। "জীবনোকস্ত নোকসংস্থৃতিঃ" (ভাগ- অ২৯া৩)

লোকসক্ষর (প্ং)> জাগতিক বিপ্লব। ২ জনসমাজে মিখ্যা-চরপকারী। (রামারণ ২।১০৯৮)

লোকসংক্ষয় (পুং) > জনক্ষয়। ২ জগতের ধ্বংস।

লোকসংগ্রহ (গ্রং) > লোকসমবর। ২ সাংসারিক অভিজ্ঞান। ৩ জগবাসীর পরস্পারের সম্মীতি ও সন্তার্ম। ৪ সমগ্র জসং। ৫ জাগতিক মঙ্গল।

লোকসনি (গুং) > স্থানকারী। ২ নিরুদ্ধেগমার্গনাধক। (গুরুষ্কুঃ ১৯।৪৮)

লোকসাক্ষিক (জি) > ৰগদ্বানীর অন্থবোদিত। (অন্ত) দান্ধি-নবকে।

লোকসাক্ষিন্ (গুং) ১ বন্ধ ৮২ শনি। (রামারণ ৬।১০১।২৮) ৩ পর্যা।

"লোকনাকী জিলোকেশ: কর্তা হর্তা ভনিত্রহাঃ" (শুর্বান্তর) লোকসাহ (ভব্য-) নাবান্তবের ফলার্টে। (ক্বানরিংনা"৯০।০০) লোকসাহকুক্ত (कि) লোকের ফলার্টে ভারতিত।

(माक्नांवक (वि) मनरश्रहराती।

लाक्षणीयम् (जी) नावरणः । (गरितः अश्वः)ः जाक्षणिक् (वि) > व्यनिकाः श्वातंत्रकः। व नीवातः गृशैकः। लाकनीमां डियर्जिम् (बि) > नाशक्तं नीमात्र विकृष्णः २ जानोक्ति, जवाजादिकः।

লোকস্পার (পুং) > ব্রজ্জে। (ললিডবিজয়) (নি) ২ লাখাসংগ বাহাকে স্থান্ত বলিয়া প্রহণ করে।

লোকস্থল (মী) দৈনলিন বটনা ৷ (সুহুবাছলি **৩০৮**)

লোকন্থিতি (बी) > প্রচলিত শছতি। ২ জাগতিক নিরম।

লোকস্পৃৎ (ত্রি) লোকসনি। (তৈবিরীরসং গংগং৪১)

লোকস্মুৎ (জি) লগভের মলন অহধ্যানকারী।

"লোকস্থ পৃথিবীলোকস স্থা" (মৈতেরোপনিবদ্ ৩৩৫ ভাষ্য)
লোকস্থাত্ত (অ) ১ জনতের হাস্তাম্পদ। ২ নাধারণের উপহাস্য (ঘটনা বা বস্তু)।

লোকহিত (বি) লোকন্য হিডঃ। জনসমূহের মদন। মানবের হিতকর।

লোকাকাশ (প্ং) > আকাশ, শৃতহান। বৈনৰতে, জগডের অংশ বিশেষ, এইহান অমৃক জীবনকের বাসভূনি।

লোকান্ধি (পুং) আচার্যান্ডেন। মন্থ্যাহিতার এ১৬০ চীকার কুলুক্তট্ট ইহার উল্লেখ করিরাছেন।

লোকাহ্নি, দান্দিণাভ্যের কাঞ্চিপ্রনিবাসী চিত্রকৈত্ব পুত্র।
তিনি জ্ঞানোপার্জনের পর রাজধানী পরিত্যাগ করিয়া ইনিকে
আনিয়া বাস করেন। "মহাজনঃ বেন গড়ঃ স পছা" এই
নীতি বাক্য তাঁহার জীবনের মূল মন্ত্র ছিল। তিনি
একধানি জ্যোতিব, স্থতি ও তরুগ্রহ রচনা করিয়া বান।

[লৌগান্দি দেখ।]

লোকাক্ষিন, লৌগান্দির নামান্তর।[লৌগান্দি দেখ।]

লোকাচার (গং) লোকন্য আচার: । অনসমূহের আচার, নাধারণ নোকে যে আচার প্রতি অস্থ্যারে চলিরা থাকে,ভাহাকে লোকাচার কছে । অনেকস্থলে লোকাচার শাস্ত্রবং মান্ত ।

লোকাচার্য্য, অটাক্ষরমন্তব্যাখ্যা, ওক্ষর ও বচনভ্বপটাকা-প্রপেতা। লোকাচার্যাসভাত নামক বেলাত প্রভ্থানি ই হার রচিত বলিরা বোধ হয়।

লোকাতিপ (গ্রং) > অনামান্ত। ২ অভ্তত। ও নাধারণ নিরমের বহিছু ত।

লোকাভিশর (পুং) > লোকাভিগ। ২ নিজসাধ্য প্রথাবহিছ্ জ।
লোকাজুন্ (পুং) > লগভের আলা। ২ বিছু। (রামা- ১)৪৪/৩১)
লোকাদি (পুং) লগংস্টর আদিকর্জা। ব্রজা। (ভারত- ৭পর্জ)
লোকাদিপ (পুং) লোকস্য অধিপঃ। ১ লোকপাল। ২ রেবভঃ
নাব। ৩ নরপতি।

লোকাবিপতি (খং) > লোকনাজ। । ধ্ৰেকা। লোকানন্দ, কিয়াভাৰ্নীয়-টাকান্যবিকা।

XVII

লোকানু এছ (পুং) > জগদালন। ২ প্রজাবর্ণের উরতি। ৩ সাধারণের প্রতি অনুকল্পা।

লোকাসুরাগ (পু:) জনসাধারণের প্রতি জেহ বা দরা। লোকাস্তর (রী) জন্তৎ লোকং। পরলোক। জন্তলোক। (ভাগ- ৪।২৮।১৮)

লোকান্তরগ (ত্রি) লোকান্তরং যাতি গছতে বা লোকান্তর-গম-ড। ১ মৃত, লোকান্তরগত বা প্রাপ্ত। ২ লোকান্তরগামী। লোকান্তরিক (ত্রি) লোকান্তরর মধ্যে অবহানকারী।

লোকাপবাদ (পুং) লোকে অপবাদ:। জনাপবাদ, লোকনিন্দা।
'লোকাপবাদে ছনিৰ্বায়' (উত্তয়চ°)

লোকাভিভাবিন্ (ত্রি) সর্মব্যাপী (আলোক)।

লোকাভিভাষিত (গ্রি) > লগবাঞ্চিত। ২ বৃদ্ধভেদ।
 লোকাভুদয় (পুং) লোকসা অভাদয়। লোকসমূহের অভাদয়,

লোকাজ্যুদয় (পুং) লোকস্য অভ্যাদয়: । লোকসম্হের অভ্যাদয় অনসমূহের উনতি ।

লোকায়ত (ক্লী) লোকের আয়তং বিত্তীর্ণমিব। তর্কভেন। চাব কিলার। (অমর) শ্রীরেণেব হি মীমাংসা লোকে লোকায়তী কৃতা" (কুমারিলভট্ট)

লোকায়তন (পুং) > চার্কাক। যাহারা চার্কাকের নান্তিক্মত অন্তুসরণ করিয়া চলে।

লোকায়তিক (গং) লোকায়তং শাক্তমন্তাদ্যতি, লোকায়ত-ঠন্। চার্কাক।

"ঐকানামাত্মসংযোগসমবারবিশারদৈ: । লোকায়তিকমুখ্যৈত ও≌বু: অনমীরিতম্ ⊭"

(হরিবংশ ২৪৯।৩০)

২ বৌশ্বভেদ। ইঁহারা নাত্তিক লোকায়ত মতালুসারে চলেন, এইজন্ত ইহাদিগকে লোকায়তিক কছে। "নান্থ্যানং প্রমাণ-মিতি বদজা লোকায়তিকেন" (সাংগাতবকো •)

লোকায়ন (খং) নারারণ।

লোকালোক (পং) লোক্যতেহনৌ ইতি লোকং, ন লোক্যতে
হনৌ ইতি আলোকং ততঃ কর্মধাররং। স্থনামধাতি পর্বতবিশেষ। পর্যায়—চক্রবাড়। এই পর্বত সাদ্ধিবীপা পৃথিবীকে
বেষ্টন ক্রিয়া প্রাকারের স্তার অবস্থিত আছে। এই পর্বতের
কোন স্থলে প্র্যালোক পরিদুশ্রমান হয়, এইজন্ত লোক এবং
কোন স্থলে প্র্যালোক দেখিতে পাওয়া যায় না এই জন্ত অলোক;
অতএব প্র্যালোক দেখিতে পাওয়া যায় অথচ যায় না, এইজন্ত
লোকালোক নামে খ্যাত ইইয়াছে।

"নোহহমিল্যা বিভঙাত্বা প্রজালোপনিমীলিতঃ। প্রকাশভাপ্রকাশভ লোকালোক ইবাচনঃ ॥" (রবু ১)৬৮) এই পর্বতের বিষয় বেবীভাগবডে এইরূপ নিবিভ আহে—

क्रगवान् नात्रम्दक विनिधाहित्मन त्य, नात्रमः ! एक मागरतत्र हत्त्र লোকালোক নামে পর্বাত অবস্থিত। ঐ পর্বাত লোক (প্রকাশ-মান) ও অলোক (অপ্রকাশমান) এই উভর স্থানের বিভাগের *জন্ম* করিত হইয়াছে বলিয়া উহার নাম লোকালোক হইয়াছে। মানসোত্তর ও মেক উভরের মধ্যবত্তী সমল্য ভূভাগই স্থবর্ণময় ও দর্শণের স্থার নির্মাণ। ঐ স্থানে দেবতা ভিন্ন অস্ত প্রাণীর সমাগম নাই। ঐ স্থানে যে কিছু বস্তু স্থাপন করিলেই তাহা स्पर्व रहेया यात्र, এইজন্ম ঐन्हरन क्ल्यार ना। পরমেশ্বর ঐ পর্বাতকে তিন লোকের সীমাস্থানে রাথিয়াছেন, সূর্য্য প্রভৃতি ধ্রুবাবধি জ্যোতিমান্ গ্রহগণের কিরণসমূহ উহার অধীনেই চতুর্দিকে শোকত্রয়ে প্রকাশ পাইয়া থাকে। কদাচ উহাকে পশ্চাৎ করিয়া বাহির হইতে পারে না। এই পর্বত এত উচ্চ ও বিস্তৃত বে, গ্রহদিগের গতি ততদূর যার না। ঋষিগণ এই लाकालात्कत्र পরিমাণ এইরূপ নির্দেশ করিয়া থাকেন যে, পঞ্চাশৎ কোটি যোজন পরিমিত এই ভূমগুলের চতুর্থাংশ। আত্মযোনি ব্রহ্মা এই পর্ব্বতের উপরিভাগে চতুদিকে ঋষভ, পুস্চ্ড, বামন ও অপরাজিত নামে চারিটী দিগ্গজ স্থাপন করিয়াছেন, এই দিগ্গজ সকল সমগ্র জগৎ রক্ষা করিতেছে। ভগবান্ হরি এইস্থানে সকল লোকের মঙ্গলের জন্ম নিজাংশসম্ভূত দিক্পালদিগের বীর্ঘা, সত্তগুণ ও ঐশর্য্য বৃদ্ধি করিয়া বিম্বক-সেনাদি অমুচরগণের সহিত চতুত্ব মূর্ত্তিতে বিরাজিত আছেন। সনাতন বিষ্ণু নিষ্ক মায়ারচিত বিশ্বের রক্ষণ নিমিত্ত করাস্তকাল পর্যান্ত এই মৃর্ডিতে অবস্থিত থাকেন। (দেবীভাগ• ৮।১৪ অ•) লোকাবেক্ষণ (क्री) জগতের মন্ত্রদাধনার্থচিন্তা।

লোকিন্ (ত্রি) > লোকপ্রাপ্ত। ২ লোকপতি। ৩ স্বগছাদি-মাত্র, এই অর্থে কেবল বহবচনেই প্রয়োগ হইয়া থাকে।

লোকেশ (পু) লোকানামীশ:। > একা। (অমর) ২ বৃহতেদ। (একা•) ৩ পারদ। (রাজনি•) ৪ ইক্র।

"বথাচ ব্রত্তান্তমিমংসদোগতত্রিলোচনৈকাংশতরা হ্রাসন:। তথৈব সন্দেশহরাদিশাস্পতিঃ শূণোতি লোকেশ তথা বিধীয়তাং॥" (রত্ব ৩)৬৬)

ং লোকপাল। (মন্থ (১৯৭) (এি) ৬ লোকাধিপতি। (ভাগবত ৩)৬১১)

লোকেশকর, তব্দীপিকা বা ওন্ধবেধিনী নামী রামাশ্রমঞ্জ সিকান্তচন্ত্রিকার টকা-রচয়িতা। ক্রেমকরের পুত্র।

লোকেশপ্রভবাপ্যয় (ত্রি) লোকপালগণ হইতে উহুত এক তাহা হইতেই প্রতি নিহুত্ত।

লোকেশ্বর (গ্ং) লোকনামীশ্বঃ ৷ ১ বুছদেব ৷ (ত্রিকা °) ২ লোকের গ্রন্থ ৷ ৩ লোকপাল ৷ "গ্রহনক্ষত্রতারাভিকর্মচিত্রং নভন্তলম্। স্থরাষ্থ্রেতবিস্তানাং পতীন্ লোকেশ্বরান্ হরান্ ॥" (ভারত ৮।৩৪।২৯)

লোকেশ্বরাজ্মজা (ত্রী) লোকেশ্বরত্ত ব্ছক্ত আত্মজ্জের।
বৃদ্ধাক্তিভেদ। পর্যার—তারা, মহাত্রী, ওছার, আহা, ত্রী,
মনোরমা, তারিণী, জরা, অনস্তা, শিবা, থদ্রবাসিনী, জন্তা,
বৈশ্রা, নীলসরস্বতী, শন্থিনী, মহাতারা, বস্থারা, ধনন্দদা,
ব্রিলোচনা, লোচনা। (হেম)

লোকৈ স্থি (ব্ৰী) ইষ্টিভেদ। (আৰ° শ্ৰৌ° ২। ১০। ১৯) লোকৈ কবন্ধু (পুং) লোকানাং এক এব বন্ধ:। গোতম বৃদ্ধ বা শাকাম্নি।

লোকৈষণা (স্ত্রী) স্বর্গপ্রাপ্তির ইচ্ছা।

লোকোক্তি (ত্ৰী) প্ৰবাদ, কিংবদন্তী। প্ৰচলিত বাক্য।

লোকোন্তর (ত্রি) > অসামান্ত, অলোকিক। ২ আদর্শ পুরুষ। ও রাজা।

েলাকোত্তরবাদিন্ (পুং) বৌদ্ধসম্প্রদারভেদ।

লোকোদ্ধার (ক্লী) তীর্থভেদ। এই তীর্থ ত্রিলোকপুদ্ধিত, এই তীর্থে স্নান করিলে সীয় সকল লোক উদ্ধার হয়।

(ভারত ৩৬•৷১১ শ্লোক)

লোক্য (ত্রি) > লোকাধিত। ২ বিস্থৃতস্থানযুক্ত। ৩ যুদ্ধার্থ পরিষ্কৃত স্থানযুক্ত। ৪ জগদ্বাধি।

লোক্যতা (ন্ত্রী) শ্রেষ্ঠ লোক্প্রাপ্তি। (শতপথব্রা^ক ১০।তাহ।১৩)

লোগ (খং) > মৃৎপিও, লোষ্ট।

লোগাক (পুং) পণ্ডিতভেদ। [লোগাকি দেখ।]

লোক্সর (পারসী) নদী বা সমুদ্রক্ষে জাহার আটকাইয়া রাথিবার রুখ বড়শীর আকার লৌহশলাকাবিশেষ।

সোগেউকা (ন্ত্ৰি) মৃত্তিকানিশ্বিত ইষ্টকভেদ।

(শতপথব্রা° ৭।৩।১।১৩)

লোচ, > ঈক্ষণ, দর্শন। দীপ্তি। ভাদি আয়নে সক সেই।
দীপ্তার্থে চুরাদি পরকৈ অক সেই। লই লোচতে। লিইদুলোচে। লুই-লোচিতা। লুঙ্ অলোচিই, অলোচিবাতাং
অলোচিবত। সন্ শুলোচিবতে। যঙ্লোলোচাতে। চুরাদিপকে
লই লোচরতি। লুঙ্ অনুলোচং। আ+লোচ = আলোচন।
লোচ (ক্লী) লোচাতে পর্যালোচরতি ক্থত্ঃখাদিক্মিতি
লোচ-সহ্। অক। (ক্লীগর)

লোচক (পুং) লোচতে ইতি লোচ-গুল্। > মাংসপিও।

' ২ অভিভারকা। ৩ কজন। ৪ ব্রীদিগের নলাটাভরণ।

৫ কংলী। ৬ নীলবন্তা। ৭ নির্ক্তি। ৮ কর্ণপূর। ১ বুর্বী।

১০ ক্রাবচর্বা। (মাধিনী) >> নির্বোক্। (শব্দর্মা)

লোচন (ক্লী) লোচ্যতেখনেনেতি লোচ-লুটে। চকুঃ।
গক্ষপুরাণে লিখিত আছে,—বক্রান্ত ও পদ্মাত লোচন হইলে
স্থা, বিড়ালের স্তায় চকু হইলে পালী, মধুণিক্লবর্ণ হইলে মহাশর,
কেকরাক্ষ (টেরা) হইলে ক্রুর, হরিণের স্তায় হইলে পালী,
কুটিল হইলে ক্রুর, গলচকু হইলে সেনাপতি, গভীর লোচন
হইলে প্রস্কু, স্থলচকু হইলে মন্ত্রী, নীলোংপলাক হইলে বিহান্,
স্তাবচকু হইলে সোভাগ্যশালী, রক্ষভারকাবিশিষ্ট হইলে চকুর
উৎপাটক, মণ্ডলাক্ষ হইলে পালী ও দীর্ঘলোচন হইলে নিঃব
হইয়া থাকে।

"বক্রান্তৈঃ পল্পত্রান্তৈলে চিনেঃ স্থভাগিনঃ।
মাজ্জারলোচনৈঃ পাপো মহাত্মা মধুপিললৈঃ॥
ক্রাঃ কেকরনেত্রান্ত হরিণাক্ষাঃ স করারাঃ।
জিক্ষৈত লোচনৈঃ ক্রাঃ সেনান্তোগজলোচনাঃ॥
গভীরাক্ষা ঈশবাঃ স্থমন্তিণঃ ভ্লচক্রঃ।
নীলোৎপলাক্ষা বিহাংসঃ নৌভাগাং ভাবচক্রাম্॥
ভাৎ কৃষ্ণতারকাক্ষাণামক্রামূৎপাটনঃ কিল।
মণ্ডলাক্ষান্ত পাপাঃস্থা নিহিনাঃ স্থাদার্ঘলোচনাঃ॥"

(গরুড়পু° ৬৫ অ°)

২ জীরক। (বৈছক্নি°) ৩ গ্রাক্ষ। (বাভট উ° ৩৯ অ°)
লোচনগোচর (প্রং) দৃষ্টিপথ। দিঘলয়। (বি.) দৃষ্টি-

পথারত।
লোচনকার (গং) লোচন নামক প্রসিদ্ধ অলভারপ্রণেতা।
সাহিত্যদর্পণে (২২। ১৫) ইহার নাম উল্লেখ আছে। অনেকে
ইহাকে অভিনবগুপ্ত বলিয়া মনে করেন।

লোচনপথ (পুং) লোচনত পছা:। নেত্রপথ, দৃষ্টিমার্গ।
লোচনপুর, বালালার বালের জেলার অন্তর্গত একটা বলর।
কাঁসবাল নদীতীরে অবস্থিত। বর্ত্তমান কালে নদীর মোক্ষনা
পলিময় চরে পূর্ণ হওয়ার ঐ নগরের চারি পার্য একণে জললাবৃত হইয়া পড়িরাছে। ৪৫ টনের অধিক বোঝাই লইয়া
নৌকাদি এই নদীবক্ষে এখন আর ভাসিয়া ঘাইতে পারে না;
স্থতরাং কুল্র পোতসমূহে মাল লইয়া অদ্রে সমুদ্রবক্ষে রাখিয়া
আসিতে হয়। চাউল ও অত্যান্ত শতাদি অপেক্ষাকৃত বৃহৎ
নৌকায় বোঝাই হয়। ভাঁটার সময় জল সরিয়া গোলে
বড় নৌকাগুলি কাদার পলির উপর আটকাইয়া থাকে।
স্থতরাং সমুদ্রোপক্লবন্তী রড়ে তাহাদের বিশেষ ক্ষতি ক্রিছে
পারে না। ইহার পার্যে চুড়ামণ নামক বন্দর অবস্থিত।
নদীর মোহানা ভরিয়া উঠার ক্রমণঃ বাণিজ্যের ক্ষতি
হইতেছে।

লোচনহিত (অ) চকুর হিতকর (অঞ্নাদি)।

লোচনহিন্তা (বা) লোচনাজ্যাং হিন্তা। তৃথাক্স। লোচনা (বা) গোচতে পৰ্ব্যালোচনতীতি গোচ-গ্যু-টাপ্। গোচনা, বৃহশক্তিকে। (বেম):

লোচনাৰর (প্:) লোচনবোরাননঃ। চক্রোগবিশেব, পর্যার অভিনত্ন। (জিকা") [চক্রোগ শব্বেখ]

লোচনা (খী) লোচাভেধনো লোচ-দুটে, তীপ্। বহাপ্রাবদিকা, চলিড দুভিন্নী। (রাজনি*)

লোচনোৎস (রী) নগরভেব। (রাজভর' ৪। ৬৭২) ইহার অপর নাম সরণোৎস।

লোচমর্কট (গং) গোচমতক। (খনরটাকার খামী)

লোচমন্তক (পুং) লোচং দৃশ্তং মন্তকং মনুরণিথেব বহা।
মনুরণিথোবং, চলিত ক্তকটা, কাহারও কাহার মতে ক্তেত্রবমানী। পর্যার ধরাষা, কারবী, দীপ্য, মনুর, লোচমর্কট।
(জমর) ২ জনমোলা। (ভাব-প্রং)

লোচিকা (খ্ৰী) থাকজবাৰিশেৰ, নুচি, ধৰি ও ছাত হারা মাৰ্দ্দত এবং উন্দোদকের সহিত দলিত ও মগুলা গারে নিশ্বিত ছাতহার। ফুঠসমিতা। (পাক্রাকেবর)

লোট, উনাদ। জাদি পরত্ম- অক- সেট্। লট্লোটভি। পুত, অলোটাং। পিচ্লোটয়ভি। পুত, অস্লোটং।

লোট, পাণিয়্যক বিজ্ঞজিকে। গোটের বিভক্তি বথা—তুপ্,
তাম, জন্ত। হি জং ত। আনি আব আম। তাং আতাং
আতাং। স্থ আথাং ধবং। ঐপ অবহৈণ্ আমহৈণ্। এই
১৮টা বিজ্ঞজি, ইহার পূর্বেজি ১টা গরদৈশন এবং শেবোজ
১টা আন্মনেপদ। ঐ সকল বিভক্তি প্রথমপ্কন, মধ্যমপ্রকর ও
উত্তম প্রকর্ভেদে ভিন প্রকার। অম্ব্রজ্ঞা ও আশীর্বালার্থে
লোট্ প্রয়োগ হর। [ধাতুশক দেখ]

লোটন (রী) ইতত্তঃ চালন। ধ্লার সৃষ্টিত হওন। লোটনপারর। (বেশক) পারাবজ্জের, ইহাদের যাথা নাড়িরা বাটিতে ছাড়িরা বিলে পুনঃ পুনঃ ডিগ্রাকী ধাইতে থাকে।

লোটা (ত্ৰী) চুকাপালং শাৰ।

লোটা (দেশৰ)> গড়াগড়ি। (হিনী) ২ ঘট, অলগানপাত্র। লোটান (দেশৰ) > বলপুর্নক দুটিত করান। ২ দুর্চন। লোটা (দেশৰ) স্কেকার্ড গোলক, জীড়ানামগ্রী।

लां हिका (बी) ह्यां नामरनाय।

লোটুল (পুং) লোটজীতি গোট বাহলকাৎ উন্চ্। অভি-গোটক। (সংক্ষিয়ার উনা⁶)

লোঠক, ছইজন কৰি। > উপালের প্রা: ২ জারাখাবের প্র:। লোড়, উন্নার: জ্বারি পরশৈ অব্ন নেট্: লট্ লোড়ভি। লঙ্ অলোড়ীং: বিচ্বোড়রভি: পৃঙ্ অনুবোড়ং। লোড়ন (ক্লী) ইতত্তঃ চালন, চালা, ৰোটা ৷ (মাধননি°) লোড়া (দেশৰ) ২ প্ৰস্তৱখন্ত ৷ লোড়া (দেশৰ) বহুজেন (Phyllanthus longifolism)

লোড়ী (কেশৰ) বৃক্ষভেদ (Phyllanthus longifolius) লোণক (দী) লবণ। (বৈশ্বস্থানিক)

লোণভূপ (জী) লোগং লবগরসমূক্তং ভূগং। লবগভূপ। (রাজনি°) জোগা (জী) লবগমন্তাতা ইন্দ্রি অচ্-টাশ্। গুৰোধরাদিখাং সাধুঃ। ১ ক্লায়িকা।

"লোণা লোণী তু কথিতা বৃহল্লোৰী তু ঘোটিকা।" (ভাৰঞে)
২ চালেরী, আমরলশাক। লোণিকাকা, ছোটদুণী ও
বড়দুণী। (রাজনি)

লোপা (দেশজ) লবণাক্ত লবণযুক্ত।

লোণাশুটি (দেশজ) কুপবিশেষ (Solanum pubescens)
লোণামাছ (দেশজ) > লোণাজনে বে মাছ জন্মে, ভাহাকে
লোণামাছ কৰে। ২ ইলিলাদি মংশু। সৰণ মধ্যে জরাইয়া
বে মংশু রক্ষিত হয়, ভাহাকেই সাধারণতঃ লোণামাছ
বিলিয়া থাকে।

লোণান্না (ত্রী) ক্রান্নিকা, খুদেনুনী। (রাজনি॰)
লোণার (ক্রী) লবণং অজ্জীতি লবণ-অ-অণ্, পুবোদরাদিখাৎ
সাধু:। কারবিশেব, পর্যার লবণোখ, লবণাকরজ, লবণমদ,
জলজ, লবণকার, লবণ। গুণ--অভ্যুক্ষ তীক্ষ, পিন্তবৃদ্ধিকারক,
ঈবল্লবণ ও বাতগুলাদিশ্লনাশক। (রাজনি॰)

লোণার, মধ্যভারতের বেরার বিভাগের বৃশধানা জেলার অন্ত-গত একটা নগর। অক্ষা ১৯°৫৮/৫০ উ° এবং দ্রাঘি ৭৬° ৩০ পৃঃ। এধানকার অধিবাদিগণের মধ্যে ব্রাক্ষণের সংখ্যাই অধিক।

এই হান অতি প্রাচীন। পর্বতের ক্রমনির্মেক্ত পাদমূলে অবহিত। এখানে লোণার নামক লবণ-জলপূর্ণ একটী ব্রদ্ আছে। কিংবদত্তী আছে বে, ঐ হুদগর্তে দানবপ্রেষ্ঠ লবণাস্থ্র বাস করিত। গোলোকবিহারী বিষ্ণু স্থলর বাগকের রূপ ধরিরা ধরার অবতীর্ণ হন। বাসকের মোহনরপে মুশ্র হইরাছিল। পরে বিক্রুর মোহলালে জড়িত হইরা, তাহারা বিক্রুর নিকট প্রাতার নিভ্ত নিকেতনের সন্থান বলিয়া দের। তথন বিষ্ণু পাসম্পর্ণে সেই গুপ্ত বাসভ্তনের আবরণ প্রভার উন্থোচন করিয়া ভূতনে প্রবেশপূর্ণক গৃহমধ্যে নিজিত লবণাত্ররকেনিহত করেন। বিষ্ণু কর্ত্বক লবণাত্রর নিহত হইলে সেই ভূপ্তেই তাহার সমানি হর এবং তাহার রক্তে ঐ পর্ব পূর্ণ হইরা। এবনও হানীর লোকে লোপার ক্রমের লবণাত্ত জন্মক ক্রমান্তরর রক্ত এবং বিষ্ণুপাসম্পর্ণ প্রিত্র ব্যবিষ্কা জন্মক ক্রমান্তরের রক্ত এবং বিষ্ণুপাসম্পর্ণ প্রিত্র ব্যবিষ্কা জন্মক

ক্রিয়া থাকে। নিক্টবর্ত্তী ধাকেরাল নামক স্থানে একটা গগুলৈল আছে। উহার বিভৃতি ও লোগান্তদের বেড় প্রার সমান। লোকে ঐ শৈলকে লবগাস্থর-ভবনের আচ্ছাদনপ্রস্তর বলিরা মনে করে। বিফুকর্ড্ব ঐ প্রস্তর পাদাস্থল ম্পর্শে উৎক্ষিপ্ত হইরা এথানে নিক্ষিপ্ত হইরাছিল।

এই ব্রুদের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য বড়ই মনোরম, ইহার চারিদিকে বৃত্তাকারে ৪০০ ফিট্ উচ্চ পর্কতসাত্ম বিরাজিত। এই
সাগ্রদেশে অসংখ্য মন্দির ও কীর্তিক্তম ধ্বংসাবস্থার পতিত
রহিয়াছে, এখন সে সম্দার প্রার জললে আবৃত। উহার
উপরের পাড়ের পরিধি প্রার ৫ মাইল এবং জলের সমীপবর্ত্তী
স্থানের পরিধি প্রার ০ মাইল। এতদ্ভির পাড়ের খাড়াইএর কোণ
৭৫০ হইতে ৮০০। ব্রুদের গভীরতা ও তাহার ঢালু পাড়ের
অবস্থা পর্য্যবেক্ষণ করিয়া ভূতত্ববিদ্গণ বলিরা থাকেন বে, উহা
এক সময়ে কোন আগ্রেমগিরির মুখ ছিল। পার্থবর্ত্তী পর্কত্তের
প্রস্তর্বাশি আজিও তাহার সাক্ষ্য দিতেছে। ঐ ঢালু পাড়ভূমি
বনসমাকীর্ণ হইলেও, স্তর্বিশেষে বিভিন্ন জাতীর বৃক্ষ উৎপন্ন
হওয়ার উহার সৌন্দর্য্য আরও চিন্তাকর্ষক হইয়াছে। সর্ক্ষিক্তরে
প্রার ৬০০ গল বিভূত বেইনী মধ্যে কেবল তেঁতুল ও
বাব্লা গাছের সার দেখা যায়। তাহার উপরে সেগুণ গাছের
বন, মধ্যে মধ্যে অস্তান্ত গাছও আছে।

ব্রদের দক্ষিণস্থ পর্বতপৃঠে একটা ক্ষুদ্র গর্ত্ত বা প্রপ্রবণ আছে।
ঐ স্থান হইতে নিবন্তর স্থামিষ্ট জলরালি উল্পাত হইরা প্রোতোবেগে হ্রদগর্ডে আসিরা পড়িতেছে। ঐ প্রপ্রবণের সম্মৃথে একটা
মন্দির আছে।

হুদের ঢালু দেশের বনপ্রদেশ ও জলগর্জের মধাবর্ত্তী স্থানে

একটা বিস্তৃত কর্দমাক্ত ভূমিভাগ দৃষ্ট হয়। বর্ষাঞ্জুতে উহা দ্র
জলমগ্র হইরা যার,কিন্তু অপর সমরে জল শুকাইয়া বা সরিয়া গেলে
চতুম্পার্দ্ধেই একটা বিস্তাপ ক্ষেত্র পভিত থাকে, উহাতে কথনও
কোন শহ্যানি উৎপর হয় না। হুদের জল লবণমিপ্রিত থাকায়

ঐ কর্দমাক্ত ক্ষেত্রও লবণরস্থিক হইরা থাকে। এই জায়্য
সামাক্ত শুকাইয়া আদিলে উহা সাদা দেখায়। তখন ঐ
মৃত্তিকা হইতে লবণ সংগ্রহ করা হইয়া থাকে। তথাকার লবণে
শতকরা ৩৮ ভাগ অস্থারায়, ৪০ ৯ কায় (Soda), ২০ ৩ জল
ও ০ ৫ কঠিন পদার্থ এবং সামান্ত মাত্রার সল্ফেট পাওয়া
য়ায়। এই ক্ষার সাবান প্রন্তুত কার্যেই ব্যবস্থত হয়।
লোণিকা (ত্রী) লোণীশাক, খ্লেলুণী, বনলুণী। (পর্যায়মুণ্)
২ চাঙ্গেরী, আবঙ্গন। ৩ চক্রিকা, চুকাপালং। (বৈজ্বকিণি)
লোণিতক, একজন প্রধান কবি। ইহার অপর নাম লোঠিতক।
লোণী (ত্রী) গত্রশাক্ষিনের, (Portulaca quadrifida)

वफ़ वा वन नृती, शूलनृती। हिसी-नृतित्रानाक वा नृतित्रा, मुक्का, देखनक-- शहेनकूत्र, तरब--कूर्का, खामिन-- स्वातिनकीतहे । हेहा ছर अकात कृष ७ तृहर । कृत्यत थन-कृष्क, शक्, बाजाबाहत, অর্শেছ, দীপন, অম ও মন্দায়িনাশক। বৃহত্তের ওণ--- অম্ব উঞ্চ, বাতবৰ্ত্তক, কফপিন্তনাশক, বাগ্লোহনাশক, ব্ৰণ, গুৰু, খাস, কাস ও প্রমেহনাশক, শোধনাশক এবং নেত্রেরাগে হিতকর। লোণী, বুক্ত প্রদেশের মিরাট জেলার গাজিয়াবাদ ভহসীলের অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর। এখন জীত্রই ও জনশৃত্র হইরা পড়িয়াছে। দিলীখর পৃথীরাজের প্রতিষ্ঠিত একটা প্রাচীন ছর্গের ভগ্নাবশেষ অভাপিও সেই কীর্ত্তিশ্বতি বহন করিতেছে। মোগলসমাটিগণ মুগরার বহির্গত হইরা প্রারই এখানে আসিতেন। তাঁহাদের প্রামান শ্রীহীন অবস্থার পতিত রহিরাছে। ১৭৮৯ वृष्टीत्म मुखारे मरुवारभाव अथात्म अकरी छेशवन अ शीर्वकी शांभन कतान। धे नीर्थिका ७ छेभराम जन जानाहेबात जन প্রথমে তাঁহারই উত্তোগে পূর্ব্ধ-বমুনা-খাল কাটা হইলাছিল। বাছাছর শাহের মহিধী জিনাৎ মহল উলদীপুরে প্রাচীর-পরিবেটিত ও প্রবেশ্বারাদি-পরিশোভিত একটা স্থন্মর উভান নির্মাণ করাইরাছিলেন। উহার মধ্যে উজ্জল লোহিতবর্ণ প্রশুরনির্শ্বিত গুৰেন্দোভিত প্ৰসিদ্ধ বারদোয়ারী বিভয়ান। এভত্তির ভথার মোগল-রাজবংশধরগণের আরও অসংথাকীর্ত্তি পরিলক্ষিত চটনা থাকে। সিপাহী যুদ্ধের পর ইংরাজরাজ এই নগর মোগলাধিকার হইতে কাড়িয়া লন। এই স্থান এখন সৌন্দর্যাহীন।

লোতি, (পুং ফ্লী) দুনাতীতি লু (হিসম্গ্রিণিতি। উপা° আচ৬) ইতি তন্। ১ ভেরধন। ২ কোপু, কোত্র, দুস্প। ৩ নেত্রাষ্। ৪ চিহ্ন। ৫ লবণ। ৬ অশ্রপাত।

লোত্র (ক্নী) লুনাতীতি লু-(সর্বধাত্ভাইন্। উণ্ ৪। ১৫৮) ইতি ইন, যবা লা (অনিত্রাদিভা ইত্রোত্রো। উণ্ ৪। ১৭২) ইতি উত্ত। লোভ, নেত্রজন।

লোদী, প্রাচীন রাজবংশভেদ। ২ দিলীর অনামপ্রসিদ্ধ সুসল-মান রাজবংশ। [ভারতবর্ধ দেখ।]

লোধ (পুং) রূধ-অচ্, রক্ত লঃ। স্থানখ্যাত বৃক্ষ। লোধরান্, পরাবপ্রদেশের মূলতান জেলার অন্তর্গত একটা তহলীল। অক্ষা ২৯°২১ ৪৫ হইতে ২৯°২৯ ৪৮ উ: এবং স্রাঘি ৭১°৪ হিটতে ৭১°৫১ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ৭৮১ বর্গমাইল।

এই দেশভাগ শতক্রনদীকুলে অবহিত। অধিকাংশ ছান্ই পর্কত ও বালুকামর হওরার এখানে শতাদি উৎপাদনের বিশেষ স্বিধা নাই। গম, জ্বার, বজুরা, তুলা, বব ও নীল এখান-কার প্রধান পণ্য প্রবা। লোধরান্ নগরে একজন ভব্নীল্যার থাকেন। তিনি এখানকার দেওয়ানী ও কৌজলারী বিভাগের লোধিকা

এই ভহনীলে সর্বসমেত ১৭৯টা নগর विष्ठांत्र करत्रम । ও গ্ৰাম আছে।

লোধা, ঠণী দক্ষ্যশন্তানালের মুসলমানবিভাগের একটা শাখা। ইহারা অবোধ্যার মুসলমান ঠনীবংশসমূত্রত। নেপালের তরাই व्यानान ७ व्यावाधात नीमान व्यानान देशानत वान व्याह ।

लाधि. क्वियोवी हिन्तू चाणिविरनव। मधाणात्रक, व्यक्तवान ७ ভরতপুরের সমীপবন্তী স্থানে ইহাদের বাস দেখা যার। আচার ব্যবহার ও সামাজিক প্রথার ইহারা কুর্মী জাতির অনুরূপ। এফ সময়ে ইহারা অব্যলপুর ও সাগর জেলায় বিশেষ প্রতিপত্তি বিস্তার করিরাছিল। সম্ভবত: ইহারা খুটীর ১৬শ শতান্দে বুন্দেলথণ্ড হইতে মধ্যভারতে আসিরা বাস করে। তৎপরে কুৰ্মীরা অন্তুমান ১৬২০ পুরীকে দোয়াব হইতে তদ্দেশে গমন ক্ষরিয়াছিল। মহারাষ্ট্রদেশে এই কারণে উত্তরভারতের লোধিরা 'লোধি পরদেশী' নামে কথিত। তথার ইহারা রাখাল ও ঘরামীর कार्या कतित्रा शास्त्र।

हेशता नृहकात्र, वनिष्ठं ও कर्षाठे । इधिकाट्या कूर्यीपिटगत्र তুলা; কিন্তু তাহাদের স্থায় শান্তিপ্রিয় নহে। ইহারা দান্তিক, অত্যাচারী, পরস্বাপহরণপ্রিয় ও প্রতিহিংসাপরায়ণ। সন্নিহিত প্রদেশে ক্লবিকার্য্য ব্যতীত ইহারা দম্যুর স্তায় অপরের व्यर्थ मुर्फन कतिया व्याचामा९ करत । विद्यारहत्र म्हा प्रिल्म नक्वात्ध विद्धाहि-मत्न त्यांग मित्रा जाभनात्मत्र व्यर्थाभट्तगण्युहा চরিতার্থ করিয়া থাকে। মৃগয়ার ইহারা বিশেষ পটু। ইহাদের অবার্থ লক্ষ্য হইতে দুরত্ব শিকার পরিত্রাণ লাভ করিতে পারে ना। जीत्र व्यथवा बमुक-ठाननाम् हेहाता विश्नव कि श्रह्य। এই কারণে ইহারা সর্বতোভাবে সৈনিকের কার্য্য করিবার উপ-বৃক্ত। দক্ষিণভারতে এই জাতীয়ের অনেকেই সৈনিকর্ত্তি व्यवनयम कतियाद्य ।

इंहारमूत्र मर्था वहविवाह ७ विश्वविवाह धार्मण प्रारह। বিবাহিত বিধবা পদ্মী ও শাস্ত্রমতে পরিণীতা ভার্যার কোনরূপ পাৰ্থক্য নাই। সাগাই মতে বিবাহিতা বিধবা অঞ্জাতীয় না হইলে স্বামী গ্রহণ করিতে পারে না। অধিকাংশ স্থলে বছ দুরসম্পর্কীর इंडेरन्छ विधवाभग रमवत्रक विवाह कतित्रा थारक। धरेक्ररभ বিবাহিতা পদ্মীর সন্তানাদির পিডুসম্পত্তিও যেরপ অধিকার, অন্নিসাক্ষাতে পরিশ্বীতা পদ্ধীর প্রগণেরও সেইরূপ সমান অধিকার।

লোধিকা, বোষাই প্রেসিডেন্সীর কাঠিয়াবাড় বিভাগের হরার আৰুছিত একটা কুদ্ৰ সামস্তবাজা। এই সম্পত্তি এখন হই স্পংশে বিভক্ত হইরাছে। উক্ত উভর সামস্তরাজকাশের মোট ভার २६ हाबात ठाका, छन्नत्श हरताबताब्राक्टक वार्विक ১২৮१ छ **জু**নাগড়ের নবাবকে ৪০**৫**্ টাকা কর দিতে হয়। লোধিকা গ্রাম রাজকোট হইতে >৫ মাইল ও গোগুল হইতে >৫ মাইল উত্তরপশ্চিমে অবন্ধিত।

লোধিখেরা, মধ্যভারতের ছিন্দবাড়া জেলার সৌসর তহসীলের অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা • ২১°৩৫ উ: এবং দ্রাঘি • ৯৮° ৫৪ পৃ:। মিউনিসিপালিটী থাকার নগরে রাজকীর সমৃদ্ধির অভাব নাই। স্থানীয় শিরের মধ্যে উৎকৃষ্ট পিত্তলের বাসন ও ভামার হাঁড়ি পাওয়া বায়। এতত্তির এথানে এক প্রকার মোটা কাপড় প্রস্তুত হইরা থাকে। নিকটবর্ত্তী স্থানবাসীরা উহা পরিধানার্থ ক্রের করিয়া থাকে।

লোধ্ (পুং) রুণদ্ধীতি রুধ-বাছলকাৎ রন্ রক্ত লছম্। লোধবৃক্ষ। (Symplocos racemosa) লোধকাঠ। হিন্দী—লোধ, ভৈলন-তেল্ললোট্রগচেট্র, গর্জ, লোদর, লোদ,গ। মহারাষ্ট্র—হরা। সংস্কৃত পর্যায়—গালব, শাবর, তিরীট, তিব, মার্জ্জন, এই ৬টা খেত লোগ্রের পর্য্যায়। রক্ত লোগ্রের পর্য্যায়—লোগ্র, ভিল্লভক্ত, • তিবক, কান্তকীলক, হেমপুষ্পক, ভিন্নী, শাবরক। ইহার গুণ ক্ষায়, শীতল, বাভ, ক্ষ ও অন্ত্রনাশক, চকুর হিতক্র, বিষ-नामक। (त्राव्यनि°)

এই বৃক্ষ নেপাল ও কুমায়ুনের পার্বত্যপ্রদেশে, কোটার জন্তল, বাঙ্গালার সমতলক্ষেত্রে বিশেষতঃ মেদিনীপুর ও বর্জমান **জেলা**য় এবং বোষাই প্রেসিডেন্সীর ঘাট পর্ব্বতমালার অত্যুক্ত জঙ্গল মধ্যে এই বৃক্ষ জনিতে দেখা যায়। এই কুল বৃক্ষ ১০ হইতে ১২ ফিট পর্যান্ত উচ্চ হয় এবং শুঁড়ির পরিধি ২০ ইঞ্চির অধিক হয় না। ইহার কাঠ দৃঢ়, খেত বা ঈবৎ হরিদ্রাভ। ইহাতে উৎকৃষ্ট থোদাই হইতে পারে।

লোধ গাছের শিকড়ের ছাল হইতে এক প্রকার লাল রঙ্ পাওয়া যার। তৈল, বন্ধও অক্তান্ত দ্রব্য রঙ ক্রিতে ইহার বছল ব্যবহার আছে। ঐ শিক্ড এখানে সাধারণত: প্রতি টাকার /৪ সের মাত্র বিক্রীত হয়। শিকড় চূর্ণ করিয়া আবীর প্রস্তুত হয়। হিন্দুমাত্রেই দোলপর্ব্বে ঐ ফাপ ব্যবহার করিয়া থাকে। [আবীর দেখ।]

উত্তেজক, বলকর ও রেচকাদি গুণযুক্ত হওরার বৈশ্বকে এই ভেষজের যথেষ্ট ব্যবহার দেখা যায়।

লোপ্তক্ৰক্ (পুং) লোভ এৰ লোভক স এৰ বৃক্ষ:। লোধ। লোধপুষ্প (পুং) মধ্কর্ক, চলিত মউল গাছ। (বৈছকনি°) লোধ পুষ্পক (গুং) শালিধান্তবিশেষ। (ভাৰঞ)

লোধ পুষ্পিণী (ত্রী) ছখগাতকী, কুজ গাইস্ক। (বৈদ্যকনি°) लानाता, पाराशा व्यास्तात शासीहे स्वनात अवर्गक अकी, নগর। আর দার্ঘলিতার পূর্বে নিকুত্বগণ মুহুমড়ী হইতে দক্ষিণাভিমুখে আসিরা এই ছানের আধিম অধিবাসী কামান্গার-দিগকে বিভাড়িত করিরা আপনারা এই নগর অধিকার পূর্বক বাস করে। এখনও নিকুস্তগণ এই ছানের স্থাধি-কারী রহিরাছে।

লোনেলী, বোদাই প্রেসিডেন্সীর পুণাজেলার অন্তর্গত একটা নগর। ভোর গিরিসকটের সর্কোচ্চ ছানে অবস্থিত। গ্রেট-ইভিরান্ পেনিন্স্লার রেলপথের দক্ষিণপূর্ব শাধার মধ্যে ইহা একটা প্রধান স্থান। এধানে রেলকোল্পানীর কারধানা থাকার বহু রুরোপীর ও দেশীর লোকের বাস হইরাছে। নগরের ২ মাইল দক্ষিণে রেলকোল্পানীর একটা স্থলর গাধনীকরা বাধ আছে। ঐ বাধের জল নগরবাসীর গৃহে গৃহে পরিচালিত হইরা থাকে। এধানে অনেকগুলি স্থলর অট্টালিকা, প্রোটেপ্তান্ট ও রোমান্ কাথলিক ধর্মমন্দির, মেসনিক লজ, রেলওয়ে স্কুল, কো-অপারেটিভ প্রোর প্রভৃতি বিভ্যমান দেখা যার। নগর পার্ষে একটা স্থলর বন আছে।

লোপ (পুং) লুপ-ঘঞ্। ১ ছেদ। ২ আকুলীভাব। ৩ অভাব। "নোহহমিক্সা বিশুদ্ধাম্মা প্রকালোপনিমীলিতঃ।

প্ৰকাশশ্চাপ্ৰকাশশ্চ লোকালোক ইবাচল: ॥" (রঘু ১١৬৮)

ব্যাকরণমতে বর্ণনাল, যাহাতে বর্ণের লোপ অর্থাৎ নাল

हम् । जकन विधि अटलका लालविधि वनवान्।

"সকলেভাা বিধিভাঃ স্থাদলী লোপবিধিতথা। লোপস্বরাদেশয়োক্ত স্বরাদেশো বিধিব'লী ॥" (হুর্গাদাস)

লোপক (ত্রি) নাশকারী, বিশ্বকারী।

লোপন (ক্লী) नूপ-मृष्ट् । নাশন।

"কন্তারা দ্বণঞৈব বার্ক্রাং ব্রতলোপনম্। ভড়াগারামদারাণামপতান্ত চ বিক্রবঃ ॥" (মহু ১১।৬২)

লোপাক (পুং) লোপং শীষ্ত্রমদর্শনমকতি প্রাপ্নোতীতি অক-অণ্। শৃগাল ভেদ। চলিত লেয়ে, খ্যাক্শিয়াল, ইহাকে লাললকমুগও কহে। (ত্রিকা°)

লোপাপক (পুং) লোপং ক্রতমদর্শনং আপ্রোতীতি আপ-গুল্। শৃগাল ভেদ। (শন্মালা)

লোপাপিকা (ত্রী) লোণাপক-ত্রিরাং টাপ্, অত ইন্ধং।

नৃগালী। (শব্দালা)

লোপামুদ্রা (স্ত্রী) লোপরতি যোবিতাং রূপাভিধানমিতি লোপা পচান্থপ, আমুদ্ররতি অই: ক্ষ্টিমিতি আ-মূদ্রা-অণ্, ততঃ কর্মধাররঃ, কিংবা ন মূলং রাতি অমুদ্রা পতিওশ্রবায়া লোপে অমুদ্রা। অগন্তামুনির পত্নী।

শ্বভিতে নিখিত আছে বে, ভাত্রমানের শেষ ভিন দিনে অগন্তাকে ও তৎপরে নোপায়ক্রাকে অর্থ দিতে হয়। "অপ্রাথে ভাররে কল্পাং শেবভূতৈরিভির্দিনৈঃ ॥

আহাং দহ্যরগন্ত্যার গোড়দেশনিবাসিনঃ ॥" (মলমাস্তর)

এই আহা দক্ষিণদিকে শথে জল রাথিরা বেতপুশা, অক্ষত
ও চন্দনাদি রচনা করিরা নিয়াক্ত মন্ত্রপাঠপূর্বক দিতে হর ।

"শথে তোরং বিনিক্ষিপা সিতপুশাক্ষতৈর্য তম্ ॥

মত্ত্রেণানেন বৈ দজাদ্দক্ষিণাশামুপস্থিতঃ ॥"

অর্থানেনমন্ত্র—

"কাশপুশাপ্রতীকাশ অগ্রিমাক্ষতসম্ভব ।

মিত্রাবরুণরোঃ পুত্র কুম্ভবোনে নমোহন্ত তে ॥"

প্রার্থনামন্ত্র—

"আতাশির্ভক্ষিতো যেন বাতাপিশ্চ মহাস্তরঃ ।

সমুদ্রং শোবিতো বেন স মেহগন্তাঃ প্রসীদ তু ॥"

লোপামুদ্রার অর্থাদানের মন্ত্র—

"লোপামুদ্র মহাভাগে রাজপুত্রি পতিব্রতে ।

গৃহাণার্যাং মরা দক্তং মৈত্রাবরুণিবরুতে ।" (মলমাস্তর)

মহাভারতে লোপামুদ্রার জন্মাদির বিবরণ এইরূপ লিখিত আছে। মহর্ষি অগন্তা একদা তাঁহার পিতৃগণকে এক বিবর মধ্যে লম্মান দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন যে, আপনারা কি জন্ম এইখানে অতিকটে এরূপ ভাবে অবস্থান করিতেছেন, তাহাতে তাঁহারা বলিয়াছিলেন যে, পুত্র অগস্তা! তুমি পুত্র উৎপাদন করিয়া আমাদের এই নিরব হইতে উদ্ধার কর, ইহাতে তোমারও মঙ্গল হইবে। তথন অগন্তা তাঁহাদিগকে কহিলেন, আমি আপনাদের এই অভিলাব পূর্ণ করিব। তৎপরে অগন্ত্য আপনি পুত্ররূপে জন্ম গ্রহণ করিবেন স্থির করিলেন, কিন্তু মনোমত কন্তা দেখিতে পাইলেন না। পরে তিনি মনে মনে বিবেচনা করিয়া যে প্রাণীর যে অঙ্গ প্রত্যঙ্গ অভি উৎকুষ্ট, সেই সেই প্রাণীর সেই সেই অঙ্গ প্রভাঙ্গ মনে মনে সংগ্রহ করিয়া তৎসদৃশ অঙ্গ প্রতাদ ধারা একটা কন্তা নির্মাণ করি-লেন। এই সময়ে বিদর্ভাধিপতি অপত্যের নিমিত্ত তপস্থা করিতেছিলেন। অগন্তা আপনার জন্ম নির্মিতা এই কন্সা বিদর্ভরাজকে প্রদান করিলেন। মাজা এই ক্যার নাম লোপাযুদ্রা क्रांथित्नन । जन्म এই क्का योवननीमात्र व्यथित्राहण कत्रिन ।

মহর্ষি অগন্তা লোপামূজাকে যথন গার্হয়ের উপযুক্ত বোধ করিলেন, তথন তিনি বিদর্জনাথের নিকট গিরা কহিলেন, রাজন্! পুত্রের নিমিত্ত আমার গার্হয় ধর্মে রতি হইরাছে, অতএব আপনি আমার লোপামূলাকে প্রত্যপণ করুন। তথন রাজা কিংকর্তব্যবিষ্ট হইরা রাজীকে এই কথা বলিলেন, রাজীও কোন সহত্তর করিতে গারিলেন না, তথন লোপামূলা রাজা ও রাজীকে কাতর দেখিরা কহিলেন, পিতঃ! আপনি আমার থবিকে সম্প্রধান কলন। অনন্তর বিগ্রহাক কলার বাক্যাছসারে বিধিপূর্বক অসন্তাকে এই কলা সম্প্রধান করিলোন। তথন অসত্য লোপাসুরাকে ভার্যালাভ করিরা কহিলেন,
ভূমি এখন বহুস্লা বনন ভূষণ পরিত্যাগ করিরা চীর বহুল
পরিধান কর। লোপার্ত্তা স্থামীর আল্লাছসারে বসন ভূষণ
পরিত্যাগ করিলা চীর-বহুল পরিধানপূর্বক অগন্ত্যের অন্থগমন
করিলেন।

অগত্তা গলাতীয়ে আসিয়া অমুকূলা সহধর্মিণীর সহিত 👺 🐃 তপকা করিতে লাগিলেন। এইরপে বছকাল অতীত হইলৈ একলা অগতা তপ: প্রদীয়া লোপামুলাকে ঋতুলাতা ৰেখিতে পাইলেন, এবং তাঁহার পরিচর্য্যাভিজ্ঞতা, জিতেক্সিরতা 🚭 ও রূপলাবণ্যে সম্ভষ্ট হইয়া রতিমানসে তাঁহাকে আহ্বান করিলেন। তথন লোপামুদ্রা অতিশয় লজ্জিতা হইরা কহিলেন, আপনি অপত্যার্থে ভার্য্যা পরিগ্রহ করিরাছেন, কিছু আমার অভিনাব এইরূপ বে, আমার পিতৃগুত্রে বেরূপ শব্যা, বসম ও ভূষণাদি ছিল, ডক্রপ শব্যা ও বসনভূষণে বিভূষিতা হইরা আমি আপনার সহিত সমত হই। তথন অগতা কহিলেন. আমি তপন্তী, ব্লাজোচিত বসন ভূষণ ও শ্ব্যা কোথার পাইব ? ভাহাতে লোপাযুত্রা কহিলেন, আপনি তপোধন, তপঃপ্রভাবে ক্ষণকাল ৰধ্যেই সমন্ত সংঘটিত হইতে পারে। অগন্তা কহিলেন, ইহা সভা, এক্লপ করিলে আমার তপোবিদ্ন ঘটবে, অভএব বাছাতে আমার তপোবিছ না হয়, এইরপ আদেশ কর। তথন লোপামূল কহিলেন, তপোধন। একণে আমার ঋতৃকাল বোড়ল দিবসের অরমাত্র অবলিষ্ট আছে, কিন্তু অলভারাদি ব্যতীত স্থাপনার নিক্টবর্ত্তিনী হইতে আমার কোন প্রকারে हैका इंडेएक्ट मां, এवः कामक्राल जानमात्र धर्मालान कति-ৰারও আমার ইচ্ছা নাই; অভএব বাহাতে ধর্মলোপ না হয়, এরপে আপরি আমার অভিনাব সম্পাদন করুন। ইহাতে অগতা কহিলেন, হভগে! বৰি ভোষার এই প্রকার অভিলাব দুছ হইরা থাকে, ভাহা হইলে আমি ধনাহরণ করিভে বাতা क्रि, এখানে থাকিয়া তুমি यथाकिनविक बाठतन क्यू।

তথন সগত্য ক্রতর্ম। দহীপালের নিকট গমন করিরা কহিলেন, রাজন্। আমি ধনার্থী হইয়া আপনার নিকট আনি-রাছি, আপনি আমাকে অভের ব্যাঘাত ব্যতিরেকে একং বিভাগাল্লারে ক্রাশ্জি ধনদান করুন। তথন রাজা প্রভর্মা আপনার আরগরের ন্নাধিক্য না থাকার তাঁহাকে কহিলেন, আমার এই আর ও ব্যর পরীকা করিয়া বাহা আপনার সভিমত হয়, তাহা প্রহণ করুন। তবন অব্যা রাজার আর ও ব্যর সমান দেখিরা এবং ভাহা হইতে ধন প্রহণ করিয়ে রাজা ও প্রকার ক্লেণের সভাবনা বিবেচনা ব্যৱহার ক্লেন্ত্রহণ করিলেন না
এবং রালা শ্রুতবার নহিত প্ররপের নিকট প্রমন করিলেন,
তথার কৃতবার্ত্ত না হইরা প্রকৃত্বংস প্রসম্বস্ত প্রকৃতির নিকট
গমন করিলেন, তথারও অপরিমিত অর্থ না থাকার বাতাপির
লাতা ইবল বানবের মিকট গমন করিলেন। ইবল মেবরপধারী
বাতাপির মানের ব্যবহেক পরিকৃত্ত করিলেন। অনতর ইবল
বারবার বাতাপিকে আহবান করিতে লাগিলেন, তথন অগত্য
কহিলেন আমি বাতাপিকে জীর্ণ করিয়াছি, তথন ইবল অতি
বিবর ও ভীত হইরা করিকে প্রচুর ধন দিলেন।

তথন রাজ্ঞাণ স্থা স্থানে প্রস্থান করিলেন। অগন্ত্য অর্থ সংগ্রহ করিরা লোণার্স্রার নিক্ষট উপস্থিত হইলেন। তথন লোপার্স্রা কহিলেন, ভগবন্! আপনি অতি পবিত্র প্রবং বলবান্ একটা পুত্র উৎপানন করুন। অবি তথান্থ বলিরা লোপার্স্রার সহিত বর্থাসমন্ত্রে সক্ষত হইলেন। লোপান্স্রা পূলা গর্ভবতী হইলে, স্থায়ি বনগমন করিলেন। লোপার্স্তা ৭ বৎসর গর্ভধারণ করিরা একটা পুত্র প্রস্ব করিল। এই পূত্র সালোপান্ধ বেদজ্ঞানসম্পন্ন এবং অতিশর রূপবান্। প্রবি-গণ ইহার নাম ইন্থবাহ রাখিলেন। এই ইন্থবাহও তপাপ্রভাবে পিতারই অল্পন্নণ হইন্নাছিলেন। ভারত বনপর্ব ৯৫-৯৮ জঃ) লোপায়ুদ্রাপতি (পুং) লোপায়ুদ্রারাঃ পতিঃ। সগন্তা।

লোপামুদ্রাপাত (সং) লোগামুদ্রারাঃ পাতঃ। অগন্তা। লোপাশ (সং) থাক্শিরালের অন্তর্ন আক্রতিবিশিষ্ট শৃগালভেদ।

লোপাশক (খং) লোপং আকুলীভাবং চকিতমলাতি অশ্-ধূল। শুগালভেদ। (হারাবলী)

লোপাশিকা (প্রী) লোপাশক-দ্রিরাং টাপ্, অভ ইছং। শৃগালী। লোপিন্ (ত্রি) ক্তিকারক। মন্দ্রারী। বিলোপকারী।

লোপ্ত (মি) नित्रमञ्ज्ञकाती। ক্ষতি-কারক। লোপ্ত (ক্লী) দুণ-हुन्। ১ জেরধন, নোত।

"তে ভক্তাবসথে গোপ্তঃ মন্তবঃ কুকসভম।

নিধায় চ ভয়াশ্লীলান্তবৈধানাগতে বলে ॥" (ভারত ১৷১-৭।৫) লোপ্ডী (ব্ৰী) লোপ্ড-বিছাৎ ভীব্। লোপ্ড। (নম্বন্ধা -) লোপ্ডি (ব্ৰি) লোপবোগ্য।

লোভ (গ্রং) গুড-বঞ্ । > আকাজ্ঞা, গ্রন্তব্যভিগার, গরের জিনিস কইবার ইচ্ছা। পর্যার—ভূকা, গিলা, রপ, পুহা, কাজ্ঞা, শংসা, গার্চ্চা, বাহা, ইচ্ছা, ত্ব, মনোরখ, কাম, অভিনাব। (হেম)

देशात गक्य-

"পরবিভাদিক দুই। নেজুং বো হবি স্বায়তে। অভিনাবো হিলপ্রেষ্ঠ ন লোজং পরিকীউজ্ঞ ঃ" (প্রস্তুও ক্রিয়ারোগনা ১৯৬ অ॰) পমবিভানি ক্রাবিদা ভাষা লইবার বাচ হাবরে বে অভিলাব ব্যু, ভারাকে লোভ ফরে। এই লোভ ব্রমার অধ্যা বেশ হইতে উৎপান হইরাছিল।

জনব্যাদভবং ক্রোখো লোভভাষরসম্ভবঃ ।" (মংগুপু° ৩ জ°)

গীতার গিখিত আছে বে, সরকের ডিসটী বার, কাম, ক্রোধ
ও লোভ, এইজন্ত সর্বাতোভাবে লোভ পরিহার করা কর্তব্য ।

"ত্রিবিধং নরক্তেলং বারং নাশনমান্তমঃ ।

কাম ক্রোথন্তথা লোভন্তমাহেতভুরং ভ্যান্তং ॥" (গীতা ১৩মা-)
কাতে একমাত্র লোভ হইতেই বভ অনিষ্ট ঘটিরা থাকে,
লোভই পাপের প্রাকৃতি, লোভ হইতেই ক্রোব, কাম, মোহ ও
নাশ হইরা থাকে, অভএব একমাত্র লোভই পাপের কারণ,
কগতের লোক লোভে পড়িরা খামী, ত্রী, পুত্র ও সংহাধর
প্রভৃতিকে বিনাশ করিরা থাকে।

"লোভঃ প্রতিষ্ঠা পাপক্ত প্রস্থতিরে ভি এব চ।
বেষক্রোধাদিজনকো লোভঃ পাপত কারণন্ ॥
লোভাৎ ক্রোধঃ প্রভবতি লোভাৎ কামঃ প্রজারতে।
লোভান্মোহন্দ নালন্দ লোভঃ পাপক্ত কারণন্ ॥
লোভন বৃদ্ধিন্দলতি লোভো জনরতে ত্বাং।
ভূষ্ণার্জো হঃধমাগ্রোতি পরত্রেহ চ মানবঃ ॥
মাতরং পিতরং প্রং প্রাতরং বা স্বস্তব্যন্।
লোভাবিপ্রো নরো হক্তি শ্বামিনং বা সহোদরম্ ॥" ইভ্যাদি।
(নানা প্রাণাদি নীতিনাত্র)

লোভন (ক্নী) পুড-গুটি। > গোড। ২ মাংস। (বৈছকনি•) লোভনীয় (ত্রি) পুড-জনীয়র। লোভার্ম, গোডের উপযুক্ত। লোভয়ান (ত্রি) গোডোক্রেক্সারী। লোভা (দেশক) লোডী।

লোভিন্ (ত্রি) গোডোংসান্তীতি লোভ-ইনি। গোভব্জ, লুক্ক। পর্যায়ি—গৃন্ন, গর্কন, লুক্ক, অভিনার্ক, ভৃষ্ণক, লোল্ভ, লিন্দু।(বেম)

লোভ্য (বি) नृভাতে ইতি নৃভ-বং। > লোভনীর, লোভার্ব। (পুং) ২ মূলা। (হেম) ৩ হরিভাল। (বৈয়ন্তনি॰)

লোম [লোমন্] (हो) > লাল্ল। ২ রোম। পর্যায়—তন্কহ,
বরীরত্ব কেল। ক্যুল্ডেরে এবং জ্ঞান্ত জীববিনেবের পাতচলোপরিত্ব ক্যু ক্যু বিবর হইছে বে সকল ক্যু ও বৃহৎ প্চাপ্র
ও পুল পুল বজাল পারীর কেশ বিনির্গত হইছে দেখা বার,
তাহাই সাধারণতঃ লোম, রোম বা রোমা বলিরা প্রচলিত।
ভবের উপরিভাবে উৎপন্ন হওরার ইহার অপর প্রকটী নাম তন্কহ বা অহলেট্ ইইরাছে। বে বিবরে ফ্ললেশ রাবিরা এই সকল
নারীরহ ক্লেচ্ন পরিবর্তিত হর, ভাহা লোকস্প নামে কবিত।

जीवरक्षवित्नार करे लाग विका क्षणा केरणा हरेगा বাবে। পরীয় বিভিন্ন অংশে অভি কৃত্য কইতে অপেকারত ছুলাকার ও বৃহদারতন লোমরাজি বিরাজিত বেখা বার। স্থান गार्थकाष्ट्रगादत **छेरात्**तत वर्गं छित्र । वित्नव कविता न्यादक्क क्तिरन, महत्त्व भरीरतत मखक, रक, गृंह, छेन्न, भारत्न आकृष्ठि বিভিন্ন খানে বোর কৃষ্ণকুত্তল হইতে ক্রমে কৃষ্ণমিল্ল লোহিত্ত ও লোহিভাভ লোমরানির সমাবেশ দৃষ্ট হইরা থাকে। ঐ গুলি नाधात्रभणः त्वम वा क्खन, हुन, लाय, त्राँवा व्यक्षि वित्मव বিশেব পর্যাবে সমিবদ্ধ। বিভিন্ন বেশীর ভাষারও মাধার কেশ ও গাজলোমের পৃথক নাম নির্মিষ্ট ছইরাছে। মন্তব্যের গাত-লোম অলেকাক্সত কুত্ৰতর হওয়ার ভাহা বিশেষ কোন কাব্দে আইনে না। মনুদ্য জাতির কেলচর বিশেষতঃ রমণী-কুলের আসুলারিত কুন্তলহাম কেলবিলেবে বিলেব বিলেব কার্ব্যে ব্যবহৃত হইরা থাকে। উদ্ভর ভারভের প্রস্রাচীন প্রদাগভীর্থে পুরুষ ও রমণীগণের মত্তকসুওনের বিধি আছে, ঐ সকল স্থানীর্ঘ কেশচর তথার রক্ষিত ও বিক্রীত হইরা থাকে। উহাতে দড়ি প্রভৃতি ব্যবহারোপধোণী নানা বস্ত প্রস্তুত হইতেছে। এতদেশে "চুলের দড়ি" দিলা বেণী বিনাইবার ব্যবস্থা দেখা বার। ইতিহাস পাঠে জানা বার বে, রোমক কর্তৃক কার্বেজ नगत्री जवलक हरेरन कार्यकनियानिमी वीवनात्रीशन बाजवानी রক্ষা কামনার স্বাস্থ্য শিরোভূষণ স্থাচিকণ কেশগুরু ছিন্ন করিয়া দড়ি প্রস্তুত করিরাছিলেন। [রোম-সাব্রাকা দেখ।]

শারীরিক রোমসংস্থান লক্ষ্য করিয়া চতুল্যান গণ্ডভৌশীকে আবার বরলোমা ও অভিলোমা নামক হুইটা শ্রেণীতে বিভক্ত করা বার। তিবত দেশীর ছার্গ, ভেড়া, কাব্দী চুবা, চানরী-গো (yak) এবং আইবেক ও লাইলের ংলোদ্ধি নামক হরিণলাতির লোম পশম বলিয়া খ্যা**ত। কোন কৌন** কৌর কুকুর, বিড়াল প্রাড়তি গৃহণালিত লক্ষ্ম গাতে বছল পরিমাণে लाम बाला। धेकवाधान त्यत्नम् क क्यात्मम् व्यक्तः प्रत्यम প্রদেশ ও শীভপ্রধানদানবাসী খেডকার ভর্মকাভিয় গাত্রেও পৰ্যাপ্ত পরিমাণে লোম হইরা থাকে। মহিব, বরাহ প্রাকৃতি चंद्रालामा नखद्र लाम वित्नव त्लाम कार्या जाहेरन मा। नतारहत्र पृष्ठेरमरम बीबाकात्र रवीछा ख्यांच व्यक्तत्र कतिय लाम छरनात हव, छेटा "मुक्टतात कृष्टि" मात्म व्यक्ति । छेटाएक क्न श्राप्ति श्राप्तक हरेगा थाटन। निरहत माथात्र दम्न वा কটা ক্রলি কেশর; অবের বক্তক ও এবিচনেশহ বিলবিত কেল-शानि हुन, बूँडे धारः गूरम्बर रूपकानि बागावृति ; बाकरिका গ্ৰায় জগর সকল পতন গালাবৰণ চুলকলি "বাল" বা লোক মানে পরিচিত।

র্ছিপাদ ও থেচর পশ্দিরাতির ডিখোরেদনের পর পাবকগুলির গাত্রককে ক্ষুদ্র কুন্ন রোমাবলী ধেখা যার। পরে ক্রমশং তাহা পালকে পর্যাবিত হইরা মাংস্পিগুকে আর্ড করিরা ফেলে। তথন আর বড় সেই লোমগুলি দৃষ্টিগোচর হয় না, কিন্ত ঐ শ্রেণীর অন্তর্গত বাত্ত্ত জাতির গাত্রে পালক ক্রিয়া ক্রমশঃ লোমের পরিবৃদ্ধি পরিলক্ষিত হইরা থাকে।

উভচর অর্থাৎ স্থলচর ও জলচর জীবজাতির মধ্যে বিবর, জলইক্র, ভোঁনড়, উিছিড়াল প্রভৃতি চতুস্পন প্রাণীর গাতে লোম দেখা যার। ইংালের লোম এতান্শ মক্ষণ যে, জলমগ্র হইরা উপরে উঠিলে গাত্রলোম কলাচ জলসিক্ত হয়। পল্লানদীতীরবাসী আলিকেরা "উছিড়াল" পোষে। উহারা নদীবক্ষে নামিরা মাছ তাড়াইরা আনে।

মহব্যের কেশ, সিংহের কেশর এবং ঘোড়ার গ্রীবালোম ও বালাম্চী মোটা হর বলিয়া তাহা স্ক্রকার্য্যের উপবোগী নহে, উহাতে দড়ি, চেন, চেটাই প্রভৃতি বয়ন করা যাইতে পারে। উত্তর-পশ্চিম ভারতে চুলের কাছিতে নৌকা বাধা হইয়া থাকে; কিছ তিব্বত, কাবুল, কালাহার, সমরকল, কির্মাণ, বোথারা প্রভৃতি শীতপ্রধান দেশলাত ছাগাদি পশুর গাত্রলাম স্ক্রতম এবং অপেক্ষাক্রত নিবিড় হওয়ার শাল, রামপুরী চাদর, পটু, নামলা, সুই, মলিলা, কছল প্রভৃতি উৎকৃষ্ট পশমী শীতবন্ধ প্রভাগের লামরাজি বহল পরিমাণে সংগ্রহ করিবার অভিপ্রায়ে তদ্দেশবাসী বণিক্গণ ছাগাদি পালন করিয়া বৎসর বৎসর পশম ছাঁটিয়া লইতেছে। চাল্পান, তুর্জান ও কির্মাণের সালা পশম সর্কাপেক্ষা উৎকৃষ্ট, উহাতে একমাত্র কাশ্মিরী শাল প্রস্তুত ইইয়া থাকে। উট্রের লোমেও একপ্রকার মোটা চোগা নির্মিত হইতে দেখা বার।

পটি, লণ বা কার্লাস স্ত্রের সহিত রনীণ পলম বিনাইরা ব্নিলে 'কার্পেট' নামক আসন প্রস্তুত হর। পারত ও তুর্কি-ছানে পাটযুক্ত কার্পেট-বরনের বিস্তুত ব্যবসা আছে; কিন্তু ভারতে পাকান কার্পাসস্ত্র সংযোগ হারা উক্ত দ্রব্য প্রস্তুত হইতেছে। বহু প্রাচীনকাল হইতে কান্মীর, পঞ্জাব, সিন্ধু, আগ্রা, মীর্জাপুর, অব্ধলপুর, বর্মকা, মসলিপত্তন ও মলবার প্রভৃতি ছানে লোমমিন্রিত কার্পেট ব্নিবার কার্থানা ও বাণিজ্ঞানে গোমমিন্রিত কার্পেট ব্নিবার কার্থানা ও বাণিজ্ঞানে গোজনিত্ত ছিল। এখন প্রার্থ অনেক ছলেই সেই প্রাচীন পলমী বিরের অবনত্তি হটিরাছে। বারাণসীক্ষেত্রে এখনও মধ্যনের কার্পেট ও মুর্শিরাবাদে রেশমী কার্পেট প্রস্তুত্ত হইতেছে। [বিস্তৃত্ত বিবরণ পশম ও শাল শব্দে দেখ।]

লোমকরণী (ত্রী) মাংসজ্লা, মাংসরোহিনী না । (রাজনি)
লোমকর্কটী (ত্রী) অজনোলা। (বৈছক্সি)
লোমকর্ক (পুং) লোমযুক্তৌ কর্ণো বছে। ১ শশক।
শগদকণ: শশং শূলী লোমকর্ণো বিলেশয়ঃ।" (ভাকপ্র)
(ত্রি) ২ লোমযুক্ত কর্ণবিশিষ্ট।
লোমকাগৃহ (ত্রী) হানভেদ। (পা ভাওভও)
লোমকান (পুং) পক্ষী।
লোমকটি (পুং) উরুণ নামক কটি।
লোমকুপ (পুং) অক্রজু, লোমের গোড়ার ছিন্ত। শরীরে বভ্ত

"সন্তি যাবন্তি রোমাণি তাবন্তি লোমকৃপকা:।" (ভাবপ্র •)
লোমগর্ত্ত্ত্রি (পুং) লোমকৃপ।
লোমপ্র (ক্নী) লোমানি হন্ত্তীতি হন-টক্। > ইল্রলুপ্রক, চলিত
টাক্। (ভূরিপ্ররোগ) (ত্রি) ২ লোমবাতক, লোমনাশক।
লোমদ্বীপ (পুং) শোণিতক ক্রমিডেদ। (চরক চি • ৭ অ •)
লোমদ্বি (পুং) রাজপুরভেন। (ভাগবত >২।১।২৫)
লোমন্ (ক্নী) ল্রতে ছিল্লতে ইতি ল-(নামন্ লীমন্ ব্যোমন্
রোমন্ লোমন্ পাপান্ ধ্যামন্। উণ্ ৪।১৫০) ইতি মনিন্ প্রত্যানে নাধ্ং। > শরীরম্ভ কেশ, পর্যায় তন্কহ, তন্তক্রহ, রোম,
তমুক্ট্। (শক্ষরত্ত্বা)
"যথোগনাভি: স্ঞতে গৃহুতে চ যথা পৃথিব্যামোষধ্য: প্রভবন্তি।
যথা সতঃ পুক্ষাৎ কেশলোমানি তথাক্ষরাৎ সম্ভবতীই বিষ্ম্॥"

মুগুকোপনিবদে ১০১৭।
গর্ভস্থিত বালকের ষষ্ঠমাসে লোম জন্মে। এই জন্ম ওমাস গর্জবতী নারীর বৈদিকাদি কর্মে অধিকার থাকে না। "ষষ্ঠে মাসি চ নারীগাং বৈদিকেনাধিকারিতা। উদরস্থত বালত নথলোমপ্রবর্তনাৎ॥" (স্মৃতি) অস্থির মল লোম, ইহা শরীরে অসংখ্য হয়।

"অন্থে মণানি গোমানি অসংখ্যামি ভবন্তি হি।" (বৈশ্বক)
লোমন (পং) পাণিনীয় অধর্তাদি গণোক্ত শব্দ। (পা॰ ২৪৪০১)
লোমপাদ (পং) গোণনীয় অধর্তাদি গণোক্ত শব্দ। (পা॰ ২৪৪০১)
লোমপাদ (পং) গোণনীর অধ্বর্তাদ অস্পদেশীয় রাজবিশেষ। ইনি ঝব্যপুলমুনির ঝণ্ডর। মহাভারতে দিখিত আছে
যে, অঙ্গদেশাধিপতি লোমপাদ রাজ্যাদগতের বন্ধু ছিলেন।
কোন সমর রাজা লোমপাদ রাজ্যদিগকে অবমাননা করেন,
তাহাতে রাজ্যগণ সেই রাজ্য পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া বান,
এইজন্ত তাহার রাজ্যে বছদিন ধরিয়া অনার্টি হয়। এই
অনার্টি নিবার্ণের অন্ত তিনি ছলক্রেনে বেল্লায়ার বিভাওকপ্র ঝ্যাপুলকে ভূলাইয়া ম্বরাজ্যে আনয়ন করেন, এবং নিজ
কল্পা শান্তাকে ইহার হত্তে স্প্রাধান করেন। ঝ্যাপুল

जनतात्वा ज्यामन कतिवामा करे প अंत्रात्व कामवरी हरेता ছिলেন। (ভারত বনপর্ব ১১০-১১২ অ॰) লোমপাদপুরী, লোমণাদের রাজধানী, চল্পা। লোমপাদপ (স্ত্রী) লোমপাদত পৃ:। পুরীবিশেষ, পর্যায় চন্দা, मालिनी, कर्पपू। (द्रम) श्रञ्ज इतित्वज्ञा । এই नगतीत्क वर्जमान ভাগলপুর ও তৎসমীপবন্তী বলিরা অনুমান করেন। লোমপ্রবাহিন্ (ি) লোমং প্রবাহতীতি প্র-বহ-ণিনি। লোমযুক্ত শরাণি। লোমফল (ক্লী) লোমগুকুং স্কৃষং। ভবাফল, চলিত চালতা। লোমমণি (পু:) লোমনির্শ্বিত কবচ, পোটুলি। লোময়ুক (পুং) ১ উরুণ। ২ রোমনাশক কটি, পশ্মীশালের মধ্যে প্রাকার যে সকল কীট জন্মিরা পশম কাটিতে থাকে। লোমবৎ (ত্রি) রোম সরুশ। রোমযুক্ত। Cलाभवाद्य (बि) > लाभवहन। २ त्वामयूङ। লোমবাহিন (ত্রি) রোমবাহী (শরাদি)। লোমবিবর (क्री) লোমাং বিবরং। লোমকৃপ। লোমবিধবংস (গং) রুনি। (বৈগ্রহনি৽) লোমবিষ (পুং) লোমি বিষং যন্ত। ব্যান্তাদি। (হেমচ৽) লোমবেতাল (পুং) অপদেবতাভেদ। (হরিবংশ) লোম্শ (পুং) লোমানি সম্ভাষ্ঠেতি লোমন্ 'লোমাদিডাঃ শঃ' ইতি ল। > মুনিবিশেষ। যুধিষ্ঠির বনবাস কালে এই মুনির নিকটে সমন্ত তীর্থের বিবরণ শ্রবণ করিয়াছিলেন। (ভারত ৰনপৰ্ক লোমশগুণিষ্টিরদ৽) (ত্রি) ২ অতিশগ রোমাধিত, যাহাদের গাত্রে অতিশর রোম আছে। সামুদ্রিকে লিখিত আছে যে, লোমশ ব্যক্তি কলাচিৎ স্থা হইয়া থাকে, অর্থাৎ লোমশ ব্যক্তি প্রায়ই হ:খী হয়। "কদাচিদ্দন্তরো মূর্ব: কদাচিল্লোমশ: হুথী।" (সামুদ্রিক) বে ধাঁত চুরি করে, পরজন্মে সে লোমশ হইয়া জন্মগ্রহণ করে। "ধাক্তং হাত্বা তু পুরুষো লোমশং সংপ্রজায়তে।" (ভারত ১৩।১১১।১১৯)

"ধাক্তং হ্বছা তু প্রুবো লোমশং সংপ্রজারতে।"

(ভারত ১৩/১১১/১১৯)

৩ মধ্বাল্, চলিত মউ আলু। ৪ ধাতৃকাশীশ। ৫ মেই।
৬ কোকড় নামক বিলেশর মৃগ। (রাজনি॰)
লোমশকণ (পুং)শশক। (হুক্রত স্থ ৪৬ অ॰)
লোমশকান্তা (ত্রী) লোমশং কারো মস্যাং। কর্কটা, কাকুড়।
লোমশচ্ছদ (পুং) দেবতাড় বৃক্ক, চলিত দেরাতাড়া। (পর্যারমৃক্তা॰) ২ পীত দেবদাসী। (ত্রিকা॰)
লোমশপত্রা (ত্রী) পীত দেবদাসী। (বৈছকনি॰)
লোমশপত্রিকা (ত্রী) লোমশপত্রা।

লোমশপর্থিনী (য়ী) লোমশং পর্ণমন্তাদ্যা ইভি ইনি ত্রীপ্ । মাবপর্ণী ।

লোমশপুত্পক (পুং) লোমশানি পুলাণি কর, কপ্। नित्रीववृक्तः। (त्राखनिः) লোমশমার্জ্জার (পুং) লোমশো লোমবছলো মার্জার:। মার্জার বিশেব,গন্ধমার্জার, গন্ধনকুল। পর্যায়—পৃতিক,মারজাতক, স্থানী, মুত্রপাতন, গন্ধমার্জারক। (রাজনি°) हेरात मूक्थन-वीर्यवर्क्क, क्ष्रवाजनानक, कथू ७ द्रकाई-পরিষারক, চকুর হিতকর, হুগন্ধ, স্বেদ ও গন্ধনাশক। "গৰুমাৰ্জারবীৰ্য্যন্ত বীৰ্য্যন্ত্ৰৎ কফবাতহাৎ। क शूरकाई हदाः निजाः स्थादाः (खरशकाष १ ° (ভारश्रकाष) লোমশ্বদ্দেস (ত্রি) লোমাজ্ঞাদিত বন্ধ বা বপু:। লোমশ্সকৃথি (বি) পশ্চাভাগে লোমবুক্ত। তক্সযজ্ (২৪١১)-ভাষ্যে মহীধর "বহুরোমপুদ্ধিকা' অর্থ করিরাছেন। লোম্শা (ত্রী) লোমানি সম্ভাস্যা ইতি লোমন্-টাপ্। > কাকজক্বা। २ मारती, जोगमारती। ७ वहा। ८ भूकभिषि। ६ महास्मना। 🎍 কাদীদ। ৭ শাকিনী ভেদ। (মেনিনী) ৮ অভিবলা। (विष) व मनशून्ती। ३० वर्साकः। ३३ शक्सारती। ३२ कारकानी, कांकना । ১० मिसी, চनिত मछेत्री । (त्रावनि •) লোমশাতন (ক্লী) লোমাং শাতনং। লোমপাতন, লোমনাশক। खेयथवित्मय, এই खेयथ लामझात्न नाशाहेन्ना नितन त्नाम আপনি উঠিরা বায়। গরুড়পুরাণে লিখিত আছে যে, হরিতাল ও শৃশ্ব্র, কদলীদলভন্মের সহিত একত্র করিয়া লোমস্থল व्यत्नल मिर्न छेखम लामनाजन इम। नवन, इतिजान, ভণুলীফল এবং লাক্ষারস এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া প্রলেপ দিলেও লোমশাতন হয়। কলিটুণ, হরিতাল, শৃষ্ণ, মন:শিলা, সৈদ্ধব এই সকল দ্রব্য ছাগমূত্রের সহিত পেষণ করিয়া উদ্বর্জন

করিলে তৎক্ষণাৎ লোমলাতন হয়।

"হরিতালং শম্পূর্ণং কলনীদলভদ্মনা।

এতন্দ্রেগে চোবর্ত্তা লোমলাতনমৃত্তমম্ ॥

লবণং হরিতালঞ্চ ত পুল্যাল্ড ললানি চ।

লাক্ষারসসমাযুক্তং বোমলাতনমৃত্তমম্ ॥

হবা চ হরিতালঞ্চ শম্পেকের মনঃলিলা।

দৈকবেন সহৈকত্ত ছাগমুত্তেণ পেবরেং।

তৎক্ষণোক্তনাদের লোমলাতনমৃত্তমম্ ॥" (গরুড়পু ১৮৫ অং)

বৈশ্বকে লিখিত আছে যে, ভরাতক, বিভুল, যবক্ষার, সৈন্ধর,

মনঃলিলা, ও শম্পূর্ণ এই সকল ক্রব্য তৈলপক করিয়া তাহার

বেলেপ দিলে লোমলাতন হয়। (কৈবন্ধ্যবন্ধরি ক্ষীকরণাধি)

লোমলা (রী) কর্কনী বিশেষ। (বৈশ্বক্তনি)

লোমলা (রী) লোমবহলতা।

লোমলা (রী) লোমবহলতা।

লোমসার (গুং) মরকত মণি। লোমসিক (বী) লোগাসিকা, শৃগালী। লোমহর্ষ (পুং) লোরাং হর্ষ:। > রোরাঞ্চ, পুলক। ''বেপথুশ্চ শরীরে মে লোমহর্ষণ্ড জারতে।" (গীতা ১ অ॰) २ त्राष्क्रनविद्यव । (त्रामात्रम ४।১२।১०) লোমহর্ষণ (ক্লী) লোরাং হর্ষণমিব। > রোমাঞ্চ। লোরাং হর্ষণ-मचार्तिछ। (बि) २ (नामर्वकात्रक। "তদ্মিন্ মহাভরে যোরে ভূমুলে লোমহর্বণে। ববর্: শবজালানি ক্রিয়া যুদ্ধপ্রদা: ॥" (ভারত ৬।৬৭।১৩) (भूर) विक्रियभूत्रानकथा अवनार लाजार हर्वनर উन्गरमा यन्तार। ৩ হত। ইনি ব্যাসের শিষ্য, ব্যাসদেৰ পুরাণসংহিতা প্রণন্ত্রন করিয়া প্তকে শিকা দিয়াছিলেন। "পুরাণসংহিতাং চক্রে পুরাণার্থবিশারদ:। প্ৰখ্যাতো বাাদৰিয়োহভূৎ হতো বৈ লোমহর্বণ:। পুরাণসংহিতাং তলৈ দদৌ ব্যাদো মহামুশি: ॥"(বিষ্ণুপু° অণ অ°) ক্ষিপুরাণে দিখিত আছে যে, লোমহর্বণ বলরাম কর্ত্তক रुष्ठ रहेब्राष्ट्रितन । "ভণা ক্ষেত্রে স্তপুত্রো নিহতো লোমহর্ষণ:। বলরামান্ত্রযুক্তাত্মা নৈমিবেহভূৎস্ববাছরা ॥" (কবিপু০ ২৭০০) লোমহর্বণক্বত সংহিতাকে লোমহর্বণিকা সংহিতা বলা যার। লোমহর্ষণক (बि) লোমহর্ষণ সম্বীয়। लामहिंसन् (जि) लामहर्वकात्रक। (लामहातिन् (वि) लामवाहिन्। লোমহৃৎ (পুং) লোমানি হরতি নাশরতীতি হ্ব-কিপ্। হরি-তাল। (হেম) লোমা (খ্ৰী) বচা। (বৈছকনি•) **লোমা**য়্য়ণি (পু:) লোমারণের গৌত্রাপভ্য। প্রবরাধারে লোমায়ণের অপত্যবাচক লৌমারন বা লৌতারণ শব্দ আছে। লোমালিকা (ত্রী) লোমাল্যা লোমশ্রেণ্যা কারতীতি কৈ-ক-টাপ্। भृशानिका। जारनहा, शाक्निहानी। (विका॰) **ट्लाबान** (प्र) मृगान। লোমাশিকা (ত্রী) শৃগানী। त्नाम्बर्धी (मूर्चि), अशा शास्त्रस्त्र विनामभूत स्वनात अस्तर्भेष्ठ একটা অমিদারী। এই সম্পত্তির অণিকারী একজন বৈরাদী। ১৮৩০ বৃষ্টাব্দে তাঁহার পূর্বপুরুষকে এইছান জারণীর স্বরূপ দান করা হইরাছিল। ভূপরিবাণ ৯২ বর্গমাইল। লোক্ষীগ্রাম এখনকার अधान वानिकादान। अधारन मानाविध नक केरना सरेबा धारक। লোল (বি) লোড়ডীভি লুড়-বিলোড়নে আচ্। ১ চৰুল।

a नामाच्य । (चमत्र) (भूर) ७ क्वांमनसङ्ग । (मार्क्ट(क्षत्रभूर १८।८०) ।

(माला (जी) गान-गिन्। > मिला। २ नकी। ७ हकना जी। "नर्सात्रमर्गबस्त्री लागा स्थः स्राप्तम नयावाः। অনসমপি ভাগ্যৰত্তং ভলতে পুৰুষায়িতেব খ্ৰী: ॥" (আর্য্যাসপ্তশতী ৬০৯) ৪ ছন্দোভেদ। এই ছন্দের প্রতি চরণে ১৪টা করিয়া অকর थाकित्व व्यवः ১, २, ७, ७, १, ४, ৯, ১०, ১৩ ও ১৪ ज्यक्त আন, ভারির লঘু। এই ছন্দের ৭ আকরে বভি। हेरात्र नक्कन-"विःमश्रहिषि लोगा म्रामे स्को ली हत्रत्व छ ।" উদাহরণ—"মুধ্রে যৌবনলন্দীবি গ্রুৎ বিভ্রমলোলা। ত্রৈলোক্যাভুতরূপো গোবিন্দোহতিছুরাপ: । তদ্বুলাবনকুলে গুল্পুসনাথে শ্ৰীনাথেন সমেতা স্বচ্ছনাং কুরু কেলিং॥" (ছন্দোমঞ্জরী) লোলাক্ষিকা (ত্রী) ঘূর্ণিতলোচনা। লোলার্ক (পুং) লোলনামা অর্ক:। সুর্য্য। "ততো দিবাকরং ভূম: পাণিনাদায় শব্দর:। ক্স্মা নামান্ত লোলেতি রথমারোপয়ৎ পুন: 1"(বামনপু° ১৫ অ°) महारानव सर्वात लाग এह नामकत्रण करतन, এहेक्छ स्वाहरू লোলার্ক করে। (কুর্মপু° ও কাশীখ°) লোলিকা (রী) লোলতীতি দুল-গুল্-টাপ্ অভ ইছং। চালেরী। 'কুলানস্তশতাৰ্ছা চালেরী লোলিকা চ সা।' (अটাধর) লোলিত (ত্রি) নুল-বিমর্দে ধঞ্লোল: সোহন্ত জাত: ইতি। #থ, চলিত ঝোলা। লোলিম্বরাজ (পুং) বৈছাকনিঘন্ট প্রণেতা। দিবাকরের পুত্র ও হরিহরের শিব্য। ইনি চমৎকার-চিস্তামণি, রত্নকলাচরিত্র**, বৈশ্ব-**बौबन, देवश्रविनाम वा हित्रविनाम, देवश्रोवज्रः न, हित्रविनामकावा छ লোলিম্বাজীয় নামে আরও কয়খানি বৈশ্বক গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। লোলুপ (ত্রি) গহিতং সুস্পতীতি নুছ-বঙ্ আচ্। অতিশর সুর। লোলুপতা (রী) লোলুপন্ত ভাব: তল্-টাপ্। লোলুপন্ধ, লোলুপের ভাব বা ধর্মা, অভিশন্ন লোভ। লোলুভ (অ) ভূপং পুভাতীতি নুভ-ষঙ্ অচ্। লোলুপ। ' অভিশর পুরু। "ত্রিরোহণীছন্তি পুংভাবং বং দৃষ্টা রূপলোপুভা:।" (क्थानविष्ना° >> १।८७) (स्त्रांभूद (वि) श्नः श्रनः कर्डनशैन । লোলুয়া (রী) কর্জনে দৃঢ়প্রতিক্ষা। লোলোর (রী) নগরভেদ। (রাজভর° ১৮৬) লোল্লট, ক্মবৃক্ষণতা নামক দীখিভিরচরিতা। লোক্লটভট্ট, কাৰ্যপ্ৰকাশম্বত আলছাব্ৰিকভেৰ। লোবা, অবোধ্যাপ্রদেশের উনাও জেলার অন্তর্গত একটা সলর, ১ नरे मगैकीरत अवस्थि। अका २६° २५ के अवर द्वावि

৮১° ১´ পৃ:। পৃৰ্বা ও উনাও নগরের সহিত এখানকার বাণিজ্যকার্য্য পরিচালিত হইতেছে।

লোবাগড়, পঞ্চাব প্রদেশের বনুজেলার অন্তর্গত একটা পর্বত।
[ক্ষেদানী দেখ।]

লোশশরায়ণি (পুং) একজন প্রাচীন গ্রন্থকার।
লোক, সংহতি। ভাৃদি আত্মনে সক সেট্। লট্ লোইতে।
লিট্ লুলোইে। লুট লোইতে। লুঙ্ আলোটিই।
লোক (পুং ক্লী) লোইতে ইতি লোই-ৰঞ্, যবা লুয়তে ইতি লু
(লোইপলিতো। উণ্ অ৯২) ইতি ক্ষ প্রতারেন নিশাতনাৎ
লাধু:। > মৃত্তিকথণ্ড, চলিত ডেলা। পর্যার লোই, দলি।
(হেম) ২ লোহমল। (রাজনি) ০ লেই। (অমর)
লোকক (পুং) > মৃৎপিণ্ড। ২ তিলকাদি ধারণযোগ্য পদার্থবিশেষ।

লোইন্ম (পুং) লোষ্টং হস্তীতি হন-টক্। লোষ্টভেদন। রুষকদিগের ভূম্যাদির মৃৎপিও-চূর্ণকারী যন্ত্রবিশ্ব। (অমরটীকা ভরত)
লোইন্টেন্সের, দীনাক্রন্দনন্তোত্ররচয়িতা। রম্যদেবের পুত্র। ইনি
শ্রীক্ঠরিতপ্রণেতা মন্দের সমসাময়িক ছিলেন।

লোক্তসৰ্ব্বজ্ঞ, একজন প্ৰাচীন কৰি।

लाक्टन् (क्री) मृर्रा ।

লোকভেদন (পুং) ভিনতীতি ভিদ্-ন্যু, লোইভ ভেদন:। লোইভদসাধন মুদ্দার, পর্যায় লোইভ্দেন, লোইম, লোইমুম, কোটিশ, কোটাশ। (অমরটাকা)

लाकेंगर्फिन् (a) लाहेष।

লোফ্টময় (ত্রিং) লোষ্টস্বরূপে মরট্। লোষ্ট স্বরূপ।

লোক্টবং (ত্রি) মৃথিকার। মৃত্তিকা-নির্মিত। লোষ্ট স্বরূপ।

লোফীক্ষ (পুং) ঋষিভেদ। (সংশ্বারকৌদুনী)

লোষ্ট্ (পুং) লোষ্ট। (হেম)

লোষ্ট্ৰ (পুং) লোষ্ট-রন্। লোষ্ট্, ডেলা।

" ''মাতৃবৎ পরদারেষু পরদ্রব্যেষু লোট্টবৎ।

আত্মবং সর্বভ্তের বং পশ্যতি স পণ্ডিত: ॥" (চাণকা)
লোসর, পঞ্চাব প্রদেশের কাঙ্ডা কেলার ম্পিতিরাজ্যের অন্তর্গত
পর্বতপৃষ্ঠত্ব একটা গণ্ডগ্রাম। সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে এই ত্থান
১৩৪০ কিট্ উচ্চ। পৃথিবীপৃঠে আর কোণাও এর প উচ্চ
ত্থানে স্প্রমূভ গ্রাম দৃষ্ট হর না। আক্ষা ৩২°২৮ উ: এবং
দ্রাভি° ৭৭° ৪৬ পৃথ্।

লোহ (পুং ক্লী) ল্যতেখনেনেতি ল্ বাহলকাৎ হ।
(Ferrum, Iron) খ্নামখ্যাত ধাতুবিশেষ, লোহ ধাতু, চলিত—
লোহা, হিন্দী—লোওয়া, তৈলক—ইমুম্। সংস্কৃত প্যায়—লোহ,
লোহক, সর্কতেজন, স্থায়ির। তীক্ষ, মুগ্র ও কারভেনে লোহ

তিন প্রকার। মৃতলোহের পর্যার—মৃত, মৃতারস, দৃবৎসার, নিলাক্সল, অন্যন্ত। কান্তলোহের পর্যায়—আর, ক্ষুকারস। তীক্ষ লোহের পর্যায়—তীক্ষ্ক, পরারস, শক্ত, পিণ্ড, পিণ্ডারস, শঠ, আরস, নিশিত, তীব্র, থড়াগ, মৃণ্ডল, অরস্, চিত্রারস, চীনজ। [বৈজ্ঞানিক বিবরণ লোহ শক্তে ক্রইবা।]

বৈভ্ৰমতে ইহার খণ কক, উঞ, ডিজ, বাড, পিন্ত, কক, প্ৰমেহ, পাণু ও পুলনাশক। (রাজনি°)

মন্ত্ৰতে লিখিত আছে বে, আশ্ব (প্ৰান্তন) হইছে লোচহর উৎপত্তি হর।

"অদ্ভ্যোছন্তি-ত্র জাতঃ ক্ষত্রমশ্মনো লোহমূখিতম্।
তেবাং সর্কাত্রগং তেজঃ স্বাহ্ম হোনিবু শামাতি ॥" (মন্ত্র>।২৭২)
বৈশ্বকে লোহের উৎপত্তি, শুণ ও মারণাদির বিষর এইরূপ
বর্ণিত হইরাছে—

"পুরা লোমিলদৈত্যানাং নিহতানাং সুরৈযুঁধি। উৎপরানি শরীরেভ্যো লোহামি বিবিধানি চ"॥ (ভাৰঞ")

পুরাকালে যুদ্ধে দেবগণ কর্ত্ব লোমিল নামক কৈতা নিহত হুইলে তাহার দরীর হুইতে বিবিধ প্রকার লোহের উৎপত্তি হয়। লোহ বিশেষ উপকারক, ইহা সেবন বা ঔবধে ব্যবহার করিতে হুইলে, লোধন করিতে হয়। লোধিত লোহই বিশেষ উপকারক। আলোধিত লোহ সেবন করিলে বণ্টতা, কুঠ, ফল্লোগ, শ্ল, অস্মরী, হুলাস প্রভৃতি রোগ উৎপন্ন হয় এবং মৃত্যু পর্যান্তও হুইতে পারে। এইজন্ত উহা সংশোধন করিরা লইতে হুইবে।

লোধনপ্রণালী—লোহের হল্ম পাত করিরা অরিতে পোড়াইতে হইবে, পরে ঐ লোহ অত্যন্ত উত্তপ্ত অবস্থার বথাক্রমে তেল, তক্রে, কাঁজি, গোমূত্র ও কুলখ কলারের কাথ এই সক্ষল দ্রব্যে তিনবার করিরা নিক্ষেপ করিলে লোহ শোধিত হয়।

মারণবিধি—লোহ শোধন করিয়া পরে উহার মারণ করিবে। বিশুদ্ধ লোহের চুর্ণ পাতাল-গঙ্গুড়ীর রস^{*} ছার। পেবণ করিয়া পুটে পাক করিতে হইবে, পরে ছতকুমারীর রসে পেবণ করিয়া তিনবার ও কুঠারছিনিকার রস ছায়া মর্দন করিয়া ৬ বার পুটে পাক করিবে।

অন্ত প্রকার—লোহচূর্ণের দশ আংশের এক আংশ হিমুল নিক্ষেপ করিরা হুডকুমারীর রসে মর্দন করিরা হুই প্রহরকাল পুটে পাক করিবে, এইরূপে ৭ বার পুটে পাক করিলেই লোহ মারিত হর।

অন্তবিধ—পারদের সহিত বিগুণ গ্রহণ দিশাইরা ক্রান্তী করিতে হইবে। পরে ক্রান্তীর সমান পরিবাণ লোহচূর্ণ নিক্ষেপ করিরা মৃতকুমারীর রস দিরা ছই প্রাহর কাল প্রেকণ করিতে হইবে। বধন উহা শিগুাছতি হইরা আসিবে, তথন ঐ লোহণিও একটা তারণাতে হাপন করিরা হই আহরকাল রোজে রাখিবে, পরে এরও পরে হারা আচ্চাদন করিতে হইবে। হই গ্রহর পরে ঐ লোহণিও উক্ত হইলে ধান্যরাপির মধ্যে হাপন করিরা পরা বিরা আচ্চাদন করিতে হইবে। তিন ভিন পরে ঐ আচ্চাদন তুলিরা কেলিরা ঐ লোহ উত্তমরণে চুল করিরা ছাকিছা লাইতে হইবে। পরে ঐ লোহচূর্ণ চতুওঁণ হুলের সহিত হাড়িমের পাড়া পেবণ করিরা সেই রুসে লোহচূর্ণ ভিলাইরা রাখিতে হইবে। তৎপরে রোজে ওক্ত করিরা পুটে পাক করিবে, এইরুপে একবিংশতি বার পাক করিলে লোহ নিশ্চরই মারিত হয়।

ৰান্তিত লোহগুণ—তিক ও ক্যারমধুর রস,সারক, শীতবীর্যা,
জ্বল, কন্দ্র, বর:বাণক, চকুর হিতকারক, বার্বদ্ধক; কন্দ্র, পিত,
গরনোব, শ্ল, শোধ, জর্ল, প্লাহা, পাতু, মেন, মেন্ট, ক্লমি ও
কুটরোগনাকক। ইহার মাত্রা জ্বির বলাবল বিবেচনা করিয়া
একন্তি হইতে নররতি প্রতি সেবন করা বাইতে পারে।

(ভাৰপ্ৰ' পূৰ্ব্বৰ')

রবেক্সনারসংগ্রহের মতে শোধনপ্রণানী।—কান্তলোহকে
পাত করিরা অর্ণমান্দিক, ত্রিফলাচূর্প এবং সালিকাশাকের রস মাধাইরা ক্রমণ: অগ্নিতে পোড়াইতে হইবে, উহা
রক্তর্ব হইলে জলে নিক্ষেপ করিবে, পরে হত্তিকর্ণ, পলাণ,
ত্রিকলা, বৃদ্ধারক্ত মান, ওল, হাড়জোড়া, তন্ত্রী, দশস্ল,
বৃষ্ধিরী, তালমূলী, ইহাদের প্রত্যেকের কাথ বা রসে পূট
দিলে লৌহ শোধিত হর।

লোছভশ্ম—বিশুদ্ধ পারন একভাগ, গদ্ধক হুই ভাগ, লোহ ভিন ভাগ, শ্বতকুমারীর রসে মর্দন করিয়া ভাশ্রপাতে রাখিয়া এমশু পাতা আচ্ছোদন করিয়া হুই প্রহরকাল পুটপাক করিতে ছুইবে, তৎপরে ভিনদিন ধাক্সরাশির মধ্যে রাখিরা পরে পুন্দর্শ করিবে। এইরূপে লোহভশ্ম হর।

আন্তবিধ---লোহের বারভাগের একভাগ হিছুল একত্র মিপ্রিত করিছা তৃতকুমারীর রসে মর্ফন করিবে, পরে উহা ৭ বার পুটপাক করিলে লোহভন্ম হর।

আন্তবিধ—গবান্নত, গদক এবং লৌহ তথ্যপোলার যুত-কুমারীয় স্কাসের সহিত একদিন মর্দন এবং কর করিরা গন্ধপুটে পাক করিলে লৌহতার হয়।

ন্ধসান্তনে লোহ ব্যবহার করিতে হইলে নিরোক্ত নিরমান্থসারে করিতে হব । স্বত, বহু, কুঁচ ও সোহাগা এই সকল জব্যের সৃষ্টিত লোহতত্ম মর্দন করিবা অভিতে পোড়াইতে হইবে, এই সুকল ক্রন্য উত্তৰ মূপে বিভ্রিত হইলে রসান্তনে প্রবোগ করিবে। ত্র-ক্ষম-বোহ পোধ, সুকা, অর্শ, কৃষ্টি, পাণ্ড, প্রবেহ, বিবদোৰ, মেদ ও বাহুনাশক, বরংহাপক, গুরু, চাকুষ্য, আয়ু, গুরু, বল ও বীর্যবর্ত্তক ও রসায়নশ্রেষ্ঠ। গোহু সেবন-কালে কুমাও, তিলতৈল, সর্বপ, রগুন, মন্ত এবং আরু প্রব্য-ভোজন বিশেব নিবিদ্ধ।

বে সকল উবধে লোহ ব্যবহৃত হয়, ডাহাদের নাম।

वृहम्गगनञ्चलत्र, क्रवामत्रम, नवात्रमहूर्ग, व्यष्टीमनाक्रतीर, **ৰগুধান্তলোহ, অ**গিরস, ভূতভৈর্বরস, লোহরসায়ন, স্বায়-স্কব গুণ্গুলু, গলংকুষ্ঠারিরস, রতিবল্লভ, গনমুরারি, পর্পটীরস, বাতপিত্তান্তকরস, বিখেবররস, চিন্তামণিরস, জয়মঙ্গলরস, নক্ত-रिভরব, व्यञ्जनरिভরব, तमत्रारकस, मृष्ठमञ्जीवनीतम, कछ बीरिভরব-त्रम, तृह९क्छ,त्रीटेखत्रव, ऋष्मनाग्रक, खत्रामनित्रम, ठन्मनापि लोह, वृहৎनर्सकारत लोर, महात्राक्विती, देवलाकािकामिनतन, महा-জরাত্মণ, বৃহজ্জরাস্তকলোহ, চূড়ামণিরস, ভীমচূড়ামণি, বৃহচ্চ ড়ামণি, অমৃতাবর্ণরস, অতিদারবারণরস, কলাম্বলৌহ, পর্ণকলা বটী, প্রহণীগব্দেক্রটী, পীযুষবলীরস, পঞ্চামুতপর্ণটী, গ্রহণীকপদ্ক-পোট্টলী, গ্রহণীকপাট, অগ্নিকুমাররদ, নুপতিবল্লভ, রাজবল্লভ, वृहत् भवल्ल, जीक्रम्थवन, व्यर्गः क्रावतन, ठळवन, निर्छापिछ-রস, চক্রপ্রভাত্তিকা, মালাফলৌহ, চঞুৎকুঠাররস, পঞ্চানন-বটী, পাশুপতরস, রসরাক্ষস, ত্রিফলাছ্মলোহ, শহর্ষটী, বিড়-भामित्नोर, निनात्नोर, धाजीत्नोर, धानवज्ञस्त्रम, पार्व्यापि-लोर, मत्यार-लोर, नगुनिन्त्रम, स्थानिधित्रम, तक्तिशिक्षक त्रम, नर्कत्राष्ट्रणोर, त्रामानित्नोर, काक्ष्माञ्जतम, वात्रित्नायन-রস, সর্বতোভদ্রস, ত্রিকট্বাগ্ন লৌহ, কটুকাগ্নলৌহ, কুষণান্ত लोर, श्वर्फनाथ लोर, निजाननात्रम, फगमात्रस्त्रतम, कूर्छ-कानाननत्रम, महाजारनचत्रत्रम, अम्मिशिखकत्रम, नीनाविनामत्रम, পানীয়ভক্তবটিকা, কুধাবতীবটী, কালাগ্রিক্ষরস, নেত্রাশনিরস, নরনামৃতরস, তিমিরহরলৌহ, শিরোবজ্ঞরস, চক্রকান্তরস, মহা-नकीरिनानत्रम, अम्त्राखक्रानोर, महात्राबनुभाजनत्रज्ञ, तुरुपधि-कुमाबबन, दृश्त्रवनापि वर्षी, कृमिकानाननवन, कृमिविनानबन, क्रमिरत्रागातित्रम, जिक्जमाञ्च लोश, देवरमाकाञ्चनत्रत्रम, हन्त्र-र्याश्वकतम, व्यामनकाश्वतीर, मञ्जूनाञ्चतीर, त्रञ्जर्छ-(भाग्नेनीवन, नक्षांक्य्मव वन, वृहरकाक्ष्नाञ लोह, मृङ्गक्षववन, মহামৃত্যুখবরদ, প্রদরাত্তক রদ, প্রভিকামরদ, মহাত্রবটী, রদ-नार्फ्न, बृहस्त्रनार्फ्न, जीयक्रम्बद्रम, खीयवार्थ द्रम, महस्त्रन-त्रम, भूर्गाठक्षत्रम, काक्षव्यातमोर, दृहर भूर्गाठक्षत्रम, सकत्रश्रहक, বসন্ততিশক রস, বসন্তকুত্মাকর রস, নীলকণ্ঠরস, মহানীলকণ্ঠ-त्रम, निमायकानि त्मोर, रक्तत्वनत्रित्रम, दुरक्रकायुष्ठत्रम, क्य-কেশরী, বৃহত্তসেক্ত ওড়িকা, পিতকারাত্তক রস, কাসসংহার-टेडबर, नचीरिनागड्य, नार्काट्डीमड्य, बद्धादिवस, बदा-

चिष्या, विषया चिष्या, वस्मारेकत्व, क्रीक्तामृक त्नोश, বিজয়াবটা, লোহপৰ্ণটারস, পিশুলাক্সলোহ, খাসকাসচিত্তা-মণি, ভৃতাভূপরদ, উন্মানতপ্লনী, ইক্সক্রমবটী, ৰাতগঞ্জাভূপ, বৃহৰাতগজাভুশ, বাতনাশনরস, বাতৰণ্টভ্রস, গগনাদিৰটা, শ্লেমাশৈলেক্সরস, গুড়্চ্যাদি লৌহ, পিডাস্করস, মহাপিতান্তক রস, লাগল্যাত্ত লৌহ, ৰাতরকান্তকরস, আম-वार्जातविका, बामवारज्यत्रतम, तुबमात्राच मोर, बामवाछ-शंकितिः हरमानक, नश्चात्र्कत्नोह, ह्यूःनमत्नोह, मृनवाकत्नोह, विकाधताल, वृश्विकाधताल, मृनविक्षि विका, अञ्चलानाननवर, महा अवाकानामनत्रन, अवानार्क्न्न, नृत्र्यचत्रत्रन, दक्ष्णांच लोह, दृश्कतिभक्तत्रम, स्वर्मुन्गत्रत्रम, स्वनामत्रम, ठक्क श्रष्टांवी, মেহবজ্ঞ, মেহকেশরী, যোগেশররস, তালকেশররস, গগনাদি-लोह, लामनाध्यम, बृह्दलामनाध्यम, लात्मध्यम, बङ्गाधि-लोश, देवधानती वर्षे, त्राहिष्ठक लोश, लाकनाथ त्रम, तृहह्याक-नाधतम, ভায়েশবরবর্তী, অগ্নিকুমারলৌহ, বক্কবরিলৌহ, মৃত্যুল্লব-लोह, प्रौंशनार्फ, न, प्राशतित्रंत्रन, चर्लाहत्रत्रन, शकावृज्यन, चित्र्यन लोह, हवापि लोह, नकामुक्तृन, नवात्रन लोह, वाजतास्ताह, লোহামৃত, পঞ্চাক্তরদ, মৃগজ রদ, বজেম্বরন্ধন, প্রাণরাণরদ, কামকলারস, চিত্রকাত চুর্ণ, ভূদাররস, গৌড়ারস, কুঞাছ লোহ, दृश्खिकनाण लोह, लोहचिष्का, कनावचिष्का, लोहचग् चन्, मृबकुळुहत्रत्नोर, चनः द्वीनि त्नोर, त्मचवक्षत्रम, त्मचित्रमत्रम, खळमाङ्का विष्का, जेमब्राबिवन, जेमकाबितनोर, त्नात्थामब्राबि लोह, अधिशक्षविका, यक्ष्यत्रीत्रामत्रष्टत्रत्नोह, श्रीनमात्रित्नोह, ত্রণগঞ্জান্ত্রণ, কাকপন্নবটী, লক্ষের রস, কুষ্ঠান্তকরস, বেতালরস, कुर्केटेनरनज्ज तम, नर्सममरानीर, अमृजाक्तरनीर, लोशामृज-लोर, कालकर्न, त्रपाञ्र्न, छक्तभावकश्रिका, शाजूरवत्रम, ञ्चक्र दी ७ ज़िका, मृज्य बीचनी ७ ज़िका, महाकारमच द्रामक, तृह९ कारमधत्रसामक, ममनमनीशर्ग, कामम्खत्र, ममनञ्चत्र त्रम, त्रव्रशितित्रम, नवव्यद्यञ्जिष्ट, शीवृवनिसूत्रत्रम, व्याननत्रम, छज्ञाञक लोह, भा भूगबरकनत्री, भा भूनि अरत्रम, लोहजूमत-রুম, বিহরিদ্রান্ত লৌহ, কালকণ্টকরম, লৌহাভরাতূর্ণ, রুহৎ পানীর ভক্তভড়িকা, অগতিরস, বৈধানমরস ও পুটাছুব।

রনেজনারনংগ্রহ মতে, সামান্ত লৌহ অপেকা ক্রৌকলোহ বিশ্বপ গুণনৃত্যু, ক্রৌক হইতে কালিল অইগুণ, কালিল হুইতে গুল্ল শতগুণ, গুলু হইডে বক্স নহস্রগুণ, বক্স হুইতে পাত্তি শগুণা, পাত্তি হুইতে নিরক দশগুণ, এবং নিরক হুইতে কান্ত-লোহ সহস্রকোটি গুণনৃত্য। গোহার উপরিভাগে বে মহলা গড়ে, ভাহাকে মণ্ডুর ক্ষে, এই মণ্ডুরগু গুনুবে প্রবৃক্ত হুইরা গাকে। (রনেজনারনণ) [মণ্ডুর শক্ষ ক্ষেণ্।] আন্দণের লোহপাত্রে ভোজন করিতে নাই, বলি কেছ লোহ-পাত্রে ভোজন করে, ভাহা হইলে ভাহার রোরব নামক নরক প্রাপ্তি হইরা থাকে।

^{শ্}কা তু আরসে পাত্রে প্রুমগ্নতি বৈ দিলঃ।

স পালিচোঁহলি ভূঙ্কেশ্বং রৌরবে পরিপচ্যতে ॥"(মংভত্কভন্ত)

"अन्नःপাত্রে পরংপানং গব্যং সিদ্ধার্মের চ।

कृष्टीनिकः मध्यकः नातित्करनावकः छथा।

क्नाः मृनक वटकिकिवङकाः मृनित्रववीद ॥"

(उद्यदेववर्ष् १ श्रीकृष्ण्यम् ।)

ত লক্ষণাৰিত কৃষ্ণৰৰ্প বা সক্তবৰ্ণছাগ্ৰিশেষ। (মছ ৩)২৭২) ৪ পাৰ্ক্ষত্য জাতি বিশেষ।

"লোহান্ পরমকাখোলান্বিকাছভরানপি।

সহিতাংকান্ মহারাজ ! ব্যক্তরৎ পাকশাসনিঃ #"(ভারত হাং গাং৫)

(ত্রি) ৎ রক্তবর্ণ। (ভারত সমত্থনত) (क्री) ৬ অঞ্চন। লোহক (গুং ক্লী) লোহ শদার্থ।

লোহকণ্টক (গুং) লোহং কাজোহন্ত। অনুভাত । (রাজনি •) লোহকান্ত (রী) লোহং কাজোহন্ত । অনুভাত । (রাজনি •) লোহকার (গুং) লোহং লোহমরং শত্রাদি করোজীতি ক্ল-জ্বশ্ । লোহকারক, যাহারা লোহার ত্রব্যাদি প্রস্তুত করিয়া লীবিকা নির্বাহ করে ।

"প্রথ্যাতাশ্চর্মকারাশ্চ লোহকারাত্তথৈব চ।" (রামারণ ২।৯০।২৩)
লোহকারক (পুং) লোহং তত্মরশক্সমি করোতীতি ক্ল-বুল্।
বর্ণসন্ধর জাতি বিশেষ, চলিত কামার, পর্য্যার ব্যোকার, লোহ-কার, অরস্কার, বর্মকার, কর্মার। (অমরস্করত) জাতিমালার মতে, গোপালের ঔরসে ও তত্ত্বারীর গর্মে এই জাতির উৎপত্তি।
"গোপালাত্ত্রবায়াং বৈ কর্মকারোহপ্যস্তৃত্ত্তঃ।"(পরাশরপক্তি)

লোহকারী (গ্রী) তরোক্ত অভিবলা দেবী। লোহকিট্ট (গ্রী) লোহত কিটং। লোহমল, পর্যায়—কিট, লোহচূর্ণ, অরোমল, লোহজ, ফুঞ্চূর্ণ, লোষ্ট। ঋণ—মধ্র, কটু, উঞ্চ, ক্রমি, বাত, পক্তিশূল, মেহ,গুলা ও শোক্ষমাশক। (রাজনি')

[मञ्जू भन तस्थ ।]

লোহগড়, বোষাই প্রেসিডেন্সীর প্ণারেলার অন্তর্গত ভারসিরিসভটের সর্ব্বোক্ত লিখরে স্থাপিত একটা নগর ও হর্গ।
বঞ্চনার ছইক্রোশ দক্ষিণগান্চিদে অবস্থিত। ১৭১৩ বৃটালে
মহারাই-অসমহা কান্হোলী অনুরা এই হর্গ অধিকার করেম।
শতাব্ধ পরে, পের মরাঠা পেশ্বা বাজীরাঁওর সহিতঃ ইংয়াজের
বৃদ্ধকালে ১৮১৮ বৃটালে ইংরাল-সেনাপতি লেক্ট্নাক্ট-কর্মেল
প্রোধার এই স্থান অবিকার করেন। ১৮৪৫ বৃটাক্ ইইতে এখানে
এক্সন সেনানারকের অধীনে ইংরাজসেনাপ্য রক্ষিত হইরাছে।

লোহগিরি (গুং) পর্বতভেদ। লোহঘাতক (পু:) কর্মকার। বাহারা উত্তপ্ত সৌহে আঘাত করে। লোহচারিণী (জী) নদীভেদ। (বাযুপরাণ) লোহতারণী পাঠও দেখা বার। লোহচুর্গ (জী) লোহন্ত চূর্ণং। লোহকিট্ট। (রাজনি°) লোহজ্ব (क्री) লোহাজ্ঞায়তে ইতি জন-ড। লোহকিট, মণ্ডুর। (রাজনি°) ২ কাংভ। লোহজন্ত্র (পুং) ১ একজন ব্রাহ্মণ। (কথাসরিৎসা° ১২৮৪) ২ জাভিবিশেষ। (ভারত সভাপর্ম) লোহজাল (রী) > লোহনির্মিত জাল। ২ বর্ম, সাঁলোরা। ৩ লোহার পাত। 'রথং লোহজালৈন্চ সংছরম্' (হরিবংশ) **लाइकि९** (प्रः) शैतक। লোহতারিণী (বী) নদীভেদ। (ভারত ভীমপর্ম) लाइमात्रक (पूर) नवकरखन । "(नार्वस्मृबीयक शहानः नामानीः मनीम्। জনিপত্রবনকৈব লোহদারকমেব চ॥" (মহু ৪।৯•) লোহদোবিন (পুং) লোহানি জাবরতীতি ক্র-ণিচ্-ণিনি। > টঙ্গন্ধার, সোহাগা। (রাজনি°) ২ অন্নবেত্তন। (পর্যারমুক্তা°) লোহনগর (রী) প্রাচীন নগরভেদ। (কথাসরিৎসা ২৭।১৮৮) লোহনাল (পুং) লোহত নালং দণ্ডো ব্য। নারাচ। (ত্রিকা°) লোহপঞ্জ (ফ্লী) স্বৰ্ণ, রৌণ্য, ভাষ্ত্র, রঙ্গ ও সীসক বা স্বৰ্ণ, রৌপা, তাম, অপুও কান্তলোহ। বৈত্বক মতে পঞ্লোহ বলিলে উক্ত পাচটা ধাতু লইতে হয়। লোহপাল (পুং) লৌহলৃমল। (হরিবংল) লোহপুর (রী) একটা প্রাচীন নগর। লোহপ্র (পুং) লোহছেব কঠিনং ক্সামলং বা পৃষ্ঠং যন্ত। > कव्यभनी। (अभन्)(जि) २ लोहमन भृष्ठेवुटः। লোহপ্রতিমা (ত্রী) লোহত প্রতিমা। লোহময়ী প্রতিমা, পর্যার -- হর্নী, সুণা, শূর্ষি, শূর্ষ, শূর্ষিকা। (দক্ষরত্না•) লোহবন (এ) লোহমণ্ডিত। লোছময় (বি) লোহ-স্বরূপে ময়ট্। লোহাস্থক, লোহ নির্শ্বিত। লোহমারক (পুং) লোহং মারহতি ভারহতীতি মৃ-ণিচ্-এল। ১ শালিক পাক (Achyranthes Triandra) (বিকা•) ২ রুসেক্সারসংগ্রহোক্ত ক্রব্যগণভেষ। এই গণোক্ত ক্রব্য বারা লোহে পুট দিলে লোহমান্ত্ৰণ হয়, এইক্স ইহাকে লোহমান্তৰ करह, এवर इंहारक जिम्माहिशन करह। "মাণ: বভিতকর্ণত গোজিহ্বাং লোহমারক:।

গিরিশাস্তনক: প্রোক্ত: জিকলাদিররং গণ: a" (রসেক্সসারস°)

এই গণ বণা—ত্রিকলা, ভেউড়ী, দস্তী, ত্রিকটু, ভালমুলী, বৃদ্ধদারক, পুনর্ণবা, বাসকপত্র, চিতা, আলা, বিড়ন্ধ, ভূকরাজ, ভেলা, ভন্তী, লাড়িমপত্র, শলুফা, তুলসী, সুতা, ওল, গুড়ুচী, মণ্ডুকপণী, হত্তিকৰ্ণপ্ৰাস, কুলিশ, কেশরাজ, মাণ, খণ্ডিত-कर्न, ও नाक्तेभाक, এই সকল ज्ञता बाता लाह्न शूछे দিতে হর। (রসেক্সপারস°) লোহমুক্তিকা (জী) লালবর্ণের মুক্তা। লোহমেথল (বি) > ধাতুনির্শিত মেধলাধারী। ব্রিরাং টাপ্ লোহমেথলা, স্বনামূচর মাতৃভেদ। (ভারত ৯ পর্বে) লোহযপ্তি (ত্রী) প্রাচীন নগরভেদ। লোহর (ফ্রী) জনপদভেদ। সম্ভবত: লাহোর। (রাজ্তর° ৪।১৭৭) লোহরজ্রস্ (ङ्गी) লোহকিট্ট। মরিচা। লোহরাজক (क्री)রোপ্য। রূপা। লোহল (ত্রি) লোহমিব লাতীতি লা-ক। ১ অব্যক্ত বাক্। ২ লোহগ্রাহক। (অমর) (পুং) ৩ শৃঝলাচার্য্য। শৃঝলের প্রধান আচার্য্য বা বন্ধনীর রহদাকার গোলকড়া। (মেদিনী) লোহলৈক (ফ্রী) রক্তপূর্ণ ক্ষোটকাদি। লোছবৎ (তি) লোহার সদৃশ। লোহবর (ক্লী) লোহেবু সর্বতিজ্ঞানেষু বরং। স্বর্ণ। লোহবর্মান (ক্লী) লোহার সাঁজোয়া। লোহবাল (খুং) ধান্ত বা তণ্ডুল জাতিভেন। বেশ্হশক্ষ্ (পু:) নরকভেদ। (মহ ৪।৯০) ২ লৌহনিশ্বিত লোহালার (পুং) লোহানি সর্বতিজ্ঞসানি লেবরতি যোজর-ভীতি শ্লেষি-ল্যু। টঙ্গক্ষার, সোহাগা। (হেম) লোহসন্ধর (ফ্রী) লোহানাং সন্ধরো যতা। ১ বর্তনোহ। ২ মিশ্রিত তৈজস। লোহসিংছ (লোহসিং), মধ্যপ্রদেশের সম্বাপুর জেলার অন্তর্গত একটা ভূ-সম্পত্তি। ভূপরিমাণ ৬০ বর্গমাইল। এখানে ২৬খানি গ্রাম আছে। অধিকাংশ প্রজাই গোঁড় ও ধন্মজাতীর। গ্রামসমীপবতী স্থানে তাহারা চাসবাস করে। ভত্তির অপর সকল স্থানেই শাল ও সর্ব্ধ গাছের নিবিভূ বন। ১৮৫१ यहीरम निभारीविद्यारम् नमन विद्यारियनस्य स्टाइक শার অধীনে এথানকার অধিবাসিবর্গ ভরানক অভ্যাচার করিরাছিল। স্থানীর সন্ধার চন্দক'র প্রাভা মধু ডাক্তার সূরকে নিহত করার অপরাধে প্রাণদতে যভিত হন। বিদ্রোহ-শান্তির नव, हेरवाक्याक्यरू भावितकात क्रकीकात्रभव मान क्याव नर्कात

इन्स्क ब्राम्याधिकांत्र व्याश्च इदेशहित्मन ।

লোহাকর (নী) গোহত আকরং। নোহের আকর, গোহার ধনি।

লোহাকর্ন (ত্রি) লোহতেবর্ণ কর্ণবিশিষ্ট। (কাজাওশ্রৌ ২২।১৯।২৯)
লোহাখ্য (ক্রী) লোহতেব আখ্যা বছ। ১ অঞ্চল। ২ কোহ।
লোহাগ্য , বালালার বলোর উজেলার অন্তর্গত একটা নলর।
মধুমতী নলীকুল হইতে অনুরে অবস্থিত। অক্ষা ২৩° ১১′
৪৫″ উ: এবং ল্লাঘি ৮৯° ৪১′ ৪০″ পুং। এখানে শুদ্ধ ও
চিনি বিক্ররের বিহৃত কারবার আছে। থাকুরা প্রভৃতি নিক্টবর্তী
প্রামবাসিগণ এখানে চাউল ধরিকের কল্প শুদ্ধ বিক্রের করিতে
আসে। ঐ গুড় হইতে এখানে পাকা চিনি প্রান্থত হর। ঐ
চিনি ক্রিকাতা ও বাধরগঞ্জে রপ্তানী হইরা থাকে। এখানে
এক কালী মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত আছে। বহু দ্রন্দেশ হইতে জনেক
বাত্রী ভক্তির সহিত্ত তাঁহার পূজা দিতে আইসে।

লোহাঘাট (ৰক্ষের), বৃক্তপ্রদেশের কুমায়ুন জেলার অন্তর্গত একটা সেনাবাস। ক্ষু লোহানদীর বামকুলে অবস্থিত। অকা° ২৯° ২৪ ১৫ উ: এবং ল্লাঘি° ৮০° ৮ ১০ পুঃ। সম্জ্রপৃষ্ঠ হইতে ৫৫৬২ কিট্ উচ্চ। এই গোরাবারিকের চারি পার্থ উচ্চ পর্বতপূকে পরিবেটিত। পূর্বে এই নগরের ও মাইল দক্ষিণে চম্পাবং নগরের গোরাবারিক ছিল। তথাকার বাছ্য ভাল না হওরার এই স্থানে স্থানান্তরিত হয়। ঐ সেনাবাস ১৮৮৩ খুটাক্ষে পরিত্যক্ত হইরাছে। একণে এখানে চা'র চাস হইতেছে। আল্মোরা হইতে এই নগর ৫৪ মাইল দক্ষিণপূর্বে অবস্থিত।

লোহাগাঁও, যুক্ত প্রদেশের বুদেশণও বিভাগের অব্দরণড় রাজ্যের অন্তর্গত একটা গগুপ্রাম, আলাহাবাদ হইতে ১৯৮ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে সাগর যাইবার পথে অবস্থিত। অক্ষা॰ ২৪° ২৯´৩০´´ উ: এবং জ্রাঘি ৮০° ২২´২৫´´ পৃ:। পারা ও বাদৈর-শৈক্ষালার মধ্যবন্ত্তী নির স্থানে সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১২৬০ ফিট্ উক্তে এই গ্রাম স্থাপিত। পূর্ব্ধে এখানে ইংরাজরাজের একটা সেনানিবাদ ছিল, পরে উহা পরিত্যক্ত হওরার স্থানীর সমৃত্তির অননক ব্রাদ্য ঘটিরাছে।

लाहात्रात्रक (ग्र) नतकर**ल्म**।

লোহাচল (গং) পর্বাতভেদ। মহিন্দরের অন্তর্গত সন্দ্ররাজ্যে অবস্থিত একটা তীর্থ। সোহাচল বা কুমার মাহাজ্যে এই স্থানের বিষরণ উদ্ধৃত আছে।

লোহাজ (গুং) गांगवर्ग ছাগজাতি।

লোহাজ-বস্তা (পুং) স্থলাস্কার মান্তদে। (ভারত ৯ প°) লোহান্ত (ত্রি) লাগবর্গ অন্তর্জ জীব বিশেব। ত্রিরাং ভীপ্। পোলিনি গৌরান্থিপ ৪।১।৪১) লোহাভিসার (পুং) লোহানাং শত্রাধীনাং শভিসারোশত । লোহাভিহার। (ভরড)

লোহাভিহার (গ্রং) লোহানামভিহারো বন । শর্মধারী রাম্বাদিগের নীরাজনা বিধি। 'মহানবদীলীকারাং অবাদীনিং' নীরাজনে সভি পশ্চাৎ শত্রধারিগাং রাজাং যঃ শাজ্রোকো নিশ্বহন-প্রধানো বিধিঃ প্রস্থানাৎ প্রাক্ স লোহাভিহারঃ' (ভরঙ)

লোহামিষ (क्री) লাল লোমগুক ছাগদাংল।

লোভায়দ (जी) তাত্র সংবৃক্ত মিল্ল গাতৃ।

লোহারভাগা, পশ্চিম বালাগার অন্তর্গত একটি জেলা। হোট
নাগপুর বিভাগে অবন্ধিত ও পর্যতমর ভূভাগে ভূবিত। জক্ষা

২২° ২৪ হইতে ২৪° ৩৯ উ: এবং জাবি ৮৩° ২২ হইতে
৮৫° ৫৫ ৩০ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ ১২০৪৫ বর্গনাইল।
ইহার উত্তরশীমার শোণ নদী হাজারিবাগ, গরা ও শাহাবাদজেলাকে পুথক্ রাখিরাছে; উত্তরপশ্চিম ও পশ্চিমে বীর্লাপুর
জেলা এবং সরগুলা, যশপুর ও গালপুর সামস্তরাল্য;
দক্ষিণে ও পূর্কে সিংহভূম ও মানভূম জেলা। ইহার পূর্কে
সীমার একপার্ক লিরা জ্বর্গরেখা নদী প্রবাহিত। রাঁটী
নগর এখানকার বিচারস্বর। বজ্বের ছোট লাটের জধীন
ছানীর ক্মিস্বর কর্ত্ব পরিচালিত।

আন্ধৃতিক গঠন-বৈশক্ষণ্য হেডু এই জেলা প্রধানতঃ তিন-ভাগে বিভক্ত হইরাছে। উহা আসল ছোট নাগপুর, পঞ্চ-প্রগণা ও পালামৌ উপবিভাগ নামে খ্যাত।

এই জেলার মধ্য ও দক্ষিণ অধিত্যকা লইরা ছোট নাগপুর বিভাগ গঠিত। এথানে জেলার বিচারদার ছাণিত হওরার, উহা আদল ছোট-নাগপুর নামে থ্যাত। এই অধিত্যকা পশ্চিমাভিমুখে জ্রমোরত ও বিস্তৃত হইরা মধ্যভারতের সাতপুরা দৈলশ্রেণীতে মিশিরাছে। উহা সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে সর্ব্বএই ২০০০ ছিট্ উচ্চ। উত্তরদিকে ইহা ভোড়ী পরগণার মধ্য দিরা বিস্তৃত হইরা হাজারিবাগের মধ্য অধিত্যকার মিলিত হইরাছে। এই কারণে সমগ্র ছোট নাগপুরবিভাগ পার্বতা জ্রমোচ্চ নির ভূমিতে পরিণত। ঐ ঢালু ভূমিতে স্তর কাটিরা ধাক্তের চাস হইরা থাকে।

নিরী, রাহী, বৃন্দু, বরোদা ও তমাস লইয়া পঞ্চণরগর্ণা ভূভাগ গঠিত। এই হান উপরোক্ত মধ্য অধিত্যকার বাট প্রদেশ হইতে পূর্বাংশে মানভূম পর্যান্ত বিহুত। এতভিন্ন বাসিরা পরগণার বন্ধিণাংশ, চীরুণরগণা ও টোরী পরগণা ছোট নাগপ্রের উত্তর ও মধ্য অধিত্যকার দক্ষিণে, সুমুঅপুষ্ঠ হইতে ১২০০ কিট্ উচ্চে অবস্থিত।

হালারিয়াগ ও ছোট নাগপুরের পূর্ব ও ছবিশাভিদ্বী

অধিত্যকা শাধা শাইষা কেলার উত্তর-পশ্চিমাংশে যে উপৰিভাগ হইরাছে, তাহাই পালামৌ নামে পরিচিত। অবলিট সমগ্র কেলাভাগ অনমানবপরিশৃত উত্ততে পর্কতিশিবর অপবা ইতত্ততঃ বিক্তিপ্ত গণ্ডলৈলে পূর্ণ। এই সকল শৈলমালা প্রধানতঃ পূর্বপশ্চিমে বিহুত, কিন্তু স্থানবিশেবে তাহারও বৈলক্ষণা দৃষ্ট হয়। সমুস্রপৃষ্ঠ হইতে এই পর্কতময় প্রেদেশ সর্কারই প্রায় ১২০০ কিটু উচ্চ, স্থল বিশেবে শৈলোক্ত শিপরভূমি ৩০০০ কিটেরও অধিক উর্জ দৃষ্ট হয়। রাঁচী নগরের পশ্চিমত্ব সারুশৃত্ব প্রথম উত্তর্গিক্ত্ব ব্রোগাই বা মরঙ্গবক্ষ্ড়া ৩৪৪৫ কিটু উচ্চ।

প্রস্তুত ছোট নাগপুর উপবিভাগ অপেকা, পালামৌ বিভাগে
অধিকতর পর্বতমালা দৃষ্ট হয়। এখানকার ভূমিভাগ এতই
ক্রেনান্ডনিয় যে, কোথাও সমতল ক্রেনানি দৃষ্টিগোচর হয় মা।
উত্তর কোরেল ও অমানৎ নদীবর প্রবাহিত-উপত্যকা প্রদেশ
ভিন্ন অন্তর ধার্ভাদি উৎপন্ন হয় না। এই জেলার স্বর্ণরেথা
এবং উত্তর ও দক্ষিণ কোরেল নদী প্রধান। তভিন্ন কাঞ্চী,
কর্কনী, অমানৎ, উরজা, কারু ও দেও নামক শাখা কর্মটী
উপরোক্ত নদীর্নের কলেবর পুই ক্রিরা এই জেলার মধ্যে
প্রবাহিত আছে।

ছোট নাগপুরের উক পর্কত্বর ব্যতীত পালামে বিভাগে বুলব্ল্ (৩৩২৯ ফিট্), ব্রী (৩০৭৮ ফিট্) ও কোতাম (২৭৯১ ফিট্) নামে আরও ভিনটা উচ্চ লৈল আছে। এই সকল পর্কাতের নিমদেশ বনকুন্দে ও প্রাাশবনে পূর্ব। বরাসেদ, পালামে প্রভৃতি বনভাগে শাল, মহরা, জামুন, কর্প্তা প্রভৃতি কৃক্ষ উৎপর হয়। শালকার্চ চেরাই ইইয়া নদীবক্ষে ভাসাইয়া নানা স্থানে বিফ্রার্থ প্রেরিত ইইয়া থাকে। বনভাগে কার্চ ব্যতীত মহরামূল, জাম ও তুথফল, ক্রপ্তবীল, লাক্ষা, ভগর (গুটী), রজন, মধু, গদ ও আরারট প্রভৃতি জায়ে। সেই বনপ্রাস্থবাদী আদিম ক্ষিবাদিবর্গ ঐ সকল দ্রব্য সংগ্রহ করিয়া নিক্টবন্তা হাটে বিক্রের করিতে আনে।

ধনিক পদার্থের মধ্যে এখানে লোহ ও চুণা পাথর প্রধান।
পলাশে বিভাগে ভার এবং সিংহভূম সীমান্তবিভ সোণাপেট
উপত্যকার নদীর বালুকাকণা বিধোত করিরা স্বর্ণ আহত
হইরা থাকে। কোরেল হইতে অনানৎ নদীর উপত্যকার
কতকাংশ পর্যন্ত এবং প্রায় পূর্বপশ্চিমে ৫০ মাইল বিস্তৃত
আহমানিক ২০০ বর্গমাইল স্থানে ক্রলার খান আছে। উহা
ভাল্টনগঞ্জ কয়লার খনি নামে প্রসিদ্ধ। এভত্তির কর্পপুর
ক্মণার খনি দক্ষিণে ভোরী পরগণা প্রান্ত বিস্তৃত রহিরাছে।
এখানকার বনবিভাগে ব্যান্ত, ভিডা, নেকডে, ভক্তাক, বনবরাহ,

ছারনা, বিভিন্ন জাতীয় ছরিণ ও নীলগাই পাওরা বার। অপরা-পর কুদ্র অন্ত এবং শিকারবোগ্য পারাবত, হংসানে পক্ষীরও অভাব নাই। নদী ও পার্কাভ্য খাদ সমূতে নালাজাতীর কই, কাতলা প্রভৃতি মংস্ত অনুত্র, তত্মধ্যে মহালীর মংস্ত বিশেব উল্লেখবোগা।

বাঙ্গালার সীমাভূক হইলেও এই স্থানের কোন প্রাচীন ইডিহাস পাওয়া যায় না। অধিক সম্ভব, পূর্ব্বে এই স্থান পর্কাতময় ও গভীর জললে আবৃত ছিল। উহার প্রাচীন নাম "ঝারপত্ত" আজিও সেই খাপদসক্ত্রল বিজন অরণ্যপ্রদেশের পরিচয় দিতেছে। সেই বিজন বনবাদে বাঙ্গালার আদিম অধিবাসী মৃত্যাগণ ও পরে ওরাওন্গণ বছপূর্বকাল হইতে বাস করিতেছে। এই ছইটী জাতি একস্থানে বহুবাল আবদ্ধ থাকিলেও পরস্পরে বিবাহাদি যৌবনসম্বন্ধে আবদ্ধ হয় নাই। পরস্পরে জাতীয় পার্থক্য রক্ষাপূর্বক আজিও স্থ স্থ জাতীয় ধর্ম্ম ও কুলপ্রথা পালন করিতেছে; কিন্তু ইহাদের উভয়েরই শাসননীতি প্রায় এক প্রকার। গ্রামা মত্তলের প্রবৃত্তিত "পর্হা" প্রথায় ইহারা এক একটা গ্রামকর্তা বা সন্ধারের অধীনে থাকিয়া তাঁহারই আদেশ পালনপূর্বক রাজনিয়ম রক্ষা করিতে বাধ্য।

বাস্তবিক পক্ষে বহু পূর্বকাল হইতে এই বনাস্তরাল প্রদেশে পার্বতা অনাহাগণ স্বাধীন ভাবে ও সানলচিত্তে স্বেচ্ছা-বিহারী হইয়া বদবাস করিয়া আসিতোছল। তাহাদের এই নৈস্গিক শান্তিস্থ নাশ করিয়া কোন রাজাই তাহাদিগকে শাসনশৃষ্থলায় আবন্ধ করিতে চান নাই। তাহারা পার্বত্তী রাজ্ঞগণকে রাজ্যন্ত দান করিতে নিখিলেও, সভ্যতার কুটিল সামাজিকতায় পদার্পণ করিতে চাহে নাই। তাহারা আনন্দমন্তব্যে বনবিংলনের ফার ইততত: বিচরণ করিয়া বেড়াইত এবং কুটার বাধিয়া একত্র এক একটা গ্রামে দল্লক হইয়া বাস করিত। গ্রামে এক এক জন দলপতি সমগ্র গ্রামবাসীর নেতৃত্ব গ্রহণ করিত। তাহার আদেশ গ্রামবাসীরা রাজান্তা বলিয়া পালন করিত, এমন কি, ইহারা আপন আপন গ্রাম্য মন্তলের আদেশ বা প্রামাণ্যারে দূরত্ব কেনা শক্রর সহিত যুদ্ধ করিতে কাতর হইত না। তীর ধন্নক শইয়া ইহারা যুদ্ধ করিত।

জনার্য গ্রাম্য দলপতিগণ কালে সভ্যতার সংমিশ্রণে সামস্ত-রাজরপে পরিগণিত হইরাছে। ইহাদের অধীনে ক্রমণঃ জনেক গ্রাম্য দলপতি সন্মিলিত ইইয়া এক একটা রাজ্ঞপতি সংগঠন করিয়াছে। ঐ সকল গ্রাম্য দলপতির মধ্যে বাহারা দলবল লইয়া পর্যাওককত্ব ঘাটা বা প্রদাপত শুলার আগম্ন হুইতে রক্ষা করিত, তাহারা ঘাটবাল বা স্থার নামে প্রিচিত। ঐ সকল সন্ধারের। এখন খবেশে ও খ্রসমাজে পূর্কবৎ
পূজা। তথার ইংরাজরাজের খ্রশাসন বিস্তৃত হইলেও, মুখা বা
ওরাওন-নেতৃগণের কর্তৃত্বের বিশেব কিছুই বর্কভা বটে নাই।
তবে ইংরাজরাজ্বরে বাস করিরা আর তাহারা পূর্কবৎ রণজ্বরে
অথবা লুঠন হারা লব্ধ বন্দীকে লুক্সমন্ত্রপে হত্যা, ও আমাছ্যিক
মহিবোৎসর্গ প্রভৃতি পাশবিক অভ্যাচারের অনুষ্ঠান করিতে
সমর্থ নহে। বৃটীশ গ্রণমেন্টের কঠোর শাসনে তাহারা এখন
শাস্ত শিষ্ট।

অনুমান ১৬১৬ খুষ্টাব্বে মোগলসম্রাট্ জাহাজীর বাদশাহের রাজ্যকালে মোগল-সৈক্ত কোক্রা (আসল ছোট নাগপুর) অধিকার করে। ঐ সমরে এথানকার কোন কোন নদীতে হীরক পাওরা গিরাছিল। যুদ্ধবিজ্ঞর এবং হীরকপ্রাপ্তির সংবাদে দিলীর রাজদরবারে মহাসমারোহে আনন্দোলাল হইয়াছিল। ইতিহাল হইতে জানা যার বে, উক্ত ঘটনার পর ১৬৪০-৬০ খুষ্টাব্বের মধ্যে মুসলমানগণ কএকবার উপ্যুগিরি পালামৌ আক্রমণ করিলে বিক্লমনোরথ হন, অবশেরে শেবাক্ত বর্ষে দাউদ বা পালামৌ হুর্গ আক্রমণ ও অধিকার করেন। তাঁহার বংশধরগণ ঐ হুর্গ মধ্যে ৩০ × ১২ ফিট্ আরতন একথানি স্ন্তুহৎ চিত্রপটে তাঁহার আক্রমণ-কৌশল বিত্ত করিয়া রাখিয়াছেন। উহার অক্রমণ-সরিপাট্য সাধারণের দেখিবার জিনিষ।

माउन कर्डक भागामी कर्न-करम्ब भन्न इटेटल ১१२२ गृष्टीस পর্যান্ত এখানে আর ঐতিহাসিক উল্লেখযোগ্য ঘটনা দেখা যার না। পেষোক্ত বর্ষে স্থানীয় সামস্তরাজ রণজিৎ রায় গুপ্তভাবে নিহত হন এবং তাঁহারই কনিষ্ঠ ভ্রাতৃপুত্র জন্মরুষ্ণ রায় গদীতে উপবিষ্ট হইয়াছিলেন। কিছুদিন রাজাত্ত্ব সম্ভোগ করিয়া জন্মকৃষ্ণ একটা কুদ্রযুদ্ধে প্রাণ বিদর্জন করেন। তদনস্তর তাঁহার পদ্নী ও পরিবারত্ব সকলে বেহার প্রদেশের অন্তর্গত মেগ্রা নামক স্থানে আসিয়া তথাকার কাতুনগো উদ্বস্ত রায়ের আশ্রয় গ্রহণ করেন। উদবস্ত রায় ১৭৭০ খুষ্টাব্দে মৃত রাজা রণজিৎ রায়ের পৌত্র গোপাল রায়কে পাটনায় আনিয়াছিলেন, পরে তিনি গোপাল রায়কে সঙ্গে লইরা তথাকার ইংরাজ একেট কারোন কার্ণাকের সমকে উপস্থিত হইরা তাঁহাকে পালামৌ-त्रात्मद्र यथार्थ छेखद्राधिकाती विनिष्ठा त्वायमा करतन । कासूनत्मात्र প্রার্থনার কাণ্ডেন কার্ণাক গোপাল রারের রাজাপ্রাপ্তি লকে ইংবাজগ্ৰণ্মেণ্টের পকে সাহায্য করিতে স্বীকৃত হন। তিনি ভংকালীন পালামৌ-রাজকে পরাজিত করিয়া গোপাল রার ও তাহার অপর ছই প্রাতাকে পাঁচ বংসরের সনদ দিয়া তদ্দেশ পরিত্যাগ করেন। তদৰবি পালামৌ বিভাগ ইংরাঞাবিহত मामगड़ एमगात असम् क स्त्र । अहे पर्टमात हर्दे बरमत शरत, কাছনগো উদ্বত্ত রায়ের হত্যাকাণ্ডে লিপ্ত থাকার আনরাথে বিশাস্থাতক গোপাল রার কারাক্ষর হন এবং বসন্ত রার সহীতে আরোহণ করেন। ১৭৮৪ খুগালে, পাটনাদগলে গোপালরারের মৃত্যু বটে; ঐবংসরই রাজা বসন্তরার পরলোকগভ হইকে চুড়ামণ রার রাজ্যাধিকার লাভ করেন। তিনি ১৮২৩ খুটাকে অনজালে কড়িত হইরা পড়েন। তজ্জন্ত বাকী থাজনার দাবিতে পালামৌ সম্পত্তি বিক্রর হইরা যার এবং বৃটীশ গ্রণমেন্ট রাজত্ব বার্যন্ত উহা স্বয়ং ধরিক করেন।

গরাবেলার অন্তর্গত দেওবিভাগের রাজা ফতেনারারণ সিংহের সাহায্যলাভে উপরুত হইরা ইংরাজগবর্গমেন্ট প্রত্যুপকার ও পুরস্কার স্বরূপ ১৮১৬ খুরীকে উাহাকে পালামৌ সম্পত্তি জারণীর স্বরূপ দান করেন। রাজা ফতে নারারণ স্থান্থলে রাজস্ব আদাঃ করিতে পারেন নাই। তিনি বন্ধপূর্কক নানা অত্যাচার করিরা প্রজার সর্কান্থ আপহরণ করিলে প্রজাবর্গ ভাঁহার বিজ্ঞাহী হইরা উঠে। ১৮১৮ খুরীকে ইংরাজগবর্গমেন্ট দানপত্রের সর্ভ রহিত করিয়া ঐ সম্পত্তি পুনরার গ্রহণ করেন এবং রাজাকে ক্তিপূর্ণস্বরূপ তাঁহার বেহারত্ব সম্পত্তি হইতে বার্ষিক ও সহন্দ্র রাজস্ব ক্যাইরা দেন।

ইংরাজ-গবর্ণমেন্টের শাসনাধীনে আসিবার পর, পালামৌ শাস্কভাব ধারণ করিয়াছে। ১৮৩১ খুটানে ছোট নাগপুরে কোল-বিজ্ঞাহ উপস্থিত হয়। ইহাই ইতিহাসে "চুয়াড় বিজ্ঞোহ" নামে খ্যাত। ছোট নাগপুরের মহারাজের আত্মীর ও অস্কচর-গণের অভ্যাচারই এই বিজ্ঞোহের কারণ। ১৮৩২ খুটানে মার্চ্চ মাসে ইংরাজের যতে উহা থামিয়া বায়। মানভূম দেখ।

এই ভীষণ বিদ্যোহে কোলগণ এরপ উত্তেজিত ছইরাচিল
যে, অসংখ্য নরশোণিত পাতে ভাহা প্রশানত হয় নাই। বহসংগ্যক গ্রাম পৃষ্ঠিত ও দগ্ধ এবং নররতে কল্যিত হইবার পর
গঙ্গানারারণ প্রভৃতি দস্থানগনেতা ইংরাজহন্তে পরাজিত হইবার পর
গঙ্গানারারণ প্রভৃতি দস্থানগনেতা ইংরাজহন্তে পরাজিত হইবার পর
গঙ্গান্তমর্শণ করে নাই। এই ঘোর সংখর্ষের সম্ম কোলগণ
উন্মত্ত পাদবিকেশে এখানকার পার্কত্য প্রদেশ আপোড়িত
ক্রিলেও পালামে বিস্তুত্তির কোন ক্ষতি হয় নাই; কিন্ত এই
বিল্লোহের পর, ইংরাজ-গবর্গমেন্টের শাসনবিভাগীর যে সকল
পরিবর্ত্তন সাধিত হইরাভে, তাহা হাজারিবাগ জেলার বিষরণী
মধ্যে বিবৃত্ত হইল। [হাজারিবাগ দেখা]

উপরোক চুরাড়-বিল্লোহের অবাবহিত পরেই চেরো ও ধরবার জাতি বিলোহী হইরা উঠে। ১৮৩২ পুঠানে অবিশন্তে তাহা ঝামিরা বার। তরবধি ১৮৫৭ খুটাজের সিপাহী বিজ্ঞাহ পর্যক্ত এখানে আর কোনরপ বিপৎপাত হর নাই। উক্ত বর্বে খুয়বার জাতি হানীর রাজপুত ভূদাধিকারীর বিক্তর অভ্যুবিত হব। ভোগ্ভারণ এই বিল্লোহে বোগদান করার ক্রমণঃ তাহারের বল বল, পুট হইতে থাকে। ঐ সমরে রামগড়ের বিল্লোহী সেনাবল পালাবৌ নগরে আশ্রার লাভ করিয়া তথাকার রাজবেবী ভূমাধি-ভারী নীলাবর সিংহ ও শীতাকর সিংহের সাহায্যে বিল্লোহের মাত্রা ক্রমণঃ বৃদ্ধি করিয়া ভূবে।; ২৬ সংখ্যক মাস্ত্রাজ্ঞ পরাতিক দল এবং রামগড়ের ক্রেক্সজনি ক্রাক্সজ্ঞ সেনার সাহায়ে ঐ বিল্লোহ প্রশমিত হয়। সাজ বারওয়া তুর্গ সমকে বিল্লোহিণ্ডল পরাজিত হইলে নীলাবর ও শীতাকর বন্দিরণে কারাগারে প্রেরিত হন, অবংশ্রে ইংরাজস্বর্গনেপ্টের বিচারে তাহাবের কাঁলি হর।

এই পর্বাভ্যর জেলার সর্বসমেত ৪টা নগর ও ১২১২৬ থানি প্রাম্ন আছে। আদমস্থলারির তালিকা হইতে জানা বার যে, ঐ হানে প্রার ১৯০০ লক্ষ লোকের বাস। ঐ সকল অধিবাসীর মধ্যে আদিন কোল ও ওল্লাওনদিগের সংখ্যাই অধিক। তারিরে হিন্দুধর্মাবলখী ও কর্ম সভ্য ভূঁইরা, খরবার, দোরার, গোঁড় প্রভৃতিকে গণনা করা নার। আদিন অসভ্য জাতির মধ্যে অনেকেই খুইধর্মের আলোক লাভ করিরা সভ্যতা নোপানে আরু হইতেছে। মুখা বা ওল্লাওন্দিগের মধ্যে অনেকে খুইধর্মের আলোক লাভ করিরা সভ্যতা নোপানে আরু হইতেছে। মুখা বা ওল্লাওন্দিগের মধ্যে আনেকে খুইধর্মের বিলা প্রহণ না করিলেও তথাবেবণতংশর ইয়া আপনাদিগকে খুটান্ বলিরা অভিবিত করিতে কুটিত হর না। ১৮৪৪ খুটাকে বাভেরিরাবাসী গ্রোস্নার সর্বাণ্যর প্রশ্ন কর্মাণ গুলারণ ইডাজেলিকান মিসন ও চার্চ্চ অব্ইংগঙ মিসন পরস্পারে খুটধর্মের মাহান্মাবিতারে ব্যাপ্ত রহিয়াতেন।

১৮৪০ খুটাক পর্যন্ত লোহারভাগা নগরে এখানকার বিচার
সালম প্রতিষ্টিই ছিল। পরে ভালা রাঁচিতে খানায়রিত হইলাছে।
রাঁটিনগরের ক্ষিণে লোরেকার: গোরাবাজার। মিউনিসিপালিটা
লা থাকিলেও এখালে প্রায় ১৮ হাজার লোকের বাস আছে।
রাঁচি নগরের ২ মাইল পূর্বে ছুটিয়া নামক গগুরাম, ঐ গ্রামের
মানে এই খান ছোট মাগপুর নাবে প্রসিদ্ধ হইলাছে। পালামে
উপবিভাগের বিচার সালর ভাপনাগর উত্তর কোঞল নকীতীরবর্তী গ্রন্থ নগর বাণিজাকের বনিরা পরিগণিত। রাঁচী
মগরে মিউনিসিপালিটা বাকার হানীর খাত্য উত্তরোভর বর্তিত
হইতেছে। লোহারভাগা, গ্রন্থা ও বোরেকার একএকটা
চৌকি আছে।

রাঁটো নগরের ও নাইল বন্ধিশগন্তিকে অবহিত জন্মাথপুর গ্রাবে একটা গগুণৈলের নিরোবেশে একটা হার্ছৎ সন্দিত্তু বিল্যান আছে। উহা পুরীধান্ত জন্মধ্যেবের গুলিড ক্ষান্তিক অধ্যাপ গ্রাবাত গঠিত। মোইলা গ্রাম্ এক সমরে বিশেষ সমৃতিশালী নক্ষমণে পরিগণিত ছিল। এএখানকার রাজপ্রাসাধির ধাংনাবলের অভাপি সেই আতীত নমৃত্তির পরিচর দিতেছে। ছোট নারপুর রাজবংশের পূর্বতন রাজসণ এখানে বাস করিছেন। ছিল্মী প্রাকে ছোট নারপুর রাজবংশের অক্তর্ম শামা ও ঠাকুর উসাধিখারী সামন্ত রাজগণের বাস ছিল। আজিও তথার তাহাদের নির্দ্ধিত প্রাচীন হুর্গের ধ্বংসাবশের পতিত রহিরাছে। জেলার ধক্ষিণসন্দিমাংশে ছোকাহটু গ্রাম। এখানে মুগুদিগের একটা বিভূত স্বাধিক্ষেত্র বিভ্রমান দেখা বার। উহা সাধারণের কেথিবার জিনিস। ছুটিরা গ্রামে ও ডাপ্টনসঞ্চ নগরে বংশরে হুইটা মেলা হয়।

এখানে প্রধানতঃ গম, বৰ, মন্তা, কাঙনিকানা, মটর, ছোলা ও অক্সান্ত তৈলকর শক্ত, থাক্ত, গাল, তুলা, ভামাক, তিল, চা প্রকৃতি প্রবান্ত চাল হইরা থাকে। ঐ সকল প্রবা্য রাচী, লোহারভাগা, পালকোট, গোবিন্দপুর, বৃন্দু, গড়বা, নাগর, উভারি, লাভবারভরা ও মহারাক্ষপুর প্রভৃতি বাণিজ্ঞাকেক্সে আনীত হইরা নানা হানে প্রেরিড চইরা থাকে। এভত্তির এখানে গালা, রক্ষন, ধূনা, তলরের শুটী, চামড়া ও ব্যক্ত প্রকৃতি আদি বিক্ররার্থ আনীত হয়। রাচী ও বৃন্দুতে পাতপালার কারথানা আছে। পূর্ব্বে এখানে গালা রঙ্কেরও কারবার ছিল। এখনও এখানে মোটা কাপড় এবং শিক্তর ও লোহনির্শ্বিত পাতাদি নির্দ্ধাণের যথেই কারবার চলিয়া থাকে।

২ উক্ত জেলার সদর উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ৭৮০৪ বর্গমাইল। বালুমাৎ, বারোয়া, বাসিয়া, বীয়, ছোরিয়া, কোরখে,
লোধমা, লোহারজাগা, পালফোট, শীয়ি, জমাক, জোরপা ও
রাচী থানা ইহার অবভাক।

ত উক্ত জেলার প্রধান নগর। জলা ২৩°২৫'৪৮' উ:
এবং লাখি ৮৪°৬৩'১৬'' পূ:। ১৮৪০ খুটাল পর্যন্ত এখানে
জেলার বিচার সদর প্রতিষ্ঠিত ছিল, পরে তথা হইতে ৪া৫ মাইল
পূর্বের গাঁটী নগরে স্থানাস্তরিত হয়। মিউনিলিপালিটা থাকার
এই নগরী বেশ স্থান্যকর, পরিকার পরিছের এবং বিলেব
মনোরম। এখানে স্থানীর বাণিজ্যের বিহুত কারবার আছে।
লোহারা, মধ্যপ্রদেশের রারপুর জেলার ধামতারি তহসীলের
স্থান্যক্তি একটা ভুসলাতি। ১২০ থানি প্রাম্ ও ৩৬৮ বর্ষমাইল
ভূমি লইরা এই বিবর গাঁটিত।

रेरात पूर्व ७ पन्निय गीनांच जाता (क्षमूना ७ कर्नुता नहीं) अपादिक। এकडित देननभावपादी वह नहीं, नानांव भाषा अनांधा करें पाता विष्ठक पांकांत क्ष्मांका पादेशे बनाकांव पर्के ना। केक पर्वाक्यानांव क्षमांत्र नहीं नांदा नांद्र बाद। केश कांत्र २००० किंतु केक। करें पर्वाक्यानींवर पन कांक्रत নেশুণ, বীল, শাল, মহরা ও কুম্ম বৃক্ষ গাওয়া বার। সেশুণ কার্চ কাটিয়া নই হওরার অনেক কম হইরা পড়িরাছে। এই সকল বনে লাক্ষা, মোম ও মধু সংগ্রহ করিবা গোঁড়গণ বাজারে বিক্রের করিতে আইলে। বজারাগণ এখানে আলিয়া লগ ও চূলা ক্রর করে। এখানে খনিল লোহ গালাই হইরা থাকে। এখানকার অবিকারী গোঁড় লাতীর মুদ্ধুররাজের অধীনে বৃহ্ববিগ্রহে বিশেব সহারতা করার এই বংশের কোন রালা ১২৩৮ গুঠাকে এই সম্পত্তি জারগাঁর স্করণ প্রাপ্ত হন। লোহারা গণ্ড-প্রামধানি বেশ সমৃদ্ধিসম্পর, এখানে গ্রহমন্ট্রের সাহাব্যক্তত বিভালর, লমিবারের স্বব্যরে রক্তিত থানা ও সাধারণের বায়ু-সেবনার্থ স্থানর উড্যান আচে।

লোহারা সাহসপুর, মধ্য প্রদেশের রারপুর জেলার হর্প
তহদীলের অন্তর্গত একটা ভূসশান্তি। ভূপরিমাণ ১৯৭ বর্গ
মাইল। এখানে সর্কা সমেত ৮৫ খানি গ্রাম ও প্রার ৫॥• হাজার
ঘর লোকের বাস আছে। শালেটিকী শৈলের জললার্ত
নিম্ন প্রদেশ লইরা এই জমিদারীর অধিকাংশহান গঠিত। প্রসিদ্ধ
ও পণ্টারিরা বংশের সহিত এখানকার ভূমধিকারীদিগের
কুট্বিতা আছে। এই হান সমধিক উর্বরা। এখানে নানারূপ
শস্ত পর্যাপ্ত পরিমাণে উৎপন্ন হইরা থাকে। লোহারা-সাহসপুর
এখানকার প্রসিদ্ধ বাণিজ্য হান।

লোহারি নাইগ্, যুক্ত প্রদেশের গড়বাল কেলার অন্তর্গত একটা ৰুলপ্ৰপাত। অকা• ৩৭°৫৭ উ: এবং দ্ৰাবি• ৭৮°৪৪ পূ:। কএকটা পর্বভন্তর ভীমবেগে অতিক্রমের পর এই বিপুল জনরাশি ভাগীরথী বক্ষে আদিরা নিপতিত হইরাছে। এখানে ভাগীরথী-তীরে একটা প্রশন্ত রাম্ভা আছে। প্রশাত হইতে ১০ মাইল দক্ষিণ পর্যান্ত নদীতীরত্ব রান্ডার ধারে ৬টা দড়ির ৰোলা সেতু আছে। উহা সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৭৩৮৯ ফিট উচ্চ। লোহাকে, পঞ্জাৰ প্ৰাৰেশের হিসার বিভাগের ক্ষিসনরের রাজকীর ভত্বাবধানে পরিচালিত একটা জেমীর সামন্ত রাজ্য। व्यक्ता अरे २२ ७ रहेए अरे 84 के जार जावि १६ रर हरें एक १६°६१ था: मधा। जाकर रख यो नामक अक्सन मार्थन এই ब्राजवरानव প্রভিষ্ঠাভা। ইনি ১৮০৬ খুটাব্দে আগবাররাজের মৃত বঞ্জল ইংব্লাল সেনাপতি কর্ড লেকের নিকট সিরা পরস্পারের ब्राबकीय मध्यमिन्द्रिय द्वाष्ट्राव मीमारमा कवित्रा गान। अह কার্য্যের পুরকার স্বরূপ ইনি স্থানবারণতির নিকট হুইছে লোহার জনপদ লাভ করেন একং লাভ লোক ক্লডাল ক্লডে ভালাকে किरदासमूत्र मंद्रक्षांत्र मानमञ्जद नगर्ने करतम । हैरदारसद সহিত সন্ধি অনুসারে ইনি বিধান রকাপুর্বাক বৃত্তবিপ্রহে সাহায্য ভাষিতে ব্যক্তিকত থাকেন।

আক্ষরের মৃত্যু হইলে জাঠ পুত্র নামস্ উন্দীন বা পিছ-नन्नवित्र व्यविवाती हम, किन्द्र ১৮৩৫ चुडीएक द्वितिएक विः জেলারের হত্যাকাণ্ডে লিশু থাকা অপরাধে বিল্লীনগরে ভীরার व्यानमञ्ज रहा। देश्ताबताब छोहात चाहतान विक्रक बहैता क्रियासभूत नवनना वात्सवाध करतम । अवरनरव आवीम क्रमीम वा ও विवाधिकीन् वा मामक जामन्धिकीत्मन जनन हुई खाळाटक লোহার সম্পত্তি বিভাগ করিরা দেওরা হয়। ১৮৫৭ খুইাকের সিশাহিবিলোহের সময় উক্ত প্রাভ্রম দিল্লীতে বাস করিতে हिराम । विद्धारीकर्कुक विद्धी अवरत्राधकारम हैरबाकश्रकि-নিধিগণ ভাঁহাবের উপর কড়া পাহারা বিরাছিলেন। তাঁচারা विद्यार दर्गामान ना क्यांत हैश्यांक भवरम के विद्याह ধামিলে পর ভাঁহাদিগকে মৃক্তি দিরা পুনরার রাজপদ ভোগ क्तिए विवाहित्वम । ১৮৬৯ वृहोस्य आमीम केवीत्वव मुकु হর। ঐ সমরে তাঁহার পুত্র আলা উদীন্ লোহাঞ্চ নবাৰী मन्तरम चारताश्य करतन । शूट्स देश्त्राव्यतास्त्र बटमाय्य व्यन नारत भागीत्नत आंछा बिता छेकीन् नहकाती नवाव हहेरमध বান্তবিক পক্ষে তিনি এই রাজ্যের শাসনবিবরে জোনজুপ হতকেপ করিতে পারেন নাই। তিনি ইংরাজয়াজের নির্দিষ্ট ১৮০০ । টাকা বার্ষিক বৃদ্ধি লইয়া সম্বন্ধ ছিলেন।

ইংরাজ গবর্মে টের বিখাসভাজন হওরার এবং ইংরাজরাজের আহগত্য বীকার করার, ভারত গবদেণ্ট ১৮৭৪ খুটান্দে জালা-উদ্দীন্তে নবাব উপাধি ও বভকপ্রহণের অধিকার দান করিরা একথানি সনক্ষ দেন। ১৮৮৪ খুটান্দে এই রাজা অণজালে জড়িত হইডা পড়ার সম্পত্তিরক্ষার জন্ত ১২ বৎসরে শোধ করিবার মিরাদে হানীর গবদেণ্টের নিকট অণ প্রহণ করেন। এই সমত্রে গোহান্দ রাজ্যের পরিচালনভার আলাউদ্দীনের পুজের হত্তে তর এবং নবাব আলাউদ্দীন্ অভ্যতম সামস্ত জিরাজনীনের জার বার্ষিক ১৮ হাজার টাকা বাসহরা পান। এই সম্পত্তির ভূপরিরাণ ২৮৫ বর্গরাইল। এথানে ৫৪টা প্রায় আছে।

লোহাক নগর এবানকার এবান বাণিজ্যন্তান। শুরুগাও কেলার করুবনগরে এবানকার নবাবগণ আরই বাস করেন। লোহার্সল (দী) লোহক স্কর্গানিব। তীর্থ বিশেষ। বরাহ-প্ররাণে এই তীর্থনাহান্ত্য বর্ণিত সাহে।

শতভঃ নিছবটে গছা জিংগন্নোজমন্বভঃ।
ক্রেছ্মধ্যে বরারোহে হিমবক্তং সমাজিতন্ ।
ভজ্ব শোহার্নান্য সাম নিবাসো মে বিবীরভে।
ভক্তঃ পাক্ষপাঃ বল সমস্তাৎ গাক্ষরোজমন ।

(कार्युः श्राहार्तननाशकः)

২ লোহখীলয় :

লোহাস্থর (পং) অহ্রন্ডের। লোহাস্থর-মাহান্ম্যে ইহার বিষয় লিখিত আছে। লোহি (রী) বেডটৰণ। (রাজনি°) লোহিকা (ত্রী) লোহমক্তাত্রেভি লোহ-ঠন্। লোহপাত্র। পর্য্যায়--- খরসেন্দি, খরপাত্র। (ত্রিকা•) লোহিত (ক্নী) ক্ছতে ইতি ক্ব (ক্রেরণ্ড লো বা ৷ উণ্ ৩।৯৪) हैकि हैकन् त्रच्च नपर। > त्रक्टरशानीर्व। २ क्ट्रूम। ७ त्रक्टन्तन। ৪ পত্তক, পিতক। ৫ হরিচন্দন। ৬ তৃণকুছুম। ৭ রুধির। "मान्त्रमुद्धाः भूतीवः वा श्रीवनः वा अमूर्क्यस्य । व्यास्थानिश्रमञ्जा (नाहिकः वा विवागि वा ॥" (मञ्जू ४। ८७) ৮ যুদ্ধ। (ইত্ম) ন সরোবর বিশেষ। (মৎশুপু• ১২০।১২) >• मानिका । "মাণিকাং পশ্মরাগ: স্থাচ্ছোণরত্বঞ্চ লোহিতং।" (ভাষপ্র°) (পুং) ১০ নদবিশেষ। ইহা ব্রহ্মপুত্রের একটী শাখা। [শৌহিত্য দেখ।] ১১ সাগর বিশেষ। এই সাগরের অল রক্তবর্ণ, এইজন্ম ইহার নাম লোহিত সাগর। [®]ভতো রক্তঞ্জলং ভীমং লোহিতং নাম সাগরম্। গছা প্রেক্ষত ভাঞেব বৃহতীং কুটশাবালীম্। "(রামায়ণ ৪।৪০।৩৯) এই স্থান বরুণের আশের। (ভারত বনপর্ব) ১২ ভৌম। (বৃহৎসংহিতা ৬৮) ১৩ রক্তবর্ণ। (মেদিনী) ১৪ রোহিত-मरख। > स्गितिस्थ। (भसत्रका°) > ७ नर्भरका। "বাস্থকিক্তক্ষকলৈত্ব নাগলৈরাবণত্তথা। ক্ষকত লোহিডলৈৰ পদ্মশ্চিত্ৰণ্ড বীৰ্য্যবান্॥" (ভারত ২।৯।৮) ১৭ স্থরভেদ। খাদশ মবস্তবের দেবতাভেদ। ১৮ মস্র। (भस्तर) ১৯ त्रकान्। २० त्रक्रमानि । "বৃষ্টিকা ধ্বগোধুমা লোহিতা যে চ লালয়:। মুদ্দাঢ়কী মন্থরাশ্চ ধাঞ্চেরু প্রবেরা: স্বভা: ॥" (স্থুঞ্ত ১।৪৬) ২১ বলভেদ। (হেম) ২২ পর্বতবিলেষ। (মৎস্তপু° ১२•।১১) २७ कूनबीशक् वर्वरङ्ग । (म९छ्लू° ১२১।७६) २८ চক্রোগ বিশেষ। (শার্ষ ধরদ ১।৬।৮৭) ২৩ নাগভেদ। (তি) २६ ब्रस्टवर्ग वृक्ट । "लाहिकान् वृक्षनिर्वामान् वक्षन धक्षवाः खथा ॥" (मन् e।७) २७ इपविरमय । (रुनिवरम) লোহিডক (क्री) লোহিডমিব ইবার্ধে কন্। ১ রীভি। ২ কাংল । (রাজনি°) (পুং) লোহিত এব স্বার্থে কন্। ৩ মছল-এহ। ৪ পশ্মরাগমণি। "লয়নেৰু লোহিভকনিৰ্শ্বিভা ভুৰঃ লিভিবদ্বনিহরিতীরুতান্তরা: ॥" (মা**হ ১৩**৫২)

৩ ধান্তভেদ। ৪ বৌদ্ধস্ত পভেদ। চীনপরিব্রাঞ্চক হিউএন্-সিরাং এই স্তূপ দেখিয়া গিয়াছিলেন। লোহিতকল্মাষ (অ) নালবর্ণ চিহ্ন (ছাপ) যুক্ত। লোহিতকুট, প্রাচীন জনপদভেদ। সম্ভবভঃ লোহিত পর্বত-माञ्चलबञ्च स्थान । (इत्रिवः म) লোহিতকৃষ্ণ (তি) রুঞ্চাভ লালবর্ণ। গাঢ়লাল। (খেতাখ-তর উপ° ৪।৫) উক্ত গ্রন্থে "লোহিত শুক্লকুঞা" শব্দে মিশ্র বর্ণের উল্লেখ আছে। লোহিতক্ষয় (পুং) > রক্তক্ষর। রক্তারতারোগ। ২ রক্তনাশ। ৩ রক্তক্ষরণ বা মোক্ষণ। (স্থশ্রুত) লোহিতক্ষয়ক (ত্রি) রকানতা রোগগ্রন্ত বা তদ্রোগ-ভোগকারী। (भाक्त धत्रमः भाग ३ • २) লোহিতক্ষীর (তি) রক্তবর্ণ গাড় ছগ্ধক্ষরণশীল। (অথব্ৰ ° ১৯।৯৮) লোহিতগঙ্গ (क्री) প্রাচীন জনপদভেদ। (হরিবংশ) 'মধ্যে লোহিতগঙ্গন্ত (সিন্ধোঃ) প্রদেশবিশেষস্ত' (নীলকণ্ঠ) (ष्वदा) २ (यथारन शका नानदर्शत राज्य यात्र । (পাণিনি २।३।२३ ভাষা) লোহিতগঙ্গক (ফ্লী) প্রাচীন স্থানভেদ। লোহিতগ্রীব (পু:) লোহিতং রক্তবর্ণ গ্রীবা যন্ত। অগি। (মার্ক°পু° সমাৎস) লোহিতচন্দন (ক্লী) লোহিতং চল্দনমিব। ১ কুছ্ম। জাক্-त्रान् नाम् अर्घाण्ड । २ त्रक्टिन्न । "পরিভ্রমন্ লোহিতচন্দনোচিতঃ পদাতিরপ্তগিরিবেণুরুংসিত:।" (কিরাতার্জ্কুনীয় ১।৩৪) লোহিতজহ্নু (পুং) প্রাচীন ঋষিবিশেষ। (আশ্বশ্রেণ ১২।১৪) লোহিতত্ব (क्री) > লোহিতের ভাব বা ধর্ম। ২ লোহিতবর্ণ। লোহিতথ্যজ্ঞ (ত্রি) > লালবর্ণ পঙাকাযুক্ত। (ভারত উল্ভোগপর্ক্ষ) (পুং) ২ সম্প্রদায় ভেদ। ৩ পূগ। (পা ৫।৩।১১২) লোহিতপাদদেশ (পুং) দেশভেদ। লোহিতপুর (থং) নগরভেম। লোহিপিন্তিন্ (বি) রক্তপিভরোগী। (স্ক্লন্ড) ***লোহিপুজ্প** (ত্রি) লালবর্ণ পু**ল্পধারী, রক্ত কুন্থ্**মসমবিভ। লোহিতপুষ্পক (পুং) লোহিতং পুষ্পমত ৰপ্। দাড়িম-বৃষ্ণ। (ভাবপ্রকাশ) লোহিতমুক্তি [মৃকা] (খ্রী) নানবর্ণের মৃকা। লোহিতমুভিকা (ত্রী) শোহিতা মৃত্তিকা। ১ গৈরিক, গিরি-यांगे। (त्रक्रमांगा) २ त्रक्कवर्ग मृख्यि, तालामांगे। लाहि छत्रांग (११) नानवक्।

লোহিতবং (ত্রি) রক্ত সনৃশ, রক্ত যুক্ত। (তৈভিরীরদ°৭।৫১২।২) লোহিতবাসস্ (ত্রি) রক্তবর্ণ বস্তব্জু ।

"অমূর্যা যদ্ভি যোষিতো হিরা লোহিতবাসস:।" (অথকা ১০১৭।১)

'লোহিতবাসস: লোহিতবর্ণবন্ধা:। লোহিতবর্ণ ইজ্যর্থ:।

যবা লোহিতক্ত ক্ষিরক্ত নিবাসভূতা: বস আছোদনে, বস
নিবাসে। ইত্যনরো: অক্ততরন্ধাৎ বসোণৎ (উপ্ ৪।২১৭)

ইতি উপাদিক: অস্থন্প্রত্যর:। তক্ত শিষ্ট্রাবাৎ উপধাব্দ্ধি:।' (ভাষ্য)

লোহিতশতপত্র (ক্নী) রজেণংপদ। দাদ পদ। (ভাগবত ৫।২৪।>•)

লোহিতশবল (অ) লালবর্ণের চিহ্ন বা ছাপযুক্ত।
লোহিতসারক্স (অ) লাল বিন্দ্বিশিষ্ট ।(শতপথবা° অএচ।২৩)
লোহিতা (স্ত্রী) লোহিত-স্ত্রিয়াং টাপ্। > ক্রোধাদিজ্ঞ
রক্তবর্ণা। (জ্বটাধর) ২ বরাহক্রাস্তা। (শক্ষচ°) ৩ রক্তপুনর্ণবা। (রাজনি°) ৪ অখির জিহ্বাভেদ।

লোহিত।ক পুং) লোহিতে অকিণী যন্ত (সক্থাকো: আসাং ষচ্)। > বিষ্ণু। (শক্ষালা) ২ কোকিল। (শক্চ°) ত লালবৰ্ণ অক্ষ বা পাশাভেদ। মুধিষ্টির বৈদ্ধ্য ও কাঞ্চনময় কুঞ্চাক্ষ ও লোহিতাক্ষ প্রস্তুত করিয়াছিলেন। (ভারত ৪।১।১২) ৪ সপ্রভেদ। (ক্মশ্রুত) ৫ জ্বনামূচর ভেদ (ভারত ৯ পর্ব্ব) ৬ শ্বিভেদ। (আবং শ্রো° ১২।১৪) (ত্রি) ৭ রক্তবর্ণ চক্ষ্যুক।

, ঋষিভেদ। (আৰু শ্ৰো° ১২৷১৪) (ত্ৰি) ৭ বক্তবৰ্ণ চকুযুক্ত "যথা স্তো লোহিতাকো মহাস্মা

পৌরাণিকো বেদিতবান্ পুরস্তাৎ ॥" (ভারত ১।৫৬।৬)
লোহিতাক্ষী (স্ত্রী) লোহিতাক্ষ-দ্রিয়াং জীপ্। ১ রক্তলোচনা।
২ স্কলাস্থ্রতর মাতৃভেদ। (ভারত শল্য পর্ব্ধ) ও জাম্বসন্ধি ও বাহ-সন্ধি (কম্বই) স্থিত রক্তবাহী শিরাভেদ। (ক্লী) ৪ জাম্ব ও বাহর সন্ধি-স্থান। (স্কুশ্রুত)

লোহিতাগিরি (পুং) পর্বজ্ঞেদ। (পা ৬৩১১৭) লোহিতাঙ্গ (পুং) লোহিতং জ্ঞানং 🐞। ১ মদলগ্রহ। (হরিবংশ ২২৮।১২) ২ কম্পিরকর্ক। (রাজনিণ)

লোহিতানন (পুং) লোহিতমাননং মুখং যন্ত। ১ নকুল। (রাজনি°) (ত্রি) ২ রক্তবর্ণ মুখ।

লোহিতামুখী (ত্রী) অন্তভেদ। (গৌ॰ রামা° ১০০০৯) ক লোহিতারন (পুং) গোত্রপ্রবর্তক ক্ষিভেদ, গোহিতের গোত্রাপত্তা। (সংশ্বারকৌমুদী) হরিকশে 'লোহিভারন-পুতাক্ত' প্ররোগ দৃষ্ট হয়।

লোহিতারনি (রী) লোহিতারনত গোত্রাপত্যং রী। লোহি-তারনের বংশোত্তবা। সম্ভবতঃ লোহিতারনি শব্দের অপপ্ররোগ। "লোহিতভোদধেঃ কক্তা ধাত্রী ক্ষমত সা স্থতা। লোহিভারনিরিভোক কম্বর্ম হি পৃষ্ণাতে ।" (ভারভবনপর্ম) লোহিভায়স্ (ক্লী) লোহিভমন্ম:। ভার। (বিশা°) লোহিভায়স্ (ক্লী) লোহিভং আরসম্। > রক্তবর্ণ লোহ-লাভি। (মুন্ধবোধ ব্যাকরণ) ২ তার। (বি) ৩ তারনির্মিভ (প্রাদি)। (ভৈত্তিমীয়রা° ১।৫।৬।৫) লোহিভার্গ (পুং) মুত্রপৃষ্টের পুর্রভেদ। (ভাগ° ৫।২•।২১)

লোহিতার (খং) শ্বরপ্রের পুএডেদ। (ভাগ বাং নং ১) লোহিতারে (আ) রকান্ত (শরাদি)। ২ রুধিরার্ত্র।(রা ভা ১২।৫৯) লোহিতার্শ্মন্ (ক্লী) চকুগোলকের পার্থবরী খেত ছকের উপরিভাগে লে রক্তগুটিকা বা ক্ষীতি উৎপন্ন হয়। (খুশ্রুত)

লোহিতাবভাস (অি) রক্তাভ। (হাইজ) লোহিতাশোক (পুং) রক্তাশোক। লাইবর্ণ পুশবিশিষ্ট অলোকবৃক্ষ। (কথাসরিৎসা• ১•৪।১১)

লোহিতাশ্ব (ত্রি) লোহিতবর্ণ স্বখারোহী।

লোহিতাস্থা (ত্রি) ১ রক্তবর্ণ মুধবিশিষ্ট। ২ রক্তাক্ত মুখ।
(অথব্ধ ৮৮৬)১২) 'লোহিতাগ্তান্ সর্ব্ধনা নবমাংসভক্ষণেন লোহিতোপেতমুখান্ লোহিতবর্ণমুখান্।' (ভাষ্য)

লোহিতাহি (পুং) রক্তবর্ণ সর্প। (গুরুষজ্ব: ২৪।৩১)

লোহিতিকা (গ্রী) রক্তবহা নাড়ী।

লোহিতিমন্ (পু:) লোহিত্য। লালবৰ্ণ। (শা**ষা**°ব্ৰা°১৮।১১)

লোহিতীভূত (ি) রক্তবর্ণতাপ্রাপ্ত।

লোহিতৈক্ষণা (ত্রী) রক্তচন্দ্। লোহিতলোচনা। লোহিতৈত (ত্রি) রোহিতৈত, লালচিক্বিনিট্ট।

লোহিতে। পেল (क्री) রক্তপন্ম। (তাগবত এংএ৪৮)

লোহিতোদ (ত্রি) লোহিতং উদকং ধরা। > লালবর্ণ উদকযুক্ত। রক্তবর্ণ জলবিশিষ্ট। (রামা° ৪।৪৪।৬৫) ২ রক্ত।
(পুং) ৩ রক্তপূর্ণ নরকভেদ।

লোহিতোর্ন (ত্রি) লোহিতানি উণানি ৰশ্মন্। লালবর্ণ উণাবিশিষ্ট। (শুরুযক্ক: ২৪।৪) 'লোহিতোলী রক্তলোমবজী (বেদলীপ)
লোহিত্য (পুং) লোহিত-শুঞ্। > ধান্ত বিশেষ। (হেম)
২ ব্যক্তিন্ডেল। (হরিবংশ) ও ব্রহ্মপুত্রনদ। [লোহিত দেখ।]
৪ প্রাচীন গ্রামভেল। (রামা ' ২।৭১।১৫) ব্রিরাং টাপ্।
লোহিত্যা—স্বর্গক্ক দেবীমূর্জিন্ডেল। "লোহিত্যা জনমাভা"
(হরিবংশ)। 'লোহিত্যারনমাতা' এইরূপ পাঠান্তর্গও আছে।
৫ নদীভেল। (ভারত ভীষ্মপর্ক্ষ)।

লোহিত্যায়নমাতৃ (খ্রী) দেবীভেদ। "লোহিত্যা জনমাতা।" লোহিনিকা (খ্রী) > রক্তবর্ণ। ২ দিরাভেদ। [লোহিত্ক দেখ।] লোহিনী (খ্রী) লোহিতা-(বর্ণাদগুলারাদিভি। পা ৪।১০৯) ইতি ত্রীপ্। তকারত নকারাদেশত। > রক্তবর্ণা খ্রী। ফ্রোধে রক্তবর্ণা রম্মী।

"রোহিণী রোহিতা রক্তা লোহিনী লোহিতা চ সা ॥" (জটাধর) লোভিনীকা (ত্রী) রক্তবর্ণ দীর্মিবিশিষ্টা। (তৈত্তিরীরত্রা°২।১।১০।২) লোহিন্য (পুং) গোত্ৰপ্ৰবৰ্তক খবিভেষ। (প্ৰবরাধ্যার) সম্ভবতঃ ইহা লৌহিছ্যের প্রামাধিক পাঠ। লোহোত্তম (ক্লী) লোহেবু দৰ্শতৈজনেবু উভ্নন্। বৰ্ণ। (হেম) লৌকাক্ষ (পুং) ধর্মশাখাজের। পাণিনি ভাষাত্র ক্রের কাৰ্ডকৌঞ্বপানিগণে "কৌখুম লৌকাক্ষাঃ" শব্দে শাখা বিশেবের উল্লেখ করিরাকেন। লৌকায়ভিক (পুং) লোকারতমধীতে বেদ বা লোকারত-(ক্রতৃৰ্থাদিসুত্রাস্তাৎ ঠক্। পা ৪।২।৬০) ১ তার্কিকভেদ। **"কশ্বিদ্যুগীকায়তিকান্ ব্রাহ্মণাম্প**দেবদে। অনর্থকুশলা ক্তে মৃঢ়া: পণ্ডিডমানিন: a" (রামা°২।১০৯)২৯) ২ চার্মাকশান্তবেডা। লোকায়তং বেন্তি ইভার্মে কিক প্রভারেন নিশারোহরম। [লোকারতিক দেখ।] লৌকিক (এ) লোকে বিদিতঃ প্রসিদ্ধো হিতো লোকং বেছি বা। লোক-ঠঞ্। লোকব্যবহারসিছ। "বৈদিকা লৌকিকজৈত বে যথোক্তান্তথৈব তে। নিৰ্ণীতাৰ্মাত বিজেয়া লোকাত্তেবামসংগ্ৰহ: ॥" (কলাপব্যাকরণ সন্ধির্ত্তি) মুশ্ধবোধমতে,—লোকার হিত ইতার্থে চ ঠক্-প্রত্যর-নিস্না: ইতি। লৌকিক শব্দে পার্থিব বা লোকাচার সম্বভীয় বুঝার, ইহা বৈদিক আৰ্ব বা শাল্পীয় হইতে ভিন্ন। ২ কাশ্মীরের অব্যক্তদ। (রাজতর° ১।৫২) [কাশ্মীর দেখ।]

২ কাশ্মীরের অব্যক্তন। (রাজতর° ১।৫২) [কাশ্মীর দেখ।] ৩ ভারতেন। ব্রিয়াং জীপ্।

লোকিকজ্ঞান (ক্লী) শাত্রাদিজ্ঞান। (ক্লুক্) মেথাতিথি
লিখিরাছেন—'লোকে তবং লোকিকং লোকাচারশিক্ষণমথবা
নীতবাদিত্রকলানাং জ্ঞানং বাৎসায়নবিশাধিকলাবিবয়গ্রহজ্ঞানং বা।'
(মন্ত্র ২০১১ গতার)

লোকিকতা (ত্রী) গৌৰিকত ভাৰ:। গৌৰিক-তল্ টাপ্।
> লোকব্যবহারসিজ্য। ২ শিষ্টাচার (ভূরিপ্ররোগ) আত্মীর
অজন মধ্যে সামাজিক কার্যবিশেবে বত্র মিষ্টামাদি উপঢ়োকনের
পরশারের আদান প্রদান। চলিত কথায় ইহাকে "লোকলৌকতা
বা নৌকিকভা" বলা হইরা থাকে।

লৌকিকছ (ক্লী) লৌকিকডা। লোকপ্ৰসিছৰ।

"পারিনিড্যালৌকিকছাৎ সাম্বরাহতরা তথা।

অন্তর্কাগ্যত হত্যাবেকবোধান রনোভবং ঃ" (সাহিত্যহ° ৪৯)
লৌকিকবিষ্যবিচার (পুং) প্রচলিড সাধারণ বিবরের
নীমাংসা বা বাবাছবাব।
লৌকিকাগ্রি (পুং) লৌকিকোহিছিঃ। অসংস্কৃত ভারি।

ন পৈত্রবজ্ঞিরে হোনো লৌকিকেংটো বিধীরতে।" মহু ৩২৮২।
'লৌকিকে শ্রোতসার্ভব্যতিরিকাটো লাত্রেণ বিধীরতে।
তন্মাৎ ন লৌকিকাটাবাগ্রাকরণহোম: কর্ত্তবাঃ।' (কুল্লুক্)
লৌকিকাটার (লী) > লোকাটার। ২ কুলাটার।
লৌকিকী (ত্রী) > লাত্রপদিদ্ধা। ২ প্রধাতা।
"তন্মিন্ যুক্ততৈতি নিত্যং প্রেতক্তত্যব লৌকিকী॥"মহু ৩১৩৭।
লৌকিকীযাত্রা (ত্রী) > লোকব্যবহার। ২ বিবাহাদি
লাংসারিক কার্য।

"দারাদন্ত প্রদানক বাত্রা হৈব হি লৌকিকী ॥" (মন্ন ১১):৮৫)
'গৌকিকীবাত্রা সকতরো: কুলনপ্রশ্লাদিকা বিবাহাদৌ নৈমিছে
গৃহানরনং ভোজনক্ষেভ্যেবমাদি।' (মেধাতিথি)
লৌক্য (ত্রি) লোকভব ইতি ব্যঞ্ । > লোকসম্বন্ধীর । ২পার্থিব ।
৩ সাধারণ । (পুং) ৪ শ্বনিভেদ । (শাল্ঞা' ত্রা' ১৫।১।৭২)
লৌগাক্ষি (পুং) > লোগান্দের গোত্রাপত্য । ২ বৈদিক
আচার্যাভেদ । ইনি ধর্মস্ত্রপ্রপ্রণতা বলিরা বিধ্যাত । ইহার

শিয়সম্প্রদায় ভরামক শ্বভন্ন শাথাধাায়ী বলিয়া কথিত।

লৌমকীয় (অি) লোমক সৰ্বীয়। (পা ৪।২।৮০ ফুণাবাদিগণ)
কৌমন্য (অি) রৌমণ্য। রোমবহল। (পা ৪।২।৮০ স্বাশাদিগণ)
কোমনীয় (অি) লোমশসম্ভূত। ২ লোমশসপরীয়।
(পা ৪।২।৮০ ফুণাবাদি)
লৌমহর্ষণ্ক (অি) লোমহর্ষণকৃত (সংহিতা)।
লৌমহর্ষণি (পং) লোমহর্ষণকৃত (সাক্ষেতা)।
লৌমার্ম (অি) নোম স্ববীয়, রোমবহুল। রৌমারণ। (পা

লৌমকায়ন (বি ক্রেনামক সম্বীয়। (পা ৪।২।৮০ পকাদিগ্ৰ)

লৌমকায়নি (পুং) লোমকের গোত্রাপত্যা(পা ৪।১।১৫৪ ডিকাদিগণ)

লৌমারুন (নি) লোন সম্ববীদ, রোমবহুল। রৌমারণ। (পা ৪।২।৮০ পদাদিসণ) (পুং) লোমনের গোনাপড়া। লৌনারন্ত। এই কর্ষে এই শক্ত বহুবচনান্ত। (পা ৪।২।৯৮ কুলাদিসণ) লৌমায়ন্ত্য (গ্ৰং) লোমনের কংশধর মাত্র।
লৌমি (গ্ৰং) লোমের সোত্রাপত্য। (পা ৪।১।৯৬ বাছবাদিসপ)
লৌলাহ প্রাচীন স্থানভেদ। (রাজতর ৭।১২৫২)
লৌলাক, একজন প্রাচীন কবি।
লৌপার (ক্রী) লোলভ তাবং। ১ চাঞ্চল্য, অভিরতা। ২ অস্থারিত,
লোপার। "ধর্মনোল্যেন সংয্তাং" (হরিবংশ) 'ধর্মনোপেন'
নীলকণ্ঠ। ওইজা, ফলম্পৃহা। ৪ শৈথিল্য। (ভাগবত ৭।১২।১৯)
লৌল্যতা (গ্রী) দৈপ্ততানিবন্ধন বহু বিশেষে বলবতী আকাজ্ঞা।
"গৃহস্কু ক্রিয়াত্যাগো ব্রত্যাগো বটোরশি।
তপরিনো গ্রামসেবা ভিক্লোরিক্রিরলীল্যতা।"
(ভাগবত ৭।১৫।৩৮)

লোল্যবং (ত্রি) ১ অতিশয় শৃহাশীল। ২ অর্থগৃয়ু। ৩ আকাজ্ঞাযুক্ত। (কথাসরিৎসাং ২০।২০০)

লোখ (রী) কএক প্রকার সাম।
লোহ (গুং) লোহ এব। (প্রজ্ঞান্তণ । পা° ৪।৩০১-৫৪ প্রে
রাজতাদিগণে এই পদের বৃংপত্তি সিদ্ধ করিরাছেন)। স্থনামপ্রসিদ্ধ লোহ নামক ধাড় । স্থগর্ভে এই ধাড়ুর উৎপত্তি।
বিশেব বিশেব গুণ থাকার, বিভিন্ন দেশীর চিকিৎসক ও বৈজ্ঞানিকর্পণ ইহার রাসারনিক বলাবল পরীক্ষা করিরা ঔবধরণে
ইহা সেবন করিতে আছেশ দিরাছেন । ধনিজ লোহ সংকারাত্তে
বথাবিধি গ্রহণ করিরা অক্তাক্ত ঔবধের বোগে পাক করিতে হর।

থাকে—১ শালিঘর্ষণ, ২ উদ্বর্তন, ৩ অন্নভাষন, ৪ আতপশোষ, ৫ নিষেক, ৬ মারণ, ৭ দলন, ৮ ক্ষালন, ৯ স্থাপাক, ১০ স্থালীপাক, ১১ চুর্যন, ১২ সুটপাক, এবং ১৩ পাকনিশার।

বৈশ্বক মতে লোহের ত্রয়োদশ প্রকার সংস্কার সাধিত হইয়া

বর্তুমান সময়ে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে লোহের আকর দৃষ্ট চইলেও, প্রাচীন ও আধুনিক ভারতে মৃদ্তর বিশেষে বে সকল বিভিন্ন প্রকার লোহ পাওরা যাইত বা যার, তৎসমুদার লোহই সংস্থানাস্থপারে বিভিন্ন গুণ ও বলপ্রাক্ত্যী আয়ুর্কেদপ্রবর্ত্তক থবিগণ কার্ফী, পাণ্ডি, কান্ত, কালিক ও বক্তক নামে লোহের পাঁচটা ভেদ নির্দেশ করিরাছেন। উক্ত পঞ্চ নামধের লোহই প্রেষ্ঠ এবং বাবহার করিলে বিশেষ ফলদায়ক হয়। ইছার গুণ-আরু, বল, বীর্যা ও কামদ, রোগনালক এবং প্রেষ্ঠতম রুলারম। ক্রম্পর্ব লোহের গুণ—শোধ, শৃল, অর্ণঃ, কুঠ, পাণ্ডু, প্রমেহ, মেদ ও বার্নাশক, বরংহৈর্যা ও চক্ত্রেক্তারী, সারক ও গুল। লোধিত লোহের গুণ—সর্করোগনাশক, মরণরোধক। অন্তর্কনারের গুণ—আরুণাবোগা ও আর্নাশক। লোহের শ্রাবশ রারণাধির সংক্ষিত্ত পরিচর বর্ণান্তানে বর্ণিত হইরাছে।

[বসারন ও লোহ বেশা]

ভারতের বিভিন্ন হানে এবং ভিন্ন ভিন্ন নালো এই লফু পুথক্ পৃথক্ নামে পরিচিত। হিন্দী লোহা, লোহা বালালা—লোহা, লোহা বালালা—লোহা, লোহা বালালা—কোহা, লোহা বালালা—ইকছু; ডেলগু—ইফুরু; কনাড়ী—কবিনা; মলালাল্—ইফুরা, বুলান, থান; আরব—হুনিল; পারভ—আহন; নিলাপুর্ক—বকল; ইংরাজী—Iron; লাটিন—Ferrum; করালী—Ferr দুক্রিনী—Eisen; পর্ত্ত্যালা ও ইতালী—Ferro; লোক—Hierro; দিনেমার ও মুরেডিল্—Jern; ওলমাল —Jizer, Yzer; গাখ—Ain; প্রীক্—Siderns; তুর্ক—নেমির, ডিমুর, পোলগু—Zelaso; ক্রব—Scheleso; প্রত্—অরস্ণা।; মলর—বিন, বেনি। রানারনিক্রিকার মতে বিহুই থাকু মল্লাব্রহের প্রভাবনশার।

ভারতের ভূপন্ধর আলোচনা করিলে দেখা বার যে, বিভিন্ন
তরে বিভিন্ন পার্থিব পদার্থের সহযোগে লৌহধাড়ু দিল্লভাবে
বর্তমান আছে। বৈজ্ঞানিকগণ ঐ সমন্ত বিভিন্ন তরের অপরিকৃত দৌহ (Iron ores) বিশেষভাবে পর্যাবেকণ করিরাছেন।
তাঁহারা বলেন যে, প্রাক্ত অবস্থার ধাতুবিশেবের সহিত স্বর্ম বা
অধিক পরিমাণে গোঁহ মিশ্রিত থাকে। আবার কোন কোন
কৃতে লোহের সহিত অন্ধ্র ধাতুর সংল্রব থাকে না, কেবল
কৃতকণ্ডলি পার্থিব পদার্থের সমাবেশমাত্র দেখা বার। যৌগিকরূপে এই লোহ প্রচুর পাওয়া বার। মুক্ত দৌহ অপেঞ্চারুও
হর্মত পদার্থ। লোহের স্বাভাবিক যৌগিক অসংখ্য প্রকার।
ইহার অক্লাইড্, কার্মনেট্, কৃস্ফাইড্ প্রকৃতি রালায়নিক
পরীক্ষা ও বিপ্লেরণ বারা অবগত হওয়া বার।

কতকগুলি অপরিয়ত বৌগিক লোহকে পরীকা বারা বিশুভ করিয়া দেখা গিরাছে যে, ঐ সকল খনিক পদার্থে লোহের পরিমাণ অস্তান্ত ভারীর মৃথিকারাদির লোহ-সংস্থান অপেকা অনেক অধিক, সাধারণের অবগতির অস্ত নিয়ে কএকটা বিশুভ ও পরীক্ষিত লোহের ভালিকা প্রমন্ত হইনঃ—

চুম্ক-প্রতর বলিরা যে প্রবাটী সাধারণে প্রচলিত আছে, ভাষা লোহের একটা অস্নাইড মাত্র, ইহাকে Ferroso-ferric বা Magnetic Oxide (FesO4) বলে, ইহার অপর মাম Magnetice or magnetic iron, ইহাতে প্রার ৭২.৪ অংশ বিশুর লোহ বাকে। বৈজ্ঞানিক ভাষার এই যৌগিককে Protosesquioxide বলা বার। বিশুর লোহপ্রান্তির আলার ভারতের নানা খানের লোকেরা ক্রুক্তর্প বানুকা বিশেষ (Black rand) অন্তির উত্তালে গলাইয়া লর। উত্তাতে প্রতিক্রমণে ক্রিপ্রিভ প্রায়েশ বিশিক্ষমণে ক্রিপ্রিভ বাকে। বিশ্বিষাটী-প্রক্রানিক ভাষার Red hamatica ও

ইংরাজীতে Red ochre (Fe2O3) নামে পরিচিত। ইহা Besquioxide ও ইহাতে ৭০ ভাগ লোহ পাওরা বার। এলাবাটী বা Yellow ochre (2 Fe 2O3, 3H2O) রাসারনিক্রে নিকট Brown hæmatite or Limonite নামে প্রসিদ্ধ। ইহাতে সাধারণত: ৫৯-৯ লোহ বিভয়ান আছে।

কার্ননেট্ অব্ আর্রপত্নে Spathic iron ore বা Siderite বলা বার। উহাতে ৪৮-৩ ভাগ লোহ থাকে। এই কার্ননেট্ বা ল্লাধিক্ লোহের সহিত কর্দম মিপ্রিত থাকিলে ভাহাকে Clay-ironstone বা Argillaceous ironstone ore বলে। Black-sand নাম্য মৃত্তিভাতর কার্নন্ বিপ্রিত ক্লে-আর্র্নন টোন্ লইরা গঠিত। Hæmatite শ্রেণীর অন্তর্কু বা ভাহার সমপ্রেণীর বলিরা ক্রিত Ilmenite নামে আর একপ্রকার বৃত্তিকা পাওরা বার। উহার কত্তাংশ Titanium হারা হানচ্যত হওরার রাসারনিকগণ উহাকে Tatiniferous iron বলিরা থাকেন। এই সকল খোলিক পদার্থে লোহের মাতা সর্বাত্ত সমান নহে।

ভূগর্ভ-মধ্যে অতি প্রাচীনযুগীর তারে লৌহধাতুর সংস্থান বেধিরা অঞ্চনান হর বে, অতি প্রাচীনকাল হইতেই এই ধাতু সাধারণে প্রচলিত ছিল; কিন্তু কোন্ সমরে ও কাহার ধারা এই থাতু আবিষ্কৃত হইরাছিল এবং কোন্ স্থপণ্ডিত ইহার ধ্যবহারোপবােগিতা নির্দেশ করিরা গিরাছিলেন, তাহার কোন বিষরণাই ইতিহাসে বিরত নাই। তবে আর্থ্য-হিন্দুগণের সর্প্রপ্রাচীন অকুসংহিতা প্রন্থ পাঠ করিলে বুঝা বার বে, আর্থ্য-গ্রিকাণ বৈদিক ব্রেও লৌহের নির্দ্বাকরণবিধি (অক্ ৪।২।১৭), তাহার কাঠিত (অক্ ১।১৬০)ন) এবং তীক্ষধারণ (অক্ ৬০০৫) অবগত হইরাছিলেন। গুরুযকুর্কেদের "মেহরণ্ড মে স্থামঞ্জ মে লোহ্জ মে সীল্জ মে অপু চ মে বজেন করন্তাম্ ॥" (১৮।১৩) মন্ত্রাংশ পাঠ করিলে স্পাইই বুঝা বার বে, তৎকালে আর্থাহিন্দুগণ লৌহের প্রক্রারণিও অবগত হইরাছিলেন। অথ্বব্রেরের হাহলাও ও ১১।৩০১ মত্রে ক্রেক্তের উল্লেখ আহে।

বৈষিক সংহিতাবুনের পর, রাজণ ও হ্রেবুরে লোহের জনেকাক্বত অধিক প্রচলন হইরাছিল। শতপথ-রাজণ ভারাওঃ, কাজ্যারন-শ্রোভহত বাঙাওঃ, ২০ামা১, ২০ামাঃ, আখলারন গুকুহত ১ামা১ প্রভৃতি পাঠ করিলে আরস ক্রাধি ব্যবহারের নির্দান পাওরা বার। মহসংহিতার ২০১১৪১৬ প্রোক পাঠ করিলে পাইই প্রভীরমান হর বে, ভংকালে বক্ষপাত্রাধিও লোহারি ধাতুবোরে নির্দিত ক্ইড। উহারা তম ও জ্বন-বোরে লোহণাত্র বার্কনা করিরা ক্ষপাত্রার বেটত করিয়া ভাইতেন, ভাবাতেই ঐ পাত্র তব্য বিদ্যাপন্য ক্ষড। আবার

উক্ত গ্রন্থের ১১/১৬৭ প্লোকে লৌহপাত্রহরণের নিষেধ বচন লক্ষ্য করিলে মনে হর, মানবজাতি আদিমযুগে লৌহকে একটা মূল্যবান্ ধাতু বলিয়া আনিয়াছিলেন। অতঃপর যাজ্ঞবন্ধ্য-সংহিতার (২০১৭) লোহপিও, মহাভারতের বনপর্কে লোহভাজন, রামায়ণে (১৷৬০৷১২) লোহমর আভরণ, কুঞ্রতে (১া২৩া২•) কুম্ভ এবং শ্রীমন্তাগবতে (১১া২৭া১২) লৌহী (স্থবর্ণাদি মন্টধাতুমরী)-প্রতিমা নির্ম্বাণের ব্যবস্থা দেখিরা মনে হর, আর্যা-হিন্দুগণ সর্কাগ্রেই লৌহের ব্যবহার অবগত रहेबाहित्मन এवः छाराबा त्मरे वाजू रहेत्छ श्रक्कंट स्वतम्बी-অতিমা বিনির্মাণ করিয়া শিরনৈপুণ্যের পরাকার্চা প্রদর্শন করিরা গিরাছেন। সেই প্রাচীন শিল্পকীর্দ্তির রেখামাত্র আমাদের দৃষ্টিগোচর না হইলেও, আমরা আলিও ভদপেকা পরবর্ত্তিবূগের কীর্ত্তিতত্ত লইরা গৌরবাধিত রহিরাছি। দিলীর মুপ্রসিদ্ধ লোহতত্ত (সুর্যান্তত্ত) সেই প্রাচীনকালের শিরকীর্ত্তির পরিচর দিতেছে। ১৫শ শতাব্দাধিককাল জ্বলবায়ুর প্রকোপ ट्यां कतिवाल डेंश महे रव मारे। [पित्री (पर्थ।]

কাহারও কাহারও বিধান, লোহণগুসমূহ কোন সময় আকাশ হইতে উঝাপাতরূপে পৃথিবীবক্ষে নিপতিত হইরাছিল, কেন না প্রাক্ততাবহার লোহ বেরপ যৌগিকভাবে অবস্থিত দেখা যার, উঝারও প্রার তক্রপভাবেই বিমিপ্রিত থাকে। ইহাতে স্বত:ই অন্থমান হর যে, উহা প্রধানত: উঝান্ত-(Meteoric origin) পদার্থ তির আর অপর কিছুই নহে। বিশেষরূপে আলোচনা করিরা দেখিলে জানা যার যে, উহাতে নানা আয়ের (acids) ক্ষার-(soda) রূপে পর্যাপ্ত পরিমাণে অক্সিজেন ও গক্ষক মিপ্রিত আছে; তব্রির তাহাতে অক্সাক্ত থাতু ও বিভিন্ন প্রকার মৃত্তিকার সমাবেশ থাকার সাধারণ দৃষ্টিতে উহার লোহ-সংস্থান নির্ণন্ন করা স্কর্তিন। [উরা দেখ]

চিরপ্রসিদ্ধ এই লোহধাড়ু ভারতের যে বে বিভাগের ভূতরে বোঁগিকভাবে অবস্থিত আছে, সাধারণের অবগতির অস্ত নিরে তাহার সংক্ষিপ্ত পরিচয় প্রদান করা গেল:—

বাজান্ত-বিভাগ।

ছানের নান	रमोर अयात	গলাইবার ছান
ত্রিবাজোর	ज्ञाक्यात्त्रविविष्ठे । नाटिनाविष्ठे	ভে নকোষ্ট্ৰা
ভিয়েবলী	মামেটিক আমনৰ ভাও	বলকুলম্
मङ्ग्रा	नारकेबांकेकृ	এবন হ্ন্সাপ্য
পুছকোট্টই	मारबड़े। स् ड्रे	
ৰিচী শগৰী	কেক্লজিনাস্ নডি উ স্	
কোরবাডোর	রাক্ ভাও	
मीनतिवि	रियागिके ७ मार्डिंगिके,	

द्वारमञ्जूष	দৌহ প্ৰকান	
মলবার	भारमञ्जूष्ट । भारमञ्जूष्ट । नारवेबाहेवे	গণাইবার হাব কর্মনাড়, শেরনাড়,
		বল্লবনাড় এরনাড় ও
		তেমেলপুর ভালুক।
সালেম •	মাল্লেটাইট্	পোর্টো-নডো
দক্ষিণআৰ্কট	डीन	তিরূপন্দর,করকুর্চি
উত্তর	ব্লাক-ভাও	-
চেক্লপৎ	माद्विष्ठाहे । इसिकाहे है	Name .
নেল ুর	माधिष्ठाहेषु ও शिमाणाहेषु	-
কোড়গ	হিমাটাইট্	****
কৰ্ল	a	-
त्यम त्री	ঠ	Grands
কৃষ্ণা		খণ্টুর, মসলীপজন
গোদাবরী	লাইমোনাইট্ ও হিমাটাইট্	`-
বিজ্ঞাগাণ	ণ্টম্, গঞ্জাম, অনন্তপুর ও দা	ক্ ণ-কানাড়ার হানে

বিজ্ঞাগাপটম্, গঞ্জাম, জনস্তপুর ও দক্ষিণ-কানাড়ার স্থানে স্থানে জন্নবিত্তর লৌহ সংগৃহীত হইরা থাকে।

মহিক্স-রাজ্য

শইগ্রাম	মাখেটাইট	
ৰঞ্জুর	ব্লাক-সাপ্ত	চীনপন্তন †
নাগর	ঐ ও হিমাটাইট	বাবা-বুদন,চিন্তলছৰ্গ,

উপরোক্ত তিনটী বিভাগের বিভিন্ন কেলার পর্যাপ্ত পরিমাণ লোহ উৎপদ্ধ হইরা থাকে। নাগন-বিভাগের অন্তর্গত কছর নামক স্থানের চতুস্পার্কে প্রচুর লোহ পাওয়া যার। তথাকার ওব্রাণী নগরের চতুস্পার্কে ও বাবাব্দন গ্রামের পূর্কস্থিত শৈলপাদ-মূলে থনিক্স লোহ গালাই ক্রিবার কারথানা আছে। তত্তির এখানে ইস্পাত প্রস্তুত হইরা থাকে।

হাইদরাবাদ বিভাগ

এখানে হিমাটাইট, টিটানিকেরাস্ সাও এবং বরললে হরিদ্রাবর্ণ এলামাটী ও লাল গিরিমাটীতে লোহ দেখা বার। লিলসাগর
' জেলার প্রস্তুত ধারবাড়-লৈলমালার পেরার-হগ্গেরী-লৈলত্তরে
মায়েটাইট্ লোহেরও সংস্থান আছে। তথাকার সিংহরেণী
করলার থনিতে অপেকাকৃত উৎক্ত লোহ পাওরা বার।
অনন্তগিরি, কলুর প্রভৃতি পরগণার লোহা গালাই করিবার
কারধানা আছে। বেলগগুলের অন্তর্গত ক্এক্থানি প্রামে
ইন্পাত প্রস্তুত হর। এখানকার কোপসমূদ্রমের ইন্পাত-

কারণানা বছকাল হইতে প্রসিদ্ধ । পঞ্চাশ বংসজের পূর্কালিখিত একথানি বিবরণী হইতে জানা বার বে, পারক্রবাসী বিণক্সভাগার কোপসমূত্রে আসিরা এখানকার সর্ক্রোৎক্রই ইস্পাত ক্রের করিয়া লইরা বাইত । উহাতে গামাভাসের চিরন্তন প্রসিদ্ধ তরবারির কলক প্রভাত হইত । ঐ ইস্পাত সাধারণতঃ বিটপারীর Iron-eand এবং বিন্তৃতির magnetite গৌহ হইতে পরিগৃহীত হইরা থাকে।

মধ্যগ্রহেশ

বতার, স্থলপুর, বিলানপুর, রারপুর, চালা, বালাঘাট, তাতারা, নাগপুর, মঞ্জন, নিওমী, ছিল্লবাড়া, নিমার, হোসলাঘাধ, নরনিংহপুর ও জবলপুর প্রভৃতি জেলার বিভিন্ন ছানে হিমাটাইট, মারেটাইট, লাইমোনাইট, লাটেরিটিক্ প্রাকৃতি প্রেমীর বােলিক-লোই পর্যাপ্তভাবে বিশ্লিপ্ত আছে। ঐ সকলের মধ্যে স্থলপুরের অন্তর্গত গড়জাত-মহলসমূহে, রাররাখোলে, রারপুরের অন্তর্গত লতী-লোহারা, বৈরাগড়, বােরার-বাধ, গঙাই, ঠাকুরজ্লা ও নলগাঁও ভূডাগে; বালা-জেলার মধ্যে লোহারা, কেক্সগাঁও, পিরলগাঁও, গুরুবাটী, ওগোলপেট, মেটাপুর ও ভানপুর এবং লােরা পর্বতের অন্তর্গত মােগালা, গোগ্রা, লানবাই ও ঘােবালপুর প্রভৃতি স্থানে প্রচুর লােহ উৎপন্ন হয়। উমারিরা-ক্রলার খনির কারথানার, জবলপুরের উত্তরপাক্তিমন্থ বাবতীর স্থানের খনিক লােহ রুরােপীর প্রথার পরিষ্কৃত হইরা ব্যবহারােসহেশগী লােহে পরিণত হইতেছে।

রেবা, ব্লেলখণ্ড, গোরালিয়র, ইলোর, ধার, চক্রগড় ও
আলি-রালপুর প্রভৃতি ভূভাগে হিমাটাইট্ ও মালানিকেরান্
বৌগিক-লৌহ পাওয়া বার । ঐ সকল লৌহ অধিকাংশই Coalmeasure strata' ও 'metamorphic rocks' নামক জরে
বিক্তন্ত রহিয়াছে। গোরালিয়রের অন্তর্গত সাজান, বৃাইশোরা,
গোকুলপুর, ধরৌলী, বানবারী, রায়পুর পার-শৈল, মালোর,
বিনাওয়ী, বরোলা, ইমিসিয়া গুলায়ী, ও বারোন্ প্রভৃতি গ্রামে
হিমাটাইট্ ও লাইমোনাইট্ শ্রেণীর লোহায় ধনি আছে।
ইলোর হইতে ৬০ মাইল দক্ষিণ-পশ্চিমে অবন্থিত বাধ-গ্রামের
Transition rocks জরে চিমক্তন প্রসিদ্ধ হিমাটাইট্ লোহের
ভাকর বিশ্বনান।

বোৰাই

উত্তর-কানাড়া, থারবাড়, কানানতি, বেসগার, গোয়া, সাবভবাড়ী, কোল্লাপুর, রছণিরি, সাভারা, ক্লাট, রেবাকাছা, প্রকর্মান, কাঠিরাবাড় ও কল্ল-প্রবেশে বারেটাইট, সাটেরাইট্ ও হিনাটাইট্ শ্রেণীর সৌহ বেধিতে পাওরা বার। জন্মধ্যে রজনিরির অভর্মত নাজুমান্ পর্যতের নিকট্য-ক্লোকাছার। জন্ম

এবানকার লৌহ অতি উৎকৃত্ত এবং ভারতব্যালুলারে চারিটা লেই বিভক্ত;
 ববা,—> সোহবলী অুপ্, ২ ভুলবলী-কোলিবলী অুপ্, ৬ নিলীপটী অুপ্,
 তীর্থন্নী অুপ্,।

বাদ্যবন্তের ইম্পাতের ভারের কভ এই ছান বহ আমীন কাল হইতে
 কালিছি লাভ করিবাছে।

বোড়া, বিমোদ্রা ও লাগকেশ্বর নামক স্থানে এবং কাঠিরাবাড়ের ওমিরা-শিশবে জ্বাসিক-করে প্রচুর লোহ আছে; কিন্তু এথন অনেক স্থানেই লোহা পলাইবার জঞ্চ চুরীতে আঞ্চন জলে না।

অরপর, মেবার, আলবার, রারবাড়, আজমীয়, বুলী, কোটা ও জরতপুর রাজ্যের বিজিন তরে বোগিকভাবে লোহ বিজমান আছে। তর্মধ্যে আরাবলী-পর্বতের ট্রাঞ্জিশন্-তর, সিন্ধুপ্রদেশের কীরধর ও রাশীকোট-শ্রেণী, মেবারের গলোর কিভাগের নিকটবর্তী ক্লান এবং আলবার-রাজ্যের রাজগড়ের নিকটত্ব বিস্তৃত লোহ ধনি উল্লেখবোগা। এধানকার লোহ মাগ্রেটাইট্, হিমাটাইট, ও মাহানিক্ল, অরাইডের বৌগিকরণে অবস্থিত।

4mia

বরু, পেশাবর, থিলান্, কাঙ্ডা, মণ্ডী, সিমলা-শৈলরাজ্যসমূহ ও গুরগাঁও জেলার নানা স্থানে লোহ দেখা বার। তর্মধ্যে
কাঙড়ার magnetic ironsand বিশেব প্রশক্ত। কাশ্মীর রাজ্যের
শক্ষ নামক নদীতীরবত্তী পার্কত্য-প্রদেশে, পঞ্চলিরের উত্তরস্থজাগড়-শৈলের নিকটে, ভীমবারা নদীর ভীরবত্তী স্কুকাহন্ গ্রামে;
কাশ্মীর উপত্যকার সোপুরে ও পামপুর নামক স্থানের নিকট
দেশে এবং লাদধ্যে অন্তর্গত বান্লা-গ্রামে পৌহ সংগ্রহের
কারখানা আছে।

বৃক্ত প্রদেশ

কুমানুন, গলিত, বান্দা ও মীর্কাপর জেলার প্রচুর লৌহ পাওরা বার। তর্মধ্যে কুমান্তনের অন্তর্গত রামগড়, পহলী, লোলগিয়ানী, নাত্না-খা, পারবাড়া, বৈরানা এবং নিবালিক ন্তরের কালধুলী ও দেচৌরী নামক স্থানের লৌহ শ্রেষ্ঠ। এই স্থানের লৌহ সকল micaceous hæmatite and limonite বলিয়া প্রসিদ্ধ।

বাহালা

বান্ধালা-প্রবেশের মধ্যে ব্রাকরের বোহার কারথানা (Barakur Iron-works) সর্বান্ধের। রাণীগল্পের ক্রলার ধনির মধ্যে Ironetone shales ও nodules of clay-iron -atone পাওলা বার। বীরভূম, ভাগলপুর, মুদ্দের, গরা, মানভূম, সিংহভূম, লোহারভাগা, উড়িব্যা, হোটনাগপুরের সামস্তরাভ্যা সমূহ এবং বার্জিলিংএ লোহ-সংহান দেখা বার। Birbhum Iron-works Company চুলীতে কালা মাখা প্রথার (a sort of puddlingsprocess) বৌলিক লোহ গালান হইলা থাকে।

খনিয়া ও জনতী গৈলে, নাগা গৈলনালায় এবং বণিপুর মাজ্যে নাধারণতঃ উপিয়ারি করণা-তরে titaniferous magnetite, pisolitie m-dule of limenite ও nodules of clay ironatono কেনা নাম েশ্যানিয়া ক্ষেত্রভাৱি কৈলেন্তরে প্রভাৱ- ন্তরে লোহ পাওরা বার, তাহা ভক্তপ্রবণ হওয়ায় তথাকার লোকে উহা উন্তমরূপে চূর্ণ করিয়া লয়। পরে একটা নালীপথে যথার প্রবলবেগে জলধারা প্রবাহিত হইতেছে, সেই স্থানে ঐ চূর্ণগুলি লইয়া ধূইতে থাকে। তাহাতে মৃত্তিকা ও তদয়রূপ লঘু পদার্থগুলি জলল্রোতে ভাদিয়া যার এবং অপেক্লাক্ষত গুরু লোহকণাগুলি নিমে সঞ্চিত হয়। এইরূপে উপর্যুগরি প্রক্ষালনের পর যথন সেই যৌগিক লোহচূর্ণ মৃদাদি পার্থিব পদার্থ হইতে বিযুক্ত হইয়া পড়ে, তথন তাহারা তাহা অম্যুত্তাপে গলাইয়া লোহ বাহির করে। এইরূপে উপর্যুপরি লোহ গলাইলে উহা পরিক্ষত হয়। পরে তাহা পুন: পুন: অমিবং উত্তপ্ত করিয়া হাতুড়ী দিয়া পিটিলে উৎকৃষ্ট লোহে পরিণত হইয়া থাকে।

ভদ্মভান্তা

উত্তর্বন্ধ, শেশু ও তেনাসেরিম বিভাগে এবং শানরাজ্যের নানা স্থানে, মাপ্ত ই নগরের ১০ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে এবং উহার ৪ মাইল দক্ষিণে অবস্থিত তুইটা দ্বীপে লোহের নিদর্শন পাওরা গিরাছে। বলোপদাগরত্ব আন্দামান দ্বীপের পোর্টব্রেয়ার নগরের কএক মাইল দক্ষিণে 'রঙ্গ-উ ছাঙ্গ' নামকত্বানে প্রচুর পরিমাণে hæmatite যৌগিক আছে, কিন্তু উহা কোরাট্ড ও পাইরাইট্ মিশ্রিত থাকার কোন কাজে আইসে না।

এই বিশাল ধরিত্রীবন্ধে লোহ প্রধানতঃ তিন অবস্থায় বিরাজিত দেখা বায়:—> Sulphide or Iron Pyrites = FeS2; ২ Carbonate FeCO3; ৩ Oxide। এই অক্সাইড, সাধারণতঃ তিন প্রকারের হইয়া থাকে; যথা,— Anhydrous ferri-oxide = FeO3, hydrated ferri-oxide = Fe2 O3 এবং ferrous and ferric oxide! এই শেবোক শ্রেণীতে magnetic oxide of iron = Fe3O4 এবং উহার প্রথমশ্রেণীতে গিরিমাটী Red bæmatite and specular ores ও ছিতীরশ্রেণীতে এসামাটী (Brown hæmatite, bog-iron ore or limonite) অক্সভ্

প্রধানত: Sub-metamorphic or transition rocks মধ্যে; বিদ্যাপর্কতের বিভিন্ন তরে (অর্থাৎ Conglomerates, Sandatones and shales of Gondwans system); রাণিগল-থামঠা ও বানুবর-উপত্যকাভাগে; করলার থনি মধ্যে, বান্ধিপাত্যের ত্রিচীনপানী কেলার cretaceous rocks নামক তরে এবং ভারত বহিত্তি দেশে অর্থাৎ উত্তরপন্তিম হিনালর প্রদেশে, আক্লান-হালে, পূর্কবর্তী ব্রহ্মান্ত্র Tertiary formation ও older metamorphic rock-ভরে এই নকল লোক্ত্রেন্ত্রির স্বাহ্বেশ্বির স্বাহ্বেশ বেখা বাহা।

व्यक्षक-धनानी ।

বাণিজ্যার্থ বাজারে বে গৌহ দেখা যায়, তাহা হইছে ঐ
প্রাক্ত লৌহ সম্পূর্ণ স্বতয়। পাখুরে কয়লার একটা প্রকাণ
চুলী প্রস্তুত করিয়া তাহাতে পৌহের ধনিজ বৌরিকদিগকে
সর্কপ্রথমে দল্প করিয়া লইলে গৌহকে মুক্তাবছার আনয়ম কয়া
যায়। এই প্রক্রিয়ার জল, কার্কাপিক্ আন্হাইড্রাইড্ ও
সক্ষকালি অক্সিজেনকর্তৃক সাল্কার ডাইঅক্সাইড্রুপে বহিপাঁত হয় এবং লৌহ প্রায় কেরিক্ অক্সাইড্রুপে পরিবর্তিত
হইয়া যায়। এই কেরিক্ অক্সাইডের সহিত কয়লা, কিংবা
কোক্ এবং লাইম্ প্রোন (কার্কপেট্ অব লাইম্) মিপ্রিত
করিয়া য়াই, ফার্পেন্ (Blast furnace) নামক বিস্তীর্ণ চুলার
উত্তর্গ করিলে লৌহ অক্সিজেনবিহীন হইয়া আইসে।

স্ইডেন, স্নিরা ও পূর্ক তারতীর জনপদসমূহে এই প্রথার লোহ গালাই হইরা থাকে। নিরে লোহ গলাইবার চুরী এবং লোহের পর্যারিক পরিণতির বিবর উদ্ধৃত হইল:—

ब्राष्ट्रे कार्यम-हेंद्रेक बाजा এই हमा गठिए रजा। देश প্রার ৮ । ফিট্ উচ্চ। উহার উর্ক এবং নিরদেশ মধ্যদেশাংশক্ষা अब विजीर्ग। निव्यत्तर्भ वायु धारवम कत्रिवात अन्न नम এवः थाजू গুলিয়া বাহির হইবার নিমিত্ত ছিজ থাকে। চুলীর উর্দদেশ দিয়া উপরোক্ত কেরিক অক্সাইডের মিশ্রণ প্রবেশ করাইরা দিতে ভ্র। ব্লাষ্ট ফার্নেদ ব্যবহার করিবার তাৎপর্য্য এই বে. চুলীর निवारमण्डिक नरमत बाता रव वांचू ध्यविष्टे हव, जन्दाता रकाक मध হইরা কার্ম্বণিক আনহাইড়াইড্ উৎপন্ন করে। ঐ বাসা যতই উর্জ-গামী হইতে থাকে, অন্নারের হারা উহা ততই অক্সিমেনবিহীন হইরা কার্কাণিক অক্সাইডে পরিণত হইরা বার। পরে এই कार्सिनिक जकराहिए छेख्य क्वित्रक्-जक्राहिए त जक्तिकन আকর্ষণ করিরা লয়; তথন লৌহ মুক্ত হইয়া পড়ে। লৌহ যে সময় দ্রবাভতাবস্থার নিয়নেশে সমাগত হয়, সে সমরে উহা কিঞিৎ আলারের সহিত মিলিত হইয়া থাকে। লাইম্ টোন ব্যবহার कविवाब जार नदी धरे त. हेरा छेखशायहार कार्कानिक जानरारे-ভাইড বাল বিবৰ্জিত হইরা কাল্সিরান অক্সাইডে (চুণে) পরিণত হর এবং এই অবস্থার কঠিন কর্মনাদির সহিত সন্মিলিত হুইরা ভরনাকারে নোহের উপর ভাসিতে থাকে। ইহাকে সাুগ্ (Slag) কছে। চুলীর নিমদেশস্থিত ছিত্রবিশেষ দিরা ইহা वाहित हरेवा यात्र ध्वर लोह ज्यात हित बात्रा वाहित जाहिता। এই ভন্নল লোহ কঠিন হইলে ভাহাকে কাই বা পিগ (Cast or pig) बरन । कान्ररकत्र माना चारन नाशान्त्रनकः छ । । । किए क्ट्रेंट्ड २० किंडे शर्यक केंद्र कार्लग विशे यात्र।

कांडे जावबरन मंककक्ष २ व्हेंटल ८ छोत्र जलात्र व्यवर

সিনিকা, গৰক, ককরান, আস্মিনান্ প্রভৃতি নানাবিধ ধাড় বিভিত্ত থাকে।

লৌহকে বিভক্তবিদ্যার পরিণত করিতে ইইলে, উহাকে পুনর্কার গলাইতে হর এবং সেই সমরে বাছুর অক্সিজেনের বারা অঞ্চান্ত পরিবার, পরে উহাকে পিটিরা বে অবস্থার আনরন করা বার, ভাহাকে রট্ (Wrought) আররণ করে। রট্ আররণে শতকরা ০৩২৫ হইতে ০৩ ভাগ অলার বাকে। যথন শতকরা ০৬ হইতে ২০ ভাগ অলার রাসারনিক বোগে লৌহের সহিত অবস্থিতি করে, তথন ভাহা ইম্পাড (Steel) নামে উল্লেখিত হইরা থাকে।

ইম্পাত প্রস্তুত করিতে হইলে রট্ আর্রণকে কর্মার আমিতে দীর্ঘনাল উত্তপ্ত করিতেইর। পরে লোহিতোপ্তর দেই লোহপণ্ড শীতল জলে কিংবা তৈলে সহলা নিমজ্জিত করিলে অভিশ্বর কঠিন ইম্পাতে পরিণত হর। ঐ ইম্পাত জলুর এবং ছিডিন্থাপক ধর্মালাভ করিরা থাকে। যে যে পরার্থ প্রস্তুত্ত করিরা আকে। ইম্পাত প্ররোজন হর, ভাহাতে দেইরাপ পান দেওরা আবশ্রক। ইম্পাতকে ২২১° দেকিইর উত্তাপে উত্তপ্ত করিরা ক্রমে ক্রমে শীতল করিলে অভিশ্বর কঠিন হর এবং তন্থারা ছুরি প্রভৃতি অল্রাদি প্রস্তুত করিরা থাকে। যন্থাপি ২৮৭° দেঃ পর্যান্ত উত্তথ্ত করিরা শীতল করা যার, ভাহা ইইলে ইহা অভিশ্বর ছিভিছাপক ধর্মালাত করে। ইহার ছারা হড়ির প্রাণ্ড প্রতিত হর।

বেপুর, সালেম, পালম্কোট, পেণাতুর ও পুছকোট নামক ছানে লোহের বে magnetic oxide বৌগিক পাওরা যার, পার্থিব পদার্থ হইতে বিযুক্ত করিরা Blast furnace মধ্যে তাহা গলাইলে উৎক্রই লোহ প্রস্তুত হর, উহাতে শতকরা প্রায় ৭২ ভাগ লোহ থাকে। উহা গন্ধক, আর্সেনিক, অথবা কন্ডরাস-বিবর্জিত। পানপাড়া ও হোনোর নামক ছানের বুনিজ লোহই ইম্পাত প্রস্তুত কার্ব্যে বিশেব প্রাণত।

বেপুর লোহার কারখানার ভারতীর কাই-টাল (cast-steel)
প্রস্তুত করিতে বে প্রথা অবলম্বিত হইরা থাকে, তাহাকে

Bessemer-process বলে। সুইডেন প্রভৃতি পাশ্চাত্য
জনপরে প্রায় উহার অহরেপ প্রথারই ইম্পাত প্রস্তুত হইরা
থাকে; কিছ প্রেট-বৃটেন রাজ্যের বিভিন্ন হানে বিশেষতঃ
নেক্তি নগরের হুপ্রাসিভ লোহার কারখানার বে উপারে ইম্পাত
প্রস্তুত হর, ভাহা উপরোক্ত প্রণালী হুইডেক্সম্পূর্ণ ক্তর।

লোকভের ছুরী কাঁচি (Catlery) শ্রেষত করিবার উপবোগী ইল্পাত নির্বাণগ্রশালী অভি অ্কটিন ও বহু ব্যরসাধ্যবাধে এ ক্ষের লোহার কারণানাসমূদে পরিত্যক্ত হইরাছে। তথার শিগ্-আরবরণ শ্রেষক ক্ষুরণার্ব একট্টী আলোকন বা প্রতিবাতকারী

চ্লী (reverberatory furnace) থাকে। ঐ চুলীর উত্তাপে কাষ্ট-আয়রণ গলিয়া নলপথে চালিত হইয়া Converter বা Bessemer vessel নামক পাত্রে সঞ্চিত হয়। স্থইডেন वा मास्रात्मत (वश्त-कात्रशानात्र मिक्र इती नाहे। ये इहे श्रान ব্লাষ্ট ফার্ণেদ হইতে অসংস্কৃত লৌহ-ধাতু দ্রাবিত হইয়া হাতার স্তায় পাত্র বিশেষে (ordinary founder's ladle) পরিচালিত হয়। পরে ভ্রামামাণ উত্তোলক বন্ধের (travelling crane) সাহায্যে ঐ লোহপূর্ণ হাতা উর্দ্ধে তুলিয়া কনভার্টার নামক পাত্রে দ্রবলৌহ ঢानिया (नया। উভয়ের মধ্যে বিশেষত্ব এই **ए**। हेरतासी প্রধায় রক্ষিত কনভাটার পাত্র চক্রদণ্ডোপরি (axlee) স্থাপিত, উহা ইচ্ছামত ঘুরাইতে পারা যায়; কিন্তু এ দেশীয় ও সুইডেনের উক্ত কনভার্টার-গুলি একস্থানে স্থিরভাবে গ্রন্থ থাকে এবং উহার চারিদিকে অধ্যাত্তাপসহ ইষ্টকচূর্ণ (Fireclay, sand and pulverized english fire-bricks) প্রভৃতির প্রবেপ দেওয়া হয়। তৎপরে বয়লারে আমুমাণিক ৫০ পাউও বাব্স সম্থিত ক্রিয়া ঐ গলিত ধাতুর প্রতিবর্গ ইঞ্চ স্থানে আ হইতে ৭ পাউণ্ড পরিমাণ চাপ দেওয়া হয়। কনভাটারে বায়বিতাড়নার্থ 🖁 ইঞ্চ ব্যাসযুক্ত ১১টা নালী (tuyeres) উক্ত পাত্রের তলদেশে সোজাম্বজি ভাবে সংশ্রস্ত থাকে। ঐ পাত্রস্ত ষ্টাল নরম করিতে মাঙ্গানিজ বা অপর কোন গাতৃ-মিশ্রণ আবশ্রক করে না। কেবলমাত্র মূহুমূহ বাত্যা-সন্তাড়ন দ্বারা চাপ দিলে ও আবশুক-মত অধিকক্ষণ আৰু মুত্তাপে আল দিতে থাকিলে এ ষ্টাল বিশেষরূপে পরিষ্কৃত হইয়া আইসে।

যথন ঐ উত্তপ্ত প্রবীভূত গৌহধাতু প্রায় সম্পূর্ণরূপ কার্বন বিমৃক্ত (decarbonized) হয়, তথন ঐ পাত্রন্থ নালীর ট্যাপ্ খুলিয়া দিলে তরল ইম্পাত ক্রতবেলে বাহির হইয়া তলন্থ ladle নামক পাত্রে আদিয়া পড়ে। ঐ পাত্রেরও তলদেশে তরল ইম্পাত গড়াইয়া পড়িবার ছিদ্র আছে। তরল ইম্পাত পুর্ব ঐ লাড্ল পরে তুলাইয়া ছাঁচের (Cast-iron ingot moulds) উপর লইয়া যায় এবং তথায় ছিদ্রের ছিপি (fire-clay plug) খুলিয়া দিলে ইম্পাত ক্রলম্রোতের জায় সেই ইাচের মধ্যে নিপতিত হয়। উহা শাত্রল হইলে পর ছাঁচের খামিগুলি উঠাইয়া Nasmyth hammer নামক হাতুড়ী যন্ত্রের নীচে রাধিয়া পিটিয়া লয় এইরপে বিভিন্ন আকারের ইম্পাতের পাত প্রস্তৃত করিয়া আচারা বিক্রয়ার্থ বাজারে প্রেরণ করিয়া থাকে।

উপরোক্ত ইংরাজী প্রথায় লোহ গলাইতে হইলে, জপেকা-কত বৃহৎ চুলী আবশ্যক এবং উহাকে পর্যাপ্ত পরিমাণে কার্চের করলা সংযোগে উক্তরোত্তর উত্তাপ বৃদ্ধিসহকারে তাপের মাত্রা স্যান রাথিতে হয়; এই অস্ক্রিবা নিবদ্ধন এবং কাঠের ধরচ

অত্যন্ত অধিক দেখিয়া এখানকার কারখানাসমূহে ইংরাজী প্রথায় आंत्र लोह-नमाब हरा मा। ১৮৩৩ प्रहोत्स मिक्का धार्करहेत সালেম জেলার পোর্টো-নভো নগরে এবং মলবার উপকলে বেপুর নামক স্থানে কার্থানা স্থাপিত হয়। সালেমের কার্থানা হইতে পিগ-আন্তরণ গালাই হইয়া ইংলণ্ডে প্রেরিত হইত। পরে তথা হইতে ইম্পাতে রূপান্তরিত হইরা উহা উচ্চ মূল্যে বিক্রীত হয়। ঐ ইম্পাতে বুটানিয়া ও মেনাই-সেতু নির্দ্ধিত হইয়া-ছিল! বেপুরের কারখানায় উৎকৃষ্ট ইম্পাত প্রস্তুত হইয়াছিল वर्छ, किन्न छेरा वह वाग्रमाश रूअग्राम धवर ष्यामीमात्रगंग किन्नुगाव লাভ না পাওয়ায়, তথায় উক্ত প্রথায় আর ইম্পাত প্রস্তুত করা हम् ना। ১৮৫६ अध्हारम तीत्रज्य-आग्रतन-अग्रार्कम् रकाम्लानी কার্যারম্ভ করেন। ১৮৫৭ খুষ্টাব্দে কুমায়ুনের লোহার কার্থানা প্রতিষ্ঠিত হয়। ১৮৭১ খুষ্টান্দে ইন্দোররাজ্যের **অন্ত**র্গত বারবাই গ্রামে একটী লোহার কারখানা স্থাপিত হইয়াছিল, কিন্ধ তাহাতে কার্য্যারম্ভ হয় নাই। ১৮৮০ খুষ্টাব্দের কোন সময়ে পঞ্জাব প্রদেশের সিরমূর রাজ্যের অন্তর্গত নাহুন নগরে একটা কার-খানা স্থাপিত হয়। কিছুদিন কার্য্যারতের পর পরিচালকগণ বায়বাছলা দেথিয়া কার্যা স্থগিত করিতে বাধ্য হন।

১৮৭৪ থটাবেদ রাণীগঞ্জের কয়ণা-ক্ষেত্রের অন্তর্গত বরাক্র নগরে 'Bengal Iron Company' লৌহা গলাইবার জন্ম একটা কার্থানা স্থাপন করেন। এই সময় প্র্যান্ত কাষ্ট্রের क्यमाहे जामानी-कार्षकाल वावक्र हरेटिक्न। ১৮१६ श्री एक চান্দা জেলায় লোহা গালাই করিবার জন্ত কার্ছের করলার পরি-বর্ত্তে পাথরে কয়লা ব্যবহৃত করিবার ব্যবহা হয় ৷ সেই সময় বরা-করের লোহার কারণানায়ও কোককয়ণা জালাইবার বাবস্থা হই-য়াছিল। ঐ কারথানায় ১২৭০০ টন পিগ্-আয়রণ প্রস্তুত হইলেও বাণিজ্যের ক্ষতি দেখিয়া ১৮৭৯ খুষ্টাব্দে কার্থানা বন্ধ রাখা হয়। উহার তিন বংসর পরে ইংরাজ গ্রন্মেন্ট স্বহস্তে কার্ণানার পরিচালন-ভার গ্রহণ করিয়া Ritter von schwartz নামক একজন স্থদক বৈজ্ঞানিককে তথাকার পরিদর্শক নিযুক্ত করেন। ১৮৮৪ খুষ্টাব্দে ১লা জামুয়ারী একটা বৃহৎ চুলি (ব্লাষ্ট ফার্ণেস) লইয়া প্রথমে কার্যাারম্ভ হয়। ১৮৮৮ খুপ্তান্দের শেষ ভাগে উহাতে ০০৩১৬ টন মাল প্রস্তত হইতে দেখিয়া সংস্কৃত প্রথায় আর একটী ব্লাষ্ট ফার্ণেদ স্থাপন করা হইল, তাহাতে ১৮৮৯-৯০ খুষ্টান্দে ১৫০০০ এবং তৎপরবর্ষে ২০ ছাব্রার টন পিগৃ-আররণ গুলান হইয়াছিল। ঐ ফারখানায় প্রতি বৎসর প্রায় ছই হাজার টন পিগ-আয়রণ গলাইয়া Pipes, sleerers, bridge-piles railway axle-boxes এবং নানা ফুলের কাজ ও কৃষিকার্য্যের উপযোগী মন্ত্ৰাদি প্ৰান্তত হুইতে থাকে। শেষোক্ত বৰ্ষে ইংরাজ গবর্ণমেন্ট বরাকর আয়য়ণ গুয়ার্কপ্ একটা অতম্ব কোম্পানীকে বিক্রের করেন। উপরোক্ত পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিক এথানে সর্ব্ব-প্রথমে মুরোপীয় প্রথার লৌহ গলাইবার কৌশল প্রদর্শন করিয়াছিলেন।

পরীক্ষা

লোহ এবং ইম্পাতের পার্থক্য-নির্দেশ করিতে হইলে, এক বিন্দু তীব্র নাইটিক এসিড্ উহাতে নিঃক্ষেপ করিবে; যগুপি তাহাতে ক্লম্বর্ণের দাগ হয়, তাহা হইলে উহাকে ইম্পাত বিলয়া জানিবে, আর লোহ হইলে সনুদ্ধ চিহ্ন দেখিতে পাইবে।

44

বিশুদ্ধ লোহ রূপার ভাষ সালা, পালিশ করিলে উজ্জ্বল দেখার। লোহকে ঘর্ষণ করিলে এক প্রকার গদ্ধ পাওয়া যায়।
প্রেপ্তচ্ছের ভায় ইহার গঠন, এই নিমিত্ত ইহা ভারবহন করিতে
সমর্থ। আপেন্দিক গুরুত্ব—৭০। লোহ চুদ্দকশক্তি ধারণ
করিতে পারে। ইহা অক্সিজেনের বিশেষ পক্ষপাতী, এইজভ্ত ইহাকে অভি কঠে রক্ষা করিতে হয়। ক্লোরিণ, রোমিণ এবং
আইওভিনের সহিত সহজে যৌগিকভাব লাভ করে। জলমিশ্রিত সাল্ফিউরিক্ এবং হাইড্রোক্লোরিক এসিডে গলিয়া
যায় এবং সেই সময়ে হাইড্রোজেন বাপ্ল বহির্গত হয়া থাকে।
১০৪০ আপেন্দিক গুরুত্বের নাইট্রক্ এসিডে লোহের কোন
পরিবর্ত্তন হয় না, কিন্ত জলমিশ্রিত নাইট্রক্ এসিডে ইহা সহজে
গলিয়া যায়। ইহার আণবিক গুরুত্ব ৫৬।

বাবহার

লোহের বাবহার সম্বন্ধে বর্ণনা করা অভ্যুক্তি মাত্র। বালক,
বৃদ্ধ, যুবা সকলেরই লোহের উপযোগিতা বিষয়ে জ্ঞান আছে।
লোই প্রচুর পরিমাণে ও নানাবিধ রূপে ঔষধে প্রযুক্ত হইয়া
থাকে। এলোপাথিক মতের ঔষধাদিতে লোহের যে যৌগিকগুলি প্রধানত: বাবহৃত হয়, তাহার বিবরণ নিম্নে প্রদন্ত হইল।
বৈপ্তক্মতের ঔষধাদি ও লোহের গুণাগুণ যথাস্থানে বিবৃত
ইয়াছে। বিসায়ন ও লোহশক দেখ।

त्नोत्हद योशिकवन्न ।

লৌছ প্রধানত ছই শ্রেণীর যৌগিক উৎপাদন করিয়া থাকে। যথা,—ক্ষেরাস্ এবং ফিরিক্।

Ferrous oxide FeO
Ferrous hydrate Fe (OH)2
Ferrouso-ferric OxideFe8O4
Ferrous chloride FeCl2
Ferrous carbonate FeCO3
Ferrous sulphate FeSO4
Ferric oxide Fe2O3
Ferric oxide Fe2O3
Ferric chloride Fe2Cl6
Ferric sulphide FeS2

ক্ষেত্র ক্ষান্থ ।—ইহা কণস্থারী পদার্থ। হিরাকদের জবে কার্থটিত দ্রাবণ মিশাইলে খেতবর্ণের হাইড্রেট অধঃস্থ হয়, কিন্তু উহা তৎক্ষণাৎ বায়ুর অক্সিজেনের হারা ফেরিক্ অবস্থার পরিণত হইয়া থাকে। খেতবর্ণ হইতে ক্রমে সুবুজ্বর্ণ এবং পরে গোহিতাভাযুক্ত হয়।

কেরাস্ ক্লোরাইড।—লোহকে হাইড্রোক্লোরিক এসিডে দ্রবীভূত করিলে প্রস্ত হয়। ইহা অতিশয় জলশোষক পদার্থ। দেখিতে সবুজ, জলে এবং আল্কছলে দ্রাবণ উৎপাদন করিয়া থাকে। বাযুতে ইহা বিকৃত হইয়া কেরিক্ ক্লোরাইড্ এবং অক্লাইডরূপ ধারণ করে।

কোন্ আইওডাইড।—আইওডিনের জাবকের সহিত লোহ মিশ্রিত করিলে ইহা প্রস্তুত হইয়া থাকে। ইহা বায়ুতে বিক্রত হইয়া যায়। এই নিমিত্ত চিনির রসের সহিত ঔষধ বাবহার করিবার বিধি আছে।

ক্ষেরাদ্ সাল্ফাইড। — হিরাকসের জাবকে কারণটিত সাল্ফাইড্ সংযোগ করিলে ক্ষেবর্ণের সাল্ফাইড অবংখ হয়।
ইহাকে বায়তে রাথিয়া দিলে কেরিক্ অক্সাইড এবং গন্ধক উংপদ্ধ হয়।

কেরাদ্ সাল্ফেট বা হিরাকস।—জলমিশ্রিত সাল্ফিউরিক এসিড দারা লোহকে দ্রবীভূত করিলে ইহা প্রস্তুত হইয়া থাকে। ইহা সবুজবর্গ ও দানাদার পদার্থ। ইহার এক অগুতে ৭ অগু জল সংযুক্ত করিলেও দানার আকার নই হয় না। জলে এবং আল্কহলে সহজে গলিয়া যায়। লোহিতোভাপে হিরা-কম বিরুত হইয়া সাল্লার ডাইজক্সাইড্ ও টুইঅক্সাইড্ বাম্প এবং ফেরিক্ অক্সাইডে প্রাথসিত হয়। নর্চসন্ (Nordhausen) সালফিউরিক্ এসিড্ প্রস্তুত করিতে ইহা বাবধৃত হয়। হিরাকসের দ্রাবণ বামুপৃষ্ট হইলে বেসিক্ ফেরিক্ সাল্ফেট্ জন্মিয় থাকে।

ক্রোস্ কার্বণেট। — হিরাকসের দ্রাবকে কার্বণেট্ অব্ সোডা সংযোগ করিলে শ্বেতবর্গের কার্বণেট্ অবঃত্ হয়, কিন্ত হাইড্রেটের আয় বায়ুত্ব অক্সিজেনের সংযোগে কেরিক্ হাই-ডেট হইয়া থাকে।

ক্ষেরাদ্ দক্ষেত্। — কক্ষেত অব্ সোডার দ্রাবণ হিরাকদের
ন্ত্রাবণে ঢালিয়া দিলে খেতবর্ণের ক্ষেরাদ্ কক্ষেত্ অধঃপতিত হয়।
কেরিক্ অক্সাইড। — কেরিক্ ক্লোরাইডের দ্রাবকে কারঘটত দ্রাবক মিশ্রিত করিবামাত্র পাটকিলা বর্ণের গুড়াবৎ পদার্থ
নীচে পড়ে। ইহাকে হাইডেটুট কহে। হাইডেটুটের জল বিপুরিত
করিলে অক্সাইড পাওয়া যায়। কেরিক্ অক্সাইড ক্ষারাদি

পদার্থে দ্রবীভূত হয় না। ইহা এসিডে গলিয়া থাকে।

কোনো-কেন্ত্ৰিক অৰ্থাইছিল নামভাগ কোন্ এক কেনিক্
নান্দেটোৰ আৰকে আনোনিয়া বিভিন্ন কৰিলা উৰাৰ আনোন কৰিলে কুকাৰৰ সাধাৰ আন কিন্তা নাইট্ৰিক এক হাইডেন-কোমিক অনিচে আৰক্ষি

কেরিক্ লোরাইড। কেরিক্ অনুনাইডকে হাইডো্লোরিক এনিতে লাইজুল করিকে ইয়া গ্রন্থত হয়; অথবা নোইকে হাইড্রোলেরিক এনিত লাইজুল করিবা, পরে উহার সহিত নাইজুল এনিত নিবিত করিবা হুটাইনেও কেরিক্ লোরাইড্

জনপুত কেরিক্ ক্লোরাইড প্রস্তুত করিতে হইলে লোহিছে।
ভাষ ক্রেছের সহিত ক্লোরিণ বাশা সংবোগ করিতে হয়।
ইহা অভিশার জনশোবক। জনে, আন্কোহনে এবং ইথারে
ক্রবীস্থুত হয়।

কেরিক্ নান্কেট্।—হিরাক্সের বৃহিত নাল্কিউরিক্
এনিড বিলিত করিরা এই বিল্লেট্র সহিত প্রবার নাইট্রক্
এনিড সংবাদ করিরা কুটাইলে কেরিক্ নাল্কেট প্রেডত
হইবে। হাইছেট্র, কার্জনেউ, কডেট্ এবং নাল্কাইড
হাতীত কেরো-নারাবাইড অব্ শোটানিরানের তাবকবোগে
কেরান্ শ্রেমীর লখণসমূহ খেডবর্গের বৌলিকরণে অধ্যয় হয়।
বায়্র সংবোগে উহা ক্রমে নীলবর্গে পরিবর্তিত হইতে থাকে।
কেরিডসারানাইড অব্ শোটানিরাম্ নিলিত করিলে গাঢ়
নীলবর্গের অধ্যপাতন হটে। ইহাকে টার্পবৃল্ ব্ল বলে। নাল্কোনারারাইড অব্ গোটানিরানের নহিত কেরান্ শ্রেমীর
ক্রপদিনের কোন প্রকার পরিবর্জন ক্রমা বার না।

কেনিক্ ত্ৰেণীর বেধিকবিগের কানাহি পৰার্থের বারা বাইডেট বছ। কারবাটত সাল্ফাইডের বারা কুকবর্ণের সাল্কাইড স্বাংশ্ব বছ এবং ভাষার সহিত গ্রহ নিত্রিত থাকে। কোনে ভাষা থাকে রা।

কেবোনামানাইড অব্ পোটানিয়ানের সহিত্য গাড় নীলবৰ্ণ অব্যাহ হয়। ইহাকে প্রানিয়ান ফু কহে। কেরিড নায়ানাইড অব্ পোটানিয়ানের নায়োগে কোন প্রকার পরিকর্তন সংঘটিত হয়, রা । এই লক্ষরের যায়া কেরান এবং রৌধিক্ষিগকে পূবক্ করা বাব । নালুক্ষে-নায়ানাইডের সহিত গাড় রক্তবর্ণ উপস্থিত হইয়া বাকে। কোনো আবা হর রা ।

Control of the way was a state of the control of th

এই বানুষ আবিদায় ও ক্ষমান্ত্রাপ্রান্তির্নাত বলে নতেই কনসমানে ইয়ার নাবিক বিভূত এইয়ারিক। আরভ্যানিগণ নৌহণানের কম্মান আনিজেন। অধ্যান্ত্রে আরভীয় দৌহ-পানারি দেবাক্তরে পরিভাগিত স্ক বিজ্ঞান ক্ষমান বিজ্ঞান ক্ষম বালিবার বিশেষ উপায় বাই। তার্ড্রেছ আইনকান হইতে কৈদেনিকের সহিত আর্ডবালীর বালিবান্ধের বাকার সম্পান হর যে, আসিন নভাভার আর্দক্ষেত্র ভারত হইতে লোহ-নির্মিত পাতারি, অথবা ইস্পাত একৃতি ভারত হইতে সূদ্র হ্রোপথতেও রপ্তানী হইত।

মহিত্য, সালেন প্রভৃতি লাজিশান্তা আমেকে বছপ্রাচীন কাল হইতে ইন্দাত প্ৰছত হইত। তথাকাৰ লোকে খনিক Magnerite সৌহ গলাইয়া আৰাত সহনশীল (Maileable) একঅকার সরম সৌহ ঢালিরা সইডা এখনও ভবার সেই প্রথা চলিতেছে। ঐ লোহ শীতন হইলে ভাহারা পুনঃ পুনঃ ভাহাকে অন্নিৰৎ অপ্তোজন করিরা হাতৃড়ীবোগে পিটিরা একখানি फोका समि श्राप्तक करता। औ शामि श्राप्ति जाशात्रगण्डः ১२ × ১১×২ পরিসরবৃক্ত হইরা থাকে। পরে ঐ থামিগুলি অভিবাগে উপর্তিপরি শিটিবার পর উপরুক্ত অবস্থার আসিলে, ভাষাকে বঙ বঙ করিরা কাটিরা লর। অনতর ভাষারা নেই বঙ শ্বলি বিভিন্ন মূচীতে পুরিয়া, প্রভ্যেক মূচির মধ্যে লৌহ-পরিমাণের বনমাংশ Cassia auriculata বুক্তের एक कांड्रेयक মিশ্রিত করিয়া দের। মূচীতে লোহ ও কার্চখন্ড রাখিবার পর্বের ভাহারা অভ্যন্তরের চতুর্দিকে Asclepias gigantes অপ্রা Convolvulus laurifolia নামক বৃদ্ধবের কাচা পাতা পাতিয়া তচ্পরে দৌহ ও কাঠখওওলি হাপনপূর্কক উপরে আর একধানি পাভা চাপা দিরা মূচীর মুখে মুদ্ভিকার প্রলেপ বিতে হর। পরে একটা কুল চুলীতে ঐ মূচী স্থাপন পূর্বক ক্রমাররে বান্সভাত্যনার করিতে হয় 🕩 আড়াই বন্টাকাল এইরূপ অধর উভাপে সুচিওলি রক্তবর্ণ হইরা উঠিখে সুচী নামাইরা রাখে। উহা স্বীপুল হইলে পন্ন, মূচী ভালিয়া ভদভারুরে বে ইম্পাডপিও থাকে ভাষা বাহির করিয়া পুনরার অগ্নিডে বিজেপ করে। অভ্যণর ভাহারা ঐ ইম্পান্তণিশ্বকে কএক ঘটা অর স্তাপে वाषिता त्रव रहे, क्षित्र बाव त्रव व्यवस्ताना कानवाम करत मा नतः छ-टेरिक भा-टेरिक केरिक भारत सांख्याचा नाइनकाफन विवास थारक । ध्रहेबान तक्य के लोहिनक क्या-कांक्रपात ইল্পাতে পরিণত হর, তথন ভাষাকে হাজ্ঞীর বারা বিটিয়া চোট क्षिके रेग्नाक रूपकरन राजारत विकास नामारेश एक । राजि-्वारक बारे वेन्साक 'बुरब' (क्वकाड)। मारव नविक्रिक । ১৭১৫

চলিত কৰাত "ভাততাৰ" বলে। সেতৃতা বা বৰ্ণকালৰ লোগা নানা-ইবাছ লালে বৰ্ণকা বা ব'বল বিভাবকেল ব্যালায়ক বীজ ও উপতে কেল বাছ্ নকালিত কৰিবা বাহিব কৰা বাব্য হালে ক্ষেত্ৰিল।

mit genglie est i der der beit bis at die die des ester ist anderen der ist anderen der in anderen der in anderen der

ষ্টাবের >>ই জুন George Pearson M D ননেল সোনাইটার সমকে Experiments and observations to investigate the nature of a kind of steel, manufactured at Bombay and there called woots †। ইহার পর Mr. Heath একটা বিশৃত তাবৰ শিখিয়া বৃৎক্ষের বাণিল্য ও উপবোগিতা প্রকাশ করেন। 1

আমরা পেরিপ্লানের বর্ণনা হইতে জানিতে পারি বে, সেই সমরে ভারতীর ইস্পাতের বহল খ্যাভি ছিল। প্রাচীন আরবীর কবিভাসন্তে অপ্রসিদ্ধ ভারতীর ইস্পাত-নির্মিত ভরবারির উল্লেখ আছে। প্রাচীন স্পেনবাদীর নিকট ইহা অল্-হিন্দে নারে, পরিচিত ছিল। পারনিক বণিক্ষণ উহাকে 'হৃদ্ধু'নী' বলিতেন। মার্কোপোলের বিবরণীতে উহা "ওন্দানিক্" (ondacique) পরে বিবৃত রহিরাছে। খুরীর ১৬শ শতাকে পর্জু গীরু বণিক্ষণ কানাড়া উপকৃষ্ভিত ভাউকল প্রভৃতি হান হইতে লোহ লইরা রুরোপে রপ্তানী করিতেন। ১৫৯১ খুরীকে পর্জু গাুলরাজ গোরার গবর্ণরকে প্রকাশী আবেশপত্রে লিখিরা পাঠান বেন তিনি প্রচুর লোই ও ইস্পাত চেউল বন্ধর হইতে আফ্রিকার উপকৃলে এবং লোহিত-সাগরতীরবর্জী তুর্কজাতির মধ্যে বিক্ররার্থ প্রেরণ করেন। (Archivo Port. Orient, Fasc. 8, 318)

Wilkinson কৃত Engines of war (১৮৪১ খু:) নামক প্রকে এবং Percy রচিত ধাতববিজ্ঞান (Metallurgy, Iron and Steel) গ্রহে "বৃৎজ্" নামক ইম্পাতের বিশেষ প্রশাসা আছে। তাঁহারা লিখিরা গিরাহেন বে, ডামাঝাসের বিখ্যাত তরবারির ক্লক ভারতীর বৃৎক ইম্পাত হইতেই নির্মিত হইত।

বর্ত্তমান সমরে ভারতীর লৌহ অপেকা বুরোপীর সৌহেরই আদর অবিক। ইহা হইতে গৃহত্তের নিতাব্যবহার্য হাতা, বেড়ী, খৃত্তি, বাঁবেরী, কড়া, তস্লা প্রভৃতি পাত্র এবং কড়ি, বর্ত্তমা, পান, কল, কলা প্রভৃতি সকলই প্রভৃত হইতেছে। রেগণণ, সেড়ু প্রভৃতি অনেকানেক অবৃহৎ অক্সমাহসিক কার্যাও লৌহের ছাল্লা সম্পাদিত হইতে দেখা বার। লৌহের ইম্পাত হইতে ইন্ধিন প্রভৃত হর।

২ ছাগৰিশের। "জজেন বাপি লৌহেন নবাবের বভত্রতঃ।" (ভারত ১৩৮৮১১০)

लोहकूट्रज्, क्रिक्श्नानारताक हर्रा वशका

বাকিবে। অধিক সভব, ইন্যাভার্থবোধক এই উদু শবাই পরে ইন্যান্তর, উকো নামক ব্যৱহাণ ব্যবহৃত ক্ষিত্রত।

+ Philos. Transactions for 1795, pt II.

1 Journ. Roy. As. Soc, Vol. V, p. 200.

লোহকান্তক (রী) कान्डलोर । (রাজনি) লোহকিট্র (রী) বঙ্গ।

লোহচারক (পুং) গোহেন লোহনিককেন চারঃ আচারো বন । নরককেন । বেধানে নিগড়ে বছন করিয়া সাজা কেওয়া হয় । [লোহনারক বেধ]

লোহজ (রী) দোহাৎ বারতে ইতি জন-ও। > বঙ্র। (রজনানা) ২ বর্জনোহ, চলিত বিদরী। (রাজনি°)

লোহদাহ (পুং) অৰচিকিৎসাভেষ। বাৰ্থকোণাৰি হেডু অৰণরীত্তে রোগ অন্মিলে নৌহশলাকা বারা ব্যবস্থান ব্যাপারভেষ।

লোহনিক্লম্বীকরণ (ক্নী) সম্যক্ষণে লোহভাইকরণ। লোহনিক্লম্বীকরণমিত্রেপঞ্চক (ক্নী) ছড, মধু, ছুঁচ, নোহাগা ও অপ্তপু পাঁচটা পদার্থ বাড়পদার্থে সংযুক্ত হর বলিরা মিত্রপঞ্চক নামে অভিহিত। মিত্রপঞ্চকরহ বিপক্ক ও মৃত লোহ সংযত না হইলেও ৪ মতি মাত্রা সেবন করা বাইতে পারে। (সংস্ক্রসায়সা

লৌহপত্ৰী (ত্ৰী) > লৌহচটকা, লোহাৰ চটা। ২ লৌহ মারণ। ৩ লোহপুর, একটা প্রাচীন নগর। (ভবিশ্ববন্ধণ ৭৩২) লোহপর্প টী. ওবধৰিশেব। প্রস্তত প্রশালী-পারদ ২ ভোলা, গদ্ধক ২ ভোলা একতা কল্মলী করিয়া ভাষায় সহিত ২ ভোলা লোহ মিশ্রিত করিরা লোহপাত্রে উত্তমরূপে মর্মন করিবে। পরে কোন পোহপাত্রে ম্বত মাথাইরা ভাষাতে কজালী স্থাপন করিয়া দৃহ অগ্নিতে খেদিত করিবে। ত্রবীভূত হইলে ক্ললী পত্রে চালিয়া বধাবিধি পর্শ টা প্রান্তত করিবে। পরে চর্ণ করিরা নইবে। ১ রতি হইতে আরম্ভ করিরা প্রতাহ ১ রডি করিয়া মাত্রা বৃদ্ধি করিবে। এক সপ্তাক বা ২ সপ্তাক পর্যান্ত অর্থাৎ আরোগ্য লাভ পর্যান্ত সেবনীর। অন্তপান শীতন কল कथरा बीज़ा ७ थत्मन काथ। खेवथ त्मदमकात्म वितारी ७ শাকাদি ত্রব্য এবং চিক্তা, মৈধুন প্রাকৃতি বর্জনীয়। লৌহপর্ণ টা দেবন করিলে এহনী,শতিকা, অতীসার, পাঞ্চ, কাবলা, অগ্নিমান্দ্য ও ভশ্বক প্রভৃতি নানা রোগ নট হর। (ভৈম্বারম্বা গ্রহণাথি) লোহপূর্ণ টারস. বাসক্ত্র ও কাসাবি রোগনাশক ঔষধ-ভেব। প্রস্তুত্রশানী-শার্থ ও গরুক প্রভোক ২ ভাগ এবং লৌৰ > ভাগ একত মৰ্দন করিয়া দুহ পদির উদ্বাংশ श्रमादेश की श्रमण कतित्व। जनस्त्र अस्पति, मुखिनी, यक. विक्ना, काडी, निनिना, विक्रु, वानक, इक्क्नांदी & जाता এই স্কল প্রব্যের প্রভ্যেকের রসে সাভ সাভবার ভাষনা বিশ্বা গুৰু হুইলে ভাত্ৰণাত্ৰে রাধিরা গছ দির্গত হওরা পর্যন্ত প্রটুলাক क्तिर्द । इरे त्रकि श्रीत्रमाण और केवन शार्मक सन्। शिश्रम् হান কাৰ, অথবা বাসক পাতার রন অছপানে সেবন করিলে খান কান প্রভৃতি বিনষ্ট হয়। তেঁতুল, তৈল, বেগুণ, কুমাও, কলা, নাংসবৃব ও কলানক ত্রব্য ভক্ষণ এবং ত্রীসভোগ নিবিদ্ধ। এই ঔষধে লোহের পরিবর্গে ভার দিরা পাক করিলে তারপর্ণটা প্রভৃত হইরা থাকে। [ভারপর্ণটা দেখ।]

লৌছবৃদ্ধ (পুং দ্লী) লৌহত বছমিৰ বছনং যত্ত। লোহার শৃষ্পা। শিক্ষী।

লোক্ডাণ্ড (গং) গোহত ভাওমিবাফ্ডির্যত্র। অগ্যভাগ। (শক্ষচ) চলিত কথার হামানদিতা বলে। (রী) গোহনির্মিত পাত্র বা ভাও।

লোহভূ (বা) লোহভ ভূমিব। > কটনী নামক লোহপাত্র বিশেষ, চলিত কথায় কটাহ।

'লোহান্ধা চাবুগা লোহা লোহভূ: কটিনীতাপি ॥' (শব্দচ•) লোহভেক্বীবীক্স (ক্লী) রসন্ধারণ বীক্তেদ।

(রুস° চিন্তা• ৩ অঃ)

লোহময় (আ) > লোহমণ্ডিত। ২ লোহবিনির্দ্ধিত। লোহমল (জী) লোহস্ত মলম্। লোহকিউ, মণ্ডুর। ইহার বিবয় ভৈষম্য-ধ্বস্তরিতে এইজপ বর্ণিত আছে—

শনভো লোহমলাজামান্দিক সিতাভাগাঃ সমামানতঃ
পাত্রে তান্ত্রমরে দিনারমন্থিতং সংস্থাপরেদাতপে ।
পশ্চান্তব্যনতাং প্রশীর রজনীমেকাং বহিঃ স্থাপরেৎ
পাত্রে তান্ত্রমরে বিধেরমথবা পাত্রে হবিভাবিতে ॥
পশ্চান্ত্রাবচত্ইরং প্রতিদিনং জধ্ব। জলং শীতলম্
পেরং ভোজনপূর্বামধ্যবিরতোহস্বজ্বভাইছার্ন রৈঃ।
জেতুং শূল্ভভাশমান্দ্যক্ষনবাসাম্লবিজ্বরা-

দ্বাদাপস্থিমেংসর্বভঠরাজীর্ণাদিস্বাক্ষরঃ ॥"(ভৈবজাধ্বস্তরি)
লোহ্যুভ্যুক্ষরন্ত্রস্ত্রদ্ধর, সীহারোগনিবারক ঔবধ বিশেষ। প্রস্তিত-প্রধালী:—পারদ, গছক, লোহ, অন্ত, তাত্র, মনঃশিলা, বিবমৃত্তি, কড়ি, ভূঁতে, শম্,রসাঞ্জন, জার্মল, কট্ কী, সাচিক্ষার, ববক্ষার, জ্বরণাল, উঠ, পিপুল, মরিচ, হিলু ও সৈদ্ধর লবণ প্রত্যেক্তে সমজাগ প্র্যাবর্জ রবে ও বেলপাভার রবে নাত সাত বার ভাষনা বিরা পরে পুনরার প্রধাবর্জরসে উত্তমরূপে মর্দ্দন করিবে। তদনস্তর চুই রতি পরিমাণ বটা প্রস্তুত করিরা রোগীকে সেবন করাইবে। ইহাতে প্রাহা, বরুৎ, শুল্ব, অঞ্চলা, অপ্রমান, পোণ, উমরী, বাতরক্ত ও বিক্রবিরোগের পাত্তি হইরা থাকে।

লোহ্যন্ত (পুং) লোহেন নিৰ্মিতঃ বন্ধ ইব। > লোহার কল (ইঞ্জিন প্রকৃতি।। ২ রসারনোক্ত ভাগু বিশেষ। ইহাতে ঔবধাদি পাক করিতে হয়।

লোহর সায়ন, ঔষণবিশেষ। প্রস্তৃতপ্রণালী—রপ পোইলী-

বছ শুগ্লন, তালমূলী, ত্রিঞ্চলা, ধদিরকাঠ, বাসক্ছাল, তেউড়ী, ভূকদৰ, নিসিলা, চিতামূল, সিজমূল প্রত্যেক ১০ পল, পাকার্থ জল ৮০ সের, শেব ২০ সের। এই কাথ বল্রপৃত করিরা তাহার সহিত চিনি ১ সের ও উক্ত শুগ্লুলু ১০ পল মিল্রিত করিরা লইবে। অনজর কোন তারপাত্রে পুরাতন স্বত ৪ সের ও লোহচূর্ণ ১২ পল দিরা তাহার সহিত চিনি ও শুগ্লুল মিল্রিত কাথ জল দিরা পাক করিবে। আসর পাকে শিলাজতু ২ পল, এলাইচ ৪ তোলা, গুড়ত্বক্ ৪ তোলা, বিড়ল ২ পল, মরিচ, রসাজন, পিপুল, ত্রিকলা প্রত্যেক ২ পল, এই সমস্ত চুর্গ প্রক্রেপ দিবে। শীতল হইলে মধু ১ সের মিল্রিত করিরা শিলার গেবণ করিরা স্বত পাত্রে রাখিবে। মাত্রা ৪ মাবা হইতে আরম্ভ করিরা ক্রেমে উপস্কু পরিমাণে বৃদ্ধি করিবে। অহুপান হয় ও হাগাদি জালল মাংসের যুব। ইহাতে মেদোরোগ প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার উপশম হইরা থাকে। কদলী, কলমুল, কাঁজি, করম্চা, করীর ও করলা এই সম্দর্বজনীর। (ভৈবজার্জা মেদোহধিকার)

লোহবিশুদ্ধিদ (গং) টম্বণক্ষার, সোহাগা। (রসেক্সসার°) লোহশক্কু (গুং) লোহস্ত শব্ধু যত্র। ১ নরকবিশেষ, এথানে পাপীদিগকে স্টীয়ারা বিদ্ধ করা হইরা থাকে। ২ লোহনির্দ্মিত কীলক মাত্র।

লোহশাস্ত্র (ক্লী) স্বর্ণাদি অষ্টধাতুর ব্যবহার ও উপযোগিতা-নির্দেশক গ্রন্থ বিশেষ।

লোহদোধন (রী) লোহন্ত শোধনং। লোহ নামক ধাড়ু বিশুদ্ধবিষ্টার আনরন করিবার রাসায়নিক প্রক্রিরাবিশেব। লোহকে অগ্নিযোগে লোহিডোড়প্ত করিয়া সাতবার কদলীমূলের রসে নিমজ্জিত করিলে, অথবা অস্টণ্ডণ জলে বিপক এবং চতুর্থ জাগাবশিষ্ট ২ সের ত্রিফলার কাথে, সপ্তপত্রবিভক্ত ১০ সের লোহ আগুনের উদ্ভাপে লাল করিয়া সাতবার নিক্ষেপ করিলে লোহ বিশুদ্ধ হয়।

কান্তি আদি গোহকে পাত করিয়া অর্থমান্তিক, ত্রিফলাচূর্ণ ও শালিঞ্চ শাল্পের রস মাধাইর জমলঃ অগ্নির উত্তাপে পোড়াইরা লালবর্ণ করিবে। তদনস্তর তাহা অলে ড্বাইরা হত্তিফর্গ, পলাশ, ত্রিফলা, বৃদ্ধলারক, মান, ওল, হাড়বোড়া, ওল্পী, দলমূল, রুত্তিরী ও তালমূলী নামক দ্রব্য প্রত্যেকের কাথে বা রসে বন্ধপূর্কক পট দিলে লোহ বিশুদ্ধ হর। গজপিয়লী, খেডবেড়েলা, অড়্টী, অপামার্গ,কুল্ক ন'টে, পুনর্নবা এই সকল প্রাত্তন মণ্ডুরের উর্দ্ধ ও অল্পোদেলে বিক্তন্ত করিয়া গোস্ত্র বার্য় তিন দিন পাক করিয়া চাকা দিবে। ত্রিরপে তিন দিন রাবিয়া দিলে অন্তর্গালে উহা নিবিক্ত হইরা ক্রমশং ওক্ত হইরা আনিলে, উহাকে বাহির করিয়া ধুইরা ফেলিবে ও ক্লাইরা গইবে।

লোহা (ত্রী) লোহন্ত। (শবচ°) লোহাচার্য্য (গুং) > ধাতুবিজ্ঞান-(Metallurgy)-শিক্ষাধাতা। ২ লোহশিলজ।

লোহাত্মা (ত্রী) লোহ আত্মা বক্তা:। লোহতু। লোহামৃতলোহ, ঔবধভেদ। (চিকিৎসাসার') লোহায়ন (গং) লোহের গোতাপত্য।

(পা ৪।১।৯৯ নড়াদিগণ)

লোহায়স (তি) বাড়নির্মিত।
লোহাসব, অররোগনাশক ঔষধবিশেষ। প্রেক্ত প্রাণালী—
লোহচূর্ণ, ত্রিকটু, ত্রিফলা, যমানী, বিড়ক, মূডা, চিডামূল
প্রত্যেক চূর্ণ ৪ পল, মধু ৮ সের, গুড় ১২॥• সের ও অল
১২৮ সের এই সকল একত্র মিশ্রিত করিয়া ম্বতকুন্তে রাখিয়া
ভাহার মুখ আছোদিত করিয়া এক মাস রাখিবে। ইহাতে ঔবধ
সমস্ত অন্তর্গুণিক্ত হইয়া আসবরূপে পরিণত হয়। ইহা সেবন
করিলে অগ্রিবৃদ্ধি এবং জীর্ণক্ষর ও শ্রীহা প্রভৃতি নানা রোগের
শান্তি হয়। (ভৈবজ্যরম্বাবলী অরাধিকার)

লোহি (পুং) অষ্টকের পুত্রভেদ। (হরিবংশ) লোহিত (পুং) লোহিতঃ ইতি লোহিতশন্ধাৎ স্বার্থে ফ (অণ্) প্রত্যায়েন নিম্পন্নঃ। > শিবের ত্রিশূল। (ত্রি) লোহিত-সম্বনীয়।

লোহিতধ্বজ (পুং) গোহিতধ্বজের মতামুবর্ডী সম্প্রদায়-ভেদ। (পা° থেতা>>২)

লোহিতাশ্ব (পুং) লোহিতাশ্বের বংশধর।

লোহিতীক (অ) লোহিত ইব। লোহিত-(কর্ক-লোহিতা-দীক্র। পা বাতা১১০) ইতি ঈক্র। ১ লোহিতবর্ণতুল্য। ২ ক্টিক।

লোহিত্য (পুং) লোহিতক্ত ভাবঃ। লোহিত-ব্যঞ্। লোহিত্য। (মদিনী)

(পুং) লোহিত ইব। স্বার্থে ব্যঞ্। > সাগরভেদ। (শব্দমালা) সম্ভবতঃ ইহাই আরব ও আফ্রিকার মধ্যবর্ত্তী লোহিতোপসাগর (Red sea)। ইহার জন বোর লোহিতবর্প এবং অলের আভ্যন্তরিক তাপও নিতান্ত কম নহে। স্থয়েজ-ধাল কাটা হইবার পর লোহিত-সাগরের সহিত ভূমধা সাগরের সংবোগ বটিরাছে। [স্থয়েজ দেখ।]

২ নধবিশেব, ইহার অপর নাম ব্রহ্মপুত্র নদ। কালিকাপুরাণে প্রহ্মপুত্র লোহিত্যের উৎপত্তি-বিবরণ এইরূপ লিখিত
আছে—হরিবর্বে শান্তমুম্নি বাল করিতেন, তিনি ইর্মাণার্তমুনিক্সা অনোবাকে পত্নীতে বরণ করেন। শান্তমু বীর প্রিরত্রা পত্নী লইয়া কবন কৈলানে, কবন চক্রভাগার উৎপাদক

বৃহৎ লৌহিত্য সরোবর তীরে কথক্ষা গভবাবন পর্বতে ুবান ৰব্লিডেন। একদিন তপৰী শাৰ্ভ কল পুলা চরলোকেশে ৰুনান্তরে গমন করিলে, অবসর পাইরা লোকপিডাবহ এখা শান্তহভার্ব্যা অমোবার সমূধে উপস্থিত হইদেন। ভিনি সেই লুরন্তৃশ্রী বেবজনমনোলোভা বুবতী অবোধার অসাধাত স্থপ-तोक्कर्वा नक्कर्णन कतिहा महनशीकात नाष्ट्रिक **देखिवरिकात** खास হইরাছিলেন। তথন কামশরে প্রশীড়িত হইরা একা সেই মহাস্তী আমোঘাকে বলপূৰ্কক আক্ৰমণ করিছে ধাৰ্মান इटेरनन। नछी वनारकारत्रत्र छत्त चालम मस्य अविडे इटेश বার ক্রম করিলে আশ্রম মধ্যেই বিধাতার রেডখলন বইল, ব্ৰদাও প্ৰস্থান করিলেন। শাত্তত্ব আগ্ৰায়ে প্ৰভাৱেত হইরা হংস্পদ্চিত্ ও ব্রশ্বীর্ঘ নিরীক্ণপূর্বক ভিবিন্ন কানিবার উদ্দেশে विश्वत्रविस्थन स्वदत्र श्रीत्र श्रीदक अन्न क्तिरनम। অনোযার মুখে ব্রহ্মার আগমনবার্তা জানিতে পারিয়া তিনি ধ্যানস্থ হটলেন এবং দিবা জানবলে জগতের হিতার্থে তীর্ঘোৎ-পাদন দেবগণের অভী জানিয়া ভিনি বীয় পদ্মীকে সেই ব্রদ্মবীর্য্য পান করিতে আদেশ করিলেন। পতি পদ্ধীতে অনেক বাদামুবাদের পর শান্তম পদ্ধীর পরামর্শান্ত্সারে সেই এক্ষরীক্ পান করিয়া পরে বয়ং সেই তেক অমোঘাগর্ভে নিকেপ করিলে, আমোখা গর্ভবতী হইলেন। কালে সেই গর্ভ ইইতে জলরাশি ' ভূমিষ্ঠ হইল। সেই জলরাণি মধ্যে নীলাম্বপরিহিত রক্তমালা-বিভূষিত উচ্ছল কিরীটধারী চতুত্বি পদ্মবিভাগবলশক্তিধারী আরক্ত গৌরবর্ণ ও লিওমার মতকারত এক পুত্র বিভয়ান রহিয়াছেন। শাস্তমু সেই জলময় পুত্রকে কৈলাল (উত্তরে), সম্বৰ্তকাদি (পূৰ্ব্বে), গন্ধমাদন (দক্ষিণে) এবং কাক্ষ্ (পশ্চিমে) শৈল চতুষ্টয়ের মধাবর্ত্তী উপত্যকাগর্ভে হাপিত ক্রিলেন। বৃহ্কাল অভীত হইলে ব্রহ্মপুত্র জলরাশিক্ষপে পাঁচ र्याजन रुक्ति शहिरनन। माकृरका शाशसाठनार्थ जामनदा পরতরাম ঐ বন্ধপুত্র মহাকুণ্ডে দ্বানার্থ আগমন করেন। ভিনি বরং পাপ মুক্ত হইবার পর, লোকহিতাভিলাবে পরও-সাহায্যে হেম শৃঙ্গনিরি বিভেদপূর্বক উপযুক্ত পথ করিয়া লৌহিত্যকে অবতারিত করেন। ঐ নদ কামরূপ পীঠের মধ্য দিয়া প্ৰৰাহিত হইল। লোহিত সৰ্বোবর হইতে নিঃস্ত ব্লিরা উহার আর একটা নাম লৌহিত্য হইয়াছিল। কামরূপ পরিপ্লাবিত এবং সর্বাতীর্থ গোপন করিয়া গৌহিত্য দিব্য-বসুনা माज विकामाशास्त्र विश्वप्रथ हिमालून। साधाः स्वान्यस्थाः পরিত্যাগপূর্বক বাদশ বোকন অতিক্রম করিরা যমুদা পুনরার **এ গৌহিতানদে মিলিড হইলেন। বে বাক্তি জিভেন্তিয়** ত্ইরা চৈত্রমানের ওক্লাইনীতে লৌহিত্য কলে কান করিবা

বাকেন, তিনি কৈবক্ষ ও ব্ৰহণৰ প্ৰাপ্ত হন। (কানিকা-পুরাণ জামদট্যোপাধ্যান ৮৪।৪৫ জ:।)

বর্তমান লোহিতে নদী ব্রহ্মপুত্রের একটা দাধারণে জাসামের বাং দিরা প্রবাহিত রহিরাছে। দিবসাগর ও লখিসপুর জেলার বাং দিরা এই নদী বিক্লাপন্তিম গভিতে প্রার ৭০ মাইল জতিক্রম করিরা ধলেবরী সক্ষের নিকট ব্রহ্মপুত্রে মিলিত ইইরাছে। এই স্ক্রমনিব্রুন উত্তর নদীর মধ্যে দীপাকার বে বাসুক্রাবর চরছ্দি নিপতিত জাছে, তাহা 'মজুনিচর' নামে খ্যাভ। ত্র্বপঞ্জী নদী ইহার দক্ষিপক্লে আসিরা মিলিরাছে। লোহিত্যারনী (বী) গৌহিত্যের গোঝাপতা ত্রী। পা ১৪৪১৮)

লোহেষ (আ) লোহমন্ন ঈৰাযুক্ত। শক্টাদির চক্রদণ্ড-সংলগ্ন লোহদণ্ড। (পা' ৬।০।০১)

দ্লী, লিবি। সংলিটকরণ। (কবিকরক্রম) ক্র্যাদি° পর° সক° অনিট। ঔঠাবর্গাছোপধ:। রিনাতি রীন: রীনি:।
"অস্তঃস্থাভোপধ ইতি।" (রমানাধ)

ল্যুট, ব্যাকরণোক্ত রুৎ প্রত্যর সংজ্ঞাতের।

ৰী, গড়াম্। গড়ি:। (কৰিকলক্ৰম) ক্ৰ্যা' পর'
সক' অনিট্। বকাৰোপধঃ। ৰীনাড়ি ৰীড়ঃ ৰীড়ি:।
বিনাড়ি ৰীনাড়ি ৰীনঃ ৰীনিঃ। 'গিনৈব ক্ৰ্যাদিছসিছো
গকরণং পাৃদ্বিবিকলার্থম্।' (হুর্গাদাস)



ব

বি, বকার। ব্যশ্ননবর্ণের অন্তর্গত উনত্রিংশবর্ণ, ইহা অন্তত্ত্বর্ণ বনিরা প্রসিদ্ধ। 'অন্তত্ত্বা ব র ল বাং।' (কলাপব্যাকরণ)

শ্ৰীমন্তাগৰতে লিখিত আছে বে,—

্ততোহকরসমান্নারমস্ত্রণ ভগবানতঃ।

ष्ट्राव्यवरुर्णान्यवर्गान्यविधानिकन्यम् ॥" (ভाগ•)२।७।८७)

'ততত্তেভ্যোহক্ষরাণাং সমারারং সমাহারং তদেবাহ—
অন্তর্গ বর্ষবা: উন্নাণ: শবসহাঃ, স্বরা অকারাদ্যাঃ স্পর্না:
কাদরো মাবসানা:। ব্রস্বীর্থান্চ, আদিশবাং জিহ্নামূলীরাদর:।
ত এব লক্ষণং স্বরূপং যুক্ত তম্।' (প্রীধর্মামিক্কত টীকা)

কলাপমতে এই বকারের উচ্চারণস্থান দক্তা, কিছু অন্তত্ত্ত্ব দক্ত্যোষ্ঠ বলিয়া সিদ্ধ হইরাছে—

"জিহ্বামূলে তু কু: প্রোক্তো দস্ত্যোগ্রে! বং স্বতো বুবৈ: ॥"
(শিকা ১৮)

মৃশ্বনেধটীকার তুর্গাদাস পবর্গীর বকার ও অবস্থ ব'র উচ্চারণত্থান নির্দেশ করিরা লিথিরাছেন—'ববরলীরবকারত্ত প ক ব ভ ম বা ইত্যেকপদোক্তা উৎপত্তিস্থানমোর্চমূক্ত্বা দত্তার্কার্থার্থ দত্তামধ্যেহপি তথদধনললা ব ইতি ভিন্নপদে পঠিতবান্। বথা সংবৃত্ধিত ইভ্যাদৌ বকারত ওঠবাৎ উর্দ্ধান্তাৰ্থ অক্স্থারত্ত মকারো ন তাং। বৈদিকান্ত অত্যোৎপত্তিস্থানং দক্ত এবেভ্যাহং। অভএব ভবিক্ষোং পরমং পদং ইভ্যাদৌ উথৈবোচ্চারত্তি।"

ৰীজবর্ণাভিধানতত্ত্ব, ক্ষুত্রবাদলের মন্ত্রকাবে ও অভাভ তত্ত্বশাল্তে 'ব' বর্ণের যে কর্মী পর্যায় উল্লিখিত হইরাছে, তাহ। নিমে উদ্ধৃত হইল—

"বো বাণো বাফণী স্কা বন্ধণো দেবসংজ্ঞক:।
তোরং লাস্তশ্চ বামাংশ:॥" (বীন্ধবণাভিধান)
"বন্ধারো বন্ধণো বাণঃ স্বেদঃ ধড়গীখরে জ্বিব: ।"

(ক্ষুয়ামণে মন্ত্রকাব)

"বো বাণো বান্ধনী হুলা বরুণা দেবসংস্কক:।

বক্ষীশো আলিনীবন্ধ: কলসংধনিবাচক: ।

উৎকারীশন্ত নাবীতো বল্লা ফিক্ সাগর: শুচি:।

ত্রিধাতু: শন্তর: শ্রেচো বিশেবো বমসাবনস্ ।"(নানা তরুণাত্র)

এই বর্ণ গঞ্চ প্রোণমর, ত্রিবিন্দু ও ত্রিশক্তি সমবিক্ত, চতুর্ব্বর্গকলদাতা ও সর্বাসিভিপ্রাদ। শিব আদ্যাশক্তিকে ইহার বরুণ
নির্দেশ করিবাছিলেন—

শ্বকারং চঞ্চলাপাদি কুণ্ডলী মোক্ষমবারম্।
পঞ্চপ্রাণমরং বর্ণং ত্রিপক্তিসছিতং সলা॥
ক্রিবিন্দ্সহিতং বর্ণমান্তানিতবসংবৃত্তন্।
পঞ্চলবমরং বর্ণং শীতবিদ্যারতাহবরং॥
চতুর্ব্বর্গপ্রনং বর্ণং সর্বাসিদ্ধিপ্রদারকন্।
ব্রিপক্তিসহিতং দেবি ত্রিবিন্দ্সহিতং সলা॥" (কামধেন্দ্ তন্ত্র)
ক্রিপক্তিসম্পার এই বর্ণের গান্ত্র্ব্বণালীও তন্ত্রপারে
লিখিত আছে; যথা—

"কুদ্দপুস্পপ্ৰভাং দেবীং ছিভুজাং পছজেক্ষণাম্। ওক্রমাল্যাব্রধরাং রক্সহারোক্ষলাং পরাম্।। नाथकाजीहेनार निकार निकित्तर निकटनविज्ञाम् । এবং ধ্যাত্বা বকারং ভূ ভন্মপ্রং দলধা অপেৎ ॥'' (বর্ণোভারভন্ন) বলীর বর্ণমালার লিখিত 'ব' অক্নরের লিখন-প্রণালী---"কোণত্রযুতা রেধা ব্রন্ধবিফুশিবাশ্মিকা। মায়াশক্তি: পরা নিত্যা ধ্যানমন্ত প্রচক্ষতে।" (বর্ণোদ্ধারতর) সাধারণত: যে প্রণালীতে ৰাজালা বর্ণমালায় 'ব' অক্সর 🦥 লিখিত হইরা থাকে, তাহা সম্পূর্ণরূপে উক্ত ভন্নবর্ণেরই ব্দমুস্ত। প্রথমে উর্দ্ধ হইতে বামভাগে কোণাকারে একটা রেখা টানিরা পরে তাহাকে ফ্রন্মণ: দক্ষিণাভিদ্রথে নির্মার্টে নামাইয়া আনিতে হইবে। বধন নিয়াভিম্থী এই দক্ষিণরেখা উর্নরেধার আরম্ভণ ছান পর্যান্ত আসিরা পৌছিবে, তথন উহাকে পুনরায় লখভাবে উর্জদিকে তুলিয়া ঐ আরম্ভণবিন্দুতে সংযুক্ত করিবে। এইরূপে বামাগ্রচুড় একট<mark>ী উর্জায়ত</mark> ত্রিভূত **অন্ধিত হইলে তাহার উর্জকোণে সোলাস্থলি ভাবে একটা সরল** রেখা টানিরা লইবে।

य (चरा) हैर चर्चरतांथक । এहेन्नण ।

"णाव नीनाः मरेनख्य त्रिक्तिणानक्ष्मतः ।

नात्रिक्नामरः राधाः भायतः व रमः भणः ॥" (त्रव् • ६।८२)

य (क्री) वा न गमनहिःमताः कः । > ध्यत्क्षाः । (क्रविनी)

र वक्षणवीका । (छत्र)

ব (পুং) বানমিতি বা ভাবে বং। > সাখন। বাতি পদ্ধতীতি
বাল-গমনে বং। ২ বাছ। ৩ বলপু। (মেদিনী) ৪ বাছ।
ব মন্ত্ৰপ। ৬ কল্যাপ। ৭ বলবান্। ৮ বস্তি। ই বলপালা।
(শক্তি) ১০ শাৰ্ছিল। ১১ বন্তা ১২ শাল্ক। ১৩ বন্ধন।
ব [সূ] (তি.) বুমান, বুমান্য বুমাকন্ শ্ৰামি। বুমং

শক্ষের দিতারা, চতুর্থী 📽 বঞ্জীর ব্রুবচনে এইরূপ হইরা থাকে।

"পৃষ্ণাতু বো নোহপি হরির্ধনং বো। দদাতু নো হয়ণুক্তানি বো নঃ ॥" (মুশ্ববোধ)

বৈশ্বাকরণগণ বলেন, পাদবাক্যাদিতে ইহার প্ররোগ হয় না ।
বংকু (বন্ধু) ইকুনদ। বর্ত্তমানে Oxus নামে পরিচিত।
ইহা মধ্য-এসিরার একটা স্বরুহৎ নদী। এই নদীর অধিকাংশ
ভাজার-রাজ্যে প্রবাহিত। পানীরের সমুচ্চ অধিত্যকায় (জক্ষা
৩৭°২৭´উঃ ও প্রাফি ৭৩°৪০´পুঃ) সরীকুল হইতে বাহির হইয়া
ভূজিভানকে পূর্ব্ব ও পশ্চিম এই হুই অংশে বিভক্ত করিয়া
বোধারার বিত্তীপ প্রান্তর ও তাতারের স্থবিভূত মকত্বল ভেদ
করিয়া ১৩০০ মাইল গিয়া বহুধা বিভক্ত হইয়া আয়ল সাগরে
মিলিত হইয়াছে। পুরাবিদ্গণের বিঝাস যে, পুর্ব্বে এই নদী
কাম্পীর সাগরে মিলিত ছিল, তৎপরে গতি পরিবর্ত্তিত হইয়াছে।

অনেকের বিশাস যে, এই অক্ (Oxus) বা বংক্ নদীর কুলেই আর্যাঞ্জাতির নিবাস ছিল। এই স্প্রাচীন নদী দিয়াই আর্যা সভ্যতা স্থল্র মুরোপণতে প্রসারিত হইয়াছে। পাশ্চাড্য প্রাচীন ঐতিহাসিক ব্রাবা, হেরোদোতাল প্রভৃতির বিবরণী হইতে জানা বার বে, পূর্কালে এখানে শকজাভির আধিপত্য ছিল এবং এই নদী ইরাণ ও ত্রাণ রাজাকে বিভক্ত করিয়া রাখিয়াছিল। তুরাণের উত্তরাংশ মৎক্রপুরাণ ও মহাভারতে শাকদীপ নামে প্রথিত হইয়াছে। [শাকদীপ দেখ] মংক্ত ও মহাভারতে শাকদীপের সীমার যে ইক্ নদীর উল্লেখ আছে, তাহাই বর্তমান অক্ নদী। প্রাণ মতে বংক্ নদী অন্থীপের সীমার যে অংশ প্রাণের অন্থবত্তী হইলে মনে হইবে যে শাকদীপের সীমার যে অংশ প্রবাহিত, তাহা ইক্ এবং জন্দীপে যে অংশ আসিয়াপড়িরাছে, তাহা বংক্ নামে খ্যাত ছিল।

এই নদীতারে "বক্ষ" বা "বধম্" জাতির বাস থাকার •
ইহার বংকু নাম হইরা থাকিবে। এখানে স্থা ও অগ্নি উপাসক
লকগণের অভ্যুদ্রের পর বিশেষ বৌদ্ধপ্রভাব ঘটিরাছিল।
খুটীর ৭ম শভাবে চীনপরিপ্রাজক এই নদী তীরে বহুতর বৌদ্ধকীর্ত্তি ও অশোক ভূপের নিদর্শন দেখিয়া গিরাছিল। তিনিও
এই নদীকে পোৎস্থ বা বক্ষু নামেই উল্লেখ করিয়াছেন। তাহার
বর্ণনার অনবতপ্ত (বর্তমান সরীকুল) হবের প্রাংশ হইতে
গলা, দক্ষিণ হইতে সিদ্ধ, পশ্চিম হইড্রে বন্ধু এবং উত্তরাংশ
হইতে সীতা নদী বাহির হইরাছে। ঠীনপরিপ্রাজক এই ছান
দর্শন করিয়া বে বর্ণনা করিয়া গিরাছেন, ভারার সহিত বিচ্ছু ও

মৎত্যপুরাণের বর্ণনার সম্পূর্ণ মিল আছে। চীনপরিএালক যাহাকে "অনবতপ্ত" ছদ বলিরা উল্লেখ করিরাছেন, তাহাই পুরাণে "বিন্দুসর" বলিরা পরিচিত। [বিন্দুসর: দেখ]

বংশ (পুং) বমতি উদিপরিত প্রধান্ বস্ততে ইতি বা। টুবম উদিগরণে ইতি ধাতোর্বদা বন শব্দে ইতি ধাতোর্বাহলকাৎ শঃ। যদা, বৃষ্টি উপ্ততে ইতি বা বশ কাস্তৌ অব অঞ্বা। ততো সুম্। ১ পুত্রপৌত্রাদি। পর্য্যায়—সম্ভতি, গোত্র, জনন, কুল, অভিজন, অবর, অববার, সম্ভান, নিবন, জাতি। (জটাধর)

বিভা ও জন্মধারা একলক্ষণাক্রাস্ত কুলপরাপাত সন্তানই বংশ পদবাচা। ভিন্ন ভিন্ন টীকাকার এ বিষয়ে ঐরূপ অর্থই গ্রহণ করিয়াছেন,—"কুলঞ্চ বিভায়া জন্মনা বা প্রাণিনামেকলক্ষণঃ সন্তানো বংশ:।" (জন্মাদিত্য) স্নভূতি বলিনাছেন,—"ধনেন বিভায়া বা থ্যাতস্যাপত্যধারা বংশ:।" অর্থাৎ ধন ও বিভাগোরবে প্রসিদ্ধ অপত্যধারার নামই বংশ। 'বমতি উলিগরতি পূর্ক্পুক্রবান্ বংশনামীতি শ:।' (অমর্টীকায় ভরত)

"ক সূর্য্যপ্রভবো বংশ: ক চাল্লবিষয়া মতি:।

তিতীৰ্ত্তরং মোহাছড় পেনামি দাগরম্॥" (রঘু ১।২)

ভারতবর্ষের প্রাচীন ইতিহাস আলোচনা করিলে জানা যায় যে, পূর্বালা হইতে এখানে অনেকগুলি লব্ধপ্রতিষ্ঠ ও বীর্যালালী রাজবংশের আধিপত্য বিস্তার ঘটিয়াছিল। ঐ সকল বিভিন্ন বংশীর রাজসন্ততিপরম্পরা বিশেষ বিশেষ সময়ে স্থানবিশেষে অপ্রতিহত প্রভাবে রাজ্যশাসন করিয়া গিয়াছেন। পূরাণাদিতে পূথ্বংশ, ভরতবংশ প্রভৃতি অনেকগুলি মুপ্রাচীন বংশের পরিচয় পাওয়া যায়। তল্মধ্যে স্থাবংশ ও চক্রবংশ সর্ব্বপ্রধান। স্থাবংশে মহারাজ মান্ধাতা, দিলীপ, রঘু ও দশরথান্মজ শ্রীরামচক্র জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। রামচক্র ফর্তৃক রাবণবিজ্ঞর স্থাবংশের প্রসিদ্ধির কারণ। চক্রবংশে বহণত নূপতি জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, তল্মধ্যে ভারতীয় মহাযুদ্ধের নায়ক মুধিটিরাদি পঞ্চপাপ্তব হইতেই বংশের খ্যাতি বিশ্বত হইয়াছি।

ক্রি (কুর্যা ও চক্রবংশ দেখ।]

এই চক্রবংশের অন্ততম শাখা যত্ত্বংশে ভগবনবতার শ্রীক্রক
ক্ষাগ্রহণ করিয়াছিলেন। ঐ বংশে দান্দিণাত্যের প্রাসিদ্ধ যাদব
রাজবংশ সমৃত্তত। [যাদব রাজবংশ দেখ]

তুর্বস্থর বংশে (তুরার রাজবংশ ?) উজ্জরিনীপতি জ্বীরাজ বিক্রমাদিত্য প্রায়ন্ত্রত হইয়াছিলেন।

শক্জাতির অভ্যানরে ভারতে শক্কুবণবংশীর বৈদেশিক রাজবংশের অধিষ্ঠান হয়। ঐ বংশীর রাজগণ ক্রমে হিন্দু ধর্মা-ক্লান্ত হইরা রাজপুত নালে অতিষ্ঠা লাভ করে। তদবধি রাজপুত সমাজে ৮৭ শাধার বিশ্বক অনিকুলের উৎপত্তি হয়। প্রমার

[.] Wood's Journey to the source of the Oxes, p. xxili.

পরিহার, চৌনুষ্য ও চাহমান এই চারিটী অগ্নিকুল। ইতিহানে এই চারি বংশের প্রতিপত্তির যথেই পরিচয় আছে।

খুইপ্র্নান্ধে লৈন ও বৌদ্ধ রাজবংশ ব্যতীত শিশুনাগবংশ,
নন্দবংশ, দ্বৌধ্বংশ, ববনরাজবংশ, নিত্র, কার্ব ও জালুবংশ
প্রভৃতি বংশের খ্যাতি ভারত প্রসিদ্ধ। শক্ষবংশের বিলর ঘটিলে
ভারতে গুরুবংশের জালুদর ঘটে। ক্ষমগুরুকে পরাভূত করিরা
তোরমাণ ভারতে হুণবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। মালবরাজ
বংশাবর্দ্ধদেব হুণবংশীর মিহিরকুলকে বিধবত করিরা উজ্জরিনী
রাজবংশের গোরববৃদ্ধি করিরাছিলেন। তদনন্দর মণাধ, বলজী,
উজ্জরিনী হাথীখর, কনোজ প্রভৃতি জনপদে এক একটা প্রবল
পরাক্রান্ত রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হইরাছিল। রাইকুট বা রাঠোরবংশ, ভোজ ও চন্দেল্ল এবং কনোজের আর্ধরাজবংশের প্রভাব
কাহারও অবিদিত নাই। এতত্তির ভারতের নানান্থানে বৃন্দেলা,
জাট এবং নিজামশাহী, কুতবশাহী প্রভৃতি বিভিন্ন হিন্দু ও মুসলমানজাতি হইতে অনেক গুলি রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হইরাছে।

উত্তরভারতীর ঐ সকল মহাপ্রভব আয়ুধ রাজবংশের সমকালে বালালায় শ্রবংশের প্রভাব বিস্তৃত হর । আদিশ্রের রান্ধণানয়ন-বিবরণ বলবাসী মাত্রেরই জানা আছে। তাহার পর এখানে পাল ও সেনরাজবংশের অভ্যাপয় হইয়াছিল। সেনবংশীয় নরপতি লক্ষণসেনকে পরাজিত করিয়া মহম্মদ্-ই-বক্তিয়ার খিলিজি বালালা জয় করেন।

ভারতে মুসলমান সমাগম হইতে এথানে গজনী, ঘোরী, দাসবংশ, থিলিজিবংশ, ভোগলকবংশ, সৈরদ, লোদী, সুর ও মোগলবংশ রাজত্ব করেন। তদনস্তর ইংরাজরাজবংশের অভাদর ঘটিরাছে।

২ পুতা।

"নৃপস্ত বংশ: স্থাতির্ভু তেজ্যোতিস্ততো বস্থ: ॥"

(ভাগ মাহাস৭)

বংশ (পুং) তৃণজাতিবিশেষ। চলিত কথার বাঁশ বলে।
ভূপৃষ্ঠত্ব বিভিন্ন স্থানীর জলবার্র তারতমাস্থলারে বিভিন্ন প্রকার
বাল উৎপন্ন হইরা থাকে। উদ্ভিদ্তত্তবিদ্ বেহাম ও হকার
২২ প্রকার বালগাছের উল্লেখ করিরাছেন, তর্মধ্যে ভারত ও
মলর-প্রারোধীপের স্থানে স্থানে প্রার ১৪ প্রকার বাঁশ দেখা
যার। এই বাঁলের মণ্ড, বাখারি, চটা ও চিরাড়ী কাটিরা ভারতবালী নানারূপ গৃহকার্যে ব্যবহার করিরা থাকে। এইটা
লব্মান স্থাক বংশ খণ্ডাকারে কাটিরা ঘরের পুঁটা, চালের বাতা,
ডালা প্রভৃতি প্রস্তুত্ত ইত্তে পারে। বাখারি চিরিয়া প্রালপের
বিভা ও ঘরের চালের পাটা দেওরা হর। বাশ কাটারি ধারা
লক্ষভাবে বিখণ্ডিত করিরা ভ্রুপরি উপর্যাপরি আঘাত করিরা

চওড়া চটা প্রস্তুত করা হর । উহা করের দেওরালরপে আটিরা তহপরি মৃত্তিকা লেপন করিলে পরিকার দেওরাল হইতে পারে । চিরাড়ীর সক্ষনোটা অহুসারে ঝুড়ী, কুলা, চাটাই বা বর্ষা, ধুচুনী প্রভৃতি এবং অপেকারত মোটা বা সক্ষ গোল শলা প্রস্তুত করিরা তাহাতে চিক্, ঝাপী, মাহধরা ঘূলী প্রাকৃতি নির্মাণ করা বাইতে পারে ।

এই বংশ শ্রেণীর মধ্যে বেউড় বাঁশ (Bambusa arundincea) সর্ববিষয়ে মন্তব্যের বিশেষ উপকারী। বিভিন্ন দেশে ইহা विक्ति नारम পরিচিত। हिन्ही-वान, काठान, मगत वान, नन-বাঁল; বাঙ্গালা—বেহড় বা বেউড় বাঁল, বাঁস; আসাম—ব্রাহ, কোলকতলা; সাঁওভালী—মাট; গান্ধো—বাহ্ কাঞে; চট্টগ্রাম ---विद्याना ; शक्षाय -- मगद्र, नान ; शक्षत्राष्ठ --- वःम, (काइन---कनक, (शामरें ; शक्ष्मरन-वन ; वाचार-मम्हन, माधगत्र ; দাক্ষিণাত্য-ভাঁস, ছোট বাঁশ হইলে ভাঁসা ও বড় হইলে বাৰু: গৌড়-কটবহুর; আরব-কাসাব, পারস্ত-মই; তামিল-মনগল, মল্গিল; তেলগু-মূলকাল, কছ, বোলা, বেছুল, रवाज-(वक्ष्म, পোरख-वर्तम्म, वर्तम्म, वर्तम्मीन, व्यक् ; কনাড়ী-বিহুদুৰু, মঘ-বা-নাহ্; ব্ৰদ্ধ-ব-গাল্যাৎ, ক্যাক-< ता ; नित्राष्ट्रत—कां हे छेना , छेना ; हीन—हूर, रेश्त्रा**जी**— Bamboo। বৈজ্ঞানিক ভাষার ইহা উদ্ভিদ্ভব্যের তুণবিভাগের (Graminem) দণ্ডুণ (Bambusem) শেলীর অরম্ভ ত। সংস্কৃত পর্য্যায়—কীচক; স্বক্সার, কর্মার, স্বচিসার, ভূপধ্বজ, শতপর্বা, যবফল, বেণু, মন্তর, তেজন, কিছুপর্বা, রস্ত, ডুণ-কেতুক, কঠালু, কণ্টকী, মহাবল, দৃঢ়গ্রন্থি, দৃঢ়পত্র, ধ্যুক্তম, ধামুষা, দুঢকাও, কিলাটা, পুপাঘাতক।

এই বংশতৃণ সাধারণতঃ ৪০।০০ হাত অর্থাৎ ১০০ হইতে ১০০ ফিটু পর্যান্ত উর্জে লখা উঠিয়া থাকে। ক্ষুদ্রজাতীয় বালঝাড় গুলি ৩০ ফিটের প্রোর কম হয় না। ভারত এবং পূর্বভারতীয় জনপদসমূহে বিভিন্ন প্রকারের যে সকল বাঁশ গাছ দেখা যায়, পাশ্চান্তা উদ্ধিপ্রিণ্ণ তাহাদের আবয়বিক গঠন, দৈর্ঘ্যভা, গ্রন্থি ও পত্রপার্থক্য নির্দেশ করিয়াছেন। নিয়ে তাহাদের বৈজ্ঞানিক নাম, উৎপত্তিস্থান, উচ্চতা প্রভৃতি সংক্ষেপে বিবৃত্ত হইল,—

- > Bambusa affinis—মার্জাবানে জন্ম, মাধা আঁক্জা ঝাক্জা, ১৫ হইতে ২় ফিট্ লখা হয়। এক্সনেশীয় ভাষার থৈকা ও থিশে বলে।
- ২ B. Agrestis—অন্তর্ন চীন, কোচীন চীন ও মলবু-বীলপ্ত। বক্লাকার গঠন, ১ কুট্নোটা ও ১॥• কুট্ থাড়াই। ভিতর কাপা নহে।

- ও Amahuss/ina—পূর্মভারতীর দ্বীপপুঞ্জের আদরনা ও মনিশা নামক স্থানে জব্মে। ছোট গাছ,মাথা ঝাঁপড়া ঝোপড়া, ঘন জন্মলের আকারে উৎপন্ন হয়। উপরের পাতাগুলি হলের ভার ও রাযুক্ত। গাঁইটগুলি খুব বেঁদ বেঁদ হইরা থাকে।
- 8 B. Apus— ব্ৰবীপের অন্তর্গত শালক পর্বতের উপরি-ভাগে এই জাতীর বাঁশ জন্মে। গাছগুলি ৩০ ইইতে ৭০ ফিট্ লবা ও মাজুবের উক্ল দেশের ভার মোটা হর। পাতাগুলি বড় বড় ও প্রচারা।
- ৫ B. Aristata—পূর্বভারতের নানা হানে; সরু ও মক্ল গঠন, কিছ দণ্ডাকার নহে। এই শ্রেণীর বাঁশগুলি দেখিতে ৰঙই ক্লার।
- ৬ B. Arundinacea—মধ্য, দক্ষিণ ও পশ্চিমভারতে প্রধানত: দেখা যার। দপ্তাকার, ৩০ হইতে ৫০ ফিট্ উচ্চ, ভিতর ততদ্র ফাঁপা নহে, গাত্রের আবরণ মস্থপ ও কঠিন এবং দলে পুরু। পাতাগুলি ছোট ও পাতলা পাতলা। গাছগুলি ত্রিশ বংসরে প্রাচীন হইলে ফুল হর।
- B. Arundo—ছউড়ী বাল বলিয়া খ্যাত। ইহাতে
 মহাবলেখনের প্রদিদ্ধ ছড়ি প্রস্তুত হইয়া থাকে।
- ৮ B. Aspera—আষয়না খীপে উৎপত্তি। গাছগুলি ৬০ হইতে ৭০ ফিট্লখা হয়।
- ৯ B. Atra— আষ্য়না দ্বীপ, বংশদণ্ড চিৰুণ ও রুঞ্চবর্ণ। পাতার ডাঁটায় কাঁটায় মত ভাঁয়া আছে।
- ১ B. baccifera—চট্টগ্রামের পার্বান্ত্য প্রদেশে উৎপন্ন হয়।
 চট্টগ্রামবাসী ইহাকে পশুটুরু বলে। দাক্ষিণাত্যে ইহা বিবা বাশ
 নামে খ্যাত। ইহাতে জামের মত এক প্রকার ফল হয়।
 উহার একটা মাত্র বাঁজ পাকে। এই বাঁশেই প্রচুর পরিমাণে
 তথাশার বা বংশলোচন পাওরা বার।
- ১১ B. Balcooa পূর্ক্বক আসামের হানে হানে কছে। বালালার বাল্কু বাল বা ধূলি বাল এবং আসাম ও কাছাড় বিভাগে বেতবা, ভাল্কা বাল নামে পরিচিত। লেপছারা ব্লিঙ্ক বলে। এই বাল জীলাতি বলিয়া গৃহীত।
- ১২ B. Bitung যবনীপজাত। পত্র চওড়া ও পদ্ধনে।
 ১৩ B. Blumeana যবনীপ। ম্প্রাকার, নবপ্রস্ত শিশুর
 মন্তের স্তার সক।
- ১৪ B. Brandissis— ব্রহ্মদেশ ও চট্টগ্রানের ৪ হাজার কিট্ উচ্চ পর্যান্ত পর্কাতপৃথ্যে জন্ম। ব্যাদ্ধান্ত ২২৬ ফিট্ পর্যান্ত লালা হর। কম্পের পরিধি বা বেড় প্রার ৩০ ইঞ্চ। কচি কচি ফ্রিকা বা পালবাধিতে লালা ও হক্সিকা মিশ্রিত কটা বর্ণের ওয়া দেখা বার। অভ্যন্তর দেশ কুম্পিত। এই বাশ

- বাদালায় ওড়া, ব্ৰহ্মে বা বো ও মগদিগের মধ্যে তুর্গুবা নামে পরিচিত।
- > e B. Falconeri—উত্তর-পশ্চিম হিমালয় শৈলপুঠে, বিশেষতঃ শিমলা শৈলের পাদমূলে ee ফিট্ উচ্চ স্থানে এই বৃক্ষ অন্মিতে দেখা যার। ডাঃ ব্রাণ্ডিজ ইহাকে বাল্কু বাশের অন্ধন্ন শেলী বলিয়া অন্ধনান করেন। ইহার ক্ষলগুলি প্রার ১ ইঞ্চ লখা হর এবং আক্রতিগত সাদৃশ্রে কতকটা তল্দা বাশের ক্ষুলের মত। পার্বতীয় ভাষায় ছো, কাগ প্রভৃতি নামে খ্যাত।
- > B. Glauca—ভারতের নানা স্থানে পত্র > ইঞ্চের বড় হর না। প্রস্তেও চুই স্তার অধিক নহে। গাছ চুই ফিটের অধিক বাড়ে না; কিন্তু ডাল পালার বিজড়িত হইরা থাকে। ইহাতে কুদ্র ও উজ্জল বর্ণ অনেক ফুল হর।
- ১৭ $B.\ khasiana$ —থশিরা শৈলজাত। থশজাতি ইহাকে তুমার বাঁশ বলিয়া থাকে।
- ১৮ B. Maxima—কাশোজ, বালি, বব প্রভৃতি পূর্কভারতীর দ্বীপপুঞ্জের অন্তর্গত অনেকগুলি দ্বীপে এই বৃক্ষ জন্ম।
 ৬০ হইতে ৭০ ফিট্ পর্যান্ত দীর্ঘ হয়। বংশদগুগুলি প্রান্ত
 মন্ত্র্যাদেহের ন্থার মোটা। ভিতর ফাঁপা। উহার গাত্র এতাদৃশ পাতলা যে, তাহাতে চেঁচাড়ি, ছিটাবেড়া প্রভৃতি প্রন্তত
 ছইতে পারে।
- ১৯ B. Mitis— আষমনার বন মধ্যেও পর্যাপ্ত ভাবে উৎপন্ন হইতে দেখা যার। কোচীন-চীনে ইহার চাস আছে। গাছ ৩ ফিট্পর্যাপ্ত দীর্ঘ হয়। কিন্তু দণ্ডগুলি সাধারণতঃ সরু হইরা থাকে। স্থানবিশেষে উহার বেড়ের আয়তন বর্দ্ধিত হইতে দেখা যার। কখন কখন এক একটা বংশ্বাষ্টি মান্তবের পারের মত মোটা হয়।
- ২ B. Multiplex—কোচীন-চীনের উত্তরবিভাগে বেড়ার লাগাইবার জন্ত প্রধানতঃ এই বুক্লের চাস হইরা থাকে।
- ২> B. nana—ব্রহ্ম ও চীনরাজ্যে জন্মে। এই বাঁশ ক্ষুদ্রাকার, পাতা ছোট ছোট, নীচের দিক্ সাদা হর, ঘন করিরা বেড়ার প্র সর্নিবিষ্ট করিলে বড় স্থলন দেখার। চীনবাসীরা ইহাকে
 কিউ-ফা এবং ব্রহ্মবাসিগণ পিলবপিনঙ্ব বলে।
- ২২ B. Nigra—চীন-সাত্রাজ্যের ইংরাজাধিকত কান্টন আদেশে এই বাল উৎপত্র হইতে দেখা বার। ইহার, বশুগুলি মান্তবের ক্লার দীর্ঘাকার হইতে না হইতেই কাটিরা লগুরা হর। উহাতে ব্যবহারোপবােগী উৎকট বাঁটি ও রমণীগণের ব্যবহার্য্য ছাতির স্থক্য বাঁট প্রশ্নত হইরা থাকে। ইংলপ্তেপ্ত এই বাল জ্বােষা।
 - २० B. nutans—(नणान, निकिन, पनिश्ना लिनमाना,

আসান, প্রীহট ও ভোটানের গ্রামাধির প্রান্তবেশে এই বাশবাড় দেখা যার। ভূপুঠ হইডে ৭ হাঝার কিটু পর্কন্ত উচ্চ
হানে করে। এই গাছ দেখিতে অনেকটা জললা বাঁশের মত,
ভিতর কিন্তু কাঁপা নহে, নিরেট বলিলেও চলে। বেটা বাশভালির ভিতর কিছু কাঁপ হর, খ্ব শক্ত ও ভারসহ। বালালার
ইহা নল বাঁশ, নেপালে মহল বাঁশ, লেপছা দেশে মহলু,
ভূটিরা বিউসিদ, আসামে বিছলী ও মুকিয়াল এবং প্রীহট্টে
পিছলে নামে খাত।

২৪ B. Orientalis-একমাত্র দক্ষিণভারতেই উৎপা হইরা থাকে।

э ৫ B. Pallida — পূর্ববদ ও আসামে জন্মে, ে ফিট্
দীর্ঘ হয় । ধনিয়ায়া ইহাকে উস্কেন এবং কাছাড়ীয়া বুর্বাস ও
বঙাল বলে।

২৬ B. Picta — সিরাম, কেললা, মেলিভিস্ ও তরিকটছ
অভাভ বীপে এই বৃক্ষ প্রচুর দেখিতে পাওরা বার। ছই ইক্ষের
অধিক মোটা হয় না। প্রায় ৪ কিট্ অন্তর এক একটা গাঁইট
আছে। কাঠ পাতলা, কিন্তু অভিশর কঠিন। এই কারণে
ইহা সর্বতোভাবে লাঠির উপবোশী হইরাছে।

২৭ B. Prava—আবরনার উপকৃল দেশে ও অভান্ত স্থানে ইছার বনমালা দৃষ্ট হয়। ইহার পাতা সাধারণতঃ ১৮ ইঞ্চ লবা ও এ৪ ইঞ্চ চওড়া হইরা থাকে। উহাতে কাঁটার ভার গুরা আছে। ঐ বাঁশ বিক্রেরার্থ উপকৃল ভাগে আনা হয়।

২৮ B. Polymorpha—পেশুবোমা শৈলে এবং মার্তাবান্ বিভাগের পর্বত সাম্বনেশে এই বাশবন দৃষ্ট হর। ক্রন্ধবাসী ইহাকে ক্যাথোলা বলে।

২৯ B. Pubescens—ইহার দশু ৩০ ফিট্ দীর্ঘ হয়, কিছ ১॥০ ইঞ্ছ ব্যানের অধিক মোটা হয় না। ঝাড় বীধিয়া উৎপর কর না।

৩০ B. Spina — দান্দিণাত্যের গঞ্জাম ও গুদ্দের জেলার উৎপন্ন হয়, এই বাঁল ৮০ ফিট্ পর্যন্ত লখা হইতে দেখা বার। উড়িয়াবাসীরা ইহাকে কাঁটা বাঁল বলে।

৩১ B. Spinoea—ভারতের পূর্বাঞ্চলভাত প্রনিদ্ধ বংশভাতি। হিন্দী—বৃদ্ধ বা বেছর বাদ ; বালালা—বেউড় বাদ ;
আসান—কোটে ; কাছাড়—কিকৈট ; ব্রহ্ম—বকংবা। বালালা,
আসাম ও ব্রহ্মরাজ্য, বৃক্তপ্রবেশ, মাজাল প্রেসিডেলীর উত্তরপূর্বাংশ এবং ভারতের অভাভ হানে বাড় বাঁধিরা এই গাছ
উৎপন্ন হইরা থাকে। ইহা দেখিতে কুলর, গঠন মধ্যমান্ততির
হইরা থাকে। কলিকাভার নিক্ট স্বন্ধ্বতলী ও ব্রহ্মরাজ্যে ৩০
হইতে ৫০ কিটের ভবিক বীর্ষ হয় লা। ইহার ক্ষিক এরণ বিভ্ত

ও কঠিন হর বে, সে বাঁশ কলে প্রবেশ করা রাসাধা। পাতা ক্রে ও দীচের বিকে ও রাত্ক। জ্যের মানে ববাঁরজের প্রাক্তানে প্রাচীন গাছগুলিতে প্রশোলন হয়। এই বাঁশ চের্ছই ফ্রিয়া গৃহাদি নির্মিত হইরা থাকে। যক্তপ্রে ধারণ কালে এই বাঁশের বঠি প্রস্তুত করিরা প্রাক্তা-সন্তানের হতে হও দিবার বিধি আছে।

তং B. Striata—চীন বেশে কল্ম। ঝাড় হর মা।
ইহার দণ্ড সক, হরিলাবর্গ, হুচিকণ ও সব্জ ডোরাকাটা, এই
বিচিত্র গঠন নিবছন ইংলণ্ডের ভেবজোছানের উষ্ণ-নিকেতনে
(hot-houses) ইহার চাস হইতেছে। এই গাছ ৩০ কিট্
পর্যান্ত উচ্চ হর।

৩০ B. Stricta—কভকাংশে ৰাড় বাধিয়া থাকে। হিন্দুছানে ইহা বাড়-বান নামে প্ৰসিদ্ধ। নাজিশাভ্যের তেলগু
ভাবার ইহার নাম সন্দ্রনগবেহর। অভিশার নৃত্, নিরেট ও
সরল হওরার ইহা বারা বরশার দও প্রস্তুত হইরা থাকে। ইহা
প্রোত বলিয়া থাতে।

৩৪ B. tabacaria—আষরনা, বৰ ও বনিপা বীপে প্রভৃত অবে। ইহার গাত্রে ৩।৪ কিট্ অন্তর এক একটা গাঁইট, প্রারই নিরেট। কনিন্তাভূপীর অপেকা কথনও মোটা হর না। এই কারণে ইহার উপর পালিস বিরা উৎকৃত্র বৃষ্টি প্রভৃত হইতেছে। ঐ দত্তের বহিরাবরক এরপ ক্রিন বে, তচুপরি কুঠারাঘাত করিলে অগ্নিফ্ লিক নির্গত ক্র্যাথাকে।

৩৫ B. teres—বাদালা ও আসাম আদেশে প্রধানতঃ উৎপন্ন হইনা থাকে।

७७ B. trilda—वामानात्र माधात्रम वीम । अध्यापारमात्र ব্দশমর বনভাগেও উৎপন্ন হর। বালালার তলদা বাল. পিকাবাঁশ, লোবা বা জাওয়া বাশ; মিটেলা, মাটেলা ও জোবা वान ; हिमी--(भका, माँ । अठान-माक्, क्लन-शामियान : शारता-विचि; मच-मन्देवा (महारतवा ?), जन-विदेवा. থৌক্ষা প্রভৃতি নামে পরিচিত। এই বাঁশ গাছ শীঘ্র শীঘ্র বাভিরা উঠে। ত্রিশ দিনের মধ্যে পূর্ণাবদ্বা প্রাপ্ত হর। প্রার ৭০ ফিট্ পর্যন্ত দীর্ঘ হইতে দেখা বার। ইহার দও ১২ ইঞ পরিধিবিশিষ্ট মোটা হইরা থাকে। পাডাওলি মধ্যমাক্রতি, কোমল ও শিরাবিশিষ্ট। গাঁইটগুলি কিছু উচুঁ উচুঁ, ভাছার চারি পার্বে ওঁয়ার একটা চক্র আছে। এই বাঁপ চিরিরা কিছ দিন কলে ডুবাইলে অভিনয় শক্ত ও দীৰ্থকালয়ায়ী হয়। ইহাতে বরের বুঁটী, বাডা, ও বেড়ার বাঁথারি প্রভৃতি এবং বরুষা, খুডি, পাৰা ও চিক অভৃতি ত্ৰব্য ইহাতে উৎকুইয়াপ প্ৰায়ত হইয়া बादक। जाउना बान वह व्यक्तित हहरनड जानजानुक वह হয়। তল্যা বাঁশের অংশকা ইহার প্রতিন্ত্রী অবিক্ষের লচ।

এই বাঁশের কচি কোঁড়া অনেকে ধার। গাছ ছই ফিট উর্চ্চে উঠিলে সেই কচি তেউড় কাটিয়া আনে এবং তাহাতে মসলাদি মাধিরা আচার প্রস্তুত করে। অনেকে বাঁশের কোঁড়ার উপর হাঁড়ি চাপা দিরা রাধে। ক্রমে সেই বংশাছুর পরিবর্দ্ধিত হইরা হাঁড়ির আকারে পরিণত হর। তথন উহা দেখিতে ঠিক বাঁধা কপির মত দেখার। ঐ কোঁড় কাটিয়া ব্যঞ্জনাদি রন্ধন করিলে ধাইতে উক্রম লাগে।

৩৭ B. Verticillata—আৰম্বনা দ্বীপে জন্ম। প্ৰায় ১৫।১৬ কিট উচ্চ ছইতে দেখা যায়। ইহার পত্র গায় লাগিলে এক্স চুলকানি উপস্থিত হয় যে, যে সহজে তাহা নিবারিত হয় না। এই কারণে কেহ সাহস করিয়া উহা সংগ্রহ করিতে চেষ্টা পার না। Rumphius এই জাতীয় বৃক্ষকে Leleba alba নামে উল্লেখ করিয়াছেন।

৩৮ B. Vulgaris—ভারতের সর্বাত্র, বিশেষতঃ শ্রীহট্ট, চটাগ্রাম এবং সিংহল খীপের দক্ষিণ ও মধ্যভাগে জন্ম। আমেরিকার ওয়েই ইণ্ডিজ দ্বীপপুঞ্জে এবং দক্ষিণ আমেরিকার স্থানে স্থানে ইহার চাস হইতেছে। এই বাঁশ দেখিতে হরিদ্রা-বর্ণ এবং মধ্যে মধ্যে ইহার গাত্রে সবুষ্ণ ভোরা থাকে। বাঙ্গালায় ইহা বাসিনী বাঁশ নামে খ্যাত। বোখাই-কলক, বংশকলক ও শিক্ষাপুরে উনা নামে পরিচিত। এই বাঁশগুলি সাধারণত: ২০ इटेंटि c • फिटिंड व्यथिक नचा इह ना **এवः वानकपिशां**द्र वाहम्यानं স্থায় মোটা হইতে দেখা যায়। পাতাগুলি মোটা মোটা শিরাযুক্ত। বালের গাঁইটগুলির ব্যাস প্রায় ৪ ইঞ্। গায়ের দল কিছু পাতলা। বর্ষার সময় গোড়ায় জল পাইয়া প্রতিদিন প্রায় ১৮ हैक वाफ़िट्छ थाटक। शाह प्यत्नक श्रुवाछन इहेरन कुल ধরে। ফুলগুলি দেখিতে অনেকাংলে B. arundinacea শ্রেণীর মত : किন্তু বহি:পত্রগুলি অপেক্ষাক্রত বড় ও চুচাল। AST B. Beechyana, B. flexuosa, B. marginata. B. regia, B. tuldoides B. Thouarsii প্রভৃতি কএকটা (अनीत नाम कता गाहेरा भारत। (भारता क अनी B. Vulgaris শ্রেণীর সমনামীর বলিয়া কথিত। অপর কয়টা শ্রেণীর বিশেষ ভোন বিবরণ পাওরা যার নাই।

ক সকল বিভিন্ন শ্রেণীর বাশ-ঝাড়ের পরস্পর পার্থক্য লক্ষ্য করিয়া উদ্ভিন্নবিদ্যাপ উহাদের জাতিগত চারিটা থাক (subtribe)নির্দেশ করিয়া থাকেন। তত্মধ্যে ১ম থাক Arundinarieæ
—ইহার মধ্যে Arundinaria শ্রেণীক বৃক্ট গণ্য হইতে পারে।
২র থাক Enbambuseæ – Bambusa, Gigantochloa ও
Oxytenanthera শ্রেণী ইহার অন্তর্ক্ত। তর Dendrocalameæ—Deudragalamus, Melocalamus, Pseudo-

tostachyum, Teinostuchyum ও Cephalostachyum শ্রেণীভূক বৃক্ষ সমুদার ইহার মধ্যে পরিগণিত হয়। এবং ৪র্থ Meloconnece—Dinochlos, Melocauna ও Ochlandra শ্রেণিক বৃক্ষই এই থাকের অন্তর্গত।

উপরোক্ত কুদ্র বা বৃহৎ জাতীয় বাঁশগাছগুলির উপরে একটা কঠিন স্বগাবরণ আছে। তাহার নিমে ও ভিতরের ফাঁক পর্যান্ত যে কাৰ্চভাগ থাকে. তাহাকে 'দল' বলা যার। জাতি বিশেষে ঐ দল মোটা বা পাতলা হয়। দলের মাঝে মাঝে এক একটা নিরেট ও কঠিন মোটা গাঁইট থাকে। কোন কোন বাঁশের গাঁইট এত কাছাকাছি হয় যে, ভিতরের দল বা কার্চ নাই বলিলেও চলে। শিক্ষাপুর, চীন প্রভৃতি দেশে এই বাঁশের ফুন্দর ফুন্দর ছড়ি প্রস্তুত হয়। উহা চীনে বাঁশের লাঠি বা ছড়ি বলিয়া পরিচিত। কোন কোন শ্রেণীর বাঁশ ৩০ দিনের মধ্যে পূর্ণাবস্থা প্রাপ্ত হয়, কোনগুলি বা ২।৩ মাসের মধ্যে শাখাসহ পরিধর্দ্ধিত হইয়া উঠে। প্রধানত: বর্ষা সমাগমেট বাঁশের কলা গজাইতে দেখা যায়। কাপ্তেন প্লিমান ১৮৩৫ খুষ্টাব্দে বিশেষ ভাবে পর্য্যা-লোচনা করিয়া দেখিয়াছেন যে, বর্ষা ঋততে বক্তধ্বনির সঙ্গেসক্লেই বাঁশের কোঁড় বাহির হয়। তদনস্তর উত্তরোত্তর বারিপাতে উহা বুদ্ধি পায় এবং ক্রমশ: কঞ্চি প্রভৃতি দারা বিভূতায়তন হইয়া উহা প্রকৃত বাঁশবাড়ে পরিণত হ**ই**য়া থাকে। চীন দেশে 'চেকিয়াং' নামে এক প্রকার চৌকা বাঁশ পাওয়া যায়। উহা গৃহাদি সাজা-ইতে, অথবা আসবাব প্রস্তুত কার্য্যে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ইহার দারা উৎক্লপ্ত কলম-দানি প্রস্তুত হয়।

বৃষ্টি আরম্ভ হইলে বাঁশের গোড়াকাটাগুলি স্থানাপ্তরে পুতিরা দিলে তথার নৃতন কোঁড় উৎপন্ন হইরা থাকে। কোন কোন স্থান বিশেষরূপে চলিরা তথার ছই বা তিন কুট্ লখা একটী কাটা গোড়া লখভাবে পুঁতিরা দেওরা হর। ঐ গোড়ার শিকড়বুক গাঁইট (nodes) গুলি হইতে কিছুদিন পরে এক একটী ফলা নির্গত হর, তথন উহাকে থণ্ড খণ্ড করিরা কাটিরা নির্দিষ্ট ভমিতে পথক ভাবে রোপণ করিরা দের।

কাটা গোড়া ভিন্ন বাদের বীজ হইতেও গাছ উৎপন্ন হয়।
Lodicules ও pulea সংস্কৃত বীজগুলি গাছ হইতে ভূমিতে
পতিত হইবার পর সংগ্রহ মধ্যেই অন্ত্রন্তিত হইনা উঠে।
কথন কথন উহা মৃল বুক্তে সংলগ্ন থাকিরাই হর ইঞ্চ
পর্যন্ত বাড়িরা থাকে। তথম ঐ কচি কোড়গুলিকে
হানাস্তরে হাপিত করা হর। ঐ অন্ত্রন্তিত বীজগুলি স্বর্জনাল
মধ্যেই নষ্ট হইরা বার, কিছ বিশেষ মন্ত্রেও সাবধানে সংগ্রহপূর্বাক রক্ষা করিলে ভারতের একপ্রান্ত হইতে অপর প্রান্তে
লইরা গাছ উৎপাদন করা বাইতে পারে। এই গাছগুলি ১০

হইতে ১২ বংসর অতিক্রম ন। করিলে জুপক ও কাটিবার উপযুক্ত হয় না।

বাশ গাছ প্রধানতঃ বেরূপ কোঁড় লইরা অছুরিত হর, পূর্ণমাত্রার পরিবর্দ্ধিত হইলেও উহার গোড়ার পরিসর প্রার একরূপই থাকে। দণ্ডের দৈর্ঘ্যতার বৃদ্ধি সহকারে ব্যাস তেমন ছুলতর হর না। বৎসরের পর বৎসর চলিরা বার, কিন্তু উহার দৈর্ঘ্যতার বা আয়তনের বিশেব কোন তারতম্য লক্ষিত হর না, কেবল উহার কার্চ পরিপক হইতে থাকে। নারিকেল, তাল, থর্জুরাদি রক্ষের বেরূপ ডালের চিহ্ন দেখিরা বয়স নির্ণয় করা বার, বাল গাছের গ্রন্থি দৃষ্টে দেরূপ কোন কাল নির্দ্দেশ করা বার না। উহার প্রশোলম বা বীজাধান দেখিরা সাধারণে বয়স নির্ণয় করিরা থাকে। মধ্যভারতের পার্ক্তির প্রদেশবাসী জাতিরা পার্ক্তির বালের বীজাধান দেখিয়া আপনাদের বয়স পর্যান্ত গণনা করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি বালের তুই "কাটল" অর্থাৎ গুইবার বীজাধান দেশিন করে, তাহার বয়স ৬০ বৎসরের ক্ম হয় না।

উপরে বাঁশের পুল্পোলামের বিষয় লিখিত হইয়াছে। সাধারণত: ২৫ হইতে ৩৫ বৎসরের মধ্যে বাঁপ গাছে ফুল ধরে। অনেক সময় ৪৪ বৎসর পরে ফুল হইতে দেখা যায়। সময় সমর বাঁশ গাছের বীজ হইতে চাউল পাওয়া যার। ঐ চাউল অনেকে খাইয়া থাকে। আমাদের দেশে অনেকের বিশ্বাস, দৰ্ভিক বা মহামারী উপস্থিত লইলে সাধারণতঃ বাঁল গাছে চাউল জন্মে: কিন্ধ বস্তুত: সে সংস্কার ভিত্তিহীন। ১৮৩৬ খুষ্টান্দের Trans. Agri Horti. Soc of India Vol III p. 139-43 গ্রন্থে লিখিত আছে যে, ঐ সময় নানা স্থানে বাঁশ গাছে চাউল দেখা গিরাছিল,কিন্তু তথন কুত্রাপি ছর্ডিক ছিলনা। কেত্রাদিতেও অপ্র্যাপ্ত ধান্ত উৎপন্ন হইয়াছিল। ঐ সময়ে ক্ষেত্রজ তওল ১, টাকার ১৬ সের এবং বংশব তণ্ডল ১, টাকার ২০ সের বিক্রীত হইরাছিল। প্রত্যেক বাঁল গাছে প্রার ৪ লের হইতে ২০ সের পর্যান্ত তণ্ডুল উৎপন্ন হর। যে গাছ বত বিচ্ছিন্নভাবে ও বত উর্বার ভূমিতে থাকে, তাহাতে ততই অধিক মাত্রার চাউল পাওরা যার। চাউল উৎপন্ন হওয়া শেষ হইলেই গাছটা আপনা আপনি ওকাইরা আইসে, কিন্তু তাহার গোড়া হইতে পুনরার কলা বাহির হর এবং কখন কখন বীজ হইতেও বুক্ষ উৎপন্ন করা হয়।

পূর্বেই উল্লেখ করিরাছি বে, মাস্থবে বাঁলের কোঁড়া ব্যঞ্জনাথিতে রাঁধিরা অথবা আচার করিরা থার। গৰাদি জন্ত বালপাতা থাইতে ভাল বালে। গোলর এলোরোপে বাঁল পাতা বিশেব উপকারী। ১৮১২ খুটাব্লের উড়িয়া-ছর্ভিক্লেলক লক্ষ লোক বাঁলের চাল থাইরা প্রোল ধারণ করিরাছিল।

১৮৬৫ খুটান্দের মহামারীতে ধারবাড় ও বেলগাম্-জেলাবাদী প্রার ৫০ হাজার লোক কাণাড়ার আদিরা বালের বীজ সঞ্জ্যপূর্বক ভাহার তভুলে প্রাণ ধারণ করিরাছিল। ১৮৬৬ খুটান্দে
মালদহ জেলার ১, টাকার ১৩ দের বালের চাউল বিজ্ঞীত
হুইরাছিল। ঐ সমর তথার প্রতি টাকার ১০ দের চাউল
ছিল। হুর্ভিক্রের দারে পড়ির। লোকে বালের চাউলে উদরপূর্ণ করিতে বাধ্য হুইলেও উহা বিশেব স্থুপক্র নহে। 1)৫
Bidie বলেন, উহাতে অস্ত্রীর্ণ ও উদরাম্য রোগ জ্যা।

বংশদণ্ডের অভ্যন্তরপ্পিত ফাঁকের মধ্যে সময় সময় হন পাওয়া বায়। ঐ জল বিশেষ শৈত্যগুণসম্পায়। বায়ুরোগএন্ত ব্যক্তিকে ঐ জল পান করাইলে বিশেষ উপকার দর্শে।
বালের উপকারিতা সম্বন্ধে ধনার এইরূপ একটী বচন প্রচলিত
আছে,—

"পূবে হাঁস, পশ্চিমে বাঁল • • • *। উত্তর বেড়ে, দক্ষিণ ছেড়ে, বাড়ী ক'ৰুগে ভেড়ের ভেড়ে।"

অর্থাৎ পূর্ব্ব দিকে কুমুদকজনার পরিশোভিত হংস বিরাজিত পুক্রিণী এবং পশ্চিমে বংশবন সমাজ্যাদিত গৃহবাটিক। গৃহত্তের বিশেষ মদলপ্রাদ।

খাছদ্রবারূপে ইহার উপযোগিতার বিষয় সাধারণে বিশেষভাবে গুলীত না হইলেও, গুহত্বের নানা কালে ইহার ব্যবহার দেখিয়া लाटक वानवाफ तकात ७ शानवात वावष्टा कतिवा चानिएएए। স্ত্রতলীর অন্তভুক্তি খাপ্রেলের বরসমূহ এবং তছহিভুক্ত পলীপ্রদেশে উনু, গোলপাতা, খড় প্রভৃতি জ্ববাছারা নিশ্মিত যে नकन हाना चत्र (मथा यात्र, छৎनमूनांत्रहे वान, निष्, थफ ७ कानांत्र সাহায্যে নিশ্বিত হইয়া থাকে। এ সকল খরের খঁ,টী, রোয়া, বাতা,টানা প্রভৃতি সকলই বাঁলের দারা প্রস্তুত হয়। চারি পার্বের দেওয়ালগুলিতে বাঁশের টাটা, চেটাই, অথবা ছেঁচা বাঁশের কাচা বা চাঁচের বেডা দেওরা হর। বাঁশের সরু গোলকাটী প্রস্তুত করিরা সভার বারা বিনাইরা 'চিক' প্রস্তুত হর। ঐ চিক দরজা बानामा প্রভৃতির সন্মধে আবরকরপে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ৰান্তবিক পক্ষে একটা গৃহত্ব পরিবারের আবশুকীয় আসবাব প্রভৃতি সকল পদার্থই বাশ হইতে নির্দ্ধিত হয়। একটা করেণ পরিবারের গৃহের প্রতি লক্ষ্য করিলে, ইহার পরিক্ষ ট চিত্র দৃষ্টিগোচর হইতে পারে। কম্বেণগণ সপরিবারে অর্থাৎ ২০০ হটতে ৩০০ পৰ্যন্ত লোক একতা একটা বাসভ্ৰনে থাকে। উহা একটা কৃত্ৰ গ্ৰাম বলিলেও চলে। স্কল্ট বংশনিবিত। বাঁশের মাচা বা পাটান্তন করিয়া ভাহাতে শ্ব্যাতন বিনির্মিত হয়। এভব্লি বংশ্বপ্তে বসিবার মোড়া, কেবারা, ইজিচেরার, ছেলের বোলা, টেগরা প্রভৃতি সন্ত্রান্ত গৃহছের নানা আসবাব প্রাক্তত হইল থাকে। জালিকেরা জলাজমির উপর অথবা নদীবক্ষে বাশের কুটার নির্মাণ করিরা বাস করে। স্থানে স্থানে নদীথান্ডের উপর অথবা রাভার মাবে মাঝে বাঁশের সেড় দেখা বার।

ৰে সকল বাদ অদিক কাঁপা অৰ্থাৎ বাহার ভিতরের কাঁক অক্সাক্ত শ্ৰেণীর ক্লাঁপা বাঁশ অপেক্ষা কিঞ্চিৎ অধিক, এইরূপ বাদ হইতে জনমানী, জনপাত্ৰ, পানপাত্ৰ, রন্ধনপাত্ৰ প্রভৃতি গার্ছত্ব উপকরণসমূহ প্রস্তুত হয়। হিমানরশিধরবাসী অনেক জাতিই এইস্থপ বালের পাত্রে জন ও চাউল দিয়া অর পাক করিরা থার। পার্কত্যে ক্লবাহকেরা মশকের পরিবর্তে **৩** किंद्रे स्ट्रेटिक किंद्रे भवास नवा बरमवंश्व गरेवा खेखश्च लीह-শলাকা বারা উপর হইতে ভাহার গাঁইটগুলি ফুটা করিয়া লর। পরে তাহা জল পূর্ণ করিরা পৃষ্ঠদেশে সংস্থাপনপূর্বক একখণ্ড দড়ি দিরা উহা কপালে বাঁধিয়া রাখে। ইহাতে ভাহা-দের পর্বতারোহণে বিশেষ ক্ষবিধা হয় এবং ঐ চোক্ষের অভ্যানত-ছিত জল কএকবিন পৰ্যান্ত থাকিলেও উদ্ভৱ বা নই হয় না। বৈশাৰে জনসভদানের সময় অথবা চৌৰাজ্ঞার উপর হইতে কলের জল অভত লইবার জভ বালের জলনালীর ব্যবহার দেখা বার, এখনও কুবকেরা বাঁলে তৈলপাত্র বা গুরুপাত্র প্রান্তত করিরা ব্যবহার করে। অরবাঞ্চনাদি পাক করিবার ভাতা. মাছকাটা ছবি, লোহনপাত্র, মছান ৰও, মই, চর্কা, লাটা, আন্লা, প্রভৃতি ব্যবহার্য্য সকল দ্রবাই বাঁশে প্রস্তুত হয়।

নাবিরা বা জেলেরা ইহাতে নৌকার দাঁড়, মাল্লল এবং মার্চ ধরার অক্তান্ত আবশুকীর উপকরণ প্রেক্ত করির। লয়। আসাম ও পূৰ্ববদ্ধে অলাজনি ও বিল প্ৰভৃতি হইতে কৈ মাছ প্ৰভৃতি ধরিবার অভ এক প্রকার বড়শি প্রস্তুত হর। উহা চিরাড়ীর जात छर्गक वाटनत अकड़ी मनाका बाज । छेरात संगृहत्न विक वीधिया हरे मूच नीह कतिरण देश्यांकी रेखे जकरत्व मूछ हत्. में हरे रहाश मूर्य अवनी क्षित्र चाहेकारेबा स्वरनबा सरन ছাড়িরা বের। যাছ কড়িংএর লোভে ঐ বড়নি আসিরা ধরিলেই বংশশলাকা পূর্কাবছার বিভূত হইরা পড়ে, এবং কান্তুরা মধ্যে স্বেগে আহিই হইরা ভাহা কাঁকি করিরা কেলে. তখন আর নড়িবার শক্তি থাকে না। এডব্রিল ছিপ, বড়শা, বড়শার দও, বটি আছডি অনেক জিনিন ইহা হইডে স্চরাচর প্ৰস্তুত হইয়া থাকে। নালা প্ৰকৃতি পাৰ্মতা জাতিয়া বাঁপের কঠিন আবরণাংশ হইতে ভুরিকা ও বড়শা প্রান্ত করিরা शास्त्र । भक्त वर्षेष्ठ आमापि त्रकात क्षत्र खावाता 'शती' मारम এক প্রকার ছুঁটাল ছুব্লিকা প্রায়ন্ত করিরা প্রামের চকুলার্ববর্তী ষনান্তরাল প্রবেশের পথে পথে বিছাইরা রাখে। উহার একটা
শক্রর অভিমুখে ও চুইটা ভাহার বিণারীতে প্রামের অভিমুখে
থাকে। শক্ররা আসিরা অগ্রমুখী কাঁটার বিদ্ধ হইলে বেমন
পা পশ্চাদিকে টানিরা লইতে চেটা পার, অমনি অপর চুইটা
কাঁটার গোড়ালী বিদ্ধ হইরা বন্ধশার অহির হইরা পড়ে।
নাগারা চিড়া প্রস্তুত করিবার জন্ত এক প্রকার বাঁশের কল
নির্দ্ধাণ করিতে জানে। সাঁওভাল কোল, ভীল, নাগা, কুকী
প্রভৃতি অসভ্য জাতিরা এখনও বাঁশের ধছক লইরা বেড়ার।
অতি প্রোচীন কাল হইতে আর্য্য-বোদ্ধ্বর্ণের ভীর, ধছক ও
ছিলা প্রভৃতি বাঁশে নির্দ্ধিত হইত। পূর্ব্বকে বাঁশের পাচ্ড়াণ
নারার রীতি আছে।

এই সকল ব্যতীত, বংশে উৎকৃষ্ট ৰাজ্যন্ত্ৰসমূহ প্ৰস্তুত হইয়া থাকে। জীককের মোহন বাঁশরী এবং লোকপঁলপরাক্রত মিঞা তানসেনস্থট শানাই নামক বাজ্যন্ত বেণু নামক বংশ বারাই নির্দিত। এবেশে সক্ষ তললা বাঁশে বিভিন্ন প্রকার বাঁশি প্রস্তুত হইরা থাকে। মণিপুরবাসী এবং নাগারা এক প্রকার বাঁশের বীণা (Jew's harp) প্রস্তুত করিরা বাজার। উহার তারভাগত তাহারা কাচা বাঁশের উপরের ছাল হইতে সক্ষ ও গোসভাবে চাঁচিরা প্রস্তুত করে। মলরবাসীর উক্লোল নামক বাজ্যন্ত্র আবস্তুত মত কুলু বা বৃহৎ এক একটা গাঁইটমুক্ত বাঁশের চোজে নির্দ্দিত। বাজাইবার সমন্ত্র উহা কতকাংশে জলতরল বাজানার জ্ঞার বাজান হয়। উহাতে স্ক্রেরও তার্তম্য স্পষ্ট অমুভূত হইয়া থাকে। গোপীবন্ধ, সেতার ও একতারা প্রভৃতি যন্ত্রের পূর্ত্বত বাঁশের নির্দ্দিত হইরা থাকে।

উপরোক্ত নিত্যবাবহার্য ক্রব্যাদি ভিন্ন বংশদণ্ড হইতে মন্ত্রাজগতে আর একটা মহহুপকার সাবিত হইডেছে। উহা মন্ত্রাজগতে আর একটা মহহুপকার সাবিত হইডেছে। উহা মন্ত্রাজগতে আর কিছুই নহে। মানবজাতির মনোভাব বা এছাদি লিখিবার কল্প কাগজের আবিকার হইরাছে। এই বংশ-দণ্ড হইতে সেই কাগজের প্রকারবিশেষ উত্তত হইডেছে। এই কাগজ অপেকারত দৃঢ় হওরার লিপিকার্য্যে বছল পরিমাণে ব্যবকৃত হয় না, বলং স্রব্যাদি মোড়ক করিয়া রাখিতেই উহার অধিক প্রচলন দেখা বায়।

Indian forester নামক পত্রিকার ৪র্ব তারে চীনদেশীর বাশের কাগজ প্রায়ত প্রথা প্রায়ত হাঁরাছে। উহা এরপ সহজ্ঞ বে সকলেই জনারাসে সেই প্রথা জবলদন করিরা কার্য্য করিতে পারে। বাশগাছকে কৃষ্ণি ও পত্র নির্দান্ত করিরা তিন চারি কিট লয়া থাকি কাটজে হর। পরে সেই খলি সরু সককেন্দান্ত বাহিরা খলে বাহিরা খলে

ভূৰাইরা রাধা কর্তকা শৃক্তিদীতে বা চৌৰাজ্যৰ বাৰাদীর তাড়া ভিজাইবার সময় একটার ঐক্সণ বাধারী সাজহিয়া ভাহার উপর পর্যায় চূদ ছড়াইরা দিতে হয়, বেন চূপে বাধারিশ্বলি ঢাকা পড়ে। এইরূপে উপযুর্ণির বাধারী ও চুগ চৌবাজ্ঞার সাঞ্চাইরা উপর হইতে আত্তে আতে অর অর জন চালিতে হর। ক্রমে তন্মধাসক্ষিত জলয়ানি উপরের বাখারিত্তরকে ঢাকিয়া কেনিলে जन (१९४१) रक कर्ता हरू। धहेन्नार्ग हुन मिलिए जन मर्सा ৩। ৪ মাস কাল নিমজ্জিত থাকিলে বাধারী পচিরা ভাইসে। তথন উহাকে তুলিরা ঢেকিতে বা উদ্ধলে কুটিরা শুঁড়া করে। অত:পর সেই ভঁড়াভলি উত্তমরূপে পরিছারপূর্বক পুনরার পরিষ্ণত জলে মাধা হইরা থাকে। কাগজের জারতন বা দৈর্ঘ্য প্রস্থ ও স্থূলতা অনুসারেই পরিকার জল মাখান নিরম। অনস্তর ঐ জনমাধা বংশ-চূর্ণের মাড় চৌকা ছাক্নীর ভার আকারের ছাঁচে ঢালিরা বধারীভি কাগজ প্রস্তুত করা হর। কাগজের অনুরূপ ছাঁচে ঐ মাড় সমানভাবে বিভৃত হইয়া কাগজের আকার গারণ করে বটে, কিন্তু তথনও উহা ভিজা থাকে ; ঐ ভিজা কাগজ গুকান আবশ্ৰক। ছাঁচ হইতে ডিজা কাগজ উঠাইরা প্রথমে ক্লবন্তক একটা দেওয়াল গাত্রে ভাহাকে শুকাইতে দেওয়া হয়। তদনস্তর পুনর্কার আতপতাপে ভকাইরা শইতে হর। এই প্রকারে বাঁশের কোঁড়া ফটকিরি মিশ্রিত জলে পচাইরা কাগজ করিতে পারিলে সর্কোৎক্লষ্ট কাগজ উৎপন্ন হইয়া থাকে। বংশ-বৃষ্টির হরিছর্ণ নাল করিরা যে কাগজ হর, তাহা মধ্যম এবং वरभ- हुन इहेर छ द्यंशन का ता कांग्रेस हुन, काहा निकृष्ट विगटक হইবে। এক জন পাকা কারিগর প্রতি মিনিটে এইরূপে ছর-খানি কাগজ শ্রেম্বত করিতে পারে।

আমেরিকা ও মুরোপবাসী কাগকবাবসারিগণ ওরেই ইণ্ডিক্
বীপপুর হটতে সহল্র সহল্র টন "বাঁশের আঁইস" (Bamboo
fibre) আনাইরা উৎক্রট কাগক প্রন্তুত করিরাছেন। ব্রেজিলবাসী বৈজ্ঞানিকগণ ইহার স্ক্র তত্ত্বসমূহ রেশম, অথবা পণবের
সহিত মিল্রিত করিরা ব্রবরনের উপবোগিতা প্রতিপাদনে
মনোবোগী হইরাছেন। Mr. Boutledge ভারতবর্ধে বাঁশের
আঁইনে কাগক প্রন্তুত করিবার ব্যবহা প্রতিপাদন করেন।
ক্রিক্ কচি কোড় ব্যক্তীত, অপর পরিপক্ষ বাঁশে উহার উপবোগিতা
অল্ল দেখিরা এবং ভাহাতে ব্যর বাছল্য আনিরা উক্ত প্রভাব
পরিগ্রীত হর নাই।

উপরে বংশের সাবাদ্ধ ভেষকথা নিশিবত হইরাছে। হৈছক মতে এই বাঁশ বিবিধ—সাবাদ্ধ ও বভুবংশ। রাজনির্থনী মতে এই ছই প্রকার বংশের ঋণ—ক্ষার, ক্রাব্তিকা, শীভন, সুত্রকৃত্ব, প্রমেদ, শর্মা, নিজনাহ ও সন্নোগকারী। সভাত্তরে च्यास्त्र । त्रज्ञुनरत्मत्र विराग्य थन धार्ड रा, देश कीनम, चार्डीन-नामक, क्रांत्र, नाहन, क्षा थ मृतद्वा

বংশাসুর বা বীশের কোঁচড়ের গুণ-কটু, ডিঞ্চ, অর, কবার,
বীজন, শিতরকবার-রুজুর ও কচিকর :

ণ, ।শধনকৰং-হুজুর ও স্নাচকর। "ক্রীয়ো বংশলো ককং বাজনিত্তকর: কটু:। স ক্রায়ো বিবাহী চ মেলম: গাকড: কটু:॥" (দাক্সমি°)

ভাৰপ্ৰকাশ নতে, ইহার খণ—

"বংশ: সরো হিনঃ খাছ: খবারো বভিলোধক:।

হেননঃ কনপিন্তর কুঁচারজনপোর্বজিৎ ॥

তৎকরীর: কুঁচুং গাকে রনে রুকো শুরুঃ সর: ।

কবার: কুকুং খাছর্মিনাহী বাতপিন্তনঃ ॥

তব্ববান্ত সরা জন্মা: ক্যারঃ কুটুপাকিনঃ ।
বাতপিত্তকরা উকা বছস্রাঃ ক্যাপহা ॥"

অর্থাৎ বাঁশ সারক, শীতবীর্যা, মর্ম ও ক্রাম্বরস, বভি-লোধক, ছেলন এবং কক, পিড, কুঠ, ত্রণ ও লোধনাশক; বালের কোড়—কটু, ক্রার, মর্ম রস, কটু, বিপাক, ক্লক, প্রক, সারক, বিবাহী এবং কক, বায়ু ও পিডবর্মক; বেগুল্ল লারক, রুক্ত, ক্রার রস, কটু, বিপাক, বারু ও পিডবর্মক, উন্ধবীর্যা, মৃত্ররোধক ও কক্লালক।

নগ, শন্ন প্রভৃতি ভূপবিশেষও বৈজ্ঞানিক বীমাংসার বংশ-লাভীন বদিনা বর্ণিত। প্রাচীন বৈভক শান্তেও ইহা ভূণলাভিন অক্তর্ভুক্ত বদিনা গৃহীত এবং স্বভন্ন ভাবে আলোচিভ হইনাছে।

নিল ও লায় শক্ত হেব।

বাবের পাতা ও কচি কোঁড় নিভ করিবা ভাষার কাথ নেবন
করাইলে ত্রীলোকের রজেনির্গন কইরা খাকে। ভারতবর্বে ও
চীনরাজ্যের হানে হানে অস্থের পর অস্টেডিকে ঐ কাথ
থাইতে সের। ভারতে রীভিমত রক্তরার কইরা আমার পরিকার
ইইরা বাকে। হতপদ ভর্ম কইলে বাড় বাধিবার করু বানের
বিনেব উপবোসিভা বেখা বার। ভাননিপ্রের বান বিখতিত
ও উত্তররূপে পরিভ্রত করিবা লাইলে অববা বংশপ্রাক্রক লইরা
ভর্মভানে নৃভ্রনে বাবিলে বাড়ের কার্য হর। ভর্মপরের হিরাত্রে
বানের চোল প্রিরা বিলে অথবা পাবসভি ভ্রেমের পর বানের
গাইট সেই ভালে আবর করিকে উরা সক্তিরানের ভার্য করে।

২ গৃহত্য উৰ্জনাঠ। আক্ষাঠা। বিংশঃ গৃঠান্তি, গেহোৰ্জনাঠ বেলোঁ-গলে কুলে। (গাওু সমুটীকান মন্ত্ৰিনাৰখুত কেলৰ)

ও পূঠাবাৰে। পিঠেন বাঁড়া। "বৰহিতিনীশ্বিভাগৰেডে-মুশং বচা ভোননগৈঃ পিনবন্ ন'' (ভাগ' ১১৮৮৩৬)। 8 वर्त्र ।

"উবাপিত: সংয়তিরেপুরবৈ:
সান্দীকৃত: ক্রনবংশচকৈ: ॥" (রঘু १।৩৯)
বোভভাগুবিশেব। চলিত বানী।
"স কীচকৈর্মাকতপূর্ণরকৈ: কুন্সভিরাপাদিতবংশকৃত্যম্।
ভ্রাব কুন্সেম্ যশ: সমুক্তৈকদ্মীরমানং বনদেবতাভি:॥"

(द्रपू २।३२)

[वःनी भटक वीनीत विवत्रण (एथ ।]

ইকু। (রাজনি॰) ৭ সর্জনামক সালবৃক্ষ। প্রিয়াং টাপ্।
(ক্রী) ৮ প্রাধাগর্ভসভূত অপ্সরোবিশেষ। (ভারত ১।৬৫।৪৬)
বংশ (গ্রং) ১ খন্তুপমধ্যোচ্চভাগ। (বু° সং ৫০।০) > বৃদ্ধসামগ্রী
পরক্ষরা বা সমূহ (রথধ্বজাদি)। ৩ জনসংখ্যা। ৪ অভিথি।
৫ লখ্মান ভেদ্দ ২০ হন্ত। ৫ গ্রন্থিকৃত হন্তপদাদির অস্থি।
'বংশ শক্ষেন দৈর্ঘ্য বিবক্ষিতং বাহু চ নলকাব্র জন্তের
চেতাইবংশকা:। নলকাবলুল্যাবিতি।' (রামা° ৫।৩২।৪৪ তীর্থ)
৬ বিকু। ৭ বংশলোচন।

বংশক্ষাষি (গং) বংশপ্রাহ্মণবর্ণিত আচার্য্য ক্ষরিভেদ।
বংশক্ (क्री) বংশ ইব কায়জীতি কৈ-ক:। > অগুরু।
(হারাবলী) বংশ ইব প্রতিক্ষতি: (ইবে প্রতিক্ষতৌ। পা

থোপন্চ) ইতি কন্। ২ মংক্ত বিশেষ। চলিত বাঁশপাতা

মাছ। (শন্ধমালা) ও ইক্লুভেদ। ইহা বাঁশাই বা শামশাঁড়া
আক বলিয়া পরিচিত। ইহার গুণ—শীতল, মধুর, নিয়, পৃষ্টিকর,
ধ্রেম্মল, সারক, অবিদাহী, গুরু, বৃষ্য ও সলবণ।

"বংশকজনভিব্যন্দী লযুদ্দিবিজয়াপহ:।" (রাজবল্প)
আবার স্থপ্ত বলিরাছেন—
"অবিদাহী শুরুর্ব্য: পৌশুকো জীক্কান্তথা।
আভাং তুল্যশুণ: কিঞ্চিৎ সন্ধারো বংশকো মত:॥"
(স্থপ্ত ১।৪৫)

হবো বংশ: (সংজ্ঞান্নাং কন্। পা এতা৮৭) ৪ কুন্ত বীন। বংশকঞ্জ (দ্বী) কুকাওক্লান্ত।

বংশকঠিন (গুং) বংশা বেগবঃ কঠিনা ব্যানিদলে স বংশকঠিনঃ।
বাশবন, বাশঝাড়।

বংশক্ষ (क्री) > আকাশে উজ্জীরমান হয়। বৃদ্ধ হইতে বায়ু কর্ত্ব আকাশে নীত শাল্পনীতুলা। বংশতুলা। চলিত বৃদ্ধির হতা।

"র্ছপ্রক্ষিত্যাহরিক্সভূলং মনীবিণঃ। গ্রীয়হানং বংশক্ষং বাতভূলং মন্ত্রন্ধন্।" (হারাবলী) বংশক্র (পুং) বংশং করোভীতি ক্ল-আচ্। > বংশের কর্ত্তা আদি প্রকর্ম পুরুষ। বংশকর। (খ্রী) মহেক্সপর্বতপাদনিঃস্থত নদীতেদ। (মার্ক পুঁ ৫৭।২৯) বংশধারাও পাঠ দেখা বার। বংশকরা, চট্টগ্রামের দক্ষিণপূর্ব্বে অবস্থিত একটা প্রাচীন নগর। রামাই বা রামুনামে পরিচিত। টলেমির ভূর্ত্তাস্তে Barakoura শব্দে এই স্থানের বাণিক্যপ্রভাব উদ্ধিবিত আছে। বংশকরীর (পুং) বংশাছ্র। বাশের কোঁড়। [বংশ দেখ] বংশকপূর [রোচনা] (পুংখ্রী) বংশক্ত কপূরি:। কপূর ইব শোভতে ইতি ক্লচ্-লা। ততঃ বল্লভংপুক্ষ:। বংশরোচনা। (রাজনি৽) [বংশলোচন দেখ]

বংশজ

বংশকর্ম্মকুৎ (অ) > দরামীর কার্যকারী। ২ বাশ কাটির।

যাহারা ঝুড়ি, কুলা প্রভৃতি প্রস্তুত করে। (রামারণ ২৮৮০৩)

বংশকর্মন্ (ক্লী) > বাঁশের কাজ। ২ বংশশিল (ঝুড়ি)
প্রভৃতি।

বংশকার (পুং) গন্ধক। (বৈষ্ঠকনি°)

বংশকীর্ত্তি (ত্রি) বংশত কীর্ত্তি:। বংশের গৌরব, কুলগরিমা। বংশকৃটজা (ত্রী) কৃষ্ণকৃটজ। (বৈশ্বকনি°)

বংশকুত্ (ত্রি) > বংশকারী বা বংশপ্রতিষ্ঠাতা। ২ বাঁশের কার্যাকারী।

বংশক্রমাগত (ি) বংশক্ত ক্রম: ইতি বংশক্রম: তেন আগত:। > পুরুষপরম্পরাপ্রাপ্ত, বংশাগত। ২ কুলপ্রথা-প্রেসিছ। (কামন্দক নীতি ৭৩১)

বংশক্ষয় (পুং) বংশক্ত ক্ষয়। বংশনাশ, বংশলোপ। বংশক্ষীব্রী (জী) বংশক্ত ক্ষীরমিবাস্তা অত্তীতি অচ্। গৌরাদি-ছাং ভীষ্। বংশরোচনা। (রাজনি)

বংশগুলা (ক্লী) পবিত্র তীর্থভেদ। এখানে স্নান করিলে বছ পুণ্যসঞ্চর হইয়া থাকে। (ভারত বনপর্বা)

वरশঘটিকা (ত্রী) জীড়া বিশেষ। (দিব্যা ৪৭৫।১৯)

বংশচরিত্রে (ক্লী) বংশাখ্যন। প্রসিদ্ধ বংশাদির ইভিত্ত। বংশচিন্তকে (পুং) বংশধারাভিজ্ঞ। যিনি খীর বংশপরিচয়-দানে সম্যক্ অভিজ্ঞ।

বংশতেছ্তৃ (পুং) > বংশচ্ছেদক। ২ খরামী। ৩ ধাহা ইইডে
বংশধারার ছেল পড়ে। রাজবংশাদির শেব নরপতি, থাহা
হইতে বংশের গৌরব ও পর্য্যার লোপ ঘটিরাছে।

বংশজ্ঞ (পুং) বংশাক্ষায়তে ইতি জন-ডঃ। ১ বেণুষৰ। (তি) কংশাৎ সহংশাক্ষারতে ইতি জন-ডঃ। ২ সহংশক্ষাত। পর্যার—
বীন্তা, বংশ্ক। ৩ বেণু, ৎপত্র (জব্যাহি)।

°ব্লিয়তনি ভ'ণং যা কংশৰং বচ্চ নিত্যনিৰ্বাণন্। কিং কুৰ্পাভনিহিতং ধৃষ্ণং পদে দেবৱাৰেন ॥"

(আর্যানগুৰুতী ৪৭৯

বংশজা (জী) বংশে কারতে ইতি জন-ডঃ ততটাপ্। ১ বংশ-রোচনা। (শনরত্বাবনী)

ভাৰপ্ৰকালে লিখিত আছে, ইহা বৃংহণ, বুৱা, বলা, স্বাহ্ন ও শীতল গুণযুক্ত এবং ভ্ৰুচা, কান, অৱ, পিন্ত, জল্ল, কামলা, কুই, বুণ, বাত ও মুত্ৰকুছে নাশক।

"বংশজা বৃংহণী বৃষ্যা ধন্যা খাৰী চ শীতলা। তৃষ্ণাকাসজ্ঞরখাসক্ষরপিতাশ্রকামলাঃ। হরেং কুঠং এণং পাতু ক্যায়া বাতকুচ্ছুজিং॥"

(ভাবপ্র• পূর্ব্বর্থ ১ম ভাগ)

২ কছা। ত কলিত জ্যোতিবোক ভূমিজে।

"পাবকে সোম্যানৈশ তা ইক্সবায়্যনে হার।
জলাগ ুত্তরনৈশ তো পৃর্কে চৈত্রাদিনাসতঃ॥
বংশজেয়ং মহাভূমিদৈত্যবংশক্ষয়করী।
দক্ষপৃষ্ঠগতা যুদ্ধে জয়দা নাত্র সংশন্ধঃ॥"

(नवशिक्तवर्गा चरवानव)

বংশত শুল (গুং) বংশজাতত্ত পুল: । বেণ্যব, বাঁশের চাউল। বংশতৈত্ব (ফ্রী) অরংঘিকা রোগঃ তৈলভেদ।

"কটুতৈ সমরুং যিয় মৃত্রে বংশফ গৈ: শৃত্তম্।" (রুসংর°)
বংশাদলা (ত্রী) জীরিকা নামক তৃণবিশেষ। বাঁশপাতা বাস।
[বংশপত্রী দেখ]

বংশাদা (ত্রী) প্রক্রপদ্ধীভেদ। (নৃসিংহ ২৮।৯) বংশাদূর্ববা (ত্রী) ১ কট্কী। ২ শতপ্রবা নামক দ্র্রাভেদ। ৩ কিংভক। (রাজনি•)

বংশধর (ত্রি) বংশং ধরতীতি ধৃ-অচ্। > বাঁশধারিমাত্র।

২ বংশমর্যাদারক্ষাকারী। ৩ পুত্রপাত্রাদি। ও বিভিন্ন

মতাবলম্বী সম্প্রাদার ভেদ।

"একৈ কতাভবতেবাং রাজন্নর্দ্দমর্ক্র্দ্ন।
ভোক্ষাতে বহংশধরৈন হী মন্তরং পরম্ ।" (ভাগ° ৪।২৮।৩১)
"বেবাং বংশধরে: বতপ্রবৃত্তি: সম্প্রদানতেদে: রুলা মহী
ক্ষেত্রং অভ:পরক ভোক্ষাতে অবিভাকানকর্মভ্যোহপি
রক্ষিত্রতে" (বামী)

ে বছাদ্রিবর্ণিত রাজভেদ। (বছা ৩০।৩৫)
বংশধর্মিপ্রা, একজন প্রাসির নৈরারিক। ইনি স্থারতদ্বপরীকা, বোগকচিবিচার প্রভৃতি করেকথানি গ্রন্থ রচনা কর্রেন।
বংশধান্ত (ক্লী) বংশস্ত ধান্তম্। বেণুবব। দেশভেদে ইহা
বিভিন্ন প্রকার হইরা থাকে। (রাজনি°)

বংশধারা (ত্রী) ১ মহেরপাদনিঃস্ট নদীকে। এই নদী মধ্য প্রেলের কালহন্তী জেলার গোলীগড় জমিলারীর মধ্য হইতে উত্তুত হইরাছে। অক্ষা" ১৯° ৫৫ উ: এবং প্রাবি° ৮৩° ৩২´ পৃ:। ইহা দক্ষিপূর্বাভিস্থে বিশাধপাটন জেলার মধ্য দিরা ক্ষিমেড়ী বিভাগের বাটলি নগর সন্নিকটে গলাম্ জেলার প্রবেশ করিরাছে। তথা হইতে পুনরার দক্ষিপপূর্বা গভিতে প্রবাহিত হইরা ক্লিলপজনের নিকট বলোপসাগরে মিশিরাছে। এই নদী ১৭০ মাইল পর্যান্ত বিভ্ত। উহার প্রার আদ্বাংশে নৌকাবোগে পণ্যন্তব্য লইরা বাওরা বার।

২ কুলপছতি। ৩ বংশবলী।

वश्मक्षांत्रिम् (बि) वश्मर वज्ञजीिक वृ-निर्मि। वश्मक्रकाकाती। वश्मक्षत्र।

বংশনর্ত্তিন্ (পুং) ১ গৃহনর্ত্তক। ওাঁড়। বাঁহারা বংশার্থ-ক্রমে কোন এক প্রসিদ্ধ রাজবংশে অথবা দেবালয়ে নর্ত্তকের কার্য্য করিরা আসিতেছে। (গুরুবজ্ব: ৩-।২১)

বংশনাড়িকা (ত্রী) বংশ এব নাড়িকা যত্ত্ব। > বংশনালী। বংশনিষ্ঠিত নল। ২ বাঁলী।

বংশনাথ (পুং) বংশের প্রধান বা প্রসিদ্ধ ব্যক্তি।

(রামা[°] ৪।২৯।২৬)

বংশনালিকা (ত্রী) বংশনালোহন্ত্যতা ইতি বংশনাল-ঠন্-টাপ্। বংশী। (শক্ষরত্বা)

বংশানাশা (রী) বংশত নাশ: কর:। বংশ-নশ-বঞ্। ১ বংশ-লগণ। ২ ফলিতজ্যোতিবোক্ত যোগভেদ। গ্রহগণের বে সমাবেশভেদে মাহুবের জচিরে মৃত্যু ঘটিরা থাকে, ভাহাকে বংশনাশ-বোগ বলা বার। যদি করকালে রবি, শনি ও রাহ একগৃহে থাকে, ভাহা হইলে সেই মহুবের বংশনাশ হইরা থাকে।

"রবিণা সহিতো মন্দো রাহ্বুকো তবেদ্বদি। , বংশনাশকরো বোগঃ কথিতো মুনিপুদ্ধবৈ:॥" (ক্লিড্জোণ)

ধনার বচনে আরও কএকটা নাশবোগ বির্ত আঁছে। জ্যোতির্কিন্গণ সহজেই তাহার অর্থ হৃদয়লম করিতে সমর্থ হুইবেন। নিয়ে তাহাউদ্ভ হুইল—

শদগনে রোহিত শশিস্থত যার, তার কারা শৃগালে থায়। ১
সাতে কুলা থাকে ববে, বাঁশের আগে ওকার তবে ॥ ২
বাংশে পুত্রে দেখে গায়, তাহার কুঠি না কর আগা ॥ ৩
বাংশ পুত্রে এক বারে থাকে, চৌর হইরা তার সৌর না রাখে।
সপ্তর এক বারে থাকে, চৌর হইরা তার সৌর না রাখে।
সপ্তর কুলা থাকে ববে, ছবেশ কুলী হর তবে।
ভুসাকুলী কিসের কাল, বুগান্গি গড়ুক বালা।
চান্দ গার না নেখে ভভাগতে, ভাহার কুঠে পেলার গৃতে।

এ৫৬ ী

চান্দে গুলু দেখ এক সন্ধু, কুজে জীৱা অতি বড় রল। ইহা ছাজি সাতে পার, সে নর গলকতে বার। ছুই কুজা মাধন গা, ভাষার কুঠি ছেলা বোগা। কাকে পুগালে ধার ভাকে, সাভ ইজ না ভার রাধে ॥ ৪ মকরে কুলা ধ্বল সলে, নিত্য ক্রীড়ার বার রলে। ই**ট কুটুবে করার কোগ, সোম কুঠি** নৃপতি বোগ। गाएक मिल गात भाग, गीएए क्रममी मात वान ॥ e রাশি লগ্ন সাগরে বান্দ, জলে বসিরা পাতিল কান্দ। লৱে থাকে আৰু বাকা, অগ্নি জলে করিবা শহা। বার মঙ্গল সাতে দেখে, মেবের নাদে পাড়ে তাকে॥ ७ বৰে ছাভে না ৰেখে সাতে, কি করিবে বাপে পুতে। লয়ে কুলা লয়ে হুলা, লয়ে থাকে ভায়ুতমুলা। রাকা দিঠে গুকা চার, অষ্টদিনে ব্যব্দের বায় 🛭 ৭ চাইর সাগরে রাহর মেলা, তবে ক্রুঠি না কর হেলা। আছুক বোগে পায় সিদ্ধি, আপন কালে মিলার নিধি। চাইর সাগর রাহ্র মেলা, তবে কুঠি ছাদা ভোলা। লগনে চান্দ হুরগুরুবুতা, অবশ্র হয় নৃপতি সমতা। কুজার বরে থেঁ।ড়ার বাসা, গোতা কুটুবের নাহিক আশা ॥ ৮ কুলা খোঁড়া থাকে সলে, এক কাল না লায় রলে। কীবা ধবে নিজ ঘরে, রাজপাশে অবস্ত বরে। রাজভোগে যায় কাল, ভাই কুটুম্বের অঙ্গে উজ্জাল। কোণে চান্দ সাগরে লগন, সকল রিষ্ট করেন ভগন ॥ ৯ জীরা ভুরা থাকে ববে, রাজা সম হর তবে। জীয়া ভূয়া দেখে এক সঙ্গে, শেষে কুঠি করিব রঙ্গে। সৰ পরিহরি থাকে সাতে, সকল কাল যার ভাতে পুতে। এক পালে অপরে পার, পাপগ্রহ ববে চাব্দে পার। ठात्मव गाएं थात्म नान, नीत्क बननी मत्त्र वान ॥ ১٠ চাইর সাগরে লগন চান্দ + সাগরে তবে পাতিল ফান্দ।১• কুলা খোঁড়া না দেখে বৰে, পানির ভিতর ডুবার তবে।১১ ওতে না দেখে লগন সাতে, অবশ্র মরে জলাঘাতে। ১২ गर्ल थारक मोत्रि, इरेनची खेबारगीती। এक পভिনী মরে ববে, ভিন পভিনী হইবে ভবে। ১৩ **म्याद कर्करें बारक कीयां, बरय बारक नन्ती विन्ना ।** शका-माश्रद पुरस् बोख, व्यवस विस्थ क्श्रमाथ । विश्वत अर (मर्प (नर्गा, कांत्र कृष्टि ना क्षि (रुगा) थम कांक कांश्री सरेटक निष्कि, व्यवक्र कारन मिनात मिथि।

সরে যদি থোঁড়া যায়, শতকুলে রাজ পার।
থোঁড়া যদি দেখে সাজে, রাজহর্মত হর তাড়ে।
তিন পাপ থাকে এক ঠাই, কর্ম্ম ঘরে মবে মলল পাই।
তত গ্রহে দেখে পাল, তারে না দেখে তাহার নাপ। ১৪
থোঁড়ার কাছে বোড়ার বাসা, ধন পুত্র ভাতে করিব আলা।
তক্ষা থাকে ধন বিনাল, রাহ থাকে বৈরি নাল। ১৫
খোঁড়ার ঘরে বোড়ার মিলন †, গলার দড়ি অবক্স মরণ।১৬
বংশনেক্র (ক্লী) বংশতেব নেত্রাগ্যন্ত। ইকুম্ল। (রাজনি°)
আকের চকু।

বংশপত্রে (গং) বংশস্ত প্রাণীর প্রাণাস্ত। ১ নল। বংশস্ত প্রম্। (ক্লী) ২ বংশদল, বাঁশের পাড়া। ৩ হরিডাল ভেদ। ইহা সর্ব্রেচ হরিডাল বলিরা ক্থিড়। রনেক্সসারসংগ্রহে লিখিড আছে বে, বংশপত্রাখ্য নামক হরিডাল কুমাও সলিলে ও চুণের জলে ভিনবার বা সাডবার নিক্ষেপপূর্বক শোধন করিরা লইবে, পরে সেই শোধিত ভালক তণ্ডুলাকারে চুর্ণ করিরা শরাবে স্থাপনপূর্বক আল দিবে। পরে পাত্র শীতল হইলে মাণিক্যাভ রস উঠাইরা লইতে হয়।

"ভালকং বংশপত্রাধ্যং কুমাগুসলিলে ক্লিপেং। সপ্তরা বা ত্রিধা বাপি ঘধ্যমেন চ বা পুন: ॥ শোধরিতা পুন: গুকং চূর্ণরেগুলু লাক্তি। ততঃ শরাবকে পাত্রে স্থাপরেৎ কুশলো ভিষক ॥ বদরীপত্রককেন সন্ধিলেপক কাররেং। অরুণাভ্যধংপাত্রং ভাক্তালা প্রদীরতে॥ আকশীতং সমুদ্ভা মাণিক্যাভো ভবেদ্রস:॥"

(রুসেব্রসারসংগ্রহ)

ইহার বিভিন্ন শোধনপ্রণালী, গুণ ও অপরাপর বিষয় হরি-তাল শব্দে দ্রইবা।

৪ ছলোডেন। সাধারণতঃ বংশপত্রপতিত ছন্দ বলির। উক্ত হইরা থাকে।

বংশপত্রক (দী) বংশপত্রমের স্বার্থে কন্। ১ হরিভাগ। (ছেম) (পুং) বংশক্ত পত্রমিরাকৃতিরক্তেতি ইবার্থে কন্। ২ কুজ মংক্রবিশেষ (Cynoglossus Lingus) ক্রমিজ—ব্যাল-পাতা দাছ। [রংক্ত শক্ষ বেধা ।]

ত নল। ৪ খেতবৰ্ণ ইন্দুভেষ। (রাজনি°)

ৰংশপত্ৰপতিতে (ঐ) ক্ষুদ্দান্তৰ পান্ধকোরিদেন। শবিভ্যুনিকশেণত্ৰপত্তিতে অৱসক্ষদদক্ষ্ণে। ইহার ১,০,২০-৬ ি১৭ বৰ্ণ অবং অপায়বালি করু। ইবার্জন বর্গা—

तस्य कर्षित शून्या मानदा, ग्रान्थत, श्रुष्टेशा नार्विश त्यांना वात्रम् विकत । निवकृत्या केम्रात्रक व्यक्तिक स्थन, स्वयुक्त क्रिका कांद्रस कृत्यत ।

ক্ষাকালে শনিকেছু একন মটকে, কিন্তু বৃদ্ধি বাবে ভাষা আগন কৰনে প্ৰদে বৃদ্ধি নহিবেক ক্ষেমিকালে কয়, উল্লেখ মেৰ এই মানিকে কিন্তু

ন্তনবংশপরপতিতং রজনিজনলবং !
পশু মুকুল মৌজিকমিবোত্তমমরকতগন্।
'এব চ তং চকোরনিকর: প্রাপিবতি মুদিতো
বাস্তমবেতা চক্রকিরশৈরমুভকণমিব ॥''

কেহ কেই ইহাকে বংশপত্রচন্ত্রিত ছম্ম বলিরা থাকেন।
পণ্ডিত শব্ধুর মতে, ইহার অপর নাম বংশদল। (ছম্মোমন্ত্রী)
বংশপাত্রিকা (লী) > বেণ্দল, বাশের পাতা। ই বংশপত্রাকার
তণ, বাশপাতা যাস। [বংশপত্রী দেখা]

বংশপত্রী (স্ত্রী) বংশপত্র গোরাদিখাৎ গ্রীব্। > নাজী-হিছু।

হ তৃণবিশেষ। পর্যার —বংশদলা, জীরিকা, জীর্পপত্রিকা।

ইহার গুণ—স্থানুর, শীতলা, রুচা, পিন্ত ও রক্তনোমনাশক এবং
পখাদির হুগ্ধবিবর্দ্ধিনী। (রাজনি°) ভারপ্রকাশে লিখিত হইরাছে
যে, বংশপত্রী, বেণুপত্রী, পিণ্ডা, হিছু ও শিরাটিকা এই করটা
পর্যায়ক শক। বংশপত্রী হিছুপত্রীর তুলাগুপদায়ক, অর্থাৎ
ইহা রুচিকারক, তীক্ত, উষ্ণবীর্ঘ, পাচক, কটুরদ এবং জ্বন্রোগ,
বব্রিগত দোর, বিবন্ধ, জার্দ, কয়, গুরু ও বায়ুনাশক।

(ভাৰপ্ৰ°প্° > ভাগ)

বংশপরম্পরা (স্ত্রী) সম্ভানসম্ভত্তিক্রম। প্রশোত্তাদিক্রম। বংশপাকে, সম্ভানিবর্ণিত রামভেদ। (সম্ভা°ত্তা>০৬)

বংশাসাজি, নিংবার্থাত সামতে । (বংশ তর্গত সুবিদ্ধার বংশাসাজিকারিণী (সী) কুড়ি চুবড়ী কুলা প্রাঞ্জতি পার যে । বুলণী বাঁশ হইতে প্রস্তুত করিয়া থাকে।

বংশপাল, শিশালিপিবর্ণিত একজন রাজা।

বংশপীত (গং) বংশ: বংশপত্রমিব পীত:। গুণ গুলু। (রাজনি°) বংশপুজ্পা (স্ত্রী) বংশত পুলানীব পুলানি যক্তা।

বংশপুরক (क्री) বংশভেব পুরুষ্মত। ইকুমূল।

বংশপ্রতিষ্ঠানকর (পুং) বংশগাভি বা প্রতিপত্তিবিত্তারকারী।
বংশের অদিপুরুষ।

বংশবীজ (क्री) বংশন্ত বীজং। বেগুবৰ। বাঁশের চাউল। বংশব্রাহ্মন (ক্রী) ১ বৈদিক আচার্য্যপরম্পরাজেন। ২ সাম-বেদের একখানি ব্রাহ্মণ।

বংশভার (পুং) বাশের ভার বা মোট।

বংশভূথ (পুং) ১ বংশের ভরণপোষণকারী। ২ বংশহ প্রধান ব্যক্তি। বংশভোজা (ত্রি) > বংশের উপভোগা। ২ বংশায়ক্রম-

প্রাপ্ত। (ক্লী) ৩ পৈড়ক রাজ্য। (ভারত বনপর্বা)

বংশাসয় (এ) কংশ ইবার্থে মরট্। বংশনির্শ্বিত।

বংশাসায় (াএ) বংশত নাব্য নাব্য নাব্য বংশাসায়ের বংশাসায়ের (জী) বংশত নাব্যালা। ২ বংশাসালার বংশাসার করিলে আনাব্যালার বংশাসালাক (জী) ভীর্বজন। এই তীর্বে লান করিলে আনেব পুণা সক্ষর হুইরা থাকে। (ভারত বনশর্ম)

वरभग्न (श्रः) वालम **हाडेन**।

বংশরাজ (গং) বংশানাং রাজা ইতি রাজাহশবিভাইচ্ ।

> বাড়ের মধ্যে উৎকৃত্ত বা সর্ব্যুহ্ৎ বাঁল। (হরিবংশ) ২ রাজভেল। (ললিডবিভর)

বংশারোচনা (জী) রোচতে ইভি, কচ্ মন্দাদিরাৎ ল্য়। টাপ্।
বংশক্ত রোচনা। স্থনামধ্যাত বংশপর্ক মধ্যন্তিত শেন্তবর্ণ
উবধবিশের। সাধারণে বংশলোচন নামে পরিচিত। পর্যার—
দক্রীরা, বংশলোচনা, তুগালীরী, শুভা, বাংলী, বংশলা, কীরিকা,
ভুগা, দক্রীরী, শুভা, বংশকীরী, বৈগবী, দক্সারা, কর্মরী, শেতা,
বংশকপুরিরোচনা, ভুলা, রোচনিকা, পিলা, বংশশর্করা, বেগুলবণ। ইহার গুণ-রূক, ক্যার, মধুর, হিম, খাসকাসম, ভাপনাশক, রক্তগুদ্ধিকারক গুণিভোক্তেকপ্রশমনকারী। (রালনি)

ভাব প্রকাশ মতে ইহার গুণাবলী বংশলা শব্দে বিরুত হইরাছে। [বংশলাও বংশলোচন দেখ।] বংশল ক্ষমি (জী) কুললন্ধী।

বংশলোচনা (জী) বংশরোচনা রগু লছন্। বাঁলের পর্কারণা নীলাভ খেতবর্ণ পদার্থ বিলেব। চলিত কথার ইহার নাম বংশলোচন। ইংরাজী ভাষার ইহাকে Bamboo Manna বলে। এই পদার্থ প্রধানতঃ বেছর বাঁশ বা নল বাঁলেও (Bambusa arundinneese) কলো। ভারতের বিভিন্ন ভানে এই ঔষধ দ্রবা "ভ্যাশীর" নামে প্রচলিত।

ভিন্ন ভিন্ন দেশে ইহা ভিন্ন ভিন্ন নামে পরিচিত। হিন্দী—
বংশলোচন, বংশকপুর ; বালালা—বাশকপুর, বংশলোচন
আসাম—কুভোরিরা; জারব ও পারক্ত—ভবাশীর ; নরাঠী—
বংশ-লোচন, বনশমীঠা ; শুর্জন্ন—বাশকপুর বাশ-ছ-মীঠা ;
ভামিল—মুক্লুগ্নু, ভেলগু—বেদক্র্যু, ভবকীরা ; নিলাপুর—
ব্যানেউয় ; কনাড়ী—বিদক্ষ্যু, ভবকীরা ; নিলাপুর—
উণা, সুণু, উণাকপুর ; ব্রজ—বা-ছা, বাঠেগা—কিলো বাঠেগলা,
বসন ; সংক্ত—পর্যারগুলি বংশরোচনা শক্ষে বিবৃত হইরাছে।

বাজারে এই এবা সাধারণতা ছুই প্রকার দেখা বার—
> কর্দী বা নীলাভ এবং ২ সফেদ বা খেতবর্ণ। প্রাচীন বৈভক্তে
ইহার ভেষক গুল লিপিবছ হইরাছে—.

"ক্ষারমধুরা ক্রকা বাতরী বংশলোচনা। তুগাকীরী ক্ষাবাস্কাসরী মধুর। হিমা ॥" (রাজবরত)

গুদ্ধ ভারত খণিরা নহে, প্রদ্ধ ভারত ও গ্রীস্থাসী ধ্বনগণ বহু প্রাচীন কাল হইতে এই বংশল প্রথেয় গুণ অবগন্ধ হইরা-ছিলেন। ভাওকোরাইডস, মিনি, সাল্নাসিরাস, ভোজেল দি, ক্রেরে, হাবোণ্ট প্রকৃতি ননীবিগণ এই স্বাস্থায় তার্যের উল্লেখ ক্রিরাছেন। মিনির "Saccharon et Arabia fert sed landarius Iodia. E-t antem mel in arundicibus Collectum প্রাকৃতি পাঠ করিলে নি:স্কেহে তবানীরের কথা বলিরা মনে হয়। সাল্যাসিরাস্ প্রকৃতি তর্ক দারা উহাকে ইকুল শর্করা বলিরা প্রজিপন্ন করেন, কিন্ত হালোট তাহার মীমাংসা করিরা বলেন, আরবা বা পারত তবানীর শব্দ শর্করা-বোধক নহে উহা সংস্কৃত অক্কারা (Bark-milk) শক্ষের অপশ্রংশনাক্ত ।

হিলু আযুর্জেনে ও মুস্লমানগণের ছেকিমী শাল্রে তবালারের বহল প্রয়োগ দেখা যার। ইহা লাতল, বলকর, কামোন্দীপক ও মাসকাসনিবারক, অঞ্জান্ত উবধের সহিত ইহা ক্র্যোগে প্রযুক্ত হইরা থাকে। অনীর্ণ, আমাশর এবং উদরাগ্রান প্রভৃতিতে ইহা আও কলপ্রান। ইহা শিপাসানিবারক ও কফনিংসারক। বিবম অরে পিপাসা অত্যন্ত বলবতী হইলে বংশলোচনের একটা চূর্ণক প্রন্ত করিরা প্ররোগ করিলে বিশেব উপকার দর্শে। ৮ ভাগ বংশলোচন, ১৬ ভাগ পিপুল, ৪ ভাগ এলাইচ ও সভাগ লাকচিনি একত্র চূর্ণ করিরা ত্বত অথবা মধুযোগে অবংশক প্রন্ত করিরা সেবন করাইবে। চূর্ণের মাত্রা ১ ইইতে ২ জুপল্ পর্যান্ত। কফনিংসারণের নিমিত্ত ৫ ইইতে ২০ গ্রেণ পর্যান্ত বংশলোচন প্রয়োগ করা বাইতে পারে।

বাল গাছের মধ্যে কিরুপে এই মহতপ্রকারী পদার্থ উৎপন্ন दत्र. जारा व्यावन ठिक निश्चात्रिक रत्र नाहै। जामारमञ्जला क्रिक्त के बादक त्य, बान बादक बाकी नेक्टरवर कम अफिटन तः गरमाहम छ ९ भन्न इत । छेडिएचिन्नार्भव भावना, चीन भारकत বভাবজাত রস মর্থাৎ পর্কমধান্থিত অলাকার তরুল প্রদার্থ (Natural sup) विकृष्ठ हरेंको आहे महाभूना नमार्च छ ९-शामन करता (र जकन कछि दकारफ धरे बनाधिका बारक, ভাষাতে এক প্রকার হুমিট গাই পাইছা যায়। ঐ রস পরিপঞ্ रहेश करम प्रकृषीशात श्रीतृशक रहा। **अहिरक्स विकाशी**त हरतास नासकर्पाताती Mr Peppe परिमा, "जिनि अक्रमन द्वनीत निम्द्रक छवानीत छेदशत कतिएक स्मिश्नादक्त । के वास्कि विस्तर शरीका बाबा अभिएक नाविक्राकितान (व. वःभरक्तनग्रकाती এক প্রকার কীটের সমাবেশ হেডু বংশপর্কান্তিত সস স্বধান্ত্রিত হটয়া রাসায়নিক সংবোগে ভিন্ন আকার ধারণ করে। তিনি এক গাছ হইতে এরণ কতকগুলি খোকা আনিরা অগ্নত অপর কতক্ত্র গাছে ছাডিরা দেন। ইহাতেও তিনি मन्द्रक वर्यम्बर आश्र स्म अस्मृत्राति अस्म्राम दहें। कांश्या जिल्लि निक्सामादक व्हेबाबित्सम, काबाटक जिलिक বিলক্ষণ কর্ম লাভ করেন। শাক্ষারার কেই কেই বলৈন, বাঁশের পাৰ্ গুলির ভিতরনিকে বাভাবিক রসসক্ষরহেত্ নিলিকা-মিশ্রিত ক্ষপর একরপ পদার্থ ('Silicious concretions, of an opaline nature') উৎপর হয়, তাহাই ত্বাশীর নামে খ্যাত। কিছ প্রকৃতপক্ষে কোন্ কোন্ ধাত্র রাসায়নিক সংবোগে উহার উৎপত্তি, পরীক্ষা ভিন্ন তাহা জানিবার উপার নাই।

মাস্পো নগরের রসারনাধ্যাপক টি, টমসম বিশ্লেষণ দারা অবগত হইয়াছেন যে, ইহার একশত ভাগের মধ্যে ৯০০৫০ অংশ সিলিকা, ১০০০ পটাশ, ০০৯০, পেরস্কাইড্ অব আয়রণ ০০৪০, আলুমিনিয়া ৪০৮৭ জল এবং নাশ—২০০০ অংশ আছে। বংশলোচন ভিন্ন বাশের অপরাপর অংশও উবধরূপে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। বাশের কোঁড়ের অথবা অগ্রকলার আবরকের অভ্যন্তরে শিকড়ের ফ্রার সক্ষ বে সকল ভ্রা থাকে, ভাহা বিষ্যাক। ঐ শিকড় সহজে গ্রাভাদির মধ্যে দিয়া সেবন করান ঘাইতে পারে। সেবনের পর ধীরে ধীরে নরদেহে বিষের ক্রিরা চলিতে থাকে। করেক মাসু পরে ঐ ব্যক্তি মৃত্যুমুথে পতিত হর।

বংশ্বর্জন (জি) বংশং বংশনানং বর্জনতি বংশ-র্ধ-পূট্। ১ বংশা-ভিমানরকাকারী, বংশগৌরবর্জিকারী। (রামারণ ২।২৩।৪২) ২ সহাজিবর্ণিত রাজভেম। (সহাণ ৩৩।৯৫)

বংশবদ্ধিন্ (a) বংশং বর্ধরজীতি বংশ-রুধ্-ণিনি। > বংশ-মধ্যানাস্থাপ্নকারী ে শম্ম জ বংশবদ্ধিনী" (ভারত বনপকা)

२ वन्नरमानमा । (टेव्यक्ति)

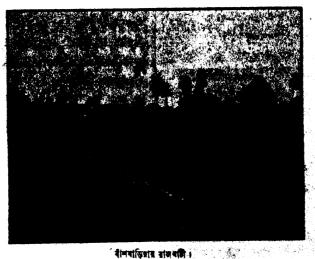
বংশবাটী, হগলী জেনার ক্ষম্প্রত একটা প্রাচীন নগর। ভাগীরথীতীরে ক্ষরিত। ক্ষম্প্রত একটা প্রাচীন নগর। ভাগীতথ পু:। লোক সংখ্যা ক্ষমান ৮০০০ হাজার। এখানে লিউার
শ্রেণীর মিউনিদিশালিটি ক্ষাছে, ক্রমান বালবেড়ে নামে পরিচিত।
নালক-স্রাট্ শাহকহানের ক্ষামনে বালবাড়িয়া রাজবংশের
পূর্কপূরুব রাঘব রার কর্ত্বক এই নগর স্থাপিত হয়। বালবাড়িয়া
রাজবংশের সহিত এই নগরের ইতিহাস ক্ষ্ডিত থাকার নিম্নে ঐ
রাজবংশের যংকিশিৎ পরিচর শেওয়া সেল।

এখানকার রাজবংশের পূর্কসূক্ষ দেবাবিত্য দক্ত বন্ধনেশের রাজা বলাগদেনের সমসাময়িক ছিলেন। মূর্নিদাবাধ জেলার বক্তবারী নামক প্রামে ইছাদের আদি দিবাস। বক্তবশীর জানগারনের বাসবারী থাকার ঐ প্রামনীর ঐরগ নাম হইছাছে। দেবাবিত্য হইতে চতুর্দশ পূক্র অবজ্ঞন হারকা নাম কর বক্তবারী পরিত্যাগ করিয়া বর্জনান কেনার অবজ্ ত জানববীতীরত্ব পাটুলী নামক ছানে নগারভাগনপুর্বক বাল করেন।

^{*} Birdwood's Economic Products of the Presidency of Bombay, pp. 95-96.

দারকানাথের পৌত্র সহত্রাক দস্ত সন ১৮০ দালে (১৫৭৩ यः भः) मानम नाम्यात्र अक्यत्वत्र निकृष्ठ अक् क्यमान ভাহাতে ভাঁহাকে "অমিনার" উপাবি বেওয়া इटेब्राहिन। **महत्राक कांत्रीत यह्नभ**्नयाना क्युक्तरात् णांछ करतम। भरुआरकत भूत डेक्स क्छरक बाहनाइ खक्रब्स বংশাক্সমে "সভাপতি রার" উপাধি নিরাছিলেন। সম ১০৩৫ मार्ग (>७२৮ वृ: म:) छमत्त्रत्र त्यां भूत सम्राम्भ महाहि माह-कशास्त्र निक्षे इहेट्ड "मङ्गमाब" डेनाबि ७ क्लिक्डिबाब-পুর পরগণার ভারণীর লাভ করেন। জরানক রার মতুমলারের জ্যের প্র রাঘৰকে বাদশাহ শাহলাছান ১২ ক্রি ১০৬৬ হিলরী नरक (१७८२ शृ: जः) "मङ्गमनात्र" ও "होधुन्नी" छेनासि श्रानाम करतमः। त्र नमरत्र वन्नरमर्थं ठाविज्ञम सङ्ग्रहात्र हिर्णमं, छबारश রাঘব একজন। এই উপাধির সঙ্গে রাঘর নিয়লিখিত ২১টা প্রগণার সমিদারী ও বিভার নিষ্যু ভূমি উপহার পাইরাছিলেন---व्यानी, हन्मा, माममामिशूत, शाक्षत्मोत्र, (बाष्ट्रा, बाहामावाप, শারেন্ডানগর, শাহানগর, রায়পুর, কোডওয়ালি, পাউনান,

र्पामानभूत, रकत स्वत्, शाहेकाम, चामित्रायान, क्यानीभूत, ৰাইহাটী, হাবলী সহর মঞ্জরপুর, হাতিকালি, মেলিপুর অভৃতি। সম্পত্তি শাসনার্থ রাহর বাশবেড়িয়ার একটা আসান निर्यान करतम । ननीगर्ड शाहेनी आमान जंडनीन बहेनात আশতকা দেশিয়া রাঘবের জ্যেষ্ঠ পুরা রাজেখর বাশ্রেইড়য়ার রাজণাট পরিবর্ত্তন করিলেন। তথন উচা একটা গভাগান মাত্র ছিল। রামেশ্বর মানা স্থান হইতে ৩৬০ গর রাজাণ পভিত, कांत्रव, देवछ এवर विविध काठतगीत हिन्तूरक अगर শতাধিক সমর্ভুল্ল পাঠানকে আনাটয়া বাশবাড়িয়াতে বাস করাইরাছিলেম। কানী চইতে পণ্ডিত রামশরণ ওক-বাগীৰকে আনাইয়া রাজা বামেখন আপন সভাপতিতপদে নিগ্তু क्रिज़ाकित्नम । किमि এই श्राम मत्था ४५ है। টোল ভাপন ক্রিয়া এবং কাৰ্না ও মিথিলা হইতে অধ্যাপক আনাইয়া ছাত্ৰনিগেব স্থতি, প্ৰতি, বেদাৰ, ভায়, সাহিত্য ও অলভার শাস্ত্র শিথিবার উপার করিয়া বিরাছিলেন। টোলের সমস্ত ব্যয় রাজসংসার হইতে দেওরা হইত।



বুলীনিধের অভ্যাচার ভবে রাজা রামেশ্বর বাঁশবাভিবার লাজ প্রাসাদ পরিণা দারা স্থরক্তিত করিয়া দল ৷ রামেশারের গড় হইতে ঐ রাজবাটী 'গড়বাটী' নামে থাতে হয়। এই প্রিপার পরিধি প্রায় এক মাইল। ধছর্মাণ, ঢাল, ভয়বারী उन्क गरक कहेवा. श्वाजित्रव अहे शरकत शाहात्राव नियुक्त পাকিত। আৰম্ভক মত ভথার মাঝে মাঝে করেকটা কানানও বাধা হইমাছিল। বনীয়া ত্রিবেশী পুঠ করিতে আসিলে ভথাকার ्माक गरून अहे शरकृत किछात चालत गरेवा कान तका বৰ্গালা এই সংবাদ পাইবা একবাল সভবাদী कविवाहिण।

व्यवस्थाय वर्ष । जाना कार्यवरत्तेष भूका इति तपुरवर्ष गरिगरका निवास वरेता मिनवृत्त बातवरितिगरक भवास करतम धर्मः क्या बहैरक विवृत्तिक कविवा रहम । तपूर्वक गुक्तगितमात्र वरकात कतिया कारांत उन्नित्क ग्रातात वक्षी मुख्य लेखिया अमन-क्यादेश हिटलम ।

े जाया बारमपत्र प्राप्त >+के रामप >+के रिक्सी व्यक्तिकारमहाह चन्नाद्यात्व निके अने गर्मम द्वार्थ स्म । 'काशांक केलाक कार्ड श्रुक्तकरम "ताका महाभव" कैमाबि (मध्या व्हेडाहिक ।

এই गमरमात्र गरम वामणांश छीशारक नाम-लाह्य (तक-

পোৰাক) থিলাত দিয়াছিলেন এবং রাজপদবী সন্ধানের সহিত
কলা করিবার কন্ম বীশবেড়িয়া প্রামে ৪০০ বিঘা ক্ষমি কারণীর
এবং কলিকাতা, বালিকা, হাতিরাগড়, আলোরারপুর, মেদননল,
মাগুরা, ধার্লা, থালোড়, মানপুর, ফুলপুর ও
কাউনিরা নামক বাদশটা প্রগণার জমিদারী দিয়াছিলেন।
উহার একথানি সনম্পের অন্তবাদ নিমে দেওরা গেল:—

"রাজা রামেখন রাই মহাপর বরাবরেরু—
মোকাম বাশবেড়িয়া,
প্রগণে আশি সরকার সাজগা

পরগণা অধিকারে আনিরা ও জরিপ জনাবনী করিবা বে ছেকু তুমি রাজাশাসনের সাহায় করিরাছ এবং বধন বে কার্য্য ডোমাকে ভার দেওরা গিরাছে, যে হেতু তুমি যথেই বন্ধের সহিত ভারা সম্পন্ন করিবাছ, এজন্ম ভোমাকে প্রকার দেওরা উচিত। ভোমার গুণের প্রকার অরূপ ভোমাকে পঞ্চ পাট্টা থিলাভ ও "রাজা মহাশম" উপাধি লেওরা হইল। পুক্রবায়ুক্তমে ভোমার বংশের জ্যেন্ত প্রত উপাধি ধারণ করিবে, ইহাতে কেহ কোন আপত্তি করিতে পারিবে না। ১০ সক্ষর ১০১০ হিজরী।"

বাদাবেড়িরার বাহ্নদেবমন্দিরও রাজা রামেশ্বর কর্তৃক স্থাপিত। ইং। ইংক নির্মিত এবং জন্তুপরি নানা দিরনৈপুণা শচিত।



बाह्यसम्बद्धाः

১৬·১ नकारम् (১७१८ थु: णः এই मन्तित अ**डिंडिंड र**त्न ।

ঐ মন্দিরের গাত্তে প্রাচীন বাঙ্গালা অক্ষরে এই প্লোকটা অভাপি খোণিত রহিরাছে—

"মহীব্যোমাজনীতাংশু গণিতে লকৰৎসরে। শ্রীরামেশ্বরদত্তেন নির্শামে বিষ্ণুমন্দিরম্ ॥"

রাজা রযুদেবকে নৰাৰ মুর্নীদকুলী বা "শূজ্মণি" উপাধি দিরাছিলেন। রাজ্য আদারে মুর্নীদকুলীর কঠোর বন্দোবত্ত ৰাজালার ইতিহাসে প্রসিদ্ধ আহে। কিন্তু মুর্নীদের গুণ-প্রাহিতাও সামাক্ত ছিল লা। শুনা বার, যথাসমরে রাজ্য উত্তল দিতে সা পারার একজন রাজ্য কমিদার নবাব কর্তৃক বৈকুঠকুওে প্রক্রিপ্ত হইতে আদিই হন। রাজা রসুদেব একথা শুনিতে পাইরা আপনি সেই দেনা শোধ করিরা তাঁহাকে মুক্ত করিরা দেন। রসুদেবের এই বদাস্ততার মোহিত হইরা নবাব রসুদেবকে "শুল্লমণি" উপাধি প্রদান করেন। তদবনি তাঁহার নাম "শুল্লমণি রাজা রসুদেব রার মহাশর" হর।

বস্তত: এক সমরে কি রাজকার্যে, কি সমরকৌশলে, কি
লানধর্মে, কি নীতিনিপূণতার পাটুলীর মহালয় বংল বালালার
গৌরব স্থান হিলেন। বিচক্ষণ অকবর, ক্রনীতি অরক্ষেত্র,
লীহালীর ও সম্ভিশোতমাম লাহজহান পাটুলীবংলকে গ্রীয়ান
রাগকলাপটু করিতে সকলেই যুক্তহন্ত ছিলেন। মূর্নীদকুলী
ও মূরাজম প্রকৃতি সকলেই এই তান্ত্রিক হিল্পু কারন্ত্রংশকে
ক্রমনে দেখিয়াছিলেন। সুক্লী-পঞ্জিকায় এবং মুসলমান
ইতিহাসে পাটুলীবংলের বঙ্গেই প্রশাসা আছে। রাজা
রন্তুদেবের পুত্র রাজা গোবিক্ষদেব বঙ্গদেশের আন্ধাদিগকে
একলক বিষা ভূমি ব্রক্ষোত্র দান করিয়াছিলেন।

রাজা গোৰিক্ষদেবের পুত্র রাজা নৃসিংহদেব পিতার মৃত্যুর তিনমান পরে ১১৪৭ নালে (১৭৪০ খুং অ:) পৌরমানে ভূমিষ্ট হন। নবাব আলীবন্দী খা তপন বাঙ্গালা বিহারের মসমবে সমানীন। বর্জমানের জ্ঞাদারের পেছার মাণিকচক্র আলীবন্দী খা কেন বাঙ্গালা বিহারের মসমবে সমানীন। বর্জমানের জ্ঞাদারের পেছার মাণিকচক্র আলীবন্দী খা কোবের নিঃসন্তান অবস্থার মৃত্যু হইরাছে। আলীবন্দী খা গোবিন্দদেবের সম্পায় জমিদারী বর্জমানের জমিদারকে দান করেন। পাঁচ মানের শিশু নৃসিংহ দেব শক্রর কৌশলে নিমেব মধ্যে বিপুল খনে বঞ্জিত হইলেন। নৃসিংহদেব অহত্তে এ কথা লিখিয়া গিরাছেন—"সন ১১৪৭ সালে মাহ আদিনে আমার পিতা গোবিন্দদেব হারের কাল হয়, সে কালে আমি গর্জত্ব ছিলান। বর্জমানের জনিগরের পেলার মাণিক্সক্র নবাৰ আলীবন্দী খার নিকট আমার পিতার অপুত্রক কাল হইরাছে ধেণাপ আহির করিয়া আমার পুত্র পুত্তানের জরবন্ধিদা সনন্দী জমিদারী আপন মালিকের ছনিদারী সামিল করিয়া সন ১১৪৮ সালে মাহ বৈশাধে

পানাথা দথল করে ও হলদা পরগণা কিসমতের মালগুলারী রাজা ক্ষচন্দ্র রারের সামিল ছিল,তিনিও এ সম কিসমত মঞ্জুর আপন পত্র প্রশঙ্কুচন্দ্র রারের ভালুকের লামিল করিয়া দথল করেন। মৌজে কুলিহাঙা মঞ্চুদ্রি ভালুক ছগলী চাক্লার

সামিল ছিল। পীর থাঁ কোজনার বর্জমানের জমিনাথকৈ দখল দিলেন না, অতএব তালুক মন্তবপুর আমার নথল আছে। তবে বাজালার কোন জমিদার বা তালুক্দারের পর এমত বেজাইন সাপি ও বেদায়ত কথন হয় নাই।"



बाब। बुलिस्ट लक् ।

এই ঘটনার অনতিকাল পরে ঘালালার মুস্পুনান বিংহাস্ক্র ছিলুপু হর। বোল বৎসরে সাভ জন নথাৰ মুস্পিদাবাদে
নববৌর ছাতিনয় করেন। তাহাতে বলের প্রজা ভীতাকিত
ও প্রতিত হইলা পড়ে। কুমার মুসিংহদেব ঐ সময়ে শৈতৃক্ষ
সক্ষতি পুমুক্রারের মুক্ত চেঠা ক্রিভেছিলেন। ইংলাজাধিকারে
বাস্থালায় অরাজকভার কথিকিৎ হ্রাস ঘটলা। ওলারেন
হেন্তংস্ থালালার শাসনকর্তা হইলেন, নুসিংহদেবও তাহার
শর্ব লইলেন। ভাহার কলা, রাজা নুসিংহ দেব বাইভে
লিপ্রিদ্ধ ক্রিয়া গিলাছেন,—

শসদ ১১৮৫ সালে গ্ৰনর জনরল তীঘুক দেয় চিটান সাহেব ও সাহেবান কৌবল হক ইনলাপ মতে তল্পীল তংকীক করিবা, আমার মিরাব জানিয়া আমার গৈড়ক অমিবারীর নধ্যে বে পকল মহাল বর্ত্তমান অমিবারের ববল হইতে চফিল পর্গণার নামিল হইরাছিল, নেই মহালাতের জমিবারীতে ইওক স্ন ১১৮৬ সাল আমাকে সরক্ষাল করিয়াক্তেন ও কৌন্ল ও ক্ষিত্ত হুইতে সনন্দ দিয়াকেন।"

>৭৭৯ বৃষ্টাব্দে ওয়ারেন হেটিংসের প্রদন্ত সঞ্জল অথুনারী নৃসিংহ দেব তাঁহার শৈতৃক জমিদারীর মধ্যে কেহল নয়নী প্রগণা পুন: প্রাপ্ত হন। নুসিংহবেৰ ভাহার পৈতৃত বিস্ব অসিদারীর মধ্যে করেকটা মাত্র পরগণা লাভ করিবা সর্বান্ত হইতে পারেন নাই। যথন লও কর্ণভাষালিক গ্রপ্র জেনারল নির্ক্ত হটয়া আসেন, নৃসিংহ ভাঁহার নিকট সমুদার জমিদারী পুন: প্রাপ্ত হইবার জন্ত প্রার্থনা করেন। লও কর্ণওয়ালিন তালাকে বিলাতে কোট অব ভিরেকটারস্থিগের নিকট बार्यपम कतिराठ वर्णम । मृतिरहत्तव विनाएं बालिरनव विश्वन वात्र निर्वारकत क्रम्न कर्वनकत्र कतिरक वारकम : अह **উল্লেশে किছুমিন ৺कानीधारम**ेशांत्र करतम १ ं स्मिथात्म शर्मिक ্বাগপথাবল্টী সন্ন্যাসীদিগের সহিত মিলিলা মিলিরা তাঁহার মতি গতি পরিবর্তিত হয়। তিনি এই সময় তাহাদিপের সাহায্যে বোগনার্গে শনৈঃ শনৈঃ উন্নতিলাভ করিভেছিলেন। তিনি ভাবিলেন, বিলাভ আপিলে বিপুল क्या स्टेरन, अथह ্যাহার ফল অনিশ্চিত। যে অর্থ সঞ্চিত হইরাছে, তত্ত্বারা কোনও প্রায়ী কীর্ত্তি মন্দির প্রতিষ্ঠিত করিলে অর্থের সন্থার হইবে। এই মনে করিরা তিনি বট্ডফ্রভেদ আশাসীতে হুয়সেম্বী মন্দির-প্রতিষ্ঠার আরোজন করিছে লাগিলেন। মঞ্জিরনির্দ্ধাণকার্য্য আগন্ত হইল বটে, কিন্ত তিনি ভাছা শ্বেদ করিরা যাইছে পারেন नाहे। ১৮०२ बुट्टीटम जिम श्रद्धांक शमन क्टबन। नृजिःहरमय ১৭৮৮ भुद्रोत्म अञ्चरस्यात समित्र अस्तित करतम । मिनतगार्व একখানি প্রেরু ফলকে নিয়লিখিত মোক্টী অন্ধিত আছে :---

''बानाहरनसूतन्तृतं नास्य श्रीमः चत्रस्याः। ८त्रद्य ७९ श्रीगृहकः श्रीनृतिःस्त्रपत्तस्यः॥''

নৃসিংছ দেব সংস্কৃত ও কারসী ভাষার স্থাপিত ছিলেন।

চিত্র ও স্কীতবিভাষ ভিনি অসাধানণ নিপুণজা লাভ করিয়া

ছিলেন। তিনি উজ্ঞীপত্ত বাজালা কবিতার অন্থান করেন।

তিনি ধর্মনিবহক অতি হক্ষর ক্ষমন সমীত বঠনা করিয়াছিলেন।
ভূকৈলাস-রাজ জহনারান্ত্র বোষাল তালা লিখিয়া গিরাছেন—

"মনে কৰি কাশীখণ্ড ভাষা কৰি শিবি।
ইহার সহার হয় কাহারে না দেখি।
সন্তর্গ টোক শকে শৌব মান হবে।
আমার মামন মন্ত বোগ হইল তবে।
শূর্মণি কুলে কক্ষ পাটুনী নিবাসী।
জীব্জ নুসিংল কেব লায়গত কাশী।
তাহারে করেন বলা কবিতা পাত্ডা।
বার পুনর্বার নেই পাত্ডা লইয়া।
পুরুকে নিখেন তাহা সমন্ত গুবিয়া।"(জন্মনারায়নের কাশীখ)

রাজা নূসিংহ দেবের পত্নী রাণী শঙ্কী ক্ষবিধ্যাত হংসেপ্রী সন্দির ১৮১৪ খুটানে প্রতিষ্ঠা করেন। ঐ মন্দিরগাতে একগাঁন প্রক্রকলকে নির্লিখিত লোকটা উৎকীর্ণ আছে:—

শাকাকে রসবছিনৈত্রগণিতে শ্রীমন্দিরং মন্দিরং নোকদারচতুর্দ্ধশেষরসমং হংসেম্বরী রাজিতং। ভূপানেন নৃসিংহনেবক্লভিনারক্কং তদাঞ্জার্হগা তৎপত্নী গুরুপাদপদ্মনির্জা শ্রীশক্ষরী নির্দ্ধিম।

नकाका ३१०७।



क्शमदशी वस्तितः।

শ্বংবেশনী মন্দির বাদানার একটা উৎকট কীর্তি। নানা হান হইতে বহু যাত্রী এই বেবীমূর্ত্তি দর্শনে আগমন করিরা থাকে। একটা ত্রিকোণ যত্ত্বের উপরে দেবাদিদেব শায়িত আছেন। ভাহার নাভিকৃত হইতে প্রস্কৃতিত পদ্ধ উবিত হইয়ছে, লাক্মরী দেবী মূর্ত্তি হংদেবরী ভাহার উপর বিরাজিত আছেন। ইহার গঠননৈপুণ্য সাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে সমর্থ।

খামীর মৃত্যুর পর রাণী শহরী বৈধরিক ভাগ্য পর্যালোচনার শ অভিনিবিট হল। তিনি সকলকেই সন্তানের ভার দেহ করিতেন। প্রজাবর্গ ভারার মধুর বাবহারে সম্ভট ছিল। তাহারা রাণীমারে নাম প্ররণ না করিবা জলপ্রহণ করিত না। রাণীমাতা সামায় ভালচলনের পক্ষপাতী ছিলেন। পুর কৈলান দেবের নোখীনতা ও বিলাসিতা আলো দেখিতে পারিতেম না। ভাইা বলিবা তিনি বারকুর্ছ ছিলেন না। দারগ্রন্ত বাজিদিগকে তিনি মুক্ত-হত্তে দান করিতেন। পূজা পার্কাণ প্রভৃতিতে বিশেব দোল-বারার সময় রাণী বাদালা দেশের পণ্ডিতমণ্ডলীকে নিম্মুণ করিয়া এক পরা আবার ও এক পরা টাকা দিরা প্রভাককৈ প্রণান করিতেন।

১২৪৪ সালে অগ্রচায়ণ মাসে পুত্র কৈলাস বেব পরবোক গত হন। কৈলাস দেবের পুত্র বেবেল্ল দেব ১২৫৯ সালে বৈশাগ মাসে প্রকাশ করেন। পৌত্রের মৃত্যুর ছর মাস পরে রাণী শকরীর মৃত্যু হর। রাণী শীর সমন্ত কমিদারী মৃত্যুর কিছু পূর্বে এক উইল করিরা ৮হংসেম্বরী ঠাকুরাণীর নামে উৎসর্গ করিয়া ধান। নাবালক প্রপৌত্র রালা পূর্ণেল্ল দেব, স্থেরল্ল দেব ও:ভূপেল্ল দেবকে বংশাছক্রেনিক দেবাইত নিযুক্ত করেন। নাবালকবের মাতা রাণী কাশীখরী উইলে একজিকিউটার হন। পাইকপাড়ার স্থ্পসিদ্ধ লালা বাব্র প্রক্রীয়ত রাজা শীনারারণ সিংহের সহিত রাজা কৈলাস দেবের কল্লা কর্লাস্থীর বিবাহ হর।

১২৯৭ সালে ৭ই কমির ভূপেক্স দেবের মৃত্যু হর, ১৩০৩ সালের ১১ই প্রাবদ জ্যের রাজা পূর্ণেল্ছের ইহলোক পরিত্যাগ করেন। মধ্যম প্রেক্স দেব ১৩০৪ সালের ১৬ই চৈত্র মানব-লীলা সম্বর্গ করেন। স্ন.১৩০৭ সালের ৬ই মাঘ রাণী কীশাশ্বী এই নশ্বর দেহ ত্যাগ করিরাছেন।

ভোটের চারি পুত্র—রালা গতীক্র দেব, কুমার কিতীক্র দেব, কুমার মৃনীক্র দেব ও কুমার রক্তের দেব।, মধ্যমের এক পুত্র কুমার বীরেক্স দেব ও কুমিটের এক পুত্র কুমার কুমারেক্র দেব। বংশবিতি তি কি) বংশগুলা । ২ বীশবন। ত কুগজ-বংশ। বংশবিদার পি তি) বংশংশিকিকি সক্ষানিক্তি, বাংশ-বি-দৃ-পিচ্-পিনি। বংশবিদারপার বী রমণী।

বংশবিশুদ্ধ (ত্রি) বংশানি বিভন্ননি যত্র। পরিছার বংশ বিনিশ্মিত। ২ বিভন্ন কুলাগত।

বংশবিস্তর (পুং) বংশন্ত বিশুর:। সমগ্র বংশধারা। বংশপরশ্পরা। বংশপরশিরা। বংশপরশিরা। বংশপরশিরা। বংশরভি। সূত্র কল্যাদির জন্ম হারা বংশের বিশুরে। ২ বংশসবৃতি।

বংশব্যজনবায়ু পুং) বংশনিশিত তালবৃত্তের বায়। বাশের পাথার বাতান। বৈশুকে ইহার গুণ লিখিত আছে। "বংশ-বাজনত্বো বাতঃ ক্ষোজো বাতনিক্সং।" (রাজ ২ পরি) বংশাক্রা (ত্রী) বংশত শর্করেব। ১ বংশরোচনা। (রাজনি) ২ বংশেক্ষত শর্করা। শানশী হো আব্রের চিনি। ইহার গুণ—চক্র হিতক্র, বলা, সুন্ধুর ও ক্স ।

বংশালাক। (রী) বংশক শগাকেব দট্যাই। ১ বীগাম্গ।
মডান্তরে বীগা, সেতার প্রস্তুতি বাল ব্রের বংশদণ্ড। বংশনির্মিতা শগাকেতি মধ্যপদলোপী সমাস। ২ বংশনির্মিত শগাকা।
বংশাসমাচার (প্রং) বংশক্ত সমাচার:। বংশাবান।
বংশান্তরিত (রী) জগতীছলোডেন। [বংশহ্বিল দেখ]
বংশান্ত (ত্রি) বংশে ডিউডাডি বংশ-ছা-কা। ১ বংশহিত।
২ ছলোবিশেব।
বংশান্তবিল (রী) আদশাক্ষর পান ছলোবিশেব ব্যা,—"বদ্ধি

বংশান্থবিলে (রা) বাদশান্তর পাদ ছলোবিশের যথা,—"বদন্তি বংশান্থবিলং জেতে জরো এ" ইহার ১,৩,৬,৭,৯ ও ১১ বর্গ সমূ গ্রহং অবশিষ্টগুরু । উদাহরণ যথা—

ं"विकामिवः मङ्गिनः म्यानियेगः

ं अपूर्ण वः पश्चमत्रागभूविशतम्। ज्ञानमानामणि शासनाणितारः

জগাৰ মানং স হরিঃ পুনাছু বঃ ॥" (ছলোমজরী)

বংশান্থিতি (রী) কংশক্ত স্থিতিঃ প্রতিপরিরিতি। বংশনগাদা। বংশগাতি। (রঘু ১৮।৩•)

বংশাহীন (জি) > পুত্রশৃক্ষ। ২ জানীয়গরিশৃক্ষ।
বংশাগিত (জি) > পুক্ষপরশারাপ্রাধা। ২ বংশক্রমাগত।
বংশাপ্র (জী) বংশক্ষ জ্ঞান্। প্রথমকাতভাব। বংশাদ্র।
বাবের কোড়। (রাজনি)

বংশাকুর (পুং) বংশক অভ্রঃ। বংশকরীর, বাশের কোড়া। বংশাকুর (পুং) পর্যার কংশাত্র, ববকলাভ্র। ইহা কট, ভিক্ত, ভি

বংশাকুক্রম (পুং) বংশত অহক্রম:। বংশগরপের। বংশাকুক্রমে (অব) পুত্রপৌত্রাদি অহসারে। বংশাকুলা (ত্রি) স্বংশেরজার। ২ তরবারির মধ্যত বজাংশের অন্তগত। (বৃহৎস' ১০।৩) ও একবংশ হইতে অন্তবংশ অন্তগমনকারী (শন্ধী)।

বংশানুচরিত (क्री) বংশত অন্তচরিতম্। বংশের চরিত্রবর্ণন।
ইহা পুরাণের পঞ্চাঞ্চপত কক্ষণবিশেষ।

"সর্গন্ধ প্রভিদর্গন্ধ বংশমন্তরাণি চ।

বংশাস্থভরিতধে**রত প্**রাণং পঞ্চলক্ষ্যম্ ॥"

বংশাক্সুবংশচরিত (রী) প্রাণোক প্রাচীন, ও নাধ্নিক বংশের আখান।

বংশান্তর (গং) নশ্য থাগড়া। (রাজনি°) বংশাবক্তা (রী) গাণিনির শ্রাদি গগোড়ুত মুক্তীভেদ।

ু (পু" ভাতা১২০)

तः भारती (जी) पुर्सप्रस्थापद नामावनी, कुनवी। वः भावत्म् (प्ः) वीत्पन्न प्रकृ । तःभान्ति (ही) मर्विष्ठिः (देवश्रक्तिः) यः महित (११) (बगूवर । (बाबनिः) বংশিক (দী) কাশেছভাভেডি ঠন। ১ অধ্যক্ষতা ৷ (অসর) (वि) २ वरणनविश्वा: ७ वरणाहरू । वरमादश्वा (शूर) इक्ष्य हेक्स्ट्राह्य क्ष्य है । বংশিকা (জী) কলিক-টাপ**়া ১ অঞ্চ**র। (ভরত) ২ কালী, मुत्रकी, (वर्ष । (अक्ट°) ह निश्रकी । বংশিন (বি) বংশ-ইনি ৷ বংশসম্বনীর, বংশলাত ৷ "বছা খ্যু ভবৰো বে ছিলাতীনাং প্ৰংশিন:।" (হরিবংশ) বংশিবাদ্ম (मी) বংশিবাদ্ধ, বাশরী। বংশী (ত্রী) বংশকারণছেনাত্যক্তা: অচ, গৌরাদিস্থাৎ ভীব্। > मुज़नी, त्वत्। (भक्ठ°) हिन्छ कथान्न वीनी वा वीननी वटन । "নিৰ্মিতা কাপি গোপীনাং কুল্পীলবিনাপিনী। विधिना भागरतरभक्तः न वःनी मुन्नदेवतिनः ।" (कावानकिका) वःभावानन ने में इक्षामन जिल्ला शानाननागान मता-त्रभ्नार्थ तृत्तात्राता वानत्री बाकारताहित्तन, तृत्तात्राता "क्रमेश्वनि" अर्थ मन श्रानश्त्रनकाती करकत्र दीनती निमानरे अञ्चल्ल इहेन्रा পাকে। এই জন্মই কবিগণ ক্ষীতে স্থবিদ প্রভাব আরোপ করিরা গিরাছেন। বাঁশী বে জীয়কের অলভূষণ ছিল, তাহা ্রেমরসাপাদী বৈষ্ণয় ক্ষরিগণের ভক্তিগাধাতেও সমন্তাসিত দেখা যায়। গোশ্বামিবিরচিত নিয়োক লোকে তাহার আজ্বা দ্ধান্ত বিশ্বমান---

> "মেরাং ভলিজয়পরিচিডাং সাচিবিতীর্ণদৃষ্টিং বংশাস্তভাধর বিশলরামুক্ষলাং চল্লকে। । গোবিন্দাধ্যক্রিডম্নিড: কেশিতীর্থোপকর্তে মা প্রক্ষিত্তব বদি সধ্যে দৃষ্কান্দেইভি রল: ॥"

সকীতশাত্তে এই বংশীরাভ, বত্তের প্রকার ও প্রস্তুতপ্রণানী নিশিবছ আছে।— যেমন তাল না হইলে গানের শোভা হর না। সেইরূপ বাভ্যত্ত না থাকিলে তাল মহিনা বুঝা বার না; কেন না তাল বাভ্যত্ত হইতেই সমুর্তুত। তর্মধ্যে মুখে লাগাইরা ফুংকার পিরা যে বংশনিশ্বিত ভবির বাজান বার, তাহাকে বীশ্ব বলা চটরা থাকে। সদীত হামোদরে এই শুবির বত্তের তিজ নিশ্বিত হইরাছে।

"বংশোহথ পারী মধুরী ভিভিন্নী শব্দকার্যাঃ। ভোড়হী মুরগী বৃদ্ধা পুলিকা স্বান্ধানুকাঃ । পুলং কাপালিকং বংশক্ষরবংশক্তথা ব্যৱহা। এতে ভবিয়কেলায় কথিতাঃ পূর্বাস্থিতিঃ ॥" বাৰী বে কৰ নিৰ্মিতই ক্ষিতে হইবে স্থীতশাত্তে এরপ
কোন বিধি নাই। তদাকার বর্তু ল, সরল ও পর্কালেরবিবর্জিত্
কার্চণত বিলেব লইকা শিলীর বারা তাহার জভ্যন্তরে কনির্চাঙ্গলি
তুল্য ছিল্র করাইবে। তাহার পর তহুপরে উপর হইতে অধ্যাদিকে অজুলি ছাপনবোগ্য করিরা কৌশলে সাভটী ছিল্র করিবে,
বেন ঐ সপ্তরুলু হইতে সপ্তত্মর নির্গত হইতে পারে। আবঞ্জুক
মত এক বা আর্ক্র অজুলী অন্তর্ম ছিল্ল করিবা সেই ছালে মধ্যম ও
কোমলাদি ক্ষর বাহির করা বার। স্থীতশাত্তে বংশের মান ও
বিভিন্ন মান প্রদত্ত হইরাছে। সাধারণের অবস্থতির অভ্য নির্মা
তাহা উদ্ধৃত করা গোল,—

"वर्जु नः मन्ननरेक्टव भक्ताविविविक्तिः। देवनवः बामिरज्ञा वानि ज्ञासन्त्रमारकाश्यवा ॥ <u>ভীগপ্তজোহৰ সৌষর্গো দণ্ডিদগুমরোহপি বা।</u> রাজভন্তাদ্রলো বাপি লৌহজঃ ক্ষটিকোহথবা ॥ ক্ষিতাসুলিভূল্যেন গর্ভরুজে । শোভিত:। **निधिविकाञ्चवीरणम वःभकार्या। मर्त्ना**रतः ॥ কলেনৈৰ মডোহপ্ৰীতিমতকমূনিনোদিতম। ভতোহাত্ৰহপি ভৰাকারা বংশা ইব প্রকীর্ত্তিতাঃ চ তত্র ত্যক্ত, শিরোদেশামধোঘিমিতিমঞ্লম। ফুৎকাররজং কুর্বীড মিতমঙুলিপর্বাণা। পঞ্চাসুলানি সংভাজা ভাররত্ব ।ণি কারয়েৎ। कूर्याख्याञ्चलका । नतः मरवानि दर्शनना ।। বদরীবীজতুল্যানি সংভাজ্যার্ছার্ছমন্ত্রনম। व्याखरवार्यकार कार्याः चत्रादेशमीपरश्कर्व ॥ সিকথকেন কলা দেয়া তেন হুত্বরতা ভবেৎ। পঞ্চাপুলোহরং বংশঃ ভাবেকৈকাপুলিবৃদ্ধিত: ॥ ৰভুমুগানি নাম ভাৎ বাবদইদশাসুলম। মৃৎকারভাররকু ত বাবন্সুলিমন্তরম্। ভদেব নাম বংশত বাংশিকৈ: পরিকীর্ত্তাতে ॥ একাছুলো হাসুলত ত্রাসুলভড়রমুল:। অভিভারতয়হত্ব বাংশিকৈ: সমপেকিত: ঃ करबावनाकृरमा वरमार्भतः शक्तनाकृतः। নিশিতো বংশতক্ষৈত্তথা সন্তৰ্শাসুল: ৪ महामन्त्राज्यामरमा विवादहरेश अवस्था। চৰার উভ্যা কশা মতক্ষ্নিগ্ৰহাঃ ১ वनाव्रता वहानत्का मक क्रमानाकृतः। ব্যবশাস্থানত বিজয়: প্রিক্টারিড: # চতুৰ্দশাকুলনিজে তথা ইম্মান্তিৰীয়তে। बचा कटा रहिन्द्रिः क्रमान्य रावश्चितः ।

নৈৰিভাগ প্ৰেট্ডভা চাপি ছবৰত্ব বীৰভা ।

নাৰ্কাৰিভি পকাৰী ক্ষত্তব্ ভগাঃ বভাঃ বা

নবি ক্ষত্তব্ নাত্ৰ বাদী ক্ষত্ত শীংভারত্ত বা

ভাষা ক্ষতি সমুখিত হলেল গল ভার, বিভাগ, ক্ষতি, সন্তু ও

অসমূল ওনা বাল, ভাষা ক্ষতে নেই বড়বোবালিভ কাৰী শীজবাদনে প্রবােশ করা অবৈধ। কাৰীবিদ্যাণ প্রলেশ কোবালিভ
কাৰীকে নিশা করিয়া থাকেন। (সাধীত-দাবোৰাল)

২ কৰ্মচতুইয় = ৮ তোলা। ৩ বংশলোচনা। ৪ ক্প্ৰেছ্বী ু চিকিৎসাৰ জ্বাতীকলাদি চূৰ্ণ।

বংশীদাস, ভেষাভেষৰাৰ নামে বৈদান্তিক প্ৰছ্প্ৰণেকা।
বংশীধ্য (৮০१) > বে বংশী ধারণ করে। বংশীধারী। ২ শীরুক।
বংশীধ্য, একজন প্রাসিভ বৈশুক প্রছ্পার। যিনি বৈশুকুত্বল
ও বৈশ্বমহোৎসৰ নামে চুকীধানি প্রশ্ন রচনা করেন। ইবার পুরা
বিশ্বাপতি ১৬৮২ খুটান্দে বৈশ্বরহন্তগভাতি প্রাপরন করিরাছিলেন।
বংশীধ্য, একজন প্রসিদ্ধ নৈরাছিক। ইনি ৰাচন্দাতি নিপ্র-রচিত
তথ্যেনুদীর টাকা ও শক্ষপ্রামাণ্যখন রচনা করেন।

২ ছন্দোমধনী ও পিদলের পিদলগ্রকাশ নারক টাকাকার।

 একজন বৈদিক, ইনি কুণপঞ্জিকা ও হোমবিধি নামে চইখানি বৈদিকপ্রায় রচনা করেন।

বংশীধরদৈবক্ত, দৈৰক্ষণাদনিধি নামৰ সংস্কৃত জ্যোভিগ্ৰন্থ সচয়িতা।

বংশীধারিন্ (পুং) বংশীং ধরতীতি ধু-পিনি। > জীকুক।
২ বংশীবাদক।

বংশীপত্রা (ত্রী) বোনিডের। "বংশাপত্রা ডুবা যুক্তবংশাপত্রবরা-রুডি:।" (লোকঞ' ৫৭ জ:)

বংশীয় (ত্রি) কলে ভবং ইডি কণ্-কা। সন্ধণজ্ঞাত। বংশোরব।

বংশীবট (রী) श्रृनातगाह शांनरका। खैक्क अवारन नीना करतन। [বৃন্দাবন দেখ।]

বংশীবদন (আ) কংশীকজাধর। বিনি সর্বলা কংশী বাজান।
বংশীবদন দাস, এক জন বৈক্ষৰ পদকর্যা। ছক্তি চটোপাধ্যানের পূজ। ছক্তি পাটুলীতে বাস করিতেন, পরে তিনি
নবীরার কুলিরাপাহাতে জাসিরা বাস করেন। ১৫১৬ শকে
চৈত্র মাসে পূদিনার বিনে এই কুলিরাপাহাতে কংশীবাসের কর।
এ সক্তে প্রেম্বানের একটা প্রেপ্ত জাতে ব্যা—

नवरक दश्यमगरनम् अवश्य नात्तव नाद्य वर्षाः — "नवीवात कास वास्तः । नवन दगारकरक्ष कारमः,

কৃষিবাগাহাত নামে তান।

তথায় আনক বান,

বিহুম্বিক চই বান,

বহুমুক্তৰা কুলীন স্থান ।

ভান্তৰতী শাৱী জীৱ, স্থানী মুখনৈতে স্থান, যশোৱাদি লয়া করে মাল ৮ জীহার গর্ডেতে আনি, স্থানের নামলা স্থানী, ভান্ডার প্রকাশে বৈলা অধিয়ার মা

বংশীবনন আন বন্ধন হাইডেই এএবে উত্তত হাইনাহিলেন। উহাত্ত অন্যতিতে গৌলাকত্রেলের উৎস চুক্তীয়াছে। উহাত্ত কেটা পদ উভূত করিয়া ক্রেনাইডেডি,—

"হেন রূপ করু নাছি দেখি।

त्र जाल नवम पूरे, निर्माणक दिएख पूरे, किसारेना जानिएक मात्रि जांकि।

দৰে নাৰা জাতরণ, ্ সাবিদ্ধী তরত দেন, চাঁচ মলিছে মেন থানি।

মিশামিশি বইল মণে, ভূবিভান মণের কুণে, থাভি অলে হেরি কড শবী ॥

বিনি বেবে খন আজা, প্ৰীত বদন শোৱা, অলপ উড়িবে মল বায়।

কিবা বে মোহন চূড়া, বোছভি মুক্তা বেয়া, যন্ত মন্ত্ৰসূত্ৰ ভার ঃ

গলার ক্ষত্যালা, জিনিরা নহন কলা, জধরে মধুর হুছে হাস।

ভাহাতে মুৰণী ধানি, আৰলা প্রাণে সুনি, বলিহারি বাও বংশীবাস »"

গৌড়ীর বৈক্য-সমাজে কংশীবাস শ্রীকৃত্যের বংশীর অবভার বলিরা প্রসিদ্ধ। কুলিরাপান্তে বংশীবাদ "প্রাণ্যক্ত" বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন। পরে ভিলি বিষ্ণগ্রামে আসিরা বাস করেন। বিষ্ণগ্রামের ভটাচার্যোরা বংশীবাদনের আভি।

নহাপ্রভাগ সন্ত্যাসঞ্জবেদ পর বংশাবরণ কিছুদিন নববীপে গৌরাল-জবনে অবহিতি করিছাছিলেন। এবানে তিনি "নীপাবিভা" নাবে একথানি ক্ষুদ্র কাব্য প্রগন্ধন করেন। উচ্চার চুই পুত্র চৈড্ডা ও নিত্যানক। ক্রৈডার পুত্র সামচন্দ্র ও শচীনক্ষন বিখ্যাত প্রকর্মা ছিলেন। শহীনক্ষম "গৌরাজ-বিজয়" নামক একথানি কাব্যও সচনা করেন।

বংশীবন্দনাপ্রা, গোরীচন্তের সংখিওসার ব্যাকরণের টাকা এবং নৈবধকাব্যের টাকা-রচরিকা।

বংশীবাদক (পুং) গুৰিবৰঃ-বাদনাভিজ, বাহারা উত্তরন্ত্রণ বানী বালাইডে লানে। প্রবজানক বংশীবাবকের পুকর স্থীত-পাত্রে এইরপ বর্ণিত আছে—

শ্বানকাবিনরাভিজ্ঞা রবকার্য়ঃ ক টাকরঃ। শীক্ষকঃ কনাভিজ্ঞা নাগেদকো রক উরুতে এ

অৰ্জিৰ্বভৰ্জিত বৃজিলেভাৰ্লৈৰ পা: ॥ স্থানতং প্রবরতং অভুনীনারণক্রিরা। সমস্তপমক্জানং রাগরাগালবেদিতা ॥ ক্রিরাভাবাবিভাবান্ত দক্ষতা গীতবাদনে। यशान हानि इःशान माध्यभागत्कोणनम् ॥ গাতৃশাং স্থানদাভূম্বং তদ্বোৰাজ্ঞাদনং তথা। বংশকত **ওণা জ্ঞাতে মন্না সংক্ষিপ্য দর্শিতাঃ॥"** (সঙ্গীতদামো°) বংশোক্তবা (জী) > বংশরোচনা। ২ বাসাথও। वर्भ्या (बि) वरान छवः। वरम-(मिनानिष्छा व८। পा siocs) ইতি বং। > সহংশলাত। পর্যার—কুল্য, বীজ্য। "বারকুবজান্ত মনোঃ বড়্বংখ্যা মনবোহপরে ।" (মন্ ১।৩১) ২ বংশোৎপন্ন মাত্র। 'বংখ্যা গুণা: ধ্বপি লোককাস্তা প্রারম্বস্থা: প্রথিমানমাপু: ॥" (রঘু ১৮।৪৯) ত গৃহোর্জ কাটবিশেষ। ৪ বালের বালা। ৫ পৃচাবর্ষ-বিশেষ।

"ষদস্থিভিনিশ্বিতবংশৰংখ্য-

ছুণং ছচা রোমনথৈ: পিনন্ধ।" (ভাগবত ১১।৮।৩৩) 'বংশোনাম ছুণাস্থ নিহিতপ্রির্থাযেণু:। বংস্তা: তল্মিনুভরতো নিহিতা বেণব:। স্বস্থিভিরেব নির্মিতা বংশাদয়ো যক্মিংস্তৎ। তত্র পৃঠে দীর্ঘমছি যৎ স বংশঃ । শার্ষাফীনি বংশ্যানি । স্থুণা হস্ত-

বংস্গ (পুং) ব্রভেদ। চলিত বাঁড়।

'वृषा यूर्थ ह दरनशः कृष्टीदिवर्षि' (श्रव)।१।৮)

বংহিয়ুস (জি) বছল, প্রচুর।

भवादीनि ।' (**औ**धत्रवामी)

বংছিষ্ঠ (ত্রি) অভিশর, অধিক।

বক্, ই উ। কৌটিলা, ৰজীভাব কুটিলীকরল। গভি। (কবি-করন্রম ; ভা" আত্ম অক" ও সক" সেট্। কৌটল্যার্থে বক্-ধাতু কুটিলীভাবপ্রকাশন বা কুটিলীকরণ ব্রাধ। ই, লট্ वक्टल छ, नहें वक्टल कार्डर कृष्टिनः अमिलाधः। वक्टल कार्डर কুটলং করোভীভার্থ:। (গুর্গাদাস) লিট্ ববছে, লোট বছিতা। সূত্ অবভিষ্ট।

বক্ > খনামগ্রাসিত জলচর পক্ষিত্ৰাভিবিশেষ (Ardea Nivea) देशका जरन माछ धवित्रा छेवत्र शृत्रम करत्र। २ इत्रक्षित्र भूभावृष्यस्थाः চলিড বাসকোনা পাছ বা বৰু কুলের গাছ। ৩ লৈজাবিশের।



্রীকৃষ্ণ ইহাকে নিহত করেন। ৪ ভীম কর্তৃক নিহত রাক্ষস-**८७४। ८ कूर्वत्र। ७ वक्कविर्णय। १ मान्छारगाळीत्र अ**विरक्षत्र। ৮ त्राज्यस्थम । > ज्याजिविरमय । এই व्यर्थ वहवरुरनरे हेशद्र প্রয়োগ দেখা বার। [বিভৃত বিবরণ প্রগীর বকশব্দে দ্রষ্টব্য।] বককচ্ছ (क्री) প্রাচীন জনপদ ভেল। নর্মনার জীরে অবহিত। উজ্জায়িনীপতি সাত্বাহন সর্ববর্তা আচার্য্যের নিকট কলাপ-ব্যাকরণ অধ্যরন করিয়া এই রাজ্য তাঁহাকে গুরুদক্ষিণা-वक्षभ मान करवन ।

> "त्राकार्रत्रप्रनिष्टदेवत्रथ नर्ववर्षा, েবনার্চিতো গুরুরিভি প্রণডেন রাজা। স্বামীকৃতশ্চ বিষয়ে বৰুক্ছনামি

কুলোপকণ্ঠবিনিবেশিনি নর্মদারা: ॥" (কথাসরিৎসা° ৬তর')

বককল্প (পুং) যুগান্তরীয় করভেন।

বক্কু শু. বোৰাই-প্রদেশে বেলগাম্ জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ড-গ্রাম ও প্রাচীন তীর্থস্থান। সম্পর্গাও হইতে ১২ মাইল দক্ষিণ-পূর্ব্বে অবস্থিত। এখানে যথনাচার্য্যের একটা স্থন্দর প্রস্তর-মন্দির আছে। এ ছাড়া কএকটা প্রাচীন মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ এখানকার দেখিবার জিনিস।

ব্রুচর (বৰ্চর) (পুং) বৰুক্তেব চরতীতি চর-অচ্। ১ বৰুব্রতিন্, বক্ষের স্তার বৃতী বা স্মাচারধারী। (ক্লী) ২ বক্ষাতির বিচরণ-

वक्**ठिक्षिका** (श्री) मरमाविलय।

ব্ৰুজিৎ (পুং) ২ ভীমসেন। ২ শ্ৰীকৃষণ।

বৃক্তত্ব (তি) বকের ভাব বা ধর্ম। কুটিলতা।

বক্ষাপ, বিষ্পুরের ৪ ক্রোল দক্ষিণে মলভূমির অন্তর্গত একটা প্রাচীন প্রাম। এখানে ক্লকরারের প্রসিদ্ধ মৃষ্টি বিদামান আছে। দেশাবলী পাঠে জানা বাহু, এখানে শিলাবতী অবস্থিত। বৰ্ত্ত-मान এইস্থান 'বগড়ী' नामে পরিচিত রহিয়াছে। (দেশাবলী) वक्षभूभ (प्रः) शक्तवा वित्नव । वृक्ष्म ।

বকন (দেশজ) > বৃধা বক্ বক্ করা। জনর্থক ভাষণ। জলন। ২ ভিরন্ধারকরণ।

বকন্ধ (পুং) বিশ্বামিজের পুত্রভেদ। বকনক এরপ পাঠও পাওরা বার।

বকন। (দেশৰ) ভারবরতা গবী। বে গবীর এখনও বাছুর रुष्ट्र नाहे।

वक्नि (एनक) चनर्तन क्थन। वृथा छित्रकात। व्किनिमुद्रम् (भूर) वक्छ मिन्स्यनः । कीमरमन । वक्रभक्क (हो) कार्डिक अङ्गशस्त्रक अकामने स्टेट्ड शूर्विमा পৰ্যন্ত পাঁচটা ডিখি। [পৰৰ্গে বহুপঞ্চক এইবা]

হকপুষ্প (গং) অগতি রক্ষ, বাদনা স্থানর পাছ। (Abschynomene grandiflora)। (ক্লী) বক্ষুণ। জিলাং তীপ্ বক্পুলীর। [অগতি কেখ]

ব কথ্যস্ত্র (ক্লী) আগবাদি পরিশ্রত করিবার বন্ধবিশেষ। বন্ধ-শ্রীবার জ্ঞার ইহার উপরিভাগে একটা বক্রাকার নল থাকার এই নাম হইরাছে। ইংরাজীতে ইহাকে Retort বলে।

বক্ষা, চন্পারণের অন্তর্গত একটা নদী। (ভবিন্য ব্রহ্মর্থ ৪২।১৪১) বকরাক্ষস, একচক্রানগরবাসী রাক্ষসভেদ। ভূতীদেবী পঞ্ পাওবসহ একচক্রার এক আদ্ধণ গৃহে বাস করেন। অকদ্মাৎ একদিন ব্রাহ্মণগৃহে আর্দ্রনাদ উপস্থিত হইলে কুরীদেবী দ্বরাধিতা হইরা ব্রাহ্মণের অন্তঃপুরে গমন করিয়া অবগত হইলেন, ঐ নগরে বক নামে এক রাক্ষ্য বাস করিতেছে। নগরবাসিগণ ভাহাকে প্রত্যাহ পর্য্যায়ক্রমে স্থাপন স্থাপন পরিবার হইছে এক একটী মহুষ্য ও গুইটা করিয়া মহিব দিছে বাধ্য আছে। অন্থ ব্রাহ্মণের পালা উপস্থিত, তাই ক্রন্সনের কারণ হইরাছে। যদি তাহারা ঐ দিন কাহাকেও না পাঠাইরা দের, তাহা হইলে রাক্ষস আসিরা ভাহাদিগকে সবংশে নিধন করিবে। ব্রাহ্মণের এবংবিধ বাক্য अंतरन काउत्र हरेबा कूछी वनिरम्भ, रह उन्नन् ! ভোমার একটা বালক পুত্র ও একমাত্র বয়স্থা কল্পা আছে, তাহাদিগকে প্রেরণ কিংবা স্বরং ভূমি অথবা ভোমার পত্নীর উপহার লইরা গমন করা উচিত নহে। আমার পঞ্চপুত্তের একজন ভোমার উপকারার্থ উপহার গ্রহণপূর্বক পাপ রাক্ষদের নিকট গমন করিবে। অনেক বাদান্ত্বাদের পর কুতীর কথার আবন্ত হইয়া ব্রাহ্মণ কুন্তীর সহিত ভীমসেনের নিকট আসিরা এই চুর্বাহ কার্য্য সম্পাদনে অন্থনর করিলেন। ভীমও মাতার নিৰ্বন্ধাতিশয়ে এই মহাত্ৰত সাধনে উদ্যোগী হইলেন।

র্জনী প্রভাতা হইলে ভীমদেন বাছ সামগ্রী গঠরা রাক্ষ্যের আবাস অভিমুখে বাত্রা করিলেন। অনস্তঃ সেই রাক্ষসগৃহে প্রবিট হইরা তিনি সেই সমস্ত ভোজা দ্রব্য ভক্ষণ করিতে করিতে নামোচ্চারণপূর্বক রাক্ষসকে ডাকিতে লাগিলেন। ইহাতে কুছ হইরা রাক্ষসকর বন্ধ ভীমদেনকে আক্রমণ করিল। ভীমদেন, রাক্ষ্যের পৃষ্ঠদণ্ড ভালিরা দিলেন। ভাহাতেই ভাহার পঞ্চপ্রাপ্তি ঘটে। (বহাভারত আদিপর্বা)

বকরাজ (গুং) রাজধর্ষন্ নামক রাজবিশেব, ইনি কল্পের পুত্র ৷ (ভারভ শারিপর্ক)

वकत्री (सनक) हानै। वर्कती नसक।

বক্তবধ (পুং) > বকান্তরের নিংনন। ২ বহাভারতীর আদি-পর্বের অন্তর্গত একটা পর্বাধার। এই আধারে ভীবনেন কর্ত্তর একট্রানগরীতে বকান্তরের নিধনবুরাত্ত বিশ্বত আছে।

वक्यूक (११) वक्र्रवत्र शहर । 🐇 ব্রুল (পুং) বৃদ্ধকের অভাস্থরত্ব পাতলা বন্ধ। "বঞ্চ পুক্ত স প্রসব্যা বৰুলাঃ স বৃপাঃ" (শাঙ্খাণ ব্রা° ১০।২) व्कत्रुखि (ग्रः) वक्ष्णव चार्चनाधिका वृक्ष्मिकः। वर्षकः श्राप्त ক্পটাচারী সন্ন্যাসী। [পবর্গে বকরুছি শব্দ দেখ।] वकरैवद्गिन् (११) वक्छ देवते वाष्ठक्यायुः > क्षेत्ररामः। २ अक्रिका বৃকত্ত্রক্ত (ক্লী) বকের ভার কণ্ট বিনীড আচরণ। বকব্রতচর (পুং) বক্রভিধারী মাত্র। বকত্রভিক, বকত্রভিন্ (পুং) কণ্ট ন্যানী। মে বাজি স্বার্থসাধনোন্দেশে কপটভাবে ধর্মাচার পালন করিভেছে। বকসকৃথ (পুং) খবিভেদ। বছৰচনে বৰুসকৃথের বংশধর-গণকে বুঝার। বকসহবাসিন্ (প্ং) প্য। বকস্থান, আচীন নগরভেদ। त्का (तनम) > कितकात्कत्र। > क्ठति विभिष्टे वाकि, কুপথগামী। বকাটে। वकाई (प्रमंख) काबिन, रहणारी। বকাচী (খ্রী) বহুচিঞ্চিকা মংখ্য। वकां । (तनम्) ज्ह्रवाद्रमिश्वत बज्जवद्रमनाधरमाभरयांगी नख-विट्नव। ठाँछ हानाहेशांत्र कारन भाग्छनद मध मक्षाननकारन ইহা ইচ্ছামত সঞ্চালিত হইরা মাকুর পথ পরিকার রাখে। वकार्टे (समझ) कूनवगामी। বকাগুপ্রত্যাশা (ত্রী) বুধা আশা। জ্ঞারোক্ত বিচারবিশেধের भौभारमामाश श्रविटनव । [श्राय नम प्रम्थ ।] वकान ((मणक) > कूनरथ न अज्ञान । २ वृथा कथा क अज्ञान । বকারি (পুং) বক্ত অরি:। ১ জীরুক। ২ ভীমসেন। বকাম (দেশজ) কুপথগামীর জাচার প্রদর্শন। জাঠামীকরণ। বকাল (আরব্য) > লেকানী, পণারী, বেণিরা। ২ পূক্বকবাসী চণ্ডালজাতি ভেদ। ইহারা বন্ধালীনামেও খ্যাত। এই জাতি **छान इहेट्स वाहित इहेटन अन्न अलावन मर्सा देवाहिक आ**नान-প্রদান অথবা আহায় ব্যবহার প্রচলিত নাই। অথচ একই ব্রাহ্মণ উভয়ের পৌরোহিত্য করে। ঢাকা জেলাছ প্রাফরণাম ও মাণিক্রঞ্জ উপবিভারেই অধিকাংশ বকালের বাস। ইতারা **চাব करत्र ना, किन्छ अरमारकत्रहें त्नोका आर्ट्ड, निरक्ष निरम्हें** त्नोका वाहिन्ना **थाटक । आद्य आदय पृतिना है**हाना हिन्तानि नम নের মসলা বিক্রম করিয়া বেড়ার। সকলের এক কাঞ্চগগ্রের ও अधिकारण वाक्तिरे क्षेत्रमध्यम धैनानक। देशालम निमान

বে, বাৰসা ৰাণিতা বারা ইহারা অনেকটা উরত হইরাছে, একারণ

৩ নিশা।

চপ্তালের সহিত্ত আরু সংশ্রব নাই। ইহারা চপ্তালের মত স্বশ্য পঞ্চমাংস অথবা মন্ত ব্যবহার করে না। . বকান্তর, দৈতাবিশেষ। পৃতনা নামক রাক্সীর লাতা ও

ক্ষাস্থ্য, বেকাপ্ৰেৰ। স্ক্ৰা নামৰ রাজ্যন আভা ও কংসের অন্তর। কংলাদেশে বৃক কৃষ্ণকৈ বধার্থ আগমন করে এবং তাহাকে গিলিরা কেলে। পরে কৃষ্ণ ঠোট চিরিরা তাহাকে নিহত করেন। ুধ্মাধিপুরাণ ও ভাগৰত)

বকুনা (দেশৰ পিত্ৰপনিশ্বিত রন্ধনপাত্র বিশেষ।

दक्षा (तमक) व्यक्तासक्थननीन।

বকুকা (পুং) স্থনামপ্রসিদ্ধ পুশার্ক। বকুল ফুলের গাছ।
ইহার অক্পত্ত ও পুশারণ—শীতণ, হল্প, বিধনোষহর, মধুর,
করার, মদাঢ়া, ফ্লচা, হর্বদ, স্লিগ্ধ, মলসংগ্রাহী, ক্ষীরাঢ়া ও স্থর্রাষ্ট।
ইহার ছাল ও ড়া করির। তাহাতে দস্তমার্জন করিলে দীতের
গোড়া দৃঢ় হয়। [বিস্তুত প্রর্গে বকুল শব্দে দেখ।]

वकुलभूष्म (हो) वक्नम्म।

বকুলা (গ্রী) বকুল-টাপ্। কটুকা। (রাজনি°)

বকুলাগ্য তৈলা, তৈলোষণভেদ। প্রান্ত প্রণালী—কাথার্থ বকুল ফল, লোধ, হাড়ঞ্চ, নীলঝাঁটী, সোঁদালপত্র, বাবলার ছাল, শালবৃক্ষের ছাল, থদিরকার্চ মিলিত ১২॥ সের। তিল তৈল ৪ সের,পাকার্থ জল ৯৪ সের, শেষ ১৬ সের। করার্থ কাথ্য দ্রবা সমস্ত মিলিত ১ সের। এই তৈল মূথে ধৃত বা নভারপে গৃহীত হইলে চলিত দক্ষ নৃঢ় হয়। (ভৈষক্ষারক্ষা মুখরোগাধিকা)

বকুলিত (তি) বকুলপুসাপরিশোভিত।

বকুলী (ন্ত্ৰী) कारकानी। कांकना। (শব্দ চ°)

বকুল। (পুং) পর্ণমৃগ। (সঞ্জ)

বক্তেয়া (আরবী) পুর্বের বাকী, সাবেক। "বকেরা বদমাশ" বনিবে পুরাতন অর্থাৎ অতি হুইই বুঝার।

व(करुका (जी) बनाका।

ব্যক্তেশ. (পুং) বৰগ্ৰভিষ্ঠিত শিবলিকভেন।

त्रकां हे (पूर) वक भकी।

বন্ধ্য গভি। ভা আর্থা সক সেই। লট কচতে।

वक्रिम् (ग्रः) विराज्य ।

वक्रम् (पूः) वश्ववित्तर। देशं कर्गन मरस्य स्नात्र। देशांत्र छन्-

"स्डः धाराश्चिरिकारणे विक्रमामामिनायाकस्य ।

বৰুসো শ্বন্তসান্নৰাৎ বিষ্টপ্তী ৰাতকোপন:।

দীশনস্থাবিদ্ধু বো বিশবোধনমলো শুক: ।" (ত্থক) ব্ৰুল, বৌদ্ধেশ।

২ কৃত্ (আরবী) সমর। হাবোগ বা হাবিধা। চলিত ওকা। বৃক্তপুর, বোবাই প্রেসিফেলির বেবাকারার পাঞ্সেবাসের অবর্গত একটা সামস্বাক্ষা। এই সম্পত্তি রাচন উপাধিবারী ভিনমন সামজের অধীন। ইহারা বড়োধার পাইকোরাড়কে কর বিরা থাকেন। নগরভাগ ১।০ বর্গনাইল।

বক্তন্য (ত্রি) ক্র বচ্ বা তব্য । > কুৎসিত, হীন ।

"নাধানীনো ন কন্তব্যো ন স্বস্থান বিকর্মারুৎ ॥" (মন্ত ৮।৩৬)

২ বচনীর, কথনীর, বচনার্ছ, বলিবার যোগ্য ।

"বক্তব্যশ্যশি রাজানঃ সর্বৈশ্ব সহ স্থাক্তনাঃ।

বৃধিষ্টিরস্যাধ্যমধ্যে ভর্মারর্জ্ভ্রতাম্ ॥" (ভারত ১৪।৭৮।২৩)
বচ ভাবে তব্য । (ক্রী) > বচন । কথন । ২ বাচা ।

ৰক্তব্যতা, বক্তব্যত্ব (क्री) কথনবোগ্যতা, নিন্দনীয়তা, তির-স্থারের উপবোগী।

ব্**ক্তম্পালী (পুং) স্থনামধ্যাত মধ্যদেশসভূত** শালিধাত। মরাঠী—ধকোই ধান। ইহা স্থু ও সুখপাচা।

ব্ৰক্তন) (বক্তু) (ত্ৰি) ৰচ্-ভূচ্। > বাক্ষী। ২ ভাষণপটু। ৰাক্পটু, বক্তৃতাশক্তিযুক্ত। 'ৰো বক্তং, জ্বানাতি সং'(ভৱত) 'ঔচিত্যাৎ ক্ষবিশিটং বদতি।' (ৱাৰমুক্ট)

"ভদ্ৰং কৃতং কৃতং মৌনং কোকিলৈৰ্ক্লদাগমে।

দৰ্দ্ধ্যা মত্ৰ বক্তাৱন্তত্ৰ মৌনং হি শোক্তনম্॥" (হিতোপ°)

পৰ্যাৱ—ৰদ, বদাবদ, বদান্ত, বক্তা, স্মষ্ট্ৰক্তা, বহুভাষী,
বাগ্মী, বাবদ্ক, বচক্ক, স্থবচা, প্ৰবাক্, পণ্ডিত।

ন্বক্তি (খ্রী) উক্তি, কথা, বাক্য। (রুহদারণ্যক উপ° ৪।৩)২৬)
বক্তি (পুং) মন্দ্রাকাভাষী। বে কুৎসিত বাক্য প্রয়োগ করে।
"পরুষবাক্যানাং বক্তু" ইতি সারণ; (ঋক্ ৭।৩১।৫) কিন্তু অস্তান্ত ভাষ্যকার ইহাকে বচ্ ধাতুর "বক্তবে" ক্রিয়া রূপের আর্থ উক্তি বলিরা গ্রহণ করেন।

বক্তকুকাম (ত্রি) বক্তব্যান্ত বং বং বা বক্তব্যান ধতা সং। বলিতে ইচ্ছুক বা অভিনাবী।

বক্ত মুনস্ (জি) বক্ত মনো বন্ত সং বক্ত মুনা:। কথিত-মানস, মিনি বলিতে মানব করিরাছেন।

व्यु (वि) व्यननीन। वका।

व्यकुक (बि) वक्-पार्थ कन्। कथनभट्टे। मठावारी।

বস্তৃতা (বী) বচ্-ছূচ্ তক্ত ভাব: ভগ্-টাপ্। বাৰ্ণটুতা, বদিবার ক্ষতা। ঝাধিন্তাস, বাফিন্তা।

ব্স্কুত্ব (क्री) বজার কার্য। ্বাহিন্তাসথজি।

বক্তেন্দ্রশক্তি (বী) বলিবার ক্ষমভা (Bioquepoe)।

বৃদ্ধে (মী) বজি অনেনেতি বচ্-(গ্ৰহণীপচিবালেনিসনিকণিভাগ্ন:। উণ্ ৪১৯৬) ইতি তঃ। ১ মুখ।

"ধৰ্ষোপদেশ হৰ্ণেশ বিজ্ঞাপানত ভূৰ্মতঃ। তথ্যসালে চৰেভৈক্য হকে প্ৰোক্তেত পাৰ্থিবঃ ঃই(মছ ৮)২৭২)

वरम, भाक, भामम, प्रशास्त्राहरू। अहे वस्तुनारक वसूरकत्र দুখ, হাভির ওঁড়, পঞ্চীর চ্ছু, তীরের কলক, ভূলারের নগ প্ৰভৃতিও বুৰার। ২ ভগরসূল। (শক্ষালা) ও বন্ধছের। (মেদিনী) ও ছব্দোবিশেব। ইহা অন্তইুন্তের অন্তর্না। লক্ষণাদি বধা,---"छ्वछार्द्धनमः वर्जुः विवसक क्वाइन । তরোর্দ রোরুপান্তেছত্র শব্দত্তব্যুনোচাতে ॥ বক্তু: যুগ্ভাাং মগৌ ভাডামকের্ব্যাহমুট,ভি: খ্যাতম্ ॥ এখানে বিরাবর্তা লোক পুরুণ করা হইল---"वक्तांखांबर नमा (चन्नर हक्सी) लार्थनर क्नम्। বল্লবীনাং স্থবারাতেশ্চেতো ভূলং জহারোজৈ: 🗗 (ছলোমঞ্চরী) কার্য্যের আরম্ভ। ৬ বীক্সণিতোক্ত প্রথম গৃহীত সংখ্যা (The initial quantity of a progression)। ৭ জগৰ-পুষ্প, টগর ফুল। (রাজনি°) বক্তৃক (🏿) বক্তুশলার্থ। মুখসবদীর। वळ्कुक्रूका (बी) म्थरवत्र। বক্ত কুর (পুং) বক্ত ভ কুর ইব। প্রোদরাদিয়াৎ খ:। দণ্ড। (**ভিকা**°) বক্তুক্ত (পুং) বন্ধণো বক্তাং কাছতে ইতি। "বান্ধণোৎস মুখমাদীং" ইতি প্রতে:। জন-ড। ব্রাহ্মণ। (ব্রিকা°) (ত্রি) মুখলাত। বক্তাল (রী) বক্ত তালন্। মুখবাঞ্চ তিকাঞ্চলেবে 'মুখবাজং বক্তুনালমিতি' লিখিত আছে। মুখ হইতে ফুৎকার-नानक्षत्रा वःश्वीवानन । (कह त्कह वर्णन, मूर्थविवरत वायु त्राथिता উভয় গণ্ডে হন্ত তালুধারা আঘাত করিলে শলোচ্চারণের সক্ষে বে বান্ত সমূখিত হয়। বক্ত তুও (গং) গণেশ। वक्क तर्ष्ट्रे (बि) वटक् प्रशासन मर्ड्रोनि वक्र। नीर्यमञ् विनिष्ठे। वक्रमस्यभात्री। भूकतामि। [वक्रमरहे तम्।] बङ्गुपल (ही) जानूपमा वक्तुषात्र (क्री) म्थविवत्र । ব্ক্তুপ্ট (রী) মুধাবরণবন্ত। যোষটা। বক্ত পট্ট (গুং) বন্ধু ও গট ইব। অবদিগের চণকভোজনপাত্র। চলিত ভোৰড়া। পৰ্যায়--তলিকা, তলনারক। বক্তু পরিস্পান্দ (পুঃ) বক্তৃ ভাকাদীন মুধকশন। ২ কথন,বাচন। বক্ত ভেদিন্ (গৃং) বকুং ভিনতীতি ভিন্-পিনি। ১ ভিক্তরন। (बि) २ मृथविशात्रकः। वक्टुर्याधिन् (ग्रः) > अञ्चलका । (हतिवरण) (जि) २ म्थ-वाता वृष्ट्यात्री (ग्यांगि)।

व्यक्तुत्रुक्क (जी) म्थनियतः **व्यक्तुक्रम् (बि) > ग्र्यतिष्य राष्ट्रा वेश्यक्त एक् । व्यक्तक्या**पि । ২ **হতিওওছিত কেশরা**লি। (বৃহৎস° ৬৭।১•) वक्तु (त्रांश (पर) म्यत्रांश। ব্জু রোগিন্ (ত্রি) মুখরোগভোগকারী। (রুৎস°) বক্ত বাস (গুং) বজুং বাসরতি হুরভীকরোজীড়ি বাসি-(কর্মণাণ্ পাতাং।১)ইতি অপ্। ১ নারজ। [নারজ দেধ।] वक् अ वागः। २ भूषछादः। বক্তুশল্যা (জী) > কাকাদনী লভা, খেড গলা। ২ রক্ত-ওলা। (বৈভক্সি°) বক্তাপেন (দী) বক্তা শোধনমিব। ১ নিৰ্ফল, নের্। ২ ভব্য, চাশ্তা। (রাজনি°) ৩ মুখণোধন। মুখণ্ডদ্ধিকরণ। বক্ত্ৰ-শোধিন্ (প্ং) বজ্বং শোধরতীতি ওধ্-ণিচ্-ণিনি। > ক্ষীর লেবু। ২ মুখলোধক (তামুলাদি)। वङ्गिधिवान (११) नागत्रक्रवृक्त । वक्टुवानू (११) वाबारीकन । वङ्गित (१:)वङ्ग्रं जानवः। अभन्नमध्। नाना। বক্তশী (সী) স্ত্রীবক্তা। ব্ৰক্ত্ৰ (ত্ৰি) বক্তৰ্য। বেদবাৰ্ক্যাৰ্থোপদেশ। (ঋক্ এং৬৯) 'वर्ज्यानाः वर्ज्यानाः (वनवााशानाम्' (नावन) বক্সন্ (क्री) > মার্গ, মার্গভূত। শ্ৰৰ্জেৰে ভব আগ্ৰাক্ত বন্ধস্থাৰবুৰি:" (ঋক্ ১৷১৩২/২) 'বন্ধনি বন্ধ নি মার্গভূতে' (সায়ণ) বল্পব্লাজস্ত্য (অ) ভোড়বর্ডাদিগের বিশ্বন্ত । (শক্ ৬।১১১১) বৈশ্বরাজসভ্যা: বশ্ববচনং ভোত্রং। ভক্ত রাজান ঈশানা বল্লরাজানঃ ভোতারঃ তেবু সত্যা জবিতথাঃ।' (সায়ণ) বৃদ্ধ্য (অ) ১ প্রশংসার্ছ। ২ ছতিবোগ্য। "প্ৰ তং বিবন্ধি বন্ধ্যো এৰাং দক্ষতাং মহিমাসতো **অভি**।" (#()) (#()) 'ৰক্ষা: দৰ্কো: ৰভো: নজোহৰাধ্যোহমোৰোহতি ভদ্।' (সারণ) तक्क (क्री) यक्टक रेखि निक-क्वींविटना बन्। शृद्वानवानिका॰ ন লোগঃ। বৰা, বৰুতীতি বন্ধু গভৌ (ক্ষাৱিভক্তিবক্টীতি। উণ্ ২০১০) ইতি রক্। জন্ধু বিভাৎ কুৰুন্। ১ নদীৰ্ঞ, নৰীর বাক। পর্যার-শ্রুডেদ, বছ। ২ ভগরপাছকা। "कानाञ्चनात्रि वा वज्जर फ्राजर कृष्टिनर मर्क्रम्। मरहात्रशः नजः विचार वीमः छगत्रभाविकम् ॥" (देवछक्तप्रमामा) চক্রপাণি শিরোরোগাধিকারোক্ত খেতাহাত্ত তৈলে ইহার ন্যবহারোপবোগিতা লিপিবত করিয়াছেন।

(পুং) বঞ্চীতি বঞ্চ গতৌ (ক্ষান্তি ক্ষান্তি। উন্
২০০০) ইতি রক্। ভবাবিশ্বাং কুকার স্বান্তর। (বেদিনী)
২ মদলগ্রহ। (বেদ) ও ক্ষার। ৪ জিপুরাক্সন। ৫ পর্ণ ট,
ক্ষেৎপাপড়া (রাজনি') ৬ বক্ষগতিবিশিষ্ট প্রহ। বে
কোন প্রহেম্ব আপ্রিভই হউক না কেন, সেই গ্রহ হইতে
পর্ব্যাধিষ্টিত রাশি জিলোপনের মধ্যবর্তী হানে রবি থাকিবেন।
[বক্রগতি দেখ।]

ক ক্ষমদেশীয় নৃপতিভেদ। (ভারত ২।১৪।১১) (গুং)
৮ স্থানচ্যত ও বজীভূত অভিভেদ বিশেষ। ৯ রাক্ষসভেষ।
(রামারণ ৫।১২।১৩) ১০ জাতিবিশেষ। এই অর্থে বহবচনাত্তে
প্রয়োগই হইতে দেখা যার। পুরাণাস্তরে 'চক্রা' এইক্ষপ
পাঠও আছে।

(ফ্রি) বছতে ইতি । বকি কৌটলো-রন্। প্রোদরাদিবাৎ ন লোপ:। যহা বঞ্চি-রক্। ১১ অনুক্, অসরল। চলিত কথার বাকা বলে। পর্যার—অরাল, র্জিন, জিলা, উর্মিনৎ, কুঞ্চিত, নত, আবিদ্ধ, কুটিল, ভুগ্ন, বেল্লিড, বছুর, বেছু, বিনত, উল্র, অবনত, আনত, ভলুর।

"স বৈ তথা বক্র এবাভাজায়-

দটাবক্র: প্রোথিতো বৈ মহর্বি:।" (ভারত তা>ত২।১২) ক্ষিকরশতার নিরোক্ত কর্মী বক্রচিক্রে নাম উদ্বুত আছে, তদ্যথা—

আলক, ভাল, ক্র, নথচিক্র, আছুল, কুঞ্জিকা, ভয়কছণ, বালেন্দু, দাত্র, কুদাল, চক্রক, গুকান্ত, পালালপুলা, বিহাৎ, কটাক্ষ, শক্রধয়ঃ, কণা, প্রবেধি, কর, হজিদত্ত, শুকরদত্ত, সিংহনথাদি। (কবিকয়লতা) ১২ ক্রের। ১৩ পঠ।
(মেদিনী)

বক্রকন্ট (গুং) বক্রা: কন্টা: কন্টকা বক্ত। ১ বদরর্ক্ষ, কুলগাছ। (রাজনি°)। ২ কুটিলকন্টক।

বক্রকণ্টক (পুং) বক্রা: কণ্টকা অঞ্চ। থদিরবৃক্ষ।
বক্রপাঞ্জুপ [ক] (পুং) বক্রং পঞ্চা:। করবাল। (রাজনি°)
বক্রপা (পুং) বক্রং বাতি গদ্ধতীতি গম-ড। সর্প। (বৈভকনি•)
বক্রপাতি (রী) বক্রা গতিবিজ্ঞাঃ। ১ বাহার গতি বাকা।
২ বক্রপাক্রথমা সভাবি।

ধগোলন্থিত গ্রহণণ এককান ইইতে গমন আরম্ভ করির।

একনির্দিষ্টকাল মধ্যে পুনরার নেই ছানে কিরিরা আইনে।

গ্রহণপের এই চিরন্তন প্রনিদ্ধ গমনের নাম গতি। গমনের
কারণ থাকাতেই গ্রহণণ এই গজিপালির হারা চালিত হর না।

গাবে। গ্রহণণ একপ্রকার গভিত্ব হারা চালিত হর না।

গাহাবের পরস্পারের আকর্ষণে ও অভান্ত শক্তিকাবাবে একটা

ৰক্ষপতি উৎপন্ন হইরা থাকে। ক্যোতিকত্বে আটপ্রকার গতির উল্লেখ বেখা বার—

"হৰ্ষ্যমুক্তা গ্ৰহা-শীদ্ৰান্তথা চাৰ্কে দ্বিতীয়গে। সমাস্থতীরগে জ্বো মন্দাভান্নচতুর্থকে **॥** বক্রা: স্থ্যঃ পঞ্চবঠেছকে ছতিবক্রা নগাষ্টগে। নবমে দশমে ভানৌ জায়তে সহজাগতি:। ষাদশৈকাদশে হৰ্য্যে শভৱে শীন্ততাং পুন:। রবিস্থিতাংশকস্তিংশাবধেঃ সংখ্যাত্র করাতে। রাহকেতৃ সদাবক্রৌ শীষ্রগৌ চক্রভান্ধরৌ ॥" (জ্যোতিস্তব্ধ) **জ্যোতিধিকগণ মঙ্গলাদি প্রহের বক্তগতির দিন সংখ্যা** নির্দেশ করিয়াছেন। তাহা হইতে জানা যায় যে, মললের বক্রগতি ৭৬ দিন, বুধের ২১ দিন, বুহস্পতির ১০০ দিন, গুক্রের >২দিন এবং শনির ১৮৪ দিন। [বিশ্বত বিবরণ গ্রহশব্দে ড্রন্টব্য।] বক্রগামিন (ত্রি) > অসরল গতি। ২ যাহা সোজ। হইয়া চলিতে পারে না। ৩ অসৎ ব্যক্তি। ৪ শঠ। ৫ প্রবঞ্ক। বক্রগুলুফ (খং) উট্ট। (বৈছকনি°) বক্রব্রীব (পুং) বক্রা গ্রীবাস্থ। উট্র। (ত্রিকা°) বক্রচঞ্ (পুং) বক্রা চঞ্গ্র। ওকপক্ষী। চলিত টিয়াপাথী। বক্রণ, বক্রণা (ফ্রী, স্ত্রী) বক্রীকরণ। ২ জুরতা, শঠতা।

বক্রতাল (ক্লী) বক্রং তালং যত্র। বাছবিশেষ। পর্যায়— মুধবাছ। বক্রনাল এইরূপ পাঠও আছে।

বক্রতালী (স্ত্রী) বক্রতাল-গোরাদিখাৎ গ্রীষ্। মুথবাছ। (শবরত্রা) বক্রত (পুং) দেবতাভেদ। (মার্কণ পুণ্টনাড)

বক্রত্ব (পুং) বক্রং ভূপ্তং বস্ত। ১ গুকপক্ষী। ২ গণেশ। (ত্রি) বক্রোষ্ঠ।

> "স পাশহস্তাংস্ত্ৰীন্ দৃষ্ট্ৰ। পুৰুষানতিদাৰুণান্। বক্ৰতুপ্তান্ধবোৰ আশ্বানং নেতৃমাগভান্॥"

> > (ভাগ্ৰত ভাসং৮)

दक्रमः हु (ग्रः) रक्रा मः हो रछ। भूकत। रक्रमन्त्र (ग्रः) महरक नामक त्राक्ता।

द्रक्षमञ्जी (श्री) इचमची । (दिश्रमनि°)

विक्रमल (जी) छान्। [वक्क्वन स्वर्धा]

वद्धामृष्टि (जी) > विकार शांति । २ त्यां प्रमृति । व समृति । वद्धानत्यक् (ग्रः) व्यक्षः कृतिका न्यकः देव दिश्यन्तः । > भिवन, वर्षः । २ क्षण्याः

व्यक्तमान : (क्री)> प्रवाधन ः १ वीव नगः।

वक्तनांत्र (बि) ३ वक्तमांत्रा वा ह्रम्यूकः । (ब्राबाः व्यशः)

वक्रमॉनिक (ग्रं) वज्रां मानिक विज्ञाः अल्डिकः (खिकाः) (बि) २ कृष्टिन मानावृक्तः।

ব ক্রপাদ (এ) বক্রং পাদং বছ। বাকা পাদব্কা। বঞা। বক্রপুচ্ছ (পুং ত্রী) বক্রং পুক্ষং বছ। ১ কুকুর। ২ সলোম-কুটিনলালুন। বাকালেক।

বক্রপুদ্ধিক (গং) कुकूत।

বক্রপুর (श्री) গ্রাচীন নগরভেন। (কথাসরিংনা° >-৭।১৩৬) বক্রপুজ্প (গ্রং) বক্রানি পুলাণ্যন্ত। ১ বকর্ক। ২ পনানর্ক। বক্রপুজ্পিকা (রী) লাক্নিকা। বিবলাক্সিরা।

বক্রবাল্ধি (গৃং) বজো বালধি: কেশব্কলাল লং বছ। ১ কুরুর। ২ কুটলপুদ্ধ।

বক্রভণিত (রী) বক্রং কুটিলং ভণিতম্। কুটিলবাক্য। পর্যায়—ছেকোক্তি। (ত্রিকা) বক্রোক্তি, রোবোক্তি।

বক্রভাব (পুং) > বক্রভা, বাকাভাব। অসরনভা, কুটনভা। বক্রম (পুং) অবক্রমণমিতি অব-ক্রম-ভাবে বঞ্। অলোপঃ। প্রায়ন। (শন্বয়া°)

वक्त्य (११) भूना।

বক্রব্যে (ত্রী) বাঁকারেখা। বেরেখা সরল নছে, বৃত্তাকার অথবা কোণাকার রেখা।

বক্রলাক্সল (পুং) ৰক্রং লাগ্লং ৰস্ত। ১ কুরুর। (রী) ২ কুটিলপুছে।

বক্রবন্ত্র (পুং) বক্রং বক্তুমন্ত। ১ শুকর। (তি) ২ বক্রমুখবিশিষ্ট।

বক্রশাল্যা (খ্রী) বক্রং শশ্যমিব প্রাধিকং বস্তা:। কুটুবিনীকুপ।
২ কটুতুবী, ভিংলাউ। ৩ রক্তনাল নিকা, নানবিবনাল নিরা।
বক্রশাল (ক্রি) বাহার শৃন্ধ বাঁকা (মহিবাদি)। প্রবাদ—
"মহিবের শিশু বাঁকা বুঝিবার বেলা একা।"

বক্রা (प्रमंक) > वर्कतमस्य । (পूः) हाग । २ वधना, योशकात्रवादतन्न चारम ।

বক্রাগ্র (ক্লী) বক্রং শক্রং বস্ত। ক্বাটবক্রনৃক্ষ। চলিত বেতুগাছ।

বক্ৰাঙ্গ (ফ্লী) বক্ৰং অঙ্গং গণ্ড। ১ হংগ। (হেম) ২ সৰ্প।
(ফ্লী) ৩ কুটিল অবরব, বাকা অজ। (ফ্ৰি) ৪ কুটিলঅবয়ববিনিট।

"ভরন্ধবিষয়াপীড়া চক্রবাকোসুবন্ধনী।
বেগগলীরবজালী অভনীনবিভূষণা হ" (ছরিবন্ধ ১০২।৩৮)
বক্রাভিছ্ (পুং) বক্রপাদ।

বক্রাতপ্ (গ্রু) ৰাতিবিংলন । (ভারত ভীরণর্ম) বক্রাতি পাঠও দেবা বার । বক্রি (বি) নিখাবাৰী, অনৃতভাৰী। বন্ধ ধাড়ুর উত্তর ক্রিন্ প্রভার বারা এই পদ নিশার বইবাছে। বক্রিন্ড (বি) বক্র-ইডচ্। ১ বক্রডাপ্রাপ্ত। ২ বক্র। ও বক্রগড়ি অসুস্ত।

"वावनवन्दिमकावनमञ्जाविकटणः कूटकश्चमूनम् ।"

(বৃহৎসং ভাব)

বক্তিন্ (পৃং) বজে বক্তভাভাতীতি ইনি। বৈদিৰধৰ্মবিক্তৰ-বাদিবাদভ তথাত্ব। ১ বৃদ্ধ। (পলরণ) ২ গর্ভবিকারজন্ত পুক্তবভেদ। বধা---

"মাভূৰ্যবারপ্রভিষেদ ৰক্ষী ভাষীত্দৌর্মল্যভরা পিতৃত।" (ত্রি) ও বক্তভাবিশিষ্ট।

"ললেশো যদি বক্তী ভাৎ পুংসঃ কার্যের্ বক্তরা। লল্পেলেহতাং গতে মর্জ্যো জ্বংথাদিকাধিসংবৃত্যঃ ॥"

ফলিত জ্যোতিৰে লিখিত আছে, বনি বক্তী কোন গ্ৰহ, ছিতি-রাশি হইতে রাক্সস্তরে গমন করে, তাহা ছইলে নেই গ্রহ অতিবক্তী বা মহাবক্তী বলিরা বর্ণিত হইরা থাকে। এই বক্র বা অতিবক্ত কুলানি পঞ্চ গ্রহেরই হইরা থাকে।

বক্রিম (এি) বঞ্-ভাবে ক্রিমচ্ বরা বক্র-ইম। বক্র, কুটিল, অসরল।

বক্রিমন্ (পুং) বক্র-ইমনিচ্। বক্রতা, কৌটদ্য, শঠতা। বক্রী (নেশন্ধ) বক্রী। ছাগী।

বঞীকরণ (জী) বাঁকান। কোন সুরল বন্ধকে যন্ত্র বা অগ্নিবোগে বাকাইরা কেলা।

বক্ৰীকৃত (জি) **স্বক্ৰী ৰক্ৰীকৃতঃ স্বন্ধৃততভাবে চি**; । ১ বক্ৰ । যাহার ৰক্ষতাপ্ৰান্তি ঘটিয়াছে ।

বক্রীন্তাব (বি) ১ বক্রতা। ২ কুট্রনতা। ৩ প্রবন্ধকতা। বক্রীন্তু (বি) ১ বক্রতাপ্রাপ্ত। ২ প্রবন্ধনার্ক। ৩ অসরগচিত। বক্রেতর (বি) বাহা বক্র নহে অর্থাৎ সরন। • "বক্রেতরাগ্রৈরনকৈঃ" (রমু ১৬)৬৬)

ব্যক্তেশ্বর, বীরভূম জেলার বর্তমান প্রধান সহর সিউড়ী হইতে ৮ মাইল পশ্চিমে অবস্থিত একটা অতি প্রাচীন তীর্থহান। হরিপুর পরস্থানার উতিপাড়া নামে যে প্রাম আছে, তাহারই অর্জ্যনোন কিলেও "বক্তেব্ব" নালার ধারে উক্ত প্রাচীন তীর্থভূমের জংসাবশের সাত পড়িরা আছে। এখানকার প্রাচীন কীর্ত্তি অধিকাংশ বিস্পূর্ব বইলেও "বক্তেব্ব" ঘোতসভীর বক্তিশে এখনও ৩০০ শিবমন্দির ও বহু উক্ত প্রক্রেশ তীর্থবালীর নম্নন মন আকর্ষণ করিয়া থাকে। প্রাচীন কলেব্ব ক্তেন্ত্র নামান্ত্রনারে আলও এই হান "ভূম বক্তেব্ব" নামে সর্জন্যধান্ত্রনের নিকট পরিচিত।

र्रशक्तरनम् वरशः वरवन्त्रन् देनवनिष्टमम् **अस्ति** असान छ

প্রাচীন জীর্ব। এখানে শাক্ত ও বৈশ্বৰ প্রভারবিস্তারের সঙ্গে ক্রমেই বে এই স্থপ্রাচীন ক্ষেত্র ধূর বন্ধবাসীর নিকট স্থপরি-ক্রাত হইরা পড়িরাছে, তাহাতে সন্দেহ নাই।

ত্রদাও উপপ্রাণের অন্তর্গত ব্যক্তবরমাহান্ত্রে ব্যক্তবর
ক্ষেত্রের পূর্ব্ব পরিচর ও মহিলা সবিভার বর্ণিত হইরাহে। বলবালীর এই তীর্থপরিচর সবিশেষ জ্ঞাতব্য মনে করিরাই ব্যক্তবরমাহান্ত্র হইতে এই তীর্থের পরিচর সংক্ষেপে উভ্,ত হইল,—

"গৌড়দেশে মহৎ ক্ষেত্রং বক্ষেরস্থসক্ষতন্।
বরাসন্তরপেনাপি মৃচ্যতে সর্কবিধিবাং ॥"
গৌড়দেশে বক্ষের্বর মাথে এক মহৎ ক্ষেত্র আছে, থাহার
নাম শ্বরণমাত্র মানব সর্কা পাপ হইতে মুক্ত হর।

এই বক্তেখরের উৎপত্তি কিন্ধপে বইল,এ সম্বন্ধে দেখা বার---"পুরা কৃতযুগে বিপ্রা অষ্টাবক্রো মহাতপা:। প্রথমো নাম ভন্তাসীৎ স্কুব্রতো নাম পুলব: ॥ পুরা দেবসভারান্ত নৃত্যমাসীমনোধ্রম্। লক্ষীসমন্বরে পুলো তৈলোকৈয়বর্যসংবৃতে॥ তত্র দেবাল্চ গন্ধর্কা মুনর: সিম্কচারণা:। সমাজগ্ম: পরং জहै; कमनात्राः चत्रचत्रम् ॥ ভত্রামরেশরো দেব: শচীনার্থ: পুরন্দর:। অত্রে দভালোমশার পাভার্যাচমনীরকম্।। लामनक महाजानः मृह्ये ह छशवान् मूनिम्। প্রতো ন শশাপেক্রং তপোভদভরান্মূনি:॥ মহাকোপেন চাষ্টাঙ্গে বক্রত্বমগমশ্বনিঃ। অষ্টাবক্রাভিধেরস্বং ততঃ প্রাণ বিজ্ঞান্তম:॥ দেবপ্রথা সমাগতা ক্ষেত্রেছদ্মিন ছন্চরং তপঃ। চকার বিপুলং বিপ্র: দর্কলোকপ্রভাপনম্।। मन्दर्वज्ञह्यानि (क्रवनाषुनिवख्या। পৰ্বাপক্তভন্তানীৎ ভাৰৎ কালং মহামূনি:॥ ভাবৎ কালং তদা বায়ুর্জকামানীব্দিতেক্রিয়:। এবমের ভপশ্চক্রে স মুনিঃ সংবতাত্মবান ॥… नाजश्रकः व्यवादश्य मूनिः म्कनवीतिगम्। ত্রিকুঞ্চ বিছতে ভত্র পাবকাগার এব চ। मिक्निशिर्माईनजाहवनीबाबाटम्य ह। তশ্বাৎ পারাৎ ক্রম্রান্তর্জন স্বর্গপ্রবাহকর ॥ অগ্নিত্রহং হি পাডালে অভবাব্যে ভূ ভিঠতি। ভোগৰতা। জলং তত্ৰ বিভলে প্ৰিমৰ্ক্তৰেং। वार्डकाचार महारखन्नर स्टानकर्मक महारक ॥ ভভশ্চোৰ্যবলং ৰাভি বন চাহিত্ৰকং বুধা। তথালিতা ভডতভাত্ব ভেরদা পাবকে ।।

নিপতা খেতগলারামুকভোরং বহেরনী ।

কেচিরোগবতীং প্রাহর্গলাক কেচিল্চিরে।
কেচির খেতত নারা তাং খেতগলাং বছরি বৈ ॥
পাতালেশং বটকৈব লাছা চৈব নদীবরম্।
ক্রমবোনিং ক্রছনিলাং লাপরিবা মহানদীম্ ॥
একাংশেন নিবং রাছা প্রায়াবৈ দক্ষিণাং দিশং।
বক্রেছরত পাশ্চাত্যে ভাগে পাশপ্রমোচনে ॥
ধয়্যক্রিকপ্রমাণা বৈতরণী পাশমোচনী।
তামাক্রম্য নরো জক্যা মৃচ্যুতে বমলাররাৎ ॥
ধয়্যাক্রপ্রমাণা বৈ বহের পাশহরা ততঃ।
তত্যাং সন্দর্শনে নাপি অতিরাক্রং কলং লভের॥
সপাকারং মহর্যক্রেরং পুণাং পাশহরং শুভম্।
তক্র তিটেম্বহাদেবক্রেলোক্যক্রাণহেতবে॥
তমুদ্দিশ্র তপত্তপে স চ বক্রো মহাতপাঃ।
তং মুনিং প্রপ্রসরোহভূর স বয়ং পার্মজীপতিঃ ॥"

সভাযুগে মহাতপা অষ্টাবক্ষের প্রথমে নাম ছিল স্কুত্রত। বৈলোকো ঐথর্য্যের আম্পদীভূত লন্ধীর স্বর্ধরে দেবসভার মনো-হর নৃত্য হইয়াছিল। দেব, গছর্ম, সিদ্ধ, চারণ প্রভৃতি সকলেই কমলার স্বয়ম্বর দেখিতে উপস্থিত হইরাছিলেন। তথায় অমর-পতি শ্চীনাথ ইক্স লোমশ মুনিকে সর্ব্বপ্রথমে পাছ, অর্ঘ্য ও আচমনীয় অর্পণ করেন। তাহা দেখিয়া ভগবান্ স্কুত্রত তপো-ভদত্তরে অভিসম্পাত না করিলেও অভিশর ক্রন্ধ হইরাছিলেন। এই ক্রোধহেতু তাঁহার অপ্তাল বক্র হইরা পড়ে, তাহাতেই তাঁহার অপ্তাবক্র নাম হয়; এইরণে বক্রান্স হইরা সুনিবর এই ক্ষেত্রে আসিরা হল্ডর তপক্তা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার তপজ্ঞান্ন সৰ্কলোক উত্তপ্ত হইনাছিল। তিনি দশ হাজান বৰ্ষ क्वन जनमाज शान कतिता, ७९शात वन शाकात वर्ष क्वन মাত্র গাছের পাতা খাইরা, তৎপরে উক্ত সংখ্যক বর্ব বারু ভক্ষণ করিয়া জিতেক্সির মুনিবর কঠোর তপশ্রুণা করিলেন। বক্র-শরীরী মুনির নিকট পাবকাকার ভিন্টী কুও বিভ্যান হইন, তাহাই দক্ষিণান্তি, গার্হপত্যান্তি ও আহবনীরান্তি। সেই অন্বিত্রয় মতল নামক পাতালে অবস্থিত, সেই স্থরতি লগ স্বর্গপ্রদারক, ভধার ভোগবতীর জলপ্রবাহিত বাঁহার মতকে সুমের সেই हाँछेक नामक बहारम्बरक्छ स्क्रम्बर्वि कार्छना कतिरानन। ভাহার উর্দ্ধান্ত হৈছে অল পিরা ভিন্টী অধিকুঙের সহিত মিলিত হইরাছে। পাবক নেই অল জালিকন করিরা উক্তোরা ৰেভগলা নৰীয়ণে বহিভেছেন। এই নৰীকেই কেহ ভোগবতী, ক্ষেত্ৰ বা বেতের সামানুষ্যারে বেকগলা বলিয়া থাকে। এথানে गा**र्जारमन, जन्ममुबर्ड क मन्द्रीबरम मान, गरम अवस्**वानि छ अब- শিশার বান এবং নদীতে একাংশে নিবকে বান করাইরা দক্ষিণনিকে, বক্রেবরের পশ্চাৎভাগে ভিন ধছু নৃত্রে পাপহারিবী বৈতরণীতে বান ও তালা কর্দনি করিলেও অভিরাজ্যের কল হর। এই পাপহর ক্ষেত্র স্পাকার। ত্রৈলোক্য আগ করিবার ক্ষয় মহাদেব এখানে অবহান করেন। তাঁহাকে উক্লেশ করিরাই মহাতপা বক্র তপজা করিরাছিলেন। বক্রেব্রনি আরাধনা করিয়াছিলেন বলিরা মহাদেব এখানে বক্রেব্রনি আরাধনা করিয়াছিলেন বলিরা মহাদেব এখানে বক্রেব্রন নামে খ্যাত হইলেন।) তাঁহার প্রভাবে অষ্টাবক্র অভীই লাভ করেন।

এই ক্ষেত্রের কোথার কোন্ তীর্থ আছে এবং সেই সেই ছলে কিন্নপ পূজাদি করিতে হয়, বক্রেখরের তীর্থপরিক্রমায় এইরূপ বিবৃত হইরাছে,—

'এই বক্রেখর ক্ষেত্রের দক্ষিণ ক্ষারকুণ্ডাদি তীর্থক্রমে বাক্রা করিতে হয়। প্রথমে বক্রেখরে গিয়া ক্ষোরকর্ম, স্থান ও শিবকে দর্শন ও নমন্বার করিয়া পঞ্চ তীর্থ বিধানে এইরূপে বাক্রী পরিক্রমা করিবে। প্রথমে ক্ষারকুণ্ডে স্থান করিয়া কুশোদক ছিটাইয়া সম্বর করিয়া এই মন্ত্র পাঠ করিবে'—

ওঁ সহাক্ষারাজিসংলাতো সহাপাতকবাপন।
কারকুও হরাত বং বল্পরা চুকুতং কৃতব্।
পিবত সূর্ত্তরে দেব কারোহার হরার চ।
প্রিল্পুর্বরে তুভাং নব: পাপান্তকার চ॥
ক্যালস্কৃতং পাগং বাগোহর সম প্রভা।
সংসারাধিমগ্রক ক্থিবিত্যালক।

এই ক্ষারকুণ্ডের পূর্ব্বে সিদ্ধসেবিত সর্ব্বপাপনাশক ভৈরবকুণ্ড ক্ষাছে। অনতার ভীর্থবাত্রী ভক্তিপূর্বক এই ভৈরবকুণ্ডে

(>) "অসিন্ করেবরকেরে দকিবে ক্রবোসত:।

কারক্রামিতীর্বাসাং বারাং কুর্যামিচকব: ।

মরো করেবরং ক্রেরং পরা রাখা মতিং তারি:।
কোরং কৃষা হরং দৃই । কুর্যাজীর্বোপবাসনন্ ।

পঞ্চতীর্বিধানক সূব্র মুনিপুজনা:।

পঞ্চতীর্বিধানেন কর্তবাং তীর্যুক্তন্ ।

ক্রেরাপবাসনাবর্ত্তা তির্বেলন্ সক্রিত: ।

ক্রেরাপবাসনাবর্ত্তা তির্বেলন্সারিবে। ।

ক্রেরাপবাসনাবর্ত্তা ক্রেরাকার্যকর্তা ।

ক্রেরানিয়ত্ত্বা সুত্রেরাকারের ক্রের্কিত ।

রেবরং ক্রেক্তের বারিবা প্রাননাব্রেরং ।

রাখা সংক্ররাহর্য্য মন্ত্রেবানের ভো বিনাং । ৬ ৬ ০

গমন করিবে। ভৈরবসূত্তের জলম্পর্ক করিরা এইরূপ মন্ত্র উচ্চারণ করিবে^২—

> আনেকজন্মত তং নানাবোনির বংকৃতন্। পাতকং বাড়ু যে নাশং তৈরবাড়্নিবেবণাও ঃ

ভৈরবকুণ্ডের পূর্বে সর্বাপাশনাদক মহাপুণ্যপ্রান অগ্নিকুণ্ড আছে। পরে বাত্রী কুশসংবৃক্ত অগ্নিকুণ্ডের তল হান্ত্রী অভিবেক করিয়া ভক্তিপূর্বক এই মন্ত্র পঠে হরিবে,"—

> ওঁ মহাবৃসিংহ্মপোহসি সর্কাণাশ্যণালন। স্বহাত্তিশর্লাক্ বাড়ু মন পাপনশেবতঃ র স্বন্ধে সর্কভূতাবায়তক্ষাসি পাবক। অসম্বাশ সময়তম্ম সর্কলোকৈক্ষীবন র

অধিকৃত্তের পূর্বে জীবকুও (অপর নাম অবৃতকুও), সর্বাপাপনাশন ও সর্বারোগনিবারণ অধিকৃত হইতে এই জীবকুতে আসিরা সর্বাপাপবিনাশার্থ এইরূপ মন্ত্র পাঠ করিরা ছান ক্রিবে. •—

> ওঁ ছাতা ক্লীখনেৰাক বাৰ্ক্সীখ ব্যাক্ষিতন্। বালহানি নমস্বতাং সৰ্বলোকৈক্ষীখন । হন চূড়াৰণিক্ষ হি অনুত ডাং শিকানাকং। ক্লমং মে চূষিতং বাড়ু মূকিং দেহি সলামৃত।

জীবকুণ্ডের দক্ষিণে সর্ব্ধসৌভাগ্যপ্রদ সৌভাগ্য নামক কুণ্ড আছে। সর্ব্ধপাপবিনাশ ও সর্ব্বসৌভাগ্যলাভের জন্ত যাত্রী। এইরূপ মন্ত্র উচ্চারণ করিবা সৌভাগ্যকুণ্ডে সান করিবে'—

ওঁ সৌভাগ্যাভসি ষয়ত সৌভাগ্যসুপ্ৰায়তে।
সৰ্বসৌভাগ্যসংৰুভো ভবেছু: লয় লয়নি র
পাৰ্কতীবেদসংভূত মহেলাজসমূত্ৰ।
ঘৰানিজানতোহ সাভং সৌভাগ্যং চাত সৰ্বলা ঃ ◆ ◆

- (২) সাদা দর্ভোগকেনাগি সর্জাপাগৈ অস্চাতে ।

 দারকুওছ পূর্বে তু ভাবে সিদ্ধনিবেবিতে।

 অতি ওক্তৈরবং কুওং সর্বাগপঞাগাননর ।

 ওতো গলেররো ভঙ্গা কুওং ভৈরবসংক্রিতন ।

 গৃহীতা ভজ্জাব ভঙ্গা ব্রনেতর্গীরবেং । + +
- (॰) অধিকৃতং সহাপ্ৰাং সর্কাণাশপ্রশানন্।
 অতি তৈরবকুওত পূর্কামিন্ বৃদিসভাবা: ।
 ভডোঃ মিকুওপরনা বর্তসংহ্রন মানবা: ।
 অভিবেকং প্রকৃতি ব্রেণানেন ভত্তিত: । •
- (a) অগ্নিকৃতক পূৰ্বে ডু জীবকুতং মুনীখরা: ।

 সর্বাধনননং চাতি সকলোগনিবারণন্ ও

 জীবকুতং ততো গচ্ছেনজোগদেন ততা বৈ ;

 সানং সুবাং অভারন নিয়েশনাধাণভূতাঃ । « »
- (e) সৌভাগ্যসংক্ষিত কুওনতি তথা বিজোৱবাট । প্ৰতিক্ৰ যুক্তিৰ নীৰকুণ্ডক সৰ্বসোভাগ্যবহন্ত হ

পরিমুখ্যের বন্দিনে পাশবোচনী বৈভারক, ইহার জলপার্শে পাশসভট হইতে মানব মুক্তিলাভ করে। এবানে এইরূপ মর্থাঠ করিরা বান করিতে হয়,"—

র্ত বনকারে মহাবোরে তথা বৈত্যনী নাই।

সা বং নাই মহাবোরা প্রানীক জানির্ভব ।

ভাং করিবারি ভজাহং প্রনীব ভানপুঃবিভব ।

শানিকারি মনের বেনি সর্ববাশাং প্রধানর ।

নার জীপানি হে অব্যে নাং প্রানীক ক্ষেত্রতারি।

পুনর্বাহং ভরিবারি ভাকা বৈত্যকাং নাই।

ব

এই ক্ষেত্রে ক্ষারকুণ্ডের বক্ষিণে পাপহরা নামে এক সর্বা-পাপহরা নরিং আছে। বৈভয়নী পার বইরা এখানে আসিরা এইরাশ বর পাঠ করিরা লান করিতে হর,1—

> ভ তিকুভনিংসতে দেবি হরাভিষেকভারিকে। নারা পাণ্ডরাসি বং নার পাণ্ডরা কব। লবকোটন্ডমেশ বং পাশং সমুপার্জিতন্। তরাশরিব। মাং পাত্তি ব্যক্তমুদ্ধানিরে।

তৎপরে ব্রহ্মকুণ্ডে আসিবে। জীবকুণ্ডের ইপানে ব্রহ্মকুণ্ড প্রতিষ্ঠিত, এই কুণ্ড মানবের ভোগমোক্ষপ্রাহ ও সর্বাপাশ-নাশক। ব্রহ্মকুণ্ডে সাম করিয়ে এই মন্ত্র উচ্চারণ করিবে'—

> ত এজন্ চড়ুম্বোংগি বং সকলৈবৈক পুজিত: । দেবানাং জনক: জীনান্ সৰ্বপাপক্ষং মুদ । ক্ষঃ নিবার লাভার সর্বপাপহারা চ। এজবিক্ষরপার ফুডাং নিতাং নমো নব:। স্বৰূপ নহালের ক্ষরিভানকারক:। বর্ষকার ফুডং পাগং ক্ষরাপর নেবনাব।

ত্ৰমনুষ্ঠেম পূৰ্বভাগে বেডগল। নামে সর্বাণাপনাশক একটা মুখ আছে। বেডগলায় আসিয়া লান ও এই মন্ত্রটী পাঠ করিতে ইয়^{*}—

> ভক্ত নৌভাগাৰুভেংশি নয়: প্লানং নগাচরেং। নৰ্বাণাশবিদালার্থং নবংনোভাগাবৃদ্ধরে । ৫ ৬

- () विषय व्यक्त्वविषयः निमान्यक्षी ।

 जीवायमा नामा मुकार मक्षापमधर्मनार । •
- (+) चनित्र्याकारः त्रांचा नाता गांगवता नित्रः। सर्वगांगवता काचि जांत्रपूचना चन्त्रिः। चरवा गांगवताः काव्य नर्वगागारकानीत्। जात्रका चर देवकातीः व्यागात्वन वावयः । • •
- () वीरक्षण नेपांत उपकृषः विक्रिक् । कृषिपृष्टि सार नृगायि नर्वारशासक् । उपकृष्ट क्या पाण गांगासक्ष्मीस्तर । • •
- (>) বেতৰপোট বিবাজিং মূক্ত নৰ্বাৰনাশনৰ । পতি ক্ষেত্ৰসূত্ৰণ পূৰ্বকাৰ বিভাইনা ।

ত বৈভাগে বৈশি গলৈ ব্যক্ত সকলোককলোককলে ।

ভূমিটে বং প্রনাণালচিক্ত কলে বিভাগিকসালকলে ।

সলাকে সম্ভাগে ক্ষর্থনিকারে থানিকে পর্মনার্লে

কবো নিবাবকলে হর মহ ছবিতা লোক্দেবীকরণে র

বেতনীর্ভিবহে বেতগলে সর্কাবিলালিন ।

জ্ঞানোট্রকার পাগং হর ব্যক্তশব্দতে ।

অ্ঞানোল্লাকতো বাণি ব্যরা ছড়তং কৃত্ত ।

তং সর্কাং হর যে বেবি বেতগলে স্থো ন্যা ন্য: ।

বেতগৰার উত্তরে পূত্র, ঐবর্থা ও অ্থওদে অক্ষয় নামে এক বট আছে। এই বট বৃক্ষ প্রাবক্ষিণপূর্বক তাঁহাকে শিবভাকে ভক্তি চিত্তে এই মত্রে পূকা করিবে''—

> ওঁ হরিবরত বৃক্তের হরষ্তিবরাক্ষর। করবৃক্তবরণোহনি বব গাপকরং কুল।

বট বৃক্ষের নিকটে মাধক দেব অবস্থিত। তাঁহাকে দর্শন করিলে অনারাসেই মুক্তি লাভ হয়।'' তাঁহার পূজামন্ত এই---

> ওঁ বীৰলাখয দেবেশ ধৰ্মকাৰাৰ্থযোক্ষণ। সৰ্বেষয় অগন্ধাম দেখদেব নৰ্বোহস্ত তে।

মাধবের নিকট বহু দেবতা সমুপন্থিত, গছপুশালি ছারা তাঁহাদেরও পূজা করিতে হয়। তৎপরে কালবেদ্ধকে পূজা করিবে। খেতগলার দক্ষিণে খেতগলার কলের নিকট ব্ধরণী ধর্ম অবহিত, গছপুশালি হারা তাঁহার পূজা করিলে চতুর্কেদ পাঠের ফল হয়। ^{১২} মন্ত্র এই—

ত্ব কুডাদিব্ধরণার স্থানাদিরভরণিশে। ধর্মাদি ক্লরণার ব্যভার নলো নম:।

বেতসভাং ততো পজেছে তপুলৈয় অপুনাতান্। তত্ত সানং নহঃ কুৰ্যাজনুমানন কঞ্চিতঃ । . . ।

- (১০) পত্র আছং প্রকৃষ্টত শিল্পাই বভনাবন:।

 যথা পজা চ বিংশ্রাজো বানং বলাং ননাবিজ:।

 যটভনে নহানকি নানাকন ইন্দ্রীভিজ:।

 উত্তরে বভনাবলাং পুলোকন্তিবনাবল:।

 নির্বাভ বিভিন্ন কর্ম কটনুক্তং প্রপুল্য চ।

 কৃষ্ণ নাবনিকাং ক্ষরা নির্বাভনান সংস্কৃত্বং ৪ ৬ ৩
- (১১) বটবুজনদৈশ জু বাধবং নে মহোন্তনাঃ ৷ এশভাতি মুনিমোটায়োনাং মুক্তিঃ করা বিকা ৪-০ ৩
- (>२) नायरक वरीत्राकृ गंबीन् तायान् नायरकः । नत्त्रवा नकत्त्रातिकः कावत्त्रकः जूनकरः । वर्षित्तः त्वक्वत्तातः त्यक्वत्रकार्वाकितेकः । कृत्यकातः गंबीकाककृत्तित्वनः सत्त्वः । • •

বৃহত্তে আলিকন করিলা পরে ব্যৱস্থাকে করি করিবে। পাত মর্যাদি ধারা অভিবেদ করিলা ব্যাত্তমে পূবা করিবে। সুব মূর্তির পশ্চিতে বেদী মধ্যে ব্যােকার্ডের ক্ষতিত। বি জীকার নয়—

> ওঁ পাৰ্কটীভাত দেকে ভক্তজাগণভাক হ বক্তেজন নৰক্তসং প্ৰবানস্কলিকে । অধাৰকাৰ্কিভেনান প্ৰনাক্তিন্ত্ৰন । গোৱীল সৰ্বজীবাছন্ পালসংবানকালক । সংসানকাৰণাভীত গুণাভীত গুণাক্ষ । বিৰূপাক নৰ্ভভাং ন্যক্তসং মহেশ্ব । সৰ্বভ্ৰাই জিনেজায় জিন্নপাণনে নবং ।

এই অষ্টাৰক্র-নির্নিত পরম রমনীর পুণ্য শিবক্ষেত্র বে প্রাণাম করে বা পরণ করে, সর্বাপাপ হইতে ভাহার মুক্তি হব। '' পূর্ব্বে যে সকল কুপ্তের উল্লেখ করা হইল, কিরুপে ঐ সকল কুপ্তের নামোৎপত্তি ঘটিয়াছে, তাহাও বক্ষেশ্বরমাহান্ত্যে বিবৃত হইশ্বাছে। বাহল্য ভরে তাহা আর লিখিত হইল না।

বজেশবনাহান্ত্যে একটা ঐতিহাসিক কথার ইন্নিত আছে—
"শেতরালা মহানাসাং সভ্যবকা বিতেপ্রিয়: ।
সভ্যবকো মহানাসাং সছবান্ দানভংপর: ॥
রালা কৃতবুংগ চাসাং শিবপাদার্কনে রত: ।
মনলবোটকং নাম পূরং তক্ত প্রতিন্তিত্য ॥
নিতাং বজেশবারাধ্য ভূত্কেংসো শেতপার্থিব: ।
আরাতি নিতাং স রালা পকবোলনমাত্রকম্ ।
পূনরেব গৃহং বাতি দিনেনৈকেন ভূপতি: ।
তমেবাসো বরং প্রাণাদ্বজেশো ভক্তবংসল: ।
শক্রন্ লাই ছুরাধর্ষান্ ব্রহণ্যো তব সর্বালা ॥
দেবছিলপ্রিয়ং দল্প ভূক্ক্রু রাল্যমকতকম্ ।
আর তে বিপুলা কীর্ত্তিরাহুলান্ ধনবান্ ভব ।
সর্ব্বেধ্যসমার্কং ভবনং তেখন সর্বাধিপঃ ।
ভূতীর প্রপত্যে ভূলা ভক্তিমুক্তিন চেতসা ॥

(> +) करका वृषकमानिका मरगटकावणीयम् । क्रम्यकिनिका शासकीयाः शृबद्धकः वयामगाव । रपनीयवासकः स्वयः वृषककः कृ शनिदयः । सकनुभाविकिककाः स्टब्स्टब्स्याः भियम् । + + জ্ঞা থাসলো ভগৰান্ প্ৰথমন্ প্ৰদেশকা ।
জ্বাচ চ ভণা শ্ৰেচ সূচভক্ত বিভেতিকা ।
বন্ধ বন্ধ নাজ্জে যতে বনসি বৰ্ততে ।
ভবেৰ ভে প্ৰবছানি সভাং সভাং বৰামাৰং ।
নাজোগাচ ।

বৰি তেবছাৰো বেব দানি কুতোহতি হৈ প্ৰছে।
প্ৰবন্ধক তথা মৰং ছৌ-বনৌ কিছবান হৈ।
সমীপে তব বেবেশং লেজেহনিন্ কুজিমুজিকে।
সভেবিবাজি মনাম প্ৰথমং জ্বাসক্তম।
তব সানিধানতে চ কেবি মে জিপুনাজক।
ইতি ক্ৰমা মহাবেশ উবাচ বুপসক্তমন্।
নিধা কৰা।

বস্তুবং নৃপতিশ্রেষ্ঠ বজাতে বজিরীনৃশী।
ন গোতং প্রথবৌ বজাবর নাজং প্রবজ্ঞতি।
দুগ্ বেতমহারাল সংসদীপে তু জাক্ষী।
নানাতীর্থেন সংপ্রাব্রো জালার মন নিত্যশং।
ভারেজ্য ভবেরারা বেডগলেতি বিশ্রুতা।
ভবিরাতি বিলোকেংলিন্ থাতো নৃপতিসভম।
অন্তর্গানে মন পদং প্রবাজনি ন সংগর্গঃ।
তব বে চরিতং সগৈঁ: প্রোভান্তি ভূবি হর্মভন্।
বং কৃতং পরসং ভোবাং পঠিকান্তি চ বে নরাঃ।
বর্গতালো তবিভান্তি ন বাজন্তি ব্যালার্ক।
বেতসভান্তলে লাখা নংস্থীপে চ বে নরাঃ।

शिक्षः नाक्रकि रक्यार देव श्रवाद्याक्रममः करवर ॥" (२ क्यांत्र) সভারাদী, সভ্যপরামণ, বীর্যবানু, জিভেজির ও দরালু বেভ नारम এक प्रांचा हिरणन, जिनि शिवशानार्कनम् । मक्नारकारे নামক লগরে ভাঁহার রাজধানী এভিষ্টিত ছিল। ভিনি প্রভাত থোজন পথ জাসিয়া বজেবরের পূজা করিয়া কিরিয়া গরে গিরা আহারাদি করিতেন। তাঁহাকে ভজনবংস্ল ভগবান্ बर्ज्जन्म अरे यत्र रित्राहित्तन त्य, भूमि नक्नार्गत प्रताधर्व छ गर्भरा उत्तरा (ता उत्तरा प्रमुद्धक) रक्षः प्रदर्शिकत व्यव বস্তু দান করিবা অক্টাকে রাজ্যকোগ কর ে জোনার রাজ্যবন गर्देशवर्गनमान्छ रहेक, पृति विश्वन क्ष्मवान, आद्वान, ६ কীর্তিমান্ হও। ব্যঞ্জনমের বচন তনিয়া বেভ নয়পতি ভড়ি-বুক চিতে প্ৰণত হইয়া ভগৰানের ভূটিবিধানের মত তব আরভ कतिराम । जनवाम् बद्धान्य व्याना रहेकी कविरामम, बार्टकार । ভোষার বাষা ইক্ষা আর্থনা কর। ভোষার বর বিভেছি। बाका करिएनन, यनि प्रस्कात व्यक्ति सक्ना रहेका थाएक, करन क्रेंग वर विन । अहे अग्राटकाळ कामात्र विकास आयात्र

^{(&}gt;a) बातम विविधा यस गातकराज्यका निष्यु । त्यांच्या मर्वाक्यम् पूक्ताः व्याक्य विविधाः । देशः (कावकाः वद्याः गूरावः कमनिर्विधाः । यः भावनः व्यवत्यः वर्ताः ग्राम्यः वर्ताः वर्ताः वर्ताः ।

প্রাণাত হইলেও আমার নাম কেন থাকে এই প্রথম বন্ধ চাই,
এবং তোমার নিকটই কেন আমার অভিন কাল শেব হন, এই
বন্ধও চাই। শিব কহিলেন, মহারাজ! তুমি বন্ধ, কেহেতু তোমার
ঈল্নী ইচ্ছা হইরাছে; ডোমার অভ বন্ধ লইতে লোভও হইল
না। মহারাজ খেত শোন, আমার নিকটে বে আহ্বী রহিরাছে,
আমার আমার বাহাতে নানা তীর্থের সমাগম হইরা থাকে,
আফ হইতে তাহা তোমার নামার্থসারে খেতগলা নামে খাত
হবৈ ও তুমিও অভকালে আমার পদ লাভ করিবে সম্পেহ
নাই। তোমার চন্ধিত্র বে গুনিবে ও তোমার ভোত্র বে পাঠ
করিবে, তাহার অর্পলাভ হইবে, তাহাকে আর বমালরে বাইতে
হইবে না। আমার নিকট এই খেতগলাকলে লান করিবা বে
শিও লান করিবে, তাহার গরা প্রাছের সমান কল হইবে।'

উভ্ত প্রাচীন কাহিনী হইতে মনে হইবে বে, নামা উক্ষ-প্রস্রবণশোভিত এই নিজ্ত ছান বহু ধবি তপৰীর প্রির নিকে-তন বলিরা গণ্য হইলেও বেত নামে কোন হিন্দু রাজার যারেই এই পূণ্যকেত্রের প্রতিষ্ঠাও তীর্থ বলিরা পরিচিত হইরাছে। এখনও নানাছাম হইতে বহু যাজী এই তীর্থ সক্ষর্ণনে গমন করিরা থাকে। এই স্থান অভি সাম্ভাকর, এখানকার কুওরাণী উক্ষ প্রস্তবণসমূহের জল প্রকৃতই নানা রোগনাশক। বা্রোক্তি (জী) বজা কুটিগা উক্তি:। ২ কাক্জি। ছার্থ-উক্তি।

"অথ বৃত্তে বৃহবাৎসর্গে দাতা বক্রোক্তিক্তিঃ পদা: । বাদ্ধগানাহ বংকিঞ্চং মরোৎস্টেড নির্দ্ধনে ॥ তৎকিঞ্চিদক্তো ন নরের বিভাজ্যং বধাক্রমন্ । ন বাহুং ন চ তৎকীরং পাতবাং ক্রেনচিৎ ক্রচিং ॥" (কানধেত্বকরতক্রপুত ব্দ্ধপ্রাণ)

কুটিলোজি । বাকা কথা ।

"বাদী বাাৰবাং বিটনৰ বিছ্ৰাং গৃষ্টঃ প্ৰবিষ্টঃ সভাম্
কল্পলম্বিটিঃ লালাং পটুবটুজ ভদৰক্ৰোজিভিঃ ।

ব্ৰীডঃ সন্প্ৰাসমেতি গণকো গোলানভিক্সভ্যা

ক্যোভিৰ্কিংসন্দি প্ৰসন্ভাগনকঃ প্ৰশ্নপ্ৰপাক্ষভিঃ ৪°

(সভাজনিনামণি-গোলাধ্যার)

ৰক্ষা অধীতরগ্ৰহণেন কৃটিলা উক্তিঃ। শলালভার বিশেব। কাব্যাদিতে শ্লেকাকাপ্রবাদ বা ব্যক্তোজ্ঞিক বজাজি বলা বার। সাহিত্যকর্শনের ১০ন পরিক্রেকে ইহার বিবর এইরূপ কালত আছে—

"অন্তভান্তাৰ্থকং ৰাজ্যমন্তৰা বোলনেগু বৰি ।
অন্তঃলেকেশ কান্ধা বা সা বক্ৰোজিকতো বিধা ।"
(সাহিত্যকৰ্ণৰ ১-০৩৪১ প°)
সাধান্ততঃ ৰজ্যোজিতে ইইউনিৰ্ধ প্ৰকাশ কৰিবা বাকে।

উহার একটা শ্লেবার্থক ও অগরটা কাকু অর্থবাচক। নিয়োক উদাহরণে তাহা স্পাটাকৃত হইরাছে।—

"কে বৃদ্ধং খূল এব শহুতি বৃদ্ধং প্রাপ্নো বিশেবাপ্রবঃ
কিং ক্রতে বিহুগঃ দ বা ফলিপতির্বজ্ঞান্তি ফুপ্রো হরি:।
বামা বৃদ্ধহো বিভূষরদিকঃ কীদৃক্ মনো বর্ততে
বেনামান্ত্র বিবেকপ্তমনসঃ প্রতেব বোবিদ্ ক্রমঃ ॥"

'কে বৃরং' তোমরা কে? এই প্রশ্নে উত্তরদাতা বলিল, আমরা জলে মহি, সম্রতি দ্বনেই আছি। এখানে 'কে' টাকে কিম্পল্যের প্রথমা বিভক্তির বছবচন-নিশার গ্রহণ না করিরা জলবাচক কং শব্দের সংগ্রমী বিভক্তির একবচম-নিশার 'কে' পদ প্রহণ করিয়া উত্তর সাধিত হওরার বক্রোক্তি ঘটিরাছে। প্রাকৃত্তরে—'প্রশ্নোবিশেষাপ্ররং' পদে জ্বিজ্ঞান্ত জ্ঞাপন করা হইরাছে। এ দ্বলে 'বি' পক্ষী ও 'শেব' অনন্ত (নাগ) এই বিশেষ অর্থ গ্রহণ করিয়াই উত্তর হইরাছিল; বিশেষ শব্দের সাধারণ অর্থ গৃহীত হয় নাই।—তবে কি ভোমরা বলিতেছ, আমরা পক্ষী, অথবা সর্প বেধানে হির শব্দ করিয়া আছেন ? এখানে বিশেষ শব্দের সাধারণ অর্থ গৃহীত হয় সাধারণ অর্থ পরিতাক্ত এবং বি-শব্দে পক্ষী ও শেব শব্দে সর্প অর্থ গৃহীত হওরার বক্রোক্তি হইরাছে।'

ছিতীয়ার্দ্ধে—আহা! তবে কি তোমরা বামা, অর্থাৎ প্রতিকৃল
অর্থ গ্রহণ করিরা থাক, (বামা শব্দের একটা অর্থ প্রতিকৃলবাদী)।
কারথ আমরা এক অর্থে প্রশ্ন করিছেছি, তোমরা অন্ত অর্থে
গ্রহণ করিতেছ। উন্তর্নবাদী বামাশব্দের প্রতিকৃলবাদী অর্থ
গ্রহণ না করিরা বামাশব্দে সাধারণক্তঃ ত্রী অর্থ গ্রহণ করিরা
বলিল,—ওহে প্রতারণাপটু, তোমার কিরুপ কামনা হইতেছে,
বে কামনোদিত হওরার বিবেকশৃক্ত হইরা পুরুবতে তোমার
নারীল্রান্তি উপস্থিত। এ স্থানে বামাশব্দেরও চুইটি অর্থ ১ম ত্রী—
২র প্রতিকৃলবাদী। প্রশ্নকর্তা প্রতিকৃলবাদী অর্থে প্ররোগ
করিরাছেন, কিন্তু উন্তরনাতা ত্রী অর্থ গ্রহণ করিরা উন্তর
বিতেছেন, ইহাই বজ্লোক্তি ক্রিই অর্থ ব্যরের বোগ হেডু ইহা,
সভল প্রের বলিরা ক্ষিত্ত। অক্তপক্তে ইহা অক্তল।

"কালে কোষ্ণিগৰাচালে সহকার মলোহরে। কুডাগদঃ পরিভ্যাগাৎ ভঙ্গাদেজে ন গ্রতে ॥"

কোনিল কলরৰ পরিপূর্ণ আম্রবৃক্ত বিকলিত মনোহর বসস্ত কালে কডাপরাধ কাছকে ভ্যাগ করিরা কামিনীর চিত ব্যথিত হইডেছে না, বস্তুতঃ ব্যথিত হইডেছে। এবানে নিরেধার্থে নঞ্শক গ্রেকু হইরাছে, কিছু অপরপক্ষে কারা অর্থাৎ ক্যনি-বিশেব বারা বিধি অর্থাও সংঘটিত হইডেছে।

ব্যক্রোলক (গুং) একটা সঞ্জান। (ক্থানরিৎসা প্রাণ্ড) ২ জ্ঞানীর একটা নরর। (ক্থানরিৎসা ১০০০) वाक्राकिका (बी) वाकार्कारकाका देखि, क्रेन्। वेवस्वरामन হি-ওঠত বক্ৰতা লাহতে **অভোহতাতবামন্। বৰা কক্ৰ ওটো** বজা:। ততঃ বার্থে কন্, টালি অভ ইম্বৃ। > অনুটারহাজ, ঈবদ্ধান্ত। পর্যার-স্থান্ত। (হুর্নাদান) বৰু (এ) ভিৰ্যাগ্পামী। ইভড্ডঃ পৰিত্ৰমণীৰ । নভাবির ভার বক্রগতিবিশিষ্ট। "প্রাগ্রবো নন্তবোহন ব**ফা ধ্বলা" (বক্** ৪।১৯।৭) 'रका न राना हैर धरवा कृषानाः धरःत्रिका' (त्रात्रण) বৰুন্ (ত্ৰি) খণবক্তা। ভোতা। "বেপী বন্ধরী যত নৃ গী:।" (বন্ধ ভাংহা ে) 'বেশী বেশো याशास्त्रिकः कर्म । उष्टी वक्ती खनानाः वख्नीः; (नावन) বৰুরী (জী) গুণবক্তী। (ঋৰু সাসংগ্ৰু) বক্লস (পুং) বৈভকোক মন্তবিশেষ। প্রাচীন গ্রন্থাবিতে ইহার বৰুস ও বন্ধস পাঠ পাওরা যায়। [বন্ধস দেখ।] বক্ষ, রোধ, কোপ, সংঘাত। ভূা° পর• রোবে অক° সংহতৌ সক° সেট্। বক্ষতি। **বৰক, বৰক্ষিণ, বৰক্ষ্য, বৰক্ষে,** वबक्तितः। বক্ষঃ [म्] (क्री) উচ্যতেহনেমেডি। বচ্ (পচিবচিভ্যাং সুট্চ। উণ্৪।২১৯) ইতি অন্তুল্ ৰক্তেরসূন ইতি রমানাথঃ ধাতৃপ্রদীপশ্চ। > অঙ্গবিশেষ। কণ্ঠের অধোভাগে হৃদরোপরিস্থ যে দেহাংশভাগ তাহ। বন্দ বলিরা পরিচিত। ইহাকে চলিভ কথার বৃক বলে। পর্যার ক্রোড়, ভূজাত্তর, উর:, বংস, অহ্ব, উৎসন্ধ, বহ্নণ, গণদীঠক ও বহ্নস্থল। গরুতৃপুরাণে বক্ষের শুভাশুভ লব্দণ লিখিত আছে। সমবক্ষোবিশিষ্ট अन्नवान् शैनवरकावाकि वीत्र ও শক্তিশালী এবং विवयवक निःश्व ७ मञ्जबादा निधनशाश हरेरवन । "অনুবান সমবক্ষা: ভাৎ পীনৈর্বক্ষোগভির্মিত:। बक्काछिक्तिबरेमिनिःयः नत्त्वन निधनख्या ॥" (পরুতৃপুরাণ 👐 ম:) (शूर) वरुकीकि वरु-🍪 विरुधियां 🗢 नाम्हलिन । 💆 🖰 sizze) ইতি অস্ত্র, সুট্চ। অনভান্। (উচ্ছলদন্ত) বক্ষণ (অ) শক্তিশালী, বলদারী। (क्री) বক্ষতানেনেডি। वकरत्रावमस्टराङाः नाष्ट्र। > वक्ता (अक्ट°ः) २ वादकः। "क्रियात्र वन्त्रनामि व**रेकः** " (बक् भर**ा**७) 'বক্ষণানি বাহকানি ভোত্রাণি ক্রিয়াত্র করবাম।' 🧸 (সারণ) ७ व्यक्ति । (क्ष्कृ el>ale) बिदार ग्रेग् । व्यक्ता । বাহ্নপা (খ্ৰী) ১ নদী। (বস্ আওবাসত) ধনদীপর্জ। (বস্কুসনাংভাসস) ० डेबन । "ना यः श्राचार वनप्तर यानादा" (प्रवर्ष ३६१२१) ।

বক্ষণী: (খী) বন্দন জিলাং তীপ্। > विकासी। २ पानल-पर्दिनी। "সরস্বতী সময়: সিমুর্রার্বিভিন্ন হো মহীমহসা বন্ধ বন্ধনীঃ।" (44 > 10619) **चक्र्यान्ह**।(क्रीः) पश्चिमाया शनिष्ठः (**पन्** दाप्रशद) 'बरको क्रिकः' (मापन) वक्का (गूर) > क्लाशन । २ द्वि अकान । "হৰ্ষকেৰ বন্ধৰে। জ্যোতিরেবাম্।") बक् ११७८१४) वारकः। यहमीत्रः भन्नीतः। "चन्त्रमः दृश्छ। वच्ययस्माण"(चक्षाः।) तुर्का शकुरकन स्कर्मन त्वाहरगम चनतीहत्रशान । यथ वक्टलरनाक्षणकर्गमः क्रमाधिवाहरकमः (चारवर्गः (नात्रप) वक्तम् (प्रः ही। ० क्वरतानतिक त्रवकात्र । २ हव । [वक्तः राथ ।] वक्कः मः समिती (जी) वक्कि मध्यम् छ हेछि मध्यम् भितः। ন্ত্ৰী, পদ্মী। व्यक्षक्ष्य (ही) ३ वकः। २ वन्तः। বক্ষস্তটাঘাত (পুং) বক্ষসঃ ভটঃ বক্ষটঃ ভেৰু আঘাতঃ বকঃ ৷ স্থাপরি স্ট্যাঘাত। বক্ষী (খ্ৰী) স্থিপিখা। "ভা অঞ্চ সভূৰৰো ন ভিন্মাঃ কুসংশিত। বজ্যো ৰক্ষেত্ৰাঃ।" (बक् ८।२२।८) 'स्विकंश्खीफि वत्का। खानाः।' (नात्रण) व्यक्तु, चनामध्यतिष रेक् (Oxus) नवी। वरक् वा वक्क् शार्रेश्व (नेषा यात्र । [करकू (वेष ।] বক্ষোত্রীব (পুং) বিশামিত্রের প্রতেষ। (ভারত ১৩ পর্ক) ব্যক্ষাক্স (क्री) বন্দান বাহতে ইতি বন-ড। ১ তন। "মধ্যত অবিমানমেতি জবনং বক্ষোজয়োর্যক্তাং দুরং বাজাদরক লোমলভিকা নেঞার্ক্সবং ধাবজি । क्यार्गः पत्रिवीका मृख्ययमात्राकाणिविकः व्यपाद व्यक्षानीय नक्ष्मेश्वर विश्वरक सिन् र्रेमर व्यक्षकः ॥" (সাহিতাদর্শ ৩ পরি) यरकामकाम् (प्र) कृष्णकानीम व्यविकामस्वतः। ৰুক্ষোব্ৰহ (পুং) বন্ধনি রোহতীতি হহ-কঃ। ভন। (ত্রিকা') "বা শাবনতকণি পীৰেনতকোঞ্চনোৰ্ডচেণ জঞ্চনৰ্নন্ । নিশোকৈরণি শোভা মহোতু কবীতিকবুকৈ: #" 🦠 া (আর্ব্যাস্ট্রপতী ৪৯৬) बक्तामान (जि) खर्निष्ठर क्यमीन विनन । वह शतकाः क्रमान-প্রভাবেন বিশার: ব্যা, আর বন্দাদাশবচনাৎ স্বয়ন্ত্রাত্রা व्याधारम् वस्त्रीयम् । (व्याप्तिकक्) २ वाहा, वक्का । अस्ताता वाष्ट्र । नकृति । वि) गिक्काका। "रेद्धा वाक्क क्किनिः" (क्क् भारताक) | क्कामांगद । ही) क्रिकारमह क्रांके मही।

বখ, প্ৰতি, গতৌ। জাৰি' প্ৰটেশ্ব সৰু সেই। লট বথতি।

নিট্—বৰাধ, বৰগত্য বখিতা। পূঙ্ অবৰীং।

বৰ্থ, ই স্থানি। জ্বা পদ্ধ সৰু সেই; ইছিং। ই, ৰখাতে।

স্থানি স্তো। (জ্বালান)

বগ, ই, ধঞা। জ্বা পর জক' সেট। ই বল্যতে। বথ তিয়ার থিলিকী, ইতিহাসপ্রসিদ্ধ বলবিজ্ঞো মুস্নমান-নেনাপতি। [মহম্মন-ই বখ্ তিরার দেখ।]

ব্যাড়ী, (ৰক্ষীপ শলের অপত্রংশ)—প্রাচীন গৌড়রাজ্য ৫ ভাগে বিজ্ঞান, তল্পধ্যে বগড়ী একটা বিভাগ। বরাহমিহিরের বৃহৎ সংখিতার বে উপবলের উল্লেখ আছে, তাহাই বগড়ী বলিয়া মনে হয়। দিখিলয়প্রকাশে নিধিক আছে—

"ভাগীরগাঃ পূর্বভাগে ছিযোজনতঃ পরে।
পঞ্বোজনপরিমিতো ভূপবলো হি ভূমিপ॥
উপবলে যশোরাদিদেশাঃ কাননসংযুতাঃ।
ফ্রাতব্যা নূপশার্দ্দ্র বহুলাস্থ নদীরু ৮॥"
অর্থাৎ ভাগীরথীর পূর্বভাগে পঞ্চ যোজন বিহুত উপবন্ধ।
ফশোরাদি দেশ, কানন ও বহু নদী এই উপবলের অন্তর্গত।

সোনবংশের অধিকারকালে ভাগীরধার পূর্ব্ব, পদ্মার পশ্চিম ও সাগরের উত্তরবন্ধী ববীপাংশ বগড়ী নামে খ্যাত ছিল। এখন ভাশীরধার পশ্চিম পার রাঢ় ও পূর্ব্ব পার বগড়ী নামে খ্যাত। রাঢ় ও বগড়ী বিভাগের বিশেষত্ব এই বে রাচ় ভূতাগ শৈল ও কল্পরায়, অধিকাংশ স্থল ভালা ও উদ্র সমতল, কিন্তু বগড়ী ভূভাগ ইহার সম্পূর্ণ বিশরীত। ইহার সমত্ত জমিট নাবাল। বক্সার সহজে ভূবিরা ধার এবং সর্বাংশে উর্ব্বরা।

[রাচ ও বক্ষীপ দেও]
বগর, চম্পারণ্যের অন্তর্গত একটা নদী। (ভবিষা ব্রহ্মণ ৪২।১৪১)
বগলা, বগুলামুখী (সী) দশ মহাবিভার অন্তর্গত দেবীবিশেষ।
কিরপে এই দশবিধ শক্তিমূর্ত্তি আবিভূতো হইরাহিলেন, তাহা
দশমহাবিভা শব্দে বিবৃত হইরাছে। পুরাণাদি ব্যতীত তর্নশান্তেও
বগলাদি দেবীর উৎপত্তি বিবরণ দৃষ্ট হর। [দশ মহাবিভা দেব]

এই মহাদেরীর পূলামর ও পূলামাছার। তরাদিতে কীর্তিত রহিরাছে। অলুসারে দিখিত আছে, ইহার মর সাধকবর্গের হিতকর ও প্রেক্তের তর্জনকারী ক্রমারক্ষণ। এই মত্তে সকলকে ক্রমিত ক্রমেতে পারা বার। এমন কি, বায়ুরও গতিরোধ ক্রমার থাকে।

শ্রন্ধারং বং প্রব দ্যানি সভ্যপ্রভারকারণন্। সাধকানাং হিভাগার ভঙ্কনার চ বৈরিপান্। বজাঃ শরণমাত্রেণ প্রনোহণি হিলারতে। প্রপাবং হির্মারাক তভাত বগলার্কির ভবতে সর্বহুটালাং ততোবাচং মুবং পদন্।
ভব্তব্যতি ততো লিবলাং কীপরে,ত পদব্যন্ ।
বৃদ্ধি নাশার পশ্চাত্ ছিরমায়াং সমালিথেও।
লিথেক পুনরোকারং বাহেতি পদমন্ততঃ ॥
বৃদ্ধিনাক্ষরী বিতা সর্বসম্পৎকরী মতা ॥
ভিরমারাং হলীং। তথাচ।
বিহুলিনক্রমারাবৃক্ ভিরমারা প্রকীতিতা ॥

"उँ स्लीः वशलाम् थि नर्क्ष होनाः वाहः मूक्तः खड्दाः खड्दाः खड्दाः खड्दाः केलब कीलग्र वृद्धिः नालग्र स्ली उँ खाइ। এই वह जिल्लाक्त मञ्ज नाधकरक नर्कानल्यः नान करतः। व्हितमात्रा लस्स स्ली वृद्धिः व्हित्सात्रा लस्स स्ली वृद्धिः व

তন্ত্রাস্তরে চতুত্রিংশদক্ষর অপর একটা মন্ত্রের এইরূপ বিবরণ লিপিত আছে যে,—

"বহিংহীনেজ্রয়ঙ্ মারা বগলামূথি সর্বযুক্। গুষ্টানাং বাচমিত্যুক্তা মুখং গুৰুত্ব ফার্ডয়েও॥ জীহ্বাং কালয় বুদ্ধিং তৎ বিনাশয় পদং বদেও। পুনববাজং ভতন্তারং বহ্নিজারাবাধভবেও। ভারাদিকা চত্ত্রিংশদক্ষরা বগলামুখী॥

"ওঁ হলী বগলামুখি সর্বজ্ঞানাং বাচং মুখং শুস্তর জিলা কীলয় বৃদ্ধিং বিনাশর হলী ওঁ বাহা।"

উক্ত মন্ত্ৰদ্বের পূঞাপ্রণালী এইরপ—প্রথমে সামান্ত প্রা-পদ্ধতির নিয়মান্ত্রস্থারে প্রাতঃকৃত্যাদি প্রাণায়ামান্ত কায় সমাণন করিরা অ্যাদি স্থাস করিবে। ব্যা—মন্তকে নারদ্থময়ে ননঃ। মুবে তৃষ্টুপ্ ছন্দনে নমঃ। কদনে বগলামুখ্যৈ দেবতারৈ নমঃ। গুছে হলী বীজার নমঃ। পাদধরে আহা শক্তরে নমঃ। এই মন্ত্রের ঋষি নারদ, তৃষ্টুপ ছন্দাং, দেবতা বগলামুখী, বীজ হলী ও শক্তি আহা।

"নারবোহত থবিং মৃদ্ধি তৃষ্টুপু ছব্দশ্চ তর্থে। শ্রীবগলাম্পীদেবীং হলরে ক্রিক্রেনস্ততঃ। জ্রী বীবং গুহুদেশেতু বাহা শক্তিত্ব পাদরোঃ।"

অতঃপর অক্সাস, করস্তাস করিতে হইকে। যথা—ওঁ হলী অকুটাভ্যাং নম:। বগলামুখি ওজনীভ্যাং কাহা। সর্বাপ্তরীনাং মধ্যমাজ্যাং ববট়। বাচং মুখং ক্তরে জনামিকাভ্যাং হুঁ। ফিহাং কীলর কনিটাজ্যাং বৌৰট্। বৃদ্ধি নাশর হলী ওঁ বাহা করতল পৃটাভ্যাং কট়। এবং ফ্লবাদিবৃ।

দিব্যতম মতে উক্ত মদ্রের চুই, পাঁচ, মাত ও অইবর্ণ বথাক্রমে করাস্থাতি ভাগ করিরা অবশিষ্টবর্ণ সকল করতলে ভাগ করিবে। এই নির্মে করভাগ সমাপন করিরা উপজ্যেক্ত প্রণাগীতে কুলবাদি কচক ভাগ করিতে হুইবে। তৎপরে মুলম্ম উচ্চারক- পূर्वक 'बाय छ बतानिना राजामूची जिलाङ्काः भूमवानि नयः' हेडानि मद्र भूगांवातानि हात्न छात छत्र जावश्रक ।

"वृग्रवार्णव् नशाहि स्वार्टिन्छ मन्डरेवः। कत्रवार्थाक् जनत्त्राः कत्राककानमास्त्रवः॥"

ভতো মূলাতে আত্মভত্তব্যাদিনী প্রবিগলাম্থা প্রীপাছকাং পূলরামি নম: ইতি মূলাধারে। মূলাতে বিশ্বাভবব্যাদিনী বগলা-মূখী শ্রীপাছকাং পূলরামি ইতি নিরসি। বগলাম্থা শ্রীপাছকাং পূলরামি ইতি সর্বাদে।"

ভান তার মত্ত্রবা ভাগ করিতে হয়। সাধক বথাক্রমে মত্ত্রবা ভালি বীর শরীরের অল প্রভালে বিভ্রন্ত করিবেন; অর্থাৎ মত্তকে ওঁ নমা, কণালে হলীং নমা, দক্ষিণ নেত্রে বং নমা, বামনেত্রে গং নমা, দক্ষিণগতে লাং নমা, বাম কর্ণে মুং নমা, দক্ষিণ কর্পে বিং নমা, বামগতে সং নমা, দক্ষিণ নাসিকায় ব্র্বং নাং নমা, মূথে বাং নমা, দক্ষিণহজে চং নমা, দক্ষিণকূর্ণরে মুং নমা, দক্ষিণমণিবত্রে বং নমা, দক্ষিণহজাসুলিমূলে তং নমা, গলে তাং নমা, দক্ষিণভানে রং নমা, বামতানে জিং নমা, হাদয়ে হলাং নমা, নাভিতে কাং নমা, বামতানে জিং নমা, ভালেশে সং নমা, বামহত্তাসুলিমূলে বুং নমা, দক্ষিণ উক্তে জিং নমা, দক্ষিণ জাইতে নাং নমা, দক্ষিণভান্তে শং নমা, দক্ষিণ প্রাপ্রনিমূলে বং নমা, বামাকতে ওঁ নমা, বাম-জালতে হলাং নমা, বাম-ভান্তে বাং নমা এবং বাম প্রাক্রিমূলে হাং নমা।

শরীরে মন্ত্রবর্ণ ক্রাস সমাপ্ত হইলে নিম্নোক্ত ধ্যান পাঠ করিতে হয়। ধ্যান যথা—

শমধ্য স্থধান্ধিমশিমগুপরক্রবেদী
সিংহাসনোপরিগতাং পরিপীতবর্ণাম্।
শীতাশ্বরাভরশমালবিভূবিতালীং
দেবীং শ্বরামি গৃতর্নসরবৈরিজিহ্বাম্।
জিহ্বাগ্রমাদার করেশ দেবীং
বামেন শত্রুন্ পরিপীড়রগীম্।
গৃহাভিখাতেন চ দক্ষিণেন
শীতাশ্বাচাং ছিভূজাং নমামি ॥"

এই প্রকারে ব্যান এবং মনে মনে বেবীর পূজা করিরা বাছ
পূজা আরম্ভ করিবে । প্রথমেই অর্থা হাপন আবন্ধক । অঠাকুল পরিমিত চতুকোণ মন্তল অভিত করিরা তাহার ঈশানাদি
কোণচতুক্তরে ও পূর্কাদি দিকে রক্তচন্দনচর্চিত পূলা ও তপুল
ছারা "মেঁ সালশভরে নমা" এই মত্তে পূজা করিয়া সক্ষমদ বা মন্ত্র
ছারা অর্থাপাত্ত পূল্য করিবে । তৎপরে তিনবার প্রবায় মূল-

ৰত্তে পূকা করিব। পূর্ব্বোক্ত প্রকারে বড়সভাগ করিবে। ভাগার পর ধেন্ত্যুদ্রা ও যোনিযুদ্রা প্রাংশনিপূর্বক অর্থাপাত্রন্থ কলবারা বীর শরীর ও পূকার উপকর্মণ সামগ্রীতে প্রোক্ষণ করিবে।

বগলামুখী দেবীর পূজার বন্ধ অভিত করিবার নিয়ন— "ত্যাত্রং বড়ত্রং বৃত্তমত্ত্রলপক্ষভূপুরাধিতস্ব।"

প্রথমে ত্রিকোণ ও তাহার বহির্জাগে বটুজোণ অভিড ক্রিরা বৃত্ত ও জটদন পর অভিত ক্রিভে চ্ইবে। তাহার ৰহিৰ্দেশে পুনরার ভূপুর অভিত করিয়া বন্ধ প্রভাত করিয়া মূলমন্ত্র ष्ठेळात्रगत्र्वक "७" जाँधात्रगक्तिकमनात्रमात्र नमः এवः पक्तिनन्ना-ननात्र नमः" এই मध्य शृका कतिरव। शक्त शूनकीत शान ক্রিরা পীঠে দেবীর আবাহনপূর্বক 'ওঁ শ্বদরার নম:' ইভ্যাদি পূর্ব্বং প্রক্রিয়ার বড়কভাস করিছে হর। বড়কভাস সমাপ্ত হইলে পুরোভাগে বড়লমত্রে মণ্ডলের পূজা এবং মূলমত্তে অভিমন্ত্ৰিত করিয়া ধেতুমুক্তা ও বোনিমুক্তা প্ৰদর্শনপূর্বক "ওঁ আয়তবায় স্বাহা, বিভাববার স্বাহা, শিবতবার স্বাহা" মঞ্জে তিনবার তিনবিন্দু জল মুখে নিজেপ করিয়া অলুষ্ঠ ও ডার্জনী-যোগে মৃলাজে 'সাঞ্চাবরণাং বগলামুখীং তপ্রামি নমঃ' এই মত্তে তৰ্পণ করিতে হইবে। তৎপরে দাধক ব্ধাসম্ভব উপচার স্বারা দেবীর পূজা করিয়া আবরণপূজা আরম্ভ করিবেন। তথন যদ্রহ यहेटकारणत शृक्षितिक उँ इडिशारेय नमः, व्यक्तिकारण उँ ভগদাপিলো নম:, जैनात्न उँ छगादहादेव नमः, পশ্চিমে उ ভগদিহারৈ নম:, নৈখতে ওঁ ভগপাতিলৈ নম:, বাযুকোণে ও ভগমালিজৈ নম:, ইত্যাদি মত্রে পূজা করিয়া অইবলপলে ত্রাক্রী প্রান্থতি **অষ্ট শক্তির পূঞা করিবে। পরে প্রেভ্যেক প**রাগ্রে 'ওঁ अब्राटेश नयः, ७ विअवादि नमः ७ अक्टिकादेश नमः, ७ अन्ता-जिलादेव नमः ଓ छडिटेना नमः ७ कछिटेश नमः, ५ মোহিনা নম: ও ভাকবিলৈ নম:, মঞে যথোক্ত ক্রমে পুল করিবে। অনস্তর মারদেশে ওঁ ভৈরবার নমঃ এবং ভাষার বৃতি-र्ভार्श रेक्सानि ननविक् भाग ७ रजानि व्यात्तत्र भूका कविए १ रेट । তৎপরে ধূপাদি দান ও যথাশক্তি মূলমন্ত্র লপ করিয়া দেবাকে তিপুলমুদ্রা প্রদর্শন করাইবে এবং তিনবার পুশার্মাল দিয়া ষেবীকে ধেরমুলা ও যোনিমূলা দেখাইবে। তাহার পর टिल्डबरक विन ध्वमानभूक्षक विमक्तनामि काँग्र ममाभन कतिरव । ভদনস্তর ত্রন্সচর্য্যাৰণখী সংযতচিত্ত ও ধ্যানেশ্বর সাধক পূর্ব্যাভিমূথে অব্যত্তিত হইরা পীত্রত্ত পরিধানপূর্বক হরিলাগ্রছিনির্দ্ধিত মালা ল্ট্রা একলক জপে বগলামুণী দেবীর প্রক্তরণ এবং প্রতিদিন প্রিরস্ কুত্র অথবা অক্স কোন পীডবর্ণের পুল লইরা তোম कदिएका ।

পূর্বে বৃগণামুৰী দেবীর বে বিতীয় মঞ্জের বিষয় উলিখিত

হট্যাছে, আহার স্থাসাদি পুরা প্রণালী সকলই পূর্ববং, কেবল পানে বাতর। ধ্যান যথা---

"গ্ৰন্থীরাঞ্চ মনোন্মজাং অর্ণকাজিসমপ্রভাম্।
চতুত্ব লাং ত্রিনয়নাং কমলাসনসংখিতাম্।
সুদগরং দক্ষিণে পাশং বামে জিছবাঞ্ বজ্ঞক্।
পীতাশ্বরধরাং দেবীং দৃঢ়পীনপরোধরাম্।
ধেমকুপুলভ্রাঞ্চ শীভ্রচন্দ্রাহ্ণনেধরাম্।
শীভ্রতীয়ণভূষাঞ্চ রক্সনিংহাসনে স্থিতাম্।

পূর্ব্বেই উক্ত হইরাছে যে, এই দেবীর পূজার বাক্তন্তন, বৃদ্ধিনাশ ও শক্রন্থরাদি বটিয়া থাকে। কিরপে এই দেবীমন্ত প্ররোগ করিলে এই সকল আধিভৌতিক ব্যাপার সাধিত হইতে পারে, তাগাই নিয়ে বিবৃত হইতেছে।

দশ সহস্রবার মন্ত্রনাপ করিয়া নিশাকালে হরিলা ও হরিতালের সহিত লবণ হোম করিলে গুট ব্যক্তির বাক্তন্তন ও বৃদ্ধি বিপর্যার ঘটে এবং ইহা ছারা শক্রতৈসম্ভকে ভাতন করিতে পারা যায়। গত, মধু ও শর্করা যোগে পীতপুলোর হোম ভাত্তক কার্যবিশেষে ফল প্রদ। কার্য্যাধনার্থ প্রথমে একটী যন্ত্র প্রস্তুত করা আব-ভাক। তৎপরে ভাত্তনার্থ হোমাদি পুঞাই বিধি।

যন্ত অভনপ্ৰণালী---

উকারয়ো: সন্থারোরজাধ: শিরসো লিথেং।

মধ্যগং নাম সাধ্যক্ত তথাকে চাক্ষরত্রয়ম্ ॥

বীল্লং ছিতীরবর্গক তৃতীয়ং বিদ্ভূষিতম্।

চতুর্দশব্রোপেতং সংলিণেং পৃথিবীগতম্॥ (জু))

ঠকারেশ সমাবেট্টা চতুজোণপুটং বহি:।

তৎকোণরেখাসংসকৈ: শৃত্যৈকালাইকং লিখেং।

রিশ্ব মধ্যরেখারা: পৃথীবীজ্ঞানি পার্বয়ো:। (লং)

আইরলি চ কোণেসু তহহিকাগলাং লিখেং॥

প্থিবাক্তরিতং বাজে মাতৃকাপরিমন্তরম্।

মাবেট্টা চাইধা পশ্চাং তহাকে ছিরমায়য়া॥

নির্দ্ধ্যাভূশবীক্তেন নালসংমিলিতাজিবুণা।

লিখেৎ পূর্কবলাচেট্টা পশ্চাত বগলামুশীম্॥"

শ্বর্থাৎ উদ্ধাধিংক্রমে মুখ সংযুক্ত করিয়া ওঁকারদার আছিত করিবে। তাহার মধান্থলে সাধ্য বা উদিট ব্যক্তির নাম এবং উচ্চ পার্থে ত্রে এই বীজ নিখিয়া লইবে। পরে তাহা ঠকার গারা বেটনপূর্ত্বক তাহার বহির্দেশ চতুকোণ বারা পুটিত করিবে, এ চতুকোণন্তরের অইকোশে আইবজ্ঞসহ ত্রিশূল এবং সেই ত্রিশূলের মধ্যরেধার পার্শব্রের লং বীজ আঁকিরা রাখিবে। তাহার বহি-ভাগে ও হাঁ কালান্থি সর্বহ্টানাং রাচং মুখং অস্তর জিহ্বাং কীলর কীলর বৃদ্ধিং নাশর হনী ও স্থাহা। এই যন্ত্র ব্যক্তাকারে

লিপিবে। তৎপরে একটা বৃত্ত আছিত করিরা মাড়কা বর্ণ ছারা মণ্ডল করিবে। তদনস্তর তাহার বহির্ভাগে এই বীন্দ ছারা আটবার বেষ্টন করিয়া ক্রোং এই বীন্দ ছারা একবার বেষ্টনপূর্ব্দক পুনর্ব্বার বগলামূলী মন্তে আটবার বেষ্টন করিবে।

ধাতৃদ্দদকে অথবা পাষাণপটে অথবা হরিলা, ধুকুর ও ইরিতাল ছারা যন্ত্র সকরেই প্রশন্ত। দেবস্তম্ভন ও শক্রগণের মুখন্তম্ভনার্থ উক্ত যন্ত্র লিপিয়া গাঢ় আক্রমণ করিবে। ইরিলাদি পুর্কোকে দ্রব্যের ছারা ভূর্জাপতে যন্ত্র আঁকিয়া সেই যন্ত্রে কুন্তকার-চক্রের মৃত্তিকানির্মিত বৃষ্ক পুঠে ছাপন করিয়া বগলাম্পীর আরাধনা করিলে বিবাদে জয় লাভ হয়। ঐ ব্যবের নাসিকাতে পীতবর্ণ রজ্জ্ব নিক্ষেপ করিয়া প্রতিদিন পীতবর্ণ পুশাদি উপত্যার ছারা সীয় গৃহে পূজা করিলে তুটের মুখন্তম্ভন হয়।

ৰগল।মুখীন্তোত্ৰ।

"চলৎ কনককুগুলোল্লসিভচারুগগুন্থলীং লসৎ কনকচম্পকচ্যতিমদিন্দ্বিম্বাননাম। গদাহতবিপক্ষকাং কলিতলোলজিহ্বাঞ্চলাং সরামি বগলামূখীং বিমুখসন্মন:গুভিনীম্ ॥১ পীয় ষোদধিমধ্যচারু বিলস্থ রক্তোৎপলে মণ্ডপে ষৎসিংহাসনমৌলিপাতিভরিপুপ্রেতাসনাধ্যাসিনীম্। বর্ণাভাং করপীডিতারিরসনাং ভ্রাম্যকাদাবিভ্রতাং ইঅং ধ্যায়তি যান্তি তক্ত সহসা সদ্যোহণ সর্ব্বাপদ: ১২ দেৰি অজরণামুজার্কনক্রতে যঃ পীতপুলাঞ্চলিং ভক্তা বামকরে বিধায় চ মহুং মন্ত্রী মনোজ্ঞাক্ষরম। পীঠধ্যানপরোহথ কুম্ভকবশারীজ্ঞং শ্বরেৎ পার্থিকং তক্সমিত্রমূপক্ত বাচি হৃদয়ে জাড়াং ভবেৎ তৎক্ষণাৎ ॥৩ বাদী মুক্তি রন্ধতি ক্ষিতিপতিকৈখানর: শীভিতি ক্রোধী শামাতি চুর্জন: স্থনতি কিপ্রায়গঃ খঞ্চতি। গৰ্কী থৰ্কতি সৰ্কবিত কড়তি ত্বন্তপ্ৰিপামন্তিতঃ ত্রীনিত্যে বগলামুধী প্রতিদিনং কল্যাণি তৃভ্যং নম: ॥ মন্ত্রভাবদলং বিপক্ষদলনে স্থোত্রং পবিত্রঞ্চ তে. যন্ত্ৰং বাদিনিযম্ভিণং ত্ৰিঞ্চগতাং কৈত্ৰস্ক চিত্ৰং স্থ তে। মাত: শ্ৰীবগলেতি নাম ললিভং ষ্মান্তি ক্সেন্ট্ৰে তরামগ্রহণেন সংস্থি মুখস্তক্তো ভবেছাদিনাম ॥৫ इडेख्यनम् श्रविष्ट्रभमनः माक्रिक्षविद्यायनः **ज्जृत्कृतमनः रनम् अनृताः ८०७: ममाकर्वनम्**। সৌভাগ্যৈকনিকেডনং মন দুলো: কারণাপূর্ণামৃতং মুত্ত্যোশ্বারণমাবিরম্ভ পুরভোমাঞ্জনীয়ং বন্ধ: III আতর্ভনার যে বিপক্ষান্তনং জিহুবাং চলাং কীলয় আঁশীং বুত্ৰৰ নাশরান্ত ধিৰণামুক্তাং গভিং ভদ্ধর।

শ্বঃশ্রুর দেবি ভীক্ষগর্বর গৌগালি শীভাষ্ট্র विद्योगः वंशत्म इत्र व्यवस्थाः स्वक्षानृत्वस्त ॥ মাততৈরবি ভত্তকালি বিজয়ে বারাহি বিশাশ্রহে শ্ৰীবিত্তে সময়ে মহেলি বগলে কামেলি রাখে হয়ে। মাতদি ত্রিপুরে পরাৎপরতরে স্বর্গাপবর্গপ্রমে मारमास्टर मंत्रगागठः कक्रगन्ना विस्थानि जाहि मार ॥৮ गःद्राप्त कोत्रगटन धहत्रगमस्द वद्धान वाशिवस्था বিদ্যাবাদে বিবাদে প্রকুপিতনূপতে। দিবাকালে নিশারাং। वर्ष्ण वा रहस्रत वा त्रिशृवधमभरत्र निर्म्हरन वा वरन वा शक्राखिकेखिकांनर यनि পঠिष्ठि निवर श्राप्त वानान वीतः ॥३ নিতাং স্তোত্তমিদং পবিত্রমির যো দেবাাঃ পঠতাদিরাৎ প্রভা যন্ত্রমিক্ত তথৈব সময়ে বাকৌ করে বা গলে। বাজানো হররো মদাভকরিণঃ দর্পামুগেক্রাদিকা-ত্তে বৈ যান্তি বিমোহিতা রিপুগণা লন্ধীঃ স্থিরাঃ সিম্বর: ॥১০ জং বিদ্যা পর্মা ত্রিলোকজননী বিদ্বোধসংক্ষেদিনী रायाकर्षनकात्रिनी अनमनः मत्याङ्मलादिनी । তভোৎসারণকারিণী পশুমন:সম্মোহসন্দারিনী জিহবাকীলনভৈরবী বিজয়তে ব্রহ্মাদিমল্লে যথা ॥১১

বিদ্যা লন্ধী: সর্বসোভাগ্যমান্ত:
পুত্রৈ: পৌত্রৈ: সর্বসাম্রাজ্ঞাসিছি:।
মানং ভোগো বশুমারোগ্যমৌখাং
প্রাথং তৃত্তভুতলেহমিন্ নরেণ ॥১২

যৎ কৃতং জপসরাহং গদিতং পরমেশ্বরি।
গুলীনাং নিগ্রহার্থার তদ্পৃহাণ নমোহন্ত তে ॥১৩
ব্রহ্মান্ত্রমিতি বিখ্যাতং ত্রিবু লোকেবু হর্ম ভম্।
গুরুক্তনার লাভবাং ন দেরং বস্ত কস্তচিৎ ॥১৪
পীতাখরাং ছিভুলাঞ্চ ত্রিনেত্রাং গাত্রকোজ্ঞানাম্।
লিলামুলসরহতাক স্বরেত্তাং বগলামুখীম্ ॥১৫
প্রাতে ও মধ্যাক্ষ্কালে এই ত্র্বপাঠ ক্রিলে কার্যাসিদ্ধি হইয়া
প্রাকে। (ক্সের্যামন্ত্র)

বগদোগ্রা, বালানার রঙ্গর জেলার অন্তর্গত একটা নগর। জন সংখ্যা প্রায় ৬ হাজার।

বগার-ম, নিমন্তক্ষের তানাদেরিম বিভাগের খোন্থ জেলার অন্তর্গত একটা গশুগ্রাম ব-গর-ম নদীকুলে অবস্থিত। ঐ নদীর উত্তর তীরন্থ উপকঠ্ঞাগ তব্-ত-নো নামে পরিচিত। এখানে ব্রহ্মদেশীর চাউলের বিভৃত কারবার আছে।

ব্যাক্ত, ধন্দিশপ্রমের ভানাসেরিম বিভাগের আমর্হাই কোনর অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। ইহার পূর্বসীমার ভৌক-হা পর্বত-মালা এবং পশ্চিমে বঙ্গোপদাগর। ভূপরিমাণ প্রার ২৮ মাইল। এই উক্ত পাৰ্কতাভূষি বনমালা-সমাজ্য — মধ্যে ধাজ-ক্ষেত্ৰ ও গওগ্ৰাম বিরাজিত। কাল্পালার প্রস্তুরের উক্তৃত্ব পর্কাজনিধরসমূহ সেই প্রাকৃতিক গান্তীব্য ভেল করিবা উন্নত মন্তকে প্রধানিক মহিমা বিকাশ করিতেছে। বাত্যান্দোলিত কলরাশির বাত প্রতিঘাতে সমূজোপকৃলে অসংখ্য থাজি গঠিত হইরাছে; উহা প্রশান্ত হওরার এবং সমূজপুঠেই অব্ধিত থাকার দেশীয় নৌকা-চালালার ক্ষম্প্রোণী হইরা পড়িরাছে।

বগবাড়ী, বোৰাই প্ৰেসিডেনীর কাঠিরাবাড় বিভাগের সোরাত প্রান্তর একটা কুল সামস্তরাজা। এখন গুই অংশে বিভন্ত হটরা পড়িরাছে। ঐ সামস্তবংশবর একণে গাইকোবাড়কে ১৩১ টাকা ও স্থ্নাসড়ের নবাবকে ১৯১ টাকা বার্বিক থাজানা দিয়া থাকেন। বগবাড়ী গ্রাম ও বর্গমাইল বিভ্নত।

বগাস্ডা, বোৰাই প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ কাঠিরাবাড়ের অন্তর্গত একটা কুন্দ্র সামস্ত রাজ্য। এখন ছয় জন অংশীদারে বিজক্ত হইয়াছে। বর্তমান অধিবাসিগণ জুনাগড়ের নবাবকে ১৫৪০ টাকা এবং বড়োলার গাইকোবাড়কে ২৫৫০ টাকা বার্ষিক কর দিরা গাকেন। বার্ষিক রাজস্ব ১০ হাজার টাকা।

২ উক্ত রাজ্যের প্রধান নগর। অক্ষা ২১° ২৯ ট: এবং জাঘি ৭১° পূ:। স্থরাট হইতে ১৬০ মাইল পশ্চিমে কাঠিয়া-বাড় প্রারোধীপের মধ্যবর্তী গীর্নামক উচ্চ ভূমির সমীপ দেশে অব্ভিত।

বগাসপুর, মধ্যপ্রদেশের নরসিংহপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর।

বগাঁহ (পুং) অব-গাই ভাবে থঞ্। অলোপ:। অবগাই।
'বাই ভাগুরিরলোপমবাপ্যোরপদর্গয়োঃ' ভাগুরি দুনি অব ও
অপি উপদর্শের অলোপ ইচ্ছা করিরা থাকেন। (মুগ্ধবোধটী' ভরত)
"পূর্বাপরৌ ভোগনিধী বগাই। (কুমার ১)১)

বগী (পারত) > তরবারি। (দেশক) ২ রেশমী প্রুবিশেষ। বগীলক। ভোজাপাক্তেদ। (ইংরাজী) ৩ প্রধানভেদ।

ব্প্রলা, বালানার নদীরা জেনার অর্থগত একটা গওগ্রাম। ক্লিকাতা হইতে ৫৭॥ মাইল উত্তরে অবস্থিত। এখানে ইটারণ বেলন টেট রেলওরের একটা প্রধান টেসন আছে। নদীরার সদর ক্রঞ্জনগর ও নববীপ বাইবার জন্ত এখান হইতে ১১ মাইল বিশ্বত পাকা রাভা আছে।

বাগেপাল্লী (বংগনহলী), মহিত্যর রাজ্যের কোলাবা জেলার কলান্য তালুকের অন্তর্গত একটা গঞ্চাম। জক্ষা ১৩°৪৭'১৫' উ: একা ক্রামি" १৭°৫০'৩১'' পৃঃ। এথানে বিচার সময় হালিত আছে।

ব্রেস্সর, (বহুসর),বৃক্ত-ক্রেশের কুষায়ন জেলার অন্তর্গত একটা

নগর। সরগুও গোমতী সঙ্গমে অবস্থিত। অকল° ২৯°৪৯´২০ উ: এবং দ্রাবি ৭৯°৪৭'পু:। কলিকাতা হইতে এই স্থান २>> माहेन উछत्रপन्टिस अवर चान्त्मात्रा इटेट २१ माहेन উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। নগরটা সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে প্রায় ৩ হাজার ফিট্ উচ্চ। এই নগরের সহিত মধ্যএসিরা ও তিবতের বিস্থৃত বাণিক্য আছে। প্রতি বৎসর মাঘ মাসে এখানে ভূটিয়া ব্যাতির একটা মেলা হয়। ঐ স্থানে সমতল ক্ষেত্রজাত ও रिमानरत्रत्र च्यूनाळ मृत्रकाळ सवानम्रहत्र विनिमग्र रहेन्ना थाट्य ।

প্রবাদ, মোগল সম্রাট্ তৈম্র প্রথমে বগেসর উপত্যকাভূমে একটা মোগল উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন। কিন্তু এক্ষণে সেই মোগল জাতির বালের চিহ্ন মাত্র নাই। কেবল মাত্র পাৰ্বত্য বেনিয়াগণ বাণিজ্য কাৰ্যো লিপ্ত রহিয়াছে।

ব্রোর, রাজপুতনার উদমপুর রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। উদরপুর রাজধানী হইতে ৩৭ মাইল উত্তর পূর্ব্বে অবস্থিত। भूट्स हैश महात्रागा माहान निः एहत अभिनातीत अञ्चल के हिन। ১৮৭৫ খুটাব্দে উহা তাহার হস্ত হইতে কাড়িয়া লওয়া হইয়াছে। বগ্লেং) ৰক্তি। বচ্(বচেগীন্চ। উণ্তাত্ত) ইতি यः शन्ठां खारमः। > वका, वाग्री, कथक। २ वावपृक। ৩ পথাদির চীৎকার। । ৪ ভেকরব।

"গ্ৰামাহন্মায়্ৰ্ৎসিনীনাং মণুকানাং বগুরুত্রাসমেতি।" (ঋক্ ৭।১০৩।২)

'ম পুকানাং বগ্ন; শব্দ: সমেতি সঙ্গছতে' (সায়ণ) বগ্লা (দেশজ) থলি।

বশ্বন (ত্রি) প্রেরবাক্যকথনশীল। স্তুতিবাক্য। (ঋক্ ১০।৩২।২) "বগনান্ বচনেন স্বত্যা" (সায়ণ)

বয়কু (পুং) শব। (ঋক্ নাতা ে)

বয়, ই ঙ, গতি নিন্দা গত্যারম্ভ আক্ষেপার্থ। ভাত আত্ম সক (জবাৰ্থে), আৰু ° চ সেট্। ই বঙ্গাতে। ও বঙ্গাতে। টীকা-কার চুর্গাদাস বলেন যে, কোন কোন ব্যক্তি হব অর্থেও বজ্যতে পদ গ্রহণ করিয়া থাকেন। লিট্ববজ্যে। পুঙ্অবজ্যি বছা (জী) প্ৰজ্বিশেষ। শলভ বা তৰৎ অহিতাচরণশাল

सीवटलम् ।

''ভৰ্মাপতে ব্যাপতে ভৃষ্টজন্তা আপুণোত মে। (অথৰ্মণ ৬।৫।৩) 'হে ভদাপতে ভদানাং হিংসকানাং আখুনাং স্থামিন হে वशाभरता। व्यवश्वति व्यवनाशस्य देशि वधाः भवजानग्रः। व्यव-পূর্বাৎ হরে: "ভোক্তরাপি দৃশ্বতে" ইতি ডপ্রতায়:। বট্ট ভাগুরিরল্লোপম্" ইভি অবশক্ত আদিলোপ: ৷ প্ৰোদরাদি-দ্বাৎ বন্ধন। বধানাং পভদাদীনাং অধিপতে ভূইলন্তা: তীক্ষ-परद्वी वृदर' (नोद्र**ग**े)

ব্যাত, পঞ্চাব প্রদেশের অন্তর্ভ একটা পার্বতীর সামস্তরাজ্য। সিমলা শৈলাবালের পার্মদেশে অবস্থিত এবং অম্বালা বিভাগের কমিসনরের রাজকীয় তত্ত্বাবধানে পরিচালিত। ভূমি-পরিমাণ ৩৬ বর্গমাইল। এখানে প্রান্ন ১৭৮টা গ্রাম আছে। রাজ্যের मधाष्ट्र व्यक्ता° ७०°६६ उँ धावर जावि° ११°१ पृ:।

এখানকার সর্দার রাণা দলীপ সিংহ (১৮৮৫) রাজপুত-বংশীয়। ১৮৫৯ খুষ্টাব্দে তাঁহার জন্ম হয়। ইনি ইংরাজরাজকে বার্ষিক ২০০০, টাকা কর দিতেন; কিন্তু কাল্কা ও সিমলার মধ্যবর্ত্তী কসোলী ও সোলোন-সেনানিবাসের নিমিত ইংরাজ-গবর্মেন্ট তাঁহার নিকট হইতে স্থান লওন্নায় রাজস্ব হইতে ১৩৯২ টাকা বাদ দেওয়া হইয়াছে। বাঘল-রাজের স্থায় এথানকার সন্দারগণও ইংরাজ-গবমে ন্টের সহিত সন্ধিত্ততে আবদ্ধ। [বাঘল দেখ]

বহার (ব্যিরাড়), সিদ্ধনদের একটা শাধা। করাটী জেলার ঠাঠা নগরের দক্ষিণে অক্ষা° ২৪°৪ 🗸 উ: সিদ্ধুগাত্র হইতে বহির্ণত হইয়া সমুদ্রাভিমুথে ধাবিত হইয়াছে। খুষ্টীয় ১৮শ শতান্দে এই নদী অতি বিস্তৃত ও বেগবতী ছিল। হালোরী বন্দরের যাবতীয় পণ্যদ্রব্য এই নদীপথেই তৎকালে পরিচালিত হইয়া সমুদ্রোপকৃলে সমানীত হইত। ১৮৪০ খুষ্টাব্দে বালুকার চর পতিত হওয়ায় সিদ্ধুর গতি পরিবর্ত্তিত হইরাছে এবং এই নদীবক্ষ ক্রমশ:ই শুক্ষ হইয়া পড়িতেছে। এই নদীর মোহানা ন্থিত পিতি, পিতিয়ানী, জুনা ও রেছাল শাথায় এথনও নৌকা-যোগে গমনাগমন করা যায়।

ব্যবল, রাজপুত জাতির একটা শাখা। আদি সোলাছী বা চৌলুক্য শ্রেণি হইতে এই শাখা সমৃত্ত। রেবাপতি মহারাজ র্যুরাজ সিংহ রচিত ভক্তমাল নামক গ্রন্থে এই রাজপুত-শাধার मःकिथ देखिशम विद्रुष्ठ इहेबाएह,—णाहा इहेर**ण बा**ना यात्र, প্রসিদ্ধ সাধু কবীর পশ্চিমসমূদ্রে স্থান করিবার জন্ম গুরুরাতে বাত্রা করেন। এই সময়ে চৌলুক্য বা সোলান্ধী দেব গুল্পরাতের সিংহাসনে অধিষ্ঠিত। রাজা অপুত্রক ছিলেন,ভিনি কবীরের নিকট পুত্রের জন্ত প্রার্থনা করেন। কবীরের আশীর্কাদে সোলাতী-রাজের গুইটা পুত্র জন্মিল, তন্মধ্যে একটার আকার ব্যাদ্রের মত ছিল। এই ব্যাম্থাকার পুত্রের নাম হইল ব্যাম্থাদেব। রাজপ্রোহিতগণ সেই হর্নকণ পুত্রকে সমূদ্রে কেলিয়া দিবার পরামর্ল দিলেন। রাজাও সমুদ্রে কেলিরা দিবার জন্ত জনুমতি করেন। এ কথা কবীরের কর্ণগোচর হইল। ভিনি কুমারকে ফিরিয়া আনিতে কহিলেন এবং এই কুমারের নামে খতত্র পাকের উৎপত্তি হইবে, ভাহাও নির্দেশ করিরা দিলেন। দৈব-विकृषमात्र वाात्रासरवद्ध भूज हरेन ना, व्यवस्था क्वीरवद ক্ষয়তে তাঁহার একটা পুত্র ক্ষত্রিন। ব্যাহনেবের নামান্সনারেই উহোর বংশপরস্পরা "বংঘন" বা 'বাংঘন" নামে খাত ছইন।

ব্যাঘ্রদেবের প্রের নাম জরসিংহ। পিতামহের আদেশে তিনি বছ সৈল্পসামন্ত লইরা দিখিজারে বাহির হইলেন। নর্ম্বান্ত্রেল আসিরা তিনি গোঁড়ারেশ অধিকার করিলেন। এখানে স্থান্ধিরা ধেরার বৈশরাজপুতক্সার সহিত তাঁহার বিবাহ হইরা গেল। তাঁহার বংশধর করণসিংহ ও কেশরীসিংহ দিখিজার উপসক্ষে নানা হান জর করিরা মুসলমান নবাবের অধিকারভ্কে গোর্থপুর দখল করিরা বসিলেন। তাঁহাদের পর মলার সিংহ, সারক্ষ দেব ও তীমল দেব বংগাক্রমে রাজ্যভোগ করেন। তীমলের প্র ব্যান্তর্কা বাজপুতগণের সহিত সন্মিলিত হন। তাঁহার পরবর্তী প্রতাপশালী উত্তরাধিকারীর নাম বীরসিংহ। প্রবাদ, তাঁহার লক্ষ অখারোহী ছিল।

বীরসিংহ মুসলমানের হস্ত হইতে কিছু দিনের জ্বন্ত প্রয়াগ-তীর্থ উদ্ধার করেন। সে সংবাদ পাইয়া বাদশাহ সসৈত্তে চিত্র-কুটে বীর্সিংহের সম্বুধীন হইলেন। বাদশাহ তাঁহাকে ডাকিয়া কহিলেন, আমার প্রজাগণের শান্তিভন্ন করিতে ভোমার ভয় इटेन ना । वीद्रिश्ट উত্তরে জানাইলেন, ক্ষত্রিয়ের নিজাধিকার থাকা চাই। চ্টের দমন শিষ্টের পালনই ক্ষতিয়ধর্ম। বাদশাহ তাহার বীরত্বে মুগ্ধ হইয়া তাঁহার পুত্র বীরভারতক "রাজা" উপাণি দান করেন। বাদশাহের উৎসাহবাক্যে বীর্সিংহ >> जन ताझारक खत्र करतन ७ वारकांगर गित्रा वान करतन । দক্ষিণে তম্সা পর্যান্ত তাঁহার জয়ধ্বজ শোভিত হইয়াছিল। ভিনি অন্তিমকালে পুত্রহন্তে রাজ্যভার দিয়া প্রয়াগে গিয়া জীবন বিদর্জন করেন। বীরভাত্ব কচ্ছবছ-রাজকভার পাণিগ্রহণ করিয়া যৌতুকশ্বরূপ রতনপুর রাজ্য লাভ করেন। প্রস্নত্তবিদ্ किनेश्हाम मारहरवन्न भएछ ४৮० हरेएछ ७৮७ मःवर পर्गान्ड ৰ্ঘেল্গণ শোণ ও ভ্ৰম্মার উপত্যকায় আধিপত্য বিস্তার করিয়া-**जिट्ट मान । जर्भात कन्द्रि, हत्मन, हार्मान, त्रामत ७ व्यवस्था** গোড়গণ ঐ স্থান দখল করিয়া বলে।

কর-থাবাদের ববেলেরা বলেন যে, মাধোগড়ে তাঁহাদের পূর্ব পূরুবের বাস ছিল। কনোলপতি জয়চক্রের সময়ে তাঁহারা এদেশে আদিয়া বাস করেন। এথানকার ববেলপতি ছত্রশাল বৃটীশ গ্রমণ্টির বিরুদ্ধে জয় ধারণ করার ববেল রাজ্য বাজেয়াপ্ত হয়। তাঁহাদের বাস হেতুই রেবারাজ্য "ববেল" বা 'বাবেলথপ্ত' নামে খ্যাত হয়।

যম্নার দক্ষিণে ববেলের। পরিহার ও গহরবাড় রাজপ্তের ফরে কলা দিরা থাকে এবং বৈশ্, গৌতম ও গহরবাড়ের কলা লইরা থাকে।

আলাহাবাদ অঞ্চলের ব্যেলেরা অত্যন্ত অবাধ্য ও চুইস্কর্তাব বলিরা পরিচিত। স্থবিধা পাউলে দক্ষাবৃত্তি করিতে বিরত হর না।

ব্যেল্থণ্ড, মধ্যভারতের অন্তর্গত একটা বিস্তীর্ণ ভূথণ্ড। বংঘল লাতির বাসভূমি বলিয়া এই বিশ্বত ভূথণ্ড বংঘলখণ্ড। নাম প্রাপ্ত হইরাছে। ইংরাজাধিকারে এই সামন্তরাজাপুত্র বংঘল-থণ্ড-একেন্সী নামে পরিগণিত হর। ভারতরাজপ্রতিমিধি বড়লাটের অধীনত্ব মধ্যভারতের এজেন্ট, এবং রেবারাজ্যের পরিদর্শক পলিটকাল একেন্টরলেপ এখানকার শাসনকার্যা নির্বাহ করিয়া থাকেন। ঐ পলিটকাল এজেন্ট সাতনা বা রেবানগরে অবহিতি করেন।

ইহার উত্তর সীমার আলাহাবাদ ও মীর্জাপুর জেলা, পুর্কে ছোটনাগপুরের অধীনত্ব নামন্তরাজ্যসমূহ, দক্ষিণে মধ্যপ্রদেশের বিলাসপুর ও মওলা জেলা এবং পশ্চিমে জব্বলপুর ও বুন্দেল-থওের সামন্তরাজ্যসমূহ। ১৮৭১ খুটাল পর্যন্ত এই বিভাগ বুন্দেলথও এজেন্দীর অন্তর্ভুক্ত ছিল। বুন্দেলা ও বংগল জাতির কীর্ত্তিনিকেতন বলিয়া এই ত্থান ভৌগোলিক ও ঐতিহাসিক সংস্রবে একতাবদ্ধ ছিল। কালে বুন্দেলাপ্রভাব থর্ম হইল। ইংরাজগবর্মেন্ট তাহাদের পরস্পরের বিভেদে সাধন করিয়া ভবিষৎ শক্তিসংগ্রহের পথ অবরোধের চেটা পান। তত্ত্দেশ্রেট উক্ত বর্ষে বংগলথও ভূভাগ লইয়া স্বতন্ত্র এজেন্দ্রী প্রতিষ্ঠিত হয়।

[বুন্দেলথও ও বুন্দেলা দেখ]

এই সমগ্র দেশভাগের ভূপরিমাণ ১১৩২৩ বর্গমাইল। এখানে সর্বসমেত ৪টী নগর ও ৫৮৩২টী গ্রাম বিভ্যমান। রেবা, নগোদ, সৈহার, সোহাবল, কোঠা, সিদ্ধপুরা ও জগীর রাজ্য লইরা এই এজেন্দী গঠিত হইরাছে। [তত্তৎ শব্দ দেখ।]

ঐ সকল সামন্তরাজ্যের মধ্যে কেবল মাত্র রেবারাজকেই ইংরাজরাজ সন্ধিপত্র দান করিয়াছেন। অপর সকলেই ইংরাজ-গ্রমেণ্টের সনদ লাভে অমুগৃহীত। এখানকার সামস্তগণ পণ্যদ্রব্যের বাণিজ্য জন্ম কোনক্ষপ শুক্ত গ্রহণ করেন না।

বৃহ্ধ কৌটিলা। বক্ৰীভাৰ ভা° আৰাখ°। লট্ বছতে, লিট্ বৰছে। বৃহিভা। লুঙ্ভাৰছিট।

বৃদ্ধ (পুং) বৃদ্ধতীতি বৃদ্ধ-আচ্। ১ নদীবক্র, চলিত কথায় নদীর বাঁক বা টোঁক বলে।

বে ববেলা জাতির নাম হইতে এই প্রদেশের নাম করণ হইরছে।
 ভাহারা দিশোলীর রাজপুতগণের একতম শাবা। গুজরাত প্রবেশ হইতে
পূর্বাভির্বে আসিয়া বাস করিয়াছে, স্ফাট্ অকবর শাহ এই বীর জাতিকে
বিশেষ অলুগ্রহ করিছেন। [ববেল দেব।]

বঙ্কাটক (পুং) পর্বাতভেদ। (কথাগরিৎসাঁ ৪৮।৪৯) বছরে (পুং) নদীর বাক

तक्क (प्रः) अभित्रिक विश्व विकास

ৰীক্ষা. (খ্ৰী) বন্ধ-টাপ্। বন্ধাপ্ৰভাগ। পদ্যয়ন। চলিত পাদান।
'বন্ধাপ্ৰাণে নদীপাতে চু ভন্নত্ন'' (মেদিনী)

'পর্যাণভাগ্রভাগ:' ইভিশ্তিকাওপেয:।

वक्षामकाष्ट्रांका, थाठीन क्यांकिक्सिन्टिन।

বঙ্কালা (ত্রী) নগরভেদ। (রাজভর° ৩.৪৮০) বালাগার ত্রাজীন বালধানী।

বৃদ্ধিপ্তি (জী) কোলনাসিক। নামক কুপভেদ। (হারাবলী)
বৃদ্ধিম (লী) বছ-ইমনিচ্। ১ বঞ্জ। ২ ঈবং বাকা।
বৃদ্ধিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়—বন্দের প্রতিভাশালী অন্বিতীয়
উপস্থাসিক, চিন্তালীল কবি এবং একজন প্রধান দার্শনিক।
১৮৩৮ খুঠাকে ২৭এ জ্ন, নৈহাটী ক্রেলনের পার্যন্ত কাঁটালপাড়া
প্রামে সাহিত্যরথী বৃদ্ধিমচন্দ্র ক্রয়গ্রহণ করেন। (কোন্তীঅমুসারে
লকালা ১৭৬০।২।১২।৩৯।৫০ তাহার জন্মকাল।)

বভিমচন্দ্রের পিছা বাদবচন্দ্র শর্ভ হার্ডিঞ্জের শাসনকালে ডিপ্টি-কলেক্টর ছিলেন। তাঁহার চারিপুত্র—ভামাচরণ, সঞ্জীব-চন্দ্র, বভিমচন্দ্র ও পূর্ণচন্দ্র।

বাল্যকাল ছইডেই বৃদ্ধিমচন্ত্রের মেধা ও প্রতিভার পরিচয়
পাওরা যায়। পঞ্চম বর্ষ বরাক্রম কালে একদিনেই তাঁহার
বর্ণজ্ঞান জন্মিয়াছিল! কাঁটালপাড়ার পাঠশালার তাঁহার প্রথম
শিক্ষা। তাঁহার বধন অন্তবর্ষ বরাক্রম, সেই সমরে তাঁহার
পিতা মেদিনীপুরের ডেপুটি কলেক্টর। বৃদ্ধিমচন্ত্রের পিতা পুত্রকে
কাছে মাধিয়া লেখাপড়া শেখান, এই তাঁহার বরাবর ইচ্চা
ছিল। তিনি বৃদ্ধিমন্তরেক মেদিনীপুরের ইংরাজী সুলে দিনেন। এ
সমরে বৃদ্ধিমন্তরেক মেদিনীপুরের ইংরাজী সুলে দিনেন। এ
সমরে বৃদ্ধিমন্তরেক মেদিনীপুরের ইংরাজী সুলে দিনেন। এ
সমরে বৃদ্ধিমন্তর বেরপ বৃদ্ধিমন্তার পরিচয় দিরাছিলেন, তাহাও
অসাধারণ। প্রতিবর্ষে ছইবার ডিনি উচ্চ প্রেণিতে উঠিতেন,
অখচ সর্ক্ষোক্ত স্থান অধিকার করিতেন। মেদিনীপুর জেলার
কাঁথি মহকুমার অন্তর্গত শোভন নদীতটের দৃশ্ভাবলী—ক্ষেচ,
বির্লিকক, নিক্তাভুক্তিয় নির্জন স্বতাধ–ক্ষণৎ বৃদ্ধিমন্তরের হৃদ্ধরে
টিরদিন অন্ধিত ছিল, তাঁহার অপুর্ক কপালকুওনার দৃশ্ভাবলীতে
সেই আলেখ্যের হারা স্থান্টভাবে পতিত হইরা তাহা পরম
ক্ষর করিরা ভূলিরাছে।

১৮৫১ খুট্টাকে বাদৰচক্র ২৪ পরগণার বদলি হইলেন। বভিষ্টক্র এ সমরে হুগলীকলেকে প্রবেশ করিলেন। কলেকেও উহার গবেবণা ও শিক্ষার পরিচর পাইরা অব্যাপক্ষওলী বিভিন্ত হইডেন। তিনি কেবল পাঠ্য পুত্তক পাঠ করিরা ভৃতিবোধ করিছেন না। কলেকের পুত্তকালরে সিরা সর্বভাই

তিনি ভাগ ভাগ পুত্তক গইর। পাঠ করিতেন। ইপদীক্রেজ হইতে তিনি সিনিয়র-কলারসিপ্ পরীক্ষার বিশেষ প্রাক্ষার নহিত উত্তীর্ণ হইরাছিলেন। এই সমরে তিনি কোন অধ্যাপকের নিকট চারিবৎসর কাণ সংস্কৃতপ্রস্থ অধ্যান করেন। কলেছে পাঠকালে তাঁহার প্রাদংসা সকল অধ্যাপকের মুখেই ওনা যাইত। সাহিত্য বলিয়া নহে, অভ্পান্তেও তাঁহার অসাধারণ বৃংপত্তি হইরাছিল।

ছগলীকলেছে অধ্যৱন শেব করিরা তিনি কলিকাতার আসিরা প্রেসিডেন্সি কলেজে আইন পড়িতে আরম্ভ করেন। এই সময় ১৮৫৮ খুষ্টান্দে বিশ্ববিদ্ধালরে প্রথম বি. এ, পরীক্ষা প্রচলিত হয়। তথন বিছমচন্দ্রের বয়স ২০ বর্ষ। তিনি আইন পড়িতে পড়িতেই বি, এ, পরীক্ষা দিলেন এবং বিশেষ প্রশংসার সহিত উত্তীর্ণ হইলেন। তিনি কলিকাতা বিশ্ববিদ্ধালয়ের প্রথম বৎসরের বি, এ। বি, এ উপাধি তথন এ দেশে এমন অপূর্ব সামগ্রী বলিয়া গণ্য হইয়াছিল যে বিছমবাবুকে দেখিবার জক্ষ বহু জোল পর্যাটন করিয়া লোকজন আসিত, এবং বিছমবাবু শিক্ষিতমগুলীর মুখোজ্ঞল "বি, এ বিছম" বিরোধ সর্বার পরিচিত হইয়াছিলেন।

বিষ্কিটন্দ্রের বি, এ পাশ করিবার অব্যবহিত পরেই ছোটলাট হ্যালিডে সাহেব তাঁহাকে ডেপুটি মাজিট্রেট করিয়া পাঠাইলেন। কাজেই তাঁহার আইন পাশ দেওরা হইল না।

খনেশের প্রতি ভাঁহার বরাবর অন্তরাগ ছিল। পরের জিনিষ হইতে যে ঘরের জিনিষ ভাল, এ কথা ডিনিই সর্বপ্রেম শিক্ষিত-সম্প্রদারের মধ্যে প্রচার করেন। উচ্চ রাজকার্য্যে নিযুক্ত হইরাও তিনি মাতৃভাষার - সেবাই জীবনের সর্বপ্রেষ্ঠ লক্ষ্য বলিরা গণ্য করিয়াছিলেন।

বাদককান হইতে তাঁহার বন্ধভাষার প্রতি অন্থরাগ দক্ষিত হয়। তিনি ঈশরপ্তথের কবিতামালা আনন্দের সহিত পাঠ করিতেন। এয়োদশবর্ষ বন্ধ:ক্রমকালে তিনি "মানস্থ লালিক্ত" নামধের কবিতা রচনা করেন। ঈশরপ্তথ তাঁহার কবিতা শুনিরা বড়ই প্রীতিলাভ করেন এবং প্রভাকরে প্রকাশ করিরা তাঁহাকে উৎসাহিত করেন। সেই দিম হইতে বন্ধিসচন্দ্র কবর শুপ্তের শিব্য হইলেন।

১৮৬১ খুৱাজে তাঁহার প্রথম উপদ্ধান ক্র্বেশনক্ষিনী বিরচিড ও তৎপর বর্বে প্রকাশিত হইল। বনিও ইংলালী
আনর্শ লইরা ক্র্বেশনক্ষিনী রচিত হইরাছিল বটে, কিছ
জাঁহার এই প্রথম উভ্যেই তিনি বলভাবার উপর অন্যাধারণ
আবিপতা ও চন্ধিঅচিক্রণে অপুর্ব বলভা বেধাইরাছেন,
উপদ্ধান নিথিরা কাহারও ছার্মেই ক্রমণ নাক্ষ্যালাভ প্রটে

्रि । विकार करहे। शासाग्र

ন্ধি তংশুৰ্কে ভিনি Indian field নামক পত্ৰিকাৰ ।) এটা ক্লাক্তনাহনের জ্রী' (Rajmohan wife) নামে একখানি উপভাস লিখিতে আরম্ভ করেন, কিন্তু ঐ পত্রিকাখানি ক্লেম্পূর্ণ থাকিয়া যায়।

পূর্কেই পরিচর দিরাছি যে, ইংরাজীভাষার বৃদ্ধিচন্দ্রের অসাধারণ বৃংপত্তি হইরাছিল। ঠেটুদ্দ্যান্ পত্রিকায় জেনেরল এপেনি র ভূতপূর্ক প্রিস্পিগাল হেটি লাহেবের সহিত বৃদ্ধিচন্দ্রের বে শাদ্যার চলিয়াছিল, তাহাতে তাঁহার ইংরাজী লেখা পড়িয়া সকলেই বিমুগ্ধ চইয়াছিলেন। এমন কি, তাঁহার প্রতিদ্বী গোই সংহেবও মুক্তকণ্ঠে বীকার করিয়াছিলেন, "এতদিন পরে বাদানায় একজন উপযুক্ত প্রতিদ্বী পাইরাছি।"

সরকারী চাকুরী ইইতে অবসর গ্রন্থগের কয়েক বৎসর পুর্বে ব্যাহ্মচন্দ্র বেঙ্গল গ্রন্থে ন্টের সহকারী সেক্রেটারীর পদ প্রাপ্ত হুইয়াছিলেন, কিন্তু নানা কারণে তাঁহাকে দে পদ পরিভাগি ক্রিতে ইইয়াছিল।



গ্ৰিমবাবুর প্রতিমূর্ত্তি।

তর্গেশন দিনা প্রচারের সহিত ব্রিষ্কাচন্দ্রের থাতি সর্ক্রির বিস্তৃত হইরা পড়িল। তৎপরে ১৮৬৭ খুঠানে কপালকুণ্ডলা ও ১৮০০ খুঠানে মৃণালিনী বাহির হুইল। ১৮৭০ খুঠানে ব্রুদ্ধন বাহির হুইল। বঙ্গদর্শন প্রকাশের সহিত যেন বঙ্গনাহিতো যুগান্তর উপস্থিত হুইল। বঙ্গান্তর বঙ্গান্তর ক্রিও হুইল। বঙ্গান্তর বিষ্কাশনের ব্যেরূপ ব্রুদ্ধনির হুইনা। শিক্ষিত বঙ্গনাসীর নিকট বঙ্গদর্শনের ব্যেরূপ আদর হুইয়াছিল, এরপ কোন সামায়িক পত্রের সমান্তর পৃত্তি-গোচর হয় না। বঙ্গদর্শনের সম্পাদকরূপে বিষ্কাহক্ত আজ্বনকর প্রেটি আনেক লেখককেই লিখিবার শীতি শিথাইরা ছিলেন এবং নিজেও বঙ্গান্তন বহু প্রক্রের ও উপভাগ লিখিরা

সাহিত্যজগতে একাধিপতা লাভ করিলাছিলের এ বাঁহারা বলভাবাকে শ্রীর মাতৃতাবা বুলিরা শ্রীকার শ্রীরতে লক্ষা-বোধ করিতেল, বউতলার পূঁথি দেখিরা বাঁহারা নাসাকুশুন করিতেল, ইংরাজীভাবার লিখিত পুস্তকই বাঁহারের একমাত্র বেদস্বরূপ ছিল, বিদেশার অস্কুল্রগকেই বাঁহারা জীবনের একমাত্র হত্তরভার্থতার কারণ বলিয়া গণ্য করিতেল—সেই পরম উক্কত প্রাক্তমানী নবাবদকে বহিমবাবুই বলভারতীর মন্দিরে উপহিত করিরা ভচ্চরণে অর্থাপ্রদান করিতে বাধ্য করেন, ভদবিদ ইংরাজীলিক্ষিত যুবকমগুলীই বলভাবার সেবক্সণের নেতা হইরা দাঁগাইয়াছেল,—বিছমবাবুর এই কার্য্য মাতৃভাষা-চর্চাকরে সর্ক্রপ্রেট সার্থকতা বলিয়া গণ্য হইতে পারে, এই জ্লাই ভিনি বলভাবার সম্লাট্" পদস্কাচা। তিনি বলদর্শনে নিম্নলিখিত প্রক্ষণ্ড গলি প্রকাশ করেন:—

১২৭৯ সালে বিষর্ক ও ইন্দিরা; ১২৮০ সালে চক্রন্থের ও যুগলাঙ্গুরীয়; ১২৮১ সালে রজনী; ১২৮০ ৮১ ও ৮২ সালে কমলাকান্তের দপ্তর, ১২৮৪ সালে ক্রফকান্তের উইল, ১২৮৬ সালে রাজসিংহ, ১২৮৭ ও ৮৯ সালে আনন্দমঠ, ১২৮৭ সালে মুচীরামগুড়ের জীবনচর্নিত, ১২৮৮ সালে দেবী চৌধুরাণী। দেবী চৌধুরাণী বঙ্গদর্শনে কিয়দংশ বাহির হইয়া শেষে পুত্রকা-কারে সমগ্র পুত্রক প্রকাশিত হয়। ১২৮৪ সালে বন্ধিমচক্র কল্পনির সম্পাদকতা ছাড়িয়া দিলে তাঁহার জ্যেষ্ঠ সঞ্জীবচক্র সম্পাদক হন। সঞ্জীবচক্রের মৃত্যুর পর বন্ধদর্শন উঠিয়া যায়।

ক এক বর্ষ পরে সাধারণী-সম্পাদক শ্রীযুক্ত অক্ষয়চন্দ্র সর্কার
মহাশয়ের চেষ্টায় নবজীবন প্রকাশিত হয়। নবজীবনের সক্ষে
বৃদ্ধিনচন্দ্র যেন নবজীবন লাভ করিলেন। আনন্দমঠের শেষে
এবং দেবী চৌধুরাণীতে ভিনি যে জ্ঞান ও কর্মযোগের স্বরণাত
করেন, সীতাগমে তাহার পরিণতি।

বলের শেষ গৌরবর্ষি সীতারামের প্রকৃত আলেগ তাহার তৃলিকার একটু ভির্নপে চিত্রিত হইলেও, তাহার জীবরে বে স্বান্যিরপী মহাপুরুবের প্রভাব বিস্তৃত হইরাছিল, সীতারামে বিজ্মচন্দ্র সেই চিত্রই দেখাইতে চেন্তা করিরাছিলেন। ঐ সময় বিজ্মচন্দ্রের আমাতা রাধালচন্দ্র বন্দ্যোপাধায় "প্রচার" নামক এক মাসিক পত্র প্রচার করেন। এই মাসিক পত্র থানি বৈ বিজ্ম বাবুর সম্পূর্ণ প্রাম্পাত্মসারে প্রকাশিত হইরাছিল, তাহাতে সন্দেহ নাই। প্রচারে তিনি ক্লক্ষচরিত্র ও গীতামর্দ্র এবং নবজীবনে ধর্মতত্ত্ব প্রকাশ করিয়া তাহার নবজীবনের প্রকৃত লক্ষা সাধারণের চিত্রগোচর করিয়াছিলেন।

ভেপুটীকার্যোও র্টীশগ্রমেনিটর নিকট ক্লাছার বিশেষ স্থগাতি ছিল। যথাকালে তিনি পেন্সন্ গ্রহণ করিয়া জ্বসর অলো বল: কলিলত পুঞ্: সুন্ধত তে স্থতা:। ছেবাং দেশা: সমাখ্যাতা: স্বমামগ্রাথিতা ভবি ॥ অকস্তাকো ভবেদেশো বলো বলত চ শভ:॥ क्रिक्षिवदर्ग्य क्रिक्क है म चुछः ॥ প্ৰাপ্ত প্ৰাপ্ত প্ৰাপ্ত কৰা কুম্বান্ত চৰ্তা:। এবং বলে: পুরা খংশ: প্রখ্যাতো বৈ মহর্ষিজ:।"

(ভারত ১/১০৪/৪৭-৫১)

এই বল হইতে বালালা জনপদের প্রতিষ্ঠা হয়। [বঙ্গদেশ শক্ষে পুরারত্ত দেখ]

২ কার্পাস। (মেদিনী) ও বার্ডাকু। বক্সজ্ঞ (द्वी) বঙ্গাৎ ধাতৃবিশেষাৎ জায়তে ইতি জন-ড। ১ সিন্দুর। (ত্রি) ২ বলদেশ ফাত। ৩ বলদেশবাসী কারন্থ, বৈন্ত প্রভৃতি জাতির শ্রেণীবিভাগভেদ। ইহা দক্ষিণ-রাটীয় শ্রেণীর অঞ্জন শাপা বলিয়া পরিচিত। ঐ শাখা বঙ্গদেশের পূর্ববাঞ্চলে আসিয়া বাস করায় বঙ্গুজ আগ্যা প্রাপ্ত হট্যাছে।

৪ পিত্তল।

বঙ্গজীবন (জী)রৌপ্য।

বক্সদেশ (পু:) স্থনামপ্রসিদ্ধ ভারতীয় দেশভাগ। ভারতের উত্তর প্রবাংশে হিমালয় পাদ হইতে দক্ষিণে সমুদ্রতট পর্যান্ত বিশ্বত। বঙ্গভূমি, বঙ্গরাজা, বাংলা বা বাঙ্গালা নামে পরিচিত। ভারত-বর্ষের পুর্বোন্তর প্রাক্ষী পুণাডোয়া গদানদীপ্রবাহিত 'ব' খাঁপাংশ লইয়া এই রাজা গঠিত। বচ প্রাচীন কাল হইতেই এই মহাসমুদ্ধ জনপদের বাণিজ্যখ্যাতি স্কুদ্র আরব ও চীন-সামাজা প্রান্ত বাপ্রি ছিল এবং এতক্ষেশ্বাসীর জ্ঞানবন্তা ও বন্ধি-মতার পরিচয় এবং শিল্লাদি বিভিন্নবিষয়িণী কলাবিভার প্রথর প্রভাব চত্র্দিকে রাষ্ট্র হইয়াছিল। বৈদেশিক বণিক-সম্প্রদায় সম্ভূপথে আসিয়া এখানকার স্বর্ণগ্রামাদি বন্দর হুইতে এতকেশ-ভাত বছতর এবা লইয়া ধাইতেন। সেই সময় হইতেই বালালাব গৌরব দিগন্ত বিস্তুত হয়। বলের দক্ষিণপ্রান্তন্ত্রিত সমুদ্রভাগ ও দেশের নামে বঙ্গোপসাগর এবং বঙ্গবাসীও তদবধি বাঙ্গালী নামে বিদিত হট্যাছিল। ভারতবাসী অক্সান্ত ভাতি হইতে এই वाजानी जाफित विधारशीतव वाजानातक चड्ड मधाना ७ नमानत मान कतियार्छ।

माममिककि ।

্রই বিশাল বাজালা রাজ্য মহাভারতীর বুগে কিরূপ দীমাবদ ছিল, ভাহার সঠিক কোন বিবরণ উদ্ধারের উপার নাই। তৎ-কালে বন্ধরাজ্য কেবল আল রাজ্যের পার্যবন্ধী জনপদ বলিয়া উক্ত किया। उरल्यक्ती कारन क्या क्यांनी सामभार्त देवील स्हेगा তাত্রিক আলোকলাভ ক্রিলাছিলেন, সেই সময় হইতেই তাহারা তদ্রের মহিমাবিক্তার একং প্রভাব-শ্রেচার প্রসঙ্গেই বাঙ্গালার দৈর্ঘা ও বিস্তার করনা করিরা শুনা: তাই আমরা শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে বাঙ্গালার একটা দীমানির্দেশ দেখিতে পাই। [বঙ্গ দেখ।]

তবকাৎ-ই-নাসিরি নাজক মুসলমান ইতিহাস অমুসরণ ক্রিলে আমরা কানিতে পারি বে, বালালার সেনবংশীয় শেষ নরপতি মহারাজ লক্ষণ সেনকে পরাজয়পর্কাক মহক্ষদ-ই-ঘখ ভিরার বাঙ্গালা জয় করিয়াছিলেন। তাঁহার আগমনে লন্ধণাবতী, বেহার, বল ও কামরূপজ্ঞমপদবাদিগণ মহাভীত हरेग्राছिलन। * मार्का (भारता (১২৯৮ थः) निथिग्राह्न, ১২৯০ খুষ্টান্দ পৰ্যান্ত বালালা বিজিত হয় নাই। বঙ্গ উক্ত **জনপদ চতপ্ররের দক্ষিণভাগে অবহিত ছিল।† উক্ত চুইটা** বিবরণী পাঠ করিলে বেশ বুঝা যায় যে, মুসলমান সমাগমের পুর্বের প্রাচীন বন্ধরাজ্য চারি থণ্ডে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছিল। মার্কোপোলো তাহারই দক্ষিণাংশকে বান্ধানা বলিয়া উল্লেখ করিয়া গিয়াছিলেন। রসিদউদ্দীন বলেন, আফুমানিক ১৩০০ খুষ্টাবন্ধ বঙ্গ দিল্লীখরের অধীন হয়। ১৩৪৫ খুটান্দে ইবন বতুতা বল্লালা (বাঙ্গালা) রাজ্যের ও তথাকার ধান্ত-প্রাচুর্য্যের উল্লেখ করিয়া-ছেন। তিনি আরও বলেন যে, পোরাসানবাসী এতৎপ্রদেশকে বিবিধ উৎকৃষ্ট দ্রব্য-পরিপূর্ণ নগর বলিত।: মুপ্রসিদ্ধ কবি হাফিজের (১৩৫ • খুঃ) কবিতার বাঙ্গালার উল্লেখ দেখা যায়।§ ভাষো দা-গামা ১৪৯৮ খুঃ বালালার মুসলমান প্রাধান্ত এবং এখানকার কার্পাস ও রেশমী,বন্ধ, রৌপ্য প্রভৃতির বাণিজ্য দ্রব্যের উল্লেখ করিয়াছেন। তিনি বলেন, স্থবাতাসে ৪০ দিনে কলিকট্র হইতে বাকালায় আসা যায়। এতিরির ১৫০৬ খুষ্টাকে লিওনার্দো ১৫>॰ थृष्टीरम वार्थिम ७ ১৫১७ थृहीरम वार्स्वामा वाञ्चाला রাক্ষার ও তদ্দেশবাসীর বাণিজ্যাদি বিবরণ লিপিবদ্ধ করিয়া যান। আবুল কজলক্ত আইন-ই-অক্বরী নামক মুদলমান ইতিহাদে বাঙ্গালা শব্দের একটা ব্যুৎপত্তি প্রদন্ত হইয়াছে। তিনি লিথিয়া-ছেন যে, প্রাচীন কালে এই জনপদ বন্ধনামে উল্লিখিত হইত। বলের পূর্বাতন হিন্দুরাজগণ পর্বতপাদমূলত্ব নিম্নুর্নীতে মৃত্তিকার বাঁধ বা আল দিতেন। বাঙ্গালার বছস্তানে উক্ত বাজ্জবর্ণের বিনিশ্মিত এরূপ বছণত আল বিভ্যমান দেখিয়া আলহুক্ত বল অর্থে 'বলাল' নামকরণ হইয়াছে। সত্রাট অবলভেব বালালার

^{*} Tabakat-i-Nasiri Elliot. ii, 507.

⁺ Marco Polo Bk. ii, ch. 55.

¹ Ibn Batuta, iv. 210.

^{\$} শকর শিকর শাবল হার তৃত্তিরান ই-ছিল। बीन् ५न रे-भातमी किर्य प्रजान विक्रयम् ॥ (शक्ति)

[¶] Roteiro de Vada Gema 2nd. ed. p. 110.

সমৃদ্ধি লক্ষ্য করিয়া দর্শের সহিত ক্রিয়াই গিরাছেন বে, এই স্থান সকল জাতির পক্ষে স্থাপ ক্রিয়াক বিভাগে ওভিংটন, লিবিরাছেন বে, বাঙ্গালা ক্রিয়াকালের উত্তর পশ্চিমে অব-স্থিত। চট্টগ্রাম বাঙ্গালার লক্ষ্যিপুর্বে সীমাত্তে বিভাগান।

[বিভূত বিষরণ পুরার্জাংশে ক্রেকা।]

বন্ধ নামের উৎপত্তি এবং এই রাজ্যের হিছি প্রতিষ্ঠা সন্ধর্ম প্রাচীন গ্রন্থানিতে বেরূপ বিবরণ পাওরা ক্রিকাণ প্রবাদিতে বেরূপ বিবরণ পাওরা ক্রিকাণ পর্যাদিতে প্রকাশ করিবাদের দ্বিকটে বালালা নামে একটা নগরের উল্লেখ করিরাছেন। প্রাচীন মানচিত্রে তাহার স্থান নির্দেশ রহিয়াছে। ক্রিকি সন্থব, বার্থেমা বালালার পদার্পণ করেন নাই, তিনি মলবার উপকূলে থাকিরাই, আরবীর বণিকদিগের প্রথাহ্যবর্তী হইয়া দেশের নামাহুসারে বালালার প্রধান নগরের নাম বালালা লিথিয়া যান; কিন্তু ঐ বালালা নগরের কোন নিদর্শন বিভ্যান নাই। বোধ হর, পর্ত্তুগীজনগণ বালালার প্রধান বন্দর চট্টগ্রামে আসিরা তাহার দক্ষিপ উপকর্গন্থিত একটা গণ্ডগ্রামকে বালালীর বাসভূমি জানিয়া চট্টগ্রামকেই বালাল-নগরে নামে অভিহিত করিয়া থাকিবেন। ও

সীয়া ও বিভাগ।

ব্ৰহ্মপুত্ৰ ও গলার বহীপ এবং তাহাদের অববাহিকা প্রদেশের
নিয়তম উপত্যকাভূমি লইয়া বস্ততঃ বর্তমান বালালা গঠিত।
১৮৭৪ খুটালে আসাম-বিভাগ নালালার অলচ্যত করিয়। স্বতম্ব
শাসনাধীন করা হয়, তদবধি থাস-বালালা, বেহার, উড়িয়া
ও ছোটনাগপুর বিভাগ একত্র করিয়া ইংরাজাবিক্বত বালালার
সীমা নির্দিষ্ট হইরাছে। অক্ষা ১৯°১৮ হইতে ২৮°১৫ উ:
এবং ক্রাথি ৮২° হইতে ৯৭°পু: মধা। শেষে গত ১৯০৫ খুটালে

ইহার উত্তর সীমা নেপাদ ও জোটান রাজ্য, পূর্বে আদাম এবং চীন ও উত্তর-ব্রন্ধর সীমারবারী আনাবিত্বত পার্বতা ক্ষাভাগ ; নকিলে বলোপসাক্ষাভাগ ও মধা প্রবেশ ; পশ্চিমে মধাজারতীর এলেন্দীর অধিত্যকা ভূমি। এই অণিত্যকা ভূমিই বালালা ও বৃক্ত প্রবেশের সীমান্ত রেধারণে করিত হইরা থাকে। বালালা বরাবর এক জন ছোটলাটের শাসনাধীক ছিল, বিগত ১৬ই অভৌবর হইতে চুই জন ছোটলাটের অধীন ইইয়াছে।

মুসলমানগণ বঙ্গবিজয় করিয়া গাঙ্গের বলীপকেই সংক্রম্ভ নামাত্রসারে বন্ধ বলিয়া অভিহিত করেন। কোন কোন মুসলম্মান ঐতিহাসিক রাজধানী লক্ষণাবতীর নামান্ত্রসারে এই প্রদেশকৈ লক্ষণাবতী বলিয়া বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। গৌড ও লক্ষণা-বতী-ধ্বংসের পর যখন রাজপাট ঢাকা ও নবদীপে স্থানাস্করিত হয়, তথনও নিয়বল বালালা বলিল্ল বিগণিত থাকে। তৎপরে মুদলমানগণ পূর্কাঞ্চলে অক্ষপ্তভীর পর্যান্ত অধিকার করিয়া বাঙ্গালার সীমা বৃদ্ধি করেন। দিল্লীর অধীনস্থ আফগান শাসন-কর্মারা এবং তৎপরবন্ধী স্বাধীন আফগান নুপতিবর্গের রাজা-শেষে মোগলসমাট্ অকবর শাহের বিখ্যাত সেনাপতি মানসিংহ বালালা মোগল সামাঞ্জ করেন। রাজা টোডরমলের করীপের পর রাজস্ব আদায়ের স্থবিধার জন্ম বঙ্গ, বেহার ও উড়িবা গিইয়া একটা সুবা গঠিত হয় এবং সেই স্থবেগুলি হইতে আবার জেলা, সরকার ও পরগণা প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ বিভাগ নির্দিষ্ট হইয়া-ছিল। এই স্থবে বাঙ্গালা শাসনের মস্ত নিল্লীখনের অধীন একজন শাসনকন্তা নবাব বাঙ্গালার থাকিতেন। এই শেষোক্ত নবাব বংশপরস্পরাধ মূর্শিদাবাদের নবাব ব্রশিগা পরিচিত। একজন নবাব বারা এই বিহুত ও মহাসমুদ্ধিশালী জনপদের রাজক আদারের স্থবিধা না হওয়ায়, তাঁহার অধীনে বেছায়, উড়িখাা ও हाकांत्र अक अक्कान नारत्रव-नाकिय (Deputy governor) वाण्याव वावका श्रेत्राष्ट्रिम ।

[শ্বস্থামান ইতিহাসাংশে বিভূত বিবরণ থেও] ইংরাজাধিকারে বালালার সন্ধিবেশ ধল্লিকে প্রকৃত বসনামের অনেক বিপর্যায় সাধিত হইয়াছে। উড়িয়ার উপ্রুক্তিত বালে-

১৬ই অক্টোবর পূর্বিবলকে আসামের সামিল করিরা একজন ক্রির ছোটগাটের অধীনে "পূর্ববল ও আসাম" প্রদেশ অতত্ত পঠিও ছইরাছে। শাসন-সৌকর্যাল্লের ইংরাজ-গবরেণ্ট ভারতবর্বে বে হালগটী শাসন বিভাগ সংগঠিত করিরাছেন, তল্পধ্যে বালাগা সর্ব্দেশ্য নধী, ব্রদ, গাঁধ, জগীপবিহীন বনমাগা ও শর্বতা ভূথগু বাদে এথানকার ভূপরিবাণ ১৮৭২২২ বর্গ মাইল। লোকসংখ্যাও ন্যুনাধিক প্রার ৮ কোটা।

[·] Stavorinus, Vol 1. p. 29In.

[†] Warthema লিখিয়াছেন, 'আনি Banghella নগন পৰিবৰ্ণন করিয়াছি।" (Varthema 210) কিন্তু তিনি যে কালিকট ও কোচীন তির ক্রোবা কোষাও পদার্থন করেন নাই, তাহা গার্সিয়া ডি ভটার লেখনীতে নিযুত ক্রিছে। (Collequins, f. 30)

¹ A chart of 1748 in Dalrymples Collection.

^{* &}quot;Arracan......is bounded on the North West by the kingdom of Bengala, some Authors making Chatigam to be its first Frontier City; but Teixeira, and generally the Portugues, writers, reckon that as a City of Bengala itself...... more Such than Chatigan. The I confess a late French generally than put Bengala in his catalogue of imaginary Crimal Ovington, (1690) 554.

ৰর হইতে বেহারের মধ্যকরী পাটনা পর্যক্ষ ছানে ইই-ইণ্ডিরা কোন্দানীর বতপাল কুঠি ছিল, তাহা উক্ত কোন্দানীর দথ্যরে Bengal E-tablishment ক্রিরা বর্ণিত দেখা যার। ফ্রান্দিস্ কার্ণণ্ডেজ্ চট্টপ্রামেন ফুল্র পূর্ম হইতে উড়িয়ার অন্তর্গত পামিরা পরেণ্ট (Palmyra Point) পর্যন্ত বিহুত উপকৃত এবং গলা-প্রবাহিত ভূমিজাগ লইরা বালালা সীমা নির্দেশ করিরাছেন। পার্কাসের (Purchas) মতে, এই উপকৃত্যভাগ প্রায় ৬০০ মাইল।

বাদালার ছোট লাটের শাসনাধীন বাদালা,বিহার ও উড়িয়া প্রবেশ নবীমালা ও ভাহাদের অববাহিকা এবং উপত্যকা ভূমিতে পूर्व। द्वांठे नांशभूत्र विकाशः श्वांक्क्रमिक्कि, छेश मधान्यामत्त्रत অধিজ্ঞাকা হইতে ৰাজালাকে পুথক রাখিরাছে। উড়িয়াবিভাগ মহানদী ও অস্তান্ত কতকওলি নদীর বহীপে সমাক্ষর। ঐ নদীপ্তলি প্রধানতঃ উত্তরপশ্চিমে করম পার্কত্য রাজ্য (Tributary Hill State) হইতে দক্ষিণপশ্চিমে বলোপসাগর পর্যান্ত আসিয়াছে। উড়িয়ার সমুদ্রোপকুল হইতে ইংকাজাধিকত ত্রন্ধের সাপর-সীমা এবং উত্তরে হিমালর পর্যান্ত বিশ্বত দেশভাগ প্রকৃত বালালা প্রাদেশ পদবাচা। ইহার দক্ষিণাংশ গঙ্গা ও ব্রহ্মপুত্র নদের ব্যীপ-ভূমি বশিয়া গৃহীত এবং উত্তরাংশ উক্ত নবীবয়ের ও তাহার শাখা প্রশাধার প্রবাহ-ক্ষেত্র বা উপত্যকা ভিন্ন জার কিছুই নহে। বেত্তার বিভাগ খাস-বাঙ্গালার উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। উহা গলার উচ্চ উপত্যক। শইরা গাটী। বুক্ত প্রদেশ ও বেহারের সীমার গদানদী দক্ষিণপূর্বাভিমূথে বক্রতা প্রাপ্ত হইয়াছে। বেহার ও উড়িয়ার মধ্যবন্তী এবং অপেকাক্বত পশ্চিম পার্ব্বতা ছৰওই ছোটনাগপুর বলিয়া পরিগণিত।

পূর্বাপর আলোচনা করিলে বেশ বুঝা বার বে, বাজালার সীমা কোল, সময়েই একটা হির ছিল না। পার্যবন্তী রাজস্তবর্ণের আল্লীদে সমর সমর ইহার অলচাতি ঘটিরাছিল। বলের শেষ মূলমান নবাব সিরাজউন্দোলার হক্ত হইতে বলসিংহাসন চ্যুত এবং বলের দেওয়ানী দিলীখর কর্তৃক ইংরাজকরে সমর্শিত হইলেও আরাকান ও এক্ষরাসিগণ বালালার সীমান্তপ্রদেশ আলোভিত করিরাছিল। সিপাহীবিদ্রোহের পর ইই-ইণ্ডিরা কোম্পানির শাসন অপক্ত হইলে, মহারাণী ভিক্টোরিয়া বহুতে শাসনভার গ্রহণ করেন। তথন ম্প্রীমকোট ও সমর দেওয়ানী আদালত উঠাইরা নিজামত লইরা হাইকোট স্থাপিত হর। ইংরাজগবর্মেন্ট বিশেব নৃতৃভার সহিত্ত বালালার শাসন-ব্যবস্থা করিতে লাগিলেন। ১৮৭৭ খুট্টান্থে বহারাণী ভারতস্থাকী প্রদেশ অভিবিক্ত হইলে, ভারতে ইংরাজ প্রভাব অক্তর হইলা উঠিল। ভোটানবৃদ্ধ ও মণিপুরুছাবসানে বালালার সীমা পরিবর্ধিত হইল। ইংরাজগবর্মেন্ট বালালাহে প্রেসিডেজাভিক করিরা লইকোন।

हेरबाबाविक्रफ धारे बाबाना बाबा ज्याम धक्की (अनिएफ्नी-রূপে বিজ্ঞ হুইন। তহ 🐂 ও বন্ধপুত্রপ্রবাহিত সমন্ত অব-বাহিকা প্রয়েশ বলিয়া নহে, "লিক্সমুদ্ধর সমগ্র অববাহিকা প্রদেশ ও তাহার হিমালর পূঠত শাবী প্রশাধাব্যাপ্তভান লইয়া প্রকৃতপক্ষে এই বিভাগ গঠিত। মোট কথার, বিদ্যানৈলমালার উত্তর দিঘর্তী প্রায় সমগ্র স্মার্য্যাবর্ত্ত ভূমি বালালা প্রেসিডেন্সীর অন্তৰ্ভু ক্ত। বাঙ্গালা প্ৰেসিডেন্দীর এই বিভাগ সম্বন্ধে অধুনা কেবল ঐতিহাসিকতাই বিভয়ান আছে, করে তদারা শাসনসম্পক্ষ য কোন কার্যাই আরু নিরপেকভাবে পরিচালিত হয় না ইংবাজবাজের ভারতীয় সেনাদ্দের সামরিক বিভাগে Commanders-in-chief for Bengal, Madras 9 Bombay নামে আঞ্জিও সেই বিভাগের সাক্ষা বৃছিয়াছে। যে পাঁচটী হুরুহৎ প্রদেশ মাত্র লইরা 'বেলল প্রেসিডেনী' গঠিত হইমাছিল, সেই পাঁচটা প্রবেশেই এখন নির্দ্ধিষ্ট বিভিন্ন শাসনকর্তার অধীন; কিন্ধু সকলের উপন্ধ ভারতরাজপ্রতিমিধি কর্ত্ব করিয়া থাকেন। বোম্বাই ও মান্ত্রান্ত প্রেসিডেন্সী স্বতঃ গ্রণবের ঘারা শাসিড; কিন্তু কেলন প্রেসিডেন্দ্রীর অধীনত যুক্তপ্রদেশ, পঞ্জাব, আজমীয় ও আসাম খড়ন্ত শাসনকভার অধীন হইরাছে। বস্তুতঃ ছোটলাটের অধীন সমগ্র বাঙ্গালা-अरम्भ এथन (अमिएएमी भागाता क्रेश तक्सिएक।

১৮৮১ খুটান্দের ইম্পিরিয়াল সেন্সাল রিপোটের ২র খতে বালালা প্রেসিডেন্সীর এইরূপ একটা বিভাগ ভালিকা প্রাদত্ত হউয়াছে,—

গ্ৰন্থেৰ সাম				ভূপবিষাণ বাইল
>	লেফ্নাণ্ট	গ্ৰপ্ৰসিপ্	অৰ বেছন	चेद्र ८७६ ४
ş	3	@	यूक्-व्यादनम	222559
•	Z)	à	পঞ্জাব	>8588>
8	চিক ক্ষিস	নিরসিপ্	আসাম	8 000 8
¢	ক্ষিপনর	স প ্	আৰুমীঢ়	3955

বাদালা প্রেসিডেলী এই ঐতিহাসিক বিভাপ সংঘটিত হইবার বছপরে অর্থাৎ ১৮৬১ খুটান্দে মধ্যপ্রদেশে একটা স্বভন্ত লাসনবিভাগ গঠিত হইরাছিল। কিন্তু বে বালালা বলবাসীর ক্ষমভূমি, বাল গলা ও ব্রহ্মপুদ্রের উপত্যকা লইরা প্রধানতঃ গঠিত, তাহাই ইংরালরালের রাজকীর ধ্রবে নিম বল (Lower Bengel) নামে বর্ণিত হইরাছে।

আকৃতিক বৃক্ত।

উপরোক্ত দীনা-সরিবিট ভুবাদালা আহেছে আফ্রডিছ দৌলবেঁটার বিশেব জোন অসমুক্তী ঘটে নাই। বন্দিনে ভয়ধ-সমূল বলোপনাগর উত্তাল উল্লিফালার, নাগম-লৈক্ড বিয়েড করিতেছে। উত্তরে হিমাচলশিশ্ব ক্রমোক্ত পৃদ্যালার স্বারোহিত হইরা বেন একটা অভিমন্ত দৃশ্রপট উলোচিত করিরা
দিতেছে। সেই তুরারমন্তিত শিণরশিরে অরুণকিরণ
প্রতিকলিত হইরা তুরারধনল পর্বতিলায় একটা ল্যোতির্দ্তর
হৈমন্তুপে পর্যাবিতি হইরাছে। দিবাভাগে কখন তাহা
স্থাকিবণে সম্ভাসিত হইরা দিগন্ত আলোকে পূর্ব করিতেছে, কখন বা গাঢ় কুল্লাটকার সমাজাদিত থাকিরা অপূর্ব্ব
মেঘমালার স্পার নিশ্চল দণ্ডারমান রহিরাছে। ঐ পর্বতগাত্র বিধ্যাত করিরা ক্ষুদ্র কুদ্র প্রোত্বিনীসমূহ প্রথর গতিতে
সমতল উপত্যকা প্রান্তরে অবতীর্ণ ইইরা পরম্পরের সংযোগে
পূইকলেবর হইরা এক একটা প্রকৃত্ত জলধান্তা রূপে প্রবাহিত
হইতেছে। উক্ত নদীমালার মধ্যে হিম্পাদনিঃস্বত গলা ও
অল্পুত্রই এথানকার প্রধান প্রবাহ। অপ্রগুলি তাহারই শাখা
বা বাল মাত্র। [গলা ও ব্রন্ধপুত্র দেখ।]

এই নদীমালাই বাদালার লোভা ও শশু-সমৃদ্ধির একমাত্র कातन। हिमानवर्ग्ड, अवना छेखत नतन त छेळ हान नमूह विट्यो छ করিরা এই নদীমালা নিয়বঙ্গের নিয়ভূমিতে একটা নুগস্তর আনিয়া সঞ্চর করিয়া থাকে। ঐ স্তরের উর্কারতাশক্তি এতাদুশ অধিক বে, যে স্থলে ঐরপ তার দক্ষিত হয়, তথার পর্য্যাপ্ত পরিমাণে বিভিন্ন প্রকার শত উৎপন্ন হইয়া থাকে। গলাও ব্রহ্মপুত্রের উত্তর উপত্যকা খণ্ড এবং নির্বঙ্গের সমতল প্রান্তর এইরূপে নদী-बारन ममान्द्रत र ७ वात्र मञ्चलक्त्रममूर बनमारमत विरन्ध स्विधा ঘটিয়াছে। কথন কথন ঐ নদী সকল বস্তাবিতাড়িত হইয়া উভর তীরবর্ত্তী গ্রামসমূহ জনমগ্ন করিয়া ফেলে, ভাহাতে ভূপুঠে এক প্রকার পলি পড়ে। ঐ পলিও শক্তোৎপাদনের বিশেষ উপবোগী। অনেক সময় থাল কাটিয়া নান। স্থানে ও বিল **প্রভৃতিতে জল আনিরা** চাসবাসের খ্যবস্থা হইরা থাকে। উক্ত ভূমিতে কুপ বা পুছবিণ্যাদি খনন দারাও কৃষিকার্য্য সম্পন্ন হয়। এই সকল ক্লবিক্তে মধ্যে মধ্যে ক্ত পলী, গগুগ্রাম, নগর বা चार्गिका व्यथनि वन्नव्रमम् विवाक्ति । नगत मतिधारन नगत-বাসিগণের বহন্তরোপিত পুলোজান, অথবা ফলরুকাদি পরিশোক্তিত উপবনসমূহ ও তন্মধ্যন্থ অট্টালিকাদি স্থানীয় সৌন্দর্যা বুদ্ধি করিভেছে। গলাদি নদীতীরণভী প্রাম বা নগরসমূহ, বিশেষ্ক্রঃ স্নানের খাটে দেবদলিরাধি প্রতিষ্ঠিত থাকিয়া দেশ-বাসীর ধর্মপ্রাণভার ও স্থাপত্যশিরের পরিচর প্রদান করিভেছে। প্রাম-মধ্য বা পার্বস্থ এই সকল অট্টালিকা বা মন্দির স্থামল গ্রাম্য বৈচিত্ৰের একাপ্রতা ভঙ্গ করিয়া বিতেছে। কোণাও কোগাও ভয়মন্দির বা প্রাচীন প্রাসাদাদি বিধাত হইয়া অললপূর্ণ তুপ-ब्रानिएक गतिगक एरेबारक। ये नक्षा व्याप्तीय कीर्विनिधर्गन প্রক্রত্ত্ত্তিকে আলোচনার জিনিস। পার্কত্য বনবালার। ঐ
নক্ষ তৃপোপরি গঠিত কগলে প্লাকৃতিক সৌলব্যের বিশেষ
বিকাশ না থাকিলেও তাহাতে বিভিন্ন লাতীর হিংশ্র জীবের বাস
বটিরাছে। এই সকল বনরাজির অদ্বেও ভিন্ন দৃশ্র ক্র
প্রাম বিশ্বমান আছে। বাত্তবিকপকে বালালার বিভিন্ন নিনীবত্তী গ্রাম বা নগরসমূহের প্রাকৃতিক সৌলব্যের এডই
বৈবমা দৃষ্ট হয়, যে সকল স্থানই যেন নবস্থ্যায় সজ্জিত হইয়া
দশকের চিত্ত আক্র্বণে প্রয়াস পাইতেছে।

वर वामाना धारमान यक्षिम नेनी वा'नाचा नेनी रमधा'वात, তন্মধ্যে গলা ও ব্ৰহ্মপুত্ৰ ক্ৰেধান। বৰ্ণনা, শোণ, গণ্ডক, কুনী, जिला, छानीतथी, (बननी-नन्दम हननी मनी मारम अधूजा साछ), দামোদর রূপমারারণ ও মহামদী প্রভৃতি অপর কর্মী নদী অপেকা-ক্লত কুল্র হইলেও প্রধান বলিরা গণ্য হইরা থাকে। এতিত্তির অনেকগুলি भाषा नती, अथवा नतीत अर्भ विष्मु विख्या नात्य পরিচিত আছে। যথা—অলয়, আলংখালী, অমানৎ, আঁধার-मानिक, आफ़िशान-गा, आफ़्लानानी, आठात्रवाका, आखारे (चाटबंदी), खेत्रका, बहुरमाना, तान्या, तान्रात्वी थान, वाचथानिह খাখমতী, বৈটাখাটা খাল, বৈতরণী, বক্রেশর, বক্রা, বলবীরা, यानधर वा हजिःचांठा, वानत्र, वनान, वनपूनी, वनानी, वागाना, वानाता, वाका, वफ्रक्मी, वत्राकत, वफ्क्मिनमा, वफ्रान, वफ्रानाह, বারাসিয়া, বর্ণার, বরুয়া, বাটা, বয়া, বেলা, বেণা, বেতনা বা ব্ধ-হাটা, ভক্রা বা হরিহর, ভৈরব, ভার্গবী, ভোলা, ভোলারী, ভোলা, ভ্রেঙ্গী, বিভাধরী, বিজয়গন্ধ, বিশ্লাই, বিন্নণা, বিৰ্থাণী, আন্দ্রী, বুড়ো ধর্লা, বড়ভিন্তা, বুড়ামমেশবর, বড়বলক, বুড়ীগগুক, বুড়ীগলা, वृजीशकी, वृजीश्वत, छाटेमा, हरनोनी, हन्मना, ठामणानी, टिक्नाटे. চেঙ্গা, ছিরামতী, ছোটতিস্তা, চিংড়ী, চিতা, চিত্রা, চুলী, ডাকা-छित्रा, मांक, क्र्णावछी, नाडेन, नवा, तन्त्रुती, तन्त्र, धाधात्रं, धामात्रं, थनकिटनात्र वा बात्ररक्षत्र, शामका, धनाहि, धनानि, धनोकी, धाला, धर्गा, धर्छा, छाडेन, शावा वा का अनमी, स्यातम, धृषणा, फिमफ़ा, श्वकुमात, श्रुवा, श्रुवाह, शट्डवत्री, शमाधत, श्रुवाहिया, গগুকী, গগুার, গান্ধনী বা কালিয়া, গাংড়ী গড়াই বা গোড় ই, चारत, गांकीशांनी, पांडांशांन, पृग्ती, जामठी, समानी, खबाद्यवा, खखतिया, खड़, इनहात्र, हलना, हननी, टाँठा-कांग्रेचान, हानता, दांगी, हन्, हारताता, हात्रावणी, हत्रगांगत, हांफ्छांना, হবোরা, হাতিরা, ইবু, ইছামতী, ইজ্রী, জরণাল, জলবক্কা, यमूना, यमनी, सामवाड़ी, अलक्लिया, अवाही, क्रिक्या, क्रिनाह. रोबत्मवत्री, करभाजाक, कामाकृती, कामाह, कामानवी, করতোরা, কালীগলা, কালীগাছী, কালীকুও, কালিনী, কাল-बानी, कंगना, कानांनरी, काकी, कारमा, कड़ाहे, काक्का,

कैंकिनिवानी, काना, कैंगिरीन, काशाह, कर्कती, छेखत ও দক্ষিণ কারো, কাশাই, ক্যালম, কাশীলম, ক্সায়াখাড়ী, क्ट्रेकी, क्ट्रेना, क्या, क्ट्रना, क्डिन, श्रम्रतायाम, श्रान्यानमी, থারী, থড়িয়া, থরথাই, থগুঁয়া, খাট্সা, খোলপেটুয়া, पूषिया, किमितिया, উত্তর ও দক্ষিণ কোরেল, কোহেরা, কোইনা, क्रेश, क्कृरे, क्निंगान, क्यारी, क्नूत, क्निंगा, क्निंनी वा कूनी, नाक्राश्राहे, नक्षीया, नक्षीरमाना, नानरकाा, नीनासन, ছোট রণজিৎ, ছোট বলান, লোক, লোরান, মাদারি, মাতামুড়ি. मरहान, महानका, माहे लाजा, मान, मसू, मत्रा हित्रन, स्थाना, मतानती, मता-िखा, मर्खाण वा काकानती, मतिष्ठाभ-गात्र, মদান, মাতাভালা বা হাউলী, মাতাই, মাথামুড়ী, মাতলা বা রাম্বমাতলা, ময়ুরাক্ষী, মেচী, মেন্দিথালী, মোহনী, মুছরি, मुख्याहे, मुद्रहत्र, मुड़िशाली, नागत्र, निक्त, नम्माकुक्का, नात्रम. नवनिना, नखा, त्ववत, भीनकूमात, गुनननी, कूना, शवा, शाहेका, পণার, পঞ্চান, পাঁচপাড়া, পাগুই, পান্ধানী, পর্ব্বাণ, পদর भारे कि, भाज त्त्रा, भट्टेग्राधानी, कक्क, टक्षी, क्नसूत, भिन्नानी, শীতার, পিথ্রাগঞ্জ, প্রাচী, পুণ্পুন্, পুণভবা (পুনর্ভবা), बायानक, बाय-मा, बाम्मान वा ब्राचान, बामबायका, ब्राट्यां अन्त्र, तः छन्, तर्गक्रि, त्रारत्रा, त्रारामा, त्रष्ट्रत्रा, रत्रव्त, रतानी, त्रश-नावांत्रण, जलमा, मानसी, भागी, भागिशारी, (शखकारभ), मसील, সম্ভাৱ, দক্ষোপ, সরস্থতী, সন্ত্রা, সাত্থভিয়া, সৌরা, শাহ্রাম্পর, निशानकाना, निशानमात्री, निवना, निश्वत्वर्गा, निका. निश्वत्वर्ग. निजिया, निःशीमात्री, त्याखनाशी, त्यागारे, त्यागाथाती, मङ्ग्रा, 🕮, জবর্ণরেগা, ভল্ক, শ্রা, তলাবা, তালেখর, তামলানদী, তপন, তেরলো, তিলেয়া, তিলাই, তিলম্গা, তিতাস, তলসী-গঙ্গা, ডুণীনদী প্রভৃতি।

উপরোক্ত নদী বা তাহার শাধাসমূহ এবং ভাহাদের সংগ্রক থালগুলি বালগোর বিভিন্ন স্থানে বিস্তারিত থাকার ক্লবি-ক্লোদিতে জললানের বেরপ স্থাবধা ধণিরাছে, নৌকাযোগে পণাপ্রবা গইরা যাতারাভৈরও সেইরপ স্থাবাগ আছে। ছঃধের বিষয়, প্রাকৃতিক পরিবর্ত্তান নদীর গৃহি ভিন্নিকে চালিও হওয়ায় আনেক নদীর প্রাচীদ পাত প্রার হল হইরা পড়িয়াছে। ব্রু থাভগুলিতে বর্ষাগ্রকু স্থাতীত জ্ঞাসময়ে অতি সামাহই জল থাকে। এরূপ থাভগুলি মরাভিন্তা, বড়ীগলা প্রভৃতি নামে পরি চিত্ত। অপর কড়কগুলিতে স্থানে যানে আদৌ কল থাকে না। ইলার উপর, নানাভানে রেলপথ বিশ্বত হওয়ায় নদীবক্তে সেতৃ নির্দ্ধিত হইরাছে। ভাহাতে কোন কোন নদীর বেগ ধর্ম হইরা প্রিলাভ চর হারা উহার পরিসর ক্রমণঃ কম হইরা পড়িরাছে। অনেক ময়া নদী স্বরাত হওয়ার লাইবজ্ব

হটরাছে। আবার রাজস্বের প্রবিধা ও বাণিজ্যের বিশ্বারকরের গবর্মেণ্ট বাহাছর স্থানে স্থানে নৃত্যন থাল কাটিরা একদেশবাসীর মঙ্গল এবং কোথাও নদীর গতি থালছারা ডিয় দিকে চালিড করিরা অপর প্রজ্ঞার অমঙ্গল সাধন করিয়াছেল। পূর্বভন অনেক নদীগর্ভ ওছ হটরা এখন শহুক্রেরে পর্যাবসিত হইতেছে। তদেশবাসী জলকটে হাহাকার করিতেছে। বারিপাতরূপ জগদীখারের অমুকল্পা বাতীত তথাকার প্রজাবর্গের প্রাণরক্ষার আর অজ্ঞ উপার নাই। কোথাও বা লক্ষেট, বাধ প্রভৃতির ছারা দেশবঞ্চার বিধান হইরাছে; কিন্তু বন্ধতেই সেগুলি ছানীর লোকের উপকারার্থে সাধিত বলিতে হইবে। স্বর্ণপ্রস্থ বাগালার নদীর বাহলা থাকিতেও এখন জলাভাব বশতঃ হু'র্ডকে ও অরকটে প্রজাবর্গ প্রশীভিত।

নদী বাতীত স্থানে স্থানে কুপতড়াগানি হইতে স্থানীর অলাভাব বিদ্রিত হইতেছে। সিংহভূম, মানভূম, হাজারিবাগ প্রভৃতি ছোট-নাগপুরের নানাস্থানে পার্কণ্ডীয় ক্রমোচ্চ-নিম্ন ভূমিতে বাধ দিয়া জলরক্ষার ব্যবস্থা আছে। তথাকার কৃদ্র ক্রম জলধারা বাতীত এই বাধগুলিই স্থানীয় লোকের বিশেষ উপকারী। উড়িবাার চিল্কাছদ বাতীত বাদালার আর সেরপ প্রাকৃতিক সৌন্দর্যাপূর্ণ হদ দৃষ্ট হয় না। উহার জল লবণাক্ত থাকায় সাধারণের নিকট তত্তদূর আদরণীয় নহে। কলিকাতার দক্ষিণস্থ বিস্তৃত বাদা ভূমি" গ্রমেণ্টের ভালিকায় "Salt lake" বিলয়া উক্ত আছে।

মুদের, রাজগৃহ, ভাগলপুর, সিংহভূম, বীরভূম প্রভৃতি
নানা স্থানে নানা শীওল, লবণ ও উষ্ণ জলপূর্ণ প্রস্রবণ
দেখিতে পাওয়া বায় । ঐ সকল স্থান বহু প্রাচীনকাল
হইতেই তীর্থক্ষেত্রপে বিদিত হইয়া আদিতেছে । আকাশগঙ্গা, লবণাখ্যা, মোতিঝরণা, ধ্বিকুণ্ড, সীতাকুণ্ড, স্থ্যকুণ্ড
প্রভৃতি নামে ঐ সকল প্রস্রবণভীধ বিদিত । ইহাদের বিশেষ
বিবরণ জেলা প্রসঙ্গে লিখিত হইয়াছে বিশেষ প্রস্রবণশুলি বে
প্রাচীনম্বের পরিচারক, ভাহা বাজালার ভূতক নানোচনা করিলে
সহজেই উপল্ছি হুইডে পারে ।

₹34 1

ভ্তববিদ্গণ বিশেষ গনেষণা ও অনুষ্ঠিননার ক্টরা ছির করিয়াছেন যে, নিম্নবাদর অধিকাংশকান সমুদ্রবর্দ্ধে নাংড ছিল। কালবাশে সমুদ্রগর্ড ষতই পশ্চাতে হটিয়া গিয়াছে, ততই নিম্নবন্ধ চররূপে অভাথিত হট্যা জনসমাজের বাসভূমিকপে পরিণত হট্যাছে। ভূগর্জনিহিত শব্দ মংজাদির প্রভারীভূত অহি এবং নবীভূত মৃশ্বরাদি তাহা সংসাশ করিতেছে। মহা-ভারতের বনপর্কের ১২৩ অধ্যায় যুধিন্তিরের তীর্থানাবিবরূপে কৌশিকী তীর্ষের কিছু দৃরে পঞ্চশত নদীবুক্ত গলাসাগরসলম এবং তথা হইতে কিছু দৃরে সাগরতীরে কলিলদেশ থাকার বেশ ব্যা বার বে, সমগ্র তীর তৎকালে উত্তররাদ্ধের কিয়দ্র পর্যান্ত বিস্তৃত ছিল। কৌশিকীর বর্তমান নাম কুনী। তারকেশরের নিকটবর্তী হরিপাল প্রভৃতি গ্রামের নিকট কৌশিকীর প্রাচীন গর্ত দৃষ্ট হর। গ্রীকরাজন্ত মেগেছনিস পাটমার ০০০ মাইল দৃরে গলাসাগর-সলমের কথা লিখিরা গিরাছেন ।। এই বিবরণগুলি বে প্রাশ্বক ভূপঞ্জর গঠনের সমর্থক, তাহাতে আর কিছু মাত্র সন্দেহ নাই।

আজকাল বেরপ আমরা নোরাধালি জেলার সমুলোপক্লে সন্বীপ প্রভৃতি চরজাত বীপের উৎপত্তি দেখিতেই, প্রাচীন কালেও সেইরপ সমুক্রতীরবর্তী নদী সকলের মোহানার পলি পড়িরা চর হইতে ক্রমে বীপের উৎপত্তি ঘটরাছিল। এই কারণে অনেক হানের নাম-শেবে বীপ' দিরা ও চর' শব্দ দৃষ্ট হর। চক্রবীপ, নববীপ, অগ্রবীপ, গুক্চর, বক্চর, কাঁটাদিরা, রপদিরা প্রভৃতি হানগুলি সম্ভবতঃ ঐরপেই পলিজ চর হইতে উত্তৃত হইরা ধাকিবে।

তৎকালীন লোকসমাজের প্রথিত চর কালে বৃদ্ধণতাদিতে পরিপূর্ণ হইরা উপবন, গ্রাম ও ক্রমে নগরে পরিণত হইরাছে। কিন্তু আজিও সেই চরাডিধান অপক্তত হর নাই। চক্রদহ, ধড়দহ, বিবাদহ প্রভৃতি বেরপ নদীগর্জ হইতে কালে সৌধমালা-মণ্ডিত প্ররম্ম নগরে পর্বাবসিত হইরাছে, দেইরপ নদীলোতে সমানীত বালুকণাও মোহানাস্থ সমুদ্রতটে সঞ্চিত হইরা চরভূমির উৎপত্তি ঘটাইতেছে। আজ বেধানে মকরসংক্রান্তি দিনে সাগরতীর্থবাত্রিগণ সর্বেত হইরা লানাদি করেন, কিছুকাল পরে উহা সমুদ্রগর্জ ভেদ করিয়া উপরে উঠিবে এবং ক্রমে প্রামে নগরে পরিণত হইরা বাইবে।

কোনা নদীর সাগ্রসক্ষম হলে বাছ্রা, মানপুরা প্রভৃতি বীপ বাহা ৭০৮০ বর্ব পূর্বে কেবল জাঁটার সমর জাগিরা উঠিত ও জারারের সমর ভূবিরা বাইত, বাহা তথন সম্পূর্ণ বাদার অবছার পরিণত হর নাই, এখন তাহাই উচ্চভূমি এবং বছজনাকীর্ণ প্রামসমূহে পরিপূর্ণ হইরাছে। তাহার পর মাজীরচর, ভাল্কন্চর মামে আরও ছইটা কুল বীপ উল্লেখবোগ্য। খুটার ১৮৬০ সালেও উহা জললপূর্ণ জগাজার ছিল, এখন তথার বছ লোকের বাসহান হইরাছে। ঐরপ আরও বিজ্ঞে এবং সমূত্র মধ্যে রাবণাবাদ নামক করেকটা বীপ, কুক্ডিমুক্ডি চর, বোগাচর প্রভৃতি আরও কুল কুল কডকভলি বীপ গত ৬০ ছইতে ৪০ বংসর মধ্যে কল হইতে জাগিরাছে ও ভাহাতে লোকের বাস হইরাছে। তার পর ২৪ পরস্পা, খুলনা ও বরিশালের অতান্ত বন্দিশভাগে, বে সকল হানে শভবর্ব পূর্বে সর্ত্তেরক বহিত, এখন সে সকল হানে অসংখ্য গ্রাম নগন্ন বসি-রাছে। এখনও নিতা নৃতন উখিত ভূমি সকল লাটে বিভক্ত হইরা কালেটরী হইতে বিলি হইরা থাকে এবং নৃত্তম জলল কাটাইরা আবাদ ও গ্রামাদি প্রতিষ্ঠিত হয়।

নদীলোত:-চালিত বালুকাকণা নদীগর্তে সঞ্চিত হইরা চরের উৎপত্তি ঘটার, এ কথা সর্ক্রাহিসমত। এই বঙ্গভূমিতে প্রবাহিত গলানদী কিরূপ কেগে কত পরিমাণ মৃত্তিকা নিত্য বহন করিরা সমুক্রমুখে চালিরা হিডেছে, তাহা গণনা করিলে চমৎরুত হইতে হর।

প্রায় আর্ক শতাক গড় হইন, কএকজন অভিজ্ঞ রুরোপীর পাওত গাজীপুরে বসিরা নানা উপারপ্ররোগ বারা দ্বির করিরাছিলেন, গলা প্রতি বংনরে নাগরসলম হলে ১৭৩৮২৪০০০০ মণ মাটি বহন করিরা ঢালিরা দিডেছেন। কিন্তু গাজিপুরের দক্ষিণে বরং গলা ও তাহার শোণ, অজর প্রভৃতি শাখা নদী, প্রকারবনের মধ্যন্থিত বিপঞ্চলত নদী এবং তাহার পর উত্তরপূর্ক-কোঞ্ছিতে আগত ব্রহ্মপুর, ধলেবরী প্রভৃতি নদী, এই হিসাবে আরও কত মাটি বাহিরা আনিতেছে, তাহার ইয়তা করা বার না।

উপরোক্ত মৃত্তিকান্তরের গঠন ও পরিণতি বালালার কোন কোন বিভাগে কিরপ ভাবে সংসাধিত ইইরাছিল, নিরে বিভাগ নির্দেশ সহকারে তাহার একটা সংক্রিপ্ত বিবরণ প্রান্ত হইল:—

প্রথম বিভাগ।--রাজমহলের পর্বাড্ডশ্রেণী হইতে আরম্ভ করিয়া ভাগীরথীর উৎপত্তিস্থান ছাপঘাটা পর্যান্ত বডগলার দক্ষিণে এবং ছাপৰাটা হইতে ভাগীরথীর পশ্চিমৰার বাছিরা মেদিনীপুর পর্যান্ত, মোটামোটা প্রার এক প্রকৃতির মাটি দেখা বার। ভূতৰবিদের হন্দ্র দৃষ্টিতে দেখিলে, ভাহাতেও বিভাগ দৃষ্ট হর ; কিন্তু দুল দৃষ্টিতে উহা প্রার একই প্রকার। ইহার সর্ব্যঞ্জই সমান কাঁকর ও পাধর পূর্ণ, অথবা পাহাড়িয়া কঠিন মাটি বিছ-মান। বিদ্যাও পূর্ববাট পর্বাভাশেণীর নাটির প্রকৃতির সহিত ইহার জনেক বিষয়ে প্রভেদ থাকিলেও বন্ধতঃ এক বিষয়ে উভয়ই সমান-কাকর ও পাবর পূর্ণ পাহাড়িয়া মাট। বেধানে কাকর বা পাণর দেখিতে পাণ্ডরা বার না, (যেমন বর্জনান জেলার দক্ষিণ ও পশ্চিমাংশ এবং হুগলির পশ্চিমাংশ,) সেথানে মাটি এড ফুঠিন বে তাহাকেও পাথরের অভুক্তাবছা বলিয়া করনা করা বাইডে পারে এবং ভাহার প্রকৃতিও এরপ বে, বাদাদার আর কোধারও ভন্তরণ মাট পাওরা বার লা। এই ভূভাগের মাটি বহ মুগ্রুগান্তর হইতে নিশিত, মুভরাং লোজা কথার ইহাকে পাকা बाहि बना बाहेरक शास्त्र। देश निष्मिक ए, आक नवस्त्र समूज

Magesthanes Fragments, vi.

গৌড়ের নিকট পর্যান্ত বিস্তৃত ছিল, অধ্ব। আরও পূর্বের, গলাসাগর সলম বধন রাজমহলের সারিধ্যে অবস্থিত ছিল, সেই সনরে সমূল্রের জল কথনই এই মাটিকে অভিক্রম করিছে সমর্থ কর নাই। কেহেতু অরকাল সমূল সরিরা গোলে, বে সকল চিল্
পশ্চাতে পড়িরা থাকে এবং বে সকল জলজ্জীবের পঞ্চরাদি
মৃত্তিকার অতীতৃত হইরা বার, এ ভূতাগের কোর্থাও তাহার
চিক্রাত্র নাই।

ষিতীর বিভাগ। পদ্ধা বা বড়-গলার উত্তর-তীর হইতে হিমালরের পাদদেশক তরাই ভূমি পর্যন্ত সমস্ত ভূতাগ ও হিমালরের
ভালু ভূমি। ইহা হিমালরের উক্ত প্রদেশ হইতে পদ্মার উত্তর তট
পর্যন্ত ক্রমাগত ঢালু হইয়া আসিরাছে। এই ভূতাগের সর্ব্বেই
ক্রমির প্রকৃতি এক প্রকার—সর্ব্বেই হিমালরের গাত্রবিধৌত
নালুকারাশি বিস্তুত। তাহার উপর কিঞ্চিৎ পরিমাণে বালুকামিল্লিত দো-আঁশ মাটি ক্রমিরা ঐ মৃত্তিকাকে চাস আবাদাদি
কার্যের উপযোগী করিরাছে। এই ঢালু বালুকামর ক্রনিতে,
সর্ব্বেই হিমালরের গাত্র-ধৌত জলরাশি অন্ত:-সলিলভাবে
প্রবাহিত থাকার, সমত দেশের ভূমিই ব্রন্পরিমাণে জলসিক ও
আর্ম্র বিহ্রাছে। ঐ মৃত্তিকার বালীর আধিকারশতঃ এ সকল
কাদেশে কুপ খনন ব্যতীত, অন্ত উপায় নাই। পুক্রিণী খনন
করিতে গেলেই, বালী ভালিয়া গর্ত বৃক্তিরা যায়। ফলতঃ অতি
বীর্ষায়তন দীর্ষিকা খনন করা যাইতে পারে।

বড়ই আশ্চর্যোর বিষয়, সমুদ্র হুইতে এন্ড দুরে ও হিমালয়-পাদমূলে এত বালুকা কোণা হইতে আসিল? ভূতত্ত্ববিলগণ ৰলেন, পুথিবীর ভূপঞ্জর নির্মিত হওয়ার "ইওসিন" মূগে, হিমালয়ের ভারেশ পর্যান্ত সমুদ্র-তরঙ্গ প্রবাহিত ছিল। কেবল ভটভাগ বলিয়া নহে, ভাহার বর্তমান উচ্চতার প্রায় এক-তৃতীরাংশ পর্যান্ত তথনও সমুদ্রগর্ম্জে নিমক্ষিত। ইওসিনের পর মিওসিন্, প্লিওসিন্ এবং ভাহার পরে ভূপঞ্জের চতুর্যযুগের স্তর-निर्मा किया हिनए एक । देशक मध्या मिल्लिन खरहरे अलम মন্ত্রাস্টির চিক্ প্রাপ্ত হওরা যার; তাহার মধ্যেও আবার নিয় ৰিওসিনে প্ৰাপ্ত চিহুওলি জড়ি জম্পাই ও সন্দেহজনক। উপর मिलिन ब्हेट क्वन मानवीय अखिरवत नाहे हिल आध इ उदा सात्र रिनदा छेराएक मामनीत यूरशत चात्रस्कान रना याहेरक পারে। এইরূপ এক একটা স্তর গঠিত হইতে কড লব্দ লব্দ বর্ব গত হইরা যার। প্রভরাং ভত কালের সমুদ্র-পরিভ্যক্ত বালী আৰিও প্ৰস্তৱাৰতাৰ পরিণত মা ৰইবা বে নিজাবভার পতিত बहिबारक, देश कथनरे अञ्चयभन्न दिनात्री दिविठित स्त्र ना ।

বর্তমান বালুকারাণি হিমালরের পাঞ্জবিধৌত প্রভররেণ্ডকা ভিন্ন আর ভিত্রুই নহেশ একে হিমালরের চালুগ্রহেশ ভার প্রভর- প্রবণ অববাহিকা ভূমি, ক্ষভরাং বালী অমিবার পক্ষে অক্সবিধা কোপার ? এ বিভাগের উপর অর্থাৎ উদ্ধরংশের অমি, প্রথম বিভাগের সহিত সম-প্রাতন এবং নিরাংশের অমি ভলপেকা কিছু আধুনিক হইলেও, অপর চুই বিভাগ অপেকা বে প্রাতন, ভাহাতে সন্দেহ নাই। কিছু আশ্চর্যের বিষয় এই বে, ভৃতীর ও চতুর্থ বিভাগের মৃত্তিকার বে পরিমাণে দ্রুভা বেধা বার, এই প্রাতন অমির কোন অংশে সেরপ দৃষ্ট হয় না। এই চাল্ ভূমিতে অন্তঃসলিলের প্রবল প্রবাহক্রিয়া মিরন্তর সম্পাদিত হওরাই ইহার একমাত্র কারণ; তবে ইহাও স্বভাসির বে, এই সক্ষল ভূভাগ জারিবার বছকাল পূর্কে এই স্থুপীরুত অসীম বালুকারাশি ভূপ্ঠে সঞ্চিত হইমাছিল।

ভূতীয় বিভাগ। ব্ৰহ্মপুত্ৰের পূর্নতট হইতে নওরাগালি, চট্টগ্রাম প্রভৃতি প্রদেশ এবং পশ্চিমদিকে তমোলুকের নিকটবতী शामनभूइ। देननर्गिक सात्रश विद्यादयः नमुख निव्या शिरम, द्वत्रश প্রকৃতির ভূমিভাগ উঠিয়া থাকে, অবিকল সেই প্রকার প্রকৃতিবিশিষ্ট ভূমি লইরাই এই সমস্ত স্থানের উৎপত্তি। সমৃদ্র অন্তর্হিত হইবার সময় স্থানবিশেষে যে সকল বালির স্কুপ রাখিয়া গিয়াছে,(যাহাকে বালিয়াড়ী বলা হয়), তাহাই ঐ সকল নবোদিত স্থানের প্রাচীনত্বের হেতু। এই সকল স্তৃপ কোথাও খণ্ড খণ্ড পর্বতাকারে বিভ্যান আছে, কোথাও বা ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অনতি উচ্চ পাহাড়শ্রেণীতে পরিণত হইয়াছে, কিন্ত স্থলবিশেষে এখনও অবি-কল বালিয়াড়ী আকারেই রহিয়া গিয়াছে। তমোলুকের নিকটস্ত বালিয়াড়ী সকল এখন অবিকল বালুকান্ত,প মাত্র, কিন্ত চট্টগ্রামাদি অঞ্চলে, ভাহা পর্বভাকারে পরিণ্ড। এই সকল পর্বতের বহিরাবরণ ভেদ করিলে অভান্তরে এখনও সেই ৰাশুকান্ত,পের পরিচয় পাওয়া যায়, তবে কোথাও কোথাও কিন্তংপরিমাণে বালুকান্তর পাথরের স্তরে পরিণত হইতে আরম্ভ করিবাছে। এই সকল পর্বতের অভ্যন্তর ভাগের সর্বত্তি সামুদ্রিক জনজ জীবের পঞ্চরে পরিব্যাপ্ত। চট্টগ্রাম প্রদেশের সীডাকুণ্ড তীর্ষের নিকট বে পর্মতমালা আছে, ডাহা কিরং-**পরিমাণে আরের অভাববিশিষ্ট হইলেও ডাহারের উৎপঞ্জি** এবং পরিণতি কতকাংশ উক্ত প্রকারের সামুদ্রিক বালিরাড় হইতে ঘটিয়াছে ত্বীকার ক্র্ব্রিছে হইবে। ব্রহ্মদেশের পূর্ব্ব দীনার ৰক্ষিণ হইতে উত্তরমূর্টে ৰে পর্বাতমালা প্রধাবিত হইয়া *ছিলাল*রে

ক ইওনিন বুবে বে সাগ্র-লল হিমালয়ঽট পর্যন্ত হিল্প ছিল, জেতাবুবে পদাধ্যমের পর, ডাহা বাভাবিক নিয়বে হিমালল পূর্ত ভাগে করিয় জমলঃ
লভাহানে সরিয়া বায় । লভাবীপের বিভ্বত ভূপত ও নালরে আফুভিজ নিয়মে
ললমবাবে ছানাভারিত হবয়া সুধিবীর বিভিন্ন ভাগেল কনগম ও বীগাবলী
পুনর্গঠন করে। নবীকুলে এই সাজ্য ব্যবং। অলুমান হয় ভার্তেই
বা রবে নিয়বলের উৎপতি।

সংলগ্ধ ইইরাছে, সে সকল পর্কাত হুইতে এই বালিরাড়ীনির্ন্তিত পর্কাতমালার প্রাকৃতি সম্পূর্ণ স্বতর। সে সকল পর্কাতমালা বছযুগ পূর্ব্বে স্টেইইরাছে। সমুদ্র এক সমরে ভাহারই পাদদেশ ধৌত করিরা প্রবাহিত ছিল। কালে তথা হুইতে সরিরা গিরা এই জভীর বিভাগন্থ ভূমি সকল উত্তুত করিরাছে। এ ভূভাগ প্রথম ও ছিতীর বিভাগ হুইতে আধুনিক। কিন্তু আধুনিক হুইলেও, ছিতীর বিভাগ হুইতে বছপরিমাণে দৃঢ়তাপ্রাপ্ত হুইরাছে। কিন্তু বে দৃঢ়ভা প্রথম বিভাগের সমকক নহে।

চতুর্ব বিভাগ।—এই বিভাগের মৃত্তিকা সর্বাত্র প্রসময়, কোন কোন স্থানে কারণ বিশেষে কিছু দৃঢ়তা প্রাপ্ত হইয়াছে মাত্র। প্রথম ও চতুর্থ বিভাগের মৃত্তিকা পরস্পারে তুলনা করিলে স্পট্টই পুথক ধর্মাক্রান্ত বলিয়া বোধ হয়। গলার দক্ষিণে রাজমহলের পার এবং উত্তরে মালদহের পার, এ চুইরের মাটি তুলনা করিলে অতি সুন্দরভাবে পার্থকা দেখিতে পাওয়া যায়। রাজমহলের পারে গছার জলের ধার পর্যান্ত পাথর ও কাঁকর-বুক্ত কঠিন রাস্তা ও এঁটেল মাটি এবং ঠিক ভাহার ওপারের সমস্ত জমি, অথবা সমস্ত মালদহ জেলার দোআঁস প্ৰিযুক্ত মাটি বা কেবল রাজমহল ও মালদহের পার বলি কেন, সমস্ত ভাগীরথীর ব্যাপ্ত ভুই পারের মাটির তুলনা করিলে, তত্তভরের প্রকৃতিগত ভেদ সামাগু দৃষ্টিতেও পরিলন্দিত হয়। ভাণীর্থীর পশ্চিম পারের নিতান্ত ধারের মাটি লইয়া তুলনা क्रिल विटनव किट्टरे श्राटक (प्रथा यात्र ना। य शर्या छ नगीत कियात मार्टित छात्रा गड़ा इटेटलट्ट वा शृक्तकारन इटेग्रा शिवाट्ट, ভারার সীমা অতিক্রম করিয়া মাটি পরীকা করা আবশুক।

পশ্চিমে ভাগীরথী, উত্তরে পলা ও তাহার লাখা প্রশাধা, পূর্কে ধনেশ্বরী ও মেবনা এবং দক্ষিণে সমুদ্র বিস্তৃত এই গান্ধের বরীপ ভূতাগই চতুর্থ বিভাগের আরতন। গঙ্গা এবং ডাহার আসংখ্য লাখা নদীসমূহের প্রবাহ হারা আনীত মৃত্তিকার সমৃদ্র ভরাট হইয়া ক্রমে ক্রমে চর পড়িরা বরীপের সমস্ত ভূমিভাগই নির্মিত হইরাছে। এজন্ত প্রার সমস্ত ভূমিভাগই নির্মিত হইরাছে। এজন্ত প্রার সমস্ত ভূমিভাগই পলি মাটি সকল অতি অবিক্রভভাবে বর্ত্তমান দেখা হার। ক্রমত: এই পলি মাটির গুণে এই ভূতাগের প্রার সমৃত্ত ভ্রমির উর্মেরভা-শক্তিও এত অবিক্ বে, তাহার সলে অপর ক্রমের বিভাগের মৃত্তিকার তুলনাই হইতে পারে না। এখানে বংসরের মধ্যে একই জমিতে বহুবার ক্রমণ হইরা থাকে এবং ক্রমি পতিত থাকিলেও বত শীত্র ক্রমণে পরিপূর্ণ হয়, এত আর জ্যোধাও হর না।

পূর্ব কৰিত ভূমিসমূহের মধ্যে প্রথম বিভান্তির জমি সর্বা-শেকা নীরস; ২ছমিন পতিত থাকিলেও, চুতুর্ব বিভাগের ক্ষমির স্থার, কোন কালেই খন ক্ষমপূর্ণ ক্ষমন্থা প্রাপ্ত ইর না; অথবা তথার উত্তিরাদির বৃদ্ধি এবং বিকাশও তানুশ সভেক বা শীয়তর সহে। বিতীয় ও তৃতীয় বিভাগীর ক্ষমির উর্বারতা ওগ প্রারই এক সমান এবং প্রথম বিভাগীর ক্ষমি অপেকা বহু-প্রশে সভেক। এমন কি কোন কোন অংশ চতুর্থবিজ্ঞাগের অনেকটা অফুরপ।

চতুর্থ বিভাগের মাটি এবং তৃতীর বিভাগের মাটি বাদিও উভরই ক্রমে সমুদ্র সরিরা বাওয়ার জাগিরা উঠিরাছে বটে; কিছ ইহালের নির্মাণ-প্রকরণে প্রকৃতিগত বিভিন্নতা আনক। এই প্রকার মাটি নির্মাণে সমুদ্রের নিতা জোরার ভাটার সমর জল সরিরা বাওয়ার সঙ্গে কতকটা সাক্ত লক্ষিত হয়। ভাটার সমর সমুদ্রের ঢাকু তীর ভূমিতে বে প্রকার তাবকে তবকে বাগ রাখিরা জল নীতে গিয়া সরিয়া পড়ে; এখানেও সেইরপ কোন মৈসুর্গিক কারণবাশে কালক্রমে যেমন সমুদ্র জল তাবকে তাবকে স্বিরা গিয়া পৃথক্ হইয়া পড়িরাছে, ঠিক সেই প্রকারেই এই সকল জমির উদয় হইয়াছে এবং সেই সঙ্গে আকার বায়ুর প্রবল আবাতে বালুকারাশি তুপীক্রত হইয়া ও তথাবিধ কারণে ক্রমোত্তর পৃষ্টিলাভ করিয়া, প্রকাও প্রকাও বালিয়াড়ী সকল নির্মাণ করিয়াছে। কিছ চতুর্থ বিভাগীয় মৃত্তিকা-প্রকার নির্মাণ করিবার প্রকরণ অভবিধ।

বাঙ্গালার দক্ষিণস্থ চনিবশ পরগণা, থুননা ও বরিশাল জেলার দক্ষিণভাগ এবং স্থল্লরনের অবস্থা মনোযোগপুর্বক পরিদর্শন করিলে এই চতুর্থ প্রকার ভূমিনির্দ্ধাণের কৌশল অতি সহজেই অন্থভব করিতে পারা যায়। নলীপ্রবাহে আনীত মৃত্তিকার ক্রিয়ালারা নদীর সঙ্গম-স্থলস্থ সমুদ্রে চর পড়ে বটে, কিন্তু ভাষা একেবারে থানিকটা পরিমাণ স্থান চারিদিকে সমানভাবে ভরাট করিয়া জ্বমাট বাঁধে না বা একবারে সেইভাবে উঁচু হইয়া উঠেনা।

নদীপ্রবাহ সন্তাড়িত ঐরপ মৃত্তিকারালি সমুদ্রগত্তে বিক্লিপ্ত হইরা প্রথমে লখা ত্রিকোণ ক্ষেত্রের আকারে মোহনাস্থিত সমুদ্রকে ভরাট করিবার চেষ্টা করে এবং ঐ ত্রিকোণ-ক্ষেত্রের তলদেশ নদীর মূথে এবং অগ্রবর্ত্তা কোণ সমুদ্রের দিকে থাকে। কিন্তু সমুদ্রের প্রবন লোতোবেগ, অতি অগ্ন পরিসমুক্ত স্থানসমূহকে কাটিয়া বিক্লিপ্ত করিয়া দেম, এই হেন্তু বথন ভরাট স্থান ক্রমে সমুদ্র হাছিয়া উঠে, তথন এক অবিভিন্ন ত্রিকোণ-ভূথণ্ড নির্মিত হওয়ার পরিবর্ত্তে ক্ষতক অংশ মূল ভূতাগে সংলগ্ন এবং অবনিষ্ট বহুখণ্ড বীপাক্ষারে পরিপত হইয়াছে দেখিতে পাওয়া যায়। সেই বীপাক্ষারির মধ্যে বেটি সকলের মধ্যতলে অবস্থিত, সেটী ক্ষমবিত্তর লখা আকার

व्याख रत्र। शूनण्ड, जे कतांठे कृष्ध वधन जन हाफारेता আগিরা উঠে নাই, অধচ অমাট বাঁধিরা গিরাছে, তখন সমুদ্রজলের লোভ-ৰেগ আৰু ভাহাৰ পাত্ৰ কাটৰা বিক্লিপ্ত ৰা বিধৌত ক্ষিতে পারে না। বরং ভাহার মধ্যন্তিত নির ও নরম অংশ সকল কাটিরা তথার গতীর রেখাপাত করিয়া থাকে। অমী অস ছাড়াইরা উঠিলে, এই সকল গভীর রেধাই, তখন বদীপ মধ্যে অনেক বুহুৎ ও ক্ষুদ্র নদী এবং থালের আকার ধারণ করে। **এই নবোধিত ভূমিভাগ উহাদের ক্লাক্রিরা বারা পুনর্কার** ভালিয়া গড়িৰা ও ক্ৰমাণত লোৱারের প্রবলতার প্লাবিত হইরা, পশিষাটির বারা পুনর্নির্বিত হইলে, একরণ চিরস্থারিত প্রাপ্ত হইতে পারে। তখন অপেকারত পূর্ণনির্নিত মাটি হইতে নদীনালা বিশ্বল হইরা, অপূর্ণ নিমভাগে সরিয়া পড়ে এবং তথার পুনরার তথাবিধরণে নির্মাণের কার্য্য করিতে থাকে। পুণনিৰ্দ্মিত অংশে তখন যে কিছু নদী ও থান থাকে, তাহা গণনায় ও আয়তনে সামান্ত এবং তত্মারা ভাঙ্গা গড়ার কার্য্যও এত মৃত্তভাবে পরিচালিত হয় যে, দেশমধ্যস্থ মৃত্তিকাও বিশেষ রূপান্তর প্রাপ্ত হয় না।

গালের বরীপ এইরপেই গঠিত হইয়াছে এবং এখনও উহার দক্ষিণভাগের গঠন-ক্রিয়া উক্ত প্রকারে পূর্ণপ্রতাপে চলিতেছে। নিভাই মন্তুরের বাস ও বাবহার উপযোগী নৃতন নৃতন ভূমিথও সমুদ্রজল ছাড়াইয়া উঠিতেছে। উপরোক্ত ভূগঠন প্রক্রিয়ার অভিনরে, এখনও সমুদ্রগর্ভে মৃতিকা-নির্মিত এমন অসংখ্য চর দেখিতে পাওয়া যায়, যাহা জোয়ায়ের সময় জলে ভূরিয়া থাকে, কিন্তু ভাটার সময় জাগিয়া উঠে। ঐ সকল জমির প্রোভবেগে তথন ভাহাদের উপর নদী ও খালের যে থাভেরেখা পড়িতে দেখা যায়, ভাহাই ভবিষ্যতে অভি স্কল্মর্কাবে জাগা জ্মির পূর্টের নদী ও খালের আকারে প্রকাশ হইতে থাকে। জালে এ সকল নদীনালাও বিভ্তায়তন হইয়া সময়ে গুরুপ্রভির্মী বাইবে এবং ক্ষুদ্র ক্রমি শকল দেশভাগে সংলম্ম ক্রয়া একাকার যাইবে এবং ক্ষুদ্র ক্রমি শকল দেশভাগে সংলম্ম ক্রয়া একাকার ধারণ করিবে, ভাহা বলাই বাহলা।

গৌড়ের পূর্ধ-দক্ষিণত্ব সমুক্তভাগও এইরপে ভরাট প্রাপ্ত ভূমি-থণ্ডের উদরে ক্রমণ: দক্ষিণমূখে সরিরা যার এবং সম্ভবতঃ সেই উন্নত ভূখণ্ডে বর্তমান ফ্লারবনের ভার অসংখ্য নদী বা ধান পড়িরাছিল। সেই সকল নদী ও খালের মধ্যে গলার মূল-প্রবাহই সর্বাপেকা প্রবা বা ক্রমধার ছিল। সেই মূলপ্রবাহ আভিও ক্রম্মর পল্লার আকারে ভটভূমি বিনুর্গ করিরা প্রবাহিত হইতেছে।

ক্লড: সমুক্ত সমিয়া যাওয়ার বধন সমুক্রণতে প্রথম বরীপ সমুখিত হয়, তথন গলার মুলপ্রবাহ ভারীরথী বাত দিয়া প্রবাহিত হইরাছিল এই কারণে চিরন্তন কাল হইছে লোকে গলার নাগর-সলমকে 'গলাসাগরসক্ষ' বলিরা অভিহিত করে। পরা বা মেঘনা সম্ভবতঃ প্রথমে সমুদ্রের খাড়ি ছিল, পরে নদীপর্জে পর্যা-বলিত হইরাছে।

খুঁটার প্রথম শতাব্দীতে লিখিড পেরিপ্লসে দেখা বার বে, বর্ত্তমান রক্ষপুর প্রভৃতি অঞ্চল হইতে তেজপাত ও অপরাপর বাণিজ্যস্তব্য গলা বক্ষে নৌকা বা জাহাজ বোগে পাজের বন্দর অর্থাৎ তমোলুক বা ভাত্রনিপ্তিতে আনীত হইড। অবশ্রই স্বীকার করিতে হইবে যে, গলার মূলপ্রবাহ ভাগীরবীর খাদে প্রবাহিত না থাকিলে কিব্লুপে ঐ সকল বাণিজ্যন্তব্য উত্তরবঙ্গ হইতে গলার বারা বাহিত হইরা ভযোগুক্ষণে আসিতে পারে না। অথবা এমনও হইতে পারে বে. এখন বেমন মেঘনার মূৰে বহুদুর প্রবিষ্ট সমূদ্র খাড়ীকেও মেখনা বলিয়া থাকে; ভখনও সেইরূপ গলার মুখে বহুদুর প্রবিষ্ট এবং তমোলুকের ভটবাহী সমুদ্রগাড়ীকে গঙ্গা বলিয়া ডাকিড। পেরিপ্ল,সে গাঙ্গের কনরে বাণিক্ষা দ্রব্যাদির প্রসঙ্গে সেই অর্থেই গলার নির্বিশেষত্ব সূচিত হইরাছে। পেরিপ্ল,দ হইতে প্রাপ্ত ইহার আফুসঙ্গিক আরও এই হুইটী প্রমাণ হইতে এই লেবোক্ত অনুমানই ঠিক বলিয়া অবধারিত করা যায়;—গঞ্চার উপর বাণিজ্ঞান্তব্য বহনার্থ যে সকল নৌকা ব্যবহৃত হইত, তাহারা সমুদ্রগামী পোত: নদীতে যে সকল নৌকা যাতায়াত করে, তাহারা সম্ভবত: তথার যাইতে সাহস পাইত না বলিয়াই সামুদ্রিক পোত ব্যবহৃত হইত। এতন্তিয় গলার মুখে ঘন সন্নিবিষ্ট জনপদ ও বাণিজ্য বন্দরাদি সহ "ধুদে" নামক একটা প্রকাশু দ্বীপ ছিল। স্থতরাং গলা দক্ষিণভাগে নদীর পরিবর্তে বছবিভৃত সমুদ্রখাড়ী বিশ্বমান না থাকিলে পেরিপ্ল,সের এ ছইট উক্তির কোন সৃষ্ঠি থাকে না।

ভাগীরথীর পূর্ককৃলছ মাটি ক্রমে ক্রমে উচ্চ ও অপেক্রারত কঠিন হইরা উঠিলে এবং বছীপের অপরাংশেও বছল পরিমাণে ভূমিওও সকল নির্মিত ও জলরেখা ছাড়াইরা মন্তক্ষেত্রলন করিলে বিবিধ নৈসর্গিক কারণের প্রেবলতার, গন্ধার মূলপ্রোত ভাগীরথী থাদ পরিজ্ঞাগ করিরা, পল্লা নাম গ্রহণ ও অভন্ত থাদ অবলঘনপূর্কক, ভাগীরথীর পূর্ককৃলের আরও উত্তরপূর্কভাগে সরিরা গিরাছিল। এবনও পল্লা ক্রমণা উত্তরনিকে সরিরা বাইতেছে। গত্ত লভ বংসরের মধ্যে পল্লার গত্তি কভটা সরিরা গিরাছে, ভালা ভাবিলেও আন্চর্য্য হইতে হর। করিলপুর অলার মাদারিপুর মহকুমার কাছে বে ছোট খালাট এথন পালঙের নির দিরা বাইরা কীর্তিনাশার গিরা মিশিরাছে, ভবার ৭০৮০ বংসর পূর্বে পল্লার মূল খাত ছিল; কিছ এখন পল্লা ভাহার ১৯১৭ ক্রোপ উত্তর। বে ক্রম্ব নবী কুমার নামে

করিবপুর জেলার সর্ক্ত বাাধ্য, অন্দা ১২৫ বংসর পুর্বে, ভাহার অনেকাংশেই পদার আটীন এবাহ ছিল। ভথা হইভে পদা এখন বহু দূরে সরিরা লিয়াছে।

গালের বর্ত্তীপের অবস্থা যথন এইরপেই ছিল, তথনকার দেশবিভাগ কিরপ ছিল, তাছার সংক্ষেপ আলোচনা বাধ হর অপ্রাসন্ধিক হইবে না। টান-পরিস্তাকক ইউএন্-নির্মান কাজিনগড়ের পরেই পৌশুরর্জন রাজ্য দেখিয়াছিলেন। বর্ত্তনান ইউ ইতিয়া রেলওরের জাহেকগজ টেসনের নিকটবর্তী রান কাজিনগড় বলিয়া অপ্রমিত হয়। তথার পর্বতোপরি তেলিয়াগড় নামক একটা আটান কেরা, অনেক স্থরমা ও ক্লের গৃহাদির ভয়াবশেব এবং অনেক ভয় দেবলেবীর মূর্ত্তি দেখিতে পাওয়া বার। বাহা হউক, এই কাজিনগড় ও কুনী নদীর পূর্বতট হইতে আরম্ভ করিয়া ব্রহ্মপুত্র পর্বান্ত বিভূত পূর্ণিরা, মানদহ, দিনাজপুর, রলপুর, বগুড়া, কোচবেহার প্রভৃতি হান লইয়া প্রাচীন পৌশুরর্জন রাজ্য। পৌশুরর্জনের পূর্ব্বে এবং ব্রহ্মপুত্রের পূর্ব্বিকে প্রধাবিত সমন্ত ভূডাগ লইয়া প্রাচীন প্রান্তব্য বা কামরূপ রাজ্য।

হিউএন সিরাং লিখিয়াছেন বে, কাষরূপ হইতে প্রার २८० मार्टन निकर्ण नम्छि ताका। এই नृत्र नित्रभाग, स्वाध হয়, সমতট রাজ্যের পরিবর্তে তাহার রাজধানীর দুরম্ব নির্ন-পণ্ট ছিউএন সিরাংএর অভিপ্রেত। বর্তমান ঢাকা, পাবনা, প্রান্ততি ক্লেলা বোধ হয় তৎকালে সমতট রাজ্ঞার অন্তর্গত ছিল এবং পদ্মার বর্তমান খাতের দক্ষিণেও কিছুদুর পর্যন্ত এই রাজ্য বিহুত থাকে। পদ্মা ক্রমশ: আরও উত্তরে অর্থাৎ ভাহার বর্ত্তমান স্থানে সরিয়া বাওয়ার পর, এই দক্ষিণাংশ, ক্রমে গালের বৰীপের অন্তর্গত হইরা পড়িরাছে। সেকালের সমতট রাজ্যের আরতন পদ্ধার প্রসর্গনীল গতির দারা অনেক রূপান্তর প্রাপ্ত হইরাছে, ভাহাতে আর সন্দেহ নাই। কেবল সেকালের সমতট কেন ং---এ ফালের বিক্রমপুরেরও বহু রূপান্তর ঘটিরাছে। পূর্বে উত্তর বিক্রমপুর ও দক্ষিণ বিক্রমপুর একই সংস্থা ভূকণ্ড ছিল, কিন্তু একণে মধ্যক্ত দিয়া পদ্মা প্ৰাথাহিত र अवात, केवत विकासमूत्र रहेरा प्रक्रिश विकासभूत गृथक रहेता পঞ্জিরাছে। বাহা হউক, সমতটের ধন্দিশছ কুভাগ বে সমুদ্রতটে অৰ্কিড ছিল, ভালা বলাই বাহলা। সমষ্ঠে এবং ব্ৰহ্মপ্ৰের পূৰ্বছিত ভূজাগ সকল, অৰ্থাৎ আধুনিক ত্ৰিপুৱা, নোৰাখালি এবং চট্টগ্রাম অভৃতি স্থানে তৎকালে কিরাভাবি বিবিধ অন্যৰ্থা-স্নাজির নিবাস ছিল।

পূৰ্বোক্ত কাজিলগড়ের বন্ধিশ ক্ষতে অবং ভালীরজীর পশ্চিম তেওঁ বাহিস্কা গ্রাচীল কারাব্য । উহা দলিশে বেদিনীসূলের নীমা পর্যন্ত বিভ্তা নামারণ, মহাতাহত ও পুরাণাদিতে বে বন্ধ নামক বেশের উরেখ আছে, তাহা সন্তবতঃ এই বন্ধ। ইহা কোন এক সমরে রাচ ও কর্ণপ্রবর্গদি ভিন্ন ভিন্ন বিভাগে বিভক্ত ইইরাছিল। উহার দক্ষিণভাগদ্বিত বর্জমানাদি প্রবেশ রাচ এবং তাহার উত্তরহ ভূতাগ কর্ণপ্রবর্গ বলিরা নিরূপিত হয়। গৌজ-নগর গোড়ার প্রাচীন পৌতুবর্জনেরই অন্তর্গত ছিল; পরে গৌড়নগরের সমৃদ্ধি চতুর্দ্ধিকে ব্যাপ্ত হইলে সমন্ত বন্ধরাল্য, এমন কি, বর্তমান সমন্ত বালালা দেশই গৌড়দেশ ও গৌড়রাল্য নামে বিখ্যাত হইরাছিল। মুসলমানাধিকারে লক্ষণাবতীরও প্রাসিদ্ধি ঘটে। গৌড় নাম প্রবল হওয়ার, কালে বালালার প্রাচীন ক্ষে কৃষ্ণে বিভাগ ও তাহাদের নাম গুলি বিশুর হইরা গিরাছে।

ভাগীরণীর পশ্চিম কুলছ প্রাচীন বলের দক্ষিণ হইতে সঞ্জবতঃ সমত মেদিনীপুর কেলা এবং বালেখর কেলাজ্বও কিরদংশ লইরা তদানীস্তম তাত্রলিপ্তি রাজ্য। বর্তমান তম্পূর্ক নগর উহার রাজধানী এবং বাণিজ্য বন্দর ছিল। মহাভারতের বনপর্কে ১১৪ জধ্যারে উলিখিত হইরাছে বে, রাজা বৃধিন্তির পঞ্জত নদীসমন্বিত গলাসাগরে তীর্থমানাদি করিরা, সমুক্রেম ধার দিরা কলিজ দেশে উপনীত হন। ঐ কলিজের মধ্যে বৈতরণী নদী প্রবাহিত। [তাত্রলিপ্তি দেখ।]

উপরে বালালার গঠন ও দেশাদির অবস্থান সম্বন্ধে বাহা লিখিত হইল, তাহার আন্তপূর্বিক ইতিস্থা বালালার পুরাতত্ব ও প্রস্নতত্ব বিভাগে স্বিক্তার আলোচিত হইরাছে।

ভুতত্বিদ ব্লানকোর্ড, বাঙ্গালা প্রান্তরের উৎপত্তি সম্বন্ধে বিশেষ আলোচনা করিয়া লিখিয়াছেন যে, প্রথমে বালুকা-কর্মমান্তিত জীবদেহ ও উত্তিজ্ঞাদিজাত পশিক স্তর্নিশেন (Loam) রূপান্তরিত হইরা ভূপুঠোপরি ক্রন্ত হয়। ক্রমে তত্তপরি নদীক্রণবিধোত বালুকাকণা সঞ্চিত হইয়া উহা উচ্চ ভূমির আকারে পরিণত হইয়া থাকে। ক্লিকাতা ও তৎসন্নিহিত প্রদেশ, ২৪ পরগণা ও বশোদ-জেলার নানান্থানের পুষরিণী ধননকালে ভূপঞ্জরত্ব মৃতিকাতর পর্যাবেক্রণ করিরা তিনি তথাকার তরগুলির গঠন পর্যার লিপি-বছ করিরা গিরাছেন। কলিকাভার শিবাদহের নিকটে একটা পুক্রিনী খননকালে ভিনি ভূপ্টের পর বধাক্রমে 'কাইন্ সাও' লোম, ব্লু ক্লে ও পিটু লেরার (Peat layer) বা অপরিণত পাথুরে ক্রলার সামাস্ত তর দেখিতে পান। নিরবঙ্গের স্থানবিশেবে এই পিটু পেরার বা রক্ষবর্ণ করলাজর ২০ হইতে ৩০ কিটু পর্যান্ত নিরে স্মিবিট আছে। এই কৃষ্ণভারের অব্যবহিত পরে প্রায় ১১ কিটু পর্যন্ত বালুকামিত্রিত কর্দমন্তর (Sand colay). ভাহার পর ১৫ ফিট্ পর্যন্ত পুনরার হ্লুক্রে নামক কর। বেবোক্ত ছুইটা ভারে তিনি অনংখা **ভাতশির: স্বল্রী** ামেছর ওঁড়ি,

ৰাণাবন স্থলভ বৃঞ্চাদির কর ও শাখ শৃষ্ ক শ্রেণীর বছবিধ জীবাহি
নিহিত দেখিরা ছিলেন। তাহাতে বেশ অসুমান হর বে, এক
শমরে শিবাদহ নদীগর্ভে নিমজ্জিত ছিল, ক্রমশ: উহা জাগিরা
উঠিরাছে এবং ঐ স্থলরী ওঁড়িগুলি স্থলরবনের বিভৃতির
শাক্ষ্যান করিতেছে।

কিছুকাল পূর্ব্বে, কলিকাতা ফোর্ট উইলিয়ম হর্ণে ৪৮১ ফিট্ গভীর একটা কুপ কাটা হয়। ভূপৃষ্ঠ হইতে যথাক্রমে ঐ কুপগর্ড रहेरछ बानुका, कर्भम, भिष्ठे ७ अखत खत्र वाहित हरेताछिन। ভূপুষ্ঠ হইতে ৩৫০ ফিট্ নিয়ে প্রথমে কছপের পৃষ্ঠান্তি, তদনন্তর ৩৮০ ফিটু নিমে স্থমিষ্ট জলজীৰী শশুক জাতির মৃতান্থি-ন্তর এবং ভাছার পর ধবন্ত বনমালার নিদপন (a bed of decayed wood) नकीकृष्ठ रहा। ये तृकावह्यतानि निर्देशकन कतिरन উপলব্ধি হয় যে, বৰ্ত্তমান ভূপৃষ্ঠ হইতে ৩৮০ ফিটু নিমে অবস্থিত **ज्**रृष्ठे छत्रही वहारिन शूर्व्स निविष् वनमानात्र ममाञ्हाति हिन। কিন্ত ঐ ভূপৃষ্ঠ বর্তমান স্থন্দরবনের সমতল প্রান্তরের জ্ঞায় বে উচ্চ ছিল, তাহাতে সন্দেহ নাই। কারণ তাহা না হটলে অবশ্রই উহা সমুদ্রজলে নিমগ্ন হওয়াই সম্ভব। এরূপ হলে অবশ্রই স্বীকার করিতে হইবে যে, এক সময়ে ঐ বৃক্ষাদি প্রাচীন বঙ্গপৃষ্ঠ পরিশোভিত করিয়াছিল, কালে উহা ভূমিকম্পাদি কোন নৈস্গিক কারণে ভূগর্ভে প্রোথিত হইয়া গিরাছে। ভাহার পর নদীলোতে এই প্রভূত মৃৎপিও ভত্নপরি সঞ্চিত হইন্না বর্ত্তমান গুরগুলি সংগঠিত করিন্নাছে; অথবা সেই সমরে ঐ স্থান ক্রমশ: চরক্রণে সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে উর্দ্ধে উঠিরাছিল।

ভূপশ্বর মধ্যে নিহিত এই সকল বনমালা কালে ধ্বংস প্রাপ্ত
হইয়া করলায় রূপান্তরিত হইয়াছে। বালালায় এই করলার
ধনির অভাব নাই। রাণীগশ্বের করলার ধনি বিশেষ বিধাত।
এখন বরাকর ও বাকুড়া জেলা পর্যান্ত বিস্তত হানে করলার
খাল কাটিয়া করলা উন্তোলিত হইতেছে। এই স্থবিভূত খাদ
দৃষ্টে অলুমান হর বে, প্রাচীনবৃগে রাণীগশ্ব হইতে বরাকর পর্যান্ত
একটা নিবিড় বন বিয়াজিত ছিল। [করলা ও প্রান্তর শক্ষ দেখ]

করণা ভিন্ন ভূগর্জে লোহও পাওরা বার। বরাকর ও বীর-ভূমে কারখানা করিলা কোহা গাণাইবার ব্যবহা হইরাছিল। এখনও ভানে হানে বেশীর প্রখার লোহা গালাই হইরা থাকে। [লোহ বেখ।]

পূর্ব্বে এখানে সমুদ্র-জন হইন্তে লবণ প্রস্তুত করিয় বিক্ররের জন্ম একটা বিশ্বত কারবার ছিল। গবসেন্ট বিগাতী লবণ-বাণিজ্যের হিতার্বে দেশীর লবণ প্রস্তুত প্রধা রহিত করিয়াছেন। এখনও উড়িয়া ও ২০ পর্যাপার স্থানবিশেবে রাজকীর বিধি অনুনারে দেশীর সামুদ্র লবধ প্রস্তুত হইরা থাকে। [লবণ দেখ]

বালালার উদ্রেখবোগ্য কোন পর্কত নাই। উন্তরে একমাত্র হিমাচলপূর্ভক দার্জ্জিলিক শৃকভাগ। বালালার হোটলাট বাহাছর তথার রাজকার্য্যালরাদি স্থাপন করিরা একটা নগর প্রতিষ্ঠা করিরাছেন। এখন ঐ স্থান ও তৎপাদমূলক কার্নীওক্ নগর আহ্যাবাসরূপে পরিগণিত। এতত্তির পশ্চিমাংশে বাঁকুড়া হইতে হোট নাগপুর বিভাগ এবং সাঁওতাল পরগণার স্থানে স্থানে গওশৈলমালা দৃষ্টিগোচর হয়। ঐ পর্কাতগুলি বিদ্যাপাদ হইতে প্রস্তুত হইরাছে। বৈজ্ঞান্তিকগণের বিশ্বাস, আমেরগিরির উদ্গারিত গলিত প্রাব গড়াইরা আসিরা এই পর্কাতশ্রেণীতে পরিপত হইরাছে। ঐ সকল পর্কাতের এক একটা অংশ বিভিন্ন নামে পরিচিত। ধশিরা, জয়ত্তী প্রভৃতি পর্কাতমালা এখন আসাম বিভাগের অন্তর্ভুক্ত। উক্ত পর্কাত মালার বিভিন্ন গুরাদির বিষয় স্থানাস্তরে বিবৃত্ত আছে। [পর্কাত ও প্রস্তর দেখ।]

উৎপব্ন দ্ৰখ্য ও অধিবাসী।

খুষীয় ১৯শ শতাব্দের শেষ এবং ২০শ শতাব্দের প্রারম্ভ কাল পর্যান্ত,এই বাঙ্গালা প্রদেশ বুটিশরাজ্যের শাসন-ব্যবস্থার স্থবিধা-করে ৪৭টা জেলার বিভক্ত ছিল। ঐ জেলাগুলির মধ্যে বরি-শাল (বাধরগঞ্জ), ২৪ পরগণা, বর্দ্ধমান, মেদিনীপুর, দিনাজপুর, মুক্ত:ফরপুর, বীরভূম ও হগলী জেলায় প্রভৃত ধান্ত উৎপন্ন হয়। বাকীপুর বা পাটনা, শাহাবাদ, ভাগলপুর, দরভান্সা, মুঙ্গের, সারণ, সাঁওতাল পরগণা, নদীয়া, মালদহ ও মুর্শিদাবাদ জেলায় ধান্ত অপেকা প্রচুর পরিমাণে গোধ্য জন্ম। ফরিদপুর, পাবনা, हाका, तक्रश्रुत, मन्नमनिश्रुह, त्राक्रमारी, क्रमभारेखिए । **এ**বং পূर्वा-ক্থিত ২৪ পর্যাণা, নদীয়া ও ছগলী জেলার স্থানে স্থানে পাট, তামাক, ভাঁট, হরিদ্রা প্রভৃতি উৎপাদিত হইরা তথাকার নানা নগরে বিক্রমার্থ প্রেরিত হয়। এডভিন্ন বাঁকুড়া, চট্টগ্রাম, নোরাধালী, ত্রিপুরা, বস্তড়া, গরা, পুর্ণিয়া, হাজারিবাগ, लाहात्र छात्रा, वालचत्र, कठेक, मार्क्जिनिक, सलात्र, यानस्य, পুরী, চম্পারণ্য (চম্পারণ), সিংহভূম, ত্রিহত, ধূলনা প্রভৃতি 🗋 স্থানেও বিশ্বত চাস আছে। বর্ত্তমান কালে হাবড়া উপবিভাগে মেজিট্রেনী স্থাপিত হওরার উহা একটা সমর জেলারূপে পরি-গণিত: রাজনৈত্তিক হিসাবে কলিকাতা মহানগরীও একটা জেলা বলিয়া পরিগৃহীত। এই সকল জেলার বিচার সদর ভত্তৎ স্থানের প্রধান নগরীতে স্থাপিত। বিশেষ বিবরণ জেলার ইতি-হাসে এবং ভথাকার নগরসমূহের ভৌগোলিক বিবরণপ্রসক্ত ৰিবৃত হইরাছে। [ভত্তৎ শব্দ স্কটব্য :]

এই প্রদেশের প্রত্যেক কেলার ও তাহার বিক্রির উপবিভাগে জনেকগুলি নগর আছে, ঐ নগরগুলি প্রধানতঃ তথাকার খাণিপ্লাকের বলিরা পরিগণিত। তর্মধ্যে বে খালি বিশেষ সমূদ্ধ ও ধনজনপূর্ণ, নিমে তাহাদের নাম উল্লেখ করা সেল---

নগরের নাম	লোক	নগরের নাম	লোকসংখ্যা
কলিকাতা সহর	তেলী, ভবানী-	- বৰ্দ্ধমান	৩৪ হাজার
পুর কালীঘাট	একতা ৮ লক	মেদিনীপুর	್ಲಾ
পাটনা > লক	৭১ হাজার	रुगनी ଓ हुँ हुड़ा	৩১ "
হাবড়া ১ "	¢ "	আগরপাড়া	۾ اادي
ঢাকা	۶۰ "	বরাহনগর	۰.
গরা	99 "	শান্তিপুর	રગા "
ভাগলপুর	٠ ۵	কৃষ্ণন গর	२ १॥ "
দরভাঙ্গা	66 a	শীরামপুর	₹¢∦ "
মুঙ্গের	(b ,	হাজীপুর	₹¢ "
ছাপরা	€ ₹ "	বহরমপুর	રજા "
বেহার	88 🌲	পুরী	২ ২ "
আরা	80 *	নৈহাটী	२३॥ "
কটক	80 ,	বেতিয়া	₹ > "
মৃজ:ফরপুর	82 ll ,	সিরাজগ ঞ্চ	« دې
মুশিবাবাদ	୍ଦ ॥ ଜଣ	চট্টগ্রাম	٠, د۶
मानाश्रुत	৩৮ ,,	বালেশ্বর	₹∘ ,,

বিগত ১৯০৫ খুণ্টান্দে রাজকীয় নির্মাস্থসারে বঞ্চরাজ্যকে বিগও করিয়া উহার কতকাংশ লইয়া আসাম বিভাগের অন্তর্ভূ ক করা হইয়াছে। এই মিলিত প্রদেশ একণে 'পূর্ববৃদ্ধ ও আসাম প্রদেশ' বলিয়া পরিচিত। প্রাচীন বাঙ্গালা হইতে চট্টগ্রাম, নোয়াখালী, বগুড়া, পাবনা, ময়মনসিংহ, রক্ষপ্তর, দিনাজপুর, করিদপুর ও রাজশাহী জেলা বিচ্ছিন্ন করিয়া এই বিভাগে সংযুক্ত করা হইয়াছে। পক্ষাক্তরে সীমা-সামঞ্জ্য রক্ষা হেডু মধ্যপ্রদেশ হইতে সম্বপুর বিভাগ বাঙ্গালা প্রেসিডেশীভুক্ত করা হইয়াছে।

বাঙ্গালার জনসংখ্যা প্রার ৭ কোটি হইবে। এই ৭ কোটির মধ্যে প্রার ৪ কোটি ৬০ লক্ষ লোক থেকার। এই কারণেই বে দেশের দারিদ্রে উত্তরোজর পরিবর্ধিত হইতেছে, তাহাতে সন্দেহ নাই। ঐ ৪৪০ কোটি লোকের মধ্যে শিশু বালিকা ও রমনীগণ গৃহীত। তন্মধ্যে ৩ কোটি ৪ লক্ষ ৬৬ হাজার লোক গৃহকর্মাদি ব্যতীত অপর কোন কার্যাই করে না। অবলিপ্ট ৪০ লক্ষ ৫০ হাজার প্রীলোকের মধ্যে প্রার ২০ লক্ষ ক্রিকার্য্যের সহবোগিতা করে এবং তদবশিপ্ট কলকার্যানার ও গৃহত্তের বাটাতে কার্য্যে লিপ্ত থাকে। কতকগুলি বা বালের কালে, ডাকের গহনা ও করি প্রভৃতি প্রেত্তত কার্য্যে বা তর্ম্যুক্তর মধ্যে প্রার ১ কোটি ৫৮ লক্ষ ৩০ হাজার লোক বেকার। ইহাদের

মধ্যে বালক ও বৃদ্ধের সংখ্যাই অধিক। প্রার ১ কোটি ৩৩ লক্ষ
৩২ হাজার লোক কৃষি ও ভূসস্পতিভোগী, ২৫ লক্ষ কলকারখানার ও বিভিন্ন শিনকার্য্যে নিযুক্ত রহিয়াছে। অভূমান
১০ লক্ষ ঘাণিজ্যকার্য্যে নিপ্ত। তদপেকা কিছু কম দাসত্বপৃত্যাল আযক। অবশিষ্ট প্রার ৬ লক্ষ ২৫ হাজার লোক
গত্যেন্টের যেতনভোগী কর্মানারী।

হিন্দু, মুসলমান, খুটান প্রভৃতি বিভিন্ন ধর্মাবল্বী জাতি লইয়া বালালার এই অধিবাসিসংখ্যা গঠিত। প্রাক্ত বৃদ্ধাসীর মধ্যে লামাজিক মর্য্যাদালুলারে বে বে শ্রেপীগত বিভাগ হইয়াছে, নিম্নে তাহাদের নাম বা সামাজিকসংজ্ঞা লিখিত হইল:—

হিন্দু—আন্ধান, কারস্থ, ক্রির বা রাজপুত্র, বৈছ, বাজন, বেণিরা, গোরালা, আহীর, সন্দোপ, কৈবর্ত্ত, জেলে, ভিওর, পোদ, ভেলী, কলু, তঁড়ী, কুমার, কামার, গোঁড়, ভাষ্থাী, কোএরী, কুর্মী ইত্যাদি এবং অনাব্য—সাঁওতাল কোল, ওরাজন, মুণ্ডা, ভূঁইরা, ভূমিজ, বরবার, কোচ ইত্যাদি। অর্দ্ধহিন্দু—চণ্ডাল, কোচ, পলী, রাজবংশ, বাগ্দী, বাওরী, চামার, মুচী, দোসাধ, মুনাহর, পাসী প্রভৃতি। এই সকল ও বন্ধবাসী অভাভ্ত জাতির বিবরণ অভ্যত্র প্রদত্ত হইয়াছে। তিন্তুৎ শব্দ দেখ।

পূর্ব্ধে কণিত হইরাছে যে, ক্লবিকার্যাই এখানকার অধিবাসিবর্গের প্রধান উপজীবিকা। উৎপন্ন দ্রব্যের মধ্যে ধান্ত ও পাট
প্রধান, ভদ্ভির এখানকার ক্রবকগণ আবশ্রক মত তৈলকর বীজ,
ছোলা, কলাই প্রভৃতি নানা শক্তের চাস করিয়া থাকে। আমন,
আউস, বোরো এবং উরী বা লাড়া (জলা) ধান বিভিন্ন সমরে
উৎপন্ন হয়। সরিষা, তিসি ও কলাই প্রভৃতি রবি শক্ত সময়ান্তরে
উৎপন্ন হইতে দেখা বার। পাট বা কোষ্টার চাস এখন উত্তরোভর
বাড়িতেছে, কিন্তু নীলের চাস উঠিয়া যাইভেছে। পূর্ব্বকের নীলকুটীমাত্রই এখন পতিতাবন্ধার পড়িয়া নহিরাছে। পশ্চিম
বল্লের কএকটা স্থানে মাত্র নীল পচান হইতেছে। হিমালয়পাদম্লন্থ লাজিলিল জেলাসমূহে চা ও সিন্কোনা এবং ভাগলপুর
ও বেহার অঞ্চলের নানান্থানে অহিকেনের চাস আছে।

বর্তমান অবস্থা।

অবস্থার পরিবর্জনের সলে সলে বলবাদী বালালী লাতির অনৃষ্টও ক্রমণা মন্দ হইরা পড়িতেছে। বে বালালীর বীরত্বকাহিনী চিরন্তন কাল হইতে ইতিহাসের উক্ষল চিত্রপটে প্রতিক্লিত রহিরাছে, সেই বালালী আজি অরলারে লালারিত।
মহাভারতীর বুগেও বলীর বীরগণের প্রভাব লিগত্তে রাষ্ট্র
হইরাছিল। বাধীন বালালী রাজগণ লোক্ত প্রেডাবে স্বাজ্যনাসন করিরা গিরাছেন। শ্রুবংশ, পানবংশ ও সেনবংশির

^{*} Tribes and Castes of Bengal by Risley.

নরগতিগণের বীরন্ধসৌরব শিলালিপিতে ও প্রাচীন কুলগ্রহে
বিবৃত আছে। বালালা মুসলমানের পদাকনত হইবার পরও
বারন্ধুরার অতুল প্রভাগ সমগ্র বলে প্রতিধ্বনিত হইরাছিল।
রালা প্রভাগিতিত, কংসনারারণ, সীভারাম প্রভৃতির বীর্ষ্থকাহিনী ও বুছনিপুণভার বিষয় কে না অবগত আছেন ?
বেলী দিনের কথা নহে, বুরীর অটাদশ শভালের মধ্যভাগে
জানকীরাম, বোহমলাল প্রভৃতি বালালী বীরকে আমরা
বালালার রপক্ষেত্রে সদলবলে অবতীর্গ দেখিতে পাই। তৎপরে উনবিংশ শভালে লেক্টেনান্ট কাল্ঘোবও সে বীর্ষ্
প্রভাবের অভ্না রন্ধি বহন করিরাছিলেন—আলিও শ্রীমান্
ভ্রমণভন্ত ব্লিয়াস বেজিল রাজ্যে বালালীর বীর্ষ্ণ ভাতি উন্তাসিত
করিতেছেম। কিছ হাথের বিষর, ইংরাজরাজের কঠোর পাসনে
ও রাজনভবিষির নির্মবশে সকল গৌরব ও খ্যাতি কোথার
বিস্তা হইরাছে, ভাহার নিদ্দলন্যাত্রও যেন নাই।

হুপ্রসিদ্ধ ও প্রাচীন বালাগার বিভিন্ন রাজবংশগুলি আর সেরপ রাজশক্তিসম্পন্ন নহেন। দরিক্রতাদোবে তাঁহারাও সকলে এখন নিবেজ ও নিপ্ৰভ। তাঁহাদের বংশধরগণ একণে উপাধিভারমাত্র বহন করিয়াই সম্বন্ধ। কোন কোন রাজবংশ গণজালে জড়িত হওরার গবর্মেণ্টের অধীন থাকিরা বৃত্তিমাত্রের উপভোগী হইতে বাধ্য হইরাছেন। বর্জমান-রাজ, বিষ্ণুপুররাজ, ছোটনাগপুর ও চল-ভাকরের রাজহর, দরভাদাপতি, পূর্দারাজ, বশোররাজ, কোচবিহার-রাজ,নদীরারাজ, নাটোররাজ, রামগড়ের রাজা এবং সরপ্তজা ও উদরপুরের नव्यक्तिवर्ण अक्टल वन, वीवा ७ नामर्थाहीन इटेबा शिक्रवाहिन। এডব্রির সারও অনেক জমিবারও রাজা সাহেন, তাঁহারা রাজামু-গ্রহ লাভ ভিন্ন, ক্থমও স্বাধীনতা লাভেচ্ছা প্রকাশ ক্রেন নাই। বরং রাজাত্মগ্রহলাডেজার এবং শীর বিবরবাসনা পরিত্তি-কামনার নিরন্তর অবিবেচকের ভার পরিত্র প্রভারন্দের রক্ত-শোৰণ ক্রিতেছেন। অর্থক্রনিবন্ধন প্রকার বাছবল অপ-নোখিত হইয়াছে এবং সেই সলে সলে রাজশক্তিরও অভাব ঘটিতেছে। ধনহারা প্রাঞ্চাপণ এইরূপে ভার বিনা মারা বাইভেছে। ভাছার উপর ভগবান করের উপর কট দিতে-**एम, शैमहःशीत इत्रत्केक्टम इफिंटकत भन्न इफिंक जा**निता तथा দিতেত্বে, অনাবৃষ্টি হেডু অলাকাৰে আলাভাৰ ঘটনা প্ৰজাৱ नर्सनाम नाविक स्टेरफ्टर ।

41

और ज्यम व्यविनातीत गर्या क्षेत्रांनकः रियु, प्रज्ञान, स्मीत ७ रेपरमिक पृष्टान् श्रवः व्यक्ति व्यनार्यः-वर्षत्वी पृष्टे स्व ।-रियु, प्रज्ञान ७ पृष्टानवर्षायन्त्री स्टेरम् काराता ज्यानात- বিশেবে বিভিন্ন । শৈর, শাক্ত ও বৈশ্বব প্রভৃতি বেরুপ হিন্দুর প্রেণীভাগ আছে এবং ভাহার মধ্যে আবার রামাননী, কবীরপহী প্রভৃতি বেরুপ সাম্প্রদারিক বিভাগ দেখা বার, মুসলমানের মধ্যেও সেইরুপ সিরা ও স্থরী ব্যতীত ওহাবী, ফরালী প্রভৃতি পৃথক্ মত বিভমান আছে। আবার খুটানদিগের মধ্যে রোমান্ কার্থলিক, গ্রীকচার্চ ও প্রটেটান্ট সমাল ব্যতীত মেণ্ডিট চাপেন, ওরেস্লিরান মিসন, এপিসকোপেলিয়ান মিসন, লুদারন্ মিসন প্রভৃতি সাম্প্রদারিক মতভেদ দৃষ্ট হর। অনার্য্য সম্প্রদারের ধর্মত স্থানতেদে পৃথক্ পৃথক্।

বৌদ্ধ ও হিন্দুধর্মপ্রোতের প্রবল বস্তা এক সমরে বালাগার অপ্রতিহত গতিতে প্রবাহিত ছিল। পালবংশীয় বৌদ্ধ রাজ-গণের অধিকারে বৌদ্ধধর্মের যে জাল্পর প্রভাব বালাগার বিরাজ করিয়াছিল, আজিও তাত্ত্বিক উপাসনার তাহার প্রভুত নিদর্শন রিছাছে। বৈদিক উপাসনাপদ্ধতি তৎকালে একবারেই বঙ্গ-রাজ্য হইতে অস্তর্হিত হয়। তাই মহারাজ আদিশুর কনোজ হইতে পঞ্চ সায়িক ব্রাহ্মণ আনাইয়া বালাগায় বেদমার্গ প্রশন্ত রাখিতে চেষ্টিত হন। তাঁহার পরবর্ত্ত: সেনবংশীয় হিন্দুরাজগণও হিন্দুধর্মপ্রতিষ্ঠাকরে বিশেষ মনোক্রমণী হইর্ক্সছিলেন। বঙ্গালের কৌলীস্ত-মর্য্যাদা এই বন্ধাণ-প্রভাব বিভারের অবান্ধর কল।

বৌদ্ধ ও হিন্দুর সমসময়ে বালালায় জৈনধর্ম্মের বিস্তার ঘটিরাছিল। এখনও নানা হানে জৈন ও বৌদ্ধকীর্ডি পরিলক্ষিত হইরা থাকে। ঐ সকল কীর্ডির বিবরণ বালালার প্রক্রুডছ প্রসলে বিবৃত হইরাছে। [হিন্দু, জৈন ও বৌদ্ধর্মের বিশেষ বিবরণ তত্তৎ শব্দে দ্রষ্টবা।]

অতঃপর সেনবংশের অধঃপতনে বালাগার মুসলমানের অভ্যাদর ঘটিলে এবানে পাঠান, মোগল প্রাভৃতি বিভিন্ন শ্রেণীর ইস্লাম-ধর্মাবলবীর অভ্যাদর হয়। সেই সঙ্গে বলবাসিগণও ইস্লাম-ধর্মাবলবীর অভ্যাদর হয়। সেই সঙ্গে বলবাসিগণও ইস্লাম-ধর্মে দীক্ষাগ্রহণ করে। সেই সঙ্গর হইতে বালাগার অনেক মুসলমান সাধু, ককির পীর প্রভৃতির আবির্ভাব হইরাছে। ঐ সকল পীরস্থানে আজিও মেলা হর এবং হিন্দু মুসলমান উত্তর শ্রেণীর লোক তথার বাইরা ভক্তিপূর্কক পূজা দিরা থাকে। বহুকাল মুসলমান সহবাসের ফলে, হিন্দুসমাজে সভ্যনারারণের (সভ্যাপীর) পূজা প্রবর্তিত হইরাছে। [মুসলমান শক্ষ দেব।]

বালালার মুসলম্নিরাজন্মের মধ্যকালে অর্থাৎ খুটার ১৫শ শতাব্দের দেব সমরে ১৪৮৫ খুটাকে নববীপথানে জ্রীচেডঞ্চ মহা-প্রভুর আবির্ভাব ছটে। বন্দের স্থবিখ্যাত স্থপতান ছবেনলাহ ও নসরৎ শাহের রাজকালে তিনি স্বীর কৈক্ষব্যত প্রচার করেন। উচ্চার ভিরোধানের পর, কৈক্ষব্যুক্ত উদ্ভরোভ্যর প্রতিষ্ঠালাভ ক্ষরিতে থাকে। ভাহার সম্পাম্যিক ও পরক্ষী বৈক্ষ্ব ক্ষিণ্য ধর্ম প্রচারের সহার হইরাছিলেন। ভাঁহারা উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট করেত প্রহ রচনা একঃ কাহারও কাহারও বাজানা অহবান করিরা জন-সাধারণের নিকট ভাগবতানি প্রোক্ত বৈক্তবধর্মের বিশন মর্শ্ব ব্যাখ্যা করিরা বাম। তাঁহাদের সেই ক্লানিত পদলহরী পাঠ ও পাল করিরা অনেকেই বিমুখচিতে শ্রীকৈতক্তের পরে আশ্রম গ্রহণ করেন। শ্রীজীব গোস্বামী, রূপননাতন, রুক্তবাস করিরাজ, কবিকনিপ্র, নরোত্তম লাস, বাহুবোব, জ্ঞানলাস, গোবিন্দ-রাস, কিছাপতি, জয়দেব প্রভৃতি বৈক্তব কবির্দের জ্ঞানগাথা অভাপিও বালানার এক প্রান্ত হটতে অপর প্রান্ত পর্যন্ত প্রতি-ধ্বনিত হটরা থাকে। শ্রীচৈতন্ত ও অপরাপর করির নাম দেখা।

বৈষ্ণব-ধর্মারকের শাখা প্রশাখারপে কর্ত্তাভজা, শুরুসভ্য, সভী-মা, হরিবোলা, রাতভিকারী এবং উৎকলের সংকুলী, অনস্তকুলী, কবিরাজী, নিহঙ্গ, বিন্দ্ধারী, অভিবড়ী প্রভৃতি মতের উত্তব হুইলেও প্রকৃতপক্ষে তাহা অভিনব ধর্মানত বলিরা গৃহীত হর নাই। শুহীর ১৯শ শভাব্দের প্রারম্ভকালে রাজা রামমোহন রার বেদান্ত মন্ত প্রতিপান্ত রাজমত প্রচার করেন। তাঁহা ক্রুইতেই আদি-রাজসমাজের খ্যাতি। তৎপরে ক্রিয়ার প্রবর্ত্তিত মতের সংলার করিরা মহাত্মা কেশবচন্দ্র সেন নববিধান (রাজ) মত প্রতিষ্ঠা করিরা বান। [রামমোহন রার, কেশবচন্দ্র দেন ও রাজসমাজ শক্ষে বিশেষ বিবরণ প্রত্বিত্তা।]

মহাত্মা রামমোহন বে সমরে দক্ষিণ-বলে ব্রাক্ষমত প্রতিষ্ঠাপ্রসলে সতীদাহাদি নিবারশক্ষণ হিন্দুধর্ম মত বিরুক্ষ হোরতর
সমাজ-বিশ্নবক্ষ আন্দোলন লইয়া হিন্দু অধিবাদিবর্গকে বিত্রত
করিয়া তুলিতে হিলেন, প্রার দেই সময়েই ১৮২৮ খুইাজে পূর্ববলে হাজী সরিৎ উল্লা করাজী নামক সংস্কৃত ইস্লাম ধর্মমত
প্রবর্জন হারা স্থানী সম্প্রদারের এক অভিনব শাবা বিস্তার
করিয়াজিকেন । ফ্রাজী দেখ।

বঙ্গের পুরার্ভ।

অতি প্রাচীন কাল হইতে বলদেশ নানা জনপদ ও নানা ক্ষুৱাজাে বিভক্ত। এখন বালালা বলিলে আমরা পশ্চিমে বেহারের সীমা হইতে পূর্বের চট্টগ্রাম ও আসামের সীমা এবং উত্তরে হিনালরের পাদদেশ হইতে দক্ষিণে বলোপসাগর ও উদ্ভিদ্ধার সীমা পর্যন্ত ব্বিরা থাকি। কিছ পূর্বকালে এরপ ছিল না। কখন ইহার আরক্তন বৃদ্ধি হইরাছে, কখন বা নানা রাজ্যে বিভক্ত হটরা একটা ক্ষু দেশ বলিরা গণ্য হইরাছে। বলের ইতিহাস আলোচনা করিলেই ভাহার বেল পরিচম্ব

Cafe witten auf

প্রথম দেখিতে হইবে, বল নামটা কড প্রাচীন ? এবং 'বল' বলিলে কোন হান বুঝার ? জগতের আদি-গ্রন্থ আক্-বংকিডার জনার্থানিবাস 'কীকট' (পরবর্ত্তী নাম মগধ), জ্যেদের ঐভরের ব্রাহ্মণে 'পুঙু' ' এবং অর্থম্ম-সংহিতার 'আল্ল' 'দেশের উল্লেখ থাজিলেও 'বল' নাম নাই। জামরা অ্যেদের ঐভরের আর্গ্যকে (২।১।১) সর্ব্বপ্রথম বল নাম পাই। বথা—

"ইষাঃ প্রকান্তিত্রো অভ্যার মারং স্থানীমানি বরাংদি। বলাবগধাশেচরপাদাক্রম্যা অর্কমন্তিতো বিবিশ্র ইতি" 🕫

'বলাং' অর্থাৎ বলদেশবাসিগণ, 'বগধাং' অর্থাৎ মগধবাসি-গণ এবং 'চেরপালাং' অর্থাৎ চেরজ্বনপদবার্শিশা। এই ত্রিবিধ প্রেজাই কি ছর্ম্মণতা কি ছরাছার ও কি বছ অপত্যতার কাক, চটক ও পারাবতাদি সদৃশ।

ৰান্তবিক বৈদিকযুগে বঙ্গদেশ অনাৰ্য্যনিবাস বৃণিয়া গণ্য ছিল। এই অনাৰ্য্যজাতিদিগকে লক্ষ্য করিয়া প্রাচীন ভাষ্যকান্তগণ বঙ্গাবগণের রাক্ষস অর্থ করিয়া থাকিবেন। আনন্দতীর্থ সেই প্রাচীন ভাষ্যেরই অনুবর্তী হইয়াছেন।

কেবল ঐত্যের আরণ্যক বলিয়া নহে, ঋক্দংহিতার কীকট বা মগধ অনার্যানিবাস বলিয়া নিন্দিত। ঐত্যারর ব্রান্ধণেও পৃঞ্জা: বা পৃঞ্জনপদবাসী দিস্যানাং ভূরিষ্ঠা

শ্বন্ধনতে তত্ৰ 'বলাবগৰাকেরণানাঃ' ইডাত ব্যাখ্যানাবেচুলং কটকল্পন্থ নিআলোক্ষনন্ ; অণি 'কলা' বলদেশীয়াঃ 'বগৰা' সপৰা, 'চেরণানাঃ'চেরনাক্ষন-গলবাসিনঃ। তালিবিধা এব প্রথাঃ 'ব্যাংসি কাকচটকণারাক্তানিক্ষুলাঃ। মুক্লেকের ইঞ্জিন্তন্। ইবালনেশতাপি সপ্থেদন পরিপ্রহা, কলিকনৌরাইলোঃ ক্লিকাক্স লোকে কিলোবেন চেরণান ইতি।" (পুঃ ১৬০)

এতবের আরণ্যকের উভ্ভ-জালের নেবোক কর্মী নামীন বলিয়া এইব করিবাব।

Bhattacharja's Castes and Scots of Bengal বহে
প্রভান্ত ক্যাণ্ডারের সংক্ষোপ পরিচয় রাষ্ট্রয়

⁽২) কক্ সংহিতা ভাৰভাচত। (২) ঐভৱের ব্রাক্ষণ গ্রহণ (৩) জধর্ক-সংহিতা ব্যবহাচত।

⁽০) এখানে ভাষ্যভার 'বজাং বনগতা বুকাং' 'অবস্থাং বীহিববালা ওবধরং' 'ইরপালাং উরংপালাং নর্পাং' এইরূপ অর্থ করিয়াছেন। আবার ভাষ্টীকাভার আনলতীর্থ 'বরাংসি' কর্থে পিলাচ, 'বলাবস্থাং' কর্থে রাক্ষন এবং 'ইর-পালাং' অর্থ জাতুর নির্দেশ করিয়াছেন। হুতরাং ভাষ্যভার ও চীকাকারৈর মধ্যেও বংশাই নতকেন দেখা বাইজেছে। ভাষ্যভার বেখানে বুক, ওবাধি ও সর্প করিলেন, ওাহারই মিকালার সেই হানে পিলাচ, রাক্ষন ও অহুর অর্থ বীকার করিয়াছেন। এইরূপ মততের মেধিরা অব্যাপক মোক্ষ্যলর জিবিয়াছেন—"Possibly they are all old etimic names like Vanga, Chera &c." (Sacred Books of the East, Vol I. p.202/;) অধ্যাপক সত্যরত সামালনী নহাপরও উহার অইটিকার এইরূপ বাাব্যা করিয়াছেন—

অর্থাৎ দহাদিগের জনক বলিরা ত্বশিত এবং অথর্কসংহিতার অঙ্গ ও সগধবাসীর প্রতি জনার্য্যোচিত প্লেবোজি দেখা যার।

ঐ সকল প্রমান হইতে মনে হইবে বে, বৈদিকবৃগে বর্তমান বেহার হইতে বাললা পর্যান্ত ভূভাগে জনার্য্য বা আর্য্যেতর জাতির প্রভাব বিশ্বত ছিল। জনার্য্যপ্রভাব হেতৃই ঐ সকল স্থানে আর্য্যগণ বাস করা স্ববিধান্ধনক বা নিরাপদ মনে করিতেন না। এমন কি, বৌধায়ন ধর্মস্ত্রে লিখিত আছে যে বল, কলিল, পুঞু প্রভৃতি দেশে বেড়াইতে আসিলেও ভ্রমণ-কারীকে পুনস্তোম বা সর্কাপ্রা ইষ্টি করিতে হইত।

মধুসংহিতা-রচনাকালে সম্ভবত: বঙ্গের নির্জ্জন বনমধ্যে হই একজন আণ্টাঞ্চবির আশ্রম গঠিত এবং সেই সঙ্গে ঐ সকল স্থান তীর্থ বলিয়া গণা হইরাছিল। মধুসংহিতাকার তাই ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন যে, তীর্থমাত্রা ব্যতীত অঙ্গ বঙ্গাদি দেশে কোন আর্থাসম্ভান ঘাইতে পারিবে না,—তীর্থমাত্রা ব্যতীত গমন করিলে ছিলাতিকে পুন: সংস্কার এছণ করিতে হইবে।

ঐতরেয় আদ্ধণে পুঞ্গণ ° বিধামিত্রের সন্তান বলিরা নির্দিষ্ট '। অথচ মন্থসংহিতায় পৌগুকগণের ব্যবহুবা শৃদ্ধ প্রাপ্তির কথা আছে। (১০।৪৪) ইহাতে মনে হইবে যে যথন বিধামিত্রের বংশধরগণ এদেশে আসিয়া বাস করেন, তথন এদেশে অপর আর্থা ত্রৈবন্ধিকের বাস ছিল না, একারণ ব্রাহ্মণ অভাবে তাহাদের সংস্থার লোপের সহিত তাহারা ব্যব্দ ও এখানকার অনার্থ্যভিত্র সংস্থাব দ্বা বিদিয়া চিক্তিত ইইয়াছিলেন।

কোন্ সময়ে বঙ্গদেশে আর্থাসভাতা প্রতিষ্ঠিত হইল, তাহা ঠিক জানিবার উপায় নাই। রামায়ণের সময়ে স্ত্রপাত ও মহাভারতীর বৃগে আর্থাসভাতা প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল, তাহার প্রমাণ পাওরা যায়। বামায়ণে লিখিত আছে যে চক্রবংশীর অমুর্ক্তরকা নামে এক রাজা ধর্মারণোর নিকট প্রাণ্ডেরাতিরপুর রাপন করেন। শতপথবাদ্ধণ প্রভৃতি বৈদিক গ্রন্থ হইতেই প্রমাণিত হইরাছে যে, বহু পূর্কাকালে মিধিলার বিদেব মাধব কর্ত্ক আর্থাসভাতা বিস্তৃত হইরাছিল। বর্তমান কল্পাইওড়ী রক্তর হইতে আসামের পূর্কামীন প্রান্ত প্রাচীন প্রাণ্ডাতার

(a) "অভ্নত্ত কলিভেন্ সৌরাইনসংগর্চ। ভীর্ষানোং বিলা গছন্ পুন:সংকারমইটি ।" (সমু) দেশ বিষ্ত ছিল, প্রাগ্ জ্যোতিবপুর (বর্তমান গোহাটী) উক্ত প্রাগ্ জ্যোতিবের রাজধানী। এখন কথা হইতেছে যে, মিথিলা (বর্তমান দরভাঙ্গা) ও আসামে আর্য্যসভ্যতা বিষ্তুত হইল, অথচ মধ্যে অঙ্গ, বল ও পোত্রে আর্য্যোপনিবেশ স্থাপিত হয় নাই, তাহা কি কথন সম্ভবপর ? মহাভারতে কর্ণপর্কে (১৫৩%) লিখিত আছে, "পোশু, কলিল, মগধ ও চেদি দেশীর মহাস্থারা সকলেই শাশ্বত পুরাতন ধর্ম স্বিশেষ অবগত আছেন এবং তদমুসারে কার্য্য করিয়া থাকেন"।' এই মহাভারত্তের উক্তি হইতে স্পাইই জানা যাইতেছে যে তৎপুর্কেই পোত্রে অর্থাৎ এখনকার উত্তর বলে বৈদিক ধর্ম ও আর্য্যসভ্যতা প্রবেশ লাভ করিয়াছিল।

হরিবংশ পাঠে অবগত হওয় যায় য়ে, য়য়াতিপুত্র পুরুর
অধস্তন ২২শ পুরুষে মহারাজ বলি জয়াগ্রহণ করেন। ইনি
পরম যোগী ও নুপতি ছিলেন। ইহার বংশধর পাঁচ পুত্র অল,
বল, মুল, পুঞ্ ও কলিল। ইহারাই মহারাজ বলির ক্রির
সন্তান, কিন্তু তাঁহাদের বংশধর পুত্রগণ কালক্রমে ব্রাহ্মণত্ব
লাভ করেন।

মহাভারতের আদিপর্কে (১০৪ অধ্যায়) বর্ণিত হইরাছে, "ভূলোক পরগুরাম কর্তৃক নি:ক্ষত্রিয় হইলে অনেক ক্ষত্রির-পত্নী বেদপারণ ব্রাহ্মণারা সম্ভান উৎপাদন করিয়া লইলেন। বেদের বিধান এই, যে পাণিগ্রহণ করে, তাহার ক্ষত্রে যে সম্ভান জন্মে, সেই সম্ভান তাহারই হয়। অভএব ধর্ম্মাচরণ ভাবিরাই ক্রিরপত্নীগণ ব্রাহ্মণের সহবাস করিরাছিল। এইরপ্রের দৃষ্টাম্ভ দেখাইবার অন্ত মহাভারতকার এই প্রাতন ইতিহাস কীর্ত্তন করিয়াছেন—

'ক্রিররাজ বলির পুত্রসন্তান হর নাই। তিনি একদিন গঙ্গালান করিতে আসিয়া দেখিলেন, এক অক্কার্ম নদীর স্রোতে ভাসিরা আসিতেছেন। ধার্মিক রাজা অবিলব্দে তাঁহাকে ভূলিয়া নিজ প্রাসাদে আনিলেন। সেই অক্স শ্ববির নাম দীর্মত্রা। ধার্মিক নরপতি তাঁহার ক্ষেত্রে পুত্রোৎপাদন করি-বার জন্ম ধবিকে অন্তরোধ ক্রেন। তদমুসারে তাঁহার মহিনীর

⁽ ७) সালবহুজেলার এখনও পুতুপবের যান আছে । [পুতু দেখ]

⁽ ৭) ুশ্বতেহজু পুঞ্জা: শৰ্মা: পুলিলা সুভিনা ইতুৰিভা অহুৰো ভাছতি, বৈশাসিতা। বপুলা: ভূমিটা: ।" (৭।১৮)

⁽৮) जामायन अवद मर्ज ।

^() चामत वाजीत रेडिशान २म वान ०० गुड़ा।

^{(&}gt; •) "কোনলা: কাপলোও লক কানিকা মাগধান্তথা চেবলক নহাভাগা ধৰ্মং কানতি পাৰতং ৷" (কৰ্ণপৰ্ক eci>e)

^{(&}gt;>) 'শহাবোদী স জু যদিৰ্যজুব বৃপত্তি: পূৱা হ প্ৰাসুৎপাহয়বাস পঞ্চবপেকছান্ জুবি ৷ আলঃ এখনতো জজে যল: হুমান্তবৈব চ ৷ পূঞু কলিলাত তথা বালেয়ং ক্ষমুচ্যতে ৷ বালেয়া বাৰূপাকৈব তঞা বংশক্ষা জুবি ৪"
(হবিবলে ৩১)৩০-০৫)

গর্ভে ধবি দীর্ঘতনা পাঁচ প্রের জন্ম দেন। এই পঞ্চপ্রের নাম অঙ্গ, বল, ফলিঙ্গ, পৃণ্ডু ও হন্দন। তাঁহাদের নামায়সারে এক একটী দেশ বিধাত।

ইরিবংশেও লিখিত আছে, পরমবোগী রাজা বলি উর্জরেতা ছিলেন। এজস্ত তাঁহার পত্নী স্থান্দেকার গর্ডে মহাতেজ্বী মুনিবর দীর্ঘতমা হইতে পঞ্চ ক্ষেত্রজ তনয় উৎপন্ন হন। যোগাত্মা বলি সেই নিশাপ পঞ্চ পুত্রকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিয়া যোগমার্গ আশ্রম্ভ করেন। (৩১ অধ্যার)

উদ্ত প্রমাণবলে বলিতে হয় যে, বলি অথবা তাঁহার পঞ্চ পুত্র হইতেই অঙ্গবলাদি জনপদে বৈদিক সভ্যতা প্রচারিত ও চাতুর্বর্গ্য সমাজ গঠিত হয়। ১৩

মহাভারতকার বলিপুত্র অঙ্গ, বঙ্গাদির নামান্থসারে ভিন্ন ভিন্ন দেশের নামোৎপত্তি খীকার করিয়াছেন। কিন্তু পূর্ব্বোক্ত অথর্কবেদ, ঐতরের আহ্বন ও ঐতরের আর্বাকের অন্থবর্তী হইলে অবস্থাই বলিতে হয় যে আর্যাসভ্যতা বিন্তারের পূর্ব্বে অঙ্গ, ওপুত্রের নাম করণ হইরাছিল। বলিপুত্রগণ যিনি যে রাজ্যে অধিকার পাইয়াছিলেন, তিনি সেই রাজ্যের নামান্থ-সারেই সম্ভবতঃ বিধ্যাত হইয়াছিলেন। যেমন পোত্রের অধিপতি মহাবল বাস্থদেব নানা প্রাণে কেবল মাত্র পৌত্রক' নামেই পরিচিত আছেন।

বলিপুত্র অকের ষষ্ঠ পুরুষ অধন্তন অকাধিপ দশর্থ লোমপাদ নামে বিখ্যাত ছিলেন। ইনি শ্রীরামচন্দ্রের পিতা দশরণের স্থাও ধ্বাস্কের শশুর। লোমপাদের প্রভৌদ্র চম্প ছইতে অব্বরাজ্যের রাজধানী চম্পা নামে প্রসিদ্ধ হয়। অসাধিপ চম্পের প্রপৌদ্র-পৌত্র বৃহর্গার বিজয় নামে এক পুত্র জন্মে। ছরিবংশে তিনি 'ব্রহ্মক্ষত্রোভর'' বিশেষণে প্রসিদ্ধ হইয়াছেন। এই বিজ্ঞারের প্রপৌত্রপুত্র অধিরথ হত্যুত্তি অবলম্বন করায় ক্ষত্রিরস্মান্তে নিশিত হইরাছিলেন। স্ত অধিরথ কর্ণকে প্রতিগ্রহ ক্রিরাছিলেন বলিরা কর্ণকে সকলে স্তপুত্র বলিত।'

(১২) ''জ্লো বল্প: কলিল্ক পুতু হৃদ্ধক তে হতা:। ডেমাং দেশা: সমাধ্যাতা: খনামক্ষিতা ভূবি।" (মহাভারত জানি- ১০৪।৫০)

- (১৩) "বলে চাঞ্জিনজং বৈ ধৰ্মভৰাৰ্থনৰ্শনৰ্। চজুৰো নিঃভান্ বৰ্ণাংগু ক ছাণায়িতেতি হ।" (ছয়িবংশ ০১।০৮)
- (১৪) প্রক্ষক্রোন্তর: স্ত্যাং বিজ্ঞানাস বিজ্ঞান।" (ছরিবংশ ৬১/৫৭)।
 এবানে 'রক্ষক্রোন্তর' শংকর কের কর্ম করিয়াচেন, রাজ্ঞান ও ক্ষরির
 উচ্চা ধর্মাবস্থী, আবার ক্ষরেকে ক্ষর্ম করিয়াচেন,—"শান্তি প্রভৃতি হায়া
 রাজন ইইতে উৎক্সই এবং বাঁহানি হারা ক্ষরির হইতে থেঠ।"
 - (১৫) इतिवान ७३ व्यवहारत शूर्वाणत वानावनि ७ व्यापत विवतन अहेगा ।

যাহা হউক, হরিবংশের বিদঃশে বদি কিছুমাত্র ঐতিহাসিকতা থাকে, তাহা হইলে অবশ্রেই বীকার করিতে হইবে যে, পৌল্লুল্ল করিরাল বলির সময় অর্থাৎ মহাবীর কর্ণের সপ্তদল পুরুষ পূর্ব্ধ হইতেই (বর্তমান সময়ের পাচহালার বর্বেরও পূর্ব্বকালে) অলবলে করির সমাজের প্রতিষ্ঠা ঘটিয়াছিল। এমন কি, এখানকার অনেক নূপতি বোগবলে বা কর্মফলে ব্রাহ্মণত্ব পর্যান্ত লাভ করিরাছিলেন। সেই প্রপ্রাচীন কাল হইতেই বালালীর জন্মভূমি বহু সাবিক বোগী, ঋবি, জ্ঞানী,মানী ও মহাবীরের লীলাহুলী হইরাছিল। এই কারণে বোধারন ধর্মপ্রেও মন্তুসংহিতার যে হান আর্যাবাসের অন্তপ্তের বলিরা ঘোষিত হইরাছিল, মহাভারতে বঙ্গপ্তান্থানে বলিরা কীর্তিত হইরাছে। শে

মহাভারত হইতে আমরা আরও জানিতে পারি বে, মহারাজ যুগিটিরের রাজহর যজ্ঞকালে এই বন্দদেশ নানা কুজ কুজ রাজ্যে বিভক্ত ছিল। ভীমের পূর্ক দিয়িজয় উপলক্ষে সভাপর্কে লিখিত আছে,—

"ভীমদেন **স্থাক হইলেও হুজ প্রস্তুদ্দিগকে** যুদ্ধে জয় করিয়া मगर्भातिशत फेल्मर्ट शमन कतिरानन। छलात्र मण्ड, मण्डभात छ অপরাপর মহীপালদিগকে পরাজয় করিয়া তাঁহাদের স্কলের সমবেত হইয়াই গিরিব্রজে উপনীত হইলেন এবং জরাসঞ্চনদান সহদেবকে সাম্বনাযুক্ত ও করায়ত করিরা সকলকে সঙ্গে লইয়া কর্ণের প্রতি ধাবমান হইলেন। অনস্তর পাগুরশ্রেষ্ঠ শ্রীম চতুরক বলে পৃথিবী কম্পিড করিয়া শক্রনাশন কর্ণের সহিত যোরতর যুদ্ধ করিলেন এবং তাঁছাকে সংগ্রামে পরাঞ্চিত ও বনীভূত করিয়া পর্বতবাসী রাজগণকে জন্ন করিলেন। অতঃপর পাওববীর মোদাগিরিস্থ অভিবলশালী রাজাকে মহাসমরে বাছবলে নিহত করিলেন। তৎপরে তীত্র পরাক্রম ও মহাবাছ পুঞ্চাধিপ वाञ्चलव ७ कोनिकीकम्हनिवामी ब्रामा मरहोमा এই छुटै नुপতিকে যুদ্ধে নির্ক্ষিত করিয়া বঙ্গরাজের প্রতি ধাবিত হইলেন। সমুদ্র-সেন ও চন্দ্রসেন নরপতিকে পরাজয় করিয়া ভাশ্ললিপ্রবাজ, কর্মটাধিপতি, স্থনাধিপতি, ও দাগরবাদী দক্ল মেচ্ছগণকে জন্ম করিয়াছিলেন ?'

⁽১৬) "এতে কলিজা: কৌৱের যত বৈতরণী নগী। যত্রাগলত গর্মোহণি দেবাধুরণমেতা বৈ ৪ ক্ষিতি: সমুপাযুক্তং যজিয়: গিরিশোভিতম্। উদ্ভর: তীরমেত্তি সভতং যিলসেবিতম্ ৪" (মুম্পার্ক ১১৪।৪-৫)

⁽ ১৭) "ভত: ফুলান্ প্র কাংক বপন্দানভিবীব্যবান্ত্রী বিজিত্য বুধি কৌরেরো নাগধানভাবার্তী ১১৬

উদ্ধ বিবরণ হইতে বেশ বুঝা ঘাইতেছে বে, মহাভারতের
আৰু আংশ রচনাকালে বর্ত্তবান বালালা প্রেসিডেলি মগধ
(বর্ত্তবান বেহার), কর্বের রাজ্য অল (বর্ত্তবান আগলপুর
জেলা), মোঘাগিরি (বর্ত্তমান মুলের), পুঞু (বর্ত্তমান মালদহ
হইতে বঞ্জা পর্যান্ত), কৌলিকীকজ (বর্ত্তমান হগলী জেলা).
বল (বর্ত্তবান ভাগীরখীর পূর্বাংশ), ফল্লাম (রাচ্), প্রস্নেল,
ভার্ত্তবিপ্ত (বর্ত্তমান ভম্নুক জেলা), কর্বাট ইত্যানি বিভিন্ন
প্রদেশে বিভক্ত ও ভত্তংপ্রদেশ বিভিন্ন রাজার অধিকারে বিভক্ত
ভিল। নির্বাহের অধিকাংশ লে সমরে সমুদ্রগর্ভনারী ছিল। নদীরা,
বশোর, করিনপুর, বরিশান, খুলনা, চব্বিন্দ পরগণা ও মুর্লিনাবাদ
জ্বোর কির্যান্ধ বা বগড়ী বিভাগের ভৎকালে অভিত্ব ছিল না।

ব্ধিটিরের রাজস্র যজ্ঞের পর পুঞাধিপ বাস্থদেব অতিশর প্রবল হইরা উঠিয়ছিলেন। হরিবংশ ও নানা পুরাণ আলোচনা করিলে মনে হইবে বে, ক্ষত্রির বীর পৌগুক বাস্থদেব বর্তমান বালালা প্রেলিডেন্সীর অধিকাংশ হান জয় করিরা একজন অতি প্রতাপশালী রাজাধিরাজ হইরা উঠিয়ছিলেন। বহু নরপতি তাঁহার অধীনতা বীকার করিতে বাধ্য হইয়ছিলেন। নিধাদপতি অন্বিতীর বীর একলবা, মগধপতি জরাসক এবং প্রাগ্রেলাভিবপতি ভগদক্তের পিতা নরক তাঁহার বন্ধু ছিলেন। প্রীক্রক্ত নরককে নিধন করিলে পৌগুক বাস্থদেব প্রীক্রক্তের প্রতি অত্যক্ত বিরক্ত হইয়াছিলেন। তাঁহার রাজ্য

দতক দতধারক বিজিতা পুলিবীপতীন । তৈরেব সন্ধিতঃ সর্বৈগি নিজন্মপাত্রবং ১১৭ बातामधिः माचविषा करत ह विनिर्देश ह। তৈয়ের সন্থিতঃ সকৈ: কর্ণসভ্যান্ত্রনী ।১৮ স কম্পর্যায়ৰ মধীং বলেন চজুরজিপা। বুৰুণে পাওৰজেঠ: মর্শেনামিত্রখান্ডিনা ১১৯ স কৰ্ণ বৃধি নিৰ্জিত্য বলে কুড়া চ ভাৰত ৷ क्रका विकित्ता बतवान् बाकः शर्कक्षशानिनः १२० व्यथ ब्यांगानिको देव ब्राव्यानः यमपञ्जम् । পাওখো বাছৰীব্যেণ নিজ্ঞবান নহানুদে ১২১ **७७: १७ विनर् हैंग: बंद्धक्य: बरायनम् ।** क्लिकिक्किकिकार ब्रांकानक मरहोक्षणन् १६६ **७८७) व्यक्ट**को वीबावुरको खेळलबाकरनो । निर्विकारको बहाबाक रकत्राकपृत्रीजयर १२० সমূত্রসেবং বিশ্বিতা চক্রসেবক পার্বিবর। ভাত্ৰলিক্তক হাজালং কৰ্মটাখিণজিং কৰা ১৭১ क्ष्मामामिनिर्क्य (व ६ मानवर्गानिनाः ।

নৰ্বানু রেজ্যপাংকৈ বিজিগ্নে ভয়ভবিতঃ হংও (সভাগৰ্ক ৩০ জ:)
(১৮) স্থাকে কেছ কেছ যেথিনীগুর জেলা খলিয়া বৰ্ণনা করিয়াছেন।
কিন্তু মহাভায়তেই ট্রাকাল্য নীলুকটের মতে "হুজাং বাচাঃ।"

বিভারের সহিত কুক্তবেবিতাও কছওণে বর্দ্ধিত হইরা
ছিল। শ্রীক্লকের অসাধারণ প্রভাবে অন্নেকেই তাঁহার

অন্নরক ভাগবত হইরা পড়িরাছিলেন, অন্নেকে তাঁহাকে ভগবানের অবতার বলিরা বিশাস করিতেছিলেন, কিন্তু পৌশুক

বাজনেবের ভাহা অসল্থ হইরাছিল। তিনি সর্ক্রসমক্রেই জ্ঞার

বলিভেন বে, "সেই গোপনন্দন কুক্ত কি সাহকে আবার ৰাক্লদেব

নাম গ্রহণ করিরা থাকে। আমার নিশিত স্লদর্শন, আমার

সহস্রাদ্ধ মহাঘোর চক্ত্র, আমার শার্ক নামক মহারবসম্পর মহাধন্ত্র,
কৌনোদকীনামক আমার এই বৃহৎ গলা, ক্রক্তের গর্ক্ম থর্কা

করিতে সমর্থ। অভএব আমি ধন্তু, শন্তু, গলা, থকা ও গলাধর

হইরা কুক্তকে জন্ম করিব। হে নূপগণ। বলি ভোমরা আমাকে

শন্ত্র ক্র ধান্তু করিব।"

ত বহু ধান্তু দণ্ড করিব।"

উদ্ভ বিষয়ণ হইতে মনে হইবে যে পৌণ্ডুক বাস্থদেব আপনাকে প্রকৃত অবভার করিতে যত্নবান হইয়াছিলেন, অথবা তাঁহার অধিকারভুক্ত বালালী সামস্ত ও প্রজাগণ তাঁহাকে ভগবান্ वाञ्चलव क्रक इटेट्ड ट्यंब मत्न कतिवाहिन। जाम्हर्धात विषय, পুণ্ডাধিপ ক্লফছেৰী হইলেও একজন অসাধারণ বীর, ও ক্ষতিয়কুলগৌরব বলিয়া বিষ্ণুপুরাণ ও হরিবংশে কীর্ত্তিত। স্বয়ং **এক্রিফ তাঁহার অভূতপূর্ক বীর্যাদর্শনে বিশ্বরবিমুগ্ধ হইরাছিলেন।** আমরা হরিবংশ ও পুরাণ হইতে আরও জানিতে পারি যে, যথন নরকহন্তা শ্রীক্লফের দিগন্তবিন্দারিত বশোগাখা পুঞ্রাধিপতির কর্ণগোচর হইল, তথন এই বঙ্গবীর আর কিছুতেই স্থির থাকিতে পারিলেন না। তিনি অই সহত্র রথ, অবুত হত্তী ও প্রার অর্ক্, দ পত্তি লইয়া জীকুকের ধ্বংসোদেশে হারকার বাত্রা করিলেন। ভারতের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্তে গিয়া বালালী বীরণণ বে অন্তত বীরত্বের পরিচর দিয়া গিরাছেন, তাহা ক্বফতক প্রাণ-কারের নেধনীডেও সুস্পষ্ট প্রতিভাত হইরাছে। বলিতে কি, বঙ্গাধিপের অসাধারণ শরগ্রহারে শত শত বাদববীর ধরাশারী হইয়াছিল। নেই ভীষণ বুদ্ধে শৌঞ্চকর অল্লে নিশঠ, সারণ. কৃতবর্ণা, উপ্রদেন, উত্তব, অকুর, সাভ্যকি অকৃতি মহারধীগণ আছত হটরাছিলেন। বলবীরকে পরাজর করিতে কোন বাদব-বীর সমর্থ হন নাই। অবশেষে বর্থন সাত্যকীর সহিভ বোরতর বুদ্ধ করিরা বলবীর নিভাত পরিপ্রাত্ত, সেই সমর ভগৰান **এক্ষ ব্যক্তের উপস্থিত হইলেন। পুঞ্**র্যাপ সম্বূথে আত-ভাষীকে দেখিয়া সাভ্যকীকে পরিভ্যাপ করিয়া শীক্তককে আক্রমণ করিলেন। ক্রেকীলক্ষন পুঞ্ছিপের শক্তি নিরীকণ করিয়া

^{(: &}gt;) रहियान जॉनरान- >> म:।

সবিশ্বরে বলিয়াছিলেন, "এই গোণ্ডুকের কি আল্রন্থ্য বীর্যা! কি হংসহ বৈর্যা!" বাহা হউক অভিনাত বলবীরকে নিপাতিত করাও শ্রীক্রকের সহজ্ঞাবা হর নাই। হই বাল্লবেরে বর্জণ রগন্ধীয়া চলিরাছিল। অবশেবে কেশব সহস্রজ্ঞারার বলাধিপকে নিপাতিত করিলেন। সেইদিন বাজালীর অপূর্ব সাহস ও অসাধারণ বীরস্কাহিনী পূণাভূত্তি হার্কার কীর্ক্তিক হইরাছিল। সেই বলীর ও বাবন বুদ্ধে মহাবীর একলবাও বলাধিপের সহিত উপস্থিত ছিলেন। তৎপরে কুক্তক্তেরের মহাসমবেও বজের বীরপ্তর্গণ বোগদান করিরাছিলেন, মহাভারতে তাহার উল্লেখ আছে।

ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ অভিশর ব্রাহ্মণভক্ত ছিলেন, এই ভক্তির কারণ তিনি ভারতীয় ব্রাহ্মণসমাজের ফ্রম্ম আকর্ষণ করিরাছেন এবং ভারতবানীর পূজা পাইবার অধিকারী হইরাছেন। কিন্তু বজীর ক্ষব্রিরগণের মধ্যে বহু পূর্ব্ধ হইতেই এরপ নিষ্ঠার অভাব ছিল। ভাঁহারা জ্ঞানীর আদর করিতেন,কেবল লোকের সন্মান ব্রিতেন মা। তাঁহারা জ্ঞানিতেন বে তাঁহাদের পূর্ব্ধপুরুষণণ অনেকে জ্ঞানবলে ব্রাহ্মণড় লাভ করিয়াছেন, অনেকে নিষ্কাম কর্ম্মবলে ব্রাহ্মণ হইতেও শ্রেষ্ঠ বলিরা সন্মানিত ও দেবগণেরও পূজিত হইরাছেন, তাঁহাদের পূর্ব্বপুরুষই অল-বল-ক্লিজে চাতুর্ব্ধা-সমাজের প্রবর্ত্তক। ১০

কর্ণপর্কে মহাভারতকার লিখিরাছেন বে, পৌপু-মগধানি দেশের মহান্মারা গরাতন শান্ত ধর্মপালন করিরা থাকেন। সেই শান্ত ধর্ম কি ? তাহা ঔপনিষদ ধর্ম—তাহাই ব্রম্বিদাা। আমরা ছান্দোগোপনিষদে পাইরাছি বে, ব্রম্বিভা ক্ষবিরের নিজম্ব, ক্ষবিরের নিকট হইতেই ব্রাক্ষণেরা ব্রম্মবিভা ক্ষবিরের কিছম লাভ করেম। ই উন্নত ক্ষবিরসমাল বেদের কর্মকাপ্তের আবভ্রকতা তত বেলী শীকার করিতেন না, তাঁহারা অন্তর্যজ্ঞের প্রেটভা ব্রাক্ষণান্ধিকেও শিখাইতেন। ই বলিতে কি ক্ষধ্যান্ম-বিভার অনেক খলে ব্রাক্ষণেরা ক্ষবিরের নিকট পরান্মিত হইয়া-ছেন। ই মিথিলার অধ্যান্মবিভার ক্ষেপাত, মগধে বিভৃতি এবং অক্ষম্পে পরিপৃটি লাভ করিরাছিল। এ দেশের জানিগণ বেশের মন্ত্রভাতা অথবা কেবল ক্রিরাছিল। এ দেশের জানিগণ বেশের মন্তর্গতা অথবা কেবল ক্রিরাছাণ্ডপর আর্থকে ব্রন্ধন শিক্ষা পাইরাছেন এবং পরবর্তীকালে ক্ষত্রিরজ্ঞানী বৃদ্ধদেব ভাঁছার বস্ত্রপদে ভাহারই সমর্থন ক্ষিত্রা গিরাছেন।

কুনশেশ্রের মহাসমরে আব্যাবর্ত হইতে ক্তিরপ্রাধান্ত বিস্থা ও রাজগঞাধান্ত হালিত হইলেও অল বল কলিলে পূর্বালর ক্তিরপ্রাধান্ত বিলুপ্ত হর নাই। পূর্বভারতে বৃহদের ও জৈন ভীর্বভারগণের আবিভাবে বরং ক্তিত্রপ্রাধান্ত কুপ্রতিষ্ঠিত হইরা-হিল। এই কারণেই প্রাচীন রাজগসমান্ত অলবলকে হীনচকে দেখিতেন। জৈন ও বৌদ্ধগ্রহসমূহ প্রাজণ আপেকা ক্তির শ্রেষ্ঠ বলিরা কীর্তিত। ইহা যে বছকাল প্রাজণ ও ক্তির-সংক্ষের্বর কল এবং প্রক্ষবিভার প্রভাব, ভারতে সম্লেহ নাই।

অনেকে মনে করিছে পারেন যে বৃদ্ধ শাক্সসিংহ অথবা জৈন্দিগের শেষ তীর্থকর মহাবীর স্বামী হইতেই জ্রাক্ষণবিদ্যোধী মত প্রচলিত হয়। কিন্তু প্রাচীন উপনিবদপ্তলি আলোচনা कतिरंग मरन रहेरव, रा वृद्ध वा महावीत्र ज्यात आफार बालाने नर পুৰ্ব্বে যে বোধিতৰ প্ৰকাশ করিয়াছেন, তাহা তাঁহানের নিজন্ম वा कब्रिज नरह। छैननियरनर जाराव तीन छेश रहेबारक। १ " অষ্টক, বামদেব, বিশ্বামিত্র, জমদ্বি, অঙ্গিরা, ভর্মাজ, বশিঙ, ভূগু প্ৰভূতি মন্ত্ৰদ্ৰটা ৰাষিগণও তাই স্থ গাচীন বৌদ্ধ গ্ৰছে বিশেষ সন্মানিত হইরাছেন।" পূর্ব্ব ভারতে ক্ষত্রিরপ্রাধান্তের কলেই বৌদ ও জৈনধর্ম্মের অভ্যাদয়। বৌদ্ধ ও জৈনধর্ম্মকে বেরপ সাধারণে অহিন্দু বলিয়া মনে করেন,স্মামরা সেরপ মনে করি না। च्रथातीन त्वीक ७ जिमधर्म हिन्सू धर्माद्रहे च्यात्र माथा, खेरानियम-ধর্মসভূত! ভাই বৃদ্ধের প্রথম উপদেশে সাধিক ও ব্রশ্ধবিদ্ ব্রান্ধণের সন্ধান^{২৮} ও সাবিত্রীর শ্রেষ্ঠতা^{২৯} শ্রেডিপাদিত হইরাছে। তাই আমরা শেষ তীর্থন্বর মহাবীর স্বামীকে চতুর্কেদ ও সকল প্রাচীন বন্ধশালে অধীত হইতে দেখি। তাই বান্ধশশাল এবং

⁽ २०) इक्षिपान ०) व्यवात विष्क विश्वन कडेगा।

⁽ २३) क्रारमारमानियम् अवान,वानान ।

⁽ २२) श्रीरणारिमांगनिवंत् शर्मात्रा, त्योगीक्यी विगविवंत् शहा

⁽ २०) क्योडकी डेगनियए अ२-०।

⁽२०) पुक्राज्यां छेरानिवेष् अवाञ

⁽২ব) জিনসংহিতা, ও আচারাল হয়ে এভৃতি জৈন এবং নহাবগ্ণ, অবট্ঠ-হস্ক প্রভৃতি বৌদ্ধগন্ধ এইবা।

⁽২৬) বৃহদারণ্যক উপনিবদে-চাং। "প্রাথণ" এক পৌতরধর্মস্থারে ভাংণ "প্রাথণ্যক" তিকুস্ত্রের প্রসেক রহিলাকে। বুংলার ধন্মণাদ ও আচারাকস্থারে প্রথমের লক্ষণ দেখা। এছাড়া আগতার ধর্মস্থারে হাঙা২০ ও গৌতস-ধর্মস্থারে (৩১৮-১৯) বেরাণ তিকুলিগের কর্মবা বর্ণিত ব্রহারে, ভাহার সবিত কৈন্দ-বৌদ্ধণারোক্ত প্রথমের কিছুমার পার্থ কা নাই।

⁽२१) महायत्त्र भण्डार सहेवा ।

⁽२४) बच्चमा त्रवं।

⁽২৯) মহাবৰ্গে বৃদ্ধা বনিয়াহেন, "সকল বন্ধ নথা অধিবন্ধ প্ৰথম, সকল বেগমত্ৰ হইতে সাহিত্ৰী মন্ত্ৰ প্ৰথম (" (মহাৰণ্ড্ৰাই উন্তিপ্তৰ)

^() Jacobi's Kalpasutra (Sacred Spoke of the East, Vol. xxii. p. 221)

হইরাছিল। এই স্বরে স্বস্থাধিপ ক্ষরাভণক্রর পুত্র উনারী। গলাতটে পাটলিপুত্র নগরী স্থাপন করেন।

্রা প্রাচীন জৈনগ্রন্থ মতে, বীর মোক্ষের ৩০ বর্ণ পরে অর্থাৎ
৪৬৭ খুইপূর্কাকে ১ম নজের অভিবেক। ইহারই চারিবর্ণ পরে
প্রাসন্ধ জৈন গণধর অধুস্থামী মোক্ষণাভ করেন।

**

প্রথম নাম্পর পর আরও ৭ জন নক্ষ রাজত করেন, কলকপুত্র শকটালের প্রাতৃগণ উচ্চাদের মন্ত্রিত্ব করেন। অবশেষে ৯ম নক্ষ সিংহাসন লাভ করেন, ইহারই প্রধান মন্ত্রী শকটাল। এই শকটালের পুত্র ভূলভন্ত।

ছুলভানের কিছু পূর্ব্ধে জৈনবিগের পের প্রতাক্তরণী জন্তবাহর অভালর। তাঁহার শিবা প্রশিবো সমন্ত জারত পরিবাধে হইরাছিল। তাঁহার কাল্পণ-গোত্রীর চারিজম প্রধান শিব্য ছিল, তর্মধ্যে প্রথম শিব্যের নাম গোদান। এই গোলাস হইতে চারিটা শাধার স্টি,—এই চারি শাধার লাম তার্র্লিক্তিকা, কোটবর্ষ, রা, পুত্রবর্ধনীরা ও লালী কর্মটিরা। এই শাধা চত্তুরের নাম হইতে সহজেই মনে হইবে বে, তার্ত্রলিপ্ত (বর্তমান জনপুত্) কোটবর্ষ (বর্তমান দিনাজপুর জেলাফ দেওকোট পরগণা), পুত্রবর্ধন (মালদহ ও বঞ্জা জেলার মধ্যে) এবং কর্মটিক (সম্ভবতঃ মানভূম জেলার) ক্ষর্থাৎ চুই হাজার বর্বেরও পূর্ব্বতন ক্রেটিকার বর্তমান বলদেশের নানা হানে জৈনদিগের প্রতিপত্তি ও শ্রেশিবিভাগ ঘটিরাছিল।

আন্ত:পর চক্রপ্তথের অধিকার। চাগক্যের কৌশলে
নলকে বিনাশ করিরা চক্রপ্তথে ভারতের একছত্র অধিপতি
হইরাছিলেন। হেমচক্রের পরিনিষ্টপর্কমতে—বীরমোন্দের ১৫৫
বর্ষ পরে অর্থাৎ ৩৭২ খুঃ পূর্কাকে চক্রপ্তথের অভিবেক।

এ সমরে বন্ধদেশে রাজণাচার এক প্রকার বিদ্ধা, সর্কাএই জৈনাচার প্রবল হইরা উঠিরাছে। ত্বরং চক্রগুপ্ত ভক্রবাছর শিব্যছ প্রহণ করেন। এই চক্রগুপ্তের অধিকারকালেই পাটলিপুত্রে জৈনদিগের শ্রীসক্ষ আহুত ও জৈন অক্যান্তগুলি সংগৃহীত হর।

চক্রখণ্ড এক প্রকার ভারত-সত্রাট্ হইরাছিলেন। ভারার পরিজ্ঞনবর্গ ভারার অধীনে ভারতের বিভিন্ন প্রায়েশ শাসন করিছেন। ছডরাং পাইলিপুজের কৈন অহুঠান সহছেই চক্রখণ্ডের অধীন সামস্বগণের চেক্রার সমস্ভ ভারতে পরিগৃহীত হইরাছিল।

জৈল-প্রভাববিভারের সহিত সম্প্র ভারত ইইতে ব্রাহ্মণ-প্রভাব অভিশব ধর্ক হইরা পঢ়িল। ক্ষত্রির-রান্ধগণের চেটার এরণ পরিবর্জন সাধিত হইরাছিল বলিরা ক্ষত্রিরগণের উপর ব্রাহ্মণগণের জাতক্রোধ হইল, জাহারা পুরাণে রটাইলেন বে আর ক্ষত্রির নাই, ক্ষত্রিরগণে নির্দৃত্য হইরাছে। চক্রপ্রপ্রাহ্মণিররোধী ও জৈনবভাবলনী ছিলেন বলিরাই ব্রাহ্মণের নিকট ভিনি 'রুবল' বলিরা লাভিত হইলেন। ৩১০ থঃ পূর্বাহ্মে চক্রপ্রপ্রপুর বিক্সাহের রাজ্যসমান্তি এবং অলোকের অভ্যানর। অলোক-প্রিরদ্ধী চক্রপ্রপ্রের অপজ্য বলিরা "চক্রপ্রপ্র" (Sundrakoptas) নামেও পাশ্চাত্য ঐতিহাসিকের নিক্ট পরিচিত। ভারতবর্ষ শক্ষ ৩৬৪ পঃ দুইবা]

ব্রাহ্মণ-রচিত গ্রছে অশোক শুদ্র বলিয়া চিহ্নিড হইলেও প্রাচীন বৌদ্ধগ্রছে তিনি ক্ষত্রিয় এবং বিশুদ্ধ ক্ষত্রিয়াচারী বলিয়াই পরিচিত। তাঁহার রাজ্যাভিবেকের পূর্ব্ধে তিনি কতকটা ব্রাহ্মণ-ভক্ত ছিলেন। তাঁহার ভোজনশালার শত শত পশুবধ হইত। তাঁহার রাজ্যাভিবেকের সঙ্গে প্রথমে তিনি জৈন, শেষে বৌদ্ধগর্মায় রাষ্ট্র হইয়াপড়িরাছিলেন। হিমালয় হইতে কুমারিকা এবং চট্টগ্রাম হইতে আফগানজানের সীমা পর্যাস্থ তাঁহার সাম্রাজ্য বিভূত হইয়াছিল। স্বদ্র মুরোপও আফ্রিকার বৌদ্ধপ্রপ্রচারার্থ তিনি উপযুক্ত পরিব্রাহ্মক নিযুক্ত করিয়াছিলেন এবং তথনকার প্রেষ্ঠ যবন-রাজ্যণ তাঁহার সহিত আত্মীয়তা ও মিত্রতাপালে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। [প্রায়্বর্দী দেখ।]

অশোকের সমরে তাঁহার অধীনে বলদেশ নানা প্রাদেশে বিভক্ত এবং এক এক জন পরাক্রান্ত সামন্তরাজের শাসনাধীন ছিল। ভারতের অভান্ত প্রক্রোজিকা প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। আশোকের ধর্মান্ত্রশাসন ও ধর্মারাজিকা প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। আশোকের সমর বলভূমে কোন্ কোন্ত্রান্তা রাজ্য করিতেছিলেন, ভাহার নাম পাওরা বাব নাই। আবৃল্ডকল এখানকার প্রাভন ইতিবৃদ্ধ সংগ্রহ করিয়া বে সংক্রিপ্ত বিবরণ প্রকাশ করিয়া সিয়াছেন, ভংপাঠে মনে হইবে বে বলভূমে ২৪১৮ বর্ষ করিয়া সিয়াছেন, ভংপাঠে মনে হইবে বে বলভূমে ২৪১৮ বর্ষ করিয়া সিয়াছেন, ভংপাঠে মনে হইবে বে বলভূমে ২৪১৮ বর্ষ করিয়া সিয়াছেন, ভংপাঠে মনে হইবে বে বলভূমে ২৪১৮ বর্ষ করিয়া সিয়াছেন, ভংপাঠে মনে হইবে বে বলভূমে ২৪১৮ বর্ষ করিয়া অধিকার, ভংপার হালিয়াছিল। তালার বার্ষিকার অধিকার করেপাত। ভাহা মহাবীর কর্ণের প্রকাশ পুরুষ পূর্বের বা পাঁচহারার বর্ষেরও পূর্বেকার করা। অধীৎ রর্জমান কলিরণ প্রবর্জিত ছইবার পূর্বের আলাকা করাবিকার প্রকাশ প্রকাশ হরিয়াছিক। তালাকার বর্ষরও প্রকাশ করাবিকার প্রকাশ প্রকাশ হরিয়াছিক। তালাকার বর্ষরও প্রকাশ করাবিকার প্রকাশ প্রকাশ হরিয়াছিক। তালাকার বর্ষর প্রকাশ করাবিকার প্রকাশ করাবিকার হরিয়াছিক। তালাকার বর্ষর প্রকাশ করাবিকার করাবিকার প্রকাশ হরিয়াছিক। তালাকার বর্ষর প্রকাশ করাবিকার করাবিকার প্রকাশ করাবিকার হরিয়াছিক। তালাকার বর্ষর প্রকাশ করাবিকার বর্ষর প্রকাশ করাবিকার বর্ষর বিকাশ করাবিকার ব্যাহিকার হার্যাহিকার তালাকার ব্যাহিকার ব্যাহিকার তালাকার ব্যাহিকার ব্যাহিকার তালাকার ব্যাহিকার বালাকার ব্যাহিকার বালাকার ব্যাহিকার বালাকার ব্যাহিকার বালাকার বালাকা

⁽ ss) गडिनिष्ठे गर्म शक्स

⁽ ००) रेबमनबच्च सहैपा ।

वृत्त "वानीचर्किका" चारः । 'क्चिका वाक्षेत्र नातः । सराचात्रक "क्चिंड नावरे चारः । (नचावर्ष २०१०)

^(40)Col. H S Jarrets's Ain-i-Akbari, Vol I p. 148-146, (41) परमा बांचीर देखिलान, эम बान १०-४६ गुर्वा सहेता :

কললের গণনা মোটামূটি ধরিরা লইলে বলিতে পারি বে, সরাট্ অশোকের পূর্বেই এখানে কারত্ব অধিকার ঘটরাছিল এবং লেই প্রাকালীন কারত্বরাজগণ তাঁহালের অধীবর মগধাধিশ-গণেরট মতাত্ববর্তী ছিলেন।

্ অশোকের পর তৎপোক্ত সম্রাট্ দশর্থ জৈনধর্মাত্মক

ক্টরাছিলেন। বরাবরের নাগার্জ্নীলৈলে উৎকীর্ণ দশরথের

নিশি চইতে জানা যার যে, তিনি জৈন আলীবকগণের সন্মানার্থ
বহুতর দানের ব্যবহা করিয়াছিলেন।

অশোকণোত্র দলরবের পর মোর্য্যবংশীর পঞ্চ জন বৃপতি পাটিলিপুত্রে অধিষ্ঠিত ছিলেন, তাঁহারের নাম সক্ষত, পালিপুর্ক, নোমপর্না, শতধবা ও বৃহত্তপ । এই পঞ্চ নৃপতির সমরে রোর্য্যপ্রতাব অনেকটা ধর্ম হইরাছিল। অলোক বে স্থবিস্তাপি সামাজ্যের প্রতিষ্ঠা করিয়া বান, তাঁহার পরলোকপমনের সহিত সেই বিপ্ল সামাজ্য রক্ষা করিবার শক্তি তাঁহার বংশধরপণের ছিল বলিয়া মনে হর না । অলোক-দ্রদেশে শাসন-স্থনির্মাহের জন্ত রাজপ্রতিনিধি রাখিয়া গিয়াছিলেন, ক্রমে তাঁহারা প্রোগক্রমে স্বাধীনতা অবলম্বন করিতে লাগিলেন। মোর্যারাজ দশর্মধ্যে বে রাজশক্তির পরিচয় দিয়া গিয়াছেন, তাঁহার বংশধরপণের মধ্যে তাহার ক্ষীণালোকও পাই নাই।

অশোক-প্রিরদর্শী ৩১৫-৩১৬ খৃঃ পূর্জাক হইতে ২৭৫-২৭৬ খৃঃ পূর্জাক পর্যান্ত সাদ্রাক্তা শাসন করেন। [প্রেরদর্শী দেখ] অবদানাদি বৌদ্ধগ্রন্থ মতে, অশোকের পর ১০০ বর্ব মৌর্যাধিকার চলিরাছিল।

উদর্গারির হাণীগুদ্ধার ১৬৪ মোর্যান্দে উৎকীর্ণ থারবেলের স্নর্ত্থ শিলালিলি ইইতে জ্ঞানা যার বে, কলিলপতি ভিক্রাজ্ঞ থারবেল তাঁহার ১২শ রাজ্ঞান্ধে (অর্থাৎ ১৬০ মোর্য্যান্দে) গল্পান্তীরে লিরা মগধপতিকে বলে আনিরাছিলেন। মগধপতি তাঁহার ক্সরে মধুরার পলারন করেন। পুর্কেই লিথিয়াছি বে বীরমোক্ষের ১৪৫ বর্ব পরে অর্থাৎ ৩৭২ খুঃ পূর্বান্দে চক্সগুরের অভিবেক হর, ঐ অভিবেক-বর্ব ইইতে মৌর্যান্দ আরম্ভ। এরূপ ক্ষেন ২০৯ খুট্ট পূর্বান্দে কলিলপতি মগধ জার করেন। তিনি অপর ধর্মে বিদ্বেরী না ইইলেও নিজে নিষ্ঠাবান্ কৈন ছিলেন। তাঁহার প্রক্রাহ্মের মগধ, অল, বল ও কলিলে জিনাচারই প্রবল ইইরাছিল। বলাধিপ তাঁহার সহিত বৈবাহিক সম্বন্ধ স্থাপন করিরাছিলেন। কলিলাধিপ শাক্ষপতি হথাশাহের কল্ভার পাণিপ্রত্থণ করেন। তাঁহার অভ্যানেরকালে কুসুম্বক্ষরিরগণ তাঁহার করেনিছাক্তিন। থারবেল ভিক্রাল বে

ৰগধপতিকে আক্রমণ করেন, তিনিই সম্ভবতঃ শেব মৌব্যপতি বৃহত্তব । তিজুরাক কলিলে প্রভাবর্তন করিলে বৃহত্তবপ্ত পুনরার রাজধানীতে ফিরিয়া আসেন।

বৃহত্রখের চ্র্বলিভা দেখিরা তাঁহাকে রাজ্যত্যুক্ত করিখার বৃহত্র হর। বাণভট্টের হুর্বচরিতে লিখিত আছে, নৈজবল পরিদর্শন করাটবার ছলনার হুই পুলমিত্র নিজ স্বামী মোর্য্য বৃহত্রখকে পি বরা কেলিরাছিলেন। † এইরূপে সেনাপতি প্রামিত্র মোর্যাসিংহাসন অধিকার করেন। মোর্যারাজমন্ত্রী কারাক্রছ হুইলেন। প্রামিত্রের সঙ্গে প্রার্থ ১৭৬ খুই পূর্কাক্ষে ভঙ্গনার প্রতিষ্ঠা হুইল।

SIMPLE !

পুৰামিত্ৰ দেববিপ্ৰান্তক ছিলেন। ত্ৰাহ্মণপুৰোহিতের প্ৰামণে তিনি অখ্যেধ বজের অনুষ্ঠান করেন।

কালিনার মালবিকায়িমিত্র মাটকে বস অতে পুল্পমিত্র বিদিশার বির প্র
আয়িমিত্রকৈ বে পত্র লিখিরাছেন, ভারাতে উারার বজের কভকটা পরিচর
পাই। ববা—'বতি, বজ্ঞল চইতে দেনাপতি পুল্মিত্র বৈদিশক আয়ুমান্
পুত্র আয়িমিত্রকে যেকে আলিলন করিলা সংখাদ দিতেছেন, বিদিত হঝ,
আমি রালপুর বজে নীক্ষিত হইলা নিবর্তনীর ও নিরগন অব হাড়িয়া
দিলাছি, আমার আদেশে শতরালপুত্র পরিবৃত হইলা শ্রীমান্ বস্থমিত্র অবের
রক্ষরণে নিবৃত্ত। সেই অব সিন্ধুর দক্ষিণ কুলে উপন্থিত হইলে অবা-রোহী বননসৈত্ত ধরিলা কেলে। ভারতে উভর পক্ষীর সৈত্তে বোরতর
মুক্ত উপন্থিত হইলাছিল। তৎপরে মহাবদ্ধারী বল্মিত্র তারানিগকে পরাজর
করিলা সেই অব্যালকে উন্ধান করিলা আনিলাছে। সপরপৌত্র অংক্ষনন্
বেষন অব কিরিলা আনিলার বজ সমাধা করেন, আনিও এখন সেইল্লপ করিব।
অত এব কাল বিলম্ব না করিলা ব্যুদিগকে লইলা বজু সেবার্থ আল্মান্য কর। ‡

ক্ষমনধনম্পন্ন করিরা পুরামিত্র ভারতের স্থাট হইরাছিলেন। বহুকাল পরে তিনি পূর্বভারতে বৈদিক ধর্মপ্রচারে
মনোবােনী হন। এই পুরামিত্রের নাজস্বলালে গ্রীকন্পতি
মিনিক্স (Menander) মধ্যমিকা ও সাক্ষেত জন্ন করিনা
পাটলিপুত্র আক্রমণ করেন। কিন্তু এথান হুইভেই ভাঁহাকে

সেনানীয়নাৰ্য্যে যৌৰ্য্য বৃহস্তৰং পিপেৰ পূল্পনিজঃ স্বামিনৰ ৷" (ছৰ্বচয়িত)

্ব "পতি ৰজ্ঞান্তনাথ সেনাপতিঃ পুলানিত্রে। বৈদিশস্থং পুত্রবাদুসভ্যান্তনিত্রং লেহাৎ পরিবল্যান্তনগরিত। বিদিতবত্ত । গোচসৌ ভাজ্রবজ্ঞানীক্ষিতেন সলা ভাজপুত্রনাথ বিস্কৃতিন বিশ্বনিত্রে। বিস্কৃতিন বিস্কৃতিন বিস্কৃতিন বিশ্বনিত্র । স সিংভার্গ কিংল বেগিসি চরম্নখানীকেন ব্যবনে ব্যাধিতঃ। তত উভলোঃ সেনাভার্ম হানানীৎ সংকর্মঃ।

ভতঃ পরাব্ পরাজিতঃ বহুসিয়েব ধর্ষিকা। প্রায়ঞ্জ ব্রিয়মাণে। যে বাজিরাজে নিব্স্তিভঃ ব্লক্ত

সোহ চ্যানি বাত বাজেব সময়লোলেব: প্রভাক্তাবো বজো। ভবিবানীককাসহীলং বিশ্বত্যেবচেত্সা ভবতা ব্যুল্কেন সহ আনেক্সালালভব্যমিত।"
(মান্তিকাশ্লিকান্টক)

[•] Actes du Sixieme congres Orient, tome iii. pp. 174-7.

^{† &}quot;अधिकाष्ट्रकान वनवर्णन वागात नवर्णिकारणवीत्रकः

কিরিতে হয়। পাটলিপুরের পূর্বে বরনেরা অগ্রসর হইতে সাহসী হন নাই। অনেকে মনে করেন বে, তৎকালে ববনেরা मा
मिक्निम्द श्वरत क्रिया वाम । भावात वोद्याह मए পুৰামিত্ৰই অংশান্দের স্টার্টিলোপের কারণ। বৰন আক্রমণে মগধ দ্বাঞা অনেকটা বিশুখন হটয়া পড়িয়া-ছিল্লা তৎপত্নে বৃদ্ধ নৃত্তির মৃত্যু ছবলৈ তাহার বংশধরকে কাঁকি দিয়া অপরে রাজ্যগ্রহণের বড়বল্ল করিতেছিল। সেই বভবজের কলে অভিনয় কালে মিমনেবের হতে অধিমিত্র ছিল্ললিরা বড়বছুকারীরা অগ্নিমিত্রের কনিষ্ঠ প্রজ্যেগ্রকে রাজা করিলেন। কিন্তু ওল ক্রজ্যের্চের ভাগ্যেও বেশীদিন রাজ্যভোগ विका ना । भवावीत वद्यमित्र व्यक्तिम भटतवे टेभक्क निध्वानस्म অভিবিক্ত হইলেম। বৈধিক ধর্মপ্রচার করিব র অভই महारीत राज्ञमित्र मान्त्रिभाका स्टेटक द्यमक विश्व जानाहेबा তাহাদিগকে রাজগৃহ এদান করিয়াছিলেন। বল্পী ও ডং-পরবর্ত্তী অন্তক, পুলিক্ষক, খোষবস্থা, বছমিত্র, ভাগৰত ও দেবভূমি প্রভৃতি ওল রাজগণ সকলেই দেববিপ্রভক্ত ছিলেন। এই বংশ ১১২ বৰ্ষ অৰ্থাৎ আর ৬৪ বৃঃ পূৰ্ব্বান্থ পৰ্য্যন্ত রাজ্যভোগ करतम ।

দেবভূমি অভিলশ্যট ও ব্যসনাসক্ত ছিলেম, তাঁহাকে বিমাণ করিয়া তাঁহার আহ্মণমন্ত্রী বহুদেব সিংহাসন অধিকার করেন। বহুদেব হইতেই কাব বা কাধারন আহ্মণ-বংশের প্রতিষ্ঠা। বহুদেব, ভূমিষিত্র, নারারণ ও ক্লশর্ত্রা কাথ বংশীর এই ৪ জন নৃপতি ৪৫ বর্ব মাত্র (প্রার ২০ খুঃ পূর্বাক্ষ পর্যান্ত্র) পাটনিপুত্রে অধিষ্ঠিত ছিলেম।

শুল ও কাংলিগকে শাক্ষীপী বলিরা মনে হয়। তাঁহালের সমরে কেবল পূর্কভারত বলিরা নহে, সমগ্র ভারতবর্বে সৌরমত ও প্রতিমাপুলা প্রচলিত হয়। সৌর, ভাগবত, পাঞ্চরাত্র এবং পৌরাণিকগণেরও অভিনব অভ্যাধান হইরাছিল।

ওল ও কাথদিগের আধিপত্য কালেই উত্তর পশ্চিম ভারতে প্রজাতির অভানর। [ভারতবর্ব শব্দে শব্দ বিবরণ এইবা।]

বন্ধনি বন্দানিত বাজাগৃহছিত বৈদিক্বি প্রগণ বংস, উপমহা, কৌভিড, গর্ম, হারিত, সৌজন, শাভিলা, তর্বাল, কৌনিক, কাঙপ, বনিষ্ঠ, বাংড, সাবর্ধি ও পরাবর এই ১৪টা গোরে বিভক্ত ছিল। পরবর্তীকালে এই সকলু বাজিশাভা বিপ্রসভান বংলর নানাছানে বিভ্ত হুইছা পাড়বাছিলেন। কিছ তাঁহালাও জৈন-বৌদ প্রভাবরর বংলর অলবার্ত্তণে কিছুকার পরে অনেকটা বৈদিকালার্ত্তই হুইরা পড়েন। এই সমরে বংলর হানে হানে বছ প্রবেশে বেল, কৈবুর্ভ প্রভৃতি ব্যক্তির আবিশত্য চুইতে বেশা বার।

দাদিশাত্যের অভুরাজগণের হতে কাধবংশ রাজ্য হারাইন।
উত্তর পশ্চিমভারতে পক্কঅপগণের আপ্রর প্রহণ করেন।
আভুগণ পাটলিপুর অধিকার করিলেও এখানকার রাজ্যানী
টাহাদের বাসপোবোশী হর নাই। টাহারা এখানে প্রতিনিধি
রাখিরা হাজিশাত্যে প্রস্থান করেন। বাহা হউক, ডৎকারে
পূর্বভারতে প্রাধিকীর আচার কডকটা প্রবর্জিত হটরাছিল।
কিছ প্রতিনিধিগণের বার্থ সাধনচেষ্টার রাজ্য মধ্যে অস্তবিপ্রবর্ধ কচনা হইল; তাহারই ফলে জল, বল ও মগধরাজ্য কুদ্র ক্রেলে বিভক্ত হইরা এক এক স্ব ধীন নরপতির লাসনাধীন
হইরা পড়িল। এ সমরে পশ্চিম প্রদেশে শক্ষধিপত্য দৃঢ় প্রতিষ্কিত হইরাছে। শাক্ষীশী কাধ্যাত্মগরিতার ধর্মোপরেশে
শাক্রাজগণ ভারতীর দেববিপ্রস্কুক ও প্রভারত্মক হইরা
পড়িলেন। প্রজাগণও তাঁহাদের অস্তর্জক ইইরা পড়িরাছিল।
স্কুরাং পূর্ববিক্ষে আধিপত্য বিস্তারের সমর তাঁহাদিগকে বেশী
বন্ধ পাইতে হর নাই। পক্ষিপের ওতদিন আসিরা পড়িল।

খুইার ১ম শতাংশ শকাধিপ কনিষ্ঠ ভারত সন্ত্রাট্ হইলেন।
সারনাথের ভূগর্ভ হইতে সম্প্রতি মহারাজ কনিকের বে ভঙ্গ
লিপি আবিদ্ধত হইরাছে, তাহার জন্মসরণ করিলে মনে হইবে,
বে পূর্বভারতও কনিকের সাম্রাজ্যভুক্ত হইরাছিল। তিনি
অনেকটা উদারনৈতিক হইলেও তাহার শিলালিপিসমূহ তাহার
বৌহধর্মাল্লরাগ ঘোষণা করিভেছে। তাহার যত্তে বারাণসীর
ভার জল, বল ও কলিকেও মহাবাল বৌহমত প্রচারিত
হইরাছিল।

মহারাজ কনিকের পুরুষপরে (বর্তমান পেশাবরে) রাজধানী ছিল। তিনি এই স্থানুর পশ্চিম দীমান্তে অধিষ্ঠিত থাকিয়াও ভাস্থ্য, দার্কন, খোডন প্রভৃতি মধ্য এসিরাস্থ স্থুদুর উত্তর व्यासन स्टेटिंड सम्मिरन विद्याखि धावर शृहर्व पात्र-वद्य-कनिरम পর্বাস্ত আবিপতা বিজ্ঞার করিয়াছিলেন। 'ধর্মপিটকসম্প্রাধার-নিবান'নামক বৌভগ্ৰহণতে মহাবাৰ কনিক পাটলিপুত্ৰে আসিয়া এখানকার রাঞ্চাকে জর করিয়া বৌদ্ধবির পরবোরকে লইরা বান। সম্রতি সারনাথ হইতে তথাকার সমতল ভূমির ১০হাত মুক্তিকা নিমে সত্ৰাই কনিকেয় শিলালিশি ও কীৰ্ত্তি আবিষ্ণুত হইছাছে। ঐ পিলালিপি হইতে আনা বার, তৎকালে বারাণদী-এবেশ মহাবাজ কমিকের অধীন পরশারণ নামক এক (শক্) ক্ষাণর পাদনাধীন ছিল। পাটলিপুত্রের আচীন ভূগর্ড দ্বীতিমত প্ৰনিত ও উষ্টেড হইলে সাম্মাণের ভার স্থপাচীন ক্ষিক্টীর্কি আবিষ্ণুত হইতে পারে। ভাষা হইলে আমর। বানিতে পারিব, পূর্বভারতে তাঁহার অধীনে কোন করণ (Satrap) আধিপত্য ক্রিভেছিলেন।

ক্লিকের প্রভাবেই শক্ষ, ব্যন্ধ, পার্ক ও ভারতীর ভাষরলিরের সমীকরণ হয়। সম্রাট্ অশোকের সময় ক্ষেবল ভারত
বলিরা নহে, প্রপ্র মধাএসিরা ও যুরোপথওে বৌহবর্গ প্রচারিত
হলনও বৃহদেবের কোন প্রকার প্রতিমা প্রতিষ্ঠিত হয় নাই।
অশোকের সমর বৃহ প্রতিমা-পূজার আবস্তকভাও কেই হলকম
করেন নাই। আমরা পূর্কেই লিখিরাছি বে, শাক্ষীপারগণই
ভারতে দেব প্রতিমা নির্দ্ধাণ করিরা প্রচার করেন। এই প্রথার
অস্বতা ইইরা মহাবান মত প্রচারের সহিত শাক্ষণতি বুছের
লীগাবিষদিনী নানা প্রতিমা গড়াইরা ভারতের নানা প্রশারান
প্রতিষ্ঠিত করিতে লাগিলেন। সেই সকল অপূর্ক ভারনিরের
নিদর্শন ভারতের নানা স্থান হইতেই আবিহৃত হইরাছে। ঐ
সকলের নির্মানপ্রাদর্শনে ভারতীর নিরিগণ সভ্যকগতের
প্রশংসাভারন হইরাছেন।

কনিক যে মহাধান মত প্রচার করিরা বান, কালে তাহা সংশোধিত ও পরিবর্ত্তিত হইরা তান্ত্রিক বৌদ্ধ ধর্ম্বের স্থাই করিরা-ছিল। একদিন সমস্ত বঙ্গদেশ এই ভাত্রিক বৌদ্ধসাগরে ডুবিরা গিরাছিল, সে কথা পরে লিখিব।

মহারাজ কনিছের পর তৎপুত্র হবিছ বা হক সিংহাসনে অভিষিক্ত হইলেন। পেশাবর হইতে পূর্ব বন্ধ পর্যন্ত তাঁহার অধিকারভূক্ত ছিল। নানাস্থান হইতে তাঁহার বে সকল শিলালিপি ও মুলালিপি আবিষ্কৃত হইরাছে, তাহা হইতে মনে হর বে, তিনি তাঁহার পিতৃদেব অপেকা দীর্ঘকাল সাম্রাজ্য পাসন করেন। তাঁহারও সমরে পূর্বভারত শাসন করিবার অক্স পাটলি-পুত্র ভাহার অধীনে একজন করপ অধিষ্ঠিত ছিলেন।

হবিকের পুত্র শকাধিপ বস্থবেব বা বাস্থবেব। তিনি

18 হইডে ৯৮ শকাল পর্যন্ত সাত্রাকাভোগ করেন। তাঁহার

সুদ্রার নিব, ত্রিপুগ ও নিন্দির্টি জভিত থাকার তাঁহাকে নৈব

নরপতি বলিয়াই গ্রহণ করা বার। কনিক বে স্থবিত্তীর্ণ সাত্রাক্যের পত্তন করিরা বান, বস্থবেবের সমর তাহার ধ্বংসের

স্তরপাত হইল। সভবতঃ তাঁহার ধর্মান্তর গ্রহণে তাঁহার জ্ববীন

স্তরপাত হইল। তার্বার, ক্র্রুর, স্বারার, নিবাধ প্রত্তি জন

পর জ্বিরা ব্যাক্তরপ উপাধি প্রহণ করেন। পাটলিপ্রের ক্রপাও ভালহ্বরী ক্রান্তিলেন। এই রাজনোহিতার

সমরে পাটলিপ্রের নিকট লিছ্বিপ্রণ প্রবল্গ হইরা উঠে।

স্তর্কর স্বার্থনার পার্রিক সাসনক্ষে স্তর্কোভ্রনন করিছে

থাকেন। ব্লিতে কি, বহুদেবের বৃত্যুর সহিত উত্তরভারতীর পাকসামাত্র্য ধ্বংস হইল এবং আভার, গাড়ীভিল, লিজ্বি, নাগ, বৈহর প্রভৃতি ভাতি নানাছান অধিকার ক্রিয়া ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র রাজার সৃষ্টি করিল, ক্রপনাম উত্তরভারত হইতে বিনুধ্ব হুইল।

খুটীর ২র শতাব্দের শেবভাগে গিছেবিগণ পাটলিপুর অধিকার করেন। হঃখের বিবর, তাহারের ইতিহাস ক্রিলার উপকরণ এখনও বাহির হর নাই। পূর্বভারতের নানা হানে কর্তৃত্বাপনে প্রবাসী সামস্তগণের হারা অন্তর্বিলোহ উপছিত হর, ভাহার কলে অনেক রাজভূমার খনেশ পরিত্যাগ করিয়া ফুল্র কথোল (বর্তমান করোভিছা), অলবীণ (অরম্) ও ববহীপে গমন করেন এবং নবলিত করোল প্রাকৃতি হানে শৈব ও ব্রাক্ষরীর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত করেন; বহুণত বর্ব আতীত হ্রতে চলিল, এখনও সেই সকল হিন্দুবীর্তি বিভয়ান রহিরাছে।

श्रीह का मंजात्म मधासाहरू दिवस्तिक वा दिवस्तरम धावन बहेता केटि । এই वर्भीत वेशक्तम २८० ब्रहारम केम्बातनीत क्रावण-मिश्रास्त्र भवास्त्र क्रिक्स दहिम वा कमहुति मध्यर ध्ववर्त्तम करवम । छोहात अकुलरत देहदत्रभू अक्यक अधिकारतत रहेशे करमम, কিন্তু তাঁহালের উদ্দেশ্ত বার্থ হয়। পুষ্টার ৩র শতাব্দের শেষভাগে শুর ও তৎপুত্র ঘটোৎকচ নামে হুইজন সামস্ত-মহাব্রাজ মগুধে প্রবল হইরা উঠেন। ঘটোৎকচের পুত্র ১ম চক্রপ্তথ লিক্ষ্বি-রাজ-ক্তা কুমারদেবীকে বিবাহ করিয়া পাটলিপ্তের সিংহাসন শাভ करवन । अञ्चलिन मर्स्य छिनि आधायर्खन मुमाष्ट्रे बहेना शक्तिन-ছিলেন। ভাঁচার সমরে পুষরাধিণ চক্রবর্মা বঙ্গদেশ জ্ব বাঁকুড়ার হুগুনিরা পাহাড়ে চক্রবর্মার শিলানিলি छेरकीर्न चाह्य। जिनि देवस्य हिरमन। >य ठळ खरखत्र सूख ममूलक्ष व्यवस्थ बरकात व्यक्तांन करता। करे व्यवस्थ क्षेत्रमान किनि महाबीत हक्षवत्री, अक्षरमब, मक्ति, मागम्ब, গণণভিনাগ, নন্দী, বনৰত্বা প্ৰকৃতি আহাবির্ভের নরপতিগণ্যক পরাজর করিরাভিলেন। এছাড়া অচ্যত ও শাগদেনের ধ্বংস-সাধন, এবং কোশলাধিপ মহেল, মহাকাভাদপতি ব্যাসরাল, ক্রেলপতি মন্ট্রাল, পিটপুরাধিপ মহেল, কোষ্টারপতি আমিদত, এরগুণরির দমন, কাঞ্চীর বিভূগোপ, অবিমৃক্তের দীলর্জ, বেলির ছভিবর্ত্তা, প্লক্ষের উগ্রসেন, দেবরাইপতি স্থানের, কুত্লপুরাধিণ ধনকর প্রভৃতি দক্ষিণাসংখ্য নয়পতিরশংক পরারর ও পরে মুজিদান করিয়া তিনি ভারতের নার্বভৌন व्यवित्र हरेशाहिल। देववगुळ, मारी, माराझमारी, मक, कुक्छ. এবং সিংহণ ও অপর বীশবাসিগণত তাঁহার অধীনতা জীকার कतिशाहित। शन्दित कास्त्रानकान स्टेटक सूर्व्य कामक्रत চট্টগ্রাম, উভরে মেপাল হইতে দক্ষিণে কিছেল পর্যন্ত ভাহার

অধিকারভুক্ত হইরাছিল। ঐ সমরে বলদেশে সমতট ও ভবাক রাজ্য গঠিত হইরাছিল। বলদেশের বিভিন্ন ভূতাগ দাসন করিবার জন্ত সমূলগুপ্ত তাঁহার আত্মীর অজনকে নিযুক্ত করিরাছিলেন। তাঁহারা অর্জবাধীন সামস্তরূপে পাটলিপুত্রাধিটিত গুপ্তসন্ত্রাট্গণের পরামর্শে অনেক সমর বলরাজ্য দাসন অন্ধিতেন। তাঁহালের বন্ধে বলদেশে নানা বৈদিক মিশ্রিত পৌরাশিক ধর্ম্মত প্রচারিত হইতে পাকে।

ধারত ৪৩ খিতাকী চটতে ৭ম খতাকী পর্যান্ত বঙ্গের নানা-कारम अञ्चलकान अवन किरनम এवः छीशास्त्र अभीत्म कामक-সামস্ত্রপণ বঙ্গপাসন করিতেছিলেন। কর্ণস্থবর্ণ প্রধানতঃ শুপুরাজগণের রাজধানী ছিল। পুর্বেই দেখাইরাছি, অতি পূর্ব-कान इटेटफरे वक्रासरन रेकन ७ त्वोद्धशर्य नाधात्रत्वत्र क्रमत्र व्यक्षि-कांत्र कतिवाहित। माशा कत ७ कांबनरानंत्र यात्र उक्तिगा धर्म প্রচারিত হটলেও ভালা সাধারণের ক্রচিসঙ্গত হর নাই। মহারাজ কনিছের সমর ক্রিরাকাওবছল ওবছ দেবদেবীপুঞ্জামূলক মহাধান মত প্রচারিত হয়, তাহাই জন সাধারণের মনোমত হইরাছিল। ক্ষতভাং অপ্রবাজগণের ত্রাজণ্য-ধর্মপ্রচারে বন্ধ ও আগ্রহ থাকি-লেও বুষ্টার ৫ম শতান্ধ পর্যান্ত গৌড়বন্ধে বৌদ্ধ ও হিন্দুগণের সমান প্ৰভাৰ ছিল। আছণভক্ত ওপ্ৰয়াৰগণ হিন্দুশাল্লামূসারে সাধারণের মন্ডিগতি ফিরাইবার জন্ত চেষ্টা করিলেও তিনি বৌদ-শ্ৰমণ বা শ্ৰাবকের প্ৰতি বিছেবভাব দেখাইতে সাহসী হন নাই। মহাযান মতের রূপান্তর তাত্তিক বৌদ্ধর্থা-জন-সাধারণের মধ্যে বিশেষ সমায়ত হওয়ায় গুণ্ড নৃপালগণ নিষ্ঠাবান শৈব অথবা देवक्षव इंडेरल श्राधांत्ररागंत्र मरनात्रक्षरमत क्षष्ठ जात्रिक रवीक দেৰদেবীর পূজার উৎসাহ দান করিতেন। এমন কি, কোন কোন গুপুরাল গোঁড়া তান্ত্রিক হইরা পড়িরাছিলেন। এই দক্দ ওপ্রাক্তগণের মুদ্রার ডাত্তিক দেবদেবীর মূর্ত্তি উৎকীর্ণ দেখা বার। বলিতে কি, পুটার ৫ম শতাব্দীতে ওপ্তরাজগণের আধিপত্তা কালেই গৌড়বলে তান্ত্রিক ধর্মের প্রতিষ্ঠা হইরাছিল। ভারাদের উৎসাহেই গোড়ীর ভাত্তিকগণের নিকট হিন্দু ও বৌছ-ধৰের সমন্তর সাধিত হইরাছিল। তাত্তিকগণের প্রভাবে ৰৈদিকতা এক প্ৰকার বিশুপ্ত হইরাছিল। এখানকার ভাত্তিক প্ৰভাৰ কেবল গৌড় ও বন্ধ বলিয়া নহে, স্থপুর উত্তরে কাশ্মীর e हीनामान, भूटर्स हीनममूद्धात खेलकृत्वकी चानांम ७ करवाक शांखा अवर बिकाल ववदील, स्त्रमांखां ও निःश्टल लगांख विचन्छ कडेबाडिन । कार्याक ও परवीन क्**रे**डिंग निर्मान पन मार्था त দক্ত প্রাচীন ভাত্তিক কেবলেবীনুর্ছি ও নিলালিলি আবিছত হটৱাছে, ভাহা পর্বাংলাচনা করিলে বুবা বার বে, ঐ সকল শিল্প ৰধ্যে গৌড়-বলের বৈক্ষব, শৈৰ অথবা শাক্ত স্বতির অভাব

নাই। উক্ত দেবদেবীর উপাসকগণের মূর্ভিতে গৌড়ীয় বা বঙ্গীর আদর্শ রহিয়াছে। বর্জমান বীরজাতির আদর্শস্থান জাপানেও সেই স্থাৰ অতীত কালে গৌড-বঙ্গের তাদ্বিক প্রভাবের স্থানা দেখা গিরাছিল। মহাবীর জাপগণের পূর্বপুরুষগণ খুষ্টার ৬ শতাবীতে বদীয় তান্ত্ৰিকতার দীন্দিত হইরা এবং বদীয় তান্ত্ৰিক আচার্যাকে গুরুদে বরণ করিরা অভিনব উন্নতির পথৈ অগ্রসর হইরাছিলেন। ৫২৬ খুট্টান্সে আচার্য্য বোধিধর্ম তমলুক ছইরা সমুদ্র পথে কান্টনে যাত্রা করেন। তথা হইতে তিনি চীন-সমাটের সভার আহত হইরাছিলেন। সেই বোধিধর্মের "কাবায়" ও ভিকাপাত্র জাপানের ইকলগ-মঠে বচকাল বুক্তিও ছিল। তিনি এ দেশ হইতে "প্রক্রাপার্মিতাহনরসূত্র" ও "উফীব-বিজয়ধারণী" নামক বে ভন্তগ্রহা প্রাছিলেন, বঙ্গাক্ষরে লিখিত লেই গ্ৰন্থৰৰ জাপানের প্রাসিদ্ধ 'হোরিউজি' মঠ হইডে আবিছত হইরাছে। । আজও জাপানের সিলোন বা তান্ত্রিকগণ যে সকল গুৰুক্ৰচাদি লিখিয়া পাঠ বা ধারণ করেন, সে সমুদার পূর্ব্বোক্ত ৰঙ্গাক্ষরের আদর্শে নিপিত।

खश्चममार्हेगंग नकरनहे प्रवशक्कांच्या देशक ধৰ্মাবলৰী হইলেও তাঁহারা বিশেব বৌদ্ধ বিষেধী ছিলেন বলিয়া मत्न इत्र ना। धात्र ४०१ वृद्धीत्म अधनमार्हे २त्र हत्र अध বিক্রমাদিত্যের সময় প্রসিদ্ধ চীনপরিব্রাক্ত ফা-হিরান গুপ্ত-রাজধানী পাটলিপুত্রে জাগমন করেন। তিনি এখানে অশোকের অবরচ্বি প্রভৃত ত্বাপত্যের আকর বিশাল রাজ-ভবনের ধ্বংসাবশেব দেখিয়া বিশ্বর্বিসূচ্ হইরাছিলেন। হীনধান ও মহাধান উভয় সম্প্রদারের স্ব্রাঞ্চম ও মঠ দেখিয়া-ছিলেন। এই সকল সম্বারামে প্রায় ছয় সাত শত আচার্যা অব-ম্বিতি করিতেন। তথনও ৰগতের সকল স্থান হইতে বৌদ্ধতবা-ন্বরাণী প্রধান আচার্য্যগণ এখানে আসিরা সম্বেড হইডেন। 🖰 অমণ ও পণ্ডিতগণ সকলেই এখানে ধৰ্মোপদেশ লাভ করিবার क्षेष्ठ जाशमन क्रिएकम । এখানে का-हिन्नान वृद्धारदात तथ-ৰাত্ৰা মহোৎসৰ উচ্ছল ভাৰায় বৰ্ণনা করিবা গিয়াছেন। এখানে তিন বৰ্ষকাল থাকিয়া তিনি সংস্কৃত ভাষা শিকা কয়েন এবং বুক্ষের ধর্ম্মোপদেশ নক্ষল করিয়া লরেন। পাটলিপুত্র হুইডে চম্পার আসিরাও তিনি বহুতর বৌশ্বকীর্ত্তি দর্শন করিরাছিলেন। তংগরে সমুদ্রোপকুলবর্ত্তী তাত্রলিপ্ত নগরে আসিয়াও ডিনি ২৪টা সম্বাদাৰ ও বছতর বৌদাচার্য্য সম্বর্ণন করেন ৷ এখানেও চীনপরিব্রাক্ত চই বর্ষকাল থাকিরা বচতর বৌচতত মকল করেন ও বৌত বেবসূর্তি আঁকিয়া লয়েন। ভিনি হিন্দুবিগ্লে ছুণার

Anecdota Oxonianais, Aryan series, part iii.

চক্ষে দেখিতেন, সেম্বস্ত ঐ সকল স্থানের হিন্দুকীর্তিসমূহ দিপি-বন্ধ করা আবস্তক মনে করেন নাই।

কর্ণপ্রবর্ণ (মূর্লিদাবাদ জেলাস্থ রালামাটী) ও ভল্লিকটবর্ত্তী প্রাচীন ইটকত্ত্রপ মধ্য হইতে সময়ে সময়ে এখানকার খপ্তরাজ-গণের সমরে প্রচলিত বহু স্বর্ণমুদ্রা বাহির হইরাছে, ভাষা হইডে রবিশুপ্ত, জন্মহারাজ, নরখপ্ত, প্রকটাদিতা, ক্রমাদিতা, বিষ্ণুখপ্ত, ্চক্রাদিত্য প্রভৃতি নাম পাওয়া গিয়াছে। এই সকল গুপ্তরাজগণ কে কোন্ সময়ে রাজত্ব করেন, তাহা জানিবার উপকরণ এখনও বাহির হর নাই। তাঁহাদের মধ্যে নরগুপ্ত বা শশাভ নরেক্র-শুপ্তের নাম ইতিহাসে প্রসিদ। তিনি এক জন খোরতর বৌদ্ধ-বিষেধী ছিলেন। তিনি বোধগরার বোধিক্রম সমূলে উৎপাটিত করিবার আয়োজন করেন এবং গ্রহশান্তি ও পৌষ্টক কর্মাদি সম্পাদনের জন্ত বহু শাক্ষীপী ব্রাহ্মণ আনাইরা গৌড়ে বাস করাইরাছিলেন। । প্রান্থ ৬০৬ খুষ্টান্দে তিনি হর্বের জ্যেষ্ঠ ভ্রাত। কনোঞ্জপতি রাজ্যবর্জনকে নিহত করেন, তাঁহার প্রতিশোধ লইবার জন্ম সম্রাট্টহর্বর্দ্ধন সদৈন্তে আসিয়া শশাদ্ধের রাজ্য-ধ্বংস ও তাঁহাকে বিনাশ করেন। শশাঙ্কের সহিত গ্রাহ্মণ্য প্রভাব কিছু দিনের জন্ম এ দেশ হইতে অন্তর্হিত হইন। এমন কি, তৎকালে এ দেশে বেদবিৎ কর্মাঠ ব্রাহ্মণ ছিলেন না। তাই <u>जिभूत्रगणि धर्मगानात्क ७४> थ होत्स</u> मिथिना हहेत्छ त्रमवि९ ব্ৰাহ্মণ আনাইতে হইয়াছিল।

হর্ষবর্দ্ধন আর্য্যাবর্ত্তের সম্রাট হইলে গৌড়রাজ্ঞা তাঁহার শাসনাধীন হইরাছিল। এ সমরে গোড়বল হিরণ্যপর্বত (মুলের), চল্লা (ভাগলপুর জেলা), কজুখির, পুঞুবর্জন (মালদহ ও বঞ্জা জেলা), সমভট (পূর্কবন্ধ), ভাত্রলিপ্ত (ভন্নুক মহকুমা ও মেদিনীপুর জেলার অধিকাংশ), এবং কর্ণস্থবর্ণ (বর্তমান রাচ্ভূভাগ) এই কর্মী ভিন্ন প্রদেশে বিভক্ত এবং চীন-পরিব্রাঞ্চক হিউ-विख्य नामखनात्मत्र भाननाशीन हिन । धान् निवार थे नकन अनगरन हिन्तू ७ शोक छेखन नच्छामारवव সক্ষারাদ, মঠ ও দেবমন্দির দেখিরা গিরাছেন। তিনি কর্ণ-কুষর্ণবাসী জন সাধারণের গৃহ ধনধাজে পরিপূর্ণ, পুঞ্বর্দ্ধনের জনভা ও নানা ফলফুলশালিভা, সমস্তটে বহু পঞ্চিতের সমাবেশ এক ভাত্রলিবে বাণিবাসমারোহ বেধিরা চমৎক্রত হইরাছিলেন। হর্ষবর্তনের সূত্যুর সহিত বর্তন-সাত্রাজ্য ছিল বিচ্ছিল হউলে বগংগ ঋথক্ষীয় আদিভাসেন প্ৰবদ হইয়া নহারাকাধিয়াক উপাধি ও পূর্বা ভারতের অধিকাশে রাজ্য গ্রহণ করেন। ভিনি ও क्षांश्व नरमवन्नमध्यत्र मध्य च्यामध्य लोन हिरमन धार

কাপরপপতি হর্বের ভাগ্যে বহু দিন রাজ্যভোগ ঘটে নাই। ইহারই অত্যন্ন কালে পরে মগধে প্রাধান্ত লইরা শুপ্ত ও মৌপরি-বংশে দারুণ বিবাদ উপস্থিত হর, ভাছাতে উভর পক্ষই হীনবল হুইরা পড়েন। সেই সমরে কাশ্মীরপতি বলিভাদিতা গৌড় আক্র-মণ করেন। এ সমরে পরাজিত গৌড়পতি ললিডানিত্যের প্রসাদ-লাভাশার কাশ্মীরে গমন করেন। কাশ্মীরপতি গৌড়পতিকে বলেন যে, পরিহাস-কেশবের অন্তগ্রহে তাঁহার প্রাণ রাখিরাছেন মাত্র। অথচ তিনি ত্রিগ্রামী নামক স্থানে এক নরহস্তা বারা তাঁহার বধ সাধন করিলেন। তৎকালে গৌড়রাজ্যের প্রজাসাধারণ অতিশর রাজভক্ত ও বীরপুরুষাগণ্য ছিল। রাজভক্ত বীর কাশ্মীর রাজ্যে এই ছ্ছার্য্যের প্রতিশোধ শই-বার আশার সরস্বতীদর্শনমানসে উপস্থিত হইয়া পরিহাস-কেশবের মন্দিরাভিমুখে এক দিন সহসা অগ্রসর হইল। ল্লিতাদিত্য তথন সেধানে ছিলেন না। গৌড়বীরেরা মন্দির আক্রমণ করিবে জামিতে পারিরা ব্রাহ্মণেরা পূর্ব্বেই মন্দিরের কবাট বন্ধ করিরা দিরাছিলেন। কিন্তু গৌড়ীরগণ রামস্বাদীর মন্দিরকেই শ্রীপরিহাসকেশবের মন্দির ভাবিরা মন্দির ধ্বংস कतिन ও দেবমূর্তি চুর্ণ বিচুর্ণ করিরা কেলিল। अञ्चलान मध्याहे সাগরতরকের মত কাশ্মীর সৈক্ত শাসিরা পড়িল। মুটিমের গৌড়ারদিগের সহিত তাহাদের খোরতর যুক্ক বাঁধিল।

রাজতক্ত গৌড়বাসী একে একে সকলেই প্রাণদান করিন।
ধন্ত বালালীর রাজভক্তি! ধন্ত সাহস! কান্দীরের ঐতিহাসিক
কল্তণ সেই ঘটনা উপলব্ধ করিরা লিখিরাছেন—

"তথারদ্ধিরাসাবৈ: স্বত্তুজ্বনীকৃত।
বাবিভজিরসাবাভা থভা চেরং বহছর। ১০০১
জ্বাসি কৃততে পূকং রাবখানিপ্রাম্পন ।
ক্রভাবং সৌড্বীরাগাং স্বাবং বলসা পূবং ৪" (রার্ভস্তিশী ৪।০০৫)
জ্ববিং ভাহাদের ক্ষরিরধারার অসাবাভ বাবিভজি আরও
উজ্পীকৃত হইরা বহুজরা বভা হইরাছিল। জ্বাপি রাব্ভাবীর
সৌরবাম্পন ক্ষরির পূভ রহিরাছে বটে, কিছ ভাতা ভূবওলে
সৌড্বীরগণের বলোরাশি বোবণা ক্রিভেডে;

কাশ্বীরণতির গৌড় আক্রমণ ও সৌড়ণতির কাশ্বীর গদন হেডু সৌড়রাজ্যে অরালক্তা উপস্থিত হয়। এই স্থাবাসে

ভাহাদের বত্তে পূর্ব ভারতে অনেকেই সৌর বভাবনবী হইরাছিল। ইহারই কিছু কাল পরে ভগদভবংশীর ভাতরবর্ত্তার
বংশধর কামরূপপতি হর্বদেব গৌড়, উতু, কলিছ ও ভোশল কর
করিরা এক জন পরাক্রান্ত অধীবর হইরাছিলেন। তিনি
নেপালের প্রতাশশালী লিছেবি ও মগধের ভপ্তরাজবংশের সহিত
বৈবাহিক সম্বন্ধ ছাপন করিরাছিলেন।

[🕆] কলের নাজীর ইভিয়ান ২র ভাগ (রাধানকাণ্ড)০র্ব আল রউন্স।

নাৰভাৱৰণণ খাধীনতা অৰ্থনন করেন, তল্পণা পূৰ্ববাদ খোদ প্ৰথমণ ও নাড়ে বেৰহিকত প্রবংশ প্রধান। প্রথমণের বিনি প্রথম খাধীন ক্রণেন, তারার নাম প্রেণাভম,» এবং প্রবংশে হিনি প্রথম মন্তব্যেত্তনন করেন, তাঁহার নাম ক্রিপ্র।। উক্ত উত্তর নুপতির পালন বহু বিশ্বত হইরাহিল বলিরা মনে হর না। পড়েশাভম সমতটে (কর্তমান ঢাকা কেলার) এবং

্ বজেগান্তমের পুত্র জাতবড়গ এবং জাতবড়েগর পুত্র দেববড়গ।
বেববড়গর ভারানাসন হইডে মনে হর, সমস্ত পূর্ববদ তাঁহার
অধিকারভূক্ত হইরাছিল এবং বহু সামস্ত নূপতি তাঁহার
অধীনভা বীকার করিরাছিল।

भूतपरत्मत अक्रामत ।

দেবপঞ্চের সমরেই উত্তররাঢ়ে বা কর্ণপ্রবর্ণে আদিশুরের অঞ্চলর। আদিশুরের প্রকৃত নাম জরত, তিনি পূর্বোক্ত কবি-শুরের পৌত্র ও মাধবশুরের পূত্র। তিনি অত্যর কাল মধ্যে পৌত্রবর্জন জর করিয়া তথার রাজধানী ত্রাপন করিলেন ও ১৮৪ শক্তে বা ৭০২ খুষ্টাব্দে বথারীতি অভিষিক্ত হুইলেন।

তাঁহার রাজধানীর গৌরবসমৃত্তি কাশ্মীরের ঐতিহাসিক কল্ছণ উচ্ছল ভাষার বর্থনা করিরা গিরাছেন। আদিশ্রের অভ্য-দরের পূর্কে কান্তকুলপতি (বৈদিকমার্গপ্রবর্তক) মশোবর্দ্মদেব গৌড় আক্রমণ করেন। এখানকার গৌড়পতি তাঁহার হতে নিহত হন। মহাকবি বাক্পতির গৌড়বধ কাব্যে কমলায়ুধ মশোবর্দ্মদেবের বিজয়কাহিনী বিবৃত হইরাছে।

[श्रम्भवर्ष्यप्तव (नश्र ।]

ব্রাহ্মণতক মহারাহ্ম হ্রায়পুর গোড়ে অভিবিক্ত হইবার পরেই বৈদিক্যার্গ প্রবর্তনের চেটা করেন। তখন কান্তকুকেই মহারাহ্ম বশোবর্দ্মহেবের আশ্রারে প্রধান সাহিক ব্রাহ্মণার্গ অবহান করিতেন, এ কারণ আদিশূর তাহার নিকটই ব্রাহ্মণ চাহিরা পাঠান। গোড়দেশ বৌহ্মবিশ্লাবিত ছিল বলিরা প্রথমতঃ কনোঅপতি সাহিক ব্রাহ্মণ পাঠাইতে সন্মত হন নাই। অবশেবে আদিশূর কৌশল করিরা কএক হন বীর সপ্রশতী ব্রাহ্মণগণকে সাহিক ব্রাহ্মণ আনাইতে পাঠাইকেন। গোত্রাহ্মণ-

ব্ৰের আশহা করিয়া ক্লোক্সভি ক্এক জন সাহিক আজ্ব পাঠাইতে বাধ্য হইলেন। এই সকল আক্ষণগণের বদ্ধে স্পৌত্ত বৈধিকাচার অনুষ্ঠানের হ্রেণাভ হইতে থাকে। পৌঞ্বর্জনের সমৃত্তি কালেই কাশ্মীরপতি কায়স্থবীর দলিভানিভোর পৌত্র মহা-ৰাজ জনাদিত্য নানাহান জন্ন করিবা ছলবেশে পৌও বর্জনসগরে উপহিত হন। রাজধানীর সমৃদ্ধিদর্শনে ডিনি অভিশন্ন গ্রীড হইরা-बिरमन। त्म नमरत्र त्मीशु वर्षात्मच निकरि निरहित छै९भाउ একদিন রাত্রিকালে ছলবেকী করাদিত্য একটা সিংহবধ করেন, এই সমরেই **তাঁহার নামান্বিভ কেরুর পড়িরা** যার। পরদিন প্রাতে স্থানীয় অধিবালী মৃত সিংহ ও কেরুল্ল দর্শন করিরা তাহা গৌড়পডির নিকট উপস্থিত করিল। কেয়ুর পাইরা গৌড়পতি জানিবেন বে কালীরপতি মহাবীর জ্যাহিত্য ছলবেশে তাঁছার রাজধানীতে উপস্থিত! অবিলয়ে চর পাঠাইরা কাশারপভিকে বাহির করিরা ফেলিলেল ! জরস্তপুরের এক পর্ম-স্থলরী কন্তা ছিল, তাঁহার নাম কল্যাণদেবী। গৌড়পতি পরম नमामत्त्र बद्यानिভाक्त निष धानाम बानाहेश महानमात्त्राह তাঁহার করে কল্যাপদেবীকে সম্প্রদান করিলেন। এইরূপে কাশীরের কামন্ত্রাজ্বংশের সহিত গৌড়ের কামন্ত্রাজ জয়ন্তপুর বৈবাহিক সম্বন্ধে আৰম্ভ হইলেন।

মহারাজ আদিশুরের অভ্যুদরকালে তাঁহার অধিকার মধ্যে नानाविश नित्रधिक এवः टेबन अथवा वोद्यकावानक बाकात्व बान हिन, जन्मधा ताएएमयांनी मधनडी बान्नएनतारे अधान हिलन। পূর্বে বিভিন্ন রমরে বহু সংখ্যক সারস্বত ব্রাহ্মণ এ বেশে আসিয়া বাস করেন, তাঁহারা বর্দ্ধমান জেলাছ সপ্তশত ঘর একত্র বাস করিতেন; বে ছানে এই সপ্ত শত ঘর বাস করিতেন সেই স্থান "সপ্তপতিকা" নাৰে প্ৰসিদ্ধ হইয়াছিল একং এই স্থাননাম হইতে এই শ্রেণির ব্রাহ্মণেরাও পরবর্ত্তী কালে "সপ্তশতী" নামে প্রখ্যাত হইলেন। বারেজ ও রাড়ীয় কুলপঞ্জিকা মতে ভাঁহারা 'ছিলবেদ-বজরহিত' অর্থাৎ শুদ্রাচারী হইলেও সকলে ফুলাচারী, আভিচারিক ক্রিরার চতুর, শান্তিকার্ছে পটু ও ঋণবান্ ছিলেম। আহিশুরের অহুতাহে নবাগভ ্সাঘিকজাক্ষণাণের সাহাত্যে ভাঁহারা প্রার-শিকাদি খারা প্নঃসংস্থত ক্টরা বিন্দুরাজসভার বিজ্ঞান্তন বলিরা সমানিত হইয়াহিলেন**া নিয়য়িক বৌদাচায়ী সম্ভাৰতী বি**ঞাগণ বৈদিকাচায় প্ৰবৰ্তক আবিশুৱের বিকট সন্ধানিত ক্ট্রার কারণ কি 🕈

আদিন কুণ্ডাহণসূত্ আলোচনার ব্যিলাহি হে, বৌদভারিকভার প্রভাবে গৌড়বল হইতে এক ভালে বৈধিকটোর
বিস্তা হয়, এবং প্রজাসাধারণ প্রাচারী অথবা পুত্র বলিরা পুণ্
হইমাহিল । এইরল রাচ্ডাবেবাদী প্রভাবাত্ত সভাবতী আহন-

[🛊] আগৱদপুর কৃইতে আবিস্থত বেবধকোর ভারবাসন।

[🕇] पाठण्यक्रि निरमञ्जूष्यशामः।

[্]ৰ কোন কোন মাট্য ও বাজেল আক্ৰণবিদেই কুলআছে ৩৭০ নকে বা ৭০২ ব্ টাজে কনোল হইডে নাহিক আন্দ্ৰণাগননকাণ নিৰিক হইটাছে। আবিশ্যের অভিযেকালকেই সভাবতঃ আন্দ্ৰণাগনৰ কাল বুলিলা কুলএছকালান পহিলা ব্যাহিশেন। [কলেব লাজীই ইভিয়ান (আন্দ্ৰণকাক) এন কাৰ > সাধে এইছা]

গণৈর বিশেষ অন্তর্মক জক্ত ছিল 🎼 ডৎকালে গৌড়বেশের व्यक्ति शक्ष्मारम स्वीद वर्ष व विशास हिन, व्यक्तिराम क्रान नश-শতী ব্রাহ্মণেরাই ঐ সকল মঠ বা বিহারের আচার্য্য ছিলেন। আমবাসী জনসাধারণ ভাঁহাদের উপদেশেই ভার্য্য করিতেন। এই সকল আচার্যোর বিনা অসুমভিতে ভাহারা কোন কার্য করিতেই সমর্থ ছিল না। ভাহাদের উপর সংস্থাতী বৌদ্ধাচার্ব্যেরা জচল অটল প্রভূত বিভার করিরাছিলেন। এই সকল ব্রাক্সণের মধ্যে অধিকাংশই বৌশ্বভাত্রিকভার আচ্ছর ও বিবর প্রথে কতকটা মিমগ্ন হইরা পড়িয়াছিলেন। তবে আজিচারিক ও শান্তিকার্য্যে वित्मव भर्षे हिरमन विनेत्रा छांशांनिशत्क छेळ नीठ मकरमहे छन्न ভক্তি করিত। আদিশুরের অভাররে রাজনৈতিক পরিবর্তন **मिथित्रा छौहात्रा वृश्चित्राहित्यन त्व, छौहात्मत वर्छमान व्यव**र्था **ठित्रमिन गयान शांकिरव ना। छाँशात्रा बाष्ट्रण मखान इटेरम**७ বেদবিৎ আহ্মণগণের নিকট হের হইতেছেন। বিশেষতঃ ভাঁছারা वृतित्राहित्मन त्व, हिन्नूध्तर्यत्र ष्यञ्जानत्त्रत्र महिल विकासिकात লোপ হয়, তাহা হইলে হিন্দুসমাজে আর তাঁহাদের স্থান হইবে না: আব্দ তাঁহারা যেরপ বান সাধারণের উপর কর্তৃত্ব চালাইতেছেন, এই অসাধারণ প্রতিপত্তি জলবুদুবুদবং বিলীন হইবে। বিচক্ষণ রাজা আদিশুরও নবলব্ধ রাজ্যের সামাজিক অবস্থা দেখিয়া বুঝিয়াছিলেন যে, দেশের প্রাচীন ব্রাহ্মণবংশের প্রতি দেশের সাধারণ লোকের জচল অটল বিশ্বাস ও ভক্তি বর্জমান। বাক্ত-শক্তি বৃদ্ধি করিতে হইলে সমাজশক্তি আয়ত্ত করা আবশ্রক। সপ্তশতী বিপ্রগণ তৎকালে একরূপ সমাজশক্তির পরিচালক हिलान। छाँदै अथरमदै महात्राच चारिनृत मश्चनिकी बाञ्चन-দিগকে ৰছ শাসন গ্ৰাম দান বারা সমানিত করিয়া ভাঁছাদিগকে খীর রাজ্যপ্রতিষ্ঠার জন্ত আব্বান করিরাছিলেন! এই সংবর্জনার সমরেই সপ্তশতীয় গাঞিমালার উৎপত্তি হইরাছিল। সপ্তশতী ব্রাহ্মণেরাও পরিণাম চিন্তা করিরাই আদিশুরের আহ্বানে রাঢ়ের বীরপুত্রগণকে দইরা গৌড়াধিপের ছত্ততলে উপনীত হইয়া-ছিলেন।। সেই ৰাজীয় অভাখান কালে, সেই অসাধ্য সংসাধনে কানীরগতি করাদিত্য গৌড়াধিশ আবিশুরের মন্ত্রী ও প্রধান নেনাপতির কার্য্য করিরাছিলেন। ক্লাণ্ড নিধিয়াছেন, মহারাজ জন্মদিত্য গোড়ের পাঁচ জন নৃপতিকে পরাজিত করিয়া খন্তর আদিশুরকে তাঁহাদের অধীবর করিরাছিলেন। ঐ পাঁচ जन बाजात नाम जाना रात्र ना, थे नीठ जन नहरु: हित्रगु-नर्बाछ, हन्ना, कब वित्र, ভাত্রলিপ্ত ও সমভট এই नक श्रारामात्र श्राचा व्हेरवन ।

কারহ্বীর অরাণিত্য কল্যাপ্রকৃত্তীকে লইরা সনৈক্তে বিশিক্ত হইরা কালীর-বাজাকালে পথে কনোজের নিংহাসন জর করিরা লইরা বান। এ সমরে মহারাজ বলোবর্মনেবের মৃত্যু ঘটরাছে, তৎপুত্র চফ্রাছ্য আমরাজ জৈনধর্ম গ্রহণপূর্ত্তক নিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইরাছেন। বৈদিক বিপ্রগণ রাজপুত্রের বর্মান্তর প্রকৃত্ত-বর্পনে ব্যথিত হইরা আনেকে শাসন ও সন্ধান লাভের আশার গৌডরাজাশ্ররে আসিরা বাস করিছে লাগিলেন। এ সমক্রেত কনোজ হইতে বহু বেগবিদ্ সাধিক বিপ্রের আগমন বটিরাছিল প্রবা মহারাজ আদিপুর সপ্রশতী ব্রাজ্ঞণের সহিত কনোজীর বিপ্রোর বৈবাহিক সবদ স্থাপন করিরা সপ্রশতীধিগকে পূজা-পবাব হইতে মুক্তিদান করিরাছিলেন।

তৎকালে অবোধ্যা, কাঞ্ছক প্রাকৃতি হান হইতেও কারত্বগণ আনিশ্রের সভার আগমন করেন। তাঁহালের আগমনের অভ্যন্ত কাল পরেই আনিশ্র জরভের ইহলীলা শেব হয়। এ সমরে পুণ্ডু-বর্জনের সভার গোলমাল দেখিরা কতিপর বাজণকারত্ব উত্তররাচ়ে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। এ সমরে রাচ্চের স্থ্রাচীন রাজধানী কর্ণস্থর্প পরিত্যক্ত ও অকলাবৃত হইয়াছে;—তৎকালে কর্ণস্থর্গের নিকট সিংহেশ্বর নামক স্থানে আনিশ্রের আদীয় আদিত্যক্র রাজন্ব করিতেছিলেন। সমাগত বিদেশীর বাজণকারত্বগণ তাঁহার আশ্রের উচ্চ রাজকার্যে নিযুক্ত হইয়া উত্তররাচ্বাসী হইলেন এবং উত্তররাচ্ বাস হেতু সেই কারস্থ্যণের বংশধ্রগণ উত্তররাচীর বলিয়া থ্যাত হইলেন।

যক্ত দিন আদিশ্ব জীবিত ছিলেন, ততদিন কনোজাগত বৈদিক প্রাহ্মণগণ গৌড়মগুলে বৈদিকধর্মপ্রচারে ক্ষযোগ ও ক্ষরিধা পাইরাছিলেন। তাঁহার জীবনাবসান কালে পশ্চিমোন্তর গৌড়েও মগধে বৌদ্ধ জন সাধারণ একত্র হইরা বণ্যটের পুত্র গোণাককে অভিবিক্ত করিল এবং তাঁহা ছারা পুনরার বৌদ্ধপ্রধাক্তরাপনের আরোজন চলিতে লাগিল, কিন্তু মগধপতি গোপাল বরোর্ভ ও জ্ঞানবৃদ্ধ আদিশ্রের প্রভাব ধর্ম ক্রিতে সমর্থ হন নাই।

বীর্ষকাল পঞ্চল্যাড় শাসন করিরা মহারাজ জাদিশুর ইছ-লোক পরিত্যাপ করিলে তৎপুত্র ভূশুর পৌগুরন্ধনের সিংহা-সনে অধিষ্ঠিত হইলেন। তিনি পিতার মত সাহসী, রাজনীতি-কুশল ও শক্তিশালী ছিলেন না। তাঁহারই সমত্রে অগ্রণডি

[†] এই সংধাতিকা জনাৰ জনতে পৰ্বনান কোনার জন্তবৃত্ত "ৰাচণাইকা" বিজ্ঞানা : [সংস্কেত্ত বাজিক ইতিহান (বাজাকান) সম আৰু সমধ্যে আইকা।]

থাসিনপুর হইতে আবিকৃত বর্ষণালের নিলালিপি। সুলের ইইতে
আবিকৃত দেবণালের তারাপান্য ইইতে আরা বার হে, ধর্ষণাল রাষ্ট্রকৃতিক
ইক্ষাতের করা আদেবীর পাশিনারণ করেন, তারারই বার্ক ভারার, থানিক
পুরুদ্ধেরণালের কর।

গোপালের পূত্র ধর্মপাল প্রায় ৭৮৫ খুঠান্দে পিতৃসিংহাসন লাভ করিয়া বথেষ্ট বলসক্ষর করিতেছিলেন। তাঁহার একান্ত প্রভাপ ও আধিপত্য অয়দিন মধ্যেই সমস্ত উত্তর গোড়ে বিভৃত হইয়া পড়িল। তৎকালে দাক্ষিণাত্যে রাইকুট-সিংহাসনে গোবিন্দ প্রীবলভ এবং উত্তরভারতে বশোবর্মপুত্র চক্রায়ধ আমরাক্ষ অধিষ্ঠিত ছিলেন। ঐ তৃই পরাক্রান্ত নৃপতির সহিত ধর্মপাল আত্মীয়তাস্ত্রে আবদ্ধ ইইলেন। †

এইরূপে বলদুপ্ত হইরা বৌদ্ধভূপতি ধর্মপাল মহারাজ ভূশুরের রাজ্য আক্রমণ করিলেন। ভূপুর বৌদ্ধ অভিযান কিছুতেই নিবারণ করিতে সমর্থ হইলেন না। তিনি ধর্মপালের নিকট পৌও বর্দ্ধন হারাইয়া রাচ়দেশ আশ্রয় করিতে বাধ্য হইলেন। রাচ্বাসী সপ্তৰতী ব্ৰাহ্মণগণের সাহায্যে আদিশুর গৌড়ের অধীবর হইয়া-ছিলেন, এখন তাঁহাদের বংশধরগণ ভূশুরকে আশ্রয়দান করিলেন। ধর্মপাল ও তৎপরবত্তী পালরাজ্ঞগণ এক প্রকার পুর্বালারতের অধীশ্বর হইলেও রাচ্দেশ অধিকারে সমর্থ হন নাই। তিনি রাঢ়দেশ অধিকারের জক্ত নিশ্চেষ্ট ছিলেন না। তাঁহার ভামশাসন হইতেই জানা যায় বে, তিনি রাঢ়-দেশীয় ত্রাহ্মণদিগকে হস্তগত করিবার জম্ম পৌও বর্দ্ধনভূক্তির मर्त्या जैशिषिशस्य वह ममुक्त श्रीम श्रीषान कतिब्राहित्वन ; किन्न ধর্মপালের দক্ষল কৌশল বার্থ হইরাছিল। রাঢ়ের ক্ষমতাশালী সপ্তশতী ব্রাহ্মণগণই আপনাদের স্থান্ট ও হর্ডেম্ব আপ্রয়ে শূর-রাজবংশকে রক্ষা করিরাছিলেন। এখানে ভূপুর ও তাঁহার বংশধরগণ বছকাল গ্রাহ্মণা ধর্মরক্ষাপূর্ব্বক স্বাধীন ভাবে রাজত্ব করিরা গিরাছেন।

পৌপুরর্জন বৌদ্ধ নৃপতি ধর্মপালের শাসনাধীন হইলে, দেশের মধ্যে হিন্দু ও বৌদ্ধসংঘর্ষে একটা আন্তর্জাতিক বিপ্লব উপত্বিত হইল। এই বিপ্লবের সমর উক্ত সাধিক বিপ্র-গণের সন্তর্জানগণ মধ্যে কেই পৌপুর্বজনের নিকটবর্ত্তী বরেক্রভূমে স্ব স্থাজনগাসনে রহিলেন, কেই বা তাঁহাদের আশ্রমণাতা ও প্রতিপালক শ্র-নরপতির সহিত রাচ্চেশবাসী ইইলেন। কেই বান্ধিপাতা, কেই বা পাশ্চাতা সমাজে মিনিলেন। বে করন্ত্রন সাধিক বিপ্রেসন্তাম ভূশ্রের সহিত রাচ্চেশবাসী ইইরাছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে শান্ডিল্যগোত্র ভট্টনারাহণ, কাশ্রপগোত্র হন্দ্র, বাংক্তগোত্র ছান্দ্র্য, ভরবান্ধ্রণাত্র প্রত্তি সার্বর্গ স্থাজনির হন্দ্রাছিলেন, কাইবিলীর নারারপের শহ্লোগ্রন্থ

পরিশিষ্টপ্রকাশ" ও ফ্লাবনেব ভটের কুলপ্রাশন্তি হইতেই তাহার আভাস পাওরা যাইতেছে। ভ তাঁহাদের সদাচার, বিদ্ধা, বন্ধা ও কর্মনিষ্ঠার রাচ্দেশে আবার সনাতন হিন্দুধর্ম প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। ক্রমে এই নবাগত বৈদিক ব্রাহ্মণগণ ও তাঁহাদের কংশধরগণ রাচ্বাসী জন সাধারণের হৃদয় অধিকার করিয়া বসিলেন। এই সময় হইতেই রাটীর ও বারেক্স ব্রাহ্মণের সমাজগত পার্থকা দৃঢ় হইরা উঠিতেছিল।

পূর্ব্বেই লিখিয়াছি বে, গৌড়পতি আদিশ্র জয়য়ের সময়ে তাঁহার প্রতিনিধিরপেই হউক অথবা মহাসামস্তর্রপেই হউক, আদিতাশ্র নামে তাঁহার এক আত্মীয় উত্তররাঢ়ের সিংহেশরে অধিষ্ঠিত ছিলেন। তাঁহারও সভায় ব্রাহ্মণকায়য়ের আগমন হইয়ছিল। ব্যাদিশ্রের পুত্র ভূশুর পোণ্ডুবর্দ্ধন হারাইয়া জ্ঞাতিবিরোধের আশক্ষায় উত্তররাঢ়ে না থাকিয়া দক্ষিণরাঢ়ে আসিয়া বাস করেন। আদিশ্রবংশ ৭ পুরুষ রাজ্যশাসন করিয়া ছিলেন, রাট্য়য় ব্রাহ্মণ কুলপ্রাস্থে সপ্রস্তর্ধনের নাম এইরূপ পাওয়া বায়—

"আদিশ্রো ভূশুরক্ত ক্ষিতিশ্রোহবনীশ্র:।
ধরণীশ্রককাপি ধরাশ্রো রণশ্র:॥
এতে সপ্ত শ্রা: প্রোক্তা: ক্রমশ: স্তবর্ণিতা:।
বেদবাণাঙ্গণাকে তু নৃপোহভূচ্চাদিশ্রক:।
বস্বশাসিকে শাকে গৌড়ে বিপ্রা: সমাগতা:॥"

(রাড়ীয় কুলমঞ্জরী)

অর্থাৎ ১ম আদিশুর, তৎপুত্র ভূশুর, তৎপুত্র জিতিশুর, তৎ-পুত্র অবনীশুর, তৎপুত্র ধরণীশুর, তৎপুত্র ধরাশুর এবং ধরাশুরের পুত্র রণশুর শুরবংশে এই সপ্ত নুপতি রাজত্ব করেন। ই ইহাদের মধ্যে আদিশুর ৬৫৪ শকে (অর্থাৎ ৭৩২ ধুটান্দে) রাজা হন এবং

[†] ভাগদপুর হইতে আবিষ্ণুত নারালাপালের ভারশাসন ও পাতাবক-চলিত এটবা।

বলের লাতীয় ইভিহান (রাজণকাও) ১বাংশ ৩৪২ পৃ: ও ৬৪ অংশ
 ২০-২০ পৃত্তা তাইবা।

[†] কুলানৰ বচিত উত্তরহাটীর কারছকারিকার লিখিত আছে—
"গৌড়বেশে বহারাজা আধিত্যপুর নাম।
পদার সবীপে বাস সিংহেদর প্রাম ঃ
আদর করিরা আনে বিপ্র পঞ্চারন।
সেই করে পঞ্চ সোত্র আইল জীকরণ ঃ
তন তম কুনবর কথা পুরাকন।
রাজার সভার কার্য করে পঞ্চান ঃ
অতি বড় বহারাজ বুদ্ধে বৃহস্পতি।
পঞ্চারার নাম পুইল পঞ্চ ধেলাতি ৪° ইন্ডাবি।

[্]ব কেং কেং প্রবালে প্রয়ারপুর প্রভৃতি কএকজন পূর নগতির নাম করিবাছেন, কিন্তু কোন প্রাচীন ইতিহাসে বা কুমনুছে প্রয়ালপুরের নাম নাই।

भागप्रमाहिता ।

ভঞ্চ শকে (१৪৬ খুঠাকে) তাঁহাক জভার ব্রাহ্মণগণ জাগনন ভরেন। কুলমঞ্জরীকার আদিশুরকে শুক্তিরংশীর প্রথম রাজা বলিরা বোকণা করিরাছেন, কিছ তৎপূর্কে আদিশুরের পিতা মাধবশ্র এবং পিতামহ কবিশ্রও রাজত করিরাছিলেন, বাচস্পতি মিশ্রের কুলরাম হইডে তাহার সভান বাহির হইরাছে। জরজপুরই শুরবংশীর মধ্যে সর্ক প্রথম সমস্ত গৌড়ের অধীখর হইরাছিলেন বলিরা তিনি "আদিশুর" উপাধি লাভ করেন।

দান্দিণাত্যের তিরুমদার শৈলে উৎকীর্ণ দিখিলারী রাজচক্রবর্ত্তী রাজেক্রচোলের শিলালিপি হইতে জানা পিরাছে যে, তিনি প্রায় ১০১২ খুরান্দে দক্ষিণরাঢ়ের অধিপতি রগশুরকে জর করেন। এ সমরে পূর্ববিদে গোবিন্দচন্দ্র, উত্তররাঢ়ে মহীপাল এবং দশুভুক্তি, বা বেহারে ধর্মপাল রাজত করিভেছিলেন, তাঁহারাও দিখিলারী রাজেক্রচোলের নিকট পরাজিত হন।

উক্ত শিলালিপি হইতে দেখা বাইতেছে বে শুরক্ষীর শেষ মূপতি রণশ্রের পূর্কেই উক্তররাঢ় বৌদ্ধ পালরান্ধাদিগের অধিকার-ভুক্ত হইয়াছিল। [গৌড় শন্ধ দেখ]

এ দিকে আবার প্রসিদ্ধ নৈরারিক শ্রীধররচিত স্থারকদাণী নারী হস্তলিধিত প্রাচীন টীকা পাঠে জানিতে পারি যে, ৯১৩ শকে (৯৯১ খুষ্টাব্দে) দক্ষিণারাঢ়ের ভূরিপ্রেষ্ঠা (হুগলী জেলাছ বর্তমান ভূরগুট্) নামক স্থানে পাগুদাস নামে এক কারন্থ রাজা রাজত্ব করিতেন। শ্রীধর ভট্ট তাঁহারই প্রার্থনার স্থারকদ্দলী নামে বৈশেষিক স্থানের টীকা রচনা করেন।

ক্সায়কন্দলীর উক্ত প্রমাণ হইতে মনে হর বে ভূরণ্ডটে দক্ষিণ-রাচের রাজধানী ছিল এবং রণশ্রের পূর্ব্বে তথার পাঞ্দাস নামে এক বিভোৎসাহী রাজকুমার বিভ্যমান ছিলেন। ইনি ধরাশ্রের কোন আত্মন্ত অথবা কোন আত্মীয় হইবেন।

বাহাছউক শ্রকশের বিবরণ আলোচনা করির। এখন আনিতেছি বে, খুটার ৮ম শতাকীর প্রারম্ভে শ্রবংশের অভ্যাদর এবং লাক্ষিণাত্যপতি রাজেন্দ্রচোলের প্রবল আক্রমণে হতবল ছইরা খুটার ১১শ শতাকে রণশ্রের সহিত শ্রবংশ আধীনতা হারাইরাছিলেন। লাক্ষিণাত্য হইতে সম্পাগত সেনবংশ ক্রমে শুর-সিংহাসন অধিকার করিরা বসিলেন।

"আধি নহপোত্তরন্ত্রশক্ষক ভারক্ষণী রচিত। রাজনী পাতৃনাসকার্ছ্বাচিত ভটনী হলেপেরন্। স্বাধ্যের প্রার্থ্যপেক্ষারক্ষণীনিক।"

† বৃদীর ১১শ শতাবে বাশুর রাজ্যনাই হইলেও উহিার বপেরসপ এককালে
রাজনী হারাইরাছিলেন হলিরা মনে হর না। ভারণ রাজে এখন সুসলমানক্ষার্থণ কালে কামরা বিকল্পন পুর সাবে ক্ষাবিশ্রহক্ষীর এক রাজার নাম
ক্ষান্ত হই। উচ্চাকে এক জন এখন ক্ষানীন রাজা ন্সিরা বীকার না

ক্ষান্ত হই। উচ্চাকে এক জন এখন ক্ষানীন রাজা ন্সিরা বীকার না

ক্ষান্ত হই। উচ্চাকে এক জন এখন ক্ষানীন রাজা ন্সিরা বীকার না

ক্ষান্ত হই। উচ্চাক এক জন এখন ক্ষানীন রাজা ন্সিরা বীকার না

ক্ষান্ত হই। উচ্চাক এক জন এখন ক্ষানীন রাজা ন্সিরা বীকার না

স্বাধ্য হই। উচ্চাক বিকল্পন ক্ষান্ত বাধ্য বিকলি বাধ্য বা

প্ৰেই লিখিয়াছি, প্ৰাৰ্থ প্ৰাণে বৌদ্দুগতি ধর্মপালের অভ্যানত । ৭৯০ খুৱান্দের সমকালে তিনি পৌশু বৰ্দ্ধনালি
অধিকার করেন । তিনি রাচ্বাসী প্রাক্ষণলিগতে হত্তগত করিবার অভ তাঁহাদের হুই এক জনকে পৌশু বৰ্দ্ধনে আহ্বান
করিয়া শাসন প্রাম বারা সন্মানিত করিয়াছিলেন । কিছ শুরবংশের অহ্বত্ত প্রধান প্রাধান প্রাক্ষণলিগতে কোন ক্রমে অপক্ষে
আনিতে পারেন নাই । উত্তররাচ্ছেও এই সকল প্রাক্ষণের
প্রভাব ছিল । তাঁহাদের মধ্যে জনেকে "বম্ব্যাভূজঃ" অর্গাহ
'ভূম্যধিকারী' বলিয়াও প্রসিদ্ধ ছিলেন । নারায়ণের 'ছলোগপারিশিষ্টপ্রকাশে' লিখিত আছে যে, ঐ সকল প্রাক্ষণের নিকট
ইউতেই আদিশ্রের সময় কনোজাগত পরিভোব উত্তররাচ্ছে
তালবাটা, চতুর্থও, পিলাচথও ও বাপুলী এই পঞ্চ কুল্ছান
লাভ করিয়াছিলেন।

যাহ। হউক, ধর্মপাল রাচ্চেপে নিজ আধিপভ্যবিভারে সমর্থ না হইলেও তিনি পশ্চিমে কাশী হইতে পূর্বে কামরূপ এবং উত্তরবলের সকল স্থান জর করিরাছিলেন। তাঁহার সমরে গৌড়ে পুনরায় বৌক্পতিপতি ঘটিরাছিল,নানা স্থানে বৌক্ষিহার প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল এবং বৌক্শারুচর্চাও বাড়িয়াছিল।

ধর্মপালের পুত্র দেবপালও এক জন মহাবীর, শীল-বিনর-সম্পার ও নিজ কুলধর্ম্মে বিশেষ অন্তরক্ত ছিলেন। তাঁহার প্রধান মত্রী শান্তিল্যগোত্রজ্ঞ দর্ভপাণির কৌশলে দেবপালের রাজ্য বহু বিভ্ত হইরাছিল। দেবপালের ধ্রুতাত বাক্পালের পুত্র জরপাল বহু চেষ্টার পর উত্তর রাড় অধিকার করেন এবং অর্থবলে বহু ব্রাহ্মণ পত্তিতকে হন্তগত করিয়াছিলেন। ছন্দোগপরিশিইপ্রকাশে

করিলেও এক জন প্রধান সামন্তর্গার বলিয়া প্রবণ করিতে পার্টি।
তুল্রার ইতিহাস ও বলল-কারছকারিকার এই বিব্যরপুরের পরিচর আছে।
তিনি মুসলমান তরে বরাল্য চাড়িরা চন্দ্রনাথতীর্থ বর্ণনে আগমন করেন।
প্রত্যোগসনকালে তীমবাতঃরি পথস্রই হইলা ১১২৫ লকে (১২০৩ বুটাক্ষে) তিনি
নার্যালী রোলার্য তুলুরার আসির। উপাইত হন এবং বারাহী বেবীর প্রত্যোলেলে এথানেই বাধীন রাজ্য ছাপন করেন। ওাহার বংলবরগন বহুকাল অপ্রতিহত প্রভাবে ভুলুরা-রাজ্য পাসন করিয়া সিমাহেন। বারস্কু কার অভতদ
মহাবীর সম্প্রবানিকা তাহারই অবতন বংলধর। রাজা লক্ষণনাবিকাও
এক সম্বরে এ অকলের কারই-পোরীপতি হইরাহিলেন। পূর্বাপর প্রেই ভূলীনকারহের সহিতই ভাহার ও ভ্রমণের বৈবাহিক সম্বন্ধ চলিয়া আসিতের।
নির্মেনির কারহের বরে ভাহারা প্রার্শিক তাহানের স্বাপরস্থান প্রস্থাত্য বির্মান বংলব্যরির তাহারের অল্পান্ত্য আজিও ভাবের প্রথমন বিহারের কারহের
বভ্রমণান্ত্য ও কল্যালপুরে আজিও ভাবের এবনও ভারারের কারহের
আলীর সুটুবের বাল রহিরাছে। বিস্তৃত্য ও কল্মণনালিক্য সেব। বি

(सप्योजगतिभिक्षेशकाम)

নারারণ লিখিরা গিরাছেন বে, তাঁহার পূর্বপুরুষ পরিতোষ।
পঞ্চ গ্রামপতি হইর। বিষ্ণার ও অর্থবলে প্রাধার লাভ করেন।
তৎপুত্র ধর্ম, পোত্র ভদ্রেম্বর ও প্রপোত্র গদাধর রাজপ্রতিগ্রহে
পরায়ুগ বলিয়া বিশেষ সম্মানিত হইলেও গদাধরপুত্র প্রাভাকরগ্রামণী উমাপতি মহারাজ জরপালের নিকট হইতে প্রভৃত মহাদান গ্রহণ করিয়াছিলেন।

কেন অবপাল উমাপতিকে নানা কৌশলে বন্ধীভূত করিয়াছিলেন ? এই উমাপতির বংশধর নারারণই লিথিরাছেন বে 'সেই পণ্ডিতকুলচুড়ামণি উমাপতির নিব্য ও উপশিব্যবর্গে স্সাগরা ধরা পরিব্যাপ্ত হইনাছিল।' স্নতরাং বৃধিতে হইবে যে উমাপতি এক জন দাধারণ লোক ছিলেন না। এরপালোককে হত্তগত করার বৌদ্ধ নৃপতির কত স্থবিধা হইরাছিল, ভাহা সহজেই অসুমের।

দেবপালের পর জয়পালের পুত্র ১ম বিগ্রহণাল গ্রোড়-মগধের আধিপত্য লাভ করিরাছিলেন। তিনি মধ্যপ্রদেশের হৈহররাজ্বকক্তা লক্ষাদেবীর পাণিগ্রহণ করেন। তাঁহারই গর্ভে প্রপ্রসিদ্ধ নারারণপালের জন্ম। এই নারারণপালের প্রধান মন্ত্রী পূর্ব্বোক্ত দর্ভপাণির পোত্র ও কেদার মিশ্রের পুত্র রামপ্তরব মিশ্র। ইনিই বদালে গ্রুড্কান্ড প্রতিষ্ঠা করেন।

নারারণণালের পর তৎপ্ত রাজ্ঞাপাল, তৎপরে রাজ্ঞাপালের পুত্র ২য় গোপাল, তৎপরে গোপালের পুত্র ২য় বিগ্রহপাল,তৎপরে বিগ্রহের পুত্র ১ম মহীপান রাজ্য-সজ্ঞোগ করেন। এই মহীপালের সময় অসিদ্ধ বৌদ্ধতান্ত্রিক দীপকর শীজ্ঞানের অভ্যানর।

ইনিই কনোল হইতে আদিরা উত্তররাচ্বাদী হন ৷ সপ্তপতী ব্রাজগপাণের নিকট হইতে ভালবাটী প্রভৃতি « খানি কুলছান লাভ করেন ৷

দিখিলরী রাজেন্দ্র চোল উত্তর-রাচে মহীপানকে পরাজয় করিরাছিলেন। মহীপালের পর তৎপুত্র নরপালনের রাজা হন। ইনি দীপদ্ধর প্রীক্তান-অতীলের একজন পরম ভক্ত ছিলেন। নরপালের উৎসাহে শ্রীক্তান সর্বাত্র তান্ত্রিক জ্ঞানোপদেশ প্রচার করেন। কি হিন্দু কি বৌদ্ধ সকলেই তৎপ্রচারিত তান্ত্রিক তারাদেবীর (শক্তির) উপাসনার ও তান্ত্রিক গুঢ় সাধনার অন্তর্বক হইরাছিলেন।

নয়পালের পর তৎপুত্র ওর বিগ্রহপাল রাজ্য লাভ করেন। जिन (वोद्धधर्मावनची श्हेरनं दनांड, श्राप्त, मीमाःमा প্রভৃতি শান্তজ্ঞ ব্রাহ্মণকে শাসন ও গ্রাম দান করিয়া সন্মানিত করিয়া গিরাছেন। তৎপুত্র ২য় মহীপালের নাম এক সময় বঙ্গবাসীর ঘরে ঘরে গীত হইরাছিল। প্রবাদ এইরূপ,--রাজ্য লাভের অল্লকাল পরেই তিনি সর্রাস ধর্ম অবলম্বন করিয়াছিলেন। महीभारनत भन्न ज्लम्ब मृत्रभान धवः मृत्रभारनत भन्न डाँशात স্হোদর শ্বামপাল গৌড়াধিপত্য লাভ করেন। ইহারই নামানুসারে পূর্ব্ববঙ্গে রামাবতী বা রামপালনগরী প্রতিষ্ঠিত হয়। রামপাল মিথিলাধিপতি ভীমকে युष्क अत्र कतित्रा विनाभ कतिशाहित्तन। রামপালের পর তৎপুত্র কুমারপাল, তৎপরে তৎপুত্র ৩য় গোপাল সিংহাসন লাভ করেন। গোপালের পর তাহার পিতৃব্য ও মদনপাল সিংহাসনে অভিষিক্ত হন। রামপালের পুত্র তাঁহার তামশাসন হইতে জানা যায় যে, রামাবতী নগুরে তাঁহার রাজধানী ছিল। তিনি বুদ্ধোপাদক হইলেও আহ্মণ পণ্ডিতের যথেষ্ট ভক্তি সন্মান করিতেন। মদনপালের পর কোন পাল রাজা সিংহাসনে অভিযিক্ত হইয়াছিলেন, তাহা এথম ও ঠিক জানা যায় নাই। তৎপরে মহীন্দ্রপাল ও গোবিন্দ্রপাল নামক ছুই রাজার নাম পাওয়া যায়। নেপাল হইতে যে বছতর বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থ আবিষ্কৃত হইয়াছে, ঐ সকল পুথির শেষে 'গোবিন্দপাল-দেবানাং বিনষ্টরাজ্যে' এইরূপ লিখিত আছে। গরা হইতে গোবিন্দপালের যে শিলালিপি আবিষ্কৃত হইয়াছে, তাহাতে ১:७১ शृहोस्म शांविम्मशास्त्र त्राकावित्रात्नत्र कथा शांवत्रा गात्र ।

[পালরাজবংশ **শব্দে বিভৃত বিবরণ এ**ইবা।]

তদ্মাদ্পদাধর ইতি ধিলচক্রমর্থী
রালপ্রতিপ্রদাস্থ-নানসোহভূৎ।
পূণ্যানি কেবলমহর্নিশমর্জনেন্ ব:
শান্তিভিরার সমরং প্রমাংবভূপ।
তদ্মান্ত্রিভিনারি ভূমিবলর: শিব্যোশশিব্যর্জনবিবন্দৌলিরভূত্বনাপতিরিতি আভাকরপ্রামণী:।
দ্মাপালাক্রমণানত: স হি মহাক্রান্তং প্রভূতং মহদানং চার্বিপ্রবিধ্যার্শন্তর প্রভ্যাব্যং পূণ্যদান।

(হলোগপরিলিট গ্রকান)

^{† &}quot;অবতি মহতি বেবামবলে সোমপীখী
সমলনি পরিতোবশ্বনাং দেহবলঃ।
অগভন্ত স হি বিপ্রাচ্ছাসনং তালবাটীং
তদিহ ভলতি পূলামূল্য বিন রাঢ়া ।
তলাততুর্ববল পিলাচবলং তথাত বাপুলী।
হিজ্ঞাননাহিক্যপার নিপ্রতমন্য কুলছানের ১০
বজ্ঞেহথ তুবললগাবনহেতুরেকঃ
আঁতে কিথা সভতনির্বালখীথাসার:।
গ্রাক্প্রিভো বিবিধসংসহি ধর্মনামা
নামাসূল্যভারিত পরিতোবস্ত্র: ১০
তলাগলারত স্বাবতনং অধানাং
ভ্রেম্বরো নিধিল-কোবিদ-ক্লনীর:।
মধ্যে সভাং ক্লিভিন্তাং প্রথমাভিবের:
স্বাভিবিত্ত-ভ্লন্ত প্রভাবির: ১৯.

নিয়ে পালরাজগণের রাজ্যকালনির্দেশের তালিকা উদ্ভ হটল—

হইল-			
রাকার নাম			রাজ্যকাল
> 1	গোপাল	(মগধে) ৭৭৫—৭৮৫ খু: আ:
ર (ধর্মপাল (মগধ ও গৌড়ে) 964-600 "
91	দেবপাল	,,	bobee "
8	শ্রপাল ১ম	n	606-646 "
c	বিগ্রহপাল ১ম	n	b96-200 "
6	নারায়ণপাল	n	৯·· · -৯২ ৫ "
9	রাজ্যপাল	n	৯২ ৫ − ৯৫ °
४।	গোপাল ২ম	n	à€•—à9• "
> 1	বিগ্রহপাল ২য়	*	24. — 24. "
201	মহীপাল ১ম	n	>>·->> "
321	নয়পাল		› • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
३२ ।	বিগ্রহপাল ওয়	ø	>•eo>•b+ "
३०।	মহীপাল ২র		20 pp>0 dp "
186	শ্রপাল ২য়)·9b>>> "
>¢	রামপাল (মগধ	ও উত্তর গোড়ে)	» «««—»
561	কুমারপাল	*	>>·0—>>> "
1 9 6	গোপাল ৩য়	*	>>>•>>>
: 1	मन्न श्रीत	n	>>>e—>>oo "
551	মহেন্দ্রপাল	n	>>৩°>>8° "
₹•	গোবিন্দপাল	x)	>>8•—>>% "

পুর্বে লিথিয়াছি, খুষীয় ৭ম শতাবে পূর্ববঙ্গে ধড়গবংশের অভানম হইরাছিল, জাদিশুরের অভাদয়ে এই থড়াবংশের শাসন বিলুপ্ত হয়। আদিশূরের পরলোক এবং শূরবংশের প্রভাব-ह्यामित्र महिन्छ अथान्त भूनत्राप्त (बोह्यशन क्षेत्रम हिर्हेश छैट्छे। তাহাদের আফুকুল্যে বৌদ্ধ পালরাজগণ অলায়াদে সমভট বা পূर्व्यक अधिकांत्र कतिरु ममर्थ इरेबाहित्नन । भागवः नीव कान् কোনু রাজা এই প্রদেশ শাসন করেন, তাঁহাদের ধারাৰাহিক নাম পাওয়া যার না। গোড়ের মূল পালবংশীয় রাজা-দিগেরই কোন শাখা পূর্ববলে হানে হানে শাসনকর্ত্ব লাভ ক্রিয়াছিলেন। এখানকার প্রবাদ অনুসারে প্রগণার মাধ্বপুরে বশপাল, ভাওয়ালের অন্তর্গত কাপাসিয়ার শিশুপাল এবং সাভারের নিকটবর্ত্তী কাটীবাড়ীতে হরিশ্চন্স রাজৰ করিতেন। হরিশ্চন্দ্রের প্রভাব উত্তরে রঙ্গপুর পর্যান্ত বিস্তৃত इहेब्राहिन। धाराम असूमाद्य अहे हिन्द्रस्य बर्टनहे विषय-विवागी द्योच नृशक्ति माणिकान छ त्रादिन्मान सम शहर करतन। মাণিকটাদ ও গোপীটাদের অপূর্কবার্থত্যাগ ও সন্ন্যাসের গাথা আজিও রজপুর ও পূর্ববজে বোগী জাতির মধ্যে গীও হটরা থাকে।

বিষয়বিয়ক্ত এই সকল বৌদ্ধ নূপতি সম্ভবতঃ পালবংশীর ছিলেন, এই কারণেই বোধ হর গোবিন্দচক্র বা গোপীচক্র প্রাচীন বঙ্গনাহিত্যে "গোপীপাল" নামেও প্রথ্যাত হইরাছেন। ও এই গোবিন্দচক্রের সমরে বিক্রমপুরে বৌদ্ধ মহা-তারিক ও পরর ক্রানী দীপদ্বর প্রীক্রানের জন্ম হর। ১০১১ কি ১০১২ খুটাকে দিখিলয়ী দান্দিগাত্য-পতি রাজেক্র চোল গোবিন্দচক্রকে পরালর করেন।

পূर्कवरक वर्षवरण।

জৈনপতি রাজেল চোলের আক্রমণে পূর্ব্বক হীনবল হইর।
পড়ে। এই সমরে বিক্রমপুরে বর্মবংশের অন্যুদয়। বর্মবংশীর
কোন্ ভূপতি সর্ব্ধ প্রথম পূর্ববন্ধ অধিকার করেন, ভাহা এখনও
জানা যায় নাই। এই বংশে হরিবর্মদেব নামে এক প্রবন্ধ
পরাক্রান্ত বৈক্ষব নূপভির ইতিহাস পাওয়া গিয়াছে। শিলালিশি,
তামশাসন ও বৈদিক কুলগ্রহে এই নরপালের কীর্ত্তি ও পরিচর
বিবৃত রহিয়াছে। পাশ্চাত্য বৈদিক কুলগভ্ত রাঘ্বেক্র কবিশেখর হরিবর্মদেবের এইরূপ পরিচয় দিয়াছেন—

'বাঁহার প্রচণ্ড ভূলদণ্ডালম্বত করাল করবালভয়ে দক্ষিণাপথ হইতে সমাগত বহুসংখ্যক শক্ররাজগণ প্রকম্পিত হইত, জৈন ও বৌদ্ধ প্রভৃতি বিধর্মিগণের যিনি শান্তিম্বর্থ বিদ্বিত করিয়াছিলেন. বাঁহার প্রভাবে সমস্ত রাজ্ফবর্গের গর্ম ও গৌরব থর্ম হইরাছিল. যিনি নাগেলপত্তন প্রভৃতি নানাদেশ কয় করিয়া অত্যন্ত যশস্বী হইমাছিলেন, যিনি একামকাননে হরিহর ব্রহ্মা সীতা রাম লক্ষ্য হন্মান্ প্রভৃতি অষ্টোত্তর শত দেববিগ্রহ এবং চারিদিকে অপুর্ব্ধ পতাকা পরিশোভিত, স্থরভিকুস্থমসমূহাদির সৌন্দর্য্যে নন্দন-কানন অপেকা মনোহর অত্যুত্তম আমোদমর উভানসমূহে পরি-বেষ্টিত অত্যুচ্চ স্থন্দর মন্দির সকল এবং মন্দাকিনীর স্থায় স্বচ্ছ-তোয় কমলকহলার শোভিত বিস্তুত সরোবর সকল প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিলেন, যিনি নানাশাল্ত ও অল্পবিভার বিলক্ষণ স্থানক, অসাধারণ বালভট্ট, গর্গ, ভট্টাচার্যাও বাচম্পতিপ্রমুখ বিশ্ব-বিখ্যাত সাত জন সচিবের সাহায্যে শীম এবং পরকীয় রাষ্ট্রের সর্ব্ধ কার্য্য স্থসম্পন্ন করিতেন, যিনি নিজ জননীর কাণীখর বিধেখনের প্রারবিন্দ দর্শনে বাইবার অভিপ্রার অবগত হইরা. ভাঁহার স্বচ্চন্দ গমনের জন্ম একটা প্রশন্ত পথ প্রস্তুত করাইরা দিয়াছিলেন; অঙ্গ, বন্ধ, কলিন্ধ প্রভৃতি নানাদেশে বাহার অন্তত কর্মকাহিনী বিঘোষিত হইয়াছিল, যিনি আন্ধাদিগকে ভূসম্পত্তি

 [&]quot;বোগীশাল গোণীশাল মহীশাল দীত।
 ইহা গুনিতে বে লোক আনন্দিত।" (চৈডভভাগ্ৰত অভ্যাবত)

দান করিরা অপের পূণ্য সঞ্জ করিরাছিলেন, সেই রাজাধিরাজ নূপকুলশিরোমণি রাজাধিরাজ হরিবর্গদেবের জর হউক ।+

কবিশেধর প্রাচীন প্রমাণ বলে ভিন শত বর্ব পূর্বের যে সকল কৰা দিখিয়া গিৰাছিলেন, তাহার একটীও অত্যক্তি নহে। **এकाञ्चकानम वा क्रवरमबंदात्र क्रमञ्ज वाञ्चलद्वत्र मिनाद्व क्रवरहर-**ভট্টের বে কুলপ্রাণতি উৎকীর্ণ আছে, তাহা হইতেও আমরা লানিতে পারি, রাচী শ্রেণী সিম্বল গ্রামীণ অবিতীয় পণ্ডিত ভৰবেৰ ভট্ট বলাধিপ হরিবর্শদেবের একজন সচিব এবং ভব-দেবের কুল প্রশন্তি-রচরিতা বাচস্পতিমিশ্র তাঁহার অন্তর্ম বন্ধু **ছिल्म ।† अनस्र राञ्चलरात्र जन्मत्र मन्मित्र खरामरवत्रहे कीर्खि ।** ভিনিও রাচ্দেশে নানা পথ ও পাছনিবাস নির্মাণ করাইরা সাধারণের সমূহ উপকার করিয়া গিয়াছেন। এক জন বালালী ব্রাহ্মণের কীর্ত্তি উৎকলে কিরুপে প্রতিষ্ঠিত হইল ? এক সময়ে এই সন্দেহ হইয়াছিল। এখন ব্রিভে পারিভেছি বে, উৎকলে হরিবর্ত্মার অধিকার বিস্তৃত হইরাছিল বলিয়াই তাঁহার প্রির মন্ত্রী जनात विशास क्रिकीर्ड स्ट्रांस नमर्थ इटेसाहित्न । जुन्त-খারের বর্তমান বিক্রুদের অপর পারে বহু মদির ধ্বংস অবস্থার পড়িরা রহিরাছে, ভাহার অধিকাংশ আমরা মহারাজ হরিবর্জ-দেবের ফীর্ত্তি বলিয়া মনে করি। তিনি যে উৎকল ও নাগেন্ত পত্তন বা নাগপুর জন্ন করিয়াছিলেন, তাহাতে আর সন্দেহ করিবার কারণ দেখি না। তৎপূর্কে বঙ্গে ও উত্তর রাঢ়ে বৌদ্ধ- প্রভাব এবং জৈন নরপতি বিজয়ী রাজেন্সচোলের সহিত অঙ্গ, বল, ক্লিলে জৈন প্রভাবও বিভ্ত হইয়াছিল ;— মহাবীর হরি-বর্দ্মদেব সেই সকল বৌদ্ধ দ্বৈন প্রভাব বর্জ করিতে সমর্থ व्हेबाकित्मन । कवित्मधेत्र वृत्रिवर्त्वामत्वत्र मध मिट्टवत्र मधा বে বালভট্ট ও বাচম্পতির কথা লিখিয়াছেন, অনস্তবাস্থ-দেবের মন্দিরত্ব কুলপ্রশন্তি হইতে ঐ ছই প্রধান সচিবের নাম বাহির হইরাছে। বালভট্ট কুলপ্রশক্তিতে "বালবলভী ভুজন **ख्वत्मव खंडे" नारम शांछ। शतम विक्रव महात्रांख हत्रिवर्यामव** গৌড়, বন্ধ ও রাচদেশে বিশুদ্ধ বৈদিকাচার প্রবর্তনের জন্ম যত্নবান হইয়াছিলেন। ফরিদপুর জেলাত্ব সামস্ত্রসার হইতে আবিষ্ণত হরিবর্দ্মদেবের তাম্রশাসন হইতে জানা বায় বে, তিনি বেদার্থবাচক ঋথেদী বৎস গোত্রজ রুফাধর ভট্টারককে (ফরিদ-পুর জেলার অন্তর্গত) বেজ্ঞণিসার প্রভৃতি গ্রাম দান করিরা-ছিলেন।

• এইক্লপে তিনি বৈদিক বিপ্রতিলক শুনক যশোধর মিশ্রকে কোটালিপাড দান এবং অপরাপর বৈদিক বান্ধণকেও সম্মানিত করিরা বৈদিকাচার-প্রচারে উৎসাহ দান করিরা-ছিলেন। এই সময়ে সর্বব শান্তদর্শী মন্ত্রিবর ভবদেব ভট্ট রাটীয় ব্রাহ্মণদিগের মধ্যে বিশুদ্ধ বৈদিকাচার প্রবর্তন করিবার অভি-প্রারে "সামবেদীর সংস্থারপদ্ধতি" রচনা করেন। অস্থাপি সেই পদ্ধতি অমুসারেই রাটীয় ব্রাহ্মণগণের সংস্কারাদি সম্পন্ন হইরা

ভবদেৰ ভট্ট বেমন এক জন অসাধারণ মীমাংসক ছিলেম,
তাঁহার বন্ধু বলাধিপের প্রধান মন্ত্রী বাচস্পতি মিশ্রও সেইরপ
এক জন সর্বাদর্শনবিদ্ অসাধারণ নৈরায়িক ছিলেন। তাঁহার
বন্ধু দর্শন টাকা ও লারস্টানিবন্ধ সংস্কৃত সাহিত্য-ভাঙারের অপূর্ব্ব
রন্ধ। তাঁহার লারস্টানিবন্ধে লিখিত আছে বে, এই গ্রন্থ "বন্ধর
বন্ধ বংসরে" অর্থাৎ ৮৯৮ শকে (৯৭৬ বুটাকে) রচিত হয়।
ইহার তাঁহার প্রথম রচনা বলিয়া অনেকে অক্সমান করেন।
ইহার পর তিনি মিখিলার রাজ্যভার সন্ত্রানিত হন এবং ভগার
বন্ধু দর্শনের টাকা রচনা করেন। পালরাজগণের প্রভাবে
মিখিলার বোঁহাচার প্রবল হইলে বাচস্পতি মিশ্র ব্রাজ্যভক্ত
দক্ষিণারাচের সভার আগবন করেন। কৈনধর্শবিক্রার আভ্রাতক
দক্ষিণারাচের সভার আগবন করেন। কৈনধর্শবিক্রার আভ্রাতক
তাঁধবাস করিবার অন্ধ উৎকল বাত্রা করেন। ঐ সমরে হরিবর্গানের জন্মান্ধর। তিনি বাচস্পতি মিশ্রের অসাধারণ পাভিত্যদর্শনে উাহাক্টেই আপনার প্রথান মন্ত্রির প্রধান করেন।

রাঘবেজ কবিশেশর নিধিরাছেন বে, কাঞ্চকুজে ব্যুলাগ্য

 [&]quot;বৃত্তি সমন্ত নরপতিকুলললাম প্রোদ্ধ্য ভূজদুঙ্গদ্মণ্ডিড-বিকরালকরবালভন্ন-প্রকম্পিতদক্ষিণাপথাসতাশেষরিপুরাক্ষয়কৈন-বৌছাদি-বিধৰ্ষি-শৰ্ম্ম-সম্মদন-খৰ্ম্ব)কড-সর্কোন্ধীপড়ি-গর্মগোরবো নাগেল্পজনাম্বনেকদেশবিষয়লভোদামষয় শ্রীরেকামকাননপ্রতি-ষ্ঠাপিত-হরিহর-বিরিঞ্চিবৈদেহীরাখবলক্ষণ-হনুমদান্মষ্টোত্তরশতাম্ভত-বৈজ্ঞবন্ধীবিভাবিতামন্দগৰ প্ৰস্থপ্ৰস্থল পটলসৌন্দৰ্য্যাদিন্তৰ ত-নন্দন-काननदेवछव भवनारमाप्त्रमद्वाचानम् मङ्ग छञ्जव भवनः म्यानि । स्यस्त्र-मिलव-मन्त्राविमी-विमनकीनानकमनकस्त्रादवसीववद्यागावविस्त्रुस-সংশোভিতস্থবিশালসরোবরসংহতিঃ · · বেশনিবাসনিধিলশান্ত্রান্তনি-পুলপরিজ্ঞানলত্তানজবৈচক্ষণ্য-বালভট্ট-ভট্টাচার্য্যগর্ববাচন্দতিপ্রমুখ-বিখ-বিখ্যাত সপ্তস্চিৰ সাহচ্ছানিৰ্ক্টিত-সমাক অপর্রাইসর্ক-ব্যাপারে বারাণদীবরবিবেবরপ্রার্থিকস্কর্নার্থসমূভভত্তরজননী-স্বাদ্ধন্দেপরিচারকতে প্রবর্জিতপ্রশন্তবন্ধ সময়নতপ্রতিনিরতসন্নীতি পরিসেবনস্ত্রাপ্তপরম্বর্তা বছালক লিলাছনেবজন পদবছসভাত ড কর্মা হরার্চেডা ভূষেবভূষানার্কিডাবেবধর্মা ক্ষমডাফিরং রাজাধি-ब्राट्या त्यव श्रीवृत्रिवर्षा।" (ब्रायटक्क कविरमधत)

⁺ কৰেৰ লাতীয় ইভিযান (alminim) > বালেশ কৰ্মবেকটের কুল-লাশকি এইবঃ।

বলের রাতীর ইভিহান (রাজ্যপর্ভাও) পরালে হয়িবর্ত্তবের ভায়লানন দেব।

ও রাজ্ঞানাশ দেখির। গলাগতি প্রভৃতি বহু বৈদিক ব্রাহ্মণ

জন্মভূমি পরিত্যাগ ক্ষিতে বাধ্য ইইয়াছিলেন।

এই সমরে
গোতমগোত্রীর গলাগতি প্রভৃতি কএকজন বৈদিক ব্রাক্ষণ বঙ্গে

হরিবর্শ্বরাজ্ঞের রাজধানীতে আগমন করেন।

তাহারা
কোটালিপাড়ে বাস করিতে থাকেন।

মুসলমাল ইভিহাস হইতে আমরা আনিতে পারি যে, দেব-प्रविधित्र गणिन माम्मृत > > > > वृहीस्य वा > ४० मत्क करनास्त्रकतः। ষ্পপ্রসর হইরাছিলেন। তাঁহার আক্রমণে কনোজরাকা শ্রীহীন হইরা পড়িরাছিল। ঐ সময়ে বৈদিকবিপ্রগণের মধ্যে কেছ কেহ নিরাপদ হইবার আশায় দেববিপ্রস্তক্ত বলাধিপ হরি-वर्षापारवन्न अधिकारत वामहाभन कत्रियाहित्मन । छाँहारमञ् পদার্শনে বন্ধদেশে বৈদিকাচার প্রতিপালনের যথেষ্ট স্থবিধা **ब्हेबाहिन। मध्यकः ১०১৯ पृष्टीत्मत्रः भृत्यं इतिवर्षतात्तत्त** प्रकृतिक वर्षे । ১०১১ कि ১२ शृष्टीत्म शाविमाहक त्रारकक-চোলের নিকট পরাঞ্জিত হটলে এবং বিজ্ঞো বন্ধরাজ্য পরিভ্যাগ করিয়া চলিয়া গেলে ছরিবর্দ্মের পিতা জ্যোতির্বর্মদেব বঙ্গ অধি-কার করেন। তিনি বেশী দিন রাজ্যভোগ করিয়াছিলেন বলিয়া মনে হয় না। তৎপুত্ৰ হরিবর্মদেৰ রাচ়, বঙ্গ ও কলিল জয় **ক্রিয়া প্রায় ১০১৫ খুটাকে এক জন মহারাজা**গিরাজ বলিয়া খ্যাত হইয়াছিলেন। ই হার ৪২ রাজ্যান্থিত তাম্রশাসন পাওয়া গিরাছে। এতদ্বারা মনে হর যে, প্রায় ১০৫৬ খৃষ্টান্দ পর্যাস্ত তিনি রাজ্ত্ব করেন।

দেনরাজবংশ।

মহারাজ হরিবর্গনেবের প্রভাব গলার উত্তরতীরে বিহুত হয় নাই। উত্তররাচ় ও গলার পরপারস্থ বরেক্স হইতে পরা পর্যাস্ত তথনও বৌদ্ধাধিকার চলিতেছিল। রাজেক্সচোলের রাচ্দেশ আক্র-মশকালে দক্ষিণাপথের বহু সামস্ত নৃপতি তাঁহার বলর্দ্ধি করিয়া-ছিলেন। রাজেক্সচোলের প্রত্যাবর্ত্তনকালে সকল সামস্ত যে তাঁহার অস্থামী হইয়াছিলেন, এমন বোধ হর না। তম্মধ্যে সামস্তদেনের নাম শিলালিশি ও তাম্রশাসন হইতে বাহির হইনাছে। মহারাজ হরিবর্ত্তনের অভ্যুদ্ধকালে দাক্ষিণাত্যরাজবংশীর
সামস্তবেন সম্ভবতঃ তাঁহারই অধীন সামস্তরণে ভাগীরথীতীরে

"তত্যেহতাগজ্ঞৎ কিল রাজগানীনবন্তরং আঁহরিবর্তরাজ্ঞঃ।
বাচস্মতিকক্ত সভাপতির্বতেনৈর রাজ্যে ভদনং দিবেল ।
ভনাশিবা ভূপতিং বছঁবিছা তক্ত ছিতৈর্বাড়বৈর্বাস্থিতেহিসৌ।
বিজ্ঞেপ বাচস্পতিনা সবেতা পরস্পরং ক্ষেব্রহারতাবে ।"

परमञ्ज आधीत देकिरान (आधारमध्य) भा चाल का/+ शृष्टी ।

ভীর্থবাস করিতে বাকেন। ভাঁছারই পুত্র হেম্ছসেন। क्रेबर বৈদিকের প্রাচীন বৈদিককুলপন্ধীর মতে, হেমস্ত ওরকে ত্রিছিক্রম व्यथरम चर्गदत्रथा नहीजोदत्र कान्त्रेश्त्रीक मामक श्राद्य द्वांक्क कृति তেন ৷ বাদীর কুলপদ্ধী মতে, সামস্ত বা হেমস্তবেন দক্ষিণরাদের শ্রবংশীর নৃপতির কন্তার পাণিএহণ করেন। শ্ররাজ নিজ বংশ ধ্বংস ক্রিরা স্বর্গ গম্ন ক্রিলে রাজ্যে অরাজক্তা ঘটে, এই সময় হেমন্তসেন শুররাজা অধিকার ক্রিয়া "শ্রীধ্র" নাম গ্রহণপূর্ব্বক্ত তথ বর্ষ রাজত্ব করেন। 🏌 किন্তু আমাদের বিশাস, এই অরাজকতা পুরবংশের রাজ্যহানির কম্ম ঘটে নাই, কারণ রণ-শ্রের পরও বে এই রাজবংশ এক কালে বিনুপ্ত হয় নাই, সে क्था शूर्व्यर गिथिवाछि। अधिक मस्त्रम्, महातास हतिवर्षातायत মৃত্যুতে সমস্ত রাচ্বলে অরাজকতা ঘটে, এই স্থযোগে হেমপ্তসেন রাচ্দেশ অধিকার করিয়া বসেন। কিন্তু সমতট বা পূর্ববঙ্গের উত্তরাংশ পাল রাজাদিগের অধিকারে এবং দক্ষিণাংশ রাজা হরিবর্মের পুত্রের অণিকারে থাকে। হেমস্তুসেনের অসাধারণ বীরছ, অপূর্ব্ব সাহস ও ভত্থারা নৃপাশবর্গের পরাজয়কাহিনী মহাক্ষি উমাপতিধরের উজ্জল ভাষায় চিত্রিত হইয়াছে:

তাঁহার অভ্যাদরের পূর্ব পর্যন্ত উত্তররাঢ়ে বৌদ্ধ পালমরপতিগণের রাজধানী ছিল। কিন্ত তাঁহার আক্রমণ সক্ করিতে না
পারিরা মহীপালপুত্র নরপাল প্রায় ৯৬৫ শকে (১০৪৩ প্রাংক)
বিক্রমশিলায়ৡ রাজধানী ছানাস্তরিত করিয়াছিলেন। পূর্বেই
লিখিয়াছি, রাটীয়কুলপঞ্জী মতে হেমস্তলেন ৩৪ বর্ব রাজফ
করেন। এ দিকে বিক্রমপ্রের বৈদিককুলপঞ্জী মতে, হেমস্তত্রিবিক্রমের পৌত্র ও বিজরের পুত্র ভামলবর্দ্ধা বিক্রমপ্র
অধিকার করিয়া ৯৯৪ শকে (১০৭২ খ্রাক্ষে) রাজ্যে অভিবিক্ত
হন। প্রিরুপ ছলে ৯৯৪ শকের পূর্বে হেমস্তল্তের বিজয়লেনর
রাজ্যলান্ত, এবং তাঁহার ৩৪ বর্ষ পূর্বে হেমস্তলেনর অভিবেক
হইয়াছিল, বলিতে হয়।

বিজয়দেন প্রায় ৯৯০ শকে পিড়রাজ্য লাভ করেন। বেও-পাড়া হইতে আবিষ্কৃত বিজয়দেনের শিলালিপিতে লিখিত আছে বে, তিনি মিথিলা হইতে কামরূপ এবং দক্ষিণে কলিদ পর্যাত্ত আপনার অধিকারভুক্ত করিরাছিলেন। "বরালোদ্য" নামক

- वर्षमान नाम कानीवाही ।
- 🕂 ৰজের লাতীর ইতিহাস (রাক্ষণকাঞ্চ) 🗪 অংশ ১৪ পৃটা ব্রষ্টব্য ।
- ‡ অলের জাতীয় ইতিহাস (বাজগৰাও) ৩র অংশ ১৯ পুটা ও ৬৪ অংশ
- २» पृष्ठी अहेरा। \$ (यहात्रक्ष सर्वमान मिलांक मामक आनः।
- প্ন "বেণএরএছমিতে স বড়ুব রাজা গৌড়ে কাং নিজবলৈঃ শারিভুছ পান বৃঁ।
 শ্বাহরাসভিন্যান বিজিতাভারতা শানে পুনা অভডিবেট বিজয়ন্ত পুনা হ'
 বিজয়ন লাভীয় ইতিহাস, বাক্ষণভাগে, তা আবে ১০ পুটা বাইবা)

একখানি প্রাচীন হন্তলিখিত সংস্কৃতগ্রন্থে আছে, মহারাজ বিজয়সেন অল, বল, কলিলের অধীখর হইরা কুরলেটির আরো-লন করেন, এই সমরেও কান্তকুল হইতে যজে ব্রতী হইবার লক্ত পঞ্চ বৈদিক বিপ্রের শুভাগমন হইরাছিল। বিল বাচম্পতির "বলল কুললীসারসংগ্রহে"ও শিখিত আছে—

> "নরশ চৌরানই শক পরিষাণে। আইলেন দ্বিজ্ঞাণ রাজ সরিধানে॥ পঞ্চ কারত্ব সজে আরোহণ গোবানে। সন্মান করিয়া ভূপ রাখিলা সর্বজনে॥"

উক্ত কুলগ্রাছের প্রমাণে ৯৯৪ শকে কনোজ হইতে বৈদিক বিপ্রাগমন এবং সেই সঙ্গে দক্ষিণরাঢ়ীয় ও বলজ কায়ন্ত-প্রধান-দিগের বীজপুরুষগণের গৌড়াগমন সির হইতেছে। পঞ্চ বৈদিক বিপ্র বিনা কারণে গৌড়-রাজসভার আসেন নাই। বলালোদরের কথা মানিলে বলিতে হর, কুরঙ্গেটি সম্পন্ন করিবার জন্ম বৈদিক বিপ্রগণ আহত হইয়াছিলেন। এরূপ হলে ৯৯৪ শকে বিজয়ন্তানের রাজ্যে অভিষেক ও কুরঙ্গেটি বক্ত এবং ঐ সমরে বিজয় কর্তৃক তৎপুত্র শ্রামলবর্ষার যৌবরাজ্যে অভিষেকক্রিয়া স্থসম্পন্ন হইরা থাকিবে।

ধারেক্স কারত্গণের "ঢাকুর" নামক কুলগ্রন্থেও লিখিত আছে—

"বাঁহার বংশের লোকে বল্লাল মর্যাদা।

নয়শ চৌরানই শকে না ছিল একদা ॥"

অর্থাৎ ৯৯৪ শকে যে সকল কায়ত্ব আগমন করেন, সে সময়ে তাঁহাদের মধ্যে বল্লালম্য্যাদা ছিল না।

নানা কুলগ্রছে ৯৯৪ শক দৃষ্টে মনে হয় যে, ঐ অন্ধ বদীয় ইতিহাসে বিশেষ স্মরণীয়। ঐ বর্ষে বিজয়সেনের অধিরাজ-পদে অভিষেক, কুরজেটি যজ্ঞোপলকে বৈদিক বিপ্র ও পঞ্চ কারত্বের আগমন এবং বিক্রমপুরের শুমেশবর্দ্ধার যৌবরাজ্যে অভিষেক প্রভৃতি স্মরণীয় ঘটনা ঘটনাছিল।

বিজয়সেন বায়েজের দক্ষিণাংশ জয় করিলেও উত্তরাংশ তথনও বৌদ্ধ-পালয়ালাদিগের অধিকারে ছিল। দীর্ঘকাল বৌদ্ধবিদারে থাকার বায়েজের সকল লোকই প্রায় বৌদ্ধবিদারী হইয়াছিল। রাদ্দীর আদ্ধাদিগের প্রাচীন কুলগ্রছে দ্বাদী-বায়েজেনোব-কারিকা হইয়া জালা বায় বে, বায়েজ আদ্ধাদিগের মধ্যেও অনেকে তায়িক বৌদ্ধানারী হইয়া উপবীতবর্জিত হইয়াহিলেন,—অবশেবে বৈদিক ধর্মান্তরক্ত মহায়ায় বিজয়সেনের অভ্যাহরে ভীহায়া বৈদিক আদ্ধাপণের সাহায়ায় বিজয়সেনের অভ্যাহরে ভীহায়া বৈদিক আদ্ধাপণের সাহায়ায় বিজয়সেকত হইয়াছিলেন। বিজয়সেন ও তৎপুত্র

বল্লালনের সমরে দক্ষিণ বারেক্সের বিপ্রগণ পুনরার বৈদিকাচার গ্রহণ করিলেও উত্তর-বারেক্সে বহুকাল বৌরাচার প্রচলিত ছিল। এই কারণেই বোধ হর, দক্ষিণ-বারেক্সের বিপ্রগণ উত্তর-বারেক্সের সহিত সম্বক্তাগ করেন। বারেক্সাদগের মধ্যে বৈদিকাচার ও বেদচর্চা আনেকটা লোপ হইমাছিল, তাহা হলারুধের আক্ষণ-সর্বস্ব পাঠ করিলেও জানা যার। বারেক্স আক্ষণদিগের মধ্যে যজুর্কেনীর সংখ্যাই জাধক। তাহাদিগকে বৈদিকাচার উপদেশ দিবার অভিপ্রায়েই স্থপ্রস্কি বৈদিক ধর্মাধিকারী হলায়ুধ "আক্ষণসর্বস্ব" রচনা করেন।*

রাজা বিজয়সেনের শাসনকালে মুর্শিদাবাদ জেলার উদ্ভরে প্রবাহিত গলা হইতে দক্ষিণে উৎকলের সীমা পর্যান্ত সর্ব্ধত্র প্রাক্ষণ্য ধর্মপ্রচারের বিপুল আয়োজন চলিরাছিল। তিনি দেববান্ধাণ-ভক্ত ও বৈদিকাচার-প্রবর্তনে বিশেষ উংসাহদাতা ছিলেন বলিরা, কুলগ্রছকারগণ তাঁহাকে ২য় আদিশুর নামে পরিচিত করিয়া গোরবাহিত করিয়াছেন। বলিতে কি, মহারাজ বিজয়সেন ও তৎপুত্র শ্রামলের প্রভাবে গোড়মগুলের উচ্চ জাতীয় জন-সাধারণের হৃদ্যে আবাব দেবহিল-ভক্তি উদ্রিক্ত হইতেছিল।

১০০১ শকে (১০৭৯ খুটাকে) অর্থাৎ মহারাত্ম বিজয়দেনের কুরঙ্গেষ্টি যজের সঞ্ বর্ষ পরে শ্রামলবর্মা বিজ্ঞমপুরে শাকুনসক উপলক্ষে পুনরায় কর্ণাবতী হইতে শুনক, শৌনক, শান্তিল্য, বশিষ্ঠ, সাবর্ণ প্রভৃতি গোতের বৈদিক বিপ্রগণকে আনাইয়া সম্মানিত করিয়াছিলেন। তাহাদের বংশধরগণ নানা শাসনগ্রাম লাভ করিয়া বঙ্গবাসী হইয়াছিলেন। এথনও তাঁহাদের বংশধরগণ পাশ্চাত্য বৈদিকসমাজে প্রধান বলিয়া স্থানিত।

মহারাজ বিজয়বেন ও স্থামলবর্ত্মা তথনকার শেষ্ঠ ব্রাহ্মণ সমাজের হৃদয় অধিকার করিয়া বসিয়াছিলেন । সকলেই বিজয়কে হিন্দ্ধর্মের রক্ষক বলিয়ামনে করিতেন । উাহারই প্রভাবে তৎপুত্র বল্লালসেন ব্রাহ্মণসমাধ্যের ব্যবহাপক হইতে সমর্থ ইইয়াছিলেন।

মহারাজ বিজয়ের তিন পুত্র—মল, প্রামস ও বল্লাল। মল পুবর্ণরেখা-তীরবর্ত্তী কাশিপুরী নামক সামস্তরাজ্যে অধিষ্ঠিত ছিলেন। খ্রামল পিতার সহিত দিখিজরে নিযুক্ত হন। বিজরের গোড় বলের অধিরাজ্যে অভিবেককালে খ্রামলও বিজ্ঞমপুরে অধিষ্ঠিত হইরাছিলেন এবং বিক্রমপুরের তৎপূর্কবর্তী বর্ণারাজ-গণের খ্রায় তিনিও বর্ণোপাধিশ গ্রহণ করিরাছিলেন।

বলের বাডীয় ইভিহান (বাঙ্কবভাও) ৩৪ অংশ ৩০ পৃথার বিশ্বত বিশ্বর ক্রয়বা।

 [&]quot;कृण्यादनावाहनामयर्गनाः वारक्ष्यक्रक्ष्यारोनाः कावृण्यांव्यक्षमान्त्रविमाः कर्षाकृक्षेत्रवारः नार्वद्यक्ष्यक्षयाव्यक्षया वार्षाः व्यक्षित्रवारः ।"—

⁽ क्याक्टबंद आक्राननर्यम्)

[†] বলের লাতীর ইতিহাস (আন্ধণকাও) জ্যাংল ২১-২৪ পুঠার বিজয়-পুত্র ভারদের "বর্গা" উপাধি ধাংগের কারণ ও ইতিহাস ত্রন্তর।

विकालत मीर्थतामध्यान मधारे मध्यकः मल ७ छामल हेर-টিশকি পরিত্যাগ করেন। এই কারণ বিজয়সেনের মৃত্যুর পরে তাঁহার অপর পুত্র বল্লাল ১০৪১ শকে (১১১৯ খুষ্টাব্দে) পিতৃ-সিংহাসনে অভিষিক্ত হইলেন। বিজয়সেন গৌড়াধিপ পালরাজকে পরাজয় করিয়া বরের জুনে বিজয়চিছ বরূপ প্রহায়েখরশিবালয় প্রতিষ্ঠিত করিলেও তাঁহার নিজ রাজধানীতে প্রত্যাবর্তনের সহিত ভাগীরথীর উত্তরতীরবত্তী অধিকাংশ জনপদ আবার পালবংশের भौजनाधीन हरेग्राहिल। वज्ञानरमन त्रास्त्रभाव जानीन हरेग्राहे গৌড় হইতে পালবংশকে বিতাড়িত করিয়া মিথিলা পর্যাস্ত জন্ম कतिश्राष्ट्रितन, मिथिना विक्रमकारलंटे छाँहात श्रिम भूत नच्चन-সেন ভূমিষ্ঠ হন, সেই ঘটনা চিরত্মরণীয় করিবার অক্তই তিনি লক্ষণ-সংবৎ (ল সং) প্রচলিত করিয়াছিলেন। গৌড় হইতে মিথিলা পর্যান্ত এক সময় সর্বত্তি এই অব্দ গ্রচলিত ছিল, বল্লাল-সেনের পিতা ও পিতামহ সকলেই বেদনিষ্ঠ লৈব ছিলেন। বল্লালও প্রথমে পৈতৃক্রপ্রে একাস্ত নিষ্ঠাবান ভিলেন, কিন্ত সমস্ত গৌডরাজ্য অধিকার ও গৌড় নগরে রাজপাট স্থাপনের সহিত বল্লাল দেখিলেন যে, তাঁহার অধিকাংশ প্রজাই বৌদ্ধ ক্যান্ত্রিকধর্মামুরক্ত। বহু চেষ্টাতেও তাহার পিতা পিতামহ বৌদ্ধতন্ত্রের প্রভাব এক কালে থকা করিতে সমর্থ হন নাই। পালরাজগণের প্রসঙ্গে পূর্ব্বেই লিখিয়াছি, রাঢ়ের পূর্ব্বতন প্রভাবশালী সারম্বত (সপ্তদতী) ব্রাহ্মণাদিগকে হস্তগত করিবার জন্ম ধর্মপাল প্রমুখ পালরাজগণ অনেক রাটীয় সারস্বত বিপ্রকে আনিয়া বরেজ-ভমিতে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিলেন। তাঁহাদের মধ্যে অনেকে পাল-রাজগণের অন্তকরণে ও দীপত্তর শ্রীজ্ঞান প্রমুথ বৌদ্ধ তান্ত্রিকগণের ধর্ম্মোপদেশগুণে বৌষতমে অমুরক হইরাছিলেন। বল্লাল এই-রূপ বারেক্র সারস্বত বিপ্রবংশসম্ভূত অনিরুদ্ধ ভট্ট নামক এক ব্যক্তির শিব্যত্ব গ্রহণ করেন, সেই সঙ্গে তাঁহার মতিগতিও ফিরিল। তিনি প্রথমে তান্ত্রিক মতেই অন্তরক্ত হইয়া পডিলেন। ভিনি ভয়োক্ত বিধি অনুসারে অতি নীচকাতীয়া রমণী ও বেখাদি লইরা ভৈরবী চক্রের অমুষ্ঠান করিতে লাগিলেন; তজ্জ্য ভাঁহার পিতা ও পিতামহের সময়কার নিষ্ঠাবান একেণ সম্ভানগণ ৰ্লালের আচরণে অভান্ত কুত্ত হুইলেন, প্ৰাঞ্চল বৌদ্ধভাব वज्ञारमञ्ज अनुक अधिकात कतित्राष्ट्र छावित्रा दिनिक आक्रान्यारे व বল্লানের নিন্দা করিতে নাগিনেন। এই উপলক্ষেই তাঁহার চর্মকার ৰা ডোম-কন্তার পাণিগ্রহণপ্রবাদ রচিত হইল। এমন কি, বৈদিক বিপ্রগণের বড়বন্ধে লক্ষণদেন পিতার বিক্লছাচরণ করিছে প্রস্তুত হইরাভিলেন। এই সমর রাজনীতিকৌশল বলাল এক-हिट्ट निक दावानम तका ଓ अनद्वित्त श्रावानिनट नही রাধিবার অভিগ্রায়ে গ্রিরপুত্র লক্ষণের চরিত্রে দোষারোপ করিয়া

किह्निप्तित क्ष जीशांक त्राका स्टेट्ड निकांतिङ क्रिस्न्त । ইহার পর তিনি হিন্দু জনসাধারণকে নিজ মতাত্ববর্তী করিবার অভিপ্রারে প্রাচীন হিলুডভোক্ত ধর্ম আত্রর করিলেন, তথনও এ प्रताम हिन्मू छन्न थेलि देविएक इतिक्षे द्वाविक्र**स विका**र शना क्रिन. সেই সমরের হিন্দু ও বৌদ্ধতান্ত্রিকগণের মত কতকটা মহানির্বাণ-তত্তে বর্ণিত হইয়াছে। মহানির্কাণ-ডন্সকার ঘোষণা করিয়া গিয়া-एकन, "এখন বৈদিক মন্ত্ৰ সকল বিষ্ঠীন সর্পের ভার **বী**র্যাহীন। কণিযুগে একমাত্র তয়োক্ত কার্যামাত্রই শীঘ্র ফলপ্রদ"। মহারাজ বলালসেন ভঞ্জান্ত্ৰতী ৰইয়া প্ৰথমতঃ ঐক্লপ বেদবিক্লম মতই প্ৰচার ক্রিরাছিলেন, ভাহাতে বৈদিক বিপ্রসমার, বল্লালসেনের কোন কোন আত্মীয় এবং উত্তররাচীয় ও অভিনৰ বারেক্স কায়ত্ব-नमाज बज्ञानात्मात्मत्र विद्याधी बहेबाहित्म । वे मिटक काजिक ধর্ম্মের পক্ষপাতী কনৌজিয়া বিপ্রসন্তান রাটীয়-বারেক্সগণ জনেকে তাঁহাদের অধিপতির পক্ষপাতী হইরাছিলেন। সেনবংশের সম্প-কিত বন্ধ কারত্ব-সমাজও বলাশসেনের পক সমর্থন করেন। যে বে সমাজ গৌড়াবিপের তাত্রিক ধর্ম অনুমোদন করিরাছিলেন, वज्ञानरमन छौशानगरक नहेबा नुष्ठन मभाव गर्छन कतिरनन। তাহা হইতেই বল্লাগদেনের অভিনৰ কোণীন্ত-মর্য্যাদার সৃষ্টি। প্রথমে বাহারা তাপ্তিক ধর্মাত্মরক্ত, বিধান, বুদ্ধিমান, কুলাচারী ও তান্ত্ৰিক ক্ৰিয়ায় স্থদক ছিলেন, তাহাদিগকেই গৌডাধিপ সৰ্ব্ব প্রথমে সন্মানিত করেন এবং তাঁহারাই প্রথমে কুলীন বলিয়া বল্লালসভায় পূজিত হইয়াছিলেন।

যাহা হউক, অলকাল মধ্যে গৌড়বলে সর্বাত্তই রাজা বল্লাল-সেনের উৎসাহে হিন্দুভাগ্রিক মত প্রবর্ত্তিত হইল, বৌদ্ধভাগ্রিক-গণ সহজেই এখন হিন্দুতান্ত্ৰিকগণের সহিত সন্মিলিত হইতে गाणिम। ब्रांका वोकाद्वशै, छांशांत्र ध्वधान व्यभाष्ठा वोकनिशत्क অতি ঘুণার চক্ষে দেখেন: স্লুতরাং রাজ্ভরেই হউক, অথবা রাজার অনুগ্রহলাভাশার হউক, প্রজা সাধারণ বৌদ্ধ মত পরি-ত্যাগ করিয়া হিন্দুতান্ত্রিকের আশ্রয় লইতে লাগিল। যাহারা হিন্দু তত্ত্বোক্ত ধর্ম না মানিয়া বৌদ্ধধর্মে আছা দেথাইতে नाशिन, তাहाता त्राकारमण्य प्यांटिशीन वर्ग विनया शंगा हहेन। পুর্বেই বলিয়াছি,বল্লালও তাঁহার পিতা পিতামহগণের ছার প্রথমে লৈব ছিলেন, ভাহা তাঁহার "নি:শঙ্কশকরগোড়েশর" উপাধির মধোট দেখা যায়। কিন্তু শক্তিমত্তে দীক্ষার পর তিনি ঘোর শাক্ত হটরা পড়িয়াছিলেন। সমস্ত বছবাসীকে শক্তিময়ে मीकिত कतिवात बर्ग छिनि कूनीन खक्र नियुक्त करतम. धवर তাঁহাদের সমানবর্জনের জন্ত তাম্রশাসন ছারা তাঁহাদিগকে বত-প্রামণ্ড দান করিয়াছিলেন। আগমোক্ত প্রমাণদারাও তিনি

चरत्रत्र वाष्ट्रात्र (विकास (विकास क्षेत्र क्

কুলীন শুরুত্ব প্রেটিতা প্রচার করেন। ক্রনে বরাল-পুনিত কুলীনগণই পৌড়-বলের বিভ্ত শাক্তসনালের মরগুরু হইরা পড়িলেন। বরালসেন ভাষাদের শাতরা ও পদন্বালা অন্তর্গ রাধিবার লক্ত ভাষাদের শ শ কর্তব্য ও ভাষাদের মধ্যে পরিবর্ত মর্মানা প্রচলন করিলেন।

কিছ বরোর্ডি ও শান্তালোচনার সলে গৌড়াবিশেরও বৈদিক ধর্মের উপর আহা বর্ডিত হর, তাহা তাঁহার মৃত্যুর কিছু পূর্বের রচিত "নানসাগর" পাঠ করিনে কতকটা আতাস পাওরা বার। বৃত্যুর পূর্বে ডিনি প্রির পূত্র লক্ষণকে আহ্বান করিবা তৎ-প্রবর্ষিত কুলবিবিশালন এবং সমরোপবোদী বৈদিকমিপ্রিত ভাত্তিকমার্গ প্রচারের উপদেশ দিরা বান।

১১৭০ খৃষ্টাবে রাজা দক্ষণসেল পিতৃসিংহাসনে অধিরোহণ করেন। লক্ষণসেনের পূর্ক হইডেই ভাত্তিক বর্ণে সেরপ অভ্নাস হিল না, ভাঁহার পিতারছাছির মত তিনিও বৈদিক কর্মাছানে তংশর একং বৈদিক বিপ্রে অভ্যাস ছিলেন। ভাঁহার প্রধান মন্ত্রী পশুপতি এবং ভাঁহার প্রধান ধর্মাধিকারী (Chief-justice) হলাছ্ব বৈদিক প্রাক্ষণ। ভাঁহার বে কর্মানি ভাত্রশাসন পাওরা গিরাছে, ভাহা প্রতিশাস্ত্রবিং বৈদিকবিপ্র-গণের উদ্দেশ্তেই নিবছ, রাচীর বা বারেক্রবিপ্রগণের উদ্দেশে প্রায়স্ত ভাঁহার কোন ভাগ্রশাসনই পাওরা বার নাই।

সিংহাসনারোহণের কিছুকাল পরে লক্ষ্পদেন পিতার আদেশ প্রতিপাদন করিবার জন্তই পিছপজিত কুলীন-দিগকে সভার আহ্বাদ করিয়া তাঁহাদের সমীকরণ করিলেন এবং হলারধ ও পশুপতির সাহাব্যে অভি প্রচ্ছরভাবে সমাজসংখ্যারে অপ্রসর হইলেন। সে সমরে সমত গৌভবল ভারিকভার আচ্চর। সাধারণে তব্র ব্যতীত অপর কোন শান্ত প্রমাণ্য বলিয়া মনে করিতেন না। স্থাডরাং লক্ষণদেনকেও ভারের আল্র লইতে হইল। ভীতার প্রধান ধর্মাধিকারী পরম প্তিত হলাহুধ ক্রতি, স্থতি, পুরাণ ও ভারের লারদংগ্রহপূর্বাক तिहे नमस्त्र छेनरवाचे 'मरक्टक' बारम এक नहांकड dibia क्तिरमम । हिन्दू मनात्मन्न मराठान नका रह, व्यवह माराजन जाडिकान विद्यापी मा **रव, रा**म धरे बरविधादार वरकरक जब ब्राटिक करेबाटक । ध्यावरमर्थे मर जन्मकरुटा वीताठावीविरशय অভিনত ভারাকর, এককটা, উগ্রভারা এক বিশুরা দেবীর পুঞ্জাক্রম ও মরোভার, তৎপরে বৌভতপ্রাপ্তবোষিত নহাচীনক্রম, जातात्र बीद्यमाधन । मीनगात्रवाध्यान ध्वेवर मर्द्या मर्द्या राद्या राद्या वानामा कविवा एक विक्रिक्शासमाद्वि कालाव कर क्या वरेवारक। वारमार्थ गाँउ कविरन बरकर्क दम दीवार्गदीव विश्व रच विनवा मरन हरेरत। क्षि बीबाहांत्र नवर्षन संबो मरक्यक- তব্ৰকার হলাবুবের উন্দেপ্ত নহে। প্ৰতি, স্থতি ও প্রাণে (व मनाहारत्रत्र विधान चाहि, गंत्रवर्धी भीन व्हेर्ड किंद-সমাপ্তি পর্যন্ত তাহারই তিনি সমর্থন করিবা গিয়াছেন। বর্তমান বজীর হিন্দুসমাজ বাহা সদাচার বলিয়া অভাবধি পালন করিতে-ছেন, বর্তমান শাক্তা, শৈব ও বৈঞ্চবগণের প্রাধানতঃ অভুষ্ঠের আহিক ও মাসকৃত্য, বারব্রত এক দেবদেবীর পূজামন্ত্রাদিতে মংক্রপ্রক্তর অধিকাংশয়ন ভূষিত হইরাছে। মংক্রপ্রক্তর ৩১পটন हरेट 8> भीन भगांख ज्ञारनाच्ना कतिरन महरक्षे मरन हरेटव বে, মরাদির প্রাচীন স্থতিতে শৌচাশৌচ, ভক্ষ্যাভক্ষ্য, চাতুর্বর্গ্যের অবস্ত কর্তব্য ও প্রারশিচন্তাদি বাহা নিরূপিত হটরাছে, হলারধ ভাহারই বেন সারসংগ্রহ করিরা মৎক্রস্থকে বিধিবন্ধ করিরাছেন। তিনি প্রথমে তারা প্রভৃতি তাত্রিক দেবদেবীর পূজা ও মাহাম্ম-প্রচার করিয়া বীরাচারীবিগকে হাতে আনিয়াছেন, ডংপরে মন্ত মাংসাধির বর্গেষ্ট নিন্দা করিয়া ভাহার অসাধিকতা ও প্রার্হিডার্হডা প্রতিপাদন করিরাছেন। বৌদ্ধাধির বর্থেষ্ট নিন্দা করিতেও মংক্রন্থত কার পশ্চাৎপদ হন নাই।

মহারাজ লন্ধানেন একদিকে যেমন মংক্রন্থেভত প্রচার করাইরা সাধারণ তান্ত্রিকাণের কদাচারবর্জনের উপার করিলেন, অপরদিক্তে আবার বারেক্র প্রজ্ঞানার করাইনেন। এই সমরেই হলামুধের অপর প্রাতা পণ্ডিতবর ঈশান গোড়বলীর প্রজ্ঞান-সমাজের জন্ম "আহ্নিকপছতি" প্রচার করেন। মহারাজ লন্ধানেন কিরণে বলের হিন্দু সমাজকে উন্নত করিবার জন্ম বন্ধবান হইরাছিলেন, তারা উক্র চারিধানি প্রস্থ পার্র করিলে মনে হইবে বে, লন্ধানেন বে প্রশালী অব্যক্ষন করিরাভিলেন, প্রায় সেই প্রশালীকৈই বলীর হিন্দুসমান্ধ আন্তর্থ পরিচালিত ইতিহন্তে।

মহারাত্র লক্ষণনেন বৃদ্ধ বরনে গোড়া বৈক্ষণ কহিরা পঢ়িরাহিলেন। জরনেবের কোনলভাজপরাবলির মধুর আভারনেই
তিনি অনেক সময় অতিবাহিত করিতে লাকিলেন। আধনে
বে হলাবুধ "শৈবসর্বাত্র" লিখিরা গোড়রাজের প্রীতিভাজন
ক্টরাহিলেন, এখন তাহাকেই "বৈক্ষণসর্বাত্র" লিখিতে ক্টল।
ভাগবতগর্গের গুড় রহত নাধারনের সহকবোধ্য নহে। লাধারনের
লক্ষে ভাহার বিপরীত কল উৎপাদন করিছাছিল। এই
সমবের রাজক্বি গোরীর "ব্যন্ত্রতা পাঠ করিকে কেরা বার,
বুধ সক্ষনেনের ভাজধানীতে বিভালিভার নোভ আভাতিত
ক্ইতিহিল,—একাভ ভাজধান বার্মিনামিনীরনের মাজক্বিভ্রুত

মুখরিত, নিশীথে বেচ্ছাচারিণী অভিসারিকাগণের অব্যাহত গতিতে সেনরাজধানী চমকিত, নগরের উন্থানসমূহ নাগরদোলার ব্র্ণামাণা নাগরীগণের উন্মাদ কলনাদে বিদ্রাবিত এবং প্রণর্মালাপ কামনীগণের প্রেমালাপে সমস্ত বিভাবরী ফেন উভ্যান্ত—তাহারই ফলে গৌড়ীয় সেনাবিভাগে যথেষ্ট মেছাচার, বিলাসিতা ও চরিত্রহীনতা প্রতিপত্তিলাভ করিলাছিল এবং তাহারই পরিণাম ফলে ১১৯৯ খৃষ্টান্দে নববীপ-রাজধানী মহারাজ লক্ষণসেনের হস্ত হইতে মুসলমান-কবলিত হইল।

ভান্তিক বৌদ্ধাচার-বিপ্লাবিত হিন্দুসমাজকে ক্রমণঃ উত্তত করিবার জন্ম মহারাজ লক্ষণসেন যে সকল উপার অবলম্বন করিয়া-ছিলেন, বঙ্গবাসী হিন্দু সাধারণের গুরুদুইক্রেমে আর তাহা সমাক পরিপুষ্টি লাভ করিতে পারিল না। বলালসেনের সমর তিনটা রাজধানী ছিল। একটা উত্তরবঙ্গে মালদহ জেলার অন্তর্গত গোড় নামক প্রাচীন স্থানে, একটা নবদীপে ও অপরটা পূর্ববঙ্গের বিক্রমপুরে। লক্ষণসেন মহমদ ই-বধ তিয়ারের অকমাৎ আক্রমণ-ভরে নবদীপ রাজধানী পরিত্যাগ করিলেও, তৎপুত্র কেশব গৌড়ে দৈল্পদংগ্রহ করিয়া একবার মুদলমানদিগের বিরুদ্ধে অন্ত ধারণ করিয়াছিলেন, কিন্তু বিলাসী ও স্বেচ্ছাচারী সৈম্পণ দইয়া তিনি পরাক্রান্ত শক্রর সন্মুথে দণ্ডায়মান থাকিতে সমর্থ-হইলেন না, কান্ধেই তিনি গৌড় পরিত্যাগ করিয়া পূর্ব্ধবঙ্গে পলাইয়া গেলেন। তথনও বিক্রমপুরে লক্ষণসেনের অপর পুত্র মহাবল বিশ্বরূপ সেন শাসন করিতেছিলেন। যেরূপ ঘোরতর ষড়যম্বে পতিত হইয়া বৃদ্ধ নুপতি লক্ষণসেন ন্বদ্বীপ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হুইলেন, বিশ্ব-রূপের সভায় সেরূপ কোন বিশ্বাস্থাতকতা বা ষ্ড্যক্তের অভিনয় হয় নাই, অথবা স্বেচ্ছাচার ও বিলাসিতায় তখনও পূর্কবঙ্গ উৎসর বায় নাই। লক্ষণদেনের সভাদদ ব্রাহ্মণ পণ্ডিতগণ মুসলমানের নিকট উৎকোচ গ্রহণপর্বক ভবিষাপুরাণের দোহাই দিয়া রটনা করেন যে, দীর্ঘশ্রহা ও আজামুল্ছিতভূজ মুস্লমান শীঘ্রই আসিরা নবংীপ অধিকার করিবে। বৃদ্ধ নরপতিও ব্রাহ্মণের এবংবিধ কথায় বিখাস করিলা প্রাণ্ডয়ে ছল্মবেশে নবদীপ পরিত্যাগ করিয়া পলায়ন করেন। কিছু সৌভাগাক্রমে বিশ্বরূপের সভার সেরূপ স্বার্থাছ ব্রাহ্মণ-পণ্ডিতের অধিষ্ঠান ছিল না, তাই বদেশভক্ত বঙ্গীর বীর-গণকে লইয়া মহাবীর বিধরপ মুসলমানের করাল কবল হইতে পলরাজা রক্ষা করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। তাই বিশ্বরূপ নিজ ভাষ্ট্রশাসনে "গর্গবনাধর-প্রবর-কালরুদ্র" ইত্যাদি বিশেষণে বিশেবিত হইয়াছেন। তাঁহার সভায় গিয়া কেশবসেন উপযুক্ত আত্রর লাভ করিরাছিলেন। বৃদ্ধ লক্ষণদেন ছন্মবেশে তীর্থযাত্রার প্রকৃত হইলে, তাঁহার জােচ পুত্র মাধবদেনও রাজ্য পরিত্যাগ क्षत्रित्र विभागत्र व्यापाटम याजा कतित्राहित्मन । कूमात्रुरनेत्र क्मात्र- । নাপ তীর্থে এখনও তাঁহার নাম ও তাঁহার সহচর বন্দাবংকীর বান্ধণের নাম তাত্রশাসন হইতে পাওয়া গিয়াছে, এখনও তথার উক্ত বন্দাবংশধরগণ বাস করিতেছেন।

লক্ষণদেনের রাজ্য পরিত্যাগ ও তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র মাধ্য रमान हिमान प्रयोज। पंटिरन भन्न रक भन्दिम भूक्षित कि इतितन अछ नाम यांच तांका इहेरनन, किंद डाँहात कर्निक विश्वकरभन्न হত্তেই প্রক্লভ শাসনশক্তি পরিচালিত হইতে থাকে। জাঁধার মৃত্যুর পর প্রায় ১২:৫ পৃষ্টান্দে বিশ্বরূপ পূর্ব্ববেদর সিংহাসনে অভিনিক্ত হইলেন। তিনি রাজারকার বাস্ত ছিলেন, সেই জন্ম সমাজ-সংস্থারে হত্তক্ষেপ করিতে স্থবিধা পান নাই। তিনি পিত-প্রবর্ত্তিত তান্ত্রিক নামধের প্রচ্ছের বৈদিকচারেরই সমর্থন করিছেন, এবং বৈদিক বিপ্রদিগকে বছতর শাসন গ্রাম প্রদান করিয়া বৈদিকপ্রিরতাই প্রকাশ করিয়া গিরাছেন। ভাঁচার সময় হইতেই লক্ষণদেন-সংস্কৃত রাটী ও বারেক্স ব্রাহ্মণসমাজের স্থার বৈদিক-সমাজেও মিশ্র-বৈদিক-তান্ত্রিকাচার প্রবেশ করিতে-ছিল। বিশ্বরূপ দীর্ঘকাল বঙ্গরাজ্য শাসন করেন। ঐ সময়ের মুসলমান ঐতিহাসিক মিনুহাজ নদীয়া আক্রমণের ৬০ বৎসর পরে লিথিয়াছেন, তথনও লক্ষণদেনের বংশধর পুর্ববন্ধ স্বাধীনভাবে শাসন করিতেছেন। সেই স্বাধীন নুপতিকেই আমরা বিশ্বরূপ বুলিরা মনে করি। আইন-ই-অকবরীতে দেখা यांग्र, ट्रिनंदरात्वत्र शत्र मनारमन वा मृतरमन नाम् अक्वारिक রাজা হন। ই হার রাজ্যকাল ১৮ বৎসর লিখিত অ সম্ভবতঃ মুসলমান ঐতিহাসিক মুসলমানহেষী বিশ্বরূপকে ছাড়িয়া তৎপরবর্ত্তী সদাসেন বা শুরসেনের উল্লেখ করিয়াছেন। তৎপরে কুলগ্রন্থে দমুক্তমাধ্ব বা দনৌক্তা মাধ্বের নাম পাওরা যার। এই দমৌজা আইন অক্বরীতে নৌজা নামে উক্ত হইরাছেন। হরি-মিশ্রের কারিকা মতে, ইনি রাজা কেশবদেনের পুত্র। মরমনলিংহ হইতে সম্ভ্র পর্যান্ত বিশ্বীর্ণ স্থান তাঁহার অধিকারভুক্ত ছিল। লক্ষণদেনের সময়ে যে বৈদিক-ভাত্তিক মিশ্রাচারের প্রত্রপাত হইরা-हिन, मत्नोका माधरवत्र नमत्र छेक मिलाहात्र शूर्क्वतन्त्रत हिन्नुनमारक বিভুতি লাভ করে। বৈদিকসমানে এই মিপ্রাচার প্রকাণ্ডে স্বীকৃত मा इहेरन अदे नमद ताही अ वादत जनमारम छात्रिक अ देवनिक এই উভরবিধ আচারই *শ্রু*তিসমত বলিয়া গণ্য হইরাছিল। দনৌজা সভার রাটীর কুলীন ব্রাহ্মণগণের চারিবার সমীকরণ হয়, তিনি ধার্মিক ও পণ্ডিতগণকে আহ্বান করিয়া কৌণীত্ত-মর্যাালা লানে লক্ষানিত করিবাছিলেন। তিনি বলক

समय माजीय देविदान, बांकनकांध, क्षेड बाल, दत्र बाबादत विक्छ विवास क्षेत्रकः।

কারত কুলীনপ্রথন প্রবস্থার কল্পাকে বিবাহ করেন» এবং বলজ-কারত্ব-সমাজের গোষ্টাপতি হন।। তিনিই গোড় হইতে প্রধান কারত্ব কুলীন ও কুলাচার্য্যাপকে আনাইরা নিজ রাজ্যে বাস করাইয়াছিলেন।

১২৮২ খুটাকে বিশ্লীখন বলবন্ গৌড়াথিপ স্থলতান মৃতিন্-উনীনের বিক্তে আগবন করেন। তৎকালে দহক রাম জন-পথে বিশ্লীখনতে সাহাব্য করাম পশ্চিম বলের মৃত্যমান সর্ভারগণ তাহার উপর অভ্যন্ত কৃত হইরাছিলেন। বল্বনের বিশ্লী-গ্রহানের পর, ঐ সকল মৃত্যমানের সমবেত চেঠার অরকাল পরে বস্থামাধ্য স্থবর্থাম হারাইলেন, এবং আশ্লীর স্থলনসহ সমুব্রের নিক্টবর্তী চক্রবীপে গিরা বাস করিলেন।

পূর্কবন্ধের উভরাংশ হারাইলেও দক্ষিণাংশে তাঁহার বংশধরপণ বহু কাল বাধীন ভাবে শাসন বিভার করিতে সমর্থ হইবাছিলেন। দক্ষমাধবের পর তৎপুত্র রমাবল্লভদেব, তৎপরে তৎপুত্র
কল্পবল্লভদেব, তৎপরে তৎপুত্র রমাবলভদেব, তৎপরে তৎপুত্র
কলমের বর্ধাক্রমে বাধীনভাবে চক্রবীপ রাজ্য শাসন করেন।
কলমেবের পুত্র সন্তান না হওয়ার তাঁহার ঘৌহিত্র বলভক্র বস্তর পুত্র
পারনানন্দ বক্ররার চক্রবীপের সিংহাসনে অভিবিক্ত হইবাছিলেন।
বল্লবংশীর ৭ অন রাজার রাজন্বের পর, শেব রাজা প্রেমনারারণের
পুত্র সন্তান না হওয়ার তাঁহার ভাগিনের মিত্রবংশীর উদরনারারণ
উত্তরাধিকার লাভ করেন, তাঁহার বংশধরগণ অভাপি বাক্লা
চক্রবীপে বিভ্যান। তাঁহাদের সেই সোভাগ্য-পূর্য অন্তমিভ
হইরাছে, এখন আর রাজবংশধর বলিরা পরিচর দিবার কিছুই
নাই। তবে চক্রবীপ-সমান্তের সমান্তিত।

[চন্দ্ৰবীপ শব্দে বিস্তৃত বিৰয়ণ ক্ৰষ্টব্য ।] বালালায় বুসনমান-প্ৰভাষ ঃ

১৯০১ অবের আদম-স্বারিতে সমত বাদাসা প্রদেশের মুসলমানসংখ্যা ২৫,৪৯৫,৪১৬ নির্দিষ্ট হইরাছে: ক্রমধ্যে পশ্চিম বাদাসায় ১০৮৪৮২০; উত্তর ও দক্ষিণ বেহায়ে ২,৯৬৬,৪৫০; মধ্যমঙ্গে ৩৭৭৩৩২১; উত্তরধন্দে ৫৮৭৬৪০৮ ও পূর্ক্রজে ১১২২০৪২৭; এডবির উড়িব্যাপ্রদেশে প্রার লক্ষাবিক মুসল-

- পুরবন্ধর কভাবানআন্তর্ক বরস্ক কারস্থকারিকার নিবিত্ত আছে—
 শন্তভান কার্থকোরার পাকাৎ কীরভাবার ।
 - বহুত্রাক্ত বসুবার বাববার বিশেষতা ।"

 † শক্ষুত্র বাবব রাজা নামধীশাপতি।

 নেই বইন বক্তর ভারিত গোলীপতি ।

 বৌহ বইকে আবিলা ভারত ব্যাবাতি।

 কুলারার্ড আনাইবা করাইবা হিন্তি ।"

(किन पान्यक्ति पहल मुख्यो मानगर्थर

বানের বাস আছে একং করীর বার্টের অধীন করব রাজান্তলিতে,
অধাৎ কোচবিহার, কভিগর পার্রভাগ্রারেশ এবং উড়িবা
ও ছোটনাগপুরের অন্তর্গত দেশীর সামস্তরাজ্যসমূহে আরও সুসদমানের বাস দেখা বার । বাজালারাকী হিন্দুলাভির বোট সংখ্যা
৪৯৬৯৮৭০৪ জন এবং অন্থ্যানিক রোট সুসলমান ২৬ লক।
ক্রতরাং এতত্তরের তুলনার হিন্দু অপেকা সুসলমানের সংখ্যাই
উভরোভর বেশী হইতেছে। হিন্দুপ্রধান বলরাজ্যে এরপ সুসলমানাধিক্য কেন ঘটিল, বাজালার সুসলমান রাজ্যের ইতিত্ত অন্ত্যারণ ভির তাহা জানিবার বিশেষ উপার নাই।

স্থবেবালালার বর্তমান আঘম-প্রমারীর মোট ৭৮৪৯৩৪১০ জন সংখ্যা লক্ষ্য করিলে মুসলমান সংখ্যা স্পষ্টতই ভাছার এক-ভতীরাংশাধিক বলিরা বোধ হর। আহাজীর বাল্পাতের সমরে এই জনতার আধিক্য ঘটরাছিল, ভাহা তৎকালে লিখিড এক-বানি বিদেশীর প্রছে বিবৃত আছে। সে সমর মুসলমানধর্ম পূর্জ-বালালার সমুদ্রকুল পর্যান্ত বিভ্বত হইরাছিল। একে মুসলমান রাজা, ভার মুসলমান অমিদার ও জারগীরদার এবং পীর ও ফকীরদিগের অভুল প্রভাব-এই দক্ত কারণে জনসাধারণ সহক্ষেই বে মুসলমানথৰ্মের অন্তবর্তী হইতে বাধ্য হইবে, ভাহাতে আর আশুর্য বি ? বিশ্ব গৌড়, মুর্নিনাবাদ প্রভৃতি মুসলমান রাৰধানী স্মিহিত অবেশ অপেনা রাৰসাহী, বভড়া, চট্টগ্রাম প্রভৃতি স্থানে অধিবাসীদিপের সংখ্যা অধিক দেখিরা বেশ ব্যা বার বে, বাছবল অপেকা অভাভ কারণেও মুসলমান-ধর্মের পরিবৃদ্ধির সহারতা ঘটিরাছে। বে সকল জেলার মুসলমান অধিক, रम्थानकात मूमनमारनता धात्रहे (इनिजीनी) धनः अधिनातः ব্যবসায়ী ও বিয়ান্ ব্যক্তিগণ আর হিন্দু। ইহা দেখিয়া অনুমান হয় যে, বহুকাল হইতে অনাৰ্য জাডিগণ পশ্চিম হইতে তাড়িড হইয়া পূর্ববাদালার আশ্রের গ্রহণ করিরাছিল ৷ অনার্যবংশসভাত ৰদিয়া ডৎপ্ৰদেশস্থ সেই অধিবাদীয়া হিন্দুস্বালে অভি নীচ তেৰীতে হান পাইয়াছিল। প্ৰবৃত্তিহালে ভাহাত্ৰা অপেকাকত সভাতা-সোণানে আরোহণ করিবা সেৱণ হীনাবছা পরিভাগ-পূৰ্বাৰ মুগলবানাধিকারে রাজার সহিত সমন্ত্রা হইতে উৎসাহ ও পাএৰ প্ৰকাশ ক্ষিণ, দাৰাছপ্ৰৰে ভাৰায়া ইস্লারগৰ্গে रीकिंठ रहेन, अथवा अधिक गण्डन, अदमदक तारे गमदा नवारक ना वाजनकारन नवानकारका जानात हैकानूक्य हेन्साकारच नीकात्यर्ग कवित्रा सहस्रवदम् स्थापनि पित्र ।

্বিতীয়ত: স্থাবিকাশ কুসৰমানের আবিশত্য হইতেই বালানার বুলগমানবাতির একানুশ বিভৃতি গতবশার বলিয়া কয়না করা বাব। তাহার স্কুলোঁও বালিকামাশবেশে আনেক কুসলয়ান বলিক্ একাশে আবিয়া বাব কুমিয়া বাকিবেশ। সুসলমান-যাকাশের আভাচারভরে, রাজান্ত্রহলাভের আশার, অথবা কোন দ্বপ লারে পড়িরা অনেক হিন্দু ইন্লামধর্মে দীকাগ্রহণ করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। আবার কোন কোন হিন্দুসভান মুন্লমানের লহবানে আসিরাই অথবা মুন্লমান যুবতীর প্রেমপাশে আবদ্ধ হইরা হিন্দুধর্মজ্যোভিঃ পরিত্যাগপূর্কক রাজধর্মের বিমল অগীর ইন্লাম-আলোকে আপনার অদ্ধ বিশ্বাসন্ত্রপ কদ্পৃত্তি উল্লেসিড ভরিন্নাহিলেন।

ভাল-উল্-মুরালীর, তবকাং ই-নাসিরী, তারিখ-ই-জালফি, তারিখ-ই-কিরিতা, অকবর-নামা, জবেনং-অল্-তারিখ, জাহালীর-নামা, শাহলহান-নামা, জবেনং-আলমণীর-নামা, মুরালীর-আলমণীরী, তারিখ-থাকি থা, মুরালার-অল্-ওমরা, রিরাল-উদ-সলাতিন প্রভৃতি বিবিধ মুসলমান ইতিহাস পাঠকরিলে, বালালার মুসলমান সমাসম ও তাহাদের প্রভাব বিভারের বধেই আভাস পাওরা বার।

তবকাৎ-ই-নাদিরীতে মধ্য-এদিরাবাদী মুদ্দমানজাতির প্রভাব বর্ণনপ্রদেশ দবক্তশীনের অভ্যানর ও ভারতাক্রমণ বির্ত হইরাছে। গবক্তশীনের মৃত্যুর পর, তাঁহার প্র অলতান মাজুদ্দ গলনী রাজধানী হইতে সদলে বহির্গত হইরা পশ্চিম ভারতের দানাল্লান আক্রমণ ও পুঠন করেন। মাজুদ্দ মধ্যভারতের মুন্দেশখণ্ড পর্যান্ত বিজয়ার্থ অগ্রসর হইয়াছিলেন । কিংবদারী আছে বে, ঐ সমর হইতে অলতান মাজুদের বিধ্যাত সেনাপতি দৈরদ সালর মসাউদ গালী উত্তর-ভারত আলোড়িত করিয়া স্প্রসিদ্ধ ভর আভিকে বিধ্বত করেন। তাঁহারই প্রভাবে নানা স্থানে মুদ্দমান উপনিবেশ ও মস্ত্রিদ্ প্রভৃতির প্রতিষ্ঠা হর।

[नवस्नीन, माक्ष्म ও नानत मनाउन् तथा।]

মাজুদের মৃত্যুর পর, ১০৩০ খুটানে মহন্দন মদাউদ ১ম
রাজা হল। মদাউদ-পুত্র মোড়দকে হীনবল দেখিয়া রিলীপতি
আফগানদিগের নিকট হইতে নাগরকোট কাড়িয়া লন। ১০৪৯
খুটালে মোচুদের মৃত্যু ঘটিলে বথাক্রমে হর মদাউদ, আলী,
রিদি ও কেরোখজালা পলনীসিংহাসন অলম্ভত করিয়াছিলেন।
কিন্তু ভাঁহারা ভারতে অধিকারবিভারে বিশেষ মনোযোগী হন নাই।
১০৪৮ খুটালে কেরোখের প্রভাগ স্থলভান ইত্রাহিম রাজপদে
অভিবিক্ত হইরা ১০৭৯-৮০ খুটালে হিন্দুহান আক্রমণ করেন।
ভাঁহার মুক্সার পর ভংপুত্র আর্গিয়া রাজা হন। আর্গিয়ার
অভ্যাচারে ক্রেলাবর্গ প্রেণীড়িত হইরা উঠে। ভাঁহার খ্লাতাত
বহরার পাই সেরে প্রাদের নায়ার পলাইরা খ্লাতাত
বহরার পাই কেরি স্বরেন প্রাদের নায়ার পলাইরা খ্লাতাত
বহরার পাই কেরি স্বরেন প্রাদের ভার্মই সহারভার বহরাম
বীর প্রাক্ত্রা আর্গিয়াকে নিহত করিয়া অরং পজনী ও লাহোরের
অবিশিতি হন। এই স্বরের খোর-রাজক্বলের অভ্যানর হইতে

থাকে। বহরামের পরবর্তী থুক নামক রাজ্যর প্রতিপঞ্জিনী বোররাজ্যথেপর সমকজ হইতে না পারিরা রাজ্যের পক্তিমাংশ পরিত্যাগপূর্বক পূর্বাঞ্জাছ লাহোর জনপদে আসিরা রাজপাই হাপন করেন। ১১৮৯ খুটাকে মহল্মন খোর জুল্ভান ২র খুক্তকে বুকে বন্দী করিরা কিরোজ-কো নামক ছানে আনর্মন পূর্বক ভথার ভাঁহার হত্যাকাথ্য সম্পন্ন করিরাছিলেন। জনবধি লাহোর জনপদ বোর-বংশের অধিকারভুক্ত হর।

বীৰ্ষলাল মুসলমান জাতির সহিত বাস করিয়া হিন্দুগণও আনেক বিবরে মুসলমান-সংকারাপর হইরাছিলেন। বিধর্মী হই-লেও হিন্দুসমাজে তাঁহালের সংসর্গ তৎকালে ততদ্র নিজনীর ছিল না। কেন মা গাছারাদি প্রাচীনভম রাজ্যের সহিত বহ-কাল হইতে তারতবাসীর সংলব চলিয়া আসিডেছিল। তথনও পাঠানজাতির ইস্লামধর্মীকা বেনী প্রাতন হর নাই। তাঁহালের মধ্যেও তথন পূর্বভন তারতীর ধর্মসংভারের অনেক নিলর্শন বিভ্যমান ছিল। তথনও হিন্দু-মুসলমানের প্রকৃত বিবেষভাব সমৃদিত হর নাই; সত্তবতঃ সেই কারণেই বোধ হর, কনোজপতি জরচন্দ্র অলাতির প্রতি ঈর্ব্যাপরতর হইরা বিদেশীকে সাদরের আমন্ত্রণ করিতে কুঠিত হন নাই। [মহম্মদ ঘোরীও জরচন্দ্র দেখ।]

১১৯৩ খুটান্দে তিরোরী রণক্ষেত্র দিলীপতি পৃথীরাজকে পরাভূত করিরা মহমদ খোরী দিলী প্রান্ত পর্যন্ত মুস্লমানরাজ্যসীমা বিভার করেন। মহমদ তাঁহার বিশ্বত ক্রীতদাস এবং সেনাপতি কুতব্ উদীন্ আইবন্ধে বিজিত প্রদেশের দাসন-কর্তা নিযুক্ত করিরা যান। এই রাজপ্রতিনিধির আন্দেশেই মহমদ-ই বধ্তিরার বাসালা-বিজয়ে আগমন করেন।

[কুতবউদীন ও মহন্মন ই-বধ্তিয়ার দেখ]
কুতবউদীনের প্রেরিত বিজরবাহিনী হইতেই পূর্বাঞ্চল
ক্রেমণ: মুননমানের বনতি বিভূত হর; কিছু গ্রুংথের বিবর
বাজালী মুননমানের মধ্যে পাশ্চাত্য মুননমান ঔপনিবেশিকের
সংখ্যা অতি অয় । স্থাবিকাল মুননমান শাসনে প্রণাজিত
এবং রামকর্মচারিবৃন্ধ কর্ত্ব নিগৃহীত হইরা, অথবা মুননমান
সাধুগণের ব্রুক্রকীর প্রভাবে বিস্থু হইরা এদেশীয় হিন্দুগণ
অনেকে তৎকালে ইন্লামধর্মের আলার প্রহণ করিরাছিল।
নেই প্রাচীন নমরে স্থার স্থানরবন বিভাগেও ইন্লামধর্মপ্রচারাথ
লোকের চিতরঞ্জনকর মস্কিন্ নির্মিত হইরাছিল।

খুটার ১২০০ অন ব্রুদ্ধে আক্রডণালে বালানার কুল্লান-শাসন আরভ; তদব্ধিই জাহারা এ সেনে বসভি কুরিরা আসিতেহেন। সেই সমর হইতে আরভ করিয়া ইংরাজ-কর্ত্ব বালানার "দেওবানী" প্রবংশন সমর পর্যাত্ত আর ১৬২ বংশন সুস্লমানস্প এ বেশে রাজ্য করিয়া নিরাহেন।

বাঙ্গালা রাজ্যের পশ্চিম অংশ হত্যুত হওয়ার বছদিন পর পর্যান্তও ছিন্দুরাজগণ পূর্ব্ব-বালালার সোণারগাঁও প্রভৃতি স্থানে त्राक्षप कतिप्राहित्मन । किन्द्र ১२ • > थुः व्यत्मत शूर्व इटेट्डरे সোণারগাঁও নগরে মুসলমানগণের ঘটিরাছিল। স্মাগ্ম খুটার অষ্টম শতাব্দীতেও বসোরার আরব সওদাগরণণ ভারত-বর্ষ ও চীনের সহিত বছল পরিমাণে সামুদ্রিক বাণিজ্যে নিবৃক্ত ছিলেন। তাঁহারা যে সকল দেশে পরিভ্রমণ করি-তেন, তথার এক একটা বাণিজ্যাবাস হির করিয়া যান। বাদালার বাণিলাপ্রাধান্ত হইতে আমরা বেশ বৃথিতে পারি বে, অতি পূর্বকাল হইতে বাঙ্গালার মুসলমানদের উপনিবেশ স্থাপন করার হুবোগ ঘটিরাছিল। প্রাচীনকালে পশ্চিম জগতের সহিত এ দেশের যেরপ ৰচল পরিমাণে বাণিজ্ঞাদি চলিত, খুটীর ৯ম শতাব্দে লিখিত চুই জন মুসলমান পরিব্রাক্তকর ত্রমণর্ত্তাক্তে ভাহার সবিশেষ উল্লেখ আছে। তাঁহারা "এ দেশকে রামি রাজার দেশ বলিরা" উল্লেখ করিরা গিয়াছেন। আরও বলিরাছেন-"তাঁহার অসংখ্য হস্তী আছে। বাঙ্গালার প্রধান রপ্তানি দ্রব্য স্কুল ভূলার কাপড় (ঢাকাই মস্লিন ?), অগুরু हम्मन, अक अकार हर्च, गंखारत्र शका है जाति। अहे मकनहे কড়ি বিনিময়ে ক্রয় করা যার। কড়িই এ দেশের প্রচলিত মূলা।"

মুসলমান রাজদের ইতিবৃত্ত।

(अध्य भागनकान ।)

মহক্ষৰ-ই-বধ্তিরার খিলজী খোরের একজন অমাত্য ছিলেন। স্থাতান গিরাস্ উদীন্ মহক্ষদ শাহের রাজত সময়ে তিনি গাজনীতে আসেন। সেই স্থানে কিছুদিন থাকিয়া তিনি ভারতবর্ষে উপনীত হন এবং মালিক মুয়াজ্জিম হিসাম উদীনের অধীনে চাকরী গ্রহণ করেন। ইনি স্থাতান শাহাব্ উদীনের একজন গ্রসিক সদক্ষ ছিলেন।

১১৯৯ খ্যা অবে তিনি বালানা আক্রমণপূর্কক ১২০৩ খৃঃ
আন্দের মধ্যে রাচ ও বরেন্দ্র নামক প্রদেশ অর করেন।
"তবকৎ ই-নাসিরী" নামক ইতিহাসে লিখিত আছে, লজ্ঞান
বতী নামক রাজ্যের অন্তর্গত নদীরা নগর রার লছ্মণিয়ার
রাজধানী। গলানদীর উত্তরকূলে ঐ রাজ্যের চুইটা বাচ
আছে। পশ্চিম বাছকে রাচ্ বলে। লক্ষণাবতী নগরী এই অংশে
অবস্থিত। পূর্ক বাছর নাম বরেক্স বা বরেক্সা, দেওকোট নামক
নগরী এই বরেক্সভূমে অবস্থিত। নদীরা এবং লক্ষণাবতী উভয়
নগরই রাচ্ প্রেমেশ বিভ্নান। কিরিভার লিখিত আছে, মহক্ষদই-বছ্তিরার নহীয়া লবের অব্যবহিত পরেই লক্ষণাবতী ও
অভাত রাজ্যগুলি অধিকার ক্রিলেন। উহির নামে পুংবা

পাঠ এবং মূলা প্রচারিত হইল। বে সকল মুসলমান তাঁহার সহিত আসিরাছিলেন, বা পরে বাঁহারা আসিরা তাঁহার সহিত বোগদান করিয়াছিলেন, তাঁহারা এই নৃতন বিজিত প্রদেশে প্রতিষ্ঠিত হইলেন। তাহারা জারণীরস্বরূপ অনেক ভূসম্পত্তি লাভ করিরাছিলেন। গোড় বা লক্ষণাবতী নগরে বধ্তিরার রাজধানী স্থাপন করেন। [লক্ষণনেন দেখা]

বরেক্স এবং রাচ ১২০৩ খুঃ অব্দে মুসলমান শাসনাধীন হইলেও, প্রকৃত বলদেশ বা বালালার পূর্বাংশ মহম্মদ ভোগ্লক শাহের রাজ্যকালে মুসলমানকর্ত্ব ১৩৩০ খুঃ অব্দে অধিকৃত হয়। গোড়, সপ্তগ্রাম এবং স্থবর্ণগ্রাম নগর বা বন্দরে উক্ত সম্রাটের প্রতিনিধিগণ রাজধানী স্থাপন করিয়া রাজ্যকার্য্য নির্ব্বাহ করিয়াছিলেন।

মহমদ্-ই-বর্ধ তিয়ার থিলন্দী হইতে আরম্ভ করিয়া কাদর থার শাসন সময় পর্যান্ত বালালা দিল্লী-সাম্রাজ্যক্ত ছিল। তৎকালে দাস, থিলন্দী ও তোগলকবংশীয় দিল্লীয়রগণ আপন আপন প্রতিনিধি হারা বালালা শাসন করিতেন। কিন্তু স্থলতান ফণ্র উদ্দীনের রাজ্যত সময়ে বালালা দিল্লীর অধীনতা উন্মোচন করিয়া আধীন হইল (১৩৪০ খুঃ আঃ)। তিনি বালালা রাজ্যের সমগ্র শাসনশক্তি স্বহন্তে গ্রহণ করিয়া আপনাকে স্বাধীন বাদশাহ বিলয়া ঘোষণা করেন। যতদিন দা অকবর বাদশাহ দায়্দকে পরাজিত করিয়া খুলীয় ১৫৭৬ অব্দে বালালার স্বাধীনতা হরণ করিয়াছিলেন, ততদিন বালালা পাঠানজাতির অক্ষম প্রতাপ ও অপরিসীম অত্যাচার অকৃষ্টিত চিত্তে সহু করিতে বাধ্য হইয়াছিল। কবিজাহিনীতে তাহা বিশেষরূপে বিরত আছে।*

মহন্দ্-ই-বর্ণতিরার স্বীয় অধিক্কত বালালা প্রেদেশ চুই থণ্ডে বিজ্ঞান্ত করিরাছিলেন। বরেক্সভূমি ও বগড়ীর কির্দংশ লইরা কে বিজ্ঞাণ গঠিত হয়, দিনাজপুরের নিকটবর্তী দেবকোট নামক ফানে তাঁহার রাজধানী ছিল। অপর বিভাগের রাজধানী গৌড় বা লক্ষণাবতী। রাচ় ও মিথিলার কির্দংশ তাহার অস্তর্ভূক। মুসলমানপতি উত্তর-প্রদেশবাসী হিল্বাঞ্চগণের আক্রমণ হইতে স্বাধিক্ষত গৌড়রাঞ্চরক্ষার জন্ম রুলপুরে গুর্গ নির্দ্ধাণ করাইরাছিলেন। অতঃশর কামরূপ ও তিব্বত অধিকারে মানস করিরা ছিলেন। অতঃশর কামরূপ ও তিব্বত অধিকারে মানস করিরা তিনি কামাতপুর-রাজের সহিত সন্ধিলাপ করেন; কিন্তু কামরূপ-দেনার পরাক্রমে পাঠানসৈক্ষ সমূলে বিনট হর। যুদ্ধে পরাজ্ঞ্ব স্বীকার করিরা মহন্দ্র-ই-বণ্ডিরার দেবকোটে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন, তথার বলক্ষরে ও চিক্তাঞ্জনিত করে অ্রাধিনের মধ্যেই

चळाड आडीत है लिहान, खाळागकांड, ३२ जरण अहेवान

তাঁহার মৃত্যু ঘটে (হি: ৬০২ = ১২০৫ খু: আ:)। তাঁহার শবদেহ বেহারে স্থানাস্তরিত ও সমাধিস্থ হইয়াছিল।

উক্ত থিল্জী বীরের সঙ্গে আনেক আঞ্গান,মোগল ও ইরাণীর এদেশে আসিয়াছিল। তিনি অগণিত মুসলমান সেনাদল লইয়া বালালা, বেহার ও মগধের নানাস্থানে মুসলমান-শাসন বিভার করেন। তাঁহার আত্মীয় স্বজন ও আমীরগণ যাহারা তাঁহার কহিত বালালায় আসিয়াছিলেন, তাঁহাদিগকে তিনি জায়ণীর দিয়া বালালায় বসাইয়াছিলেন।

মহমান-ই-বথ তিয়ারের মৃত্যুসংবাদে তাঁহার বিশ্বন্ত বন্ধু ও দেবকোটের সেনানারক মহমান-ই-সিরান্ থিলজী বিশেষ ক্ষ্ম হন। কিন্তু বথন তিনি গুনিলেন, বগুলের শাসনকর্তা আলীমর্দান খাঁ তাঁহাকে ছুরিকাবিদ্ধ করিয়া তাঁহার প্রাণসংহার করিয়াছেন, তথন তাঁহার প্রতিহিংসা-বহ্নি শতগুলে প্রজ্ঞালত হইয়া উঠিল, তিনি সদলে বন্ধ ল অভিমুথে অগ্রসর হইয়া যুদ্ধে আলী মর্দনকে বন্দী এবং বাবা ইম্পাহানী নামক একজন কোতোয়ালের হস্তে তাঁহাকে সমর্পন করিয়া রাজধানী অভিমুথে যাত্রা করিলেন।

মহম্মদ সিরান লক্ষণাবভীতে ফিরিয়া আসিলে মুসলমান সেনাধাক্ষেরা তথার সমবেত হইয়া তাঁহাকে একবাক্যে সর্বপ্রধান মুসলমান অধিনায়ক বলিয়া স্বীকার করিল। মহম্মদ সিরান আজা উদ্দীন্ উপাধি সহ গোড়ের মস্নদে অধিষ্ঠিত হইলেন এবং মুসল-মান-সেনাপতিগণকে অধীনস্থ সেনাদলের পোরণার্থ জারণীর দান করিলেন।

এদিকে রাজ্যাভিষেকের স্থযোগে আলীমর্দান কোভোয়ালকে উৎকোচ-দানে मञ्जूष्टे कतिया श्वयः कातावाताथ श्रृहेत्व উन्यूक रन । পরে তথা হইতে গোপনে দিলীযাত্রা করিয়া সত্রাট্ কুত্ব फैकीरनत ममरक वाकानात ताकरेनिक विश्ववित्र कथा निर्वानन করেন। এই সংবাদ প্রবণে এবং স্বীয় রাজশক্তির অবমাননা হইরাছে ভাবিয়া সম্রাট কুদ্ধ হইলেন। তিনি তদণ্ডেই অযোধ্যার শাসনকর্ত্তা কামার ক্রমিকে অবিলম্বে বাঙ্গালা অভি-মুখে অগ্রসর হইতে আদেশ করিলেন। তদমুসারে কামার ক্ষমি বালালার অপরাপর মুসলমান সামন্ত সন্দারদিগকে বশীভূত করিয়া মহমাদ সিরান্কে দশুবিধান করিতে অগ্রসর হইলেন। যুদ্ধে পরাজিত হইরা সিরান দলবল সহ কোচবিহার অভিমূপে পলাইরা গোলেন। তথার মুসলমান সন্দারগণ পরস্পারে আত্মকলহ উপস্থিত ক্রিল। এক অন সর্দারের তরবারির আখাতে গোড়েশ্বর মহম্মদ সিরান নিহত হইলেন। কামার ক্ষমি खाविन्हें महीत्रिक्शित्क क्या कवित्रा वाकामा वाका छोटाएव मत्था বিভাগ করিয়া দিলেন।

आंगीमकान थिनजी वक्वित्क्ला महस्त्रम-रे-वथ् छित्रांत्र थीत

XVII

হত্যাকারী বলিয়া সাধারণে নিন্দিত হইলেও, তিনি বীর, সংসাহলী ও কর্মকুশল ছিলেন। তিনি বালালা ইইতে দিলীতে
উপস্থিত ইইরা দেখিলেন, দিলীখর কুত্ব সদলে গজনী-বিজয়ে যাত্রা
করিতেছেন। আলীমর্দানও সম্রাটের সহকারিরূপে তথার যাইরা
বিশেব কৌশল ও রণপাওিত্য প্রদর্শন করেন। তাহাতে সন্তই
ইইরা সম্রাট তাহাকে বালালার রাজপ্রতিনিধি পদ দিরাছিলেন।
রাজাজামুসারে হিলাম উদ্দীন অবুজ প্রভৃতি খিলজীবংশায় সামস্তসর্দারগণ নবীন প্রতিনিধি আলীমর্দানকে অভ্যর্থনার্থ কুন্দীনদীতীরে সমবেত হন। গোড়েশ্বর আলীমর্দান ঐ স্থানে সমাগত
ইলৈ পরম্পারে মর্যাদাবিনিময়ের পর, সদলে দেবকোট অভিমুখে যাত্রা করিলেন। এখানে কিছুদিন মন্দ্রদে উপবিষ্ট ইইরা
তিনি প্ররায় লক্ষণাবতী বা গৌড় রাজধানীতে উপনীত ইইলেন।
কেইই তাঁহার রাজ্যাধিকারে প্রতিবন্ধকতা করিল না। তিনি
নির্কিরোধে বলের শাসনদও পরিচালনা করিতে লাগিলেন।

১২১০ খৃষ্টাব্দে যা ৬০৭ হিজিয়ায় কুত্ব উদ্দীনের মৃত্যু ঘটিলে আলীমর্দান খাঁ। দিল্লী-রাজসরকারের অধীনতা পাল ছেদনপূর্বক স্বয়ং স্থলতান আলা উদ্দীন নাম গ্রহণ করিয়া স্বাধীনভাবে বাঙ্গালা শাসন করিতে লাগিলেন। বাঙ্গালার মসনদে আরোহণের পূর্বে মর্দানের হৃদয় প্রকৃত বীয়পুন্ধবের স্পান্ধ ছিল। তিনি তৎকালে তীক্ষ বৃদ্ধি ও রাজকীয় দ্রদর্শিতার যথেষ্ট পরিচয় দিয়াছিলেন। রাজভক্তে উপবেশনানস্তর গর্বে মদে মন্ত হইয়া ভাহার ঘোর চিত্রবিকার উপস্থিত হইল, তিনি ঘোরতর অত্যাচারী ও আত্মন্তরী হইয়া উঠিলেন। তাঁহার প্রত্যেক কার্যোই অনৈতিকতা ও অবিম্যাকারিতা প্রকাশ পাইতে লাগিল। তাঁহার অধীনত্ব থিকজীবংলীয় ওমরাহগণ এবং সম্বান্ত প্রজাবৃদ্দ রাজকৃত একপ হঠকারিতা প্রভৃতি দোর উপেক্ষা করিয়া নিশ্চিত্ত থাকিতে পারিলেন না। তাঁহারা উত্রেরান্তর বিরক্ত হইয়া অবশেবে ১২১২ খুটান্দে গোড়েশ্বরকে গোপনে হত্যা করিল।

রাজহত্যার অব্যবহিত পরেই, মৃদ্দামান সুদ্দারকৃদ্দ পূর্কবৎ
সমবেত হইয়া গলোওরী জেলার স্থপ্রসিধ সামন্ত হিসাম্ উদ্দীন্
অবৃদ্ধ রাজসিংহাসনে অভিবিক্ত করিলেন। তিনি বোর রাজ্যের
কোন সম্লান্ত সন্দারবংশসমূত—অনৃষ্টাবেবণে ভারতে আসিরা
মহন্দ্র-ই-বথ্ ভিরারের অধীনে সেনানারকের পদে নিবৃক্ত হইয়াছিলেন। ক্রমে বীর প্রভুর অম্প্রহে গলোভারী বিভাগের
শাসনাধিকার প্রাপ্ত হন। তাহার বীর্ষ, সাহস ও কর্মনিষ্ঠার
অপরাপর সন্দারগণ তাহার উপর প্রভাবান্ ছিল। মহন্দ্রদ
সিরানের রাজ্যকালে কামার ক্রমির সমক্ষে ভিনি বিজীখরের
অধীনতা বীকার করার রাজভক্তির প্রভারত্বরণ বিশেবক্রপ
স্ক্রানিত হইয়াছিলেন।

মংলাণ্-ই-ৰণ্ডিরারের মৃত্যুর পর বিল্লীবংলীর বে করেকজন সেনাপতি বল্পদেশ শাসন করিরাছিলেন, তর্মধ্য স্থলতান
গিরাস্উদীন্ট সর্জাপেকা বিখ্যাত। স্থলতান হিসাম্ উদীন্
জব্দ গৌড়ের মসনলে স্বাসীন হইরা গিরাস্ উদীন্ নাম
ধারণ করেন। তাঁহার স্থাপিত কীর্তিমালা জন্তাপি বলে তাঁহার
বলং বোবণা করিতেছে। তিনি গৌড়নগরী নানা জন্তালিকার ও
ধর্মমন্দিরে স্প্রোভিত করিরাছিলেন। তখন লক্ষণাবতী বা
গৌড়-রালধানী গলার ছই দিকে বিস্থত ছিল। বর্বাঝতুতে
জলমধ্য স্থান দিয়া রালধানী হইতে জন্তুর যাতারাতের অস্বিধা
বৃত্তিরা তিনি বীরভূষের অন্তর্গত নগর (লক্ষণনগর বা লখ্নোর)
মামক স্থান হইতে গৌড় দিরা দেবকোট পর্যন্ত একটা জালাল
(মৃত্তিকান্ত্রণ বারা নির্দ্ধিত উচ্চ পথ) প্রন্তুত করান। ইহাতে
সাধারণ গোকের ও রালকীর কর্মচারীদিগের বালালার বিভিন্ন
নগরে গমনাগ্যনের বথেষ্ট স্থবিধা ঘটনাছিল।

मुननमानवाहिनी नाम नहेबा जिनि चबर कामब्रुश, मिलिना এবং ৰুগল্লাথের (উড়িখার) রাজাদিগকে কর দিতে বাধ্য করিয়া-ছিলেন। প্রায় দশ বৎসরকাল মহাসমুদ্ধির সহিত রাজ্য করিয়া ডিনি দেশহিডকর নানা কার্য্যের অমুষ্ঠান করিয়া যান। তিনি সাহিত্য ও শিরের প্রচপোষক ছিলেন। জ্ঞানোরতি করে তিনি শত শত পণ্ডিতকে রৃত্তি দান করিয়াছিলেন। বাস্তবিক পক্ষে ভিনি हिन्तु, भूगनमान, धनी वा पत्रिप्राप्तार कानक्रभ विচाद्यत তারতমা করিতেন না। ১২২৫ খুটান্দে দিলীখরের বিরোধী হটর। তিনি প্রথমে দিল্লীতে রাজকর প্রেরণ বন্ধ করেন। সম্রাট্ট আল্-তমাস তাঁহাকে দণ্ডবিধানার্থ বাঙ্গালার সমাগত হইলে তিনি ভাহার অধীনতা স্বীকারপূর্বক সৃদ্ধি করিতে বাধ্য হন। সম্রাট প্রভাগত হইলে,তিনি বেহারের শাসনকর্ত্তা মূলক আলা উদ্দীনকে রাজ্যন্ত করিয়া পুনরায় দিল্লীখর স্থলভান আল্ভামানের অধীনভা অশীকার করেন, তাহাতে স্থপতান আপনার বিতীয় পুত্র দাসির উদ্দীনকক তহিকতে প্রেরণ করেন। গিরাস্ উদ্দীন্ সমরে পরাজিত এবং নিহত হন (১২২৭ খুটাৰ)।

গিরাসের মৃত্যুর পর লক্ষণাবতীর ক্তনর্কার দিরীরাজধানীতে প্রেরণ করিরা নাসির উদীন বালালা ও বেহারের
শাসনকর্ত্তা হন। ১২২৮-২৯ খুরান্দে লক্ষণাবতী রাজধানীতে
তাহার মৃত্যু ঘটে। এই ছবোগে থিলনীবংশীর সর্পারগণ
বিল্রোহী হইরা পুনরার বালালা হতগত করিতে চেটা পান।
ছলতান আগ্তমাস ৬২৭ হিজিয়ার হার বালালার উপনীত
হইরা বিল্লোহধমনপূর্কাক পূর্কাভিত র্লন্ম আলা উদীন্তে
গোড়সিংহালনে অভিবিক্ত করেন। আলা উদীন্ত বংসর এবং
ডংপরে নৈক্ উদীন্ তুর্কাও বংসরকাল রাজ্য করিলে পর বালা-

লার মসনদে তুবান খাঁ আরোহণ করেন। ৬৩৪ হিজিরার বিষ-প্রারোগে শৈক উদ্দীনের মৃত্যু ঘটে (১২৩৭ খুঃ)।

নাসির উদ্দীনের পর বর্ণার্থ পক্ষে তুবান থাই বঙ্গরাক্ত শাসুন করিরাছিলেন। তিনি নানা সন্তথে ভূবিত ছিলেন। স্থাতান আল্তমাসের অন্থ্যাহে তিনি ৬৩০ হইতে ৬৩৪ হিঃ মধ্যে বথাক্রমে বুদাউন, বেহার ও গোড়ের মসনদে সমধিষ্টিত হইরাছিলেন। বঙ্গসিংহাসনে উপবিষ্ট হইরা আলা উদ্দীন তুবান থান্ উপাধি ধারণ করিরা দিনীগরী স্থাতান রিজিয়ার সমিকটে উপঢোকনাদিসহ একজন দৃত প্রেরণ করেন। তাহাতে তিনি উচ্চ সম্মানলাভ এবং লোহিতবর্ণ ছত্র ধারণের অধিকার পান। অতঃপর তিনি ত্রিহতপতিকে পদানত করিয়া কয় দিতে বাধ্য করেন এবং বহু ধনয়ত্র লইয়া গৌড় রাজধানীতে প্রত্যাবৃত্ত হন।

সমাট্ মসাউদের রাজ্যকালে দিলীর রাজসরকার বিশৃশল জানিরা তিনি সেই রাজ্যজিকে অবজাপুর্কক শ্বরং শাধীন রাজরণে সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন এবং কড়া-মাণিকপুর অধিকার করিরা শীর রাজ্যসীমা রুদ্ধি করেন (১২৪২ খুষ্টাব্দে)। তথার বাসকালে ৩৪০ হিজিরান্দে তবকৎ-ই নাসিরী প্রণেতা মিন্হাজের সহিত প্রলতানের সাক্ষাৎ হর। স্বলতান তাঁহাকে সঙ্গে লইরা বালাবার আসেন।

১২৪৩ খুষ্টাব্দে উৎকলপতি স্থলতান তুখানের বিরুদ্ধাচরণ করিলে তিনি মুসলমান সেনা লইয়া যাত্রপুর রাজ্য সীমাস্তহিত কতাসন নামক স্থানে উপনীত হন। উড়িব্যাবাদীর সহিত যুদ্ধে পরাজিত হইরা স্থলতান লন্ধণাবতীতে সদলে ফিরিরা আসেন। তাহাতে উত্তেজিত হইয়া উড়িব্যালৈড বালালা আক্রমণ করে (১২৪৪ খু:,৬৪২ হি:)। গলবংশীর নরপতি অনজভীমপুত্র মহাবীর নরসিংহদেব স্বরং এই অভিযানের অধিনারক ছিলেন। উডিয়া সৈম্ভ গোড়নগর ও বীরভূমের প্রধান নগর লখ্নোর আলোড়িত এক তথাকার সেনাপতি করিম্ উদীন্কে বিপর্যান্ত করিলে উপায়ান্তর না দেখিয়া স্থলভান দিল্লীখরের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করেন। তদ্মসারে অবোধ্যার স্থবাদার তৈনুর বাঁ কিরাণ সদলে লক্ষণাব্ডী অভিমূখে অগ্রসর হইলেন। তাঁহার আগমনে कीक हरेता उरकारमञ्ज मक्क्यवापि गरेता यामनावित्राध भनावन कविन । रेडमुब की छन्डान सुबिन हे कुषानरक हीनवन ছেৰিরা স্বরং বাজালার মসনদ অধিকার করিরা বসিলেন। এই পুত্রে উভয়পকীর মুসলমানদেনার খোরতর বৃদ্ধ বটে। ১২৪৪ ৰ্ছাৰে উভয়পকে একটা সৃদ্ধি হয়। ভাহাতে ভৈদুর খান পৌড়েয় ব্দন্তে অধিটিভ হইলেন এক ফ্লডান ভুবান বীর ধনরত্র महेबा क्रिकी बाबवानीएक व्यक्तन क्रिक्तन । विज्ञीचंद स्ट्याठिक সন্মানদানের পর তাঁহাকে অবোধ্যার স্থাদার পদে নিরোজিত করেন।

ৈ উমূর খান্ প্রকান খাল্তমাসের ক্রীতদাস ছিলেন। তাঁহার বীর্থাদি সদ্প্রণে ও সৌন্দর্য্যে মুগ্ধ হইরা সম্রাট্ তাঁহাকে খাবোধ্যার শাসনকর্ত্বপদ দান করেন। তদনস্তর তিনি ঘাদালার মসনদ খালছত করিরা ছই বৎসর মাত্র ক্রীবিত ছিলেন, ৬৪৪ হিঃ গৌড় নগরে তাঁহার ক্রীবালীলা শেব হয়। ঐ রাত্রিতেই স্কলতান তুবান খাবোধ্যানগরে দেহ রক্ষা করেন।

অতঃপর ১২৪৬ খৃষ্টান্দে তুর্কবংশীয় ক্রীতদাস শৈকউদীন্
যুবন তাঁত বালালার শাসনকর্তা হন। তিনি বিশেষ প্রতিভা
ও যশের সহিত ৭ বৎসরকাল বালালা শাসন করিয়া ১২৫৩
খৃষ্টান্দে (৬৫১ হি:) গোড়নগরে জীবলীলা শেষ করেন,
তাঁহার সময়ে উড়িব্যার রাজা গলবংশীর নরসিংহদেব বালালা
ভাক্রমণ করিয়া, গোড় নগর অবরোধ করেন। যুগন ধাঁর
প্রোর্থনাত্মলারে ও দিলীখরের আদেশে অযোধ্যা হইতে সাহাব্য
আসিয়া উপনীত হইলে উৎকলনৈক্ত স্বদেশে প্রভ্যাবর্তন করিল।

শৈক উদ্দীন যুবন তাঁতের পর অযোধার শাসনকর্তা ইঙ্তিরার উদ্দীন তুবল ধাঁ মূলক যুজবেগ বালালার শাসনকর্তা হইরা
আাসেন। তিনি বলদর্শিত উড়িয়াবাসীর প্রতিশোধ লইবার ইচ্ছার
উড়িয়া আক্রমণ করেন। হুইবার যুদ্ধে তাঁহার জয় লাভ
হয়, কিছ ভূতীর যুদ্ধে ভিনি পরাজিত হইরা পলায়ন করিতে বাধা
হয়। রাজ্যারোহণের এক বৎসর পরে, তিনি অজমর্দনরাজকে
(সন্তবতঃ প্রীহট্টরাজ) পরাজর করিয়া বহু ধনরত্ব সংগ্রহ করেন।
এইরূপে অভূল ঐশর্যের অধিপতি হইরা তাঁহার হদয়ে স্বাধীন
হইবার বাসনা বলবতী হইরা উঠে। তিনি মুদ্দি উদ্দীন নাম
ধারণ করিয়া খেত ছত্রতলে উপবিষ্ট হন। পরে ১২৫৭ খুটাক্ষে
কামরূপ আক্রমণকালে তিনি শক্রহত্বে বন্দীকৃত ও নিহত হন
(১২৭৫ খুটাক্ষ)।

৬৫৬ ছিজিরার মালিক যুজবেকের মৃত্যু সংবাদ দিল্লী সরকারে উপনীত হউলে, সম্রাট্ নাসির উদ্দীন্ মহম্মদের মন্ত্রিবর্গ জলাল উদ্দীন্ থানি নামক একজন মুস্লমান সেনাগতিকে বালালার শাসনকর্ত্তাক নিয়োগ করিয়া তদ্দেশ অধিকারে প্রেরণ করেন।

জলাল্ বালালার উপনীত হইলে তথাকার মুসলমান সামত-গণ তাঁহাকে বালালার শাসনকর্তা বলিয়া গ্রহণ করিল। অতংপর স্থাতান জলাল উজীন্ বালালার রাজধানী লক্ষণাবভীতে শাসন-শুখালা স্থাপন করিয়া পূর্ববিজের বিষেবী রাজগণের স্বাধীনতাহরণে অগ্রসর হইলেন। এই স্থবোগে কড়ার শাসনকর্তা আর্সিলান বাঁ পৌড়সিংহাসন অধিকার করেন। জলাল বৃদ্ধে নিহত হইলে, আর্সিলান ভবীর সম্পত্তি ও হত্যাবরণাধির কতকাংশ দিল্লী সর- কারে উপটোকনস্বরূপ প্রেরণ করিরা গ্রোড়সিংহাসন নিক্টক করিরাছিলেন।

সমাট্ আল্ডমানের ক্রীডনাস ও সেনাপতি ইলা-উল্
মূল্ক ডাজ্ উদীন্ আর্সিলান বাঁ সম্পর ব্যারিলমী ১২৫৮ অব্দে কড়ার শাসনকর্তা হইরা মালব ও কালিগ্রর আক্রমণের আন্দেশ পান। তিনি ঘটনাচক্রে সন্মণাবতী অধিকার করেন। ছই বংসম্বলাল গোড়সিংহাসনে অধিষ্ঠিত থাকিরা তিনি ১২৬০ বুটাকে লোকান্তর প্রাপ্ত হন।

অতঃপর তৎপুত্র মহন্দর ভাতার বঁ। বালালার মস্নদে অধি
তিত হইলেন। ইনি উলারচেতা, ধীর ও ধর্মশীল ছিলেন। দিলীখর
নাসির উলীন্ ঐ সমরে মোগল আক্রমণ হইতে ভারতপ্রাপ্ত রক্ষা
করিবার লক্ত ব্যক্ত থাকার গোড়ের দিকে নরন কিরাইতে পারেন
নাই। ১২৩৫ খুটাকে দিলীর শাসনর্দ্ধি হ্রক্ষ সমাটি বল্বনের
হত্তে সমর্পিত হইলে, গোড়েখর মহন্দর দিলীখরের তৃত্তিবিধান লক্ত
নানা উপঢোকন প্রেরণ করেন। তদবধি ১২৭৭ খুটাক পর্যন্ত্র
দিলীর অধীনস্থ সামস্তর্গে বাস করিরা হালতান তাভার বা
লক্ষ্যাবতীতে দেহত্যাগ করেন।

রাজসিংহাসন শুন্য জানিয়া সম্রাট্ বল্বন্ খীয় জীতদাস ও প্রিরপাত্র হলতান মুবিদ্ উদীন্ তুমলকে বালালার শাসনকরা নিযুক্ত করিয়া পাঠাইলেন। তুমল বীরম্ব দেখাইয়া উত্তরপূর্কাবলের হিন্দু রাজানিগকে বলে আনিয়াছিলেন এবং তাহানিগকে করদানে বাধ্য করেন। ইতিহাসাস্তরে প্রফাপ, এই সময়ে আমীন নামে এক ব্যক্তি গৌড়ের শাসনকর্ত্বলদে নিযুক্ত হন, তুমল নামক তাহার একজন নায়েব ছিলেন। সম্রাট্ বল্বন্ অত্যন্ত পীড়িত হইয়াছেন সংবাদ পাইয়া তুমল বিজ্ঞাইছন ও বলের শাসনকর্ত্তা খীয় প্রভূকে বন্দী করেন। তৎপরে খয়ং হলতান মুবিদ্উদীন্ নাম ধারণসূর্কক বলসিংহাসনে অধিভিত হইয়াছিলেন (১২৭৯ খুইাক)।

রাজাসনে আসীন হইরা মুখিস্ বাজনগর (উৎকল)-রাজকে পরাজর করিরা তৎপ্রদেশ সূঠন করিলেন। এই সমরে সম্রাটের পীড়ার সংবাদ পাইরা তিনি গোড়রাজছ্ত্রতলে উপবিট্ট থাকিয়া আপনাকে আধীন রাজা বলিরা ঘোষণা করেন। দিলীবর বল্বন্ এই সংবাদে তাঁহার বিরুদ্ধে ক্রমে ক্রমে ছুই দল সৈত্র পাঠান। প্রথম অভিযানে তিনি মালিক অবজ্ঞানিকে আমীন ঘাঁ উপাধি দান ও বলের শাসনকর্তা করিরা অবোধাপেথে বাজানা অভিসূবে অপ্রসর হইতে আদেশ করেন। ক্রাট্র্ন বাহিনী ঘর্ষরা অভিক্রম ভরিরা সোড়সীলাক্তে উপনীত হইনে তুরলের সহিত বৃদ্ধ হয়। অবজ্ঞানিন পরাজিত হন।

ভূক সেনাপতিকে দ্বিতীরবার গৌড় বিজয়ে প্রেরণ করেন।
এবারও দিল্লী-সৈজের পরাভব ঘটে। ইহাতে ক্রুদ্ধ হইরা সম্রাট্
বল্বন্ স্বরং প্র বব্রা ধান্কে সলে লইরা বালালা জাক্রমণ
করেন। তুপ্রল সম্রাটের জাগমনে ভীত হইরা ধনরত্ব সঞ্চমপূর্বক
বিপ্রাভিম্বে পলাইয়া যান। দিল্লীখর গৌড়রাজধানীতে পদার্পন
করিয়া হিলাম্ উদ্দীনকে গৌড়ের শাসনকর্তা নিয়োজত করিয়া
সদলে ত্রিপুরাভিমুথে জ্ঞাসর হইয়া সোণারগায়ে শিবির সয়িবেশ
করিলোন,এখানকার স্বাধীন হিন্দুন্প দহজ্বায় (সেনবংশীয় দনৌজা
মাধব) তাঁহার সাহায্যকরণাভিপ্রায়ে নদীপথ রক্ষাভার গ্রহণ
করেন। মালিক বারিক ও মহম্মদ শের প্রভৃতি সেনানায়কের
জ্বদীনে স্বীয় সেনাদল বিভক্ত করিয়া সম্রাট্ ভাহাদিগকে বিজ্ঞোহীর
জ্বেবণে নিয়োগ করিলেন। তুপ্রল পথি মধ্যে আক্রাক্ত ও বিনই
হন (১২৮২ খুটান্ধে)। জ্বনস্তর বল্বন্ স্বীয় বিতীর প্রকেকেন।
উদ্দীন উপাধি দিয়া বালালার শাসনকর্তা নিযুক্ত করেন।

স্থপতান বহুরা খান নাসির উদ্দীন গৌড়সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইবার কিছুকাল পরে তাঁহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার মৃত্যু হয় এবং তিনি দিলীসামাজ্যের উত্তরাধিকারী হন: কিন্তু তিনি উক্ত গুরুভার বহন করিতে অনিচ্ছা প্রকাশ করাতে তৎপুদ্র কৈকোবাদ সর্বাসন্মতিক্রমে সমাট্পদে অভিষিক্ত হইলেন এবং নাসির স্বয়ং গোড়ে রাজ্ব করিতে লাগিলেন। কৈকোবাদ ক্রমে অত্যন্ত প্রক্রিয়াস্ক্র হইয়া পড়িলে নাসির্উদীন পুন: পুন: উপদেশপত্র লিখিয়া তাঁহাকে সতর্ক করিতে লাগিলেন, কিন্তু তাহাতে কোন স্থফল ফলিল না, বরং কুমন্ত্রীর প্ররোচনায় ও মন্ত্রণায় উদ্দীপ্ত হইরা কৈকোবাদ পিতার বিরুদ্ধে যদ্ধযাত্রা कतिरान। উভয়ের সৈতা ঘর্ষরা ও সর্কা নদীতীরে পরস্পরের निक्रिक्की इहेन। इहे पिन किंडूहे इहेन ना। जुठीय पिराप्त নাসির উদীন সমাটের সহিত সাক্ষাতের প্রার্থনা জানাইয়া সহতে পত্র লিখিলেন। মন্ত্রীর পরামর্শে কৈকোবাদ পদের ম্য্যাদা वका कतिएक निश्रितन। शुक्त निःशान्तन जानीन त्रशितन. পিতা আসিয়া যথারীতি ছইবার কুর্ণিস করিলেন, তিনবার कतिएक शहरकाहन. असन नमाइ देका का निष्हामन इहेरक নামিয়া পিতাকে অভিবাদনপূর্বক তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা ক্ষ্মিলেন। অনস্তর পিভাকে সিংহাসনে ৰসাইয়া আপনি নীচে ৰসিলেন। পিতা পুত্ৰে মিলন হইল। নাসির পুত্ৰকে সভুপদেশ দিয়া গৌড়ে প্রত্যাবর্ত্তনপূর্বক কিরৎকাল রাজ্যলাসন করিয়া मामवनीमा मध्यत्रभ कत्रित्सन (১२৯२ चुटीत्स)।

এদিকে জলাল্ উদ্দীদ্ থিলজীর হতে কৈকোবাদ রাজ্য ও প্রাণ হারাইলেন (১২১০ খুটাজে)। জলাল উদ্দীন্ এবং তংপরে জালা উদ্দীনের রাজডের প্রথমকালপর্যন্ত প্রলভান নাসির উদ্দীন নির্বিদ্নে গৌড়বাজ্য শাসন করিয়াছিলেন, কিন্তু শেব সময়ে আলা উদ্দীন্ শক্তিসমূদ্ধিতে পূর্ব হইরা উঠিলে, তিনি সম্রাটের ভরে কেন্ত্রের গৌড়িসিংহাসন ত্যাগ করিয়া লক্ষণাবতী ও দক্ষিণ-পশ্চিম বঙ্গের সামস্তরাজরূপে গৌড়নগরে বাস করিতে অধিকার পান (১২৯৯ খুষ্টান্দে)। এই সময়ে কৈকায়ুস এবং ফিরোজ্ব শাহ নামক নাসির উদ্দীনের পুত্রবর বথাক্রমে গৌড়ে রাজত্ব করেন। ফিরোজ্ব শাহের সময়ে তৎপুত্র বাহাত্র খান্ সমবেত মুসলমানশক্তির সাহায্যে দহজরারকে পরাজর করিয়া পূর্কবালালার শাসনাধিকার লাভ করিয়া স্বর্ণ গ্রামে রাজধানী স্থাপন করেন। ১৩১৭ বা ১৩১৮ খুঃ অবদ ফিরোজ্ব শাহের মৃত্যু ঘটে এবং তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র শাহাব্ উদ্দীন লক্ষ্ণাবতীর সিংহাসনে আরোহণ করেন। কিন্তু অরকাল পরেই বাহাত্র খাঁ শাহাব্ উদ্দীনকে গৌড় হইতে ডাড়াইয়া দেন।

এই সমরে মুবারক শাহ দিলীর সিংহাদনে অধিষ্ঠিত। বলদর্শিত বাহাত্তর খান্ তাঁহার রাজশক্তিকে উপেক্ষাপূর্কক বাহাত্তর
শাহ নাম গ্রহণ ও স্থনামে মুদ্রান্ধণ করিরা স্বাধীনতা অবলম্বন
করেন। মুবারকের অনতিকাল পরেই থিলজীবংশের বিলম্ন
সাধিত হয় এবং গিয়াস্ উদ্দীন্ তোগলক দ্বিলী-সিংহাসনে
সম্ধিতি হয় ।

এদিকে রাজাচ্যুত শাহাব্ উদীন্ ভারত-রাজধানী দিলীতে উপনীত হইয়া সমাট্ গিয়াস্ উদ্দীন্ তোগলকের শরণাপন্ন হইলেন। কিন্তু ইহার পরে কি হইল জানা যায় না। সমাট্ ১৩২৪ খুঠান্দে বালালায় আসিয়া শাহাব্ উদ্দীনের প্রাতা নাসির উদ্দীন্কে শাসনকর্ত্ব প্রদান করেন এবং বাহাত্রকে বদ্দী করিয়া দিলী লইয়া যান।

বাহাতর শাহকে সঙ্গে লইরা দিলীধামে উপনীত হইবা মাত্র সম্রাট্ নাসির উদ্দীনের মৃত্যু সংবাদ পাইলেন। তিনি বন্ধ পরিত্যাগকালে বহরম খাঁকে প্রবর্গগ্রাম এবং আহ্মদ খাঁকে ত্রিহতরাজ্যে অভিবিক্ত করিয়া বান। এই ঘটনার কিছুদিন পরে ১৩২৫ খুটান্দে মহম্মদ তোগলক দিলীখর হন। নাসিরের মৃত্যুর পর, তিনি কাদর খাঁকে লক্ষণাবতীর ও আক্রম্ উল্ মূলককে সপ্তগ্রামের শাসনকর্ত্তাপদে নিযুক্ত করেন। ১৩৩৮ খুটান্দে প্রবর্গ্যামের শাসনকর্তা বহরম খাঁর মৃত্যু ঘটে। তোগ-লক্রে প্রস্থানের পাসনকর্তা বহরম খাঁর মৃত্যু ঘটে। তোগ-লক্রে প্রস্থানের পর হইতেই বালালার নানা রাজনৈতিক বিশ্বব স্থান্ড হইতে থাকে এবং তাহা হইতেই অল্লকালের মধ্যে বালালার স্বতম্ভ ও স্বাধীন মুসলমানরাজ্য সংস্থাপিত হইবার ক্রেপাত হয়।

মহরম্ শীর মৃত্যুতে উৎজুল হইরা তাঁহার কর্মচারী কথর উদীন্ অ্বর্ণগ্রামের মসনদে আরোহণপুর্বক আপনাকে স্বাধীন রাজা বলিন্না ঘোষণা করেন। এই সময়ে সম্রাট্ট মহম্মদ তোগলক দিরী হইতে দোলভাষাদে রাজধানী হানান্তর করণাভিপ্রারে
বিশেষ ব্যক্ত ও নিযুক্ত ছিলেন। তিনি কথর উদ্দীনের এই
অবিস্থাকারিতার দপ্তবিধানার্থ লক্ষণাযতীর দাসনকর্তা কাদর
থাঁকে সদলে অগ্রসর হইতে আদেশ পাঠান। তদস্থারে
কাদর থাঁ সুষর্ণগ্রাম অধিকার করেন। রণজরে উৎজুর হইরা
কাদর থাঁ মুসলমান সন্দারদিগকে এবং সেনাদলকে বিহার
দিরাছেন গুনিরা কথর উদ্দীন্ উৎসাহিত হইলেন। তিনি
উৎকোচদানে বিপক্ষীর সেনাদলকে বন্দীভূত করিরা লক্ষণাযতীর
দাসনকর্তার প্রাণনাশ করাইলেন। তদনত্তর তিনি স্থবর্ণগ্রাম
রাজধানীতে আসিরা অদ্বীকার মত রাজকোবের ধনরত্ব বিভাগ
করিরা দিলেন (১৩৪০ খুটাকে)।

এ পর্যান্ত যে সকল পাঠান-শাসনকর্তাদিগের নাম উল্লিখিত হইল, তাঁহাদিগের মধ্যে অনেকেই মুখে দিল্লীর প্রভূষ বীকার করিতেন, কিন্তু কার্য্যে প্রান্থ সকলেই স্বাধীনভাবে গৌড়রাক্স শাসন করিয়া গিয়াছেন। কেহ কেহ প্রকাশ্তরূপে সমাটের অধীনতা-পাশ উচ্ছেদ করিতে গিরা বিলক্ষণ প্রতিফলও পাইয়া-ভাঁহাদিগের শাসনকালে সময় সময় অরাজকতার বিষময় বহি প্রজ্ঞানিত হইয়া উঠিত, কথন বা গৃহবিপ্লবে রাজ-সিংহাসনের সঙ্গে সঞ্জাবর্গেরও সর্কনাশ সাধিত হইত, আবার কথনও বা রাস্তা-নির্শাণ প্রভৃতি ওভকর কার্যাও মধ্যে বালালার পূর্ব্ব এবং দক্ষিণাংশ মধ্যে অনুষ্ঠিত হইত। তাঁহাদিগের হস্তগত হইলে তাঁহারা সমস্ত প্রদেশটার নাম তৎকালে লক্ষণাবতী, সুবর্ণগ্রাম এবং वाकाना द्वारथन ।* সপ্রগ্রামে যথাক্রমে পশ্চিম, পূর্ব্ব এবং দক্ষিণ বিভাগের রাজধানী প্রতিষ্ঠিত হয়। বধ্তিয়ার খিলজীর সময় হইতে ১৩৩০ খুটাক প্রান্ত সমুদায় দক্ষিণ বিহার ও কথন কথন সারণ প্রান্ত উত্তর বিহার প্রদেশ গৌড়ের শাসনকর্তাদিগের অধিকারে ছিল।

विजीत ज्योतपु बाजागात शांशिय भागमकर्ष्यर्ग ।

	•		
4 ;	हिः चः	बरक्ष चंत्र	সাসরিক দিলীখন
3122	163	মহকাদ-ই-ৰথ্তিয়ার	
		খিলঞ্জী (লন্মণাবতী)	শাহাবৃদীন্ ঘোরী
> > •¢	•••	মহস্মদ সিরান	
		बिगजी	কু তব্ <u></u> দীন্ আইবক
74.5	6.6	जांगी मनान् थिनमी	ক্র
2522	***	কুৰভান গিয়াস্ উদীন্	আল্তমাস

পৃষ্টার একাদশ পভাষীর রাজেল্প চোলদেবের একথানি সিরিগাব বোলিত শিলাক্ষকে "বলাল দেশের" উল্লেখ দেবা বার। [সৌড় দেব।]

ષૃ:	શિઃ ષા	ग्राम्पत्र .	সামজিক বিলীবর
३२२१	6 28	নাসির উদীন্ বিন্ আগত	নাস আণ্ডমাস
322 2	6 29	আলাউদীন্ লানি	3
>>>>	6 81	সৈফ্উদীন্ আইবক	A
५ २००	40>	তু খান ধা ন্	কুলভানা রিজিয়া
><80	485	ভা ৰি	আলাউদীন্ মসাউদ
>288	•32	তৈমুর খাঁ কিরাণ্	১
><88	68 2	মালিক বুজ্বেগ	
		<u> তুজিলখান্</u>	ক্র
> 286	688	সৈক্ উদ্দীন	শ্ৰ
५ २८७	462	ইখ্তিয়ারউদীন্ মালিক	যুক্ৰেগ ঐ
३२৫१	414	লশাল্উদীন্ মসাউদ	নাসিরউদীন্ মাদ্প
३२ १४	469	हेळ् छेकीन् वल्वन्	T
३२ ६৯	664	चात्रनान थान थात्रीकिमी	5
১२७ ०	963	আর্শলান তাতার খান্	ট্র
३ २११	•96	তুল্ল (মৃইজ্উন্দীন্)	গিয়াস্উদীন্ বল্বন্
१४४८	447	नानित्रकेकीन् वष्त्रा था।	
		(বল্বনের প্র	
><>>	449	क्रकन्डेकीन् टेककाडेन	
			ফিরোজ শাহ খিলজী,
			षागाउँभीन् चिननी
১৩•২	9•2	সামস্উকীন্	ফিরো জ শাহ ঐ
7076	?	শাহাবউদীন্ বগুরা শাহ	মুৰায়ক শাহ
?	?	গিরাস্উদীন্ বাহাত্রশাহ	তোগলক শাহ
?	?	নাসির্উদীন্	মহশ্বদ ভোগলক
ऽ७२€	१२६	कामन थान्	S P
			,

(বিতীয় শাসনকাশ।)

পুবর্ণগ্রামের শাসনকর্তা বহরম খাঁর মৃত্যু হইলে, তদীর অম্বর্চর ফথর্ উদ্দীন্ কাদর খাঁকে কৌশলে নিহত করিরা পূর্বাবালায় স্বাধীনতা-পতাকা উজ্ঞীন করিলেন। এই সমর তর্বল-ছদর ৩র মহন্মদ দিল্লীসিংহাসন কলভিত করিভেছিলেন। সম্রাট্হত্তে রাজকীর শক্তির অপলাপ দেখিরা এবং রাজপক্ষ হতবল জানিয়া প্রলতান ফথর উদ্দীন্ বীর রাজার্ছি-মানসে মুখলিন্ খাঁকে লক্ষ্মণাবতী আক্রমণে পাঠাইলেন; কিছ তিনি মৃতশাসনকর্তা কাদর খাঁর প্রশিক্ষিত সেনাপতি আলী মুবারকের হতে পরাত্ত হইলেন। আলী মুবারক আপনার বিজয়বার্ডা জাপন করিরা সম্রাটের নিকট হইতে বালালার মন্মদ প্রার্থনা করেম। সম্রাটের আদেশপত্র আদিবার পূর্বেই তিনি আলা উদ্দীন্ মাম

এছণপূর্বক গৌড়সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইলেন। তবনতর তিনি পূর্ববলে আসিরা ত্বর্গগ্রাবের শাসনকর্তা কথার উজীন্কে আক্র-মণ করিলেন। কথার উজীন্ ধৃত ও নিহত হইলেন (১৩৪২ খুঃ)।

তিনি কর বংসর মাত্র রাজ্য করিরা গভাস্থ চইলে, তংপুত্র মৃত্যাকর পাজি শাহ পূর্ববেলের (স্থবর্ণপ্রাম) সিংহাসনে আরোহণ করেন। এদিকে পশ্চিম বালাগার আগিউদীন আলী শাহ রাজ্যা অবলম্বন করিরা, গৌড়সরিহিত পাঙ্কা নামক স্থানে রাজধানী স্থানন করিলেন। তাহার এবর্ধা দেখিরা হাজি ইল্রাস্ বা ইলারস্ খালা তাহার প্রতিষ্বী হইলেন। এই স্ত্তে উভরে অনেকবার যুদ্ধ ঘটে, পরিশেবে আলী শাহ পরাত্ত হইরাও নিক্নতি লাভ করেন নাই। ইর্বাপরবাদ ইল্রান্ গোপনে তাহাকে নিহত করিরা বৈর্জ্ঞানা লাভি করিলেন। আলী মুবারক এক বংসর পাচ মান কালমাত্র রাজ্য করিরাছিলেন।

পাওরা ইলয়াদের হক্তগত হইল। তিনি ইল্রাস্ খাজা সামদ উদীন ভালরা নাম ধারণ করিরা বালালার মননদে উপবিষ্ট হইলেন। ক্ষেক বংগর পঙ্গে সামস্ উদীন্ পূর্ববালালা আক্রমণ ও অধিকার করেন (১৩৫৩ বৃষ্টাব্দ)। এই সময়ে ত্রিপুরারাজও ঠাহার নিকট পরাজিত হইরা রাজকর ও নজর দিতে বাধ্য হন। অমন্তর ডিনি পশ্চিমে বারাণসী পর্যান্ত রাজ্যবিস্তার করিতে চেষ্টা করেন। ইহাতে সম্রাট্ তৃতীয় ফিরোজ শাহ ক্রন্ধ হইয়া छांशात्र विकास बृद्धगांजा कतितना । नुसार्छेत्र निरूष बृद्ध हेन्द्रान्-পুত্র বন্দী ছইলেন, পাণ্ডরা অধিকৃত হইল। এই সমরে সামস উদীন্ পাঞ্রা হইতে ১১ ক্রোল দুরে একডালা নামক চুর্নে चाला क्रम करतन । ममाहे जिला धर्म व्यवसाय कतिया यथन দেখিলেন যে, সহজে উহা হস্তগত হইবে না, তখন তিনি সন্ধি করিয়া দিলীতে প্রস্থান করিবেন (১৩৫৩ গুরাকে)। ইছার অভ্যয়কাল পরে বাদশাহ বাদালার বাধীনভা স্বীকার করেন (১৩ঃ৭ গুটাবে)। এই সমূলে বাজালারাজ্যের সীমা উত্তর-বিভারে গওক নদ পর্যান্ত বিভূত হইরাছিল।

কএক বৎসর বিশেষ বলগপে রাজ্যপাসন করিরা সাম্স্টনীন্

१৬০ হিজিরার গভাল্প হন (১০০৮ খঃ)। ডিনি খীর জ্জবলে

সমগ্র বলের অধীপর হইরাহিলেন। তাহার সমরে রাজ্যাট

গৌড়রালধানী হইডে মালবহের নিকটবর্তী পাপুরা নগরে হানাত্ত
রিড হইরাহিল। হালীপুর নগর ডিনি খনামে প্রতিঠা করেন।

প্রাসিদ্ধি আছে যে ডিনি হিল্পপ্রেরও বিশেষ পক্ষপাতী ছিলেন।

একডালার নিকট রাজা ভ্রানী নামে এক সামুর বাস হিল।

সমাট কিরোজকর্ত্ব একডালা অব্যোধকালে ঐ সাধুর স্তুল হয়।

সাধুবরের প্রতি ইকাত্তিক ভক্তিনিব্যুন প্রভান নামন্ উনীন্

ক্ষিরবেশে ভারার স্বাধি হলে উপনীত হইরাহিলেন এবং

সেই ছন্ধবেশেই নগ্রাট্-শিবিকে আসিরা সম্রাটের সহিত সাকাৎ করিবা বান।

गामन फेलीरनम मुकान शब अक्षेष्ठ चुडीरस काराम कार्र श्रह "राक्त्यतः नाष्ट्" छैशावि अर्थशृक्षकः प्राका रम । अरे गमरप्र কিলোজ শাহ পুনর্কার বাজাবা আক্রমণ করেন, কিন্তু গেকলর্ম পিডার অনুবন্তী হইয়া একডালা হুর্বে আত্রহ লন এবং এরূপ যুদ্ধ-কৌশন দেখান যে, সম্রাট্ ক্ষেক্টা হন্তী ও কিঞ্চিৎ উপঢৌকন সইয়াই প্রতিনিবৃত্ত হইতে বাধ্য হন (১৩৫৯ খুটানে)। সেকলর একটা প্রকাণ্ড বৌষত্ত প ধাংস করিয়া তাহার উপর বিখ্যাত "আহিনা-মদ্বিদ" নির্মাণ করেন, পাঞ্যায় উহার ভগাবশেষ অভাপি দৃষ্ট হয়। সেক্ষারের ছুই বহিবী ছিল, একের গর্ভে গিয়ান্ উদীন, অপরের গর্ডে ১৬টা সম্ভান করে। গিরাস্ উদীন্ বিমাতার চক্রে আৰ হালাইকার সভাষনা দেখিয়া, স্বর্ণপ্রামে পলাইয়া আনেন ও সেনাদল সংগ্রহপূর্বক রাজবিদ্রোহী হন। তথায় কিয়ৎ-ফাল স্বাধীনভাবে রাজত করিবার পর তিনি সোণার-কোটে আসিরা শিবির স্থাপনপূর্কক স্বীয় পিডার বিরুদ্ধে গোরালপাড়া পর্যান্ত অগ্রসর হন। পিডাপুত্রের পরম্পরের যুদ্ধে সেকলর শুক্তরত্নশে আহত হইরাছিলেন, তাহাতেই তাঁহার মৃত্যু ঘটে (৭৬৯ হি: = ১৩৬৭ খুঃ)।

গিয়াস উদ্দীন রাজা হইয়া চিরস্তন প্রথামত আত্মরকার্থে বৈমাত্রের ভ্রান্ডান্বিগকে অব করিলেন। ইহা ব্যতীত তাঁহার **कीरान जात्र त्कान निर्ह ताहत्वरागत्र উল্লেখ পাওরা** यात्र नाहे। তিনি সহিচার হারা সকল লোককে সম্ভষ্ট করিহাছিলেন। তিনি স্বরং কবি, কবির মর্যাদা রক্ষার সততঃ সচেটিত ছিলেন। পুর্ববালাগার রাজ্যকালে ভিনি পারসিক কবি হাফেজকে আনিরা বাস করাইতে বিধিমতে চেষ্টা পান। কিন্ত উক্ত কবি আগমন করেন নাই। ৭৭৫ হি: (১৩৭০ খ্র:) ভাহার মৃত্য ঘটে। কেছ কেছ বলেন বে, ডিনি দিনাজপুরের রাজা গণেশ কর্ত্ত নিহত হন। এ কথা সত্য হউক বা মিখ্যা হউক, তাঁহার পুত্র ও পৌত্রের রাজ্যকালে রাজা গণেশ বে অভ্যন্ত পরাক্রান্ত হইয়াছিলেন এবং পরিশেবে উক্ত পৌত্তকে বিনাশ করিয়া তিনি (व वास्तिश्हांन्यन चारवाहन चित्रवाहिस्त्रन, छरियदा नाम्मङ নাই। গিয়াস্ প্রসিদ্ধ মুসলমান সাধু কুত্ব উল্ আলমের गरुशाठी हिरमन धवर मंग्रामीत अगिष गांवू शामित जेमीरनत নিকট ভিনি পরমার্থভন্থ শিকা করেন।

গিরাসের মৃত্যুর পর, অবাভ্যবর্গ তাঁহার পুত্ত সৈক্ উদীনকে ফুলভান উদ্ দলাভিন উপাধিনত্ব বালালার বসনতে অভিবিক্ত ক্ষরেন। লৈফ্ উদীন্ লিবিংরোবে ও শান্তির সহিত বলরাল্য শাসন ক্ষরিয়া ২০৮৩ পুরীকে গভাস্থ হউল্যে ভালার বলক পুত্র ২র সাম্স্ উপীন্ হই বংসর কাল শান্তিমর রাজ্য ভোগ করেন। এই সমরে ভাতৃত্বিরা পরগণার জমিনার রাজা গণেশ (মভান্তরে রাজা কংশ) রাজদ্রোহী হইরা বলসিংহাসন অধিকার করিরাছিলেন (১৩৮৫ পৃষ্টান্দে)। যুসলমান সর্বারগণ কেহই তংকালে বলেশরের লহারতা করেন নাই। তংকালে অপর কর্মান মুসলমান রাজার শাসনোর্ব্বেধ দৃষ্টে অস্থ্যান হর, মুসলমান সমাজেও রাজ্যাধিকার বিশ্রটে বিশেবরূপ বিশ্বর উপত্তিত হুইরাছিল।

দিরীবরের সামর্থাহীনভাই বলীর রাজবিয়াবের একমাত্র ফারণ। ৮০০ হিজিরার তৈস্বলল ভারত আক্রমণ করেন। ঐ সমরে দিরীবরকে হীনবল দেখিয়া গুজরাত, মালব, কনোজ, আবোধাা, কড়া, জৌনপুর, লাহোর, দেবলপুর, মূলতান, সমানা, বয়ানা, মহোবা প্রভৃতি ছালের মূললমান সন্ধারগণ খাধীনতা অবলঘন করেন। ধাুজা জহানকর্ত্ত বেহার অধি-ভাবে পার বালালার অপরাপর মূললমান সন্ধারগণও খাধীনভাবে শাসন পরিচালন করিতে চেষ্টা করেন। এই খ্বোগে দিনাজপুরপতি গণেশ খাধীনতা অবলঘন করিয়াছিলেন।

১০৮७ बृष्टीत्म जामा गर्गन वामानाज व्यथिनिक इन, धवर ৭।৮ বৎসর রাজত্ব করেন। তিনি অপক্ষপাতে রাজাশারীন ক্রিরা হিন্দু মুসলমান উভয়ের প্রিয় হইয়াছিলেন। তাঁহার মুলার 'বয়াজিদ শাহ' নাম দৃষ্ট হয়। ১৩১২ খুলাকে তাঁহার মৃত্যু ঘটিলে, তাঁহার পুত্র জিৎমল 'জলাল্ উদ্দীন্ মহমাদ শাহ' নাম গ্রহণপূর্বক মুসলমান হন এবং গৌড়নগরে পুনর্বার রাজধানী স্থাপন করেন। জলাল গৌড় ও পাপুরার অনেক স্থরম্য ছর্ন্মা নির্মাণ করিয়াছিলেন। তিনি প্রস্থাপীড়ন করি-**८७**न এবং অবশেষে इंटेकन की छनारमत हरछ (১৪•२ थृंहोस्स) निरुष्ठ इस । ज्ञाब्स शर्मन शृक्षवरक माना स्वयम्बित्र दार्शन করিরা পৌত্তলিকভার প্রভাব বিভার করিয়াছিলেন। কিন্ত ভাহার পুত্র ও পৌত্রের ইস্লাম ধর্ম প্রহণে সে লোভ বাধা প্রাপ্ত হর। গৌড়নগরে তিনি এবং তাঁহার পূত্র ও পৌত্র প্রায় চল্লিশ বৎসর রাজত করেন। এ সময়ে বাঙ্গালার পরাক্রম অনেক ক্ষিরাছিল। উত্তরপূর্বে কামরূপ রাজা করতোরা পর্যান্ত বিভ্ৰন্ত হইবাছিল। পশ্চিমে জৌনপুরের ক্লাভান খাজা জহান্ সমুদান বেহার প্রদেশ অধিকার করিয়াছিলেন। ত্রিপ্রার রাজাও মধ্যে ফ্লেসীমান্ত আক্রমণ করিরা করণাড করিতেছিলেন।

জলাল্ উদীনের মৃষ্টার পর, তাঁহার জােঠ প্রে আমল পাহ বালালার অস্নকে উপবিধ হন (১৪০৯ বঃ)। এই সমরে জৌলপুররাজ জলজান ইরাহিম বালালা আক্রমণে উজােদী হইলে ক্ষেব্র তৈত্ত্বপুর্ পাহকবের লাহাব্যবার্থী হইলা হিরাটে দ্ত প্রেরণ করেন। তাতার-রাজন্ত গৌড়রাজধানীতে আধানন কালে জৌনপ্রণতিকে বীর সমাটের বজৰিজর-নিবেধারা জ্ঞাপন করিয়া বান। ১৮ বংসর রাজন্তের পর আর্থন ১৪২৩ ভুইাকে গতাস্থাকন।

আছনের বৃত্যর পর, মুগ্লমানেরা প্রশুচান সামন্ উদ্দীনের বংশবর্থী নালির উদ্দীন্ নামক একজনকে রাজা করেন। হিন্দুনাজকংশের অভ্যারর মুগ্লমান স্কারগণ রাজনৈতিক ব্যাপার হইতে সরিয়া পভিরাছিলেন। এখন ভালরাবংলের হস্তে রাজ্যাদ্দি নিপতিত হওরার স্কারগণ রাজসংসারের বলর্ছি কামনায় রাজস্কাশে আলিরা উপনীত হইলেন। তাহাদের সাহায্যে বলীরান্ হইরা নিসির শাহ ১৪৫৭-৫৮ খুটাল পর্যন্ত নির্কিরোধে রাজ্য করেন। উদ্ধার ব্যাপ্ত নির্কিরোধে রাজ্য করেন। উদ্ধার ব্যাপ্ত হন। তাহার নির্দিত গৌড়ের প্রাক্তারাদিও প্রবেশবার অভালি বিভ্যান আছে।

নিসর পাহের পুত্র বার্কক পাছ বীর রাজ্য ও রাজপ্রাসাদ রক্ষার্থ অনেক ওলি হাবসী (আবিসিনীর ক্রীজনাল) ও খোজা নিযুক্ত করেন। ইহারা ক্রেনে আট সহস্র পরাক্রান্ত অধারোহী হইরা উঠে এবং রাজায়গ্রহে কেহ কেহ রাজসরকারে উচ্চপদ ও সম্মান লাভ করে। স্থলভান বার্কক ১৪৭৪ খ্বঃ আঃ প্রান্ত নির্কিরোধে রাজ্যপাসন করিয়া গভাস্থ হইলে ভাঁছার জ্যেঠ পুত্র য়ুর্কে পাহ রাজা হন। রাজাসনে আসীন হইরাই ভিনি ছায়-বিচারের স্বর্বস্থা করেন এবং রাজবিধির সংখার ক্রিরা যান। কালী ও মুক্তীগণ ভাঁহার নিক্ট বিচারে পরাত্ত হুট্তেন।

৮৮৭ হিজিরায় অপুত্রক গুজুক গভাস্থ হইলে মুসলমান ওমরাহগণ রাজবংশীর সেকলর পাহ নামক একজন ব্যক্তিকে সিংহাসনে অধিষ্ঠিত করিলেন; কিন্তু সেকলয় রাজকার্য পরি-চাসনে অক্ষম দেখিরা তাঁহারা চুইনাস পরে তাঁহাকে রাজাচ্যুত করিরা তানীর খুলতাত কভেলাইকৈ সিংহাসন অর্পণ করেন।

স্থাতান কতেশাৰ বিভাগি নামা সদ্পাণ ভূবিত ছিলেন।
তিনি সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইরা দেখিলেন, হাবসী ও খোজাগণ
পূর্ব হইডেই রাজসরকারে আধিপতা বিতার করিরাছে।
তাহানের অভ্যাচারে নিরীহ বলীর প্রজাবর্গের ওঠাগতপ্রাণ।
তিনি ইহার প্রতিবিধান জন্ত ক্রকার্লকে উপযুক্ত শাতি দিরা
তাহানের মর্যাদার দ্রাস করিরা দিলেন। ইহাতে ভাহারা
স্থাভানের পরম শক্ত হইরা গাড়াইল। ভাহারা রাজপুর-রক্ষী
শগাইক"দিগতে প্রনোভিত করিরা একদিন গভীর নিশীবে
রাজাত্তপুর বধ্যে স্থাভান কতেশাহকে বধ করিব।

রাজসরকারের এবানত স্থলতান প্রভাতে রাজসভাততে উপস্থিত হইডেছেন না দেখিরা প্রভাত স্বদ্যাই উপস্থানিত হইরা পড়িয়াছেন, এমন সমরে সাধারণের বিশ্বর সমুৎপাদন করিরা থোলা-সর্দার বারিক রালপরিছেদে ভূষিত হইরা সিংহাসনে সমাসীন হইলেন। ঘটনাচক্রে সেই সমরে উলীরপ্রধান খাঁ। লাহান এবং হাবসীশ্রেষ্ঠ সেনাধ্যক্ষ মালিক আপ্তেল রালধানীতে উপন্থিত ছিলেন না। তাহারা রালধানী রক্ষার্থ পাইকমাত্র নিযুক্ত রাধিরা সমগ্র সেনাদল লইরা কোন হিন্দুরাজের বিকর্দ্ধে যুদ্ধাত্রা করিয়াছিলেন, পাইক-সর্দারও পূর্ব হইতে উৎকোচ গ্রহণ করিরা চুফীস্তার ধারণ করিয়াছিল, স্বতরাং বারিকের সিংহাসন গ্রহণে সে কোনও আপত্তি উত্থাপন করিল না। খোলা বারিক স্থলতান শাহলাল উপাধি ধারণ করিরা ১৪৯১ খুটান্সে বান্ধালার সিংহাসনে আরোহণ করিলেন।

শাহজাদা সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইলেন বটে,: কিন্তু তাহা সাধারণের অভিমত হইল না। মালিক আতেল স্থলতান-কর্ত্তক অপদে নিয়োগাধিকার সত্ত্বেও তাঁহার বিরোধী হইয়া রাত্রিযোগে তাঁহার অন্তঃপুরে প্রবেশপুর্কক সহযোগী যুগ্রিস খাঁর সাহায়ে তাঁহাকে নিহত করিলেন এবং সাধারণের অভিপ্রায়াম-সারে উক্ত বর্বে সৈক্ উন্দীন কিরোজশাহ হাবসী নাম ধারণ করিয়া ৰাজালার মসনদে উপবিষ্ট হইলেন। তিনি ধেরপ বীর ছিলেন, তদকুরূপ দরাও তাঁহাকে অলম্ভত করিয়াছিল। তাঁহার উদারতা সম্বন্ধে এইরূপ একটা কিংবদন্তী আছে.— একসমরে তিনি দরিদ্রদিগকে ১ লক্ষ মূলা ভিক্ষাদানার্থ মন্ত্রীর প্রতি আদেশ করেন। মন্ত্রিবর মনে ভাবিলেন, লক্ষ টাকা মিতান্ত কম নর। ক্রলতান বোধ হয়, লক টাকার পরিমাণ না ভানিয়াই এত অধিক অর্থ বিভরণের আদেশ করিয়াছেন। ভুতরাং এই অর্থ ভাঁচাকে চকে না দেখাইরা বিতরণ করা ছইবে না : এই বৃক্তি করিয়া তিনি লক্ষ পরিমাণ রৌপ্যমূদ্রা ক্ললভানের বাইবার পথের থারে রাখিয়া দিলেন। স্থলভান তাহাতে লক্ষা করিয়া বলিলেন, এ মুদ্রা কিলের ? উজীরপ্রবর ভাহা ভিকার্থ দের বলিরা অভিবাদন করিলেন। ভাহাতে ক্লভান বলিয়াছিলেন, "এই সামাল্ক মুদ্রা করজনকে দিবে। ইছার দিশুণ পরিমাণ বিভরণ করিরা দাও।"

ফিরোজ শাছ গৌড়নগরে একটা শ্বরুৎ মসজিল, মিনার ও অন্ত বাধা পুছরিনী নিশাণ করিরা বান। ঐ কীর্তিগুলি আজিও সাধারণের দৃষ্টিগোচর হইরা থাকে।

প্রায় ৩ বংসর কাল রাজত করিয়া ১৪৯৪ পুটালে কিরোজ শাহ ভবলীলা সম্বরণ করিলে ওমরাহগণ ভাঁহার জ্যেটপুত্র নাসির্ উন্দীন মাজ ল শাহকে + রাজা করেন; কিন্তু প্রকৃতপক্ষে হাবসী- জাতীর উজীর হাবেশ খাঁই রাজ্যের সর্কমের কর্তা ছিলেন।
মন্ত্রিবরের অপ্রির আচরণে বিরক্ত ও উজ্যক্ত হইরা অপরাপর
হাবসীগণ ঈর্বাবিত ইইরা তাঁহার বিনাশের চেষ্টা পান। সেই
সমরে সিদ্দি বদর বেওরানে অত্যাচারী উজীরকে নিহত করিরা
ক্মলতানের বন্ধনদশা মৃক্ত করিরা দেন। মাজুদ শাহের রাজ্যকাল
একবংসর অতিক্রম করিতে না করিতে উক্ত সিদ্দি বদর ক্মলভানকে গোপনে বধ করিরা বঙ্গসিংহাসন অধিকার করেন।

निक्ति वनत एन उत्राटन ३८२६ चुडीएक वाकानात क्रशीयत स्टेंबा মুল্বংফর শাহ নাম প্রহণ করিলেন। এরপ অত্যাচারী ও यर्थष्क्राठात्री त्रांका कथन ७ वक्रिश्हाम्त केश्रद्भम करत्न नाहे। তিনি প্রথমে তুর্কজাতীয় ওমরাহর্গণের নিধনসাধন করিয়া স্বীয় বিজ্ঞাতীর জালা নির্মাণিত করেন। তদনন্তর তিনি হিন্দুনামন্ত-রাজ ও জমিদারদিগকে নির্জিত, নিহত ও বিধান্ত করিয়া তাঁহা-দের যথাসর্বাম্ব লুগুন করিলেন। ইহাতেও তাঁহার কলুবময় জীবনের বিজ্ঞাতীয় ভ্রমার বিলয় হয় নাই। তিনি সকল প্রকার অত্যাচারেই স্বীয় প্রস্তাবর্গকে উত্তাক্ত করিয়াছিলেন। অবশেষে তাঁহার প্রধানমন্ত্রী মন্ধাবাসী সৈয়দ হুসেন সরিফ মুসলমান ও "হিন্দু সর্দাররন্দে মিলিত হইয়া ১৪৯৭-৮ খুষ্টান্দে রাজধানীতে স্থল-তানকে অবরোধ করেন। এই সময়ে স্থলতানের অধীনে ৫ হাজার হাবদী এবং ২৫ হাজার পাঠান ও বঙ্গীয় দেনা ছিল। ৪ মাস গৌড়নগরে অবক্ষ থাকিয়া স্থলতান মনে করিলেন যে. **এই ब्रह्मी वाहिमी नहेग्रा जिनि जनाग्राटमहे विद्धाहिमन्दरक** বিপর্যান্ত করিতে পারিবেন। এই আশার উৎফল হটরা তিনি ছর্গপ্রাকার পতিক্রমপূর্বক গৌড়নগর-সন্মুধস্থ স্থুরুছৎ ময়দানে যুদ্ধার্থ অবতীর্ণ হইলেন। যোরতর যুদ্ধের পর স্থলতান রণক্ষেত্রে প্রাণ বিসর্জন করিলেন (১৪৯৮ খুঃ)। তাঁহার সঙ্গে গৌড়-প্রাঙ্গণে ২৩ হান্ধার সেনা প্রাণ দিরাছিলেন। কথিত আছে. বিজ্ঞোহিদলের নেতৃবর্গ বন্দীভাবে স্থলতান মুঞ্জঃফর শাহের সন্মধে षानी इरेटन जिन बहुत्य जाहारमत भिन्नत्वम क्तिराजन। নিজাম উদ্দীন বলেন,মন্ত্রিপ্রধান সৈর্ছ হুসেন পাইক্দিগের সহিত বড়বন্ত্র করিয়া রাত্রিতে শ্ব্যাগ্যহে তাঁছাকে নিহত করেন।

বিগত সাহৈ ক শতাক কালের মুদলমান ইতিহাস আলোচনা করিলে বেশ বুঝা যার যে, ধর্মরকাকরে হিন্দুগণ এক সমরে বেরূপ নির্বাচন ভোগ করিরাছিলেন, অন্ত সমরে আবার তাঁহারা সভ্যর মুদলমান নরপতিবর্গের করুণার স্বধর্মপালনে সেইরূপই সামর্থাবান্ হইরাছিলেন। ছংখের পর হুখোবর, অভ্যাচারের ও অনাদরের পর সমানর বেমন হর্ষজনক, মুদলমান রাজ্ঞগণের এই বিজ্ঞাতীর বিহেবের পর হিন্দুদমাজের প্রতি সকরুপ রূপাক্টাক্ষণাত সেইরূপ ক্ষরামন্ত্রকর হুইরাছিল। ইহার উপর মুদলমান

সন্ধানগণের পরস্পর বিষেষ ও বাদাগার মন্নদ-লাভের আকাব্দা পরস্পারের আতীরতাকে শক্রতার পরিণত করিরাছিল। ফ্লতান-গণের গুপ্তক্তাই সেই বৈজাতা পরিণতির মুখ্য কারণ। পদ্ধা-গ্রের উপরোক্ত মুগ্লদান সন্ধারণণ বা তদধীন সেনার্ক্ষ যুদ্ধবিদ্যানিবার ও অর্থগৃর্ছলেন। তাঁহারা নিরীই ধর্মজীর বলমানীর অর্থ-লোষণ করিয়া, অথবা কোশলপূর্কক তাহাদের ভূসস্পত্তি প্রভিত বাজেরাপ্ত করিয়া আগনাদের উদর পূর্ণ করিতেছিলেন; কিন্ত অর্থহানিনিবন্ধন উপন্থিত দরিক্রতা হিন্দুর অঙ্গল্পন ইইলেও জাতীর চিরন্তন গৌরব বিশ্লাভ্যুবণ হিন্দুদিগকে পরিত্যাগ করে নাই; নববীপের তাৎকালিক বিশ্লা-গৌরব জগতে অবিদিত ছিল না। সেই বিশ্লাবলে হিন্দুগণ মুললমান স্লভানগণের পরামর্শনাতা বা মন্ত্রী হইতেন। সেই মেশামিশিতে হিন্দু ও সুললমান সমাজে অনেক সামরিক বিপ্লব সমুপন্থিত হইমাছিল।

প্রায় খুষ্টায় ত্রয়োদশ শতাব্দের পূর্বে মুসলমান আধিপত্য বিত্বত হইলেও সে সময় বস্ততঃ পক্ষে পূর্ববন্ধে হিন্দু সমা-জের উপর ব্রাহ্মণগণের অসাধারণ কর্ত্ত ছিল। পূর্কেই বলিয়াছি, রাটীয় কুলীন ব্রাহ্মণগণ বলের স্থবিত্বত শাক্ত সমাজের মন্ত্রগুরুপদে অধিষ্ঠিত হইরাছিলেন, তাঁহাদের হত্তে সমাজের নেতৃত্ব ও ধর্মনৈতিক কর্ত্তব ছিল। স্থতরাং এরূপ ব্রাহ্মণকে হস্তগত করিতে পারিলে রাজ্যশাসনের অনেকটা স্থবিধা হইতে পারে, তাহা মুসলমান রাজপুরুষগণ বিলক্ষণ ব্রিতেন, কিন্ত সাধারণতঃ পশ্চিমাগত মুসলমানগণ বাঙ্গালীদিগকে ঘোর শক্র মনে ক্রিতেন, হিন্দু মুসলমানের মধ্যে সম্ভাব ও প্রীতি স্থাপনের পক্ষে এ কারণে প্রথমতঃ যথেষ্ট অস্থবিধা ঘটিয়াছিল। যতদিন **फिलीचेर्द्रद अशीरन मुगलमान नरावशंश वलदारकाद** বিভিন্ন প্রদেশ শাসন করিতে ছিলেন, ততদিন হিন্দু ও মুসলমান মধ্যে পরস্পরে শ্রীতি ও সহামুভূতি জ্বিতে পারে নাই, কিন্তু যথন বজের মুসলমান শাসনকর্তারা দিলীখরের প্রভাব অগ্রাছ করিয়া স্বাধীন হইবার চেষ্টা করিতে ছিলেন, তপন হইতেই বন্ধ-বাসীর সাহাব্য আবশুক হইয়া পড়িরাছিল। ৭৩৯ হিজিরা সনে (১৩৪৮ थुडोटक) हिन्तू-भूगनभारतत्र भिनत रहेन। धारे वर्रा कथव छेकीन मुझःसत्र म्वात्रक भार नित्तीचत्रक स्थमान এवर পূর্কবেলের প্রধান প্রধান হিন্দু অমিলার-সাহাব্যে স্করণগ্রাম অধিকার করিরা স্বাধীনতা অবলম্বন করেন। তাহার অব্যবহিত পরেই লক্ষণাবভীতে শাম্স্ উদ্দীনের প্রাধান্ত, বহুসংখ্যক বাদালী-कर्तुक क्रनभर्थ क्थन् छेसीन्टक आक्रमणभूर्वक श्रवर्गशाम अधिकात, শামদ্ উদ্দীন্ ইল্রাসকে শাসনোদ্দেশে সমাট কিরোজ শাহের বলে আগমন প্রভৃতি ঘটনাপ্রসলে হিন্দু-মুসলমানের মেশামিশির यत्त्रहे পরিচর পাওরা বার।

म्वात्रक वैशिष्टित चार्क्रला चारीन हरेरान, डांशानिश्रक উপযুক্ত খেলাভ ও জারগীর দিরা লক্ষানিভ করেন, কিছু এ সভাব স্থায়ী হর নাই। তিনি স্বজাতীর ওমরাহর্গণের পরামর্শে भन्न मिम शरतहे हिन्तु नामखर्गरक भारका कतिएक नागिरनम । সেই কারণে অভ্যন্ন কাল মধ্যেই তাহার অধঃপাতের প্রেপাত रहेन। छाहात्रहे अञ्चानत्रकारन शन्तिम तर्म भामम छेकीन ইল্লান্ তাঁহারই নীতির অনুসরণ করিয়া হিন্দু জমিদারগণের সাহায্যে আপনার সৌভাগ্যপথ প্রাণত করিবার অবসর খুঁ জিতে ছিলেন। মুবারকের হিন্দু বিষেষের পরিচয় পাইবা মাত্র ভিনি খদল বলে বাঙ্গালী নৌসেনাগণের সাহায্যে মুবারক্কে আক্রমণ ও স্বৰ্ণগ্ৰাম দুখল করিয়া লইলেন। তৎপূর্কেই দিলীর সম্রাট ফিরোজ শাহ গিরাস্উনীন্কে দমন করিবার জন্ম সলৈছে রাচ্দেশে আগমন করেন। এ সমর পশ্চিম বঙ্গের হিন্দু-अभिनात्रवर्ग जात्नरक्टे किरताज भारतत शक जावनवन करतन. ও দিকে পূর্ব্ব বঙ্গের আনেক সম্রান্ত হিন্দু জমিদারবর্গ ও পূর্ব্ব বঙ্গের বালালীবীরগণ ইলিয়াদের পক্ষ হইরা সমাটের বিফদ্ধে রণক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইলেন। দিল্লীখরের সহিত যথন বঙ্গাধিপের ঘোরতর যুদ্ধ উপস্থিত হয়, তথন সহদেব নামে এক জন বাঙ্গালী বীর বলাধিপের সেনাপতি হইয়া ঘোরতর যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তিনি এক লক্ষ্ণ ৮০ হাজার বাসালীর সহিত রণক্ষেত্রে জীবন वित्रर्व्धन करत्रन । वालानी वीत्रशरभन्न कीवन भन्निमा प्रभीन कत्रिया শামস্থাদীন দিল্লীখনের সহিত সন্ধি করিতে বাধ্য হন: পশ্চিম বন্ধ হইতে শাম্মুদীন যখন পূর্ব্ব বলে আসিলেন, সে সময় বহু কমিদার তাহার পুঠপোষক হইয়াছিলেন, তিনিও কথার উদীন মুবারকের ভার তাঁহার পক্ষীয় হিন্দুবীরগণকে উপাধিদানে স্মানিত করিয়াছিলেন। রাটীয় ব্রাহ্মণদিগের প্রধান কুলগ্রন্থ क्ष्यानत्मत्र महावःभ हटेए७ ब्लानिए७ পात्रि, हर्रेवःभावजःभ कुनीन अवत्र छाक्त्रतभोज महाधनी मत्नाहत्त्रत्र भूज कृत्गाधन "বঙ্গভূষণ" উপাধি এবং মুবারকের পক্ষীর হিন্দু অমিদার-বৰ্গকে পরাস্ত করার পৃতিতৃগুৰংশীর প্রসিদ্ধ কুলীন চক্রপাণি "বাক্তক্ষয়ী" উপাধি লাভ করিয়াছিলেন, এইরূপ অন্ত জাতীয় বীরগণও উপাধি পাইয়াছিলেন।

দিলীখন ফিরোজ শাহ থাহাদের নিকট সাহাত্য পাইরাছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে সাগরধীয়ার মহাধনী ও কবিকলণ
উপাধিধারী উদরন এবং তাঁহার মুগারি, মাধব প্রকৃতি সপ্ত বীরপুত্রের নাম উল্লেখযোগা। দিলীখন প্রত্যোগমন কালে রাজীয়
বীরদিগকেও উপস্কা মর্য্যাদাদানে সন্মানিত করিয়াছিলেন,
তর্মধ্যে রাজীয় কুলীনপ্রবর অ্দর্শনপুত্র বিকর্তন চট্ট "রাজা"
উপাধি এবং মনোহর বদ্দগুরণের পৌত্র প্রীরাম "ধান" উপাধি

লাভ করিবাছিলেন, এতারের আরও অনেকে সম্মানিত হইরা-ছিলেন। রাটীর অপেক্ষা বারেক্রদিগের সহিতই অধিক পরি-মাণে মুসলমান রাজসংত্রৰ ঘটিরাছিল ; তাঁহারা গৌড়াধিপের অতি নিকটেই বাদ ক্রিতেন; মুদ্দমান রাজ্যভার ভাঁচ্চদের मर्जनारे गिर्विषि हिन, এ कांत्रन छौरापत्र मर्या अस्मरकरे মুসলমান রাজাদিগের নিকট উচ্চ পদ লাভ করিরাছিলেন, ভক্কস্ত রাটীশ্রেণী অপেক্ষায় বারেক্সশ্রেণী বেশী বিষয়ী হইয়া পড়িয়াছিলেন এবং মুসন্মান রাজসরকারে তাঁহাছের প্রভাব অভ্যন্ত বুদ্ধি পাইরাছিল, ভাহারই ফলে খুটার ১৪শ শভাব্দীর শেষ ভাগে ভাতুড়িরার হিন্দু জমিদার রাজা গণেশ মুসলমান আবিপতির সর্ক্ষমর কর্তা হইরা পড়িরাছিলেন। এই গণেশই বারেক্সমন্ত্রী নমসিংহ নাড়িরালের পরামর্শে দুসলমান নুপতিকে বিনাপ করিয়া সমত্ত গৌজের অধীপর হইরাছিলেন, তিনি হিন্দুগর্ম ও হিন্দুরাকা বিভার করিবার জল বন্ধপরিক্স হইলেও ভাঁহার চাল চলন ও আনব কারদায় যথেষ্ঠ মুসলমানী প্রভাব সংক্রমিত হইরাছিল। তিনি এক জন প্রকৃত হিন্দু হইলেও তাঁহার बाजवकारम य मकन बूझा धार्टनिङ इब, छाहारिङ "वबाजिन শাহ" এই মুদলমানী নাম আছিত দেখা যায়। তিনিও যে মুসলমান নৃপত্তিগণের অত্করণে বাদশাহী নাম গ্রহণ করিয়া ছিলেন, ভাহা ভাঁহার প্রচলিত মুদ্রা হইতেই প্রমাণিত बहेटफरम् ।

রাঢ়ীয় ব্রাহ্মণপ্রবর 'মমরকোষের স্থপ্রসিদ্ধ টীকাকার বৃহ-ম্পতি গণেশবংশীর মুসলমান অধিপতির নিকট "রার্মুকুট" উপাধি এবং তাঁহার প্রিরপুত্র কবীক্স শ্রীরাম "বিখাদ" উপাধি गांछ करत्रन।

যাহা হউক, এই সময় ও পরবর্তীকালের ইতিহাস জালোচনা कतिराध राम पुरा यात्र रा, हिम् ७ मुननमान कारमह धनिकेला পত্রে আবন্ধ হইডেছিল, সুসলমান নরপতিগণ হিন্দুর প্রতি অভক্তি বা অবহেলা প্রদর্শন করিছেন না। তাঁহারা হিন্দু সমাজকে আয়ন্তাবীনে আনিবার কভ সমাজনেতা ব্রাহ্মণগণকে **হত্ত**গত করিতে সচেষ্ট ছিলেন। তাঁহারা বাঙ্গালার স্থারি-धालाव विकारतात्मरणहें माल, शंगा ও विहम्म बालानीपिशतक बाककीत फेळ शाद निरद्यांग कतिराजन । बाकमध्यान क्रमनःहे दिवस इटेट्ड विवयत्र इटेन्ना नैष्डिन । मूननमान वद्गवादन निवजन গতিবিধি मिक्सम डांस्ट्रगतां प्रमुगमानी चाप्रवकात्रना, ठान-চলন বা রীভি-নীতি অভ্যাস করিছে বাধ্য হইলেন। ক্রমে এই সংক্রামক ব্যাধিতে অনেক নিষ্ঠাৰান্ প্রাক্রণসভামও আক্রান্ত रुष्टेशक्टिन्स ।

रिण्-मूनणमारनद् और स्मामिनिक करण क्रांका भरणन कर्डक

পৌড়েখনের বিদাপ সাধিত হইয়াছিল। * উভয় দলের विराग्य चिमिडेणा अवुक्त दे बाका शर्मरागत भूक मूननमारनत छेकिहे ভাৰু ল গ্ৰহণে ও নিভান্ত সংগ্ৰবদোৰে পড়িয়া ইস্লামধৰ্মে দীকিত रहेट यावा रम । शर्मनक्ष्मवक्ष्मन हैन्सामधर्म मीकिङ হইলৈও হিনুসমাৰ তৎকালে জাতীর শক্তি হারার মাই চ গণেশবংগ্ৰেম গৌরবয়বি অন্তমিত হইতে ১৪৪০ হইতে ১৪৭০ श्रुष्टीक भवान राजानात्र मननदन डिक्टवरमीत्र मूननमानभरणत व्याधि-পত্য বিভূত হয় এবং বালালায় বিধনীয় সভ্যাচার-লোত: উত্তরোত্তর বৃদ্ধি হইতে থাকে।

এই অত্যাচারের দিনেও নসির শাহ, বার্মক শাহ, বৃত্ফ শাহ, সেক্ষার শাহ ও কতেলার মামধের করজন ধর্মনিষ্ঠ মুদতান শান্তিময় শাসন-পদ্ধভিয় ব্যবস্থা করেছ। বার্ককশাহ वाकानामत्मव अविधार्व हावनी ७ त्याकानिभरक स्मनाविভारन এবং যোগ্যভালুলায়ে অক্সান্ত ব্যাক্তর্মে নিরোগ স্বরিয়া যে বিষময় বীজ ৰপম ক্ৰিয়া যান, ভাহাই অভুনিত হইয়া কালে ছিলুসমাজের সর্কনাশ সাধন করে। মুসলমান রাজপুরুষগণ ব্রাহ্মণদিগকে মুদলমান করিবার অভিপ্রায়ে অতি জঘল্লরূপে নির্ঘাতন আরম্ভ করেন। উপর্য্যুপরি অভ্যাচারে অনেক হিন্দু বংশ মুসলমানদোষসংশ্লিষ্ট হয়। বছসংখ্যক ব্ৰাহ্মণ কুল, জাতি ও मात्नब खरत्र दक्रतन ছाफिश्र खिन्नरम् भनाहेत्रा याम । पात्नरक মানসম্ভ্রমরকা করিছে না পারিয়া মুসলমানলোতে জাতিকুল বিসর্জন দিয়াছিলেন। এই পাঠান-শাসনকালে হিন্দুসমাজের विल्यवन्धः जान्त्रणं कृतीमनमारकत्रः 🕶 कारण यस्यहे विणुष्यना नमूर-পাদিত এবং ভাষা হইডেই এদেশে খনেক সামাজিক পরিবর্তন প্ৰবৰ্ত্তিত হইয়াছিল।

১৪৭৪ খুটাব্দে বার্ক্ক শাহের মৃত্যুর পর, ভৎপুত্র বৃত্তক শাহ গৌড়-সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন। তাঁহার ভারপরতা ও দরালাব্দিণাগুৰে হিন্দু-প্রকা শান্তির মুখ দেখিতে পাইল। ১৪·২ भरक व्यर्था९ ১৪৮· बृष्टीरम दिवीवत वहेक, ताहीत्र কুশীন ব্ৰাহ্মণসমান্ত্ৰের সংস্কার সাধন করিয়া মেলনির্ম প্রচারিত क्त्रिरणम् ।

এই ঘটনার কিছুকাল পূর্বেব বারেক্ত কুলগাত্রবিশারদ উদয়না-চাৰা ভাছড়ী বালেজ কুলীনসমাৰকে আটটা পটিডে বিভক্ত করেন। অদিকে দক্ষিণ-বঙ্গে দেবীবরের সমকালবর্ত্তী পুরন্ধর বস্ত ৰক্ষিণরাটীর কারস্থসমাজে পুঞ্জ পৌতাদি ক্রমে সমাস গর্যারে

[•] नेनाममानक्ष्रक व्यवस्थाकारन विविक्त वाह्य त, व्यवसारहाक निरुप्तर मुनिरर वो मतनिरह बाखियान निष्यत्वाधित ७ चान ७वात नवान।

[&]quot;बाहार बाना पटन बनदनन श्रामा । रभोरक्षक कारणार माति रमोरक्षक स्टेम बाजा 🗗 🤻 चरेबक व्यक्तान 🕽

বিবাহ দিবার কুলবিধি প্রচারিত করিরাছিলেন। এই সমরে চল্ল-দ্বীপেও রাজা পরমানন রার বছল কার্ড্রিগের সামাজিক কুলাচার শব্দে কতকগুলি নিয়ম অবধারণ করিয়া বান। ইহারই কিছু পরে নবৰীপধানে প্ৰেম ও শান্তির পূর্ণ মূর্তি জ্রীচৈভক্ত মহাপ্রক আবি-ভূতি হইরা বৈক্ষবধর্ম প্রচার করেন। হিন্দুসমাজ তথন হরিনামের প্রভাবে মাডোয়ারা হইরা নগরে নগরে হরিনাম কীর্ত্তন করিয়া শান্তি ও প্রেমের পীব্যধারা চালিয়া দিরাছিল। বুক্লফ শাহের পূর্ববর্ত্তী অলভানগণের অধিকারকালে রাজকর্মচারিগণের অত্যাচার এবং তৎসামরিক শান্তিভাব জয়ানন্দের চৈড্ছমঙ্গলে বিবৃত আছে।

তৎপূর্ব্বে হাবদীবংশীয় শেষ স্থলতান মুক্তাফর শাহের শাসন-ফালে মুসলমানের অত্যাচার চরমসীমার উঠিরাছিল। পদ্ধবতঃ এই অমাত্রবিক অত্যাচারের প্রারম্ভ দর্শন করিরাই নবনীপের मनीयिम छनी नवदीश छाफिया नाना द्वारन शनायन करवन। প্রধান নৈরারিক বাস্থদেব সার্বভৌম এই সমরে সপরিবারে **डि**एकन गांजा करत्रन ।*

বলিতে কি. খুটীয় >৫শ শতাব্দের শেবভাগে বিস্থাচর্চা ও গঙ্গাবাস উপলক্ষে নানা গোত্ৰীয় বৈদিক ব্ৰাহ্মণ আসিয়া নবন্ধীপে বাস করিতে থাকেন। খ্রীচৈতন্ত মহাপ্রভুর পিতা জগরাধ মিশ্রও সেই সমরে শ্রীহট হইতে নবছীপে আসিয়া নীলাম্বর मिट्यत क्छा भही एम्बीट्क विवाह कतिया नववीभवागी हन।

ঞ্জীচৈতক্সদেব নবৰীপধামে বিষ্ণা, বৃদ্ধি ও জ্ঞানের প্রাথব্য দেখাইরা ভারতবাসীকে মোহিত করেন। ভজের নিকট তিনি ष्पालीकिक पंक्तिकाल यहां महाभूक्यकार भ करें हहें ब्राहितन। শ্রীধর, গদাধর ও ঈশ্বরপুরী এবং শ্রীপাদ ক্ষরৈতাচার্ব্য প্রভূ তাঁহার ধর্মকেত্রের সহায় ছিলেন। ঈশ্বরপুরীর ভক্তিমাধা মুধধানি দেখিলে মহাপ্রভ পাগলের স্থার ব্যাকুল হইরা পড়িতেন।

এ হেন মহাপ্রভুর সহপাঠীরূপে নবৰীপধামে আবিভূতি হইয়া ও সেইরূপ জ্ঞানবভার পরিচর দিরা রবুনাব নিরোমণি ভারশাত্রে অভিজীর প্রতিভা বিকাশ করিরা গিরাছেন। এই সমরেই স্বতি-নিবদ্ধকার স্বার্তপ্রবর র্যুনন্দন আবিস্কৃত হইরাছিলেন। এই नमत्त्र नवदीनशास्त्र कमनाकात छह्नाठाया, कानीमाथ विद्यानिवान, ও তৎপুত্র বিশ্বনাথ তর্কপঞ্চানন প্রভৃতি অসাধারণ ধীপক্তিসম্পর

প্রিডমঙলী জন্মগ্রহণ করিয়া বালালার মুখোজ্ঞাল করিয়া श्रद्धत विवत-मुनगमारमच **कर्द्धा** जानम ख অত্যাচার মহাপ্রভুর প্রেমপ্রবাহে ভালিরা গিরাভিল।

[নবৰীপ ও চৈউছচন্দ্ৰ দেখ।]

জীতৈতভ মহাপ্রভু ১৫০৯ খুষ্টানে কেশৰ ভারতীর নিকট মন্ত্ৰদীকা ও শ্ৰীকৃক-চৈতন্ত নামগ্ৰহণপূৰ্বক গৃহস্থাপ্ৰম ত্যাগ কৰিয়া अञ्बद्धाञ्च व्यवस्य करहन। मिनिक्षण देवस्वशर्मात शून-ক্ষীপন ও অনুস্নাতে ভাহার প্রচার, ভাহার জীবনের মূল লক্ষ্য ছিল। তাঁহার পার্বদ ও ভক্ত পণ্ডিতমণ্ডলীর মধ্যে অনেকেই ত্বৰ ছিলেন। তাঁহারা মহাপ্রভার দীলা-বর্ণমপ্রসঞ্জে আনেক তৰকথার পরিচর দিরা গিরাছেন। ক্মভরাং স্বীকার করিতে हरेएउएइ त्व, चांबीम नाठाम मजनजिंगानंत ब्राजकनात वाकानांत সাহিত্য, দর্শন ও ধর্মশাল্লের বথেষ্ট উন্নতি সাধিত হইরাছিল। হিন্দুগণ ধার্ম্মিক প্রবন্ধ স্থানতান আলাউনীন ইনেন পাছের ताजाकारन ऋरथ ऋहरन वाम कविद्या निनिष्ठ मरम भवमार्थ हिन्हा করিবার অবসর পাইয়া ছিলেন। তৎপুর্বে ভ্রাহ্মণবংশে মুপ্রসিদ্ধ কবি বিভাপতি, চণ্ডীদাস ও ক্ষৃত্তিবাস এবং কায়ত্ত-বংশে গুণরাম্ম থান প্রাহত্ত হন। উক্ত ক্বিগণ ব্যতীত অপর সকল পদকর্তাই শ্রীচৈতন্ত মহাপ্রভূব সমসাম্যাক, অথবা তাঁহার পরবর্ত্তী। পদকলতর রসমল্পরী, গীতচিন্তামণি, পদক্রনতিকা প্রভৃতি সংগ্রহ পুত্তকে যে সকল পদকর্তা-দিগের নাম পাওয়া বায়, তন্মধ্যে মুসলমানভক্ত অকবর भागी, कमतांगी, नांत्रित, माक्ष्म, क्कित, ह्दीव, क्'ठन, नाल বেগ, শেথ জালাল, শেখ ভিক্, শেখ লাল ও সৈয়দ মূর্ত্তাজার নাম উল্লেখযোগ্য। এতভিন্ন জ্ঞানদাস, গোবিদ্দ দাস, বলরাম দাস, কুঞ্চাস কৰিবাল এবং রামী, রসময়ী, মাধ্বী দাসী প্রভৃতি সামরিক বছ পুরুষ ও জীকবিগণ তৎকালে প্রাচ্ছুত হইয়া বাঙ্গালা সাহিত্যের শ্রীসম্পাদন করিয়া গিয়াছেন।

[বাঙ্গালা ভাষা শব্দে বিস্তৃত বিষয়ণ ড্ৰষ্টবা।] এককথার বলিতে কি, ধুরীর ১৫শ শভাব্দের মধ্য হইতে ১৬শ শতাব্দের প্রায়ন্তকাল পর্যান্ত মুসলমান-শীাসনে বালালার কি ধর্ম, কি সাহিত্য, কি রাজনীতি, কি সমাজনীতি नकन विवाद है अकी जामीकिक शतिवर्छन माथिल हरेबाहिन। **উनम्रना**ठार्या, द्ववीयम, शूनम्बत्र वद्य ७ शम्मानम् ग्राम स्माजविधि मध्यात करतम । ১৫-৯ श्रेरिक ३६०० बृहीरम अवसीम काम পৰ্যান্ত শ্ৰীচৈতত দেব মুসলমান অত্যাচারে বিশীনপ্রার হিন্দুধর্শের পুন:প্রতিষ্ঠার ক্ষা ভক্তিপ্রধান বৈক্বধর্মের পুনত্তধান ও বীবৃদ্ধি সাধন করেন। বীমং কবৈতাচার্য্য ও নিজ্ঞানেশ প্রভ मराध्यक्त गरदागिकर्भ देवक्षरमधारक विदेवक मन्त्रामकाकन

 [&]quot;আত:পর স্বধীপে ছইল ছাত্রতর। স্ত্ৰাহ্মণ ধরিয়া মালা জাতি প্রাণ লয় । বিশারক্ত সাক্তেট্র ভট্টাচার্য। बन्धन डेरक्टन ध्यमा शक्ति विक शका । ভার আভা বিব্যাবাচশতি সৌত্বাসী। विनासर निवान कविन चांद्रांगरी s" (क्यांनवकुठ के कः)

হন। শ্রীরূপ ও সনাতন বৈশ্ববাচার্য্যগণের অগ্রণী ছিলেন।
এতদ্যতীত বেশ্বটভটের পুত্র গোপালভট্ট, মাধবমিশ্রের পুত্র
গদাধর (১৪৮৬—১৫১৪ খৃঃ), সপ্তগ্রামবাসী কোটীপতি গোবর্দ্ধন
দাসের পুত্র রঘুনাথ দাস (১৪৯৮ খৃঃ জন্ম), এবং লিবানন্দ সেনের পুত্র কবিকর্ণপুর প্রভৃতি বৈশ্ববাচার্য্যগণ মহাপ্রভুর
পার্শ্বচর বলিয়া খ্যাভিলাভ করেন।

যে সকল বৈষ্ণবভক্ত পশ্তিতমগুলীর উভোগে বাদালা ও সংশ্বত সাহিত্যের উরতি সংঘটিত হইরাছিল, তল্পধ্যে রূপ, সনাজন, জীবগোস্বামী, গোপাল ভট্ট, সার্জ রঘুনন্দন ও রঘুনাথ শিরোমণি প্রভৃতি মহাজনগণের নাম প্রথম উল্লেখযোগ্য। চিস্তামনি-লীধিতিপ্রণেতা রঘুনাথ শিরোমণি অসাধারণ বিচারশক্তির পরিচর দিয়া নববীপে স্থারশাল্তের প্রাধান্থ স্থাপন করেন। স্মার্জ রঘুনন্দনের অস্টাবিংশতিত্তবের ব্যবস্থায়সারে আজিও বাদালার ধর্ম্মকর্ম্ম চলিতেছে। এই সমরে বারাণসীধামে বারেক্সবংশীর পণ্ডিতপ্রথম কুলুক্তট্ট মন্থসংহিতার টাকা প্রথমন করিয়া পণ্ডিতপ্রথম কুলুক্তট্ট মন্থসংহিতার টাকা প্রথমন করিয়া পণ্ডিত-সমাকে শ্বতিশাল্তের সমাদর বর্দ্ধিত করিয়াছিলেন। ক্রপণোশ্বামিকত ভক্তিরসামৃতদিল্ব, দানকেলিকোমূলী প্রভৃতি গ্রন্থ এবং সনাত্ত্য-বির্হিত হরিভক্তিবিলাস্টাকা ও বৈষ্ণব্রু তাহিণী নামী ভাগবত্টীকা ভক্তিরসের ও সংস্কৃতসাহিত্যের চূড়ান্ত নিদশন।

রগুনন্দন ও কুলুক যে সমরে শ্বতিব্যবস্থার প্রতিষ্ঠা এবং রূপসনাতন ও অপরাপর বৈষ্ণব কবিগণ বৈষ্ণবধ্দের প্রাধান্তস্থাপন ও প্রচারকামনায় বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন, ভাহার কিছু পরে ক্লফানন্দ আগমবাগীশ সমগ্র তল্পের সার সঙ্গন করিয়া শক্তিপুঞ্জার স্বব্যবস্থা করিলেন।

[বিষ্ত বিবরণ বালালাভাষা শব্দে এইবা।]
এই সামাজিক ও রাজনৈতিক বিপ্লবের সময় ধর্মপ্রতিদ্ধা ও
লাতিগত পার্থকানিবজন বলভূমে নিয়ভই সামাজিক বাদাপ্রবাদ
লইরা বিশেব গোলবোগ উপস্থিত হইত। মুসলমান নরপতি
বা সর্দারগণের অন্নগৃহীত ব্যক্তিই তৎকালে সমাজবাহ্ বলিয়া
নিন্দিত হইতেন। এই সামাজিক আন্দোলন সময় সময়
রাক্সের মহা অশান্তিকর হইত বলিয়াই মুসলমান ফ্রলতানগণ
জাতিবিচারের জন্ম একটা স্বতন্ত্র 'জাতিমালা-কাছারী' নির্দিন্ত
করিয়া রাখেন। কুলগ্রছে লিখিত আছে, দেবীবরের অভাদরের
পূর্কে দক্রখাস উপাধিধারী এক ব্যক্তি মুসলমানরাজের মন্ত্রী
ছিলেন। তিনিই ঐ জাতিমালা কাছারির প্রধান বিচারপতি
হন। তালিই সক্রান্ধ রাজীর ব্যক্তগণের ৫৭মঃ সমীকরণ

হইরাছিল। বালালার বিভিন্ন জাতির সামাজিক ইতিহাসে (কুলগ্রন্থে) ইহার বিস্কৃত পরিচয় আছে।

এই জাতিবিদ্রাটের দিনে সকলেই দেশ, কাল ও পাত্র বিবেচনা করিয়া সমাজসংগঠনে বন্ধপরিকর হইয়াছিলেন। ঘটক দেবীবর নানা দোষের একত্র সমাবেশ দেখিয়াও য়াঢ়ীয় কুলীন-সমাজে পরস্পারের বিবাহজনিত সংস্রব লক্ষ্য করিয়া তাঁহাদের মধ্যে এক একটী 'মেল' নির্দেশ করেন। তিনি স্বয়ং ঐ সময়ে 'দোষ-নির্দয়' ও 'মেলবিধি' নামে ছইখানি কুল্গ্রন্থ রচনা করিয়া-ছিলেন। তৎপরে ১৪০৭ শকে গ্রনানদ্যাশ্র কর্তৃক মহাবংশাবলী রচিত হয়। এতয়্তিয় এই সময়ে আরও কতকগুলি কারিকা প্রকাশিত হইয়াছিল।

খুষ্টীর ১৫শ শতান্দীর এই সংস্কার্যুগে, মুসলমান-রাজ্ঞরের যেরূপ রাজনৈতিক পরিবর্ত্তন সংসাধিত হইরাছিল, তাহা আলাউন্দীন্ হুসেন শাহের রাজত্বকালের ইতিবৃত্ত পাঠ করিলে স্পাষ্টই বুঝা যার।

আলাউপীন্ হসেন শাহ খীর প্রতিপালক ও প্রভু হাবসী-বংশীর রাজা মুজংকর শাহকে নিহত করিরা বলসিংহাসন অধিকার করেন। রাজসিংহাসনে সমাসীন হইয়া সৈয়দ হসেন আলা উদ্দীন্ সেরিফ মকা নাম ধারণ করেন। রিয়াজ-উস-সলাতিন্-প্রণেতা বলেন, 'গৌড়ের স্তম্ভাগিতি লিপিতে তাঁহার হসেন শাহ নাম বিস্তমান আছে। অনুমান হয়, তাঁহার পিতা বা তহংশার কোন পূর্বপুরুষ মকার সেরিফ ছিলেন। সম্ভবতঃ সেই বংশগরিমা অরণ করিয়া তিনি ঐ নাম প্রকাশ করিয়া থাকিবেন।'

তিনি পূর্ববর্তী স্থলতানগণের ক্লার হীন-জাতীয় ছিলেন না। ইস্লামধর্মপ্রবর্ত্তক হল্পরৎ মহম্মদের বংশে তাঁহার জন্ম। আরবের মস্কভূমি তাাগ করিয়া তিনি সৌভাগ্যান্ত্রেবণে বালালার উপনীত হন। গৌড়পতি তাঁহার আভিজ্ঞাত্যের পরিচয় পাইরা তাঁহাকে রাজকার্য্যে নিযুক্ত করেন। তাঁহার কার্য্যক্ষতার ও বিনয়-নম ব্যবহারে সন্তই হইরা স্থলতান তাঁহাকে রাজের শ্রেইতম উলীরপদ দান করেন। মন্ত্রিপদে অবস্থানকালে তিনি সকল শ্রেণীর ওমরাহ ও সামন্ত্রনিগের প্রতি বেক্রপ সদয় ব্যবহার করিতেন এবং সকল কার্য্যে বেক্রপ দক্ষতা দেখাইতেন, তাহাতে সকলেই তাঁহার প্রতি প্রীত ও বিমুধ হইরাছিল। অদৃইচক্রে পাশবপ্রকৃতি মুল্ক:করের অসহনীর অত্যাচার তিনি দির পাভিন্না আহিছেতি বাধ্য হন, অবশেবে বিশেষ সহটে পড়িয়াই তিনি রাজবিন্দোহী হন। সৌভাগ্যবন্দে পরিচালিত হইরা অভংগর তিনি বালালার রাজসিংহাসনে উপষিষ্ট হইতে সমর্থ হইরা-

নুসলমান রাজন্বের অবসালে এবং ইংরাজাবিকারের প্রাক্তক কাসিম বাকারের ভ্রপ্রক্রিক 'কৃষ্ণকান্ত মল্বী' জাতিমালা কাছারির স্বক্ত ইইরাহিলের।

नत्मत्र बाफीत देखिनात >म ७ २६ छात्म से त्रका आहत दिवद्वत सहेता ।

ছিলেন। সকল শ্রেণীর মুসলমান-সামন্ত এবং হিলুরাজগণ তাঁহাকেই রাজসিংহাসনের উপযুক্ত পাত্র বিবেচনা করির। রাজপদে অভিবিক্ত করেন। তিনিও পক্ষান্তরে তাঁহাদের মনোরঞ্জনার্থ নির্দিষ্ট সময় মত গৌড়রাজধানী পৃঠনের আদেশ দেন। ঐ সময়ে গৌড়নগরের অনেক ধনশালী হিলু-প্রজা সর্ববাত হইরাভিলেন।

পূর্ব্বোক্ত নগর-পূর্গন-ব্যাপার উপর্গাপরি কয়দিন অবাধে চলিতে লাগিল। স্থলতান ইস্লাম-ধর্মের পক্ষপাতী হইরা ছিল্মর এই সর্ব্বনাশ দেখিয়াও দেখিলেন না। কিন্তু অচিরেই দীনহীন প্রজার আর্ধ্যনাদে তাঁহার ধর্মপ্রাণ বিগলিত হইরা উঠিল, তিনি হিন্দুর প্রতি চিরন্তন বিবেষ ভূলিয়া দুর্গন বন্ধ করিতে আদেশ দিলেন। পুন্ধ সন্ধারব্দ্দা ও সৈনিকসভ্যাদার এবং অক্সান্ত মৃসলমানগণ লোভের বশবর্তী ইইরা তখন রাজাদেশ লজ্মন করিল। তাহাদের পরস্বাপহরণপ্রবৃত্তির নিবৃত্তি হইল না। রাজ্য ক্রমশংই অরাজক ও দস্য-প্রধান হইরা দাঁড়াইল। তখন উপায়ান্তর না দেখিয়া স্থলতান সৈরদ আলাউদীন্ হসেন শাহ অত্যাচারী মুসলমানদিগের নির্দ্থেদের আদেশ দিলেন। দেখিতে দেখিতে ছাদশ সহল মুসলমান নিহত হইল এবং রাজাক্তরার তাঁহাদের সংগৃহীত অর্থ্বালি রাজকোবে সমান্তত হইল।

অভঃপর বধন আলাউদীন্ দেখিলেন বে, হাবসী সৈপ্ত ও দেশীর পাইকগণই দেশে যাবতীয় রাজকীয় গোলবোগের একমাত্র কারণ; তথন তিনি তাহার প্রতিবিধানের উদ্যোগী হইলেন; তচুদ্দেশ্য সাধনার্থ তিনি হাবসিদিগকে কর্মচ্যুত করিলেন এবং পাইকদিগকে বাঙ্গালার পশ্চিম দক্ষিণ সীমার অল নিক্র ভূমি দিরা বিপক্ষের আক্রমণ হইতে দেশরকা কার্য্যে নিয়োজিত করিলেন।*

স্থালাউদ্দীন্ স্বেচ্ছা প্রণোদিত হই রাই হাবসী নির্বাসনরপ এই দেশহিতকর কার্য্য সম্পাদন করিরাছিলেন। হাবসী ও খোলাদিগের অত্যাচার হইতে হিন্দু প্রজাদিগকে রক্ষা করার তিনি সাধারণের পূজনীয় হইরা পড়েন। অত্যাচারক্লিই হিন্দু-গণের মলিন মুখ সম্দর্শন করিয়া তাঁহার হৃদয়ে অপূর্ব্ব দরার উল্লেক হয়, তদবধি তিনি অপত্যনির্বিশেষে ও বিশেষ স্থায়-পরতার সহিত বন্ধরাক্ষা শাসন করেন। তিনি হিন্দু-মুসলমানে বিশেষ প্রভেদ রাখিতেন না।

এই সমরে তিনি একডালা কুর্নের সংকার করিয়া তথায় রাজ-

আসাদ মনোনীত করেন এবং তথা হইতে রাজ্যশান্স সম্বান্তির বাবতীর ব্যবহা আজা করিতেন। উচ্চ ক্ষেত্রীয় ও সন্ত্রান্ত সৈরুদ, মোগল ও পাঠানদিগকে তিনি রাজকর্মে নিবৃক্ত করিরা আপনার রাজ্যভিত্তি স্থান্ত করিরাছিলেন। তিনি সন্ত্রান্ত বংশান্তব হিন্দুদিগকেও বংগাই উৎসাহ দিরা তাহাদিগকে রাজান্ত্রাহ্ দান করিতেন। নানা শান্তবিশার্দ্ধ ও বৈক্ষবচ্ডামণি শ্রীরূপ ও ধ্যাতন
তাহার মন্ত্রী হইরাছিলেন।

উড়িয়ার সামন্ত-রাজগণকে বশীভূত করিরা এবং বীর রাজ্য শাসনের অ্বন্দোবত্ত করিয়া অ্বতান হত্যেন পাছ আসাম আক্রমণ ও সূর্চন করেন, কিছ তথার বিশেব কিছু করিয়া উঠিতে পারেন নাই। অভঃপর তিনি কামতাপ্রে (কোচবিহারের) রাজা নীলাবরকে পরাজিত ও বন্দী করিয়া তাহার রাজধানী ধবংস করেন (১৯৯৮ খুটাকে)। তৎপরে সেই অধিকৃত প্রদেশে হত্যেন্ আপন পুত্রকে কাথিয়া আসিরাছিলেন, কিছু কোচনিগের আক্রমণে বছ বলক্ষরের পর তিনি কোচদেশ পরিস্কাণ করিতে বাধ্য হন। তদবধি এই ত্থানে বর্ত্তমান কোচবেহার-রাজবংশের পুর্বাপুরুবদিগের রাজ্য সংস্থাপিত হর।

কামরপ-বিকরে বার্থমনোরখ হইরা অলতান হলেন শাহ রাজধানীতে প্রত্যাবৃত্ত হন। তথার অবস্থানকালে তিনি খীর রাজ্যতিত্তি স্পুতৃকরণমাননে গণ্ডকনদীতীর সীমান্তনেশে একটা স্থবিস্থত হর্ম নির্দ্ধাণ করান। অনস্তর রাজ্যের প্রজাবৃত্তি কামনায় তিনি প্রত্যেক জেলার সাধারণের উপাসনার্থ মসজিল, সুশাফির থানা, দাতব্য চিকিৎসালর প্রভৃতি স্থাপন করেন। তিনি জ্ঞানী ও সাধুপুরুবদিগের ভরণপোষণার্থ মাসিক বৃত্তি নির্দ্দেশ করিয়া যান। আজিও পাঞ্রার কৃত্তব্ উল্ আলমের আতানার ব্যরাদি তাহারই প্রদন্ত ভূমির আর হইতে নির্দ্ধাহিত হইতেতে ।

স্থাতান হসেন লাহ বেহারের কিরদংশ হত্তগত করিয়াছিলেন। দিলীখর সেকলর লোদি জৌনপুর অধিকার করিলে
তিনি রাজ্যচ্যত স্থাতানকে বংগ্র্ট সামান প্রদর্শন করেন এবং
মাসিক বৃত্তি দান করিয়া তাঁহাকে আশ্রন্ন দিরাছিলেন। এ
নিমিত্ত স্থাট্ রেহার অধিকার করিয়াই প্রণাতানকে বাজালা
আক্রমণের তর দেখাইলেন। বাজালার সীমার আসিতে
আসিতেই কার্য্যগতিকে উভর পাকে সবি হইরা গেল; এতজ্বারা
বিজিত বেহার প্রদেশ দিলীখরের থাকিল এবং বাজালা আক্রমণ
নিবারিত হইল। উভর পাকে বন্ধুত্ব স্থাপিত হইবার কিছুদিন পারে,
১৫২০ বা ১৫২০ অলে হসেন লাহ মানবলীলা সংবরণ করেন।
তিনি বেমন প্রজাদিগের প্রার্হ্য, তেমনই অপর লোকের প্রভালনা
ছিলেন। ঠাহার সমরে প্রমরাহণণ বলীর কবিদিগের প্রভিলারত
সমাদর করিতেন, এমন কি জানেকে কবিরিগের প্রভিলারত

পরবর্তী সবরে ইংরাজ প্ররেকি রাজকার্ব্য অনুগ্রোগিত। নিরীক্ষণ
করিরা ইহাদের জুনিসভ হইতে ব্যক্তি করেন। সেই কারণে ১৭১০ হইতে
১৮০০ ষ্টাক্ষের নব্যে বেদিনীপুর জেলার আভবাসী পাইকবণেররগণ কএকবার
ক্রিপ্রেক্তের প্রকাশ করিরাছিল।

হিলেন। প্রাচীন গ্রহাদির কবি-তণিতার ঐ সকল ওমরাহবর্মের বদাভাঙার পরিচর পাওরা বার।

[याजाना जायानरम जाशांत विज्ञ विषयन अहेवा ।] অনতান হসেন শাহের নুড়ার পর ১৫২১ বুটানে ভণীর জােচ পুত্র নসরৎ শাহ বাদালার রাজসিংহাসনে আরোছণ করেন। अभरम छिमि जातक मम्बर्धनंत्र गितिहत्त निताहित्यम । जिमि অভান্ত মুসলমান স্থলতান্দিনের ভার আভূবর্গকে নিহত বা ভাহা-দের চক্ষু অন্ধ করেনা নাই, বল্প পিছবন্ধ বৃত্তি বিশুণ করিবা निया यटबंडे जोजङ त्नबाहेबाहित्नम । কুটবগণের অভি শ্বেছ বেধাইতে তিনি জাট করেন নাই। মোপলপতি বাবরের আগমন-সংবাদে দিলীবরুকে বিব্রত কেবিয়া ও হযোগ বুৰিয়া ভিনি লেই অংলয়ে নিবিলা, হালিপুর, মুলের প্রভৃতি আপদার রাজাভুক্ত ক্রিরা ক্টপেন এবং ভত্তৎস্থানে যধাক্রমে আপন পুত্র, আখাতা ও নেলাপতিকে শাননকর্তা নিবৃক্ত করিলেন। ঐ সময়ে ভারতের অপর আতে মোগল-नामानामरबानक वावत्र भार नानिनात्वत्र युद्ध ১८२७ वृहीत्न ইবাহিম লোদিকে পরাও ও নিহত করিয়া প্রাং দিলীর প্রথীবর হইলেন। ইব্রাহিষের দ্রাভা মান্দ্র লোদী গৌড়রাঞ্গানীতে আদিরা আত্রর লাভ করিলেন। শত্রুর আত্ররপ্রান্তিভে কৃত্ হইলা বাবর শাহ বালালা আক্রমণের উত্তোপ করিলে, সসরৎ শাহ বহুমূলা উপচৌক্ন দিয়া চুইবার মোগলপতির প্রকোপ হুইডে পরিত্রাণ পাইলেন।

অতঃপর ১৫২৯-৩০ খুটান্দে হলতান ইত্রাহিন লোদির প্রাতা মার্দ্র লাহ প্নরার আফগান স্কার্ত্ত্ত্বের সাহাব্যে স্বীর পৈতৃক্তরাজ্য উদ্ধারের চেটা পান। এই সংবাদে স্প্রাট্ বাবর সকলে আগ্রা হইতে আদিরা পদাতীরবর্ত্তী হিদেরী নামক স্থানে উপসীত হন। যুদ্ধে মার্কুদের পক্ষ পরাজিত হইরা শোণ নদ অতিক্রম-পূর্বক পলারন করে। নসরৎ শাহ মোগলস্ক্রাটের ক্রোথোপ্নো-দনার্থ বস্তুত্ত্বত সন্ধি করিরা নিয়ুভিলাত করিলেন।

ঐ স্থিসর্তে নসমৎ মাজুলকে সাহাব্য করিবেল মা বলিয়া বীয়ত হইলেন এবং সমাইও সার বলেবরকে উদ্ভাক্ত করিবেন না এই অধীকার করিয়া সাঞা অভিস্থা গ্রহান করিলেন। ১৫৩০-০১ প্রচালে বাবয় শাবের পুরু হয়।

বাৰণ পাৰের বৃত্যান্তালে আক্সান সর্বারণ উৎদ্র হালেন। বিরীশ্র ইরাইলের আক্সান্ত বেহার প্রিকার করিলেন। বিরীশ্র ইরাইলের আক্সান্ত্র করেনে ক্রেন্স্তরের বোগল-শাসনকর্তা ক্রিক বর্গানকে প্রাক্তিক করিয়া তৎপ্রকেশে বীয় শাসনবিকারে স্থানিক ক্রিকান নসরৎ পার পূর্ব করায়ক স্থিতি ক্রিকান ক্রিকা ক্ষমিকারকার্য্যে ক্ষম্মুক্তর সহায়তা করিরাছিলেন (১৫৩২-৩ বুঃ)।
এই সময়ে বাবরপ্যে ছনাভূনকে হীনবল দেখিরা তিনি বিরীশরের
চিরশক্ত ক্ষমিপতি ক্ষতান বাহাইর বাহের সহিত বন্ধর থাপনে
ইচ্ছুক ছইরা তাহার নিকটে নৃত ক্রেরণ করেন।

মতংশয় কোন মভাবনীয় কারণে ভুলভান নসরভের চিত্ত-বুভি পরিবর্তিভ হইল। ভিনি উভরোজন নিষ্ঠরপ্রস্কৃতির পরিচর দিতে লাগিলেন। পত্তবত: উদীয়মান চৈতন্ত্র-সম্প্রদারের উপর অভ্যাচার প্রবাসী হইরাই তাঁহার চিত্তবিকার সমুপরিত হইরাছিল। ভাঁহার রাজ্যকার্টে বৈক্ষবসম্প্রদারকৈ বেরূপ মিগ্রহ সম্ব করিতে হইরাছিল, তাহা তৎসাময়িক এছারিতে বিরুড আছে। ভর शिषु या देवकंद असा विनिज्ञा नरह, जिनि चीत्र पूजनमान अस्त्र, এমন কি, আত্মীয় অন্তর্জ ও উচ্চতন সাজকর্মচারীদিগের প্রতি কঠোর অভ্যাচার করিতে কুটিত হন নাই। নিষ্ঠরাচরণে ক্রমশঃই ভাঁহার প্রজাগণ ও কর্মচারিসকল অসভ্ত হইতে লাগিল। পরিশেষে একজন খোজার হতে মগ্রিদ মধ্যে তিনি নিহত হইলেন (১৫৩৩ খুটান্দ)। ঐ বৎসরেই মহাপ্রভর লীলাবেহের অবসান হর। গৌডনগরে স্থলভান নসরৎ শাহ বে সকল অট্টালিকা নির্মাণ করান, তন্মধ্যে সোণা মসঞ্জিদ ও কদম-রক্তন অভাপি বিভ্যমান আছে। সাজ্লাপুরের হলরৎ মধ্চমের সমাধিমন্দির তাঁহারই ব্যয়ে নির্মিত হইরাছিল।

নসরতের মৃত্যুর পর, ওমরাহ্গণ ১৪০ হিজিরায় তৎপুত্র किरताक नार् एक वाकानात्र ममनरम अधिष्ठे करतन ; कि इ এই বালক রাজার রাজ্যকাল তিন মাস ক্ষতিবাহিত হইতে না হইতে, স্থলতান আলাউদ্দীনের অস্ততম পুত্র মাক্ষ্ শাহ গোপনে ভাঁহার প্রাণসংহার করিয়া রাজাসনে উপবিষ্ট হইলেন ! প্রাতৃ-পুত্র নিহননরপ ক্লাচারে বিশু হওরার অনেকেই মান্ধরের भाग्या विवक्त रहेग । राजीशृद्यत भागनक्छ। यथ हम भागम প্রকাশ্রে বিরোধী হইরা উঠিলেন। ভিনি বেহারের ভাৎ-কাশিক রাজসভািবক ইভিহাসপ্রসিদ্ধ শের খানের সহিত সংমিশিত হইয়। বলেশবের প্রতিশবিভাল্পরে প্রবৃত্ত হইলেন। धारे मरवारत कुछ इरेना माण्य नाइ सविकार मध्यक्रामन मध-विश्वानार्थ केट्डांत्र कंत्रिएक गांत्रिरंगन । पूर्वरहात्र माननकर्छ। মূতব্বান লেরকে লাভি বিশার জন্ধ ভোরিত বইলেন ; মুর্ডার্যু-ক্রমে বদীর সেনাপতি রণজেতে প্রাণবিস্থান করিলেন। সাজ-रिक्ष करन हैवाक्स हरेंची शमावन कविन । बरक्षम वहें शवाबरक পুরুষনা ব্টরা উক্ত ব্যক্তান্য কোলভিত্র পুত্র ইত্রাহিল বাঁকে भूनवाद रुवार्ष अञ्चल श्रेटक मारान किलन ।

এই সময় বেধার-রাজমুমার প্রাাব দীর প্রতিভাবক পের-গালের কঠোর অফাচার ক্টতে প্রভারতি ভাতের আগার বন্দেবদের নিবিতে পলাইরা আইনেল এবং খীর অনুচর্মধানে পের বানের সম্ব ভাগে করিতে আলেল পাঠান। শের এইরাপে সেনাসংখার স্থাল হুইতে দেবিয়া বেহারহুর্নে আশ্রয় লইলেন। এ দিকে বলীর সেনা আসিরা হুর্ন অবরোধ করিল। ক্ষএক নান অবরোধর পর সেনাপতি ইআছির সাহাযার্থ মৃত্যন সেনালল প্রার্থনা করিয়া পাঠাইলেন, কিন্ত এ সেনা আসিবার প্রেই শের এক বিল অক্যাৎ হুর্ন সর্বা হুইভে নিক্রান্ত হুইরা ভীনবেনে বলীর সেনাকে আজ্রনণ করিল। অভারতি আজ্রমণে ধলীর সৈত্র হুর্মাক হুইরা পাউল। সেনাপতি নিহত হুইগেন এবং জগাল্বগৌড় নগরে পলাইরা আজ্বরলা করিবেন। ১২০২-২৬ খুঃ)।

পর বৎসর ৯৪০ হিং, শের চুলার ছর্গ অবিকারপূর্বক সমগ্র বেহার প্রেলেশ আপনার শাসনদণ্ড স্থাপন করিলেন। তদন্তর তেলিরাগাঁর ও শক্রী-গাঁর সভাই অতিক্রম করিলা তিনি স্থলতামের অস্থরতী হইলেন এবং ক্রমণ: রাজধানী অভিসুথে
অগ্রমর হইলা গৌড়নগর বীল সৈন্য মারা পরিবেটিভ করিলেন।
কিন্তু অবিক কাল বকে থাকিতে সমর্থ না হওরার তিনি থাবাল্
খানের হতে নৈনাপত্য প্রদানপূর্বক স্বয়ং বেহারে প্রত্যাবৃত্ত
হইলেন। এই অবসরে মাজুদ শাহ মোগল-সম্রাট্ হুমার্ম এবং
পর্ক শীক্ষাধিকত ভারতের প্রতিনিধি স্থলো-দে সুন্হার সাহাব্য
লাভের চেন্তা পান। হুর্ভাগ্যের বিবর, প্র সহকারিমর আসিরা
সম্পন্থিত হইবার প্রেই নগরবাদিগণ থাভাভাবে আল্বসমর্পণ
করিতে বাধ্য হর (বিং ৯৪৪ = ১৫৩৭ ৮ খঃ)। স্থলতান নাজুদ
এই সমরে নৌকারোহণপূর্বক গোড় হইতে হাঞিপুরে পণাইরা
আইসেন।

বিপক্ষ সৈতা ভাঁছার পশ্চাদরসরপ করিল। ত্লতান বাধ্য হইয়া আত্মরকা করিতে সচেই হইলেন। বােরতর বৃদ্ধ বাধিল। রগক্ষেরে ক্লতানকে আহত বেধিরা উচ্চার বন্ধবর্গ ভাঁচাকে লইরা পলারন করিল এবং মুদার মুর্ণ অবরােধকারী সম্রাট্ হ্লামুনের শিবিয়ে আশ্রর লাভ করিল।

সম্ভাই ছলায়ুন বলেবরের গ্র্দানার সবিশেব হাবিত হাইলেন এবং আলীকার মত চুনার গ্র্দানিকরের পর বলাভিবানে উভোগ করিলেন। এই সমতে লের বান্ ভেলিয়াসভি ও শক্রী-সভি সভি জ্বাভ করিতে রাজ ভিলেন। আহাজীর জুনীবেসের অবীনে মোলনানত সমাসত ছাইলে শেরসুর অবান বান্ বীর পার্সান-লৈজনার ক্রানার ভারতার হাইলেন। সালেবনে বোগল সেনাপতি আহত হাইলে নোগলনানত পলারন করিল। তবর্ণনে জ্বাস্থ্য বরুং ক্রানা অনিমেন। কর্তানার নিকট মোগলবাহিনী উপনীত হাইলে আক্স ভারতান, আর্তানালন উল্লেখ্য স্বেবরতে নিহত ক্রিরারে। এই হাসবোধে লোকসভার জনার নামান প্রাণতাস করেন '(১৫৩৮-৯ থ্য)। তীহার রাজ্যকান ক্রতেই প্রকৃত্তপক্তি বালালার বাবীন সরপতিবংলের অবলান ক্রত।

হ্যাহ্য বৈভিন্ন স্থাপে উপ্লভি ইইনে নগম্বাদী সাংলাদে বার উন্দুজ করিল। তীহার আবেশে রাজ্যের করণ ক্ষেত্রার রাজ্যানেই পুংবা পাঁঠ ইইল। তিনি নগম্বের নাম অর্জবিদ রাখিপেল। তীহার নামে বে বৃত্তাবিশ হর, ভাইাতে নগম্বের নৃত্তন নাম সমিবিট হইরাছিল।

বিদ্যাল্য করের পর ক্লভান ছমাছ্ন বিদাসকুৰে নিমগ্ন হইলেন। তিনমান ভোগকুথে রঙ থাকিরাও ভাছার আত্ম-প্রমান উপস্থিত হইল না, তিনি বিদ্যালিনিনিতনরনা মছর-গমনা বারাসমাকুলের নৃত্যক্ষতে সর্কান বিভোর হইরা রহিলেন। শক্রদল এই অবসরে পুদরায় বলপুট ক্রিরা স্ইল। শের খান্ বলপ্রতি মোগল শক্ষর বিরুদ্ধে যুহার্থ প্রস্তুত হইলেন।

অনতিকালণরেই ওপ্রচরমূবে শত্রণক্ষীরের উর্জ্ঞান ও বড়যন্ত্র-সংবাদ পাইরা সমাট হুমান্থমের ক্ষপ্রপ্রি ভদ হইল। তিনি কভকটা যেন ভীত হইরাই সেই বর্বা বতুতে আগ্রা অভিনুথে প্রেলান করিলেন। কিন্তু রাজ্যপাসনার্থ তিনি ৯৪৬ হিজিয়ার লাহালীর কুলীবেগকে বালালার শাসনক্ষা নিপুক্ত করিয়া বান, তাহার আনেশে রাজ্যরকার্থ তবার ৫ হালার মোগল অখারোহী রক্তিত হইরাছিল।

মোগল সৈত যালালার অলবাৰ্থকোশে অনভাত ছিল।
তাহারা নিরম্ভর বারিপাতে ক্লিটিভ ও ক্রমেই নানা রোগএত
হইমা মৃত্যুক্তে পাতিত হইতে লাগিল। এই প্রবেদী সমাটের
অততম প্রাক্তা বিলোধী হইগোন। পের দাঁ লৌপণে রোহতাল্
হর্পবিক্তরে সকল অনোরব হইরা প্রেরার বলরাতা উলারে
সচেটিভ হইলোন। তাহার উলোগে হলেক আকলান সৈত্ত
পুনরার কর্মনালা তীর্ক টেলির প্রাক্তে প্রকলা ইবছে।
সমাই স্বালীর উল্লোপ্রাক্ত আর অবিকাশ্য অপ্রথম ইবছে
সারিকেন সা। বোগল সেনা সাইনি শিক্তিরতের ক্রিছে
নাহনী হইন না, অবর্ধ সাল ব্যক্তমাণ্যুক্ত প্রালীরহু

[&]quot; रमासा कि क्या कार्य, त्या थे। के द्वार प्रमूश सहित्या ।

চইতে পারিল না; ক্রভরাং অক্তপথে গমনের আশাও রহিল না। তখন সম্ভাট ৰাধ্য হইরা সন্ধির প্রভাবসহ পাঠানশিবিরে দৃত পাঠাইলেন। শের খাঁর ধর্মগ্রহ পবিত্র ধার্মিক দরবেশ খলিল मधाप इहेरनन । मिल्या दिव हहेन, मुम्राहे भाव थाँदिक বালালা ও বিহার ছাডিয়া দিবেন। পক্ষান্তরে শের খাঁও কথন সম্রাটের পভিরোধ বা তাঁহার শত্রুকে সাহায্য করিতে পারিবেন না। সন্ধির পর উভয় শিবিরে আনন্দল্রোত প্রবাহিত হটল: মোগলগণ বালালার আসিরা নানা কটের পর আজ আক্রাদ-সাগরে ভাসমান হইরা সমস্ত বিপদের আশহাই ভূলিয়া গিরাছিল: কিন্তু বিশ্বাস্থাতক শের খাঁ শক্রুর প্রতিজিঘাংসা जुरनन नाहै। त मिन नुबाँग नुसक्त त कार्रागम्मार्ल भूपथ করিল, দেই দিনে রঞ্জনীর গাঢ় অন্ধকারে অতর্কিতভাবে সেই আফগানদস্তা মোগল শিবির আক্রমণ করিলেন। মোগল সৈন্ত দলে দলে আহত, নিহত ও পলায়নপর হইল। সম্রাট্ প্রাণ লইয়া অখপুঠে আরোহণপুর্বক গলা পার হইলেন, কিন্ত তাঁহার অধীনস্থ আট সহস্র মোগল সৈম্ভ নদীলোতে ভাসিরা গেল (১৫৩৯ খু: ष्यः)।

হুমায়ুনের পরাজরে বাজালার প্রবংশীর আকগানগণের প্রতিষ্ঠা হইল। তাঁহার অকাদরে তৎকালে সমগ্র উত্তর ভারত প্রকশ্পিত হইরাহিল। কোন্ পুত্রে শের খাঁ বেহার-রাজ-সরকারে নিযুক্ত হইরা কিরূপ প্রতিভারণে বল ও বেহারের অধীশর হইরাহিলেন, তাহা পুর্কোবর্ণিত হইরাছে।

তিনি রোহ্বাসী প্রবংশীর আফগান। তাহার পিতার সাম হসেন। তিনি খীর প্রের নাম ফরিদ রাখেন। এই কারণে শের খাঁ রাজাসনে আসীন হইরা ফরিদ্উলীন্ শের লাহ নাম ধারণ করিরাছিলেন। স্থলতান বহলোল লোদীর রাজ্য-কালে তাহার পিতামহ ইত্রাহিম জরাভূমি পরিত্যাগপূর্মক দিল্লী রাজধানীতে উপনীত হন এবং সামরিক বিভাগে কর্ম গ্রহণ করিবা খীর সোভাগাবেবণে প্রবাস পান।

বহলোগ-পুত্র সিকলর লোদীর শাসন কালে জৌনপুরের লাসনকর্তা সর্কার জরমল্ল ইত্রাহিম-পুত্র হসেনকে সঙ্গে আনেন। হসেনের নগণাঙ্গিত্য ও সন্ধাগদি লক্ষ্য করিরা জরমল্ল তাঁহাকে সাসেরাম ও তাঁড়া জেলা জারদীরস্থলপ দান করেন। তাহার আর হইতে ৫ শত জ্বারোহী সেনাদল রক্ষা করিরা হসেন রাজার জ্বীন সামস্থলপে পরিগণিত হন।

হমার্নের পাঠান জাড়ীর পত্নীর গর্ডে করিন ও নিজামের জন্ম হর। পিডা পুরের বিভা পিজা বিবরে বিশেব বন্ধ সইতেন না বিগরা করিন স্বেচ্ছাপ্রগোবিত হইরা জরমন্ত্রের জনীনে নৈনিকর্ত্তি জবলবন করেন। এই নামন্ত্রিক শিক্ষাকালে তিনি রাজা জরমজের অমুপ্রতি নানাবিভার পারদর্শিত। লাভ ক্রিয়াছিলেন।

তিন চারি বৎসর পরে হসেন কৌনপুরে আসির। পুত্রের বিভাবতার পরিচর পাইলেন। তিনি তখন উপযুক্ত পুত্র হত্তে বীর সম্পত্তির পরিচালন ভার সমর্শণ করিরা নিশ্চিত্ত হন। ইহাতে তাঁহার বিমাতা ও বৈমাত্রের ভ্রাতা স্থলেমানের ঈর্বা বৃদ্ধি হর। বিমাতার পীড়নে পিতার মানসিক বিপর্যন্ত্র লক্ষ্য করিরা আগ্রা অভিমুখে যাত্রা করেন। এখানে তিনি ইগ্রাহিম বাদশাহের প্রসিদ্ধ ওমরাহ দৌলতের সাহাত্যে সম্রাটের অন্থগ্রহতাজন হন এবং বীর পিতার মৃত্যুর পর পৈতৃক সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হইরাছিলেন।

৯৩২ হিজিয়ার সম্রাট্ ইব্রাহিমের পরাজর সংবাদে, দিলীখরের অধীনত্ব সামস্তবর্গ ব ব প্রাধান্ত স্থাপন করিতে উহাত ইইলেন। শেরও সে ক্রোগ ছাড়িলেন না। তিনি দরিয়া লোহানীর পুত্র পার খাঁর সহিত বোগদান করিয়া বেহার অধিকার করিলেন। পার খাঁ স্থলতান মান্ধা লোহানী নাম গ্রহণ করিয়া রাজা হইলেন। এক দিন মান্ধ্যের সহিত শের শীকারে বহির্গত হইয়া বহুতে একটী বৃহদাকার ব্যান্ত বধ করেন। স্থলতান তাহাতে প্রীত হইয়া তাঁহাকে সের আখ্যা দিয়াছিলেন। পরে তিনি পাঠানবংশীর চুলারপতি তাজিরের বিধ্বা পত্নীকে বিবাহ করিয়া চুনার হুর্গ হত্তগত করেন।

শের মাক্ষ্ দের নিকট বিলক্ষণ প্রতিপত্তিলাভ করিরাছিলেন;
এ জন্ত মাক্ষ্ দের মৃত্যু হইলে যুবঁরাজ জলাল অপ্রাপ্তবন্ধ বলিয়া
শের বেহারের রাজপ্রতিনিধি হন। কিছুদিন পরে লোহানি
দর্কারেরা শেরের বিনাশার্থ একটা বড়বত্র করে, এবং ইহা
প্রকাশ হইরা পড়িলে, জলাল অপক্ষ ওমরাহপণসহ বালালায়
১৫৩৫-৬ খুটান্দে পলাইরা বান ও বক্ষের মাজ্যুদ শাহের সাহায্য
প্রার্থনা করেন। এইজপে শের বেহারের সর্কমন্ত্র করে।
উঠেন। অনস্তর তিনি মাক্ষ্ দ শাহকে গৌড় হইতে তাড়াইরা
দেন,এবং ছলে ভূলাইরা ওবিশাস্থাতকভাপুর্কক রাজা বরকেশের
নিকট হইতে হর্তেজ "রোহিতাস্ হুর্ন" ক্ষাক্ষার করিরা দেখানে
বীন্ন পরিবার ও ধনরাশি নিরাপ্তেরাখিবার উপার করেন।

রাজ্যচ্যত মাজু দু খাই বিরীখন হমান্থনের খরণাপার হইলে, হমান্থন বাজালা আক্রমণ ও পৌড় নগর অধিকার করেন। শের পলিমাতিমুখে বাইরা বারাগনী হত্তগত এবং রাজালা হইতে হ্যান্থনের প্রভাগমনের পথ কছ করিলেন। বধন হমান্থন বিরীতে ফিরিরা বাইবার চেটা করিতেহেন, তধন গজা ও কর্মনাশার সক্ষরতার নিকটে শেলের সৈজ্যের নহিত উহার সাক্ষাৎ হইল। উত্তর বলই শিবির স্লিবেশ করির।

তিন বাঁদ অবহিত্তি করিলেন। অবশেবে জোৱাণ লার্ক করিয়া त्मत्र व्यक्तीकात्र कत्रित्मम त्यु, यमि इसावुम छाहारक सावामा ७ বেহারের অধীধর বলিরা শীকার করেন, ভাহা হইলে ভিনি সত্রাটের প্রতিগমনের কোন প্রতিবন্ধকতা করিবেন না। এই সংবাদ ওনিরা মোগদেরা কিঞ্চিৎ অসাবধান চুটুরা আয়োর প্রমোদ করিতে লাগিল; এবং রাত্রিকালে শের ভাহাদিগকে বিশাসবাভক্তাপুর্বাক সহসা আক্রমণ করির। পরাজিত করিল। হমাহুন অভি কটে গলা সম্ভৱণ করিয়া প্রাণরকা করিলেন এবং অত্যৱ সহচর সঙ্গে আগ্রার উপন্থিত হইলেন।

অতঃপর শের শা বাদালার শাসনকার্ব্যের বন্দোবন্ত করিরা ৯৪৬ হি: শেষভাগে ৫০ হাজার পাঠান সৈল লইবা জমারনের विकास प्रताम युक्तांका कतिरामा । करमारका निकृष्ठे केवा পক্ষে বৃদ্ধ বাঁধিল (১৫৪০ খুটানে); হুমাৰুন পরান্ত হইরা পারতে প্রস্থান করিলেন। শের দিলীখর কটলেন।

শের বধন দিল্লীপরের বিরুদ্ধে যুদ্ধোভ্যম করেন, তথম তিনি थिकित थै। दि वानानात भागनकर्ता नियुक्त कतिता यान । थिकित ৰা এই পদোয়তির পর বঙ্গের শেষ স্বাধীন নরপতি মাল্লদ শাহের কম্পার পাণিগ্রহণ করেন। সেই প্রত্তে পূর্ব রাজবংশের অকুগুহীত অনেক আফগান তাঁহার দলভুক্ত হর। তাহাতে ম্পৰ্কিত হইয়া খিজির খীয় প্রভু শের খাঁর অধীনতা অমান্ত করিরা বাজনোহিতার ভাব প্রকাশ করেন। এই বিলোহ নিবারণার্থ শের খাঁকে আর একবার বালালার আসিতে হয়। তৎপত্নে তিনি এমেশকে করেক থওে বিভক্ত করিয়া, প্রত্যেক খণ্ডের এক এক জন শাসনকর্তা নিযুক্ত করেন। তাঁহাদের সকলের কার্য্যবলী পরিদর্শন করিতে কাঞ্জী কজিলাৎ নামে এক-জন উচ্চতম কর্মচারী নিযুক্ত হন। তননত্তর ১৫৪১ প্রচাকে ভিনি আসিরা প্রভাবত হইলেন। সেধানে ১৫৪৫ গুটালে শেরের মুক্তা ঘটে। জাঁহার চরিত্র লক্ষ্য করিলে ধর্ম ও পাপের সমলোভ প্রবাহিত ৰেখা বার। তিনি একজন সমরকুশন সেনাপতি হইলেও বিখাস্ঘতিকভার খীয় চরিত্র কলবিত করিয়া-ছিলেন, লোক্ষিডকর কার্ব্যেও তাঁহার মতি ছিল। তিনি উৎপ্রের এক চণ্ডর্থাংশ রাজকর ধরিরা বাজালার ভূমির ्रवासक्य क्षित्रा यान ; अहे वासावय जनगपन क्षित्राहे जक्तन লাহের সময় এক্সেলে রাজ্য নির্ছারিত হয়। শের শাহ অবৰ্ণপ্ৰাম হইছে শিছনৰ পৰ্যন্ত একটা ৰাজা প্ৰভত ক্লাইৰা ভাহার হুখারে হুক্ বনান এবং প্রয়োজনাত্তরণ পাছনিবান নির্দাণ ७ कृत असम कन्नांस । जिमिटे वायंद्य छात्रकवर्द त्यांकात छात्कत कृष्टि करवन । काराव बाबाफ बद्याक्य दिन मा । পविक ७ वर्गक्-. १९ च च जन्म निव सदा निश्मन कतिका चन्द्र**म निर्मा** सहेछ।

9.5%		বাজালার আধীন পাঠান নহপতিবর্ণ ।	Mark Comments
44	विः च	। वाज्यम	गामकिक विजीतन
2000	191	क्थ्य केकीन् प्राप्तक भार	बर्चन ट्यांशनक
2065	182	আলা উদীন্ আলি শাহ (গ্ৰোগ	F) &
2480	188	ইল্য়াস্ শাহ (গোড়)	à
>066	. 1	গাৰি শাহ (পূৰ্ব্বৰ)	3
>042	. ?	ইল্য়াস শাহ (সৰ্কাৰক)	কিলোক শাহ
>04F	142	সেক্লর শাহ	3
200k	14>	গিলাস উদীন্ শাহ বিন্ সেকল	4 3
2018	114	সৈক্ উদ্দীন্ বিন্ গিরাসউদ্দীন্	মহক্ষণ পাত্
>018	146	হামৰা অলভান উস্-স্লাতিন	নসিরৎ শাহ
?		শাহাৰ উদীন্ বহাজিদ শাহ	মাজুদ পাহ
১৩৮৬	969	बांबा शर्मण	.
>७३२	128	जनान जेनीन् मरका भार विन् श	म्ना विकिन्न वै।
28.5	F33	আহ্মণাহ বিন্ত্ৰাণ	মুৰার্ক পাহ
>8२9	₩•	'नानित्रं डे कीन् मा क् ष्ण भीव	আল্য পাৰ
>869	৮৬২	वार्कक नाह	ৰহলোল লোগী
3898	۲۹۵.	যুক্তফশাহ বিন্ বাৰ্কজ	ঠ
>825	bb3	সেক্সর শাহ	ঞ
>864	b b9	ফতে শাহ	ূ জ্ব
2892	424	মুলভান শাহলাদা	ঠ
>8>>	৮৯৭	সৈফ উদীন্ ফিরোজ শাহ হাব্সী	† 47
8686	629	নাসির উদীন্ যাকুদ	নেকন্দর
3886	>••	মুক্তঃকর শাহ হাবসী	ঐ,∗
7695	O•4	चाना छेनीन् रेमदम इरम्स भार	A
5455	સ્વ ૧ ં	নসরত শাহ	ইত্রাইম ও বাবর
>605	ನಲಾ		श्माद्न
>408	>8 •	মাক্দ শাহ বিন্হলেন শাহ—ই	
			। वीन मन्नপछि।
>609	>86	क्तिम् डेकीम् त्वत्र मार	3
2604	284	হ্মাহ্ন-ইনি গৌড় বা জনতা	
			द्यांगन करत्रन।
acos c	384	শেরশাহ (পুনরার)	
>686	26 3	महत्रम बी	er en
		(ততীয় শাসনকাল।)	

(ভূজীর শাসনকাল।)

শের শার বৃত্যু হইলে, তৎপুত্র ইস্লাম শাহ (মতাভারে (मिनिम भार), मरकर **याँ। एडाक बालागांत भागनकर्षा निवृक्त** कतिरामन । देननाम मानवनीमा नश्यक कविराम, कांबाब ভনরকে বিনাশ কমিয়া তদীর কালক জাবিল পাছ বিশীখন

इंडेरनन (১८६७ थुः)। धारे भरवाव भारेता महत्त्वव वा चाँबीनका चवनवम क्त्रितनम खेरा स्कोनभूरतत कर्छकारन অধিকার করিয়া লইলেন। সহস্বদ বী পুর স্থানে মুলাকণ করে। কিংবদতী আছে, ডিনি বিশেব ভারপরতার সহিত बाबानामन क्षित्राहित्सम । छीवात क्रेय क्राव्यत क्र হইয়া পরবংসর মহন্দ আদিল বীর হিন্দুসেনাপতি হিমুকে বালালার ত্রেরণ করেন, হিমুর হতে কুল্পীর নিকটক ছাপর-धाष्ट्रां वृद्ध वरण्यंत्र नदाजिष्ठ ७ मिर्फ स्ट्रेरनम () eee)। মহস্মই খাঁর বৃষ্ণার পর তৎপুত্র বিভিন্ন খাঁ মুসলমান সন্দারনিগের ্জভিনতে বাহারর শাহ দাম ধারণ করিরা বালালার সস্নদে আবোহণ করিলেন। বাহাছর শাহ সদলে সৌড়ে উপনীত ইইরা विशिष्ट्रमा, नर्कात भारताल था विश्वीचत मरुवन जानित्नत शक ছইরা বলসিংহাসন অধিকার করিরাছে। তিনি শাহবার্ককে নিহত করিয়া খীর পিড়শক্রর বিরুদ্ধে বুদ্ধের আরোজন করিলেন। ৯৬৩ হিজিরার মুলেরেরু যুদ্ধে আদিল শাহকে সংহার করিয়া তিনি শিতার মৃত্যুর প্রতিশোধ লইলেন (১৫৫৬)। অনস্তর কিছু-কাল রাজপরিবর্ত্তননিবন্ধন বাজালার অরাজকতা বঁটিল। মুরেরে বুকলরের পর বাহাছর পাহ বালালার একমাত্র ক্ষীবর হইলেন। তিনি পুত্রনির্বিশেষে কএকবংসর প্রকা পালন করিরা ৯৬৮ हिक्कितात (১৫৬০-> খুটাব্দে) গৌড়নগরে বেহত্যাগ করেন।

অপুত্রক অবহার বাহাছর পাহের সূত্য হইলে, তদীর প্রাতা কলাল্ উদ্দীন্ বলসিংহাসনে আরোহণ করেন। ৯৭২ হিজিরার গৌড়নগরে উাহার মৃত্যু হইলে উাহার যুবকপুত্র সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন। এই বালক রাজাকে পোপনে নিহত করিরা গিরাস্ উদ্দীন্ বাজালার পাসনভার অহতে গ্রহণ করিলেন। এইরপ অরাজকভার ও অভ্যাচারে কিছুকাল অভিবাহিত হইলে পাঠানজাতীর কিরাশীবংশীর স্থলেমান এই সমরে ইস্লান্ শাহ কর্তৃক বেহারের পাসনকর্তৃত্বপদে নিবৃক্ত হন, তিনি বাহাছর পাহের বন্ধ ছিলেন। মৃত্যে-বৃত্তে বলেখরের পৃষ্ঠপোষক হইরা তিনি দিল্লীবরকে পরাজিত করেন। অলাল্ উদ্দীন্ পুত্র গিরাসের অভ্যাচারে নিহত হইরাহে ওনিরা তিনি স্বীর প্রাতা তাল খান্কে পাঠাইরা দিরা বালালা অধিকার করেন। ২০৩৪ অলে ভালবার মৃত্যু হর, এবং স্থলেমান আসিরা গৌড়ের অপরপারবর্ত্তী উড়া নামক হানে রাজধানী হাপন করেন।

এই সমরে হমাধুন শাহের পুত্র নোগলকুলরও অকবর দিলীর সিংহাদনে আরোহণ করিরা চতুর্কিকে আপনার ক্ষমতা বিভার করিজেছিলেন। অলেমান তাঁহার নিকটে উপহার প্রেরণ করেন, তাঁহার এই চতুরভার সম্রাট্ সুত্র হইরা পঞ্চিবেন। ভাহাতে সম্রাটের সহিত তাঁহার সভাব অকুর স্থিক। সংগ্রহণ গুরীবে রেহিতাস্ কুর্ম আক্রমণ ও ১৫০৭ পুটাকে উড়িব্যাবিজ্ঞ প্রশোধনের রাজ্য-সময়ের প্রধান বটনা। সমাট্ অকরর শাহের আগ্রহন তিনি রোহতাস্ মর্বের অবরোধ ত্যাগ করিরা শীর রাজ্যানীতে প্রত্যাবৃত্ত হল। কিন্তু ১৫৬৭ পুঃ অবল তিনি শীর বিখ্যাত সেনাপতি কালাপাহাড়কে (রাজ্) উৎকলে প্রেরণ করেন। কালাপাহাড় তথাকার শেব খাধীনরাজা মুকুলবেকে পরাত্ত করিরা উড়িব্যা অধিকার করিলেন এবং আনেক পেবস্থি ভালিয়া কেলিলেন। কালাপাহাড় প্রথমে আদ্ধান ছিলেন; পরে বলীর মুসলমান রাজ্যবংশীর কোন রমণীর প্রণরে পড়িরা মুসলমানধর্ম গ্রহণ করেন। কালাপাহাড় প্রথমে বাদ্ধান হরির ১৫০০ পুটাকে কামরূপ আক্রমণ করেন ও অসংখ্য দেবালর ও দেবস্থি ধ্বংস করেন। উড়িব্যা ও কামরূপের অধিবাসীরা এধনও কালাপাহাড়ের নাম ভূলে নাই।

খ্টীর ১৫৭৩ অব্দে স্থলেমানের মৃত্যু হয় এবং তাঁহার জ্যেত্রপুত্র বরাজিদ রাজা হন। আফগান সন্দারেরা বরাজিদের আচন্ত্ৰণে উত্যক্ত হইৱা পৰ ৰংগৱ জাঁহাকে বিনষ্ট করিবা জাঁহার ভ্ৰাতা হাউদকে বাজসিংহাসন প্ৰহান করেন। দাউৰ রাজ্য-শাসনভার এহণ করিয়াই বেখিলেন বে, তাঁহার ১৪০০০০ পদাতিক, ৪০০০ অখারোহী, ২০০০ কামানাদি অন্ত এবং ७,७०० इसी ७ वह गंछ यूड-मोका ध्यन्न दिशाहि। এই বিভুত সেনাদল লইরা তিনি সম্রাট্ অকবর শাহের সমকক চটতে পারেন ভাবিরা তাঁহার হৃদরে রাজ্যবিস্তারের বাসনা জন্মিল। তিনি বাঙ্গালা ও বেহারের দর্মত্র খনামে পুতবা পড়িতে হুকুম দিলেন এবং স্বমানিয়া নামক গাজিপুর সন্নিহিত একটা মোগল হুর্গ বলপুর্বক হত্তগত করিলেন। অকবর দাউদের বিরুদ্ধে দেনাপতি সুনাইম খাঁ এবং রাজা টোডরমল্লকে পাঠা-ইলেন। ১৫৭৪ খুটাকে কএকদিন অবরোধের পর পাটনা অধিকৃত হইল এবং বালালার মোগল-সৈত প্রবেশ করিল, দাউদ নৌকারোহণে উড়িব্যার প্লারন করিলেন। মেদিনীপুর এবং অলেখরের মধ্যবতী মোগলমারি (তুকারো) নামক স্থানে যোগল ও পাঠান সৈক্তের একটা ঘোরতর যুদ্ধ হয় (১৫৭৫ बु:)। खाधरम शाठानविरागतहे बारतत मखावना वहेता छेर्छ, কেবল রাজা ভোডরমলের অদৃইশ্বনে মোগলদিগেরই জয়লাত হুইল। দাউদ সময়ক্ষেত্র হুইতে পলারন করেন; কিন্তু মোগল-সেনাপজিল্লা কটক পর্যন্ত ভাঁহার অতুসরণ কলিলে, তিনি ভাঁহা-দিগের হতে আত্মসমর্শণ করিলেন এবং উাহাদিগের অভ্তাহে স্ক্রাটের প্রভূষাধীন কটক রাজ্যের শাসনাধিকার লাভ করেন।

[বাউন বাঁ সেখ :]
নেনাপড়ি মুনাইৰ বাঁ, ভাড়ানগৰ হইতে প্ৰত্যাগনন কৰিবা

পুনরার সৌড়ে রাজধানী করিলেন। তথক নোর বর্ধাকাল। দেই সমৃতি-শরিষ্যান্ত মহানগরী বহুকাল অনংক্ত ও পতিত থাকার তথাকার জনবার থারাপ চইরা পড়িরাছিল। তাহাতে জননিক ভূমি। উপযুক্ত বাসহান না থাকার অনেকে বৃতিকার পরন করিরা পীড়িত হইরা পড়িল। সহসা হারীতর উপহিত হইল। বেথিতে দেখিতে সহল সহল লোক মরিতে লাগিল। সুনাইম্ থাঁ কালগ্রাসে পতিত হইলেন; কত নৈনিক ও কর্মারী প্রাণত্যাগ করিল। এইরপে বে বৎসর বালালা মোগল-সাত্রাজ্যক্ত হর, সে বৎসর প্রাচীন রাজধানী গৌড় বিজন প্রদেশে পরিণত হইল। [গৌড় দেখ।]

पृष्ठस्थात् वरीत मानवस्थानः।

कृ यः	€:	यामपत्र	সামরিক দিলীখর
>666	395	থিজির খাঁ বাহাছর শাহ	শেরণাহ্
•	?	মহম্মদ স্থ্য	স্থিম শাহ্
>666	৯৬২	বাহাছর শাহ্	মহক্ষদ আদিব
>643	364	জলাল্ উজীন্ বিৰু মহস্ম	•
>648	292	কুলেমান স্ব্রামি	3
3490	دطھ	ব্য়াজিদ্ বিন্-স্লেমান	3
>699	242	দাউদ খাঁ বিন্ স্লেমান অব	দ্বর-সেশাপত্তি
		কুমাইম খাঁ ইহাকে ছোগলগ	াদানত করেন।
		(চতুর্থ শাসনকাল।)	

১৫৭৫ খুটান্দে গৌড়ের মহামারীতে মোগল-সর্দার মুনাইম খাঁ ভবলীলা শেব করিলে অক্ততম মোগল-সেনাপতি সারেম খাঁ কিছুকালের অক্ত বালালার শাসনভার এহণ করেন। মুনাইম খাঁর মৃত্যুর সংবাদ দিল্লীসরকারে পৌছিলে তথা হইতে শাসনকর্তা নিয়োগ হইবার পূর্বেই বালালার পাঠানগণ রাজ্যচ্যুত দাউদের অধীনে বিদ্রোহী হইরা বালালা অধিকার করিল। মোগল-সেমাপতি সারেম খাঁ বৃদ্ধে পরাজিত হইরা প্রথমে হাজিপুরে ও পরে পাটনার বাইরা আপ্রর লাভ করিলেন।

বধাসময়ে মুনাইমের মৃত্যুসংবাদ অক্বর পাহের কর্ণে পৌছিল। তিনি পঞ্চাবের শাসনকর্তা হসেন কুলী ধাঁ থানজহান্তে বাজালার পাসনকার্যে নিহুক্ত করিলেন। শীর
সৈল্পসামন্ত সংগ্রহপূর্বক বাজালার আসিতে হুসেন কুলীর
বিলম্ব ঘটিল। ইত্যুবসরে লাউদ ধাঁ প্রার ৫০ হাজার আখারোহী
পাঠান ও বছুপত প্রাতিক সংগ্রহ করিরা অক্বর পাহের
প্রতিক্ষী হইল।

ধান্ অহান্ সহলে তেলিয়াগড়ির নিকট উপনীত হইয়াই সন্মূৰে আফগান-লেনা দেখিতে পাইলেন (১৫৭৬ বঃ জঃ)। উত্তর পক্ষে একটা বঙ্গুকু হইয়া গেলঃ স্বটবিত আফগান নেলাকে সমূলে নির্দ্ধুল করিয়া বোগল-শাসমক্রী ক্রুপণ অগ্রসর হইছে লাগিলের। আগ্রহণের (রাজ্যহণ) নিকট ক্রেইং খা বরং রোগল-সেনার সহিত বুছার্থ সমূখীন হইলের। আজ্যান ও বোগলে বোর সংবর্থ উপস্থিত হইল, রেখিতে কেখিতে বোগলের গোলাঘাতে অসংখ্য আফ্যান নিহত হইল। আফ্যান-সেনাগতি দাউদের প্রাতা ক্রিক কর্রাণী ও অভ্যান্ত আনেক সেনাথ্যক রপকেরে প্রাণ বিসর্জন করিল। দাউব ধাঁ বলী হইলেন। রাজ্যোহিতাপরাধে তাহার প্রাণ দও হইল। খান্ কর্বন্ তাহার মতক স্তহতে আগ্রাহ্ম অক্বর্ন পাহের সমক্ষেণ্ঠাইরা বিলেন। বাউব ধাঁর সক্ষেণ্ডাহার। বাজানার পাঠানরাজ্য লোপ পাইল।

১৫৭৬ খুটাকে আগমহলত্ত রণজয় হাঁরা হলেন কুলী খাঁ
থান্ অহান বাজালার মদনকে উপবিট হাঁইলেন। তিনি উক্ত
যুক্তে লব্ধ সম্পত্তি ও হত্তী প্রান্তা টোডরমন্তের তবাবধানে
লক্ষাট্ সকালে পাঠাইরা দিলেন। অতংগর বেহার প্রকেশে
লুকান্তি পাঠানদিগকে পরাক করিরা তাঁহার প্রেরিভ সেনাপতি মুলংকর খাঁ রোহ্তাস হুর্গ অধিকার করিলেন। ক্রমে
উড়িরা। ও কোচবিহার প্রেরেশ মোগলের অধীনতা বীকার
করিল। ১৮৬ হিজিরার তাঁড়ার নিকট খান্ জহানের মৃত্যু হর।
এই অত্যর কালের মধ্যে তিনি বালালা, বেহার ও উড়িব্যাব
সর্ব্বত্র মোগল অধিকার বিতার করিরাছিলেন।

তাঁহার মৃত্যুর পর, ১৫৭৮ পুরীকে মূল:কর খাঁ তরবৃতি বালালার পাসনকর্তা নিযুক্ত হইলেন। তাঁহার সহকারিরপে রার পাত্রদাস ও মীর আদম রাজববিভাগের সহযোগী পরি-मर्नक, तिल्वि थाँ बजी अवर आयुग करछ ध्यशंम विচातक हरेश আসিলেন। সমাটু সামরিক বিভাগের উপর বিশেষ দৃষ্টি রাখিবার জন্ত স্বীর প্রতিনিধি মুক্তাফরের উপর আদেশ পাচাই-লেন ৷ ভদমুসারে তিনি পাঠান্দিগের জারণীর-আত্মসাৎকারী ও জাঁহার বৃত্তিভোগী ক্ষমতাশালী মোগল সন্দার্নিগের প্রত্যেকের निकृष्ठे ब्हेट्ड य य बावगीरवत बाववारवत विनाव ठाविरमन, ভাছাতে নৰ্দারেরা ক্লম্ক হইয়া উঠিল। কারণ তাহারা ঐ সম্পত্তিতে আপন অধীনত্ব ৰাজিবৰ্গকে ত্বান দিয়াছিল। জ্ৰোধ ক্ৰমে বিজ্ঞাতে পরিণত হইল। বিল্লোহবন্দি বেহার পর্যান্ত পরিব্যাপ্ত হইরাছিল। তথাকার সেনাধাক সক্ষকাবৃদীর অধীনে বিল্রোহি-রুল প্রথমে রাজবুপরিদর্শক প্রভৃতিকে শমনসদনে প্রেরণ করিল। তৎপর ভাহারা তাঁড়া অবরোধ করিরা শাসনকর্ত্তা वृक्षःकतरक निरुष्ठ कृतिन (১৫৮० थुः) धावर निष्क केवीन हरनम নামক একলন ওমরাহকে আপনাদের অধিনারক বলিয়া সন্থানিত করিব 🗠

এই বিপাৰের দিনে, সমান্তি অক্বর শাহ অহনৈত এবং শাসনকর্তা; লারনীরবার ও অনিদারনিধের অতি আদেশ দিরা রাজা
টোডরমরকে বালালা ও বেহারের শাসনকর্তা করিরা পাঠাইকেন। তথম বালালা ও বেহার বিজ্ঞোহি-শক্রসভুল। বিজ্ঞোহিদল বালালার মোগলাখিকার উৎসর করিতে বরনীল। কাজেই
ভিন্দুরাজগণ হিন্দুর পকাবলবন করিলেন। টোডরমর হিন্দু
অনিদারনিসকে হক্তসভ করিরা তাঁহাদের সাহাব্যে বিজ্ঞোহীদিগের
রসম বন্ধ করিরা দিলেন। পরে তিনি মুলের ও ভাগলপুর হইতে
বিজ্ঞোহিবল বিশেব কটে পড়িল। এই সময়ে ককেশ্লান্
বংশীর পাঠান সর্কার বাবা বার মৃত্যু হয়। বিজ্ঞোহিনল ভাহাতে
ভর্মনারাধ হইরা পড়ে।

এদিকে মহুমকাবৃদী সদলে বেহারে আসিলেন। কক্ষেণ্ লান
সর্দার জেকাবর্দী থাবাসপুর হইতে উড়ার খদলে প্রভাাবৃত্ত
চহলেন। আরচ্ বাহাছর পাটনা আক্রমণের স্থবোগ দেখিতে
লাগিলেন। রাজা টোডরমল সংবাদ পাইবা মাত্র উছাদের
বিক্লকে যুদ্ধ যাত্রা করিলেন। ১৯৮০ খুটানে রাজা সদলে হাজিপুরে
আসিলা ছাউনী করিলেন এবং উলীর পাহ মনস্বেরর ত্র্রাবহারের
কথা সন্ত্রাট্কে আনাইলেন। তদহুসারে সন্ত্রাট্ আজিম খাঁ
মীর্জাকোই নামক একজন ওমরাহকে বেহারের পাসনক্র্যা
করিলা পাঠাইরা দেন।

এই সমনে বাঁসী ও প্রান্তার শাসনকর্তা রাজনোহী হইলে
টোডরমর শাহবাজ বাঁকে তাহাদের বিফকে প্রেরণ করেন।
শাহবাজ বাঁ বাঁসী ও প্রায়াগের বিজ্ঞাহ দমন করিরা অবোধ্যার
বিজ্ঞাহ শান্তি করিলেন। ১৫৮১ পুরীকে অবোধ্যার শাসনকর্তা
মন্ত্রম ক্রেলণ ক্ষি রাজ্যচ্যত ও সণরিবারে বন্দী হন। তাঁহার
সম্ভ্রমর সম্পত্তি রাজকোবে সংগৃহীত হব।

র্থইরূপে বিদ্রোহের অনেকটা শান্তি হইল বটে, কিন্তু
বালানার প্রকৃত শান্তি হালিত হইল না। মুসলমান সেনাপতিদিগের সহিত হিল্পাভ টোডরমন্নের মনের মিল না হওরার
বড়ই বিভাট বাটতে লাগিল। আজিম খাঁ বেহারে আসিরা
সমুদার অবলা অবগত হইলেন। তিনি বিল্লোহিণলকে বলে
আনিতে না পারিরা ১৫৮২ খুটালে আপ্রার সম্রাটের সহিত
এ বিবরে প্রামণ করিতে সেলেন। তথার ছির হইল বে, রাজা
টোডরমন্নের ভালে আজিম খাঁকেই বালালার শাসনকর্তা
নিব্দ করা হউন। ওবজুলারে তিনি বান্ আজিম নাম প্রহণ
করিয়া বালালা, বেহার ও উদ্বিয়ার স্থানার হুইরা আলিলেন।
রাজা টোডরমন্ন বেহার ও উদ্বিয়ার স্থানার হুইরা আলিলেন।
রাজা টোডরমন্ন বেহার হুইতে প্রভালিকন করিয়া বোগলগামাভোর একটা রাজ্বহিনাৰ প্রভাত করেন। উহার নাম

"গুরাশীল তুমার অমা।" ইহাতে কর্ম ১৮টা সর্ভারে ও ৬৮২ মহলে; বেহার প্রবেশ গটা সর্ভারে ও ২০০ পর্পণার এবং উড়িয়া এটা সর্ভারে ও ৯৯টা প্রস্ণার বিভক্ত হইরাছিল। তৎকালে বালালার রাজ্য ১০৯৮৫৯৪৪১, টাকা, বেহারের ৫৪৪৭৯৮৪১, এবং উড়িয়ার ৪২৬৮৩০১১, টাকা থার্য হয়।

[डिजिनमा (मथ ।]

খান্ আজিম মীর্জা কোকা ১৫৮২ খুটাকে বাজালার আসিরাই
বিদ্রোহী জারগীরদারদিগের পরস্পরের মধ্যে বিবাদ বাধাইলেন।
মহ্ম কাবুলী খীর অধীনত্ব সেনাদল কর্ত্ত্ব পরিত্যক্ত হওরার
দেশীর জমিদারের অধীনে আশ্রন্ন তিক্ষা করিতে বাধ্য হইলেন।
এইরূপে একে একে সকল বিজ্ঞোহনেতাই নোগল সর্দারের
হত্তগত হইল। ৯৯০ হিজিরার খান্ আজিম তাঁড়া নগরী অধিকার করিলেন। এডদিনে এই তর্ত্তর বিজ্ঞোহের শাস্তি হইল।

মোগল আর্থীরলারদিগের এই বিদ্রোহের সমসে পাঠালেরা আকগান কতনুখার কর্তৃথাধীনে সমবেত হইরা সমুদার উড়িব্যার ও দামোদর নদ পর্যন্ত বালালা অধিকার করিল। আজিমের আদেশে করিদ্ উদীন্ বোধারি কতনু খাঁকে দমনার্থ অগ্রসর হন। কতনু খাঁ পরাজিত হইরা বন মধ্যে আশ্রর গ্রহণ করেন। এই সমরে সম্রাটের আদেশে খান্ আজিমকে বালালা ড্যাগ করিরা আগ্রার আসিতে হর; স্থতরাং বালালার বিদ্রোহাবস্থার বিশেব কোন পরিবর্তন সাধিত হয় নাই।

আগ্রার উপনীত হইরাই থান্ আজিমকে মোগল-সান্রাজ্যের সৈনাপত্য প্রহণ করিতে হইল; কাজেই সন্ত্রাট্ অকবর লাহ লাহরাজ থাঁ ক্লোকে বহুসংখ্যক সেনা ও মুসলমান সর্দারগণসহ বাজালার পাঠাইতে বাধ্য হইলেন। সন্ত্রাটের আলেশ মত লাহরাজ বোড়াবাটে ক্কেল্লানবংশীর বিজ্ঞোহী পাঠানদিগকে বিপর্যন্ত করিলেন। বিজয়ী মোগল সেনা ক্রম্শঃ অগ্রসর হইরা ব্রহ্মপুত্রতীর পর্যন্ত উত্তর্গক মোগলাধিকারভুক্ত করিল।

এই সংখাদে বুইচিত হইরা সন্ত্রাট্ট শাহবাজকেই বাজালার পাসনকর্তা করিরাছিলেন। রাজ্যপরিচাসনভার করে নইরা শাহবাজ বড়ই বিত্রত হইরা পড়িলেন। তিনি কক্ষেপান্য ও জন্তান্ত বিত্রোহীদিগকে নমন করা অথবা তাহাদের জারদীর বাজেরাপ্ত করা একরপ অসম্ভব বোধ করিলেন। অবলেবে তিনি বাধ্য হইয়াই ভাহাদিগকে ব ব অবিকৃত সম্পত্তি নির্বিবাদে ভোগ করিতে আকেন বিশেন। আক্সান সন্ধার কভনু খাঁর সহিত ভাহার একটা সন্ধি হইল, ভাহাতে ভিনি ভাহাদিগকে উড়িব্যা প্রধানের রাজ্য করিতে অন্তর্নতি বিশেন। কথা রহিল, গার্ডান্তান বাজালা পরিত্যাগ করিয়া বাইবে, আর বাজালা আক্রমণ করিবে না।

লাহ থাজের এই কার্য নিরী নরবারে অন্থবাদিত হয় নাই, তাহারা কলেবরকে উৎকোচগ্রাহী বিবেচনা করিবা তৎপদে উলীর খানু হেরেবীকে নিযুক্ত করিলেন এবং পাহ্ বাজকে আগ্রার প্রভাবিত হইতে আদেশ বিলেন। শাহ্ বাজ রাজধানীতে উপনীত হইলে তিনি তিন বৎসরের অন্ত কারাক্ত হন।

উজীর খান্ হেরেবী বালালার মস্নলে আরোহণ করিরা বেলী কিছু পরিবর্তন সাধন করিতে পারেন নাই, তিনি উজ বর্বে (১৪৮৭ বৃষ্টাব্দে) তাঁড়া নগরে প্রাণত্যাগ করেন।

উজীর ধার মৃত্যাগংবাদ আগ্রা নরবারে পৌছিলে স্থাট্

ক্ষ্বর শাহ বেহার ও বালালার শাসনভার রাজা মানসিংহের

হতে অর্পন করিরা খীর উলিয় চিত্তের শান্তি বিধান করিলেন,

এই সমরে মানসিংহ পেশাবর প্রদেশে আফগান লাতির বিলক্ষে

র্যাপৃত ছিলেন,তিনি বঙ্গশাসনভার প্রহণ না করা পর্যান্ত পাটনার
সেনাধ্যক্ষ সৈরদ ধাঁর প্রতি বঙ্গরাভ্যরক্ষার ভার অর্পিত হুইল।

৯৯৭ হিজিয়ার (১৫৮৯ খুটাকে) মানসিংহ পাটনার পদার্পন করিরা গুনিতে পাইলেন বে, হাজীপুরের ভুমাধিকারী প্রণমল খেছরিরা এই স্থানে বিলোহী হইরা বহু অর্থ সূঠন করিরাছে। রাজা মানসিংহ গুঁহার এই হুর্ব্যবহারের জক্স গুঁহাকে সমূচিত শান্তি নিতে অগ্রসর হইলেন। হাজীপুরে রাজা পুরণমল মোগল-স্ত্রাটের বক্ততা বীকার করিলে তিনি তাহাকে মুক্তিদান করেন, এই সমরে মানসিংহ স্থান বেহারে থাকিরা সৈরদ খাঁকে বীর সহকারিরপে গুঁড়ার রাখিরা নেন, এবং ঘোড়াঘাটের মোগল-সেনাপতিনিসের অর্থপুরুতা উপশমনার্থ বীর পুত্র জগৎসিংহকে তাহাদের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেন। মোগল-সন্ধারগণ রাজ-সৈল্পর আগমনে ভীত হইরা বন মধ্যে আশ্রর গ্রহণ করেন।

অতঃপর রোহ তাস্তর্গ-সংখারাতে রাজা মানসিংহ ২১৮ হিজিরার উড়িয়ারাজ্য প্নক্ষারের সকল করেন। প্রথমে তিনি কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই; তাঁহার পুত্র জগৎসিংহ এই বৃদ্ধে পার্চানদিগের হতে পতিত হন। ইহার কিছুকাল পরে কতপু বান মৃত্যু হইলে পার্চানেরা জগৎসিংহক প্রভাপে করিয়া সন্মি প্রার্থা হর এবং স্রাটের জবীন বাকিতে বীকার করে; কেবল মাত্র পুণাতীর্থ জগলাধক্তের রাজা মানসিংহের অধিকারে বাকে। ছুই রুৎসর পরে পার্চানেরা জগলাপক্তের পুট করে; জাহাকে রাজা মানসিংহের অধিকারে বাকে। ছুই রুৎসর পরে পার্চানেরা জগলাপক্তের পুট করে; জাহাকে রাজা মানসিংহ জাহারিগকে প্রবর্গয়েবাতীরে সম্পূর্ণ-রুপে পরাক্ত করিয়া উড়িয়া প্রান্থে পুনর্বার বোসকরাজাভুক্ত করেন। জনজর তিনি জাগনহল সগরকে রাজনহল নামে জাতিহিত করিয়া তবার ছাজবানী হাপন এবং রাজন্যানান ও প্রস্তিনি করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়াত্র করেন।

১৫৯৫ খৃঃ আলে ভোচনেহার-রাজের ভালিরীর সহিত ভাহার বিবাহ হর। ১৫৯৮ খৃঃ আলে হকিলাপনে নোলল-বাহিনীর অধিনারকরণে সলে বাইবার রাজ সরাই তাঁহাজে রাজধানীতে আহার করেন। এই সমরে ভিনি জগৎসিংহজে প্রভিনিত্রি রাখিরা যান। কিছু অরকাল বাংলার জগৎসিংহ বার্মকালা সংবরণ করিলে, পাঠানেরা ওসমান খানের অধীনে উদ্বিদ্যা এবং বাজালার কিরবংশ কর করে। এই সংবাদ ভানিরা রাজালার কিরবংশ কর করে। এই সংবাদ ভানিরা রাজালার প্রভাগার প্রভাগারন করেন এবং বর্জনার ও মানিবিংহ ভরার বার্লালার প্রভাগারন হানে পাঠানিবিগকে পরাক্রানার্দের মধ্যবর্ত্তী সেরপ্রনামক হানে পাঠানিবিগকে পরাক্রানার্দ্রের মধ্যবর্ত্তী সেরপ্রনামক হানে পাঠানিবিগকে পরাক্রানার্দ্রের মধ্যবর্ত্তী প্রেরপ্রনামক হানে পাঠানিবিগকে পরাক্রানার্দ্রের স্বার্মির পারে ভিনি করেক বংসর স্বচালকরণে রাম্বর্জার প্রভাগার্ম্বন করিয়াছিলেন।

১৬০৪ খুরীন্দে রাজা নানসিংহ বাজানার খাসনভার ভ্যাগ করিলে সরাট তংপবে আবৃল মজিদ আসক থান্কে নিবৃক্ত করেন, কিন্তু তাঁহাকে অধিক দিম রাজ্যার্থ পরিদর্শন করিছে হর নাই। কারণ ১৬০৫ খুঃ অন্ধে অক্ষর পাহের মৃত্যু ঘটিলে তৎপুত্র সম্রাট্ জাহাজীর রাজ্যাধিকার প্রাপ্ত হন। অত্যন্ত্রকান পরেই তিনি মানসিংহকে বড়বন্ত্রকারী জানিরা হানাত্তরিত করিবার অভিপ্রারে বজরাজ্য-শাসনে নিরোগ করেন। তথাকার বিদ্রোহী আকগানদিগকে মোগল-পদামভ রাখিবার জন্তু সম্রাট্ তাঁহাকে অবিলবে বাজালার অপ্রসর হইতে আদেশ দেন। আহবলিক ইতিহাস পাঠে জানা যায় বে, মানসিংহ এইবার বাজালার আসিরা বাজালার মহাবীর বশোরপতি মহারাজ প্রতাপাদিত্যকে পরাজিত করিরা সমগ্র ক্ষরবন অধিকারজুক্ত করিরাছিলেন। প্রতাপাদিত্য ও মানসিংহ দেখ।

১৬-৬ খুটালে সরাট্ আহানীরের আনেশে মানসিংহ রাজধানীতে ফিরিরা বান এবং বাত্রীপ্তা কুত্ব উদীন কোকন্-তান বালালার রাজগ্রতিনিধি হইরা আইনেন। কুত্ব উদীন্ খাঁ কোকগতান কোকাকে বালালার খাননকর্ত্বদান করার উদ্দেশ্রই কেবল আলী কুলী শের আক্সানের হন্ত হইতে লগতের ললানভূতা স্থলরী মেহেন্থ-উদ্লিনাকে হন্তগত করা। কিরপ বড়ব্যে শের আক্সান নিহত এবং তাঁহার প্রির্ভনা পত্নী লাহালীরের অকগত হইরাছিল, তাহা ইতিহানে উদ্ধান অক্ষরে লিখিত আহে। [আহালীর, নুরজহান ও শের আক্সান কেখ]

শের আকগাদের সহিত হুছে কুত্ব বা নিহত হাইলে সমাট, বড়ই নগাণীড়িত হম এবং অনিগতে ১০০৭ পুটাতে বহারের শাসনকর্মা আহালীর কুণী বাদ্ কাব্দীতে হালাগার প্রতিনিধিতে বরণ করেন। ইনি ক্ষেপ করিব ভিয়েক, তদহুরণ অভ্যানারেই বেহারনানীকে উভ্যক্ত করিব নিয়াকেন।

বালালার ওভানৃষ্ট যে, তাঁহাকে বছকাল জীবিত থাকিতে হর নাই। গর্বাধিকমাত্র জীবিত থাকিয়া তিনি কালের করাল কবলে নিপ্তিত হইলে সমাট্ জাহালীর ১০৮৭ হিজিরার শেখ আলা উদ্দীন্ ইস্লাম খাঁকে বালালার মসনদে এবং আফ্জল খাঁকে বেহারের লাসনকর্ত্পদে নিযুক্ত করেন। ইস্লাম খান্ রাজনহল হইতে ঢাকা সহরে রাজপাট পরিবর্ত্তন করিয়া উহার নাম জাহালীর-নগর রাখেন।

এই সমরে আরাকান ও চট্টগ্রামবাসী পর্ক দীর্জ দহাদিগের জত্যাচারে নিয়বল উৎসর প্রায় হইতে থাকে। ১৬০৯ খুটালে সিবাটিয়ান গঞালে সন্দীপ অধিকার করেন। তথাকার মুসলমান সেনানায়ক ফতে থাঁ উপায়াস্তর না দেখিয়া একটা ক্ষুদ্র হর্গে আশ্রম লন।

এই সমরে ওসমান বাঁর অধীনত্ব পাঠানেরা পুনরার অত্ত ধারণ করে। ইশ্লাম থাঁ হাজাত থাঁ নামক একজন লক সৈজাধ্যক্ষকে তাহাদিগের বিক্লছে প্রেরণ করেন। পাঠানেরা সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হয়; ওসমান যুক্তেনিহত হন এবং তদীয় দ্রাতা, পুত্র ও আত্মীয়কুটুখগণ সম্রাটের বস্তাতা খীকার করেন (১৯১২ খুটারা)।

এই বিদ্রোহাবকাশে কুতব নামে একজন রোহিলা আকগান জাহালীরের জ্যেষ্ঠ পুত্র ধসকর পরিচর দিয়া বেহারে বিদ্রোহ উপস্থিত করে এবং পাটনা নগরী অধিকার করিয়া লয়। শাসনকর্তা আফজ্ল খাঁ তথন গাজিপুরে ছিলেন। তিনি এই সংবাদ ওনিয়া সসৈত্রে পাটনা অভিমুথে যাত্রা করিলেন। ছল্মবেলী থদ্ক পাটনা হইতে কয়েক ক্রোল দ্রে যুদ্ধার্থ অগ্রসর হইল, ক্ষিত্র বৃদ্ধে পরাজিত হওয়ায় পুনরায় পাটনা নগরীতে আশ্রয় গ্রহণ করিল; শাসনক্রা উক্ত নগরী অবরোধ করিলেন। পরিশেবে দুরস্থ গৃহছাদ হইতে নিক্ষিপ্ত ইউকের আখাতে কুতবের প্রাণবায়্ বহির্গত হয়। [পাটনা দেখ।]

ইশ্লাম খাঁর মৃত্যুর পরে (১৬১৩ খুটান্সে) তাঁহার প্রাতা কালিম খাঁ সম্রাটের আদেলে বাঙ্গালা ও উড়িয়ার স্থবাদার হন। কালিম খাঁর রাজ্যশাসনকালে গঞ্জানে বিখাস্ঘাতকতা হারা আরাকান-রাজের যুক্তরাহাজগুলি হন্তগত করিরা আরাকানের উপকূল প্রদেশ পূর্ক প্রারাদানগরীয় পর্ক গ্রীজনিগকে আরাকান জর করিতে আহ্বান করে। রাজা ওলন্দাজনিগের সাহারো পর্ক শীজনিগকে পরাজিত করেন; এবং সন্হীপ আক্রমণ ও অধিকার করেন।

অতঃশর আরাকানের মগেরা বারংবার বাজানার পূর্বানকিণ প্রদেশ পূর্তুন করিরা বাজালা উৎসর করিতে থাকে। এই কারণে সমাট্ জাহালীর কাশিম খার প্রতি অসক্তই হইরা তাঁহাকে পদ- চ্যুত করিলেন এবং ন্র-জহানের প্রান্তা ইত্রাহিম খাঁ। কতে জকর্কে বালালা ও উড়িয়ার স্থবাদার করিয়া পাঠাইলেন (১৬১৮ খঃ)।

ইআহিমের সময়ে বালালার বাণিজ্যের বিশেব উরতি হয় ।

আাথ্যার রাজসভাসদ্মশুলীর নিকট ঢাকার স্কৃচিকণ কাপড় এবং
মালহহের পট্টবন্তের বিশেব আদর হইরাছিল। এই সময়ে
ইংরাজ কোম্পানীর একেন্টগণ পাটনার আসিরা একটা কুঠা
স্থাপন করেন (১৬২০ খুটাজে)। ইআহিমের শাসনকালে বালালা-দেশে পূর্ণ শান্তি বিরাজ করিরাছিল। সহসা (১৬২৩ খুঃ) তাহার
পরিবর্ত্তন ঘটল; শাহ জহান শিতা জাহালীরের বিক্লছে জন্ত্রধারণপূর্বক দক্ষিণাপথে পরাজিত হইরা বালালার প্রবেশ করিলেন।
ইত্রাহিম খা তাহার সহিত যুছে নিহত হইলেন। বালালা
ও বেহারে প্রায় হুই বংসর রাজত্ব করিরা শাহ জহান স্থাট্প্রেরিত সৈত্তের নিকট পরাত্ত হইলেন এবং আত্মসমর্শণ করিরা
পিতার নিকট ক্রমা প্রার্থনা ক্রিলেন। তাহার প্রার্থনা পূর্ণ
হইল, কিন্তু এই প্রদেশে অস্তু শাসনকর্তা নিযুক্ত হইল।

শাহ জহানের পরে, অয়দিন মধ্যেই (১৬২৪-২৮ খুঃ) মহক্ত থাঁ, তৎপুত্ৰ থানুকাদ থাঁ, মকরম থাঁও ফিদাই থাঁ নামে যে কয়-क्न करम करम बाजानात भागनकर्छ। इन, छौहापिरशत प्रमुख উল্লেখযোগ্য কোন ঘটনাই ঘটে নাই। মকরম গাঁর রাজ্যশাসন সময়ে সম্রাট্ মীর্জা রুন্তম নামক এক ব্যক্তি বেহারের স্থবাদার নিযুক্ত করেন। ১৬২৮ অব্দে শাহ জহান সম্রাট্ হইরা ফিদাই খাঁকে পদ্চ্যত করিয়া স্বীয় প্রিয়পাত্র কাশিম খাঁ জবুনিকে वाजानात अवानाती भाग नियुक्त कतिरानन। এই সময়ে छशनी ও চট্টগ্রামে পর্কুণীঞ্জদিগের স্থরক্ষিত কুঠী ছিল। এ দেশে তাঁহাদিগের যথেষ্ঠ ক্ষমতাও বিস্তুত হইয়াছিল। শাহ জহান্ যধন বাঙ্গালায় ছিলেন, তথনও তিনি পর্ত্ত গীব্দের অত্যাচার লক্ষ্য করিয়াছিলেন, তাহারা এউদ্দেশবাদীদিগকে বলপুর্বক খুষ্টান-ধর্ম্মে দীক্ষিত করিত। ইহাতে বৈদেশিক পর্কুণীজ্ঞাতির প্রতি কুছ হইয়া সম্রাটু কাশিম খাঁর প্রতি তাঁহাদিগের সহিত যুদ্ধ করি-বার আদেশ দিলেন। স্থবাদার স্বীয় পুত্র ইনারতুল্লাকে তদ্বিজন্দে পাঠাইয়া হুগলি অধিকার ক্রিলেন (১৬৩২ খুঃ)। সেই অবধি এদেশে পর্ত্ত্বীঞ্জদিগের প্রভাব কমিল, হগলি রাজবন্দর এবং व्यथान वानिकाञ्चान रहेवा फ्रेंठिन । এই সমন্ন रहेटिंड मरावारमन ছঃখের দিন আরম্ভ হইল। রাজকর্মচারিগণ তথা হইতে ছগলিতে চলিয়া আসায় জমশংই সপ্রগ্রাম পরিতাক্ত হইয়াছিল।

কাশিম খাঁর পরে আন্তিম গান্ স্থবাধার হন, তাঁহাকে দেশ-রক্ষাকার্য্যে অপক্ত দেখির। সভ্রাট, তৎপত্তে ইস্লাম খাঁ। মণ্ছ দিকে নিযুক্ত করেন(১৬৩৭ খুঃ)। অল্লকাল মধ্যে (১৬৩৮ খুঃ) চট্টগ্রামের শাসনকর্ত্তা মুকুট রাত্র আন্তাকান-রাজের অধীনতা পরিত্যাপপুর্কক মোগণগদ্রাটের বশ্রতাবীকার করিলেন। আসামবাসীরা বালালা আক্রমণ করিলা পরাজিত হইল (১৯৩৮ খুঃ); এবং ইল্লাম খাঁ আসামে প্রবেশপূর্জক অনেকগুলি হুর্গ হন্তগভ করিলেন। ভিনি কোচবেহার-মুদ্ধে জয়লাভ করিলাছিলেন। কিন্তু উজিরী পাল প্রাপ্ত হইলা শীন্তই আগ্রাম প্রতিগমন করিলেন। তখন সম্রাটের বিতীয় পুত্র স্বশুতান মহম্মদ স্থলা বালালায় স্থবাদার হুইলেন।

১৬০৮ অব্দে ভোজপুরের রাজা বিদ্রোহী হন এবং জাঁহাকে শান্তি দিবার জন্ম শাহ জহান স্বীর প্রির দেনাপতি আবহুলা ধাঁকে বেহারের শাসনকর্তুপদে নিযুক্ত করেন। আবহুলা যাইরা ভোজপুরের হুর্গ অধিকার করেন ও রাজার ছিন মত্তক সম্রাটের নিকট পাঠান।

স্থলা শাসনভার প্রাপ্ত হইয়াই ঢাকা পরিত্যাগপুর্বক পুনরার রাজমহলে রাজধানী করেন। এই সমরে ন্র-জহানের প্রাতৃপুত্র সারেক্তা খাঁ। বেহারের শাসনকর্ত্বপদে নিযুক্ত হন। স্থলার আমলে বালালায় ইংরাজ-বাণিজা ব্ছমূল হয়।

স্থলার রাজ্যশাসনকালে করেক বৎসর প্রজাগণ স্থাৎ স্বছন্দে বাস করিয়াছিল। ১৬ং৭ খুঃ অন্দে তিনি বালালার রাজ্যবের নৃতন হিসাব প্রস্তুত করেন। ইহাতে বঙ্গভূমি ৩৪ সরকারে ও ১৩৫০ মহলে বিভক্ত হইরা ১,৩১,১৫,৯০৭ টাকা রাজ্যব নির্দ্ধারিত হয়। অক্বর শাহের পরে এদেশে মোগলদিগের অধিকার বৃদ্ধিই এ প্রকার রাজ্যবৃদ্ধির প্রধান হেতু। প্রার এই সময়েই উড়িয়া ১২টা সরকার ও ২৭৬ মহলে বিভক্ত হইরা উহার রাজ্যব ৫৯,৬১,৪৯৭ টাকা নির্দ্ধারিত হয়। ১৬৮৫ খুঃ অন্দে বেহারে বন্দোবন্ত হয়। এতদ্বারা বেহার প্রদেশ ৮টা সরকার ও ২৪৬ পরগণার বিভক্ত হইয়া উহার ৮৫১৫৬৮৩ টাকা রাজ্যব নির্দ্ধারিত হয়।

সমাট্ শাহ জহানের পীড়া হইলে হুজা সামাজ্য-লোভে জাগ্রা যাত্রা করেন; কিন্তু বারাণদীর নিকটে দারার তনর হুলেমানের সহিত যুদ্ধে পরাজিত হইরা বালালার প্রত্যায়ত্ত হন (১৯৪৮ খঃ)।

অরক্ষের দারাকে পরাস্ত এবং মুরাদকে বন্দী করির।
মোগল-সিংহাসন হস্তগত করেন। অতঃপর প্রয়াগের
(আলাহাবাদের) নিকটে ফুজার সহিত অরক্ষেত্রের একটা

মুদ্ধ ঘটে। ঐ বুদ্ধে ফুজা প্রাতৃহক্তে পরাজিত হন (১৬৫৯ খৃঃ)।

ফুজা প্রথমে রাজমহলে ও তদনস্তর তাঁড়ার আশ্রর গ্রহণ
করিরাছিলেন। সেনাপতি মীর জ্বা তাঁহার পশ্চাঘতী হইলে

তিনি বাখালা ছাড়িরা আরাকান রাজ্যে আশ্রর গ্রহণ করিতে
বাধ্য করেন। [ফুজা দেখ।]

শ্বনন্ধর সেনাপতি মহলা সৈরদ মীর শুরা নবাব মুরাজিম
বাঁ বান্ বানান্ সিপা সালর স্থবাদার হইরা ঢাকা নগরীতে
রাজধানী করিলেন। ১৬৬ অলে তিনি কোচবেহার জর করেন;
এবং পর বংসর আসাম আক্রমণ করিরা উহার রাজধানী হস্তগত
করেন। কিন্তু বর্ধাকাল উপস্থিত হইলে, তাহার সৈঞ্গণ
শীড়িত হইতে লাগিল দেখিয়া তিনি প্রত্যাগমন করিতে বাধা
হইলেন। ঢাকার পৌছিয়া অয়কাল পরেই তাহার মৃত্যু হর
(১৬৬৪ বুঃ)।

মীর ক্ষার পরে নুর জাহানের প্রাভূপ্ত সারেতা থাঁ বালালার ক্ষালার হন এবং সমাট্ অরলজেবের ভূতীর পুত্র ক্লতান মহম্মদ আজিম বেহারের শাসনকর্ত্পদে নিযুক্ত হইলেন। মধ্যে তিন বংসর ব্যতীত সারেতা থাঁ ১৬৬৪ হইতে ১৬৮১ খুটাল পর্যান্ত বালালা শাসন করিয়াছিলেন। তাঁহার সময়ে ফরাসিরা চল্দননগরে, (১৬৭৩ খুঃ) এবং দিনেমার ও ওললাজেরা চুঁচুড়ার কুঠী ভাপন করেন। আরাকানরাজ ক্লার প্রতি অসদাচরণ করিয়া যথেপিযুক্ত শান্তি না পাওরার সাহসী হইয়া মধ্যে মধ্যে বালালার দক্ষিণ-পূর্ক প্রদেশ সুঠন করিতেছিল; সারেতা থাঁ। আরাকান আক্রমণ করিয়া তথাকার রাজাকে ব্যতিব্যক্ত করিয়া তুলিলেন এবং চট্টগ্রাম সম্পূর্ণরূপে বালালাভূক্ত করিলেন।

সায়েতা খাঁ বেছায় বলসিংহাসন ত্যাগ করিলে, সমাট্
অরলজেবের অভিমতে ফিলাই খাঁ আজিম খাঁ উপাধিসহ ১৬৭৭
খুটালে ঢাকায় উপনীত হন। পর বৎসর সেপানে তাহার
মৃত্যু হইলে ১৬৭৮ খুটালে স্মাট অরলজেবের তৃতীয় প্রত্র স্বলতান
মহম্মদ আজিম বালালায় স্থানার হন। তিনি উক্ত বর্ষের
শেষকালে আসামীদিগের উপদ্রব দমনার্থ সেনাদল প্রেরণ
করেন। ইংরাজ ও ওললাজেরা এই সময়ে ঢাকায় কুঠা
নির্মাণ করিয়াছিলেন।

যোধপুর-রাজকুমার রাজা যশোবস্ত সিংছের নাবালক পুত্রের রাজ্যাধিকার লইয়া সম্রাটের সহিত রাজপুতদিগের বিবাদের স্ত্রপাত হয়, ঐ সময়ে দক্ষিণে শিবাজীর অধীনে মহারাষ্ট্রায়ণণ মোগলসম্রাটের অধীনতা অধীকার করে; এই গোলঘোগে বিত্রত সম্রাট্ শীর পুত্রকে বালালা হইতে নিকটে আনাইয়া রাজপুত সামস্তর্গণের বিক্তমে প্রেরণ করেন। ভাঁহার আদেশে নবাব সারেস্তা বা আমীর উল্ওমরা বালালার স্থবাদার হইয়া আইসেন।

এবার সারেকা খাঁর অত্যাচারের মাআ বিশুণ বাড়িয়া উঠে।
তিনি জিজিয়া কর আঘারের জন্ম হিন্দুর মন্দিরাদি চুণ বিচুণ্
করিতে লাগিলেন। তিনি খুটানের নিকট হইতেও বলপুর্কক
জিজিয়া গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই সময়ে মিঃ হেজেন্ ইট
ইতিয়া কোম্পানির প্রথম গ্রণির নিযুক্ত হন। ওক লইয়া

নবাবের সহিত কোন্দানীর বিবাদ বাঁধে। ছুএকটা বঙ্গুছের পর ইংরাজগণ সন্ধি করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। ইংরাজেরা হিজলী হইতে প্রভাষ্টীতে প্রতাবৃদ্ধ হইলেন। কোন্দানীর সদজেরা প্নরার বৃদ্ধার্থ রক্তত হইলে, নবাব নানারণে ইংরাজ-দিগকে নির্মিত করেন। এই সমরে ইংরাজনৈত্তকর্তৃক বালেবর স্টিত হর। ইংরাজনিগকে মোগল-সার্রাজ্য হইতে বহিত্ত করিবার জন্ত সারেতা বাঁ দিল্লী ইইতে পরওরানা আনাইরা ছিলেন। উহার কিছু পরে তিনি বালালার শাসনকর্তৃক ত্যাগ করেন। [সারেতা বাঁ ও ইট ইতিয়া কোন্দানী দেখ।]

তদলন্তর ১৬৮৯ খুং জং নবাব ইত্রাহিম ধাঁ বাদালার শাঁদনকর্ত্বলৈ নিযুক্ত হন। পর বংসর তিনি স্থাট্ অরদ্ধেরের
নিকট হইতে ইংরাজনিগকে এদেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিবার
জন্মতি আনাইরা দেন। ইহার কারণ এই যে, ইংরাজেরা
মোগলদিগের করেকথান আহাল হক্ত্রগত করেন এবং মুসলমানদিগকে ললপথে ভারতবর্ব হইতে মন্তার বাইতে দেন নাই।
ইত্রাহিম ধাঁর আহ্বানে চার্ণক স্বহলবলে প্রভ্যাগমন করেন
(১৬৯০ বং)। অনন্তর সমাটের হকুম আসিল বে, বাণিল্যার্থ
ইংরাজদিগের বার্থিক ০০০০ টাকার অধিক ওছ দিতে হইবে
না (১৬৯১)। ইহার পরে বাদশাহ চুইবার ইংরাজদিগের
বাণিল্য বন্ধ করিতে আদেশ দেন; ইত্রাহিম ধাঁর অন্তর্গতে
ভাহাদিগের কোন বিপদ ঘটে নাই।

১৬৯৬ খৃঃ অবে শোডাসিংহ নামে বর্জমামের একজন জমিলার, বর্জমানাধিপতি রাজা ক্ষরামের বিক্তমে অন্তবারণ করেন
এবং ইহিম বা নামে একজন পাঠান দলপতির সঙ্গে যোগ দিরা
রাজাকে নিহত ও চতুপার্থবর্তী দেশ বুঠন করিলেন। হগলী
ভাষাদিগের হত্তগত হয়; চুচুড়ার ওলন্দারেরা, চন্দননগরে
করাসিরা এবং কলিকাডার ইংরাজেরা আয়রকা করিতে নবাবের
অন্তমভি পান। এই স্থবোগে ইংরাজেরা "ফোর্ট উইলিরম"
হর্গ নির্দাশ করিতে আরম্ভ করেন।

ওগলাজদিগের সাহাব্যে ইত্রাহিম খা হগলী পুনর্ধিকার করেন। পোতানিংহ বর্জনান রাজকুমারীর ধর্মনান করিতে গিরা উাহারই অপ্রাথাতে প্রাণ বিসর্জন দেন। এই রাজ্য বিমবের সমরে সঁরাট অর্থনিকেরের শৌর আজিম উস্নান বালালা, বেহার ও উড়িয়ার নালনকর্তী হইল আগমন করেন। স্বালারের পুত্র কর্মহন্ত খা রাজসহলের নিকট রহিম খাঁকে পরাজিত করেন (১৯৯৮ বা)। পর বংশর বর্জনানের নিকট সংগ্রামে রহিম বার বৃদ্ধা বটে এবং ভবীর অন্তর্জনবৈর মধ্যে কিয়নংশ নিকত এবং কিয়নংশ বোলনবল্যক হব। আজিম উস্নানের নিকট হইতে ইংলারেরা হ্রাক্টের, গোবিক্সার অবং ক্ষিত্যতা

এই করেকটা বৌলা ক্রন্ন করিবার অনুমতি পান (১৯৯৮ শ্ব:)।
এই সমরে ভারতবর্ধের সহিত বালিজ্য করিবার নিমিত আর
একটা ইংরাজ কোম্পানি স্থাপিত হয়। প্রাতন এবং নৃত্ন এই
ছই কোম্পানির প্রশাস বিবাদে উভরের বার্থহানি হয় দেখিরা,
কোম্পানির ্নিলিভ ছইল (১৭-৬ শ্ব:) এবং উভরের হোগে
কোট উইলিজন ছবে ১৩- জন ব্রোশীর সৈনিক রক্ষিত হইল।

আজিম উন্নানের পাসনকালে বুর্ণিবকুলি খান্ বাজানার বেওরান হইরা আনেন (১৭০১ খুঃ)। তিনি বরিক্র ব্রাক্তান ছিবেন। পরে পারক্তবেশীর বিপিক্ হাজি প্রকিরা কর্তৃক ক্রীত ও বুসলমানধর্মে বীক্ষিত হরেন। ইহার পূর্বের্ম ক্ষকর পাহের সময় হইতে বাজালার বেওরান ও নাজিমের পদে ভিন্ন ভারতি নিযুক্ত ছিলেন। দেওরান রাজস্ব আলার করিতেন এবং আরবারের প্রতি দৃষ্টি রাখিতেন। নাজিমের প্রতি বেশারকা ও শান্তিরকার ভার ছিল, এবং তাঁহার অধীনে সৈম্ভ ও শান্তিরকার লাবী নাজিম থাকিতেন। বাদশাহের ইহাই আনে বিত্র বিরুদ্ধ বিরুদ্ধ

মুর্শিদকুলি বঁ। দেওয়ান হইলে তদীয় পরাম্পাত্সারে সম্রাট বালালার জারণীরবারদিগের ভূমি খাল করিয়া লইরা ভাহার সম পরিমাণ ভূমি উড়িয়া প্রভৃতি বেবলবস্তী প্রলেশে জারগীর্ম্বরূপ প্রদান করিলেন। এইরূপে ও অক্তাক্ত উপারে এদেশের ব্রাক্তর বুদ্ধি করিয়া মুর্শিদ বাদশাহের প্রির হইরা উঠিলেন। কিন্তু ব্যর-বিবন্ধে অভ্যস্ত সভৰ্ক হওৱাতে এবং যুদ্ধবল জারণীরদারদ্বিগকে অ্যব্রট করাতে, তিনি নাজিমের বিব্যুটিতে পড়িলেন। আছিম উদ্সান একৰাৰ তাঁহাকে মারিয়া কেলিবার চেষ্টা করিলেন; কিছ ভাহাতে হুডকার্য হইতে পারিলেন না। অন্তর মুর্লিদ कृति थैं। ঢाकांत्र ताकशानी दाश श्रविश नरह वृत्तिता, मुक्यमा-বাবে খীর বাগছান ছির করিরা আপনার নামাছলারে উক্ত नशरप्रम नाम मूक्तिशावाच प्राचित्नम । এই नक्न मःवाच गहारिक निक्रि (नीहिरक फिलि चांकिक केंग्नानरक कर्जना ক্ষিয়া পত্ৰ লিখিলেন একং ৰাজালা পরিস্তাপ ক্ষিয়া বেছার बहिबाद आदिन विराम । शद वर्गद बुव्लिय विक्रणाशस्त्र বাইরা স্বাটের সহিত সাক্ষাৎ করিরা আর্বারের হিসাব क्षांम विक्रित्मम । क्षांच कार्यक्रका व्यक्ति योग्नार अञ्चल मक्ट इरेलम (र, छाहारक हाकामा थ छेक्रियांत रहत्वानी अवर नरकारी माविकारत निवृक्त केतिराम ।

১৭০৭ খা অবে খীন প্র করণ নিররকে প্রতিনিধি রাখিরা আজিম উস্পান দিলীতে প্রত্যাগদন করেন এবং তাহার অর্থ ও সৈপ্তবলে পর বংসর তাঁহার পিতা পাহ আলম্ বাহাছর পাহ নাম ধারণ করিরা মোগল-সিংহাসনে আরোহণ করিরাছিলেন। করুণ সিরর মুরশিদাবাদ রাজপ্রাসালেই থাকিতেন, তিনি মুরশিদ্কৃণি খাঁর কোন কার্যো হাধা দিতেন না। স্বতরাং ১৭০৬ খা অক হইতে প্রকৃতই মুরশিদ এলেনে দেওরান ও নাজিম পদের সমুদ্র কার্যাই করিতে আরম্ভ করেন। প্রার এই সমরেই সৈরদ আব্দুলা খান্ আলাহাবাদের এবং সৈরদ হুসেন আলী খান্ বেহারের শাসনকর্তা ছিলেন।

১৭১২ খা অন্দে বাহাত্তর পাছের মৃত্যু হর; আজিম উস্সান বাদপার হইবার চেটা করিয়া নিহত হন এবং করণ সিয়য় বাদাপা পরিত্যাগ করিয়া দিলীতে ঘাইয়া স্রাট্ হন। করণ সিয়য় বাদপাহ হইয়া মৢরশিদ কুলি খাঁকে বাদাপা ও উড়িয়ার নাজিমীপদ প্রদান করেন (১৭১৩)। ১৭১৮ অবে মৢরশিদ বেহার প্রদেশেরও নাজিম ও দেওরান হন।

मुत्रभिष (४७ दान ७ नाकिम हरेत्रा व्यष्ट गारकत काइ বেরপ বাণিজ্যের মাওল পাইতেন, ইংরাজদিগের নিকটেও ভক্রপ মান্তল চাহিলেন। ইংরাজেরা সম্রাট সমীপে দুড পাঠাইলেন। সমাট কর্ম্প্রিরর তথন পীড়িত ছিলেন। ঐ দুভদ্দের মধ্যে ভাক্তার হামিণ্টন সাহেবের হৃচিকিৎসার হৃত্ ভইলে, ভিনি সম্ভট হইরা ভাঁহাদিগের প্রার্থনামুষায়ী সনক बिलान। এই मनम्म बात्रा हित्रीकुछ रुरेन (४, (১) हैश्त्राम **टकान्गानि विना माखरम बाकामात्र वानिका कत्रिरछ शातिरवन** ; (২) তাঁহারা কলিকাতার নিকটবতী ও মৌজা ক্রম করিতে পারিবেন; (৩) মুরশিদাবাদের টাকশালে সপ্তাহে তিন দিন তাঁহাদিগের জন্ত টাকা মুদ্রিত হইবে; (৪) যাহারা ইংরাজ-দিগের কাছে ঋণী, নবাবের কর্মচারিগণ তাহাদিগকে हैश्त्राव्यविराम इत्य नमर्गन कतित्वन । हैश्त्रात्यता এहे नमस লইয়া আসিলে সুবাদার কুর হইলেন এবং কলিকাতার সমীপস্থ अभिषात्रिमित्र हैश्त्रां अमिरात्र मिक्टी अभि विजन्त कतिएछ निरंवध ক্রিলেন। কিছু অপর তিন্টা সর্ভ স্বত্তে তিনি কোন বাধা (पन नाहे। ननम पात्रा हेरतामिंग्रित वानित्मात्र मानक स्रविधा ৰ্ইল এবং ক্লিকাতার সমূদ্ধি দিন দিন বৃদ্ধি পাইছে সাগিল।

মুরশিদ কুলি খাঁ বালালার রাজবের বে ন্তন হিলাব প্রস্থত করেন (১৭২২ খ্ব:), ডছারা বার্ষিক রাজস্ব ১,৪২,৮৮,১৮৬ টাকা নির্দ্ধারিত হর। তিনি বজ্জুমিকে ১৩ চাকলা, ৩৪ সরকার ও ১৬৬০ পরলাগার বিভক্ত করিরাছিলেন। প্রবাধার জমিদার দিপের নিকট একং জমিলারের। প্রজাদিগের নিকট হইতে টাকা আদার করিতেন; রাজত্ব-সংগ্রহের জন্ত মুরণির জমিরারহিগত্তে অনেক কর্ট দিতেন। তাঁহার বৈকুঠের কথা কাহারও অধিনিত নাই। রাজত্ববিভাগের কর্মচারিগণ প্রায় সঞ্চলেই হিন্দু ছিলেন। মুরণির কুলি থান প্রমন প্রভাগাবিত হইরাছিলেন বে ব্রিপুরা, আসাম, কোচবেহার ও বিস্কুপ্রের তাধীন রাজারাও তাঁহার নিকটে উপঢ়োকন পাঠাইতেন। [মুর্নির কুলি বাঁ দেখ।]

১৭২৫ খা অবল তাঁহার মৃত্যু সমর তিনি খাঁর নৌহিত্র সরফরাজ থাঁকে বালালার প্রতিনিধিকে উত্তরাধকারী বলিরা বান। ঐ সমরে সরফরাজ থাঁর পিতা নবাব মোতিমন উল্ মূল্ক কলা উদ্দীন মহম্মদ খান্ ক্লা উদ্দোলা আছার জল বাহাতুর মূর্নিক্ত ক্লি খার অধীনে উড়িব্যার শাসনকার্ব্যে নিমৃক্ত ছিলেন; তিনি সম্রাট মহম্মদ শাহের নিকট হইতে গোপানে বালালা ও উড়িব্যার শাসনাধিকার হত্তগত করিতে চেইা পান। মূর্নিক কুলি খাঁর মৃত্যু হইলে তিনিই প্রথমে তৎপর অধিকার করেন এবং পুত্র সরফরাজ খাঁকে বালালার মেওরানী পারে রাখিরা ভারাক্ত, ক্রোধ শাবি করিলেন। এই সমরে বালাহ মসরৎ থাকে বেহারের শাসনভার প্রধান করেন। তদনকর তিনি তৎপরে কথর উদ্দোলা নামক এক ব্যক্তিকে নিমৃক্ত করিরাহিলেন।

রাজত বছ করা দোবে বে সকল অমিদার কারাজ্য হইরাছিলেন, দরাপরবর্ণ প্রজা তাহাদিগকৈ মৃক্তি কেন এবং আলমটাদ নামক একজন হিন্দুকে সহকারী দেওয়ান করিয়া তাহার কল্ল দিলী হইতে 'রাম-রামা' উপাধি আনান। আলমটাদ, জগংশেঠ এবং হাজি আন্দদ ও আলিবর্দী খান্ নামক ছইজন আত্মীর, এই চারি জন নইয়া প্রজা একটি মন্ত্রিসভা গঠিত করেন। তিনি ঐ সভার পরামর্শ প্রহণপূর্বক রাজহার্য্য নির্বাহ করিতেন। এই সকল কারণে করাব প্রজা প্রথমে হিন্দুদিগের বিশেব ভক্তিভালন ছিলেন।

মুরশিদ কুলীর দোর্থক প্রভাবে বাজার সংক্রিক হিল। তথন বাজানার সৈল্পবংখ্যা অনেক কম ছিল। জুলা বাজানার সৈল্পবংখ্যা অনেক কম ছিল। জুলা বাজানার সৈল্পবংখ্যা বৃদ্ধি করেল; এতাইন তিনি অল্লান্ত আক্তর্যবেশক মত্ত ছিলেন। তিনি মুরশিন কুলি গাঁর লার নির্মান্তরূপে বিনীতে নাজ্য পাঠাইতেন। বুধা আক্তর্যপ্রমান্তর্যার উথার যায় অভ্যন্ত বাজ্যির বার। এই নিনিত জিনি নির্দিষ্ট মালবের অভিনিজ্জ আনওরাব নামক কর সংগ্রহ করিছে বার্য হন। আনবক্তরার ভারর সমরে প্রার ২২ লক্ত ইইরা উঠে। আলিবর্দ্ধী ও বীর-কালিবের খাসনকালে উহা ক্রমণা প্রিরাহিত ইইতে বাজে। বধন কোলানি বাহাছর হততে বালানার সেতরারী প্রহণ ক্রমেল (১৭৬৫ খাঃ), তবন বালানার নোট নাজ্য আক্রমী প্রহণ ক্রমেল ভিনিও

১৭১৯ বাঃ আবে বেহারের শাননকর্তা কব্র উন্দোল পাবচাত হইলে ক্সলা ক্রবানার প্রবাদার হন। তিনি আলিবর্দি
বাঁকে বেহারের পাননকার:কেন্দ্র আলিবর্দি ক্রেডিরা চকরান্তী,
মূলবাড়ী ও ক্রোক্সকের ক্রিক্রাহী ক্রিয়ারবিধকে পরাজিও ও
লালিত করিরা বেহারের পাত্তিখালন করেন। ১৭৩২ অবে
চাকার বেওরান বীর হবিত্ বিপ্রাক্তর বর করিরা ভাষার নামেনাবাল নাম ভারেন। অনকার সরক্তরাক্তর বাঁ ঢাকার পাসনকর্ত্পদে
নিব্রোক্তি হন, ক্রিভ ক্রিনি মুর্নিবাবানেই বাস করিতেন।
ক্রারা সক্তরের বলোক্ত রার ক্রাক্তরণে রাজকার্য নির্বাহ
ক্রিরা সক্তরের ক্রেক্সার টাকার ৮ মণ চাউল বিক্রের হইরাছিল
(১৭৩৫ বাঃ)। ইহার হাই বংসর পরে সক্রপ্রের ক্রোক্সার
ভালি আক্সনের মধ্যমপুত্র নৈয়ন আক্রে বিনারপ্রের ও ক্রোচবেহার
আক্রেমণ করিরা ক্রেব্রু রাজাহিণ্ডের ব্রহ্বান স্ক্রিত ধনরাশি
ক্রমণ্ড করেন।

ভাষার শাসনকালে ১৭২৯ খুটাকে আইও ইট ইডিয়া কোন্দানী বাদাবার বাণিজার্থ আগমন করেন। বাকি-বাজারে উচ্চান্তের কুটা ভাগিত ছিল। এই অর্থাণ-বণিকসম্প্রাহারের বাণিজ্য বৃত্তিতে উর্বাধিত হইরা ইংরাজ ও গুলনাজ বণিক্গণ তাঁহানের বিক্রাচারী হইবেন। তাঁহারের প্রয়োচনার নবাব স্ন্রভা উদীন্ ১৭০০ খুটাক্ষে আর্থাদিগের কুটা অবরোধ করিলেন। অবশেবে নবাব সেনাপতি মীর আকর বাঁকিবাজার হন্তগত করিয়া ঐ কুটা ধ্বংস করেন।

১৭০৯ থা আৰু হ্বজা উদীন মানবলীলা সংবরণ করেন।
মৃত্যুকালে তিনি হাজি আছাল, জগৎশেঠ ও আলমটার এই
করেকজনের পরামণ লইবা বীর পুত্র আলা উদৌলা সরকরাজকে
রাজকার্য নির্বাহ করিতে আমেশ করিবা বান। কিন্তু সরকরাজ
নিংহান্দে আরোহণ করিবাই হাজি আছার ও অগৎশেঠকে
আনবালিত করিলেন। তাহাত্তে উহারা কুত্র হইবা বিনী হইতে
আলিবর্ষী বার নিবিত বাজালা, বেহার ও উড়িবার স্থবালারী
পরের নিরোগণার সংগ্রেকে কর্তবন্ধ করিতে ছিলেন। এই

সহবোগিতা লাভ করিয়া আলিবকী নিগৈতে পরকরাজের বিরুদ্ধে মুজ্যাআ করিলেন। বুরশিবাবার পরিষ্ঠিত গড়িরা নাবক স্থানে নরকরাজ পরাজিত ও নিহত হইলে (১৭৪০ খুঃ) আলিবকী বাজালার স্বাধার পরে অধিষ্ঠিত ইইলেন।

আদিবদাঁ ত্বাহার হইরা বিরীতে আনেক উপঠোজন প্রেরণাতে রাজাশাননের নৃতন বংশাবত করেন। তাহার জিন ক্রার সহিত তাহার রাতা হাজি আজ্ঞার তিন প্রের বিবাহ হইরাছিল। ঐ আমাত্ত্রর মধ্যে নিবাইন মহক্ষতে তিনি ঢাকার এবং কনিঠ জৈন উদ্দিনকে বেহারের পাসনতার প্রদান করিলেন। জৈন উদ্দিনের পূত্র নিরাক উদ্দোলাকে তিনি অভ্যত্ত তাল বাসিতেন। এই কারণ ঐ বালককে তিনি সর্বাহাই দত্তক-প্রত্বরূপ পালন করিতেন; অভ্যপর সরক্ষাক বার তালিনী-পতি উড়িয়ার পাসনকর্তা ব্রুপির ভূপিকে পরাজিত করিরা তিনি বীর মধ্যম আমাতা নৈরক আজ্ঞানকে সে প্রাজেশের পানমভার কর্মণ করেন। কিছু আজ্ঞানকে অসলাচলনে নীরই উৎকলে বিলোহ হর; এবং মুর্শির ভূপির লল প্রবাদ হইরা আজ্ঞানকে করেবং এই সংবাহ পাইরা আলিকলী উড়িয়ার গমন পূর্বক আবাতার উভার সাধ্যম করেন।

এই সমরে ১৭৪১ খা আনে চৌধের দাবী করিরা মহারাট্রগণ বালানা আক্রমণ করিরা ভারীরথীর পশ্চিমতীরবর্তী প্রদেশ অধিকার ও সুঠপাঠ করিরা প্রকাদিগকে কংপরোনাতি কঠ প্রেনান করে। ভাহাবিগের অত্যাচারভারে কনিকাভাবাসিগণ নগররকার্থে মারহাটা খাড' কাটিতে আরম্ভ করেন।

নবাব কৰা উদ্ মূল্ক, হিসাম উদ্যোগা মহক্ষৰ আশীৰ্কী থ'।
বহৰত অল বাহাছের এই সংবাদে উচ্বিয়া বিজ্ঞান্তর আমোদপ্রান্ধান্তর এই সংবাদে উচ্বিয়া বিজ্ঞান্তর আমোদপ্রান্ধান্তর ক্ষিত্র হার্যাই বীর্য থকা ক্ষিত্রার অভ মূত্রের উদ্যোগে
ব্যাপ্ত রহিলেন। পর বংসর তিনি ভাহাবিগরেক কাটোরার
নিকটে পরাজিত ক্ষিত্র দেশ হইতে বহিত্তত করেন (১৭৪২ গুঃ)।
ক্ষাভর আহারা বারংবার এতকেশ আক্রমণ করিরা ক্ষাভারকে
ব্যতিক্রন্তর করে; পরিশেবে আলিবর্লী ভাহাবিগরেক কটক প্রান্ধান্তর
ক্ষাভার করিরা এবং বালালার চৌক্ষরণ বংসর বংসর বার
সক্ষ টাকা বিতে বীক্রক হেরা ক্ষিক ক্ষেত্র (১৭৪২)। এই বহারাই
আক্রমণ রাধ্যান্তর "বর্গীয়র হালালা" ব্রিয়া আর্ড।

বৰ্ণিৰ হালাবাৰ সকলে অব্যোগ ভিনবাৰ বিয়েইৰ উপস্থিত হয়। প্ৰথম সেবাপতি স্থাবন বঁ) বিয়োহী হইছা ক্ৰান্তৰ প্ৰাস্ত্ৰকৰ্মা বৈদ উলিদ কুকুৰ নিৰ্ভ ক্ষা। আনৱৰ নামলেৰ বঁ। বিশ্বাস্থাত্ততা পূৰ্ত্তক কৈন উভিন ও বাংলি শিকা হাজি আন্তৰ্ণত নিন্তু কৰে। তিক আন্তিক্তীৰ বৃহিত গাটনা কুছে ভিনি বাং নামৰ্থ স্থানে প্ৰাক্তিক ও নিহত্ত হয় (১৭৪১ ছা)

ব্যালান ঐতিহানিকার কর্মার হতিন্দ্রভাবের সালালার অবহিতি
সহতে একবত করে। কের কের ক্ষেত্র স্থানার ব্যালিক ক্ষাীর শাসনকাসেই
কর্মার বালিকার একার বিস্তৃত্ব হা। ঐতিহাসিক অর্থি বসেন, ১৭:৮
বুরুপ্তে ভালার এ সাম ক্ষতে আছিত ক্ষাীর্থনে । কির অঠেও কোলাবার বিকাশীতে একান ও স্থান ক্ষেত্র কর্মার ১৭০০ বুরুপ্তে গণিত অবন্য
ভালাকে পানিলাঞ্জনার কর্মা বৃহত্তে বাকে একা ১৭০০ বুরুপ্তে ক্ষান্তর
লোগানির ক্ষোভালি মানার্থা ক্ষাত্র ক্ষিত্র ক্ষান্তর করা ১৭০০ বুরুপ্তে ক্ষান্তর
লোগানী কর্মান্ত ক্ষা গতি এক ১৭১০ বুরুপ্তে করা ব্যালানী কর্মান্ত ক্ষান্তর ব্যালানী
লোগানী কর্মান্ত ক্ষান্তর ক্ষান্তর ব্যালাকী ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর
লোগানী কর্মান্ত ক্ষান্তর ক্ষান্তর ব্যালানী কর্মান্তর ক্ষান্তর ব্যালানী
লোগানী ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ব্যালাকী ক্ষান্তর ক

কৃতীর রিজানের বুল নিরালতবোঁলা। বাতান্যকে নিরোসন্চাত করিবার আপার পাটনা আক্রমণ করিতে নিরা তিনি তথাকার শালনকর্তা রাজা জানকীরার কর্তৃক কারাক্র হন (১৭৫০ খুঃ)। এরপ আচরণেও নিরাজের প্রতি জালিবর্তীর বিরাগ করে নাই; বরুং নিরাজ কিনে সভই থাকেন তৎপ্রতি ত্থাকারের বিশেব দৃষ্টি ছিল। এই কারণেই নিরাজ উলোগার অভ্যানার বৃত্তি পার। ভীহার সমরে নিবাইস মহরদের প্রিরণাত্ত চাকার সহকারী লাসনকর্তা হোনেন কুলি ধাঁর বিনা অপরাবে বিনাশ সাধিত হয়। [আলিবর্কী, মহারাই ও হোনেনকুলি দেখ।]

১৭৫০ অবে আলিবর্দী বেহারের রাজখের নৃতন বন্দোবত করেন। এতদারা বেহার প্রদেশ ৮টা সরকার ও ৩২০ মহলে বিভক্ত ধর, এবং ইহার রাজখ ১৫, ৬,০৯৮ টাকা অবধারিত ক্ষাছিল।

২৭৫৬ খুঃ অব্দে আলিবর্দী নানবলীনা সংবরণ করেন;
তাহার পূর্বেই সিরাল-উদোলার পিতৃবাধ্বের মৃত্যু বটে।
ইক্টদের মধ্যে পূর্ণিরার শাসনকর্ত্তা সৈরদ আক্ষরের পুত্র সঞ্জত
কল আলিবর্দীর আদেশে পূর্ণিরার শাসনকর্ত্ত্ব লাভ করেন।

আলিবর্দী খাঁ ইংরাজনিগের ক্ষমতা বুরিরাছিলেন, এক্স বালিজ্য লইরা উাহাদিগের সহিত কোনদেশ কিরোধ করেন নাই, ভাহাদিগকে এনেশ হইতে তাড়াইয়া দিবার পরামর্শ একজন উচ্চশন্ত্র কর্ম্বচারী ভাহাকে প্রদান করিলে, ভিনি বলেন যে, শহলের ক্ষমি নির্বাণ করাই কঠিন; জলে আজন লাগিলে কে নিবাইবে?" ফরাসী এবং ওলনাজেরা তাহার সময়ে স্থাধ বাণিজ্য চালাইরা ছিল। তাহার বিবাস হইরাছিল বে, জরকাল মধ্যে ভারতবর্বে "টুশিওরালা" দিগের প্রাবাভ স্থাপিত হইবে। ১৭২৬ খুটাকে বিলোমারেয়া শ্রীয়ামপ্রের কুঠী স্থাপন করেন।

নিয়াল উজোলা নিংহাননে আরোহণ করিরা চ্ন্তরিতাও নির্চুরতানিবছন শীরাই লোকের অপ্রির হইরা উঠিলেন। সকলে পূর্বিরার নাসনকর্তা সঙকত লক্ষক ক্রাবার করিবার উজেলে একটা বড়বার করিবার টিজেলে একটা বড়বার করিবার টিজেলে পূর্বিরাজির্বে অপ্রসর হইলেন। পরিবর্ধে তারার সমদর প্রতি পরিবর্ধিত হইল—উল্লের ফ্রোব্ ইংরাজবিশের বিরুদ্ধে বাবিত হইল।

চাকার স্থাবী শাসনকর্তা রাজবরতের মশ্যতি হজগতকরণপ্রত্নে ইংরাজের সহিত লবাবের বিরোধ হব। কাশিমবালারের
কোশানির হুটা হজগত করিবার শর প্রাথনৈত কলিকাতার
ইংরাজ হব কাবিকার করে। স্থাবি ড্রেক নবলে জলপথে
আমিতা কলভার সহিলেন। ক্লিকাতার ইংরাজবনিকাব
কারাবিত রাজিকেন। (স্বভুগ হুড়া দেব।)

ক্ষিত্ৰক অববোধ ও অধিকারের পর নিরাক প্রণিয় প্রকা ক্ষিত্রিন। সপক্ষেত্র নথাৰ-নেলালভি রাজা লোক্ষ্যালের বতে লানকর্ত্তা নওকত লল পরাভিত্ত ও নিহক হইবেন। অন্ধানন ক্লাইব, বীরজাকন, উনিটাদ প্রকৃতির নহবোলে নিরাক্তে আক্লা-চুত ক্ষিবার বড়বত্র হর এবং তৎপ্রদক্ষে বিব্যাক্ত প্রণালিক্ষেত্রে বৃদ্ধ বটে। ১৭৫৭ গুরাকে ২৩ কুল বৃদ্ধে ইংরাজের কর ক্ষতে নথাব হুরবেশে প্লাব্দন করেন ও প্রিক্তে থকা প্রক্রি বীরণ-হতে প্রাণ হারাণ। [বিস্কৃত বিব্যাণ নিরাক্ত ও প্লাইব শব্দে ক্ষরীয়াণ

প্ৰামীয় বৃত্তির পর ইংরাজেরাই বাধালার হর্ডাক্ডা, বই-লেন। অভ্যপন্ন নীর্বাক্তা, নীর্কাশিন বা নতন উলোলা প্রাকৃতি বে ক্ষরন নবাব বাধালার ক্ষরতে অভিবিক্ত হইরাছিলেন, ভাষা ইংরাল্ডিগের্ছ অভ্যন্ত-কলে বলিতে হইবে। বাধালার দেওরানী প্রাধির পর হইতেই অভ্যন্তশক্তে হাবালার লোগেল কর্ম অপশ্যত হইরাছিল।

বোপতা-সমার্কের		

पुः व्य	Per	चरमचत्र नामतिक निर्मित्
3610	***	वी अद्याम
. >613	369	मुक्तामत भी। १०० क्षेत्र कार्य
>64.	200	নাৰা টোড়ৰ নন 🛒 👑 🖖 🖂 🐠 🥎
>663	***	थान् चानिम
>448	>><	भार्याम वी 💎 🛒 🚟
sera	224	ब्राजा मानिश्ह
>6.6	>->6	কুডব্ উদিন কোকন্তাস স্বাহালির
>601	>+>+	जाशांत्रित्र कूरि 💮 🐪 .
>4.4	>+>+	সেৰ ইসলাম বা ঐ
>4>0	>•२१	कानिय वाँ
3674	>+24	ইৱাহিম বা
5044	3.00	শাহ্ শহান
>446	>-00	बाम्बाम् 🐴 💮 👙 🐪
3640	3000	यक्त्र वीकार । अस्ति ।
3924	3+06	निरादि वी (१८५१ का १५ । १८५४ १८ के
>621	3.01	कानिम वी कक्षी । भार करान
5000	3684	পালিদ শী
5001	>+10	हेन्साम वी यगर्मिः वी
5000	>+45	THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH
>66.	>-1-	मीन क्रमा अस्तराज्य
5048		भारतका वी
115939	****	Proft di
-	- 3000	क्ष्मकाम गरका लाजिक
Lawrence Control		

शृः षः	ft:	रहरा	गांवविक विश्वीपत
>64.	>->-	সারেকা বাঁ	•
2 44 5	>**>	ইত্ৰাহিম বাঁ ২ৰ	5
2429	>>+	আজিৰ উন্সান	5
		মুয়শিক কুলি খাঁ	5
		ছুজা উদ্দিদ খাঁ	মহক্ষণ শাহ
>.0>	3565	আলা উলোলা সরকরাক বাঁ	&
>98•	2660	व्यानियमी थी महस्वछ सन	ঠ
39.6	>>1.	সিল্লাজ উলোগা	আলম্গীর
>><1	3343	नीव कांक्व चांगी वां	&
> 940 -	>>98	ফাশিম জালী খাঁ	শাহআলম্
>100	>>99	মীর কাকর আলী বঁ।	(a)
3966		নজিৰউদ্দোলা	S

>१६८ बुडीएम बाब्बाती मार्ग मीत बाकरतत मुकात नत, তংগুত্ৰ নৰ্ম উদ্দোলা ইংরাজ কোম্পানীর সহিত সন্দিহতে चायक हरेबा हैश्बाधकरत दलबाजा-बच्चाजात नमर्गन करबन। তিনি কেবলমাত্র নামে নবাব-মাজিমের পদাভিবিক্ত রহিলেন, ধালালার কৌকবারী ও বেওরানী বিচারের পরিদর্শনভার ভাহার উপর ভক্ত থাকিল না ; তিনি বন্ধতঃই বিচারবিভাগের ব্যবস্থাপকত্ব ও সর্কমন্ত্রকর্ত্ত হারাইলেন। তাঁহার অধীনত্ব এক জন দেওৱানের ভবাবধানে নিজামতের কার্য্য চলিতে লাগিল। चारवाशांत खेळीत ज्ञा खेल्मोगांत भन्नाचरवत भन्न. हेश्त्रांक कालामी जागाशवाम ७ काजा ध्यामन मिन्नीयवरक छेनाकोकन দিরা তৎপরিবর্ত্তে বন্ধ, বেহার ও উড়িব্যার দেওরানী সনন্দ লাভ করেন, তাহাতে নবাব-নাজিমের "নিজামং" রক্ষার জন্ম বার্বিক ৫৩৮৬১৩১ সিল্লা টাকা বৃত্তি ধার্যা হইরাছিল। ইংরালগণ সেই পুত্র धूर्मिमावास्मा नवायिमगरक के वृक्ति निष्ठ वाशा रन । পরে ইংরাজের কটনীভিতে উহা ক্রমণঃ দ্রান প্রাপ্ত হব। বাত্তবিক পক্ষে এই সময় হইডে ইংয়াল কোম্পানী বালালার প্রকৃত শাসন-কর্তা হইরাছিলেন। নিজামৎ মস্নদের উপসক্ষভানী বাজালার भववर्षी नवाव नाक्षिमगरभव वः भ-छानिका नित्व खक्क हरेन ;---বুভিভোগী খালালার নবাববংশ।

১৭৬ নজন্ উদ্দোলা---নীরজাদর জালীর প্র, ১৭৬৬ খুঠালের প্রা মে ? ইহার বৃত্যু ঘটে। ইলি বেওবাল ইংরাজ কোম্পানীর নিকট হইছে বার্বিক ৫৩৮৬১৩১ নিজা টাকা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হন।

১৭৬৬ শৈক উজোলা—নীয়ভাকরের ২র প্রা; ১৭৭০ খুটাবের ১০ই মার্চ সৃষ্ঠ্য হয়। ইহার সময় বার্ষিক বৃত্তির হার ক্ষিয়া ৪১৮৬১৩১ সিকা টাকা থার্ছ হইয়াছিল। ১৭৭০ মূবারক উদ্দোলা —শীরজাকর থর পুত্র; ১৭৯৩ খুটাকের নেপ্টেবর মানে কুড়া। বৃদ্ধি ৩১৮১৯৯১ নিজা টাকা প্রাপ্ত হন। ইহারই অবিকারকালে ১৭৭২ খুটাকে উক্ত বৃদ্ধির টাকা ক্যাইরা বার্বিক ১৬ লক্ষ রোপ্যমূলা ধার্য হর। সেই হার অভাশিও চলিরা আদিতেছে।

১৭৯০ নাশির উদ্ মূল্ক উলীর উলোলা বেলবার জল— মূবা-রকের পুত্র, ১৮১**০ খুটালের এপ্রিল বানে তাঁ**হার মৃত্যু বটে।

১৮১০ সৈরদ জৈন্ উদীন আলী খাঁ ওরকে আলী জাহ্— নাশির-উল্মূল্কের পুত্র।

১৮২১ নৈরদ আহ্বদ আলী খাঁ ওরকে বালা জাহ — জালী জাহের ভ্রাতা, ১৮২৪ খুটাকে ৩০এ আটোবর দৃড়া।

১৮২৫ সৈরদ ম্বারক আলী বাঁ ওরকে হমাহুন লাহ্—বালা লাহের পুতা।

১৮৩৮ করিগুন জাহ্ সৈরদ মনস্থর জালী বাঁ নসরৎ জন্দ হুমান্থন জাহের পুত্র। ইনি নালা কারণে বুণজালে জড়িত হওরার ইংলও প্রবাদী হন।

এই সময়ে ইংরাজ-গবর্ষেণ্ট ভাহাকে অর্থসাহায্য করিতে শীকৃত হওরার, তিনি বার্ষিক লক্ষ্ টাকা মাসহরা ও ঋণমুক্তির অভ ১০ লক টাকা প্রাপ্তির আশার ১৮৮০ বুরীজের ১লা নবেদর (মভান্তরে ১৮৮৩ খুষ্টাব্দে) চিরপোবিত নবাব নাজিম মর্য্যালা ভাগে করিতে বীকৃত হইরা বীর অভিপ্রার জ্ঞাপন করেন। ১৮৮২ খুটাকে তাঁহার পুত্র সৈয়দ হসন আনী বাঁ সনদ হারা वृर्निवावात्मत्र नवाव बाहाइत छेशावि शान । ১৮৯১ बृहोत्सव ১२ह মার্ক তারিখে নবাৰ সর্ সৈয়দ হসন আশী থা বাহাছর জি. সি, আই, ই ১৮৮০ খুটাব্দের ১লা নবেশ্বর তারিখে শীর পিতক্রত নবাৰ-নাজিম প্ৰত্যাগালীকার সাব্যস্ত ও শীকার করিয়া সেক্রে-টারী অব্ টেটনের ইণ্ডেকার পত্রে খীর অভিনত জ্ঞাপন করেন। উক্ত বর্ষের উক্ত মাসের ২১এ তারিখে সকৌসিল ভারতপ্রতিনিধি *** (by the Council of his Excellency the Vicercy and Governor General of India) 2222 শালের > ধ নং রাজবিধিতে (Act XV. of 1891) ভাল দ্বিনীক্ত ও পরিপ্রবীত হয়। এই সর্যাদা ভ্যাগ করিয়া ভিনি ভংপরিবর্তে ইংরাজয়াজের নিক্ট হইতে একটা বংশালুক্তমিক वार्षिक इषि धारा बुनियायाय, कनिकाका, व्यक्तिरेगुत्र, छाका, मानवर, शूर्विता, शांक्या, त्रक्शूत, स्श्वी, त्रावभारी, रीतक्षि क নাঁওভাল-পরগণার মধ্যে কডকগুলি নির্দিষ্ট আরের ভূসন্পত্তি व्यास रहेबाहिएनन । हेराव नीव्यव-मानक कारत देनहरू

यां बिक् वानी मीर्ब्स, हेंबान्तत्र कानत रेगबन नागित वानी मीर्जा, व्यागक वानी मीर्जा, रेगबन बाकूद वानी मीर्जा ও मह्विन् वानी मीर्जा।

মোগলশাসনে বাজালার জবস্থা।

দিলীর মোগলসমাট্গণের অধীন সুবাদারদিগের শাসনকাল হইতে ইংরাজ কোম্পানিগণের প্রাধান্ত বিভার পর্যন্ত এই স্থাবি কালে বালালার ভাগ্যাকাশে বিশেষ কোন পরিবর্ত্তন সাধিত হয় নাই। বালালার ইতিহাস পাঠে তৎকালীন দেশের অবস্থা সহক্রেই স্থান্যসম হইতে পারে, নিম্নে অতি সংক্ষেপভাবেই তাহা বিরুত হইল।

দাউদ খাঁর মৃত্যুর পরেও প্রায় ৩৬ বৎসর পাঠানপ্রভাব বান্ধালা হইতে বিদুরিত হয় নাই। তদনপ্তর বাধ্য হইয়া তাহারা মোগলশাসনের বণীভূত হয়। এই সময়ে পুর্বদক্ষিণ বাঙ্গালায় পর্ত্ত গীব্দের। বিলক্ষণ উৎপাত আরম্ভ করে। দেশীয় জমিদার-দিগের মধ্যেও অনেকে রাজসরকারে নিয়মিত রাজস্ব প্রদান না করিয়া সময় সময় বিদ্রোহ সম্পদ্থিত করিয়াছিল। সম্রাট অকবর শাহের রাজত্বকালে পূর্ব্বদেশে "বারভূঁয়া"র প্রাছর্ভাব হয়: তদ্মধ্যে যশোহরের রাজা প্রতাপাদিত্য, ভূষণার মুকুলরায়, চক্রদ্বীপের কলপ্নারায়ণ রায়, ভুলুয়ার লক্ষণ মাণিকা, বিক্রমপুরের চাঁদ রায় কেদার রায়, ভাওয়ালের ফজল গাজি, থিজিরপুরের ইশা খাঁ। সাতৈলের রাজা রামক্ষ্ণ, চাঁদ-প্রতাপের চাঁদ গান্ধি প্রভৃতি নর জনের নাম বিশেষভাবে উল্লেখ যোগ্য। ঐ জমিদারদিগের দেও-য়ানী ও ফৌজদারী শাসন ক্ষমতা ছিল। তাঁহাদিগের স্বতম্ব সৈতা, গুড় ও বিচারালয় ছিল। তাঁহার। প্রজাদিগের নিকটে থাজনা আদায় করিতেন এবং স্থবাদার পরাক্রান্ত হইলে তাঁহার সমীপে দেয় রাজস্ব প্রেরণ করিতেন, নতুবা বলপ্রারোগ ভিন্ন তাঁচালিলের নিক্ট হুইতে রাজ্য সংগ্রহ হুইত না। কথন ক্ষম তাঁহারা বিদ্রোহেরও স্ট্রনা করিতেন এবং স্থ্রবাদারগণ তাঁহাদিগের সহিত ুদ্ধ করিতে বাধা হইতেন। [বারভূঁয়া দেখ।]

সরকরাজ থা ও সিরাজদৌলা বাতীত বাঙ্গালার অপর সকল স্থবাদারই দিল্লীর বাদশাহকর্ত্বক নিযুক্ত হইরাছিলেন; সরকরাজ থান্ও মুরশিনাবাদের সিংহাসন অধিকার করিয়া দিল্লীর অথমতি প্রার্থনা করিয়াছিলেন; কিন্তু তিনি বাদশাহের মনোনীত আসীবর্দীকর্ত্বক নিহত হন। নাদির শাহের আক্রমণে দিল্লীখরের ক্ষমতা অনেক থক্র হয়। ঐ সমরে বর্ণির হাঙ্গামার ও রাজকর্মতারীদিগের বিজ্ঞাহে নবাব আলীবর্দী গাঁর প্রভূত অর্থবার হইরা থাকে। এ কারণে কিঞ্চিৎ উপঢৌকন বাতীত তিনি দিল্লীতে নিরমিত রাজ্মত্ব প্রেরণ করিতে পারেন নাই। সিরাজ উদ্দোলা এক বংসর মাত্র রাজ্য ক্রিয়াছিলেন। রাজসক্ষেম্ব নানা-প্রকার

জটিল কাৰ্য্যে ব্যাপৃত থাকার যোগন-সম্রাটের সহিত ভারার কোন সম্বন্ধ বটে নাই। [সিরাক উলোলা বেখ ।]

খুটীর ১৬শ শতানীর শেবভাগে এবং ১৭শ শ**ভানীর প্রারম্ভ**সমরে এবেশে পর্কুগীজনিগের প্রায়ন্তাব ঘটে। ১৯৩২ খুঃ জন্ম
হইতেই জাহানিগের প্রতাপ ব্লাস হইতে থাকে। তদনন্তর নিম্পরে
বাণিজ্য করিবার অন্তমতি পাইরা ১৯৩৪ খুটাল হইতে ইংরাজদিগের প্রতাপ উত্তরোজ্য বাড়িয়া উঠে এবং ক্রেনে জাহারা অর্থ
ও ক্ষমতা বলে দেশীর লোকের বোগে এভদেশের সর্বাময় কর্তা
হইয়া উঠেন। [ইংরাজ দেখ।]

মোগলদিগের শাসনকালে কেবলমাত্র রাজা টোডরমল ও রাজা মানসিংহ নামক হাই জন হিন্দুবীর বালালার অ্বালার হন। তৎকালে রাজকীর উচ্চতম পরে ও অক্সান্ত প্রধান কর্ম্মেও হিন্দুরা নিযুক্ত হইতেন। পরবর্তিকালে যশোবন্ধ রার ঢাকার দেওয়ান এবং আলমটাদ বালালার সহকারী দেংয়ান ও মন্ত্রিসভার সভ্য হইয়াছিলেন। জগংশেঠও মন্ত্রিসভার সভ্যপদ প্রাপ্ত হন। যথন সিরাজ উদ্দোলা সিংহাসনচ্যুত হন, তথন রাজা মোহনলাল সেনাপতি ও পূর্ণিয়ার শাসনকর্তা, রাজা রায়চ্মেতি দেওয়ান, করাজা রামনারায়ণ পাটনার শাসনকর্তা এবং রাজা রামরাম সিংহ মেদিনীপুরের শাসনকর্তারপে বর্তমান ছিলেন। ভূতপূর্ব্ব দেওয়ান জানকী রাম, রায় রায়া চিয়য় রায় ও রাজা রাজবল্পত প্রভাব পরিচর ইতিহাল পাঠকমাত্রেরই অবিধিত নাই।

[তত্তৎশব্দে বিশ্বত বিষয়ণ দ্রষ্টব্য ।]

ষাণীন পাঠানদিগের রাজত্ব সময়ে বলদেশে প্রীচৈতন্ত মহাপ্রভু, রবুনাথ শিরোমণি প্রভৃতি অসাধারণ প্রতিভাশালী ব্যক্তি জন্মগ্রহণ করিয়ছিলেন। মোগলধীন স্থবাদারদিগের শাসনকালে সেরুপ কাহারও আবির্ভাব ঘটে নাই। তৎকালে সংস্কৃত কাব্য ও সাহিত্যের এবং স্তামণারাদির যেরুপ আলোচনাও বিজ্ঞার ঘটিমাছিল, এ মৃগেও তাহা বিশেষভাবে লর প্রাপ্ত হয় নাই; বরং সংস্কৃতালোচনার অবনতির স্মুলাত হইভেছিল বলা যার। চৈতন্তুবুগের শেব সমরে বালালা পদরচনাও সংস্কৃত প্রভাবির পতাহ্বাদ আরক্ত হয়। উহার পরে ক্রমে কবিক্তণের চণ্ডা, কানাদাসের মহাভারত এবং শেবোক্ত সমস্বের রামনাসাদের পদাব নী, ভারতচন্তের অরক্তানল প্রভৃতি গ্রহ দিখিত হইরাছিল। কবিকভাগি কর্তুক বালালা ভারা ক্রমণঃ মার্ক্তিত হটরা পদরচনা সম্বেক্ত ভারতচন্তের হত্তে উহা বিসক্তা উরতি ও পৃষ্টিলাত করিয়াছিল। মেরারিক্তিগের মধ্যে জগদীল তর্কালন্ত্রান, গদাবর ভট্টাহার্য্য, মধুরালাথ তর্কবাদীল, ভবানন্দ সিক্তাভবাদিশ,

অকৃতগলে ইট ইভিয়া কোম্পানী ই হারই পর প্রহণ করেন (১৭৬৫) ।

এবং দার্জগণের মধ্যে নারারণ বন্দ্যোপাধ্যার ও অগরাধ তর্কপঞ্চানন পূর্বাপুক্ষবিধের শেব গৌরব কথাঞ্চিৎ রক্ষা করিরা গিরাছেন।

বদিও বিভালোচনা সবদে মুসলমান শাসনকর্তৃগণের বিশেষ বন্ধ ছিল মা, কিন্তু এ বিবরে তৎকালিক অমিদারদিগের অনেক উৎসাহ দেখা বার। তাঁহারা আক্রণপণিতিদিগের অর্থিচিন্তা দ্ব করিবার নিমিত্ত তাঁহাদিগকে 'প্রক্ষোত্তর' ভূমি দান করিবা গিরাছিলেন। তাঁহারা সংস্কৃত শিক্ষার্থী ছাত্রদিগের নিমিত্ত টোল বা চতুস্পাঠীর বার বোগাইতেন। তাঁহারা ঋণীলোক দেখিলে তাঁহাকে আশ্রর দিতেন। কবি রামপ্রসাদ সেন এবং ভারতচন্ত্র রার নদীরার অমিদার রাজা ক্লকচন্ত্রের আশ্রর পাইরাছিলেন। কবিককণ মুকুন্দরাম চক্রবর্তী মেদিনী-প্রের অমিদার বাঁকুড়া রার ও তৎপুত্র রত্নাথ রারের আশ্রিত ছিলেন। প্রাচীন গ্রন্থভণিভার একণ প্রতিপাদকের অসংখ্য প্রমাণ পাওরা হার। [বালালাভাবা দেখ।]

रेश्वाकाकुमत्र ।

वाजानात्र वानित्जात्रिजात्जत्र जानात्र हरताज हेई हेखित्रा কোম্পানী মাজান হইতে সমুক্রপথে বলাভিমুখে আগমন করেন। ১৬১৪ গুটাৰে সর টমাস রো মোগল সমাট জাহালীরের তুপায় बानिका कतिराज जाएन शाश हन। >७२० चंडीएक बाजानात মোগল-প্রতিনিধি ইত্রাহিম খাঁ ফতে জলের শাসনকালে উক্ত কোম্পানী পাটনার ব্যবিক্ররের জন্ত কুঠা স্থাপন করেন। ভদবধি ক্রমণ:ই বালালার অতি প্রাক্তরভাবে ইংরাজের প্রভাব বিশ্বত হুইতে থাকে। কোল্পানীর কর্মচারিগণ কিরূপে আপনাদের কুঠা রকার জন্ত সৈত্ত সমাবেশ করিয়াছিলেন, তাহা ইতিহাসপাঠক बारतारे जनशब जारहन । ३७६० चंड्रोरन हगनी मशरत এवः ১७৪২ पृष्टीत्म वारमध्य कृति मश्चाभिष्ठ इत्र। খুটাম্বে সত্রাট্ পার্ জহানের আতুকুলো ও ডা: সার্জন গেবিয়ল वाकिएतम धार्यमात क्रांनीएक वेश्ताल-विकारकामारतत धार्क-পত্তি বিশ্বত হইরা পড়ে। তরবধি উক্ত কোম্পানী আপনা-त्वत्र चाविकात्र प्रकाद विरुपंद रफ्रयान रून । कात्रन के সমরে প্রভিক্তী ওলকাজ, বিলেমার, করাসী, কর্মণ প্রভৃতি विकित विवृत्रक्षानाद्वत्र महिक क्रिकिनक्का क्षित्रा हैरताविकारक ज्ञानमात्त्रम् वार्थन्तमा कतिएक स्वेदादिन । धरे नमत्र देशाय-श्रेन जाननात्त्व वानिजाक्ती श्रवत्त्वावत्व भविष्ठानिक कविषाव बाह्य अक् अक बाम अरबकी निवृक्त करहान ।

ইংরাজ কোন্দানীর এই প্রভাবরুদ্ধির সংখ সলে ডিরেটরের আবেশে প্রজেকের পরিবর্তে এক এক কন গবর্গর নির্ক্ত হইরা-ছিনেন। ১৬৯০ টুটাকে কব চার্কক কলিক।ভাষানী হন। ১৬৯২

পুঠাবে তাঁহার মৃত্যু হয়। ঐ বৎসরে হগলী হইতে কলিকাডার ইংবাজ কোম্পানীর এজেনী স্থানান্তরিত হইবাছিল ৷ ১৬৯৬ পুঠাকে অরদজেব-পুক্ক আজিম উস্সান বাদালার শাসনকর্তা হন। ১৯৯৮ খুষ্টাব্দে তিনি ইংরাজ কোম্পানীকে কলিকাতা ও তৎ-সন্নিহিত চুণানি গ্রাম দান করিয়া তথাকার প্রকারুন্দের দোষ **७**८९त ब्राविकात कतिवात कम्का एमन । छाहात्रहे जाएएए छेख বর্বে কলিকাতার 'ফোর্ট **উই**লিরম' চর্নের ভিত্তি স্থাপিত হয়। ইংরাজগর্ণর ড্রেকের বিসদৃশ আচরণে বিরক্ত হইয়া নবাব সিরাজ फेल्लोना ১৭८७ ब्रहोस्स कनिकाला जात्क्रमण ७ वस करतन। পর বংসর মাজাজ হইতে আসিয়া কর্ণেল ক্লাইব কলিকাতা পুনরার মুসলমানের নিকট হইতে কাড়িয়া লন ৷ ১৭৫৭ খুষ্টাব্দের জুন মাসে সিরাজকে রাজ্যচ্যুত ও নিহত করিরা ক্লাইক মীরজাকর আলী থাঁকে বলসিংহাসনে অভিবিক্ত করেন। এখান হটতে ইংরাজ কোম্পানীর রাজদের প্রপাত। মীরজাফর ইংরাজের অভিমতে বালালা শাসন করিতে পরাত্মধ হওয়ার মীর কাসিম আলীকে বালালার শাসনভার দেওয়া হর, কাসিম আলী ইংরাজবেধী হইলে তাঁহাকে পদচ্যত করিবা পুনরার মীর-बाक्द्रारक रक्षनिश्हानतन बनान हत्र। >१७६ पृष्टीरक मीत-জাফরের মৃত্যুর পর তৎপুত্র নজম উদ্দৌলাকে বালালার মসনদে अভिविक कता रहेबाहिल। উक बर्सन सून मान रहेरड नकम ইংরাজ কোম্পানীর বৃত্তিভোগী হন। এ সালের ১২ই আগষ্ট তারিখে মোগল-সমাট্ ক্লাইবকে আমুগীরক্ষরণ বন্ধ, বেহার ও উডিয়ার বেওয়ানী দেন। এই বেওয়ানী সনন্দই বাঙ্গালায় हैश्त्राक त्राक्रास्त्र व्यथान ও व्यथम मनिन । छम्यथि हैश्त्राक्रशगरे ৰাজালার প্রকৃত শাসনকর্তা হইয়া পড়েন এবং মুর্শিদাবাদের নবাৰবংশ ইংরাজের বৃদ্ধিভোগ করিছে থাকেন। পূর্কোক ভালিকার অতি সংক্ষেপে এই প্রতিভাশালী নবাববংশের পরিচয় ध्यक्त बहेर्नाह ।

ইট ইভিয়া কোম্পানির অধীনত বাজালার একেউপ**ৰ।**

नाम		কাৰ্যপ্ৰহণকাল
विः	রাল্ক কাটরাইট	3400
*	बहेन	***
•	रेबार्ड	***
कारशन	খন্ ব্ৰুকাডেন	£ >44.
निः	জেম্প ক্রিক্যান	***
	পৰ ধরাক্তে তেত	>000
	वर्ष शर्हेन	2010
	খোনাথান ক্ৰেম্পি	3446
•	वेदिनवर अप	>000

শেষ ব্রিজেগ

নাম

কার্যাপ্রহণ কাল

>663

39	ওরাণ্টার ক্লোওরেল		>49.
<i>b</i>)	মাধিয়াস্ ভিজেণ্ট		3499
	শালানার স্থ	क्रिन्।	
भिः	উইनियम दरस्यम्		১৬৮২ জুলাই
*	" গিকো র্ড		১৬৮৪ আগষ্ট
শর	এডওয়ার্ড নিট্ন্টন		১৬৯৯ জুলাই
,,	চালৰ আরার্		३१०० (म २७,
মি:	জন বীয়ার্ড		১৭•> জান্থ ৭,
মি :	আণ্টনি ওয়েণ্টডেন		३१४० क्नारे २०,
,,	अन प्राप्तन		১৭১১ মার্চ্চ ৪,
>>	রবাট হে জে শ্		১৭১৩ ডিসে ৩,
	সাম্এল ফিক্		১৭১৮ জান্ত ১২,
33	জ ন জীন্		১१२७ _क ১१,
	হেন্রী ফ্রাছল্যাও		>946 , 00,
n	এডওয়ার্ড ষ্টিফেন্সন্		১৭২৮ সেপ্টে ১৭,
n	🕶 म जीन्		३१२৮
यिः	জন ষ্টাকহাউস্		১৭৩২ ফেব্ৰে ২৫,
*	টমাদ্ ব্রাডিল্		১৭৩৯ জান্ত ২৯,
	জন্ ফরেষ্টার		३१८७ टक्ट 8,
ø.	উইলিয়ৰ বারওয়েল		১৭৪৮ এপ্রিশ ১৮,
39	এডাম ডুসন		১৭৪৯ জুলাই ১৭
n	উইলিয়ম ফিট্কে (F)	tche))982 " ¢,
,,	রোকার ড্রেক্	•	১৭৫২ আগষ্ট ৮,
কর্ণেল	রবার্ট ক্লাইব		১१८४ क् न २१,
ज न (क्षड्, इन ध्रम		3 ৭৬০ জাতু ২২,
विः	হেন্রী ভাব্দীটার্ট		>१७० क् नाहे २१,
	জন স্পেন্দার		> 168 ডিসে, ৩,
শর্ভ ব			>१ ७६ त्य ७,
ৰিঃ	হারি ভেরেশেই		>१७१ क्यांस् २१,
•	জন কাৰ্টিয়ার		১৭৬৯ ডিসে, ২৬,
	রারেন হেটিংস		३ ११२ अखिन २७,
	व अवारतम् दश्विरम		
	াৰ্শমেশ্টের বিধি অন্থসা		
	হয় এবং ছিনি গৰণ		
	গভর্ণর জেনারলের		
	চার চারিজন স্থক্তের ও		
का धार्य	হর। ভারতবর্বের ই	एक्शनारट	ৰ ভারতের হংরাজ

গ্ৰৰ্ণন জেনাৰণগণের শাসন-বিৰন্ধী আদম্ভ হওৱাই এথানে বিশেষ ভাবে উলিখিত হইল না। কেবলমাত্ৰ বাজালাসংক্ৰান্ত করেকটা অসিদ্ধ ঘটনা লিপিবদ্ধ করিয়া ইংরাক্ত শাসনপ্রান্তাবের সংক্ষেপ পরিচন প্রদন্ত হইল:—

ইটই ভিরাকোম্পানীর দেওরানী গ্রহণের পর, লর্ড ক্লাইব কোম্পানীর সেনাবিভাগের সংখার করেন। ভাহারা বালিজাছলে অর্থ-লালসাপরবশ হইরা এ লেনীরদিগের নিকট হইতে অবথা অর্থগ্রহণ করিত। নীরজাকর ও নীর কাশিমের সময়ে কোম্পানীর কর্মচারীদিগের অর্থগৃর্তা ও অভ্যাচারমাত্রা উভরোজর পরিবর্দ্ধিত হয়। কোম্পানীর অর্থপিপাসা নিবারণ করিতে নবাবলিগকেও প্রজানীত্বন করিরা অর্থ সংগ্রহ করিতে হইরাছিল। এই অভ্যাচারের দিনে নিঃম্ব প্রজাগণের উপর নীবরও প্রতিকৃল হইলেন। ১৭৬৯-৭০ খুটানে বালালার ভীষণ ছর্জিক বেখা দিল, বালালা ১১৭৬ সালে এই ছর্থটনা ঘটে বলিরা উহা "ছিরাভরের মবস্তর্ম" নামে খ্যাত।

ওরারেশ হেরিংস বাদালার রাজত্ব সংগ্রহের জুবিধার্থ কালেন্টর নিরোগ করেন। এই সমরে নিকাসী দারে মহত্মদ রেলা থাঁ ও রালা সিতাব রার কারাক্ষর হন। হেরিংস রাজকোর ও রাজকার্য্যালরসমূহ মুর্শিদাবাদ হইতে কলিকাতার আনমন করেন। তিনি বিচারকার্য্যের জুবিধার্থ দেওরানী ও কৌলদারী আদালতের এবং কালী বা মৃক্তীরা কৌলদারির বিচারক হইলেন। আশীলের জন্ত কলিকাতার "সদর দেওরানী আদালতে" ও "সদর নিজামত আদালত" নামক ছইটা প্রধানতম বিচারালর স্থাপিত হইরাছিল। ১৭৭৫ পুরাকে "সদর নিজামত" মুর্শিদাবাদে উঠিয়া বার এবং মহত্মদ রেলা থাঁ নারের নাজিম হইরা তথাকার প্রধান বিচারপতি হন।

কোল্গানীর শ্রীবৃদ্ধি বেথিয়া ১৭৭৩ খুটাকে ইংলপ্তের পার্লিয়ামেন্ট বলবাপারে হতকেপ করেন। তাঁহাবের শাসনাদেশে
ওরারেন হেটিংস গবর্ণরকোনারেল হন এবং সকৌজিল গবর্ণরজেনারলের কর্তৃত্ব কোল্গানীর ভারতীর অধিকারে ব্যাস্ত হয়। এই
সমরে ইংরাজ অপরাধীদিগের লগবিধানের লক্ত ইংলগ্ডীয়
ব্যবস্থায়্পারে কলিকাভার ক্ষ্রীমকোর্ট হাণিত হইয়াছিল।
ভিরেক্টায়িদিগের ক্ষরভাত্যপারে হিল্পায়ায়্পায়ে এবং
স্সলমানদিগের মুসলমান হয় অস্থারে বিচারাবেশ প্রচারিত
হয়। এই নিমিত্ত হাল্হেড সাহেব একবানি বাললা ব্যবস্থায়ায়্
সকলন করেন। তাঁথার প্রথম বাললা ব্যাক্ষর ১৭৭৮ খুরীকে
মুল্লিত হইয়াছিল। চালস্ উইল্কিল ও ছালায় অক্ষর বৈলাই
করেন। ইহাই বালালা অক্ষরের প্রথম ক্ষ্নি। ১৭৮০

খুঠাকে ২৯এ জাতুরারী কলিকাতার প্রথম সংবাদ পত্র মুদ্রিত হর।

হেটিংসের শাসনকালে ১৭৭৪ খুটাকে মহারাজ নলকুমারের ফ'াসী হয়। তাহার পর স্থপ্তীমকোট স্থাপিত হইলে ১৭৮৩ খুটাকে সর উইলিরম জোল প্রধান বিচারপতি হইয়া আইসেন। ১৭৮৪ খুটাকে তিনি 'এসিয়াটক্ সোসাইটি অব বেকল' নামক সন্তা স্থাপন করেন। উক্ত বর্ষে পার্লিয়ামেন্টের আনেশে 'বোর্ড অব্ কন্টোল' স্থাপিত হয়।

লওঁ কর্ণন্তরালিদের শাসনকালে ১৭৯০ খুটান্দে সদর নিজামত পুনরার কলিকাতার আনীত হর। ১৭৯৩ খুটান্দে নির্দিষ্ট রাজ্যর আদাদেরর জন্ত দশশালা বা চিরন্তারী বন্দোবন্ত তাঁহার সমরের প্রধান ঘটনা। ঐ বর্ষে ইংরাজী লিখিত কতকগুলি ব্যবহা সংগৃহীত ও প্রচারিত হয়। মিঃ ফরেটার তাহার বালাল। অনুবাদ করেন।

শর্ড কর্ণপ্রয়ালিস "কালেক্টারদিগের" হন্তে কেবলমাত্র রাজস্ব সংগ্রহের ভার দিয়াছিলেন। তিনি কাজি, মৃক্তি প্রভৃতির পরিবর্ত্তে প্রতি জেলায় "জজ" নিসুক্ত করিয়া তাঁহাদিগের হত্তে দেওয়ানী ও কৌজদারী মোকদমার বিচারভার অর্পণ করেন। কৌজদারী কার্যকালে মৃসলমান ব্যবহালুসারেই বিচার কার্যা নির্কাহিত হইবে, এইজন্ত একজন মৃসলমান কর্মচারী কার্যা নির্কাহিত হইবে, এইজন্ত একজন মৃসলমান কর্মচারী কার্যা নির্কাহিত হইবে, এইজন্ত একজন মৃসলমান কর্মচারী কার্যা নির্কাহিত হারার থাকিতেন। জেলার জজদিগের হারা নিস্পাদিত মোকদমার আপিল শুনিবার নিমিত্ত কলিকাতা, মৃর্দানাবাদ, ঢাকা এবং পাটনা নগরে চারিটা "প্রভিস্নিয়াল কোটের" উপরে সদর দেওয়ানী ও সদর নিজামত আদালত রহিল। দেওয়ানী মোকদমার বিচারের জন্ত প্রতি জেলায় জজদিগের অধীনে এক এক জন রেজিটার ও কএকজন মৃন্সেক নিযুক্ত হইলেন। স্থানে স্থানে আক্ একটা থানা স্থাপিত হইল এবং এক এক জন দারোগা প্রত্যেক থানাছ কর্ষা হইলেন।

১৭৯৮ খুষ্টাব্দে মার্কুইন অব ওয়েলেস্তি বালনার গবর্ণর ক্ষেনারল হন। ১৮০৩ খুষ্টাব্দে মহারাষ্ট্রীরের সহিত সদ্ধি অনুসারে কোম্পানী কটক প্রদেশ হত্তগত করেন। তদবধি উচা বালালার অন্তর্জুক রহিরাছে।

তাহার সমর পর্যান্ত সদর দেওরানী ও সদর নিজামতের কার্যাভার সকৌসিল গ্রন্থর জেনারলের হত্তে জন্ত ছিল। তাহাতে কার্যাের অক্ষরিধা বটে দেখিরা ওরেলেস্লী তিন জন জল নিযুক্ত করেন। তাহাদের মধ্যে প্রথিতনামা ও বক্বিভাবিশারদ কোলক্রক একজন। ইংরাজ সিবিলিয়ানদিগতে দেশীর ভাবা শিক্ষা দিবার নিমিত্ত লউ ওরেলেস্লী জোট উইলিয়ম ক্লেজ

স্থাপন করেন। এই উপলক্ষে তথাকার পাঠ্যরূপে কতকগুলি বাঙ্গালা পুস্তক রচিত হয়; তন্মধ্যে রামরাম বাব্র প্রতাপাদিত্য-চরিত (১৮০১) ও লিপিমালা (১৮০২), রাজীবলোচনের ক্ষচন্দ্রচরিত, মৃত্যুঞ্জর বিত্যালম্ভারের রাজাবলী, কেরি সাহেবের বাঙ্গালা-ব্যাকরণ ও অভিধান উল্লেখযোগ্য। ১৭৯৯ খুইান্দে মিসনরি মার্সমান ও ওয়ার্ড প্রীরামপুরে আসিয়া অবস্থিতি করেন। তাহারা জয়গোপাল তর্কালম্ভার ছারা সংশোধন করাইয়া ১৮০১ খুটান্দে রামায়ণ ও পরে মহাভারত ছাপাইতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। এই সময় হইতে প্রকৃতই বাঙ্গালা-সাহিত্যের আদর বাড়ীতে থাকে।

১৮০৭ খুষ্টাব্দে লড মিন্টো গবর্ণর-জেনেরল হন। তাঁহার শাসনসমরের শেষভাগে (১৮১৩ খুঃ) পালিয়ামেন্ট প্রদত্ত সনন্দামুসারে এদেশে কোম্পানি একচেটিয়া বাণিজ্য রহিত হইয়া যায়, খুষ্টান মিসনরিরা এ হানে ধর্ম প্রচার করিতে অমুমতি পান; সেইহেতু কলিকাতায় একজন বিশপ নিযুক্ত হন। এতিজ্ঞি কোম্পানির এদেশীয় প্রস্কাদিগের বিভাশিক্ষার জন্ম সরকারী রাজস্ব হইতে প্রতি বৎসর এক লক্ষ টাকা বায় করিতে আদেশ হয়।

লর্ড ময়য়া বা মাকুইস্ অব হেটিংস ১৮১৩ খু: অবন গভর্ব কেনারল হইয়া বাঙ্গালায় আইসেন। তাঁহার সময়ে নেপাল ও মহারাই যুক্তে ইংরাজেরা জয়ী হইয়াছিলেন। এই সময়ে কতিপয় দেশীয় সম্বান্ত ব্যক্তির যুদ্ধে ও ব্যুদ্ধে কলিকাতায় "হিন্দু কলেজ" স্থাপিত হয় এবং তাঁহারই উৎসাহ পাইয়া শ্রীয়মপুরের মিসনরি-গণ "সমাচার-দর্পণ" নামে প্রথম বাঙ্গালা সংবাদপত্র মুদ্রিভ করেন। (২৩ শ্রে ১৮১৮ খু:)।

১৮২৪ খুঃ অন্দের আগান্ত মাদে বর্ড আমহার্চ গ্রবর্ণর জেনারল হইয়া কলিকাতার আদেন। তাঁহার সমরে ব্রক্ষ ফুরে কোম্পানির রাজা বৃদ্ধি এবং ভরতপুরের প্রসিদ্ধ কেলা ইংরাজনিগের হস্তগত হয়। এই সমরে কলিকাতার 'সংস্কৃত কলেজ' স্থাপন বিষয়ে সংস্কৃতভাষাবিৎ অধ্যাপকপ্রবর উইলসন্ সাহেব বিশেষ উত্যোগী হইয়াছিলেন। লর্ড আমহার্চ ১৮২৭ খুটান্দে পশ্চিমে ঘাইয়া দিলীর বাদশাহকে বলিলেন যে, কোম্পানিই বাস্তবিক এদেশের সমাট্।

১৮২৮ খং অবে লর্ড উইলিয়ম বেণ্টিছ গডর্পরজেনায়ল হন।
তিনি সহমরণথাথা রহিত করেন। রাজা রামবোহন রার,
ছারকানাথ ঠাকুর, রার কালীনাথ মুলি প্রভৃতি এতকেন্দ্রীর অনেক
ক্লিক্ষিত তন্ত্রসন্তান এই মহৎ কার্যো তাঁহার সহারতা করিয়াছিলেন। তথন একেন্দ্র ঠগ নামে একটী ভাকাইতের দল ছিল।
ভাহারা তন্তরেশে গমনাসমন করিত এবং প্রবোগমতে সহহাত্রী-

বিপত্তক বৰ করিয়া ভাহাদের বধানর্জন আপত্রণ করিত। কর্পেন জীনানের করে ঠপদিগের দোরাত্মা নিবারিত হয়।

এই সমরে এতক্ষেমার লোকদিগকে সংস্কৃত কিংবা ইংরাজী ভাবার শিকা দেওরা উঠিত কি না, এই বিবরে লোর আন্দোলন উপস্থিত হয়। অধ্যাপক উইলসন্ সাহেব সংস্কৃতের পক ছিলেন এবং প্রেসিক লর্ড মেকলে। ও টা বেসিরান সাহেব পাশ্চাত্য জ্ঞান-চর্চার প্রেরাজনীরতা দেখাইরা ইংরাজীর পক্ষ সমর্থন করেন। গভর্গর জেনারনের বিচারে ইংরাজীরই জন্ম হয়। ১৮৩৫ জন্মেকলিতাতার 'মেডিকেল কলেক' সংস্থাপিত হইরাছিল।

লর্ড বেণ্টিছের সমরে বিচার বিভাগের অনেক পরিবর্ত্তন
বটে—"প্রক্তিনিয়াল কোর্টগুলি" উঠিরা যার এবং "রেভিনিউ
কমিলনরী"-পদের হুটি হয়। "কালেউরেরা" কৌকদারী মোকক্ষার বিচার ক্ষমতা পান এবং অজেরা বেওয়ানী ও বাররার
মোক্ষমা করিবেন, স্থির হয়।

১৭৯৩ খা অবে "মৃক্ষেনী" এবং ১৮০৩ খা আৰু শদর আমিনী" পাদের হারী হয়। এপর্যান্ত দেশীর লোকেই ঐ পদ পাইতেন। লর্ড বেণ্টিক এদেশীরের নিমিন্ত "প্রধান সদর আমিনী" পাদেরও হারী করেন। ঐ পাদের নাসিক বেতন ০০০ টাকা নির্মারিত হর এবং প্রধান সদর আমিন সকল প্রকার করেনী বোকদমা করিতে অধিকারী হন। ১৮৩৩ খুঠাকে "ডেপ্টী কলেন্টার" নির্ক হইবার নিরম হয়। এই কর্মাও এতকেশার লোকে পাইতেন।

লর্ড বেন্টিছের শাসনভাবে ক্ষর্ত্বক্র শুরু "প্রভাকর"
নামক সংবাদপত্র প্রচার করেন (১৮৩০ খুঃ) এবং রাজা
রামমোহন রার ক্সিকাডা রাজ্মসমান্ত সংস্থাপন করিরাছিলেন
(১৮২৯ খুঃ)। ভারতবাসী হিন্দু ভন্তলোকদিগের মধ্যে বোধ
ছর, রাজা রামমোহন রারই প্রথম ইংলতে বান (১৮৩৪ খুঃ)।
এবং তথার ভিনি মানবলীলা সংবরণ করেন (১৮৩৩ খুঃ)।
রামমোহন রার অনেক বালালা গ্রন্থ রচনা করিরাছিলেন।

[রামমোহন রার ও ব্রাহ্মসমাজ দেখ।]

১৮৩৫ খু: অন্দে গর্ভ বে ভিছ খনেশে বাত্রা করেন; এবং
খতত্র গভর্ণর জেনারন না আনা পর্যন্ত মেটকান্ সাহেব তং-কার্ব্যে নিরোজিত হন। তাঁহার শাসন সমরে ও তাঁহারই বরে ইংরাজী ও বাজানা মুলামত্রের খাধীনতা সংহাণিত হর। নেকলে সাহেব এ বিবরে বর্বেই পোনকতা করিবাছিলেন।

১৮२७ इंडेट ১৮৪२ वृद्ध अस नर्यात गर्क अक्नां नर्यात

জ্বোরস ছিলেন। তাঁহার বনুরে ভারুলে ইংরাজরিগের নির্মাণ কুর্মণা বটে। বালানার হগনী ভলেজ (১৮০৬ বুঃ) এবং চাঞ্চা ভলেজ (১৮৪১ বুঃ) হালিভ হর ঃ

১৮৪২ হইতে ১৮৪৪ খ্ব: আৰু পৰ্যন্ত লক্ত এলেনবলোর শাসনভাল; তাঁহার আমনে ভাবুলে ইংরাজেরা জবী হইরা মানে মানে কিরিরা আসেন এবং নিমুদেশ কোম্পানির রাজ্যমুক্ত হয়। কর্ত এলেনবরো "ভেস্টা আজিট্রেটা" পবের ক্ষৃষ্ট করেন। তাঁহার শাসনভালে ভত্বাধিনী পত্রিকা প্রকাশিত হয় (১৮৪০ খ্ব:) এবং অক্ষরকুমার বস্ত ঐ পত্রিকার সম্পাদক হন।

[বালালাভাবা বেব।]

১৮৪৪ হইতে ১৮৪৮ বৃঃ অব পর্যন্ত হার্তিক সাহেব গ্রবর্ণর বোনেরল ছিবেন। জিনি বিধনিগের সহিত বৃদ্ধে অরলাভ করেন। তাঁহার সমরে "হার্তিক খুল" নামে কডকজলি গ্রহেকি বালালা বিভালর ও ক্ষমনগর কলেজ ১৮৪৬ বৃত্তীকে সংস্থাপিত হয়। ঈবরচন্দ্র বিভালাগর মহালর এই সমরে বেতালগককিংক্তি প্রকাশিত করেন (১৮৪৭ খুঃ)।

১৮৪৮ থাঃ অন্দে গর্ভ ভারতেরী এ দেশের প্রবর্গ জেনেরক হন। তাঁহার পানমকালে পঞ্চাব, শেগু, নাভারা, নালপুর, বাঁনি, অবোধ্যা ও বেরার কোশানীর অধিকারমূক হইরাছিল। বহরমপুর কলের সংস্থাপন ১৮৫৩ খাঃ জঃ বটে ও ১৮৫৫ খুট্টাকে হিন্দু কলের "প্রেসিডেলি কলেরে" পরিপত হইরা বার। জনেকগুলি গবর্মেণ্ট আদর্শ বলবিভালর এবং বালালার বীজাতির বিভালিকার জন্ত কলিকাভার বেথুন বিভালর প্রতিন্তিত হর। এই সমরে সর চার্লন্ উড্ প্রেমিড ১৮৫৪ খাঃ জনের শিকাবিবরিশী জন্মতিলিপি আইলে এবং হুলমুসারে "কলিকাভা বিশ্ববিভালরের" প্রেপাত হর। ঐ সলে বিভালর সম্বর্ধে গবর্মেণ্টের "প্রাণ্ট ইন এড" প্রথাও প্রবর্ধিত হইরাছিল। এই উপলক্ষে শিকাবিবরক কমিট উঠিরা বার, এবং বিভাষ্যাপনের "ডাইরেন্টর," "ইনন্দেটর" প্রভৃতি পরের ক্ষি হর।

লর্ড ডালহোনীর মন্ত্রে এ দেশে ইট ইন্ডিরা রেলপ্তরে এবং ভারের থবর বাণিত হর (১৮৫২ খুঃলঃ)। "গোটাল ডিগার্টনেন্ট" সংহাপিত হইরা ভাতের নাগুল কমিরা নার। ১৮৫০ অকে ইট ইন্ডিরা কোম্পানি পার্লিরানেন্ট মহাসভা হইন্ডে বে স্বন্ধ প্রাপ্ত হল, তদারা বালালার "লেক্টেনান্ট স্বর্ণর" নাবে প্রকল্পন বছর পাসনকর্তা নিরোগের আবেশ হর এবং এতক্ষেশবানিগণ বিলাভে ঘাইরা "সিবিল লার্কিন" পরীকা বিভে অন্তর্নান্ট পার্লা। নর ক্রেডারিক হেলিডে বালালার প্রথম সেক্টেনান্ট প্রকার ইয়া আসেন (২৮ এপ্রিল, ১৮৫৪ বৃট্টারা)। ১৮৫৬ অব্যে বিভারাণর মহাপ্রের টেটার বিধবাবিবার ক্রমণ বিধিক্ত হয়।

১৮৫৬ অবল পর্ড ভাগহৌশী খনেশে বাত্রা করেন এবং পর্ড ক্যানিং ভারতবর্বের গবর্ণর জেনেরল হইরা আসেন। পর্ড ক্যানিংএর সমরে ১৮৫৭ খুটানে সিপাহীদিগের বিদ্রোহ ঘটে। এই রাজাবিপ্রবে তিনি বিশেব বিচক্ষণতার সহিত কার্য্য করিরাছিলেন, এ জন্ত তিনি সাধারণে 'ক্লেমেলী ক্যানিং' নামে পরিচিত হন। সিপাহীবিল্রোহের পর ইংলভেশ্বরী মহারাণী ভিক্টোরিরা কোম্পানির নিকট হইতে এ দেশের শাসনভার খহতে গ্রহণ করেন। তৎকালে তিনি অলীকার করিয়াছিলেন বে, এতদেশীর প্রজাদিগের ধর্ম্ম ও ঋত্ব রক্ষা করিবেন এবং তাহাদিগকে উপযুক্ত দেখিগেই সকল রাজকর্ম্ম দিবেন (নবেম্বর, ১৮৫৮ খুটান্ধা)। লভ ক্যানিভের সমরে "ভারতবর্ষীর দণ্ডবিধি", "দেওয়ানী" ও "কোজনারী কার্যাবিধি" এবং শোজনাসবন্ধীর ১৩ আইন" প্রচারিত এবং "করেন্সি নোট" প্রথম প্রচলিত হর।

ক্যানিং এর পরে লর্ড এলগিন্ গ্রথরিক্সেনেরল হন। তাঁহার শাসন সমরে পূর্ববালালা ও মাতলা রেলওরে খুলে এবং সদর আদালত ও স্থপ্রিমকোট মিলিত হইয়া "হাইকোট" নাম ধারণ করে (মে, ১৮৬২)। হাইকোটের বিচারপতিপদে এতদেশীয় লোক নিযুক্ত হইবার নিয়ম আছে।

ছই বংসর (১৮৬২—৬৩ খু:) পূর্ণ হইতে না হইতে লর্জ এলগিন্ মানবলীলা সংবরণ করেন। তাঁহার মৃত্যুর পর সর উইলিয়ম ডেনিসন্ কিছু দিন গবর্ণর-জেনারল ছিলেন। অনস্কর সর জন লরেন্দ (১৮৬৪—৬৯ খু: আ:) এবং লর্জ মেও (১৮৬৯—৭২ খু: আ:) যথাক্রমে গবর্ণর জেনারল হন। একজন নির্দাসিত মুসলমানের অন্তাঘাতে আন্দামান বীপে লর্জ মেওর মৃত্যু হর (৮ই ফেব্রুরারী, ১৮৭২)।†

অনস্তর ৯ই হইতে ২৪শে ফেব্রুরারী পর্যান্ত সর জন ট্রেচি ও ২৪শে ফেব্রুরারী হইতে ৩রা মে পর্যান্ত লর্ড নেপিরর গবর্ণর জেনারলের কার্য্য করিয়াছিলেন। ১৮৭২ অব্দে ওরা মে গবর্ণর জেনারল লর্ড নর্থব্রুক এদেশের শাসনভার গ্রহণ করিয়া করপ্রশীড়িত প্রজাদিগের কর ভার লাঘ্য করেন এবং উচ্চ অক্টের ইংরাজী শিক্ষাবিব্যর উৎসাহ দেন।

नर्छ नर्धकरकन्न नगरत्न ১৮१६ थुः व्यत्मन त्नवजारंग यूनत्राक

প্রিক্ষ অব্ ওরেলস্ (বর্তমান ভারত-স্মাট্ ৭ম এডওরার্ড)
বাঙ্গালার গুভাগমন করেন। যুবরাজ ইংলপ্তে প্রভাগত ইইলে
মহারাণী ভিট্টোরিয়া "এম্প্রেস্ অব ইণ্ডিয়া" উপাধি গ্রহণ
করিয়াছেন (১৮৭৬ খু:)। ১৮৭৭ অব্দের জান্তমারিমাসে
এই উপাধি গ্রহণ উপলক্ষে দিল্লী নগরীতে মহাসমারোহে
দরবার হয়। এই বৎসর দক্ষিণ ভারতবর্বে ছর্ভিক্ষ ঘটে ও
কাব্লের আমীরেয় সহিত যুক্ষ বাঁধে। তাহাতে ইংরাজপক্ষে
জয়লাভ হয়। ১৮৭৬ অব্দে তিনি খদেশ যাত্রা করেন এবং
লর্ড লিটন তৎপদে অভিষক্ত হন।

লর্ড লিটন দেশীর সংবাদ পত্রের স্বাধীনতাহরণ ও অন্তরআইন বিধিবদ্ধ করেন। ইহার সময়ে ছর্ডিক্ষ নিবারণার্থ
ব্যবসায়িগণের উপর "লাইনেন্স ট্যাক্স" নামে কর সংস্থাপিত
হয়। ১৮৮০ খুটান্দের এপ্রিল মাসে লর্ড লিটন ভারত
পরিত্যাগ করিলে মার্কু ইন্ অব্ রিপন ভারতের গবর্গর জেনারল
হইয়া আসেন। ভাঁহার সময়ে ইংরাজেরা প্নর্কার কাব্ল যুদ্ধে
জয়ী হন।

রিপন দেশীয় সংবাদপত্তের স্বাধীনতা পুন:প্রদান এবং "স্বায়ন্তশাসনপ্রণালী" প্রবর্ত্তিত করিয়া বাগালার বিশেষ মঙ্গল সাধন করেন; এতদ্ভির বিভাশিক্ষাস্থকে "এডুকেশন কমিশন" নিযুক্ত হয়। তাঁহার সময়েই জল্প রমেশচন্দ্র নিত্র কিছুকাল চিফ্ জন্তিসেরও কার্য্য করিয়াছিলেন।

১৮৮৪ খু: অব্দের শেষভাগে লর্ড ডফারিণের হত্তে ভারতশাসনভার অর্পন করিয়া লর্ড রিপন খনেশ যাত্রা করেন।
তাঁহার আগমনের কিছুদিন পরে বাঙ্গালার প্রজাখদবিষয়ক
১৮৮৫ খু: অব্দের ৮ আইন বিধিবদ্ধ হয়। ১৮৮৫ খু: অব্দের
শেষভাগে ব্রহ্মরাজ থিবকে সিংহাসনচ্যত ও বন্দী করিয়া তদ্দেশ
অধিকার করা হয়। ১৮৮৬ অব্দের ১লা জামুয়ারি হইতে
বিজ্ঞীণ ব্রহ্মরাজ্য ভারত সাম্রাজ্যভুক্ত হইয়াছে। উক্ত বর্বের
এপ্রিল মাস হইতে 'ইন্কম্ টাাক্স' কর পুন: সংস্থাপিত হয়।
ভারতরাজরাজেখরী ভিক্তৌরিয়ার রাজ্যকালের পঞ্চাশৎ বর্ব
পূর্ণ হওরা উপলক্ষে ১৮৮৭ খু: অব্দের ১৬ই ক্ষেক্রমারি ভারতবর্বে
সর্বাত্র মহাসমারোহে "জুবিলি" মহোৎসব সমাহিত হইয়াছিল।

লর্ড ডফারিণ দেশীরদিগকে অধিক পরিমাণে উচ্চ পদে
নিবৃক্ত করিবার প্রভিপ্রারে "পবলিক সার্ক্ষিন কমিনন" নিবৃক্ত
করেন, কিন্ত উহার মন্তব্য অনুসারে এখনও কোন বিশেষ
কার্য্যের অনুষ্ঠান হর নাই। লর্ড ডফারিপের সমরে সিকিম,
ডিকাত ও পঞ্জাব সীমান্তবিভ ক্রম পর্কতে বৃদ্ধ হর। ইনি
১৮৮৮ অক্টের ২০ই ডিসেবর লর্ড ল্যান্সডাউনের হত্তে শাসনভার অর্পণ করিরা বিলাত বারা করেন। লর্ড ল্যান্সডাউনের

সমরে ১৮৯০ খুটাব্দের ডিনেখর মানে ক্ষিরার সম্রাটের জ্যেটপুর দেশ ন্রমণ উপলক্ষে ভারতবর্ধে উপস্থিত হন। মণিপুর রাজ্যে স্থেশুশালা অনুসারে রাজকার্যা নির্কাহ না হওয়ার ভারত-গবর্ণমেন্ট তদ্বিরে হতকেশ করিতে বাধ্য হন। তছ্পলক্ষে প্রেরিত ইংরাজ কর্মচারিগণ নিহত হইলে একদল ইংরাজ-নৈস্ত মণিপুর অধিকারপূর্বক অপরাধিগণকে ধৃত করে। বিচারে অপরাধিগণের সম্চিত দওবিধান হয় (১৮৯১ খু:)। ব্বরাজ্ টাকেক্সজিৎ ইংরাজরাজের বিচারে প্রাণ হারান। [মণিপুর কেখ]

লর্ড এলগিন ২৪এ জাতুয়ারি ১৮৯৪ খুষ্টান্দে ভারতবর্ষের রাজপ্রতিনিধি ও গ্রণ্র জেনেরল হন। তাঁহার শাসনকালে "ভারমণ্ড कृतिनि" উৎসব মহাসমারোহে নিপার হইয়াছিল। ১৮৯৯ খুষ্টাব্দে এলগিন প্রত্যাগত হইলে লর্ড কার্জন অব কেডলষ্টোন ভারত-প্রতিনিধি হইয়া আগমন করেন। তাঁহার শাসনকালে মিউনিসিপালিট ও শিক্ষাবিষয়ক নানা রাজনৈতিক কার্যোর সংস্থার সাধিত হইয়াছিল। তাঁহার শাসনকালে ১৮৯৯ चुहोरसत २२ ८ कारूयाती ভाরতে बती ভिक्लोतियात मुका घटि। তাঁহার জােষ্ঠপুত্র ৭ম এড-ওয়ার্ডের রাজ্যাভিষেক উপলক্ষে দিলীতে দরবার হয়। এই সময়ে বাঙ্গালায়ও বিশেষ ধুমধাম হইরাছিল। তাঁহার অবকাশ সময়ে মান্ত্রাজের গ্বর্ণর লও আম্পণিল কার্য্য করেন। তিনি পূর্ববেদের কতকগুলি জেলা আসাম প্রদেশের সহিত যোগ করিয়া বঙ্গরাজ্ঞাকে দ্বিথণ্ডিত করেন। ইহাতে বাঙ্গালার রাজনৈতিক ভিত্তি অনেকাংশে স্থান্ত হইয়াছে, সন্দেহ নাই। ভারতের উত্তরপূর্বসীমান্ত রক্ষা এবং বন্ধ ও ব্রন্ধের মধ্যবর্তী বনাকীর্ণ পার্বত্যপ্রদেশে ইংরাজ-শাসনপ্রতিষ্ঠাই এই জটিল তবের গৃঢ় উদ্দেশ্য।

এই সমরে সামরিক বিভাগের সংশ্বার লইয়া অলী লাট লর্ড
কিচনার বাহাছরের সহিত তাঁহার বিরোধ উপস্থিত হয়।
তাহাতে তিনি ভারত-সচিবের নিকট কর্মত্যাগ পত্র প্রেরণ
করেন। তাঁহার পদত্যাগ পত্র সাধারণে গৃহীত ও অম্নাদিত হইলেও তিনি ভারতবর্ষ ত্যাগ করিতে পারেন নাই।
ইংলগুলীশ্বর ৭ম এডওয়ার্ডের অম্মত্যম্সারে তিনি ব্বরাদ বিশে অব ওরেলস্কে অভিনন্দন দিবার অক্ত ভারতে থাকিতে,
বাধা হন। ১৯০৫ খুটান্দের মই ডিসেম্বর যুবরাক্ত বোষাই সহরে
পদার্শন করেন। ১৭ই তারিধে লর্ড মিন্টো ভারতে উপনীত
হইলে তিনি তাঁহার হত্তে ভারত-সাম্রাজ্যের কার্যাভার দিয়া
১৮ই ডিসেম্বর ইংলগু-বাত্রা করেন।

লর্ড মিন্টোর সমরে ২৪এ ডিসেম্বর যুবরাজ বালালার জাসেন। ফলিকাভার তাঁহার গুভাগমনে বথেই আনন্দোৎসব হইরাছিল। ফলিকাভা মরদানে তাঁহার শিক্তার্থনা ও অতিনন্দনার্থ একটা

দরবার আছত হর । ঐ সমরে ছোটলাট বাহাছরের বেলভেডিরার প্রাসাদে বলীর হিন্দু মহিলারা যুবরাজপত্নীকে বরণ ক্রিরাছিলেন।

১৯০৫ পুটান্দের অক্টোবর মানে বছরাল্য প্রাক্ত প্রাক্তাবে বিভাগে বিভক্ত হয়। ফুলার সাহেব তথাকার ছোটলাট হম। वक्रवांत्री এই त्रमूर विभावत पितन हैरबाक विविक्तिराज वाणिका नथ রোধ করিতে বালালায় "খদেশী" বিস্তার করিতে চেঠা পান। তাঁহারা বদেশী বাণিজ্যরকার জন্ম বন্ধমান্তার পাদপল্লে ভরণ লন এবং বন্ধিমচল্লের সেই দিগন্ত বিন্দারিত "বন্দে মাতরম" महामाज मीक्किण हरेबा काणीब अफ छन्यांशान यञ्जरान् हन। এই 'বন্দে মাতরম' মত্রে অচিরে একটা বিলোছের আশহা कानिया देश्याक बाककर्यागित्रश्य मुनक्षिक दहेया केट्रिन । তাঁহারা চারি দিকেই "বন্দে মাতরম্" ল্লোড প্রতিরোধ করিবার জন্ম সাকু লার জারি করিলেন। দরিজ বালাণীপ্রজার উপর রাজপুরুষদিগের হত্তে অরবিত্তর অত্যাচারও চলিতে লাগিল। বরিশালেই মাত্রা কিছু অধিক দাঁড়াইল। তথাকার রাজকর্মচারি-গণের মন্তক "বন্দে মাতরম্" ধ্বনিতে বিগুর্ণিত হইল। তাঁহারা বাঙ্গালীর ঔষত্য দমনের জন্ম তথার গোর্থ সেনাদল রক্ষার ব্যবস্থা করিলেন। অবশেষে ১৯০৬ খুষ্টাব্দে বেঙ্গল প্রভিন্সিয়াল कन्कारतरमञ्ज नमत्र त्राव्या-धाव्यविषयत्वत्र हुष्कां छ हदेशा राजा। বঙ্গের বক্তা সুরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় রাজপুরুষদিগের প্রকোপে অর্থনতে দণ্ডিত হইলেন। প্রকামহলে আরও মশান্তি অমুভূত হইতে লাগিল, তথন রাজ্যে শান্তিবিধানের জন্ম পূর্ববঙ্গের ছোট-লাট বাহাছর স্বীয় আদেশ প্রত্যাহার করিলেন। কিন্তু বালালায় এই সময়ে "বদেশী আন্দোলন" পূর্ণরূপে জাগিয়া উঠিল।

ৰাজালার কোর্ট-উইলিয়ম ছর্গের প্রথরগণ।

কার্য্যারত	পদত্যাগ
১৭৭৪ অক্ট ২০,	১৭৮৫ ফেব্ৰু ১,
११४६ (कड़ ४,	১৭৮৬ সেপ্ট ১২,
১৭৮৬ সেপ্ট ১২	১৭৯৩ অক্ট ১০,
১৭৯৩ অক্ট ২৮,	১৭৯৮ মার্চ ১২,
১৭৯৮ মার্চ ১৭,	১৭৯৮ মে ১৭,
১৭৯৮ মে ১৮,	১৮০৫ জ্লা ৩০
১৮০৫ ৩০ জুলাই	
১৮০৫ অক্ট ১০,	১৮০৭ জুলা ৩১
১৮०१ क् नाहे ७১,	३४३८ खर्छे ह
১৮১৩ অক্ট ৪,	১৮২০ জানু ৯,
३४२० बाबू ५७,	১৮২৩ আগ ১,
১৮২৩ আগ ১,	১৮২৮ মার্চ ১০,
>४२४ मार्फ २७,	अध्यक्ष म् गा ८,
	১৭৭৪ জন্ত ২০, ১৭৮৫ কেব্ৰু ৮, ১৭৮৬ সেণ্ট ১২ ১৭৯৩ জন্ত ২৮, ১৭৯৮ মাৰ্চ ১৭, ১৭৯৮ মে ১৮, ১৮০৫ ৩০ জুলাই ১৮০৫ জন্ত ১০, ১৮০৭ জুলাই ৩১, ১৮১৩ জন্ত ৪, ১৮২৩ জান্ত ১০,

णांतकपर्यत्र में में स-त्मना प्रमाह S SIMP VINCE गर्छ छैरेनियम विनिष् ১৮৩৫ মার্চ ২০ সর চার্ল মেটকাক, अध्यक्ष वार्व २० ১৮৩৬ মার্চ ৪ গৰ্ড অহবাও SHOW ATE 8 ३४४२ (कड़ २४ नर्छ अल्यस्ता ১৮৪৪ জুলাই ২৩ >>85 CAS SA লর্ড হার্ডির ১৮৪৪ खूनाई २১, ১৮৪৮ बाबू ১२, बादकूरेन चन् छानारोनी २५८५ बाद २२, ১৮৫৬ কেব্ৰু ২৯. चात्रम् कामिर SPER CATE 59

ভারতথরে গভর্ম জেনারল ও ভাইস্বর।

-14-44		·
नर्छ कानिर	১৮৫৮ নভে ১	ऽ ৮७२ मार्চ ऽ २,
্ল এলগিন্	১৮৬২ মার্চ ১২,	
দৰ্ রবাট নেপিয়াৰ	১৮৬৩ নভে ২১,	১৮৬৩ ডি ২,
গৰ্ উইলিয়ম ডেনি স্ন	১৮৬৩ ডিসে ২,	३৮७८ जोस् ५२,
मन् क्षम गटक्क	३५५८ सास् ३ २,	১৮৬৯ জালু ১২,
गर्ड त्यव	১৮৬৯ बाह्य ५२,	
गत्र वन होति	১৮৭২ ক্ষেক্ত ৯,	১৮৭২ কেব্ৰু ২৩,
শৰ্ভ নেপিয়ায়	১৮৭২ কেন্দ্র ২৩,	১৮৭২ মে ৩,
লর্ড নর্থক্রক	१५५१ त्य ७ ,	১৮৭৬ এপ্রিশ ১২
লর্ড লিটন	১৮৭৬ এপ্রিল ১২,	३७४० क्न ४
্ৰ গ্লিপন	३४४० ब्ल ४,	১৮৮৪ ডিসে ১৩
্ল ডাক্রিন	১৮৮৪ ডিসে ১৩,	১৮৮৮ ডিসে ২৭
্ল লালডাউন	১৮৮৮ ডিসে ১০	১৮৯৪ জাতু ২৭,
্ল এশগিম	১৮৯৪ আৰু ২৭,	১৮৯৯ জান্থ ৬
গৰ্ড কাৰ্ম্মন	১৮৯৯ আন্থ ৬,	১৯০৫ ডিলে ১৮
লৰ্ড মিন্টো	১৯০৫ ডিলে ১৮	

ক্ৰেটি লাটের শাসন।

হেলিডে সাহেবের পরে সর জন শিটার প্রাণ্ট (১৮৫৯—
১২), সর সিনিল বীডন (১৮৬২—৬৭), সর উইলিয়ন প্রে
(১৮৬৭—৭১) ও সর জর্জ ক্যান্সবেল (১৮৭১—৭৪) সাহেব
বথাক্রমে মালালার লেপ্টেনান্ট গবর্ণন হইরাছিলেন। প্রাণ্ট
সাহেবের সমরে নীলকর ইংরালবিশের অভ্যাতার নিবারিত
হব। বীডন সাহেবের আমলে উড়িয়ার হর্ডিক হইরা অনেক
লোক মারা বার, পাটনার কলেজ সংহাপিত হব এবং ৮তৃত্বেব
হুবোপাধ্যাবের সাহাত্যে পাঠলালার উর্জি কার্ব্যে গবর্ণনেন্ট
মুক্তকেল করেন। ১৮৯০—৬৪ ব্রঃ অকে নবীরা ও বর্জনান
জ্বেলার রাগেলিরা কর প্রায়ত্তি হইরা অনেক লোক মারা বার।
১৮৬০ ব্রঃ অকে কলিলেন্টা রাজবানীতে এবং ১৮৬৪ ব্রঃ অকে
সকঃস্থানের প্রধান প্রধান করের বিউনিনিস্বালিট সংহালিত হব।
১৮৬০ ব্যঃ অকে মুক্তির ব্রেক্তিনিস্বালিট সংহালিত হব।
১৮৬০ ব্যঃ অকে মুক্তিন ব্রেক্তিনিস্বালিট সংহালিত হব।

হইবার সজে সজে কলিকাডার ও মুক্তছলে রেকিটরি আফিস অপিড হইল।

কাৰেলের সমৰে (১৮৭১ বু: অব্দে) সূর্জ্যপ্রথম বাদালার জনসংখ্যা অব্ধারিত হয়। এই বৎসরেই রাতানির্দাণ ও পুন:সংশ্বার এবং খাল প্রভৃতি খনন জন্ত "পথকর" স্থাপিত হয়। এই কার্য্যের স্থবিধার অক্ত তিনি "সব্ ডিপুটী" ও "কাতুনগো" পদ স্ষ্টি করেন। ঐ সময় হইতেই কুল ও কলেকে ব্যারাম শিক্ষার ব্যবস্থা হইরাছিল। ৭ই কেব্ৰুৱারী আসাম প্রবেশের শাসনভার लार्ल्डेनां के भवर्गदात रुख रहेएक धक्सन हिक कमिननदात है হত্তে অৰ্শিত হয়। ১৮৭৪ খুৱাৰ হইতে ১৮৭৭ অৰু পৰ্যান্ত সর রিচার্ড টেম্পল বাঙ্গালার লেপ্টেনান্ট গবর্ণর ছিলেন। তাঁহার আমলে শাসনকার্য্যের পুবিধার জন্ত অনেকগুলি বহকুমা সংস্থাপিত এবং অনেক জেলার সীমা পরিবর্ত্তিত হইরাছিল। ১৮৭৬ বুঃ অব্দে নামজারি আইন প্রচলিত হইরা সকলের ভূমি-সম্মীর সম্ব লিপিবদ্ধ হয়। এই বৎসরে কলিকাতা মিউনিসি-পালিটিতে প্রথম নির্মাচনপ্রথা প্রবর্তিত হর। সর মাসলী ইডেনের সমরে (১৮৮৬—৮২) বেহারের আদালতে ও সরকারী কার্য্যে পারদীর পরিবর্জে "কারেথী" ভাষা প্রচলিত হর। ১৮৭৮ অবে বিলাতে না বাইরা বাহাতে অপেকায়ত অন্ন বেজনে এতদেশীর ব্যক্তিগণ সিবিল সার্বিসে প্রবিষ্ট হইতে পারে, ভবিবরে নিরম প্রচলিত হর। ঐ সমরে করেকজন ষ্টাচুটারি সিবিলসার্কিন' পরীক্ষার উত্তীর্ণ হৃত্যাছিলেন : এই সময়ে অনেক ডাক্ষর সংস্থাপিত হয় এবং ১৮৮০ অবে ডাকের 'মনিঅর্ডার' ও 'পোইকার্ড' প্রচলিত হয়। ১৮৮১ অবে বিতীয়-বার বাজালাদেশের জনসংখ্যা নির্মারণ করা হর। বাজালার খোলাভাটী সংস্থাপিত হওরার এই সমরে বালালার স্পরাপানের লোভ প্রবাহিত হইতে থাকে। ইহার পরে সর রিভার্স টম্পুসর नारहव (১৮৮২-৮१ बृष्टीएक) वाकानात्र लाल्डेमान्डे शदर्गत्र हम । ভিনি 'এগ্রিকলচরেল' বা ক্রবিবিভাগ স্থাপন এবং মকংখল মিউনিসিপালিটিতে নির্মাচনপ্রথা প্রবর্তিত করেন। ১৮৮৩-৮৪ অৰে কলিকাভার আত্তৰভিক প্ৰদৰ্শনী (International Exhibition) मांचक महात्वना त्यांना हद। धरे नमत्व वनीत ध्वजायप्रविवतक भारेन विधिवक इरेबाहिन। भारतक ছলে নৃতন বেলওবে এক অনেক ভার ও টেলিগ্রাক আছিল নংখাণিত হয়। এই সময়ে বেখুন মূল কলেকে বারিণত হয়। ফতিগৰ বেশীৰ কুডবিলা ব্যক্তি নিলিক হইয়া "দেশানাল कनतान्य वा बाजीय महानमिष्ठि बांशन करतम । ३४४० व्या करव क्रिकाला केरा विकीत समित्रकाम रह । क्रिक्न मारहरवह

आंगरन क्यांनी कमिनन ও आंक्जांत्री कमिनन निर्दाक्कि इत्. কিন্তু অত্যাপি তদমুসারে কোন কার্যাই হর নাই। উড়িয়া *কোষ্ট ক্যানাল" নামক খাল জাঁহার সময়ে কাটা ও খোলা হয়। অতঃপর সর ই রাট কলভিন বেলি বালালার লেপ্টেনান্ট গভর্ণর হন (৩ এপ্রিল, ১৮৮৭)। তৎপরে দর চার্ল ইলিয়ট ডিলেম্বর মালে ১৮৯০ খুটান্দে বালালার লেপ্টেনান্ট গ্রণর ষ্টলেন। এই বৎসর ডিসেম্বর মাসে কলিকাভার নেশনেল কন-ত্রোদের ষষ্ঠ অধিবেশন হয়। ১৮৯১ খুঃ অব্দের ২৬এ ফেব্রুয়ারি তৃতীয়বার বলদেশের জনসংখ্যা নির্দ্ধারণ করা হয়। সর চার্ল স ইলিয়ট ৬ মাসের জন্ম অবকাশ গ্রহণ করার স্তার এণ্টনি প্যাটি ক মাাকডোনেল সাহেব প্রতিনিধি লেপ্টেনান্ট গ্রণর হইরাছিলেন (জুন ১৮৯৩ খুষ্টাব্দে)। ১৮৮৫ অব্দের ডিসেম্বর মানে সর আলেকসান্দার মেকেন্সি বাঙ্গালার লেপ্টেনান্ট গবর্ণর হন, তিনি মিউনিসিপাল বিলের খস্ডা প্রস্তুত করিয়া যান। তাঁহার পীড়ার অবকাশে মহামাগ্ত চার্ল স্ সিসিল ষ্টিভেন্স সাহেব প্রতি-নিধি লেপ্টেনাণ্ট গবর্ণর হইরাছেন। তদনস্তর উড্বরণ সাহেব বাঙ্গালার ছোট লাট হন। তিনি মিউনিসিপাল বিল অনুমোদন করিয়া তাহা কার্য্যে পরিণত হইতে আদেশ করেন। তাঁহার সমরে বাঙ্গালায় 'প্লেগ' পীড়া দেখা যায়। ঐ প্লেগের সময় তিনি নিজ জীবনের মারা পরিত্যাগ করিয়া কলিকাতার প্লেগ নিপীড়িত পল্লীতে পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন। তাঁহার এই উদারতায় সকলে মুগ্ধ হইয়াছিলেন। যে সকল বস্তিতে অনেক त्नाक मात्रा পড়িতেছিল, তিনি তাহা ভালিয়া দিতে আদেশ দেন। তাঁহার পর বর্তমান ছোটলাট ফ্রেক্সার বাহাহর বিভক্ত বাঙ্গালার শাসনকর্তা হইয়া ধীর পাদ বিক্ষেপে রাজনৈতিকমার্গ অমুসরণ করিতেছেন।

বাজালার লেপ্টনাণ্ট গভর্ণরপ্র

১৮৫৪ এপ্রিল ২৮, সর ফ্রেডারিক জে. হালিডে জন পি. গ্রাণ্ট >> c> C4 সেসিল বিডন K. C. S. I, ১৮৬২ এপ্রিল ২৪, উলিয়ম গ্রে ₹8. वर्ष कारपन ১৮৭১ মার্চ , तिर्हाफ टिम्भन Bart., ১৮৭৪ এপ্রিল माननीय जागुनी हेएडन C. S. I. C.L.E., **১৮**৭৭ बाङ्गाती *৮,* नव है,बार्ट नि, (वनी K.C.S.I, C.I.E, ১৮৭৯ জুলাই (মাননীর আস্লী ইডেনের বিশেষ কার্য্যের অবসরে অহারিরূপে কার্য্য করেন)

্ অগাটাস্ রিভার্স টব্বসন C.B.I, C.L.E., ১৮৮২ এতিবল ২৪, বি: এচ, এ, ককুরেল I.C.B, C.L.E., ১৮৮৫ আগট ১১, XVII (বিভাগ উস্পাননৰ ছুটার অবকাণে অভারিক্ষণে কার্য্য করেন)

সর টুরাট সি, বেলী ১৮৮৭ এবিল ২,

্ব চার্লন্ আল্ফেড্ এলিরট K.C.S.I, ১৮৯০ ডিসেম্বর ১৭,

্ব আন্ট্রনি পাট্রিক ম্যাক্ডোনেল K.C.S.I. ১৮৯৩ মে ৩০, (উক্ত বর্ষের ৩০এ নবেম্বর পর্যাস্ত

এলিয়টের ছুটার সময় কার্য্য করেন)

মাননীর সর আলেকজালার মেকেঞ্জী K.C.B.I, ১৮৯৫ ডিসে, ১৮
মাননীর চার্ল লি, ষ্টিভেন্স C.B.I, (আলেকজালার মেকেঞ্জীর
অবকালে ১৮৯৭ খৃষ্টালের ২২এ ডিসেম্বর
পর্যান্ত কার্যা চালান)

মাননীয় সর জন উড্ বরণ I.C.S, K.C.S.E, ১৮৯৮ এপ্রিল ৭,

় জে, এ, বোর্ডিলোন্ v.D. I.O.S, C.S.I, ১৯•২ নডেম্বর ২**২** একটিং

্দু সর এ, এচ, এল ভ্রেজার m.A, I.C.S, K.C.S.I,
১৯০৩ নভেম্বর ২, (উাহার স্ববকাশে ১৯০৬
খঃ জ্ন, মাননীর এল্, ফেয়ার কার্যা করেন।
পুর্ববদ্ধ ও আসামের লেপ্টেনাট স্বীব্রিঃ

মাননীয় সর,জে,বি,ফুলার I.C.S., K.C.S.I, C.I.E,১৯০৫ আক্টোবর ইংরাজ শাসনে বাজালার অবস্থা।

ইংরাজদিগের রাজত্বালে এদেশে কতকগুল কুপ্রথা প্রতিষ্টিত হয় এবং কতকগুলি কুপ্রথার বিলয় সাধিত হইরাছে। সহমরণ বা সতীদাহ, গঙ্গাসাগারে সপ্তান বিসর্জন প্রভৃতি কুপ্রথা যেমন রহিত হইয়াছে এবং চোর ডাকাইত ও অত্যাচারী জমিদারদিগের দোরাত্ম্য কমিরাছে; তেমনই নৃতন নৃতন রাতা, রেলওয়ে এবং বালার পোত্যোগে গমনাগমনের ও বাণিজ্যপ্রকাত প্রেরণের স্থবিধা ঘটিয়াছে। আবার পোঠবা ডাক এবং টেলিগ্রাফ প্রবর্তিত হওরার অতি অর সমর মধ্যে দ্রে সংবাদ পাঠাইবারও উপার হইয়াছে। বিচারালরের বৃদ্ধি হওরাতে লোকের অন কমিরার পথ প্রশন্ত হইয়াছে। বিস্তাচর্চা ভারা লোকের অনেক মানসিক উরতি ঘটিয়াছে। বজাসির চকু ফুটিয়াছে; মুদ্রায়রের স্থাধীনতা পাওরার ভারার দ্যাজপুরুবদিগকে মনের কথা খুলিয়া বলিবার পথ পাইয়াছে।

ইংরাজেরা এদেশে নীল, চা প্রাকৃতি দ্রব্যের চাব করিরাও এখানকার কিঞ্চিৎ উপকার করিরাছেন বটে, কিন্তু ভার্ত্যুত দরিদ্রবাদী প্রজার জনেক জনেক বিষয়ে জমলল সাধিত ছই-রাছে। এই নীলের চাব ঘুটার ১৮শ শতালে এথানে জারন্ত হন্ন এবং নেই সমর্য হইতে শীনহীন প্রজাবর্গ নান্দের জর্মের লোভে আপনার সর্বাধ হারাইরা ইংরাজের নিকট প্রাণ ও মান বিকাইতে শিক্ষা করে। নীলকট্নগণ কিন্নপ শ্রীমান্থবিক অত্যাচারে বালাগার প্রজাবর্গকে নির্মিত করে, তাহা নীলদর্শণ-সাঠকগণ সহজেই উপলব্ধি করিতে পারেন। এই নীলের চাব একদিন পূর্ব্ব, পশ্চিম ও দক্ষিণ বজের সকল ছানেই প্রায় প্রচলিত ছিল। প্রতি ১০ মাইলের মধ্যে নীলকর বণিক্ষিগের একটা না একটা কুটা স্থাপিত হইরাছিল। নেই সকল নীলকুটার ধ্বংসাবশেষ আনিও বালাগার সেই অতীত ছংগন্বতি আপন করিতেছে।

বে সক্ষণ প্রান্দে নীলকুঠা স্থাপিত হইরাছিল, সেই সকল প্রান্দের অধিকাংশ ধনাতা ব্যক্তিই ঐ কুঠার দেওরান বা দারোগা হুইভেন। তাঁহারাও ইংরাজসংস্পর্শে আসিরা অনেকাংশে ইংরাজের স্থার কঠোর প্রকৃতি হইরা পড়েন। তাঁহাদের প্রায় কুল ভূমাধিকারীর অভ্যাতারেও বালালার প্রকাগণ সল্ভিত হুইরাছিল।

বণিকবেশে ইংরাজবণিক বাজালার প্রবেশ করেন। বাজালার উর্বের ও শশুপূর্ব সমতলক্ষেত্র সহজেই তাঁহাদের চিত্ত আকর্ষণ করে। এই গাঁজের ববীপ ভাগ নদীজালে সমাকীণ হওয়ায় তাঁহারা সহজেই বাজালার অভ্যন্তর ভাগে প্রবেশ করিতে সমর্থ হইলেন। ভারতের অভ্যন্ত প্রদেশে এরূপ গমনাগমনের প্রবিধা না থাকার এবং তক্ষেশ ভাগ শশুসমূদ্বিপূর্ণ না হওরার চতুর ইংরাজগণ সে সকল স্থান বিশেষ প্রবিধান্তনক মনে করেন নাই। কারণ তথন এদেশে রেলপথ ছিল না! নৌকাপথেই তথনকার পণাদ্রব্যবহনের একমাত্র উপার ছিল। সেই কারণেই ইংরাজগণ তথাকার অধিবাসীদের সহিত আত্মীরতা হাপনপূর্বক মিশিতে পারেন নাই। বাজালার তাঁহাদের সে প্রবিধা ঘটরাছিল।

নীস বাঙ্গালা ভিন্ন ভারতের অপর কোণাও প্যাপ্ত উৎপন্ন হয় না এবং পণ্যস্রবাবহনের বিশেষ স্থবিধা দেখিয়া ইংরাজবণিকগণ নীলকরবেশে বাঞ্চালার উপনিবেশ হাপন করেন। এখনও নদীরা ও যশোহর জেলার আনেক উপনিবেশী ইংরাজ জমিলারী ক্রেয় করিয়া ভাহার উপসন্ধ ভোগ করিতেছেন।

পূর্বকালে নীলের লাগন উপলক্ষেই ইংরাজের সহিত বলবালীর বিশেব ব্যিইতা ঘটে। সেই প্রে এবং বাণিজ্য বাপাদেশে
তাহারা বাজালার নবাব করকারের অনেক হিন্দুক্র্যচারীর
সহিত মিত্রতা করিরা লন। এমন কি, সেই ব্যবসারী ইংরাজ
রাণক্রিগের অনারিক্তার স্থানীর অনেক প্রানিক কমিগার ও
রাজার সহিত তাহাবের সভাব ঘটে, কেই বেলাবেশার তাহারা
তৎকাশিক রাজনৈতিক ক্ষেত্রের প্রকৃত অবস্থা অবগত হইতে
থাকেন। সিরাজকে রাজ্যুত করিবার ক্ষরের বর্ধন ইংরাজ
ব্লিকের কর্পে বার, তর্ধন তাহারা উন্নীব হইলা নেই আলো-

লমে বোগদান করেন। বাদাবার প্রজা বা জমিদারেরা তথন ইংরাজকে বিশ্বত কছুর ভার বিবেচনা করিতেন। জ্ঞান গুরোপীর বণিকের ভার তাঁহাদিগকে বৈদেশিক বলিরা জ্ঞান করিতেন না। এই বিশ্বাদ-বলেই বড়বত্রকারীরা গোপনে ইংরাজের সাহাব্য প্রার্থনা করে, তাহারই ফলে ইংরাজবণিক বাদাবার অধীধর হইরা ক্রমে ভারতের শাসনদও পরিচালন করিতে সমর্থ হন।

ইংরাজ রাজা হইলেন বটে, কিন্ত তাঁহাদিগের শাসনে এদেশে তিনটি মহৎ অনিষ্ট সাধিত হয়। নবাৰ সরকারের ছ্রবছা লক্ষ্য করেন নাই; বরং ন্যাঞ্চেইরনিবালী ইংরাজবণিকলিগের বস্ত্র-ব্যবসার প্রপ্রের দিতে এখানকার বস্ত্রন্তরসারীদিগের বিলক্ষণ ছর্মণা ঘটাইরাছিলেন। তাঁহাদিগের অন্তর্করণে বাজালার শিক্ষিত সমাজে স্কর্মাণানের প্রভাব বৃদ্ধি হয়। কিন্তু লর্ড লরেলা, কেশবচন্ত্র সেন, প্যারীচরণ সরকার প্রভৃতির যত্রে স্ক্রাপানের প্রোত অনেকটা কমিরা বার। পরবর্ত্তিকালে এতদেলবাসীরা, "সিবিল সার্কিদে" প্রবেশ করিতে সমর্থ হওয়ার হাইকোর্টের জ্বজ্ব ও ব্যবহাপক সভার মেম্বর হইতে পারিরাছেন এবং এইরূপে তাঁহারা কিন্তপ্রিমাণে অঞ্চান্ত উচ্চপদেও আরোহণ করিতে সমর্থ হইয়াছেন। এদেশে এখন বাণিজ্যের প্রবাহ বহিতেছে। মাঞ্চেইরের বন্ধ-ব্যবসার প্রতিভৃত্বী হইরা এখানে কাপড়ের কল প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

মুসলমান শাসনসমরে জমিদারেরা করদ রাজাদিগের স্থার ছিলেন; ইংরাজ-রাজছকালে তাঁহাদিগের সে অবস্থা লয় পাই-রাছে। তাঁহাদিগের আর পূর্বের মত রাজক্ষমতাস্থাক সৈন্ত, গড় ও খতন্ত বিচারালয়-স্থাপনের অধিকার নাই। দশশালা বন্দোবস্তের পর হইতে নির্মাপত দিনে রাজস্ব না দিলে জমিদারী নিলাম হইবে, এই নিরমে প্রাচীন জমিদারদিগের অনেক অপকার হইরাছে। এ প্রকার নির্দিষ্ট নিরমে রাজকর দেওরা তাঁহাদিগের অভ্যাস ছিল না, খতরাং তাঁহাদিগের রাজস্ব বাকি পড়িতে লাগিল এবং তাঁহাদিগের ভূসম্পতি বাণিজ্যশ্বাবসারী লোকের হাতে ঘাইতে আরম্ভ হইল। এইরপে আর্ছিন মধ্যে বহু জমিদার বিব্রহ্যুত হইরা পড়িলেন। নদীরা, নাটোর প্রশৃতি রাজবংশ এইরপে গুরুলা ঘটিরাছিল।

ইংরাজনিগের সময়ে বাজালার চিরণান্তি বিরাজনান করি-রাছে; এজভ সমাজসংখ্যার ও ভাষার উর্লিড নিকে দৃষ্টি করিতে সকলে অবসর পাইরাছেন। রাজা রামনোহন রার বাজসমাজ সংখ্যাপন এবং ঈশব্দক্ত বিভাসাগর প্রহাশর বিধবাহিবাহ প্রচলন ও বছবিবাহ নিবারণ স্বাচ্ছে আন্যোলন করিয়া সমাজসংখ্যারের পথ খুলিরাছেন। ঈশ্রচক্র শুপ্ত, অক্সর্কুমার হন্ত, ঈশ্রচক্র বিদ্যালাগর, মাইকেল মধুস্থন হন্ত, ধীনবদ্ধ ক্রিত্র, বিদ্যাচক্র চট্টোপাধ্যার, হেমচক্র বন্দ্যোপাধ্যার শুভূতি গ্রন্থকারন্ধিগের দারা বাদ্যালা তাবা ও লাহিত্যের বিলক্ষণ উরতি হইরাছে। কবি-ওরালা, পাঁচালীওরালা, কীর্ত্রনওরালা, এবং যাত্রাওরাবাদিগের নীতেও বাদ্যালা ভাষার মধুরতা র্ছি পাইয়াছে। বদীর রদ্যালর-সমূহেও ইংরালী অন্তকরণের বথেই প্রভাব লক্ষিত হইতেছে। ইংরালদিগের আমলেই বোধ হয়, বাদ্যালা গম্পগ্রেছর বহল প্রচার আরম্ভ। ফরেইর লাহেবের ১৭৯৩ খুইাকে বিধিব্যুহের বাদ্যালা অন্তবাদের পূর্কে আরপ্ত অনেক গম্ভুশুদির পরিচর পাওরা গিরাছে। [বাদ্যালা ভাষা দেখ।]

খু होन মিননরিদিগের বছে করিবানের রামারণ ও কাশীদাসের মহাভারত প্রথম মুক্তিত হর। পরে তাঁহারাই বালালা সংবাদপত্র ছাপাইতে আরম্ভ করেন। প্রীরামপুরের কলের, কলিকাতার করেকটী কলের ও স্থানে হানে অন্ত প্রকার বিছালয় হাণিত হওরার এতকেশীয় লোকের বিছালিকার বর্ণেষ্ঠ সাহায্য হইরাছে। কেরী, মাসম্যান ও ডফ সাহেবের নাম এদেশের ক্লভবিন্ত বালিলার ইংরাজীশিক্ষা দৃচভিত্তি লাভ করে। সেই শিক্ষাফলে ক্রমে এখানে হিন্দু পোটুরট, বেলল হরকরা, ইণ্ডিয়ান ডেলী নিউস, ইণ্ডিয়ান মিরর, ইেটস্ম্যান, ইংলিশ্যান, বেললী ও অমৃতবালার প্রভৃতি ইংরাজী সংবাদ পত্র এবং সঞ্জীবনী, বল্বাদী, বস্ত্মতী, হিত্রাদী প্রভৃতি বালালা সংবাদ পত্র প্রচারিত হইতেছে।

বাঙ্গালার প্রাচীন বাণিজ্ঞাসমূদ্ধি কাহারও অবিদিত নাই। যে আশায় পর্ত্তুগীজ, ইংরাজ, ওলন্দাজ, দিনেমার ও জর্মণ বণিক্গণ এথানে আসিয়াছিলেন, তাহার প্রভাব তৎকালে ৰাঙ্গালায় কিন্নপ বলবৎ ছিল, তাহা ১৭৫৩ খুষ্টাব্দে ইতিহাস-লেখক অশ্বির উক্তিতে স্পষ্টতর প্রতিভাত হইরাছে। ডিনি বলেন, ভারতবর্ষের অভাভ প্রদেশপেকা ৰাঙ্গালার বাণিজ্য বহুবিস্তীর্ণ ছিল। তথন এখান হইতে সমুদর কার্পাস ও পট্টবন্ত্র দিল্লীতে রপ্তানী হইত। এতভিন্ন আরব, পারক্ত ও ভারতবর্ষের অস্তান্ত অংশে রেশম ও রেশমী কাপড়, কার্পাসবস্তু, চিনি, অহিকেন, শশ্ত প্রভৃতি প্রেরিত হইত। তথন বালানাই বুরোপীরবিদের প্রধান ব্যবসারের হান ছিল। এই বাণিজ্ঞা-ক্ষেত্র ইংরাজজাতি অপ্রবিনিবরে পণ্যরূপে বলরাজ্য ক্রয় করিরাছিলেন, তাহা ইতিহাসপ্রসঙ্গে বিবৃত হইরাছে। বাণিলা উপদক্ষে বালালীর দহিত ঘনিইতাই ইংরাজফাতির উর্জিত মুন এবং সেই মেশামিশিই বাঙ্গালীর অধ্যপভনের কারণ। তথন এলেশে সৰর রাজা বা কোন প্রধান নগর হইতে কিছু দূরে গমন

করিলে এনন কোন প্রার পাওরা বাইজ না, বেখানে প্রজ্ঞেক্ত পূক্র, ত্রী বা পিত ব্যক্তিরাণ কার্য্যে নিসুক্ত বিশ না। অপর বাণিক্যরপ্রথাকাত স্থাকে বারা হউক, ব্যক্তির্যাণ সক্তরে এরেশের তছবার-সমিতি সভ্য কগতের নীর্বহান লাভ করিবাহিল, কিছ এখন আর প্রের বে কর্মহান নাই এখন আর বরে হরা হুরে না। এখন এখান হুইতে বিবেশে কাপড় বার না। এখন ন্যাক্টেরের প্রতিকোগিভার আনাবেল সে বাণিজ্য-গোরব অভমিত হুইরাছে। সামান্ত পরিমাণে তাঁতের কাপড় বাতীত মতক উরোচন করিতে পারিবে, এরূপ সন্তাবনা নাই। এখানে এবং বোধাই প্রদেশে এখন অতি অর পরিমাণেই কলে মোটা কাপড় প্রস্তুত হুইতেছে।

১৮১২ খুটান্দে বলোহরকোর থেখন ওলাউঠা দেখা দের, পরে উহা ভারতবাালী হইরা পড়িরাছে। সমরে সমরে এই রোগের উৎপাতে সকল দেশের অধিবাসীরাই বাভিবান্ত হইরা পড়ে। করেক বৎসর হইতে নবীরা, হগলী, বর্জনাল, মেদিনীপুর প্রভৃতি কেলার "সঞ্চারী অরে" অনেক লোকের বৃত্যু হইরাছে। ইন্সুবেরা ও বোধাই সেপ দেখা দিরা এখনও দেশের সর্ক্রাণ করিতেছে। বৈজ্ঞানিকগণ অহ্বান করেন, মদী, খাল প্রভৃতি ক্রমে পলি মাটি ধারা ভরাট হইরা এবং স্থানে হানে প্ররোজনীয় পরঃপ্রণালী না রাধিরা রান্তা নির্দ্দিত হওরার জল নির্গমের বাধা করিরা এই জরের উৎপত্তি ঘটিতেছে। বর্ষা অনুতে নির্মবদের শুক্তাদি পচিয়া এক প্রকার হুর্গক্ষর বালা উথিত হর। ঐ অবিভঙ্ক বায়ুসেবনে রক্ত দ্বিভ করিরা ম্যালেরিরাদিরোগ উৎপাদন করে। অনেকে বিবেচনা করেন যে, তিনশত বৎসর পূর্ব্বে বে মহামারীতে গৌড়নগর জনশৃত্ত হইরাছিল, ভাহাও এইরপ এক প্রকার অর।

১৮৬৪ খৃষ্টান্দে এদেশে একটা ভরত্বর ঝটকাবর্ড উপস্থিত হইরা অনেক অপকার করিরাছিল। বহুসংখ্যক বৃক্ষ ও গৃহ ধরাশারী হইরাছিল, অনেক জাহাজ ও নৌকা ডুবিরাছিল; এবং ঝড়ের প্রতাশে বলোপসাগরের সনিলরাশি চন্দ্রিশ পরগণার দক্ষিণাংশে প্রবেশ করিরা কত মহন্দ্র, জীবজন্ধ ও গোকালার বিনষ্ট করিরাছিল, তাহার ইরতা নাই। ইহা বালালার ১২৭০ সালের আখিন মাসে ঘটে বলিরা আখিনে ঝড় নামে খ্যাত। তৎপরে ১২৭৪ সালের কার্ত্তিক মাসে কার্ত্তিকে ঝড় হয়। ১২৭৬ সালেও একটা ঝড় হইরাছিল। এ প্রকার রাটকা এবেশের পক্ষেন্দ্র করিছিল। এ প্রকার রাটকা এবেশের প্রক্রেশ আইন আক্ররী পাঠে জানা বার বে, ১২৮০ খুরাজে এবেশে একটা বড় বিন্তাৎসক্ত ভীষণ স্বট্টকার্ক্ত উপস্থিত হইরাছিল। উহার প্রভাবে সর্ক্রমারি উথিত ইইরা দেবসন্দির্ক্ত ভাষিত বাধর্মক প্রবেশের আনেকাংশ

নিমজ্জিত করিরাছিল। উক্ত ত্বটনার প্রার ত্ই লক্ষ লোকের মৃত্যু হর। ১৮৭৬ বৃষ্টাব্দে ৩১ এ অক্টোবর বে বাটকাবর্ত বটে, তাহা সর্বাপেকা মারাত্মক। তাহাতে মেঘনা ও বলোপসাগরের জল বাধরগঞ্জ, নোরাধালী ও চট্টগ্রাম প্রদেশে প্রবিষ্ট হইরা প্রার তিন লক্ষ লোক, বহুসংখ্যক গবাদি জন্ত, এবং অগণ্য নৌকা ও গৃহ বিনষ্ট করিরাছে।

বাজালার জাহন-প্রবারী।

भूटक्टि फेट्सच कतिवाहि (व, ३৮१) वृष्टीत्म वानागात व्यथम लाक्नरशा नगना कता इत । जमनखत २৮৮३ थ्हीरक, ১৮৯১ मुहोत्म ७ ১৯০১ मृहोत्म वशाकरम विकीत, कृकी प छ इकूर्यवात लाकमरथा जनभात्रिक इहेबाए । এই लाकमरथा गनना फेल्मर বাদালার গ্রাম, নগর,বেলা ও বিভাগের সীমা ও তত্তদ্বিভাগবাসী বিভিন্ন শ্ৰেণীর হিন্দু, অর্ধ-হিন্দু, পার্বত্য অসভ্যজাতি, মুস্সমান ও বট্টান প্রাঞ্জি বিভিন্ন জাতির জাতীর ইতিহাস ও তাহাদের माच्छमात्रिक विवत्रण निशिवक स्टेरिट्स । ७४ ठारारे नरह, এই विवयंगित्क वर्खमान वाजानात्र रकान रकान जाि - कि कि ব্যবসায় বিশু, তাহারা কোথার কিরপভাবে কোন কোন দ্রব্যের বাণিক্ষ্য চালাইতেছে; প্রজাগণ কৃষিকার্য্যের কিরূপ উন্নতি সাধন করিভেছে: কোথায় কভ নদী, কভ থাল, কভ রাস্তা ও কত মাঠ কিরূপভাবে বিশ্রন্ত থাকিয়া দেশবাসীর হিত-माधन कतिएलएक, लाहा हैरतांक गवार्मान्वेत यह मानवमरथा।-বিবরণ গ্রন্থানি পাঠ করিলে সঠিক বুঝা যার। এক কথার ইহাতে বাঙ্গালার ঐতিহাসিক, নৈতিক, সামাজিক ও ব্যবসা বাণিজ্যসম্পর্কীর যাবতীর বৃত্তান্ত বর্ণিত আছে।

প্রথম ছইবারের মান্ত্র গণনার ইংরাজ গবর্মেন্ট কতদ্র ক্রতকার্য হইরাছিলেন, তাহা ওডোনেল সাহেবের বিবরণীতে বিবৃত আছে। ১৮৯১ খৃষ্টাব্দের সংখ্যা গণনার ৭ লক্ষ টাকা ব্যর পড়ে, কিন্তু ১৯০১ খৃষ্টাব্দে স্বে মাত্র ৩ লক্ষ ৯০ হাজার টাকা ব্যর হইরাছিল, অর্থাৎ প্রতি ১ হাজার লোকের হিলাবে ৫ টাকা মাত্র ব্যর পড়িরাছিল। যাহা হউক এরুপ বহ ব্যর করিরা ইংরাজ গবর্মেন্ট বে এতানুল মহহদেশু সমাধা করিরা সক্ষন মনোরখ হইরাছেন, ইহা পরম আহলাদের বিবর; অধিকক্ষ হংধের বিবর এই বে, এরুপ ব্যরবাছলাসক্ষেপ্ত সংবাধদাতাদিগের জ্বজালোবে অথবা প্রমনিবন্ধন এই বিবরণীতে অনেক প্রমাদপূর্ণ ব্যরাভ স্ট্রবিশিত হইরাছে।

বিগত ১৯০১ লালের মার্চ মামে নৌকগণনা কার্য্য নিলার হর; স্কেরাং উহা বর্তমান ১৯০৬ সালের বল-বিজেনের প্রেই সংঘটিত হইরাছিল। এ কারণ উহাতে রাজসাহী, ঢাকা ও চুইগ্রাম বিভাগ বাদ দিরা গণনা করা হর নাই। পূর্বত্ন বালালার সীমা ধরিরা গণনা হইরাছিল। সংখ্যা-গণনার হ্ববিধার জস্ত ঐ সমরে বালালা ৮টা খতন্ত্র বিভাগে গঠিত হয়; বথা,—

- ১ পশ্চিম-বালালা বর্দ্ধমান বিভাগ।
- ২ মধ্য-বালালা--প্রেসিডেন্সী বিভাগ, খুলনা বাদে।
- ৩ উত্তর-বঙ্গ---রাজ্বসাহী বিভাগ, মালদহ, কোচবিহার ও সিকিম।
- ৪ পূর্ব-বদ—ঢাকা ও চট্টগ্রাম বিভাগ, খুলনা ও পার্ববত্য ত্রিপুরা।
- উত্তর-বেহার—মুজ্ঞাকরপুর, দরভাকা, চম্পারণ, সারণ, ভাগলপুর ও পূর্ণিয়া।
- ७ मकिन-त्वहात-भाष्टेना, गत्रा, भाहावाद ७ मूत्क्रत ।
- উড়িষ্যা—উড়িষ্যা বিভাগ, অসুল বাদে।
- ৮ ছোট নাগপুর অধিত্যকা—ছোট নাগপুর বিভাগ, সাঁওভাল পরগণা, অলুল, উড়িয়ার সাৃমন্তরাজ্যসমূহ ও ছোট নাগপুর। এই ৮টী বিভাগ প্রকৃতিকর্তৃক যেন পরস্পারে বিস্কু। গশ্চিমবন্ধ ভাগীরখীর পশ্চিম পারে অবস্থিত এবং ইহা প্রাচীন রাচ্ভ্মির অন্তর্ভুক্ত। এখানে প্রধানতঃ বাগদী, বাউরী, কোড়া, মাল, কৈবর্তু, সাঁওতাল, আগুরী, গুক্লী, সদ্যোপ, কারস্থ ও রাজ্ প্রভৃতি অসভা ও হিন্দ্ধর্মান্তিত আর্দ্ধ সভ্য-ভাতির বাস আছে। এতদ্ভির এখানে ব্রাহ্মণ, কারস্থ, বৈষ্য এবং নাপিত, স্ত্রধার ও কামার প্রভৃতি ভাতিরও অভাব নাই। ইহারা আপনাদিগকে রাচ্দেশী বলিরা গৌরব করে এবং স্থ স্থ শ্রেণীর বন্ধক বা বারেক্রবাসী লোকের সহিত আদান প্রদানে কুঠাবোধ করে।

পশ্চিমে ভাগীরথী, উত্তরে পদ্মা এবং পূর্ব্ধে মধ্মতীর মধ্যবর্তী গালের বন্ধীপ-ভাগ মধ্যবন্ধ বলিরা পরিচিত। খুলনা জেলা এই নদী দীমাভূক্ত হইলেও উহার নিরাংশ এখনও পলি দারা গঠিত হওরার উহাকে পূর্ববন্ধের দীমা দরিবিষ্ট করা হইরাছে। এখানে একমাত্র পোদ, চণ্ডাল, কৈবর্ত্ত ও বাগদী কাতির প্রাধান্ত দেখা বার।

পদার উত্তর হইতে দার্জিনিক পর্কত পর্যান্ত উত্তর বক্ব বলিরা গৃহীত। মৃত্তিকার প্রকৃতি নির্কিশেবে উত্তর-বঙ্গের সহিত আনেক সৌনাদৃশ্র থাকার-বর্তমান কালে মালদহ জেলা উত্তর-বঙ্গের অন্তর্গত হইরা পড়িরাছে। এখানে মেচ, কোচ, পার্কাতীর ভোটিরা এবং দীক্ষিত মুসলমানেরই সংখ্যা অধিক। পূর্কা-বঙ্গে নমংশুক্র বা চণ্ডাল, কোচ, গারো, টিগরা. কুকী ও মহ প্রকৃতি পার্কাত্য অমন্ত্য ও অর্জ্বসন্ত্যলাতি এবং দীক্ষিত মুসলমান, এইরূপে বেহার, হোটনাগপুর ও উড়িব্যাবিভাগে বিভিন্ন প্রেমীর পার্কাত্য অনার্য্য লাভিত্যই বহুল বাস বেখা বার।

এই **পাটটা** বিভাগের বর্তনান ভূপরিমাণ ও লোকসংখ্যা এইরপ নিবীত হইরাছে—

আৰেশিক্বিভাৰ পশ্চিম বাজালা		ভূপরিমাণ	লোকসংখ্যা
		48KOC	¥2896
মধ্য উত্তর পূর্ক		*88	1102246
	W	২৩৬৮•	>•••€>99
		७२৯१७	36962.29
निक्न ८	বহার	>6.02	1134836
উন্তর উড়িব্যা	.0	₹ 598 6	১৩৮৩১১২•
	•	F70.	8> 63 ₹%
ছোটনাগ	াপুর অধিত্যকা	48666	4006346
	মোট	१७८६४६	9689087•

এই সংখ্যা গণনায় স্থন্দর-বনৰিভাগের পরিমাণ ও লোক সংখ্যা গৃহীত হয় নাই।

এই বিস্তীৰ্ণ বাঙ্গালার বে সকল বিভিন্ন জাতি বাস করিতেছে, শ্রেণীগত বা বংশগত বিভিন্নতা অনুসারে তাহারা স্বতম্র স্বতম জাতীর আধ্যার পরিচিত। ঐ সকল মূলজাতির এবং তাহাদের সংশ্লিষ্ট শাধাপ্রশাধাসমূত্ত বিভিন্ন শ্রেণীর সামাজিক ও নৈতিক ইভিহাস গভর্মেণ্টের উপরোক্ত গণনা বিবরণীতে সনিবিষ্ট আছে; বাহলাভয়ে তাহা উদ্ভ হইল না। ব্ৰাহ্মণাদি বৰ্ণ-চতুইয়ান্তৰ্গত বিভিন্ন জাতি বা তাহার প্রাসিদ্ধ ও প্রধান শ্রেণীর বিবরণ স্থানান্তরে দ্রাইব্য।

বঙ্গন (পুং) বঙ্গতীতি বগি-লা। বার্ত্তাকু। চলিত বেগুণ। বঙ্গভাষা (ত্রী) বঙ্গদেশবাসীর কথিত ও লিখিত ভাষা। ইহা সাধারণত: বাঙ্গালা ভাষা নামে পরিচিত।

[বাঙ্গালা ভাষা শব্দে বিস্কৃত বিবরণ দ্রষ্টবা।]

বঙ্গমল (গং-ফ্লী) দীদ ধাতু। (বৈছকনি°)

বঙ্গবাড়ী, উত্তরবঙ্গের একটা গওগাম।

বঙ্গলা (ত্রী) রাগিণীবিশেষ। ইহার নামান্তর বন্ধালী। (হলাব্ধ) বঙ্গ শুল্লজ (ক্লী) বঙ্গগুৰাভ্যাং বন্ধতান্ত্ৰাভ্যাং **বা**রতে কন-ড। কাংজ ধাড়ু, রাং ও তামার মিশ্রণে এই ধাড়ু প্রস্তুত হয়; এই জন্ত ইহার নাম বঙ্গগুরু । (হেম)

বঙ্গদেন (পুং) বকর্ক। "বঙ্গদেনবগতিক: ওকনাশো মুনি-क्रम:।" (जिका°) चार्थ कन्। वनरमनक---वक्तृकः। ২ রক্ত বকর্ক। (রদমালা)

বঙ্গদেন, > ধাতুরপ বা আধ্যাতব্যাকরণপ্রণেতা। ২ চিকিৎসা-সারসংগ্রহ ও বন্ধসেন নামক বৈভক্রচরিতা। ইহার পিতার নাম গদাধর। কাঞ্জিকা নগরে ইহার বাস ছিল[া]।

বঙ্গাধিকশ্রমণ, অতীচারত্ত্র প্রণেতা।

বঙ্গারি (পুং) বছত রক্ধাতোররিঃ অত বঙ্গধাডোর্জারক্ষাং ত্রপাক্ষ। হরিতাল। (হেম)

বঙ্গাল (প্ং) ভৈরব রাগের পুত্র। "বঙ্গালঃ পঞ্চম: বঠো মধুরৌ হর্বকত্তথা। দেশাখ্যো মাধ্য: সিদুর্ভৈর্যপুত্রা: প্রা**নীর্ভি**ডা: ॥"

हेरात्र शान-

"কন্দানিবেশিতকরগুবরন্তপরী, ভাৰত্তি শ্লপরিমপ্তিভবামহন্ত:। ভঙ্গোজ্ঞলো নিবিড্ৰছজটাকলাপো বলাল ইভাভিহিতত্তরণার্কবর্ণ: 🕫 ৰাড়বো দেৰবলালো গৃহাংশস্তাসমধ্যম: । व्यर्श्य विनिर्धाक्तवाः द्यारकारतः मूनिना चतः॥" (সদীতরত্বাকর)

वक्रांनिका (बी) टेक्ववबारगव बाणिनी, बनानी। বঙ্গালী (জী) ভৈরবরাগের রাগিণী।

"ভৈরবী কৌশিকী চৈব ভাষা বেলাবলী ভথা। বলালী চেতি রাগিলো৷ ভৈনবভেষ বলতা: ॥" (সদীভদামো^{*}) ইহার মৃর্তি---

"मरनाख्यम्का अगकृविकांकी अवर नशाना वज्रमेशक्रका। थारणः क्रमात्री कमनीत्रमृधिर्राज्ञानित्कतः ಅिर्णाक्षिण ॥"

(সঙ্গীতরত্বা°) এই রাগিণী ঔড়ৰ এবং গৃহাংশ-ভাস ও ৰজ্জ-ভাগিনী, हेरा 'च' 'ध' हीन, धवर हेरांत्र ध्यशस्य मृत्स्ना धवर धहे त्रांशिनी भूनी।

"বঙ্গালী ঔড়বা জেরা গৃহাংশভাসবড্ জভাক। अपरीना ह विस्कारा मृष्ट्ना धार्यमा मछा।

পূৰ্ণা বা মন্বরোপেতা কলিনাথেন ভাবিতা ॥" (সলীতদৰ্শন) वक्रीवटलङ्, ध्यामस्त्रात्तात्त्र व्यवस्थितः। রতি মধুর সহিত লেহন করিবে, পরে ঋড় ও গন্ধক ২ তোলা শেৰন করিবে বা ঋড়ুচীর স্বন্ধ ও চিনি দিয়া দেবন করা ধাইতে পারে। ইহাতে প্রমেহরোগ আরোগ্য হয়। (রুসেক্রসারস°) वनार्केक, अत्मर त्रारंग रावराया खेरधवित्नव। आच्छ अभागी-পারা, গৰুক, গৌহ, রূপা, ধর্পর, অত্র ও ভাত্র প্রভ্যেক সমান ভাগ এবং সকলের সমান পরিমাণ রঙ্গ একতা মর্দ্ধন করির। গলপুটে পাক করিবে। তদনত্তর ঔবধ শীতল হইলে পাত্র হইডে উদ্ভুত করিরা লইবে। মাত্রা ২ রতি প্রমাণ। অল্পান মধু, হরিলাচ্প ও আমলকীর সন। ইহা সেবন করিলে বিংশতি প্রাকার প্রামেহ, আমদোব, বিস্টেকা, বিষয় ব্যর, ক্ষর, ব্যক্তি সার প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

ৰঙ্গিপুরম্, মাত্রাল প্রেসিডেশীর কৃষ্ণা জেলার অন্তর্গত একটা নগর। বাণট্লা হইতে >> মাইল উত্তরণক্তিমে অবস্থিত। এখানকার বলভরার-মন্দিরের গঞ্জ-ভাজে ও অগজ্যের স্থানীর মন্দিরগাতে চ্ইণানি শিলাফলক দৃষ্ট হর। প্রথম খানি ১৪৮৭ শকে বিজয়নগরয়াল সদানিব রায়ের শাসনকালে উৎকীর্ণ। এই বৎসত্তে মুস্কুমানগণ বিজয়নগর ধ্বংস করিয়াছিল। শেবোক খানি ১৪৭৮ শকে উক্ত রাজার শাসন-সময়ে উৎকীর্ণ। উহাতে মুর্জ-রাজ্যদেব চোড় মহারাজের দান-স্তাত শিশিবদ্ধ আছে।

বঙ্গিরি (পুং) রাজভেদ। (ভাগ্যত ১২।১।৩০) বঙ্গায় (ত্রি) ^{প্}বল-(গহাদিত্যশ্চ। পা ৪।২।১৩৮) ইতি ছ। বঙ্গদেশোরব, বলদেশ সম্বীয়।

বঙ্গুলা (জী) রাগিণীভেদ। [রাগিণী দেখ।] বঙ্গ দ (পুং) অস্থরভেদ, ইক্স এই অস্থরকে হনন করেন। "সংশতা বন্দুলভাভিনং" (ঋক্ ১)৫০৮)

'বদ্দক্ত এতংসংজ্ঞকক্তাত্মরত' (সায়ণ)

বক্ষেশ্র (পুং) বলং তরামক্রেশক্ত ঈশ্বরং অধিপতি:।
বাসালার রাজাল

বঙ্গেশ্বর্স (पूर) ঔষধবিশেষ। এই ঔষধ বলেশর ও বৃহৎকেশবরেন্ডেদে বিবিধ। প্রস্তুত প্রণালী—পারাভন্ম ৮ তোলা, বদভন্ম ৮ তোলা, গদক, তামভন্ম, প্রত্যেকে ৩২ ভোলা, আকল হুদ্ধের সহিত মর্দ্দনপূর্বক মৃয়া বন্ধ করিয়া ভূধর যপ্তে পাক করিবে। এই ঔষধের মাত্রা ২ রতি। এই ঔষধ্যতের সহিত শেহন করিয়া পুনন বার রস বা কাথ আর্দ্ধ ভোলাও গোম্ত্র বা হরিজার বসসহ পান করিবে। এই ঔষধ্যেবনে গ্রন্থাদর আতে প্রশমিত হর। (রুসেন্ড্রার্সাং উদরীরোগার্দি) অন্তর্বিধ—রুস্সিন্ধ্র ও বল সমভাগ মর্দ্দন করিয়া ছুই মাযা

পরিমাণে মধুর সহিত সেবন করিলে প্রমেহ রোগনাশ হয়।

বৃহহকেশর — প্রস্ততপ্রণালী — বল, পারদ, গদ্ধক, রৌপ্য,
কপ্র, অত্র,প্রত্যেকে ২ তোলা; স্বর্গ, মুক্তা প্রত্যেকে হই মাধা,
কেণ্ডরের রসে ভাষলা দিরা হই রকি পরিমাণ বটা প্রস্তৃত করিবে। প্রমেহরোগাধিকারে ইলা একটা উৎকৃত্ত ঔষধ।
দোবের বলাবল অস্থলারে ছাগাহ্যা, গোহ্যা বা দধি অস্থপানে
সেবন করিতে হত্ত। এই ঔবধ্যেবনে সাধ্যাসাধ্য বিংশতি প্রকান প্রমেষ, মুক্তক্ত্র, পাঞ্জ, ধাজুস্থ অর, হলীমক,
বাজ, গ্রহণ্ট, আমবোৰ, মলাঘি, জন্নচি, বহুমূত্র, মৃত্রমেহ ও মুক্তাভিনার প্রস্তৃতি রোপ আন্ত প্রশানিত হব এবং ইহাতে কান্তি,
বল, বর্গ, ওক্ষ ও ওক্ত রুদ্ধি হত্ত। (রসেক্রসারসা প্রমেহরোগাধি)
বচ্চ, বাজ্য, সন্দেশ, পরিভাবণ, উজি। আহাবি গরিছে বিভা অনিট্ট। লট্ট বজি। বিশ্ব, বঢ়ি। বিশ্ব, উচ্চাব। প্র

भारम्, केक्नार, केठम्। निष्ठे धेनात, केठपूर, धैनविष् छेनस्थ ।

পুট্ৰকা। পৃট্ৰকাতি। পুঙ্ অবোচং। সন্বিবক্তি।
বচ্চুরাদিও পরবৈত সকও সেট্। লট্ বাচয়তি। পুঙ্ অধীবচং। বচ ভাদিও পরবৈত সকও অনিট্। লট্ বচতি।
"ন বচত্যপ্রিরং বচং" (হলায়্ধ) প্রান্বচল প্রক্তন। প্রতিন্দ বচল প্রতিষ্ঠান বচ ধাতুর উত্তর অন্তি, অন্ত বিভক্তি হর না।
"বচেরস্তান্ত্র ভি প্রারোগো নাভিধীরতে।

জন্ধতেনাতি পঞ্চমা উত্তম: পুক্ৰ: কচিং ॥" (চুৰ্গাদাস)
বচ্ (দেশজ) অনাম প্ৰদিদ্ধ বিশিল্ অব্যবিশেষ। ইহা কটু
আখাদ এবং কাশী ছৰ্দিন বিশেষ উপকারী। দেখিতে অনেকটঃ
ভাঁটের মত কিন্ত বৰ্ণ লাল। এই শুদ্ধ মূল খণ্ড খণ্ড ক্রিয়া
মূখে রাখিলে কাসির বিশেষ উপকার দর্শে। বৈছকোতেন
ভ্রমাদিতে,ইহার বহুল ব্যবহার আছে। [বচা দেখ।]

বচ (পুং) বন্ধীতি বচ্- আচ্। > কীরপকী। ২ টিরাপাধী। (মেদিনী) ৩ সূর্যা। ৪ কারণ।

বচঃক্রেম (পুং) বচসঃ ক্রমঃ। বাকোর ক্রম, ৰাক্প্রণাণী।
বচরু (পুং) বক্তীতি বচ্ (ক্র্রচিভোচ্ছ্যজাগুজরুচঃ। উণ্
অ৮১) ইতি অকুচ্। ১ ব্রাহ্মণ। ২ বৃহদারণাক উপনিবদ্বর্শিত
ক্যক্তিভেদ। (ক্রি) ও বাবদুক।

বচ্পোতি, রাজপ্ত জাতির একটা কিংবদন্তী আছে—সাহাব্ উদীন ঘোরি কর্তৃক দিল্লীখর পথারারের পরাজরের পর তাঁহার ভ্রাভা চাহর দেবের বংশধর কংস রায় ও বরিয়ার সিংহের অধীনে কতকগুলি চৌহান শস্তলগড় পরিত্যাগ করিয়া ১২৪৮ খুটাকে স্থলতানপুর জেলার অধাবন নামক স্থানে আসিয়া বাস করেন। এখানে মুগলমানের ভয়ে তাঁহারা চৌহান নামের পরিবর্তে বিংভগোত্রী'নাম গ্রহণ করেন। পরবর্তিকালে বংভগোত্রী হইতে অগভ্রংশ বিচ্গোতি' হইয়াছে।

বিতীর উপাধ্যান হইতে জানা বায় যে, উপরোক্ত চাহয় দেবের প্রপৌত্র রাণা সদত দেবের একবিংশতি পুত্র ছিল। উচাহাদের মধ্যে সর্কাকনিষ্ঠ পিতৃসম্পত্তির অধিকারী হন এবং অপর পুত্রগণ অনৃষ্ঠ পরীক্ষার জন্ত বিভিন্নদেশে গমন করেন। তল্পথ্যে বরিয়ার সিংহ ও কংল রার মৈনপুরীতে হাইয়া আলাউদীন্ ধোরীর অধীনে সৈনিক রন্তি অবলবন করিয়াছিলেন। তাহারা তথা হইতে ভরজাতির বিহুদ্ধে বুড়ার্থ অপ্রসর হইয়া অবোধ্যায় আসিয়া বাস করেন। বরিয়ার সিংহ কবাবনে আসিয়া বাসহাপনের পর প্রভাগগড়ের নিকটবর্তী কোট বিল্থার নালক হালের সামস্তরাক্তি বিল্থারিয়া শীক্তিবিগের সর্কার রাজনবের অধীনে কর্ম প্রহণ করেন। জনে তিনি উক্ত সামস্তরাজের প্রিয়ণাত্র হইয়া তাহায় কভার পানিপ্রহণপূর্বক রাজপুত্র কলপৎ পাছ কে নিহত করিয়া তরাকার রাজা হন।

এক সমরে অবোধ্যা প্রকেশে এই বচগোভি রাজপুতবিসের
শ্রীধান্ত বিভ্বত ছিল। উণাও-রাজবংশেতিবৃত্ত পাঠে জানা
বার বে, অবেশিরার প্রধানতম রাজা তিলকটাদের সমর পর্যাত
বিচগোতিরা ভূথাকার রাজ-সমাজে বিশেষ সন্মামার্ছ ছিলেন।
সুকুন রাজার অভিযেককালে তাঁহারা ভাহার কপালে ভিলক
দান করিরা রাজা বলিরা বীকার করিলে ভবে ভাহার
রাজমন্যাদা সার্থক হইত। কুর্বাবের রাজা এবং হসনপুরবন্ধরার দেওয়ান এই বংশের প্রধান সামন্ত বলিরা পরিগণিত।

হসনপুর বন্ধরার সর্দার বর্ত্তমান সমরে ইস্লাম ধর্শে দীক্ষিত হইরা থান্জাদা নামে পরিচিত হইলেও বনোধার রাজন্তবর্গকে রাজটীকাদানের অধিকারী। অরোরের সোমবংশী সর্দারগণ, রামপুরের বিষেনগণ, অমেঠার বন্ধল-গোতিরা এবং তিলোই-বাসী কানাইপুরিরাগণ ইহাদের নিকট রাজটীকা না লইলে স্ব স্প্রপ্রধাণের আচরিত ক্রিরাস্থানে অধিকারী হইতে পারেন না।

স্থলতানপুরের বৎস্ত-গোত্রীরা বিল্ধারিরা, তবাইরা, চল্লোরিরা, কঠবাঈ, ডালে স্থলতান, রঘুবংশী ও গর্গবংশীর কছা গ্রহণ করে এবং তিলকটাদ বাই, মৈনপুরী চৌহান, স্থাবংশী, গৌতম, বিষেন ও বন্ধল-গোতিদিগকে কল্লা দেয়। জৌনপুরের বচ্গোতিরা রঘুবংশী, বাই, বৌশংথাম, নিকুন্ত, ধনমন্ত, গোতম, গহরবাড়, পণবার, চল্লেল, শৌনক ও দৃগ্বংশীদিগের কল্পালর এবং কল্হন,সর্গেত,গোতম, স্থাবংশী, রাজবাড়, বিষেন, কানাইপুরিরা, গহরবাড়, বাষেল, বাই প্রভৃতিকে কল্পা দেয়।

বচণ্ডী (ত্রী) > সারিকা। ২ বর্ষ্টি। ৩ শত্রভেদ। (শব্দরকা•)
মেদিনীতে ইহার পাঠান্তর বচণ্ডা ও বরণ্ডা এইরপ দেখিতে
পাওরা যার।

বচন (ক্লী) উচ্যতেহনেনেতি প্লেখনাশক্ষাদক্ষ তথাখং, বচ-ল্যুট্।
১ শুলী। (শন্দচন্দ্ৰিকা) ২ বাক্য। পৰ্য্যায়—ইরা, সরস্বতী, বাশী,
ভাষা, বানী, সারদা, গিরা, গির, গিরাংদেবী, গীদেবী, ভারতেম্বরী,
বাচ্, বাচা, বাগ দেবী, বর্ণমাভ্কা, ভাবিত,উন্জি, ব্যাহার, লণিত,
বচন্। (শন্ধর্মাণ)

देविष्क भर्यात्र — धाता, देना, त्भीः, त्भाती, भाष्वर्वी, भणीता, भणीता, मखान्नी, नानी, नानी, नानीती, तान, भणान्नी, नानी, नानीती, तान, भणित, णात्रणी, ममिन, नानी, तमा, त्मीन, र्या, मत्रपणी, निविष, चाहा, वधु, छन्ति, नाहा, काह्रपणी, नाह्य, चाह्रपणी, चाह्रपणी, वाह्य, चाह्रपणी, वाह्य, चाह्रपणी, वाह्य, चाह्रपणी, वाह्य, चाह्रपणी, वाह्य, चाह्य, वाह्य, व

বচনকার (অ) বচনক, বচনে প্রবৃত্তি।
বচনকারিন্ (ত্রি) ২ বাক্যাছসারে কার্যকারী আনাজাছবর্তী।
বচনগোচর (ত্রি) বচনেন গোচরঃ। বাক্যালা গোচর,
প্রভাকীভূত। "ক্ষমমণবদারামিশি সকলকপানিমসনামি
তব প্রশক্তনামধেরানি বচনগোচরাবি ভবত্ত" (ভাগ থাতা২২)
বচনগ্রাহিন্ (ত্রি) বচনং গৃহাতীতি গ্রহ-পিনি। বচনে বিত্ত,
বচন অনুসারে কার্যকারী।
বচনপারু (ত্রি) বচনে গটুঃ। বাক্পটু, বাক্র্পলু।
বচনবিরোধ (ত্রি) প্রমাপবিকল্প শার্রবাক্ষ।
বচনবিরোধ (ত্রি) পার্রবিকল।
বচনমাত্রে (ত্রি) পার্লবিকল।
বচনমাত্রে (ত্রি) থালি কথা, বে কথার মৌলিক্স ঘটনা হারা
প্রমাণিত নহে। ভিত্তিহীন বাক্য।
বচনব্যক্তি (ত্রি) বহ বাক্য। চলিত কথার "লক্ষ কথা" বলে।

বচনসহায় (ত্রি) কথা কহিবার সাথী। কোন ব্যক্তির সহিত্ কথা কহিবার জন্ম বে বিনরী ও মিইভাবী ব্যক্তিকে সঙ্গে শওরা বার। বচনাসুসা (ত্রি) বচনং জন্মগছতি গম-ড। বাকোর জন্মগামী,

বিনি বচন অনুসারে চলেন। (মার্কণ্ডেরপু॰ ২১।৫৫)
বচনাব্ (জি) > বাকারুশল। ২ স্থবকা। ৩ প্রাশংসাবাক্যক্থনশীল। ৪ অব্যক্ত শক্কারী। "হস্তারবাদিশক্ষবং"। (সারণ)

বচনীকৃত (बि) তিরন্ধত, নাঞ্ছিত।

বচনীর (ি) বচ-জনীয়র। ১ কথনীয়। (ক্লী) ২ নিকা।

"মদনেন বিনাকৃতা রতিঃ কণমাত্রং কিল জীবিতেতি মে।
বচনীর্মিনং ব্যবস্থিতং রমণ স্বামন্থ্যামি বস্থাপি ॥"

(क्यांत्र हार्ट)

হিতি বচনীয়ং নিক্লা' (মদ্লিনাখ)
বচনীয়তা (স্ত্রী) বচনীয়ত ভাবং তল্-টাপ্। লোকাপবাদ।
'জনপ্রবাদং কৌশীনং বিগানং বচনীয়তা।' (হেম)
"বাধীনা বচনীয়তাপি হি বরং বছো ন সেবাঞ্জলিমার্গো ছেব নরেক্রসোপ্তিকবধে পূর্কং ক্রতো দ্রৌনিমা ॥"
(কৃষ্কেকটক ও অ॰)

বচনেস্থিত (অ) বচনে তিঠতি খেতি খা-জ। (তৎপুদ্ধে ফুতি বছলং। পা ৬।৩)১৪) ইতি সপ্তমা অনুক্। বিনি বচনা অবহিত, যিনি বচনাখুসারে অবহান করেন। পর্যায়—বচনন্থ, বিধের, বিনয়প্রাহী, আগ্রব। (অসরটীকাকার ভরত) কাহার কাহারও মতে বল্ল ও প্রণের এই হইটা পর একপর্যায়ক। বচনোপাক্রম (প্রং) বচনত উপক্রমঃ। বাজ্যারভ, পর্যায়—উপক্রাপ, বাজ্ব। (অসর)

(त्रयू २। ४२)

বচর (পৃং) অবান্তরে চরুতীতি অব-চর-অচ্, অরোপঃ।
> কুকুট। ২ শঠ। (মেদিনী)

व्यक्त (११) भवा।

প্রাস মন্তঃ স্কুপণ্যুক্ত বচলুর্কাগনুকথা। ভরপুক্ত পরপুঃ ভাষমিত্রে স্থানিরতাপি ॥' (শব্দমালা) (ক্রী) উচাতে ইতি বচ (সর্ব্ধধাতভোচন্তন। উণ ৪।১৮২

বচুস্ (ক্লী) উচাতে ইতি বচ্ (সর্কাধাত্তোহস্থন্ । উণ্ ৪।১৮২) ইতি অস্থন্ । বাকা ।

ঁইতি প্রগণ্ডং পুরুষাধিরাজো মৃগাধিরাজন্ত বচো নিশম্য। প্রক্যাহতারো গিরিলপ্রভাবাদাম্মগ্রকাং শিথিলীচকার ॥"

বচসাংপত্তি (পুং) বচসাং বাচাং পতিঃ বঠা। অনুক্। বৃহস্পতি।
"লীবোহদিরা স্থরগুরুর্বচসাং পতীকো)" (দীপিকা)

বচস্কর (বি) করোজীতি ক্ল-জন্, বচসঃ করঃ। বচনে স্থিত, বচনালুসারে কার্যকারী।

বচন্দ্র (ত্রি) বচনবোগ্য। প্রশংসনীর। বিখ্যাত। বচন্দ্রা (ত্রী) ছডির ইজা। "সোমবভ্যা বচন্দ্রা" (ঋক্ ১০১১১০৮) বচন্দ্ররা অভীজ্যা। "(সামণ্)

বচন্ত্য (জি) ছডিকাম, ছত্যজিলাবী। "সহবীরং বচন্তবে" (জব্দ ১০।৪০।১৩) 'বচন্তবে ছডিকামারৈ' (সায়ণ)

বচা (ত্রী) বাচরতীতি বচ্-ণিচ্ অচ্, নিপাতনাৎ ক্রম্মা, বহা অন্তর্ভাবি-ণার্থাৎ বচোহচ্। গুরধবিশেষ। (Acorus calamus) চলিত বচ্; হিন্দী—বচ, বোরবচ; তৈলক, বড়ন্দ্র, নরবস, বলে—বেখাড়ে; তামিল—বশস্থা ইংরাজী—Orris-root। সংস্কৃত পর্যায়—উগ্রগন্ধা, বড়গ্রহা, গোলোমী, শতপর্বিবকা, তীক্রা, লটিলা, মললাা, বিজয়া, উগ্রা, রক্ষেমী, বচ্যা, লোমশা, জন্ত্রা। গুণ—অতিতীক্ষ, কটু, উঞ্চ, কফ, আম, গ্রহিশোফ, বাত-জর ও অভিসারবোগনাশক। (রাজনি°)

ভাৰ প্ৰকাশমতে —বচ, প্রাসানী বচ ও মহাভরীবচ এই তিন প্রকার। বচের পর্যার — উগ্রগদ্ধা, বড় গ্রহা, গোলোমী, শতপ্রিকা, ক্ষপত্রী, মললাা, কটিলা, উগ্রা ও লোমলা। ওপ—
উগ্রগদ্ধ, কটুভিতন্তন, উক্ষবীর্যা, বমিজনক, অমির্চিকারক, মল্মুব্রশোধক এবং বিবন্ধ, আশ্বান, শূল, অপন্যার, কফ, উন্মান, ভূতদোৰ, ক্লমি ও বাধুনাশক।

খুরাসানী বচ-- খুরাসানী বচকে পারসীক বচ কহে, এই বচ গুরুবর্ণ, ইছার অপর সাম হৈমবজী। এই বচ পূর্ব্বোক্ত গুণবুজ, বিশেব বার্নালের পক্ষে ইছা সর্বাশ্রের।

মহাজরী বচ-পশ্চিমদেশে কুলিঞ্চন লামে প্রদিদ্ধ এবং ইহাকে ক্লগড়াও করে। ওপ-উগ্রগছবিশিষ্ট, বিশেষতঃ ক্ল ও কাসনাপক, স্বব্রপ্রসাদক, ক্লিজনক এবং ক্লর, কঠও মুখলোধক। ইহা তির ছুলগ্রাছিবিশিষ্ট অপর আর এক প্রকার ফুগদ্ধি বচ আছে, এই বচ পূর্ব্বোক্ত বচ অপেকা হীনতথাবিশিষ্ট।

তোপচিনিকে বীপাস্তর-বচ করে। অন্ত বীপে উৎপন্ন হয় বিলিয়া উহার নাম বীপাস্তর। তুপ—ক্ষীবং তিজ্জান, উন্ধানির, আন্তিনীপ্তিকারক ও মলম্ত্রশোধক, বিবন্ধ, আন্থান, খুন, বাত-ব্যাধি, অপন্মার, উন্মান ও শরীরবেদনানাশক। বিশেষতঃ কিরন্তরোগে ইহা বিশেষ উপকারী। (ভাবপ্রত)

গক্ষড়পুরাণে লিখিত আছে বে, একমাস কাল বচ জ্বল ছগ্ধ বা ছতের সহিত সেবন করিলে ছভিশক্তি বৃদ্ধি হয়। চক্র ও স্থ্যগ্রহণ সময়ে এক পল বচ ছগ্ধের সহিত সেবনে ধীশক্তি বৃদ্ধি হইরা থাকে।

"অভিবা পরসাজ্যেন রাসমেকত্ব সেবিতা।
বচা কুর্যাররং প্রাক্তং শ্রুতিধারণসংযুত্ম ॥
চক্রত্র্যাঞ্জাহে শীজং পলমেকং পরোহবিত্ম।
বচারাত্তংক্ষণং কুর্যান্ত্রহাপ্রজ্ঞাবিতং পরম্ ॥"
(গরুড়পুণ ১৯৮ অ°)

২ সারিকা পব্দী।

বচাচার্য্য (পুং) আচার্বাজে।
বচানিচুর্ণ, গুল্মরোগনাশক ঔবধ বিশেষ, প্রস্তুত প্রণালী
বচ, হরীতকী, হিন্দু, সৈত্ত্ব লবণ, অন্নবেতস, ববক্ষার ও যমানী
একত্র সমভাগে চুর্ণ করিয়া প্রাতঃকালে ৪ মাধা পরিমাণে
উক্ষজনের সহিত সেবন করিলে অন্নকাল মধ্যে গুল্মরোগ
প্রশমিত হইয়া অগ্নির তেজোর্ডি হইয়া থাকে।

বচার্চ (পুং) > পুর্যোপাসকমাত্র। ২ পারসীঞ্চাতি।
বচান্দিবর্গ (পুং) বৈছোক্ত ওবধিসক্তা (বাভটস্থ- ৩৫)
বচান্মন্থত ক্লী)গণ্ডমালা রোগাধিকারে মতৌবধবিশেষ। (রসং র')
বচি (পুং) ১ বচন। (কাত্যার্ধ শ্রোণ ভাগাং৪) ২ নাম,
অভিধান।

বচোগ্ৰন্থ (পং) গৃহাতীতি গ্ৰন্থন্ত, বচসাং গ্ৰন্থ:। কৰ্ণ। ইহার পাঠান্তর বচোগ্ৰন্থ। বচোযুক্ত (জি) বাক্যমাত্র।

শব্দা বচোযুকা ইক্সো বন্ত্ৰী" (ধক্ ১) ৭)২) 'ৰচোযুকা বচনমাত্ৰেণ' (সায়ণ)

বচোবিদ্ (জি) বচস্-বিদ্-ভিপ্। ভতিসক্ষণবাক্যের বেদিতা।
"বহুং বঁৰ্ছরামো বচোবিদ্নং" (ধক্ ১৯৯১১১)

'বচোবিং: ছতিলক্ষণানাং বচনাং বেদিভারঃ' (সারণ) বচিত্রকবালা, বালালার অন্তর্গত একটা প্রাচীন হান। বচিত্রে, নিবক্লারপ্রণেভা। বাজের উৎপত্তি-বিষয়ে পুরাণাদিতে নানা মত দেখিতে পাওরা যার। মৎস্থপুরাণে লিখিত আছে বে, বিশ্বকর্মা রবিকে ক্রমিয়াত্রে ভ্রমণ করাইয়া তাহার তেজ পুথক্ করিয়াছিলেন, এই সহত্র কিরণাত্মক পৃথক্কত স্থাতেজ বিষ্ণুর চক্র, কল্রের শৃল এবং ইল্রের বজ্লরূপে পরিণত হইয়াছিল।

"তথেত্যক্ত: স রবিণা ত্রমৌ ক্রছা দিবাকরম্।
পূথক্ চকার তত্তেজশচক্রং বিষ্ণোরকলয়ৎ॥
বিশ্লকাপি কদ্রত বন্ধমিন্তত চাধিকম্।
দৈত্যদানবসংহর্তৃং সহত্রকিরণাত্মকম্॥
রূপক প্রতিমঞ্চক্রে ছঠা পাদাদৃতে মহৎ।
ন শশাকাধ তদ্যইং পাদরপং রবে: পুনঃ॥

(মংস্থপু°১১ অ°)

বামনপ্রাণে লিখিত আছে যে, একদা ইক্স দৈত্যমাতার
ক্ষারে প্রবেশ করিয়া দেখেন যে, গর্ভত্ব বালক কটিদেশে হাত
রাখিরা উর্জমুখে অবস্থান করিতেছে, তাহার সমীপে এক
মাংসপেশী আছে, ইক্স কুদ্ধ হইয়া যেমন এ মাংসপেশী গ্রহণ
করিয়া মর্দ্দন করিতে লাগিলেন, তৎক্ষণাৎ ঐ মাংসপেশী
ক্ষাতিশর কঠিন এবং উর্জ ও অধোদেশে বৃদ্ধি পাইতে থাকে;
পরে ঐ মাংসপেশী হইতে শতপর্কা কুলিশ উৎপন্ন হয়।

শপ্রবিশ্ব জঠরং ওজা দৈত্যমাতৃ: প্রনার:।

দদর্শোর্জমুখং বাদং কটিশুস্তকরং মহৎ ।

তক্তৈবাজেহধ দদৃশে পেশীং মাংসন্ত বাসব:।

ওজ্জটিকসঙ্গাশাং করাভ্যাং জগৃহেহধ ভাষ্॥

ততঃ কোপসমান্ত্রাতো মাংসপেশীং শতক্রেজুঃ।

করাভ্যামর্দরামাস ততঃ সা কঠিনাভবং ।

উর্কেনার্ক্য বর্ধে কধোহর্ক্য বর্তে তথা। শতপর্কা চ কুলিশঃ সঞ্জাতো মাংসংশশিতঃ ॥"

(बाममार् ७ ७ ० ०)

ভাগৰতে দিখিত আছে বে, ইক্স বৃত্তাস্থর-বংগর ক্ষণ্ণ দানিদি মুনির অছিলারা বিশ্বকর্মানে বন্ধনির্মাণ করিতে আদেশ করেন। বিশ্বকর্মা ইক্সের আদেশে দ্বীচিমুনির অছি থারা বন্ধ প্রেস্তত করেন। ইক্স এই বন্ধলারা বৃত্তাস্থরকে বধ ক্যিরাছিলেন। (ভাগৰত ৬١১০—১১ অ°) [ভাড়িত বেখা]

আহিকতথে লিখিত আছে যে, যথন ভরানক বন্ধনিৰোৰ, হর, সেই সমর পূর্ক বা উত্তরমূথে জৈমিনিস্নির নাম তিনবার শ্বরণ করিলে বন্ধতর বিদ্রিত হর।

> "প্রচণ্ডপ্রমাঘাতে মেবের্ জনিতের্ য: । জি: পঠেক্জৈমিনীরোংখি প্রাভূথো বাপ্যুদভূথ: । ডক্ত মাজ্তরং বোরং বিহাতীরো>বদীদভি ॥"

> > (আহিকতব্যুত ব্ৰহণু •)

অতিরিক্ত মহাপাতক না হইলে বজ্ঞাযাতে মৃত্যু হর না। নারিকেলাদি উচ্চশির: বৃক্তে বক্সপাত হইতে দেখা যার। বজ্ঞ-পতনের পর সেই গাছ মরিরা যায়। অনেক সময় বজ্ঞায়াতে মৃত বা মৃতপ্রার ব্যক্তিকে মৃতিকায় প্রতিরা রাখিলে বাঁচিতে দেখা গিরাছে। ইইকনির্মিত গৃহে বক্সপাত হইলে সেই হান চুর্ণ হইয়া যায়।

ইংরাজীতে বজ্পকে Thunder-bolt বলে। ইছা মেঘবরের পরম্পর ঘর্ষণ জন্ম বিপ্রতের সহিত উৎপন্ন হর। ঐ

ঘর্ষণের দক উথিত হইলে তাহা বজ্পের ডাক বলিরা কথিত।
প্রবাদ আছে, গোবরগাদার বা কদলী বৃক্ষে বজ্প নিপ্রতিত হইলে

আর উপরে উঠিতে পারে না। অনেকে বলেন, বজ্প দেখিতে
লোহশলাকার ভার, কিন্তু বাত্তবিক তাহা নহে। [বিহ্যুৎ দেখ।]

২ রদ্ধবিশেব, হীরক। পর্যার—ইক্রায়ধ, হীর, ভিচ্ন, কুলিল, পবি, অভেদা, অলির, রদ্ধ, দৃঢ়, ভার্গবন্ধ, বট্কোণ, বন্ধার, শতকোটি। গুণ—বড্রনোপেত, সর্বরোগাপহারক, সকলপাপনাশক, সৌধাকর, দেহলার্টাকারক ও রসারন। (রাজনি°)
[বিশেব বিবরণ হীরক শব্দে দেধ।]

ত বালক। ৪ ধাঝী। (মেদিনী) ৫ ফাজিফ। (ধরণি) ৬ বজুপুলা। (শক্ষরত্বা°) ৭ লোহবিশেব, এই বজুলোই অনেক প্রকার, বথা—নীলপিও, অরুণাত, মোরফ, নাগকেশর, ভিতিরাল, বর্ণফল, শৈবালবল, লোগবল, রোহিনী, কাফোল, প্রহিবল্লফ, মদনাধা। এই লোহের নামান্তর্কা চিহ্ন সকল থাকে। ৮ অপ্রবিশেব। ভাবপ্রকালে ইহার উৎপত্তির বিষর এইরপ লিখিত আছে—

প্রাকালে ইত বৰল ব্যাহরতে নিহত করিবার লভ বছ
উত্তোলন করেন, তথন ঐ বছ হইতে অলিফ্ নিল নির্গত হইরা
তরানক শংলর সহিত পর্বতশিবরৈ পতিত হর। যে বে পর্বতশিধরে ঐ অনিকণা নিপতিত হইরাছিল, তথার অল্রের উৎপত্তি
হয়। বল্ল হইতে ইহার উৎপত্তি বলিরা উহার নাম বল্ল
হইরাছে। ইহা আছাণ, ক্ষান্তর, বৈশ্র ও প্রত্তেদে চারিলাতি।
আহণলাতীর অল্ল ভঙ্গবর্গ, ক্ষান্তর-স্কর্যর্গ, বৈশ্র—শীতবর্ণ,
এবং প্রত ক্ষাবর্গ। বেতবর্ণ রৌপ্য সংভারবিষরে, রক্তবর্ণ অল্
রসারনে, শীতবর্ণ অল্ল ক্র্যান্তরিবরে এবং ক্র্যবর্ণ অল্ল

পিনাক, দর্ম, নাগ ও বছ এই চারি প্রকার অন্ন। ইহার
মধ্যে বছা নামক অন্ন অধিতে নিকেপ করিলে বজের জার
ছিরভাবে থাকে, কোন প্রকার বিকৃত হর না। এই অন্ত অক্ত
সকল অন্ত হইতে উৎকৃত্ত। বজান্তবারা অরাধিরোগ প্রশানত
হর এবং ইহাতে অকালমৃত্যু নিবারিত হইরা থাকে। অন্তলোধন
করিরা ব্যবহার করিতে হর। শোধিত অন্তই গুণকারক।

শোধিতের ওণ — ক্ষার, মধুররস, শীভবীর্যা, আযুক্র, থাড়ুবর্জক এবং ত্রিলোব, এণ, প্রমেষ, কুঠ, সীহা, উদর, প্রস্থি, বিষ
ও ক্ষমিনাশক। ইহা নিজ্য সেবনে রোগনাশক, শরীরের
দৃঢ়ভাসম্পাদক, বীর্যবর্জক, অভ্যন্ত কোমণভাজনক, প্রমায়ুবর্জক, পুত্রজনক, সিংহ সদৃশ বিক্রমজনক, অকালমৃত্যুনাশক,
এবং প্রভাত একশত জী রমণ করিবার শক্তিজনক।

অশোধিতের গুণ – মানবগণের নানাবিধ পীড়াঞ্চনক এবং ফুঠ, কর, পাণ্ডু, শোথ, হৃদ্গত ও পার্বগত বেদনা এবং শরীরের গুফতা উৎপাবক। (ভাবপ্র•) [অভ্রশক দেব]

৯ কোকিলাক্ষর্ক। ত বেতকুশ। (রাজনিত) ১১ সেহও-বৃক্ষ। (ভাবপ্রত) ১২ জীক্ষের প্রপৌত্র, কলিণী গর্ভজাত প্রস্থানের পুত্র। (গরুত্বপূত ১৪৪ জঃ, ভাগবত ১১/৯০ জ্বত)

১০ বিশামিত্রের পুত্রভেদ। (ভারত ১৩।৪।৫১-৫১)

> বিদ্যাধি সপ্তবিংশভিবোগের অন্তর্গত পঞ্চনশ বোগ।
জ্যোতিব শালে দিখিত আছে বে, বল্লবোগের আদি ৯ বও
নিন্দানীর, অর্থাৎ এই নর দতে বাত্রাদি কোন ওড কর্ম ক্লবিতে নাই।

"তাজানৌ শক্ষ বিষয়ে সন্ত শুলে চ নাড়িকা: ।
নাঙ্যালাডরো: বটু চ নব হর্ষপক্ষরো: ॥
বৈশ্বভিত্যাজীপাতৌ চ সমধ্যে পরিস্কৃতিবেং ॥" (জ্যোডিতব)
নামি কোন লানক আই কোনো ক্ষমজন্য করে, তাহা হইলে
নালক ঋণী, ভণগ্রাহী, বলধান, ক্ষেত্রাই, নম ও ব্যানির
পরীক্ষক এবং শক্ষমাণক হবরা বাকে।

শ্বণী খণজো কৰান্ বহোজাং নামসক্ষাহিণারীক্ষক ভাং 🗓 । ক্ষাতিখানে যদি চেৎ প্রাক্তো ক্ষােক্ষা ভাত্তিপুকামিনীনাং 💒 । (কোন্ধিপ্রবীপ 🌬

১৫ বৌদ্ধ মতে চক্রাকার চিক্বিশেব।
বক্রক (ক্লী) বন্ধসংজ্ঞারাং কন্। বন্ধক্রার। (রাজনি॰)
২ সর্বতোভ্রচক্রের অন্তর্গত হর্যজ্ঞোগ্য নক্ষত্র হইতে ক্রোবিংশ
নক্ষত্রাত্মক উপগ্রহবিশেব।

"কুৰ্যাভাৎ পঞ্চমং ধিষ্টাং জেমং বিহ্যানুখাভিধম।

শৃত্তকাইমগং প্রোক্তং সরিপাতং চতুর্কনাং ॥
কেতুম্রীদশং প্রোক্তম্বা ভাদেকবিংশতিঃ।
বাবিংশভিতমং কলাং এরেবিংশক বছকম।
নির্বাতক চতুর্কিংশমুকা অপ্তাবুপগ্রহাঃ ॥ (ব্যোভিত্তব)
বক্তক্রার (পুং ক্লী) বলুকার। (বৈয়কনি)
বক্তক্রট (পুং) বজ্তা করটো দেহাবর্গমভ। হন্মান্।
বক্তকন্টক (পুং) বজ্তাভ কটকমিব ভবারক্যাৎ। মুহীবৃক্ষ।
(ভটাধর) ২ কোকিলাক বৃক্ত, চলিত কুলেখাড়া গাছ। (রাজনি)
বক্তকন্টলাল্যালী (গ্রী) নরকভেদ। ভাগবতের মতে অপ্তাবিংশতি
নরকের মধ্যে এই নরক ক্রোদশ। বে সকল পাণী সর্বাভি-

"যন্তিহ বৈ সর্ব্বাভিগমন্তমমূত্র নিরয়ে বর্তমানং বক্সক-ক্রিনার্বাপ্য নিমর্বস্তি॥" (ভাগবত ৫।২৬।২১)

গামী, ষমলোকে ভাহাদিগের এই নরকে গতি হইরা থাকে।

ব্জুকন্দ (পুং) বজাকার: কন্দোহন্ত। বজ্লকর্ণ, চলিত সকর-কন্দ আলু। (রত্নমা°) ২ তালবুকের শিরোমজ্জা, তালের মাতি। ওবনশ্রণ, রুনো ওল।(বৈভকনি°)

বন্ত্রকপাটমৎ (অ) অণ্ট বারস্ক।

বস্ত্রকপালিন্ (পুং) বজুকপালোহভাতীতি ইনি। ব্ছবিদেব, পর্যায়—হেরস, হেন্নক, চক্রনম্বর, দেব, নিগুলীল, শনিশেধর, বস্তুটিক। (হেম)

বজ্রক (পুং) বজ্ঞকন, চলিভ সকরকন আলু। (রম্বনাণ)
বজ্রক জিক (নী) বীরোগাধিকারের ঔবধবিশেব। প্রস্ততপ্রাণালী—কাজি ১ সের, করার্থ পিপুল মূল, পিপুল, ওঁঠ, বমানী,
বীরা, ক্ষকবীরা, হর্মিরা, হামহরিরো, বিট্ লবণ, সচল লবণ
এই সকল প্রখা নিবিভ এক পল, পাকার্থ কল ও সের, শেষ
কাথ ১ কের, বথা নির্মণ পাক্ষ করিবে। ইয়া কর সহিত
পের। ইয়া সেবন করিবেল বীরিসের ক্ষিত্রিকি ও আমশ্ল,
এবং করু নাই ক্ষরা বল বীর্য ও জনহুগ্ধ কৃষ্কি হর। (ভৈবজ্ঞারম্বাণ)
বক্রকার্ক (পুং) নাবী নাবক পর ক্রবা। (বৈভক্ষার্থ)

रक्ककोतिको (श्री) सम्माननिका सनिका। ३ मानावरी। १ माकान्तित बाजा। ७ जमनानक।

বজ্রকালী (জী) > জিনশন্তিকে। ২ হিন্দেশীন্তিকে।
বজ্রকাট (গুং) এক প্রকার কীট । ইহারা প্রকার গু কাট
কাটরা গর্ভ করে। বজ্রকীটে যে শিলা কাটরা হিন্র করে;
তাহাই সচক্র গঞ্জনীশিলা বলিরা প্রসিদ্ধ । [বজ্রকট্র কেখা)
বজ্রকট্র (গুং) বজ্লন
বজ্রকট্র (গুং) > বজ্লনর পর্নাড। "সবজ্রকটালনিপাভবেগনিশ্রণিক্রকি ওলার স্বান্।" (ভাগবত ৩,১৩।২৮) ২ পর্নাডকেন।
(ভাগবত ৩।২০।৪) ৩ হিনালরশিধরত্বিত প্রাচীন নগর।
বজ্রক্তে (গুং) প্রারশ্ভিতবিশেষ।
বজ্রক্তে (গুং) পর্রভেদ, নর্বরাজ। (মার্কণ্ডেরপ্রণ্ড ২১।২৯)
বজ্রকার (লী) বজ্লসংক্রকং কারং। কারবিশেষ। পর্যার—বজ্রক, কারপ্রেচ, বিদারক, সার, চক্রনার, গুনোখ, গুরুলাকক।

২ দীহরোগাধিকারে উবধবিশেব। প্রস্তুত প্রণালী—
সামুদ্র লবণ, দৈরুব লবণ, কাচ লবণ, ববক্ষার, সৌবর্চন লবণ,
সোহাগা, ও সাচিক্ষার, সমভাগ চূর্ণ, আক্ষার গুল গুরুর ও দীক হুয়ে
তিন দিন ভাবনা দিরা একটা তামার পাত্রে বরু করিয়া লেপ
দিবে, পরে উহা প্টপাক করিয়া চূর্ণ করিবে। পরে তিকটু,
ত্রিফলা, জীরা, হরিদ্রা ও চিতা সমভাগ চূর্ণমিশ্রিভ করিয়া ক্ষারের
অর্জাংশ প্রদান করিতে হইবে। মাত্রা দোবের বল অন্থসারে
ছির করিতে হয়। যদি বায়ুর আধিকা থাকে, তাহা হইলে
উক্ষ জল অন্থপান, প্রেমার আধিকা থাকিলে মৃত, পিতের
আধিকো গোমুত্র এবং ত্রিদোষ্ট্রই হইলে কাঁজি অন্থপানের
সহিভ সেবন করিতে হয়। এই ঔবধ সেবনে সকল প্রকার
উদরী, শুল্ব, শুল্ব, অগ্রিমান্দা, অজীর্ণ ও দীহাদি রোগ আভ
প্রশমিভ হয়। (রুসেক্সসারসণ দীহরোগাধিণ)

খণ-জত্যুক, তীক্ষ, কারক, রেচন; খন্ম, উদরশীড়া, বিষ্টস্ক

বক্সগর্ভ (গৃং) বোধিসবতেদ।
বক্সগৃড়, বোবাইপ্রেসিডেন্সীর প্ণাদেলার অন্তর্গত একটা গিরিছর্গ।
বক্সগুড়ালু, উবধবিশেব। (চিকিৎসাসা)
বক্সগোলা (গুং) ইন্সগোলাইটভেদ। (বৈভকনি॰)
বক্সযাত (গৃং) বক্সপাত।
ক্সেহাত (গ্রং) বক্সপাত।
ক্সেহার্য (ত্তি) বক্সপাতনের কড়কড় শব্দ। বীনুভবন্ত।
বক্সচর্ম্ম (গৃং) বক্সকং ছর্ভেজ চর্ম বস্ত। খড়লা, গগুক, গগুর।
বক্সচর্ম্ম (গৃং) গ্রশকী। (বৈভকনি॰)
বক্সচিক্ (গ্রুণ) বক্সালাতি বা বক্সের ভার বাস।
বক্সচিক্ (গ্রুণ) বক্সালাতি বা বক্সের ভার বাস।
বক্সচিক্ (গ্রুণ) বক্সং কর্মতি ভক্ত আবাত সবনেত্রতি, বিক্রিপ, তুপাগদন্ত। গর্মক। (হেন)

বজ্ঞজন (পং) বিহাৎ। লোনানিনী।
বজ্জজালা (বী) বলুত লালা। > বলুলি। (হলাছা)
"বজ্জলালাভ্যননঃ শাললভাভ্যালয়ৎ।" (নংক্লাই ১২১।১৪)
২ বিয়োচনের পৌতী।

বক্তটক শান্ত্ৰী, ভবাননীৰণখন ও বক্তটীৰ ভাৰপ্ৰথণোডা। বক্তটীক (পুং) বক্ষেপ বক্ষমণানেন টাকতে প্ৰফানভে ইভি টাক-কঃ বক্ষমণানি নামক বৃদ্ধ। (জিলা)

বজু ডাকিনী, বৌৰভাৱিকগণের উপাভ ডাকিনী স্থিতের।
নেপালে ও ডিবাডে এই ডাকিনীর পূরা প্রচলিত আছে, তথার
আই বিধ ডাকিনী বৃষ্ট হর; বথা—বেতবর্ণা লাভা, দীতবর্ণা নালা,
রক্তবর্ণা দীতা, ভারবর্ণা নৃত্যা, ভরবর্ণা পুলহতা পূলা, দীতবর্ণা
বুশহতা ধূপা, রক্তবর্ণা বীপহতা দীপা এবং গ্রহতা হরিৎবর্ণা
গ্রহা। এই আই বল্লডানিনীকে অনেকে, অইমাড্রকার রূপাভর
বিদ্যা ননে করেন।

ব্জ্ঞগৃথা (খ্রী) রুমন্টতেন। (পা° গ্রাসার্ভ) বজ্ঞতার (পুং) গাখ্নীর মনলাবিলেন। ব্জ্ঞাতীর্থ, তীর্থভেন। বজ্ঞতীর্থনাহান্ত্যে ইহার সবিভার পরিচর আছে।

ব্দ্রাকুণ্ড (পং) বজুং ব্রাহ্মসাং কঠিনং কুণং বছ। ১ গরুড়। ২ গণেশ। (ক্রিকা°) ৩ গুর। ৪ মশক। (রাজনি°) ৪ মূহীবৃক্ষ, সীলগাছ। (ক্রি) ৫ বলুকুণ্ডবর। (ভাগবত ধাহতাতঃ) বক্লাকুলা। পং) বল্লেগ কুলাঃ। বলুসদৃশ।

বক্সদংষ্ট্র (পৃং) বন্ধু ইব দংট্রা বন্ধ। > ইক্রগোপ কীট। ২ রাক্ষস (রামারণ ১৭০৯৮) ও অন্তরভেদ। (ভাগবন্ড ৮)>০)২০) (ত্রি) ও বল্লের ভার দংট্রাবৃক্ত। এ সহাদ্রিবর্ণিত এক্জন রাজা। (সহাতি ৩০)>০)

ব্জুল্কিণ (তি) বজাং ধনিংশে দক্ষিণহতে বস্ত। দক্ষিণ হত ধারা বজাবৃক্ত। "অবক্তবো ব্বণং বজাবন্দিশং" (অক্ ১۱১০১১) 'বজাবন্দিশং বজাবৃত্তেন দক্ষিণহত্তোপেতেন' (সারণ)

বক্তদশ্ধ (আ) বজাগি বারা নথ। চিকিৎসাসারে বজনখের ভাশজালানিবারণবিষয়ক কএকটা বিধি আছে।

ব্যস্ত্রদণ্ড (ত্রি) ধীরকশোভিড বও। (বেবীপুরাণ) ব্যস্ত্রদণ্ডক (জী) ওবডেন।

ব্যস্ত্রদন্ত (পুং) > ভগদক্তের পুত্রভেদ। (ভারত) ২ বৌদ্ধ-গ্রহ্লারভেদ। (শ্বিরা ১০৯৭)

वक्कमुख (गूर) रबुमिर काँगा रखा रख । > मूक्ता । र बुस्कि । वक्कमुखा, मरीएकर । (विशिषत १००१)

दक्कारमान् (११) क्युनिय कडिनाः वनमवकः। ईःवृदिक्ः। (८२म)२ क्युनकः। ব্দ্রদাম, কচ্ছণবাতকাশীর একজন রাজা, লন্ধণের পুত্র । ইনি গাধিনগরপতিকে পরাজিত করিরা গোপাজি অধিকার করিয়াছিলেন।

विक् पृतृत्वि (ग्रः) यक्त प्राव्यक्त ।
विक प्रत्न (ग्रः) क्रम्भ किन प्रतः ।
विक प्रतः (खि) > वक्ष मृत्रं किन प्रतः । २ वन प्राप्तः ।
विक प्रतः (ग्रः) वक्ष वाद्यका स्तः । मृहीहकः । (स्राप्तः)
विक प्रतः (ग्रः) वक्ष वाद्यका स्तः । मृहीहकः, गीवागाः ।

'নেহও: সিংহতুও: ভাৰত্ৰী বক্তজ্ঞাংপি চ।' (ভাবপ্ৰ•)
বজু দ্ৰুফাকেস্বধ্বজ্ব (পুং) গৰ্ম্ববাৰভেদ।

বজ ধর (পুং) ধরতীতি ধু-আচ্। বজ্লতা ধর:। ১ ইন্ত্র। (হলায়ুধ) ২ বৌহুঘতিবিশেষ। (ত্রিকা•) ও বলালপুরাধিপতি রাজবিশেষ। (রাজতর্জিণী ৮/৪৪•)

বজুধর, বৌৰতত্ত বর্ণিত আনিবৃদ্ধতেন। তিব্বতীয় বৌৰতত্ত্ব ৰতে ইনি প্রধান বৃদ্ধ, প্রধান জিন, শুহুপতি, সকল তথাগতের প্রধান মন্ত্রী, অনাদি, অনন্ত ও বজুসন্থ। অপদেবতাগণ তাঁহার নিকট পরাজিত হইয়া শপথ করে বে বৃদ্ধধ্যের বিক্লম্বে কথন তাহারা হতক্ষেপ করিবেনা।

কোন কোন বৌৰতজ্ঞমতে বজুধন ও বজুসৰ ছই জন ভিন্ন।
বজুধনই আদিদেব, তিনি সমাক্ সমাধিতে নিরত অবহিত,
বজুসৰ ৰারাই তিনি মানবের কল্যাণ বিধান করিয়া থাকেন।
ধ্যানী বুৰের সহিত মান্নবী বুৰের যে সম্পর্ক, বজুধরের সহিত
বজুসবের সেইরূপ সম্পর্ক।

বজ্ধাত্রী (জী) বিরোচনের পদীভেদ।

বজুনখ (ত্রি) নৃসিংহ। (তৈত্তিরীয় আ॰ ১০।১।৬)

বজনগর (ক্রী) দানবশ্রেষ্ঠ বজনাভপ্রতিষ্ঠিত নগরভেদ। (হরিব°) বজুনাভ (মি) > ফলার্চর মাতৃভেদ। ২ দানবরাজভেদ। ৩ রাজা উক্থের পুত্র। ৪ উরাভের পুত্র। ৫ ছলের পুত্র। ৬ ক্লঞ্চের জ্যোভিঃ।

বজনাভীয় (ত্রি) বজনাও নামক দানবসংশীর।

বস্ত্রনারাচ (রী) অন্নবিশেষ। "এতভু বন্ধনারাচং পট্টোছিত-মিদং জঝ:।" (লোকপ্র'৪০১)

বজু নিৰ্ছোষ (পুং) বজ্বত নিৰ্ছোবঃ। বজ্বনিত শব্দ। (হলাছুধ)
বজ্বনিতেশ্য (পুং) বজ্বাগাং নিশেষঃ সংঘৰ্ষধানিঃ। বজ্বনিৰ্ঘোষ।
মেষসংঘৰ্ষধানিত ধ্বনিঃ। বজ্বনিৰ্ঘোষ। পৰ্যায়—কূৰ্মধু।

বস্তুপঞ্জর (পুং) ১ হর্গাতোরভেদ। ২ সহাত্রিবর্ণিত একজন দালা। (সহা^ক ৩১/১৯) ও নামকরেদ।

বজ্ৰপাত্তিকা (জী) বৃদ্ধতেদ (Asperagus Racemosa)। মৃত্যুপাতি (গ্ৰং) বহুং পাণো বছ । ১ ইজ । (ত্ৰিকান) ২ ব্ৰাহ্মৰ । "বলুপানিত্র ক্লিনঃ ভাৎ ক্লবং বলুরথং স্বতম্। বৈভা বৈ দানবভাশ্য কর্মবল্লা যবীরসঃ ॥"(ভারত ১১১৭১।৫১)

৩ বৌদ্ধ মতে, দেৰবোনিভেদ। ৪ ধ্যানী বোধিসৰভেদ। নেপাল, ছোট, সিকিম ও ভোটানে এখনও বজুপাণির विज्ञ-जीवनमूर्वि পृक्षिक हरेता थारक। जित्मन्-रकन्-रक्षक নামক ভোটগ্ৰাছে লিখিত আছে, এক সময়ে সকল বৃদ্ধ মেক্ল-শিখরে সমবেত হইলেন। কিন্নপে সমূত্রগর্ভ হইতে অমৃত আছত হইবে, তাহার উপায় নির্দারণের অন্ত সকলে সন্মিলিত ৷ তৎ-কালে অম্বরেরা মানবজাতির প্রতি হলাহল প্রয়োগ করিয়া সর্ব্ধ-নাশ সাধনের চেষ্টা করিতেছিল; এখন অমৃত বিতরণ করিরা মানবসমাজ রক্ষা করিবার জন্ম সকলে উদ্গ্রীব। বৃদ্ধাণ মেক্র বারা সমুদ্র মহন আরম্ভ করিলেন। তাহাতে অমৃত সমুদ্রোপরি ভাসিরা উঠিল ৷ বন্ধ্রপাণির উপর সেই অমৃতরক্ষাভার অর্পিড হইগ। ঘটনাক্রমে রাহু বোধিসন্থগণের শুপ্তকাশু জানিতে পারিল এবং বন্ত্রপাণির অসাক্ষাতে কুম্ভ নিঃশেষ করিয়া অমৃত পান করিরা পলাইল। বজুপাণি পরে অমৃতাপহরণ জানিতে পারিয়া রাহকে ধরিবার জন্ম চুটিলেন। প্রথমে সূর্য্যলোকে গেলেন। স্থ্য রাহর ভয়ে প্রকৃত সংবাদ না দিয়া এক জনকে ষাইতে দেখিরাছেন, এই মাত্র বলিলেন। তথা হইতে বজুপানি চক্রলোকে আসিলেন। চক্র সমস্ত বলিয়া দিলেন। অবিলংখ বজুপাণি রাছকে আক্রমণ করিলেন। তাঁহার বজুাঘাতে রাছর শরীর দ্বিধণ্ডিত হইল, তাহার মুধমাত্র অবশিষ্ট রহিল, নিয়াংশ এককালে উড়িয়া গেল। কেবল অমৃতপ্রভাবে তাহার প্রাণ রহিল। তৎপরে বোধিসম্বর্গণ সমবেত হইলেন। প্রস্রাবে মহানর্থকর হলাহল উৎপন্ন হইনাছিল, তাহাতে স্ষ্টি-নাশ হইবার উপক্রম হইল। বোধিসন্থগণের পরামর্শে বঞ্পাণি সেই মূত্র পাল করিরা স্টেরিকা করিলেন। তখন বন্ধুপাণির অফুপণ স্থন্দরত্বপ বোর কৃষ্ণবর্ণ হইল। চক্ত স্র্রোর উপর দাহর জাতক্রোধ থাকিল। কেষল বন্ধুপানির কৌশলে একবারে চক্রত্বাকে গ্রাল করিছে পারিভেছে না।

বজুপাণি যপন রাছকে আক্রমণ করেন, তথন রাছর কত হইতে অমৃত রক্ষিত হইতে থাকে। সেই রস পৃথিবীতে বে খানে বেখানে পড়িল, সেই থানে নানা তেমক উৎপর হইল। ভোটবেশে বে সকল ক্লফবর্ণ ভীবণ বজুপাণিমূর্ত্তি আছে, তাঁছা-দের দক্ষিণ হল্তে বজু, বামহত্তে ঘণ্টা পাশ প্রাভৃতি এবং কটি-দেশে মুগুমালা।

বজু পানিছ (ফ্লী) বজুপাণের্ডারং ছ। বজুপানির ভাব, বা ধর্ম। বজু পাতে (পুং) বজুজ পাতঃ পতনং। বজুপতন। বজু পাহাণ (ফ্লী) ছর্ম পাবাণ, চলিত কুলবছি। (বৈভক্ষিণ) देख्यं भू स्त्री) समुख्य मृतर । समुनगत । (रेक्सर्डि) ११००) स्वास्त्रभूष्ण (जी) समुनिय मृत्यर । किनमूल । (अत्रत) ६ नफ-मृत्य क्यामा । जित्रार होल् । समुमूला--नकास्ता, क्यामा ।

बद्ध श्रेष्ठ (ग्रेर) विश्वविद्यास्य ।

वाज्ञ প্रकार (रहे) चत्रवत्रावरक्य ।

বন্ধপ্রভারিণী (খী) তয়েভ দেবীভেব।

बुख्यांतु (वि) बुख्य का कर्कम ।

ব্দ্রবাস্ক্র প্র) ১ ইল । (ধন্ ১।১৬৪৮) ২ কল । ৩ জনি । ৪ উড়িব্যার একজন রাজা।

वक्कविक्रक (ग्रः) वळविष कडिमा शैववक कन्। वकाकप्रशः। बक्ककृति (जी) नगत्राक्षः।

यक्ककृतित्रक्षम् (ज्ञी) देवकाच मनि। (देवक्रिती)

বন্ত্ৰভূকুটা (हो) ভৱোক দেবীকো।

বক্সভৃতী (ত্রী) বধুর ভূগ বিশেষ, গুড়াছু। গুণ—কটু, উঞ্চ, খান, বিজ্ঞা, কম্পা, কঠরোগ, বাডগুল, পীনস প্রভৃতি রোগনাশক। (বৈছক্নি')

बुक्क्क्ट्र (बि) स्त्रः विष्ठतिं-ष्-किन् फूक् ह। हेळ।

(まく)・・(事事)

বজ ভৈরব, বৌদতাত্রিকগণের উপাস্ত এক ভীমকার বিকট ভৈরবমূর্ত্ত। ভোটদেশে ইহাই বনান্তক শিবমূর্ত্তি বলিরা পূজিত।
ইহার বহমুখ ও বহহত। সর্কা নির মুখটা মহিবমূতাকার।
হত্তে নানা প্রহরণ। পদতলে বৌদধর্শবেবী অসংখ্য পাষ্ঠ নিপ্তিত।

वंज्ञम्बि (११) शैत्रम् ।

ব্রস্ত্রমর (বি) বজ্ঞ-বন্ধণে মরট্। বক্তবরূপ, বক্তত্ন্য। ব্রিরাং তীপ্।

ব্দ্রবিত্র (পুং) রাজভেদ। (ভাগবন্ত ১২।১।১৬)

ব্জ্রযুক্ট (পুং) রাজা প্রতাপ-মৃক্টের প্র।

ব্জ্রমুষ্টি (ত্রি) ১ ইক্র। (রামারণ ৬)৭২।২৯) (পুং) ২ ছাক্ষসভেদ। (রামা° ৫)১৮/১৪) ও স্বারণ্য শ্রণকন্দ, শ্রণকন্দ ক্রডেম। (বৈভক্তি)

यख्यमृती (दी) स्वामन काँगर मृगर रकाः। मारभर्ते । (प्राक्रामि) राख्यमृत् (दी) जक्तम् रदा ।

वक्करबांश, क्रविक ब्याक्टियक वाश्रवित्तव।

বস্তুবোগিনী (গ্রী) তল্লোক দেবীকেন। ২ চাকাজেনার অন্তর্গত জাসিত প্রায় । প্রাচীন বালাবাপ্রহে বরুবোগিনী নামে খাত।

व्यात्रवं (११) स्वयितं स्था गण। व्यवितः।

"क्वानानिव कार कार कार कारण प्रकर्।"

(क्षांत्रक अध्यादा)

वक्कान् (प्र) प्रतिष प्रतिष्ण । > गुण्य । १ प्राप्ति एक । वक्कान्त (सी) नगवरण्य ।

বন্ধারুপ (वि) বজের ভার আছডিবিশিষ্ট।

वृद्धमिनि (औ) मिनिक्षमात्रस्थः। [स्वयानव स्व

বৃদ্ধান্ত (পুং) গাখনির মসলাভেদ। অপক ভিন্তুক, অপক ক্রিন্ত, পাজলীপুলা, পরকীর বীঝা, ধরন-বর্বল ও বব, প্রোণ পরিবাণ কলে সিভ করিরা উহার অইডাগাবনের হাথ প্রস্তুত ক্রিবে; পরে মানাইরা ডাহাডে শ্রীবান-করন,ভগ্ওপ্, তরাডক, কুম্মুক, মূনা, অকরী ও বিধ প্রাকৃতি প্রব্যের কর সংবোস করিছে বস্তুনেশ প্রস্তুত হয়।

এই বল্লালে উভও করিয়া প্রানাদ, হর্ন্যা, বলডী, নিল, প্রতিমা, কুডা ও কুণে বিলেশন করিলে, ভজারেরা সহলাযুত বর্বকাল হারী হর। লালা, কুলুল, ওপ্তপুর, গৃহধুল, কণিও, বিববীল, নাগবনাকল, ভিলুক, মধনকল, বগুক, করিছা, সর্কান ও আমলকের কর বিশাইলে বিভীয় প্রকার কর প্রভাত হইরা থাকে। পো, মহিব ও ছাগের পুল, গর্কভরোল, মহিবের চর্ল্য, গ্রায়ত এবং নিব ও কণিখরতে কর করিয়া মিপাইলে বক্সতর নাবে লেগ প্রস্তুত হর। (বুহৎসংহিতা ৫৭ আঃ)

সাধারণতঃ বে সকল প্রলেপ বছরৎ কঠিন হইরা উঠে বা তবৎ দৃদৃদংলগ্ন থাকে, ভাষাকে বছলেপ বলা বাইতে পারে। "বারাণক্তাং কৃতং পাপং বছলেপে ভবিষ্যতি।" (তীর্থতর্কিনী)

বক্সলেপঘটিত (বি) ব্যালেগরার সম্বন্ধ।
বক্সলোহক (ক্লী) > কাজলোহ। বৈছক্ষনি) ২ চুমক।
বক্সবটকমুপূর (ক্লী) ঔবধ বিশেষ। প্রজ্ঞতপ্রণাদী—
গোন্তে শোধিত সপ্রচুর ৬ পল, পাকার্থ গোন্ত্র ৬ সের,
পাক শেষ হর হর এরপ সমরে নির্মাণিখিত ক্রব্যের চুর্ণ প্রক্ষেপ
করিয়া উত্তমরূপে আলোড়ন করিতে হয়। পরে ৪ মারা
পরিমাণ বটক প্রজ্ঞত করিতে হয়। অস্থপান তক্র। প্রক্ষেপ
ক্রব্য — শিশুন মূল, চই, চিতামূল, ডাঁঠ, মনিচ, দেবলারু, ক্রিকলা,
বিভঙ্গ, মূতা ইহালের প্রত্যোক্তর চুর্ণ ২ তোলা, এই কণ্ডুর সেবন
করিলে পাঞ্জু, ক্লর্ল, প্রহন্তী, উক্তত্ত, কুনি, প্রাহা প্রভৃত্তি রোগ
আত প্রশ্বিত হয়। (কৈবলারক্সাও পাঞ্রোগাধিও)

ৰক্সবঁটা (ত্ৰী) খবধবিশেষ। প্ৰকৃত প্ৰণাদী—পারং, চিচা, মরিচ, প্ৰত্যেকে এক ভাগ, গছক ২ ভাগ, কাঠচুকুরের রসে একনিন ধর্বন করিরা হরীভকী, আনলকী, কহেড়া, উঠ, নিগুল, মরিচ ইহাবের প্রভ্যেকের ভাবে ৭ বার করিয়া ভারতা নিরা বটী প্রভৃত করিছে হরবে। অনুপান এবং খববের বারো বোবের বলাবণ অনুসারে হিন করিবে। এই খববনেবারে ক্রুটি ও পানা রোগ প্রশ্বিভ হয়। (রনেক্সনার্ক স্থুট্ডরোগারিত)

वस्त्रवर्ध (११) > ब्राम्थलन पात्रा मृङ्गः। २ ४।काक्राफ्यः। (Cross multiplication) * বস্ত্রবরচন্দ্র (পুং) উড়িব্যারালভেদ। वक्षवर्षान्, अक्षन व्यक्ति कवि । वक्कवही (जी) बबुमिब करिना बही। অন্থিসংহারক্সতা। চলিত হাড়জোড়া বা হাড়ভালা লভা। (হারাবলী) বক্সবাটল (বেশন) অভিশন্ত নৃত্ব। বজ্ৰবারক (অি) বজনিবারণকারী, বাহাদের নাম করিলে 🥍 বন্ধুভর নিবারিত হয়। বৈমিনি, স্থমত, বৈশশ্গারন, প্রস্তা ও পুলহ এই পাঁচ জন ঋষির নাম করিলে বজুপাতভয় দুর হয়, এইবস্ত এই পাঁচ কন বন্ধবারক বলিয়া অভিহিত। "रिजयिनिक ख्यादक रिवम्लावन এव ह। পুৰজ্ঞ: পুৰহদৈৰ পঞ্চৈতে বস্ত্ৰারকা: ॥" (পুরাণ) वक्कवाताही (जी) मात्रारमवी। পर्यात-मातिही, विम्या, वक्-কালিকা, বিৰুটা, গৌরী, পাত্রীরপা। (ত্রিকা•) रक्रवाहिका, रक्षवाहिका (जी) व्यक्षवेती विष्ण । (निष्मभू° शंदरुषः) [बरक्रवंत्री विद्या (मध] वक्कविद्धाविनी (जी) वोद्ध प्रवीरक्ष । বক্সবিক্ষম্ভ (পুং) গদড়ের পুত্রভের। বস্ত্রবিহত (ত্রি) বন্ধপাত দারা ভাহত। বজুবীজ্ঞক (পু:) বছুকনাম লভাভেদ। বজ্রবীর (পুং) মহাকাল নামক মূর্জিভেদ। ব্জুবুক্ষ (পু:) বজুনিবারকো বৃক্ষ:। সেহও বৃক্ত, দীদ্ধ গাছ। বজ্রবেগ (পুং) > রাক্ষ্যভেদ। ২ বিভাধরভেদ। ব্ৰক্তশ্ল্য (পুং) বছমিব কঠিনং শ্ল্যং গাত্রলোম শ্লাকা যন্ত। শল্যক নামা জন্ত, চলিত সন্ধান । (রাজনি°) বজ্বশাধা (ত্রী) বঙ্কবাদী প্রবর্ত্তিত জৈনধর্মসন্দারভেদ। বজুলিষ্য (পুং) ভৃত্তর পুত্রভেদ। ব্ৰন্ত্ৰশৃত্মলা (ত্ৰী) বছৰৎ শৃত্মলং যক্তা:। জৈনমত্তি, বোড়শ

বিভাদেবীর একভম। (হেম) বজু শৃত্যলিকা (জী) বজাছি। চলিড কুলেখাড়া, হিন্দী---ভালমাথনা, কলিজ—কোকিন্তা, ববে - বিধরা। যজ সংখাত (পুং) > বল্লসগৃশ কটিন। ২ ভীম। (আদিপর্ক) ত গাথনির মদলা বিশেষ। অইভাগ দীদক, বিভাগ কাংভ ও একভাগ বীভিকা বোগে "বল্লসংঘাত" নামক কঠিন মিল্লধাড় উৎপন্ন হইরা থাকে। यख् त्रः हाङ (१११) त्राज्यः। (ननिकवि°) राष्ट्रमञ्जू (शूर) शांनी नुषरकर । [सक्रथप (१५ ।] वक्ष्मक्षिका (जी) शानी-वृष्कत भन्नी।

বক্সসাধি (প্ং) বৌদ্ধতে - চিত্তের বোগনমাধি বিশেষ। বক্সসমূৎ কৌর্ন (ত্রি) > হীরকখোদিত। ২ কঠিন বরবারা উৎপাত। বজ সিংহ (ত্রি) > একজন হিন্দুরাজা। ব্দ্রসার (অ) বছবং সার:। ১ বছ সমান সার, বছের ভুল্য সারযুক্ত। ২ হীরক। वक्त जाजभग्न (बि) वल्य नावषकार्य मन्हे। बल्यावजन्म। হীরকনির্মিত। বজু সূচি চৌ (বী) > হীরক নির্দিত হচে। ২ শহরচার্য্য বিরচিত **উ**পनिवम्टलम् । বন্ধসূৰ্য্য (পুং) অভিসারবরাৎ বন্ধমিব তেজবিদ্বাৎ ক্র্যা ইব । वृष्ठविरमव। (जिका°) বজ্সেন (পুং) > প্রাবন্তিপুরীর একজন রাজা। ২ জাচার্য্যভেদ। वक्ष्यान (ही) नगवरणमः। বজ স্থামিন্ (পুং) জৈন সপ্তদশ পূর্কির একতম। (স্থবিরা ১৩) वक्र हरा (वि) वक्षः रख वक्र। वसुनानि, हेसा (क्षक् ১१०) -) এই অর্থে অগ্নি, মরুদ্গণ, শিব প্রভৃতিকেও বুঝার। দ্রিয়াং টাপ্ৰজুহন্তা—২ সমিধভেদ। ৩ বৌদ্দেবীভেদ। বক্তৃহস্ত দেব, গদবংশীয় একজন রাজা। তিনি ত্রিকলিলের অধিপতি ছিলেন। কলিঞ্চনগরে তাঁহার রাজধানী ছিল। তাঁহার পিতার নাম কামার্ণব ও মাতা বিনরমহাদেবী। বজ্তুণ (क्री) নগরভেদ। ব্ৰক্তা (জী) বন্ধতি গদ্ধতীতি বন্ধ গড়ে। রক্টাপ্। ১ মুহী-বুক্ষ। ২ গড়ুচী। (মেদিনী) ৩ ছর্গা। "বক্সাছুলকরী দেবী বন্ধা তেনোপগীয়তে।" (দেবীপু: ৪৫ অ°) বজু শৃংশু (পুং) জীক্ষকের পুত্রভেদ। বজাকর (খং) शैরকখনি। বক্সাকৃতি (ত্রি) বজুের স্থায় আকৃতিবিশিষ্ট। চিকা+বা কুশের স্থার আঞ্জতি। পূর্বের ব্যাকরণে জিহলামূলীর বর্ণ সংজ্ঞায় বে চিহ্ন ব্যবদ্বত হইত, তাহা বজাকৃতি বলিয়া কথিত ৷ বৃদ্ধা (हो) বলং আখ্যা বহু। > বল্পবাৰাণ, ফুলথড়ি। (পুং) ২ সেছও বৃক্ষ। (মুশ্রত চি° ৯ ক্ম°) ৩ বঞ্জনকার্থ। বজ্বাদ্যাত (পুং) > বছপাত। ২ আক্ষিক দুৰ্ঘটনা বা বিপদ। वस्त्र कि (बि) व्यक्तिर्युक्त । বজ্বাক্ষুপ্ম (ত্রী) তল্লোক বেৰী বিশেব। বজ্ঞাঙ্গ (পুং) বছমিৰ অলং বছ। > লগ। (রাজনি*) ইহার পাঠান্তর 'বক্রাল'। (জি) ২ ব্রত্তুল্য অলবিশিষ্ট, বাহার অল বজের ভার কঠিন। সার্থে কন্। বজালক। वक्कांकी (जी) वक्कान-बीव्। > शरवधूका। (अन्तर्क)

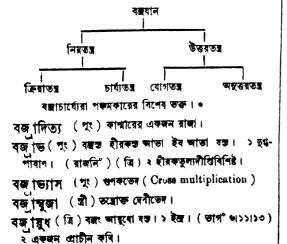
২ অহিসংহারী, হাড়ভালা নতা। (ভাৰপ্র')

ব সু | চার্ব্য, নেশালের বৌছভাত্রিক আচার্বা বা ওক। তিব্বতে এই বলু াচার্বাই এবন গামা নামে গাড। [নামা বেখ]।

বলনেশীর তাত্রিক হিন্দুসমাজে মন্ত্রগুল বা আচার্যোর বৈ হান, নেপালে বৌকসমাজে বজু চার্যা সেইরূপ অথের ভক্তি ও পূজার পাত্র। নেপালের মুখিতকেশ 'বাড়া' নামক বৌক আচার্যাগণ ছইভাগে বিজ্ঞভ্য—ভিন্দু ও বজু চার্যা। বাহারা সংসারভ্যানী ও বাহ্চর্যোর অনুষ্ঠান করেন, তাঁহারা ভিন্দু এবং বাহারা গৃহস্থ ও অক্সজ্ঞরচর্যা পালন করেন, তাঁহারাই বজু চার্যা।

বজাচার্য্য গৃহত্ব, স্থতরাং ত্রী পুত্র লইরা বিহারে বাস করেন বটে, কিন্তু ইনি এক প্রকার নেপালের বৌদসমাজের কার্য্য-করী মন্ত্রণালাতা, এবং প্রধান মন্ত্রক্তবা এক একটা বিহার এক একজন বজাচার্য্যের জ্বধীন। নেপালের বহুসংখ্যক বিহার আছে, স্থতরাং বহুসংখ্যক বজাচার্য্যও দেখা বার। নেপালের কি বাঁড়া, কি সাধারণ বৌদ্ধ গৃহী সকলেই অবনত মন্তকে বজাচার্য্যের আদেশ ও উপদেশ পালন করিতে বাধ্য ? [নেপাল দেখ]

নেপালের সাধারণ মৃত্তিভক্ষে বৌদ্ধগণ বজু ধারণ করিতে পারেন না, যিনি এই বজুধারণে অধিকারী তিনিই বজুাচার্য্য নামে থাত। নেবারীদিগের নিকট বজুাচার্য্যরা 'গুভাজু' বা গুভাল' নামেও থাত। বজুাচার্য্যের অফুঠের বা প্রবর্তিত মৃতই বজুযান নামে থাত। ভোট ও নেপালের বৌদ্ধগণ একণে বজুযান মতাবলদী বোর তান্ত্রিক। একণে বজুযান নিমোক্তরূপে বিভক্ত:—



वक्रुमिनि (ग्रः) वसः (विका॰)

বজানিন (রী) থানের আননভেদ। ২ বুছের আনসভেদ।
বজাভিপুখ্বলা (রী) কোকিলাঁক বুক। (রাজনি°)
বজাভিত (বি) বজাঘাত হারা মৃত।
বজাভিকা (রী) কপিবজু, চলিত আলভুনী। (বৈভকনি')
বজাভিক (রী) তগরপাছক। (বৈভকনি-)
বজাভিক (রুং) ইজবিজরী। ২ গরুড়।
বজিন (রুং) বজোহত্যভেতি বস্তু (জত ইনি টলনা। পা
হাং।১২৭) ইতি ইনি। বজাধারী ইজা। ২ বুছ বা কৈনসাধু।
(বি) ও বজবিলিট। ৪ ইউক্তেদ।

বজি দ্বী (বী) দেবীমূর্জিভেদ। (সন্ধা ৩০)১২)
বজি বস্ (বি) বজ্ঞধারী। (বন্ধা ১১২১।১৪)
বজি (বী) বজ্ঞ পৌরাদিছাৎ তীব্। দুবী ভেদ। (ভাবপ্রা)
বজ্ঞে দ্বর (প্রং) মেগালছ তীর্থভেদ। এখামে প্রাচীন হিন্দু ও
বৌহমিশ্রিত তারিকাচার বিভয়ান সাহে।

বজে শ্বরী (জী) বৌদ্ধনেবীতেল।
বজে শ্বরী বিদ্যা, গুণাবিদ্যাতেল। ইহার অপর নাম বল্পবাহনিকা বিদ্যা, বংগাবিধি বল্প নির্দাণপূর্বক এই বিদ্যা বারা
অভিবেক করিবে এবং কাঞ্চন বারা তাহাতে মন্ত্র গিথিবে। পরে
কোন লিতেজিয় ব্যক্তি সেই বল্প এহণপূর্বক লক্ষ লপ করিয়া
বল্পকুতে প্রতাদি বারা তদ্দশংশ হোম করিবে। ইহা বারা বল্প
সর্বা শক্ষেলয়কারী হইরা থাকে। এইয়পে লপ বারা পৃতঃ বল্প
নৃপতিগণ রক্ষা করিবেন।

পরাকালে ইক্রের উপকারার্থ একা মহাদেবের নিকট হইছে

ক্ষত্যাস করিরাছিলেন। কোন সমরে ইক্র বিশ্বরূপের উপদিট

বিভা বারা সোমরস হরণপূর্ক বিশ্বরূপকে নিহত করেন। তদনত্তর ইক্র সোমবোগে হতঃ হবিং প্রার্থনা করিলে হতপুত্র প্রজাপতি বটা তাঁহাকে সোমরস লানে ক্ষরীকার করেন, তাহাতে
কুপিত ক্রীরা ইক্র বলপূর্কক সোমরস পান করিলে, প্রজাপতি

ইক্রেক্র ইক্রের বলপূর্কক সোমরস পান করিলে, প্রজাপতি

ইক্রেক্র ইক্রের বলিরা বক্তে আছতি প্রধান করিলেন।

তাহাতে কালাগ্রিসনৃশ বৃত্ত নামে ক্ষন্তর প্রান্তর্ভূতি হইল। অনন্তর
সেই ক্রের্রর ইক্রের পশ্চাবাবিত হইলে ক্ষরিক্রেন ইক্র ক্রার প্রণাপন্ন হইলেন। তথন বন্ধা কহিলেন, হে ক্রিক্রম
তুমি এই বক্রেররী বন্ধ বারা অভিবিক্ত বন্ধ ত্যাগ কর, এথনই

তোমার শক্র বিনষ্ট হইবে।

এই বজেবরী মত্তের প্রথম গার্মী, তৎপরে ও ফট্ জহি ইত্যাদি" মন্ত । এই আনীবিভা সর্বাপক্ষরকারিনী। ইহা ধারা বশীকরণ, বিষেষ, উচ্চাটন অন্তন, মোহন, ভাড়ন, উৎসাদন, ছেলন, মারণ প্রতিবন্ধন, সেনাওন্তন প্রভৃতি সকল কর্মাই গান্ধনী ধারা সিত্ত হইরা থাকে।

ম্লাচার্বোর অভিবেক্তিরাদি Hodgeon's Nepal and Tibet
 p. 189-145 পৃঠার অটবা।

[8b.]

"আরাহি বরবে দেবী" ইত্যাবি বন্ধ থারা দেবীকে আবাধনপূর্বক পূজাকপারি বাহুকার্য এবং বস্তাবি ক্রিরাকরত 'বাক্ষেনত্যাংভায়জ্ঞাতা গছে দেবী ববা ক্ষর্থ' রন্ধ বারা দেবীকে বিস্কান
করিবে। তার পর বহিন্দাপর্কাক হোম করিবে। এই
বিভা বারা সকল প্রকার কার্যাই সিছ হইরা থাকে। বঙার্থী
আতিপূলা বারা অব্ভবর হোম করিবে। যুভকরবীর বারা
হোম করিলে আকর্ষণ সিদ্ধি হয়। গাললক পূলা বারা হোম
করিলে বিবেব সিছ হইরা থাকে। ভৈল-হোমে উভাটন, মধু
বারা বন্ধন, তিলহোমে বাহন, ধর, গজ বা উট্ট ক্ষিরে ভাছন,
কুলবোমে পাটন, রোহীবীকে মারণ ও উভাটন, পান পর্কারা
কর্ম এবং সনঃশিলা হোমে সৈভক্তম হর। এতত্তির ছুভরোমে
সিদ্ধি, ত্বর্থ হোমে বিভারি, ভিলহোমে রোগ নাণ, পন্ধ রোমে
বন, মধুকপুল হোমে কান্ধি বৃদ্ধি হইরা থাকে। সাম্মিক্রারা
অব্ভবর হোম করিলে সক্ষম প্রবার ক্রাবি সাহিত হয়।
(বিলপ্ণ ২০০-২২ আঃ)

বজ্বে । পরী) রাক্ষ্সীতের।
বজ্বজ্ঞ, কলিকাতার ১৫ নাইন বক্ষিণে অবস্থিত একটা পশুগ্রাম।
এই স্থান এখন বাশিক্য-বন্দররূপে পরিগণিত। কলিকাতা
হইতে নিরন্তর নালপত্র রগ্তানীর কল্প বের্ড ইইরাছে।
এখানে খুটার ১৮শ শতাক্রের মধ্যভাগে নবাবনৈক্রের সহিত
ইংরাজনিগের একটা যুদ্ধ হর। পরিশেবে ইংরাজনৈক্ত তুর্গ

বঞ্চ, গমদ। জুনি পর্মে সক' সেট্। লট্ বঞ্তি।
লোট্বঞ্চু। লিট্ববঞ্। লুট্ বঞ্জি। লুঙ্ অবঞীৎ
অবঞ্জিং অবঞ্জি: সন্বিবঞ্জিতে। বঙ্ বনীবচ্যতে।
নঙ্সূত্বনীবকীভি। পিচ্বক্সভি, সূত্ অববঞ্ধ। বচ প্রালভন।
চুরাধি আস্থেন। লট্বক্সভি।

व्यक्षिकात्र करतः [क्रारेव (१४)]

यक्षक (११) वक्षत्रक व्यवात्रत्रकीकि वक्ष-निह-क्ष्मक गृशान । (भावत) २ गृहवक । (वि) ७ वन, वृक्ष ।

"भृग् भूव वंककामार गक्नकगावदश्यात्रविष्ठ करिनम्।" (क्नाविष्यात्र)।

৩ চোর।

ব্যক্ত (প্র) বন্ধতি প্রভাগরতীতি বন্ধ (প্রত্যাপতি। উন্তঃ ১০০০) ইতি কথা ১ পূর্ত । ২ বন্ধনা। ও কোনিদা। প্রকাশ (সেন) নীতিলারে ক্রিকন (সি) বন্ধ-ভাবে ক্রই। ১ প্রভাগন। (ক্রেন) নীতিলারে নিষ্ঠিত আহে বে, লোকের নিষ্ঠিত প্রভাগিত ক্রিনে বৃদ্ধিনান্ ব্যক্তি ভাগে প্রকাশ করিবেল কা।

শক্ষকণাশানক ৰতিবাদ্ স অবশিবেথ ৷"(হাণক জো•) ব্দিত (বি) বক্ষতে কেডি বক-নিত্ত কা বক্ষনাবিনিই,

প্রভারিত, পর্যাধ বিপ্রভন্ধ । (হের) "বিধিনাধন্তব ব্রিভ-ক্ষরীনং পদু বেছিনাং ক্ষর।" (কুষারস ও।১০) ব্রক্তন্তা (ব্রী) ব্রুল্ভ ভাবং ক্ষর-চাপ্। ব্রুল্নর ভাব বা ধর্ম। ব্রক্তন্বহ (ব্রি) ব্রুল্ভ অন্তর্মে মৃতৃপ্ মত ব। ব্রুলবিশিষ্ট, প্রভারিত।

বঞ্চনা (জী) বঞ্চ-পিচ বৃচ্-টাপ্। আভারণা।

"তে কান্তঃ মুনরো দিব্যাঃ প্রেক্ষ্য হৈমবভং পুরষ্।

বর্গাভিসন্ধি ক্ষক্ৎ বঞ্চনানিব মেনিরে ॥" (ক্ষমারক্ষা ৬:৪

वर्गाणित्रवि ऋक्षर वक्ष्मामित स्मित्र ॥" (क्ष्माक्षक ५) व्यक्षमीत्र (वि) वक्ष-चनीत्रत् । व्यक्षात्रीत्र ।

শ্রোর্থিগাভবীর্থাত বঞ্চনীয়ত বিক্রনৈ:।" (রামারণ ৬৮৯।৫) বঞ্চয়ত্ (ত্রি) বঞ্চ-পিচ্ ভূচ্য বঞ্চন, প্রভারক। বঞ্চয়িতব্য (ত্রি) বঞ্চ-পিচ্ ভন্ত। বঞ্চনার বোগ্য

"আশাৰতাং প্ৰদৰ্শতাঞ্চ লোকে কিমৰিনাং বঞ্চয়িতব্যসন্ত্ৰি" (হিভোপদেশ)

विकन् (जि) वक्नाकाती।

অভারণার বোগা।

বঞ্চ (ত্রি) বঞ্চি প্রভাররতীতি বঞ্চ-উকন্। প্রভারণ-শীল। পর্বার---পূর্ত, বঞ্চ। (পলরত্না৽)

বঞ্চ (ত্ৰি) বন্দ প্ৰংং (ৰংকৰ্মতৌ। পা গাঙাঙঃ)ইতি ন কুকং। গমনীয়, গমন্বধোগ্য।

বঞ্জনাচল, পর্কতভেষ। (শিব উ॰ ১৬৮) বঞ্জরা (জী) নধীবিশেষ।

বঞ্জা (গ্ৰং) বজজীতি বন্ধ গজৌ বাহণকাৎ উদ্চ, সুম্চ।
১ তিনিপর্ক। ২ অশোকরকা েও স্থাপন্নবৃক। (পক্ররাং)

্ ৪ গন্ধিবিশেষ । (বলাব্ধ) ৫ বেডসমূক 🕸 (ভারঞ •) বঞ্জুসক (গ্রং) ১ সুক্তেদ । ে২ পন্দিভেন ।

वश्चनात्रम् (११) वश्ना समा। जनावन्तः स्वान नवार्थ। वश्चनात्रम् (११) वश्नाक जिल्लाः स्वानः व्यवस्थाः कर्मनात्राः व। वर्षमात्रम्

'বিছলো বৈজনঃ শীজো বানীরো বছ্পব্যিরঃ।' (রয়নালা)
বজ্লা (বী) বছ্ল-টাপ্। স্পতিনর হুড়বতী গাড়ী, ইবোলগাই।
(হেন) ২ নবীডিশেব। (বানলপুণ স্থানক) সংক্রপ্রাণে
লিবিত আছে বে, এই নবী সম্বানি বইতে উন্ধৃত হবুরাছে।

এই বাতু ইবিং, বটি বট। লট্ বণ্টতি। বট বণ্টন, বিভাজন চুরাদিও পক্ষে ভূটিও গবংলও সকও লেট্। এই বাতুও ইবিং। লট্ বণ্টরতি পক্ষে বন্টতি। "বণ্টতি হাটকং বলাং প্রাণা বিপ্রাঃ পরক্ষার দৃরাদির প্রারোগ প্রার দেখা বার না, কেবল গণেই চুরাদি বলিরা অভিহিত হইরাছে। 'অবং চুরাদৌ কৈন্চির পঠাতে ইতি হুর্গসিংহাদরঃ' (ছুর্গাদান) বট বেইন, ২ ভাগ। আদত্ত চুরাদিও প্রক্রৈও স্বত লেট্। লট্ বটরতি। ল্ভ অবীবটং।

ষ্ট (পুর্ব) বটিভ বেইরতি মূলেন বৃন্ধান্তরমিতি বট-পচালাচ্। অনামখ্যাত ছারা বৃন্ধ, বটগাছ (Ficus Bengalenesia ayn. Ficus Indien)। স্থানীর নাম, হিন্দী—বর, বড়, বর্গট। মহারাষ্ট্র—বট। কলিল—আল। তৈলল—মরিচেট্র, মারি, পেড়ি মরি; উৎকল—বোরু। বালালা—বড়, বট; কোল—বোই; লেগছা—কান্ধি; মলরালম—পেরমু, পেরলিছ; গোড় — বরেন্ধী; উত্তর-পশ্চিম—বোরা, কুর্কু; নেপাল—বোরন্ধর; পাছ—বাগাৎ, হাজারা—কগ্বাড়ী, কণাড়ী—আলব, আলহ, আল; ব্রন্ধ—পিত্তভাল; নিলাপ্র—মহাছল; ইংরাজী—
Baayan tree। সংস্কৃত পর্বাধ—প্তরোধ, বহুপাৎ, বৃন্ধনাথ, বমপ্রার, রক্তফল, পুলী, কর্ম্বল, এব, ক্রীরী, বৈশ্রবণাবান, ভাত্তীর, জটাল, রোহিণ, অবরোহী, বিটপী, স্বন্ধসহ, মণ্ডলী, মহাছোর, ভূলী, বলাবান, বন্ধজন, পানরোহণ, নীল, নিকান্ধহ, বহুপাদ, বনম্পতি।

হিমালয়ের নিম্ন প্রদেশ হইছে দক্ষিণ ভারতের প্রার সর্বঅ এই বৃক্ক উৎপন্ন হইতে দেখা বাব। সাধারণত: ইহা १০ হইতে ১০০ কিটু প্ৰ্যান্ত উৰ্দ্ধে উঠিয়া খাকে এবং লাখাপ্ৰলাখাৰ বিভ্ৰত হটরা বহুদূরব্যাণী হয়। 🗳 বটচহারা শীতন, আতপভাপত্লিই প্রিকের পক্ষে ইহা বড়ই ব্যর্থাহী। কর্ণেল সাইকস্ নর্মদা নদী-ৰুক্ত্ব একটা কুদ্ৰ বীশে সূত্ৰহৎ ৰাত্ৰকের উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন। উহা সাধারণে কবীয় বট' নামে প্রসিদ্ধ। অনেকে উহাকে Nearchus ব্ৰিড সেই কুপ্ৰাচীন বৃক্ষ বলিয়া মনে করেন। পুণার (Gas Vol. xviii) আৰু উপত্যকার অবর্গত মৌগ্রামে একটা স্থারহৎ বটবুক ছিল। উহার ছারাতলে ২০হালার লোক ব্যক্তকে বনিজে পারিত, বুকের পরিধি আর ২হাকার ফিট এবং উপর হইডে বড়বলি বুরী বা শিক্ড (air-roots) নাৰিৱাছে, ভাহার নৰো ৩২-টা ৰোটা ভড়ির আকার ধারণ ক্রিয়াছে এবং অর্থক্ট আর ৩ হাজার দক শিক্ত মৃত্তিকা লংগর হছরা রহিরাছে, ঐ শিক্ষের অন্তর্গে ৭ হাজার লোক অনাহানে দুক্টির: থাকিছে পারিত। নর্মধার তীমণ বস্তার के बीटनंद क्यारन प्रतिहा वां ब्याय, त्राव्यीक महे व्हेश तिहारक।

এতজি দলিকাতার পার্ববর্তী শিবপুর আবহু মরেল বোটানিকেল গার্তেনে এবং বোঘাই প্রানেশন লাভারা উভানে ঐরপ

ইবঁটা র্বং বটরুক আছে। নিবপুর তৈবজা-উভানের রক্ষক
তাঃ কিং বিশেব পর্যবেক্ষণ করিরা বলিরাছেন বে, ঐ রুকটা
১ গত বর্ব প্রাচীন, ১৭৮২ খুঃ থর্কুর রুক্ষের উপর উহার কয়।
উহার ২৩২টা নিকড় ভড়িরপে বৃত্তিকা লগাঁ করিরাছে এবং
উহার সুলওড়ির বাান প্রায় ৪২ কিটু। পত্র সমাছাবিভ পাথাপ্রাণাধার ইহার হারার পরিধি ৮৭৭ কিটু। এবদও এই বৃক্ষ
উভরোত্তর বর্তিত হইডেছে এবং আরও বাড়িবে বলিরা আশা
করা বার। ১৮৮২ খুটাকো লাভারার বটরুক পরিবর্গন করিরা
বিঃ ভরাগাঁর লিধিরাছেন বে, ইহা কলিকাভার বৃক্ষ হইডে
অনেক বড়। উহার পরিধি ১৫৮৭ কিট এবং উহা উত্তর দক্ষিণে
৫৯৫ কিট ও পূর্কা পন্তিবে ৪৪২ কিট।

বিভার করে বলিরা পূণা-কৃত্তরপে গণা। এই কারণে অনেকে পথের থারে বা পূড়রিনীর তীরে পঞ্চবীর প্রতিষ্ঠা করিরা থাকে। পঞ্জারে ইহা পথিকৃকে নিশা-লিপির হইডে রক্ষা করে। এক বিকে ইহার উপকারিত বেরপা, অপর দিকে উহা তেমনিই অপকারক। পক্তীরা বটকল থাইরা বদি গুড়ছাদ বা মন্দিরোপরি বিঠা ত্যাগ করে, তাহা হইলে দেই বিঠারিত বীজ হইতে বৃক্ক উৎপর হইরা অচিরকাল মধ্যেই দেওরাল মধ্যে দিকুত্ব বিভার করিরা কেলে। তথ্য দেওরাল মাই। অবহেলা করিলে গাছ শীরই বাড়িরা তিরীরা গৃহ ধ্বংস করিরা কেলে। হিন্দুগণ পাপ-ন্পর্শের তরে বট বা অথক নই করিতে চাহে মা। দ্বারে জীবত্ত কৃত্ত স্থানে উঠাইরা বা আরক্ষা নই করিতে চাহে মা। দ্বারে জীবত্ত কৃত্ত স্থানে উঠাইরা গৃহ ধ্বংস করিরা কেলে।

দক্ষিপভারতের রন্তাগিরি জ্বোর বটবুন্দের উপর কর নির্দিষ্ট আছে, কারণ বাছড়েরা সাধারণতঃ Calophyllum inophyllum ক্রারণ করের বাল বিঠা সহ তছপরে ত্যাগ করিরা থাকে। ঐ বীকে তেল হয়। অনেক বট-লাছে লাক্ষাও উৎপর হইতে বেখা বার। বটের আটার ভাহার সিকি নাত্রা সর্বপ তৈল নিশাইরা আল বিলে এক প্রকার আটা প্রভাত হর, ঐ আটার পাবী নারারা আঠা-কাঠির বারা পাধা বরিরা থাকে। আসানীরা ইহা হইতে এক প্রকার কাগক প্রভাত করিত। লখিবপুর এক্য নাত্রাজের বেলরী কেলার এখনও ঐ কাগক হয়। অনেকে বুরির আঁইল (fibre) বারা বভি করে, কিছ ভাহা বিশেব কোন কাকে কালে নাতে না।

হয়বং বটের আটা বেগনা-নালক। বাজন বেগনাছানে ঐ জাটার প্রেলেণ যিনে রিশেব উপকার বর্গে। গারের কলা কাটিয়া

KVII

গেলে অথবা নাঁত কন্তনানি হইলে কেই ক্ষণ্ড ইংনি বা দত্ত
যাড়িকে আটা লাগাইরা জিলে যাতনার উপন্য হয়। ইংনি
ছালের ভাগ বলকর, ক্ষ্কুর্রোলের ইংা বিশেষ গুণধার্ম।
বীজের গুণ বীতল ও বল্য। কৃতি বটপাতা বাটিরা উত্তর
ক্রিরা কোড়ার উপর দিকে পুন্তিনের কার্ত্ত করে। প্রশাসিগ
রোগে ইংার শিক্ত্যুর্গ বিশেষ উপকারী। উহা সালসার
কার্য করে।

কৃতি শাখার ভাগ রজোৎকাশনাশক, রুরির কৃতি আগা-ভাল বন্দনিবার্থ, তক বটের আটা ও কল হালেবে (Sperma torrheaa), আমেহ (gonorrheaa)-মাশক ও কানোন্দীপক, কৃতি কুড়ি ও রুগ্ধশুলি ধারক্ত্পণ বিশিষ্ট এবং অনীর্ণ ও উদরাদর-রোগে উহা বিশেষ হিডকর।

ইবার লাল বর্ণ পাকা কল ছার্ডিক্সের সমর বরিরলোকে পেটের আলার থার, বজী-গ্রাণিও ইবার পাতা থাইতে ভাল বাঁতে। ইবার কাঠ বিশেষ উপফারে আইসে না। কেবল সরু সরু ওছ ভালগুলি সমিধরণে খাবনুত বইরা থাকে মাত্র।

Figure elastica বা আটা-বট নামে আর এক শ্রেণীর বটরুক্ত দেখা বার। উহার আটা রবারের স্থার গুণকুক্ত।

[त्रवात्र (क्या]

শুণ — ক্ষার, মধুর, শিলির, কফ, শিন্তজ্ঞরাপহা, দাহ, তৃষ্ণা, মেহ, ব্রণ ও শোকনাশক। (রাজনি -) ভাবপ্রকাশ মতে— "বটঃ শীতো শুরুগ্রিটী কফ্পিন্তব্রণাপছঃ।

वर्त्या विमर्गनाव्यः क्वारता (वानिरनायक्ष ॥" (खाव्यः)

শীফুল, গুল, গ্রাহক, ক্ল, গিল্প ও ব্রগনালক, বর্গকর, বিসর্গ ও নাহনাশক, ক্রায় ও ঘোনিধাব-নিবারক।

রুক্দের মধ্যে বট ও অখন এই চইটা বৃক্দ প্রনীয় এবং বটবুক্দ বরং ক্ষাধারণ।

"কথং দ্যাখখনটো গোত্রাহ্মশননো ক্রডে।
সর্বেজ্যাংশি ভক্তাতো কথং প্রাভনৌ ক্রডে।
ক্ষরশা ভগবান্ বিক্রের ন সংশর:।
ক্ষরশো বটভাবং পানালা ব্রহ্মন্তন্ত্র ॥
দর্শনম্পর্বের ভার বিশাসংবাঃ হতা:।
হংখাপন্ব্যাধিহরীনাং বিদ্যালারিগো ক্রম্ ॥"

া (পাছোজন্ম-১৬০ অ০)

এই যুক্ষের স্থান, স্পর্ণ ও সেবা করিলে গাপ বিলুরিত এবং দ্বংখ আগন্ ও বাবি প্রকৃতি প্রশমিত হইরা থাকে। এই অন্ত এই বৃক্ষ অভিনর পূব্য, অভএব এই বৃক্ষ রোগণ করিলে আনের পূব্য সক্ষর হয়। বৈশীখানি পূব্য বানে এই বৃক্ষে জগ-নেক করিলে গাপ কংস ও নানারিক স্থা সম্পদ্ধ লাভ হইরা থাকে। এই বৃদ্ধ ছারাত্মক, ইবার ছারা অভি প্রশীন্তন, এই বৃদ্ধ সুধীর্ককান জীবিত থাকে।

২ কপ্ৰদ্, কড়ি। (বেনিনী) ৩ গোল। ৪ উজ্বাধিলের, চলিত বড়া। ৫ সাম্য। (হেখ)

(क्री) । ব্রথমগুলের অভ্যন্তর্য বটসংজ্ঞক বৈভিন্ন বল।
এই বোড়শ বট বথা—১ সক্তেত বট, ২ ভাগ্ডীর বট, ৩ হাবফ
বট, ৪ শৃলারবট, ৫ বংশীবট, '৩ প্রীবট, ৭ জটাজ টবট,
৮ কামাথ্যবট, ৯ অর্থবট, ১০ আশাবট, ১১ অশোকবট,
১২ কেলিবট, ১৩ ব্রজবট, ১৪ ক্রমেবট, ১৫ প্রীবরাধ্যবট,
১৬ সাবিত্রাধ্যবট। এই বোড়শ বটবন। ৩ (ত্রি) বটভীতি
বট-জচ্। ৭৩৭।

বটক (পুং) বট এৰ স্বাৰ্থে কন্। পিটকৰিলেৰ, চলিত বড়া।
খণ--বিদাহী ও ভূঞাকারক।

ভাৰপ্ৰকাশে বটকপ্ৰস্তুতের প্ৰণালী ও গুণাদির বিষয় লিখিত আছে;—মাৰকলানের দাইল ভিজাইরা উহাকে উত্তমরূপে পেবণ ক্ষরিতে হর; পরে লবণ, আদা ও হিং মিশাইরা বটক বা বড়া প্রস্তুত ক্যিবে, পরে উহা তৈল বারা মৃত্ অগ্নির উত্তাপে ভাজিলে উহাকে বটক বা বড়া কছে। গুণ—বলকারক, পরীবের উপচরকারক, বীর্যবন্ধক, বায়ুরোগনাশক, ক্লচিকারক; বিশেবতঃ আর্দিত, বায়ুনাশক, ভেদক, ক্ষকারক এবং তীক্লা-গ্রির পক্ষে হিতকর।

জীরা ও হিং ভাজিরা লবণের সহিত বোলে নিজেপ করিবে, পরে ঐ বটক উক্ত ঘোলের মধ্যে ভিজাইরা রাখিলে তাহা ওক্রবর্জক, বলকারক, স্লচিকারক, গুরু, বিবক্সাশক, বিলাহী, কফকারক ও বার্নাশক। ইহা জত্যন্ত রোচক ও পাচক। ইহা রারভার (বধি ও লবন মিলিত ক্ষম জলাবু থঙানির) সহিত ভক্ষণ করিতে হয়।

বটক অনেক প্রকার, তির তিয় দ্রব্যের বটক প্রস্তুত করা বার, ভাহার প্রস্তুত প্রধানী তির প্রকার।

কারীবটক—একটা নৃতন পাত্রে কটু তৈল লেপন করিরা
নির্মান লল বারা প্রশ করিবো। পরে তমধ্যে রাই সরিবা,
লীরা, লবণ, হিং, তাঁঠ, ও ইরিলা এই ক্রেকটা জব্যের চুর্প
এবং বটকতলি ভিরাইরা ঐ পাত্রের মুখ বন্ধ করিরা তিন বিন
রাখিরা বিবে। তিন বিন পরে বটকতলি অরবসাখাদ হয়।
ইহাকে কারীকবটক কহে। এই বটক কচিকারক, বাহুনাশক,
ককভারক এবং পূল, ক্রবীপ ও বাহুনাশক এবং নেজ্রেরাগের
প্রশেষ বিভেকারক।

অন্নিভাষ্টক—তেতুল বলে তিবাইনা চটুকাইতে হইবে, পরে বুৰক কেবা বাইবে কে, তেতুলের পত বলে নিভিড ক্টরাকে, তথন কটকখনি অনিতে সিদ্ধ করিবা তাহার মধ্যে কেনিতে হর। ইহাকে অরিকাবটক ক্ষেত্র। ইহা কটিকারক, অন্নিপ্রেদীপক ও পূর্বোক্ত কারীবটকের ভার ওপর্কা।

ভক্রবটক — মূগের বড়া প্রস্তুত করিরা ভজের সহিত পাক করিলে সংকার ভবে উহা লগু, দীভল, জিলোকনার্থক এবং হিতকারী হয়।

মাবৰটক—ভূবরহিত মাবকলারের দাইল পেরণ করিরা হিন্দু, লবণ ও আদার সহিত মিপ্রণে বটক প্রস্তুত করিরা একথানি বল্লে শুফাইতে দিবে। পরে উহা উত্তমরূপে শুভ হইলে তপ্ত তৈলে ভাজিয়া জলের সহিত সিদ্ধ করিতে হয়। ইহা পূর্ব্বোক্ত বটকের স্থার গুণবিশিষ্ট এবং ফ্রচিকারক।

কুমাওবটক — কুমড়ার উক্তরণে বটক প্রস্তুত করিতে হর।
ইহা মাববটকের ভার গুণযুক্ত, বিশেব রক্তপিওনাশক এবং লগু।

না মূলবটক— মুগের বড়া পুর্বোক্ত মাববটকের বিধানামূলারে

প্রস্তুত করিবে। এই বটক হিতকর, স্লটিকারক, লগু এবং
মুলেগর ভার গুণবিশিষ্ট। (ভাবপ্রণ)

২ বটী, চণিত বড়ি।

"ৰটকা অণ কথ্যন্তে ভন্নামগুটিকা বটী।

মোদকো বটকা পিঞ্জী গুড়োবন্তিক্তথোচ্যতে ॥" (ভাবপ্র°)

৩ পরিমাণবিশেষ, অষ্ট মাষক পরিমাণে এক বটক হয়।

'দশ গুঞ্জাস্ত মায়: তাৎ লাগো মাষচতুষ্টরম্।

ছৌ শাণো বটক: কোণস্তোলকো দ্রন্থণশ্চ স: ॥' (শব্দমালা)

विकिशीका (श्री) विवृक्त थए।

विकाकात (१९) भक्तिवित्मव। (देवश्वकिते°)

বটকিনী (ত্রী) পৌর্ণমাসীভেদ। ঐ পূর্ণিমা রাত্রে বটক ভক্ষণ করিতে হয়।

বটগ্রু, খেতামর জৈনদিগের সম্প্রদারভেদ।

रुष्टेक्ष्म (श्रः) प्याजर्कक, त्यञ्चात्रे । (रेवश्यक्ति°)

विक्रहामा (जी) विवृत्कत होती।

"कृटनामकः वर्गेष्टात्रा आमा ती रहेकानतः ।

শীতকালে ভবেহ্ঞং গ্ৰীমকালে চ শীতলম্ ৷" (উন্তট্ট)

विक्रिका (जी) विक्र करें। वर्षे एका, बर्धेत सूति।

বটতীর্থনাথ (রী) গুলরাতের ওবনগুলের অন্তর্গত একটা তীর্থ। এখন বরেত নামে বাত। (প্রভান ব ৮০।১।৫) কলপুরাবাত্তপিত বটতীর্থনাথ মাহাজ্যে এই তীর্থের সবিভার

विवतन भारक्।

বট্টদ্বীপু (রী) ধীপডেন। (প্রুর সংহিতা ২৬-০৪ জঃ জনেকে ধ্বনীপের রাজধানী বাতাবিরাকে বটবীপ বলিরা থাকেন।

[व्यक्ति (मथ !]

বটপত্র (গং) বটভেব পরং বস্ত। নিভার্কী, বৌজনর ক্র কুলনী। (সাধনি) (সা) হ বটের পার্ডা। ভার্বে কন্। বটপত্রক।

বটপ্রে। (বী) বটভেব প্রমন্তাঃ। বিশ্ববাসী পুলয়ক। ইয়ুড্মিরিকা। (মাজনি")

বটপাত্রী (খ্রী) বটজেব পত্রং বজাঃ গৌনাবিদ্বাৎ ত্রীব্। পার্বাণ-ভেনিবিশের, চলিত বড় পাধর কুটি। পর্যায়—ইনানী, জন্মবিতী, গোধাবতী, ইনাবতী, স্থামা, গটালনামিকা। গুণ—শ্বিতদ, কন্দ্রনেহনাশক, বল্লারক এবং ত্রণবিশোবক। (রাজনি)

यहेयकिगैडिर्भ (मे) डीर्बबिटनव ।

বটর (পুং) > কুকুট, কুটন গাধী। ২ বেট। ৩ ৮৮। ৪ চৌর। ৫ চকুল। (পুলুবুলা)

विविश्वासित् (ग्रं) वर्षे वैवेशक वनकीकि वन-निर्माः । अस्म । यक विश्वक वान करत्र धवेशन सनधीता स्वास्त्र ।

(बि) २ वष्ट्रक्लवानी । जित्रार श्रीव्।

বটসাগর, উৎকলের অন্তর্গত একটা তীর্ব।

(उदन्य > > १। > ११

বটসাবিত্রী ব্রন্ত, (🔊) ব্রডভেদ।

বটাকুর (গুং) রক্ষু দড়ি। (অমরটাকার রামাশ্রম)

विष्ठोतका (वी) त्रम्यू, मिष्ठ।

"ক্ষতারিত্রাং সভামরীং ধর্মান্তর্যাবটারকাম্।"(ভারত ১২।৩২৯।৩৯)
এই শব্দ প্রংলিকও দেখিতে পাগুরা বার।

"বটারকসরং পাশনথ মং**ভত বৃদ্ধনি**।

মহ মহজাৰ্দ ল ভাষিন্ পৃথি ভাষেপাৰং ॥" (ভাষা ৩৯৮৭।৪০)
বটারণ্য, ৰান্দিণাভোৱ অভগত একটা মহাতীর্ধ। কাষেরীর
পার্থে কুজালমরের অর্ক বোজন পশ্চিমে অবস্থিত। (দেশাবলী)
অগ্নিপ্রাণাভাগত বটারণ্য-মাহাজ্যে ইহার সবিশেষ এইবা।

वहां वीक (श्रः) को बवित्नवः।

শোক্ষ চৌরো বটাবীকঃ শন্ধিচৌরন্ধ হারকঃ।' (শক্ষালা)
বটীশুখবিবাস্ত (পুং) হিন্দুলাজ্যোক্ত ক্রিরাবিশের। ইহাতে
বট ও আর্থ বৃক্ষ প্রস্পারে সংলগ্ধ ভাবে পুভিন্না পূজা
করিতে হয়।

বৃটি (ব্ৰী) ৰটজীতি বট (সৰ্বধাজুতা ইন্। উপ্ ভা১১৮) ইছি ইন্। উপজিহিবলা, জালজিব।

'উপজিহিকেবংশানিকা চ বটিন্নকেহিকা দেবী a' (হারাবলী) (দেশল) নামনাত্র বা সম্মতিহ্নকার্থ। আমন্ত্র বন্ধবাসী বটি। (শকুকলা)

বৃটিকা (ত্রী) বটকে বার্থে কন্টাপ্। বটা, চলিজ বঞ্জি, পর্যার—নিজনী। (শবচুনু) "ৰটকা অথ কথ্যতে জ্যামা ৰটকা ৰটা।
নাদকো ভটকা শিখী ভড়োৰভিজ্পোচাতে ঃ
লেহবং সাধ্যতে বকৌ ভড়ো বা শৰ্করাথবা।
ভগ্ ভসুৰ্বা কিপেন্তত্ত্ব চূৰ্ণং ভ্রিম্মিডা বটা ॥" (ভাৰপ্র•)
২ বাঞ্চনোপবোগি-ক্রবা, বড়ি, বড়ী দিরা ব্যশ্তন ক্রমা
হর। (ভাবপ্র•)

বটিস (দেশৰ) অবজ্ঞানক ক্রিয়াপদ।

'ওরে ডুই কে বটিদ্ রে কে বটিদ্।'
বটি (ত্রী) বট-জচ, গৌরাদিদাৎ ভীব্। ১ বটিকা। (ভাবতা॰)

২ রক্ষবিশেষ। পর্যাস—নদীবট, বক্ষবৃক্ষ, সিভার্ব, বটক, জমরা,
ভূকিনী, ক্ষীরকার্চা। তুণ—ক্যার, মুধুর, শিশির, পিন্তনাশক, বাহ,
ভূকা, শ্রম, বাদ, বিষ ও চর্দিনাশকী (রাজনি॰) (ত্রি) তরকু।
বটু (পুং) বটতীতি বট (কটিবটিক্যাঞ্চ। উণ্ ১১৯) ইচি উ।

১ মাণ্বক। ২ ব্রুচারী। ৩ বালক।

'বালকো মাণৰো বালঃকিশোরো বটুরিত্যপি।' (শক্ষরতা•) ৪ কুটরট বৃক্ষ চলিচ্ছ শোপাগাছ।

বটুক (পুং) বটু-বার্বে নংজ্ঞারাং ক্ষঞ্জন্। ১ বালক। ২ বন্দচারী। ৩ ভৈরববিশেন, বটুকভৈরব।

> "তৈরবালৈত্ব বেডালা বটুড়া নারিকাগণাঃ। শাক্তাঃ শৈবা বৈক্ষবাদ্য সৌরা গাণপডালরঃ ॥**

> > (महानिकांगंड॰ २।२8)

মানৰ বিশাদে পভিত ক্ইলে বিশিল্পভারের অন্ত বটুকভৈরবের পূজা, কলি ও ভোজাবি পাঠ করিবা থাকে এবং বটুকভৈরবের প্রসাদে অভিনে বিশদ্ ক্ইতে উদ্ধার হয়। বটুকভৈরবের ভোজকে এইজন্ত আপন্থভারভোজ কহিবা থাকে। তর্সারে ইহার পূজা, বন্ধ ও ভবাদির বিবর বাপত ক্ইরাছে—

"উত্তরেষ্ট্রক ডেক্ডং আপছ্ডরণং তথা কুলবরং পুনর্ডেক্ডং বটু ডাডং সমুভরেও। একবিংশতাক্ষরাভা শক্তিকতো মহামহঃ॥" (তরুসার)

শ্বী বটুকার আপছ্ডারনার মূক কুক বটুকার ঐং হী" এই
একবিংশাক্ষর বটুকভৈরবের মন্ত্র। এই মন্ত্রে পূলা করিলে
আপদ্ বিগ্রিত হয়। বটুকভৈরবের পূলা করিলে হইলে
সারাভ পূলাপদ্ধতি অন্তর্গারে প্রথমে পূলা করিরা পীঠভাস,
ক্যাবিভার ও মৃতিভারাবি করিবে। পরে থান করিরা
পূলা করিতে হয়। বটুকভিরবের থান সাধিক, রাজসিক
ও ভারসিক ভেষে ভিনা প্রকার।

नाषिक शाम-

"बत्स बानः कविकानुषः स्वाताद्वानिवञ्ः विद्याककेर्त्वविभिन्तुः मीश्राकातः विनमवननः प्रथानतः व्यत्नव्य व्यानव्य । प्रशासन्ति । प्रशासनिव । प्र

"উষ্টভাষরসরিতং ত্রিনরনং রক্তালরাগতকং
দেরাতং বরুদং কণালমভয়ং শূলং দধানং করৈ: ।
নীলগ্রাবমূলারভূবণশতং শীতাংশুচুড়োজ্জনং
বন্ধু কারণবাসনং ভর্বরং দেবং সদা ভাবত্তে।"
ভামসধ্যান—

"शास्त्रमैनास्त्रिकासः मनिभक्तभद्रः मूखमानः मट्हमः विश्वसः निक्नाकः छमक्रमथम्निः चक्रम्नाछम्नाति । नाभः चन्तेः क्नानः क्रमहनक्रेट्रिख्छः छीमवःहुः मनिक्तः खिल्लाः मनिमन्निनन्यक्तिक्षेम्सून्नाणम् ॥"

এই ধ্যানাস্থানে ধ্যান, মানসপূজা, আবরণ ও পীঠাদি পূজা করিরা পুনর্জার ধ্যান করিয়া বিভবাস্থপারে দশ বা বোড়শোপচারে বটুকভৈরবের পূজা করিবে। বটুকভৈরবের পূজার পর অসিতাল ভৈরব, রুক্র ভৈরবে, চণ্ড, ক্রোধ, উন্মন্ত, কপানী, ভীবণ ও সংহার এই অপ্ত ভৈরবের পূজা বিধেয়। পরে বড়লাদি পূজা করিয়া পূর্জাদিক্রমে ডাকিনীপুত্র, লাকিনীপুত্র রাকিণীপুত্র, কাকিনীপুত্র, শাকিনীপুত্র, হাকিনীপুত্র, মালিনীপুত্র, দেবীপুত্র ও উমাপুত্রের পূজা করিবে। পরে জ্বপ হোমাদি করিতে হর। এই দেবভার পুরুক্তরণ করিতে হইলে ২১ লক্ষ ক্রপ এবং দশাংশ ঘৃত্ত, মধু শর্করাখিত ভিল ঘারা হোম করিতে হয়।

ইহার বলিবিধি—প্রথমে বিদ্নাশন ও তুর্গার পূজা করিয়া বলি দিতে হয়। বলির দ্রব্য—শালি ধান্তের অয় বা পারস, য়ত, লাজচূর্ণ, লর্করা, গুড়, ইক্রুলস, পিউক ও মধু এই সকল দ্রব্য দিপ্রিত করিয়া রাত্রিকালে রক্তচন্দন ও রক্তপুশের সহিত বলি নিবেদন করিবে, অপবা সর্ক্রম্লক্ষণসম্পন্ন একটা ছাগবধ করিয়া বলিপ্রদান করিতে হয়। বলিপ্রদান করিয়া দক্রগণের সৈম্ভগণকে বলিয়লে নিবেদন করিয়া দিতে হয়। বলিমত্রে শক্রর নামোক্রেধ করিয়া নিয়োক্ত মন্ত্র পাঠ করিয়া দিবে।

^गनकाशका क्रिशिश शिनिष्ठक मित्न मित्न ।

ভব্দর স্বগণৈঃ সার্জ্য সার্মেরসম্বিতঃ ॥"

এইরণে বলিদান করিলে বটুকতৈরব স**ভঃ চ্ইরা সমতঃ** শক্তর মাংস অগণের মধ্যে বিভাগ করিয়া দেন, স্কুডরাং অচির কাল মধ্যে শক্ত নাশ হইরা থাকে। (তরসার)

অতি সংক্রিপ্ত ভাবে এই পূজা পছতি নিধিত হইন, ইছার বিশেষ বিবরণ তল্পসারে নিধিত আছে। জ্বাদিরোগ, শত্রুতর প্রত্তি উপস্থিত হইলে বটুক্তৈরবের ভবর্ত্তবন রা পাঠ করিলে জ্বাদি রোগ ও শক্তুতর প্রশ্মিত হয়। २ वात्रागनीच् त्ववमृश्विवित्वव ।

वर्षे क्रज्ञ (क्री) वर्षाः कत्रशः। উপনন্নन। (जिला॰) वर्षे जिन् (जि) > भन्नाता (वहेनभीन। २ मर्सवाशिवर। "हिक्कि वर्षे जिना भना" (अक् ১।००)२) 'वर्षे जिना भना (वहेनभीनान" (मात्रण) वर्षे (तम्ब) वांखविक। यथार्थभक्ता।

'এ মেরে কেমন মেয়ে বটে' (বিষ্ণাস্থলর)

বটের (দেশজ) পক্ষিবিশেষ (Perdix olivacea)।

বটেশর (রী) কাশীরন্থিত লিঙ্গতীর্থ। (রাজ্বতর ১।১৯৪)
বটেশরমাহাক্ষ্যে এই তীর্থের বিস্তৃত বিবরণ ও পূজাদি লিপিবদ
ইইয়াছে। (স্বাদ্দে নাগরখন)

বটেশ্বর, মূলাপ্রকাশ নামক মূলারাক্ষস-টীকাপ্রণেতা। ইনি গৌরীষরের পুত্র। ২ একজন প্রাচীন কবি।

বটোদকা (স্ত্রী) পুণ্যতোরা নদীবিশেষ।

"তত্র চন্দ্রসা নাম তাম্রপণী বটোদকা। তৎপুণাসলিলৈনিতামুভরতান্মনো মৃকন্॥"

(ভাগবত ৪।২৮।৩৫)

বট্টকেরাচার্য্য (পুং) আচারহত্তপ্রণেতা। বস্থনন্দী ইহার টীকা রচনা করেন।

বট্য (পুং) > বটর্ক সম্পীয়। ২ ধাত্বিশেষ। বট্কারা (দেশজ) দ্রবাদির তোলমাপক পরিমাণভেদ, বাট্কারা। বট্কারিয়া (দেশজ) তামাসাকারী।

বট্কেরা (দেশজ) তামাসা, ঠাট্টা, বিদ্ধপ।

বট্থারা (দেশজ) > ওজনমান। ২ থকাকোর মহন্য। গাঁটুল।
বঠ, স্থোলা, সামর্থা। ভাদি পরস্থৈ সকল সেট্। লট্বঠতি।
লুঙ্জবঠীং। বঠি—বঠ ধাতু একচ্য্যা, অসহায়গমন, একাকী
গমন। ভাদি আজানে সকল সেট্। লট্বঠতে। লিট্
ববঠে। লুট্ বিষ্ঠিতা। লুঙ্জবিষ্টি। এই ধাতু ইদিং
বিলিয়া মুমাগম হইয়াছে।

বঠর (পুং) বকীতি বচ (বিচমনিভাগ চিচ্চ। উণ্ ৫।০১) ইতি
অরপ্রতায়শ্চান্তাদেশ:। ১ মূর্থ। ২ অষষ্ঠ। ৩ শব্দকার।
৪ বক্র। (সংক্ষিপ্তসার উণা•) (ত্রি) ৫ শঠ। ৬ মন্দ।
বড়, বড়ি-বড় ধাড়। ১ আরোহণ, এই অর্থে ইহা সৌত্রধাড়।
২ বিভাগ। চুরাদি৽ পরক্রে• সক্ত সেট্; ভ্রাদিপক্ষে লট্
বঙ্গতে, লিট্ ববণ্ডে। লুট্ বণ্ডিতা। লুঙ্ অবন্তিই। চুরাদিপক্ষে লট্ বঞ্জতি, লুঙ্ অববস্তং।

ব্ছু (দেশন) বট শব্দের অপক্রংশ।

वर्ष (तमक) तृह९, छक्र, टार्छ।

বড়, বোদাই-প্রেসিডেন্সীর ঠানা জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ ও নগর। [বাড় দেব] বড় আদালৎ (आहरी) त्यां आमानर, व्यथान विठाहानह, हारेटकार्डे (High court)।

বড়কট্রলাই, মাস্রান্ধ-প্রেসিডেন্সীর তারোর বেলার অন্তর্গত একটা নগর।

বড় কড়ি (দেশজ) > গুল্মবিশেষ। (Sida graveolene)

২ বৃহদাকার সামুদ্রিক কড়ি। ৩ গৃছের ছাদে দিবার জন্ম বৃহৎ
কাঠ গগু।

বড় কড়েলা (দেশৰ) বৃক্ষভেদ (Momordica muricata)। বড়করবীর (দেশৰ) বৃক্তভেদ (Nerium odorum)।

বড় কাৰুড় (দেশৰ) বৃক্তেদ (Crinum toxicarium)। বড় কুদ (দেশৰ) পুশার্কিডেদ (Jasminum arborescens)। বড় কুকুরছিট্কী (দেশৰ) শুমডেদ (Ixora undulata)

বড় কুক্শিম (দেশজ) বৃক্ভেদ (Coryza lacera)।

বড়কু-বলিয়ুর, মাজ্রাঞ্চ-প্রেসিডেন্সীর তিরেবরী জেলার অন্তর্গত একটা নগর। নান্গণেরী হইতে ৪ জেশে দক্ষিণে অবস্থিত। অকাণ ৮°২৩ উ: এবং দ্রাঘি ৭৭°৩৯ পূ:। ইহা একটা প্রাসিদ্ধ তীর্থ। এথানে প্রতিবৎসর বহু তীর্থ্যান্ত্রীর সমাগম হইরা থাকে। বড় কেশ্রতি (দেশক) কুলডেদ (Ageratum aquaticum)। বড় কেশ্রতিরীয়া (দেশক) কেশুর গাছ (Scirpus grossus)। বড়থীয়ুই (দেশক) কুলডেদ (Euphorbia hirta)।

বড়গাঁও, বোষাই-প্রেসিডেন্সীর পুণা জেলার অন্তর্গত একটা নগর। এখানে জি, আই, পি, রেলপথের একটা ষ্টেসন আছে। স্থানটা নিতান্ত বাণিজ্ঞাহীন নহে। প্রতি মঙ্গলবারে এখানে হাট বলে। ১৭৭৮-৭৯ খুষ্টান্দে এখানে ইংরাজ-মর্যাদার হ্রাসকারী একটা ক্ষুদ্র দরবার হয়। তাহাতে ইংরাজ সেনাপতি বাধ্য হইয়া ১৭৭৩ খুষ্টান্দ পর্যান্ত ইংরাজদিগের অধিক্ষত সমুদার রাজ্য মহারাষ্ট্রকরে সমর্পণ করিতে বাধ্য হন। রঘুনাথ রাওকে পেশবা-পদে অধিষ্টিত করিতে আসিরা ইংরাজ-সেনাপতি এই লাঞ্চনা ভোগ করেন।

বড়গাছ (দেশজ) ১ বৃহৎ বৃক্ষ । (Croton oblongifolium) ২ বটবৃক্ষ ।

বড়গুজর, ছত্রিশ রাজপুতকুলের একতন। তাহারা আঘোধ্যাপতি জীরামচন্দ্রের পুত্র লবের বংশধর বলিরা পরিচিত। এই জাতি এক সমরে মহাপ্রতাবসম্পর ছিল। কালে কছেবাহগণ প্রবল হইরা তাহাদিগকে রাজোড় হইতে তাড়াইরা দেয়। তদবধি বড়গুজরেরা অন্থপসহরে আসিরা বাস করে। সম্রাট্ট অকবর শাহের শাসনকালেও এই জাতির প্রাধান্য নই হর নাই। তথন তাহারা বুর্জা, দিবাই, গহাস্থ প্রভৃতি স্থানে ভ্রাধিকারী সামস্তরূপে পরিগণিত ছিল।

তাহাদের মধ্যে বংশাহুগত কিংবদত্তী এই যে, মচেরী প্রদেশের দেবতী-রাজ্যের রাজধানী রাজ্যেড় হইতে রাজা প্রতাপ সিংহ শীম আত্মীর ও শ্বজাতীরবর্গে পরিবৃত হইরা পিতম্পুরের নিকটছ মেরিয়া নামক স্থানে আসিরা বাস করেন। কোএল নগরে তিনি ধোর-জাতীরা এক রাজপুত-কল্পার পাণি-গ্রহণ করিরা দোরমাজপুতগণের প্রীতিভাজন হন। তদনস্তর তিনি দোরদিগের সাহায্যে মেবাতী ও তিহর জাতিকে পদানত করিরা ব্সক্সহরের প্রকাশে গলাক্তা প্রার ২৪ লত গ্রাম অধিকার করেন। মৃত্যু সমরে তিনি ব্লক্ষসহর জেলার পহাস্তর নিকটবর্তী চৌন্দেরা নগরে শীয় রাজপাট স্থাপন করিরাছিলেন। রাজ্য প্রতাপের জত্ব ও রাগু ক্রিমা ছই পুত্র ছিল। জতু রোহিলথণ্ডের অন্তর্গত কাতিহার নামক স্থানে এবং রাগু চৌন্দেরার রাজপাট স্থাপন করিয়াছিলেন।

কনোজের রাঠোর-রাজবংশের আখ্যায়িকা হইতে জানা ধার বে, রাঠোরপতি নয়নপালের পৌত্র ভরত বড়গুজর-সদার রুদ্রসেনের নিকট হইতে কনকশির রাজ্য অধিকার করিয়া লন। বংশতালিকাকথিত নয়নপাল খুঁটীয় ৫ম শতালে বিখ্যমান ছিলেন।

কাতিহার এবং অমূপসহরের বড়গুজরেরা অস্থাপিও আপনাদের কুলধর্ম প্রতিপালন করিয়া আসিতেছে। কিন্তু অ্ঞান্ত স্থানের, বিশেষতঃ মুজঃকরনগরের বড়গুজ্বরেরা আলা-উদ্দীন थिणकीय बाक्षाकारण हेम्लामधर्म श्रहण कविशास्त्र। তাহা হইলেও তাহারা রাজপ্তকুলের গৌরবজ্ঞাপক ঠাকুর উপাধি পরিত্যাগ করে নাই, তাই এখনও ঠাকুর আকবর আলী था, ठाकुत मर्फन व्यानी थे। व्यक्ति नात्मत्र व्यानन त्रथा यात्र। ज्यत्व मूमनमान इटेरन शिमूत होनिभर्क मञ्जानि भान मह-कारत विरमध व्यास्मामध्यस्माम कतित्रा शास्त्रः এই ख्रशांत কিন্তু ক্রমণ: ব্রাদ ঘটিতেছে। বিবাহের সময় ইহারা গৃহদ্বারে একটা কাহার রমণীর প্রতিমূর্ত্তি চিত্রিত করিয়া থাকে। প্রবাদ---কোন কাহারিন চাকরাণীর নিদেশ অহুসারে তাহাদের কোন পুর্বাপুরুষ মেবাতীদিগকে ধাংসমূপে পতিত করিছে সমর্থ হইয়াছিলেন, সেই ঘটনা শ্বরণ করিয়া আজিও ভাহারা কাহার রুমণীকে এইরূপে সন্মান করিয়া থাকে।

মুজ:করনগরবাসী বড়গুজরেরা বলে বে, তাহারা আলবার রাজ্যের দক্ষিণত্ব দোবন্দেশর নামক স্থান হইতে সন্দার কুমারসেনের সহিত এখানে আসিরাছে। এখনও তাহারা উক্ত কুমারসেনের পূর্বাপুরুব "বাবা মেঘার" করণার্থে উৎসব করিয়া থাকে। তাহারা প্রধানতঃ গ্রহণাত, ভটি, তোমর, চৌহান, কাভিহার, চাণবার ও পভিত্র রাজ্যুত্তকে কলা বের এবং গহলোত, বাছল, পণ্ডির, চৌহান, বাঈ, ক্লপার প্রভৃতি শ্রেণীর কন্তা গ্রহণ করে।

বড়াগেনহল্পী, দক্ষিণ-ভারতের মহিন্দর-রাজ্যের বঙ্গপুর কোর অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা° ১৩°২৮´ উ: এবং দ্রাবি॰ ৭৭°৫২´ পু:। এধানে মিউনিসিপালিটা থাকার নগরের উত্তরোত্তর শ্রীবৃদ্ধি সাধিত হইতেছে। স্থানীর তুলাও আলুর ব্যবসা লিম্নারতগণ এক চেটিয়া করিয়াছে।

বড়গোধুরী (দেশজ) তৃণবিশেষ (Kyllingia umbellata)। বড়চকুমা (দেশজ) বৃক্ষভেদ (Quercus squamosa)। বড়চনা (দেশজ) চণকভেদ (Cicer arietinum)।

বড় চুয়া (দেশজ) ইন্দুরভেদ (Mus decumanus)। বড়চুলী (দেশজ) জলজ বৃক্তেদ (Menyanthes Indica)। বড়চুঁচা (দেশজ) ভৃণভেদ (Cyperus Iria)।

বড়জালগাঁথী (দেশজ) তৃণবিশেষ (Panicum setigerum)। বড়টগর (দেশজ) পুশার্কভেদ (Tabernæmontana coronaria)

বড়ডানকুনা (দেশজ) মংখ্যভেদ (Clupea vittata)।
বড়নগর, পশ্চিম-ভারতের গুজরাত-প্রদেশের বড়োলা রাজ্যের
অন্তর্গত কড়ি জেলার একটা উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ৭৬ বর্গমাইল। এখানকার উত্তরপশ্চিম সীমায় যে থাড়ি আছে,
তাহার জল ঈষৎ লবণাক্ত হওয়ায় পানের অমুপযোগী হইয়াছে।
প্রায় ৮০ হইতে ১০০ ফিট্ গভীর কুপ-খনন না করিলে স্থামিট
জল পাওয়ার আশা করা যায় না।

২ উক্ত উপবিভাগের প্রধান নগর। বিশ নগর হইতে ৪॥॰ ক্রোশ উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। প্রবাদ, অধােধ্যার স্থান্বংশীয় কোন রাজা ১৪৫ খুটান্দে অধােধ্যা রাজধানী পরিভাগান্দ্রক এই স্থানে আগমন করেন এবং পরমারবংশীয় কোন রাজকুমারের নিকট হইতে এই স্থান জন্ম করিয়া তথার বড়নগর রাজধানী স্থাপন করিয়াছিলেন। নাগরগােএীয় রাজনগণের রাজধানী আনন্দপুরেই এই বড়নগর স্থাপিত হয়। এই বড়নগরের নাম হইতেই এথানকার রাজ্পগণ নাগর রাজ্বণ নামে পরিচিত। আনন্দপুরে ২২৬ খুটাক পর্যান্ত নাগরগােএীরবিশিগের প্রাত্রভাব ছিল। [বেবনাগর দেখ।]

চীন-পরিব্রাজক হিউএন্ সিরাং খুরীর ৭ম শতাকে এই নগরের সমৃত্তি ও জনতার উল্লেখ করিরা গিরাছেন। বছফাল হইতে এখানে বড়োগা-রাজের আপ্রিক্ত দীনোজ ব্রাহ্মণগণ বাস করিতেছে। তাহারা ক্যাচারী ও দহ্যপ্রকৃতিক, ঐ ব্রাহ্মণ-ছিগের অজ্যাচার ও উপত্রবের পরিচর পাইরা বোখাই গবর্মেন্ট সরাজী মহারাজের রাজস্কানে ভাছাদিগকে বড়োরা দরবারের অমুগ্রহ হইতে বঞ্চিত করেন। এখনও এখালে প্রায় ২ শত বর দীনোক ব্রাক্ষণের বাস আছে। এখন তাহারা দক্ষাতৃতি ত্যাগ করিয়াছে। সকলেই প্রায় ব্যবসা বাণিক্ষা বা অপর কালকর্শ্বে লিপ্ত হইরা ইংরাজরাজ্বছে শাস্ত হইরাছে।

ৰড়নিৰ্বিষি (দেশৰ) গুলভেদ (Scirpus glomeratus)। বড়নোনিয়া (দেশৰ) বৃহ্ণভেদ (Portulaca pilosa)। বড়নোকা (দেশৰ) > বৃহৎ নৌকা। ২ জনজ গুলভেদ (Pontederia vaginalis)

বড়ন্দ (নেশৰ) ভূগভেদ (Panicum uliginosum)। ৰড়পটুকা (ত্ত্ৰী) মংহুভেদ (Tetrodon fornicatus)। বড়পটোল (দেশজ) পটোল জাতীয় লভাভেদ (Trichosanthes dioica)

বড়পাত্রাক্ষী (দেশজ) পক্ষিভেদ। (Merops Philippensis)। বড়পাথা-মেলপাথী, মাজাজ-প্রেসিডেনীর তাজাের জেলার স্কালী ভালুকের অন্তর্গত একটা নগ্র।

বড়পানীমরিচ (দেশজ) বৃক্জেদ (Polygonum pilosum)। বড়পিনিনটী (দেশজ) ভূণজেদ (Poa Chinensis)। বড়ফুটিকা (দেশজ) বৃক্জেদ (Melastoma Mulabathrica) বড়বটের (দেশজ) পক্ষিভেদ (Perdix olivacea)। বড়বড়া (দেশজ) বছভাষী। বাচাদ।

বড়ন্ত্রী (ত্রী) বড়াতে আক্ষতেংত্রেতি বড় বাছলকাং অভিচ্, ক্লিকারাদিতি ভীষ্। গৃহ-চূড়া, চলিত মুদ্দি। পর্য্যায়— গোপানসী, চন্দ্রশালিকা, কুটাগার। (ত্রিকা ॰)

'চক্সশালা চ বড়ভী স্থাতাং প্রাসাদমূর্দ্ধনি।' (শ্রীধর)

বড়ভি, বড়ভী, বলভি ও বলভী এই চারি প্রকার রূপ হইরা থাকে। তুণনির্দ্ধিত গৃহের পাইড় প্রভৃতি এবং ছাদের উপরিভাগে নির্দ্ধিত বে গৃহ, ভাহাই চক্রশালা (চিলের ঘর।) বড়র (বরুড়), দার্কিণাতাবালী নিরুপ্ত জাতিবিশেষ। ইহারা জাতকর্মাদি অনেক বিষয়ে হিন্দুপদ্ধতির অমুকরণ বটে, কিন্তু শৃকর, ইন্দুর প্রভৃতি ঘণিত মাংসও হোজন করিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে গাড়ীবড়র, জাতাবড়র ও মাটীবড়র নামে করটা থাক আছে। ব স্ব শ্রেণীর রুত্তি অমুসারে ইহারা এইরূপ সামাজিক আখ্যা লাভ করিরাছে। ইহারা রন্ধমা, জনাই, সাতভাই ও বাজোবার পূজা দের। বিবাহের পর মারুতিপূজা দিবার বিধি আছে।

ব্ৰফুবা (স্ত্ৰী) ধলং ৰাতীতি বল-বা-ক-টাপ, ডলৱোরিক্যাৎ লক্ত ড্বং। ১ ঘোটকী। ২ বড়বারূপধারিণী স্থ্যপত্নী। (ভাগবত ৮০১৩৮) ০ অধিনী নক্ষত্র। ৪ নারীবিশেষ। ৫ বাসী। ৬ বাস্থদেবের অনামধ্যাতা পরিচারিকা। (হরিব° ০০।৩) বাছবারি। ৮ নদীবিশেষ। (ভারত ৩/২২১/২৪)
 তীর্বভেদ। (ভারত ৩/৮২/৮৮) [প্রর্গে বড়বা শব্দ রেখ।]
 বড়বাক্কত (পুং) বড়বরা বাজা ক্বতঃ। প্রকল্পবিধ রালের
অন্তর্গত বাসবিশেষ।

"ভেজদাসভ বিজেরতথৈব বড়বাকৃত: ॥" (মারদ) 'বড়বা দাসী তলোভাদদীকৃতদাভ:' (দারক্রমসংগ্রহ)

কোন কোন ছানে ইহার 'বড়বাড়ড' ও 'বড়বাহুড' এইরূপ পাঠান্তর দেখিতে পাওরা যার।

বড়বান্ত্রি (থং) বড়বারা: সমুত্রস্থিতারা: বোটক্যা: মুধস্থেছিরি:।
সমুত্রস্থিত অন্তি, বড়বানল।

বড়বান্ (বাধ্বান, বর্জমান) বোলাই জেনিডেলীর ঝালাবার প্রাক্তম একটা দেশীর নামস্করাজ্য। ভূপরিমাণ ২৩৭ বর্গমাইল। বোদে বড়োলা ও দেণ্টাল ইতিয়া রেলপথ এই রাজ্য মধ্যদিরা বিভূত থাকার এথানকার বাণিজ্যের বিশেষ স্থবিধা ঘটিয়াছে। ১৮০৭ খুঠাকে সন্ধি অনুসারে এথানকার সন্ধারগণ দিতীর প্রেণীর সামস্করণে পরিগণিত হইরাছেন।

এখানকার সর্দার দাজীরাজ ঠাকুরসাহের রাজকোটের রাজকুমার কলেজে শিক্ষা-সমাণন করিরা পিতৃসম্পত্তির অধিকারী ইইয়াছেন। তাঁহার রাজস্থ আদার ৪ লক্ষ টাকা; তন্মধ্যে ইংরাজরাজকে ও জুনাগড়ের নবাবকে বার্ষিক ২৮৬৯২, টাকা কর দিতে হয়। তাঁহারা ঝালাবংশীয় রাজপুত, জােষ্ঠপুত্রই পিতৃ-সম্পত্তির অধিকারী, কিন্তু দত্তকগ্রহণে অধিকার নাই। রাজ্ঞার দেনাসংখ্যা ৫ শত।

২ উক্ত রাজ্যের প্রধান নগর। বোদে বড়োলা ও সেন্ট্রাল ইপ্রিরা রেলপথের এখানে একটা টেসন আছে। অক্ষা ২২°৪২´ উ: এবং জাখি° ৭১°৪৪´ ৩০´´ পূ:। নগরের দক্ষিণে রাজপ্রাসাদ ও হুর্গ। পরিখা ও প্রাকারাদি বারা নগরটা স্থরক্ষিত। এখানে ঘত, তুলা, নানারকম শশু ও দেশী সাবানের বিস্তৃত কারবার আছে। দেশীর ভাস্করণণ শিশ্পবিভার সমাক্ উরত। ভাবনগর-গোণ্ডাল রেলপথের সহিত উপরোক্ত রেলপথের এখানে মিলন হওরার স্থানীর সমৃদ্ধি উত্তরোজ্ঞর পরিবর্দ্ধিত হইতেছে।

ও কাঠিরাবাড় এজেন্সীর ইংরাজাবাস। বর্জমান রাজ্যের মধ্যে উপরোক বড়বান নগর হইতে ও নাইল পশ্চিমে স্থাপিত। এখান হইতে রেলপথ থিয়া বোখাই ও আক্ষণাবাদ এবং ভাব-নগর ও রাজকোট বাওয়া যার। পূর্কে বড়বান দরবার হইতে বার্ষিক ২২৫০ টাকা খাজনার এইখান ও ২৫০ টাকা খাজনার হংরাজ পিরাসিরার অধিকৃত হাল জাড়া লইরা এই রাজ-সংর (Civil Station) স্থাপিত বুইয়াছিল। এখানে

জেল, কুল, ধর্মালালা, ঔষধান্তর ও ঘটিকান্তন্ত (Clock-tower)
প্রভৃতি শোভিত সুন্দর স্থানর জাটালিকা আছে। গিরাসিয়ার
ভূমিদানের জ্বন্ত ইংরাজরাজ তাঁহার সন্তান সন্ততিদিগকে রাজকুমার কলেজে পাঠের অধিকার দিয়াছেন।

বড়বানল (পুং) বড়বারা: অনল:। বড়বারি। পর্যার—
সলিলেজন, বড়বামুখ, কাকধবল, বাণিজস্কলারি, তৃণধুক, কাঠধুক,
উর্জ, বাড়ব। (আমর) ২ লছার দক্ষিণে পৃথিবীর চতুর্থভাগরূপ
স্থানবিশেষ। (সিলান্তনি") ও বটকোষধবিশেষ। (রসেক্রসারস॰)
বড়বামুথ (পুং) বড়বারা: ঘোটকা মুখমাশ্রম্ভেনান্তান্ত আদি
আদিভাদচ্। ১ বড়বানল। (হেম) ২ মহাদেবের মুধ।

৩ মহাদেবের নামভেদ। (ভারত ১৩।১৭।৫৫)

ও কুর্মের দক্ষিণকুকিন্থ জনপদবিশেষ।

विदेशिय विदेशिय । (त्राप्तक्र मात्रमः)

वरुवावक् (क्री) वरुवाम्थ, वरुवानव ।

বড়বাস্থত (পুং) বড়বারাঃ ঘোটকরপারাঃ স্বষ্ট স্থতারাঃ সংক্রারাঃ স্থতঃ। অধিনীকুমার। এই অর্থে এই শব্দ বিবচনান্ত, অধিনীকুমার ছইজন।

ব ড়বাহ্নত (পুং) বড়বরা দাক্তা হাতঃ। পঞ্চদশবিধ দাসের অন্তর্গত দাস বিশেষ। বড়বা শব্দে গৃহদাসী, যে ব্যক্তি লোভে আরুষ্ট হইরা এই দাসীকে বিবাহ করিয়া তদ্গৃহে দাসরূপে অবস্থান করে, তাহাকে বড়বাহৃত কহে। (মিতাক্ষরা)

বড়বিন্ (ত্রি) বড়বাজাত বা তৎসম্বীয়। বড়া (ত্রী) বড়-অচ্-টাপ্। বটক, চলিত বড়া।

'কদলেনাথবা তালৈর্ফং যন্তাপুলং পিড়ং। পিঞা চুর্গং বটো বড়া' ইতি (শব্দচ)

বড়া ক্সবাহ জব্য। তাল, নারিকেল, কলা প্রভৃতি বছবিধ জব্যের বড়া প্রস্তুত হইয়া থাকে। যে জব্যের বড়া প্রস্তুত করিতে হইবে, তাহার সহিত জ্বনপরিমাণে চাউলের গুড়া মিশাইরা তৈল বা দ্বতে ভাজিরা লইতে হয়। রসবড়া, ছানাবড়া প্রভৃতি থাক্ত স্প্রাছ।

বডিকা (ত্রী) বটকা।

বড়িশ (क्री) বলিনো মংক্তান্ শুডি নালয়ডি শো-ক, লন্ত ড্বং।

> মংশুধারণার্থ বক্ত লোহকন্টকবিশেষ। চলিত বড়্লী,
পর্ব্যায়—মংশুবেধন, বলিশ, বড়শী, বড়িশা, বলিশী, মংশুবেধনী,
বলিসী, বলিস, বরিশা, বলিশি, মংশুভেদন। (জটাধর)

২ আযুর্ব্যেশাক্ত বড়িশাকার বেধনবন্ধবিশেষ।

বড়ী (দেশৰ) ১ ঔবধের বটিকা। ২ থাছদ্রব্যবিশেব। প্রস্তত-প্রণালী—পাকা চালকুমড়া উদ্ভবরূপে কুরিরা তাহা বাটিরা লাইতে হর, পরে মটরডাল এবং ঠিকুরা বাটিরা উহা একত মিপ্রিড

করিয়া উত্তমক্রপে ফেনাইয়া বড়ী দিতে হয়। এই বড়ী অভিশর স্বাহ্ন। ইহা ভিন্ন কেবল ডাইলের বড়ী ও মূলার বড়ী প্রভৃতি দেওরা যাইতে পারে।

বড়োসক (क्री)প্রাচীন স্থানভেদ।

বড়্বড় (দেশজ) অব্যক্ত শব্দ। পত্তে নিমজ্জনকালে যে অব্যক্ত শব্দ উথিত হয়।

বৃদ্ (বি) বৃদ্তে ইতি বৃদ্ধ বৃদ্ধমন্ত্রাপীতি রক্। বৃহৎ।
চলিত বৃদ্। (অমর)

বণ, শব্দ। ভাূদি পরদৈ সক সেই। লট্ বণতি। লিট্ ববাণ। লুট্ বণিতা। লুড্ অবাণীং, অবণীং। ণিচ্ বাণয়তি। লুঙ্ অবীবণং, অববাণং।

বিণিক্ (পুং) ব্যবসায়ী ব্যক্তিমাত্র। যাহারা বাণিজ্যবৃত্তিদারা জীবিকার্জন করে। বাঙ্গালায় গদ্ধবণিক্, স্বর্ণবণিক্ কাংস্থানিক্ প্রভৃতি শ্রেণীবিভাগ আছে। উত্তর ও পশ্চিমভারতে শেঠী এবং বেণিয়ারা এই শ্রেণীভুক্ত। এতদ্বিম ইংরাজ, ফরাসী, মুসলমান প্রভৃতি অনেক বৈদেশিক বণিকেরও ভারতে অধিষ্ঠান হইয়াছে। ভারতীয় ব্যবসায়ী বণিক্ জাতির বিবরণ বৈশ্ব শদ্ধে এবং বণিক্জাতির শশ্বিশেষে বিবৃত হইয়াছে।

[বৈশ্ব শব্দে বিস্তৃত বিবরণ দেখ।]

বণিক্কর্মন্ (ক্লী) বণিজ্ঞাং কর্ম্ম। বণিক্দিগের ক্রমবিক্রমাদি-রূপ কার্যা।

বণিকৃক্রিয়া (ন্ত্রী) বণিজাং ক্রিয়া। বণিক্দিগের কার্যা। (রুহৎস° ৬৯/২০)

বিণিক্পথ (পুং) বণিজাং পছা:। বণিক্দিগের পছা। নিগম। বিপণি। বাণিজ্ঞা (জটাধর)

"আচোরাভূতথা ভূমিথথা রাত্রো বণিক্পথাঃ।"(রাজতর° ৬।৭)
বণিক্ত্রত (ক্লী) বণিকের কার্যা। ব্যবসায়। বণিস্র্তি।
বণিক্সার্থ (পঃ) বণিক্সমূহ। "বিষ্ণোর্বশ্বর্তিন্তা মায়য়।
জীবলোকোধ্যং যথা বণিক্সার্থেহির্থপরঃ" (ভাগবত ১৫।১৪।১)
বণিস্তান (পুঃ) বণিক্জাতি।

বিণিয়াকু (পুং) বণিজঃ পণ্যাজীবক্ত বন্ধর্ম নদত্বাং। নীলিবৃক্ষ। (শক্ষচ॰)

বিণিগৃ বৃহ (পুং) বহুতীতি বহু-অচ্ বণিজাং বহু:। উট্ট। (শক্ষচ°) বিণিগৃতাব (পুং) বণিজা ভাব:। বাণিজা, বণিক্দিগের ধর্ম। পর্যায়—সভ্যানৃত, বণিক্পথ, বাণিজা, বণিজা। (শক্ষরত্বা°) বিণিগৃবৃত্তি (ত্রী) বণিজাং বৃত্তি:। বণিক্দিগের বৃত্তি, বাণিজা, বণিক্দিগের জীবিকা।

বণিজ্বার্গ (পুং) বণিজ্ঞাং নার্গ:। বাণিজ্ঞা, বিপণি, বণিক্পথ। বণিজ্ব (পুং) পণতে ক্রমবিক্রমাদিনা ব্যবহরতীভি পণ- পোনাদেক বা । উপ্ । ২০০০) ইভি ইজি পত চ বা । জন
*বিজ্ঞাকতা, কাণিল্যকারক । পর্যার—বৈদেহক, সার্থবাহ, নৈগন,
বাণিল, পণ্যালীব, আপনিক, জন্মবিজ্ঞারিক, বৈদেহ,
বাণিল, বাণিলিক, জ্ঞারিক, বিজ্ঞারিক, বাণিলক, বাণিল্যকার ।
(পন্মর্থাণ) ২ বৈকা । (নালনিণ) বাণিল্যই ইহাদের বৃত্তি,
এইজন্ত ইহাদিগকে বণিল্য কহে । ৩ ক্রণবিশেব, ব্য-বালব
প্রেত্তি ক্রণের মধ্যে বর্চকরণ । (বৃহৎসা ৯৯। ৭)

বণিজ্ঞ (পুং) বণিগেব বণিজ্পার্থে জণ্, জডিধানাৎ ন বৃদ্ধি:।

> বণিক্। ২ বব প্রাভৃতি করণের মধ্যে বঠকরণ। এই করণে
বাণিজ্যারস্ত করিলে ওভ হইরা থাকে। অন্ত ওভকর্মে এই
করণ নিবিদ্ধ। বণিজ্ঞকরণে কোন বালক জন্ম গ্রহণ করিলে
বৃদ্ধিনান্, ফতজ্ঞ, গুণবান্ এবং বণিক্দিগের ছারা তাহার অভিলাব
সিদ্ধি হইরা থাকে।

"প্রান্তঃ ক্তভো গুণবান্ গুণজো বণিক্সন গ্রাপ্তমনোরথঃ স্তাৎ। ষষ্ঠ প্রস্তেটা বণিন্ধাভিধানং ভাগ্তপ্রধানং দ্রবিণং হি ডন্ত ॥"

(কোষ্টাপ্রদীপ)

বৃণিজ্ব (পুং) বৃণিক্। ব্যবসায়ী।

বৃণিজ্য (রী) বণিজো ভাব: কর্ম্ম বা বণিজ্ (দূতবণিগ্ড্যাং। পা ১)১২১) ইতাত্র কাশিকোক্তে:। বাণিজ্য, দ্রিয়াং টাপ্। বণিজ্যা।

ৰণ্ট, বিভাগ। চুরাদি° পরদৈর° সক° সেট্। লট্ ৰণ্টর্জি, ৰণ্টাপর্জি। লুঙ্জববণ্টং।

ব ক (পুং) বন্টাতে ইতি বন্ট-বঞ্। ১ ভাগ। ২ দাত্রমৃষ্টি।
(হেম) বন্ট-অচ্। ৩ অক্তভোছাহ, অবিবাহিত। (শন্দ্যালা)
বন্টক (পুং) বন্ট এব আর্থে কন্। ১ ভাগ। (অমর) বন্টধুল্। (ত্রি) ২ বন্টনকারী, বিভাগকর্তা।

वन्छेन (जी) वन्छे-मूर्छ्। विভाগ।

বৃণ্টনীয় (জি) বন্ট-জনীয়র। ক্টেনের বোগ্য, বিভাগের যোগ্য। বিশ্বিত (জি) বন্ট-ইডচ্। ক্লতবিভাগ, যাহা ভাগ করির। ক্ষেত্রা ইইরাছে।

বন্টাল (পুং) > শূরবৃদ্ধ। ২ নৌকা। ৩ প্রনিত্র। (মেরিনী)
কোন কোন ছানে 'বঠাল' এইরপ পাঠও দেখিতে পাওরা বার।
বঠি (পুং) বঠতে ইতি বঠি-সচ্। > সক্রতোদ্ধার, স্ববিবাহিত।
২ ধর্ম। ৩ কুরামুধ। (মেরিনী)

বঠর (পুং) > ব্যিকারক্। ২ কুকুরের নাল্ন। ৩ করীর কোষ। ৪ ভালপঞ্জব। ৪ পরোধর। (মেদিনী)

वर्श्वाल (ग्रः) [वन्त्रेण तव]

व्यक्ष (गूर) वनाष्ठ देखि वन नहरको (हवस्थार छ। छन्। ३।১১০) देखि छ। अधनावृद्धाः । भर्यात्र-क्ष्मां, বিনয়ক, নিশিবিট। (হেন) বাড়া। (ুবি) হ হতাবিবৰ্জিত। নাল্লাবিসহিত, চলিত বেড়ো। (মেবিনী) ও ব্যৱসায়। ত্ৰিয়াং টাপ্। অনতী ত্ৰী। পুংশ্চলী।

বং (অব্যর) বাজীতি বা উতি। স সাম্য। পর্যার—বা, বর্বা, তথা, এব, এবং। (অর্বর)

व्रक्त (अवाद) > (बंद । २ अञ्चलना ।

"ক বত হরিণকানাং জীবিভঞ্চাভিলোলং

ক চ নিশিতনিপাতা বস্ত্রসারাঃ শরান্তে।" (শকুন্তকা ১ জ**॰)**

ত সজোব। ৪ বিশার। ৫ আমারণ। (আমার)

বতংস (প্र) অবজ্পেরতি অবজ্জেভেহনেদ বা ইতি অব-তিসি
আচ্বঞ্বা অবজালোগঃ। কর্ণপূর, কর্ণভূষণ, কাণের গহনা।

- শেশর, শিরোভূষণ।

"চলিত-দৃগঞ্চল-চঞ্চল-মৌলিকপোলবিলোক্ষবজ্ঞাং। বাসে হরিদিহ বিহিতবিলাসং শ্বরতি মনো মম কুজপরিহাসন্॥" (শীতগোবিশা ২।২)

বতক্ (আরবী) হংগী।

বৃত্ত প্র (প্র) বনতীতি-বন (অওন্ রুক্ত্রুঞ:। উণ্ ১১১৮) ইত্যত্র বনতেওবারাভাদেশ:। ১ মূনিভেদ। (উণাদিকোর)

বতারীখ্ (আরবী) মাসের অমুক দিন।

বতায়ন (পুং) ৰাতারন, দানালা।

বভূই (দেশজ) পক্ষিভেদ।

ব্ভূ (পুং) > দেৰনদী। ২ সভাবাক্। ৩ পদা। ৪ জন্দিরোগ। বতেনুকা (গ্রী) অবগভং ভোকং অপভ্যং য**্তাঃ, অবকালো**দাঃ।

অবতোকা, যে গাভীর গর্ভনাব হইরাছে।

বৃত্তিল (দেশন) বাজিংশৎ, ৩২ সংখ্যা।

ব্ৎস (পুং) বদতীতি বদ (বৃত বদি-হনি-ক্ষিক্বিডাঃ সঃ। উদ্ ৩৬২) ইতি স। ১ বর্ষ। ২ গোশিন্ত, চলিত বাছুর। পর্যার— শরুৎক্রি, তর্গন্ধ, দোঝা, দোবন্ধ, দোব, রৌহিশের, বাছদের, তন্তত। সভোলাত বংসের পর্যার—তর্গন্ধ, তর্গত, তন্তত, কচ। (কটাধর) ৩ পুত্রাদি, চলিত বাছা।

> "ন বৎস নৃপতের্বিষ্ণাং তবানারোচু মুর্বতি । ন গৃহীতো মরা যৎ যং কুকাবণি নৃপান্ধল ॥"

> > (ভাগৰত গ্রাচা১১)

৪ দিবোনাসের পুত্র। (ভাগবত ৯।১৩৫) ৫ দেশভেন। শব্দতি বৎস ইতি থাজো দেশো দশোপশান্তরে।

স্বৰ্গন্ত নিৰ্মিতো ধাত্ৰা প্ৰতিময় ইৰ ক্ষিতে #"(ক্থাসরিৎসা° ১৪)

৬ কংসের অনুচর বংশাপুর, এই অপুর শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃত্ব নিহত হর। (ভাগবত ১০ছ০') ৭ইপ্রবর্ষ। (চঞ্চনত্ত) (রী)৮ বনস্। (অনর) ২ মুনিবিনেশ। (নিম্পূর্য ৭৪০) ব্দস, > কুমারসভবটীকারচরিতা। ২ চরকাধ্বর্গুত্তপ্রণেতা। বেমারি ইহার উল্লেখ করিয়াকেন।

বংসক (ক্লী) বংস-সংজ্ঞান্নাং ইবার্ছে বা কন্। ১ পুলকাসীস।
(রাজনি॰) ২ বংসললার্ছ। (গুং) বংস-কন্। ৩ কৃটজ।
(অসর) ৪ ইক্লবব। ৫ নিশুপ্তী, দিসিন্দা। (বৈভকনি॰)

বংসকপ্তভিকা, ঔবধভেন। (চিকিৎসা[®])

বংসকল্টক (গুং) পর্শ টক, কেতপাপড়া।

वरमक्काल (जी) रेखनन। (हत्रक २०८ ७०)

वरमकवीख (ही) वरमण्ड वीबर। हेड्यव।

"(त्रावः वरनक्वीकश निष्कृनिषमार्कवम्।

চিত্রকং রোহিণীং পাঠাং বার্কীমতিবিবাং সমাম্ ॥" (চক্রপাণিস')
বৎসকামা (ত্রী) বৎসং কামরতে ইতি কম্-অচ্-টাপ্।
বৎসাভিলাবিণী গাভী। পর্যায়—বৎসলা। (রাজনি•)
২ পুরাদিকামাত্রী, যে ত্রী সম্ভান কামনা করে।

বৎসপ্তরু (পুং) পুত্রের জাচার্য্য।

বৎসণুরকতীর্থ (क्री) তীর্থভেদ।

বংসতন্ত্রী (গ্রী) বংসগু তন্ত্রী। বংসবদ্ধন রক্ষু, চলিত বাছুর-বাধা দড়ি।

বংস্ত্র (গুংঁ) প্রথম বর্ষের বংস (বংগোক্ষাশ্বর্ষভাজান্টেড। পা বাতা৯১) ইতি ইরচ্। প্রাপ্তদমনকাল গোলিন্ত, চলিত লোয়ানে বাছুর। পর্যায়—দম্য, হর্দাস্ত, গড়ি। (রাজনি৽) বংস্ত্রী (জী) বংসতর-ভীপ্। তিনবংসর বয়সের জীগবী, র্ষোৎসর্গে ব্রপদ্ধীরূপে করিতা ত্রিহায়নী গাভী। র্ষোৎসর্গ করিতে হইলে চারিটী বংসত্রীর সহিত একটী ব্য উৎসর্গ করিতে হয়। এই বংস্ত্রী উত্তমরূপে অলম্বারাদি বারা সজ্জিত করিয়া দিতে হয়। তিনবংস্বের ক্মে বংস্ত্রী ইয় না।

"ত্রিহারণীভির্মস্রাভি: স্কুর্নাভি: স্থােভিত:।

উৎশ্ৰষ্টব্যা বিধানেন শ্ৰতিশ্বতিনিধৰ্শনাৎ ॥" (গুৰ্দ্ধিত হ)

বৎস্ত্র (क्री) বৎসদ্য ভাৰ: ছ। বৎদের ভাব বা ধর্ম।

ব**্সদৃত্ত (পুং) গোশিশুর দক্তের স্থান্ন** তীরভেদ।

বংসদ্মিন্, শ্রুরেসনবংশীর রাজতেদ। ইহার পিতার নাম দেব-রাজ ও মাতা যাজ্ঞিকা দেবী।

বংসনপাৎ (পুং) বক্তর বংশধর। (শতপথরা • ১৪।৫।৫।২২) বংসনাভ (পুং) বংসান নভাতি হিনন্তীতি নভ হিংসারাং (কর্ম্মগণ্। পা তাহা১) ইত্যাশ্। বিষয়ক্ষবিশেষ, (Aconitum forox)। স্থাবরবিষভেদ, কন্দ্রবিষ; চলিত—কাঠবিষ বা মিঠেবিষ; হিন্দী—মিঠা; বব্দে—বচনাগ; তামিল—বসনবী। সংস্কৃত পর্যার—অমৃত, বিষ, উগ্র, মহোবধ, গরল, মারণ, নাগ, তৌকক, প্রাণহারক, স্থাবরাদি। তাণ—অতিমধ্র, উঞ্চ, ৰাড, কক্,কঠপীড়া ও সন্নিপাতনাশক, শিন্ত ও সস্তাপবর্ত্ধক। (রাজনি॰) ভাবপ্রকাশে লিখিত আছে বে,—

"দিশ্ববারসনৃক্পত্রো বৎসনাভ্যাক্বভিত্তথা।

যং পার্থন তরোর্গ্রিবিৎসনাভঃ স ভাষিতঃ ॥" (ভাবপ্র•)

বৎসনাভাখ্য বিষের আকৃতি গোবৎসের ভার এবং বৃক্ষের
পত্র সিশ্ববার (নিসিন্দা) পত্রের ভার হইরা থাকে। যে স্থলে
বৎসনাভ বিষের বৃক্ষ থাকে, তাহার নিকটে কোন বৃক্ষই বর্দ্ধিত
হর না। এই বিষ শোধন করিরা ঔষধাদিতে প্ররোগ
করিতে হয়।

শোধনপ্রণালী — বিষ থণ্ড থণ্ড করিয়া কাটিতে হইবে, পরে ঐ বিষ তিন দিন গোমুত্রে নিমম করিয়া রাখিবে, তৎপরে উহার ছাল তুলিয়া রৌদ্রে শুকাইতে হইবে, অনস্তর রক্ত-সর্বপের তৈল দারা আর্দ্রীকৃত বন্ত্রথণ্ডে তিন দিন বাদ্বিয়া রাখিলে বিষ শোধিত হয়।

গুণ—এই বিষ প্রাণনাশক, ধ্ববায়ী ও বিকাশিগুণযুক্ত। অগ্নিগুণবৃহন, বায়ু ও কফনাশক, ধোগবাহী এবং মন্ততাজনক; কিছ বিবেচনার সহিত ফথোপযুক্ত হলে প্রহোজিত হইলে প্রাণরক্ষার কারণ হয়। ইহা রসায়ন, যোগবাহী, বাতম, কফাপহারক ও ত্রিলোযনাশক হইয়া থাকে। (ভাবপ্রত)

বৎসনাভ শব্দের ক্লীবলিকেও প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু সাধারণতঃ পুংলিকে ব্যবহার হইয়া থাকে।

"চত্বারি বৎসনাভানি মুস্তকে দ্বে প্রকীর্ত্তিতে। গ্রীবান্তক্ষো বৎসনাভে পীতবিগ্মুত্রনেত্রতা॥"

(হুঞ্ত কশ্বয়া° ২**অ**°)

২ সহাদ্রিবর্ণিত রাজভেদ। (সহা° ২৭।৫৭)

বংসপ (পুং) > বংসপালক। ২ শ্রীকৃষ্ণ।

"পরীতো বৎসপৈর্বৎসাংশ্চাররন্ ব্যহরবিভূ:।

যমুনোপবনে কৃষ্ণদ্বিজসঙ্গিতাজিবুপে ॥'' (ভাগৰত অহা২৭)

৩ দানবভেদ। (অথর্ব ৮।৬।১১)

বৎসপতি (পুং) রাজভেন, বংসরাজ। (বাসবদন্তা)

বং সপ্ত্রন (রী) বংসরাজন্ত পত্তনং। ভারতবর্ষের উত্তরন্থ দেশবিশেষ, পথ্যায়—কৌশামী। (হেম)

বৎসপাল (পুং) বৎসান্ পালয়তীতি বৎস-পালি-অণ্। এই ক্ষ ও বলদেব, বৃশাবনে পোবৎস পালন করিয়াছিলেন, এই ক্ষ্ম ইহারা বৎসপাল নামে খ্যাত হইয়াছিলেন।

"এবং ব্ৰজৌকসাং প্ৰীতিং ফছজৌ বালচেষ্টিতৈ:।
কলবাক্যৈ: স্বকালেন বৎসপালৌ বভূবজু: ""
(ভাগৰত ১০১১)৩৬)

(ত্রি) ২ বৎসপালক, বৎসপালনকারিমাত্র। (ছরিব॰ ৩৭।২৪) ইৎসপ্রচেতস্ (ত্রি) প্রাবিবরে গ্রন্থইমনা। "ভোডরি গ্রন্থই-জ্ঞানঃ" (শ্বক্ ৮।৮।৭ সারণ)

বৎসপ্রী (গ্রং) রাজতেদ, ভলন্দনের পুত্র, অপর নাম বংসপ্রীতি। ইনি ঝার্থেদের ৯৩৮ ও ১০।৪৫,৪৬ স্কের মন্ত্রন্তী ঋষি।

"ভগন্দনস্থতন্তম বংসপ্রীতির্দ্রদানাং ।" (ভাগবন্ড ৯।২।২৩) বংসপ্রীতি (গ্রং) > বংসপ্রীতি, রাজডেন। (স্ত্রী) বংসম্ম প্রীতি:। ২ বংসের প্রতি ভালবাসা।

বংসবন্ধা (জী) বন্ধবংসা। বংসাকাক্ষী গাভী।

বংসবালক (পুং) বহুদেবের ভাতা।

বংসভক্ষক (পুং) বংসন্ত ভক্ষক:। মহামৃগ, হাঁড়োল, গোবাঘা, ইহারা গোবংস ভক্ষণ করে, এইজন্ত ইহাদিগকে বংস-ভক্ষক কহে।

বংসভূমি (ত্রী) > জনপদভেদ। বংসদিগের বাসভূমি। (ভারত বন ২৫৩৮) ২ বংসরাজের পুত্র। (ছরিবংশ)

বৎসমিত্র (পুং) গোভিলভেন।

বৎসমুখ (পুং) গোশিশুর স্থার মুধবিশিষ্ট।

বৎসর (পুং) বদস্তাত্মিন্ অরনর্জুমাসপক্ষবারাদর ইতি, বস নিবাসে (বসেশ্চ। উণ্ তা৭১) ইতি সরন্, (সং স্থার্কার্ডক। পা ৭।৪।৪৯) ইতি সম্ভ তঃ। বাদশমাসাত্মক বা অরন্ধরাত্মক কাল, ১২ মাসে অথবা উত্তরায়ণ ও দক্ষিণায়নের সমষ্টিতে এক বংসর হয়। পর্যার—সংবংসর, অব্ব, হায়ন, শরং, সমা, শ্বদা, বর্ষ, বরিষ, সংবং। (শব্দর্যাণ)

মলমাসতবে লিখিত আছে যে, সোর, সাবন, নাক্ষত্র ও চাক্রভেদে বৎসর চারি প্রকার; স্থতরাং সৌর, সাবন, নাক্ষত্র ও চাক্রভেদে মাসও চারি প্রকার। ইহার মধ্যে বাদশ সৌর মাসে এক সৌর বংসর, বাদশ চাক্রমাসে এক চাক্রবংসর, কিন্তু মলমাস স্থলে অয়োদশ মাসে এক চাক্র বংসর হইরা থাকে।

"চাক্সবংসরোহপি দাদশমাদৈর্ভবতি, মলমাসপাতে তু জ্বোদশমাদৈর্ভবতি। তথাচ শ্রুতিঃ—দাদশমাদাঃ সংবংসরঃ, ক্চিৎ ত্রোদশমাদাঃ সংবংসরঃ" (মলমাসত্ত্ব)

ছাদল নাক্ষত্র মাসে এক নাক্ষত্র বৎসর হয় এবং ঘাদল সাবন মাসে এক সাবন বৎসর হইরা থাকে। ক্র্য্য বতদিন এক রালিতে অবস্থান করেন, ততদিন এক সৌরমাস। ক্র্য্যের রালিতে অবস্থান জন্ত মাস হইরাছে বলিয়া ইহাকে সৌরমাস ক্রে। সাল, লকালা প্রভৃতি সৌরমাসাম্পারেই গণনা হইরা থাকে।

তিথিবটিত মাসকে চাক্রমাস করে। চাক্রমাস মুখ্য ও গৌণ-তেনে বিবিধ। বাদশ চাক্রমাসে এক চাক্রবৎসর হইয়া থাকে। ২৭টা নক্ষয়ে এক নাক্ষয় মান, ইহার মানপ নাক্ষয় মানে এক নাক্ষয় বংনর হইরা থাকে। এনোর ও চাক্ষতেকে সাধনমানও বিবিধ। বে কোন দিন হইতে আরম্ভ করিরা ৩০ অহোরায়ে বে মান হর, তাহাই নৌরনাবনমান—বেমন ১০ই আধিন হইতে ১ই কার্ত্তিক পর্যায় ৩০ অহোরাত্রে এক নৌরনাবন মান। যে কোন তিথি হইতে তাহার পূর্ক তিথি পর্যায় ৩০ তিথিতে এক চাক্রনাবন মান, ইহার মানশ মানে এক সাবনবংদর হর।

[বিশেষ বিষয়ণ মাস, মলমাস ও ষ্টিসংবৎসর শক্তে দেখ] সৌরবৎসর প্রজ্বাদি ৬০টা নামে বিজ্ঞত বলিয়া ষ্টিসংবৎসর নামে অভিহিত ৷

২ঞ্জবের প্রত্র। (ভাগবত৪।১০।১) হ মুনিডেদ। (লিন্দপু° ৬০)৫১) বংসরাক্ত (পুং) বংসদিগের নরপতি।

বৎসরাজ, > নির্ণরদীপিকারচরিতা। ২ ভোক্তপ্রবন্ধ ও হান্ত-চূড়ামণিপ্রহ্যনপ্রণেতা। ৩ বারাণদীদর্শণ ও তাহার টীকাপ্রণেতা। রামাপ্রমের শিষ্য ও রাঘ্ব ত্রিপাঠীর পুত্র। ১৯৪১ খুষ্টাব্দে ইনি উক্ত গ্রহ্থানি রচনা করেন।

বংসরাজ, > চাহমানকশীয় একজন রাজা। ২ চৌলুকাবংশীয় লাটদেশাধিপতি। ৩ ককরেজীর মহারাণক উপাধিধারী একজন সামস্ত। ৪ মহোদয়রাজভেদ। ৫ চন্দেলরাজ কীর্ত্তিবর্দার প্রভেদ। ইহার অপর নাম লোহড়দেব। ইনি কনোজপতি গোবিশচক্র দেবের সমসাময়িক ছিলেন।

वरमद्राद्धाप्तव, अक्षम आठीन कवि।

বৎসরাদি (পুং) বৎসরের আদি। মার্গনীর্ব, অগ্রহারণ।
বৎসরান্তিক (পু) বৎসরত অত্তে কারতি শোভতে ইতি কৈক, যদ্মা বৎসরতান্তো নাশো যত্মাৎ। কান্তন মাস। (রান্সনি°)
বৎসলে (ত্রি) বৎতে পুত্রাদিলেহপাত্রে কামোহতাতীতি বৎস
(বৎসাংসাভ্যাং কামবলে। পা এ।২।৯৮) ইতি লচ্। > কেহযুক্ত। পর্যার—প্রিয়া (অমর)

"জ্ঞানং গুস্তু তমং যন্তৎ সাক্ষাৎ ভাগবতোদিতম্।
অন্ধবোচন গমিবান্তঃ ক্লপন্না দীনবৎসলাঃ "(ভাগবত ১।৫।৩০)
বৎসং লাতি গৃহাতীতি লা-ক। ২ বৎসকামুক।
(পুং) ৩ শূকারাদি দশবিধ রসের অন্তর্গত রসবিশেব। সাধারণতঃ
রস ৯টা স্বীকৃত হইয়াছে। দশটা রস স্বীকার করিলে
বৎসল দশম রস হয়। ইহার লক্ষণ—

শফু নৈ চনৎকারিতয় বৎসলফ রক্ষ বিহ: ।
স্থারী বৎসলতা স্নেহ: পুত্রাভালস্বনং মতম্ ॥
উদ্দীপনানি তচেষ্ঠা বিভাগেতিগাদয়াদয়: ।
আালিঙ্গনাকসংস্পর্শনিরশ্ভ্রনরীক্ষুম্ ॥
পুনকানন্দবাপাভা অস্থতাবা: একীর্ডিতা: ।

স্কারিশেহনিউশ্বা হর্বগর্মানরো মতাঃ।
পল্পর্কজ্ঞবির্ধে দৈবজ্ঞ রোক্ষাভন্তঃ

বে ব্লে বর্ণনার অভিশ্ব চনংক্ষরিতা হয়, তথার বংসলরস
হইরা থাকে। এই রসের হারিভাব বংসলতা বা দেহ; পুরাদি
ইহার খালখন; পুরাদির কেটা, বিভা, লোই ও দরাবি উদীপমভাব; প্রাদিকে ক্ষানিক্ষ, ভাহাদিগের অঞ্চলপর্ন, পিরশ্চু বন,
দর্শন, পুরাক, আনক্ষ ও বালাদি ইহার অস্তাব; অনিউপ্রা,
হর্ব ও গর্কাদি স্কারিতাব; ইহার বর্ণ পল্পেবের ভার এবং
ইহার অধিষ্ঠানী দেবভা লোক্ষাতা। উদাহরণ—
"হলাহ ধানা প্রথমোনিতং বচো ববো তদীর্মবল্যা চাকুলীম্।
অভ্নত নত্র: প্রণিপাতলিক্ষ্যা পিত্র্দং তেন ততান সোহর্ভকঃ ॥
(সাহিত্যক্ গ্লত রব্ব) [রসশ্ব দেখ]
বংসলতা (গ্রী) বংসলত ভাবঃ তল্, টাপ্। বাংসল্য, বংসল্ড,

ব্ৰস্কৃতা (প্ৰী) বংসক্ত ভাৰঃ তল্, চাপ্। বাংসক্ত, বংসক্ত বংসক্তের ভাব বা ধর্ম।

বৎসলা (ন্ত্রী) বৎসল-টাপ্ বা বৎসং লাভি লা-ক-টাপ্। বৎসকামা গো।

> "সাহং গৌরিব সিংহেন বিবৎসা বৎসলা ক্বতা। কৈক্ষেয়া পুক্ষব্যাম বালবংসের গৌর্বলাং॥"

(রামারণ ২। ৪২।৮১)

বংস্বং (অি) বংস জান্তার্থে মতুপ্ মন্ত বং। বংসমুক্ত।
জিলাং তীপ্। বংসমুক্তা গাভী।

"সমেত্য গাৰোহধো-বৎসান্ বৎসবজ্যোহপ্যপারয়।"

(ভাগৰত ১০৷১৩৩১)

বৎসবরদাচার্য্য, প্রশন্নপারিজ্ঞাতপ্রণেতা। বৎসবিন্দ (পুং) ঋবিভেদ। (প্রবর্গগার) বৎসবৃদ্ধ (পুং) রাজভেদ।

"উঞ্জির: স্থতন্ত বংসবৃদ্ধো ভবিয়তি।" (ভাগ° ১৷১২৷১)

বৎসব্যুত্ (পুং) বংসের পুত্র। (বিকুপুরাণ)

্বংস্ণাল (ডি) গোৰাল ঘৰে আত।

व्यम्भोला (जी) लातान पत्र।

বৎসন্মৃতি, প্রাচীন স্বভিগ্রছবিশের। মাধবাচার্য্য কালমাধ্বীর গ্রন্থে ইছার উল্লেখ করিবাছেল।

বৎসা (ত্রী) বংস-টালু । বংসা । (রাজনি)

वरमायम् (जी) वरमणंकीय गांजिम्स यकाः, यहः, ममामासः, जित्रार कीय्। > भाष्मुवा। (बढीयत)

यथमाञ्जीद (बि) गावरमं भागमबाता जीविकामिकाहकाती। २ भिक्रम वि।

स्थानित (११) व्यवीषि वय-मू, वश्योगोर व्यवसः वयकः। वृष्, श्योगोर। (प्रावितः)

वरमामनी (श्री) वर्रमञ्चाउ विश्वतानिक, जन-मूक्ते, कीन्। ७५ हो। (जनत)

বৎসার (পুং) কাশ্রণের প্রভেষ।

বৎসাস্ত্র (পুং) অস্থরভেদ, এই অস্থর মথুরাপতি কংসের অন্তচর ছিল। বৃন্দাবনে আইক্ষ বৰন গোচারণ করিতেন, তথন এই অস্থর বংসরপে তথার অবস্থান করিত এবং আইক্ষের অনকল চেষ্টার পুরিরা বেড়াইত, আইক্ষ ইহা আনিতে পারিরা এই অস্থরকে বধ করেন। (ভাগবত ১০ম হক)

বংসিন্ (বি) ১ বংসয়ক্ত । ২ পুত্ৰসমন্বিত । ৩ শ্ৰীকৃষ্ণ । বংসিয়ন্ (বি) বাল্যাবস্থা । বৌৰন ।

বংসীয় (ত্রি) বংস (তল্পৈ হিতং। পা ধাসাধ) ইভি হিতার্থে ছ। বংসদিগের হিতকারী। (গোধুক্)

ব্ৎসেশ্বর (পুং) > রাজভেদ। (রত্নাবলী) ২ বৈরাকরণভেদ।
ত চিকিৎসাসাগরপ্রণেতা।

বৎস্য (ত্রি) বৎসসম্বীয়।

বথ্সর (পৃং) বৈয়াকরণ পৌষ্বসাদির মতে বৎসর শক্ষের ক্লান্তর। (পাণিনি ৮।৪।৪৮ বার্ত্তিক)

বদ, কথন, উক্তি। ভাদি প্ৰদেশ সক্ত সেট্। লট্বদতি।
লিট্ববাদ, উদতুং, ববদিধ। লুট্বদিতা। লুট্বদিয়তি।
লুড্ অবাদীৎ অবাদিৱাং, অবাদিবুং। সন্বিবদিবতি। বঙ্
বাবহাতে। যঙ্পুক্ বাবতি। পিচ্ বাদম্ভি-তে। লুঙ্
অবীবদং-ত। শিক্ষ বদধাতু বাদনার্থ।

বোপদেবের মডে, সন্দেশ-বচন ও কথন। বীপ্তি, সান্ধন, জ্ঞান, উৎসাহ, বিবাদ ও প্রার্থনা অর্থ ব্যাইলে বদ ধাড়ুর আত্মনেপদ হইরা থাকে।

श्रम् नव = श्रह्मवार, तमृभक्षतः। श्रम्भ नव = श्रावार, श्रम्भविद्यास्त, श्राम्भवादः। श्राप्ति नव = श्राप्ति । तम् । तम् नव = श्राप्ति । विज्ञम् = श्राप्ति । विज्ञम्य = श्राप्ति । विज्ञम् = श्राप्ति । विज्ञम् = श्राप्ति । विज्ञम्य = श्राप्ति । विज्ञम् = श्राप्ति । विज्ञम् = श्राप्ति । विज्ञम्य = श्राप्ति = श्राप्ति । विज्ञम्य = श्राप्ति =

यम् (बि) सम्र्कि नकीषि सम्भागिष्ठः,। स्काः। (व्यस्तः) सम्रक् (बि) साक्त्रक्थननीमः। स्काः।

বৃদ্ধন (क्री) বৰস্কানেনতি বৰ-করণে গৃষ্টি। ১ মুখ, স্থানন।
"বৰ্ণনবিনীভয়নো গৃহিণীকর্বোদ্ধনংকপোলভয়ং।
চুখননিবেধনিকতো বৰসং শিষধাতি শাণিভ্যান্।"

্ (সাধানধনতী ২৭৯)

"बीगाणनि बायकमानि बीगाजूनकमानि" (क्यांच ১)९)

বদ-ভাবে দ্যুট্। ৩ কথন।
বদনদস্ত্তর (পুং) জাতিবিশেষ। (মার্কণ্ডেরপু॰ ৫৮/১২)
বদনব্রোগ (পুং) বদনস্ত রোগঃ। মুখরোগ।
বদনস্তামিকা (স্ত্রী) বদনস্ত স্তামিকা, ৬তৎ। বদনকালিমা।
চলিত কথার মেছতা বলে।

বদনাময় (পুং) বদনশু আমর:। বদনরোগ।
বদনামুতা (স্ত্রী) বদনশু অমতা। পিত্তজ রোগভেদ, এই রোগে
মুথ সর্কাদা অমবৎ হয়। (ভাব প্র°)

বদনাস্ব (পং) বদনশু আসব:। অধরমধু। (ভ্রিপ্র°)
বদন্তি[ী] (স্ত্রী) বদ (বেদশ্চ। উণ্ ৩৫০) ইত্যুজ্জনদত্তোক্র্যা ঝিচ্, ক্লিকারাদিতি বা ঙীষ্। ১ কথা। বদ-ধাতৃ
লট্ অস্তি করিলেও বদস্তি হয়, এই 'বদস্তি' ক্রিয়াপদ। বদ ধাতৃ
শহু প্রতায় করিয়া স্ত্রীলিঙ্গে ঙীষ্ প্রত্যয়ে বদস্তী পদ হইয়া থাকে।
"যং বদস্তি তমোভূতা মুর্থা ধর্মমতন্বিদঃ।" (মন্থ ১২১১১৫)

বদস্তিক (গ্রং) জাতিবিশেষ। (মার্কণ্ডেয়পু৹ ৫৮।৪৫) বদস্য (ত্রি) বদাস্ত। (অমরটীকা-সারস্কারী)

বদল, বোষাই প্রেসিডেন্সীর গোহেলবাড়প্রান্তস্থ একটী কুজ সামস্তরাজ্য। এখন ছুইজন স্বত্যাধিকারিমধ্যে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছে। রাজস্ব ২০০০ টাকা, তন্মধ্যে বড়োদার গাইকো-বাড়কে ১০৪ টাকা কর দিতে হয়। বদল নগর এথানকার প্রধান বাণিজ্যস্থান। ভূপরিমাণ ছুই বর্গমাইল।

বদল (আরবী) বিনিময়।

বদলাবদলী (দেশজ) পরস্পারে একের বিনিময়ে অপরটী গ্রহণ। অদলবদল।

বদলী, বোষাই-প্রেসিডেন্সীর হালারপ্রাক্তন্থ একটা কুল্র সামস্ত-রাজ্য। রাজস্ব ২০০০ হাজারটাকা, তন্মধ্যে ইংরাজরাজকে ২৪৬ টাকা এবং জুনাগড়ের নবাবকে বার্ষিক ৭৮ টাকা কর দিতে হয়। বদলী গ্রাম এথানকার প্রধান স্থান, ভূপরিমাণ হুই বর্গমাইল। বদলী, বোষাই-প্রেসিডেন্সীর গুজরাট্ প্রদেশের মহীকাছা বিভা-গের অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর, ইদর হইতে ছয় ক্রোল উত্তরে অবস্থিত। খুলীর ৭ম শতাব্দে চীন-পরিব্রাক্তক হিউএন্ সিরাং এই নগরের সমৃদ্ধির উল্লেখ করিয়া যান। খুলীর ১১শ শতাব্দে বদলী নগর একটা বিস্তীপ রাজ্যের রাজধানীরূপে পরিগণিত ছিল।

বদাগরা, মান্ত্রান্ধ-প্রেসিডেন্সীর মলবার জেলার অন্তর্গত একটা নগর,অক্ষা ১১°৩৬ উ: এবং দ্রাঘি ৭৪°৩৭ ৯ পু:। ইহা সমৃদ্র উপকৃলে অবস্থিত, কোলিকট হইতে কোরন্র পর্যান্ত বিভ্ত রাজা এই নগরের মধ্য দিরা গিরাছে। এখানকার ছপটা কোলতিরি (টারক্কা) রাজাদিগের প্রতিষ্ঠিত। ১৫৬৪ খুটানে উক্ত রাজবংশের কোন রাজা এই হর্গ কোনজনাত্ব রাজবংশের হতে অর্পণ করেন,
আতঃপর ইহা টিপু অ্লভানের অধিকারভুক্ত হয়, টিপু ইহাকে
বাণিজ্য-তক্ক আদারের প্রধান রাজকার্যালয়রপে পরিণত
করেন। ১৭৯০ খুটাকে ইংরাজরাজ টিপুর নিক্ট হইতে এই হর্গ
কাড়িরা লইরা পুর্বোজ্য কোনজনাড় রাজবংশের হতে সমর্শণ
করিরাছিলেন। অনস্তর উহা তীর্থবাত্রীদিগের বিপ্রামতবনে
পরিবর্ত্তিত হইয়াছে। এই নগর বাণিজ্যপ্রধান।

বদাত্য (বি) বদতি সংক্ষা এব দাভামীতি মনোহন্বাক্তা-মিতি বদ্ (বদেরাভাঃ। উণ্ ৩।১০৪) ইতি আন্তাঃ বছপ্রদ, যিনি বছধন প্রদান করেন, অতিশয় দাতা।

শগতো বদালান্তরমিত্যরং মে
মাভূৎ পরীবাদনবাবতার:॥" (রঘু ৫।২৪)
২ বল্গুবাক্। (অমর) ত স্থনামধ্যাত ঋষিবিশেষ।
শনিবেষ্ট্,কামন্ত পরা অষ্টাব্যক্রো মহাতপাঃ।

ঋষেরথ বদাস্থান্ত বত্ত্বে কন্তাং মহাত্মন: ।"(ভারত ১০।১৯।১১)
বদাম (ক্রী) ফলবিলেব, চলিত বাদাম। পর্যার—ক্রফল, বাতবৈরী, নেত্রোপম। ইহার গুণ—উষ্ণ, স্থানিগ্ধ, বাতনাশক, গুরু
ও গুক্রবর্দ্ধক। (রাজনি°) ভাবপ্রকাশমতে মধুর, বলকারক,
উষ্ণ, কলনাশক ও রক্তপিত্তরোগনাশক।

বদাল (পু:) বদ-অঞৰ্থে ক, বদেন বদনেন অলতি পৰ্য্যাপ্ৰোতীতি বদ-অল-অচ্। মৎক্ৰবিশেষ, চলিত ৰোয়াল মাছ। এই মৎক্ৰ হব্যকৰ্ব্যে ব্যবহার করা যাইতে পারে। পৰ্য্যায়—পাঠীন। (ত্রিকা°)

"পাঠীনরোহিতাবাজৌ নিযুক্<mark>কৌ হ্ব্যক্বারো</mark>ः।" (**ম**ন্থু)

বদালক (পুং) বদাল এব স্বার্থে কন্। পাঠীন মংখ্য। (ভূরিপ্র°) বদাবদ (ঝি) অভ্যন্তং বদতীতি বদ-অচ্, (চরিচনীতি। পা ৩।১।২৩৪) ইত্যন্ত বার্তিকোক্ত্যা নিপাতিতং। বক্তা। বদাবদিন্ (ঝি) অভ্যন্ত কপনশীল। বহুভাবী।

বৃদ্ধি (অব্য) > বছল দিন শব্দের অপপ্রারোগ। ২ হিন্দী পঞ্জিকার। ক্ষপ্তপক্ষকে বৃদ্ধি বলে, যেমন বৈশাধ বৃদ্ধি।

বদিত ব্য (ত্রি) বদ-তব্য ৷ কথনযোগ্য, বক্তব্য ৷ বদিত (ত্রি) বদ-ভূচ্ ৷ বক্তা ৷

"**অপৃতারৈ বাচঃ বদিতারঃ"** (ঐত[°] ব্রাণ ৭৷২৭)

বদিবাস, প্রাচীন জনপদভেদ।

বদ্বহরী (দেশজ) অধ্যতেদ। (Limodorum or Geodorum bicolor)

বদ্বো (পার্মী) পৃতিগন্ধ।

वम्हान (भावमी) ध्ववश ।

ব্ধ (পুং) হননমিতি হন্-অপ্ বধাদেশ:। প্রাণবিরোগজনক ব্যাপার বিশেষ। পর্যায়—প্রমাপণ, নিবর্হণ, নিরাকরণ, নিশারণু প্রধাসন, পরাসন, নিজ্বল, নিছিংসন, নির্বাসন, সংজ্ঞপন, নির্বাহ্নন, অপাসন, নিজ্ঞাল, মিইনন, ক্ষণ, পরিবর্জন, নির্বাপণ, বিলসন, মারণ, প্রতিবাতন, উদ্বাসন, প্রমণন, ক্ষণন, উজ্ঞাসন, আলক, শিঞ্জ, বিশর, বাত, উত্মন্ত, হিংসা, ঘাতন, বিনারণ, পিজক, পাত, পরিখ, পরিঘাতন, ফলন, নিবারণ, সমাঘাত, নির্বাহ্নন, মারি, বারী, উৎপাত, মারক, মরক, বার, সংঘাত। (শক্ষরণ)

কোন প্রাণীকে বধ করিলে পাপ হইয়া থাকে। কিন্ত আন্তঃতারী শক্রকে বধ করিলে পাপ হয় না।

"নাততান্নিবধে দোষো হত্তর্ভবতি কণ্চন।"

(গীতার ১৷২৬ টাকার স্বামী)

পারিভাষিক বধ---

"বপনং জবিণাদানং দেশারিযাপনং তথা।
এয হি ব্রহ্মবন্ধু নাং বধো নাজোহতি দৈহিক: ॥"

(ভারত সৌপ্তিকপ°)

ব্রাক্ষণদিগের মন্তক্ষুগুল, সমন্তধনগ্রহণ এবং দেশ হইতে নির্মাসন করিরা দিলে, তাহাতেই তাহাদিগের বধ হয়। ইহাকে পারিভাবিক বধ করে।

কালিকাপুরাণে লিখিত আছে যে, যে হলে এক ব্যক্তিকে বধ করিলে অনেকের মঙ্গল হয়, সেই বধ পুণ্যপ্রাদ এবং বর্ণচৌর, স্থরাপান্ধী, ব্রন্ধহত্যাকারী, গুরুপদ্মীগামী এবং আত্মঘাতী এই সকল ব্যক্তিকে বধ করিলে তাহাতে পাপ হয় না এবং এই বধও পুণ্যপ্রাদ বলিয়া অভিহিত হইয়াছে।

"একন্স যত্র নিধনে প্রবৃত্তে ছষ্টকারিণ:। বছুনাং ভবতি ক্ষেমং তন্স পূণ্যপ্রদো বধ:॥ রুক্মন্তেরী সুরাপক ব্রক্ষা গুরুতমগ:। আদ্মানং ঘাতরেদ্বন্ত তন্ত পূণ্যপ্রদো বধ:॥"

(ফালিফাপু ২ • অ°)

একের জন্ম বছকে বধ করিতে নাই, কিন্তু বছলোকের শান্তির জন্ম একজনকে বধ করা ঘাইতে পারে, তাহাতে পাপ হর না।

"নৈক্সার্থে বছুন্ ইস্টাদিভি শাজেবু নিশ্চরঃ। একং হস্তান্বহুনাং হি ন পাপী ভেন স্বার্থে॥"

(বামনপু ৪৫ অ°)

वश अतः वक्त भूकंकर्णात्र वक्ष, व्यर्धाः भूकंकणीय्रगास्त्रहे वश अवस्म इहेशा थारक ।

শন কশ্চিন্তাত কেনালি বধাতে হততেহলি বা ।
বধবজৌ পূর্বকর্ত্ত্বরেজী নূপতিনন্দন ॥" (বাসনপূ° ৬২ অ°)
শ্বতিতে বৈধহিংস্থা বিচারস্থলে অভিহিত হইরাছে বে,

যক্সাদিতে বে পশুবধাদি করা হয়, ভাহাতে পাপ হয় না, বৈধ-হিংসা ব্যতীত হিংলা ক্ষিলেই পাপ হইরা থাকে। যক্ষার্থ যে বধ ভাহা অবধ।

শ্বজ্ঞার্থে পশবঃ স্পৃষ্টাঃ ষজ্ঞার্থে পশুধাতনঃ। অতকাং ঘাতয়িব্যামি তন্ত্ৰাদ্যক্তে বংধাংবধঃ ॥" (স্বৃতি)

কিন্তু সাংখ্যদর্শনের সাংখ্যতশ্বকৌনুদীতে বাচন্শতি মিশ্র দিখিয়াছেন যে, যজ্ঞাদিতে পশুবধ করিলে পাপ ও পুণ্য ছই হইবে, বধল্পত যে পাপ তাহা হইবে এবং যজ্ঞের পূর্ণতাজ্ঞত যে পুণ্য তাহাও হইবে; স্তরাং পশুবধে পাপ ও পুণ্য ছইই আছে। যজ্ঞপূর্ণ হওরার স্থর্গভোগ এবং পশুবধজ্ঞত পাপভোগ অবজ্ঞভাবী। তবে যজ্ঞে পুণ্যের ভাগ অধিক এবং পাপের ভাগ কম, স্তরাং অনেক স্থাভোগ করিরা অরমাত্র কইভোগ করা তত হংধজনক নহে। [বিশেষ বিবরণ হিংসা শব্দে দেখ]

শ্বজ্ঞানতঃ গো প্রভৃতি বধ করিলে তাহার প্রারশ্চিত্ত করিতে হয়। প্রারশ্চিত্ত করিলে বধজ্ঞ পাপ হইতে মুক্তিলাভ করা যায়। যজ্ঞাদি ভিন্ন অন্তত্ত্বে বধ করিলেই প্রারশ্চিত করিতে হইবে।

বধক (পুং) হন্তীতি হন্-কুন্(হনো বধশ্চ। উণ্ ২০০৬) ইতি বধাদেশ:। ১ বধকর্তা, বধকারী। ২ হিংল্র। ৩ ব্যাধি।
র মৃত্যা (সংক্ষিপ্রসার উণ°)

বধক, (বিধিক) উত্তরপন্চিমপ্রদেশবাসী জাতিবিশেষ, দস্যাবৃত্তি ইহাদের প্রধান উপজীবিকা, ছলৈ ভূলাইরা অসহায় পথিক
অথবা তীর্থমাঞ্জীদিগকে ৰধ কমে বলিরা ইহারা বধক নামে
পরিচিত; কিন্তু জাতিগত সাণ্ডে বাওরারিরা ও বহেলীয়াদিগের অহরক। অধু ইহাদের মধ্যে রাজপুতদিগেরই আধিকা
দৃষ্ট হয়। বর্তমানকালে অনেক ধর্মান্ত মুস্লমানও ইহাদের দলভূক হইয়াছে।

মণুরা, পিলিভিং ও গোরথপুর জেলার এই দহাদিগের বাস আছে। ইংরাজশাসনে ইহারা এক্ষণে অনেকটা শাস্তভাব হারণ করিরাছে। ইহারা সময়ে সমরে রাক্ষণ, ভিক্তুক অথবা বৈরাক্ষির বেশে ভীর্থবাত্রীদিগের সহিত সমন করে এবং আবক্তক্ষত ভীর্থক্ষেত্রে বাত্রীদিগের ভীর্থকার্য সম্পন্ন করে। এই অবসরে ইহারা বক্ষিণা ও প্রাণামীরূপে বলপূর্কক অর্থ আঘার করিবার চেষ্টা পার। অনেক সমরে বাত্রীদিগকে ধুতুরা সংযুক্ত প্রসাদ সেবন করাইরা ভাহাদিগের ধ্বাসর্ক্ষক অপহরণ করিরা পর।

কালীমাতা ইহাদের প্রধান উপাক্ত দেবতা। ইহারা বেবী পূজার ছাগ বলি দের, ছাগমাংস ব্যতীত শৃগাল, বেকশিয়াল ও গোধাদি সরীক্ষণমাংস ইহারা তক্ষণ করিয়া থাকে। ইহাদের বিশাস, শৃগালমাংস তক্ষ্ম করিলে শীতকালের রাজিতে বিচরণ

কালে শৈতা পার্শ করিতে পারে না। ইহারা রাজনিরমের প্রতিবন্ধকতা সম্বেও গোপনে মন্ত প্রস্তুত করিয়া পান করে। ডাকাতী করিতে বাইবার পূর্বে ইহারা কালীযাভার পূলা করে, এবং দুঠনকালে দলত্ মৃতব্যক্তির বিধৰাকে বা ভাছার বালক বালিকাকে ভরণপোবণার্থ লব্ধ দ্রব্যের অংশ দিতে দেবী সমক্ষে অঙ্গীকার করিয়া থাকে।

वश्कर्यम् (क्री) वर धव कर्त्र। व्यानविद्यान्नक-वानात्र, বাছাতে প্রাণবিরোগ হয়, ভাহাকে বধকর্ম কছে। ইহার বৈদিক পর্য্যায়—দড়্যোভি, শ্রথভি, ধ্বরভি, ধ্র্বভি, রুণক্তি, রুভভি, ক্লৰ্যতি, ক্স্তুতি, শ্বসিতি, নভডে, অৰ্দন্নতি, ভুণাতি, নেহন্নতি, যাত-য়তি, ক্ষুরতি, কুলতি, নিপ্যস্তু, অবতিরতি, বিয়াত, আতিরৎ, তলিঠৎ, আথগুল, জ্লণাতি, রয়াতি, শৃণাতি, শ্মাতি, তৃণেল্হি, তাল্হি, নিতোশতে, নিবৰ্হয়তি, মিনাতি, মিনোতি, ধমতি।

(दिषनि° २।১৯)

বধকর্মাধিকারিন (গং) बस्लाम । রাজনিযুক্ত প্রাণহত্তু । वक्षकामा। (मस् १। २७८)

वशकोविन (वि) वर्षन आगिवरधन क्षीविक आगान् धात्रप्रकि कीय-निमि। याहात्रा প्यानिवध कत्रिया कीविका फार्कन करत्र, বাতুক। ইহাদের অন্ন ভোজন করিতে নাই।(যাঞ্জবন্ধা° ১।১৬৪)

বধত্র (ক্লী) বধ্যতেহনেনেতি বধ (অমি-নক্ষি-যজিবধি-পতি-ভ্যোহরন্। উণ্ ৩।১০৫) ইতি অমবন্। ১ অসা। (উজ্জল) ২ নাশ হইতে ত্রাণকারী।

বধদণ্ড (পুং) বধ এব দণ্ডঃ। বধরূপ দণ্ড, প্রাণনাশদণ্ড। (মন্থ ৮/১২৯)

বধনিৰ্কে (পুং) নরহত্যাজনিত পাপের প্রায়শ্চিত্ত। বধ্ ভূমি (স্ত্রী) বধশু ভূমি:। বগান্থান, যে স্থলে প্রাণবধ হয়। বধুস্থলী (স্ত্রী) বধুছা বা ছানং ভূমি:। প্রাণিবধুখল, চলিত মশান। পর্যায়—আঘাত, প্রবাত, বধস্থান, আঘাতন। (হারাব°)

वश्य (बि) > नानकाती प्रञ्ज। २ हेटलत बस्र।

বর্ধস্মু (ত্রি) করকারী অন্তধারী। 'প্রহারেণ প্রস্রবণনীলঃ' (সায়ণ) वश् (व्यवा) वका नसार्थ।

व्यक्षिक (ही) वंशः वक्षतस्याजः यद्य, उठः कत्। कातात्वन्न, কারাগার। (ত্রিকা°)

वश्र (बि) वशः अईजैछि अई-अन्। वश्र, इनमरवांशा। "ৰধাৰ্ছ: সুৰৰ্ণশতং দমং দাপান্ত পুৰুষ:।" (বৃহস্পতি)

विश्व 🗐) वर्ष (चनिवामिष्ठा रेटवाव्वो । 💆 ६१) १८) रेठि हेळ। अग्रथ। (छन्दन)

বৃষ্কি (জি.) প্রাণবিদ্ধোগদশক্ব্যাপারো বধঃ সমিশাভ্য-নির-পিত-নিম্পাদকতে নাত্যন্তেতি ৰুধ-ইনি। বধকর্তা, বংকারী,

रशक्षारांकक, महत्रका, महत्राष्ट्क ଓ निविष्ठक और शक्कान वर्षक পাপভাগী হইয়া থাকে। (প্রারন্ডিভবি") व्हीश्रुत विक्रगार्थर जरुंगे आंग्रेम बाम। (क्ष्मि बक्षे अंध्रः)

ব্ধু (জী) ব্ধু।

ব্ধুকা (জী) > প্তৰগ্। ২ নৰপরিশীভা পদী। ৩ সমনীমাত্র। ব্ধুটী (জী) বধ্টী। পিত্রালয়ে বাসকারিণী বিধাহিতা বা অবিবাহিতা কলা।

ব্ধু (জী) ব্যাভি ক্রেছা বছ-উ-নলোপন্চ, ব্যা-ন্বহতি সংসার-जातः **উक्**ट कर्रानिकितिकि वा वह (वटहर्म क । उम् अप्ट) ইতি 👺 ধশ্চাজ্বাদেশঃ। ১ মারী। ২ খুবা। ৩ নবোঢ়া। ৪ ভার্যা। (মেদিনী) ৫ শারিবোরধি। ৬ শটা। ৭ পূজা। (অমর) বধুকাল (পুং) বালিকার বিবাহযোগ্য কাল।

বধুগৃহপ্রবেশ (পুং) বিরাগমন। ক্ঞার বানীগৃহে আগমন-কালীন শাসীয় অস্ট্রানবিশেব।

त्रभुक्तन (प्रः) वर्षत्वर कनः । त्यावि । (जिका)

"ক্ষিতিপ্রতিষ্ঠোহলি মুখার্বিলৈ

ব্ধুজনশ্চক্রমধশ্চকার ।" (মাঘ ৩/৫২)

বধুটশয়ন (রী) বধ্টীনাং শরনমিব, প্রোদরাদিকারভাকারঃ। গ্ৰাক, জানালা।

'বাতায়নং গৰাক্ষ: ভাৎ ৰধ্টশয়নং তথা।' (ত্রিকা°) বধূটী (স্ত্রী) অয়বয়য়া বধু: অয়ার্থেটি, পক্ষে ভীষ্, यश বধু 'বয়ত চরম্ ইতি বাচ্যং' (পা ৪।১।২•) ইত্যন্ত বার্তিকোক্তা। ভীপ্। ১প্রভার্যা। ২ স্থাসিনী। (হেম) ৩ আলাবধ্। "নৃতনজ্বধরক্ষমে গোপবধৃটীছকুলচৌরায়।

তলৈ নম: কুঞায় সংসারমহীকৃহত বীজায় ॥" (ভাষাপরি)

वधुम्म (कि) वशुमर्गन । श्वावध्व म्थममर्गन ।

वधूराथ (११) वश्व कर्षवा।

বধুম্ব (ত্রি) ১ পত্রীযুক্ত। ২ লাগামগুক্ত পশুসৰ্লিত। ৩ জল-পুঞ স্থানের উপযোগী স্ত্রীপত্তযুক। সাজ দিবার উপসৃক্ত (পত)। বধুযু (ক্রি) ১ যে পত্নীকে ভালবাদে। ২ বিবাহেচ্ছু। ৩ ব্লাক।মী।

ব্ধৃবস্ত্র (क्री) বিবাহকালে ক্লার পরিধের বন্ত।

বধুসরা (আ) নদীভেদ। ভৃগুপদ্ধী প্রদোমার অঞ্জলে এই नेती উद्धुक रहेब्राहिन।

वरेशविन् (बि) श्मरमञ्जू।

वर्धानक (वि) मत्रनकाती। वशकत्र।

ব্রধান্তত (জি) বধার উছত:। বধের নিমিতু উছাক্ত, অপরকে বধ করিবার জন্ত উত্তত। পর্যায়—সময়, আততায়ী। (আমর) विद्यालाम (भूर) वश्य छलायः । वटश्य छलायः।

"रक्राकिरेजर्दर्शभारितकरवजनकरेत्रन् भः ।" (म्ह ३१२८४)

বধু (ক্লী) আতিবিশেষ। (ভারত ভীমপর্বা)
বধ্য (ত্রি) বধমর্হতীতি বধ-বং। বধার্হ, বধের উপযুক্ত।
পর্যায়—শীর্বছেন্ত। (অমর)

"গোত্রাহ্মণং বৃদ্ধমথাপি স্কৃতং বালং স্ববন্ধং ললনাং স্কৃত্তীম্, কৃতাপরাধানপি নৈব বধ্যাদাচার্য্যস্থা শুরবন্তথৈব।"

(বামনপু° ৫৫ অ°)

বধ্যন্ম (ত্রি) বধাং হস্তি হন-ক। বধা-বাতক, মিনি বধা ব্যক্তিকে হনন করেন।

বধ্যতা (ত্রী) বধ্যস্ত ভাব: তল্টাপ্। বধ্যত, বধ্যের ভাব বা ধর্ম। বধ, হনন।

বধ্যপ্ৰটহ (পুং) বধকালে যে ঢকা নিনাদিত হয়।

বধ্যপাল (পুং) বধাং বন্ধনস্থানং কারাগারং পালয়তীতি বধ্য-পাল-অণ্। কারাগৃহ-রক্ষ।

> "স্বাধনী বিক্রয়ক্ষধ্যপালঃ কেশরিবিক্রয়ী। তপ্তলোহে তু পচ্যস্তে যশ্চ ভক্তং পরিত্যব্বেৎ॥"

> > (विकूপुत्रांग २।७।>>)

বধ্যজু (জী) বধ্যজ ভূ:। ৰধ্যভূমি, বধাস্থান, যে হলে বধ হয়। বধ্যজা।

বধ্যমালা (রা) বধকালে অপরাধীর গলে যে মাল্য অর্পণ করা যার।

বধ্যশিলা (জী) যে প্রস্তরে প্রাণিহত্যা করা হয়।

वशुरहान (क्री) वश्रक शनः। वश्रहान।

वशा (जी) वश्रवांगा। वश्र

ব্ধ্র (ক্লী) বধ্যতেহনেনেতি বন্ধ (সর্বধাতুভাষ্ট্রন্। উণ্ ৪।১৫৮) ইতি ট্রন্। সীসক। (স্বমর)

বঙ্জক (পুং) দীদক।

বৃধ্রি (ত্রি) ছিন্নমুক, চলিত খানী।

বৃত্তিকা (গ্রং) খোলা বা ছিন্নমূচ গুরুষ। (পা॰ ১)২।৫২ বার্তিক৩)

বিধিম্ (তি) ছিন্নমূদশালী। যে জীলোকের স্বামী ধ্যমভদ-রোগগ্রন্থ অথবা রমণাক্ষম এরপ রমণী বরিমতী পদবাচ্য।

বিশ্রিবাচ্ (ত্রি) > স্করক। র্থা বাক্যব্যরী।

বৃধ্যুদ্ধ (পুং) ১ আক্রণ করা ঘোটক। ২ বঙ্গ্যাবের বংশপরম্পর। শেষোক্ত অর্থে ইহার প্রেরোগ বছবচনান্ত।

বন, > সংভক্তি, সেবা। ২ শক। ভাদি পরবৈ সক সেই।

गট্ বনজি। লিট্ববান। সুত্ অবানীং। বন—> বাাপৃতি।

ত হিংসা। আই অর্থে ভাদি পরবৈ । শিচ্বনরতি।

সুত্ অবীবনং। বহু বন ধাতু—প্রার্থনা। তনাদি আন্নে

বিক সেই। লিট্ববনে। সুট্বনিভা।

গুড্ অবনিট।

বন (ক্লী স্ত্রী) বনতীতি বন-জ্ঞাচ্ বা বস্তুতে সেব্যতে ইতি বন-ঘ; (পুংসি সংজ্ঞায়াং ঘঃ প্রায়েণ। পা অতা১১৮) ১ বছরুজসময়িত স্থান।

> "পরন্ত্রিরং বোহভিবদেৎ তীর্থেহরণ্যে বনেহপি বা। নদীনাং বাপি সন্তেদে স সংগ্রহণমালুরাৎ।" (মহু ৮।৩৫৬) বন-স্ত্রীষে তীপ্। পুশ্ধষা, যথা,—

"কালো মধ্: কুপিত এব চ পুল্পধন্ব। ধীরা বহস্তি রতিথেদহরা: সমীরা:। কেলীবনীয়মপি বঞ্লকুঞ্জমঞ্ছ্-

দুরপতি: কথয় কিং করণীয়মদ্য" (সাহিত্যদ°)

পর্যায়—অটবী, অরণ্য, বিপিন, গহন, কানন, দাব, দব, অটবি, ভীরুক, ঝাট, গুছিন, শত্র, সমজ, প্রান্তর, বিক্ত, কাস্তার।

গৃহে কিংবা গৃহের নিকট কিরপ বন প্রস্তুত করিতে হইবে, তৎসম্বন্ধে ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণের প্রীকৃষ্ণজন্মথণ্ডে এইরূপ উক্ত হইরাছে। যথা—আবাস স্থলের মধ্যে স্থলর তুলসী বৃক্ষ স্থাপন করা কর্ত্তবা। উহাতে হরিভক্তি, পুণা ও ধন পুত্র লাভ হইরা থাকে। এমন কি, প্রভাতে তুলসী বন সন্দর্শনে স্থাপানের ফল লাভ হয়। এতদ্বির গৃহের পূর্ব্বে ও দক্ষিণে মালতী, যৃথিকা, কুন্দ, মাধবী, কেতকী, নাগেশ্বর, মল্লিকা, কাঞ্চন, বকুল এবং অপরাজিতা এই সকল স্থলের স্থলের পুস্পর্ক্ষ ছারা বন প্রস্তুত করা নিঃসন্দেহ কল্যাণকর।

বরাহপুরাণে মথ্রান্থ ঘাদশ বনের বিবরণ উল্লিখিত হইয়াছে। ঘথা—মধুবন, তালবন, কুমুদবন, কাম্যকবন, বহলবন, ভদ্রবন, থাদিরবন, মহাবন, লোহজ ধবলবন, বিহ্বন, ভাতীরবন ও বৃদ্ধাবন।

[এই সকল পুণা বন দর্শন, বিহরণ ও তথার সান জক্ত ফলাফলের বিভূত বিবরণ মধুরা শব্দে দ্রষ্টবা।]

বনবিশেষে মৃত্যু ঘটিলে উত্তম ফল লাভ হয়। দেবীপুরাণের জরণ্যোবরপ্রশংসার বলা হইয়াছে,— দৈছব, দওকারণ্য, নৈমিষ, পুকর, কুরুজালল, উপলার্ভ, জঘুমার্গ ও হিমবাস প্রভৃতি নয়্টী বনে বা জরণ্যে যাহার প্রাণ বিয়োগ হয়, সে ব্রন্ধলোকে উপনীত হইয়া পরম পদ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

বন বর্ণন করিতে হইলে কবিগণ প্রেধানত: সর্প, বরার, গজবুধ, সিংহাদি হিংশ্রেজভ, ক্রমশ্রেণী, গুক, কাক, কণোত প্রভৃতি পক্ষী এবং ভিজ, ভল ও দাবালি প্রাভৃতি বর্ণন করিবেন।

উন্থান সম্বন্ধে বর্ণনীয় বিষয় যথা—সরণি, সর্বাক্ষণপুশার্ত্ত ভঙ্গ, গভা, পিক, মধুকর, ময়ুর ও হংসাদি পক্ষী এবং ক্রীড়াবাপী ও পাছণালা প্রাভৃতি। ্তিভাবে নরশিং বর্ষকণগুলনভাক্রমা:।

শিকালিকেকিংসান্তাঃ ক্রীড়াবাপাধ্বগছিছিঃ ।" (ক্রিক্রক্তা)

২ জল। "বনস্চে নম্চেরররে শিরঃ" (রবু ৯৭২)

জালর। ৫ চনসাথা বজপাত্র ভেল। "অধ্বর্ধবঃ কর্তনা
ক্রিমিনে বলে নিপ্তং বন উররধ্বন্।" (অক্ ২০১৪) বিনে
সভজনীরে বন উলকে নিপ্তথাপ্যারনেন শোধিতং সোমস্করধন
ক্রিং নরত। বহা বনে তহিকারে চমনে নিপ্তং ক্লাপবিত্রেণ
শোধিতং সোমং বনে চমনে উর্ব্বং। (সারণ)

প্রত্নবন। (হেমচন্দ্র) বন বন সম্ভক্তো ভ্যাদি পরত্রৈ বন্যতে সেবাতে শীতাদিবারণার, বলা বনতি হিংসার্থ: বন্ধতে হিংক্ততেহনেন ভমঃ অথবা বন্ধ যাচনে ভনাদি আআনে বন্ধতে হাচাতে বৃষ্টিপ্রদানার, কিংবা বন শব্দে ভূ পব বন্ধতে শব্যুতে অনুষ্ঠে বিভাগিতি পুংসি সংজ্ঞারাং বন-ব। ৭ রামা। (নিঘণ্টু ১০০৮) (পুং) ৮ শহ্মচার্য্যের শিব্য বিশেবের উপাধি। বে সর্যাসী আশাপাশ বিমৃত্য হইরা স্কর্ম্য নির্ম্বরের নিকট বনে বাস করেন, তাঁহাকে বন বলা যার।

শ্বরমো নির্মারে দেশে বনে বাসং করোতি যা। আশাপাশবিনির্মাকে বননামা স উচাতে ॥"

(প্রাণডোবিণী অবগৃতপ্রকরণ)

३ छवक। ३० क्रूम।

दनचार् (तनम) रृक्कुण्य।

दनकामा (समम) जातकरकम, ब्राजामा।

বন্ওকড়া (দেশক) ওকড়াভেদ।

বনকচু (পুং) কচুভেদ, বুনো কচু, ইহা মানকচু হইতে ভিন্ন জাতি। এই কচুন শাক থাওরা যাইতে পারে, কিন্ত কচু থাওরা যার না।

वन्कन्। (जी) वमिश्रमी। (देवचकि)

दनक्कुल (गूर) मधूत मूत्रन, छैउम अन। (दिष्ठकनि°)

वनकाली (बी) बानाडवा काली। कार्रकाली, ब्रानाकना।

वनकम्म (११) वनकाषः कमः। वनमूत्रण, त्रां छण।

বেতপুরণ। ধরণীকর্ম। (রাজনি॰)

वनकनीवः (११) भ्गरहत्र भ्वरक्षः।

वनकत्रिन् (ग्रः) वनश्यी।

ব্নকর্কটা (ত্রী) আরণাকর্কটা, বনকাকড়ী। (রসেপ্রসারস°)

বনককোঁট (স্ং) অরণাকর্ষটিকা, চলিত কাঁকরোল।

वनकर्निका (जी) महसीहरू। (देवस्ति-)

वनकाम (बि) बनवमरमञ्जू।

বনকাৰ্পাসী (ত্ৰী) বনোৱবা কাৰ্ণাসী। বনোৱৰ কাৰ্ণাস। পৰ্যায়—বিশান, ভাষৰাজী, বনোৱবা। (সম্মাণা) वनकूँ (१९५७) क्राइक, ब्राईट । वनकूकुट (१९) रन-काश्क, ब्राईट । वनकूकुद्ध (१९) रकिएक, ब्राईट हाकी । वनक्किनक (शे) हरकारक । और स्राक्त व्यक्तिप्रत्य २१के कित्रा क्यान शक्ति । देशा नथन, स्ट्रं अपर इपूर्व

১৭টা করিছা অকর থাকিবে। ইহার স্থান, বঠ এবং চতুর্থ অকরে বভি। এই ছব্দের ১, ২, ৬, ৬, ৮, ৯, ১০, ১২, ১৩, ১৫ ৪ ১৬ অকর বায়ু, এভত্তির বর্ণ শুল। এই হুলঃ কোহিনক নাবেও প্রসিত।

ইহার উলাহ্মণ--

ইহার লক্ষণ---

শনসক্ষেত্ৰণ মধুসভাবৰ্গেন্ত্ৰয়ং
মধুসম্বাগ্যে সঙ্গতেক্তিভিজ্পসিতম্।
অতিলগিভঞ্জিং স্বিদ্ৰা বনকোভিলকং
মন্ত্ৰ কলয়ামি ভং স্থি। স্বা ক্ৰি মন্ত্ৰভৃষ্ণ (ছলোম')

"হয়-য়তু-সাগরৈর্থিত মৃতং বলি কোকিলকং" (ছল্ফোজ্জন্মী)
বনকুগুলিন্ (পুং) বনপুরণ, বুনো ওল। (বৈভক্তনি॰)
বনকেন্দ্রাণী (ত্রী) খেতনির্গুণী, খেতনিসিলা। (বৈভক্তনি॰)
বনকোন্রেব (পুং) বনল কোন্রেবংগ্রু, বুনো কুলোধান্য (ভাবত্রুণ)
বনকোলি (ত্রী) বনোরবা কোলিং। বনজ বদরী, বুনো কুল।
পর্যায়—কর্কশিকা, ফলকর্কলা।

বনজ্ৰক (অ) > সোমপাতের ব্ৰুদোলগমন। ২ বিছিন্ন কঠি কঠিগাতে হাপিত। 'কাঠেবু পাতের বিতাকীৰ্ণ বৰা উদকানামৰ্বকং' (ৰক্ মা> ০৮।৭ সায়ণ)

বন ক্রীড়া (খ্রী) বনে জীড়া। বনকেলি, বনে বে খেলা করা বার, তাহাকে বনজীড়া কছে।

व्यक्थ (ही) वन्ति। अक्षी वम।

বনগ (वि) বনং গচ্ছতি গম-ড। বনগামী।

वनश्क (११) वरनाडवः शकः । वसहजी।

वनगव (११) वनाता, भवत ।

বনগরু (দেশক) গবর।

ব্নগ্ৰহন (ही) গভীন্ন বন।

বনগুপ্তা (পুং) খণ্ডচর।

বনগুলা (গুং) বনজাত খন।

यम्हा (जी) वनक शीः। शवः। (ज्ञाक्तिः)

বনগোচর (গাং) বনং গোচরো দেশে। বভ। ১ বাবে। বনং জলং গোচরো নিবানখনিং বভ। ২ নারারণ। (ভাগ'২।১৮০টীভার খারী)
(বি) ৩ লগচর।

"মুক্তবজা অসচোহকণজিরা লহাস চাহো বনসোচরো সুসঃ।" ্রিজার্ক্ জা১৮া২)

8 काननिकाती। (मळ ।। १०००) वन(चानी (बी) अत्रगारवानी व বনক্ষরণ (क्री) পরীরের অংশবিশেষ। সারণাচার্ব্যের মতে, "वनः উपकः क्रिवर्ण विकारण दिन" এই चार्थ क्रमकाती त्मवामि नृकात्र। वनहन्द्रम् (ही) वनकाष्ट हन्दरः। > अध्यक्षः। २ प्रवताकः। (विध) বনচন্দ্রিক) (ত্রী) বনে চল্রিকা জ্যোৎনেব। মলিকা। (রাজনিণ) বনচম্পক (পুং) বনপ্রাতশ্লাক:। वनस हल्लकशूल्लवृक्त । পর্যার-ৰনদীপ, হেমাহন, স্থকুমার। গুণ-কটু, উঞ, বাত **७ कर्म्यानक, रुक्त नीशिवर्षक, बगर्त्राभग ७ वदः उन्हरू ।** वसहत् (बि) वरन हज्रजीिक वन-हज्र-है। > क्नहांत्री, वरनहत्र। भत्रक नामक चहेननी वनकहित्सव। ব্রচর্ব্য (ত্রী) > বনচারী। ২ বনবাসী। वनहांत्रिन् (वि) वतन हत्रजीिक हत्र-शिनि । वतन विहत्रशकात्री, बत्नहत्र । বন্টাড়াল (দেশৰ) স্ব্যুচন (Hedysarum gyrans)। বন্টাদভ (দেশৰ) বৃক্তেদ (Flagellaria Indica)। व्यथत नाम बनहात । वनहां लिखा (तनम) रूक्टम । বনছাগ্ন (পুং) বনত ছাগঃ। অরণ্যছাগল। পর্যার-এড়ক, **निख्वाङ्क ।** (जिका॰) बत्न होंग हैव । २ भूकत । (भक्तांगा) ব্নজিদ (তি) বনকর্তনকারী মাত্র। (পুং) কার্চ্রিরা। वनरुष्ट्रम (श्रः) काईकर्छन। व्यक्त (ही) वरन करन कांग्रर हे कि क्न-७। > अबुक्। "দীর্ঘেষমী নির্মিতাঃ পটমগুলেযু निष्ठाः विश्वाय वनकाकः । वनायूप्तधाः । বক্রোম্বণা মলিনরস্কি পুরোগতানি ल्हानि रेनब्दिनगानकगानि वाहाः ॥" (রঘু ৫।৭৩) (बि) २ वनकाछ, वत्नाष्ठवमाज, वत्न याहा छे९शत हत्र। (পুং) ৩ মুক্তক্। (মেদিনী) ৪ গজ। (বিশ্ব) ৫ বনশ্রণ, बूरमां ७ ग । ७ जूब्यूक्क । (तास्ति ।) १ रमरी स्पृत्रक, तूरमा लात्। ৮ वनिकाक। » वनकूनच। (देवछकनि•) वनकाराष्ट्रक (भः) वनकूक्र, वूत्ना क्रक्षा । বনজমুৰ্দ্ধজা (ত্ৰী) কৰু টপুনী। চলিত কাঁকড়া পুনী। (বৈছকনি") পুত্তকান্তরে 'বনমূদ্ধলা' পাঠও দেখা যার। वनकलभाई (समब) वृक्टकर। व्यवज्ञ द्वा (जी) इत्राम्बन्ती । (दिक्वनि°) বনজা (খ্রী)বনে জারতে ইতি জন-ড ভ্রিহাং টাণ্। > মূলা-পৰী। ২ অৱশাকাশীনী। ৩ নিজ জী, চলিভ নিসিলা। ৪ খেতকন্টকারী। ৫ বনতুলসী। ৬ বনোপোদিকা, চলিভ বনপূঁই। ৭ অখগদা। ৮ গদপত্রা। ৯ মিপ্রেরা, চলিভ মউরি। ১০ ঐল্লে। (রাজনি°)

বনজার, ভারতবাদী পণ্যজীবি-জাতিবিশেষ, উত্তর-ভারত অপেকা
দক্ষিণভারতেই ইহাদের অধিক বাস। বহু প্রাচীনকাল হইতেই
এই জাতির বাণিজ্যপ্রভাব লক্ষিত হইয়া থাকে। আর্রিরান্
(Indica, xi.) এই জাতির উল্লেখ করিয়া গিরাছেন। দশকুমারচরিতেও ইহাদের পরিচর পাওয়া যায়। পাশ্চাত্য জাতিতঅবিদ্গণ বাণিজ্ব বা বাণিজ্যকার হইতে অপপ্রংশে বণিজার বা
বনজার শব্দের উৎপত্তি আকার করেন। এলিয়ট্ সাইহেব
পারদী "বীরজার" অর্থাৎ ধাত্তবাহী অর্থ হইতে এইরপ নামকরণ করনা করিয়া থাকেন। তিনি এই শক্নিদর্শন হইতে
ভারতবাদীর সহিত পারদিক জাতির প্রাচীন সংস্রবের স্চলা
মীমাংসা করিয়া যান। অধ্যাপক কাউএল উক্তমত সমীচীন
বলিয়া শ্বীকার করেন নাই; তিনি বলেন, হিন্দি বন্-আলনা ঝ
বন্ধারণা শব্দার্থ হইতেই অধিক সম্ভব "বন্জার" শব্দের বৃৎপত্তি
সিদ্ধ হইয়া থাকিবে।

এই লাভির নামোৎপত্তিপ্রসদ্দে পাশ্চাত্য পণ্ডিতর্গণ যেরপ সিন্ধান্তেই সমুপৃষ্থিত হউন না কেন, বহু প্রাচীন কাল হইতেই যে ইহারা হিন্দু-সমাজে প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছে, তাহাতে সদ্দেহ নাই। ঐতিহাসিক উক্তিই তাহা সমর্থন করিতেছে। দান্দিণাত্য-বাদী বনজারগণের মধ্যে মাথুরিয়া, লবাণ ও চারণ নামে তিনটা শ্রেণীবিভাগ আছে। ইহারা আপনাদিগকে বর্ণশ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ ও রাজপুত আতির বংশধর বলিয়া স্বীকার করিয়া থাকে। মাথুরিয়া শ্রেণী মধুরা হইতে এই অঞ্চলে আসিয়া উপনিবেশ হাপন করিয়াছে। অধিক সম্ভব, রাজপুত চারণগণ তীর্থবাত্রা উদ্দেশে এবং লবাণেরা লবণের বাণিজ্য লইয়া এদেশে আসিয়া উপন্থিত হয়। পরে তাহারা সবর্ণা ক্সার অভাবে অসবর্ণা ক্সার পাণিগ্রহণ করিয়া মূল লাতি হইতে পৃথক্ হইয়া পড়ে। ইহায়া সকলেই শিধ্যক্ষ নানককে ধর্মগ্রহ্ম বলিয়া স্বীকার করে।

মুসলমান ইতিহাস আলোচনা করিলে জানা যার যে, দিল্লীর সমাট্গণের দান্ধিণাত্য-বিজয় প্রসঙ্গের সময় হইতে সমরান্তরে রাজাবেশে রসদ লইরা বন্জারগণ দন্ধিণাভারতে আসিরা উপস্থিত হয়। এইরুপে ১৫০৪ খুটান্ধে দিল্লীখন সিকল্পর বাদশাহের চোলপুর আক্রমণ সময়ে প্রথম বনজারনিগের উপনিবেশ ঘটে। চারণগণ রাঠোরবংশীর। ইহারা ১৬৩০ খুটান্ধে মোগল-সেনাপতি আসক্লাহের অধীনে লান্ধিণাত্যে আগমন করে। এ সমরে ভাহানের স্প্রশীর ভলী ও জলী নারকেরা এখানে আসে।

বর্ণাক্তরে লিখিরা একথানি সনদ দেন। উহাতে এইরূপ লিপি আছে:—

পরস্কন কা পানি, ছাগ্গর কা ঘাস।
দিন কা তিন খুন মু'রাজ্।
আতির জহান আসফ্ জান্ কি বোড়ে
বাহন তদি এলী কা বএল্।"

ঐ ভলী বংশধরগণের নিকট অভাপি এই ছাড় পত্র ভাছে। হারণরাবাদের নিজাম তাহা দেখিরা তাহাদের খেলাত দিরাছিলেন।

ইহারা যাত্ বিভাগ বিখাস করে এবং আনেকে বিশেষ পারদর্শিতা দেখার। ভূত তাড়াইবার জন্ম ইহারা দানা মন্ত্র আরুত্তি
করিয় থাকে। জন, বাতবাাধি ও উদরামর প্রভৃতি রোগ ইহারা
ভাইনের দৃষ্টি বলিয়া নির্দেশ করে। কোন রমণীকে ভাইনী
ধরিয়াছে বলিয়া বিখাস হইলে, ইহারা ভাহাকে বন মধ্যে দইয়া
মারিয়া ফেলিডেও কুটিত হয় না।

हेहात्रा माधातगण्डः हिन्तू (नवरमवीत छेनामना कत्रित्रा थारक। वानाजी, महाकानी (मित्रवारे), जूनजारमवी, निव, मिर्ठ-जूथिवा ও সভীমুর্জি ইহাদের প্রধান উপাক্ত, এতত্তির আরও অনেকগুলি ছোট থাট ঠাকুরও ইহারা ভক্তিসহকারে পূজা করে। মহা-কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবার পূর্ব্বে ইহারা স্ব স্থ উপনিবেশের পার্বস্থ মিঠ ভূথিয়ার মন্দিরে গমন করে। দহ্যতার লিপ্ত হইবার পুর্বসন্থ্যা ভিন্ন ঐ ঘরে কেই গমন করেন না। তথার প্রথমে ইহারা দ্ব্যুপতি মিঠুর পূজা দিরা একটা সতীমূর্ত্তি আনরন করে এবং একটা ঘতের প্রদীপ আলিয়া বর্ত্তিকালোকে ভভাতভ নিরীকণ করিতে থাকে। যদি ঐ বর্ত্তিকায় শুভ লব্দণ প্রতিভাত হয়, তাহা হইলে ইহারা সদলে বহির্গত হইয়া উক্ত গৃহ সন্মুখস্থ পতাকাতলে ভূমিষ্ঠ হইরা প্রণামপূর্বক অভীষ্ট পথে যাত্রা করে। नुश्रेनकाटन देशांत्रा टकान कथा करह ना, देशांत्रत मःश्रात, स्रि क्ह ভুলিয়া পথিমধ্যে কথা কর, তাহা হইলে সে বাত্রায় ওভ হইবে না জানিরা ইহারা পুনরার মিঠু-ভূথিরার মন্দিরে প্রভাাগত হর এবং পুনরার প্রদীপালোকে শুভ লক্ষণ অবগত হইরা লুঠনে ৰহিৰ্গত হইরা থাকে। পথে হাঁচি পড়িলেও ইহারা কার্য্যে विश्व चंडिएव मत्न करत्र।

কাহারও পীড়া হইলে ইহারা বালাজীর নামে উৎসর্গীকৃত ইটাদিরা (হট্ট-আচ্চ) নামক ব্বের পূজা দিরা থাকে। এই ব্বের উপর কেছ কথন কোনরূপ বোঝা চাপার না, বরং লাল কাপড় ও কড়ির গহনা পরাইরা সজ্জিত রাখে। ইহারা অফ নানককে ধর্মজগতের একমাত্র কর্তা বলিরা জ্ঞান করে এক এক একমাত্র ক্ষাবের স্কাধারত বীকার ক্রিরা থাকে। বৃক্ত এনেশবাসী বন্ধারদিগের মধ্যে চৌহান, বহরণ, সৌড়, বালব, পণবার, রাঠোর ও তুঁবার নামক শ্রেণীবিভাগ আহে। বহরপ ও গৌড় বাতীও সকল বংশোপাধিওলিই ইবালের বালপ্ত লাভিখের পরিচারক। কিংবদত্তী এই বে, ইহারা একসমরে অবোধ্যা ও হিমালর সমিহিত নানা হানে আধিপত্তা বিভার করিরাছিল। বরেলী হইতে কজার রাজপুত্তবর্গ ইহাদিগকে ভাড়াইরা দের, ১৬০২ খুটাকে পাঠানসর্দার রহল বা বরাইচ ক্লোর নানপাড়া পরগণা হইতে এবং ১৮২১ খুটাকে চাক্লানার হকিন্ নেহেলী সিজোলী পরগণা হইতে ইহাদিগকে ভাড়াইরা দেন। খেরী কেলার আলে রাজপুত্রপ ভাহাদের মিত্র বন্তার দিপের নিকট হইতে ধররাগড় প্রাপ্ত হন। শাহরানপুর জোলার দেওবাধ নগর ইহাদের হারা প্রতিষ্ঠিত বলিয়া কিংবদন্তী আছে।

হার্লে হি জেলার গোপামৌ নগরের বনজার টোলাবাসী বন্জারেরা বলে বে, ভাহারা মুসলমান সাধু সৈরদ সালরের বংশধর, আবার মাজাকবাসী বন্জারগণের মুখে ভনা বার বে, ভাহারা রামান্তচর বানরপতি প্রতীবের বংশে উৎপর হইরাছে। এই সকল আলোচনা করিলে বেশ ব্ঝা বার বে, বন্জার জোল একটা বিশিষ্ট জাতীর সংজ্ঞানহে। সমরে সমরে বিভিন্ন জাজিবা বংশের ব্যক্তিবর্গ স্থানান্তরে প্রবাসী হইরা ইহাণের বৃত্তি আবাস্থন করার বন্জার নামে অভিহিত হইরাছে। এইরূপ দুস্যাবৃত্তি বা শস্যবাণিজ্য হেতু বন্জার শ্রেণীভূক্ত হইলেও বর্তমান জাতীয় পেবা অনুসারে মূলংকরনগরবাসী বন্জারদিগের মধ্যে এইরূপে ধানকুটা, লবাণ, নন্দবংশী, জাট, ভূথিরা গুরাল, কোটনবার, গৌড়, কোড়া ও মুজহর প্রভৃতি শ্রেণীবিভাগ হইরাছে।

পশ্চিম প্রদেশের বন্জারগণ সাধারণতঃ পাঁচটা বিভাগে বিভক্ত, তর্মধ্যে তুর্কিরা বা মুসলমান শ্রেণীতে ৩৬টা গোত্র প্রচলিত আছে, যথা—তোমর, চোহান, গহলোত, দিলবারী, আল্বী, কনোঠা, বৃড়কী, ছর্কি, শেখ, নাথমীর, অলবান, বদন, চক্তিরাহ, বহরারী, পদড়, কণিকে, ঘাড়ে, চন্দোল, তেলী, চরকা, ধলগিরা, ধানকিকা, গলী, তিতর, হিন্দিরা, রাহ, মরৌথিরা, থাখর, কড়েরা,বহলীম্, শুট, বন্ধারী, বরগলা, আলিয়া ও থিলনী। ইহারা রোত্তম খাঁর অধীন মূলতান হইতে প্রথমে মুরালাবাদ এবং তংপরে বিলাসপুর ও তংসমীপবন্ধী প্রদেশে আলিয়া বাস করিয়াতে।

বৈদ-বন্দারগণ ভাট্নের হইতে আসিরাছে। ইহাদের সন্ধারের নাম হল্হা। ঝলোই, তথার, হতার, কপাহী, দথেরি, কছনী, তারিণ, ধরপাহি, কীরি ও বহু লীম নামে ১১টা লোক ইহাদের মধ্যে প্রচলিত। লবাণ (লবণবাহী) বন্দারগণ আপনাদিগকে গৌড় আক্রণের বংশধর বলিরা পরিচিত করে এবং সমাট্ অরলজেবের সমরে রণজ্জনাত হইতে ধানিশাতো আসিরা এবাসী হয়। ইংগ্রের মধ্যেও ১১টা গোত্র প্রচলিত আছে। ইহারা সকলেই ভূমিনীবী।

সুকেরী বন্লারগণ বলে যে, মকার ভাহাদের এক নারকের ভাণা (পিবির) ছিল। তবা ক্রডে ঐ বংশ ঝাঝর নগরে লাসিরা বাদ করিলে ভাহারা সাধারণে মকাই বা মুকেরী নামে পরিচিত কর। এই কণা সমর্থনের কর ভাহারা অভাত্ত উপাখ্যানের করনা করিরাছে। সে বাহাই হউক, ভাহাদের ক্ষণত নামে হিন্দু ও মুসলমানের সংমিপ্রণ দেখিরা মনে হর বে, ভাহারা উক্ত উত্তর লাতির সংমিপ্রণ গঠিত। ভাহাদের করে নিরোক্ত বংশাঝা প্রচলিত দেখা থার, ঘণা—অববান, মোগল, মোথর, চৌহান, চৌহান, দিম্লী, চৌহান, ছোট-চৌহান, পক্ষতিকরা চৌহান, ভাম্বর, কাঠেরিরা, পাঠান, ভরীন্-পাঠান, বোড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাটিনাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাটিনাল, বলাড়ীরাল, বলাটিনাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বলাটিনাল, বলাড়ীরাল, বলাটিনাল, বলাড়ীরাল, বাড়ীরাল, বাড়

বহরপ বনজারগণ সাধারণতঃ হিন্দু। ইহারের মধ্যে মুসলনানও আছে। মুসলমান শ্রেণীর ভার বনজার হিন্দুগণ গৃহস্থাপ্রমাচারী নহে। ইহারের মধ্যে রাঠোর, চৌহান, পণবার,
ভোরর ও ভূর্তিরা মামে কর্মী বংশবিভাগ দেখা যার। ঐ সকল
বংশের মধ্যে আবার গোত্রবিভাগ নির্ণীত হইরাছে। রাঠোর
বংশের মধ্যে মুহারী, বাহকী, মুর্হাবং ও পণোত নামে চারিটী
থাক আছে, তর্মধ্যে মুহারীতে ২২টী, বাহকীতে ২৭টী, মুর্হাবতে
১৬টা এবং পণোতে ২৩টী গোত্র প্রচলিত আছে। চৌহানবিপের মধ্যে ৪২ টী গোত্র বিভ্নমান, ইহারা সৈনস্বী হইতে
এবেশে আসিয়াছে। ভূর্তিয়াগণ গৌড্রাছণের সম্বান। চিতোর
রাজধানীতে ইহারের বাস ছিল। সেথান হইতে ইহারা
দাক্ষিণাত্যবানী হইরাছে। ইহারের মধ্যে ২২টী গোত্র প্রচলিত।
পণবারণণ দিলীবানী ছিলেন। ভাহারের মধ্যে ২২টী গোত্র আচলিত।

এই বহরণ বনলারগণ অভাক্ত কাতির ভার সংগাত্রে বিবাহ দের না। নাট লাতির কভাঞ্ছণ করে বটে, বিভ আপনাবের কভা তাছাগিগকে সমর্পণ করে না। নাএক বা নারক বনলারগণ এই লাতিত্বক হইলেও সামালিকতার সাধারণ শ্রেকী অপেকা অনেক উরত। ইহাবের মধ্যে রালপুতেরই সংখ্যা অধিক। গোরুপপুর বিভাগের নাএকগণ আপনাবিগকে সনাত্য রাজণ বলিয়া পরিচিত করে এবং পিলিভিতে তাহাবের আদিবাস ছিল বলিয়া লামায়। ইহারা সম্পূর্গরণে হিন্দু। সমাজে ইহাবের বহু বিবাহ প্রচলিত আছে বটে, কিছ বিধ্বা-বিবাহ প্রচলিত নাই। বদি কোল অবিবাহিতা বালিকা অপর পুরুবের সহিত অবৈধ প্রণরে আগত হয়, ভাহা হইলে তাহার পিতাকে একটা রাতীর ভোল বিতে হয় এবং কটাকৈ সত্য-

নারারপের ক্ষা তনাইরা পরিজ করিরা লাজ্যা হয়। বিবাহের সমর ব্রের পিতার হতে ক্সার পিতার "ভিলক্ষান" বরপ কিছু টাল্লা দিবার বিধি আছে, পঞ্চারতের বিচারে সকলেই ব্যক্তিচারিনী পরীকে ত্যাস করিতে পারে। ইহাদের মধ্যে বিধবা বিবাহ নাই বলিরা ঐ রমনী আর ব্যাতি-সমাজে পরিনীতা হইতে পারে না। ক্ষা, মৃত্যু ও বিবাহ বংখার তাহারা ব্যাবিধি সম্পন্ন করিরা থাকে। শবদেহ লাহ ও অপোচাতে প্রাক্ত করিরা থাকে। সর্ক্রিরা ত্রান্ধপেরা সকল কার্য্যে ইহাদের বাজকতা করিরা থাকে।

বিবাহকালে ইহারা উপর্ব্বপরি ৪টী করিয়া সাত থাক কর্মনালার এবং তাহার মধ্যস্থলে হুটী মূরল ও একটী জলের কলস রাখিয়া দের। ইহার সমূপে মৃত্তিকালিপ্ত হালে চৌকাকাটিয়া প্রোহিত হোম করে। তদনস্তর সেই নবদম্পতী থাইট ছড়া বাঁবিয়া সেই মুবলের চারিদিকে সাক্তপাক ঘূরে। পরে তাহারা একস্থানে আসিয়া বসিলে কন্তার পিতা বরের পাপ্তা করে এবং কতা সম্পোলনের বৌতুক স্বরূপ ২টী বা ৪টী টাকা দের। ইহাই বড় ঘরের বিবাহ। নিয় শ্রেণীর মধ্যে কতাকে বরের গৃহে লইয়া 'ধরৌনা' মতে বিবাহ দেওয়াহয়। তদনস্তর ক্লভাতিভাল হইয়া থাকে।

বনজীর (পুং) বনোভবো জীর:। বনজাত জীরক, কটুজীরক, চলিত বনজীরে। ইহার পর্যার—বৃহৎপালী, স্ক্লপত্র, অরণ্য-জীর, কণ। তুণ-কটু, শীতল ও ব্রণনাশক। পাকে— কটু, ক্ষিয়, দীপন, জীব্জরহর ও ফচা।

বনজীবিন্ (পুং) কাঠুরিরা। যাহারা বন হইতে কাঠসংগ্রহ করিরা বিজের করে।

ব্ৰত্যুলী (ত্ৰী) তপুলীরভের। (Amblegina polygonoides) ২ ব্যতপুলীয় লাক।

वन्छकः (११) वर्ष्मनवृत्तः। (विश्वकृतिः)

বনতিক্তা (প্ৰং ত্ৰী) বনেৰু বনোজবেৰু মধ্যে ডিক্তা, ডিক্তা বা।
হয়ীতকী।

বনজিক্তা (বী) খেডবৃহা বা গ্রীয়া নাম গডাভেন।

বন্তি ক্রিকা (জী) বন্তিকা-কন্। টাপি অভ ইছং। ১ পাঠা, চলিত আকনাদি। [ইহার খণাদির বিবর পাঠাপতে ক্রইডা।] ২ উৎপদশাক। ইহার ঋণ – ডিকা ও শীতল এবং কটু ও ক্ষণিত্র। (চরক্ষা ২০ শঃ)

यनाव्यभूत[क] (ग्रः) > चाँत्रमात्रश्य । २ देखवात्रये । (देवच्यनि') युन्य (वि) > अगरनावात्री । २ (चांचा वा भूवक । 'वननः कावः नचचात्रः वद्यां वनदराद्यनवः ज्ञार नववदः खांचातः।'

(क्ष् शक्ष गावन)

· কুৰ্মাহান 'খনদঃ' শলে 'বনদাঃ' অৰ্থাৎ অভীষ্ট কুঁলোপহার-দানকারী ভার্থ করিয়াছেন, কিন্তু বর্তমান টীকাক্ট্রগণ 'ব্নন্' भत्म ध्वयन देख्वायुक धहेन्नने कर्य कतिया शास्त्र । 🛣 यम् (पूर) यमः क्याः ममाजीकि मा-क। । (खि) ২ বনদান্ত-মাত্র। वनमञ्जन (११) वनकारण नयनः। अत्रशाममनक वृक्तः। (त्रावनिः) **চ**निष्ठ बनम्ना । বনদারক (পুং) জাভিবিদের। বনদাহ (পুং) দাবদহন। অগ্নিযোগে বনপ্ৰজ্ঞলন। वस्त्रीर्भ (प्ः) वनक मील हेव । वनहण्लक । বনদীয়ভট্ট (পুং) একজন প্রসিদ্ধ টীকাকার। বনতুৰ্গা (জী) > ভঞ্জেক দেবীমূৰ্ত্ত। পূৰ্ববন্ধে বনছ্ৰ্গাপুৰা বিশেষ সমারোহের সহিত হইয়া থাকে। এই পূজা প্রায়ই কোন প্রসিদ্ধ বিটপিবেষ্টিত খোলা বা উন্মৃক্ত চন্ধরে সমাহিত হয়। মানসিক করিয়াও অনেকে এই পূজা দেন। ২ তন্নামক তন্ধভেদ। ৩ উপনিষদ্ভেদ। বনদেবতা (জী) বনের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। (উত্তরচরিত ২) বনজ্র (পুং) চারবৃক্ষ। (রাজনি°) চলিত পিয়াল গাছ। वनास्वय (११) > अर्ब्ड्नरूक । २ कांश्री एक । (रेक्क मि) বনন্ত্রপ (পুং)বনহন্তী। বনধারা (জী) রক্ষশ্রেণীর মধ্যবর্ত্তী পথ। বনধিতি (ন্ত্রী) > ছেত্তব্য বৃক্ষসমূহে নিধাতব্য (কুঠারাদি ষ্ণন্ত্র)। ২ মেখমালা। "বিমা যবনধিতিরপতাৎস্বো অধ্বরে পরিরোধনা গো:" (শ্লক্ ১١১২১। ৭) 'বনধিতিবনৈ ছেওবো বৃক্ষসমূহে নিধাতব্যা, * * * বছা বনমুদক্ষমতাং ধীরত ইতি বনধিতি-ৰেখমালা।' (সারণ) বনধেকু (পুং) অরণ্যজাত গো। গবর, চলিত বুনো গরু। वनन (क्री) > धन । २ हेव्हा, वाजना । जित्रार गेंग्र् ু বনন মিশ্র, তর্কসংগ্রহটিয়ণপ্রণেত।। বননিতা (পুং) রৌদ্রাধের পুত্রভেদ। यनमीय (बि) वास्नीय। ব্ৰশ্বৰ্থ (ব্ৰি) উদক্বিশিষ্ট। "পাধ্য স্থানকং স্বধিতিৰ্বনৰতি।" (ঋক্ ১০১২)১৫) 'বনবতি উদকৰতি' (সারণ) ्र मक्किया धन। (अक् १४४) वंगमं (पूर) अवगरानी। - २ कार्त्रविश । ७ वमतक्कर । यमश्रमण (ग्रः) वन इ गर्ग। বনপৰ্ব্বৰু (ही) বহাভারতের ভূতীর কংশ। এই কংশে বৃধিচিরাবি **াক্ষা ক্রের ক্ষান্যক্**বনে অবস্থিতি বিবরণ বিবৃত আছে। ৰনপলাপু (গুং) বনলাভ পলাপু (Urginea Indica, syn.

Scille Indica.) indian squill. प्राणिताच । दिन्ती-কংলা শিরাজ। তেলক—নকবৃদ্ধিগতঃ। বোধে—স্নানকান্দা। यमश्राद (११) क्मिन निविष: श्रादन वक्र । (भाषांक्र क्र চলিত সন্ধিনাগাছ। यमभीरक्षा (भूर) यस भारकाः भाभिकः। गाव। (भूक्षक्राः) यम्भाष्ट्र (११) यमवर्षः। বনপাৰ্ছ (পৃং) বনের পার্যন্থিত খান। বনসমীপ। वनशाम (भूर) बनवक्र । वनिश्रमी (बी) वरमाख्वा निम्ननी। চनिত वर्गानेपून, एकार्ड শিপুল। ময়াঠী — রাণণিপুল, क्मांकी--काहिनिश्रमी। নংকত পর্যায়-ক্লপিয়লী, ক্লেপিয়লী, বনক্ণা। ইহার ৩০-কটু, উক, ভীক্ষ ও মতা। এই বনপিপুল কাঁচা অবস্থায় খণযুক্ত, ওছ হইলে খণ কমিরা যার। "আমা ভবেদ্ধণাঢ়াৰ ওকাঃ শ্বর্মণাঃ শ্বভাঃ" (রাজনিং) বনপীত (পুং) ভূমিলাত ওগ্ ওলু। ১ কণওগ্ ওলু। वनश्रुष्भा (जी) बनिषव निविष्य श्रूष्मा वजाः, होन् । पण्यूष्माः, শতাহবা। (রাজনিণ) वनभूष्भागग्न (वि) वनभूष्ममञ्जर । यमभूरष्मादम्य (११) बाबहुकः। (रेवछक्तिः) বনপুতিকা (জী) আরণাপুডিকা, চলিত বনপুঁই চার খণ--কটু, ভিক্ত, উষ্ণ ও রুচ্য। বনপুরক (পং) বনজাতঃ পুরবঃ বীজপুরক:। পুরক। (রাজনি°) পাঠান্তম —'বনপুর'। বনপূৰ্বৰ (পুং) প্ৰাচীন গ্ৰামভেদ। वनश्चिक (वि) जगाती। वनकका [वनश्चक (१९।] বনপ্রবেশ (পুং) বনগদন। কোন দেবমূর্ত্তি গঠনাভিলাবে बनम वृक्ष (पक्षि) एइपनार्थ मपनवरन वनमर्था यार्जायमब्दिलव । বনপ্রস্থ (मी) > মধিতাকাহিত বন। ২ স্থানবিশের। ৩ বান্প্রস্থ। व्यथन्त्रंत्रिय् (वि) वनगमनकात्री। বনপ্রিয় (রী) বনেবু বনজাতের মধ্যে প্রিরং। > বকু। (রাজনি॰) (१९) २ (काकिंग । "অন্নি বনপ্ৰিন্ন বিশ্বত এব কিং বলিভূজো বিষদো ভবভাগুনা। यमनदेवच क्रुबिजि विश्वता, নপততক্ষাপৌ ধরপৌ তব 🗗 (উইট)

বাণভূজো বিবনো তবভাবুনা।
বদনবৈৰ কুছুন্নিতি বিভয়া,
নপততভ্ননেশী ধরণোঁ তব র" (উডট)
ও বিভীতক বৃক্ষ। ৪ পঠি।, চনিত পটি। ৫ প্ৰৱন্ধী ।
বনকল (জী) বনজ বৃক্ষ কগভেষ। ইয়া বাবিতে নিষ্ট।
বনকুল (জী) পুশাবুক্তের । ইয়ার নালা গাঁজিলে জ্নার
দেখার। জীকুক্ষ বনসূলের নালা গাঁজির। "বনবালী" কুইন্নিত্নেন।

বনবর্ষটো (বেশন) বর্ষটাভেছ।
বনবর্ষার (পুং) কুফার্জক, কুফগরে কুল কুলগাঁ। (রাজনি')
বনবর্ষারিকা (বী) বনলাত জর্জক লাডীর পরশাক, চলিত
বনবাব্ট তুলগাঁ। নরাঠা—আজবলা নেছ। কণাড়া—তুগছি
জলরা। ইহার ঋণ—তুগছ, উফ, কটু, বনিম, পিশাচ ও
তুতর এবং রাণ-সরুপণ। (রাজনি')

বনবরাছ (দেশক) শৃকরকাতিবিশেষ (The wild Hog)।
ইহাদের ওঠের পার্থদেশ দিরা গক্ষকসদৃশ দক্ত বাহির হয়।

ঐ বস্ত বারা ভাহারা ফোথের সমর শক্রকে আঘাত করিরা
ভাহার বেহ ক্তবিক্ত করিরা দের। আর্থাশাত্রে এই মাংস
প্রিত্ত বিলিয়া গৃহীত হইরাছে। সেই কারণে অনেকে ইহার
মাংস ধাইতে ব্যবহা দিরা থাকেন। [বরাহ দেখ।]

বনবহিণ (পুং) বছ মযুদ্ধ।

वनवाञ्चक (११) काजिविध्यव ।

্রন্বিড়ালু (পুং) বিদ্বাস লাতিভেদ, (Felis caracal) ইংরাজিতে

Tigarcat বলে। ইছারা ব্যাস লাতীর এবং দেখিতে অনেকটা

ক্রিব্র মত; সাধারণতঃ বাধ বলিয়া শ্রম হর। ইছারা মেবশাবক, হাঁস প্রভৃতি মারিরা খার। কিন্তু মান্তব দেখিলে ভরে
সরিরা বার। [বিড়াল শকে বিস্তৃত বিবরণ দেখ।]

বনবীক্ষ: (পুং) বনত ব্ৰোপ্তবো দা বীজো বীজপুরক: । বনবীজ-পুরক, বনমাতুলদ । (সাজনি)

रुनरीक्षक (श्रः) वनवीक-चार्च कम्। वनवीकगृतक। (ताकनि)
यनवीक्षशृतक (श्रः) वरमाक्षता वीकशृतः। जातनाकाठ
वीकशृतः। भर्गाय-वनक, वनवीकक, वनवीक, ज्ञाञ्चा, श्वाञ्चा,
वरमाववा, स्ववृत्ती, भीक्षा, स्वव्यानी, स्वर्वो, माजूनिकना, भन्नी,
महाकना। देशत ज्ञान-ज्ञा, कर्ष्ट्र, ज्ञेक, क्रिक्षिक, अवर वाक,
जामस्ताव, इमि, क्ष्व क्ष वामनानक। (ताकि)

বনভান্তিকা (জী) বনে জজা ৰজাঃ ডডৱালি খত ইবং। জ্ঞাবনা। বনভুজ (পং) ৰনং ভূঙ্ভে ইভি বন-ভূজ-কিল্। গবভোষধ। বনভূ (জী) বনমৰ শাৰ।

वनकृष्या (जी) काविना । (देवक्रवनि)

বনভোজন (বেশক) পাঁচ জন বন্ধ মিলিরা কোন বনে বা কোন বাগান বাড়ীতে নিজেরা রাঁধিরা বাড়িরা আমোদ-উৎসবের সহিত বে থাওরা লাওরা করে, তাহার নাম বন-ভোজন। পরস্পর চালা বিরা থাত ত্রব্যাধি কিনিরা আনিরা কোন বাড়াতে রাছিয়া খাওরার নামও বনভোজন। ইহা বেশা-ভরের বাখা। ইংরাজীতে ইহাকে Pio-aic বলে। আমাদের সেপেও বনভোজন পাস্তসমুক্ত বলিরা প্রচলিত। বনভোজন— পুণাহ-বচন-প্রবোগ এবং বনভোজন-বিধি প্রহুণ পঠি করিন্তে উহার বিশেষক জানিতে পারা বার। ফলিফাডার নিকট আজ্প কাল ওলাবিবির পূজা দিয়া এই পুত্রে বনভোজন প্রচলিত হই-রাছে। তথার ভোজনাদি সমাপনের পর সারংকালে গৃহপ্রভাগত ব্যক্তি গৃহক্তীকে আসিয়া জিজাসা করেন, "বরে কেন আলো" পূ গৃহাভ্যন্তর হইতে গৃহিনী উত্তর দেন "গিরি গেছেন বনভোজনে ছেলেশিলে আছে ভালো।" গৃহক্ত্পণ পুত্রগণের মলন কামনায় ওলাউঠা দেবীর পূজা লইয়া বান এবং দেবীয়্বানের সমীপত্ব বনার্ভ স্থানে বীর ব্যয়ে বনভোজন করিয়া আসেন।

व्याप्रहेल्। (तम्ब) वृक्तरस्म।

বনমঞ্জরী (জী) বননিশু জী। (বৈছক্নি°)

বনম িকা (ত্রী) বনভ মক্ষিকা। দংশ। চলিত ডাঁশ।

वनम्बिष्ठ (१९४८) दक्कवित्मव ।

বনমল্লিকা (স্ত্রী) ১ খনামখ্যাত শতা, চলিত দেওতি। ২ দেওতি স্থলের গাছ।

বনমূলী (ত্রী) বনোডবা মন্ত্রী, বনজাত মলিকা। (শশর্পা[°]) বনমাকুষ (দেশজ) > বনজাত মাহধ। ২ বনবাসী।

० चनामधानिक खळाभावी ठजूञ्म कीववित्मव, जातकाश्त গরিলাবাপুছেহীন জাতীয় বা স্বয়পুছে বানরের মড়; কিন্তু बानत्त्रत्र छात्र भूष्ट्रिक् वा शक्ष्यनी नाहे। ग्रुत्ताशीम आणि-তত্ববিদগণ বিশেষভাবে ইহাদের হক্ত পদ, বক্ষ প্রভৃতি অন্থি এবং দস্তাদি পর্যাবেক্ষণ করিয়া মহুষ্যজাতির সঙ্গে ঐ সকলের ৰথায়থ সানুখ্য নিরূপণ করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছেন বে, এই জাতীর পশুগুলি চতুম্পদ বানর ও মানবের মধ্যস্থলে আসন শাভ করিতে পারে। মহুদ্যের সহিত পার্থক্যের মধ্যে ইহাদের প্ৰাষ্ঠ ও প্ৰাগ্ৰভাগ লৰা ও কোমল বলিয়া নিৰ্দেশ করা ষাইতে পারে। পদাঙ্গুলিগুলি পরম্পর পৃথক্। আরও ইহানের ক্লালের সহিত নরক্লালের তুলনা করিলে দেখা যার যে, মন্তুয়াপেকা ইহারের হস্ত ও পদের অকুলি বুহৎ, জাতু হটতে পাদস্ত্রি এবং লাফু হটতে অস্থাস্ত্রি থর্কাকার, মণিবত্ত হুইতে ক্যুই প্রান্ত বিভূত প্রস্তান্থিকী নিয়দিকে অধিক বিছুত, ক্টির অভি সরু অথচ লখা; করোটা চেপ্টা ও মুখের पिट्य विष्य । पर = कर्फन 🛊 ; (भोवन (Canine) 🛊 ; विभूनी 🛔 ; চর্মাণ 👙 🗕 যোট ৩২টী। মোট স্থার, নেহোর্ছভাগের গঠন ধরিয়া বলিভে গেলে শিশ্পানীর সহিত মানৰ কন্ধানের অধিক সামুক্ত আছে একং উত্তসালের কীলকার্ডাত করোটা পাৰ্বাহি (Sphenoid with the parietal bones), বাদল नववासि, क्यादित निकृषि (Boapula in its greater broadth) ও অধোষেকের অস্থিগঠন লক্ষ্য করিলে ওরজ-উটন্ডেই মানবের অভি নিকট বাদ্যাসম্পদ্ম বলিতে ধইবে। এইরপ

অভিনংছান লক্ষ্য করির। বৈজ্ঞানিকগণ ইছানিগকে ওরজ, শিম্পালী ও গিবোঁ নামে তিনটা স্বতন্ত্র থাকে বিভক্ত করিরাছেন। এই ওরল ও শিম্পালীই আমানের কেলে বনমান্ত্র নামে পরিচিত।

মলর ছীপের ভাষার 'ওরঙ্গ-উটান' শব্দে বুনোমান্ত্রৰ ব্রার । এইজন্ত তথাকার অধিবাসিবর্গ এবং বর্ণিও ,ও স্থমা নাছীপবাসি-গণ ছিপদচারী এবং শাখা-মূগের ভার হত্তপদ-ব্যবহারকারী মস্থ্যাকার এই বন্ত পশুকে ওরজ-উটান শব্দেই উল্লেখ করিব। থাকেন। পরে ইংরাজ-ভ্রমঞ্জারীদিগের অন্থগ্রহে এই ভারতীর ছীপপুঞ্জাত জীব দেশীর ভাষার orang-outang শব্দে পরি-গৃহীত হইরাছে। প্রাণিতত্ববিদ্ লিনিয়াল ইহারিগকে Simia শ্রেণীভূক্ত করিরাছেন। বৈজ্ঞানিকের ভাষার ইহারা Pithecus জাতিগত Chimpanzeeর একটা শাখা মাত্র।

বৈজ্ঞানিকগণ বানরপ্রেণীর জীবসককে (Simiadæ) আরুতিপ্রভেদে, অথবা জাতিগত পার্থক্য অন্থসারে বেরুপ বিশিষ্ট থাকে
বিভক্ত করিয়াছেন, নিমে ভাষার একটা সংক্ষিপ্ত ভালিকা প্রায়ত্ত ইইল। ঐ ভালিকা ইইভে বানরের সহিতে ইহাদের ক্তদ্র পার্থক্য, তাহা সহজেই উপলব্ধি হইবে।

বানরজাতি (Simiadæ)

Simine Hybolatine Colobine Papionine উল্ক (Gebbon) (হন্মান্) (নীলবানর)

শিপালী (ভাফ্রিকা) গরিলা (আফ্রিকা) বনমান্ত্র (Troglodytes nigar) (Tr. gorilla) (Simia satyrus)

এই বানর জাতির মধ্যে S. Satyrus শ্রেণীর বনমান্ত্র নামক পশুগুলি দেখিতে ঈবৎ লালবর্ণ। ইহাদের মৃথাগ্র
(muzzle) বিস্থাত ও হচাগ্র এবং মৃলদেলে কিছু গোল, কপাল
পশ্চাদিকে চেপ্টা, উর্দ্ধ অক্সিপুটান্থি (Supraciliary ridges)
হ্রম, কিন্তু করোটার উভর পার্বাহি-মধ্যন্থ অগ্রপশ্চান্ম্বী বালসেবনীসন্ধি (Sagittal and lamboidal crests) অপেক্ষারুত
ল্ল। মৃথকোণ ৩০°; হলকোৰ কুল, উভর পার্বে বালশটা
পঞ্জরাহি। বুকান্থি গুই ভাগে বিভক্ত (Sternum in double
alternate row), হত্তবর শুল্কগ্রছিবিলবী, পা লবা ও সক্র,
অনেক সমর নথ থাকে না; হিতীরবার দক্ষোল্যমের সময়
হত্ত ভাহার আভ্যন্তরিক ক্ষি সংবত হইরা বার। ইহারা
প্রার ৎ ক্টের উচ্চ হর না। প্রবাজা ও বর্ণিও বীপে ইহাবের
বাল আছে।

জীবভন্দিশূপ বলেন, জীবলাভিন্ন পশু শ্ৰেণীৰ সংখ্য গরিলা

নামক পণ্ড প্রথম থান অধিকারে সমর্থ। বিশ্বাকী ঠিক ভাইনির নিরাসনে অধিকীত এবং ওরজ-উটান তৃতীর স্থানের অধিকারী। ভারপ প্রাকৃতিক জ্ঞানেও ইহাদের মধ্যে ওরজ্যপ পার্থকা নৃষ্ট হর। আশ্বর্ধের বিষর, ঐ তিন শ্রেমীর মধ্যে ওরজ্যপ সর্বা-শেকা দীর্ঘাকার এবং সর্বতোভাবে মহুব্যের আন্কৃতিবিশিষ্ট। ইহাদের বন্দ, বাহু ও হত্তের গঠন মাহুবের ভার তৃল্যপরিমাণ-বিশিষ্ট। বাহুবেরও যেমন পরশারে আক্রতির ভেদাভেদ দৃষ্ট হর, ইহাদের মধ্যেও সেইরাপ মুখাকৃতির ইতর বিশেব আছে। ওরজের মধ্যে বাহারা বেনী বৃদ্ধিমান, ভাহারা অমারাসেই মুধের ভাবে ও হাবভাবে বিশেব বিচলপতার সহিত ক্যরমিহিত ভাবভাবে ও হাবভাবে বিশেব বিচলপতার সহিত ক্যরমিহিত ভাবভাবি প্রকটন করিতে সমর্থ এবং কোন কোন বন্ধান্ত বছাবা ভাতির বভাবলাত হবজোধাদি বিভিন্ন মানসিক বৃদ্ধিও প্রকাশ



७ तक छे।न् ।

ইহারা ভারতীর ধীপপুঞ্জের বিভিন্ন ধীপের বনমালা-পরিষ্যাঞ্চ সমতল প্রাক্তরে বিচরপ করিরা বেড়ার। তথার ইয়ারা মধ্যমা-কার বুক্লের ৪০ কিট্ উচ্চ চূড়া জথবা মৃত্তিকা হইছে ৪৫ ফিট্ উচ্চে তেকাক্ডা ভালের উপর পাছের পাড়াঞ্জ ভালা ভাল লইরা এক থানি কুড়ে বর প্রান্তত করে। বর্গনির ব্যাস
ই কিট্। ইহারা গাছের ভালগুলি চেটাই বুনার ভার এড়ো
ও গ্লাভাবে সাজার। বন মধ্যে রাত্রি বাপন করিতে হইলে
মান্তবকে কুঠার বা ছুরীর অভাবে বৃক্ষণাথা দিরা বেরূপ "হুৎরি"
প্রেক্ত করিরা কুথে শরন করিতে হর, ইহারাও ঠিক তদত্রপ
ঘরের পাটাতন করে। তৎপরে তাহার উপর গাছের কচি ও
কোমল পাতা বিহাইরা সেই কোমল শর্যার ইহারা চিৎ হইরা
গুইরা থাকে। নিজাকালে ইহারা হাত বা পা বাড়াইয়া নিক্টর্
আপেকার্গত দৃঢ় লাখা ধরিরা কুথে নিজা বার। যতদিন পর্যান্ত
আই পরগুলি গুকাইরা ছির ভিন্ন না হর, ততদিন তাহারা
বিহ্নেক তহুপরে গুইরা থাকে; কারণ বৃক্ষণাথাগুলি পরবিষ্ট্যত
হইলে সহজেই অকুথদারক হইরা থাকে।

বোৰ্ণিও-ৰীপবাসী ওয়লগণ অত্যন্ত বিবাদপটু। বনমধ্যে ধল ফুল খাইতে বাইলা কোন সামাগু কারণে বিবাদ উপস্থিত হইলে ভাহারা আপনাপন শৌবন দস্ত হারা পরস্পরে কামড়াকামড়ি করিছা কত বিক্ত হয়। ঐ শৌবন-দন্ত তাহাদের আত্মরক্ষার অক্রশ্বরূপ। বিরোধের সময় ভাহারা শত্রুর হাত বা মাথা টানিরা লইরা হাতের অঙ্গুলিগুলি অথবা ওঠবন কামড়াইরা লয়। যদি কথন কোন মহুব্য বা হন্তী ঘটনাক্রেমে তাহাদের বাসার সন্মুখে আসিয়া পড়ে, তাহা হইলে ভাহারা ভাহাদের তাড়াইয়া দিবার কম্ম বৃক্ষের শাখা ও প্রস্তরখণ্ড লইরা তাহাদের উপর সবেগে নিক্ষেপ করিছে থাকে। হস্তিগণ শীছে গাছ ভালিয়া তাহাদের বালা নষ্ট করিয়া দেব, এই ভরে তাহারা হতী দেখিলেই ভাড়াইতে অগ্রসর হয়। সময় সময় ভাহারা बनमधानामा व्यनहास अधिकपिनाटक व्यनवा निःश्विताटक छेशद्रां छ রূপ শত্রে পরিবৃত হটরা আক্রমণ করে। কুভিরার ও কাণ্ডেন পাইনের বর্ণনা আনা বার বে, এক সময়ে ভাহারা নিগ্রো বালিকাদিগকে হরণ করিয়া বন মধ্যে সুকাইরা রাথিরাছিল।

পিশ্বরাবদ্ধ শিশ্যানীর অন্ত্রন্থরিয়তা ও সুবৃদ্ধির পরিচর
পাইবা ডাঃ ট্রেল স্থলেন বে, ডাহাদের স্বভাব বড়ই বিষয়প্রদ।
ডাহা পর্যাবেক্ষণ করিয়া নিজ্ঞাই প্তন গল সকলন করা যাইতে
পারে। ডাহারা সহকেই বশীকুছ হর, এমন কি, যাহারা
ডাহাকে ভালবানে, ডাহার পার্বে বনিরা ভোজন করে, বে বাজিনিরম্বর ডাহাদের আলাভন করে, চাহাকে দেখিলেই বিরক্তিভাব প্রভাশ করিয়া সান্ধি জাপন করিয়া বাকে। ভাহাদের গারচর্ব লোমবৃহল হার্কেড, ডাহারা ক্রিক্রেবান হাবে বান করিতে
ভালবানে না। ক্রিপ্রথান ক্রোপথকে জাহারা ক্ষুণ্ণ কড়া-

ইরা সুথে পড়িয়া থাকে। রাগিরা উট্রেন তাহারা উল্লেখনর চিৎকার করে এবং স্থমিষ্ট থাবার পাইলে তাহারা "হান, হান" শব্দ হারা আনন্দ প্রকাশ করিরা থাকে।



শিশালী।

শরাবক হইতে সর জেমন ক্রক্ কলিকাতাত্ব বেলল এসিয়াটিক সোনাইটার বাছবরে ৭টা ধীর্ঘাকার বনমাছবের কডাল পাঠাইরা দেন। মিঃ ব্লাইল উচ্চাদের পার্থকা লক্ষ্য করিরা টেটা বিভিন্ন থাক নির্দেশ করিরাছেন,—> Pithecus Brookei বা মিরাস্ রিছ; ২ P. Sutyrus বা মিরাস্ পাঞ্চান্; ৩ P. Curtus বা মিরাস্ ছাপিন্; ৪ P. প্রস্কাত বা মিরাস্ কসর এবং P. Owenii, ই সকল বিভিন্ন থাকের বনমাছর ছারতীর বীপপুলের বিভিন্ন অংশে বাস করে। স্থাকার উভরাংশে P. morio এবং দক্ষিণাংশে P. Owenii জাভির বাস দেখা বার। জীবভদ্ববিদ্ আর্ভর ঐ শ্বীপে Simia Sutyrus ও ৪, morio নামের ছই আর্ভীর সন্সাছবের উল্লেখ করিরাছেন। গিকুন আফ্রকার গিরুন মুনীতীরক্রেশেবাসী, T. gorilla ও T. niger থাকের শিক্ষারী ও গরিলা জাভির বিশ্বত বিবরণ ছানাছরে ক্রেরা। [বাসর বেশ।

दनमाल (बि) क्रिकाना। (शर) २ इक वा विकृत ७ आग्र ्रक्साछित्वत्र क्षत्रनखरानीत्र अकवन त्रावा । [व्याग्रह्माछिव तम् ।] **'क्यमानारमय,' निर्नानिनि वर्निङ अक्यन बाक्न**। ব্নমালা (জী) বনোত্তবা পূপা-রচিডা মালা, মধ্যপদলোপী। শ্ৰীক্লকের দালা, বে মালা স্কল ঋড়ুর সকল রকম কুসুম সমূহে সুশোভিত, আরু পর্যান্ত লখিত এবং মধ্যত্বল ছুলাকার কদবযুক্ত, काराबर नाम बन्याला । 'व्याबायुनविनी माना नर्सर्कु कृष्ट्रसाब्बना ।

मत्थाः चूनकन्यात्। वनमात्निक कीर्षिका ॥' (भसमाना) ২ বনপুষ্পরচিত সাধারণ মালা। "প্ৰপিতমৌলিৱসৌ ৰনমালৱা ভরুপলাশসবর্ণতমূচ্ছন:।" (র্ছু ৯।৫১) 🗢 इत्सारकमः। हेरांत्र व्यक्ति इत्रत्य ১৮টी व्यक्ततः। जनात्था ১, २, ७, ८, ९, ७, ४, ১১, ১৪, ७ ১৭ वर्ग मण् अवर **उद्धित** वर्ग अका हेहात ३, ३, ७, ६, ६, १, ৯, ३०, ३०, ३०, ७० ७ वर्ग

नपू अवर ७, ४, ३२, ३८ ७ ३६ अङ । िवनभानाधर (वि) > जीक्य । २ ছम्मास्थम । বন্ম ক্লিক। (ত্রী) ২ আক্ষোতা। চলিত হাণরমালী। ২ বনমলিকা, চলিত সেউডি। ় ৩ বারাহীকদা। (রাজনি°)

বনমালিদাস, বনমাশা নামক গ্রন্থ প্রণেতা।

বনমালিন্ (পুং) বনমালা অন্ত্যক্তেতি ইনি। ১ শ্রীকৃষণ। (অমর) ২ নারায়ৰ ৷ (প্রহায়বিজয় ৩ অন্ধ)

বনমালিন, > অবৈতসিভিগ্তনপ্রণেতা। ২ চওমারুত ও মাক্তর্থগুনরচরিতা। ৩ দ্রব্যশোধন-বিধানপ্রণেতা। ৪ প্রায়-শ্ভিন্তসার-কৌমুদী-রচরিতা। ৫ ভক্তিরক্লাকর-প্রণেতা। ৬ ভগবদ্-গীতার এক টীকাকার। ৭ মুক্তাবলী নামক বেদান্ত গ্রন্থ-রচরিতাঃ ৮ বেদারদীপ ও ক্টুটচন্দার্কী নামক জ্যোতিঃশার-প্রশেষ্ঠা। ১ একজন প্রাচীন কৰি।

বনমালিভট্ট, একজন গীতগোবিশ্ব-টাকাকার। यम्मालिनी (बी) > वातकाश्ती। (बिका°) २ वाताही। (बाबनि°) यममालि-मिल्न, देवदाक्वरम्पर्ग-मरणायन्त्रिनी ও निर्धास्त्रपर-

ইনি কো**ও ভট্টের হাত্**। विद्यक नामक श्रह-त्रहतिका। ২ সারবর্গী নামক জ্যোতির্য হপ্রণেতা।

वनमाली मिल्न, बन्नाननीत १७न ७ वनमानिवितीत नामक বেদান্ত-রচরিতা।

वनमानीना (जी) वारा।

वनमूठ्य (गर) बनर बनर मुक्कीं म्रिट्-किन्। > स्मर (अवस्त्राः) (बि) २ जनवर्षनकात्रिमांव । (त्रष्ट्र अ२२)

यमभूर्ग (तामक) क्रमान्यक्तं । [वनस्तरं ताम]

यसमूला (पर) यत्नाख्या मुकाः। नक्केन, क्रीक वनम्म। (ब्राक्मि") भर्गात नवक, निशृतक, क्नीनक, क्की। (दश्य) [हेरात जान नर्गात ७ ७० मुक्टे ७ मक्टे नरम बहेरा ।] नर्गा---"বনসুদ্ধ-ক্লায়-মকুষ্ট-মন্ত্রমর্দলাচপক-সজীন-জিপুটক্তরেবাড়কী প্রান্থভারো বৈদলা:।" (স্থঞ্জ ১**।৪৬) ব্রিরাং টাপ**ু। (প্রী) ২ মুদ্যপণী, চলিত মুগানী। (রান্সনি°)

বন্মুক্ত (পুং) बनः जनाः मूजः वद्गः यन, बनः মুঞ্জীতি বা। মের। অমরটাক্রিভরত জীম্ত শক্রের ব্যরপ ব্যুৎপত্তি করিরা-ट्रिंग, उपस्पादि और वनप्छ नत्यत्र वृष्णिक निर्मिट स्रेग।

বন্মুজ্ঞা (জী) বনত মৃদ্ধি জারতে ইতি জন্ত। ১ বনবীজ-भूतक । २ क्केंग्रेज़ी, हनिष्ठ कॅक्फ्रा मृजी । (तासनि°)

वन्यून (दिन्स) श्रमाप्तर ।

व्ययूल्यल (ही) व्यवाध कम ७ मन। বনমুগ (পুং) ছবিণবিশেষ। वन्त्रशी (रामन) इक्टल । (Trifolium Indicum)

वन्द्रिश्का (जी) भारतग्रमिका, हनिष्ठ वनस्मिष्ठ । वन्याहा (जी) वटनांडवा त्याहा, कांडे क्यली। हिल्ड वन-कपनी शाष्ट्र। (त्राक्रि)

वनयमानी (जी) चनामधाष्ठ इच मूल। (Lingusticum diffusum) हनिङ वनयमान । **উৎकरी** नाम-विनवमानी। বন্য়িত (बि) হার্রিতা।

वनयुक्ते (तनम) प्थिकारङम ।

यन द्या निन (तनन) यमनी दन।

বনর (পুং) বানর-পূবোদরালিছাৎ আঞ্চার ব্রখ্য: । বানর। वस्त्रक्रक (वि) य यस, छनवस या छणास प्रका करत ।

वनत्रञ्ज (जी) कार्रकारी।

ব্নব্রসি, দাক্ষিণাত্যের মহিন্দর রাজ্যের কোলার জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডপ্রাম। অক্ষা॰ ১০°১৪´ ৩০´´ উ: এবং জাবি॰ १৮°>३ ७७ पूर । এथानে अफि वरनत देवनाथ मारन हेतानक्ष **प्राप्त ७९मटन > पिम ऋषि अक्की स्मना हत्र। धै स्मना**ग्र আহুমানিক এক লক গৰানি পণ্ড বিক্ৰীত হইয়া থাকে।

व्यवस्थ्य (एनम्म) मखनाज्य । वनद्राष्ट्र (प्रमुख) गर्वभएक्य । 💛 🗥 🦠

व्याद्राक्ष (गूर) वमक वटन या बाबा, देखि वसबाबन्-पेट् (बाबा-हान्यिकाहेरु । भा ४।६।৯>) > निरंह । २ वर्णम अधिभक्ति, বনের মালিক। ও অব্যক্তক কুক্; চলিত আবুটা ে মরাজী--· व्यारन्त्रेत्र 🖯 (।देवक्रक्ति* 🕽 🦠 🦠

यमद्राक्षः (१५०) नम्बन् । (देनक्रमानि

वनदाखि [जो।] (वी) > नगटनी, नगमूर । व नगम्मा निष ।

*করীৰ সিক্তপৃৰতৈঃ পঞ্জোমুচাং छिविशोदि वनब्रोजिशवनः।" (ब्रमू २।८) ৩ বহুদেবের দাসীভেদ। বনরাজ্য (हो) জনপদভেদ। ব্নরাষ্ট্র[ক] (পুং) আভিবিশেষ। (মার্কওপু• ৫৮।৪৯) [दनवानी (मथ।] ব্রব্রুত্ব (দ্রী) পর। "নিপরিক্ষরে নীলকুস্তলৈ-র্বনক্ষাননং বিভ্রদাবৃত্তম্।" (ভাগবভ° ১০।৩১।১২) বনন্ত (ত্রি) বনগামী। (ৰক্ ১।১৪৫।৫) वनक (११) मृत्रीवृत्तः। বন্ধি (জী) বনের সমৃতি, বনসম্পৎ। त्रविष् (वि) (वरणांक वनविश्त्रभकात्रिमाव)। २ वनवाश वाष्ट्र। "वनर्वता वान्नरवा न लामा।" (अक् > ।।।।।) 'बनर्वरमा वरमवू नीमखः नश्हिजाबार हाम्मनश क्रफर' (नावन) यमलक्षी (जी) वनक नन्ती (नाका। > कानी वृक्त। १ वरनत লোভা সৌন্দর্যা। বনলক (দেশক) वृक्षविष्य । (Jussieua exultata) বনল্ডা (জী) বনলাভ লভা, বলী। "বনলতান্তরৰ **আন্ধনি বিষ্ণুং বাঞ্চন্ত্য ইব পুলাফলা**চ্যা:।" (ভাগবত ১০৷৩৫৷৯) यमनवक (तम्ब) नवमरकम । (Ludwigia parviflora) वन्तिश्री (जी) वनानार लिथा ७ छर । वनत्र्वती, वनवासि । "নবনপ্রনেশেখা ভাষমধ্যাভিরাভি:।" (মাব ৪।৪🙌 বনবর্ববিকা (গ্রী) বনজাতা বর্ববিকা। অরণাজাত বর্ববী। চলিত বনবাব্ই। পর্যায়—স্থান্ধি, স্প্রসন্তক, দোবাক্লেশী, বিবন্ধ, সমুধ, কলপত্রক, নিজালু, শোকহারী, স্থবজ্ঞ। ইহার খণ—উঞ্চ, হুগৰি, পিশাচ, বাস্তি ও ভূতম এবং ভাণসন্তৰ্শন-কারী। (রাজনি°) বনবহ্ছি (পু:) বনভ বনোডবো বা বহি:। দাবানল। (হেম) "कगात्रप्र**टाणावानवरि**गः यसवस्ति।।" (कथानिति ६७।७८७) द्मत्यां (११) यमवायु, वनानिन। বনবাভাম (গং) ৰাভামভেষ। চলিভ বনবালাম। व्यावात्र (थर) वरन वृक्षारे । वरन बान, वरन व्यवश्वान । ३ मध्क-(ত্রি) ০ বনবাসী। "ভঙ্গভির্বনবাসবদ্ধভিঃ" (পকুস্বলা) वनवांत्रक (११) > भाषनीस्य । (बाधनि) २ धारीन नगर्रात्कन । यसवान काववत्राक्षश्रात्व बाक्यशंनी । [कावच (वच) यनवाजन (११) बनर वाजबिक शरकाजिक वाजि-मू। बहान, চলিত बांगिनि। (बि) १ परन बान क्यांन।

বনবাসিন্ (পুং) বনং বাসরতি স্থরতীক্ষাভি ইতি বাসি-পিনি। ১ ৰবভ নামক ঔবধ। ২ সুহকবৃক্ষ। ৩ বারাহীকন্ম। ৪ দান্মলী-कमा ६ नीगमहिरकमा। (ब्राव्यनि°) ७ द्वांशकाका ৭ দীপাস্তরন্থ ধর্ক্দুরীযুক্ষ। (বৈছক্দি°) বনে বসভীতি বস-ণিনি। (बि) ৮ वनवानकात्री, व वाक्ति वत्न वान करत्र। "তাপসেবেব বিপ্রেরু যাত্রিকং ভৈক্ষমাচরেৎ। গৃহমেধিবু চান্যেৰু বিজেবু বনবাসিবু 🗗 (মন্ত্রু ৬।২৩) বনবাসী, দান্দিণাত্যের তুক্তলা নদীর বরদাণাধার তীরবর্ত্তী একটা প্রাচীন নগর। ভৌগোলিক টলেমি Banawasei নামে ইহার উল্লেখ করিয়াছেন। [কাদৰ দেখ।] বনবাস্তা, জনপদজেদ। দান্দিশাত্যের বনবাসী রাজা। বনবিড়াল (পুং) বনমার্জার। (বৈছক্ষি°) বনবিরোধিন (অ) > বনশক্ত । (পুং) ২ বর্ষাশ্বন্থ । নিদাবের পরবন্তী কাল। বনবিলাসিনী (রী) শম্পুলী গভা। (রাজনি°) वनवोक्क (१९) वनवीव्यभूत्रक । हिमक होवा त्मवू । বনবীজপুরক (পুং) বনজাত মাতুদুজর্ক। চলিত বুনো লেবুর 🦘 গাছ, টাবা। মরাঠী--বনমাছলিজ, ক্নাড়ী--কামাধ্বল। ইহার ওপ-অন্ন, কটু, উঞ্চ, কচ্য, বাতন, অন্নদোষ ও ক্লমি-नामक, क्कन्न, এवः चानन्न। (त्राखनि°) বনবুস্তাকী (ত্রী) বনত বৃস্তাকী বার্ডাকী। বৃহতী। (রাজনি°) বনব্ৰীছি (গং) বনক ব্ৰীহি:। দেবধান্ত, নীবার। চলিত, উড়িধান। (হেম) दन्रभ्व (समञ्ज) वृक्षवित्मय। বনশিম (দেশৰ) শিমভেদ। वनश्चन्त्र (प्रापंत्र) वृक्तराज्य । বনশিন্দ্ৰিকা (ত্ৰী) অরণ্যশিৰী। (ভৈৰজ্যর° শিরোরোগচি°) বনশূকরী (খ্রী) বনত শৃকরীব রোমণদাৎ মাংসলদাত । ১কপি-क्कू। (त्रावनि) २ व्यात्रगः वत्राशै। বনশুরণ (গং) বনজাত: শূরণ:। বনোজবৌল, ; চলিত বুনো थन । পर्यात्र-निष्ण्यन, वस्त्र, वनक्स, व्यत्रगाण्यन, वनक, (पेज्नूतन, कनक्ष्न। हेरांत्र अन-क्रा, करू, क्या, क्रांत्र, खन, ७ म्नारि शायत्र अवर नर्स-अक्रिनामक । (तास्रि) বুক্ষ। চলিত, মউল গাছ। (বৈজকনি°) বনে বালো বতা। (শ্বনাশুক্সটি (পুং) বনত পুৰাট ইব, কটকাবৃতভাৎ। গোক্ষর। ইহার পর্যায়—কুরক, ত্রিকট, খাহ্কটক, গোকটক,গোকুরক, बनन्त्रांहे, शनदवा, चररद्वा ७ हेक्शिका। (ভावता ১४ ভाগ) বনশৃসাট ভার্যে কন্। গোস্বক। (রাজনি°) বনুশোক্তন (ফ্লী) বনং জনং শোক্তমতীতি গুল্ক-পিচ্-ন্যু । পদ্ম। (শব্দ)(বি) ২ বনের শে**ভিকারক্ষা**ত্র।

र्यनार्थन (११) वर्षन वा वा कूक्तः। ১ शक्ताब्बान, इनिष्ठ गक्रतांकून। २ तकक, मृंशान। ७ बाच। (समिनी) वनव[थ] ७ (१) भगवन। जित्रार कीभ्। বনষদু (জি) > বনবাসী। ২ কজ। (পার°গৃ° ০।১৫) [वनगर् (१५ ।] বনস্ (क्री) বননীয় ডেজ ও ধন । "আয়াহি বনসা সহ পাব:।" (अक् > ।) ११।) 'বনসা বননীয়েন ডেব্রুসা ধনেন সার্ছং'(সায়ণ) বনস (অ) ১ ইছো। ২ আরুরক্তি। ৩ বন। বনসঙ্কট (পুং) বনে সন্ধটো বাহুলাং বন্ত। মহর, চলিভ मच्त्री। (भन्ठ°) বনসৃদ্ (তি) ১ বনবাসী। (পুং) বনবহি, দাবানি। "বনং বৃষ্ণসমূহস্তত্র দাবাঘিরপেন সীদতীতি বনসং। "(ওঞ্নবজু: ১৭।৭২) বনসমূহ (পুং) বনানাং সমূহ:। > অরণ্যসংহতি। পর্যার— वका, वाका। २ वनममूह। বনসংপ্রবেশ (পুং) দারুমর দেবমূর্জিনির্দ্রাণার্থ কার্চসংগ্রহের जन्न वनकारवण। 🏶 वनमुद्राक्रिमी (जी) वनमा मुद्राबिमी भविमीव (भाष्टाक्रवहार । • বনকার্পাসী। (শব্দরত্বা°) वनमाञ्च्या (जी) वश উপোদকী गण। वनस्त (११) शामत्र भूवासम्। বনস্থ (পুং) বনে তিষ্ঠতীতি স্থা-ক। ১ মৃগ। (শন্দট°) ২ বাদপ্রস্থ। গৃহস্থদিগের বিশুণ, অন্ধাচারীদিগের ত্রিশুণ এবং বানপ্রস্থযতি-গণের চতুগুণ শৌচ হইরা থাকে। "এতচ্ছোচং গৃহস্থানাং দ্বিগুণং ব্রহ্মচারিণাম্। विश्वनः गावनहानाः यञ्जीनाच ठ्यूर्श्वनम् ॥" (यस ४।১२१) (ত্রি) ৩ বনবাসিমাত্র। "প্রবৃত্তচক্রো নৃপতির্বনম্বান্, शकान् शरेकः रेषतिव वीर्यामीखान्।" (रुत्रिव ३६२।२३) वनक्ली (जी) बनक्षि, अवगामन। "বনস্থলীমর্শ্বরপত্রমোক্ষাঃ" (কুমার ৩)২৯) ব্মশ্বা (ত্রী) বনে তিঠতীতি স্থা-ক, টাপ্। অরখর্ক। वनकान (ही) बनभएएका वनट्याङ्गला (बी) इयव्हजी, हनिङ क्ष्यगाङ्ग् । (देवछ्वनि°) বনস্পৃতি (গুং) বনস্য পতিঃ। পারকরাদিকাৎ স্কট্। ১ পুপ-हीन क्ववान् वृक्तः। "অপুলা: ফরবেরা বে তে বনম্পতর: শ্বতা:।" (মহ ১।৪৭) २ कृष्माज। "ৰুবং ছু শাখাভিঠেয়ন্ ছিন্নমূলে বনম্পতৌ।"

(महाकांत्रक अअध्यादक)

ত খালীরুক। (মাজনি°) ইহার পর্যায়— "मनीदृष्काश्यवप्रकाः व्यक्तारहा शक्रशाहराः। "शंगीरूष: क्वक्त: कीती है जावनागिक: ३" (कावआ २।>) ৪ খুডরাট্রের প্রডেন। (ভাগ° e।২০।২১) e ছভপুঠের পুৰভেষ। ৬ বটবৃষ্ণ। (ভাৰঞ') বনস্পতিকায় (গুং) ছাগডিক বুক্সজ্ব। বনস্ভিসত্ত্র (গুং) একাহজে। व्यक्त् (जी) वनभूरभाडवा वा वक्। वनमाना। "क्रप्रावधारवोवधिरतोमनक वनवरका दव्यूकाच्यु भाष्यु ॥" (ভাগৰত অদাহৰ) वन्ह्वन्ति (प्रः) मनत्राक्तः। वनइत्रि (प्रः) निःह। वनश्तिम (जो) बत्नाडवा शक्ति । (Ourouma aromatica, Curcuma Zedoaria) जन्नगाज रतिया, वसर्गृत । शिकी-बरनीहनूम । महाताड्रे-नानी । क्लाइन-अफिविनका, अतिनिम । रेकनब---क्कृति भक्षप्, अफ्रिशिज्ञ्यू । यदन---वसक्त्, करहाता । ভামিল-কণ্ডুরি মঞ্জ। সংস্কৃত পর্যায়-শোলী, শোলিকা, বনারিটা। ত্রণ-কটু, কচিকর, ডিজ্ঞা, দীপন ও গোলা। यम्हल्ति (तम्ब) वनहत्रिया । वसङ्ग (पूर) वसक हान हैव ध्यक्तानकपार। ১ कानकृत। (ত্রিকা°) ২ কুন্দপুন্সবৃন্দ । (রাজনি°) वनहां मक (गूर) यमहाम चार्च चन्। कानकृष । (वाक्रि) বনস্তৃগলী,কণিকাতার উত্তর উপকঠ্বিত একটা প্রসিদ্ধ গওগ্রাম। বনস্ত্ৰিন (গুং) বনোৱবঃ হতাশনঃ। বনাগি। বনা (আরবী) > প্রস্তুত। বাহা প্রস্তুত হইরাছে। ২ বিক্র वनां भू (गूर) वनजानुः । > मनक, धत्रशाव । (विका°) बनांशूक (११) ब्रुल, प्रा । (जिका °) बनाधि (पूर) बनबाठ वर्षि, बरनाइव वर्षि । বনাচার্য্য, চক্রাভরণহোরা নামক জ্যোতিঃশাত্র-প্রণেতা। वनाम (प्र) बनक चनः। वनकागः। वनकागन, पर्गाप हेफिक, निश्वाहक, शृंक्ष्य । (इस) वनां हेन (क्री) वान अहमर। वनसम्म। বনাটু (গুং) वर्त्तना, নীলমন্দিকা। (শলচ°) বনাত (हिन्मी) পাত্রবক্তত্তব, এই বক্ত পদমে প্রস্তুত হয়। উপা-নিৰ্শ্বিত স্থুলবন্ত। বনাতী (বেশৰ) কাড নিৰ্দ্বিত। वनान (एनम)> निर्मान, गर्छन।

वनान्छ (ग्र) वनक चन्छः। > दनवान्छ। २ दनकृति, दनवारमा।

वन् खुत्र (ही) पड़र वनर । अनव वम, पड़रन । বনান্তরাল (हो) বনপার্ব। द्यांश्रंश (ही) वरमाडव मही। अहे भन चार्व, चार्वअरहांश विनित्रा भाकात इत्र बहेन्ना क्यांभशी शाम वनाभश्यक हरेन्नारह । "महार्गदः नमानाच बनानन निकः वथा।" (द्रामानन १।১৯।১৬) 'वनर जगर छ९नूर्नर महीनकर चार्ति इचः' (हीका) वमाकिमी (बी) सर्गाव। वनाखिनाय (जि) बनक्शनकाती। यमाञ्चल (पूर) वनक व्यावनः व्यावनक हैर। क्रक्यां करन। '(Carissa carandus) वभाष्ट्रिका (बी) स्क्क्डा मकिम्बिएस। বনাত্র (পুং) বদন্ত আদ্র ইব। কোণান্ত। (রাজনি°) বনায় (দেশজ) বন্ধুতা, মেলামেশা। বেদন, লোকটা বেশ विभिद्य निर्णा। वभाग्न (१११) > (मनवित्नव । विभाष् काष्टित्र वामकृति । 'গরা গরণ্ড বনারুর্বনার্বগুসামজং।' (শব্দমুদ্রা°) ং দানববিশেষ। (ভারত ১৮৫।৩০) ৩ পুরুরবার পুরুজেন। 8 वर्नाइ खोछि। वनाशुक्त (पर) बनारही त्मरण बाहरण बन-छ। बनाश्-त्मरणाइव িবৈটিক। এই শব্দের রূপান্তর বানাযুক্ত। (শব্দর্যা°) হ্মারপুর, প্রাচীন নগরভেষ। (ভবিষ্য ব্রহ্মথগু ৫৮।১৭) বনারিফ্রা (জী) বনজাতা অরিষ্টেব। বনহরিজা। (রাজনিণ) বনার্চ্চক (পুং) বনশু জর্চক ইব নিয়তপুশাচারিছাৎ তথাছং। পুস্পাৰীৰী, মালাকার। (অটাধর) वनार्क्तक (पूर) बटनांडव कार्ककः । यस काला । वनार्क्षका (जी) वनार्कक। वनाहास्क (क्री) रेगनिक, रंगनिमाणे। (रेवश्रकनि°) বনালয় (পুং) বন মৰ্যান্থিত বাসগৃহ। वनामग्रकीविम् (पूरं) वनकाष छवा बाता बीविकानिकाहकाती। बनालिका (जी) बनः अनिक प्रविक्त अन-धृत-छान् छानि-चाउ हेक्स । इत्तिवादी गठा, हिनाड हाजिए ही । (हातांवनी) वनाली (जी) वनशकि, वनध्यति। वनाध्येय (भूर) वनत्मन वाध्यमः । वनक्रभ वाध्यमः। वनात्वांत्रिन् (वि) वनात्रमः चलार्व हेनि। विनि वनात्रम कतिबाद्यम्, बामधाष्-अश्रीयणेषी । वजात्वाय (भूर) बनायन कांबारता तक । त्वान कांक। (कींधत) (बि) २ जन्नभाजनी, विनि वसं जोजन व्यक्तिनारहरू । শীবিস্বভাবিলো লোকৰ্মী কুল বনান্তৰে।'' 🦛 (明季·文·200)

वसाव्याक (बि) > दा बरन पालह जान बितारह। व वान-প্রস্থাচারী। state teaching दम् हित (११) रनक चाहितः । अपूर्वत । (किका°) विन (११) वन (धनि कवि अभि अनि विन निन धवि अधि विनिद्यान । উन् ४। २०৯) हेिछ है। > अप्रि । (प्रेम्बन) विनिका (श्री) कूबवन । বনিকাবাস (পুং) > উপবনমধ্যন্ত কুম। ২ প্রাচীন গ্রামবিশেব। বনিত (এ) বন-জ। ১ বাচিত। ২ সেবিছ। বৈদিনী) ব্নিতা (রী) বন-জ-টাপ্। > প্রিরা, অন্রক্তা ভার্যা। २ जी नामाछ । (यमिनी) ७ विष्कताच्चक इत्नाष्टिम । ইरात ১, ২, ৪, ৫ বর্ণ লঘু এবং ৩ ও ৬ বর্ণ গুরু। বনিতাদ্বিয় (পুং) দ্বীৰেবী। বনিতাভোগিন (পুং) > দৰ্শবং ক্রা দ্রী। ২ নাগৰুছা। বনিতামুথ (গুং) > আভিবিশেষ। (মার্কপু • ১৮। ০০) .(क्री). २ जी-मूथमञ्जू । "নলিনী মলিনী দিবসাত্যন্তে ननिकनाविकना कर्गनाक्रम । ইভি বিধিবিদধের্বনিভামুখং ভবতি বিজ্ঞতমঃ ক্রমশো জনঃ ॥" (উভট) বনিতাবিলাস (পুং) > স্ত্রীলোকের ভোগেছা। ২ স্ত্রীসম্ভোগেছা। 4 বনিতাস (क्री) আচীন বংশভেন। ব্নিড় (ত্রি) স্বাচক। ২ অধিকারী। বনিন (গুং) বনং আশ্রম্মেনান্তাঞ্চেতি বন-ইনি। বানপ্রস্থ। "वनी वर्षात्र क्षामाटेकतां १९ करेंक्स्टेक्टः शूत्राकरेनवां ।"(लाइहिकाः) ব্রমিন (ক্রী) বনজাত প্রাথাদি। "ব্রতাপ ওবধীর্বনিনানি ব্রিজয়া" (अक् > । ७७।৮) 'विनिनानि यत्नकवान् शलाभागीन्' (जात्र) (बि) २ वातिमानकात्री। ७ वनमाछा। ६ वनवात्री। ৫ বনোন্তব। ৬ ইচ্ছালীল। ৭ পূজা বা স্বভিচাৰী বনিয়াল (পারদী) ভিতি। विभागि (शातनी) छे९क्टे छिखियुक । वाहात मून गर, नदः न, পুরাতন বড়মান্তব, পুরাতন গুড়স্থ। যথা—বনিয়ালী ধর। বনিষ্ঠ (অ) বাভূতম, অভিশন বাডা । ৰ্প্পিবর্গেবরতে বনিষ্ঠা" (ঋড় . ৭০১৮০) বিনিষ্ঠঃ খাড়জনো ভৰ্টি (সায়ণ) ब्रिके (१६) स्टब कारायक गण्य महिराय । इतियाह । (गार्ग) विभिक्क (श्रः) चनाम। (केन् शरः) दनी (बी) यन । (अमन्रहीकालनक) "বেশিবনীয়মণি বন্ধুগৰুলমক্" (দাহিত্যর° ২ প°) वसीक (बि) महन्। (अमहिना मात्रक्ष) क्वीहरू (बि) निनः राज्यमिक्कीकि कार, करका वृत्। राज्य।

বনীয়স্ (কি) বন্ধবস্থা অভিনৱ বাচক।
"অন্তথা তেহৰাজগালৈ নিন না কথা নৃণাং।
নিভরাং প্রিরমাণানাং কাসিছল বনীয়সঃ॥" (ভাগৰ ১)১৯।৩৬)
'বনিয়িভা বাচয়িভা বনিয়িভ্ডমঃ বনীয়ান্' (স্বামী)

বনীবন্ (জি) বননবিশিষ্ট, বননযুক্ত। "বনীবানো মন গুডান ইক্ৰং" (অক্. ১০।৪৭।) 'বনীবানো বননবস্তুং' (সারণ)

বনীবাহন (ক্লী) এক্সান হইতে অক্স হানে আনম্বন। ইতক্তত: সঞ্চলন বা স্থানপরিবর্তন।

বকু (পুং) হিংসা। "সাতৌ বহুং বা বে" (ঋক্ ১০।৭৪।১) 'বহুং হিংসাং' (সারণ)

বসুই (দেশজ) ছগিনীপতি। বোনাই। বসুয়া (দেশজ) বনসম্মীয়। বুনো।

বকুষ্ (ত্রি) হিংসক। "বন্ধবোহব্যতং মদং" (ঋক্ ১০।৯৩০১) 'বন্ধবা বন্ধ হিংসাঝাং হিংসকন্ত' (সারণ) হ সংজ্ঞা। "জ্ঞা বন্ধবা ভামঃ" (ঋক্ ১০১৫০।৩) 'বন্ধবা সংজ্ঞারঃ' (সারণ) বনে-কিংশুক (পুং) বনে কিংশুক ইব। অবাচিত প্রাপ্ত। আশা নাই এরপ দ্রবাপ্রাধি।

বনে-ক্ষুদ্র (স্ত্রী) বনে ক্রা অনুক্ সমাস:। করম। (রত্নমালা) বনে-চর (অি) বনে চরতীভি চর ইতি ট, তৎপুরুষে রতীত্য-লুক্। অরণ্যচারী।

> "বনেচরাণাং বনিভাসথানাং দরীগৃহোৎসঙ্গনিষজ্ঞভাস:। ভবস্তি যত্রৌষধয়ো রজ্ঞামতৈলপুরাং স্থরভঞ্জীপা:॥

> > (कूमात्रमञ्चव > मः)

ব্যুনজ্য (রী) ৪ জরণ্যে জারমান। "বসতির্বনেজাঃ অরণ্যে জারমানঃ" (এক্ ৬।৩৩ সারণ)

বনেজা (পু:) বনে ইজ্য:। > বছরসাল, আর্থক। (রাজনি°) ২ পর্প টক, ক্লেৎপাপড়া। (বৈভকনি°)

বনেভব। (্ব্রী) শাকবিশেষ, গোনীশাক। (বৈছফনি°)

বনেবিত্ত্বক পুং) বনে বিশ্ব বৃক্তের ভার, যাহা জ্বাচিতরূপে প্রাপ্ত হওরা যার।

বনেযু (পুং) রৌদ্রাধের প্রভেদ। (ভাগবন্ত ১।২০।৫)

বনের জ (গ্রী) বনে রাজতে রাজ-ভিপ, অনুক্ সমাসঃ। দাবা-নলরপে অরণ্যে বিরাজমান। "তেজিন্তা বস্তারতির্বনেরাট্" (গ্রহ্ %)২২০) বনেরাট্ দাবরপেণারণ্যে রাজমাণা'(সারণ)

বনেক্সহ্। (নী) ত্রিপণী কন্ম, চলিত তিলকন্ম। (পর্যারমুক্তা°) বনেশায় (ত্রি) বনবাসী।

ক্ষেষ্ট (বি) বনে কাঠের অভিভবিতা। "বিবর্জনির্বনেবাট," ক্ষেন্দ্ ১০।৬১।২০) 'বনেবাট বনেকাঠানাং অভিভবিতা' (সারণ) বনেসর্জ্জ (পুং) বনে সর্জ ইব। অসন কৃষ্ণ। (রম্ভবালা) वर्देनकरम्भ (११) वरनत्र अकारमः। वर्दनांश्रमाङ् (११) शकात्र ।

वट्नांद्रज्ञर्ग, त्ववनित्र, श्रविषे, छेनवनावि छेदमर्वक्रम माजीव िकता वित्यव ।

ব্ৰেন্দ, বোৰাই প্ৰসিডেন্দীর বালাবার প্ৰাক্তম একটা ক্ষ নামবরাজ্য। ভূ-পরিমাণ ৫৮ বর্গ মাইল। এখানকার অধি-কারীরা এখন ইংরাজরাজকে বার্ষিক ১৯৫০ টাকা কর দিরা থাকেন। ২ উক্ত রাজ্যের অন্তর্গত একটা গণ্ডপ্রাম।

बट्नार्टकर्म (११) > बनगरीश । २ बनस्थात्र निर्विद्धे क्षाम । बट्नार्टकर्म (११) कांडर्क । (देवछक्ति)

বনোস্ত্র (বি) বনে উত্তবো বছ । > বছজিল। (রাজনি")

২ বনমাতুলুল, চলিত টাবা লেবু। ৩ পুগালকোলী, শেরাস্থল।
(পর্যারমুক্তা") ৪ বনপুরণ। (বৈছকনি") ৫ বনবীজপুরক।
বিরোগ টাপ্ = বনোরবা। ৬ বনকাপিনী। ৭ কাঠমলিকা।
৮ মুললপর্নী, মুগানি। (রাজনি")

বনোপপ্লব (ङ्गी) > वनष्टम । ২ দাবানক। বনোক্রী (জী) বনসমীপত্ব ছান ।

বনোকস্ (পুং) বনমেৰ ওকো গৃহং ৰছ। ১ বানর। (জি) ২ বনবানী, অরণাবানী।

"धर्त्वार्श्वाः क्थानः मरका मूनद्वा त्य वत्नोकनः।

চরন্তি দক্ষিণীক্বডা ভ্রমজো যৎ সভারকাঃ ॥" (ভাগবভ ৪।৯।২১)

(ত্রী) ও অলমোদা, রাধুনি। ৪ ওকাশিবী, চলিত আলকুনা। বনৌল (পুং) > বনসমূহ। (বৃহৎস° ২৪।২০) ২ ভারতের প্রিমিদ্ধিত্ব একটা পর্বত ও তৎসমীপত্ব জনপদ।

वरनोध्ध (जी) (छनमानि।

বস্তি (হিন্দী) বনাৎ, পশমী শীতবন্ধভেদ।

বস্তি (ত্রি) বন-সংভক্তে তৃচ্। সংভকা। "রারো বস্তারো বৃহজ্ঞ" (ঋক্ ৩)৩০।১৮) 'বস্তার: সংভক্তার:' (সারণ)

বন্ধলি (ৰামনত্বনী), বোৰাই-প্রেসিডেন্সীর সৌরাই-প্রাক্তন্থ
একটা প্রাচীন নগর। কুনাগড় ইইতে ৪॥০ ক্রোল দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। অক্ষা ২১°২৮ ০০ উ: এবং জাবি ° ৭০°২২
১৫ পু:। ছানীর প্রবাদ, ভগবান নারারণ ৰামনরপে এই
নগরে অবতীর্ণ হইরাছিলেন, তাঁহারই নামান্থনারে পরে এই
হান ৰামনত্বনী নামে খ্যাত হর। লোকে ইহাকে ৰামনপুর বা
বামনধাম, আবার দেবতার লীলাহল বিবেচনার অনেকে দেবফুলী বা দেখলী বলিয়াও থাকে। এখানে লৌহ ও তাম্পাত্রনির্দাণের বিশ্বত কারবার আহে।

दम्म, , अधिवामन, तसन, धनाम, । ज्यानि आसारने सस्य तिहें। सहे दसरका जिल्लामा । युक्त अवस्थित। বক্ষক (জি) ক্ষতে ইডি বন্ধ-ৰূল্। বন্ধনাকারী। ছডিগাঠক। বন্ধকা (জী) বন্ধক-টাপ্। ক্ষা, চলিড পরগাছা।

'কলাকা শেবরী সেব্যা কলা চ বলকেন্ততে।' (হড্ডচক্র)
বল্পথ (পুং) বলতে তোঁতি বলতেন্ত বুতে ইতি বা অথ (বলশীঙ্ শশিকগমিবশিচনীবিপ্রাণিজ্যোহন)। ১ ভোতা। ২ বত্য।
সিভান্তকৌমুদীতে বলি ধাড়ুর অথ প্রভাৱে এই শল নিপার।
বলন (ক্লী) বলতেহনেনেতি বল-করণে গ্রাট্। ১ বছন।
(শলচ°) বলভাবে গ্রাট্। ২ প্রাণাম। ইহা বোড়শ প্রকার
ভক্তির অন্তর্গত ভক্তিবিশেষ।

হরিভজিবিলালে ১৬ প্রকার ভক্তি নির্দিষ্ট হইরাছে, তাহার মধ্যে বন্দান এক প্রকার জ্ঞিক। ভক্ত ভববদ্ধনাছেদের জন্ত ভগ্নামে ১৬ প্রকার ভক্তি প্রানর্শন করিবেন।

"আছছ বৈশ্বন প্রোক্তং শশ্বচক্রাছনং হরে:।
ধারণকার্ছপুণাহে ক্যুদ্রাগাং পরিপ্রহঃ ॥
আর্চনক জপো ধ্যানং ক্যানস্থরণং তথা।
কীর্ত্তনং প্রবণকৈব বন্দনং পাদসেবনং ॥
তৎপাদোদকসেবা চ তরিবেদিতভোজনং।
তদীরালাক সংসেবা ঘালীব্রতনিষ্ঠতা ॥
তুলসীরোপণং বিকোর্ছে বদেবত শার্ষিণঃ।
ভক্তিঃ বোড়শধা প্রোক্তা ভববছবিযুক্তরে ॥"

(रविजिक्किवि॰ ১১ वि॰)

দেবপৃশ্বার বোড়শোপচারের মধ্যে শেব উপচার, দেবভাকে বোড়শ উপচারে পৃশ্বা করিতে হইলে শেবে বন্দন করিতে হয়।

"আসনং খাগতং পাছমর্থমাচমনীয়ক্ষ্।

মধুপর্কাচমনমান-বসনাজরণানি চ।

গছপুলে ধুপরীপৌ নৈবেছং বন্দনং তথা ॥" (আছিকতম্ব)

হরিভজিবিলানে বন্দনের বিবর এইরপ বণিত হইরাছে,
ভগবানের ছতিপাঠ করিরা বন্দন করিছে হয়। বন্দনের সমর
বাহবুগল হারা ভগবানের পদহর ধারণ করিরা শিরোদেশ অবনত
করিরা "হে উশ! বৃত্যুর আক্রমণরূপ সমুত্র হইতে ত্রন্ত ও
আপনার আপ্রিত, আমাকে পরিত্রাণ কর্দন" ইত্যাদি বাক্য হারা
বন্দন করিবে।

"শিরোমংপাগরো: রুখা বাছভাকে পরশ্বরন্।
প্রপারং পাছি নানীশ ভীজং বৃদ্ধুগ্রেবার্থনাৎ ।" (ব্রিভবি॰ ৮ বি॰)
ইকা ভিন্ন লাম্যবার চ্যাব্যবার বজাঃ শিরোরেশ, এই মন

ইহা ভিন্ন বাহবুগন, চন্নপন্ধান, বক্ষঃ, শিরোবেশ, বৃটি, মন ও বচন অটাক বালা বক্ষনত্বপ প্রধান করিবে। কাছবুগন, বাহবুগন, শিরোবেশ, বচন ও বৃত্তি এই পঞ্চাক বালাও বক্ষন করা বাল। এই বক্ষন নিধিল বজের কথ্যে প্রধান। একসাত্র বক্ষন বালা মন বিশ্বত হইবা হতিকে লাভ ক্ষিতে পালে। বন্ধনকালে ব্যসংখ্যক গুলিকণা ভারের বেকে সংব্রন্ধ হয়, ডভগড়
মধন্তর তাহার বর্গে বান হইরা থাকে: বৈ ব্যক্তি অসংখ্য গাণ
করিরা অজ্ঞানে মুখ থাকে, সেই ছাক্তি কেবল মাত্র ভক্তিপূর্বক হরিকে বন্ধন করিলে সকল পাণ হইডে মুক্ত ছুইরা বর্গে বান করিতে সমর্থ হয়। অভ্যান বেবক্সন পাণনাশক ও অর্গজনক। দেবপ্রতিমা দেখিলেই ভাহাকে বন্ধন করিভে হয়, অজ্ঞানত। বশত: দেববন্ধন না করিলে ভাহার নিয়র হইরা থাকে।

(হরিভজিনি ৮ বি •) [প্রণাম ও নমন্বার শব্দ দেখ]
ত বিবনিশেব। ৪ অসুর। ৫ রাক্ষসনিশেব। (বক্ ৭।৫১।২)
ব্যক্ষন, বোবাই প্রেসিডেন্সীর অন্তর্গত একটা গিরিহর্গ ও তৎপাদস্থিত গশুগ্রাম।

বৃদ্ধনমালা (ত্রী) বন্দনার্থ মালা হর সা। ১ ভোরণ।
(হলার্ধ) বন্দনার্থ মালা। ২ রম্ভাক্ত-চতুট্রবেটিত আদ্রপত্ররচিত মালা। চারিটী কলাগাছ পুতিরা আদ্রপত্র হারা বে
মালা রচনা করা হর, তাহাকে বন্দনমালা কছে। »

"কুর্যাহন্দনমাশাং যো রম্ভান্তক্তৈঃ স্থানাভনি:।

চূতবৃন্দোভবৈ: পত্রৈর্জাগরে চক্রপাণিন:।

বুগানি পত্রসংখ্যানাং স্বর্গে তন্তোৎসবো ভবেং।
পূক্যতে বাসবাধৈশ্য ক্রীড়তে চাপ্সরোবৃত্য:।"

(হরিভজিবিলাস ১৩ বি৽)

বন্দনমালিকা (ত্রী) বন্দনমালা খার্থে কন্টাপ, ইছং। বহিছারোপরি ওভদা মালা।

'ভোরণোর্ছে তু মালগাং দাম বন্দনমালিকা।' (হেম)
বন্দনশ্রেক (িএ) বন্দি অভিবাদনন্তত্যো:। ইনিয়ার মূ—ভাবে
ল্যাট্ ভেবাং শ্রোভা। শ্র শ্রবণে কিপি ভুগাগম:। ভতির
শ্রোভা। "হরীবন্দনশ্রদা কৃষি" (অক্ ৫৫)১৭)

'বন্দনশ্ৰৎ বন্দনানাং স্বন্ধীনাং শ্ৰোভঃ' (সামণ)

বন্দনা (গ্রী) বন্দ-(গম্ট-বন্দি-বিদিভ্যক্তেডি বাচাং। পাওতা> ৭) ইত্যন্ত বার্তিকোজ্যা যু6, টাপ্। > ছডি। নীটার—সমীটা। (ডিকা°) ২ বন্দন, প্রাণাম। ৩ হোম জন্মবারা ভিলক, হোমের ফোটা।

"ঐশাভামাহরেড্রন প্রচা বাধ ক্রবেদ হৈ।
বন্দনাং স্থাররেডেন শিরঃস্ঠাংশকেষু চ।
স্থাপতেতি মধ্রেশ বধাস্থান্দরোগতঃঃ র" (ভিথিতর)

কৰিগণ প্ৰহারতে নিৰ্মিনে প্ৰহের পরিস্বাধিকাননার বেষভার বন্ধনা করিরা থাকেন। বন্ধনী (ত্রী) বন্ধ-পূট্-ভীণ্। ১ নডি, ভভি। ২ নীবাড়। ৩ বটা। ৪ বাচনকর্ম। (বেবিনী) ৫ সোরোচনা। (বৈশ্বস্থান-)

बन्सभीत्र (कि) वनि-मनीतन्। खननीत्र, बन्सा, बन्सिख्ना, नवज्ञ, खरवत्र रवाताः। (श्रः) २ विख्युकतासः। (तासनि०)

বলানীয়া ্ত্রী) বলানীর-চাপ্। পুজনীরা। ২ গোরোচনা। (জিলা) বলার (গাঁরনী,) সমুত্র প্রান্ততির উপকৃলে আহাজ যারা বাণিজ্য করিবার ছান, সমুত্রকৃলে প্রধান সহর, বেখানে বলার থাকে, ভাষার জাহাজাদি রাধিবার ছান থাকে। (A port)

বন্দা (জী) বন্দতে অণরবৃক্ষমিতি বনি-অচ্-টাপ্। বৃন্দোণরি
বৃক্ষ, টলিত বাঁচ, বা পরগাছা। (Epidendrum tessellatum)
পর্যার—বৃক্ষাননী, বৃক্ষরুহা, জীবস্তিকা, বলাকা, শেখরী, সেবাা,
বন্দকা, বলক, নীলবানী, বন্ধাকী, পর্বাসিকা, বলিনী, পৃঞ্জিই,
বন্দাা, পরপুটা, পরাত্ররা। (শলচ॰) ২ সভাবিশেব, ভিক্কী।
পর্যার পাদপক্ষহা, লিথরী, তক্রভোহিনী, বৃক্ষাননী, বৃক্ষরুহা,
কামবৃক্ষ, শেখরী, কেশরুপা, ভক্রকহা, ভক্রহা, গ্রমাননী, কামিনী,
ভক্রক, শ্রামা, উপনী। শুণ—ভিক্ত, শিলির, ক্ষ্ক, পিন্ত ও
ভ্রমনাশক, বৃদ্ধু, ক্যার, রসায়ন। (ভাবতা॰)

ৰন্দাক (গুং) বৃক্ষোপরিবৃক্ষ, পরগাছা। [ৰন্দা দেখ।]

বন্দাকা (ত্রী) বন্দা। (ভরতখ্ত ইড্ড)

'বন্দাকী (জী) वन्मा। (শব্দর্গা•)

বন্ধারু (ত্রি) বন্ধতে স্তোতি অভিবাদরতীতি বন্ধ (শ্বন্দ্যোরারঃ।
গা এ২।১৭২) ইতি আরু। বন্ধননীল। পর্যার অভিবাদক,
অভিবাদরিতা। (শন্ধরয়ো•) (রী) ২ স্তোত্র। (ঝক্ ৪।৪৩)২)
৩ বন্ধাক, পরগাছা। (বৈশ্বকনি•)

ৰন্দি (ত্ৰী) বন্দতে ভৌতি নৃপাদিকং সমুক্তাৰ্থমিতি বদি
(সৰ্বধাতৃতা ইন্। উণ্ 31>>৭) ইতি ইন্। আৰুষ্ট মহুবা
গৰাদি, চলিত করেদী, পৰ্যার প্রগ্রহ, উপগ্রহ, বন্দী, বন্দিকা।
(পন্দর্যা•) ২ গ্লহ। (ভাগ• ভা১া২২) (পুং) ও ভতিপাঠক,
বাহারা রাজা প্রভৃতির ভব পাঠ করিয়া থাকে।

বিদ্যাত বিং) বন্দিনিব গৃহত্বং গৃহাজীতি গ্রহ-ক। অধ্যার্থ দেবতাগারত্বেক, চলিত ডাকাইত। ইহারা গৃহত্বকে বন্দির ভার ক্ষম করিরা ভাহাদের বধাসর্কাব ক্ঠন করিরা থাকে। মিতাক্ষরার লিখিত আছে, রাজা ইহাদিগকে শ্ল আরোপ করিবেন।

"बन्मिश्राहारकथा बान्धि-कूक्ष्यांगांके राविनः । व्यवस्थाजिनटेक्टव ज्ञानाटवागटक्ष्याम् ॥"

٠.

(मिछाक्त्रा बीवहात्राधा[®])

বন্দিচৌর (পুং) বন্দিবি বিধার চৌরঃ অপহারকঃ গৃহস্থ বন্দিবিব হয়। সমন্তর্যবাশামশহারক্ষায়ত তথাজ । বন্দিগ্রাহ, পর্কার—নাচন, বন্দীকার। (একা॰)

ৰন্দিত্তব্য (.জি.) বন্দ-তবা। বন্দনার, বন্দনার উপস্কুল।

বন্দিভূ (বি) ক্ৰ-ভূচ্। ক্ৰম, ক্ৰমাকারী। বন্দিদ্ৰেল, প্ৰাচীন জনগৰতেব'। সভবতঃ ইহাই রাজপুত্নার অন্তর্গত বুলিরাব্য। (ভালীব- ৪৭ বাঃ)

বৃদ্দিন্ (পুং) বন্ধতে তোঁতি নৃপাদীরিতি ধবি ছতোঁ পিনি।
ছাআদির বারাদিতে বীর্যাদি ছতিভারত। পর্যার ছতিপাঠক,
নাগধ, নগধ। এতিবাবে জরবোক্দাদি হারা রাজাদিনের ছতিপাঠ করাই ইহাবের বৃত্তি। রাজনীর পর্যে ক্রিরের ঔরবে
এই জাতির উৎপত্তি হইরাছে।

"ক্ৰিয়াৰিএকভায়াং হতো ভৰতি জাভিতঃ।" (মৃত্ব ১০জ০) আৰভত্বে লিখিত আছে বে, আৰুম পর ইহাবিগ্রেক বথাপক্তি লান করিতে হয়, ইহাবিক্ষক বৃদি বিছু লান না করা হয়,
তাহা হইলে আৰু নিক্ষল হইয়া থাকে। আবার শান্তে নিধিত
আছে, আন্তের পর লান করিতে নাই, কিছু অভ্যুক্ত নিধিত
আছে, আন্তোভনকালে বলীবিগ্রেক বথাপজি লান করিবে, ইহার
মীমাংসা এইমপ বে, আন্তের পূর্বে ভোজ্যাদি ইহাবিগ্রেক লভ
উৎসর্গ করিয়া আন্তের পর ঐ উৎস্গীয়াভ ভোজ্য ইহাবিগ্রেক
লান করিবে।

"বন্দিভালৈবমৰিভো**ংভাবিভালারবর্বিভঃ**।

वित एक स क्षांकृ विकार **पंकित्का करवर** ॥

'বন্দিনো বীৰ্যভোভারঃ। অধিতঃ সন্ বদি এভোচরং ন দভাৎ তদা প্রাক্ষ বিক্লং ভবেদিতি।'

'হতাঃ পৌরাণিকাঃ ঝোকা মাগধা বংগলংসকাঃ। বন্দিনব্যলঞ্জাঃ প্রভাবসদূশোক্তরঃ ॥'

ইড়াকে:, ইবক প্রাভোত্তরগাননিবেধাৎ প্রাভে বলি-প্রভৃতিভ্যো দানাকরণে নিকাপ্রবণাচ্চ প্রাভাৎ পূর্বাং তদর্গং ভোত্যাদিকং উৎক্ষমেশ (প্রাভত্ত) ২ কৃত্য।

"अभिकासिनमानात्र, नषा कर स्वतिनिनः।"(काण- ১১।৪।১৫) 'स्वतिनिक्ताः (चामी)

বন্দিনীকা (বী) দাক্ষান্দীন নামান্তন । বন্দিপাঠ (গং) ভট কবিগণের দীত বা বংশকীর্ত্তিবর্ণনা । বন্দিমিঞা, বাদচিকিৎসারচমিতা।

বিন্দিবাস (ৰমিবাস), মালোল-থেসিডেন্সীর উদ্ধর আর্থট জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ বা আনুক। তৃপরিমাণ ৪৬৬ বর্গনাটুল। এই হান শতলালী নহে। সমতল প্রোন্ধরে পরিব্যাপ্ত হইলেও ভবাকার অধিকাংশ সুভিকা বালুকা ও কছর বিশ্রিত। বব্যে মধ্যে লাল বা রুক্তবর্গের সুভিকাশশু দেখা বার; কিছ উহা কাম মিশ্রিত থাকার শত্লোৎপালনের উপবিশ্রিকী হর না। এই উপবিভাগে শুএকটা পৃথ্যলৈগও উন্নক্ত শিশ্রের ক্রারনান আছে।

২ উক্ত জেলার একটা নগর এবং বন্দিবাস উপবিভাগের विहात मनत् । व्यक्ता >२°०० र % किः ध्वर खावि १२°०७ 8० % পৃ:। এই স্থানের ঐতিহাসিক প্রাসিদ্ধি আছে। বিগত কর্ণাটক यूरकत ममरत्र এहे ज्ञारमञ्ज यूक चित्राह्मिन । ज्यार्करहेत्र नवाववश्यनत्र আত্মীয় এক জন মুসলমান দামন্ত বন্দিবাস-চূর্ণের অধিনায়ক ছिলেন। ১৭৫२ थृष्टीत्म देश्त्रां अस्ति। समानि समान नात्रका विम-वात्र ज्वात्क्रमण करत्रन । जनसङ्घत्र ১१६१ धृहोस्य कारश्चन ज्वन-ভারকোম নগর দথ্ম করিয়াও তুর্গ জয় করিতে পারেন নাই। তৎকালে ঐ তুর্নমধ্যে অবস্থিত করাসী সৈম্ম পুন: পুন: ইংরাজ-দিগকে হটাইয়া দিয়াছিল। ১৭৫৯ খৃষ্টাব্দে মোনগোন ভীমবেগে তুৰ্গ আক্ৰমণ করিলেন**ু বটে,** কিন্ত তুৰ্গজয়ে অসমৰ্থ হইয়া স্বীয় (मनापन गहेवा প্রভ্যাবৃত্ত হইলেন। এই সময়ে য়য়য় ফরাসী দেনাদল বিদ্রোহী হয়। ইংরাজ দেনাপতি আয়ারকূট হযোগ বুনিয়া দেই অবসরে ছর্গ আক্রমণ করেন। ছর্গবাসিগণ কিছু-দিন অবরোদের পর, ইংরাজকরে আত্মসমর্পণ করে। ফরাসীর মুগগ্রাস হস্তচ্যুত দেখিয়া ১৭৬০ খুষ্টাব্দের প্রথমেই সেনাপতি ণালী সদলে হুৰ্গ সন্মুপে আসিয়া উপনীত হইলেন। দেখিতে দেখিতে ছই দিবদ মধ্যেই বুশি ৩ হাজার মরাঠা সেনাসহ সেই রণপ্রাঙ্গণে আসিয়া সমবেত হইলেন। ফরাসী সৈক্ত ছর্গ অব-রোধ করিল; নিরুপার বৃশিরা সর্ আয়ারকৃট একদিন ছর্গদ্বার উন্মোচনপূর্বক সশন্ত্র ও সদলবলে সন্মুখে উপনীত হইলেন। ত্ই দলে ঘোরতর সংঘর্বের পর ফরাসীরা পরাঞ্জিত **হইল**। বুশি हेरताञ्च करत्र वन्ती रहेराना । कत्रांनीनिरंगत नहिल हेरताञ्चतारकत्र ভারতে আর কোথাও এরপ যুদ্ধ ঘটে নাই। ১৭৮০ খুটান্দ হইতে প্রায় ৩ বৎসর কাল লেপ্টনাণ্ট ফ্লিট বিশেষ কৌশলের সহিত মহিস্করপতি হাইদার আলীর প্রচণ্ড আক্রমণ হইতে এই তুর্গ রক্ষা করিয়াছিলেন। হায়দারের আক্রমণকালে আয়ারকৃটও তুইটা যুদ্ধে তাঁহাকে সহারতা করিয়াছিলেন এবং অপরগুলিতে তিনি বিশেষ দক্ষতার সহিত স্বীর বাহিনী রক্ষাপূর্বক শক্রদলকে বিদ্বরিত করেন।

বন্দী (স্ত্রী। বন্দি 'হৃদিকারাদজিলঃ' ইতি ধ্রীব্। বন্দী, শ্বতিপাঠক। "গোপ্তারং জ্রুনৈক্সালাং বং পুরস্কৃত্য গোত্রভিং।

প্রজ্ঞানেষ্য জিল্প্ডো বন্দীনিব জয়প্রিয়ম্ ॥" (কুমার ২।৫২)
বন্দীক (পুং) ইক্স।
বন্দীকার (পুং) বন্দীবং গৃহস্থং করোজীত ক্সন্প্। বন্দিগ্রাহ,
ডাকাইড। পর্বায়—মাচল, প্রসন্তোর, চিল্লাড। (ত্রিকা৽)
বন্দীকৃত (জি) কারাবন্দ্য। অপরাধী বোধে রাজপুরুষ
কর্ত্ব ধুক্ষ।
বন্দীপাল (পুং) কারাবন্দী (Jailor)।

বন্দুক (ভেশগু) আগেরান্তবিশেষ।
বন্দোবস্ত (পারসী) কোন একটী বিধর বা কার্য্যের নিশান্তি
করিয়া দেওরা।
বন্দ্য (ত্রি) বন্দ্যতে ত্রতে ইতি বদি গাং। বন্দনীর, স্বত্য,
বন্দনের যোগ্য।
"আশিঃপরম্পরাং বন্দ্যাং কর্ণেক্সডা ক্লপাং কুরু।" (সাহিত্যদুত)

"আনী:পরম্পন্নাং বন্দ্যাং কর্পেক্স কুপাং কুরু।" (সাহিত্যদে)
বিরাং টাপ্। বন্দ্যা, বন্দা, পরগাছা। ২ গোরোচনা।
বন্দ্যতা (ত্রী) বন্দান্ত ভাবং তল্-টাপ্। বন্দান্ত, বন্দ্যের ভাব
বা ধর্ম্ম, বন্ধন।
বন্ধ্য (ত্রি) বন্দতে ভোতি দেবাদীন্ পূজাকালে ইতি বন্দি-রক্।
পূজক। (উজ্জ্লন)

বন্ধুর (ক্রী) > রথের নীড়বন্ধনাধারভূত অক্ষমহ ঈষ্দয়। ২ সারথির বিসবার স্থান। সায়ণাচার্য বেদভাব্যে ইহার এইরূপ অর্থ করিয়া-ছেন;—'নীড় বন্ধনাধারভূতম্, উন্নতানতরূপবন্ধনকাষ্ঠম্, বেটিতং সারথেঃ স্থানম্যভা সারথাশ্রস্থানম্।' [পবর্গে দেখ]

বন্ধুরস্থ (তি) রথাদনে উপবিষ্ট। রথারাড়।

বন্ধুরায়ু (ত্রি) বন্ধরম্ক র বন্ধরায়ঃ রথে নিবাসাধারভূতকাছে। বন্ধরং তদান্। (অক্ ৪।৪৪।> সামণ)

বন্ধুরেষ্টা (ত্রি) রথোপবিষ্ট (ইন্দ্র)। (ঋক্ এ৪৩১)

বন্ধ, বোম্বাই-প্রেসিডেন্সীর ঝালাবার প্রান্তম্ব একটী ক্রুদ্র সামস্ক রাজ্য, তিনথানি গণ্ডগ্রাম লইয়া গঠিত। ভূপরিমাণ ২৪ বর্গ-মাইল। এথানকার অধিবাসীরা এখন ছয় অংশে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছে। মোট রাজস্ব ২২৩১০১, তন্মধ্যে ইংরাজরাজ বার্ষিক ৩৭১৫ টাকা ও জুনাগড়ের নবাব ২৭৭ টাকা পাইয়া থাকেন।

বৃদ্যু (ত্রি) বনে ভব, বন-যং। ১ বনোঙুত, যাহা বনে উৎপন্ন-হয়। "হৈয়লবীনমাদায় ঘোষরজাহুপন্থিতান

नामत्पन्नानि शृष्क्रत्को वक्टानाः मार्गनाथिनाम्॥" (त्रव् ১।৪৫)

(ङ्गी) ২ সচ্। (রাজনি॰) ৩ কুটরট। "কুটরটং পরং বন্তং মৃত্তাভঞ্চ পরীলবং।" (বৈভাকরভা°)

(পুং) ও বনশ্রণ, বুনো ওল। ও বারাহীকন্দ। € দেব-নল। (রাজনি•) ৬ কীরবিদারী। (বৈস্থকরভা°) ৭ শছ। ৮ লতাশাল।

ব্যুজ্ব (ত্রী) বনোপোদকী, বনপুই। (বৈছক্নি•)
ব্যুজ্বীরক (ক্রী) বনৰ ক্টুজীরক, বনধীরা। (বৈছক্নি•)

র্ব্যুদ্মন (ত্বং) বনৰ দমনকুপ, বনদনা। মহারাট্র—রাণদবণা,
ক্লিদ্দ — কাদবণা। ত্বণ—বীর্যাক্তক, বনপ্রদ ও আনধোৰদাশক।

रमाधील (११) वस्रवी। रमाधीमा (झी) नीरात, উष्धिन। (পর্যারদ्°) বন্যপ্রকী (গুং) খনজাত গলী। বাহারা কছলে বনে বিহার করে। পিঞ্চাবছ পালিতগলীর বিপরীত।

বস্থাবৃক্ষ (পুং) অশ্বর্দ। (বৈছকনি°) ২ বুনো গাছ। বস্থাবৃত্তি (স্ত্রী) বজোপদীবিকা। অরণ্যবাসীর দীবনোপার। বন্যসহচরী (স্ত্রী) পীতবিকা, পীতঝাঁটা। (রাদনি•)

বন্যা (ত্রী) বনানামর্ণ্যানাং জ্বলানাং বা সংহতিঃ বন্
(পালান্বিভ্যো য:। পা ৪।২।৪৯) ইভি য-টাপ্। ১ বনসমূহ,
বনসংহতি। (মেদিনী) ২ মূলপর্ণী। ৩ গোপালকর্কী।
৪ গুলা। ৎ মিশ্রো। ৬ ভদ্রমুগ্রা। ৭ গর্মপ্রা। ৮ অবগন্ধা। (বৈক্রকনি°) ইহার পাঠান্তর কোন ফলে বল্যা দেখিতে
পাওয়া যার। ৯ জলপ্রাবন, জলসংহতি, বান। নদীতে, বান
আসিয়া চারিদিকে জলপ্রাবিত হইলে বন্তা হয়।

वस्त्रान्त (कि) वस्त्रकराना ।

বস্যাভাম (পুर) বুনাখ্ম।

বন্দ্রেভর (ত্রি) > গৃহ পালিত। ২ শিক্ষিত। ৩ সভা।
বন্দ্রোপোদকী (ত্রী) বস্তা বনোরবাইউপোদকী। লতাবিশেষ,
বনপুঁই। পর্যায়—বনজা, বনসাহবয়া। গুণ—তিক্তা, কটু,
উষ্ণা, বোচনী। (বাজনি॰)

বন (প্রং) বনতি ভাগমহৃতি বনসংভক্তে (খল্লেক্সাএবপ্রেতি। উণ্ ২।২৮) ইতি বন্ প্রত্যয়:। অংশী, ভাগী। (উজ্জা)
বপা, ১ ক্লেক্লে-বীজবিকিরণ, ক্লেক্রে বীজ ছড়ান, বপন। ২ গর্ডায়ান, নিবেক। ৩ ছেদন, মুগুন। ভাদি উভ সক আনিট্।
লট্ বপতি তে। লিট্ উবাপ, উপতুং, উবিপিথ, উবপ্য।
উপে। লুট্ বপ্রা। লুট্ বপ্ততি-তে। আশীর্ণিভ্ উপ্যাৎ,
বপ্নীষ্ট। লুভ্ অবাপ্নীৎ, অবাপ্রাং অবাপ্রং। অবপ্র
অবপ্রাতাং অবপ্রত। সন্ বিবপ্রতি-তে। যভ্ বাবপ্রতে।
যভ্রক্ বাবিশ্লিক্সাপরত। সুভ্ অবীবপৎ।

নি + বৰ্ণ নিবাপ, পিতৃদিগের উদ্দেশে দান। নির + বপ = দান, উৎসর্গ। প্র + বপ = দান, প্রক্ষেপ। প্রতি + বপ = বিক্লাস।

বপ (পুং) বপ-ব। ১ কেশম্খন। ২ বীজবপন।
বপন (ক্লী) বপ-ভাবে লাট্। ১ কেশম্খন, মাথা মুড়ান।
"শূদ্রাণাং মাসিকং কার্যাং বপনং স্থারবর্তিনাং।" (মুনু ৫1১৪০)
শূদ্রেরা একমাস অন্তর মন্তক মুখন করিবে। ২ বীজাধান।
ভূমিজে, বীজ বপন করিতে হইলে জ্যোভিবাক্ত দিন দেখিরা
ক্রিছে হয়, অদিনে বীজবপন করিলে ভাহাতে কল হয় না,
এইজস্ত উত্তম দিনে বপন করিতে হয়।

শ্হলপ্রবাহবদ্বীক্সবপনস্ত বিধিঃ স্বতঃ। চিত্রায়াকাণ্ডতে কের্ন্তে হিরম্মমুক্ষোদরে ॥" (ক্যোক্সিঃসারস") পূর্কভানী, পূর্কাবাঢ়া, পূর্কভারপদ, ছবিকা, ভরনী, জরনী, জরনী, কর্কী, নবনী, চতুর্কী, আইনী ও আনাবাচা ভিন্নিভে, গুড়গ্রহ কেব্রুছ হইলে, ছিরলারে বা জ্বরুলার ও মিগ্না, তুলা, কন্তা, কুছ ও ধতুর্লারের পূর্কভালে বীজ্বপন করিলে গুড় হর। বধানিয়নে হলচালানা করিরা বীজ্বপন করিলে ভারতে ত্রুক হইরা থাকে।

বপনী (ত্রী) উপ্যতে মন্তকাদিকমন্তামিতি বপ্-অধিকর্ত্তপে প্যুট্, গ্রীপ্। ১ নাপিতশালা, যে হলে ক্লোরকার্য্য হইরা থাকে। ২ তত্তবারশালা, তাঁতহর। ৩ মাকু।

বপানীয় (অি) বপ-জনীয়র। ১ বপনের বোগ্য, বীজবপনের উপযুক্ত। ২ নিবেকযোগ্য।

"আর্রিয়তা কলাচিৎ ন পরজারারাং বপনীয়ঃ"

(মন্ত্র ১৪১ টীকার কুলুক)

আর্ছামী ব্যুক্তি কথনও পরস্ত্রীতে বীজ বপন করিবেন না। বপুরু (পুং) কেশরাজ, চলিত কেণ্ডরে। কোথাও কণ্ডজে বলে। বপা (স্ত্রী) উপাতেহত্রেতি বপ্ ভিদাছঙ্, টাপ্। > ছিন্ত, রন্ধু। "অথ বন্ধীকবপা স্থবিয়া ব্যধে নিহিতা ভবতি"(শভ'ব্রা'ঙাতাও)

২ মেদোধাতু, চর্বিব।

বপাটিকা (রী) অবপাটকা। (রুক্ত চি• ২• অ•)
বপাবৎ (ত্রি) বপা-অন্তার্থে মতুপ্ মন্ত বং। প্রবৃদ্ধ, মুইপুই।

"বিপ্ৰা বপাৰন্ত: নান্নিনা তপন্ত:" (ঋক্ **৫**।৪৩)৭)

'বপাৰক প্ৰবৃদ্ধ পশুং' (সারণ) ২ মেদোবিশিষ্ট।
বপাবহ (ক্লী) মেদস্থান রূপ কোঠাল। (চরক্ত্ • ৭ আ)
বিপাল (পুং) বপতি বীজমিতি বপ-ইনচ্। পিডা, জনক। (উজ্জন)
বপুন (পুং) বপ-উনচ্ বা বয়ুন প্ৰোদরাদিশাৎ যস্ত প:।
দেবভা। (শক্ষয়া)

বপুনন্দন, একজন প্রাচীন কবি।

বপূর্ধর (অি) ধরতীতি ধ-স্বচ্, বপুনো ধর:। দেহধারী। বপুষা (ত্রী) হব্লা। (ভাবঞা•)

বপুরুমা (ত্রী) > পদ্মচারিণী লতা। (অটাধর) হরপ। (শক্ ভাহা১৫)

ত কাশীরাজের কন্তা, পরীক্ষিৎতনর জনমেজরের সহিত ই'হার বিবাহ হয়। হরিবংশে লিখিজ আছে, রাজা জনমেজর অন্ধ্রমের বজের অন্ধ্রান করিয়া জাবহনন করেন, বপ্রইমা এই হত জবের সমীপে উপবিটা ছিলেন। তৎকালে দেবরাজ সেই রাজসহিবীকে সর্বাজকলারী দেখিরা ভাহাকে কামনা করেন। ইক্র ভখন জব্দারীরে প্রেবেশ করিয়া বপ্রহার সহিত সঙ্গত হন। জনমেজর জবকে লীবিভ দেখিরা প্রতিক্ষিপাকে কারণ জিজানা করিলে তাহারা ইক্রের হরভিস্কির কথা প্রকাশ করেন। তথন রাজা জভিশ্বর ক্রুক্ত হইয়া ইক্রকে

>29

অভিসম্পাত প্রদান করেন যে, ইস্তা ৷ তুমি বেরপ হছর্ম করিরাছ, এই চুছবের ফলে অক্তাববি কের আর অধ্যেধ মজে ভোমার व्यक्तना कतिरव ना अवः अधिकृषिरगत व्यमस्नारवारंग हेश योज्यारक वृत्थिया छाँकाविशतक तम्य क्रेंट्ड विष्कृष्ठ कतिया एन । পরে বপ্রমাকে নানারপ ভিরন্ধার করিতেছিলেন, এমন সময়ে বিশ্বাবস্থ নামে গৰ্মব্যাঞ্জ তথায় উপস্থিত হইয়া তাঁহাকে কহিতে লাগিলেন, রাজন্! আপনি ত্রিশত অখ্যেধ যজের অনুষ্ঠান করিয়াছেন, এইজন্থ ইন্দ্র তাঁহার ইন্দ্রছনোপের আলকা করিয়া রম্ভা নামক অপ্ররাকে প্রেরণ করিয়াছিলেন, এই রম্ভাই কাশীরাজছহিতা রূপে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। এই বপুটমাই রম্ভা নামী অপ্সরা। ইস্ত এই ছলে আপনার কার্য্য সিদ্ধ করিয়া চলিয়া গিয়াছেন, ইহাতে আপনি হঃখিত হইবেন না, ইহার কালই একমাত্র কারণ। ঋতিক্দিগকে অবমাননা করায় আপনার পুণ্যক্ষর হইয়াছে। আপনা হইতে ইক্সের যে ভর ছিল, তাহা দ্র হইরাছে, অতএব আপনি বপুটুমাকে বুণা তিরন্ধার করিবেন না, ইহাকে পুনরায় এহণ করুন, ইহাতে त्नाव इहेटव ना। विधावस्त्र कथात्र बाक्षा खनरमका हेटाटक পুনরার গ্রহণ করেন। (হরিব • ১৯২-১৯৬ অ ০) বপুত্ম (क्रि) বপুস্ প্রশন্তার্থে মতুপ্। > প্রশন্তশরীরী, উত্তম-শরীরবিশিষ্ট। ২ (পুং) শারালীদ্বীপপতি। বপুষ্য (এ) বপুদ্-হিতার্থে যৎ। শরীরের হিতকর। "বপুর্বপুষ্যা সচতামিরং" (ঋক্ ১।১৮৩।২) 'বপুষ্যা বপুষি হিতা' (সায়ণ) বপুদ্ (রী) উপাত্তে দেহান্তরভোগদাধন-বীজীভূতানি কর্মাণ্য-মেতি বপ্ (অপ্তি-পূ-বপি-বন্ধীতি । উণ্ ২।১১৮) ইতি উসি । ১ শরীর, দেহ। "একাতপত্রং জগতঃ প্রভুত্বং नवः वयः कांखिमः वर्ग्नाः (त्रण् २।६१) ২ প্রশন্তারুতি। (মেদিনী) ও অংশ। "बडोमाः (नाकभानामाः वभूषीतग्रद्ध नृभः।" (मन्न ६।२७) 'বপুন্তেজোহংশঃ' (মেধাতিথি) (স্ত্রী) ৩ স্থনামধ্যাতা प्रकरमा। देनि धर्म**तारकत्र भन्नै।** (मार्करण्यम् ००।२১) বপুঃপ্রকর্ষ (জি) শারীরিক সৌন্দর্যা। বপুঃ ব্রব (পঃ) বপুর: শরীরাৎ প্রব: ক্ষরণং ব্রু: শরীরহিত त्रमधाक्। (साम्बनि •) বপুস্সাৎ (অবা॰) শরীরাকারে। वर्षानद्ग (जि) नीबरदानत, चूफि। "जूनिशीरवा वरशानतः" (अक् ৮।> १।৮) 'बर्लानवः नीवरतानवः' (नावन) वशुद्द्र (वि) वन-खवा। वननीय, वननवागा। नवजीट वीक

वलन क्षिएक मारे।

"बंशा बीक्स न वश्चवार शूरमा भव्नभविद्यद्य ।" (मञ् २।८२) বপ্তৃ (গং) বপতি ৰীজমিতি বপ-তৃচ্। ১ জনক, পিতা। २ कवि। ७ मालिख। "बरधंव भाक्ष वर्शन" (बाक् ১।১৪२।৪) 'বপ্তা নাপিতো ৰপতি' (मात्रग) (@) ৪ ৰাপক। ৫ কৰ্ষক। "यरपितरा रीक्षम्था न रथा नन्दर कनः । তথা নূচে হবিৰ্দ্দৰা ন দাতা লভতে ফলং ॥" (মন্তু ৩১৪২) **বপ্ল (পুং) > ৰাপ। ২ পূজ্য দেবগুরুজন প্রভৃতি। ৩ মেবারে**র রাণাদিগের পূর্ব্বপুরুষ। 🗼 वश्रुहेदम्वी (खी) त्राक्षमहिंबीएक । বিপ্লিয় (পুং) একজন হিন্দু রাজা। বঞ্জীহ (খুং) চাতক (Coculus Melanoleucus) t বপ্যট, মগধের পালবংশীয় প্রথম নরপতি গোপালের পিতা। বপ্যনীল (পুং) জনপদভেদ। বপ্র (পুং ক্লী) উপ্যতেহত্ত্রতি বপ-(ক্ষবিপিভ্যাং রন্। উণ্ ২।২৭) ইতি রন্। ১ ছর্গ ও নগরাদির প্রান্তন্থ পরিথা হইতে উদ্ভ মৃত্তিকান্ত ুপ 🚚রা উপরিবদ্ধ প্রাকারবিশেষ। অর্থ-শাল্তে আছে, থাত হইতে উত্তোলিত মৃত্তিকা দানা বঞ্জ নির্মাণ করিবে এবং তত্তপরি প্রাকার সন্নিবেশ **হই**বে। ইহার পর্য্যায়,—চয়, মৃত্তিকান্তৃপ। (শব্দরত্বা•) প্রাকারের আধার স্বরূপ উত্তোলিত কুত্রিম মৃত্তিকান্ত পের নামই বপ্র। যথা— "মহোঞ্চানাং মহাবঞাং তড়াগ-শতশোভিতাৰু। প্রাকার-গৃহস্থাধামিক্রস্যেবামরাবতীম্ ॥'' (বিকুপু ০ ২২ জ:) ৰপতি বীজমত্রেতি। ২ ক্ষেত্র, চলিত ক্ষেৎ। ইহার পর্য্যায়— কেদার, ক্ষেত্র, নিছুট, বনজ, বাজিকা, গাটীর। (জটাধর) বৃহৎসংহিতায় উক্ত হইয়াছে,—গুক্র বর্ষাধিপ হইলে, শৈলো-भम जनमञ्जान बात्रि वर्षन करत्र, डाशाट वश्र वा क्ला भित्रभूनं হইয়া বায়, পৃথিবী নানা নৃতন শোক্লায় শেয়ভিত হইয়া উঠে, ভাহাতে প্রচুর শালি ও ইকু করে। "শালীকুমত্যপি ধরা ধরণী ধরাভ-धात्राधरत्राक् विजनतः भतिभूर्गवत्था।" (वृह ९ मः ১७।১१) ৩ রেণু। ৪ ভট। "বপ্রাস্তখনিতবিবর্ত্তনং পরোভিঃ" (কিরাভ ৭।১১) ৫ পর্বতসাম্ভ। "নানা-রত্নজ্যাতিষাং সন্নিপাটত: ছরেহন্ত: সামুৰপ্রান্তরেরু"। (কিরাত ৫।৩৬) বপ-রন (রুধি-বপিভাংরন্। উণ্২।২৬) ৬ দীসক । (হেম) "দীসং ৰধুঞ্চ ৰ গ্ৰঞ্চ যোগেষ্টং নাগনামকম্।" (ভাবপ্ৰত পুতপ্ৰ) বপতি বীজমিতি বপ-রন্। ৭ পিতা। (মেদিনী) ৮ প্রাকার। ৯ প্রজাপতি। (সংক্ষিপ্তসার উণাদিবৃত্তি)। ১০ ছাপরযুগের চতুর্দশ বিভাগের ব্যাসভেদ। ১১ চতুর্দশ মহর পুত্রভেদ।

ৰপ্ৰক (পুং) গোলবৃত্তির পরিধি।

বপ্রক্রিয়া, বপ্রক্রীড়া (রী) ভটাবাত। হত্তী বা ব্বের শৃদ দস্তাদি ৰারা উচ্চভূমিতে আবাতরূপ ক্রীড়া।

"বপ্রক্রীড়াপরিণতগল্পপ্রেক্ষণীয়ং নদর্শ।" (মেখদ্ত) বপ্রবাদ, চম্পারণ্যের অন্তর্গত একটা প্রাচীন গ্রাম। ভিলপর্ণী নদীঅটুট অবস্থিত। (ভবিষ্যব্ৰহ্মখং° ৪২।২১৩)

বপ্রা (জী) বপ-রন্টাপ্। ১ মঞ্জি। [মঞ্জি দেখ।]

২ জৈন অবসর্পিণীর একবিংশ অর্হৎ নেমিনাণের মাতা।

বপ্রান্ত (ত্রি) ক্রীড়ার্থ উচ্চভূমি সম্মুখে অবনত মস্তক। বপ্রাস্তর (অব) তট্বর মধ্যবন্তী (হান)।

বপ্ৰাভিঘাত (পু:) ৰপ্ৰক্ৰীড়া।

বপ্রান্তঃস্রুতি (ন্ত্রী) নদীকূলবাহী স্রোভোজন। ২ শাধানদী।

বপ্রাস্তুস্ (क्री) তীরবাহী স্রোতোজন। বপ্রি (পং) বপতি বীজমত্র বপ-ক্রিন্ (বন্ধ্যাদয় । উণ্ ৪।৬৬)

> কেন্দ্ৰ। (সিদ্ধান্তকৌ•)২ গুৰ্গতি। ৩ সমূদ্ৰ।

ব্বশ্রী (স্ত্রী) ব্রী পৃষোদরাদিষপ্রযুক্ত 'ম' স্থানে প। ১ বন্মীক। (হলাযুধ) চলিত **উ**ইটিপী। ২ গ**ও**লৈল।

ব্ব (পুং)একাদশ করণের অন্তর্গত প্রথম করণ, এই করণের অধিপতি ইক্স। ইহাতে বিহিত কর্ম্ম যথা---

"পৌষ্টিকস্থিরগুভানি ববাখ্যে॥" (জ্যোতিস্তন্ধ)

এই করণে জিমিলে মানব বলবান, অভিণীরপ্রকৃতি, কৃতী ও অভি বিচক্ষণ হয়। লক্ষী নিয়ত তাহার আলায়ে বাস করিতে থাকেন।

"ববাভিধানে জননং হি ষস্ত, শ্রোহডিধীরো মমুল্গ: রুতী স্থাৎ। পন্মালয়া তন্নিলয়ে নিবাসং করোতি নিত্যং স্থবিচক্ষণঃ স্থাৎ ॥" (কোষ্ঠীপ্র•)

দাক্ষিণাত্য জ্যোতির্বিবদ্গণের মতে 'বব' শব্দের প্রথম বকার বর্গীর এবং **শেষ বকার অস্তঃ**স্থ**া**

বববলিয়া (দেশৰ) > মিগ্যাবাদী। বাহারা অর্থ লইরা আদালতে মিথাা সাক্ষী দেয়। গ**লাজোলে শব্দ**ও ইহার অসুরূপ অর্থে ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

ব্ৰু, গভি। ভাদি প্ৰদ্ৰৈ সক সেট্। লট্বভ্তি। বন্দ্র (পুং) মগুলী সর্পবিশেষ। (স্কুলত কর • ৪ অ°)।

२ वक्षरानीव क्रोनक अनिष वार्षिः। (निक्रभानं २ व्य°)

বক্রধাতু (শুং) অবর্ণ-গৈরিক, চলিত স্বর্ণগেরিমাটী। বভ্রবাহন, অর্জুনের পুত্র। [পবর্গ দেখ]

বপ্সস্(क्री) ১ ৰূপ। ২ ৰপু। "উত ভা ৰাং ৰুণতো বন্দলো গীপ্ৰিৰ্হিৰি সদসি পিৰতে নৃন্" (ৰক্ ১৷১৮১৷৮) 'ক্লুতো দীপ্তত ৰন্ধসো ৰূপজ্ঞৈৰ ৰপুষো বা' (সামণ)

ব্মৃ (দেশজ) গৃহছাৰোপরি পারাবতাদি বসাইবার জঞ্জ বংশনির্দ্ধিত

ছত্রি বিশেষ। ইহা একটা বংশদপ্তের উপর চকুকোণ আকারে সমতৰ পৃঠে আঁটা থাকে। উঁহা শৃক্ত হানে বিলখিত থাকে বলিরা সম্ভবতঃ ব্যোম শব্দের অপএংশে ক্ষিত হইরা থাকে। ব্মু (অমর) শিবপূজাতে কপোলবাভভেদ। উহা উকার, অকার ও মকারাত্মক শিবের প্রাণব স্বরূপ। যথা— "ডিম্ ডিম্ ডিম্ ডিম্ ডিডিম্ ডিম্ ডিডিমঞ্চমঞ্চং বাদরন্ স্ক্রনাদং वम् वम् वम् वम् वम् वम् अभिजननिवाक्षानमात्मम नृजान्। কৰ্প্রাসিক্তভন্মাণটিতপটুৰটালবিক্জাক্মালো मात्रारयांनी मुनारका त्रयुत्रमनभूतः खान्नरन खाङ्तानी १॥"

(রামনীলামৃত)

২ বরুণবীজ। বথা—"নাসাপুটো ধুমা বমিতি বরুণবীজ্ঞ চতুষ্টিবারন্ধপেন কুম্ভকং কৃষা' ইত্যাদি (তন্ত্রসার ভূতগুদ্ধিঞ -) वस्की (तनम) वसन।

ব্ম, উদিগরণ, ব্মন। ভাদিও পরশৈও সকও সেট্। লট্ ব্মতি. লিট্ববাম, ববমতু: ববমু:। লুট্বমিতা। লুট্বমিতাতি। পুঙ্অবমীৎ অবমিষ্টাং অবমিধুঃ। কেষ কেছ লিটের উস্করিয়া 'বেমৃ:' পদ সিদ্ধিবিষয়েও মত প্রকাশ করেন। "বেমুল্চ কেচিক্রদির" মিতি দেবীমাহাত্ম সন্বিবমিষ্তি, যঙ্বংবমাতে, যঙ্পুক্বংবস্তি। ণিচ্ৰাময়তি, বময়তি। উপসর্গপুর্বাক---উদ্বময়তি। ঘঞ্-বাম। অপ্বম। জ্বা—বমিদ্বা, বাকা। অথুচ্---ব্মথু। কেবল ব্ম ধাতুর উত্তর শিচ্করিলে 'আলে হবল' ইত্যাদি প্রযুক্ত বিকল্পে হ্রম্ম হইবে, কিন্তু উপসর্গপূর্বক ছম্ম নিতাই इटेरव। यथा -- वमग्रकि, वामग्रकि। श्रवमग्रकि। (इर्गानाम) ব্ম (পুংরী) ব্ম-অচ্। ব্মন। ব্মিকরা।

ব্ম্থু (পু:) ব্মন্মিতি ব্ম-অণুচ্ (ট্রিতোহপুচ্ পাএতাচ্ছ) ১ ব্মি। ''লৌকল্য-খাসকাশ-জ্র-ব্মথ্মদা-পা গুতাদাহম্চ্ছ্রিং''

(ফুশ্রুত উত্তর ৪৫ ম:)

২ হস্তিশুগু হইতে নিৰ্গত জলকণা। ইহার পর্যায় – করিশীকর। "त्रक्रनिवम् श्राटनहास्यः क्राक्रममञ्जू है छः ॥'' (देनवर्ग ১৯।७) ব্যান (ক্লী) বম-ভাবে পুটে । ১ ছর্জন। উদসক্ষ পাতাদির উদ্পারণ। "মধুরারে) রসৌ বাপি ব্যনায় প্রদাপয়েৎ।" (ক্সপ্রত ১।১২) জ্বাদিতে রোণীকে আবশুক মত বমন করান ঘাইতে পারে। (বাস্টট)

२ वसनक्रवा। "म क्ष्या वसनः कृष्ट्रात्राृष्ठकद्वसङीवत्र ॥'' (कथानविष्मा॰ ७४।५५)

৩ অৰ্দন। (মেদিনী) ৪ আছতি। (বিশ্ব) ৫ আহার। ^শ যা সৌরাজ্য প্রকাশাতির্কভৌ পৌরবিভূতিভি<mark>ঃ।</mark> चनीजिब्राम्नवमनः इंटबरवार्गनिरविण्णा ॥" (ऋष् ১६।२৯) ব্মতীৰ ওক্লবৰ্ণমিতি ব্ম-সূত্। 💩 শণ। (স্নাজনি •)

ব্যানী (জী) বনন-জীপ্। জলোকা। (রাজনি॰)
[বিজ্ঞ বিবরণ জলোকা শব্দে এইবা।]

বমনকল্প (প্রং) ব্যননিমিন্ত বদনাদি নানাবিধ যোগ-বোজন বিধি। তন্মধ্যে এই মন্ত্রমন্ত্রই প্রাপত্ত। (ক্ষুক্ত, ক্ ০ ৪৩ অ°) বমনদ্রের্য (ক্লী) উর্জ্বপত্ত্রিক আয়ি ও বাযুগুণাধিক বাস্তিকর জবা, বমিকারক বছা। বমিকার জবা যথা—মরনাফল, ক্ড্চিকল, দেরাভাদ্ধা পুন্দা, ভিৎলাউ ফুল, ঘোষা ফল, খেতঘোষা, খেতদর্বপ, বিদ্বল, পিপুল, করন্ত্র, নাগেলর, রক্তকাঞ্চন, খেতকাঞ্চন, নিম, অবগল্পা, বেড্স, বান্ধানি, অপরান্ধিতা, আতৃসী, তেলাকুচা, বচ, রাধালশশা এবং খেতরাখালশশা প্রভৃতি। (ক্ষুক্তত্বত্তত্ত্বত্ত) বমনবিশ্বি (পুং) বমনক্রিয়া। বমনক্রিয়ার কাল—পূর্বাহু। বিচক্ষণ চিকিৎসক শরৎ, বসস্ত ও বর্ধাকালেই রোগীকে রেচন এবং বমন করাইবেন।

"শরৎগ্রীমবসন্তে চ প্রার্ট্ কালে চ দেহিনাম্।
বমনং রেচনং চৈব কাররেৎ কুশলো ভিবক্॥" (ভাবপ্র•)
বে রোগী কফাক্রান্ত, বলবান্, হিন্ধারোগাদি হারা নিপীড়িত
ও বীরচিন্ত, ভাদৃশ রোগীকেই বমন করাইবে।
"বলবন্তং কফবাধাং জ্লাসাদি-নিপীড়িত:।

তথা বমনসাত্মশু ধীরপিত্তশু বাময়েৎ ॥" (ভাবপ্র°)

বিষদোষ, অন্তরোগ, অগ্নিমান্দা, স্নীপদ, অর্কুদ, ক্রোগ, কুন্ন, বিসর্প, মহাজীর্ণ, বিদারিকা, অপচী, কাস, খাস, পীনস, বৃদ্ধি, অপসার,জ্বরোম্মাদ, রক্তাতিসার,নাসা তালু ও ওঠ পাক, কর্ণপ্রাব, অধিজিহ্বক, গলগুণ্ডী, অতিসার, পিস্তপ্লেমবোগ, মেদোরোগ ও অরুচি: এই সকল রোগে চিকিৎসক বমন করাইবেন।

বমন-নিবেধ-বিষয়—কম্প, উপলেপ, নিদ্রা, তন্ত্রা, আলন্ত, নৌর্গন্ধ বিষয়নিত উপসর্গ, কফপ্রসেক, ও গ্রহণী প্রভৃতি দোষ বমনকারী ব্যক্তির ক্ষান থাকে না। বমনের গুণ,—বমনে শ্লেম লোধন হয়, তাই তক্ষনিত সমস্ত বিকার প্রশমিত হইয়া থাকে।

নিয়লিখিত ব্যক্তিদিগকে বমন করাইবে না। যথা— চক্রোগী, উর্জবাত, গুলোলর, শ্রীহ ও ক্রিমিরোগগ্রন্থ, শ্রমার্ড, রূল, কভকীণ, রুল, অতিহৃদ্ধ, মুত্রাতুর, কেবল বাতরোগী, সরো-পদাতী, অধ্যয়নরত, ফুর্ছবি, হংকোঁছ, ভৃষ্ণার্ড, বালক, উদ্ধান্ত, পিত্র, ক্রধিত, নিরুক্ধ ও গার্ডিগী প্রভৃতি। অব্যা বমনে রোগ

"বিবলোবে অভ্যন্তালে মন্দেহরা রীগনেহ কর্ছে।
করেরাগে কুটবিদর্শে নহারীর্ণজনের চ ।
বিদারিকাপারীকান-বানগীননবৃত্তিব।
অপারারে করোজাবে তথা চকাতিনারির ।
নাগাতাবোটগাকের কর্পনাবেহবিকিক্সকে।
গলপুত্রায়ভীলাকে শিশুরেমগাকে তথা।
ক্রোগাকের্কাটে চিব ব্রন্থ কার্যব্যক্তিক্।" (ভাব্রুণ)

দকল ক্লচ্ছ হইরা উঠে, অথবা একেবারে অদাধ্য হইরা পড়ে, তাই ইহাদিগকে বমি করাইবে না। (১)

অতি বমনে তৃষ্ণা, হি**ৱা,উদগার, সংস্করাহিত্য, জিব্বানি:** সরণ, চকুর্ব্যার্ত্তি, হমুসংহতি, রক্তছের্দি ও কণ্ঠপীড়া প্রভৃতি স্বানিয়া থাকে।

বিষ ব্যবস্থার অন্তান্ত বিধি ব্যবস্থার বিষয় বাডট ক্রাস্থানের প্রথম কাধ্যারে ও স্থান্ত প্রভৃতি চিকিৎসা গ্রন্থে প্রস্তীত বমন-অসিদ্ধি পক্ষে আগ্মানাদি বিকার।
[বিস্তুত বিবরণ স্থান্ত চিকিৎসিতস্থানের ৩৪ অধ্যারে প্রস্তীত বমণ্যর্থবিবক্ষারামভিধানাৎ কর্তুরি অনীয়র্-স্থিয়াং টাপ্। ১ মক্ষিকা। (রাজনি॰) ২ (ত্রি) বমন-বোগ্য, বমনার্হ।

বমাল (পারসী) নইদ্রবা বা বন্ধবিশেষ সহিত।
বিমি (স্থী) বমনমিতি-বম (সর্বধাতৃন্ডা ইন্। উণ ৪।১১৩) ইতি
ইন্। বমন, ছর্ণন, প্রাক্ষিকা, রোগভেদ, বমিরোগ। এই
রোগের নিদান ও চিকিৎসাদির বিষয় বৈশ্বকে এইরপ আছে—
অতিরিক্ত তরলবন্ধ পান, অতিশর দ্বিশ্ব প্রবাতোক্ষন, অধিক
লবণভোলন, অকাল বা অপরিমিত ভোলন এবং শ্রম, ভর,
উব্বেগ, অঞ্জীর্ণ, কমিদোম, গর্ভাবন্ধা ও যে কোন ছ্ণাজনক
কারণসমূহ হারা বায়, পিত্ত ও কল উৎক্লিষ্ট হইয়া বমনরোগ
উৎপাদন করে। এই রোগে দোব সকল বেপে, উপদ্থিত হইয়া
মুখকে পীড়িত ও আচ্ছাদিত,এবং সর্বাক্ষে ভদবৎ পীড়া উৎপাদন
করিয়া থাকে।

এই বমনরোগ পাঁচ প্রকার। বাতজ, পিন্তজ, কফজ, সির্নিপাতজ ও আগন্তজ। এই রোগের পূর্ব্বরূপ বমি উপস্থিত হইবার পূর্ব্বে হ্রনাস, অর্থাৎ বমনোদ্বেগ, উদ্দারাবরোধ মুখ-প্রসেক ও মুখ দবণাক্ত বোধ হয় এবং আহারীয় ও পানীয় দ্রব্যে অত্যন্ত বিশ্বেষ হইয়া থাকে।

বমির সামাপ্ত লক্ষণ—বে রোগে কুপিত দোব অত্যন্ত বেগ ও অঙ্গপীড়নের সহিত উর্জদেশে অর্থাৎ মুখের দিকে ধাবিত হইরা মুখকে পরিপুরণ করত বহির্গত হয়, তাহাকে ছর্দ্দি বা বমিরোগ কহে।

(১) শী বাবৰেৎ তৈনিমিকোর্ক বাত-গুলোগন-নীংক্রনি-অবার্তান্।
ছলকডকীণকুলাভিবৃত্বমূত্রাত্রান্ কেবলবাতরোপান্।
বরোপবাতাবারনএসকল্পান্ত্রান্তিনিক্রিকিতাংশন।
উপ্তারপিককুবিতা নিক্রক্লার্ডিপ্রাবিদিকরিক্তাংশন।
অব্যাব্যবার বাপাং কৃদ্ধ ভাং বাভি দেহিনাং।
অসাব্যতাং বা পদ্ধতি নৈতে বাবায়তত: কৃতাং।
এতেহণ্যজীর্থাবিতা বাবা বে চ বিবাত্রাং।
অতীক্তোব্যক্লান্ড চ স্থার্থ্বাস্থ্বাং" (স্প্রত)

বাতক লক্ষণ—বাতক বমনে ক্ষর ও পার্কবেশে বেদনা, মুখশোর, মন্তক ও নাভিহনে শুলবেদনার ছার বেদনা, কাস, বরভেদ, আলে স্টীবেধবং বেদনা, এবং অভি কটের সহিত অভিমাত্র বেগ, প্রবল উল্পার, ও অভিশব শব্দের সহিত ক্ষেন-মিশ্রিত বিচ্ছির (থামিরা থামিরা) পাতলা ও ক্যার রসবিশিষ্ট বস্তু বমন, এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়।

পিত্তৰ লক্ষণ—পিত্তৰ ব্যনরোগে মূর্জা, পিপাসা, মুখণোষ, মন্তক, তালু ও চকুর্বরে সন্তাপ, আছকার দর্শন, এবং পীত, হরিৎ, বা ধ্রবর্ণসূক্ত, ঈবং তিক্ত, আতি উষ্ণ পদার্থের ব্যন, ও ব্যন সমরে কঠদেশে আলা, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

ক্ষম্ম লক্ষণ — ক্ষম্ম বমনরোগে মুখ মধুর রসবিশিষ্ট, ক্ষ্প্রাব, ভোজনে অনিছা, নিল্লা, অক্লচি, দেছের শুক্তা, রিশ্ব, ঘন, মধুর রসবুক্ত ও শেতবর্ণ পদার্থ বমন এবং বমনকাশে শরীরে রোমাঞ্চ ও অভিশর বর্জণা হইরা থাকে।

সন্নিপাতজ লক্ষণ—সন্নিপাতজ বমনরোগে শূল, অজীর্ণ, দাহ, পিপাসা, খাস, মৃদ্ধা এবং লবণ রসযুক্ত উষ্ণ, নীল বা লোহিড বর্ণের ঘন পদার্থ বমন প্রভৃতি লক্ষণসমূহ প্রকাশিত হয়।

আগন্তঞ্জ বমন—কুৎসিত দ্রব্য ভোজন ও কোনরূপ গুণাজনক বস্তুর আত্মাণ বা দর্শনাদি কারণে যে বমন উপস্থিত হয়, অথবা ত্রীদিগের গর্ভাবস্থার যে বমি হয়, কমিরোগ বা আমরসের ক্ষন্ত যে বমি হইয়া থাকে, তাহাকে আগন্তজ বমি কছে। এই বমনরোগে বাতাদি দোব এরের মধ্যে যে দোবের লক্ষণ অধিক প্রকাশিত হয়, তদমুসারে তাহাকে সেই দোবজ বমনরোগ বিলিয়া স্থির করিতে হইবে। কেবল মাত্র ক্ষমিজ বমনরোগ অত্যন্ত বেদনা, অধিক বমনরোগ এবং ক্ষমিজ ক্রন্তোগের কতিপয় ক্ষালে প্রকাশ পায়। আগন্তজ বমনের কারণ পাঁচটা বিলিয়া ইহাও পাঁচ প্রকার, য়থা—অসাত্মক, ক্ষমিজ, আমজ, বীতৎসক ও দৌর্ছ কর। এই আগন্তজ বমনে বাতজাদি দোবের লক্ষণ অমুসারে ইহারও বাতজাদি কারণ স্থির করিতে হইবে।

এই রোগের উপদ্রব—কাস, তমক খাস, অর, পিপাসা, হিলা, বিক্লতচিত্ততা, স্বল্লোগ এবং ক্ষকারে প্রবিটবৎ বোধ।

বমনরোগের সাধ্যসাধ্যতা—বমনরোগে বদি কুপিত বার,
মল, মৃত্র, স্বেদ ও জলবাহী লোভঃসমৃহকে ক্লম জীররা উর্জগত
হর এবং তজ্জন্ত বদি রোগীর কোঠ হইতে পূর্ব্ধ সঞ্চিত পিত্র, কফ
বা বারু ব্যতি স্বেদাদি ধাতুসমূহ উদ্দীর্ণ হইতে থাকে, জার বমি
বদি মলমূত্রের ভার গভযুক্ত হয়, তাহা হইলে সেই বমনরোগাক্রোজ্ঞরোগী ভূষণ, বাস, ও হিভাদি গারা শীড়িত হইরা
হঠাং বিনষ্ট হইরা ধাকে। বে বমনরোগে রোগী শীণ হইরা
য়ার, এবং সর্বাধা রক্তপ্রাদি মিলিত প্রার্থ বমন করে, অথবা

বনিজে বদি মরুরপুজের ভার আ্ঞা বেশিতে পাওরা বার, কিংবা বননরোগের সহিত বদি কাস, খাস, অর, হিলা, কুঞা, প্রম, ক্রোগ প্রাকৃতি উপরেব উপন্থিত হর, তাহা হইলে এই বননরোগ অসাধ্য। এই সকল সকল ভিন্ন অপর সকল প্রাকার বননের চিকিৎসা করিলে আঞ্চ প্রভীকার হয়।

চিকিৎসা—সকল প্রকার বমনরোগই আমাপরে দোব সক্ষিত হইরা উৎপার হর, এই জন্ত ব্যনরোগে সর্বপ্রথমে লক্ষন পেওরাই কর্ত্তবা। তাহার পর কক ও শিক্তমাপক সংশোধন (বমন বিবেচন) ঔবধ সেবন করান বিধের। কিন্তু একটু বিশেব এই বে, কেবল বাভক ব্যনরোগে লক্ষন অকর্ত্তবা। বাভক ব্যনরোগে তুলা জলসুক্ত হর, সৈত্বব লবণ ও মুভনিপ্রিত মুগ বা আমলকীর ব্র পান করিছে দেওরা উচিত। ওলঞ্চ, ত্রিফলা, বহেড়া, আমলকী, নিম্ব, ও পোলতা এই সকলের কাথ, মধুসংযোগে পান করিলে পিভল ব্যিরোগ ভাল হর। হরীত্তবীচুর্গ মধু বারা লেহন করিলে দোবকে অধোগামী অর্থাৎ বিরেচিত করে, এ কারণ শীত্তই ব্যি নিবারিত হর।

বিড়ল, ত্রিফলা ও ভাষী চুর্ণ সমভাবে গ্রহণ করিয়া মধুর সহিত কিংবা বিড়ল, কৈবর্ত্তমুক্তক ও ভাষীচুর্ণ সমভাগে মধুর সহিত দেবন করিলে প্লেমজ বমিরোগ বিনষ্ট হয়।

আমলকী, থৈ ও চিনি ৮ তোলা, একত্র পেষণ করিরা, তৎসলে ৮ তোলা মধু এবং ০২ তোলা অলমিপ্রিত করিরা বল্ধনার ছাকিরা লইতে হইবে, পরে উহা পান করিলে ত্রিদোবজ বিমরোগ নিবারিত হর। গুলঞ্চ বারা হিম (শীতক্যার) প্রস্তুত করিরা মধু সহযোগে পান করিলে কুচ্ছুসাধ্য ত্রিদোবজ বমিও হঠাৎ প্রশমিত হয়।

হরীতকী, ত্রিকটু, ধনে ও জীরা সমভাগে চুর্ণ করিরা মধ্র সহিত গেহন করিলে ত্রিলোবজ বমি ও অক্রচি নট্ট হর। বেলছাল, গুলকের কাথ ও ক্ষেত্র পাণড়ার কাথ মধু সহবোগে পান করিলে সারিপাতিক বমি নিরাক্বত হর। আমের জাঁটি ও বিবের কাথ মধু ও চিনি সহবোগে পান করিলে বমি ও অতীসার বিনট্ট হয়। আম ও আমের পাতা হারা কাথ প্রেছত করিরা শীতল হইলে থৈচুর্ণ ও মধুসংবোগে পান করিলে উন্নালক্ত বমি, অতীসার ও পিগানা নট হয়।

অধ্বর্ধের ছাল ওকাইরা অগ্নিতে গোড়াইতে হইবে, পরে উহা ললে নিজেপ করিরা সেই লল পান করিলে অতিগ্র:মাধ্য বমিরোগ নিরাক্ত হব। এলাচি, লবল, নাগকেলর, কুলের আটির শাঁন, বৈ, প্রিরলু, সুত্তক, রক্তচন্দন ও পিরালী এই সকল দ্রব্য সমতাপে চুর্ণ করিরা মধুর সহিত লেহন করিলে বাতল, পিতল ও ককল এই ত্রিবিধ ব্যিরোগই প্রশ্নিত ছব। বীভৎন ংবৰি ক্ষমগ্ৰাহী, জব্য ছালা, পোক্ষমণ বনি অভিলবিত কৰ ছালা, ও আমক বনি লক্ষন ছালা নিবারণ ক্ষিতে
হয়। উদগার আধিক্যের সহিত বনি হইলে মূর্কা, ধনে,
দত্তক, ক্ষমগুও রদালন্দ্র্প সমভাগে গ্রহণ ক্রিরা মধুসহবোগে
লেহন অথবা সাবর্জন লবণ, ক্লফলীরা, চিনি ও মরিচচ্প
সমভাগে মধুর সহিত লেহন ক্রিলে সছা বনি নিবারিত হয়।

(ভাৰতা - বমিরোগাধি - কুল্রভ)

ভাবের কল, মুড়ি বা পোড়ারুটি ভিজাজন, অথবা বরকজন বনন নিবারণের উৎকৃষ্ট ঔবধ। বড় এলাইচের কাথ দেবনে বন্ধনরোগ আন্ত নিবারিভ হর। রাত্রিতে গুলাক ভিজাইরা রাথিরা প্রাভঃকালে দেই কল রখুর সহিত পান করিলে সকল প্রকার বমি নিবারিভ হর। ক্ষেত্রপাগড়া, বিষ্মৃল বা গুলাক্ষের কাথ মধুর সহিত বা মুর্ব্বা মূলের কাথ চাউল ধোরা জলের সহিত সেবন করিলে সকল প্রকার বমিই তাল ইইতে পারে। বাইমধু ও রক্তাচন্দান ছয়ের সহিত উত্তমরূপে পেবন ও আলোড়ন করিরা পান করিলে রক্তবমন মিবারিভ হর। আমলকীর রস ১ ভোলা ও কতবেলের রস ১ ভোলা, কিন্দিৎ পিশ্লাচ্ন, ও মরিচচ্ন মধুর সহিত একত্র মিপ্রিভ করিয়া দেবন করিলে প্রবল বমনও নিবারিভ হয়। ভেলাপোকার বিষ্ঠা এ৪ টী দানা জলে ভিজাইয়া ঐ জল একট্ একট্ থাইলে অতিপ্রবল বমিও তৎক্ষণাৎ প্রশমিত হয়।

বেডচন্দন ২ তোলা, আমলকীর রস ২ তোলা একত্র কিঞ্চিৎ মধুপ্রক্রেপ দিরা সেবন করিলে বমি থামিরা বার। ভাজা মুগ ১ পল, জল ২ সের, শেষ ২ পল, ধইচূর্ণ ২ পল ও কিঞ্চিৎ মধু ও চিনি মিশ্রিত করিরা এই জল পান করিলে বমি, অতীসার, ফুক্মা, দাহ ও জর নিবারিত হয়। ইহা ভিন্ন এলাদিচূর্ণ, রসেক্র, র্বধ্বজন্ম ও পদ্মকান্তব্যুত প্রভৃতি: বমনরোগের উৎকৃত্ত শ্রবধ। (ভৈবজারত্বা • বমিরোগাধি•)

এই রোগের পথ্যাপথ্য।—বমি হইলেই আমাশরের উৎক্রেশ হর, এই জন্ত প্রথমে লজ্জন দেওরা উচিত। বমনবেগ নিরত্ত হইলে লগুণাক, বার্র অন্ধলামক ও ক্লচিকর আহারাদি ক্রমণ: দেওরা আবস্তক । বমনের বেগ থাকিতে বদি আহার দিবার আবস্তক হর, তাহা হইলে ভাজাবুগের কাবেল সহিত থৈ চূর্ণ, মধু ও চিনি মিশ্রিত করিরা আহার করিতে দিবে। এইরপ আহার দিলে বমন, ভেদ, অর, লাহ ও পিপাসার শান্তি হইরা থাকে। বমনবেগ নিরত্ত হওরার পর সভ্যত সকল দ্রব্য আহার এবং জ্রাদি উপসর্গ না থাকিলে অভ্যাস্যত স্থানাদি করিতে পারা বার। পরিকার পানাহার, পরিকৃত হানে বাস, হুগছ আহাণ এবং মনের প্রভ্রতা এইগুলি এই রোগে বিশেষ উপ-

কারী। বে সকল কারণে স্থণা জন্মিতে পারে, সেই সকল কারণ ও রৌক্রাদির আতপ সেবন প্রভৃতি বমনব্রোগে বিশেষ অনিষ্টকারক।

শূলরোগ ও অরপিত রোগে বমন করাইলেই উপকার হয়। ঐ সকল রোগে বে সকল বোগ সেবন করাইরা বমন করাইতে হয়, তাহা তত্তদ শব্দে তাইবা।

বমতি উদ্গিরতি ধ্মানিকমিতি 'ইক্ ক্লয়ানিভাঃ' ইতি ইক্।
২ আমি। (মেনিনী)ও ধ্র্ত্ত। (শক্রমাণ)
বমিত (অি) বম্-কো। বাস্ত। বমনমুক্তা। ক্লতবমন। পীড়িত।
"বমিতং লব্দরেৎ প্রোক্তো লব্দিতং ন তু বামরেৎ।
বমনে ক্লেশবাছল্যাৎ হলাক্লবনকর্মিতং ॥" (উত্তট)

২ বমনকৃত বন্ধ।

বমিত্ব্য (জি) ৰমনের উপর্ক্ত। বমনোজেক্কারী।
বমিন্ (জি) > বমনকারী। ২ পীড়িত।
বমী (দেশল) উদরস্থ জবোর উদ্গমন। বমন।
বস্থেটিয়া (দেশল) > জনদক্ষা। বোধাই প্রেসিডেলীর
সম্লোপক্লে থকাকোর ম্সলমান জনদক্ষাণ পণাবাহী নৌকা-,
চালনের ভাণ করিয়া বণিকদিগের নিক্ট আসে এবং হ্বিধা
পাইলে তাহাদের বণাসর্কাম্ব লুঠন করিয়া লইয়া যায়। অনেকে
অন্থমান করেন, 'বন্ধে' (জনপদ) ও বেটিয়া (থর্কাকার)
বা বন্ধেবাসী অর্থ হইতে এই দক্ষা সম্ভ্রনকে যাতায়াত করে,
ইংরাজীতে ভাহা Bum-boat নামে থ্যাত। অধিক সম্ভব
এই 'বন্ধোট' শব্দ হইতেই ক্লাদক্ষা সম্ভ্রাদরের বন্ধেটে
মাম হইরাছে।

২ বর্ত্তমান সমরে দ্বাসৃষ্ট্রপ দৃঢ্কার পুরুষকেও ব্লোকে ব্রেটে বলিরা সম্বোধন করে। ৩ বে সকল কর্ম্বচারী ক্ষুদ্র নৌকার আরোহণ করিরা সমূত্রমূথে আসিরা বৈদেশিক বণিক-দিগের জাহাজ ধরিরা এজেন্টের হাতে বা থালাশবোঝাই সমিতির নিকট আনিরা দের, ভাহারাও ধ্যোট নামে থাত।

वस्त (ग्रः) वरम, वीम । (मसत्रप्ता°)

বজ্ঞারব (পুং) হবারব (প্রবাদি)।

বন্মাগ (क्री) জনপৰভেদ।

ব্ৰ্ৰ্ৰ (গ্ৰং) ১ উপজিহ্ন। (ৰক্ ৮।৯১।২১) বন্ন বিবাং জীপ্। ২ উপজিহ্নিকা। "বনীডিঃ প্ৰস্থাবা মদানং।" (ৰক্ ৪।১৯।৯) "বনীডিক্লপজিহ্নিকাডিঃ" (সাক্ষা)

্পং) এক ধন বৈধিক ধৰি-নত্ৰ বৈধানদ, ইনি ধধেদের ১০১৯ প্ৰক্ষের মন্ত্ৰত্বা ধৰি। ব্ৰক্তীকূট (দ্লী) ক্ৰীক। বদ্ৰক (গুং) হৰজাতীয় পিশীলিকা।

ব্রু, গভি। জ্বাদি আমনে সক সেট। লটু বরজে। লোটু বরতাং। লূটু বরিবাতে নুট্ ববরে। লুট্ বরিজা।

বয় (গুং) তন্তবার। বন্তবরনকারী। দ্রিরাং জীপ্। বরী ত্রী ভন্তবার।

বয়€ 🛦 🖲) वत्रनकार्य।

বয়ত (গং) ৰখেদ-ৰৰ্ণিড ব্যক্তিভেদ। (ৰন্ ১।৩এ২) বয়ন (দ্বী) ব্যাদির ক্ত্তগ্রহণক্রপ কার্যবিশেষ।

বয়নবিতা, উর্ণা বা কার্পাসাদি প্রজ্ঞাত বন্ধনির্দাণরূপ শিল্পবিদ্যাবিশেব। পাশ্চাতা বিজ্ঞানে ইছাকে Art of weaving বিলয়া থাকে। কিরপে কত পরিমাণ তুলা লইরা কত বিভিন্ন নধরের মোটা ও সরু স্তা প্রস্তুত করিতে হয়, তাহার পর সেই প্রতাপ্তলি টানা দিরা দিরা নরাজে শুটাইতে হয়; তদনন্তর নরাজ তাঁতে সংযোজিত করিয়া তাহায় স্তার থেইপুলি প্রথমে হুইটা ঝাপের মধ্যে দিয়া ও পরে সানার মধ্য দিয়া চালাইয়া দিতে হয়; তৎপর বর্থানিয়মে তাঁতবন্ধ স্ক্রাদিসহ স্পেম্বন্ধ করিয়া, তন্ধবায় বা বন্ধবরনকারী কিরপেই বা মারু নামক যন্ধান-সাহাব্যে বন্ধ ব্নিতে পারেন, তৎসমুদার বাহাতে শিশ্বিতে বা ব্রিতে পারা বায়, তাহাকে বন্ধবরনবিত্যা বলে।

বর্ত্তমান সময়ে পাশ্চাত্য জগংবাসী সভ্যজাতিগণ প্রথম বৃদ্ধিপ্রভাবে হল্কচালিত এ দেশীর তাঁতের অমুকরণ দারা বৈজ্ঞানিক ভিত্তিপ্রতিষ্ঠিত একপ্রকার লোহবর্ত্রমর তাঁতের আবিকার করিরাছেন। ঐ সকল কলে এককালে হতা প্রস্তুত্ত হইতে বস্তুবরন পর্যান্ত এতং শিরসংক্রান্ত বাবতীর কার্যাই হ্নসম্পন্ন হইরা থাকে। যব্রচালনা হইতে বিভিন্ন প্রকারের হতা (Yaru) নির্দ্ধাণ, হতা বৃদ্ধান (Dyeing) ও বস্তুবর্ত্তন সকল প্রকার কার্যাই শিক্ষণীর। বিভিন্ন প্রকার তাঁতের বিবরণ ও চালনা এবং তাহার শিক্ষণ প্রণালী পরে বিবৃত্ত হইতেছে।

অতি প্রাচীন কাল হইতে আমরা কি প্রাচা কি পাশ্চাতা সভা জনপদসমূহে দেহাছাদক বরের (ধক্ ১০২৬০১১) প্রচলন দেখিতে পাই। প্রাচীনেরা তৎকালে বজবরনকৌশল স্থচাদ-রূপে অবগত ছিলেন। ধক্সংহিতার ১০৯০০১, ১০৯২০১, ২০৯৩০, ৯০৮০, ৯০৯৮০ প্রভৃতি মন্ত্র আলোচনা করিলে বেদী ও রক্তানের আছোদন-বরের বহল ব্যবহার ক্ষরকম হয়। এই বর নাধারশতঃ গুরুক্ ও কল্যাশকর (ধক্ ৩০৯২) এবং জন্তনাচিত ও আবশ্রকীর (ধক্ ১০৯৪৪, ৫০২৯০৫)। ইহা তৎকালে সাধারণে ধনস্বল্প বলিয়া গৃহীত হইন্নাছিল (ধক্ ৬৪৭০০)। মাতা স্বয় প্রাহির পরিষের বাদ নির্দাণ করি-তেন—শব্রা প্রার মাতরো বয়বি। " (ধক্ ৫০৪৭০); উহার

হত্ত ভালার প্রতিষ্ট হত। অথকাবেরের বাসাণ, চারাহর, ১২।এ২১, ১৪।২।৪১ মত্রে বত্রের উল্লেখ প্রাপ্তরা বার। ভবির কাত্যারন প্রোভহত্তর (১৪।১।২০), আবলারম গুরুহত্তর (১৮।১২), গোভিলগৃছ (৩৪২০), এবং পারভরগৃছ (৩৪১০) হত্তর বত্রের আবশুক্তা ও ব্যবহার লিপিবছ হইরাছে। কৌবীতকীরাজণে (২।২৯) কৃষ্ণবর্ণ বত্রের প্রচলন দেখিরা মনে হর, ভবনকার কবিগণ শুক্রেতর কুকাণি কর্ণ বার। বত্ররঞ্জন করিরা ব্যবহার করিতেন এবং জীহারা বে রঞ্জনপ্রশালী অবশৃছ হিলেন এই বস্তু হউতে ভাহারও আভাল পাওরা বার।

গৌলাণিক বুলে সানা-বৰ্ণরঞ্জিত ব্যাধারণের এড়ত व्यव्यवस्था विद्यास्थित । छारे वृत्तावस्थित्या वस्त्रामी चीव ভাষতম্ব পীতবসদে সমাহাদিত করিয়াছিলেন। গণও রক্তবাস বা **নীলবাস পরিমৃত হইরাছিলেন।** রাষ্ট্র আহ্লণদিগকে কৌশেরবস্ত্র (রামায়ণ ২।৩২।১৬) দান করিয়া-ছিলেন। অবোধ্যাকাণ্ডের ৩৭ অধ্যারে রাম ও লক্ষণের শুভবসনহয় পরিভ্যাগপূর্বক চীর ধারণ করিবার কথা আছে। আবার ২৷৫২৷৮২ সোকে দীতা কর্ত্তক ত্রাত্মগদিগতে বিবিধ বস্ত ও অরপ্রদানের উল্লেখ দেখিয়া মনে হর, তখন নানা রঙ্ও উর্ণাদি নানা দ্রব্যক্ষাত বন্ধ প্রচলিত ছিল। বিভিন্ন রাজগণের বেশভূবা ও ক্রৌপদীর বত্তহরণ-প্রসঞ্চে বথেট বল্পপার্থক্যের নিদর্শন পাওরা বার। রামারণের আদিকাণ্ডের ৭৭ অধ্যান্তে লিখিত আছে বে অযোধ্যাধি-পতি দশরণ বীয় পুত্র ও পুত্রবধ্ চতুইরকে লইয়া জনকগৃহ হইতে বরাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হইলে ক্লনবর্গ বিবিধ কাম্যবন্ধ ৰারা তাঁহার পূজা করিরাছিলেন। তথন কৌশল্যা, সুমিত্রা, কৈকেরী এবং জ্ঞান্ত রাজপত্নীরা কৌমাবাস পরিধান করিয়া প্তবধ্ রাজকুমারী চতুইরের সহিত মলল আলাপনপূর্কক তাঁহাদের সমভিব্যাহারে দেবালয়ে পূজা দিতে গমন করেন। এই সকল আলোচনা করিলে জানা বার বে, রামারণীয় যুগে ভক্ল, কাশাররঞ্জিত বস্ত্র এবং ওভকার্ব্যে ক্ষোম্যবাদের প্রচলন বটিরাছিল।

ভগবান্ মন্থরচিত স্বভিপ্রেছের ৩৫২, ৯২১৯ ও ১১১৮১ লোকে বল্লের উল্লেখ আছে। ঐ পরিধের বাস তথনও সম্পত্তি মধ্যে গণা ছিল এবং বল্লছরণভারী বধনওে দণ্ডিত হইতেন (৮২২১ লোঃ)। উক্ত প্রেছে অস্তান্ত সম্পত্তির ক্লার বল্ল বিভাগেরও ব্যবস্থা দেখা বার।

ি বদি কেই উপাশণাদি অথবা কাশাসিকস্ত্র অপহরণ করে, তাহা হইলে সে ভজন্মব্যের বথাস্ক্যের বিশুপ দিতে বাধ্য (মস্থ ৮০২৬)। ভজ্কবার বদি ব্যাব্যয়নার্থ কোন ব্যক্তির নিকট ১০ পল পরিমিত প্রত্নগ্রহণ করে এবং ব্যাধিকারীকে ভক্তমগুমিপ্রণের ক্লক্ত ১১ পলমান বস্ত্র না দের, তাহা হইলে রাজদুখামুসারে সে ১২ পুল দিতে বাধা হইরা থাকে।

"छखवादमा मन्नान्य मछाद्यक्रननाधिकम्।

্ত্ৰ অতোহক্ৰথা বৰ্তমানো দাপো বাদশকং দমন্ ॥" (মন্তু ৮।৩৯৭)
উপৱোক্ত ভূলার পরিমাণ দুটে উপলব্ধি হয় যে, তৎকালে
বৈ সকল প্রমাণ বস্ত্র প্রবৃত্ত হইত, তাহা দীর্ঘ ও প্রায়েই
বর্তমান প্রমাণ বস্ত্রের কম্মুরুণ ছিল।

তৎকালে কার্পান, রেশন ও পশমী বত্তের বহল ব্যবহার

হিল। তাঁহারা জলপ্রকালন বারা কার্পানবত্ত এবং কারজমৃত্তিকা

নারা রেক্সী ও পশমী বত্ত বিশুদ্ধ করিরা লইতেন :—

শঅভিছ প্রোক্ষণং শৌচং বহুনাং ধালুবাসসাম্।
প্রকালনেনম্বরানামভিঃ শৌচং বিধীরতে ॥

চেলবং কর্মাণাং গুছিবৈদলানাং তথৈব চ।

শাকমূলকলানাক ধালুবং গুছিরিবাতে ॥

কৌবেরাবিকরারবৈঃ কৃতপানামরিইকৈঃ।

শীকলৈরংওপটানাং কৌমানাং গৌরস্ববিশঃ ॥

কৌববং শুশুলানাং অফ্রিন্তুমরক্ত চ।

গুছিরিজানিতা কার্য্যা গোস্তোনাদকেন বা ॥"

(मञ्जारहिका ६।১১৮-১২১)

উক্ত গ্রন্থের ১০ম অধ্যারে ৩৫ ও ৫২ প্লোকে নিবাদচতালাদি হীনজাতীবের মৃতচেল পরিধানের বিধি আছে; কিন্তু অক্টের পক্ষে মৃতের বাস ত দ্বের কথা—রজককর্তৃক প্রমক্রমেপ্রদত্ত পরবাসও গ্রহণ করিতে নাই। মন্থুসংহিতার উহার নিবেধ-বচন বিধিবন্ধ আছে,—

"শাল্পনী ফলকে প্লক্ষে সেমিজাারেজক: খনৈ:।

ন চ বাসাংসি বাসোভিনির্ছিলের চ বাসরেৎ ।" ৮।৩৯৬ প্লোক
তৎকালে কুম্পুডাদি বাসা রক্তরজিত খাপকৌমাজিনাদি
নির্দ্ধিত বস্ত্র ও বিক্রের বাজণের পাক্ষে বিশেব নিবিদ্ধ
ভিল (মন্ত্র ১০৮৭)।

এই সকল আলোচনা করিলে বেশ বুঝা বার বে, বৈদিকবুগ হইতে স্বতিবুগ পর্যাক্ত ভারতীর আর্থাসমাজে বরনবন্ত ও বরনবিভার প্রাভৃত প্রচলন ছিল। পরবর্ত্তী পৌরাণিক যুগে তাহার প্রভাব জারও বিভৃত দেখা যার। রামারণ ও মহাভারতাত্ত্বি ঐতিহাসিক মহাকাব্যে এবং পুরাণাদি শান্তগ্রছে বিভিন্ন বর্ণরঞ্জিত বত্তের বহুল ব্যবহারের প্রমাণ আছে; কিন্তু হৃঃথের বিবর তাহার কোন নিদর্শন নাই।

🍍 বদি জগতের প্রাচীন বন্ত্রশিরের নিদর্শন দেখিজে 📆 বদি জগতের সর্বপ্রাচীন তাঁতের অন্তিম উপলব্ধি করিবার আবশুক হর, তাহা হইলে একবার প্রাচীন মিশররাজ্যের দিকে দৃষ্টি निः स्किन कत्रित्न नकन मत्मिरुहे मिष्टिया वाहेत्व। छशाकात्र मामि-शब्ददत्रत्र मत्था (Mummy pita of Egypt) अञ्चलकान ক্রিলে আজিও শ্বাচ্ছাদিত বল্লের (মড়ার্লড়ান কাপড়) প্রভৃত নিদর্শন পরিলক্ষিত হইবে। মিশরের এই লিনেন্ বক্ত পরিচ্ছর ও नीर्धकान शांत्री त्मिश्रेत्रा उथाकात्र लात्क नमामत्त्र উहात्क শ্বদেকের অস্ত্যেষ্টি-ব্যাপারে নিরোজিত করিরাছে। রোজেটার প্রস্তর্নিপি হইতে জানা বার যে, তথাকার রাজসরকার হইতে পুরোহিতদিগকে তাঁহাদের চিরপ্রির কার্শাসবস্ত্র দেওরা হইত। তথাকার উচ্চলেণীর সম্ভান্তলোকেরা কার্পাস ও পশমী বাস পরিধান করিত এবং দরিদ্রগণ একমাত্র পশমী বস্তুই অঙ্গে ধরিত। এই পশমী বন্ধ ভারী ও তাহাতে পোকা লাগে বলিরা তথাকার পুরোহিত সম্প্রদায় লিলেনবল্লেরই বিশেষ পক্ষ-পাতী ছিলেন।

হিক্ত জাতির ধর্ম্মাজক ও পদস্থ সম্লান্ত ব্যক্তিগণ উৎকৃষ্ট লিলেন বন্ধই ব্যবহার করিতেন। বাইবেল গ্রন্থের ইংরাজী অন্থবাদে তাঁহাদের যে রেশমী বন্ধ ব্যবহারের কথা আছে, তাহা সম্পূর্ণ প্রাথমিক, কেন না, প্রোচীন হিন্দ্র বা আসীরীমদিগের মধ্যে রেশম ব্যবহারের বিশেষ ইন্ধান প্রমাণ পাওরা যার না। ইংলতের British museum নামক জাত্বরে প্রোচীন হল্ম লিলেন বত্তের বে নিদর্শন আছে, তাহার হতা ২ পাউও ওজনে প্রায় ১০০ স্থাছ (Hank) এবং ২ ইঞ্চ স্থানের মধ্যে টানার (warp) ১৪০ খাই ও পোড়েনে (woof) ৬৪ খাই হতা বিদ্যান রহিলাছে।

খেৰিস্ নগরে ও জন্ধান্ত স্থানে প্রাচীন নিগরীর তাঁতের বে
লকল নার্কা বিভয়ান আছে, তাহার বরন-প্রণালী অবিকল
ভারতীর তাঁতেরই অক্তরণ, কেবল প্রভেদের মধ্যে এই বে,
নিগর-দেশীর তাঁত থাড়া-ভাবে পাতা (vertical), আর ভারতীর
তাঁত পাটাভাবে পাড়া (Horisontal)। পাল্টাড়া পণ্ডিতরপের বিধান, অরণাতীত কাল হইতে ভারতীর আর্থানণ বে
প্রথার ব্রবরন করিয়া আনিজেহেন, সেই চিরন্তন প্রথানিক
তাঁত ক্রবে পারত ইইরা প্রাচীনকালে রুরোগে প্রবেশ গাত

^{*} কোন পাকাছা পাছত ঘলেন,—"No trace of linen cloth made from flax is to be found in Manu or in any other earlier works of the Hindus, and it is probable that flax has never been made from the linseed plant for the manufacture of years for weaving.' কিছু নমুনাহিছাৰ ১০৮০ লোকেন "সৰ্বাক ভাতৰা কছা লাগ কোনাবিভালি চ।" চন্দ্ৰ লাগ কনিলে সেক্তা মনে হব না, যাহ ভাতৰালী আইনিভাকে সকল প্ৰকাষ সক্ষ ও বোটা প্ৰেন্ত ব্যৱস্থিতে স্বৰ্থ বলিয়াই কিবছনা কৰা বাব।

করিয়াছিল। ভাটিকানের ভার্কিল-পুরিতে বন্ধকনোন (Montinuçon) কর্ত্ব মধার্থীর বে তাঁতের চিত্র অভিত আছে, তাহা পুরীর ৪র্থ শতাবের বলিরা উক্ত হইরা থাকে। উহার সহিত ভারতীর তাঁতের বর্গেই সৌনান্ত আছে, তবে তু এক ছানে সামাজ পরিবর্তনও দৃষ্টিগোচর হর। চীম লাতির বেশমী বন্ধ-বুনা-তাঁত সম্পূর্ণ যতর এবং চীমলাতির অক্তুলাক-করিত, ইহাতে যরপরিপাট্য অনেক অধিক। সভবত: এই তাঁতের অক্তরণে বর্তমাম লাওস্ম সকল গঠিত হইরাছে। আরিপ্রট্লে রেশমের উরেধ দেখিরা মনে হর যে, গ্রীক ও রোমক-দিগের ক্রথসমৃত্তির সময় তাহাবের বিলাসবাসনা পূর্ণ করিতে চীন হইতে রেশম ও তাঁত রুরোপে নীত হইরাছিল। আরিষ্ট্রিলর পূর্বেরিপে রেশমের আর ঐতিহাসিক উরেপ দেখা বার না 1

বস্তু বুনান শিখিতে হইলে শিক্ষার্থীর নিপুশতা, ধৈর্যশীকতা, হস্ত-সঞ্চালনাদির পটুতা শিক্ষা করা আবস্তুক। সহলাধিক স্কা ক্তা লইরা তাহার প্রত্যেক স্তাটী বগানিরমে প্রস্তুত এবং পৃথক্তাবে মধাস্থানে সন্নিবেশিত করা আবস্তুক। কোন অংশ জোড়া তাড়া দিরা তাড়াতাড়ি করা অসহিক্ষুতার ফল ও অতাধিক বিল্যাক্তর কারণ।

আমাদের দেশে হিন্দু তাঁতি এবং মুস্লমান স্লোলা আছে, এখনও ইহারা । ইঞ্চি চওড়া এক ফুট্ লখা চুলির মধ্যে ধরে এরূপ সরু স্তার প্রমাণ চাদর বৃনিতে পারে। ম্যাক্ষের ব্যর্বরন-নিরের প্রতিষ্ঠা হেতু ধীরে ধীরে আমাদের দেশ হইতে এই নির্নিপ্তা অপক্ত হইল—ম্যাক্ষেরীরের ওভাগমনেই এই বরননিরের বিপর্যায় ঘটিল এবং জরাভাবে জোলা ও তাঁতির জর ফুরাইল। স্থান-বৃদ্ধি উন্ধৃতিরা লাভের আলায় স্কল স্তার আগ্রন্থ করিল। কলে "অতি লোভে তাঁতি নই," আর "লোলার গারে করিল। কলে "অতি লোভে তাঁতি নই," আর "লোলার গারে গিন্টি তাঁতির পরনে নেটে।" এই প্রবাদ বাক্যা রচিত হইল। আশ্রুরের বিষয় এই বে, এই উভর জাতির জাতীর বাবনা এক হইলেও কাপড় বুনানি সম্বন্ধে সকল বিষরেই জোলা ও হিন্দু তাঁতি পরশারে বিভিন্ন পত্না জবলম্ম করিরাছে। নিরে উভর প্রক্রের বিভিন্ন পত্না জবলম্ম করিরাছে। নিরে উভর প্রক্রের ব্রারাণ্ডাবির বিষয় ব্যর্বনাপ্রামির ব্রের পরিচর প্রাম্ব ক্রের হিতেছে।

১ তাঁত (Loom)—তাঁত ভারতবর্ধে কতকাল হইতে বে প্রচলিত, তাহা নির্ণর করা যার না। তবে প্রাচীন পানীর গ্রহান্বিতে ইহার উল্লেখ দেখিতে গাঙরা যার। বে তাঁত বহ-পূর্ব হইতে প্রতদেশে চলিরা আদিতেহে; ভালাকে হাতের ভাত বা বালালা তাঁত বলে, উহা ভাল কাঠে প্রস্তুত এবং স্থাপিক কালহারী; এমন কি, তাঃ পূক্ষ পর্যন্ত একই ভাতে কাল চলিতেছে এলপ ওলা বান। ইহার নামু এক হাতে চালাইরা
আপর হাতে ধরিতে হর ; বেশী চওকা কাপড় ইহাতে বুনাল
আহবিবা, তবে এই তাঁতের বারা ইছানত বোটা লক সব
রক্ষ বুনানি করা বাইতে পারে; ইহাতে প্রতা পুর কম
হিঁতে এবং বেরূপ সক বুনানির কাল হর, ছাও পুনের বারা
সেরূপ হওরা হলহ, তবে বালালা তাঁতের বারা কাল বেশী ক্রত
হর না, একজন প্রক্ষ তাঁতি এই তাঁতে প্রতি মিনিটে ৩১।৩১
বার নাকু চালাইতে পারে। ইহার প্রধান নোব এই বে, মাকু
রাড়াইবার অন্ত ইহাতে কোন আপ্রর হান নাই এবং চালাইতে
সকল বার ঠিক সরলভাবে বা স্বান জোরে চালান বটে না,
ভক্ষেত্র নাকু আনক সমর পড়িরা বাইবার সভাবনা।

শংলর তাত (Fly shuttle loom)—আইনিল পড়ালীর শেবভাগে জন্ কে নামক একজন সাহেব প্রথমে এই উাত প্রচলন করেন, ইহা সম্পূর্ণ বিদেশী নহে, কেবল বাজালা উাতের অভিনব সংজ্ঞরণ (Improvement) নাত্র। মূলতঃ ভাষার সহিত ইহার সম্পূর্ণ সান্ত আছে। ভাল সেওপ বা শাল কার্চ দিরা উক্ত দুই প্রকার তাঁতই প্রস্তুত হইরা থাকে; কাঠটি বেল মজবুল ও ওক হওরা আবর্ত্তক; নড়ুবা কিছুনিল পরে উহা বাহিরা ব্যবহারের অবোগ্য হইবার সভাবনা। ইহার জনেক জল প্রভাজ আছে, কোন একটা অংশ বাহিরা গেলেট কার্যা অচল হইরা পড়ে। তাঁতের অল প্রত্যক্ষপ্রলির বিবরণ নিমে দেওয়া হইনা

লকি (Lay)—যাহার উপর দিয়া মাকু বাতায়াত করে সেই কাঠখানি ও ভাহার উভর পার্বহ বার হুইটি একত দক্তি নামে খ্যাত, ৰাজালা তাঁতে ৰাজবিহীন ঐ কাষ্টট দক্তি নামে প্রিচিত ছিল, বিলাতী তাঁতে তাহাই উন্নত (Improved) আকারে 🗷 রূপ ধারণ করিয়াছে। ইহাতে ২ থানি কার্চ আছে, উপরের থানির সহিত নীচের থানি অতি কুম্মর ভাবে সংযোজিত। বধন মাকু জনবরত বাভারাত করিছে করিছে কাঠের উপরিভাগটী কর, পাছলা বা অসমতল (uneven) হটরা আইলে, তথন সামাল বাবে কাঠথানি বদলাইর। লইলে আৰার সেই ভাঁত ঠিক নৃতনের ভার কাল করে। সেওণের অপেকা ইহা পুরাতন পাকা শাল কাঠের হওরাই ভাল। এই कांठशानित्क "दब्ज" (Shuttle race) ब्राज, छेरांत्र छेनत দিয়া মাকুর চাকা চলে বলিরাই উহার এক্সণ নামকরণ হইরাছে। এই দক্ষিণানির নির্বাণচাতুর্বোর উপরই অধিক পরিবাদে সমস্ত মন্ত্রের ভাসমন্দ নির্ভন্ন করে। এই কঠিখানি ২ কি ০ ইঞ্চি পরিসর, নির্মাণ সমতল, উপরিজাণ উপর हरेएछ नीरक्त पिरक कारब छानू अर्थाय कांत्रिकरतंत्र क्रिक कांत्रित

দিকে বে প্রাক্ত থাকে, তারা ২ ইঞ্চি উচ্চ বইকে অপর প্রাক্ত चाथ हेकि इहेरका अहे छानू (Slope) बिक हिनाव मछ इ अबा हाहे। हान इंडांच (Abript) इहेरन मार् উণটিয়া পড়ে বা সানাম সহিত বেশী বুকিয়া চলিতে থাকায় नामा नचन महे इहेना यान धावः साँ । (वृतिसात नमत ना निया চাপিরা মাকু চলিবার রাজা করা) বেশী কোড়ে চাপিতে হর; ডক্ষর "ৰ'' এর ক্তা এবং টানার ক্তা বেশী ফাটবার সম্ভব। আবার বদি চালু কম হয়, ভবে মাকু পড়িবার কথা এবং ঝাঁপে শ্তা ভাল টান হর না । এই রেলটার ঢালুদিকে একটা জ্লি কাটা (Groove) আছে, দেটা দানা বসাইবার হান । সেটা ত্রিক সর্জাও সালার মাপ মত স্কু হওয়া আবশুক। সানা वनाहरू दिंका रक्ष्म वा हिन ना रहा, कात्रन छाहा हरेरनारे नामू ণ্ডিরা যাইবার সম্ভাবনা। ৰক্তিপানি বেশ সোজা এবং পালিশ-যুক্ত হওরা নিতান্ত ধরকার। কাপড় বুনানির সমন্ন এই দক্তিকে (कारनम निरक गिनिमा "न'एकरनम" क्छा गिमा नरेए रम। ইহা বেকিয়া গেলে কাৰ্য্যে ঝাৰাত ঘটে। কোটের ছিট বা विकासात हामब है जानि स्माठा कार्यन क्या करे मिकिशानि একটু মোটা রকম ও শাল কাঠের হওয়াই দরকার, আর সক কাপড় বুনানির পক্ষে ইহা হালকা অর্থাৎ সেগুণের रहेर नहें खरिया।

বাকা (Shuttle box) - পূর্বা-বর্ণিত রেলের হুই পার্বে পাচার মত চুইটা বেরা স্থান আছে, তাহাকে বাঝ বলে। মাকুটা এক বাক্স হইতে চালিত হইয়া অপর বাক্সে যাইয়া দাঁড়ায়। ঐ বান্ধ ১৫।১৬ ইঞ্চি লখা এবং মাকুর অনুরূপ চওড়া। কলের তাঁতে এই নৃতন উন্নতি সাধিত হইনাছে। এই বাস্কটী মাকুর গভিকে নির্ত্তিত (Regulate) করিরা দের। বাজের মধ্যে একটি জ্বলি কাটা (Groove) থাকে, তাহাতে চৌপলা একটি কাঠের টকরা (wooden block) বদান আছে, এ টুক্রাকে "মেড়া" (Picker) বলে। একটি লোহার শিক ঐ মেড়ার উপরাংশ ভেদ করিয়া একদিকে বাল্পের মৃড়ার কার্চে ও অপর দিকে পাধার সংলগ্ন একটি ছকে আবদ্ধ আছে। মেড়ার এক প্রাপ্ত জুলির মধ্যে ও অপর প্রাপ্ত শিক্ষের সহিত লাগান থাকার বেল খাড়া হট্যা বদিয়া থাকে। বেড়াট্য বাহিরের দিকে গুইটি ছিল্ল করিয়া ভাষাতে দড়ি পরান হয়। সেই দড়ির সহিত তাত ঝুলাইবার অভ দড়ির বোগাবোগ আছে, মেড়া ঐ বাজের **এ:क्वांट्य श्राञ्चारन अवः मानूने। मन्तृन वार्याय मर्था शारक**। ছাত্তেল ধরিয়া টানিলেই বেড়ার টান পড়ে, এবং মড়াটা শিকের মধ্য দিল্লা চলিল্লা আসিল্লা মাকুর অঞ্চলগতে আবাত করে। ७४न तिहे भाषात्वत्र नत्न नत्न मानू क्रुडित बार्क, किन्न ৰান্ধটি সাঁকুর হই পাহর্ব কৌনিরা থাকে বলিয়া উহার গাতি নিরন্তিত (Regulated) হয়। বান্ধ বেশী চঞ্জা হইলে মাকু লাফাইয়া উঠে এবং রেল চঞ্জা হইলে পড়িরা যায়। মেড়ার সহিত দড়িটাও বেশ হিসাব করিয়া বাঁধা দরকার, যেন উহার টানে মেড়াটি সহজ ভাবে ও কাঞ্চ না হইয়া আসিতে পারের এবং আঘাডটি যেন বেশ জারের সহিত অকুভাবে লাগে। শাল কাঁঠের মেড়াই ভাল, সেগুণ বা অক্ত কাঠ হইলে শীয় নই হইবার সক্তাবনা। অনেক জাঁতে চামড়ার মেড়া দেখা যায়, ভাহা ধীর্থকাল হারী হয়।

ষ্ট-কটি (Top-batten)—ইহা একথানি ২ঁবা ২২ দিলের নীরস শাল বা সেওপ কাঠ; ইহার উপরিভাগ অর্ক্ষ বৃত্তাকার, নিমভাগ চেপ্টা এবং ভাহার মধ্য দিয়া দক্তির রেলের জ্লির অমুরূপ ঋত্ ও সক্ষ জ্লি (Groove) আছে। ঐ কাঠখানি রেলের সমাস্তরাল করিঃ। তাঁতের উভয় পার্ছতি কোল পাথার সহিত এরপ বাঁচ করিলা বসাইতে হইবে বে, ইছো-মত মৃট্কাঠ উপরে ভোলা বা খোলা যায়। এই উপর ও নীচের জ্লি গুইটির মধ্যে সানা বসিবে। এই গুইটি জ্লি ঠিক সরল এবং সানার অল্পরুপ সক্ষ না হইলে সানা লাগান গ্রন্থ হব এবং "প'ড়েনের" স্ভায় ভাল ঘা লাগে না। সক্ষ বৃনানির পক্ষে সেওপ এবং মোটা বৃনানিতে শাল কাঠের ভারী রক্ম-মৃট-কাঠ ভাল।

পাথা (Side-bar)—কোন কোন তাঁতে তুই পাৰ্ছে প্ৰা ৫ বি ইঞ্চি চওড়া চুইথানি ডকা লাগান থাকে; কুটিরার যে প্রকার তাঁতে বন্ধবন্ধন হন্ন তাহার প্রথমে চুই পার্ছে চুইথানি ২ বা ৩২ চিওড়া এবং আবার তাহার তুই পার্ছে চুইথানি ২ বা ৩২ চিওড়া এবং আবার তাহার তুই পার্ছে চুইথানি ২ বা ৩২ চিওড়া এবং আবার তাহার তুই পার্ছে চুইথানি ২ বা ৩২ চিথা থাকে। প্রকাপ বেশী লখা তাঁতে ৪ থানি পাখা দিলে বেশী মাজবৃদ্ধ হয়; এই পাথা চুইখানির নিম্নভাগে স্কৃতি ভাটিরা মূট-কাঠ বসান থাকে। স্কৃতি এক দিকে ৪ বা ৫ ইঞ্চিও অক্তাদিকে পারা ৮ ইঞ্চি। মূট-কাঠটা সানা পরাইবার সমন্ন বাহির করা বরকার, সে কল্প বে দিকে বেশী জুলি থাকে, মূট কাঠটীর সেই মাথা উপর দিকে টানিলে সহজে সে মূথ বাহির হইল্ল থার, তৎপরে অপর মূখ বাহির করা আবশুক। কুটিরার তাঁতের পাথাগুলি অল্প তাঁতের পাথা অপেকা কিছু লখা, ইহাতে ব্যাসার্দ্ধ বিভার দিকা ঘা নিবার সমন্ন কম জোরে আসিয়া খা লাগে বলির টানার স্তার বেশী জোর লাগে না এবং পড়েনের স্তাও বেশ সহজে আক্তুজাবে চাপিরা যার।

নাধা-কাঠ (Top-bar)—তাঁতের উপরত্বিত একখানি লবা কাঠ; ইহা পাধাঞ্চলিকে ধরিয়া থাকে। এথানি তাঁতের দক্তির ঠিক স্বাভ্যান থাকার স্বর্থ বয়নী একটা স্ম-চতুর্ত্ব আকারে পরিণত হইরাছে। এই নাগাকাঠ বক্তি অপেঞ্চ ছই নিকেই কিছু কিছু ছোট থাকে। নাগা কাঠের হইপালে রুইটা সক্ষ লোহার শিক লাগান আছে, তাহার উপর সমন্ত ভাঁত বুলিতে থাকে।

ক্রেন (Frame)—তাতের মাণ লইরা ক্রেমটা প্রস্তুত করিতে হয়। তাতের মাথাকাঠটা বত ললা হইবেড, ক্রেমটাও তত ললা হইবে। ক্রেমটার উপরে নীচে 'ৰাতা' (কাঠ) দিরা আটিরা খুটা করটার উপরে এড়ো দিকে ২টা পৃথক ছড় (Bar) লাগাইতে হয়; সেই ছড় ইছামত উপরে উঠান বা নীচে নামাইবার লগু খুঁটার পার্যদিকে ভূলি কাটা আবশ্রক। উপরের ছড়ের সক্রে দড়ি লাগাইরা ইছামত তাত নামান বা উঠান বাইতে পারে।

মাকু (Shuttle)--বাদালা বা বেলা তাঁতে যে নাকু বাবহুত হর, তাহা সম্পূর্ণ লোহ বা পিত্তল নিশ্মিত। কলের ভাঁতে কাঠ ও লৌহনির্শ্বিত মাকুর ব্যবহার আছে। তবে কোন কোন হাওলুমে (Chatterton's Handloom) সম্পূৰ্ণ লোহ-নিশিত মাকুই ব্যবহৃত হয়; কলের তাঁতের মাকু কিছু বেশী লখা-চওড়া। উভয় প্রান্তে লোহার ঠেস লাগান ১৪।১৫ ইঞি লম্বা একথানি কাঠ মাকু বলিয়া পরিচিত। তাহার জ্বগ্রভাগ কলার মোচার মত স্থচাল (pointed) এবং ক্রমে মোটা হইয়া কাঠের সঙ্গে এরপভাবে মিশিয়া থাকে বে, জোড়া স্থানের চিল্ল পর্যান্ত থাকে না। ইহার কাঠেরও কোনরূপ আঁ। দেপা যার না। প্রাক্তন্থিত স্চাগ্রভাগ মাকুর ভার-কেন্দ্রের সঙ্গে এক সরল রেখার থাকে। মাকুর মধ্যভাগে e ইঞ্চি পরিমাণ ন্তানের চুই পার্ষে 🚣 কাঠ রাখিরা ভিতরের কাঠ কাটিয়া ফেলে. ঐ ফাঁকের বামদিকে একটা লোহার পেঁচ আর দক্ষিণ দিকে একটা সরুছিত্র (Eye) থাকে। ঐ ছিত্রটার মধ্যে একটা লৌছ চলি দিতে হল। চুলিটীর পরিবর্তে কাঁচের মতি দিলে ভাল হয়। প'ড়েনের স্তার নলী বা খালীর গোড়ায়ও পেঁচ কাটা থাকে। পুতা-ভরা-নলী মাকুর পেচে আঁটিয়া পুতার এক প্রান্তে অর্থাৎ দেই মাকুর অপর দিকের ছিত্র সংলগ্ন লৌহ-চজির মধ্য দিয়া বাহির করিবা লইতে হর। মাকুর নীচের দিকে তুই পার্বে তুইথানি লোহার চাকা তুইটা ক্লর দারা লাগান থাকে, ভাহাতেই মাকু ক্ৰতগতিতে চলে ও বেলী সংঘৰ্ষণ হর না। চাকার কুটা ঢিল করিয়া দিলে বা একটু তৈল দিয়া লইলে চাকা ভালরপ বুরিতে থাকে। দফ কালের পক্ষে অপেকাকত সক মাকুই ভাল। মাকু খুব ভারী বা খুব পাতলা ভাল নতে। তেতুল, বেল, শিরীৰ প্রভৃতি আঁশশৃক্ত কাঠের আৰুই প্ৰণৱ। মাতুর পেঁচের সহিত প'ড়েনে এবীর হত।

লাগান থাকে,তাহা সময় সময় মুট্যা মার ও ক্রা ছি ডিয়া গছে। এই কারণে ইত্রিএের মানু গাবহুত হুইরাছে । কার্যার লময় বাবে মানুম তলে ও পার্বে তেল বিক্তে হয়।

হাতল (Handle)—দেশুণ কাঠে প্রস্তুত একটা ছোট কও। উহা হাত নিরাধরিতে হব। ইহার সহিত তাঁতের সমত দড়ি এবং মেড়ার দড়ির বোগ থাকে। ইহা ধরিরা টানিলেই মেড়া বাতারাভ করে। এই হাতলটা বেলী মোটা বা তারী হওরা ভাল নহে, কেন না এই হাতেদের ভারেও বারের শ্রম্য হইতে সাকু বাহির হইতে পারে।

ভারাক্ৎ—ক্রেনের উপরে ভাঁতের মাথাকাঠের সমান্তরান আর একটা কাঠের হড় বা সরন বংশ দও। উহা ফ্রেমের শ্রিড়োকাঠের (Oross bar) সঙ্গে জাঁটা থাকে। ইয়াকে শ্রেক্তিবা

ৰাত খিল বা খিল কাটি—ইহা এক কুট বা লগুৱা কুট সক্ষ একথানি কাঠখণ । ইহা এক্ষিকে সক্ষ কৰিবা নরাজের ছিজের সংখ্য দিতে হর এবং ইহাতে একটা দক্তি লাগান খাকে । কাণ্ডু কড়াইবা হাত খিল নাগাটুরা ক্রেমের সহিত একটা কাঁলি দিয়া রাখিতে হয় । সলে সলে বাহির-নরাজের মধ্যেও ঐরল একটা কাঠি দিরা মাটীতে আটকাইবা রাখিতে হয় । এই কাঠটীকে খিল বা মোড়ানি বলে । নরাজের সহিত 'Toothed wheel' লাগান থাকিলে এই কাঠের আবশুক্ত হয় না ।

পাশা বা পাদল (Treadles)— ফ্রেমর নিমে লখা কাঠের মাঝখানে ইহা লাগান পাকে। ইহা পা দিয়া চাপিতে হয়। "ব" এর বেগনার সহিত দড়ি দিয়া এই পাদল বাঁধা থাকে। আব্দ্রুক্ষত এক একথানি করিয়া চাপিতে ও ছাড়িতে হয়।

নরাজ (Beams or Rollers)—প্রত্যেক তাঁতে চুইটা করিরা নরাজ থাকে। একটা কোল-নরাজ আর একটা বাহির নরাজ। ইহাকে গুটি এবং পাটিও বলে। নরাজ সেওন কাঠের ভাল, পালের হইলে আরও হারা হইতে পারে বটে, কিছ ভারী হয়। কেহ কেহ দেবলাক, ছাতিম প্রস্তৃতি কাঠের করেন, কিছ ভারা সহজে ফাটিয়া বা বাকিরা অকর্মণা হইরা পড়ে। নরাজ প্রায়ই সকলেই কুঁনাইরা গোল করিরা থাকেন, তবে প্রীরমণ্য অকলে চৌপলা নরাজও চলিত আছে। বাহা হউক, এরূপ চৌরস (Plane) হওয়া আবশ্রক বে, কোনরূপ উচু নীচু বা তেড়া বাকা না পাকে, তাহা হইলে হতা বোঁচ হইয়া কুনানির সমর বিশেব অক্সবিধা ঘটে। ক্রেমটি বত বড় লখা হইরে, নরাজও তত বড় লখা করিতে হইবে এবং তাহার হই মাথায় ছইটা গলা করিরা ক্রেমের গুঁটার মধ্যে কতক প্রবেশ করাইরা বাহাতে স্কল্বরূপে আটিয়া থাকে, এরূপ ক্রিবে; ভারণ

তাহাতে বুনানির সমর নরাক তাহিনে বাবারে সরির কাপড়া তেড়া হইবার সভাবনা নাই। তাঁতে বভ প্রেক্সের কাপড় বুনানি হইবে, নরাক্সের মধ্য দিরা তভদুর পর্যান্ত আব ইকি চওড়া একটা লখা জ্বিন বাবিনে। নরাজের মধ্যবিশু ঠিক করিয়া তথার একটা চক্রাকার দাস দিরা বাওয়া ভাল । সেইস্লপ ৪২%, ৪৬% ৪৪%, ৪৫% ইকি স্থানেও দাস দিরা বিভিন্ন রং বারা রন্ধিত করিয়া সাইলে কাজের স্থবিধা হয়। নরাজের দক্ষিণ দিকে ২% বা ২% ইকি কাঠি বাইতে পারে, এইরূপ স্থইটি হিন্ত থাকা উচিত। কেহ কেহ নরাজের দক্ষিণ প্রান্তে লোহার দাঁতভিরালা চাকা (Toothed wheel) গালাইরা তাহার উপরে একটি ছেনী আঁটিরা লরেন।

কোল-নরাল (Cloth Been)—এইটা কারিকরের ঠিক কোলের দিকে থাকে বলিরা ইহার নাম কোল-নরাল। ইহার নিম দিরা পা চালাইতে হয়। জাঁত ক্রেমে ঝুলাইতে হইলে চেয়ারে বলিরা বে রামে ঝুলাইতে হইবে এবং মাটিতে তাঁত বসাইলেও বলিবার স্থানের ঐরপ একটুকু উপরে বলাইরা লউতে হইবে। দে: জন্ম ক্রেলেইরেল একেবারে না আঁটিরা চামজার দপ বা কিতা দিরা ঝুলাইরা রাধা কর্তব্য। কোল নরাজে এবং বাহির নরাজে প্রথমে স্তা টান করিরা লইতে হয়, পরে যেমন বুনানি হইতে থাকে, তেমনই কোল নরাজে কাপড় জড়াইতে এবং বাহির নরাজ টিল দিরা স্তা ছাড়িতে হয় ঃ

বাহির-নরাজ (Warp Beam)—এই নরাজে টানার প্তা অভান থাকে। ইহা ফ্রেমের অপর দিকে কোল নরাজের অপেকা কিছু নীচে লাগাইরা লইতে হয়। ভাহাতে টানার প্তা বেল টান্ টান্ থাকে। ভাঁত মাটিতে বলাইলে এই নরাজ ২টা ও বথাছানে ছোট ছোট খুঁটির উপরে বলাইরা লক্ষা আবস্তুক।

ভুসারি বা মতি (Stretcher)— কাপড় ব্নিবার সময় ছই নরাজের বারা বেমন হতা ও কাপড় স্বাভাবে টান্ রাখিতে হর, সেইরূপ যে অংশ বুনা হইতেছে, ভাহার বহরের বিকেও টান্ থাকা আবশুক; সেইরুপ্ত ভাহার মুখে টান রাখিবার অভিপ্রারে চইথানি বাখারির সক কাবারি ধন্তকের মত করিয়া লাগাইতে হয়। ঐ কাবারি ছইথানির অগ্রভাগে আলপিন্ বা সক লোহ বাধিয়া লইরা ভাহাই পাড়ের কাছে বিধিয়া বিভে হয়। কাবারি ছইথানির মাঝখানে এইরূপ ভাবে হতা দিয়া বাধা থাকা দয়নকার; বেহেতু ইছোমত ধন্তকে বেলী জাের বিশিষ্ক বার কেওয়া

বেলনা বা জলগনর—শাল বা লেগুন আখবা অভ কাঠের ১ বা বু ইকি মোটা এবং ও মুট লখা একথানি কাঠের দও। ভাহাতে ছিত্ৰ কল বা বাঁচ কাটা থাকে, ভাহার উপর দিকে "ব"এর বাঁণের শরের সহিত ও নির দিকে পাদলের সহিত দড়ি বারা সংযোজিত থাকে।

বাঁপ (Healds)—ইহা ঠিক সানার পরেই থাকে এবং ইহার মধ্যে দিরা টানার হতা চলিরা সানার ছিল্ল পার হইরা বার। হতার হতার একরূপ শিকলের মন্ত আঁকিড়া থাকে, তাহাকে "ব" বলে। এরপ "ব" চারি পংক্তি এবং 'ব' এর উপরে নীচে ও মধ্যহানে একএকটি শর (Heald Shaft) সংলগ্ন দেখা বার। উপরের শর নাচনির সহিত হতা দিরা এবং নীচের শর বেলনার সহিত আবির থাকে। পাদলের সজে সজে এই 'ব'ও উঠা নামা করে, ইহাকে "ঝাঁপ তোলা" বলে। ঝাঁপের সঙ্গে সলে সানার কোলের দিকেও একটী ফাঁক হয় তাহাই মাকু চলিবার পথ। পারে এই ঝাঁপ তোলার সজে সঙ্গে হাতল টানিবার একটী তাল আছে। সেইটী অভ্যন্ত লইলে ক্রভ কাপড় বুনিবার আর ব্যাঘাত হর না।

माना वा नाइ (Reed)-वाला मक थिन वा भरतत मक কাঠি ছারা এই সানা তৈয়ারি হয়। ইহা দেখিতে ঠিক চিরুণীর স্তার। ইহার থিল এবং ফাঁক সমান ভাবে থাকে। যে স্কল মুসলমান কেবল এই সানা প্রস্তুত করে, তাহাদিগকে "নাছি" বলে। বাঁশের বা শরের উপরিভাগটি খুব পাতলা করিরা চাঁচিয়া र वा २३ किंक नवा नक नना कतिया वाँधिया यात्र। हेराज উপর ও নীচ্চ অতি পাতনা বাঁশের বেতী আছে, তাহা সূতার মধ্যে থাকায় দেখা যার না ; ভাছাতেই সানা শক্ত থাকে । বাঁলের অপেকা শরের সানা ভাল; খুব পাকা বাঁলের সানা হইলে ভাহার ধার বেশী হয়, আবার ধুব কাঁচা বাশের হইলে ভাহার খিল বাঁকিয়া ষাইতে পারে। গামছা ইত্যাদিতে ৬০০।৭০০ সানা এবং ৪০ নং সূভার ১০৫০ বা ১১০০ সানার ব্যবহৃত হর। ৪০ ইঞ্ দৈর্ঘ্যের মধ্যে যক্ত কাটি থাকে, তাহাই সালার সংখ্যা ধরা হয়। কাপড় বুনানির সময়ে বা কাপড় এক প্রস্থ উঠিয়া গেলে সানার তেল বিরা লইতে হর। তাহাতে সানা মজবুদ হর এবং স্থভাও ভাল চলে। বলি দক্তির রেল অপেকা সানা ছোট হর. তবে সানা মধ্যভাগে বসাইরা ছই পার্বে মোটা কাগল দিয়া সানার সহিত মিল করিয়া লইতে হয়। এই মিল ভাল না হইলে মাৰু পড়িয়া যায়। এইরূপ ফাগল দিয়া না লইলে মাকু সেই ক্ৰীক দিৱা বাহির হইতে পারে। সানার মধ্যে কোন ন্তানে ২০১ট খিল জালিরা গেলে পালের বে স্থানটা কাপড়ের ৰাহিরে থাকে, তথা হইতে ২০১টা বিল খসাইরা ঐ ভর থিল नमगरिए इत्। नाना रठाए मा जानिया (गाल २ वा २३ वर्गत्र हरण ।

নাচ্নি (Levers)—নেজৰ কাঠের ৫ কি ৩ ইঞ্চি লক্ষ্
ভক্তা। ইহার মধ্যভাগে একটা ছিল্ল এবং উভব প্রান্তে কুইটা
বাঁল কাটা থাকে। মধ্যভাগের ছিল্ল মধ্যে সক্ষ লড়ি বা প্রভা নিলা
উপরে ভারাজুতে বে কড়া আছে, ভাহার সহিত বাধিতে হর;
আর কুই পাশে বে ২টা বাঁল কাটা আছে "ব" এর শর (Heald shaft) পেঁচাইরা প্রতা আনিয়া ঐ বাঁচের সহিত বাধাইরা দিতে
হয়। নাচ্নি কাপড়ের বহর বিবেচনার ৩,৪ বা ৫টা করিয়া
দিতে হয়। বে কয়টা দিলে "ব"র বেশ টান থাকে, ভাহাই
দেওয়া আবশ্রক; কিন্ত টেরছা ছিট বা বিছানার চালর বৃনিতে
৮ পাটি "ব" লাগে; ভাহাতে ৬টা কি ৯টা নাচনির আবশ্রক।
সমরে সমরে নাচনি না লাগাইরা ছোট ছোট থক্তক উপরের
ভারাজুতের সলে বাঁধিয়া লইলে ঐয়প কাল চলে, ঐ থতুক গুলি
ছিভিছাপক গুলবিশিষ্ট (Elastic) হওয়ার পাদল ছাড়িয়া বিলেই
"ব" আপনি আবার উঠিয়া আইসে।

নাচনির পাটি—আড়াই কি তিন ইকি টুকরা তজা।
ইহার ছই প্রান্ত ২টী ছিল্ল থাকে। সেই ছিল্লের ভিতর দিরা
নাচনির দড়ি পেঁচাইরা উপরে তারা-ছ্তের সহিত বীধিতে
হয়। যদি "ব" উঠান বা নামান আবক্তক বিনরা বিবেচিত
হয়, তাহা হইলে পাতি ধরিয়া নীচে বা উপর দিকে টান দিতে
হইবে। তদল্পরপ ইহাতে বিশেব কৌশলে দড়ি লাগাইতে হয়।
সে লক্ত এই দড়িকে "ধাঁদা"র দড়ি বলে। মতান্তরে এই পাতি
না দিরা সোআহেনি নাচনির সহিত উপরে তারা-ভ্তের কড়া
পেঁচাইরা দড়ি বেড়া দিরা আনিয়া দড়ির অপ্রভাগ দড়ির পাকের
মধ্যে পুরিয়া রাধিলেও ঐয়প হোট বড় করিতে পারা বায়।

ষেচ্কা—একটা লোহার সক স্চ; জন্মভাগে বড়শীর ভার আঁকড়া আছে, কোন স্তা ছিড়িরা গেলে ইহার সাহাব্যে ছিন-স্ত্র "ব" এর জথবা সানার মধ্য দিরা আনা হর। যোজা ব্নি-বার কাঁটা লইরা অথবা বালের চটার খাঁল কাটিরা কাল চলে।

শর বা ডালি (Bhaft)—বাঁশের বা স্থপারির ই ইঞ্চিলনের ছড়ি, ইহা স্থগোল করিয়া টাচিতে হয় এবং বক্ত থানিলে অগ্নির উক্তাপে লোলা করিয়া লইতে হয়।

শির ভালি—অতি সক ও পাড়লা বাঁলের শর। উনিধিত শরের উপরেও "ব" স্তার মোচড়ার মধ্যে, বাঁলের উপরে একটা ও নীচে একটা থাকে। ইহাতে মোচড়া ওলি আঁটা থাকে।

জো-শর (Lease maker)—ইহাও বাঁশের পাতলা ছড়ির
মত, এইরুল তিনটা লো শর বাঁশের পরেই পাশাপাশি থাকে
এবং কাপড়ের লো ঠিক রাখে। কাপড় বেমন বুনা হইতে
থাকে, তেমনি এই কাঠিওলি নরাইরা বিতে হর। এই শরওলি
ভক্লা বাঁশের হইনেই স্থিধা।

উদ্ধিতি করেক প্রকারের শর উভ্যরণ ইটিরা শিরীব কাগক বারা এরণ পালিশ করিয়া অঞ্চা আবিভাক, বেন কোন রূপে শুভার আঁশ না উঠে।

শুলটো কোলপুত বা "ব" পাটি—দেওৰ ফাঠের ৬ ইকি লখা ও ০ ইকি পরিসর একথান টুকরা কঠি। ইহার চেহারা কডকটা "ব" এর বড; এক্টিফে সরু অপর্য়িকে ৩ ইকি পরিসর। সফ দিকে একটা ছিল্ল আহে; ফাঠখানি ধূব পালিবদুক ও পাতলা। "ব" বাবিবার সময় ইহার আবঙ্গক।

চরকি (Swift)—ছোট একখানা বাঁপ কি পুণারীর কাবারিকে একটা ধুরার (axlo) বত করিরা এবং তাহার চুইদিকে গাড়ীর চাকার পাটর স্থার পাতলা কাবারির পাট লাগাইরা পুডা দিরা উতর দিকের পাটিওলি বাঁধিরা দিছে হয়; পরে উহা একটা বাঁপের চুলির বধ্যে বসাইরা লইলেই চর্ন্নিতে পরিপত্ত হয়। চরকির একদিকের চাকা কিছু ছোট হওরা আবস্তক। নেই দিকে পুডা পরাইরা নোটা দিকে চাপিরা চাপিরা দিলে পুডাবেশ আঁট হইরা থাকে। পুডার টানে সহজে পুরে, এরপ হাল্কা চরকি হওরা আবস্তক।

চরকি ছোট বড় ছই ডিল রক্ষরে হর; প্রথম রক্ষ থাড়া (vertical) চরকি; দেওলি একটা কাঠির উপরে বসান থাকে। বিতীর রক্ষ গাড়ী-চরকি (horizontal); ধুরা সমেত গাড়ীর ছই চাকা ছইটা খুঁটিতে কুলাইরা রাখিলে বেরূপ হর, এগুলিও সেইরূপ। তৃতীর রক্ষ খোচা হাত-চরকি (Conical), এগুলি ছোট এবং মোচার মত ক্রমে হুচাল, এই চরকিতে ছোট কাঁদের হুতা পরাইবার বেশ হুবিধা। জোলারা টানা দিবার সমন্ব এই চরকি ব্যবহার করে; চতুর্ধ—বাধারা-ছাত-চরকি—ইহার গঠন প্রথম প্রকারের জার, কেবল সল ফাঁদের হুতার কর্জই ইহার লরকার। ইহা এরূপ হাল্কা বে সামাজ বানুবেরে যুরে, দে কল্প ইহাকে "বাওরা" চরকি বলে।

নাটা বা নাটাই (Reel)—ইছা অনেকটা বৃদ্ধি উড়ানো নাটাইএর ভার, তবে ইছার মারধান সদ নহে।—পোড়া মোটা, ক্রমে আগার বিকৃ অর অর সদ হইরা মধ্যছিত মঞ্জের সহিত মিশিরাছে। ইহাও ছোট বড় চুই রকম। পুতা পোচাইবার জন্ত বাহা ব্যবহৃত হর, সেওলি হাত নাটাই, আর পুতা বলানের (sizing) সমর বাহা ব্যবহৃত হর, সেওলি কিছু কেনী বোটা ও লবা অর্থাৎ তাহাতে ৪।৪ স্থানে পৃথক্ পৃথক্ করিরা পুতা নাটান হাইতে পারে। নাটাইএর পাটিওলি কেন পালিশসুক্ত অবচ মজবুদ হর। বেনী পাতলা হইলে পুতা জড়াইতে জড়াইতে মারধানে সদ হইরা বার, তথ্য পুতা বাহির করা বার না।

चूत्रने कांत्रे-नागरे चूत्रारेनात रहांगे र × 🎸 रेकि पूक्ता

তকা; ইহার মধ্যে বোরাতের মত একটা গর্জ কাটা আছে। নাটাইএর গোড়া উহার মধ্যে ত্রাধিরা পুরাইতে হয়।

টেকো—একটা সক লোহার শিক। ইহার একদিকে কুর ছার পেচ আছে এবং অস্তুদিক হুচের ছার সক। পেঁচওরালা মুখের সঙ্গে পেঁচের থালি অর্থাৎ প'ড়েনের ছোট নলী (Pirn) ও হুচাল দিকে বড় নলী (Bobbin) পরাইরা হুডা জড়ান হইরা থাকে। চরকার চক্রের সন্মুখন্ত দণ্ডের সহিত ইহা থাগাইতে হয়।

চরকা (Spinning wheel)—খনামপ্রসিদ্ধ "চক্রাকার"
বর্রবিশেষ। একখানি কাঠ চক্রের পরিধি বেড়িয়া একটী জুলি
কাটিরা লইতে হয়, জগবা ৮ খানি কাঠের পাটি লইয়া ছইথানি
চাকা প্রস্তুত পূর্বক জার একটা কাঠের ধুরার (uxle) সহিত
ভাহা জাবদ্ধ করিবে, পরে সেই চাকা উভয় প্রায়োপরি পাটি,
বেত, স্তুতা বা সরু পাতলা তক্রা হারা জাঁটিয়া লইবে।
ধুরাটা ছইটা খুটার ছিছের মধ্যে প্রবিষ্ট করাইবে ও ঐ ধুরার
এক প্রান্তে একটা হাতল লাগাইয়া দিবে। তৎপরে এই
চক্রের সম্মুণেই হাড়-কাঠের মত মধ্যে ফাঁক বিশিষ্ট একটা
কাঠের খুঁটা পুতিবে। একটা স্তুতা বা ফিতা (মাল বলে)
চরকার চক্র বেড়িয়া এই হাড়-কাঠের সংলগ্ন টেকোতে
জড়াইয়া রাখিয়া হাতল দিয়া চরকা খুরাইলে এই টেকো খুরিতে
গাকে। চরকা যত বড় হুইবে, টেকো তত শীঘ্ ঘুরিবে।

টানার নলী (Bobbin)—এগুলি আকারে ৪ ইঞ্চি লখা,
নূই পার্ছে গাড়ীর চাকার স্থায় এবং মধ্যভাগে দর:। টেকোয়
লাগাইবার জন্ম ইহার মধ্য দিয়া লখ-ভাবে ছিদ্র থাকে। নলী
সেগুণ বা অক্স কাঠের হয়। টানার হতা পেচাইতেই
ইহার ব্যবহার। বাশের ক্ষি দিয়াও কারিক্রেরা নলী
করিয়া থাকে।

থালি বা প'ড়েনের নলী (Pin)—ইহা নরম রকমের বাজে কাঠে প্রস্তত। ইহার গোড়া মোটা এবং ক্রমে সরু হইয়া অগ্রভাগ স্থচাল; গোড়ায় স্কুপের স্তায় পেঁচ আছে, টেকোর পেঁচের সজে লাগাইয়া ইহাতে প'ড়েনের স্তা জড়াইতে হয়।টানার নলীর মতও একরকম সরু প'ড়েনের নলী আছে।

টানা-কল (Bobbin Frame)—দেশুণ কাঠের আলনার ভার থাড়া বা পাররার বোদের মত একটা চত্রী বা একটি ফ্রেন। ত'বা ৪' ইঞ্চি অন্তর লখভাবে (Lengthwise) এক একথান পাতলা চড়-লাগান, তাহার শ্বীয় দিয়া ২২ ইঞ্চি অন্তর খুব সঙ্গ লোহার শিক পার হইরা গিয়াছে। টানার নলী এই সমস্ত শিকে পরাইতে হয়। ইজামত এই ফ্রেমটা ছোট বা বড় আকারে গঠন করা ঘাইতে পারে। কিন্তু বড় হইলে যদিও বেলী নলী ধরে, তথাপি তাহা টানিয়া বুরিরা বেড়ান কঠিন। কেহ বড় টালা ছল ব্যবহার করিতে চায় না। সচরাচর প্রায় ১০০টী নলী ধরে, এইরূপ ফ্রেম ব্যবহৃত হয়। তাহাতে ৩ ফুট প্রায় ও চারি ছুট লখা করিলেই চলিতে পারে। ইহার মাঝধানে ছই পালে ধরিবার ছুইটা হাতল আছে।

বার বা চালি (Lease-taker)—ইহা সেলেটের স্থায় এক
ফুট্ পরিমাণ লখা ও চারি দিকে ভক্তার ফ্রেমে গাঁথা, ঐ সঞ্জ লফ্ক অনেকগুলি কাবারি চিকের মত কাঁক রাখিরা সাজাইয়া লইয়া তাহার চারিদিকে ক্রেম গাখা হয়। সমন্ত কাবারিগুলির মধ্যস্থানে ক্লে ছিন্ত থাকে। টানা দিবার সময় বার থানি
দক্ষিণে এবং বামে টানিলেই জালা বা বাঁণ হইতে থাকে।

টানাহাটা শর—কিছু মোটা রকম বাশের দণ্ড। অন্যন্ত ১৩টা বা ১৭টা টানা দিবার কালে আবশ্রক। এই শরগুলি একটু মজবুদ হওয়া দরকার, কারণ ইহা মাটীতে থাড়া ভাবে পুতিয়া রাখিতে হয়।

হৃশ্কি—একপান কঞ্চির অগ্রভাগ চিরিয়া তাহার মধ্যে কাঁচের ছোট একটি কড়া লাগাইতে হয়। ঐ কড়ার মধ্যে সূতা পুরিয়া টানা দিতে হয়।

মুড়াবাড়ি বা পালাবাড়ি—সরু সরল বংশও তিনহাত পরিমাণ লখা। ইহা উত্তমরূপ চাঁচিয়া লইতে হয়। টানার পরে নরাজে জড়াইবার সময় এবং সানা ভরার সময় ইহা আবহাক।

ঝাড়ন-সরু সরু ছোট কাঠি। নরাজে জড়াইবার সময় ইহা ছারা টানার স্তাগুলিকে যথাস্থানে সংযত করিতে হয়।

টানা-পেচা ডাঙ্গি—একটি মোটা রকম স্থপরির বা বাশের শর। টানা জড়াইবার সময় আবশুক, ইহা নরাজের ছিদ্র মধ্যে প্রবিষ্ট করাইয়া যুৱাইতে হয়।

সাতাশি বা চিরড়—বাঁশের ১২ ইঞ্চি চঞ্চা ছইখানি পাতলা কাবারি। তাহার এক প্রান্ত থুব চোখা, জপর প্রান্তে সমদূরে ছইটা ছিদ্র পাকে। ঐ ছিদ্র মধ্যে একটি শলাকা দিতে হয়, তাহাতে কাবারি ছইখানি খাড়া হইয়া পাকে। "ব" বাধার সময় ইহা আবশ্রক। মোটা শরকেও চিরড় বলে।

ফুল্কি—বেণার অথভাগ তুলির মত করিয়া প্রস্তুত করিতে হয়। জোলারা ইহা হারা মাড় এবং জল দেয়। তাসনের সময় ইহার প্রয়োজন। কিছু তাঁতিরা বড় বাবহার করে না।

মাজন বা বাস-এই বাস দেড় হাত পরিমিত গদা; "হির' নামে একপ্রকার শিক্ত উত্তরকলে পাওয়া যায়, তন্ধারা এই বাস তৈরার হয়। মোটা প্রতার কাল করিতে জোলারা প্রায়ই এই বাস বারা মাড় দের, ইহাকে তাসন করা বলে। তাঁতিরা আনো ইয়া শুপ্ করে না। এতভিন্ন ক্লবি, কাঁচি, পূৱা, মুখর, ৰড়ি, হাতবাদ, স্বাজন-ফিতা, গজ, কোলাদ, লা, বাদ প্রভৃতি আবশুক।

बद्दन-क्षा

বন্ধ বুনানির প্রথম সোপান হতা-প্রস্তুত (Preparation of the yara)। সর্বাগ্রে স্তাকে বন্ধনোপযোগী করিয়া লইতে হয়। পাড়াগাঁরে এই হতা প্রস্তুত ব্যাপারটা প্রায়ই কারিকরদের মেয়েরা করে। তাহারা হতা প্রস্তুত করিয়া একেবারে তাঁতে চড়াইবার উপযোগী করিয়া দিলে কারিকরেয়া কাপড় বুনিতে থাকে। কারিকরেয়া এক চড়ন বুনিতে বুনিতে ঐ সময়েয় মধ্যে প্রীলোকেয়া আর এক চড়নের সমস্ত যোগাড় করিয়া দেয়।

পূর্ব্বে এনেশে উচ্চশ্রেণীর হিন্দুর ঘরে অর্থাৎ ব্রাহ্মণ কারত্ব পরিবারের ত্রীলোকদিগের মধ্যে চরকা কাটার রীতি ছিল। ব্রাহ্মণকুমারীর কাটাক্তা আজিও বিবাহাদি শুভকার্য্যে চলিয়া থাকে। কবচাদি ধারণেও কুমারীর "ব" ক্তা না ছইলে চলে না। সেই চরকা কাটার জন্ম তাঁহারা ক্তার সক্ষ মোটা হিসাবে গারিশ্রমিক পাইতেন। এক কোট ক্তার মক্ষ্রী। ও জানা পর্যান্ত ছিল। তৎকালে চরকার জন্ম এনেশে অরবত্বের হুংথ ছিল না। সকলেই বাল্যাবন্থা হইতে চরকা কাটিয়া কিছু না কিছু রোজগার করিয়া গিয়াছেন। প্রাচীনাদের মুথে এখনও চরকার প্রভাবজ্ঞাপক এইরূপ একটী কিংবদন্তী শুনা যাম—

"চরকা আমার ভাতার পুত, চরকা আমার নাতি। চরকার দৌলতে আমার দরজার বাধা হাতি॥"

লোকপরম্পরায় অবগত হওয়া যায় যে, 'সে কালে চরকা কেটে হতা করে তাতির বাড়ী দিলে সে ছয় আনা মজুরি নিয়ে যে কাপড় বুনে দিত, তাহা পুরা এক বৎসবেও ছিঁড়িত না।' ইহার কারণ এই যে, তথনকার চরকা কাটা হতা রীতিমত পাকান হইত, তাহা সহজে ছিঁড়িত না, স্বতরাং বুনানিও সহজে হইত। ইহাতে গৃহছেরও বস্ত্রবায় অনেক কম পড়িত। চরকা বছ হইয়া যাওয়ায় আমাদের দেশে বিশেষ ক্ষতি হইয়াছে; কলের হতা নিতান্ত আল্গা, হতরাং তাহাকে বয়নাপযোগী করিতে অনেক মজুরী পড়ে, হতাকে শক্ত, হাচিকণ এবং শৃত্যান্ত করিতে না পারিলে আদে বস্তাহাকে টানার হতা (warp) এবং ঐ টানার হতাকে ছই ভাগ করিয়া কতক হতার উপর দিয়া ও কতক হতার নীচে দিয়া মাকুর সাহায়ে বে হতা কাপড়ের পরিসর দিকে থাকে, তাহাকে শিড়েনের সূত্য' (weft thread) বলে।

টানার হতা (warp) প্রস্তুত কালে বিশেষ মনোযোগ থাকা আৰখক। টানার হতা বেশ মালা বা "ভাতান বলান" চাই; প'ড়েনের হতা (west thread) পরিপাটী করিতে কিছু নরম থাকিলেও বিশেব কতি হর না, কিছু টানার হভার খাটুনি পুব বেন্দ্র, তাহা বেন্দ্র পক্তি, বিভিন্ন এবং মধান্থানে সন্নিবেশিত হওয়া আবশ্রক।

হতা-ভালা (Unfastening)—হতা কিনিবার সমর হতার বেশী গুটী বা কাটা আছে ফিনা পরীক্ষা করিরা লইতে হইবে। প্রতি মোড়ার ২০ কুড়ি লিকলি হতা থাকে। ছই লিকলি করিরা হতা পৃথক্ করিবে। ছই হাঁটুর উপর বাধাইরা লিকলি জাগ করিরা লওরাই হুবিধা। ইহাকেই হতা-ভালা বলে।

স্তা ভিন্ধান (Wetting)—একটা গামলা বা বাণ্তির
মধ্যে পরিছার জলে স্তা ভিন্ধাইরা রাধিবে। টানার স্তা
এইরূপে তিন দিন ভিন্ধাইরা রাধা চাই। প্রতাহই জল
বদলাইরা দেওয়া উচিত। পড়েনের স্তা এক দিনের বেশা
জলে রাধার দরকার হয় না। স্তা ভিন্ধাইলে মজবুদ্ হয়, কিন্দ
ভাই বলিরা খুব বেশী দিন ভিন্ধাইয়া রাগা উচিত নহে। রদিন
স্তা বেশী ভিন্ধাইতে হয় না।

নাটা-করা (Winding the reels)—চতুর্থদিনে স্কার জল নিংড়াইরা ভাহার মধ্যস্থ অস্তার বাধা ফেটি (skein) গুলি পরম্পরে খ্যাইয়া লইবে। পরে একটি চরকিতে পরাইয়া চরকিটা ১১।২ হাত দূরে বদাইবে। চরকির সূতা গুলি তথন চুই হাতে চিরিয়া ফেটি-(skein) গুলি পর शत माझाहेग्रा नहें(व) छाहाएँ यनि ध्वकाधिक (थहे বাহির হয়, ভাহা হইলে ভাহার একটি মাত্র লইয়া নাটার এক পারীতে (কাবারী দত্তে) মড়াইয়া লইবে এবং অপর খেই-গুলি চরকির এক প্রাত্তে জড়াইয়া রাখিবে, নতুবা চরকি ঘুরিবার সময় স্তায় স্তায় জড়াইবার সম্ভাবনা। তৎপরে "গুরণী কাঠের" মধ্যন্থিত দোয়াতের ভায়ে গর্জের মধ্যে নাটার দভের আংগটী बाबिया এवर गाँगेत शासा डेशरतत मिटक कतिया गाउँ। है-দত্তের মধ্যঞ্জ ধরিয়া বৃদ্ধান্ত্রিল ছারা বামদিক ইইতে দক্ষিণে ও অভাত অঙ্গুলি দ্বারা দক্ষিণ হইতে বামে মোচড়। নিগেই নটোই বেশ ঘরিতে থাকে। তথন বামহতের বৃদ্ধান্ত্রি ও ভর্কনীর ছারা সভাটী সহজ ভাবে টিশিয়া ধরিবে। তাহাতে স্তার সহিত কোনরূপ জঞ্চাল বা গিরা যাইতে পারে না।

মোচ্ডা (Piecing)—হতা মাঝে মাঝে ছিঁড়িলে গিরা দেওয়া বাতীত এই উপারে জুড়িয়া লইতে হয়। ছইটী কতার অগ্রতাগ বাম হাতের বৃদ্ধান্ত্রলি ও তর্জনী বারা ধরিয়া নিজণ হাতের ঐ ঐ অসুলি দিয়া উপর মুখে চাপিয়া পাক্ নিয়া সেই পাকের সলে সলে নীচ দিকে আনিয়া নিজপের হতার সহিত মিলাইয়া নীচিদিকে একট্ট চাপিয়া একটা মোচড়া দিতে হইবে ৷ ইহাজে প্তার কোনও গিরা পড়িবে না, অবচ এরণ কৃড়িরা রাইরে বে, জঞ্চ হান হিঁছিরে, তব্ও জোড়া খুলিবে না। নোচ্ছা ভালরণ বেওরা না হইলে ব্যাবস্থলালে অনেক জুলিতে হয়।

এই মোচড়া দেওবার মধ্যেও তাঁতি এবং লোলাদের তেদ জাছে। উহাদের পদাশেরের বিপরীত প্রশালী। উপরে লোলা-দের মোচড়ার কথা লিখিত হইয়াছে। হিন্দু তাঁতিরা বাম হুজুের সুভাতুলি ও তর্জনীর নথ্যে তুই স্তার অপ্রভাগ লইয়া কীট্টিকে পাক দিলা ঐ সজে সজে উপর দিকে কুড়িয়া দেয়। নার সভার তাঁতিকের লোচড়া ভাল, আর মোটা স্ভার লোলা-দের লোড়া দেওবাই স্থিধাজনক।

স্তা ভাজান ও বলান (Sizing)—মোটা স্তার ভাতের
মণ্ড অথবা চিড়া ও ধরের মিশ্রিত মণ্ড এবং সরু স্তার বৈথ্যর
মণ্ড ব্যবহৃত হয়। একখানি পাধর বা পাত্রে মাড় লইরা
এথনে স্তার কেটী বাম হাতে ধরিরা লক্ষিণ হল্ত বারা উহার
পূর্টে উত্তমরূপে মাড় মাখাইরা লর। পরে ঐ স্তা মাড়ের
মধ্যে এরপ ভাবে চট্টকাইতে হইবে বে, সমল্ত স্তার গারে
ট্রে, ভালরূপ মাড় লাগে অথচ স্তা বিশৃত্যল না হয়। তলনন্তর
হোট চরহির বাধার ঐ স্তার কেটী লাগাইরা বড় নাটা বারা
পূর্ববিৎ নাটাই করিবে। প্রথমে ভাতের মণ্ড দিরা সমল্ত
মাড়ের কাল্ল হইত বিশিরা আল্লও ইহাকে "ভাতান" বলে
এবং মাড় দিবার পর স্তা নাটাই করিলে স্তার দৈব্য কিছু
বাড়িরা বার বলিরা ইহার নাম "বলান"।

ভকান (Drying)—নাটাকরা হইলে ঐ নাটাই রোজে

দিরা হতা ওকাইতে হর। ওকাইরা গেলে পূর্ব প্রকারে

হতা খুলিরা একটা চটার বা বালের উপর অহাইরা রাখিবে।

এই সকল কার্বো বত শৃথালা রাখা বাইবে, ততই কটিলতা
কম হইবে। বদি আকাল নেবাজ্বর থাকে এবং রোজে হতা
ওকাইবার স্থবিধা না হর, তাহা হইলে অয়ির উত্তাপে হতা
ওকাইবার প্রবেধা না হর, তাহা হইলে অয়ির উত্তাপে হতা
ওকাইবার প্রবেধা বাইতে পারে। বেলী বাদলার সমর
কারিকরেরা প্রার হতার মাড় বের না।

নলীভরা (Winding the bobbins)—ত্তা ওকাইরা
গেলে ত্তার কেটা বাম হতের বৃদ্ধান্থলি বারা চাপিরা বন্ধিণ
হত্ত হারা ক্রমে যোচড়াইরা বেশ উপ্টাইরা বিবে, এইরপ
করিলে ত্তার মাড়ের জাটা ছাড়া হর, তথদ ছোট বাওরা
চরকিতে ঐ কেটা পরাইবে। বেখাদে ত্তার থেই কড়াইরা
বাধা আছে, ভাহা ছিড়িরা লইরা একটা থেই টালার নলীর
(Bobbin) গারে একটু কড়াইরা ঐ নলী টেকোর লক্ষ্ তচাল
দিকে মাটিরা, ভানহাতে চরকার পাক বিতে থাকিবে এবং

ৰাম হতের ছই অভূলি বারা সেই থেই ধরিরা সমত নলীর গারে হতা অভাইবে। বেন নলী বেশ আঁট হর অবচ সহজে হতা পুলিরা আইসে। নলীর মধ্যভাগে মোটা এবং ছই দিকে সক্ষ করিরা হতা অভাইলে ভাল ইর। টানার ক্রেমের মধ্যে পরক্ষার বাধিরা না বার, সেই বিবেচনার নলীতে হতা অভান উচিত। প'ভনের হতা ও থালিতে (Pirn) ক্রিম্নণ প্রকারে চরকার সাহাব্যে অভাইতে হর,তবে থালি টেকোর প্রেচ-বৃক্ত মুধের সহিত আটিতে হর। মাকুর মধ্যে সহজে প্রবেশ করাইতে পারা বার এইরাপ মোটা করিবা হতা অভাইবে।

টানার ক্রেম-সাজান ও বার-গাঁথা—বত জোড়া কাপড় একেবারে আরম্ভ করা হটরে তাহার আবশুক মত নলী (Bobbin) পাকান হটলে টানাকলের মধ্যন্থিত শিকে ঐ নলগুলি পরাইবে; তৎপরে প্রত্যেক নলীর স্তার থেই বাহির করিরা একটি বারের চুই শলাকার মধ্যন্থ ফাঁকের মধ্য দিরা টানিরা লইবে; এইরূপে বত নলী থাকিবে, অর্জেক বারের ছিল্র মধ্যে এবং অর্জেক সলার ফাঁক দিরা স্তার থেইগুলি প্রবেশ করাইরা এক্ত করিরা একটি গিরা দিরা বাধিতে হর।

টানা হাটা (Warping)-চলিত কথার টানা কাড়াও ' বলে। তাঁভিরা প্রার এক সঙ্গে ৪ জ্বোড়া হইতে ১২ জ্বোড়া পৰ্বান্ত টানা দিয়া থাকে। বত হাত কাপড় হইবে বা তাহা ১১।২ হাত বেশী লখা টানা দেওৱা উচিত। টানা চক্রাকারে বা চতুকোণ করিরা দেওয়া বার। ১০×৫ হাত স্থানে ৪০ হাত লখা টানা দিভে পারা বার। প্রথমে হুই প্রান্তে ৩ বা ৩২ হাত লখা ২টী খুঁটা পুজিৰে। প্ৰেথম খুঁটার ৬ বা ৭ ইঞি দূরে বামভাগে ২টী এবং ডানদিকে ৩টা শর পুভিবে, পরে ২২ বা ০ হাত দূরে দূরে এক এক লাইনে ২টা করিয়া শর পুডিবে। তথন টানার ফল (Bobbin frame) এবং বার আনিবে, হতার শেইগুলি বে একটি গিরা দেওরা আছে, ভাহা **पुनित्रा अध्यम पुँठांव वांधित्य अवर बांब्रधानि छान हाटक** बांब्रहा नतारेतनरे त्वमन अकृष्ठि तना वा बाना (Loase) इर्हेरव, बामनि বাম হাত দিয়া তাহার এক প্রেম্ব ফ্রডা ১ম শরের মধ্যে ও ২র শরের বাহিরে দিবে এবং অপর প্রস্থ হতা ১ম শরের বাহির ও २व भटवव मधा पित्रा ठामारेबा शिट्य । अरे मिब्रटम ममख पुत्रारेबा ১ম খুঁটার নিকট আসিতে হইবে। ফলতঃ অর্থেক সূতা প্রভাক শরের বাহিরে এবং অর্থেক প্রভা ভারার ভিতর বিকে থাকিবে। কিন্তু খুঁটা ছটীকে ঐকপে না পেচাইরা त्कवन पूँ छोत्र वाहित किटकरे नव क्छा पुतिका वाहेटन।

বে নিকে ২টা শন্ন সেই দিকে টানা আরম্ভ এবং বে দিকে ৩টা শন্ন, সেই দিকে টানা শেব করিতে হইবে। কাপড়ের বহর

বেরপ হইবে এবং বেরপ ঘন বা পাডলা বুনিতে হইবে, সেইরূপ সানা লাগিবে। স্বভরাং সেই হিসাব করিরা জমির ও কোল পাড়ের এবং পাড়ের হতার সংখ্যা ঠিক করিবে। বহরের হিসাব করিবার সমত্ত্বেও ২ ইঞ্চি বেশী ধরিরা সইতে হয়, কারণ বুনানির সময় তাহা কমিরা বার। টানা দেওরার সলে সলে হতা গণনা করিরা প্রতি একশত হতা গোছ করিরা বাঁধিরা রাখিবে। কলের সাহাব্যে পাড়ের টানা না দিরা পুথক ভাবে দেওয়া কর্ত্তব্য, কেননা পাছে ও কোল পাছে (ইহাকে কছিও বলে) লোহৰ (তুই হার বা খেই একত্ত্ব) সূতা দিতে হয়, अर्थाए क्रेट (थेट এक नाज এक नाजात अफ़ाहेता ताहे लाहत সূতা একটা "বাওয়া" চরকিতে লাগাইরা চরকিটা বাম হাতে ধরিয়া ডান হাতে একটি "হল্ফি" লইবে, চর্কি হইতে লোহর স্তার ধেই বাহির করিয়া হলকির আংটার মধ্য দিয়া ১ম খুঁটার বাধিয়া লইতে হর। পরে হলকির সাহাধ্যে ঐ কভা একটা শরের ভিতর দিয়া ও অপরটির বাহির দিয়া খুরাইল লইবে। এক দিকের পাড় ও কোল পাড়ের টানা শেষ হইলে শর গুলি ক্রমে ক্রমে উল্টিয়া পুতিরা লইবে এবং অপর দিকের কাঞ্চও উক্তরূপে সম্পন্ন করিবে।

অস্থা প্রথমে একদিকের পাড ও কোল পাডের টানা দিরা কাপড়ের জমির বা খোলের টানা শেষ করিবে, পরে অঞ্চ मिटकत्र পाफ रेकामित होना मिटन आत भत्र प्रतारेटक रुप्त ना । আজ কাল টানা-হাটার কল হওয়ার কাজ অনেক সহজ এবং শ্বর সময়-সাধ্য হইয়াছে, নচেৎ এই জ্বোডা কাপডের টানা দিতেই দেড় দিন লাগিত। টানা শেষ হইলে মোটা শরের পরিবর্তে সরু জোশর পুরিয়া এবং প্রথম খুঁটা পেঁচাইয়া যে স্তা আছে, সেই স্তা কাটিয়া লইয়া যে দিকে ২টা শর আছে, ষাইবে। বেখানে ৩টা শর আছে, সেই প্রান্তে আসিয়া আন্দান ১২ হাত স্তা বাহিরে রাখিরা সেই স্তাগুলি বিস্তার করত উপরে ও নীচে তুইথানি "চিরড়" দিরা আবো একটু জড়াইরা লটবে এবং দড়ি ছারা চিরড়ের সহিত শব্দগুলি বাঁধিরা লইবে। ্বে ৩টী জো বাহিরে রহিল, তাহাও ঐ দড়ির আর এক মুড়া দিরা रक्शास्त रक्सन नव चारह. त्यहे छारवहे त्यंत विद्या बाधिरव, रवन পড़िता ना यात्र। त्करन এই औँ ला ताबिरनरे गर्बा स्त কিন্তু কোন কারণে মধ্য হইডে প্তা কাটা পড়িলেও অস্ত্ৰ-বিধা হইবে না বলিয়া তাঁতিয়া বেশী জোশর রাখিয়া থাকে।

সানা গাঁথা—উলিখিত প্রকারে টানা পেঁচা ও বাঁথা হইরা গেলে চালের বাভার বা ঐরপ কোন একটা উচ্চ স্থানে জড়ান সূভা বাঁথিয়া যে দিকে এটা শর আছে, সেই দিক্ সুলাইরা দিবে।

ज्यम अप आंख रहेरछ २०।२१ही मुखा अस्त स्त्रिता हुँ। रीविता बाहेरव अवर के बूँ हिक मर्ता अक्की भागावाकी ठानाहेबा क्रिक्ट राष्ट्रांचित वर्ग काँक काँक हरेंद्रा श्रीकृत्व। उदलब्र কাপড়ের বছর বিবেচনার সানার ও কাপড়ের মধ্যভান ঠিক ক্রিরা পালাবাড়ীর সহিত সামাধানা আটুকাইরা লইবেঁ। এক আৰ হইতে সুঁটি খুলিয়া লো শরের নিকট হইতে বাছিরা এক জোড়া (ভিডর বাহিরের) হন্ডা সানার এক্বরে প্রবেশ করাইবে। এই সমরে মুইজন লোকের আবগুক। একজন প্তার জোড়া সানার ফাঁকে ধরিবে, আর একজন অপর দিক্ হইতে মেঁচ্কা वां केंग्रिं वित्रां रहा नामात्र मरश् धारम कत्राहेता विरव : এইরূপে বিশেষ সভর্কভার সভিত সালা গাঁখিরা ঘাইতে চইবে। যেমন গাঁথা হইয়া যাইৰে, অমনই ২০০০টা হজা একত পাক দিয়া মোচ ডাইরা রাখিবে। কলেও (mills) সানা গাঁথিতে ঐকপ र बन (नाक नार्त), फाराबिनरक Reacher in ज्वर Drawer in বলে। জোলার নিরমে সামাভরা সহজ্ঞ, কারণ উহারা হতার মুড়া কাটে না, এক সলে কোড়া থাকে ৰলিয়া একজনেই দানা গাখিতে পারে।

नदारक अफ़ान (Beaming)—हेंदा वित्नव नावधानकात्र সহিত সম্পাদন করা আবশুক। সানা গাঁথা হইলে স্ভার প্রাত্ত থলি ঝুঁটি বাধিরা বাহির নরাজের ও সানার মধ্যকল ঠিক মিল করিরা তাহার মধ্যে একটী সঙ্গ শর দিরা বাহির নরাজের জুলির মধ্যে ঐ শর্টী ৰসাইয়া দিবে এবং একজন টানার অপর প্রান্ত মধ্যে একটা পালাবাড়ী দিরা ভালা টান্ টান্ করিরা রাখিবে। তথন নরাজের ছিল্ল মধ্যে একটি টামা-পেচা-ভাজি দিয়া একজনে বুরাইবে, আর একজন বথাস্থানে প্রতা স্থাপিত इटेरफर कि ना जादा भन्नीका कतिया बाटेरब, मरशा मरशा परा টিল বা টান না পড়েঁ, তজ্জ্ঞ সঙ্গ জোশর এক একটা জড়ানের সময় দিবে, অথবা স্থানে স্থানে পাড়া বা কাগৰ দিয়া বাহাতে টানার প্রতা উচ্চ নীচ না হয় সেরপ ব্যবহা করিবে। জোলারা টানার যে প্রান্তে দানা গাঁথে, সেই প্রান্ত হইতে নরাজের হতা জড়াইতে থাকে ও সজে সজে সানা অন্ত প্রাত্তে লইরা যার। ইচাতে যথাস্থানে স্থতা স্থাপন করার বেশ স্থবিধা হয়, কিছ তাঁতিরা বে প্রান্তে সানা গাঁথে, তাহার বিপরীত দিক্ হইতে নরাজে জড়াইতে থাকে।

"ব" বাধা প্রণাদী—নয়াকে স্তা কড়ান হইলে নরাক্টির ছই দিক্ ছইটি খুঁটার সহিত একটু উচ্চ করিয়া বাঁথিতে হয় এবং ভাহার অপর প্রাত্তে বে মুড়া-বাড়ি আহে, ভাহার উভর পার্বে ছইখানা ১০০ ইকি লবা খুঁটা পুতিরা এরপভাবে আবত করা উচিত বে, ভাহাতে বেন স্ভাত্তিতে সম্পূর্ণ স্বান্তাবে টান

भएए। भूदर्काक्रिकिक क्षांकृष्टिक और स्वामदबन बाना २ है "स्वा" (Louse) হয়, উক্ত "বো"এর মধ্য দিয়াই "ব" বাঁথিতে हत । व्यथमण्डः मचुर्यस् "(मा"त चिक्रम् > बाना "वित्रज्" প্রাইরা পার্থ গড়িতে উহা কিরাইলেই ক্তাঞ্জি কাঁক হইরা गाहेर्द । अप काफ-क्रमंबिटफ "न" वैश्विवात एका भनावेता थे চরভিটি ১২ বা ২ হাত মুদ্রে মাটিতে পুডিবে । চরকীর ক্তার অপ্ৰভাগ একটা স্বা গৱের মাধার বাধিয়া "জো"ৰ ভিডৰ দিয়া विट्नव मावधाटन ध्यादन क्षत्राहेश क्षापत निक निमा वाश्ति ক্রিয়া লইবে। গুলটের দক্ষ দিকের ছিল্লে ৩ বা ৪ হাত লখা এক পাই কোটা হুডা বাধিবে। ভান হাত দিয়া সন্মুখহ "কো''-এর ভিত্তরের "ব" বাধা শুভাটি এমন ভাবে তুলিবে, যেন ভাহাতে চিয়ভেয় উপরের এক এক গাছা টানার হতা পেঁচাইরা উঠে। "ব" স্থতা উঠাইয়া গুলটের উপরিষ্থ শির ভালির নীচ দিয়া গুৱাইয়া ঐ শিব-ডাঙ্গির সহিত একটি পেঁচ জাঁটিয়া স্তাগাছাকে গুনটের নীচ দিরা সম্বধের দিকে জানিলেই একটি স্ভার "व" दीश हडेरव। **এইका**श अकड़ि अकड़ि कतिका विकारणत উপরের সম্পূর্ণ স্থভার "ব" বাধিবে। একপাটি "ব" বাধা শেষ হটলেই খলটের সক্ষ পার্বসংলগ্ন হতাগাছা একটি মোটা শরের সহিত বাধিয়া শিরের নীচ দিয়া "ৰ"র ভিতর পূরিবে। "व"त मरश भन्न भन्नाम हरेला भरतन खेखन आख भिन्नफानिन সহিত চুইটি গাঁইট দিবে, তৎপর উল্লিখিড ভাবে অপর "জো"র ভিতৰ উক্ত "চিয়ড" থানাকে পরাইলে নীচের "লো"র হতা উপরে উঠিৰে এবং ঐরপে ঐ স্তাগুলিরও "ৰ" বাঁধিতে হইবে। এইরপে একদিকের ছই পাটি "ব' বাধা শেষ হইরা সেলে नताक के हैं। हेश जानत शर्दात "व" वीधित्व, धरे 'व' वैधिवात সময় পুতা এমন ভাবে "ভো"র মধ্যে পরাইতে ইইবে বে, সেই প্ৰতাগাছা যেন পূৰ্ব্ব বাধা "ব"র মধ্য দিলা বার। একাধিক টানার সূতা যাহাতে এক ব'র মধ্যে প্রবিষ্ট না হয়, তৎপ্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাখা একার প্রয়োজন।

তাতে চড়ান (Looming the yarn.)—"ব" বাঁধা সমাধা হইলে বাহিন্ন নরাক্রের নহিত সমত হতা ও "ব" ইত্যাদি তাতে আনিরা বসাইলে। প্রথমে বাহিন্ন নরাক্রী বধাবধরণে মুলাইরা সূঠকাঠ উঠাইবা সানাটা বক্তির জ্লির মধ্যে, মধ্যভাগ ঠিক করিরা বসাইবে; তবলতার কোল নরাজের জ্লির মধ্যে, মধ্যভাগ ঠিক করিরা বসাইবে; তবলতার কোল নরাজের জ্লির মধ্যে, মধ্যভাগ ঠিক করিরা বসাইবে; পরে কোল নরাজের জ্লির মধ্যে একটা শন প্রিরা ভাবার সহিত বিতীর বে একটা শন টানার হতার মধ্যে প্রেই প্রবিষ্ট করান মইবাছে, সেইটি ঠিক সমাভারাল করিরা একট্ট, ইবে সক্ষ বড়ি বা হতা দিরা বাবিরা লইবে। এয়ণ করিলে অক্যান গোড়ার ফাণ্ড বেনী মই

ছইবে না। তথন "ব" কোড উপরে নাচনির বহিত একা নীচে কেন্নার সহিত বাঁথিবে; তৎপরে বেল্না পালনের সহিত বাঁথিরা সইবে।

ভাসন-করা (Sising and Brushing)—টানা শেষ হুইলে শ্ব সমেত টানা উঠাইছা ছুই প্ৰান্তে চুইটি পালাৰাডি পরাইরা প্রত্যেক পালাবাড়ির ছই মুড়ার দড়ি বাধিরা সেই ২টি দড়ি কিছু দূরে জানিরা একটা ক্রিডুজের প্রায় করিরা একসঙ্গে গিরা দিবে এবং টানা কোমর পর্ব্যস্ত উচ্চ পাকে, এরপভাবে ছুই প্রান্তে চুইটি মজবুদ খুঁ টার সহিত বাধিবে। তৎপরে শর ও পালাবাড়ির উপর হতা বিভার করিরা মাজনে (Brush) মাড় মাধাইদা স্তার উপর দিয়া টানিবে এবং মধ্যে মধ্যে স্কৃতি দিরাও প্ৰভাৱ মান্ত মাধাইৰা লইবে। স্থভার মধ্যন্তিত লরগুলি ছই হাতে ধরিয়া কাঁক করিতে করিতে এক প্রান্ত হইতে অন্ত প্রাত্তে बांबेरव. बेबारक "डेब्रारना छांग्रारना" यरन । डेब्र्स क्षकारत १।१ বার বাস করিলে সভা পরিমার্ক্তিত এবং মাডমাখানো শেব হয় : মধ্যে মধ্যে শরগুলি উলটাইরা টানার অপর পিঠেও ঐক্নপে বাস করিবে। পুতার মাত বসিলে ঐকপ রাখিরাই টানা চিপিয়া লইবে এবং প্তা বিছাইয়া দিয়া পুনরায় ২।১ বার ব্রাস টানিয়া। একট বিলম্ব করিলেই মাড় গুকাইরা আসিবে, তথন ব্রাসে তৈল মাখাইয়া "তেলমাজন" করিবে, ইহাতে স্তা বেশ স্থাচিকণ এবং বিজিত চুটুৰে। এইক্ৰপে মাজন দিতে দিতে স্থা লখা হয়, ञ्चलकाः मरशा मरशा ध्याखिषक भूँ हो मः नध निक हो निका निरंक হয়। কিছু ক্টসাধা হইলেও জোলাদের এই প্রণালীট (বিশেষত: মোটা প্রভার কাজে) উক্তম এবং অভি জন্ন সমর মধ্যে শভাতান বলানের" কার্য্য সমাধা হর। প্রাতঃকালেই ভাসন করিতে হয়, বেশা রৌক্র বা বাতাদের মধ্যে ইহা হয় না।

উতি-খাটান (Setting the loom)—এ কার্যাটা বেশ সভর্কভার সহিত সম্পন্ন করা আবশ্রক, কিন্ত ছংথের বিষয় অনে-ভেই এ বিবরে বিশেষ অমনোরোগী। তৈয়ারি ক্রেমে তাঁত কুলানো বড় শক্ত নতে। উত্তের বৈর্থের অনুরূপ ক্রেম করা হইবে এবং প্রস্থে তিন ক্রেটর বেশী হইবে না। উত্ত প্রস্থানাকে ০ ভাগ করিরা ২ ভাগ বাহির নরাজের দিকে হাড়িয়া জাঁত খানি ক্রেমের পার্থাছত এড়ো কাঠের (cross bar) উপর বুলাইবে এক না সরির বার, এইজন্ত ঐ কাঠে থাজ কাটিরা ভাহাতে উত্তের লোকা বসাইরা দিবে। বসিবার ছানের ভ" বা ৫" ইকি উবরে কোল নরার ক্রেমের বলে ঝুলাইবে। বাহির নরার উত্ত অংশ করির করার করার করার ক্রেমের করার ক্রিচতার বার্যান্তর স্থিত কোল বরার প্রস্থানার উচ্চতার বার্যান্তর স্থিত কোল বরার স্থানার ক্রমের করার উচ্চতার বার্যান্তর স্থিত কোল বরার স্থানার ভাততার

আবস্তৰ মত উক্ত এজে কঠিখানি উঠাইৱা বা নামাইৱা লইতে হইবেক। তৎপরে ভারাত্বভের সহিত লড়ি দিয়া লাচ্নির পাটি ও নাচ্নি সুলাইরা ভাহার সহিত "ব" **ভো**ড এরপে বাঁধিবে বে, সানার মাঝাড এবং "ব" এর কেওড়া (বাছার মধ্য দিরা টানার হতা থাকে) বেন সমান্তরাল থাকে। ঝাঁপের নীচে যে শর আছে, তাহার সহিত সমান্তরাল করিরা বেলনা এবং বেল্নার সহিত পাদল বাঁধিৰে। এখন ছিলাৰ করিয়া দিউ গুলি এমন করিয়া বাঁধা আবন্তক বে সহজে হাতল ধরিয়া টানা যার এবং হাতণ টানিলে সহজে মেড়া ভালে। প্রথমে ale হাত লখা ১নং দড়ির মধ্যভাগ ভারাজ্ঞের **উ**পরে জোন একটি উচ্চয়ানে বাঁধিবে, ছই দিকে সপ্তয়া হাত পরিমিত দড়ি ছাড়িয়া তথায় ২।৩ নং দড়ি नवाভাবে ঝুলাইয়া দাও এবং ১নং দড়ির প্রাপ্ত ছুইটি দক্ষিণে ও বাবে ফ্রেমের এড়োকাঠের সঙ্গে **ঢिल कत्रिया वैधित् । शांकरलत माथाय त्य वे** किस कारक धनः সক্ষ একগাছি দক্তি হাতলে খানিক অভাইয়া (ইচ্ছামত উচ্চ নীচ ताथिवात अन्त) के निष्ण इहें श्रीक फेक हुई किटलत मशा निता একহাত আন্দান বাহিন্ন করিয়া লখাভাবে প্রলম্বিত ২া৩ নং ঁদড়ির (১নং দড়ির সন্ধিত্বদের অসুমান স্থরা হাড নীচে) সহিত বাৰিৰে, তৎপন্ন মেড়া ছই বান্ধের শেষ প্রান্তে সরাইয়া দিরা ২।৩নং দক্তির মুড়া মেড়ার ছিন্ত মধ্যে ছুরাইয়া বাঁধিবে, ৩ ও ৪নং দড়ির সন্ধিয়ল হইতে মেড়ার বন্ধনস্থান নাুনাধিক দেড় হাত क्टेंद्र ।

ফ্রেম এবং তাঁতের উক্ততা ও দৈর্ঘ্যের উপর এই মাপ নির্ভর করে, মোটামুটি একটা ধারণা জন্মাইবার জন্ত ঐরপ মাপ দেওয়া হইল। ফলত: হুই পার্থের একলেট রক্ষ্ক্ সমদূরে বাইরা অপর সেট রক্ষ্র সহিত মিলিবে।

বাঁশের ক্রেম করিতে হইলে ভাহাও ঠিক কাঠের ফ্রেমের
মত করিতে হইবেক, তবে ভাহাতে নরাল ঝুলাইবার লভ্ত
পুথক্ ছোট খুঁটি আবশ্রক এবং মাটিতে গর্ভ করিরা বসিতে
হইলে পালল গর্ভের মধ্যে বলাইরা লইতে হয়। মেজের চেরারে
বসার ভার পা গর্ভ মধ্যে বলাইরা বসিরা কাল করিতে হয়।
লোলারা নারিকেলের মালার ছিদ্রের মধ্যে দড়ি বাঁধিরা ভাহাই
বেলনার সহিতে বাঁধিরা পাদলের কাল করে।

चन्नचत्रम् ।

ভাগড় ব্নিবার জন্ত ভাঁতে বসিবার সমর ওসারি, মাতু, মেচ্কা, ছুরী, হাতত্রার, জন প্রভৃতি জিনিস আবক্তক। কাজের সমর সে গুলি একেবারে হাতের কাছে লইরা বসিবে। ভংগরে প্রবাদে পাদল টিপিরা রাঁণ ঠিক মত উঠিতেছে কি না, দক্তিকানি কোনের বিকে টানিরা ভাছা কথানিরনে কুলান বইবাছে কি না এই সকল পরীকা করিবে, বনি কোন লোব থাকে, তবে প্রথমে তাহা সংলোগন করিবা কাল আরম্ভ করিবে। লোপর করটিকে পরস্পার এফটি সক বড়ি বিদ্যা আট্ কাইরা ভাষাতে সাবাভ এফটা ভার বুলাইরা দিবে।

বর্ত্তমান প্রচলিত বেশী ফ্লাইনাট্ল উাতের সামান্ত একটু পরিবর্ত্তন করিরা লইলে এবং বর্নকোশণ লানিলে ধৃতি, শাড়ী, রেপার, টুইল, ভোরালে, কমাল, ছিট, মশারি প্রকৃতি সকল রক্ম ব্নানির কাক চলিতে পারে। চেটা করিলে পশম ও জনবের ব্রাদিও প্রস্তুত করিতে পারা হার।

জীরামপুর ও কুরিরার তাঁতে হাত ও পারের সঞ্চালন আবতক। কার্ব্যে বিশেব পট্ডা গাবিলে বুনানি ভাল হয়। প্রথমে
মুঠকাঠ ঝাঁপের দিকে বামহতে ঠেলিরা প্রকটা পাবল টিপিরা
ঝাঁপ তুলিবে, ইহাকে ইংরাজীতে Shedding: metion বলে;
তৎপরে ডানহাতের বুডাকুলি হাতলের মাখার উপর বিরা মুঠার ন
মধ্যে হাতল্টি ধরিরা, নিরনিকে একটু ভেরছা করিরা টানিলেই
মেডার টান পড়িবে এবং সঙ্গে সঙ্গে মাকু চলিবে, ইহাকে Picking motion বলে। ভদনভার লে ঝাঁপ ছাড়িরা পূর্বাক্থিত
প্রশালীতে অন্ত ঝাঁপ উঠাইরা মুঠকাঠ কোলের দিকে টানিরা
পড়েনের হতার বা দিবে, ইহাকে Beating up motion বলে।
এইরশে ভাল ঠিক রাখিরা বত শীক্ষ এই ওটি টান চালাইতে
পারিবে, তত সম্বর কাপড় বুনানি হইবে। প্রেভি মিনিটে বে বন্ধ
ভারা ১২০ বার মাকু চালান বার, সেই বন্ধই সর্কোৎক্রাই এবং সেই
কারিকরকে স্থানিপুণ কারিকর বলা থার।

দেশী ভাতে সাধারণতঃ প্রতি মিনিটে ৮৫ বার মাকু চালাইতে পারা বার। আবার অপেকারত মাঝারি রকম কারি-কৰেৱা ৭০।৭৫ ৰাৱও চালাইতে পাৱে। ক্সিত্ৰ কেবল টানিলেই যে কাজ শিক্ষা হটল ভাষা নহে, ভাষার মাত্রাও ঠিক হওরা চাই। शामरण हठां (वनी रकांत्र मित्रा हाशिरण होमात्र प्रका हिँ फिरव. পাদলে আবাদ জোর কম হটলে ভালরপ কাঁপ না উঠাছ নাক চলিবার সময় প্রতা ভিঁজিয়া বাইবে বা নলিকোঁড হইবে, অথবা মাকু পুভার মধ্য হুইছে পলিয়া পড়িবে। ভান পাদল টিশিয়া फान निरुक्त अवर बाम शामन हिलिन्ना वामनिरुक्त माकू छास्त्रित । এটব্রণ করিছে করিছে পদস্কালনের সলে হয়সকালনও অভান্ত হট্মা ঠিক কলের মত হট্মা বাইবে। হাতল ধরিয়া টানিবার সময়ও পুব বেশী জোরে টানা উচিত নছে, ভাহাতে মাকু বাজের প্রাত্তে বাইরা আবার কিরিয়া আইলে এবং পড়েনের প্ৰভা চিল পড়িয়া বাষ, ভক্ষত হাত দিয়া ঐ প্ৰভা টানিবা না बिटन शांए कुँ शि केंडी इत्र । त्मक सत्तम शांटक अवाल क्यांट्य हाम (मडवा नवकात त्य, बाकूहा धक बाक्र हरेड क्रिक्स अनव

বাৰের প্রান্তে বাইরা পৌছে। এই টান ঠিক না ছইলে কাপড় বুনানি ভাল হয় না। মুঠকাঠ টানিবারও মাজার হিলাব আছে। বন্ধবিশেৰে কম বা বেশী জোৱে মুঠকাঠ টানিতে হয় অৰ্থাৎ যদি সত্ন হ'ডার কাজ হয়, অথবা বেশী থাপি বুনিবায় অভি-প্রার না থাকে,ডবে অপেকান্তত কিছু কম কোরে টানা আবশুক, আর বদি ছিটু, রেপার অভৃতি মোটা কাল হর এবং চাপা বুনানির প্রয়োজন হয়, তবে কালেই একটু বেশী জোরে মুঠকাঠ টালা দরকার। কাপড়ের ভালনক এই টালের উপরে নির্ভর करत । १।৮ हैकि वाना इंडेरनरे वारित्र नत्राम छिन मित्रा क्लान নরাজে কাপড় জড়াইরা লইবে এবং তৎপরে "ব" ইত্যাদিও সরাইয়া শইতে হইবে। মুঠকাট টানিলে বদি দক্তি পড়েনের স্তার খা না দিয়া দুরে থাকে, তবে বুঝিতে হইবে, কোল নরাজ বেশী সভান হইয়াছে, স্নভরাং আবখ্যক মন্ত কোল নরাজ ঢিল করিয়া দিৰে বা তাঁতথানি কোলের দিকে সরাইয়া লইবে। কোল নরাজে কাপড় জড়াইবার পূর্বে তরল মাড় দিয়া বোনা অংশ ভিজাইয়া কড়ি বা প্রস্তর্থও বারা ভাঁতিয়া ভালরপ মাজিয়া থাকে, ইছাতে কাপড় বেশ মস্থূ এবং জনটি হয়।

माकूब या निष्क हाका ज्यारह, मिह निक् निकार डेशर ७ य দিকে ছিন্ত (Eye) আছে, তাহা কারিকরের কোলের দিকে রাখিয়া মার্কুর মধ্যে থালি (Piru) লাগাইয়া পূর্ব্বকথিতরূপে বুনিতে থাকিবে। টানার স্তা কতকগুলি একর ঝুঁটি বাধা থাকে বলিয়া প্রথমেই পড়েনের স্থতা টানার স্থতার ঠিক সমকোণ ভাবে বসান যার না। ২।৩ ইঞ্চি বুনা হইলে পর ছিলে দিরা রীতিমত কাপড় বুনিতে **আরম্ভ করিবে। ৪** বা ৫ ইঞ্চি বুনিবার পরে ওসারি লাগাইবে, কিন্তু ভাছাতে যেন বেলী জোর না লাগে। প্রথমে বুনিবার সময় টানার হতা মাঝে মাঝে ছিড়িবে, কিন্ত বেমন ছিঁ ড়িৰে তেমনই সেই স্তাটি "ব"র মধ্য হইতে বাহির করিয়া জোশরের উপর উপ্টাইরা রাখিবে; নচেৎ পালের অঞ্চ স্তার সলে অভাইয়া ঝাঁপ উঠিবার বিষ্ণ ঘটাইবে, এরপ কভক-টুকু বুনিবার পর ছিন্ন হভাটি মেচ্কার সাহাব্যে "ব" এবং সানার मधा पित्रा चानिता वथाचान कृष्णिता नित्त, अ विवय जानक कतिता কাপড় বুনা ভাল হইবে না। বদি বেশী হতা ছিঁড়ে, ভবে ৰে হ্লম্ভ ঐক্লপ হইডেছে, ভাহার সংশোধন করা আবশ্রক।

চেক, ছিট বা রেপার বুনিজে বে বে রজের হতার দরকার, ভাহা ভিজাইরা নলী করিরা পূথক পূথক মাকুর মধ্যে পৃরিরা লওরাই স্পবিধা, যখন বে মজের হতার দরকার হইবে, তখন সেই মাকুটি ব্যবহার করিবে।

পাড় বুনিবার প্রতি বিদেব লক্ষ্য রাখা করকার, কারণ বে হতার জনি যুনানি হয়, পাড়ে সেই হভার ২টি বা ৩টি একত্র করিরা একটি সানার প্রিরা কেওরা আবশুক; কারণ সেগুলিতে বেশী চাপ পড়ে; হুতরাং বুনিবার সমর মাঝে মাঝে বাড়িয়া বার, তাহা ওসারি লাগাইরা ঠিক করিতে হর।

মাড়প্রকরণ—(size) আমাদের দেশে মোটা স্থডায় সাধারণতঃ ভাতের মণ্ড একং সক স্থডার ধইএর এবং মাঝারি স্থডায় চিড়া ও ধইমিশ্রিড মণ্ড ব্যব্রহাত হইরা থাকে।

আতপ চাউল ভালরপ গলাইরা গাছ মণ্ড করিবে, পরে বাবহার করিবার সময়ে তাহাতে একটু চুণের জল ও তেঁতুল মিশাইরা জল দিরা পাতলা করিবে ও কাপড় দিরা ছাঁকিয়া লইবে। টাট্কা ধই থালার (f'late) বা পাথরে চট্কাইরা লইলে একটু আটা মত হইবে, তথন উহা বারা মাড়ের কাজ করিবে। বেশী ধই-ভিজান মাড় ভাল নহে।

বর্তমান সময়ে আলু, কচু, বালি ইত্যাদির মাড় ব্যবহারেরও চেষ্টা হইতেছে। ফলতঃ মাড় কিচু আঠা রকম হইবে, অথচ এরপ না হয় যে, হুতায় হুতায় জোড়া লাগে, সেজভ উহাতে তৈলাক্ত পদার্থ থাকাও দরকার, জোলারা ভাতের মাড় দেওয়ার পরে তেল মাজন পৃথক্ দিয়া থাকে।

কেই কেই বলেন, ১৮ সের চাউল, ১২ লের সাগুলানাঁ, ব জিজিলী তেল জভাবে বাদাম তৈল ১২ সের এবং ১৬ গ্যালন জল একতা সিদ্ধ করিলে উত্তম মাড় তৈরার হয়। জবভা প্রথমে উক্ত দ্রব্যাদি উত্তমরূপে সিদ্ধ করিয়। নামাইবার পূর্বে তৈল দেওয়া উচিত।

রং করা—(Dyeing) স্তার রং করার ব্যাপারটি বড় সহজ নহে। রেশম বা পশমে পাকা রং করার সহজ, কিন্তু কাপা-সের স্তার পাকা রং করা অতি কঠিন, অনেক বৈজ্ঞানিক প্রক্রিরার সংবোগ ও অনেক বত্তের সাহাব্য ভির হর না। আমানের দেশে কেবল নীল, লাল, কাল ও হরিজাদি রলের স্তা ছোপান হইতেছে। ঐ রঙ্ওলি বিলাতী রঙ্ অপেক্ষা অনেক খারাপ। নীল রং করিতে নীল বড়ি, মাত গুড়, সাজিমাটি ও দুল কাঠ আবশ্রক। বর্ত্তমান সমরে এদেশীর স্তার রঙ্ বেশ পাকা হই-রাছে। তবে রক্তকের রূপার অঞ্চ রঙ প্রারই ক্ষারে অনিরা নই হইনা থাকে।

প্তা—(Yarus) তাঁতি কোলারা বলে "চরকা উঠিরা গিরা কাপড় ব্নিবার ক্থা উঠিরা গিরাছে।" ৰাত্তবিক্ট চরকার প্তা ভালরণ পাকান হইত এবং বেলী শক্ত ছিল। এখনকার কলে পাকান প্তা নিভান্ত আল্গা, প্রভুরাং মাড় ইভ্যাদি কুত্রিম উপার বারা কাল করা জিল্ল ট্রপার নাই। বিদ লে বিবরে একটু ক্রাট বটে, ভাহা হইটো কঠের একদেব। আমানের কেপে প্নরার চরকার প্রচলন সা হইটো এ জভাব কিন্তুতেই দূর হইবে না এক বাতিল হতার ওজন ৫ পাউত। এবানে বোদে,
নাগপুর, ওজনাট, মহিবর প্রকৃতি হানে এখনও হাডের চরকার
ও দেশী কলে হতা হইডেছে বটে, কিছু অনিকাশে বিলাভ
হইতে আলিতেছে। দেশীকলৈ ০০।৪০ নং অপেকা নর হুডা
কলিতেছে না। নবর বভ উর্ছ হইবে, হুডাও ভড হুজ
হইবে। প্রতি বাতিলে নিক্ষি বোড়া হুডা এবং প্রতি
নোড়ার হুড়ি ছড়ি (Skein অর্থাৎ ১২০ পরা) হুডা বাবে।

১৬ নং স্তাৰ উত্তৰ গামছা, ৰাজ্ন ইজ্যানি প্ৰক্ৰম্ভ হয়।
২০ নং হইতে ২২ নং স্তাৰ দেপাৰ, ছিট, বিছানার চাৰর
ইত্যাদি একং ৩০ হইতে ৫০ নং স্তার বেশ সাধারণ পরিবার
কাপজ হইতে পারে। ৬০ নং হইতে ৯০ বা ডভোবিক্ষ নং পর্যন্ত
স্তার সক্ষপুতি প্রন্তত হইরা থাকে। উর্জ নকরের স্তার ধৃতি
করিলে অতি পাতলা হয়, তবে ধৃব সক্ষ স্তার উত্তর উল্লানি
প্রেত্তত হইতে দেখা বার। ৯০ নং পর্যন্ত প্রচলিত ক্লাইসাটেলে
বেশ বুনা বার।

তাতগৃহ এবং কল-বাহুর জিল্লা (Weaving shed atmospheric influence)।—নিম্নবদের কল হাওরা ব্রবহন কার্ব্যের বিশেব অক্তৃত্ব হইলেও হতার ধাত নরম রাধিবার কল ব্যক্তা করা উচিত। তাহা না হইলে সকল সমরে তালরপ বুনানি হর না। দেশীভাঁতে বে হতা লাগান হর, তাহা মাড় দেওরা থাকে; হতারাং গরম পড়িলে তাহা পটপট্ ছিড়িতে থাকে। এই কারণে সকল তাঁত বরেই অল্লবিত্তর বৈজ্ঞানিক উপারে হতা নরম রাধিবার ব্যবহা উত্তাবিত হইরাছে।

কারখানাসমূহের মধ্যক বাছ বংগঠ জলীর বাশপূর্ণ রাখিবার জন্ত নিলগুলিতে Hamidifiers প্রকৃতি নানা বর বাবহৃত হইরা থাকে। এ দেশীর গরীব কারিকরেরা এই কার্য জতি সহজে ও উভ্তমক্রণে নির্বাহ করে। ভাহারা বেরের মধ্যে গর্ভ করিয়া তাতথানি গর্ভের ঠিক জাধ হাত উপরেই গাতিরা লর এবং মধ্যে মধ্যে বিশেষতঃ গ্রীমকালে জাবার জল দিরা লেগিরা দের। জালো রাখিবার সামান্ত পথ রামিরা ঘরটা বেশ জাঁটিরা রাবে, ইহাতে মৃত্তিকা মধ্য হইতে জলীর বাশ্য সমূখিত হইরা উপরিছিত টানার ক্তাকে বেশ নরম রাধে এবং বাহিরের গরন বাদ্ব জানিতে না পারার গৃহস্বধান্থ বাহু বেশ নীতল থাকে। আলগ্য বৃদ্ধিক ক্রীয় জ্ঞানেত হইত।

বাংক্টানের বরণবিরস্থান বৈজ্ঞানিক পঞ্জিত Mr. William Thomson F. C. S. পরীকা ধারা হিব করিয়াকেন বে, ১০০ ভোগা ক্ষার মধ্যে ধ্বন ৮ ভোগা ক্যীর বাশা वाक्टिन, क्रथमहे केश रश्चनस्था गटक गर्बाह्मका क्रिन्छ्याचे रहेटव ।

উনিখিত কারণে চেরারে বনিরা কাপড় বুনা বিশ্বের ক্রিবান্
ক্রমণ করে । ঐকপ থাকিবার কাল করিছে ক্রিলে বর্তমের
বিনে তাঁকের ক্রেনের নীতে তৎপরিবাণ ক্রেরে কর দির
করিরা থনন করিরা ভাষাতে ১ ইকি আব্যাক কল তরিরা
রাখিলে এক তাঁকের তিন বিক্ কাপড় তিলাইরা লড়াইরা
বিনে প্রভার ধাত নরম রাধা বাইতে পারে। উক্ বার্রর
সংশাদে টানার প্রভা অভার চল্লা হইরা থাকিদে ভিলাইরা
ভাষা নরন করা উন্নিভ নতে, ভাষাতে বাড় গুইরা বাইরা উষা
একেবারে বর্তমের জবোগা হইরা পড়ে।

नवाविकंक कीक क ब्रहानि ।

বর্তনান সমরে "ববেশী আন্দোগনে" ববেশী ব্যবহারের প্রবাস বর্ত্তিত হওরার বেশী বালালা উাতের করেই উন্নতি সাবিত হইতেছে। অনেকে বৈবেশিক উাতের অক্তরণে দেশীর উাতসংক্রান্ত কোন কোন বিবরের সংবার করিবাছেন; তর্ত্তার এককালে ৬টা বা ১২টা নাটাইরে হুতা জ্যাইবার জন্ত বর্তনান আবিহৃত তারিণীয়র; এককালে ৬টা, ১২টা বা ২০টা টানার নলীতে (Bobbin) চরকার সাবাব্যে একজনে হুতা জ্যাইবার জন্ত সরলাবর (ইবার বারা পঞ্চেনের নলীতেও হুতা জ্যান বার) এবং সাধু মিল্লীপ্রবর্ত্তিত টানা বেওবার স্থানর কল উল্লেখবোগ্য।

প্তচিক্র বা New epiuning wheel—ইবা ঠিক সেলাইরের কলের মত চেরারে বসিরা পা দিরা পাবল টিপিতে হর। তুলা হুইতে একেবারে ২টা প্রতাধ প্রেছত করা বাইতে পারে।

আৰু পৰ্যান্ত বডন্ডলি স্কুল জাঁড—(Improved Handloom) উদ্ধাৰিত হুইয়াছে, নিয়ে সংক্ষেপে জাহাদের পদ্মিচর দেওয়া হুইল,—

- ঃ লাপানী উাত—(Japenese Handloom)—বিলাতী ় উাত অংশকা লাপানী উাত বিশেষ কার্যকারী। তবে ় কারধানার কতক চলিতে পারে। ব্যক্তিগত হিসাবে উহা কাল চালাইবার উপতৃক্ত নহে।
- ২। জাটানুস্লি উভি—(Hattersly Domestic Handloom) দেখিতে গুনিতে এবং বজৰুত হিসাবে জাটানুস্লি উভি পুৰ জাল এবং আজকাল ইহার নামৰ সজা করিবা ১২০ টাকা করা হইরাছে; কিন্ত ইহার বারিক অংশ ভজনুর সহজ নহে, হঠাৎ বিগড়াইলে বিশবে পড়িতে হয়, কাজও বন্ধ থাকে। ইহাজে বৈনিক ৮ কটা কাজ করিলে ৪৫ প্র ৪৪ ইন্ডি বহুরের ৫ বান কাপড় হয় বুনা বান। ইহা প্রিচালনা করা শক্তিশালী

লোকের স্বর্কার। কেহই তিন স্বন্টার বেশী কাল করিতে পারে না। এজিন বোগে চালাইবার পক্ষে বিপেষ উপযোগী।

৩। লাহোরের উর্ক্ত উাজ—(Inhore Improved Handloom) ইহার নির্শ্বাণকৌশল ভালূশ কটিল নহে। আমানের বেশের জলবাহুর পক্ষে অনেকটা উপবোগী।

ৰিভিন্ন প্ৰকার বৈবেশিক তাঁভেন্ন সংক্ষিপ্ত পরিচয়,—

- 8। Jacquard Looms of reed space 82 = ইহাতে টেবিল ঢাকার জন্ম নানারূপ কাপত বনা হর।
- t | Drop Box Looms 85" with 1 shuttle == চেক,
 ডিল, ভূরিরা, নাড়ী প্রভৃতি বুনা হর ।
- ৬। Drill mations Looms 60" with I shuttle =
 ভিল ও জিনকাপড় প্ৰকৃতি বুনা চলে।
- ৭। Doby Looms 48" with I shuttle = পাড়ে অকর ও ফুল বুলার জয়।
- ৮। Dhuty Looms 48" with I shuttle = ধৃতি ও সাড়ী কাপত বুনা হয়।
- ১। Calico cloth Looms 48" with I shuttle =
 ক্লিকো-কাপ্ত প্ৰস্তুত্বের বস্তু ।
- > । Plain Looms 42" with I shuttle = क्यांग, ভোৱালে প্ৰভৃতি বুলা হয়।
- >>। Drill mation 42" with I shuttle = ইহাতে কামিজ ও কোটের নানাল্লণ কাপড় বুনা বায়।

একখানি দেশী তাঁতে কত ধরচ পড়ে এবং উপরোক্ত ভাবে কাল চালাইলে কিরপ আর হইতে পারে, সাধারণের অবগতির কল্প নিমে তাহার একটা আরব্যবের তালিকা প্রদন্ত হইল.—

ব্যর—দেশী ক্লাইসাটেশ্ তাঁত ক্রেম ও সরস্বাম ৪০১ এবং আতিরিক্ত সানা মাকু ও প্রতা ইত্যাধি ১০১ নোট = ৫০১ টাকা।

আর—> লোড়া ৪০ নং ধুতি প্রস্তুত করিতে ও নোড়া হতা লাগে, প্রতি মোড়া ।৮০ জানা হি: =>৮০ নাড় ইত্যাদি—৴০, রঙীন হতার জন্ম অতিরিক্ত—৮০, প্রতি লোড়ার বোগান ধরচা—৴০ মোট—১৯৮০।

প্রতি চড়নে ৪ হইতে ১২ জোড়া পর্যন্ত কাপড় বৃনানি হয়। নানকলে ৪ জোড়া প্রতার বর্তনান নিরমে পাট করিতে ৪ দিন বা ৫ দিন লাগিতে পারে। পারিপ্রামে কারিকরের বাড়ীতে প্রতা দিলে মোড়া প্রতি ১০৮১৫ পরচে প্রতা পাট হয়। তদভাবে ৪।৫ টাকা বেতনে কারিকর-বালকও পাওরা বায়। তবুও আমরা এছলে ৭৮০ টাকা হিসাবে বেতন ধরিলার। প্রতি জোড়া ২ টাকা (আমাদের এখানে ২।০ বিক্রম হইজেজে) বিক্রম হইলে জোড়া প্রতি ।০০ আনা অর্থাৎ নাসিক

১১৪• বা ১২ টাকা থাকিতে পারে। কিন্তু পাকা কারিকর না रहेरन रिमिक > स्त्राफ़ा बुनिएक शास्त्र ना । रिमिक अथाना প্রমাণ রেপার প্রস্তুত হইয়া থাকে। ডিনখান রেপার প্রস্তুত করিতে ৪ মোড়া হ'ভা লাগে, প্রতি মোড়ার দাম II আনা हिनादन---२८ । राजात अधितिक तर धावर माफ धत्रह--। ४० : १ **লো**ড়া রেপার এক চড়নে হয়, ভাহার যোগানে **৫** দিন লাগে,দে হিসাবে—1> মোট=২॥/> । প্রতি জোড়া রেপার ২॥ টাকা হিসাবে বিক্রেয় হইলে তিন খানার দাম ৭॥০. তাহা হইলে দৈনিক ১০> পরসা অর্থাৎ মাসিক ৩২৮/ আনা হর। উল্লিখিত নিয়মে ৰস্ত্র ও রেপার বুনানির গড় পড়তা ধরিলে মাসিক ২২॥ হইতে ২৩. টাকা আয় হইতে পারে। কিন্তু অনবরত বুনানি সমানভাবে চলে না এবং কারিকরকেও বোগানের কারু দেখিয়া লটাতে হর। সেজন্ত উক্ত আর সপেকা কিছু কম দাড়াইবে। এডট্টির রেপার ৩৪ মাসের বেশী বিক্রের হয় না বলিয়া চ:ত্ত কারিকরের। এরপ আর করিতে পারে না। কিন্তু অবস্থাপর ব্যক্তির পক্ষে উক্ত নিয়মে আর করা অসম্ভব নহে।

শিল্প ও বাণিকা।

মন্বাদি কথিত দেশীর তাঁতের বিশেষ কোনরপ সংস্কার শাধিত না হইলেও এবং তাহাতে বরন বহু পরিপ্রমাধ্য বলিয়া বিবেচিত হইলেও, বহু প্রাচীন কাল হইতেই যে ভারতে বর্মশিল্প পরাকার্চা লাভ করিরাছিল, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। ভারতবাসীর অধ্যবসারে ও অমান্থবিক পরিপ্রমে এবং অসাধারণ হতকোলনে বহুকাল হইতে যে সকল হল্ম, স্কুল্মর ও বহুমূল্য বত্র অনসাধারণে প্রচারিত হইয়াছে, জগতের আর কোথাও সেরূপ শিলের নিদর্শন পাওয়া বাম না। ব্রহ্মদেশ প্রায় প্রত্যেক গৃহেই আসবাবরূপে তাঁত বিরাজিত আছে। তথাকার রমণীগণ বেন বৈদিকমাগাহুসারী হইয়াই আপনাদের আমি-পুত্রের ও বীর সম্প্রান্থের জন্ত কার্পাস ও রেশমী জামার কাপড়, রুমাল ও উড়ানি প্রস্তৃতি বুনয়া থাকে, কিছু হুংবের বিষয় সেগুলি তত্তদূর পরিছার পরিছের নহে, ক্তকটা মোটা রক্ষমের। চীন ও আপানে আজকাল রেশমী শিলের বিশেব আদের বাড়িয়াছে বটে, কিছু তাহা আলে ভারতীয় শিলের বিশেব আদের বাড়িয়াছে বটে, কিছু

ভারত হইতে বরন-শির একপ্রকার লোপ হইলেও, আরিও কার্পান, শণ, রেশম ও পশমের বে সকল বন্ধশিরনিদর্শন বিশ্বনান আছে, ভাষা দেখিলে চমৎক্রত হইতে হর এবং ভাষার শিরচাতুর্বোর বিবর স্কুল্লাবন করিলে ক্ষরে এক অপূর্ব আনন্দ সমূদিত হইরা ক্রিক। হঃথের বিবর, ইংরাল কোম্পানির অন্তর্কার আহ্বন্পার আহেন ক্ষরে শির ভারত হইতে অব্রহিতপ্রার। মাক্টোর শিক্সমিভির প্রব্রসাধ্য ধৃতি ও সাচীর বাণিক্য

নকা করিতে ধীরে ধীরে এদেশের তত্তবার লাতির চিরপোবিত বক্সবাণিল্যের মূলে কুঠারাঘাত করা হইরাছে, এখন হডাখান তত্তবারকুল জার সেরুল উন্থনে কার্য্য করিতে পারে না। প্রাচীন শিরিগণ ইহলগং হইতে অপক্ত, স্কুডরাং তাহা-দের সলে ললে ভারতীয় বত্তশিল একরুপ অবসাদ প্রাপ্ত হইরাছে: এখন যাহারা বিশেব চেন্তা করিয়া সেই প্রাচীন শিল্ল-কীর্ত্তি বজার রাধিতে যন্তবান্ আছেন, তাঁহারাও বৈদেশিক বক্তের কুলনার লাভের পরিবর্ত্তে কভির জংশ বেশী দেখিরা হ স্থ ব্যবসারে বীতশ্রদ্ধ হইরা পড়িতেছেন। কালে কালেই পূর্জা-শেকা বন্ত্রশিল্পে অনেক দৈক্সভা আসিরা পড়িরাছে, তবে এই শ্রীহীন বাণিজ্যেরও গৌরৰ করিবার এখনও অনেক আছে।

বারাণদীর হবিষ্যাত জরির কিতা, সোণা বা রূপার তন্তবারা প্রস্তুত গুলবাহার সাটী, জামদানী, কামদানী ও জগতের অতুললীর কিংথাপ বন্ধ এখনও শিরচাতুর্যোর পরাকাঠা জ্ঞাপন
করিতেছে। ঐ সকল বন্ধ প্রধানতঃ কার্পাস বা রেশমী স্ত্রের
উপর জরির ফুলদিয়া বুনা হইরা থাকে। বুর্হান্পুর, মহিন্তর,
আর্কট, দিল্লী ও অরলাবাদ প্রস্তুতি হানে এখনও তন্ধশিল্পের যথেই আদর ও বিস্তার দেখা যায়। ম্বাদি-লিখিত
সেই হ্পপ্রাচীনবুগ হইতে আল পর্যান্ত তারতবাসী সকল বর্ণের
রমনীদিগের মধ্যে চরকা কাটার প্রথা দেখা বার। এখনও
উপরিউক্ত স্থানসমূহে রমনীগণ চরকা কাটিরা সক্ত প্রভাত
করিরা থাকে। খুরীর ১৯শ শতাক্ষে ভারতে ইংলগুদি নানা
পাশ্চাত্য ও প্রাচাদেশজাত স্ব্যের আমদানী হওয়ায় দেশীর চরকাঘারা স্তা প্রস্তুত ও প্রচারের অনেক অবনতি ঘটিয়াছে, কিন্ত এখনও যে যে হলে রেশনীবন্ধ প্রস্তুত হর, তত্তৎহানে প্রভৃত পরিমাণে চরকার প্রচলন আছে।

বাঙ্গালার অন্তর্গত মূর্নিদাবাদ জেলার বহরমপুর সদরে দেশী তাঁতে বেশমী গরদ বন্ধ এবং মানভূম জেলার রখুনাথপুরে এখনও ভটী হইতে চরকার স্থা কাটিয়া তদর-বন্ধ ব্না হইতেছে। বীরভূম, বাকুড়া প্রভৃতি স্থানেও ভটী হইতে স্থা প্রস্তুত এবং বন্ধবন্ধারের ব্রেষ্ঠ প্রভাব বিশ্বমান আছে।

এখন মাঞ্চোরের কলে নির্মিত কার্পাস হত্যের প্রাভৃত আমদানী হওরার বালালার রমনীগণ চরকা কাটা বন্ধ করিরাছেন। বিলাতী হতা দরে সন্তাও অনারাসলভা, এলভ দেশীর সভার্ন্দ আর স্বকুলকামিনীকুলকে হতা কাটার কট সহু করিতে দেন না, বন্ততঃ সেই বিলাসিতার প্রভাবে বালালার আৰু চির দৈছ আসিরা সম্পহিত! বন্ধবাসীকে অলাছাদন-বাসের লভ আল পরম্থাপেকী হইতে হইরাছে। উচ্চ শ্রেণীর শিক্ষিত ও সৌধীন বালালীগণ কুলকামিনীধিগকে চরকা কাটার কট

হইতে অব্যাহতি দিয়া আল তাহাদের কটিবানৈর অভাব বটাইরাছেন। তত্তবারকুল আর্থ্যানি দেখিরা আতীর ব্যবসার জলাঞ্চলি বিরাছে, তাহারাও রূপা পরিশ্রম ও কট বীলার করিয়া অদেশবিরাকী বিরেশতক বাজালীগণের অন্থর্গহলাতের প্রত্যাশা রাখে না, তাই দেশে এতকাল পরে ব্রব্রবনশিলের এরূপ অধ্যপতন ঘটিরাছে। প্রক্লতই বলিতে কি, পূর্বের বিশিরের লক্ত সমগ্র ভারত, এমন কি, সমগ্র সভ্যত্তপৎ বাজালার চির আকাজিত বেবজের লক্ত লালারিত হইত, সে বন্ধ আল বাজালা হইতে সুপ্ত হইরাছে। তাহার পরিবর্ত্তে এবং তাহারই অন্থ্রুকরণে ইংরাল-বণিক্-সমিতির অন্ধ্রগ্রেছে আজ সাদা ও ভোরাদার ভ্রিরা, মলমল, অব্বানি, স্থইস, আছি প্রভৃত্তি সৌধীন জনমনোলোভা প্রব্রজন্তি বালালার প্রেরিত হইরা বলবাসীর মুবোজ্ঞল করিতেছে।

ঢাকার সেই স্থবিখ্যাত মসলিন্ বল্লের কথা মনে হইলে—
বালালার সেই গৌরবকীর্দ্রির ইতিহাস পাঠ করিলে মনে হয়,
একদিন বালালার তাতিকুল বল্লবনশিয়ের শীর্বহানে সমার্চ্
হইরাছিল। খুঁইার বোড়শ শতান্দের মধ্যভাগে ইংরাজ-পর্যাটক
রাল্ড কিচ্ ত্বর্ণপ্রানে আসিরা এখানকার কার্শাস-বল্ল-বাণিজ্যের
প্রভূত স্থ্যাতি করিরা গিরাছেল। তথনকার বলরারধানী ঢাকা
সহরে যে ক্ষা কার্শাস বল্ল প্রস্তুত হৈত তাহা "ঢাকাই মসলিন্"
নামে পরিচিত। উহা প্রক্রত মোগল মগরজাত মসলিন বল্ল
হইতেও উৎক্রই। এখনও মুরোপের খিভির রাজ্যে তাহার অমুকৃত বল্ল প্রস্তুত হইরা ভারতে প্রেরিত হইতেছে। প্রক্রত ঢাকাই
মসলিন মহার্ঘ ছিল, ধনী ব্যক্তি ভির কেছ উহা ক্রের করিতে
পাইত না। তনা যার ত্রভের স্থলতান ঢাকাই মস্বিনের
শির্ম্মাণ ব্যবহার করিতেন।

ঢাকার হল্ম মসলিনের হতা পর্যবেকণ করিয়া পাশ্চাত্য পণ্ডিতমণ্ডলী নান্মত প্রকাশ করিয়াছেন। সেই গুলি আলোচনা করিলে, আমরা সহজেই প্রাচীন বন্ধের হল্পতা ও তদানীন্তন কারিগরগণের কার্যানিপৃণ্ডার পরিচর পাইতে পারি। মি: টেলর শিধিরাছেন যে, ঢাকার কারিগরগণ বিশেষ যমে চরকা কাটিয়া যে হল্পতম হতা প্রভত করিত, তাহাতে ৭৪০ছটাক ওজনের এককেটি হভা সন্ধাভাবে হড়াইয়া গেলে ১২০ মাইল হাড়াইয়া যাইতে পারে। স্বাভাবিক শৈত্য ও জলীয় বাল্য-প্রধান হানে হতা কাটিলে কার্শাসের আঁশ নরম হওরায় শীজ বাড়িয়া পড়ে বলিয়া ঢাকাই তাঁতিয়া প্রাতে হর্যোব্রেয় পূর্কো তাহা সারিয়া লয়। বধন বায়ু অপেকায়ত গুক্ক হয়, তথন তাহারা চরকার নীচে জল রাধিয়া কার্য করে। ভাহাতে বায়ু প্রকালিক হয়য় করিয়া দেয়। তৎপরে

গ্ৰাতঃস্থান ছইডে ১টা বা ১০টা পৰ্য্যন্ত ভাৰারা বাবাসী প্তা কাটে। বৈকালে ০ বা ০ টার সমর হইতে প্র্যাতের অৰ্দ্ধ কৰা পূৰ্বা পূৰ্বান্ত পূজা কাটা ক্ট্ৰয়া খাকে। ডাঃ ওয়াটুসন ঢাকাই, করানী ও ইংলিদ ফালিব প্রভার্গ অণ্বীক্ষণবোগে পরীক্ষা করিয়া লিখিয়াছেন, হুরোপে বত প্রকার ক্ষ ক্তা প্রস্তত হইয়াছে, ভাষার সক্সপ্তলির অপেকা ঢাকাই সসলিনের প্তার ব্যাস অন্তেক কর এবং বুরোপীর প্তা অপেকা প্রভ্যেক ঢাকাই কুডার আঁপ্ত (Minmonte) অনেক পরিমাণ কম (मथा वात : किन्द्र छाकारे नुष्कात काँग्लात वान (diameter of the ultimate filaments or fibres) বুরোপে এছত স্ভার ভলা অপেকা অনেক বড়। এই ছই কারণেই ঢাকার হত। পুদ্ধভার ও নুচভার অভান্ত স্কল দেশীর স্তাব্দে পরাত করিরাছে। আরও বিশেষদের মধ্যে এই বে ভূসার স্ক্রাঁশ মোটা হওরার এবং প্রভা চরকার কাটা হর বলিরা প্রতি ইঞ্চ প্রতার পাক বেনী হয় ৷* এখনও করালভালা (চলন নগর), সিমলা (কলিকাডা), বগড়ী, বশোর, শান্তিপুর, কল্বে, রাধাবলভপুর প্রভৃতি হানে কাশাস-বন্ধ-বন্ধনের বিকৃত আড়ত আছে। বারা-ণদী থাবে রেশনী কভা ও কার্শাদ কভার উপর বেমন জরির ফুলদার বা ওলবাহার সাটা প্রস্তুত হর, অধুনা চাকার সংগ্রেও একমাত্র কুল কার্শাস কল্লের উপর ও বিভিন্ন বর্ণের নীলাবরীর উপর জরির ফলছার পাত কাপড প্রস্তুত হইতেছে।

এভভিন্ন ৰাজ্ঞান্ধ ও বোদাই প্রেসিডেন্সীর নানা হানে বন্ধবন্ধনের বিভ্ত কারবার আছে। গুজরাট, আন্ধান্দ, হুরাট ও ভরোচে, নানাক্লপ ছিটের সাড়ী পাওরা বার। রুলপুরে লাল ও কালা প্রভাব একপ্রকার হুক্সর ছিট প্রান্ধত হয়, তাহাতে নানা পৌরাণিক চিত্র অভিত দেখা বার। পুণা, রেওলা, নাসিক ও ধারবাড়ে নানাক্ষণ রঙ্গিন প্রভার সাড়ী প্রভত হয়, মহারাইনরমন্বীগণের উহা বড়ই আহরের জিনিব। নলৈয়, মুটকল, ধনবরম্, অমরচিন্তা ও আর্লিডে এখনও ঢাকার অভ্রন্থ মসলিন্ প্রন্ত হইরা থাকে। বারাগনী সাটা বা ধুতি, কিংধাব প্রভৃতি বন্ধের ভার বন্ধসন্থ, ধনবরম্, রেওক্লা প্রভৃতি স্থানে প্রশ্বত হইতেছে। কানীর, ন্রুণর, স্থিরানা, অমৃত সর প্রভৃতি স্থানে প্রশ্বী পাল বুলা হয়। রজপুর,

ভাগলপুর, বারাণদী, আগ্রা, লাখ্নৌ, বরেলী, কতেগড়, লাহোর, মূলভান, হিনার অভৃতি হানে কার্লান ও পাননী কার্লেট প্রছত হর। নাধারণতঃ কার্লান কার্লেটওলি আছতি ও বর্মপ্রক্রিরা ভেদে, গালিচা ও চুলিচা (Cotton pile carpet) মানে, থাত। পাননী ভঁরা উক্ত হইলে গালিচা (Woollen pile carpet) বলা বার। মছলিপটনের ছিট্, পালমপোর ও কার্লেট এবং গোলাবরী বিশীপহিত মাধ্য-পাল্য নামক ছানজাত মাডাপালম্ আজকাল "র্টাণ ওড়ন্" রূপে ভারতে আম্লানী হইতেছে। মাধ্যপদ্যে আর কে বন্ধ্র বোনা হর না। ইংরাজনপিক্রণ ঐ বন্ধ্র একটোটরা করিবার কল্প তথার কুঠী ত্থাপন করিরাছিলেন। পরে ভাহারই নমুনা লইরা অনেশ হইতে সেই মাডাপালম্ বন্ধ রথানী করিতেছেন। ছাথের বিষয়, ভাহারেরই কুহকে এ ছানের সেই ব্রবালিকা লুগু হইরাছে।

এখনও ভারতবর্ষের নানা স্থানে বন্ধনশিরের বর্থেষ্ট সমাদর আছে। স্থান বিশেষে উভ্ন কার্পেট, কোন স্থানে বা উৎকৃষ্ট গালিচা, কোথাও কার্পাস রেশমাদি বিনির্মিত স্ক্রবাস, কোথাও পশমন্ত শাল কম্বল এবং কোথাও জরি, সল্মা প্রভৃতির পাড় বোনা ছইতেছে। বর্তুমান (১৯০৬ খুঃ) স্বাহেশী আন্দোলনে উক্ত শিরের উত্তরোত্তর উন্নতি ঘটবার সম্ভাবনা। নিম্নে উৎপন্নব্রাদি ও তাহার স্থান ও বিভাগের নাম নির্দেশ করা গেল।

बाबगीए, बानरे, बानगढ़, बानारावार, बानवात, बहाना. অনুভানর, অনন্তপুর, অনুগাও, আর্কট, আদোনী, আগ্রা, আন্ধ-দাবাদ, আৰ্ণি, আরা, আসাম, আরদাবাদ, আজম্গড়, বগ্রু, वहावती, वबाहेठ, वक्लूब, वाकूड़ा, वब्रु, वाबावाकी, वबाहनगत्र, वजाफ, वर्कमान, बरत्रही, बरत्रमशूत्र (माळाच , वर्त्रमशूत्र (मूर्निहा-वान), वर्ष्णाना, वनाहत्र, विख, वखाना, वस्तात्र, विनाती, বারাণসী, ভাচুরা, ভাগলপুর, ভাঙারা, বহাবলপুর, ভেরা, विकारनत, वीत्रकृम, विकृशन, वक्ष्मा, व्याचार, करताठ, वृत्रमान्दत, বুর্হানপুর, কলিকাডা, কালিকট, কাবে, কাণপুর, চবা, চন্দারণ্য, ठाका. ठरकती, इजिनन्न, विकाश, काकनामा, काकीशुत्र, क्फ़ांशा, क्रेंक, हाका, मतकामा, मखिता, मित्री, (मता शाबी थें). त्वजा रेन्सारेन थी, ध्रवाफ, फिनाबशूब, लीम मगब, प्लागाहि, **अनिवरफ्, हेरनामा, बक्र्यावाम, फिर्झाक्युब, श्रामावदी.** बाजबरहती, श्रीनक्षी, सहक, स्रीपत्री, सक्तुत्रान्यांना, सक बाठे. धनवनी, धन्यानभूत, श्रीसानिवत, भन्नी, श्रतस्थातास (शक्तिगाका), शतकताराच (निष्), श्वामकुक, स्की, स्नन-আব্দাল, হালালা, হিনাল, হোনলালাল, হাবড়া, হলিলালপুর, ইন্সা, ইন্দোরা, ইন্দুর, আলেমণেট, জনলাগুর, লাকরুগঞ্জ, बारानावार, बारावीप्रावार, बक्रम्ब, बानानगुब, बानस्त

[&]quot;These causes—combined with the ascertained result that the number of twists in each of length in the Dacca yarn amounts to 110-1 and 80-7, while in the British it was only 68-8 and 56-6—not only account for the superior fineness, but also for the durability of the Dacca over the Europian fabric." Balfour's Cycle. India.

अञ्चलमञ्च, अञ्च, बाँगी, विनाम, तारश्रुत, त्यजा, कानान्त्र, कानहारी, कल्मी, करनाम, काड्जा, कताही, कर्तानी, कर्नान, কৰ্ল, কাশ্মীর, শ্রীনগর, কত্মর, কাঠিয়াবাড়, খালবানা, ক্লা, কোহাট্, কোটা, কোট, কামালিরা, কুস্তবোনম,লাহোর, ললিভ-পুর, লোহারভাঙ্গা, লাখুনৌ, লুধিয়ানা, মাজ্রাঞ্জ, মধুরা, মলবার, मानम्ह, मार्ट्याम, मानस्म, मिनश्च, म्हनीभ्रोम, स्मे (बाज्य-গড়), মৌ (ঝাঁদী), মেদেরপাক, মীরাট, মেদিনীপুর, মীর্ভাপুর, त्मातानावान, मझाती, मन्तरमात्र, मथुता, मुखः कत्रशक्, मुखः कत्र नशत्र, মহিস্তর, নাভা, নদীয়া, নাগপুর, নেপাল, নুরপুর, উচ্ছা, পাবনা, পালম্কোট, পাতিয়ালা, পাটনা, পোনী, পেশাবর, পুণা, প্রতাপ-গড়, পুরী, রায়ত্ত্, রামপুর বোদ্বালিরা, রামপুর (বুক্তপ্রদেশ), রক্ষপুর, রৎলাম, রত্মগিরি, রাবলপিণ্ডি, রেবাদণ্ড, রেবা, রোহ-তক (পঞ্চাব), সালেম, সম্বাপুর, সম্বর (কাশ্মীর), সাদনের, শান্তিপুর, সারণ, শারঙ্গপুর, সাতক্ষীরা, সাবস্তবাড়ী, শিওনী, শাহপুর (পঞ্জাব), শাহপুর-মিসোলী, শিকারপুর, শোলাপুর, শিवान कार्ड. शिरक सदावाम. शिमना (शक्षाव), शिरहण्म, नीर्वा (পঞ্চাব), দীতামাড়ী, স্থলতানপুর (পঞ্চাব), স্থরাট্, তাঞ্চার, ঠানা, তিলোবানাথ (পঞ্জাব), তিরুপপিলির্ম, তোড়গড়, ট্যাট রা বসিরহাট, ত্রিবাঙ্কোড়, ত্রিটীনপল্লী, উজ্জবিনী, রম্বাড়ী (মান্দ্রাঞ্জ), বিশাথপাটম, বৃদ্ধাচলম্, বাল্লাঞ্জ (মান্দ্রাঞ্জ), বেওলা, বরঙ্গল যেরোবদা, জেলগওল।

এই সকল স্থানে সাধারণত: কার্পাস ও রেশমী সাড়ী এবং জরির ফিতা, লেস, সলমার পাড় প্রভৃতি বুনা ইইরা থাকে। মনেক স্থানে পশমী শাল ও কম্বল প্রস্তুত হয়। নিমে বয়ন-শিলে সমুৎপন্ন বিভিন্ন প্রকার ব্যাদির নাম উল্লেখ করা গোল-

দরি, সতরজী, গালিচা, ছলিচা, দোপাট্টা, সরবতী, মলমল, আদি, তরলম, ভূরিয়া, শৌগাতি, আবাবান, সব্রাম, মস্লিন, গড়া, একহতি, দোহতি, চারখানা, হৃদি, সুলী, থেল, কোক্তি, ফোটা, মাগনা, নিম্জা, গব্লুল (লুধিয়ানা), গাজি, থাকি, বড়কাপড়, থানিয়া কাপড়, ছেলেল, গামছা ও পরিদিয়া কাপড় (আসাম) এবং পাটসো, তামিরেন, থিন্দৈল (মণিপুর) প্রভৃতি কার্পাসবস্তা।

রেশনী বত্তের মধ্যে এড়ি, মৃগা, তসর ও গরদের ধৃতি, সাড়ী, চাদর, পীতাম্বর, মসরু, সওলি, দোপাটা, গুলবদন, কমাল, ওড়না, হাওরার কাপড়, লুলী, থেল, মেধলা, এড়া, বড়কাপড়, হুকাঠিরা, রিহা, গামছা, ভোরালে ইত্যাদি। পশমিনা বত্তের মধ্যে রামপর ও কাশ্মীরী শাল, রামপুরী চাদর, আলোরান, একতারা, মলিদা, লুলী প্রভৃতি।

কার্পাদ এবং রেশম বা পশমাদি মিশ্রিত বন্ধ-গর্ভস্তি

(বাঁকুড়া ও মানভূম), আগমানি (বাঁকুড়া), বাফ্ডা (ভাগলপুর), নেথলি (রজপুর), আজিল উলা বা আজিলি (ঢাকা), সেরাজা (ঢাকা), সালা ও লাল আসমানি সেরাজা, মছলি কাঁটা, স্বজিক্তার, লালকাতার, ব্লব্ল-ছাসম, লাল ক্লমকুলী, সালা ক্লমকুলী, কাল পাটালার, লাল পাটালার, স্কার, সেরাজা, সালা বড় ক্লমকুলি, সক্লে কার্লার, লাল কার-লার, কালা মছলিকাটা, কোজনী মসক, স্ক্লাথানি, ইলাইছা, নুলী, চক্লকলা, দোপাট্যী, স্থানি ইত্যাদি।

ছিটের কাপড়—গন্ধি, গাড়া, ধোতিজোড়া, ফর্দ, রেজাই, লিহাক্, পাললপোব, বৃলুদি, বন্ধ-স্থর্ব, জান্ধিম, ফরাস, সামি-রানা, ছিঁট জরদা, তোষক, ছিঁট-কান্দি, ছিট-বৃটিদার, খেলারা, নাথনি, চলেটা, ছিট-আগ্রেবাড়, গোলবৃটি, আলোহা, লালু, চুনরি, আব্রা, কলমনার, ধূপছায়া, ময়ুরকটি, বেগুনি, মৌজলপুর চাদতারা, পাচপাত, স্থতিস্কাল, নমণসই, ঝিলমিলি, লহরিয়া, ফুলাল, নামাবলী, পটোলা, পীতাখর ইত্যাদি।

লোণা বা রূপার তার (তত্ত) প্রত্ত করিয়া জরির ফিতা, গোটা, কিনারা, আঁচলা, কালাবতুন্, ত্বর্প বা ত্বন্হেরী, রূপালী, ধানক, লাচ্কা, পাট্রী, বাঁকড়ী, পাটা, গধ্রী, গলাবমুনা, কিরণ, পাইমক, সল্মা, কার্চিকন, কারচোব, ধৃতি বা সাড়ীর পাড়, হাঁসিরা, তাদ, লগ্নো, ফিট্, পল্লব, কিংথাব, দুলী, বেলদার, ব্টেদার, শীকারগা, জললা, মীনা, জালদার, থণ্ড, চাঁদতারা, চসমস্থল, মোহরবুটা, কামদানী, জামদানী, করেলা, তোড়াদার, টেরছা, জালছার,পারাহাজারা, ডুরিয়া, গোঁদা, পাবুর্গা, চিকনলাজী, কলিদা, ঝাপান, মুগা-চারথানা-কালিদা, কাটাফানিকালিদা, নীলাচারখানা কালিদা, সম্প্রশাহর ইত্যাদি। এই লেবাক্তবন্ত্রগ্রেগ্র পাড় রেশম জরি ও কাপাসক্রবোগে বুনা হয়।

হুটীর সাহায্যে তসর বা গরদের কাপড়ের পাড়ে, রুমালে, স্থীলোকদিগের অঙ্গরাধার এবং বালকদিগের পরিধের বাসে চিকনের কাল হইতেছে। রেশম ও কার্পামিঞ্রণে অলমী প্রস্তুত হর,রমন্ত্রীরাই প্রধানতঃ তাহার উপর হুচের কাল করে। কার্শীর, অমৃতসর, সুধিরানা, নৃরপুর, লিরালকোট ও অক্ল্যাসপুরে লাল ও লালের পাড় বোনা হর। কার্শীরী উত্তে বুনা খাল—ভিলিবালা, তিলিকার, কালিকার ও বিনোট এবং হুচে বুনাগুলি অস্লিকার বিশ্বা থাতে। ক্লকারী উড়ানিতে কার্শাস বুলোপরি রেশমের পাড় দেওরা থাকে। মোটাহুতার কার্শেট গুলি সালিচা, ছুলিচা সভরক প্রভৃতি নামে থাতে। পশ্যেও গালিচা (Carpel), ক্ষ্বা প্রস্তি বুনা হইতেতে।

মাছর, শীতলপাটী ও ধন্ধনের পরদা এবং পাটের চট, ধলে প্রভৃতির উৎপত্তি বয়নলাপেক হইলেও উভাদিগকে বর্ন-

শিরের অন্তর্ভ করা যার নী। কেননা, উহাতে হক্ষতা ও শিরচাতুর্য্যের সেরপ পরিচর লাই। অধুনা ক্রিপুরা, চট্টগ্রাম, মেদিনীপুর, মাজাজ, বেলোর, তিল্লেবলী প্রভৃতি ভারতের নানা স্থানে মাত্র বুনা **হই**য়া থাকে। এই মাত্র কাটী ও বালান্দা ভেদে হুই প্রকার। চট্টগ্রাম, নোরাধানি প্রভৃতি হানে বেতের ছাল চাঁচিরা অভি স্কুও শিরযুক্ত শীতলপাটী প্রস্তুত হইরা থাকে। [ভত্তৎশব্দ দেখ।] ব্য়নাড়, মান্তাজ-প্রেনিডেনীর মলবার জেলার অন্তর্গত একটা পাৰ্বত্য উপবিভাগ। [বৈনাড় দেখ।] ব্যালপাড়, মাল্রাখ-গ্রেসিডেনীর কড়াপা জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। ভূপরিমাণ ৮০১ বর্গমাইল। ২ উক্ত জেলার একটা নগর। বরলপাড় তালুকের বিচার-সদর। এই নগর সদনপরী হইতে ৪ ক্রোশ উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। ব্য়স (পুং) ১ শব্দী। (ক্লী) ২ জীবনকাল। বয়সিন্ (তি) বরদে হিত। প্রাপ্তবয়ছ। ব্য়স্ক (ত্রি) বরসবৃক্ত। অভিনববয়ন্ধা = নবযৌবনসম্পরা স্ত্রী। ব্য়ক্ষ্ণ্ড (ত্রি) আর্ব্যপ্রদ। পরমায়্র্ দ্ধিকর। (ঋক্ ১।৩৯।১০) বয়ঃক্রেম (খং) ক্রমিক বরসকাল। বয়ুন্থ (ত্রি) বর্ষি বৌবনে তির্নতীতি বন্ধশ্-স্থা-ক। ১প্রাপ্তবন্ধস্ক। ২ যুবা, যুবক। "পিত্রা পুত্রো বয়ন্থোহপি সততং বাচ্য এব তু॥" বয়সি তিষ্ঠতি এই বাক্যে 'ঙ' প্রত্যন্তেও 'বয়স্থ' পদ নিষ্ণার হয় এবং বিকলে বিদর্গ লোপে 'বর:ছ' এবং 'বয়ছ' ছিবিধ भन्हे हहेरव। वानामि, भक्की ७ माज योवन **এ**हे जिन व्यर्थ हे এছানে বরস্ শব্দের ব্যবহার। ৩ সমবয়ত্ব ব্যক্তি। বয়স্থা (স্ত্রী) বরো বৌবনং ডিছডানয়েতি বয়স্-য়া-য়ঞর্থে ক:। নিপাতনে বিৰুৱে বিদর্গ-লোপ:। > আমলকী। ২ হরীতকী। ৩ সোমবল্লরী। ৪ গুড়ুচী। ৫ হন্দ্রেলা। ৬ কাকোলী। ৭ আলী। ৮ শান্মলি। ৯ ক্ষীরকাকোলী। ১০ অভ্যন্নপ্রী। "বচা বন্ধস্থা গোলোমী হরিভালং মনঃশিলা। কুষ্ঠং সর্জন্নসলৈতৰ তৈলার্থে বর্গ উচ্যতে ॥" (সুঞ্রুত উ° ৩২) दश्रुत्माष्ट्रा, मूर्याविरामयः। वत्रमकारम शक्षापरम केनाक इत्र । दशस्त्रान (ही) वोवन। বয়স্থাপন (এ) যৌৰনরকা। ব্যুস্থা (পুং) বরুনা ভূলা: বরুন (নৌবরোধর্ম্বেভি। পা ৪।৪।৯১) हेकि वर । > नवानवबद्ध, अक्वब्रती । প्रदात-विश्व, नवब्रत् । "বহু বোবিভি **দাক্ষান্ধণীরসি বয়ক্তেন দরিভ উপহসি**ভে। তৎকালকলিতলক্ষা পিওনরভি সবীৰু সৌভাগ্যম্ ॥"(আর্য্যাস'৪০৩)

ব্যুস্মা (জী) বর্জ-টাপ্। ১ শৰী। (জনর) ২ ইটকা।

"একরা ন বিংশতির্বর**হান্তা এক্চম্বারিংশন্দিতী**য়া চিতিঃ" (শত[ু] ত্রা° > ।৪।৩।১৫) 'বয়স্তা সংক্রকা ইষ্টকা উপদ্বাতি' (মহীধর) वश्चाक (रूः) दक् । समवक्क मिळ । ব্যুস্প্ৰভূ (ক্লী) বয়স্তম্ভ ভাবঃ ছ। বয়ক্তের ভাৰ বা ধৰ্ম। বয়স্তভাব (পুং) বরক্ত ভাবঃ। সধ্য ভাব, বন্ধুছ ভাব । ব্য়স্ত্ (এ) অরগুক্ত। "বার: ক্তাম রখ্যো বয়স্বত:" (ঋক্ ২৷২৪৷১৫) 'বয়ম্বতোহন্নযুক্তপ্ৰ' (সারণ) ব্য়ঃসন্ধি (পু:) বন্ধস: সন্ধি:। বাল্য যৌবনের সন্ধিকাল। যৌবনের প্রাক্কান। "যৌবনের চারিভেদ শুন বিবরণ। ष्पारंग वयःमिक भरत्र नवीन त्योदन ॥ তার পরে যুবা ভাবে উন্মাদ লক্ষণ। তার পরে বৃদ্ধভাব বৃঝ বিচক্ষণ ॥" (ভারতচ° রদমঞ্জরী) ব্য়ঃস্ম (ত্রি) বয়সা সম:। সমানবয়স্ক, তুল্যবয়স্ক। (রামা⁶৭।৪।২৯) বয়া (স্ত্রী) > শাধা। "মূর্দ্ধনি বয়া ইব রুকুছ" (ঋক্ ভাগাভ) 'वद्मा हेव भाषा हेव' (नाम्रण) २ वद्मन्। (अक् ১١:७৫ ১৫) **ব্যু**। (পারদী) জাহাজ বাঁধিবার লোহযন্ত্রবিশেষ (Buoy)। বয়াকিন্ (ত্রি) শাথাবিশিষ্ট। "তঙ্গভিঃ স্থতে গৃভং বয়াকিনং" (ঋক্ ৫।৪৪।৫) 'বয়াকিনং বরাঃ শাখা বয়াকা লতাঃ তছস্তং সোমং' (সারণ) व्याटि (तमझ) डेव्ह् अन (यूवक)। ব্য়াড়া (দেশজ) স্থনামপ্রসিদ্ধ বণিজ্জব্য বিশেষ। বিভীতক। ব্য়াদা (দেশত্র) বাওয়া ডিম্ব। যে ডিম্ব পুং শুক্র ব্যতীত উৎপন্ন হইয়াছে। ব্য়ান্ (আরবী) > ব্যাথাা, অর্থ। (বদনশব্দ) ২ মুখ। ব্য়ারু (দেশজ) > বায়ু। ২ মহিষ। ব্য়াল (দেশজ) > ভারবাহী বলদ। যে বুব লাকল বা গাড়ী টানে। ব্য়িষু (ত্রি) বন্ধাদি। (ঋক্ ৮।১৯।৬৭) ব্যুন (ক্লী) বীয়তে গমাতে প্রাপ্যতে বিষয়া অনেনেতি অজ গতৌ (অজি যমি শীঙ্ভাল্চ। উণ্ ৩৬১) সচ কিং। অজে-बोर्खादः। ३ छान। "হন্তাগ্রাহে রচরতি বিধিং পীঠকোদ্খলাছৈ-দ্দিরং হস্তর্নিহিতবয়্ন: শিক্যভাতের্ তবিং ।" (ভাগ্নত ১০।৮) 'শিকাভাণ্ডের্ অন্তর্নিহিতদধ্যাদৌ বয়ুনং জ্ঞানং' (স্বামী) ২ দেবতাগার। (উচ্ছল) (পুং) ৩ ধিবণা গর্ভনাত কুশা-শ্বের পুত্র। (ভাগণ ভাভাবন) ব্য়ুন্বং (বি) প্রকাশবৃক্ত, প্রকাশবিশিষ্ট। "হর্ষোণ বয়ুনবচ্চ-ফার" (ঋক্ ৬২১।৩) 'বরুনবং প্রকাশবং' (সারণ) दशुनम्म (भरा) दश्न-६नम्। स्त्रानक्रम,

"অধ্বরং হোতবঁয়ুনশো যথ" (অক্ ভা৫২।১২) "বয়ুনশো জ্ঞানক্রমেণ" (সারণ)

বয়ুনাবিদ্ (অ) বয়ুনাং বেতি বিদ্-কিপ্। প্রজ্ঞাবেতা, জ্ঞানবিশিষ্ট। "হোত্রা দংধ বয়ুনাবিদ্" (ঋকু ৪।৮২।১) 'বয়ুনাবিদ্
বয়ুনমিতি প্রজ্ঞানাম তত্তমমুজ্ঞানবিবয়প্রজ্ঞাবেতা' (সায়ণ)
বয়ুয়্মদ্ (ক্ষার্বী)> শান্তবাক্য। ২ লোকের চারি চরণ।

বয়োগত (জী) বন্ধন গভং। বন্ধোহানি, বৃহস্থ।
"বন্ধোগতে কিং বনিভাবিলান:়" (উভট)

বয়োজু (ত্রি) বলর্ছিকরণ। বয়োহতিগ (ত্রি) বৃছদ্ধপ্রাপ্ত।

বয়োধস্থ (পুং) বয়ো বৌৰনং দ্ধাতীতি ব্যুস্থা অসি, (ব্যুসি
ধাঞা। উণ্ ৪।১২৮) স চ ডিং। > যুবা। ২ অয়। "বয়োধসাধীতেনাধীতং শ্লিষ্ট (বাজসনেয়স° ১৫।) "বয়োধসা
বয়ো দ্ধাতি পুঝাতি বয়োধা অয়ং' (মহীধর) (এ)
০ আয়ুর্লিতা। "অয়িমিঞ্জং বয়োধসং" (বাজসনেয়সং ১৮।২৪)
'আয়ুর্লিতা বয়োধান্তমায়ুরো দাতারং ধার্রিতারং বা' (মহীধর)
বয়োধা (এ) > বলদাতা। ২ অয়দাতা। (সায়ণ) ০ যুবা।
৪ শক্তি। বল, সামর্থা।

বায়েহিধিক (ত্রি) বয়সা অধিক:। বরোজ্যের্ঠ, বৃদ্ধ, বয়:প্রাধীণ।
"সন্ত্রীবালবয়োহধিকা" (রামায়ণ ২।৪৭।১•)

বয়োধেয় (য়ী) > অয়দান। "জং ন: সোম স্থক্ত ক্রিরাধেরার জাগৃহি"(ঋক্ > ০।২৫।৮) 'বয়েরাধেরার জ্বয়দানায়' (সারণ) ২ শক্তি। বয়োনাথ (অ) > প্রাণ। "সজুদে বৈর্বরোনাধৈরয়য়ে ছা" (বাজসনেয় >৪।৭) 'বয়ো বাল্যাদি নছজি বর্রস্তি তে বয়োনাধাঃ প্রাণাঃ' (মহীধর)

বয়োবয়ঃশয় (ত্রি) পাছদ্রবাপুর্ণ ছানে বাস। বয়োবস্থা (ত্রী) জীবনকাল। বাল, তরুণ ও বৃদ্ধাদি অবস্থা। বয়োবিধ (ত্রি) পক্ষীপ্রকৃতিসম্বনীয়।

वर्षात्रक (वि) वार्ककाश्रीशः वरत्रारमार्छ।

বয়োর্ধ্ (ত্রি) বলবদ্ধনকারী (প্রাতঃ ও সারংকালীন মরুৎ)।

वरग्राहानि (जी) योवनहाम। वृषः।

ব্যা (ত্রি) বহা কুলোৎপদ্ন তুর্নীতি রাজা। "তুর্নীতিং বহাং
শতক্রতো" (ধক্ ১।৫৪।৬) 'বযাং ব্যাকুলজং তুর্নীতিনামানং
রাজানং' (সায়ণ)

বার্রাব্স (ক্লী) বরদা বন্ধমিব। দীসক। (রাজনি°)
বর, ১ বরণ। ২ বারণ। অদত্ত চরানি° পরদৈর্থ দক্° সেট্।
বাররভি। বোপদেবের মতে এই ধাতু পরদৈর্থদানী, কিন্তু
মতান্তরে এই ধাতু উভরপদী দেখা বার। আব্যানেপদের
প্রযোগ—বারসতে।

বর (রী) ত্রিরতে ইতি র কর্মণি জপ্। ১ রুছুম। ২ মনাক্-বিষ। শ্রেট[†]

"বরং প্রাণান্ত্যান্দ্যা ম চ শিশুবিনালেবভিন্নতি-বরং মৌনং কাব্যং ন চ বচনমূক্তং কন্তৃতং। বরং ক্লীবাং ভাব্যং ন চ পরকল্যান্তিগস্থনং

रदेश किमानिकः म ह शहरमामार हि हद्दशम्।"(वामनभू°३७व्य°)

ও কৰু, দাকটিনি। ৪ বালক। ৫ আক্র'ক, আলা। (রাজনি') ৬ সৈত্তব লবণ। ৭ জ্পদ্ধ ভূণ। (বৈভক্নি') বৃ-অণ্ (পুং)

৮ বরণ। পর্যায়—র্ভি। ৯ বিবেটন। প্রার্থনাবিশেষ। (ভরত) ১০ দেবতার নিকট বৃত, দেব সন্ধাশ হইতে বাচিত।

"তপোভিরিয়তে বস্তু দেবেজ্যঃ স বরো মতঃ।" (ভরত)

১২ কামাতা। "প্রামুদিতবরপক্ষমেকতত্তং" (রলু ৬৮৮)
১০ বিজ্গ, বিট্। (মেদিনী) ১৪ গুগ্গুলু। ১৫ পতি। (হেম)
১৬ নিগ্রহ। "ন বো বরার মকতামিব খন: সেনেব কটা
দিব্যা বথাশনি:।" (ঋক্ ১১১৪০)৫) 'বোহরিকারার বরণার
নিগ্রহার শক্তোন ভবতি।' (সারণ) (ত্রি) ১৭ শ্রেট। (অসর)
"রাকাসনং রাক্ষক্ষত্র বরাখা বরবারণাঃ।

যন্ত পুণানি তত্তৈতে ৰবৈভৎ শামা পুত্ৰক।" (বিফুপুঁ ১/১১/১৮)
১৮ পিরাশ রক্ষ। ১৯ বকুলর্ক্ষ। ২০ বিকল্পত রুক্ষ।
২১ হরিলা রক্ষ। (বৈভকনি°)

বর, পর্কাতভেদ। (ভবিষ্যান্তশ্বর ৩২।৫) সম্ভবতঃ ইহাই বেচারের অন্তর্গত বরাবয় শৈল।

বরুম্ (অব্যর) মনাক্তিরে। শ্রেরজর, উহাপেকা ভাল।

'মনাগিটে বরং ক্রীবং কেচিলাহত্তদব্যর্ম।' (মেদিনী)

বরংবরা (ত্রী) বরং রূপোতীতি বৃ-অচ্-মুম্চ। > চক্রপণী, চলিত চাকুলিয়া। (শব্দচ°)

ব্যক (জী) বিরতেখনেন ইতি ব্-অপ্ ততঃ সংজ্ঞায়াং কন্।

> পোতাজাদন। (হারাবলী) ২ খোত বা অখোত সাধারণ
বন্ধ। (শব্দরারণী) বিরতে লোকৈরিতি ব্-অপ, ততঃ কন্।
(পুং) ও বনমূদা, চলিত মুগানী। (হেম) ৪ পর্ণটিক,
চলিত ক্মেণাপড়া। (রাজনি) ৫ প্রিরন্থ নামক ভূগধাজভেন,
চলিত চীনাধান, কাংনীধান। ইহার পর্যার—ভূলকলু, কক্ষ ও
রূলপ্রিরন্থ। ইহার ওপ—মধুন, রক্ষ, ক্যার ও বাতপিভকর।
(রাজনি) (জী) ৬ রুখবদরী কল। (মন ব ৬), বর স্বার্থে
কন্। (পুং) ৭ প্রার্থনাবিশেষ।

শন বত্রে ত্রগং তত্র প্রথমং বজ্ঞকারণন্।
বিতীয়ং বরকং বত্রে পিতৃণাং পাবনেদ্বরা ॥"(মহাভা" ৩)১-৭।৫৩)
বরক্ত (আরবী) আশীর্কাদ। সৌভাগা। দেবাছ্গ্রহ।
বরক্দাজ (পারবী) বন্দ্ধারী সৈত্ত।

বর্করার্ (পারশী) > বিশ্লাম। ২ গার্চা।
বরকল্যাণ (প্রেন্ধী) রাজভেদ।
বরকল্যাণ (প্রেন্ধী) কারীশ রুক্ষ। (প° দু°)
বরকান্ঠকা (ত্রী) স্কুলভেদ। ২রাটকা।
বরকান্ঠি (ত্রী) পঞ্চতরোক্ত ব্যক্তিবিশেষ।
বরকান্ত (প্রং) বরাঃ শ্রেন্ধাঃ ক্রভবো বস্ত শতার্থমেধিফাৎ
তথাকা। বহা বরঃ ক্রত্বাহাৎ শতক্রভুহাৎ তথাকা। ইক্র। (হেম)
বরকোন্তেব (প্রং) কোবিদারবৃক্ষ। (রাজনি৽)
বরথাস্ত (পারশী) কর্মে ভবাব।
বরপেলাফা (পারশী) বিপরীতে।
বরপেলাফা (পারশী) বিপরীতে ভাব।
বরগা (লেশক্ষ) গৃহজ্যাক্ম কার্রথভ, তুইটা কড়ির উপরে এড়ো
ভাবে বে কুল্ল ক্ষুদ্র কার্রথভ দেওয়া এবং ভত্পরি টালি
ক্যান্থমা বার।

বর্গী (দেশজ) মহারাইদ্যা। [প্রর্ণে বর্গী ও মহারাই দেখ।]
বর্ল ভিকা (ত্রী) বৃক্তেদ। বর্লটী নামেও পরিচিত।
বর্লুল, দাঁজিপাজ্যের হারদরাবাদ রাজ্যের অন্তর্গত একটা প্রাচীন
নগর, হারদরাবাদ নগর হইতে ৪০ জোল উত্তর পূর্বে অবস্থিত।
অক্ষা ১৭°৫৮ জঃ এবং জাঘি ৭৯°৪০ পূ:। এই নগর
নিজামের লাসনাধীন। ইহার পশ্চিমোপকঠে করিমাবাদ
(৪৫৬৫ জনসংখ্যা) এবং এক মাইল উত্তর পশ্চিমে মৎবারা
(৮৮১৫ জনসংখ্যা) নগর আজিও বরল্লের প্রাচীন সমৃদ্ধির
পরিচর দিতেতে।

প্রাচীন ছেনিল রাজ্যের অনুবংশীয় হিন্দু নরপতিগণের সমৃদ্ধি সক্ষমে এই নগর রাজ্যানী রূপে গণা হইয়াছিল। হুংথের বিবর, সেই প্রাচীন রাজ্যখনের প্রক্লাভ কোন ইতিহাস পাওয়া যায় না। ১০০০ পৃত্তীকে আলাউদীন তেলিলানা আক্রমণ করেন। কিন্তু তিনি রাজ্য করে বিদলমনোরথ ইইয়া বহন্দতি বীকার করিলা প্রত্যাহন্ত হইতে বাধা হন। এই সময় হইডেই মুস্পমান ইতিহাসে বরলদের প্রক্লভ ইতিহাস প্রাপ্ত হবরা বায়। ১০০৯ পৃত্তীকে মালিক কারুর বরলণ হুর্ম অবরোধ পূর্কক অধিকার করেন এবং ভথাকার হিন্দু নরপতিকে কর বিতে বাধা করিবাছিলেন। সিবাস্ট্রীন তোগলকের রাজ্যকালে নুস্পমানগণ প্রবায় বরলা অবিকার করে বটে, কিন্তু অধিকানি নির্কিরোধে রাজ্যশালন করিভে পায়ে নাই; কারণ বহলদ তোগেকের খাসনকালে হিন্দুস্প পূল্রায় নইরাজ্য উদ্বার করের লায়।

অতঃপর হান্দিণাতো বান্ধনী রাজকণের প্রভাব বিভৃত!

হইলে এতত্তর জনপদবাসী হিন্দু ও মুসলমানের বোর সংঘর্ষ উপস্থিত হর। তাহাতে ১৫০৮ খুটান্দে বরললরাজ হতরাজ্য পুন:প্রাথির জন্ত আবেদন পাঠাইলে পুনরায় উভয় পক্ষে যুদ্ধ উপস্থিত হয়। এই বুদ্ধে বরললরাজ গোলকোণ্ডা রাজ্য হারাইতে বাধ্য হন এবং তাঁহার পুত্র বন্দিভাবে বান্ধনীরাজ্য সমীপে নীত ও নিহত হইয়াছিলেন। উক্ত হিন্দুরাজ্যের অবশিষ্ট বাহা ছিল ভাহা ১৫২২ হইতে ১৫৪৩ খুটান্দের মধ্যে হন্তগত করিয়া কুলী কুতবশাহ কুতবশাহী বংশের প্রতিষ্ঠা করেন। গোলকোণ্ডায় তাহার রাজধানী স্থাপিত হইয়াছিল। এখানে এখনও অনেক হিন্দুকীর্ত্তির ধ্বংসাবশেষ নয়নপথে সমুদিত হইয়া থাকে। [সাতবাহন বংশ ও গোলকোণ্ডা দেখ।]

বরঙ্গান্তন (বরণগান্ত), বোদাই প্রেসিডেন্সীর থান্দেশ জেলার অন্তর্গত একটা নগর। ভূষাবল উপবিভাগের সদর হইতে ৮ মাইল পূর্ব্বে অবস্থিত। পূর্ব্বে এইস্থানের বাণিজ্ঞানমুদ্ধি যথেষ্ট ছিল। ভূষাবলে বিভাগীর সদর স্থাপিত হওয়ার এই স্থান ক্রমশঃ প্রীহীন হইয়া পড়িতেছে। ১৮৬১ থুপ্টাঙ্গে সিন্দেরাজ এই স্থান ইংরাজ করে সমর্পণ করেন। ইহার পূর্বের এই নগর যথাক্রমে মোগল, নিজাম ও পেশবাদিগের অধিকারে ছিল। মিউনিসিপালিটি থাকায় নগরের শোভা ও সৌন্দ্র্যানই হয় নাই।

বর্চন্দন (রী) বরং শ্রেষ্ঠং চন্দনং। >কালীয় চন্দন। ২দেবদারু।
বরজ (ত্রি) জ্যেষ্ঠ। (পা ভাতা>৬) বরেজ পাঠও দেখা যায়
বরজ (দেশজ) > বেথানে পর্ণলতার চাব হয়। একটা
ক্ষেত্রের চারিদিক্ বাধারি ও পাখাটা দিয়া ঘিরিয়া ও তাহার
উপরে ছাদের স্থায় পাখাটীর আছোদন বাধিয়া বে গৃহাকার
পর্ণক্ষেত্র রচিত হয়, তাহা পানের বরজ বলিয়াই প্রসিদ্ধ।
২ ব্রজবৃলিতে "ব্রজ" শব্দ অপ্রংশে 'বরজ' লিখিত হইয়া থাকে।
বরজ, ভোলারাজ্যের অন্তর্গত একটা গ্রাম। (ভবিষ্যবৃদ্ধা ও া৪৭-১০৪)
বরজাকুক (পুং) ক্ষিভেদ।

বরজীবিন্ (পুং) সম্বর জাতিবিশেষ। > ব্রাক্ষণের ঔরসে
শ্রার গর্ডজাত। ২ গোপ ও ডব্রবারের সংযোগ উৎপর জাতি।
বর্ঞ (অব্য) সংস্কৃত বর—েচ বোগে নিস্পন্ন। ইহাপেকা ভাল।
বরট (ক্নী) ব্রিরতে ইতি বৃ-জটন্, (শকাদিভ্যোহটন্। উণ্
৪/৮১)> কুন্দপুলা। (শক্রম্বা৽) বরতি সেবতে সরোবরবিভি কৃঞ্-সেবারাং জটন্। (পুং) ২ হংস। (মদিনী)
ও বেদিকা, কটিবিশেষ, চলিত বোলতা। ইহার পর্যায়—গজোলী,
বরটা, গজোলি, বরলা, বরলী, কুন্তা, কুরা, কুন্দবর্ষণা। (রাজনি°)
বরটক (পুং) কুজবীল। [বরট দেখ।]

व्यक्ति (जी) वत्रष्ठ-हान्। > इःनी।

[19[8]]

"মদেকপুত্রা জননী জরাত্রা নবপ্রস্তির্বরটা তপদ্বিনী।" (নৈষ্ধ ১১১৩৫)

২ কুন্তবীজ। ইহার গুণ---

"বরটা মধুরা নিগ্ধা রক্তপিত্তকফাপহা।

ক্ষায়া শীত্রা গুরুবী স্থাদরুয়ানিলাপহা ॥" (ভারপ্রতপূ৹প্র)।

৩ বরলা, অগ্নিপ্রকৃতি কীটভেদ, চলিত বোল্তা। ৪ বন্ধ।

বর্টী (ত্রী) বরট-জাতৌ ঙীষ্। > হংদী। (মেদিনী॰) ২ গদ্ধোলী। (ত্রিকা॰)

"হন্ধতুপ্রেক্তিটন-বর্টীশতপদীশৃক্বলভিকাশৃদী-

ভ্ৰমরা**: শৃকতু**গুবিষা:।" (সুশ্রুত কল্পন্তান ৩ অ:)

বর্ট্টিকা (স্ত্রী) কুন্তবীজ। পর্যায়—বরটা। ইহার গুণ— মধুর, স্লিগ্ধ, গুরু, অর্যা ও বায়ুহর। (ভাবপ্র:-)

বরণ (ক্লী) বৃ-ভাবে লুট্। ১ মনোনয়ন বা পছল করিয়া কার্য্যে নিয়োজন। যাহাকে কোন মঙ্গল কার্য্যে নিয়োগ করা যাইতেছে, তৎপ্রতি শিষ্টাচার ও শ্রন্ধা দেখাইয়া তাঁহার সন্মাননারূপ তদীয় সর্ব্বাদের সম্বর্জনা। ২ ক্ঞাবিবাহে বর-বর্ষণের রীতি।

"ন চ বিপ্রেম্বরীকারো বিভাতে বরণং প্রতি।

বয়দ্বর: ক্ষত্রিয়াণামিতীয়ং প্রণিতা শ্রুতিঃ॥" (মহান্তা ১০১৯০। ৭)

হোমসাধ্য যে কোন বিহিত কর্মেই হোম আরম্ভ করিবার
পূর্ব্ধে যঞ্জমান আপন শিষ্ট ও বিনীতভাব দেখাইবার জন্ত
আচার্য্য প্রভৃতিকে ব্রন্থং বরণ করিয়া দিবেন। আচার্য্য প্রভৃতি
বরণীয় ব্রাহ্মণদিগকে গন্ধাদি দ্বারা প্রীতি বিধান করিয়া কর্মাকরণার্থ প্রেরণ করার নামই বরণ। দানবাচন, অগ্ররম্ভ, বরণ
ও ব্রত প্রভৃতি স্থলে যজমান-কর্তৃতাই বুঝিতে হইবে। বরণকালীন যজমানকে পূর্ব্বমূথ এবং আচার্য্য প্রভৃতিকে উত্তরমূথ
হইয়া বসিতে হইবে।

"দর্কার প্রান্থ্যে দাতা গৃহীতা চ উদব্ধঃ।" (স্থতি)

কাত্যায়ন বরণবিধি এইরূপ নির্দেশ করিয়াছেন। যথা— প্রথমে যজমান আসন আনিয়া বলিবেন,—'সাধু ভবান আন্তা-মন্করিশ্যামো ভবস্তং।' বরণীয় ব্রাহ্মণ উত্তর করিবেন, 'সাধ্বহমাসে' ছরিশন্মা বলেন—'অন্করিয়ামো ভবস্তং' এই কথার পর 'অর্কর' এইরূপ প্রভিব্চন প্রযোজ্য। (সংস্কার্ভত্ত্ব)

ৰে কৰ্মে বরণ করিতে হইবে, তাহাতে নিয়োক্তরূপ সঙ্গন করিয়া বন্ত্র ও উপবীতাদি দিতে হইবে।

ষাহাকে বন্ধণ করিতে হইবে তাহার দক্ষিণ জাফু স্পর্ল করিয়া
"বিঞ্রোম্ তৎসদোমত অমৃকে মাসি অমৃকে পক্ষে অমৃকতিথো
অমৃকগোত্রং অমৃক প্রবন্ধ শ্রী অমৃকদেবশর্ষাণং অমৃককর্মকরণার
এভিবন্ত্রপূপামালাদিভিরভার্চে ভবস্তমহং রূপে" এবং ঋত্বিত্,
"রুভোহ্যি" বলিবেন। পরে ষল্পমান বলিবেন—"ব্পাবিহিত্যং

্তৰ্মক কৰ্ম কুরু।" ঋত্বিকু 'বপাজ্ঞানং করবাণি' এই কথা বলিবেন।

এইরপে ঋত্বিক্ বরিত হইয়া তাঁহার সন্ধানিত কর্ম আরম্ভ করিবেন। যক্ষমান নিজে কর্ম করিতে না পারিলে পুরোহিত প্রভাতিকে বরণ করিয়া দিবেন, পুরোহিত ঐ পৃক্ষাদি কর্মে ব্রতী হইয়া কার্য্য সমাধা করিবেন। বিবাহেও জামাতাকে প্রথমে বরণ করিয়া পরে ক্যাসম্প্রাদান করিতে হয়। বিবাহে বরণ স্থলে বর ও ক্যার উর্জ্ তন তিন প্রক্ষের নাম উল্লেখ করিয়া বরণ করিতে হয়।

"বিবাহে যো বিধিঃ প্রোক্তো বরণে স বিধিঃ শ্বত:।

বাকাং ত্রৈপুক্ষিকং কার্য্যং ত্রিরার্ভিবিবজ্জিতে ॥"(উদ্বাহত্ত্ব)
বিবাহে বরণবাক্য এইরপ হইবে। সংপ্রদাতা বরের দক্ষিণ
জারু স্পর্শ করিয়া— বিষ্ণুরোম্ তৎসদোমত অমুক মাসি অমুকে
পক্ষে অমুক্তিথো অমুক্রোম্ তৎসদোমত অমুক্রোত্রন্ত অমুক্রোত্রন্ত অমুক্রোত্রন্ত অমুক্রেরন্ত মাক্রের্ন্ত অমুক্রেরন্ত মির্ন্তন ভবস্তমহং রূলে" বলিবেন । পরে জামাতা 'র্ভোহ্নি' বলিবেন । যথাবিধি বরণ করিয়ে দিলে তবে ভাহার কার্যো অধিক্রার হর, এইজন্ত ব্রভানিতে পুরোহিভানিকে বরণ করিতে হয়।

প্রতিনিধি বা উপযুক্ত ব্যক্তিনিয়োগের নামই বরণ। যেনন রাজপদে বরণ। এই জান্ত মাঙ্গলিক কার্যাদিতে নিযুক্ত ব্যক্তির সন্মানার্থ কতকগুলি মাঙ্গলিক দ্রব্য থারা ভাহার সম্বর্জনা করা হইয়া থাকে। যে পাত্রে ঐ মাঙ্গলিক দ্রব্য গুলি এক্ত সন্ধিবেশিত থাকে, ভাহাকে বরণভাশা বলে।

২ বেটন। ৩ পূজার্চনাদি। (পুং) ৪ প্রাকার। ৫ বরণবৃক্ষ।
(অমর) ৬ উট্র। ৭ সংক্রেম, চলিত সাঁকী। (হলাযুধ)
বরণক (ত্রি) বরণকারী। আজোদন।

বরণ ডালা (দেশজ) মান্দলিক দ্রব্যপূর্ণ একথানি পিপ্তলের গালা বা বংশথগুনির্বিত গোলাকার ডালা। কুলকামিনীগণ সে পাত্রে পুরি রাধিরা তাহাতে নিমোক্ত দ্রব্যগুলি সাজাইরা দেন। পুরোহিত তাহার একটা একটা তুলিরা বরকে বরণ করেন। ক্রী-আচারের সমরে সধবা কামিনীগণও ক্তএকথানি জ্রৈরণ পাত্র বিভিন্ন দ্রব্যে সাজাইরা মাধার লইরা বরের চারিদিকে মুরিয়া বেড়ার এবং নির্মাহন করে।

বরণডালার জবা: — মহী (মৃত্তিকা), বেতচন্দন, শিলা (পুড়ি), ধান্ত, দুর্কা, পুন্দা, ফল, দবি, ছড, অভিক, সিন্দুর, শম্ম, কন্মল, হরিপ্রা, চাউল, সোণা, রূপা, তামা, বেতসর্বপ, দর্পণ, শুত্র, চামর, দীপ, লৌহ।

বর্ণমালা (ত্রী) বরণার যা মালা। বরণত্রজ্, বরণসময়ে বে পুলমাল্যাদি দেওয়া যার।

বরণসী (খ্রী) ৰারাণসী। (শব্দরত্বা°)

বর্ণস্রক্ত (জী) বরণমালা। (রাজতর°১।৬১)

বরণা, পঞ্চাবদেশোরবা একটা নদী। (পা গাবাচন প্রাচীন থ্রীক টেগালিকগণ ইহাকে Aornos নামে উল্লেখ করিরাছেন। ইহা সিদ্ধনদের দক্ষিণকূলে আটকের বিপরীত দিকে প্রবাহিত। ইহা এখন বরণস নামে খ্যাত।

বরণা (ত্রী) বরণ-টাপ্। নদীবিশেষ। (শন্বর্ম্পা°) এই
নদী বারাণসীর উত্তর সীমা এবং অভিশয় পুণ্য নদী। এই
নদীতে মান করিলে ব্রহ্মহত্যাদি পাতক বিদ্রিত হর। বিষ্ণুর
দক্ষিণপাদ হইতে এই নদী এবং বাম পাদ হইতে অসি নামক
নদী বিনির্গতা হইয়াছে, এই ফফ এই ছই নদীই পুণ্যবর্দ্ধিনী ও
পাপনাশিনী। এই ছই নদীর মধ্যবর্জীছান বারাণসী নামে খ্যাত।
ইহার তুল্য পুণ্য স্থান স্থর্গ, মন্ত্য ও রসাতলে আর নাই।
(বামনপুত অত)

২ তুৰরী। (নকুল ১৩জ") চলিত অড্হর কলাই। বরণীয় (গ্রি) বু-অনীগ্র্। বরণের যোগ্য, যাহাকে বরণ করা যায়, বরণাই। ২ প্রার্থনীয়। ৩ শ্রেষ্ট।

বর্প্ত (পুং) বুণোভীতি র (অপএন্ ফ্রন্স্ছ র্ঞ:। উণ্ ১।১২৮)
হাত অপএন্। ১ অপএরাবেদি, চলিত বারাপ্তা। ২ সমূহ।
৩ মুধরোগভেদ, চলিত বরসফোড়া। (মেদিনী) ৪ বড়িলহত্ত, গাঁচরী।

বরগুক (পুং) বরও স্বার্থে সংজ্ঞান্ধাং বা কন্। ১ মাতদ্রবিদি, হাতীর হাওল। ২ যুধ্যমান গল্পব্যের মধ্যবর্তিনী ভিত্তি, দেওয়াল। ৩ যৌবনকটক, চলিত বরসফোড়া। (মেদিনী) ৪ বর্তুল, গোল। (ত্রি) ৫ বিশাল। ৬ জীত। ৭ কুপণ। (শন্দর্ভা°) ৮ বরগুশন্যর্থ।

বরগু। (ত্রী) বরগু-টাপ্। সারিকা। ২ বর্তি। গশরভেদ। বরগুালু (পুং) বরগু এব আালুরঅ। এরগু বৃক্, ক্লাণাক-বিশেষ। (ত্রিকা^ক)

বর্তর্ক (পারদী) কার্যা হইতে ধ্বাব দেওরা।

বর্তর্ফী (পারসী) যাহাকে বর্তরক্ করা হইরাছে, যাহাকে ধবাব দেওয়া হইরাছে।

বরতকু (তি) > হৃদরী ত্রী। ২ ছদোভেষ। ইহার প্রত্যেক

চরণে ১২টা অক্ষর থাকে, ভন্মধ্যে ১,২,৩,৪,৬,৭,৯,১১ লঘু, তত্তিম বর্ণ শুরু।

ব্রক্তস্ত্র (পুং) একজন প্রাচীন গাবি। "কৌৎসঃ প্রাপেদে বরতন্ত্র-শিষ্যঃ" (রঘু) বহু বচনে বরতন্ত্রর বংশধর বুঝার।

বর্রতিক্ত (পুং) বরঃ শ্রেষ্ঠন্তিক্তন্তিক্তরসো যন্ত। > কুটন্ত বৃক্ষ, কুড্চি গাছ। ২ নিম্বর্ক্ষ। (রান্ধনি°) ৩ পপটন্ত, ক্ষেত পাপড়া। ৪ রোহিতক বৃক্ষ, ররনা গাছ। (পর্য্যায়মুক্তা°) বর্রতিক্তিকা (ত্রী) বরতিক্ত স্বার্থে কন্টাপ্ অত ইছং। ১ পাঠা, আকনাদি। 'বরতিক্তকা' এইরূপ পাঠ দেখিতে পাওয় যায়।

বরতোয়া (গ্রী) নদীভেদ। (শক্তপ্পরমা° ১1৫৪)
বরৎকরী (গ্রী) রেণুকা নামক গৰ্জপ্রয়। (শব্দেও°)
বররো (গ্রী) রিয়তেহনেনেতি র (র্ঞাশ্চং। উণ্ ৩০১০৭)
ইতি অত্রন্টাপ্। হত্তিকক-রক্জু, করিবন্ধন, চলিত কাচদড়ী।
পর্যায় —চ্যা, কক্ষা, কক্ষা। ২ চর্মারক্জু। (ঝক্ ১০৬০৮)
বরত্বচ (প্রং) বরা হিতকরী ঘচা বস্তা। ১ নিম্বর্ক । (রম্বমালা)
বরদ (ত্রি) বরং দদাতীতি দা (আতোহমুপসর্গেতি। পাঁ
থাং।৩) ইতি ক। ১ অভীষ্টদাতা, পর্যায় — সমর্ধক, বাঞ্চিতার্থদ।
"বরদং তং বরং বব্রে সাহায্যং ক্রিয়তাং মন্।" (ভারত ১।২।২১৭)

২ প্রসন্ন, যিনি অভিশ্বিত বরপ্রদান করেন।

বর্দ, বিদ্ধাপার্যন্থিত শোণননতীরবন্তী একটা গণ্ডগ্রাম। (ভবিষ্যবৃদ্ধাধ্য ৮০০৭)

২ বঙ্গের একটা প্রাচীন বিভাগ। (ভবিষ্যবন্ধধ°১০৩) ব্রুদ, দাক্ষিণাত্যবাদী একজন সংস্কৃত শাস্ত্রবিৎ পণ্ডিত, তোণ্ডীর-মগুলে ইহার বাস, ইহার পিতার নাম শ্রীনিবাস। ইনি অনঙ্গ-জীবন নামে একথানি ভাগ রচনা করেন।

বর্দক্বি, কারিকাদর্পণপ্রণেতা।

বরদ্দ্দিণা (রা) > বিবাহকাদে কছার পিতা বরকে যে যৌতুক বা উপহার দেন। ২ ন**ইবন্ধ উদ্ধারের** যে বৃথা ধরচ পত্র হয়, তাহাকে বরদ্দিশা বলা যায়।

বরদচতুর্থী (গ্রী) বরদা চতুর্থী। মাধ মানের গুক্লাচতুর্থী। বরদক্ত (ত্রি) > বর বা অন্তগ্রহরূপে প্রাপ্ত। বরদদেশিকাচার্য্য, > কাঞ্চীবাদী অ্বশ্নের পুত্র, ইনি 'বসন্ত-

তিলক' নামে একখানি ভাগ রচনা করেন।

২ একজন দার্শনিক। ইনি তত্ত্তর ও বেদান্তকারিকাবলী নামে চুইখানি গ্রন্থ রচনা করেন।

বরদনাপ, তক্তরচুপুকার্থসংগ্রহ নামে সংস্কৃত গ্রহপ্রণেতা। ইহার পুত্র ঐ গ্রহের উপর রহক্তরস্কুপুক নামে একথানি প্রক প্রথমন করেন। বরদনীয়কসূরি, দান্দিণাত্যের একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। ইনি তম্বনিরূপণ নামে গ্রন্থ রচনা করেন।

বরদম্ত্রি, বাজপেরাদি সঞ্চরনির্ণর নামক বৈদিক গ্রন্থরচরিতা।
বরদযোগা, বাজালার অন্তর্গত একটা প্রাচীন স্থান। ভেবিষ্যব্রন্ধর্গ ১৮।২২) বর্তমান নাম বক্সবোগিনী। বিক্সবোগিনী দেখা
বরদরাজ, ১ একজন বিখ্যাত তার্কিক। ইনি তর্ককারিকা,
তার্কিকরক্ষা এবং সারসংগ্রহ নামে তার্কিকরক্ষার টীকা রচনা
করেন।

২ একজন বিখ্যাত বৈরাকরণ, ইহার পিতার নাম হুর্গাতনয়।
পাণিনি-ব্যাকরণ আশ্রর করিয়া ইনি গীর্কাণপদমন্তরী, মধ্যসিদ্ধান্তকৌমুদী, লঘুকোমুদী এবং সার্জিদ্ধান্তকৌমুদী বা সারকৌমুদী নামে
সংস্কৃত ব্যাকরণ প্রণয়ন করেন।

ত একজন বিশ্বাত বেদজ পণ্ডিত, বামনাচার্য্যের পুত্র ও জ্বনস্ত নারায়ণের পৌত্র। ইনি ধ্বেদভায়, তৈত্তিরীরারণ্যক-ভায়, নিধানস্ত্রহৃত্তি, প্রতিহারস্ত্রহৃত্তি, মশককলস্ত্রভায় এবং বরদরাজনীকিতীয় নামক প্রোতগ্রন্থরচয়িতা।

৪ একজন মীমাংসক, রঙ্গরাজের পুত্র, দেবরাজের পৌত্র এবং সুদর্শনাচার্য্যের শিশু, মীমাংসানয়বিবেকদীপিকাপ্রণেতা !

- একজন নৈরায়িক, রামদেবমিল্লের পুত্র, হরিদাসের ভারকুস্থমাঞ্লিটীকার একজন টিপ্লীকার।
 - ৬ শিবস্থত্রবার্ত্তিকরচয়িতা।
 - ৭ ব্যবহারকাণ্ড বা ব্যবহারনির্ণয়প্রণেভা।
 - ৮ বাগপ্রারন্ডিত্রবাাথাকার।
- ৯ আনন্দভীর্ধ রচিড মহাভারততাৎপর্যানির্ণরের মন্দ-স্থবোধিনী নামে টীকাকার।
 - ভাষামশ্বরী ও প্রমাণপদার্থ নামক ব্যাকরণ-গ্রন্থরচয়িতা।
 - ১১ ক্লারদীপিকাপ্রণেতা।
 - ১২ ভর্নির্ণর নামক বৈদান্তিক গ্রন্থকার।
 - ১० किव्रगावनीत्र क्टेनक हैकिकावात्र ।
 - ১৪ পুরুষসূত্তের জনৈক ভাষ্যকার।
 - >६ क्विक्मविरनाम नारम मः ऋष श्रष्टक्रिका ।

বরদরাজ আচার্য্য, নামমাভূকানিখন্ট্রচরিতা। বরদরাজ চোলপণ্ডিত, বিবেক্তিনক নামধের রামারণের জনৈক টীকাকার।

বরদরাজভট্ট, সামাজপদমশ্লরী নামে বৈদান্তিক গ্রন্থরারিতা। বরদরাজ ভট্টারক, কামককীয় নীতিসারের টীকাকার।

বরদরাজীর (बि) বরদরাজনিপিত।

বরদ্ধিনী (ত্রী) দেখিতে প্রদক্ষণা বা স্থলরী। (রামারণ ২০০১,২) কেন্ত বরবর্ণিনী এই পাঠ অন্তমান করেন। वत्रप्तियुः मृति, देवन एतिएक ।

ব্রদা (জী) বরদ-টাপ্। > কছা। (মেদিনী) ২ আদিজ্য-ভক্তা। ৩ অখগন্ধা। (ভাব প্র°) ৩ অভীইকলনাত্রী। ৪ প্রস্ত্র-চিহুস্চক হন্তাদি বিজ্ঞানরপ মুদ্রাবিশেষ। ৪ সুবর্জনা, চলিজ্ হড়হুড়ে। ৫ বারাসীকলা। (বৈশ্বহানি°)

বরদা, হিমপাদবিনিঃস্থত দদীভেদ। (হিমবংখ- ৪।৬৯) এখানে অষ্টাদশভূজা জ্লবীমূর্ত্তি বিরাজিতা। (হিম- ৪১।৩৯-৪৪)

বরদা (জী) শক্তিমূর্তিভেদ।

বরদাচ ভূপী (জী) বরদাখ্যা চতুৰী। মাব মানের ওক্লাচতুৰী।
মাব মানের ওক্লাচতুৰীর দিন গৌরীপূলা করিছে হর, এই দিন
গৌরীপূলা করিলে তিনি বরদায়িনী হইরা থাকেন, এইজন্ত এই
চতুৰ্থীকে বরদাচতুৰ্থী কহে। এই ভিথিতে গৌরীপূলা করিলে
সোভাগ্য ও অতুল শ্রী লাভ হর। এই চুতুৰ্থীতে গৌরী পূলা
করিরা পঞ্চমীতে সরবতীপূলা করিতে হর।

*চতুথী বরদা নাম ততাং গৌরী স্পৃত্তিতা।
সোভাগ্যমতৃশং কুর্যাৎ পঞ্চম্যাং শ্রীরপি প্রিরং ॥" (তিথিত ব)
ব্রদ্যাচার্য্য, করেকজন বছ প্রাচীন সংস্কৃত গ্রহকারের নাম। যথা—
স্কল্মক্বিভাবিলান ও অবালভাগ নামে ভাগ্রচিবিতা।

- ২ অধিকারসংগ্রহ-ভাষ্যকার।
- ৩ অভযুপ্রদান ও অভযুপ্রদানসার-প্রণেতা।
- ৫ কাস্থালীরথগুনমগুনকার।
- ৬ পরভয়নির্গরকার।
- १ कात्रिकामर्भगव्यामणा ।
- ৮ প্রমেরমালা নামে বৈদান্তিক গ্রন্থরচয়িতা।
- ৯ ভগবদ্ধানমুক্তাবলীকার।
- > মঙ্গলমযুরমালিকা নামে অলকার-গ্রন্থরচয়িতা।
- ১১ যতিরাজবিজয় বা বেদান্তবিলাদনাটককার।
- ১২ বিরোধপরিহারকার।
- >० वाक्त्रननवृत्विधारना ।
- ১৪ খেতাখভরোপনিবদ্রায়কার।
- > শাবিত্রী-পরিণয় নামে কাবারচ্চিতা।

বরদাতু (পুং) দদাতীতি দা তুন্, বরছা দাতুঃ। বৃক্ষবিশেষ,
শাকর্ক, সেগুণগাছ, হিন্দী ভূঁইনছ, পর্যার ভূমিনছ, বারদাতু,
ধরছদে। গুণ—শিপির ও রক্তণিতপ্রধাদন। (ভারপ্র)

বরদাতৃ (অ) দা-তৃণ্, বরভ দাতা। **দভীই ফলপ্র**দাতা, যিনি বর দেন। বিরোগ ভীষ্। বরদাতী গ

বরদাধীশ যজুন, এক্ষন প্রসিদ সার্ভ কেটাধীনের পূর্ব। ইনি প্ররোগর্ভি ও প্রারশ্ভিত প্রদীপিকা রচনা করেন।

বরদান (क्री) বরভ দানং । অভিলবিত বিষয়-প্রদান। ব্রদানম্য (অ) বরদান স্বরূপে মরট। বরদান স্বরূপ। वद्रमानिक (वि) वद्रमानमस्बीद्र। বরদাভূমি, জনপদভেদ। (ভবিষ্যবন্ধণ ভা২৭) বরদাযোগিনী, বাদানার প্রাচীন রাজধানী। এখানে গৌড়াধিপ রাজত্ব করিতেন। (দেশাবলী) বর্ত্তমান নাম বছ্রযোগিনী। বরদার (পারদী) > বেহারা।(ত্রি) ২ ধার্রকারী। বরদারী (পারদী) বেহারার কার্য। বরদারে (পুং) > রুক্বিশেষ। (Tectona Grandis) (ত্রি) শ্রেষ্ঠদার । অখথ বটাদি সূর্হৎ বৃক্ষ। বরদারুক (পুং) রক্ষভেদ। ইহার পত্রগুলি বিষময়। वत्रमाश्वम् (वि) वत्रमः বরদ(স্ত (পারদী) मञ्च, महिञ्चुल। বরদেব, একজন রাঠোর রাজবংশপ্রতিষ্ঠাতা। ইনি কামধ্বজ উপাধিধারী অয়োদশ মহাশাখার একতমের আদিপুরুষ। ইনি খীয় জ্যেষ্ঠ ভ্রাতাকর্তৃক বারাণসী ও ৮৪টা নগরের আধিপতা প্রাপ্ত হইলেও তৎসমুদায় পরিত্যাগপূর্বক পাবকপুরে স্বতম রাজধানী স্থাপন করেন। ইহার বংশধরগণ পাবক কামধ্বজ নামে খাত। বরদ্রেম (পুং) বৃহদাকার বৃক্ষভেদ। অগুরুভেদ। (Agallochum) বরধর্ম (খং) শ্রেষ্ঠকার্যা। বরধশ্মকুৎ (a) অপরের মঙ্গলজনক কার্য্যকারী। वत्रभाती (जी) समती जी। বর্রনিশ্চয় (ত্রি) পতিনির্মাচন। वृत्रन्ता (तनक) ज्वितिनव । मञ्चवकः वानाका चाम, याशतक মাছের প্রান্তত হয়। বরপদ্ধ (পুং)বর্ষাত্র। বরপাত্র (দেশজ) বর। বরপ্রিণী (গী) ডগ্রোক্ত দেবীভেদ। ববুপক্রীয় (তি) বরের সম্পর্কীয় বা বর্ষাত্রসম্মীয়। বরপণ্ডিত, কথাকৌতুক নামক সংস্কৃতগ্রন্থরতা।

ক্ষীরকঞ্কী বৃক্ষ। চলিত ক্ষীরকড়ার। (রত্নমা°)

বরপোত (পং) শ্রেষ্ঠ শাক। (নেঘন্ট প্রকা°)

প্রদান করেন। ত্রিরাং টাপ্=বরপ্রদা-লোপামুদ্রা।

বরপ্রাদ (তি) বরং প্রাণাডীভি দা-ক। বরদাভা, বিনি বর

বর্পীত ক] (পুং) হরিতান।

्यमन कानिमान नव्यकीव व्यक्त्र्य ।

वतुश्र्वाशा (श्रः) वतानि भ्रमाञ्च, वत्रभर्गि आशा वन्न। বরপুত্র (পুং) বিনি দেবতার অন্ধগ্রহ লাভ করিরাছেন।

वद्रश्रामा (क्री) वद्रश्र श्रामार । वद्रमान, वद्र (मण्डा) বরপ্রভ (তি) > অতি প্রভাবিশিষ্ট। বোধিসত্বভেদ। বরপ্রস্থান (क्री) বর্ষাত্রা। বিবাহনিমিত্ত আশ্রীয় কুটুশ্বসহ বরের ক্তালয়ে আগমন। বর্ফ (পার্দী) ভূষার। জল জমিয়া খেতবর্ণ প্রস্তর্থতের शांत्र रहेरण जाशांत्र वत्रक करह। [প्रवर्त (प्रथ ।] বরফুল (পুং) বরং ফলমশু। ১ নারিকেল বৃক্ষ। (ক্রী) २ नादिएक का ७ (अर्छका । वत्रवांस्नीक (क्री) क्रूम। खाकतान्। বর্ষাত্রা (স্ত্রী) বরস্থ যাত্রা। বিবাহ করিতে বরের কন্মাগৃহে গমন। পৃথিবীত্ব কি সভা কি অসভা সকল সম্প্রদায়ের সকল জাভির ভিতরই বরষাত্রা প্রথা প্রচলিত আছে। তবে বিবাহ-পদ্ধতি সকল জাতির সমান নহে। আধুনিক শিক্ষা ও সভ্যতা বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে প্রাচীন উৎসব ও আমোদের রীতি নীতি এবং আদৰ কায়দাগুলি এক একটু করিয়া উলাট পালট এই পরিবর্ত্তন শুধু যে উচ্চ সম্প্রদায়ের ভিতর ঘটিতেছে তাহা নয়; উচ্চ সম্প্রদায়ের যথাসম্ভব-चामर्भ महेगा धीरत धीरत निम्न मध्यमारगत माक-मड़्डा. চাল-চলন, রীতি-পদ্ধতি প্রভৃতি গঠিত হইতেছে। এরুপ পরিবর্ত্তনের প্রথা কালের হিল্লোলে ভাসিয়া সকল জাতিকেই জ্ঞাত বা অজ্ঞাত ভাবে বরিয়া লইতে হইতেছে। তবে কণা এই, বাহিরের চাল-চলনাদির পরিবর্ত্তন-পরিমার্জন কিছু কিছু হটলেও কোন জাতিই এ সকল ব্যাপারে আপন আপন ধর্মোচ্ছল কর্মক্রম এথনও ত্যাগ করেন নাই।

বাজালার সর্ববর্ণের হিন্দু — বিশেষতঃ উচ্চ বর্ণ ধনী হিন্দু-গণের মধ্যে এই বরষাত্রা স্থানভেদে কচিৎ কোণাও কিঞ্চিৎ পরিবর্ত্তিত আকার দেখা যায়। তবে এই ব্যাপারের মাঙ্গলিক ধর্মকর্মগুলি প্রায় সর্ব্বত্রই সমান।

যাত্রা করিবার পূর্কে অবভাত্মসারে বরের সাজ-সজ্জা হয়। কোন কোন বর হয় ত কিরীট-কুগুল-কঞুকাদি-মণ্ডিত হইয়া যাত্রা করেন এবং কাছাকেও বা গুদ্ধ বসনে গুদ্ধ উত্তরীয়ে আরুত हरेया गाजा कतित्व हम । उत्य धनीत उ कथारे नारे, वत मृतिम হইলেও বর্ষাত্রা ব্যাপারটীতে সর্ব্বত্রই সমৃদ্ধিসম্পদের কিছু না কিছু পরিচয় থাকিবেই। অতি দরিদ্র নিরক্ষর ব্যক্তিও ভাবী খণ্ডরভবনে প্রথমগমনে সম্ভব্মত শ শ সম্পান ও সমৃত্ব-ভাবেরই পরিচর দেয়।

বর উপবাসী থাকিয়া ধথাকালে বাত্রা করে। বাত্রা করিবার পূর্ব্বে বরের ললাটফলক চন্দন-চর্চিত হয়। বাড়ীর রমণীগণ বরের ললাটে খেত চন্দন লেপিয়া দেন এবং বরের বিশ্ববিনাশের জন্ম হাহার চন্দনাম্বিত ললাট মধ্যে 'তুর্গা বা হরি' প্রভৃতি ভগ-বৎ নাম লিখিরা রাপেন। বাত্রাকালে একটা দধি-মধু-ব্রুইছিত সফলপল্লৰ পূৰ্ণকুম্ভ বরের সম্মুখে রাখা হয়। বর ভাহার বিকৈ তাকাইরা 'গুর্গা গণেশ মাধব' প্রভৃতি ভগবৎ নাম শ্বরণ করিছে করিতে বাজা করে। এই সমর গুরু পুরোহিত কিংবা অন্ত কোন শান্তৰ ব্ৰাহ্মণ 'ধেফুৰ্বৎস প্ৰবৃক্তা' প্ৰভৃতি যাত্ৰামক্ষণ মন্ত্ৰ পাঠ করেন, বর বাত্রা করিয়া অগ্রে দেব, ব্রাহ্মণ ও পিতামাডা প্রভৃতি অক্তান্ত নমন্তবর্গকে প্রণাম বা নমন্বার করে। তথন নমন্থত ব্যক্তিগণ বরকে আশীর্কাদ করিতে থাকেন। এই সময় আশীয় কুটুৰ রমনীগণ হল্ধনি ও শব্ধনি করেন। অনেক স্থানে দেখা যায়, সমণীগণ পাঁচ সাত জনে মিলিয়া এই সময় মাললিক সঙ্গীত গাইতে থাকেন। পূর্ণকুম্ভের পার্ষে একথানি বরণ-**डाना थोटक**। এই বরণ डानात्र चिष्ठक, निन्दूत, शास्त्र, पूर्वी, প্রদীপ প্রভৃতি বছ মাঙ্গলিক দ্রবা সঞ্জিত রাধিতে হয়। বর যাত্রা করিয়া যাইবার সময় কোন রমণী হুগ্ধ দিয়া তাহার হাত ध्यादेश (पन।

দেশতেদে প্রথামত কলার মাঝ, মাছ-কাটারী, ছুরী, কাটারী জাঁতি দর্শনিদি বামহত্তে লইরা বর ঘর হইতে বাহির হইরা আইসেন। এইবার বরের সলে তাহার জ্ঞাতি কুটুম আমীয় অস্ত-রক্ত প্রভৃতিও চলিতে থাকেন। অবস্থাতেদে ও চলাচলের স্থবিধাবিশেষে বর বান, নৌকা, পান্ধী, বা অবে গমন করেন। অবস্থাপর বড় ঘরের বর, পথের স্থগম ও স্থবোগ হইলে প্রারই হতী, চতুর্দোল বা মূল্যবান্ অধ্যানে যাত্রা করিরা থাকেম।

त्राका क्रमीमारतत्र छ कथारे नारे । विनि धनी व्यथठ महत्रवामी, ষ্ঠাহাদের বরবাতাব্যাপার বান্তবিক্ই দেখিবার যোগ্য। বাহার ধন আছে, তিনি অস্ত বাবদে যত ব্যয় কক্ষন আর নাই কক্ষন, বর-যাত্রাব্যাপারে ঘরের গৃহিণী বা অক্ত পরিজনের থাভিরে বাধ্য হইরা জাহাকে প্রায়ই মৃক্তহন্ত হইতে দেখা বার। খেত, পীত, নীল, লোহিত বা মিশ্রবর্ণের চক্রাতপ-রাজিত রৌপা বা পিত্তৰ দশুমশ্ৰিত বহু বাহক-বাহিত ঝালর-ঝলমলীক্লত স্কলম চতুর্দোলের লোহিত মধ্মল-মণ্ডিত বেদিকার চ্ছিরা কিরীট-কুপুন ককুক পরিদা কোন রাজপুত্র বা নবাবপুত্রবৎ বর চলিতে থাকেন। ছই পাৰ্ছে ছইটা স্ত্ৰী বেশধারী ৰালক চাৰর লইছা ঠাহাকে ৰাতাস করে, অস্তান্ত ব্যবাত্তিকগণ অৰ্ছাসুসারে পরিকার পরিচ্ছের বেশ ভূষা করিয়া বরের সংগে সালে পদত্রকে চলিতে থাকেন। সকলেই বেশ মিছিল বাঁধিরা চলেন, নানা तक (वज्रतक प्रामनार रव । नाना घरकत सनी विक्रमी वाजना ৰাৰে, কোণাও বা হয়েক য়কম বাজী পুড়ে। আনাসোটা লইয়া কোৰাও বা ঢাক কুরোয়াক ধরিয়া বিবিধ পাগড়ী-বাঁধা বহু প্রশিক্ষিত অস্চর সহচর কাতারে কাতারে বাকনার তালে তালে পা কেলিরা চলে; কাগজের হাতী, কাগজের অখ, কাগজের নৌকা ও ভঙ্গরি বাইনাচ, থেমটা নাচ প্রস্তৃতি কত কি রং-বেরং সং চলিতে থাকে। অগণিত আলোক-সক্ষার দর্শকের চকু বলসিরা বার। এরূপ মিছিল দেখিবার জন্ম রান্ধার তুই থারে কলে দলে লোক জমিরা বার।

বর বধন সদস্বলে ক্সাক্তার বাড়ী গিরা পৌছেন, তথন ক্সাক্তৃপক্ষী বর ও বরবাত্রিক্রিগকে সসন্মানে মিট জাহ্বানে গুহে লইরা বান।

বালাণার আহ্মণ, কারছ, বৈশ্ব ও পুলাদি মধ্যে অবস্থাহ্যারে চলাচলের স্থাম স্থানোগে বর্ষাত্রা ব্যাপার এইরূপই। তবে বাহাদের অর্থস্থার তেমন নাই, তাঁহারা সমারোহের ভাগ অনেকটা ক্মাইরা দেন।

ভারতের, ওধু ভারতের বলি কেন্দ্র-পৃথিবীর সন্তা অসভা সমূদ্ধ অসমূদ্ধ বাবতীর জাতিরই বরবাত্রা ব্যাপার এইরপ অর-বিত্তর আমোদ উৎসব ও সমারোহ আড়মরেই পরিপূর্ণ। তবে জাতিবিশেবের বা সম্প্রদায়বিশেবের রীতি পদ্যতিতে অনেক পার্বকা আছে। [বিবাহ দেব।]

বর্ষাত্রিন্ (তি) বর্ষাত্রা-অন্তর্থে ইনি । বাহারা বরের অন্ত্র-গমন করে। বরের সহিত বাহারা বার, তাহানিগকে বর্ষাত্রী করে। বর্যাত্র (পুং) বর-ণিচ্-তূচ্ । ১ তর্তা, স্বামী, প্রণন্ধী।

২ বরণকারম্বিতা।

বররিতব্য (ত্রি) বর-ণিচ্-তব্য। বরণের যোগ্য। (হেম)
বর্যু (পুং)ভারত বর্ণিত ব্যক্তিভেন্ন। (ভারত উদ্যোগপর্ক)
বর্যুব্তি (ত্রী) > ছন্দোভেন, এই ছন্দের প্রভিচরণে >৬টা
ক্রিরা অক্টর হইবে। ভাহার মধ্যে >,৪,৬,৮,৯, ও ১৬ অক্টর
গুরু, ভব্তির বর্ণ শবু। ইহার লক্ষণ—

"ভো নয়না নগৌ চ যক্তাং বরবুবভিরিয়ং" (ছন্দোম°)

২ রূপযৌবনসম্পন্না ত্রী।

বরুযোগ্য (ত্রি) ১ বর, আনীর্কাদ বা উপহার শাইবার যোগ্য। ২ বরণীয়।

বরয়েনিক (গুং) কেসর। (নিষ্টু প্রকাণ)
বররুচি (গুং) বরা কচিবঁত। একজন প্রাচীন বৈরা করণ ও প্রানিদ্ধ
কবি, ভাহার জণর নাম পুনর্বাহ্ন। (জিকাণ) জটাধাারীবৃতি,
একাক্ষরকোর, একাক্যনিষ্টু, একাক্ষরনামমালা, একাক্ষরভিধান, উপ্রনিষ্টু, কার্ডচক্রকারিকা, ক্লগণকারিকা, পত্রকৌমুদী, প্রধ্যোগবিবেক, প্ররোগবিবেকসংগ্রহ, প্রাক্ত-প্রকাল,
কুলত্ত্র (পুলাহ্র), বোগণতক, সাক্ষরকার্যা, রাজনীতি, লিলবিশেববিধি, শিক্সুতি, লিকাক্রণাসন, ব্যক্তিরাকাক্যা, বাদ-

তর্দ্ধিনী, বার্ত্তিক, শব্দক্ষণ, শ্রুতবোধ ও সমাসপটন প্রভৃতি প্রস্থ তাহার রচিত বলিয়া প্রকাশ; কিন্তু বন্ধতঃই তিনি এই সকল গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন কি না তদ্বিরের নানা সন্দেহ আছে। অনেকে স্ব গ্রন্থ প্রচারের ক্ষন্ত বর্মচির নামে প্রকাশ করিয়া থাকিবেন। মহাক্বি কালিদাসের নামেও অন্তের রচিত অনেকগ্রন্থ প্রচারিত দেখা যায়। একমাত্রে পাণ্ডিত্যপূর্ণ প্রাক্ত-প্রকাশ এবং বাক্যপদীয় আদি বর্মচির রচনা বলিয়া অনেকের বিশ্বাস। ভোলপ্রবন্ধে তাঁহার রচিত অনেকগুলি প্লোক্ উক্ত আছে।

সোমদেব ভটের কথাসরিৎসাগরে লিখিত আছে, বরস্কৃতির অপর নাম কাত্যায়ন। তিনি বৈয়াকরণ পাণিনির সহাধ্যায়ী ছিলেন। এই কারণ অথবা তাঁহার নামে প্রচারিত বা তৎক্রক প্রকাশিত অষ্টাধ্যায়ী পাণিনিস্ত্রের বৃত্তি ও বার্ত্তিকাদি নানা ব্যাকরণ এছ দেখিয়া পণ্ডিতসমাক্ষ তাঁহাকে ব্রহ্মণ-বংশোভব সোমদন্তের পুত্র কাত্যায়ন বলিয়াই স্বীকার করিয়া থাকেন। কিন্তু পাণিনির স্ত্রেও বার্ত্তিক আলোচনা করিলে স্ত্রকার ও বার্ত্তিককারকে কণনই এক সময়ের লোক বলিয়া স্বীকার করা যায় না, বরং স্ত্রের বহু শতবর্ষ পরে বার্ত্তিক রচিত হইয়াহে, তাহাই প্রতিপন্ন হটবে। পাণিনি দেখ।

নার্ত্তিক ও প্রাক্ত প্রকাশকাবকেও আমরা অভিন্ন ব্যক্তি বলিরা মনে কবি না। প্রাক্ত-প্রকাশে বরক্ষচির অসাধারণ ক্লতিজ দেখিয়া মনে হয় যে প্রাক্ত ও পালী দ্রাযার তাঁহার বিশেষ বাংশার ছিল। উক্ত গ্রন্থানি মুদ্রাজ্বকালে তাহার ভূমিকায় অধ্যাপক ই, বি, কাউয়েল লিখিয়াছেন, বরক্ষচি খুটার ১ম শতাব্দের লোক ছিলেন। গাবেট সাহেবের মতে তিনি খুট পূর্ব্ব চতুর্থ শতাব্দে এবং চক্রগুপ্তেরও পূর্ব্বে বিশ্বমান ছিলেন। অভিধানকার হেমচক্রবিরচিত স্থবিবাবশীচরিতে লিখিত আছে, নন্দবংশার বালা ১ম নন্দের রাজজ্বলৈ মগধের অস্থবিত পাটনীপুত্র নগরে বরক্চি জন্মগ্রহণ করেন। ৪৬৬ খুট পূর্ব্বাব্দে নন্দবংশের আবিভাবকাল। এ দেশের অনেকেরই বিশ্বাস যে বরক্ষচি মহারাজ বিক্রমাদিত্যের নবরত্বের মধ্যে একজন। এ সম্বন্ধে ভাহারা জ্যোতির্বিদান্তর্বের একটা ল্লোক উদ্ধৃত করিয়া থাকেন,—

"ধ্বন্ধরিঃ ক্ষপণকামরসিংহ-শস্ক্ব্বিতালভট্ট-ঘটকর্ণর-কালিদাসাঃ।

গ্যাতো ব্রাহমিহিরো নূপতেঃ সভারাং
রক্ষানি বৈ ব্রক্তিনিব বিক্রমন্ত ॥" (মবর্দ্ধ)

কিন্তু উক্ত নবরত্ব বে এক সমবের লোক নহেন, প্লোকটা ক্বিক্যনামাত্র ভাষা প্রমাণিত ছইয়াছে। [বরাহমিহির দেখ।]

নন্দবংশের উপাথ্যানে বরফ্চির অপরাপর বিবরণ উদ্ভূত रुहेब्राट्ड [नन्म (मर्थ ।] २ मिव। বরুক্চিতীর্থ, প্রাচীন তীর্থভেদ। (স্থান্দে নাগর্প° ১২৫ আঃ) বর্রপ (ত্রি) হন্দর রূপবিশিষ্ট। (পুং) বৃদ্ধভেদ। বরল (পং স্ত্রী) বৃণাতীতি বৃ-অলচ্। বরট। চলিত বোলতা। 'विषम्को ज्ञादतात्मा वत्रमञ्चयहे पनः।' (भक्षमा -) বরলক (পুং) বর: উৎকর্ষো লব্ধ: পুলেষু যেন। ১ চল্পকবৃক্ষ। (ত্রিকা॰) (ত্রি) বরেণ লব: । ২ বরপ্রাপ্ত, যিনি বর দারা गांड कतिशां हिन। ७ तुक्ककांकन। २ नागरकमत **ए**ल्लक। বরলা (জী) বরল-টাপু। > হংসী। (মেদিনী) ২ বরটা। বরলী (জী) বরল-ভীষ্। বরটা। (জটাধর) চলিত বোলতা। বরবৎ সলা (প্রী) বরে জামাতরি বৎসলা। খণ্ডরভার্যা।, শাञ्जी। (भक्तभावा) বরবরাহ (পু:) অসভা। বর্বর বা কুঞ্চিত কেশযুক্ত বভা মহ্যা। ভাষাবিদ্গণ অহমান করেন, এই শক হইতে গ্রাক Barbaros, রোমক Barbarus ও ইংরাজী Barbarian শক্তের উৎপত্তি হইয়াছে . বরবর্ণ (পুং) > স্থবর্ণ। ২ শ্রেষ্ঠবর্ণ। वत्विं (वि) स्मत वर्गामी। বুরবর্ণিনী (স্ত্রী) বরঃ শ্রেষ্ঠো বর্ণ: প্রশস্তঃ পীতাদির্বাস্তাইতি বরবর্ণ-ইনি-ভীপ্। > অত্যুত্তমা স্ত্রী, পর্যায়—বরারোহা, মত্ত-কামিনী, উত্তমা, মন্তকাশিনী। (ভারত) "রক্ষভূতা চ কন্তেরং বাক্ষেমী বরবর্ণিনী। ভবিষাৎ জানতা পূর্বং ময়া গোভিবিবিদ্ধিতা ॥"(বিষ্ণুপু ১১১৫।৭) ২ লাকা। ৩ হরিকো। ৪ রোচনা। ৫ ফ্লিনী, প্রিয়সু। ৬ সাধ্বী স্ত্রী। ৭ গৌরী, ভগবতী। "ভদ্রকালি নমস্বভাং মহাকালি নমোহস্ত তে। চণ্ডি চণ্ডে নমস্কভ্যং তারিণি বরবণিনি ॥" (ভারত ৬।২২।২১) ৮ লক্ষী। ১ সরস্বতী। (শব্দর্ভা ০) বরবারণ (পুং) > জাঙ্গল জীববিশেষ। ২ সুন্দর হস্তী। বরবাসি (পুং) জাতিবিশেষ। वत्वाङ्लीक (क्री) (अर्थ कृष्ट्रम, कृष्ट्रम। (अमत्रिका) বরব্বস্ত (ত্রি) বর বা আশার্কাদীরূপে প্রাপ্ত। বরবৃদ্ধ (পুং) বর: শ্রেষ্ঠো বৃদ্ধ:। পুরাতন। শিব। (ক্রিকা ।) বরশঠ, স্বর্ণগ্রামের অন্তর্গত একটা প্রাসিদ্ধ স্থান।(ভবিষাত্র°খ°৮।৪৩) বরশিথ (পু:) অম্বরভেদ। ইক্স ইহাকে সপরিবারে নিহত

करतन । "रयनावधीर्वत्रनिश्च त्नवः" (अक् ७।२१।४)

'বরশিপক বরশিধো নাম কশ্চিদক্ষরঃ' (সায়ণ)

বরশীত (দী) খচ্, দারুচিনি। (বৈশ্বক্নি•) বরশ্রেণী (স্ত্রী) ব্রষ্প্র। লগুমোরবেল। (বৈশ্বক্রি৽) বরস্ (क्री) > তেজঃ। "পর্যারবরাংসি" (ঋক্ ৬।৬২।১) 'বরাংসি ডেজাংসি' (সায়ণ) বর্সদ (ত্রি) আদিতা, হুর্গা। "নুষদ্বরসন্তসদ্ব্যোমসদজা" (अक् 818 । (१) 'বরসদ্ বরে বরণীয়ে মণ্ডলে সীদভীতি বরসদাদিত্যঃ' (সায়ণ) ব্রসান (পুং) র (ছন্তুলানচ্স্জ্ভাম্। উণ্২া৮৬) ইতি শানচ্। দারিক। (উজ্জল) বর্ম্মন্দরী (স্ত্রী) > স্থলরী স্ত্রী। ২ ছন্দোভেদ। ইহার প্রতি চরণে ১৪টী অক্ষর। ১,৫,৯,১৩,১৪ বর্ণ গুরু ও তদ্কির লঘু। বর্মুর্ত (তি) স্রতক্রিয়াভিজা। উচ্ছৃশ্ল। वत्राम्म (पूर) शितिमङ्ग्रेटिं । वत्रसी (जी) समती नाती। বর স্থা (জী) বরণীয়া, বরণের যোগ্যা। "বরস্থা বাম্য এগৃছ বে" (শক্ ৫।৭৩।২) 'বরস্তা বরণীয়া' (সায়ণ) বরত্রজ (ত্রী) ক্তাকর্ক বরের গ্লার যে মাল্য দেওয়া হয়। বরহক (क्री) জনপদভেদ। বরহি, পার্কাতা জাতিবিশেষ। বরা (রী) বৃ-অচ্-টাপ্। ১ ফলত্রিক। (মেদিনী) ২ রেণুকা-নামক গৰুদ্ৰা। (শব্দ চ ॰) ৩ গুড় চী। ৪ মেদা। ৫ ব্ৰাহ্মী।

বুরা (রী) বৃ-অচ্-টাপ্। ১ ফলত্রিক। (মেদিনী) ২ বেগুকানামক গন্ধন্তা। (শন্দেচ•) ৩ গুড়ুটী। ৪ মেদা। ৫ ব্রাক্ষী।
৬ বিড়ঙ্গ। ৭ পাঠা। ৮ হরিন্দা। (রাজনি°) ৯ শ্রেষ্ঠা। ১০ শণপূপ্পী। ১১ বাতিঙ্গন, বেগুণ। ১২ ওড় পুপ্প, জবাফুল। ১৩ বন্ধাকর্কোটকী। ১৪ মহা। ১৫ শেতাপরাজিতা। ১৬ সোমরাজি।
(বৈহাকনি•) ১৭ শতম্পী, ব্রাক্ষীশক। (রাজনি•)

বরাক (পুং) ব্ণীতে ভচ্ছীল ইতি (জন্ত জক্টলু উবুঙ: যাকন্। পা াহা>৫৫) ইতি যাক্ন্। > শিব। (মেদিনী) ২ যুদ্ধ। (ছেম) (ত্রি) ও শোচনীয়। ৪ অবর।

শনাথে শ্রীপুরুষোত্তমে ত্রিজগতামেকাধিপে চেতসা
দেব্যে স্বস্তু পদস্থ দাতবি পরে নারায়ণে তিষ্ঠতি।

য়ং কঞ্চিৎপুরুষাধমং কতিপয়গ্রামেশময়ার্থদং
সেবারৈ মৃগরামহে নরমহো মৃঢ়া বরাকা বয়ম্॥"(মৃকুন্দমালা ১৭)

৫ পপটক, ক্ষেত্পাপড়া। (বৈশ্বক্দিন)

বরাকপুর, একটা প্রাচীন গ্রাম।

বরাগাম, বোখাই প্রেসিডেন্সীর মহীকাছা বিভাগের অন্তর্গত একটা কুদ্র সামস্তরাজ্য ও তাহার প্রধান নগর। এখানে ঠাকুর উপাধিধারী সামস্তরাজ রাম্নসিংহ রেহবাড়বংশীর রাজপুত। জ্যেষ্ঠ পুত্রই সম্পত্তির অধিকারী, কিন্তু দত্তকগ্রহণের ক্ষমতা নাই। রাজপ্ত ৯৫০০ টাকা।

বরাক্স (রী) বরমলানাং। > মন্তক্। ২ গুছ। (অমর)
৩ গুড়বক্। ৪ বোনি। (একা°) ৫ প্রের্চাবরব। ৬ চোচ।
"ডক্পত্রক বরাকং জান্ত্রকোচং তথোৎকটং।" (ভাব প্র-)
৭ উপস্থ। ৮ কসুঠ। (বৈশ্বকনি৽) ৯ পাঠা, আকনাদি।
১০ হরিলা। >> মেলা। (রাজনি৽) (পুং) বরাণি
ছুলানি অলানি যন্ত। >২ হতী। (ত্রিকা°) ১৩ বিকুর
সহস্রনামের অন্তর্গত নামডেদ।

"স্বৰ্ণবৰ্ণো হেমালো ব্যাঙ্গশুনাগদী।" (বিষ্ণুর সহস্রনাম) ১৪ ডিন শত চবিশে দিনব্যাপী নক্ষত্রবংসরভেদ।

ব্রাক্সক (ङ्गी) বরমজমন্ত কপ্। ১৩৩ জ্বক্। লাকচিনি। (আমর) (ত্রি) ২ শ্রেটাবয়বযুক্ত।

বরাঙ্গদল (ফী) প্রিমঙ্গর। (চরক চি॰ ৩ অ॰)
বরাঙ্গনা (ত্রী) বরা শ্রেষ্ঠা অলনা ত্রী। অভিপ্রশন্তালযুক্তা
ত্রী, সর্কালফুলরী ত্রী।

শিরঃ স পুলাং চরণৌ সুপৃ্জিতৌ বরাজনাসেবনমরভোজনম্। অন্যশায়িত্মপর্কমেথুনং চিরপ্রনারীং শ্রিয়মানরভি বট্॥"

(नन्नीहिति)
বরাঙ্গরাপোপেত (কি) অলানাং রূপাণি অঙ্গরপাণি বরাণি
অঙ্গরপাণি তৈরুপেতঃ। শ্রেষ্ঠরূপযুক্তা, স্থানর। পর্য্যায় সিংহসংহনন।
বরাঞ্জিন্ (কি) বরাজমন্ত্যতেতি বরাজ-ইনি। ১ শ্রেষ্ঠাঙ্গযুক্তা,
বরাজবিশিষ্ট। (পুং) ২ অন্নবেতস। ৩ গল। রিয়াং ভীষ্।
বরাজিনী।

ব্রাঙ্গী (স্ত্রী) বরমক্ষমস্তরবয়বে। যতাঃ। ২ হরিদ্রা। ২ নাগদস্তী, বড়দস্তী। ত মঞ্চিতা। (রাজনি•)

বরাজীবিন্ (পু:) জ্যোতির্বিদ্। গণক।

বরাজ্য (রী) উৎকট ছত। মাধন জাগান ছত।
বরাট (পুং) বরমন্দমটতীতি অট কর্মাণ অণ্। > কপদক,
কড়ি। (রাজনিং) শ্রেঠ, মধ্য এবং কনিষ্ঠতেদে তিন প্রকার।
পাতবর্ণ গোটে ছয় মাধা ওজনের কড়ি শ্রেঠ, চারি মাধা ওজনের
মধ্য এবং তিন মাধা ওজনের কড়ি কনিষ্ঠ মধ্যে গণ্য। বৈজ্ঞক
মতে এইরূপ কড়িই বরাটক সংজ্ঞায় অভিহিত।

"পীতাভা গ্রন্থিলা পৃষ্ঠে দীর্ষগৃত্তা বরাটিকা।
সার্দ্ধনিকভবা শ্রেষ্ঠা নিক্তাবা চ মধ্যমা।
পাদোননিকভাবা চ কনিষ্ঠা পরিকীর্তিতা ॥" (রুসেক্সসা॰)
বরাট বা কড়ির শোধনপ্রণালী যথা—কড়ি এক প্রহর্
কাল কাঁজিতে স্বেদ দিলে তবে তাহা শুক হয়। প্রকারান্তর—
মাটীতে গঠ খুঁড়িরা পাতা পাতিয়া তুব পুরিষা মধ্যে বাড়ির মুঘা
রাখিয়া পালিকানামক যত্ত্বে গুঁটের আগগুনে দল্প করিলে কড়িতক্ম
বা বিশুদ্ধ হয়। এই বিশোধিত কড়ি সর্বরোগ্রন। অনুস্ঠত

আমলকী কবীর কিংবা অন্ত কোন অর্রনে কড়ি ভিজাইরা উহা নীতবর্ণ হইলে পরে উঠাইরা ধুইরা এইণ করিবে। ভাষা হইলেই কড়ি পোধন হইরা বাইবে। ক শোধিত কড়ির ভণ---পরিণাম-শূল, কর ও এইনীনালক। কটু, ভিজ্ঞা, আরিনীপক, ডক্রবর্জক এবং বাত ও কছ-হর।

ৰ রক্ষ্। (ত্রিকা॰) ও পর্যবীজ। (মেদিনী)
বরাটক (পুং ত্রী) ৰরাট স্বাধে কন্। > কপদ্দক, চলিত কড়ি।
শীলাবতীতে বরাটকের সংখ্যাতেলে এইরূপ নামনির্দ্ধকি বেখিতে
পাওরা বায়। এক কুড়ি কড়ির নাম কাকিনী, চারি কাকিনীতে
একপণ, বোল পণে এক ত্রমা এবং বোল উন্যেয় নাম নিক।

"বরাটকাশাং দশক্ষরং যৎ, সা কাকিশী তাশ্চ পশশ্চতপ্র:। তে বোড়শ ক্রম্য ইবাবগম্যো, দ্রম্যৈতথা বোড়শভিশ্চ নিষঃ ॥" (শীলাম্ভী)

প্রাথ্য প্রতিষ্ঠ কর্ত হইরাছে, আশী বরাটকে এক পণ, বোড়শ পণে এক প্রাণ এবং সপ্ত প্রাণে এক রক্ত হয়। "অশীতিভিব্রাটকৈঃ পণ ইত্যভিধীরতে।

তৈঃ ৰোড়লৈঃ পুৱাণং ভাত্ৰজ্ঞতং সপ্ততিভ তৈঃ ।" (প্ৰাৰ্শ্চিতত")

দক্ষিণাৰ বরাটক দিবার ব্যবহা আছে। আফণেতরে দান
ও দক্ষিণান্ত্রীন যক্ত নই হইরা বার, ভাই এক কুড়ি বা এক পণ
কড়ি অথবা একটা ফল বা একটা পুশাও অস্ততঃ দক্ষিণা দিবে।

"হতমশ্রোত্রিরং দানং হডো বক্সবৃদ্দিশঃ। তন্মাৎ পশং কাকিশীং বা কলং পুন্সবাপি বা। প্রদেষ্ঠাৎ দক্ষিণাং বক্তে তন্মাৎ দ সকলো তবেৎ।" (গুডিতম্ব) (পুং) > বক্ষু। ৩ পদ্ধশীয়া। (মেদিনী)

বরাটকরজন (পুং) বরাটক ইব রজো বতা > নাগকেশর বৃক্ষ।
বরাটকবিষ (দী) বরাটক নামক পক্সারনির্বাস বিষ।
(পুঞ্জ কর ২ জঃ)

"বরাটা কারিকে বিরা বাবাক্ বিববাধুবাব ।"
বভাততঃ—
ভূগতে চ সবে ওজে পৃত্তলীং ভাগতেও হবী:।
ভূবেণ পূর্বেও ভতাঃ কিন্দিবার কিবকা ।
বরাটেঃ পৃথিতাং বুবাং ভতবো বিনিবেশবেও।
কারীবারিং ততে বরাং পানিকা ব্যব্তবন্ ।
আবেন বিরতে মূবং ঘরাটঃ সর্বাহেগবিও ।
আততঃ,—বরাটং তত্ত চাকেরী কবীরাবাং ত্রেন বা।
আতেবাবাণি চারাবাং বাবং গীতং ন প্রতি ।
গবিধাবালিপুনত্ব করং। এক্বীবরা ।
কটুক। বীগবা ভিত। মুখ্যা বাভক্ষাপত্তা ।" (সনেক্রনাত কারব্বারণ বা:)

ব্রাটিকা (ত্রী) ব্রাট-খার্থে কন্। ডডটাপ্, জত ইয়ক। ১ কপ্দিক। (ভরত)

"বছকৰ্মণিব্রাটিকাগণনাটৎকরকর টোৎকর: ।" (নৈবধ ২৮৮) ২ তুদ্ধবাচিকা।

শ্ৰেষ্ণাপে মৃত্যুতে ৰেল তন্ত গলা ৰৱাটিকা ॥" (উন্তট) ৩ লাগেৰৱবুক।

বরাটকী (ত্রি) বরাটক সবদীয়। (প্রবরাধ্যার)

বরাটা (দেশন্দ) রাগিণীভেদ।

বরাড়ী (জী) রাগিণীডেদ। [রাগ ও রাগিণী দেখ।]

বরাণ (গং) বিরতে ইতি বৃ-বৃচ্, প্রোদরাদিদপ্রস্ক দীর্ঘ।

> ইন্দ্র। (বিকা•) ২ বরণবৃক্ষ। (শক্ষাদ্মা•)

বরাণস (জি) বরণা ও অসিসম্মীয় (মানী)। (পা ৪।২।৮) বরাণসী (জী) প্রোণরাদিম্প্রার্ক্ত আকার ক্সম। কানী,

प्रभागना (जा) रूपाण्यात्वर्ध्यपूर्व जाकात्र द्वा काल्य वात्राणनी। 'काली वत्राणनी वात्राणनी लिवसूत्री ह ना' (द्वा)

[रात्राननी वा कानी (नच ।]

বরাৎ (পারসী) দয়কার, প্ররোজন। (দেশজ) ২ অদৃষ্ট।

ু নিজ দের অংশ বরং না দিরা অপরের নিকট হইতে পাওরাইবার অলীকার। বেন সে অমুকের কাছে বরাং দিরাছে।

বরাতী (পারসী) দরকারী ও প্ররোজনীর।
বরাতুরট (রী) বৌহতেক।

বরাদন (দী) বরৈ রাজভিরভতে ইতি আন বৃটি। রাজাদন।
বরান্ন (দী) বরং আরং। ভর্জিতথান্ত, বিদলকৃত শ্রেষ্ঠান।
শনীধান উত্তবরূপে ভাজিরা তাহার দাইল ক্রিতে হয়, পরে
উহা জলে উত্তবরূপে পাক করিরা স্থাসিক হইলে তাহাকে

বরার কৃষ্টে। "নশীবাজ্ঞ ভূষ্টজ দালিছ্ডা মুনিস্থবাং। পজেনুদকে স্থাসিতা সা বরার্মিতি চক্ষতে।

क्रमण मनगरण्यः गण्यः क्रमण मत्राम् ॥" (ज्याश्च•) यत्राममा (जी) वतः चामनः वजाः । च्यमती जी।

বরাভিদ (পুং) অর্থেড । (রাজনি) বরাবর (পারসী) > সোজাছজি । ২ স্কালে। ৩ চিয়কাল। ৪ সমতল। ৫ মন্দ্র।

বরাবর, বেহার আদেশের অন্তর্গত একটা গণ্ড শৈলাশের। গরা বেলার কাহানাবাধ উপবিভাগে অবহিত। এই শৈল শিধরো-পরি এক প্রাচীন মন্দির বিভমান। ভাষাতে সিভেবর নামক শিবলিক আছে। প্রবাধ কিলাকপুরের প্রীকৃষ্ণবিদ্ধেরী অন্তর্গাল প্রধানে এই ধেকমুর্তি স্থাপন করিবাছিলেন। ইহার বন্দিশে পর্বাভগাবমুলে সাজ্ঞান নাবে একটা বিকৃত ভাষা গৃষ্ট হয়। ঐ করা গটার মধ্যে কর্পহোগার, স্থানা, লোকস্থবি ও বিশ্বানিত্র নানে চারিটার খতর নাম পাওরা বার। শুহামধ্যক পালি অকরে লিখিত শিলালিপি হইতে জানা বার বে উহার সর্ক প্রাচীনটা স্বাইপূর্ক ৪ব শতাব্দে এবং সর্কাপেকা আধুনিকটা ২৯৪ ক্টাকে উৎকীর্ণ হইরাছিল। ইহার জদ্রে পাতাল-গলা ও নাগার্জ্নী নামে কলবারা, তৎসারিকটে গোপী, রাপীর ও বাকিখী নামক অপর তিন্টী শুহা। এই তিনটা শুহাই খুই পূর্ক ওর শতাকে অশোক-পৌত্র দশর্প কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত হয়। গোপী শুহার সম্রাট্ অশোকের সমরের প্রাচীন পালি অকরে উৎকীর্ণ একখানি শিলালিপি আছে। [প্রর্পে বরাবার দেখ।]

वञ्जाञ्चल (भावनी) स्नावारताभ। नानिन।

বরাত্র (গং) শ্রেটোংয়োংত, রস্ত লন্ধ। করমর্ক। (রন্ধালা) ইহার পাঠান্তর করার।

বরারক (রী) বনং শ্রেষ্ঠং ধনিনম্ ঋচ্ছতি গচ্ছতি ঋ-ধূল্। হীরক। বরারক্ষক, বিদ্যাপর্কতিপার্শন্তিত একটা গগুগ্রাম।

(ভবিষাত্রহ্মর্থ° ৮।৪৩)

বরারণি (পুং) মাতা।

"দদর্শ রাবণক্তর গোর্বেক্সবদারণিন্" (রামা° ৭।২৩)২২)

"গোর্বেক্সো মহার্বক্ত সাক্ষাৎ মাতরন্' (তট্টীকা)
বরারোহ (পুং) হন্তিন: উচ্চমাৎ আয়তপৃষ্ঠঘাক বর:
আরোহো যতা। ১ হন্ত্যারোহ অবরোহ। উৎকৃষ্ট সওয়ার।
২ বিষ্ণু। (বিশ্ব) ও পক্ষিবিশেষ। (বৈশ্বকান-)
বরারোহা (ত্রী) বর: আরোহো নিতবো বতা:। উদ্ভমা ত্রী,
সুন্দরী ত্রী।

"যদা তু বৈদিকী দীক্ষা দীক্ষা পোরাণিকী তথা। ন স্থান্ততি বরারোহে তদৈব প্রবদঃ কলি:॥" (মহানির্কাণত ৪।৪৭)

২ কটি। (হেম) ও সোমেধর হিত দাক্ষারণি মূর্বিভেদ।
বরার্থিন্ (ত্রি) জানীর্বাদাকাক্ষী। ঈশিত বরগাভেফু।
বরার্দ্দ [বরাদ্দ] (পারনী) নিত্য বা অবধারিত ব্যবস্থা। কোন
বিষয়ে কত টাকা বা প্রবাদি নাগিবে, তাহার হিরতা।
বরার্দ্ধিক (রী) একভাগ কুছুম, একভাগ চন্দন ও একভাগ কল
একত্ত করিকে বরার্দ্ধিক হয়।

"চলদং কুৰ্ম বানিজননেতৰনাৰ্কক্।" (রাজনি । বরার্ছ (জি) বর্লানের উপবৃক্ত । মহামূলা । শ্রেষ্ঠ, সন্মানার্ছ । বরাল (প্রে কী) > লবল । (বৈভকনি) স্থার্থে কন্। বরালক = বরালপথার্থ । বরালি (প্রে) ১ চজ্র । ২ বরাজী রাগিনী । বরালিকা (জী) বরা আলিকা সধী জনাদিব্লাঃ । ১ ছগাঁ। বরালি (প্রে) ইলবল্প, বোটা কাপড় । প্রান্ধ — ইল্লাটক, বরাসি,

ছুলশাটিকা, ছুলণ্টক। (পৰ্যন্তা=) ৰটাধন এইশক দ্লীব-লিক বলিয়া নিৰ্দেশ করিয়াছেন।

বরাস্ন (রী) বরারৈ হুগারৈ অঞ্জে কিপাতে দীরতে ইতি বাবং, আস-সূচই। ১ উতুপুলা। (শক্ষালা) বরং প্রেট্ন বাসনা। ১ উত্তম আসন, প্রেট্ট আসন, সিংহাসন। (পুং) বরাং বীরাং নারীং অঞ্জি ভারতীতি অস-লূা। ৩ বিজ্ঞা। বরানপি কনানু অঞ্জি দুরীকরোডি। ৪ বারপাল। (বিশ্ব)

বরাসন, একটা প্রাচীন নগর, ছর্জার পর্জতের দক্ষিণ-পূর্জকোণে অবস্থিত, এই নগরের দক্ষিণে ক্ষোভক নামক মহাদৈন ও ক্ষোভক নগর বিশ্বমান। (কালিকাপু- ৭০।১৬১)

বরাসি (পুং) বরৈঃ শ্রেটিঃ অভতে কিপ্যতে ইতি অস-টন্।
পুলশাটক, মোটা কাপড়। বরোহসির্বস্তা ২ বক্সধর। (ধরণি)
বরাসী (ত্রী) মানবাস, মলিনবত্ত। (শক্মালা)

বরাস্ত্ (পুং) > বিষ্ণু। ২ মানভেদ। ৩ পর্বাভভেদ। ৪ মুক্তা। (মেদিনী) ৫ শিক্তমার। ৩ বারাহীকন্দ। (রাজনি৽) ৭ অটাদশ দ্বীপের অন্তর্গত কুক্ত শ্বীপবিশেষ।

"গদ্ধে বিরুশ: সৌম্যো বর্ষাই: কছ এব চ।
কুমুদশ্চ কসেরশ্চ নাগো জ্ঞারকতথা ॥
চক্রেজ্রমলয়া: শৃষ্ধবাদকগভতিয়ান্।
ভাষ্রাকুন্চ কুমারী চ ভত্র বীপা দশাইভি: ॥" (শৃক্রালা)
৮ কুঞ্পিগ্রীর। (বৈশ্বক্রম্বরুণ)

ব্রাহ (অবতার), বিচ্ন তৃতীয় অবতার, ভগবান্ বিচ্নু বরাহ-क्रांत्र व्यवजीर्ग स्टेबा पृथिवीव जिकात करवन। এই व्यवजारतत বিষয় ভাগবতে এইরূপ লিখিত আছে—প্রলরপয়োধিজনে পৃথিবী নিমন্না হইলে আরম্ভূব মন্তু একার নিকট আসিরা স্থান 🛼 প্রার্থনা করেন। তথন ব্রহ্মা নিভান্ত চিন্তাকুল হইয়া ভগবান্ বিষ্ণুর তবে প্রবৃত্ত হল। এমন সমরে ভগবান্ জন্ধার নাসারজ্ হইতে অনুষ্ঠ প্রমাণ একটা বরাহপোত নির্গত হইল, এই বরাহ-পোড নিৰ্মৰ্ভ হইবামাত্ৰই দেখিতে দেখিতে আকাশ প্ৰমাণ বাড়িরা উঠিল, তাহার অল প্রত্যেক পাবাণের ভার অতিদৃঢ় হইল। তখন ব্ৰহ্মাদি দেবগণ ইহাকে ভগৰানের অবতার দ্বির করিরা ত্তব করিতে লাগিলেন। জগৰান্ তাঁহাদের তবে পরিতুট हहेबा श्रुविवीटक **উदा**त्र कत्रिवाद क्क व्यनम्भारदाधिकरन व्यादन-পূর্ব্বক পৃথিবীর অবেষণ করিতে লাগিলেন। পরে রসাতলে যাইরা তথার পৃথিবীকে দেখিতে পাইলেন। তথন তিনি প্রলয়-कारन भवरतम्बू हरेवा गर्सबीवाशात्र ये श्वारक जानमात्र कंटरव ধারণ করিলেন। অনস্তর অক্লেলে নিজ বস্তু বারা পৃথিবীকে ধারণ क्त्रियां क्रगकान मर्था फिनि ब्रमाफ्न स्टेस्फ निर्मफ स्टेरनन। ৰ্লাহদেব পৃথিবীকে উভার করিয়াছেন দেখিয়া ভাঁহাকে দেবগণ



স্তব করিতে লাগিলেন। তংপরে তিনি দৈতারান্ত হিরণাক্ষকে ললমধ্যে বধ করেন। [হিরণাক্ষ দেখ]

(ভাগবত ৩।১৩-২০ অ০)

কালিকাপুরাণে লিখিত আছে যে, গুগবান্ বরাহনেব ধরিত্রীকে উদ্ধার করিয়া পৃথিবীতে যথেচ্ছ বিচরণ করিতে লাগিলেন, ধরা ওাঁহার ভার কিছুতেই সহ্থ করিতে না পারিয়া নহাদেবের শরণাপর হন। তখন মহাদেব বরাহরূপী বিষ্ণুকে বিলয়াছিলেন, দেব! আপনি বে জপ্ত বরাহদেহ ধারণ করিয়াছিলেন, তাহা সম্পন্ন হইয়াছে, এখন ধরা আপনার বহনে অসমর্থা হইয়া বিলাগা হইতেছেন, অতএব আপনি বরাহশরীর ত্যাগ কর্মন। বিশেষতঃ আপনি জলময় প্রদেশে কামিনী পৃথিবীর কামনা পূর্ণ করিয়াছেন। ক্রীধর্মিণী পৃথিবী আপনার তেজে দারুল গর্ভধারণ করিয়াছেন। কেই গর্ভ ছইতে বাহার উৎপত্তি হইবে, সেই পুত্র দেবছেবী অম্বর্জাবাপর হইবে। রক্তম্বলাসক্ষমে তুই আনিইকারক এই কামুক বরাহদেহ ত্যাগ কর্মন।

বরাহদেব মহাদেবের এই বাক্য শুনিয়া তাহাকে বিচ্ছাছিলেন যে, মহাদেব! তোমার বাক্যামুসারে আমি এই বরাহ
দেহ ত্যাগ করিব এবং পুনরায় লোকহিতের জস্ত আশ্চর্য্য
বরাহদেহ ধারণ করিব। বরাহদেব এই কথা বলিয়া সেইস্থানেই
অন্তর্ধিত হইলেন। বরাহদেব অন্তর্ধিত হইলে মহাদেব স্বস্থানে
প্রস্থান করিবেন।

বরাহদেব সেইছান হইতে যাইয়া লোকালোক পর্কতে বরাহকাপিণা মনোরমা পৃথিবীর সহিত রমণ করিতে লাগিলেন।
বরাহক্রপী বিষ্ণু পৃথিবীর সহিত বহুকাল ক্রীড়া করিয়াও তৃথ্যিলাভ করিলেন না। তদনস্তর বরাহদেবের বীথ্যে পৃথিবীর গভে
মহাবললালী প্রবৃত্ত, কনক ও লোর নামে তিনটা পুত্র জারিল।
বরাহদেব এই সকল প্রস্তেশ পরিবৃত হইয়া নানারপ ক্রীড়া
করিতে লাগিলেন। সেই ভারে পৃথিবীর মধ্যদেশ নম্র হইয়া
পড়িল। অনন্তদেব কুর্দ্ধকে আক্রমণ করিয়া পৃথিবী মধ্যদ্বায়ী
বরাহদেবের বহনবাধার ভয়মন্তক ও আত্তিত হইলেন।
এইরপে প্র-পরিবৃত্ত বরাহদেবের ভারে পৃথিবীতে নানাবিধ
উৎপাত হইতে লাগিল, স্থেকের শৃক্ষ সকল ভয়, মানসাদি
সরোবর আবিল ও ক্রক্রম ভয় হইল।

অনন্তর দেবগণ লোকহিতের নিমিত দেবেক ও দেবযোনি সম্হের সহিত মন্ত্রণা করিয়া ভগবান্ বিকুর তাব করিতে লাগিলেন। ভগবান্ দেবগণের তাবে তুট হটয়া বলিলেন, ভোমরা যে তারে ভীত হটয়া আমার নিকট আগমন.করিয়াছ, আমা বারা কি প্রকারে সেই তারের শান্তি হটবে, তাহা শীল করিয়া বল। দেবগণ কহিলেন, বরাহের জ্রীড়া হেতু পৃথিবী দিন দিন শীর্ণা হইডেছেন, লোক সকল সেই উদ্বেগে শান্তিলাভ করিতে পারিতেছে না। শুক অলাবু কলের উপর আঘাত করিলে তাহা বেরূপ ভগ্ন হইয়া বার, বরাহের ক্ষ্রের আঘাতে পৃথিবীও সেই প্রকার বিদীর্ণ হইডেছেন। আপনি স্টিহিতির জন্ম আপনার এই ভয়কর রূপ সংহার করুন।

তথন জনাৰ্দ্দন দেবগণের এই কথা গুনিরা ব্রহ্মা ও মহাদেবকে বলিলেন, জগতের ছঃথের কারণশ্বরূপ এই বরাহদেহ আমি ত্যাগ করিব, কিন্তু স্থাসক্ত এই দেহকে স্বেচ্ছাক্রমে ত্যাগ করিতে দমর্থ হইব না। অতএব ব্রহ্মন্! তুমি মহাদেবকে নিজ তেজে পুষ্ট কর, দেবগণ মহাদেবকেও আপ্যায়িত করুন। রজস্বলার সঙ্গমে এবং ব্রাহ্মণাদির বধহেতু পাপপূর্ণ প্রাণকে আমি স্বচ্ছন্দে ত্যাগ করিব। তথন ভগবান্ বিষ্ণু দেবগণের আদেশে বরাহদেহ হইতে স্বকীয় তেজ আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। তেজ आकृष्टे रुरेल वताहरमर मचरीन रुरेल प्रथिया मर्शामव प्रविश्वात्र সহিত তেজোহীন বরাহদেবের সমীপে উপস্থিত হইলেন। ত্রন্ধাদি দেবগণ মহাদেবের তেজোবিস্তারের নিমিত্ত পশ্চাৎ পশ্চাৎ षाशमन कत्रित्नन এवः निष्क निष्क एडक महास्तरतत्र स्तरह मधात করায় তিনি অত্যন্ত বলবান্ হইয়া উঠিলেন। তদনন্তর মহাদেব উর্দ্ধ এবং অধোদেশে অষ্টচরণসমন্বিত ভরানক শরভরূপ ধারণ করিলেন। তথন বরাহ ও শরভে তুমুল যুদ্ধ আরম্ভ হটল। পরে শরভরূপী মহাদেব কর্তৃক বরাহদেব যুদ্ধে নিহত এবং তৎপরে তাহার মহাবলশালী পুত্র পৌত্রগণও শরভের দারুণ আঘাতে বিনষ্ট হন।

এইরূপ কৌশলে বরাহদেব নিহত হইলে তাহার দেহ হইতে
যক্ত সকল প্রাহর্ত হইল। শরভকর্ত্ব বরাহদেহ বিদারিত
হইলে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও প্রমণগণের সহিত মহাদেব জল হইতে সেই
দেহকে গ্রহণ করিয়া আকাশে গমন করিলেন এবং বিষ্ণু স্থলন্দনচক্র ছারা সেই দেহ থও খও করিয়া কাটিয়া ফেলিলেন। এই
বরাহদেবের ক্রম্ম ও নাসিকাদেশের সন্ধিভাগ জ্যোতিট্রোম
নামক যক্তরূপে পরিণত হইল। কপোলদেশের উচ্চস্থান হইতে
কর্ণমূলের মধান্থিত সন্ধিভাগ বক্সিটোমযক্ত, চকু ও ক্রম্বরের
সন্ধিভাগ পৌনর্ভবস্তোম যক্ত, জিহুবামুলীয় সন্ধিভাগ রুদ্ধভোম
এবং বৃহৎজ্যাম, জিহুবাদেশের অধোভাগ হইতে অভিরাত্র এবং
বৈরাজ যক্ত হইল। আধ্রেমধ, মহামেধ এবং নরমেধ প্রভৃতি
প্রাণিহিংসাকর যে সকল যক্ত আছে, হিংসাপ্রেম্বর্জক সেই সকল
যক্ত চরণসন্ধি হইতে; রাজস্ম, বাজপের এবং গ্রহ্যক্ত সকল
পৃষ্ঠসন্ধি হইতে; প্রতিষ্ঠা, উৎসর্গ, দান, শ্রদ্ধা এবং গাবিত্রী প্রভৃতি
যক্ত ব্রদ্বর্সন্ধি হইতে; উপনরনাদি সংজ্যাক যক্ত এবং প্রার্শিতর-

বিধারক যজ্ঞ সকল মেচুসদ্ধি হইতে; রাক্ষসমঞ্জ, সর্পয়ক্ত প্রাকৃতি বজ্ঞ প্রকার অভিচার বজ্ঞ গোমেধ এবং বৃক্ষজাপ প্রাকৃতি যজ্ঞ ক্র হইতে; মারেটি, পরমেটি, গীলাতি, ভোগজ্ঞ এবং অগ্নিরোম যজ্ঞ লাজুলসদ্ধি হইতে; তীর্ধপ্ররোগ, মাস, সক্র্বণ, আর্ক এবং আথর্কাণ নামক যক্ত নাড়ীসদ্ধি হইতে; প্রচোৎকর্ব, ক্ষেত্রযজ্ঞ, পঞ্চমার্গ, লিক্ষসংস্থান এবং হেরম্বযক্ত জালুদেশ হইতে উৎপর হইল। এইরূপে বরাহের দেহ হইতে অষ্টাধিক সহস্র যজ্ঞ উৎপন্ন হইরাছিল। অন্থাপিও এই সকল যক্ত প্রজা সকলের উৎপত্তি সাধন করিতেতে।

বরাহের শ্রোত্র হইতে ক্রক্, নাসিকা হইতে ক্রব, গ্রীবা হইতে প্রাক্তবংশ (হোমগৃহের পূর্বভাগস্থ গৃহ), কর্ণরজ্ঞ হইতে ইলাপ্র্র্ড, দক্ষণ ও বামপাদ হইতে অধ্বর্ম ও হোতা, মন্তিক হইতে পুরোডাশ,মধ্যদেশ হইতে অধ্বর্ম ও হোতা, মন্তিক হইতে পুরোডাশ,মধ্যদেশ হইতে বজ্ঞবেদী, এবং মেচু হইতে বজ্ঞবুত্ত, পৃষ্ঠদেশ হইতে বজ্ঞগৃহ এবং হুৎপদ্ম হইতে বজ্ঞের উৎপত্তি হইল। বরাহের আত্মা বজ্ঞপুরুষ হইলেন, তাহার কক্ষা হইতে মূঞ্জার উৎপত্তি হইল। এইরূপে বরাহের দেহ হইতে ভাও হবি: প্রভৃতি বৃজ্ঞীয় সকল প্রকার দ্রবাই উৎপন্ন হইল। বজ্ঞবিপ সর্বজ্ঞগৎ আপ্যান্তিত ক্রিবার নিমিত্ত বরাহদেবের দেহ বজ্ঞবণে পরিণত হইল।

ত্রন্ধা, বিষ্ণুও মহেশ্বর এইরূপে যজ্ঞের কৃষ্টি করিরা বরাহদেবের স্থর্ত্ত, কনক ও ঘোর নামক মৃত পুত্রদিগের নিকট
গমন করিয়া স্থ্তাদির দেহত্রমকে ম্থবায় সঞ্চারিত করিলে
সেই দেহ হইতে দক্ষিণাথির উৎপত্তি হইল। কেশব কনকের
শরীর ম্থবায় দারা পূর্ণ করিলে সেই দেহ হইতে গার্হপতা অগ্নি,
ও মহাদেব ঘোরের দেহ ম্থপবনে পরিপূর্ণ করিলে তাহা হইতে
আহবনীয় অগ্নির উৎপত্তি হইল। এইরূপে বরাহদেব হইতে
যক্ত ও যজ্ঞীয় দ্রবা সকল এবং বরাহপুত্র হইতে গজ্ঞীয়
অগ্নির উৎপত্তি হইল। (কালিকাপুণ ১৯—২২ অণ)

বরাহমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করিতে হইলে তাহার সক্ষণাদির বিষয় হরিভক্তিবিলাসে এইরূপ লিখিত আছে—বরাহমূর্তির মুণের বিতার অষ্টক্পা, কর্ণ থিগোলক, হরুদেশ সপ্তাঙ্গুল, কর্মনী ছি-অঙ্গুল, বছন সপ্তাঙ্গুল, দশনদ্বর সার্দ্ধ এককলা, নাসিকাবিবর তিন্বর, নেত্রদ্বর ঘবহীন, মুখ ঈবদান্ত-বিরাজিত, কর্ণবৃগল রদ্ধু-দ্ববিশিষ্ট সম ও আয়ত হইবে। কর্পের মধ্যভাগ চারিকলা, এবং উচ্চতা চুইকলা হইবে। ক্রীবাদেশ অষ্টাঙ্গুল, উচ্চতা নেত্র-পরিমাণ, অবশিষ্ট অঙ্গ সকল নৃসিংহ দেবের তার হইবে। শেষ নাগ নৃ-বরাহ দেবের চারণ করিরা রহিয়াছেন। বরাহ বার বার্মনাকে ধারণ করিরা অবস্থিত আছেন। ইহার বারতাগে শৃশ্ধ ও পল্প, বক্ষিণভাগে গলা ও চক্র। এইরূপ বরাহ-বারতাগে শৃশ্ধ ও পল্প, বক্ষিণভাগে গলা ও চক্র। এইরূপ বরাহ-

দেবের মূর্ব্তি প্রতিষ্ঠা করিলে ভববন্ধন দূর হয় এবং ইহলোকে নানা ক্লথ সৌভাগ্য হইয়া থাকে।

"বক্তুং কলাষ্টকারামং শ্রোত্রমন্ত বিগোলকং।

হন্ সপ্তাঙ্গুলে তক্ত স্কনী বাঙ্গুনে মতে ॥

সপ্তাঙ্গুলং মুধং গ্রোক্তং রন্দৌ সার্ছকলো বিক্রা।

নাসারব্যুং ভবেরেত্রং যবহীনেহক্ষিণী মতে ॥

কিঞ্চিবক্তে স্নিতে প্রোক্তে বিগোলকসমায়তে।

চত্ত্রলং কর্ণমধাং তলজেন তহচ্ছিতং।

বস্বস্থলা ভবেন্ত্রীবা মেত্রকং চোল্লভা তু সা।

শেবং নৃসিংহবৎ কার্যাং বরাহক তু বিপ্রহম্ ॥

শেবাহিবিশ্বতং পাদং বাহনা ধারমন্ ধরাং।

শব্যাং বামে তথা পল্লং গলাচক্রে তু দক্ষিণে ॥

এবং নরবরাহক ক্ষরা বং শ্বাপরেররঃ।

ভবোদ্ধিসমুভারং রাজ্য হতক টকং ॥"(হরিড জিবি" ১৮বি')
বরাহ (পুং) বরান্ আহন্তি বর-হন-ড। পণ্ডবিশেব, চলিত
বরা, প্র্যার — শুকর, ঘৃষ্টি, কোল, পোত্রী, কিরি, কিটি, দংট্রী,
ঘোনী, স্তজ্জরোমা, ক্রোড, ভূদার, কির, মুস্তাদ, মুখলালুল,
ছূলনাসিক, দন্তাহুধ, বক্রবন্তু, দীর্ঘতর, আখনিক, ভূকিং,
বহুস্ত্র (শক্রম্নাও) ইহার মাংসপ্তণ—বৃত্ত, বাত্ম, বলবর্জন,
বহুস্ত্রকারক এবং ক্লক্ষ। বস্তবরাহ্মাংসপ্তণ—মেন, বল ও
বীর্যবর্জক। (রাজনিও)

ইহার মাংস বিষ্ণুকে নিবেদন করিতে নাই। শান্তে পঞ্চনথ জন্তর মাংস ভক্ষণ বিহিত আছে, বরাহ পঞ্চনপীর মধ্যে হইলেও প্রামাবরাহ ভোজন নিবিদ্ধ। বরাহমাংস ভোজন করিয়াও বিষ্ণুর পূলা করিতে নাই, বদি কেছ বরাহমাংস ভক্ষণ করে, তবে তাহার অধাগতি হইরা থাকে। বরাহভোজী বরাহরূপে জন্ম-গ্রহণ করিরা দশ বংসর বনে বিচরণ করে, পরে ব্যাধ হইয়া ৭৭ বংসর, রুমিরূপে ৭ বংসর, মৃষিকরূপে ১৪ বংসর, রাক্ষস-রূপে ১৯ বংসর, শল্লকরূপে ৮ বংসর, পরে আবার ব্যাধরূপে ৩০ বংসর জন্মগ্রহণ করিয়া থাকে। তৎপরে বরাহ্মাংস ভোজনের পাণ বিনই হয়।

অজ্ঞানতঃ বরাহমাংস ভোজন করিলে ভাষার প্রায়শিস্ত করিতে হয়, ঐ প্রায়শিস্ত য়ারা পাপ ধ্বংস হইয়া থাকে। প্রায়শিস্তের বিষয় এইয়প লিখিত আছে। প্রথম ৫ দিন গোময় ভোজন, পরে ৭ দিন তপুলকপভোজন, তৎপরে ৭ দিন কেবল জলপান, তদনস্তর ৭ দিন অক্লারলবণভোজন, তিন দিন শকু-ভোজন, ৭ দিন তিলভোজন, ৭ দিন পারাপভোজন, তৎপরে ৭ দিন ক্রমণান, এইয়পে ৪৯ দিন আহার সংযত ও জিতেক্রিয় হইয়া অবহান করিলে এই পাপ বিশ্রিত হয়। এইয়প

শ্রোরশ্চিত্ত করির। পাশ মই হইলে তথম আবার বিস্কৃপুলার অধিকার লয়ে। বিস্কৃতজ্ঞের পক্ষে বরাহ্যাংস ভোলন বিশেব নিবিত্ত। •

ৰম্ভবরাহ-মাংসভোজন প্রাথাবিতে বিহিত আছে। প্রাডে বন্ধবরাহমাংস বারা প্রাথাব ভোজন করাম বাইতে পাতে, তাহাতে পাপ হর না'। কিছ বিষ্ণুপাসক কথমও এই মাংস ভোজন করিবেন না।

"বছৰরাহ্মাংসং প্রান্ধানো বিহিতং। বথা অপ্পন্তীত্যসূত্ত্ত্বী হারীতঃ। মহারণ্যবাসিদশ্চ বরাহাংডাবেডি। এবঞ্চ বিবদত্তে অপ্রাম্যপুকরাংশ্রেডি, বশিক্তোক্তং বেভাবেডরা ক্সবস্থিতং। ক্রডলক্ত—প্রান্ধে নির্বাদিন বৃক্তরেডি, বিক্পুপাসক্ত সর্বাধানিবেধঃ। বথা বারাহে ভগৰবাকাং—

"ভূক্ । বরাহমাংসম্ভ বন্ধ মানুশসপতি ।
বরাহো দশ বর্বাদি ভূমা বৈ চরতো বনে । (একাদশীতন্ত)
"ঐপরৌরম্ববারাহ-দশৈম গৈসৈর্বধাক্রমং ।
মানবৃহাভিভূপাতি দত্তেনেই পিতামহাঃ ॥"

(প্রান্ধতবধৃত বাক্সবর)

এই শ্রেণীর ভয়পারী পশুর্তানিক পাশ্চাত্য প্রাণিতত্ববিদ্যণ

Suidas নামক পশুর্কাতির অন্তর্ভুক্ত করিরাহেন। বস্তু ও

"জুজু। বারাহবাসের বে। বৈ বার্ণসর্গতি।
পতনং তক্ত বজ্ঞানি তথা তবতি ফুলরি।
বরাহে। লগববঁগি ভূজা বৈ চরতে বনে।
ব্যাধাভূজা বহাজাপে সলাং সপ্ত চ সপ্ততি:।
কুমিজুজা সলাং সপ্ত তিওঁতে তক্ত পূজনে।
অবোটেচর্দ্ধ বিবাহ ভূজা বর্বাগাল চকুর্দন ।
বাক্তলাইবর্বাণি বাজুগালক বাছতে।
পরকল্যাইবর্বাণি বারতে তবনে বহঁ।
ব্যাত্রাপ্তিবর্বাণি বারতে গিণিতাশনং।
বব সংসারিভাল্ল। বারাবানিবতক্ষক: ।

ৰূপ্ত প্ৰাৰশ্চিত্তঃ

ভরত্তি বানবা বেল ভির্জ্ সংসারসাগরাং। বোষকের বিনং পঞ্চ কণাহারেল সপ্ত বৈ ।
পালীয়ত্ত ভতো ভূজুণ ভিটেখ সপ্তাদিনং ভঙঃ।
অক্ষানকলং সপ্ত পজ্জুক ভখা এবঃ ।
ভিন্তভানা বিনান্ সপ্ত সপ্ত পানানকককঃ।
পারাভূজুণ বিনং সপ্ত কাররেক্ষ্ডিনাত্তনঃ ।
বিনাক্তেকোনপকালভারেক কুডবিক্তাঃ ।
বিনাক্তেকোনপকালভারেক কুডবিক্তাঃ ।
বাযুক্তঃ সর্বাপাশেভাঃ সসংক্ষো বিগতকরঃ।
কুডা ভু নবকর্মানি রব লেভিন্ত বক্তাতি ।"

(न्यांक्णू - यशास्त्रारमञ्जनशासन्तिक)

পালিততেবে এই বরাহ আভি ছুইভাগে বিভক্ত—বন-বরাহ (Sus Indicus) ইংরাজীতে প্ল (wild bear) ও ত্রী (swine) ভেবে গৃহীত ছুইরাছে। পুশ্বরলাতি এই শ্রেণীর অন্তর্গত, কিন্তু অপেকারত সুমাকার জীব। সাধারণতঃ বজ্
বা পালিত ত্রীবরাহগুলিই শুকর (pig) নামে অভিহিত। এই শ্রেণীর অনেক পুংবরাহেরও বজোন্গম হর না। ইহারা চতুপান, চারি পায় চারিটী খুর আছে। বস্তু পং বরাহগুলির ওঞ্জান্ত দিয়া গলমন্ত সন্শ, কিন্তু অপেকারত অনেক ক্ষুত্র, দত্ত নির্গম হইরা থাকে। দত্তবিহীন বরাহগুলিই প্রধানতঃ শৃকরপদবাচা।

ভারতের নানাম্বানে এবং ব্রোপে যে সকল বরাহ দেখা যায়. তাহাদের অপেকা ভারতীর বীপপুঞ্জ শুকরগুলি অনেক কৃদ্র। বস্তবরাহগুলি প্রায়ই দিবাভাগে বনাস্তরাল প্রদেশে লুকায়িত থাকে এক রজনীর জন্ধকারে জগৎ ভ্রমনারত হইয়া আদিলে তাহারা আপন আপন আশ্ররকেন্ত্র পরিত্যাপ করিয়া বহির্গত হয় এবং নিকটবন্তী পল্লীর শক্তপূর্ণ ক্ষেত্রে প্রবেশ করিয়া ইচ্ছামত শশু ছারা উদর পুরণ করে। বরাহ ক্ষেত্রে প্রবেশ করিলে সেই মাট বেন চসিয়া কেলে, তাহাতে বছসংখ্যক চারা গাছ নষ্ট হইয়া বাম্ব এবং প্রচুর শক্ত উৎপাদনে ব্যাঘাত জন্মে। স্থানে হানে বরাহেরা মৃত্তিকা খনন করিয়া মানকচু, খামজালু প্রভৃতি कम উত্তোলনপূর্বক ভক্রণ করে। বেখানে এই সকল উদ্ভিদাধির অভাব ঘটে এবং তাহারা ক্ষেত্রের কন্দমুলাদি আহার ৰবিতে পান্ন না, তথান্ন ভাহারা মৃত উট্টাদি পশুমাংসও উদরসাৎ করে। ক্রধায় নিতান্ত পীড়িত হইলে তাহারা নিকটবন্তী গ্রামে বাইরা গ্রামবাসীর নিক্ষিপ্ত আবর্জনা হইতে স্বীর আহার্য্য বাছিয়া থার। মানববিঠাতেও তাহাদের বিশক্ষণ কৃচি দেখা যার।

এসিয়ার নানাছলে বে ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের বন্ধবর্মাহ দেখিতে পাওরা বার, প্রাণিতত্ববিদ্যাণ ভাষাদের মধ্যে ৭টা শাখা বিভাগ করিয়াছেন। তাঁহারা আরও বলেন বে, ভারতীর বন্ধবরাহের একটি শাখা বাহা অধুনা হুরোপ ও উত্তর আক্রিকার বিভূত হইরা পড়িয়াছে এবং হিলুস্থানের মধ্যে বাহার অন্ধর্মণ বরাহআভি বিভ্নান আছে, ভারা বুরোলীর সমাজে চাইনীল ব্রীড'
(Chinese breed) নামে ক্ষিড। বিভিন্ন শাখার্জ হইলেও
এই শ্করলাভি ক্ষেত্রের ভিন্ন ভিন্ন নামে পরিচিত আছে।
নিমে বিভিন্ন ক্ষেত্র ভিন্ন ভিন্ন আভিগত পার্থক্য নির্দেশ করা সেল—

বিজ্ঞিনেশীর নাল্য—আরব ও পারত—আন্জির, থানজর; সংস্কৃত ও বালালা—বরাহ; কণাড়ি—হতি, নিজা, জেবাড়ি, বিনেনার—Syna; অক্ষাক Varhon, swijn; করানী— Verrat, Cochon, Pourceau; জর্মাণ Eber, Schwein; গোঁড়-পদি; গ্রীক — Choiros, হিন্দি-শ্রার, জললীশোর, ইতালী ও পর্ত্ত গাল-Verro, Porco; লাটন Sus Porcus, মলর—ববি, ববি-আলস, ববি উটান; মহারাষ্ট্র ছকর, কয-Svinzu, স্পেন Verraco, Puerco, স্ইডেন Svin; তেলগু আদাবি-কোকু, পণ্ডি; ওয়েলস—Hweh Hweh, হিক্র—হাজির্ছজির; শিলাপুর—বলুর।

এসিয়ার নানাস্থানে এবং ভারত সমীপবর্ত্তী স্থানে যে বিভিন্ন বরাহশ্রেণী দেখা যায় তাহা সাধারণতঃ ৭ ভাগে বিভক্ত, ঐ ণটি শাখার সংক্ষিপ্ত বিবরণ নিমে উদ্ধ ত হইল:—

Sus Indicus বা S. serofa ভারতীয় সাধারণ বন্যবরাহ—

কর্মণীর বহুবরাহ হইতে এই জাতির অনেক পার্থকা, কিন্তু তরিবন্ধন ইহাদিগকে একটি স্বতন্ত্র শাথাভূক্ত করা যায় না।
ভারতীয় বরাহের মন্তক বৃহৎ ও কোণাকার এবং কপালাস্থিতল

চেপ্টা, কিন্তু যুরোপায় বরাহগুলির উহা কুজপৃষ্ঠবং। ভারতীয়
বরাহের কাণ ছোট ও ছুঁচাল, পক্ষান্তরে পাশ্চাত্য বরাহের
বড় ও লোটান। ভারতীয় বরাহ দৃঢ়কায় এবং জ্বতগমনশীল; জ্ম্মণদেশীয় বরাহ দৃঢ়কায় হইলেও সুলোদর।
এই তুই দেশের বন্য ছাড়া, পালিত বরাহের মধ্যেও নানাবিষয়ে
এইরূপ পার্থকা দেখা যায়।

ভারতে উক্ত শ্রেণীর বরাহই প্রধান। বাদ্ধালার নানা স্থানে এই শ্রেণীর বরাহ দেখিতে পাওয়া যায়। আহারাম্বেষণে বন হইতে গ্রামে বরাহ প্রবেশ করিলে গ্রামবাসিগণ দস্তাগাতে আহত হইবার ভয়ে সশক্ষিত হইয়া পড়ে এবং বহু লোক একত্র হইয়া বরাহ মারিতে উপ্পত হয়। দেশীয় লোকে বনমালাচ্ছাদিত ভূমে যাইয়া কুকুব সাহাযেয় বরাহ শীকার করে; কিন্তু য়ৢরোপীয় শীকারীঝা প্রধানতঃ অস্থপুর্চ্চ আরোহণপূর্কক বড়সা হস্তে শীকারের পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রধাবিত হয়, ইহাকে ইংরাজী ভাষায় Pig-sticking বলে।

প্রাণিতত্ববিদ্গণের ধারণা এই যে, এই শ্রেণীর বরাহের
চীনদেশ জাত শাবকাদি হইতে যুরোপের ও উত্তর-আফ্রিকার
শ্করকুলের উৎপত্তি। উত্তরপশ্চিম ভারতে এই শ্রেণীর
শ্করকুলের উৎপত্তি। উত্তরপশ্চিম ভারতে এই শ্রেণীর
শ্করকুলের উৎপত্তি। উত্তরপশ্চিম ভারতে এই শ্রেণীর
শ্করক্তিন কথনও ৩৬ ইঞ্চের উর্জ হয় না। কিন্তু বালাগায়
সাধারণত: উহারা ৪৪ ইঞ্চ পর্যান্ত বড় হয় । রোমরাজ্যে যে
সকল শ্কর দেখা যায়, তাহারা প্রধানত: চীন, কোচীন-চীন
ও স্থামরাজ্য-জাত শাবকাদি হইতে উৎপত্র; আন্দাসুসিয়া,
হালেরিয়া, তুক্ক, স্ইজল ও এবং দক্ষিণপূর্ব মুয়োপে বিশ্বমান
শক্ষরতিন এই শাধারই অন্তর্ক।

বাজালার অপর এক শ্রেণীর শৃকর (S. Bengalensis)

আছে। পূর্বোক্ত শ্রেণীর সহিত এই শ্রেণীর শারী 🕮 গঠন विवास विराग भार्थका तम्था वात्र। ज्यानमामान बीरभन मुकत-গুলি S. Andamensis এবং ম্বার-প্রারোদীপ ও তং সমীপবর্ত্তী স্থান-জাত শৃকরবংশ S. Malayensis নামে গ্যাত। यवकीरशत हात्न हात्न S. verrucosus (अभीत मुकत चारह। উহাদের গণ্ডবরের পার্বত্ব মাংস্পিণ্ড আপেক্ষাক্রত স্থল ও দীর্ঘ, মৃথাক্ততি দেখিলেই ভয়ের উল্লেক হয়; কিন্তু অপ্রাপ্র বরাহশোণীর অপেকা ইহারা অভাবতঃই জীর। গিংহল বোর্ণিও প্রভৃতি দীপের S. barbatus শ্রেণীর শৃকর S. Indicus শ্রেণী হইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন। বোর্ণিও শীপজাত বরাহের করোটার সাদৃশ্য এবং অস্তায়্য অল প্রভালের পার্থকা দেখিয়া মি: ব্লাইথ S. Zeylanensia নামে আরও একটা শাখার উল্লেখ করিয়াছেন। নিউগিনি**দীপজা**ত বরাহ S. Papuensis নামে খ্যাত। উত্তর-ভারতের শাল-বনে এক প্রকার কুদ্রকার শুকর (Porcula aylvania) আছে, দেশীয় লোকে উহাদিগকে ছোট পুষর বা সানো বেনেল বলে। উহারা বনের নিবিভতম দেশে দলবদ্ধ হইয়া বাস করে। উচাদের পুং শুকরগুলি প্রধানত: দলরকা করিরা থাকে। Guineapig নামে আরও একটা অভিকুদ্রে শুকর জাভি দেখিতে পাওয়া যায়। উহার। সাধারণতঃ মৃত্তিকাগর্ভে বা তৃণমণ্ডিত ক্ষেত্রে বাস করে এবং তৃণপল্লবাদি দ্বারা জীবন ধারণ করিয়া থাকে।

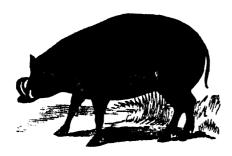
জাপান ও ফর্মোজা নীপে Sus leucomystax নামে আরও একশ্রেণীর শুকর দেখিতে পাওয়া যায়। এতত্তির জাপানে আরও এক প্রকার বিক্ততম্থ ও দীর্থ-শৃক্ষবিশিষ্ট শৃকর আছে। প্রাণিত ইন্বিদ্যাণ উহাদিগকে S. pliciceps শাথাভূক করিয়াছেন। উহাদের গাত্রচর্মা লম্মান গভীর ও কুঞ্জিত। ইংরাজীতে ইহাদিগকে musked pig বলে। আফ্রিকায়ও Musked Boarএর অভাব নাই। যুরোপজাত অপরাপর বয়াহের অপেক্ষা ইহাদের গণ্ডান্থি প্রবর্জিত, লৌবন-দন্ত-স্থানীর অন্থি অপেক্ষাকৃত বিবর্জিত ও উন্নত; এই কারণে ইহাদের উভয় দিকের হন্থদেশ (maxillary bone) ও দন্তম্পান্থির মধ্যে একটা থাল (Canal) হইয়া পড়িয়াছে। তজ্জ্জ উহার শেবভাগে মাংসের শুটা (Tubercle) সমুৎপাদিত দেখা যায়। পার্ব গণ্ডম্বর ক্ষীত এবং নাসিকান্থি সমূহত না হওয়ার ইহাদের মুথ অতি কদাকার ও শীতিপ্রাদ হইয়াছে।

প্রাণিতব্বিদ্ F. Cuvier বিশেষ পর্যবেক্ষণ দারা Babirussa নামে আর একটা বরাহত্রেণীর উল্লেখ করিরাছেন।
তিনি মলর ভাষার 'ববি' শব্দে বরাহ ও 'রুসা' শব্দে ছরিণ গ্রহণ
করিরা এই প্রেণীকে একটা মাঝামাঝি নাম দিরাছেন।

ভাষার Sus scrois হইছে এই শ্রেণীর ক্ষেক্ বিবরে পার্থকা দেখা যার। নিরে উক্ত শ্রেণীয়রের বন্ধবারা নিথিত হইন:—

S. serofa : — কর্ডক উ, শৌধন ; —; ; চর্মণ ; —; = 88টী, কিছ Babirussa পক্ষে — কর্ডক 🚦 ; শৌধন 🚉 ; চর্মণ ; —; = ৩২টা।

মালাকারীপের কোন কোন জংশে, বৌরুরীপে এবং সিলেবিস্ ও টার্পেট রীপে B. alfurus শাখার বরাহ দেখা বার।
ইহালের দেহ ছুলকার, কিন্তু পদ চতুইর অপেক্ষাকৃত সরু। গাত্র
প্রার লোমপৃত্র ও গ্লরবর্ণ। ইহালের উপরের রুক্তক্তাকী
মুখচর্শের উপরে উঠিরা নাসাক্ষকাহির উপর রুক্তাকারে
নত হইরা পুনরায় মুখদেশ স্পার্ক করিরাছে। উতার নিয়ে
আরও গুইটি কুল্লাকার দক্ত আছে। ত্রীবরাহদিগের দক্ত
অপেক্ষাকৃত কুল, কোন কোনটার আদৌ নাই। নিয়ে
এই ফাতীর এক্ট পুং-বরাছের চিত্র প্রদেশ্ভ ছবল—

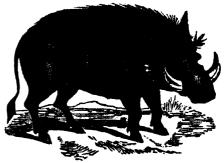


ভারতীয় বাপ-পুলবাসীদিপের বিশাস, এই বরাহশ্রেণী কুড়াকৃতি হরিণ ও বরাহের বোগে উৎপন্ন। তাহারা এবং বীপবাসী
বৈনেশিক বণিক্রুল সাক্ষাদে ইহার মাংস ভক্ষণ করিরা থাকে।
উহা অতি প্রবাহ। ইহারা কুড়াকার দক্তবারা শক্রুকে আক্রমণপূর্বক আহত করিতে পারে বটে, কিন্তু ভারতীয় সদস্ত বরাহের
ভার ততনুর চ্পান্ত নহে। ইহাদের দীর্ঘাকার দক্তবি বিশেষ
কার্যাকারী নহে। যথন ভাহারা স্বেগে নিবিড় বনে প্রবেশ
করে, তথন ঐ দক্ত কেবল লতা গুলা সরাইরা ভাহাদের চক্ষুকে
রক্ষা করে মাত্র।

Phacochorus ও Æliani P. Æthiopicus নামে ক্ষমণ তীবলম্ব ও মুল্যুখী চুই প্রকাশ বরাব দেখা বার; তরাধ্যে প্রথমোক্ত শ্রেণী অংশকা শেবোক্ত শ্রেণী বীবাকার ও জীবলম্ব। ইংরাজীতে এই শ্রেণিকে Wart-hog কলে। ইংবাদের দত্ত-পঞ্জি বভয়, তবে ওঠাবাক্তরে হুইটা করিবা বে শীর্থ দত্ত আছে, তাহা পার্বভাগে বিভূত। ইংবাদের ক্ষান্তের কর্মান্তরে বিল্ত। ইংবাদের ক্ষান্তরে কর্মান্তরে কর্মান্তরে কর্মান্তরে কর্মান্তরে ক্ষান্ত হয়েই জ্যোক্ত শ্রেণিক শ্রেণিক কর্মান্তর ক্ষান্তর ক্য

ও সরণ। দীর্ঘনন্ত সরণ ও জীবং উপরমুখী, কিন্তু জ্ঞাঞ্জ সকল প্রকার বরাহের অপেকা বৃহৎ ও মোটা। গওবর মাংসল এবং ছল পিওবং (Wart), পুক্ত কুত্র এবং পদবর ভারতীর বস্তু-বরাহের জার দৃঢ়কার। পৃষ্ঠদেশ শক্ত ও দীর্ঘ লোমে জাফাদিত। ইহাদের দক্তধারা—

কর্জক ৰ বা - পৌবন ২-২ চর্কণ ত-ত - ও বা ২৪।
কুভিরার বলেন, কেপরাজা (Cape Colony) বে ওয়াট
হগ্ দেখা বার, তাহাদের উপর ও নির হলুতে ৩টা করিরা চর্কণদক্ত আছে; কিন্তু P. Æliani শাখার উপরের চর্কণ দক্ত হটা।
ইহা ভিন্ন P. Æliani ও Cape Wart hogo অভ্যান্ত বিবরে
অনেক প্রভেদ আছে। নিরে আফ্রিকার সুলমুখ বরাহের
(P. Æliani) চিত্র প্রদত্ত হইল—



দক্ষিণ আমেরিকার আর্কান্সাস্ ইইতে ব্রেজিল পর্যন্ত বিত্বত ভূজাগে পুছবিহীন এক শ্রেণীর কুলাকার পুকর (Dicotyles) দেখিতে পাওরা বার। উহাদের মধ্যে যে খলির গলদেশে সাদা নাগ আছে, সেগুলি D. torquatus এবং বেগুলির ওঠপ্রাস্ত খেত বর্ণবিশিষ্ট, সেগুলি D. labiatus নামে খ্যাত। ইংরাজিতে প্রথমাক্ত শ্রেণীর পণ্ডগুলি the Coloured Peccary এবং শেষোক্ত শ্রেণীর পণ্ডগুলি the lipped Peccary বলিরা পরিচিত। মেরিকো এবং ওরেই ইপ্রিরা বীগপ্রে বে পুকর-শ্রেণী দেখা বার, তাহা প্রথমোক্ত শ্রেণীর অন্তর্ভুক্ত। ইহারা জনেক বিবরে ভারতীয় Sus শ্রেণীর অন্তর্ভুক্ত। ইহারা জনেক বিবরে ভারতীয় Sus শ্রেণীর অন্তর্ভুক, কেবলমাত্র পদতল, বন্ধ ও শারীরিক গঠনে সামান্ত প্রকেক আছে। ইহানের করজাছি (Metacarpus) ও প্রক্রাছি (Metacarpus)

নৱগঙ্জি—কর্ত্তক হু, পৌৰন <u>; ;</u>, চর্মণ <u>১—১ — ১৮</u> এই শ্রেণীর পণ্ডর পাছার (lains) উপরে একটা সহিত্র প্রছি আছে, তাহা হইতে নির্ভই এক প্রকার প্রক্রমর রগ নির্গত হইরা থাকে।

D. torquatus, 9 D. Inbintus भाषात्र मुक्तता अक्ज

क्रमन्द इहेता निव्यय करता। कथन कथन अक अकी मार्ग সহস্রাধিক বরাহও বেখা বার। সক্ষিত সেনাগলের ভার ভাহারা অনুস বিভূত ছান ব্যাপিরা গমন করিতে থাকে এবং এক বা ভভোধিক বরাহ ভাহাদের নেভা হইরা অপ্রস্তাগে অগ্রসর হয়। যদি সমুখে তাহারা নদী পার, ভাহা হইলে ভীরে আসিয়াই ভাহারা থামিরা পড়ে। অতঃপর কিছুক্ত যেন চিন্তা করিরা পরে একে একে সকলেই নদীবক্ষে পদ্ধপ্রদান-পূর্বক নদীসন্তরণ করিয়া অপর পারে উত্তীর্ণ হর এবং পুনরার গস্তবাপৰে অগ্ৰসর হইতে থাকে। পথিমধ্যে যদি শক্তকেতাদি নিপতিত হয়, তাহা হইলে তাহারা সমূলে ক্ষেত্রছাত শভাদি নষ্ট করিয়া ভূত্থামীকে কতিগ্রন্ত করে। আর যদি পথে কোন অস্বাভাবিক দুক্ত দেখিয়া ভাহারা ভীতচ্কিত হর, তাহা হইলে তাহারা বেশ ধীরতার সহিত ঐ বিসদৃশ বস্তুটী দর্শনের জন্ত ভরবিহ্বলভাবে দত্ত ক্তৃমড়ি করিরা উঠে এবং ভরের কোন কারণ না বেখিলে ভাহারা অবিলবে সে ছানত্যাগ করিয়া চলিয়া যার। আর যদি কোন শীকারী ঐ সমরে তাহাদের সমুধে আসিয়া উপস্থিত হয়, ভাহা হইলে ভাহারা ভাহাকে সদলে ছেৰিয়া দীৰ্ঘনত ছাত্ৰা ক্ষতবিক্ষত বা নিহত করিয়া ফেলে। D. labiatus সাধারণতঃ ৩ হইতে আ- ফিট লম্বা ও প্রায় ১০০ পাউও ওজনের হয়, কিন্ত D. torquatus গুলি ৩ ফুটের বেশী লখা ও ৫০ পাউওের অধিক ভারি হর না। রিজেন্ট পার্কের রাজকীয় পশুরক্ষিণা উদ্ধানে Choiropotamus Africanus मात्म चात्र এक প্রকার বরাহ রাখা হইয়াছে।

বহু প্রাচীন স্থাল হইতে জগতে বরাইের নিদর্শন পাওরা গিরাছে। হিন্দুশাস্ত্রে বিষ্ণুর বরাহমূর্ত্তি ধারণপূর্কক ধরার ভূতীর অবতাররূপ প্রকটন ও ধরিত্রীকে উদ্ধার কথা পূর্কেই বর্ণিত হইরাছে। এই আখ্যারিকাকে রূপক বলিয়া বরাহকে জগতের ভূতীর জীবসর্গ বলিয়া গ্রহণ করিলেও অপ্রাস্তিক হর না। (পৃথিবী দেখ।)

ভূতৰ আলোচনা করিলে কানা যার বে, টার্সিয়ারি ভূপঞ্জর-সংভূত জীবদেহাত্বিসমূহের মধ্যে মাইওসিন্ বৃগের বিতীর বিতাগে এবং নিওসিন্ বৃপের ভূতীর ও চতুর্ব বিতাগে বরাহের অফি-নিদর্শন পাওরা বার । প্রীক্ষিপের পুরাতবেও টাইকোন দেবের পবিত্র বরাহের উল্লেখ আছে । চীনদেশীর একখানি গ্রহে ৪৯০০ বংসর পূর্কে বরাহের বৃতাত্ত লিপিবছ আছে । মন্থ্যংহিতার বরাহ-মাংলের বিধিনিবেধ বিধিবছ হইরাছে । মহাতারতে বরাহাতারে রগজ্জে সৈত্তস্থার রাজগণ রাজচিত্তরপ বরাহ-রাভের (ক্ল্যাণের) চৌলুকাবংশার রাজগণ রাজচিত্তরপ বরাহ-রাভ্যা ব্যবহার ক্রিতেন । এই বংশের প্রচারিত অর্ণমূল্যতেও বরাহের প্রতিকৃতি অভিত থাকার ভাষা বরাহমুলা নামে থাত হইরাহিল।

ভারতে রাজপ্তবীরগণ বাসভীমহোৎসবে মন্ত হইরা বন্ধবরাহের বুগরার লিপ্ত হইছেন। ঐ দিন জীবনের মারা ভুক্ত
করিরা তাঁহারা বরাহ-শীকারে বনে প্রবেশ করিছেন। ঐ দিন
বরাহ শাকার করিতে না পারিলে রাজপুত-লাভির বড়ই নিপ্রহ
ঘটিবে, তাঁহাদের এইরূপ সংখার ছিল। এই দৈব ঘটনার
লগস্বাভা উমারেবী তাঁহাদের প্রতি বে কুক্ত হইরাছেন, এইরূপ
তাঁহারা মনে করিছেন। রাজপুত লাভির আহেরিরা উৎসবেও গৌরীর সমক্তে বরাহবলি দিবার রীতি আছে।

বসন্তকালে বরাহ-দীকার শক্তাতির একটি চিরপ্রথা। হন্দনাভ-বাসী অসিজাতির মধ্যে বসন্তকালে "ক্রিয়া" দেবীর মহোৎসবে বরাহ-বলি দিবারও রীতি দেখা বার। তদ্দেশবাসিগণ ঐ দিবস মরলাও নানাসস্লার প্রস্তুত্ত বরাহ অগ্নিতে দগ্ধ করিরা তন্দণ করিরা থাকে। ঐক্রপ করাসী দেশেও বর্ষারভের প্রথম দিন "Cochelin"-দগ্ধ সেবনের প্রথা বিভ্যমান। হেরোদোতাসের বিবরণীতে মিসরবাসীকর্তৃক মরলাথও বারা প্রস্তুত দগ্ধ শ্করাকৃতি-ভক্তগের উল্লেখ আছে।

ব্রাহ, একজন অভিধানপ্রণেতা। ইনি শাবতের সমদাম্যিক ছিলেন।

বরাহক (পুং) > হীরক, চলিত হীরে। ২ শিশুমার, ওওক। বরাহকন্দ (পুং) বরাহপ্রির: কল:। বরাহী, বারাহীকন্দ, চলিত চামর আলু। ববে অঞ্চলে ইহার নাম ভুকরকন।

বরাহকর্প (পুং) > বন্ধভেদ। ২ বাণভেদ।

वदाहकर्निका (बी) य्काजस्म ।

বরাহকণী (বী) অবগদা (Physalis flexuosa)।

বরাত্করা, করভেদ, এই করে ভগবান্ বরাহমূর্তি ধারণ করিয়া-ছিলেন।

বরাহকবচ, ধারণীর মজোবধবিশেব। কলপুরাণে ইহা লিখিত আছে।

বরাহকান্তা (ত্রী) বরাহত কান্তা প্রিয়া। বারাহীরুক। বরাহকালিন্ (গ্রু) হর্যামণি পুশারুক, চলিত হর্যামণি ফুলের গাছ। পর্যায়—হর্যাবর্তা। (হারাবলী)

বরাহ্কালী (ত্রী) আদিত্যভন্তা,চলিত হড় হড়িরা।(বৈছকনি°)
বরাহক্রান্তা (ত্রী) বরাহেশ ক্রান্তা অভিগ্রিরথাং। > ক্লবিশেষ। (খলমা•) পর্যার—লক্ষানু, নমলা, লক্ষারিকা,
বরাহনামা, বদরা, শুকরী, ভিজ্ঞপদ্ধিকা, নমনারী, গগুকালী,
থানিরী, লক্ষানুকা, অঞ্জলিকারিকা, কৃতাঞ্জলি, গগুকারী,
স্বীক্ষনা। ২ বারাহী, চলিত চামরানু। (স্ভৃত্তি)

বরাহ গ্রাম, বোষাই প্রেসিডেন্সীর বেল্প্রাম্ জেলার অস্তর্গত একটা গগুগাম।

বরাহতীর্থ, তীর্থভেদ। (কৃন্দ্রপূণ)

বরাহদং 💆 (গুং) কুদ্ররোগবিশেষ, চলিত বরাহদন্ত। (মাধবনি॰) স্তিরাং টাপ্।

বরাহদন্ত, বণিকভেদ। (কথাসরিৎসা° ৩৭।১٠٠)

বরাহদৎ (ত্রী) বরাহদন্ত।

বরাহদন্ত (তি) বরাহদন্তবিশিষ্ট। (পুং) বরাহের দাঁত।

বরাহদেব স্বামিন্, গৃহত্তব্যাপ্যা-রচরিতা।

বরাহদ্বাদশী (রী) মাঘমাদের গুক্লাঘাদশীতে বরাহরূপী বিষ্ণুর শ্রীত্যর্থে আচরণীর ক্তান্ডেদ।

বরাহত্তীপ (ক্নী) দীপভেদ। [বরাহ দেখ।]

বরাহ্নগর, বালালার ২৪ পরগণার অন্তর্গত একটা প্রাচীন
ও প্রসিদ্ধ নগর। কলিকাতা রাজধানীর উত্তর উপকর্গে এক
মাইল দূরে গলানদীর বামকৃলে অবস্থিত। এই স্থান পূর্বের
বাণিজ্ঞাপ্রধান ছিল। গলাভক্তিতর্মিণী প্রভৃতি প্রাচীন গ্রন্থে
তাহার উল্লেখ পাওয়া যায়। এখানকার কাচি ধৃতির বাণিজ্ঞা
পূর্বের বহ বিস্কৃত ছিল, এখন তাহার অনেক হ্রাস ঘটিয়াছে।
পূর্বের ওলনাক্ত বণিকগণের এখানে একটা কুরী ছিল। চুঁচুড়ায়
মাসিবার সময় ওলনাক্ত সওদাগরী জাহাক্ত এখানে নলর করিয়া
থাকিত।

এই স্থানের বরাহনগর নামকরণ সম্বন্ধ নানা কথা ভানা যায়। ঐ সময়ের একথানি প্রাচীন কাগজপত্তে প্রকাশ ওপলালগণ এথানে বরাহহত্যা করিত বলিরা এই স্থানের বরাহনগর নাম হইয়াছে। স্থানীয় কিংবদন্তী এইরূপ যে, বিষ্ণুর বরাহ মৃত্তি হইডে এই স্থান দেব নামে কীর্ত্তিত হয়। আবার অনেকে বলেন যে, এখানে একজন দক্ষ্য সন্ধার ছিল, সে বরাহ অবতারের উদ্দেশে এই নগর স্থাপন করে। যাহাইউক, বরাহনগর হান ও নাম নিভান্ধ আধুনিক নহে। মহাপ্রস্কু চৈতপ্রদেব আসিয়া এখানে ভাগবভাচার্যাকে অম্প্রহ করিয়াছিলেন। আজ্পু বরাহনগরে ভাগবভাচার্যার পাট আছে। ভাগবভাচার্যা দেশ।

এখানকার ওললাজ কীর্তি-নিদর্শন স্বরূপ এখনও অনেক চিত্রিত টালির ভয়ধণ্ড দেখিতে পাওরা যায়। ১৭৯৫ খৃষ্টাকে ওললাজ গভমেন্ট এই স্থান ইংরাজকরে সমর্পণ করেন। ওল-লাজদিগের আগমনের পূর্ব্বে এখানে একটা পর্ভ্ গ্রিজ উপনিবেশ স্থাপিত হইরাছিল। ইংরাজাধীনে এখানে মিউনিসিপালিটা স্থাপিত হইরাছে, উহা নির্থম্বর্কান্ মিউনিসিপালিটা স্থাব কাটালামে পরিচিত। এখানে গলাভীরে অনেক ধনী ও বণিকের বাগনেবাড়ী আছে। কএকখানি ঠাকুরবাড়ীও গলাসৈকত-

ভূমির শোভা রৃদ্ধি করিতেছে। আগমবাজারের রেড়ীর তৈগের কল ও তাহার বাণিজ্ঞা এবং বোর্লিও কোম্পানীর চটের কল এখানকার প্রসিদ্ধ বাণিজ্ঞাকেক্স। আগমবাজারের উত্তরাংশে স্থ্রপ্রসিদ্ধ দক্ষিণেশ্বরের কালীবাড়ী। পূজ্ঞাপাদ পরমহংস রামক্ষণ-দেব এখানে অবস্থান করিতেন।

বরাহনামন্ (পু:) বরাহন্ত নামেব নাম যত। বারাহীকন্দ।
বরাহনির্যুহ (পু:) বরাহমাংসরস। (চরক স্ত্রন্থা•)
বরাহপত্তিক, প্ররোগসংগ্রহবিবেক নামে ব্যাকরণরচয়িতা।
বরাহপত্তী (রী) অখগনা। (রান্ধনি•)

বরাহপিত (ক্লী) শৃকরপিত। ইহার শোধনপ্রণালী — শৃকর-পিত শুকাইয়া লইয়া পরে নিম্বরদে ভাবনা দিলে একদিনেই বিশুদ্ধ হয়। মৎস্তাদির পিত শোধনপ্রণালীও এইরূপ।

[মৎস্থপিত্ত দেখ।]

বরাহপুরাণ (ক্লী) বরাহপ্রোক্ত একথানি মহাপুরাণ।
[পুরাণ শব্দে বিস্তৃত বিবরণ দেখ ।]

বরাহভূম (বরাহভূমি), মানভূম জেলার অন্তর্গত একটা গওগ্রাম ও পুলিস থানা। এই নামে এপানে একটা পরগণাও আছে।
বরাহ্মাংস (ক্লী) শৃকরমাংস, বন্ধ ও গ্রাম্যভেদে তুই প্রকাব।
বন্ধ বরাহ মাংসের গুণ—গুরু, বাতহর, বৃষ্য এবং বল ও স্থেদকর। গ্রাম্য বরাহ মাংস—গুরু, মেদ, বল ও বীর্যবর্দ্ধক।

"বরাহমাংসং গুরুবাতহারি বৃদ্ধং বলস্থেদকরং বনোখম্। তথা গুরুং গ্রামবরাহমাংসং তনোতি মেদোবলবীহার্দ্ধিম্॥" (রাজনি৹)

বরাহমিহির, ভারতে যত জ্যোতির্বিদ জন্মগ্রহণ করিলাছেন, তন্মধ্যে বরাহমিহিরকেই সর্বপ্রধান বলিয়া দকলে মনে করেন। সাধারণের বিশাস, বরাহমিহির রাজা বিক্রমাদিত্যের নবরত্বের মধ্যে একজন। এসম্বন্ধে আনেকেই জ্যোতির্বিদাভরণের এই শ্লোকটী উদ্ধৃত করিয়া থাকেন—

"ধৰস্ববিক্ষণণ নামনিংহশকু-বেতালভট্টণটন্ধপরনালিদানা:।
ধাতো বনাংমিহিনো বৃপতে: সভানাং রক্থানি বৈ বরন্ধচিন ব বিক্রমন্ত ।"
অনেকের বিশ্বাস, রম্ববংশ, কুমারসম্ভব প্রভৃতি প্রণেতা কবি
কালিদাস উক্ত জ্যোতিবিদাভরণের রচনিতা, স্থতরাং তিনি বরাহমিহিরের সমসাময়িক বটেন। প্রমাণস্থলে অনেকে জ্যোতিবিদাভরণ হইতে এই শ্লোকটাও উদ্ধৃত করিয়া থাকেন—

"বংগ: সিন্ধুরদর্শনাম্বরগুলৈ-(৩০৬৮) বাঁতে কলো সংমিতে মানে মাধ্যসংক্ষিতে চ বিহিতো এছক্রিয়োগক্রম: ঃ"

উক্ত প্লোকামুসারে ৩০৬৮ গত কল্যন্দে বা ২৪ বিক্রম-সংবতে জ্যোতির্বিলাভরণের রচনাকাল হইতেছে, কিন্তু পরে জ্যোতির্বিলাভরণের মধ্যেই— শোক্য পরাভোধিব্গোনিতো হতে। বানং গতকৈররনাংশকা: স্থাঃ ।"

ইত্যাদি ছলে ৪৪৫ শকের উল্লেখ এবং "মন্তা বরাহমিহিরাদি-মতৈঃ" ইত্যাদি প্রসদ থাকার জ্যোতির্বিদাতরপকে খৃঃ পূর্ব্ব প্রথম শতাব্দীর প্রস্থ অথবা এই প্রস্থের প্রমাণ অনুসারে বরাহমিহিরকে নবরম্বের একটা রন্ধ বলিরা শ্বীকার করা বার না।

শাবার কেহ কেহ ব্রশ্বগুরীকাকার পৃথুখামীর লোহাই

দিয়া এই বচনটা বলিয়া থাকেন—

"नवाधिकनकन्छमरबानात्क वज्राविविज्ञातार्द्या क्रियर नाष्ट्रः।"

আবার হলমঞ্জরীর দোহাই দিয়া কোন কোন মহারাষ্ট্র-জ্যোতির্বিদ্ এই বচনটী পাঠ করিয়া থাকেন,—

> "ৰতি অনুপত্ৰীত্ত ক্ষাপ্ত কাৰ্যত বিবেদাৰর-ক্ষোনাক্ষমিতে বনেহনি জবে বৰ্ষে বসন্তাদিকে ।"
> "চৈত্রে বেতদলে শুভে বস্তুতিথাবাদিত্যগানাকভূদ্-বেদাকে নিপুণো ব্যাহণিহিত্যে বিশ্বো ববেরানিভি: ।"

অর্থাৎ ৩০৪২ যুধিষ্টিরের অব্দে বা ২ বিক্রমসংবতে চৈত্র
মাসে আদিতাদাসের ঔরসে হর্যোর আশীর্কাদে বেদান্সনিপূণ
বরাহমিহির জন্মগ্রহণ করেন। ছঃধের বিবর, এই ল্লোকটাও
কোন প্রাচীন জ্যোতিগ্রহিনা থাকার বিখাস্যোগ্য নহে। *

স্থতরাং দেখা যাউক, বরাহমিহির আপনার গ্রন্থে কিরপ পরিচয় দিয়াছেন। তাঁহার বৃহজ্জাতকের উপসংহারাধ্যারে লিখিত আছে—

"আদিতালাসভদরত্তদৰাথবোধঃ কাপিথকে সবিভূলক্ষরপ্রসাবঃ। আঘন্তকো মূনিমতাক্সবলোক্য সম্যাস হোরাং বরাছমিছিরো ক্রচিরাং চকার ।"

উক্ত রোকাস্থলারে বরাহমিহিরের পিতার নাম আদিত্যদান, তিনি অবস্তীবাসী। কাপিখ নামক দ্বানে তিনি স্থাদেবকে শ্রেনর করিরা বরলাভ করিরাছেন। পঞ্চনিছাত্তিকার রোমক-নিছান্তের অহর্গণ ছির উপলক্ষে বরাহমিহির লিখিরাছেন—

> "সপ্তাছিবেৰসংখ্যা শক্ষালমণাত চৈত্ৰগুক্লাদো। অস্কান্তয়িতে ভাষে) ব্যৱস্থাত ভৌষণিবদানাঃ ।"

উক্ত প্লোক অনুসারে, ৪২৭ শকে চৈত্র শুক্ত প্রতিপদ্ মল্পবার পাওরা বাইতেছে। নিজ সমর ধরিরাই জ্যোতির্বিদ্যাণ অহর্পণ ছির করিয়া থাকেন। এরপ ছলে আমরা বরাহমিহিরকেও ঐ সমরের লোক বলিয়া ছির ক্রিতে গারি। একেশ বরাহমিহির ও ধনা সক্তে অনেক গল প্রচলিত আছে। কেই কেই ধনাকে করাহমিহিরের কলা, কেই বা পদী, কেই বা প্রবৃধ্ বলিরা মনে করেন। কিন্তু ঐ সকল অলুমান বা প্রবাদের মূলে কিন্তুমাত্র ঐতিহাসিক সত্য আছে বলিরা মনে করি না।

বরাহমিহির তৎপূর্কবর্ত্তী পাঁচধানি সিকান্তের আগ্রন্থ করিয়া পঞ্চসিকান্তিকা রচনা করেন। ঐ পঞ্চসিকান্তের নাম—

"পৌলিশ-রোমক-বানি**ঠ-নৌর-পৈতাবহাত প্রক্**মিত্বাতা: «"

পৌলিল, রোমক, যাসিঠ, সৌর ও পৈতামহ এই পাচবানি সিদ্ধার ।

বাসিষ্ঠ ও পৈভামহ এই ছুইবানি সিদ্ধান্ত আলোচন। করিরা জ্যোভিঃশান্তের ইভিত্তত-দেখকগণ থঃ পূর্ক ১০শ শভালীর সিদ্ধান্ত বিগরা শীকার করেন। কিছু পৌলিশ ও রোমক এই ছুইথানির নাম দেখিরা অনেকে মনে করেন বরাহমিছির প্রাচীন পাশ্চান্তা জ্যোভিবেরও সাহাব্য গ্রহণ করিরাছিলেন।

পৌলিশসিদ্ধান্তে বৰমপুত্ৰ বা আলেক্জান্তিত্ব হইতে দেশান্তর গৃহীত হইয়াছে। এদিকে আবাত্ৰ ব্যোমকসিদ্ধান্তে গত দিনসংখ্যা-নিৰ্পত্নাৰ্থ বৰমপুত্ৰের মধ্যাক্ত ধরা হইয়াছে।'

প্রাণিক মুসলমান পণ্ডিত অল্বীক্ষণী লিখিরাছেন, শৌলিশ দিছান্ত বুনানীর পৌলসের রচনা। তল্পসারে কেহ কেই মনে করেন বে, গ্রীকভাবার Paulus Alexandrinus এর বে জ্যোডিগ্রন্থ আছে, পৌলিশদিছাত্ত তাহারই সংস্কৃত অন্তবাদ; কিছ
বাহারা উক্ত গ্রীক্গ্রন্থ মিলাইয়া দেখিয়াছেন, তাঁহারা বলেন বে
গ্রীক্গ্রন্থের সহিত উহার কিছুমাত্র মিল নাই। বিশেষতঃ পৌলিশ
দিছান্ত একখানি ছিল না। ব্রন্ধনিছান্তের টাভাভার পৃথ্নক
ও ভট্টোংশল পৌলিশদিছান্ত হইতে কতকগুলি প্লোক উদ্তৃত
করিয়াছেন, ঐ সকল প্লোকের সহিত পঞ্চনিছাত্তিকার অন্তর্গত
পৌলিশনিছান্তের কোনরূপ ঐক্য নাই। সৌর ও আর্ব্যভটদিছান্তের মতের সহিত বরং মিল আছে।

রোমকসিদ্ধান্ত নাম গুনিরাও অনেকে ত্বির করিরা বসিরা-হেন বে, আলেক্জান্তিরার প্রসিদ্ধ জ্যোতিবিদ্দ উলেমীর মূল গ্রন্থ অবলয়নে সংশ্বত ভাষার রোমকসিদ্ধান্ত রচিত হইরাছিল। কিন্তু ব্রন্ধগুপ্তের ব্রন্ধসিদ্ধান্ত পাঠ করিলে ভাষা মনে হর না। লাট, বলিঠ, বিজ্ঞারনদী ও আর্যাভট এই চারিন্ধনের গণনা ভিত্তি করিরা ব্রিবেশ রোমকসিদ্ধান্ত রচনা করেন। ভট্টোংশন ও আল্বেক্সীও ভাষাই বলিরাছেন।

⁽১)" বৰৰাজনলা ৰাড্য: সপ্তাৰস্ভানিভাসসংৰ্ভা: । ভানতীয় জ্যোজিশাল্ল" ন্তইয়। বাহাপুসাং ক্ৰিকুজি সাধ্ৰমন্তন্ত ৰক্ষ্যাদি।" (প্ৰদীক্ষাভিকান পৌলিব)

বরাহমিহির বে ৫ থানি সিন্ধান্তের আলোচনা করিরাছেন, তন্মধ্যে নৌর বা প্র্যাসিন্ধান্ত লমালোচনা করিরা জ্যোতিষিক্রণণ প্রমাণ করিরাছেন যে, এই সিন্ধান্তথানি শকালারন্তের সময় সঙ্গলিত হইয়াছিল, তৎপূর্কে পৌলিশ এবং পৌলিশের পূর্কেরোমক্সিন্ধান্ত রচিত হয়। এীক জ্যোতিষী হিপার্কস্ প্রায় ১৫০ বর্ষ পূর্কের্ম জীবিত ছিলেন। তাঁহার গ্রন্থ এখন বিস্তা। তাঁহার পরিদর্শনকাল লইরা টলেমি প্রায় ১৫০ খুটাকে বীর গ্রন্থ রচনা করেন। তাঁহার গ্রন্থের সহিত রোমক্সিন্ধান্তের মিল নাই। এরূপ স্থলে তাঁহার বছপূর্কেরচিত রোমক্সিন্ধান্ত হিপার্ক্সের গ্রন্থ দেখিল। সঙ্গলিত হইরাছে এরূপ কণাও বলিতে পারা যার না।

এই মাত্র বলিতে পারি বে, বরাহমিহির ঘবনাচার্য্যগণের মতও উপেক্ষা করেন নাই। তাঁহাদের মত গ্রহণ করিয়াছেন। পঞ্চসিদ্ধান্তিকা ব্যতীত তিনি বৃহৎসংহিতা, বৃহজ্ঞাতক, লঘুলাতক প্রভৃতি বহু জ্যোতিগ্রন্থিও তিনি রচনা করিয়া গিয়াছেন।

এতপ্তির আর্ড্ডাতক, কালচক্র, ক্রিয়াকৈরবচন্ত্রিকা, জাতক-কলানিধি, জাতকসরদী, জাতকসার বা লঘুজাতক, দৈবজ্ঞবন্ধভা, প্রশ্নচন্ত্রিকা, বৃহদ্ধবর্গ, বৃহদ্ধাত্রা, ময়ুরচিত্রক, ময়ুর্প্তগ্রন্থ,যোগ্যাত্রা, যোগার্ণব, বটকলিকা, সারাবলী ও বরাহমিহিরীয় নামক কএক গানি গ্রন্থ ভাঁহার রচিত বলিয়া প্রচারিত আছে।

বরাহমিছির, একজন জ্যোতির্বিদ্। ইনি সম্রাট্ অকবর শাহের সমসাময়িক।

বরাহমূক্তা (গ্রী) মৃক্তাভেদ। [মৃক্তাশন্দ দেখ।]
বরাহমূল (ফ্রী) কাত্মীরত্ব জনপদভেদ। এথানে বরাহরূপী
বিষ্ণুমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত ছিল। [কাত্মীর দেখ।]

বরাহ্যু (অ) বরাহ-ইচ্চুক, শুকরাভিলাধী কুরুর। "বরাহয়ু-বিশ্বসাদিক উথর:।" (ঋক্ ১০।৮৬।৪) 'বরাহয়ুর্বরাহমিচ্চন্ধা'

বরাহ্বe (অবা) বরাহসদৃশ বা তদমুরূপে।

বরাহবপুষ (क्री) বরাহের দেহ (ত্রি) বরাহদেহধারী।

বরাহশশ্মন্, ক্যোতিরক্প্রণেতা।

বরাহশিশ্বী (ত্রী) শ্করভোজা শিশী।

বরাছশিলা, হিমালয়শিখরত একটা পৰিত্র হান।

বরাহশৃঙ্গ (পুং) শিব।

वद्गाहरेनल (गूः) नर्सक्रसम ।

ব্রাহসংহিতা (ত্রী) ১ বরাহমিহিরবিরচিত জ্যোতির্প্রভেদ, রহৎসংহিতা। ২ শ্রীকৃঞ্জের কৃষ্ণাবনলীলাজ্ঞাপক একথানি গ্রন্থ।

বরাহস্বামিন্ (গুং) পৌরাণিক রাজভেদ।

वज्ञाङ्क्री (जी) क्ष्मक्षी। (देशकनि•)

বরাহাদ্রি (পুং) বরাহ পর্বত।

वदाहावजाद (११) विकृत व्यवकाद्वरक्ष । [वदाह (१४ ।]

বরাহাশ্ব (গৃং) দৈত্যবিশেষ।

বরাহিকা (ত্রী) কপিকছে। (রাজনি•)

বরাহী (জী) বরাহো ভক্কক্ষেনান্তাতেতি বরাহ-জন্পৌরা-দিখাৎ ভীব্। ১ ভদ্রস্তা। ২ প্করকলা। ০ অখগদা। ৪ ক্ষচটকা। (বৈজকনি•)

বরান্ত (পুং) > প্রধান শত্রুর বাতক, ২ উত্তম বৃষ্ট্যুদকন্তা।
"অন্নোদক্রোন্ বি ধাবতো বরাহ্ন্।" (শ্বক্ ১৮৮৮৫)

'বরস্থ উৎকৃষ্টক্ত শত্রোহস্তত্ন্।' (সামণ) ও হবিভিক্ষিতা। বিশ্বিক, প্রাচীন স্কাতিবিশেষ।

বরিতৃ (ত্রি) ২ আচ্ছাদনকারী। ২ পছন্দকারী।

বরিন্ (প্রং ক্লী) বিখেদেবাদির অন্তর্গত দেবতাভেদ। (ভারত) বরিমন্ (ত্রি) ১ বিভৃতি, ব্যান্তি, পরিধি। (থক্ ১।৫৫।১)

২ বরতম, শ্রেষ্ঠ, উৎকৃষ্ট, মহন্বযুক্ত, বরিষ্ঠ।

বরিয়া (বারিয়া), বোদাই প্রেসিডেন্সীর শুজরাত প্রদেশের রেবাকাছা বিভাগের অন্তর্গত মিত্ররাজা। অক্ষান্ত ২২°২১ হইতে ২২°৫৮ উ: এবং দ্রাঘিন ৭৩°৪১ হইতে ৭৪°১৮ প্রমাণ। ইহার পূর্ব্ধ ও পশ্চিমে ইংরাজাধিরত পঞ্চমহল বিভাগে, উত্তরে সঞ্জেলী ও স্থাত নামক সামস্তরাজা এবং দক্ষিণে ছোট উদযপুর। ইহার দৈর্ঘা উত্তর দক্ষিণে ৩০ মাইল এবং বিস্তৃতি ৮১৩ বর্গমাইল। এই সামস্তরাজাের দক্ষিণে ও পূর্ব্ধভাগ পর্যত্তনময় এবং রক্ষিকপুর, ছধিয়া, উমারিয়া, হাবেলী, কাকদিখিলা, শাগতালা ও রাজগড় নামক ৭টা উপবিভাগে ইহা বিভক্ত, এই সকল উপবিভাগ ও পূর্ব্বক্থিত পর্বভের অধিকাংশ স্থানই জনলাবৃত। এখানকার স্থান্থ ভাল নহে, জলবায়ুর অস্থান্থাকরতানিবন্ধন এই স্থান নানা রোগের আকর হইয়াছে। বনভাগে শাল বৃক্ষ আছে। চাসবাসের মধ্যে কলাই ও তৈলকর শস্তই প্রধান।

এধানকার সর্দারগণ চৌহানবংশীর রাজপুত। ১১৪৪ খুটান্দে মুসনমান সেনাকর্ত্বক তাঁহারা নাক্ষিণাভিমুখে বিভাজিত হইরা চল্পানের হুর্গ অধিকার করেন। এথানে তাঁহারা প্রায় সার্দ্ধিশতাক্ষকাল রাজখ করিবার পর ১৪৮৪ খুটান্দে শুর্জারপতি মহম্মদ বৈগাড়া কর্ত্ত্বক রাজ্যন্তই হইলে রাজ্যের বনাস্তরাল প্রদেশে আসিরা উপনীত হইলেন। অবশেবে একটা বংশ ছোট উদরপুরে এবং অপরটা বরিরায় রাজপাট স্থাপন করেন। ১৮০৩ খুটান্দে সিন্দেরাজের বিক্রম্ম সহায়ভা করায় এখানকার সামস্তরাজ ইংরাজের বিশেষ অন্থগ্রহ এবং ইংরাজ গ্রহ্মেন্ট বরিরাজীল সেনামল রক্ষার কর্ত্ত সর্দ্ধারকে মাসিক ১৮৮০ টাকা দিবার ব্যবহা করেন। এখানকার সামস্তরাজ বেরগড় বরিরার বহারাক্য বলিরা পরিচিত।

বর্ত্তমান সামস্তরাজ ইংরাজ গবর্মে কৈকে বার্দ্দিক ৯৩০০ টাকা কর দিরা থাকেন। জ্যেষ্ঠ পুত্রই পিতৃসম্পত্তির একমাত্র অধিকারী, কিন্ত দত্তকগ্রহণে রাজাদের অধিকার নাই। রাজার সেনাসংখ্যা ২৬০ জন। তিনি ইংরাজরাজের নিকট হইতে মাক্তম্যকক ১০৮ তোপ পাইরা থাকেন। পানটিকাল এজেন্টের সহিত পরামর্শ ব্যতীত তিনি অপরাধীদিগকে প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত করিতে পারেন। রাজার বারে ১৫টা বিদ্যালয় ও একটি চিকিৎসালর পরিচালিত হইতেছে এবং গুজরাত হইতে মালব পর্যান্ত বে রাজা গিরাছে, তাহার যে অংশ এই রাজ্যের মধ্য দিয়া গিয়াছে তাহা এবং আরও কএকটি রাজা পাকা করা হইরাছে।

২ উক্ত সামস্তরাজ্যের প্রধান নগর: বড়োদা রাজধানী হইতে ২৫ ক্রোশ উত্তর পূর্বে অবস্থিত। অক্ষা• ২২°১৪ উ: এবং দ্রাঘি• ৭৩° ৫৬' ৩০''পূ:।

বিরয়ু, মার্ভাবানবাসী একজন বণিক্, প্রাকৃত নাম মগছ। খ্রামনরাজের অন্থাহ লাভ করিয়া তিনি ক্রমে তথাকার একজন আমাতা হইয়া উঠেন। রাজা কার্যাবশতঃ স্থানাস্তরে গমন করিলে, তাঁহাকে রাজধানীর শাসনকর্তা করিয়া বান, এই সময়ে তিনি খ্রামরাজকভাকে অপহরণ করিয়া মার্ভাবানে পালাইয়া আসেন এবং তথাকার পাসনকর্তা আলেইন্মাকে বিনাশ করিয়া মার্ভাবানের শাসনকর্তা হন। ১২৮১ খুষ্টাব্দে খ্রামরাজ তাঁহার প্রাধিকার স্বীকার করেন। এই সময় হইতে ইতিহাসে তিনি রাজা বরিয়ু নামে পরিচিত। অতঃপর বরিয়ু কানপালানি রাজা জয় করিয়া রাজকন্তার পাণিগ্রহণপূর্কক আপনার শাসনশক্তি বিস্তার করিয়াছিলেন। তিনি চীনসেনার অত্যাচার হইতে পেগুরাজকে রক্ষা করিবার জয়্য সেনা সাহাব্য করিয়া ছিলেন, কিছ অচিরে উতয় রাজায় বিরোধ উপত্বিত হওয়ায়, তিনি পেগুরাজ্য অধিকার করিয়া লন। ১২৮২ খুষ্টাব্দে তিনি মার্ভাবান নগরে শমর্থিরেন্না" পাগোদা স্থাপন করিয়া যান।

বরিবস্ (ত্রি) > অন্তরীক । "এবশ্চনাঃ বরিক্ছনাঃ" (বাজসনের স • ১:18) বরিবঃ প্রভামগুলেন ব্রিয়ত ইতি বরিবোহস্তরিক্ষশ্ (মহীধর) ২ ধন । "স্থা মেবেভ্যো বরিবশুকর্থ।" (ধক্১।৫৯।৫) বরিবোহস্ট্রেরপক্তং ধনং' (সারণ) ৩ পূলা, শুক্রবা ।

বরিবস্কৃৎ (জি) ধনকর্তা। "এব ইক্রো বরিবস্কৃৎ" (ঋক্ ৮/১৬/৬)
'বরিবস্কৃৎ ধনক্ষ কর্ত্তা' (দারণ)

বরিবস্তা (জী) বরিবদ: পূজারা: করণম, বরিবদ-কাচ্। (নমোবরিবদন্দিঞ: ক্যাচ্। পা ৩১১১৬।) ডড: আং,ডভটাপ্। ৬ ক্রা। "হবে বরাং ররিবলা গুণানো" (আক্ ১১১৮১১)

বরিবস্থিত (ত্রি) বরিষতা সঞ্জাতা অন্ত তারকাদিয়াদিতচ্।
অথবা বরিবত-জ-, (কান্ত বিভাষা। পা ভাগাং-) পক্ষে বনোপা-

ভাষ:। উপাণিড, বাহাকে উপাননা, গুলুবা বা দেবাৰুরা হইরাছে। (অমর)

ব্রিবোদ (এ) বরিবঃ ধনং নলাজীতি বরিবন্-লা-ক। ধন-দাতা। (শুরুবকু: ১৭১৪)

ব্রিদ্বোধা (তি) ধনদাতা। "শ্রেটীবানং বরিবোধায়তি প্রবঃ।" (অক্ ১।১১৯।১) 'বরিব ইতি ধনং নাম বরিবসো ধনত দাতারম্।' (সারণ)

বরিবোবিদ্ (অি) ধনশন্তরিতা, বিনি ধন লাভ করাইরা বা পাওরাইরা দেন। 'বিদু লাভে, আন্নাদস্তর্জাবিতণ্যর্থাৎ কিপ' ইনি (অক্ ১০১৭) ভারে নারণ)

व्यतिनी (जी) विजनी। (नमत्रका॰)

ব্রিষ (রী) র্-সঃ বাছলকাৎ ইউ্। বৎসর। (শন্ধর্ত্বা৽)

'বর্ব: ভাদ্বরিবোহপি চ' (উজ্জনতত্ত্বস্তু

বরিষা (ত্রী) বৃ-সং বছৰচনাৎ ইট্। বর্ষা। (ছিরপকোণ)
বরিষাপ্রিয় (পুং) বরিষা বর্ষা প্রিয়া বন্ধ। চাতকপক্ষী। (পক্ষরত্বা)
বরিষিতে (দেশক) বর্ষণ করিতে, বৃষ্টি করিতে, ছড়াইয়া দিতে।
বরিষ্ঠ (ক্লী) অভিশয়েন বর্মাতি বর-ইইন্। তাম, তামা।
"রক্তং বরিষ্ঠং মেজাধাং তামং শুব্যুভূবরম্।" (বৈভক্ষরমালা)
২ মরিচ। (মেদিনী)

বরিষ্ঠ (অ) অরমেষামতিশরেন বর উরুব' ইটন্। প্রেম-হিরেতি বরাদেশ:। ১ বরতম।

"হতা স্বরিক্থম্পুধ আততায়িনো

যুধিষ্ঠিরো ধর্মজ্ভাং বরিষ্ঠ:।" (ভাগবত ১।১•।১)

২ উদ্ধৃতম। (শ্বক্ ৪।৫৬।১) ০ বংস। (অবস্থা) ব—ইঠন, পুং। ৪ তিতিরিপকী। ২৫ নাগরক বা নারক বুক্ষ। চলিত নারালা। লেবুর গাছ। (রাজনি•) ৬ চাকুষ মন্ত্র পুত্র।

"বরিছো নাম ভগৰান্ চাকুষভা মনোঃ স্থতঃ ॥"

(ভারত ১৩।২৮।২০)

৭ ধর্ম-সাবর্ণি মন্বন্তরের জনৈক পৰি।
"হবিয়াংশ্ট বরিষ্ঠশ্ট প্রেটিরগুত্তথাক্ষণিঃ।
নিশ্চরশ্চানঘশ্টের বিশ্লিশ্চাক্তো মহাসুনিঃ॥
সপ্তর্বয়োহস্তরে তামিন্নান্তিদেবশ্চ সপ্তমঃ॥"(মার্ক প্০৯৪১৯)
৮ দৈতাবিশেষ।

"বরিষ্ঠ" গরিষ্ঠ" ভূতদোরখনোবিভূ:।

স্থপ্রসাদ: কিরীটা চ শুচীবজেনু মহান্তর:॥" (হরিব॰ ১৩২।১৩))
বরিষ্ঠা (ত্রী) > আদিত্যভক্তা, হড়হড়ে। (রাজনি॰) ২ হরিজা।
(বৈদ্যকনি॰) ও গুরুভেন্ন (Polasina Icosandra)

বরিষ্ঠাক (বি) বরতম। শ্রেষ্ঠ, গরীরান্। বরিষ্ঠাঞাম (গ্রং) স্থানবিশেষ।

ব্রিহিষ্ঠ (ক্লী) উনীর। ২ বানক, চলিত বালা। (মুক্রত চিকি ১৮ অ•) বরিহিন্তযুদ্ধ (ही) উদীর মৃদ। (স্থক্ত চিকিৎসিত ছান১৮জ•) বরী (রী) বুণোডীতি বৃ-পচাদ্যচ পৌরাদিয়াৎ ভীষ্। শতাবরী (অমর) ২ সূৰ্যাপত্নী। (ত্ৰিকা•) ৩ লঘুশতাৰরী। ৪ মহাশতাৰরী। (दिछक्ति •) ६ वाकीकामधिनकीलनवन । वद्गीकु (बि) बाष्ट्रांतनकाद्गी। बाष्ट्रांतक। বরীভাক্ষ (পুং) দৈতাভেদ। (মহাভারত) বরীদাস (পুং) গৰ্ম নারদের পিতা। বরীধরা (জী) ছন্দোভেদ। ইহার ১ম ২য় ও ৪র্থ চরণে ১১টি আকর এবং ১, ২, ৪, ৫, ৮, ১০, ১১ বর্ণ শুরু ও অপর গয়। তর চরণে ১, ৩, ৬, ৭ ও ৯ লঘু এবং ভঙ্কি বর্ণপ্রক। বরীমন্ (তি) পরিধি, বিছতি। [বরিমন্ দেখ] বরী[য়স্] য়ান্ (তি) অন্বনবের ডিশরেন উর্করো বা ঈরস্তন্। প্রিরন্থিরেডি বরাদেশ:। ১ শ্রেষ্ঠ। "বরীয়ানেষ তে প্রশ্ন: ক্লডো লোকহিতো নৃপ।" (ভাগবত ২।১।১) ২ বরিষ্ঠ। ৩ অতি যুবা। (মেদিনী) (পুং) ৪ বিজ্ঞাদি সপ্তবিংশতি যোগের অন্তর্গত चहोमन योग। এই योगে कम्मिल मानव नत्रानु, नाठा, ऋसत्र, স্থবেশ, সৎকর্মকারী, মধুরক্ষভাব এবং ধন-জন-বল-সম্পন্ন হয়। "দাতা দরালু: স্নতরাং স্থবেবং, সংকর্মকর্তা মধুরত্বভাব:। नत्त्रा वनीवान् धनवान् बनारछा যোগো বরীরান্ যদি জন্মকালে।" (কোষ্টাপ্র৹) ৫ পুলছের পুত্র। (ভাগৰত ৪০। ১। ৩৪) ক্রিরাং ভীব্। বরীয়**দী শভ**মূলী। (রাজনি•) चर्ती वर्षः (११) वनीवर्षः । (अमत्र जिला त्रमानाथ) বরীরুত (ত্রি) পুন: পুন: আবর্জন। वतीयु (११) कामलव। (जिका •) বরু (পুং) ১ রাজা। ২ সকলের বরণীর। (ৰক্ চা২৩া২৮ সারণ) ব্রুক্ত (গুং) কুধান্তভেদ, বরক, চীনাধান। (স্ফ্রান্ড হ॰ ৪অ॰) वक्रेष्ठे (श्रः) क्रब्बाकि-वित्नवं, वक्क् । 'भूजिन्ता नहना निद्धाः चववा वक्रो छोः। মালা ভিলা: কিরাডাশ্চ সর্কেহপি মেচ্ছমাডর: ম' (হেম) বরুড (পু:) নীচ ৰাভিবিশেব। পরাশরপদ্ধতিমতে কৈবর্দ্ধের কল্পাণৰ্ডে এবং শৌভিকের উরদে এই লাভির উৎপত্তি হইয়াছে। **''কৈবৰ্ডকণ্ড কন্তারাং দৌভিকাদেব** সৌচিকঃ। সৌচিকাৎ শৌভিকাজাতো মটো বৰুড় এব চ।"

धारे काफि जड़ाब मरश गणा।

"রঞ্জকশুর্কারণ নটো বঞ্চ এব চ।
কৈবর্জনেদভিলান্চ সথৈতে চান্তালাঃ শ্বতাঃ ॥"(প্রার্শিন্তাত্ত্ব)
রাহ্মণ অঞ্চানতঃ বদি এই জাতির জীগমন করে এবং
ইহাদের অরভোজন বা ইহাদের নিকট প্রতিগ্রহ করে, ভাহা
হইলে পতিত হয়, আর জ্ঞানপূর্কক করিলে ঐ সকল
জাতির সমতা প্রাপ্ত হয়। অজ্ঞানপূর্কক পাপামুষ্ঠানে প্রায়ন্ডিত্ত
করিলে গাপের শান্তি হইরা থাকে।

"এতেবান্ধ ব্রিয়ো গায়া ভূজা চ প্রতিগৃহ্ছ চ।
পততাজ্ঞানতো বিশ্রো জ্ঞানাং সামান্ত গাছতি॥" (প্রারশ্চিত্ততত্ত্ব)
বর্মণ (প্রং) র্গোতি সর্বাং ব্রিয়তে অল্টেরিতি বা বু-উনন্,
(ক্লাদিন্ডা উনন্। উণ্ ওাঞ্ছ) > দেবতাবিশেষ, অদিতির
গর্কে কক্ষণ হইতে উৎপন্ন। শ্রীমন্তাগবতে লিখিত আছে,
চর্মনী নামী পদ্মীর গর্কে ভূগু ও বাল্মীকি নামে ইহার ছই
পুত্র জারে। ইনি পশ্চিমদিক্-পাল এবং জালের অধিপতি
বলিয়া পুজিত। পর্যায়—প্রচেত্তস্, পাশিন্, যাদশাম্পতি,
অপ্পতি, যাদঃপতি, অপাম্পতি, জন্ক, মেঘনাদ, জালেশ্বর, পরজ্ঞয়,
দৈত্যদেব, জীবনবাস, নন্দপাল, বারিলোম, কুগুলিন্,
রাম, সুখাস। (জটাধর)

জনাশরোৎসর্গ প্রভৃতি জত্নঠানে বরুণদেবের পূজা করিতে হয়। হয়শার্বপঞ্চরাত্রে ইহাঁর পূজা পদ্ধতি বিধিবদ্ধ হইরাছে। পূজাকালে মূর্ত্তি নির্মাণ প্রয়োজন। কৃত্র কৃত্রাজ্ঞি দিয়া বরুণমূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া লইতে হয়। ইইায় ছই ভূজ, ইনি হংসপুঠে আসীন। ইহাঁর দক্ষিণহত্তে অভয় এবং বামহত্তে নাগপাশ। বামভাগে জলরাশি এবং দক্ষিণে ইহাঁর পূজ্র পূজর। ইনি নানা নদনদী, নাগ, জলধি ও বিবিধ জলজন্ত হায়া পরিয়ৃত। জলাশয়েয় তীরে বা প্রাক্তভাগে বরুণদেবের এইরুপ মূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া পরে প্রতিষ্ঠাত্তে জর্জনা করিবে। (১) ইহাঁর ধাান বথা—

"প্রসন্নবদনং সৌমাং হিমকুন্দেশুসন্নিভম্। সর্বাভরণসংযুক্তং সর্বাকশনকিতম্ ॥

(>)"লথ বাগ্যাবত: কুর্বাৎ প্রদারজানিবিধিতন্।
নিজুলং বংসপৃত্তবং বন্দিশেনাভাগ্রথন্ত
বানেন বাগগানত থান্তবং প্রভোগনন্।
সনিলং বাববাভোগং কাননেগ্রাবসাম্পতিং ।
বানে ভু কাননেগ্রিয় বন্দিশে পুড়রং শুরুর।
বানেবিধিনির্যাধিনাভিন্ন ।
কুইছবং কর্পাং বেবং প্রতিকাশিনির্যার্ক্রেরং ৪" (ব্রশীর্বাভ্রাব্র)

বরুণের নমস্কার-মন্ত্র যথা---

कित्ररेगः भीजरेगः मोरेगाः श्रीगत्रस्रमवस्थित्। লবণ্যামৃতধারাভিত্তপরস্থমিব প্রক্রা:। রাজহংসসমার্ক্য পাশবাগ্রকরং গুভন্। পুকরাদ্যৈগণৈ: সর্কে: সমস্তাৎ পরিবারিতম ॥ গৌর্য্যা কাস্ত্যা চামুগতং নদীভিঃ পরিবারিতম। नारेगर्यारम् गिरेनयुक्तः बाक्रागामिव हाशवः ॥ স্টিসংহারকর্তারং নারায়ণমিবাপরম u" এইরূপ ধ্যান করিয়া পরে পূজা করিতে হইবে। वक्राव मह-- ७ (वी। "অষ্টাবিংশান্তবীজেন চতুর্দশন্বরেণ চ। অর্দ্ধেন্দুবিন্দুযুক্তেন প্রণবোদীপিতেন চ ॥" (হয়শীর্বপঞ্চরাত্র) প্রতিমায় প্রাণ প্রতিষ্ঠা করিয়া প্রণব বারা নিবোধমুদ্রা প্রদর্শন করিতে হয়। অঙ্গুষ্ঠ ও মৃষ্টি অন্তর্গত করিলেই নিবোধ-মুদ্রা হইয়া থাকে। পরে পাশমুদ্রায় দেবতার সারিধ্য করিয়া গন্ধ, পূপ, स्वे अ दिल्लामि वाता **পृका क**तिए**उ हत**। শপ্রতিমায়াং স্থিতিং কৃতা প্রণবেন নিবোধয়েৎ। পুজরেদগৰূপুলাদৌ: সারিধাং পাশমূদ্রয় ॥" (হরনীর্ব)

"বক্ষণো ধবলো বিষ্ণুং পুক্ষো নিজগাধিপম্। পাশহন্তো মহাবাহন্তকৈ নিতাং নমো নমঃ ॥"(জ্লাশরোৎসর্গত্ত্ব)

দেশে অনার্ষ্টি দেখা দিলে বরুণার্চনা ও বরুণমন্ত্র জ্বপে সুর্ষ্টি হয়। অনার্ষ্টির কারণ বরুণার্চনা করিতে হইলে তথন স্বতন্ত্র ধ্যান আছে। সেই ধ্যানে বরুণের রূপ চিস্তা করিয়া ভাহাকে নমস্কার করিবে।

"পূষ্ণবাবন্তকৈ মৈ হৈঃ প্লাবয়ন্তং বস্থা । বিজ্ঞাদ্গৰ্জ্জিতসন্নথ্ধ: তোয়ান্মানং নমাম্যহম্॥ যন্ত কেশেষু জীমূতো নদ্যঃ সৰ্ব্বাদসন্ধিষু। কুকৌ সমুদ্রাশতথারন্তমে তোয়ান্মনে নমঃ॥"

এইরূপ ধান করিরা মানসোপচারে বরুণকে আরাধনাপূর্বক মূল মন্ত্র জপ করিবে। জপের পূর্বে বিনিয়োগ করিয়া
লইতে হর। বথা—"প্রজাপতিখ বিভৃত্ত প্ছলো বরুণো দেবতা
এতাবদ্রাষ্ট্রমভিব্যাপ্য স্থর্বতার্বং জপে বিনিয়োগঃ।" মন্ত্র গুরুমুথ হইতেই জানিরা লইতে হয়। সেই মন্ত্র মধা—-

"ওঁ বৃষ্টিরিহানাব্যন্তররো মন্তান্পৃশতীং
গচ্ছ বশাপন্নির্দ্ধা দিবং গচ্ছত তেনো বৃষ্টিমাবহ ॥"
এই মন্ত্র সহজ্ঞবার জপের পর নিশ্চর বৃষ্টি হইবে। মন্ত্রান্তর
বধা—কূর্চে লক্ষী ও মারাবীজ, (হুঁ প্রাঁ হুঁী, এই আক্ষর মন্ত্র
বিদি নাজি পর্বান্ত জলে মন্ত্র হইরা জপ করা হয়, তবে অনাবৃষ্টি
লূর হয়, এবং সন্থা সন্থা দেশে মহাবৃষ্টি হইতে থাকে। মন্ত্র জপের

সংখ্যা অষ্ট সহল, কিন্তু তাহার চতুপ্তণি, অর্থাৎ বৃত্তিশ হাজার জপ করিতে হইবে। তিনদিনের পর চতুর্থ দিনে এই জপের সমাপ্তি।

"নাভিমাত্রং জলে স্থিদা জপেদাদ্রং প্রসর্ধী:।
বহুসহত্রং জপেদাদ্রং ত্রিদিনং ব্যাপ্য বছতঃ॥" অথবা—
"বট্সহত্রং জপেদ্রিতাং তদা বৃষ্টির্ভবেদ্ধু বম্।" (বট্কর্মদীপিকা)
কের কের জনাবৃষ্টিকালে বরুণের একাক্ষর মন্ত্র জপেরও
ব্যবস্থা করেন। একাক্ষর মন্ত্র বিং'।

মন্থ বলিরাছেল,—মহাপাতিকী ব্যক্তির যে, ধন দণ্ড করা হইবে, সাধুচরিত্র রাজা তাহা কখন গ্রহণ করিবেন না। কেন না লোভে পড়িরা তাহা গ্রহণ করিলে, সেই মহাপাতকীর দোষেই তাঁহাকে লিও হইতে হয়। এই জন্ম জলে প্রবেশ করিয়া রাজা সেই দণ্ডবারা লক্ষ ধন বরুণকে অথবা সদৃত্তি-সম্পার শান্তক্র রাজ্মণকে দান করিবেন। কারণ, বরুণ দণ্ডকর্ত্তা, তিনি রাজা-দিগেরও দণ্ডধর। আর বিনি বেদপারগ রাজ্মণ তিনি সর্ব্ধ জগতরই প্রভু। শং (মন্থ ৯ আঃ)

অতি প্রাচীন কাল হইতেই জলাধিষ্ঠাতা বস্লণদেবের উপা- 🍃 সনা প্রচলিত আছে। ঋথেদে তিনি রাজা, বিওদ্ধ বল, বিমান-চারী, বেগবান ও পরাক্রমশালী বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন। উক্ত রাজা বরুণ সূর্য্যের ক্রমান্তরে গমনার্থ পথ (উত্তরারণ ও দক্ষিণারন মার্গ) বিস্তার করিরা থাকেন। তিনি মূলরহিত অন্তরীকে থাকিয়া বননীয় তেজ্ঞপুঞ্জ উর্জে ধারণ করেন, সেই রশ্মিপুঞ্জ আধামুণ, কিন্তু তাহার মূল উর্দ্ধে, তত্মারা তিনি জীবের মরণ রোধ করেন। তাঁহার শত সহল্র ওষধি আছে, অর্থাৎ তিনি ওষ্ধিপতি। তিনি নিশ্ব তিকে পরামুখ করিয়া মন্থ্য-দিগের দুরিত নাশ করিতে সমর্থ। তিনি পরমায়ু দান ও গ্রহণ-কারী, তাঁহার আজ্ঞায় রাত্রিযোগে চক্র দীপ্যমান হয়; তিনি বিদান ও অহিংসিও বন্ধনমোচনকারী ও মুক্তিদাতা এবং তাঁহার কর্মসমূহ অপ্রতিহত। 'হে বঙ্গণ। নমকার করিয়া তোমার ক্রোধ অপনয়ন করি, বজের হবা দানবারা ভোমার ক্রোধ অপনোদন করি। হে অহরে! হে প্রচেতঃ! হে রাজৰ্। আমাদিগের জন্ম এই যজে নিবাস করিয়া আমাদের কুতপাপ শিণিল কর। হে বরুণ। আমার উপরের পাশ উপর দিয়া, নীচের

 পাল নীচে দিরা এবং মধ্যের পাল মধ্য দিরা খুলিরা দাও। তংপরে হে অদিতিপুত্র! আমরা তোমার ব্রতথক্তন না করিরা পাপরহিত হইরা থাকিব।' (অক্ ১।২৪)৬—১৫)

এইরপে বেশ বৃধা যার বে, বরুশ দিক্পতি বা লোকপাল,

✓ তিনি বমের ভার পাপপুণাের বিচার বা নিএছকর্তা। তিনি
দনাবিকারী (পক্ ১০১৭৩৪) এবং ধৃত্ত্রত। (পক্ ২০১৪)
পক্লংহিতার ১০১৬৯০১৪ মত্রে লিখিত আছে, বরুশ সমুত্রভলের সহিত আগমন করিতেছেন। ৭৮৭৩ মত্রে তৎকর্ত্বক
সমুত্রকে স্থাপনের কথা আছে। তাঁহার ভিতর তিনপ্রকার
হালোক নিহিত আছে; তিন প্রকার ভূমি, ছর অবস্থার
ইহাতে অকুভূত রহিয়াছে। তিনি অক্তরীক্রে হিরগর দোলার
ভার দীত্তির জভ্ত স্বর্যাছে। তিনি অক্তরীক্রে হিরগর দোলার
ভার দীত্তির জভ্ত স্থাকে নির্দাণ করিয়াছেন। তিনি জলবিশ্বর
ভার বেতবর্ণ, গৌর মৃগের ভার বলবান্, উদকের নির্দাতা ও
সমন্ত সংপদার্থের রাজা। এ।৪।৭ মত্রে তিনি স্থাকর্ত্বক ভত
হয়াছেন। অক্সংহিতার ৭ম মগুলের ৮৭-৮৯ প্রক্রে মন্ত্রনিচরে বরুণ দেবতার নানা ভাতি আছে।

এতত্তির উক্ত সংহিতার ১/১৫৬/৪, ২/২৭/১০, ২/২৮/৯, ৪/১৮/৯, ৪/১৮/৯, ৪/৪১/১-২, ১০/৯৯/১০, ১০/১৩২/৪ স্থলে বরুণ সর্ব্ধ-শেষ্ঠ, রাজা ও শক্তিমান্ এবং ব্যোত্তবিশিষ্ট দেবতা বলিয় গৃহীত হইরাছেন। অথকবেদেও বরুণ দেবগুণের মুখ্য বলিয়া কীর্তিত। "সোমো ভগ ইব বামেবু দেবেবু বরুণো বথা।" (অথকা ৬/২১/২)

ঋকৃসংহিতার ৮।৪১ ও ৮।৪২ স্থকে বরুণদেবের ছতি আছে। "লেধ হজের মন্ত্রনিচরে অতিথবি বকুণ দেবভার এই-রূপ ন্তব করিয়াছেন, 'তিনি নিখিল ভুরনের অধিপতি ও ্বিষ্টিপাত্ত্বারা পৃথিবী, **অন্তরীক্ষ ও স্ব**গাকে আঞ্জ করেন।' এই প্রকের মন্ত্রপুলি পাঠ করিলে স্বতঃই মনে হয়, সর্ব্বশক্তিমান পর্মেশ্বরই বরুণ। ঈশ্বরের কার্য্যাবলী শুডার অভিধা প্রাপ্ত হট্যা বৰুণে আরোপিত হইরাছে। খাখেদের ঋষিগণ প্রকৃতির বিময়-কর কার্যাপরস্পরা নিরীক্ষণ করিরা বরুণ ইন্তাদিদেবের স্থাতন্ত্র कन्नना क्रिताहित्मन, भरत औहात्रा त्महे कार्याभतन्भतात्र खेका উপলব্ধি করিরা ঈশবের একম ভ্রম্বরে অভুভব করেন। ('যিনি পূর্বাছারা অন্তরীক্ষের পরিমাণ লয়েন (elbele), ডিনিই नहीं नकशरक अक महानमूटक-त्यात्रण करतन, अवह तिहे महा मयुक्त भूर्व इस ना (elbelo), ' व्यावात जिनिहे ससूरहात भाभ বিনাশ ও অপরাধ খণ্ডন করিয়া থাকেন। তিনি স্থাের আন্ত-নণার্থ এবং বৃক্ষ সকলের উপরিভাগে অন্তরীককে বিস্তারিত করিয়াছেন, তিনি অবগণের বল, ধেমুগণকে হয় ও হৃদরে भः कह मान कतिया थारकन । जिनिहे करण पश्चि: पश्चितिक एश्व ও পৰ্বতে লোমণভা কাপন করিয়াছেন।' ইত্যাদি স্বভি দেখিয়া অফুমান হয় যে, ধর্মপরারণ বৈদিক ঋষিগণ বরুণ ও ঈশ্বরকে এক ও অভিন্ন বলিয়া নির্দেশ ক্রিয়া গিয়াছেন।

এই একছ হেতুই ১। ৩৬-১৩৭ প্রক্তে পর্কচ্ছেপ শ্ববি, ১।১৫১-১৫২ প্রকে দীর্ঘতমা শ্ববি এবং শ্বাহেদের ৭।৬৩-৬৬ প্রকে বশিষ্ঠ শ্ববিকর্তৃক প্রাতে মিত্র ও বর্রুণের* স্কৃতিমন্ত্র গীত হইরাছে। শ্রীহারা নামপার্থকে জগতের ভিন্ন ভিন্ন মঙ্গলজনক ক্রিয়া সম্পান্দকর্তা হইলেও মূলে এক মহান্ ঈশ্বর ভিন্ন আর কিছুই নহেন, তাহা ম্পাইই ব্যা যায়। তাই আমরা প্রক্রুংহিতার ১।১৫৬।৪ মত্রে বিষ্ণু ও বরুণ এবং অশ্বিদ্ধারক একত্র স্থাবিশিষ্ট হইন্না যজে মিলিত দেখিতে পাই।/ শাশ্বান্ধন শ্রৌতস্ত্রে (২।২০।৪) এরূপ বিষ্ণু-বরুণের সংযোগ ও একাধারত্ব বর্ণিত হইরাছে। গোভিল ৩।৬০২ প্রত্বে বমবরুণের এক্যোগত্ব এবং শাশ্বান্ধনব্রান্ধণ ১৮০১ ও কাত্যান্ধন শ্রৌতস্ত্রে (১০।৮।২৭) আন্ত্রির একাধারত্ব নির্দেশিত আছে। শ্রশ্বক্ ৪।১।২ মত্রে অন্নিবর্ণরে একাধারত্ব ভিন্তৃত্ব সম্বন্ধ আরোপিত ।।)

অথর্কবেদের "ইল্লেক্স মছব্যাঃ পরেহি সং ক্ষুজ্ঞান্থা বরুণেঃ সংবিদানঃ।" (অথর্ক ৩।৪।৬) মত্রে ইক্স ও বরুণের একমতিত্ব দ্বিরীকৃত হইরাছে। এইরূপ বাজসনের-সংহিতার ইক্স ও বরুণের একত্ব দেখা যার। তাঁহারা দেবগণের সমাট, স্কুতরাং দেই ইক্সাবরুশ মিত্রাবরুণের ভ্রায় কিছুতেই ঈশ্বর ভিন্ন অপর কেছই হইতে পারেন না। তবে স্থানবিশেবে তাঁহাকে মিত্র, আমি, ইক্স, যম বা বায়ুর সহিত ঐশক্মা সম্পাদন করিতে দেখিরা তাঁহার মৌলিক ঈশ্বরত্বের কিছু বিশেষত্ব নির্দিষ্ট হইয়াছে, এই মাত্র বলা যাইতে পারে।)

শ্বংগদের ১।১২৬-১৩৬ হক্তের মন্ত্রগুলি পাঠ করিলে তাঁহাদের পরস্পরের কিছুই বিশেষত্ব উপলব্ধি হয় না বরং তাঁহাদের
একত্বই নিস্পাদিত হইরা থাকে। শ্বক্ ১।১৩৬/২-৭ মত্তে আছে
বে "আমি হুর্য্য, পৃথিবী, আকাশ, মিত্র, ও বরুণ এবং কুদ্রকে
নমন্ত্রার করি। ইহারা সকলেই অভিমত ফলদারী ও হুবদারী।
ইন্ত্র, আরি, অর্থ্যমা ও ভগকে তাব কর। ৩ ০ ৮ আমরা ইন্ত্রকে
প্রাপ্ত হইরাছি, ০ ০ ৮ ইন্ত্র অন্ত্রি, মিত্র ও বরুণ আমানের
হুব্পপ্রদ হউন, আমরা অরবান্ হইরা বেন সেই স্থুবজার করি।"
১।১৫৩ হুক্তে ইন্ত্র ও বারুর এবং ১।১৩৩ হুক্তে ইন্ত্র ও বরুণের

व्यवस्थित अठाठ मद्ध मिजानम्प्रांत्र क्षात्रम् व्याद्धः।

^{† &}quot;স আঠয়ং বলপময় আ ববৃৎষ অছো হয়তী বঞ্জবনসং জ্যেষ্ঠং বঞ্জবনসয়।
অভাবামসাবিভাং চর্বশীবৃতং রাশানং চর্বশীবৃতয়।
সংধ সধারমভা ববৃৎখাতং ন চক্রং রব্যেষ রংফায়ভাং বয় য়য়য়।
অয়ে সুলীকং বলপে সচা বিবো ময়য়য় (বয়ভায়ৢয়ৢ। [ড়ড় য়ায়য়৹])

সংহচর্যা স্থাচিত হইরাছে। ইহার বারা স্পাইই এই দেবতামগুলীর এক্ষ ও ঈশ্বরত্ব প্রতিপাদিত হইতেছে। আবার—শুক্র বৃদ্ধ্র্ কেদের ৮০০৭ মন্ত্রে "ইন্দ্রুল্চ সম্রাড্বরুণন্দ রাজা তৌ তে জ্বলং চক্রজুরপ্র এতম্।" পাঠ করিলে উভরকে এক বলিয়াই মনে হয়। উহার ভাবেয় মহীধর লিথিয়াছেন;—"তৌ দেবৌ ইক্রবরুণো তে তব এতং সোমমগ্রে প্রথমং জ্বলং চক্রজু:। তৌ কৌ ইক্রো বরুণন্দ চকারৌ সমুক্তরে, কিছুত ইক্রং সম্রাট্ পরমেশ্বর্যায়ক্তরে বাজপেয়্যাজীতার্থ:। কিংজুতো বরুণঃ রাজা রাজস্বয়্যাজী রাজা বৈ রাজস্বয়েনেই। ভবতি সম্রাড্যাজপ্রেনেতি শ্রুতেঃ।"

শ্বক্ষাহিতার ১১০৩৬। মন্ত্রে উষাকর্ভ্ক বরুণের গৃহ আলোকী-করণের কথা আছে। শুরুষভূর্বেদের "পন্ত্যাম্ব চক্রে বরুণঃ সধস্বমপাণ শিশুম তিত্তমাস্বস্তঃ"(১০<u>৭৭) মন্ত্রপাঠে বৃন্ধিতে পারি যে, সমৃদ্র বা জলগর্ভই বরুণের পৃ</u>হ। তিনি জলের শিশু, জলই তাঁহার নিবাসস্থান। ঐ মন্ত্রের ভাষ্যে মহীধর লিখিরাছেন—'যা এবিখিধা আপস্তাম্ব অস্তর্মণো বেরং সধস্বং সহস্থানং চক্রে কুতবান্ সহ স্থীয়তে যন্মিন্ তৎ সধস্বং। কিস্কৃতো বরুণঃ জ্বপাং শিশুঃ বালক অপাং বা এব শিশুর্ভবিতি যে রাজস্বরেন ফলত ইতি ক্রুতো স্বন্ধ্যা প্রত্যাম্ব প্রত্যাম্ব প্রত্যাম্ব প্রত্যাম্ব স্বর্জাম্ব সর্বেষামাধারত্বাৎ তথা মাতৃত্যমান্ত্র অতিশরেন জগরির্ঘাত্রীয়ু।"

উক্ত সংহিতার ৬।২২ মন্ত্রে বন্ধণের পাশসমযিত স্থানের ভয়ভীত মানবের মৃক্তি প্রার্থনার কথা আছে;— "ধামো ধামো রাজংস্ততো বরুণ নো মুঞ্চ। যদাহুরয়া ইতি বরুণেতি শপামহে ততো বরুণ নো মুঞ্চ।" আবার শুরুষজু: ১০০৯ মন্ত্রের "রহ্মপতির্বাচমিন্দ্রো জোঠায় রুদ্রং পশুভাঃ মিত্রং সত্যো বরুণে। ধর্মপতীনাম্।" এখানে মন্ত্রাংশে বরুণকে ধর্মপতি বলা হইয়ছে। উহার ভাষো মহীধর তাহা বিশদভাবে ব্রাইয়াছেন, "ধর্মপতীনাং ধর্মেখারাণাং ধর্মশিলানামাধিপত্যোদা স্বতাং। সবিত্রাদরোহটো দেব স্ক্রেবিষাং দেবতাত্বাং নানাধিপত্যানি দদর্ঘিত বাক্যার্থ: ।' টেছার পরবর্তী মন্ত্রে (১।৪০) বরুণাদি দেবতা কর্তৃক রাজাদিগকে মহতী ক্ষ্মপদরীতে নিয়োগের প্রার্থনা দেখা যার। তৈতিরীয় ব্রাহ্মণের ও)২২।৭ মন্ত্রের "ক্ষম্রন্থ রাজা বরুণোহধিব্রাক্রং" পদ্রে এই বাক্য সমর্থিত হইয়াছে। দি।

র্প ধরেদের অনেক ছলে বরণকে ১কজ বা ক্ষত্রির বলা হইরাছে। কিছ
সেখানে ক্ষত্রির অর্থে বলবান্, তথম ক্ষত্রির নামে খড্রে বর্ণের স্পষ্ট হইরাছিল
কিনা সন্দেহ। উহারা বলের পথিগতি এই কারণে পরবর্তী আন্ধণনূসে ক্ষত্রির
(কলপানী) রাজাদিগের বর্ণনির্পরের সলে সলে বর্লণকেও ক্ষত্রিরের রাজাদিপের অধিপতি বঞ্চনতা ও রক্ষাকর্তা বলিরা গ্রহণ করা হইরাছে।
অকুসংখিতার গাওথা মন্ত্রে

জ্ঞধর্কবেদের ২।১০।১ মত্রে বঁকণ দীপ্রিলালী ও বডাক্সারণ-শীল ব্রলা হইরাছে। অনুতাদি ভাষণহেতু তাঁহার কোপে পড়িলে লোকে অচিরে কলোদরাদি রোগার্ড হইরা পড়ে। / ব্রন্ধমন্ত্র বারা বা বকণবিষয়ক অতিক্রপ হরিছারা বা অতি তীক্ষ ভোত্রাদি বারা তাঁহাকে তুই করিলে তাঁহার অন্তর্গ্রহে রোগোন্মোচন ও লোকে বলগ্রাপ্রি ঘটে ।।

এক ক্রের আন্দর্গ (১২৪) পাঠ করিলে জানা যায় যে, জলাধিপত্তি দেবরাজ বরুণ দিক্পালরূপে অহারগণের সহিত যুদ্ধ করেন, আদিজ্ঞগণ ভাঁহার সব্দে অগ্রসত্ত হইয়া দেবতাদের ভীতি অপনোদন করিয়াছিলেন 📭 উক্ত গ্রন্থের (৭৷১৪-১৫) হরিশক্ত উপাথানে লিখিত আছে বে, এক্ট্ৰু বাৰা হ্ৰিড্ৰু নার্চনের আদেশে পুত্ৰকাৰী হইয়া বন্ধুণ দেৰের তপজা করেন। ভাঁহার আরাধনার তথ্য হইয়া বঙ্গাদেৰ তাঁহাকে দর্শন দিয়া কহিলেন, হে রাজন! তোরার তপভার পরিতৃষ্ট হইয়াছি,তৃমি বর প্রার্থনা কর। ভাহাতে রাজা পুত্রবর প্রার্থনা করিলে বরুণ বেব ইবৎ হাগু করিয়া বলিলেন, তোমার পুত্র জন্মিবে, কিছ তুমি নিঃপছ চিডে तिहे भूखरक य**जी**त भक्ताल स्थामात शिकार्थ वनि मिरव। बाका খীকৃত হইলে ভাঁহার রোহিত নামে এক পুত্র জন্মিল। भूमःभूमः भूद्धरक धार्षना कतिएक गागिरगन । त्राजाक वातर-বার অন্তরোধ, দিনত্ব ও নানা আপতি সেধাইরা পুত্রের প্রাণ-রকার উপার দ্বির করিতেছিলেন। এইরূপে ক্রমান্তর রোহিড দলম বর্ষে উপস্থিত হইলে বন্ধুণ দেব আসিয়া বলিলেন, এখন আপনার পূত্র ৰজীয় পশু হইবার হোগ্য হইয়াছে। ভাছাকে সমাবর্জনের পর মরমেধ বজের বাদনা জানাইরা বিদায় দিলেন এবং পুত্ৰক্লে সমীপে ডাকিয়া বলিলেন, হে প্ৰিয়! বে ভোমাকে আমার নিরাছেন, জামি বজীয় পণ্ডরূপে নিহত করিয়া তাঁহার করে তোমার সমর্শণ করিব। পিতার একবিধ বাকাশ্রবণে পুত্র "না হ্লা" বলিয়া খীর মন্ত্রক বলে সইয়া বনে প্রতেশ করিল ৷ বথাসময়ে বরুণ দেব রাজস্কাশে আসিরা 'মহা-বাক যক্ত করুন' বলিয়া দণ্ডাম্মান হইলেন। রাজা ভর্ম দেবতাকে आश्रंम मरवाम कार्यम कविद्यान। वक्षरश्व मार्टश वाका करमापत्री রোগে আক্রান্ত হইয়া বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন।

পিতার এই রোগের ঝাপার ক্ষরগঠ হইরা রোহিত বনদেশ ছাড়িরা প্রামে উপনীত হইবেন । তথন বান্ধণরূপে ইন্ত ভারাকে

শৰারান্ধানাম কচন্য গোপা নিজুপতী ক্ষত্রিয়া বাডমর্কাক্।"
মত্রে বরণকে নিজুপতি ও ক্ষত্রিয় বনা হইরাছে। কিন্তু উহার ক্ষর্থ ক্ষত্তরূপ।
† "ব্যায় দেবানাসমূরে। বি রাজতি বলা হি সভ্যা বরণন্য রাজঃ।
ভক্তপারি ব্রহ্মণা পাসনান্য উত্তস্য বজোক্ষিমং নরামি হ" অবর্কা ২০১০০ হ

দেখা দিয়া বলিলেন, তুমি মূঁচ, রাজসংসালের ছঃখপরাকাঠা কেন ভোগ করিতে বাইবে, অতএব আমার পরামর্শে নিরন্তর ভ্রমণ করিতে থাক। তবিবাতে তোমার স্থাধান হবৈ।

'এইরপে তিনি ব্রাহ্মণরূপে বৎসরান্তে বঠ বৎসর পর্যান্ত সাঞ্জন করে বৃত্তিমূক্ত বচনে নিষেধ করিয়া বান। এই বৎসরে রাজ্পত্র ক্ষরনপুত্র আরীপুত্র ধ্বির আশ্রমে আসিয়া বলিলেন, হে ধ্বিশ্রেট আমি আপনাকে শত গাভী দান করিব। আপনি বীয় পুত্ররের এক জন বারা আমার পশুরূপে বজ্ঞে বলি হওরার পথরোধ কর্মন। তাহাতে ধ্বি তাহাকে শুন্দার ধ্বিকে শত সাভাদানপূর্কক ব্রাহ্মণকুমার শুনংশেককে লইয়া পিতৃস্কাশে উপনীত হইলেন এবং বলিলেন এই বালককে দিয়া আমি অব্যাহাত লাভ করিব। ভদনস্তর রাজা বজ্ঞে ব্রতী হইলেন বয়ং রাজপুর্বক্ষের অভিবেচনীর করিয়া দিয়াছিলেন:—

"দ পিতর্বেভোবাচ তত হত্তাহ্মনেনাত্মানং নিজাণা ইতি দ বহুশং রাজানদুপদ্যায়ানেন তা ফলা ইতি তংগতি ভ্রান্ বৈ রাজণঃ ক্রিয়াহিতি বহুশ উবাচ তত্মা এতং রাজস্যং ফ্রুকুস্ প্রোবাচ ত্যেত্যভিবেচনীয়ে পুরুষং প্রমানেতে।"

(91)

বেরণ বলিলেন, ক্রির পশু হওরা অপেকা ব্রাহ্মণই যজে পশু হওরা ভাল, তথন যজারস্ত হইল। বিশু<u>মিত হোতা, ক্রমা</u>রি অধ্বর্য, বলির ব্রহ্মা এবং অ্যাত্র উল্লাতা হ<u>ইলেন</u>। শুনংশেফ যথন ব্রিলেন বে, তিনি পশুরূপে যজে নিহত হইতেছেন, তথন ভিনি ব্যাক্র্মের প্রজাপতি (শুক্ ১/২৪/১) অমি (শুক্ ১/২৪/১) স্বিতা (শুক্ ১/২৪/৩-৫) ও জ্লেনন্ত্রন ব্রুণের (শুক্ ১/২৪/৬-১৫, ১/২৫/১-২১) ভতি ক্রিরাছিলেন।

দেবীভাগবতের ৭ম ছবের ১৪—>৭ অধ্যায়েও এই ঘটনা
 বিস্তৃত ভাবেও প্রকারান্তরে শিখিত আহে।

[ভন:শেক ও বিখামিত্র শব্দ দেখ।]

তৈভিনীর ব্রাক্ষণের ১৷১৷৪৷৮, ১৷৪৷১৽৷৬ এবং শতপথ-ব্রাক্ষণের ১২৷৮৷৩৷১০ ও ১৩৷৩৪৷৫ ছলে বরুগ দেবের পূজা বিহিত হইরাছে।

এই উপাধ্যানদারা বরণকে প্রজ্বাপ্রদ, প্রজাপানক ও প্রজা-সহারক দেবতা বনিরাই বোধ হয়। স্বতরাং তিনি স্টি, হিতি ও নারকর্তা পরম পুরুষ। তিনি রাজানিগকে রাজ্যে হিতি করিয়া থাকেন। "ভদরং রাজা বরণকথাই স ভারত্তবাং স্কুলোক্ষেই। (, অবঁক প্রচার)

আবার মন্থ সংহিতার তিনি রাজাদিসেঁর দওগাতা বদির। উক্ত হইরাছেন (মন্থ ২০৪৫) শবেদে বৰুণকৈ দেৱজাগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বলিয়া বর্ণিত দেখা বায়। তিনি জলদেবতা বলিয়া কথিত। যখন সমস্ত তমোনরাশি-সমাজ্য ও প্রস্থের ফার ছিল, তখন তগবানের ইচ্ছার মহাভূতাদির বিকাশ হইতে থাকে। আদিতে অপ্স্ট হইয়াছিল অর্থাৎ জলই ঈশ্বরের আদি বিকাশ; স্তরাং জলাধি-পতি বরুণকে ঈশ্বর এবং দেবগণের মধ্যে প্রথম বলিয়া ক্রনা করা কিছু অসম্ভব নহে।।

মহাভারতের উদ্যোগ ও শলাপর্মে তিনি উদকণতিরূপে বর্ণিত আছেন। তিনি এই আধিপত্য সর্বলোক পিতামহের নিকট প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। "অপাং রাজ্যে স্করাণাঞ্চ বিদরে বহুণং প্রভুম্।" (ভারত স্ত্রীপর্ম)

ভাগৰতে বৰুণদেব **কাশ্রুপপন্নী অ**দিতির পুত্ররূপে কীর্তিত হইয়াছেন,—

"অথাতঃ শ্রন্নতাং বংশো বোহদিতেরস্থপূর্বলঃ। বত্র নারান্নগো দেব স্বাংশেনাবতর্ন্নিভূ: ॥ বিবস্থানগ্যমা পূধা জ্ঞাখ সবিতা ভগ:। ধাতা বিধাতা বন্ধণো মিত্র: শক্র উক্তক্রম:॥"

(ভাবৰত ভাভাত৮—৩১)

হরিবংশ ৩র অধ্যারে বরুণাদি দেবগণের উৎপত্তি সম্বন্ধে এই একই বিবরণ গৃহীত হইয়াছে। আবার ঋক্সংহিতার ১০।৭২।৮ মন্ত্রে অদিতির আট পুত্রের জন্মকথা আছে। আবিতি আটটীর মধ্যে মার্কগুকে দূরে নিক্ষেপ করিয়া অপর সাতটীকে লইরা স্বর্গগমন করিলেন। ঋষ্যেদের ২।২৭।১ মত্ত্রে ছর জন আদিত্য এবং না১১৪।০ মত্ত্রে সাত আদিত্যের বর্ণনা আছে। তৈত্তিরীয় ব্রাহ্মণে ধাতা, অর্থুমা, মিত্র, বরুণ, অংশ, ভগ, ইক্স ও বিবস্থান্ এই অন্ত আদিত্যের কথা আছে; কিন্তু মহাভারত † ও বিষ্ণু ‡

"শংগ্রে পূলাস: পূলা বিলাদরোহ দিতেওঁবন্ধি বোহ দিতেওবং পরিলরীরাআাতা। উৎপরা:। অবিতেরটো পূলা অধ্বর্গুলিরণে পরিসবিতা:।
তথা হি তালসুক্রমির্যানো মির্লিত বঁষণাক ধতা চার্যীরা চার্নিক ভর্মক বিব্যালাদিতাকেতি।

 ক হি তিতিরীয়সংহিত ভিলিও

 বিব্রা

 শ্রেক্তাতীত শতপথ প্রাশ্ধণে ভাগাত উক্ত কম্ মন্ত্রের প্রকৃত্ত বিব্রণ প্রদ

ইরাহে।

 বিব্রণ

্ব কর বিশৃশ্যু পরণক সম্ভাতে পুনরের হি । বিববান্ সবিতা চৈব বিজো বছল এব চ। আলো ভগলটোডেজো আবিতা। বাংশ বৃতাঃ । (বিশৃশুণ ১/১৭/শং) শ্রেছি প্রাণে বাদশ আদিত্যের নাম পাওয়া বার। শ্রুপথরাজ্পের ১১।৬।৩।৮ বরে বাদশ মাসের স্থাকে বাদশ আদিত্য
বলা হইরাছে। ,ঋক্সংহিতার ২।২৭।১ মত্রে দুকু অদিন্তির
প্রেরপে উলিখিত হইরাছেন। নিরুকে (৯)২০) বাছ লিখিরাছেন,—"অনিতের্ব কো অলারত দক্ষাত্ত অনিতিঃ পরি" অর্থাৎ
দক্ষ হইতেই অনিতির উৎপত্তি। আবার অক্ ৬।৫০।২ মত্রে
স্থাকে দুকু হইতে সমূত বলা হইতেছে। স্কুতরাং এরূপ স্থলে
কোন মীমাংসা করা বার না। তবে ১উক্ত স্কুকের ১ম মত্রে
লিখিত আছে, 'হে দেবগণ! আমি স্থের নিমিত্ত
ভোত্র সহকারে অনিতি, বরুণ, মিত্র, অর্থা, অর্থামা, তগ ও
সম্দায় রক্ষাকারী দেবগণকে আহ্বান করিতেছি।' এই সকল
আলোচনা করিলে বরুণকে আদিত্যগণের এক্তম বলিরাই
মনে হয়।?

মহুসংহিতার বরুণ অধিতীয় তেজঃসম্পর § এবং পাশহত বলিয়া উক্ত হইরাছেন। তাঁহার পাশবছ ব্যক্তি পাপ প্রশমনার্থ বারুণ ব্রতাচরণ । করিলে মুক্তি পাইয়। থাকেন। বরুণ মত্তের দারা সলিল বিকারে বরুণের পূজা এবং তাহার দারা নাভিজনে দাড়াইয়। অপ ও হোম করিতে হয়।

"प्रतिनविकारत कूर्गा प्रकार वक्रणण वाक्रनमरेकः।"

(বুহৎস° ৪৬/৫১)

হরিবংশের ৪৫ অধ্যায়ে বরুণদেবের রূপবর্ণনা এইরূপ

লিখিত আছে:

—

"চতুর্ভি: সাগরৈগুঁ প্রো লেলিছডিক পরগৈ:।
শুঝুক্তাগদধরো বিদ্রভাগমন্ত বপু:।
কালপাশন্ত সংগৃত্ব হুরে: শশিকরোপনৈ:।
বাধীরিতজলোদগারৈ: কুর্কন্ লীলা সহস্রশ:॥
পাপুরোছ,ভবসন: প্রবালক্ষরিধর:।
রশিশ্রামোন্তমবপুর্হারোন্তমবিভূবিত:॥
বন্ধণ: পাশভূদ্মধ্যে দেবানীকণ্ঠ তদ্বিবান্।
যুদ্ধকোমভিলবন্ ভিন্ন বেল ইবার্পর: ॥" (হরিবংশ ৪৫৪১২৪১৫)
ভিনি হংসারুত্ব এবং পাশভূহ। (বৃহৎস্ ৫৮৪৭) তাহার
এই পাশান্ত কাল বা বন্ধপপাশ নামে খ্যাত। (রামান্ত্রশ ১৪২৭৯)
এই জন্ত্র ধান্ত ক্রিয়া তিনি দেবাস্বসংগ্রামে দেবপন্ধীর
কিন্পতিরূপে অবতীর্ণ হইরাছিলেন। ঐতরেন্থ রান্ধণে (১৪৪৪)
ভাষা প্রসক্তমে বর্ণিত আছে। রামান্ধণেও বক্পের যুদ্ধন্দলভার পরিচন্ধ প্রকৃত্ত হুইরাছে।

"পাশহতো বিপাশন্ত রণে বন্ধণ এব চ। ভগ্ন: প্ররাত: সহসা মরা স্ট্রীতে হুপাংপটি: ॥"

(রামারণ অং৪।৯)

শ্বমেরে বিষ্ণু ও বন্ধশের স্থিত বা অভেনজের যে আভাস প্রানত হইরাছে, সীভার ভাহা পূর্ণরূপে পরিবাক্ত দেখা বার। ব্যয়ং ভগবান্ট বলিভোছন:—

শ্বনব্ৰকামি নাগানাং বৰুণো যাদসামহম্।
পিতৃণামৰ্থ্যনা চাম্মি যমঃ সংযমতামহম্ ॥" (গীতা ১০।২৯)
আবার মহাভারতে কৃষ্ণ ও বৰুণের বিরোধের কথা আছে।
জীকৃষ্ণ জলজন্তসমাকীর্ণ সমূতগর্তে প্রবেশ করিরা সনিলাবর্গত
বক্ষণকে পরাজর করিরাছিলেন।

"প্রবিশ্র সকরাবাসং যাদোভিরতিসভৃতম্। জিগার বরুণং সংখ্যে সদিলান্তর্গতং পুরা।"

(ভারত ভোণপর্ম ১১ অ:)

ভাগবতে এই রঞ্জবরুণবিবেরের আভাস উপাখ্যাসদ্ধণে বিস্ত হইরাছে। একদা নক্ষ একদেশীতে নিরাহারী থাকিরা জনার্দ্দনের অভ্যক্তনা করেন এবং বাদশী তিথিতে আহ্মনী বেলার রামার্থ কালিনীসলিলে অবগাহন করিলে কলমগ্ন হইরা বরুণভূত্য কর্ত্ত্ব বরুণালরে নীত হন। ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ বরুণভূত্ব পিতাকে অপহত শুনিরা বরুণস্বীণে সমনপূর্বক পিতাকে উদার করেন। বরুণ তথন শ্রীকৃক্ষের পানবন্দনা করিয়াহিলেন—

শুজন্ত মে নিভূতো বেহোৎলৈ বার্থে হিধিপতঃ প্রভাঃ।
বংপালতা কোতগবরবাপঃ পারমধ্বনঃ ॥" (ভাগৰত ১০।২৮।৫)
ন্তন্দপুরাণের স্থান্তিপপ্তান্তর্গত বরুপাপুরী-মাহান্ত্যে লিখিত
আছে, —

একদা পৌনক হতকে বন্ধণাপ্রের মাহান্ম্য-বিবৃত্তি জিলাদা করিলে তিনি বলিরাছিলেন বে,নানা রম্বরাজিবিরাজিতা মনোরমা বন্ধণের একটা পুরী ছিল। সেই ক্ষেত্রের জনপদবাদী লোক দকল ধর্মপরারণ ও বেদার্থতক্ষ। তত্রন্থ লোকসমূহ জ্যোতিটোম বিধি বারা রামকে আরাধনা করিরাছিলেন। এই বজ্ঞে দেবতা ও পিতৃগণ সাতিশর পরিতোব লাভ করেন। পরে রাম তথার উপহিত হইরা বন্ধণকে বলিরাছিলেন, হে জলাধিপ বন্ধণ! তুমি তোমার ভবন সদৃশ আমার একটা ভবন নির্মাণ করে, এই ভবন নানারম্বিভূবিত ও সদা মূনিগণ সেবনীর হইবে। বন্ধণের পরস্তরামের এই কথা তানিয়া বীর ভবন নির্মাণ করিয়া ঐ পুর পরস্তরামকে নিবেদন করেন। তথম পরস্তরাম ঐ নানারম্বাভি বন্ধণাপর নামে থাতে হইবে এবং পরস্তরাম ঐ কানারম্বাভি বন্ধণাপর নামে থাতে হইবে এবং পরস্কর্মার এই প্রের জ্বিণতি থাকিবেন। একদা মনুমানে ক্ষেত্রার এই প্রের জ্বিণতি থাকিবেন। একদা মনুমানে ক্ষেত্রার

^{2 45 910.01}

[#] **44 Me.**F |

मवमी छिबिएक नर्सरमाय धक्क रहेवा नर्रापनवानी वारमब মহোৎসব করিতে ছিলেন। এই সময় এক মহাদৈত্য তথার উপস্থিত হইয়া রামমহোৎসহকারী লোকসমূহকে অভিশর পীড়িত ৰবিতে লাগিল। বন্ধনালয়বাসী লোকসমূহ গৈত্য কৰ্ত্তক পীড়িত হইলে প্ৰস্তৱাম ভাষাবের তবে তুই হইরা তথার উপস্থিত হইলেন এবং ভাহাদিগকে সম্বোধন করিরা কহিলেন, হে আন্দৰ্শণ ৷ তোমরা আমার জ্বাবহ বাকা প্রবণ কর, তাহা হইলে তোমাদের দৈত্যপীড়া, বিদুলিত হইবে। আমি নৈভাদানৰ নাশের জভ বহুণ নির্দ্ধিত পুরীতে মহামারাকে স্থাপন করিয়াছি, ভোমরা সকলে ভাহার শরণাগভ হও ভাহা হইলে এই ভয় নষ্ট হইবে। তথন বন্ধণালয়বাসী বিশ্ৰেগণ প্রভরামের আবেশাসুসারে মহালসা নামে মহামারার শরণাগভ হইয়া তাঁহার তাব ও পূজাদি করিতে লাগিলেন। মহামারা এালণদিপের তবে সম্ভব্ন হট্যা তাঁহাদিগকে বলিলেন, হে বিপ্রেগণ। ভোমাদের তর নাই, আমি এই দৈতাকে বিনাশ করিতেছি। এইরপে ভাঁহাদিগকে অভয় দিল্লা তিনি ঐ দৈত্যের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। মহামারা দৈত্যের সহিত ঘোরতর বুদ্ধ করিয়া তাহার মন্তক কর্মন এবং বামহত্তে গ্রহণ করিয়া নিজালয়ে গমন করিলেন। তথন দৈত্যভর বিদ্রিত হইল, দেবগণ আকাশে পুশার্টি ও গছর্ম সফল গান করিতে লাগিল। নির্মিন্নে রাম-मरहा९नव (भव रहेन। त्नहे व्यविध मांच मारनव छक्ना बछ। তিথিতে কামন৷ ক্রিয়া ও ভক্তিপ্রায়ণ হইয়া যে সক্ষ ব্যক্তি विज्तानवती (नवी महामात्रात्क भूका करत, (नवी छाहां पिरात অভিলাষ পূর্ণ করিয়া থাকেন।

(क्माप् न्याजिथ° वक्नाप्तीमाहाका >-२ काः)

त अखरीक विभिन्न विकिच्या अखरीत आर्यानिरगत अखरीत ঈশবের অভিবাক্তি প্রতিভাত হইয়াছিল, বেদে তিনিই বৰুণদেব বলিয়া বৰ্ণিত। সেই অন্তরীক্ষপ্রধ্যাত দেবভাদিগের রাজা বরুণের সহিত গ্রীকপুরাণোক্ত উরেনাসের অনেক সৌশাদৃত দেখা যায়। বৈদিক উপাধ্যানে দ্যৌগ্ কর্ডুক যেমন বন্ধণের প্রচাতি ও জলপতিরূপে নিরোগের কথা আছে; সেইরূপ গ্রীদের পুরাত্তে ভিউস কর্তৃক উরেনাসের পদচাতি বিবৃত হইরাছে। বরুণ বৃটিদাভা এবং জলগৃহবিহারী, উরেলাস্ও সেই সেই কাৰ্য্যের অধিপতি। কিন্তু বন্ধতঃই মেনা ও অধিনী এবং আর ও বরুণের সহিত আঞ্চান্ত বিবরে অনেক প্রাভেদ দেখা বার। বরং জলাধিকারিছে নেপচুনের সহিত বল্পের বিশেষ भिग चाटह। [त्नभट्टम देवें ।]

৩ খনামন্তাভ বৃন্ধবিশের। পর্যার—বন্ধন, সেডু, ভিজ-শাক, কুমারক, অকরীয়, সেডুক, বরাণ, লিখিনজন, বেতবৃক,

(बळ्जम, माधुरुक, ज्यान, माक्रजानह । हेरात खन-कर्रे, উক, সক্তবোৰ ও শীতীবাতহর, দিয়, বীপন, এবং বিজ্ঞান রোপর। (রাজনি•) ভাবপ্রকাশ মডে--"বরণ: পিতলো ভেদী প্লেম্বরুছ প্রমারভান। নিহত্তি গুলবাতাশ্ৰ-কুমাংশ্চোকোহরিদীপন:। ক্বারো মধুরভিজঃ কটুকো ক্লককো শুক্তঃ ॥" (ভাবএ। রাজবলভদতে ইহার ৩৭,—বাবু ও পুলহর, টেনক, উঞ্চ, ও অশ্বরীনাশক। বরুণের পুলাঞ্চণ--পিতন্তর ও আমবাতহর। (ब्राजनब्रञ्ज) ७ जन (स्विनी)। ६ रूर्या। (विच) "ধাডামিত্রোহর্যামা শক্রো বঙ্গপক্ষণ এব চ। ভগোবিবখান পুৰা চ সৰিতা দশমন্তথা ॥" (মহাভা°১।৬৫।১৫) ৫ মুনিগর্জ্জাত কপ্তপপত্র-বিশেব। (ভারত ১।৬৫।৪৩) বরুণক (পুং) বরুণকুক (Oratæva Roaburghii) বক্লণগুড়, ঔষধবিশেষ। (চিকিৎসাসার ১০৬) ব্ৰুপ্ৰচুট্টিত (বি) ১ বৰুণ কৰ্ত্ব আক্ৰান্ত। ২ উদরী প্রভৃতি রোগগ্রন্ত। বরুণগ্রাস্ত (তি) বরুণপ্রাপ্ত। জলনিমগ্ন। ব্রুণ্রান্ত (পুং) অবের তরামক হুট গ্রাহ বিশেষ। আর এই গ্ৰহাবিষ্ট হইলে ভালু, জিহুৱা, নেত্ৰ, বুৰণ ও মেচু, কুঞ্চৰণ গাত্রের শুরুতা ও খেদ নির্গম হইরা থাকে। ইহার শক্ষ্ "ভালুজিৰে চ নেত্ৰে চ ব্ৰণো মেচুমেব চ।

श्रावर क्रम्भ यश्र श्राम्शाक्र शोनवस्मय ह । ভত্ত খেলপরীভত্ত বৃদ্ধিমান বন্ধণগ্রহৈ:।

(जवनक ६१ जशाय)

ব্রুণ্গ্রাম, একটা প্রাচীন গ্রাম। (ভবিষ্যবন্ধর্থ enice») বক্লব্যাত (পুং) বৰুণ কৰ্তৃক আক্ৰমণ বা বৰুল।

कुछः लावः महार्थातः खबाष्ट विनिर्कित्भर ॥"

(তৈভিনীৰস[°] ভাভাৰাষ্ট্ৰ) दक्रभमूल्य, अन्त्रीत अन्त्री खेषर। एक १ त्नत, काशार्व कृष्टिक বক্ষণছাল ১২।• সের, জল ৬৪ সের শেব ১৬ সের। কথার্য বরুণ-मृत्नत्र हान, कमनीमृन, निष मृत्नत्र हान, कूनांवि नककृत्नत्र मृन, খলক, শিলাজভু, কাঁকড় খীজ, দুর্মা, ভিললালের জার, পলাণ ব্দার, বুঁইনূল প্রড্যেক ২ ডোলা। স্থল বিবেচনা করিয়া মাত্রা ছিন্ন করিবে। জীর্ণ হইলে প্রথমতঃ পুরাতন সংযুক্ত দ্বিদ্ন লাভ त्यवनीतः। देशास्त्र जनाती, भर्कता ७ कृतकुष्क् निरांतिक इत्तर। বক্লণ্ডীর্থ (রী) তীর্ঘটের। কালিকাপুরাণে এই ভীর্থ-অসকে নিখিত আছে বে, বৰ্ণ টনদের পূর্বনিকে অগ্নিবান পর্বত। ভাহার সন্মুখভাগে কংসকর পর্যভেতটে বরুপতুও মানুক পবিত্র সমোবর। এখানে কলাধিপ বরুণ নিজ্ঞাবাস করেন। কংসকর

পর্বতে বরুণদেবের পূজা দিয়া বারুণকৃত্তে লান করিলে বছবা वन्नभरनां क्यांश रह। य रहेर्ड शक्यवर्ग व'कारत व्यक्तात रवांश कतित्व वक्रवीक रुरेश शास्त्र । अ वीक्रमध्य वक्रवत्वत्व পূজা কর্তব্য। (কালিকা ৭৯/১০-১৭) ব্যুক্ত (क्री) বন্ধবন্ধ ভাব বা ধর্ম। ব্যক্তপদ্ধ (পুং) পাণিনিবর্ণিত ব্যক্তিভেদ। (পা ৫।৯৮৪) বক্লণ্দেৰ (জি) ৰক্ষণ বাহার দেৰভা। (পুং) ২ শতভিবা সক্ষত্ৰ। (বৃহৎস• ৩২।২•) ও বঙ্গণ দেবতা। वद्भगेटेमवर्ड (बि) मठिवा नक्ता (इह९न॰ २०१२) বরুণ্ঞ্ৰ (बि) > বরুণকে প্রবঞ্চনা বা গোভপ্রদর্শনকারী। २ वक्रगकर्जुक विरिनिछ। 'वक्ररगन विरिनिष्ठः'। (अक् ११७०१२ नावन) বরুণপাল (গুং) > বরুণের অর। ২ নক্র, হালর। বরুণপুরুষ (পুং)বহুণের ভূতা। (আৰ গৃহ ১।১।৫) বক্লণপ্রাস (গুং) আবাটী বা প্রাবণী পূর্ণিমার বঙ্গণের উদ্দেশে আচরণীর বিতীর ক্তাভেদ। জননিমগ্ন বা গ্রাহনক্ষতাদির হত্তরূপ বঙ্গণপাশ হইতে পরিত্রাণ লাভের জল্প এই ব্রতাচরণ করিতে হর। ঐ পর্বাদিনে বঙ্গণের প্রীভার্থে ববচুর্ণ ভক্ষণ • ক্রিতে হয়। ব্ৰক্লণপ্ৰশি**ন্ট** (ত্ৰি) বৰুণ কৰ্ত্তক শাসিত বা পরিচালিত। ব্**নু**রপুত্, কুরুক্তের পশ্চিমন্থ নগরভেন। (ভ°ত্রন্নথ° ¢৭।>>৪) বরুণভট্ট (প্ং) একজন প্রসিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্ । বরুণমতি (পুং)বোধিসম্বভেদ। বরুণমিত্র (পুং) গোভিশভেদ। বরুণমেনি (ত্রী) বরুণের ক্রোধ। (তৈত্তিরীয় সং ৫।১।৫।৩) বরুণরাজন্ (ত্রি) বঙ্গণ বেধানে রাজরূপে অধিষ্ঠিত। (ভৈদ্বিরীরসং অধাদা>) বরুণলোক (গুং) > লোকভেদ। (কৌশিকীউপ৽ ১/৫) कानीचर अत्र > • प्रधारत देशन विवत्र प्राटः। २ वक्रप्तत অধিকার স্থান বা লগ। (তর্কসংগ্রহ ৭) বক্লণাৰ্শ্বন্ (গ্ং) দেবাস্থর বৃদ্ধে দেবপক্ষীর সেনাপতিভেদ। বরুণশেষস্ (অ) ১ বরুণের ব্রপতা। (বক্ হাধহার সারণ) ২ ব্রকাকারী পুতাদি বিশিষ্ট। 'বারকাঃ পুত্রাঃ যেবাং' (সারণ) বকুণশ্ৰাৰ (ही) খাছৰত্যভেৰ। ব্রুণস্ব (প্:) ব্রুপের অভিপ্রেড ব্রু ৷ "বো রাজস্বঃ স वज्ञानवः (देखितीतवाचन रागानाः) वक्रनरम्ब, निर्माणिन वर्गिष्ठ ब्रोक्टबर ।

বরুণদেনা [নেনিকা] (খ্রী)রাজক্সাভের। (কথাসরিৎ৪৪।৪৪)

বঙ্গণভোতন্ (গং) পর্বভ্রমণ। (ভারত

वस्त्राक्त् शांडक त्रवा वात्र ।

वक्रगोक्रक्रम् (ग्रं) > वक्ररणत वरणमत्रः। २ जनचापनित গোতাপজ্য। युद्धगोष्ट्राक्षा (बी) वनगण समण साम्रकाः छङ्डवसारः। बालनीत्रण, धरे मण नमूल मञ्जलारन छेड्छ सरेशादिन। বক্লপাদিকাখ, বরণহাল, ওঁঠ, গোজুর নিশিত ২ ভোলা, জল 🖫 সের, শেব 🗸 পোরা, প্রক্ষেণার্থ বৰকার হ' নাবা, পুরাতন খড় ২ মাবা। এই কাথ পান করিলে বছকালের বার্ক অশ্বরীর শাস্তি হয়। वृद्ग्यक्रगाति --यक्रगहान, उँठ, शासूत्र वील, जानवृती, কুলখকলাই, কুণাবিভূপণকষ্ণ মিলিভ ২ ডোলা, জল ॥• সের, শেব 🗸 পোরা, প্রক্ষেপার্থ চিনি ২ মাবা, ববক্ষার २ मार्चा। देशारा चन्द्रती, मृजकुक्, रित्रभूग ७ निक्रमूग নিবারিত হয়। বরণছালের হাথ বা কডের সহিত পুরাতন ওড় এবং সজিনা মূলের উঞ্চকাধ সেবন করিলে আগরী ও ভজ্জনিত বরণা নিবান্থিত হয়। বৰুণাদিগণ (পুং) জন্যগণভেষ, ক্ষুক্তত এই গণে নিম্নোক্ত জন্য निर्मिष्ठ रहेबाइ -- वक्रणतृष्क, मीनिश्व हो, निगु, मध्निशु (नान সজিনা), জয়তী, মেবশৃদী, পৃতিকা, নাটাকরঞ্জ, মোরাটা, व्यक्तिमञ्ज, विक्ती, नानवाँ हि, व्याकन्त, दनित्र, ठिका, भक्रम्नी, বিৰ, অলশুলী, বর্ড, বৃহতী, কণ্টিকারী। এই বরুণাদিগণ কফ ও মেদোনাশক এবং শির: भृत, श्रुव ও আভাতরিক বিজ্ঞধি-নাশক। (ফুল্ডে স্ • अ प प) বরুণাদ্রি (পুং) পর্বতভেদ। ব্ৰুণানী (খী) বন্ধণত পদ্মী বন্ধ (ইক্সবন্ধণভবেতি। পা ৪।১।৪৯) ইতি ভীৰ্, আহুগাগমণ্ট। বরুণপন্নী। (कটাধর) বরুণাপুর, সহাত্রিপর্বতহ একটা প্রাচীন তীর্থকেত্র। (সহাত্রিগত [बक्रन (एव ।] বরুণাপুরমাহাম্ব্য) वक्रभानम् (११) नम्ब, नागव। वक्रगावाम (११) मम्ब, मानव । वक्रगावि (जी) गमी। বরুণিক (পুং) বঙ্গণগভের সংক্ষিপ্ত নাম। বঙ্গণির ও বঙ্গণিন্ পদও প্রযুক্ত হইরা থাকে। বুকুৰোল (ত্রি) শতভিষানক্ত্র, বরুণ বাহার অধিপতি। বরুণেশ্বরতীর্থ (हो) তীর্থভেদ। वक्रर्शान (जी) गांत्रव । वक्र (गंशनियम् (बी) छेशनियम् । বক্লণোপপুরাণ, একথানি উপসুরাণ। কুর্মপুরাণে এবং রেবা-মাহান্মে ইহার উল্লেখ আছে।

ব্যুগ্য (ত্রি) বরণ-সন্তব, বরণ হইতে উৎপন।
"মৃক্ত মা শপথ্যাদধো ব্রুগ্যাহত।" (অক্ ১০।৯৭।১৬)
'বরুণাং বরুণসন্তবাং' (সারণ)

বরুরে (ক্লী) বুণোতি আবুণোত্যনেনেতি বৃ-উত্ত (আনিত্রা-দিভা ইত্রোত্রো। উপ্ ৪।১৭২) উত্তরীর বন্ধ। (সিদ্ধাত্ত-কৌ-উপা৽বৃ৽)

বক্লয়ী, নামৰ প্ৰ অন্তৰ্গত নদীভেদ। (ভবিষ্য বন্ধৰ ১৯৫০)
বক্লল (পুং) কিনা। সংভক্ত। (সংক্ষিপ্ত লাভ উপাভ)
বক্লম, স্থানভেদ। প্ৰাণে ভিন্নৰ নামে খ্যাত।
বক্লম্ (ত্ৰি) মন্দিতা, মন্দক। "এতামহন্দিদলি তালনো বন্ধতা।"

ব্ৰুক্ত (অ) রাক্ষতা, রক্ষক। "এতামহাশ্চনাস ভাজনো বন্ধতা। (ধক্ ১।১৬৯৷১) 'বন্ধতা বন্ধিতা রক্ষিতাসি।' (সারণ)

বর্মপ্ (क्री) ব্রিরতে শরীরমনেনেতি র্-বরণে উপন্ (জুব্ঞ ্ডামুণন্।' উণ্ হাঙা) ১ তমুত্রাণ। (হেম) ২ চর্ম। (মেদিনী)

৩ গৃহ। (অক্ ১।৫৮।৬) গৃহার্থক বর্মপশস্কের 'ব' বর্গীর বকার
বলিরা গণ্য। (নিম্নট্র) ৪ সৈন্ত। "ছন্মং বর্মথমভিপত্তির্থাধ্যোধ্য:।" (ভাগবত ৯।১০।২০)। ব্রিরতে ব্রোহনেনেতি
র্ঞ ্বরণে উপন্। (পুং) ৫ শক্ষক্ত অল্লাম্য হইতে রক্ষা
পাইবার ক্সা রপসরাহের ভার আবরণ প্রভৃতি দ্রব্যভেদ।
ইহার পর্যায়—রথগুন্ধি, রথসংবৃতি। (ভাগবর)

"উরণধ্যজহর্জর্বং স্থারপথ অপকরম্।" (রামারণ ভাব।২৬) ৬ গ্রামবিশেব। (রামারণ ১।৭১।১১)

ব্র্পশ্স্ (অব্যর) সক্ষশঃ, বছ সংখ্যাক।

"পল্ল প্রেরাকীরভবান্সযোবিভোহ-

প্যশঙ্কতা: কান্তস্থা বন্ধথশ: ।" (ভাগবত ৪।৩)১১) বন্ধথাধিপ (গুং) বন্ধথানাং সৈক্সানামধিগঃ, রন্ধিতা । সেনাপতি । বন্ধথাধিপতি (গুং) সেনানী, সেনানামধ ।

"किक् बक्रशांधिशिक्षिर्म्मार

প্রচানে আতে তথমক বীর।" (ভাগৰত ৩১।২৭)
বর্জিথিন্ (পুং) বরুণঃ অফাতীতি বরুধ—ইন্। গলোপরিছ
গলাকার কার্চ বা রথগুতিমুক্ত। (কুলকুঃ ১৬।৩৫) ২ বরথার্থক বন্ধনাত্রমুক্ত। জিবাং তীপ্, বরুণিনী। ও সেনা।
"চিক্লিকুর্গুল্বা বরুণিনী নত্নটা ইব নদীররাং ত্তনীন্।"
(রুণ্ ১১।৫৮)

যক্তিথ্য (আ) ১ বনশীন, সভজনীন। ২ পদিধিনস্থে পরিবৃত।
"ত্রাতা শিৰো ভবা বন্ধয়।" (ঋক্ ৫।২৪।১) 'বন্ধথো বন্ধীয়ঃ,
সন্ধলনীয়ঃ। যবা বন্ধথৈ পরিবিভিত্তিঃ।' (সানণ) ও গৃহার্ধ,
গৃহবোগ্য। (ঋক্ ৫।৪৬।৫) ৪ শীভবাভাভপনিশারক। (ঋক্
৬৬৭।২) ৪ গৃহহাতিভ ধন। (ঋক্ ৮।৪৭।৩)
বারেটী (দেশক) ভূগভেষ (Cyperus verticilistus)।

বরেণ (পুং) বোদ্তা। বরোদ।
বরেণা (জী) বরেণ্যা শব্দের অপএংশ।
বরেণা (গুং) ব্রিরতে লোকৈরিতি বৃ-এণ্যঃ, (বৃঞ এণ্যঃ। উণ্
অ৯৮।) (জি) ১ প্রধান। "সন্তর্শণো নাকসদাং বরেণাঃ।"
(ভাট ১৪৪) ২ বরণীর। (মলিনাথ) "সংস্কারপুতেন বরং
বরেণ্যং, বধুং স্থাধ্যান্থনিবন্ধনেন।" (কুমার ৭১০০) (পুং)
ও পিতৃগণের অভ্যতম। "বরো বরেণ্যো বরণো পুটিন্তুটিন্তুখা"
(মার্কণ্ডেরপু০ ৯৬।৪৫) ৪ ভৃগুপুত্রভেদ। (মহাতা০ ১০৮৫।১২৯)
৫ মহাদেব। "বরো বরাহো বরদো বরেণাঃ স্মহান্থনঃ॥"

(মহাভারত ১৩।১৭।১৩৬)

৬ কুছুম। (রাজনি॰) (ক্লী) ৭ সকলের উপাক্তত্ব ও জ্ঞেরত্বরূপে সম্ভক্তনীর। (ঝক্ ৩।৬২।১•)

বরেণ্যক্রন্তু (বি) বরণীর প্রজ্ঞাযুক্ত হোতা। (ঋক্ ৮।৪০১২)
বরেন্দ্র (পুং) ১ রাজা। ২ সামন্তরাজ। ০ইজা। ৪ বাজালা
নেশের উত্তরন্থ একটা বিভাগ। বরেক্রন্ত্র্মি নামে থ্যাত। দেশাবলীতে লিখিত আছে, এক সমরে নাটোরই বরেক্রন্থ্মির রাজধানী ছিল। [বল্দেশ ও বারেক্রন্থেধ।]

বরেন্দ্রগতি, পরতত্বপ্রকাশিকা নামী বৈদান্তিক গ্রন্থ-রচয়িতা। বরেন্দ্রী (স্ত্রী) গৌড়দেশ। (ত্রিকা•) বরেন্দ্রদ্ধি।

বন্ধেয় (পুং) ক্থা। 'বরেরং বরনীরারা: ক্থারা: সম্ক্রিনং
বরৈর্যাচিতবাং বা। ক্থামিনার্থ:।'(ঋক্ ১০।৮৫।১১-ভাব্যে সারণ)
বন্ধেয়া (দেশজ) বানের লঘা বাধারী।

ব্রেয়ু (তি) প্রণয়প্রার্থী। বিবাহার্থ কলার যাচ্ঞাকারী। ব্রেশ (তি) সর্ক্ষের, বরদানকর্তা ভগবান্।

"বরং বরর ভক্রংতে বরেশং স্বাভিবান্ধিতম্।" (ভাগবত ২।৯।২১) বরেশ্বর (জি) শিব।

ব্রোট (ক্রী) বরাণি শ্রেষ্ঠানি উটানি দলানি আন্ত। মক্রবক।(শক্ষ্মা°) ব্রোৎপল (ক্রী) খেত রজপন্ম। (বৈছক্নি•)

ব্রোদ, বোখাই প্রেনিডেপীর ঝালাবার প্রান্তস্থ একটা সামস্ত-রাজ্য। এখানকার সামস্তরাজের রাজস্ব ২১ হাজার। তল্পধ্যে তিনি জুনাগড়ের নবাবকে বার্ষিক ২৭৮ টাকা এবং বড়োদা-পভিকে ১২৫২ টাকা কর দিয়া থাকেন।

বরোদ, পোষাই প্রেসিডেন্সীর গোহেলবাড় প্রাক্তম একটা কুজ সামত রাজ্য। এখন হই কংশে বিভক্ত। এখানকার অধি-কারীরা বড়োদার গাইকোবাড়কে ও কুনাগড়ের নবাবকে কর দিরা থাকেন।

বারোক (প্ং) বলঃ উলং, কর্মা। > শ্রের উল, বাহার আছর উপরিভাগ ক্রকর ও হলকণ। "বিরদ্ধর-ক্রিকিনির্বরো-ক্রভি:।" (রৃহৎস' ৬৮।৪) বলঃ উক্রক্তেতি ক্র্বীরি। (আ) ২ শ্রের উদশালী। "বো বিশ্চগ বজ্ঞগতং করোর বাদনাগসং হর্জচনা-হক্রোভিরঃ ৮" (ভাগবভ ৪।খ২৪)

ব্রোল (গুং আ) বু-ওলচ্ । ১ বরট। ২ ভ্ররোল। (ত্রিকা•) চলিত ভীমকল।

বরোহশাঝিন্ (পুং) প্রকর্ক, পাকুডগাছ। (রাজনি॰) ব্রোষ্থী (ত্রী) > আদিত্যভকা, চলিত ভড়চড়ির। ২ রাজী-শাক। (বৈভকনি॰)

বৰ্কণা (জী) তরণ ছাগী। (হঞ্জেড চি- ১ पः)

বর্কর (পুং) রক্তাতে গৃহতে ইতি বৃক-আদানে বহুলবচনাৎ

শার। (উজ্জাল ৩০১০১) ১ মুবপশু। (জনার) ২ মেরণাবক।
(জনত) ও পরিহাস। আমোলপ্রমোদ।

"কান্তঃ কেলিফচিযুঁবা স**হ**দম্বতাদৃক্পতিঃ কাতরে।

কিলো বর্করকর্করে: প্রিয়শতৈরাজ্রম্য বিজীরতে ।" (জমরুশতকণ)

৪ ছাগ। (মেধিনী)

বর্করকর্কর (অ) নানা রক্ষের।

বর্করাট (পুং) বর্করং পরিহাসং আটতি গচ্ছতীতি অট্-আচ্। ১ কটাক্ষা ২ তরুণ তপনপ্রভা। ৩ কামিনীর পরোধরপার্থে কান্ত কর্ত্বক প্রদত্ত নথক্ত। (মেদিনী)

বর্করীকুগু (ক্লী) কাশীস্থ সরোবরভেষ। ইহা একটা পুণাতীর্থ বলিয়া পরিগণিত। [কাশী দেখ।]

বর্কট (পুং) গজাল, কাঁটা, পিন্, থিল, অর্গল।

বর্করী তীর্থ, তীর্থভেদ। (কুমারিকা ১০৭।১।৭)
বর্গু (পুং) বুজাতে ইতি বুলি-বর্জনে বঞ্। সন্ধাতীয়সমূহ।

"ব্ৰতায় তেনাম্বচরেণ ধেনো-

क्व (विध শেষে। প্রান্থ্যারিবর্গঃ।" (त्रणु २।८)

২ সমানধর্মী প্রাণী বা জ্ঞানিগণোপলক্ষিত বৃদ্দ বা সমূহ।

মধা — কবর্গ। কর ধন্ধ প্রভৃতির বিজ্ঞাতীরন্ধ থাকিলেও উহা
দিগের স্থানসাম্য আছে। ঝাকরণ মতে বর্গ পাঁচটা, যথা —

কবর্গ, চবর্গ, টবর্গ, তবর্গ ও পবর্গ। কবর্গ বলিলে ক, খ,

গ, খ, ৬; চবর্গ বলিলে চ, ছ, য়, য়, ঞ; এইরুণ টবর্গ বলিলে

ট হইতে 'ণ' পর্যান্ত, তবর্গ বলিলে 'ড' হইতে 'ন' পর্যান্ত এবং

শবর্গ বলিলে 'প' হইতে 'ম' পর্যান্ত পাওরা বাইবে। ক চ ট ড

প ক্রেকৃতি পঞ্চ পঞ্চ পাঁচ পাঁচ বর্গ লইয়াই ব্যাকরণের বর্গসংজ্ঞা।

"কচেউত্পাঃ পঞ্চ বর্গাঃ" "ডে বর্গ: পঞ্চ পঞ্চ পঞ্চ গ্রতাদি।

অভিযানে এই সমষ্টি বা সমার্থে কর্গণান্তালানি বর্গ, নানার্থ বর্গ, ভূমিকনোবিধি বর্গ, অবার বর্গ, ক্রম বর্গ, ক্রমিট, পুরাদি কর্মেক উল্লেখ হেখা বায় : (অফিস্নু তক্তনতাৎ অ১)

ক্ষিত ক্যোতিকে বিভিন্ন আর্হে, অবর্গের অধিপতি ক্র্যা, কর্বেক্ট অধিপতি সকল, চবর্গের গুক্র, টবর্গের বুধ, তবর্গের ফুল্পতি, প্ৰবৰ্গর পনি, য ও প্ৰৱৰ্গন অধিপতি চক্ত । ইহার যালা প্ৰশা কলিলে নামাধি জীনা যান।

ত প্ৰছ পরিচ্ছেদ। কোন প্ৰছ বা কোন প্ৰকল্পনাহের
মাৰে মাৰে বে একটা ছেদ দেওলা হয়, সেই ছেন, উচ্ছ্যুন,
কা অৰু প্ৰভৃতির নামান্তর বর্গ।

"সর্বো বর্গ পরিচেনেদ্বাভাব্যারাভস্পেছাঃ। উচ্চ্যুসঃ পরিবর্জক গটলঃ কাওমার্ক্যি

ছানং প্রকরণং পর্কাদ্ধিকঞ্ গ্রন্থসময়ঃ ॥" (ফ্রিকা • লে)

8 আয়ুর্কেলোক গণ । ৫ (ত্রী) অপ্নরোধিশেষ ।

এই অপ্সরা মুনিশাপে গ্রাহরূপ প্রাপ্ত হয়। পাপুনন্দন অর্জ্ন হইতে ইহার উভার হয়। [বিস্তৃত বিবরণ মহাভারতে ১।১২৭ অ: এইবা।]

৬ সমান আৰম্ভের পূরণ। পর্যাদ্ধ—ক্ষতি। কর্মে করণত্ত দুইটা বুজ বা সমান রাশির গুণাল্প। শীলাবতীতে ইহার বিবর লিখিত হইরাছে—

শসমন্বিৰাত: কৃতিক্ষাতেছৰ স্থাপ্যাহস্তাৰপোঁ। বিশ্বপাস্থানিয়: ।
ক্ষেপ্ৰবিষ্টাক্ত তথাপ্ৰেহবাত্যক্ৰাস্তাৰ্থ্যক্ৰাৰ্থ্য পুনন্দ নালিং ।
বিশ্বব্যাতিহতিনিমন্নী তংশগুৰদৈ কাৰ্তা কৃতিবা ।
ইটোনমুগ্ৰালিবধংক্ষতি ভাদিইভ বৰ্ণেশ সমন্তিতা ৰাঃ"(শীলাবতী)

ইছার উদ্দেশক বা সম্ভব্য নিরোক্ত বিধিবারা স্পরীকৃত ইছার উদ্দেশক বা সম্ভব্য নিরোক্ত বিধিবারা স্পরীকৃত

> শ্বথে নবানাঞ্চ চতুদ্দানাং ক্রহি বিহীনত শত্রুত। পঞ্চোত্তরভাপায়্তত বর্গং জানাসি চেম্পবিধান্মার্গম্॥

এই দ্ত্র অবলঘন করিয়া ৯,১৪,২৯৭ ও ১০০০৫ রাশির বর্গকল নির্ণয় করিতে হইলে বথাক্রমে পূর্ব্বোক্ত প্রক্রিয়াঘার। ৮১,১৯৬,৮৮২০৯ ও ১০০১০০০২৫ রাশি পাওরা যার, অথবা অক্ত প্রক্রিয়ার ৯ সংখ্যার থও ৪ ও ৫ লইয়া নিয়োক্ত প্রকারের অক্তারের অক্তার করিছে। উক্ত রাশিররের ওপকল ২০। উত্তার ঘিনিয়ী ৪০। উত্তারের প্রক্রেক থওের বর্গকলসমাই—

৪×৪=>৬; ৫×৫=২৫; >৬+২৫=৪>; ইতরাং
৪০+৪১ বোগ করিলে ৮১ পাওরা বার। উহাই » বর্গমূলের
বর্গকল। এইরপে ১৪এর ৭৩ ৬ও৮; ইহালের অপকল ৪৮ বিনিয়া
৯৬। উহালের প্রেত্যেক থণ্ডের বর্গফলের সমষ্ট ৩৬+৬৪=
১০০। উহালের বোগে ৯৬+১০০=১৯৬; অথবা ১৩ ৪ =
১৪ রালির খণ্ড ধরিরা ঐরপ প্রথার অভ কনিলে ঐ ফলই
কর্ম হইবে।

अञ्च केनाव---२३१ ज्ञानिहरू फिन कांत्रा केन कतिया त्य

পৃথক্চাত রাশি লব্ধ হয়, তাহাকে ২৯৪ × ৩০০ হারা গুণ করিলে ৮৮২০০ গুণফল হয়। পরে [©]তাহাতে পূর্ব্বতাক্ত ৩ সংখ্যার বর্ণফল ৯ বােগ করিলে ৮৮২০৯ বর্গফল পাওয়া যায়। এইরূপ প্রথায় সকল রাশিরই বর্গফলনির্গন্ন হইতে পারে।

বর্গকশ্মন্ (শ্লী) গণিতোক্ত বর্গকগনির্ণায়ক অন্ধপ্রক্রিয়া-সমাধানকার্যা।

বর্গচর (পু:) পাঠীনমংখ্য, চলিত চিতল মাছ। (বৈছক্নি । বর্গঘ্ন (ক্লী) কোন বর্গরাশির খনফল।

বর্গবন্যাত (পং) অঙ্গান্তোক রাশির পঞ্চম বর্গপাত (Fifth power)।

বৰ্গণা (জী) অপন (Multiplication ()

বর্গপদ (ফ্লী) বগ (Square root)

वर्शभास (पूर) मनतकः । याजीमिरगत नामकः।

বৰ্গপ্ৰকৃতি (জী) গণিতোক অঙ্কপ্ৰক্ৰিয়াবিশেষ (an affected square in arithmatic)

বৰ্গপ্ৰথম (পুং) কাদি ৰগের প্ৰথম বৰ্ণ।

বর্গপ্রশংসিন্ (বি) স্ব স্ব দলের প্রশংসাকারী।

বর্গচিলা, কোন একটা রাশিকে তাহার সমান রাশির ছারা গুণ কারলে যে ফল লাভ হয়।

বর্গমূল (ক্লী) বর্গ সমানাক্ষরত মূলং আভাক:। পুরিত সমান অক্ষরের আভাক। বর্গমূলে করণস্ত্র বৃক্ত হইয়া থাকে। শালাবতীতে বর্গমূলের বিবরণ এইরূপ আছে—

"তাক্রাস্থাবিধমাৎ কৃতিং বিশুদরেম্বং সমে তক্তে তাক্রালককৃতিং তদাভবিধমালকং বিনিম্ন অসেং। পঙ্ক্যাং পঙ্কিশতে সমে২ছাবিধমাৎ তাক্রাপ্তবর্গ কবং পঙ্ক্যাং তদ্বিশুদং অসেদিতি মৃত্য পঙ্কেদনং ভাৎ পদম॥"

(লীলাবতী)

ইহার উদ্দেশক যথা---

"মূলং চতুৰ্ণাঞ্চ তথা নবানাং
পূৰ্ব্বং কতানাঞ্চ সথে কতীনাম্।
পূথক্ পূথ্যৰ্গপদানি বিদ্ধি
বুদ্ধেবিবৃদ্ধিবদি তেহত জাতা॥"

রাশির বর্গনির্গরকালে যে প্রাক্রিয়া অবলম্বন করিতে হর, বর্গমূলে ভাষা সম্পূর্ণ বিপরীত। ২ রাশির বর্গ ৪; কিন্তু ৪ রাশির বর্গমূল ২।

ইংরাজীতে ইহাকে Square root বলে। প্রকৃতপক্ষে প্রত্যেক সংখ্যাকেই ভাহার বর্গের বর্গমূল কহা যায়। বে সকল সংখ্যার বর্গমূল কোন অথও সংখ্যা বা ভগ্নাংশের ঠিক সমান ভাহাদিগকে পূর্ণবর্গ বলে; কিন্তু বে সকল অথও সংখ্যা বা দুশ্যমিক ভগ্নাংশের সর্বাদিশক অছ ২, বা ৩, বা ৭, বা ৮, তাহা পূর্ণবর্গ নহে।
৪০০এর অনধিক পূর্ণ-বর্গসংখ্যাগুলির বর্গমূল নামতার সাহায়ে
নির্ণীত হইতে পারে; কিন্তু হুইএর অধিক সংখ্যা বিশিষ্ট হুইলে
সেই সংখ্যার বর্গমূল নির্ণয় করিবার উপার স্বতম্ব।

একক স্থানীয় আছ হইতে আরম্ভ করিয়া বামদিকে প্রত্যেক দিতীয় স্থানীর আছের উপর বিন্দু স্থাপন কর। তাহা হইলে উক্ত রাশির উপরে এইরূপ যতগুলি বিন্দু স্থাপিত হইবে, সেই রাশির বর্গমূলের অথগুংশ ততগুলি আছ বা সংখ্যাবিশিষ্ট হইয়া থাকে। যেমন—

৩১৩৬ এর বর্গমূলের অথতাংশ ২ আছবিশিষ্ট এবং ১৫৬২৫ রাশির বর্গমূলের অথতাংশ ০টা আছে বিশিষ্ট। উদাহরণ যথা—

১৫২৫ | ১২৫ বে আছের উপর বিন্দু স্থাপিত হয়,
১২) ৫৬ তাহা এবং তাহার বাম ভাগের
১৪৫) ১২২৫
১১২৫ এস্থলে ১, ৫৬ ও ২৫ এক একটা
অংশ। প্রথমে এমন একটী গরিষ্ঠ

সংখ্যা নির্ণয় কর যাহার বর্গ প্রথম অংশের অনধিক। সেই , সংখ্যাই বর্গমূলের প্রথম সংখ্যা হইবে। প্রথমাংশ হইতে ঐ সংখ্যার বর্গফল বাদ দিয়া ঘাহা অবশিষ্ঠ থাকিবে, ভাহার দক্ষিণদিকে দ্বিতীয় অংশী নামাও। ইহাতে নৃতন ভাজ্য (৫৬) পাওয়া গেল। এখন লব্ধ মূলাংশের সংখ্যা দ্বিগুণ করিয়া তাহাকে ভাজকরপে এই ভাজোর বামদিকে স্থাপন পূর্বক ঐ ভাজকদারা উক্ত ভাজ্যের শেষ অংশ ত্যাগ করিয়া প্রথম একটী বা হুইটা সংখ্যাকে ভাগ কর। তাহাতে যে ভাগফল হয়, তাহা পুর্বে লব্ধ মূলাংশের দক্ষিণে (১২) এবং উক্ত ভাজকের দক্ষিণে রাথ, এখন নৃতন ভাজক ২২কে শেষ লক মৃলাক্ত ২ ছারা গুণ করিয়া দেই গুণফল ভাজা ৫৬ হইতে বিয়োগ কর। যাহা অবশিষ্ট রহিল তাহার দক্ষিণে তৃতীয় অংশ নামাও। তাহা হইলে নৃতন ভাজা ১२२৫ इटेल। এই ভাজোর বামে লব্ধ মূলাংশের সংখ্যা দ্বিগুণ করিরা (২৪) ভাজকরপে পুনরায় স্থাপন কর। এখন এই ভাজক দারা উক্ত ভাজ্যের শেষ অংশ ত্যাগ করিলে যে অংশ হর (১২২) তাহাকে ভাগ কর এবং ভাগফল ৫ কে লব্ধ মূলাংশের (১২৫) দক্ষিণে এবং উক্ত ভাজক ২৪এর দক্ষিণে (২৪৫) রাথিয়া পুনরায় ভাগফল । দিয়া ভাজক ২৪০কে গুণকর। সেই গুণফল ভাজকের সহিত হরণ করিলে আর কিছুই অবশিষ্ট থাকিবে না। তথন স্থির হইল ১৫৬২৫এর বর্গমূল ১২৫।

ভাগৰারা বর্গমূল নির্ণন্ন করিতে গিয়া যদি কোন নির্ণীত আছ অধিক হইরাছে দেখা বার, তাহা হইলে অপেকাঞ্চত কুন্ততর অংশ এহণ করিবে। অধবা ভাগৰারা বর্গমূলের কোন অংশ নির্ণয়্নকালে যদি ভাজ্য অপেকা ভাজক বড় হয় এবং যদি দেখা বায় যে, ভাগফল ১ কিন্তু অধিক গ্রহণীয় নয়, ভাহা হইলে পূর্ব্ব লব্ধ মূলাংশের দক্ষিণে এবং ভাজকের দক্ষিণে এক একটা শৃত্য বসাইয়া পরবন্তী অংশ নামাইয়া লইবে এবং পূর্ব্ব প্রক্রিয়ায় অছ নিম্পার করিবে। বর্গমূলাকর্ষণের সময় কথন কথন ভাজক অপেকা বৃহত্তর অবশিষ্ট থাকিয়া যায়। যে কোনও পূর্ণবর্গসংখ্যাকে অনায়াসে মোলিক উৎপাদকে পরিণত করা যায়, তাহার বর্গমূল অতি সহজেই নির্ণীত হইতে পারে।

 $V_{\text{bloo}} = V_{\text{2}} \times \alpha_{\text{2}} \times \alpha_{\text{3}} \times \alpha_{\text{1}} = \alpha_{\text{2}} \times \alpha_{\text{3}} \times \alpha_{\text{2}} = \alpha_{\text{3}}$

দশমিক ভগ্নাংশের বর্গম্লাকর্ষণ প্রক্রিয়া অথও সংখ্যার হ্যায় বিন্দু স্থাপনের সময় প্রথম বিন্দু এককস্থানীয় আক্ষের উপর স্থাপন করিতে হইবে এবং তৎপরে আবশুক মত বাম ও দক্ষিণদিকের প্রত্যেক দ্বিতীয় আক্ষের উপর বিন্দু স্থাপন করিবে। অথওাংশ হইতে মূলের যে অক্ষণ্ডলি পাওয়া যায়, তাহার দক্ষিণে দশমিক বিন্দু পড়িবে। যে অথও সংখ্যা বা দশমিক ভগ্নাংশ পূর্ণ বর্গ নহে, তাহার বর্গমূল একটা অসীম দশমিক ভগ্নাংশ হইবে। এরূপ স্বলে কতিপিয় দশমিক স্থান পর্যান্ত বর্গমূল নির্ণীত হইতে পারে। আবশ্যক মত শৃস্থা যোগ করিয়া বর্গমূল নির্ণিয়কালে দশমিক অক্ষ-সংখ্যা যোগ করিয়া লইতে হয়।

বর্গমূল্যন, বর্গঘন (ক্লী) সঙ্গাতীয়াস্ক্রয়ন্ত ঘাতঃ ঘনঃ। সঞ্জাতীয়া অকরেয়ের পরপার গুণফল অথবা কোন একটী রাশির বর্গফলের সহিত সেই রাশিদ্বারা পুনরায় গুণ, তাহাকে মূলরাশির ঘনফল (Cubic root) বলে। লীলাবতীতে এই ঘনমূল প্রকরণ স্বতন্ত্র। ইহার করণস্ক্র বির্ক্তাত্মক। তদ্যথা—

"সমত্রিঘাতশ্চ ঘন: প্রদিষ্ট:
ফ্রাপ্যো ঘনোহস্তান্ত তাতোহস্তাবর্গ:।
আদিত্রিনিম্নন্ত আদিবর্গ
ক্রান্তাহতোহথাদিঘনশ্চ সর্বে ॥
ফ্রানন্তর্বেন যুতা ঘন: তাৎ
প্রকল্প তৎ খণ্ডযুগ: ততোহস্তাম্।
এবং মৃত্র্বর্গঘনপ্রসিদ্ধা
বাদ্ধান্তা বা বিধিরেষকার্যা:॥
খণ্ডাভ্যাং বা হতো রাশিক্রিম: খণ্ডঘনকাযুক্।
বর্গমৃলঘনস্থারো বর্গরাশের্থনো ভবেং ॥" ইহার উদ্দেশক—
"নব্দনং ত্রিঘনস্ত ঘনং তথা
কথর পঞ্চনন্ত ঘনক মে।
ঘনপ্রক্ষ তত্তাহিপি ঘনাৎ স্থে

यपि चरनश्चि बना खनएठा मिंडः ॥"

», ২৭, ১২৫ এই তিনটী রাশির বণাক্রমে গুণন্দারা

ঘনফল ৭২৯, ১৯৬৮০ ও ১৯৫৩১২৫ হয়। অথবা ৯ রাশির
৪ ও ৫ থও ধরিয়া কদিলে অয় উপায়ে উহা সিদ্ধ হইরা থাকে।
অর্থাৎ ৯ এবং ৪ ও ৫ রাশি, ঐ রাশিয়ের পরক্ষার ওণফল ১৮০।
তাহার ত্রিনিম্ন বা তিন ওণ ৫৪০। ৩৩ রাশিয়্রের এক একটীর
ঘনসমষ্টি ৪ × ৪ × ৪ = ৬৫, ৫ × ৫ × ৫ = ১২৫; ৬৪ + ১২৫ =
১৮৯। লদ্ধ্য রাশি ছইটীর যোগফল ৫৪০ + ১৮৯ = ৭২৯।
ইহাই ৯ রাশির বর্গঘন। অথবা ২৭ রাশির ৩৩ ২০ ও ৭।
ইহাদের প্রক্ষার ওণফল ও ত্রিনিম্ন সংখ্যা ২৭ × ২০ × ৭ =
৩৭৮০ × ০ = ১১০৫০; ৭৩ রাশিয়্রের ঘনফল সমষ্টি -- ২০ × ২০ ×
২০ = ৮০০০ + ৭ × ৭ × ৭ = ০৪০ = ৮০৪০ এই জাতঘন সমষ্টি
ও প্রের্জিরাশির যোগফল ১১০৪০ + ৮০৪০ = ১৯৬৮০।

অথবা ৪ রাশি— ইহার বর্গমূল ২ ও খনফল ৮। ইহাদের স্বন্ন অর্থাৎ প্রক্রপারের গুণফলের ও গুণ == ৬৪ বর্গরাশির ঘনফল হইরা থাকে। এইরূপে ৯ রাশি—ইহার মূল ৩ ও খন ২৭। ইহার বর্গ—৯ এর খন ৭২৯ অর্থাৎ ৩×২৭×৯ == ৭২৯। এতদ্ধারা ব্রা যায় যে যাহা বর্গরাশিখন তাহাই বর্গমূলখনবর্গ == ৩×৩×৩= ২৭×২৭ = ৭২৯। ঘনমূল নিশাদনার্থ করণস্ত্র দ্বিত্তও আছে—

"আতং ঘনস্থানমথাঘনে তে পুনপ্তথাস্ত্যান্থনতো বিশোধ্যম্। ঘনপৃথক্সং পরমন্ত কথা ত্রিয়া তদাত্তং বিভজেৎ ফলস্ক॥ পত্ত্যাং ভাসেত্তংক্রতিমস্তানিয়ীং ত্রিয়ীং তল্পেতংক্রতিমস্তানিয়ীং ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতিমস্তানিয়ীং ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতিমস্তানিয়ীং ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতিমস্তানিয়ীং ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতমস্তানিয়ীং ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতমস্তানিয়ীং ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতমস্তানিয়ানি ব্রেয়ীং তল্পেতংক্রতমস্তানিয়ানি

বর্গবির্গ (পুং) বর্গের বর্গফল (Biquadratic number)
বর্গনিস্ (অবা) দলে দলে।
বর্গস্থি (ত্রি) দল মধান্ত। স্থানাস্থ্যকত।
বর্গা, (বর্গাহ, বর্গাহি), উত্তরপশ্চিম ভারতবাসী নিমশ্রেণীর জ্ঞাতিবিশেষ। রাজপুতগৃহে দাশুবৃতিহারা জীবিকার্জন করা তাহাদের
প্রধান ব্যবসা। এই শ্রেণীর রমণীগণও গৃহস্থপরিবারে, বিশেষতঃ
রাজপুত-সর্দার পৃহে রাজকুমারদিগের ধাত্রীরূপে বাদ করে এবং
স্তনত্ত্ব দিরা তাহাদের লালন পালন করিরা থাকে। তাহারা
বলে যে কনোজে তাহাদের আদি বাস ছিল। গহরবাড়-রাজপুতগণের দলে তাহারা আদি জরাভূমি পরিত্যাগ করিয়া নানাস্থানবাসী হইরা পড়িরাছে। তাহারা গোয়াল আহীরগণের
কুটুর্ব বিলয়া পরিচিত।

তাহারা বলাতির মধ্যেই আবান প্রবান করে। গোত্রবিভাগ না থাকার পিওবোৰ বটিবার সন্তাবনা। এই কারণে
তাহারা কএক পুরুষ বাদ দিরা অর্থাৎ বতদিন না পূর্ব কুটুছিতাবৃতি লোপ হর, ততদিন পরে সেই পরিবারে :আর পুত্র কন্তার
বিবাহাদি দের না। বিবাহপ্রখা সাবারণ হিন্দুর মত। অধিক
বরসেই সাধারণতঃ বিবাহ হয়। বিবাহ উৎসব তিন দিন মাত্র
থাকে। প্রথম দিন শিল অর্থাৎ উঠানের মধ্যহলে শিল পাতিরা
চাল গুড়ান হর এবং ত্রাহ্মশ আসিরা সৌরী পূলা করিরা যার।
ত্র দিন অর্থাভির বা আতিকুটুদের ভোল হয়। বিতীর নাইন্
দিন—ত্র বিনে মাতৃপূলা ও আত্যুদ্ধিক প্রাহ্ম এবং তৎপরে
ভোল। তৃতীর দিন বরাত—ত্র দিন মহাসমালোহে বর কন্তার
গৃহাভিমুধে সহলে বাত্রা করিরা থাকে।

বর আসিরা উপন্থিত হইলে বথালয়ে বর ও ক্লাকে লইরা বাঁড়ো নামক ছত্রতলে লইরা বসার। জার পর ক্লারে পিতা আসিরা বরের পদে হক্ত দিরা ক্লা সম্প্রদানের অন্থরেধ জানার এবং লানের ছচ্ছিপাল্বরপ জামাতার হক্তে একটা ফল দের। তলনজর উভরের বজ্রের পূট লইরা "গাঁটছড়ো" বাঁধিরা দেওরা হর এবং বর ও ক্লা মাঁড়োর চৌদিকে গ পাক প্রিরা আইসে। ইহার পর ক্লারা পিতা বরের ক্পালে হরিলা ও চাউল ঠেকাইরা দের এবং জামাতা ও ক্লাকে লইরা কোহাবারে (বাসর্বরে) লইরা যার। এখানে গৃহত্বিভ অপরাপর রমণীরা উপন্থিত হইরা হাল্ল পরিহাস করে এবং বরকে দিরা ছইটা প্রজনিত বর্তিকার আলোকশিধা পরস্পরে সমিলিত ক্রাইরা উভরের অভিনর্দয়তা জ্ঞাপন ক্রিরা থাকে। ইহাদের মধ্যে বিধ্বাবিবাহ বা বেবর-বিবাহ নাই। মহাবীর ও পাঁচপীর ইহাদের প্রধান উপাল্প। জনেকে ক্রিকার্য্যও করিরা থাকে।

ব্যাহিঞা, দাজপুত জাতির একটা শাখা। গাজিপুরে ইহাদের বাস। ইহারা আপনাদিগকে দৈনপুরী জেলাবাসী চৌহান জাতির অঞ্চতম শাখা বলিয়া মনে করে।

বর্গালা, বৃদ্দদহর জেলাবাদী রাজপুত জাতির একটা শাখা।
ইহালা আপনাবের চক্রবংশী বলিরা পরিচিত করে। ইহাদের
মধ্যে বিধবা বিবাহ প্রচলিত আছে। এই কারণে ইহারা
আপনাবিগকে গৌড়ুয়া জাতির সমশ্রেনীর বলিরা গণ্য করিরা
থাকে। ইহারা আপনাবিগকে দৃত্পাল ও ভট্টপালের বংশধর
বলিরা পরিচিত করে। বংশেতিহালে প্রকাশ, উক্ত ত্রাভূহর
ইলোর হইতে মালবে আলিয়া বাস করেন। মহম্ম বোরী
রাজা পৃথালারকে আজ্মণ করিলে, ইহারা বিল্লীক্র সেলার অধিনাক্রক হইরা রশক্ষেত্র বৃদ্ধ করেন। স্মাটু অরক্ষ্মেক্রের রাজ্যকালে এই শাখার অনেকে ইস্লাম ধর্মে বীক্ষিত ক্ইরাছিল।

"চরাণাং প্রথমে চাংশে দ্বিরাণাং পঞ্চমে তথা।
নবমে ক্যম্মকানাঞ্চ বর্গোত্তম ইতি শ্বতঃ ॥" (জ্যোতিত্তর)
ইহা তির রাশিদিগের শ্বকীর নবাংশকেও বর্গোত্তম কহে।
রাশির শ্বীর নবাংশে গ্রহণণ অবস্থিত হুইলে তাহাদিগকেও
বর্গোত্তমন্থ কলা বার।

"খনবাংশস্থ রাশীনাং বর্গোক্তম ইতি শ্বত:।" (জ্যোতিত্তৰ)
বর্গ্য (বি) কর্গসম্বন্ধীর। (পূং) সভার সভা। সহবোগী।
বর্চচ, দীপ্তা। জ্বাদি" আত্মনে" অক" সেটা। লট্ বর্চচতে। পূঙ্
অবর্ভিষ্ট।
বচচ টি (বী) > ধাঞ্চভেদ। ২ বেঞা।

বর্চন (ক্লী) বর্চনেত ইতি বর্চ (সর্বাধাসুভ্যোহস্ন্। উণ্ ৪।১৮৮) ইতি অস্ন্।১ রূপ।২ বিক্লা। (স্কুলত উত্তর ৩৪ অ°) ৩ তেল: (মেদিনী) ৪ আল। "অরাতীর্কেচাধা বজ-বাহস্ত" (ধক্ ১।৬৬।২১) 'বর্কোধাঃ অরং ধেহি' (সারণ) (পুং) ৫ চন্দ্রব্ন। (মেদিনী)।

"রোহিণ্যমন্তবন্ধর্চা বর্ক্কবী বেন চন্দ্রমাঃ।"(অগ্নিপু"সভীনেহত্যাগ") বর্চ্চস্ক (পুং ক্লী) বর্চ্চস্ বার্থে কন্। ১ বিষ্ঠা। (অমর) ২ দীন্তি, ভেজঃ। (ভারত ১৩২৫।১৯)

বর্চ্চস্ত (ি) বর্চনে হিতং বং। তেলোবর্ডক, তেলোবিবরে হিতকর। "আর্ব্যং বর্চস্ত রারন্দোবনোরিদম্" (গুরুবজু°৩৪।৫•) 'বর্চস্ত বর্চনে তেলনে হিতং' (মহীণর)

বর্চনুত্র (বি) > জীবশক্তিসম্পন্ন। বলসম্পন্ন। ২ সমুজ্জন, দীন্তিশালী।

বৰ্চস্থিন্ (পুং) ৰজেহিভাতীতি বৰ্চস্ (অস্বারামেবেতি। পা থাং।১২১) ইতি বিনি। ১ চক্র (অন্তিপু-) (ত্রি) ২ তেলখী। ব্যক্তিন্ (পুং) অধ্বেবর্ণিক অন্তর্ভেদ। ইক্ল ইহাকে সকলে নিহত করেন। (ঋক্ ২০১৪।৬)। আবার ঋথেদের অফ্রছনে (৭০৯না৫) বর্ণিত আছে যে, ইক্র ও বিষ্ণু ইহাকে নিহত করিরাছিলেন।

বর্চেচ† গ্রন্থ (পং) মলরোধ। গুললেশের সজোচন।
বর্চেচাদা [ধা] (বি) শক্তিদ। বলদানকারী।
বর্জ ক (বি) বর্জনগুলীত বৃজ-বৃল্। বর্জনকারী, ত্যাগকারী।
বর্জনে (রী) বৃজ-বৃট্। ১ ত্যাগ। ২ হিংসা। ৩ মারণ।
বর্জনীয় (বি) বৃজ-অনীরন্। বর্জনবোগ্য, ত্যক্তব্য। বে
সকল দ্রব্য বর্জন করিতে হয়।

"রাজারং নর্ত্তকারঞ্চ তক্ষোহরঞ্চক্রকারিণ:। গণারং গণিকারঞ্চ বজ্ঞারঞ্চিব বর্জারেং॥" (কুর্মপূর্ণ উপবি°১৬অ°) রাজার অন্ন, নর্তকের অন্ন, স্তারের অন্ন, কুমারের অন্ন, গণান, গণিকার অন্ন এবং ব্যবসার অন্ন বর্জনীয়।

মনুসংহিতার লিখিত আছে—উদয় বা অন্ত অবস্থায় স্থাদর্শন বর্জনীয়। রাচগ্রস্ত সূর্যা, জল প্রতিবিম্বিত সূর্যা এবং আকাশমণ্ডলের মধাগত কর্ষাকে দর্শন করিতে নাই। বংস-• বন্ধনের রজ্জু উল্লক্ত্যন, বারিবর্ষণকালে দৌড়িয়া গমন এবং জ্ঞালে আপনার প্রতিবিদ্ধ দর্শন বর্জনীয়। কামোন্মত হইলেও त्राजापर्नात्व निविद्ध पिनजारा शमन वा त्रक्षचना जीएलाजन করিতেছে, এমন সময় ভার্য্যাকে অবলোকন; হাঁচিতেছে, হাই তুলিতেছে বা যথাসূথে অসংযত ভাবে বসিয়া আছে, এমন সময়ে ভার্য্যাকে অবলোকন; নেত্রপ্তমে কচ্ছল প্রদান করিতেছে, অনাবৃত হইয়া তৈলমুক্ষণ করিতেছে বা সম্ভান প্রস্ব করিতেছে, এমন সময়ে ভার্যাকে অবলোকন করিতে নাই। একবন্ত পরিধান করিয়া অন্নভোজন, বিবন্ত হইয়া স্নান: বর্জনীয় পথে. ভদ্মের উপর, গোচারণস্থলে, ফাল-ক্ষিত ভূমিতে, জলে, অগ্নিতে, শ্মশানস্থ চিতায়, পর্বতে, জীর্ণমন্দিরে, কুমিকৃত মৃত্তিকারাশির উপর যে সকল গর্তে প্রাণিদিগের বাস, এই সকল স্থলে মল মূত্র ভ্যাগ বর্জন করিবে। গমন করিতে করিতে দাঁড়াইয়া, বায়, অগ্নি, ত্রাহ্মণ, স্থা, জল ও গো এই সকলের সমুণ অবলোকন कतिएक कतिएक मनम्बलाग कतिएक नारे। मूथ बाता क्रॅमिया অগ্নিপ্রজ্ঞালন, পত্নীকে উল্প দর্শন, ও অগ্নিতে অপবিত্র বস্ত নিক্ষেপ বর্জনীয়। অগ্নিতে পা উত্তাপিত করিবে না। শ্যার व्यासीत्मान व्यक्तिक्मन निविष्त । वाशास्त्र श्रास्त वाशास्त्र नारम, এইরূপ কর্ম করিতে নাই। সন্ধাবেলার ভোকন, ভ্রমণ এবং नम्रन कतिएछ मार्छ। त्रिशांति चात्रा ভূমি थनन कतिर्देश ना, व्यस्मधा-निश्व वर्षाः विक्रामुजामिनिश्व बञ्जामि क्लानन, वाममूलगुरह धकांकी नवन, टार्ड बनाक निजा हरेएड धाराधिक क्वन, व्रवचना जीव স্হিত সম্ভাবণও অনিমন্ত্রিত হইরা বঞ্জাংলে গমন বর্জন করিবে।

গাড়ী বধন লগ বা হ্র্য পান করে, তথন তাহাকে নিবারণ করিতে নাই, কিংবা লগ বা হ্র্য পান করিতেছে দেখিয়া উহা কাহাকেও বিলিয়া দিতে নাই। যে গ্রামে অধিক সংখ্যক অধার্মিক লোকের বাস তথার বাস নিবিদ্ধ। যে হ্রামের লোক সকল বহুদিন ধরিরা ব্যাধিস্ক, তাদৃশস্থলেও বাস নিবিদ্ধ। দ্রপথে একাকী গমন, দীর্ঘকাল পর্কতে বাস, শ্রেষণবন্ধী জনপদে বাস, ও দেববহিছ্ তি পাবওগণ কর্ত্তক আক্রোভনেশে বাস বর্জনীর। যেসকল পদার্থের মেহমর সারভাগ বাহির করিয়া লওয়া হইয়াছে, তাহা ভোজন, এবং অতি প্রোত্ত বা অতি সায়ংকালে ভোজন বর্জন করিবে। যাহাতে দৃষ্ট বা অদৃষ্ট কোম ফল নাই, তাদৃশ কর্ম্ম নিবিদ্ধ। অঞ্জলি হারা জল পান,ও উল্লর উপর রাধিয়া কোন দ্রেরা করের ক্তৃহলী হইবে না। প্রেরোজন না থাকিলে কোন বিবরে কুতৃহলী হইবে না।

অশান্ত্রীয় নৃত্যাণীত বা বাদিত্র বাদন করিবে না। বাহর ভিতরে বা উপরে হস্ততন দিরা আন্দোট ধ্বনি, দক্ষে দক্ষে ঘর্ষণ করিয়ে শব্দ, বা অভ্যরাগভরে গর্দভাদির ভাষ চীংকার করিতে নাই। কাংস্থপাত্রে পদধাবন, ভ্যাপাত্রে ভোজন বা যে পাত্রে ভোজন করিবে মনোভাব অপ্রশন্ত হয়, তাহাতে ভোজন বর্জনীয়। অস্তের ব্যবহৃত চর্মপাত্রকা, বন্ধ, উপবীত, মান্য,ও অলম্বার ব্যবহার করিতে নাই। অবিনীত, ক্ষ্পিত, ব্যাধিশীড়িত, ভ্রমণুক্ল, উৎপাটিতনত্বন, বিদীর্ণক্ষর, বা বাহার বালাম্চি ছিন্ন হইয়াছে এমন অধ্ব প্রভৃতি চড়িয়া গমন করিতে নাই।

প্রথমেদিত স্থাতাপ, চিতাধুম এবং ভগ্ন আসন বর্জন করিবে। আপনা আপনি নথ ও লোম ছেদন, কিংবা দস্তবারা নথ কর্ত্তন করিতে নাই। মৃত্তিকা বা লোক্ক অকারণ মর্দান,
নথবারা তৃণজ্বেদ ও নিক্ষলকর্দা, এবং ভবিশ্বতে যে কর্ম্মে অস্থথোবর হইবে তাদৃশ কর্মা বর্জন করিবে। কি লোকিক, কি শালীর
কোন নিবন্ধ সহকারে পণবন্ধনাদিবারা কোন কথাই কহিবে না।
কণ্ঠত্বমালা উত্তরীয়ের বহির্দেশে ধারণ, গোকর পৃষ্ঠে আরোহণ,
প্রাচীরাদি বারা বেষ্টিত গ্রামে বা গৃহে বারাদি ভিন্ন অক্তন্থান দিয়।
প্রবেশ, রাত্রিকালে রক্ষতলে অবস্থান বা রক্ষতল দিয়া গমনাগমন, ব্যবহাত চর্ম্মণাত্রকা হত্তে লইরা গমন, শ্যার বসিয়া
ভোলন, হত্ততলে প্রভূত অর লইয়া ক্রমে ক্রমে ভোলন, আসনে
ভোলা ক্রব্য রাধির। ভোলন, রাত্রে তিল বা ভিলবারা প্রস্তুত
ক্রব্যভোলন, নগ্রবহার শরন, ও উচ্ছিইমুখে কোন হানে গমন,
এই সকল বর্জন করিবে।

পতিত, চণ্ডাল, প্ৰশ, মূর্থ, ধনাদিমদে গর্কিত ও রজকাদি নীচ জাতি ইহাদের সহিত ব্রাহ্মণ কিছুকালের জন্তও এক ছারাতে উপবেশন করিবেম না।

বৰ্জনীর অন্ন-মন্ত, কৃত্ ও ব্যাধিসুক্ত ব্যক্তির অন্ন ভোজন कतिएक नाहे। दमनकीणितियुक्त आहे, या हेक्शपीन शतन्त्रृष्ट आहे, ক্রণবাতী কর্ত্ব দৃষ্ট অন্ন, ঋতুমতী নারী কর্ত্ব স্পৃষ্ট অন্ন, পক্ষিগণ কর্ত্তক অবলীয় অল্ল, কুরুর কর্তৃক স্পৃষ্ট অল্ল, গাভী বে অলের আলাণ লইরাছে, ভাদৃশ অন, বে অন্নের বোষণা করা হইরাছে অর্থাৎ কে কৃথিত আছ আইস, লর প্রস্তুত হইরাছে, ডিভি-মাদি বারা এইরূপে সাধারণ আগন্তকের অভ যে অরবাশি উদ্দেশ করা হইয়াছে, তাদৃশ অন্ন, বহুজন মিলিত মঠবাসী-দিগের অর, বেখার অর এই সকল অর বর্জনীর। ইহা ভিন্ন চৌর, গীতবাভোপদীবী, তক্ষণ-বৃত্যুপলীবী, বৃদ্ধি উপলীবী এই সকল ব্যক্তির আর, ক্বপণের অর, মহাপাতকী, ক্লীব, ক্যভি-চারিণী স্ত্রী ও কপট ধর্মচারীর অন্ন বর্জন করিবে। পর্যুবিত অর, শুদ্রের অর, উচ্চিই অর, চিকিৎসকের অর, মৃগাদি পশুহস্তা बारधत अब, क्रूबवाकित अब, উव्हिड ट्रांबनकातीत अब, निर्वृत কর্মকারীর অন্ন, অশৌচান্ন, এই সকল অন্ন যত্নপূর্বক বর্জন করিবে। পতিপুত্রবিহীনা অবীরা স্ত্রীর অন্ন, ছেবকারীর অন্ন, শত্রুর অন্ন, পতিত বাকিন অন্ন, বে আল্লের উপর হাঁচিয়াছে তাদুশ অন্ন, যে ব্যক্তি পরোক্ষে পরাপবাদ করে, যে মিথ্যা সাক্ষ্য দেয়, যে ধন-লোভে যজ্ঞকৰ বিজ্ঞান করে, ইহাদের অন্ন, নটবুভাপজীবীর অন্ন, যে বন্ত্ৰাদি সীবন দালা জীবিকা নিৰ্ম্বাহ করে, যে ব্যক্তি উপকারীর অপকার করে, কর্মকার, নিষাদ, রক্ষোপজীবী, অর্থকার, বেণু-বিদারক, লৌধবিক্ররী, কুকুরপোষণকারী, শৌণ্ডিক, বস্ত্রধারক, वजापित तक काती, निर्मृत धरे नकन वाक्तित अन वर्कनीय। याहात ন্ত্রীর উপপতি আছে, যে আডসারে ন্ত্রীর উপপতি সম্ব করে, যে ব্যক্তি সকল প্রকারে স্তীন্ধিত, এই সকল ব্যক্তির অন্ন এবং वाकात का वर्कन कतित्व। (मन् ११६ काः)

বর্জন্মিন্তব্য (বি) বৃঙ্গ-ণিচ্ তব্য । বর্জনীয়, বর্জনের যোগ্য । বর্জমিন্ত (কি) বৃজ-ণিচ্-ছুচ্। বর্জনকারী, ত্যাগকারী। বর্জ্জিন্ত (বি) বৃজ-জ । ভাজ ।

"অবজ্ঞাভঞ্চাবধৃতং সরোবং বিশ্বরাদিতং।

গুরোরপি ন ভোক্তব্যময়ং সংকারবর্জিন্তম্ ॥" (কুর্মপু৽ ১৬জ') বর্জিন (মি) গুলার। গুলাকারী।

वर्ष्का (जि) वृष-गार । वर्षमीव, वर्षमावागा ।

বর্ণ, ১ বর্ণন। ২ জেরশ। ৩ রাগ। চুরাফি পরত্রৈ সকা সেট্। লট্বর্ণরভি। সূত্র্জববর্ণন। এই ধাড়ু জনত চুরাদি। বর্ণ (ক্লী) বর্ণরভীতি বর্ণ-জচ্। কুল্ম। (তেম)

বৰ্ণ (পুং) ব্ৰিয়তে (ইডি হু কুবুজু বিক্লণ্ডলিকলিভো দিং। উণ্ ৩৷১০) স চ দিং। ১ ৰাডি।

बाजि ठाति असात-जावन, क्यान, देख ७ मूतः। धरे

চারি বর্ণ বা চারি জাতির উৎপত্তি সম্বন্ধ এইরূপ বেলোক্তি আছে বে, বথন ভগৰান্ প্রক্রমণে স্টেবিভারে প্রবৃত্ত হন, তথন তাহার দেহ হইতে চারিটা বর্ণের উৎপত্তি হয়। ভগবানের মূধ হইতে বাহ্মণ, বাহু হইতে ক্রিয়, উক হইতে বৈশ্র এবং পাদ হইতে শুদ্র উৎপন্ন হইরাছিল।

"আদ্দোহক মুখমানীৎ ৰাছু রাজকা হকঃ।
উদ্ধ তদক ববৈকা পজাং পৃলো অজায়ত ॥"(বক্ ১০।৯০।:২)
শালে এই বৰ্ণচড়ুষ্টদ্ধের পৃথক্ পৃথক্ ধর্মকর্মনিনীত হইরাছে।
আদ্ধা ক্রিয়াদি বর্ণচড়ুষ্টমুকে শাল্তাদেশে আপন আপন ধর্মকর্মায়নারেই চলিতে হয়।

ভগবান্ মহু বর্ণচভূষ্টরের এইরপ পৃথক্ পৃথক্ কর্ম নির্দিষ্ট করিরাছেন—আন্ধণের ধর্ম অধ্যরন, অধ্যাপন, যজন, বাজন, দান ও প্রতিগ্রহ। ক্ষত্রিরের কর্ম—প্রজারক্ষা, দান, যজাহুছান, অধ্যরন এবং নৃত্যগীত ও বনিভোপভোগাদিতে আত্যন্তিক অনাসক্তি। বৈশ্রের ধর্ম—পশুপালন, দান, যজ্ঞ, অধ্যয়ন, বাণিন্দ্য; কুসীদর্ভি এবং ক্ষত্রিকর্ম। শ্রের ধর্ম—অহুরাহীন হইরা উক্ত বর্ণত্রেরের গুশ্রহা।

"সর্বকান্ত তু ধর্মত গুরুর্থে স মহাজ্যতি: ।

মুধবাহুরূপাজ্জানাং পৃথক কর্মাণ্যকররং ॥

অধ্যাপনমধ্যরনং যজনং তাথা ।

দানং প্রতিগ্রহক্ষর জাজাদানামকররং ॥

প্রজানাং রক্ষণং দানমিজ্যাধ্যরনমেব চ ।

বিবরেষপ্রসক্তিক্ষ ক্রিয়ন্ত সমাসভ: ॥

পশ্নাং রক্ষণং দানমিজ্যাধ্যরনমেব চ ।

বিপিত্পথং কুসীদক বৈশ্বন্ত ক্রিমেব চ ॥

একমেব তু শুক্রত প্রেন্থ: কর্ম সমাদিশং ।

এতেবামেব বর্ণনাং গুরুরামনস্বারা ॥" (মন্ত্র ১৮৭-৯১)

বান্নণ, ক্ষত্রির, বৈশ্র ও পুত্র সকল বর্ণেরই শান্তশাসনে
বথাবিধি আশ্রমী হইতে হর। তর্নাংগ্য ব্রাক্ষণের আশ্রম
চারিটী। বথা—ব্রক্ষচর্যা, গার্হস্তা, বানপ্রান্থ ও সন্ত্যান। উপনরনের পর জিতেজির হইরা ওলগুহে বাল ও সাক্ষরের অধ্যরন
করিতে হর, ইহারই নাম ব্রক্ষচর্যাশ্রম। বেলাগ্রন সমাপনের
পর লারপরিপ্রহাত্তে অধ্যাত্তরণ-পূরঃসর গৃহত্ব হইতে হর। এই
আশ্রমের নাম গার্হস্তা। তৎপরে প্রভাগেশাবনের পর বনে বাস,
অক্তইপচ্য ক্লাবি তক্ষণ ও ক্ষরের আরাধনা, ইহাই হইল
বানপ্রান্তাম। তৎপরে গুহারি সর্কবন্ত পরিভ্যাগাস্ক্রক রুভিত
মন্তব্দে গৈরিক কৌলীন পরিরা, নতক্ষরের ভারা ভিকার্তি
অবশব্দ, নির্ক্রন প্রের্থনের বা তীর্ষাবিতে বাস এবং একমাত্র
পরবেরের আরাধনা। ইহারই নাম—সম্যাস আশ্রম।

[এই আশ্রম চারিটার মতি দংক্ষিপ্ত পরিচর এখানে দিশিবছ হইল। ঐ সকলের বিভূত বিবরণ তংগুৎ শব্দে ক্রপ্তর।]

षिতীর ও তৃতীর বর্ণ—ক্ষত্রিয় ও বৈশ্র। ইহাদিগের পক্ষে লেবাজ্ঞ সর্ন্নাস আশ্রম ছাড়া প্রথমোক্ত ব্রহ্মচর্য্য, গার্হস্থা ও বান-প্রস্থ এই তিনটী আশ্রমই প্রশস্ত। এতত্তির পৃদ্ধের পক্ষে শুধু গৃহস্থাশ্রমই নির্দিষ্ট। জন্ত কোন-জাশ্রমে পৃদ্ধের অধিকার নাই।

ঈশবের আরাধনা সকল বর্ণের—সকল আশ্রমেরই সাধারণ ধর্ম্ম । তন্মধ্যে যিনি বিষ্ণু উপাসক, তিনি বৈষ্ণৱ, শিবোপাসক শৈব, হুর্গা প্রাভৃতি শক্তি-সাধক শাক্ত, সুর্য্যোপাসক সৌর এবং গণেশোপাসক গাণপত্য নামে খ্যাত। ইহা পৌরাণিক মত।

চারিবর্ণের বিভিন্ন কর্ম সম্বন্ধে বিশুপ্রাণ বলিয়াছেন, আর্মণ দান করিবেন, বেদাধ্যয়ন-পরায়ণ হইবেন এবং যজ্ঞাদি বারা দেবগণের অর্জনা করিবেন। আর্মণকে নিত্যোদকী হইতে হইবে ও অগ্নিপরিগ্রহ করিতে হইবে। জীবিকার জক্ত যাজ্ঞন ও অধ্যাপন করিবেন এবং যে ব্যক্তি বৈধ উপায়ে ধনার্জনকরিয়াছে, তাহার নিকট হইতেই স্তায়তঃ প্রতিগ্রহ লইবেন। আ্রাহ্মণ সকলের হিত্সাধন করিবেন, কথন কাহার অহিত বা অনিষ্টাচরণ করিবেন না। সর্বভূতে মৈগ্রীয়্লাপনই আহ্মণের পরম ধর্ম। পরকীয় প্রস্তর কিংবা রক্ত উভয় বস্তুতেই আহ্মণ তুল্যজ্ঞান হইবেন। ঋতুকালে পত্নীগমন করিবেন। *

ব্রাহ্মণ উপনীত হইয়া বেদাভ্যাদে তৎপর হইবেন। এই
সময় তাঁহাকে ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন করিয়া একাগ্রমনে গুরুপুরে
বাস করিতে হইবে। তথন শৌচ ও আচারবান হইয়া গুরুর
শুশ্রমা করিবেন এবং নিয়মত্ব হইয়া পবিত্র বৃদ্ধিতে বেদ গ্রহণ
করিবেন। উভয় সন্ধায় সমাহিত হইয়া অয়ি ও সংগ্যোপাসনা
এবং গুরুকে অভিবাদন করিতে হইবে। গুরু দাঁড়াইলে দাঁড়াইতে
হইবে, গমন করিলে গমন করিতে হইবে এবং উপবেশন করিলে,
নিয়াসনে উপবেশন করিবে। কথনও গুরুর প্রতিকুলাচরণ
করিবে না। গুরুর আদেশে গুরুর অভিমুখে বিদিয়া অন্স্রাচিতে
বেদপাঠ করিবে। তাঁহার অহজা লইয়া ভিক্লায় ভক্ষণ করিবে।
আগ্রে আচার্য্যের জলাবগাহন হইলে, পরে সেই জলে অবগাহন
করিবে। গুরুগুরে বাসকালীন সমিৎ ও জল প্রস্তৃতি প্রয়োজনীয়

"লানং লল্যান্বৰেদেশান্ বলৈ: বাব্যান্তৎপর: !
 নিত্যোগলী কৰেছিএ: কুব্যান্তাগ্নিপরিএন্ন ।
 বৃদ্ধার্থ বান্তরেন্ডান্ডানভানব্যাগনেত্বথা ।
 কুর্যাৎ অভিপ্রহং লানং গুলার্থান্ত্যান্তে বিল: ।
 নির্বানিকিন্য: প্রান্তিতং ক্রান্তিবং লালাং ও
 বিভ্নান বিল্লান প্রান্তিবং ক্রান্তিবং লালাং ও
 বিভ্নান প্রান্তিবং লালাং বিল্লান ও

সমত বস্তু প্রতিষিক প্রতিপ্রভাতে শ্বরং আহরণ করিরা আনিবেন। তৎপরে বধন অবস্তু অব্যেত্তর বেদ অধ্যরম শেব হইবে, তখন শুকুর অন্তুল্ঞা লইরা ও বধাশক্তি শুকুরকিশা দিরা গার্হিয় ধর্ম অবলখন করিবেন। পরে বধাবিধি বারপরিপ্রহ ও বীর রুত্তি বারা ধনসংগ্রহ করিরা সাধ্যমত বাবতীর গৃহস্থেটিত কার্য্য-সম্পন্ন করিতে থাকিবে। নিবাপ বারা পিতৃপুক্ষবিগকে, ব্যক্তবারা বেবভাদিগকে, অর্থদানে অতিথিদিগকে, শ্বাধ্যারে মুনিদিগকে অপত্যোৎপাদনে প্রজাপতিকে, বলিকর্মে ভূতবর্গকে এবং বাৎসল্য প্রকাশে সমগ্র জগৎকে আগ্যারিত করিবেন। পুকুর শ্ব শ্ব কর্মার্ক্সিত লোক সকল প্রাপ্ত হইরা থাকেন। কি ভিক্ষাভোলী, কি পরিবালক, কি ব্যক্ষচারী, গার্হস্থা ধর্মেই ইইাদিগের সকলেরই প্রতিষ্ঠা। সেই জক্ত গার্হস্থা ধর্মই সর্বপ্রধান।

রাহ্মণগণ বেদাধারন, তীর্থদান ও পৃথিবী দর্শন এই তিন কার্ণ্যের অক্স সমস্ত বহুধা পর্যটন করিয়া থাকেন। বাহাদিগের কোন গৃহসংস্থা নাই, বাহারা আহার ত্যাগ করিয়াছেন, যেথানে সায়ংকাল, সেই থানেই বাহাদিগের গৃহ, অর্থাৎ বাহারা সায়ংগৃহ, তাঁহাদিগের গৃহস্থাশ্রমী ব্যক্তিই প্রতিষ্ঠা এবং গৃহস্থই তাঁহাদিগের মূল। তাঁহারা গৃহাগত হুইলে, গৃহস্থ তাঁহাদিগকে স্বাগত সম্ভাবণাদি মধুর বাক্য বলিবেন এবং শয়ন আসন ও পান ভোজনাদি দানে গৃহস্থ বাহ্মণ তাঁহাদিগকে আপ্যায়িত করিবেন। কোন না, অতিথি গৃহ হুইতে হতাশ হুইয়া ফিরিয়া বাইবার সময় নিজ গুছতির বিনিময়ে গৃহস্থের স্কর্কতি লইয়া চলিয়া যান। অবজ্ঞা, অহয়ার, দস্ত, পরিতাপ, উপবাত ও পারুয়া প্রভৃতি গৃহস্থ ব্যক্তির পক্ষে প্রশন্ত নহে। গৃহস্থ বাহ্মণ ঐ গুলি পরিত্যাগ করিবেন। যে গৃহস্থ বিপ্র এই ভাবে স্থচারুয়ণে গৃহধর্ম্ম পালন করেন, তাঁহার সকল বন্ধন ছিল হুইয়া যায়, তিনি চয়মে পরম স্থান লাভ করেন।

গৃহাশ্রমী ব্রান্ধণের যথন বরংপরণতি ঘটিবে, গৃহধর্ম ধথাবিধি
প্রতিপালিত হওয়ার তিনি যথন ক্রতকার্য হইবেন, তথন
প্রাদিগের উপর ভার্যারক্ষার ভার দিয়া অথবা ভার্যাকে দক্ষে
লইয়া বন গমন করিবেন। এই আশ্রমের নাম বানপ্রস্থ।
এখানে আসিয়া ভারাকে কেশ, শাশ্র ও জটাধারী হইতে হইবে।
ফল মূল ও পত্র ভারার আশ্রমাগত সকল অতিথিরই আতিথা করাইবেন। ক্রফাজিন কাশ ও কুশ বারা আপনার পরিধান ও উত্তরীয়
করিবেন। প্রাত্তে, মধ্যাকে ও সারাক্রে ভিন্ন বেলা লাম
করিবেন। ক্রেমিভিনা, হোম, অভ্যাগতগণের অর্জনা, জিক্লা ও
ভূতবর্গকে বলিপ্রদান, এই সকল কাল বানপ্রস্থাশ্রমীয় প্রশন্ত ।
বনবাসী হইয়া বনজাত সেহ পদার্থেই নিজ গাত্রাভাল সমাধা করি-

বেন। তপঞ্চা করিতে করিতে ক্রমে শীতগ্রীমাদিসহিষ্ণু হওরা আবক্তক। যে বানপ্রস্থাশ্রমী নিরমরত হইরা উক্তরূপে যথাবিধি আপন আশ্রমধর্ম পালন করেন, তিনি অগ্নিবৎ দোবরাশি দধ্য করিরা সেই সনাতন পদ পাইবার পথ পরিকার করিরা লরেন।

তাহার পর চতুর্বাশ্রম। এই আশ্রমই শেব আশ্রম। ইহা যতি বা ভিকুর আশ্রম। সমত মাৎস্থা ভ্যাগ করিয়া পুত্র, মিত্র, কলত্র ও সমস্ত প্রবা সম্পাদের মারা মমতা বা প্লেহ আসন্তি ছাড়িরা এই আশ্রমে প্রবেশ করিতে হর। এ আশ্রমে ত্রৈবর্ণিক-কেই সর্বায়ন্ত ত্যাগ করিতে হইবে। সর্বাক্ততে মিত্রাদিবৎ মৈত্রী স্থাপন করিবে। বাকা, মন ও কর্মছারা জরায়ু ও অওজ প্রভৃতি কোন প্রাণীরই কথন কোনরূপ দ্রোহাচরণ করিবে না। সর্ক সঙ্গ পরিত্যাগ করিবে। গ্রামে একরাত্র পর্যান্ত বাস করিবে। পরে পঞ্চরাত্র পর্যাস্ত্র বাদ করিবে। তদ্তির নিজ প্রীতি অমুদারে ভিকু যেখানে দেখানে বাস করিতে পারেন। যখন গৃহছের গুছের পাকাগ্নি ও পাকণুম নির্কাপিত হইয়া যাইবে, গৃহছেরও আহারকার্য্য শেষ হইবে, তপন ভিক্ষু বা যতি যথাকালে প্রাণযাত্রানির্বাহের জন্ম উচ্চ বর্ণদিগের গ্রহে ভিকার্থ গমন ক্রিবেন। কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ ও গ্র্কানি সমস্ত দোব পরিহার করিয়া নির্মাম ও নিস্পৃহ ভাবে সর্বাত্র পরিভ্রমণ করিবেন। কোন হিংল্র জীব জন্ত হইতেই তাঁহার কোন ভয় থাকিবে না। কারণ মুনিরা সর্ব্বপ্রাণীকেই অভন্ন দিয়া চলেন, ঙাহারও কখন কোন প্রাণী হইতেই ভয় উৎপন্ন হয় না। যে বিপ্র ভৈক্ষোপগত হবিছারা অগ্নিহোত্র নিজ শরীরসংস্থ করিয়া মুখে শরীরামি বছন করেন, তিনি অমিচারীদিগের সালোক্য व्याश्व इन। এইक्रां एकि ध क्रक्त्र्दि इहेन्ना विनि गर्भाक মোকাশ্রম ধর্ম পালন করেন, অনিষ্কন প্রশান্ত জ্যোতির ভার তিনি বন্ধলোক লাভ করিরা ধাকেন। (বিষ্ণুপু°২র অংশ৮৯ জঃ)

ক্ষতিষের ধর্মসম্প্রে বিষ্ণুপ্রাণে উক্ত হইরাছে বে, ক্ষত্রিয় ব্রাহ্মপান্ত নিক্স ইজামত দান করিবেন। বিবিধ যজ্ঞামুচান ও ক্ষরায়ন করিবেন। শত্র ধারণ করিয়া মহীরক্ষাই তাঁহাদের শ্রেষ্ঠ জীবিকা, বরিত্রী পরিপালনই ক্ষতিরের প্রধান কার্যা। রাজ্যরক্ষাও রাজ্যে শান্তিস্থাপনাদি ব্যাপারেই তাঁহাকে কৃতকার্যা ছইতে হইবে। ছুইের শাসন ও লিটের পালন ক্ষত্রিয়েরই ধর্ম। ক্ষত্রির রাজ্যাকে অধিষ্ঠিত হইবেন। ক্ষত্রির রাজ্যাকে সর্কাবর্ণের সংস্কারক হইতে হইবে। ক্ষত্রির এইজপে শান্ত্রসম্বর্জ প্রধর্ম পালন করিয়া চর্মের পর্ম্ম পালন করিয়া

বৈশ্বের ধর্ম কর্ম সব্বন্ধে উক্ত আছে, পণ্ডপালন, বাণিজ্য, ও ক্লবি-কর্মা এই তিনটা বৈশ্বের ধর্ম-সম্লভ জীবিকা। ক্ষিত্রকর্তা এইয়াপ জীবিকাই বৈশ্বপক্ষে নির্ণীত করিয়াছিলেন। বৈশ্ব অধ্যরন, নিতা নৈমিত্তিকাদি কর্মাম্চান, যক্ত এবং দানধর্মের অফুচান করিবেন। বৈক্তের কর্মা ছিলাতি সংগ্রামে সম্পন্ন হইবে এবং ক্ররবিক্ররজাত ধন বা কাক্ষকার্যাজাত ধন ছারা তিনি দান ক্রিয়া সমাধা করিবেন। *

ক্ষত্রির এবং বৈশ্র এই বর্ণছরের মোটামূটী গার্ছস্ত জীবনের জীবিকাধর্ম ঐরপই। তবে আশ্রমান্তর পরিগ্রহে বর্ধাশান্ত তৎতৎ আশ্রমধর্মই পালন করিতে হর।

শূদ্রও দান করিবে এবং পাক্ষজ্ঞ ছারা পিতৃপুরুষ প্রভৃতির অর্চনা করিবে।

"দানঞ্চ দভাৎ শৃদ্রোহপি পাক্যক্তৈর্যজেদপি।

পিত্রাদিকঞ্চ সর্ব্বং বৈ শূদ্রঃ <mark>কুবর্কীত তেন চ॥" (বিষ্ণুপু•)</mark>

কি রাদ্ধণ, বি ক্ষরির, কি বৈশ্র, কি শুদ্র সকল বর্ণেরই ভূতা, অমাতা ও আত্মীয়বর্গের পরিপালন করা কর্ত্তব্য । সকলেই যথাকালে দারপরিগ্রহ করিয়া ঋতুকালে স্থ স্থানীতে অভিগমন করিবেন। সর্কা প্রাণীব প্রতিই দয়া থাকা চাই, ভিভিন্দা থাকা চাই। কোন বর্ণ ই অভিমানী বা গর্জান্ধ হইবেন না। সত্যা-শৌচ, অনায়াস মঙ্গগচেষ্টা, প্রিয়ভাষণ, সর্কাত্র মৈত্রবন্ধনম্পুহা । এবং অকার্শণ্য ও অনস্থয়া এই সকল সর্কবর্ণেরই সাধারণ গুল।

"ভৃত্যাদিভরণার্থায় সর্কেরাঞ্চ পরিগ্রহ: ।
ঋতুকালাভিগ্যনং স্থাবেষু মহীপতে ॥
দয়া সমস্তভূতেষু তিতিকা নাভিমানিতা ।
সত্যং শৌচমনায়াসো মঞ্চলং প্রিয়বাদিতা ।
মৈত্রী স্পৃহা তথা তহদকার্পণ্যং নরেশ্বর ।
অনস্রা চ সামান্তা বর্ণানাং কথিতা গুণাঃ ॥" (বিশ্নুপ্
•)

 'বানানি দদ্যাদিক্ষাতো বিক্লেক্তা: ক্ষজিরোছণি হি। श्यक्रक विविदेशधेकात्रशीही उ ह शार्थिय । শরাজীবো মহীরক্ষাপ্রবরা তক্ত জীবিকা। ভদ্যাপি প্রথমে কল্পে পৃথিবীপরিপালনম্ । ধরিত্রীপালনেনৈষ কৃতকৃত্যে। নরাধিপ:। ভবস্তি দুপতেরংশা বতো ধর্মাদিকর্মণান্ ঃ क्रोनाः माननाक्राका निद्धामाः गतिभागमार । প্রায়োত্যভিষ্তান লোকান বর্ণসংক্ষারকে। নৃপঃ ঃ शास्त्रशासाः वृतिकाकः कृषिक प्रमुख्यपत्र । रेवकात्र जीविकाः उक्षा मत्ने लाक्लिकान्दः । ভদ্যাপাধায়নং কলো দানধর্মত শদ্যতে। নিতানৈনিভিকাদীনামপুঠানক কৰ্মণান্। ছিল্লাভিসংগ্ৰহং কৰ্ম ভাষাৰ্থাং তেন গোৰণৰ। ज्यविक्रवरेक्षवीति धरेन: कांक्रस्यन या ।" PIER PEIS (रेकारेबि) (विकूण्- ७ वाल ४--- वाः) আপৎকালে ব্রাহ্মণ ক্ষত্রির বা বৈশ্ববৃত্তি প্রহণ করিতে পারেন এবং ক্ষত্রিরেরও বৈশ্ববৃত্তি লইবার বাধা নাই। তবে ঐ উজ্জর বর্ণ কোন কালেই শুরুবৃত্তি গ্রহণ করিবেন না। এই যে ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয়র্ত্তি লইবেন, কি ক্ষত্রির বৈশ্ববৃত্তি লইবেন। কি ইহারা কথন শুরুবৃত্তি লইবেন না, ইহা শুধু একান্ত আপৎকালেরই বিধি। পারতপক্ষে উজ্জর বর্ণের উহা ত্যাগ করাই কর্প্তব্য । সহসা কেহই এই কর্ম্মসঙ্কর ব্যাপারে হত্তক্ষেপ করিবে না।

বর্ণগণের আপদ্ধর্ম সম্বন্ধ মহাভারতের শান্তিপর্কে বিমৃত-ভাবে লিপিবদ্ধ হইরাছে। প্রপুরাণ স্বর্গথণ্ডের মতে সর্ব্বাগ্রে এক তেলোমর দিবা পায় স্পষ্ট হইল। সেই পায় হইতে ব্রহ্মা জানিলেন। ব্রহ্মা হইতে মামুখস্টি আরম্ভ হইল। প্রকা স্পৃষ্টির প্রোরক্তেই প্রকাপতি ব্রহ্মা ব্রাহ্মণকে স্পষ্টি করিলেন, ব্রাহ্মণ আহ্ম-তেকে আলি ও স্থাবৎ উন্দীপ্ত হইয়া উঠিলেন। তার পর সত্য, ধর্মা, তপা, ব্রহ্মপদার্থ, আচার ও শৌচ প্রভৃতি ব্রহ্মা হইতে স্পৃষ্ট হইল। এই সকল স্পষ্টির পর দেব, দানব, গর্ক্ম, দৈতা, অস্ত্রর, মহোরগ, যক্ষ, রক্ষ, রাক্ষ্য, নাগ, পিশাচ ও মন্ত্র্যা সকল স্থাই করিলেন। তৎপরে ব্রাহ্মণ, ক্রির, বৈশ্র ও শৃদ্র এই চারি প্রকার বর্ণস্থিটি হইল। তন্মধ্যে ব্রাহ্মণের বর্ণ সিত, ক্ষব্রেরের লোহিত, বৈশ্রের পীত এবং শুদ্রের বর্ণ অসিত অর্থাৎ ক্রক্ষ।

মান্ধাতা নারদের কাছে প্রশ্ন করেন—আছো, যদি খেতপীতাদি বর্ণের পাথকাই ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিরাদি বর্ণ-বিভাগ হইয়া থাকে,তবে ত সকল বর্ণেরই বর্ণসন্ধর দেখা যায়। কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, ভয়, শোক, চিয়া, ক্র্ধা প্রভৃতির আধিপতা ত সর্ব্ধত্র। মৃত্র প্রীয়াদি সকলেই ত্যাগ করে, মৃত্যু সকলের প্রভু, দেহ-কয় সকলেরই অনিবার্যা। স্বতরাং এ অবস্থায় বর্ণবিভাগ হইল কিরূপ এবং তাহাতে ফলই বা কি ? আর এক কথা—লগতে স্থাবর কক্ষম কত অসংখ্য লাতি রহিয়াছে, তাহাদিগের বর্ণও নানা প্রকার; স্ক্তরাং বর্ণনির্ণয় কেমন করিয়া হইবে ?

এই প্রশ্নের উত্তরে নারদ বলিরাছিলেন, রাজন্ ! বর্ণসমূহের কোনই বিশেবত নাই। এই সমগ্র জগৎই ব্রহ্ময় । ব্রহ্ম সকলেরই স্ষ্টেক্স্তা। ব্রহ্মস্ট সকলেই এক ব্রাহ্মণ, তবে কর্মা-স্থারে এক এক সম্প্রদায় ও এক এক বর্ণ অখ্যার অভিহিত। বে সকল ব্রাহ্মণেরা স্বধর্ম ভ্যাগ করিরা কামভোগে রভ, বাহার

"কলং কর্ম বিলন্যোক্তং বৈভকর্ম তথাপনি। রাজভান চ কৈলোক্তং লৌলং কর্ম ন চৈতলোঃ। সামর্ব্যে সতি তথ্যালামূতাজানিশি পার্থিব। তদেবাশনি কর্মবাং ন কুর্বাংর বর্মীনভর্ম।" (বিকুপু॰) তীক্ষ বভাব, ক্রোধন, মিরসাহস ও লোহিভাল, তাঁহাঁরাই ক্রির হইরাছিলেন। বাঁহারা ক্লবিকর্মে লিপ্ত হইরা ভাহা বারাই জীবিকা নির্কাহ করিতে লাগিলেন, গ্রানি পণ্ডপালনে আসক্ত হইলেন, বংশ্বকে পরিত্যাগ ক্ষরিলেন, তাঁহালের দেহ পীতবর্ণ ছিল, ভাইারই বৈশুলাতি মধ্যে গণ্য হইরাছিলেন। আর বাঁহারা হিংসা ও অসত্য আশ্রর ক্রিলেন, যে কোন কর্মেই জীবিকা নির্কাহ করিতে লাগিলেন, পৌচাচার ত্যাগ ক্রিলেন, এবং অত্যন্ত লুদ্ধবভাব হইরা উঠিলেন, তাঁহাদের বর্ণ ছিল ক্ষ্ম, ভাঁহারা বিল হইলেও তাঁহারাই শুদ্র সংক্ষার অভিহিত হইরা।ছিলেন।

এইরপে কর্ণাস্থলারে আক্ষণেরাই বিভিন্নবর্ণে বিভক্ত হন।
চারিবর্ণের জন্মই বেদবাণী বিহিত ছিল, লোভে ও অক্ষানে
পড়িয়া অনেকে সে আন্ধী বাণী হারাইয়াছিলেন। থাহারা
ধর্মতন্ত্রে একান্ত আসক্ত ছিলেন বলিয়া সে আন্ধীবাণী ভূলেন
নাই এবং থাহারা বেদাবলম্মন, বেদবোধিত নিতা নৈমিন্তিক ব্রতনিরম ও শৌচ সন্নাচারাদি সাধুসেবিত পথে থাকিয়া ব্রহ্মশুট
দ্বেপ্রতিপান্ত পরব্রক্ষকান প্রাপ্ত হটয়াছিলেন, তাঁহারাট ব্রাহ্মণ।

নারদ মাদ্ধাতার প্রস্নের উত্তরে চাতুরিবর্ণের এই কাণ শক্ষণ নির্দেশ করেন, যথা—যিনি লাভকর্মাদি দশবিধ সংস্কারে সংস্কৃত, গুচি ও বেদাধ্যয়নসম্পান, বিনি শৌচাচারে রত থাকিয়া যজন যাজনাদি বট্কর্মে অবস্থিত, যিনি নিত্য গুরুপ্রির, নিত্যবতী ও স্ত্যরত, তিনিই ব্রাহ্মণ নামে অভিহিত। সত্য, দান, আন্শংস্ক, অন্দোহ, রূপা, মুণা ও তপস্থা এই কর্মী বাঁহার কাছে নিত্য বিভ্যান, তাঁহাকেই ব্রাহ্মণ বলা যার।

যিনি বেদাধ্যয়ন সম্পন্ন হইরা নিয়ত ক্ষত্রিয়োচিত কর্ম আচ-রণ করেন, যিনি দান বাতীত কথন প্রতিগ্রহ করেন না, তাহাকে ক্ষত্রির বলা যায়। যিনি পবিত্রভাবে বেদাধ্যয়ন সম্পন্ন হইরা পশুপালন ও ক্ষত্বিকর্মের রত, তাহারই নাম বৈশ্র।

বাহার কোন থাডাথাত বিচার নাই, সর্বাণা অপবিত্র অবছায় যে কোন কর্মেই জীবিকা নির্বাহ করে, তাদৃশ বেদবজ্জিত, সম্বাচারহীন ব্যক্তিই শুদ্রনামে থাত। (মহাতা ও পদ্মপু সুর্বাথত)

চতুর্বর্ণের পর্যাকর্ম সম্বন্ধীয় বিধি বাবছা মনালি স্থৃতিসংহিতার এবং তদ্ধি প্রার সমত প্রাণেই চতুর্বর্ণের ধর্মাকর্মবিষয়ক বিশ্বৃত উল্লেখ আছে। বাহুলাভরে সে সমন্ত উদ্ভূত হইল না। নরসিংহ-পুরাণ ৫৯ অধ্যার, মার্কণ্ডেয়পুরাণের মদালসা উপাখ্যান, কুর্ম্বন্তির ২ ও ৩ অধ্যার, পদ্মপুরাণ স্থর্গবিশ্বের ২৫, ২৬ ও ২৭ অধ্যার, বামনপুরাণ ১৪ অধ্যার, এবং গরুড়পুরাণের ৪৯ অধ্যার, এ সম্বন্ধ বিশ্বৃত বিবরণ এইবা।

বর্ণ (পুং) > গজচিত্রকখন, চলিত হাতীর খুল। পর্যায়-

প্রবেণী, আন্তরণ, পরিস্তোম (পৃং) কুপ, কুথা (অমর) প্রবেণি, পরিষ্টোম (ক্লী) কুথ। (ভরত) ২ গুক্লাদি, চলিত বঙ্।

এই বর্ণ বা রঙ্বত প্রকার, যথা - খেত, পাণ্ডু, পুসর, রুক্ত, পীত, হরিত, রক্তে, শোণ, অরুণ, পাটল, স্থাব, ধুমু, শিলল এবং কর্ম্ব (অমর)। স্থাবোধের মতে ছয় মাসের সময় গর্ভন্থ বালকের বর্ণ হয়।

ত যপ। ৪ গুণ। ৫ জাতি। (মেদিনী) ৬ স্বর্ণ। ৭ ব্রত। বর্ণাতে ভিছাতে ইতি বর্ণ-ঘঞ্ (পুং ক্লী) ৮ ভেদ। ৯ গীতক্রম। ১০ চিত্র। ১১ তালবিশেষ। ১২ অক্লরাগ। (হেম) বর্ণাতে ভিছাতে অনেনেতি বর্ণ-ঘঞ্। ১৩ ক্লপ। বর্ণয়তি বর্ণ-জাত্। ১৪ অক্লয়। বর্ণাতে বুজাতে ইতি বর্ণ ঘঞ্। ১৫ বিলেপন। (মেদিনী)

বর্ণ তৃষ্ট প্রকার—ধর্যাত্মক এবং অকরাত্মক। দেহিগণের
ফ্লাধারে একটি নাড়ী আঁছে। ঐ নাড়ীটা সর্পের স্থার কুণ্ডলী৮৩। উহা সর্কান মূলাধার মধ্যে কুণ্ডলাকারে থাকে বলিয়া
উহার নাম কুণ্ডলী। কুণ্ডলী চন্দ্র ক্ষা ও অনলর্মণিনী, দিচ্ছারিঃশদ্বর্ণমরী অর্থাং ভূতলিপিমন্ত্রশালিনী এবং পঞ্চাশহর্ণমরী
অর্থাং মাতৃকাবর্ণস্থরপিনী। ঐ কুণ্ডলী সকল বর্ণে পরম্পের
মিলিত হটয়া মন্ত্রময় ক্রগং প্রকাশ করে। এই কুণ্ডলী শব্দ
ব শব্দার্থের প্রবর্ধীনী এবং ত্রিপুদ্ধর অর্থাং জোই, মধ্য ও কনিষ্ঠভেদে তীর্থত্রয় ও উদাত অন্থদান্ত প্রভৃতি কর সমাহারের প্রকাশক। তত্রশাল্রে কুণ্ডলী পর্ম দেবতা নামে অভিহিত।

•

বক্স ও শ্রোত্রপথ অপরিকার থাকে, তাই ঐ কুগুলী যথন অপ্পষ্ট বর্ণে অথাৎ অক্ষুট ধ্বনিতে আলাপাদি করিতে উগ্নত হয়, তথন মূলাধারে গিয়া ধ্বনিত হয় এবং স্বন্ধা নাড়ীও বার বার ঐ ধ্বনিতে আলোড়িত হইতে থাকে। ক্রমে এই ভাবেই বিস্পষ্ট ও অস্পষ্টরূপে বর্ণসমষ্টি প্রকাশমান হইয়া পড়ে।

পূর্বে যে তল্পেক পরদেশতা কুশুলীর কথা কহিরাছি, তিনি ভিচতারিংশভর্ণে মিলিত হইরা এইরূপ ক্রমপরস্পরার অকার হইতে সকার পর্যান্ত ভিচতারিংশলাত্মক বর্ণমালার উভাবন করেন। এই ভিচতারিংশলাত্মক বর্ণমালাই ভূতলিপি মন্ত্র। কুশুলিনী সর্ব্বশিক্তিমরী ও শক্ষপ্রকার্মপিনী। তিনি যে ক্রম ধরিয়া বর্ণমালা প্রস্ব করেন, তাহা এইরূপ, যথা—প্রথমতঃ কুশুলিনী হইতে

"কুওলীভূতসর্গাণাবছাত্রিবনুশের্বী ।
 তিধামকননী বেবী শক্ষত্রছাবন্ধনিশী ।
 হিচছারিংশ্বশিল্পা গঞাশবর্ণকাশিলী ।
 গোতা সর্বগাত্রের কুওলী গারবেবতা।
 বিবারনাগর্কা না কতে মন্ত্রহার কাবং ।
 একথা ওপিতা শক্তিং সর্কাবিব্যাবত্তিনী ।
 তিপুদরং বরান্ বেবী এক্ষালীনাং তাং তারব্ ॥" (সারবাতিকক)

শক্তির বিকাশ। শক্তি হইতে ধর্মন। ধ্বনি হইতে নাদ।
নাদ হইতে নিরোধিকা। নিরোধিকা হইতে অর্থ্পেন্দ্র অর্থ্পেন্দ্র হইতে ক্রেনে অক্তান্ত সমন্ত। সমন্ত অক্ষর উৎপত্তি স্থান্থেই পরম্পারা এইরূপ। (১)

চিচ্ছক্তি সৰ্সন্থলিত ছইরা শব্দপদবাচা হর। তিনি আবার ঐ সৰস্থলিত অবস্থার আকাশন্থ হইরা রজোপ্তণে অন্ধ-বিদ্ধ হইন করিল শব্দে অভিহিত হইরা থাকেন। ধ্বনি অক্ষর অবস্থার তমোপ্তণে অন্ধবিদ্ধ হইরা নাদশন্দবাচা হর। ঐ অব্যক্তা-বন্ধা তমোপ্তণের আধিকাবন্দে নিরোধিকা শব্দে অভিহিত। ঐ নিরোধিকা আবার রত ও মত উভরপ্তণের আধিকা হেতু অর্দ্ধেন্দ্দ্ শব্দে অভিধের। অলঙ্কারকৌস্বন্ত ও পদার্থাদর্শ প্রভৃতি প্রস্থেলিপিত আচে,—

পরা, পশ্যন্তী, মধামা এবং বৈধরী, অবস্থাতেদে বর্ণের এই করেকটী সংজ্ঞাসক্ষেত আছে। বর্ণ যথন নাদরূপে মূলাধার হইতে প্রথম উৎপন্ন হয়, তথন তাহাকে পরা বলে। পরে যথন ঐ বর্ণ নাদরূপে মূলাধার হইতে উঠিয়া ক্রুমে হৃদয়গত হয়, তথন তাহা পশ্যন্তী, তৎপশ্চাৎ যথন হৃদয় হইতে উঠিয়া ক্রুমে বৃদ্ধি বা সঙ্কলের সহিত সংযুক্ত হয়, তথন উহা মধামা এবং তার , পর যথন বৃদ্ধি হইতে উঠিয়া ক্রুমে কণ্ঠগত হইয়া মূঝ্দারা অভিবাক্ত হয়, তথন তাহা বৈধরী। এই বৈধরী অবস্থাপন্ন নাদ হইতেই পবন প্রেরিত হইয়া বর্ণসমূহ বাহিরে সকলের গোচরীভ্ত হয়। শরা ও পশ্যন্তী দশাপন্ন বর্ণ যোগিদিগেরই প্রতাক্ষহয়, অথকা পক্ষে উহা প্রতাক্ষ হওয়া অসম্ভব। (২)

ব্যাকরণ মতে, বর্ণসমূহের উৎপত্তিস্থান আটটী। বথা—হৃদয়, শির, শ্লিছ্বা, দন্ত, নাসিকা, ওঠছর এবং তাপু•। ইহার মধ্যে অ, ক, ঝ. গা, ঘ, ঙ, হ, ও বিদর্গ (:) এই কয়েউটী বর্ণের উচ্চারণ রণস্থান কঠ। ই,চ, ছ, জ, ঝ,ঞ, য়, শ,এই কয়টী বর্ণের উচ্চারণ-স্থান তালু; ঝ,ট, ঠ,ড, ঢ, গ, র, য়, ইহাদিগের উচ্চারণস্থান মুদ্ধা

- (>) "বিচ্ছারিলেতা মূলে গুণিতা বিষ্ণারিক। ।

 সা প্রস্তুতে কুওলিনী শক্ষরক্ষমনী বিজু: ।

 শক্তিত্বতো ধানিত্মান্তানজন্মানিরোধিকা ।

 ততোহর্কেন্তুত্বতো বিন্তুত্মানাসীৎ পদা ততঃ ।" (সার্থাতিলক)

 "মূলাধারাৎ প্রথমসুদিতো বন্ধ জার: পরাধ্যা: ।

 শক্তাং পঞ্চন্তাধ ক্লমনো বৃদ্ধিবৃদ্ধ্যানাখ্য: ।

 বক্লে বৈবর্গাধ কলদিবোরসালতো: স্বৃদ্ধান্

 বদ্ধতান্ত্রতিতা বর্ণনিক্ষণ ।" (আন্তারকৌক্ত)

 বিজ্ঞান্ত্রতি প্রবাধিক্ষণ ক্রিক্সিক্ষণ ।" (আন্তারকৌক্ত)
- "অটো ছানানি বর্ণানামুক্ত কলিরন্তবা।
 জিহবামুলক রন্তাক নাসিকেটেটা চ ভাগু চঃ" (শিক্ষাহ্তর)

১, ३, ७, थ, भ, ४, न, न, न हेशिनिशित डेकातगदान नस । ७, ७, १, १, १, १, वात उपधानीत हेशिनिश्तत उक्कातगदान अर्छ। 'व' मस ७ ७ई। 'वे थे, क्रि ७ छान् ध्वर किस्तामृनीदित उक्कातगदान किस्तामृनी

"অবর্ণ-কবর্গ-হ-বিসর্জ্জনীরা: কণ্ঠ্যা:। ইবর্ণ চবর্গ-হলা-ভালব্যা:। ধ্বর্ণ-টবর্গ-রবা: মূর্দ্ধস্পা:। ১বর্ণ-তবর্গ-লনা দস্ত্যা:। উবর্ণ-পবর্গোপথানীরা ওঠ্যা:। বো দক্ষোষ্ঠা:। এ ঐ কণ্ঠাতালব্যো। ও ও কণ্ঠোঠোঁ। জিহ্বামূলীয়ত জিহ্বামূলম্।"

প্রপঞ্চসারের তৃতীয় পটলে দেহমধ্য হইতে পঞ্চাশংবর্ণ বা অক্সরের উৎপত্তি সম্বন্ধ এইরপ লিখিত হইয়াছে—বর্ণসমূহ সমার-সঞ্চালিত হইয়া স্থন্মা নাড়ীর রন্ধু মধ্য দিয়া বহির্গত হইডে থাকে। পরে কণ্ঠাদি স্থান আলোড়িত করিয়া বদনবিবর দিয়া বাহিরে প্রকাশ পায়। উচ্চ উন্মার্গ বায়ু উদান্ত স্বর উৎপাদন করে। ঐ বায়ু নীচগত হইয়া অন্থানত এবং তির্যাগ্ভাবে গিয়া স্বরিত স্বরের উৎপাদক হয়। এইরুপে একার্ম, এক, দিও ত্রিসংখ্যক মাত্রায় লিপি সকলের ক্ষি। উহারা ব্যঞ্জন হম্ম, দীর্ম ও প্রত সংজ্ঞায় গভিহিত।*

বিণাভিধানে অ হইতে হ পর্যান্ত প্রত্যেক বর্ণের স্বরূপ ও অর্থাদির বিস্তৃত বিবরণ লিপিবদ্দ হইয়াছে। 'অ' হইতে 'হ' পর্যান্ত প্রতি বর্ণে বর্ণের উৎপত্তি, স্বরূপ ও অর্থাদির বিস্তৃত বিবরণ দ্বাস্থান।]

বর্ণক (রী) বর্ণয়ভীতি বর্ণ-গ্ল্। > হরিতাল। (রয়মা৽)
২ গাত্রামূলেপনযোগ্য পিট বা ঘট প্রগান্ধ দ্রবা। ০ চন্দন।
(শব্দর্গা॰)(পুং) ৪ বিলেপন। বর্ণয়তি নৃত্যাদীন্ বিস্তারয়তি।
৫ চারণ। (মেদিনী) ৬ মণ্ডল। (পুং রী) বর্ণাতে রজাতেহনেনেতি, বর্ণ-ঘঞ্, স্বার্থে কন্। ৭ হিন্দুল হরিতাল কাচ
নীলিকাদি। (অময়ভরত)

"কন্তাং নিন্দতি সুপাতি কঃ শ্বরফলকন্ত বর্গকং মৃগ্ণঃ।
কো ভবতি রব্ধকাউকমমৃতে কন্তাপ্দচিকদেতি॥" (আর্থাসে ১৮৯)
বর্ণক (পুং জী) ১ মহ। (লিন্ধ ৭।২৩) ২ মুখোস, অভিনেত্তবর্ণের পরিচ্ছদ। ৩ বিলেপনজ্বা।

বর্ণকণ্ট (क्री) তৃখ, (বৈছকনি •) চলিত তুঁতে বা তৃতিয়া।

ু "সনীবিড: সমাবেশ সুধ্বারজ্ব নির্মতা: ।
ব্যক্তিং প্রথাতি বৰনে কটানিস্থানস্থিতা: ঃ
উত্তৈক্ষার্থান। বায়ুক্লাতং কুকতে পরন্ ।
নীতৈর্গতোহসুবাতক পরিতং তির্মাণ্ডত: ঃ
আর্ক্রেমিনেংখায়তির আভিতিশিকা ক্রমাণ ।
স্বায়ানর্থানীক্রিম্নেকা ভগতি তা: ঃ ' (প্রপ্তসার ও পটন)

বর্ণকাদশুক (প্র) > চিত্রকরের তুলিকারও। 🔍 ছঙ্গোভের। বৰ্ণক্ৰয় (তি) বিচিত্ৰ বৰ্ণমঞ্জিত। वर्गकिवि (११) क्रावत्रभूख । (जिका) বৰ্ণকিতে (ত্রি) বর্ণবিশিষ্ট। (পা ধাং।৩৬ জীবকাদিশণ) বর্ণকৃষ্পিকা (ত্রী) বর্ণানাং কৃশিকের। মৎভাধার। মাছের পাত্র। 'মসীধানী মসিমণিমে লাছুব্ গ্ৰুপিকা।' (জিকা ।) वर्णकु९ (वि) वर्गमानकाती। বর্ণজ্রেম (পুং) > রঙের পর্যার। ২ উচ্চনীচভাভেদে আভি-পরম্পরা। ৩ অকরশ্রেণী। বর্ণগাক্ত (ক্রি) ১ বর্ণসম্বনীয় । ২ জাতিগত । ৩ বীজগণিতঘটিত । বর্ণচারক (এ) বর্ণান্ নীলাধীন্ চারম্বতি বিভাগমতি চম-ণিচ্ থল। চিত্রকার। (শক্ষালা) বর্ণচোরা (দেশক) প্রকৃত বর্ণের অপলাপ। "বর্ণচোরা আম।" বর্ণজ (ত্রি) বর্ণাৎ জায়তে ইতি জন-ড। জাতি। বর্ণোন্তব। বর্ণজ্যেষ্ঠ (পুং) বর্ণের চড়ুর্মধ্যে জ্যেষ্ঠঃ প্রথমোৎপরাৎ শ্বশেৎ-ক্ষত্তভাচ্চ। ১ ব্রাহ্মণ। চারিবর্ণের মধ্যে ব্রাহ্মণই প্রাথমে স্পষ্ট হইয়াছেন। [ব্রাহ্মণ দেধ।]

(ত্রি) বর্ণেন জ্যোতিবোক্তপারিভাষিক্ষরর্ণেন জ্যেষ্ঠ: শ্রেষ্ঠ: । শ্বরণাপেকা উত্তমবর্ণ, নিজে বে বর্ণ, সেই বর্ণ হইতে উত্তমবর্ণ। বিবাহে বর্ণমেলক দেখিতে হয়। হীনবর্ণ পুরুষ বর্ণজ্যেষ্ঠা নাবীকে বিবাহ করিলে ছয় মাসের মধ্যে তাহার মৃত্যু হয়।

"মীনকর্কট-বৃশ্চিকবিপ্রাঃ সিংহতুলাধস্থাক্ষত্রিরা উজাঃ।
কুস্তনর্বর্বমেববিশঃ স্থান্মকরব্বত্রী ক্ষিতা বর্জাতিঃ ॥
বণজোষ্ঠা চ যা নারী বর্ণহীনশ্চ বং পুমান্।
তরোর্বিবাহে মৃত্যুঃ স্থাৎ বন্ধানে নাত্র সংশরঃ॥"(জ্যোতিস্তন্ত)
[মেলক শব্দ দেখ।]

বর্ণতি মু (ত্রী) সরস্বতী দেবীর উদ্দেশক মন্ত্রবিশেষ।
বর্ণতি । (ত্রী) বর্ণ-তল্টাপ্। বর্ণের ভাব বা ধর্ম।
বর্ণতি লি (সুং) রাজতেদ।
বর্ণতি লি (ত্রী) বর্ণানাং তুলিরিব। লেখনী। (শক্ষরত্বাণ)
বর্ণতি লিকা (ত্রী) বর্ণানাং তুলিকে। লেখনী। (ত্রিকাণ)
বর্ণতি লি (ত্রী) বর্ণানাং তুলীব। লেখনী। (ত্রিকাণ)
বর্ণতি (ত্রী) বর্ণানাং তুলীব। লেখনী। (ত্রিকাণ)
বর্ণদি (ত্রী) বর্ণা লাতীতি লা (আভোচমুপসর্বে কং। পা তাহাত)
ইতি ক। ১ কালীরক। (ত্রি) বর্ণদাতা।
বর্ণদিত্রি (ত্রী) বর্ণং দ্বাভীতি লাভ্তুচ, ভ্রিরাং ত্রীব্। হলিলা।
বর্ণদিত্রি (ত্রী) বর্ণং দ্বাভীতি লাভ্তুচ, ভ্রিরাং ত্রীব্। হলিলা।
বর্ণদিত্রি (ত্রী) বর্ণং দ্বাভীতি লাভ্তুচ, ভ্রিরাং ত্রীব্। হলিলা।

शतक, विषयुष । (जिका॰)

বৰ্ণদূষক (ত্ৰি) ৰণান্ দ্বলতীতি দ্ব-ধুন্। বৰ্ণসমূহের দোবোৎপাদক। জাতিত্রংশকর।

''राज त्यराज निविध्वरमा वावरस वर्गम्यकाः।

রাষ্ট্রিকৈঃ সহ ড্রাষ্ট্রং ক্ষিপ্রমেষ বিসম্ভণ্ডি ॥" (মহু ১০।৬০) বর্গদেশনা (খ্রী) শব্দশিকা।

বৰ্ণস্বয়ুম্যু (ত্ৰি) ছইটা পদাংশসম্বাভ ।

বর্ণধর্ম (পুং ক্লী) বর্ণানাং ব্রাক্ষণাদীনাং ধর্ম:। বর্ণাশ্রমধর্ম।
ব্রাক্ষণ, ক্ষব্রির, বৈশু ও পুদ্র এই চারি বর্ণের কর্ত্তব্য কর্ম।
বর্ণশব্দে উক্ত চারি বর্ণের বপাকর্ত্তব্য কর্ম ও ধর্মের বিধিনিষেধাদি এবং ব্রাক্ষণ, ক্ষব্রের, বৈশু ও পুদ্র বিবরে বর্ণবিশেষের
আচারাদি বিশেষ ভাবে বর্ণিত হইরাছে। রাজধর্ম ও আপদ্ধর্মাদি
বর্ণাশ্রমধর্ম পক্ষে বথাসংক্ষেণে বিবৃত হইল। এতত্তির অস্থলোম
ও প্রতিলোম প্রভৃতি বিভিন্নজাতির মহাভারতবর্ণিত ধর্মবিধান
নিম্নে বিবৃত হইতেছে:—

ভীম কহিলেন, পূর্বাকালে প্রজাপতি বজের নিমিত্ত চতুর্বার্ণের कर्च-नमृत्रम् धावः (कवन वर्गाइकृष्टेत न्या कतित्राहितन । आकारणत চারি ভার্যা, তন্মধ্যে ব্রাহ্মণকজা ও ক্ষত্রিরক্জাতে যে পুত্র জন্মে, তিনি ব্ৰহ্মণের আছা বা ব্ৰহ্মণ এবং বৈশ্ৰকন্তা ও শুদ্ৰক্লার মাড়কাতীর পুত্রগণ ক্রমাহরে পূর্ব্বোক্ত উভয় হুইতে হীনরূপে প্রস্ত হয়। ব্রাহ্মণ হুইতে শূলার গর্ডে যে পুত্ৰ জন্মে, সে শব অৰ্থাৎ শবস্থান শ্মশান-তুল্য, শুদ্ৰ অপেকা পর অর্থাৎ শ্রেষ্ঠ, এই নিমিত্ত পশ্তিতেরা শূলা-পুত্রকে পারশব কহিলা থাকেন। সেই পুত্র অকীয় কুলের গুল্লবক হইবে এবং নিয়ত নিজ চরিত পরিত্যাগ করিবে না। সে সমস্ত উপায় অবধারণ করিরা নিজ কুলের উপকরণ সমাক্রণে উদ্ধার করিবে; পারশব ব্রাহ্মণাপেকা ব্যোক্ষেষ্ঠ হইলেও ব্রাহ্মণের নিকট কনিষ্টের ছার ব্যবহার ও ওক্সবা করিবে এবং দানপ্রায়ণ ছইবে। ক্তিরের ভার্যাত্ররের মধ্যে ক্তিয়া ও বৈপ্রাতে ক্তিয় পুত্ৰ কৰে, আৰু পুদ্ৰা ভাৰ্যাতে হীনবৰ্ণ উগ্ৰ নামক পুদ্ৰ কাতি লব্মে, ইছাই শ্বরণ আছে। বৈল্পের চুই ভার্য্যা, চুই পদ্মীতেই উहात देवल भूज जाता। भृत्यत अक्सांज भूजा कांगा, काहारक শুদ্রজাতীর পুত্র জন্মগ্রহণ করে। নিজ জনক হইতে অবশিষ্ট अक्षम भूज विन जाकन-मातानि अधर्यन करत, তবে চাতুর্বাণ্-বিগহিত চণ্ডালাদি ৰাছবৰ্ণ উৎপাদন করিয়া থাকে। ক্ষতিয় ব্রাহ্মণীতে চতুর্কেদের বহিতৃতি ভূপতিগণের স্ততিকারক স্ত-জাতীর সন্তানের জন্ম দান করে। বৈশ্ব ব্রাহ্মণীতে অন্তঃপুর-तक्य-कार्याकांत्री मरकातांगई दिवत्वर-काकीत भूज छेरभागन করিরা থাকে। পুত্র ত্রাহ্মনীতে অভি উপ্রস্থভাব বধার্হ চৌরাদির শিরশ্যে প্রভৃতি কার্ব্যের কারণ প্রাম-বহির্ভাগে বসতিকারী

চঙাল-পুত্র উৎপাদন করে; এই সমস্ত প্রতিলোমজাত লাভি সকল কুলপাংসন। ইহারাই বর্ণসম্বরজাত। বৈশ্র হইতে ক্তিরাতে বাক্জীবী বন্দী মাগধজাতীর পুত্র জন্মে, আর শুদ্র হইতে কজিরাতে ব্যতিক্রমে মংক্রবাতী নিবাদ পুত্র উৎপন্ন হয়, আৰু বৈশ্ৰাভে প্ৰাম্যধৰ্মবিশিষ্ট পুত্ৰ জন্ম, তাহাকে আয়োগৰ বলা যায়; স্বধনজীবী তক্ষা ব্রাহ্মণগণের ব্দপ্রতিগ্রাহ্ন। অষষ্ঠ, পারশব, উগ্র, হুত, বৈদেহক, **ठछान, मांगंध, नियान ७ ज्यारतांगंव, देशांत्रा मरगांनि छ** অনন্তর যোনিতে অর্থাৎ ব্যবহিত নীচ যোনিতে সদৃশবর্ণ ও মাতৃলাতীর পুত্র প্রসব করে। বর্ণচতৃষ্টবের মধ্যে ব্রাহ্মণাদি ভার্যাদ্বরে স্বন্ধাতীর সন্তান সম্ভূত হয়, স্বন্ধাতির আনস্তর্যা বশত: প্রধানামুসারে বাছবর্ণ সকল জন্মগ্রহণ করিয়া পাকে। ভাছারাও সযোনিতে সদুশ বর্ণ উৎপাদন করে, আর পরস্পরের পদ্মীতে বিগর্হিত পুত্রসমূদয়ের জন্ম দান করিয়া থাকে। শুদ্র বেমন বান্দণীতে অতি হীনবর্ণ চণ্ডালের উৎপাদন করে, তক্ষপ চতুর্ব্বর্ণের বহিন্তু ত হীনবর্ণ হইতে অতিশর হীনতর বর্ণ জন্ম গ্রহণ করিয়া থাকে। হীনতর বর্ণহইতে প্রতিলোমজাত বর্ণের বুদ্ধি হয়, হীন হইতে দাসাদি পঞ্চদশ হীনতর বর্ণ প্রস্ত হইয়া থাকে।, ষ্মগম্যাগমন নিবন্ধন বর্ণসন্ধরের উৎপত্তি হয়। চতুর্ব্বর্ণের বহি ভূত বর্ণ সকলের মধ্যে সৈরন্ধী ও মাগধজাতিতে ভূপালগণের প্রসাধন-কার্য্যক্ত এবং তাঁহাদিগের দিব্য অঙ্গরাগঘর্ষণ ও স্তবাদি ছারা সম্ভোষজনক অদাস অপচ দাসজীবন জাতির জন্ম হইয়া থাকে। মাগধ-বিশেষ কর্তৃক সৈরন্ধ্-বোনিতে বাগুরাবন্ধজীবী আরোগ্র জাতির উৎপত্তি হয়। মাগধীতে বৈদেহ-কর্ত্ব মুখ্যকর নৈরেয়ক নামক পুত্র উৎপাদিত হইয়া থাকে। নিবাদজাতি মদগুর অর্থাৎ मन्ध नामक मरस्कानकीयी । अतिकानकीयी नाम-मञ्जान अमन করে, আর চণ্ডাল খপাক নামে বিখ্যাত মৃতপ অর্থাৎ শ্রশানাধি-কারী সন্তান প্রসব করিয়া থাকে। মাগধী বাগুরোপজীবী ক্রর পুত্রচতৃষ্টর প্রস্ব করে, তাহাদিগের কার্য্য মাংসবিক্রয় ও মাংস-সংস্কার। এই কার্য্য হইতেই উহাদের ছই জনের মাংস ও স্বাহকর নাম হইরাছে; অপর চুই জন ক্ষোদ্র ও সৌগন্ধ নামে কথিত আছে। এইরূপ মাগধন্ধাতির বৃত্তিচ্তুইয় নির্দিষ্ট হইরাছে। আরোগবীতে পাপিষ্ঠ, বৈদেহ হইতে মাংসোপ-ৰীবী জুৰ, নিবাৰ হইতে ধ্রধানগামী মন্ত্রনাভ এবং চণ্ডাৰ হইতে ধরাৰগৰ-ভোৰী পুৰুশৰাতি লয়ে, ইহারা মৃতের বন্ত ঢাকে এবং ডিব্ল ভাজনে ভোজন করিয়া থাকে; আরোগবীতে **এই जिन शैनवर्ग जन्म शहर करत्र। निवामीएक देवामह हरेएक জ্জ, অভ্ ও আরণ্যপত-হিংসোপজীবী কৌমার-নামক** চর্দ্মকার এই পুত্রত্তর প্রস্থত হর, ইহারা প্রামের বহির্ভাগে বসতি করিয়া

খাকে। নিবাদীতে চর্মকার হইতে কারাবর ও চাণ্ডাল হইতে বেণুব্যবহারোপনীবী পাপুদোপাক লাভি লছে। বৈদেহীতে নিবাদ-কর্ত্তক আহিওক নামক পুত্র প্রাকৃত হয় ৷ চঙাল হইতে সৌপাকে চাপ্তালনম-ব্যবহার-বিশিষ্ট পুত্র উৎপন্ন হইয়া शास्त्र। निवासी कथान स्टेट्ड वास्त्रवर्णन बहिन्नु भूमान-বাদী অন্তাৰশায়ী সন্তান প্ৰদৰ করে। পিড়-মাড়-ব্যতিক্রম-तभकः अहे ममुनद महत्रकां ि उर्शद हत्, हेहाता अव्यवसायहे থাকুক অথবা প্রকাশভাবেই থাকুক, ইহাদিগের অংশ মারাই ইহাদিগকে জানা বার। শান্তে ব্রাক্ষণাদি বর্ণচড়ারের ধর্ম বিহিত হইয়াছে, অপরাপর ধর্মহীন জাতিভেদের মধ্যে কাহারও ধর্মের নিরম অথবা ইরস্তা নাই। ব্রাহ্মণাদি বর্ণচ্জুইর ছইতে অন্মলোম-ব্দাত ছয় এবং বিলোমজাত ছয়, এই ছাদশবিধ স্থীৰ্ণ বৰ্ণ হইতে বটুবটি অনুলোমনাত এবং বটুবটি প্রতিলোমনাত: এতদারা ১৩২ প্রকার বর্ণসন্ধর কাতি হয়, অপিচ ভাহা-দিগের অনুলোম ও প্রতিলোম গণনা ছারা অনস্ত ভেদ হইরা উঠে, অতএব এই সমুদয়েরই প্রাপ্তক্ত পঞ্চদশ ভেদের মধ্যে অন্তর্ভাব হইরা থাকে, এজন্ত সকলের পরিসংখ্যা প্রদর্শিত হয় নাই। যুদুছাক্রমে অর্থাৎ জাতিগত নিয়ম না থাকায় মিপুনী-ভাবপ্রাপ্ত, বক্ত ও সাধুগণ হইতে বহিষ্কৃত বাছ বর্ণসন্ধর-জাতি সকল ব্যুদ্ধাক্রমে কর্মাসুসারে জীবিকা ও জাতিবিশেব প্রাপ্ত হট্যা থাকে। ইহারা চতুস্থ, শ্বশান, শৈল ও অক্তান্ত বনস্পতিৰ নিকট সকলের বিজ্ঞাত হইয়া বাস ও নিয়ত ক্লঞ্বৰ্ণ লোহময় অলম্বার পরিধান করিয়া নিজ কর্ম বারা জীবিকার্জন করিবে এবং অলম্বার ও গৃহোপকরণ দ্রবাসমূদর প্রস্তুত করিতে থাকিৰে। ইহারা গো বান্ধণ সকলেম:সাহায্য করিবে, সংশয় নাই। আনুশংস্ত, দয়া, সভাবাক্য, ক্ষমা এবং স্বশরীর বারা বিপল্লগণের পরিত্রাণকরণ বাহ্বর্ণসমূহের সিদ্ধির কারণ; হে नज्ञत्त । त्य विषदा व्यामात्र भः भन्न नाहे। वृक्तिमान् मानव উপদেশালুসাবে পরিকীর্ত্তিত হীনজাতি বিবেচনা করিয়া পুত্রোৎ-পাদন করিবে; বেহেডু জল-মধ্যে তরণেচ্ছু মানবকে প্রান্তর নেমন অবসর করে, তত্ত্বপ নিতান্ত হীনবোনিজাত-তনম বংশকে অবসন্ন করিব। থাকে। ইহলোকে রমণীগণ বিভান অথবা অবিহান ৰাজিকে কাম-কোধের বন্ধভূত করিয়া নিতান্ত কুপথে শইরা যায়। নারীগণের অভাবই দোবের আকর, অভএব বিপশ্চিৎ ব্যক্তি সকল প্রমদাগণে অতিশর প্রসক্ত হন না।

যুধিটির বলিলেন, পাপষোনিজ হীনবর্ণ ব্যক্তিকে বিশেষরূপে জানিরা আর্যাপ্তে জন্মগ্রহণ করিয়াছে বলিরা আর্যারূপ অথচ উৎপত্তি বশতঃ অনার্য্য ব্যক্তিকে আম্বা কি প্রকারে অবগত কটতে সমর্থ হটব ?

ভীষ কহিলেন, অনাৰ্গগণেম পৃথক পৃথক ভাৰ ও চেটা-সম্বিত মানবকে স্বর্যোনিক স্থানিবে, আর স্ক্রনাচরিত কর্ম বারা যোনিওছতা বিজ্ঞাত হইবে। ইহলোকে জনার্যজ্ঞা, জনাচার, ক্রেডা ও নিজিধামভা কলুববোনিক পুরুবেই প্রকাশ হইরা ধাকে। সকীৰ্ণজাতি পিভার অথবা মাভার চরিত্র কিংবা পিভা মাতা উভরের স্বভাব প্রাপ্ত হয়, সে কথনও আপন প্রকৃতি গোপন রাখিতে পারে না। তির্যাক্ষোনিকাত ব্যায় প্রভৃতি যেমন বিচিত্র ৰৰ্ণের সহিত মাতা পিতার রূপের সদৃশ হইরা জ্বো, ডক্রপ পুরুষ ৰীৰ বোনি প্ৰাপ্ত হয়। ৰংশজোতসংক্ষেত্ৰ হইলে বাহার বোনিসম্বর হয়, সেই মানব যে ব্যক্তিয় ওরতে জন্মে, ভাহার অল অথবা বহুচরিত্র অবশ্রুই আশ্রন্ধ করে। আর্বারূপে রুতিমপথে विष्ठशुलीन वाकि लाकन वर्ग वा निकृष्टे वर्ग, हेबाब निकृष्ट-বিষয়ে ভাষার স্বভাবই ভাষা প্রকাশ করিয়া দেয়। স্থবর্ণ বেমন বাছত: কঠিন হইরাও কার্য্যকালে বুচু হর এক চুর্বার্ণ অর্থাৎ রক্ত যেমন নিয়ত মৃত্ৰ থাকিয়া কাৰ্য্যকালে কঠিন হইয়া উঠে, ভুজাত ও চর্জাত পুরুষগণের জন্ম ও চরিত্র তজ্ঞপ। বিবিধকর্ণারত বছবিধ চরিত্র জীবগণের জন্ম ও চরিত্র উপচিত ব্যবহার পরিহার করিরা অঞ্ভণারণে অবস্থান করে। সম্বর্জাত বর্ণের শরীর শাস্তীর বৃদ্ধি ছারা নীচমার্থ হইতে আরুষ্ট হয় না, বীলঞ্চণের প্রবৃদ্ধা বশত: কালভেদে বৃদ্ধিবৃত্তির প্রাধান্ত হুটলেও শরীরারত্তক খুডের **(आईफ. मश्रम्फ 'अ व्यवत्रक व्यक्तात्र गांश कुना इत्, काहारे** প্রামৃদিত হইরা থাকে, অস্ক স্বত্ব উৎপর হইবামাত্র, শরৎকালের মেখের छात्र. नीन इहेबा यात्र। वर्गटकार्छ वास्ति यमि नमाठात-विशीम इब, छार छाहारक मधान कबिरव मा, जाब मूछ गर्न সদাচারসম্পন্ন ও ধর্মজ্ঞ হয়, তবে তাহাকে সন্মান করিবে। মহুগ্র ভভাওত কর্ম, সুশীনতা, সজরিত্র ও কুন বারা আপনাকে প্রকাশ করে, কল নাই ভাইলে পুরুষ নিজ কর্মা ছারা পুনরার জবিলাখে ভাচার উদ্ধার করিয়া থাকে। এই সমন্ত সমীর্ণ ও ইতর বোনির মধ্যে প্ৰোৎপাদন ক্রিছে নাই, প্রিত ব্যক্তি এরপ বনিতা পরিত্যাগ করিবেন ।* (ভারত অহুশাসন ৪৮ অং)

তীল উবাচ।

চাতৃৰ্বজি কৰ্মাণি চাতৃৰ্বণিদ কেবনৰ্।

অহলং স হি বজাৰ্থে পূৰ্ববেৰ প্ৰলাপতিং।

ভাষান্ত সো বিপ্ৰভ ব্যোৱালা প্ৰলামত।

আনুপ্ৰ্যাপ্ৰোহাঁবে মাড়লাভো প্ৰস্তুতঃ।

পৰং শ্বাদ্বান্তবিদ্ধ প্ৰঃ শ্বাপ্ৰং পালন্য ভ্ৰাহঃ।

তথ্যকং ৰঙ ক্লত স ভাং বচানিকা নিভানবো ন বছাং।

স্বাস্থানানৰ স্মোচাৰ্য সমূৰ্বেত সভ ক্লান্য ভ্ৰাৰ্।

কোনোঃ। ববীয়ানিল সো বিদ্যাভ শুৰাব্যা লানপ্ৰায়ণঃ ভাং।

বর্ণন (জী) বর্ণনতে বিভাগে মধনানৌ সূট্। ১ জবন ।
"ইবং নিশস্য দমবোৰস্থত স্বশীন্ত ত হথাৰ ক্ষান্ত্ৰপ্ৰবিকাতমন্ত্ৰ ।"ব্ ভাগ° ১০।৭৪।৩০.)
২ বিজ্ঞান । ৩ গুলাবিশ্বাক্ষন ।

> रित: कवित्रमध्याष्ट्रवात्रा**षाक कांत्रक**े। हीनवर्गाक् ठीवांबार मूखां छेंबी देखि चुकिः । ৰে চাপি ভাৰ্ব্যে বৈক্তঞ্চ কৰোৱাল্যাক্ত ভাৰতে। मुखा मुख्या हारनाका मुखरवन काको**सर** ह व्यरहार्मा निष्ठेष्वयम् अवनावयम्बनः। 🥒 बाहर वर्गर अनम्रक्ति ठाजूर्व ग्रीविगर्विकम् 🚛 বিগ্রাথাং ক্ষরিয়ো বাহুং পুতং জ্যোনজিয়াপরন্ ৷ रेश्या रेश्रण्डकः हानि मोनननामनवर्ष्किङम् ॥ न्त्रन्ठाकानमञ्जातः वशक्रः वाक्यानिमम्। डामशोर मत्त्रकावन वैट्डाटन क्मगरमंगः । 🐣 এতে মডিমভাং জেট দৰ্শসম্বদ্ধা: লালে ১ यनी जु साम्रक रेपमामान्यवा योकामीयनः। **गुजाबिक्एक। बदछश्चः कवित्रोत्रोत् वास्त्रिकार क** नुजाबादक्षान्यनकाणि देवकाबाद आमायशिनदः। जाकरेगद्रश्रष्टिश्राष्ट्रच्या वधनबीवनः । এতেছপি সমূলান্ বর্ণান্ ক্ষমন্তব্ধি ক্ষেতিৰ । माज्ञालार वार्यस्य स्वतः शैनश्विति । ৰধা চতুৰু খৰ্ণেৰু ধলোৱাক্ষাদ্য কামতে। व्यामस्त्री। र अमान्यस्य स्था प्रामाः अयानसः ॥ एक हानि प्रमृणः वर्गः सम्मासि वरवानिक्। भवन्ततम् नारवष् **अनवकि विशक्तिम्** । वथा पूर्त्यावनि जाव्यमारं बन्धा बाहर अपनत्छ । এবং বাহতরাধাহনভাতুর্ববীৎ প্রজালতে। প্ৰতিলোমং ভূ বৰ্ততে বাদাবাফডমাং পুন: ৷ होनाकीमाः अञ्चलक वर्गाः गणवरेनव फू ह व्यवप्राचनमध्य बाह्य क्रिकाः। वाकामावद्यातस्य टेमब्कुगः वानस्यम् छ । अमाद्रमान्डाक्रमयसम्भः सामक्षेत्रमम् ३ वाक्रमहारक्षांत्रक्ष स्टब्स वाक्रमायक्षांत्रम् । रेम्द्रश्चन्त् ह टेन्ट्रम्सः मच्चाक्त्यक्त्य बाबूक्त् । निवादमा मन्द्रकर एएछ जोगः नात्वानकीयमन्। मुख्याः ठामि ठाकामः प्रयाक्तिकि विकासम् । इकुरबा बालकी एटक क्कार बारमानकीविनः। মাংসং ৰাত্মকাং কৌলং দৌগঞ্চনিতি বিজ্ঞাতন্। रेन्द्रक्षक भाभिकेः क्षार महिलाभकीविनन्। निश्राचामाणः ह यववानव्यवानित् । চাওলাৎ পুরুষ্ণ চাপি বরাক্রমভোজিনন্। इंडिक्श्यक्षिक्षः विश्वनावनक्षित्रम् ।

বর্ণনা (জী) বর্ণ-পিচ্-কুচ্-টাপ্ । তা শুলক্ষণনা, পর্যার—ইড়া, তব, তোত্র, ভডি, কুডি, প্রাবা, প্রবেশনা, কর্থবান । "বিষয়া অপি বর্ণাত্তে বিট্বপানরা দ্বিয়া।"(ক্ষাসরিৎসা• ৩২।১৬৬)

> আলোপবীৰু জায়তে হীনবৰ্ণান্ত তে জয়: । मृत्या देवलश्काष्ट्रा पश्चिमा । কারাবরো নিবাল্যাং ডু চর্ম্বভার: প্রস্কৃত্ত । চভালাৎ পাও সৌপা কলক্ষারবাবহারবান্ ঃ षाश्किरका निवासन रेक्टनकार नेकालकार । চাতালেৰ ভূ সৌণাকে চতালসময়ন্তিমান্ 🛊 नियांकी ठांनि हांकालाद शूलबरक्षवमात्रिमम् । শ্বশাৰণোচয়ং পুছে ৰাজৈরপি বহিছুভৰ্ 💰 ইভাতে সম্বন্ধে জাভা: পিডুমাভূব্যতিক্রমাৎ। প্ৰক্ষা বা একাশা বা বেদিভব্যা: স্কর্মডি: । চতুৰ্ণামেৰ বৰ্ণানাং ধৰ্মো নাক্তঞ্চ বিদাতে। वर्गामाः धर्महीरमव् गरधा माखीर कंछिट । বৰ্জনোপস**ন্দর্ভিজনাথ্**বছি*ছা*ভৈ:। वाशावादेशक कान्नत्व ववावृष्टि ववासन्त्रम् । চতুপাৰস্বশানলি শৈলাকে।ভান্যসপাতীন্ : কাক রিসমলভারং পরিপৃহ্য চ নিত্যশং ॥ খনেরুরেডে বিজ্ঞাতা বর্তরন্তঃ খকর্মজি:। বুপ্লভো বাণ্যলভারাংভবোণকরণাণি চ 🛊 भाउक्तिमात्र माहायाः सूर्व्यानी देव म मानमः । আৰুশংক্তমৰুক্লোল: সভ্যবাদ্যং তথা ক্ষয়।। चनबीरेवद्रनि जानः वाकानाः निष्क्रिकाद्रनम् । . . ক্ষতি মনুক্ষাত্র ভত্র যে দান্তি সংশয়: । ৰখোপদেশং পরিকীর্ষিভাত্ব সরঃ এজানেত বিচার্গ্য বৃদ্ধিসান । विदीनवानिर्दि प्रकाश्यनानवानिकीर्यमाना हि वत्यानानाकान । व्यविद्यारमभगः लाटक विद्यारमधी वा भून:। बर्केष स्थार नार्यः कायद्यावयनाकुत्रव् । च्छावटेन्छव मात्रीनाः मन्नानानिह पूर्वनव् । অভাৰ্থং ৰ প্ৰসক্ষত্তে প্ৰবৰাত্ত বিপশ্চিত: 1

বুণিটির উবাচ। বর্ণাপেডসভিয়ার নিরং কলুমবানিজন্। আর্থ্যজনবিধাবার্থ্যং কথং বিকাশনংহ করন্ত্র

ভীম উবাচ।

বোদিনকদ্বে জাতং নারাভাবসববিভদ্।
কর্পতিঃ সজনাটার্বৈপিকজনা বোদিকজভা।
জনাগ্ডবনাচানঃ জু রুবং নিছি,রাজলা।
পূলবং বাজনভীত লোকে কল্মবানিজব ।
শিক্ষ বা কলকে শীকং বাড়কং বা কবোজনন।
ব কথকৰ সভীবঃ প্রকৃতিং বাং নিবক্ষতি।
বাংলিকজভা। বাালিকজভি ।
বাালিকজভা। বোলিব পূলব বাং নিবক্ষতি।

বর্ণনাশ (পুং) বর্ণন্ত নাশ: ৬৩৫। বর্ণের দাশ।
"বর্ণাসন্দো সংবেক্সালৌ সিংহে ধ্ববিশ্বরার:।
বোড়শালৌ বিকার: ভাষ্ণনাশ: প্রোগরে ॥" (উমাপতিধর)
বর্ণনীয় (জি) বর্ণ কর্মণি খানীরর। বর্ণা, বর্ণিতবা, বর্ণনার
বোগ্য। ২ গুবার্ছ।

"এতত্তে আদিরাজন্ত মনোশ্চরিতমম্ভতম।

ৰাণতং বৰ্ণনীয়ন্ত তদপত্যোদরং পৃণু ॥" (ভাগৰত এ২২।৩৭) বৰ্ণপত্ত্ৰ (পুং) মস্থপ কাঠকলকবিশেষ। যাহার উপর বিভিন্ন রঙ্রাধিরা চিত্রকর রঙ্কশার।

বর্ণপাক্ত (পুং) বর্ণক্ত পাতঃ। উচ্চারণকালে শকান্তর্গত বর্ণ-বিশেষের পতন বা উচ্চারণরাহিতা।

বর্ণপাত্র (ক্লী) বর্ণক পাত্রং। চিত্রকারের রঙ্রাধিবার পাত্র, যে আধারে নীলী প্রভৃতি রঙ্থাকে।

'মলিকা বর্ণপাত্রং ভাৎ তৃলিকা লেখাকৃতিকা।' (শন্ধমালা) বর্ণপুক্স [ক] (গুং) বর্ণবিদ্ধি পুলাণি যন্ত কণ্। রাজভক্ষী পুলার্ক। (রাজনি৽)

 বর্ণপুষ্পা (রী) বর্ণবন্ধি পুলাণি বলাং তীব্। উট্টকাতী পুলার্ক। (রাজনি॰)

বর্ণপ্রকর্ম (পুং) বর্ণের আতিশব্য, ঔজ্বল্যের আবিকা।
বর্ণপ্রসাদন (ক্লী) বর্ণগু প্রসাদনং বত্মাৎ। অগুরুচন্দন।(রাজনি°)
বর্ণবিপর্ব্যায় (পুং) বর্ণের বিপর্যার। বেমন—হিংস ধাড় হইডে
অক্ষরবিপর্যার হইরা সিংহ হইরাছে।

শ্বৰ্ণাগমো বৰ্ণবিশধ্যৰক ৰৌ চাপত্ৰৌ বৰ্ণবিকারনালো। ধাভোক্তদৰ্থাতিশদ্ধেন বোগন্তস্কচ্যতে পঞ্চবিধ নিক্ষক্তং ॥*
(কাভব্ৰটীকার হুৰ্গসিংহ)

কুলে শ্রোতিনি সংক্রের বস্য স্যাব্যোদিনকর: ।
সংশ্রেত্যের তারীকং নরোহন্দ্রমধ্যা বহু ।
আর্থারপসমাচারং চরকার কৃতকে শবি ।
হ্বর্গরক্তর্গ বা বাশীলং লাভি নিশ্চরে ।
নারাক্তরের কৃতকে নানাকর্পরতের চ ।
অন্যর্গরক্ষর লোকে হারিক্তর ন বিষ্কাতে ।
আ্রের্গরাকর নকর কৃত্যা পরিক্তরতে ।
আ্রের্গরাকর নকরে কৃত্যাসকর প্রবেশতে ।
আ্রার্গরাকর নকরে কৃত্যাসকর প্রবেশতে ।
আ্রার্গরাকর ক্রেক্তর স্বর্গরক্তিস্বরের ।
আ্রার্গরাক্তর হুর্গরিকর স্বর্গরক্তর্যাকর ক্রেক্তর ।
আ্রার্গরাক্তর ক্রেক্তর স্বর্গরক্তর ক্রেক্তর ।
আ্রার্গরাক্তর ক্রেক্তর স্বর্গরক্তর রাক্তর্যাকর ক্রেক্তর ক্রেক্তর ।
আ্রার্গরাক্তর ক্রেক্তর ক্রেক্তর ক্রেক্তর ক্রেক্তর বিশ্বরক্তর ।
আ্রার্গরাকর স্বর্গরক্তর স্বর্গরক্তর রাক্তর্যাকর বিশ্বরক্তর ।
আ্রার্গরাকর স্বর্গরক্তর স্বর্গরক্তর ।
আ্রার্গরকর স্বর্গরক্তর প্রার্গরক্তর ।
আ্রার্গরকর স্বর্গরক্তর প্রার্গরকরের ।
আ্রার্গরকর স্বর্গরক্তর প্রার্গরকরের ।
আ্রার্গরকর স্বর্গরকর প্রার্গরকরের ।
আ্রার্গরকর স্বর্গরকর প্রার্গরকর প্রার্গরকর ।

ভিন্নতা। ২ সঙ্গের তেন।
বর্গভেদিনী (ত্রী) লভাবিশের।
বর্গন্নার (ত্রি) বর্গতিশিষ্ট।
বর্গনাত্ত্ব (ত্রী) বর্গত মাডেব ক্লানাভন্দর প্রস্থাং। ১'লেবলী।
বর্গনাত্ত্বা (ত্রী) বর্গতে মাডেব ক্লানাভন্দর প্রস্থাং। ১'লেবলী।
বর্গনাত্ত্বা (ত্রী) বর্গনাং বর্গনালানাং মাড়কেব। সরস্থতী।
বর্গনাত্তা (ত্রী) বর্গনাং বর্গনালানাং মাড়কেব। সরস্থতী।
বর্গনাত্তা। তারে কালানাং নালা। ১ জাতিমালা, বর্গনোলা
১০টা। তারে ১০টা বর্গনালান নির্দেশ ও ভাহার জপের বিধান
আছে। ইংরালী বর্গনালা বির্দেশ ও ভাহার জপের বিধান
আছে। ইংরালী বর্গনালা ২০টা, ক্রালী ২০টা, আরবীর ২০টা,
পারসীর ৩০টা, ভুল্লবী ৩০টা, ছিক্র ২২, ক্রমীর ৪১, প্রীক্ ২৪,
লাটিন্ ২২, ডচ্ ২৬, ল্যানীস্ ২৭, ইতালীর ২০, তাতার ২০২,
ব্রন্ধ ১৯, টানবেশে বর্গনালা শ্রমান্ত্রক, এই শব্দের সংখ্যা প্রার

वर्गाख्या (ग्रा) वर्गक (क्या । वर्गक (क्या)

বর্ণারিত্ব। (ত্রি) বর্ণনীয়, কর্ণনালোগ।
বর্ণারালি (পুং) বর্ণসমূহ, বর্ণমালা।
বর্ণারেখা (ত্রী) বর্ণা লিখাজেংনারতি লিখ-করণে বঞ্ রলারোরৈকাং। কঠিনী, ধড়ি। (ত্রিকাণ)

वर्गिति, वर्ग वा अक्काद्धकानक त्नथनद्धशानी (Alphabetic writing !)

সভাজতি স্ব স্থ ভাষার মনোভাষ ও স্বরপ্রকাশ করিবার
জন্ত বে সকল চিক্ন বাবহার করিরা থাকেন, ভাহাকেই আমরা
সাধারণতঃ বর্ণ বা অক্ষর বলিরা থাকি। জনতে সভাজাতির
সংখ্যাও যত বেশী, ভাষাভেলে উাহাদের মধ্যে অক্সরের প্রকারভেমও তত বেশী। সভাতার পৃত্তির সহিত বর্ণমালার শৃত্তী।

ভাষাক্রানের সলে সলে অক্ষর বা বর্ণনালার উৎপত্তি হইলেও সর্ক্ষপ্রথম কোবার ও কি রূপে বর্ণনালার উৎপত্তি হইল, ভাষাই আমাদের প্রথম আলোচা।

বর্ত্তমান সভাতার ইতিহাস আলোচনা করির। সকলেই বীকার করিতেছেন বে, ববৈদিক সভাতাই অগতের সর্বাদিন সভাতা। ভারতীর আর্থাগণ সেই বৈদিক সভাগণের বংশধর। দেখা বাউক, বৈদিককালে বর্ণমালার উৎপত্তি হইরাছিল কি না এবং ভারতীর কালিদির কোন্ সমরে উৎপত্তি হইল।

পাশ্চাতা মত।

মোক্ষ্ণর প্রমুখ পাশ্চাচ্য পশ্চিতগণের কথা এই, খুইপুর্ক ৪র্ব শতাবীর পূর্বে ভারতে নিশি বা লেখনপদ্ধতি সুন্দূর্ব অক্ষাত ছিল, অথচ তাহার সহজাধিক বর্ব পূর্বে বেরের মন্ত্র, রাজণ ও প্রভাগ প্রচলিত হইরাছিল। একমাত্র কর্মেরের ১০টা মগুলের

माधा ১०६४- है। श्रक धवः लात्र ১९७४२ ७ है। सम भावता वात्र। ব্ধন লিপি অজ্ঞাত ছিল, তথন এডগুলি ঋক্ বিশুদ্ধ ও সংপূৰ্ণ চন্দোবৰে কিন্নপে রচিত ও এত দীর্ঘকাল রন্দিত হইল ? তাহা ্কবল স্বৃতি ছারা মূথে মূথে চলিরা আসিরাছে। মোকমূলর ব্লেন, একথা ওনিতে বিশ্বর্জনক বটে, কিন্তু বিশ্বরের কোন কারণ নাই। ভারতীয় ছাত্রগণের কিন্নপ অসাধারণ স্বতিশক্তি ও পাঠ্যাবশ্বায় কিরূপ শিক্ষাপদ্ধতি ছিল, তাহা আলোচনা করিলে जात नामह शांकित्व ना। जिनि निष উक्तित नपर्थानत क्र খন্তীর ৭ম শতাব্দের শেবে লিখিত চীন-পরিব্রাক্ত ইৎসিং বর্ণিত শিশুশিক্ষার প্রতি উদ্ধৃত ক্রিরাছেন। ইৎসিং ভারতীর বালক-দিগের এইরূপ শিক্ষার পরিচর দিগাছেন—'প্রথমে শিশু मुक्की स्वक्रम निर्देश, खरुशांत के वर्ष हत्रभारतत भरधा ১०००० यकाक्त्र वा आर्क्षमना अखान करत। हेहाएक खाहारनत দান্তিংশং অব্দরাত্মক (বা অসুষ্টপ ছন্দের) ৩০০ শ্লোক অভ্যাস করা হয়। পরে আট বংসরে ভাহারা পাণিনিব্যাকরণ শিক্ষা করে : ইহাতে ১০০০ পুত্র আছে, লিখিছে ৮ মান নমর লাগে। ত্রংপরে ধাতপাঠ ও ৩টা খিল শিখিতে আরম্ভ করে। দশ বৰ্ষ বন্ধস হইতে আরম্ভ করিয়া এরোদশ বর্ষ মধ্যে খিল পাঠ শেষ ৰয়। পঞ্চল বৰ্ষ বন্ধ:ক্ৰমকালে পাণিনির স্ক্রভাষ্য শিথিতে আরম্ভ করে, ৫ বর্ব মধ্যে পাঠ সমাধা হর। প্রভান্ত পাঠকালে একদণ্ড भानक कतिरन हिन्दि मा। पिराताक मूथक कतिरा हैरेद। এই প্রভান্ত সম্পূর্ণ আরম্ভ করিতে না পারিলে অপর শাল্তে সমাক অধিকার জন্মে না।' এই প্রকার শিক্ষারীতির উল্লেখ করিয়া ইৎসিং লিখিরাছেন বে, 'এক্লপ ব্যক্তি একবার মাত্র পাঠ কবিরা চুইখানি বৃহৎ গ্রন্থ কণ্ঠত্ব করিতে পারে।' তৎপরে তিনি ব্রজ্বপদিগকে লক্ষ্য ক্রিরা লিখিরাছেন, 'জাহারা তাঁহাদের চারি-त्वस्क कांडिनव डिकिन्नको करतन, के ठाति त्वस आव नक शाक च्यारकः। त्वस्रुक्टें कांशरक निर्विष्ठ इत्र ना, मूर्ण मूर्थे हिनाता আসিভেতে। প্রভাক বংশেই এমন কডকগুলি প্রাশ্বণ আছেন ্ব, সেই লক্ষ্ণ বেদমন্ত্র আরম্ভি করিতে পারেন। আমি স্বচকে এরূপ লোক দেখিরাছি।' ইৎসিংএর বিবরণী প্রমাণ স্বরূপ উদ্ধ ত ক্রিয়া অধ্যাপক মোক্ষ্যুলর বলিতে চান যে, সেই প্রাচীন বৈদিকযুগে শিক্ষারীতি অভি স্থগ্রগালীবন্ধ থাকিলেও তৎকালে পুস্তক, প্রস্থ, চর্ন্ধ, পত্র, কলম, লিপি বা মসির কোন প্রকার উল্লেখ পাওরা বার না। ভারতবাসী এই সকলের নাম পর্যান্ত অবগত ছিলেম লা। জাহাদের বিশাল সাহিত্য ছিল বটে, সে সমদারই অভিবন্ধ সহকারে মূবে মূবে রক্ষিত হইয়া আসিতেছে।•

তবে কোন সময়ে ভারতে বর্ণলিপির উৎপত্তি হইল ? ইহার উত্তরে মোক্ষমূলর বলেন বে, এ পর্যন্ত ভারতে বড লিপি আবিষ্ণত হইরাছে, তর্মধ্যে অশোকলিপি সর্বাধারীন। প্রকার অশোক্লিপি পাওয়া গিয়াছে—এক প্রকার লিপি দক্ষিণ হইতে বামদিকে লিখিত, এই লিপি স্পষ্টতঃ অরমীয় (Aramean) বা সেমিটিক বর্ণলিপি হইতে উৎপন্ন। অপর প্রকার লিপি বামদিক হইতে দক্ষিণদিকে লেখা। এই লিপি ভারতীয় ভাষার প্রয়োজন অফুসারে ব্রথানির্মে সেমিটিক বর্ণলিপি হইভেই পরিপুষ্ট হইয়াছে। ভারতীয় নানা প্রাদেশিক লিপির এবং বৌদ্ধাচার্যাগণের হল্ডে ভারতের বাহিরে বছ দুরদেশে যে সকল লিপি ছড়াইরা পড়িরাছে, সে সমুদারের মূলই উক্ত দিতীর প্রকার বৰ্ণলিপি। তবে এটাও অসম্ভব নহে যে, অতি প্ৰাচীন কালে সেমিটিক লিপি হইতে সাক্ষাৎ ভাবে তামিল বৰ্ণলিপি গৃহীত **इहेबाहिन । । এই**काल अधालक साक्क्यूनत स युक्ति हाता ७ অক্তর- বিক্তাস দেখিয়া ভারতীয় বর্ণলিপিকে বিদেশীর লিপিজাত ৰলিভে চান, ভাহা নৃতন কথা নহে। তাঁহার বহু পূর্বে ১৮০৬ খুষ্টাব্দে সর্ উইলিয়ম্ জোব্দ ভারতীয় লিপির সেমিটিক উদ্ভৱের ष्माञात्र पित्रा यान।

তৎপরে কপ্, লেপ্সিয়াদ, বেবের, বেন্ফী, ছইট্নি, পট, বেদ্টারগার্ড, নঁদ্, লেনরমন্ট প্রভৃতি পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণও অশোকলিপির আকারের উপর নির্ভর করিয়া ভারতীয় লিপির সেমিটিক-মূলতা ঘোষণা করিয়াছেন। ইহাদের মধ্যে অধ্যাপক বেবের সাহেবের বিশেষ মত এই যে, পুরাতন ফিনিক বর্ণলিপি হইতে এবং ডিকের মতে প্রাচীন দক্ষিণ সেমিটিক দিয়া আসীরীয় কীললিশি হইতে বাহির হইয়াছে। টেলর প্রভৃতি কোন কোন পাশ্চাত্য পণ্ডিতের মতে ভারতীয় লিপি দক্ষিণ আরবের কোন প্রকার সেবীয় (Sabian) লিপি হইতে উত্তৃত, কিন্তু এ পর্যান্ত তাদৃশ প্রাচীন কোন সেবীয় লিপি আবিত্বত না হওয়ায় অবশেষে তিনি এরপও প্রকাশ করিয়াছেন যে, ভারতীয় লিপির আদি নিদর্শন হয় ও ওয়ান, হাড্রাম, অরমা, নেবা অথবা অস্তু কোন অজ্ঞাত রাজ্য হইতে আবিত্বত হইতে পারে।

এদিকে অধ্যাপক ডৌসন, টমাস, কানিংহাম্ প্রভৃতি
প্রাভৰ্বিদ্গণের মতে ভারত বীয় বর্ণমালার কয় কোন দেশের
নিকট ঋণী নহেন। ডৌসন স্পাষ্টাক্ষরে লিখিরাছেন,—ভারতবাসী আপনারাই বে অক্ষরের উত্তাবন করিরাছেন, ভাহাতে
সক্ষেহ করিবার কোন কারণ নাই। ভাবাভবের স্ক্লাভিস্ক্রবিবরে হিন্দুগণ সভাবগতে সর্ক্রের্চ পণ্ডিত ছিলেন, তাহার

^{*} Max Müller, India, what can it teach us, p. 207-216.

[†] Max Müller's India, what can it teach us, p. 206.

শক্ষণাত্তের বেরূপ অপূর্ক উৎকর্ম সাধন করিরা গিরাছেন এবং স্বর-ভালের বেরূপ স্ক্র পার্থকা জানিতে পারিরাছিলেন, তাহাতে অক্ষরের উদ্ভাবন একান্ত আবশুক হইরাছিল। এ ছাড়া তাঁহারা অক্ষণাত্তের চিক্সগঠনে যে অসাধারণ প্রতিভালেগাইরা গিরাছেন, তাহাও অনস্তসাধারণ। প্রত্নতন্ত্রিক কানিংহাম্ বলেন বে, ভারতবাসীর অক্ষর মিশর দেশের চিত্র-লিপির স্থার একই উপারে স্বাধীনভাবে গঠিত হইরাছে। যেমন খননবন্ত হইতে অশোকলিপির ধ, যব হইতে অন্তঃস্থ য়, দক্ত হইতে দ, পাণিতল হইতে প, বাণা হইতে ব, লাক্ষল হইতে ল, হন্ত হইতে হ, প্রবণিশ্রির হইতে ল। ইভালি।

ইহার পর কেনেডি সাহেব প্রকাশ করেন বে, ৭০০ খৃঃ
পৃঃ হইতে ৩০০ খৃঃ পূর্বাল পর্যান্ত বাবিগানের সহিত দক্ষিণভারতের বাণিজ্য চলিয়াছিল। ফিনিক জাতিই সর্বপ্রথম
ভারতের সহিত বাণিজ্যকার্য্যে লিপ্ত হন। সেই সময়েই
ভারতীয় লিপির উৎপত্তি ঘটে।

উভর পক্ষের মতামত জালোচনা করির। প্রসিদ্ধ সংস্কৃত-শান্ত্রবিৎ ডাক্তার বৃহ্লর, ১৮৯৮ খুটান্দে এইরূপ প্রকাশ করেন— কানিংহাম যে ভারতীয় চিত্রলিপির উৎপত্তি স্বীকার করিয়াছেন, তাহা অসমীটীন। দান্ধিণাতো ভটিপ্রোলু হইতে বে লিপি বাহির হইয়াছে, তাহার পর্যাবেক্ষণ করিলে কথনই চিত্রলিপির সহিত সামঞ্জ্ঞ করা যাইতে পারে না। বৃহ্লর নিজ্মত সমর্থন করি-বার জন্ত প্রকাশ করেন,—

খুষ্টপূর্ব্ব ৮৯০ অবে উৎকীর্ণ মেদার পাছাড়ে যে প্রাচীনতম সেমিটিক অক্ষরের ধ্বন্তাত্মক (Phonetic) লিপি দৃষ্ট হর. ভাহার সহিত বান্ধীলিপির বহু অক্সরের অনেকটা সামঞ্জ রহিয়াছে, তন্মধ্যে হ এবং ত এই ছইটী আবার দক্ষিণ মেদো-পোটেমিয়ার খুষ্টপূর্ব্ব ৮ম শতাব্দীর মধ্যভাগের হে এবং ভউ এই ছুই ফিনিক অক্ষর হইতে বাহির হইয়াছে। এইরূপে শ এবং ষ এই অক্ষরও শুষ্টপূর্ক ৬৮ শতাশীর অরমীয় অক্ষর হইতে পাওরা বার। অবশ্র ইহাও স্বীকার করিতে হইবে যে, সাহিত্যিক ও गिलिभाजीत अमार्य ७०० ७ ६०० धृष्टेलूकीरसत्र मरभा रा সকল অনুমীয় শিপি আবিষ্ণত হইবাছে, তাহা হইতে ব্রাশ্বীলিপির উৎপত্তি হইতে পারে না, এরণ অনেকেই মত প্রকাশ করিয়া-ছেন বটে, কিন্তু ভারভক্ষেত্রে প্রাচীন অরমীর লিপির অহরণে আধুনিক স, ব. শ, অকর গঠিত হইরাছে, তাহা বেশ বুঝা যার। ৮৯ - ও ৭৫ - খুইপূর্বান্দের মধ্যেই ভারতে সেমিটিক বর্ণমালা প্রবেশ লাভ করিয়া থাকিবে। বৌছদিগের বাবেকজাতক পাঠে লানা বার বে, বাবেল (Babylon) হইতে ভারতে বাণিলা চলিরাছিল। খুটার প্রথম শভাব্দ পর্যান্ত পশ্চিমভারতে ভরুকছ (ভরোচ) ও প্রশারক (প্রণারা) নামক হান সমুত্র-বাণিজ্যের কেন্দ্র বলিরা পরিগণিত ছিল। বৌধারন ও গৌতমধর্ম্মক্তরেও বাত্রীর উপর ভব্ধ আদারের ব্যবস্থা দেখা বার ব খাংগেরেও সমুত্র-বারার উরেখ আছে। ু সিরীর বণিক্গণ বহু পূর্বকাল হইতেই পারজোপনাগর দিরা ভারতে বাণিজ্য করিছে আসিছে। এই-রাপে খুইজারের প্রার ৮০০ বর্ধ পূর্ব্বে আর্থাৎ প্রোর ২৭০০ বর্ধ হইতে চলিল ফিনিকীর (Phoenician) বণিক্রালগের যঙ্গেই ভারতে সেমিটিক লিপি আসিরাছে এবং ক্রমণঃ তাহাই যুক্ত-প্ররণ সহ পরিপৃষ্টি লাভ করিরা খুটার ৫ম শভালে সর্ব্বাক্স্কলের ভারতীর লিপিতে পরিণ্ড হইরাছে।

ডাজার বৃহ্লর বে মত প্রকাশ করিরাছেন, তাহাই একণে পাশ্চাত্য প্রয়তববিদ্ ও ঐতিহাসিকগণ স্থীটান বলিরা প্রহণ করিরা থাকেন। কিন্তু আমরা বতদুর আলোচনা করিরাছি তাহাতে বৃথিয়াছি, বে বে প্রমাণ ও বৃজ্জিবলে প্রসিদ্ধ করিরাছি তাহাতে বৃথিয়াছি, বে বে প্রমাণ ও বৃজ্জিবলে প্রসিদ্ধ করিরাছেন, তাহা স্থীটান বলিরা গৃহীত হইতে পারে না। করণ ফিনিক বর্ণনালা এত অসম্পূর্ণ ও এত অর সংখ্যক বে, তদ্বারা ভারতীর শাস্ত্রন্ম উচ্চারণপ্রক্রিরা বা লিখনপ্রণালী কিছুতেই পিছ হইতে পারে না। তিনি বে যে লিপির সহিত ব্রাদ্ধী লিপির তুলনা দেখাইরাছেন, তাহাও আমাদের বিবেচনার ঠিক নহে। উভ্যুপ্রকার লিপি পাশা পালি রাথিলে আকাশ পাতার প্রভেদ লক্ষিত হয়। বিশেষতঃ ভারতবর্ষীর ৪৮টী বর্ণমালার মধ্যে তুই একটীর সামল্লক দেখিয়া সকলগুলিকে ফিনিক-বর্ণমালার সম্প্রতি বলিরা কোনক্রমে গ্রহণ করা যার না। এ সক্ষক্তে আমাদের বৃত্তি ও প্রমাণ পরে লিপিবছ ইইতেছে।

বৈদিক বৰ্ণমালার উৎপত্তিকাল।

অতীত ইতিহাস খোষণা করিতেছে বে বছ সহল বর্ব, এমম কি হিমপ্রসারের পূর্ক হইতেই আর্বাসভাতার স্থবীল অছ্রিত হয়। বথন হিমালর ভূগর্জ হইতে মন্তকোজোলন করে নাই, বথন সমুক্ত আল্পলৈল একটা নাত্যুক্ত পর্কাভরূপে উঠিতেছিল, বখন বর্ত্তমান এক্রিয়া ও আফ্রিকা মহাদেশ ক্ষুদ্র স্থান মাধার ছিল, ভূতরবিষ্যা আমাদিগকে আনাইয়া দিভেছে, সেই ক্ষুদ্র অতীত্ত বুলে পশ্চিমে উদ্ভর ক্ষমনাত হইতে পূর্কে উত্তর আমেরিকা পর্যান্ত আর্বালাতির 'প্রান্তৌক্স' বা আদি জন্মভূমি প্রবিশৃত ছিল। আল বে হান চির ভূষারমন্ত বলিয়া স্থবী মানবের কইলারক ও অসহ এবং উপাদের ফলমূলকুলাদি উৎপাদনের সম্পূর্ণ অন্তপ্রকৃত্ত বিলা গণ্য হইভেছে, সেই উদ্ভর্ম বাদেশই এক সময় আর্বাহেবগণের নক্ষনকানন বলিয়া গণ্য ছিল। বতদিস হিমপ্রশার অতি মাই, বতদিস ভূমারস্থ্যাত আর্বাহ্য

ভূমি স্থানকর (Arctic regions) প্রাকৃতিক বিপ্যার সাধিত হর নাই,—নেই অতীত যুগে এসিরা ও যুরোপের উত্তর নের নাতন গ্রীম এবং উষ্ণ শীত স্কুমণ্ডিত অর্থাৎ চিরবসত্ত বিরাজিত সকল উপাদের ফল মুলের উত্তান স্কুমণ্ডিত, সেও ২১০০০ বর্ষের ও পূর্বকার কথা। তথন ইইতেই বৈদিক স্লাধ্যগণের মধ্যে সন্ত্যতার লোত বহিতেছিল, তথন ইইতে তাঁহারা নানা যাগ্যজ্ঞ ও জ্যোতিষ্কি তর অবগত ইইবাছিলেন।

নানা সত্রের সম্পাদনকরে ঋষিপপের ক্ষরে জ্যোতিষিক কঠিন সমস্তা উদ্বিভ হইরাছিল। [বেদ দেখ] অকবিলা বাতীত দেই সকল সমস্তাপুরণ সম্ভবপর মহে! অকপাত বাতীত কঠিন গণনা সাধিত ক্ষিত্রপে হইজ? কোন প্রকার চিচ্ছ বা বর্ণবিস্তাস বাতীত কিমপে অকপাত করা যাইবে? স্থতরাং শ্বীকার করিতে হইবে যে, সেই অতিপ্রাচীন যুগ হইতেই বর্ণ বা অক্ষর-বিশেষের উৎপত্তি। কিন্তু কিমপে লিপির সাহায্যে সেই সকল বর্ণ অকপাত হইত, তাহা জানিবার উপার নাই। তবে যে সেই আদি বৈদিকমুগেই নানাবর্ণমালার বা অক্ষরের স্টেই হুইয়াছিল, তাহা বৈদিকমন্ত্র আলোচনা করিলেই জানা যায়। নানা বর্ণ বা অক্ষর সমাধান বাতীত সকল বৈদিক শব্দ সমুচ্চারিত হববার সম্ভাবনা নাই।

হিমপ্রলয়ের পূর্বে যথন বৈদিক সভ্যতা স্কপ্রতিষ্ঠিত इहेब्राहिन, उथन भागिमृति चौकात कवा यात्र या, देवितक वर्ग-মালার বিকাশও সেই সময়ে ঘটিয়াছিল। প্রাতিশাখা বা প্রতি-লাখার বৈদিক পঠনপাঠনবিধি অম্বসারে প্রতি মন্ত্রই 'স্বর্তঃ' ও 'বর্ণক্তঃ' পাঠ করিবার নিয়ম আছে। স্তত্মাং আদি বৈদিক মন্ত্রসমূহ কেবল যে অবাছাল্রিড ছইড ভাষা নহে, বর্ণবিশিষ্ট ছিল, ভাষাও সকলে জানিতেন। অবশ্ব এমন কোন প্রবল প্রমাণ নাই যে, আমরা জোর করিয়া বলিতে পারি যে, হিমপ্রলয়ের পূর্বে अध्यक्ष-निवामी देविषक सिवर्षिशम रच मक्स गन्न छेळात्रन कतिएडन, তাচা অবিকৃত আকাৰেই আৰ্যাবৰ্ছে পৌছিমছিল এবং এখন যে সকল বৈদিক মন্ত্ৰ পাওয়া যাইতেছে, তাহার সমস্তই হিম-প্রলয়ের পুর্বেষ বিশ্বদান ছিল। কিন্তু এটা অসম্ভব নছে, হিম-প্রলারের সময়ে বিষম ভুবারসমূল্যের তর্জাখাত হইতে বে ক্য়জন আর্যাসপ্তান রক্ষা পাইমাছিলেন, তাঁগাদের শ্রুতিবিশ্রম ঘটে নাই। फीकारनत तरमशत्तम् (मक् (Pamir) श्र नमुक्क विमानव शासरम अवदानकारम डाहारपत भूरवह या आमि देविषक मध किन्याहित्तन, छाराहे 'अछि' पनिया भभा स्टेबाट्ड। तन, कान, भाव ও बनवायुत्र व्यवद्यारकाम भवविकारन तन्द्रे अधित के का तर्भव तर्ग कि कि कि नार्थका मा चरियादिक, खादा नरह अवः স্থানবিশেষে আর্থাসন্তান যে কেহ সেই আদি মন্ত্রগুলিও স্থ স্থ ব্যবহারোপযোগী করিয়া না কইয়াছিলেন, এমন নহে।

বেদের মন্ত্রপরিচারক ত্রাহ্মণগ্রন্থে লিখিত আছে—

"পথ্য স্বান্তিকদীটীং দিশং প্রাক্ষানাং। বাগ্ বৈ পথ্যা স্বন্ধি:। তত্মানুষীচাাং দিশি প্রক্ষাত্তরা বাপ্তলতে। উদক্ষে উ এব যতি বাচং শিক্ষিতুম্। বো বা তত স্বাগচ্ছতি তত্ম বা শুশ্রমতে ইতি স্বাহ। এবা হি বাচো দিক প্রক্ষাতা।"

(শাঝায়নব্রাহ্মণ ৭৩)

অর্থাৎ পথ্যাবন্তি উত্তর দিক্ জানেন। পথ্যাবন্তিই বাক্।
উত্তরদিকেই বাক্য প্রক্রান্ত বলিয়া কীন্তিত হইয়া থাকে।
লোকেও উত্তরদিকে ভাষা শিখিতে যায়। যে লোক সেই
দিক্ হইতে আসিয়া থাকেন, সকলে 'তিনি বালতেছেন' এই
বলিয়া তাঁহার (বেদবাণী) শুনিতে ইচ্ছা করেন। কায়ণ এই
ফান বাক্যের দিক বলিয়া খাত।

ঐ উত্তরদিক্ কোথার ? সেই স্থান কশ্মীরের উত্তরে । মেলর নিকট, যে স্থান হইতে সরস্বতী নদী বাহির হইয়াচে।

বান্ধশগ্রের ছায় পারসিকদিগের বেদ বা আদিধর্মগ্রন্থ
ক্ষরতাতেও 'হরকুইতি' বা সরস্বতী বাগুৎপত্তির হান বলিয়া
নির্দিষ্ট হইয়াছে। কিন্তু আবন্তিক মতাবলধিগণ সারস্বত
প্রেদেশ ছাড়িয়া অনার্য্যসমাকুল হুদ্র উত্তরপশ্চিমে বিভৃত
হইয় পড়ায় হানীয় প্রভাব ও বহু পুরুষ ধরিয়া ধর্মবিপ্লবহেতৃ
আদি আবন্তিক বা বৈদিক বাক্ বা শ্রুতি কথিপিৎ রূপান্তরিত
করিয়া ফেলিয়াছেন, তাই অবস্তায় এবং বেদে ভাষায় ও উচ্চারণে
এত পার্থকা ঘটিয়াছে। কিন্তু আব্যাবর্তবাসী বৈদিক আব্যাসস্তানগণ সারস্বত্যব্রস্থা পরিভাগে না করায় এবং উত্তরদিকের সেই
প্রাচীন বাক্ধারা শ্রুতিতে স্বত্তে রক্ষা করিয়া আসায় ভারতীয়
বেদ আক্ষপ্ত প্রাচীনতা রক্ষায় সমর্থ হইয়াছে। তাই আমাদেব
বেদ আক্ষপ্ত শুল্তি" নাম বহন করিতেছে।

ভারতীয় বর্ণমালা ও লিপির উৎপত্তি ৷

ভারতীয় জ্যোতিঃশাল্লের ইতিহাসদেশক প্রাসিদ্ধ জ্যোতি-বিদ্ শহর বালকৃষ্ণ দীকিত জ্যোতিষিক প্রসাণ উদ্ভ করিয়া দেখাইরাচেন বে, ভক্রবজ্বেদের শতপথবাদ্ধণে এখন চুইতে

^{(&}gt;) B. G. Tilak's Arctic Home in the Vedas, p. 26.

শাঝাধন-প্রাক্ষণের ভাষাকার বিনায়ক ভট্ট লিখিরাছেন, ---

^{&#}x27;প্ৰজ্ঞান্তরা দাঞ্জাতে কামীয়ে সম্বতী কীর্ভাতে।'

এইরংশ তিনি কলীএই সর্বতীর স্থান বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। খংজপুরাণ্যতে সর্বতীর উৎপত্মিস্থান বিন্দুসর (১২০৮০), বর্তমান নাম সরীকুল
কুল। এক সমরে এই সরীকুল পর্যান্ত কলীর গেশ বিকৃত হিল। ইহা
আর্গালাভিত্র যাক্ষা বৈশিকী ভাষা শিক্ষার স্থান বলিয়া সর্বভীর অপর নাম
বাক্ষা ভাষা হ্ইরাছে।

थात्र ६ हामात्र वर्ष शृक्षकात (क्यांजिविक विवत्रन त्रहिन्नाष्ट्र) স্ত্রাং শতপ্রাক্ষণের কতকাংশ যে ঐ সমূদ্ধে প্রকাশিত হইরাছে, তাহাতে সন্দেহ নাই। শঙপথবান্ধণেরও বছপুর্বে যজু:সংহিতা এবং তাহার বতপুর্বে ঋক্সমূহ প্রকাশিত হইরা-ছিল। মহারাষ্ট্র-পণ্ডিত বালগলাধর তিলক তৈত্তিরীয়সংহিতা আলোচনা করিয়া দেখাইয়াছেন, বাসস্ত বিষ্বাদন মৃগশিরা-সংক্রমিত হইবার পূর্কো অর্থাৎ ৪০০০ খ্র: পূর্কান্সে ভারতীয় আর্যাজাতি জ্যোতিবিক আলোচনা করিভেন এবং ঋকৃসংহিতার প্রাচীনতর জ্যোতিষাংশ গণনা করিয়া দেখিলে স্থির হইবে যে, ৬০০০ খু: পূর্নানে হিন্দুগণ জ্যোতিষিক অনেক বিষয় লিপিবদ্ধ করিরাছিলেন। কেবল মহামতি ভিলক বলিয়া নহে। প্রসিদ্ধ জন্মণ-জ্যোতিষী ও পুরাতত্বিদ্ জাকোবি (Jacobi) বেদের ক্যোতিষাংশ আলোচনা করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে, হিন্দুগণ ৩০০০ খুষ্টপূর্কান্দে বা এখন হইতে প্রায় ৫০০০ বর্ষ পূর্বের এব-নক্ষত্র আবিষ্ঠার করিয়াছিলেন। [জ্যোতি**খ শব্দে ২**৭২-২৭৪ পৃষ্ঠার বিস্তৃত বিবরণ দ্রপ্টবা।]

উদ্ভ প্রমাণবলে বলিতে পারা যায়, বেদসংহিতা ও তদস্তর্গত স্থোতিষ্ঠিদ্ধান্ত সংরক্ষণ করিবার জন্ম অন্ততঃ হে হাজার বর্য পুর্বের বৈদিক বর্ণমালা ও কোন প্রকার লিপিপদ্ধতি প্রচলিত হইয়াছিল। কেহ কেহ এখানে এই আপত্তি করিতে পারেন, বেদের কোন অংশ যদি লিপিবছেই হইয়া থাকিবে, তবে বেদের অপর নাম শ্রুতি হইল কেন ? এবং বেদসংহিতায় বা প্রাচীন কোন বৈদিক গ্রন্থে লিপিব। লিপিবচক কোন প্রকার শদ্দের প্রমাণ পাওয়া যায় নাই বা কেন ?

পূর্বেই বলিয়াছি যে, হিমপ্রলয় উপছিত হইলে আদি বাস ছাড়িয়া আবাসন্তানগণ পূর্ব শ্রুতি লইয়া দক্ষিণমূপে সরপস্ (পৌরাণিক বিল্পর ও বর্তমান সরীকুল) ক্রদের নিকট আলিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন, এই স্থানই পরবৃত্তী বৈদিক ও আবন্তিক মাধাজাতির নিকট, পরে "প্রছৌকদ্" বা প্রাচীনবাসভূমি বলিয়া গণ্য ইইয়াছিল। বেদের অনেক ময় এই ছানে প্রকাশিত ইইয়াছে এবং এই ছান হইতেই বৈদিক আর্যাগণ সিদ্ধ, শতন্দ, আপয়া, গলা ও সরস্বতী-প্রবাহিত পঞ্চন ও সালস্বত ভূলাগে আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করেন, তাহা ঋক্সংহিতা ইইতেই পাওয়া বায়। [আর্থাশন দেখা] আর্থাসন্তানগণ যে শশ্রুতি" লইয়া ভারতে প্রবিষ্ট ইইয়াছিলেন, সেই ঋক্সংহিতায় (১০৭২)৪) আনয়া এইয়প ময় পাইতেছি—

"উজক: পশুন্ন দদৰ বাচমুত ব শৃংন্ন শৃংগাতোনাম্। উতে। কলৈ তন্বঃ বি সলে লায়েব পতা উপতী হবাসাঃ ।" উক্ত খক্টী কোষাৰ্থ এই—কোন কোন গোক বাকাকে কেখে অথচ দেখে না। আবার অপর লোকে বাকাকে ওনে, অথচ জনে না। অপর লোক ওনাইলেও বাকা ভাষার নিকট অলতের মত থাকে, অর্থাৎ ওনাইলেও সে বুবিজে গারে না। কামরমানা রমণী শোডনবজাদি বারা বিভূষিতা হইরা নিজ পতিকে বেরুপ দেহ সমর্পণ করে, বাকা সকলও সেইরুপ (পূর্বোক্ত) বিবিধ লোক বাতীত অভ্য এক প্রকার গোককেট নিজ মূর্তি বা অক্ত সমর্পণ করিয় থাকেন।

উদ্ভ প্রমাণে ময়ের দর্শন, প্রবণ ও মৃথি পরিগ্রহ হইতে আমরা কি মনে করিতে পারি না বে অজ্ঞ, বিজ্ঞ ও মন্ত্রসদ্ধ এই তিন প্রকার পাঠকই ছিল এবং এই সজে দর্শনের বিষয়ীভূত বর্ণলিপি, প্রবণের বিষয়ীভূত ক্রতি ও মন্ত্রমূর্তি বা মৃথিবিশিষ্ট লিপি এই তিনেরই আভাস পাওয়া যাইতেছে। কোন ক্রকর বা চিছ্ন। থাকিলে বাক্যকে দর্শন করা যায় কিরপে শ সংছিতার অথ বাজনে অনেকটা বিশদীকৃত হইসাছে। খংগেদের ঐতিরেয় ব্যাক্ষণে (৩৩৪) আছে—

"তে বা ইমে ইতরে ছলসী গায়ত্রী মভাবদেতাং বিভং
নাবক্ষরাগান্ত পর্যাগুরিতি নেতাত্রবীদ্ গায়ত্রী যথাবিত্ত মেব ন
ইতি তে দেবেষু প্রশ্ন মৈতাং তে দেবা অক্রবন্ যথাবিত্ত মেব ন
ইতি তত্মান্ধাপোত হি বিভ্যাং ব্যাহ্মথাবিত্ত মেব ন ইতি ততো
মন্তাক্ষরা গায়ত্রাভবজ্ঞাক্ষরা ত্রিষ্টুবেকাক্ষরা ক্রগতী সাষ্টাক্ষরা
গায়ত্রী প্রাতস্পবন মুগুল্কং তাং গায়ত্রাত্রবীদান্ত পি মেহত্রান্থিতি সা
তথেতাত্রবীং ত্রিষ্টুপ্ তাং বৈ মৈতৈরষ্টাভিরক্ষরৈক্রপসক্ষেত্রীভিত্তথিতি তা মুপ্ সমদ্ধাদেত হৈ তদ্গায়ব্রা মধ্যন্দিনে যক্ষরক্তিয়
ভোভবের প্রতিপদো যণ্টান্ত্রিয় সৈকাদশাক্ষরা ভূজা মাধ্যন্দিনং
স্বন মুদ্রছেন" ইত্যাদি।

অর্থাৎ সেই অপর ছইটা ছন্দ (এই প্ ও জগতী) পায়্র্রার নিকট আসিয় বলিলেন — তোমরা যে যাহা পাইয়াছ, তাহা আমাদের; সেই অক্ষর কমটা আমাদের নিকট ফিরিয়া আস্ত্রক। গায়্ত্রী বলিলেন — না, আমরা যে যাহা পাইয়াছি, তাহাই তাহার পাকুক। তথন তাঁহারা দেবগণের নিকট প্রশ্ন উপান্থত করিলেন। সেই দেবগণও বলিলেন — তোমাদের যে যাহা পাইয়াছ. তাহার তাহাই থাকুক। তথন গার্ত্রী আট অক্ষর, এই ভের তিন অক্ষর ও অগতীর এক অক্ষর হইল। সেই অহাক্ষরা গায়্ত্রী প্রাতঃসবন নির্মাহ করিয়াছিলেন, কিছ ক্রাক্ষরা ত্রিই প্ মাধ্যন্দিন সবন নির্মাহ করিছে পারেন নাই। গায়্ত্রী তাহাকে বলিলেন — ভাষাই হইবে, তবে তুমি সেই আমাকে আট অক্ষর হারা যুক্ত কর। গায়্ত্রী তাহাই হউক বলিয়া তাহাকে

আট অক্ষর যুক্ত করিলেন। তথন মাধ্যন্দিন সবনে মক্ষতীর শক্ষের বে ছই উত্তরবর্তী প্রতিপৎ আর বে অস্তুচর আছে, তাহা গায়গ্রীকে দেওরা হইল। ত্রিষ্টুপ্ও একাদশাক্ষরা হইরা মাধ্যন্দিন সবন নির্বাহ করিলেন।

ঐতরের আন্ধণের অস্ত স্থলেও (১/১/৫) দেখা বার— "মস্ট্রন্ডৌ অর্গকাম: কুর্বীত ব্রোগা অস্ট্রন্ডোল্ডত্বাষ্টরক্ষরাণি।" বিনি অর্গকামনা করেন, তিনি চুইটা অস্ট্রন্ড ব্যবহার

করিবেন। তুই অনুষ্ঠতে ওঁ৪ অক্ষর আছে।

ঋক্প্রাতিশাথ্যের মতেও অস্কুট্ডে ৬৪ অক্ষর আছে,—
"গাত্রিংশনকরাস্কুর্প্ চন্দারোষ্টাক্ষরাং সমাঃ।" (ঋক্প্রাণ ১৬।২৭)
অর্থাৎ প্রতিপাদে ৮টা অক্ষর করিরা চারি পাদে ৩২টা
অক্ষরে অস্টুপ্ ছন্দাঃ।

ঐতবের বাদ্ধণের অঞ্চহানেও "তেন্ডোহভিততেভাররো বর্ণা অঞ্চারত অকার: উ-কার: মকার: ইতি তানেকথা সমতবং তদেতং ওমিতি।" অর্থাৎ তাহার ভিতর তিনটী বর্ণ হইরা থাকে—অকার, উকার ও মকার; এই তিনটী একত্র হইরা তবে 'ওম' হইরা থাকে।

এইরূপ **উক্তি ছারা অক্ষর শব্দের স্পর্টই বর্ণবাচক**তা প্রতিপন্ন কইতেছে।

এতখ্যতীত **ঐতরে**র ব্রা**ন্ধণে** (১**।৪**।৪)

"ভৌরিত্যেতৈরেবৈনং তৎ কামৈ: সমর্ম্বরীতি স্লু পূর্বং পটলং" ধ্বেদের আবলায়ন শ্রৌতস্ত্তেও উচ্ ত প্রমাণটী পাওরা বায়। (আবলায়ন শ্রৌত ৪৩৩০)

এখানে 'পূর্ব্ব পটল' গ্রন্থাংশবাচী, স্থতরাং স্থীকার করিতে হইবে বে, সেই আতীব প্রাচীন কালেও গ্রন্থবিভাগ ছিল এবং কুক্ষমক্ প্রভৃতি কোন কিছুতে গ্রন্থ লিখিত হইত।

শ্বেদে এরপ লাই প্রমাণ থাকিলেও কেবল পাল্টাত্য যুরোলীর পণ্ডিত বলিয়া নহে, এদেশীর ইংরাজী অভিজ্ঞ অনেক পশুভের বিখাল বে, বেদ মুগে মুগেই চলিরা আসিরাছে, বৈদিক কালে লিখিবার প্রথা ছিল না। এ কারণ বেদে লিখিবার উপকরণ বা লিপির কোন উল্লেখ নাই,—এমন কি কিছুতেই গাহারা বিখাল করিছে প্রস্তুত হইবেন না বে, বৈদিক আর্থ্যগণ লিপির ব্যবহার জানিতেন। বাহারা সেই বহু সহল্রবর্ধ পূর্কো নানা বিবরে বর্থেই উন্নতি লাভ করিয়াছিলেন, শিক্ষা দীক্ষার বাহালের সমক্ষ লে সমত্রে অপর কেই ছিল কি না সন্দেহ, গোহারা পড়িতে জানিতেন, অথচ লিখিতে জানিতেন না,— তাহারা নিরক্ষর (unlettered) ও লিপিজ্ঞানবর্জিত ও ছিলেন, এরপ উক্তিক কি প্রশাপবাক্য নহে ? আমরা পূর্কেই দেখাইরাছি, ঋথেদের সমন্ন অক্ষর ছিল, বর্ণ ছিল এবং মন্ত্রমূর্কিও অনেকের আনা ছিল। গুরুষভূর্কেদে (১৫।৪)—"অক্ষরপঙ্ ক্রিন্ডলাং পদপঙ্ ক্রিন্ডলাং ক্রিরপঙ্ ক্রিন্ডলাং ক্রেন্ডলাড্রান্ডলাং ক্রেন্ডলাড্রান্ডলাং ক্রেন্ডলাড্রান্ডলাং অইরপ মন্ত্র পাওরা যার। এখানে ভাষ্যকার মহীধর ক্রেন্ডলাড্রান্ডলাড সর্কমিত্তি' প্রালতে দীপাত ইতি ভ্রত্তঃ' অর্থাৎ ক্রুর অর্থে বিলেখন ও খনন। বিলেখন ও খনন হারা অক্ষরবন্ধ যে ছন্দাং ভ্রান্ত্রমান বা প্রকাশিত হয়, তাহাকে ক্রুন্ডলাড্রান্ডলার এই ক্রুন্ডলাল ক্রেন্ডলাড্রান্ডলার ক্রিন্তান বিন্ত্রমান বা প্রকাশিত হয়, তাহাকে ক্রুন্ডলাড্রান্ডলার উড়িয়ার ধন্ত্রী নামক ক্রুণলাকা আছে, বৈদিককালে সেইরণ খুদিয়া লিছিবার উপযুক্ত কোন প্রকার লেখনী ছিল এবং লেখনী হারা ছন্দাং লেখা হইত। এই লেখন হারা কি মনে হয় না বে, বৈদিক আর্য্যণ কোন প্রকার বর্ণলিপির ব্যবহার আনিতেন।

পাশ্চাত্য পশ্ভিতগণ বেদের নিকক্ত ও প্রাতিশাখাগুলিকে বৃদ্ধদেবের পূর্ববর্তী অর্থাৎ খুষ্টপূর্ব্ব বর্চ শতাশীর পূর্ব্ব প্রন্থ বলিরা মনে করেন। আমরা পূর্ব্ব প্রমাণ করিয়া দেখাইয়াছি যে, নিকক্তের পূর্ব্বে পাণিনি বিভ্যমান ছিলেন, কারণ নিকক্তকার যাব পাণিনির মত উদ্ভূত করিয়াছেন।

[পাণিনি দেখ।]

পাণিনি লিপি, লিবি, লিপিকর, গ্রন্থ, বর্ণ, অক্ষর প্রভৃতি বে বহুতর শব্দ প্ররোগ করিয়াছেন, তদ্বারা তাঁহার সময়ে যে বর্ণলিপি ছিল, তাহা নি:সন্দেহে প্রমাণিত হইয়াছে। এমন কি, তাহার সময় শিশুক্রন্দীয়" নামক বালবোধক পুস্তৃক প্রচলিত ছিল, সে কথাও পাণিনি উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন।

পাণিনির পূর্ব্ধে বেনের প্রাতিশাধ্যের রচনা। এরপ স্থলে অন্ততঃ থৃষ্টপূর্ব্ব ১০ম শতাব্দীরও পূর্বে প্রাতিশাধ্যের কাল ধরিতে হইবে। বেদের বিভিন্ন শাধার পঠন পাঠনে যে কিছু, রাতিক্রমের সম্ভাবনা হইতেছিল, সেই সকল দোবপরিহারের কল্প প্রাতিশাধ্যের কৃষ্টি।

পাণিনি হত্ত করিরাছেন, "লোপোহদর্শনম্" অর্থাৎ কোন বর্ণের অদর্শনকে লোপ বলা হর। এই লোপ সম্বন্ধে স্থপ্রাচীন প্রাতিশাখ্যগুলিজেও বহু হত্ত দৃষ্ট হর যথা—

"লোপ উদঃস্বান্তভোঃ স্কারন্ত।" (অথর্বপ্রোতিশাব্য ২।১।১)—
(বাজসনেরপ্রাঃ ৪।৯৫, তৈভিত্তীরপ্রাঃ ৫।১৪।)

"অন্তব্যেম্ব নোণঃ।" (অধর্মপ্রা° ৩৩২,=ৠক্প্রাতি° ৪।৫, বাজসনের প্রাতি° ৪।২, তৈতিমীরপ্রাতি° ১৩২।)

বেল কেবল শ্রোভবা হইলে, ক্থমই লোপের লার্থিকতা থাকে না। ভার পর রেক্ষের প্ররোগ। অকু, রকুঃ, অথক

^{*} laac Taylor's Alphabet, Vol. I. p. 2-8.

প্রস্তৃতি সকল প্রাতিশাখোই রেকের নিয়োগ ও রেকের পর বাশ্বনের বিশ্ববিধান বর্ণিত আছে।

(ঋক্প্রাতি ১৫, বান্ধসনেরপ্রা° ১১০৪, অথর্ক্প্রা° ১৪৮) পুল্পথ্যি-প্রণীত সামপ্রাতিশাখাতেও এইরূপ লোপ, রেক ও অবগ্রহের কথা পাইতেজি।

বেদ যদি কেবল শ্রুতিতে প্র্যাবসিত থাকিত, তাহা হইলে বেদে রেফ, অবগ্রাহের প্রয়োগ ও লোপ কোথায় হইবে এবং দ্বিদ্ধ কোথার হইবে; এক্লপ নিরম বিহিত হইবার কোন কারণ ছিল না।

তৈতি বীর সংহিতার দেখিতে পাই যে, সেই আতি পূর্ককাশে বাকেরণ রচিত হইরাছিল এবং ইক্সই দর্কাদিম শান্দিক। যথা—
"বাক্ বৈ পরাচী অব্যাক্তা অবদং। তে দেবা অক্রবন্ ইমাং
নো বাচং ব্যাকুক। সোহববীং বরং বুশৈমছং চৈষ বারাব
চ সহ গৃহতা ইতি। তন্মাদৈক্রবায়বং সহাত। তামিক্রো
মধ্যতোহবক্রম্য ব্যাকরোং। তন্মাদিরং ব্যাক্রতা বাওভাতে
ভদ্যেত্যাকরণ্ড ব্যাকরণ্ডম্॥"*

ভাবার্থ এটারপ —প্রাতনী বাক্ অর্থাৎ বেদরপ বাকা প্রথমে মেঘণজ্জনের ভায় অথথাকারে আবিভূতি ছিল। তল্মধাে কতটা বাকা, কতটা পদ তাহা কেহ বৃদ্ধিত না। তথন দেবগণ প্রার্থনা করেন যে, বাকা প্রকাশ করুন। ইন্দ্র বেদরপ বাকাকে মধ্যে মধ্যে বিচ্ছিন্ন করিয়া বাকা, পদ, প্রত্যেক পদের প্রকৃতি প্রের্মাছিলেন। বাকা, পদ ও পদের অন্তর্গত প্রকৃতি প্রভালিশান শব্দ বিশেষরপে ব্যক্ত করাই ব্যাকরণের কার্যা। ব্যাকরণ যথন ছিল, তথন বর্ণলিপি থাকিবারই কথা। বেদ হইতে আরও ছই একটা প্রমাণ উদ্ভূত করিয়া দেখাইতেছি। বাজসনের-সংহিতায় (১৭।২) আছে — "একা চ দশ চ দশ চ শতঞ্চ শতঞ্চ সহস্রঞ্জ সহলং চাবৃতঞ্চ চাযুতং চ নিযুতঞ্চ নিযুতঞ্চ প্রার্থ, চার্ব্যু দং চ সমুল্রণ্ড মাঞ্চ অন্তর্গত পরার্থ:।"

পরার্দ্ধ সংখ্যা ব্রাইতে কেবল শ্রুতির সাহায্য লইলে চলিবে না, অস্কপাত করিয়া ব্থাইতে হইবে। অক্সংহিতার (৫।৪০।৯) দেখুন—

শ্বং বৈ কুৰ্যাং স্বৰ্ভাস্কুস্তমসাবিধ্যদাহর:।

भाजवस्यभविकन् नशस्य व्यक्तृतन्॥"

ভাৰাৰ্থ এই — অসুর রাহ নিজ ছারার থারা সুর্যাকে যে বিছ করে, সে বেধ অত্রিগণই জানিতেন, অস্ত ক্ষবিরা ভাহা স্থানিতে সমর্থ হন নাই।

উক্ত ধন্ হইতে সহজেই মনে উদর হইবে বে, আজেরগণীই গ্রহণগণনার আদি শুরু। গ্রহণেথ বে মুখে মুখে ইইতে পারে, তাহা আমাদের বুদ্ধির অগম।

উপরোক্ত প্রমাণ বারা বৈদিক বুগে বদি বণীলিপির বিভ-মানতা বীকার করা হর, তাহা হইলে গুরুষুর্থে গুনিরা মুখে মুখে বেদাভ্যাস করিবার নিরম রহিয়াছে কেন ৮ এমন কি, খুটীর ৮ম শতাকে চীনপণ্ডিত ইংসিং ভারতে আসিরা বচকে দর্শন করিবা ঐরপ বেদাধারনের কথা লিপিবছ করিলেন কেন ৮

ধর্মণান্ত গুলর মুখে শুনিরা শিবা কঠন্ত করিবে, এইরূপই নিয়ম ছিল। কেবল বেল বলিরা নহে;—ইৎসিংএর বিবরণ পাঠ করিলে জানিতে পারি বে, বৌদ্দসমাজেও ঐরূপ ধর্মগ্রছ শুরুম্বে শুনিরা কঠন্ত করিবার রীতি ছিল।

অধারন ও অধাপেনার পছতি ঐরপ থাকিলেও বেদ লিপি-বছ হেঁত, তাহারও প্রমাণ পাওরা যার। বেদের নিরুক্তকার যায় লিখিয়াছেন,—

"সাক্ষাৎক্রতধর্মাণ ঋষরের বন্ধুব্রেছবরেরভোহসাক্ষাৎক্রত-ধর্মত উপলেশন মন্ত্রান্ সম্প্রাচ্চঃ। উপদেশার মারস্তোহবরে বিশ্ব প্রহণারেমং গ্রহং সমান্নাসিব্রেকক বেদাকানি চ ॥" (নিক্লক ১।২০)

বাঁহারা ধর্মের সাক্ষাৎকার বা দর্শন লাভ করিরাছেন, সেই সকল ঋবি, বাঁহারা ধর্মসাক্ষাৎকার লাভ করেন নাই অর্থাৎ প্রতিবিদিপকে উপদেশ বারা মন্ত্রসমূহ প্রদান করেন, সেই প্রতিবিদিপ আবার উপাশারিরপে উপদেশ বারা 'গ্রহতঃ' ও 'অর্থতঃ' মন্ত্রগুলি শিথাইয়াছিলেন। তাঁহারা আবার অর্থ-গ্রহণে অক্ষম শিব্য দেখিয়া খেলগুক্ত হইয়া বুঝাইবার কল এই গ্রছ (নিঘণ্টু), বেদ ও বেদাক্ষ সকলন করেন। কাহার বারা সেই বেদ বেদাক্ষ সকলিত হয় ? তবিষরে নিক্ষকটীকাকার চুর্গাচার্য্য লিখিরাছেন,—

"স্থগ্ৰহণার ব্যাদেন সমায়তবক্তঃ। তে একবিংশতিধা বহৰ চাম্। একশতধা আধ্বর্যবং সহস্রধা সামবেদং। নবধা আথক্ষণং। বেদালাভণি। তদ্ বধা। ব্যাকরণমইধা নিক্লতং চতুর্দ্দধা ইত্যেবমাদি। এবং সমায়াসিমুর্ভেদেন গ্রহণার্থং। কথং নাম ভিরাভেতানি শাণান্তরাদি লঘুনি স্লথং গৃহীয়ুরেতে শক্তিহীনা আয়ারুবো মুখ্বা ইত্যেবদর্থং সমায়াসিবুরিত।"

সহজবোধ্য করিবার জন্ম ব্যাসের বারা তাঁহার। বেদ
সক্তনন করাইনেন। (তন্মধ্যে) বহুখন্ত্ত থানে ২১টা শাধার,
অধ্বর্গ্ত কর্য্য স্বভীর বস্তুর্কে ১০১ শাধার, সামবেদ ১০০০
শাধার, অথকবিদ ৯টা শাধার বিভক্ত হর। রেবালও এইরুপে
ভাগ করা হইরাছিল, (বধা) ব্যাকরণ ৮ ভাগ, নিরুক্ত ১৪ ভাগ।

শব্দ পরাচী পুরাত্নী বাক্ বেবরণিথী অব্যাক্তা রেবলুনিতবলপথাকারা অভিনিতপথ্যাক্তভেলতি থাবং। তানিক্রো নথাতেহিবকুনা বিভিন্ন
এতাব্দিবং থাকাং বাকো চৈভালি পদানি পদেবু চৈভাং প্রকৃততঃ এতে চ
নিতারা ইভোবনবালনাং অথকরা বাচোনিতেবনং কুকেতাাদি' (ভাব)

^{*} Max Muller's India, what can it teach us ? p. 811.

এরপ সম্বানের কারণ কি? এইরপ ভিন্ন ভিন্ন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শাখা সংক্রেই শক্তিহীন জন্নারু মন্থবা গ্রহণ ক্ষিতে পারিবে। •

বেদ গ্রন্থাকারে বে লিপিবছ হুইড, মহাভারতের এই বচন করটা পাঠ করিলে তাহাতে আর কাহারও সন্দেহ থাকিবে না—

"বনেতছ্কাং ভবভা বৈদ্পান্তনিদর্শনন্। এবনেতদ্বপা চৈতন্তিগুল্লাভি তথা ভ্যান্ ॥ ধার্যাতে হি মনা প্রস্কৃতবোর্ত্তেদণান্তরোঃ। ন চ প্রস্কৃত ভবকো বথাতম্বং নম্পের॥ যোহি বেনে চ পাত্রে চ গ্রম্থারপত্রপারঃ। ভারং স বহতে ভক্ত গ্রম্থার্থ ন বেন্তি য়ঃ। বস্তু প্রস্কৃতিবক্তো নাক্ত গ্রম্থানা বুধা॥"

(শান্তিপর্ক ৩০০।১১-১৪)

(বিশিষ্ঠ জনককৈ সংখাধন ক্ষরিরা বলিভেছেন)—আপনি বেদ ও ধর্মপাত্রের যে এই নিদর্শন বলিলেন এবং মনে মনে যেরপ ধারণা ক্ষিয়াছেন, তাহা এরপই বটে। আপনি বেদ ও ধর্মপাত্র উভর গ্রন্থই অভ্যাস ক্ষিয়াছেন, কিন্তু তাহার বধাবৎ অর্থ গ্রন্থক ক্ষিতে পারেন নাই। বিনি বেদের ও ধর্মপাত্রের গ্রন্থ অভ্যাস ক্ষেত্রক হইরা তাহার তন্ত্ব বধাবৎ গ্রহণ ক্ষিতে না পারেন; তাহার গ্রন্থ অভ্যাস বিকল। বিনি গ্রন্থের অর্থ ব্যথিতে না পারেন, তাহার পক্ষে গ্রন্থের তারবহনই সার। আর বিনি গ্রন্থের অর্থ ব্যথিতে লাপারেন, তাহার পক্ষের তারবহনই সার। আর বিনি গ্রন্থের অর্থ ব্যথিকরপে জানিতে পারেন, তাহার অভ্যাস বিকল হব না।

এখন আমরা নিঃসংশহে জানিতেছি বে, অভি পূর্বকাল চইতেই প্রতিও ধর্মণাত্র লিপিবছ ও গ্রহ' বলিরা পরিচিত হইরা আসিতেছে। তাই মন্ত্রসংহিভার (৭।৪০) টীকার কুর্ক-ভট্ট লিখিরাছেন— "ত্রিবেদীরপবিভাবিদ্যা ক্রিবেদীমর্থতো গ্রহতশাভাবেং।"
রযুনস্থনও বৃহস্পতির প্রাচীন বচনটী উভ্ ত করিয়াছেন,—
"বাশ্মানিকেংশ সমরে প্রান্তি সংকারতে বতঃ।
ধাত্রাক্ষরণি স্টানি প্রার্ডান্যতঃ পুরা॥" (জ্যোতিত্তব)
অর্থাৎ ৬ মানের পর লোকের ভুল হইরা থাকে, তাই
বিধাতা পুরাকালে অক্ষর স্টি করিরা পঞ্চনিবন্ধ করিয়াভিলেন।

অতি পূর্ককাল হইতেই বে ভারতে সম্লান্ত প্রীপুক্ষ উভয়েই বণলিপি অভ্যাস করিতেন, তাহারও প্রমাণ পাওরা গিরাছে। বালীকি রামারণ পাঠে ফানিতে পারি বে, সর্কাশাস্ত্রক মহাবীর হন্মান্ অপোকবনে উপস্থিত হইরা সীতার দর্শন পাইলেন এবং আপনার ও রামের পরিচর দিরাও বখন সীভার সন্দেহ দূর করিতে পারিলেন না, তখন তিনি সীভার বিশ্বাস জন্মাইবার জন্ম রামনামান্তিত অনুরীয়ক বাহির করিরা দেখাইরাহিলেন।

"বানবোহহং মহাভাগে দুভো রামশু ধীমত:। রামনামাত্তিকেলং পশু দেব্যস্পীরকম্॥" (স্করকাওতভাং)

জন্মনামাজতকেলং পশ্র দেবাসুলারকম্ ॥ (প্রশ্রনারততাং)
উক্ত প্রোকটা প্রাক্তির বলিয়া উড়াইয়া নিবার জো নাই,
প্রাচীন টীকাকারগণ সকলেই ঐ শ্লোকটা ধরিয়াছেন। রামনাযাকিত অসুরীর উপর স্থানরকাত্তের ভিত্তি স্থাপিত। স্থতরাং
বীকার করিতে হইবে বে, শ্লোকটা বাল্মীকির নিজন্ম। তৈত্তিরীয়প্রাতিশাধাস্থ্রে পূর্বন্ডন আচার্যারপে বাল্মীকির নাম গৃহীত চইয়াছে। এরূপ স্থলে বাল্মীকির সময়ে অর্থাৎ বৈদিক্যুগের শেষভাগে
অন্তভাপকে খুঃপূর্ব ১০ম শতাব্দেরও পূর্বে ভারতীয় শিক্ষিতল্রীলোকনিগের মধ্যেও বর্ণলিপিক্রান ছিল, তাহার লগাই আভাস
পাওরা ঘাইভেছে। অতি প্রাচীন বৈদিক্যুগ হইতেই বে ভারতে
ল্রীশিক্ষা প্রচলিত ছিল, তাহার উল্লেখ এক্লে জনাবশ্রক।
স্থতরাং খুঃ পূর্ব্ব ৮ম শতাব্দীর পর ফিনিক (Phœnician)
নামক বনিক্রিগের নিকট হইতে ভারতবাসী লিশিক্কান শিক্ষা
করিয়াছেন, এ ব্রক্তির কিছুতেই সমর্থন করা বার না।

খুইপূর্ব্ব বর্চ শতাবে শাকার্ছের অভ্যানর। তাঁহার নির্বাণের কিছু পরেই তাঁহার ধর্ম্মোপদেশসমূহ রক্ষা করিবার জন্ম তাঁহার প্রধান প্রধান শিবাগণ একত্র হইরা ১ম বৌদসক আহ্বান করেন। করাসী পণ্ডিত ফুকো (Foucaux) ও রাজা রাজেন্দ্র লাল মিত্র মহাশর "লালিতবিত্তরের" সমার্কৌটনাকালে দেখাইরা-ছেন বে, ললিতবিত্তরের মধ্যে বে সকল গাখা আছে, তাহা ঐ সমরে (খু: পূর্ব্ব ৬ই শভাব্বে) রচিত ও সংগৃহীত হইরাছিল। ১ সেই পাখার এইরূপ বর্ণিত হইরাছে—

 [&]quot;সাক্ষাৎকৃত্তো বৈধৰ্মী: সাক্ষাকৃত্তা অভিবিটেন তপ্সা। তে মে সাক্ষাৎ-কৃতধর্মাণ:। কে পুনতে ইতি উচাতে। ধবর: ক্ষতি অমুদাৎ কর্মণ এবম বতা নত্ত্বেল সংযুক্তাবমূলা প্রকারেণেবং লক্ষণকলবিপরিণামো ভবতীতি करतः विवर्णनेनाहिष्ठि वकाछि । छानछएकर्वनः कनविनत्रिनावनर्गमायोगहात्रिका। বুভোক্তং সাক্ষাৎকৃতধর্মাণ ইভি। ম হি ধর্মন্য দর্শনমন্তাহভাপুর্বো হি ধর্ম:। আৰু কিং ভেৰানিভাচাতে। তেইবরেভাইনাক্রড্রড্রভা উপদেশের মন্ত্ৰাৰ সম্প্ৰান্তঃ। তে বে সাক্ষাৎক্ৰভবৰ্ত্তাশন্তেই ব্যৱহাণাই বয়কানীমেভা: পজি-रीतिकाः आवर्षिकाः । स्कारं हि आया छकः शब्दांपविषयुगवाहरू न वश ग्राक्तिश नाकारकृष्ठवर्षाश अन्त्रवर्षत्त्व । जाह-किर एका हेकि । एक-বরেজা উপনেশের শিখোশাধারিকর। বুড়া মন্ত্রান্ ভেজ্ঞ ইতি। তেইবরেজা **উপলেশেন শিল্যোপাধ্যারিকরা বৃদ্ধ্য বছান প্রস্থাকেকিক সন্দ্রান্ত্র:** সন্ধারকর: । . उरुणि क्रांगरम् विष्युद्धाः ... छेगरम्यात्र छेगरम्यार्वरः। 'स्वर मात्र छेन-विक्रमानामार पहें मुर्ज रीकृषिकि अवसर्वनिकृता प्राप्तकः विकामानाः एकगृहस्य उरमूकम्माता (खरामापूर: अत्योधमतका कांत्रामूक्षणाक अवग्राह्मः विध-अवगरतमः अवः नवानित्ववनवात्तः नवावाववतः किः वक्रवरक्रमञ्जाहारः ।"

Dr. Rajendra Lal Mitra's Lalita Vistara, Intro. p. 56,

"না গাওলেখনিখিতে গুণ অৰ্থ্যুক্তা

বা কল্প উৰ্গ ভবেন্ মম ডাং বরেখা: ।" (ললিভবিত্তর>২আ:)
(শাক্সসিংহ বলেন) বে কল্পা গাথালেখ লিখিছে এবং গাথার
অর্থগ্রহণে গুণবতী হইবেন, তাহাকে আমি বিবাহ ক্রিব।

উক্ত গাথা হইতে কি আমরা জানিতে পারিতেছি না বে, আড়াই হাজার বর্ষ পূর্ব্বে এদেশে লিপিজ্ঞানকুশলা সন্ত্রান্ত-মহিলারও অভাব ছিল না। আড়াই হাজার বর্ষ পূর্ব্বে বেধানে কল্পা লিপিকুশলা না হইলে রাজকুমারের পত্তী হইবার যোগ্যা হইজেন না, সে দেশে বর্ণলিপির চর্চা কত প্রাচীন তাহা সহজেই অলুমের। ললিতবিক্তরের গাথাতেই লিপিশাল (১)ও লিপিশালেরে(২) উল্লেখ থাকার স্পষ্ট জানা যাইতেছে যে, সেই পুরাতন কালেও লিপিশিক্ষা দিবার উপযোগী পাঠশালা এবং নানা দেশীর লিপিজ্ঞানের উপযুক্ত লিপিশার (Palæography and Epigraphy) প্রচলিত ছিল।

ব্রাশ্ধী প্রভৃতি লিপির উৎপত্তিকাল।

যে প্রাচীন কালের কথা হইতেছে, সে সময়ে ভারতে কিরূপ অক্ষর প্রচলিত ছিল, তাহাই এখন আলোচা।

উক্ত ললিতবিস্তরে ৬৪ প্রকার লিপির উল্লেখ দৃষ্ট হয় ঘণা—
রান্ধী ১, থরোষ্ঠী ২, পুষরদারী ৩, অললিপি ৪, বললিপি ৫,
মগধলিপি ৬, মালল্যালিপি ৭, মহুষ্যালিপি ৮, অনুলীরনিপি ৯,
শকারিলিপি ১০, বন্ধবল্লীলিপি ১১, দ্রাবিড়লিপি ১২, কিনারিলিপি ১৩, দক্ষিণলিপি ১৪, উগ্রলিপি ১৫, সংখ্যালিপি ১৬,
অন্ধলোমলিপি ১৭, অর্ধ্বমূর্লিপি ১৮, দরদ্বিপি ১৯, খান্তলিপি
২০, চীনলিপি ২১, হুণলিপি ২২, মধ্যাক্ষরবিস্তরলিপি ২৩,
পুলালিপ ২৪, দেবলিপি ২৫, নাগলিপি ২৬, যক্ষলিপি ২৭,
গন্ধর্কলিপি ২৮, কিন্নরলিপি ২৯, মহোরগলিপি ৩০, অন্থরলিপি
৩১, গরুড়লিপি ৩২, মৃগচক্রলিপি ৩১, ক্রুরলিপি ৩৪, বাযুমক্বলিপি ৩২, ভৌমদেবলিপি ৩৬, অন্তর্নীক্ষদেবলিপি ৩৭, উত্তরকুক্বীপলিপি ৩৮, অপরগোড়াদিলিপি ১৯, পূর্ব্ববিদেহলিপি ৪০,
উৎক্ষেপ্রিপি ৪১, নিক্ষেপ্রিপি ৪২, বিক্ষেপ্রিপি ৪০, প্রক্ষেপ্র

লিপি ৪০, নাগরলিপি ৪০, বছলিপি ৪৬, লেখ প্রছিলেখলিপি ৪০, অহুক্রভলিপি ৪৮, শান্তাবর্জনিপি ৪৯, গণনাবর্জনিপি ৫০, উৎক্ষেপাবর্জনিপি ৫০, বিক্ষেপাবর্জনিপি ৫০, বিক্ষেপাবর্জনিপি ৫০, বিক্ষেপাবর্জনিপি ৫০, ক্ষাহারিণী-লিপি ৫৬, সর্কারতসংগ্রহিণীলিপি ৫০, বিজ্ঞান্থনাসলিপি ৫৮, বিমিন্তাতনিপি ৫৯, ক্ষাহাতপত্তপ্রালিপি ৬০, বর্মীপ্রেক্ষণানিপি ৬১, সর্কার্মারসংগ্রহণী ৬০ ও সর্কভৃতকত-গ্রহণীলিপি ৬৪, এই ৬৪ প্রকার নিপি। (গলিভবিক্তর ১০ জঃ)

त्य ननिखिविकात केक निनिमानात नाम केब्रुक रहेन, সেই গ্রন্থানি চু-ক লন কর্ত্তক ৬৯ খুষ্টাব্লে চীনভাষার অন্ত্রাদিত হর+। এরপ ফলে মূল গ্রন্থ সর্বাত্ত প্রচারিত এবং তৎপরে চীনদেশে নীত হইতে অল সময় লাগে নাই। পাশ্চাত্য ও এ দেশীর রাজেন্সলাল মিত্রপ্রমুখ পশ্চিতগণ ললিভবিভরকে খু: পূর্ব্য ২য় শতাকীর গ্রন্থ বলিয়া খীকার করেন। আমরা কিন্তু তদপেকা প্রাচীন বশিয়াই মনে করি। সম্রাটু স্পশোকের যত্ত্বে বেমন বৌদ্ধপর্ম প্রচারার্থ পশ্চিমে গ্রীস, উত্তরে মোললীয়, পূর্বে কথোজ ও দক্ষিণে সিংহল পর্যান্ত ধর্মাচার্য্যগণ প্রেরিড হইয়াছিলেন, সেইরূপ সভালগতের আর সকল স্থান হইতে লোক আসিয়া অশোকের সাম্রাক্তা মধ্যে নানাকার্যা উপলক্ষে বস্তি আরম্ভ ক্রিয়াছিলেন,--এসময়ে ভারতে নামা বিদেশীয় সংস্রবে যত প্রকার লিপি বা বর্ণমালা প্রচলিত হইরাছিল, ভৎপুর্কে আরু কোন সময়ে এমন হইয়াছিল বলিয়া আমরা মনে করি নাাা ভারতীর বৌদ্ধগণের সেই স্থবর্ণযুগে এখানে বতপ্রকার লিপি প্রচলিত হইয়াছিল, সম্ভবতঃ ললিতবিত্তরকার সেই সমুদ্য निभिन्नहे উলেখ कत्रिनाएकन ।

সিংহল, ত্রদ্ধ ও শ্রামদেশীয় প্রাচীন বৌদ্ধগ্রন্থ মতে, ৫৪০ থ্টপূর্কান্দে বৃদ্ধদেবের নির্কাণ এবং নির্কাণের ২১৮ বর্ব পরে অর্থাৎ ৩২৫ থুঃপূর্কান্দে অশোকের সাম্রাজ্যাভিবেককার্য্য সম্পন্ন হয়। [প্রিয়দশী শঙ্গে বিস্তৃত বিবরণ এটব্য]

তৎপরে অশোকের রাজধানীতে ৬৪ প্রকার নিপি প্রচলিত থাকা কিছু বিচিত্র নহে। ঐ সমরে গ্রীক নাবিক নিরাপু্সের (Nearchus) বিবরণীতে প্রকাশ বে, ভারতবাসী কার্শাসবন্ধ অথবা কাগজে অক্ষরবোজনা করিত। তাঁহার কিছুকাল পরে

^{(&}gt;) "পান্তাণি বানি প্রচরন্ধি চ দেবলোকে
সংখ্যা লিপিন্চ গণনাহণি চ খাতুতন্তং।
বে শিল্পবোগ পূখু লৌকিক অপ্রমেরাতেবে, বু শিক্ষিত্ব পুরা বহুকলকোটঃ ।
কিন্তু জনক অসুবর্ষনভাং করোভি
লিপিনালযাগতুং হুশিক্ষিতশিক্ষণার্থং।" (লালতবিত্তর ১০ আঃ)

⁽২) "লোকোন্তরের চতু: সতাপথে বিধিজ্ঞা হেতু প্রতীভারুণলো বধ সম্ভবতি। বব চানিরোধকর সংকৃত্সীতিকাব-গুলিন্বিধিজ্ঞা কিমধো নিপিলাক্সাতে।" ঐ

^{*} Beal's Romantic Legend of Sakya Buddha, Introduction.

[†] শকাধিশ কনিছের অধিকার উত্তরে বোতন, পশ্চিমে পারত এবং পূর্ণে পূর্ববৃদ্ধ পণ্যন্ত বিশ্বত হইরাছিল কটে, কিন্তু তিনি খুবীর ১ম শতাবো বিব্যরাম ছিলেন; তংপূর্বে যে ললিত্যিতর রচিত হয়, তাহা খুবীর ১ম শতাবাহি চীন অনুবাদ হইতেই অমাণিত।

গ্রীকদৃত মেগেছিনিদ্ মগধরাজ্যের বর্ণনা উপলক্ষে লিথিয়া গিয়াছেন বে, ভারতবাসী ১০ ষ্টেডিরাম্ অন্তর শাখাপথ ও তদন্ত্রবিভী হানের দুরছবিজ্ঞাপক জ্ঞোশাহযুক্ত প্রভবক্ষক (mile-stone) রাখিতেন। প্রস্তারে দিপি উৎকীর্ণ করিবার প্রথা সে সময় বিশেষ প্রচলিত ছিল; অশোকের অনুশাসন এবং তাঁহারও বছপূর্ব্বে কলিববান্তর নিকটবর্ত্তী পিপরাবা গ্রাম হইতে আবিদ্বত বুদ্ধদেবের দেহাবশেব-সংরক্ষিত প্রস্তরপাত্রের উপর উৎকীর্ণ খোদিত লিপি তাহার সাক্ষাদান করিতেছে। পিপুরাবা-লিপি হইতে এখন দৃঢ় বিশাস হইতেছে যে, খুঃ পূর্ক 👈 ১ শতান্দীর পূর্বেও ভারতবর্ষে প্রস্তবে লিপি উৎকীর্ণ করিবার প্রথা প্রচলিত ছিল। মগ্রপতি জ্বাসন্ধের রাজধানী গিরিত্রজে জরাসন্ধ-কা-বৈঠক ও ভীমজরাসন্ধের রণরকভূমির মধ্যস্থলে চিত্র-লিপি ও কীল্রপা শিল্পলিপির মধ্যাকারের লিপি পর্বতগাতে উৎকীর্ণ রহিয়াছে। তাহার উপর দিয়া বছকাল হইতে গো-মহিষাদির গ্মনাগ্মনের পথ হওয়ায় সেই প্রাচীনতর লিপি অনেকটা জম্পষ্ট ও অবোধ্য হইয়া পড়িয়াছে। আমাদের বিশ্বাস, এ পর্যান্ত ভারতবর্ষে যতপ্রকার লিপি আবিষ্কৃত হই-য়াছে, তন্মধ্যে সেই মগধলিপি সর্কাপেকা প্রাচীন। কে বলিতে পারে, তাহা জরাসন্ধের সময়কার লিপি নহে ?

যাহা হউক, এখন আমরা জানিতেছি যে ২২ শতবর্ষ পূর্বে ভারতবাসী ৬৪ প্রকার লিপি অবগত ছিলেন। ঐ ৬৪ লিপির মধ্যে কতকগুলি সমাট্ অশোকেরও বহপুর্বে হইতেই ভারতে প্রচলিত ছিল। জৈনদিগের স্থাচীন "সমবার্ত্ত" নামক ৪৩ অলে লিখিত আছে—

"ৰন্ধী এণং অঠারসবিহ লেখ্কবিহানে। ৰন্ধী জবণালিয়া দৰউরিয়া । থানোটিয়া পুক্ধবসানিয়া । পহারাইয়া উচ্চন্ত্রিয়া অথ্করপৃথিয়া ভোমবইয়া ‡ বেক্থেইয়া নিথ্কেইয়া ৡ আংকলিবি গণি মলিবি গন্ধবেলিবি আদস্দগলিবি মাহেসরলিবি দামিলিলিবি বোলিদিলিবি।"

রান্ধী প্রস্তৃতি ১৮ গ্রাকার লেখন প্রক্রিয়ার নাম—রান্ধী ১, ঘবনানী ২, দলোত্তরিকা ৩, খরোষ্ট্রীকা ৪, পুন্ধরসারিকা ৫, শাক্তিকা ৬, উত্তরকুকক। ৭, অক্ষরপুত্তিকা ৮, ভৌমবহিকা ৯, বিক্রেপিকা ১০, নিক্রেপিকা ১১, আন্দলিপি ১২, গণিতলিপি ১৩, বন্ধক্রিলি ১৪, আদশক্রিপি ২৫, মাহেশ্বর্যাপি ১৬, ত্রাবিড়ী-ধ্যপি ১৭ ও বোলিনী বা পোলিনা নিপি (१)।

জৈনদিগের ৪র্থ উপান্ধ পরবনা (প্রজ্ঞাপনা) ক্রে উক্ত ১৮টা লিপির উল্লেখ আছে। লিপিকরের দোবে বিভিন্ন পুথিতে সামান্ত পাঠতেদ মাত্র লক্ষিত হয়। প্রজ্ঞাপনাক্তবের টাকাকার মলরগিরি লিপিয়াছেন—

"প্রান্ধী যবনানীত্যাদরো লিপিভেদান্ত সম্প্রদারাদবশেষঃ"
অর্থাৎ প্রান্ধী, যবনানী ইত্যাদি ১৮ প্রকার লিপি বিভিন্ন
সম্প্রদার হইতে উন্ধব।

জৈনশাস্ত্র মতে জৈনাক্ষসমূহ মহাবীর স্থামীর সময়ে প্রথম প্রচারিত এবং বীরনির্বাণের ১৬৪ বর্ষ পরে (৩৬০ খুটপূর্বান্দে) পাটলিপুত্রের শ্রীসজ্বে সংগৃহীত হয়। এরূপ স্থলে বলিতে পারা যায় যে, সন্নাট্ অশোকের পূর্বেভারতে ব্রাক্ষী প্রভৃতি ১৮ প্রকার লিপি প্রচলিত ছিল।

ধ্বনানী।

যবনানীলিপি দেখিয়া কেহ কেহ বলিতে চান যে, মাকিদন-বীর আলেক্সান্দারের সময় এদেশে এীক যবনগণ যে লিপি প্রবর্ত্তন করেন, তাহাই যবনানীলিপি। এই যবনানী শব্দের উল্লেখ পাইয়া মোক্ষমূলর প্রভৃতি কোন কোন পাশ্চাতা অধ্যাপক অষ্টাধ্যায়িস্থত্রকার পাণিনিকে ও ঐ সময়ের লোক বলিতে চান। কিন্তু পাণিনিসত্তের বার্ত্তিককার ও মহাভাষাকার 'যবনানী' শব্দের লিপি * অর্থ করিলেও পাণিনি কোথাও স্পষ্টাক্ষরে এরূপ অর্থ প্রকাশ করেন নাই, স্ত্রীলিকে যে সকল শব্দের উত্তরে 'আগুক্' হয়, তিনি দৃষ্টান্তস্বরূপ সেই সকল শব্দের মাত্র উল্লেখ कत्रिप्राष्ट्रन । यारा रुडेक, यवनानी भन आधुनिक मत्नर করিবার কোন কারণ দেখি না। যবন (Ionian)-দিগের অভাদয় অতি প্রাচীন। স্থামরা অন্তত্ত্ত দেথাইয়াছি যে, খুঃ পূর্ব্ব ১০ম শতাব্দে যুবন বা যোনজাতির পরাক্রম সর্বাত্র ঘোষিত হইয়াছিল। তৎপূর্বে ব্বনজাতির অভ্যুদয়। রামায়ণ মহা-ভারত প্রভৃতি প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থেও যবনজাতির বিশেষ উল্লেখ আছে। ববনানী বলিলে বছ প্রাচীন কীলরূপা (Cuneiform) লিপিই বুঝাইত। [যবন দেখ।]

পুক্রসারী।

সমবারাল ও ললিতবিভাবে বে "পুন্ধরসারী" লিপির উল্লেখ আছে, তাহাও ভারতের এক অতি প্রাচীন লিপি। পাণিনি পুন্ধর-সারীর উল্লেখ করিবাছেন।

উত্তরকুলক। ও গন্ধর্কালিপি প্রভৃতি।

ঐতরেম্বরান্ধণে উত্তরকুক ও উত্তরমন্ত্রের উল্লেখ আছে।

^{• &#}x27;ध्वमाध्वितः-- भाग्रेड्द्रः 🕂 'लाव्डेतित्रा'-- भाग्रेड्द्रः

^{! &#}x27;(काभवत्रखा'---भाशिकतः।

^{\$ &#}x27;বেরপতিবা' 'পিরাছইরা' বা 'বেপণিরা নিত্টরা'--পাঠান্তর

 ^{&#}x27;বৰনারিপ্যাদ্ ইতি বক্তবান্'—বার্তিক! 'বোবো ববো ববানী।
 বৰনারিপ্যাদ্। বৰনানী লিপিঃ।'—মহাভাষা (৩।১।৩৯। প্রে)

^{† &#}x27;ইত্রেবলণ্ড বলক্ষিতাস্ড্হিমরেণাব্ব-ব্যব্মাভুলযার্গাণামাণুক্' পাঙ।১।১৯।

তথার বৈদিক বাগ বক্ষ প্রচলিত ছিল, তাহাও ঐতরের আদ্ধণ হইতে জানা বার। বাগ বজ্জের নির্দারণের জন্ম বেমন জ্যোতি-বের প্ররোজন,সেইরূপ ওবহরও জানা আবক্তক। [ওবহুত্র দেখ।] এই জন্ম জন্মনি ও গণিতলিপিও সেই প্রাচীনকালে প্রচলিত হইরাছিল। প্রভারে প্রচলিত লিপিই সক্তবতঃ গর্জ্জর-লিপি। গন্ধারের সহিত অতি প্রাচীনকাল হইতেই বৈদিক আর্থা-গণের সংক্রব। এখানকার লিপিও নিভার আধুনিক নহে। ধরোষ্ঠালিপির প্রসক্ষে এ বিবর পরে আলোচিত হইবে।

বাহেখরলিপি।

পাণিনিহতে বে ১৪টা প্রজ্যাহার আছে, সেই ১৪টা পিবহুত্র বলিয়া বরুলচি, পতঞ্জলি প্রভৃতি বৈরাক্রণের নিকট পরিচিত। এদেশে সর্ক্রসাধারণ বৈয়াকরণগণের বিবাস বে. মহেবরই সর্ক্রপ্রথম ব্যাকরণ প্রকাশ করেন। বেলাকের অন্তর্গত শিক্ষাতেও দেখা বার বে মহেবরই ৬৪ অক্ষর প্রকাশ করেন। যাহা হউক, পাণিনির বছ পূর্ব্বে বে শিবহুত্রের উৎপত্তি, ভাহাতে সন্দেহ নাই। চীনপরিব্রাক্তক ইৎসিং খুরীয় ৭মশতাব্দের শেবভাগে ভারতবর্বে আসিয়া সংস্কৃত শাক্রশিক্ষা করেন। তিনি লিখিরাছেন বে, 'সিদ্ধিরন্ত হইতে আরম্ভ করিয়া বর্ণমালাসবদ্ধীয় বে মহেশ্বর রচিত "সিদ্ধান্ত" ৬ বর্বের বালকেরা প্রথম মৃথ্যু করিয়া থাকে, ইহাতে ৪৯টা অক্ষর, ভাহার সংযুক্তাক্ষরগুলি আবার ১৮শ ভাগে বিভক্ত, ইহাতে সর্ক্রন্ত ১০০০ শব্দ এবং অন্তর্গুণ ছন্দের ৩০০ প্রোক।' অধ্যাপক মোক্ষমূলরের বিশ্বাস যে উহাই 'শিবহুত্র'।(১) কিন্তু ইৎসিং পাণিনির্হিত ১০০০টা স্ব্রক্রেই শিবের প্রভ্যাবিষ্ট স্থ্য বলিয়া প্রকাশ করিরাছেন।

লেই শিবস্ত্ত্ত বে লিপিতে লিপিবছ হয়, তাহাই সম্ভবতঃ সাহেশ্বরলিপি। অথবা পাণিনিতে বে মাহেশ্বর সম্প্রদারের উল্লেখ আছে, জাহাদের ব্যবস্থত লিপিই মাহেশ্বর বিপি।

স্বাদর্শকলিপি।

পতশ্রলি মহাভাব্যে আর্থাবর্তের সীমানির্দেশকালে লিথিবা-ছেন,—"প্রাগাদশীং প্রত্যক্কালকবনাং," আদর্শের পূর্ব্বে ও কালকবনের পল্চিমে, হিমালরের দক্ষিণে ও পরিপাত্তের উত্তরে আর্থাবর্ত্ত অর্থাং আর্থাবর্তের পশ্চিম সীমার আদর্শ। ময়-সংহিতার আর্থাবর্তের পশ্চিম সীমার সম্প্র নির্দিট হইরাছে। এরূপস্থলে সমুক্রের পূর্বে পার হইতে আর্থাবর্তের অবস্থান বির করিতে হয়। বিষ্ণুপুরাণাদিতেও ভারতের পশ্চিম সীমা ববন (Ionia) নির্দেশ আছে। এরূপ হলে আদর্শ প্রাচীন মিলর বা তুলক রাজ্য হওয়াই সম্ভব। তথাকার ক্র্প্রাচীন নিনিট সম্ভবতঃ আদর্শকনিশি। সেই নিশির আদর্শ সইরা পাল্চাত্য সভ্যকাতিসমূহের নিশির উৎপত্তি হওয়ার সেই ক্র্প্রাচীন চিত্রনিশির "আদর্শনিশি" নাম হওয়া কিছু বিচিত্র সহে।

ত্ৰাবিক্টালিপি।

দাব্দিণাভ্যের লিপিডৰ প্রণেতা বুর্ণেল সাহেবের মডে প্রাবিড়ীলিপি অশোকের (ব্রামী) লিপি হইডে বডর হইলেও ইহাও সেই এক মূল লিপি বা সেমিটিক লিপি হইতে উত্তত। জাবিড়ের বট্টেলেব, নামক প্রাচীন নিপির "ই" ও "উ" এই চুইটা বর "ব" ও "ব" হইতে সামাছই পৃথক, অধচ সেমিটিক লিপির সহিত সালুক্ত আছে। ভারতের ব্যবহারোপযোগী করিয়া লইলেও অসম্পূর্ণতা রহিয়া গিয়াছে। ডাজার বৃহ্ লর বলেন বে, শক্ষিণাভ্যের ভট্ট-প্রোপু হইন্ডে বে স্থপ্রাচীন অশো-কাক্ষরের লিপি বাহির হইরাছে,উত্তরভারতীর অশোকলিপি হইডে ইহার সামান্তই পার্থকা লক্ষিত হয়। দক্ষিণভারতীয় উক্ষ লিপির 'আ' উত্তরভারতীয় 'অ'কারের মত: উত্তরভারতীয় অশোক-লিপির বাঞ্চনের পহিত আকারের চিক্ত একটা সমান্তর রেখা. কিন্ত দক্ষিণভারতীর লিপিতে একাপ সমান্তর রেখার পরিবর্তে ব্যঞ্জনের মাধার (।) এইরূপ একটা উর্জবেশা অভিত আছে। ইহাতে বোধ হয়, অতি পূর্ককাল হইতেই এই ছই লিপির কিছু কিছু পাৰ্থক্য ছিল। উক্ত পাশ্চাত্য পঞ্জিতগণ বলেন, ফিনিকীর বণিক্ষিগের সহিত দক্ষিণভারতের সাক্ষাৎ সংক ঘটিরাছিল। বাইবেলে সলোমনের মনুর 'কৃষ্ণি' নামে পরিচিত, দ্রাবিছে এখনও মরুরকে 'ভোকেই' বলে। স্থতরাং বাই-বেলোক্ত 'তৃকি' দক্ষিণভারত হইতে গিয়াছিল, ভাহাতে সন্দেহ নাট। এইরপে দক্ষিণভারতে বাণিজাকরে ফিনিকদিগের ৰদ্ধে বে লিশি প্রচারিত হয়, তাহাই উত্তরভারতে ক্রমে বিভুত হইরাছিল।

ক্রাবিড়ের সহিত ফিনিক্লিগের বহু পূর্বকাল হইতে সংক্রব
ঘটিলেও ফিনিকলিপি ক্রাবিড়েরা গ্রহণ করিরাছেন, অন্থমান
ভিন্ন তাহার প্রকৃষ্ট প্রমাণের অভাব। দ্রামারণের সমন্ন হইতে
ক্রাবিড়ে বৈদিক আর্থ্যসভ্যতা বিস্তৃত হইরাছিল, দান্দিশাত্যবাসী
হন্মান্ সর্কাল্রনলী বেদক বলিরাই বালীফির রামারণে
পরিকীর্ত্তিত হইরাছেন, তিনি রামনামান্তিত অন্থরী লইরা
লক্ষান্ন গিরাছিলেন। এরপহলে সলোমানের বহুপূর্বেব বে
দন্দিশাপথের কৃতবিভ জনপণের মধ্যে বর্ণনিপি প্রচলিত ছিল,
তাহার সন্দেহ করিবার কারণ ধেথি না। প্রাবিড়ী সভ্যভা
অতীব পুরাতন, তাহা পুরাবিদ্ মাত্রেই বীকার ক্রিলা
থাকেন। ইহাও অসম্ভব নহে বে, প্রাবিড়ী সভ্যভান্ন ফিনিক্র-

^{(&}gt;) Maxmuller's India, what can it teach us, p. 843.

⁽२) "चानमूजार कू रेव शृक्षीर चानमूजार कू गन्निवार। करतारत्वाकार जिर्देश त्राशीकवर विकृत्याः।" (१।१२)

গণ আলোকিত হটরা থাকিবেন। এ সম্বন্ধে এন্থলে চুই এক কথা বলা অপ্রাসলিক মনে করি না।

ফিনিক-(Phœnician)-গণ প্রাচীন গ্রীক ও স্বর্মাণগণের নিকট ফোনিক বা ফনিক নামে পরিচিত। ফনিক জাতিকে আদি বণিক্জাতি বলা ঘাইতে পারে। ফণিক্ ও বণিক্ শব্দে উচ্চারণগত বেশী পার্থকা নাই। সেমিটিক ক্লে লপ।

ঋথেদের বহুত্বানে 'পণি' শব্দের উল্লেখ আছে। ৬ঠ মগুলের ৩> হুক্তের ভাষ্যে সায়ণাচার্য্য 'পূণি' শব্দের 'বুণিক' অর্থ করিরাছেন। এদিকে পাণিনির উণাদিস্ত অমুসারে 'পণ'ধাত হইতে 'বণিক' শব্দ নিশায় হইয়াছে, স্নতরাং পণিক্ ও বণিক একট কথা। ঋগেদে পণি-গণ গোতুগ্ধ-ব্যবসায়ী অথচ সমৃদ্ধিশালী জাতিরপেই পরিচিত। তথ্ন, কীর ও প্রতাদি প্রস্তুত করিবার উপযোগী তাঁহাদের চতু:শৃঙ্গ ও দেশযন্ত্র উৎস' (ভারণা২৪) নামক যন্ত্র ছিল। অলিরা প্রভৃতি বেদোক্ত যাজিকগণ তাঁহাদের ঘোর শত ছিলেন; সর্বাদাই তাঁহাদের গোধন কাড়িয়া লইতেন। একারণ উভয় দলে ঘোরতর সংগ্রাম হইত। প্রিগ্র 'অক্তু' ও 'অবজ্ঞ' বলিয়া ঋষিদিগের নিকট হেয় ছিল। ঋকৃসংহিতা মনোযোগপুর্বাক পাঠ করিলে মনে হটবে যে, বৈদিক আর্য্যগণ ভারতে যথন প্রবেশ করেন, মেই সময়ে পণিগণ এথানে বসতি করিতেছিল। তৎকালে এখানকার লোক সমুদ্রযাত্রা করিত, তাহাও ঋকসংহিতা হইতে জানা যায়। পণিরা ব্যবসা বাণিক্ষ্য করিত (১।৩৩৩)। অনেকের বেশ টাকা কড়ি ছিল (৪।২৫।৭)। টাকাও ধার দিত। বৃদ্ধিমান বলিয়াও গণ্য ছিল। খু: পু: ৫ম শতানে হিরোদোতস লিখিয়াছেন, 'ফিনিক্গণই আদি বণিক বলিয়া পরিচিত ছিল। ভাহার। পুর্বের পারভোপসাগরকুলে বাস করিত'। কেহ কেহ এরপও লিখিয়াছেন যে, আফগানিস্থানেই ভাহাদের আদিবাস। * ফিনিকগণ 'কেদমস্' (Kedmus) বা প্রাচ্য বলিয়া আপনাদিগের পরিচয় দিত। গ্রীক ঐতিহাসিকগণ পুক্ষভারতকে (মগ্ধ) Prasii বা প্রাচ্য বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। এরূপ ক্তলে মনে হয় যে, পণিগণের সর্ব্বাদিম বাস কীকট বা মগধ। ঋখেদেও কীকটের গোপ্রাধান্ত বর্ণিত উৎপীড়নে ও আক্রমণে পরাম্ভ হইরা ক্রমে তাহারা কেহ দাক্ষিণাতো, কেহ বা পশ্চিম দিয়া প্রথমে আফগানিস্থান, তথা হইতে পারভোপসাগরের উপকৃষ, তথা হইতে আরব এবং আরব হটতে ভাহার৷ ভাহাদের সৌভাগাকেক ফিনিসিয়ার গিরা উপনিবেশ করিরাছিল। তৎপরে সভ্যতার লীলাস্থলী মিশরপ্রান্ত ও ভূমধ্যসাগর তাহাদের অধিকারভূক্ত হয়।

এখন কথা হইতেছে, পণিক-(ফনিক) গণ যথন ভারত হইতেই মুরোপে গিয়াছে, তথন মুরোপীয় ফনিক হইতে ভার-তীয় লিপির উৎপত্তি কিরুপে স্বীকার করা যায় ? আমাদের বিশ্বাস, সভ্যতার শীলাভূমি ভারত হইতেই অসম্পূর্ণ ফণিকলিপির উৎপত্তি ঘটিয়া থাকিবে। পণিগণের মধ্যে যাহারা দাক্ষিণাত্যে গিয়াছিল, সম্ভবতঃ তাহারাই দ্রাবিড়ীয় সভ্যতার মূল। তাহারা যজ্ঞবিদ্বেষী ছিল এবং স্থানত্যাগের সহিত তাহাদের স্বভাবপরি-বর্তুন বটিয়াছিল। সম্ভবতঃ পরবর্ত্তী কালে তাহাদেরই কোন শাখা রাক্ষসরূপে এবং তাহাদের মধ্যে অপর কোন শাখা বস্তু:ফল মূল দারা উদরপূর্ত্তি করিত বলিয়া "বানর" নামে প্রসিদ্ধলাভ করিয়া থাকিবে। অতি পূর্বাকালে তাহাদের এক শাখা মিসবে গিয়া তথাকার চিত্রলিপি ভাঙ্গিয়া ৫ হাজার বর্ষ পুর্বেষ সঙ্কেত লিপির (Hieratic) সূত্রপাত করেন। দক্ষিণভারতের স্কপ্রাচীন বট্রেলেক্ত্র লিপির 'অ', 'ই' প্রভৃতির রূপ সেই অতি প্রাচীন সক্ষেত লিপির অমুরূপ, হইতেও কতকটা দাক্ষিণাভার সংস্রব স্চিত হইতেছে।

বাণিজ্য কার্য্য নির্বাহের জক্ত সামাত্ত লেখা পড়ার দরকার। সভরাং পণিকদিগের বৈদিক বা সংস্কৃত বর্ণমালার মত বৃত্সংখ্যক বর্ণলিপির প্রয়েজন হয় নাই, এই কারণেই ফণিক-বর্ণমালায় অতি অল সংখ্যক অক্ষর দেখা যায়। ধরোষ্ঠালিপিমালার উৎপত্তিপ্রসঙ্গে এবিষয় আলোচিত হইবে। দ্রাবিড়ীয় সভ্যতা সম্দ্রপথে স্বন্ধ পাশ্চাত্য ও প্রাচ্য জনপদসমূহে বিস্কৃত হইলেও ভারতে আর্যাবৈদিকগণের প্রভাবে তাহা অন্তদিকে ধাবিত হইয়াছিল। এখানে অগত্যাদি আর্যাঞ্ধিগণ দ্রাবিড়ী সমাভের সংস্কার করিয়া তাহাকে আর্যাভাবাপর করিয়া লইয়া ছিলেন। তাই আজও অগত্যঞ্জি দ্রাবিড়ে বর্ণমালা ও ব্যাকরণ-প্রবর্ত্তক বলিয়া পরিগণিত এবং দ্রাবিড়ীলিপিতে ব্রাক্ষীলিপির আদশে বর্ণমালার সংখ্যাও বাড়িয়া গিয়াছে।

ব্রান্ধীলিপির উৎপত্তি।

অল্ বেরুণী ভারতীয় পণ্ডিতগণের মুখে গুনিয়া লিখিয়া গিয়াছেন যে, পরাশরপুত্র বেদবাাসই বর্ণলিপির উদ্ভাবদ্বিতা। জৈনদিগের মতে, ঝবভদেব দক্ষিণ হস্ত হারা ১৮ প্রকাব লিপি শিক্ষা দেন, তরুধ্যে আদি লিপির নাম ব্রাহ্মী। ভাগ-বতের মতে ঝবভদেব ভগবানের ৮ম অবতার। (১০০১০) তিনি লোক, বেদ, ব্রাহ্মণ এবং গো সকলের পরম গুরু,

^{*} Pococke's India in Greece, p. 218.

[†] किः (७ कृष्ति कीक्टियु शाय: ।" (बक् अरकाऽ)

 [&]quot;অথ শীশ্ববভাবেন ব্রাকী দক্ষিণ হল্ডেন অন্তাহণ লিগয়ো দনিতা: ,"

 (গন্ধীবন্ধতগণিরচিত করপুত্রকরক্রমকলিক) ;

তিনি সকল ধর্ম্মের মূল গুছ ব্রাহ্ম ধর্ম্ম (বেদরহন্ত) ব্রাহ্মণদর্শিত মার্গাস্থসারে শাখাদি উপার অবলন্দপূর্কক সাধারণকে উপদেশ করিরাছিলেন। (৫।৬ অ:) ব্রহ্মাবর্জে ব্রহ্মার্মিংগের সভার তিনি ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচার করিরাছিলেন। (৫।৪।১৬-১৯) রাজ্মর্মি ভরত এই ঋষভ দেবের পুত্র। তাঁহা হইডেই ভারতবর্ষের নামকরণ। তিনি ব্রহ্মাক্ষর জপ করিতেন। (৫।৮।১১)

মহাভারতে শিখিত আছে—

"ইত্যেতে চতুরো বর্ণা ঘেষাং ব্রান্ধী সরস্বতী।
বিহিতা ব্রন্ধণা পূর্বং লোভান্বজ্ঞানতাং গতাঃ॥"

(শান্তিপর্ব্ব ১৮৮/১৫)

ত্রাহ্মণ হইতেই বর্ণান্তর প্রাপ্ত চারি বর্ণেরই ত্রাহ্মী ভাষা পূর্ব্বকালে ত্রন্ধা কর্ত্তক নির্দিষ্ট হইয়াছে।

উদ্ভ প্রমাণ হইতে বেশ বুঝা যাইতেছে যে, ব্রদ্ধ শব্দের অর্থ বেদ, ব্রাদ্ধী অর্থ বৈদিকী। ঋষভদেবই সন্তবতঃ ব্রদ্ধ-বিছার জন্ম লিপিকোশল উদ্ভাবন করেন। স্থতরাং দেখা যাইতেছে যে, ব্রাদ্ধী লিপি বলিলে পুরাকালে বৈদিকী লিপিই ব্র্যাইত। বেদ যে লিপিবদ্ধ হইত, তাহা পুর্বেই প্রমাণিত হইয়াছে। ঋষভদেবই সন্তবতঃ ব্রদ্ধবিভাশিকার উপযোগী ব্রাদ্ধী লিপি প্রচার করেন, হয়ত সেই জন্মই তিনি ৮ম অংশাবতার বলিয়া পরিচিত হইয়াছেন। ব্রদ্ধাবর্তি এই লিপি প্রথম আবিদ্ধত হয় বলিয়া ব্রাদ্ধীলিপি নাম হইলেও হইতে পারে। বেদসঙ্কননকালে বেদবাাস এই লিপি ব্যবহার করিয়াছিলেন বলিয়া, তিনিও লিপিপ্রচারক বলিয়া গণ্য হইতে পারেন।

যাহা হউক, ব্রান্ধীলিপিই ভারতীয় আর্য্যগণের আদিলিপি, এই ব্রান্ধীলিপি হইতেই ভারতীয় সকল লিপির উৎপত্তি।

ভাক্তার বৃহ্লর অশোকলিপিকেই ব্রান্ধীলিপি বলিয়া ধরিয়াছেন। কিন্তু আমরা ভাষা নিঃসন্দেহে স্বীকার করিতে পারিলাম না। অশোকের সময়েই ভারতে ৬৪ প্রকার লিপি প্রচলিত
ছিল। তৎকালে পাটলিপুত্রে তাঁহার রাজধানী। এরপ স্থলে
তাঁহার অফুশাসনগুলিকে মাগধ-ব্রান্ধীলিপি বলিয়া গ্রহণ করা
যাইতে পারে। এ ছাড়া বিভিন্ন প্রদেশ হইতে যে সকল অশোকলিপি বাহির হইয়াছে, তাহার বর্ণ ও শব্দেশালনা অবিকল একরপ
নহে। বেহারের বরাবরের গিরিলিপিতে 'অনপিতম্' আবার
দান্ধিণাত্যের স্বন্ধলিপিতে 'অনপিরসতি' ও উত্তর-পশ্চিমপ্রদেশের স্বন্ধপিনিতে 'আনাপিসতি' পাঠ দৃষ্ট হয়। দন্ধিণদেশীয়
লিপিতে 'এতারিসম্' ও 'অনথেম্ব', কিন্তু উত্তরদেশীয় লিপিতে
'এতানিসম্' ও 'অনথেম্ব' এই বর্ণবিপর্যায় দেখা বায়। এ
ছাড়া দন্ধিণদেশীয় ও উত্তরদেশীয় লিপির মধ্যেও ব্যক্সনের
হত যক্ক আকার ও ইকারের প্রভেদ দেখা বায়। ইহাতে

সহক্ষেই মনে হইবে বে, দেশজেদে বেমন ভাষার সামান্ত ভেদ ছিল, বর্ণালিপিরও সেইরূপ সামান্ত ইতরবিশেব ছিল। ইহাতে মনে হয় বে, অশোকের পূর্কে ভদম্বরূপ এক প্রকার লিপি ছিল। বর্ণবোজনার পার্থকা, প্রবোগ ও রীতি অনুসারে এক ব্রাক্ষী লিপি হইতে সকল দেশীর লিপির উৎপত্তি ঘটে।

এখন পর্যান্ত ভারতে যত প্রকার লিপি আবিছত হইরাছে, তরাধ্যে কপিলবাস্ত (বর্তমান পিপ্রাবা) গ্রামের বৌদ্দিপিই नर्स्त शाहीन। यह निभिधानि श्राप्त ८६० युहेश्र्यात्मन वर्षार ২৩৫০ বর্ষের পূর্ব্বতন। এই লিপির সহিত এথানকার আশোক-লিপির অক্সরের পার্থক। নাই। স্থতরাং স্বীকার করিতে হইবে বে, আড়াই হাজার বর্ষ পুরের ব্রান্ধী লিপিরই পরিণাম মগধলিপি প্রচলিত ছিল। উক্ত লিপির পূর্ববর্ত্তী লিপি এ পর্যান্ত সাধারণে প্রচারিত না হওয়ায় গ্রন্থতত্ববিদ্গণের বিশ্বাস যে, অশোকই প্রথম অমুশাদন প্রচারের বন্দোবন্ত করেন, তৎপুর্বে এরপ অফুশাসনপ্রচারের বাবস্থা ছিল না; এরপ বিশ্বাসের মূল নাই। যতদিন পিপ্রাবার বৌদ্ধলিপি আবিষ্কৃত হয় নাই, তভদিন পুরাবিদ্গণের এরপ বিশ্বাস ছিল বটে, কিন্তু এখন তাঁহা-দের সে বিশ্বাস দূর হইয়াছে। অশোকাবদান প্রভৃতি বছতর প্রাচীন বৌদ্ধগ্রন্থ হইতে জানা যায় যে, অশোক ৮৪০০০ দর্ম-রাজিকা প্রতিষ্ঠিত করেন, কিন্তু এখন তক্মধ্যে ২৫।২৬টা মাত্র विश्वमान। এরপ ছলে মনে করিয়া দেখুন, তৎপূর্ববর্ত্তী কীর্ত্তি গুলির কি পরিণাম! সে দিনও বারাণসীর পার্যন্ত সারনাথেব ১০ হাত মৃত্তিকার নিম হইতে বহুতর প্রাচীন বৌদ্ধকীর্তি, অশোকামুশাসন ও কনিছের লিপি বাহির হইয়াছে। এরপ অমুসন্ধান চলিলে বহু নিমু ভূগর্ড হইতেও যে প্রাচীনতর লিপি বাহির হইতে না পারে, এমন নহে। শত শত বার ভক্তে প্রাকৃতিক বিপর্যানে লক লক মুপ্রাচীন ভারতীয় কীঠি ভগর্ভশালী হইলাছে, কে তাহার ইয়তা করিবে? যথন ৮৪ ছালার আশোককীর্ত্তির মধ্যে মাত্র ২০৷২৫টা পাওয়া ঘাইতেছে, তথ্ন সহজেই অহুমেয় যে, তৎপুর্কেকার কত লক্ষ লক্ষ কীর্তি বিলপ্ত। স্নতরাং পিপ্রাবার বৌদ্ধলিপির পূর্বতন কোন শিলালিপি এ পর্যান্ত বাহির হয় নাই বলিয়া এমন আমবা মনে করিব না যে, তৎপুর্কের রাজকীয় শাসনলিপির প্রচলন

ভারতীয় ধর্মণাত্রগুলি অধিকাংশই যে বৌদ্ধন্ত্যার পূর্ববর্ত্তী: তাহা আমরা স্থীকার করিতে পারি। [মৃতি দক্ষে বিস্তৃত্বিবরণ দ্রষ্টবা] যাজ্ঞবন্ধ্য, বশিষ্ঠ, ব্যাস, বৃহস্পতি, কাভ্যায়ন প্রভৃতি ধর্মণাত্রকারগণ সকলেই রাজলেখা ও রাজাম্পাসন-লিপির উল্লেখ করিয়াছেন।

মাং বি বাজ্ঞবন্ধা । নিৰ্দেশ করিয়াছেন—

"দৰা ভূমিং নিৰন্ধং বা ক্লন্ধা লেখাং ভূ কাররেং।

আগামিভজনুপতিপরিজ্ঞানীর পার্ধিবঃ ॥

পটে বা ভান্ধণট্টে বা স্বস্কুলোপরিচিন্ধিতন্।

অভিবেখ্যান্মনো বংগ্যানান্মনন্ধ মহীপতিঃ ॥

প্রতিগ্রহপরিমাণং দানজেদোপর্বশন্দ।

স্বহন্তকালসম্পারং শাসনং কাররেং হিরম্ ॥" (১।৩১৭।৯)

বাজা ভ্রমিদান বা কোন চিম্নভারী বন্দোবন্ধ করিবে ত

রাজা ভূমিদান বা কোন চিরহারী বন্দোবত করিলে তাবী
তদ্র নৃপতিগণকে জানাইবার উপবােদী লেখ্য করাইবেন। রাজা
কার্পানাদি পটে বা তাত্রফলকে নিজ বংশীর পিতৃপুক্ষবগণের ও
প্রতিগৃহীতার নাম, প্রতিগ্রহের পরিমাণ ও গ্রাম ক্ষেত্রাদি প্রদত্ত
ভূমির চতুঃসাঁমা ও পরিমাণ নির্দেশ করিবেন। উক্ত পত্রে
তাহার নিজ দত্তখত, সন তারিখ ও নিজু মুলার চিহ্নিত শাসন
করিয়া দিবেন।

গ্রীকলেথক নিরাধু স্ খুইপূর্ম ৪র্থ শতাব্দে বে কার্পাসাদি লেখ্যের উল্লেখ করিরাছেন, তাহাকেই আমরা যাক্কবক্যোক্ত পট'বলিরা মনে করিতে পারি।

অশোকলিপির পূর্বান্তন পিপ্রাবার বৌজলিপির অক্ষর পূর্ণাব্যবসম্পর। এই লিপির পূর্ণাব্যব গাঁঠিত হইতে বহু শত বর্ব অতীত হইরাছিল। বখন এর প্রপ্রাচীন লিপিতে ভারতীর সকল বাম হইতে দক্ষিণ লিপির মূল পাওয়া বাইতেছে, তখন বান্ধী লিপিকেও আমরা এরপ লিপি বা তাহার প্রাচীন রূপ বিলা গ্রহণ করিতে পারি। শ্রুতি, স্থৃতি ও স্থ্পাচীন হিন্দু-রাজগণের অমুশাসন সেই বান্ধী লিপিতেই লিপিত হইত।

ধ্বংগদে দর্শনবোগ্য মন্ত্রমূর্তি ও বর্ণের উল্লেখ আছে। মিসরে বেমন একই সময়ে চিত্রলিগি (Hieroglyphics) ও ভাহার সম্ভেড লিপি (Hieratic characters) প্রচলিড ছিল, বৈদিক আর্য্যদিগের মধ্যেও সেইরূপ মন্ত্রমূর্তিরূপ চিত্রলিগি ও বর্ণলিপি প্রচলিড ছিল। পাপিরল (Papyrus) নামক পত্রে বেমন মিসরীর আদি সন্ভেড লিপি অভিড হইড, বৈদিক কালেও সেইরূপ ভূর্জ্জপত্রে অথবা ক্ষুরন্ত্র ভারা কোন পটে লিখিবার প্রথা ছিল।

বেদাদের অন্তত্তর শিক্ষাগ্রহে বর্ণিত আছে,—'শক্তুর মতে—প্রাক্ততে এবং সংস্কৃতে বংগাক্রনে বিবাই ও চতুংবাই বর্ণ প্রসিদ্ধ। তর্মধ্যে স্বরবর্ণ একবিংশভিটা, ন্পার্ল বর্ণ অর্থাৎ ক হইতে ম পর্যান্ত বর্গীর বর্ণ পাঁচিশটা, বাদি বর্ণ অর্থাৎ ব ব র ল ল ব স হ এই আটটা এবং বম বা ক্যাবর্ণ (?) চারিটা। এতভিন্ন অন্তথ্যার, বিসর্গ, বিহ্নামূলীর, উপগ্রানীর, হংস্পৃষ্ট >কার এবং প্লাল্ড, এই সমষ্টি লইরা চতুংবাই বর্ণ।

'আয়া বৃদ্ধির সহিত মিলিরা বচনরচনবাসনার মনকে প্রেরণ করেন। তথন মন কারামিকে আহত করিতে থাকে। আমি বায়ুকে প্রেরণ করে। বারু ক্ষরদেশে বহিরা ধীরে ধীরে ধীরে বারুকে প্রেরণ করে। ঐ বর প্রাতঃলানের সাহচর্ব্যে গারুত্রী-চ্ছন্দে, মধ্যাকে কণ্ঠোখিত মধ্যম ত্রিষ্টুভূচ্দে এবং সারাক্তে অত্যুক্ত নীর্বণ্য জগতীচ্ছন্দে পরিণত হয়। বায়ু ক্রমে উথিত হইরা নীর্বদেশে অভিহত হয়, পরে তথা হইতে মুখে আসিয়া বর্ণ-সমন্ত্রি প্রকাশ করিতে থাকে। ঐ বর্ণসমন্ত্রি পাঁচ ভাগে বিভক্ত। ঘথা,—বর, কাল, হান, প্রয়ন্ধ ও অত্যুক্তান। বর্ণাভিজ্ঞগণ উক্ত পাঁচ ভাগেই বর্ণ বিভাগ নির্দেশ করিরাছেন।

'শার ত্রিবিধ—উদান্ত, অন্থান্ত ও স্থারিত। আচ্ বা স্থার বিষয়ে উক্ত তিন শার এবং হ্রম্ম, দীর্ঘ ও প্লুত ইহারাই কালত: নিয়ত বা নিয়মবন। উদান্ত স্থার হইতে নিবাদ ও গান্ধার, অন্থ-দান্ত হইতে অবভ ও ধৈবত, এবং স্থারিত হইতে বড্জ, মধ্যম এবং পঞ্চম শারের উত্তব।'

'বর্ণ-সমষ্টির উচ্চারণের স্থান আটটী, বথা—হাদর, কণ্ঠ, শির, জিহ্বামূল, দত্তসমূহ, নাসিকা, ওঠ ও তালু। 'ও' ভাব, বিবৃত্তি, শ ব স, রেফ, জিহ্বামূল ও উপগ্না, এই আটটী হইল উন্ন বর্ণের প্রসিদ্ধ গতি। 'ও' ভাবটী উকারান্তাদি পদে সংহত দেখা যার বটে, কিন্তু ঐরপ পদ স্থরান্ত বিলিয়াই বৃথিতে হইবে। এতত্তির অপরত্র যে বে পদে উন্নবর্ণের অভিন্তান্তিল, সেই সেই পদও তক্রপ স্থরান্ত বশিরাই বিজ্ঞের। হকার পঞ্চ স্থরে ও অন্তান্ত্র বর্ণসমূহে মিলিত হইলে তাহা হৃদরোৎপর আর অমিলিতাবস্থান্ত কঠেখিত বলিয়াই আনিতে হইবে।'

[•] এবন বে করবানি ধর্মণান্ত প্রচলিত দেখা বার, তরংখা বাজস্বত্য-সংহিতার সহিত বানবধন্ম হত্যের সম্পূর্ণ ঐকা। এই ভারণ পাকাতা সংস্থাতক পাত্তসপ প্রচলিত ধর্মণান্ত পির কথা বাজস্বতা স্থাতিকে অতি প্রাচীন বনিরা মনে করেন। মন্ত্রনাম বিভাবে সকল রোক রামারণ ও নহাভারতে তত্ত হুইরাছে, তাহার অনেক রোক আমরা বাজস্বতাস্থাতিকে পাইরাছি। একণ হলে বাজস্বতা ধর্মণান্তকে বৃদ্ধদেশের বহু পূর্ববর্তী বলিরা প্রহণ করিতে আর আপত্তি থাকিকেছে না।

 [&]quot;ত্রিবট্টশত্রুংকটিব। বর্ণাঃ শক্তুবতে সতাঃ।
প্রাকৃত্রে সংস্কৃতে চাপি বরং থ্রোক্তা বরকুবা ।
বর্ষা বিপেডিরেকশ্চ শর্লানাং গঞ্চবিংলতিঃ ।
বাবরণ্ড ক্বডা ক্টো চবারণ্ড বসাঃ ক্বডাঃ ।
অকুবারো বিদর্গক × ক × পৌ চাপি পরাত্রিকেট।
দুংশ্টেশ্ডেডি বিজেরো ১কারঃ মৃত্ এব চ ।
আছা বুছাা স্বেড)ার্থারবো বৃত্তে বিবক্ষরা ।
বরঃ কারাগ্রিবাহিতি স প্রেরবিভ বারণ্ডম্ব ।

প্রথমতঃ ৬৩ বা ৬৪টা বর্ণ বেলাকে স্থিয় হইলে বেনে ভাহার প্রয়োগ থাকিলেও লৌকিক ভাবার অনেকওলি অকর পরিত্যক্ত হয়। ললিভবিত্তর হইতে জানিতে পারি বে, বৃহদেব ৪৫টা মাত্র বর্ণনিপি অভ্যাস করিয়ছিলেন।

ब्या - म, मा है, में, छ, छ, व, के, ७, छ, मः मा।

क्षण्यका उद्यक्तिका

টিঠড়চণ। তথ্দধন।

नक्ष्डमः। रहतः

न व म इ क । (निर्माठवित्तक > व्यशाह)

আক্রেরের বিষর, উক্ত বর্ণমালার মধ্যে উত্তর ভারতে প্রচলিত অ শ্লু > ১ এবং দান্দিণাতো প্রচলিত > ১ ও ল মোট এই ৪টা বর্ণ এককালেই নাই। অথচ ললিতবিস্তবের গাথা মধ্যে ১. ল বাতীত অপর চারিটী অক্তর বাবছত হইনাছে।

ললিতবিত্তরে অকারাদি ককারান্ত উক্ত ৪৫টা অক্রমাড়ক। বলিরা গৃহীত হইমাছে। তত্ত্রে ৫০টা মাড়কা ও ৪২টা ভূতলিপি বলিরা নির্দিষ্ট। যথা—

"কুওলী ভূতনপাণামদশ্ৰিরমূপেয়্বী। ত্রিধামজননী দেবী শক্ৰজাত্বরূপিণী॥ গুণিতা সর্ক্যাত্রেণ কুওলী পরদেবতা।" (সারদাতিলক) "ছিচ্ডারিংশদিতি ভূতলিপিমরমরী,পঞ্চাশদিতি মাতৃকালিশিঃ।" বাহাহউক, উত্তর্জারতে বিভিন্ন স্থানে ভিন্ন ভিন্ন শতাংক বে

মারতত্ত রাস চরন্ মকাং জনরতি বরষ্। প্রাতঃসৰনবোগং তং ছন্দোগায়ত্রমাজিতম্ ॥ कर्छ माधान्तिनयूगः मधामः दिवहे छ। यूगम् । তারং ভার্জীয়সবদং শীর্ষণ্যং জাগতাসুগদ্ ॥ लाबीर्ल। मुक्कां किहरका वक्तु मालना मालकः। वर्गाम् अमन्तरक एकवाः विकाशः श्रेकथा खुकः । वर्षः कामणः हानार ध्वकृष्टिमानणः। ইতি বৰ্ণবিদঃ প্ৰাৰ্শিপুৰং ভরিবোৰত: । উদান্তকান্ত্ৰ ব্যৱস্থ ব্যৱস্থা । বুৰো দীৰ্ঘ: গুত ইতি কলতো নিয়ন। অপি । **छेगाञ्च निरामभक्षात्रावनुषाख क्ष्यक्षरेथवरको ।** ক্রিতপ্রক্রা ছেতে বড় অস্থানপঞ্সা:। व्यक्ति श्रामानि वर्गामानुतःकर्शः निवत्रवर्गा । জিকাৰুলক বভাশ্চ নালিকোটো চ ভালু চ। ওভাৰত বিবৃত্তিত শৰসা য়েক এব চ। জিকাৰ্সৰূপদ্ম চ পতিরট্রিখোদণ: ঃ बाह्याकावश्चमकावाक्ष्मवाः भाव । ৰৱাজ্য তাবৃশং বিলাগ্যদ্ভবাজমুদ্ধণ:। হকারং পঞ্জিবুজনভরাভিত সংযুত্_য । क्षेत्रकः एः विकानीतार कर्णमावत्रमक, छन् ।" (পाविनीत्र निका) প্রকার নিশি প্রচলিত ছিল, অপার পৃঠার ভাষার ভালিক। বেওরা হইল। বেখা বার, অলোকনিশি হইভেই ক্রমশা ভারতীয় সকল নিশি পৃষ্টিলাত করিয়াছে।

প্রজ্ঞাপনাপ্ত নামক জৈনবিগের উপার্চে দিবিও আছে—
"লেশং অন্ধ নগহাও ভাবাও ভানেত্তি অস্ন ব নই বন্ধী বিপৰ্ভই।"
অর্থাৎ আন্ধানগদী ভাবা বাহাতে প্রকাশ করা বার, ভাহাই
ভানীদিশি।

পূর্বেট বলিয়াছি যে অলোকের পূর্বে রাজী প্রভৃতি ১৮টা লিপি প্রচলিত ছিল, তথমও মগবলিপি, অল্পলিপি প্রভৃতির বিভিন্ন নামকরণ হর নাই। সে নমর জৈদ ধর্মণাগ্রন্তনিও ক্সপ্রাচীন রাজীলিপিতেই লিখিত হইত, তাই বোধ হর পাশ্চাতা প্রস্তুতত্ত্ববিদ্যাণ মগধানি স্থানে প্রচারিত অলোক্সিপিকেও রাজী-লিপি বলিয়াই গ্রহণ করিয়াকেন।

খন্তীয় ৫ম শতাবে সম্বলিত জৈনধৰ্মণাত্ৰ নন্দীপুত্ৰে ৩৬ প্রকার নিশির উল্লেখ পাওয়া বার। বথা---ছংসনিশি >, ভূত-निनि २, यक्तिनि ७, ब्राक्तीनिनि ४, केक्टीनिनि ४, यायमी-निभि ७, फूक्कीनिभि १, कीत्रीनिभि ४, जाविफीनिभि २, रेनक्वी-লিপি ১০, মালবীলিপি ১১, নড়ীলিপি ১২: নাগরীলিপি ১৩, পারদীনিপি ১৪, লাটালিপি ১৫, অনিমিন্তলিপি ১৬, চাণক্টী-निनि ১৭, योनस्वी ১৮। मनीप्रजंत्र मण्ड अहे ১৮টা निनि **अवछान्द्वत निक्न रुख अनुनिष्ठ रुष । এ हांड्रा क्रष्ट ३৮ क्ष**रात निभिन्न উत्तर्थ मुद्दे रहा। यथा--नांगि >>, कोणी २०, खारनी २>, कानकी २२, अकती २०, त्नात्रकी २८, मत्रकी २८, व्यावनी २७, बुजामानी २१, मांगवी २४, रेमरहंगी २२, हांकी ७०, कींबी ७১, ह्बीती ७२, भत्रजीती ७७, मनी ७८, मानदी ०६ अ महारवाशी ७७। ননীপুত্রের রচনাকালে এই 🦇 প্রকার লিপি ভারতে প্রচলিত ছিল। নন্দীপুরের মতে দেশবিশেষের নামান্ত্রসারে ঐ সকল লিশি ও ভাষার মামকরণ হইরাছে। পুটার ১২শ শতালে শেষ-কৃষ্ণ ৬টা দুল প্রাকৃত ও ২৭টা অপ্রংশ ভাষার উল্লেখ করিয়া-ছেন। ঐ সকল প্রাক্তত ভাবার গুরি তৎকালে বিভিন্ন লিপিও প্রচলিত ছিল। শেষ্ককের প্রাক্নতচিক্রিকা হইতে এইস্প নাম পাই--মহারাট্রী ১, অবস্তী ২,সৌরসেনী ৩, অর্জমাগধী ৪, বাজীকী ৫, মাগধী ৬, আচগু ৭,লাট ৮, বৈদর্ভী ৯, উপদাগরী ১০, নাগরী वासंत्री >२, जावका >७, शांकान >४, ठांक >४, मानदी >७, देकका ১৭, त्योष ১৮, के<u>स</u> ১৯, देवच २०, शान्हाका २३, गाखा २२, क्लेंचन २७, रेतरहन २६, क्लिना २६, व्याहा २७, কর্ণাটা ২৭, কাঞ্চা ২৮, ত্রাবিড় ২৯, গৌর্ক্সর ৩০, আজীর ৩১. मधारमनीय ७२ छ देवणांग ७०।

[मिवमानंत्र नत्म विकृष्ठ विवेत्रण मिथ ।]

ভারতবর্ষে এইরূপে নানা নিপি প্রচনিত থাকিলেও সকল নিপির ঠিক রূপ নির্দেশ করা কঠিন। ভারতের বিভিন্ন রাজ-বংশের রাজস্বকালে কোন্ বংশের ব্যবহৃত নিপি কতদ্র প্রচনিত ছিল, সংক্ষেপে ভাহারই পরিচর দেওয়া যাইতেছে।

भागव आकी वा भोधानिशि !

মৌর্য-সম্রাট্ অশোক যে ব্রাক্ষী লিপি ব্যবহার করিতেন, হিমালরের তরাই হইডে সিংহল পর্যান্ত সেই লিপির নিদর্শন বাহির হইয়াছে। মহাবংশ হইতেও আমরা জানিতে পারি যে, অশোকের এক পুত্র ও এক কছা সিংহলে বৌদ্ধর্ম্ম প্রচার করিতে গিরাছিলেন। তাঁহাদের সহিত মাগধ ব্রাক্ষীলিপিও গিরাছিল, তাহারই নিদশন সিংহলে খৃষ্টপূর্ব্ব ১ম শতাকে উৎকীর্ণ মভয়গামিনীর শিলালিপিতে পাওয়া গিয়াছে। কেবল সিংহল বলি কেন, চীনসমুদ্রের তীরবন্তী কংঘান্ত ও অয়ম রাজ্য হইতেও ব্রান্ধী লিপির বিকাশ দৃষ্ট হয়। পূর্ব্বেই লিথিয়াছি যে, দাক্ষিণাতের কৃষ্ণাকলায় ভট্টপ্রোল্ হইতে যে আবিজ্-ব্রান্ধীলিপি আবিদ্ধৃত হইয়াছে, তাহার যুক্তস্বরের সামান্ত প্রভেদ ছাড়া অপরাপর বর্ণের সহিত সেরূপ পর্যাব্দ নাই। স্থানভেদে লিপিকরের হাতে ক্রমে ক্রমে পৃথক্ হইয়া পড়িতেছিল।

লিপ্রাবার খুইপূর্ব্ব ৬ ই শতালীর লিপি ও তংপরবর্ত্তী খুই-পূর্ব্ব ১৫০ অলে উৎকীর্ণ নানাঘাটের আজুলিপি অর্থাৎ ঐ সমরের আর্যাবর্ত্তের সমূদয় লিপি প্রায় একই রূপ;—ইহাতে বেশ দেখা যাইতেছে যে, ভারতবর্ষে প্রায় ৫০০ বর্ষ কাল একই লিপি সমভাবে চলিয়াছিল, পিপ্রাবার পূর্ণাবয়ব লিপি হইতে মনে হইবে বে, তংপূর্ব্বেও অস্ততঃ ৫০০ বর্ষ কাল অর্থাৎ বর্ত্তমান সময় হইতে প্রায় ৩০০০ বর্ষ ভারতে সেই এক প্রকার রাজী-লিপি প্রচলিত থাকাই সম্ভবপর। যাথা হউক, আবিদ্ধত শিলা-লিপিসমূহ আলোচনা করিয়া মনে ইইতেছে, প্রাচীন লিছেবিবংশ, নন্দবংশ, মৌর্যাবংশ, চেতবংশ এবং শুক্ষমিত্রবংশের রাজত্বকালে প্রায় এক প্রকার রাজী লিপিই প্রচলিত ছিল।

তৎপরে ভারতের উত্তরপশ্চিম সীমায় শকাধিপত্য বিস্তারের সহিত ব্রাহ্মী লিপির আকার সামান্ত সামান্ত পরিবর্তন হইতে থাকে; সেই ব্রাহ্মীলিপি ইতিহাসে শকলিপি নামে গণ্য হইবার যোগ্য। মথুরা, স্থরাব্ধ প্রভৃতি স্থান হইতে শকলিপি আবিষ্কৃত হর্মছে। এই সময়ে দাকিপাত্যে সাতবাহন-রাজবংশের যে সকল লিপি পাওয়া গিয়াছে, তাংা মৌথ্য বা শকলিপির সংস্কার বিশ্বাই মনে কার। নাসিকে কাদদ, জ্বার ও জগ্যাপেটে জন্মুভূত্য এবং কাকী প্রভৃতি স্থানে পল্লব রাজবংশের যে সকল লিপি আবিষ্কৃত হইয়াছে, শকলিপির অক্রের সহিত ঐ সকল লিপিব

উত্তর-ভারতীয় নাগরী ও গৌড়লিপি উৎপত্তি হইল, অপর পৃষ্ঠায় ভারতীয় ত্রান্ধী লিপির তালিকা দেখিলেই জানা যাইবে।

দাকিণাতালিপি।

বিদ্যান্তির দক্ষিণে গুজরাত, কাঠিয়াবাড় পর্যান্ত যে লিপি প্রচলিত, তাহাকেই স্থামরা দাক্ষিণাত্য লিপি বলিয়া গ্রহণ করিলাম। পূর্বে যে জাবিড়ী ব্রান্ধী লিপির কথা লিপিয়াছি, ভাহাই সমস্ত দাক্ষিণাতা লিপির জননী।

ক্ষা জেলার ভটিপোলু হইতে আবিষ্ণত দ্রাবিড়ী রান্ধীর কথা পূর্বে জানাইরাছি, আগাবর্তে গুপ্ত ও চদহবর্তী বিভিন্ন বংশের লিপির জ্ঞান্ন দান্দিণাত্যেও সেই দ্রাবিড়ী লিপি হইতে তথাকার আন্ত্র, শক, গুপ্ত, বলভী, গুরুত্বর, বাকাটক, কদম, প্রাচ্য ও প্রতীচ্চ চালুকা, চের, চোল, পল্লব, গঙ্গা, রাষ্ট্রকৃট, কাক-তীম, বাণ, পাণ্ডা প্রভৃতি রাজবংশের বিভিন্ন সময়ে ব্যবহৃত লিপিসমূহ ক্রমশং পরিপুষ্ট হইয়াছে।

জুনাগড়, গিরুনার প্রভৃতি স্থানের খুষ্টায় ১ম হইতে ৩য় শতানীর শকক্ষত্রপ লিপি, নাসিক, কুড়, জুন্নব, কণেরি প্রভৃতি ম্বান হইতে খুষ্টীয় ১ম হইতে ৩য় শতাকীয় সাতবাহন-লিপি, কৃষ্ণা জেলার জগয়পেট হইতে খুষ্টায় ৩য় শতাবে উৎকীর্ণ অলম্ভ ইকাকুরাজ 'সিরিবীর পুরিসদত্তে'র লিপি, কাঞ্চীপুর হইতে খুষ্টার ৪থ শতাব্দে উৎকীর্ণ পল্লবলিপি, সাঞ্চী ও মন্দ্রসোর হইতে খুষ্টার ৫ম ও ষষ্ঠ শতাব্দে প্রচলিত গুপ্তলিপি, স্থবাই ও গুজরাত হইতে খন্তীয় ৬৯ হইতে ৮ম শতাবে উৎকীর্ণ বলভী-রাজবংশের লিপি, ৬৪ ও ৮ম শতার্কীর মধ্যে উৎকীর্ণ গুর্জার-রাছবংশের লিপি, মধ্যপ্রদেশে ৫ম ও ষষ্ঠ শতাকে উৎকীর্ণ, বাকাটক রাজবংশের লিপি, নাসিক জেলার খুষ্টায় ৫ম শতানে উৎকীর্ণ কদম্বাজগণের লিপি, কর্ণাট ও মহারাষ্ট্র হইতে খুষ্টায় ৬৪ হইতে ৮ম শতানের প্রতীচ্য চালকা রাজবংশের লিপি. গোদাবরী ও রুষ্ণা জেলা হইতে খুষ্টীয় ৭ম শতাব্দের প্রাচ্য চালকা রাজগণের শিপি, কাঞ্চী ও তাহার নিকটবন্তী স্থান হইতে খুষ্টীয় এম হইতে ৭ম শতাব্দীর প্রব্রাজগণের বিপি, মহিস্তুর হইতে খুষ্টার ৭ম শতানীর গঙ্গ (দক্ষিণশাথা) ও চেররাভগণের লিপি. ওজরাত ও কর্ণাট হইতে আবিষ্কৃত রাষ্ট্রকটলিপি, কলিঙ্গের খ্টায় ১ম হইতে ১২শ শতাবে উৎকীর্ণ গ্রন্থরাজগণের লিপি উল্লেখযোগ্য। ঐ সকল বিভিন্ন লিপি আলোচনা করিলে আমরা বেশ ব্রিতে পারি কলিলের গঙ্গলিপি হইতে বর্তুমান উড়িয়া, চালুকালিপি হইতে বর্তমান তেলগু ও কণাড়ী এবং চের ও চোলালপি হইতে তামিল লিপি গঠিত হইয়াছে।

দাক্ষিণাত্যের লিণিতস্বপ্রণেতা ডাক্তার বুর্ণেল, দাক্ষিণাত্যের লিপিমালাকে প্রধানতঃ চারিভাগে বিভক্ত করিয়াছেন— > তেলগু কণাড়ী, থ গ্রন্থতামিল, ও বট্টেলেন্ডু, ও ৪ দক্ষিণীনাগরী। বেঙ্গী, প্রাচ্য ও প্রতীচ্চালুকা ও যাদবলিপি তেলগু কণাড়ীর সম্বর্গত, ঐ সকল লিপি হইতেই প্রাচীন ও আধুনিক তেলগু ও কণাড়ী লিপির পৃষ্টি। চের ও চোললিপি গ্রন্থতামিলের সম্বর্গত অর্থাৎ ঐ হুই প্রাচীন লিপি হইতেই প্রাচীন ও আধুনিক তামিল-গ্রন্থ ও তুলু-মল্যাল লিপির উৎপত্তি।

.পুর্বেই বলিয়াছি যে, প্রাচীন তামিল লিপির পূর্বে বট্টেলেজু নামক একপ্রকার বাঁটী দ্রাবিড়লিপির উৎপত্তি হইয়া অর দিন হইল অপ্রচলিত হইয়া পড়িয়াছে।

বট্রেলেন্ত্র।

বট্রেলেন্ত্র অর্থাৎ বর্জুললিপি, এই লিপি গোল গোল হাতের মত বলিয়া এই নাম হইয়া থাকিবে। কত পুর্কের এই লিপির উৎপত্তি, তাহা নিশ্চয় করা এক প্রকার অসম্ভব।

ডাজ্ঞার বৃণেল সাহেবের মতে, এই লিপি অপোকলিপি হইতে সমুদ্রত নহে। অপোকলিপির সহিত ইহার ধন্তাত্মক সাদৃশ্র নাই। সংস্কৃত বৈয়াকরণদিগের দাক্ষিণাত্যে আগমনের পূর্ব্বে এই লিপিই জাবিড়লিপিরপে প্রচলিত ছিল। তাহার মতে, অপোকের মোর্যালিপির ন্তায় এই স্প্রাচীন লিপিও সেমিটিক লিপি হইতে উছুত। লেনরমণ্ট বটেলেজু ও সাসনীয় (পহলবী) লিপি মিলাইয়া উভয় অক্ষরে যথেষ্ট সাদৃশ্র বাহির করিয়াছেন। কিন্তু বট্টেলেজু বছকাল হইতে রাক্ষীজ্রাবিড়ী-লিপির প্রভাবে ক্রমেই অচল হইতে থাকায় ইহার প্রাচীনতম রূপ বাহির হইতেছে না।

পূর্বেই বলিয়াছি, উত্তরভারত হইতে পণিকগণের এক শাণা দাক্ষিণাত্যে গিয়া পড়িয়াছিল, তাহারাই আদি বটেলেভ লিপি ব্যবহার করিত, তাহারা সেই অতি প্রাচীনকালে কাহারও নিকট হইতে লিপি গ্রহণ করে নাই। মিসবে অতিপ্রাচীন সক্ষেত (Hieranc) লিপিতে অকার ও ইকার লিপি উত্তারণের যে সক্ষেত আছে, তাহার সহিত বটেলেভ রুর সৌসাক্ত রহির্মাছে। এরূপ হলে আমরা মনে করিতে পারি, দ্রাবিভ্রামী পণিকদিগের বাণিজালিপি স্থদূর মিসবে প্রচারিত হইয়া সক্ষেত্রিকার বারণ করিয়াছে। ডাক্তার টেলর দেখাইয়াছেন যে সেই সক্ষেতলিপিই সিলোন, মোআব, অরমা, সেবায়, গোক্তান প্রভৃতি স্থানীয় ফিনিক বা সেমিটিক লিপির জননী। স্থতরাং দ্রাবিভ্রের আদি লিপিকেও আমরা স্থ্রাচীন বছ পাশ্চাত্য-লিপির মূল বলিয়া গণা করিতে পারি।

খুষ্টার ৮ম শতাব্দের প্রারম্ভে দ্রাবিড়ের হিন্দ্রাজগণ সিরীয়-দিগকে যে শাসন দান করেন, তাহাতেও বটেলেত, অকর পাওরা গিরাছে। ঐ সমরেরই অরকাল পরে (খুইর ১ম শতাব্দে) চোলরান্ধগণ মছরা অধিকার করিয়া ভামিল ক্ষকর চালাইতে থাকেন, এই সময় হইতেই বট্টেলেন্তু বিরলপ্রচার হইল, অবশেবে খুটার ১৫ শতাব্দে দ্রাবিত্ব হইতে এই লিপি একবারে উঠিয়া গেল। কেবল মলবার উপকূলে খুটার ১৭শ শতাব্দী পর্যান্ত হিন্দুগণ ঐ লিপি বাবহার করিতেন। এই সময়ে বট্টেলেন্ত্র ক্ষরই একটু বিক্বত করিয়া কোলেলেন্ত্র নাম ধারণ করে, হিন্দুরান্ধগণ দানপত্রে ঐ লিপি চালাইয়া গিয়াছেন। তেলি-চেরি ও নিকটবর্ত্তী শ্বীপবাসী মারিলাগণ সে দিন পর্যান্ত বট্টেলেন্ড্র ক্ষকরেই লেথাপড়া করিত, সম্প্রতি ধর্মের গোড়ামীতে তাহারা ঐ লিপি ছাড়িয়া আরবী ক্ষকর ব্যবহার করিতেছে।

मणी मानती।

माक्किगारका य नागती निशि अहिनक इत्र, काहा नभी-নাগরী নামে প্রসিদ্ধ। ১০৩১ খুষ্টাব্দে অলবীক্ষণী যে 'সিদ্ধমাতৃকা' লিপির উল্লেখ করিয়াছেন, ঐ সময়ে এই লিপি বারাণসী, মধ্যদেশ ও কাশ্মীরে প্রচলিত ছিল, তাহাই খুষ্টীয় ১১শ শতাপে দাকিণাতো আনীত হয়। তাই আমরা পুটীয় ১১শ শতাব্দীর পুর্বে দান্দিণাত্যে সিদ্ধমাতৃকার ব্যবহার দেখি না, সমস্তই ১০ম শতাব্দীর পরবর্ত্তী। কেবল মহাবলিপুরের শালবন্কপ্লং নামক গ্রামের নিকটবর্ত্তী অভিরণচণ্ডেশ্বরের মন্দিরে দাক্ষিণাভা-निभिन्न महिक नागतीनिभि मुद्दे हम्, এই निभिशानि माकिनाका-বাসীর জন্ম নহে, উত্তরভারতীয় তীর্থ্যাত্রীর উদ্দেশ্রে উৎকীর্ণ हरेग्राहिल, তाहा (प्रशिटलहे त्वांध हम। ১৩১**) श**हीरम प्राक्ति-ণাত্যে মুসলমান অভিযান ঘটিলে এবং সংস্কৃতচৰ্চ্চার লীলাভূমি বিজয়নগর মুসলমানকবলিত হইলে সংস্কৃত ও দেশীয় সাহিত্যের অধ:পভনের সহিত এথানে নাগরীলিপির প্রচারও বিরল হইয়া পড়িল। এ সময়ের পর দান্দিণাত্যে যে সকল নাগরীলিপি (হলকগ্ধড়) পুথি ও শাসনাদি পাওয়া যায়, তাহাতে লিপি-পদ্ধতির বিক্লতি ও অধোগতিই দৃষ্ট হয়।

মরাঠার। তঞ্জার অধিকার করিয়া এথানে যে নাগরী প্রচলিত করেন, তাহা 'বালবোদ' নামে সাধারণতঃ পরিচিত। এছলিপি।

দাদিণাতো এক সময়ে ধর্মশার লিণিতে যে লিপি ব্যবহাত হইত, তাহাই "গ্রন্থ" নামে পরিচিত। এই গ্রন্থলিপি আবার ছই প্রকার, তয়পো তঞ্জোরপ্রদেশের রান্ধণেরা যে লিপি ব্যবহার করেন, তাহা কতকটা চতুরল্ল এবং অরক্ত ও মাল্রাজের নিকটবত্তা লৈনেরা যে লিপি ব্যবহার করেন, তাহা কতকটা বস্তুলাকার। দান্দিণাত্যে রান্ধণদিগের অধিকাংশ ধর্মগ্রন্থই উক্ত গ্রন্থলিপতে লিখিত। দান্দিণাত্যের পশ্চিমাংশে তুলু-মলরালম্ নামে আর একপ্রকার গ্রন্থলিপি বছকাল হইতে প্রচলিত

আঁছে; এই নিপি কেবল সংশ্বত নিৰিবার কালেই ব্যবহৃত চুটুতে দেখা বাব।

গ্রছদিপি হইতে আবার গ্রহতারিল ভিন্ন। গ্রহতারিলের ব্যবহার ক্লঞ্জা ও গোলাবরীর বরীপাংশেই অধিকাংশ প্রচলিত।

ব্ৰাক্ষী হইতে ভাত ভারতের বর্ত্তনান নিশিসবৃহ।

বর্ত্তমান ভারতবর্ষে নির্মাণিখিত লিপিখালি প্রচলিত, বর্ণাস্থক্রমে তাহাদের নাম লেখা ইইল—

অরোরা (সিদ্বপ্রদেশে), আসামী, উড়িরা, ওঝা (বহারের ব্রাহ্মণ মধ্যে), কণাড়ী, করাড়ী, কার্মী, গুজরাড়ী, গুরুম্বী (পল্লাবে নিবলিগের মধ্যে), গ্রন্থ (তামিল ব্রাহ্মণদিগের মধ্যে), তামিল, তিব্বত, তুলু (মললুরে), তেলগু, থল (পল্লাবের দেরালাতে), নোগ্রী (কান্মীরে), দেবনাগরী, নিমারী (মধ্য প্রদেশে), নেপালী, পরাচী (তেরার), পাহাড়ী (কুমাউন ও গড়বালে), বণিরা (শির্সা ও হিলারে), বালালা, বহুবাপুরী, বিশাতি, বড়িরা, মণিপুরী, মলরালম্, মরাঠা, মারবাড়ী, মূলতানী, মেধিলী, মোড়ী, রোরী পল্লাবে), লামাবাসী, লুঙী (শিরালকোটে) সরাজী বা প্রাবহী (পশ্চিমা বণিরার মধ্যে), সারিকা (পল্লাবের দেরালাতে), সইনী (উত্তরপশ্চিমা তৃত্যদিগের মধ্যে), সিংহলী, প্রাম, লেরস, কাবোল, পেগুরান এবং ববরীণ ও ফিলিপাইনেও নানা প্রকার লিপি প্রচলিত আছে।

থরোঞ্জ লিশি।

রুরোলীর পঞ্জিগণ ছির করিরাছেন বে, থরোঞ্জী লিপি ফিনিকলিপির অরমীর শাখা চইতে বাহির হইরাছে। পঞ্জিতবর বৃহুলর বেধাইরাছেম---

 সেমিটিক দিশি হইডে উড়ুড, ভাছা প্রমাণ করিছে চেষ্টা করিরাছেন।

পূৰ্ববৰ্ত্তী পাশ্চাত্য ঐতিহাসিকগণ এই খরোটীলিপিকে কেহ ৰজে া-পালী (Bactro-Pali) বা ইজো পালী, কেই বা গাৰারী নামে উল্লেখ করিয়াছেন। কিন্তু সমবায়াল ও ললিতবিক্তরে গন্ধর্ব বা গদারী লিপির পুথক উল্লেখ থাকায় এবং পালীলিপি ব্ৰান্ধী হইতে বাহির হওরার খরোষ্ঠাকে একটা স্বতন্ত্র প্রাচীন লিপি বলিরাই মনে করি। উত্তরপশ্চিমসীমান্তে শাহবাৰগড়ী ও মানদেরা প্রস্তৃতি স্থানে সম্রাট অশোকের যে मिकन इहेट वाममुबी अधार विभागानित वाहित इहेताएह. ভাহাই থরোটা বলিয়া পরিচিত। আশ্চর্যোর বিষয় হিন্দুকুশের উত্তরে এমন কি বাল্থে (বক্তিয়া)ও এই শিপির কোন সন্ধান পাওয়া যায় নাই। প্রাচীন গন্ধাররাক্তা প্রচলিত থাকাতেই কনিংহাম 'গন্ধার-লিপি' নাম দিয়াছেন। কিন্তু বৃহ্লর, রাপদোন প্রভৃতি ইদানীং পাশ্চাভ্য পুরাবিদ্গণ সকলেই থরোটা বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন। কিন্তু আমরা কনিংহামের স্থায় উহাকে "গন্ধার" বা ললিতবিন্তরোক্ত 'গন্ধর্বলিপি' বলিভে প্রস্তে। আর্যাবর্তে ব্রান্ধীলিপি হইতে ষেমন মগধ, অঞ্ বন প্রভৃতি ভারতীয় লিপিসমূহের পুষ্টি ঘটিরাছে, সেইরূপ প্রাচীন থরোষ্ট্র হইকত গন্ধর্কলিপি, কিরুরলিপি, দর্দলিপি, শকারিলিপি, থাক্তলিপি, ছুণলিপি, যক্ষলিপি, অস্তর (Assyrian) লিপি, অর্থমু লিপি (Cuneiform), উত্তর্কুক ও উত্তর্মদ্র (North Median) প্রভৃতি স্থাচীন লিপিসমূহ পরিপূর্ট ভইয়াছিল। খরোষ্ট্রকে এত প্রাচীন লিপি বলিবার কারণ কি ?

প্রস্তত্ত্ববিদ্ কনিংহাম্ নিধিয়াছেন,—পারসিকদিগের জাদি-ধর্মগ্রছ অবতার মন্ত্র বা গাথাগুলি জরপুত্র (Zoroaster) কর্তৃক সভলিত। দারমবুস্ বিত্তাম্পের (Darius Hystarpes) সমর ভাষাই প্রচলিত কোন নিপিতে নিপিবছ ক্টরাছিল। সেই নিপি জরপুত্রের নামান্ত্রসারে 'ধরোঞ্জী' নাম প্রাপ্ত হইরা থাকিবে। এই নিপি দক্ষিণ হইতে বামধিকে অর্থাৎ বিপর্যস্তক্ষমে লিখিত হয়।

প্রায়তথবিদ্ কনিংহাম্ গাররবুসের সময় থরোষ্ট্রীর হৃষ্টি লিখিলেও তাহা আমরা ঠিক বলি না; কারণ লিপিতত্ববিদ্ বৃহ্ লর্ নিজেই বখন বীকার করিরাছেন বে, অরমীর পোপিরি হইতেও থরোষ্ট্রীর কোন কোন বর্ণ প্রাচীন, তথন পারস্যাপতি বরার্সের সমর পুটজন্মের হর শভাক্ষ পূর্বে ধরোষ্ট্রীর উৎপত্তি, ভাহা কিরপে বলিব ?

আর্থ ঐতিহাসিক মন্ত্রী বুটার ১০ম শতাকে লিখিরা

গিয়াছেন বে, জরপুত্র প্রচারিত জন্দ অবস্তা ১২০০০ গোচর্বে তাহারই উত্তাবিত বর্ণনিপিতে লিপিবছ হইরাছিল।

ভারতীর ভবিবাপুরাণ ও পারদিক আদিধর্ম পুত্তক অবতা পাঠেও আনা বার যে সৌরদিগের মধ্যে অগ্নিপুরাপ্রবর্তক জরশন্ত বা লরপুর 'মগ' 'মগুন' বা মধুন' নামে গাড় ছিলেন। খঃ পৃঃ ধম শভাদে প্রদিদ্ধ প্রীক ঐতিহাদিক হেরোগোতদ্ গিথিরাছেন বে, শাক্দীপীরগণের মধ্যে আরিজ্জা (Ariaspa) (আর্জর্ব) শাখা বহুপুর্ককালে প্রবন্দ হইরা অস্ত্রীর, মিণীর প্রস্থৃতি প্রাচীন রাজ্য অথিকার করিরাছিল। ভবিবাপুরাণমতে গুলিরা নামে মিহিরগোত্রে একজন থবি ছিলেন।' তাঁহারই কজার গর্তে জরণত্রের (বা জরপুরের) জন্ম। তাঁহার জন্ম ঠিক বৈধরণে না হওরার তিনি ও তাঁহার বংশধরগণ ভবিব্যপুরাণমতে 'অগ্রিজাত্য' এবং তাঁহার পিতৃকুল অজ্ঞাত থাকার হেরোদোতান্ তাঁহার বংশধরগণকে মাতৃকুল ধরিরা আরিজ্ঞান বা আর্জর্ব (অর্থাৎ গুলিবার গোত্রাপত্য) বিলরাই প্রকাশ করিরাছেন।

লিদিয়ার প্রানিক গ্রীক্ পণ্ডিত জানথোদ্ ৪৭০ খঃ পূর্ব্বাব্দে লিথিয়াছেন বে, জরপুর টুরযুক্ষের প্রায় ৬০০ বর্ষ পূর্ব্বে আবিস্কৃতি হইরাছিলেন। আরিউটল্ ও ইউডোক্সাসের মতে, প্লেটার ৬০০ বর্ষ পূর্ব্বে জরপুরের অভ্যদর। আবার প্রানিক ঐতিহানিক প্রিনি টুরযুক্ষের ৩০০০ বর্ষ পূর্বে জরপুরের আবিতাবি শীকার করিরাছেন। এ দিকে বাবিলোনের ঐতিহানিক বেয়োসদ্ দেখাইয়াছেন বে, জরপুর একসময় বাবিলোনের অধীশর ছিলেন। তাঁহার বংশধরগণ এখানে ২২০০ খঃ পৃঃ হইতে ২০০০ খঃ পূর্বাক্ষ পর্যান্ত আধিপতা করিয়া গিয়াছেন। উক্ত নানা ঐতিহানিকের প্রমাণাবলী হইতে বুঝিতেছি বে, জরপুর একাধিক ছিলেন। জরপুরের বংশধরগণও জরপুর নামে পরিচয় দিতেন। চারিছাজার বর্ধেরও বহপুর্ব্বে তাঁহাদের অভ্যাদ্ম। তাঁহাদের প্রভাবেই শক্ষিপের আদি মিত্রধর্মের অধংপতন ঘটে এবং জারিপুরাই স্বর্ধ্ব প্রচালত হয়। পূর্বেই জাভাস দিয়াছি,

মগগণ বিপরীডভাবে পাঠ করিডেম। ভবিভপুরাণে নিধিত আছে—

"বিপৰ্যন্তেন বেদেন মগা গান্নস্তাতো মুগাঃ।…… ৰংগ্ৰদোহধ বন্ধুৰ্বেদঃ সামবেদত্বৰ্মণঃ। ব্ৰাক্ষণোক্তাতথা বেদা মগানামণি ভ্ৰম্ভ ॥

ত এব বিপরীতান্ত তেবাং বেলা: প্রকীর্ম্বিতা: ।" (১৪০ আ:)
ইহারা বিপরীতক্রমে বেলাধারন করেন বলিরাই 'মগ' নামে
ঝাত হইরাছেন। ঋথেদ, বন্ধুর্মেদ, সামবেদ ও অথক্রবেদ এই চারিবেদ বেমন রাজ্মণের, মগদিগেরও ইহার বিপরীত চারিথানি বেদ আছে, তাহার নাম বিদ, বিশ্বরদ (বা বিম্পরদ), বিলাদ ও আদিরদ।

ভবিষ্যপ্রাণের এই উক্তি হইতে বেশ বুঝা যাইতেছে যে ভারতের চারিবেদ বেমন বাম হইতে দক্ষিণবিকে অর্থাৎ প্রাক্ষীলিপিতে লিখিত হইত, শাক্ষীপীর মধ্যেরা তাঁহাদের আদি ধর্মগ্রহণ্ডলি প্রাক্ষীপিসির বিপরীত ভাবে অর্থাৎ দক্ষিণ হইতে
বামদিকে পাঠ করিত ও লিপি বছ করিত। এই পাঠবিপর্যার
হইতেই তাঁহাদের 'মগ' নাম হইরাছে। এই 'মগ' নাম অবভার
প্রোলীনাংশ গাথাতেও পাওয়া গিয়াছে। এরূপ হলে ৪।৫ হাজার
বর্ষ পূর্কে যে 'বিপর্যন্তে' লিপি বা থরোন্তার উৎপতি ঘটিয়াছিল,
তাহাতে সক্ষেহ নাই। প্রাচীনতর ঐতিহাদিকগণ ও এদেশীর
পৌরাণিকগণ প্রান্ত সক্ষেহ আভাস দিরা গিয়াছেন যে ৪।৫
হাজার বর্ষপূর্কে শাক্ষীপ॰ হইতে বাবিলোন, এমন কি মিসয়ের
উপকৃল পর্যন্ত মগাধিপগণের আধিপতা বিস্তৃত হইরাছিল। '
তাহাদের আধিপতা বিভারের সহিত প্রাচীন থরোন্তা লিপিও
বে সর্ক্রে প্রচারিত হইরাছিল, তাহাতে সক্ষেহ নাই। তাই

⁽১) "পোনো মিছিসমিত্যাক এতং তু এ।ক্ষমুভ্ৰমন্। কলিবা নাম ধর্মারা কবিয়ানীং পুরানম ।" (ভবিয়াপু - ১৩৯।৩৪)

⁽২) "বেদোকং বিধিমৃৎক্ষা বগোহং ক্ষিতভাগ। শুদ্ধাৎ দগং সমৃৎপঞ্জন্ত পূত্ৰো শুবিবাতি। জনসন্ত্ৰ ইতি গাাতো বংশকীতিবিবৰ্জনং।

অগ্নিজাত্যা মগা প্ৰোক্তা সোমজাত্যা বিজ্ঞাতর: :"(তবিবা ১৩৯:১৩-১১) জাহিত্যপূৰ্বাণ চঠকেও জানা যায় যে শাল্পীপে মংগঞ্জ আবিপত্য

 ⁽৩) ভবিবাপুরাণ হইডেও লানা বায় বে শাক্ষীপে মদেরা আবিপত্য কচিতেন—

[&]quot;এডিব্রুছি ভূরিটা ডান্সিন্ দ্বীপে স্বাধিশা।। বিল্যাব্যাঃ কুলে ভ্রেটাঃ শৌচাচারস্বহিতাঃ ঃ" (১৪০ জঃ)

⁽৩) ভবিবাপুরাণের প্রমাণ বলিয়া কেছ বেন আধুনিক ননে করিবেন না। বোলাই হইতে প্রকাশিত ভবিবাপুরাণের 'রাজপর্কা' ভিন্ন অপনভালি আধুনিক বলিয়া মনে করিবার বংগাই কারণ থাকিলেও রাজপর্কা না প্রাচীন। বংজপুরাণ, বরাহপুরাণ ও নারলপুরাণে এই অংশের আই উল্লেখ্যাহে। এই বর্ষপুরাণের (২)২০।৫-৩) এই ভবিবাৎপুরাণের উল্লেখ রহিয়াছে। এই বর্ষপুরাণির অধাশিক বৃহ্ লরের বতে অভতঃ পৃত্তপুর্বা বন শতালীর। এই এছে বৃদ্ধপ্রভাবের নিবর্দন না পাকার আনরা ইবাকে পৃত্তি বই শতালীরও পূর্ববর্তী বলিয়া মনে করি। তাহারও পূর্বেক্ ভবিবাৎপুরাণের উৎপত্তি।

[•] পূর্বাক্তন প্রীক ইতিহাসিক্সপের বর্ণনা অল্পারে বর্তনান মুরোপীর পুরাবিদ্পণ ছিল কলিলাছেন যে বর্তনান ভাতার, এসিলাছ কবিলা (নাইবেরিলা, কভোবী, ফিমিলা), পোলত, হলেরিলার কতকাপে, নিগুলনিলা, কার্কসির উত্তরাপে, কুইডেন, নরওয়ে প্রকৃতি অনশন লইলা প্রাচীন কিবিলা বা শাক্ষীপ বিকৃত ছিল। [অলেন কার্কীর ইতিহান, রাজ্ঞবন্ধত, এর্থাপে ৬-৭ পূঠা প্রইব্য।]

অন্তরীয় (Assyria), বাবিলোন প্রভৃতি স্থানের লিপির সহিত থরোটা লিপির সাদৃশ্র রক্ষিত হইস্কাছে।[ভোলক ব্রাহ্মণ দেখ।]

এখন আমরা বৃষাইয়া দিতে পারি যে অরমীর শ্রেণীর
ফণিকলিপি হইতে ধরোষ্ঠার উদ্ভব ঘটে নাই। বহুলিপিবিদ্
আইজাক্ টেলর তাহার "বর্ণমালা" পুততে লিখিয়াছেন যে
নেবৃকাদনেজার ও নেরিমিলারের (৫৬ খুঃ পূর্বাজে) ইষ্টকের
উপরই অরমীর লিপির স্পষ্ট নিদর্শন পাওয়া যায়। কিছ
তাহারও পূর্ব্বেকার বাবিলোনীয় লিপি হইতে ধরোষ্ঠার নিদর্শন
বাহির হইয়াছে এবং তাহারও বহুপূর্বে যে এখানে জরপুত্রবংশ আধিপতা করিতেন, সে কথা পূর্বেই বলিয়াছি। কেবল
বাবিলোন বলিয়া নহে, অস্তত্বানেও খুঃ পূর্বে ৭ম শতান্ধীর পূর্বের
অরমীয় লিপির পৃষ্টিলাধন হয় নাই। †

প্রায় খুঃপূর্ব্ব ৭ম শতাব্দে ফনিকদিগের রাজশক্তি ও বাণিজ্য-প্রভাবের অবসান ঘটিলে ফিনিসিয়ার আদিবর্ণমালা হইতেই উত্তর সিরীয়ায় অরমীয়লিপি গঠন লাভ করিয়াছিল। আদি ফ্নিকলিপিও ছুই প্রকার দৃষ্ট হয়। তন্মধ্যে যে সর্ব্ধপ্রাচীন নিপি আবিষ্কৃত হইরাছে, তাহা খুষ্টপূর্ব ১০ম শতানীর শেষে অথবা ১১শ শতানীর প্রথমে উৎকীর্ণ হইয়াছিল। এপাচীন নিনেভে নগরীতে কীলম্বপা শিয়্লিপির সহিত প্রাচীন ফনিক-লিপি উৎকীর্ণ দেখা যায়। যাহা হউক,বেরোসাসের মত ধরিলেও আমরা দেখিতেছি যে, খুট জন্মের চুই সহস্র বর্ষেরও পুর্বের্ ঞ্রথন্তের বংশধরগণ অফুরীয়ায় রাজত্ব করিতেছিলেন, সেই স্প্রাচীনকালে ফ্রিক্লিপির সন্ধানই পাওয়া যায় নাই। মিসরপতি আহমেশের চিত্রলিপিতে প্রায় ১৪৬২ খুট পুর্বাবে আমরা "ফেনেথ" নামে ফিনিকদিগের উল্লেখ পাই। 💩 সময়ের পুর্বেই যে এখানে ফনিক সংশ্রব ঘটরাছিল, তাহাতে বিশেষ महम्मह कतिवात कात्रण (मधि ना। उथन ७ छोहारमत्र हाता বিপ্রায় বা দক্ষিণ হইতে বামমুখী লিপির সৃষ্টি হয় নাই। এই সময়ের পত্রপটে অন্ধিত (Papyrus) সংস্কৃতিলিপিতে (Hieratic) যে অক্ষরের আভাস পাই, তাহার কএকটা বর্ণ দাকিণাতোর স্প্রাচীন বট্টেশেন্ত, অক্রের মধ্যে পাওয়া গিয়াছে, সে কথা পুরেই লিখিয়াছি। ভারতীয় পণিকগণ খুষ্ট-জন্মের বহসহস্র বর্ষ পর্কে যে মিদর প্রভৃতি স্থানে বাণিজ্য করিতে আসিত,সলোমনের ইজিহাস হইতেই তাহার আভাস পাওয়া গিরাছে। পণিকদিগের কেছ কেছ মিসরে আসিয়া জাবিড়ীর সভাতার রেখা পাত করেন

এবং তাঁহাদের সঙ্গেই দাক্ষিণাত্যের অতি প্রাচীন বট্টেলেভ সঙ্কেতলিপির স্থান অধিকার করে। তৎপূর্ক্ষে মিসরে কেবল চিত্রলিপিরই প্রচলন ছিল। দ্রাবিড়ীয় পণিকদিগের সহিত সঙ্কেতলিপি ইজিষ্টে প্রবেশ করিলে তাহাতেই পত্রপট (Papyrus) অঙ্কিত করিবার প্রথা চলিল। যাঁহারা বলেন যে, পাশ্চাত্য দেশ হইতে ফনিকগণ গিয়া দ্রাবিড়ে দেমিটিক সভ্যতার বীজ প্রবর্ত্তন করেন, তাঁহাদের মতের সহিত আমাদের মিল নাই। তাহা হইলে মিসরে যেমন চিত্রাক্ষর প্রচলিত, দাক্ষিণাত্যেও সেইরূপ চিত্রাক্ষরের কোন প্রকার সন্ধান পাইতাম। তাহা যথন নাই. অথচ দাক্ষিণাত্যের বট্টেলেন্ড্র অ, ই, প্রভৃতি কোন কোন বর্ণের সহিত মিসরের সঙ্কেতলিপির মিল পাইতেছি, অথচ সেই সময়ে চিত্রাক্ষরের অসম্ভাব ছিল না, তথন যে ভারতবাসী গ্রহণ না করিয়া তাঁহাদের নিকট হইতেই বরং মিসরবাসী স্ববিধান্তনক সক্ষেত্তিলিপি গ্রহণ করিয়া থাকিবে, তাহা কিছু আশ্চর্যাজনক নহে। এই সঙ্কেতলিপিরই ভিন্নরূপ নিদশন স্থপাচীন বাবিলোন ও অস্কুরীয় কীল্লিপিতে রহিয়াছে। কেবল মিদর বলিয়া নহে, বাণিজ্য ব্যপদেশে ফনিকগণ জরথুস্ত্র-গণের অধিকারভুক্ত রাজ্যে আসিয়া বিপর্য্যন্তলিপির ব্যবহার শিক্ষা করিয়া য়রোপে গিয়া প্রচার করিয়া থাকিবে, এই কারণ সেই স্থপাচীন গ্রীক ঐতিহাসিকগণের নিকট ফ্রিকরাই লিপি-মালার প্রবর্ত্তক বলিয়া পরিচিত। বাস্তবিক তাঁহাদের অভ্য-দয়ের বহুপুর্বেষ বিপর্যান্ত বা খরোষ্ঠালিপির উৎপত্তি। এখন আমরা ব্রিতেছি যে, ব্রাশ্বীলিপি যেমন ভারত, ব্রহ্ম, দিংহল, ও ভারতমহাসাগরীয় দ্বীপপুঞ্জে প্রচলিত, প্রাচীন লিপিসমূহের জননী ধরোষ্ঠীও সেইরূপ সকল বিপর্যান্ত লিপির জননী। फिनिकशन এই रिालि सहिमा निमा मुरतारल अथम अनात कित्रमा ছিল বলিয়াই গ্রীকদিগের নিকট ফনিকেরাই বর্ণলিপির উদ্ভাবয়িতা বলিয়া থাতিলাভ করিরাছে। বেমন মোন্সাব ও সিদোনে ফনিকদিগের প্রচারিত লিপির কালবশে পরস্পরের রূপে অনেকটা পার্থক্য ঘটরাছিল, সেইরূপ অশোকের ব্যবহৃত খরোষ্ঠার সহিত উক্ত লিপিসমূহের পার্থকা দৃষ্ট হইয়া থাকে। যেমন স্থান ও . কালবলে সেবীয় ও বোক্তানের সেমিটক লিপি ‡ মোআব, সিদোন ও অবমার লিপি হইতে বছলাংশে পৃথক্ হইয়া পড়িয়াছে, সেইরূপ অশোকের বাবগৃত খরোটার সহিত অপর স্থানের বিপর্যান্ত লিপিরও পার্থকা ঘটিয়াছে। টেলর, বৃহ্লর প্রভৃতি লিপিত্রবিদগণ এদিয়া মাইনর বা আরবের প্রাচীন লিপির

[.] Taylor's Alphabets, Vol. I. p. 247.

⁺ Taylor's Alphabets. Vol. I, p. 198,

¹ Taylor's Alphabets, Vol. 1. p. 216

[্]ব ক্ৰিব্যাল সম্ভিক। স্বাহতৈ স্মিতিক বা সেমিটিক নামের উৎপত্তি।
স্বাহ্যাং ক্ষিক ও স্মিতিক একস্থ

সহিত অশোকের বিপর্যান্ত লিপির সাদৃখ্যস্থাপনে বেরূপ অগ্রসর হইরাছেন, তাহা অনেকটা কট করনা মাত্র, তাঁহাদের উদ্দেখ্য নিজ হর নাই। *

আর একটা কথা—প্রাচীন ফণিকলিপিসমূহে ২০টার অধিক বর্গ মিলিবার উপায় নাই.—সেই ২০টা বর্ণের নাম— অলেক, বেথ, গিমেল, দলেপ, হে, বাও, জইন, চেথ, রোদ, কফ, লমেদ, মেম, স্থন, সমেছ, ফে, ছ'দে, কোফ, রেব, বিন, তও। এই ২০টা বর্ণের উচ্চারণ ধরিরা যথাক্রমে অ, ব (বর্গীর), গ, দ, হ, ব অন্তঃস্থ), জ, চ, য়, ক, ল, ম, ন, স, প, ছ, ঝ, য়, য় এবং ত বা ট এই বর্ণ বাহির হইতে পারে। কিন্তু ভারতের উত্তরপশ্চিম সীমা হইতে আবিষ্কৃত অশোক, যবন, শক ও কুষণ্রাজগণের সময়ে ব্যবহৃত থরোটা লিপিগুলি এক এ করিলে তাহা হইতে আমর। ৩৯ বর্ণ দেখিতে পাই. যথা—

অ ই উ এ ও অং

ক থ গুঘ

5 5 5 4 4

े उ क र्ह

কে থ দ ধ ন

প ফ ব ভ ফ

त तत्र भ र म

থরোষ্ঠী যে ভাষায় প্রথম ব্যবস্থত হয়, সেই অবস্তার দ্পপ্রাচীন গাথা আলোচনা করিলে আ, ঈ, উ, ঐ, ঔ, এই এটা অধিক পাওয়া যায়। স্কৃতরাং থরোষ্ঠীর ৪৩টী বর্ণের মধ্যে ফলিকেরা স্ব ব বালিজো ব্যবহারোপ্যোগী ২০টী অক্ষর মাত্র গ্রহণ করিয়াছিল। যেমন সংস্কৃত শাস্ত্রে ৫০টীর অধিক বর্ণমালা থাকিলেও সাহিত্যিক হিসাবে না ধরিয়া বাঙ্গালীর উক্তারণ ধরিলে এদেশে যেমন ৩০।৩২টী অক্ষরের রেশী আবশ্রক নাই, স্বীকার করিতে হয়, [বাঙ্গালা ভাষা দেখ] অথচ য়েমন বঙ্গালিপ ব্রাক্ষীলিপিরই সম্ভতি, সেইরূপ আবস্ত্রিক ধর্মশাস্ত্রে বর্ণের ব্যবহার থাকিলেও ফলিকদিগের ২০টীর অধিক ব্যবহারে আসে নাই, অথচ ঐ ২৩টী আদি থরোষ্ঠী লিপিরই সম্ভতি।

এখন মূরোপীয়গণ যেরূপে স্ব স্ব দেশপ্রচলিত লিপির উৎপত্তি স্বীকার করিয়া থাকেন, তাহাই আলোচ্য। মূরোপীয় লিপিতক্ষিদ্গণ বর্গলিপির স্ষ্টির পূর্ব্বে এইরূপে সাক্ষেতিকলিপির উৎপত্তি স্বীকার করেন –

বৰ্ণলিপির পূৰ্ব্ববৰ্ত্তী সাঙ্গেভিক চিহ্ন।

প্রাচীন যুগের মন্থব্যপ্রকৃতির ইতিবৃদ্ধ আলোচনা করিলে স্পষ্টই হৃদর্শম হয় যে, মানবন্ধাতির উন্নতির ক্রমবিকাশের সঙ্গে সঙ্গেই লিপিকার্য্যের আবশ্রকতা অনুভূত হুইয়াছিল। তাঁহারা কএকটা অভাবমোচনের জন্ম চিল্মাত্র অভন করিতে অভ্যাস করেন। তাঁহারা বিশেষ বিশেষ কার্য্যামুদ্ধানের মন্ত্র সমন্ন বিশেবের নির্দারণ জন্ম, অমুপস্থিত অথবা যাহার সহিত সহজে সাক্ষাৎকারের স্থবিধা নাই এরূপ ব্যক্তির নিকট ভাব বিশেষ জ্ঞাপন নিমিত্ত কতকগুলি সাছেতিক চিক্লের প্রয়ো-জন উপলব্ধি করিতে থাকেন। সেই আদিম যুগের অধি-বাসিবৰ্গ আপনাপন অন্ত্ৰ, শল্পাদি, ৰ ৰ পালিত গৰাদি পশুকে পরস্পরের স্বাধিকার ও স্বাতন্ত্র নির্দিষ্ট রাখিবার জন্ম অথবা স্বহত্তে নির্দ্দিত মুৎপাত্রাদি বা অপর কোন দ্রব্যের অপর সাধা-त्रग इहेटल भार्थकानिर्द्भागत अस्य विस्मय विस्मय हिस्स वावशात করিতেন। অম্বাপিও ভূগর্ডনিহিত মৃৎপাত্রসমূহে ঐরূপ বিভিন্ন চিক বিভ্যমান দেখা যায় এবং তাহা আলোচনা করিলে বেশ বুঝা যায় যে, খুষ্ট জন্মের বছ পূর্বে হইতে বিভিন্ন সময়ে বিভিন্ন ব্যক্তি ছারা ঐ সকল পাত্রাদি নিশ্মিত হইয়াছিল। এখনও ভিন্ন ভিন্ন স্থানের মৃৎপাত্তে তৎকালের ভার কুম্বকারের সাক্ষেতিক চিক্ক ব্যবহৃত হইয়া থাকে। প্রাচীন কালে যাহা ব্যক্তি বিশেষের পারিবারিক সম্পত্তির স্বাতন্ত্রা চিহ্নরূপে গৃহীত হইয়াছিল, বর্তমান যুগে তাহাই ক্রমশ: উন্নতির পরিণতি প্রাপ্ত হইয়া "টেড্ মার্কে" পর্যাবসিত হইয়াছে।

मकरलहे क्यारन, व्यामारनंत्र रनर्भंत्र व्यक्त द्रमगीता शतिरश्य বন্ধ বা কুমালাদিতে চিহুস্থরূপ তাহার কোণে এছি দিয়া রঞ্জককে দিয়া থাকেন। সাঁওভাল, কোল প্রভৃতি বর্ণজ্ঞানবর্জিত জাতির মধ্যে এখনও ঋণগ্ৰহণকাৰ্য্যে অর্থের সংখ্যা নিরূপণার্থ ক্রতে বা রজ্জবতে গ্রন্থি দেওয়া চারা থাকে। পূর্ববলের নিরক্ষর গোপ-ान क्रथ क्रमिक्टियत हिनाव वाटन क्रिया मान कार्डिया बाटन ইচাও অনেক সময় দেখা গিয়াছে, যদি কথনও হিসাবের টাকা আদান প্রদান লইয়া আদালতে মোক্ষমা উপন্থিত হইয়াছে. তথন বিচারক ঐ সকল দাগ দেখিয়া মোকদমার সভ্যাসভা ক্রির কবিয়াছেন। পাশ্চাতা অগতেও এরপ এক সময়ে ঋণসংখ্যার্থ গ্রন্থিচিক ব্যবস্থাত হইত। হেরোদোতালের (IV. 78) विवत्नीएक काना बाब एव, भकास्थियान कारन नतायून देहोत নদী অতিক্রম করিয়া সেড়ুরক্ষক গ্রীক সেনাদলের হল্ডে বচ श्राहिएक अक्षी भीष कब्बू ब्राथिया एम अवश् वरनाम, देशारक यक গ্রান্থি আছে, ততদিন ভোমরা এই সেতু রক্ষা ক্রিবে এবং প্রত্যহ এক একটা গ্রন্থি খুলিরা ফেলিবে। যদি শেব গ্রন্থি

^{*} Taylor's Alphabets, Vol. I ও Indische Palægraphie von G. Buhler এই এছ দুইবা।

খুলিবার দিনে রাজার প্রভাগেমন না ঘটে, ভাষা হইলে গ্রীকগণ নেতু ভালিয়া চলিয়া বাইবে ।

উহারই উন্নত প্রকরণ পেদ্ধ নাজ্যের দুইপু রক্ষ্তে দৃষ্ট হয়। উহা প্রথমে সংখ্যাগণনাকার্যে ব্যবহৃত হইত। পরে কালবণে ক্রমণঃ উহার উন্নতি সাধিত হয়। নির্মাতার কৌশলে তাহাতে ঐতিহাসিক বটনানিচর, রাজবিধিপ্রশতি প্রভৃতি সক্ষেত প্রথিত হইতে থাকে এবং তদ্বারা দেশ হইতে দেশাভরে, রাজ্য হইতে রাজ্যাভরে সংবাদ-প্রেরণের ব্যবহা প্রচলিত হয়। তৎকালে প্রত্যেক প্রধান প্রধান নগরে দুইপুর ব্যাখ্যা করিবার জন্ত এক এক জন রাজকর্মচারী নির্কা হইতেন। তিনিই দুইপু পাঠের পর পুনরার দুইপুর সাহাব্যে উত্তর বাধিরা দিতেন। ছঃথের বিবর, দুইপুর অপুর্বা ব্যাখ্যাকৌশল সুপ্ত হইরাছে। এইরূপ সাভেতিক প্রথা এক দিন চীন, তিব্বত এবং প্রাচীন ভূষগুবাসী আদিম জনগণের মধ্যে প্রচারিত ছিল।

चार्द्धिनिवात चानिम चिथवानीनिरशत मरथा कूरेश्व छात्र কাৰ্য্যসাধনশীল 'দৌত্যদণ্ড' বিশ্বমান আছে। উহা একটা বৃক্ষ-শাখা মাত্র। পত্রলেখক গাত্রোপরি পূর্বে শামূক দিয়া (এখন ছবিকা সাহায্যে) কডকগুলি আঁচড় কাটিত। বর্ত্তমান "সট-ক্লাও" লেখার ক্লায় ঐ আঁচড়গুলি শ্বতঃ ব্যাখ্যাত নহে। উহা वान्ति वित्नात्वत्र मत्नाञ्चाव ऋष्ठिनशाक्रक कत्रिवात्र निमर्ननमाख। मधक यथन के जाहफ होनिए धारकन, उथन निकार कि कन দুত বা পত্ৰবাহক দাড়াইয়া থাকে। বেমন একটা আচড় रक्षणात जाँका इत्र. जमित रमधक शब्दाहरू के के के अपन অভিপ্রায় ও অর্থ জ্ঞাপন করিয়া দেন। এইরূপে ঐ দডের অন্তন সমাধা হটলে পত্ৰবাহক দণ্ডটী হতে লইয়া পত্ৰোদিট ব্যক্তির নিকট লইরা আইলে এবং শ্বরং এক একটা আচড লকা করিয়া এক একটা ভাবের কথা জানার। উপরোক্ত ৰীপের ভিক্টোরিরা বিভাগের বিদ্মেরা নদীভীরবাসী বোটজো-বল্লফ জাতির মধ্যে এইরূপ প্রথার পত্রের আলান প্রদান হইরা থাকে: ভবার পত্রবাহক এক সর্কারের নিকট হইতে অহিত लोजात् नहेश अशरहत हरत ममर्गन करत धरा छाहारक জনাজিকে লইয়া গিরা পত্তপ্রেয়কের নাম জানাইরা দের ও পত্র-মূর্য জ্ঞাপন করে। এই দৌভাদণ্ডের অভিড আচড বা লিপিগুলি विक कृष्टे वाक्तित्र मध्या नित्रकत ठानिक इत्र, खादा दरेल काराता উভবে উভবের মনোভাবের অভিত আচড়গুলি বুরিতে পারে।

কালে অস্থপন্থিত ব্যক্তির পরমর্মজ্ঞাপনের অভাব অনু-ডঙ হইন। কোন যভন্ন প্রধার নাধারণে পরস্পারের অভিগ্রার- শ্বলি পরস্পরের স্থৃতিপথে সমার্ক্ত করিবার জল্প কতকগুলি স্বেত (mnemonics) শহুমোদিত করিরা লইলেন। ইহাই বাত্তবিক বর্ণলিপির প্রাথমিক অবস্থা। ইহা হইতেই পরবর্ত্তী সমরকার লিপির আংশিক গঠন সংসাধিত হইরাছিল।

মরণাতীত কালের মহবাপ্রকৃতির প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে প্রথমতঃ আমরা এবছত অর্থাঞ্জক ও মনোভিপ্রারভাপক ছই প্রকার লিপির নিম্নান দেখিতে পাই। অন্ধিত
উহার একটা কঠিন প্রস্তর বা অন্থিপতে খোদিত দৃষ্ঠ বস্তর
চিত্র এবং বিতীরটা অন্ধিত রেগাটা কলিত চিত্র মাত্র আহে।
সেই পৌরাপিক বুগের (Prehistoric times) মন্থ্যসমাজ
শুহাদি খোদিত করিরা তাহার সমতল গাত্রে হরিণ, মহিব ও
তদ্মুগের পর্যাদির বে সকল প্রতিকৃতি উৎকীর্ণ করিরা
রাখিরাছে, তাহাই প্রথমোক্ত শ্রেণীর বলিরা গণ্য এবং M. Ed.
Piette কর্ত্ব আবিষ্কৃত এরিজন নদীকুলের সচিত্র প্রস্তরপ্রতি
(L'Anthropologie Vol vii. pp. 844) দিতীর শ্রেণীর
অন্তর্ভুক । এই চিত্রিত প্রস্তর্গকলক (marked pebble)
Reindeer মুগের শেব স্তর ও Neolithic মুগের প্রথম
স্বরের মধ্যবর্ত্তী কালে অন্ধিত ইইয়াছিল বলিয়া গণনা করা হয়।

এই যুগীর স্তর প্রায় ২ ফুট মোটা এবং লাল ও ক্লফ-বর্ণ। ইহার মধ্যম্বিত সচ্ছিত্র হরিণদক্ত (মালার জন্ত), বিভিন্ন **লীবদেহান্তি প্রভৃতির মধ্যে ইতন্তত: বিক্লিপ্ত বে চিন্সান্তিত** প্রস্তরথত বিরাজিত দেখা যার, তাহা বর্ণমালাগুলি প্রধানত: গুই শ্ৰেণীতে বিভক্ত ;--> সংখ্যাবোধক শ্ৰেণীবদ্ধ কতকগুলি আচড় (Series of strokes) এবং ২ স্লচিত্রিভ চিত্রাবলী (graphic symbols)। ঐ সকল প্রান্তরলিপির অর্থ যাহাই इफैक ना रकन, छेहा रव जाकचिक मधुड छ नरह, छाहा महस्बहे বীকার করা যাইতে পারে। বিশেষ পরীকা করিয়া দেখিলে উহার কোনটাতে বুশ্চিক, ওঁরা বা সর্প, কোন কোনটাতে বুক্ক, ল্ডা, গুলা ও নছাদির জম্পষ্ট আভাস, এবং ভারে অধিকাংশ ध्यद्धारति वर्गमानात हिल्लामुल E, I, T, O, A, ⋈, Д, প্রভতি অক্তরমালা উৎকীর্ণ দেখা বার। মহামতি পিকটে উহার मत्था नाना श्राह्म तनवानी, किनिकीय नाइ श्रश्नान तनन-বাসীর কতকগুলি বর্ণমালা ও শব্দংশ '(Syllabaries) এবং মাস দে' আজিলের প্রাচীন বর্ণদিপির নরটা জকরের সাদৃত্ত দেখিতে পান। বর্ণমালার এন্ডাদৃশ ক্ষবস্থা দেখিরা উহাকে क्थन है वर्गमानात जानि वा छै९ पछि निवर्गन विनेत्रा সিভাল করা বাব না.বরং উহাকে প্রাচীন কালের কোন ভৌতিক চিকেরা বা আডি বিশেষের নির্ভারিত লাভেডিক বিষয়ণের निवर्गन विनेत्राहे अहन कता बहिएछ शादा। कांत्रन धवन छ

^{*} Ethnologische Parallelen und Vergleiche, i. p. 184.

মধ্য আষ্ট্রেলিরার পর্বাভগুহা মধ্যে এবং আমেরিকাবালী ইণ্ডি-য়ানদিগের মধ্যে কুরা প্রভৃতি ধেলার এক্ষণ সাক্ষেতিক চিহ্ন প্রচলিত আছে।

প্রাচীন ভূখণ্ডের বিভিন্ন জনপদ হইতে নবাবিদ্ধত আমেরিকা ভূখণ্ডে সর্জাপেকা প্রাচীন চিত্রলিপির (Picture-writing) আদর্শ বিশ্বমান আছে। উহা মিসরীয় বা চীনদেশীয় চিত্রলিপি হইতে আনেকাংশে উৎকর্ষতা লাভ করিরাছিল, কিন্তু ইঞ্জিপ্ত বা চীনের স্থায় আমেরিকাবাসীর চিত্রলিপি বর্ণ বা শক্ষবঞ্জক হয় নাই। চিত্রপ্রধিক কেবল চিত্রেরই উদ্বোধক হইত।

চিত্রলিপি বাজীত আমেরিকাবাসিগণ সংখ্যাগণনার্থ এক প্রকার ছড়ি ব্যবহার করিত। উহার সাক্ষেতিক আঁচড়গুলি গণনা করিয়া তাহারা যুদ্ধাতিযানের ব্যাপ্তিকাল, তত্ত্বদ্ যুদ্ধে নিহত শক্তর সংখ্যা ও তদমূরপ পরিচরাদি ব্যক্ত করিতে পারে। এতদ্বির তাহাদের মধ্যে বিম্পুম্' নামক মালার ব্যবহার আছে। উহার সালা দানাগুলি সন্ধি বা শান্তিছাপনের উদ্বোধক এবং বেগুণে দানাগুলি সৃদ্ধিবামক। ১৬৮২ খুটান্দে লেনী লেনপে সন্ধারগণ সন্ধিস্থাপনার্থ উইলিয়ম পেন্কে বিভিন্ন বর্ণের যে মালা দান করে, তাহার মধ্যন্থলে সন্ধির উদ্বোধক হইটী মন্ত্র্যামৃত্তি পরম্পরে হন্ত ধারণপূর্বাক দণ্ডারমান ছিল। এইরূপ মেক্সিকোবাসীর ফাঁস চিক্ত চৌর্য্য বা শান্তিজ্ঞাপক এবং কালিফোর্ণিয়ার পার্ব্যত্তিত্ব অঞ্চারাক্রান্ত প্রতিক্রতিই শোক্জ্ঞাপনার্থ উৎকর্ণি হইরাছে।

আমেরিকাবাসী আদিম জাতির মধ্যে এই চিত্রলিপির প্রাচীনতম আদেশ বিপ্রমান থাকিলেও বাস্তবিক পক্ষে উচা ক্রমশ: উন্নত হইন্না বর্ণমালার পরিণত চইতে পারে নাই। প্রাচীন ভূথণ্ডের অস্ক্রীয়, মিশর ও চীন রাজ্যে সভ্যতার বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে চিত্রলিপির যথেই উন্নতি সাধিত হয় এবং উচা কালে শব্দ বা বর্ণমালার প্রকৃষ্টরূপ প্রাপ্ত হইয়। তত্ত্বদ্ জন-পদবাসীর মনোভাব ও তদর্গজ্ঞাপনে নির্দারিত বা অধি-কারী হয়।

চীনদেশেই সর্ব্ব প্রথমে এই চিক্লালিপি হইতেই বর্ণ বা শব্দ লিপির ক্রমোলতি ও বিকাশ সাধিত হয়। তথাকার বর্ত্তমান লিপির মৌলকাবস্থার সহিত সামজক্ত নির্ণয়ার্থ সেই আদিম চিত্র-লিপির নিদর্শন দৃষ্টি গোচর না ছইলেও নিঃসন্দেহে বলা যাইতে পারে যে, চীনদেশী বর্ণলিপি আফুমানিক ৮০০ হইতে ১০০০ খুই পূর্বান্ধ হইতে প্রচলিত হইয়ছে। চীনদেশীর প্রাচীন অভিধানলিখিত শাক্ষালিপি ও বর্ত্তমান বর্ণ বা শব্দালিপির বৈষ্মাদর্শন করিলে স্পাইই ইহার উয়তি ও বিকাশ উপলব্ধি হইতে পারে। যথন তাহারা প্রস্তার বা তছৎ কঠিন পদার্থে শৌহন

শলাকা থারা চিত্রলিপি অভিত করিত, তথন তাহারা পোলকপিণ্ডে সূর্যা এবং আর্ক চন্দ্রাকারে চন্দ্রকে বৃথাইত। পরে বথন
কাগজ, রেশম ও তৎসনূল কোন কোমল বন্ধর উপর বর্ণমালা
বিজ্ঞানের আবস্তুক হয়, তথন তাহারা লৌহশলাকার পরিবর্ণে
তুলির স্থায় কেবল লেখনী বা চিত্রতুলিকা ব্যবহার করিতে আরম্ভ
করে। সেই সমর হইতেই বাত্তবিক পক্ষে তুলির টানে বৈপরীতা সাধিত হইয়া বর্ণগুলি বর্ত্তমান ছাদে রূপান্ডরিত হইয়া
আসিয়াছে।

চীন শন্ধণিপি হইতে জাপণিপি গৃহীত হইলেও উচা আনেকাংশে সংস্কৃত হইলা ভিলাক্তি প্ৰাপ্ত ইইলাছে।» এই জাতীয় লিপিয় ছাঁদ ভিন্ন জাপানে গৃহীয় পক্ষম শতাল্পে ভাৰত প্ৰচলিত সংস্কৃত বৰ্ণমালার লিপিও বিশ্বমান আছে। তথাকার বৌদ্ধধৰ্ম সম্বাীয় অনেক গ্ৰন্থই সংস্কৃত ছাঁদে লিখিত।

মিসরীয় বর্ণালিপিই প্রথমে সম্ভবত: পাশ্চাতা লগতের স্ক্রিকাটীন লিপি বলিয়া বিদিত। এখানে চিত্রলিপির (Hieroglyphics) এক সময়ে বিশেষ প্রচলন ছিল, তদ্দেশস্থ উৎকীণ ফলকাদি নিরীক্ষণ করিলে তাহার সমাক্ বিবরণ জ্ঞাত হওয়া যায়। চীনগণ যখন বস্ত্রবিশেষকে চিত্রলিপির ছায়া ব্যাইবাব পরিবর্তে শম্পলিপির উদ্ভাবনে সচেই ছিলেন, তখন তাহায়া শ্রাম্পারে প্রবাবিশেষের কতক চিহ্ন সামন্ত্রত অবধারণ করিয়ালন। তাহাতে আদিম চিত্রঘটিত লিপির আংশিক চিত্রের বিলয় ঘটে এবং মূলতঃ তাহা বিলুপ্ত হইয়া পড়ে।

ভাষাবিদ্গণ প্রাচীন ভূখণ্ডের এই তিনটী বিশ্বত চিত্রলিপিব উৎপত্তিনির্ণয় করিতে গিয়া বলিয়া থাকেন যে, এক সমরে ইচা মধ্য এসিয়াথগুবালী জাতির মধ্যে বিস্তৃত ছিল। কেচ কেচ বলেন, চীনগণ বাবিলোন হইতে ক্রমণঃ পূর্ব্বাভিমুথে আসিয়া বর্তমান চীনসাঞ্রাজ্যে বাস করিয়াছে। আবার কাহারও কাহারও ধারণা, ইউফ্রেটিস্ প্রবাহিত উপত্যকাভূমে প্রথমে মিসরীয় সভ্যতার বিস্তার হইরাছিল অর্থাৎ প্রাচীন আর্থা (হিন্দু)-মিগের স্তার ইউফ্রেটিস্ তীরবাসী জনস্রোত সেমিটিক অভিযানে লিপ্ত হইরা রাজ্য হইতে রাজ্যান্তরে সভ্যতা বিস্তার করিতে করিতে মিসর রাজ্যে আসিয়া প্রভূত বিস্তার করিরাছল। এই মিসরীয়গণ প্রাচীন সোমালী জাতির অন্ত একটী শাখা ভিন্ন আর কিছুই নহেন।

মিসরের প্রাচীন ইতিবৃত্ত আলোচনা করিলে জানা বার বে, বস্তকাল ব্যাপিয়া অস্থ্রীয় (অস্ত্র)-গণের সহিত মিসরীয়-দিগের রাজনৈতিক সংঘর্ষ (বৃত্তবিগ্রহ) চলিরাছিল, সেই

^{*} See Taylor's The Alphabet, i, p. 34,

যুদ্ধে লিপ্ত হইরাই তাহারা ক্রশমঃ পশ্চিমাভিমুথে উপনীত হয়।
এবং তত্তদ্ হানে আপনাদের জন্মভূমির প্রচলিত চিত্রবর্ণমালার
প্রচার করে। বাত্তবিক পক্ষে, এই মিসরীর সভেতলিপিপ্রথা
(Hieratic writing) নীল নদের উপত্যকাদেশে সমাক্
পৃষ্টি লাভ করে নাই; অথবা যে প্রাচীন চিত্রলিপি (Pictographic System) হইতে অস্ত্রীর ও তৎসমীপবর্ত্তী স্থানের কীললিপি ক্রমশঃ পৃষ্ট হইরাছে, তাহা হইতে এই মিসরীর সভেতলিপি
উচ্চ বা নিম্ম ধারার অন্নস্থত বলিরা খীকার করা যায় না।

চীনবাসীর ছায় মিসরবাসিগণও একই উদ্দেশ্যে শ্বতঃপ্রবৃত্ত

হইরা (চিত্রলিপি হইতে) বর্ণমালা নির্দারণে অগ্রসর হন।

তাহারীও বন্ধবিশেবের আক্লতি এবং বন্ধগত ভাব সাদৃশ্যের
উপর নির্ভর করিয়া সেই চিত্রগুলির ছাঁট বাদ দিরা এক একটা

"বর্ণশন্ধ" অপ অক্লর নির্ণয় করেন; পরে তাহা হইতেই এক
প্রকার মুরোপের প্রচলিত ভাষাগুলি বেরূপ আক্লরিক, মিসরীয়
ভাষা সে ভাবে কখনও আক্লরিক হয় নাই। কারণ প্রাচীন
মিসরবাসিগণ শ্বভাবতঃই আয়েগৌরবরক্ষণশাল এবং চিত্রবিতাবিশারদ ছিলেন। তাহারা শ্বকীর এই শোভাবর্দ্ধক ও সৌইবলালী চিত্রলিপিরই পক্ষপাতী হইরা তৎপরিবর্ত্তে বর্ণমালা চিহ্নব্যবহারবাসনাকে বিলক্ষণ ক্ষতির বিষয়ই জ্ঞান করিতেন।

সেই কারণেই তাহারা চীনবাসীর স্থায় বর্ণমালা সম্বন্ধে বিশেষ কোন উন্নতি সাধন করিতে পারেন নাই। তাঁহারা শব্দপরস্পরার সংযোগ লক্ষ্য করিয়া সেই শব্দে যে বন্ধ, পশু, পক্ষী বা মন্থ্যের উন্দ্যোতক শব্দকে ব্যায়, সেই বন্ধর হারাই ভাষালিপি অন্ধন করিয়া ঘাইতেন। যেমন জল ব্যাইতে চিক্লের হারা তরলায়িত জলপুর আঁকিত, ভৃষ্ণা ব্যাইতে জলের চিক্ল আঁকিয়া একটা গোবৎস ছুটিয়া জলের আভমুথে যাইতেছে, দেথাইলেই চলিত। যুদ্ধ ব্যাইতে একহত্তে ঢাল ও অপরে বড়শা বা তরবারিয়্ক বীরমূর্তি লিখিত। এই সকল চিগ্রলিপের মধ্যে পরস্পর সম্বন্ধন্দেশার্থ তাহারা কতকগুলি চিক্লেও বাবহার করেন। ডাক্টার আইজাক টেলার বলেন, সেই সকল অক্ষরমূলক (Alphabetic symbol) চিক্ল হইতেই বস্তমান ইংরাকী বর্ণমালার বীক্ষকীট প্রস্থপ্ত ছিল, কালে তাহা প্রবন্ধ ও প্রকাশিত হইয়া পড়িয়াছে।

এই হাইরোমিফিক চিত্রাপপি ইইডে কিরপে মিসররাজ্যে হিরাটিক লিপির প্রচলন হইরাছিল, সাধারণের অবগতির জন্ত নিমে তাহার একটা দৃষ্টান্ত দেওয়া গেল:—ইংরাজী দ বর্ণের উৎপত্তি দেখাইতে গিন্ধা পাশ্চাত্য ভাষাবিদ্গণ বলেন যে, প্রাচীন মিসরী-ভাষার পেচকের নাম মূলক = উলুক। প্রথম চিত্রালিপি অন্থসারে পেচক পন্দী বা সেই বন্ধর ধারণা (as a

idiogram) বুঝাইতে পেচকপশ্চিত্রই অন্তিত হইয়াছিল। পরে তাহা পেচক শব্দার্থের (Phonograms) বোধকরপে ব্যবহৃত হয়। শেষোক্ত অর্থে তাহার শব্দরূপ পরিণতি ঘটে এবং শব্দামুসারে তাহাতে উ যুক্ত হট্মা mu পদ হয়। প্রাচীন হায়রোমিফিকের পেচকচিত্র প্রস্তরাঙ্কণের পরিবর্ত্তে যথন পাণি রাদ্ (Papyrus) পত্রে লিখিতে আরম্ভ হয়, তথন ক্রুতলিপির জন্ম স্বম্পষ্ট পেচকাকৃত না লিখিয়া মোটামূটি উহার চারিপার্দ্বের রেখাই লিখিত হইত। পরে লেখার তারতম্যামুসারে ক্রমে আদি পেচকচিত্রের লোপ ঘটে এবং পদ ও পৃষ্ঠবিহীন পেচক রেখার ক্রায় ইংরাজী হস্তলিথিত জেড্রর্ণ বাসংস্কৃত "দ' বর্ণের অমুরপ আকৃতিতে লিখিত হয়। ডেমোটীক লিপিতেও উহা ক্রমশ: বিক্লত হইন্না আইসে। আবার সেমিটিক বর্ণমালার প্রতি লক্ষ্য করিলে দেখা যায় যে, উক্ত অক্ষরগুলি মিসরীয় সঙ্কেতলিপি (Hieratic) হইতে যেন গুংগত। মোআবাইটু প্রস্তর্ফলকে সেমি-টিক অক্ষরে যে স্থপ্রাচীন শিলাফলক উৎকীর্ণ আছে তাহাতে mঅক্ষর স্থলে **"। অক্ষর অন্ধিত দেখা যায়। উহার সহিত মি**সরীয় সঙ্কেতলিপির m বর্ণের অনেক সাদৃশ্য আছে। স্তরাং মোআ-বাইট অক্ষর হইতে প্রাচীন গ্রীকের wi অক্ষরের উৎপত্তি কল্লনা করা যায়। উহা হইতে পরবন্তী সময়ে পরিবর্তন নিয়মে গ্রীকভাষার M বা м অক্ষর উদ্ভুত। ইহার পরে গ্রীকলিপি ইতালীতে উপনিবেশ স্থাপন করে। সেই গ্রীকদিগের সংস্পর্শে আসিয়া রোমকগণ বর্ণমালার Roman capipal M গ্রহণ করিয়াছিল। সেই রোমক অক্ষর হইতে স্বছাঁদবিশিষ্ট ইংরাজী m অক্ষরের উৎপত্তি।

মিসরীয় সংক্ষতনিপিতে ব্যক্ষন ও অগ্ধব্যক্ষন বর্ণের প্রাধান্ত থাকায় মিসরীয় ধাতুগুলি সাধারণতঃ তিনটা অক্ষরে গঠিত হইয়াছে, এ সম্বন্ধে চীনভাষার সহিত মিসরীভাষার অতি নিকট সম্বন্ধ। টলেমিবংশের অধিকার পর্যান্ত স্থপ্রাচীন মিসর-রাজ্যে সংক্ষতনিপিরই প্রচলন ছিল। পরে অপেকার্কত স্বিধাজনক ও সহজ্ঞানেথ গ্রীক বর্ণমালার প্রচলন হওরায় উহা একবারে লুপ্ত হইয়া গিরাছে।

১৮০২ খুটান্দে আকেররাদ্ নামক একজন স্ইড্ মিসরীয় বর্ণমালার উদ্ধারের চেটা পান, ঐসমরে গ্রোটকেও পারত রাজ্যান্তর্গত কতকগুলি কীলকলকের পাঠোদ্ধার করিয়া তাহার প্রথম উদ্ধান সাধারণের গোচরার্থ প্রকাশ করেন। তৎপরে কান্দোলিরেঁ। ও টমাস ইরাং বিশেব অধ্যবসারের সহিত মিসরভাষা আলোচনা করিতে থাকেন। তাঁহারা অনেক গবেষণার পর, রোকেটার প্রস্তর্গলির সাহায্যে প্রাচীনভাষা উদ্ধারে পথ বিস্থত করিয়া দেন। গ্রোটকেও ও সর হেন্দ্রী রালন্সন

৫১৬ খৃষ্ট পূর্ব্বাব্দে দরায়ুস বিত্তাম্প কর্তৃক উৎকীর্ণ কীলকলকের পাঠোদ্ধার করিরা কীলকলকপাঠের যথেষ্ট প্রবিধা করিরা দেন। কীললিপির পাঠোদ্ধার হইতে প্রক্ষতপক্ষে পারসিক্দিগের পবিত্র ধর্ম্মগ্রছ অবস্তাশান্ত্রপাঠেরও বিত্তর স্থবিধা হর। কারণ কীল-লিপির ভাষা ও অবস্তার ভাষা পরস্পরে বিশেষ নৈকট্যসম্বন্ধ্যুক্ত।

যথন প্রাচীন পারন্তলিপির পাঠোছার হয়, তথন স্থসান ও বাবিলোনিয়ার সমান্তরাল স্বস্তুশ্রেণীর গাত্রোৎকীর্থ লিপি পাঠের আলা হয়। পরবর্তিকালে এসিয়া মাইনরের নানাছানে কীললিপি আবিছত হওয়ায় উক্ত ভাবালোচনার পথ অনেক স্থগম হইয়াছে এবং নিনিভে ও বাবিলনের ধ্বন্ত তুপরাশির অভ্যন্তরনিহিত মৃৎফলকসমূহের পাঠোছার হইয়া য়ুক্রেটিস্ উপত্যকার ইতির্ত্তকে সঞ্জীব করিয়া তুলিয়াছে। আকেদিয়ান ভাষায় কর্ণকে "পি" বলে। কীলাকার লিপিতে "পি" লিখিতে যে ভাবে কীলকগুলি (হা) বিশুস্ত হয় তাহায় সহিত বাঙ্গালা প্, হিক্র "পি" ইংরাজি P এবং সংস্কৃত প্রথম বিশেষ সার্ভ্য আছে।

অস্থাীয় ও বাবিলোনীয় হইতে এই কীলাকার লিপি বিভিন্ন
দেশে নিস্ত হয়। কিন্তু ঐ সময়ে অপরাপর জাতির মধ্যে আর
একটা ভিন্ন ভাষা প্রচলিত ছিল। তাহা কীললিপির উৎপাদক
স্থমারীয় জাতি বা তাহাদের বিজেতা সেমিডিক বাবিলোনীয়
দিগের ভাষা হইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন। এদিয়ার বিভিন্ন ছানে,
এমন কি, ইজিয়ান সাগরস্থিত বীপপুঞ্জে এই ভাষার বহশত
শিলাফলক বিক্তমান আছে। ঐ ভাষা হিটাইট্ (Hittite)
নামে ক্থিত। ইহার লিপিকৌশল প্রথমাবস্থার চিত্রলিপি
সন্তুত হইলেও আক্ষরিক পরিণতিতে ইহা বাবিলোনীয় লিপি
হইতে সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র। অনেক চেটার পর, এই ভাষার ফলকলিপিসমূহের পাঠোজারকার্য্য আরম্ভ হইয়াছে বটে, কিন্তু এখন ও
তাহার প্রক্রষ্ট পথ্না নিদ্ধারিত হয় নাই।

প্রাচীনকালে পিলোপেনিজ হইতে একটা এীক উপনিবেশ সাইপ্রাসন্থীপে ঘাইয়া বাস করে, তাহারা যে ভাষায় কথা কহিত, ভাহা জনেকাংশে আর্কেভিয় ভাষার অফুরপ। সমগ্র গ্রীক জাতির মধ্যে এই শাখাই বর্ণমালায় লিখিতে জানিত না, ভাহারা এসিয়া-বাসীর সংস্রবে পড়িয়া ধয়্যাত্মক বর্ণলিপির অফু-সরণ করে। বিখ্যাত পারস্ত্যুদ্ধের অবসানে সাইপ্রাস্ বীপ গ্রীকরাজের অধীন হইলে, গ্রীক ঔপনিবেশিকগণ অলাতীয়ের সংস্রব লাভ করে বটে, কিন্তু ভাহারা মূল গ্রীকদিগের অভ্যন্ত বর্ণলিপি গ্রহণ না করিয়া আপনাদের পূর্ব্বতন শন্দলিপিই ব্যবহার করিতে থাকে।

সম্রতি বৃটাশ মিউজিয়নের কর্তৃপক্ষদিগের যতে সাইপ্রাস

বীপের থবত তৃপরাশির থননকার্য আরত হইরাছে। ভূগিও
আবেবণ করিতে করিতে তর্মায় হইতে খুই পূর্ব ৪র্ম শভাবে
উৎকীর্ণ এক থানি শিলাকলক দেখিতে পাওরা বার। ঐ কলক
থানিতে ডেমিটার ও পার্শিকোনের উদ্দেশে উৎসর্গীকৃত ব্যাপারাংশ গ্রীক বর্ণমালার এবং তরিয়ের ঘটনাবলী শক্ষলিপিতে
উৎকীর্ণ রহিরাছে। উহার গ্রীক বর্ণমালার পাঠপ্রণালী বামদিকে আরম্ভ করিরা ক্রমশঃ দক্ষিণে আসিতে হয় এবং শক্ষলিপির
প্রথা ভাহার সম্পূর্ণ বিপরীত অর্থাৎ বর্তমান আরবী বা পারসীর
ভায় দক্ষিণ হইতে বাম দিকে। এই শাক্ষলিপিতে ৫টা খরবর্ণের চিক্ আছে, কিন্ত ভাহার দ্রন্থ বা দীর্ঘ ঘরের পাথকা
নির্ণয়ের স্থবিধা এবং বাঞ্জনবর্ণে ও জিক্ষামূলীর ভালব্য বা অন্থনাসিকাদির উচ্চারগনির্ণয়ের উপায় নাই।

পাশ্চাতা বর্ণমালার উৎপত্তি।

গভীর গবেষণার সহিত সাইশ্রীয় বর্ণমালা আলোচনা করিতে করিতে খত:ই মনে বর্ণমালার উৎপদ্ধিপ্রসন্ধ আসিয়া সমূদিত হয়। পাশ্চাত্য পশুতগণের বিশ্বাস, এই বর্ণমালা ফিনিসিরা ও গ্রীস হইতে প্রথমে ভূমধ্যসাগরোপকুলবন্তী দেশসমূহে এবং পরে তথা হইতে দুরবর্ত্তী জনপদসমূহে পরিব্যাপ্ত হইমাছিল। ১৮৫৯ খুঠানে ইমানুয়েল ডিক্লতে Academie des Inscriptions সভার শিপিতবের যে অভিমত প্রকাশ করেন, তাহাতে তিনি মিদরীয় হাররোমিফিক বা চিত্রলিপির অভিলপ্ত বা কুৎসিত আফুতি হইতেই ফণিক বর্ণমালার উৎপত্তি শীকার করিয়াছেন। তিনি এতচ্চম বর্ণমালার সামগ্রন্থ সাধনকালে উভয় ভাষাগত কভক্তলির অপুর্ব্ব বৈষম্য অবধারণ করিয়া গিরাছেন। ১৮৭৭ খুষ্টাব্দে অধ্যাপক Dercke ইমাত্বএল ক্ষত্তের মত খণ্ডন করিয়া বলেন যে, অপেক্ষাকৃত পরবর্ত্তি-কালের বিকৃত অস্করীয় কীল-লিপি হইতে লেমেটক বর্ণমালার উৎপত্তি এবং ফণিক ভাষাও সেই অসুরীয় বর্ণমালার নিকট ঋণী: কিছু এ বিষয়ে প্রমাণা-ভাব। যদি প্রমাণ পাওয়া যার, তাহা হইলে অবশ্রই স্থীকার করিতে হইবে যে, কণিক বর্ণমালা বর্তমান নির্দারিত যুগ অপেকা আরও সহস্রাধিক বৎসরের প্রাচীন বলিরা গ্রহণ করিতে হইবে এবং বর্ণমালার ইতিহাসে একটা বুগান্তর সাধিত হইবে।

আবার মিসরের ধ্বস্ত তুপরাশি অবেবণ করিতে করিতে অধ্যাপক ক্লিগুলে পিটি ১৯০০ খুটানে আবিডোস্ নগরের রাজসমাধিকত্তে বে লিপি (Symbola like alphabetic obaracter) উৎকীণ দেখিতে পান, তাহা প্রাচীন হাররোগ্লিফিক্ ও চিক্লিপির সংযোগে উৎপন্ন। মিসর রাজ্যের ইতিহাসোক্ত প্রথম রাজবংশের রাজস্কালেরও পূর্ব্বে অথবা খুটপূর্ব্ব ৬০০০ বংসর হইতে ১২০০ খুঃ পুঃ পর্যন্ত ঐ চিক্লিপি অবাধে মিসররাজ্যে

প্রচলিত ছিল। খু: পু: ৮০০ অব্দেরও পূর্ববৃগের উৎকীর্ণ ক্রীট বীপের শিলাফলকেও ঐ চিক্লিশির নিদর্শন আছে। ইহা বারাও প্রবর্ত্তী মিশরী ভাষার বর্ণমালা হইতে ফিণিকগণ কর্তৃক বর্ণনিপির পরিস্টি সম্বন্ধীর পূর্বস্থিতি মীমাংসাও অপ্রতিপর হইতেছে।

১৯০০ খুৱাকে ক্রীট খীপের ভূগর্ডে মি: ইভান্স বে সকল লিপিপূর্ণ মৃৎকলক পান, তাহার লিপিগুলি মিপরীর চিত্রলিগির অন্তর্মণ। উহার ৮২টী চিত্রমধ্যে ভটী মন্থবা বা তাহাদের প্রভিক্কতি ১৭টী অল্লাক্সতি, বন্ধ ও বাছবন্ধ, গৃহ, গৃহাংশ বা রক্তন পাত্রাদি; ভটী সামৃত্রিক জীবচিত্র; ১৭টী পশু ও পক্ষীমৃত্রি; ৮টী কুক্ষ ও গুলাদি, ভটী গ্রহনক্ষত্রাদি, ১টী ভৌগোলিক চিত্র, ৪টী জ্যামিতমূলক চিক্ষ এবং ১২টী অপর চিক্ষ ছিল। এই ১২টী কি বর্ণ ভাহা আজিও আবিষ্কৃত হয় না। নোসসের (Kuosson) স্থবিধ্যাত প্রাসাদের ধ্বত্তকুপ হইতে প্রাপ্ত ফলক-থানি মাইকিনি খীপের আদিম অধিবাসীর উৎকীণ বলিয়া সাধারণের ধারণা।

ইভাল ঐ মৃৎফলক পাঠে অবগত হইয়াছিলেন যে,এখানকার অধিবাসিবর্গ মাইকিনীর বিজেত্দলের অধীন ছিল। মাইকিনীরগণ এখানে নবাগত হইলেও ভাহাদের লিপিও অপেকারত প্রাচীনতম ছিল, কেন না এখনও আবিডোস্ হইতে প্রাপ্ত ফলকে মাইকিনীর লিপির যে প্রতিকৃতি রহিয়াছে, তাহা মিসরের প্রথম রাজবংশের পূর্কবন্তী সমরের মৃৎপাত্মন্থ চিত্রলিপি অপেকা প্রাচীন না হইলেও যে ভাহার সমসাময়িক, তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। এই লিপিপ্রধার বর্ণগুলি আক্ষরিক কিলাকিক ভাহা আজিও ফল্পাইরলে জানা যায় নাই।

এক সমরে এই বীপ হইতে সভ্যতাল্রোত করিরা ও
নাইসিয়ার প্রবাহিত হয় । কারিয়াগণ ক্রীট হইতে এসিয়ার
উপক্লে আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিলেও, তাহাদের ভাষা
বা নিপির সহিত কৌনাস্ (Caunus)—বাসিদিগের নিপির
অনেক সাদৃশ্য দেখা বায় । নোসসের ফলকপাঠে অমুমান হয়
যে, কারিয় ও মাইকিনীয়গণ পরস্পারে নিকট সম্বন্ধ্যুক্ত এবং
কারিয় ও লাইসিয়গণও পরস্পারে বিশেব ভাবে সংলিষ্ট, কিন্তু
গুংথের বিষয় ভাহাদের ভাষাগত সাদৃশ্য স্বভন্ত। উহা আদৌ
ইন্দোবুরোপীয় কেন্দ্রস্কৃত বলিয়াই ধারণা করা যায় না।
পক্ষাব্রের জিলীয় ভাষায় উৎকীর্ণ ফলকাদিতে গ্রীক লিপির যথেট
সাদৃশ্য অমুকৃত হয়। উপরোক্ত ভাষাত্রের উৎকীর্ণ শিলাফলক
গুলিয় মধ্যে একটাও গৃষ্ট পূর্ক ওট শভান্দীর পরবর্তী নহে।
গ্রেরানামটনর (বিশেষতঃ লাইসিয়)-বাসিগণের কথিত ভাষার
সহিত গ্রীকভাষার অনেক শক্ষাইবয়। লক্ষিত হয়। এতছায়া

প্রতীরমান হর বে গ্রীক অক্ষর হইতে ঐ ভাষার বর্ণচিক অনেক স্বতম্ভ। অনেকে এমনও অক্সমান করেন বে, রোডস্ বীপের ডোরিয়া লিপির সহিত প্রীক অক্ষর মিশিয়া এই বর্ণমালার উৎপতি হইরাছে।

উপরে যে মোজাবাইট্ প্রস্তরকলকের বিবরণ বর্ণিত হইরাছে, তাহা নি:সন্দেহে খুই ৮৯৫ জন্মের পূর্ববর্ত্তী সময়ে উৎকীণ বলা বাইতে পারে। ঐ মোজাব ভাবা বা তাহার বর্ণচিক্ত আক্ষরিক পরিপুষ্টির কীর্ত্তিক্ত বলিরা গৃহীত হইলেও,
সমগ্র মুরোপের বর্ণাচকের বিভারকর্তা ফণিক ভাষা হইতে পৃথক্।
১৮৭৬ খুইান্দে সাইপ্রাস্ খাঁপে ব্রোঞ্জ ধাতু নির্মিত যে পাত্র
পাওরা গিয়াছে, তাহা সিদোনীয়রাজ হিয়ামের ভৃত্য কর্তৃক
বাল্লেবেনোনের উদ্দেশে উৎসর্গান্ধত হইয়াছিল। উহাতে যে
থোদিত লিপি আছে, তাহা ফণিকলিপির প্রাচীনতম নিদর্শন।
কেহ কেই উহাকে মোজাবাইট্ ফলকের পূর্ববর্ত্তী, কেই বা
পরবর্ত্তী বলিয়া গ্রহণ করিয়া থাকেন।

উপরে বর্ণালপির উৎপত্তি, পরিণতি বা বিস্তার প্রসক্ষে যাহা লিখিত হইল, তাহার কোনটী হইতে যে পাশ্চাত্য বর্ণ-লিপি গৃহীত হইয়ছে তাহা কোন পাশ্চাত্য পণ্ডিতই মীমাংসা করিতে পারেন নাই। তাহাদের ধারণা ফণিক বর্ণমালাই মুরোপীয় সমগ্র বর্ণমালার আদি। অধ্যাপক পিটর গাইল লিখিয়াছেন:—"Whenever the Symbols originated, it was to the Phoenicians that the Western world owed its alphabet, as is clear (1) from the forms of the letter themselves; (2) from the names which the Greeks gave to them; (3) from the Greek tradition of their origin."

১৮৯৬ খুষ্টাব্দে থেরা দ্বীপে কডকগুলি প্রাচীন শিলালিপি আবিষ্কৃত হয়। পণ্ডিতবর Freiherr Hiller Von Gartringeu উহার পাঠোদ্ধার করিয়া দেখাইরাছেন বে, প্রাচীন গ্রীক বর্ণমালার সহিত ফণিক বর্ণমালার যথেষ্ঠ সাদৃশু আছে।

বাহা হউক, এই ফণিক জাতীর বণিকসমিতির দ্বারা পশ্চিম
যুরোপ খণ্ডে এবং ভূমধ্যসাগর তীরবর্ত্তী প্রদেশে বর্ণমালার
বিস্তারকরে মানবজাতির বিশেষ উর্লিড ও ঐতিহাসিক পরিণাত
সাধিত হইরাছিল। অদম্য উৎসাহে ও অধ্যবসায়ে এই ফণিক
জাতি অতি প্রাচীন কালেই মিসর রাজ্যবাসীর সহিত বাণিজ্য
সম্ম বিস্তার করে। এই সমরে তাহারা বাণিজ্যের প্রয়োজনীরতাস্থারে মিসরীর লিপিপ্রথা কতক পরিমাণে পরিবর্তিত করিয়াছিল। এরূপ স্থলে ইহাই স্বীকার করা যাইতে পারে বে,
ভাষারা সংদশে থাকিরাই জটিল চিত্রলিপি বক্ষন করিতে

শিধিরাছিল এবং অক্তান সভেত চিক্ত আপনাদের বর্ণমালা मार्था महिर्विष्ठे कृतिहा नरेबाकिन। किन्न वास्त्रविक भएक ফনিক্ সম্প্রদায় মিসরীয় সঙ্কেতলিপি ও তাহার উচ্চারিত স্বরাদি গ্রহণ করিয়াছিল কি না, অথবা তাহারা মিসরীয় সঙ্কেতলিপি গ্রহণ করিয়া তাহাতে আপনাদের শ্বর সংযোজনা করিয়াছিল কি না তাহা সঠিক নির্ণয় করা ছ:সাধ্য। তবে স্বীকার করিতে হইলে এই মাত্র বলা বাইতে পারে বে. সাঙ্গেতিক ও তাহার অনুদ্রপ প্রাচীন শব্দই ফণিকদিগের উদ্ধাবিত হওয়াও বিচিত্র নছে। তবে এ কথাও ঠিক,ফনিক বর্ণমালার যে সকল নাম প্রদত্ত হইয়াছে এবং মিদরীয় সঙ্কেতলিপিতে যে সকল মৌলিক বন্ধর চিত্র উদ্যাটন করে, ভত্নভয়ের মধ্যে কোন সম্বন্ধ নাই। বেমন হিক্র "আলেফ "এর সহিত ফনিক বর্ণমালার বে তুলা আছক্ষর. তাহার সহিত রুষমুণ্ডের কারনিক সাদৃত্য আছে এবং দ্বিতীয় হিক্র অক্ষর "বেথ্"এর সহিত একটা চতুরস্র বাটীর সৌসাদৃশ্য দেখা যায়। কিন্তু বস্তুতঃ বুৰমুণাক্ষতি ঐ ফনিক বৰ্ণটী তাড়া-তাড়ি লিখিতে হইলে বৃষমুখের পরিবর্তে অনেকটা ঈগল পক্ষীর ঠোটের ন্যায় হইয়া আইসে এবং সেইরূপ ক্রন্ত প্রণালীতে বেথ অক্ষরটাও বকের তার বক্রগ্রীব হইরা যার। ইহাতে পাশ্চাতা পশ্চিতগণ অমুমান করেন যে, ফনিকগণ চিহ্ন ও শব্দ বা স্বরমাত্র গ্রহণ করিয়াছিল, কিন্তু তাহারা বর্ণের নামগ্রহণ করে নাই।

পরবৃধিকালে ফনিকদিগের হারা ফনিক বর্ণমালার কতদ্র পৃষ্টি সাধিত হইয়াছিল, তাহা লিপিচিত্র এবং ফলকাদি নিরীক্ষণ করিলেই স্কল্প্ট প্রতিভাত হইবে। উত্তর ইজিপ্টের আর্দিবেল নগরন্থ স্কর্তং প্রতিমৃত্তিসমূহের পাদমূলে সমেতিকাসের বেতন-ভোগী গ্রীক্, কোরিয়া ও ফনিকসেনাদল স্ব স্ব জাতীয় ভাষায় আপনাপন নাম অন্ধিত করিয়াছিল। ইহার পরে, খুইপুর্ক প্রায় ৩০০ অবদে বাইরোসের ষ্টেলিতে, এসমাল্লারের প্রস্তব-নির্দিত শ্বাধারে, কার্থেজের ধ্বস্তস্থ মধ্যে এবং প্রাচীন সিডোন্ উপনিবেশে ঐ সকল লিপির যে সকল ফলক পাওয়া গিয়াছে, বাহ্য আকৃতিকে তাহা প্রায় একরূপ; কিন্তু সর্ক্রিরাই অতিসামান্ত প্রভেদ দৃষ্ট হয়।

এই সকল শিলা বা মৃৎদলকে যে সকল অক্ষর বাবহৃত হইরাছে, তাহা পূর্জবর্তী জাক্ষরিক লিপিচিল্পেক্ষা সরু ও লক্ষা; স্থতরাং বেশ বুঝা যায় যে ঐ লিপিপ্রণালী তথন শিলা-ফলকের পরিবর্তে বাণিজ্ঞাকার্যোর উপযোগী হইরা দাঁড়াইয়াছে। কারণ বাণিজ্যের ব্যস্ততার লেখা কিছু ক্রুত ও সক হইয়াই পড়ে। পাথরে খুদিবার জন্ত যোটা ইাদের অক্ষর আবশুক। যথন ফনিকর্ণমালা পাশ্চাভাত্থতে আপনার অলোভ্ডত

অক্রনিপির পরিপৃষ্টি ও উৎকর্বতাসাধনে তৎপর ছিল, ঠিক সেই সময়েই প্রাচাজনপদসমূহে স্লমলোতে বর্ণমালা ও লিপি-প্রচার কার্য্য চলিতেছিল। পাশ্চান্তা-পঞ্জিগুণের বিশ্বাস, পূর্ক্থতে সেমিটিকজাতিই সর্বপ্রেথমে কতকগুলি অসম-বর্ণীয় চিহ্ন লইয়া ভাষালিপির প্রতিষ্ঠা করে এবং তথা হইতে ক্রমণ: দূরদেশে বিভূত কয়। কিছু উচ। কতদুর যুক্তিসিদ্ধ, তাহা পূর্বাপর আলোচনা করিলে বেশ বঝা যায়। মেদার কর্ত্ত আরব দেশ হটতে আবিষ্কৃত ভাষ্টভালর কোন কোনটার লিপি খুষ্ট পূর্ব্ব ১৫০০ অব অপেকাও প্রাচীন : মতরাং যদি তাহা হইতে বর্ণমালার উৎপত্তি ও প্রচার স্বীকার করা যায়, ভাহা হইলে পূর্ব্ব মীমাংসিত লিপিডবের ভিত্তি আরও প্রাচীন যুগে আসিয়া পড়ে। তৎপরে খুষ্ট পূর্ব্ব ৭০০ অব্দের প্রাচীন কয়ট সেমেটিক লিপির নিদর্শন পাওয়া যায়। হোজ-কিয়ার রাজত্ব কালে মোআবাইট প্রস্তুরে এবং সিলোরামের প্রভাৱনীর স্রভন্ন মধ্যে প্রাপ্ত হিব্রুলিপি এবং বল লেবানোনের পাত্রন্থ লিপিতে ফনিক ছাঁদের সেমিটিক অকরের লিপি বিশ্বমান আছে। এতব্রির লাফিদ ও অক্সান্ত নগরে প্রাপ্ত মং-পাত্রাদিতে যে সকল হিত্রবর্ণ চিহ্ন এবং হিত্রা শিলাশিপি পাওয়া গিয়াছে, ভাহাও তদমুরূপ প্রাচীন বলিয়া গৃহীত হইরা থাকে। ফনিকদিগের স্থার এই হিক্র চিক্লগুলিও বিলেষ বক্রাকৃতি।

দ্বিছদীগণ নির্ম্মাননের পর ক্রমে ক্রমে অরমীন্বলিপি অভ্যাস করিতে থাকে। তাহা হইতেই ক্রমে চতুকোণ হিক্রবর্ণ-লিপির উৎপদ্ধি হয়। এক মাত্র সামারিটান্ লাভিই সেই প্রাচীন ও বক্রাক্সতি হিক্রনিপিই আশ্রম করিয়াছিল, সেই কারণে তাহারা আপনাদিগকে প্রকৃত হিক্র বলিরা গৌরব করিরা থাকে।

অরমীয় লিপির প্রাচীনতম নিদর্শন সিরিয়া রাজ্যের অন্তর্গত নিন্দ্ লিলি নগরে পাওয়া গিয়াছে, উক্ত ফলকলিপি প্রায় ৪০০ খুই পূর্ব্বাদে উৎকীর্ণ হইয়াছিল। এই অরমীয় লিপির সহিত পূর্ব্বাদে মাআবাইট্ প্রেল্ডরলিপির তেমন ইতর বিশেষ নাই। আত্মানিক ৫০০ খুই পূর্ব্বাদে পাপিয়াস্ পত্রপটে যে সকল অরমীয় লিপি লিখিত হইয়াছিল, সেইরপ অক্ষরমালা খুই পূর্ব্ব ২০০ অব্দ পর্যান্ত বিশুমান থাকে। এই সমরে মিসরদেশে পারক্তরাজপ্রতাব অপ্রতিহত ছিল। এইরপ বক্তাকতি বা জড়ানে অরমীয় লিপির সহিত অফ্ররীয় কীলক্ষক পার্বাহ চুক্কাংশ লিখিত অরমীয় লিপির সহিত অনেক সোনাল্র্ডা আছে। অরমীয় লিপি তাড়াতাড়ি ও জড়ানে লিখিতে ক্রমে গোলভাব ধারণ করে, কারণ ফনিক লিপিতে অক্ষরের হলগুলি সাধারণতঃ সমান ছিল। অক্ষরের টান বা হলগুলি গোল হওয়ায় অরমীয় অক্ষর ক্রমে চতুক্ত হিক্ত

ফকরে পরিণত এবং তাহা হইতেই ক্রমে Palmyraর অলক্ত লিপির (Ornamental writing) বিকাশ যটিয়াছে।

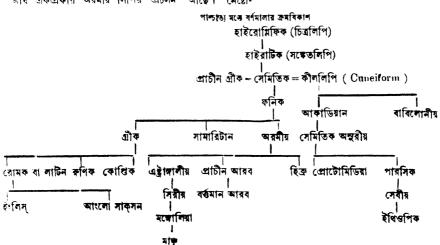
আরবজাড়ির নবতীরদিগের মধ্যে পুর্বেষ এই অর-মীয় বর্ণনিপি প্রচলিত ছিল্। উহাদের অক্সরের ছাঁদগুলি অন্ন পরিবর্তনেই ভাহা বর্তমান আরবী অক্ষরে রূপাস্তরিত হইয়া যায়। উত্তরপূর্ব্ব আর্বদেশের তিসার মন্দিরভাভে এই শ্রেণীর লিপি বিভাষান আছে। উহা খুইপুর্ব ৫ম শতাম্বের পূর্বে উৎকীণ হইয়াছিল। এই লিপিতে প্রাচীন অরমীয় লিপির অনেক ছাঁদ বিশ্বমান দেখা যার। তৎপরবর্তী সময়ের অনেকগুলি নবতীয় শিলালিপি আবিষ্ণত হইয়াছে। সমরের তারভমাানুসারে ঐ ফলফলিপিগুলির যথেষ্ট পরিবর্তন ঘটয়াছে। চাল'ন ডৌট, হবার ও ইউটিং প্রভৃতি প**প্তিমশু**লী বিশেষ গ্রেষণার সহিত ঐ ফলকের পাঠোন্ধার করিয়া সেই লিপি-ালার বর্ণসমহের ক্রমবিকাশ দেখাইবার জন্ম একটা ভালিকা উন্ধত করিয়াছেন। ঐ শিলাফণক প্রধানতঃ ১ খুষ্ট পূর্ব্বান্দ ४३८७ १६ बृष्टीक गर्सा उँ९कीर्ग इटेग्नाहिल । टेहांत्र लिलिल्याांग्र অনুসৰণ করিলে সহজেই কঠমান আর্বী লিপির বর্ণবিস্থাস অমুভব করা যাইতে পারে।

আরব দেশে কিউফিক ও নষকি নামে হুই প্রকার বর্ণমালার ব্যবহার ছিল। শিলালিপি ও মুদ্রাদিতে সাধারণতঃ প্রথমোক্ত লিপিই ব্যবহৃত, এই কারণে সাধারণ কার্য্যে তাহা অস্ত্রবিধাননক বোধে পরিতাক্ত এবং সাধারণ লিপিতে অপেক্ষাকৃত ক্রুনে ছাঁদের বর্ণমালা গৃহীত হইয়াছে। এই শেষোক্ত মহ্কি লিপিই বর্তমান আরবীলিপির জননী।

দিরিয়ার উত্তরবাসী খুষ্টানদিগের মধ্যে এট্রাঙ্গালিয়া নামে আব একপ্রকার অরমীয় লিপির প্রচলন আছে। নেষ্টো- রীর মিসমরীদল ঐ লিপি মধ্যএনিরার লইরা বার, পরে ভাহা ক্রমে তুর্কমান্ হইতে মাঞ্রিক্স পর্যান্ত হুদীর্ঘ জনপদবাসীর লিপিরণে পরিগণিত হয়।

উপরোক্ত লিপি বাতীত, আরবদেশের দক্ষণন্থিত যেমেন প্রদেশে আর এক প্রকার লিপি প্রচলিত ছিল। উহার বর্ণথলি দক্ষিণ সেমিটিক, বা ইথিওপিন্ন লিপি নামে পরিচিত।
ব্যাকরণ ও বাক্যবিভাসের ক্রমনির্ণন্ধ ছারা এই সকল
দক্ষিণ সেমিটিক লিপিরও সেবীর ও মাইনীর নামে হইটি
বিভাগ গঠিত হইয়াছে। অভ্যান্ত শিগালিপির ভার, এই সেবীর
লিপি দক্ষিণ হইতে ক্রমণঃ বামদিকে লিখনেরই রীতি ছিল,
কিন্তু কতকগুলি ইথিওপিক ফলকলিপিতে বাম হইতে ক্রমে
দক্ষিণে লিখিয়া বা পড়িয়া ঘাইতে হয়। কোন সময়ে দক্ষিণ
আরবে সেবীয় ও মাইনীয় লিপির প্রান্থজীব ছিল এবঃ
কোন সময়েই বা চিরস্কন প্রসিদ্ধ দক্ষিণ হইতে বামে লিপি
অঙ্গরূপ সেমিটিক প্রথা বর্জন করিয়া তদ্বিপরীত অর্থাৎ বাম
হইতে দক্ষিণাভিমুখী ইথিওপিক প্রথা প্রবর্তিত হয়, তাহা
আজিও নিণীত হয় নাই ।।

ভারতীয় থরোষ্টালিপির স্তার, পারস্থ, আরব, দেমিটিক, দাইপ্রিয় লাটন, ফিনিক প্রভৃতি যাবতীয় পাশ্চাত্য ভাষাবই লিপিপ্রণালী দক্ষিণ হইতে বামমুখী ছিল, খুইপুর্ব্ব ৮ম শতাব্দেব উৎকীর্ণ ডিপিলনের স্থাবৃহৎ পাত্রোপরিস্থ প্রাচীন আটিক লিপি, কিউরীয় হইতে প্রাপ্ত সাইপ্রীয় কলকলিপি ও তাহার নিমন্থ গ্রীক সমবর্গগুলি এবং প্রিনেষ্টির গোল্ড ফাইবিউলার উপরিস্থ প্রাচীন লাটিনলিপি প্রভৃতি দক্ষিণ হইতে বামমুখীলিপির নিদর্শন। বিংখ্যালিপি, স্বর, দেবনাগরী প্রভৃতি শব্দ দেখ।



লেণ্দিউদ্ বলেন, এই ইবিওপিক বর্ণনালার অধিকাপে আচীন ভারতীয় লিপি হইতে পরিপৃহীত।

বর্ণ লৈখিক। (ত্রী) ধর্ণলেখা স্বার্থে কন্। টালি অভ ইন্ধা।
কঠিনী। ১ খড়ি। ২ লেখনোপ্রোগী খুব্রি।
বর্ণবিৎ (ত্রি) বর্ণোহস্তান্ত বর্ণ (রসাদিভাশ্চ। পা ধাহা৯৫) ইতি
মতুপ্ মক্ত বং। বর্ণবিশিষ্ট। ত্রিরাং ভীব্। বর্ণবর্তী হরিতা।
(প্রটাধর)

বর্ণবর্ত্তি, বর্ণবর্ত্তিকা (জী) লেখনী (Pen বা Pencil)। বর্ণবাদিন্ (পুং) প্রশংসাকারী। স্ততিকারক। বর্ণবিকার (পুং) বর্ণের বিকার। যেমন যোড়শ। যয্দশ, দ স্থানে উ ও য স্থানে ড় ইহার পদ হইল = যোড়শ।

(কাতব্রপঞ্চিকায় ত্রিলোচনদাস)

বর্ণবিলাশিনী (স্ত্রী) হরিজা।
বর্ণবিলোড়ক (পুং) বর্ণান্ বিলোড়য়তীতি বি-লোড়-খূল।
লোকতেন, যে ব্যক্তি অন্তের লিখিত বিষয় চুরি করিয়া নিজের
বলিয়া পরিচয় দেয়। ২ সন্ধিচৌর, সিঁদেল চোর।
বর্ণবৃত্ত (ক্লী) অমুষ্টুভ, ইন্দ্রবন্ধা প্রতি সাধারণ শ্লোক, যাহাদের
বর্ণ ধরিয়া ছন্দোগণনা করা হয়। [মাত্রার্ত্ত দেখ।]
বর্ণবিমুক্তি (স্ত্রী) বর্ণভাবার।
বর্ণশিক্ষা (স্ত্রী) বর্ণভাবা।
বর্ণশিক্ষা (পুং) বর্ণেয়্য শ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ।

বর্ণস (ত্রি) বর্ণযুক্ত। (পা ৪।২।৮০ তৃণাদিগণ।) বর্ণসংযোগ (পুং) সবর্ণ বিবাহ। বর্ণসংসগ (পুং) অসবর্ণ বিবাহ।

চারিবর্ণের মধ্যে ব্রাহ্মণ প্রধান।

র্ণসিংছার (গুং) > অসবর্ণ বিবাহ দ্বারা সবর্ণের নাশ। ২ আদ্ধানি চারিবর্ণের একত্র সন্মিলনী।

বর্ণসঙ্কর (পুং) বর্ণতো ব্রাহ্মণাদিতাঃ বর্ণানাং বা সঙ্করো নিশ্রণং যত্র। মিশ্রিতজাতি, ব্রাহ্মণাদিবর্ণের অন্থলোম বা প্রতিলোমে জাত জাতি।

গীতায় লিখিত আছে যে, যথন অধর্মের অতাক্ত প্রাহর্জাব হয়, তথন কুললনাগণ দ্বিত হয়। তাহারা দ্বিত হইলে ঐ ললনাগণ হইতে বর্গমন্ত্র জাতির উৎপত্তি থাকে। বর্ণমন্তর হইলে দেব ও পিতৃকার্য্য লোপ এবং কুলধর্ম্ম ও জাতিধর্ম নাই হয়। ফুডরাং তথন সকলের নরক হইয়া থাকে।

"অধর্মাভিভবাৎ ক্লফ ! প্রচ্নান্তি কুলজিয়:।
জীব্ হুষ্টাস্থ বাজের ! জারতে বর্ণসঙ্কর:॥
সঙ্করো নরকারের কুলমানাং কুলস্থ চ।
পতত্তি পিতরো জেবাং লুপ্রপিণ্ডোলকজিয়া ॥
দোবৈরেতৈ কুলমানাং বর্ণসঙ্করকারকৈ:।
উৎসাপ্তরে জাতিধর্মাঃ কুলধর্মান্ত শাবতাঃ॥

উৎসম্ভূলধৰ্মাণাং মন্ত্ৰ্যাণাং জনাৰ্জন ৷ নরকে নিয়তং বাসো তবতীভান্তগুলার দ্ব

(ভগবদ্গীতা ১ অ০)

বান্দণ, ক্ষত্রির, বৈশ্ব ও শুদ্র এই চারিটা বর্ণ, এই চারি
বর্ণের অভিরিক্ত আর বর্ণ নাই। চারিবর্ণের অভিরিক্ত যে
সকল লাভি দেখিতে পাওরা বার, তাহারা সম্বর লাভি।
এই চারি বর্ণ হইতেই সম্বর লাভির উৎপত্তি হইরাছে। শাল্রে
লিখিত আছে বে, জীদিগকে অভি সামান্ত গুংসল হইতে
যাত্রপূর্বক রক্ষা করিবে, ভাহা না করিলে সেই জী পিভা ও
বামী এই উভর কুলেরই সম্ভাপের কারণ হয়। পদ্মীকে সর্বতোভাবে রক্ষা করা সকল ধর্ম হইতে শ্রেষ্ঠ। কি হর্বল, কি
সবল, কি ব্যুর, কি ব্যুর, সকলেই নিজ নিজ ভার্যা রক্ষা করিতে
যন্ত্রবান্ হইক্রে, এক ভার্যাকে রক্ষা করিলেই ধর্ম ও কুল
পবিত্র হয়।*

ভার্যা স্থরক্ষিতা না হইলে তাহাদের মধ্যে ব্যভিচার ঘটিয়া থাকে, তাহাতে বর্ণসন্ধর হয়। বর্ণসন্ধর হইলে ধর্ম ও কুল নাই হয়। ধর্ম ও কুল নাই হইলে ঐহিক ও পার্ম্মিক কোন রূপ মালগের সন্ভাবনা থাকে না। এইলয় যাহাতে বর্ণসন্ধরত না হইতে পারে, এবং বর্ণসন্ধরের মূল কারণ বে স্ত্রী জাতি তাহাদিগকে অতিশর যম্প্রের সহিত রক্ষা করিতে হইবে। ইহাই শাল্রের উপদেশ।

ইহা ভিন্ন আক্ষণাদি বর্ণতার যদি অধর্ম ত্যাপ করেন, তাহ। হইলে তাহারাও বর্ণসন্ধর নামে অভিহিত হন। মনুতে গিণিত আছে যে, অভ্যোক্ত স্ত্রীগমন, সগোতে বিবাহ এবং উপনমুনাদি স্থধর্ম ত্যাপ প্রাকৃতি কারণে আন্ধণাদি বর্ণত্রেরের মধ্যে বর্ণসঙ্কর ও ঘটিয়া থাকে।

"ব্যক্তিচারেশ বর্ণানামবেস্থাবেদনেন চ। স্বকর্মণাঞ্চ ত্যাগেন কারন্তে বর্ণসঙ্করাঃ ॥" (মন্ত ১০।২৪)

"প্লেভ্যেছপি প্রসঙ্গেতাঃ দ্বিবোরক্ষা বিশেষতঃ।
 বর্গেছি কুলরোঃ পোকমাবহেবুররকিতাঃ
 ইমং ছি সর্বর্বর্গানাং গল্পতাে ধর্মমুক্তমন্।
 বততে রক্ষিতুং ভার্যাং জর্জারো দুর্বলা আপি
 বাং প্রস্তিং চরিত্রক কুলমান্তাননেব চ।
 বক্ধ ধর্মাং প্রক্রি কুক্তিঃ।

 'রান্ধণাদিবর্ণানাং **অস্তোভন্তীগমনেন সংগাআভবিবাহা**-বিবাহেন উপনয়নকপ্ৰকৰ্জগীগেন চ্বৰ্ণস্করো নাম **জা**য়তে' (কুল্ক)

শীল্লান্থসারে দেখা বার, ছই প্রকারে বর্ণসন্ধর হইরা থাকে,

এক ব্রীদিগের ব্যক্তিচার হইতে চারি বর্ণের অতিরিক্ত যে

সকল জাতি ভাহারা প্রথম বর্ণসন্ধর আরু ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় স্বধর্ম
ভাগে বারা দিতীর বর্ণসন্ধর হইরা থাকে।

চারিবর্ণ হইতে অনুলোম ও প্রতিলোম ক্রেমে বর্ণসঙ্কর আছি উৎপর হয়। বিভিন্ন লাতি মধ্যে পরস্পার আসক্তিবশতঃ অনুলোম ও প্রতিলোম ক্রেমে এই বর্ণসঙ্কর জ্বারা।

"সন্ধীর্ণধোনরো বে তু প্রতিলোমান্থলোমজা: ।

অভ্যেন্তবাত্রষকাশ্চ তান্ প্রবক্ষাম্যশেষতঃ (শ্রেম্ব ১০।২৫) রান্ধণাদি চারিবর্ণ কর্তৃক পরিণীতা স্ত্রীতে উৎপন্ন সন্তান বান্ধণাদি বর্ণ হইয়া থাকে। ইহা ভিন্ন অসবর্ণা পদ্মীতে উৎপন্ন সন্তান জনকের সমানবর্ণ হয় না, তাহাদের জাত্যন্তর ঘটিয়া থাকে। মহাদি ঋষিগণ বলিয়াছেন যে, বিজবর্ণত্রম কর্তৃক অসলোমক্রমে অনন্তরবর্ণকা পদ্মীর গর্ভসন্থত তনরেরা মাতার হান জাতি হইলেও পিতার সদৃশ জাতি প্রাপ্ত হইয়া থাকে এবং তাহারা যথাক্রমে মূর্দ্ধাবসিক্তা, মাহিয়া এবং করণ এই তিন আথা প্রাপ্ত হয়

ব্রাহ্মণ কর্তৃক একান্তরক বা বৈশ্বাগর্ভসম্ভূত সন্তান অষ্ঠ ও
দ্বন্তরক্ত শুদ্রাগর্ভসম্ভূত সন্তান নিষাদ বা পারশব এবং ক্ষত্রিয়কর্তৃক
শুদ্রাগর্ভসমূত সন্তান উগ্র নামে অভিহিত। ক্ষত্রিয় কর্তৃক
ব্রাহ্মণীগর্ভসমূত সন্তান হত, বৈশ্ব কর্তৃক ক্ষত্রিয়াগর্ভসমূত
ব্যাগধ এবং ব্রাহ্মণীগর্ভসমূত সন্তান বৈদেহ নামে অভিক্রত। শুদ্র কর্তৃক বৈশ্বাগর্ভক সন্তান আয়োগব, ক্রত্রিয়াগর্ভক কন্তা, ব্রাহ্মণীগর্ভক চঙাল। শুদ্র কর্তৃক প্রতিামক্রমে ক্লাভ এই ভিন ক্লাভি অভি নিক্ষট। ব্রাহ্মণ কর্তৃক
উগ্রক্ত্রাগর্ভসমূত ভনয় আর্ত, অষ্ঠক্ত্রাসমূত আভীর এবং
আ্রোগ্র-ক্রাগর্ভক বিগ্রণ উপাধি প্রাপ্ত হ্ট্রা থাকে।

চণ্ডাল, স্ত, বৈদেহ, আবোগব, মাগধ এবং ক্ষতা এই ছয়টা প্রতিলোমক্ষ বর্ণসক্ষর। চণ্ডালাদি বড়্বিধ বর্ণসক্ষর জাতিব পরস্পর অন্থলোম বা প্রতিলোম ক্রমে পরস্পর জাতীয়া কন্সাগর্ভে বে দকল দক্তান হয়, তাহারা তৎপিতা মাতা অপেকা দর্বতোভাবে হীন, নিন্দাই ও সংক্রিয়াবহিভূতি। পুত্র কর্তৃক ব্রাহ্মনীগর্ভজাত চণ্ডালাদি দন্তানেরা বেরপ অপ্রক্রই বানিয়া পরিগণিত, চণ্ডালাদি বড়্বিধ সক্ষরকর্তৃক ব্রাহ্মণাদি চারিবর্গে সমুৎপাদিত দন্তানেয়া তাহাদের অপেকা দহন্ত গুলে হান ও নিন্দাই। আবোগবাদি বড়্বিধ হীনজাতীবেয়া

পরম্পর মিত্রভাবে পরম্পর বর্ণজা পদ্মীগর্ছে যে সম্ভান উৎপাদন করে, তাহাদের সংখ্যা পঞ্চদশ। তাহারা জনকাপেকা আরও হীন। দম্মজাতি কর্ত্ব আয়োগব স্ত্রীগর্ডে যে সম্ভান সমুৎ-পাদিত হয়, তাহার নাম সৈরিক, ইহারা কেশরচনাদি কার্য্য-কুশন। ইহারা যদিও প্রকৃত দাস নহে, তথাপি দাসকার্য্যোপ-कौरी এবং পाम बात्रा मुशानि वध कतिया कीविका निक्तां करता। रितानरुक जाि कर्ज़क चारियागरी जीगर्स्क रय मस्रान छैरभन्न स्य, তাহার নাম মৈত্রের। ইহারা স্বভাবতঃ মধুরভাষী, প্রাত:কালে ঘন্টা বাজাইয়া নূপতি প্রভৃতির স্তুডিপাঠ করা ইহাদের কার্যা। নিষাদ কর্ত্তক আয়োগবন্ত্রীগর্ভে সমুৎপাদিত সম্ভানের নাম মাৰ্গৰ বা দাশ। ইহাৰ নৌনিৰ্মাণকৰ্মকুশল। আয়োগৰী ন্ত্রীগর্ভে জনকভেদে সৈরিষ, মৈত্রেয় এবং মার্গব এই জাতিত্রয় জন্মগ্রহণ করে। নিষাদ কর্ত্তক বৈদেহীগর্ভসম্ভূত সম্ভানের নাম কারাবর, ইহারা চর্ম্মচ্ছেদকারী। বৈদেহজাতি কর্ত্তক कात्रावत्र जी रहेए जम ७ नियामजी रहेए रामकाणि, हजान হইতে বৈদেহী স্ত্রীতে বেণুব্যবহারজীবী পাশুসোপাক, নিষাদ বৈদেহীতে আহিণ্ডিক ও চণ্ডাল হইতে পুৰুষীস্ত্ৰীগৰ্ভে সোপাক জাতি জন্মগ্রহণ করে। এই সোপাক জাতি জল্লাদের কার্যা क्रिया भौविका निकार करत। ठुणान स्ट्रेंट नियानीगर्छ-সম্ভূত যে সম্ভান, তাহারা অম্ভাবসায়ী (গঙ্গাপুত্র), খাশানকার্য্য हेशामत्र উপसीविका। এই मकन वर्गमस्त्र क्रांजि निस्मनीय এবং নিন্দাকর্মকারী। (মমু >০ মৃ০ ও কুন্নুকডট্ট)

বর্ণসক্ষরদোষ দারা বহতর শঠ জাতির উৎপত্তি হইয়াছে, তাহাদের নাম ও সংখ্যা নির্দেশ করিতে কেহই সমর্থ নহেন।

"वर्गमङ्गतामाराग वस्तानः मठेकाख्यः।

ভাসাং নামানি সংখ্যাঞ্চ কো বা বক্তুং ছিজোত্তম ॥"

(ব্রন্ধবৈবর্তপু• ১ ব্রন্ধও ১০ অ°)

[এই বর্ণসন্ধরের বিশেষ বিবরণ জ্ঞাতি, সন্ধরজ্ঞাতি ও তত্তৎ শব্দে জ্ঞান্তব্য ।]

বর্ণ সঙ্করিক (ত্রি) বর্ণসঙ্করসম্বন্ধীর। অসবর্ণ বিবাহ দ্বারা সঙ্করজাতির উৎপাদনকারী।

বর্ণসংঘাট (পু:) বর্ণমালা।

বর্ণসংঘাত (পু:) বর্ণসমূহ।

वर्णभ्यास्त्रायः (११) जनवमाना ।

বর্ণ সি (পুং) রুণোভি হুলমিতি রুঞ্ আবরণে (সানসিবনসি প্রসীতি। উণ্ ৪।১০৭) ইতি অসি ধাতোমুক্ চ। জল। (উজ্জল)

বৰ্ণস্থান (क्री) বৰ্ণ বা শক্ষাদির উচ্চারণস্থান।

বর্ণস্থানের (প্র:) জ্যোডিবোক্ত ওভাওভজ্ঞানের প্রকার বা নিম্মবিশেষ। নরপতিজ্বর চর্বা। বরোদর বৃত ব্রহ্মানলে উচ্ছ হইরাছে,
মাকুকার ববের সংখা বোড়শ বলিরা নির্দিষ্ট। এই বোড়শ
ববের মধ্যে অস্তাবর হুইটা—আং, অ:। এই বর ছুইটা ত্যাগ
করিরা লইতে হুইবে। বোড়শ বরের চারিটা বর দ্বীব,
বধা—ঋ, য়, ১, ১। স্তরাং এ চারিটা বরও তাজা।

অবশিষ্ট দশটা স্বরের মধ্যে ছই ছইটা করিরা পাঁচটা যুগ্ম হইবে। এই পঞ্চ গুগোর আদি পাঁচটি স্বর—অ, ই, উ, এ, ও। ইহারা ছবস্বর মধ্যে গণনীর। স্বতরাং এই পাঁচটি স্বরই স্বরোদরে অবলম্বনীয়।

এই স্বরোদ্য হইতে লাভালাভ, স্থতঃণ, জীবন-মরণ, জয়-প্রাজয় ও সন্ধি এই সকল বিষয় বিদিত হওয়। যায়।

া মাতৃকাৰণেই চরাচর পরিবাণে, কিন্তু মাতৃকাৰণগুলি স্বর ভিন্ন উচ্চারণ করা অসম্ভব, স্বতরাং এই চরাচর নিথিলজগুণ স্বর হইতে উত্তুত হইরাছে, তাই স্বরোদ্র বারাই সমস্ত জ্ঞাত হুইতে পারা যায়।

অকারাদি পাচটি খব, ব্রহ্মাদি পঞ্চ দেবতা বলিরা কথিত।
যথা—অকাবে ব্রহ্ম, ইকাবে বিষ্ণু, উকাবে রুজু, একারে পবন,
 ওকাবে সদাশিব। এইরূপ ঐ অকারাদি পঞ্চবতে নিবৃত্তি,
প্রতিষ্ঠা, বিষ্ণা, শান্তি ও শান্তাতীতা এই পাঁচটি ফলা এবং
ইছো, প্রজ্ঞা, প্রতা, শ্রহ্ম ও মেধা এই পাঁচটি শক্তি
নির্দিষ্ট আছে।

ঐ পঞ্চারর অকারাদিক্রমে চতুরত্র, অর্দ্ধচন্দ্র, বিকোণ, বড় বিন্দুয়ত, গোলাকার ও শুদ্ধ গোলাকার এই পঞ্চক্রে, পৃথিবী, জল, তেজ, বায়ু, আকাশ এই পঞ্চৃত; গদ্ধ রস দ্ধণ শশ্দ এই বিষয়পঞ্চক এবং সন্মোহন, উন্মাদন, শোষণ, তাপন ও স্তম্বন এই পাচটি পঞ্চ বাণের বাণরূপে নিনীত।

"অকারাদি স্বরাঃ পঞ্চ ব্রহ্মান্তাঃ পঞ্চদেবতাঃ।
নিবৃত্তাদাঃ কলাঃ পঞ্চ ইচ্ছাদাঃ শক্তিপঞ্চকম্।
মারাত্তাশক্তকভেদাশক ধরাতঃ ভূতপঞ্চকম্।
গন্ধাতা বিষয়াতে চ কামবাণা ইতীরিকাঃ ৮" (স্বরোদয়)

"মাত্কারাং বরাং থোকাং খরাং বোড়শসংখ্যকাং।
তেবাং বাবতিয়ে তাজোঁ চছারক নপুংসকাং ।
শেব। দল পরাতের তালেকৈকো বিকে বিকে।
ক্রেরা অতং পরালাকে হুবাং পদ পরোপরে ।
লাভালাভং হেবং হুবং জীবিভং মরণং তথা।
ক্রয়ং পরাহেরং সবিং কর্মেরং বরোপরে ।
করাং পরাহেরং সবিং কর্মেরং বরোপরে ।
তরাং বরোভ্রমং সর্কা ত্রোকার ।
তরাং বরোভ্রমং সর্কা ত্রোকারা ।
করাং বরোভ্রমং সর্কা ত্রোকারাং সচরাচরম্।
তরাং বরোভ্রমং সর্কা ত্রোকারাং সচরাচরম্।
বরণভিচ্চাবরোল্যভাত একব্যরস্ব।

সরণভিচ্চাবরোল্যভাত একব্যরস্ব।

সরণভিচ্চাবরোল্যভাত একব্যরস্ব।

সরণভিচ্চাবরোল্যভাত একব্যরস্ব।

সরণভিচ্চাবরোল্যভাত একব্যরস্ব

অকারানি পঞ্চরর জাটভাগে বিভক্ত। বর্থা—মাত্রা, রুণ, গ্রহ, জীব, রাদি, নক্ষত্র, শিশু এবং বোগছর।

বর্ধন মাত্রাশ্বর বলবান থাকে, তথন মন্ত্রসাধন, বন্তসাধন ও অভাভ অংধামুধ কার্য্য করিবে।

বর্ণবর প্রবল থাকিলে ওভাওত কর্ম করিবে, বর্ণবর সকল সময়ে বিশেষতঃ বৃদ্ধকালে সিদ্ধিপ্রদঃ

গ্ৰহত্বর বলবান থাকিলে মারণ, মোহন, অভন, বিহেষণ, উচ্চাটন, বলীকরণ, বিবাদ, যুছ, প্রহার ও সংহার এই সমুদার কার্য্য কর্তব্য।"

जीवचत्र वनवान् शाकित्न बत्त, व्यनकात, कृष्ध, विद्यात्रञ्ज, विवार, याजा ७ भागानि कार्या कतिरव।"

রাশিষর বশবান্ থাকিলে প্রাসাদ, হর্ম্মা,উভান, দেবতাস্থাপন, বাজ্যে অভিবেক ও দীকাকার্য করিবে।

नक्ष्यत्र वनवान् इहेरन भाष्टिक, श्लीष्टिक, शृहानि अस्त्रभ, वीस्त्रथन, विवाह ७ यांजा कार्यः विरक्षः । "

পিওত্বর প্রবেশ হইলে শত্রপক্ষের দেশভঙ্গ, সেনাপতি ও মত্রিনিয়োগ এই সকল কার্যা করিবে।

আর যোগস্বর প্রবদ হইদে জ্ঞানসম্ভব আণব অথাৎ অণিমাদি অটেইম্ব্যপ্রাপ্তিবিবরক, শান্তব ও শাক্তেন ইত্যাদি শারীরিক যোগ সাধন ক্রিবে।

যে নাম ধরিয়া নিজিত ব্যক্তিকে ডাকা যায়, যে নাম লইয়া ডাকিলে মাস্থর গমন করে, সেই নামের আগাবর্ণেযে মাত্রা অর্থাং স্বর হইবে, তাহার নামই মাত্রাস্থর। যেমন রজনীকাপ্

⁽২) "বৰ্ণপদ্ধলৈ সৰ্বাং কৰ্ত্তব্যক্ত গুভাগুভন্ত :
সিদ্ধিদঃ সৰ্বাক্তব্যক্ত বৃদ্ধকালে বিশেষতঃ ॥"

⁽ ৩) "মারণং মোহনং শুরুং বিবেবক্ষেটিনে বলমু। বিবাদং বিএবং ঘাতং কুর্যালঞ্জনরোদয়ে ॥,

⁽ s) "वाजाशानाधिकः नर्वतः वद्यानकात्रकृष्णम् । विकातस्यः विवाहकः कृष्णाक्कीवयःत्राससः ॥"

⁽ e) "আসাধারামধ্র্যাণি দেবতাস্থাপনানি চ ৷ রাজ্যাভিবেচনং দীক্ষা কর্ত্তবাং রাশিকে করে ॥"

⁽ ৭) "লত্র্ণাং দেশভদ্ধক কুটব্দ্ধক বেইনস্ : সেনাথাক্তথা মন্ত্রী কর্তব্যং শিশুকোদ্ধে «"

 ⁽৮) "বোগেন সাধয়েদ্বোবা দেহছং আন্সম্ভবন্।
আগবং শাভবদৈব শাভেয়ৢ৵ ভৃতীয়য়য় ।" (বয়েয়য়)

এই নামের আদ্য অকর হইল 'র', ঐ 'র' বর্ণে অ-সংগৃক্ত
আহে। স্থতরাং মাত্রাম্বর হইবে 'অ'।

21.7	-	27	d

• ख	\$	\$	Б	B
4	कि	क्	কে	ক ো
খ	খি	4	খে	খো
গ	পি	•	গে	গো
ঘ	যি	খু	ঘে	বো
Б	हि	Þ	ርδ	চো
Ę	ছ	E	CE	CVI
13 9	ঞ	9	ক্ষে	জো
₹	ঝি	ঝু	বে	ঝো
b	ि	Ì	८ढे	(हे।

এক্ষণে বর্ণ প্রাস্থৃতি অস্থাস্থ্য সংখ্যারের বিষয় বলা যাইতেছে।

অকারের নিমে ক ছ আদি যে ছরটা বর্ণ আছে, তাহা

অবরের অন্তর্গত। এইরূপ ই ব্যরের নিমন্থ ছরটা বর্ণ ই
স্বরের অন্তর্গত এবং উ-স্বরের নিমন্থ ছরটা বর্ণ উ-স্থরের অন্তর্গত,
এ-স্বরের এবং ও-স্বরের নিমন্থ ছর ছরটা বর্ণ, এ-স্বরের এবং
ও-স্বরের অন্তর্গত ছইবে।

উল্লিখিত বর্ণস্থরচক্রের নিরম যথা— স্পন্ধক্র

অ	₹	উ	હ	છ
₹	*	গ	য	Б
ē	জ	ব	हे	b
4	5	35	*	Ħ
¥	a	4	*	ৰ
4	¥	व	র	न
व	4	4	म	Ę

s এn ণ এই ভিনটি অব্দর ভ্যাস করিরা অবলিট 'ক'

ক্ষৰধি 'হ' পৰ্যান্ত সমন্ত ক্ষকর পঞ্চাবরের নিম্নে তির্যাক্ পঙ্জি-ক্রমে বিস্থাস করিবে। স্বরবর্ণের পঞ্জি সমেত সাডটি পঙ্জি হইবে এবং সর্কাসমেত পরিত্রিশটি ঘরে পরিত্রিশটি ক্ষকর বিহাস্ত হইবে। (উপরের চক্র ক্রষ্টবা।)

থেমন রসিকমোহন নামের **আন্তক্ষর 'র'। 'র'** একারের পর্য্যারে আছে, স্থতরাং একার বর্ণস্বর হইডেছে।

ঙ ঞ ণ এই তিন বর্ণ নামের আদিতে থাকে না, এই জন্ম তাহা ত্যাগ করা হইল। যদি কোন নামের আছা বর্ণ 'ছ' 'ঞ' অথবা 'ণ' হয়, তবে 'ঙ' এই বর্ণের পরিবর্ত্তে 'গ', 'ঞ' এই বর্ণের পরিবর্ত্তে 'জ' এবং 'ণ' এই বর্ণের পরিবর্ত্তে 'ড' এই বর্ণ স্থাপন করিতে হইবে।

যদি নামের আত্মকর সংযুক্ত বর্ণ হয়, তাহা হইলে এক-যামলের উক্তি অসুসারে ঐ সংযুক্ত বর্ণের মধ্যে আতা বর্ণ মাত্র গ্রহণ করিবে। †

এক্ষণে গ্রহস্বরের বিষয় বলা হইতেছে। অ স্থারে মেষ, সিংহ ও র্শিক ; ই স্থারে কক্সা, মিথুন ও কর্কট ; উ স্থারে ধমু ও মীন, এ স্থারে তুলা ও বৃষ ; ও স্থারে মকর ও কুন্ত ; এই সকল রাশি-সন্তুত গ্রহস্থার হইবে। যে গ্রাহ বে রাশির অধিপতি, তাহাকে সেই স্থারের নিয়ে স্থাপন করিবে।

এই ব্যৱস্থা

9	\$	উ	Ð	8
মেষ সিংহ	কন্ম) মিপুন	ধসু মীন	ভুলা বুষ	মকর কুস্ত
	কৰ্কট			•
বাল	কুমার	যু ব।	হৃদ	মৃত
র মং	ৰু চং	ৰ্	•	শ

- "নরনামাধিমো কর্মো করাবধারিত:।
 স বছরত ক্তি ক্তির ইহোচ্ছে ।" (করোবর)
- † "নং থাজা ৫-জ-বৰ্ণা নানাবে সভি তে নহি। চেত্তবভি কবা ক্ষেত্ৰা গলভাতে ব্যাক্তব্ব । বদি নাত্ৰি কৰেব': সংব্জাক্তবন্ধ। গ্ৰাক্তভাদিবো ব্য ইড়াকো ক্ষেত্ৰান্ত ।

নামের আছ বর্ণে বে রাশি হইবে, সেই রাশির অধিপতি বে গ্রহ, সেই গ্রহ বে খরে পতিত হইবে, সে খরকেই গ্রহখর বলা বার। বেমন রসিকচন্দ্র, এই নামের আছক্ষর 'র'। 'র' ডুলা রাশি, ঐ ডুলা রাশির অধিপতি গুক্র। গুক্র একার খরে পতিত, তাই রাশিখর হইল—'এ'।

একণে জীবস্বরের কথা বলা হইতেছে। 'জ' বর্ণের অক্ষর বোলটি। ক বর্গাদি পঞ্চবর্গে পাঁচ পাঁচটি করির। অক্ষর। হ বর্গ ও শ বর্গে চারি চারিটি করিরা অক্ষর। প্রত্যেক বর্ণের প্রত্যেক অক্ষরে এক হইতে আরম্ভ করিরা বর্ণান্ধ হির করিতে হইবে। বথা—

জীবৰর চক্র

অ	আ	₹	8	\$	ষ্ঠ	8 H	şh	۵	डे
>	ર	9	8	a	৬	9	ь	6.	>0
9	ঐ	.6	હ	वः	ष:	奉	*	গ	च
>>	>૨	20	78	>4	১৬	>	2	•	8
5	Б	Þ	8	ঝ	Æ.	हे	3	ড	ับ
œ	٥	ર	9	8	a	٥	2	૭	8
9	ভ	থ	7	4	a	প	华	ব	ভ
Œ	۵	ર	9	8	¢	٥	ર	9	8
ম	য	র	ল	ৰ	m	য	স	হ	
œ	>	ર	•	8	٥	ર	၁	8	-

নামে বতগুলি জক্ষর থাকিবে, তাহার বর্ণসংস্থান সংখান ক্রমে জন্ধ সংলগ্ধ করিয়া ৫ বারা ভাগ দিরা বাহা জ্বনিষ্ট থাকিবে, তাহা বারা জীবস্থর নিরপণ করিবে। বেমন রসিক-মোহন এই নামে রংস এইও ক সমধ্য ১০ ছ ৪ ন ৫ ইহার ৩৩। ইহা পাঁচ বারা বিভক্ত করিলে শেব ১; স্তরাং জীবস্থর জ্ব-১। •

অ-বরে বেবনিংহালিরিঃ ক্ষাব্রকর্কীঃ।
উ-বরে চ ধ্রুবীনৌ এ-বরে চ জুলার্বৌ ।
ও-বরে মুগর্কো চ রাশীশালু এইবরঃ।
বরাধঃ হাগরেং খেটান রাশেরো বত নারকঃ।" (বরোধর)

"বোড়শাক্ষরকাহবর্বঃ তাৎ কাবিবর্বন্ধ শক্ষন।
 চড়ুর্বর্বে । বলৌ বলৌ সংব্যা বর্গের কার্তিকাঃ ।
 নারো বর্গা: পরা আছা বর্গাণ্য বর্ণসংব্যরা।
 পাওতঃ পক্তির্ভকাঃ পেবং জীব্দরা বিছঃ ।" (বরোদর)

একণে রাশিকর নিরূপণ করা বাইভেছে,— রাশিক্তক

ष	*	\$	D	
মেৰ	মিপুন ৩	কস্থা	বিছা ৬	म क द्व
वृव	क व्हें	ভূলা	ধসু	क्ष
মি খু ন ৬	সিংহ	বিছা ৩	মক র ৬	मीन

অকার বামে মেব, বুব ও মিখুন রাশির প্রথম বড়ংশ লক্ষিত হইবে। ই-বারে মিখুনের শেষ ডিল আংশ, ক্ষর্কট রাশি ও বিশ্বর রাশি লভ্য হবৈ। উ-বারে কক্ষা তুলা এবং বৃশ্চিকের ডিন আংশ পাওয়া যাইবে। এ বারে বৃশ্চিক রাশির শেষ চয় আংশ, ধয় ও মকর রাশির প্রথম ছর আংশ ধরিতে হইবে। ও-বারে মকরের অভিম ডিন আংশ কুজরাশি ও মীন রাশি প্রাপ্ত হওয়া বাইবে।

বেমন রসিকচক্ত এই নামের আছে অকর 'র'। 'র' তুণা রাশির প্রথমাংশে উ-বরে পতিত, তাই উ-বর রাশিবর হইতেছে ইহার সংখ্যা—৩। *

একণে নক্ষত্র ব্যের কথা বলা হইতেছে,—

व	₹	8	SQ.	8
२ 9	9) \) \	39	২২ ২৩
ર	2	78	32	₹8
೨	10	30	२०	२०
8	>>	১৬	२১	২৬
Q.				
৬				

অ-বরে রেবতী, অধিনী, ভরণী, স্বৃত্তিকা, রোহিণী, মৃগশিরা, আর্দ্রা, এই সাতটী নক্ষত্র গাব্দিত হইবে। ই-বর প্রভৃতি

"বেববুবাবকারে চ নিধুনারা: বছণেকা:।
 নিধুনাগোল্পনৈত্ব ইকানে সিংহককটা: ৪
 কভা জুলা উকারে চ বুল্ভিক্ত অবেহিংশকা:।
 একারে বুল্ভিক্তাংশা: বট্ডাপবড় বুগারিবা: ৪
 অংশাল্লনো সুগতান্ত্যা: কুলনীনো তথোবরে;
 এবং নাশিবন্ধ এলাকো ন্বাংশক্ষনেদর: ৪" (ব্রেবির)

শরচতুষ্টরে পুনর্বন্ধ হইতে পাঁচটা করিরা নক্ষত্র বধাক্রমে গভা

• হইবে। অর্থাৎ অ-শ্বর ২৭াসাংগঙালোওা, ই-শ্বর ৭াদানাস্থাসা উ-শ্বর সংগ্রাজ্যাস্থাস্থা, এ-শ্বরে স্থাস্থাসনাহ্যাস্থাস্থার ২ংবিজ্ঞাহতাহতাহতাহত

শতপদচক্রবারা নামের আছে অক্সরে যে নক্ষত্র হইবে, সেই নক্ষত্র যে বাবে পড়িবে, তাহাই নক্ষত্র অর, যেমন শতপদ চক্রবারা রসিকচক্র এই নামের আছক্ষর 'র' বারা ১৪ চিত্রা নক্ষত্র হয়। চিত্রা নক্ষত্র উকার অবে পতিত, স্ত্তরাং নক্ষত্রঅর উকার, সংখ্যা—৩।

শিশুসরচক্র।

অ	₹	উ	B	8
মাত্রা	মাত্রা	মাত্রা	মাত্রা	মাত্রা
বৰ্ণ	বৰ্ণ	বৰ্ণ	বৰ্ণ	বৰ্ণ
জীব	জীব	জীব	জীব	বৰ্ণ
q	c	¢	ď	œ

মাআস্বর, বর্ণস্বর ও জীবস্বর, এই সমুদায় সংখ্যা একত্র করিয়া পাঁচ দিয়া ভাগ করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, ভাহা দারা পিওস্বর ঠিক হইবে। যেমন পূর্কোক্ত মাআস্বর অ-১, বর্ণস্বর এ-৪, পূর্ব্বোক্ত জীবস্বর অ-১ ইহার শেষ ৬, ইহা পাঁচ দিয়া ভাগ করিলে শেষে ১ থাকে, স্কুজরাং পিওস্বর অ-১।

3 ₹ Ø ٩ मा মাত্রা মা ¥ 지 বৰ্ণ ব ₹ 4 ব গ্ৰহ থ্ৰ গ্ৰ গ্ৰ গ্র জীব की की কী की রাশি রা রা 4 রা নক ન 4 4 PH পি P পি পিশু

নামের মাতা ও বর্ণ সমুলার হইতে বর বাইয়া ভাহার সমষ্টি

করিবে, পরে তাহাকে ৫ দিয়া তাগ করিয়া বাহা থাকিবে, তাহাই বোগস্বর। বর্ণা পূর্বপ্রক্রিয়া অনুসারে মাত্রাম্বর ১, বর্ণস্বর ৪, গ্রহম্বর ৪, কীবম্বর ১, য়াশিম্বর ১, এই সমস্ত একত্র যোগ করিলে ১৭ হয়, ইহাকে ৫ দিয়া ভাগ করিলে ২ অবশিষ্ট গাকে, অত্রব যোগের ই-উহার সংখ্যা ২।

[স্বরোদর শব্দে দ্রষ্টব্য]
বর্ণা (স্ত্রী) রুণাতে ভক্ষাতে ইতি রুণু ভক্ষণে কর্মণি ঘঞ্। তত-ষ্টাপ্। আঢ়কী। (হেম)

বর্ণা ক্ষা (ন্ত্রী) বর্ণা অস্কান্তেংনয়েতি আন্ধ করণে ঘঞ্, ভতত-ষ্টাপ্। লেখনী। (শব্দর্জা°)

বর্ণাট (পুং) বর্ণান্ অটতীতি অট-অচ্। > গায়ন। ২ চিত্রকর।
৩ প্রীকৃতজীবন। (মেদিনী)

বর্ণাজুন্ (পুং) বর্ণ: অক্ষরম্ আত্মা অরূপং যক্ত। শব্দ। (জটাধর)
বর্ণাধিপ (পুং) বর্ণানাং ব্রাহ্মণাদীনামধিপঃ। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়,
বৈশু ও শুদ্র ইহাদিগের অধিপতি গ্রহ। বৃহস্পতি ও শুক্র
ব্রাহ্মণের অধিপতি, মদল ও রবি ক্ষত্রিয়ের অধিপতি, চক্র বৈশ্যদিগের, বৃধ শুদ্রের এবং শনি অন্তাঞ্জ জাতির অধিপতি।

"ব্রান্ধণে শুক্রবাগীশৌ ক্ষক্রিয়ে ভৌমভান্ধরৌ।

চন্দ্রে বৈশ্বে বৃধঃ শৃদ্রে পতির্ম দেশহস্কাজে জনে ॥"(জ্যোতিস্তর) বর্ণান্যত্ত্ব (ক্লী) জন্ম বর্ণের ভাব। বর্ণের পরিবর্তন। বর্ণাপেত (ত্রি) বর্ণাদপেতঃ। বর্ণহীন, সক্ষর জাতি।

"বর্ণাপেতমবিজ্ঞাতং নরং কলুষযোনিজন্। আর্থ্যরূপমিবানার্যাং কর্ম্মভি: দ্বৈবিভাবরেং ॥" (মন্তু ১০।৫৭) 'বর্ণাপেতং বর্ণদাদপেতং মন্তুষ্যং সঙ্করজ্ঞাতং' (কুরুক)

বৰ্ণাপ্ৰম (পুং) ৰণানাং চাতুৰ্বৰ্ণানাং আশ্ৰম:। চাতুৰ্ব্ণাশ্ৰম, চাহিৰ্ণেৰ আশ্ৰম।

বর্ণ ক্রিমধর্ম (পুং) চারি বর্ণের আশ্রমধর্ম। ত্রাহ্মণ, ক্রির, বৈশ্ব ও শুদ্র এই চারি বর্ণ আশ্রমে অবস্থান করিবা যে বৃত্তি হারা জীবিকা ও যে কর্ম্ম হারা ঐহিক ও পারত্রিক মঙ্গল লাভ করিতে পারেন, তাহাকে আশ্রম ধর্ম কহে। ইহা প্রত্যেক বর্ণের ভিন্ন প্রকার। মহাভারতে লিখিত আছে যে, মুধিষ্টির ভীমনেবকে জিজ্ঞালা করিরাছিলেন বে, লক্ষবর্ণের লাধারণ ধর্ম কি ? এবং চারি বর্ণের পৃথক পৃথক ধর্ম্মই বা কি ? কোন্ কোন্ বর্ণের কোন্ আশ্রমে অধিকার। জীমনেব ইহার উত্তরে বলিরাছিলেন বে, চারি বর্ণের আশ্রমধর্মের বিষয় কীর্জন করিছেছি, শ্রবণ কর। ক্রোধপরিভাগে, সভ্যবাদ্যক্রমেরাক, সমাক্রমণে ধনবিভাগ, ক্রমা, নিজ পত্নীতে পুর্বোৎপাদন, পবিজ্ঞাতা, জহিংলা, সরলতা ও ভ্রত্যের ভরণপোষণ এই নয়টী লব্ম বর্ণের লাধারণ ধর্ম।

रेखियमम्ब ७ तमाधायनरे आकालय धार्यान धर्मा नाव

অভাব, জ্ঞানবান্, আত্মণ যদি অসৎ কার্য্যের অনুষ্ঠান পরিত্যাগ করিরা সংপথে ধনশাভ করিতে পারেন, তাহা হইলে দার-পরিগ্রহ করিরা সন্তান উৎপাদন, দান ও যজাফুটান করা তাঁহার কর্তব্য। আত্মণ অস্ত্র কোন কার্য্যের অমুষ্ঠান কর্মন বা না কর্মন, তিনি বেদাধারননিরত ও সদাচারসম্পন্ন হইলেই তাহার বর্ণাশ্রম ধর্ম্ম রক্ষা হয়।

ধনদান, বজাম্প্রচান, অধ্যয়ন ও প্রজ্ঞাপালনই ক্ষাব্রিরের প্রধান ধর্ম। যাচঞা, যাজন বা অধ্যাপন ক্ষাত্রিরের পক্ষে নিতান্ত নিষিদ্ধ। নিয়ত দহারুবধে উত্তত হওয়া ও সমরাঙ্গণে বিক্রম প্রকাশ করা ক্ষাত্রিরের অবশ্র কর্ত্তরা। দহাবিনাশ বাতীত ক্ষাত্রিরের প্রধান কার্যা জার কিছুই নাই। দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ দ্বারাই ক্ষাত্রিয়দিগের মঙ্গল লাভ হইয়া থাকে। রাজ্ঞা অন্ত কোন কার্যা করুন, বা না করুন আচারনিষ্ঠ হইয়া প্রজ্ঞাপালন ক্রিলেই ক্ষাত্রধর্মা রক্ষা হয়।

দান, অধ্যয়ন, যজামুষ্ঠান, সহপায় অবশ্বনপূক্ত ধনসঞ্চ এবং পূত্রনিকিংশেবে পশুপালন করাই বৈশ্রের নিতাধর্ম। এভদ্যতীত অভাকোন কার্ণোর অনুষ্ঠান করিলে বৈশ্রকে অধ্যের লিপু হইতে হয়।

ভগবান্ প্রজ্ঞাপতি ব্রহ্মণাদি বর্ণত্রয়ের দাস হইবে বলিয়া শুদ্রের স্পষ্টি করিয়াছেন। অতএব তিন বর্ণের পরিচর্যা করাই শুদ্রের প্রধান ধর্ম। শুদ্র অর্থসঞ্চয় করিলে ব্রাহ্মণ প্রভৃতি উৎক্র জাতি তাহার বশীভূত হইতে পারেন এবং তরিবন্ধন তাহাকে পাপগ্রস্ত ইইতে হয়, অতএব ভোগাভিলায়ে তাহার অর্থসঞ্চয় করা অতিশয় নিষিদ্ধ। কিছু রাজার আদেশামুসারে দর্মকার্য্যের অনুষ্ঠানার্থ অর্থসঞ্চয় করা শুদ্রের অবিহিত নহে। ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় শুদ্রকে ভরণ, পোষণ এবং হত্র, বেইন, শয়ন, আসন, উপানংযুগল, চামর ও বয় দক্র প্রদান করিবেন। এই সকল দ্রা শুদ্রের ধর্মালন্ধ ধন। শুদ্রের অর্থকার নাই। তাহার বে ধন উদ্ধৃত ইইবে, প্রান্থ ভাষার সেই ধন গ্রহণ করিবেন।

যক্ত নানাপ্রকার এবং তাহার ফলও বছবিধ। আদ্ধণ, ক্রিয়, বৈশ্ব ও শূল এই চারি বর্ণই সকল যজ্ঞের অনুষ্ঠান করিবেন। শূলের যজ্ঞে অধিকার থাকিলেও মদ্রে অধিকার নাই। চারি বর্ণের সম্দার যক্ত মধ্যে সর্কাতো প্রভাযজ্ঞের অনুষ্ঠান করা কর্তব্য। প্রভা মহদেবতাশ্বরূপা। উহা যাক্তিক-দিগের পবিত্রতা সম্পাদন করিরা থাকে। চারি বর্ণের মধ্যে অতিশর প্রভাসন্পর হইলেই ব্রজামুঠানের অধিকার জ্যো। লোকে চৌহ্য প্রভৃতি পাপকার্যো আসক্ত হইরাও যদি ব্রজান্তান করে, তাহা হইলেও সাধু বিশ্বা নির্দেশ করা বাইতে

পারে এবং মহর্ষিগণ ও প্রাশংসা করিরা থাকেন। ত্রিলোক মধ্যে বজের তুল্য আর কিছুই নাই। অভএব বর্ণচতুটর অংয়াশৃঞ্জ হইরা পরম প্রভাসভূকারে সা্ধ্যান্ত্রণ বজ্ঞান্তর্টান করিবে।

লোকে বানপ্রায়, তৈকা, গার্হ্ ও ব্রহ্মটা এই চারিটা আত্রম অন্দ্রমন করিয়া থাকে। ব্রহ্মটা আত্রমে কেবল ব্রাহ্মশেরই অধিকার। আত্রহ্মসালার কিতেনির ব্রাহ্মণাণ প্রথমে উপনরনাদি সংখ্যারে সংস্কৃত হইরা ব্রহ্মটার্যার্থারণ, অন্যাধানাদি কার্য্য সমাধান, বেদাধারন ও তৎপরে তিনি গার্হত্ব ধর্ম প্রতিপালন করিয়া কেবল পত্নীর সহিত বানপ্রায় অবলখন করিবেন এবং ঐ আত্রমে তিনি আরণ্যক শার সমুদর অধারনপূর্ক্ক উদ্ধ্রেতা হইরা অনায়াসে ব্রহ্ম শীন হইতে পারেন। ব্রহ্মটার্যাসমাপন করিরাই মোক্ললাভার্থে ভৈক্ষ্য ধর্ম আত্রায় করা ব্রাহ্মণের দোষাবহ নহে। ঐ আত্রমে তিনি স্বত্ঃথবহিত, নিকেতনবিহীন, যদ্গ্রাক্রমীবী, দান্ত, জিতেন্ত্রির, সকলের প্রতি সমৃদ্ধিসম্পর্ম, ভোগকামনাশৃত্য ও নির্ক্কিকার্যিত হইয়া পরিধের ব্রহ্মপদ প্রাপ্ত হন।

ক্ষরিয়াদি বর্ণও ব্রাহ্মণদিগের দৃষ্টাস্থান্সারেই বানপ্রাথাদি আশ্রম অবলম্বন করিয়। থাকেন। অধন্যানিরত ক্ষরিয়, বৈশুও পুদ্রেরও ভৈক্ষ্যধর্ম্মগ্রহণে অধিকার আছে। ক্ষতকার্যা পরিণতবয়য় বৈশুও রাজার অনুমতি লইয়া আশ্রমান্তর গ্রহণ করিতে পারে। ক্ষরিয় বেদও রাজনীতি অধ্যয়ন, সন্থানোৎপাদন, সোমরস পান, রাজন্মর ও অখ্যমেধ প্রভৃতি যজ্ঞের অম্পষ্ঠান, বেদপাঠ করাইয়া ব্রাহ্মণকে দক্ষিণাদান ও শ্রাহ্মাদি ছারা পিতৃদ্দিগের তৃপ্রিসম্পাদন ক্রিয়া শেষাবহাদ্ম আশ্রমান্তর অবলম্বন ক্রিতে পারেন। ক্ষরিয় গৃহত্বধর্ম পরিত্যাগ করিয়া আপনার জীবনরকার নিমিন্তই ভিক্ষার্ত্তি অবলম্বন করিতে পারেন। ভিকারতি অবলম্বন করিতে পারেন।

মানবমগুলীর মধ্যে এক ক্রিরবর্ণ ই শ্রেষ্ঠতর ধর্ম্মের সেবা করিয়া থাকেন। বেদে কথিত আছে বে, অক্ত তিন বর্ণের বাবতীয় ধর্ম ও উপধর্ম সমন্তই ক্যান্তধর্মের ক্সায়ন্ত। বেমন সমুদয় প্রাণীর পদচিক্ হন্তীর পদচিক্তে লীন হইরা বায়, তক্রপ সমন্ত ধর্মাই রাজধর্মে লীন হইয়াছে। পঞ্জিতগণ অভান্ত ধর্মকে অরফলপ্রদ এবং ক্রেরধর্মকে আশ্রমের সারভূত ও কল্যাণের একমাত্র নিদান বলিয়া কার্তন করিয়াছেন, ক্যান্তধর্ম—সমুদর ধর্মের সারভূত। এক রাজধর্মের প্রভাবেই সমুদর লোক প্রতিপালিত ইইডেছে। দগুনীতি না থাকিলে বেদ ও সমুদার ধর্ম এককালে নই হইরা বাইত। চারি আশ্রমের ধর্মা, ব্তিধর্মা, লোকাচারপ্রথা ও কার্যা সমুদার এক ক্ষত্রিরধর্ম-প্রভাবে জন-সমাকে প্রভিত্তিক রহিরাছে।

(ভারত শাস্ত্রিপ° বর্ণাপ্রবাধর্ম ৩০-৭০ অ°)
মন্ত্রিস ভাগাপ্রমাধ্য নির্দেশ ভাগাপ্রমাধ্য

ভগবান্ মন্ত এইরপ বর্ণাশ্রমধন্ম নির্দেশ করিরাছেন,
রান্ধণ সালবেদাধ্যরন, অব্যাপন, বলন, বাজন, বালন ও প্রতিগ্রাহ এই ষট্ কর্ম করিরা জীবনবাত্রা নির্মাহ করিবেন। এই
ষট্ কর্মের মধ্যে অধ্যাপন, বাজন এবং লংগ্রেভিগ্রহ এই
তিনটা আন্ধণের উপজীবিকা। ক্ষিত্র মাজন, অধ্যাপন এবং
প্রতিগ্রহ এই ভিনটা ক্ষত্রিয়ের পক্ষে নিবিদ্ধ। কেবল দান,
অধ্যরন ও বাগ এই ভিনটা করিয়ে। ক্ষত্রিরের ক্যার বৈশ্রের
পক্ষেও বাজনাদি নিবিদ্ধ। প্রজাগণের রক্ষার জন্ম ক্ষত্রশারধারণ ক্ষত্রিরের বৃদ্ধি, পশুপানন, কৃষি ও বাণিজ্য বৈশ্রের
জীবিকা, এবং দান, বাগ ও মধ্যরন উভরেরই ক্ষবশুকর্ম্বা।
স্কর্ম মধ্যে আন্ধণের বেদাধ্যাপন প্রশন্ত, ক্ষত্রিরের প্রজাপানন
এবং বৈশ্রের বাণিজ্য ও পশুপানন।

যদি এই সকল স্বকর্মের ছারা জীবিকানির্কাহ না হয়, ভাহা চটাল নিয়োক আপদৰ্যোক বিধানামুসারে চারিবর্ণ জীবিকা নিৰ্মাহ করিতে পারিবেন। যদি ব্রাহ্মণ যথোক্ত অধ্যাপনাদি निक वृश्विषाता कृष्ट्रेष गःनर्भवशृक्षक बीविका निर्माह कतिएछ অসমর্থ হন, ভাষা হইলে গ্রামনগররকাদি ক্রিরর্ভি ঘারা কীবিকার্কন করিবেন। কারণ ইহাই ভাষার আসরবৃত্তি। নিজ্যতি ও ক্ষত্রিয়বৃত্তি এই উভয়বিধ কর্মধারা বধন ব্রাহ্মণের জীবিকানিৰ্মাছ কঠিন হইবে, তখন তিনি ক্লবিবাণিজ্যাদি रेबछर्छि कारमधन कतिया कीरमधाका निर्माह कतिरान। বৈশ্ববৃত্তি দারা শীবিকা নির্মাহ ক্ষিতে হইলে ব্রাহ্মণ এবং क्वित हेराता उछरबंहे दिश्मावहम गर्वावि भवाधीन क्रविकार्या পরিজ্ঞাগ করিবেন। বদিও কেই কেই কুবিজীবিকার প্রশংসা कतिया शारकन, किन्नु छोहा हरेरन ३ देश मध्यननिमिष्ठ । कारण এডচুপলকে হলকুদালাদি সঞ্চালনদারা ভূমিহিত বহু প্রাণীর প্রাণনাশ হইরা থাকে। জাত্মণ ও ক্ষত্রিরের নিকর্ত্তির অসম্ভাব এবং ধর্মনিটার ব্যাহাত কটলে নিবিদ্ধ বন্ধ বর্জন করিবা বৈজ্ঞের বিফ্রেডবা বস্তবাভ বিক্রের বারা শীবিকা নির্বাহ করিতে भाषित्वम ।

সর্বাপ্তাকার রুস, ডিস, প্রান্তর, সিভার, সবণ, পশু এবং
মন্তব্য এই সকল দ্রুবেলা বিজ্ঞার নিবিদ্ধ। কুমুক্তাবি বারা রক্তবর্ণ
কুজানিবিদ্ধ সর্কাবিধ বস্ত্র, শপ ও অকসীভব্তনর বস্ত্র এবং
রক্তবর্ধ না হইকেও মেবলোম বিনিবিদ্ধ কর্মলানি এ সকল
বস্তব্য বিজ্ঞায় নিবিদ্ধ। অল, শস্ত্র, বিব্, মাংস, লোমরস, সর্কাপ্রান্ধার গাছদেন্য, কীর, রবি, নব, কৃত্ত, তৈলা, মধু, ওড়, কুল,

সর্ব্ধ প্রকার আরণাপণ্ড, বিশেষতঃ গঞ্জাদি দক্ষী, পণ্ড, অথণ্ডিতথ্র আদাদি; এতত্তির পক্ষী, নীল, মন্ত এবং লাক্ষা এই সকল বস্তুর বিক্রবু ব্রাক্ষণের পক্ষে নিবিদ্ধ।

শ্বরং কর্ষণধারা তিল উৎপাদন করিয়া অচিরকাল মধ্যে বিশুদ্ধাবার বিক্রম করিতে পান্ধে, ক্ষিত্র লাভপ্রভ্যাপার বিলম্পে বিক্রম নিবিদ্ধ । ভোজন, মর্ক্তন এবং লানবাতীত বলি কেহ ভিলবিক্রম করে, তাহা হইলে তিনি পিতৃপুরুষদিগের সহিত রূমিক প্রাপ্ত হইরা কুরুরবিচায় নিময় হইরা পাকে। আহ্মণ মাংস, লবণ এবং লাক্ষা বিক্রম করিবামাত্রই পতিত হন, কিন্তু ক্রমাগত তিনদিন হগ্ধ বিক্রম করিলে শুদ্রম্বপ্রপ্রপ্র ক্রমাগত ৭ দিন মাংসাদি ভিন্ন ক্রম্ম নিবিদ্ধ ক্রমা ইচ্ছাপুর্কক ক্রমাগত ৭ দিন বিক্রম করিলে আহ্মণ বৈশ্রমপ্রপ্রথি হন। এক্রপ রস্ক্রবার বিনিমরে অপর রসক্রব্য লওয়া বাইতে পারে, কিন্তু রসদ্রবার সহিত লবণের বিনিমর হয় না। সিদ্ধারের বিনিমর আ্যারের সহিত এবং ধাপ্তের বিনিমরে তিল লওয়া বাইতে পারে, কিন্তু সম্যান পরিমাণ দিতে হয়।

বান্ধশের আপংকালে যেরূপ জীবিকা অভিহিত হইল.
ক্রিরেও এইরূপ বৃত্তিবারা জীবিকা নির্দ্ধাহ করিবেন। স্বধশ্ম
নিরুষ্ট হইলেও তাহার আচরন করা সর্বতোভাবে বিধেয়।
পরধর্ম স্বকীর ধর্ম হইজে উৎকৃষ্ট হইলেও যদিকেই আচরন করে,
তাহা হইলেও রাজা ভাহার দওবিধান করিবেন। স্বধর্ম নিরুষ্ট
হইলেও তাহা অন্ধর্টের। পরকীয় ধর্ম স্কর ইইলেও লোকের
অন্ধর্টের নহে। বেহেতু আভাত্তরধর্মবারার জীবনবাপন করিলে
নাম্বর তৎক্ষণাৎ স্ক্রাতি হইতে পরিভ্রষ্ট হয়।

বৈশ্ব খধর্ম বারা জীবিকা-নির্কাহে অসমর্থ হইলে উচ্ছিট্ট ভোজনাদি অনাচার পরিহারপূর্বক দ্বিশুশুজাদি দূদের্ভি বারা জীবিকা-নির্কাহ করিবে, কিন্ত আপদ্ মুক্ত হইলেই দূদের্ভি পরিত্যাগ করিবেন। দূদে যদি নিজ র্ভি বারা পুত্র কল্রাদির ভরণপোষণে অক্ষম হয়, তবে কাক্ষকরাদি কর্ম বারা জীবিকা-নির্কাহ করিবে। যে কর্মাচরণে দ্বিশুশুলা নির্কাহ হয়, এই-রূপ বিবিধ কাক্ষকর্ম ও শিল্পকর্ম করিবে।

খণধন্ত আদ্দব্ভাতাবপ্রশীড়িত হইরাও বদি ক্রির বা ক্রৈবৃত্তি অবলবন না করেন, তাহা হইলে এইরপ বৃত্তি ভাষার অবলবনীর। বিপন্ন আদ্দ সকলেরই নিকট হইতে প্রতিপ্রহ করিতে পারেন। আদ্দ খভাবভঃ রল ও অগ্নির ক্রার পবির। আপংকালে রাজনের মিন্সিত ব্যক্তির বাজন, অবাপন ও প্রতিপ্রহেও পাল হব না। প্রাণাভার মন্তাবনার বদি আম্বাশ নীচলাভির আরও প্রহণ করেন, তথাপি আন্তানে বেরুপ পর বিশ্ব হয় না, ভক্ষণ ভাষার কোন পাগাণকা নাই।

বৃত্তু কিও খবি অজীগর্জ নিজ তনরের আগসংহারে সম্ভত হইরাছিলেন, তথাপি কুংগ্রতীকার ইহার উলেন্ড বলিরা তিনি পাপে লিপ্ত হন নাই। বামদেব খবি কুখার্ড হইরা প্রাণরক্ষার্থ কুরুরমাংস ভোজনেজু হন, তাহাতে তিনি গাপলিপ্ত হন নাই, জতএব ব্রাহ্মণ আগৎ কালে অতিনিজিত কর্মের আচরণেও পাপভালন হন না।

ব্রাহ্মণের নিন্দিতাধ্যাপন, যাজন ও প্রতিগ্রহ এই তিনের
মধ্যে প্রতিগ্রহই অতীব নিক্কই। উপনরনসংস্কারে সংস্কৃতাত্মা
ব্রাহ্মাদিগের যাজনও অধ্যাপন কর্ম্ম নিত্য কর্ত্তব্য, কিন্তু আপিংকালে নিক্কই জাতি বা শেষজন্মা শুদ্র হইতেও প্রতিগ্রহ
বিধের। ব্রাহ্মণের জপ ও হোম হারা শুদ্রাদি নিক্কই জাতির
যাজনাধ্যাপনজনিত পাপ নই হর। স্বর্ত্তি হারা জীবিকা
নির্মাহে অক্ষম হইলে ব্রাহ্মণ উপপাতকী প্রভৃতির নিকট হইতে
শিলোভ্রত্তি হারা জীবিকানির্মাহ করিবেন। কারণ অসং
প্রতিগ্রহ অপেক্ষা শিলর্তি শ্রেষ্ঠ এবং তদপেক্ষা উপ্রত্তি
আরও প্রশন্ত। ধনাভাবে অবসর ব্রাহ্মণ ধান্ত ব্রাদি, তাম্র
ও কাংগ্রাদি নির্মিত দ্বর ক্রিবেরর নিক্ট যাক্রা করিবেন।

কৃষ্ঠ ভূমি অপেক্ষা অকৃষ্ট ভূমির শশু প্রতিগ্রহ করা প্রশন্ত থবং গো, ছাগ, মেব, হিরণা, ধান্ত ও সিদ্ধার এই সকল দ্রব্যের মধ্যে উত্তরোভর দ্রব্য অপেক্ষা পূর্ব্ধ পূর্বর দ্রব্যের প্রতিগ্রহ প্রশন্ত। সকলেরই ৭ প্রকার ধনাগম ধর্মসঙ্গত, বথা—দার প্রাপ্ত ধন, মিত্রের নিকট হইতে লব্ধ ধন, ক্রুর ও ধান্তাদি বৃদ্ধি লব্ধ্বন, ক্রবি বাণিজ্যাদি কর্মবোগে লব্ধ ধন এবং সংপ্রতিগ্রহ লব্ধ ধন। এই ৭ প্রকার উপারে ধনাগম উভ্যন্ত বলিরা অভিহিত হইরাছে। বিদ্যা, লির্কার্য্য, সেবা, গোরক্ষা, বাণিজ্য, অর প্রাপ্তিতে সন্তোব, ভিক্ষার্ত্তি এবং স্বদের জন্ত ধন-প্রব্রোগ এই সকল জীবিকার হেন্তু। আক্রণ বা ক্রিব্রের ক্লাচিৎ স্বদ্ গ্রহণ করিরা ঝণ দান কর্ত্ব্যানহে। কিন্তু ক্রের্য ক্রাপ্ত

বিপ্রদেবার জীবিকা না চলিলে শৃদ্র যদি বৃদ্ধান্তরাভিনাবী হয়, তাহা হইলে ক্ষত্রির তাহার দেবা, ইহার অভাবে বৈশ্রের সেবা করিয়া জীবিকা নির্কাহ করিতে পারেন। স্থপ ও জীবিকা লাভার্থ ব্রাহ্মণ শৃদ্রের আরাধা। শৃদ্র ব্রাহ্মণদেবক এই বিশেবণ মাত্রই ফুতার্থতা লাভ করে। শৃদ্রের ব্রাহ্মণদেবা ভিন্ন আর বৈ কিছু কার্ব্য তাহা নিক্ষণ। ব্রাহ্মণ শৃদ্রন্তভার পরিচর্ব্যা, সামর্থ্য, কার্যানেশ্ব্য এবং উহার পোইবর্নের পরিমাণ বিশেব বিবেচনা করিয়া বেভন অবধারণ করিবেন। ব্রাহ্মণ আপ্রিত শৃদ্রের ভক্যার্থ উচ্ছিট অয়, পরিধানার্থ বীর্ণ বসন, শ্রনার্থ জীপ্রয়া এবং ধাত্তের প্রাক্ষ প্রাধান করিবেন।

নতনাধি অপত্রবা তক্তণ পুত্রের পাপ নাই। উপনয়নাধি সংখ্যার এবং অভিহোত্তাবি বজে অধিকার নাই। কিছু পাক বজালি কার্য্য নিবিছ নহে। বর্ণজ খুল ধর্মেজু হইরা আজগানির অস্তরের পঞ্চ বলাবজানি মন্ত্র বর্গজ করিরা করিবেল। অপ্রাণ্ড পুত্র বজাপ সভ্ ভার্ত্তালৈ প্রত্তুভ হর, তবস্থান্তাল ইহলোকে মাঞ্চ এবং পরলোকে অর্থান্ত করে। রাজা খুত্রকে জার্থ সুক্তর করিতে দিবেল না, কারণ খুত্র ধনমনে মন্ত হইরা আজগকে অবমাননা করিতে পারে। এই বঞ্জ খুত্রের অর্থাক্যর নিজনীর।

চারি বর্ণ এইক্লপ বৃত্তি বারা জীবিকাদিকাহ করিবেন।

(ম্মু ১১ অ॰

বৰ্ণাপ্তমবং (জি) ৰণাশ্ৰম জন্তাৰ্থে মজুপ্ মন্ত বঃ। বৰ্ণাশ্ৰম-বিশিষ্ট।

বৰ্ণা জ্ঞামিন্ (জি) ৰণা শ্ৰমঃ জন্তাৰ্থে ইনি। বৰ্ণা শ্ৰমধৰ্ম বৃক্ত।
(জ্ঞাগৰত ৭।৪।১৪)

বর্ণাসা, আসামের অন্তর্গত একটি নদী। (দেশাবদী) বর্ণার্চ (পুং) বর্ণমর্হজীতি অর্হ-অগ্। সুদ্দ। (রাজনি॰)

বৰ্ণি (জী) বৰ্ণাতে ভ্ৰতে ইভি বৰ্ণ ছভৌ ইন্। ১ হৰ্। (গং) ২ বলি। (বৰ্ণেবলি-চাহিল্লো। উণ্ ৪/১২৩)

বর্ণিক (পুং) বর্ণা লেখাখেন সন্তি অত্যেতি বর্ণ-ঠম্। ১ লেথক। 'লেখকেংকরপূর্ব্বা:প্রাক্তগন্তবীকচঞ্চব:।

বণিকো লিপিকরশ্চাক্ষরভাবে লিপিনিবি:॥'(ছেম) বর্লিকা (খ্রী) বর্ণা অক্ষরাণি লেখ্যম্বেন সম্ভাভাঃ ইতি বর্ণ-ঠন্-টাপ্। ২ কঠিনী। খড়ি।

"লেখন্তাং কর্ণিকাপি তাৎ কঠিন্তামপি বর্ণিকা।" (হারাবলী) ২ মসি। ৩ কাকমের উৎকর্ষ।

'বর্ণকান্ডারণেহন্ত্রী ভূ চন্দনে চ বিলেপনে।

বরোনী লাদিবু ত্রী ভাছৎকরে কাঞ্চনত চ ॥' (মেদিনী)
বর্ণিন্ (পুং) বর্ণা অক্ষরাণি লেখাছেন সন্তাভেতি বর্ণ-ইনি।
> লেখক। বর্ণা নীলনীতাদরঃ লেখাছেন সন্তাভেতি।
২ চিত্রকর।

"अकार्यसभ्यानाः शनानभववर्गनाम्।

বৰসেকনদিশ্বানাং কাররেড চ সঞ্চরান্ ॥" (ভারত ১২।৬৯।৫৭)
বর্ণ (বর্ণাদ্রেকচারিণি। পা ধান্য ২০৪) ইভি ইনি।

৩ ব্ৰহ্মচারী।

'বনী স্যাৎ লেখকে চিন্নকল্পের্গে ব্রক্তান্ত্রিণি' (বেদিনী) (ব্রি) ৪ বর্ণবিনিষ্ট। বর্ণোজরণদাজু (ধর্ণানীলবর্ণাজাচ। পা বাংসংবং) ইতি ইনি। ৫ ব্রাহ্মণ।

"বাজনাধ্যাপনে ওছে বিশ্বজ্ঞাক প্রেজিগ্রহঃ। বৃত্তিব্যবিদ্য প্রোহর্ত্বরো জোঠবর্ণিনঃ এ"(কামকক ৭।২।১৯) বর্ণিনা (রী) বর্ণিন্-জীপ্। > হরিক্রা। ২ বনিতা। (হেম)
বর্দিক্ত (ত্রি) বর্ণ-ক্তা। > অতিযুক্ত, পর্য্যার—দ্বীলত, শত্ত,
পণায়িত, পনায়িত, প্রপুত, পনিত, পণিত, গীর্ণ, অভিষ্ঠুত,
দ্বিভি, অত, মৃত্ত। (কটাধুর) ২ বিভারিত।

"চতুর্থমেত**দ্বিপূলং বৈরাটং পর্ব্ব বর্ণিতং।**" (ভারত ১।২।২০৯) ৩ কৃথিত।

শ্বভর্ত্ত ন মন্না দরিত্রস্যাপি বর্ণিক: ।" (কথাসং ১৯০৬)
বর্ণিল (ত্রি) বর্ণ-লোমাদি-পামাদিশিচ্ছাদিভ্য: শনেলচ: । (পা
াবাস্তর্গ (ত্রি) ইভি প্রশন্তরে ইলচ্। প্রশন্তর্ববিশিষ্ট, বর্ণ্যুক্ত ।
বর্ণ পুং) বৃঙ্ সংভকৌ (অজিব্বীভ্যো নিচ্চ। উণ্ ০০০৮)
ইভি-গ্-সচ্-নিং। ১ নদ্বিশেষ। ২ আদিত্য। ০ দেশবিশেষ।
[পবর্গে বন্নু দেখ।]

বর্ণা (ক্রী) বর্ণ-গাৎ। > কুজুম। (আ) ২ বর্ণকর। (পুং)
ত খেতার্জক। বর্ণাগণ—রক্তানন, পুরাগ, পদ্মকাষ্ঠ, বেনারমূল,
গাষ্টমধু, মঞ্জিষ্ঠা, জানস্তমূল, ভূইকুমড়া, চিনি ও দুর্বা। এই
দশটী বর্ণাগণ। (চরক স্ত্রত ৪ অ০)

বর্ণ্য (পুং) গন্ধক। (বৈশ্বকনি॰)

বর্ত্তক (क्रो) বর্ততে ইতি বৃত-গুল্। > বর্ত্তলোহ, চলিত বিদারি। (হেম) (ত্রি) ২ পুজক।

> "নিবেশ্য সেনাং ভরতঃ পদ্ধাং পাদবতাং বর:। অভিগত্তং স কাকুৎস্থমিয়েষ গুরুবর্তক:॥"(রামা[ং] ২০১০ ৭০১২) (পুং) ও পক্ষিবিশেষ, চলিত ভারই পাখী।

৪ অথের কুর। (অমর)

বর্ত্তকা (রী) বর্ত্তক-টাপ্, 'বর্ত্তকা শকুনো প্রাচাং' ইতি ব্যত্তিকোন্ত্যা-ন-জ্বত-ইত্তং। বর্ত্তকপক্ষী। (অমরটীকার রায়মুকুট) বর্ত্তকী (রী) সপ্রশা, সাতলা।

বর্ত্তজন্মন্ (পুং) বর্তনি আকাশপথে জন্ম যগু। মেঘ। (শন্দমালা) বর্ত্ততীক্ষ্ণ (ক্লী) কল্পলোহ, বিদ্রী। (রাঞ্নি৽)

বর্ত্তন (ङ्गी) বর্ততেখনেনেতি বৃত-করণে লাট্। ১ বৃত্তি,
কীবনোপায়, বেতন।

"বিনা বর্তনমেবৈতে ন ত্যক্ষন্তি মমান্তিকং।"

২ সাধারণ বর্তুল। ও তুলনালা। ৪ তরুপীঠ। তুলার পাইজ। ৫ জীবন। (মেদিনী)

"দেবতাপিতৃমর্ক্ত্যানামতিথীনাঞ্চ বর্ত্তনম্।

বস্তাবশিষ্টেনারেন প্নেপ্তস্ত গৃহং ব্রজ ॥" (মার্ক°পু • ৫০।৭১)

পুং ৰৰ্ত্ততে ইতি বৃত-(**অম্দাত্তেত**শ্চ হলাদে:। পা অ২।১৪৯)

ইতি যুচ্। 《 বামন। (মেদিনী)(ক্রি) ৬ বর্জিঞ্। "এষ দৈনন্দিনঃ সর্গোৱাজকৈলোক্যবর্জনঃ।

তিৰ্যাঙ্বৃপিভূদেবানাং সম্ভবো ধতা কণাভিঃ ॥"১ভাগ" ৩,১১১২৬)

(ক্লী) ৭ পরিবর্জন। ৮ নির্ভের বর্জনীকরণকর্ম।

৯ শশ্যকম্পনকর্ম। (স্থক্ষত স্ক্রেছাও ৭ অও) ১০ ছিতি,

অবস্থিতি। ১১ নিরোগ। ১২ বৃত্তিযুক্ত। ১৩ বর্তমান।

১৪ ছিতিশীল। ১৫ বারস। ১৬ স্থাপন। ১৭ পেষণ।
বর্জনি (পং) ১ পূর্ব্বদেশ। (স্ত্রী) বর্ত্তহেনয়েতি র্ত (র্তেশ্চ।
উণ্ ২০১৭) ইতি অনি। ২ পছা। (উজ্জ্বল)
বর্ত্তনিন্ (মি) পথিক।

বর্ত্তনী (স্ত্রী) বর্ত্তনি ক্লিকারাদিতি পক্ষে ঙীষ্। ১ পস্থা। ২ পেষণ। (শব্দরভা•)

বর্ত্তনীয় (ত্রি) বর্তনযোগ্য।

বর্ত্তমান (পং) বর্ততে ইতি বৃত-শানচ্। প্রয়োগের অধিকরিণীভূত কাল। পর্যায় অগতন, অধুনাতন। (রাজনি ।
বাকরণ মতে আরভ্তের অসমাপ্তি পর্যান্ত বর্তমান। এই
বর্তমান প্রবৃত্তোপরত, বৃত্তাবিরত, নিত্যপ্রবৃত্ত ও সামীপ্য
এই চারি প্রকার।

"প্রবৃত্তোপরতেন্চৰ বৃত্তাবিরত এব চ।

নিত্যপ্রবৃত্তঃ দামীপ্যো বর্তমান*চতুর্বিধঃ ॥"

(মুগ্ধবোধটাকার হুর্গাদাস) এই চারিপ্রকার বর্ত্তমানের মধ্যে সামীপা ছিবিধ ভূতসামীপা ও ভবিষাৎসামীপা। এই চারিপ্রকার বর্ত্তমানের উদাহরণ যথা 'মাংসং ন থাদাতি' এই স্থলে আদিতে প্রবৃত্ত যে মাংসভোজন তাহা নিবর্ত্তিত করিতেছে, এইজ্বস্তু ইহা প্রবৃত্তোপরত বর্ত্তমান। 'ইহ কুমারাং ক্রীড়প্তি' এই স্থলে কুমারগণের তদানীস্তন ক্রীড়নাভাবেও পূর্কে তাহারা ক্রীড়া করিয়াছিল, এই বোধ হওয়ায় ইহা বৃত্তাবিরত বর্ত্তমান। 'পর্ক্ষতা-বিশ্বজিতি' এইস্থলে পর্কাতদিগের ভূত ও ভবিষ্যৎকালে অবস্থানের সম্বন্ধবিবক্ষাহেতু বর্ত্তমানত্ব থাকায় নিত্যপ্রবৃত্ত বর্ত্তমান।

কিলা আগতোহসি ইতি প্রশ্নে অধ্বন্ধেলাদের্বস্তমান্ত্রাৎ এবাহহং আগচ্ছামি ইতি আগতোহি বলতি অর্থাৎ কথন আসিরাছ এইরপ প্রশ্ন করিলে আগতবাক্তি এই আমি আসিলাম এইরপ উত্তর দেয়, এইস্থপে তাহার আগমনক্রিয়া হইয়া গেলেও আগমন কল্প পওশ্রমাদির বর্তমানতা থাকার এইস্থলে ভূতসামীপা বর্তমান হইয়াছে। 'কলা গমিষাসি ইতি প্রশ্নে এবাহহং গচ্ছামি ইতি গমনক্রিয়মাণোল্প মোহণি বলতি' কখন গমন করিবে এইরূপ প্রশ্ন করিলে গমন করিতে উল্পত ব্যক্তি এখনই গমন করিতেছি এইরূপ উত্তর দেয়, এইস্থলে গমনক্রিয়া আরম্ভ না হইলেও ভবিশ্বতের সামীপা হেতু এইস্থলে ভবিশ্বত্যসামীপা বর্তমান হইয়াছে। এই চারিপ্রকার বর্তমান। ভূত, ভবিশ্বৎ ও বর্তমান ভেদে কাল ক্রিবিধ। প্রায়ম্ভ ও আসমাপ্রকালই বর্তমান, উপস্থিত বা উপস্থিতের সমীপ বর্তমান। [ধাতু ও কালন্দ দেখ]

বর্তমান কালে নট্ বিভক্তি হয়। (ত্রি) ২ বিছমান, উপস্থিত, বাহা চলিতেছে। ৩ সাক্ষাৎ। ৪ হিডিশীল। বর্তমানতা (ত্রী) বর্তমানস্ভাবঃ তল্টাপ্। বর্তমানদ, বর্তমানের ভাব বা ধর্ম।

বর্ত্তমানাকেপ (পুং) বর্তমান ঘটনায় অদক্ষতি বা অস্বীকার।
বর্ত্তরেক (পুং) বর্তের বর্তনং রাতি গৃহাতীতি বা বাহনকাৎ
উক। ১ নদীভেদ। ২ কাকনীড়া ৩ জলাবট। (মেদিনী)
৪ হারপাল। 'মল্লী গ্রন্থিংরোংমাত্যো ঘাংস্থিতো বেরধারক:।
দৌংসাধিকো বর্ত্তরকো গর্জাটো দশুবাসিনি॥' (ক্রিকাণ)
বর্ত্তলোহ (ক্লী) বর্ততে ইতি বৃত্ত্ত্ত, ততঃ কর্মধারয়:।
লোহবিশেব, চলিত বিদ্রি লোই। পর্যায়—বর্ত্তীক্ষ্, বর্ত্তক,
লোহসক্ষর, নীলক, নীলনোহ, নীলজ, বর্ত্তলাহক। ইহার শুণ—

কটু, তিক্তা, লিলির, মধুর, কফ, দাহ ও পিত্তনালক এবং পিত্ত-

দাহপ্রশমক। (রাজনি°) এই লোহ শোধিত হইলে উক্ত গুণ

ইয়া থাকে।
বর্ত্তস্ (ক্লী) পদ্মপঙ্কি। "ভাবা পৃথিবী বর্জোভাং বিজ্যতং' (শুরুষজু° ২০০১) 'বর্জা: পঙ্কি: ডাভাাং' (মহীধর)
বর্ত্তি (ক্লী) বর্ত্তেহনরেতি বৃত (ছাপিষি ক্লি বৃতীতি। উণ্ ৪০১১৮) ইতি ইন। ১ দীপদশা, বাতি, শল্তে।

'ষ্থা প্ৰদীপো ঘূতৰ্ঠিমশ্লন্ শিণাঃ সধ্মা ভঞ্জতি *হ্যা*লা স্থ্ন।'' (ভাগ° ৫।১১৮)

২ ভেষজনির্মাণ। ৩ নয়নাঞ্জন। ৪ লেখ। ৫ গাত্রাজু-লেপনী। ৬ দীপ। (মেদিনী)

গরুড়পুরাণে লিখিত আছে যে কতক্ষল, শৃথ, দৈশ্ব, জুবিণ, বচ, ফেন, রসাঞ্চন, মধু, বিড়ঙ্গ ও মনঃশিলা এই সকল জবোর বর্ত্তি কাস, তিমির ও পটল রোগ নাশ করে।

"কতক্ত ফলং লখং সৈন্ধবং অ্যুষণং বচা। ফেনো ৰসাঞ্জনং কোন্তং বিডলানি মনঃশিলা।

ফেনো বসাঞ্জনং ক্ষোপ্রং বিপ্রসাদ শ্বনাশা। এবাং বর্ত্তি ইস্তি কাসং তিমিরং পটলং তথা ॥" (গরুড়পু° ১৯৮অ°)

ভাব প্রকাশে রেগণনী ও লেহনীবর্ত্তির বিষয় এইরূপ আছে— রোপনীবর্ত্তি—তিলপুল ৮০টা, পিপুলদানা ৬০টা, জাতীফুল ৫০টা, এবং মরিচ ৬টা এই সকল এব্য জলে উত্তমরূপে

৫০টা, এবং মারচ ভাটা এই সকল প্রবা কলে ভাতনগণে পেবণ ক্রিয়া বর্ত্তি ক্রিবে, এই বর্ত্তি ছারা নয়নে অঞ্জন প্রায়োগ ক্রিলে কাস, তিমির, অর্জ্জন, ভক্ল ও মাংসর্ত্তি নই হয়।

মাত্রা এক মটর কলার পরিমাণ।

ক্ষেত্ৰীবৰ্ত্তি -- আমলকী বীজ ১ তোলা, ৰাহেড়া বীজ ২ তোলা, ও হরীতকী বীজ ১ তোলা এই কএকটা দ্ৰৰা জল হারা পেবণ করিরা মটর কলান প্রমাণ বর্তি প্রস্তুত করিয়া নরনে ক্ষমন প্রবােগ কনিবে ৷ এই বর্তিতে অক্সনার ও বাতরক্ত জান্ত শীড়া প্রানিত হয়। (ভাষপ্র' দিতীয় ৩০) বর্ততেহনরেতি যুত (রুভেন্দ্রনান উপ্ ৪০১৪০) ইতি ই। ৭ বোগকর্মজ্য । শ বর্ত্তিক (প্রাং) পন্দিবিশেষ, দিন্দী বটেয় পাখী। পর্যায় বার্তিক, বন্ত্রী, গান্ধিকায়। ইহার মাংস্থপ-নির্দোধ, বীর্যা ও প্রবিশ্বক। (রাজনি)

বৰ্ত্তিক। (ত্ৰী) বৰ্ত্তনি বৰ্ত্তকৈ ইডাচ্, বৰ্ত স্বাৰ্থে ক-টাপ্। বৰ্ত্তকী পক্ষী, চলিড ভারই। ইহার মাংসপ্তপ—মধুন্ন, কক্ষ, কদ্ধ ও বায়্নাশক্ষ। (রাজব°) ২ অজপুলী। (রাজনি°) বর্তি স্বার্থে কন্টাপ্। ও বর্ত্তি, বাতি, শলিভা বা পলিভা। ফালিকাপুরাণে লিখিভ আহছ যে, বর্ত্তি পাচ প্রকার।

"পদাস্ত্ৰভবা দৰ্ভগৰ্ভস্ত্ৰভৰাথবা।

भागका वानती वानि कनटकाटवाडवांश्वा ।

বর্ত্তিকা দীপরুত্যের সদা পঞ্চবিধা স্থতা ॥" (কালিকাপু° ৭৮ছ। পদ্মস্ত্রন্তব, দর্ভগর্জস্ত্রন্তব, শালত্র, বাদরী ও ফলকোবোত্তব

এই পঞ্চিধ প্রেৰারা দীপের বর্ত্তিকা করিতে হর। এই বর্ত্তিকা ঘারা দেবপুজার আরতী দিবার বিধি আছে। ৪ পিটকবিশেষ।

(চরক্চি॰ ৮৯০)

বর্ত্তিতব্য (ত্রি) বৃত-ভবা। বর্ত্তনযোগ্য, স্বাভবা, স্থিতিশাল।
বর্ত্তিত (ত্রি) বৃ-গিচ্-জন। সদৃশ্পাদিত, নিশাদিত। ২ ক্বতসম্পন্ন।
বর্ত্তিন্ (ত্রি) বৃত-ইন্। বর্ত্তনশাল, বর্ত্তিমু, বর্ত্তন। অবস্থান।
বর্ত্তির (পুং) কপিঞ্চল সদৃশ পন্দী, ভিত্তির পন্দী। (চরক)
বিক্তিয়ুকু (ত্রি) বর্ত্তে ইতি বৃত্ত (আলক্কঞ্নিরাক্কঞ্প্রজনোৎপচোৎপতন্মদক্ষচাপত্রপর্ত্বুধুসহচর ইমূচ্য। পা তাং।১০৬) ইতি .

ইকুচ্। > বর্ত্তনশীল, পর্যায় বর্ত্তন, বর্ত্তী। (হেম)

"নিরাকরিঞ্বর্তিফ্ বর্দ্ধিন্দু পরিতো রণম্। উৎপতিফ্ সহিষ্কু চ চেরতুঃ ধরদ্বণৌ ॥" (ডটি এ) >)

বিভিন্যমাণ (ত্রি) বৃত ভবিব্যতি অমানপ্রত্যর:। ভবিব্যৎ-কালাদি, বর্ত্তমান প্রাগভাবাশ্রয়। (রাশ্রনি•)

"বৃত্তৰৰ্ভিষ্যমাণানাং কথাংশানাং নিদৰ্শকঃ।

সংক্ষিপ্তাৰ্থন্থ বিজ্ঞের আদাবন্ধক দশিতঃ ।'' (সাহিত্যদ • ৬।৩০৮) বিজ্ঞিস্ (क्री) গৃহ। "জিবজিবাতঃ চিরম্বতে" (ঋক্ ১।৩৪।৪) 'বৰ্জিস্বর্জতেহত্ত্রেতি বর্জি গুলিং' (সারণ)

ব্ট্টা (ব্ৰী) বৰ্ত্তি-ছদিকাগদিতি ভীব্। বৰ্তি, সনিতা, পনিতা।
"আসীদভাধিকা চান্ত ব্ৰীঃ প্ৰিয়ং প্ৰসূত্মকতঃ।

নিৰ্বাণকালে দীপত বৰ্ত্তীমিব দিংক্তঃ ॥" (ভারত ৪। ১১।২৩)

বৰ্জীর (পুং) বটের পাধী, ডিপ্তির গন্দী। (চরক)
বর্জ্ব (বি.) বর্জতে ইন্ডি বৃত বাহলকাগুলচ্। গোলাকার বন্ধ,
পর্ব্যার নিজল, বৃত্ত, মন্তলাহিত। (শন্তরত্বা) ২ সম্পূর্ণ্যন্তবৃত্ত।

(ক্নী) ৩ গ্ৰন্ধন। (রাজনি॰) ৪ কলায় বিশেষ**, ৰাটুল, মট**র।

'কলারন্ত এয়ো ভেলান্তিপুটো বর্জুলোইছটা।' (শন্তমাণ)

' ৫ গুঠুকুল। ৬ টছণক্ষার। ৭ মণিভেল। (বৈভক্ষিণ)
বর্জুলা (ন্ত্রী) বর্জুল-টাপ্। ভর্কুপাটী, টেকোর বাটুল।
বর্জুলা (ন্ত্রী) বর্জুল-টোপ্। ভর্কুপাটী, টেকোর বাটুল।
বর্জুলা (ন্ত্রী) বর্জুল-টোপ্রাদিখাৎ ভীব্। ১ গল্পিয়লী। (মান্তমিণ)
বর্জুকর্দ্রের। পুং) নেত্রবর্জ্ম গভ রোগবিশেষ। (ক্লুল্ড উত্তর তক্ষ্প)
বর্জুকর্দ্রের্কা, পুং) নেত্রবর্জ্ম গভ রোগবিশেষ। (ক্লুল্ড উত্তর তক্ষ্প)
বর্জুকর্দ্রের্কা, পুং) নত্রবর্জিলের শাবাভেল।
বর্জুন্ (ক্লী) বর্জভেনেনাজ্নির বেতি বৃত-মনিন্। ১ পছা, পথ,
রাজা, মার্গা। ২ আচার। (ক্লমর) ত নেত্রছেন, চক্লুর পাডা।
''সিতাসিভক্ষ ভক্ষধ্যে নেত্ররোম গুলং হি বং।

প্রজ্ঞাননং ভবেদ্বর্দ্ধ চাক্ষিক্টমতঃ পরম্।" (আর্থানি ২ বর্জ হৈতি বৃত (বৃতেশ্চ । উপ্ ২ । ১ ০ ৭) ইতি অনি-চকারাৎ মৃড়াগমোহপাত্রেতি কেচিৎ । ১ পছা, মার্গ, পথ। বর্জাবন্ধ (পুং) নেমপল্লগত রোগ, চক্ষুর পাতায় এই রোগ হর। "কণ্ডুমতারতোদেন বন্ধ শোকেন যো নরঃ।

ন সমং ছাদয়েদকি ভবেষকা স বয় না।।''

(সুক্রত উ॰ ৩ ব্ল •) [নেত্ররোগ দেখ]

বর্মাক্ষিক (পং) বর্গনাক্ষিক। (বৈশ্বক্ষনিক)
বর্জারোগ (পুং) বর্জনো রোগং। নেত্রপক্ষগত রোগ, চকুর
বর্জাত রোগ। পৃথক পৃথক দোব সকল মিলিত হইরা চকুর
বর্জাক আশ্রয় করিলে এই রোগ উৎপন্ন হর। এই বর্জারোগ
২১ প্রকার, যথা—১ উৎসঙ্গিনী, ২ কুন্তিকা, ৩ পোথকী,
৪ বন্ধাকরা, ৫ বর্জার্লা, ৬ শুকার্লা, ৭ আন্ধনপৃষ্কা, ৮ বহলবর্জা,
১ বর্জাবর্জা, ১৪ আন্ধিরবর্জা, ১৫ বাতহতবর্জা, ১৬ বর্জার্ম্বর্জা,
১৭ নিমের, ১৮ শোণিতার্লা, ১৯ নগণ, ২০ বিববর্জা, ও
২১ কুঞ্চন এই একবিংশতি প্রকার বর্জারোগ।

इंशामित्र नक्कन---

ত্রিলোবের প্রকোপছেতু বন্ধ মধ্যত্বল কণ্ডু বৃক্ত, বাহিরে
বক্তবর্গ এবং অভ্যন্তরে মুখবিশিষ্ট পীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাহাকে
উৎসন্ধিনী কহে। বে নেত্ররোগে বন্ধ মধ্যে দাড়িমফলের স্থার
ফলবিশেবসদৃশ পীড়কা উৎপন্ন হয়, ঐ পীড়কা ভিন্ন হইরা
আব নির্গত হয় এবং পুনর্কার স্থীত হইরা উঠে, ভাহাকে
কুন্তিকা কছে।

কণ্ডুও আবযুক্ত, শুক্ল ও বেদমাবিশিষ্ট রক্তসর্বপের আরুতি পীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাহাকে পোধকী কহে।

বৰ্ত্ত মধ্যে কুত্ৰ কুত্ৰ পীড়কাপন্নিত্ত কঠিন স্থল ও ধরম্পর্শ লীড়কা উৎপন্ন হইলে ভাষাকে বন্ধানৰ্করা কহে। কাঁকুড় বীল সন্শ স্ক তীক্ষ অগ্রবিশিষ্ট অথচ অরবেদনাযুক্ত পীড়কা উৎপন্ন হইলে তাহাকে বন্ধার্শি কহে। বন্ধার
অভ্যন্তরে দীর্ঘ অভ্যন্তক কর্কশ, অত্যন্ত কঠিন, অথচ শুদ্দ
মাংসাভ্যুর উৎপন্ন হইলে তাহাকে শুদ্ধার্শ কহে। বন্ধা মধ্যে
দাহ ও স্চিবিদ্ধবং বেদনাযুক্ত, কোমল ও অন্নবেদনাযুক্ত
তান্ত্রবর্ণ স্ক্র পীড়কা উৎপন্ন হইলে তাহাকে দূষিকা কহে।

সমস্ত বন্মের উপর চর্মের স্থায় বর্ণবিশিষ্ট ও কঠিন পীড়কা हरेल डाहारक वहनवर्ष करह। वर्षाबद्धरारा वर्षा दश्र कछ्र, অক্ষিগোলক সমাকৃ আচহাদন করিতে অসমর্থ হয়। বযুরিয় ষ্মন্নবেদনাযুক্ত ও তাত্রবর্ণ হইরা অকন্মাৎ রক্তবর্ণ হইলে তাহাকে ক্লিরবর্ম করে। ক্লিরবর্মরোগ পিতামুবিদ্ধ হইয়া যথন রক্তকে। বিদশ্ব করে ও অন অন্ন প্রাব নির্গত ২ইয়া আর্ক্সভাবাপন্ন হন্ন,তথন তাহাকে বন্ধকর্দম কহে। বন্ধের বাহে ও অভ্যন্তরে কও ুযুক্ত শ্রামবর্ণ অন্ন বেদনাবিশিষ্ট অথচ ক্লিন্নভাবাপন্ন শোথ হইলে শ্রাব-বম্ম ; বহিদ্দেশে কিঞিৎ বেদনাযুক্ত শোথ হইয়া উহার উপাস্ত অত্যস্ত ক্লিন্ন হইলে প্রক্লিরবর্ম্ম; বন্মদ্বিয় পাকে না অথচ প্রকালন না করিলে পরস্পর সংলগ্ন হইয়া থাকে এবং পুনঃ পুনঃ ধৌত করিলে পৃথক্ হয়, ভাহাকে অক্লিন্নবন্ধ; যে নেত্ররোগে বেদনার সহিত হউক বা বেদনাবিহীন হউক, বয় সদ্দিবিশ্লিষ্টপ্রযুক্ত নিমেষ ও উন্মেৰরহিত হয় এবং সঙ্কোচনে অশক্ততাহেতু নেত্র মুদ্রিত হয় না, তাহাকে বাতহতবর্ম ; বন্মের অভ্যন্তরে বিষম কিঞ্চিৎ বেদনাযুক্ত ঈষৎ রক্তবর্ণ অথচ অপাকী গ্রন্থির ভাষ হুইলে তাহাকে বন্ধৰ্মিদ; যে নেত্ৰরোগে বন্ধ ও গুক্লের সন্ধিন্থিত মিলন উন্মীলনকারী শিরাসমূহে কুপিত বায়ু প্রবিষ্ট হইয়া বন্ধ-হুয়কে অত্যন্ত চাৰনা করে, তাহাকে নিমেষ ; কুপিত রক্ত কর্ত্তক বৰ্ম মধ্যে রক্তবর্ধ কোমল মাংসাত্রুর উৎপন্ন হইলে তাহাকে শোণিতার্শ কহে; (এই রোগ ছিন্ন হইলে পুনর্কার বন্ধিত হয়।) ব্যের উপরিভাগে কঠিন, ছুল কণ্ডু যুক্ত, পিচ্ছিল, অথচ অপাকী বদরী পরিমাণ গ্রন্থি উৎপন্ন হইলে নগণ, যে নেত্ররোগে ত্রিদোবের প্রকোপ হেতু বন্ধের বহির্ভাগে শোথ উৎপন্ন হইয়া ঐ শোপের অভ্যন্তরে বহুসংখ্যক ছিদ্র হয় এবং ঐ ছিদ্রন্বারা জলের স্থার অত্যন্ত আব নির্গত হয়, ইহাকে বিষবস্থ এবং বাতাদি দোৰতার কুপিত হইয়া বধন বন্ধ হয়কে সভুচিত করে, তথন রোগীর দর্শনশক্তির অভাব হয়, এই রোগকে কুঞ্ন কৰে। এই একবিংশতি প্ৰকার বন্ধ রোগ। (ভাৰপ্র• নেত্র-রোগাধি•) [নেত্ররোগ মেধ।]

২ অব্দের নেত্রবর্ষ্ম গত রোগ। (জরদত্ত ৩০ জ:)
বৃদ্ধ বিবৃদ্ধক (পুং) বৃদ্ধ রোগবিশেষ। [বর্ত্তরোগ দেখ।]

বজু শিক্রা (জী) বন্ধ রোগবিশেব। বজু যিসে (পুং) পথকেন, পথশান্তি। বজু বিরোধ (পুং) চন্দ্র বন্ধ গভরোগভেদ। (স্থশত)

বর্ক্ত (ত্রি) > নিবারশ্বিতা। ২ প্রেরক। (সারণ)

বৰ্ত্ত্ত্ব (ত্ৰি) ২ বারন্থিতা। ২ রক্ষণশীল। (ক্লী) ও প্রণালিকা। বংস (পুং) চোরালের ভিতর মাড়ীর উপর স্মীতি।

বংস্য (ত্রি) বংস সম্বীয়।

· বর্দ্ধ, ১ ছেদন। ২ পূরণ। চুরাদি• পরদৈ• সক• সেট। লট্ বর্দ্ধয়তি। লুড্অববর্দ্ধং।

বর্দ্ধ (ক্লী) বর্দ্ধরতি প্রয়তি বর্দ্ধ-অচ্। ১ দীসক। (হেম)
(পুং) র্ধ-অচ্। ২ আকশবটিকা। (জটাধর) ও পৃর্তি,
পূরণ। ৪ ছেদ।

বর্দ্ধক (পুং) বর্দ্ধতে ইতি বৃধ-ধূল্। (ত্রি) > পূরক। ২ ছেদক।
বর্দ্ধিকি (পুং) বর্দ্ধতে ছিনজীতি বর্দ্ধ-অচ্, বর্দ্ধং কষতীতি কষ
হিংসায়াং বাহলকাৎ ডি। স্বন্ধার, ছুতার।

"কর্মান্তিকান্ শিল্পকরান্ বর্দকীন ধনকানপি।

গণকান্ শিলিনদৈচৰ ভথৈৰ নটনৰ্জকান্॥" (রামারণ ১।১৩।৭)

বর্জিকিন্ (পু॰) বর্জকো বর্জোহন্তি অস্তেতি বর্জক-ইনি।
বর্ণসন্ধর জাতিবিশেষ। পর্যাায়—ছয়া, বর্জকি, তক্ষা, হঅধার,
রথকার, রথকর, কায়তট্, কায়তক্ষক। (শব্দরয়া৽)
"অরডকে বলভেদোনেমা। নাশোবলভাবিজ্ঞেরঃ।

"অর্ডকে বলভেলে। দেখা নালে। বলত বিজ্ঞান । অর্থকয়োহক ভবে তথানিভবে চ বর্ষকিনঃ ॥" (র্হৎস• ৪৩/২২)

বর্তমান সময়ে বড়্হি, বহি, বহি, বহি বা বহি নামে পরিচিত। উত্তরপশ্চিমে ইহারা আপনাদিগকে বিশ্বকর্মার সন্তান ববিরা মনে করে। একংশে প্রকৃত বর্ধকী জাতি দেখা যায় না। মধার্ত্ত নানা শ্রেণীর গোকে ছুতার বৃত্তি অবশ্বন করিয়া এই নামে একটী শ্বতম্ব শ্রেণীভূক্ত হইয়ঃ পড়িয়াছে।

বেহারের বর্জকীরা ছয় থাকে বিভক্ত। তাহারা পরস্পরে আলান প্রদান করে না। কনোজিয়ারা কেবল কাঠের কাজ করে, আর মঘবর্হিরা লোহা ও কাঠ লইয়া জানালা দরজা প্রভৃতি প্রস্তুত করিয়া থাকে। ভাগলপুরে এই জাতির লোহার নামে একটা থাকের বাস আছে। উহারা প্রকৃত লোহার হইতে পৃথক্। কামারকলা থাকের বর্জকিগণ কাঠের পুতৃল নাচাইয়া বা খেলা দেখাইয়া পথে পথে বুরিয়া বেড়ায়।

উত্তরপশ্চিমভারতের হিন্দুস্বসমান বড় হিলিগের মধ্যে অনেক লাখা আছে। তর্মধ্যে হিন্দু বিভাগে ৭৯টা স্বতন্ত্র থাক আছে। ঐ সকলের মধ্যে নিম্নোক্ত গুলি স্থানভেগে বিশেব পরিচিত। লাহরাণপুরে —বন্দরীয়া, ঢোলী, মূলতানি, নাগর, তরলোইরা; মূলঃফ্র নগরে ঢালবাল, লোটা; মীরাটে ক্ত্রার, বৃশন্ধ-

সহর—জীল; আলীগড় — চৌহান, মধুরা—ৰাজন, লোশনিরা, আগ্রার—নাগর, অভ্যার ও উপ্রোত; ফুরুথাবার—পারিভিরা, মৈনপুর —উমারিরা; ইটা—জগবারিরা, বারমাণিরা, বিশারী, জলেবরীরা; বালিরা—গোকুলবংশী; বভিজেলার – দক্ষিণাত্ত, সর্বরিরা, সরর্পারী, গোণ্ডা—কৈরাতী বা ধরাত্তী, লোহার বর্তি, কোকালবংশী, নগধিরা বা মগহিরা পুরবীরা, উভ্যারী, ও ক্রী বা ধাটি দহমান, মধুরীরা, লহোরী, কোকাল ইভ্যাদি। এতদ্বির মহর, টাক, ওঝা ও বা্মন বড়হি ও চামার বড়হি প্রভৃতি বিভাগ দৃষ্ট হয়। বারাণনী বিভাগে জনাউধারী নামক একটা থাক আছে, ভাহারা বক্তম্ত্র ধারণ করে। ভাহাবা মন্ত্রমাংস প্রভৃতি অধাত্ত লগাল করে মা। ওঝা থাকেরাও বক্তম্ত্র ধারণ করিরা পাকে।

সেতৃবদ্ধাদেশর নামক বর্দ্ধনীরা ক্ষেবল কাঠের দেবমূর্তি
গড়িয়া বিক্রের করে। জাতীর ব্যবসারে উচ্চ স্থান অধিকার
করিলেও ইহারা ভিক্লা করে বলিয়া সমাজে নীচ শ্রেণীরূপে
গণ্য হইয়াছে। থাটারা কেবল গাড়ীর চাকা গড়ে এবং দিলীবাসী কোকাসগণ টেবিল, চেমার প্রভৃতি প্রস্তুত করিয়া থাকে।
খাটা ও কোকাসেরা জলাচরণীর নহে। টাক, উকাট, দিভান
ও জভ্যাবেরা জভ্যার রাজপ্তজাতির অস্তুতম শাখ্য বলিয়া
গণ্য। চুণিয়ারা, কুলের ও কুদেরা প্রভৃতি পর্বত্বাসী বড় হিয়া
ডোমজাতির অস্থরূপ।

মগহিয়াদিগের মধ্যে ৩ হইতে ৫ বৎসরের মধ্যে বালিকার বিবাহ হইয়া থাকে। কিন্ধু উত্তরপল্ডিমাঞ্চলে বালিকার ৭ হইতে ১১ বৎসর এবং বালকের ৯ হইতে ১৩ বৎসরের মধ্যে বিবাহ হয়। মাতৃকুলে অথবা পিতৃত্বসার বংশের পিশুবাধা পর্যান্ত তাহারা বিবাহাদি করেনা। তাহার মধ্যে ধনীর পক্ষেচারহোবা প্রথার,নিধ নীর পক্ষে "দোলা" প্রথার এবং সাধারণতঃ 'আদল বদল' ও সাগাই মতে বিবাহ হইতে দেখা বায়। বিববাবিবাহ প্রচলিত আছে। বিধবাপণ দেবর বাতীত অপর ব্যক্তিকে ভিতীরবার পতিরূপে গ্রহণ করিতে পারে। জীলোকের চরিত্র-দোব ঘটিলে তাহাকে আতিচ্যুত করা হয়। যদি সে এই সমাজদকের পর পুনরার ধর্মপথে ও সন্মানে জীবন বহন করে, তাহা হইলে সে সমাজভুক হইরা আবার সাগাই মতে বিবাহ করিতে পারে। পুরুবদিগের ক্ষতণাপাদির প্রারশিত্র বান্ধণভোজন অথবা অবোধ্যাতীর্থে, গলার বা সরষ্টে সান।

তাহারা বীরাচারী শৈব। মন্ত ও মাংসভোজন ও ধারা প্রহণ করে না। পাচশীর, মহাবীর, দেবী, ফুল্হাদেও, বিবিরাদেব, বিশ্বকর্মা প্রভৃতি দেবতার পূজার তাহারা বিশেষ ভক্তি প্রদশন- পূর্ক পূলা করে। তাহারা শবদেহ দাহাত্তে তথ্য বা অছি

গাইরা গলা বা কোন নদীর জলে নিক্লেপ করিরা থাকে।

সাধুপুরুবদিগের সমাধিছানের উপর তাহারা আবিনমানের

মহালরার দিন লল দের এবং ত্ররোদশী তিথিতে সেই স্থলে চাউল

ও চুগ্ধ দিরা প্রান্ধাদিগাকে কিছু খান্ত দ্রবাদি দান করিরা থাকে।

বসত্ত বা বিস্তৃচিকা রোগ্নে মৃত্যু ঘটিলে তাহারা শবদেহ প্রোথিত
করে অথবা নদীর জলে তাসাইরা বের। তির দেশে কোন

আখীয় বা ব্রুবনের মৃত্যু ঘটিলে তাহারা কুশপুত্রিকা দাহ করে।

বেহারের বড় হিরা জলাচরণীর। তাহারা উপ্রমহারাজ, বন্দি, গোরাইরা ও পাঁচণীর প্রভৃতি গ্রাম্য দেবতার পূজা করে। গোরালা, কোইরী, হজাম প্রভৃতির স্থার তাহারা সমাজে তুল্য জাসন পাইরা গাকে। কাঠের কার্য ব্যতীত ভাহারা চারবাস ও করে!

বর্দ্ধন (ত্রি) বর্দ্ধরতীতি বৃধ-নন্দ্যাদিশ্বাং ল্যু, বন্ধা বর্দ্ধতে ভচ্ছীল ইতি বৃধ-পূর্ব্তে (অফুলাভেডশ্রেড। পাথাং।১৪৯) ইতি যুচ্। ১ বর্দ্ধিক, বর্দ্ধনশীল। ২ বৃদ্ধি, উন্নতি। ও বাড়ান। ৪ পূরণ। ৫ ছেদন। ৬ বৃদ্ধিকারক।

বর্দ্ধনকোট, (বর্দ্ধনকূটা)—বস্তুড়া জেলার অন্তর্গত বগুড়া হইতে উত্তরে অক্ষাণ ২৫ চিং৪ ডি: ও জাঘিণ ৮৯°২৮ পূং, গোবিলাগানের নিকট, করতোরা নদীতীরে অবস্থিত। একণে রাজাবাড়ী নামে খ্যাত। কাহারও মতে, এখানে এক সমরে প্রাচীন পৌতু বর্দ্ধনরাজ্যের রাজধানী ছিল। সংস্কৃত ব্রদ্ধপত্তর মতে, বন্ধনকোট নিস্তি দেশের অন্তর্গত। একণে প্রাচীন রাজাবাড়ীর ধ্বংসাবশেব দৃষ্ট হয়। বর্ডমান কালেও বর্দ্ধনকোটে এক বাবেন্দ্র কারত্ব রাজবংশ বিভ্যমান।

वर्षमकृष्ठीत-ताम्रयःम ।

বর্জনকৃটী বছকাল বাবেক্স কারতের অপিকারে ছিল। এখানকার ইতিরক্ত হইতে জানা যার যে, খুঁহীর চতুর্জল লতাক্সে আলমান গোনীর দেববংশে রাজেক্স নামে এক ব্যক্তি প্রবল হইরা
ইল্রাকপুরের অন্ধর্গত বহ ভূসম্পত্তি অধিকার করিয়া বসেন।
কোম্পানীর আমলে গুড্লাড সাহেব ইল্রাক্পুরের যে বাজবিবরণ সংগ্রহ করেন, ভাহা হইতে জানা যার যে, এখানকার
প্রথম রাজার নাম রাজেক্স, তৎপরে বংশাস্ক্রমে রাজা ভগীরও,
রাজা প্রগালাভ, রাজা ভ্রগারালাল, রাজা রামহলাল, রাজা
গোপীরমণ, রাজা অমরকান্ত, রাজা গৌরহরি, রাজা আর্যাবর ও
মার্যাবরের প্র রাজা ভগবান্ রাজ্য করেন। + বাবেক্স কারত্গণের ঢাকুর নামক কুলগ্রহে লিখিত আছে,—

"তৎপরে কহি এক **ছেব পরিপাটী**। আর্য্যাবর মণ্ডল বাস কৈলা বর্দ্ধনকুটী॥ ভার পুত্র ভগবান করিয়া চাতুরী। রাজা ভগবান মৈলে নিলা জমিলারী॥ যবে মানসিংহ রাজা বাজালাতে আইলা। নয় আনা সাত আনা ভূমি বন্টন করিলা। ক্রমে ক্রমে ভাগ্যলন্ধী প্রচুর হইল। হন্তী নিশা রাজ্টীকা পাতসা করিল।। তাহার সন্তান হইল কুমুদানক্ষন। তক্ত পুত্ৰ রঘুনাথ বড়ই সদগুণ॥ মনোহর তম্ম হত তম্ম পুত্র হরি। রাজা বিশ্বনাথ তম্ম স্কৃত গিরিধারী। প্রধান বারেক্স সনে কুলক্রিয়া কৈল। कूनीन नमास भारक मधाना नाहेन । নিরাবিল সিদ্ধ ঘরে হইল করণ। সেই অনুসারে দেব হইল চলন ॥"

বর্জনক্টীর নিকটবর্ত্তী রামপুরের বাহ্নদেবের মন্দিরে এইরূপ ইষ্টকবোদিত লিপি পাওয়া যায়—

"গুণাকিশরচক্রেণ যুতে শাকে ভবচ্ছিদে। ভবানিভীতো ভগবান্দদৌ শ্রীবিঞ্বে মঠম্॥"

অর্থাৎ সংসারসাগরভীত ভগবান্ ১৫২০ শকে অর্থাৎ
১৬০১ খুঠানে ভবভরহারী শ্রীবিফুর উদ্দেশ্তে এই মঠ দান করেন।
উক্ত প্রমাণ অরুসারে খুঠায় ১৬শ শতানে আগ্যাবর মগুলের
অন্তাদয় স্বীকার করিতে হয়। মিঃ গুড্লাড্ সাহের ১৭৮১
খুঠানে লিখিয়াছেন বে, রাহ্রা আগ্যাবরের পুত্র রাহ্রা ভগবান্
নির্বোধ ছিলেন। এই রাহ্রা ভগবানের দেওরানের নামও
ভগবান্ছিল। দেওয়ান স্থবিধা মত তখনকার ঢাকার স্থবাদারকে
উৎকোচ দিয়া নিম্ন নামে সম্পত্তি লিখাইয়া লইলেন। আয় দিন
পরেই রাহ্রা তাহা জানিতে পারিলেন। তৎপরে উভরে ভরুতর
বিবাদ উপস্থিত হইল। রাম্বার পক্ষ হইতে এ সময় দরবার
হইয়াছিল। দীর্ঘকাল দরবারের পর দ্বির হয় বে, রাম্বা নর
আনা ও দেওয়ান সাত আনা জংশ পাইবে। এই সাত আনা
দিনাকপুর রাজ্যের অন্তর্গত হইয়াছিল।

কিন্ত ঢাকুরের উক্তি পাঠ করিলে একটু গোলে পড়িতে হর, আর্যাবরের পূর্বে এই বংশ রাজোপাধিতে ভূষিত ছিলেন কি না, সন্দেহের বিষয় হয়। আর্যাবরের "মণ্ডল" উপাধি দৃষ্টে মনে হয়, এই বংশ পূর্ব্ব হইতেই সম্পত্তিশালী ছিলেন। তৎপুত্র তপথান্ বর্ত্বনকৃতীর কেওয়ান ছিলেন কি না, দে বিষয় সন্দেহ আছে। বেওয়ান থাকিলে বারেজ ঢাকুরকার সে কথা লিখিতে

^{*} Mr. Goodlad's Account of Edrakpur, no, 12. p. 69.

ভূলিতেন না। তবে দেওরানী কথাটা কিরণে আদিল? দিনাজপুরের ইতিহাস হইতে আমরা জানিতে পারি বে, দিনাজপুরপতি বিকুদত হইতে বর্তমান মহারাজ গিরিজানাথ ১১শ পুরুষ। বর্তমান মহারাজের উদ্ধৃতিন ৬৮ পুরুষ রাজা রামনাথ নবাব মুর্শিদকুলীর সমসাময়িক। রামনাথের শিতা হরিরাম পুর্বাতন দিনাজপুরপতি শ্রীমন্ত দত্তের ক্যার পাণিগ্রহণ করেন। হরিরাম রার ইদ্রাক্পুর বা বর্জনকুটারাজের দেওরান ছিলেন। এই হরিরামের পুত্র শুক্দেব রার মাতামহের উত্তরাধিকারপ্রে দিনাজপুররাক্ষা লাভ করেন। [দিনাজপুর শক্ষ দেখ।]

১৬৭৭ খৃষ্টাব্দে শুকদেব রার পরলোক গমন করেন। একপ্
স্থলে তাঁহার পিতা বর্ধনকূটীর দেওয়ান ছরিরাম রার রাজা
ভগবানের সমসাময়িক হইতেছেন। ইদ্রাক্পুরের সাত আনা
অংশ হরিরামের বংশ অধিকার করিয়া বদেন, এই করণেই বোধ
হয় দেওয়ান কর্তৃক বর্ধনকূটীর ।১০ আনা গ্রহণের প্রবাদ প্রচলিত হইয়াছে। প্রকৃত প্রস্তাবে আর্থাবরের পূর্বপূক্ষগণ
স্থপ্রাচীন বর্ধনকূটীর রাজবংশের আর্থীয় মগুলাধিপ বা সামস্করাজ বলিয়া গণা ছিলেন, তজ্জ্য তাঁহাদের বংশতাশিকার তাঁহারা
রাজা উপাধিতে ভৃষিত হইয়াছেন।

স্থ প্রাচীন বর্দ্ধনক্টী-রাজবংশের প্রতাপস্থ্য অন্তমিত হইবার কালে তাঁহারই আত্মীয় আর্যাবরমণ্ডণ বর্দ্ধনক্টী রাজবাটীর নিকট রামপুর নামক হানে আদিয়া বাদ করেন। বর্দ্ধনক্টীর পূর্বতন রাজা ভগবানের মৃত্যু হইলে আর্যাবরের পুত্র ভগবান্ মুদলমান রাজদরকারে নিজ নাম পন্তন করিয়া বর্দ্ধনক্টী রাজ্য অধিকার করিয়া বদিলেন। এ দময়ে পূর্বতন রাজমন্ত্রী হরিরাম রায় জীবিত ছিলেন, তিনি ভগবানের অভ্যায় কার্যো থথেষ্ট বাধা দান করেন। এই বিবাদের দময় রাজা মানদিংহ বাজালায় আদেন। তিনি উভয় পক্ষের গোলাযোগ মিটাইয়া রাজা ভগবানকে॥৴০ আনা এবং দেওয়ান হরিরামকে।৴০ আনা ভাগ করিয়া দিয়া যান। হরিরামের পুত্র রাজা ভকদেব রায়ের সময়।৴০ আনা অংশ দিনাজপুর-রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত হয়।

রাজা ভগবানের বছকীর্তি বর্দ্ধনক্টী ও নিকটবর্তী রামপ্র প্রভৃতি স্থানে দৃষ্ট হয়। তাহার পুত্র কুমুদানন্দন। কুমুদানন্দন অলকাল রাজত করিয়া পরলোক গমন করেন। এই সময় তৎপুত্র বলুনাথ নাবালক। মধুসিংহ নামে এক অমিদার তাহার জমিদারীর। ০ আনা অংশ দখল করিয়া বসেন। এই সময় শাহস্কল বাঙ্গালার নবাব। রাজা রঘুনাথ আপনার পৈতৃক সম্পত্তি উদ্ধার করিবার জন্ম বাদশাহ অরঙ্গজেবের নিকট প্রার্থনা জানাই-লেন। ভদমুদারে ১১ই জুশুস্ অরঙ্গজেব মধুসিংহকে উচ্ছেদ করিয়া রাজা রঘুনাথকে উপযুক্ত সনন্দ প্রদান করেন। গুড্লাড্

সাহেব সেই ফরমাণ বর্জনকৃটার রাজবাটীতে দেখিরা ছিলেন্ত। রাজা রঘুনাথের পুত্র মনোইরের সমর্বেও এই বংশের যথেষ্ট শ্রীবৃদ্ধি হইরাছিল। এই সমরে কুণ্ডী, সেরপুর, পলাদশী প্রঞ্তি পরগণা বর্জনকৃটীরাজ্যের অধিকারভুক্ত ছিল।

রাজা মনোহর জন্নদিন রাজ্যভোগ করির। পরলোক গমন করিলে তৎপুত্র হরিনাথ পৈড়ক অধিকার লাভ করেন। বাদশাহ জরকজেব তাঁহার ১৭শ বর্ষে (১৬৭৫ খুটাকে) এক ফরমাণ দিয়া হরিনাথকে ইদ্রাকপুরের রাজা বলিয়া বীকার করেন।

वाका रविनारथव शूक विश्वनाथ। विश्वनारशव शूक शिविभाती, তৎপুত্র শিবনাথ। এই শিবনাথের সহিত ইদ্রাকৃপুর জমিদারীর न्जन वत्नावछ इत । शिव्रिधाती डिक्ष वारतञ्ज कूनीनकछाव शानि-গ্রহণ করিরা বারেক্সকারস্থ-সমাজে বিশেষ সন্মানিত হন ৷ শিব-নাথের পুত্র গৌরীনাথ কোম্পানীর আমলের রাজা বলিয়া খ্যাত। এই সময় ইত্রাকপুর জমিদারীর অন্তর্গত চাকলা ঘোড়াঘাটের মধ্যে ইন্তাকপুর, ইসলামপুর, আলীগঞ্জ, বাজিতপুর, বাহির (पाड़ापांड, गाडेडनन, थनानी, मुक्तावश्रव, विमी, दनगांड, ভিয়েনকুও, সেরপুর, কানবালা, সেরপুর নওয়াবাদ প্রভৃতি পরগণা ছিল। দশশালা বন্দোবত্তের সময় বন্ধনক্টীরাফোর আয়তন অনেক কমিয়া আদে; এই সময়ে ইদ্রাক্পুর-রাজের অধীনে ৬৯টি পর্গণা এবং তাহার ১৬০১৯৬ টাকা রাজস্ব নিষ্কারিত ছিল। দশশালা বন্দোবন্তের সময় যে ৬৯টী প্রগণা ছিল, তাহাও একে একে নিলাম হইয়া অধিকাংশই পরহস্তগত হয়। এমন কি, অর্দিন মধ্যেই ইদ্রাকৃপুর কমিদারীর নাম পর্যাস্ত মানচিত্র হইতে উঠিয়া বাম।

গৌরীনাথের জোষ্ঠপুত্র রাজা গোকুলনাথ এবং মধানপুত্র রাজা গৌরকিলোর, গৌরকিলোরের পুত্রসঞ্জান হয় নাই। তাঁহার দন্তকপুত্রের নাম খ্যাসকিলোর, এই খ্যামকিলোরের পুত্র কুমার চন্দ্রকিলোর এখন বর্ত্তমান।

এক সমরে স্থবিত্তীর্ণ বর্জনকৃতীরাজ্য থাহাদের অধিকারে ছিল,
যাহাদিগকে লক্ষাধিক মূলা রাজত্ব দিতে হইত, এখন তাঁহাদিগের
অবস্থা অতি শোচনীর, ২০০ টাকার অধিক রাজত্ব দিতে হয় না।
বর্জনগড়, বোত্বাই প্রানেশে সাতারা জেলার অন্তর্গত একটা
গিরিত্র্গ। কোরেগা ও খটাও উপবিভাগের শীমার ব্যবধানে
মহাদেব শৈলমালার একটা শাখার উপর; সাতারা সহর হইতে
১৯ মাইল উত্তরপুর্ব্বে অবস্থিত।

ধটাও বা পূর্বাদিক্ দিরা একটা কুঞ্চ দিরা ঐ গড়ে উঠিতে হয়। ইহার পার্ব দিরা সাভারা-পুরন্দর রাজা গিরাছে। এই রাজার গুই শত গঞ্চ দুরে গুইটা প্রাচীন সরোবর আছে।

নবজিত রাজ্যের পূর্কসীমা রক্ষা করিবার জন্ত ১৭৬৩ খৃ টান্দে

নহারা ট্রকেশরী শিবাজী এই হুর্গ নির্মাণ করেন। ১৮০০ খৃ টাজে মহাদলি সিন্দিরা ২৫০০ দৈশ্য লইকা প্রেজিনিধির হস্ত হইতে এট তর্গ দথল করিরা-লয়েন। এ সমর সিন্দিরার ভগিনী সর্গোবং ঘোড়পড়ের স্ত্রীর মধ্যক্তার বেশী অভ্যাচার ঘটিতে পারে নাই। ১৮০৩ খৃ টাজে হুর্মাধ্যক্ষ বলবন্ত রাও বক্সি এখানে যেনাই তিরন্দির সহিত বৃদ্ধ করেন। ১৮০৫ খৃ টাজে কতেসিংহন্যানে তুর্গ আক্রেমণ করিরাছিলেন, ও বছ অখ লইরা যান। তাহার নিক্ষিপ্ত পোলকের চিক্ত অদ্যাপি তুর্মারের খিলানের উপর লৃষ্ট হর।

১৮০৬ খুটান্দে বসন্তগড়ের বৃদ্ধের পর বাপু গোধলের হত্তে
চর্গ সমর্পিত হয়, তিনি ১৮১১ খুটান্দ পর্যান্ত কর্তৃত্ব চালাইরাচিলেন, তৎপরে পেশবা সেই ভারপ্রহণ করেন। ১৮১৮ খুটান্দে
বিনা যুদ্ধে এই ত্রেজ্ঞ তুর্গ ইংরাজগবর্মেন্টের অধিকারভুক্ত হইল।

এখন ত্র্ণের অবস্থা নিভাস্ত মলা। অধিকাংশ ভবনই ধ্বংসাবশেষে পরিণত। মৃত্তিকারাশির মধ্যে এখনও চুইটী কামান পুড়িরা আছে।

২ লাজারা জেলাছ মহাদেব শৈলমালার পূর্বাংশে উরত একটা শাখা খটাওর মোল হইতে চন্দনবন্দন শৃক্ষ পর্যান্ত প্রায় ১৬ মাইল বিস্তৃত। সাধারণতঃ "বন্ধনগড় মছিক্রগড়" নামে পরিচিত। এই বিস্তৃত শৈলমালার উপর উত্তরে বর্দ্ধনগড়, করাঢ়ের নিকট সদাশিবগড় এবং সদাশিবগড়ের ১২ মাইল দক্ষিণে মছিক্রগড় অবস্থিত।

বৰ্দ্ধনসূরি (পুং) একজন প্রসিদ্ধ জৈনাচার্য। বৰ্দ্ধনিকা (স্ত্রী) যজাদির পবিত্র জল রাধিবার পাত্রভেদ, বদ্না। বৰ্দ্ধনী (স্ত্রী) > জলপাত্রবিশেষ। (মেদিনী) ২ সম্মার্জনী,

ঝাটা। (হেম) ও সনাল পাত্রবিশেষ, কমগুলু বা বন্না।

'আলু: স্ত্রী কর্করীপারী বর্দ্ধনী চ ললস্থিকা।' (জটাধর)
প্রতিষ্ঠাদি কার্য্যে এই বর্দ্ধনী পাত্রেক আকশুক হইলা থাকে।

"প্রতিষ্ঠা যক্ত দেবক তদাখাং কলসং ক্সসেৎ। উপাক্তাং পুরুরেদ্যামো অক্টেণ্ডর চ বর্দ্ধনীম্॥ কলসং বর্দ্ধনীকৈর গ্রহান্ বাস্ফোম্পতিং তথা। আসনে তানি সর্বাণি প্রণবাধাং ক্সপেন্ডক:॥"

(গরুড়পু৽ ৪৮ অ৽)

বৰ্জনীয় (বি) বৰ্জ-জনীয়ন্ত্ৰ নৰ্জনযোগ্য, নৰ্জনাৰ্ছ।

"জাভয়ো বৰ্জনীয়াজৈব ইচ্ছডাগ্ৰন: গুডম্।" (উদ্যোগপ॰)
বৰ্জমান (পুং) বৰ্জতে ইভি বৃধ-বৃহজ্ঞী শানচ্। ১ এরওবৃক্ষ।
(অমর) ২ পশুভেছ। ৩ শরান, শরা।

"তথা গাঃ কপিলা দোড়াই সূবৎসাং পাপুনন্দনঃ।

ংমশুলী ক্লপান্ধুৱা দ্বা চক্তে গ্রাক্ষণম্।

ক্ষতিকান্ বৰ্তমানাংশ্চ নক্ষ্যাবর্তাংশ্চ কাঞ্চন্যন্ ॥"(ভার° ৭।৮০।১৯)
এই অর্থে এই শব্দ ক্লীবলিকও কেবিতে পাওরা বার।
"ম্যাস্থ তিলপূর্ণানি বর্ত্তমানিন মানবঃ।
প্রদার পুত্রপশুমানিই প্রেড্য চ মোলতে ॥" (ভারত ১৩।৬৪।১২)
৪ ক্ষ্যি । (মেদিনী) ৎ জিনবিশেষ। পর্য্যার—বীর, চর্ম-ভীর্ষক্র, মহাবীর, দেবার্য্য, জ্ঞাতনন্দন। (হেম) [মহাবীর দেখ।]
৬ ধনীদিগের গৃহবিশেষ।

'স্বস্তিকো বৰ্দ্ধমানশ্চ নন্দ্যাবৰ্ত্তাদক্ষেছিপি চ।' (হলান্ধুধ) বৃহৎসংহিতায় লিখিত আছে যে, এই গৃহের দার দক্ষিণদিকে করিতে নাই।

"বারালিন্দো হস্তগতঃ প্রদক্ষিণোহয়ঃ শুভন্ততশ্চায়ঃ। তথচে বর্দ্ধমানে শ্বারম্ভ ন দক্ষিণং কার্য্যমৃ॥" (রুহৎসংহিতা ৫৩।৩৩)

৭ স্বনামথ্যাত দেশ, বর্দ্ধমান প্রদেশ।
"প্রাচাাং মাগধশোণে চ বারেক্সী গৌড়রাঢ়কা:।
বর্দ্ধমানতান্ত্রিপ্রাগ্র্যোতিবোদয়াদ্রয়ঃ"(ক্যোতিস্তন্ধ্রত কুর্ম্মচ°)

৮ ভদ্রাশ্বর্ধের অন্তর্গত কুলপর্বতবিশেষ। ভদ্রাশ্বর্ধের ৭টি কুলপর্বত। তাহার মধ্যে বর্জমান সপ্তম কুলপর্বত। "বিশাল: কম্বল: রুম্ফো জয়স্তো হরিপর্বত:। বিশোকো বর্জমানশ্চ সথ্যৈতে কুলপর্বতা:॥"(মার্কণ্ডেয়পু[°]৫৯।১২)

(ত্রি) ৮ বৃদ্ধিবিশিষ্ট, বৃদ্ধিনীল, বৃদ্ধিষ্ট্ ।
বৃদ্ধিমান, বাঙ্গালার ছোটলাটের শাসনাধীন একটা বিভাগ,
একজন কমিসনরের অধীনে পরিচালিত। অক্ষা ০ ২১°৩৫ হইতে
২৪°৩৫ উ: এবং দ্রাঘি ০ ৮৬°৩৫ হইতে ৮৬°২২ ৪৫ পর্বমধ্য।
বন্ধমান, হুগলী, হাবড়া, মেধিনীপুর, বাকুড়া ও বীরভূম জেলা
লইয়া এই বিভাগ গঠিত। ইহার উত্তরদীমায় সাঁওভাল
পরগণা ও মুর্শিদাবাদ, পুর্কেনদীয়া ও ২৪ পরগণা জেলা বা
গঙ্গানদী, দক্ষিণে বজোপসাগর ও বালেশ্বর জেলা এবং পাশ্চমে
ময়ুরভঞ্জ রাজ্য এবং সিংহভূম ও মানভূম জেলা।

বৰ্দ্ধমান, বাঙ্গালার অন্তর্গত একটা জেলা। ছোটলাটের লাসনাধীন। অক্ষাও ২২°৫৫ হইতে ২৩°৫০ উ: এবং দ্রাঘিও ৮৬°৫২ হইতে ৮৮°৩০ পু: মধ্য। ভূপরিমাণ প্রায় ২৬৯৭ বর্গমাইল। এই জেলার উদ্ভরে বীরভূম, সাঁওতাল পর্গণা ও মূশিদাবাদ, পূর্ব্বে ভাণীরবীতীরবর্ত্তী নদীয়া জেলা, দক্ষিণে হুগলী, মেদিনীপুর ও বাঁকুড়া জেলা এবং পাশ্চমে মানভূম।

এই জেলার প্রায় সর্ক্তিই সমতল, কেবল সাঁওতাল পরগণার সমীপবত্তী উত্তরপশ্চিম কোণাংশ ক্রমোচ্চ নিয় পার্কত্য চানু ভূমিতে ও জলনে পূর্ণ। এই বনভাগে নেকড়ে, চিতা, ও জ্ঞান্ত হিংশ্রজ্জর বাদ আছে। জ্ঞপরাপর স্থান স্থামল শক্তক্ষেত্রে পূর্ণ। মধ্যে মধ্যে তাল, জাত্র, কদলী ও বাশবন সমাচ্ছর গশুথাৰ খালি প্রাকৃতির একীতাব বিদ্রিত করিরা জনকোলাহলে সেই সেই প্রামনমীপবতী স্থানসমূহে স্বভাবের
সমূদ্ধি বিরাজিত রাখিরাছে। কোন কোন স্থান দিল্লা ধলকিলোর
বা দারিকেখব নদ, দামোদর, অজর, খারী, বাঁকা, ধর বা মন্দ্রগামী
হইরা ভাণীরপী সলিলে আসিরা মিশিরাছে। এতিক্লির বরাকর
নদী এই জেলার উত্তরপশ্চিমাংশে দামোদর নদে আসিরা
প্রিয়াছে, এভেন খাল দামোদর ও বাঁকাকে সংযুক্ত করিয়াছে।
দক্ষিণে কাণা নদী প্রবাহিত।

এইরপে নদীমালাসমাছের হওয়ার এবং বিত্তীর্ণ শ্রামন প্রান্তরের মধ্যে মধ্যে ভালবৃক্ষ পরিশোভিত দীর্দিকাসমূহ বিরাজিত থাকার এখানকার চাসবাসের বিশেষ স্থাবিধা গটিয়াছে। ঐ সকল নদীপথে কাল্না, কাটোরা, দাইহাট, ভাউদিংহ, মিল্লীপুর, উবণপুর প্রভৃতি গলাতীরবর্ত্তী প্রাদিক নগরে বাণিজ্য পরিচালিত হইতেছে। ঐ সকল বন্দরে লবণ বন্ধ ও পাটের ব্যবসাই অধিক। রাণীগঞ্জ উপবিভাগে কয়লা, লোহ, চুণেপাথার প্রভৃতি যথেষ্ট পাওয়া যায়। [রাণীগঞ্জ ও কয়লা দেখ।]

থুগীয় ১৬শ শতাব্দে রচিত ব্রহ্মথণ্ড নামক সংস্কৃত ভৌগোলিক গ্রন্থে লিখিত আছে —

বর্দ্ধমান মণ্ডলের বিস্তার ২০ বোজ্বন। এখানকার চারি-বর্ণের লোকই রুষিকর্মারত। কলির ৪৪০০ বর্ষ গত হইলে অর্থাৎ এখন হইতে প্রায় ৬ শত বর্ষ পূর্ব্ধে) দামোদরের সমীপে হেমসিংহ নামে এক প্রবল পরাক্রাক্ত রাজা হইবেন, তাহার সাত মহাল বাড়ী। এই হেমসিংহের পুত্র বীরসিংহ। ইনি নিজ বাছবলে ভারলিশু, কর্ণহর্গ, বরণাভূমি, স্কল্পেশ ও বীরণেশ নিজারত্ত করিবেন। এই বীরসিংহের চারি পুত্র ও বিভালমে এক কল্লা হইবে। কল্লা পণ করিবে যে, যে তাহাকে বিদ্যায় হারাইতে পারিবে, সেই তাহাকে বিবাহ করিবে। এ সংবাদ কাঞ্চিপ্রে পৌছিলে কাঞ্চিপ্রপতি গুণাস্থর পুত্র স্কলর বন্ধমানে আসিবেন। তিনি দামোদরতটে এক মালাক্ষারের ঘবে আশ্রম লইবেন। কুট্টনী মালিনীর সাহাব্যে তপোবলে এক ভড়ক করিয়া বিদ্যাকে হরণ করিবেন। কেবল কালাদেবীর প্রসাদে স্কলর রক্ষা পাইবেন। গৌড়াদির লোকেরা সেই বিদ্যাস্থলর চরিত্র গান করিবে। • ব্রন্ধণ্ডের উদ্ভূত কাহিনী

হইতে মনে হর বে, খুটার ১৬শ পভাষীর পূর্ব হইভেই বর্জমারন বিদ্যাত্রলবের গান প্রচলিত ছিল। তথনও বৃত্তমান রাজবংশের অভালর হর নাই।

ত্রহ্মধণ্ডের স্থার প্রাচীন সংস্কৃত প্রকৃ বিধিকর প্রকাশেও
আমরা বিভাক্ষণর ও বর্জনানের বিবরণ এইরূপ প্রাপ্ত হইরাছি।
আবশ্রুক মনে করিরা এই ভানে উদ্ধৃত হইন—

"অজরাদ্দিশে ভাবে শিলাবত্যান্ত ৰু, ব্রুরে।
গলারাঃ পশ্চিমে পারে দারিকেশিহি পূর্বতঃ॥ ৭৭০
অইবোজনবিমিতো দেশো নদনদীযুতঃ।
কল্রবোজনবিমিতো দীর্ঘো চৈব মহীপতে ॥৭৭১

गारमानक्रममीरण ह मनवाश्वक्ररका मुन । ক্তিরপোত্রমধ্যে চ ব্যেসিংছো ভবিষ্যতি ১১৬ হেমসিংছ-নুপঞ্চাপি সম্পত্তিরচলা ছিলা:। প্রতাপদান ধার্দ্ধিকণ্ট নির্ভয়ো রণকর্কণঃ ঃ২৪ नक्तनभगनाता महावननदाक्रमः। কুলদীপো ৰীয়লিংছো পুজোঞ্চ ভবিহাতি ঃ২৫ चौत्रमिश्हमत्या त्राजा म छायी वर्षमानत्यः। निस्रवाहयत्वरे । व यहार नान् स्रतिवाणि । २० তাত্রলিপ্তং কর্ণহর্ণং ধরলাকৃষিকং তথা। रुक्तरमणः वीत्ररमणः निकाशकः कत्रिवाणि ।२१ वीविमार्क्ष नृपातः धर्मापञ्चार विकासमाः। ক্ষতিরে চ বেদ পুত্রান মহাবলপরাক্রমা: ॥२৮ करेखक। दम्मश्री चिमा बट्टा श्रुनचर्छी मूना । ক।কিপুরত নুপতি: গুণসিন্নু পোড়ম: ।২৯ বুগসায়ং তক্ত পুত্র: প্রন্ধরো হি ভবিবাভি। কালীভক্ত: পণ্ডিতো হি লক্ষ্বিদ্যাক্ত পার্গ: ।৩-বিদ্যাপ্ৰক ধিদ্যালা: ক্লিয়াতি সহৎৰত । मा स्वपृत्तः स्वम विलाकिः म स्म अर्था कविवाणि ४०२ **उद्वेप्** एक गत्मनश्चः नीका मुशास्त्रा । नानातनः खालनार्थः बाल्या मुट्टा गमिवाछ ।०० विमार टक्कः गिवाधि वहरवा मृगवानकाः। পরাভূতা: পলায়ন্তে দেশাত বর্মানকাৎ ৪০০ কাফিদেশে মহারালে। গুণসিদ্ধ: প্রতাপণান। ভত পুরো কুলরণ্ড প্রামা দ্তমুখাৎ ঋণন্ ১৪৪ व्यापरेनम क्रका समाव मर्बमाना मिनाकि। गारमामज्ञाति माना काम देव गुरह । । । वम्डिक्षमातः वैभान् विशावादिनिमिष्ठकम् । মালাকারত গৃহিনীং বিধার কৃষ্টিনীং মুধা। বিদ্যাঞ্ পর্কমার্গেশ ছরিব্যতি ভপোষলাৎ ১৪৬ काजीलबाः धनालम न महिवाछि छूनिभार। काल: माहचिमा ठिवा विमाश्चिम गाविमा: 181 গান্তভি লোকা: চামিত্রাং গৌড়ানে। মৃনিসম্ভনাঃ ।"(ভারত ব্রহ্মধন্ত ৬ খ-)

 [&]quot;বিংশতিটোলনানাক বর্জনানক নওলন্।
লোকান্তর ভবিবাধি ভাগাবছো নুগার্জকে ৪২
চত্বাধ্যকনহলানি চত্বাহাকশতানি চ।
কলেবহাগামবাত্তি বর্জনানে তলা বিজাঃ ৪১৫

সাধারণভূমিকক বর্জমানোহতি স্থলর:। मारमामजनमी वर्ष वहरू मधीकांशरक ॥ ११२ মুখ্রেবরী বন্ধুলা চ পূর্বের সরস্বতী বরা। প্রায়শো বহুলা নম্বঃ সদা দক্ষিণগা মডাঃ ॥ ৭৬৩ তগধাক্তাদিভেদানাং সপ্তদশ ভবত্তি D । কার্পাসো রক্তবেডণ্ড পাটলন্ড বিশেষভ: ॥ १৭৪ পঞ্চেদান্দেক্ষৰণ্ট জান্তত্তে বত্ৰ নিত্যশ:। সর্কোষাং বর্জনালিত্যং বর্জমানমভো বিছঃ॥ ৭৭৫ विकृशानायुकां ठाक मार्यामत्रवनाविः। বৰ্দ্ধমানমন্ত্ৰবাংশ্চ গায়ন্তি ভূবি মানবা: ॥ ৭৭৬ · · · অঘোরভূমিপন্ত<u>এ</u> রাজস্তুকুলসম্ভব:। বৰ্দ্ধমানপ্ৰজাঃ সৰ্কাঃ শাস্তি ধৰ্মবৃদ্ধিতঃ ॥ ৭৭৮ कालार्वममहत्वाणि शष्टिखन्म यमा नृष्य । বীরসিংহরাজগেহে কৌতুকং জাতমেব হি॥ ৭৭৯ কাঞ্চিপুরে মহারাজ গুণসিন্ধর্মহীপতি:। তগু পুত্র: স্থলরক্ত বর্জমানমুপাগতঃ ॥ ৭৮০ বীরসিংহত্ত হুহিতা বিষ্ণা নামীতি শোভনা। নানাশাল্রপারগা চ বিনোপনিষদং নূপ ॥ ৭৮১ ভূমিমার্গে স্থন্দরশ্চ গদা তত্র বিবাহিতা। জিছা বিদাাং বিচারেষু সজোগং কৃতবান বর:॥ १৮২ विमाञ्च्यततृखांखः कोत्रभक्षांभनांशकः। গ্রন্থে দমীচীনতয়া বর্ত্ততে নুপশেধর॥ ৭৮৩ অবোরত তুতঃ শ্রীমান্ চক্রাক্স মহীপতি:। বিবৃতির্যক্ত বছলা গণেশাখা পুরাণকে ॥ ৭৮৪ স্থাবংশোম্ব: এমান্ কান্তিচক্রো মহীপতি:। কুলবংশ প্রস্তৃত বর্জমানস্ত শাসক: ৪ ৭৮৫ কুশাদতিথি**: পুত্ৰণ্ড স্থক্সায়ামন্তায়ত**। আত্মরায়াঞ্চ বীর্য্যাক্ত ছতিথিত মহাবল:। পুগুরীকো হি গ্রহণো স্থান্ড নৃপলেধর ॥ ৭৮৬ উলুপ্যাং পুগুরীকন্তাপ্যমোষরেডসঃ সদা। ক্ষেমণৰ্মা মহাবোগী জাতশ্চ কুলপাবন: ॥ ৭৮৭ রভিদাখ্যা ক্ষেমধর্ম্মো বীর্যাতো হি মুনের্বরাৎ। (मरानीरक। (मर्वधर्माष्ट्रस्थ रर्फमानरक । १৮৮ মেবামীকন্স বীর্যাচ্চ ফুলারা: সমজারত। পারিজাভোহতিকুশলো যুদ্ধবিদ্যাবিশারদ: ॥ ৭৮৯ ঘট্টশৈলে নৃপোড়ভঃ চকচকীসরিভন্তটে। পারিক্রাতাৎ পরো নৈব পুরুবোহর মহীপতিঃ । ৭৯০ বঞ্জাং পারিজাতাচ্চ নাডুকঃ সমজায়ত। हिंडानकानस्य बाबाज्याज्ञाज्ञाज्ञा हि निर्जयः॥ १२३

নাতৃলাৎ মারিষায়াঞ্চ অর্কপুরো হি দিক্পতিঃ। দিক্পতিং প্রমীশারাঞ্চ প্রেরন্নামাস বৈ পুরা ॥ ৭৯২ जनमात्रात्मकवीयां ए हो भूरको वानिमाः वरत्रो । বন্ত্রনাভো রদকলিবামনশ্রমন্তব্য: ॥ ৭৯৩ গোবৰ্জনাখ্যদেশে চ জীমৃতক্ত নদীতটে। বন্ধনাভন্ত বীৰ্যাচ্চ মেনকারাং মহীপতে। স্বগণো গণচূড়ক জাতৌ ছৌ চাভিলোভনৌ ॥ ৭৯৪ ষমকরে নদীপার্বে গণচূড়ো হি লুক্কক:। বস্তিং ক্লতবান্ তেন পাট্লিগ্রাম্সল্লিধৌ ॥ ৭৯৫ মোদমত্যাঞ্চ স্বগণবীর্যাচ্চেব মহীপতে। বিভৃতিশ্চ স্বভৃতিশ্চ রামভৃতিরঞ্চায়ত ॥ ৭৯৬ রামভূতিঃ কীকটস্ত রাজা পর্বতবেষ্টিতে। দেশে জঙ্গলসম্ভূতে নীচকাতিপ্রশাসকঃ॥ ৭৯৭ পালাদনগরে রাজা রামভৃতিরভূৎ পুরা। কিরণো ভূমিকা যত্র প্রাপ্নোতি চক্সপ্র্যায়ো:॥ ৭৯৮ বিভূতি: গুক্রতো জাতো মহাবলো পরাক্রম:। ... কেরলে শতশৃকে চ থৌবনে প্রাপ্তবান স চ। রাজ্যং শূদ্রভূমিকায়াং ক্রতং পৌরাণিকং বচ: ॥ ৮৮० দ্বিজক্তা তুঙ্গলেখাগর্ভে পুষ্পান্ধুরো মহান্। ততঃ কোমলপ্রকৃতিইটাখন্ট ঋষিত্রতঃ॥ ৮০১ অগন্তান্ত বরেণৈব একামে বিপিনে স চ। রাজাভূৎ চোৎকলভান্তে জগন্নাথত সন্নিধৌ ॥ ৮০২ গওক্যা জাত: পুতো হি চন্দনাখ্যো হি সুন্দর:। পুষ্পাত্মত বীর্যাচ্চ চন্দনোপ্রনে ভদা॥ ৮০৩ **অঘোরশংক্তকন্তস্ত চন্দনস্তামুজোহভব**ং। চন্দনকাননে রাজাসীভূলাথ্যে বিষয়ে ভিদি 🖟 ৮০৪ দেশিকায়ামঘোরাচ্চ করণোহতুশবিক্রম:। বৰ্দমানং পরিভাজা গভো গ্রামং কলাপকম।। ৮০৫ পুকরাননক্ষত্রিয়ক্ত স্বরাজ্যে সিক্তবান নূপ। সংক্ষেপাৎ বৰ্জমানত ভূপালবৰ্ণনং কৃতম্ ॥ ৮০৬ সাধারণানাং দেশানাং মধ্যে শ্রেষ্ঠতমোত্তম:। বৰ্দমানন্তত্ত ভূপ পুরাণে বিবৃতা প্রথা 🛭 ৮০৭ পুছরাননবংশীর: রাজন্তো বর্দ্ধমানকে। त्रांचा नित्रखतः व्यामान् मणगारमरीभूकनार ॥" ৮०৮

(দিখিজস্প্রকাশে সপ্তজালালবিবরণ)

আজর নদীর দক্ষিণে, শিলাবতীর উত্তরে গলার পশ্চিমে

এবং দারিকেশির পূর্ব্বে একটি অতি স্থলর সাধারণভোগা
ভূতাগ আছে। রাজন্! এই ভূতাগের নাম বর্দ্ধান। এই
বর্দ্ধান দেশে নানা নদ নদী প্রবাহিত। ইহার দৈখ্য একাদশ

বোজন এবং প্রাছ অষ্ট বোজন। এই দেশের মধ্যজাগ দিরা দামোদর নদী প্রবাহিত হইতেছে। ইহার পূর্ক দিকে যে সকল নদী আছে, ভল্লধ্যে মৃণ্ডেখর, বকুলা, ও সরস্বতী এই তিনটিই প্রধান। এতিরা ইহার দক্ষিণ দিকেও বহুতর নদী প্রবাহিত। তৃণধাত্যাদিভেদে সপ্তদশ প্রকার ধান্ত এদেশে উৎপর হর। রক্ত, খেত ও পাটলবর্ণ কার্পাস এখানে প্রচুর পরিমাণে জন্মে, ইহা ছাড়া পাচ প্রকার ইক্ষুর্কের এখানে বার মাস চায় হইল্লা থাকে। ফল কথা, সমন্ত বন্ধরই এদেশে বর্জন অর্থাৎ উপচর হর বলিয়া ইহার নাম বর্জমান। দামোদর-জল বিষ্ণুর পাদপন্ম হইতে সন্তৃত। স্নত্বাং দামোদর নদীর উভন্ন পার্ব্বাপী বর্জমানের অধিবাসী মন্থ্যদিগকে বিভিন্ন দেশবাসী লোকেরা বথেষ্ট প্রশংসা করিয়া থাকে।

অংশার নামধেয় জানৈক ক্ষত্রিয় নরপতি ধর্মামুসারে বর্দ্ধমানবাসী প্রজাপুঞ্জকে শাসন করিতেন। হে রাজন্! কলির চারি হাজার বর্ষ অতীত হইলে, এই বংশীর রাজা বীরসিংহের গৃহে একটা বড় কোতুককর ঘটনা ঘটিয়াছিল।

কাঞ্চিপুরে গুণসিদ্ধু নামে রাজা ছিলেন। তাঁহার পুত্রের নাম স্থলর। স্থলর একসময়ে বদ্ধনানে আগমন করেন। বদ্ধমানাধিপতি বীরসিংহের বিভানামী এক পরনাস্থলরী ছহিতা ছিল। বিজ্ঞা উপনিষৎশাস্ত্র বাতীত অভাভা সমন্ত শাস্ত্রেই বিশেষ বৃৎপত্তি লাভ করেন। স্থলর ভূ-বিবর দিয়া গিয়া রাত্রিকালে বিজ্ঞাকে বিবাহ করেন। বিভা শাস্ত্রবিচারে স্থলরের কাছে পরাত্ত হন। পরে স্থলর তাঁহাকে সম্ভোগ করেন। হে নূপবর! এই বিভাস্থলরের বৃত্তান্ত চৌরপঞ্চাশৎগ্রন্থে বিশেষভাবে উলিথিত চইরাছে।

রাজা অবোরের পুত্র শ্রীমান্ চক্রাজদ। ইনিও রাজা ছিলেন। গণেশপুরাণে এই রাজার বিস্তৃত বিবরণ লিপিবফ হইরাছে।

শ্রীমান্ কান্তিচক্ত জানৈক স্থাবংশীয় রাজা ছিলেন। ইনি কুশের বংশে উৎপন্ন। এই কান্তিচক্ত এক সময় বর্জমান শাসন করেন।

কুশ হইতে স্কভার গর্ভে অতিথি নামে এক পুত্র জন্ম।
অতিথি হইতে আল্বার গর্ভে মহাবল পুগুরীকের জন্ম হর।
অমোধবীরা পুগুরীক হইতে উলুপীর গর্ভে ক্ষেমধর্মা নামে এক
পুত্র উৎপর হয়। ক্ষেমধর্মা যোগীপুরুষ ছিলেন। ইহাঁঘারা
কুল পবিত্র হইরাছিল। ইনি এক সুনির নিকট বরলাভ
করেন। এই বরপ্রতাবে তৎপরী রতিহার গর্ভে দেবানীক
কর্মগ্রহণ করেন। ইহাঁদিগের সকলেরই ক্যুভূমি বর্মনান।

দেবানীকের ঔরসে মূলার গর্ভে পারিলাত নামে এক পুত্র উৎপत्न रहा। हैनि तासकार्या विकल्प अवः युद्धविष्ठांत्र भन्नम भट्टे हिटनन । देनि पहेटेनन्छ ठक्ठकी नदीत जीत सम्यश्रहण করেন। পারিজাত হইতে পুরুষকারতংপর শ্রেষ্ঠ রাজা আর क्टि ख्थात्र हिल्लन ना। **এই পারিষাত হইতে খুল**নীর গর্ভে নাতৃত্ব নামে এক পুত্র হয়। নিউ।কচিন্ত নাতৃত্ব হিন্তাল-কাননে ৰাস করিতেন। নাতৃত্ব হইতে মারিষার গর্ভে অর্কপুত্র এবং অর্কপুত্র হইতে প্রমীলার গর্ভে দিকপতি উৎপন্ন হন। দিক্পতি হইতে অনুশার গর্ভে ছই বলবান পুত্র ক্ষুগ্রহণ করেন। তৎপরে বঞ্জনাভ, রয়াকলি, বামন ও ছত্রমগুক নামে চারিপুত্র করে। গোর্জনদেশে কীমৃতনদীর ভটে বস্ত্রনাডের মেনকানালী পদ্দীন গর্ভে অগণ ও গণচুড় নামে চুই পরম স্থানর পুত্র উৎপল্ল হয়। গণচুড় পাটলি গ্রামের নিকট ব্যকর নদীর পার্ষে বাসন্থাপন করেন। ইনি অতি সুত্রসভাব ছিলেন। স্বগণের ওরসে মোদামতীর গর্ভে বিভূতি, স্কুভৃতি ও রামভৃতি নামে তিন পুত্র জন্মে। রামভৃতি কীকটদেশে রাজপাট স্থাপন করেন। ঐ দেশ তথন পর্বত-পরিবেটিত ও জন্মলাকীর্ণ ছিল। বছসংখ্যক নীচলাতীয় প্রজা তাঁহার শাসনাধীন হইরাছিল। স্কৃতি প্লাসনগরে রাজ্য করিভেন। তাঁহার রাজস্বস্থান চক্রপুর্য্য-কিরণের কেব্রন্থল ছিল। বিভৃতি অভি বলবিক্রাম্ভ রাজা ছিলেন। তিনি বৌবনকালেই কেরল ও শতশুল প্রাদেশে রাজান্থাপন করেন। তাঁহার রাজ্যে বছতর শুদ্রজাতীয় প্রজা বাস করিত। ইহাই পৌরাণিক মড। পরে দ্বিঞ্ক্স্তা তুঙ্গলেখার গর্ভে পূলাভুর জন্মগ্রহণ করেন। পূলাভুরের পুত হটার। ইনি বড় কোমণগ্রকৃতির রাজা ছিলেন। ইহার তপোমুষ্ঠান ছিল। অগন্তা ইহাঁকে বর দেন। সেই বরপ্রভাবে ইনি উৎকলের অন্তর্গীমার জগমাথক্ষেত্রের অদূরে একামকাননে वाका इन । १७३वी नामी भन्नीत गर्फ क्लमबरन, क्लन नाम ইহার এক স্থলর পুত্র জন্মে। চল্দনের এক কনিষ্ঠ সহোদর ছিল, তাহার নাম অংখার। ইনি তুলাদেশের চন্দনকাননে রাক্তা করেন। অংথার ছইতে তৎপদ্ধী দেশিকার গর্ভে করণ ক্রমারত করেন। করণ অসাধারণ বিক্রমসম্পর ছিলেন। ইনি বর্ডমান পরিত্যাপ করিয়া কলাপক গ্রামে গমন করেন। প্রহরানন নামক জনৈক ক্ষত্রির তদীর রাজ্যে অভিবিক্ত হন। **সংক্ষেপে वर्षमानाधिপতি ভূপাनपिश्रের विवत्रश** निशिवस इंडेन। অক্তান্ত সাধারণ দেশের মধ্যে বর্ত্তমান একটি শ্রেষ্ঠতম দেশ। এখানকার ভূপালদিলের বিষরণ পুরাণে বর্ণিত আছে। পুরুরা-नत्नत्र वः नशत्र कृषानगर्नरे शत्त्र मननात्नवीत्र व्यक्तमात्र करन বৰ্দ্ধমানে রাজ্য করিয়া আসিতেছেন। (দিখিজয়গ্র°)

পুরাতম।

मार्कर ७ वर्ष न्यान वर्ष वर्षमात्म व 🗟 🗷 चार्ष । 🗎 रेक्न निरंश व মতে, মহাতীর বা বর্জমানস্বামী রাচ়দেশের যে অংশে অসভ্য জাতির মধ্যে ধর্মপ্রচার করিয়াছিলেন, তাঁহার নামান্ত্র্নারে সেই স্থান্নই পরে বর্দ্ধমান নামে খ্যাত হয়। এখন বর্দ্ধমান মধ্যরাঢ় নামে খ্যাত। এই জেলায় এক সময়ে অনেক স্থাচীন রাজ-বংশ রাজত্ব করিল্লা গিল্লাছেন এবং তাঁহাদের বহু প্রাচীন কীর্ত্তি নানা স্থানে পড়িয়া আছে। সেরগড় পরগণার সিংহারণ নামে যে নদী আছে, এই নদীর ভীরে সিংহপুর নামে একটী প্রাচীন बाबधानी हिन। এখানে সিংহ্বাছ নামে রাজা রাজত করিতেন, সিংহপুর নগর ধ্বংস হইলে এই স্থান সিংহারণ্য নামে প্রসিদ্ধ হয়। এই সিংহারণা হইডেই বর্তমান সিংহারণ নদীর নাম-করণ হইন্নাছে। এই ক্ষেলার সাতলৈকা পরগণা সপ্তশতী ব্রাহ্মণগণের আদি উপনিবেশ। এই জেলায় তাঁহারা বে সকল গ্রাম লাভ করেন, সেই সকল গ্রাম নাম হইতে সপ্তপজীদিগের বিভিন্ন গাঞি বা উপাধির স্ষষ্টি হইয়াছে। গৌড়াধিপ আদিশুর জয়ত্তের অভ্যদয়ের পূর্বে এখানে সপ্তশতী আদ্ধণগণেরই আধি-পত্য ছিল। নারায়ণের ছন্দোগপরিশিষ্টপ্রকাশ হইতে জানিতে পারি যে, কোন কোন রাড়ীয় আক্ষণের পূর্ব্যপুরুষ ভাঁহাদেরই নিকট বহু কুলম্বান লাভ করিয়াছিলেন, তাহা হইতে কোন কোন রাটীয় ব্রাহ্মণের গাঞি ছইয়াছে। গৌড়ে পালরাজগণের আধি-পতা বিভ্ত হইলে আদিশ্রবংশীয় শ্রনরপতিগণ বহকাল এই জেলার রাজ্য করিয়া গিয়াছেন, তাঁহারাও রাটীয়প্রেণির ব্রাহ্মণ-গণকে এই জেলার বহু শাসনগ্রাম দান করিয়াছিলেন, সেই সকল গ্রাম ছইভেই রাটীয় ব্রাহ্মণগণের পূর্বপুরুষগণের বছতর গাঞি নাম হইয়াছে।

পালরাজগণ যে সমরে বারেক্সে বৌদ্ধধর্মপ্রচারে উপ্পত ছিলেন, সেই সমরে রাচ্ছেশে শ্বনরপতিগণ এথানকার বৌদ্ধসমাজকে হরগত করিবার ক্ষম্ম আবশ্রুক মত শৈব ও শাক্তধর্ম প্রচার করিতেছিলেন। গৌড়ে বৌদ্ধাধিকারকালে এথানকার চেকুর নামক স্থানে লোমবোবের পূত্র ইছাই ঘোব নামে একজন শাক্ত নৃপত্তি অভিশয় প্রবল্গ হইরাছিলেন। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত গ্রামরূপার গড়ই এক্ষণে দেনপাহাড়ী গড় নামে পরিচিত। ইহার ক্রায় প্রাচীন হুর্গ ও প্রনেশে আর নাই। গৌড়েশ্বর তাঁহার নিকট ক্যাক বার পরাত্ত হইরাছিলেন। অবশেষে ধর্মের সেবক লাউন্যেনের নিকট ভিনি পরাজিত হন। ইছাই ঘোষের গড়েব গুরারশ্রেশ আরও সেনপাহাড়ীতে পড়িয়া আছে।

এই কোর অর্থত বর্তমান ভূরতট্ পরগণার ভূরিপ্রেট
নামে একটা সমৃতিশালী নগরী ছিল: এথানে খুটার ৯ম শতালী

পর্যান্ত কারত্ব নৃপতিগণ রাজত করিয়া গিয়াছেন। এখনকার পাণুরা হিন্দু ও মুসলমান উভর রাজগণের সময়েই প্রসিদ্ধ ছিল। সেনবংশীয় রাজাদিগের মধ্যে বিজয়সেন এখানে বিজয়পুর নামে একটী নগর প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন।

এখানে বছদিন হইতেই মুসলমান সংত্রহ হইয়াছিল। মেমা-রির উত্তরপশ্চিমে বহা বা শ্রীকৃষ্ণনগর নামক গ্রামে সৈয়দ जनान् छेकीन् তাবিজী কিছুकान व्यवशान कतिबाहितन। ৬৪২ হিজরী বা ১২৪৪-৪৫ পুটাবেদ পাপুরার তাঁহার মৃত্যু হয়। উक बीक्रकनशरत खनान् छेमीरनत नामाञ्चारत माजाना-ह-ললালিয়া নামে একটা মাদ্রাসা প্রতিষ্ঠিত আছে। বর্দ্ধমান জেলার নানা স্থানে প্রাচীন হুর্গের ধ্বংলাবশেষ দৃষ্ট হয়। ছুটিপুর পরগণায় মেমারি ষ্টেসনের দক্ষিণে কুলীনগ্রামের নিকট অনেক প্রাচীন গড়ের ভগ্নাবশেষ পড়িয়া আছে। আজমতশাহী পর-গণায় ভাটাকুল গ্রামের নিকট রামচক্রগড় এবং অজয়নদের নিকট শেরগড় পরগণায় রাণাগঞ্জের উত্তরে আরও কএকটা গড় দৃষ্ট रग्न। वर्कमान महरत्रहे अपिक वहत्रम मका नामक अपिक मुनल-মান কবির গোরস্থান দৃষ্ট হয়, এই গোরস্থান ঠিক ছর্গের মত। আগ্রা হইতে সিংহলে যাত্রাকালে কবিবর ১৫৭৪ খুষ্টান্দে বৰ্দ্ধমানেই প্রাণত্যাগ করেন। ঐ বর্ষে মুসলমান ইতিহাসে, বন্ধমানের প্রথম উল্লেখ দৃষ্ট হয়। রাজমহলে দাউদ থানের পরাজয় ও মৃত্যু ঘটলে অকবরের সৈভাগণ বন্ধমানে আসিয়া দাউদের পরিবার-বর্গকে আক্রমণ করেন। তৎপরে দশ বর্ধ কাল দাউদের পুত্র কুতলু খান্ এই বৰ্জমানে মোগলবিক্লকে থোরতর সমরানল প্রজনিত করেন। [কুতলুখাদেখ।]

তাহার কববের নিকট ন্রজাহানের স্বামী সের আফগান ও বঙ্গের শাসনক্ষা কুতব্ উদ্দীনের সমাধিমন্দির দৃষ্ট হয়। দিলীম্বরের আদেশে কুতব্ উদ্দীন ন্রজাহানকে দিলীতে পাঠাই-বার জ্ঞা সের আফগানের সহিত যুদ্ধ করেন। বদ্ধমান ষ্টেসনের দক্ষিণে স্বাধীনপুর নামক গ্রামে বেখানে উত্তর বীরে যুদ্ধ হইয়া-ছিল, আঞ্জ সকলেই সেই স্থান বেখাইয়া থাকেন।

১৬২৪ খৃত্তীব্দে শাহজাদা খুরম্ (পরে শাহজ্ঞহান্) বর্জমান প্রগ ও সহর জার করিয়া দিলীর শাসনভূক্ত করেন। বাদশাহ অরক্তেবের পৌত্র আজিম্ উস্সান্ ১৬৯৭ হইতে ১৭০৪ খৃত্তীক্ মধ্যে বন্ধমানে একটি স্থুলর মস্জিদ্ নির্মাণ করাইয়া ছিলেন, আজও সেটি দেখিবার জিনিস।

वर्त्तमान वर्षमान-ब्राह्मकाम ।

পঞ্চাব-প্রদেশস্তর্গত লাহের নগরত্ব কোটলি মহলা-নিবাসী সন্ধম রাল, বঙ্কমান রাজবংশের আদি প্রথা বুটার বোড়শ শতাব্যের শেবভাগে সন্ধম রার সশরিবারে জগরাত্ব দর্শনোদেশে শ্রীক্ষেত্রধামে গদন করিয়া প্রভ্যাগমনকালে, বর্ত্তমানের স্থিকটে রাইপুর গ্রামে ব্যবসা উপলক্ষে বাস করেন। এই স্থান হইতে শস্তাদি ক্রেয় করিয়া, স্থানাস্তরে বিক্রেয় করাই জাঁহার ব্যবসার ছিল। ক্রমে জাঁহার ব্যবসায় বিলক্ষণ উন্নতি হইতে লাগিল।

সঙ্গম রাষের মৃত্যুর পর, তদীয় পুত্র বন্ধ্বিহারী রায়ও রাই-পুরে অবস্থিতি করিয়া পিতার স্থায় ব্যবসা করিতে লাগিলেন এবং সৌভাগ্যবশত: ক্রমেই বাবসায়ের উর্ল্লিড ইইতে লাগিল।

বছ্বিহারী নামের মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র আবু রায় রাইপুর হইতে আসিয়া বর্জমানে বাস করেন। তিনি এতদ্দেশ মধ্যে একজন বিখ্যাত ব্যবসায়ী ছিলেন। কোন সময়ে দিল্লীখরের কতকগুলি সৈপ্ত এই স্থানে আসিলে আবু রায় তাহাদিগের জন্ত যাবতীর আহারীয় সামগ্রী ও গোশকটাদি সংগ্রহ করিয়া দেওয়ায় উক্ত সৈল্লাধ্যকের অন্প্রহে, ১০৬৪ হিজ্বি ইং ১৮৫৭ খঃ অবে বদ্ধমানের ফৌজদারের অধীনে, রেকাবি বাজার, ইত্রাহিমপুর ও মৌগলটুলীর কোতোয়াল ও চৌধুরী পদ প্রাপ্ত হয়েন। তংকালে উক্ত স্থানত্রয়ের বার্ষিক রাজস্ব ৫৩২ টাকা মাত ধার্য ভিল। প্রবিশাল সমৃদ্ধিশালী বর্জমান রাজ্যের ইহাই স্ত্রপাত।

আবু রায়ের মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র বাবু রায় পৈতৃক পদ ও সম্পত্তির অধিকারী হয়েন। ক্রমে তিনিও বন্ধমান পরগণার অন্তর্গত আরও কয়েকটি স্থান প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন।

বাবু রায়ের মৃত্যুর পব তদীয় পুত্র ঘনশ্রাম রায় পৈতৃক পদ ও সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হয়েন। বহুমানের স্থাসিত্ত শ্রাম-সাগর নামক স্থাবশাল সরোবর ঘনশ্রাম রায়েরই অতুল কীর্তি।

ঘনশ্রাম রায়ের মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র ক্ষ্ণরাম রায় পৈতৃক পদ ও সম্পত্তি লাভ করেন। ১৬৯৪ খৃঃ (১১০৭ হিজরি) ২৪ রবিরল জায়ল তারিথে দিল্লীশ্বর অরক্ষজেব বাদসাহের বাজরের ৬৮ বর্ষে (জুলুস) তাঁহার নিকট হইতে চাকলে বন্ধমানের জামদার ও চৌধুরিপদের সনন্দ প্রাপ্ত হয়েন। এই ফরমাণে তিনি অনেকগুলি জমিনারি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন; তল্মগো সেনপাহাড়িগড় বিশেষ উল্লেখযোগ্য। এখনও উক্ত ক্ষ্ণরাম বারের প্রপৌত্র মহারাজাধিরাজ তিলক্চক্র বাহাত্রের বাজন্দ কালেও উক্ত হুর্গ পূর্ণাব্রবে বর্তনান ছিল।

কৃষ্ণরাম রায়ের জীবিতকালে, বরণা ও চিত্রার জনিদার শোভাসিংই; বিশুপুরের জনিদার গোপালসিংই এবং চক্রকোণার জনিদার রত্নাথ সিংই বিদ্রোধী ইইয়া প্রবণ প্রতাপে মোগল-সম্রাটের বিক্তমে অস্ত্রধারণ করিয়া মূর্নিদাবাদ, বীরভূম ও বছমান আক্রমণ করেন। শোভাসিংই বছমান আক্রমণ করিয়া কৃষ্ণরাম রাবের সহিত যুদ্ধ করেন এবং সেই সমরে কৃষ্ণরাম রাম হত হল, শোভাসিংহ রুক্তরাম রারের পুরী আক্রমণ করিজে, তদীয় পরিবারত্ব ১০ জন ত্রীলোক জহরপানে প্রাণত্যাগ করেন। রুক্তরাম রারের কক্তা শোভাসিংহের হত্তে গুতা হইলে, শোভাসিংহ তাঁহাকে শীম অছণান্ত্রিনী করিবার অভিপ্রারে, যখন বাইছর মধ্যে ধারণ করিতে যাইবে, সেই সময়ে বীরবালা তদীয় অক্ষরত্র মধ্য হইতে শাণিত চুরিকা বাহির করিয়া পাপাচাব শোভাসিংহের উদর মধ্যে সবেগে প্রবেশ করাইয়া দিয়া ভাহার পাপময় জীবনের অবসান করিয়া দিলন এবং সেই চুরিকাঘাতে তৎক্ষণাৎ শীর জীবনও বিসর্জন করিলেন।

ক্ষুবাম রাষের শোচনীয় মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র জগংগাম রায়, পৈতৃক পদ ও সম্পত্তি লাভ করেন। ১১১১ হিজার < दे समानियन चाउँयन ७ निज्ञीयतत्तत् ३० वर्ष तासाकारन (स्नृतृप्त) ৰুগৎরাম রায় দিলীখন অনুৰ্ভেব বাদশাহের নিকট হটতে মহল অমিদারী এবং অমিদার ও চৌধুরী উপাধি সম্বলিভ এক থানি ফরমাণ প্রাপ্ত হন। তাহার জীয় নাম এজ-কিশোরী, তদীয় গর্ডে কার্ত্তিচক্র ও মিত্রসেন নামে গুইটি পুত্র **জন্ম গ্রহণ করেন। ১৭০২ খু: কৃষ্ণসাগর সরোব**রে লান করিবার সময়ে জনৈক গুপ্তহ্ত্যাকারীর ছুরিকাখাতে তাহার প্রাণবিয়োগ হয়। তদবধি রাজপরিবারস্থ কেহই অপবিম্-বোধে কৃষ্ণসাগরের জল পান বা তাহাতে স্থান করেন না। বর্দ্ধমান-রাজবংশের যে দকল অতুল কীর্ত্তি চতুর্দ্দিক সমুজ্জল করিয়া আছে, তাহার অধিকাংশই কীন্তিমতী এঞ্চিকেশারীই স্থাপন করেন। বন্ধমানের সাগ্রসম স্থাবিখ্যাত রুঞ্চসাগ্রই কুঞ্চরাম রায়ের অতুলকীতি।

জগৎরাম রাষের লোচনীর মৃত্যুর পব তদীয় জোন্নপ্র কাতিচক্র পিতার পদ ও সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হইলেন, তদীয় লাতা
মিত্রদেন মাসিক বৃত্তি প্রাপ্ত হইতেন। ১১১৫ হিজার ২০৩৫
সওয়াল ৪৮ জুলুস দিল্লীশ্বর অরক্তরেব বাদশাহের নিকট হইতে
কাতিচক্র পৈতৃকপদ ও সম্পত্তিপ্রাপ্তির ফরমাণ লাভ করেন।
তিনি শ্রীয় বাহবলে, বরদা ও চিতুমার জমিদার শোভাসিংহের
লাতা হিম্মত সিংহকে পরাজর করিয়া তদীয় জমিদারী অধিকার
করেন। চক্রকোণার জমিদার রখনাথ সিংহ, শোভাসিংহের
সহিত মিলিত হইয়া বন্ধমান আক্রমণ করিয়াছিলেন বলিয়া
কীত্রিচক্র রখুনাথ সিংহকে পরাজ করিয়া তদীয় জমিদারী চন্দ্রকোণা অধিকার করেন, পরে তিনি বিষ্ণুস্তরের জমিদার গোপালসিংহকেও বৃদ্ধে পরাজ করেন বটে, কিন্তু তিনি তাহার কোন
সম্পত্তি লইতে পারেন নাই, কেবল তাহার তরবারিথানি
লইয়াছিলেন। ভূরস্কট, রাবদা ও বেলগরের জিল্পাবদিগতে
পরাজ করিয়া তাহাদিগের জমিদারী হত্তগত করিয়াছিলেন।

• কীৰ্ত্তিক্স দিল্লীবৰ আবৃদ কতে নসক্ষীন্ মংলাদ শাহের নিকট হইতে ১৫ রমজান ১৭ কুলুস তারিবে একথানি করমাণ প্রাপ্ত হন। তাহাতে উক্ত বিজিত সম্পত্তি ও কতাহপুর পরগণার অধিকার প্রদত্ত হইরাছিল। কীর্ত্তিক্স অত্যন্ত সমর-কুশল ছিলেন, ভিনি বলের নবাব বাহাছরের অহমত্যন্ত্রপারে বিক্পুরের রাজার সহিত মিলিভ হইরা কাঁটোরার নিকট হইতে ছালাভ মরাঠাবিগকে বিতাজিভ করিয়াছিলেন। কীর্ত্তিক্স বাদশাহের নিকট হইতে রাজা উপাধি প্রাপ্ত না হইতেও দেশমধ্যে ভিনি মহারাজ বলিরা খ্যাত ছিলেন, প্রথম্মকল কাব্যে কবিবর অন্যাম তাহাকে মহারাজ বলিরাই উল্লেখ করিয়াছেন—

"अधिरण गांशात कीर्षि, मशातान ठळवडी, कीर्षिठळ नरतळ-ध्यथान।

চিস্তি তার রাজোনতি, কৃষ্ণপুর নিবস্তি,

ছিল খনরাম রস গান॥"

বলের নবাব বাহাত্রের নিকট কীর্তিচন্দ্রের অত্যন্ত প্রতিপত্তি ছিল, একদা তাঁহার মাতা জ্রীক্লেত্রে গমনকালে, বলেখর উড়িয়াপ্রদেশস্থ ফৌজদার ও যাবতীর ফাঁড়িদারদিগকে তাঁহার বিশেষ
ক্লেপে তত্বাবধারণ করিবার জন্ম আদেশ প্রদান করেন।

বর্ত্মানের স্থিকটন্থ কাঞ্চননগর নামক যে মহা সমূদ্ধিশালী জনপদের ধংলাবশেষ বর্ত্তমান আছে, কীর্ত্তিমান্ কীর্ত্তিক্রই তাহা স্থাপন করেন। ১৭৪০ খ্ব: আ: কীর্ত্তিচন্দ্র পরলোক গমন করেন। তাহার হত্তন্থিত অন্থপম তরবারি-খানি অত্থাপি রাজধনগোরে পরম্বত্তে রক্ষিত আছে, উহাকে কৌরিচন্দ্রের তেগাঁ বলিয়া থাকে। কীর্ত্তিচন্দের আনেকগুলি ক্রীর্ত্তি অত্থাপি বর্ত্তমান রাজবংশের মুখোজ্ঞল ক্রিয়া আছে।

কার্ত্তিক্রের মৃত্যুর পর তদীর পুত্র চিত্রনেন রায় বর্জমানের জামদারী প্রাপ্ত হরেন। তিনি বাদশাহের নিকট হইতে পরগণা মগুল বাট, জারসা, ত্রাক্ষণভূমি প্রভৃতি কতকগুলি জমিদারী প্রাপ্ত হইরাছিলেন। দিলীখর আবৃল কতে নসকদীন মহন্দদাহ বাদশাহের নিকট হইতে ১৫ সওয়াল ১২ জুলুস রাজা উপাধিস্কু ফ্রমণ ৪ পারচা খেলাত এবং এক জোড়া মুক্তা প্রাপ্ত হরেন। ঐ সমরে কীর্তিক্র জীবিত ছিলেন।

উক্ত বাদশাহের ২>শ বর্ষ রাজস্বকালে ২০ রমজান তারিথে ১৭৪০ খু: চিত্রলেন রাজা উপাধিসহ চাকলে বর্জমানের জমিদারী সনন্দ প্রাপ্ত হন। ১৭৪২ খু: পুনরার দিলীবরের নিক্ট হইতে ছত্র, জাস্কি, নাকারা ও আড়ানি খেলাভ সহ, একখানি সনন্দ প্রাপ্ত হরেন। এ সময়েও কীর্ভিচন্ত জীবিত ছিলেন। এইজ্বপে রাজা চিত্রলেন স্ক্রিমেত ১২ খানি কর্মাণ ও সনন্দ প্রাপ্ত হইন্নাছিলেন। ভিনি বার্বিক ২২৭০৪৭২ টাকা রাজস্ব প্রদান করিছেন।

তাঁহার হুই পদ্ধী, উভয়েই বন্ধা ছিলেন। ১৭৪৪ খৃ: চিত্র-সেনের মৃত্যু হর। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত দেবালয় কালনায় বর্তমান আছে। ইহার রাজস্বকালের অনেকগুলি কামান অভাবধি রাজবাটীতে বিভ্যান, তাহাতে পারসী অক্ষরে তাঁহার নাম খোদিত দৃষ্ট হয়।

রাজা চিত্রদেন রাদ্ধের মৃত্যুর পর তদীর খুলতাত মিত্রদেনের প্রত্ন তিলকচক্র বর্জমান রাজ্যপ্রাপ্ত হন। সন ১১৪০ সালের ১২ই অগ্রহারণ তারিখে মহারাজ তিলোকচক্র জন্মগ্রহণ করেন। তিনি ১৭৪৪ খ্ব: ২৪ জুলুস্ ৯ জমাদিরাল আউঅল তারিখে দিলীখর আবৃল কতে নসক্ষণীন্ মহম্মদ শাহ বাদশাহের নিকট হইতে বর্জমান প্রভৃতি জমিদারীর রাজা উপাধিসহ প্রথম সনন্দ পান। পরে আবৃল নসর্ মৃজা উদ্দীন্ আহম্মদ শা বাদ্শাহ গাজীর নিকট হইতে ৭ জুলুস ৭ রজব তারিখে পুনরায় একথানি করমাণ প্রাপ্ত হন। দিলীখর আলমণীর বাদশাহের নিকট হইতে তিনি ১ জুলুস ২৬ মহরম তারিখে একটি হস্তী উপহার পাইমাছিলেন।

দিলীখর শাহ আলম্ বাদশাহ 'ফিদবী থাস' উল্লেথে তাঁহাকে একথানি পত্র এবং তদীয় প্রধান সেনাপতি তাঁহাকে (৪ হাজার জাত ও হ হাজার সওয়ার) চারিহাজারি জাত ও রাজা বাহাত্র থেতাবযুক্ত একথানি ফরমাণ দিয়াছিলেন। ফিদবী খাস অর্থে বাদশাহের থাসের কর্ম্মচারী, এরূপ সম্মান রাজ্যের প্রধান কর্ম্মচারী ভিন্ন অপর কেহই প্রাপ্ত হইতেন না, এবং বঙ্গদেশে অপর কোন ভূপতিই উক্ত উপাধি প্রাপ্ত হরেন নাই। ইট ইভিন্না কোম্পানীর তদানীস্তন গবর্ণর জেনারেল বাহাত্র 'ফিদবী খাস' শব্দ ব্যবহার করিতেন। ঐ সঙ্গে তিলকচক্ত নহবত ও বালরদা'র পালকীও প্রাপ্ত ইইরাছিলেন। প্রনার দিলীখরের নিকট (১৭৬৮ খঃ) ৯ ক্ল্স্ ৪ঠা রমজান হ হাজার জাত ৩ হাজার সওয়ার (পঞ্চাজারি জাত), মহারাজাধিরাক খেতাব, তোপ, নাকারা ও পতাকাপ্রাপ্তির ক্রমাণ লাভ করেন।

১৭৫৫ খ্যা ইট ইণ্ডিরা কোম্পানির তদানীস্তন প্রবর্গর মিঃ হেনরি রিসবেট দিল্লী সম্রাটের আদেশাসুসারে মহারাল তিলক-চক্রকে একটা খেলাত ও একটা হন্তী প্রেরণ করেন। পলাসীর যুদ্ধ কালে ভিলকচক্র আব দিরা ইংরাজদিগকে বথেট সাহায্য করিয়া-ছিলেন। ১৭৬০ খ্যা ইট ইণ্ডিরা কোম্পানি মহারাজ ভিলকচক্র ও ভাষীর দেওরান এবং আক্রাক্ত প্রোধান কর্মচারিগণকে ৭৫২৫ টাকা মুলোর খেলাভ পাঠাইরা ছিলেন।

ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানীকে তিলকচন্দ সাহাব্য করিলেও অর-

কাল পরেই কোম্পানী সেই উপকার বিশ্বত হন ; এমন কি শগ্র-কাল পরেই সঙ্গতগোলাম ইংরাজনৈতের সহিত রাজনৈতগণের একটা সৃদ্ধ হয় এবং সেনপাহাড়ী ও ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর কুঠীর সৈম্ভগণের সহিতও ছইবার যুদ্ধ হইরাছিল। এ সময়ের রাজসরকারে ১৫ সহস্র সৈতা থাকার প্রমাণ পাওয়া যায়। তৎকালে বর্জমান একটা করদ রাজ্যরূপে পরিগণিত ছিল। রাজ্যের দেওয়ানি ও কৌঞ্জনারি বিচার মহারাজের নিজ व्यामानरकटे निष्पत्ति इहेठ, मन्ना ९ उन्नत्रमिश्यक महाताक স্বয়ংই দণ্ড প্রদান করিতেন। মগারাজ তিল্কচন্দ বাহাচুরের অধীনে ১২টা গড় (চুৰ্গ) বৰ্ত্তমান ছিল, এখনও ঐ লকল তুর্বের ধ্বংসাবশেষ বর্ত্তমান রতিয়াছে। ১৭৬৭ খুঃ রাজসরকারের বরান্দের তালিকায় দৃষ্ট হয় যে, উপরোক্ত ১২টী দুর্গে ২৯৬ জন স্থদক সওয়ার এবং ১১৯১ জন স্থলিকিত পদাতিক সভত হুর্গ-রক্ষায় নিযুক্ত ছিল, তদ্ভিন বহুতর দেশীয় পাইক ও পদাতিকও নিবুক্ত থাকিত। ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর সহিত গোলযোগ মিটিবার পরই শোভাবাজারের রাজা নবক্ষা বর্দমানের সাঁজো-রাল হইয়া আদেন। ১৭৬৫ খ্র: মহারাক্ত ভিলকচন্দ ইট ইণ্ডিয়া ्कान्नानीरक ४०৯४৮৯०५८० होका ताजव अमान कतित्रा स দাধিলা প্রাপ্ত হয়েন, তাহা অন্তাবধি রাজবাটীতে রক্ষিত আছে।

তিলকচন্দ বহুতর সংকীঠি এবং বিত্তর দেবত ও আক্ষত্র প্রদান করিয়াছিলেন। তাঁহার রাজজ্ঞাল পর্যান্ত সর্কাসমেত ৪ লক্ষ্ ৬৭ হাজার বিঘা জমি কেবল আক্ষত্র প্রদত্ত ইইয়াছিল। ১১৫৭ সালে ইং ১৭৭০ খৃং তিলকচন্দ পরলোক গমন করেন। তাহার তুই পত্নী, তন্মধ্যে মহারণী বিষপ্রুমারীই পুত্রবতী হুইয়াছিলেন ইহার গার্ভে মহারাজ তেজচন্দের জন্ম।

সন ১১৭১ সাল ৬ই মাণ (১৭৬৪ খুঃ ১৭ই জামুমার্রাতে)
তেজচল জন্ম গ্রহণ করেন এবং তদীয় পিতার পরলোকগমনের
পর ৬ বৎসর বয়ক্রেমকালে পৈতৃক পদ ও সম্পত্তি প্রাপ্ত হন।
কিন্তু তৎকালে নিভান্ত শৈশবাবস্থা হেতৃ তদীয় জননী অসাধারণ
বৃদ্ধিনতী মহারাণী বিষণকুমারীই তাহার অভিভাবিকা অরপ
সম্পন্য রাজকার্যা পর্যাবেক্ষণ করিছেন। ১৭৭১ খুঃ তেজচল
বাহাছর দিল্লীখন শাহজালম্ বাদশাহের আজ্ঞানুসারে তদীয়
প্রধান সেনাপতির নিকট ইইতে সন ১-৮৪ হিল্পর। ১২ স্ওয়াল
১২ জুলুস, তারিণে পৈতৃক পদ অর্থাৎ মহারালাধিরাক বাহাছর
থেতার, পঞ্চালারি জাত এবং তিন হালার স্ওয়ার, নাকারা,
ভোপ প্রভৃতি রাথিবার ক্ষনতাস্থলিত ফ্রমাণ প্রাপ্ত হরেন।
তেজচল্দ সাবালক হইয়া অভান্ত বিলাদী হইয়াছিলেন এবং তাহার
রাজকার্যো অভান্ত অমনোহোগে হেতু, অরকাল মধ্যেই জনেক গুলি
ভ্রমিনারী বাকী গাজনার প্রকাল নিলামে বিক্রের হইয়া যার, সেই

সকল অমিদারী থরিদ করিয়াই এছকেশীর বহু অমিদারঅর্থ্রন শাই হইরাছে। ১৭৯৩ খা দশশালা বন্দোবছের সমরে মহারাজ তেজ-চদ্দ বাহাছর বার্ধিক ৪০১৫১০৯ টাকা রাজত্ব এবং ১৯৩৭২ ১০টাকা পুণবন্দি ধার্য হর। দশশালা বন্দোবছের পরেও মহারাজের কতকগুলি অমিদারি বিক্রের হইরা গিয়াছিল, পরুপ্ত তৎপরেই সহলা ভাহার অভাবের পরিবর্তন হর এবং বরং রাজ্বার্য পর্যাবেক্ষণ করিতে থাকেন ও সমূদর অমিদারি পণ লইরা পশুনী বন্দোবছ করিয়া এককালে বিপুল অর্থ প্রাপ্ত হয়েন। এই বিপুল পণরাশিই বর্জমান-রাজধনাগারের ভিত্তি; ভদবিদ একাল পর্যাপ্ত রাজ্যের যাবভীয় বায়নির্মাণান্তের মৃত্ত অর্থই উক্ত ধনাগারে রক্ষিত হইয়া আসিতেছে। ১৭৯০ খা ইট ইভিয়া কোং মহারাজের হস্ত হইতে দেওয়ানি ও ফৌজলারী ক্ষমতা, জেলখানা, এবং ১৭৯০ খা পুলিস বিভাগ উঠাইয়া লারেন। তৎপূর্ব্ব পর্যাপ্ত ঐ সকল ক্ষমতা তিনি ও তৎপূর্ব্ব প্রস্করণণ অক্তর ভাবে উপভোগ করিতেছিলেন।

মহারাজ তেজচক্র বাহাছর নর্টী দারপরিগ্রহ করিয়াভিলেন. তরাধ্যে মহারাণী নানকী কুমারীই পুত্রবতী হইরাছিলেন। সন ১১৯৮ नार्न छोहात गर्फ महाताल প্রভাপচক্র জন্মগ্রহণ করেন, শেষাবস্থার মহারাজ তেজচক্র বাহাত্র পুর্বেই রাজাভার প্রদান করিয়া স্বরং নিশ্চিম্ব হইবেন স্থির করিয়া প্রভাপচল वयः आश्र इहेरन छाहारक विवाहारका अखिविक करत्रन । মহারাজ প্রতাপচক্র অত্যম্ভ বৃদ্ধিমান ও কার্যাক্ষম ছিলেন। রাজ্যভার প্রাপ্ত হুইরাই ভিনি বিশেষ যদ্ধ করিরা ৮ম আটন প্রণয়ন করাইয়া খীয় রাজা রক্ষা করিয়া যান। जन ১২২৮ সালের পৌষ মাসে ২৯ বৎসর বয়ংক্রম काली মহারাজ প্রতাপচন্দ্র পরলোক গমন করেন। এই প্রতাপ চন্দ্রকে লইরাট জাল প্রতাপটাদের ক্টি। মহারাজ তেলচক্র বাহাত্র পুত্রের পর্লোকগমনে পুনরার রাজ্যভার এহণ করেন এবং ভালক প্রাণ্চন্ত্র কপুরের পুত্র চুনিলাল বাব্যক দত্তক পুত্র প্রহণ করিয়া তাঁহার মহতাবচলে নামকরণ করেন। তেজচন্দ্র বাহাত্তরের বহুতর কীর্তিতে বর্জমান-রাজবংশ সমজ্ঞল বুছিরাছে। সন ১২৩৯ সালের ভাত্রমাসে তেজচক্র প্রলোক গমন করেন।

১৮০০ খু: ১৭ নবেম্বর তারিপে মহারাজ মহাতারচক্র বাহাত্র জন্মগ্রহণ করেন এবং ১৮২৭ খু: ১১ ফেব্ররারি তারিখে তিনি তেজচক্র বাহাত্রের পরলোকগমনের পর তদীয় মহিবী মহারাণী কমলকুমারী (পরাণচক্র কপুরের তগিনী) পুত্রের রাজোপাধি প্রাপ্তির জন্ম তারতবর্ধের তদানীক্তন গ্রপ্র জনারেল লর্ড উইলিয়ম বেণ্টিক বাহাত্রের সমীপে একথানি পত্র প্রেরণ

>63

করেন। অচিরকাল মধ্যেই ভিনি (১৮৩৩ খ্বঃ ৩০ আগষ্ট) গবর্ণর **°জেনারেশ বাহাছ্রের নিকট হইতে মহারাজাধিরাজ খেতাব** ও থেলাভ পাইলেন। তাঁহার নাবালকাবস্থার ভদীর মাতা মহারাণী কমলর্কারী ও পরাণচক কপুরই ভবীর অভিভাবক স্বরূপ রাজকার্যা পর্বাবেক্ষণ করিতেন। ১৮২৯ খুঃ ৮ই ফেব্রুরারি তারিথে মহতাবচন প্রথম দার পরিপ্রহ করেন। তদীর গর্ভে রাজকুমারী **জীমতী ধনদেরী দেবী জন্ম গ্রহণ ক**রেন। ছঃধের বিবর বে, কুমারীর অত্মের ৭ দিন পরেই মহারাণী পরলোক গমন করেন, শৈশৰে মাড়হীনা মাজকুমানী বিবাহের অত্যরকাল পরেই বিধৰা হয়েন। সূল ১২৯২ সালের ২রা আবাঢ় তারিখে রাজ-কুমারী লালা অবনীনাথ মেহেরা বাবুকে দত্তক পুত্র গ্রহণ করেন। ১৮৪৪ খৃ: ২৪ স্থুন ভারিখে মহভাবচন্দ বাহাত্র শ্রীমতী নারারণকুমারী দেবীর পাণিগ্রহণ করেন। মহারাণীর গর্ডে **मञ्जानांकि ना इ अवात्र ३৮७७ थु: >> मार्क कांत्रिर्ध महात्रारक्त्र** খালক ৺লালা বংশগোপাল চলা বাবুর জ্যেষ্ঠ প্রকে দতক-পুত্র প্রহণ করিরা কুমার আক্তাব্চক মহতাব বাহাছর नामकत्रण करत्रन।

১৮৩৯ খঃ মহারাজ পুনরার গধর্বর জেনারেল বাহাছরের নিকট হইতে পেলাভ প্রাপ্ত হইরাছিলেন।

১৮৫৫ খঃ সাঁওতাল বিদ্রোহের সমন্ন এবং ১৮৫৭ খঃ
সিপাহী বিদ্রোহের সমন্ন মহারাজ বিবিধ প্রকারে গবর্ণমেন্টের
বিস্তর উপকার করেন। ভক্ষান্ত তিনি গবর্ণমেন্ট হইতে ভূরি
ভূবি ধন্তবাদ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।

১৮৬৪ খৃঃ মহতাব চলা ভারতবর্ধের বাবস্থাপক সভার সদস্যপদ লাভ করেন, এডদেশীরগণের মধ্যে তিনিই সর্ব্বপ্রথম উক্ত পদপ্রাপ্ত হইরাছিলেন। উক্ত পদের আবস্তুকীর ব্যর নির্বাহের জক্ত গ্রব্ধমেন্ট হইতে প্রতি বংসরে ১০ সহস্র টাকা দিবার নিরম আছে, মহারাজ তিন বংসর উক্ত পদে সমাসীন থাকিরা এক কালে ৩০ সহস্র টাকা প্রাকাই তিনি আলিপুরত্ব প্রশালানির্মাণার্থে প্রদান করেন।

১৮৬৬ খ্ আবে ভীবণ ছডিকের সমরে মহারাজের অসাধারণ বদাঞ্চতা দৃষ্টে ভারতবর্ধের ওলানীজন গ্রুপরি জেনারেল সার জন লরেন্দ বাহাছর মহারাজকে অহতে একথানি পত্র লিখিয়া বিশুর ধন্ধবাদ প্রদান করেন। ১৮৬৮ খ্য মহারাজ বংশান্তক্রমে মহানাল্যা সম্রাজীর রাজচিছ (Armour and supporters) ধারণ করিবার ক্ষমতা প্রাথা হত্তেন।

১৮৬৯ থা বর্ষনান আবেশে ভরতর ম্যালেরিরার মহানারীর প্রাত্ত্রার ভ্রনে, তৎপ্রতীকারার্থে বেলল গ্রন্মেন্টের হত্তে বৰ্জমানপতি এককালে ৫০ সহস্ৰ টাকা প্ৰদান কৰিয়া গৰণ্মেন্টের নিকট বিস্তৱ ধঞ্চবাদ প্ৰাপ্ত হয়েন। ১৮৭০ খ্বঃ মহামাতা সম্ৰাজীপত্ৰ ডিউক ক্ষব এডিনবরা বৰ্জমানস্থ রাজভবনে গুডা-গমন করিয়া বৰ্জমানপতিকে সন্মানিত করিয়াছিলেন।

১৮৭৪ খু: ভীৰণ ছর্ভিন্দের সময় মহারাজ নিজ ব্যবে চুঁচ্ড়া, কালনা ওবর্জমানের হানে হানে অরসত্ত করিয়া অসংখ্য দীনহীনের জীবন রক্ষা করিয়াছিলেন, বক্ষের তৎকালীন লেক্টেনেন্ট গবর্ণর সার জর্জ ক্যাখেল বাহাত্ব হর: ঐ সক্ষল অরসত্ত দর্শন করিয়া বর্জমানরাজের জীলুল বলাঞ্জভার জন্ত ভূমনী প্রশংসা করিয়া হতত্তে একথানি পত্ত লিখিরাছিলেন। ১৮৭৭ খু: মাল্রাজ প্রদেশে ছর্ভিক্ষের জন্ত তিনি ১০ সহত্ত টাকা প্রদান করেন।

১৮৭৭ খা দিল্লী দরবার হইতে বর্জমানপতি His High
1008 থেতার এবং আজীবন সন্ধানস্বরূপ ১৩টা ভোগ লাভ

করেন। ১৮৭৮ খা বর্জমানপতি ভারতসম্রাজ্ঞীর একটা
প্রস্তরমন্ত্রী প্রতিমূর্ত্তি কলিকভোর মিউজিয়মে স্থাপন করেন।

বৰ্দ্ধমান ও কাল্নার অবৈভনিক বিভালয়, দাভবা চিকিৎসালয়, বালিকা-বিভালয় প্রাভৃতি বছতর দেশহিতকর কীর্ত্তি স্থাপন করিয়া মহভাবচন্দ বাহাছয় এতদ্দেশীয় জনসংগের নিকট চির-শ্রন্থনীয় হইয়াছেন। ভঙ্জির তাঁহার নৃতন ক্রীত বিশাল জমিদারী উড়িয়া প্রদেশয় কেলা কুজল ও মেদিনীপুর জেলায় প্রজামুঠা পরগণায় ২টা আবৈভনিক বিভালয় ও ২টা দাভবা চিকিৎসালয় স্থাপন করিয়া গিয়াছেন।

সন ১২৬৫ সালে ভিনি মহর্ষি বালীকিক্ত মূল ও সরল ব্যাথ্যা সহ রামায়ণ এবং মহর্ষি বেদব্যাসক্ষত মূল ও ব্যাথ্যাসহ মহাভারত মূদ্রিত করিয়া সাধারণে বিভরণ করিতে আরম্ভ করেন, কিন্ত ছঃখের বিষয়, আরন্ধ কার্য্য সম্পূর্ণ হইবার পূর্কেই তিনি পরলোক গমন করেন। সন ১৮৭৯ খৃঃ ২৬এ অক্টোবর ১৯ বংসর বয়ঃক্রমকালে, ভাসলপুর নগরে ভাঁহার মুক্যু হয়।

উনবিংশতি বংসর বরঃক্রমকালে মহারাজাধিরাক আফতাব মহতাব বাহাছর বর্জমান রাজসিংহাসন প্রাপ্ত হরেন; তংকালে তিনি পূর্ণবন্ধ না থাকার, বর্জমানরাক্ত্য কোর্ট অব ওরার্ডের অধীন হইবার প্রভাব হর, কিন্তু মহারাক্ত মহতাবচন্দ বাহাছরের রাজকার্য্য প্রণালী এতই সুন্দর ও সুবন্দোরতের সহিত সম্পাদিত হুইডেছিল, তাহার নিকট সুনিক্তিত তদীর প্রাত্তপুত্র তংকালীন দেওরান-ই-রাজ কনবিহারী কপুর সাহেক এরূপ বোগ্যতার সহিত রাজকার্য্য পরিচালনা করিডেছিলেন বে, বলেকর সার আস্তি এডেন বাহাছর, বর্জমানরাক্ত্য অরকালের ক্স্প কোর্ট-অব ওরার্ডের অধীন না করিরান্ত্রেরপ ভাবে পরিচালিত হইতেছে, তক্ষপই রাধিবার অন্ত্রমতি প্রধান করেন। মহারাজ আক্তব চল বাহাছরও শ্বরং রাজকার্ব্যে হন্তক্ষেপ না করিরা রাজমন্ত্রী বনবিহারী কপুর সাহেবের উপর সর্ক্ডো-ভাবে নির্ভর করিরা রাখিরাছিলেন। ১৮৮১ খৃঃ আফতাব বাহাছর মহাসমারোহে গবর্ণমেন্টের নিকট খেলাতসহ রাজসনন্দ প্রাপ্ত হরেন। তিনি অতি জয়কাল রাজ্য করিরাছিলেন, কিন্তু এই অন্ন সমরের মধ্যেই তিনি করেকটা মহাকীর্তি হাপন করিয়া এলেশের মহৎ হিতসাধন করিয়া গিরাছেন। ১৮৮১ খৃঃ লাজিলিকে য়ুরোপীর লাভব্য চিকিৎসালর হাপিত হইলে তিনি তাহার সাহাব্যার্থ এককালে ১০ সহল্র, ও বর্জমান নগরে জলের কল প্রশ্নত করিবার জন্ত বর্জমান মিউনিসি-পালিটিকে এককালে ৫০ হালার টাকা প্রদান করেন।

মহারাজ মহতাবচল বাহাত্র যে বিভালর স্থাপন করেন, তাহাতে কেবলমাত্র এন্ট্রেল পর্যন্ত পাঠ হইত। আফতাবচল ঐ কুলটিকে ২র শ্রেণী কলেজে উন্নীত করিরা বিনা বেতনে এল, এ, পরীক্ষা পর্যন্ত পাঠ করিবার স্থবিধা করিরা দেন, এই কার্যো তাঁহার ৮০ হাজার টাকা বার হর।

তিনি বৰ্দ্ধমান সাধারণ পুত্তকালয় স্থাপন করিয়া গিরাছেন, পুত্তকালয়টা স্থাপন করিতে তাঁহার ১ সহস্র টাকা ব্যব হইয়া-ছিল। এই সকল সাধারণ হিতকর কার্যা দৃষ্টে গ্রন্থেনট ভাঁহাকে ভূরি ভূরি ধ্সুবাদ প্রদান করেন।

সংস্কৃত শিক্ষার উরাভিকরে তিনি গ্রণমেন্টের হল্পে এককালে
ক্রেহল টাকা প্রদান করেন। মহতাবচন্দ বাহান্ত্রের অরণার্থে
বর্জমান গ্রন্দেন্ট দাতবা চিকিৎসালয় ও চক্ষ্ম পীড়াগ্রান্থ রোগীদিগের বাসোপযোগী একটা গৃহ নির্দ্ধাণ করিয়া দেন। তিনি
তদীর পিতৃদেবের পূণ্যতম কীর্দ্ধি রামারণ ও মহাভারত সম্পূর্ণ
মন্ত্রিত করিয়া সাধারণে বিতরণ করেন।

সন ১২৯১ সালের ১৩ চৈত্র তারিখে ২৪বৎসর বরঃক্রমকালে আফতাবচনদ মহতার বাহাত্তর অকালে প্রলোক গমন করেন।

আফ্তাবচন্দ মহতাব বাহাছরের পরবোক্সমনের পর
তদীর নাবালিকা মহিবী মহারাণী অধিরাণী বেনদেরী দেবী
বর্জমানরাজ্যের উত্তরাধিকারিণী হরেন। মহারাজ আফ্তাব
চন্দ বাহাছরের উইলে মহারাণীর দতকপুত্র গ্রহণ করিবার
অন্তমতি থাকার, তিনি রাজা বনবিহারী কপুর মহাশরের পু
এ
সান্ বিজনবিহারী (বিজরচন্দ) কপুরকে ১৮৮৭ খঃ ৩১ জুলাই
তারিখে বজেখরের আদেশাস্থলারে দত্তক পুত্র গ্রহণ
করেন। এই দত্তক প্রহণ স্থাকে তদীর খাল প্রীমন্তী মহারাণী
নারারণকুমারী দেবী, বহুতর আপত্তি করিয়া উচ্চতম আঘালতে
অভিবোগ করিয়াছিলেন, কিন্তু উপত্তিত মোক্দমাটী অবলেবে আপোনে নিশ্বতি হইরা সিয়াছিল। সভক্রগ্রহণের

অভ্যয়কাল পরেই ১৮৮৮ খুঃ ১৩ বে ভারিখে মহারাণী পরলোক গমন করেন।

১৮৮১ খা ১৯ অটোবর তারিখে মহারাজাধিরাজ বিজরচন্দ্র সহতাব বাহাছর জল্পগুল করেন। নহারালী বেনবেরীর মৃত্যুর পর মহারাজ বিজরচন্দ্র নাবালক থাকার কোর্টজবওরার্ডের অধীনে তলীর জল্পাতা পিতা, বর্জনানরাজ্যের ত্রোগ্য ন্যানেজার প্রীযুক্ত রাজা বনবিহারী কপুর সাহেবের ভল্পাবধানে অশিক্ষিত হইরা ১৮৯২ খা ১৯ অক্টোবর তারিখে সাবালক হইরা বর্জনানরাজ্যের রাজসিংহাসনে অধিক্ষয় হইরাছেন।

রাজা বন বিহারী কপুর সাহেব ১৮৫০ খুটালে ২১ই নবেবর বর্জমান জেলাছ সোঁরাই প্রামে জন্ধগ্রহণ করেন। তাঁহার ফরে বর্জমানরাজ্যের বহু বিবরে উরতি ঘটনাহে। তিনি বৃটীশগবরেন্টের নিকট ১৮৯০ খুটালে ২রা জাছরারী রাজা উপাধিলাভ করেন। বিগত ১৯-১ খুটালের আদমত্মারীর সমর তিনি নিজ জাতির পদমর্যালা রক্ষা করিবার জভ বরেলীতে এক ক্ষত্রিরসভা আহ্বান করেন। ভারতবর্ধের সকল ছানের অভাতির্ক্ষ তাঁহাকে সভাপতিপদে বরণ করিরা তাঁহাকে বিশেব সমানিভ করেন। তাঁহারই বত্ত্বে ও অধ্যবসারে বৃটীশ গবর্ণমেন্ট বর্জমানরাজ ও ভাহার অলাতির্ক্ষকে ক্রির বিশিরা আক্রাক্তর্বাধ্য হন।

প্রাচীন স্থান

বৃদ্ধপ্রের মতে বৃদ্ধমানের মধ্যে বৃদ্ধপ্রক নগর ও গ্রাম আছে, তুরুধ্যে এই কয়ট প্রধান---

थांद्रेन, पातित्किनिनेतीत शार्त्य बाहानावाद, मात्राश्वत, नकत-স্বিৎ পার্ছে গ্রিষ্টগ্রাম, মুখেশ্বীর নিক্ট শ্রীক্লফনগর (এগানে অভিরাম-প্রতিষ্ঠিত স্থামস্থলর), দামোদরের পার্বে রাজবল্লক, ভাগীরণীর পার্ছে বিফান্থান নব্দীপ (গৌরালের জন্মন্থান), মালাজোর, একলকক, রাঘববাটকা, অঘিকা, বালুগাম. মীরগ্রাম, ভূরিশ্রেষ্টিক, সেনাপি, জনারি, ক্রুরণ, আছন, তট, স্বৰ্ণ টীক। বৰ্দ্ধমানের দক্ষিণে পাঞ্চল (এখানে বিজয়াভিনন্দন রাজা हरेरका), कूमात्रवीथिका, कूनिकेशा, क्रान, लोश्पूत, शावर्कन, হাত্তক, জীরামপুর, বেলুন, অগ্রদীপ, পাটলি, বর্ণগ্রাম, জোতিবনি, <u>ठळ</u>श्रुत, वनिहात्रिश्रुत, विक्किवाना, कुनमान, गन्छात्रि, जावहे. চন্দ্রলেশ : অঙ্গলের নিকট রস্থাম, এ ছাড়া ৮টা প্রনের নাম ৰথা — বৈজ্ঞপুর (ভাগীরখীর পশ্চিমে ছই বোজন দূরে, (ভিলির अधिकारत), भाष्टिन (शकात भार्ष कात्रवदारकत अधिकारत). निजावकी नमीत्र भार्च लाहमा, मारमाबदब्र निक्र कविदब्र किन-কারে চন্ত্রবাটী,বর্দ্ধমানের পূর্ব্বাংশে বৃশ্চিকপত্তন,দামোগরের তীরে ত্রিবক্রাসরিৎপার্বে হাটক নগর, ভাগীর্থীর পশ্চিমে বিবশন্তন.

বর্ত্ধনানের ২০ জোশ দূরে সামরপত্তন, (এখানে ক্রতোরানদী-প্রবাহিত)। (৭ অধ্যায়)

উক্ত প্রামনগরাদির নাম হইতে বোধ ছইতেছে যে, বর্তমান চগলী, নদীরা ও পাঁবনা জেলার ফতকাংশ পৃর্বে বর্ত্মান প্রদেশের অন্তর্গত চিক।

বর্তমাল সবারে বর্জমান জেলার কমাকীর্ণ নগরসমূহের মধ্যে বর্জমান, কালনা, ভামবাজার, রাবীগাল, আহানাবাদ, বালী, কাটোয়া,দাইহাট এই ৮টী সহর প্রধান। এই ৮টির মধ্যে বর্জমানে প্রায় ৪০ হাজার এরং দাইহাটে প্রায় ১০ হাজার লোকের বাস। বর্জমান গঙ্কামদশূহের মধ্যে বঙ্জঘোর, ইন্দান, সলিমাবাদ, গালুরিয়া, সাহেবগাল, ভাজুরিয়া, মদ্রেবা, ভাউদিংহ, ভগবতীপুর, মজলকোট, উজানপুর, বৃদ্বুল, আউল্গাম, সোণামুণী, কসবা, দেগ্লা, মানকর, কাক্সা, নিয়ামভপুর, গোঘাট, কোতলপুর, বাহানা ও সলিমপুর এই ২৪ থানি গ্রাম প্রধান। এ সকল গগুগ্রামে বহু লোকের বাস।

উক্ত নগর প্রামাদির মধ্যে কালনা একটি বাণিজ্যকেন্দ্র, এগানে সহস্রাধিক বিপনী সুপোভিত। মুসলমান আমণেও এই জানের বিশেষ সমৃত্তি ছিল। সে সময়ে কাল্নার পার্ব দিয়া গলা প্রবাহিত ছিল। প্রাচীন কাল্নার আর বাণিজ্যকেন্দ্র না প্রাক্তির তথার বহু সন্ত্রান্ত লোকের অভাপি বাস আছে। বহু বিপনীমণ্ডিত নৃক্তন কাল্না বর্জমানের মহারাজের যতে নির্মিত। বাণীগঞ্জের কয়লার থনি জগছিগাত। [রাণীগঞ্জ দেখ।]

দারিকেশ্বরনদীর তীরে জাহানাবাদ, এখানে মহকুমা ও বহ সন্ধান্ত লোকের বাস আছে। বালিগ্রাম ও দারিকেশ্বরের তীরে, পূর্ব্ধ এই হান ব্রাদ্ধণকারছের সমাজ বলিয়া গণ্য ছিল। ভাগী-বগী ও অজ্ঞারে সজমস্থানে প্রসিদ্ধ কাঁটোয়া নগরী, এখানে বহ দনী বলিকের বাস। বহু পূর্ব্ধ হইভেই কাঁটোয়ার সমৃদ্ধির পরিচন্দ্র পাওয়ায় যায়। নবাব আলীবন্দীর সময়ে মরাঠাদিগের উৎপাতে কাঁটোয়ার বথেই ক্ষতি হইরাছে। এখনও কাঁটোয়া একটি প্রধান বাণিক্ষা হান বলিয়া খ্যাত। [কাঁটোয়া দেখ।]

ভাগীরবীর তীরে দাঁইহাট অবস্থিত। — পূর্বে এই স্থানও বিশেষ সমূদিশালী বলিয়া গণ্য ছিল। এখনও এখানে নানা ব্যবসায়ীর বাস দেখা যায় ও বাণিজ্যের জক্ত প্রসিদ।

বন্ধনান জেলায় পতিত জমি নাই। সকল জমিতেই প্রায় চাধ এইরা থাকে।

এখানে বন্ধ পশাদির মধ্যে রাণীগঞ্জের জকলে অরসংখ্যক বান্ত্র, ভলুক ও নেকড়ে দেখা যার। বিষধর সর্পের আভাব নাই। পন্ধীর মধ্যে বস্তু কুছুট, পাতি হাঁল, মরুর, রাজহাঁল, বস্তু কপোত, তিত্তির ও বটের পাখী প্রারই দেখা যার।

অধিবাসী ও অবস্থা।

এই জেলার শতকরা ৮০ অন হিন্দু, ১৮ জন মুসলমান, বাকী ভিন্ন ধর্মাবলধী। হিন্দুর মধ্যে বান্দী ও সংলগাপের সংখ্যাই অধিক। তৎপরে সংখ্যাইসারে যথাক্রমে ব্রাহ্মণ, বাউরি, গোরালা, চামার, ভোম, বেথিয়া, কারছ, কৈবর্ত, তেলী, কলু, হাড়ী, ভরবায়, কর্মকার, ভঁড়ি, নাপিড, চণ্ডাল, কুস্তায়, মোদক, ছুভার (বড়ই)। মুসলমানের মধ্যে সকলেই প্রায় ফ্রমী, অলই শিয়া। খুটান সম্ভাগায়ের সংখ্যা সহস্রাধিক হইবে না। তয়ধ্যে । মুরোপীয় ও ইউরেসিয়ান্দিগের সংখ্যাই বেশী, দেশী খুটানের সংখ্যা সার্ম্মণাতাধিক হইবে না।

পূর্বে বর্দ্ধমান জেলায় বহু লোকের বাস ছিল। ১৮৬৬ খুটান্দে ম্যালেরিয়া দেখা দেয়, সেই পর্যান্ত ম্যালেরিয়ায় এখানকার লোকসংখ্যা বড়ুই কমিয়া আসিডেছে। অর দিন হইতে সামান্ত উন্নতি বোধ হইতেছে। মাঘ হইতে আযাঢ়ের প্রথমাংশ পর্যান্ত এই জেলা বেশ স্বাস্থ্যকর থাকে, তৎপরে রৃষ্টিপাতের সঙ্গে সঙ্গে জরেরও প্রাহ্ভাব ঘটে। জলে অধিকাংশ স্থলই আর্দ্র থাকে. জলনিকাশেরও তেমন স্থবিধা না থাকার ঠাণ্ডার ও আহারের লোবে অনেকেই পীড়িত হইয়া পড়ে। কোন কোন বৰ্ষে আবার **ভীষণাকার ধারণ করে। সাধারণের বিধাস, যে রেলে**ভয়ে বাঁধ হওয়া পর্যান্ত জল নিকাদের অস্থবিধা ঘটায়, বড় বড় নদীর গতি পরিবর্ত্তিত হওয়ায়, বস্তা আসিয়া পূর্ব্ব সঞ্চিত আবর্জনা সকল গোত করিবার স্কবিনা না থাকায়, ছোট ছোট নদী নালা শুষ্ক হওয়ায় এবং সেই সঙ্গে অনেক স্থলে বিশুদ্ধ পানীয় জলের অভাব বটাঃ ৰদ্ধনান জেলা এরপ অস্বাস্থ্যকর হইয়া পড়িয়াছে। তাই জেলার উন্নতিবিধানের জন্ম দামোদর হইতে এডেন খাল, বর্দ্ধমান সহরে জলের কল ও অপরাপর স্থানে ভাল পানীয় জল সরবরাহের বন্দোবন্ত করা হইয়াছে ও হইতেছে।

রেলওরের স্থবিধার জন্ত দামোদরের বাঁধ নির্মিত হইবার পূর্কে বর্জমান জেলার নির্মত বস্থা হইত। ১৭৭০,১৮২৩ ও ১৮৫৫ খুষ্টাব্দে যে বস্থা হইয়াছিল, ভাহাতে বহু লোক ধনে প্রাণে মারা যার। বাঁধ হওরা পর্যান্ত বস্থার প্রকোপ কমিরাছে।

১৮৬৬ খৃষ্টান্দে বৰ্জমানে হুভিক্ষ দেখা দেয়। এ সময়ে মোটা চাউলের মণ ১৪০ টাকা হুইডে ৫৪০ টাকা হুইয়াছিল।

वानिज्ञा ।

এখানে দেশীরগণের মন্ত্রে ধুন্তি, সাজী প্রস্তুত হইরা নান।
ফানে প্রেরিড হইরা থাকে। বোণা, রূপা ও পিঙল কাঁসার
জিনিসও এখানে বংগই তৈরারী হইতেছে। এখানকার জমি
বেশ উর্জার, সেই জঞ্জ একটুও পড়িরা নাই। শক্তাদিও যথেই
উৎপদ্ধ হয়। এখানকার ধরচ কুলাইরা উদ্ভূত থাকে। এখান

হইতে চাউল, তামাক, নানাপ্রকার কলার, গোম, সরিবা, পাট, চিনি, লবণ, দেশী ধুতি, তুলা প্রভৃতি অন্ত স্থানে রপ্তানী হর এবং এখানে বিলাতী কাপড়, বিলাতী জিনিস, লোহ, লবণ, গরম মসলা, নারিকেল ও এরও তৈল আমদানী হইরা থাকে।

এই জেলার ইষ্ট ইণ্ডিরা রেলওরের মেমারি, শক্তিগড়, বর্জমান, কাফুজংগন, মানকর, পানাগড়, ছ্গাপুর, অগুল, রাণী-গঞ্জ, সিরারসোল, নিম্চা, আসন্সোল, সীতারামপুর, বরাকর, শুস্করা ও ভেদিয়া প্রভৃতি ষ্টেশনেই অধিকাংশ আমদানী র্থানীর চালান হইয়া থাকে। রাণীগঞ্জে বরণকোম্পানীর এক বৃহৎ কারপানা আছে, তাহাতে পাইপ, ইষ্টক ও নানা প্রকার স্কৃষ্ট টালিখোলা প্রস্তুত হউতেতে।

এই জেলায় ৪টি জেল ও ১৭টি পানা আছে। এতর্মধ্যে ৮টি থানা সদরের অধীন যথা—বর্জমান, সাহেবগল, খগুলোষ, রায়না, গাঙ্কুড়, সলিমাবাদ, বুদ্বুদ্ ও আউন্গ্রাম। ৩টি থানা রাণী-গল্পের অধীন যথা—বাণীগঞ্জ, আসন্দোল ও কক্সা। ৩টি থানা কাঁটোয়ার অধীন যথা—কাঁটোয়া, কেতুগ্রাম ও মললকোট এবং ৩টি থানা কাল্নার অধীন যথা—কাল্না, পূর্বস্বলী ও মজেখন। ঐ গুলি আবার ৭১টি প্রগণায় বিভক্ত।

ও উক্ত ক্ষেণার সদর মহকুমা, অক্ষা ২২° ৫৭'৩• শহিতে ২৩° ৩২'উ: এবং জাদি ৮৭°৩২'৪৫ হইতে ৮৮°১৮'৪৫ পু:। ভূপরিমাণ ১২৪২ বর্গমাইল।

৪ উক্ত জেলার প্রধান নগর ও সদর, বাকা নদীর তীরে অবস্থিত। অকা ২০°১৪ ১০ উ: ও দ্রাধি ৮৭°৫০ ৫৫ পু:। লোকসংখ্যা প্রায় ৩৫ হাজার। ১৮৬০ খুষ্টান্দ হইতে অনর্থকর জরে এই সহর উৎসন্নপ্রায়। এখন মহারাজের বায়ে জলের কল ও মিউনিসিপালিটির চেষ্টায় বর্জমান সহবের অনেকটা উন্নতি হইয়াছে। পূর্ব্বে এখানে বর্জমান বিভাগের কমিসনর সাহেব বাস করিতেন। এখানকার বর্জমান-মহারাজের স্মুবৃহৎ প্রাসাদ, তাঁহাদের প্রতিষ্ঠিত অষ্টোত্তরশত শিবমন্দির এবং পীরবহরমের মস্থিদ্ দেখিবার জিনিস। ১৬২৪ খুষ্টান্দে শাহজাদা খুরুম্ (পরে শাহজাহান) বর্জমান অধিকার করেন। ১৬৯৫ খুষ্টান্দে শোভাসিংহ বর্জমানাধিপতিকে নিহত করিয়া বর্জমান অধিকার করেন। অবশেষে বর্জমান-রাজকুমারীর হত্তে তাঁহার আয়ু শেষ হয়; বর্জমান জেলার ইতিহাস প্রসঙ্গে প্রের্হিসে ক্রা হয়াছে। এখানে ইষ্ট ইতিহাস প্রসঙ্গে গ্রাক্তমান আছে। এখানকার সীতাতোগ ও মতিচুর প্রসিষ্ক।

বর্জমান (মের বর্জমান), উত্তরভারতের কান্মীর উপতাকার পূর্বাপার্থবত্তী একটা স্থাধি উপতাকা। একটা উচ্চচূড় পর্বাতদারা উক্ত উত্তর উপতাকা পরস্পারে বিচ্ছির। ইহা উত্তর-

ৰন্ধিংশ থার ৪০ মাইল লখা এবং প্রস্থে প্রায় সিকি মাইল।
ইহার চতুঃসীমান্থিত পর্কাতরাজি তুবারার্ত নিধরে কথালমান।
এই উচ্চতুত পর্কাতগুলি চারিদিকে বিভ্নান থাকার ইহার নিম্নদেশে প্রাক্তর স্পান করিতে পারে না। বর্দ্ধমান নদী এই পর্কাতমালা ভেদ করিয়া চক্রভাগার মিলিত হইয়াছে। এখানে
করেকথানি গ্রামে অতি অয়লোকেরই বাস আছে, ভাহারা
এখানকার কঠোর লীত সহু করিতে সমর্থ।

বর্দ্ধমান, স্থনামখ্যাত কএকজন গ্রন্থক্তা। > কাড্মবিস্তররচরিতা। ২ ক্রিয়াগুপ্তক, সিদ্ধরাজনর্গন ও গণরজমহোল্ধিপ্রণেতা। ইনি ১১৪০ খুটান্দে শেষোক্ত গ্রন্থানির একখানি
টীকা রচনা করিয়াছিলেন। স্থপ্রসিদ্ধ পণ্ডিত গোবিন্দ স্থি
ইহার গুরু ছিলেন। ও নানাশাস্তার্থনির্গয়রচয়িতা। ৪ প্রাদ্ধপ্রদীপপ্রণেতা। ৫ একজন প্রাচীন কবি। ৬ একজন বিখ্যাত
জ্যোতির্বিদ্ধ, বরাহমিহির ইহাঁর নামোজেপ করিয়াছেন।

বৰ্দ্ধমান উপাধ্যায়, > কিরণাবলী প্রকাশ, খণ্ডনখণ্ডখাও প্রকাশ, তর্ভিস্তামণিপ্রকাশ, ভায়কুম্মাঞ্জলিপ্রকাশ, ভায়নিবন্ধপ্রকাশ, ভায়লীলাবতী প্রকাশ এবং প্রমেয়ভন্ববোধ প্রভৃতি গ্রন্থ রচনা করেন। ইনি গলেশ বা গলেশ্বরের পুর্মধ্যে প্রিগণিত।

২ এক জন বিখ্যাত পণ্ডিত। ইনি কবিলেন্ঠ ও মহাধন্মাধিরাজ ভবেশের পুত্র; পিতার নিকট বিভাশিক্ষা লাভ করেন।
গঙ্গাক্তভাবিবেক, দগুবিবেক, ধর্মপ্রদীপ, পরিভারাবিবেক, ম্বতিতর্ববিবেক, স্থতিত্বামৃত, স্থতিত্বামৃতসারোধার ও স্থতিপরিভাষা প্রভৃতি গ্রন্থ ইহাঁর রচিত বলিয়া প্রকাশ। রুল্নশন,
কমলাকর ও কেশব ইহার মত উক্ত করিয়াছেন।

বর্দ্ধনানক (ত্রি) বর্দ্ধনান স্বার্থে সংজ্ঞায়াং বা কন্। ১ রুদ্ধি-বিলিট। (পুং) ২ শরাব। (অনস্ব) ৩ এরওত্ত্বক। ও আর্ত্রিক, আর্বিত।

"नहेनर्खकन्द्रदेशः भूगीकर्वद्रमानरेकः।

নিত্যোদ্যোগৈ**শ ক্রীড়াভিত্ত**রাপ্যপরিহ**র্বিতা**: ॥"

(ভারত গাবে।৪)

বর্দ্ধমানগণি, কুমারপ্রশতিকাব্যরচরিতা। ইনি হেমচক্রের শিয় ছিলেন।

বৰ্দ্ধমানদ্বার (ক্লী) ১ বৰ্দ্ধমানের প্রবেশপথ। ২ হবিনাপুর-রাজ্যের প্রবেশদার।

বর্দ্ধমানপুর (রী) প্রামবিশেষ। গুরুরাতের একটি প্রধান নগর। বর্দ্ধমানপুরীয় (ত্রি) বর্দ্ধমান নগর সম্বন্ধীয়। তরগরকাত। বর্দ্ধমানপতি (পুং) বর্দ্ধমানশ্রত পতিঃ। বর্দ্ধমানপুরের অধিপতি।

বর্দ্ধনাননতি (পুং) বোধিসরতেন।
বর্দ্ধনানমিঞা, ইনি বর্দ্ধনানপ্রক্রিয়া দামক ব্যাকরণ প্রণরণ করেন।
বর্দ্ধনানসট্টক (क्री) সটকতেন। ইহার প্রস্তাপ্রপালী—ঘন
দ্বি মহন করিয়া ভাহাতে সম্ভব মত শর্করা, মরিচ, ওঁঠ, পিপুল,
জীরক এই সকল প্রবার চুর্গ মিশ্রিত করিতে হয়। পরে উত্তম
রূপে ইহা হত্তরারা আলোড়ন করিবে। তৎপরে পক নাড়িমরস
উহাতে মিশাইয়া বল্ল বারা ছাকিয়া লাইলে এই সটক হয়। এই
সটক গুরু, অয়িনীপ্রিকয়, বলকারী, তৃথিকারক, কফ, বাত, পিত,
শ্রম, মানি ও ভুকানাশক।

"সাক্রং দাঁবি গৃহীতা তু কিঞ্চিনাথা চ মছরেং।
নকিনা মরিচং গুট্টা পিরলী জীষ্চ্ণিকম্ ॥
নিন্দিপ্য চ বথাযোগ্যং হত্তেনালোড্য বছত:।
বঙ্গেণ গালয়েন্তমিন্ পরুদাড়িমবীজকম্॥
নিন্দিপ্য সিদ্ধমেতন্ত, সট্টকং বর্দ্ধমানকম্।
গুরুদীপ্রিকরং ক্ষাং বলসং তৃত্তিকারকম্।
ক্ষবাভক্ষ পিরক্ষ শ্রমং মানিং ড্বাং জ্বাং এতা

(रेरक्कनि॰ प्रवाशः)

বর্দ্ধমানসূরি, জৈনস্রিভেদ। অভয়দেবের শিবা, ইনি ১০৩২
খুষ্ঠান্দে বিশ্বমান ছিলেন। কথাকোষ বা শরণর্দ্ধাবলী এবং
উপমিতিভব-প্রপঞ্চনাম-সমূত্যে ১৯৮৮ সংবতে রচনা করিয়াছিলেন।

বর্জমানস্থামী, জৈন তীর্ষকরভেদ। [মহাবীর দেখ।]
বর্জমানেশ (পুং) বর্জমানগু ঈশ:। ১ বর্জমানপুরের রাজা।
২ শিবনিক ও মন্দিরভেদ।

বর্জয়িতৃ (বি) বর্জ-ণিচ্-তৃচ্। বর্জনকাবক।
বর্জা, মধ্যপ্রদেশের চীফ্ কমিশনরের অবীনস্থ একটা জেলা।
আক্ষা° ২০°১৮ হইতে ২১°২১ উ: এবং ৭৮°৪ ৩০ হইতে ৭৯°১৫ পৃঃ মধ্য। এই কেলা ত্রিকোণাক্তি, পাদম্লে চান্না জেলা,
পুর্কে নাগণুর এবং পশ্চিমে বর্জানদী প্রবাহিত থাকিয়া বেবার
ভইতে এইছান বিজ্ঞিয় রাখিয়াছে। ভূপরিমাণ ২৪০১ বর্গমাইল। বর্জা নগর এখানকার বিচার সদর।

এই জেলার অবিধাংশ স্থানই পর্কত্ময়। সাওপুরা পর্কত্ময়ালার কএকটা শাখা উত্তরদিক হইতে এই জেলার দক্ষিণ-পূর্বাংশ পর্যন্ত আছের করিরা রাধিরাছে। এই জেনোজনির এবং উপলব্ধতিনিকও ভূমিভাগে বিশেব কোনরপ বৃক্ষলতা বা শভাদি উৎপন্ন হর না। গ্রীমকালে পর্কত্তের ঢালু দেশে সামান্ত মাত্রার ক্ষুদ্ধ ওবা কলিতে দেখা বার। বর্ধাঋতুর পর গ্রু সকল স্থান পর্যাপ্ত পরিমাণে ফুগমপ্তিত হইরা উঠে। তথন তথার দলে দলে গোমহিবাদি আসিরা বিচরণ করিরা

থাকে। অষ্টি ও থানদাশী পরগণার পর্কতাংশ শাল ও সেওণ বৃক্ষ মণ্ডিত জন্ধলে পূর্ণ। এই সকল পর্কাতশাধার মধ্যবত্তী উপত্যকা ভূমি বিশেষ উর্কারা একং শক্তসমৃদ্ধিশালী।

এই ক্লেলার উত্তর বিভাগ হইতে জলেগাঁও, চিচোলী, ধামকুপ্ত ও থানেগাঁও নামে কএকটা গিরিপথ নাগপুর অভিমূণে
গিরাছে। ঐ সকল পর্বজনালার মধ্যে মালেগাঁও, নন্দগাঁও ও
কৈত্রগড় (২০৮৬ ফিট্) শিশর সর্কোচ্চ। তাহারই মধ্য দিয়া
আবার পর্বজগাত্রপ্রস্ত জলরাশির অববাহিকাভূমি। কএকটা
কুদ্র কুদ্র স্রোভস্থিনী কুল কুলনাদে সেই গিরিকন্দর ভেন্দ করিয়া
পর্বজপার্বস্থিত নির প্রদেশের সমতল প্রাস্তরে প্রবাহিত হইয়া
বর্দ্ধাসলিলে আসিরা মিশিরাছে। ঐ সকলের মধ্যে ধাম, বোর,
অপোড়া ও বসা নামে কয়টী শাথা বর্দ্ধার কলেবর পুষ্টি করিতেছে। বৃহদাকার বৃক্লের মধ্যে এখানে আম্র, উতুল, বট ও
অখপ দেখা যায়। পূর্ববিভাগের বনদেশে সেরপ দীর্ঘাকার
বৃক্ষ নাই। হিলনঘাট তহসীলে এবং গিরাড় নগর স্মিহিত
প্রদেশের ভূগর্ভস্থ স্তর মধ্যে স্থমিই জল প্রবাহ বিভ্যমান আছে।

বিগত ছয় শতাব্দ পূর্বে শেথ খাজা ফরিদ নামে একজন মুসলমান সাধু এথানকার পর্বতশিপরে আসিয়া বাস করেন। প্রবাদ, এক সমরে কএকজন বণিক্ নারিকেল লইয়া এই স্থান দিয়া বাণিজ্যার্থ গমন করিতেছিল, তাহারা মুসলমান সাধুকে ভগুমনে করিয়া তাঁহার প্রতি বিদ্ধাপ বাক্য প্রয়োগ করে, তাহাতে সাধু কুপিত হন এবং তাঁহার অভিশাপে সমন্ত নারিকেল পাথরে রূপাস্তরিত হইয়া পর্বতিস্তুপে পরিণত হয়। এখনও ঐ পর্বতের শিথরদেশে বহুসংখ্যক মুসলমান সাধু বাস করিয়া থাকেন।

এখানে বিশেষ কোন খনিজ পদার্থ পাওয়া যায় না। পর্ব্বভাংশে যে কএক প্রকার পাথর পাওয়া যায়, তাহা গৃহনিশ্বাণ-কার্য্য বাতীত কোন উপকারেই আইসে না। কোন হানে চৃ'ণে পাথর পাওয়া যায়, তাহা পোড়াইরা চুণ প্রস্তুত হয়। ক্লাগ্র্টোন্ ও ব্লাক্বেসাল্ট পাথরের অভাব নাই।

বনভাগে চিতা, হায়না, নেকড়ে, বনবরাহ ও বক্তশৃগাল প্রভৃতি জন্ধ প্রচুর দৃষ্টিগোচর হয়। হয়িণ, নীলগাই ও বৃনোভেড়া পর্বাতভাগে যথেষ্ট। পক্ষীর মধ্যে তিন্তির, টিট্টিভ, বটের, পার্বাত্য কপোত প্রভৃতি প্রধান। সকল প্রকার সর্প, শতপদী ও বৃহৎকায় বিচ্চু বিশ্বর দেখিতে পাওরা যায়।

এধানকার প্রাচীন ইতিহাস সদদে বিশেষ কিছুই পাওরা যার না, তবে সহাভারতের উক্তি এবং স্থানীর প্রবাদ অস্থসরণ করিলে জানা যার বে, এথানকার উত্তরপশ্চিমাংশ বিদর্ভরাজ ভীমকের শাসনাধীন ছিল। ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ এই ভীমকনন্দিনী কর্মিনী দেবীর পাশিগ্রহণ করেন। ধন্দিশপূর্বাংশে গৌলীক্ষাতির বাদ ছিল। স্থাবংশীর ক্ষত্রির-রাজ পবন পৌণার, পরি ও পোহরা নামক স্থানে স্থীর শাসন বিস্তার করিয়া ছিলেন। প্রবাদ, তাঁহার একথানি পরেশ পাথর ছিল। প্রজ্ঞাগণ তাঁহাকে ধাজনা না দিয়া লাজলের লোহফলা দিত এবং তাহারই স্পর্শে ফলগুলি বর্ণে পরিণ্ড হইত।

অবশেবে সৈরদ সালর কবীর নামে এক জন মুসলমান রাহ্ কর তথার আসিরা উপনীত হয়। সেই ব্যক্তি রাজার লিরক্ষেদ কৌশল অবগত হইয়া পৌনর নগরে প্রবেশের পৃর্কেই ঐক্র-জালিক বিভাপ্রভাবে স্বীয় মন্তক স্থানাজ্বরে রাখিয়া নগরে প্রবেশ করিল। রাজা কবীরের প্রভাব লক্ষ্য করিয়া এবং তাঁহার ভৌতিকবিদ্যা স্বীয় মায়ার অতীত জানিয়া লাজনার ভয়ে পৌনর ছর্গের সন্মুখে সন্ত্রীক ধামনদীর জ্বলে প্রবেশ করেন। তদবধি সেই জ্বলাবর্ত নানা ভৌতিক চিত্রের উৎপাদক হইয়াছে।

কিংবদন্তী আছে, এক সময়ে এক রাখাল এই স্থানে নদীতীরে গোরু চরাইত। তাহার পাল মধ্যে একটী রুক্ষবর্ণ গাভী
বিচরণ করিতে দেখিয়া দে মনে মনে ভাবিল, এ গোরুটী
কাহার ? বহু দিন হুইতে ইহাকে চরাইয়া বেড়াইতেছি, কিন্তু
অন্তাপিও তাহার জন্ম পারিশ্রমিক কিছু পাই না, অথবা গোরুটী
কোন দিনও আপনার স্বামীর কাছে যায় না। ইহা চিম্বা
করিয়া সেই ব্যক্তি গীরে গীরে সেই গাভীটার কাছে গেল এবং
জিজ্ঞাসা করিল, তুমি কাহার ? গাভী সেই প্রশ্নের কোনকপ
উত্তর না দিয়া শীরে ধীরে জল মধ্যে প্রবেশ করিল। তথন
শীর প্রাপ্য মূল্যের আশায় বঞ্চিত ভাবিয়া রাখাল গাভীর পুষ্চ
ধরিয়া পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল এবং গাভীর সহিত জল মধ্যে
নিমার্ম হইল।

রাথাল জল মধ্যে আদিয়া দেখে যে, একটা সুন্দর দেখন মান্দর তথার বিভ্যমান রহিয়াছে। সেই মন্দির হইতে এক জন দিবাকার পুরুষ বহির্গত হইয়া তাহার নিকট আদিল এবং গোরুটী বন্ধন করিতে লাগিল। তথন সেই রাথাল গাভীর অয়াধিকারীর নিকট গোচারণের মূলা প্রাথনা করিলে মেই ব্যক্তি তাহাকে কতকগুলি ফলমূল অর্থন করিল। তাহাতে সে বিরক্ত হইয়া পুনরার গোপুছে ধারণপুর্বক উপরে আইসে। পর দিন সে বিশেষ অনিচ্ছাসকে একবার সেই ফলমূলাদির প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া বড়ই আশ্চর্যাধিত হইল। সেই ফল মূলাদি যেন কোন অস্কুজালিক শক্তিপ্রভাবে স্কুবর্গ পরিণত হইয়াছে। এই পৃক্রিনীতে কেই তথুল উৎসর্গ করিলে সে পরু আর পাইত। পরে এক দিন কোন ব্যক্তি আরব্যক্তনপূর্ণ থালা প্রত্যপ্রন না করার তদবধি আর সেরপ প্রশাদ পাওয়া বায় না।

এরপ অসংখ্য কিংবদন্তী রাজীত এখারকার বিদেশ জোন ইতিহাস নাই। মহাজারজীর তীন্ত্রক প্লাকার রাজকাটারের পর এই হান ক্রমণ: লাজিগাত্যের ছিভিন্ন জুরুণারের রাজগণ কর্ত্তক অধিকৃত হয়। এই স্লানে অত্তর রাজগাট স্থাপিত হয় নাই, কিন্তু আছু প্রভৃতি হাজিগাত্যের প্লপ্রসিদ্ধ রাজরংশীরেরা এখানে বে বা খাসন প্রভাব বিভার করিরাছিলেন, ভাষাতে সল্লেছ নাই।

দাব্দিশাভোর বিভিন্ন মুসলমান-রাজবংশের প্রার, বখন মহারাই শক্তি অভ্যুখিত হয়, তখন এই হান মহানাই অদ্ধিনহেব
বল্পত ইইরাছিল। ইংরাজাধিকারে এই হান নাগপুর জেলার
অন্তর্ভুক্ত ইওরার নাগপুরের সহিত এখানকার বিচার বিভাগীর
সখন হাপিত ইইরাছে। পেনারি দহুদেশের উপত্রবে এখানকার
আধ্বাসিবর্গ বিশেষ উত্তাক্ত ইইরাছিল। এই সমরে এখানকার প্রার প্রত্যেক পলিতে মৃতিক্ষারা গঠিত হর্গসমূহ স্থাপিত
হয়। নাগপুর দেখা]

নাগপুর, চালা, হারণরাবাদ প্রস্কৃতি স্থানের সহিত এখান্ডার বাণিজ্ঞা অবাধে চলিতেছে। হিল্লবাটের কার্পাস বাণিজ্ঞাই প্রশন্ত বর্ষাভেলী প্রেটু রেলপথ এবং গ্রেট ইণ্ডিয়ান পেনিন্
ফলার রেলপথ এই জেলার মধ্য দিয়া যাওয়ায় আভ্যন্তরিক বাণিজ্ঞার ও পণ্যন্তব্যর আমদানী রপ্তানীর পক্ষে বিশেন প্রবিধা ঘটয়াছে। সোণগাও ও হিল্লব্যটি নামক স্থানে প্রথমাক রেলপথের হুইটা এবং পালগাঁও, বর্দ্ধা, দেগয়ির, পাওনাড় ও দিল্লী নামক ভানে ছিতীয় লাইনের কয়টী ট্রেসন এই জেলায় অবস্থিত। তুলা বাতীত এখানে তিসি, চর্ম্ম ও গোধুমের বিভৃত্ব গ্রহা আছে।

২ উক্ত জেলার মধ্যন্থিত একটা তহলীল। ইহার ভূপরি-মাণ ৮০০ বর্গমাইল। ইহার মধ্যে ৫টা দেওয়ানী ও ১১টা ফৌকদারী আদালত আছে।

ত উক্ত জেলার প্রধান নগর ও বিচার সদর। অক্ষ°ং•"৪৫ উ: এবং দ্রাঘি" ৭৮°৪ পুর্বা। ১৮৬৬ খুটান্দে প্রাচীন পালকবাড়ী গ্রামের উপর এই স্থরমা হন্দ্যাপূর্ণ নগর স্থাপিত হয়।

বর্দ্ধা, মধ্যপ্রদেশে প্রবাহিত একটা নদী। নাগপুর ও বেহুলের মধ্যবন্তী সাতপুরা পর্কতন্ত্রেণী হইতে উড়ুত। পরে নাগপুর, বন্ধা ও চান্দা জেলার সীমা দিয়া এবং বেরার ও নিজামরাঞাকে বিভিন্ন করিয়া এই নদী মন্দ গতিতে দক্ষিণপুর্কাতিমুখে ১৯০ মাইল জ্ঞাসর হইরা জ্জাই ২০ ৬ ৩০ তিঃ এবং ব্রাহিণ ৭৯°১০ পুঃ বেণগলায় মিলিত হইয়াছে। তদনস্তর চান্দার কিছু উত্তরে, প্রায় ২০৪ মাইল জ্ঞাসিরা ইহা বেণগলার সহিত মিলিত হইয়া পুইক্লেবরে প্রাণহিতা নাম ধারণ করিয়া

গোদাবরী জলে নিগতিত হইরাছে। সকল সমরেই এই নদী হাঁটিরা পার হওরা বার। কিন্তু বক্সার কালে এক এক সময় চিহার জল এতদ্র কীত হইরা উঠে যে, ভাহার প্রবাহে অসংখ্য জীবজন্ত ভাসিরা বার। চান্দার অদ্রবন্তী সোইত গ্রামে এই নদীবন্দে একটা স্থবিখ্যাত জলপ্রপাত আছে। বর্ষাকালে এ হানে নদীর জল ৮০ গজ প্রস্থ হইরা একটা স্থবীর্ঘ পাতমধ্যে পতিত হইতে থাকে। এ সমরে জলোচ্ছাসিত ফেনরাশির অপূর্ব সৌন্দর্য নর্মন্থে নিপতিত হইরা বড়ই মনোজ্ঞ দৃগু বিরা জ্ঞান হর। আখিন মাসের শেষে এই প্রপাতের দৃগু সর্বাপেকা স্থন্মর।

দুলগাওর নিকটে এই নদীবক্ষে একটা লোহসেতু স্থাপিত সাছে। উহা ৬০ ফিটু বিস্তৃত, ১৪টা লোহ গার্ডার বোগে নদীবক্ষয় ইইকনির্দ্ধিত স্বস্থোপরি রক্ষিত। বর্দ্ধানদীপ্রবাহিত উপত্যকাভূমিতে প্রচুর তুলা উৎপন্ন হয়। নদীকৃলে স্থানে দেবমন্দির, সমাধিক্তম্ভ ও মূললমান সাধুর কবর বিভ্যমান দেখা যার। দেউলপাড়া নামক স্থানে প্রতিবৎসর অগ্রহারণ মাসে তিন সপ্তাহব্যাপী একটা মেলা বলে।

বন্ধাপক (বি) > নাড়ীচ্ছেদনকালীন ক্রিয়াবিশেষ দম্পাদনকারী। ২ উক্ত উৎসবে প্রদন্ত উপহারাদি।

वक्ताभन (क्री) नाषीत्क्रमन।

"অর্ধরাত্রে বসোধরিং পাতয়েদ্গুড়সর্পিষা।
ততো বর্জাপনং ষটিং নামাদেং করণং মম।।"
'বর্জাপনং নাড়ীচ্ছেদনং।' (তিথিতর) ২ মহারাষ্ট্রদেশে
স্বাতিথিতে পুরুষদিগের অভ্যক্ষাদি ক্রিয়াকে বন্ধাপন কহে।
"পুষুরেয়াতৃপিতরৌ বালবদ্ধাপনে সতি।"

'বদ্ধাপনং নাম প্রতিসম্বৎসরং জন্মদিনেরু পুরুষন্ত ক্রিয়মাণমভাঙ্গাদিকং মহারাষ্ট্রদেশে প্রসিদ্ধং।' (স্বতাধ্যাগর)

বাদ্ধিত (অ) র্ধ-ক্ত। ১ প্রস্ত। ২ ছিন্ন। ১ প্রিত। ৪ পূর্ণ।

"পাণিভ্যাস্ত্ৰপুৰ্যায়ন্ত্ৰ স্বামন্ত্ৰত বৰ্জিতম্। বিপ্ৰান্তিকে পিতৃন্ ধ্যায়ন্ শনকৈকপনিক্ষিপেং ॥"(মন্ত্ৰ) ২২৪) 'বজিতং পূৰ্ণং' (কুলুক্) বৃধ-ণিচ্-ক্ত। ৫ বৃদ্ধিপ্ৰাণিত। "দৃষ্টবাস্থানং প্ৰচয়সমেকদা বৈণ্য আম্ববান্।

শাম্বনা বৰ্দ্ধিতাশেষস্বাহ্নসূৰ্যঃ প্ৰস্থাপতিঃ ॥"(ভাগৰত ৪।২১।২)।

राष्ट्र (बि) इस-छन्। वर्षक, वर्षनकाती। रुष्टिन् (बि) वर्षननीन।

বদ্ধিষ্ণু (এ) বৰ্ণতে ইতি বৃধ-(জলছাঞিতি। পা তাহাতত / এতি ইঞ্চ্। বৰ্জনদীল, পৰ্যায় বৰ্জন। (জমর)

"নিরাক্রিমূ বর্তিমূ বর্ত্তিমূ পরিতে। রণ্দ্। উৎপতিমূ সহিমূচ চেরডুঃ খরদুরণে। ১" (ভটি ১)) বধান্ (তি) বৃদ্ধি সম্মীয় বা বৃদ্ধিল। অন্তবৰ্গন্ শক্ষােগে ইহার ব্যবহার দেখা যায়। অন্তবৃদ্ধি রোগ (Hernia)।

বন্ধা রোগ (পুং) সম্মর্দ্ধ (Hernia)।

বর্জ্রি) বর্জতে দীর্ঘাভবতীতি রুধ-(র্ধিবপিভ্যাং রন্। উণ্২।২৭)ইতি রন্। ১ চর্ম। (উজ্জ্লা)

বৃদ্ধিক। (জী) > চর্মপটা। চর্মরক্ষ্বৎ কোমল জীবা পুরুষ।
বৃদ্ধী (জী) বর্দ্ধ গৌরাদিখাৎ তীষ্। চর্মরক্ষ্ক্, চামড়ার দড়ী,
চলিত বলী। পর্যায়—নদ্ধী, বরুতা, বন্ধী। (ভরত)

বর্পাস্ (ফ্রী) র্ণীতে সংপ্তকং ভবতীতি র (রঙ্শীঙ্ভাগ স্বরূপাস্কো: পূট্চ। উণ্গা২০০) ইতি অহন্পূড়াগমন্চ। ১ রূপ। (উজ্জাল) ২ জোতা। "মহি বর্প: করিক্রতঃ" (ঝক্ ১া১৪০।৫) 'বর্প: কোবেং' (সারণ)

বফ, ১ গতি। ২ বধ। ভাগি পরদৈ সক সেট্। লট্ বফডি। লুট্ভাবজাং।

वकृत् (क्री) वर्षम्। (छेण् शर००)

বর্ণ্মক (পুং) > মহাভারতোক্ত জনপদভেদ, বর্ত্তমান নাম বন্ধা, ব্রহ্মদেশ। [ব্রহ্মদেশ দেখ।] ২ তক্ষ্মপদবাসী মাত্র।

বশ্মকণ্টক (প্রং) পর্প টক, কেতপাপড়া। (রাছনি৽)

বৰ্ম্মক্ষা (জী) বৰ্ম ক্ষতীতি ক্ষ-ক্ষচ্ টাপ্। সপ্তলা, চশিত ভাষায় চামরক্ষা।

বর্ম্মণ (পুং) নাগরঙ্গবৃক্ষ। (ত্রিকা৽)

বর্ণ্মন্ (ক্লী) রূণোতি আচ্ছানয়তি শরীরমিতি বৃ-মনিন্। ১ তন্ত্র, তন্ত্রাণ, কবচ, সাঁজোয়া।

"অভ্যভূষত বাহানাং চরতাং গাত্রশিক্সিতৈ:। বর্মাভি: প্রনোদ্ধৃতরাজতালীবনধ্বনি:॥" (রঘু ৪।৫৬)

অতি প্রাচীন কাল হইতেই ভারতে বর্দ্মণরিধানের রীতি প্রচলিত দেখা বার। এই লোহনিন্মিত কবচ আদে ধারণ করিরা আয়া বাছে বর্গ শক্তর করাল কুপাণ হইতে আয়ারকা করিতেন। ঋক্সংহিতার ৬ মণ্ডলের ৭৫ স্তুক্তে প্রথম মন্ত্রে লিখিত হইরাছে; —সংগ্রাম উপস্থিত হইলে (এই রাজা) যখন বর্দ্ম পরিধান করিরা গমন করেন, তখন তাঁহার জীমূতের স্থার ক্ষপ হর (হে রাজা)! তুমি অবিদ্ধানীরে জ্বর লাভ কর। বর্দ্মের সেই মহিমা তোমাকে রক্ষা করক।" আবার উক্ত স্তুক্তের ১৮ মত্রে "মর্দ্মাণি তে বর্দ্মণা ছাল্রামি" মন্ত্রাংশ লারা ক্ষপাইই বুঝা বার বে, আর্য্যগণ বর্দ্মারা মর্দ্মহানসমূহ আছোদন প্রথা অবগত ছিলেন। এতজ্জির অর্থেদের ৮।৪৭৮,১০।১০৭।৭ এবং অথর্ক্সবেদের ৮।৪।৭ ও ৯।৪।২৬ মত্রে বর্দ্মের কার্যকার্দ্মিশের উল্লেখ আছে। রামারণ ও০০ অধ্যারে এবং মহাভারতের

আছি, বন, বিরাট ও উচ্ছোগ পর্কো বর্ম্মণরিধানের ফথেষ্ট

উপদ্বিত দেখা মার। এতদ্বিন শ্রীমদ্বাগবত, বৃহৎকংহিতা প্রভৃতি প্রদ্বেও বর্ষের প্রচার ও প্রভাবের পরিচয় লিপিবদ্ধ হইরাছে। কিন্তু তৃঃধের বিষর, তৎকালে কিন্তুপ বর্মনিশ্বাণ করিয়া ভার-তীয় আর্য্য বোদ্ব্যণ যুদ্ধালে স্ব স্ব শরীর আচ্ছাদন করিতেন, তাহার কোন নিদর্শন পাওয়া যায় না।

প্রাচীন অসুমীরদিগের উৎকীর্ণ শিলাখণ্ডের যুদ্ধচিত্রে বর্মার্ড
বাদ্বুবন্দর প্রতিকৃতি প্রথিত রহিলাছে। ভারতের নানাস্থানের
মন্দিরগাত্ত্বর প্রস্তর্থণ্ডে প্রক্রপ অনেক বর্মপরির্ত মূর্ত্তি বিভ্যমান
দেখা যার। আরবীরদিগের বিশ্বাস, ধর্মপ্রচারক দাউদ
প্রথমে সাঁলোরা (Cost of mail) প্রস্তুত ও প্রচার করিরাছিলেন। প্রাচীন রোমক যোদ্ধ্যণ সাঁলোরার সর্কদেহ আর্ত
করিরা যুদ্ধ করিত। তৎপরে ক্রেমে অপবাপর জনপদবাসীর
মধ্যে যুদ্ধলালে সাঁলোরা পরিধানের ব্যবস্থা প্রচারিত হর। পরে
বখন কামান, বন্দুক প্রভৃতি আরের যুদ্ধান্ত্র প্রচলিত হর, সেই
সঙ্গেই হারে ব্যবহার ক্রমশং ক্রিরা আইনে।

২ গৃহ। (নিঘন্টু ৩।৪)(পুং) ৩ ক্তিয়ের উপাধি। ব্রাহ্মণ শশ্বীস্ত এবং ক্তিয় বশ্বীস্ত নাম রাধিবেন।

"শর্মান্তঃ ব্রহ্মণস্থ স্থান্তর্মান্তঃ ক্ষত্রিরস্থ চ। গুপুনাসাত্মকং নাম প্রশক্তঃ বৈশুশূদ্রোঃ॥" (শাতাতপ) ৪ প্রপ্টিক, ক্ষেত্রপাপ্ডা। (ভাবপ্র•)

বর্মাবং (তি) বর্ম বিভাতেহত মঞ্প্ মন্তঃ ব। বর্মাযুক, বর্মবিশিষ্ট।

বর্দ্মহর (ত্রি) হরতীতি হ্র-অচ্ হর:, নর্দ্রণো হর:। বর্দ্মহারক, ক্রচহারী।

বিশ্মি (পুং) মংজ্বিশেষ, বানমাছ। ইহার গুণ—গুরু, বল-কারক, ক্যায় ও রক্তপিতনাশক। (রাজ্ব॰)

"বর্ম্মিন (ক্রো হরেছাতং পিতং ক্ষচিকরো লঘু: ।" (ভাবপ্রত) ভাবপ্রকাশমতে এই মংস্ত লঘুপাক এবং বায়ু ও পিত্তনাশক।

বর্মিক (ত্রি) বর্মপরির্ভ। বর্মধারী। বর্মিত (ত্রি) বর্ম করোতীতি বর্ম-পিচ্, ততঃ কর্মণি ক,

বিশ্মিত (ত্রি) বন্ধ করে। তাতে বন্ধনাত, বিশ্ব করে। বর্দ্ধ সঞ্জাতমভেতি ইতচ্ বা। বর্দ্ধবৃক্ত, পর্যার—কৃতসরাহ, সরন্ধ, সক্ষ, বংশিত, বৃাচ্চকন্ধট, উচ্চকন্ধট। (সভ্তি)

"বাজিনাং বর্শ্বিতাঙ্গানাং কুম্বন্ত মন্ন সারকাঃ। অন্ত চিবা প্রবেক্ষান্তি শরীরাণি মরেরিতাঃ॥"

(द्रामाद्रम २१२०१०६)

বৰ্মিন্ (পুং) নাদের মংক্তবিশেব, বানিমাছ। (রাজব°)
২ কবচধারী। বর্মবৃক্ত।

বৰ্ম্ম ব (পুং) মংভৰিশেব। চলিত বামিকবমাছ, ইহার গুণ---বাতনাশক, বিশ্ব ও প্রহদোবনাশক। (রাজবলত)

ব্যা (ত্রি) বর্গতে প্রার্থতে ইতি বর ঈশ্সারাং (মচোঁ বং । পা ৩/১৯৭) ইতি বং । ১, প্রধান ।

"वथा धर्मापत्रकार्था मूनिवर्गाष्ट्रकीर्विकाः ।

ন তথা বাহ্নদেৰত মহিমা হুছুবৰিত: ॥" (ভাগৰত অচাবে) ২ ভোষ্ঠ। (পুং) ও কামদেব। (মেদিনী)

বর্গ্যা । (ন্ত্রী) ব্রিরতে ইতি রু (অবস্থপণাবর্ষোতি। পা এ১।১০১)
ইতি অপ্রতিবন্ধে যং। ১ পতিংবরা। ২ কল্পা (মুধ্রবোধবাা)
ত ভূলাঢ়কী, চলিত টোঙর কলায়। (প্যারেমুকা) আঢ়কী,
অভ্তর। (রাজনি)

বর্য্যাঞ্জন (জী) রসাশ্ধন। (বৈছকনি")

বর্ধনিট (পুং) স্থনামধ্যাত কলারতেন, (Dolichos cutjung:
বর্জনি। এই লতা দেখিতে অনেকটা সিধি লতার ছার।
সীম প্রকার তেলে নানা নামে পরিচিত এবং কিছু চওড়া হর,
কিন্তু বর্জনীর ভাঁটি গুলি লখা অথচ সরু হইরা থাকে। ইফা
বাঞ্জনাদিতে থাইতে উত্তম লাগে। পাকা বর্জনি কলাই জংগ
ভিজাইরা তরকারীতে দিরা বা কাঁচাই থাওরা যার। আলু ও
বর্জনি একত্র সিভ করিরা মসলাবোগে "গুঙ্নিদানা" হয়। উজ
বাজারে বিক্রম হইরা থাকে।

ছানীর নাম—বালালা—বর্বটি, কণাড়ী—তড্গনি, কুলে । নামবত, গুলরাতী—ছোরা, হিন্দি—লেবে, বরর; সংস্কৃত—লসান্ত্র, মলরালম্—মসেন্দী, শিলাপুর —লিসী, তামিল—করমণি, তেলগু—দক্ত পেললু, বোরা, বোবালু । D. Sinensia বা ভিন্ন আর এক প্রকার বরবটির ভিন্নদেশীয় নাম—দান্দিণাত্য—ছোলী, হিন্দী ও পারসী—লোবির, জালছর — রাবন্, কাঙড়া—রাওলী, মলরালম্—পরু; পজাব —ছোট হাড়কানা, সিমলা—রবলন; দিছু—বৌরো, শিলাপুর—বন্দুরু মী, তামিল —আলা-চন্দালজ আলসন্দা, করমণি ও বোবালু । খেত, ক্লঞ্চ ও ধুসর বর্ণভেদে এই রাজমাব বা বর্কটির প্রকার নির্ণীত হইরা থাকে।

ইহার রাসারনিক জবাসংস্থান— ক্লীরাংশ—১২-৪৪, যবক্লারিক পদার্থ—২৪-০০, সার—৫৯-০২, তৈল বা বসাবৎ পদার্থ—১-৪১, ধাতবাংশ (ছাই)—৩-১৩।

বৰ্মবৰণা (ত্ৰী) বরিতাব্যক্তশব্দেন বণতি লকারতে ইতি বণ লব্দে আচ্টাপ্। নীলমন্দিকা। (অমর) 'নীলাকার মন্দিক। বৰ্মবণা মল্লিকাখা। বামিতোকে' (ভরত)

বর্কবর (ক্লী) বুণুতে বরন্ধতি নানাঞ্চণানিতি বু (কু গু দু বচিন্তা: মরচ্। উপ্ ২০২০) ইতি মরচ্। ১ হিমুল। ২ পীতচন্দন। ৩ বোল। (রান্সনি[®]) রুণোতি দোবানিতি বু-মরচ্।৪ পামর। ৫ নীচন্সাতিবিশেষ। ৬ কেদ, চলিত বাবরী-কেশ। ৭ চক্রেল। ৮ দেশবিশেষ। ২ তদ্দেশবাসী। " कारपाद्या पत्रप्राटेन्डव वर्षात्रा हर्ववर्षनाः।"

(मार्कर अवशु क् कार्य)

১০ প্রিকা। ১১ বৃক্ষবিশেষ, চলিত কালবাব্ই। পর্যায় — স্মৃথ, গর্ম, কৃষ্ণবর্ষক, স্কুক্ষর, গ্রুপত্ত, পুতগদ্ধ, স্বাহক। ইহার গুণ—কটু, উষ্ণ, স্থগদ্ধ, ব্যুন, বিষ্ণপ্ত প্রান্তনি । বিজ্ঞানি)

বর্ববন্ধ, ক্লেছ জাতিবিশেষ। এই জাতির বাসভূমি প্রাচীন গ্রছাদিতে বর্মর জনপদ নামে উক্ত হইরাছে। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে সেই হান কোবার ভাষা আজিও স্থাপাইরূপে নির্ণীত হর নাই। মহাভারত জীয়পর্কে ৯।৫৬ জঃ, বামন ১৩।৩৯, মার্ক ৫৭।৩৬, মৎক্ত ১২০।৪০ জঃ প্রেড্ড হলে বর্মর জাতির উল্লেখ দেখা বার। পোল্টাত্য ভৌগোলিকগণ সিদ্ধনদের মধ্য মোহানার সমীপবর্জী স্থানকেও এবং ভারতীর কোন কোন গ্রছকর্জা মহারাষ্ট্রেরা অংশ বিশেবকে প্রাচীন বর্মর জনপদ বলিরা নির্কেশ করিরা থাকেন। হিন্দুপাস্তোক্ত বর্মর জনপদে একটী শ্বতন্ত্র অপশ্রংশ ভাষাও প্রচলিত ছিল। যথা—

"বর্ধরাবস্তাপাঞ্চালাঃ টাকুমালবকৈবরাঃ।" (প্রাক্তচন্ত্রিকা) আমরা প্রাচীন রোমক্জাতির ইতিবৃত্ত পাঠে জানিতে পারি বে, বর্ধর (Barbarian) নামে একটা চুর্ধ্ব জাতি রোমনামাজ্যকে বিধবত্ত করিয়াছিল। সেই বর্ধর জাতির বাসভূমি সম্ভবতঃ পশ্চিম ও মধ্য এনিয়াখণ্ডে ছিল বলিয়া বিধান। গ্রীকগণ Barbaros শব্দে বৈদেশিক ব্যক্তি বা বস্তুই বৃথিতেন। যাহারা গ্রীকভাষা জানিত না, তাহাদিগকেও গ্রীনের লোকেরা বর্ধর বলিত। গ্রীসবালীর নিকট হইতে এইরপ অর্থে রোমকেরাও বৈদেশিককে বর্ধর বলিতে শিক্ষা করে। সেই শক্ষুপ প্রভৃতি চুর্ধ্ব প্রাচ্য জনপ্রবাদী যোক্জাতি পাশ্চাত্য রোমকদিগের নিকট বর্ধর নামে স্থপরিচিত হইরাছিল। (রোম দেখ।)

গ্রীকের বৈদেশিক জ্ঞাপক Barbaros শব্দের স্থার বিভিন্ন জাতির মধ্যেও ঐরপ একটি শব্দর অভিনা প্রচলিত আছে। রিহুদী দিগের Gentile শব্দে শক্তেম্বাইন ব্যক্তি মাত্রকেই এবং হিন্দু-দিগের মধ্যে ঐরপ "রেচ্ছ" শব্দে বিজয়ন্তই ব্যক্তিমাত্রকেই বুরার। ঐরপ কাকের শব্দও ইন্লামধর্ষে অবিখালী ব্যক্তি মাত্রনির্দেশক। চীনবালীরা কন্ বাই শব্দে এবং ভোটজাতি গ্যা শব্দে বৈদেশিককে অভিহিত করে। আরবগণের বিশাস, বাণিভাস্থত্তে যে সকল ভারতীয় বণিক্ আরবী ভাষা শিক্ষা করিয়াহে, অপচ

আরবে বার নাই, কিছুভেই সেক্কপ লোকের তাবাগত উচ্চারণ দোবের সংগোধন হইতে পারে না, একপ ভারতবাসী অথবা উচ্চারণ বৈলক্ষণ্যবুক্ত ক্রীতলাসদিগাকে ভাহারা বর্ধরাং-উল্ হুল্ বিগত। গ্রীক "বর্বরাস্" শব্দ সংস্কৃত "বরবরাহ" শব্দের অন্তক্ত বলিরাই পাশ্চাতা পভিত্যপণের ধারণা। বরবরাহ শব্দে কুকিতকেশ বন্ধ বা পার্মতীর অসতা অধিবাসী বা বিদেশ-বাসী বা ক্রিক স্থানবাসী অসতা বর্মরদিগাকেই বুঝাইরা থাকে। আরব ভিন্ন তরিক্টবর্ত্তী হানসমূহ আরবী মুসলমানের নিকট অস্ আরম্ নামে পরিচিত। তাহারা আরববাসী ভিন্ন অপর দেশবাসী ব্যক্তি মাত্রকেই "আজিমী" সংজ্ঞার বিভক্ত করিয়া থাকে।

আরববাসী, পারসিক অথবা মোগলগণ ভারভের প্রাচীন অধিবাসীদিগকে অবজ্ঞাকর "কালা আদমী" শব্দে অভিহিত করিত। পক্ষান্তরে পাশ্চাত্য বণিক্সম্প্রদার এবং ইংরাজপুরুব-গণও ভারতের অধিবাসিবর্গকে "কালা আদমী" বলিয়া দুণা করিতেছেন। সেইরূপ স্থপ্রাচীন আর্যাদিগের মধ্যেও বৈদিকযুগে দাস, দুস্যু বা শূদ্রপদে আর্য্য ও অনার্য্যের অর্থাৎ দ্বিজ বা
শুদ্রের স্বাভন্ত্য গৃহীত হইরাছিল।

বর্কারক (क्री) বর্কার স্বার্থে কন্। চন্দনভেদ। পর্যায় বর্কারোখ, মেতবর্কারক, শীত, মুগদি, পিতারি, স্থরভি। ইহার গুণ শীতল, তিক্তা, কফা, বায়ু, পিত্ত, কুষ্ঠ, কণ্ডু ও ত্রণ এবং বিশেষতঃ রক্তদোষনাশক। (রাজনি°)

বর্ববা (প্রী) পূলান্তেব আরুতিরস্তান্তা ইতি বর্ধর-জচ্-টাপ্।
> পূলান্তেদ। ২ শাকডেদ। (মেদিনী) বর্ক ইতি শব্দং
রাতীতি রা-ক। ও মন্দিকান্ডেদ। (শব্দর্গাণ)

বর্বব্রা (স্ত্রী) বর্ষর টাপ্ পক্ষে বিশ্বাৎ ভীষ্। > কুন্ত বৃক্ষবিশেষ। ২ বাবৃই। প্যায়---কবরী, তুলী, ধরপুলা, অব্দানিকা,
অব্ধগদ্ধা, কবরা, ধরপুলিকা। (ভাবপ্র°) ০ মুনিভেদ।
(লিকপুণ গান্তৰ)

বর্বব্রীক (পুং) রুণুতে ইতি কৃঞ ব্রণে (শৃণু বৃজাং দে রুক্ চাভ্যাসভা উণ্ ৪١১৯, ইতি ঈকন্ দ্বিচনং অভ্যাসভ রুগা-গমন্চ। ১ ব্রাহ্ষণষ্টিকা বৃহ্ণ। ২ কুটিলকুভল। ৩ অজ-গদ্বিকা, চলিত বাবুই তুলনী। (শহ্চ) ৪ মহাকাল। (হেম) বর্ববা (রী) বর্ধনী। (শহ্চ)

বর্ধার, জাতিবিশেষ। বৈদ্ রাজপুতদিগের একটা শাখা।
গুণিরখেবা নামক হান হইতে ইহারা শতাক্তর পূর্কে বরিয়ার
সিংহ ও চাহসিংহের অধীনে ফৈলাবাদ অঞ্চলে আসিরা বাস
করিরাছেন। বরিয়ার সিংহের অধীনত্ব দল ইইতে বর্কার শাখা
এবং চাহ ইইতে চাহশাধার উৎপত্তি।

^{*} Ind. Ant. XIII p. 857.

⁺ Wil, Mack, 59,

প্রবাদ আছে, —উভর প্রাতাই অকবর পাহের সমরে দিলী সরকারে কবী হন। তাঁহারা মুক্তিগাভের পর অ্নাদেশ মত ভূগর্ভ ছইতে দেবমূর্ত্তি উঠাইর। পশ্চিমরাঠ পরগণার অন্তর্গত চিতাবন নামক স্থানে প্রতিষ্ঠা করেন। এখনও উভর পাখার লোকেরা ঐ মূর্ত্তির পূজা করিরা থাকে। অবোধ্যার স্থাবংশীয় ঠাকুর সর্ফারদিপের ছারা অবোধ্যা হইতে ভাড়িত হই গাঁর পর তাহাদের সন্ফার শিলালী সিংছ বেগমগঞ্জের অন্তর্গত রাম্বাটে আর একটী পবিত্র দেবতীর্থ স্থাপন করেন।

আর একটা আখ্যারিকা হইতে জানা বার যে, জরপুরের দক্ষিণ-পশ্চিমন্থ মূলী পাচন বা পাচানপুরে তাহাদের বাস ছিল। এথানে তাহাদের রাজা শালিবাহন রাজত করিতেন। তথা হইতে তাহারা চিতাবনকারিরা নামক ত্বানে আসিরা ভরজাতিকে তাড়াইরা দের এবং কনোজরাজ-কন্তা পরিনীকে অপহরণ করিরা দিরীখরকে প্রত্যপণ করে বলিরা তাহারা পারিতোবিক অরূপ ১৬ ক্রোশব্যাপী জারনীর প্রাপ্ত হয়।

বর্জারগণ শিশুক্রা ইইলে প্রারই মারিয়া কেলে, বেহেত্ ঐ ক্রার বিবাহে ভাহাদের বিশেষ কই পাইতে হয়। ভাহারা • সাধারণত: পালবার, কচ্ছবাহ, কৌলিক প্রভৃতির ক্রা গ্রহণ করিয়া থাকে। বালিয়ার বর্জারেরা উক্ষরিনী, হৈহয়বংশী, নরবাণী, কিন্বার, নিকুন্ত, সেনাগার ও থাটাগিগের ক্রাগ্রহণ করে এবং হৈহয়বংশী, উজ্জিয়নী, নরবাণী, নিকুন্ত, কিন্বার; বিষেন, বাঈ ও রঘুবংশীদিগকে ক্রাদান করিয়া থাকে।

আজমগড়ে তাহারা ছবি বা ভূঁইহার বলিয়া পরিগণিত।
দিল্লীর নিকটবভা চের নগর হইতে আগত বলিয়া এই নামে
পরিচিত হইয়াছে। সন্দার গোরক্ষদেও (১৩৩৬-১৮৫৫ খুঃ)
ভাগেদিগকে আজমগড়ে আনমন করেন।

বর্নি (থি) রু (রুদভ্যাং বিন্। উণ্ ১।৫৩) ইতি বিন্। গমর। (উজ্জণ)

বর্ববুর (পুং) ব বাহলকাৎ বুরচ্। বৃক্ষবিশেষ, বাবলা গাছ।
পথার – যুগলাক, কণ্টালু, তীক্ষকন্টক, গোলুল, পংক্তিবীত,
নীর্ঘকন্ট, কফান্তক, দৃঢ়বীত্ত, অজন্তক। গুণ-ক্ষার, উঞ্চ, কফ,
কাল, আমরক্ত, অতীলার, পিত্ত, লাহ ও অল্বোগনাশক।

[वावना (मथ ।]

বশ্ম ন্ (গং) জন্তাবায় এই শব্ধেরশ্মন্ লিখিত হইয়। গাকে। [ভোজকরাত্মণ দেখ]

বৰ্ষ, ৰৰ্ষ, (বৃষ্) ১ সেচন, বৰ্ষণ। ২ ছিংসা। ৩ ক্লেশ। ৪ গৰ্জপ্ৰহণ। ৫ শ্ৰেষ্যা। ভাগি পৰকৈ সৰু সেট্। বৰ্ষিত। লিট্ বৰ্ষ। সৃঙ্ অৰব্ৰীং।

वर्ध (भू: क्री) व्यारक हेकि इबू त्मारन (जाकिरनो जनामीनामून-

সংখ্যানষ্) ইতি অচ্ অথবা বিরতে প্রার্থান্ত ইতি হু-স (বৃ তৃ বদি হনি ক্ষি ক্ষিডাঃ স:।, উণ্ ৩।৬৯) > বৃষ্টি, জলবর্ষণী।

"विकार समिष्वर्यात् मरहाबामाक नःत्रातः ।
जाकानिकमनशात्ररमण्डम् मसूत्रस्वीर ॥" (मसू ६।) -७)

২ লবুৰীপাংল। ও লবুৰীপ। ৪ পৃথিবীত্ব সমন্ত ৰীপের ভূবিভাগ।

শৌরাণিক ভূ-বৃদ্ধান্ত পাঠে জানা বার, পৃথিবী সাভটী বীপে বিভক্ত। উক্ত সপ্ত বীপের নাম, বথা—জবু, প্লক্ষ, লাক ও পৃক্র। এই সাভটী বীপের মধ্যে জাবার এক একটী বীপেরও বিভাগ বিভিন্ন নামে বিভক্ত। সেই সেই নাম-পের বিভিন্ন ভূবিভাগের নামই বর্ব। বর্বসমূহের নাম, সংখ্যানবিবরণ, পরিমাণ এবং ভত্মভ্য অধিবাসী প্রভৃতির বৃদ্ধান্ত ক্রমেপরে বিবৃত্ত হইতেছে।

শ্রীমন্তাগবতে লিখিত আছে, প্রিয়ন্ত্রের রখচক্রে সাভটী থাত ইইরাছিল, ঐ সপ্ত খাতই কালে সাভটি সমুদ্ররূপে পরিণত হয়। সেই সপ্তসাগর বারাই পূর্বোলিখিও বস্থ প্রভৃতি সপ্ত বাপ বিরচিত। উক্ত বীপসমূহের পরিমাণ পূর্ব পূর্বের বীপের বিস্তার অপেকা উত্তরোজর বিশুণ। ঐ সকল বীপ সমূদ্রের বাহিরে চারি দিকে বিস্তৃত। যেমন সমূদ্রসমূহের বাহিরদিকে এক এক সমূদ্র। ঐ সমূদ্রসমূহের নাম—লবণাদ, কুরুরদাদ, অরোদ, ব্যতাদ, কীরোদ, দাইজল, হুন্দোদ এব তাছাদ। এই সাভটী সাগর পূর্বেকে বীপসমূহের পরিথা বরুপ। ঐ সমন্ত সাগরপরিস্ত বীপসমূহের বে পরিমাণ, ততুলা বথামূপুর্ব্ব এক একটী সাগর এক একটী বীপের সমান। এই সকল সাগর অসম্বীর্গ ভাবে ভিন্ন ভিন্নরূপে বাহিরের দিকেত ব্যাপ্ত,—অভ্যন্তরের নহে।

প্রিররতের পদ্ধীর নাম বর্ধিয়তী। তাঁহার সাতটা পুত্র, সকল পুত্রই সচ্চরিত্র। ঐ সকল পুত্রের নাম—ক্ষমীঙ্ক, ইশ্বজিক্স, ইশ্ববাহ, হিরণারেতা, শ্বতপৃষ্ঠ, মেধাতিখি ও বাতিহোত্র। এই সাতটা পুত্রকে প্রিয়ত্রত এক এক করিয়। উল্লিখিত এক এক শ্বীপের আধিপতো অভিক্রেক করেন।

প্রিয়ন্ততের ভাৎকালিক কীর্ত্তি বর্ণন প্রসঙ্গে পুরাকালে এইরূপ লোক গীত হইমাছিল বে, এক ঈর্ষর ভিন্ন কে প্রিয়ন্তক্তত কার্য্যের অপ্লকরণ করিতে পারে ? তিনি অককার দূর করিবার
লক্ত শ্রমণ করিতে ক্ষিতে নিজ চক্রাগ্র হারা সাতিটী সমুদ্র থমন
করিমাছিলেন। তিনি বিভাগক্রমে খীপ রচনা করিমা পৃথিবার
সংস্থান নির্ণয় করিয়া গিরাছেন এবং প্রোণিবর্গের বিপদ্ বারণ
বা অপ্রবিধা দুরীকরণজন্ত নম্ব, নমী, পর্মত, বর্ষ প্রভৃত্তি হার।
প্রত্যেক খীপের সীমা নির্দেশ করিয়া দিরাজেন।

°এই বিৰন্ধে ভাগৰতে এইৰূপ শ্লোক পাওয়া বায়:—

প্রিয়ত্তক্তং কর্ম কোৎমুক্যাবিনেধরম্। বো নেমিনিরৈরকরোচ্ছারাং মন্ সপ্তবারিধীন্ । ভূসংস্থানং কৃতং যেন সরিদিসরিবনানিভি:। সীমা চ ভূতনির্ভা বীপে বীপে বিভাগদা: ॥"

(ভাগবত ৫৷১ জঃ)

প্রিয়ন্ত বথাকালে পরমার্থচিন্তার ময় হইলেন। পিতার অকুলাসনে পুত্র অন্ধীর ধর্মান্তারে অব্বীপবাসী প্রজাগণের প্রতিপালন করিছে সাগিলেন। অন্ধীর অপার পূর্বাচিত্তির পালিগ্রহণ করেন। পূর্বাচিত্তির গর্ভে রাজবি অন্ধীর হইতে নর্মটী পুত্র উৎপর হর। তাহাদের নাম, বথা—নাভি, কেন্দুকর, হরিবর্ব, ইলার্ভ, রম্যক, হিরগ্র, কুরু, ভদ্রার্থ ও কেত্মাল। অন্ধীরের এই সকল পুত্র মাতার অমুগ্রহে স্থভাবত্তই দৃচ্দেহ ও বলশালী হইরা উঠেন। অন্ধীর ঐ পুত্রগণের মধ্যে বথাকালে পৃথিবী ভাগ করিয়া দেন। পুত্রগণ বিভাগক্রমে নিজ নিজ নামান্ত্রসারেই জব্দুবীপের এক একটী বর্ব অধিকার করিয়া লয়েন। উক্ত বর্বাধিপতিগণের পত্নীর নাম বথাক্রমে মেরুদেবী, প্রতিরূপা, উগ্রদংট্রা, লতা, রমাা, স্ক্রমা, নারী, ভদ্রা ও বেদদীধিতি। এই রমণীগণ সকলেই মেরুর কক্সা।

বীপসমূহের মধ্যে অভ্বীপই প্রথম। ইহার দীর্ভতা নিগুভ বোজন এবং বিস্তার লক্ষবোজন, এই দীপ কমলপতের ভাগ চারিদিকে সমান বর্জুলাকার। এই দীপে নয়টী বর্ষ আছে। ইহাদের মধ্যে জন্তাব ও কেতুমাল বর্ষ ভিন্ন প্রত্যেকের বিভার নর সহল্র বোজন। ঐ নববর্ষ আটটী সীমা পর্কতে পরম্পর সুন্দর্র্বপে বিভক্ত।

বর্ষসমূহের মধ্যে ইলাবৃত নামক বর্ষ অভ্যন্তর বর্ষ। উহার মধ্যক্ষে পর্বাত-কুলের রাজা স্থবর্গমর স্থানের গিরি বিরাজ-মান। ঐ স্থানকর উচ্চতা উক্ত বীপের বিভারপরিমাণের তুল্য লক্ষবোজন। উহার মন্তকের দিকে বাত্রিংশৎ সহস্র বোজন, এবং মূলে সহস্রবোজন বিশ্বত। ভূমির মধ্যভাগেও তত সহস্রবোজন দেখা বার। উক্ত পর্বাত ঐ প্রকারে ভূমওল-রূপ প্রকাত ক্ষদের কর্মিকারবৎ প্রতিভাত।

ইলাবৃত্বর্ষের উত্তরভাগে উত্তরাদি দিক্কামে ক্রমশ: নীল, খেড, শৃন্ধবান এই তিন পর্কাত এবং বধাকামে রমাক, হিরগার ও কুল নামক বর্ষজ্ঞার সীমা পর্কাত অরপ। উক্ত তিন পর্কাত পূর্কাদিকে দীর্ঘ। উহাদের উক্তর পার্বে লবণ সমূদ বিভাত। ইহাদের বিভার দিস্হালবোলন। অগ্রন্থিত পর্কাত হুইতে পরবর্ত্তী পর্কাত কেবল একাদশ অংশ দৈর্ঘা পরিমাণে হুত্ব। এইরপে ইলাব্ত বর্ষের দক্ষিণে নিষধ, হেমকুট এবং হিমালয় নামে তিন পর্বত বিশ্বমান। ঐ তিন পর্বত উল্লিখিত নীলাদি পর্বতের ভার পূর্বাদিকে আরত এবং প্রত্যেকে তিন সহস্রয়েজন উরত। উক্ত পর্বতেরর ষধাক্রমে হরিবর্ষ, কিম্পুক্ষবর্ষ এবং ভারতবর্ষের সীমা পর্বত। এইরপে উক্ত ইলাব্ত বর্ষের পূর্বা ও পশ্চিমদিকে বথাক্রমে মাল্যবান্ ও গদ্ধমাদন পর্বত অবহিত। এই পর্বত হুইটী—উক্তরে নীল ও দক্ষিণে নিবধ পর্বত পর্যান্ত দ্বীর্ষ ও ছই সহস্রয়োজন বিস্তার্গ। এই ছই পর্বতেই বথাক্রমে প্রক্তিয়াল ও ভল্লাব্যর্বের সীমাপর্বতেরপে বিরাজিত।

স্থানেকর চারিদিকে মন্দর, মেকমন্দর, স্থার্থ ও কুমুদ নামে চারিটী অবইন্ত পর্বত বিশ্বমান। ঐ পর্বত গুলির প্রত্যেকটার বিস্তার ও উচ্চতা দশহাজার বোজন। উক্ত চারি পর্বতের মধ্যে পূর্ব্ধ ও পশ্চিম দিকের পর্বত দক্ষিণোন্তরে বিস্তৃত এবং দক্ষিণোন্তর দিকের পর্বত পূর্বপশ্চিমে আয়ত। উক্ত চারি পর্বতে যথাক্রমে আয়, জম্, কদম্ব ও বট এই চারিটি রক্ষ আছে। ঐ সকল তরুর বিস্তার শতবোজন। উহারা পার্বত্যে পতাকাবৎ একাদশ শত যোজন উচ্চ। উহাদের শাধা সকল সেইরূপ শতবোজন বিস্তৃত। উক্ত রক্ষ চারিটার নিকট চারিটি ব্রদ আছে। তাহার মধ্যে একটা হ্রদ্ধলপ, বিতীয়টা মধুজল, তৃতয়টা ইক্রাস্কল, চতুর্থটা শুদ্ধলল। এই চারিটা ব্রদেরই জল অতি মনোহর। উপদেবগণ এই ব্রদ্ধলসেবনে স্থাভাবিক মহিমমণ্ডিত হইয়াছেন। ঐস্থানে উল্লিখিত চারিটী ব্রদ ভিন্ন চারিটী উন্থানও আছে। তাহাদের নাম,—নন্দন, চিত্ররথ, বৈভাজক ও স্ক্রতভেন্তন্ত।

ঐ সকল উন্ধানে স্থরবরেরা স্থরস্থলরীগণসহ মিলিয়া একসঞ্চে বিহার করিয়া থাকেন। এইরূপ বিহারকালে গন্ধর্কগণ তাঁহা-দের মহিমা গান করেন।

মলর পর্বতের ক্রোড়দেশে দেবচ্যত নামে একট বৃক্ষ আছে। তাহার উচ্চতা একাদশ শত বোজন। ঐ বৃক্ষের অগ্রভাগ হইতে নিরত রাশি রাশি অমৃত ফল পড়ে। সেই সকল ফল পর্বতের চূড়ার মত সূল। ফলগুলির অফলবর্গ বার, তথন তাহার গন্ধ অতি মধুর। ফলগুলির অফলবর্গ প্রচুরতর অবাস রসে এক নদী ক্ষরিয়াছে। ঐ নদীর নাম অফণোদা। অফণোদা নদী মন্দরিশৈলের শিধরদেশ হইতে বাহির হইরা প্র্কাদিকে ইলার্ভ বর্গ প্লাবিক করিতেছে। তবানীর অস্কুচরী বৃক্ষালনাগণ ঐ রনের সেবিকা, তাই তাহাদের অক্ষেপার সৌগন্ধ। তাহাদের অক্ষেপার সৌগন্ধ। তাহাদের অক্ষেপার সৌগন্ধ। তাহাদের অক্ষেপার সৌগন্ধ। তাহাদের অক্ষেপার সোগন্ধ। তাহাদের স্বাক্ষালনাপ্র বিশ্ব বিশ্ব বারা চারিন্ধিকে দশ-বোক্ষান আমোদিত হয়।

জৰ্বুকের কল সকল গলগাত্রবং অতি ছুল। ভাছাদের বীলগুলি অতি শক্ষ। নেই সকল কল উচ্চ হুইতে প্তিয়া ফাটিরা বার; তথন তাহাদের রসে জব্দুনদী নামে এক নদী হর, সেই নদী মেকমন্দর শৈলের লিধর হইতে অযুত্রোজন অন্তরে ভূমগুলে পড়িরাছে। ঐ নদী যথার পড়িতেছে, তথা হইতে আপেন দক্ষিণদিকে সমগ্র ইলার্ত বর্ধ ব্যাপিরা প্রবাহিত হইতেছে। ঐ নদীর মৃত্তিকা তাহার জলরসে অস্থ্রিক হওরায় বায় ও স্থা-সংবোগে বিশেষ পক্ষতা পাইয়া আখুনদ অর্থাৎ স্থবর্ণ পরিণত হয়। ঐ স্বর্ণই অমর ও অমরকামিনীগণের আভরণ।

স্থপার্থ পর্বতের পার্থদেশে মহাকদ্ম নামে এক বৃক্ষ আছে।
তাহার কোটরনিকর হইতে পঞ্চব্যাম পরিমিত পাচটি মধুধারা
ঐ শৈলশিথরে পড়িয়া পশ্চিমত্ব ইশার্তবর্ষকে স্বীয় সৌগদ্ধে
আমোদিত করিতেছে। যাহারা ঐ পর্বতের মধুধারা সেবন
করেন, তাঁহাদের মুগ-মাকতে চারিদিকের শত্যোজনবাাপী ভূভাগ
করাসিত।

কুমুদ পর্বতে শতবলশ নামে একটী বটবিটপী আছে। তাহার স্বন্ধদেশ হইতে অধাদিকে দদি, হয়, য়ত, গুড়, অয় প্রভৃতি এবং বসন ভ্ষণ শয়ন আসনাদি অভীপ্যিত বস্তু দোহনকারী নদ সকল ঐ পর্বতের অগ্রভাগ হইতে বাহির হইয়া তাহার উত্তর দিক্ত্ ইলার্ডবর্ষবাসী লোকদিগের অশেষ উপকার সাধন করিতেছে। তথাকার অধিবাসী প্রজাবর্গ ঐ সকল সামগ্রী সেবন করিয়া কথন অঙ্গবৈক্ষরা, ক্লান্তি, ঘয়, জরা, রোগ, অপমৃত্যু, শীত বা উষ্ণজন্ম বৈবর্ণা এবং অভাভ উপসর্গ কিছুই ভোগ করে না। এপ্রভ ঐ বর্ষের অধিবাসীরা যাবজ্জীবন কেবল স্বণভোগে দিন যাপন করে।

অগ্নীপ্রের যে নয় পুত্রের নামে নয়টী বর্ষ চলিয়াছে, ঐ পুত্র
গণের মধ্যে নাভি জোষ্ঠ, নাভি বর্ষাধিপতি হইলেও তাঁহার অধিকৃত বর্ষ তদীয় পোত্র ভরতের নামেই প্রাস্কি হইয়াছে। নাভির
পূত্র ঝ্বছ, ঝ্বত হইতেই প্রসিদ্ধ ভরতরাজের জন্ম। এই
ভরতের নামাম্নারেই এই বর্ষ ভারতবর্ষ নামে অভিহিত।
ভরতের পিতা ঝ্বত অজনাভ নামক একটি বিশিষ্ট প্রদেশে
প্রভূষ করিয়াছিলেন এই জয় তাঁহার অধিক্রত সমগ্র বর্ষ অঞ্জনাভ
নামে প্রথিত ছিল। পরে তংপুত্র ভরত রাজা হইলে তাঁহারই
নামে এই বর্ষ বিগাত হইয়াছে।

এই ভারতবর্ষে বহু নদ নদী ও বহুতর শৈলপ্রেণী আছে।
শৈলসমূহের মধ্যে মলার, মদলপ্রস্থ, মৈনাক, ত্রিকৃট, গুবহু,
কৃটক, কোণ, সহু, দেবগিরি, গুৱামুথ, শ্রীশৈল, বেছট, মহেল্ল,
বারিধার, বিদ্ধা, শুভিনান, গুলিগারি, পারিপার, ল্রোণ, চিত্রকৃট,
গোবর্দ্ধন, রৈবহুক, করুত, নীল, কোকামুণ, ইল্লকীল, ও
কামগিরি এই কন্মী পর্যভই জনেকটা প্রথিত। এতম্ভির আরও
বে কত শত পর্যত আছে, তাহার ইন্তর্জা হর না।

XVII

উক্ত শৈল সকলের নিত্মদেশ হইতে কত**ু** যে নদ নদী বাঞ্রি হইরা ভারতবর্ষ বন্ধ বিধৈতি ক্রিতেছে, ভাছারও সকলের সংখ্যা হওয়া অসম্ভব। সেই সকল নদ নদীর জলেই ভারত-সম্ভানেরা পানাবগাহন সমাধান করেন। ভন্মধ্যে চন্ত্রৰণা, ভাষপণী, व्यवस्थित, कृष्टमाना, देवहात्रमी, कारवली, द्वशा, भवविनी, मर्कवावर्खा, कृष्ण छता, कृष्णदेवशा, खीमवर्शी, त्शानावती, निर्किका, भरवाकी, जाभी, (त्रवा, स्वत्रमा, नर्चका, हर्चवजी, स्वक्-नम (अक्षभूत), त्नागनम, महानमी, त्वमच्चि, जित्नामा, त्कोनिकी, मन्त्राकिनी, यमूना, नत्रवाठी, नुनवाठी, शामाठी, नत्रम, अधवाठी, ষষ্ঠবতী, সপ্তৰতী, স্থৰমা, শতক্ৰ, চক্ৰভাগা, মৰুৰুধা, বিভক্তা, व्यक्तिकी, এवः विश्वा এই छनि महाननी। डिक महाननीमभूर १ व নামোচ্চারণ মাত্রেই লোক পবিত্র হয়। পরক্ত ভারভবরীয় প্রস্লাগণ এই জলে অবগাহন করিয়া থাকেন। প্রক্ষেরা এই বৰ্ষে জন্ম লইয়া স্ব স্ব সাজিক, রাজসিক ও ভাষসিক কর্ম ছারা আপনাদের দিবা, মামুধী ও নারকী গতিই নিশাণ করিয়া থাকে। যে বর্ণের বেরূপ মোক্ষ প্রকার নির্দিষ্ট আছে, ভদত্ব-সারে মুক্তি এই বর্ষেই হইরা থাকে। যাবতীয় বর্ষ মধ্যে ভারতবর্ষকেই কর্মকেত্র বলা যায়। অন্ত আট বর্ষ স্বর্গীদিগের পুণ্যশেষে উপভোগের স্থান।

জৰ্বীপ এই ভারতবর্ষ ভিন্ন অস্তান্ত অইবর্যে সকল পুরুষ বাস করেন, তাঁহাদের পুরুষ পরিমাণে অসুতবর্ষ পরমান্ত্ অযুত হন্তীর তুল্য বল এবং বজ্ববং স্থান্ত শ্বীরগঠন। ঐ শরীরে এরূপ বল, যৌবন এবং হর্ষ যে, ভন্ধারা মহাস্থরতব্যাপারে গ্রী-পুরুষ অত্যধিক প্রস্থানিত হয় এবং সভোগান্তে একবংসর আরু: শেষ থাকিতে ভাছাদিগের কলত্র একবার মাত্র গর্ভ ধারণ করে। এইরূপে বিষয়স্থের উৎকর্ষ হেতু এই সকল বর্গের পুরুষেরা ত্রেতার্গের ক্রায় পরমস্থের কাল বাপন করে।

এই স্কল বর্ষে দেবাধিপাণ বাবা অন্তচর পরিচারকদিগের বারা মহা উপচারে অর্চিত হন। বেচ্ছামত আপ্রমায়তনসমূতে, গিরি-গহরের এবং অমণ অলালরাদিতে জীড়া করিয়া বেড়ায়। তথার স্বর্জনারীগণের অলজীড়া, অস্তান্ত কেলিকলা বা কামোনাদিনীদিগের সবিলাস হাত ও লীলাললিত বিলোকনে তথাকার পুরুষদিগের চিত্ত ও নেত্র আক্রষ্ট হইয়াধাকে।

এই সকল বর্ষপ্তি বে সমত্ত আশ্রম আরতনে প্রুষপুলবদিগের বিহারের কথা বলিলাম, তাবার শোভা বে কত চমৎকার
তাহা আর কি বলিব ? তথাকার ভরুরাজির শাখা-প্রশাধাগুলি
সকল ঋতুর পুলাওবকে, কলে ও নবীন কিশলরসক্তরে সমৃদ্ধির
সহিত পরপর নত হইরা পড়িরাছে; সেই শাধার আবার বত
লতা আশ্রের লইবাছে। আর সেই সকল জলাগর। সে পোতা

অবর্ণনীয়। বিক্সিত নব নব কমলকুলের সৌরভ—রাজহংস, জলকুরুট ও কারওব প্রভৃতি কিংলকুলের কলালাপ এবং প্রমন্ত্র নিকরের মধুর ঝ্রার, এই সকলে তথাকার সেই সরসীসমূহের শোভা অতুলনীয়।

উল্লেখিত নৰ বৰ্ষেই ভগৰান্ নারায়ণ বিভিন্ন মূর্বিতে বিরাজিত। তল্মধ্যে ইলাবৃত বর্ষে ভগৰান্ ভবই এক মাত্র পুরুষ। সেধানে অন্ত পুরুষ নাই। কারণ বে সকল পুরুষ ভবানীর শাপের বিষয় বিদিত আছেন, তাঁহারা কখন সে স্থানে প্রবেশ করেন না। যে সকল পুরুষ না জানিয়া তথার প্রবেশ করে, তাহারা তৎক্ষণাৎ ত্রীষ প্রাপ্ত হয়। ঐ বর্ষে ভগৰান্ ভব — ভবানী এবং তাঁহার অধীন সহস্র অর্ক্ত্ব সংখ্যক ত্রীগণ কর্মক সর্কতোভাবে সেবিত হন।

ভদ্রাথ বর্ষে ধর্মপুত্র ভদ্রপ্রবা নামে বর্ষপতি এবং তাঁহার প্রধান প্রধান সৈবকের বাস। ভগবান্ হয়প্রীব মূর্জি ইইাদিগের আবাধা।

হরিবর্বে ভগবান্ নৃসিংহ মৃর্তিতে অবস্থিত। পরম ভাগবত প্রস্থাদ এই বর্ষবাসী প্রজাগণের সহিত ভক্তিভরে তাঁহার উপাসনা করেন।

কেতুমাল বর্বে ভগবান্ কামদেবরূপে বিরঞ্জিত। লক্ষী, সংবংসর এবং তাঁহার কল্পা রাত্র্যভিমানিনী দেবতা ও তাঁহার পুত্র দিবসাভিমানী দেবগণের প্রিয়সাধনই তাঁহার ইছে। সেই সকল দিবসাভিমানী দেবগণের সংখ্যা ঘট্ত্রিংশং সহত্র। এ বর্ণের অধিপতি মহাপুরুবের চক্রত্তেজে দিবসাভিমানী কল্পাগণের মন উদ্বিধ্ব হয়, তাহাতে তাহাদের গর্ভ নই হইয়া সংবংসরাজে পতিত হইয়া যার।

রমাক বার্বর অধিপতি মহ। তগবান্ তাঁহাকে মৎজম্রি প্রদশন করেন। মহু অভাপি ভক্তিভবে সেই মৃত্তির উপাসনা ক্রিলা থাকেন।

হিরগার বর্ষে ভগৰান্ হরি কুর্মাণরীর পরিগ্রহ করির। অব-থিত। পিভূগণের অধিপতি অধ্যমা এই বর্ষবাসী প্রজাগণসহ নিরস্তর জাহার উপাসনা করেন।

উত্তর কুক্রবর্ধ জগবান বজ্ঞপুক্রই বরাহমূর্ত্তি ধরিলা অব-প্রিত। দেবী পৃথিবী কুক্সগবসহ অক্রিভাবে তাঁহার অর্চনা করেন। কিচ্চুক্রব কর্বে পরম ভাগবত হন্মান্ ঐ বর্ববাসী প্রজাগণসহ ভগবান্ প্রীরামচক্রের উপাসনা ক্রিভেছেন।

(ভাগৰত ৫ 📭 ১---১৯ম:)

জৰু ৰীপজ্ বৰ্ধবিভাগের সংক্ষিপ্ত বিবরণ ৰসা হইল। একংগ ভাগৰত মতে জ্ঞান্ত ৰীপক্ ক্ষিকাপের বৃত্তান্ত সংক্ষেপে বিবৃত্ত করা বাংতেছে।

অধ্বীপের পর প্রক্ষীপ । প্রক্ষীপ অধ্বীপ অপেকা
বিশ্বল বিস্তুত । এই বীপে একটা স্থাৰ্থমর প্রকার আধিপতি ।
প্রিররতের বিতীর পূত্র ইয়জিন্দ এই বীপের অধিপতি ।
তিনি উহাকে সপ্তবর্ধে ভাগ করিয়া আপনার এক এক প্রেকে
এক এক বর্ধের অধিপতি করিয়া দেন । তাহার সাভ প্রের
নামাল্লসারেই সেই সাভবর্ধের নামকরণ হয় । বথা—শিব,
বর্ম, স্কেন্ড, শাব, ক্মেন, অমৃত এবং অভয় । এই সপ্তবর্ধে
বদিও বহু নদ নদী ও শৈলপ্রেনী আছে, তথাচ সাভটী নদী ও
সাতটী পর্যাতই এধানে প্রেণ্ডাত । সেই সাভ নদীর নাম—
অরুণা, নুমণা, আদির্দী, সাবিত্রী, স্থপ্রভাতা, বভস্করা এবং
সভাস্তরা । সেথানকার সেই সাভ সীমাণর্বভের নাম—বঞ্জকূট,
মণিকূট, ইস্তাসন, জ্যোভিলান্ স্থবণ, হিরণ্ডার এবং মেবণাল ।
এই সকল বর্ধবাসীরা ত্রিবেদমর স্থেগ্র উপাসনা করিয়া থাকেন ।

শাব্দনীপের অধিপতি ছিলেন প্রিয়্রতায়্বল ষ্প্রবাহ।
তিনি এই দ্বীপকে আপনার সাজপুত্রের মধ্যে তাহাদের নামায়সারে সপ্তবর্ধে বিভাগ করিরা ছেন। সেই সপ্তবর্ধের নাম—
ক্রেরাচন সৌমনত্ম, রমণক, দেববর্ছ, পারিভদ্র, আপ্যায়ন ও
অভিক্রাত। এই সাতবর্ধের সাতটী প্রধান সীমাপর্মতের
নাম—ক্রেরস, শতপৃন্ধ, বামদেব, কুন্দ, কুম্দ, পুন্দাবর্ণ এবং সহস্র
প্রতি। সাতটী প্রধান নদীর নাম—অন্তমতি, সিনীবালী,
সরস্বতী, কুহু, রজনী, নন্দা এবং রাকা, এই বর্ধবাসী লোক
সকল শ্রুতিধর, বীর্যধর, বস্কুর এবং ইবুদ্ধর নামক চতুর্মর্ণে
বিভক্ত। তাঁহারা বেদময় সোমদেবের উপাসনা করেন।

কুশহীপ, স্থরোদসাগরের বহির্জাগে, উহা পুর্ব্বোক্ত দ্বীপ অপেকা দ্বিপা। প্রিয়ন্ত্রতের পুত্র হিরণারেতা কুশ্দীপের রাজা। তিনি তাঁহার সাতপুত্র মধ্যে নিজ অধিকৃত দ্বীপ সাতভাগে বিভাগ করিছা দেন। ঐ সপ্ত পুত্রের নামাসুসারেই তথার সাতটী বর্ব প্রথিত। বথা—বস্থ, বপ্লদান, দৃঢ়ক্লচি, নাভিগুপ্ত, সমাত্রত, বিপ্রনাম ও বেদনাম। এই সাত জনের সাতবর্বে সাতটী গিরি এবং সাতটী প্রসিদ্ধ নদী আছে। এই বর্ষের অধিবাসীরা কোবিদ, অভিযুক্ত ও কুশক প্রভৃতি নামধারী হইরা কর্মকেশিলে অজির অর্চনা করেন।

ক্রৌঞ্বীপের অধিণতি প্রিরত্তপুত্র মৃতপুষ্ঠ। তিনি ত্র বীপকে বীর সপ্তপুত্রের নামে সপ্তবর্ধে বিভাগ করির। সেই সকল বর্ধে সেই সাতপুত্রকে রাজা করিরা দেন। ত্রী সাত পুত্রের নামে প্রচলিত সাতটী বর্ধের নাম—আজা, মধুরুহ, মেষপুষ্ঠা, স্থধামা, প্রাজিষ্ঠ, গোহিতবর্ণ এবং বনম্পতি। এই সাতবর্ধেও সাত্রটী প্রসিদ্ধ পর্কাত ও নদী আছে। ত্রী বর্ধবাসী লোকেরা পুক্ষ, ধ্বত, প্রবিণ এবং দেবক এই চারিরর্ণে বিভক্ত। শাক্ষীপের রাজা প্রিয়রভপুত্র মেধাতিখি। এই বীপের বিস্তার ৩২ সক্ষরোজন। মেধাতিথি ঐ বীপকে স্বীর সাত পুত্রের নামে বধাক্রমে পুরোজব, মনোজ, বেপমান, ধুমানীক, চিত্ররেক, বছরপ এবং বিশ্বাধার—এই সাতবর্বে বিভাগ করিয়া প্রত্যেককে এক একটা বর্বের রাজা করেন। এই সপ্রবর্বেও সাতটা সীমাণ্র্কভ এবং সাতটা প্রসিদ্ধ নদী আছে। উক্ত বর্ববাসী মহুযাগণ—খৃতব্রত, সত্যব্রত, দীনব্রত ও অন্ব্রত, এই চারিবর্ণে বিভক্ত।

পুকর দীপের অধিপতি প্রিয়ন্ত্রতের পুত্র বীতিহোত্র। তাঁহার রমণক ও ধাতক নামে ছই পুত্র হয়। বীতিহোত্র রাজা ঐ দ্বীপকে ছই বর্ষে বিভাগ করিয়া আপনার ছই সম্ভানকে বর্ষপতি নিযুক্ত করেন। (ভাগবড এ)১২১১৬১৯ ও ২০ অ:)

পৃথিবীত্ব বর্ষবিভাগ সম্বন্ধে সংক্ষেপে ভাগবত মতই উক্ত করা হইল। মার্কণ্ডেয়, বরাহ, বামন, কৃষ্ণ প্রাভৃতি বাবতীয় পুরাণগ্রন্থেই অলবিস্তর বর্ষবিষয়ণ দেখিতে পাওয়া বার। বাহলা-ভয়ে সে সকল আর এখানে উদ্ধৃত হইল না।

বর্ষতীতি বৃষ অচ্। ৫ মেখ। (কেমচক্র) (ত্রি) ৬ বর্ষক মাত্র।

"নুমাম্যতীক্রং নুমনীরপাদং

সরোজমনীয়সি কামবর্দ্ম " (ভাগৰত অং১।২১)

৭ বংসর। প্রভবাদি ষষ্টি সংবৎসরের বিষয় এবং সেই সেই
বংসরে পূজা বৃষ্টি প্রকার দেবতার নামাদি সংবৎসর শব্দে দ্রষ্টবা।
বৃষ্ঠিক (জি) বর্বণশীল। বর্বার স্থায় পতনশীল। ২ বংসরসম্বন্ধীয়। বেমন পঞ্চবর্বক।

বর্ষকর (গং) > মেঘ। ২ বৃষ্টিদানকারী।

বর্ষকারী (ক্রী) ৰগং তৎস্চনং রবেণ করোতীতি বর্ষ-কূট, গ্রীপ্। বিলিকা। (হেম)

वर्षकर्ण्यम् (ज्ञी)वर्षगकार्षा। २ वरमज्ञक्रा।

वर्षक।म (११) बृद्धि व्यार्थनाकाती।

वर्षकारमष्टि (११) शागरखन । (आवः (खोः २।२००)

वर्षकांसी (जी) बीतक। (वश्रकनि°)

বৰ্ষকৃত্য (ত্ৰি) বংসত্তে আচরণীর শান্ত্রবিহত কার্য্যাদি।

বর্ষকে জু (পুং) বর্ণজ বৃট্টো কেতুরিব সতি বর্ণে ভূরিল;উৎপর-থাদজ তথাক। রক্তপুনর্নগা। (রাজনি⁴) ২ জনর্কনংশীয় কেতুমানের পুত্র। (জরিবংশ ৩২।৪০)

বর্ষকোষ (পুং) বর্ণস বংসরস্ত কোব ইব সর্ববর্ধনামবনাৎ তথান্বস্ত। > দৈবজ্ঞ। (শনর্কা) বর্বস অব্ভৃতি কণ-ইব কোবঃ। ২ মাব। (শন্মবানা)

বর্ষসিরি (গ্রু) বর্ষপর্কত। [বর্ষশন্ধ দেশ] বর্ষস্থা (ডি) ১ বৃষ্টনাশকারী। ২ পরন। বৰ্ষজ (ত্ৰি) বৰ্ষাৎ আডমিছি জন-ড। ১ বৃটিলাড। ২ বংনিদ্ৰাড, লগু দীপলাড। ৩ দীপাংশুলাড। ়০ মেৰলাড। বৰ্ষণ (ফ্লী) ব্য-লাট। ১ বৃটি।

ंजरमव मूक्ष्ण्डः नर्सर त्रमः देव कक्ष्मात्र वर ।

রণনাপ্যারকং ভাষং ক্তম বেধার তে নমঃ র"(নার্ক"পু" ১০৪।২১) ২ বর্ষোপল। (ত্রিকা")

বৰ্ষ[ণি(জী) র্য-মনি। ১ বর্জন। ২ ছড়ি। (উচ্ছন) ০ ফ্রড়। ৪ বর্গনঃ

বর্ষ**ার (শুং) ১ মেখ। ২ খোজা বাদ ৷ ৩ জন্তঃপুররকী** ৷ বর্ষধর্ষ (শুং) ১ জন্তঃপুররকী ৷ খোজা বাদ ৷

বর্ষগার (পুং) নাগাহরতের।

वर्गनात्राधत (वि) स्पर्।

বৰ্যনিৰ্বিজ (জি) বৰ্ণকারী। বৰ্ণক। 'নিৰ্ণিক্শকো দ্বনাটা নিৰ্ণিডিরিবিডি ভলাবত্ব পাঠাং, বৰ্ণণ দ্বনা বেখাং তে বৰ্ণনিৰ্ণিক্ষো বৰ্ণকাঃ।' (বক্ অংভাঃ সারণ)

বর্নপ (পুং) বর্ণতি।

বর্ষপতি (কু) বর্ষত পতি:। বংসরাধিপতি প্রবৃগণ। বর্ষপ্রবেশে কর্ষা চন্দ্র প্রাকৃতি গ্রহণণ এক এক বর্ষের আধিপতো
অধিষ্ঠিত হইরা থাকেন। কোন্ প্রহের আধিপতো কোন্ বর্ষ
কিরূপ ফলপ্রদ হয়, তাহার বিভৃত বিবরণ বর্ষাধিপ শব্দে দ্রইবা।
২ বর্ষাধিপতি রাজগণ। পৃথিবী সপ্তবীপে বিভক্ত, এই সকল
বীপের ভূবিভাগগুলি ভিন্ন ভিন্ন নামে বহু বর্ষে পরিচিত। ঐ
সকল বর্ষের অধিপত্তিগণ বর্গপতি সংক্রার অভিহিত। বির্ব দেখ]
বর্ষপান্ (রী) পঞ্জিকা।

বর্ষপর্ববিত (গ্রুং) বর্ষাণাং ভারতাদীনাং বিভালক: পর্কতঃ, মধ্যপদলোপী সমাসঃ। কবিভালক গিরি।

'হিমবান্ হেমকুটণ্ট নিষধো মেলবেৰ চ।

চৈত্ৰ: ক্লী চ শুলী চ সবৈতে বৰ্ণপৰ্বতাঃ ॥' (হারাক্লী)
বৰ্ষপাকিন্ (গুং) বৰ্ষে বৰ্ষাকালে পাকোহতাতীতি বৰ্ষণাক-ইনি । আয়াতক বৃক্ষ । (হেম) "আয়াতকো বৰ্ষণাকী"।
(বৈভক্ষসমালা)

বর্ষপুরুষ (পুং) পৃথিধীর বাষভীর বর্ষবাদী বিভিন্ন শ্রেণীর প্রজা। (ভাগবত ৫ কম, ১৮, ২৪, ২৯, ২০ ও ২২ অধ্যার)

বর্ষপুত্প (পুং) ব্যক্তিভেছ। (সংভারকে))
বর্ষপুত্প। (রা) বর্ষে বর্ষণকালে পুত্পা বজাঃ। সহকেবী
দতা। (রাজনি) ইহার বিস্তৃত বিষরণ সহকেবী দলে দেখ।
বর্ষপ্রবেশ (পুং) বর্ষস্ত প্রবেশঃ। নীলক্ষঠতালিকোক্ত
ধ্রণনাবিশেষ। এই প্রশা বারা কর্ষের প্রবেশ হিরীক্তত হয়।
আতক বে লক্ষে লক্ষ্যাহণ ক্রিরাছে, প্রবংশর কোন্-সমর্

ঠিক বংসর পূর্ণ হইরা নববর্ষের আরম্ভ হইল, তাহা ইহা বারা "সম্ভারণে জানা বারু।

বৰপ্ৰবেশ বারা লাতকের বংসরের গুডাওড কলনির্ণর করা বার, বর্ষপ্রবেশ লগ্ধ হির করিয়া বানশ মাসের কোন মাসে গুডাওড কি কল হইবে, তাহা ইহা বারা উত্তমরূপে লানা বায়। তালিকৈ বর্ষ প্রবেশের প্রণালী এইরূপ বর্ণিত আছে —

জন্মসময়ে রবি বে রাশির বত জাংশাদিতে অবহিতি করেন, পুনর্কার রবি বে সময়ে সেই রাশির তত জাংশাদিতে আগমন করেন, সেই সময়ই বর্ধপ্রবেশ সময়। রবিক্ষৃট ছির করিরাও বর্ধপ্রবেশ সময় নির্ণয় করা বায়। কিন্ত তাহা অতি আরাসনাধা। এই রবিক্ষৃট হারা বর্ধপ্রবেশ সময় ছির করিলে অতি ক্ষরণে সময় ছির করিলে অতি

গহগণের গোচরফলের যে তারতমা, তাহা প্রতিবংসর বর্ধপ্রবেশকালীন লগ্ধ ও গ্রহগণের ছিতিহারা নিরূপণ করা যার। প্রত্যেক ব্যক্তির জলমাস হইতে নৃতন বংসর আরম্ভ হইরা থাকে। সচরাচর ৩৬৫ দিনে এক লৌর বংসর গৃহীত হর। কিন্তু প্রাকৃত দৌর বংসর উহা আপেকা আরম্ভ ১৫ দেও, ৩১ পল, ৩১ বিপল, ২৪ অফুপল অধিক। যে বারে বংসর আরম্ভ হর, তাহার পরবারে পরবংসর হইরা থাকে। অভ্যাব জলাদিন হইতে যত বংসর গাত হইবে, তাহা হারা ১ বার ১৫ দও, ৩১ পল, ৩১ বিপল ২৪ অফুপল গুণ করিবে এবং সেই গুণকলে জল্মবার ও দগুদি যোগ করিলে যে যোগকল চইবে, তাহাই বর্ধপ্রবেশের বার ও দগুদি জানিতে হইবে। উক্ত করে বাগ করিলে বদি বারের অভ সাতের অধিক হয়, তাহা ছটলে ৭ হারা হরণ করিরা ১ অবশিষ্ট থাকিলে রবিবার, ২ অবশিষ্ট থাকিলে সোমবার ইত্যাদি বিবেচনা করিতে হইবে।

বর্ধ প্রবেশ নিপদ্ধ করিবার নিরম—
"বর্ধকালাধনার্থং বর্ধপ্রবেশ সমরমান্ধ—
গভাঃ সমাঃ পাদধুতাঃ প্রকৃতিত্বসমাগণাং।
ধ্বেদাপ্তব্চীবুকা ক্ষমবারাদিলংবুতাঃ।

আক্ষপ্রবেশে বারাদিঃ সপ্তভাইৎত্র নির্দ্ধিশেও।"(নীলকণ্ঠতাজিক)
বাহার বে বংসরে বর্ধপ্রবেশ নির্দ্ধি করিতে হইবে, তাহার
সেই বংসরের পূর্বো বন্ধ বংসর অন্তীত হইরাছে, তাহাতে বীয়
চতুর্থাংশ বোগ করিরা একস্থানে রাখিবে। পরে পুনরার অন্তীত
বর্ণাক্তকে ২১ দিরা তাপ করিরা অপকলকে ৪০ বারা ভাগ করিলে
বাহা ভাগকল লক্ষ হইবে,ভাহাকে পূর্বভালিভ অভের সহিত যোগ
করিতে হইবে। এইরূপে বোগ করিলে বে অক্সপ্রেণী হইবে,
ভাহাকে বার, বন্ধ ও পল বিবেচনা করিরা ভাহাতে জন্মবার,
দও ও পল বোগ করিলে বে বার, বত্ত দণ্ড ও বত পল হইবে,

জন্মদিবদে সেই ৰাৱে তত দও ও তত পল সমৰে বৰ্ষপ্ৰাবেশ হইরাছে, হির করিতে হইবে।

বারের অহ বদি সাতের অধিক হয়, তাহা হইলে তাহাকে । দিরা ভাগ করিরা অবশিষ্ঠ অহ গ্রহণ করিতে হইবে। ঐ অক্ষের > রবিবার ২ সোমবার ও সক্ষণবার ইত্যাদি বৃদ্ধিতে হইবে। বর্ণপ্রবেশগণনার নানা প্রকার নিরম আছে। সেই সকল প্রণাণী হারাও বর্ণপ্রবেশ হির করা যায়।

অন্তবিধ—প্রথমে ১ এক, ১৫ পনের, ৩১ এক ত্রিশ ও ৩০ ত্রিশকে গত বর্গাক্ষার গুণ করিরা চারিস্থানে রাখিতে হইবে, এইরূপে গুণ করিলে যে চারিটী গুণফল হইবে, তাহার প্রথম অন্তকে বার, দিতীয় অন্তকে দণ্ড, তৃতীয় অন্তকে পল, চতুর্থ অন্তকে বিপল জ্ঞান করিয়া তাহাদিগের সহিত জন্মবার, দণ্ড, পল ও বিপল আন করিয়া তাহাদিগের সহিত জন্মবার, দণ্ড, পল ও বিপল যোগ করিবে। পরে বিপলের অন্তকে ৬০ দিয়া ভাগ করিয়া লনান্ধ গোগ করিতে হইবে। অবশিষ্ট অবশিষ্ট অন্ত যথাস্থানে রাখিয়া দিবে। এইরূপে আবার পলান্ধকে ৬০ দিয়া ভাগ করিয়া লনান্ধকে দণ্ডাক্ষে ও দণ্ডাক্ষকে ৬০ দিয়া ভাগ করিয়া লনান্ধকে বারাক্ষে যোগ করিয়া অবশিষ্ট অন্ধ পূর্ববিব যথাস্থানে রাখিয়া দিবে।

এইক্লপ গণনা দারা যে কয়টা শ্বশিষ্ট অন্ধ পাকিবে, তাহা দারা বর্ধপ্রবেশের বার, দগু, পল ও বিপল জানিতে পারা যাইবে:

অন্তপ্রকার—৫ পাঁচ, ২ ছুই, ও ৬ ছয়কে গতবর্ধাক ধার। গুণ করিয়া যে তিনটা গুণফল হইবে, তাহাদিগকে তিন স্থানে রাশিয়া দিবে, তৎপরে প্রথম অককে বার, বিতীয় অককে দও ও তৃতীয় অককে পল মমে করিয়া তাহাদিগের সহিত জন্মবার, দও ও পল যোগ করিবে। পরে পলের অককে ৪ দিয়া তাগদিতে হইবে। তৎপর লক্ষাককে দওে এবং দঙাককে ৪ দিয়া ভাগদিতে হইবে। তৎপর লক্ষাককে দওে এবং দঙাককে ৭ দিয়া ভাগদিতে হইবে। অবশিষ্ট অক মধাক্রমে বর্বপ্রবেশের বার, দও ও পল হইবে।

অন্তবিধ — গত বর্ষান্ধকে ১০০৭ দিরা গুণ করিরা সেই গুণকলকে ৮০০ নারা ভাগ করিলে বাহা ভাগলক হইবে, ভাহাই বর্ষপ্রবেশের বার, অবশিষ্ট অন্তব্দ ৬০ দিরা গুণ করিরা পুনর্কার ৮০০ দিরা ভাগ দিলে বাহা লক্ক হইবে, ভাহা দও, এইকপ প্রণালীতে পলাদিও পাওরা বার। পরে উহার সহিত জন্মবার, দণ্ড ও পলাদি বোগ করিলে বর্ষপ্রবেশের বার, দও

নিল্লোক্ত প্রকারেও বর্ধপ্রবেশ ছির করা বার। গভবর্বাক্তে তাছার চতুর্থাংশ বোগ করিরা বারহানে এবং ঐ গত বর্বাক্তকে ২ দিরা ভাগ করিরা ভাগ সন্ধাক্তক সঞ্চরানে এবং দেড়

করিয়া গুণফলকে পলত্বানে রাখিবে। পরে এই সকল বারাদির সহিত জন্মবারাদি যোগ করিলেই সেই সেই অঙ্কারা বর্ণপ্রবেশের বারাদি নির্ণীত হয়।

एव क्क्रिकी निक्रम निर्मिष्ट क्टेन, এই जकन निक्रमंद्र वर्ष-প্রবেশ গণনা করা যার।

নিমে একটা তালিকা দেওৱা গেল, ইহাতে অভি সহজে বর্ষপ্রবেশ স্থির করা বাইবে। ইহা দেখিলে অতি সহকে কোনরূপ গণনা না করিয়া বর্ষপ্রবেশের বার দণ্ডাদি জানিতে পারা गাইবে।

বয়স	বার	मध	পল	বিপল	বয়স	বার	म ७	পল
٥	>	>a	එබ	೨೦	२०	Œ	೦೦	>4
ર	ર	৩১	•	•	२०	8	٥٠	9.
9	9	85	•8	೨೦	ಅಂ	ર	8¢	8¢
8	a	ર	৬	0	80	>	२ऽ	•
a	৬	ک ۹	৩৭	90	00	৬	৫৬	٥٥
৬	9	೨೨	۵	•	೭೦	¢	৩১	90
9	న	86	80	೨۰	9•	8	৬	8¢
ь	•	8	ડર	•	b.o.	>	8२	•
స	*	አ ል	89	•	సం	>	39	>a
					>00	৬	৫২	8•

উল্লিখিত তালিকার বর্ষের অঙ্কের সংলগ্নে যে বার ও দণ্ডাদি লিখিত আছে, তাহাতে সমুবার ও দণ্ডাদি বোগ করিলে বর্ধ-**अर्यन्**वात्र अ मशामि आश स्थ्या याहेरव। > ७ ३ २ , २० अ ৩০, ৩০ ও ৪০, ইত্যাদি বৎসরের মধ্যে বয়:ক্রম হইলে ১০, ২০, ৩০ ইত্যাদি বর্ষের সংলগ্নে বে আছ আছে, তাহাতে ১,২,৩ ইড্যাদি বর্ষের সংলগ্ন আৰু এবং জন্মবার ও দণ্ডাদি বোগ क्तिरण पाणीहे वद्यानत्र वर्षधारमवात ७ मधानि इहेरव। এ স্থলে বক্তব্য এই বে, কখন কখন জন্ম তারিখের পূর্ব্ব বা পর मित्न वर्वश्रातम रहेत्रा थोटक ।

উক্ত প্ৰণালী অসুসারে বৰ্ষপ্রবেশের বার ও দণ্ডাদি নির্দ্ধারিত হইলে সেই সময় অবলয়নপূর্কক জয়পত্রিকার অমূরণ এক-শানি বর্ধপত্রিকা প্রস্তুত করিরা ভাষাতে বর্ধলয় ও ভাৎকালিক >60

XVII

এহন্দুট সংহাপন করিবে। পরিশেষে জন্মকাল হইতে জীত-লগ বত অন্তর ছিল, বর্ব প্রবেশকালে বৃহস্পতি হইছে উক্তা লগ-সঞ্চালন করিয়া তত অন্তর রাখিবে। ইহার কারণ এই রহম্পতি बीरकात्रक, এই निमित्र উरात्र चनत्र अक्टी नाम जीव अवर মানবের জন্মলয়ের উপর উহার এতাদুশ আভর্ষ্য আকর্ষণ-भक्ति प्याद्ध त्व, त्व हात्न छेहा निविद्या यांछेक मा त्कर्म, के नध উহার অন্থবর্তী হইরা থাকিবেই ; স্মুক্তরাং প্রেডি বৎসর বৃহস্পতি যেরূপ এক রাশি করিরা সরে, জন্মগন্ত সেইরূপ এক রাশি হইতে সরিয়া পর রাশিতে যার এবং আজীবন কাল এই প্রকারে উভরের সমনুরতা রক্ষিত হয়। কিন্তু বৃহস্পতির কথন শীম কথন বক্রগতি: অভএব স্থারূপে গণনা করিতে হইলে জন্মকালে বৃহস্পতির ফ ট রাখাদি হইতে বাম বা দক্ষিণাবর্তে জন্মলয় যত অন্তর ছিল, বর্ণপ্রবেশকালে বৃহস্পতির ক্ষুট রাপ্তাদি নির্ণয় করিয়া তাহা হইতে জাতলয় সঞালনপূর্বাক তত অন্তর সংস্থাপন করিবে এবং ঐ সঞ্চালিত লগ্নে গুড়াগুড় গ্রহের বোগ বা দৃষ্টি অনুসারে বর্ষফল বিচার করিতে হইবে। রুহম্পতির ক্ট্ট-অভাবে জন্মকালে বৃহস্পতি হইতে বাম বা দক্ষিণাবর্ত্তের জন্মলগ্র যত অন্তর ছিল, বর্ষপ্রবেশকালে বুহুম্পতি হইতে এ লগ তত-রাশি অন্তর রাখিবে, অথবা বর্ষপ্রবেশকালে যত বয়স হটবে, জন্মলগ্ন তত রাশি সরাইরা অতীত বরসের অভ বে রাশিতে শেষ হইবে, ভাহার পর রাশিতে উহা সংস্থাপন করিবে: অর্থাৎ একবর্ষ অতীত হইরা বিতীয় বর্ষে পদার্পণ করিলে জন্মলগ্ন হইতে দিতীর রাশিতে, পুইবর্ণ জতীত হইরা ততীরবর্ষে পদার্পণ করিলে জন্মলগ্ন হইতে তৃতীর রাশিতে, এইরূপ নির্মে জন্মলগ্রের সঞ্চার হট্যা থাকে। কিন্তু এই প্রকার বুল-গ্ৰনার ব্ধন বর্ধপ্রবেশের পূর্বে বৃহস্পতি অতিচারী হইরা পররাশিতে কিংবা বক্রগতি দারা পূর্বারাশিতে গমন করে, তথ্য গণ্নার ব্যতিক্রম হইবার সম্ভাবনা। উক্তরূপ সঞ্চালিত सम्बन्धरक मन्न करह।

একটা উদাহরণ দেওরা বাইতেছে। উদাহরণ ১৭৫৩ শকে ৭ই আখিন বৃহস্পতিবার ১৭৷৩৫ পল সময়ে ধছুল্গে কোন ব্যক্তির জন্ম হয়। ১৮০৪ শক্তের ৭ই আধিনে ৫১ বংসর অতিক্রম করিয়াবে ব্যক্তি ৫২ বৎসরে পদার্পণ করিয়াছিল। বৰ্ষতালিকা দুষ্টে ঐ অতীত ৫০ বংসরে---

	वात्र,	TO,	পল,	ৰিপল,	অমুপল,
	বংসমুভা	661	>61	>-1	•
>	বৎসর>৷	561	०)।	971	२ 8
()	वदमब्र।	166	891	168	२8 स्क्र

উভাতে ভাহার ৰন্মৰার ও দঙাবি ১১১৭৩৫ বোগ করিলে

১০ বার ২৯ দশু, ২২ পল, ৪১ বিপল, ২৪ অন্তপ্র হর। কিন্ত বীরের অন্ত লাতের অপেনা অধিক, অতএব ঐ অন্তবে ৭ দিরা ভাগ করিলে ৬ অবলিট থাকে। স্থতরাং ৭ই আদিন ওক্রবার ২৯ দণ্ড, ২২ পল, ৪১ বিপল ২৪ অন্তপ্র সমরে ভাহার বর্ধ-প্রবেশ হইরাছিল ঐ সমর গণনা করিরা দেখিলে দেখা যায় যে, তখন মীনরাশির পূর্কদিকে উদর হইরাছে। অভএব ঐ মীনরাশিই বর্ষলয়।

পূর্ব্ধে বলা ইইরাছে বে, উক্ত সময়ে ঐ ব্যক্তি ৫০ বংসর
অভিক্রেম করিরা ৫২ বংসরে পদার্পণ করিরাছিল। ভাষার
কর্মলগ্ন ধন্ধ, ৫০ রাশি সরাইলে শেষ কুন্ত হর এবং তংপর রাশি
মীন, অভএব ৫২ বংসর আরম্ভে পূর্ব্বোক্ত নির্মান্ত্রসারে মীন
রাশিতে ভাষার ক্রমলগ্ন সঞ্চার ইইরাছিল। কিন্ত ১৮০৪ শকালার
আখিন মাসে রহম্পতি অভিচারী হইরা মিশ্বন রাশিতে ছিল,
স্রতরাং ঐরপ কর্মলগ্ন সঞ্চালন করিলে গণনার ব্যতিক্রম হয়।
এছলে ক্রমণনার আবস্তুক। ঐ ব্যক্তির ক্রমলালে রহম্পতি
মকরের প্রায় ২২ অংশে অবছিত ছিল, এবং ভাষার ক্রমলগ্রন্থ
৮০১১৫০, অর্থাৎ র্হম্পতি ইইতে দক্ষিণাবর্ত্তের ক্রমলগ্ন প্রায়
৪০ অংশ অস্তর। ভাষার বর্ধপ্রবেশকালে রহম্পতির ক্র্ট্র

এইরপে প্রতিবৎসর জন্মলপ্রের সঞ্চার হয় বলিয়া জন্মরাশি হইতে গ্রহগোচরফল বিচার করা যার। এক্ষণে ঐ সঞ্চালিত লগ্ন ও বর্ষলগ্ন হইতে যেরূপে ঝাৎসরিক ভভাশুন্ত ফল নিণীত হয়, তাহা অভিসংক্ষেপে বলা যাইতেছে।

এইগণ জন্মকালে গুড ইইরা বর্ধপ্রবেশকালেও গুড ইইনে গুডফলের আধিকা হয়। কিন্তু জন্মকালে গুড ইইরা বর্ধপ্রবেশ-কালে অগুড ইইলে বর্বের প্রথমার্কে গুড এবং শেষার্কে অগুড হয়। আরু বলি জন্মকালে অগুড ইইরা বর্ধপ্রবেশকালে গুড হয়, তবে ব্বের প্রথমার্কে অগুড এবং শেষার্কে গুড ইইরা থাকে।

বণলগ্ধ, জন্মলগ্ধ, সঞ্চালিত জন্মলগ্ধ ও জন্মরালিতে গুড-গ্রহের যোগ বা দৃষ্টি থাকিলে, অথবা তদবিপতি গ্রহণণ গুড গৃহ-গত হইরা গুড়যুক্ত বা দৃষ্ট ইইলে লে বর্ষে বিষিধ প্রকার হথ হর, ইহার বিপরীতে অগুড় হইরা থাকে।

ক্ষমণা বা ক্ষমনাশি হইতে অটম রাশিতে অথবা ক্ষমণানে বে রাশিতে শনি কিংবা মূলল ছিল, সেই প্লাশিতে, বর্বনাথ কিংবা স্কালিত ক্ষমণাথ হইলে সেই বর্বে বিশেষতঃ ঐ লয়ে বদি পাপ-প্রহের বোগ বা দৃষ্টি থাকে তাহা হইলে মানব পীড়াবুক্ত ও বিপদাপন্ন হয়।

क्त्रकानीन अष्टेमक भाभशक वर्षमध्य बाक्टिन वित्नव अञ्च-

ফল হইরা থাকে। বন্ধি বর্ষপ্রবেশের অর্মদন পূর্বের বা পরে পাপগ্রহণণ বক্রী হয় এবং বর্ষলয়ে পাপগ্রহের বোগ বা দৃষ্টি থাকে, তাহা হইলে সেই বর্ষে নানাবিধ কট্ট ও ব্যাধি হয়।

বর্ধপ্রবেশকালে চক্র জন্মরাশিতে জন্মনক্ষত্রবৃক্ত হইর। বর্ধলয়ের চতুর্ধ, বর্চ, সপ্তম, অইম, কিংবা হাদশ গৃহ ভির জন্মগৃহে
অবস্থান করিলে এবং ভাহার প্রতি গুডগ্রহের দৃষ্টি থাকিলে, সে
বর্ষে বিবিধ গুডকল হইনা থাকে। নচেৎ বিপরীত ফল হয়।
বর্ষলাধিপতি, জন্মলাধিপতি, সঞ্চালিত জন্মলাধিপতি ও
জন্মকালীন বলবান্ গ্রহণণ বর্ষপ্রবেশকালে নীচত্ব অথবা তুর্বল
হইলে রোগ, শোক ও অর্থনাশ হয়।

বৰ্ধপ্ৰবেশকালে ধহুল গ্ল শুভগ্ৰহ্মুক্ত বা দৃষ্ট হইলে ধনাগম, কিন্তু পাপগ্ৰহ্মুক্ত বা দৃষ্ট হইলে ধননাশ হয়। জন্ম ও বৰ্ষলগ্লে চতুৰ্থ, বন্ধ, সপ্তম, অইম, কিংবা ছাদশে সঞ্চালিত লগ্ল হইলে অথবা উহাতে যদি পাপগ্ৰহের যোগ বা দৃষ্টি থাকে তাহা হইলে অশুভ হয়।

জন্ম ও বর্ষ এই উভদ্ন লগ্ন হইতে উক্ত স্থান ভিন্ন অন্থ কোন গৃহে জন্মলগ্ন সঞ্চালিত হইলে গুভজাবস্থ হইয়া কিন্তু ঐ সঞ্চালিত লগ্ন জন্মলগ্ন হইতে গুভভাবস্থ হইয়া বর্ষলগ্ন হইতে অগুভ গৃহগত হইলে বর্ষের প্রথমার্দ্ধে গুভ এবং শেষার্দ্ধে অগুভ হইরা থাকে। জার যদি উহা জন্মলগ্ন হইতে অগুভভাবস্থ হইরা বর্ষলগ্ন হইতে গুভগৃহগত হয়, তাহা হইলে বর্ষের প্রথমার্দ্ধে অগুভ এবং শেষার্দ্ধে গুভ হইয়া থাকে। সঞ্চালিত জন্মলগ্ন চতুর্থ কিংবা সপ্তম গৃহগত হইয়া যদি কোন গুভ গ্রহযুক্ত হয়, তাহা হইলে পূর্ক্ষাক্তভাবে অগুভ না হইয়া বরং গুভ হইয়া থাকে। ঐ লগ্ন রবিযুক্ত হইলেও গুভ-ফললাভ হয়।

বর্ষলয়ে লম্মণয়ের সঞ্চার হইলে সম্মান, অপত্যা, রাজপ্রসাদ ও ধনলাভ, প্রতাপর্দ্ধি, শরীরের পৃষ্টি এবং শক্রনাশ হয়। হিতীয় হানে হইলে সম্মান, বশ, অর্থ, বদ্ধু, মুখ এবং স্বাস্থ্য লাভ হয়। তৃতীয় হানে হইলে নিজ উৎসাহে ধন, যশ ও মুথলাভ, ধর্ম্মর্দ্ধি, শরীরপৃষ্টি এবং রাজসম্মান লাভ হয়। চতুর্ঘ হানে হইলে পীড়া, শক্রভয়, ম্বলস্থান লাভ হয়। চতুর্ঘ হানে হইলে পীড়া, শক্রভয়, ম্বলস্থান লাভ হয়। পঞ্চম হানে হইলে আয়য়, ধন ও রাজপ্রসাদ লাভ, প্রতাপর্দ্ধি এবং ধর্মোয়তি হয়। বছ হানে হইলে শক্রত্মি, রোগ, চৌয় বা রাজভয়, ফার্যা ও অর্থনাশ এবং চ্ব্র্মিরশভং অন্থতাপ হয়। সহাম হানে হইলে পুয়, কলত্র, মিত্র ও অর্থনাশ, শক্রস্থারি, কলহা, দ্য়বাত্রা একং উৎসাহভঙ্ক হয়। অইম হানে হইলে শক্রভয়, বর্মার ও অর্থকয়, বজহানি, রোগ, পোক, বিশ্বা বা মৃত্যু হয়। নবম হানে হইলে অর্থনারি,

ধর্মোর্রাভি, পুত্র, ক্লব্র, বন্ধু, বশোলাভ এবং ভাগ্যোদর হয়।
দশম স্থানে হইলে সৌভাগ্য, পদ ও কীর্ত্তি লাভ এবং পরাক্রম
হৃদ্ধি হয়। একাদশ স্থানে হইলে মনস্বাহী, স্বাস্থ্য, সন্মিত্র, পুত্র,
রাজাশ্রের, হর্ষহৃদ্ধি, সৌভাগ্য ও বাহনাদি লাভ হয়। দ্বাদশ স্থানে
হইলে ব্যরাধিক্য, ঋণ বা কারাবাস, রোগ, সজ্জনের সহিত কলহ
ও ওপ্রশক্র বৃদ্ধি হয়। কিন্তু শক্র হইতে অর্থলাভ হইবার
সম্ভাবনা।

জন্মকালে গ্রহণণ তথাদি থাদশ ভাবস্থ ইইরা ধে সকল ফল উৎপন্ন করে, বর্ধপ্রবেশকালেও উহারা সেইরূপ ফল প্রদান করিয়া থাকে। অর্থাৎ ওডগ্রহণণ কেক্সে বা ত্রিকোণে রবি ও মঙ্গল উপচয়ে, এবং শনি, তৃতীর, ষষ্ট, একাদশ ও খাদশ স্থানে থাকিলে ওডফলপ্রাদ হয়।

বর্ষণ ম হইতে আরম্ভ করিয়া দাদশ রাশি দারা দাদশ মাদের ফল দ্বিরীকৃত হইয়া থাকে। যে যে এহ বর্ষলগ্ধে থাকে, অথবা বর্ষলগ্ধকে দৃষ্টি করে, প্রথম মাদে তদন্ত ফলভোগ হইয়া থাকে। এইরূপ যে যে এহ দিতীয়, ভৃতীয় ইত্যাদি গৃহে থাকে, অথবা সেই সফল গৃহকে দৃষ্টি করে, দিতীয় ভৃতীয় ইত্যাদি মাদে দেই সমন্ত গ্রহদত্ত ফল হইয়া থাকে। যে গৃহে কোন এহের যোগ বা দৃষ্টি না থাকে, সেই মাদে সেই গৃহাধিপতির স্থিতি ও ভেডাগুত সম্বন্ধ অনুস্থায়ী ফল হয়।

বর্ষণায় হইতে হাদশ গৃহের যে যে গৃহে মঞ্চল ও শনি থাকে, সেই সংখ্যক মাদে পীড়া বা মন:কট হয়। জন্মকালীন চক্র হইতে গ্রহণত গুডাশুভ ফল নিরপণ করিয়া দেখিতে হইবে যে, কোন্ কোন্বৰ রিষ্ট্রণায়ক। তন্মধ্যে যদি কোন বর্ষে বর্ষণায়, সঞ্চালিত জন্মলয় ও তাহাদের অধিপতিগণ পাপযুক্ত বা দৃষ্ট কিংবা অশুভ গৃহগত হয়, তাহা হইলে সেই বর্ষে মৃত্যু হইবার সাজ্ঞবনা।

বর্ষাধিপানরন—বর্ধ প্রবেশে বর্ধের অধিপতি কোন্ গ্রহ, তাহা ছির করিরা তবে কলাফল নির্পন্ন করিতে হয়। বর্ষাধিপ ছির করিতে হইলে ত্রিরালিপতি কোন্ কোন্ গ্রহ, এবং তাহার মধ্যে কোন্ গ্রহ বলবান্, তাহা নির্পন্ন করিতে হয়। যথন দিবাভাগে বর্ধপ্রবেশ হয়, তখন বর্ধপ্রবেশলয় মেব হইলে রবি, রয় হইলে গুরুল, মিখুন হইলে লনি, কর্কট হইলে ত্রুল, সিংহ হইলে রহলপতি, কল্পা হইলে বুধ ও বুল্চিক হইলে মঙ্গল ত্রিরালিপতি হইয়া খাকে। য়াত্রিতে বর্ধপ্রবেশ হয় বর্ধপ্রবেশ লয় হইলে চল্ল, তাহা হইলে বৃহল্পতি, এবং বৃষ বর্ধপ্রবেশ লয় হইলে চল্ল, মিখুন হইলে চল্ল, কর্কট হইলে মঞ্চল, সিংহ হইলে রবি, কল্পা হইলে তল্লে, তুলা হইলে কল্লে, তুলা হইলে লল্লে, তুলা হইলে কল্লে, তুলা হইলে ভল্লে, তুলা হইলে কল্লে, তুলা হইলে কল্লে তুলা হইলে কল্লে, তুলা হইলে কল্লে তুলা হইলে কল্লে, তুলা হটলে কল্লে, তুলা হটল

দিবা বা রাত্রিকালে বর্ধপ্রবেশ হইলে ধক্স শনি, বকরের মনল, কুন্তের বৃহস্পতি এবং শীলের চল্ল তিরাশিশতি হইরা থাকে।

জন্মলধ্যের অধিপতি, বর্বপ্রবেশলধ্যের অধিপতি, মুস্থাধিপতি ও ত্রিরাশিপতি, নিবাতে বর্বপ্রবেশ হুইক্লে ক্র্বাডোগা রাশির অধিপতি ও রাত্রিতে বর্বপ্রবেশ হুইলে চন্ত্রভোগা রাশির অধিপতি এই পাঁচটা গ্রহমারা বর্বাধিপতির বিচার ক্রিতে হয়।

এই পাঁচ এত্বের মধ্যে পঞ্চবলী বলবারা বলবান্ ইইরা
যে এই লয়কে দৃষ্টি করে, সেই এই বর্ধাধিপতি ইইরা থাকে।
যে এই লয়কে দৃষ্টি না করে, সেই এই বর্ধাধিপতি ইর না। উক্ত
পঞ্চএই তুল্যবলী ইইলে যে এত্বের দৃষ্টি অধিক, সেই এইই
বর্ধাধিপতি ইর। উক্ত পাঁচ এই ইনিবল ইইরা যদি সমান
দৃষ্টি করে, তাহা ইইলে মুহাধিপতি এই বর্ধাধিপতি ইইরা পাকে।
আর উক্ত পঞ্চাইই যদি লয়কে দৃষ্টি না করে, তাহা ইইলে
বলাধিক এই বর্ধপতি ইর। ইহাতে কেই কেই বলেন যে,
বল ও দৃষ্টির সমানতা ও অভাব ইইলে দিবাতে প্র্যাত্যাগ্য
রাশি রাশিপতি ও রাত্রিতে চক্তভোগ্য রাশিপতি বর্ধাধিপতি হয়।

বর্ণপ্রবেশে বোড়শ প্রকার যোগ নির্দিষ্ট হর্রাছে, এই সকল যোগহারা গুভাগুড ছিন্ন করা যায়। যোগ সকলের নাম বথা—> ইছবাল যোগ, ২ ইন্দ্রার বোগ, ৩ ইছশাল যোগ ৪ ঈশরাফ যোগ, ৫ নক্তযোগ, ৭ যময়াযোগ, ৮ ময়্মূর্ড হোগ, ৯ কম্পূর্ণযোগ, ১০ গৌরিকবৃল্যোগ, ১১ বলাসরযোগ, ১২ রজ-বোগ, ২৩ হুকালিকুখ্যোগ, ১৪ চুখোখদ্বীর্যোগ, ১৫ ভ্রবীন- বোগ, ১৬ কুছ্বোগ, মতাক্তরে হুন্ধযোগ।

এই সকল যোগের বিশেষ বিষয়ণ দীলকণ্ঠোক্ত তাজিকে বর্ণিত হইরাছে। এই সকল বোগ নির্ণন্ন করিরা সহম হিন করিতে হয়। সহমএ ০০ প্রকার, তৎপরে বর্বপ্রবেশের দশা নিরূপণ করিরা কলাফল হিন্ন করিতে হয়। বর্বপ্রবেশে বর্যকুপ্রলী ও জন্মকুপ্রলী এই উচ্চন্ন দেখিরা কল ছির করা আবস্তক, কেবল বর্বকুপ্রলী দেখিয়া কল নির্ণন্ন করিলে তাহা মিলিবেনা, জন্মকুপ্রলীয় সহিত সক্ষ বিচার করিলা কল নিরূপণ করিতে হইবে। ব্লীলক্ষ্ঠতাজিক)

বর্ষপ্রাবন্ (তি) অভাধিক র্টিণাত। (তৈভিনীনত্রা ৬।৬১০।১)
বর্ষপ্রিয় (গুং) বর্ষো বর্ষণং প্রিরং বন্ধ। চাতকগন্ধী।(ত্রিকা ও
বর্ষক্রল (ক্লী) বংসরের ক্লাকল। [বর্ষ ও সম্পাদর ক্রেমীর।
বর্ষক্রজ্ব (গুং) অপ্তর্মপ্রতি। পৃথক্ স্থক্ জনপদের ক্রমীরর।
(ভাগবত ১০।৮৭।২৮)

বর্ষমর্য্যাদাগিরি ('গুং) বর্ণসন্তের সীলাপর্বান্ত।

(कार्यक्ष धार गरक)

বৰ্ষমাত্ৰ (অব্য) এক বৎসর। वर्षस्मान ् (पूर) वृष्टित्रनातः। (जन्म >२। >। ४२) বর্ষবরু (পুং) বরতীতি বর আবরণে আচ, বর্বভ রেভো বর্বণভ বর আবরক:। এক, চলিত খোলা। "নটং ব্ৰব্বৈৰ ছুৰাগণনভাৰাদপভ ত্ৰপা-

ম্বঃ ক্ৰুকিক্তুক্ত বিশতি ত্ৰাসালয়ং বামন: ।"

(त्रप्रावनी २ व्यथाय)

वर्षवर्द्धन (ही) वहरमत वृद्धि । वर्षवृद्ध (जि) वरमावृद्ध । विनि वन्नरत वष् । বর্ষবৃদ্ধি (নী) বর্ষত বৃদ্ধিরাধিকাং বত্র। জন্মতিথি। [বিশেষ বিবরণ জন্মতিথি শব্দে দেথ] ২ বরোবৃদ্ধি। বর্ষশত (রী) শতান। বর্ষশভাধিক (ত্রি) শতান্দেরও অধিক। वर्षमङ्ख्य (बि) मश्य वरमत्र । वर्षा (जी) वर्ता वर्षणमञ्जाल हेलि वर्ष-व्यर्णमामियामन्, जान, বৰা ব্ৰিরজে ইভি (বৃভ্ বদীতি। উণ্ ৩৬২) ইভি সঃ, ভভৱাপ্। चनामभाउ चडू। পर्गात्र--शार्हे, वनकान, जनार्ग, छार्हे, মেগাগম, খনাগম, খনাকর। (শব্দর্ভা •) সৌরপ্রাবণ ও সৌর-ভাজ এই মাস ধরাত্মককালই বর্বাকাল। "নভাশ্চ নভজ্ঞ বাৰ্ষিকার্ডু: "(মলমাসতব্ধু ১ শ্রুতি) এই বর্ষাকাল দক্ষিণায়ন, हेहा (पवजापिरगत्र त्रावि।

व्यावारामि मात्र ठञ्डेद्राप्यक कानात्क वर्षा करह । व्यावार, শ্ৰাৰণ, ভাত্ৰ ও আৰিন মাস। চাতুৰ্মান্ত বিধানস্থলৈ আঘাঢ় মাস হইতে এই ব্রতের বিধান আছে, এবং এই চারি মাস বৰ্ষা বশিয়া অভিহিত হইয়াছে।

"আবাঢ়ওক্লছাদশ্ভাং পৌর্ণমাশ্ভামথাপি বা। চাতুম ক্রিভারম্বং কুর্যাৎ কর্কটসংক্রমে ॥ অভাবে ভূ ভূলার্কেংপি মন্ত্রেণ নিয়মং ব্রতী । कार्तित्क अक्रमामञ्चार विधिवखर नमानात्वर ॥ (वज्राहन्त्र-) চতুর্ধাপি চ ভট্টীর্ণ চাতুর্মাঞ্চ ব্রভং নর:। কার্ত্তিক্যাং শুক্লপক্ষে ভূ ছাছপ্তাং তৎ সমাপরেৎ ॥ চড়ুরো বার্বিকান্ মাসান্ দেবভোখাপনাবধি। मधूचरका ভবেत्रिजाः नरता ७७विवर्ज्यनार ॥ **এक्রाजर क्ट्रम्श्राटम नगरत्र शक्काजकम्**। वर्वारकार्यक्रव वर्वाञ्च मानाःक हकूरवाबरम् ॥" (मरक्रम् •) ভাৰপ্ৰকাশে দিখিত আছে বে, বৰ্ণা ঋতু শীতল, বিদাহ-भाक्षनक, मकाधिकात्रक ध्वर वाद्यवस्य । वदीकारम भिरंखत সঞ্জ হয় এবং বাৰু প্ৰবল হয়, অভএব ঐ বাৰু শান্তিয় নিষিত মধুম, আন ও লবণ বস্যুক্ত জব্য বিশেবরূপে সেবন

कता क्रवा। धरे नमत भनीत क्रिय रूप, धरे क्रिया निवा-রণের জন্ম কটু, ভিক্ত ও ক্যাররস সেবন করা বিধের।

वर्गाकाल त्यमकत स्रवा त्यवन, अन्नमन्त्रन, मधि, डिक्ट्या, গোধ্ম, শালিতভুলের অন্ন, কৃপোছৰ জল ও চৃতফল সেবনীয়। পূৰ্কদিগ্ভৰ বায়, বৃষ্টি, रतोज, हिम, পরিশ্রম, नमीजीरत গমন, विवानिजा, क्रक्कज्ञवा ও নিতামৈথুন এই সকল বৃৰ্জনীয়।

ঘুত, মধুর, কবার ও তিব্রু রস্মুক্ত দ্রব্য, স্থুপাক দ্রব্য, হ্ম, স্বচ্ছ অপচ শুক্লবর্ণ ইক্ষুবিকার, লবণ, অন্ন পরিমাণে জাঙ্গল-মাংস, গোধ্ম, বব, মুগ, শালিতপুল, কর্পুর, রক্তচন্দন, রাত্রির প্রথমভাগের চক্রকিরণ, মাল্যধারণ, নির্ম্মলবস্ত্র পরিধান, ব্যারামরাহিত্য, স্থল্ব্যক্তিগণের সহিত মধুর আলাপ, সরোবরে অশক্রীড়া এবং পিস্তাধিক ব্যক্তির বিরেচন ও বলবান্ ব্যক্তির পক্ষে শিরাবেধ ছারা রক্তমোক্ষণ, বর্ধার অবসানসময়ে হিত-জনক। দধি, ব্যায়াম, অমু দ্রব্য, কটু দ্রব্য, উঞ্চ দ্রব্য, তীকু জব্য, দিবা নিজা, হিম এবং রৌজ, এই সকল বর্ষা অবসানে বর্জনীয়। (ভাবপ্র+)

বাভটে লিখিত আছে যে, বর্ধা, শরৎ ও হেমস্তকাল দক্ষি-शायन, हेरा मिन मिन लाकरक वन वित्रर्क्षन अर्थाए वन मान करत विनिया हैशास्क विभविकाल करह। अहे कारण हक्क वलवान अ রবি হীনবলা হর, আরে শীতল মেঘ রৃষ্টি ও বায়ুযোগে মহীতলের তাপ শাস্ত হইয়া থাকে। এই জন্ত দ্ৰব্য সকল স্নেহ্যুক্ত হয়। আম, লবণ ও মধুর রস প্রবল হয়। বর্ষার আম, লরতে লবণ এবং হেমক্তে মধুর রস প্রবল হইয়া থাকে।

বর্বাকালে কালধর্ম্মবলে মানবের অগ্নিতেজ মাল্য হয়। ইহাতে শরীর মানিবিশিষ্ট হইরা থাকে। তখন আকাশ জল-ভারাবনত ও জলনজালে ব্যাপ্ত হওয়ায় সহসা শীতস তুষার্সিক পবনে, ভৃতলোখিত বাস্পে ও অন্ন বিপাক্বারিতে এবং ষ্মির মন্দতাবশতঃ বাত, পিত্ত ও কফ হুট হয়। বাত, পিত্ত ও কক এইরূপে পরম্পরকে দূষিত করে বলিরা পাচকাগ্নি ক্ষীণ হর। এই কালে সাধারণতঃ এইরূপ ক্রব্য ব্যবহার করা উচিত, বাহা পাচকান্নির উত্তেজক। এই কালে শরীর শোধন করিরা মেহবন্ধি, পুরাতন ধারু, স্থুসংস্কৃত মাংসরস, জাল্ল-মাংস, মুল্লাদির ব্ব, পুরাতন মধু ও অরিষ্ঠ, সৌবর্চনযুক্ত মন্ত (দধির মাত) বা পঞ্জোলচূর্ণ এবং আকাল জল, কৃপজল বা অভিসিদ্ধ কল দেবন করিবে। অতিশয় ছদ্দিনে তীক্ষ, অন্ন, नवण ७ व्यक् त्रवन, एक ७ नचू एकांबन अवर मधू भान कत्रित्व।

বৰ্বাকালে পদত্ৰকে ভ্ৰমণ বিশেষ নিবিদ্ধ। এই সময় সুগদ্ধি সেবন ও গুণিত বসন পরিধান এবং বাশশীত শীকর বর্জিত হৰ্দ্মপৃঠে বাদ প্ৰণন্ত। নদীকল, উদমন্থ (ন্বত প্ৰক্ষেপ সহ-বোগে জলসিক্ত শক্তু ৰাৱা যে খান্ত প্ৰস্তত হয় ভাহাকে উদমন্থ কহে) দিবানিলা, পৱিশ্ৰম ও আতপ প্ৰিহাৰ কৰ্ত্ব্য।

(বাভট স্ক্রছা• ৩ জ•)

বৰ্ষকালে এই সকল বৈশ্বকোক্ত বিধিনিবেধ মানিরা চলিলে ব্যাধির প্রকোপ হয় না, শরীর স্কৃত্ব থাকে।

স্থাপতে লিখিত আছে যে, এই কালে দিবারাত্রির মধ্যেও সংবংসরের স্থার শীত, গ্রীর, ও বর্ষাদির মত ছয় ঋতুর লক্ষণ এবং সন্ধ্যাকালে বর্ষাঋতুর লক্ষণও প্রকাশ পার। এই জন্ম বর্ষাকালের নিধিদ্ধ দ্রব্য সন্ধ্যাকালে আহার করিবে না।

কবিক্ষণতার লিখিত আছে যে, বর্ধা বর্ণন করিতে চ্ইলে শিখী, শ্বয়, হংসাগম, পঙ্ক, কন্দল, উদ্ভেদ, জাতী, কদৰ, কেতক, ফলানিল, নিম্নগা ও হলিপ্রীতি এই সকল বর্ণন করিতে হয়।

"বর্ধান্ত ঘনশিথিমারহংসাগমাঃ প্রকল্লান্তেনে।
জাতী কৃদ্ধকেতকঝঞ্জানিলনিরগাহলিপ্রীতিঃ ॥"(ক্বিকর্মলতা)
"পত্রী কৃত্রতি কাননে চ সরসী মানাম্পূর্ণা তথা
হংসা মানসমাত্রন্তি কমলাজ্ঞানতাং ঘাস্তি চ।
গার্জন্মেঘমহেক্সকল্লরদরী শস্তাবৃত্তা শ্রামলা
ভাত্যেং প্রনম্ভ কোপনকরো বর্ধাঝতুঃ শোভিতঃ ॥"

(হারীত ১।৪ **प**°)

এই শব্দ নিত্য বহুবচনাস্ত, 'দারাদেনি তাং' এই স্তামুসারে দার, অপ্, বর্বা, এই তিন শব্দ নিত্য বহুবচন, এই স্কল শব্দের উত্তর একবচন বা দ্বিচন হয় না।

বর্ষাংশ[ক] (পুং) বর্ষস্ত বংসরস্ত অংশ:। মাস। (ত্রিকা•)
বর্ষাকাল (পুং) বর্ষাঝড়। আবাঢ়ও প্রাবণ মাসম্ম বর্ষা।
বর্ষাকালীন (ত্রি) বর্ষাসময়োপযোগী।

বর্ষাগম (পুং) বর্ষারম্ভ। রুষ্টপাত।

বর্ধানোর (পুং) বর্ধান্থ খোষো মহান্ শলোহন্ত। মহামপ্তৃক। বর্ষাক্ত (পুং) বর্ষত বংসরত অজমিব অভিধানাৎ পুংবৃদ্। মাস। (হারাবলী)

বর্ষাঙ্গী (ত্রী) বর্ষাস্থ অলং যন্তাঃ তত্র জাতাভ্রদর্শনাৎ তত্তা-তথাজম্। পুনন বা। (শক্ষরভাবনী) ইহার বিভ্ত বিবরণ পুনন বা দক্ষে এইবা।

বর্ষাচর (এ) বর্ষার বিচরণকারী। 'বর্ষাচরোহন্ত ভৃতকঃ' (ভারত ১৩ পর্ক)

বৰ্ষাজ্য (তি) বৰ্ষাকালোংপন্ন ছত সম্বন্ধীর। (অথব্য ১২।১,৪৭) বৰ্ষাৎ (হিন্দি) বৰ্ষাকাল।

বৰ্ষাতি (এ) ১ বৰাকাল-সৰ্বীর। ২ বৰ্ষাকালে পরিধের পরিচ্ছদভেদ। ৩ পৰাখাদির বৰ্ষান্তনিত রোগবিশেব।

বর্ষাধিপ (পুং) বর্ষাণামধিপঃ ৩তৎপুরুব:। > বর্ষসমূহের
অধিপতি। [বর্ষ দেখ।] •

২ বর্ণাধিপ গ্রহণণ। এক এক নাম কর্বে এক একটা গ্রহ অধিপতি হইরা থাকেন। গ্রহাত্মনারে কুর্বের কলাকল ছির করিতে হয়। এই বর্বফলাকলের উপরই পৃথিবীর মকলা-মকল নির্ভন্ন করে।

বরাহমিহির এ সম্বন্ধে বৃহৎসংহিতার লিখিরাছেল, স্থা যে বার বর্বাধিপতি, মাসাধিপতি বা দিনাধিপতি হন, সে বার পৃথিবীর সর্কাত্র অল্প শশু হর। বনবিভাগ বৃত্তু লং ট্রপণে পূর্ণ হইরা উঠে, নদীগণ প্রাচুর বারিক্ষরণ করে না, শীড়ার প্রযুক্ত ঔবধ সকল তানুশ বলকারক হর না। শীডকালেও স্থা প্রথর তাপ দিরা থাকেন। পর্কভোপম মেঘগুলি বেশী বর্বণ করে না, আকাশের নক্ষত্ররান্ধি, এমন কি স্বয়ং চক্রমা পর্যান্ত দীপ্তিহীন হইরা উঠে, গো ও তাপসকুল বিষাদগ্রন্ত হয় এবং হস্তী, অস্ব, পদাতি প্রভৃতি বলবাহনযুক্ত নরপতিগণ অন্তুচর সহচর সম্ভিব্যাহারে বহু বাণ, ধন্তু ও অসি প্রভৃতি অল্প শন্ত শইরা দেশধ্বংদে প্রযুক্ত হন।

চক্র বর্ণাধিণ হইলে, প্রচ্লিত পর্কাণেম মেবদল, রক্ষনণ, কক্ষল, অমর বা মহিববং রুক্ষবর্ণ হইরা আকাশমগুল ছাইরা ফেলে, লোকের উৎকণ্ঠাহচক গভীর শব্দে অধিল দিয়পুল পূর্ণ হইরা উঠে। নির্মাণ সলিলে পৃথিবী পূরিত হর। সরোবর সকল পদ্ম, উৎপল ও রুমুদমালার মণ্ডিত হইরা উঠে। উপবলহু . ক্রমদল প্রকৃত্তা হয় ও অমর ঝকার করে। গাভী সকল প্রচ্র হ্র্মন্বলী হয়, স্ক্লেরী কামিনীরা অহুরাগভরে নিরত পুক্রসল করে। পৃথিবী গোধুম, শালি, বব, প্রেষ্ঠ ধান্ত ও ইক্ল্লালিনী হইরা নানা নগর ও চৈডাসমূহে শোভিত, পবিত্র হোম ধ্বনিতে পূর্ণ এবং নরপভিগণ কর্ম্ভক পালিত হইরা থাকে।

মদল বর্ণাধিপতি হইলে প্রনাভূত প্রাপ্তবহি,—এাম, বন ও নগর দথ করিতে উভত হর, পৃথিবীতে মর্ভ্যবর্গ দহাগণে আহত ও নিংল হইরা হাহাকার করিয়া বিচরণ করে, পশুকুল নির্মুল হয়,মেঘদল শৃক্তে অভ্যুন্তও ও সংহত মূর্ত্তি হইরাও কোথাও প্রচুর জল বর্ষণ করে না, পক্তপ্রার শক্ত শোষ প্রাপ্ত হয় এবং কোনয়পে নিশার হইলেও অবিন্র বলে অপর ব্যক্তিরা তাহা হয়ণ করিয়া লয়। মন্তলের সংবৎসরে নৃপতিগণের চিত্ত প্রজাণালনে তাদৃশ অভ্যুন্তক হয় না। পিন্তলাত রোগের প্রাচুর্ব্য হয়। ভূজদগণের প্রকোপ বৃদ্ধি পায়। এইয়পে প্রজাবর্গ শক্তবিন, বিপার ও উপহত হইয়া উঠে।

বুধ বর্ষাধিপতি হইলে, মারা, ইজ্লাল ও সুহক্কারী নাগর-গণ এবং গাড়র্ক, লেখা, গণিত ও অম্ববিদ্যালের বৃদ্ধি হয় নর্বপতিরা পরস্পর প্রীতিকামনার অহুত দর্শন ও তুষ্টিকর দ্রব্য দর্শক পরস্পরকে দান করিতে অভিলাবী হন। কর্তা ও অগী-শাস্ত্র জগতে অধিকল ও সভা থাকে। কাহারও বৃদ্ধি শাস্ত্রজানে অভিনিবিট এবং কেহ কেহ আবীক্ষিকী শাস্ত্রে পরম পদ লাভে চেটিত হয়। বৃধ্গ্রহের নিজবর্ব ও মাসে এইরপে পৃথিবী হাসাজ্ঞ, দৃত, কবি, বালক, নপুংসক, যুক্তিজ্ঞ, সেতু জল ও পর্বতবাসিগণের তৃত্তি ও পৃথিবীতে ওব্ধিগণের প্রচুরতা সম্পাদন করেন।

বৃহস্পতি বর্ধাধিপতি হইলে, যজ্ঞোচারিত বিপ্ল আকাশগামী বেদধ্বনি বজ্ঞলোহিগণের মন বিদীর্গ করিয়া, জিল্পবর ও
যজ্ঞাংশভাগীদিগের হৃদয়ানন্দকররূপে ভ্রমণ করে। ক্ষিতি
উত্তম শশুবতী, আনক হত্তী, আয়, চতুরঙ্গ সেনা, মহাধন,
গোকুল ও দনশালিনী হইয়া নরপতিগণে পালিত ও বর্দ্ধিত
হইতে থাকে। জনগণ স্বগীয় লোকের ন্তায় স্পদ্ধার সহিত
বিরাজ করে। গগনোয়ত বিবিধ বর্ণের পরোদগণ তৃপ্তিকর জল
ভারা পৃথিবী পূর্ণ করিতে থাকে। স্করগুরু বৃহস্পতির গুভবর্ষে
এইরূপে পৃথিবী বহু শশুবুতা ও সমৃদ্ধিশালিনী হইয়া উঠে।

শুক্র বর্ধাধিপতি হইলে, ধরাধর তুলা জলদপটল বারিধারা বর্ধণ করিতে থাকে। তাহাতে পৃথিবী পূর্ণ হইরা যায়, তড়াগ সক্ষর সরোরহজালে আকীণ হয়। পৃথিবী নবালন্ধারে আলম্বত হইয়া উজ্জলালী নারীর স্থায় শোভা পায় এবং বহ শালী ও ইকু উৎপাদন করে। ভূপতিগণের জয়শব্দে দিঙ্মগুল ধানিত হয়। শক্রদল বিধ্বস্ত হয়, রাজগণ হয়্ট দমন ও শিষ্ট-পালন করিয়া নগর ও আকর সহ সমুদায় পৃথিবী পালন করিতে থাকেন। বসন্ত শকুতে মানবগণ কামিনীগণসহ পুন: পুন: মুপুপান করিয়া বেণু বীণা সহ বার বার শ্বণমধুর গান গাইতে থাকে এবং অতিথি সূত্রং ও অ্লাকগসহ একত্র আয়ভোজন করে। শক্রের বাবে এইয়পে মঙ্গলেপ সাল প্রাধান্তাই স্বৃচিত হয়।

শনি বর্ষাণিপতি হইলে তৃক্ত দুয়াগণের উপদ্রবে ও বহু সংগ্রামে রাজ্য সকল আকুল হইরা উঠে, অনেক ধর্ম ও পশু নই হইরা নরগণ বন্ধুজন বিরোগে অতিশন্ধ রোদন করিতে থাকে। কুগা ও সংক্রোমক ব্যাধির প্রকোপে মামুষ আকুল হইরা পড়ে। অন্ধরীকে বায়ু বিক্ষিপ্ত মেছ আর দেখা যার না। ধরাতলে একটা পল্লব ও অক্ষত বা অক্ষয় অবস্থার থাকে না। আকাশে চক্র ও স্থাকিরণ অত্যধিক ধ্লিপতনে ঢাকিরা কেলে। অনালর জলহীন এবং সরিৎ সকল কীণপ্রোভ হইরা পড়ে। কোথাও জলাভাবে শত্র সকল নই হইরা যার। কোথাও বা জলসিক্ত ভূতাগে উহারা পৃথি প্রাপ্ত হয়। এইরূপে দিবাকরবংলধর শানর বর্ধে ইক্র পঞ্চাত প্রদান কল বর্ধণ করিরা থাকেন।

ফলত: যে গ্রহ কুন্দ্র, অপটুকিরণ, নীচগামী বা অক্সদারা বিজিত হন, তিনি সকল ফল ও পুষ্টিদাতা হইতে পারেন না। অভডগ্রহ বর্ষাধিপতি ও মাসাধিপতি হইলে তাহার মাসজাত ফলের বৃদ্ধি হর, অস্তথা শুভফল ও যাপ্য হইরা থাকে। (বৃহৎসং ১৯ আঃ)

বৰ্ষাধৃত (ত্ৰি) বৰ্ষাকালে লব্ধ। বৰ্ষাপ্ৰাপ্ত। (কাত্যা°শ্ৰৌ° ৪৮৮১৮) বৰ্ষাপ্ৰভঞ্জন (খুং) ঝটকাণ।

বর্ষাপ্রিয় (গুং) চাতকপন্দী। (ত্রিকা৽)

বর্ষাবীজ (क्री) মেখ।

ব্রহাভ (দেশজ)ভেক।

ব্র্মান্তব (পং) বর্ষাস্থ ভবতীতি ভূ-স্বাচ্ বর্ষাস্থ ভব উৎপত্তি ব্যাহ্য বা। রক্তপুনর্বা। ২ পুনর্বা। (রাঙ্গনি°)(ত্রি) ও বর্ষায় উৎপন্ন মাত্র।

র্ষাভূ (পুং স্ত্রী) বর্ষাস্থ্য, ভবতীতি ভূ-ক্বিপ্। > ভেক।

"মঙ্কঃ প্রবগো ভেকো বর্ষাভূদ দুরো হরিঃ।" (ভাব প্রতংগুঃ)

> ইক্রগোপ। (রাজনি•) ও ভূলতা। (মেদিনী) (স্ত্রী)
৪ বক্ত পুনর্ন বা। (পর্যায়মুক্তাবলী) ৫ খেতপুনর বা। (চক্রদ)
৭ পুনর্ন বা। "তিলপর্ণিকা বর্ষাভূ চিত্রমূলকপোতিকালস্তরনপলা পুকলায়প্রভৃতীন।" (স্ক্রুভ স্ত্রস্থার ৪৫ আঃ) ৭ ভেকী।
(ভরতধৃত রসরক্লাকর) (ত্রি)৮ বর্ষাজ্ঞাত মাত্র।

বর্ষাভূশাক (পুং) পুনর্ন লাক, চলিত খেতপুণা শাক।
মরাঠা – ঘেণ্টুল, কণাড়ী, — বেলড়কিলু। ইহার গুণ — কফ,
অগ্নিমান্য ও বাতহর, রুলজের এবং গুল, প্লাহা ও শুলনাশক।

বর্ষাভূী (জী) বর্গাভূ-ঙীপ্। > ভেকী। ২ পুনন'বা। বর্ষামদ (পুং) বর্ধায় মাগুতি ইতি মদ-অচ্। ময়ুর। বর্ষায়ু (জী) বৃষ্টিজল।

বর্ষাস্থ্রবাহ (পুং) বর্ষাজলসঞ্যার্থ জলধারা।

বর্ষান্তঃপারণব্রত (পুং) বর্গান্তো রৃষ্টিল্লসং তম্ম পারণং উপবাসান্তে পানং ব্রতমিব ব্রতং যন্তা। চাতকপক্ষী।

বর্ষাযুক্ত (क्री) অযুত বৎসর।

বর্ধারাত্র (পুং) বর্ধাণাং রাত্রিঃ ততঃ সমাসাজ্যে ১৮০। ১ বর্ধা-কালীন রাত্রি। ২ বর্ধাঞ্চু।

বর্ধার্চিস্ (পুং) বর্ধান্থ অর্চিদীপ্তিরস্ত। মলনগ্রহ। (শলর্কাল) বর্ধাল (পুং) পুরু।, চনিত পিড়িং। (বৈছকনি°)

বৰ্ষালক্ষায়িকা (জী) পূৰা, পিড়িং শাৰু। (ভন্নড)

বৰ্ষালী, পাণিনীয় উৰ্যাদিগণোচ্ত একটা শব্দ। (পা ১।৪।৬১) বৰ্ষাব্দ (অি) বৰ্ষাসদৃশ।

বর্ষাবৃত্তী (স্ত্রী) ভূকীটবিশেষ, চলিত ইন্দ্রগোপ কীট। ২ ভেক-পত্রী। ও পুনর্শবা। (স্বমর্মালা)

বর্ষা বসান (পুং) বর্ষাগানবসানমত। ১ শরৎকাল। (রাজনি°) २ (क्री) वर्गात्मय। বর্ষ। শাটি (জী) বর্ষাঞ্চতে বৌদ্দালের পরিধের বাসভেদ। वर्षाभारति (जी) वर्षा ७ भन्न कान। वर्षामग्रा (थः) वर्षाकान। বর্ষাস্থজ (ত্রি) বর্ষাকালজাত। (পা ভাএ) বাত্তিক) বর্ষাহিক (পু:) বিষবিহীন সপভেদ। (স্থ শ্রুত কর° ৪ ম:) বর্ধাহ (জী) বর্ধাভূ। ভেকী। (বাঞ্চসনেম্বসং ২৪।৩৮) বর্ষাহবা (জী) পুনর্নবা। (চক্রদ°) বর্ষিক (তি) > বর্ষাসম্বীর। ২ বর্ষসম্বীর। বর্ষা ও বর্ষ এই উভয় শব্দের উত্তরই ঞিক্ প্রত্যয় করিলে 'বর্ষিক' পদ সিদ্ধ হয়। বর্ষিত (क्री) র্টী। ব্র্যিক (ত্রি) বর্ষণকর্তা (নিঙ্গক্ত ৪৮) বর্ষিতা (স্ত্রী) বর্ষিন্ভাবে তল্ততপ্রাপ্। বর্ষণকর্তা। বর্ষিন্ (ত্রি) বর্ষিণকারী। শ্রাবিন্। ু বর্ষিমন্ (পুং) বৃংধর ভাব। দীর্ঘজীবিদ। (শুরুষজু° ১৮।৪) বর্ষিষ্ঠ (ত্রি) > অতিশয় রুদ্ধ। (ঋক্ এ।।১) 'অয়মনয়োরতি-শয়েন বৃদ্ধঃ' এই অর্থে বৃদ্ধ স্থানে বর্ষ আদেশ করিয়া পরে ইষ্ঠ প্রত্যয়ে 'বঞ্চি' পদ সিদ্ধ হইয়াছে। ২ অত্যন্ত বলবান্। ব্যিষ্ঠকৃত্ত (তি) > অতিশয় ক্ষমতা বা শক্তিশালী। ২ মিত্রাবরুণ। (ঋক্ ৮।৯০।১) वर्षीका (जी) इत्नाट्डम। ব্য়ীণ (ত্রি) বর্ষণসম্বন্ধীয়। (পা ।।।৮৬) वर्षीय (कि) वरमत वा वयममन्त्रीय। ব্ধীয়ৃস্ (ত্রি) অন্তমনদ্মেরতিশ্যেন বৃদ্ধঃ ; বৃদ্ধ ইয়ন্ততো वर्षातमः। अठि वृक्तः। পर्यात्र-नममी, आग्रान्। (अमत्) "ছিয়তে বিষয়ে: প্রায়ো বর্ষীয়ানপি মাদৃশ:।" (ভারবি >> সঃ) শ্বতিশাল্লে উক্ত হইয়াছে, যোড়শ বৰ্ব পৰ্যাস্থ বালক, তাহার পর তরুণ বা যুবক। তৎপরে সপ্ততি বর্ষের পর বৃদ্ধ এবং নবভির পর বর্ষীয়ান্ সংজ্ঞার অভিহিত হটতে হর। "আযোড়শাদ্ভবেদ্ বালস্তরণতত উচ্যতে। বৃদ্ধঃ স্তাৎ সপ্ততেক্তম্ম বৰীয়ান্ নবতেঃ পরম্॥" (শ্বতি) ব্যু (ত্রি) বর্ষপ্রভব ভূণাদি, বর্গকালোৎপন্ন। "বৰ্ষো বৰীন্দসি ৰজে বজ্ঞপতিং" (গুৰুবৰু° ৬١১১) 'কৰোঁ বৰ্ষাছৎপক্ষ বৰু': ভৎসম্বোধনং কৰোঁ বৰ্ষপ্ৰভব হে ভূপ' ((वननी १) ব্যু ক (ত্রি) বর্ধতি ভাষীল ইতি বৃষ-(লম-পতপদস্থাভূ-বৃষ-হন-

कम-गम-मृंखा डेकक्ष्। भा अशाव्यक्ष) हेकि डेक्क्ष्। वर्षुन-কর্ত্তা, বর্ষণকারী, বর্ষণশীল। 🔹 "बग्रा: धनामः विक्रमाननामि छोर्वव् का धन्नानन्नः वस्त्रव । নিৰ্ব্যাক্ষমিক্সা বহুতে ৰচন্চ ভূরো ৰভাবে সুনিনা কুমারঃ ॥" (ভট্ট : ৩৭) বযু কাৰা (পুং) বৰু কলালো অসলেডভি কৰ্মানন:। বৰ্ষণশীল মেণ। যে মেণ হইছে বৃষ্টি পতন হইতেছে। (अটাধর) বর্ষেঞ্জ (ত্রি) বর্ষে জারতে ইতি জন-ড, সপ্তম্যা অপুক্। ১ বর্ষা-কালজাত। ২ বংসরজাত। ব্ৰ্ধেশ (পুং) বৰ্ষস্ত মশ:। ৰৰাধিপ, বৎসৱের অধিপতি। ব্র্ধোপল (পুং) বর্বাণামুপল:। মেঘলাত শিলা, করক। "বর্বোপলবজ্ঞাতং বায়ুক্কাচ্চ সপ্তমান্ত্রইং। দ্রিরতে কিল থাদিব্যৈন্ডড়িৎপ্রভং মেঘসম্ভূতম্॥" (वृहৎमःहिष्ठा ৮১।२४ व(र्श्य (११) अफ़। ध्येष्ठक्षम। বফ্ট (ত্রি) বৃষ্টিকারী। "জাতি বীজং বর্টা পর্জন্তঃ পক্তা শহুন্।" (তৈভিরীরসং গাধারণা১) বুর্ম্ম (ক্লী) শরীর। (দ্বিরূপকো") "বর্মের্1 ছব্মি সমানানাম।" (পারস্বরগৃহ ১١৩) বৃত্ম ন্ (क्रो) বর্ষতি বৃষ্টেত বেতি বৃষ মনিন্। পরীয়। "দদর্শ চ সমীপে২ন্ত পিশাচানাং শতৈরু তং। কাণভূতিং পিশাচং তং বর্ম গা শালসন্নিভম্ ॥" (क्थानविष्ना[°] २।६) ২ প্রমাণ। (অমরটীকা) স্বামীর মতে প্রমাণ শব্দে উর্নতি। 'প্রমাণমত্রোন্নভিরিভি স্বামী' (অমরটীকা ৩।৩।২২৩) "অণাপঞ্দৃষীন্ হ্রন্ অসুচোদরবন্ন ।:। প্লালবৃদ্ধিকামেকাং বহতঃ সংহতানু পথি॥"(ভারত ১।৩১।৮) ৩ ইয়ন্তা। (ভরত) ৪ অতি স্থলরাক্সতি। (সারস্ক্রী) (আরি) ৫ উরভ। ৬ ছির। "तम्म अटको वित्रमन्न। পृथिवााः" (अक् > । २ ৮। २) 'বর্মণ শব্দ উন্নতবচনঃ ছিন্নবচনো বা' (সান্ধণ) ৭ ব্রীয়ান্ অভিশন্ন বৃদ্ধ। "নমো বন্ন গৈ নমো **ভূন্নে" (ভাগবত ৫**।১৮।৩০) 'বন্ন পে ববীন্নসে' (স্বামী) ৮ জলরোধক:। 'উদকশু বারক:।' (সাম্বণ) বত্মল (তি) বর্ম মন্বর্থে (সিশ্বাদিভাশ্চ। পা ধাং।৮৭) ইভি गर्। वर्षा यूक्त, वर्षा विभिष्टे। বদ্ম'বৎ (ত্রি) শরীরসদৃশ। वश्च वीर्या (मी) भारीतिक भक्ति। বন্মাভ (দ্লী) আকার বা গঠনবিশিষ্ট।

বর্দ্ধ্য (ত্রি) বর্ষাসম্বনীয়। বর্ষপবোগ্যা। वर्ड, > वर्ष । » मीखि । চুরाणि পরতে वशार्ष मक मीधार्ष অক° সেট্। দুট্ বর্ছমতি। পুঙ্ অববর্ধ। বর্ই—শ্রেষ্ঠ। ভাদি° আত্মনে° সেট্। লটু বর্ছতে। লুঙ**্** অবহিটা বৰ্চ (हो) বৰ্ষতি দীপ্যতে ইভি বৰ্ছ-জচ্। মযুরপিছে। "বথা বহাণি চিত্ৰাণি বি**ভৰ্তি ভূজ**গাশনঃ। তথা বছবিধং বাজা রূপং কুব্বীত ধর্মবিৎ ॥"

(ভারত ১২।১২০।৪)

২ প্রছিপর্ণ। (ভেক) বর্হতীতি বৃহ বৃদ্ধৌ আচ্। ৩ পত্র। (শক্রপ্র•)

"বিলাসিনী বিভ্ৰমণ্ডপত্ৰমাপাপুরং কেতক্বর্ছমন্ত:। প্রিরানিতবোচিতসরিবেলৈবিপাটরামাস বুবা নথাবৈ: ॥" (রবু ৬/১৭)

৪ পরীবার। (হেম)

বৰ্চণ (ক্লী) বৰ্ষ তীতি বৃহ-বৃদ্ধো শাট্ট, বৰ্ষ মতি শোভতে ইতি বৰ্ছ-मीरक्षी मूर्गि। भवा। (भक्तप्रां•)

বৰ্ছস (পুং) বৃংহতি বৰ্দ্ধতে ইভি বৃহি বৃদ্ধে (বৃহেন লোপণ্ড। উণ্ ২।১১০) ইভি ইসি নলোপশ্চ। ১ আমি। (মেদিনী) > দীপ্তি। (উজ্জ্বল) ০ বজ্ঞ। (হেম) "মা নোবহিঃপুরুষতা" (ঋক্ ৭।৭৫।৮) 'নো জন্মাকং বহির্যক্রং' (সারণ) ৪ চিত্রক । (चमत्र) ৫ বৃহদ্রান্তের পুত্র।

"বৃহদ্রাব্দত্ত ভক্তাণি বহিন্দত্তাৎ কৃতঞ্জর:।"(ভাগবত৯।১২।১৩) (পু: ही) ७ কুन। (মেদিনী)

বৰ্হসু (ক্লী) বৃংহজীতি বৃহিবৃদ্ধৌ ইসি নলোপশ্চ। ১ এছিপত্র। (मसत्रक्षा •) २ कूम ।

"অবচিডবলিপুলা বেদিসন্মাৰ্গদন্দা।

निव्यविधिक्रमानाः वर्षिवारकांगरन्त्वी ॥" (क्रूमाव्रमः ১।७১) 'दिहः भूच्य (क्री) वर्डिवी शिखन्य कर भूच्यमछ । > अधिगर्ग। বহিঃশুলুন্ (পুং) বৰ্ষিবা কুশেন বৰ্ষিবি বজে বা ওয় তেজে। रक्ष। ५ व्यथि। (व्यवद्र)

वर्डिक (ज्ञी) बर्डिबिन फिक्रेकीफि शू-स । > वर्डिक । २ हीरवत । বহিকুকুম্ম (দী) বহিবইকুজং কুম্সং বঞ্চ। এছিপর্ণ। (শক্ত°) वहिन (पूर) वईमचारण्डि वर्द ;'क्नव ईाणाविनाः' हेडि इनह्। महुन।

"बुबुक्यतिः एकान् श्वान् श्वान् श्वान् वर्षिनः।" (मह >२।७६) (क्री) ২ ভগর। (ভাবপ্র•)

विश्विवाह्म (पूर) वर्षित्वा मन्द्रमा वास्तर वक्र । कार्कित्वम । र्दार्डभ्दका (जी) वहीं भरका वास्तः वकाः। छ**छी**। (जिका॰) वहिन् (पूर) वर्षमञाजीिक वर्र-हैनि। सब्ब। (स्थव)

"সদা মনোঞাৰুদনাদসোৎসূক্ষ বিভাতি বিত্তীৰ্ণকলাপশোভিতং সবিভ্ৰমাণিজনচুখনাকুলং প্ৰবৃত্তনৃত্যং কুলম্ভ বহিণাৰ্ ॥''

(अफूनश्हांत्र २।७)

২ অধাগর্ডে সম্ভূত কম্মপের পুত্রজেন। (ভারত ১।৬৫।৪৭) ব্ল, ১ প্রাণন। ২ ধান্তাবরোধ, সমৃদ্ধির প্রতিবন্ধক। ৩ নিরূপণ। हरना। ६ मान। जुनि॰ शब्देच॰ ध्याननार्थ ह्वानि॰ পরদৈ"। নিরুপণ, হিংসা ও দানার্থে ভাৃদি" আত্মনে" সক" সেট্। निष् रनिष्ठि। रनएक। नृष् व्यवनीर। व्यर्गिष्ठे। চুরাদি-পক্ষে বলম্বতি, বালম্বতে। পুঙ্ অবীবলং।

বল (পুং) ১ মেষ। ২ স্বস্থরভেদ। ইনি দেবতাদিপের গাডী व्यन्तर्भक्षक श्रहामत्था नुकाविक हन । हेन्द्र त्महे श्रहा व्यव-রোধ করিয়া গোধন উল্মোচন করেন। (ঝক্ ১০।৬৮।৯)। পরে ঐ অস্থর বুষরূপ ধারণ করিলে বৃহস্পতি তাহাকে নিহত করেন। ঋক্সংহিতার অক্তান্ত স্থানে এই অস্তর মেদরূপে বর্ণিত।

[প্রর্ণে দেখ।]

বলংক্লজ (গুং) মেঘনাশকারী।

বলক (পুং) ১ বলনামক দানব। (হরিবংশ) ২ তামস মন্বস্তুরোক্ত **সপ্তবিভেদ।** (মার্ক° পু° ৭৪।৫৯)

ব্লক্ (দেশক) হগ্ধ জাল দিবার সময় প্রথমে উৎলাইয়া উঠিলে ভাহাকে বলক্ কহে। এ ছগ্ধ নামাইয়া রাখিলে তাহাকে वन्का इद्ध वरन।

বলকাতুধ (দেশৰ) অৱ আল দেওরা হয়।

বলকেশ্বরতীর্থ (ক্লী) তীর্থভেদ।

বলক্রম (খং) 🕻 পর্যায়িক বল।

तमक (-१) (४७वर्ग)

বলক্ত (গং) ভলাংভ চক্র।

বলগ (क्री) বধা ব্যক্তির প্রতি আচরিত ক্নত্যাবিশেষ। পরাজিত রাক্ষসেরা পলারনপূর্বক ইস্রাদি দেবগণের বধের **লয় অহি কেশ** ও নথানি পদার্থ ভূগর্ভে নিথাত করিয়া যে বে আভিচারিক ক্লড্যা সম্পাদন করিড, ভাহাই বলগ।

"পরাজয়ং প্রাপ্য পলায়মানে রাক্টেসরিক্রাদিবধার্থমভিচার-ক্লপেণ ভূমৌ নিখাতা অভিকেশনখাদি পদার্থাঃ ক্লত্যাবিশেযো বলগাঃ।" (ৰাজসনেরসং বেঘদীপ ৫।২৩)

वलग्रह्म् (बि) वनगान् रखीिछ वनग-रून-किन्। (পा अशाम्म) क्छारननकाती। (**७क्रफ्**° बार०)

বলগিন্ (জি) ৰদগদমৰিত। (জধৰ্ম ১।৩১/১২)

বলঙ্গিমান, নাজাৰ-প্রেনিডেনীর তালোর কেনার কুডকোণ্য তাৰুকের অন্তর্গত একটা নগর। অঞ্চা° ১০° তে উ: এবং জাবি॰ ৭৯°২৫´ পৃঃ। এথানে স্থানজাত শভাবির বিভৃত কারবার আছে।

বলতী (बी) আনাদোপনি মণ্ডলিকা, বলভি।

বলভেক্ত (ভরালটেরার), মাজাল গ্রেসিভেন্সীর বিলাগাণাট্য জেলার অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা ১৭° ৪৪´ উ: এবং ক্রাঘি ৮० २२ ०७ पृ:। वर्तमान है:बाबी मानहित्व वा कृत्भारन (Waltair) নামে বিখিত। বলোপসাগরোপকৃলসমীপে স্থাপিত হওরার এই স্থান বিশেব স্বাস্থ্যপ্রদ। এখানে সিবিল ও মিলিটারী বিভাগের অনেক রুরোপীর কর্মচারী বাস করিয়া থাকেন। বিশাধপত্তন হইতে এই স্থান তিন মাইল উভরে অবস্থিত এবং উক্ত নগরের মূরোপীরদিগের বাসভূমিও উপকঠ বলিরা পরিপণিত। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে এই স্থান ২৩০ ফিট্ উচ্চ এবং গগুলৈলমালার পরিবৃত। ইইকোট রেলপথ এই নগর-সারিধ্য দিরা মাক্রাকাভিমুখে প্রধাবিত হইরাছে। এই কারণে এখন এখানকার প্রীবৃদ্ধি অনেকাংশে বর্দ্ধিত হইরাছে। পূর্বে এখানে পানীয় জলের বিশেষ অভাব ছিল। এখন ভাহা অনেকাংশে দুর হইরাছে, পরস্ত এথনও ফলমূল ও উৎকৃষ্ট খাছ দ্রব্যের অভাব মাছে। এখানকার ইংরাজটোলা হইতে বালালী-টোলা অনেক খারাপ।

*বলদব্র, (বল্দব্র), মাজাজ-প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ আর্কটি কেলার বিষপ্রম্ ভাল্কের অন্তর্গত একটি গণ্ডগ্রাম। পুঁদিচেরী হইতে ৯ মাইল উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। অক্ষা ১১°৫৮ ৫০ ° উ: এবং দ্রাঘি ৭৯° ৪৪ ৩০ ° পৃ:। করাদীগণ পুঁদিচেরী রাজধানী সুদ্দীকরণার্থ এই স্থানে প্রথমে তুর্গ স্থাপনপূর্বক সেনা-সন্নিবেশ করিয়াছিলেন। ১৭৬০ খুঠানো ইংরাজ্সেনানী কৃট পুঁদিচেরী অবরোধকালে তাহা অধিকার করিয়া লন।

১৮৮২ খুষ্টাব্দের ৩০এ জুন পর্য্যন্ত স্থলপথগামী পণ্যদ্রব্যের উপর শুদ্ধ আদারের জন্ম এখানে ফরাসীদিগের একটা শুদ্ধ-কার্য্যালয় ছিল।

वलिष (११) हेस ।

বলন (ক্নী) প্রচনক্ষত্রাদির সায়নাংশ হইতে বিচলন (deflection), ইহা সাধারণতঃ আয়নবলন নামে প্রসিদ্ধ। ভাররাচার্য্য বলনানরন সম্বদ্ধে লিথিয়াছেন:—

"ব্যন্ত্ৰকালে বলনং সাধ্যং তদ্মিন্কালে বা নব্যটিকাতাঃ থাকা ৯০ হতাশ্চন্ত্ৰগ্ৰহে রাঞ্জিন ভক্তা অৰ্কগ্ৰহে দিনাৰ্জেন কলমংশাঃ স্থাঃ তেবাং ক্ৰমজাংশক্ষারা ভণ্যা হ্যজোবরা ভক্তা লক্ষত চালং পলোভবং বলনং আরতে। প্রাভ্নতে সৌবাং পশ্চিমনতে বামাং।" ০ ০ ০ (সিদ্ধান্তশিরোমণি গণিতাধ্যার)

কুটবলন ও দৃক্বলন সম্বন্ধে বিশেষ বিবরণ তভদ্বন্ধে
এবং আর্নবলন শব্দে বিভ্তরণে আলোচিত হইরাছে।
বলনবাসনা (ত্রী) গ্রহাদির অরন্চাতি প্রতিপাদন।

यमनाभन (पूर) > सम्परनकः। २ देखः। यमनिमृतन (पूर) देखः।

বলনাংশ (দ্লী) ৰক্ষগতিয় খংশ (degree of deflection)

বল্জিকা (বী) দদীভশারোক স্বরক্রমভের। •

वलभूत (ही) वननामक नानवित्र भूती।

বল্ডি [ন্ত্ৰী] (ন্ত্ৰী) বলভি-ক্লিকানাদিতি বা গ্ৰীব্। কড়জী। ১ গৃহহয় কাঠাম। ২ ছালের উপন্নিছ গৃহ। ৩ গৃহচুকা। ৪ ছাল।

"হৰ্ষ্য প্ৰাসাদবলভীৰবিব্যন্ সোহত্ৰমন্নিশি।"

(कथानविष्ना• ৮१। ३२)

श्रीवित्नव । [यमकीबाक्यरम (मथ ।]

"काबामिकः विश्विष्ठः मन्ना वनकााः

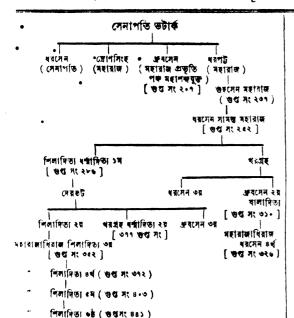
व्यवदानमनदत्रव्यभागिकात्रार ।

ৰীৰ্ত্তিরতো ভৰভার্পত ভত

ক্ষেমকর ক্ষিতিপো বতং প্রকানান্ ॥" (ভারী ২০।৩৫)
বলভীরাজ্ঞবংশ, স্থরাট্রের একটা স্থ্যাচীন রাজবংশ। স্থরাট্রের
(বর্তমান কাঠিরাবাড়ের) অন্তর্গত, ভাওনগরের ১৮ মাইল
উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। বর্তমান বলা নামক স্থান পূর্বের বলজী
নামে খ্যাত ছিল। প্রাচীন বলভীরাজধানীর ধ্বংসাবশেব উক্ত
বলা নামক স্থানে বিভ্যান। এখানকার প্রাচীন নরপতিবংশই
"বলজীরাজবংশ" বলিয়া ইতিহাসে পরিচিত।

খুটার ৫ম শতালে ভটার্ক নামে এক সেনাপতির অস্থানর হয়। তিনি মৈত্রক বা মিত্রবংশীর ছিলেন। ভটার্ক সন্তবতঃ ক্ষরাষ্ট্রের শক্ষ-নরপতিগণের কোন সেনাপতির বংশধর। বলভীরাজগণের বহু শিলালিপি ও তারশাসন হইতেও জানা বার বে, ভটার্কের মত তাঁহার জােচ পুত্র ১ম ধরসেনও "সেনাপতি" উপাধিতে ভ্রিত ছিলেন। পালাতা ঐতিহাসিকগণ ইহানিগকে বৈরেশিক বলিয়াই মনে করেন। আমানেরও মনে হয় বে, ভটার্কও এক জন শাক্ষীপীর ক্ষত্রির-বংশসভূত ছিলেন। অতি পূর্কাকালে বে সকল শাক্ষীপীর জারতে আসিরাছিলেন, তাঁহারা মিত্রনামক স্বর্গোপাসক ছিলেন, এই কারণ অনেকেই মৈত্রক বা মিছির উপাধি ধারণ করিতেন। শবে তাহাই বংশোণাধিরণে গণ্য হয়,—ভটার্কও ঐরণ কোন বৈত্রক-কুলোংগর, ভাহার বংশবহুগণও "বৈত্রক" বলিয়া পরিচিত। এই বংশের বহু ভারশাসন পাওয়া পিরাছে, ভাহা হইতে হুল্লাভার বাহির হইরাছে। (পর পুঠার প্রাক্ত হইন)

নেনাপতি ভটার্ক এই বংশের বীলপুরুষ হাইলেও তাঁহার তর পুত্র প্রথম প্রবাদনই প্রকৃতপ্রভাবে "পঞ্চমহাশব"-বৃক্ত রাজোপাধি প্রবণ করেন এবং এই বংশীর রাজগণের যে সুক্ত ভাত্রশাসন আবিভূত হইরাছে, তক্সধো ঐ প্রস্কাসন্ত



निर्मापिका १म अपक्र (श्रुष्ठ मः १८०)

ভামশাসনই সর্বাঞ্চীন, ভাহাতে ২০৭ আছে দৃষ্ট হয়। ঐ অহকে কোন কোন প্রাত্নতত্ত্ববিদ্ "বলভীসংবৎ" নামে নির্দেশ স্থাসিদ্ধ মুদলমান-পণ্ডিত অল্বেক্ষণী থুষ্ঠীয় করিয়াছেন। ১০ম শতান্দীর শেষে লিখিয়া গিয়াছেন, যে 'বল্লভ' বংশ ধ্বংস হুইলে ২৪১ শকালে ঐ সংবৎ প্রচলিত হয়। কিন্তু আমরা দেখিতেছি যে, সেনাপতি ভটার্ক হইতে বলভীবংশের অভ্যাদয়। এরূপ স্থলে তাঁহার জন্মের শতাধিক বর্ষ পূর্বে কিরূপে বলভী-রাজবংশের ধ্বংসের কথা স্বীকার করা যায় ? আমাদের বিশ্বাস, এক সময় বলভী স্তরাষ্ট্রে শকরামগণের অধিকারে ছিল। ২৪১ শকে বা ৩১৯ খুষ্টাব্দে শকরাজ্য ধ্বংস ও গুপুসামাজ্য প্রতিষ্ঠিত হয়। ২৪১ শকানেই শুপ্তদংবতের আরম্ভ। তাহার বহু বর্ব পরে সেনাপতিবংশের অভাদর ঘটলেও বলভীরাজগণ তাঁহাদের সন্মা-নিত গুপ্তসমাট্গণের সংবৎ গ্রহণ করিতে বাধা হন। এরূপ ত্বলে বলভীরাজ্ঞা ধ্বংস হইতে বলভী-সংবৎ আরম্ভ হওয়ার প্রবাদ প্রচলিত হওয়া কিছু অসম্ভব নহে। উক্ত ২০৭ আছে + ২৪১ = ৪৪৮ শকে (বা ৫২৬ খুটাব্দে) ১ম প্রবদেন রাজ্য করিতেছিলেন। তিনি ও তৎপরবর্তী রাজগণের তামশাসন হইতে জানা যায় যে, তাঁহারা "পঞ্মহাশব্দ" ব্যবহার করিতেন। সামন্ত, মহাপ্রতীহার, মহাদপ্তনারক ও মহাকার্তায়তা। ঐ দকল উপাধিগুলি সম্ভবতঃ তাঁহাদের পূর্বপুরুবগণের রাজ-কায় প্ৰ-নিৰ্দেশক ছিল, অধন্তন বংশধরগৰ সে স্থৃতিলোপ कता कर्वता मान करतम नाहै। अम अवरमन निष्म अक्कन বৌদ্ধ হইলেও তিনি অপর ধর্মবিবেরী ছিলেন না। বছ তাম্র-শাসনে তাঁহার ভগিনী হক্তা 'পরমোপাসিকা' নামে সম্মানিত হইয়াছেন। বলজীরাজ শিলাদিতা ১ম ধর্মাদিতা সম্রাট্ হর্বদেবের নিকট পরাজিত হন।

বালাদিত্য ২য় ধ্রুবসেনের ৩১০ সংবৎ চিহ্নিত (৬২৯ খৃঃ
জঃ) তামশাসন পাওরা পিরাছে। এই ধ্রুবসেনকে চীন-পরিরাজক হিউএন্ সিয়াং, 'ভু-লু-হো-পো-ট' বা ধ্রুবভট নামে
পরিচিত করিয়াছেন।

তিনি বলভীপতিকে মালবপতি শিলাদিত্যের ভাগিনেয়. কান্তকুজপতি হর্ষবর্দ্ধনের পুত্রের জামাতা এবং ক্ষত্রিয় জাতীয় विनया উল্লেখ कतियाहिन। त्यरे वनश्रीबाक शृद्ध हिन्तृथन्त्रा-বলম্বী থাকিলেও ঐ সময় তিনি বৌদ্ধ ত্রিরত্বের উপাসক হইয়া বৌদ্ধর্ম অবলম্বনের সঙ্গে অতিশয় দয়ালু, বিস্ফোৎসাহী ও ধার্ম্মিক হইয়া পড়িয়াছিলেন। প্রতিবর্ধেই তিনি মহাধর্ম-সভা আহ্বান করিতেন, শ্রমণদিগকে বহু ধনরত্ব ও উৎক্লপ্ট খান্ত দামগ্রী দান করিতেন, আচার্য্যদিগকে ৩ থানি পরিচ্ছদ. टिष्ठकाणि अ भूगावान् मणित्रक्वाणि विख्या कतिरखन । वह ज्व দেশ হইতে যে সকল আচাৰ্য্য বলজী-সভায় উপস্থিত হইতেন, তাঁহারা রাজার নিকট বিশেষ সম্মানলাভ করিতেন। তৎকালে বলভীরাজ্যের আয়তন ৬০০০ লি বা হাজার মাইল, ইহার ও ভূসংস্থান মালব রাজোর মত। এই স্থান বহু জনাকীর্ণ. রাজধানী ধনী জনের প্রাসাদে সমাচ্চর, এখানে বছ কোটীপতির বাস। নানা দুরদেশের রত্মরাশি এখানে স্ঞ্ভিত। এখানে শতাধিক সঙ্ঘারাম এবং তাহাতে প্রায় ৩০০০ আচার্য্যের বাস। তাঁহারা সকলেই প্রায় সন্মতীয় শাথার হীন্যান। শৃত শৃত দেব-মন্দিরেরও অভাব নাই। চীনপরিব্রাজক এইরূপে বলভীর পরিচয় দিয়া শেষে শিথিয়াছেন, তথাগত অনেক সময় এখানে পদার্পণ করিতেন, তজ্জ্ঞ অশোকরাজ তাঁহার স্থরণার্থ এথানে কএকটা স্থতিত্ত প নির্মাণ করিয়াছিলেন। বলভীনগরের অনতি-দূরে চীনপরিব্রাজক অর্ছৎ আচারের প্রতিষ্ঠিত গুণুমতি ও স্থিরমতির স্থতিনির্দেশক বৃহৎ সম্থারাম দেখিয়া গিয়াছিলেন।

সমাট্ হর্ষক্রের :মৃত্যুর পর যখন বর্দ্ধনসামাজ্য লইয়া গোলযোগ ঘটে, সেই স্থযোগে ৪র্থ ধরসেন বহু রাজ্য জয় করিয়া "পরমভট্টারক পরমেশ্বর চক্রবন্তী মহারাজাধিরাল" উপাধি গ্রহণ করেন। তিনি স্ত্রীপুরুষ উভয়কেই রাজকার্য্যে সমান অধিকারী মনে করিতেন। তাহার ৩২০ বলজী-সংবতে (৩৪৯-৫০ খুটাকে) উৎকীর্ণ ভাম্রলাসনে তাহার প্রির ছহিতা ভূপা দৃত্ত অর্থাৎ দানপত্রের কার্য্য সংসাধনে প্রধান রাজপুরুষ বলিয়া পরিচিত। তিনি ভরুকছে বর্তমান ভরোচ সহরে আপন রাজধানী প্রতিষ্ঠা করেন।

বলজী-ধ্বংস হইলেও পরে বহুকাল বলজী-সংবডের প্রচলন ছিল। বেরাবল হইতে আবিষ্কৃত চৌলুকারাজ অর্জ্নদেবের শিলালিপিতে ৯৪৫ বলজী সংবৎ অন্ধ (=>২৪৬ খুৱাল) দৃষ্ট হর। বলজীধ্বংসের পর বলজীবংশীয় কোন কোন ব্যক্তি রাজ-পুতনাদ্ব আশ্রম লাভ করেন। [ব্রুর দেখ।]

বলম্ভ (পুং) প্রাচীন জনপদভেদ।

ব ল স্থ (পুং) অবলম। সরলরেথার উপরিস্থ লম্বরেথা (Perpendicular)।

বলয় (পুংক্লী) বলতে আর্ণোতি হস্তাদিকমিতি বল (বিনিম্বি-ত্রিভা: কথন্। উণ্ ৪।১৯) ইতি কথন্। স্বৰ্ণাদি রচিত কোষ্টাভরণ, চলিত বালা, করাভরণ। পর্যায়—আবাপক, প্রিহার্য্য, শহাক, কমু, কুওল। (জ্বটাধর)

"সচেমস্ট্রম ণিডিঃ কেয়্রৈব লয়েরপি।" (রামারণ ২।৩২।৫)

২ মণ্ডল।

"অপ্রান্তঃ সকলং ভূমেব লয়ং তুরগোত্তম:।

সমর্থ: ক্রান্তমর্কেগ তবায়ং প্রতিপাদিতঃ ॥"(মার্ক°পু । ২০।৪৯)

ত অন্থিবিশেষ। (সুশ্রুত শারীবস্থা । ৫ অ°) ত বৈদ্যকোক্ত
ভাগ্নিকর্মবিশেষ।

"বোগাধিষ্ঠানভেদাদ্যিকশ্ম চতুর্ধ ভিন্ততে। তদ্যণা—
বলয়বিন্দ্লেথাপ্রতিসারণানীতি দহনবিশেষা:" (স্থশ্রত ১)১২)
স্থশতের মতে রোগের স্থানভেদে অগ্নিকর্ম চারিপ্রকার।
যথা—বলম, বিন্দু, বিলেখন ও প্রতিসারণ। অর্ক্যুদ ও গলগভাদি
দৃদ্মূল রোগে বালার ভার গোলাকাররপে দগ্ধ করিলে
ভাগকে বলম করে। ৪ বেইন।

"স বেলাবপ্রবলয়াং পরিথীকৃতদাগরাম্ । অনস্তশাসনাম্কলং শশাসৈকপুরীমিব ॥" (রযু ১।৩०)

(পুং) বলয়বদাক্তিরস্তাতেতি অর্শ আদিদ্বাদচ্। ৫ স্বষ্টা-দশ প্রকার গলবোগের অস্তর্গত গলবোগবিশেষ। ইহা গলগণ্ড-রোগ নামে পরিচিত। ইহার লক্ষণ---

"বলাস এবায়তমূয়তঞ্চ শোধং করোৎপন্নগতিং নিবার্য।

তং সর্কাপেরাপ্রতিবার্য্য বীর্যাং বিবর্জনীয়ং বলয়ং বদস্তি ॥"(ভাবপ্র°)
কক কর্তৃক বিস্তৃত, উন্নত এবং অন্নবহা নাড়ী অবরোধকারী শোথ গলে উৎপন্ন হইলে তাহাকে বলমবোগ কহে। এই
বোগ অসাধ্য। এই রোগ চিকিৎসা করিলে একেবারে সারে না।

७ (नना । १ कवन । ৮ मधनार्शितम्ब । "स्थारका ननवरेन्टन मधारमः स्टब्बरः।"

(कामसकीय नीकिमा॰ ১৯।৪१)

त्मग्रवर (बि) वनत अखार्थ मञ्जूष मञ्जू वः। वनप्रविनिष्ठे। वनप्रकृतः

বলয়িত (ি) বলয়বং ক্তমিতি বলয় তংকরোজীতি গিচ্
ততঃ ক্তঃ, যহা বলয়ং ভদায়তির্লাতমতেতি বলয়-ইতচ্।
বেষ্টিত, পরিবৃত, খেরা।

"ইন্ধনমালাবলয়িতবাহঃ প্রধনহরণে সাক্ষাজ্ঞাহঃ।" রপ্তাবোবনভঞ্জনবীরঃ কীর্ত্তনপজনে মলপ্রীরঃ॥" (উট্ট) বলয়িন্ (এ) বলয় বা র্ডাক্ষারে শোজিত। বেমন জ্যোতিলেপাবলয়িন্।

বলয়ীকৃত (ত্রি) ১ বলমাকারে বেটিত। ২ ক্তবলম। যাথা বলমালভারে পরিণত করা ছইয়াছে। ৩ কুঞ্জীকৃত।

বলয়ীকুতবাস্কী (পুং) শিব।

বলয়ীভুত (बि) > বলয়াকারে ছন্ত। ২ বেটিত।

বলরাম রায়, বারেজ-কারন্থ-সমাজের দেববংশে বণরাম বায় জন্মগ্রহণ করেন। বর্তমান জেলা পাবনা ও পরগণা কাটাব মহলার অন্তর্গত তাড়াশ (১) গ্রামে ইঁহার বাসস্থান। বলরাম ও উাহার জ্ঞাতিবংশ তাড়াশের কমিদার বলিয়া পরিচিত।

উক্ত তাড়াল গ্রামের উত্তরপূর্বাদিকে প্রায় ১০ দশ মাইল দুরে দেবচড়িরা নামক পলীতে জীরামদেবের পুত্র নারায়ণ দেব চৌধুরী বাদ করিতেন। এ সমর রাজমহল হইতে ঢাকা সহরে রাজধানী স্থানাম্বরিত হর। নারায়ণ দেব একদা ঢাক। গমনোদেশে বর্তমান ভাড়াশ নামক স্থানে উপনীত হইয়া একস্থলে তিনি একটা অনাবৃত বাণলিক্ষের উপর কামধেপুকে চুগ্নবর্ষণ করিতে দেখিয়া বিশ্বরাপর হন। তিনি কামধেমুকে দেখিবামাত্র সেই ধেমু অন্তর্হিত হইল। চলনবিলের একাংশে জনপ্রাণিশৃক্ত স্থানে এইরূপ ঘটনা মিতাক্ত আশ্চর্যাজনক বটে। তিনি ঢাকা হইতে প্রত্যাগমন ক্ষিয়া বাণলিক স্থীয় ভবনে প্রতিষ্ঠিত করিতে সংকর করেন। ঢাকার বে উদ্দেশে গমন করেন, তাহা সফল হওরার বাণলিকের প্রতি ভক্তিপরবশ হইয়া তাহা উত্তোলন মতা বত্ন করেন। কিছ উক্ত বাণলিকের মূলদেশ গভীর মৃত্তিকার নিমে প্রোণিত থাকার তাঁছার অভিনায পুর্ণ হইল না। নারায়ণ দেবের স্থাপিত 角 🕮 গোপীনাথ দেবের নামাকুদারে তদীয় ভদ্রাসন চড়িয়া গ্রাম "চড়িয়া গোশীনাথ পুর" নামে কথিত হইতেছে। সেই সময় হইতেই উক্ত বিগ্ৰহের

⁽১) প্রসিদ্ধ চলন বিলেয় একপার্বে তাড়াল প্রায়। ইহায় পুর্বাদিকে
প্রাচীন কীর্ত্তিকলাপের খ্বংসাবলেবপূর্ণ নিমগাহী নামক হাবে বিপুত্ত কয়েয়াঃ
ভটে সংহাপিত নিমগাহীকে নাধারণে বিয়াটেয় দক্ষিণ প্রাপৃত্ত নামে অভিহিত
করেম। তথায় য়য়সাগয় মামক সুবীর্ব য়লালয় ও য়য়্টালিকায় ভয়াবলেয়
প্রাচীন ঐবর্গয় পরিছয় প্রদাম করিভেছে।

দেবর সম্পত্তি গোপীনাধপুর এবং চড়িরা অস্থৃতি করেকথানি তালুক ছিল। নারারণ দেব ও চাকুর প্রবের শুক্ষের একই ব্যক্তি ছিলেন। চাকুরে লিখিত আছে—

"চড়িয়া প্রামেতে বাস গুক্ষের নাম।

শুক্দেবপুত্র ৰাজনেৰ ভাপুক্ষার ।
তাহার বংশের কথা গুলহ বিভার ॥
ধনবান্ কীর্ত্তিনত বিবর ব্যাপারে ।
তার পুত্র চাকুরী কৈলা নবাব সরকারে ॥
সেই বংশে উম্বিলা বলরাম রার ।"

বাস্থ্যের কর্তৃক তাড়ালের জ্ঞাসন নির্দিত হর। বাস্থ্যের পিতার নিকট উক্ত জনাদি বাণলিক্ষের মহিমা প্রবণ করিরা-ছিলেন। নারারণনের বিশেষ চেটা করিরাও উক্ত বাণলিক্ষ চড়িরা প্রায়ে হানান্তরিত করিতে সমর্থ হরেন নাই। বাস্থ্যের রাজকার্য্য বলতঃ ঢাকার বান। উক্ত বাণলিক্ষকে প্রণাম করিবার কল্প তাড়ালে জ্ঞানেন, এখানে একহনে একটা ভেককে সর্প ধরিতে দেখিরা তথার জ্ঞানন নির্দাণ করিরাছিলেন। (১)

নারারপদেব ঢাকার নবাব সরকারে কি কার্য্য করিতেন, তিবির পরিজ্ঞাত হওরা বার না। তাঁহার নির্মিত বে সকল অট্রালিকা ও পুকরিনীর পরিচর পাওরা বার, দেবপ্রতিষ্ঠা এবং অতিথিসেবাদি নিতাকর্পের বে বশংসোরত আছে, সেই সকল বিবয় বিবেচনা করিলে, তাঁহার সম্পত্তি বে নিতান্ত সামান্ত ছিল না, তাহা প্রতীরমান হয়। নারারপদেব উক্ত বাপলিকের মন্দির নির্মাণ করেন। বাপলিকটা এ প্রাদেশে অনাদি শিক্ষ বলিরাই খ্যাত এবং তাহা কপিলেকর নামে পরিচিত। ঐ মন্দিরের প্রবেশহারের বহিন্দিকের শিরোভাগে নির্মালিক্ত প্রোক্ত অব্যাদিও বর্জমান আছে:—

"পাকে বাজিপরাওগেলুগণিতে জীরামনেবাৎ পর:
জীনারারণনেব এব ক্সকৃতিঃ বর্জোকলোকোভরম্।
গ্রানানং ক্ষতিলৃষ্টিতো নিরুপনং তক্যা বনৌ পভবে
নাডুং বর্গপরগ্রাপকরণং লোপানমেকং তৃবি ।
ইতি গুডমন্ড পকালাঃ ১৫৫৭ জীগৌরালো করতি।"
বাহুদেবের নারাভ্য নারারণ বেব। জীরামনেব তাঁহার
পিতা ভিলেন।

ৰাজ্যৰেৰ বাহের প্ৰথম পুত্ৰ জন্মক ও বিভীন পুত্ৰ নামনাথ।

ইইারা ছই প্রাজা ঢাকার নবাব সরকারে বিষয় কর্ম করি-তেল। এই বিষয়কর্ম হইতেই রার চৌধুরী উপাধি হয়। বাহুদেবের কার্যো নবাব অতি সন্তই হইরাছিলেন। ইনিই শ্রেখনে "চৌধুরাই তাড়াশ" নামক সম্পত্তি অর্জন করেন। গরগণে কাটার মহলা তৎকালে সাক্তেলের রাজার জমিনারী ছিল। তদক্তপত ছইপতেরও অধিক মৌলা সইরা এই চৌধুরাই তাড়াশ নামক সম্পত্তির ক্ষেই হয়। চৌধুরাই তাড়াশের অধিকাংশ মৌলাই তাড়াশের চতুপার্থবর্তী।

জরক্ষ রারের সাতিটা পুত্র সন্তান জল্ম। তল্মধ্যে বলরাম, রামদেব ও রামরাম ভিন্ন জন্ত কাহারও বংশবৃদ্ধি হর নাই। রামদেব ৪র্থ, বলরাম এম এবং রামরাম ৭ম পুত্র।

ইত্রাহিন্ খাঁ বে সমর নবাব, সেই সমরেই সমাট্পোঞ আজিম ওস্সান বালালার স্থবাদার হইরা আগমন করেন। বসরাম রার এই স্থবাদারের দেওয়ানী কার্য করিয়াছিলেন।

এ সময়ে রছ্নক্ষনের আধিপত্যের প্রপাত। মুর্লিদাবাদে রাজধানী স্থাপিত ছইলে কাননগো দপ্তরে তাঁহার একাধিপত্য ও অতির্দ্ধি আরম্ভ হইরাছিল। পুঠিরা-রাজসংসারে কার্য্য কালে তিনি সাতৈলের জমিদারীর বিবর বিশেবরূপে অবগত ছিলেন। তক্ষ্ম সাতৈল জমিদারীর প্রতিই তাঁহার প্রথম দৃষ্টি নিপতিত হর। সাতৈলের তদানীক্তন জমিদার রাণী সর্কাণী অতির্দ্ধা ও রাজকার্য্যে অসমর্থা এবং তাঁহার জমিদারীর কার্য্য-নির্কাহের জন্ম উপবৃক্ষ কর্মচারীর অসভাব থাকার, তিনিই তৎপ্রতি বিশেব লক্ষ্য রাখিতে আরম্ভ করেন। নবাব মুর্লিদ্ধ কুলিখার স্বসৃষ্টি রঘুনক্ষনের প্রতি নিপতিত হইয়াছিল। তক্ষ্মপ্রতিহন্দিতা করিতে কেই সাহসী হন নাই।

সাতৈল অনিদারীর অশৃত্যলার কার্যপ্রশালীর জন্ত অনৈক অভিজ্ঞ কর্মচারীর আবন্ধক হইরাছিল। তাড়াল প্রাম সাতিল হইতে প্রার ১২ মাইল উত্তরে অবস্থিত। জরক্ষ চৌধুরীর প্রগণ শৈতৃক সম্পত্তি ও নবাব সরকারের বিবরকর্ম্মের জন্ত প্রশিক্ষ ছিলেন। রত্মনান সাতৈল অনিদারী-পরিচালনে উপযুক্ত তাবিয়া বলরামরারের কনির্ভ্ প্রাত্য রামরাম রারকে স্থির করেন। বলরাম নবাব সরকারে ও রামরাম রার বাটাতে থাকিরা শৈতৃক বিবরের তত্মাবধারণ করিতেন। শৈতৃক বিবরকর্ম্মের তত্মাবধান হেতু অনেকে তাঁহার জনিহারী পদ্মচালনের পরিচর পাইরাছিলেন।

রখুনন্দন বে সমর রাধরামকে খীর ব্রাভা রাজা রামজীবনের বেওরানী পদে নিরোগার্থ নির্মাচন করেন, তৎকালে বলরাম রারের চাকার অবহান হেডু রামরাম জোঠের মড গ্রহণ করিছে পারেন নাই। বিশেষতঃ তৎকালে সাতৈল ঐভ্ডি জ্বিলারীয়

⁽১) ভাড়ানের অবিহাত-হাটার বে স্থানে মাজের বাটা দাবে কবিত হত, নেইস্থানে তেক কর্মুক সর্গ যুক্ত হওলার, বাস্তবেশ কর্মুক ভবার বনসার দেবী মির্মিত স্ট্রাছিল। ঐ বেদী কায়াশিও কর্মুনা আছে।

পরিণাম দেখিরা রামরাম কেন, এ দেশের জনেক জমিদারই জীত হইরাছিলেন। তিনি ঢাকা হইতেই তদীর প্রাতা রাম-জীরন বা রঘুনন্দনের দেওরানী ফার্যগ্রহণের বিবর প্রবণ করিরা ক্রোধে ও ক্লোভে প্রিরমাণ হইরা প্রাতার মুখাবলোকন করিবেন না বলিরা পত্র লেখেন।

বলরাম প্রাতার প্রতি অসম্ভই হইরা কিছু দিন বাটাতে আগমন করেন নাই। তিনি অতি মাতৃতক্ত ছিলেন। কনিটের প্রতি কুদ্ধ হইরা বাটাতে আগমন না করার মাতৃবিরোপের সমর জননীর চরণ দর্শন করিতে না পারিরা হৃঃবিত হইরাছিলেন। মাতৃপ্রাদ্ধ অতি সমারোহের সহিত করিতে হইবে এবং সেই কাণ্যের বার সংসার হইতে বা প্রাতা কর্তৃক স্থচারুরূপে নির্কাহ হওরা অসম্ভব মনে করিয়া তাঁহাকে পত্র লেখেন বে, তুমি সামান্ত জমিদারের কর্ম কর, একটা বৃহৎ দানসাগর প্রাদ্ধের বার নির্কাহ করা তোমার সাধ্য হইবে না। অতএব সামান্ত একটা প্রাদ্ধের আরোজন করিবে। আমি বাটাতে উপস্থিত হইরা যথাকালে দানসাগরের আরোজন করিব।

রাজা রামজীবন এই পত্রের বিষর অবগত হইরাছিলেন। তাঁহার দেওয়ান মাতৃপ্রাদে দানসাগরের আয়োজনে অসমর্থ এ কথা তাঁহার হৃদয়ে শেলের স্থায় বিদ্ধ হয়। দেওয়ানের কার্যাদক্ষতায় জমিদারী ক্রমশং বিদ্ধিত হইতেছে জানিয়া রামজীবন তাঁহার উপর যথেষ্ট প্রীত ছিলেন।

এখন তিনি স্নাদেশ প্রচার করিলেন যে, নিরূপিত দিবসে দেওয়ানের মাতৃপ্রাদ্ধে দানসাগরব্যাপারের আয়োজন করিতে হইবে। রাজার অমাত্যগণ প্রাদ্ধের আয়োজনে প্রস্তুত্ত হইলেন। অত্যন্ত কাল মধ্যেই বিবিষ্ণ সামগ্রীতে তাড়াশ-ভবন পূর্ণ হইয়ছিল।

বলরাম মাতৃপ্রান্ধের জন্ত এক লক্ষ টাকা বায় করার সংকর করিরাছিলেন। তিনি একটা নীল ব্ব মাত্র ও নগদ অর্থ সঙ্গে করিয়া প্রান্ধের করেক দিবস পূর্ব্ধে বাটাতে উপনীত হরেন। তৎকালে রাজা রামজীবনের জমিদারীর প্রত্যেক গ্রাম হইতে দ্রবাদিসহ বছতর নৌকা তাড়াশে আসিরাছিল এবং সমস্ত দ্রবারাখিবার স্থান সংকুলান না হওয়ার অধিকাংশ দ্রবা নৌকাতেইছিল। বলরাম রায় দানসাগর প্রান্ধের প্রচুর আরোজন দেখিরা ভাতাকে বলিয়াছিলেন "দানসাগরের বিপূল আরোজন হইয়াছে। এ সমস্তই তোমার ক্রম্ম। অভাবের মধ্যে একটা নীলব্ব দেখিতেছি। মাতৃপ্রান্ধে কেবল এই সামগ্রী সংগ্রহ করাই আমার অদৃষ্টে ছিল।"

বলরাম রারের মাতৃশ্রাভ ত্নীয় কনিট রামরাম কর্তৃক রাজা রামজীবনের সাহাব্যে অতি সমারোহের সহিত সম্পর হয়। বলরাম রার মাতৃতক্তির নিলশন স্বরূপ জননীর স্বর্গস্থ্কামনার, লামসাগর প্রাছে বে লক টাকা বাঁর করা সংকর করিছিলেন, ঐ টাকা মাতৃতক্তির স্থতিছাপনার্থ বার করাই উচিত মনে করেন। এই অর্থের ছারা তিনি রসিকরারবিগ্রহপ্রতিষ্ঠা ও প্রাতন কুঞ্গবন নামক দীবী ধনন, গৃহরিশী ধনন, কোলমঞ্চনামক মন্দির নির্দ্ধাণ, কপিলেছরের মন্দির সংজ্বপ এবং কাশা, গ্যা ও বুল্লাবনধানে ছ্তান্থাপন করেন।

কপিলেখনের মন্দিরে পূর্বোভ্ত প্লোকের নিয়ে এই প্লোকটা বিশ্বমান আছে---

"কালায়িতকেন্দ্মিতে শকামে বরং শিবকালয়মিষ্টকাকৈঃ। জীৰ্ণ: ক্টাঞোজরতে স্ম জক্যা তন্মিন্ প্রবীণো বলরামদাসঃ॥"

কাল, অমি, তর্ক, ইন্দু শব্দ ছারা ১৬৩৬ শ্বাদ (১৭১৪ খু: আ:) উপলছি হইজেছে। বলরাম রার মাত্বিরোগের পর নিজ্ঞ ভবনে রসিক রার নামক বিগ্রহ স্থাপন করেন। উক্ত বিগ্রহের পাদপল্লে বলরাম রারের নাম লিখিত আছে। বলরাম উক্ত বিগ্রহের জন্ত ত্রিতল দোলমঞ্চ নির্দ্ধাণ করেন। তাহাতে নিয়োক শ্লোক আছে:—

"नात्करुव्यतम् अक्तूम् भारक व्यानाममूख्यम् ।

क्रिक्षात्र मामे खिनवनत्रास्य महाचारम ।"

১৬৪০ শকান্দে শ্রীরদিক রার বিএচের শ্রীমন্দির রামরাম রার কর্তৃক নিশ্বিত হর। শ্রীমন্দিরটা বিভল গৃহ। তাহাতে এইরূপ লিখিত আছে:—

"রসবেদৰাতুকোণীমিতশাকে মহান্দ্রনা।

🕮 इकाम माम 🕮 লবল রামা গৃহং ওভম্।"

রস, বেদ, ঋতু, কোণী, শল ধারা ১৬৪৬ শকান্ধ (১৭২৪ খুটাল) হইতেছে। বলরাম রার প্রগণে বড়বালু হসেনশাহীর হিন্দা জমিদারী অর্জন করেন। মূলীদকুলির পর ফুলা থা বে রাজত্ব বন্দোবত করেন, তাহার কাগল পত্র মধ্যে বলরামের পূত্র রত্রাম ও তাহার ভাতৃপুত্র হরিদেব প্রভৃতির নাম দৃষ্ট হর। ১১৪১ সালের পূর্কেই বলরাম রার ইহলোক পরিত্যাগ করেন।

রামরাম রার অতি পরোপকারী ছিলেন, জাঁচার বড়ে এই প্রদেশের অনেক লোক ও কতিপর আস্ত্রীর স্বজন নবাব সরকারে বিষয় কর্ম লাভ করেন। দেবসেবা, অতিবিসেবা, প্রভৃতি পূণা কার্য্যে জাঁচার অভিশয় আহা ছিল। এতদেশে তৎকালে ঐ সকল কার্যাই একমাত্র সবস্থচান বলিয়া পরিগণিত ছুইত। বল্যাম রারের প্রলোক্পমনের কিছু দিন পরও তদীর পুত্র এবং রামদেব ও রামরাম রারের পুত্রগণ একত্র ছিলেন, পরে পৃথক্ হইরাছিলেন। বলরামের বংশ বড় তরফ, বামদেবের বংশ মধ্যম তরফ ও রামরাম রারের বংশ ছোট তরফ নামে পরিচিত।

রামরাম রারের উদারতা ও তীক্ষ বৃদ্ধি সম্বন্ধ বিবিধ প্রবাদ প্রচলিত আছে। তাঁহার লোক জন ভাল আহার করিত, কিন্তু নিজে কথনও ভাল আহারের জন্ত লোলুপ ছিলেন না। তিনি বে সমর রাজা রামজীবনের দেওরান, তৎকালে তাঁহার ম্বগ্রামবাসী এক ব্যক্তি মূলী ছিলেন। তিনি রামরাম রারকে অপদন্থ করিবার জন্ত জনেক কাগজের মধ্যে একখানি তালুক দানপত্র সহি করিরা লরেন। তিনি "বরাত আলমান" কথা লিখিরা দেন। রাজা রামজীবন মুনলীর নিকট দেওরানের দানের কথা ভনিরা তৎপ্রতি জুদ্ধ হরেন; কিন্তু পরে প্রকৃত অর্থ হাদর্যক্ষম করিয়া সঞ্জোব লাভ করেন।

রামরাম নাটোর জমিদারীর শৃষ্টি হইতে রাজা রামজীবনের প্রলোকগমনের পরও জাতার কাল দেওয়ানী করেন। রাজা রামকান্ত বৌবনের প্রারম্ভে প্রাচীনদিগের সৎপরামর্শ জাবহেল। ক্রায় ও রামরারের বার্ভকাবশতঃ সেই বর্বে তিনি কর্ম্ম পরিত্যাগ করেন।

বলরামী, বৈঞ্চব সম্প্রদায়ভেদ। বলরাম হাড়ি এই সম্প্রদায়ের প্রবর্তক, এই নিমিত্ত ইহা বলরামী নামে কথিত। নদীয়া জেলার অন্তর্গত মেহেরপুর গ্রামের মালো-পাড়ায় ভাহার অন্য হয়। ভাহার পিতার নাম গোবিন্দ হাড়িও মাতার নাম গৌরমণি। ১২৫৭ সালের ৩০এ অগ্রহায়ণ অন্ত্রমান ৬৫ পরবৃত্তি বংসর বয়াক্রমে ভাহার মৃত্যু হয়।

বলরাম ঐ প্রামের মলিক বাবুদিগের বাটতে চৌকিলারি কশ্ম করিত। তাঁহাদের ভবনে আনন্দবিহারী নামে এক বিগ্রহ আছে, একলা ঐ বিগ্রহের শ্বণালভার চুরি বাওয়াতে, বাবুরা বলবামকে কিছু শাসন করেন। তাহাতে সে বাটা পরিত্যাগ করিয়া গেরুয়া বন্ধ পরিধানপুক্ষক, উদাসীন হইয়া যায় এবং এই শ্বনাম-প্রাস্থ উপাসক-সম্প্রাধ্য প্রবর্তন করে।

বলরামের শিব্যেরা তাহাকে শ্রীরামচন্দ্রের অবতার বলিয়া বিধান করিত। কিন্তু বলরাম বয়ং যে এরূপ অভিপ্রায় প্রকাশ করিবাছিল, এনন বোধ হয় না। শুনিতে পাওরা বার, সে বয়ং লাই-বিভিপ্রালয়-কর্মা বলিরা আভাবে আপনাকে পরিচর বিত। ভাহার শিব্যেরা করে, "বলরাম বাচক' ছিলেন এবং সভা ব্যবহার করিছে উপরেশ বিভেম।

বলরান বাক্য-চজুর ছিলেন এবং সংসারের বাবভীর ব্যাপারের নিগুচভাব ব্যাখ্যা করিভে পারিভেন; এই নিমিত্ত তিনি বাচক বলিরা প্রানিছ। এক বিবস তাঁহার কোন কোন শিষ্য জিজ্ঞাসা করিল, পৃথিবী কোথা হইতে হইল ? তিনি উত্তর করিলেন, 'কর' হইতে হইরাছে। দিব্যেরা জিজ্ঞসা করিল, 'কর' হইছে হুইরাছে। দিব্যেরা জিজ্ঞসা করিল, 'কর' হুইছে কিরপে হুইরাছে। ছিন পুনরার বিশেষ করিয়া বলিলেন, আদিকালে কিছুই ছিল না, আমি আপন শরীরের 'কর' করিরা অর্থাৎ আপনার শরীর হুইতে এই পৃথিবী স্পষ্ট করি। এই নিমিত ইহার নাম কিতি। কর, ক্ষিতি ও ক্ষেত্র একই প্যার্থ। লোকে আমাকে নীচ হাড়ি জাতি বলিয়া জানে, কিন্তু তোমরা বে হাড়ি সচরাচর দেখিতে পাও, আমি ন হাড়ি নই। আমি কুড়ার গড়নদার হাড়ি, অর্থাৎ যে ব্যক্তি গর প্রস্তুত করে তাহার নাম বেমন বরামী, সেইরপ আমি হাড়ের ক্ষি করিরাচি বলিরা আমার নাম হাড়ি।"

এক দিন বলরাম নদীতে লান করিতে গিরা ধেখিল, কয়েক জন ব্রাহ্মণ তথার পিতৃলোকের তর্পণ করিতেছেন। সেও উাহাদের স্থায় অঙ্গ-ভলী করিরা নদী-কূলে জল সেচন করিতে লাগিল। ইহা দেখিয়া একটা ব্রাহ্মণ তাহাকে জিজাসা করিলেন, "বলাই তুই ও কি করিতেছিস্ ? সে উত্তর করিল, আমি শাকের ক্ষেতে জল দিতেছি। ব্রাহ্মণ কহিলেন এখানে শাকের ক্ষেতে কেপায় ? বলরাম উত্তর দিল, আপনারা যে পিতৃ-লোকের তর্পণ করিতেছেন, তাহারা এথানে কোথায় ? যদি নদীর জল নদীতে নিক্ষেপ করিলে, পিতৃ-লোকেরা প্রাপ্ত হন, তবে নদী-কূলে জল সেচন করিলে শাকের ক্ষেতে জল না পাইবে কেন ?"

দোলের সময়ে বলরাম শ্বরং দোলমঞ্চে আরোহণ করিয়া বসিত এবং শিষ্যেরা আবীর ও পূস্পাদি দিয়া তাহার অর্চনা করিত।

এ সম্প্রদারী লোকের মধ্যে জাতিভেদ প্রচলিত নাই। ইহাদের অধিকাংশই গৃহস্থ; কেহ কেহ উদাসীন। উদাসীনেরা বিবাহ করে না, অথচ ইন্সিন্ন-দোবেও লিপ্তানহে। গৃহত্তেরা আপন আপন কুলাচার মতে বিবাহ-সংকার সম্পন্ন করিরা থাকে।

ইহাদের সাম্প্রদায়িক এছ নাই; বিগ্রহ সেবাও দ্বেখিতে পাওরা বার না; গুরু নাই বলিলেও হর। ক্রন্ধ মালোনী নামে একটী শ্রীলোক ছিল, বলরাম ভাহাকে ভালবাসিত; এই কারণে লে কিছুদিন গুরুর কার্য্য করিবাছিল।

বলরাধী সম্প্রদার ছুই শাখার বিভক্ত। এক শাখার লোকেরা বলরামের মৃত্যু-স্থানের উপর একথানি কুন্তু ঘর প্রস্তুত করিরা রাধিরাছে; সন্থ্যাকালে তথার প্রধীপ দের ও প্রণাম করে। বিতীর শাখার লোকেরা, বলরামের এক্রপ আজ্ঞা নাই বিদ্যা ভাষার মৃত্যু-স্থানের কোনক্রপ গৌরব করে না। বলরামের বিরতিত করেকটি বচন এখনে উক্ত হইল ; উহা পাঠ করিলে কৌতুক জন্মে, এবং এ সম্প্রদারের মতও কিছু কিছু জানিতে পারা যার।

>--- "রাছনি নেই ভো রাঁদ্দে কে রারা মেই ভো খেলেম কি। বে রাঁদ্দে সেই খেলে এই ছনিরার ভেকি॥

ব্রেরও আছে বেক্ষেও নাই, ভেমনি তুমি আর আমি রে । ভামরা বরে বেঁচে বেঁচে মরি।

৩ – ছিনি তাই, তুমি ঘাই, যা ভিনি ভাই ভূমি, ভিনি ভূমি আমি ভাবি ভাবি অধোগামী।

8 — যম বেটা ভাই ছমু খো থলি, ভাই লল্পে ওর আবংটা থালি।
ও কেবল থাচে, থাচে,

ওর পেটে কি কিছু থাকচে থাক্চে থাক্চে।
 চকু মেলিলে সকল পাই, চকু মৃদিলে কিছুই নাই।
 দিনে সৃষ্টি রেভে লয়, নিয়য়য় ইহাই হয়।"

বলবং (ত্রি) বল অন্তার্থে মতুপ্মশু ব:। বলবুক, বলবিশিষ্ট। বলবক্তা (ত্রী) বলবতো ভাব: তল্টাপ্। অভিশয় বল, শক্তি, দামর্থ্য, বলবর।

বলবন্ব, মাস্তাজ-প্রেসিডেন্সীর দক্ষিণ ও আর্কট জেলার বিৰ-পুরম্ তালুকের অন্তর্গত একটি সমৃদ্দিশালী গণ্ডগ্রাম। পুঁদিটেরী হইতে আড়াই ক্রোল দক্ষিণপদ্দিমে অবস্থিত। অক্ষা ১১° ৫৫ উ: এবং দ্রাঘি ৭৯° ৪৮ পু:। এখানে স্থানীর ক্রবিজ্ঞাত দ্রব্যের ক্রমবিক্রেয়ার্থ একটী বিস্তৃত হাট আছে।

বলবুত্রেম্ন (গং) বল ও বৃত্তনাশক ইন্দ্র।

বলবুত্রনিসূদন (গং) ৰলক্ত্রো নিস্পয়তি প্দালা। বলক্ত্র-হস্তাইক্স।

वलमृष्म् (पूर) वना रुपप्रिक रूप-न्। हेल ।

বলস (বলাসন), বোষাই প্রেসিডেন্সীর মহিকাছা বিভাগের
অন্তর্গত একটি কুল সামস্তরাজা। এখানকার সন্ধার ঠাকুর
মানসিংহলী রাঠোরবংশীর রাজপুত। ভারাদের দতকগ্রহণের
অধিকার নাই, কিন্তু রাজনিরনে জ্যেষ্ঠ পুত্রই রাজভক্তের অধিকারী ইইরা থাকেন। রাজন্ম ৭২৪০ টাকা, ভন্মধ্যে বার্বিক
২৮০ টাকা কর প্ররূপ বড়োলার গাইকোরাড়কে দিতে হর।

रालहरू (११) > यनमामक षाहरनामक हेन । र समन ामकाती। यनां हे (११) यानम षोहरू आनारण हे छ षोहे प्राक्ष्य । मूनन, तुन । (१२म)

বলারাতি (গুং) বলভ স্বরাতি:। ইস্ত ।

বলাত্ত্ক (প্ং) বলেন হীক্ষতে ইতি বল-হা-কুন্, বৰা বাজীগাঃ
বাহকঃ প্ৰোহনাদিবাৎ নাধুঃ।" > মেৰ । মহাপ্ৰদানে নব্দিত
সপ্তনেবের একতম। ২ মুক্তৰ। (কাৰ্য়) ও পর্কাত।
৪ দৈত্যবিশেষ। ২ নাগবিশেষ। সর্শতেক। (বেদিনী) এই সর্পা
দক্ষীকর সর্শলাজীর। "ইলাহকসর্শত্ত স্বল্পীকরাণামত্তর্শতঃ"।
স্প্রশত করহা" ৪ অ")

৬ রমাগর্ভোত্তব ক্ষিদেবের পূত্র। (ক্ষিপু• ০১ আ)

अक्ररकत्र त्राचेत्र व्यविद्याव ।

"তদ্দনত্ত শভানকঃ সার্রথিশাত দারুকঃ।

ভূরদা শৈব্যহ্মত্রীবনেবপুশবলাছকাঃ ॥" (জিকা°)

৮ ব্যৱত্তবের ব্রন্থবিশেষ। (ভারত এংবরাসং)

৯ নদৰিশেষ, এই সদ লকাসমূত্রগাসী।

"बलाइक्न अवजन्हरत्ना रेममाक अव ह।

বিনিষিষ্ঠা প্রতিদিশং নিময়া সবশাব্ধিং ॥" (মংজপু॰ ১২০।৭২)

৮ কুদারীপত্ন পর্বাভবিশেষ। (মংস্তপু - ১২১।৫৫)

৯ কাদৰব্যক্ত রাজা তারাপীড়ের স্বলামগ্যাত বলাধিকারী। রাজা তারাপীড় চন্ত্রাপীড়কে আনিবার জন্ত বলাহককে প্রেরণ করিরাছিলেন। (কাদস্বরী)

> वकविरमय। [भवर्ग वनाइक स्मर्थ।]

বলি (প্র:) প্রোপহার। ২ দেবসমন্দে হলিদ্ধণে নিহত্তব্য পত।
ত নাভির উপরে হেহোজভাগে রমণীগণের লোলমাংসে হে থাজ
পড়ে। ৪ রাজকর। ৫ অহ্মরভেদ, প্রফ্রাদের পৌত্র। ৬ প্রেণী।
৭ অর্ণোরোগে মির্গত মাংসপিগু। [পবর্গে বলি দেখ।]

বলিবাক (পুং) ভারতবর্ণিত ঋষিদর---ৰণি ও ৰক। (ভারত ২।৪ অ°)

বলিক্রিয়া (খ্রী) > উপহার দান। ২ কোন ব্যক্তির গাতে রেপারণ।

বলিত (ত্রি) ১ বেটিত। ২ থাঁন্সবৃক্ত ।

বলিন (ৰি) > ৰাজযুক্ত কুঞ্চিত গাত্ৰমাংল। ২ বনশালী।

বলিভ (ত্ৰি) ৰণি-মন্ধৰ্ব (তুলিৰণিৰটেৰ্ছঃ। পা ৫।২।১৩৯) বলিযুক্ত, ৰণিবিশিষ্ট।

"मधाना विनिष्ठः मधार" (कि 813%)

विलिमूच (भूः) वामन ।

বলির (ত্রি) বলতে সংগ্রেশতি চকুল্লারাবিতি বল বাহুলকাং কিরচ্। কেকর বা টেরা চকুবিশিষ্ট।

বলিবও (পুং) রাজপ্রজেন।

বলিল (জী) বলিনা গৰুবন্দ্ৰবাচ্চাগহারেণ শুভি হিনতি মংজা-

নিতি শো-ক। বড়িল। (শবরন্না°)

বলিশান (গং) বেষ। (নৈখনী ১০১০) বলিশি (রী) বলিনা আহারোগহারেণ মৎভাষীন ভডি, বিমাণর- ু তীতি শো বাহলকাৎ কি । বজিণ । (শক্ষরতা॰) বলিনি-ভীব্। বলিনী, বজিশ্, বজনী ।

বলী (ত্রী) ১৯শ্রেণীসমূহ। **অঞ্জচন্দনাদি বারা অলে** বে রেখা দেওরা হয়। ও বলিশবার্থ।

বল্লীক (क्री) বলতি সংর্ণোজীতি বল সম্বরণে (স্বশীকাদয়ত। উণ্ ৪।২৫) ইতি কীকন্। ১ পটলপ্রান্ত, চলিত ছাট।

"বভামসেবত নম্বলীকাঃ সমং বধ্তিবলভীযু বানঃ।"

(মাখ ৩৫০)

বলীদপুর, যুক্তপ্রদেশের আজমগড় জেলার অন্তর্গত একটি নগর।
তৌগনদী তীরে আজমগড় হইতে ৬ জ্রোল দৃরে অবস্থিত।
অক্ষা° ২৮° ০'০৫ "উ: এবং দ্রাঘি° ৮০° ২৫ '৩০ "পু:। নগরটি
কৃত্র হইলেও বেল সমৃদ্ধিশালী। সপ্তাহে তুইবার হাট বঙ্গে।
সেই হাটে নিকটবর্ত্তী স্থানজাত নানা দ্রব্যের আমদানী হইরা
থাকে। এথানে প্রার ২৫০ তাঁত লইরা, তাতিরা বয়নকার্য্য
চালাইরা থাকে। জৌনপুরবাসী মধদুম শেষ মুশেরিদের বংশধ্রগণ এথানকার প্রধান জমিদার। উক্ত ব্যক্তি খুইীয় ১৫শ
শতাক্ষের শেষভাগে জৌনপুরের শেষ রাজা স্থলতানের নিকট
হইতে ঐ জমি জারণীর স্বরূপ পাইরাছিলেন।

वलीय (वि) जनकाव्क।

वलीमू थ (बि) वलीयुकः मूथः यश्च। वानत्र। (अभत्र)

वलीवाक (११) अविष्णमः [वनिवाक रम्थः]

বলুক (রী) বলতে ইতি বল সংবরণে (বলেরক:। উণ্-৪।৪•) ইতি উক। ১ পল্মুল। (পুং) ২ পক্ষিবিশেষ (উজ্জল) বহু, ভাষণ। চুরাদি পরত্ত্বৈ সক সেট। লটু বছরতি। লুঙ্ অববৰং।

বশ্ব (ত্রি) বলতে বল সংবরণে (শৃকবজোঝা: । উৰ্ ৩।৪২) ইতি কপ্রতায়াঝো নিপাতিতঃ । বছল ।

"ওণবৎ স্বতরোশিতপ্রির: পরিণামে হি দিনীপবংশবা:। পদবী: তফ্রবরাসসাং প্রবতা: সংব্যিনো প্রপেদিরে॥"

(র্যু৮/১১) ২ শঙ্ক। (পুং) ও পটিকা লোঞা (রাজনি॰) বহ্নজ্ঞ (পুং) জাভিবিশেষ। (বিষ্ণুপু°)

বক্ষত ক্ল (পুং) বৰুপ্ৰধানতক্ষরিতি কর্মধারর: । পুগর্ক ।

तक्कासम्बद्धाः (११) वक्षधाः । स्थान्यः । स्थान्यः । (त्रायनि∙)

বক্ষল (ক্লী) বলতে সংবৃশোভীতি বল-বাছলকাৎ কলন্। पर्,
চলিত দার্ঘটনি। (পুং ক্লী) ২ বৃক্তক্, চলিত বাকন্। পর্যার—

वक्, वक, पठ्, cbis, cbinक,मक, इक्का,इक्कि,cbisक। (नमत्र°)

"ভৌ তু পূৰ্বেণ কালেন তপোর্ফৌ বছ্বতু:। কুংশিশাসাগরিল্লাভৌ কটাবক্দগারিগৌ ॥"

(ভারত ১৷১৫৬/২)

অতি প্রাচীনকাল হইতে বঙ্কলপরিধানপ্রথা প্রচলিত ছিল। রামারণীর বুগে আমরা রামচক্রকে সীতা ও লক্ষণসহ (রামা' ১০১) এবং মহাভারতীর বুগে পঞ্চপাণ্ডবকে জটাধারী ও অজিনববল-পরিধারী হইরা মাতা কুন্তীদেবীর সহিত (মহাভারত ১০০৭০-২) বনান্তরপ্রশণকার্যে নির্ক্ত দেখিতে পাই। সাধু-সর্মাসিগণ সেই পূর্বাতনকালে স্ত্রানির্দ্ধিতবাসের পরিবর্ধে ববলনির্দ্ধিত কৌপীন ব্যবহার করিতেন। প্রাচীন নাটকাদি গ্রন্থে ভাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওরা যার। বন্ধত: এই পরিধের "ববল" পর্ণাছ্যাননের মূল (leaf-wearing) স্তার বৃক্ষত্বক্ রূপেই ব্যবহৃত হইত অথবা বৃক্ষত্বকের অভান্তরভাগত্ব 'নাড়' বা স্ক্র তন্ত্রমর আঁইসের স্ক্রতম স্ত্র হারা বন্ধরপে বোনা হইত, ভাহার কোন প্রমাণ পাওরা যার না।

বর্ত্তমান সমরে আমরা দেখিতে পাই যে, বৃক্ষম্বকের এই কোষময় নাড় (Cellular tisaue) ভাঙ্গিয়া হল্ম হল্ম তন্ত্ব (fibrous material) প্রস্তুত করা হয়, পরে তাহা হইতেই হত্ত বা মাছ ধরিবার 'কড়' (Cordage) এবং গালিচা, জাজিম প্রভৃতি বোনা হইতেছে। ব্রহ্মদেশে এই ছক্তন্ত "য" নামে পরিচিত। ইংরাজীতে ইহাকে bast বলে। ক্ষদেশজাভ Linden শ্রেণীর বৃক্ষোন্তব স্বকৃতন্ত নারা বিনিশ্বিত বহুলবাস মুরোপের মধ্যে সর্ব্বোহের ত্ব ভারা বিনিশ্বিত বহুলবাস মুরোপের মধ্যে সর্ব্বোহের শ্রেণীর বৃক্ষ দেখা যায়। তাহারও ছালের আইসে মেজে পাতিবার গালিচা ও উৎকৃষ্ট জুতার কাপড় (কাজিসের স্থায়) প্রস্তুত ইইয়া থাকে।

ভারতবর্ষে এবং পূর্বভারতীয় বীপপুঞ্জে Grewin, hibiscuses Mulberry শ্রেণীর বৃক্ষত্বক্ ইউতে উৎক্লই তত্ত্ব পাওয়া যায়। তৃথ কলের গাছ হইতে মৃগা নামে একপ্রকার তব্বজ্ঞ তত্ত্ব উৎপদ্ম হয়। উহা রেশম অপেক্ষা দৃঢ় এবং বছকালত্বায়ী। মংশু ধরিবার জক্ত বড়শি ঐ স্ত্রে গাঁথা হইয়া থাকে। আরাকান দেশের থেঞ্-বম্-ব, প-ধ-বৌ = ব, ম-কুর, ঞোৎসৌঞ্-ব, ম-নী ও এগ্রোৎ-ব নামক বৃক্ষ হইতে প্রচুর বত্বলতত্ত্ব পাওয়া গিয়া থাকে। আকারাব ও জন্মবিভাগে হেন্-ক্যো-ব, দম্-ব, মনোৎ-ব, বাগ্রীপূ-ব, ম-গৌছ প্রভৃত্তি নানা আতীর বৃক্ষ হইতে ঐরপ তত্ত্ব সংগৃহীত হয়। উহাছারা নৌকার্বাধা লড়িও মাছধরা আল প্রভৃত্তি প্রস্তুত্ত বিশেষে গাধারণতঃ ১৯০ সিকা হইতে ৩০০ টাকা মণ দর হিং বিক্রম্ম হইয়া থাকে।

আকারাবের গুরাল-বৌধ-ব বৃক্ষের তক্ত তত্তে পুদৃচ জাল ও জাহাজ বাঁধা কাছি প্রস্তুত হয়। ইহারই চলিত বাজার দর ৩। হি: মণ। মালাকা বীপের মান্গাছের (Melaleuca viridiflora) ও তালী ছালের (Artocarpus) সূত্র দারা সহজে উৎকৃষ্ট মাছধরা জাল প্রস্তুত হইয়া থাকে। শিলাপুরের তালী তারালের তন্ত্রতে এবং শ্রামদেশের বৃক্ষত্বকে টোন স্তা(Twine) বুনা হয়।

মণ্য-প্রায়্বীপে এবং কেদা নামক স্থানে সেমক্স্পাতি কর্ত্বক বৃক্ষাক্তন্ত হারা এক প্রকার বহলবাদ প্রস্তত হইলা থাকে। সিলেবিদ্ দ্বীপের কোইলি । বিভাগ বিশেবে একপ্রকার তুথ গাছের (mulberry paper) ছালে বে হত্ত প্রস্তুত হয়, ভাগও "বহুলবাদ" বলিয়া পরিগণিত। ১৮৫৭ খুষ্টাব্দের মাস্ত্রাক্ত প্রদর্শনীতে মি: জাফ্রি Eriodendron anfractuo-sum নামক বৃক্ষের তুক্ হইতে হত্ত বাহিব ক্রিয়া ভাহার দৃঢ়ভা ও বন্ধবরনোপ্যোগিতা সাধারণের নয়নগোচর করাইয়াছিলেন।

বর্তমান সমধে ছাল্টা কাপড় নামে এক প্রকার রেশমী স্থানর কাপড় প্রস্তুত হইতেছে, উহা সম্পূর্ণরূপে বৃক্ষক তন্তু হইতে উৎপন্ন। বেনারসদিক নামে যে মোটা গাত্রবন্ধ চলিত আছে, তাহা Rhea fibre হইতে প্রস্তুত,ইহাতে সিক্ষের চাদরের ক্রান্থ পাতলা ও শীতকালোপযোগী মোটা গাত্রবন্ধ এবং কোট-প্রস্তুতি প্রস্তুত হইমা থাকে।

পরিধেয় ভিয় এই বকল হইতে নানারপ ঔষধ এবং চামড়া পরিকার কবিবার জন্ম এক প্রকার কম প্রস্তুত হইরা থাকে। সিন্কোনা (Cinchona) রুক্ষের ছালে কুইনাইনের স্থায় ডিক্ত এবং তদদ শুণবিশিষ্ট ঔষধ প্রস্তুত হয়। বাকসভাল, নিমছাল, জামছাল,বকুলছাল প্রভৃতি এক একটী রোগে বিশেষ উপকারী। আয়ুর্কোনোক্ত ভৈষজ্যতক্ষে এতদ্বিয় আরও অসংখ্য প্রকার গাছের ছালের রম ঔষধ বা অমুপানরূপে বাবহারের বিধি আছে। Oaks, Rhus, Eucalyptus ও বাবলা (Acacia Arabica) প্রস্তুতি বুক্ষপ্রেণীয় অকু চামড়া পরিকার করণের (tanning) বিশেষ উপযোগী। Acacia leucophlesa বা সক্ষেদ কিকর নামক বুক্ষেব ছাল আরক চোয়াই কার্য্যে প্রচুর বাবহৃত হয়। এই Acacia প্রেণীভুক্ত অস্ট্রেলিয়ার Wattle বুক্ষ-সমূহের ছালও চামড়াপরিকার কার্য্যে বহুলপরিমাণে ব্যবহৃত হুইতেছে। একপ্রকার ওক্গাছের ছাল ছিপি (Cork) রূপে বাজারে বিক্রীত হইতেছে।

ভূচ্ছপত্র নামে বে আর এক প্রকার হন্দ্র রুক্ষ আঁদ দেখা বার, তাহাও বছল মধ্যে পরিগণিত। উহাতে পাপ-গ্রহের অপ্তভদৃষ্টিদুরীকরণার্থ স্তবক্ষকাদি লিখিরা অলে ধারণ করা হইরা থাকে। প্রাচীন শাত্রগ্রন্থাদিও এই ভূচ্জপত্রে লিখিত হইত। এখন আর উহার বিশেষ প্রচলন নাই। পাট, শণ প্রভৃতিও বক্ষকা তন্ত্রমধ্যে গণ্য হইতে গারে। বজ্বলক্ষেত্র (পুং) পৰিত্র হানভেদ। বজাওপুরাণ ও অধ্যাপ্ত রামারণের অন্তর্গত বভলজ্বে মাহাজ্যে ইহার বিভৃত বিবরণ আছে।

वस्त्रलवर (बि) वदन अव्यार्थ मङ्ग्रामण वः। वदनविनिष्टे, वदनधात्री।

বঙ্গুলসন্থিত (তি) বৰণাবৃত।

বহুলা (ত্রী) বছল-টাপ্। > শিথাৰছা। ২ গুরুপাবাগভেদ,
শাদা পাথরকুচি। (রাজনি•) ও তেজোবলা, চলিত তেজোবল।
বল্ধলিন্ (পুং) > খেতলোএবৃন্ধ। (বৈভকনি•) (ত্রি)
২ বছলবিশিষ্ট, বছলধারী।

বল্ধলোপ্ত (গ্ৰং) বৰুপ্ৰধানো লোধঃ। পাট্টকা লোধ। বল্ধবং (গ্ৰং) বৰুঃ শৰোহস্তান্তেতি বৰু-মতুপ্ মন্ত বঃ। ১ মংস্ত। (ত্ৰিকা•) (ত্ৰি) ২ বৰুযুক্ত।

বল্ক্ষ, মধ্যভারতের অন্তর্গত একটা ক্ষুদ্র হল।
বল্কান, কাম্পায় সাগরোপক্লের পূর্বনিক্স হইটা গণ্ড
শৈল্মালা। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে প্রায় ৩ হাজার ফিট্ উচ্চ।
অক্ষা ৩৯° ৩০ ডি: এবং দ্রাঘি• ৫৪° ৩০ পৃ:। এখানে নানাপ্রকার খনিজ মণিরত্ব পাওয়া যায়।

বৃদ্ধিল (পুং) বজোহতাতীতি বজ-ইতচ্। কণ্টক। (শন্ধরণ্ধা॰) বৃদ্ধুক্ত (ক্লী) বজন। (শন্ধচ॰)

বল্থ (বাল্থ), আফ্ গান তুকী ছানের অন্তর্গত একটী ছুপ্রাচীন নগর। অক্ষা ৩৬°৪৮ উত্তরে কাবুল রাজধানী হইতে ৩৫৭ মাইল উত্তরপ্রিনে, কুন্দুল হইতে ১২০ মাইল পশ্চিমে এবং হিরাট হইতে ৩৭০ মাইল উত্তরপূর্ব্বে অবস্থিত। এই জনপদের উত্তরপূর্ব্বে বংক্নদী, পূর্ব্বে কুন্দুল, পশ্চিমে ধোরাসান এবং দক্ষিণপশ্চিমাংশে হাজারা ও মৈমুনার পর্ব্বতমালা।

রামারণাদি প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থে বাহলীক নামে এই স্থবিদ্বত জনপদের উল্লেখ আছে। তৎকালে আর্য্য হিন্দৃগণের সহিত বাহলীকবাসীদিগের যে ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ ছিল, তাহা ভারতবৃদ্ধ পাঠ করিলে বেশ বৃশ্বা বায়। পরবর্ত্তিকালে এই জনপদ হইতেই ভারতে শকাভূদের ঘটিরাছিল।

বিহুলীক ও শকশন্দে বিভূত বিবরণ দ্রইবা।]
এই জনপদের দক্ষিণপূর্বাংশ শীতপ্রধান ও পর্বতময় এবং
উত্তরপশ্চিমাংশ বাস্কাপুর্ণ হওয়ার আপেকারত উষ্ণপ্রধান ও
সমতল। এধানে প্রীয়ের সময় অতার গরম বোধ হইয়া থাকে।
এধানে উলবেক, আক্গান, মোলল, তুর্ক ও তাজক জাতির
বাস আছে, কিন্তু গোকসংখ্যা অতিশর অয়। কতকগুলি
লোক কুল্ল কুল্ল প্রামে প্রেণীবন্ধ হইয়া বাস করে, আবার কতকগুলি লোক গবাদি পণ্ড একস্থান হইতে অক্স্থানে চরাইয়া লইয়া

বেড়ার ও সেই সঙ্গে আপনাদেরও বাসভূমির পরিবর্তন করির।
থাকে । উন্ধবেক্ত জাতি সুরুলচিত্ত, সাধুপ্রকৃতিক এবং দরাসু।
তাঞ্জেৎ বা ভাজকগণ মদ্যপ ও পাপরত, ছর্ম্মর্ব, কঠিন জ্বদর
এবং নষ্টাচারী।

বর্তমান বা নৃতন বল্থ্ নগরে ১০ হাজার আফ্গান,

হোজার কপ্চক্, কতকগুলি উজবেক, হিন্দু ও মিহলীর বাস
আছে। নৃতন নগর তত দুর শ্রীসম্পন্ন নহে। এই নগরাংশের
অদ্রে ২০ মাইল পরিধিবিশিষ্ট স্থ্রাচীন বাজ্ঞীক রাজধানীর
ধ্বংসাবশেষ দৃষ্টিগোচর হয়। ইহারই বহিন্ডাগে প্রস্তুত্তবায়সন্ধিংশ্ব মৃরক্রফট ও গুণ্বীর সমাধিগুল্প বিভ্যমান আছে।
পূর্বেই উল্লেখ করিয়াছি বে, রামারণীর ও মহাভারতীয় যুগে
এই জনপদ বিশেব সমৃদ্ধ ছিল। গুদ্ধ হিন্দুর নিকট নহে, পশ্চিম
এসিয়াপগুবাসীর নিকটেও এই স্থানের যথেষ্ট গৌরব ছিল।
গুলারা এই রাজধানীকে আস্-উল্-বালাদ বা নগরমাতা বলিয়া
উল্লেখ করিত। পারভ্রবাসীরা ইহাকে প্রাচীন ধর্ম্মের কেন্দ্রস্থান ও জ্ঞানভাগ্রর বলিয়া জানিত। প্রবাদ, পারভ্রবাসী
কাইয়ৎমৃক্ষ এই নগর স্থাপন করেন এবং প্রসিদ্ধ দার্শনিক ও
ধর্মপ্রাছিলেন।

মাকিদনবীর আলেকজান্দার এই স্থান অধিকারপূর্বক বক্তিয়া রাজাভ্ক্ত করেন। একণে এই নগর স্থানীয় শৈল-শ্রেণী হইতে তিন ক্রোল দূরে সমতলক্ষেত্রোপরি নির্মিত। এখানকার স্থান্থ্য তত ভাল নছে। নগরে জল সরবরাহের জন্ম নদীতট হইতে জলনালী (aqueducts) চালিত আছে।

এক সময়ে ছর্মব বিজ্ঞিরারাজগণ সেনাদল নইরা রণক্ষেত্রে বৃদ্ধকৌশলের বিশেষ পরিচয় দিয়া গিয়াছেন। বাল্ধ্রাজ ১ম অস্কিশ পছলববংশীর ছিলেন। ছোরেণীবাসী মোজেস্ তাঁহার বীরছের পরিচয় দিয়াছেন, মতাক্তরে অস্কেশ সোগ্দ-জনপদাধীশ্বর বলিরা কথিত।

চেলিস্ থার সমন্ব পর্যান্ত বাল্থ নগরী স্বীর সৌন্দর্য্য সমৃদ্ধিতে এসিরার অপর সকল নগর হইতে শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার করিয়াছিল। তৈমূর রাজাবিজয়বাসনার স্বীর বিভূত মোগলবাহিনী লইরা সমন্ব সমন্ব আসিরা এই নগর ভূমিসাং করিয়া থান। বিখ্যাত পরিপ্রান্তক মার্কোণোলে এই স্থানের প্রাচীন সমৃদ্ধির কতকনিদর্শন প্রত্যক্ষ করিয়া গিরাছিলেন। ১৭৩৬ খুষ্টান্দে পারক্তপতি নাদিরশা বল্ধ ও কুন্দুক্ষ অধিকার করেন। তাঁহার মৃত্যুর পর এই স্থান হ্রাগাবংশের অধিকারে আইসে। ১৮২০ খুষ্টান্দে কুন্দুজপতি শাহ মুরাদ স্বাধীনতা অবলম্বন করিলে এই স্থান আফগান-শাসন হইতে বিভূত হয়। তৎপরে ইহা বোধারার

অধিকারভৃক্ত হইরাছিল; পরে পুনরার আঞ্চগানন্থানের সীমা-ভুক্ত হইরা পড়িরাছে।

বল্প, গতি, ভাগি পরত্মে অক সেট। লট্ বল্গতি। লুঙ্ অব্ল্গীং। ভট্মাল ও হুর্গাদাস এই ধাতুর অর্থ প্লুত গতি বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।

বন্ধন (ক্লী) বন্ধ-সূট্। > প্লুডগমন। ২ বহজাবণ।
বন্ধা (ব্লী) বন্গ্যতেখনমেডি বন্গ-করণে বঞ্, টাপ্। দণ্ডালিকা,
চলিত লাগাম্। পর্যার —অবক্ষেপণী, রশ্মি, কুশা (হেম)

"বল্গন্মধ্যেংখবারাণাং নৃত্যতে বাগ্রবাজিনা।

বল্গাকেনোদ্বহল্লখং শিক্সং বামপাণিনা ॥"(রাজতর ০৫।৩৪৭) বল্লিড (ক্লী) বল্ল-ভাবে ক্ত। অখের বিশেষ গমন, অখের গতি-ভেদ, বেগে বিক্লিপ্রোপরিচরণ। ২ প্রতগমন।

"অনিলোঁড়িতকার্য্যন্ত বাগ্জালং বাগ্মিনো বৃথা। নিমিন্তাদপরাজেবোধান্তকস্তেব বল্গিতম্॥" (শিশুপালবধ ২।২৭) ৩ বহুভাষণ।

বল্প (পুং) বলতে ইতি বল প্রাণনে বল-উ, (বলেও ক্চ। উণ্ ১৷২০) ধাতুর উত্তর গুগাগম। ১ ছাগ। (তি) ২ স্থন্য। (মেদিনী)

"তম্বনা যুগপছন্মিষিতেন তাবৎ,

সন্থঃ পরস্পরতুলামধিরোহতাং ছে।" (রঘু ৫।৬৮)

ব্স্তুক (ক্লী) বন্ধ সংজ্ঞায়াং স্বার্থে বা কন্। ১ চন্দন । ২ বিপিন । ৩ পণ। (ত্রি) ৪ ক্ষচির। (অজয়) ক্ষচিরার্থক বন্ধক শব্দের ব বর্গীয়।

বন্ধুজ (তি) ২ বন্ধলাত। ২ ছাগ। প্রিরাং টাপ্।

ব্যক্ত জ্ব (তি) > স্থন্দর জন্মাবিশিষ্ট। ২ বিশ্বামিত্রের পুত্রভেদ।

বন্ধপত্র (গং) বন্ধ মনোজং পত্রং বন্ধ । বন্ধুল। (শক্চ°) বন্ধপোদকী (ত্রী) লতাভেদ (Amaranthus polygamus) বন্ধুল (গং) উদাম্থী থেঁকশিয়াল।

বজ্বলা (ত্রী) বন্ধ লাভীতি লা-ক-টাপ্। ১ বাকুটী। ২ পদ্দি-বিশেষ। এই অর্থে ব্যবহৃত বন্ধ শব্দের পর্যার—চক্রবিষ্ঠা, দিবাদা, নিশাচরী, বৈরিণী, দিবাখাপা, মাংসেরা, মাতৃহারিণী। বজ্বলিকা (ত্রী) বন্ধ সংজ্ঞারাং কন্, টাপি অত ইন্ধা। তৈল-পার্মিকা। আরম্বলা, তেলাপোকা।

'বৰুলিকা মুখবিষ্ঠা পরোক্ষী তৈলপারিকা।' (ছেম'')

"ততো বন্ধনিকাতন্তং দৃষ্ট্ৰ। পটমদর্শন্নং ।"(কণাসরিংসা° ee। ৭৯) বন্ধনৌ (ত্রী) রাত্রিচর পন্ধিবিশেব।

ব্স্তুদোম, একজন আটীন গ্রহকর্তা। গোভিনগৃহস্ত্রভাষ্যে ইহার উল্লেখ আছে। বল্ভ, ভক্ষণ। জ্বাদি, আত্মনেপদী, সক সেট্। লট্ বল্ভতে। লিট্ববল্ভে। লুট্বলিভতা। "বল্ভতে আনং লোক:"। (হুৰ্গাদাস)

বল্ভন (ক্নী) বল্ড ভক্ষণে ভাবে লাট্। ভক্ষণ। (হেমচন্দ্র)
বিলাকি (পুংক্নী) বলীক। (শন্তর্মাণ)
বিলাকি (পুংক্নী) বলীক। (অমুবটীকা ভরত)
বল্মীক (পুংক্নী) বলতে ইতি বল সংবরণে (অলীকাদরশ্র।
উণ্ ৪।২৫)মুমাগম: কীকনাস্তো নিপাত:। (উজ্জ্বলদন্ত) > উরিকাকৃত মৃত্তিকান্তুপ। ইহার পর্যায়,—বামল্র, নাকু, বলিক বাল্মীক, বাল্মীকি, বাল্মিকি, পুগলক, শক্রম্ধা, ক্লিপি,
শেলক। (শন্তর্মাণ)

"বল্মীকাগ্রাৎ প্রভবতি ধয়ু:গণ্ডমাণণ্ডলশ্ন ।"(মেবদ্ত প্: ১৫)
আমরা বাড়ীর দেওয়ালে, কড়িকাটে অথবা কার্চনির্মিত
আসবাব প্রভৃতিতে একপ্রকার পুতিকাকীট বা উইপোকা
(Termites) দেখিতে পাই। তাহারা দেয়ালে বা কার্টোপরি
মাটীর ঢাক্নি করিয়া তন্মধ্য দিয়া যাতায়াত করে, আবার
কথন কথন কার্চথণ্ডের অভ্যন্তরে মুড়ল কাটিয়া কার্টের বিশেষ
কতি করিয়া থাকে, কোন কার্চে একবার উই লাগিলে তাহার
আর উদ্ধারের উপায় নাই। আল্কাতরা, সাবান ও চুণ
সমভাগে উত্তাপযোগে মিশাইরা কার্টের উপর মাধাইলে
উইপোকার আক্রমণ নিবারিত হয়। কথন কথন মোম ও
তারপিন্ গলাইয়া উই নাশ করা হইয়া থাকে। বৎসর বৎসর
বর্ষার পূর্ব্বে কার্চণণ্ডে ব্রহ্মদেশজাত মেটেভেল লাগাইলে আর
পোকা ধরে না।

ইক্লেত্রেও প্রচ্ন পরিমাণে উই থাকে। উহা ইক্ কাটিয়া
নই করিয়া দের। এই জন্ত ইক্লেত্র হইতে উই দ্রীকরণাথ
কতকগুলি উপার অবলম্বন করা হইয়া থাকে। হিল্
৮ ছটাক, সরিষা ৮ সের. পচা মাছ ৪ সের, অতিবিষামূলচুর্গ
২ সের উপযুক্ত পরিমাণ জলে সিদ্ধ করিয়া কাথ প্রস্তুত করিবে।
সেই কাখ ক্লেত্রে ছড়াইয়া দিলে উই মরিয়া যায় বটে, কিন্তু
অতিবিষার প্রভাবে ইক্লুগাছ বিহ্নত হইয়া যায় এব: তাহ
থাজের অমুপ্যোলী হইয়া পড়ে। ময়দা বা ছাতুর সহিত
সেঁকোবিব মিলাইয়া শুড় মাথিবে, পরে সেই পিশু লইয়া উইচিপির সমূধে রাখিয়া দিবে। উহা ভক্ষণে উইকুল নির্মুল
হইয়া বায়। বক্ষপুশ্নির্ঘাস (Dammer oil) ১২ ও গাস্তীর
বৃক্ষনির্ঘাস (Uncaria gambir) ৬ মাত্রার মিলাইয়া কাঠে
লাগাইলে উই লাগিতে পারে না। তুঁতে, সেঁকো চূর্ণের সহিত
মিলাইয়া কাঠে বসিলে, অথবা সেঁকো, মুসক্বর, সাবান ও
সালিয়াটী একত্র ভাপে এক্টেট্ডাল গলাইয়া নামাইয়া রাথিলে,

পরে সেই জলে পুনরার ঠাওাজল দিরা ফার্চমার্জন ফরিলে উই মরিয়া বার। [উই দেখ। বু

এই উই বা পুত্তিকাকীট (White Ant.) মাঠে, ক্লেত্রে ও পল্লীর পথপার্বে এক একটী মৃত্তিকান্ত্রপা পঠন করিয়া ভন্মধ্যে বাস করে। উহাকে চলিত কথার উইপোডা বা উইটিপ্লি এবং সাধুভাবার বন্ধীক (Aut-bill) বলা হইরা থাকে।

ভারতবর্ষে বিশেষতঃ নিয়বদের আন্তর্মানেশে, সিংহলনীপে, উন্তর্মাশা অন্তরীপে ও সেণ্টহেলেনা দীপে বহু উইচিপি দেখিতে পাওরা যায়। উহাদের সশৃক্ষ ও কোণাকার মৃদ্তুপাক্তি দেখিলে অতঃই মনে বিশ্বদের উদ্রেক হয়। অ্লবিশেষে এইগুলি ২ হইতে ১৬১১৭ ফিট পর্যান্ত উচ্চ হইতে দেখা গিরাছে।

খুলনা অথবা গোরালনন্দ যাইবার রেলপথের ধারে ধারে এবং অদ্বছ ক্রেমধ্যেও ৪।৫ দুট অনেক বল্পীকন্তম্ভ দেখিতে পাওরা বায়। ঐ বল্পীককৃটাভান্তরন্থ কীটগুলি বে পরিমাণে মৃত্তিকান্তপুপ উচ্চ করে, সেই পরিমাণে তাহারা ভূগর্ভে গহরর কাটিয়া উপরে মাটী উঠার এবং সেই মৃত্তিকানারা তাহারা অতি মুচাক্রমপে এবং বিশেষ শিল্লচাতুর্যোর সহিত তদভান্তরে আপনাদের আবশ্রক মত গৃহাদিখনন করিয়া লয়; অর্থাৎ বিদ একটা বল্পীকের ভূপ্টোপরিস্থ কোণাকার ন্তুপ ৭ কিট্ উচ্চ হয়, তাহা হইলে জানিতে হইবে বে, উইদিগের ছারা মৃত্তিকাগর্ভেও তদমুরূপ গর্গ্ত উৎখাত হইয়া সেই মৃত্তিকা সাহায্যে ও তাহাদের অপুর্ক নিশ্বাণকৌশলে একটা বল্পীক-গৃহ নিশ্বিত হইরাছে।

ভধু তাহাই নহে,এই মৃদাক্ষাদিত অদৃশ্র বাটকামধ্যে তাহারা রাণীকীটের বাসার্থ একটা প্রবিষ্ঠত রাজপ্রকোঠ প্রস্তুত করিরাছে এবং তাহারা চতুসার্থে অসংখ্য ধারীপ্রকোঠ বা শিশুকীটগুলির বাসগৃহ আছে। এই বরগুলি খিলানকরা ছাদযুক্ত এবং খিলানকরা সছাদ সোপানশ্রেণীবারা পরস্পারে সংযুক্ত। এতজ্ঞি একস্থান হইতে অঞ্জন্মনে যাইবার স্মৃত্তিপথ, বারাধ্যা, দালান, প্রবেশবার প্রস্তৃতি স্বচামক্রপে বিশ্বত আছে, উহাদের গঠন-নৈপ্তা দেখিলে চমৎক্রত হইতে হর। নিরে আফ্রিকালেশ-ক্রাত একপ্রকার প্রিকার বিষরণ সম্বলিত হইল। উহারা সামরিকপ্রিকা নামে খ্যাত।

আফ্রিকার সামরিক প্রতিকাঞ্চলি বেরূপ ভাবে বন্ধীক প্রস্তুত করের তাহা উর্জাধোভাবে ছেদন করিলে দেখা বার বে, কি অপূর্ব্ব গঠন-কৌশলে তাহারা এই বাসস্থান নির্দ্ধাণ করিরাছে। বে সকল সামরিক পুত্তিকা বন্ধীক প্রস্তুত করে, তাহাদের শরীরের দৈর্ঘ্য ১ এক বুকলের চতুর্থাশে অপেকাও নান, কিন্তু তাহাদের নির্দ্ধিত বাসগৃহ সচরাচর ৭।৮ হাত উচ্চ হর। অনেক অনেক বন্ধীক তদপেকাও উন্নত হইনা থাকে।

উদ্ধিত বন্ধীক সকল বেমন উন্নত, উহার নির্মাণ-পরিপাটীও তদমুরূপ। উহার অভাত্তর ভেদ করিয়া দেখিলে, সামরিক পুত্তিকাদিগের নিপুণতা ও বিচক্ষণতার স্থাপাই প্রমাণ প্রত্যক্ষ করিয়া চমৎক্রত হইতে হর। তাহাদের স্থন্সররপ আহার বিহার সম্পাদনার্থে বাসগৃহের বেরূপ শৃত্যুলা আবস্তক, তাহারা তাহা স্কুচারুরণে সম্পন্ন করিরা থাকে। রাজ-প্রাসাদ, ভাগুরি-গৃহ, বিশু-শালা, পথ, সেতু, সোপান প্রভৃতি অতি পরিপাটী রূপে প্রস্তুত করে। প্রকোষ্ঠ সকল খিলান করা। এক প্রকোষ্ঠ ছইতে অন্ত প্রকোঠে গমন করিবার নিমিত স্থগম পথ প্রস্তুত शास्त्र । এक প্রদেশ হইতে অন্ত প্রদেশে গমন করিতে হইলে, বে বে হলে কুটিল পথ দিয়া অনেক ঘুরিয়া গমন করিতে হয়, তাহারা সেই সেই স্থলে এক এক থিলান করা সেতু নির্মাণ করিয়া গভায়াতের স্থবিধা করিয়া রাখে। এই রূপে ভাহারা আপুনাদের বাস্বাটী স্কাঙ্গস্থেশ্বর করিয়া ভাহার মধ্যে স্থাত অৰ্ডিতি করে। উহা এমন স্থান ও কঠিন যে, ৪।৫ জন মমুষ্য, উহার উপর দশুায়মান হইলেও, ভাঙ্গিয়া পড়ে না।

সামরিক পৃত্তিকাদিগের কার্য-প্রণালীও অত হন্দর। ঐ প্রণালী এমত পরিপাটী বে, উহাকে এক উৎকৃষ্ট রাজ্যের বাবস্থাপ্রণালী বলিলেও বলা যায়। ইহারা তিন শ্রেণিডে নিবিষ্ট, শ্রমজীবী পৃত্তিকা, সৈনিক পৃত্তিকা ও বিশিষ্ট পৃত্তিকা। শ্রমী পৃত্তিকারা গৃহ, পথ, দেতু প্রভৃতি প্রস্কৃত করে। সৈনিক পৃত্তিকারা গৃহের রক্ষণাবেক্ষণ করে এবং প্রয়োজনামুসারে শক্রর সহিত যুদ্ধ করিয়া থাকে। তাহাদের শরীর শ্রমজীবী পৃত্তিকান দিগের শরীর অপেকায় প্রায় ১৫ গুণ বড়। আশ্চর্যের বিষয় এই যে, শ্রমী পৃত্তিকারা কথনও সৈনিক পৃত্তিকার কর্মে প্রস্কৃত্ত হয় না এবং সৈনিক পৃত্তিকারাও কথন শ্রমী পৃত্তিকার কার্যে নিযুক্ত হয় না।

বিশিষ্ট পৃত্তিকারা না গৃহাদি নিশ্মাণ করে, না যুদ্ধ করিতেই প্রবৃত্ত হয়, তাহারা আপনার রক্ষণাবেক্ষণ করিতেও সমর্থ নয়। কিন্ত তাহাদের কলেবর সর্ব্বাপেক্ষা পরিণত ও উৎকৃষ্ট এবং অবদ পালক উঠিয়া থাকে। তাহাদের দেহ, সৈনিক পৃত্তিকাদিগের ২ দিওণ ও শ্রমজীবী পৃত্তিকাদিগের দরীবের ৩০ তিশ ওপ। অভ অভ পৃত্তিকারা তাহাদিগকে সর্ব্বাপ্রধান বলিয়া মাভ করে ও প্রধান পদে অধিক্রচ্ করিয়া রাখে। তাহারা ঐ পদে অভিবিক্ত হইবার পর করেক সপ্তাহ মধ্যেই উজ্জীয়মান ইইয়া অক্সত্র পমন করে। কিন্তু উদ্ধিবার কিঞ্চিৎকাল পরেই, পালক সকল বরিয়া পড়ে, তথন পক্ষী পভলাছি আসিয়া, তাহাদিগকে আহার করে। আজিকানিবাসীয়া ভাহাদিগকে ভাজিয়া ভক্ষণ করে। এইয়পে প্রার সমুদ্বর বিশিষ্ট পৃত্তিকা, নই

হইরা বার। বদি ২।৪ ছই চারিটা কোন ক্রমে রক্ষা পায়, পুর্বোক্ত শ্রমী পুত্তিকারা, দেখিতে পাইলে, তাহাদিগকে প্রহণ করিরা রাজার ও রাজীর পদে বরণ করে এবং এক মৃত্তিকামর প্রকোষ্ঠ মধ্যে স্থাপন করিয়া, যত্ত্বপূর্বক পরিপালন করে। পরে যথন রাজীর সন্তান উৎপত্তির উপক্রম হয়, তথন এক কার্চমর প্রকোষ্ঠ প্রস্তুত করিতে প্রস্তুত্ত হয়। রাজী, যে সমন্ত অশু প্রস্ব করে, তাহা সম্বর গ্রহণ করিয়া, সেই প্রকোষ্ঠে স্থাপন করে।

ভারতে সাধারণতঃ সদ্ধার প্রাকাদে সপল্প পুত্তিকা উড়িতে দেখা যার। উহাদিগকে বাদলা পোকা বলে। যথন তাহারা দলে দলে মেঘাকারে ভূগর্জস্থ নিবাস হইতে আকাশ মার্গে উঠিতে থাকে, তথন কাক, বাহুড় প্রাভৃতি নানা জাতীয় পক্ষী তাহাদিগকে থাইতে আরম্ভ করে। ডানা ভাগিয়া যাহা মাটিতে পড়িরা যায়, তাহা পর দিন প্রাতে কাকের উদরস্থ হয়, কোথাও কোথায় নিক্কষ্ট শ্রেণীর লোকে উহা সঞ্চয় করিয়া মতে ভাজিয়া থায়।

উল্লিখিত পুতিকা-মহিষী, গর্ভাবস্থায় যাদৃশ অবস্থান্তর ও রূপাস্তর প্রাপ্ত হয়, তাহা গুনিলে, বিষ্ময়াপন্ন হইতে হয়। উহার বস্তি-দেশ ক্রমশ: ক্ষীত হইয়া অবশিষ্ট সমুদায় অঙ্গ অপেকা ১৫০০ দেও সহস্র অথবা ২০০০ তুই সহস্র গুণ স্থূল হইয়া উঠে। উহার শরীর স্বীয় স্বামীর শরীর অপেক্ষায় ১০০০ এক সহস্র গুণ ভারী হয় এবং শ্রমী পুত্তিকাদিগের শরীর অপেকা ২০।৩০ সহস্র গুণ বিশ্বত হইয়া পড়ে। এক জন পণ্ডিত, গণনা করিয়া দেপিয়াছিলেন, এক পুত্তিকামহিষী এই অবস্থায় ৬০ ষাট্ দত্তে, আশী হাজার অও প্রস্ব করিয়াছিল। প্রস্ব-কালে কতকগুলি শ্রমী পুত্তিকা তাহার নিকট নিযুক্ত থাকে; তাহারা ঐ সকল অও গ্রহণ করিয়া পূর্ব্বোক্ত কার্চময় প্রকোষ্ঠ মধ্যে স্থাপন করে। ঐ সমস্ত ডিম্ব ফুটিয়া, যে সকল পুত্তিকা শাবক উৎপন্ন হয়, শ্রমী পুত্তিকারা তাহাদিগকে সম্যক প্রকারে লালন পালন করে। ভাছাদের রক্ষণাবেক্ষণার্থে যথন যে বিষয় আবশুক, তথন তাহা অবাধে সম্পাদন করিয়া থাকে। শাবকগণ এইরূপে লালিত ও পালিত হইয়া শক্তিসম্পন্ন ও শ্রমক্ষম হইলে, বন্মীক-রূপ সুরুমা রাজ্যের কার্য্য করিতে নিযুক্ত হয়।

পণ্ডিতের। প্রত্যক্ষ দেখিরাছেন, যদি কোন প্রকারে বন্ধীকের কোন স্থান তম করিরা দেওয়া বার, তাহা চইলে, তৎক্ষণাৎ ১ একটা দৈনিক প্রতিকা, দেই ভয় স্থানে আসিরা উপস্থিত হর। অনতিবিলম্বে আর ২।০ হই তিনটা আগমন করে। তদ্ধনত্তর ভূরি ভূরি প্রতিকা বাহির হইতে ধাকে। এইক্লা বতক্ষণ বন্ধীকের উপর আঘাত করা বার, ততক্ষণ

সৈনিক পুত্তিকা দকল বহিৰ্গত হয় এবং ইতন্তত: ধাবিত হইয়া এক প্রকার শব্দ করিতে থাকে, তাহারা আততায়ীকে আক্রমণ করে, দংশন করে ও দুরীভূত করিয়া দিবার নিমিত্ত সাধ্যমত চেষ্টা করে, কিন্তু বন্ধীকের উপর আঘাত করিতে নিরস্ত হইলে, ভাহারা তৎক্ষণাৎ নির্ভ হট্যা বন্ধীকের মধ্যে প্রবেশ করে। অনন্তর সহত্র সহত্র শ্রমী পুত্তিকা বাহির হইরা, 🗗 ভগ্ন স্থান পুনর্কার নির্মাণ করিতে প্রবৃত্ত হয়। আশ্চর্যোর বিষয় এই যে, লক লক পুত্তিকা একত্র কর্মা করিতে থাকে, অথচ কেহ কাহারও কর্মে ব্যাঘাত জন্মার না এবং এক নিমিরের নিমিত্তও নিজ কার্য্য করিতে নিবৃত্ত হয় না। এক একটা দৈনিক পুত্তিকা, এক এক দল শ্রমী পুত্তিকার সঙ্গে সঙ্গে থাকে, বোধ হয়, ভাহারা অধাক বা প্রহরীর স্বরূপ হট্যা ভ্রাবধারণ করে। বিশেষতঃ একটা পুত্তিকা ভগ্ন স্থানের অতি নিকটে দুখায়মান থাকে, দে এক এক বার শব্দ করে, আর শ্রমী পুত্তিকারা তৎ-ক্ষণাৎ উঠিভঃম্বরে আর এক প্রকার শদ করিয়া, পুর্ব্বাপেক্ষা দিওণ অরায়িত হইয়া, কর্মা করিতে আরম্ভ করে।

দেনেগেল নামক স্থানের সমীপবর্ত্তী কোন কোন স্থানে একত্র এত বল্পীক দেখিতে পাওয়া যায়, বোধ হয়, যেন সেই সেই স্থানে এক এক থান গ্রাম ব্যিয়া গিয়াতে।

সিংহল, স্থমাত্রা ও বোর্ণিও দ্বীপ এবং ভারতের কোন কোন স্থানে Termes taprobanes নামে একজাতীয় প্রতিকা দেখা যায়। সিংহলদ্বীপে T. menoceros শ্রেণী গাছের কোটরে বাসা করে। অনেক সময় সেই স্থানে গোপুরা সাপের বাস দেখা যায়। মান্ত্রাজপ্রেসিডেন্সীর বসরপাড় নামক ছানে যে সকল বল্লীক দেখা যায়, তাহাদের অধিকাংশগুলির অভান্তরেই বন্ধসংখ্যক বিষয়র সর্প থাকে। কুইন্সলাপ্তের উত্তরন্থ সমাসেটি নগরের ১ মাইল দূরে আলবাণী গিরিসক্ষটের মূথে ১৬ ফিট উচ্চবহুল বল্লীক বিশ্বসান আছে।

বন্দীক মৃত্তিকাদারা শৌচ করা নিষিদ্ধ। বিষ্ণুপুরাণে লিখিত আছে যে, বন্দীক বা মৃথিককণ্ড্ক উৎপাত মৃত্তিকাদি দারা শৌচক্রিয়া ক্রিতে নাই।

"বল্মীকম্বিকোৎথাতাং মৃদমন্তর্জাং তথা। শৌচাবশিষ্টাং গেহাচ্চ না দল্পাল্লেপসন্তবান্। অন্তঃপ্রাণ্যবপরাঞ্চ হলোৎথাতাং ন কর্দমান্॥"

(আছিকাচারতব্যুত বিষ্ণুপু)

কোন দেববিগ্রহ প্রতিষ্ঠার পূর্বে শিলিব্যক্তির স্পশ্দোধ-পান্তির জন্ত বল্মীক মৃত্তিকা, গোমর ও ভার এই তিন বস্তু ধারা বিগ্রহটী ধৌত করিয়া লইডে হয়। উক্ত বন্ধান্তর ঘারা স্থান করাইবার কোন পূথকু মন্ত্র নাই, এজন্ত শ্লপাণি গায়নী বা সেই সেই দেবতার মূল মন্ত্র ছারাই স্থানবিধি নির্দ্ধেশ করিয়াছেন।

"বন্দ্রীকমৃত্তিকাভিন্ত গোমরেন স্থভদ্মনা। কালরেৎ শিলিসংস্পদালাগামুপশান্তরে ॥

(দেবপ্ৰতিষ্ঠাতৰ)

(পুং) ২ বাশীকি মুনি। ও রোগবিশেষ। ইহার লক্ষণ—
"গ্রীবাংশকক্ষাকরপাদদেশে সজৌ গলে বা ত্রিভিরের দোবৈ:।

গ্রান্থ্য ন বন্দ্রীকবদক্রিয়াগাং জাতঃ ক্রমেশের গতপ্রবৃদ্ধিঃ ॥

মুথৈরনেকৈজ্বতিতোদবিদ্ধিবিদপ্রথ সপতি চোরতার্টাঃ।

বন্দ্রীকমাহর্ভিষজো বিকারং নিপ্রতানীকং চিনল্পং বিশেবাং ॥"

বে রোগে ত্রিদোবের প্রকোপ হেতু গ্রীবা, অংস, কক্ষ, হত্ত,
পদ ও সদ্ধি স্থানে এবং গলদেশে বন্ধীকের স্থায় গাঢ়মূল অথচ
প্রতুর শিধরযুক্ত ও উন্নতগ্রন্থি উৎপন্ন হয় এবং তাহা যদি চিকিৎসা
না করা যায়, তাহা হইলে ক্রমশই বৃদ্ধিপ্রাপ্ত ইইতে থাকে, ও
ইহাতে স্টাবেধরৎ বেদনা অন্তত্ত্ব হয়, ইহার অনেক মুখে
প্রাব হইতে থাকে ও উন্নত অত্যের সহিত বিদর্শের স্থায় প্রস্পিত
হয়। এই সকল লক্ষ্ণ হইলে তাহাকে বন্ধীকরোগ কহে।

এই রোগ উপযুক্তরূপে চিকিৎসা না করিলে কালক্রমে গুঃসাব্য
হইয়া থাকে।

ইহার চিকিৎসা— বর্গাকরোগ প্রথমতঃ শক্ত দ্বারা উৎপাটন করিয়া ক্ষার ও অফিকর্ম দ্বারা দ্বা এবং অব্বৃদ্ধ রোগের জায় শোধন ও রোপণ করিবে। ধাহার মর্ম্মন্থান ব্যতীত অক্ত হানে বর্মাক রোগ হয় এবং যদি উহা অত্যন্ত বৃদ্ধিত না হয়,তবে প্রথমে সংশোধন ও তৎপরে রক্তমোক্ষণ করিয়া তাহার চিকিৎসা করিবে।

কুলথ কলায়ের মূল, ওড়্চী, দৈছৰ, লোঁদালমূল, দান্তমূল, ভামালতার মূল, মাংস ও শক্ত্ এই সকল পেষণ করিয়ং তদারা প্রনেপ দিতে হঠবে এবং উহাতে ছত মিলিত ও ঈষৎ উষ্ণ করিয়া উপনাহ (পুল্টাশ) প্রারোগ করিলে বন্ধীকরোগে বিশেষ উপকার হয়।

বল্মীকরোগ পাকিয়া যদি তাহাতে নালী হয়, তাহা হইলে উহার সমন্ত নালী অবেষণ করিবে। যদি এই রোগে মাংল দ্বিত তাহাতে পূল্টীল প্রয়োগ করিবে। যদি এই রোগে মাংল দ্বিত হয়,তাহা হইলে কার প্রয়োগ বারা তাহা নিকাষিত করিবে,পরে এণ বিশুদ্ধ হইলে রোপণ ঔষধ প্রয়োগ করা বিধেয়। নিক্তিল ৪ সের, ক্রার্থ মনঃশিলা, হরিতাল, তলাতক, ভোট এলাচি, অগুদ্ধ, রক্তালন, লাতীপত্র ও ইক্রয়ব এই সকল মিলিত এক সের লইবে,পরে বথাবিধানে পাক করিয়া এই তৈল বল্মীকরোগে প্রয়োগ করিলে বিশেষ উপকার হয়। এই তৈলকে মনঃশিলাভ্যতিল কহে। হল্ম বা পদের উপর বহু ছিন্তবিশিষ্ট অথ্য শোষ-

ন্নক বন্ধীকরোগ হইলে তাহা অসাধ্য। চিকিৎসক এইরপ ুবোণীকে ত্যাগ করিবেন। (ভাবপ্র° ক্ষুদ্রোগাধি°) বন্ধীক মৃত্তিকার প্রলেপ দিলেও এই রোগে উপকার হয়। "ক্ষোদ্রসর্কপবন্ধীক মৃত্তিকাসংযুক্ত ভিষক্। গাদৃম্ৎসাদনং কুর্যাদৃরুত্ততে প্রলেপনম্॥"

(বৈশ্বকচক্রপাণিসণ)

বিশ্মীকমাত্র (ত্রি) বদ্মীকন্ত্রের অন্তর্নাক্তিবিশিষ্ট। বল্মীকল্ল (পুং) করন্তেদ।

বিল্মীকশীৰ্ষ (ক্লী) ব্লীকভ শীৰ্ষমিব শীৰ্ষমভ। প্ৰোভোৎঞ্জন, রক্তস্থা। (রাজনি^)

বল্মীকসম্ভব। (স্ত্রী) অলাব্বিশেষ। নাগস্থর তৃষী। (মদনপাল) বল্মীকি (প্রং) বশ্মীক। (শন্মালা)

বল্মীকুট (क्री) ৰবীক্স ৰবীক্সঞ্চিতং বা কূটং। বন্মীক। (হেম)
ামীকৃট এইরূপ পদও হয়।

বল কুল (লুঃ), ১ ছেদন ও পুরণ! অদক্ত চুরাদি° পরতৈর° সক'সেট্। লট্বলালয়তি। লুঙ্অববলালং।

বল্ল, সংবরণ। ভাদি° আঝানে° সক° সেট্। দট্ বলতে। দিট্ববলে। সূট্বলিতা। সূঙ্অবলিট।

বল্ল (পুং) বলতে সংবৃণোতীতি বল-অচ্। পরিমাণবিশেষ, ওঞ্জাত্রয় পরিমাণ।

"বামস্ত্রিগুলো ধরণঞ্চ তেহটো" (লীলাবতী) বৈছফ পরিভাষার মতে দ্বিগুলা পরিমাণ। রাজনিদ্নিটর মতে সার্দ্ধগুলা পরিমাণ।

"গোপুমন্বিতয়োন্মিতা তু কথিতা গুঞ্জা তথা সাৰ্দ্ধরা। বলো বল্লচত্ইয়েন ভিষজাং মাধামতস্তচ্চতু: u (রাজনি°) २ मञ्चितिस्य । ७ मज्ञकीवृक्य । ७ वाद्यानक, ८वरङ्गा । বলা (পুং) বল-যৎ। ১ ডাক্ষ্য। (ক্লী) ২ গুড়ুছক্। (রাজনি°) (ত্রি) ৩ বলকর। ক্রিয়াং টাপ্। বল্যা, পাতালগরুড়ী লতা। বল্ল, প্রাচীন শকজাভির একটী শাখা। পূর্ব্বে ইংগার সৌরাষ্ট্রে বাজত্ব করিতেন। ইহারা রাজপুতনার রাজকুলের একতম। ভট্টকবিদিগের বর্ণনা হইতে জানা যায় যে, ইহারা এক সময়ে সিদ্ধনদের কুলে ঠট্ট ও মূলতান প্রদেশের রাও ছিলেন। কিন্ত এখন ইছারা আর আপনাদিগকে শক বলিয়া স্বীকার করেন না। বরং ক্র্যবংশীয় অংযোধ্যাপতি রামচক্রের পুত্র লবের বংশে আপনাদের বল বা বগ্ন নামক কোন পূর্ব্যসূত্রের উৎপত্তি क्त्रना क्त्रिज्ञा ज्याभनामिशक प्रधावः भीत्र विनत्नाहे थाक्न । প্রথমে তাঁহারা মূলিপাটনের অন্তর্গত প্রাচীন ধাছ নগরে আদিরা বাস করেন এক পার্থবর্তী স্থানসমূহ কর করিয়া আপনাদের রাজশক্তি বিস্তার করিয়াছিলেন। তাঁহাদের এই রাজ্য

বল্লক্ষেত্র ও রাজধানী বল্লীপুর নামে প্রতিষ্ঠা লাভ করে এবং তথাকার রাজবংশ বল্লরায় উপাধি ধারণ করিয়া আপনাদের প্রভাব বিস্তার করিয়াছিলেন।

সৌরাষ্ট্রের রাজশক্তির প্রতিষ্ঠার পর বল্লগণ আপনাদিগকে মেবারের গহলোত বংশীরগণের সমশ্রেণী বলিরা খীকার করিতে থাকেন। কিন্তু রাজেতির্ভ পাঠে জানা যায় যে, গহলোতগণ দিবোপাসনার পূর্ব্বে স্বর্ধার উপাসনা করিতেন, পক্ষান্তরে সৌরাষ্ট্রের বল্লেরা আপনাদিগকে ইন্দ্রংশোন্তর ও বলিকপুত্র বলিরা নির্দেশ করিরা থাকেন। বলিকপুত্রগণ সিদ্ধতীরবর্ত্তী অরোর নামক স্থানে রাজত করিতেন। খুষীয় ১৩শ শতাকে বল্লগণ অতিশর হর্দ্ধর্ব হইরা উঠে এবং উপর্যুপরি মেবার আক্রমণ করে। রাণা হামীর একটী যুদ্ধে চোতিলার বল্লসদারকে নিহত করিরাছিলেন। ধাজের বল্লসদারকংশ অভ্যাপি জাতীয় গৌরব রক্ষা করিয়া আসিতেছে। [বলভীরাজবংশ দেখ।]

বল্লকরঞ্জ (পুং) করঞ্জভেদ।

বল্লকী (স্ত্রী) বলতে ইতি বল্ল-কূন্, গৌরাদিখাৎ ভীষ্। ১বীণা।

"বলকীং বাভমানে। হি সপ্তস্তরবিম্ঠিতাম্।"

(इतिवःभ ৮८।১১১)

२ महाकी तृष्णः। (तां क्रनि°)

বল্লগুণপূগ (ক্লী.) পূগবিশেষ, স্থপারিবিশেষ। (রাজনি⁶) বল্লটভট্ট, একজন প্রাচীন কবি। স্থর্ততিলকে ক্লেমেক্র ইহার উল্লেখ করিয়াছেন।

বল্লটভাগবত, একজন কবি। বল্লন, একজন প্রাচীন কবি।

ল্লেপুর, লাক্ষিণাভার অন্তর্গত চুইটা প্রাচীন নগর, চিক্ক ও লোদ বলপুর নামে থাতে। উক্ত নগরদ্বয় পরস্পরে ৭ কোশ ব্যব-ধানে অবস্থিত। হায়দার আলী কর্তৃক ধ্বন্ত হইবার পূর্ব্বে এই নগর অতি সমৃদ্ধিশালী ও ধনজনপূর্ণ ছিল। চিক্ক্লপুরের স্বাস্থা নিভান্ত মন্দ নহে। এথানে মোরস্থ বকলিগবংশীয় কএকটী ক্ষিজীবি-লোকের বাস আছে। তাহাদের বিশ্বাস, দক্ষিণ হন্তের গুইটী অঙ্গুলি কর্তুন তাহাদের জীবনের একটী কর্ত্তবা কর্ম্ব, এই কারণে উক্ত বক্কনু শাখাভুক্ত রমনীরা স্বধর্ম্মরক্ষার জন্ম স্ব স্ব ক্যাগণের বিবাহকালীন কর্ণবেধের সময় দক্ষিণ হল্তের অঙ্গুলীয়্ম ছেদন করিয়া দেয়। এ সময়ে তাহারা ঘণাসাধ্য পূজামুদ্ধান করে এবং গ্রামন্থ কামারকে ডাকাইয়া তাহাকে কিছু কাটাই মক্ষ্বী দিয়া কন্থাদিগের অঙ্গুলী গাঁটের মাথায় কাটিয়া লয়। ত ইহা আইনবিক্স হইলেও ১৮৭৪ খুটাক্সের প্রারম্ভে বঙ্গুলুব্রক্স এইরপ অঙ্গলি কটো হইন্নছিল। আঙ্গুল কাটিবার সমর চিত্র নামক বন্ত্র সাহাযো এক আঘাতে কটোই রীতি।

এই অভুত ক্রিয়া সম্বন্ধে তাহাদের মধ্যে একটা কিংবদস্তী আছে:--পুরাকালে বুক নামে এক রাক্ষস ছিল। সে বছ সহত্র বৎসর কঠোর তপস্তা করিয়া মহাদেবকে ভূষ্ট করে। রাক্ষসের তপে পরিতুষ্ট হইয়৷ মহাদেব রাক্ষসকে দেখা দিয়া বলেন, বংস! আমি তোমার তপস্থায় প্রীত হইরাছি, এক্ষণে यथा जिनिक वत आर्थना कता त्रीक्रम दावामित्व महात्मदत्त এবন্ধিধ বাক্য শ্রবণ করিয়া বলিল, দেব! যদি অধীনের প্রতি রূপা করিয়া দর্শন দিয়াছেন, তবে আমায় এই বর দিন যেন व्यामि माथाग्र हां जिनामाञ्चे त्रहे वाकि उप इहेगा गाग्र। আশুতোষ রাক্ষ্যের অসদভিপ্রায় জ্ঞাত না হইয়া "তথাস্তু" বলিয়া প্রস্থান করিলে গুরুত্ত রুক দেবপ্রদত্ত এই অসাধারণ শক্তির পরীক্ষার্থ মহাদেবের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হইল। শিব উপায়া-ন্তব না দেখিয়া ক্রতপদে প্লায়মান হইলেন, রাক্ষ্স তাঁহার পশ্চাদমুসরণ করিয়া ক্রমশঃ নিকটবতী হইলে মহাদেব একটা বনে প্রবেশ করিলেন। রাক্ষ্য হাফাইতে হাফাইতে দৌডিয়া আর্সিয়া বন সমুথত্ব ক্ষেত্রে এক কৃষককে দেখিতে পাইল এবং জিজ্ঞাসা করিল-শীঘ বল, তুই এখান দিয়া কাহাকেও যাইতে দেখিয়াছিদ ? ভীষণদশন দেই রাক্ষ্যকে দেখিয়া তথন ক্লয়ক মনে মনে চিন্তা করিল, যদি আমি এই রাক্ষসকে মহে-শ্বরের সংবাদ না বলিয়া দিই, তাহা হইলে এ এখনই জোধের বশবর্ত্তী হইয়া আমাকে সংহারপ্রবাক ভক্ষণ করিবে; আর যদি শিব এট বিষয় জানিতে পারেন, তাহা হুইলে আমায় হরকোপা-নলে দ্ব্বীভূত হইতে হইবে ; স্থতরাং কি কর্ত্তবা অমুসরণ করিলে এই দারুণ বিগদ হইতে অব্যাহতি পাই। ক্রুককে চিম্বাদীন দেথিয়। রাক্ষদের দৃঢ় বিশাদ জানিল, দে নিশ্চয়ই মহেশবের সংবাদ জানে। তথন সে পুনঃ পুনঃ হরার ছারা কৃষককে ভয় প্রদর্শন করিতে লাগিল, ক্লষক উপায়ান্তর না দেখিয়া চিৎকার-পুর্বক বলিল, "আমি মহাদেবের কোন সংবাদ রাখি না" পর-ক্ষণেই সে আন্তে আত্তে রাক্ষসকে মহাদেবের গুপ্তস্তান (मथाहेबा मिन।

যথন রাক্ষণ বৃক সেই বনে প্রবেশ করিয়া মহাদেবকে ধরিতে অগ্রসর হইল, এমন সন্মে, বিষ্ণু মহাদেবের উদ্ধারার্থে মোহিনী-বেশ ধারণ করিয়া রাক্ষ্যের সন্মে উপনীত হইলেন। যুবতীর মোহনরপে মুগ্ধ হইরা রাক্ষ্য মহাদেবের প্রতিহিংসা ভূলিয়া ধীরে ধীরে মোহিনীর অঞ্সরণ করিতে লাগিল, কিন্তু সেই বরবপ্ স্পর্শ করিতে পারিল না, রাক্ষ্যের প্রেমবিহ্বল ভাব দেখিয়া যুবতীর দ্রার উত্তেক হইল। তথন সে বলিল, আমি আক্ষণ-

কন্তা, কিরপে তোমার স্থায় অপৃত্যের রাক্ষসের প্রার্থনা পূর্ণ করিতে পারি। তুমি অগ্রে সন্থ্যা বন্দনাদি দারা পৃত্যেঁত হও, তবে তোমার বাসনা পূর্ণ স্থুইতে পারে এবং তুমি আমাকৈ স্পর্ণ করিতে পার।

বিষ্ণুর ছলনা রাক্ষ্য বৃদ্ধিতে পারিল না। নারীর রূপে মুগ্ধ হইরা সে বীর দক্ষিণহত্তের প্রভাব ভূলিরা গেল। সন্ধা করিবার সময় রাক্ষ্য অক্সাসকালে খীয় অকাদিতে যথাক্রমে দক্ষিণহত্তের অভূলি স্পর্শ করিতে লাগিল। অনস্তর যেমন মন্তকে হন্ত স্থাপন করিবে, অমনি ভক্ষপাৎ হইয়া গেল। তদনস্তর মহাদেব সেই গুপ্ত স্থান হইতে বহির্গত হটয়া বিষ্ণুর নিকট শীর কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপনপূর্বকে অকৃতজ্ঞ ও বিশ্বাস ঘাতক ক্ষকের অপরাধের বিচারে প্রবৃত্ত হইয়া আদেশ করিলেন, যে অনুলি ছারা তুই আমার গুপ্ত স্থান নির্দেশ করিয়া দিয়াছিল, তোর সেই অজুলি আমি নষ্ট করিয়া দিব। এট বলিরা মহাদেব তাহার অঙ্গুলি কাটিতে উন্নত হইলেন। এমন সময়ে অকন্মাৎ ক্লযকপত্নী স্বীয় স্বামীর অনুবালনাদি লইয়া সেই কেত্রে আসিয়া উপস্থিত হইল, সে মহাদেবকে তদবত্ব দেখিয়া খীয় খামীর অঙ্গুলি রক্ষার্থ মহাদেবের চরণতলে নিপতিত হইল এবং বিশেষ অমুনয় বিনয়ের পর বলিল, হে প্রভো। যদি আপনি আমার স্বামীর অঙ্গুলি নষ্ট করিয়া দেন, তাহা হইলে অরাভাবে এই দরিদ্র পরিবার মৃত্যুমুখে পতিত হইবে, স্থতরাং তাঁহার পরিবর্তে আমি হুইটা অনুনি দিতে প্রস্তুত আছি ! মহাদেব ক্লয়কর্মণীর এই প্রকার পতিভক্তি দেখিয়া বলিলেন, তোমার এরপ স্বামিভক্তিতে আমি প্রীত হইয়াছি। আৰু অবধি তোমার বংশে যে সকল রমণী জন্মগ্রহণ করিবে, সেই আমার মন্দির সমক্ষে তাহার ছইটা অন্থলী বলি দিয়া তোমার এই অসাধারণ পতিভক্তির মহিমা খোষণা করিবে। ভাই অগ্রাবধি (महे तमनीत वः नीता कलाता कलाता कलान कतिता कामिएङ । তাহারা রাজবিধির নিষেধ না মানিয়া দও গ্রহণ করিতে বরং ইচ্ছক, তথাপি দেবাদেশ শঙ্কন করিতে ইচ্ছুক নতে। এখনও মহিস্করে প্রায় ২ সহত্র পরিবার ঐরপ অঙ্গুলিদান করিয়া থাকে।

বল্লপুর, মাল্লাজপ্রেসিডেন্দীর সলেম জেলার অন্তর্গত একটা গণ্ডগ্রাম। কোলিমলর পর্বতোপরি স্থাপিত নামকল নগরী হইতে ১৬॥ মাইল পশ্চিমোন্তরে অবস্থিত। এখানে তোরিয়ুর উপত্যকার সন্মুখ্য কলরমূথে আরপলেশ্বর আমীর মন্দির ও পুরুর। এ পুথুরে কতকগুলি মাছ আছে। প্রত্যহ ঘণ্টা বালাইয়া এ মাছগুলিকে থাত দেওরা হয়। ঘণ্টাশন্দ হইলেই মাছগুলি বাধের তীরে আসিরা উপস্থিত হয়। এই লক্ত অনেকে এ মন্দিরকে

মৎ ক্রমন্দির বলে। মন্দিরগাত্তে অনেক শুলা শিলাকণক

উৎকীর্ণ আছে। তন্মধ্যে একখানি ১৩৫০ খুটান্দে উৎকীর্ণ।
ব্রন্ত ("ত্রি) বল্ল-অভচ্। ১ প্রের।

"পুঞ্জেভ্যন্ত নমকুর্যাৎ বল্লভেভ্যন্ত ভূপডে:।"

(कामनकीयनी किंमा° (155)

 অধ্যক্ষ। (অমর) খামীর মতে অমরতীকার অধ্যক্ষ শব্দে পরাধ্যক্ষ বৃথার। ৩ সুলক্ষণাক্রান্ত অখ। ৪ কৃষ্ণান্তক।
 রাজনিধী। (ভাবপ্র•)

বল্লভ, একজন রাজা। দশপতিরাজের পিতা। ২ রাজকুমারভেদ।
ত্থানিক রূপ ও সনাতন গোত্থানীর দ্রাতা। [সনাতন দেখা]
বল্লভ, কএকজন কুপ্রসিক গ্রন্থক্তা—> বল্লভাচার্যা। ২ একজন
বৈরাকরণ। মলিনাথ ও বারসুকুট ইহার মত গ্রহণ করিরাছেন।
ত মোক্ষসন্থীবিলাসপ্রণেতা। ৪ বিক্জনবল্লভ নামক জ্যোতিপ্রত্বিল্লভা। ৭ শক্ষেশ্পেধর্টীকাপ্রণেতা। ইহার প্রকৃত
নাম হ্রিবল্লভা। ৮ সম্পশ্গভার্থরচ্যিতা। ৯ বৈশ্ববল্লভ নামক
গ্রন্থকার।

ব্লভক্ষুত, হল্বোগের উপকারক ঔষধভেদ। প্রস্তুত প্রণালী— হরীতকী • নী, সচল লবণ ২ পল একত্র মৃতপাক করিয়া পান করিলে হলাদ, মূল, উদররোগ ও বায়ুনাশ হয়।

(ভৈষজারত্বাবলি হুদ্রোগাধিকা০)

বল্পভাৰ বোদাই প্ৰেসিডেন্সীর বেলগাম জেলার অন্তর্গত একটা গিরিত্র্গ। চিকোড়ি হইতে ১৫ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। লৈলশিখরোপরিত্ব ছর্গাংশ প্রায় গোলাকার (২৭৫×২০০) এবং কোন স্থানে ক্লব্ৰিম ও কোথাও বা পৰ্বভগাত্ৰ ইহাকে প্ৰাচীৱ-রূপে বেষ্টন করিয়া আছে। উহার হুইটা প্রবেশদার, ৪টা প্রশ্রবণ, একটা স্থরহৎ কুপ এখন সম্পূর্ণ নষ্টপ্রায়, সংস্কার অভাবে ত্রেরও অধিকাংশ ধ্বংস হইবার উপক্রম বলভগড় তুর্গ ১৬৮০ খুষ্টাব্দে মহারাষ্ট্রকেশরী শিবান্ধীর অধিকারে ছিল। উহা বেলগামের ১০টা প্রাসিদ্ধ ছর্মের একতম। ১৭৮৬ খুষ্টাব্দে নেদগার দামৰ দৰ্শার কোল্হাপুর-রাজের বিরুদ্ধে অস্ত্র ধারণ করিয়া তাঁহার নিকট হইতে বলস্তগড়, গৰ্ম্বগড় ও ভীমগড় অধিকার করিয়া লন: কিন্তু কোল্ছাপুরপতি পরবর্ষেই বিল্রোহী সামস্তকে পরাজিত করিয়া তুর্গ পুনক্ষার করেন। ১৭৯৬ খুটানে যথন পরওরাম ভাউ পুণার অবস্থিতি করিতেছিলেন, তথন কোলহা-প্ররাজশক্র উপরোক্ত সন্দার পুনরায় বলভগড় হুর্গ হস্তগত करवम ।

বল্লভগণক, গণিতদভাপ্রণেভা।

বল্লভগণি, হেমচক্রক্ত অভিধানচিন্তামণির সারোদ্বার এবং শেষ-সংগ্রহের টাকাপ্রণেতা। ইনি ক্যানবিষলের শিষ্য ছিলেন।

বল্লভ জী, > হন্ত শ্রাদ্ধরচিয়তা। ২, নাগরপণ্ডের সারশ্লোক ও অধ্যান্নাস্ক্রমণি, মহাভারতাধ্যান্নাস্ক্রমণি, মহাভারতোদ্ভ্তসার এবং ব্রভ্যালা-সক্লিভিটা।

বল্লভাজী গোস্বামী, একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। বল্লভাত্ম (জি) অতিশয় প্রিয়ে।

বল্লভতা[জু] (স্ত্রী) বল্লভন্থ ভাবঃ ধর্মে বা তল্টাপ্। প্রিয়তা, বল্লভের ভাব বা ধর্ম।

বল্লভ তাতিয়া, একজন মহারাষ্ট্র প্রধান। ইনি সিন্দেরাজের প্রধান অমাত্য ছিলেন। ১৭৯৫ খুষ্টাব্দে পেশবা মধুরাওর মৃণ্যুর পর, পেশবার গদি লইয়া গোলযোগ উপস্থিত হয়। এই সময়ে বিধবা রাজমহিধী যশোদাবাই দত্তকগ্রহণের সঞ্চল করেন। বল্লভ তাহাতে বাধা প্রদান করিয়াও বিশেষ কিছ করিতে পারেন নাই। অবশেষে তিনি ১৭৯৬ খুষ্টাব্দের জামুয়ারী মালে বাজীরাওর বড়বন্দ্র যোগদান করিয়া তাঁহাকেই রাজ্যের করিবার ব্যবস্থা করেন, কিন্তু বাজীরাও পুণায় আসিয়া নানা ফড়নবিশের সহিত সাকাৎ করিলে, উভয়ের পূর্ব্বমনোমালিত-বিদ্রিত হয় এবং নানা রাজমন্ত্রী থাকিলে বাজীরাও পেশবা হইবেন, এইরূপ একটা যুক্তি হয়। এই সন্মিলন বিশেষ আশা প্রদ নহে, ভাবিয়া বল্লভ তাতিয়া উভয়ের গুপুপরামর্শে বিপ্রীতা চরণ করিতে চেষ্টা পান। তিনি স্বীয় বৃদ্ধিবলে চিমনাজী আপাকে যশোদাবাইর দত্তক সাবাস্ত করাইলেন এবং কৌশলে পর্ভ রাম ভাউকে মন্ত্রিপদাধিকারে অঙ্গীকার করাইয়া বাঞ্চীরাওর नर्सनाममाभरन अनुष घडेरलन। नाना कड़नविन मन्नी त्रहिरलन এবং পর্ভরাম রাজাচালনের ভার গ্রহণ করিলেন। এই সময়ে পাছে দৌলতরাও সিন্দে শত্রু হইয়৷ উঠে,তাহার প্রতিবিধান জন্ম বল্লভ নানার পরামশান্ত্রসারে উভয় পক্ষের মিলনচেষ্টা পাইলেন।

এই সময়ে চিম্নার্জা আপা, বাজীরাও ও নানা ফড়নবিশ পরগুরাম ভাউকে গইয়া মহারাষ্ট্র-সরকারে যে বাের রাজবিপ্লব স্টেড হইয়াছিল, তাহা মহারাষ্ট্রের ইতিহাসে স্ম্পটরূপে লিখিত আছে। চিম্নার্জী আপাকে নৃতন পেশবা করিবার অভিপ্রায়ে নানা ফড়নবিশ সাতারার আসিয়া রাজসনক গ্রহণ করিলেন, এদিকে পরগুরামের কৌশলে বল্লভ কর্তৃক বাজীরাও হস্তগত দেখিয়া তাহার সন্দেহ জয়িল, তিনি তাহাদের সহিত মিলিত না হইয়া বালী হইতে রাজসনক প্রেরণ করিলেন। ২৬এ মে চিম্নার্জী পেশবা পদে অভিষক্ত হইলেন।

ইহার পর পরভরাম নানা কড়নবিশকে পুণায় ভাকাইর।
আনিরা বন্ধত তাতিয়ার সহিত মিলন করাইতে চেটা পাইলেন,
কিন্তু কলে কিছুই হইল না। উভরপকে শক্রতার্ত্তির সহিত
মুদ্ধ অবক্রজাবী হইরা উঠিল। নানা বিশেব কৌশনে রযুলী

ভোন্দ্ৰেকে ইন্তগভ করিলেন। সিন্দেরাজ ও বোলকরণতি এবং পেশবার সেনাগতি মি: বরেড্ সজ্জিত ইইলেন। ৮ই আটোবর বাজীয়াও মসনদে বসিলেন এবং ২৭এা আটোবর বল্লড তাজিলা সিন্দেরাজ কর্তৃক অবরুদ্ধ ইইলেন। অতঃপর সিন্দেরাজ তাঁহাকে মুক্তিদান করিয়া প্রনরার মন্ত্রিপনে মিরোগ করেন। কিন্তু ১৮০০ বৃষ্টান্দে নানা কড়নবিলের মৃত্যুর পর, পেশবা বাজীরাওর সহিত সিন্দেরাজের বার শক্রতা উপস্থিত হয়। সেই সমলে সিন্দেরাজ পুমরার বিজ্ঞোহাগভার বল্লভন্ত করেন। [মহারাট্র ও অপরাপর শক্ষ দেখা]

বল্লভদাস, বৈক্ষবাহিকগুণেতা।

বল্লভদীক্ষিত (পুং) ৰলভাচাৰ্ব্য। [বলভাচাৰ্ব্য শেখ]

বৃদ্ধভাদেব, > স্থভাবিভাবলি প্রণোগ। ইনি খুরীর বোজ্প শতাব্দে বিশ্বমান ছিলেন। তাঁহার যত্ত্বে শার্ক ধরণছতির স্কলনকার্য্য আরক্ক হয়। ২ যোগমূকাবণীরচরিতা। ৩ একজন কবি। 3 কুমারসভবের অপ্রাধায়-টীকা, মেঘদ্ভটীকা, রঘুবংশপঞ্জিকা, বক্রোক্তিপঞ্চাশিকাটীকা, শিশুপালবধটীকা ও স্থাশতকটীকা-প্রণোভা। মল্লিনাথ ইহার মত উদ্ভ করিয়াছেন। ইনি আনন্দদেবের পুত্র এবং আনন্দবর্ধনকৃত দেবীশতকের টীকাকার ক্যাটের (১৭৭ খুঃ) পিতামহ।

বল্লভন্মাচার্ষ্য (পুং) স্তারনীনাবজীপ্রণেতা। গলেশতর-চিন্তামনিতে ইহার উল্লেখ করিরাছেন।

বল্লভপালক (ত্রি) বল্লভানাম্ অধবিশেষাণাং পালক:। অধ্যক্ষক। (ভূরিপ্রয়োগ)

বল্লভপুর (ক্লী) কলিকাভার উত্তরত গলাতীরবর্ত্তী একটি গণ্ড-গ্রাম। এথানে বল্লভজীর মন্দির বিভ্যান। প্রতি বংসর রথ-যাত্রা উপলক্ষে এথানে দাদশগোপালের উৎসব হইয়া থাকে। এই স্থান ইঠ ইণ্ডিয়া রেলপথের শ্রীরামপুর ষ্টেশন হইতে ক্ষর্ম ক্রোশ মাত্র। [মাহেশ দেখা]

বল্লভরাজ, অন্হিলগড়ের একজন রাজা। চামলরাজের পুত্র। বল্লভশক্তি (ত্রী) একজন রাজপুত্র। (কথাসরিৎসা° ১০।১৭) বল্লভস্মিন্ (পুং) বল্লভাচার্য।

বল্লভা (ব্রী)প্রিয়া।

'প্রেরনী দরিতা কাস্তা প্রাণেশ বরতা প্রিরা।

क्षारतमा প্রাণসমা প্রেষ্ঠা প্রণরিনী চ সা ॥' (हেম)

বল্লভাচারী, বৈক্ষব-সম্প্রদারভেদ। অপর নাম ক্রসম্প্রদার। বল্লভাচার্য্য ইহার প্রবর্তক, এই নিমিত্ত লোকে এই সম্প্রদারী বৈক্ষবদিগকে বল্লভাচারী বলিরা থাকে। ভারভবর্বের উত্তর-পশ্চিমে রামসীভার উপাসনাই প্রচারিত্ত দেখা বার, কিন্তু ঐ স্থানের পশ্চিমভাগে ঐপর্যাবান্ ও ভোগবান্ গৃহত্তের মধ্যে

আন্তর রাধারকের উপাসনা আচলিত। ঐ প্রাণেশে ধর্মতা-চাত্মপ্রবর্তিত বালগোপালের, দেবা কিছুদিন হর্ষণ বিশেষভাবে প্রবল হইরা উঠে। গোরুলছ গোত্মানীরা এই ধর্ম উপদেশ দেন, একড ইহা গোরুলছ গোত্মানীবিগের ধর্ম বলিরা প্রাসিদ্ধ।

প্রবাদ আহে, — নর্মপ্রধনে ধেদ-ভান্তকার বিজ্বানী এই করের সারভাব প্রচার করেন। তিনি সন্মাসাল্রনী রাজণ বাতীত অন্তক্ষে শিশ্র করিছেন না। তাঁহার শিশ্র আনদেব। আনবেবের শিশ্র করিছেন না। তাঁহার শিশ্র আনহেব। আনবেবের শিশ্র নানদেব ও আনোচন। তাঁহারের অব্যবহিত কাল পরে ভেললদেশীর লক্ষণ ভটের পূত্র বারভাচার্য গুরুপদে অভিবিক্ত ইইয়া, খুটার পঞ্চলশ পতালীর শেষভাগে, সবিশেষ যত্র সহকারে ঐ মত প্রচার করিছে প্রার্গত ইন। প্রথমে তিনি গোকুলে ও বাস করিছেন। তথার কিছুলাল যাপন করিয়া তীর্থপির্যাটনে বার্রা করেন। ভক্তমালে লিখিত আহে, তিনি ভারভবর্বের দক্ষিণথতে বিজ্বনস্রাধিপতি ক্ষকদেবের সভার উপস্থিত ইইয়া তথাকার স্মার্থ-আদাদিগতে বিচারে পরাত্ত করেন, এবং ভল্রভা বৈক্ষবগণের আচার্যা-পদে অভিবিক্ত ইন। তথা ইইতে উক্ষরিনী নগরীতে গমন করিয়া শিপ্রা-তটে অম্ববৃক্ত-তলে অবস্থিতি করেন। ঐ হান অভাপি তাঁহার বৈঠক বলিয়া প্রসিদ্ধ আহে।

মণুদার বাটে তাঁহার ঐদ্ধপ আর এক বৈঠক দেখা বার।
চনারের এক ক্রোপ পূর্বে তাঁহার নামে একট বঠ ও বন্দির
বিভ্যমন রহিরাছে। ঐ মঠের প্রাক্তণে যে কূপ আছে, তাহা
আচার্য্য কুঁরা নামে খ্যাত। উজ্জারনীতে কিছু দিন অবস্থিতি
করিরা তিনি বৃন্ধাবনে প্রত্যাগমন করেন। জীকক তাঁহার
অচলা ভক্তি ও ধর্মার্থকেশ বীকার দেখিরা পরম পরিতৃষ্ট হন,
এবং অতি মনোহররপে দর্শন দিয়া তাঁহাকে বালগোপালের সেবা
প্রচার করিতে আদেশ করেন।

বর্মভাচার্য্যের সৃত্যুগটনাবিবরক আখ্যান অতিমাত্র অন্ত ।
তিনি শেববিশ্বার কিছুদিন বারাণসীর জেঠনবড়ে বাস করিতেন ।
ঐ জেঠনবড়ের নিকটে অভ্যালি ভাঁহারা একটি মঠ আছে । তিনি
মর্ত্যা-দীলা সম্পন্ন করিরা এক দিবস হন্মান্থাটে গলা-সলিলে
অবস্তরণ করিলেন এবং অবপাহন করিছে করিছে একফালে
অন্তর্ভিত হইরা গোলেন । ভালনতার ভাঁহার অবগাহন-হান
হইতে এক দেদীপানান অন্তি-শিবা গ্রাহীপ্ত হইরা উঠিল,
তিনি বছতের দর্শক সমক্ষে অগারেছেণ করিছে লাগিলেন, ও
অবনেবে আকাশে লীন হইরা গোলেন।

বনিও মহাভারতাদি প্রছে বিষ্ণু ও ক্লকের অভেদ রূপ বর্ণনা আছে এবং প্রভাগৰতে ভাঁহার কেলি-কৌতুকপরিপূর্ণ বৌবন-

व्यूनात्र वात्रक्टि व्यूनात्र बात्र क्रिक स्क्रांत पृथ्व (नाकुन बात्र)

পীলার সবিত্তর বর্ণনা পাওরা বার, তথাপি বিফু অংশকা ক্রকের প্রাথান্ত-বর্ণন ঐ চুই গ্রান্থের কোন অংশে দৃই হর না; কিন্তু কোন কোন হলে শ্রীক্লক্ষের বাল-রূপের উপাসনার স্থাপান্ত বিধি প্রাথাত হওরা বার ।

ত্রক্ষবৈবর্জপুরাণে লিখিত আছে—বৃন্ধাবন-বাসী গোপাল হইতেই এই চরাচর বিব উৎপন্ন। তাঁহার দক্ষিণ পার্ব হইতে নারারণ, বাম পার্ব হইতে মহাদেব, নাভি-পন্ন হইতে ত্রক্ষা, বক্ষঃ-হল হইতে ধর্ম, মুখ হইতে সরস্বতী, মন হইতে লামী, বৃদ্ধি হইতে চুর্গা, জিহবা হইতে সাবিত্রী, মানস হইতে কামদেব এবং বামান্দ হইতে রতি ও রাধিকা উৎপন্ন হন; রাধার লোমকূপ হইতে জিংশং কোটি গোপান্ধনা এবং শ্রহুক্তর লোমকূপ হইতে জিংশং কোটি গোপান্ধনা এহণ করে; প্রথমে গোলোকবাসী, পরিশেবে রন্ধাবন-নিবাসী, গান্তী ও বৎস পর্যন্তও তাঁহার লোমকূপ হইতে উৎপন্ন হন্ম, ক্লক্ষ অন্ধ্রহ করিরা তাহার একটি গোদ মহাদেবকে দিরাছিলেন। ঐ প্রাণের স্কটি-প্রকরণে শ্রহুক্তর বিদারা বর্ণিত আছেন।

বল্লভাচার্য্য বলিরা গিরাছেন, পরনেশবের উপাসনাতে উপবাসের আবশুকতা নাই, অন্ধ বল্লের ক্লেপ পাইবারও প্রবান্ত্রন নাই, বন-বাস বীকার প্রশের কঠোর তপভারও আবশুক নাই; উত্তম বসন পরিধান ও স্থাত্ম অন্ন ভোজনাদি সমস্ত বিব্যাহ্থ সন্ভোগপূর্ককে তাঁহার সেবা কর। বন্ধতঃও এ সম্প্রদারী বৈদ্ধবেরা অভিমাত্র বিব্রী ও ভোগবিলানী। গোলামীরা সকলেই গৃহস্থ। সম্প্রদার-প্রবর্ত্তক বন্ধভাচার্য্য

কিন্ত শ্রীমন্তাগবতে বালকুঞ্চের ঈবর-ভাব বর্ণিত আছে । লিখিত
আহে, বহুদেব মব-প্রস্তুত শিশুকে চতুত্বি, প্রীবংস-চিছ-ধারী, পীতাবরপরিধান ও শঝ্চক্রাদি-বৈক্ষান্ত-বিশিষ্ট দেবিলাছিলেন।

"তমভুতং বালকমৰ্জেকণং চকুতৃ কং শখ্যলগৰ্গদাৰ্থৰ।

এবংসলক্ষং গলশোভিকৌত্তং শীভাৰতং সাম্ৰপ্ৰোৰসৌকগৰ্ ।

মচাৰবৈদ্ধাকিনীটকুওলখিব। পদিবক্তসহ্মকুৰদৰ্।

উদামকাঞ্চদকৰণাধিভিকিবোচমানং বহুদেৰ একড ।"

(ভাগৰত ১-(৩)১-১-)

ঐ পুরাণের ছানান্তরে বণিড আছে, জীকুক সুৰব্যাদান করিলে, বংশাদা ভরবো অধিল একাও অবলোকন করিলেন।

আখার মহাভারতের বনপর্বে ১৮৮ অধাতে একণ একট উপাধান আছে বে, বার্কণ্ডের মূনি, প্রলম্ভনালে, বিধ বিচরণ করিছে করিছে থেখিলেন, এক প্রকাশ বট-কৃষ্ণের উপারভাবে বিবাজন্তন-ভূবিত পর্বাহে একট বানক শরন করিরা রহিলাতে। বার্কণ্ডের ত্রিকালবেজা হইলাও জাহাকে লাকিতে পারিলেন না বেখিরা, সেই বালক কৃষ্ণবর্ধ ও বীবংস-চিছ্-বারিক্রপে কর্মন হিলা কহিলেন, "মার্কণ্ডের; আমি জোমাকে লানি, তুরি পর্বাচন করিয়া পরিভাত হইলাক, একপে আমার বেরাজারত আবিও ইবা বডনিন ইচ্ছা বাস কর।"

বিষও প্রথমে সন্ন্যাসী ছিলেন, কিন্তু লোঁকে বলে, তিনি পুনর্কার গার্ছসাশ্রম অবলম্বন করিয়ছিলেন। সেবকেরা গোত্থামীদিগকে পরিধানার্থ উত্তমোত্তম বছ-মূল্য বল্প প্রদান করে এবং চর্কা, চোবা, লেফ, পের নানাবিধ স্থাস দ্রব্য ভোজন করার।

শিষাদিগের উপর গোস্থামীদিগের অভ্যন্ত প্রভূত্ব দেখিতে পাপ্তরা বার; এমন কি, শিব্যেরা তাঁহাদিগকে তমু, মন ও ধন এই তিনই সমর্শণ করিবে; এরূপ স্থান্দাই বিধি আছে। সেবকেরা অনেকেই ব্যবসারী। গোস্থামীরাও বছ-বিভূত বাণিজ্ঞা-ব্যবসারে ব্যাপ্ত থাকেন এবং তীর্থভ্রমণোপদক্ষে দ্রদ্রান্তরে গমন করিরা বাণিজ্ঞা-ভার্যা নির্বাহ করেন।

দেব-সেবার বিষয়ে অক্সান্ত সম্প্রদায়ের সহিত ইহাদিগের বিশেব বিভিন্নতা নাই। ইহাদিগের গৃহে ও মন্দিরে গোপাল, রাধারক এবং রুকাবতার স্বন্ধীর অক্সান্ত প্রতিমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত থাকে। এই সমস্ত প্রতিমূর্ত্তিই প্রান্ত ধাকে।

- > মদলারতি। প্র্যোদ্যের আর্ক ঘন্টা পরে প্রীক্ষণকে শ্ব্যা হইতে উত্তোলনপূর্বক আসনার্ক্ত করিরা তাখুল-স্থলিত যৎকিঞ্চিৎ জলপানের সামগ্রী প্রদান করিতে হয় এবং সে সমরে তথার দীপ রাখা হইরা থাকে।
- ২ শূলার। চারি দশু বেলার সময়ে জ্রীকৃষ্ণ তৈল, চন্দন, ও কর্পুর দারা স্থান্থিত ও বক্তালভারে বিভূষিত হইরা বার দিয়া বনেন।
- ত গোরালা। ছয় দও বেলা হইলে ঐক্ত যেন গোচারণে যাত্রা করিতেছেন, এইরূপ বেশ ধারণ করেন।
- ৪ রাজভোগ। মধ্যাক্তকালে জ্রীক্টক গোষ্ঠ হইতে যেন গৃহে প্রত্যোগমূন করিরা ভোজন করিতেছেন, এই মনে করিরা, দেবাল্যের পরিচারকেরা বিগ্রহ সমীপে নানাবিধ মিষ্টান্ন ও জ্ঞান্ত স্থান্থ সামগ্রী স্থাপন করেন এবং জোগ সমাপ্ত হইলে পর, প্রসাদী দ্রব্য ও জ্ঞান্ত সামগ্রী, উপস্থিত সেবকলিগকে গরিবেশন করিরা থাকেন এবং কোন কোন ধনাঢা ও সম্ভ্রান্ত শিব্যের বাটাতেও প্রেরণ করেন।
- উত্থাপন। ভোগান্তে বিগ্রহের নিজা হয়, পরে ছয় দও
 বেলা থাকিতে জাগরিত করিয়া উত্থান কয়াইতে হয়।
 - 🗣 ভোগ। উত্থাপনের অর্দ্ধ ঘন্টা পরে বৈকালিক ভোগ হয়।
- ৭ সন্ধা। স্থাত সময়ে শ্রীক্রকের সায়ংকালিক সেবা হর। তথন তাঁহার দিবা-পরিহিত সমুদার অলভার উল্লোচন করিরা পুনর্কার তৈল ও গছ-ত্রব্যাদি হারা অল সেবা করিতে হয়।
 - ৮ শরন। অভ্যান ছয় দও রাত্রির সময়ে বিগ্রহকে শব্যার

হাপনপূর্বক, তৎসন্নিধানে পানীর জল, তাব্লাধার ও অক্তান্ত প্রাতিহর ক্রব্য সম্কার রাধিরা, পরিচারকের। কেবালরের কার ক্ষত্র করিরা প্রকান করেন।

এই সকল সমরে প্রায় এক প্রকারই সেবা হয়; বথা পুন্দ, গন্ধ ও ভোগদান এবং স্তোত্ত-পাঠ ও সাষ্ট্রান্ধপ্রণাম। বিগ্রহ-সেবক এবং অক্তাক্ত লোকও এই সমুদারের অমুষ্ঠান করেন, কিন্তু ক্লফ-স্টোত্ত প্রায় ঐ সেবকেরাই গাঠ করিয়া থাকেন।

নিত্য-সেবা ব্যতিরেকে কডকগুলি সাংবৎসরিক মহোৎসব আছে। কাশীধামে ও পশ্চিম প্রদেশীর অন্তান্ত অনেক হলে জন্মাষ্ট্রমী ও রাস-যাত্রা উৎসবে অতিশয় আমোদ হয়। গ্রাম-সন্নিহিত কোন চম্বরে সমারোহপূর্বক রাস-যাত্রার কার্য্য সম্পন্ন হইরা থাকে। কত লোকে বেত, পীত, লোহিতাদি কত উৎকৃষ্ট বদন পরিধানপূর্বকে রাদ-ভূমিতে সমাগত হয়, কভপ্রকার অতি মনোহর নৃত্য, গীত, বাছের অফুঠান হয় ও ভামস্থলরের স্থলনিত লীলামুরপ কত কৌতৃকই প্রদর্শিত হয়। স্থানে স্থানে গায়ক, বাদক ও নর্ত্তক সকল স্বেচ্ছাত্মসারে উপস্থিত হইয়া নিজ নিজ গুণ প্রকাশ পুর:সর শোকের মনোরঞ্জন করে এবং দর্শকরণ পরম পরিতৃষ্ট হইয়া তাছাদিগকে মনোমত পারিতোধিক अमानभूक्षक भूत्रकृष्ठ करत्र। ज्ञारन ज्ञारन छ्ण-गृह, रज्जगृह छ পণ্য-শালা প্রস্তুত হয়, মধ্যে মধ্যে মনোহর দোলনা ও ঝোলনা সকল আলম্বিত থাকিয়া লোক্দিগকে অতিশয় আমোদিত করে, অপ্র্যাপ্ত ফল মূল ও নানাবিধ মিষ্টান্ন সামগ্রী পরিপাটীক্রমে সজ্জিত থাকিয়া সর্বস্থান স্থানোভিত করে এবং দর্শকগণ পরম कोज्हनाविष्ठे इहेग्रा श्रवारमुझ हिर्छ हर्जुमिरक विहत्रण कत्रिष्ठ থাকে। অসংখ্য লোকের সমাগম! বিচিত্র বসন! বিচিত্র ভূষণ! বিবিধ কৌতুক পরমাশ্র্যা স্থদৃশ্র ব্যাপার! এই সমস্ত সন্দর্শন করিয়া লোকের আমোদের আর ইয়ন্তা থাকে না বৃন্দাবনেও চাক্ত আখিন মাসে দশমী অবধি করিয়া পূর্ণিমা পর্যান্ত এই উৎসব হর। তথার নদী-কূলে পাবাণমর কৃত্রিম বেদির উপর শ্রীকৃষ্ণের রাসদীলার স্মবিকল প্রতিরূপ প্রদর্শিত इहेन्रा शास्त्र ।

বল্লভাচারীরা ললাটে ছই উর্ক পুশু করিরা নাসামূলে অর্কচল্লাকৃতি করিরা মিলাইরা দেন এবং ঐ ছই পুণ্ডের মধ্যন্তলে
একটি রক্তবর্ণ বর্জুলাকার তিলক করিরা পাকেন। এ
সম্প্রদারের ভক্তেরা শ্রীবৈক্ষবদিগের হ্যার বাহু ও বক্ষংহলে শন্ধ,
চক্রে, গলা ও পল্লের প্রতিক্রতি অন্ধিত করেন, এবং কেহ কেহ
ভাষবলী নামক রক্ষযুত্তিলা অথবা ক্রক্ষবর্ণ অক্তরূপ ধাতু বারা
উল্লিখিত বর্জুলাকার তিলক আলিখিত করিরা থাকেন।
ইহারা কঠে তুললীর মালা এবং হন্তে তুললীকাঠের অপমালা

রাংশন, এবং 'ঞ্জিক্ক' ও 'লরগোপাল' বলিরা পরতার অভি- । বাদন করেন।

বন্ধভাচার্যা আইমভাগবতের বেঁটাকা রচনা করেন, তাহা ইহাদিগের প্রধান সাম্মানরিক গ্রন্থ। তাহাতে ভাগবতের বাদৃশ ব্যাখ্যা আছে, ইহারা তাহাই অবলবন করিরা চলেন। তহাতিরেকে, ভিনি বন্ধস্বভাব্য, নিছাস্ত-রহত, ভাগবঁত-লীলারহত্ত, একাস্ত-রহত প্রভৃতি অনেকানেক সংস্কৃত গ্রন্থও রচনা করিরা বান। [ব্রভাচার্ব্য বেখ।]

এতত্তিন, সামাভ সেবকদিগের মধ্যেও ক্লুঞ্লীলাপ্রতি-পাদক ভাষার লিখিত বহুতর সাক্ষাদারিক এছ প্রচলিত আছে। বধা,—

বিষ্ণুপদ---এ প্রস্থ ভাষার লিখিত। ইহা বন্নভাচার্য্য-ক্লড, ইহাতে বিষ্ণুগুণ-প্রতিপাদক কতকগুলি পদমাত্র আছে।

ব্রক বিদাস—ব্রক্ষবাসী দাস এই গ্রন্থখানি ভাষার রচনা করেন। ইহাতে জ্রীক্লঞ্চের বুন্দাবনলীলার বর্ণনা আছে।

অষ্ট্রছাপ---এই গ্রন্থে বলজাচার্য্যের আট জন প্রধান শিব্যের উপাধ্যান আছে।

বার্ত্তা—এই ভাষা-গ্রছে বল্লভাচার্য্য ও তাঁহার মতাত্ববর্ত্তী
৮৪ জন ভজের অত্যহুত চরিত বর্ণিত আছে। ঐ ৮৪ জনের
মধ্যে ত্রী প্রুষ উভরজাতীর ও সকলবর্ণোত্তব লোকই ছিল।
এই সাম্প্রদারিক শাত্রে জীব ও ব্রন্ধের অভেদ ভাব স্পষ্টত:ই
উক্ত হইরাছে। সিদ্ধান্তরহন্তের পরামৃক্তি বা জীববন্ধ-মিলন
সম্বনীর প্রসঙ্গ চৌরাশি-বার্ত্তা নামক গ্রন্থের একস্থলে এইরূপ
লিখিত আছে। বল্লভাচার্য্য শ্রীক্তকের সহিত এ বিবরে কথোপ-কথন করিরা উহার মর্ম্ম অবগত হইরাছিলেন। বধা,—

"তব্ প্ৰীআচাৰ্য্য জী মহাপ্ৰভূ আপ কহৈ জো জীব কো বন্ধপ তো তুম্ জানত হী হৌং দোষবন্ধ হৈ সো তুম সোঁ। সম্বদ্ধ কৈসে হোৱা, তব্ প্ৰীঠাকুর জী আপ কহৈ জো তুম জীবন কো ব্ৰহ্মসম্বৃদ্ধ করাবোগে তিন কোঁ হোঁ অস্বীকার কন্ধলো তুম জীবন কোঁ নাম দেউগে তিনকো সকল দোব নিবৰ্ত্ত হোৱদে।"

'তথন আচার্য্য কহিলেন, তুমি জীবের বভাব ভাত আছ, ভাহার সকলই দোব, তবে কিরপে তোমার সহিত ভাহার সংবোগ হইবে ? ভাহাতে ঠাকুরজী (অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ) কহিলেন, তুমি ব্রহ্মের সহিত জীবের বেরপ সংবোগ সাধন করিবে, আমি ভাহাই বীকার করিরা লইব।'

এই করেকথানি ছাড়া আরও বিত্তর সাম্প্রদাদিক গ্রন্থ বিছ-মান আছে, কিন্তু সে সমত তাদৃশ প্রচলিত নহে। ভক্তমানেও এ সম্প্রদার সংক্রান্ত অনেক উপাধ্যান আছে। কিন্তু ব্রন্তচাচারীর। অপরাপর সম্প্রদারের ক্রান্ত উহাকে মূল শাক্র বলিরা অঙ্গীকার করেন না। উলিখিত বার্ডাই ইহাঁদের ভক্তমাল হানীর হইরাছে।

তক্তমালের ভার ঐ গ্রন্থে শ্রীকৃষ্ণের প্রসাদ ও আবির্তাব
হচক ক্ষেত্রানেক আনৌকিক ও অসন্তাবিত উপাধ্যান

নমিবেশিত ইইরাছে।

উজ হেছের অন্তর্গত একটি রাজপুতানী বা বাজপুত্র-লাতীয় बीरमारकत जैशाधाम शार्फ त्वांव रत्न, त्व এरे मच्छापाद नर-नजरगत्र विशान किन ना । जनकाथ ७ बागाचान नारम ग्रहे निया সঙ্গে লইরা বল্পভাচার্য্য নদীজীর্বে স্থান করিভেছিলেন। এমন সমরে এ প্রী খার খানীর সহগ্রনার্থ তথার উপস্থিত চইল। हेहा विश्वता समझाच मछीर्च जानाशामारक विकामितनम, "जी-লোকে সভীদ-ধর্ম-প্রকাশের বে প্রথা প্রচলিত আছে, ভাচার यानावधाना कि ?" वानायान निवन्धाननभूक्क कहिरनन, "শবের সহিত সৌন্দর্ব্যের অনর্ব সংবোগমাত্র।" রাজপুতানী তাঁহার শিরভাগনের ভাৎপর্য্য বুঝিভে পারিরা সহগমনে নিবৃত্ত হইল। কিছু দিন পরে রাজপুতানী অক্তমাৎ এক प्रिम छ। हापिशत्क प्रिचित्रा जालमात्र नहमत्रण निवात्रण-नःकान्छ পুর্বা বুড়াস্ত সমুদার নিবেদন করিল, এবং ভৎকালে তাঁহাদের চুট জনের কি কথা বার্ত্তা হইরাছিল, তাহাও জানিতে প্রার্থনা করিল। রাণাব্যাস নিশ্চিত জানিলেন, রাজপুতানীর উপর শ্রীজাচার্যোর ক্লপা হইরাছে, এবং লগরাথের সহিত তাঁহার যে কথোপকথন হইয়াছিল, তৎসমুদার স্বিশেষ অবগত ক্রিয়া কহিলেন, ভোমার রূপলাবণ্য খ্রীঠাকুরজীর সেবার সমর্পিত না করিয়া শবের উপর নিক্ষিপ্ত করা অভিশর অন্তর্ভিত ও অতার তংখের বিষয়। অনস্তর রাজপুতানী রাণাব্যাস-সন্নিধানে উপদিট চুট্রা এঠাকুরজার পরিচ্যাকার্য্যে নিযুক্ত থাকিয়া आयः कत्र कत्रिताहित्सम ।

ব্য়ভাচার্য্যের পুত্র বিট্ঠনাথ পিতৃপদে অভিবিক্ত হন।

এ সম্প্রদারের লোকেরা তাঁহাকে শ্রীগোসাঁইলী বলিরা জানে।
বিট্ঠলনাথের সাত পুত্র, গির্ধরি রার», গোবিন্দ রার, বালক্তঞ্চ,
গোকুলনাথ, রবুনাথ, বহুনাথ, ও বনস্তাম। ইহাঁরা সকলেই
ধর্ম্মোণদেশক ছিলেন, এবং ইহাঁদের মতাম্বর্ত্তীরা বলিও পৃথক্
পূথক্ সমাজভূক, কিন্তু প্রধান প্রধান বিবরে প্রার সকল
সমাজেরই ঐক্য আছে। কেবল গোকুলনাথের শিহ্যদিগের
কিন্ধিং বিভিন্নতা বেখিতে পাওরা বার। তাহারা অপর হয়
সমাজের মঠের প্রতি কিছুই শ্রহা রাখে না, স্ববীর সমাজের
গোন্থানী ব্যতিরেকে আর ভাহাকেও শ্রহা করে না, এবং
স্ববীর সমাজের গোন্থানী ব্যতিরেকে আর কাহাকেও শাত্র-

বিহিত গুৰু বলিয়া খীকার করে না। বিট্ঠকনাথের অস্ত কোন পুত্রের মডাছবড়ী লোকদের এরণ একডর পক্ষপাত নাই।

নানান্থানের, বিশেষতঃ গুলরাত ও মালবদেশের, বৃহত্র वर्गरिक ও वारमात्री लाटक बद्धछाठाट्यांत्र मछायमसी इटेग्नाट्ड. এ নিমিত্ত এ সম্প্রবাবে অনেকানেক ধনাত্য লোক দুই হইয়া থাকে। ভারতবর্ষের সর্বাহানে, বিশেষতঃ মধুরা ও বুন্দাবনে, ইহাঁদিগের বিশুর মঠত দেবালয় আছে। কানীতে এ সম্প্র দারের গুইটা প্রসিদ্ধ সন্দির আছে; দানজীর মন্দির ও পুরুবোত্তমজীর মন্দির । ঐ ছই মন্দিরের বিগ্রাহ অতি বিখ্যাত ও বহু সম্পত্তিশীল। জগন্নাথক্ষেত্র ও ছারকা এ সম্প্রদারের অতি-মাত্র পবিত্র তীর্থ, এবং আজমীরের অন্তঃপাতী শ্রীনাথবারের মঠ দর্কাপেকা মহিমারিত ও সমৃদ্ধি-সম্পন্ন বলিরা প্রাসিদ্ধ আছে। প্রবাদ আছে, এ মঠের বিগ্রহ পৃর্বে মধুরার ছিলেন; অৱসজেব ৰাদশাহ তথাকার মন্দির ভান্ধিয়া ফেলিতে অনুমতি ক্রিলে পর, ঐ স্কান্তগ্যামী বিগ্রহ তথা হইতে আল্লমীরে প্রস্থান করেন। তথাকার বর্ত্তমান মন্দির অধিক দিনের নহে. কিন্তু সেবক-দত্ত ধনে ভত্ৰস্থ বিগ্ৰাহের বিস্তার সম্পত্তি হইয়া উঠিরাছে †। বন্ধভাচারীদিগের অস্ততঃ এক বারও শ্রীনার্থ क्षर्मम कत्रिएक इम्र, ध्वरः श्राधान श्रीमान क्षित्राह्म कत्रिकारम শ্ৰেমাণ-পত্ৰ গ্ৰহণ করিয়া মঠের আমুকুল্যার্ছে যথাসম্ভব কিছ क्षिष्ठ मान कतिएछ रत्र ।

সাম্প্রদারিক বাসক্দিগকে গোঁসাঞীরা গলার কুলসী মালা ধারণ করাইয়া "শ্রীকৃষ্ণঃ শরণং মম" এই অষ্টাক্ষর মন্ত্র পাঠ করির। ধর্ম্মসম্প্রদারভূক্ত বলিরা গণ্য করে এবং হাদশ বা ডভোধিক বর্ষে বধন ঐ বালক জীবনের কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য ও শুরুত্ব অস্থত্তব করিরা দৈনন্দিন ক্রিরাকলাপ আচরণ করিতে সমর্থ হর, তথন গোসাঞীরা তাহাদিগকে দীকা ছিয়া থাকেন, তখন ঐ বালক শ্রীগোপাল চরণে আপনার যথা সর্বাহ্ম অর্থাৎ ভম্ন, মন ও ধন সমর্পন করিতে অন্ত্যাস করে। নিরোক্ত মত্ত্রে ভাহা স্কম্পট বর্ণিত হইরাছে:—

শর্ত প্রীকৃক্ষ: শরণং মম সহস্র পরিবংসরাবিভকালসঞ্জাত-কৃক্ষবিরোগলনিত্যতাপক্রেশানস্ততিরোভাবোহং ভগবতে কৃষ্ণার দেহেস্তির-প্রাণাহন্ত:-কর্শতভর্ষাংশ্চ দারাগারপুরাপ্তবিস্তেহ-পরাণ্যান্ধনাসহ সম্পরামি দাসোহং কৃষ্ণ ভবান্ধি "

কারীয় পোকারের। প্রভাবে কথীতে এক পরসা করিরা দেবালরে হান
 করে। আর ভর্থাকার বয়-ব্যবসায়ীয়া প্রভিবারের ক্ষাবিকরে ছই পরসা
 করিয়া দের।

[†] এডোক মন্দিরের ভিন স্থানে বান করিতে হর, বধা বিগ্রন্থ সন্নিধানে, প্রকর্তকের স্বিতে, ও জীনাধবারের বাজে।

[া] নারদশক্ষাতে ইয়ার অপুরূপ ভাবের লোক পাওলা বার

বোধ হয় সংস্কৃত বিশ্বিধারী শক্ষের অপত্রশে।

বল্ল ভাচার্য্য, বন্ধভাচারীনামক বৈশ্ববমত প্রতিষ্ঠাতা একজন আচার্য্য। তিনি লন্ধণভট্টনামক এক জন তেলগু ব্রান্ধণের বিতীর প্রেরণে ১৪৭৯ খুইান্দে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতামাতা দান্দিণাত্যের স্থান্ব ভৈলন্ধ প্রান্ত হইতে তীথ্যাত্রা উদ্দেশে উত্তরভারতে আদিয়া উপনীত হন: এইথানে বারাণ্দীর অদূরবর্ত্তী চম্পারণ্য নগরে তিনি প্রস্থৃত হইয়াছিলেন। এই কারণে উত্তর-পশ্চিম-ভারতবাদী পণ্ডিতগণ তাঁহাকে উত্তর-ভারতবাদী বিলয়া গোরব করিয়া থাকেন।

বল্লভের পিতা বিষ্ণুস্বামী+ সম্প্রদায়ভুক্ত ছিলেন। বারাণ্সী ধামে অবস্থিতিকালে ধর্মাচার লইয়া তৎস্থানবাসীর সহিত তন্মতাবলম্বীদিগের ঘার বিরোধ উপস্থিত হয়। এই কারণে তাঁহাকে বারাণ্দী ছাডিয়া অন্তর ঘাইতে হটয়াছিল: ঐ সময়ে তাঁহার পত্নী পূর্ণগর্ভা ছিলেন। অতি দ্রুত প্লায়ন কালে পথাতিক্রমণ কটে অকালে অষ্টম মাসে তাঁচার পত্নী এই নব-কুমার প্রস্ব করেন। তাঁহার। আপনাদের জীবন বিপদ্সভুগ জানিয়াই হউক, অথবা পুত্রের দেবাশ্রয়লাভের আখাসেই হউক, সেই সন্তঃপ্রস্থত তনম্বকে একটা বৃক্ষতদে ফেলিয়া রাখিয়া বান। এইরূপে দুরান্তরে গমনপূর্বক কিছুদিন অভিবাহনের পর, যথন তাঁহাদের প্রাণের আশকা দুরীভূত হইল, তথন তাঁহারা ধীরে ধীরে দেই পথে পুনরায় আসিয়া স্বীয় পুত্রকে ভদবস্থার অক্ষত শরীর ও জীবিত দেখিরা আনন্দাশ্র বিসর্জন করিতে করিতে কোলে তুলিয়া লইলেন। তদনস্তর পুলক-পুরিতহাদয়ে তাঁহারা সপুত্র বারাণসীতে উপস্থিত হইয়া তণায় কিছকাল অবস্থানের পর, শ্রীরন্দারণোব সমীপবর্তী গোকুল নগরে আসিয়া বাস করেন।

এখানে নারায়ণভটের অধীনে কোমলগুরুতি বালক বল্লভের অধ্যাপনা চলিতে লাগিল। স্থীয় স্থকতি ও অধ্যবসারবলে বালক অতি অল্লকালের মধ্যেই নানা শাল্পে স্থপত্তিত হইয়া উঠেন। প্রবাদ এইরূপ যে, তিনি চারি মাদের মধ্যে সংস্কৃত সাহিত্য ও দর্শনশালে সমাক্ বৃংপত্তি লাভ করিয়াছিলেন।

একাদশ বর্ধ বয়:ক্রমকানে তাঁহার পিতৃবিরোগ হয়, এই সময়
হুইতেই সাংসারিক বিশৃথ্যা তাঁহার পাঠ্য শীবনকে ত্রমসাছয়
করিয়া কেলে। তাহাতে তাহার শাস্তিময় চিতে ঘোর সাংসারিক
বিরহ আসিয়া সমুপস্থিত হয়। সেই বিশৃথ্যসার সঙ্গে সজে
সাম্পারিক আচারাম্টানের বৈসান্ত দেখিয়া তিনি আয়ও হতভ্রান হইয়া পড়েন। এই সকল দেখিয়া তানিয়া তিনি প্রকৃত

এই উদীপনার বলবন্ত্রী হইরা বল্লভ বাল-গোপাল উপাসনারূপ সীয় অভিনব মত প্রচার করেন। উত্তর-ভারতে তাঁহার
মত বিত্তার করিবার পূর্বেই, কামাবাপদেশে তাঁহাকে একবার
মত্তিসুমি দশন কারতে দাকিগাতো গমন করিতে হইরাছিল,
এখানে আচরেই তাঁহার কীপ্তিত্তন্ত প্রপ্রতিষ্টিত হয়। তথার
দামেদের দাস নামক একজন লক্ষপ্রতিষ্ঠ ব্যক্তি সর্কাপ্রথম
তাহার নিকট দীক্ষিত হইয়া তাঁহার ধর্মমতের আশ্রম গ্রহণ করেন।
অতংপর তিনি বিজয়নগরে স্বীয় মাতৃলালয়ে গমন করেন।
এখানে বিজয়নগর রাজদরবারে রাজপ্রতিত্তগণ ওাহার মতনিরাসের জন্ম একটা প্রকাশ্র সভায় তাহাকে বিচারে আছ্বান
করিলে তিনি তথার বাইয়া উপস্থিত হন। প্রতিতমগুলী
তাহার তর্কে প্রাক্ষত হইলেন। রাজা কৃষ্ণদেব স্বয়ং তর্কস্থলে উপস্থিত ছিলেন। তিনি অপরিচিত সেই ব্রক্তের বাগ্যিতা
ও জ্ঞানবত্তা দেখিয়া চমৎকত হইলেন এবং স্বয়ং তাহার প্রতাহাকে আহ্বানে ব্যর্কা

এই ঘটনা ইইডেই বল্লভাচাথ্যের ধর্মমতের প্রাভিটাভাত আরও দৃঢ়তর ইইল। তিনি অতঃপর যে হানে গমন করিতে লাগিলেন, সেই স্থানে অনেকেই তাঁহার শিব্যক্ত গ্রহণ করিতে লাগিল, এইরণে উজ্জারিনী, বারাণসী, হরিষার, প্রস্নাগ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ ও পবিত্র ধর্মক্ষেত্রে তাঁহার নবীন মতে অসংখ্য ব্যক্তি দীক্ষিত ইইল। তাঁহার মতে, আজীবন প্রস্কচর্যাবলম্বন স্থায়-সঙ্গত বা ধর্মপ্রণোদিত নহে। বারাণসী অবস্থানকালে তাই তিনি শ্বং বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ ইইয়াছিলেন। এই বিবাহের কালে ১৫১১ খুটাকে গোপীনাথ এবং ১৫১৬ খুটাকে বিট্ঠলনাথ নামে তাঁহার ছইটী পুত্র সন্তান হর।

তিনি শেষ জীবনে প্রারই ব্রজ্ন তাগ করেন নাই।
তথার ১২২০ খুটান্দে তিনি গোবর্জন শৈলের পার্বে শ্রীনাথের
ক্রপ্রমিজ ও ক্র্রহৎ মন্দির স্থাপন করেন। একদা রুলাবনে
ভগবদ্ধানে নিরত থাকিরা তিনি শ্রীক্রক্তের সাক্ষাৎ গাভ
করেন। ভগবান্ ঐ সমরে তাঁহাকে বীর পূজার বা উপাসনার
একটা অভিনব প্রথা প্রবর্জন করিতে আদেশ দেন এবং বলেন
বে, ঐ প্রথার তাঁহার বালকম্বিরই উপাসনার ব্যবস্থা জানিবে।
তদমুসারে বালক্ষণ বা বালগোপাল নামে ঐ উপাসনাপদ্ধতি
প্রচলিত হইরাছে।

ৰারাণসীতে তাঁহার বাসভবন ছিল। সেখানে তিনি বাস

ধর্মপথাশ্রয়ই চিত্তভারাপনোদনের এক মাত্র অবলম্বন জামিরা ধর্মপাল্রালোচনার প্রবৃত্ত হন • এবং ক্রমশঃ সাম্প্রদায়িক ও সামাজিক আচারাদি সংশ্বার বারা একটা অভূতিনব ধর্মমত-স্থাপনের আশা উহার স্কুদরে জাগিয়া উঠে।

 [&]quot;त्रामाकृषा वै: पोठटक मक्षाठांत्राक्ष्यूर्त् थः।
 विष्कृषामिना क्रटक। निष्पातिकाः क्र्युनमः ।" (ध्यमानश्रदेशववज्ञावनो)

ু করিতেন এবং মধ্যে মধ্যে জীক্লকের লীলাভূমি জীব্নাবনে আসিরা আপনার ধর্মমন্ত্র প্রশিক্ষে ভগৰৎ-প্রেমসলিলে নিবিক্ত করিরা লইয়া রাইতেন। বারাণদীতে অবস্থানকালে তিনি বীর মতপ্রতিষ্ঠাপক কএক বানি ধর্মগ্রন্থ রচনা করেন। তর্মধ্যে প্ররোধনী নারী প্রবিশ্বত ভগবন্দীভাটীকা অতি প্রসিদ্ধ। ১৫৩১ পৃত্রীকে বরভাচার্য্যের ভিরোধান ঘটে। তিনি সাধারণে বৈশানর বিলিয়া পৃত্রিত হইতেন। প্রস্থাবিতে ভাহার বরভদীক্ষিত নামও পাওয়া বার।

তাঁহার রচিত এছাবলী—অত্তঃকরণপ্রবোধ ও তাহার টীকা, আচার্য্যকারিকা, আনন্দাধিকরণ, আর্য্যা, একান্তরহন্ত, কৃষ্ণান্তর, চতুঃল্লোকিভাগবভটীকা, জনভেদ, জৈমিনিপুত্রভাষ্য (মীমাংসা), তম্বদীপ বা তম্বার্থদীপ ও তটু ীকা, ত্রিবিধলীলানামা-वनी, नवतप्र ७ जर्हीका, निर्दाधनक्रम ७ विद्रुखि, भवावनयन, পথ, পরিত্যাগ, পরিবৃঢ়াইক, পুরুষোভ্রমসহক্রনাম, পুষ্টি-প্রবাহমর্য্যাদাভেদ ও টীকা, পূর্বমীমাংসাকারিকা, প্রেমামৃত ও টীকা, প্রোচ্চরিজনামন, বালচরিজনামন, বালবোধ, ব্রশ্বস্থার্ত্তি, ব্ৰহ্মস্ত্ৰামুভাষা, ভক্তিবৰ্দ্ধিনী ও টীকা, ভক্তিসিদ্ধান্ত, ভগবদ্গীতা-ভাষা, ভাগবভভৰদীপ নামে টাকা, নিবন্ধ ও ভাগবভপুরাণটাকা স্থবোধিনী। এছাড়া ভাগৰতপুরাণ দশমস্বৰামুক্তমণিকা, ভাগৰত-পুরাণ পঞ্চম ऋष्টीका, ভাগবভসুরাণৈকাদশহধার্থনিরূপণকারিকা, ভাগবতসারসমূক্তর, মললবাদ, মধুরামাহাম্মা, মধুরাষ্টক, যমুনাষ্টক, রাজনীলানামন্, বিবেকধৈর্য্যাশ্রয়, বেদস্ততিকারিকা, শ্রাদ্ধপ্রকরণ, শ্রুতিসার, সন্ন্যাসনির্ণন্ন ও ভট্টীকা, সর্ব্বোত্তমন্তোত্রটিপ্লণ ও টীকা, সাক্ষাৎপুরুষোত্তমবাক্য, দিদ্ধান্তমুক্তাবলী, দিদ্ধান্তরহন্ত, সেবাফল-ব্যোত্র ও তাহার টীকা, স্বামিক্সইক।

বল্লভাচার্যের মৃত্যুর পর, তাঁহার ছিতীয় পুত্র বিট্ঠল নাথ মঠের গদিতে উপবিট থাকিয়া অসীম বদ্ধে ও উভ্তমে এবং বিশেষ আগ্রহের সহিত দক্ষিণ ও পশ্চিমভারতে বীর পিতার প্রবর্ত্তিত ধর্মাত বিস্তারে সফলমনোরথ হটয়াছিলেন। তিনি এই প্রচার-কার্য্যে স্বধর্মভূক্ত ২৫২ জন সাধুর সাহায্য পাইয়াছিলেন। ঐ সকল পবিত্রচন্ত্রিত বৈক্ষবন্ধিগের জীবনী "দোশোবাভ্যনবার্ডা" নামক হিন্দীগ্রহে লিপিবছ আহে।

বিট ঠলনাথ ১৫৬বেরীকে গোকুলে আসির। বাস করেন।
এখানে ৭-বংসর বয়্ফেমকালে পবিত্র গোবর্জন শৈলপিথরে
ভাহার ভবলীলা শেব হয়। ভাহার ছই পদ্মী এবং গিরিধর,
গোবিন্দ, বালক্ষক, গোকুলনাথ, রঘুনাথ, বছুনাথ ও ক্রভান
নামে সাভটী পুত্র ছিল; ভন্মধ্যে গোসাঞী গোকুলনাথ বিভা ও
বৃত্তিত সমধিক প্রসিভ। গোকুলনাথ, বীর পিভামক বয়ভাচাথ
ক্রভ নিভাস্করতেক টীকা রচনা করিরাছিলেন। ব্রজভাচাথ

বংশধরগণ গোসাঞী উপাধিতে পরিচিত। বোদাই মঠের গোঁসাই তাঁহাদের একজন প্রধান প্রতিনিধি।

বর্জচার্যের ধর্মত।

বন্ধভাচার্য্য-প্রবর্জিত ধর্ম্মতন্তের মূলমন্ত ব্রন্ধ-সম্বন্ধ। এই কথা তিনি ভগবানের নিকট লাভ করিয়াছিলেন এবং ভাছাই ভাঁছার সিদ্ধান্তরহত্তে লিখিরা গিরাচ্চুন। উছা সাধারণের অতিশন্ধ আদ-রের বন্ধবোধে এখানে উদ্ধৃত হইল:—

"প্রাবণভাষলে পক্ষে একাদখ্রাং মহানিশি। সাক্ষাৎ ভগবতা প্রোক্তং তদকরণ উচাতে ॥ जक्रमचक्कात्रांगाः मर्ट्सवाः (मर्ट्यीवरहाः । नर्काराविमवृद्धिर्हि स्त्रावः शक्षविधः चुन्तः ॥ সহজা দেশকালোখা লোকবেদনিক্ষপিতা:। गःरवागकाः न्यर्नकान्त न मखनाः कथकम ॥ ष्मञ्जरा नर्सामायां न नितृष्टिः कथक्त । ব্দ্দমপিতবন্ত নাং ভক্ষাৎ বৰ্জনমাচরেৎ ॥ নিবেদিভি: সমপ্যৈৰ সৰ্বং কুৰ্য্যাদিভি স্থিতি:। ম মতং দেবদেবতা স্বামিভুক্তসমর্পণং ॥ **ङ्यानाटनी नर्ककाट्या नर्कवश्वनमर्थनम्**। দত্তাপহার বচনং তথা চ সকলং হরে: ॥ ন গ্রাহ্মিতি বাক্যং হি ভিন্নমার্গপরং মভম। দেবকানাং ধথা লোকে ব্যবহার: প্রসিদ্ধতি u তথা কার্য্যং সমপ্রৈব সর্বেষাং ব্রহ্মতা ততঃ। शकायः नर्वातायांनाः अन्तायांनिवर्गना ॥ গলাছেন নিরূপ্যং স্থাত্ত্বদত্রাপি চৈব হি। ইতি শ্রীবন্নভাচাথ্যবিরচিতং সিদ্ধান্তরহস্তং সম্পূর্ণম 🛚 🖈

[বিস্তৃত বিবরণ বলভাচারী শব্দে ডইব্য ।] বল্লভানন্দ, ষট্কারক নামক ব্যাকরণপ্রণেতা। বল্লভা (ব্লী) গুলুরাতম্ব একটি প্রাচীন নগর ও জনপদ। [বলভীরান্ধবংশ দেখ]

২ রাটীয় কুলীন আঞ্চলসমাজের মেল। বয়ভ হইতে এই মেলের কৃষ্টি।

বল্লভেন্দ্র, কৌতুক্চিন্তামণি, শিবপুলাসংগ্রন্থ ও সনৎকুমার সংহিতাটীকাপ্রণেতা। ইহার উপাধি সরস্বতী। ২ বৈছচিন্তামণি-রচারতা। ইনি ভেলগুরান্ধণ, পিতার নাম অমরেখর ভট্ট। বল্লভেশ্বর (গুং) রাজপুরভেদ। বল্লম (কেশন) > বড়না। ২ সিংহল হীপলাত লৌকা বিলেব। বল্লম (বেন্থ্য), মাজাল প্রেসিডেন্টীর উত্তর আর্কট জেলার অস্তর্গত একটা গঙ্গাম। বন্দীবাস নগর হইতে ৪ জেলা

পশ্চিমে ব্যবস্থিত। এখানে প্রাচীন চোলরাম্ববংশের প্রতিষ্ঠিত

(

একটা প্রাচীন মন্দির এবং উহার স্থলপুরাণ আছে। এখানকার শিলালিপির মধ্যে একথানি ১১৬৯ খুষ্টাব্দে রণসিংহ দেব মহারার नायकः ब्राह्मात त्राक्ष्य कारम छे९कीर्ग ।

বল্লর (ক্লী) বলতে ইতি বল-জরন্। রক্ষাপ্তরু। (রাজনি•) ২ মঞ্জরী। ৩ পছন । ৪ কুঞা (ধরণি)

বল্লরি িরী ী (জী) বল্ল-কিপ্,বল্লং, সংবরণং ঋচতীতি ঋ-আচু-रे, क्रनिकातानि**छि वा छीव्। > मक्षती**।

"অনপায়িন সংশ্রহজমে গজভারে পতনার বলরী।"

(कूमात्रम 810२)

২ চিত্ৰমূল। ৩ মেথিকা (রাজনি•) ৪ বচা। (বৈছকনি•) বল্লব (পুং) বল্ল-প্ৰীতৌ হিপ্বলং প্ৰীতিং বাতীতি বাক। > গোপ। (अभन्न)

"শশিনমিব হুরোঘাঃ সারমুদ্ধর্থেতে। কলসিমুদধি গুৰুঝং বল্লবা লোড়য়ন্তি ॥'' (মাঘ ১১।৮) ২ ভীমদেন, বিরাট নগরে ধধন অজ্ঞাতবাস অবস্থার অবস্থান করেন, তথন তিনি এই নামে পরিচিত ছিলেন।

"পৌরোগবো ক্রবাণোংহং বল্লবো নাম নামত:। উপস্থান্তামি রাজানং বিরাটমিতি মে মতি: ""

(ভারত ধা২া১)

(ত্রি) ও স্থপকার। (অমর)

বল্ল 🎒 (স্ত্রী) বল্লভ-ভাষ্। বল্লবজাতি স্ত্রী, বল্লবপদ্ধী। পর্য্যায়— আভীরী, গোপিকা, গোপা, মহাশুলী, গোপালিকা। । শব্দর্যা৽) বল্লাপুর (क्री) নগরভেদ। (রাজতর^{° ৭।২২•)} বল্লি (ত্রী)বলতে সংয়ণোতি বল সক্ষধাতুভা ইন্। ১ লতা। "বল্লিশেষ্টয়তে বৃক্ষং সর্বতেশৈচৰ গচ্ছতি।"

(ভারত ১২।১৮৪।১৩)

२ शृथिबी। (भस्माना)

বল্লিকণ্টকারিকা (রী) বলিলপা কণ্টকারিকা। অগ্লিদমনী-কুপ, শোলা। (রাজনি॰

বল্লিকন্টারিকা (ত্রী) দারিদ্দনীকুপ।

বল্লিকা (খ্রী) > বৃত্তমন্ত্রিকা, চলিত বেলফুল। (গ্রান্সনি॰) २ छरभावकी, शृहै। (देवश्रकनि॰) विन-चार्थ कन्

টাপ্। ৩ লভা। বল্লিজ (ক্লী) মরিচ। (রাজনি•)(বি) ২ বল্লিজাতমাত্র। विद्यामृद्धा (वी) विज्ञालना मुर्जा । ज्ञानिक व्यवमृद्धा । मनाजी-পাংড়রীহরিশারী; বর্ণাট-বিলিয়করকে। এই দুর্বায় খশ--ভিক্ত, মধুর, শীভ, পিত্তন্ন এবং কফ, ৰমি ও ভৃষ্ণাহর। (রাজনি°) বলিমণ (তি) বল্লীকুজ। "অনৃত্ ক্রবলিমখনবী" (গীডগো" ২০১১) বল্লিমলয়, মাল্লাজ প্রেসিডেন্সীর উত্তর আর্কট জেলার চিত্র ভানুকের অন্তর্গত একটা গওগ্রাম। পূর্ব্বে ইয়া ছগাদি। পরিশোভিত নগরে পরিশত ছিল। পেরানী নবীতীরবর্তী (मननाकी आम स्ट्रेंटिक भारत पनित्म क विकृत स्ट्रेंटिक अहे दान ३१ मारेन मध्निश्न्यं व्यविष्ठ। भूट्यं क्रथात्त्र देवन সম্ভানার প্রবল ছিল, কালে শৈবগণ প্রবল হইরা লিলোপাস্কার প্রভাব বিভার করেন। ভাঁহারা পর্যভোগরিছ প্রাচীন কৈন-मिन्द्र व्यक्षिकां क्रिकां छात्। इत्वक्षग्रमन्द्र शतिग्छ क्रिका । পর্বতগাতে জৈনকীর্ত্তির নিয়র্শনশ্বরূপ অনেকগুলি মৃত্তি ও শিলা-क्लक छे कीर्व चाह्य। मिलाबब गर्रेन निश्ना प्रमू-মান হয় যে, ৪•×২• किंট পরিসরমূক্ত একটা পর্বাত গুছা মধ্যে क्षे मिलवरी निर्विष रहेबाट्ट। ध्यवाम, क्रानबाबवरमब कान রাজা ঐ মন্দির নির্দ্ধাণ করাইরাছিলেন। পর্কডের দক্ষিণাংলে পর্বতচ্ডা কাটিরা সমতল ভূমিতে পরিণত করা হইয়াছে, তাহার চতুস্পার্বে প্রাচীরের ধ্বংসাবশেষ দেখিয়া লোকে বলিয়া থাকে বে, জৈন-প্রাহ্ভাবের সময় ঐ স্থানে একটা ক্ষুদ্র গিরিছর্গ স্থাপিত ছিল। নগরের প্রধান রাস্তার পূর্বাংশে একটা স্থবিষ্ঠ তুর্গের ধ্বস্ত নিদর্শন অন্তাশি দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে।

বল্লিয়ুর, মাজান প্রেসিডেনীর ভিরেবলী নেলার অন্তর্গত একটা গওগ্রাম। নানগুণেরী তালুকের সদর হইতে ৪ ক্রোশ দক্ষিণপশ্চিমে কুমারিকা অস্তরীপ ছইতে ভিলেবলী সমুরে আসিবার রান্তার পশ্চিম ধারে অবস্থিত। এথানে একটা নীর্ষিকার ধারে বহুসংখ্যক প্রস্তরাবলী নিপতিত আছে। উহার শিরনৈপুণ্য ও তক্মধ্যে অন্বিভ প্রতিকৃতি প্রভৃতি পর্যাবেকণ ক্রিলে সহজেই সেঞ্চলি জৈনমন্দিরের ধ্বংসাবদের বলিরা মনে হয়। ঐ পাথরের মধ্যে কতকগুলি শিলালিপি উৎকীর্ণ আছে। এখানে যে জিনসৃত্তি পাওয়া গিয়াছিল, তাহা বিশপ সাক্ষেণ্ট লইয়া রকা করিতেছেন।

এতত্তির এখানে কুলশেখর পাখ্যের স্থাপিত একটা সুরুহৎ শিবমন্দির আছে। বিষ্ণু ও সুবেশণ্য দেবের অভা চুইটা মন্দিরও বছ প্রাচীন। পাশ্তা রাজবংশের প্রতিষ্ঠিত একটা स्पृष्ठ क्टर्नन स्वरमायत्नव व्यक्तांति पृष्टित्गावत रहेन्ना थात्क ।

বলিরাষ্ট্র (পুং) জনপদবাদী লোকভেদ। অপর নাম মর্রাষ্ট্র। (বিষ্ণুপু")

ব্রিশাকটপোতিকা (বী) ব্রিপ্রধানা শাক্টপোতিক। মূলপোডী, চলিত ক্চিমূলা। (রাজনি॰)

বল্লিলি]শূ [সূ]রণ. (গং) বলিকাধানঃ শ্রণঃ । অভারণণী । বল্লী (জী) বল্লি-ভীৰ্। লভা। এই লভার ছিভিকাল একবর্ধ মাতা। ইহা ভূপুঠ দিয়া বিভূত হইরা পড়ে। ইহা কুয়াও বা কুমড়া নতা প্রভৃতি নামে খ্যাত। (ব্যক্ত ব্রস্থান ২৮ জঃ)

"লুতাবল্লীত গুলাংত ছান্নখন এব চ।
ভানাতে চক্রিরে মার্গং ছিলাভো বিবিধান জ্ঞান্॥"
(রামারণ ২৮০।৬)

২ কৈবর্ত্তমৃতা, চলিত কেওটমুক্তা। (রাজনি৽) ও অজ্ঞােদা, চলিত রাজ্নী। ৪ চব্য, চই। (রাজনি৽) ৫ অগ্রি-দমনী, শােলা। ৬ ক্রঞাপরাজিতা। (বৈত্তকনি৽)

বল্লীকর্ল (পুং) সম-বিষ্ণায়পালি কর্ণ। (সুশ্রুত স্০ ১৬ জ:)
বল্লীথাদির (পুং) আরুকনামক খদিরভেদ। ইহার গুণ—তিক্ত,
১টু, উষ্ণ, ক্যার, অন্তর্ম এবং শ্বাস-কাসন্থ ও পিত্ত-রক্ত ত্রিদোষহর। (বৈস্থক্তি)

বল্লীগড় (শং) বল্লিজপো গড়:। মৎসাডেদ, চলিত কথার কোণাও ভোলা, কোণাও বেলে এবং কোথাও বালিকড়া বলে। ইহার গুণ —লঘু, ক্লফ, অনভিয়ান্দী, বায়ুক্র ও কফনাশক। বল্লীফ্র (ক্লী) বল্লাং লভারাং লারতে ইতি জন-ড। মরীচ। বেলাফ্রনি , শক্ত) ভাল্রপদসংক্রক বংসরে বল্লীক সকল পরিপক কর। অক্ত শক্ত হর না।

"ভাদ্ৰপদে বন্ধীৰং নিস্মৃতিং বাতি পূৰ্কনত্ৰক।"(বৃহৎসং৮।১৩) বন্ধীপঞ্চমূল (ক্লী) লভা পঞ্চমূলৰ

"বিদারী সারিবারননী গুড়ুচ্চোধনাপুনী চেডি।"

(স্ঞাত স্৽ ০৮ সঃ)

পরিভাষা প্রদীপের মতে উক্ত পঞ্চমূদ কফনালে প্রশন্ত।
ক্রুত চিকিৎসাস্থানে সপ্তদশ অধ্যায়েও ইহার উল্লেখ দেখা যায়।
বল্লীপলাশকদা (ত্রী) ভূমিকুমাও। (বৈহাকনি॰)
বল্লীক্ল (ক্লী) কর্কটিকাদি। (ক্লুত চি॰ ১৪ জঃ)
বল্লীকট (ক্লী) বটরক্ক ভেদ।
বল্লীবদ্রী (ত্রী) বল্লীকুপা বদরী। ভূবদরী, চলিত মোটা কুল।
বল্লীযুদ্ধা (পুং) বল্লীযু জাতো মুদ্ধা। মুকুইক। (রাজনি॰)
বল্লীর্ফা (পুং) বল্লীবং দীর্ঘো বৃক্ষ:। সাগর্ক্ক। (রাজনি॰)

বল্লুর (ক্নী) বল্লাতে আত্রিয়নে লতাদিনেতি বল্ল বাহলকাৎ উরচ্। > কুঞা। ২ মঞ্জী। ৩ ক্ষেত্র। ৪ নির্জ্ঞল স্থান। ব লাছল। (হেমচ•) ৬ গছন। (মেদিনী) বিশ্বধররত্না-বলীতে বল্লুর স্থানে বল্লর পাঠ দেখিতে পাওরা বার। বল্লুর (ত্রি) বল্লাতে সংবিশ্বতে ইতি বল্ল-উরচ্ (খর্জিপিঞ্লাদিতা

ङ्ख्युत्र (বি) रहाएँ সংবেরতে হাও বিদ্ধান্ত (বাজ্জান্ত) উরোলচো। উণ্ ৪।৯০) ১ আতপাদি বারা ওক মাংস। (জমর°) মঞ্ এইরূপ মাংস ভক্ষণ নিবেধ করিরাছেন।

"निमञ्जलक मध्यानान् त्रोनः बह्न्स्यव ह ।" (मद्य ६।७०) 'वहादः क्षम्याःनम्' (कृक्ष्रकः)

২ শৃক্রমাংস। (মেদিনী) ও বনক্ষেত্র। ৪ বাছন। ৫ উবর্জ্মি। (হেমচক্র) বহ্নুর (বসুর), কাশ্মীর উপত্যকান্থ একটা স্বর্হৎ হ্রম। বিলাম
নদীর বিস্তার দারা গঠিত। ইহার পূর্বপশ্চিমে ২১ মাইল এবং
উত্তরদক্ষিণে ৯ মাইল বিভূত। ইহার ঠিক মধ্যস্থানের অক্ষা
৩৪°০০ উ: এবং জাবি° ৭৪°৩০ পু:। ইহার মধ্যস্থানের থবংসাকুল বদ্দীপ আছে, তত্পরি একটা প্রাচীন বৌদ্দান্দিরের ধবংসাবশেষ বিস্তমান। এই বিস্তৃত বৌদ্দশীর্ত্তি যে এক সময়ে
এপানকার অপূর্ব্বশ্রী সম্পাদন করিয়াছিল, তাহাতে সম্পেহ নাই।
প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্যেও ইহার তটভূমি উজ্জ্বল রহিয়াছে।
এপানে প্রায়ই ভীষণ ঝটিকা হইয়া থাকে।

বল্লুর, (রার বল্লুর) মান্তাল প্রেসিডেন্সীর উত্তর আর্কট জেলার একটা তালুক। ভূপরিমাণ ৪৫৪ বর্গমাইল। এই উপ-বিভাগের পালর নদী প্রবাহিত উত্তরাংশ সমতল এবং অপর সকল স্থানই প্রায় জন্মগাকীর্ণ পর্বতমালার পরিপূর্ণ। এখানে চর্মী থানা আছে।

২ উক্ত জেলার অস্তর্গত একটা নগর। পামীর নদীব তীরে অবস্থিত। অক্ষা ১২°৫৫১৭ উ: এবং দ্রাঘি ৭৯°১০ ১৭ পৃ:। উপবিভাগীর বিচারকার্য্যের স্থবিধার জক্ত এথানে ১টা দেওয়ানী ও ৪টা ফৌজদারী আদালত আছে। নগরটা মিউনীসিপালিটার অধীন। এখানে এক জন সব্কলেন্টার থাকেন। একটা সেনানিবাস প্রতিষ্ঠিত থাকার এগানে সামরিক কর্মচারীদিগের বাসের জক্ত গৃহাদি নির্ম্মিত আছে। এতদ্বির জেল থানা, গির্জ্ঞা, হাসপাতাল প্রভৃতি রাজকার অট্টালিকা এই নগরের শোভা সম্পাদন করিতেছে। মাল্রাডেব দক্ষিণপশ্চিম শাখা এই নগর দিয়া গিয়াছে। এখানে একটা ষ্টেসন আছে।

১২৭৪-৮০ খুষ্টান্দের মধ্যে এখানকার হুর্গ নির্মিত হয়।
হানীয় কিংবদন্তী এই বে, ভজাচলবাসী এক ব্যক্তি এই
হুর্গ নির্মাণ করিয়া বিজয়নগর রাজকরে অর্পণ করেন।
খুষ্টীয় ১৭শ শতান্দের মধ্যভাগে বিজাপুরের স্থলতান এই
নগর অধিকার করিয়া লন। অতঃপর ১৬৭৬ খুটান্দে তুকাজীরাওর অধীনে মহারাইরগণ সাড়েবার মাস অবরোধের পর
বল্লুর হুর্গ জয় করেন। ১৭০৮ খুটান্দে দিল্লী হইতে লাউদ
খা নামক এক জন ভুমোগলসেনানী দাক্ষিণাত্যে প্রেরত
হন। তিনি মহারাইর্দিগকে পরাজিত করিয়া ১৭১০ খুঃ অঃ
হুর্গ বীয় জামাতা দোক্তআলীকে দান করেন। দোক্তআলীর
পুত্র মুর্ব্জা আলী ১৭৪১ খুটান্দে এখানে সব্দর আলীকে
গোপনে নিহত করিয়াছিলেন। অতঃপর প্রায় ২০ বৎসর
কাল মুর্ব্জাআলী এই স্থল্ড হুর্গের সর্বায়র কর্তা হইয়া আর্কটের
নবাব এবং তাহার ইংরাজনিত্রকেও উপেক্ষা করিয়াছিলেন।

>१ ॰ चुडीच পर्याख मूर्डका निर्किताम এই क्ष्मीरीचन्न शास्त्रनाः উক্ত বৰ্ষে এক দল ইংরাজদেনা হুৰ্গঞাচীর সন্মুখে আদিয়া গোলাবৰ্ণ করিতে থাকে। তখন কেলাদারের বিনীত প্রার্থনার ইংরাজ দেনাপতি সদলে প্রত্যাবৃত্ত হন।

ইহার কিছুদিন পরে, বলুর ইংরাজদিগের হস্তগত হইলে তথায় ইংরাজদেনাস্থাপনের ব্যবস্থা হয়। ১৭৬৮ খুটান্দে হারদার আলী সলৈজে হুর্ন সমীপে আসিরা ছুর্নাধিকারে প্রবৃত্ত হইলেন। ইহার পর হারদার পুনরার ১৭৮০ খুটানে এই নগর অবরোধ করেন। এই অবরোধ প্রায় হুই বৎসর থাকে। ত্যাগ করিয়া বায়।

> १२> श्रहोत्म गर्ड कर्न । ज्ञानिम् এथान हरेत्ड वसनुत्र आक-মণে অগ্রসর হন। ১৭৯৯ খৃষ্টাব্দে জীবদপত্তনের পতনের পর, টিপু স্থলতানকে কিছুদিন এখানে স্বৰুদ্ধ রাখা হয়। এই সময়ে সেনাদলের মধ্যে রাজবিদ্রোহজনক একটা বড়বন্ত চলিতে পাকে, তাহাতে ১৮০৬ খুষ্টাব্দে এপানে একটি সামাক্ত সিপাহী-বিজ্ঞোহ ঘটে। তাহাতে অনেক মুরোপীয় নিহত হয়। কর্ণেল क्षिरनम्भि विष्णार नमन क्रियन गीयरे महिन्द्रतत्र ताकक्मात्रनिशतक বাঙ্গালায় স্থানান্তরিত করিয়া ইংরাজগণ ভাবি-বিদ্রোহের আশহা रहेर्ड मुक्त रन।

উপরি উক্ত ছর্গ ভিন্ন, এখানে উল্লেখযোগ্য আরও অনেক অট্টালিকা ও মন্দির আছে। তুর্গাভান্তরত্ব জলকণ্ঠেশ্বর স্বামীর মন্দির (শৈব) এখনও স্থন্দর অবস্থায় রক্ষিত আছে। স্থানীয় প্রবাদ, ১২৭৪ খুষ্টাব্দে ঐ মন্দির নির্দ্ধিত হয়। কেহ কেহ বলেন, ১২৯৫ খুষ্টান্দে তুর্গস্থাপনের পর উহা গঠিত হইরাছিল। (कह (कह वरणन, विकासनगताधिण कृष्ण (पवतास्त्रत त्राक्ता-ধিকারের কিছু পূর্ব্বে সম্ভবতঃ ১৪৮৫ খুষ্টাব্দে ঐ হর্গ প্রতিষ্ঠিত হয়। রাজা কৃষ্ণদের রার এখানকার স্থাপ্ত গুছরিণী এবং ज्मीत महिरी क्रकांबी अपानगीजीत इट्टिंगिनन शानन करतन। স্থানীয় বিষ্ণুমন্দির ও চাঁদ সাহেবকৃত স্কুমামসন্দিদ, হারদার বংশের সমাধিক্ষেত্র এবং কএকটি হিন্দুকীর্ত্তির নিদর্শন দেখিবার জিনিস। বল্লুর, মান্তাজ প্রেসিডেন্সীর ক্ষণ জেলার বেজবাড়া ভালুকের व्यंद्धर्गेष्ठ একটি নগর। বল্লুর অমিদারীর রাজধানী। নদীতীরে বেজবাড়া হইতে > ধমাইল দক্ষিণে অবস্থিত। বল্লুকু, মান্ত্ৰাজ প্ৰেলিডেশীর বাপট্লা তালুকের অন্তর্গত একটি গভগাম। বাপট্লা হইতে >৫ মাইল উভয়ে অৰহিত। এখানকার গোপাল্যামিমন্দিরে ও মণ্ডপের স্তম্ভগাতে চুই श्रांनि निवाकनक छैरकीर्ग चाह्य। उरनार्छ बाना वाद रव, ১৫৭৩ খুটানে ঐ মঞ্চপটি নির্ন্তিত হইরাছিল।

वह्नक (११) का,न-कन्। [का,न तथ।] বল্লবর, ভাতিবিশেষ। বলের, মাল্লাজ প্রেসিডেলীয় উত্তরবিভাগত ধালড় লাতি-বিশেষ। ইহারা বের-বল্লের নামেও পরিচিত্। वख्न (जी) वच-छारव धक्र, वचात्र मध्यमात्र माधूः, वच-व०। ধাত্রীবৃক্ষ। (হারাবলী) বল্লজ (পুং) বৰে পৰ্বতে জারতে ইতি জন-ড। ১ উপল। উপলভূণভেদ, বাবভূপ। চলিত উলুধড়। (অমর) "মুঞ্জাভাবে ডু কর্ম্বরাঃ কুশাশ্মস্কর্মারের। ত্রিবৃতাগ্রছিনৈকেন ত্রিভিঃ পঞ্চত্রেব বা ॥" (মৃদু ২।৪২) বৰজা (জী) বৰজ-টাপ্। ভূপবিশেষ। পৰ্য্যায়--দৃঢ়পত্ৰী, ভূণেকু, ভূণবৰজা, মৌলীপত্রা, দৃঢ়ভূণা,পাণীরাখ্রা, দৃঢ়কুরা। গুণ---মধুর, শীভল, পিত্ত, লাছ ও ভৃঞানাশক, বাতবৰ্জক, কচিকর ও কঠওছিকারক। (রাজনি৽) বল্ল (গং) শাখা। "শত বল্লো বট:" (ভাগ° ১১৬।২৫) বলহ, ১ কাভি। ২ শ্ৰেষ্ঠ। চুরাদি৽ পরত্রৈ৽ অক প্রেষ্ঠাথে ভু।দি॰ আক্সনে॰ সক্ও সেই। লট্ বল্গছতি। সুঙ্ অববচ্লং। জাদি পক্ষে লট্বল্ছতে। বল্ছিক (গং) জাতিবিশেষ। সম্ভবতঃ বাহ্নীক জাতি। [পवर्ग (एथ ।] বব (গং) সমন্ত্রনির্বার্থ জ্যোভিবোক্ত একাদশ করণের প্রথম। ववाक्र (ही) वत्रावः। (विका°) ববজু বী (স্ত্রী) যে ব্যক্তি পাপক্ষালন করিয়াছে। ক্বভঞারশিভ । বত্র (এ) > বেটিড। (সারণ) (পুং) ২ আত্মকারান বারক। (সারণ) ৩ গর্ত্ত, গহবর। (সারণ) ৪ কুপ। (देनषर्षे अ२७) বব্রি (পুং) শরীবাবরক জরা। "বব্রিং ক্লংলং শরীরমান্ত্যাবা-বিতাং জরাম্' (ঋক্ ১।১১৬।১০ সারণ) ২ রূপ। (নৈখন্ট্র তাণ) বব্ৰিবাসস্ (তি) রূপযুক্ত বসনশালী। 'বব্ৰিবাসসং ববিঃ রপনাম রূপোপেতবসনবস্তম্।' (অথক্ষ ৮।৬।২) वबर् ((बरा)म (गः) वस्तू वृक्त, हिन्छ वावना । "বৰ্ব লঃ কিং কিরাতঃ স্তাৎ কিং কিরাটঃ গণীতকঃ। স এব কথিতত্তভা কৈরাভা বটুপদমোদিনী। वस्तृनः कक्सून्शारी कृष्ठक्रमिविवानमः।" (खाव १०) वदव लिनियान (गः) वन्तृ न वृत्त्वत्र नियान, वावनात्र जाते, গদ্। ইহার খণ-গ্রাহী, পিড ও বারুছ, এবং রক্তাতিসার, পিকাল, মেহ, ও প্রদর্নাপক। ভঙ্কির ইহা ভগ্রানসভান-কারী, শীত ও সকালবায়ক। (আত্রেয়স•)

বৰৰ ল্যাভিরিক (গং) গ্রহণীলোগাধিকারোক ঔষধভেদ

বাবনা ছাল ২৫ সের, পাকার্থ জল ২৫% সের, শেব ০৪ সের,
ত্বড় ০৭॥ সের, ধাইফুল ১৬ পল, পিপুঁল ২ পল, ছারকল,
কাকলা, গুড়ছক্, এলাইচ, ডেজপত্র, নাগেম্বর, লবল, মরিচ
প্রত্যেকে ১ পল। এই সমত একত্র করিরা এক মাস বাবৎ
আবৃত পাত্রে রাধিবে। ইহা সেবল করিলে অভিসার প্রভৃতি
নানা গীড়ার শাত্তি হয়। (ভৈবজারগ্রাবলী গ্রহণাধিকার)

বশ, > কাজি। ২ ইজ্ঞা। অসলাদি পদকৈ সক কে নেট্। লট্ বাই, উই: উপজি। ছি—উড্টি। লিঙ্ উভাৎ। লঙ্ অবট্ ঠাইাং ঔপন্। লিট্ উবাদ, উপজু: উবিশিধ, উপিব। লুট্ বশিতা। লুট্ বশিয়তি। লুড্ অবলীং। অবাদীং। সন্বিবশিষতি। বঙ্ ৰাবভাতে। বঙ্লুক্ বাবাই। শিচ্ বাপরতি। লুঙ্ অবীবশং।

বশ (ক্লী) বল (ৰশিরণ্যোরুপসংখ্যানং । পা তাতা৫৮) ইত্যন্ত বার্ত্তিকোক্ত্যা অপ্। ১ ইছো। ২ প্রেড্ছ। ৩ আরম্ভত।। "বলে বলবতাং ধর্ম: মুখং ডোগ্যব্ডামিব ॥"(ভারত ১২।১৩৪।৭)

(ত্রি) বহীতি বশ-অচ্। ৪ আরস্ত। (শব্দরছা॰) "গুণাঢ্যোহপি ভদাকণ্য সন্তঃ খেদবশোহভবং।''

(কথাসরিৎসা৽ ৮/১৭)

(পুং) বল-ভাবে আচ্। ৫ ইছো। (আমর) উক্ততে ইব্যতে ইতি বল-কশ্বি আপ্। ৬ বেখ্যাগৃহ। ৭ আরওতা। ৮ প্রভূত্ব। (ত্রিকা৽) ৯ জন্ম। (হেম)

বশংবদ (ত্রি) বশং তবাহং বশ ইতি বাক্যং বদতীতি বশংবদ (প্রিয়বশে বদ: খচ্। পা অং।৩৮) ইতি খচ্, (অরুধিবদন্তত্ত মুম্। পা ভাএ৬৭) ইতি মুম্। আমি তোমার বশীভূত এই কথা যিনি বদেন। ২ বশীভূত।

"স কহার ছরাচারো ভূভ্ৎ লোভবশংবদ:।"

(রাজতরঙ্গিণী ৪৷৩৯৫)

বশাংবদত্ত্ব (ক্লী) বশংবদন্ত ভাব: স্ব। বশংবদের ভাব বা ধর্ম। বশকের (ত্রি) বশংকদোতীভি। ধাহাকে বশ করা যার। বশ্য, বশাভূত।

বলকা (স্ত্রী) বশেন আম্বন্তরা কারতি শোভতে ইতি কৈ-ক। বস্তানারী। (শব্দর্যা•)

বশক্তিয়া (জী) বশত জিরা। বশীকরণ। পর্যায়—সংবদন। (জমর) [বশীকরণ দেখা]

ব্শাগ (ঝি) ৰশং গচ্ছতীতি গম-ড। বশগত, বশীভূত। "লগামি তে হস্ত বরং বমিছেসি

> প্রাণাধি মৎস্থান্ বৰ্ণগোহন্মাহং তব।" (ভারত ৪।৩।১২) স্থিনাং টাপ্। বৰ্ণগা—ৰক্ষিত্তা।

বশ[ং]গ্ৰত (ত্ৰি) বশংগতঃ। ৰঞ্জিত। (ভাগ- গাংভাংভ)

বশগ্ৰু (क्री) বশগন্ত ভাৰঃ স্ব । বশগের ভাৰ বা ধর্ম, বশতা বশগ্ৰুন (ক্ষী) বশ হওরা, বশীভূত হওরা।

বশগামিন্ (ফি) বৰং গছতীতি গম-ণিনি। যিনি ৰশীভূত হইয়াছেন, বশ হইয়াছেন।

বশ্তা (ত্রী) বশস্ত ভাষঃ ওল্-টাপ্। বশস্ক, বশের ভাব বা ধর্ম, বশস্ব।

বশনীয় (ত্রি) বশবোগ্য, ব্স্থা।

বশ্বর্ত্তিন্ (জি) বশে বর্ততে বৃত-পিনি। বশীভূত, বিনি বশে অবস্থান করেন।

বশন্ম (ত্রি) বশে ডিঠতীডি হা-ক। বশবর্তী।

বৃশা (ত্রী) বশ-জচ্টাপ্ (বশিরণ্যোরপসংখ্যানং। পা ৩৩।৫৮) ইতি জ্ঞপ্রা। ১ বন্ধ্যানারী। মহুর মতে, রাজা বন্ধ্যানারীর ধুম রক্ষা করিবেন।

"ৰশাংপুত্ৰাস্থ চৈবং ভাত্ৰকণং নিৰুলাস্থ চ।

পতিব্ৰতাস্থ চ স্ত্ৰীৰু ৰিধৰাস্বাত্মুৱাস্থ চ 🛍 (মন্সু ৮/২৮)

> হতা। ২ যোবা। ৩ ব্রীগবী। ৪ করিনী। (মেদিনী) ৫ বন্ধাগবী। "ভারতাগ্নে বশাভিক্লফভিং" (ঋক্ ২।৭।৫) বিশাভিবন্ধাভিশোভিং' (সায়ণ) ৬ বশাভূতা।

"সপ্তভিম খ্রিতং কৃদ্বা করবীরশু পুষ্পকম্।

ন্ত্ৰীণামগ্ৰে ভ্ৰামন্ত্ৰেচ্চ ক্ষণাহৈ সা বশা ভবেৎ ॥"(গৰুড়সূ্° ১৮৩ অ°) বশাকু (পুং) পক্ষিবিশেষ।

বশাঢ্যক (পুং) বশরা আঢ্যক:। প্রচুরবশাবস্থাৎ তথাস্ক:। শিশুমার। (শক্ষরত্বা•)

বশাতল (পুং) জাতিবিশেষ। (ভারত সভাপর্ক)

বশানুগ (ত্রি) বশস্ত অন্থগঃ। বশবন্তী, বশীভূত। ২ দাস বা দাসী। বশান্ধ (ত্রি) ১ বশাক্ত অন্ন। ২ বশান্নবিশিষ্ট। (ঋক্ ৮।৪৩১১)

বশাপায়িন্ (গুং) বশাং পিবতীতি পা-ণিনি। कूकूत्र।(শনরদ্নাণ)

বশামৎ (ত্রি) বশাযুক্ত। (পা ৮।২।৯ ধবাদিগণ)

বশায়াত (ত্রি) বশং আরাতঃ। বশীভূত। বশপ্রাপ্ত।

"প্রাক্সংস্কারবশায়াতবৈরল্পেহ:" (কথাসরিৎসা° ২৩৫১)

বলি (রী) বল-ভাবে ইন্। বলিছ। (শক্ষালা)

বশিক (বি) ೡ । (অমর)

বিশিকা (ত্রী) বলী বলীক্রণং সাধ্যক্ষেনান্ত্যক্তা ইতি বল-১ন্ টাপ্। অঞ্চলঃ (শক্চ•)

বশিত। (জী) বশিনো ভাবঃ বশিন্-তল-টাপ্। বশিদ্, বশীর ভাব বা ধর্ম।

বশিতৃ (তি) বশ-ছচ্। বতর, স্বাধীন।

ঁ(থা বৈ মন্তাৰমাপন্ন ঈলিভূৰ্ণনিভূঃ পুমান্।" (ভাগ ১৯৷১৫৷২৭) 'ব্লিভূঃ খতৱন্ত' (বামী) বিশিক্ষ্ (क्री) বশিন্দ জাবে ও। আরম্ভত।
"শাজং স্কৃতিস্তিতমপি প্রতিচিন্ধনীরমারাবিতোহপি নৃপতিং পরিশক্ষনীরং।
অবে হিতাপি বৃবতিং পরিরক্ষণীর।
শালে নৃপে চ ব্বতৌ চ কুতো বশিক্ষং॥" (বড়ু ডু ১)

২ অপিনাদি অইবিধ ঐশর্য্যের মধ্যে ঐশর্যবিশেষ। যোগ নারা এই ঐশর্যা লাভ হইয়া থাকে। এই ঐশর্যা লাভ হইলে বতজ্ঞভাবে বিচরণ করিবার ক্ষমতা হয় এবং সকলই ভাহার বশ হইয়া থাকে।

'জণিমা লখিমা প্রাপ্তিঃ প্রাকামাং মহিমা তথা।

কীশিত্ক বশিত্ক তথা কামাবশারিতা ॥' (ভরত)
বশিন্ (ত্রি) বশ-ইনি । জিতেজির, বশযুক্ত।
বশিনী (ত্রী) বশো বশীকরণং সাধ্যমেনান্ত্রকা ইতি বশ-ইনি
ভীপ্ । ১ বন্ধা । ২ শ্মীর্ক ।

বিশিষ্কন্ (ত্রি) যোগের ঐশ্বাডেদ।

"বিশিষাৎ বশিমা নাম যোগিনঃ সপ্তমোগুণঃ।"

(মার্কপু• ৪০।৩২)

বশির (ক্নী) উপ্রতে ইয়তে ইতি বশ বাহসকাৎ কিরচ, যথা বশং বশতং রাজীতি রা-ক। ১ সামুদ্র লবণ। ২ গলপিয়লী। (অমর) ৩ চবা। (রাজনি॰) ৪ অপামার্গ। (মেদিনী) ৫ বচা। (শব্দচন্দ্রিকা)

বশিষ্ঠ পং) বশবতাং বশিনাং শ্রেষ্ঠং, বশবৎ-ইষ্টন্ (বিশ্বতোদুর্ক্। পা ৫।৩৬৫) ইতি মতোদুর্ক্, যদা বরিষ্ঠং প্রোদরাদিদ্ধাং সাধু:। অনামধ্যাত মুনি, পাার—অঞ্চ্নতীজানি, অরুদ্ধতীনাথ, বাশিষ্ঠ। (হেম) বশিষ্ঠ ব্রহ্মার প্রাণ ইইতে জন্মগ্রহণ করেন, কর্মমক্তা অরুদ্ধতী ইঁহার স্ত্রী এবং পুত্র সপ্তর্ষি। (ভাগবত) কুর্মপুরাণের মতে ইঁহার ৭ পুত্র ও এক ক্তা। [বসিষ্ঠ দেখ।]

"ব্লিষ্ঠণ তরোজারাং সপ্ত পুত্রানজীজনং। কলাঞ্চ পুণ্ডরীকাক্ষাং সর্কশোভাসমন্থিতাম্॥" (কৃর্মপু°>২অ°) ২ মিত্রাবরূপের পুত্র। (অগ্নিপু•)

বশীকরণ (ক্রী) বল-ক্র-ভাবে লা্ট, অভ্ততভাবে চি । নণিমত্রৌবধাদি বারা আরত্তীকরণ, আথর্মপক্রিরাজেন, বে ক্রিরা বারা
সকলে বল হর, তাহাকে বলীকরণ কহে, ইহা মণি, মন্ত্র ও
প্রবিধ বারা হইরা থাকে। মণি প্রভৃতি ধারণ এবং মন্ত্র ও ঔবধ
প্রবোগ করিলে বলীকরণ হর। তত্তে বলীকরণের মন্ত্রোবধির
বিলেব বিবরণ বর্ণিত হইরাভে, অতি সংক্রেপে ভাষার বিবর
আলোচনা করা হইল।

বিনি মারণ, উঠাটন ও বলীকরণাদি কার্যা করিবেন, তাহার মন্ত্রনিত্ব হুইতে হুইবে, মন্ত্রনিত্ব না হুইরা এই সকল প্রক্রিরা করিলে ভাষা সিদ্ধ হইবে লা। সাধক স্থিনটিভে বিংশতি সহত্র মন্ত্র লগ করিয়া এই বলীকরণ করিবে, বলীকরণ কার্য্য করিলে ভাষাকে দর্শনমাত্র ত্রিভূবন কুক্তহুইয়া থাকে।

ভূমিকুমাণ্ড ও বটর্কের মূল কলের সৃহিত ধর্বণ করিয়া বিভৃতির সহিত কপালে ভিলক করিবে, এই করিয়া বাহাকে দেখা বার, ভিনিই বলীভূত হন। প্যানক্ষত্রে প্নর্বায় মূল ও ক্রেকরীর মূল উভোলন করিয়া এই মূলের সহিত বববীল বজনকালে ও এই পুরং কোভর ভগবভি গভীরর মুং আহা' এই মন্ত বারা প বার অভিমন্ত্রণ করিবে। ইহা বজন করিবার পূর্কে ঐ মন্ত বিংশতি সহল্য লপা করিবে। ইহাতে লোক সকল বলীভূত হয়। বায় ধারা উৎক্ষিপ্ত পত্র, মলিছা, অর্জুনবৃক্ষ, তগবকাল এই সকল দ্রব্য সমভাগে বাহাকে ভক্ষণ এবং বাহার গাত্রে স্প্রান্ধার, সেই ব্যক্তিৰ বলীভূত হয়।

প্রানক্ষরে কণ্টকারীর মূল উজোলন করিয়া কটিতে বন্দ এবং রুফ্পক্ষের চতুর্কশীর রাত্তিতে শ্বশানস্থিত মহানীল হুকে: মূল উদ্ধৃত করিয়া নরতৈল্যারা অঞ্চন করিলে জগৎ বলীভূত হয়।

শাশানোৎপদ্ম মহানীলর্ক্ষের মূল ও বীর শুক্র একত্র পেষণ করিরা অঞ্জন করিলে বলীকরণ করিতে পারা যার এবং উক্ত মূল হত্তে বন্ধন করিলে সেই বাক্তি সর্কলোকপ্রিয় হর। প্রয়ানক্ষত্রে ইড়া নাড়ী বহন সমরে প্রক্ষার্তীর মূল উভোলন করিয়া যাহাকে ভোলন করান যার, সে বশু হর। পেচকের প্রদয় ঘতকুমারী ও গোরোচনা, এই সকল প্রব্য সমপ্রিমাণে লইরা চক্ষতে অঞ্জন করিলে ক্রিভুবন বলীভূত হয়। চক্ষতে অঞ্জন দিবার পূর্বের্ব "ওঁ নমো মহাবন্ধিনি অমুকং মে বলমানর বাহা" এই মন্ত্র > হাঞ্জার জল করিতে হয়। মূগশিরানক্ষত্রে রক্তকরবীর মূল উদ্ধৃত করিয়া তাহার নয় অঞ্লুল প্রিমাণে কলিক — 'ওঁ ঐ' বাহা' এই মত্রে ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিয়া যাহার নাম উল্লেখ করিয়া ভূমিতে নিখনন করা যার, সেই বংকি নিশ্চরই বণীভূত হয়। ঐ মন্ত্র প্রথমে > হাজার জপ করা আবশুক।

অপামার্গের মূল উত্তোলন করিরা তাহার তিন অসুল পরিমিত কীলক ৭ বার অভিমত্তিত করিরা বাহার পৃত্ত মধ্যে নিক্ষেপ করা বার, নেই ব্যক্তি বলীভূত হইরা থাকে। 'ওঁ মদন কামদেবার বাহা' এই মত্র অষ্টোত্তরশত বার জপ করিরা সিদ্ধ হইলে এই কার্যা করিবে। অভিমত্ত্রণত এই সম্ভারা হইবে। অপামার্গের মূল হারা কপালে ভিলক করিলেও বলীক্রণ হর।

শরকুকুশ্ম বন্ধ মধ্যে প্রহণ করিয়া ত্রিপথের মধ্যস্থানে শনি বা মকলবারে কয় করিবে। তৎপরে ঐ বন্ধদ্বভাষার। কপালে তিলক করিবে। ইহাতে রাজাও বশীভূত হন। কয় করিবার সময় ওঁ নমো ভৈরবীতারে আজাকালে ক্মলসূথে রাজমোছনে প্রজাবশীকরণে ত্রীপক্ষরপ্রনিগোকবস্তমোহনি মে সোহং 'ওঁ গুরুপ্রসালেন' এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়।

ক্ষপাঁকের চত্মুক্তীর রাজিতে ইবলাললিয়ার বৃণ, নরতৈল, মধুও হরিভাল এই সকল জব্য একজ করিয়া কপালে ভিলক করিলে সর্বলোককে বশীভূত করিতে পারা বার।

বুমানীবৃক্ষের মূল ও হরিভাল একত্র পেবণ করিরা প্রতিকা করিবে, ঐ প্রতিকা মুখমধ্যে রাখিরা বাহার নিকট বে দ্রব্য প্রার্থনা করা বাইবে, তিনি বলীভূত হইরা তৎক্ষণাৎ সেই দ্রব্য প্রধান করিবেন। "ও অক্সকর্ণেরের মুর্বলে আর্হি কেশিক জটাকলাপে চকারফেৎকারিশি আহা" এই মন্ত্র পাঠ করিরা ইহার অমুষ্ঠান করিতে হয়।

বটপত্র ও মনুরশিখা ভূল্য পরিমাণে লইরা ঘবিরা ভিলক করিলে সর্বলোক বশীভূত হর এবং ক্রফাপরাজিভা, ভূলরাজের মূল, গোরোচনা, বেড়েলা ও খেতাপরাজিভার মূল এই সকল দ্রব্য একত্র পেবণ করিরা অবিবাহিতা কল্পার হতে লেপন করিবে, তৎপরে ঐ লিপ্তা বন্ধ জলের সহিত ঘর্ষণ করিরা ভিলক করিলে সর্বলোক বশীভূত হর।

রক্তকরবীর পুশা, কুড়, খেতসর্বপ, খেত আকদ্দের মূল, তগর, খেতগুলা ও রাখাল-শসার মূল এই সকল দ্রব্য পুয়ানক্তর্তুক ক্ষাষ্টমী বা ক্ষণা চতুর্ঘলী তিথিতে একত্র করিয়া পেষণ করিবে, তৎপরে ঐ শিষ্টদ্রব্য দারা তিলক করিলে সকল লোক বলীভূত হয়।

অপামার্দের মৃগ ও গোরোচনা একত্র পেষণ করিরা কপালে তিলক করিলে ত্রিজগৎ বশীভূত হয়। 'ওঁ নমো বরজালিনী সকলোকবশঙ্করী স্বাহা' এই মন্ত্র ৮ হাজার জপ করিরা উক্ত কার্যা করিবে। পেচকের চন্দু উৎপাটন করিবা লইরা ভাহার সহিত গোরোচনা মিশ্রিত করিরা বাহাকে জলের সহিত পান করিতে দিবে, সেই ব্যক্তি বশীভূত হইবে।

পেচকের চুই কর্ণ এবং চটক পন্দীর চন্দু এই চুই দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিবে, এই চূর্ণ দ্বারা কপালে ভিলক করিলে দ্বাং বলীভূত করিতে পারা বার । স্থার এই চূর্ণ কোন ব্যক্তির ভক্ষ্য দ্রব্য ও পানীর জলের সহিত প্রদান করিলে স্পথবা গছক্রব্য ও পুলোর সহিত স্থান্ত্রাণ করাইলে বা কোন ব্যক্তির মন্তব্যে স্পর্শণ করিলে সে বলীভূত হর ।

পেচকের মাংস, কুছুম, অগুরু, রক্তচন্দন ও গোরোচনা এই সকল দ্রব্য সমপরিমাণে একত্র পেষণ করিয়া ভক্ষণ কিংবা পাণের সহিত প্রাদান করিলে জিকাগং বলীভূত হয়। ইং। করিবার পূর্বে 'ওঁ হ্রীং হ্রাংক্কাং হেং কটু নমঃ' এই মন্ত্র সহস্রবার রূপ করিয়া করিতে হয়। ইহাতে কি স্ত্রী কি পূরুষ সকলেই বলীভূত হয়। পূর্বানিবস উপবাসী থাকিয়া রাখালনসার মূল উত্তোলন করিয়া,

উত্তরাভিমুখে উদুখলে ঐ মূল কুষ্টিভ করিবে, অনস্তর ঐ মূল ও ত্রিকটু তুল্য পরিমাণে লইরা ছাগস্ত্রে শেষণপূর্বক ছারাতে শুকাইরা ধটা প্রস্তুভ করিবে। ভৎপরে ঐ বটিলা ও রক্ষচন্দন একত্র ঘর্ষণ করিয়া বীর অনুলিতে লেপন করিয়া ঐ অনুলি ছারা ঘাহাকে ম্পান্ করা বাইবে, সেই ব্যক্তি বশীভূভ হর।

পূর্ব্বোক্ত বটা, দেবদার ও খেডচন্দন তুলা পরিষাণে লইরা একত জলে ঘর্বন করিরা বাহার অলে লেপনার্থ প্রদান করা বার, সেই ব্যক্তি বনীভূত হইরা থাকে।

পূর্বাঞ্চত বটা ও গোরোচনা এই ছই দ্রব্য তুল্য পরিমাণে লইয়া জলের সহিত পেবণ করিয়া কণালে ভিলক করিলে সেই ব্যক্তি সর্বাঞ্জন লাভ করে। 'ওঁ নমঃ শটী ইক্রাণী সর্ববশঙ্করী সর্বার্থসাধিনী স্বাহা' এই মন্ত্র সহস্র স্থাপ করিয়া ইহার অফুঠান করিবে।

ক্ষণ চতুর্দশী বা কৃষ্ণাইনী তিথিতে উপৰাসী থাকিরা দেব-তাকে বলিপ্রদানপূর্বক বেড়েলার মূল উদ্ভোলন করিরা চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ তাম্বুলের সহিত যাহাকে ভক্ষণ করিতে দিবে, সেই ব্যক্তি বলীভূত হইরা থাকে।

গোরোচনা ও বেড়েল। এক এ পেষণ করিয়া তিলক করিলে সকল লোক বলীভূত হয়। মনঃশিলা ও বেড়েলার মূল এক এ পেষণ করিয়া অঞ্জন করিলেও সর্বলোক বলীভূত হয়। বেড়েলার মূল সংহাহ পর্যান্ত তাখুলের সহিত প্ররোগ করিলে রাজাও বলীভূত হয়। বেড়েলার মূল চূর্ণ করিয়া মন্তকে ধারণ করিলে বলীকরণ হয়। ঐ মূল মূর্থে রাখিয়া যে নারীকামনা করা যার, সেই নারী বলীভূতা হইয়া থাকে। ইহা করিবার পূর্ব্বে 'ও নমো ভগবতি মাতলেখরি সর্ব্বমুখরঞ্জনি সর্ব্বেষাং মহামারে মাতলি কুমারিকে লেপে লঘু লঘু বলং কুরু আহা' এই মত্র সহল্ল জপ করিয়া উক্ত প্রক্রিয়া করিতে হয়।

শ্বশানের মন্তার ও শৃগালের রক্ত একত্র করিরা বাহার মন্তকে নিক্ষেপ করা বার, সেই ব্যক্তি নিক্ষর বশীভূত হর । মর্রের পিন্ত, গোরোচনা, আজীপুলা এই সকল প্রবা অবিবাহিতা কল্পাবারা পেবণ করাইরা বাহাকে ম্পর্ল বান করান বার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হইরা থাকে । চক্তগ্রহণ কালে খেত অপরাজিতার মূল আহরণপূর্বক তদ্বারা অঞ্জন করিরা কপালে তিলক করিলে সকল লোক বশাভূত হর । কাটা নটিয়ার মূল মুখে রাখিলে বশীকরণ করিতে পারা বার এবং প্রতিবাদী মূক হর, বা অক্তর পলারন করে । ক্ষণক্ষের চতুর্কনী তিথিতে খেতগুলার মূল উচ্ ত করিরা তাশুলের সহিত বাহাকে দেওরা বার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হর । এই প্রাক্রিরা সকল লোককে বশীভূত করিতে পারা বার ।

মনঃশিলা, গোরোচনা ও খেত অপরাজিতার মূল একত্র করিয়া পেষণ করিবে, পরে উহা ছারা কপালে ভিলক করিরা ঘাহার সহিত আলাপ করা যার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হয়। অর্ণ-বেষ্টিত খেতাপরাজিতার মূল মুদ্রামধ্যগত করিরা যে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহার বাক্যে সকল লোক বশীভূত হয়। খেত অপরা-জিতার মূল চর্কাণ করিয়া তদ্বারা তিলক করিবে, নারী কিংবা নর উক্ত তিলকধারী ব্যক্তিকে দর্শনমাত্রই তাহার বশীভূত হয়। এই প্রক্রিরা করিবার পূর্কো 'ধং বল্লকিরণে শিবে রক্ষ রক্ষ ভগরতি মমাল অমৃত: কুরু কুরু বাহা' এই মন্ত্র সহত্র জ্বপ করিতে হয়।

পুষ্যানক্ত্রযুক্ত রুক্ষপক্ষের অষ্ট্রমী তিথিতে সাধক উপবাসী া থাকিয়া পূল্প, ধূপ, বলি ও গ্নতপ্ৰদীপ প্ৰদানপূৰ্বক 'ওঁ ৰেড-বর্ণে সিতপর্কতবাসিনি অপ্রতিহতে মম কার্য্যং কুরু কুরু ঠঃ ঠঃ স্বাহা' এই মন্ত্র হাজার আটবার জপ করিবে। তৎপরে শ্বেত গুঞ্জাফল ও সেই স্থানের মৃত্তিকা আহরণ করিয়া ঐ ফল গ্নত বারা লেপন করিবে, ভদনস্থর ঐ বীজ ও মৃত্তিকা একটী নৃতন পাত্রে নিকেপ করিয়া রুঞাচতুর্দনী বা অইনী তিথিতে মৃত্তিকা মধ্যে পুতিয়া রাখিবে। যতদিন ঐ বীঞ্চ হইতে কৃষ্ণ হইয়া ফল না হয়, ততদিন 'ওঁ খেতবর্ণে সিতবাসিনি খেতপর্যতবাসিনি দক্ষকার্য্যাণি কুরু কুরু অপ্রতিহতে নমো নম: স্বাহা' এই মন্ত্রে জলদেক করিতে হইবে। ঐ বক্ষের ফল হইলে পুনরায় পুষাা-নক্ষত্ৰে গুচি হইয়া উপবাসী থাকিয়া ধূপাদি উপহার প্রদান করিবে, পরে 'ওঁ খেতজন্যায় নমঃ' ওঁপলুমুথে শিরসি খাহা, ওঁ দর্বজ্ঞানময়ৈ শিখায়ৈ বষট, ওঁ নমঃ দর্বশক্তিমতৈ কবচার হুং, ও নমঃ নেত্রয়ায় বোষট্ ও পরমন্তেদনে অস্তায় ফট্ এট মন্ত্রে জ্ঞাস করিরা খেতগুঞ্জার মূল উৎপাটন করিবে। ইহার পুরেষ ওঁনমো ভগবতি হীং শেতবাদে নম: নম: শাহা খেত গুঞ্জার মূল তুলিয়া এই মন্ত্র দশহাজার জপ এবং ঘৃত মিলিত তিল ও খেতদুর্কা দারা সহত্র হোম করিতে হইবে। পরে ঐ খেত গুঞ্জার মূল ও খেতচন্দন একত্র পেবণ করিয়া আলে লেপন করিলে উত্তম বশীকরণ হয়, উক্ত মূল মধুর সহিত লেপন করিলেও সকল লোক বণীভূত হয়।

মনঃশিলা পূর্বোকরণে উদ্ত খেত ওলার মূল ও খেত-চন্দন এই তিন দ্রব্য একত জলের সহিত ঘর্ষণ করিয়া কপালে তিলক করিশে স্বালোক বনীভূত হয়।

পূর্ব্যরূপ বেতগুলার মূল, খেতসর্বপ ও প্রিরন্থ, এই তিন দ্রব্য সমপরিমাণে লইরা চূর্গ করিরা সেই চূর্গ বাহার মন্তব্দে নিক্ষেপ করা বার, সেই ব্যক্তি বশীভূত হয়। 'ওঁ নমঃ খেত-গাত্রে সর্বাকেবশহরি ছটান্ বশং কুফ কুফ যে বশমানর খাহা' এই বন্ধ ক্ষেত্রান্তর লগ করিরা সিদ্ধ হইলে ভবে করিবে। এই মন্ত্র সিদ্ধ না হইলে এই বশীকরণ হয় না।

বাসকের মৃশ, প্রেরষ্থু, কুচ, এলাচ্চি, নাগকেশর ও বেঁত-সর্বণ এই সকল ক্রয় একত্র করিয়া বাহার অলে ধৃপপ্রধান করা বার, সেই ব্যক্তি বলীভূত হইরা থাকে। 'ওঁ কামিনি নাধবি মাধবি নমঃ' এই মত্রে ধৃপ অভিমন্ত্রিত করিয়া দিতে হইবে। এই মত্রে একটা পূলা লইরা শতবার অভিমন্ত্রিত করিয়া যাহাকে দেওরা বার, সেই ব্যক্তি বলীভূত হয়। অল-ভোজন করিবার সমর এই মত্রে অল অভিমন্ত্রিত করিয়া বাহাকে বলাভূত করিতে হইবে, ভাহার নাম করিয়া গদিন ভোজন করিলে সেই ব্যক্তি বলীভূত হয়। অলভোজনের পূর্কে 'ওঁ কটং কটে ঘোররুপিণি ঠঃ ঠঃ' এই মত্র সহজ্ববার জপ করিবে।

সাধক 'ক্লীং জনকে স্বাহা' এই বন্ধ ছই লক্ষ লপ করিয়া স্বতাক্ত গুপ্তল হারা জপের দশাংশ হোম করিবে। এইরূপে লপ হোম করিলে দেবী লৌভাগ্য প্রদান করেন এবং ম্পর্ণমাত্রে সাধক ত্রিভূবন বদীভূত করিতে পারে।

আৰথবৃক্তে আন্নোহণ করিয়া 'ওঁ নমো ভগবতে কজার সিজ-রূপিণে শিখিবত্ব সর্কোষা শিবমন্ত শিবমন্ত হন হন রক্ষ রক্ষ সর্বাভূতেভাশ্চ নমঃ' এই মন্ত্র দল হাজার জপ করিয়া পরে একটী করবীর পুশা উক্ত মত্ত্রে ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিয়া বাহাকে দেওরা বার, সেই ব্যক্তি তৎক্ষণাৎ বলীভূত হইরা থাকে।

'ওঁ নমো ভূতনাথার বং ভূপালং বলং কুরু কুরু ভূবনকোতক সর্কলোকান কোতর কোতর কে: ব্লীং ব্লীং ব্লুং আহা' এই মন্ত্র লক্ষ লপ করিলে সাধকের প্রতি ভূতনাথ অর্থাৎ মহাদেব সম্ভট হন এবং ঐ সাধক বাহাকে সরণ করে, সেই ব্যক্তি তৎক্ষণাৎ বলীভূত হইরা থাকে।

রাজবশীকরণ—কুজুম, রক্তচন্দন, গোরোচনা ও কর্পুর এই সকল জব্য সমপরিমাণে লইরা গোছডের সহিত মিশ্রিত করিরা তিলক করিবে, ইহাতে রাজবশীকরণ হয়। এই তিলক করিবার পূর্বে 'ওঁ ক্লীং সঃ অমুকং মে বৃণং কুক কুক স্বাহা' এই মত্র হাজার জপ করিরা করিতে হইবে।

মজিনা, কুছুম, বমানী, শ্বতকুমারী, চিতাতম ও আপন দরীরের রক্ত এই সকল জবা একত্র করিয়া বীর ওক্ত বারা তাবনা দিতে হইবে, পরে প্রানক্তে উহার ওটিকা করিবে। এই ওটিকা বাহাকে ভক্ষাদ্রব্য বা পানীর জলাদির সহিত ভক্ষণ করাইবে, সেই বাজি নিশ্চরই বশাভূত হয় এক উক্ত ওটিকা রাজাকে স্পর্ণ করাইলে চগুমত্রগ্রজাবে রাজাও বশীভূত হন। চগুমত্র 'ওঁ হীং রক্তচায়ণ্ডে কুক কুক অযুক্থ মে বশানর স্বাহা' এই মত্র হাজার জপ করিয়া করিতে হয়।

চন্দ্রগ্রহণকালে কেত অপরাজিতার মূল উদ্ধৃত করিরা প্রস্তুকে ভোলন করাইলে চগুমরবলে নেই প্রকৃত ওক্ষণাং বলীভূত হইরা থাকে। ইহাতেও উক্ত চগুমর সহল লগ এবং ভোলনকালেও ঐ মত্র পাঠ করিতে হর। উত্তরকভ্নী, উত্তরাহাঢ়া কিংবা উত্তরভাতপদ নক্ষত্রে প্রাতঃকালে অবখনুক্ষের মূল উদ্ধৃত করিরা হতে ধারণ করিলে রাজ্বারে বা অক্সান্ত হানে বর লাভ হইরা বাকে।

ভরণীনক্ষত্রে আমলকী বৃক্ষের মূল, বিশাধানক্ষত্রে আন্ত-রক্ষের মূল এবং পূর্বকন্ধনী নক্ষত্রে দাড়িদর্কের মূল এহণ করিরা হজে ধারণ করিলে দেবরাল ইক্ষণ্ড ভাহার প্রতি বলীভূত হম। আরোবানক্ষত্রে নাগকেশরের মূল গ্রহণ করিরা করে বন্ধন করিলে রাজা বলীভূত হন। রক্ষোৎপলের মূল, আঁকোড় কলের তৈলে ঘর্ষণ করিরা পূর্ব্বোক্ষ চণ্ডনত্ত্রে ৭ বার অভিমন্ত্রিত করিরা কপালে ভিলক করিলে রাজা বলীভূত হন। ইহাতেও চণ্ডমন্ত্র সহস্রবার জপ করিতে হয়।

রক্তচন্দন, খেতসর্থপ ও কটু তৈবের সহিত চওখন্ত্রে সহস্র হোম করিলে তৎক্ষণাৎ রাজাকে বলীভূত করিতে পারা যায়। রাত্রিকালে বীর গৃহে ছাগরকের সহিত খেতসর্থপ হারা উক্ত চওমত্রে সহস্র হোম করিলে রাজাকে বলীভূত করিতে পারা বায়। রাত্রিকালে মধুর সহিত সর্বপ-পূপ হারা চওমত্রে সহস্র হোম করিলে সমস্ত পৃথিবীর অধিপতিও তৎক্ষণাৎ বলীভূত হইরা থাকে।

> "একচিতঃ হিভো মন্ত্রী মন্ত্রং কর্যুত্বরন্। তওঃ ক্ষোভরতে লোকান্ দর্শনাবের সাধকঃ । বিদারিবটসুলক কলেদ সহ বর্ষরেও। বিভূত্তা সংবৃতং মন্ত্রী ভিলকং লোকবস্তুত । পুরো পুনদ্ বারুলং ক্রন্তর্ভীরবুলিকা। বববীলং তথা বছা করে স্থাভিমন্তিক। পুরো। তবতি সর্বাক্ত কর্মুক্তর কথাতে ।

ও ঐ: পূরং কোভর ভগৰতি গভীরর সুং বাহা এতদান্তমযুদ্ধরং লঞ্! নিছো ভবতি।

উৎআভগনাং বঞ্জিটাং ককুজং ওপারং সবং।
বাবে পাবে জবা শার্শেক্তে বন্ধং ভবভালন্।
নিংহীনুলং হরেৎ পুরো কটাাং বন্ধা লগংগ্রিয়ঃ।
নিশি কুক্তজুর্জভাং মহানীনং স্থানানতঃ ।
উন্ধৃতা সমতিবান অপ্রবে লোকবভানুং।
তল্পং বন্ধ ওলেশ অপ্রবে লোকবভানুং।
তল্পং বন্ধবেন্ধতে সর্বালোকবিবান তবেং।
চল্লাং বন্ধবেন্ধতা ব্যবাকভীয়ন্দকং।
ভোলাবেং সর্বালাং ব্যক্ষকাশস্কৃতন্।

ত্রীবশীকরণ—পারাবডের হৃদর ও চকু এবং স্থানীরে রক্ত, গোরোচনা ও জিহবার মলা এই সকল একত্র করিরা অঞ্চন করিলে ত্রী বশীভূতা হয়।

> हेन्क्वर जूनाः कुमात्रीताहवः स्थीः। जक्षनः लाहत् वश्चमानतक्षुत्रन्तकस्य ॥

ও নমে। মহাবৃদ্ধি অমুকং বৃশ্বানর বাহা, অন্ত মন্তত পূর্কমেবাযুজং লগু। উদ্ভাৱপুতাদি সংক্ষা বোগা কর্তবাঃ। প্রতারমভিমত্তা দিল্লা ভ্ৰন্তি।

> সর্বেবাদের মন্ত্রাণাং মন্ত্রথানং পৃথক । উক্ত ছাদে বথাসংখ্যমন্ত্রেবরুতং লগেং । বুগশীবেঁডু সংগ্রাক্তং প্রক্রকর্ত্রীরকং। নবালুসং কীলকত্ব সন্তবারাতিমন্ত্রিতর। বক্ত নামা লিখেকুনৌ সবজ্ঞা কর্যি প্রবন্ধ

ওঁ ঐ: বাছা প্রথমসমূতক্ষণ:। অপামার্থক কীলন্ত মূলমূৎসাধ্য আজুলন্। সন্তাভিমন্তিত: যক্ত গৃহে কি তাক্শীভবেৎ ।

ও সদনকামদেবার কট্ ভাচা।

শতসভৌত্তর কথা পূর্ববেবাভবরর: ।

সিজো তথতি তৎসতাং তিসকং কুরুতে খণং ॥
বর্জুকুফনং বন্ধে গৃহিদা ত্রিপথে দহেং ।
শনিকৌমস্ত বারে বা তক্তমতিসকং কৃতং।
বস্তং নমতি রাজানমন্তলোকের কা কথা ।

ওং নমে। ভৈরবীতরে আফ্রাকালে কমলমুখে রাজমোহনে প্রভাবনীকরণে ত্তীপুক্ষরঞ্জনি লোকবঙ্গমোহনি মে সোহহং ও শুক্সপ্রসাদেন।

> রানৌ কৃষ্ণততুদিকাং লাজনীন্দমুদ্ধরেং । বেতচ্ছুগলিকাগতে শব্যারাং মরতৈলকং । কৌদ্রতালকসংযুক্তং ভিলকং সর্ববিশ্বকৃৎ ॥ অজমোদসমূলেন ভূরদীগভিশব্যরা। হরিতালক সংপিত্ত ভক্তিকামুব্যবাদ্ধে । বহু বক্ষাদ্ধানতে বস্তু তস্তব্যের দৃধান্তানে। ।

ও অন্তর্কারর তুর্বলে আইকেশিকজটাকলাপে চকারকেংকারিণি স্বাহ।।

বিশুক্তান্ত। ভূজরাজং রোচনং সহাথেবিকা।
বেতাপরাজিতামূলং কল্ডাহতে এলেপরেং।
বাবিশা ভিলকং কুব্যাৎ সক্রনোকবশদর: ।
বক্তাবমারপূপক কুঠক বেতস্বগং।
বেতার্কমূলং ভগরং বেতগুলা চ বারশী।
কুকাইমাং পুরাবুকং চতুর্মপ্রাং ভগাবিধং।
পেবরেৎ কল্পবাহতে ভিলকং সর্ববিশুকুৎ।
ক্রনাটে ভিলকং কুবাহ বেলাক্রনেক দু।
ক্রনাটে ভিলকং কুবাহ বশীকুর্যাক্রপন্ত হন্।
ক্রনাটি ভিলকং কুরাহে বশীকুর্যাক্রপন্ত হন্।

ওঁ নৰো গৰজানিবী সৰ্কলোকৰণভাৱী খাহা।
উল্কচভূৱাৰাত খোৱোচনসম্ভিতং।
বাহিবা সহ পাগুৰাং পানাৰ্ভকাং পান্ত উদ্কাশ ভূ কৰ্মে হৈ চৌচটকভ বিলোচনং। গোনোচনা, চিডাভন, মহুবাতৈল ও সীর গুক্ত এই সকল দ্রব্য একত্ত পেরণ করিরা বে ব্রীকে প্রদান করা বার, সেই ব্রী তৎক্ষণাৎ বনীভূতা হয়।

চিতাতন, বসা,কুড়, তগরকাঠ ও কুছ্ম এই সকল দ্রবা সম-পরিমাণে লইরা চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ যে স্ত্রীর মন্তকে ও পুরুবের পদে নিক্ষেপ করা বার, সেই স্ত্রী ও পুরুষ বন্ধীভূত হুইরা থাকে।

ধুন্ত্রবীজ, ছোলল লেব্র বীজ, জিহ্বামল, নন্তমল, চকুর
মল, কর্ণমল ও নাসামল একত্র করিয়া বে ত্রীকে ভক্ষণ করাইবে
সেই ত্রী ক্লীভূতা হয়। ৩০টী ছোলা, ১৬টি ইত্রেষব, গোদস্ত ও
নরনস্ত ভৈলের সহিত পেষণ করিয়া ললাটে ভিলক করিবে,
ইহাতে ভিলোভ্যাও বলীভূতা হয়।

শোহাগা, ষ্ট্রম্থু, গোরোচনা, চিডাভন্ম ও কাকজিহনা, এই সকল দ্রব্য সমপ্রিমাণে লইরা একত্র মধুর সহিত তিলক করিলে দ্রীগণ বলীভূত হর। পুরানক্ষত্রে ক্ষপুস্তুরের মূল, ভরণীনক্ষত্রে কল, বিশাধানক্ষত্রে পত্র, মূলানক্ষত্রে মূল উদ্ভূত করিয়া একত্র পেষণ করিয়া তাহার সহিত কুছুম, কর্পুর ও গোরোচনা মিপ্রিত করিয়া তিলক করিলে দ্রী বলীভূত হয়।

কাকল্লজ্মা, বচ, কুড়, বিপ্রপদ, কুছুম ও খীর রক্ত একত্র করিরা কপালে তিলক করিলে ত্রী বলীভূত হয়। কাকলজ্মা, বচ, কুড়, শুক্র ও শোণিত, এই সকল একত্র করিরা যে স্ত্রীকে থা ওরাইবে, সেই স্ত্রী যাবজ্ঞীবন তাহার বলীভূত হইবে।

চটক পক্ষীর মন্তক, খেত আকলের মৃগ, মঞ্জিছা, ও খদির এই সকল বাহাকে পান করাইবে, সেই স্ত্রী বলীভূত হয়। সর্পের খোলস, দাড়িম্বকার্ছ ও এরগুটেল, এ সকল সমপরিমাণে লইয়া ধুপ প্রদান করিলে সেই স্ত্রী বলীভূত হয়।

অখিনীনক্ষতে প্লাশবুকের মূল সংগ্রহ করিয়া করে বন্ধন

তচ্চুৰ্ণ তিলকে পানে ভক্ষণে গৰ্মপুলারো: ।
কিপেছা মন্তকে বক্ত স্বত্যে। জারতেছচিরার ॥
ফাসেরে আফ্ মুকুকক্ত কুছুমাঞ্চলচক্ষণ ।
গোরোচনা সন্ম পিটা ভক্তে পানে জগ্যশন্ ।
জিল্পে খা পুরুষো বাপি সহস্ত জপনাক্ষরে ।

ভ ব্লীং ব্লীং ব্লং ক্লং ব্লং কট্ নসং।

কৃজেপিবাসো গৃহীয়াৎ সম্পাদেক্সবারূপীং।

উন্তরাভিদ্ধেশৈর কূট্যকেছ্রপুরের ও

ওৎককং ক্রিকট্র তুলাসলামূত্রের পেবরের।

হারাভভাবেটীং কুর্বাাৎ সা বটা রক্তদদন:।

কৃষ্ট্রাথ বাজুলীং লিক্তাং তরা স্পৃষ্টে রূপবলর।

সার্বটা বেববারক জুলাক সিত্তদদন:।

রক্ষে কৃষ্ট্রা বিকেশার বজ্ঞ বব্দ ক্ষেববল: ৪

ইডাাদি।

(সিম্বাগার্জ্য কমপুট)

ক্রিলে নারিকা বনীভূতা হয়। বজোহ্বরের মূল, সুগশিরা-নক্ষমে আহরণ করিরা হজে বন্ধন করিরা বাহার আলে পার্ন করাইবে, সেই কামিনী বশীভূত হয়।

ধনিষ্ঠানক্ষত্রে শিরীবর্তকর মৃদ গ্রহণ এবং স্থাতীনক্ষত্রে থাতকীমূল আনরম করিয়। করে ধারণ করিলে নারীগণ বলীভূতা হইরা থাকে। রেবতীনক্ষত্রে বটের কুড়ি আহরণ করিয়া হত্তে বছন করিলে সক্সকে বণীভূত করিতে পারে এবং মূলানক্ষত্রে বদরী মূল উল্লোচন করিয়া বে প্রীকে ভোজন করাইবে, সেই ব্রী বলীভূত হইবে।

খর্পপাতে কুন্দর্কের মূল, ব্যণ করিয়া যে জীর পৃষ্ঠনেশে দেওরা যার, সেই জী নিশ্চরই বশীভূত হয়। অগ্রহারণ মাসের পূর্ণিমা তিথিতে অপামার্গের মূল উল্ডোলন করিয়া যে জীকে থাওরাইবে, সেই জী বশীভূত হইবে। খেত গুঞ্জার মূল, এবং পঞ্চমল, জিহবা, দক্ত, চক্ষুং, কর্ণ ও নালামল এই সকল একত্র করিয়া চণ্ডমন্ত্র পাঠপূর্বক যে জীকে ভ্রোজন করান বার, সেই বশীভূত হয়।

এই যে সমন্ত রীবলীকরণ লিখিত হইল, ইহার প্রত্যেকই চন্ডমন্ত জপ ও পাঠ করিরা করিতে হয়। চন্ডমন্ত ভির উহা নিম্দল হয়। প্রাতংকালে দক্ত প্রকাশন করিরা যে রীর নাম উল্লেখ ও 'ওঁ নম: ক্ষিপ্রং কামিনীং অমুকীং বলমানয় হং ফট্ খাহা' এই মত্তে ৭বার অভিমন্ত্রিত করিরা ৭ গণ্ডুৰ জলপান করিবে, সেই রী বলীভূতা হইরা থাকে।

নাগকেশর পুলা, প্রিরপু, তগরকান্ত, পল্লকেশর, বচ, জাটানাংসী এই সকল দ্রব্য একতা চূর্ণ করিয়া বে বাজি 'ওঁ মূলি মূলি মহামূলি রক্ষ রক্ষ সর্কাসাং ক্ষেত্রত্যে পারেভঃ স্বাহা' এটমত্র পাঠ করিয়া উক্ত চূর্ণ হারা স্বীর শরীরে ধূপ প্রদান করিবে, সেই ব্যক্তিকে কামদেবের স্থার জ্ঞান করিয়া স্রীগণ তাহার বস্ত হইবে।

বীর জিহ্বামল, নাসামল ও কর্ণমল এই সকল একজ করির। 'ওঁ মমঃ স্বাবৈ নমঃ স্বাবৈ দ অমুকীং মে বলমানর স্বাহ।' এট মন্ত্র পাঠ করিয়া ক্রার সহিত বে জীকে ভোজন করান গায়, সেই ল্রী নিশ্চর বলীভূতা হইরা থাকে। 'ওঁ নমঃ বাচাট পথ পথ ছিট-ভাবহি বাহা' এই মত্রে গ্রার অভিমন্ত্রিত করিরা বেড়েলার মূল বা কল আহরণপূর্কক বে লীকে দেওরা বার, সেই ল্রী অবশ্র বণীভূত হর।

অপামার্গ বৃক্ষের মধ্যভাগের চতুরসুস পরিমিত কাঠ 'ওঁ দ্রাবিণি বাহা ওঁ হর্মিলে খাহা' এই মত্তে গ্রার অভিমন্ত্রণ করিরা বেক্সাগৃহে মিক্ষেপ করিলে সেই বেক্সা ব্রীফুড হয়।

পেচকের চকু ও সাংগ, রক্ষচন্দন; গোরোচনা, কুরুর এবং

মংস্ত তৈল এই সকল একত্র করির। "ব্রীং ব্রীং গ্রং গ্রং কট্ট নমং' এই মত্রে স্বীর পরীরে অভ্যক্ত করিলে ত্রীপণকে বণীভূত করিতে পারা বার। একট্র কুকলালের দক্ষিণ পদ আনিরা মুণে ধারণ পূর্বাক বে ত্রীর সহিত রতিক্রিরা করা বার, সেই ত্রী বণীভূত হইরা থাকে এবং কুকলালের বামনেত্র মধুও তৈলের সহিত একত্র করিরা চক্ততে অক্তন প্রদান করিরা বে ত্রীর প্রতি দৃষ্টিপাত করা বার, সেই ত্রী বণীভূত হর। ত্রীলোক দেখিবার সমর 'ওঁ আনক্ষ ত্রক স্বাহা ওঁ ত্রীং ক্রীং গ্রাং কালি কপালি স্বাহা' এই মত্র পাঠ করিতে হর। কুকলালের দক্ষিণ চক্ত্র, কাঁজি ও মধু একত্র করিরা বন্ধিণ চক্ত্রত অক্তন দিরা 'ওঁ প্রভিতার স্বাহা' এই মত্র পাঠ করিরা বে ত্রীকে দেখা বার, সেই ত্রী বণীভূত হইরা থাকে।

'ওঁ নম: কামদেবার সহকল সহদল সহাম সহালিমে বহে ধ্ননজনং মমদর্শনং উৎক্ষিতং কুক কুক দক্ষণগুধর কুকুম্বাণেন হন হন স্বাহা' এই বে নারীর উদ্দেশে সপ্তাহকাল জপ করা বাইবে, সেই নারী নিকটে জাগমনপূর্কক তাহার বশীভূতা হইবে।

রাত্রিকালে কামাক্রান্ত চিত্তে বাহার নাম উল্লেখ করিয়া 'ওঁ সহবলীং বলীং করবলীং কামপিশাচ অমুকীং কামং গ্রাহর স্থানন মম রূপেন নথৈবিনারর দ্রাবর স্থেদেন বন্ধর শ্রীফট্' এই মন্ত্র জপ করা বাইবে সেই নারী বশীভূত হইবে।

এই বলীকরণ কার্য্যেও পূর্ব্বোক্ত চণ্ডমন্ত দশসহত্র জপ করিরা করিতে হইবে, চণ্ডমন্ত জপ না করিরা ইহা করিলে ফলদ হইবে না।

লবণ, তিল, হয়, ময়ু ও ছত এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া সপ্তাহকাল হোম করিলে রূপহীন ব্যক্তিও তিলোভমাকে বলী-ভূত করিতে পারে। সর্বপ, লবণ, হয়, ময়ু, ছত এই সকল দ্রব্য হারা সপ্তাহকাল হোম করিলে ত্রীগণ বলীভূত হর।

চতুর্দৃশ পরিমিত এর ওকার বারা মন্ত্রপাঠপূর্ব্বক কটু তৈল ও লবণের সহিত অটোজনশত হোম করিবে। হোমকালে বাহার নাম উল্লেখ থাকিবে, সেই ব্যক্তি বশীভূত হইবে। মহানিখের পূলো বৃত মিশ্রিত করিরা প্রতিদিন আটোজনশত হোম করিবে, এইরূপে সপ্তাহকাল হোম করিলে মনোরমা নারী বশীভূত হয়। 'ও' ব্লীং রক্তচামুখে কুরু কুরু অমুকীং মে বশমানর স্বাহা' এই মন্ত্রপাঠ করিরা হোম করিবে।

তিনটা গোম্প আনিরা তাহা হারা চুরী প্রস্তুত করিতে হইবে, তাহাতে মানবের মন্তকের খুলীতে ধান দিরা থৈ ভাজিবে, ভাজিবারকালে বে সকল থৈ ঐ খুলী হইতে বাহিরে পড়িবে, ভারা চুর্গ করিরা এক স্থানে রাখিয়া দিবে এবং খুলীর মধ্যহিত থৈ চুর্গ করিরা অন্ত এক স্থানে সংখাপন করিবে। পরে বহির্গত থৈ চূৰ্প যে জীর মন্তকে দেওরা যার, সেই জী বলীভূত হয়। মধ্যগত থৈ চূৰ্ণ ছারা বলীকরণ নিবৃত্তি হয়। এই যোগে বিনা মজে কার্য্য সিদ্ধি হইরা থাকে।

মানব মন্তকের মধ্যভাগ, গদিতের মন্তক মধ্যগত মক্ষা দ্বারা পূর্ণ করিরা তাহাতে ভূলরাজের রস্বারা ৭ দিন ভাবনা দিয়া শুকাইবে। পরে কাপাসভূলার শলিতা করিরা ঐ মক্ষাপাত্রে দিয়া প্রদীপ জালিবে, শনিবারে এই প্রদীপের শিখার নরকপালে কক্ষলপাত করিরা সেই কক্ষল বারা চক্ষতে অঞ্জন দিয়া যে নারীকে দেখা বার, সেই নারী বনীভূত হইরা থাকে।

মন:শিলা, হরিতাল, খীর গুক্ত, আকোড় ফলের তৈল এবং হন্তীর গণ্ডের মদ, এই সকল একক্ত মিশ্রিত করিয়া কপালে তিলক করিলে ব্রী বশীভূত হইরা থাকে। মন:শিলা, প্রিরস্থ, নাগকেশর পূন্দ ও গোরোচনা এই সকল একক্ত করিয়া চক্ষুতে অঞ্জন করিলে মনোরমা কামিনীকেও বশীভূত করিতে পারা যায়।

প্রিমৃদ্, বচ, তেজপত্র, গোরোচনা, রসাঞ্চন ও রক্তচদন, এই সকল জব্য একত করিয়া চক্ষতে জঞ্জন দিয়া যে নারীকে দেখা যাইবে, সেই নারী বলীভূতা হর। সোনরাজী, আকল-মূল বা চাকুলিয়া মূল যে ত্রী বা পুরুরের কাম ফরিয়া কটিদেশে বছন করা যায়, সেই ত্রী ও পুরুষ বলিভূত হয়।

ক্ষাইনী বা ক্ষা চতুর্দলী: তিথিতে উদ্ ত পীতধুত্রার মূল, কুড় ও দেবদারু, এই সকলে জব্য সমপরিমাণে লইরা চূর্ণ করিবে, এই চূর্ণ যে স্ত্রী বা পুরুবের মন্তকে নিক্ষেপ করা যার, সেই স্ত্রী ও পুরুষ বশীভূত হইরা থাকে। ফলের সহিত আমলকী বৃক্ষের মূল, ঘর্ষণ করিয়া চক্ষতে অঞ্চন কিংবা কপালে তিলক করিলে যে স্ত্রী ও পুরুষকে দেখা যার, সেই স্ত্রী ও পুরুষ বশীভূত হয়।

রাধান শশার মূল প্রানক্তে নশ্ব হইরা উন্তোলন করিবে, পরে ঐ মূলের সহিত মরিচ, পিশ্ললী ও ভাঁঠ এই সকল প্রব্য গব্যছয়ে একত্র পেবণ করিরা বটিকা করিবে। এই বটিকা ঘষিয়া রক্তচন্দনের সহিত কপালে ভিলক করিরা প্রীগণকে দেখিলে বীগণ বলীভূত হইরা থাকে। স্বাতীনক্ষত্রে বরবটীর মূল এবং অন্তর্মাধানক্ষত্রে বদরী মূল উচ্ত করিরা হত্তে ধারণপূর্বাক বীগণকে অবলোকন করিলে ভাছারা বলীভূত হইবে। উর্জপুলী, অধঃপুলী, সক্ষাবতী ও অপরাক্ষিতা এই সকল গাছের ফুল আনিয়া সপ্তাহ পর্যন্ত বীর ভক্তে ভাবনা দিবে, পরে তাহার সহিত জহবা, দত্ত, করিরা হে নারীকে ভক্ত্রেব্য অথবা পানীর ক্ষণের সহিত ভক্ষণ করাইবে, সেই নারী বশীভূত ইবৈ।

গুরুপক্ষে পুরানক্ষত্তে সক্ষকালে বছপূর্বক বোনিস্থিত উভরের বীর্থা বাসহস্ত হারা গ্রহণ করিয়া স্তীয় বাম হত্ততেনে ম্পর্শ করাইলে সেই স্ত্রী বশীভূত হয়। রুঞ্চপক্ষের প্রধানক্ষত্রে এইরূপ করিলেও বশীকরণ হয়।

"শুক্লপক্ষ্তে প্রো সংগৃছ রতিসঙ্গনে।
বোনিস্মৃতরোবীর্যাং যন্ততো বামপাণিনা॥
তেন স্পৃষ্টাং ক্রিয়ো বঞ্চা বামপাণিতলে কিল।
ক্রঞ্পক্ষ্তে প্রো পূর্ববং স্ত্রীবলা ভবেং॥" (সিন্ধনাগার্জ্ন)
খেত আকল, লাঙ্গলিরা, বচ, লুজ্জাবতী, মল এই সকল প্রবা
সমপরিমাণে চূর্ণ করিরা কুন্ধুরের হুগ্ধের সহিত মিশ্রিত করিবে,
পরে ইহা ধুহুরা ফলের মধ্যে রাখিবে, ইহা কামবাণস্বরূপ, যে
স্ত্রীকে এই ঔষধ ভোজন করাইবে,দেই স্ত্রী বলীভূত হইবে। এই
সকল বলীকরণে চণ্ডমঞ্জ দশসহত্র জপ করিতে হইবে, ভাহা হইলে
সিদ্ধ ইইবে। পুর্বোক্ত চণ্ডমঞ্জ বাতীত বলীকরণ দক্ষল হন্ধনা।

৭ বার জলাঞ্চলি প্রদান করিয়া— 'ওঁ বিশ্ববিদ্ননি গন্ধর্ম: কন্মকানামধিপতিঃ স্করণাং লালভারাং দেহি মে নমন্তলৈ বিশ্ববিদ্যাব স্বাহা' এই মন্ত্র একমাস কাল জপ করিলে স্বন্দরী ব্রী বলী-ভূত হয়। (সিদ্ধনাগার্জ্জনকক্ষপুট)

ষট্কর্মদীপিকায় মারণ, উচ্চোটন ও বশীকরণাদির বিছত বিবরণ বর্ণিত হইয়াছে, এই মতে বশীকরণের বিষয় সংক্রিপ্ত-ভাবে আলোচনা করিয়া দেখা যাউক।

"অথ বক্ষ্যামি মন্ত্ৰাভ্যাং বনীক্ষণসূত্ৰমং।
যেন বিজ্ঞানমাত্ৰেণ বলীকুৰ্যান্ত্ৰরং ।
কৃতাঞ্চলিঃ লিখিলিখা বিভীতা গিরিকর্ণিকা।
চাণ্ডালীসহিতা পিট্বা গব্যক্ষীবপরিপ্লুতা ।" (ষট্কর্মদীপিকা)

অনস্তর বলীকরণের বিষয় বলা ঘাইতেছে, ইহার জ্ঞান জন্মিলে নর ও নারী উভয়কে বশীভূত করিতে পাবা যায়। লক্ষাপু-লতা, অপামার্গের জটা, বহেড়া, অপরাঞ্চিতা ও চাণ্ডালীলতা এই স্কল একত্র গব্য চুয়ের সহিত পেষণ করিয়া কর্দমের স্থায় ক্রিতে হইবে, পরে ইহা এক খণ্ড পট্টবক্সে লেপন ক্রিয়া তন্দারা বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তি পল্মনালের মধ্যগত স্থত্ত ছারা বেষ্টন করিয়া রাখিবে। তৎপরে একবর্ণা গাভীর গুগ্ন হইতে নত শ্ৰেম্বত করিয়া সেই মত মারা পূর্বাক্ত বর্ত্তি আর্দ্র করিয়া লইবে। ভদনস্তর ঐ বর্ত্তি প্রজালিত করিয়া ভাগার শিধায় কজ্জল করিবে। তৎপরে চতুর্দশীর রাফ্রিতে ভৈরবের পূঞা করিয়া ঐ কজ্জলপাত করিবে, এই কজ্জল ছারা স্ত্রী পুরুষ যাহাকে ইচ্ছাকরা যার, তাহাকেই বশীভূত করিতে পারা যার। এই বলীকরণ সংক্ষান্তম, স্বরং মহাদেব এই বলীকরণের উপদেশ দিয়া-ছেন। সাধকের ইহা ষরপূর্বক গোপন করিয়া রাখা উচিত, ত্রুর, অর্বিভ, নিক্ষক ও চপল এই সকল ব্যক্তির নিকট ইছা প্রকাশ कत्रित ना।

এই মন্ত্র যতদিন সিদ্ধ না হয়, ততদিন সাধক 'ওঁ ব্রীং মোছিনি আংগ' জপ করিবে, পরে মন্ত্রসিদ্ধ হইলে চদ্দন, পুন্দা, বক্ত অথবা কোন প্রকার উত্তম কল উক্ত মত্তে আইোডরশত বার অভি-মন্ত্রিত করিয়া যাহার হতে প্রদান করা বাইবে, সেই ব্যক্তি বলীভূত হইবে।

সাধক 'ওঁ চিটি চিটি চাণ্ডালি মহাচাণ্ডালি অমুকং মে কলমানর আহা' এই মন্ত্র ভালপত্রে লিখিরা ঐ ভালপত্র হুগ্ধ-মিশ্রিত জলে নিক্ষেপ করিয়া পাক করিবে। এই মন্ত্র মধ্যে যাহার নাম লেখা থাকিবে, সেই ব্যক্তি মিশ্চর বলীকৃত হটবে। কেহ কেহ বলেন যে, উক্ত মন্ত্র বিশ্বকন্টক দিরা লিখিতে হইবে এবং ঐ ভালপত্র হুগ্ধে পাক করিয়া তিন দিন কালার মধ্যে রাখিয়া দিবে, পরে উই। তুলিরা হুগোৎসবম্প্রপর্বারে প্রোণিত করিয়া রাখিবে। এইম্বল করিলেও বলীক্ষরণ হয়।

পূৰ্ব্বোক্ত ওঁ চিটি চিটি ইত্যাদি মন্ত্ৰ বিষক্ত ৰামা তালপত্ৰ লিখিয়া যথাবিধানে ভদ্ৰকালীয় পূলা ক্ষিয়া সেই গৃহে উচা পুতিয়া রাখিবে। ইহাতেও বশীক্ষণ হয়।

'রং সর্বালোকং বশমানর স্বাহা' এই মন্ত্র হল ও এই মন্ত্রে পুঞা করিলে অভিলয়িত ব্যক্তিকে বলীভূত করিতে পারা যায়।

'ওঁ রাজমুখি রাজাভিমুখি বশুমুখি ব্লীং শ্রীং ক্রীং দেবি দেবি মহাদেবি দেবাধিদেবি সর্বজনশু মুখং বশ্রুং কুক স্বাহা'

'ड्री: मरमा उन्न मित्राकिएछ त्रावश्विष्ट करम विकास शीति গাদারি ত্রিভূবনবশ্বরি সর্বাদেবশ্বরি সর্বাতীপুরুববশ্বরি সুহার্যার স্বছর্যার দ্রীং স্বাহা' এই ছইটা মন্ত্র দশ হাজার জপ করিয়া তৎপরে মৃতসংযুক্ত পারস ছারা জ্বপের দশাংশ হোম कतिएक रहेरव । दशमायनारन वानरप्रवर्ण, व्यष्टमाङ्का ७ मण-দিক্পালের পূজা করিয়া পুনর্কার স্বাহ্যুক্ত ভিলত গুল, মধুর ফল এবং শ্বতবৃক্ত রক্তপন্ম দারা হোম করিবে। এইরূপে তিন দিন হোম করিয়া সূর্যাম ওলাধিষ্ঠাত্রী দেবতার আরাধনাপুর্বক কুর্বাভিমতে অটোত্তর্শত অপ করিবে। ইছাতে অচিরকাল মধ্যে বলীকরণ সিদ্ধি চটরা থাকে। মন্ত্র মধ্যে অভিলবিত বাক্তির নাম উল্লেখ করিতে চর। क्षेत्र भारत भारत भारत, নিবট ছক্ষঃ ও গৌরী কেবতা, ইহাতে এইরণে করাজভাগ क्तिए इत । हीर मत्या उन श्रीवामिए वास्त्रशिक्षण समुक्रीकार নম: জরে বিজরে গৌরি গাছারি ভর্জনীভাাং শ্বাহা, মিতুবন-वनइति वधामानाः वयष्टे, नक्तनाकवनद्वति समाविकानाः हर, नसंजीतृक्वयनकति कनिकासाः त्योवम्, क्रकृत्यात क्रकृत्यात हीर ৰাহা করতনপৃষ্ঠান্তাং ফট্। এইরূপ ধ্রুরাদিতে ভাস করিতে হয়। এট দেবতার পূজাকালে নিরোক্তমত্তে ধ্যান করার বিধি আছে।

"অমলশনিবিরাজসৌলিরাবছণাশাছুশক্ষচিরকরাজা বছুলীবারণালী।
অমরনিকরবলক ত্রীকণা লোগবর্ণাং
ওককুস্থমযুত্তা ভাৎ সম্পদে পার্বভীব ॥"
এই প্রণালী অন্মুসারে বলীকরণ করিলে সকলকেই বলীভূত
করিছে পারা বার।

'মদ মদ মাদর মাদর ত্রীং বশর অমুকং স্বাহা' এই মজের নাম মদনমন্ত্র।

"কনক রচিতমূর্ত্তিঃ কুগুলাক্সইচাপো যুবতিভ্রদরমধ্যে নিশ্চলা রোপিতাক্ষ:।"

মদনদেবের শরীর প্রবর্গরচিত, আরুণ পর্যন্ত ধল্পর্মাণআরুট এবং যুবতীদিগের হুদর মধ্যে নিশ্চনভাবে চন্দু আরোপিত করিয়া আছেন। এইরূপে মদনদেবকে চিন্তা করিয়া মদন
মন্ত্র দশ হাজার জপ ও মদনদেবকে সহল্র রক্তপুশা প্রদান করিতে
হর। ইহাতে মন্ত্র সিদ্ধি হইরা থাকে। এই মন্তবলে সমস্ত
জগৎকে বণীভত করিতে পারা যায়।

'ওঁ চামুডে জয় চামুডে মোহর বশমানর অমুকং আহা' এই
মন্ত্র লক্ষ লপ করিরা শিরীববৃক্ষ সমিধ্ হারা দশ সহলে হোম
করিবে। নিম্নোক্ত ধ্যানে দেবতার পূজা করিতে হর।
ধ্যান যথা —

"দং ব্রীকোটিবিশস্কটা স্থবদনা সাক্রান্ধকারে স্থিতা থটালাসিনিগুচদক্ষিণকরা বামেন পাশং দির:। স্থামা শিল্পমুর্দ্ধনা ভরকরী শার্দ্ধনুচর্দ্ধার্তা চামুণ্ডা শববাহিনী লপবিধৌ ধোলা সদা সাধকৈ:॥" বিধিপুর্ব্ধক এই ধানে পুজা করিলে মন্ত্র সিদ্ধ হয়, এই মন্ত্র-প্রভাবে সকলকে বৃশীভূত করিতে পারা বার।

ওঁ নমঃ কামার সর্বজনপ্রিয়ার সর্বজনসন্মোচনার জল জল প্রজালর প্রজালয় সর্বজনত ক্ষরং মম বশং কুরু কুরু আহা' এই মন্ত্রজপ করিলে নর ও নারীকে বলীকরণ করিতে পারা যার।

'ওঁ নম: ভগবতি প্রচিচাণ্ডালিনি নম: স্বাহা' এই মন্ত্রে মধ্চ্ছিই (মোম) দারা অভিলবিত ব্যক্তির একটা প্রতিক্ষতি করিছে হইবে। প্রতিমূর্দ্ধি প্রান্তক্ষির উপর পূর্ব্বোক্ত 'ওঁ নম: ভগবভি' ইত্যাদি মন্ত্র ক্ষপ করিয়া অলারামি দারা ঐ মূর্দ্ধি ভাপিত করিছে হইবে। এইরপ করিলে অভিলবিত ব্যক্তি ব্লীভৃত হইরা থাকে। (বট্কুম্নীপিকা)

বুহরীলভন্ন, উজ্ঞীশ প্রকৃতি তত্ত্বে বন্ধকরণাদির বিস্তৃত বিবরণ বুণিত আছে, বাহণাভৱে তাহা আরু লিখিত হইল না। বণীকরণকার্য্য বসস্ত ঋজুতে বা পূর্ব্বাহ্ন কালে করিতে হয়। ইহাতে সপ্তমী ও দশমীতিথি প্রশন্ত।

"বশ্যাকর্ষণকর্মাণি বসন্তে যোজনেং প্রিয়ে। গ্রীমে বিদেষণং কুর্যাৎ প্রাবৃধি স্তম্ভনং তবেং॥ বসন্তল্যের পূর্বাকে গ্রীমে মধ্যাক উচ্যতে। বর্ষা জ্ঞেয়া পরাহে তু প্রদোবে শিশির: মৃতঃ॥ বশীকরণকর্মাদি: সপ্তম্যাং কাররেছ্ধঃ। দশমামিতি সপ্তম্যাং তথা চ বশ্যকর্মবৈ॥" (উজ্জীশ)

পৃথিব্যাদি তদ্বের উদয়কালে বশীকরণাদি কার্য্য করিতে হর। জ্যেষ্ঠা, উত্তরাবাঢ়া, অন্তরাধা, রোহিণী, এই সকল নক্ষত্র পূথীতন্ব, এই সকল নক্ষত্রাদি মিদ্ধপণ করিরা বশীকরণ কার্য্য করিতে হর।

এই বে বশীক্ষপের প্রক্রিয়া সকল বর্ণিত হইল, ইহা করিবার পূর্বে সাধকের মন্ত্রসিদ্ধ হইতে হইবে। কারণ মন্ত্রের সিদ্ধি লাভ না করিলে এই সকল সফল হয় না। এইজন্ম সাধক প্রথমে সর্ব্বপ্রবন্ধে মন্ত্রের আরোধনা করিরা সিদ্ধি লাভ করিলে পর মারণ, উচ্চটিন, বশীক্ষরণ প্রভৃতি যে কোন আভিচাষিক ক্রিয়া করিবেল, ভাহাতেই তিনি তৎক্ষণাৎ সফল ক্ষাম্বাইবেন।

বশীকার (গং) বশীক্ষণ। [ঘশীক্ষণ দেখ।]
বশীকৃতি (জী) বশুক্তাপ্রাপ্তি। মন্ত্রমুদ্ধ।
বশীক্রিয়া (জী) বশীক্ষণ। বলে আন্যুদ্ধন কার্য।
বশীকুত (ত্রি) ধ্ববশা বশো ভূত ইত্যর্থে চ্ঃ। ১ বশুতাপ্রাপ্ত।
বশীর (গুং) বশ-ঈরন্। ১ গ্রুপিপ্রশী। (ক্রটাধর) ২ চবিকা,
চলিত চই। ৩ অপামার্গ, চলিত আপাঙ্। (বৈভ্ননিত)
(ক্লী) সামুদ্রশ্য।

বশে (দেশজ) অধীনে। তাঁবে।
বিশ্বিক (পুং) অগ্রহারভেদ। (রাজতর : ১০৪৫)
বশ্য (ক্রী) বশার বশীকরণার সাধু ইতি বশ-যৎ (তত্র সাধু:
পা ৪।৪।৮৯) > লবদ। (শক্ষেচ) বশমধীনদ্ধং গত ইতি বশধৎ (বশং গতঃ। পা ৪।৪।৮৬) (ত্রি) > আরত্তা-প্রাপ্ত, বশীভূত।
ইহার পর্যায় — প্রশেষ ও বশ।

"মৃত্তং সেবামানাত্ত সিংহলার্জ্যকরা:।

বধা বাত্তি তথা প্রাণো বক্তো ভবতি যোগিন:॥"

(মার্কণ্ডেরপুণ ৩৯।১৭)

২ অন্নিধের পঞ্চম পুত্র। (মার্কণ্ডেরপু• ৫০।০৪) বৃশ্যুক (ত্রি) বশু-বার্থে কন্। ১ বশীভূত, বশগ। ত্রিরাং টাপু। ২ বশগা নারী। বশ্যকর (ত্রি) বশযোগ্য। বশ করিবার উপবোগী। বশ্যকর্মন্ (ক্লী) বশীকার্য্য।

বশ্যতা (ত্রী) বশীভূতের ভাব বা ধর্ম। বশীকার। অধীনতা। বশ্যুদ্ধ (ক্রী) অধীনত। বশীভূতত্ব।

বশ্যা (জী) বশ্র-টাপ্। বশীভূতা নারী। পর্যার—বশগা, বশাকাও বশ্রকা। (শন্বরা৽)

"যং ব্রাহ্মণনিয়ং দেবী বাগ্বপ্রেবাস্বর্ক্তে" (উত্তর্রামচ • ১ আ:)

২ নীলাপরাজিতা। (মদনপাল) ও গোরোচনা। (বৈজ্ঞকনি •)
বশ্যাত্মন্ (পুং) বশ্ধ: আত্মা কর্মধা। ১ বশীকৃত আত্মা।
বশ্ধ আত্মা যথেতি বক্ত্রী। (পুং স্ত্রী) ২ বশীকৃতিচিত্তেন্তির,
যাহার চিত্তেন্তির বশান্ত্গ ক্ট্রাছে। (চরক • প্র • ৮ আ:)
বৃষ্ বধ, হিংসা। ভাদি • পর • সক • সেট্। লট্ ববতি। লোট্
বযত্ন ল্ট্ ববিষ্তি। লিট্ ববাষ। লুঙ্ অবাধীৎ।
লুট্ববিতা।

ব্যট্ (অবায়) দেবোদেঞ্চক হবিত্যাপমন্ত্র, যে মন্ত্র পড়িয়া দেবতার উদ্দেশ্রে তৃতাহতি দেওরা হয়। (অমর)

২ অক্সাস ও করন্তাসাদিতে অক্বিশেষে ভাসবোধক মন্ত্র।
ইহা অক্সাসে শিপায় ও করন্তাকে মধ্যমাকুলীতে ব্যবহৃত
হইয়া থাকে। ৩ তাপ্তিক পূজাদিতে এব্যবিশেষ দানে প্রযুক্ত মন্ত্র।
অমরটীকাকার ভরত বলেন — কেবল ব্যট্ শব্দ নম, স্বাহা,
শ্রোষট, বৌষট, ব্যট্ ও স্বধা এই পাঁচটা শব্দই দেবোকেন্তে
বহ্নিমুখে ঘুতাহতি দানে বিহিত। এন্থলে দেব শব্দে ইক্সাদি
দেবগণকেই ব্নিতে ইইবে।

"ইতি স্বান্নে বৃষ্টিংনাত্রস্থ পুত্রা উপস্ক তাস ঋষয়োহবোচন্।
তাংশ্চ পাহি গৃণতশ্চ স্বীন্ বষ্ড বৰজিতৃর্বাদো অনকন্॥"
(ঋক্ ১০০১১৫১৯)

"লাহা দেবহবিদানে পিতৃদানে স্বধা মতা।
ইক্সদানে ব্যট্পোক্ত ইতি দানত্রক স্বতম্॥" (স্বতি)
ব্যট্কুর্ত্ (পুং) ব্যট্ মল্লোচ্চারণপূর্কক যাগকারী পুরোহিত।
ব্যট্কার (পুং) ব্যট্ ইত্যক্ত কার: করণং ঘ্র।
১ দেবোদেশ্যক যাগ। প্যায়—দেব্যক্ত, আহতি, হোম,
হোত্র। (হেমচ০)

২ বেদোক্ত ৩০টা দেবভার একতম। তণ্যধা—অটবস্থ, একাদশ ক্ষা, ছাদশ আদিভা, প্রকাপতি ও ববট্কার। ব্যট্কারনিধন (ক্লী) সামভেদ।

ব্যত্কারিন্ (a) ব্যত্মন্তবোগে হোমকারী। ব্যত্মন্তোরণ হারা হোমকালে অগ্নিতে উৎস্গীকৃত।

ব্যট্কৃতি (ত্রী) ববট্কার। ববট্কারবৃক্ক উৎসর্গ।
"য আহতিং পরিবেদা ববট্কতিম্" (শক্ ১০৩১) ৫)

'ৰ্থট্ কুভিং ব্ৰট্ কার্মুক্তাং' (সারণ)
ব্রষ্ট্ কুভা (ক্লী) ব্ৰট্ কার্বাগ বা হোম।
ব্রষ্ট্ ক্রিয়া (জী) হোমকার্ক্ত।
ব্যট্ কুভ (ত্রি) ব্ৰড়িভি মত্তেণ ক্লডং। হৃত।

"শ্বৰী হতত্ত বলুবাং তৎভাত্তিবু বৰট্ হতত্ত্ব।" (শ্বর্ত্তা ব্যট্ফল (দ্বী) কভোল। (রাজনি -)

ব জ ু গতি। ভাগি - আআৰ - সক - সেট্। লট্ বছতে। লোট্বছতাং। লিট্ববকে। লুঙ্আবিভিট। লুট্ৰজিতা। কিপ্করিলে পদ হইবে বট্।

বক্ষয় (পং) বহুতে ইতি বহু-গতৌ বাহুলকাং অন্তন্য একছায়ন বংস। (অসরটীকার রারমুকুটখুত শাক্টান্থন)

বক্ষয়(য়ি) পী (জী) বন্ধ একহারনো বৎসঃ, ভেন নীরভে ইতি
নী-কিপ্, গৌরাদিছাৎ জীব্, গছম্। (পূর্বপদাৎ সংজ্ঞারামগঃ।
পা ৮।৪।০) বন্ধনিপতি পাঠে বন্ধরাহত্তাক্তা ইতি। 'জত ইনি
ঠনৌ' ইতি ইনিঃ, জট্ কুপাঙিতি বন্ধম্। চিন্নপ্রস্তা গান্ডী।
'বন্ধতে পরিক্রামতি বন্ধনিচরকালীনবৎসঃ। চলিত বক্না। বহু
গতেই নানীতি অরঃ, বন্ধরন্ধেকহারনো বৎস ইতি (কোহঃ)
তদ্বোগাৎ বন্ধরিপী নৈকালাদিতি ইন্। বন্ধরণীতি পাঠে
গোড়পেত্যাদিনাপামাদিছাৎ নঃ, নদাদিছাৎ ঈপ্। ছ্বামুষতী
গবেবিতবন্ধরিপীতি মৃক্ষন্তব্যমধ্যে গদসিংহঃ।' (জমরটীকার ভরত)
বিস্তি (অ) কাময়মান, প্রার্থনাকারী। "পরিচিষ্টরো দধ্ং"
(ঋক্ বাণনাব) 'বইরঃ জ্লানেব কাময়মানাঃ' (সারণ)

বস নিবাস। ভাদি পর দৈ জক জানিট্। লট্ বস্তি, লিট্
উবাস, উবড়: । উবসিথ, উবছ। লট্ বছা। লট্ বংছত।
লঙ্ জবংগ্রং। জবদীনিতং উবাং। লুঙ্ জবাংসীং,
অবাত্তাম্, অবাংশ্রং। কর্মণি উবাতে। জবাসি। "উবাস
পর্ণশালায়াং" (ভটি ৪।৭) সন্—বিবংসতি। যঙ্বাবংগ্রত।
যঙ্লুক্ বাবতি। পিচ্ বাসয়তি। জবীবসং। কল —উবিছঃ
কে —উবিত। অধি-অধিবাস, (কুমার ১। ৫৫) উপ —উপবাস। "গ্রামম্পবস্তি" (পা ১।৪।৪৮) নি — নিবাস। নির্—
নির্কাসন। প্র —প্রবাস। বস ধাড় উপসর্গপুর্ক বছ অর্থে
ব্যবস্ত দেখা যায়।

বৃদ্, স্থৃতি, আচ্ছাদন, পরিধান। আদাদি আত্তা সক শেষ্ট্।
লট্ ববে, বসাতে বসতে। লিট্ ববসে। লুট্ বসিয়তে। লুট্
বসিয়তে। লুট্ অবসিষ্ঠ, অবসিষাতাম, অবসিষত। "বসনং
ববসে মা" (ভাট ১৪।৯২) সন্—বিবসিষতে। বঙ্বাবস্ততে।
বঙ্লুক্ বাৰতি। শিচ্ বাগ্যতি-তে। নি-বস, আত বল
পরিধান (ভাট ১৫।৭) বি-বস-পরিধান। "মনোরমে ন ব্যবসিষ্ট
বল্প।" (ভাট ৩।২০)

বস, তত্ত, নত্রতাহীনতা। দিবাদি পর জব নেট্। লট্
বৃহতি। লিট্ বদাস। লৃট্ বসিবাতি। লৃঙ্ জবসং।
জবাসীং, জবসীং। কৈহ কেছ পুরাদি প্রবৃক্ত এই বাতুর
উত্তর নিতাই স্বাভ্ করনা করেন। উদিস্তেত্ কা পরে
থাকিলে এই ধাতুর বিকলে ইট্ছইবে। কা—বসিধা, বদা।
"বো বহাতারিদ্র" (হলায়ধ)

বস, > বেহ গ্রীতি। ২ ছেম। ৩ অপহরণ। চুরাদি পর অব : সেট্। লট্বাসমতি। পুঙ্ অধীবসং। হুর্গাদাস এই ধাতৃ বধার্থেও অভিহিত করিয়াছেন।

বস, যাস। আমস্তচুরা• পর• অক• সেট্। লট্ বসরতি। (ছুর্গাদাস)

বসই দ্বীপ, বোৰাই প্রেনিডেন্সির অন্তর্গত, বোৰাই সহর হইতে ৩২ মাইল দূরে অবহিত একটা বীপ। অক্ষা ১৯°২৪ হইতে ১৯°২৮ উ: এবং প্রাথি ৭২°৪৮ হইতে ৭৪°٤৪ পু: পর্যান্ত, দৈর্ঘ্যে ১৯ মাইল, প্রত্থে ৫ মাইল, ভূপরিমাণ ৩৫ বর্গ মাইল। এই কুল্র বীপের উত্তরে দন্তরা খাঁড়ী, দক্ষিণে বসইপ্রণালী, পশ্চিমে আরব সমৃত্র এবং পুর্ব্বে সমৃত্রের সক খাড়ী ভারতভূমি হইতে এই বীপকে পুথক করিয়াছে।

এই কুল দীপটা অতি পূর্ককাল হইতেই কি পাশ্চাত্য কি প্রাচ্য উভর অগংবাসীর নিকট পরিচিত। কাহারও মতে সংক্ষত 'বসতি' মুসলমান আমলে 'বসই', পর্কুণীজদিগের নিকট বলইম্ (Bassein) এবং ইংরাজদিগের নিকট বেসিন (Bassein) মামে আখ্যাত। হিন্দু পৌরাশিকগণের মতে এই প্রাভূমি পরশুরাম ক্ষেত্রের অন্তর্গত সপ্তকোজপের মধ্যে বর্লাটের সামিল। সম্বাজিখণেও কেরল, তুলুব, গোরাই, কোলণ, কর্রাট, বরলাট ও বর্জর এই সাতটা লইরা পরশুরাম ক্ষেত্র বা সপ্তকোজণ—

"কেরলাচ্চ ভূলুবাশ্চ তথা পোরা ট্রবাসিনঃ। কৌছণাঃ করহাটাশ্চ বরলাটাশ্চ বর্জরাঃ ॥" (উত্তরার্দ্ধ ৮০৯ঃ) তল্মধো বসইবীপ বরলাটের অন্তর্গত। আরতনে কুল্র

তন্মধো বসইবীপ বর্গাটের অন্তর্গত। আরজনে কুন্র হইলেও জুলারি, নির্ম্মণ, ক্ল্যাণ, জীহান ও পূর্ণারক নামক মুপ্রাচীন ভীর্মনান্তলি এই বীপের মধ্যে থাকার ঐতিহাসিক ও প্রশ্নতব্যিকের জ্ঞাতব্য অনেক তথা এখানে রহিয়াছে।

ভুলারি প্রভৃতি পঞ্চক্রে দান্দিণান্ডোর হিলুগণের নিকট অতি পুণ্যতীর্থ ও মোক্ষধাম বলিরা গণ্য। ক্রিরূপে ঐ সকল তীর্থের উৎপত্তি হইল, পদ্মপুরাণ ও ক্রমপুরাণে ভাষার সংক্রিণ্ড পরিচর আছে।

পদ্মপুরাণীর জুকারি মাহাজ্যে লিখিত আছে— অক্সরেরা ব্যলাটের ত্রান্ধণিনিগের উপর বধেষ্ট অভ্যাচার করিত। রাক্ষণেরা পরত্রামের শরণাপর হইলেন। রাক্ষণ রক্ষার জন্ম পরত্রাম বরলাটে আদিলেন। অস্ক্রেরা তাঁহার আক্রমণ সহ করিতে পারিণ না। সমূদ্রে পলাইরা আত্রক্ষা করিণ। অস্করণতি বিমল মাধার করিরা তুক নামে একটা শৈল আনিরা সমূদ্রে হাপনপূর্বক ভাহাতে বাদ করিতে লাগিলেন। এখানে তিনি শিবের তপভার নিরত হইলেন। শিব সন্তই হইরা তাঁহাকে অমর করিলেন, শিবের প্রাদাদে এখানে তীর্থ হইল। বিমল এখানে দিব্যালিক প্রতিষ্ঠা করিলেন, তাঁহার নাম হইল ভ্রেক্রার।

ভূকারি এক্ষণে 'ভূকার' পাহাড় এবং একটা শ্রেষ্ঠ স্বাস্থ্যবাদ বলিয়া থ্যাত, ইহার পার্য দিয়া রেলপথ গিরাছে।

পদাপুরাণীয় নির্মাণ মাহাম্যো লিখিত আছে-অস্ত্রপতি বিমল তুল্পলৈল হইতে ঋষিদিগোর মুখে পরগুরামের গুণামুকীর্তন প্রবণ করিতেন। তাঁহার শত্রুর প্রশংসা-বাদ শুনিয়া অভিশয় ক্রন্ধ হইয়া বিমল ঋষিদিগের হোমকুণ্ডের উপর এক বৃহৎ প্রস্তর চাপাইয়া আসেন। ধবিরা শিবের নিকট অভিযোগ করেন। শিব আপনার প্রতিশ্রুতি বিশ্বত হইয়া বিমলকে শাসন করিবার জন্ম পরশুরামকে পাঠাইয়া দিলেন। পরভরামের সহিত বিমলের যুদ্ধ বাধিল। বিমল শিবের বরে অজের। যতবারই পরওরাম তাঁহার মাথা কাটেন, ততবারই মাথা জোডা লাগে। অবশেষে পরশুরাম শিবের পরামর্শে পরশু দারা বিমলকে পরান্ত করিলেন। বিমল সংগ্রামে পতিত হইয়া পরগুরামের স্তব করিতে লাগিলেন। স্তবে পরগুরামের মন টলিল। যেখানে বিমল পড়িরাছিলেন, সেখানে পরভরাম শ্বরণার্থ 'বিমলেশ্বর' নামে একটি শিবলিক প্রতিষ্ঠা করিলেন এবং বিমল নাম পরিবর্ত্তন করিয়া "নির্ম্মল" নাম রাখিলেন। তথন হইতে এই ক্ষেত্ৰ "নিৰ্ম্মণ" নামে খাত হইল।

নির্মণ-মাহান্ম্যের ৮ম অধ্যাদে লিখিত আছে,—নির্ম্মণক্রের বৈতরণীতীর্থ যিনি কার্ত্তিক-ক্ষকোদশীতে সান করেন, তীহার সর্ববিপাপ দুর হয়।

পর্ক শীর্জদিগের হত্তে বিমলেখনের স্থ্রোচীন মন্দির ও বিদ্ধ বিধবত হইরাছে, চিক্ক মাত্র নাই। তৎপূর্কপর্যান্ত বিমলেখন কর্ণাটকবালীর একটি প্রধান তীর্থ বলিয়াই পরিচিত ছিল। ১১৮৩ শকে (১২৬১ খুটাকে) উৎকীর্ণ চালুকাবংশীর প্রীক্ষণ্ড-দেবের ভাত্রশাসন পাঠে জানা বার যে সে সমরও বিমলতীর্থ জডি প্রাসিত্ব ও এখানকার শিক্ষ পৃঞ্জিত হইতেন। চালুকা-

ভায়শাসনে এইয়প বর্ণনা আছে—

[&]quot;তত ভীৰ্বেৰ্ বিষশং নিৰ্মাণ নাম কুন্দরং। সংসায় মল-নিম্মুক্তং বত্ৰ যান্তি পরং গদং ॥

রাজ বিমলেশ্বর লিঙ্গের উদ্দেশ্তে জাতকেশ্বর নামে এক প্রাম দান করিয়াছিলেন। নির্ম্বল-মাহান্দ্যে এখানকার বহু ক্ষুদ্রতীর্থ ও ক্ষুণ্ডের উল্লেখ আছে। পর্কুণীজ অধিকার কালে সেই সমস্ত তীর্থই লুপ্ত হইরাছিল। তৎপরে মহারাষ্ট্রগণ এই স্থান অধিকার করিয়া বিমলেশ্বর-মন্দিরসংখার ও লিঙ্গের স্থানে দন্তাত্ত্বের পাছকা প্রতিষ্ঠিত করেন। এই সময় কতকগুলি তীর্থের পূনক্ষার সাধিত হয়। অধিবাসী সাবারণের প্রদন্ত মূলধনে শুক শঙ্করাচার্য্য স্বামীর তর্বাবধানে বেবসেবার বার নির্মাহ হয়। শঙ্করামী মানে মানে এথানে আসিয়া থাকেন। এই মন্দিরের পার্থেই এথানকার প্রথম শঙ্করাচার্য্য স্বামীর সমাধি ও ব্রাহ্মণ-দিগের জন্ত অর্মান আছে। কার্তিক মানের ক্রইফকাদনীতে এথানে একটি বাত্রা বা মেলা হয়। তাহাতে বহুল্রদেশ হইতে বাত্রীসমাগম হইবা থাকে।

ইতিহাস।

এখানকার প্রাচীনতর ইতিহাস অম্পষ্ট। আলেক্সান্দারের দমর্কার আরিয়ান প্রভৃতি গ্রীক-ঐতিহাসিকগণ পশ্চিম ভারতের যে সংক্ষিপ্ত পরিচয় দিয়া গিয়াছেন, তাহা পড়িলে মনে হয় যে সেই সময় এই দ্বীপ সুরাষ্ট্র বা লাটের অস্তর্ভুক্ত ছিল। আরিয়ান निथियार्टिन य श्रीकृशन छाहात ममस्यत वहभूक हर उठहे कन्यारन বাণিজ্ঞ্য করিতে ঘাইতেন। এমন কি কোন কোন ঐতিহাসিকগণ এমনও লিপিয়াছেন যে এীকগণ শালসেটিবীপে উপনিবেশ করিবার চেষ্টা করিয়াছিল, তাহার উদ্দেশ্য, দান্দিণাত্য অধিকারে ভাহাদের স্থবিধা হইবে। রোমকেরা ইঞ্জিপ্ট অধিকার করিলে ভারতীয় বাণিজ্য তাহারা একচেটিয়া করিয়া কইয়াছিল,এই সময়ে कात्रयममुद्ध विदानीयगरात कात्र आदमाधिकात तरिन ना। গ্রীক ঐতিহাসিক লিথিয়াছেন যে তৎকালে 'সারগনদ' (Saraganos) = नातज नाम এक ताला कन्यान, वनहें अ पूपहे অভৃতি স্থানের অধিপতি ছিলেন, গ্রীক্দিগের সহিত তাঁহার মিঞ্জা हिन, कि मानाराम (Sandanes)= हनाराम छोहात त्राका অধিকার করিয়া বিদেশীয়দিগের প্রতি বাণিঞ্জানিবেধাঞ্জা বোষণা করেন, এমন কি কএকজন বিদেশীকে কড়া পাহা-রার ভবোচে (Burace) পাঠাইয়া দেন। এইরপে গ্রীকগণ নিবারিত হইলেও বোমকেরা ভারতে বাণিলা সংস্তব ত্যাগ করে নাই। অটিনিয়াদের রাজ্যকালেও কল্যাণের বাণিজ্যপ্রভাব বিশ্বপ্রসিদ্ধ ছিল। মিদরের প্রসিদ্ধ বণিক্ কদ্মদ্ (Kosmos Indikopleustes) প্রায় ৫৪৭ বৃষ্টাব্দে কল্যাণে আগমন করেন, তিনি এথানে বহু সংখ্যক খুটান দেখিরা চমৎকৃত হইরাছিলেন,

ভত্ত নদী বৈতরশী বৃক্তপশ্চিমসিস্কুলা। একাঃ বানেন দানেন ন পক্তেৎ ব্যবহাতনা ॥" ঐ সকল খুটান পারতের নেটোরিয়ান্ বিশপের ধর্মনাসনাধীন ছিল। তৎপরে খুটার ৭ম শতাব্দে চীন-পরিব্রাক্ত হিউএন্ সিরং আসিরা এখানকার বাণিজ্যসভূতি উজ্জন্য ভাষার বর্ণনা করিয়া গিরাকেন।

এই বীশের অন্তর্গত প্রীক্ষান বা ঠানা বছপূর্বকাল হইডে রাজধানী বলিরা গণ্য ছিল। খুটীর ১ম শতাব্দীর, নেরজাগে এখানে পিলাহার-রাজবংগের অভ্যুদর। তাহাদের সময় প্রীদ্বান লন্ধী সরস্বতীর প্রিরন্থান, এখানেই অপেব-শান্তবিং জীমৃতবাহন রাজস্ব করিতেন।

খুটীর ১০শ শতাব্দ পর্যন্ত বরলাট শিলাহার বংশের অধিকাবে ছিল, তৎপরে বাদবরাজবংশের অধিকারভুক্ত হইরাছিল। বসট হইতে ১১৯৪ ও ১২১২ খুটাব্দে উৎকীর্ণ বাদবরাজবংশের শাসন-পত্র পাওয়া গিয়াছে। বাদবেরা মুসলমানের অধীনতা খীকার করিলে কোজনের এই অংশ বল্ডে থতে বিভক্ত হইরা মহিমের ভীমরাজ, দেবগিরির রামদেব, এতদ্ভির নারক, বলোলি ও ভাগুরী উপাধিধারী সামস্তগণের শাসনাধীন হইরাছিল।

১২৯৪ খুটানে দিলীখর আলাউদ্দীনের নিকট রামনেব পরাজিত ছইলে অর্রাবন মধ্যেই সুমুল্ড দান্ধিণাত্য মুগলমান করকবলিত হইরাছিল বটে। কিছ তখনও বসইথীপপতি স্বাধীনতা
রক্ষার সমর্থ হইরাছিলেন। তিনিসের প্রান্তিক মার্কো
পোলো ১২৯৫ খুটান্দে প্রীছানে (ঠানার) আগমন করেন, তিনি
এখানকার সমৃদ্ধিদর্শনে চমৎক্রত ছইয়াছিলেন। তিনি লিখিয়াছেন বে, এই স্থান প্রতীচ্যের একটা স্থবিস্থত জনপদের রাজধানী,
এখানকার নরপতি কাহারও অধীন নহেন। এখানকার অধিবাসীরা পৌত্তলিক, তাহারা দেশীভাষার কথা কয়। তাহার
সমরে এখানে উৎক্রই চর্ম্বের ও জার্পানের নানা সাজ সক্ষা,
মসলিন এবং সোণা ক্রপার ব্যবদা চলিত। প্রীহানে নদী ইইতে
জলমস্থ্যপণ বাহির হইরা বথেই অভ্যাচার করিত।

১০১১ খুণ্টান্দে যুসলমান বিজেত্গণের পরসৃষ্টি এই অঞ্চলে নিপতিত হইল। ভাহানের উপত্রবে ও অভ্যাচারে দীর্থকাল এধানকার অধিবাসিগণ নিপ্রহ ভোগ করিয়াছিল। সেই সময় কেবল স্থানীর লোক বলিয়া নহে,কত নিরীং বিদেশী ধর্মপ্রচারক জীবন উৎসর্গ করিতে বাধ্য ইইয়াছিল। ১০০০ খুণ্টান্দে প্রেউনিনিবাসী সন্নাসী ওমেরিক (Friar Oderic of Priuli) বর্ণনা করিয়া গিয়াছেল বে ১০২০ খুটান্দে ফ্রান্সিয়ান্ খুটায় সম্প্রামান করিয়া গিয়াছেল বে ১০২০ খুটানে ফ্রান্সিয়ান্ খুটায় সম্প্রামান করিয়া গিয়াছেল বে ১০২০ খুটানে ফ্রান্সিয়ান্ খুটায় সম্প্রামান হত্তে জীবন করিয়া বিভিন্নে সমাধিছ করিয়ার পর মুন্লমান-হত্তে জীবন উৎসর্গ করিয়াছিলেন। খ্রেরিক অনেশে প্রভ্যাগরনকালে করিয়া সেই সকল খুটান সাধুগণের অহি করিয়া গৈর

ভিলেন। তিনি কিছুকাল পরে ভারতে ফিরিয়া আদেন এবং

তুট সহচর লইয়া বসইবীপেই কাল যাপন করেন, মুসলমান
কাজিগণ এসমরে বিশ্বীন্দারিগ্রেই উপর কিরপে অত্যাচার করিত,
তাহা ওদেরিক লিপিবছ করিয়া গিয়াছেন। বিশপ জেরোনিমো

ওজারিও (Jeronimo ozrio) লিখিয়া গিয়াছেন যে সেই
সকল ফ্রান্সিছান সাধুগণ করঞ্জনীপে এক স্বর্হৎ পৃষ্টমন্দার প্রতিষ্ঠা
কবিয়াছিলেন। লেওনার্দো পাএস্ (Leonardo Paes)
নামক খুন্টান লেখকের বর্ণনা হইতেও জানা যার যে, করঞ্জনীপে
নীল পাণরে গাঠিত কুমারী মেরির একটি স্কলরমুন্তি ছিল,
পাঙ্গুণীজেরা তাহাকে "Nossa Senhor da Pensa" বলিত,
পারে পাঙ্গুণীজ অধিকারকালে করঞ্জনীপ উক্ত পাঙ্গুণীজ নামেই
আগাতে হইয়াছিল।

১৫০৯ খুইান্দে পর্জ্ব বিধকগণ বসই উপকৃষ্টে দেখা দিখেন। ইহার ১৭শ বর্ষ পরে এখানে পর্জ্ব করিলের। বাণিজ্ঞা পুঠীর পত্তন করিলেন। ছআঠে বর্ষোনার বিবরণীতে প্রকাশ যে, তৎকালে বসই সহর গুজরাতের মুসলমান নূপতির অধিকার কুক একটি বাণিজ্ঞাকেন্দ্র বিশ্বরা গণা ছিল। এখানে নানা দেশ বিদেশ হইতে জাহাজ জ্বাসিয়া লাগিত। মলবার উপকৃল ১ইতে পদির, নারিকেল ও নানা প্রকার গরম মসলা এখানে জামদানী হইত।

১৫০০ গৃষ্টান্দে পর্কুগীজেরা বসইদ্বীপে নামিয়া খ্রীস্থান ও কল্যাণ আক্রমণ করিয়া কর আদায় করেন। তাহাতে গুর্জরপতি বাহাত্র শাহের সহিত তাহাদের বিবাদ বাঁধে। বাহাত্র শাহ নানা কারণে অস্থবিধা দেখিয়া সন্ধি করিতে বাধা হন, তাহাতে পত্তুগীজেরা মুম্বই, মহিম্, খ্রীউ, দমন, চেউল ও বসই লাভ করেন এবং হুগাদি নিশ্মাণ এবং আর্বসমূদ্যত বাণিজ্যগুদ্ধ আদায়ের অধিকার পাইলোন।

১৫৩৬ খুষ্টাব্দে প্রনো-দা কুন্ছা বসইন্ধীপের দক্ষিণাংশে একটি তর্গ নির্মাণ কবিয়া তাঁহার প্রালক গার্সিরা ডিসা'কে তর্গের অধ্যক্ষ করিলেন। জোয়াওঁ ডি কাষ্ট্রোর মৃত্যুর পর উক্ত তর্গাধাক্ষই ১৫৪৮ খুষ্টাব্দে ভারতীয় পর্কুণীজ অধিকারের গবর্ণর হইয়াছিলেন।

পর্ক গীঞ্চদিগের লিশিত বিবরণী হইতে জানা যার যে বসই ত্র্যা স্থান্ত প্রস্তারপ্রাচীরপরিবেটিত, ১১টা উচ্চ বুরুজ শোভিত, তাহাতে ১০টি কামান সংযোজিত ছিল। এছাড়া এই দ্বীপের মধ্যে আর যে সকল ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গড় ছিল, তাহাতে ১২৭টি কামান থাকিত। এথানকার বন্দর রক্ষা করিবার জন্ম ২১টি কামানবাটা সমুদ্রপোত নিয়ত প্রস্তাত থাকিত, এক একখানি পোতে ১৬ হইতে ১৮ টা প্রয়ন্ত্র কামান লইত।

পর্ত্ত গীজ অধিকারেও বসই বিশেষ সমৃদ্ধিশালী ও শ্রেষ্ঠ ধনী বণিকগণের আবাস বলিয়া গণ্য ছিল। তৎকালে এখানে যে সকল বিদেশী প্র্যাটক ও লেখক উপস্থিত হইয়াছিলেন, তাঁহা-দের বর্ণনায় জানিতে পারি যে এখানকার রাস্তা ঘাট প্রশন্ত. বিপণিতে অত্যাচ্চ অট্টালিকা, নগরের উপকর্ষে উৎক্লপ্ত আম্র, তাল, ইকু প্রভৃতির বিস্তৃত উত্থান ও গ্রামসমূহের চারিপার্বে নানা-বিধ শহুকেত্র ছিল। খুষ্টান্ক মুসলমান ও হিন্দু এই ত্রিবিধ প্রজা-গণের যত্নে এখানকার কৃষিকাগ্য সম্পন্ন হইত। গৃহনির্দ্মাণোপযোগী উৎকৃষ্ট কড়ি কাঠ, ভক্তা, ও দানাদার পাথর উৎপন্ন হয়। স্থানীয় ও গোয়ার স্থবহৎ গীর্জা ও প্রাসাদগুলি এখানকার পাথকেই নিৰ্মিত। বৰ্ত্তমান সময়ে যেমন কুঁচ্কি ফুলিয়া শত শত লোক প্লেগে মারা যাইতেছে, খুষ্টীয় ১৭শ শতাব্দের শেষভাগেও বসইদ্বীপে সেইরূপ প্রেগ দেখা দিয়াছিল, তাহাতে আরু সময়ের মধ্যে বসই-সহর এককালে প্রায় জনশৃশু হইয়াছিল।* তৎপরে পুনরায় জনসমাগম হইলেও নগরের উত্তর ভাগ (সমস্ত নগরের প্রায় একতৃতীয়াংশ) বছকাল পরিতাক্ত ছিল।

পর্ত্ত গীজদিগের আধিপত্যবৃদ্ধির সহিত খুষ্টানধর্ম্মের গোঁডামীও যথেষ্ট বৃদ্ধি হয়। খুষ্টান ভিন্ন আর সকলকেই তাঁহারা অতি ঘুলার চক্ষে দেখিতেন। খুষ্টানদিগের মধ্যেও যাঁহার। ভাঁহাদের ধর্মাত্ববর্তী হইয়া না চলিতেন, তাঁহাদিগকে কারাক্ত্র করিয়া বিশেষ কণ্ট দিত। বসই কারাগারে এরূপ বচ্ন খন্তান ও অখন্তানকে নিয়তই নিগ্রহ ভোগ করিতে হইত। ক্রমে এখনকার শাসন-কর্ত্তা নিয়ম করিয়া দিলেন যে খুষ্টান ভিন্ন আর কেহই সহরে বাস করিতে পারিবে না, সম্ভান্ত হিন্দু মুসলমানেরও আর প্রবেশাধিকার থাকিল না। এমন কি খুষ্টান ভিন্ন আর কাহারও সহিত পর্কুগীজের জমি জমার বন্দোবস্ত ঋণ আদান প্রদান বা কোন প্রকার বৈষয়িক বা রাজনৈতিক কোন কার্য্য করিতে পারিত না। কি হিন্দু কি মুসলমান যাহাকে স্পবিধা পাইত, বলপূর্বক ধরিয়া আনিয়া খুষ্টান করা হইত, খুষ্টানের আচারবিধি পালন না করিলে আবার সাজা নেওয়া হইত। অধিবাসীরা এইরূপে উত্তাক্ত হইরা দিলীশবের নিকট অভিযোগ করিল। দিল্লীখর পর্ত্ত্রীজদিগকে শাসন করিবার জন্ত মহারাষ্ট্র-দিগের উপর ভার দিলেন।

Churchhill's Voyages, Vol. iv, p. 191.

⁺ ডাজার গেমিরি কাবেরি ১৯৯৫ খুইাখে ঘনই গর্পন করিয়া লিখিয়া লিখাছেন—"the contagious and pestilential disease carozzo that used to infect all the cities of northern coast. It is exactly like a bubo, and so violent that it not only takes away all names of preparing for a good end, but a few hours depopulates whole cities."

মরাঠাসৈত্ত প্রথমে অর্ণলনদীর পরপারে অবস্থিত একটা কুদ্র इर्ग अधिकात कतिया विश्व । এই সময়ে नुहे-छि-वटिनहा वान-সেটীর শাসনকর্ত্তা, তিনি করঞ্জরক্ষায়, কাপ্তেন পেরিরা বদই তুর্গরক্ষায়, এবং কাপ্তেন কেরাজ বলোরা সেনাবাদ-রক্ষায় নিযুক্ত হইলেন। এদিকে ভোন্সেরা গোয়া আক্রমণ করিলেন। মহারাষ্ট্রদেনাপতি চিমনাজি অপ্লা বহু সৈতা লইয়া ছুর্গভেদ করিয়া পর্ত্ত, গীজদিগের সহিত সম্মুথ যুদ্ধে অগ্রদার হইলেন। অপরদিকে মরাঠাসৈত্র যাল্সেটী অববোধ করিয়া বরসোবা ও ধারাবি দ্বীপ मथन कतिया वनदेत शृक्ताः (नत्र थाड़ी आहेकादेशा विनन, काटकहे বাহির হইতে পর্ত্ত গীজদিগের সাহাযোর আশাও দূর হইল। ১৭০৯ খুষ্টাব্দে ১৭ই ফেব্রুয়ারী মরাঠাদৈত বসই তুর্গ অবরোধ করে, তিন মাসের অধিককাল অবরোধের পর পর্ত্থীব্দেরা আত্মসমর্থন করিতে বাধ্য হইল। সেই পরাজয়ের সহিত এথান-কার পর্ত্তগীজনিগের গোরবস্থা অন্তমিত হইল, অষ্টাহের মধ্যে পর্ত্তুগীজেরা হাহাধনজন লইয়া চিরদিনের জ্ঞা সাধের বসই পরিত্যাগ করিল।

বসই মরাঠাদিগের হস্তগত হইলেও এথানকার রাজধানীর সৌল্পা নই হয় নাই, অল দিন মণ্ডেই একজন 'স্বৃত্তা' নিস্কাহলৈন, বাণকোট নদী হইতে দমন পায়ন্ত ঠাহার শাসনাবীন হইল। এ সময়ে বসই নগরে সন্ধান্ত হিল্পুর বাস ছিল না, এখানকার অধিকাংশ অধিবাসীই পর্ভূগীজনিগ্রহ্ডয়ে খৃইধর্ম গ্রহণ করিতে বাধ্য হইয়াছিল। পেশবা মাধবরাও তাহাদিগকে প্ররায় হিল্পুমাজে তুলিয়া লইবার জন্ম কএকজন রাক্ষণ নিম্কাকরিয়া দিলেন। সেই সকল ব্রাক্ষণেব ভ্রণপোষণেব জন্ম এক কর নির্দ্ধারণ করেন। বলিতে কি পেশবার এই সহলম্ভায় বছ জাতিচ্যুত হিল্পু প্রায়শিত করিয়া আবার হিল্পুমাজে স্থান পাইল। ক্রমে ক্রমে মহারাষ্ট্র ও গুর্জার হইতেও বছ সন্ধান্ত আসিয়া এপানে বসতি করিল, তন্মধ্যে প্রভূকাম্পুগণ্ট প্রনাম্য এপানে বসতি করিল, তন্মধ্যে প্রভূকাম্পুগণ্ট প্রধান। অভাবণি বসত সহরে প্রভূকায়্ত্রণাই ধনে জনে শ্রেষ্ট।

বর্ত্তমান বসই সহর বাজিরাওর নামান্তসারে বাজিপুর নামে থাতে এবং সমস্ত বসই জেলা ১৬১টী মৌজায় বিভক্ত, ইহার মধ্যে ৪ খানি ইনাম্। এই সকল মৌজা গ্রামের মধ্যে থানিবড়েমে একটী ছোট বন্দর, দক্ষিণপূর্কে মাণিকপুর মহলে রেলওয়ে ষ্টেসন, উত্তরে অঘনাসি বা অগাসি মহাল, সয়বনে প্রসিদ্ধ তর্গ, শৈলমর তুলারিতে প্রসিদ্ধ তুলাবেধরের মন্দির, নির্মাণে প্রসিদ্ধ বিমলেধরতীর্থ, শূর্ণারকে বা স্থপারে প্রাচীন তীর্থ ও প্রসিদ্ধ বন্দর, এবং বাজীপুরের নিকটবর্ত্তী, পাপরি গ্রামে বছ সংখ্যক চিৎপাবন, করাত ও দেশস্থ ব্রাহ্মণ এবং পলশা, সোণার প্রভৃতি অপরাপর নিম্ব শ্রেণীর বাস আছে। বার্থিক রাজত্ব আদার প্রায় ১৮০৩০ টাকা।

১৭৮০ খুরীকে ইংরাজ সেনাপতি গড়ার্ড ১২ দিন অবরোধের পর বসই অধিকার করেন, তৎপরে ১৭৮২ খুরীজে সরুবাইর সন্ধি অনুসারে ইউইজিয়া কোম্পানী মরাঠাদিগকে এই স্থান ছাড়িয়া দেন। অবশেবে ১৮১৮ খুরীজে পেশবাকে পদ্যুত করিয়া তাঁছার অপরাপর অধিকারের সহিত বসইদ্বীপও বোদাই-প্রেসিডেন্দীর সামিল হইল।

১৮৪০ খুইান্সে বসইর পার্ধবন্তী কল্যাণ-থাড়ীতে বাধ প্রস্কুটের জন্ম কোট অব্ ডিরেক্টার আদেশ করেন। এই বাধ হওয়ায় সমুদ্রের জল আর উঠিতে পারে না, তাহাতে অনেক জমি উদ্ধার হইয়াছে। ১৮৭২ খুইান্সে রেলওয়ে কোম্পানি একটা স্তুল্চ্ লোহ-সেতু নির্দাণ করিয়া বসইকে বোদাইর সহিত সংযোজিত করিয়াছেন। মহারাষ্ট্র অধিকারে আসিলে এথানকার বচ প্রাচীন হিন্দুতীর্থ যেমন উদ্ধার হইয়াছিল, সেইরূপ বছ পর্তুণীজ কীর্ষি নই হইয়াছিল, তন্মধ্যে ১০টি প্রাচীন শীর্জা খুইান পালী-দিগের যত্ত্বে পুনরুদ্ধার বা পুনঃসংক্ষার হইয়াছে; ঐ সকল গীর্জার কার্ক্কার্যা ও শিল্লনৈপ্রণ্য দেখিবার জিনিস।

ভিলো-জো-কোটো লিথিয়াছেন যে, পর্জুগীজেরা বসই অধিকার করিয়া এথনকার প্রসিক্ত মন্দির (এলিফান্টা) ধ্বংস করিতে যান। তাঁহারা মন্দিরের সিংহয়ারে একথানি স্থাক্ত প্রস্তরে লিপি গোদিত দেখিনে পান। সেথানে উঠাইয়া আনিয়া পর্কুগীজ গবর্ণর এথানকার হিন্দুমসলমানের স্থারা পাঠোজারের চেন্টা করেন। কিন্তু কেন্টই পাঠোজার করিতে না পারায় তিনি পর্কুগালরাজের নিকট পাঠাইয়া দেন। পর্কুগীজপতি ডি জোমাঁও (৩য়) পাঠোজার করাইবার জন্ম সাধ্য মন্ত যত্ন করেন। তাঁহার চেন্টা বিফল হয়। অবশেষে ১৭৯৫ গুলাকে জ্রেম্ মর্ফি (একজন স্থপতি) তাঁহার পর্কুগাল-লমণ প্রস্তুকে জিলাকলকের প্রতিক্রতি প্রকাশ করেন। সম্প্রতি ঐ প্রতিক্রতির পাঠোজারের সঙ্গে উহা সংস্কৃতলিপি এবং এগানকার দেব ও হিন্দুরাজের প্রশন্তি বিলয়া জানা গিয়াছে। বর্জমানকালেও বসই অতি উর্ক্রর ও শস্যশালী ভূভাগ বলিয়া পরিগণিত। এখানে ইক্ত্র, কদলী ধান্ত ও তাত্বলের যথেই চার আছে।

স্বাস্থ্যকর স্থান ভাবিরা অনেকেই এপানে বাযুপরিবর্ত্তনের ক্ষয় গিয়া থাকেন। ◆

Periplus Maris Erythræi; Hudson, Geog. Vol I. 30, Hist du Christianisme des Indes, by V La Croze, Vol I. p. 40-50, Linschoten, Voyages into the East and West India, Boke I. ch 44 Brigg's Ferishta, vol I p. 30I-304; Travels of Marco Polo; P. Francisco de

[🚁] নিয়লিখিত গ্রন্থে বস্ট্ শ্বীপের পরিচয় ও ইতিহাস পাওয়া বাইছে ---

ব্স (পারসী) এই পর্যান্ত। লেব। আরু না। र्वम् ((५१) व) व बे ब्रुंग् । प्रधीन । বস্থ (দেশৰ) বাস্বাটী। ° বস্তবাটা (দেশজ) বাছভিটা। বস্তি (রী) বস নিবাদে ভাষাধিকরণে অভি। (বহিবভ-র্ত্তিভাশ্চিৎ। উল্ ৪।৬০) ১ বাস। "গ্ৰামীণৈত্ৰ জভো জনভ বস্তিপ্ৰ (মে নিবিদ্ধা বধা" (অমকূপ° ১১) ২ যামিনী। ৩ নিকেজন। "রজনীতিমিরাব গুপিতে পুরমার্গে ঘনশব্দবিক্লবা:। বসতিং প্রিয়। কামিনাং প্রিয়াম্বনতে প্রাপয়িত্বং ক ঈশর:"। (कुमात 81>>) 8 टिबनमर्छ। ৫ खनशूर्न ७ क्येंग्रेनिका-পরিলোভিত দ্বান। ইহার অপ্রংশে "বন্তি" শন্দ হইরাছে। বসতিদ্রেম (পুং) বৃক্ষভেদ। বস্তী (জী) বসতি কৃদিকারাদিতি ভীষ্। ১ বাস। ২ বামিনী। ০ নিকেতন। (মেদিনী) বস্কীবরী (রী) সোম প্রস্তুত কালে ব্যবহার্যা পানীয়ভেন। বসন (রী) বস্ততে আচ্ছাম্বতেহনেনেতি বস-লাটু। > বস্ত্র। "বহুসি বপুষি বিশদে বসনং জলদাডং। হলুহুতি ভীতিমিলিত- যম্নাভম।" (শীতগোবিন্দ ১!১২) বসনমিতি বস-ভাবে ল্যাট। ২ ছাদন। (মেদিনী) বস-আধারে লাট্। ৩ নিবাদ। "মৌনার স মুনির্ভাতি লাবণ্যরসনামুনি:। স্বলক্ষণন্ত যো বেদ স মূনি: শ্ৰেষ্ঠ উচ্যতে ॥" (মহাভা° ১।৪৩।৬০) ৪ স্ত্রীক্টীভূষণ। (শব্দরত্বা) বসন (রী) তেজপত্র। (রাজনি॰) দ্রিয়াং ভীপ । ২ পীত-কার্পাস। (বৈশ্বকনি•)

Souza, Oriente conquistado; Faria y Souza, tome I. pt iv 2; Tuhfatul Muzahidin, p. 136-7; J. S. Lafitian Hist Dis. Decouvet cong. de Port, Vol ii. p. 215. Dict. Hist. Exp. art. Bacaim (Goa edition) p. 10; Chonista de Tissuary, Vol iii, p. 250-58, Decada Vii, liv. iii cap x-xi, James Murphy's Travels in Portugal (1795); Narracao de Inquisicao de Goa, p. 48, 187, Viagem de Francisco Pyrard, Vol ii p. 226-7; A Voyage round the World, by Dr. J Gemelli Careri; Capt. A. Hamilton's New Account of the East Indies, Vol. I. p. 180, J. Ovington's Voyage to Surat in the year 1669, p. 208-7, Senhor Aranches Garcia in Instituto Vasco da Gama, no 27, p. 66-67; Archivo Potuguez oriental. fasc. iii p. 106-288, Mrs Poston's Western India, vol 1. p. 183-4, Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, vol 1. p. 3-5 and vol. x. p. 316-317.

বসন্ময় (জি) ৰন্তৰয়। (লাটারন ৮/১১/২০)
বসনবং (জি) ৰদনশালী। বন্ত্রধারী।
বসনবীরপুর, বোঘাই প্রেসিডেলীর রেবাকাছা বিভাগের
সজ্জেড় মেবাসের অন্তর্ভুক্ত একটা কুছ সামত্তরাজ্য। এখানকার সন্দার দহিমা জিৎবাবা নামে পরিচিত। রাজস্ব ১০ হাজার
টাকা, তন্ত্রধ্যে বার্ধিক ৪৩২ টাকা ভিনি বড়োদার গাইকোবাড়কে কর দিরা থাকেল।
বসনসেবদা, বোঘাই প্রেসিডেলীর রেবাকাছা বিভাগের,

বসনসেবদা, ৰোখাই প্রেসিডেকীর বেবাকাছা বিভাগের সংশাজ্যেবাসের অন্তর্গত একটা কুজ সামস্ত রাজ্য। এখানকার সন্দারবংশ রাঠোর কাশ্বাবুনামে আব্যা। বার্ধিক ৫৭১০ টাকা বড়োদারাজকে কর দিতে হয়।

বসনা (স্ত্রী) বস-যুচ্-টাপ্। স্ত্রীকটীভূষণ।
'সারসনং সারশনং বসনা বশনা তথা।

ৰসনং বল্লনঞ্জি জীকটাভূষণে ভৰেৎ ॥' (শন্তব্যাবলী) বসনাৰ্গ (ক্লী) বসন ঋণ। কাপড় ধার। বসনার্শবা (ত্রী) সমুদ্রবসনা। সমুদ্রপরিবৃতা (মহী)।

"দৈত্যানাং কিল ধর্মজ পুরেরং বসনার্থবা।" (রামা° ৭।১১।২৬)
বসনার্হ (ত্রি) ১ বসনযোগ্য। (পুং) ২ গার্ছপত্য বা বাসকাদি
আচ্চাদক কৃষ্ণনাশক অগ্নি। (গ্রুক্ ১।১১২।৩) [বসার্ছন্ দেখ]
বস্নিয়া (দেশজ) বাসন্দা, অধিবাসী।

বসন্ত (পুং) বসন্তাত্র মদনোৎসবা ইতি বস-নচ্ (তুভুবার্হসি-ভাসিসাধিগড়িমগুলিনজিভাক। উণ্ ৩১২৮) ঋত্বিশেষ। মলমাসতকে উন্ধৃত ফাতিনির্দেশ এই যে, "মধুশ্চ মাধবশ্চ বসান্তিকবৃত্য়।" অর্থাৎ চৈত্র এবং বৈশাথ এই ছই মাস বসন্ত ঋতু। কেহ কেহ ফান্তন ও চৈত্র এই ছই মাসকে বসন্ত ঋতু বলিয়া উল্লেখ করেন।

ইহার পর্যায়—পূব্দসময়, স্থর্জি, মধু, মাধব, ফস্কু, ঋতুরাজ, পুশ্দমাস, শিকানন্দ, কান্ত ও কামদব।

"क्रमाः मभून्भाः मनिनः मभन्नः

जित्रः नकामाः शवनः स्गिकः।

ऋथाः अत्मावा मिवमाण्ड ब्रमाः

সর্কাং প্রিরে চাক্ষতরং বসস্তে॥" (ঋতুসংহার ৬।২)

শুধু ক্ষিবর্ণনার বা ক্ষি ক্রনার নর, সতা স্তাই বসন্তের ধর মধুর মোহন-মহিনার প্রকৃতির পরম রমণীয়তা প্রকট হইরা উঠে। পার্থিব জগতের যে দিকে তাকাও, বসন্তে সকলই অন্দর—সকলই রম্য—সকলই প্রিরদর্শন। এমন মানব মানবী নাই, এমন ক্ষীট পাওল নাই, এমন ছল-জল-চর জীব জন্ধ দেখি না, এমন ভক্লতাও দৃষ্টিগথে পড়ে না. বাহারা বসন্তস্মাগ্রে প্রহ্মপ্রকৃতার স্থিধ সোম্য মাধুরী মাধিরা, কি মেন কি এক

উন্ধাদনার কিছু-না-কিছু আত্মতৃত্তি বা আত্মপ্রসাদের হব শান্তি
দলিলে সিক্ত হইতে থাকে। বলিতে কি, বসন্ত প্রকৃতির এমনি
দাঁহিমা! চিররুগ্ধ, চিরন্তিগ্ধ, চিরবিধানমগ্রের মনে এ কালে
অন্ধ বিন্তর হাসির ভাব ভাসাইরা উঠার। বৃহক বৃবতীর ত
ক্থাই নাই, বাসন্তী প্রকৃতির প্রমোদপ্রবর্তনার অতি বড় বৃদ্ধ
ব্যক্তিকেও আত্মহারা করিরা তলে।

শীতের সে কঠোর স্পর্শ নাই। গ্রীমের প্রবরভারও পূর্ণ অধিকার অপ্রতিষ্ঠ। আকাশ ও দিও মণ্ডল প্রদর। দিবস নাতি-শীতোক। প্রদোধ পরম রমা। যামিনী প্রমোদিনী। উবা মধ্রহাসিনী। জল নির্মাল। তল ফুগম। তলে ভলপ্ল, ়ও জালে জালপদা প্রাফাটিত। চূতাভুর মুকুলিত। দ্রুমদল নবোদগত লিগ্ধ পশ্লবে উদ্থাদিত। বনস্থলী মধুকরনিকরের মধুর ঝন্ধারে মুধরিত। মলয়াগত স্থগন গন্ধবহ মশ মন্দ প্রবাহিত। স্লিগ্ধ-মধুর তরুলতাকুল নানাজাতীয় প্রচুরতর কুসুমভারে অবনত। কুসুমসমূহের সৌরভচ্ছটায় বন, উপবন, উপ্তান আমোদিত। লভার পাতায়, ফলে, ফুলে, মুকুলে বাসস্তী বনভূমি নবীন সাজে নবীন বেশে সদাই হাস্তময়ী। চল্লের হুয়প্লিয় জ্যোৎপ্লা, বিহঙ্গের কলকুজন, কোকিলের কাকলী, মলরের মৃত্যুন্দ হিলোল, কুস্তুমের সৌরভ, অশোকের শোক-হর স্বযুমা, দকলই এ কালে মন:প্রীণন। তাই ভারতের প্রাচীন কবিরা বসত্তে সকলই কান্ত, সকলই রম্য এবং সকলই कुम्ब दिन्द्रा दर्शन कतिशारहर ।

এই ভারতবর্ষই বদন্ত ঋতুর মাধুরী মহিমার পূর্ণ দীলাভূমি।
ভাই মদনোৎদব বা বদন্তোৎদবাদি বসন্ত ঋতুর অফুগুণ
অফুষ্ঠানাদি এই ভারতেই প্রথম প্রচলিত ছিল এবং কালের
বলে বিলম পাইয়াও দে উৎদব অফুষ্ঠানের দলীবতা এখনও
অনেক স্থানে বিরাজমান। [মদনমহোৎদব দেখ।]

বসন্তকালের অধিষ্ঠাতুদেবের উৎপত্তি সম্বত্তে পৌরাণিক উপাধ্যান এইরূপ—

বিধাতার আহ্বানে মন্ত্রথ আসিরা এক সমর তাঁহাকে বলিলেন, বিভো! আমি আপনার আদেশে ত্রিপ্রহর হরের মোহবিধানে সমর্থ। কিন্তু কামিনীই আমার মহান্ত। সেই মহান্ত্র
কামিনী আপনি স্পষ্ট করুন। আমি শস্তুকে সম্মোহিত করিলে,
সেই কামিনী তাঁহাকে পর পর আরও মুদ্ধ করিয়া রাখিবে।
স্পত্রাং হরসমোহনে একটা মনোহারিশী কামিনীর বিশেষ
প্রয়োজন। কিন্তু যত কামিনী আছে, তাহাদের মধ্যে হরনোহিনী কামিনী আমি দেখি না। স্পতরাং বিধাতঃ! এ কর্ত্তবা
সম্পাধনের ক্ষন্ত আপনাকেই কোন উপার বিধান করিতে
হইতেছে।

কলপের কথাবসানে, কি করিরা শক্তুকে সপ্রোহিত করা বাইবে, ইহা ভাবিরা চিত্তিরা বিধাতা ব্যাকুল হইলেন। চিত্তা করিতে করিতে তাঁহার একটা নির্মাস নির্মাত হইল। সেই নির্মাস হইতে কুস্থমসমূহ-ভূবিত বসন্তের উৎপত্তি হইল। চ্টতার্ক্র, চৃতকর্লিকা, প্রমন্নমালা এবং কিংশুক প্রভৃতি বসন্তের করে বিরাজিত। বলিতে কি, তথন বসন্ত একটা প্রকৃত্তর পান্ধপথৎ শোভিত হইল। বসন্তের আরুতি রক্তকোকনদ-নিত্ত, মর্মমন্থর প্রকৃত্তন-পদ্ধর্যথ স্থান্থল, মুথমণ্ডল সন্মোদিত পূর্ণ শশাক্ষের প্রায় সমূজ্বল, নাসিকা স্থান্ধর, কর্ণবিবর শল্প সর্গা, কেশকলাপ কুঞ্চিত ও প্রার্মণ, কর্ণের হইটা কুণ্ডল অন্তোম্থ অংশুনালীর স্তার সমূজ্বল এবং বক্ষংক্ত বিত্তীর্থ। এতদ্ভির তাহার গতি মন্ত মাড্রাস্থ ক্রের পিন কুল ও আরত, কর্ষয় কঠিনম্পর্ল, উর্ম্ব কটি এবং জ্বান এই ভিনটি স্থান স্থ্রত, গ্রীবা কর্মবং, ক্ল উরত, ক্রক্রনেশ গুড় এবং হাল্যনেশ শীন ও সর্কন্ম্লাকণে সম্পূর্ণ।

ঐরপ সম্পূর্ণ স্থাক্ষণ স্কুল্লারাক্সতি বসজের উত্তব হইবা মাত্র সৌরভময় বায় বহিতে লাগিল, জনমালি কুস্মতিত হইরা উঠিল, কলকণ্ঠ কোকিলেরা পঞ্চমে গান গাইতে লাগিল, সরোবরসমূহে অদ্ধ সলিল দৃষ্ট হইল এবং তাহাতে বহুপত শতদল মূটির। উঠিল। (কালিকাপু ৪ আঃ)

হরসমোহন বাপারে বসন্ত কন্মপের কিরপ সহারতা করিরাছিলেন, তৎসবদ্ধ উক্ত প্রাণের ৭ম অধ্যারে লিখিত আছে যে,
মদন যথন হরের থৈম্ছরণে উক্তত, তথন তাঁহার একান্তক্তৎ বসন্ত হরের আশ্রম ও আশ্রমের চারি দিকে কিংশুক,
কেতক, বক, প্রাগ, নাগকেশর, মাধবী, মরিকা, পর্ণসার ও
ক্রবক প্রভৃতি যতগুলি পূস্পপাদপ ছিল, তৎসমতই ফুটাইয়া
ভূলিল। বসন্তেম সহারতার সরোবরস্তলি ক্রপদের উদ্বানিত
হইল, মৃত্যুম্ম মল্যানিল বহিতে লাগিল, তাহাতে শহরের সমগ্র
আশ্রম প্রক্রমের হইয়া উঠিল, লতারাজি মৃত্যন মৃত্য ও
মৃত্য কলিকান্তরে সোহাগে চলিরা পড়িয়া পার্মন্থ পাদপশুলির গলা জড়াইয়া ধরিল; তথাকার স্থম, দির ও অক্তান্ত
ভাপসক্লের মন পরমানোদে পূর্ণ হইল; কিন্তু কঠোর সংযী
হরের মন তাহাতেও টলিল না। ইত্যাদি (কালিকাপুণ ৭জঃ)

বসন্তকালের কবিবর্ণনীর বিষয়গুলি এই বর্থা—
"স্করতৌ দোলা-কোকিলয়ারত-স্বাগতিতরদলোদ্ভিদা: ।
জাতীতরপুশ্চরান্ত্রমঞ্জরীত্রসরক্ষারা: ॥"

(কৰিকল্লনতা ১ গুৰুৰ)

বসন্তকালের গুণ--ক্ষার, সধুর ও কক্ষ। (রাজনি•) হেমন্তকালে ক্লেফ উপচিত ২ন, বসন্তকাল জাদিলে উত্ত প্রকৃপিত হইরা উঠে। একালে বারু একরপ প্রশমিত এইরাই বার।

"হেমন্তে চীরতে প্লেমা বয়তে চ প্রকুপ্যতি। প্রায়েণ প্রাথমং বাতি স্বর্মের সমীরণঃ ॥ শরৎকালে বসন্তে চ পিজং প্রার্ডুতৌ কক:"। (শার্ল ধর) হারীতসংহিতার বসব্তোপচারে সিথিত আছে,—এই বসস্ত-কালে প্রমৃদিত কোকিলকুলের কলকুলনে কানন মুধরিত হইয়া উঠে, কিংশুক কুসুমগুলি মদনাগমের হুচকরপে শোভা পার, ভ্ধরনিকর কুত্মেসৌরতে রঞ্জিত হইরা উঠে, মত মধু-করেরা মধুলোভে ছুটাছুটি করে, পণ্ড পক্ষী মানব সকল জীবই মদনবাণের বিষয়ীভূত হইয়া পড়ে, গুণযুত মৃদয় মাক্লত বহিতে থাকে, ফলে এই সমন্ত ৰূগৎটাই কেমন যেন এক প্রমোদে পূর্ণ হইরা উঠে। কিন্তু এই বসন্ত ঋতু কফবৰ্দ্ধক, স্নতরাং এই কালে কফপ্রকোপ উপশ্যের জন্ত ব্যনাদি ও কৃক্ষসেবন একান্ত প্রয়োজনীয়। এতন্তির আনন্দবছল বিবিধ স্থরতক্রীড়াজনিত পরিশ্রমও ক্রবারণের প্রধান । উপায়। ক্রের উপচয়ে কটু, ক্ষার ও অম দ্রব্য দেবা করা উচিত। এ কালের আর এক স্বাস্থ্যকর জিনিস-ব্যায়ামাদি নানাত্রপ শারীরিক পরিশ্রম।*

চরকের স্তর্থানে লিখিত আছে, হেমস্তকালে প্রেমা সঞ্চিত হয়, বসত্তে উহা দিনকর-করম্পর্লে কুপিত হইয়া পাচকারিকে দৃষিত করিয়া দেয়। এই জন্ম বসত্তে শ্লেমজন্ম বিবিধ ব্যাধি জিয়িবার সম্ভাবনা। স্থতয়াং এই সময় বমনাদি হারা শ্লেমনাশ করা উচিত। এই কালে লঘুপাক, রুক্ষবীর্য্য, কটু-তিক্তনক্ষায় লবণ রস্মৃত আরাদি; হরিণ, শশ, নাব ও চটক প্রভৃতি লঘুমাংস ও যব গোধুম এবং অভ্যন্ত হইলে দ্রাক্ষাঞ্জাত পুরাতন মন্তাদি পান এবং স্থানপান, আচমন ও পৌচাদি কার্য্যে স্থেসেরা ঈষত্ত্ব জল ব্যবহার করা কর্ত্তর। অগুরু-চন্দনাদি অন্তলেপন এবং পরিচ্ছদ ও শ্যাদি হেমস্তকালের স্থায় ব্যবহার্য। যুবতী ব্রীসন্তোগ ও কাননের রমণীয়তা উপভোগ এই কালে একান্ত প্রশন্ত। অন্তল্পন, দ্বিদ্ধ এবং আয় ও মধুর রস্মৃত দ্বরা ভোষান ও দিবানিলা প্রভৃতি বসস্তকালে অনিষ্ট্রনক।

"হেমন্তে নিচিতঃ শ্লেমা দিনকুডাভিরীরিতঃ।
কারাগ্রিং বাধতে রোগাংকতঃ প্রকুকতে বহুন্॥
তত্মাঘসন্তে কর্মাণি বমনাদীনি কাররেং।
শুর্করমিগ্রমধুরং দিবাত্মপ্রঞ্চ বর্জন্মেং॥
ব্যায়ামোছর্জনং ধূমং কবড়গ্রহমজ্জনম্।
স্থাত্মা শৌচবিধিং শীলরেং কুসুমাগমে।
চন্দনাশুরুদিগ্রালো যন্ত্গাধ্মভোজনং॥
শারভং শশমেণেরং মাংসং লাবকপিঞ্জলম্।
ভক্ষরেরিগদং সীধুং পিবেক্মাধ্বীক্ষেব বা।
বসন্তেহসুভবেং স্ত্রীণাং কামীনানাঞ্চ যৌবনম্॥"

(চরকস্ত্র • জ জ:)

এতত্তির স্ক্রান্ত বর্চ অধ্যায় এবং বাগ্ভট স্ক্রেস্থান তৃতীয় অধ্যায়েও বসস্তচর্যার বিষয় উল্লিখিত আছে। বাহুল্যভয়ে সে সকল এখানে উদ্ধৃত হইল না।

বসন্ত (পুং) > অতিসার। (শব্দরক্লা :) ২ ছয় রাগের অন্তর্গত ্রিতীয় রাগ। সঙ্গীতদামোদরে লিখিত আছে, রাগ ছয়টী এবং রাগিণী ত্রিশটী। পুর্ব্বোক্ত ছয় রাগের মধ্যে বসন্ত একটী। বধা—"রাগাঃ বড়েব তু প্রোক্তা রাগিণান্তিংশদেব তু।

ভৈরবোহথ বসস্তশ্চ নটনারায়ণস্তথা ॥" (সঙ্গীতদামোদর)
সঙ্গীতদর্পণের মতে পঞ্চবক্তু শিবের বামদেব নামক দ্বিতীয়
বক্তু হইতে এই রাগের উৎপত্তি হইয়াছিল।

"সভোবক্তান্ত, জীরাগো বামদেবাদ্দস্তক:।"

(সঙ্গীতদ০ রাগাধ্যায় ১০)

শ্রীরাগ, বসস্ত, ভৈরব, পঞ্চম, মেঘরাগ ও বৃহয়াট এই ছয়টী রাগ পুরুষপদ-বাচা। এই ছয় রাগের মধ্যে এক একটী রাগের অমুগামিনী ছয় ছয়টী রাগিণী আছে। বসস্ত রাগের অমুগামিনী ছয়টী রাগিণী য়থা,—দেশী দেবগিরী, [দেবকিরী] বৈরাটী,ভোড়িকা, ললিতা ও হিন্দোলা। এইরূপ অম্বাস্থা রাগেরও রাগিণী আছে। করিনাথ মতে বসস্তরাগের অমুগামিনী ছয় রাগিণীর নাম শ্বতক্ষ। যথা,—আছ্লী, গমকী, পঠমঞ্জরী, গোড়করী, ধামকলী ও দেবশাধা।

সঙ্গীতদামোদরে বসস্তরাগের অভুগামিনী মাত্র পাচট রাগিণীর উল্লেখ দেখা যার। যথা—

(সমীতদর্শন রাগাধ্যার ১০-১৫)

মুগিতকোহিলক্জিতকালনং মলনপ্তক কিংককশোভিতন ।
 ক্প্যস্থেরজালিত ধ্বরং কলিতমন্তনধ্রতলালসন্ ।
 য়করকেতনধাপুসমাকুলং মুগিতবেব সমন্তনিবং লগং ।
 মলরমালতকু গুলাবিতঃ কদকরো হি বসন্ত অকুর্তবেং ।
 কলকলোপবিমালনালনং বমনবামনক্রক্ষমিবেবণন্ ।
 বিবিধঃ ক্রতানক্ষঃ সংখ্রমঃ কলকালণঃ ।
 কট্কারালকাঃ সেবাাঃ শোধনং কলসভবে ।
 বালাম্যন্সংরোধ্যিয়ো বিশ্লাভ্যানসঃ ।
 এবং ক্রিল্মাল্যাণয়ো নরঃ ক্রিলং ক্র্বী তবেং ।
 বিবিতসং > ছান । জঃ)

 [&]quot;ইরাগোহণ বসভক তৈরব: প্রকর্ষণা ।
নবরাগো বৃহয়াট: বড়েতে পুরুষাহ্বরা: ।
কেন্দ্র বেবসিয়ী চৈব বৈয়াটা ভোড়িকা ভথা ।
লালিতা চাথ হিস্পোলী বসভস্য বয়াল্বা: ॥"

আন্দোলিতা চ দেশাখা লোলা প্রথমমঙ্করী। মন্দারী চেতি রাগিণ্যো বসম্ভত্ত সদাস্থগাঃ॥" (সঙ্গীতদামো•) এই বসস্ত রাগের ধ্যান যথা,—

"শিথপ্তিবর্ছোচ্চরবন্ধচ্ড: পৃঞ্চন্ পিকং চুতলভাঙ্কুরেণ।

শ্রমন্ মুদা বামমনোজ্ঞমূর্তির্পাতক্ষমন্ত: স বসস্তরাগ: ॥"
বসস্ত রাগের স্থরক্রম যথা—

"मा, त्रि, श, म, भ, ६, नि, म"।

এই রাগের গানের সময়সম্বন্ধে সঙ্গীতদামোদরে উক্ত হইয়াছে,—শ্রীপঞ্চমী হইতে আরম্ভ করিয়া হরির শরন পর্যান্ত যতকাল, উক্ত কালের মধ্যেই সঙ্গীততত্ত্ববিদেরা বসম্ভরাগ গান করিবার সময় নির্দ্ধারণ করিয়াছেন।

*শ্রীপঞ্চম্যা: সমারভ্য যাবৎ স্থাচ্ছয়নং হরে:।
তাবদ্বসন্তর্নাগস্থ গানমুক্তং মনী হিভি: ॥" (সঙ্গীতদামো॰)
সঙ্গীতদর্পণের মতে বসন্তান্থগামিনী রাগিণীর সহিত
বসন্তরাগ বসন্ত ঋতুতেই গেয়।

"বসস্তঃ সমহায়স্ত বসস্তর্কে) প্রগীয়তে।"

(मकी उपर्भन जांगशांग, २१)

দিবারাত্র মধ্যে বসস্তরাগে গান ধরিবার সময় প্রভাত হুইভেই আরস্ত।*

বসস্তরাগের আকার, তাল, লয়, স্থর-ক্রম ও সময়াদি সম্বন্ধে বাঙ্গালী-সঙ্গীতকবি রাধামোহন সেন দাস তৎকৃত সঙ্গীত-তরঙ্গ গ্রন্থে সংক্ষেপেযে বর্ণন করিয়াছেন, নিম্নে তাহা উদ্ধৃত হইল—

"নবহুৰ্জাদল জিনি বৰ্ণটো।
বালা পূৰ্ণভাবে-মুখচন্দ্ৰ ছটা।
শিথিপুছে শিরস্তাণ ক্ষপ্রকাশে।
শরীরের শোভা করে রক্তবাদে।
নানা পূশ্যমর ক্রতমাল্য-গলে।
উন্মন্ততা—যৌবন মজ-বলে।
কর দক্ষিণে আন্তের মঞ্ল রে।
পূগ-কর্প্র-ভাত্মল সব্যক্রে।
তাল-বাজ- সমন্বিত নৃত্য গান।
এ বসন্ত মাগিণীর বিজ্ঞমান।
দুমিদং দুমিনং ক্ষ্যুদক্ষ বাজে।

"মধুমাধবী চ দেলাখ্যা ভূপালী তৈরবী তথা।
 বেলাবলী চ মন্নামী বন্নারী মোমগুর্জনী ।
 ধনাত্রীর্কারত্বীক মেঘরাগক পঞ্মঃ।
 দেশকারী তৈরবক ললিভা চ বসপ্তক:।
 এতে রাগা: প্রশীরত্বে প্রাত্রারত্য নিতাল: ।"
 (স্লীত্দর্শন রাগাধ্যার ২০,২১)

বসস্ত (পুং) তালনিশেষ।

"ক্ষমদলগদ্ধমক্রদ্দ জিল্লমা:। রতিতালো বসস্তশ্চ কগজ্জাম্পোহথ গান্ধণি।" ইত্যাদি "বসস্ততালে কর্ত্তব্যো নগণো মগণতথা।

অগজ্ঞান্দে গুলু কৈচক। বিরম্যান্ত প্রথম (সলীত লামোদর)
বসন্ত (গুং) > গুরাণ ও নাটকোক্ত প্রসিদ্ধ ঋতুপতি দেবতাতেদ। ইনি কামদেব ও মদনের চির সহচব। বসন্তদেবেব
আগমনে ধরা বাসন্তিক মাধুরীমালায় পরিপ্লাবিত হইমা
হর্ষোৎ ফুল হইয়া থাকে। নবীন শ্রামল শক্তক্ষেত্রনিচয়
চূতমুকুসকলিকাকীণ নব কিশলরগুলি কোমল পত্রবলীর মধ্যে
নবীনরাগে রঞ্জিত হইয়া যেন তাঁহারই কুপার অপুর্ক্ষ প্রী ধারণ
করে। সেই বসস্তের প্রেবণার ধরাবাসী বসন্তকালের মাহাত্ম্য
অসুত্রব করিয়া থাকে।

২ ব্যোগভেদ (Small pox)। [মক্রিকা দেখ।]
বসস্তক (পুং) বসন্ত সংজ্ঞায়াং কন্। ১ পৃথ্-শিদ, ভোনাক
বিশেষ। (রাজনি॰) ২ কথাসরিংসাগর-বর্ণিত ক্ষমধানের
নশ্বস্থাদের পুত্র।

"স্প্রতীকন্ত পুত্রক রুমধানিত্যজারত। যোহত নর্মাস্থরৎ তত্ত পুত্রোহজনি বসস্তব্দঃ॥"

(কথাসরিৎসা• ৯।৪৪)

বসস্তকরল (দেশজ) পক্ষিবিশেষ।
বসস্তকাল (গং) বসহ: কাল: কর্মধা। বসত ঋতু,
বসন্তসময়। "বসন্তকালে কিল বৌ-কথাক"। (উভট)
বসন্তকুসুম (গং) বসন্তে কুসুমং বছা। বৃক্ষবিশেষ।
"বসন্তকুসুম: সেলু: শায়িতো ছিক্কুৎসিত:।" (শক্ষা))

वमस्त्रकृष्ट्याकद्र (११) वृष्टितियः।

বর্সন্তকু সুকাকর, ভ্রথধবিশের। প্রস্তুত করিবার প্রণালী—
প্রবাল, রসসিন্দ্র, মৃক্তা, অন্তি, প্রত্যেক ৪ তাগ, লোহ, সীসা,
বঙ্গপ্রত্যেক ০ তাগ এই সমুদার একতা করিয়া বাসক, হরিদ্রা,
ইক্ল, পল্ল, চন্দন ও কললীমূলের স্বসে, ছত্তে এবং মৃগনাভির
কাথে যথাক্রমে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ
বাটকা করিবে। দোবালুসারে অনুপান ব্যবক্ষে। ইহা সেবন
করিলে বিবিধ রোগের শান্তি হন।

বসন্তকু সুমাকর রস, > কালাদিকারে ঔষধ ভেন। প্রস্ততপ্রণালী — স্বর্ণ হ ভাগ, রৌপা ২ ভাগ, (রৌপোর পরিবর্তে কেছ
কেছ কর্পূর বাবহার করেন) বন্ধ, সীনা, লৌছ প্রত্যেক ৩ ভাগ,
প্রান, প্রবাল, মুক্তা প্রত্যেক ৪ ভাগ। এই সমুদার একত্র মাড়িয়া
যথাক্রমে গবাড়্ম, ইকুরদ, বাকদছালের রদ, লাক্ষার কাথ,
বালার কাথ, কদলীমূলের রদ, মোচার রদ, পল্মের রদ,
মালতীক্লের রদ ও মৃগনাভি এই সমুদার ত্রব্য ঘারা ভাবনা
দিয়া হ রতি প্রমাণ বাটকা প্রস্তুত্ত করিবে। অন্থপান হত,
ভিনি ও মধু। ইছা মেছ রোগের অতি উৎকৃষ্ট ঔষধ। ইছাতে
অক্যান্স অনেক রোগেরও উপশম হইরা থাকে। চিনি ও
চন্দানের সহিত সেবন করিলে অম্লণিত্ত প্রভৃতি বিবিধ পীড়াব

২ দোমরোগাধিকারে ঔষধভেদ। প্রস্তুতপ্রণালী;—বৈক্রান্ত ১ ভাগ, বর্গ, অন্ত, মুক্তা, প্রবাল প্রত্যেক ২ ভাগ, বঙ্গ ৩ ভাগ, রঙ্গনিস্থার ৪ ভাগ এই সমুদার গোড়ানেবুর রঙ্গে, গাবাহুধে, বেণারমূলের কাথে, বাসকছাল ও ইক্ষুর রঙ্গে ৭ বার ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। মধু সহ সেবা। ইহা ভারা সোমরোগ, বহুমুত্র, প্রমেহ, ভূষণা, দাহ এবং অভ্যান্ত বিবিধ রোগ প্রশমিত ও বল বীর্ঘা রুদ্ধি হয়। ইহা উৎকৃষ্ট রঙ্গায়ন ঔষধ।

বসন্তগড়, দান্দিণাত্যের বোখাইপ্রেসিডেন্সীর অন্তগত একটা প্রাচীন হর্গ। প্রবাদ ১১৯২ খুটান্দে পনালারাক্সবংশের একজন রাজা কর্তৃক উহা প্রতিষ্ঠিত হর। পরে মহারাষ্ট্রীর অভ্যাদরে উহা লিবালী মহারাজের অধিকারভুক্ত হইরাছিল। ১৬৯৮ খুটান্দে রাজারামের নিকট হইতে মোগলস্মাট্ অরক্তেবে তিনদিন অব-রোধের পর এই হুর্গ অধিকার করিয়া লন। বহুকাল হইতে এই হুর্গ হুর্ভেজ বলিরা খ্যাত ছিল। স্মাট্ হুর্গজ্মের পর উহার নাম "কুলীদ্-ই-কডে" রাখেন।

বসন্তুগদ্ধিন্ (পুং) বৃদ্ধেন্দ। (গলিতদিতর) বসন্তগরল (দেশন) পন্দিভেদ। বসন্তকাল। বসন্তব্যারী (দেশন) মবদ ও রুফবর্ণের ক্ষুদ্র নাতার পন্দিবিশেষ।

বসস্তদোষিন্ (বি) বসংৰ বসন্তলালে বোৰতি বিরোজি, বৰা, বসন্তং বোৰয়তি বিজ্ঞাপয়তীতি বসন্ত-খুব-পিনি। কোকিল। এই অর্থ সর্কাবাদি-সন্মত নয়। কেছ কেছ এই অর্থের পক্ষপাতী। বসন্তক্ত (বি) বসন্তে ভারতে ইতি জন-ড। বসন্তক্তা (বী) > বাসন্তী লতা। ২ তক্ত বুপিকা। ৩ বাসন্তীবৃক্ষ। চলিত ছোট বাসক। (রাজনি•)

 ৪ চৈত্রমাসের প্রারম্ভে বসস্তের উলোধনভোতক কামদেবের পূজারপ উৎস্বায়্টানভেদ।

বসস্ততিলক (क्री) বসস্তত তিলক্ষিব। > পুলাবিশেষ।

১ চতুর্দশাকরপাদযুত ছল্পোবিশেষ। এই ছল্পের ছল্পোমঞ্জরীনির্দিষ্ট গণ, যথা—ত, ভ, জা, জ, গৌ, গ।

"ক্রেয়ং বসস্ততিলকং ত-ভ-জা-জ-গৌ-গঃ।" (ছল্পোমঞ্জরী) উদাহরণ—

"কুল্লং বসম্ভতিলকং তিলকং বনাল্যা: লীলাপরং পিককুলং কলমত্র রৌতি। বাত্যেষ পুষ্পস্থরভিন্মলাদ্রিবাতো যাতো হরি: স মধ্রাং বিধিনা হতা: ম্ম: ॥" (ছম্পোম•) বসস্ততিলক (পুং) ঔষধবিশেষ। এই ঔষধ শুদক্ষরোগে প্রযুক্ষ্য।

> চূর্ণং করম্বদহিতং মধিতেন শীতং। নৈবং প্ররোহতি পুনগুদলং করেতো-তুমে বসন্তুতিদকৈরশি করকরম্॥" (বৃত্তরত্বাবলী)

"चन्त्रात्रलुम्हनरेनक्वविश्वनकः-

২ অন্তবিধ ঔষধ। এই ঔষধ কাস খাস প্রাভৃতি কভিপর রোগে প্রযুক্তা। ইহার প্রস্ততপ্রণালী;— বর্ণ এক ভোলা, আদ্র ২ ভোলা, লৌহ ও ভোলা, বঙ্গ ২ ভোলা, পারদ, গছক, মুকা, প্রবান প্রভ্যেকে ৪ ভোলা লইরা পরে গোক্ষর, বাসক ও ইক্ষরসে ভাবনা দিরা বন্ধহন্তীর ঘূঁটের অ্যিতে সাতবার পুটপাক করিরা কন্তুরী ও কপুর মিশ্রিত করিবে। ইহাতে কাস, খাস, বাভ, পিন্ত, কফ, ক্ষর, শূল, পাপু, গ্রহণী,বিংশতি প্রকার প্রমেহ, বিষ, ক্রোগ ও অর প্রভৃতি রোগ নই হয়। এই ঔবধ ব্রা, বলকর ও শ্রেষ্ঠ পৃষ্টিকর, ইহা মৃত্যুক্তর্কৃত্ক ক্ষিত।

 বসস্ত তিলক তন্ত্র (ফী) তত্রগ্রন্থ তিল ।
বসস্ত তিলক বস, কাসরোগের ঔবধডেছ। প্রস্ত প্রণালী—
বর্ণ > তোলা, অত্র ২ তোলা, লোহ ও তোলা, পারদ ৪ তোলা,
গারক ৪ তোলা, বল ২ তোলা, মুক্তা ৪ তোলা, প্রবাল ৪ তোলা
এই মনুষার দ্রব্য গোকুর, বাসক ও ইক্সরদে মর্দন করিয়া
বন্ধুবায় বিলপুটয়ার অয়িতে বালুকাষত্রে ৭ প্রহর পাক
করিবে। পরে ঔবধ উন্ত করিয়া তাহার সহিত মৃগনাভি
৪ ভোলা ও কর্পুর ৪ ভোলা মিপ্রিত করিয়া মাড়িয়া লইবে।
ইহা কাস ও ক্ররোগের মহোবধ। ধাত্রা ২ রভি।

বস্তদৃত (পুং)বদভঞ্ছত ইব। ১ আনত্রক। ২ কোকিল। ৬ পঞ্চন রাগ। (বিখ)

• বসস্তদুতী (ত্রী) বসস্তম্ভ দৃতীব। পাটলীর্ক্ষ, চলিত পারুল গাছ। (রাজনি°) "পাটলা বসস্তদৃতী" (ডবণ) ২ পুন্দর্ক-বিশেষ। কোজণে এই বৃক্ষ গণিকারী নামে প্রসিদ্ধ। ও কোকিলা। ৪ মাধবীলতা। (রাজনি°)

বসস্তদেব, এক জন প্রাচীন কবি।

বসন্তন্ত্রে (পুং) বদন্তত্ত ক্রব্ ক:। আমর্ক। (শব্দানা)
বসন্তপঞ্চমী (প্রী) বদন্তত্ত ক্রব্ ক:। আমর্ক। (শব্দানা)
বসন্তপঞ্চমী (প্রী) বদন্তত্ত পঞ্চমী। শ্রীপঞ্চমী। মংজ্পত্তের
পক্ষ-পঞ্চাশৎ পটনে লিখিত আছে, প্র্যা মকররাশিস্থ হইলে
শুক্রপক্ষীয় পঞ্চমীতে লন্ধীদহ জগদ্ধাঞ্জীকে স্থান করাইয়া পূজা
করিতে হয়। এই নানক্রিরা প্রভাতে মরকতময় কুন্তে নদীজল
বারা সমাধা করিবে। এই বদন্তপঞ্চমী সর্ক্ষপাপনাশিনী। এই
দিনে বসন্তকে এবং রতিসহ কন্দর্পকেও পূজা করা কর্তবা।
তন্তিয় এই দিনে বসন্তরাপ্রের গান শুনিলে অভীপ্র শ্রীলাভ
হইয়া থাকে। কোন কোন মুনি এই বসন্তপঞ্চমীকে শ্রীপঞ্চমী
নামে অভিহিত করিয়াছেন। যাহা হউক, এই দিনে একাহারী
থাকা কর্তব্য। ইহাতে লন্ধী সর্ক্ষাই প্রসরা থাকেন।

"মকরন্তে সহস্রাংশৌ শুরুপকে বশবিনি।
ইত্যারত্য-—"পঞ্চমাঞ্চ জগন্ধাত্রীং প্রাত্তরের নদীজলৈঃ ॥
রাপরিতা সদলীকাং কুন্তৈর্মারকতৈরপি।
বসন্তপঞ্চমী নাম সর্ব্ধপাপপ্রমোচনী ॥
বসন্তঞ্চ সমত্যর্জ্য কন্দর্পং সরতিং প্রিয়ে।
বসন্তর্মাপ্রবর্গাৎ প্রিয়মপ্রোত্যতীব্দিতাম্ ॥
শ্রীপঞ্চমীত্ত কেচিত্তাং মূনত্বঃ প্রবন্ধত্তি বৈ।
বর্জেদেকভক্তেন শ্রিয়ো ন বিচ্যুতির্জবেং ॥"

(মংক্তস্তুর ৫৫ পটন)

হরিভজিবিলানে লিখিত আছে, মাঘমানের গুরুপক্ষীর পক্ষমীর দিন মহাপুকা করিতে হর। এই পুকার বিশেষত এই বে, ইহাতে নব প্রবাল, নব কুমুষ ও নানা অকুলেপনদান একান্ত আবশুক। এতত্তির বিশেষ সমারোহে নীরান্তনা, ভুক্তি-ভরে বৈক্ষবদিগকে সন্থাননা এবং বসন্তরাগময় সদীত ও নৃত্যাদি করিবে। কথিত আছে,— শ্রীপঞ্চমী ইইতে আরম্ভ করিয়। শ্রীছরির পরন পর্যন্ত এই বসন্তরাগে গান গাইবার সময়। অভ্য সময়ে নিবিছ। বসন্তপঞ্চমী হিনে এইরণে বৃন্ধাবনবিহারী শ্রীক্রক্ষের পূলোৎসব সমাধা করিণে বসন্তবঃ প্রিয় হওরা বার।» [শ্রীপঞ্চমী দেখ।]

বসস্তপাল, শিলালিপি বর্ণিড রাজডেদ। বসস্তপুর, প্রাচীন বিশাল জনপদের অন্তর্গত একটা নগর।

(ভবিষা ব্ৰহ্মণ ৩৯৷২৩)

২ মলভূমির অন্তর্গত একটা গওগ্রাম। বিকুপ্রের উত্তর উপকঠে অবহিত। (দেশাবলী)

तमस्त्रभूष्म (११) ध्नीकम्म। (त्राष्ट्रीन•)(क्री) २ वनस्र-कारमा९भक्त कृष्ट्य।

"বসন্তপুশাভরণং বহন্তী"। (কুমার ৩ বর্দ)
বসন্তব্যু (পুং) কামদেব।
বসন্তভামু (পুং) রাজপুত্রভেদ। (দশকুমারচরিত)
বসন্তমগুল (ক্লী) > সিন্দ্র। ২ রক্তপন্ন (বৈছকনি •)
বসন্তমকোৎসব (পুং) বসন্তোৎসব। বসত্তকালে আমোদপ্রমোদার্থ অন্তর্ভিত লোকিক ক্রিয়াবিশেব।

ঐ দিন লগতের যাবতীর দেশবাসী মহারাসমাল শীতের জড়তা পরিত্যাগ করিয়া বসজের আগমন জ্ঞাপনার্থ আনন্দে উৎফুল্ল হটরা বেড়ায়। প্রাচীনকালে হিন্দুসমাজে মদনমহোৎসব প্রচলিত ছিল। এক্ষণে তাহা বাসন্তিক হোলীপর্বে পর্যাবিসত হইরাছে। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে শ্রীপঞ্চমীপূলার পর্যাদিনই এখন বসজোৎসব আচরিত হইয়া থাকে। ঐ দিন কি বালালার, কি হিন্দুছানে শীতবাস পরিত্যাগ করিয়া গুলু বা বাসন্তীবর্গে রঞ্জিত বাস পরিধানপূর্বাক সকলে বসজের আগসনভোতক চুত্রকুল সন্দর্শনার্থ ইত্ততঃ পরিশ্রমণ করিয়া থাকে। কুলাবনে এখনও এ চিত্র আক্ষল্যমান রহিয়াছে।

(इक्किकि वि. २३ विनान)

ঐ দিন এবং হোলীপর্বাদিন রক্ষনীতে ভোক্ষন ও আমোদের ঘটাও নিতান্ত কম নহে। রাজপুতজাতির মধ্যে বসন্তোৎসবের দিন উমা বা গোরীর পূজাঁ ও মৃগন্তার রীতি আছে। প্রাচীন গ্রীম, রোম, রন্দনান্ত প্রভৃতি দেশের ফরুৎসব ব্যাপার সেই এক বসন্ত-আবাহনের অন্তকরমাত্র। মিদনমহোৎসব দেও।

বসন্তমালতীরস, 'ঔষধবিশেষ। প্রস্তুত করিবার প্রণালী—বর্ণ
১ ভাগ, সূকা ২ ভাগ, হিঙ্কুল ও ভাগ, মরিচ ৪ ভাগ এবং কপূরি
৮ ভাগ এই সকল দ্রব্য প্রথমে অর পরিমাণ মাধন সহ মর্দন
করিয়া পরে পাতিনেব্র রসের সহিত বেশ উত্তমরূপে মর্দন
করিবে, যেমন মাধনের স্নেহাংশ দেখা না যায়। ২ রতি মাত্রায়
মধু ও পিপ্ললী চূর্ণ সহ সেবা। ইহা সেবনে, জীর্ণজ্বর, বিষম
কর, উদরাময় ও কাস প্রস্তুতি বিবিধ পীড়া সম্বর উপশমিত
হয়। ইহা পশ্চিমপ্রাদেশের প্রেসিক্ধ ঔষধ।

वमख्यालिका (जी) इत्नाएक।

বস্ত্যাত্রা (জী) বসভোৎসব।

वज्ञास्याधः (४१) कामरम्यः।

বসন্তর্বাজ, একজন প্রসিদ্ধ বৈয়াকরণ। ইনি প্রাক্তসঞ্জীবনী নামে প্রাক্তপ্রকাশের একখানি টাকা প্রণয়ন করেন।

ব্দশুরাজ, কুমারগিরির একজন রাজা। ইনি কাটয়বেম নামক গণ্ডিতবরের প্রতিপালক ছিলেন। ইহার রচিত বদস্তরাজীয় নাটাশাস নামে একখানি গাছ পাওয়া যায়। মলিনাথ শিশুপাল-ব্য টাকায় উক্ত এছের উল্লেখ ক্রিয়াছেন।

বসন্তর্জাজন্তট্ট, শকুনার্গর বা শাকুনশাস্ত্র প্রবেশ। ইনি মিণিগারীখর চন্দ্রদেবের প্রাথনাম্বসারে উক্ত গ্রন্থ রচনা করেন। ইহার পিতার নাম বিজয়রাজ এবং জোইলাতা শিবরাজ।

বসস্তর জীয় (ক্লী) বসস্তরাজকৃত নাটাশান্তভেষ।

বস্তুর্য় (রাজা), বজের স্বাধীন বাঙ্গালী বীর প্রভাপাদিতোর খুল্লভাত। বঙ্গজ্ঞ-কায়স্কুলে গুহবংশে গুণানন্দের

ওরসে উচ্চার জন্ম। প্রকৃত নাম জানকীবলভ, কিন্তু তিনি
বসন্তবায় নামেই সাধারণে স্থপরিচিত ছিলেন। গুণানন্দের
অগ্রজ্ঞ ভ্রানন্দের পুত্র বিক্রমাদিতাই প্রভাপের পিতা।

বাল্যকাল হইতেই বিক্রম ও বসস্তরায়ে বিশেষ সন্তাব ছিল। বাজমান্ত্রপদে নিযুক্ত হইবার পর উত্তর প্রাতা গৌড়ে বাস করেন। এই সময়ে বিক্রম চাদ খাঁ নামক জায়ণীর পাইয়া তথায় যমুনা ও ইচ্ছামতীর সলমস্থলে নগর ও গড় পত্তন করিয়া পুত্র ও পরিবারাদি প্রেরণ করেন, কিছ উত্তর প্রাতা রাজ-ধানীতে রহিলেন। মুনাইম খার বলাক্রমণকালে, গৌড়বাসী বাছধানী তাগে করিলেও, উত্তর প্রাতা ছ্বাবেলে তথার বাস করেন। লাউদের মৃত্যুর পর টোডরমল্লকে বালালার রাজ্য-

বিষয়ক কাগজ পত্র বুঝাইয়া দিয়া তাঁহারা উভয়েই মোগল সরকারের অন্থগৃহীত হইলেন। দিল্লীখরের নিকট হইতে রাজা টোডরমল বিক্রমাদিত্যকে মহারাজ এবং বসন্তরায়কে রাজা উপাধি আনাইয়া দিতে প্রতিশ্রুত হইয়া তাঁহাদের ভায়গীর বাহাল রাখিলেন।

প্রতাপ কৌশলে ১৮ বৎসর বয়সে পিতা ও পিতৃব্যকে জায়গীর হইতে বঞ্চিত করেন। অতঃপর বিক্রমাদিত্যের মৃত্যু ঘটে। তিনি শ্বীয় প্রকে দশ আনা এবং প্রাতাকে হয় আনা কদশন্তি ভাগ করিয়া দেন। প্রাতৃশুর প্রতাপকে রাজ্যাভিষিক্ত করিয়া বসস্তরায় বার্দ্ধকাবশতঃ গঙ্গাতীরে রায়গড় নামক স্থানে নিম্প্রট হইয়া বাস করিতে থাকেন। প্রতাপের কহা বিল্নুনতীর বিবাহোপলক্ষে তিনি বিশেষ অহ্মকক্ক হইয়া যশোহরে আইসেন। এই সময়ে রামচক্ররায়ের পলায়নের জহা গুল্লতাতের উপর প্রতাপের বিদ্বেষ উপস্থিত হয়। যশোহরে বাস কালেই পিতৃশ্রাক্রের বার্ষিক তিথি উপস্থিত হওয়ায় বসস্থরায় প্রতাপ ও আত্মীয় শ্বজনকে নিমন্ত্রণ করেন। প্রতাপণ্ড সাম্বচর নিমন্ত্রণ রক্ষায় উপস্থিত হন। হর্ডাগ্যক্রমে কালচক্রে সপুত্র বসস্থরায় প্রতাপের হত্তে নিহত ইইয়াছিলেন। প্রতাপাদিত্য দেখ।

বাঘবরার, চক্রশেথররার প্রভৃতি বসন্তরায়ের অপর পুত্রগণ ঘটনাচক্রে অন্তর থাকার রক্ষা পাইয়াছিলেন। এই জ্ঞাতি-শক্রদিগের ষড়যন্ত্রে প্রতাপের সর্বনাশ সাধিত হইল। মানসিংহ যশোহরজিৎ উপাদিসহ কচুরায়কে যশোহরে অভিষিক্ত করিয়া দিল্লীযাত্রা করেন। কচুরায় নিঃসন্তান ছিলেন, কিন্তু তাহার জ্রাতা চক্রশেথরের বংশধরগণ অভ্যাপি খুলনা জেলার অন্তর্গত ন্র্নগর ও বসিরহাট উপবিভাগের মধান্থিত খোড়গাছীতে বাস করিতেছেন।

রাজা বসস্তরায় একজন উৎকৃষ্ট ভাবুক কবি ছিলেন। পদ-কঠা গোবিলদাদের সহিত তাহার প্রায়ই কবির লড়াই চলিত। বসস্ত রায়, একজন প্রাসিদ্ধ বৈষ্ণব কবি। নরোত্তম ঠাকুর মহাশয়ের শিষা। নরোত্তমবিলাসে কবি নরহরি ইহাকে মহা-কবি বলিয়া অভিহিত করিয়াছেন—

''জয় জয় মহাকবি শ্রীবসম্ভ রায়।

সদা মন্ন রাধাক্তক চৈতগুলীলার ॥" (১২শ বিলাস)
ভক্তিরক্লাকর হইতে আমরা জ্লানিতে পারি যে ইনি শেষ
বয়সে বৃন্দাবনবাসী হইরাছিলেন, মধ্যে জীব গোস্বামীর পত্র
শইরা একবার শ্রীনিবাসাচার্য্যের নিকট আসিয়াছিলেন।

"হেনই সময় বিজ্ঞ জীবসন্ত রায়।

পত্রী লৈয়া আইল তেঁহো আচার্য্যসভায় ॥" (১০ তবঙ্গ) পদকল্পতক্ষতে বসস্ত রায়ের পদ উদ্ধৃত হইয়াছে। বসস্তরোগ, মহরিকা। ত্রণোদ্গমরূপ সাংঘাতিক ক্ষতরোগ-বিশেষ। ইংরাজীতে ইহাকে Small pox বলে। বৈজ্ঞানিক সংজ্ঞা Variola।

ইহা একটা বিশেষ সংক্রামক ও স্পর্শাক্রামক সন্দোটক জব।
এই পীড়ার বিষ শরীরে প্রবেশ করিলে কিয়দিবস গুপ্তভাবে
থাকিয়া প্রবল জর ও চর্ম্মে এক প্রকাব কণ্ণু উৎপাদন করে। ঐ
কণ্ণুগুলি প্রথমে প্যাপিউল্, পরে ভেসিকেল্ ও পষ্টিউলে পরিবর্ত্তিত হইতে দেখা যায় এবং অবশেষে শুদ্ধ হইলে কচ্চু অর্থাৎ
চামড়ি পতিত হয়। এই ব্যাধি একবার হইলে প্রায় দিতীয়বার
হয় না।

এই পীড়ার সংক্রামক বিষ বোণীর রক্ত, ক্লোটক ও কচ্ছুতে
ভাবস্থিতি করে; সময় সময় ঘণ্ম, মৃত্র, প্রশ্নাস এবং অন্তান্ত অপস্তাব
দ্বারাও পরিচালিত হয়। বন্ধ, গাড়ী ও গৃহাদিতে উক্ত পদার্থ
বহু দিবস লিপ্ত গাকে; এবং উঠা অধিক দূরে চালিত হইতে
গাবে। বসন্তরোগে মৃত্যু ইইলে মৃতদেহ ইইতে জীবিত
শরীরে উক্ত বিষ প্রবিষ্ট হইবার সন্তাবনা। পৃষ্ম জান্মিবার সময়
ঐ পদার্থের সংক্রামণশক্তি বৃদ্ধি পায়। কোন কোন গ্রন্থকার
বলেন যে, উক্ত ক্লোটক গুলিতে এক প্রকার অতি ফল্ম পদার্থ
ভাবস্থিতি করে। উঠাই ভিন্ন বাক্তির শরীরে সংক্রামিত হয়।

নাহাদের টীকা হয় নাই এবং কাদ্বী জাতি ও ক্ষাকায় বাক্তিরই এই পীড়া অধিক হইতে দেখা যায়। এতদ্ভিন্ন সাধা-রণতঃ অপরিষ্কত অবস্থায় থাকা, কুংদিৎ আহার প্রাস্তি হইতেও এই পীড়া হইবার সভাবনা। কোন কোন বাক্তির শারীরিক অবস্তা এইরূপ যে, তাহার। ইহাব বিদ কর্তৃক সহজে আক্রাস্ত হয় না। উত্তমরূপে টীকা দেওয়া হইলে এই পীড়া কলাচ হয় না। উত্তমরূপে টীকা দেওয়া হইলে এই পীড়া কলাচ

এই পীড়া হেতু নানা স্থানের চয়ে সীমাবদ্ধ প্রদাহের চিহ্ন পাওয়া যায় এবং তাহার মধ্যে অগ্রে পাণিউল্ দৃষ্ট হয়। প্রকৃত চয়ে নব নব কোষ উৎপর হৎয়তে এপিডার্মিসের নিমে তরল বস এবং পরিশেষে লিক্ষ ও পুয় জয়ে। পরিপক অর্থাৎ সপ্তমনিরের গুটি ভেদ করিয়া অগুনীক্ষণ দারা দেখিলে তাহার মধ্য কোটব শৃত্য বা সন্ধৃতিত দেখা যায়, কিন্তু উহার প্রাচীর কৌষিক বিধানের কুদ্র কুদ্র থপ্ত দারা চর্ম্মে সংযুক্ত থাকে। মৃতদেহের নানা স্থানে অর্থাৎ চর্মা, গলদেশ, চক্ষু, নাদিকা, একাই, কথন কথন পাকাশয় ও অল্পমধ্যে ক্ষেটিক দেখিতে পাওয়া ষায়। স্থংপিও, মৃত্রয়য়, যক্রং ও স্বাধীন পেনী সকল কোমল এবং ব্যাপকৃত্বতাবিশিষ্ট হয়। প্রাহা বিবন্ধিত ও কোমল হইয়া থাকে। স্থানে স্থানে পেটিকি বা রক্তর্মাবের চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়। মৃতদেহ শীঘ প্রিয়া উঠেন お寄り

১ম গুপ্তাবস্থা।—সংক্রমণ ছারা রোগোৎপন্ন হুইলে ১২.দিন এবং টীকা ছারা হুইলে ৭°দ্ধিন; এই অবস্থায় রোগী কিঞিৎ অস্ত্রত্থাকে; কোন বিশেষ লক্ষণ দেখা যায়,না।

(২) আক্রমণাবহা—শীত ও কম্প হারা অকন্মাৎ পীড়ারম্ভ হর এবং রোগী অরের লক্ষণ সকল অমুন্তব করে। কোটক বহির্গত হইবার পূর্বেক তাপ-পরিমাণ ক্রমণ: বৃদ্ধি পাইয়া ১০৪ হইতে ১০৬ ডিগ্রী প্যান্ত হয়। এতদ্বির উদরোক্ষণেশে বেদনাও ভারবোধ, বিবমিষা কিংবা অতিশয় বমন এবং কটিদেশে প্রবল বেদনাইত্যাদি করেকটি বিশেষ লক্ষণ দেখিতে পাওয়া যায়। অস্তান্ত লক্ষণের মধ্যে শিরোবেদনা, মৃথমণ্ডল আরক্তিম, হস্ত পদাদির স্পান্দন, আলন্ত, অতান্ত ত্র্বেলতা, প্রপাপ, অহিবতা, অচৈতন্ত এবং শিক্তদিগের সর্বাদা আক্রেপ প্রভৃতি বইন্মান থাকে, কোন কোন হলে সান্ধ বাগলায় বেদনা হয়। ইহাকে প্রোথমিক (Primary Pever) জর কহে। উক্ত লক্ষণ সকল তুই দিবস প্যান্ত বর্তমান থাকিয়া গোনিগত হয়।

(৩) ক্রেটকাবছা।—জ্বের তৃতীয় দিবসে মুখে, কপালে ও হত্তে ক্ষুক্ত ক্ষুক্ত লাল লাগ দেখা যায়। ইহারা দলে দলে উৎপা इटेग्रा २।२ फिटनत मर्टमा ममछ भनीरत वााख रहा। महनाहत ইহার সংখ্যা ১০০ হইতে ৩০০ ; কখন কখন সহস্র প্রাপ্ত ১ইতে পারে। মুখমগুলেই অধিক সংখ্যক হইয়া থাকে। টাকা দিবার পর, অথবা সংক্রামক রূপে বসস্তরোগ উপস্থিত হইলে েল্টেকাবভার পুকো উদবে ও উরুর অভ্যস্তরে বৃহদাকার . লাল দাগ সকল বহিৰ্গত হইতে দেখা যায়, তাহাকে প্ৰোড্ৰোম্যাল এক্জেছেম্ (Prodromal Exanthem) বলে। বসত্তের গুটিগুলি স্বতন্ত্র, সংশ্লিষ্ট, বা অস্ত প্রকার হইতে পারে। 'গুটি হইবার পূর্বের প্রথমে কুল্র কুল লাল দাগ উৎপন্ন হয়। কেটেকের দ্বিতীয় দিবলে কণ্ণুগুলি সর্বপের স্তায় উচ্চ দেখায়, ইংরাজীতে প্যাপিউল্ কহে, তৃতীয়দিবদে স্পর্ল করিলে ছিটা গুলির স্থায় কঠিন বোণ হয়, চতুর্থ দিবলে গুটির মণ্যে মধ্যে রস (সিরম্) সঞ্চিত হও-য়াতে কোমল হইয়া থাকে এবং মুক্লার স্থায় ভেসিকেল্ দৃষ্ট হয়। পঞ্চম দিবদে উহাদের উপরিভাগ নত কিংবা নাভির মত কিঞিং নিয় হয়, ইহাকে অম্বিলাইকেটেড্ (Umbilicated) বলে। ক্ষেটি-কের পরিধি রেটিমিউকোসম্ (Retemucosum) সিরম্ স্বারা শ্লীত এবং মধ্যস্থ কোষ সকল এপিডাশ্মিসের সহিত সংলগ্ন হওয়াতে ঐ নবভাব উপস্থিত হয়। ক্ষোটকের মধ্য দিয়া একটা হেয়ার কিংবা ম্যাত ভক্ত (Hair or gland duct) গমন করিলেও উক্ত প্রকার নত হইতে পারে। ষষ্ঠ হইতে সপ্তম দিবস পর্যান্ত স্ফোটকের মধান্তলে অচ্ছ ও তর্গ সিরম্ থাকে এবং চতুস্পার্থে

ক্রমশ: পৃশ্ন সঞ্চিত হইতে দেখা যায়। ঐ অফ রস ও পৃরের মধ্যে এক প্রবার আবরণ থাকে; পৃশ্ন র্ছি প্রাপ্ত হইলে উহা অদৃত হইরা বার, এই অবহাকে পৃত্তির্ক্তিল্ (Pustale) কহে। এই সমরে প্রাদাহ কক গুটির চতুলার্ছে লাল রেখা দেখা দের। অইম দিবনে ক্ষোটকগুলি পৃশ্ন বারা পরিপূর্ণ হওরাতে গোলাক্ষতি ও উচ্চ দেখার। ইহাকে পরিপকাবতা (Maturation) বলে। এই সমর উহার কোটর বেন নানা আংশে বিভক্ত বোধ হয়। ১ হইতে ১০ দিবনের মধ্যে কতকগুলি বিশীপ হইরা গায় এবং অবশিষ্টগুলি গুলু হইরা আইসে। বিদীপ হইলে পীতাভ পাটল বর্ণ কচ্চু উৎপন্ন হয়। ১০ হইতে ১৪ দিনের মধ্যে উক্ত কচ্চুগুলি শ্বলিভ হইতে থাকে। কচ্চু পতিত হইলে চর্দ্দে লাল লাল গাগ থাকিয়া যার; ক্ষোটক গুলুতর হইলে লাগসমূহ কিঞ্চিৎ গভীর হর, ইহাকে Pits বলে।

গুটিকার সংখ্যাত্মারে সাধারণ লক্ষণের অনেক পরিবর্ত্তন ঘটে। গুটির সংখ্যা অধিক হইলে মন্তক, গলদেশ, অকিপল্লব ও শরীরের অফ্রাক্স স্থান ক্ষীত, চর্ম্ম গাড় লালবর্ণ এবং উহাতে কণ্যন থাকা বশত: নথাঘাভ্যারা বৃহৎ বৃহৎ ক্ষত্যুক্ত এবং নানা ত্থানের শ্লৈমিক বিল্লীও আক্রান্ত দেখা যার। গলাভান্তরে শুটি इंहेरन (तमना, नाना निःमत्रण अतः आशांत्र कतिएक क्षे हत्र। नामिकारक रहेरेन नामिकात निः आव तृष्कि भाग्न ७ नामात्रक् सक হইয়া যায়। লেরিংস, টে কিয়া, বা ব্রন্ধাই আক্রান্ত হওয়াতে কাসি, স্বরভন্ধ এবং সময় সময় স্থাসকুছে, উপস্থিত হয়। মূত্র-মার্গের দ্রৈত্মিক ঝিলী আক্রাস্ত হইলে মুত্রত্যাগে আলা ও কথন কথন রক্তন্তাব অর্থাৎ হিমেটিউরিয়া (Hæmaturia) হইয়া পাকে। চকু আরক্তিম, সজল, বেদনাযুক্ত এবং ক্ষীত হয়। রোগী আলো দেখিতে কষ্ট বোধ করে। কখন কখন রোগীর উদরাময় हरेग्रा थात्क। शांक स्टेटक धक धाकांत्र पूर्वक वास्त्रि स्त्र। শ্লোটক বহিৰ্গত হইলে জনের কিঞ্চিৎ বিরাম হয় ; কিন্তু পুত্র হই-বার সময় পুনর্কার শীত ও কম্পের সহিত অর উপস্থিত হইতে त्नथा यात्र। উহাকে विजीय अत्र वा त्मरकश्चाति (Secondary) ফিডার কহে। এই সমরে উতাপ ১০৪ হইতে ১০৫ পর্যান্ত উঠিয়া থাকে এবং ভাষা ক্রমণ: হ্রাস পার। নাড়ীর গভি ক্রত, লিপালা বৰ্দ্ধিত, জিহবা ও মুখাভ্যস্তর শুক; রোগ কঠিন হইলে বিকারের লক্ষণ সকল উপত্তিত হইয়া পাকে।

ইহার কণুগুলি সাধারণতঃ নানাপ্রকারের হইরা থাকে।
বথা—(১) ডিস্ক্রিট্ (Discrete) অর্থাৎ অসংমুক্ত।
ইহাতে জীবনের আশহা নাই; লক্ষণ সকল মৃত্। শিশুদিগের
দলেমকালে হইলে গুরুত্বর হইতে পারে।

(२) कन्द्रगुरक्षे (Confluent) व्यथीर मरिप्रहे ; हेहारङ्

প্রথমে শরীরে বহুসংখ্যক কুল কুল ও সামান্ত উচ্চ প্যাণিউল্
বহির্গত হর এবং শীত্র পরস্পর মিলিত হইতে দেখা যার। তেসিকেল্ ও পাইউল অবহার উহারা অধিক মিলিত হয়। গুটি
সকল দেখিতে অকুচ্চ, কিন্তু বিস্তৃত এবং জলবৎ সিরম্, পূর, কিংবা
রক্তে পরিপূর্ণ থাকে। মন্তক, মুখমগুল এবং কঠদেশেই বহুসংখ্যক দেখা বার। উহারা ওক হইলে মুখোপরি একটা বৃহদাকার ওক চর্ম্মণণ্ড পতিত হয়; তাহা উঠিয়া সেলে, গভীর দাগ
সকল উৎণার হইরা থাকে। গুটিগুলির মধ্যক্তী ছানে রেখা
দেখা বার না, সমন্ত ত্বক্ কুফান্ত লোহিত বর্ণ হয়। ইহাতে প্রথম
অবের বিরাম হয় না, কিংবা ছিতীর জর বিশেবরূপে প্রকাশ পার
না। অস্থিরতা, প্রকাপ প্রভৃতি কঠিন স্নায়বিক লক্ষণ সমূহ
বর্তমান থাকে। ইহা অভান্ত সাক্ষাতিক এবং ইহাতে নানা
প্রকার কঠিন উপসর্গও উপন্থিত হয়। ডাক্তর কলি (Colli)
বলেন বে, গুটিগুলিতে বদি পূর না জয়ে এবং রোগীর মুখ্মগুল
মরদার আঠার বর্ণ দেখার, তবে রোগ সাংঘাতিক হয়।

- (৩) অর্দ্ধসংযত (Semiconfluent), উহা উপরোক্ত প্রকারন্বয়ের মধ্যবত্তী। ইহাতে শুটিগুলি শ্বতন্ত্র কিন্তু নিকটবত্তী থাকে; শীবনের আশহা নাই।
- (৪) নশবদ্ধ (Corymbose)—অর্থাৎ দেখিতে জাকা গুড়বং; ইহা অত্যস্ত সাক্ষাতিক।
- (c) ম্যালিগ্নেন্ট (Malignant) অর্থাৎ সান্দাতিক। ইহাতে গুটিগুলি দেখিতে ক্লক্ষবর্ণ কিংবা রক্তে পরিপূর্ণ থাকে। कथन कथन नानाञ्चान रहेरा त्रकत्वात ; मूथम ७८न मानिश, जहि-রতা, প্রবাপ, অচৈতন্ত প্রভৃতি লক্ষণ সকল বর্তমান থাকে। চর্ম্মে ক্ষত বিগলন,বা পেটিক দৃষ্ট হয়। প্যাপিউলার,ভেসিকিউলার কিংবা পষ্টিউলার অবস্থায় গুটির মধ্যে রক্তপ্রাব হইলে, যথাক্রমে ভোর-ওলা, হেমরেজিকা,প্যাপিউলোজা,ভেসিকিউলোজা ও পষ্টিউলোজা প্রভৃতি নামে অভিহিত হয়। এই প্রকার বসন্তরোগাক্রন্ত ব্যক্তি-দিগের গাত্র হইতে একটা বিশেষ পূর্ণত্ব বহির্ণত হইরা থাকে। মল মৃত্রের সহিত রক্তপ্রাব হইতে দেখা বার এবং বঠ, সপ্তম বা অপ্তম দিবসে মৃত্যু হয়। এতথ্যতীত ভেরিওলা নাইপ্রা(Variola Nigra) অর্থাৎ ব্লাক্ স্থল পদ্ধ (Black Small Pox) একটা ছাতি সাংবাতিক প্রকার বনত। ইহার ওটিওলি দেখিতে বেওনি বর্ণ বা কালির দাগের স্থার। ইহাতে চকুর বৈত্মিক বিল্লীতে রক্ত-আব হর, ও কনীনিকার চতুস্পার্শে শোণিত সংবত হর। এই শীড়ার মৃত্যু পর্যান্ত জ্ঞান বর্ত্তমান থাকে। শীড়ার ভৃতীর বা **भक्त्र भिवत्म मृ**ष्ट्रा इत्र ।
- (৬) বিনাইন্ (Benign) হর্ণ্ (Horn) বা ওরাট্ পক্ (Wart pock)—ইহাতে প্টিসবৃহের অভ্যন্তরে পুর সঞ্জি

হর না এবং ৪।৫ দিনের মধ্যেই ওচ হইয়া যার। দিতীর জ্বর প্রকাশিত হর না। এই প্রকার বসস্ত টীকা দিবার পর উপস্থিত হইয়াথাকে।

উপদর্গ ও আহবলিক পীড়ার মধ্যে নিউমোনিরা, প্লুরিদি, মদাইটিন্, গ্যাষ্ট্রাইটিন্, এন্ট্রাইটিন্, উদরাময়, নানাল্লানে প্রদাহ ও ক্ষেটিক, ক্ষ্যেটম্ ও লেবিরাতে কত বা বিগলন; এরিদিপ্লান, পাইমিয়া, এল্বুমিন্উরিয়া, হিমেটউরিয়া, এপিন্ট্যাক্ষিন্ এবং মেনোর্থেজিয়া প্রভৃতি বিজ্ঞান গাকে।

এই পীড়া অভিশয় সাজ্যাতিক, শতকরা ৩০ জনের মৃত্যু ঘটে। প্রায় একাদশ দিবসেই মৃত্যু হইরা থাকে। অভ্যন্ত জর, হর্মালতা, খাসক্রস্কৃতা, গাত্রে পূর্ এবং রক্তনাব প্রকৃতি লক্ষণসমূহ উপস্থিত হইলে রোগ গুরুতর বনিয়া জানা যায়। অভি শিশু, মধ্যবয়ন্ত ও গর্ভবতী স্ত্রীলোকদের হইলে প্রায়ই অসাধ্য হইয়া থাকে। ১০ হইতে ১৫ বংসর বয়য় বালকেরা প্রায় আরোগ্য হয়। কোটক বহির্নত হইবার পর উত্তাপাধিকা, কটিদেশে অভিশয় বেদনা, অভ্যন্ত বমন ও রক্তনাব প্রভৃতি উপস্র্র উপস্থিত হইলে ভাহাকে কঠিন বলা যায়। কন্ত্রুরেন্ট ও করিখোজ প্রকার প্রায় সাজ্যাতিক। এই পীড়া ছালেটিনা, হাম ও ক্লবসন্তের সহিত প্রম হইতে পারে।

চিকিৎসা।

নিম্নলিথিত প্রণালী অনুসারে বসন্তের ডাক্ডারী চিকিৎসা করা হয়। (১) সাধারণ শুশ্রবা, (২) শুটিগুলি যাহাতে স্কচারু রূপে বহির্গত হয় এবং শুবিষাতে চর্ম্মে বিশেষতঃ মুথমশুলে দাগ না থাকে, (৩) উদ্ভাপাধিক্য নিবারণ করা (৪) বলকারক ঔষধের ব্যবস্থা, (৫) বিষয় বিশেষের চিকিৎসা, (৬) প্রধান প্রধান উপসর্কোর চিকিৎসা, (৭) প্রভিবেধক চিকিৎসা।

- (১) পূর্বকালে বসন্তরোগীকে উত্তপ্ত গৃহে অবরুদ্ধ রাথা হইড, এখন আর উহা থাটে না। আরু কালকার মতে বায়ু-প্রবাহিত আলরে রাখাই উচিত, কিন্তু ঘেন কোন প্রকারে রোগীর শ্রীরে শ্বীতল বায়ুসংলগ্ন হইতে না পার। প্রথমাবলার লঘু পথা ও কোনাড, বরুদ্ধ ইত্যাদি শীতল পানীয় এবং কমলালের প্রেন্তুতি স্কর্ম ফল ব্যবস্থা করিবে। পূর সঞ্জয় কালে কিংবা রোগী হর্মাল হইলে বিফ্লি, স্থপ, জেলি ও অরমাত্রার স্করা দেওরা আবশ্রক।
- (২) শুটিশুলি স্টাক্ষমণে বহির্গত করিবার কল্প কার্কলিক, কণ্ডিক্ কিংবা সল্কিউরস্ এসিড্ লোসন বারা গাত্র স্পাল করিবে। কণ্ড্রন নিবারণার্থ মহলা, এরাক্ট অথবা অল্প কোন ইচিচ্চ গাত্রে লাগাইবে। তবিব্যতে চর্মোপরি বাগ না হইতে পারে, ডক্ষেক্স পরিপক্ শুটিশুলির উপর ক্রমশং নাইট্টেড্ অব্

সিল্ভার পেজিল্ অথবা উহার লোসন সংলগ্ন করিবে। কিংবা মার্কিউরিরেল্ অথবা সলকার অরেন্টনেন্ট, টিং আই-প্রভিনু, করোসিব্ সব লিমেট লোমল (৬ আউজ জলের সহিত ২ এেগ) এবং লাইকর গটাপার্কা ইত্যাদি সংলগ্ন করিতে পারা বার । ডাং ভাজান্ (Dr. Sadosm) বলেন বে, কার্কিকি এসিড্ থাইমল অরেল মিশ্রিত করিরা লাগাইলে উপকার নর্লো। যদি উপরোক্ত মলমসমূহ হারা যন্ত্রণা বোধ হয়, ভবে কোল্ড্ ক্রিম্ বা গোলাপ-জল মিশ্রিত মিসিরিণ্ সংলগ্ন করিবে। কোন কোন গ্রহুকার ভেসিকেল অবহার কার্কালিক্ এসিড্ সংলগ্ধ করিবে। কোন কোন গ্রহুকার ভেসিকেল অবহার কার্কালিক্ এসিড্ সংলগ্ধ করিতে বলেন। কিন্তু ডাক্টার মার্সন (IDr. Marson) বলেন বে, পৃষ নির্পত হইলে পর গুটির উপর কোল্ড ক্রিম্ বা মিসিরিণ লাগাইলে বত্রণা ও হাগ পড়েনা। উত্র রস হারা চর্ম্মে উড্জেনা হইলে তথার উঞ্জলের স্পান্ধ করিরা তহপরি মরদা, এরান্সট, টরেলেট পাউভার কিংবা ক্যালেমাইন সংলগ্ন করিবে।

- (৩) উত্তাপনিবারণ জন্ম গাত্রস্পাঞ্চ এবং মৃত্ বিদ্নেচক ও ঘর্মকারক ঔষধ সকল ব্যবহের। উত্তাপাথিক্য হইলে এক্টি-ক্ষেত্রিন্ দিবে।
- (৪) পুর জন্মিবার সময় টাইকমেড লক্ষা, সকল উপস্থিত হইলে এমোনিয়া ও বার্ক প্রস্তৃতি উত্তেজক ঔবধ দিবে। আতি, ও এখ জাহায়ার্থ বিশেষ। গলার বেদনা নিবারণার্থ নানা প্রকার কুলি দেওয়া যাইতে পারে। রক্তলার কল্প এসিড্ গ্যালিক, তার্পিণ তৈল ও জার্গট্ দিবে। জনিদ্রা ও প্রালাপ থাকিলে কেহ কেহ জহিকেন বা মর্কিয়া ২।১ রাত্রি দিয়া থাকেন, কিন্তু মুস্কুসের প্রদাহ থাকিলে জহিকেন কিংবা মর্কিয়া ব্যবহার করা উচিত নহে। সিকি গ্রেণ মাত্রায় বেলেডোনা দিলে কথন কথন উপকার দর্লে।
- (৫) বিশেষ চিকিৎসার মধ্যে সল্ফো কার্মলেটন্, কার্ম লিক্ এসিড, হাইপোক্রোরাইটন্ ও সল্ফিউরস এসিড, প্রভৃতি এন্টিসেপ্টিক ঔষধ সকল প্রারোগ করা বিধেয়। কেছ কেছ ভালিসিলেট্ ক্ষব্ সোডিরম্ দিতে পরামর্শ দেন।
- (৬) উপসর্বের চিকিৎসা—চক্ষুতে প্রদাহ হইলে চক্ষুর উপরে সর্ব্বদা শীতল অল কিংবা করোসিব সব্ লিমেট্ লোসন (৬ ওল অলের সহিত ১ গ্রেণ) ও সিক্ত ব্যাপ্ত সংলগ্ধ করিবে; অথবা পোত্তের চেড়ির খেদ দিবে। অত্যক্ত কর্মটেভাইটিস্থাকিলে টেম্পেলে ব্লিটার দেওয়া কর্তব্য। কর্ণিরাতে ক্ষত হইলে তত্তপরি নাইট্রেট্ অব্ সিল্ভার পেন্সিল্ বা উহার সোসন লাগাইবে। চক্ষুর উপর সর্ব্বনা সর্ব্ববর্ণের পর্দ্ধা রাপ্ধ উচিত। কাসি থাকিলে ক্ষ-নিঃসারক ঔবধ সক্ষা ব্যবহের। ক্ষেটিক

ু ইটলে ছেলন করিয়া কার্কালিক তৈলযুক্ত লিল্টের পটি দিবে।

(१) প্রতিবেশক — বিশেষরূপে আরোগ্য না হইলে রোগীকে কোন হানে যুইতে দিবে না। এতদেশে এইরূপ প্রথা আছে যে, কোন গ্রামে বসন্ত রোগের প্রাত্তবি হইলে, অথবা বাদাগা নীকা লইলে অন্ত গ্রামের লোক সেই গ্রামে যায় না। যে গৃহে বসন্তরোগ্যক্রান্ত রোগীকে রাখা হয়, সেই গৃহে চুণ লেপন করিয়া ডিস্-ইন্ফেক্টেণ্ট ঔবধ সকল ছড়াইবে। শ্যা ও বন্ধাদি ধৌত কিংবা দয় করিবে। এই পীড়া উপস্থিত হইলে বাহাদের টীকা হয় নাই তাহাদিগের টীকা দেওয়া উচিত। সমুদ্রগর্জে জাহাজের উপর বসন্ত রোগ প্রকাশিত হইলে এবং ভ্যাকৃসিন্ লিক্ষ্ না থাকিলে, যাহাদের টীকা হয় নাই ভাহাদিগকে বসন্তবীক দারা চীকা দেওয়া বিধের। কারণ তদ্বারা বসন্ত রোগ মৃহ লক্ষণাক্রান্ত হয়া থাকে। বসন্তের পুয়পুর্ণ অবস্থায় নিয়োক্ত ঔবধ—

এক মাত্রা তিন ঘণ্টা অস্তর বাবহার্যা।

বাৰালা টাকা (Inoculation)

ইংতে বসজের বীজ দারা টীকা দেওয়া হয়। টীকা দিবার পর দিতীয় দিবসে ছেদিত স্থান কিঞ্চিৎ লালবর্ণ দেখায়। চতুর্থ কিংবা পক্ষম দিবসে ঐ স্থান প্রদাহযুক্ত ও তথায় একটি ভেসিকেল্ উংপদ্ধ হয়। উপরোক্ত দিবসে উহার চতুস্পার্শ্বে এরিওলা হইয়া থাকে। এই সময়ে প্রাথমিক ক্ষর উপস্থিত হয়; এবং ৩৪ দিবসের মধ্যে সর্ব্বাক্ষে গুটি বহির্গত হইতে দেখা যায়। ইতিমধ্যে টীকার গুটি পৃষযুক্ত হইয়া ক্রমশং শুক্ত হয়। ইহাতে গুটির সংখ্যা ন্যন ও লক্ষণগুলি মৃত্ব দেখা যায় বটে, কিন্ধু কথন কথন রোগ সাভ্যাতিক হইয়া থাকে।

ভেরিওলমেড্ (varioloid)— টীকা দিবার পর বসন্ত রোগ হইলে তাহাকে ভেরিওলমেড্ কহে। ইহাতে বিতীয় জরের লক্ষণগুলি প্রায় প্রকাশিত হয় না। গুটির গতি মৃহ ও ভেসিকেল গঠিত হইয়াই শুক হইতে থাকে। সময় সময় পষ্টিউল্ হইলেও শীঘ শুকাইয়া যায়। গাত্রে গভীর দাগ জন্মে না। কোন কোন হলে গুটি বহির্গত হইবার পূর্বে গাত্রে বৃহৎ বৃহৎ বাল দাগ দেখা বায়; যাহাকে রাাস্ (Rash) কহে।

इ:त्राजी जिका (vaccination)

বছকাল পূর্ব্বে ইতালিদেশীর চিকিৎসকেরা: জানিতে পাবেন যে, গাড়ী ও অফ্টাফ্ট প্রাদির দেছেও একপ্রকার বসস্ত বহির্গত হইরা থাকে। ১৭৪৫ খুষ্টান্দে ইংলগুদেশে প্রথমে এই বিষয়ের আলোচনা হয়। ১৭৮০ খুষ্টান্দে ডাং জেনার (Dr. Jenner) টাকা দিবার উপযোগিতা সম্বন্ধে একটা প্রবন্ধ লেথেন। তিনি ঐ প্রবন্ধ উপদেশ দেন যে, নরদেহে গো-বীজ প্রবেশ করিলে গুটির গতি মৃছ হইরা থাকে। অনেক সময় দেখা গিয়াছে যে, বসন্ত সংক্রামক হইলে গাভীর পরোধ্বেও ভ্যাক-সিনা বা গো-বসন্ত হয়। মানব-বসন্ত-বীজ গাভীর উদরের নিকট ইনোকিউলেট্ করিলে শরীরের মধ্যে বিশেষ পরিবর্তন হেতু বসন্ত-গুটি না হইয়া গো-বসন্ত বাহির হইয়া থাকে; তাহার ক্রিয়া বসন্তের ক্রিয়া অপেক্ষা মৃছ। এই গো-বসন্তের স্বাসকা দ্বারা টাকা দেওয়া যায়।

গাভীর স্তনের উপর শুটি হইলে তাহাকে ভ্যাকদিনা (Vaccina) বা গো-বসস্ত কছে। ঐ গুটির রসকে কাউ লিক্ষ অর্থাৎ গোবীল্প বলে। এতদারা টীকা দেওয়া হইয়া থাকে। যে প্রণালীতে ঐ বীজ দারা মন্ত্রয়দেহে টীকা দেওয়া যায়, তাহাকে **क्षाकिम्यानम्ब वना यात्र এवः केश बाजा नजरम्यट एय छोटे के**९भन्न হয়, তাহাকে ভাাকসিন পষ্টিউল বলে। সপ্তম দিবসের গুটিকা হইতে যে রস পাওয়া যায়, তাহা লসিকা বা লিক্ নামে খ্যাত। উহা নিম্নলিথিত উপায় দ্বারা রক্ষা করা হয়—(১) অতি সুল্ল গ্লাসটিউবে, (২) হুই খণ্ড কাচের মধ্যে, (৩) লসিকা স্বল্ল হইলে তাহার সহিত মিসিরিন মিশ্রিত করিয়া রাখা যায়। সপ্তম বা অষ্টম দিবসে অর্থাৎ এরিওলা হইবার পুর্কে ক্ষোটকের শার্ষস্থানে অস্ত্র বিদ্ধ করিয়া লসিকা গ্রহণ করিবে। পার্ন্দে বিদ্ধা করিলে মধ্যপ্রাচীর ভেদ করিয়া লসিকা অস্ত্রোপরি আসিতে পারে না এবং তাহাতে লসিকায় রক্ত মিশ্রিত হইবার সম্ভাবনা। শীতকালে ৬।৭ এবং গ্রীম্মকালে ৫।৬ দিনের গুট হইতে বীজ গ্রহণ করা উচিত। এক ব্যক্তির হস্ত হইতে বীজ লইয়া অন্যের হল্ডে টীকা দিলে বিলেষ উপকার দর্শে। স্তুত্ত বালকের টীকা হইতে বীজ লওয়া বিধেয়। কোন শিশুর চন্মরোগ, অথবা গুহুদার বা জননেব্রিয়ে উপদংশজনিত উচ্চ ক্ষোটক, কিংবা সন্দি ও গলায় ক্ষত থাকিলে তাহার বীজ লইবে না। পরিস্কৃত ল্যানসেট্ (Lancet) ব্যবহার্যা, অপরিস্কৃত অস্ত বাবহার করিলে, চশ্মের উত্তেজনা বৃদ্ধি পায়। ২ হইতে ৪ মাস বয়ত্ব শিশুদিগকে টীকা দিলে বিশেষ ফলপ্রাদ হয়। শিশু জ্বা-ক্রান্ত হইলে, অথবা চর্মারোগ, উদরাময় বা দভোদগমের স্ঞা-বনা থাকিলে টীকা দেওয়া নিষিদ্ধ। বিশেষ আবশ্রক না হইলে ১॥ বা ২ বৎসর বয়সের সময় টীকা দেওয়া উচিত। ইদানীং অনেকানেক গ্রন্থকার কাফ্-লিক্ষ, অর্থাৎ গোবৎসে যে ভ্যাক্-সিনা উৎপন্ন হয়, তাহার লসিকা দারা টীকা দিতে পরামর্শ দেন। ইহা দ্বারা শিশুদিগকে একবার ও পরিণত ব্যস্তদিগকে ছইবার টীকা দিলে বিশেষ ফললাভ হইয়াছে।

টীকা দিবার স্থান—সাধারণতঃ যে স্থানে ডেল্ট্রেড্ পেশী শেষ হইরাছে, তাহার উর্জ ও অধঃ পরম্পর এক বা দেড় ইঞ্
অন্তরিত স্থানের চর্ম আরু ইকরিয়া অন্তর্গরা উপত্তকের নিম্ন পর্যান্ত
বীজ প্রবেশ করাইতে হয়। প্রত্যেক হত্তে হুইটী টীকা দেওয়া
উচিত। নিম্নলিখিত চারিটি প্রণালীতে টীকা দেওয়া বিধেয়।
(>) ল্যান্সেটের অগ্রভাগে বীর্জ লিপ্ত করিয়া তাহা বক্রভাবে
প্রক্রত চর্ম পর্যান্ত বিদ্ধ করিবে; এরূপ ভাবে অস্ত্রাঘাত করিতে
হইবে, যেন কেবল বিন্দুমাত্র রক্ত বহির্গত হয়। এভ সেকেওঃ
পর্যান্ত ছেদিত স্থানে অন্ত্র রাখিয়া পরে বাহির করিবে।
(২) অন্তর্গরা সমান্তর্গলভাবে এভ টি ছেদ করিয়া তহুপরি লিক্
লিপ্ত করিবে। (৩) উন্দী দিবার মত স্থানিল গ্রান্তী বিদ্ধ
করিয়া তাহার উপর লিক্দ্ সংলগ্ন করিবে। (৪) অন্ত্র কিংবা
লাইকর্ এমানিয়া শ্বারা উপথক্ উন্মোচন করিয়া বীল্ব দিবে।

গুটির গতি—টীকা দিবার পর তৃতীয় দিবসে ছেদিত স্থানে লাল ও উচ্চ প্যাপিউল্ দৃষ্ট হয়। দিন দিন উহার উচ্চতা ও আরক্তিমতা বৃদ্ধি পায়। এ৬ দিনের মধ্যে প্যাপিউল্ওলি ভেসিকেলে পরিণত হয়। উহারা দেখিতে গোল বা অত্যাকার. মধাস্থল নত, বর্ণ নীলাভ খেত। ৭ম দিবসের শেষে উহাদের চতুর্দ্দিকে একটা লালবর্ণ রেখা দেখা যায়, তাহাকে এরিওলা (Areola) কহে এবং তৎসময় গুটিগুলি পূর্ণতা প্রাপ্ত হয়। ৮ম দিবস হইতে গুটি সকল ক্রমশঃ বদ্ধিত হইয়া থাকে এবং ্দেখিতে গোল, আকৃষ্ট, ধার উচ্চ, বর্ণ মুক্তার ভায়ে উচ্ছল ও তন্মধ্যস্থ লিক্ষ্ কিঞ্ছিৎ গাড় হয়। অণুবীক্ষণ দ্বারা সচল পদার্থ দেখিতে পাওয়া যায়; তাহাকে ডাক্তার বিল্(Dr. Beale) বাইওপ্লাজ্ম্ বলিয়া উল্লেথ করিয়াছেন। ছই দিবস পর্যাস্ত এরিওলা (Areola) বিবর্দ্ধিত হয় এবং উহাদের ব্যাস ১ হইতে ৩ ইঞ্চ প্র্যাস্ত বাড়ে। ক্রমে উহার চতুঃপার্শ্বর স্থান ক্ষীত ও দৃঢ় হয়। ১১ দিবদের পর কোটকগুলি ক্রমশঃ শুদ্ধ হইতে থাকে এবং একত্র হইয়া চতুর্দ্দশ বা পঞ্চদশ দিবসে একটা বৃহৎ লোহিতাভ পাটল কচ্চু উৎপাদন করে। ঐ কচ্চু ১১ হইতে ২৫ দিবসের মধ্যে খলিত হইতে দেখা যায়। টীকা দেওয়া সফল হইলে তাহার দাগটি গোলাকার খেতবর্ণ এবং চর্মাপেক্ষা কিঞ্চিৎ নিম দেখায়। উহার বাাস 🔞 ইক্ষের নান হয় না এবং তলদেশে হন্দ্ৰ হন্দ্ৰ গৰ্ভ থাকে। এতহাতীত মধ্য-স্থল হইতে চতুপ্পার্থ প্রাস্ত রেথাবং চিহ্ন দেখা যায়। ঐ প্রকার দাগ থাকিলে টাকা সফল বলা যায়। দাগটি ঐক্লপ বৃহৎ কিংৰা পূৰ্কোক্ত প্ৰকাৰ চিক্ষুক্ত না হইলে অসম্পূৰ্ণ বা সন্দেহজনক এবং দাণটি সামান্ত হইলে বিষণ বলা বার।
সময় পাটগুলি উজ নির্মান্ত্রসারে বহির্গত না হইরা জির
হানে ২ বা ৩টি কিংবা আনেকগুলি জেলিকেল্ বহির্গত হইতে
দেখা বার। আপরিবর্তিত গোঁ-বীক হইতে টীকা হইলে ৮।৯
দিন পর্যান্ত প্যাপিউল্ উৎপন্ন হর না; বরং ১৪ কিংবা ১৬
দিন পরে বেগুলী বর্ণ এরিওলা দৃষ্টিগোচর হর। এত্তিরা
আনেকানেক অনির্মিত কল ফলিতে থাকে।

টীকা দিবার পর প্রথমে অর হয় না, কিছ গুটগুলি পরিপক্ষইবার সমর অর ও অঞ্চান্ত লকণ সকল প্রকাল পায়। গাতে ১০৪° ডিগ্রী পর্যন্ত উত্তাপ উঠে। ঐ সময় টীকা-ছানে কপ্তুমন, উক্তভা, বেদনা ও আরুইতা অহুভূত হয় এবং কক্ষের মাণ্ড-সমূহ ক্ষীত ও বেদনাযুক্ত হইয়া থাকে; তজ্জন্ত লিগুরা হত্তচালনা করিতে কইবোধ করে। কথন কথন এরিসিপ্ল্যান্থ বা ক্ষত এবং চুর্কাল শিশুদিগের অন্থিরতা, উদরাময়, ও অক্তান্ত কঠিন লকণ ঘটে। কোন কোন হলে বিশেষতঃ গান্তীর গাত্র হইতে লিক্ষ্ হইয়া টীকা দিলে প্রায় গাত্রে পাটনিকা, শৈবালিকা বা রসপ্তটী বহির্গত হইতে দেখা যায়।

এরপ অবস্থার অরনিবারণার্থ শিশুদিগকে মৃছ্ বিরেচক ঔষধ, যথা—> ভূাম্ ক্যান্তর অয়েল্ ও সামান্ত ঘর্মকারক ঔষধ দিবে। হত্তের প্রদাহ নিবারণ করিবার জন্ত আর্জ বস্ত্রথপ্ত, গোলাড্স লোষণ, বা কোল্ড্ ক্রিম্ অথবা চন্দন লেপন করিবে।

পুনটিকা প্রদান (revaccipation)—টকা দেওয়া বিজল কিংবা অসম্পূর্ণ হইলে, অথবা বসস্ত রোগের প্রাহ্নভাব কালে, পুনরায় ইংরাজি টীকা দেওয়া যায়। সচরাচর বয়ঃপ্রাপ্তির পর পুনরায় টীকা দেওয়া হয়। কোন কোন গ্রন্থকার বলেন, ৭ বংসর অন্তর টীকা দেওয়া উচিত। কিন্তু বিতীয়বার তাল করিয়া টীকা দেওয়া ইইলে পুনর্কার টীকা দেওয়া আবশুক করে না। প্রণম দেওয়া টীকার গুটি হইতে বিতীয় বা তৃতীয় বাবের গুটির অনেক বিভিন্নতা আছে। ইহার ফোটক গাঁয় বহির্গত হয় এবং বাশু দিনে রসগুটী(Vesicle)পূর্ব ইয়া গাকে। ৮।৯ দিবসে শুক্ত হইতে পাকে। পুনরায় টীকা দিবার পরও জরের সক্ষণ সকল প্রায় প্রবল থাকে এবং কথন কথন এরিসিয়্যাস্ উপস্থিত হয়। পুনটাকা প্রদানকালে কথন কথন কোন হুর্মকাচিত্র বাক্তি মুদ্ধি বায়।

একবার টীকা হইলে পর যাহার দ্বিভীয়বার টীকা দেওয়া হয়, তাহার দেহে আর কথনও বসন্তরোগ প্রবিষ্ট হইতে পাবে না। কোন কোন হলে যদিও বসন্ত হইতে দেখা যায় বটে, কিন্তু লক্ষণ স্কল মৃত্ হয় ও গাতে দাগ পড়ে না। টীকা দিবাব প্রধা প্রচলনের পর বসন্তেব সংক্রামকতা কম হইরাছে। भातिवसक वा कन-वनक (Varicella)

ইংরাজিতে ইহাকে chicken-pox বলে। ইহা একটা সংক্রান্তর্প ও প্রপালিকামক প্রক্রেটিক ব্যাধি। এই ব্যাধি কথন কথন অধিক বান বালিরা উপাহিত হর। উক্ত রোগ একবার হইলে বিতীর বার হর না এইরূপ সংখ্যার বটে, কিন্তু কথন কথন এক ব্যক্তিয় ছাইবারও ছাইতে দেখা গিরাছে। ইহা সচরাচর ৪ বৎসর বরত্ব বাজকনিগকে আক্রেমণ করিরা থাকে; কিন্তু সময় সমর ব্যক ব্যক্তিগণ ও বরত্ব স্তীলোকনিগকে আক্রান্ত হইতে বেথা বার। কেন্তু কেন্তু বলেন বৈ, ইনা একপ্রকার বসত্ত রোগ; কিন্তু পরীক্ষা করিরা কেনিলে ইন্তাকে বত্তর শীড়া বলিরাই অস্থান হর। কারণ প্রকৃত বসত্ত পান-বসত্তে মূলতঃ বথেট পার্যক্ত। অপ্রীক্ষণ বারা বিলেষ পর্যাবেক্ষণ করিরা দেখা গিরাছে যে, ইন্তার লসিকা বা প্রের মধ্যে এক প্রকার ক্ষা ক্ষা বিশ্বমন আচে।

কোন কোন হলে ১০ হইতে ১৪ দিবস পর্যান্ত ইহা গুপা-বহার থাকে, তথন ইহাতে কোন বিশেব সক্ষণ দেখা যার না। আবার অনেক হলে কোন অরের সক্ষণ উপস্থিত না হইরাই অগ্রে কণ্ঠ বহির্গত হইতে দেখা যার। কিন্তু অপরাপর হলে কণ্ঠ বহির্গত হইবার ২৪ বা ৩৬ ঘন্টা পূর্কে শিরোবেদনা, আলস্থ ও সামান্ত অর উপস্থিত হয় এবং সামান্ত কাশি ও বায়্নলীর প্রদাহের লক্ষণ সকল বর্ত্মান থাকে।

অরের প্রথম বা বিতীয় দিবসে ক্ষোটক গুলি সহসা বহির্গত চর। অত্যে বক্ষায়ল ও ক্ষকে দেখা দেয়; পরে ৪।৫ রাতি माधा करन करन क्रमनः इन्छ भनानिए गान्ध इहेर्छ शास्त्र এবং মুখমগুল সামাগু ভাবে আক্রান্ত হয়। কোন কোন গ্রন্থকারের মডে, প্রথম হইতেই ফোটকগুলির মধ্যে কিঞ্চিৎ जनवर रूम शास्त्र । किन्नु अधिक शाम किकिए छैक्क ए छैन्क्रम मामावर्ग मांग विश्रीष्ठ इत्र ध्वरः ६।७ वन्तेत्र मत्था छेशातक রসপ্রটীতে পরিণত হইতে দেখা বার। তখন গুটগুলি দেখিলে বোধ হয় যেন উষ্ণ জল ছিটা দিয়া রোগীর গারে কোছা উৎপর कता इंदेशाएए। २८ घणीत मर्पा एजनिरकरनत मधाक तन किकिए আবদ্ধ হর এবং তৃতীর দিবসে কভকগুলি ভেসিকেল পুর শুটি-কার মত দেখার। ভেসিকেল সমূহ দেখিতে গোল বা অঞ্জাক্ত এবং বসন্তের শুটির মত। উহাদের শীর্বজাগ অবনত কিংবা উহার। (कांग्रेज-विकक्त महर। विक क्त्रिंग श्रीविश्वन मूल्प्नंक्रत्भ সভুচিত হয় এবং এরিওলা থাকে না। ২৪ ফটার মধ্যে উক্ত গুটিসমূহ ঈবং গাঢ় ও অস্বচ্ছ হইরা পড়ে। চতুর্থ ও পঞ্চম দিবনে কণ্ড ওৰ হয় ও পাতলা কল্প নিশ্বাণ করে; পরে ভাষা ক্রমণঃ চণালাবে **খলিত হইয়া পড়ে। কল্পতিত হইলে কিবন্দিবসের** জন্ম গাত্রে সামান্ত লাল কাগ থাকে; স্থলবিশেষে কাগগুলি গভীর দেখা বায়। সাধারণ লক্ষণের মধ্যে সামান্ত জ্বর, সর্দ্ধি ও চর্মে কণ্ডুরন বর্ত্তমান থাকে এবং গাত্র হইতে এক প্রকার গদ্ধ বহির্গত হয়।

নির্গরতন্ত্র—টীকা দিবার পর বসন্ত রোগ হইলে কথন কথন জল-বসন্ত বলিরা শ্রম হইতে পারে। বসন্তের শুটি বহির্গত হইবার পূর্ব্বে কটিদেশে বেদনা, বমন ও শিরোবেদনা প্রভৃতি করেকটি বিশেষ লক্ষণ বর্ত্তমান থাকে; কিন্তু এই পীড়ার তাহা দেখা যার না। জল-বসন্তের আবরণ বসন্তের মত দৃঢ় নহে। তেসিকেল্ অবস্থায় পরিণত হইলে তলদেশ বসন্তের শুটির মত উচ্চ বা কঠিন হয় না। হচিকা হারা বিদ্ধ করিলে চিকেন্-পন্ম, সম্পূর্গরণে সঙ্চিত হয়। কিন্তু বসন্ত ভক্রপ হয় না।

ভাবিফল—সর্মনা শুভ এবং সহজে আরোগ্য হয়; কিন্তু রোগারোগ্য হইবার পর রোগী কিয়দিন পর্যান্ত চর্মন থাকে।

চিকিৎসা—সচরাচর কোন ঔষধ প্ররোগের আবশ্রক নাই।
কোষ্ঠ পরিকার রাথিয়া লখু আহার দিবে। জর ও কাশি
থাকিলে তরিবারণার্থ উপর্ক ঔষধ সকল ব্যবহার করিবে।
সাধারণতঃ গৃহস্বেরা পান বসস্ত হইলে কুড়বাবুই, পেরাজ প্রভৃতি
বোগে একপ্রকার পাঁচন খাইতে দেয়, উহাকে বসন্তের "জ্লাড়ি"
বলে। বেণের দোকানে বসস্তের জাড়ি চাহিলেই পরিমাণ মত
মিলিত জাড়ি কিনিতে পাওয়া যায়।

বসত ঋড়ুতে আমাদের দেশে বসত্তরোগের প্রাহ্রভাব হর।
এই রোগের উপদ্রবশান্তির জন্ম আমাদের দেশে শীতলার পূকা
ও ন্তবকবচাদি পাঠ এবং শান্তি স্বন্তারনের রীতি আছে: মা
শীতলাই বসত্তরোগের অধিষ্ঠাত্রী দেবী, জ্বরান্তর তাঁহার সহকারী।

মলয়ানিল সঞ্চালিত ভারতে এই রোগের প্রাবল্য বছকাল হইতে শুনা বার। অথর্কবেদে (১।২৫।১) "তন্ধন্" শব্দে শীতলা রোগের উল্লেখ আছে। লান্ধিশাতা প্রভৃতি নানা স্থানে আজিও বসন্তের পরিবর্জে শীতলা নামেই এই রোগ কথিত হইরা থাকে। পিছিলাতত্ত্বে শীতলাদেবী বিন্দোটকের উগ্রভাপনাশিনী এবং ক্ষমপুরাণে তিনি বিন্দোটকবিশীর্ণের অমৃতবর্ষিণী ও গলগগুদি দান্ধশ গ্রহরোগবিনাশিনী বলিরা উক্ত হইরাছেন। এই কারণে ত্রণক্ষকত বসন্তরোগের তিনিই অধিষ্ঠাত্রী।

হিন্দ্যতে, একমাত্র শীতলাদেবীর সেবাইত ব্রাহ্মণ বা ডোম পণ্ডিতগণ বসন্তরোগ চিকিৎসার একমাত্র অধিকারী। তাঁহারা যে প্রণাশীতে চিকিৎসা করিরা থাকেন তাহা সংক্রেশে নিরে বিবৃত হইল। রেশ্বির গার বসন্ত দেখা দিলে, ডফণ্ডেই তাহাকে শতর গৃহে ও পবিত্রভাবে রাখিবে । রাজিবাসের পর বাসি কাপড়ে বা মলভাগাদি কয় কণ্ডচি বত্রে ঐ রোশীর ঘরে প্রবেশ করিবে না। দিবসে ৩ বা ৪ বার ঘরে গঙ্গাজল ছড়া ও ধূনা দিবে। বাটীর কেহ মাছ পাইবে না, লালপাড় কাপড় পরিবে না. অথবা পান গাইয়া ঠোঁট রাঙ্গা করিবে না। এমন কি, পায় পর্যান্ত আলতা দিয়া এয়োরা বেড়াইতে পারিবে না, ইহাতে মা শীতলার নিষেধ আছে। কারণ বসন্ত হইলেই গৃহে মা শীতলার অধিষ্ঠান হইয়া থাকে। এই জন্ম লোকে ঐ সময় গৃহে ঘট পাতিয়া মার পূজা করে। মা খেতাঙ্গী বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন, কিন্তু সাধারণে মার মূর্ত্তি খোব লালবর্ণ করিয়া গঠন করে। রোগী ঐ সময়ে একমনে মার মৃতি ধ্যান করিয়া থাকে, শালপাড় বা রাঙ্গা ঠোঁট রাসভ্যা খেতাঙ্গী দেবীর অপমানকর ভাবিয়াই সম্ভবতঃ ঐরপ নিষেধাক্তা প্রচারিত হইয়াছে। বর্ত্তমান কোন বৈজ্ঞানিক স্থির করিয়াছেন যে, বসস্থ রোগগ্রস্তকে লালবর্ণহীন ঘরে রাথিলে ভাল হয়। কেননা লালবঙ্গের সহিত বসস্তের বিশেষ সহযোগিতা আছে। তাই বোধ হয়, আমাদের জ্ঞানী মনীযিগণ শীতলাদেবীর লালমূর্ত্তি কল্পনা করিয়াছিলেন। দেবীমূর্ত্তির ধ্যানে রোগমূক্তিরূপ সৌকিক ও মোক্ষরূপ পার-লৌকিক মূর্ত্তি বিনিবিষ্ট আছে। রোগারোগ্যের পর বসস্তের দাগ গাত্রচম্মের সহিত মিলাইবার জন্ম অনেক বহদশী লোক নারি-কেলোদক গায় মাখিতে বলেন।

শীতলার পণ্ডিতগণ প্রথমে রোগীর উষ্ণ রক্তের তাপ নিবারণ জন্ম এবং গাঞ্জালা শীতল করণার্থ বৈথক শাস্ত্রের মস্রিকা-ধ্যায়োক্ত কএকটা পাচন ও মকরধ্বজাদি ঔষধ ব্যবস্থা করিয়া থাকে এবং সঙ্গে সঙ্গে শীতলামাতার স্তবাদি পাঠ করিয়া রোণীর চিত্তে শীতলা মার প্রভাব বিস্তার করিয়া দেয়।

যদি গায় বসস্তু ভাল করিয়া না ফুটে, তাহা হইলে তাহারা আপনাদের অভ্যন্ত ঔষধ প্রয়োগ করিয়া বদস্ত উঠাইবার চেষ্ঠা পায়, এইরূপে যথন বসস্তগুলি গায়ের সর্ব্ব স্থলেই উঠিয়া ক্রমশঃ স্থুপক হয়, তথন তাহার৷ রোগীর গাতে চন্দন, কাঁচা হলুদের রস ও মাথম সংযোগে একটী ছোব্ লাগায়। তাছাতে রোণীর গাত্র শীতল হয়। তার প্র কাঁটা দিবার বাবস্তা। ঐ দিন তাহারা বেলকাটা ত্রণের উপরে বিধাইয়া বসস্তগুলিব মূথ উন্ধাইয়া দেয়। কাটা দিবার পূর্ব্ব রাত্রে ভাষার: রোণীব গৃহে পঞ্চপাত্রে গঙ্গাজ্ঞল, তুলা, থাটাত্ত্ম ও ৫টা বেলকাটা রাণিয়া বলে "মা আসিয়া কাঁটা দিবেন। ● তার পর আবভাক মত আমরা দিব, আবশুক না হইলে দিব না।" বেলকাটা দিয়া বসস্তের মুখ উদ্ধাইয়া দেওরা বিশেষ উপযোগী, কেন না তাহাতে কোণাকাব ছুঁচাল ব্ৰণের মুখে কাঁটার গোড়া স্পর্ল করায় বড়

 পর্কিন প্রাতঃকালে ঐ «টা কাটা, ভুলা, ছক ও গলামল নিখবুকের ৰুলে কেলিয়া দিতে হয়। বসভোৱ ছোঁচ কাটিলে "নিৰ্হলুদ" ছোচাইৰার বাৰত্বা আছে। 796

হইয়া পড়ে, অথচ কাঁটার হুচাগ্র ত্রণক্তের গন্তীরতম তলদেশ ম্পর্শ করিয়া থাকে। ইহাতে পুরনির্গমের বিশেষ স্থবিধা[®] ছয়। ক্ষতের পর গাত্রজালানিবারণের জন্ত ভাহারা সর্বালে মাথ্যের প্রলেপ দিয়া থাকে। কথন কথন কতের খা বা "বসস্তেব গোড়" আরোগ্যের অভ তাহারা বস্তুকুমারী পাভৃতি নানা প্রকার তৈল প্রস্তুত করিয়া ব্যবহার করায় এবং ক্ষত অপবা আক্রান্ত স্থানের উপর লাগাইতে বলে। ইহাতে বিলেষ উপকাব হটতে দেখা গিয়াছে।

মা শীতলার রূপায় বসস্তের উগ্রজাণা বিদ্রিত হইলে, হিন্দু মাত্রেই গৃহে গৃহে শাভলার গান দেয় এবং দেবীর সমুথে পুজা ও ছাগ বলি দেয়। এই শীতলা পূজার জন্ম স্থানে স্থানে আহ্নণ সেবাইত এবং কোণাও কোণাও ডোম পণ্ডিত নিযুক্ত আছে। ইছারাই বসস্তুরোগের চিকিৎসা করিয়া থাকে। চিকিৎসাপ্রণালী স্বতম। বসম্ভরোগের চিকিৎসা করিয়া কোন কোন ডোম পণ্ডিত গ্রমেণ্টের নিকট ডিপ্লোমা পাইয়াছেন।

শীতলার পণ্ডিতমূথে এবং দৈবকীনন্দম কবিবল্লভ ও নিত্যা-নন্দের শীতলা-মদলে আলকুশী, ধুকুড়িয়া, চামদল প্রস্তৃতি ৩৪ প্রকার বসম্ভের উল্লেখ গুনা যায়।

উরিলে পরম রঙ্গে "চৌষটি বসন্ত সঙ্গে, নানাদেশ বুলেন ভ্রমিয়া। ধুকু জিয়া চামদল, বিষম প্রবন্ধ বল, লোকে দেহ বসস্ত থাইয়া ॥' উক্ত গ্রন্থের আর এক স্থলে আছে,— 'আগে শীত আরম্ভ পশ্চাতে মাথা ব্যথা। চৌদ প্রহর জর ভোগ আমি করি তথা।।

চৌদ প্রহর অর্থাৎ দেড় দিন অরভোগের পর, প্রারই বসন্থ দেখা দেয় এবং মাথাবাথা কম্পসংগুক্ত জরই ৰসন্তাবিভাবের প্রধান লক্ষণ। বিভিন্ন প্রকার বসস্তের নাম ও বসস্তরোগম্কিক নিদানভূত শীতলান্তর ও শীতলার গান শীতলাদেবীপ্রসক্ষে [শীতলা দেখ।] বিবৃত হইল।

বসস্তলতা (নী) নারিকাডেদ।

বসস্তল্লনা (জী) ওক যুগী, চলিত খেতযুঁই। (বৈছক্নি॰)

বসন্তলেথা (জী) রাজক্সাভেদ। (রাজভর৹ ৭।>৫৭)

বসন্তনিতল (পুং) বিষ্ণুমূর্ত্তিভেদ।

বসস্তাত্রণ (क्री) বসন্তনামক রোগজনিত ত্রণ, মহুরিকা।

বসস্তুত্ৰত (গুং) কোকিল। (বৈছক্ৰি•)

ব**সস্তশেথর** (পুং) কিরুরভেদ।

বস্স্তুস্থ (পু[ং]) বসম্ভক্ত স্থা (রাজাহংস্থিস্ভাইচ্।

६।८।२) हेल्डि उठ्। कामरन्द । (इनायुथ)

বসন্ত্রসমন্ত্রোৎসব (থং) বসন্তব্যরক্ত উৎসবঃ। বসন্ত স্থানের উৎসবং, বসন্তোগন্ত, কান্তন্যানের পূর্ণিয়াভিথিতে প্রীক্তকের উদ্দেশে বে উৎসব হর। ২ বসন্তুকালের উৎসবমাত। বসন্তাসেন (গং) রাজপুত্রভেগ। (কথাসরিৎসা
ত প্রসন্তাসেনা (রী) মহাক্ষি রাজা প্রস্ক-প্রশীত স্ক্রুটিক নামক প্রকরণের নারিকাভেগ। অবস্তীপরীতে চারুদ্ধত নামে অনৈক সাধবাহ আহ্নণ বুবা ছিলেন, বসন্তাসনা বেশ্বনিতা হইরাও

ঐ দরিপ্রযুবকের গুণাছুরাণিণী হইবা পড়েন। বসন্তসেনা

क्रबर्गाणात जांत्र त्रमधिता, अदेशभारे कवित वर्गमा ।

"অৰস্তীপূৰ্ব্যাং বিষমাৰ্থবাহো ধুৰা দৰিল্ল: কিল চাৰুদন্তঃ। গুণামূরকা গণিকা চ যস্ত, বসস্তুপোডেব বসস্তুদেনা।" (মুক্ত্ৰুটিক > আঃ)

বসস্তার্দ্ত (পৃ:) বিভীতক রক। (বৈশ্বকনি॰)
বসস্তাধ্যয়ন (রী) বসম্ভসহাচরিত অধ্যরন। (পা ৪।২।৬৩)
বসস্তিকা (রী) অপরোভেদ।

বসন্তোৎসব (ক্লী) বসম্বস্ত উৎসব। ফান্তনোৎসব। ফান্তনমানের
পূর্ণিমার দিন বৈশ্ববগণসহ প্রীক্তকের প্রিয় ভক্ত বসন্তের
পূর্নোৎসব করিতে হয়। এই উৎসবের বিধি ব্যবহা প্রভৃতি
ভবিয়োত্তরপতে ভগবান্ বরংই যুধিষ্টিরের নিকট ব্যক্ত করিয়াছেন। ইহার ফলশ্রুতি সম্বন্ধে এইরূপ বলিরাছেন যে, যে জন
লাপ্রদাসনমত এই ফান্তনোৎসব অক্ষ্টান করিবে, আমার
প্রসাদে তাহার সমন্ত মনোরপই পূর্ণ হইবে। ভ ভুষারকাল
অতীত হইলে বসম্ভকালে বাস্ত্রী-পূর্ণিমার দিন প্রাতে যে জন
চন্দন সহক্ষত চ্ডকুস্থম ভক্ষণ করে, নিশ্চরই শতবর্বকাল পর্যান্ত
ভাহার জীবন স্থম্মর হইরা থাকে।

শ্বতে তুষার সমরে সিতপক্ষনশাম, প্রাতর্গরসমরে সমুপন্থিতে চ । সম্প্রাপ্ত চুডকুস্থমং সহ চল্পনেম। স্তাং হি পার্থ পুরুষোহলশতং স্থথাকাং।"

(হরিভ**ক্তি বি• ২**৪ বি•)

২ বসম্ভকালোম্ব উৎসবমাত্র।

"শব্দ তারিন্ মহাবেশো বসজোৎসববাসরে। আববৌ প্রথমে বামে কুমারসচিবো নিলি ।"(কথাসরিৎসা॰ ৪।৪৯) [মধনমহোৎসব দেখ।]

বসন্তোৎসবমগুল (क्री) হরিতাল। (বৈছক্নি)
বসর্হন্ (পুং) ১ নানা বেশধারী। ২ অগ্নি। "মমজুন: পরিআ
বসর্হা (পুক্ ১/১২২।৩) 'বসর্হা বসনার্হো পার্হপ্রাদির বেশ,
বছা বাসকানাং আজ্ঞাদকানাং বৃক্ষাদিনাং হতাগ্নি: অথবা,
বসর্হা বাসার্হো বাসরত গম্মিতা (পারণ)। [বসনার্হ দেখ]
বস্ব, (বৃষত্ত শন্দের কনাড়ী অপত্রংশ)—দাক্ষিণাত্যের বীরনৈব
বা লিলারত-সম্প্রদারের প্রবর্ত্তক। বীরনৈবদিগের নিকট ইনি
শিবাস্থান্তর নন্দীর অবতার বলিরা প্রাসিদ্ধ। দাক্ষিণাত্যে আজও
লক্ষ্ণ লক্ষ লোক এই বসবের মত অস্থুসারে চলেন, স্পুতরাং ইনি,
একজন সামান্ত ব্যক্তি নহেন। ইহার মাহাম্মা ও ধন্মমত
বীরনৈবদিগের 'বসবপুরাণে' ও 'ছরবসবপুরাণে' বর্ণিত আছে।

বসবপুরাণে বিশ্বিত আছে,—জৈন, বৌদ্ধ ও চার্কাকাদগের এডাবে ভারতভূমি হইতে শৈবধন্ম একপ্রকার বিশুপ্ত হইবার উপক্রেম হয়। সেই সমর নারদ ঋষি কৈলাসে গিয়া মহাদেবকে ভারতভূমির হরবয়। জানাইলেন। শিব ও পার্কাতী উভয়েই নারদের কথার বিচলিত হইলেন। ক্ষণকাল চিস্তার পর শিব সভাধর্মপ্রচারের অফ্ল নশ্দীকে পাঠাইলেন।

ৰঙবরী নামক প্রামে মাদিরাজ নামে এক শৈবপ্রাহ্মণ তাঁহার সাধবী পত্নী মদলাখিকার সহিত বাস করিতেন। তাঁহাদের সম্ভানাদি ছিল না। পুত্র কামনা করিয়া তাঁহারা নন্দিনাথের পুলা করায়, নন্দিনাথ প্রাহ্মণের বাসনা পূর্ণ করেন। তাহাতেই প্রাহ্মণ-পত্নী গর্ভবতী হইলেন। তিনবর্ষ কাটিয়া গেল, গর্ভভারে প্রাহ্মণী অভিশন্ধ পীড়িভা হইয়া নন্দিনাথের নিকট কট জানাইলেন, নন্দী মথে প্রাহ্মণীকে দেখা দিয়া কহিলেন, আমি নিজেই ভোমার গর্ভে অবতীর্ণ হইব, কোন চিল্কা নাই। অনভিকাল পরে প্রাহ্মণী কঠে লিকশোভিত এক শিশু প্রস্ব করিলেন, তাঁহার নাম হইল বসব।

অন্নদিন মধ্যেই বসৰ লিখিতে পড়িতে শিখিলেন। ৮ম বর্ষে জাহার উপলবনের নাম আদিল, পিতা উপলবনের আয়োজন করিলেন, কিছ তিনি বজ্ঞোপবীত লইতে সমত হইলেন না। তিনি প্রকাশ করিলেন,—'আমি শিবভক্ত, আমি ব্রন্ধকুল চাহি না। ভাতিভেদরপ বৃক্ষয়লছেদনে আমি কুঠার স্বরূপ।'

এই সমর কল্যাণপতি বিজ্ঞালের মন্ত্রী বলদেবও তথার উপস্থিত ছিলেন; তিনি বালকের অপূর্ব শক্তির পরিচর পাইর। তান্তিত হইলেন। এমন কি তিনি আপেনার কলা গলাদেবীর সৃহিত বসবের বিবাহ দিলেন। অরদিন মধ্যেই বলবের মত

শ্লাক্সভাং পৌৰ্বাভান্ত বিৰখ্যাবৈদ্ধবৈ: সহ ।

 শ্ৰুক্ত প্ৰিয়ত কল্প বসবভাৰ্তনোৎসৰ্ব ।

ভাবব্যাক্তরভা ক্ষেত্রভাবিবিশেশপেন্সতে ।

ব্: শ্ৰুব্ধিক সোন্তো ব্যক্তং ভগৰত। বৰষ্ ।

এবং ব: কুক্তে পাৰ্ব লাজেকং কান্তনোৎসৰ্ব ।

৪২ প্ৰসাদাক নিধান্তি ক্ষা সংক্ষে ক্ষ্মান্তবাং ।

(ইনিভক্তিনি)

চারিদিকে রাষ্ট্র হইল। বাদ্ধপেরা তাঁহার নিপ্রহ আরম্ভ করিলেন। কান্দেই তাঁহাকে জার্মুমি পরিত্যাগ করিতে হইল। তিনি কর্মুড়ী গ্রামে আসিয়া বাস করিলেন, এখানে প্রসিদ্ধ সক্ষমেন্তরের মন্দির। সক্ষমেন্তরের প্রত্যাদেশ হইল "তাঁহাকে শৈবধর্ম প্রচার করিতে হইবে। সক্ষমিদিগকে আমারই বন্ধপ তাবিবে,—সহত্র অপরাধ করিলেও তাহাদের দেব করিবে না। পরত্রী বা পরধনে ক্রক্ষেপ করিবে না, সর্বাদা সত্য বলিবে এবং সত্যপালন করিবে।"

কর্মড়ী গ্রামে উৎসব হইল। এ উৎসবে নন্দীমৃর্ত্তিরও
পূজার বাবহা ছিল, রাক্ষণেরা বরারর যে ভাবে পূজা করিরা
আসিরাছেন, সেই ভাবেই সঙ্গমেশরের পূজা করিলেন, কিন্তু
নসব আসিয়া ভিন্ন ভাবে পূজা করেন, তখন রাক্ষণেরা চটিয়া
বসবকে মারিতে উন্ধত হইলেন। এই সময় কলমেশর কলদ
গন্তীর নিনাদে সকলকে জানাইলেন 'তোমাদের পূজা রুধা,
বসবের পূজাই প্রক্লত পূজা,' এই ঘটনার বসবের মাহাশ্মা
সর্ক্র প্রচারিত হইরা গভিল।

কল্যাণ-রাজমন্ত্রী বলদেবের মৃত্যু হইলে, বিক্ষালরাজ আত্মীর বজনের পরামশে বসবকেই মন্ত্রিত প্রদান করিলেন। যথন বসব রাজমন্ত্রিরণে কল্যাণে প্রথম প্রবেশ করেন, তথন কল্যাণ-রাজধানী মাঙ্গলিকচিছে স্থাশোভিত হইয়াছিল। বন্ধং বিক্ষালরাজ অতি সমাদরে আগবাড়িয়া বসবকে লইয়াছিলেন। তিনি রাজমন্ত্রিত ব্যোগত প্রধান সেনাপতি ও প্রধান কোষাধাক্ষপদও লাভ করেন? বলিতে কি কল্যাণপতি ভিন্ন তাঁহার উপরে আর কেহ রহিল না।

বিজ্ঞানর জ তাঁহার অসাধারণ গুণে মুগ্ন হইয়। তাঁহার কনিষ্ঠ ভাগিনী নীললোচনাকে বসবের করে সম্প্রদান করিলেন। বসবের উরত চরিত্র, সদাশয়তা ও স্বাধীন ধর্ম্মোপদেশে রাজ্যের সকলেই বিমুগ্ধ, দেশ বিদেশে তাঁহার কীন্তি বিবোষিত। এমন উরতচরিত্র মহাপুক্ষেরও ১২ হাজার কুকর্মনিরত লিলায়ত আচার্য্য ছিল, বেশ্রালয়েই তাহারা বাস ক্রিত!

রাজমন্ত্রিকলালে রাজকীরকার্যা বাতীত তাঁহার হারা বহ আমাস্থ্যিক কার্যা সাধিত হইরাছে। তিনি গোম ওজনের বাটথারাকে নিজরণে ও জোরারীর বস্তা মুক্তার পরিণত করেন। বাছুরের হুধ বাহির করিরা শিবাদিগকে থাওয়াইরাছিলেন, চিত্র হুইতে কাঁঠাল বাহির করেন, রাজসভার বসিরা হুইফোল দূর-বর্ত্তিনী গোপালনার কাতরবারী শ্রবণ ও তাহাকে উদ্ধার করেন।

বিজ্ঞানরাজ একবিন গুনিলেন যে, মন্ত্রী তাঁহার ধনাগার শৃষ্ট করিরা জলমকে অর্থ বিতরণ করিতেছেন। রাজা এ সংবাদ পাইরা বস্বের উপর অতিশ্ব বিরক্ত হন এবং তাঁহাকে ডাভিয়া আানরা বলেন, "তুমি কি মনে করিয়াঁছ বে, তুমি বাহা ইচ্ছা তাহাই করিবে। এরপ লোককে আমি চাহি না। বসর হাসিরা উত্তর করিলেন, বতবিদ আমার কাছে ক্যুমধেন্ত ও করতক আছে, ততদিন আমার চিত্তা কি ''' এই বলিরা তিনি রাজাকে ধনাগার দেখাইরা বিভিত্ত করিলেন।

এক্লিন রাজসভার বদ্ধ জন্মধারণের সাহাত্ম প্রকাশ करतम, बांबा टेबन धर्यावनची। छत्रधात्रभ वा निर्द्धाशास्त्रमात्र উপর ভাঁহার কিছু বাত্র আছা ছিল না। বসবের মুখে ভদ্ম-নাহাত্ম ওনিয়া হাসিয়া একজন নীচলাতীর খ্রীলোককে বেথাইয়া উত্তর করেন,এই বেখ জন্মানুত হাড়ীতে কেমন পৰিত্র সূরা নইয়া राहेरछरइ। यमय छरक्मार छेखन्न कतिरामन, के भविक भारक কথনই স্থরা থাকিতে পারে না, এইরূপ বলিয়া রাজাকে প্ররার भित्रेवर्ष्क इद्य त्मथादेश मित्नन । मक्त्नाहे ठमएक्र इहेन । किक्कमिन পরে একজন বৈদান্তিক কল্যাণের রাজসভায় উপস্থিত হন, ভাহার मत्म वहमाश्यक हाज जवा मनति हाजी तासाई गहेरछ भारत এত পুঁথি ছিল। সভাস্থ সকলেই উঠিয়া বৈদান্তিকের সম্মাননা क्तिरमन, रक्षम यमव जस्कर क्तिरमन मा। देवशक्तिक তাথ লক্ষ্য করেন। পঞ্জিতবর জাঁহাকে লক্ষ্য করিয়া রাঞ্জি জিজানা করেন, ঐ জন্মার্ড-মৃত্তিটা কে ৷ রাজা অতি-মুখ্যাতি ক্রিয়া নিজ মান্ত্রর পরিচয় দিলেন। অনজন বেদান্তিক তাহার সহিত শাল্লালাপে প্রবন্ধ হইলেন। বসব একে একে ठाँहात्र नकन ठकंबान १ इतन कत्रितन । अवस्थित देशासिक শিবের নিক্ষা আরম্ভ করিলেন, তথন বসৰ বলিলেন, শিবের निमा कतिया अभाव धक्त माथा शिवाहिन, छाहात मछ শিবনিশুকের মাথা শগুরাই উচিত, এরপ লোকের সহিত শান্ত-বিচার আমার শোভা পার না। খড়ের পুরুষ এইরূপ অর্কাচীনের সহিত শান্তবিচার করিতে পারে। বৈদান্তিক একটা থড়ের পুতृन তৈয়ারী করিয়া বসবকে দেখাইলেন। कि আশ্চর্যা वनव मिहे थए भीवनमान क्रिया छोशबरे बाबा विमासिक्स দর্শ চুণ করিলেন। তথন বৈদান্তিক স্থলবলে বস্বের শিষ্যত্ব चीकात्र कत्रिरमन ।

একদিন বহুলোকের কোণাহলে বিজ্ঞানরাজের নিজাওল হইন, তিনি সেই গভীর নিশিথে প্রাসাদের ছাদে উঠিরা দেখিলেন চারিদিকে লোকারণ্য, জালোক্যালার সমস্ত পথ ঘাট ঘেন দিবালাকের মত হইরাছে। রাজা দেখিলেন, লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ নিজারত শৈবে তাহার রাজধানী জার্ভ করিরা কেলিয়াছে, শৈবের পোবণের জন্ত তাহার মন্ত্রী তাহার রাজকোব নিঃশেব করিয়া কেলিতেছেন, ভাবিরা জাতার ক্ষুত্ব হইলেন। পর্যাদন মন্ত্রীকে বৃত্তর পূর্ণ দানা করিলেন। রাজার ভণ্ স্না ত্নিরা ব্সব কাণে

হাত দিলেন, পরাধীনতা তাহার অসহ বোধ হইল। তিনি তৎ
কণাৎ রাজাকে তাহার যাহা কিছু ছিল সমত অর্শণ করিয়া

॰ কল্যাণব্রাজধানী ত্যাগ করিয়া চলিলেন।

প্রথর রৌক্রতাপে জনাছারে পদব্রজে ২২ ক্রোল পথ আসিরা এক পুরোহিতের সহিত দেখা হইল। তিনি বন্ধ করিরা তাঁহাকে নিজালয়ে আনিলেন। এখানে ভগবান্ তাঁহাকে অপ্রে দেখা দিরা জানাইলেন, 'ভোমার চিন্তা নাই। অমুক স্থানে গর্ত মধ্যে এক-ছারা মালা পাইবে, তাহাতে ভোমার সকল উদ্বেগ দূর হইবে। সেই গর্তে হাত দিবা মাত্র এক ভরত্বর বিষধর সর্প বাহির হইরা পদিল। কিন্তু কি আলচার্যা! স্পর্ল মাত্র সেই সর্প তাঁই হার বেচিয়া বসব প্রভৃত অর্থ পাইলেন এবং তন্ধারা মহাসমারোহে জন্ম সেবার ব্যাপৃত হইলেন। বিক্রনান্ধ তাঁহার অপুর্ব্ধ ক্ষমতা দর্শনে বিমুদ্ধ হইয়া আবার তাহাকে মন্ত্রিও প্রদান করিলেন। বসবের ক্ষমতা আবার বাড়িয়া গেল, সহল্র সহল্র লোক আদিরা তাঁহার ভক্ত হইল।

ছরবসবপুরাণে লিখিত আছে, বসবের চরিত্রবল, জান-প্রভাব ও অলোকিক শক্তির ফলে শৈবসম্প্রদায় প্রতিষ্ঠিত হইল, তথন বসবের জোষ্ঠা ভগিনী নাগলাখিকার গর্ডে স্বয়ং ভগবান শিব অবতীর্ণ হইলেন। নাগলাখিকা চিরকুমারী অথচ বয়ন্তা. ভাঁহার গর্ভগক্ষণ দেখিয়া নানা জনে নানা কথা রটনা করিল। রাজার কাছে ও অভিযোগ আসিল। রাজা বিচার করিবার জন্ম মাগলাদিকাকে আনাইয়া তাঁহার গর্ভের কারণ জিজ্ঞাসা করি-्त्रन । माध्वी कुमाद्री अकूछिठ ভाবে ताकारक ज्ञानाहरनन, याः ভগধান তাঁহার গর্ভে আদিয়াছেন। ইহা তাঁহার দেবপরিচর্যাার ফল। রাজা সহজে তাঁহার কথায় বিশ্বাস করিলেন না, কিন্তু কি আশ্র্মা ! নাগলাখিকার গর্ড হইতে স্বয়ং ভগবান্ হন্ধার করি-লেন। সকলে স্বস্থিত হইল। যথাকালে স্বয়ং ভগবান শিব ভূমিষ্ঠ হইলেন, ভাঁহার নাম হইল ছরবসব। বসব ও তাঁহার মতাত্ববতী ক্তম্মগণ পূর্বেই পথ করিয়া রাখিয়াছিলেন। এখন ভগবান অব-তীর্ণ হইয়া নিজমত প্রতিষ্ঠা করিলেন। পিবর্গে বসব ও লিন্তায়ত শক্তে অপরাপর বিবরণ ডাইবা]

বসবান, বাসক, আছোদক। "তে হি বলো বসবানা: ।" (ঋক্১।৯।২)

'বসবানা বাসকা আছোদয়িতার::'(সায়ণ)

বসব্য (ক্লী) ধন, অর্থ, সম্পত্তি। (ঋক্ ২।৯।৫)
বসা (ত্রী) বসতে বত্তে ৰা বস-নিবাসে বস-আচ্ছাদনে বা
বস-জচ্ ! ক্রিরামাপ্। > মাংসরোহিণী। ২ মেদোধাড়। (রাঞ্চনি°)
৩ গুরুমাংসভ্তর মেহ, চলিত চক্রী।

"ভদ্দাংসভ য: কেঃ সা বসা পরিকীভিডা।"

(সুক্রত শারীরস্থান ৪ জঃ)

বসা ও লেহের পার্থক্য নির্দেশ করিয়া মহীধর লিথিয়াছেন— "তাণামানস্ত বা লেহো মেদসঃ সা বসা মতা"

(শুকু যকু: ২৫।৯ ভাষা)

বৈছকশাল্রে বসাবিশেষের বিশেষ বিশেষ গুণের উল্লেখ জ্বাছে। মথা—

"বদা মজ্জা চ বাতন্ত্ৰী বলপিত্তকজ্ঞপা। শৌক্ষী মাহিষী বদা বাতলা শ্লেমবৰ্দ্ধিনী।

সার্পনাকুলগোণেরা তলপনে এণকুষ্ঠহা।" (অতি ১৪ অ:)
মংশু, শিশুমার ও মকরাদি গ্রাহ প্রভৃতির বসার গুণ ও •
ঐকপ। উহা বিসপ্তর, হুলু ও কুষ্ঠবোগম। [মেদ: শব্দ দেব।]

বহু প্রাচীন কাল হইতে বসার প্রচলন আছে। তৈত্তিরীয় সংহিতায় "বসাহোমের" (৬।৩)১১।১) ব্যবস্থা দেখা যায়। স্থানতে বরাহবসার উপকারিতা নির্দিপ্ত হইয়াছে। ধবল রোগে শ্করবসানির্দ্ধিত প্রালেপ গাত্রস্বাকের বিশেষ উপকারী। বাত রোগে শ্করবসা মার্জন সন্থ রোগনাশক।

এই বরাহ বসা বা শৃকরের চর্জির ঐতিহাসিকতা সম্বন্ধে আমরা ভারতের স্থবিথাত সিপাহী বিদ্রোহের উল্লেখ করিতে পারি। যে টোটা কাটা লইয়া ১৮৫৭ খুষ্টাব্দে হিন্দু ও মুসলমান সিপাহী দল ইংরাজ কোম্পানীর বিপক্ষে অভ্যথিত হইয়াছিল, সেই টোটা উক্ত উভয় জাতির নিষিদ্ধ গো ও শৃকরবসামিশ্রণে প্রান্থত বলিয়া তাহাদের বিশ্বাস ছিল।

জীবশরীরের মেদ বা চর্বিব তাপযোগে গলাইয়া তাহা হইতে ঝিলিজপদার্থগুলি (Membranous matters) পৃথক করিয়া লইলে ঘতবৎ পরিষ্ণার ও দানাদার বদা পাওয়া যায়। 🗿 বদার কোনরূপ ভাল আস্বাদ পাওয়া যায় না, উহাকে একরূপ স্বাদহীন পদার্থ বলিলেও চলে। বাণিজ্যের জন্ত দেশদেশান্তরে যে বসা প্রেরিত হইয়া থাকে, তাহা কতকপরিমাণে অপরিষ্কার ও ঈষৎ হরিদ্রাবর্ণ। জীবদেহের ভেদামুসারে এবং পদার্থের তারতম্যামুসারে ইহা সাধারণতঃ নানা প্রকার হইতে দেখা যায়। ঐ গুলির মধ্যে যে গুলি উৎকৃষ্ট, তাহা ঔষধ (মুলম = ointment প্রভৃতি) ও বর্ত্তিকা (candles:) প্রস্ততকার্য্য সম্পাদিত হয়। বসার মলম বা প্রদেপ প্রস্তুত করিয়া ক্ষত-স্থানে লাগাইলে ঘা শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ আবোগ্য হইয়া উঠে। Tallow candles বা চৰ্বির বাতি যাহা ঝাড়, সেন্স, সামাদান প্রভৃতিতে আলান হয়, তাহাও উৎকৃষ্ট শ্রেণীর বদা হইতে প্রস্তুত। অপেক্ষাকৃত নিকৃষ্টতর বসা হইতে সাবান (soap) প্রস্তুত হয়। চামড়া পালিস (Leather dressing) ও নরম করিতে চর্বির रित्नव ध्यामान । कनकवकात्र (Machinery) ও वानामित्र চক্রে চর্কি না লাগাইলে কার্য্যের বিশেষ ব্যাহাত জন্মে

ইংলগু, ফ্রান্স, জর্মণি, স্কান্দিনেবিয়া, ইতালী, ক্রম প্রভৃতি মুরোপীয় রাজ্যে সাবান ও বর্জিপ্রস্কতের জন্ম প্রচুর পরিমাণে বসা গালান হইয়া থাকে। অধুনা আমেরিকা, জাপান ও ভারতের স্থানে স্থানে জীবদেহের চর্জি হইতে বসা গালাইয়া লইয়া সাবান, বর্জি প্রভৃতি প্রস্তুতের কারথানা স্থাপিত হইয়াছে। ঐ দকল স্থানে কি রূপে বসা গালান হয়, তাহা নিয়ে বিবৃত হইল—

কসাইগণ পশুমাংসবিক্রয়ের গপর, চর্ক্রিসমষ্টি (fat and sult) কারখানায় বিক্রয়ার্থ আনে। বসাকারী Renderer) সেই ৰসাগুলি লইয়া ছুবীর সাহায়ে খণ্ড গণ্ড করিয়া কাটিয়া উঞ্চজলে ফেলিয়া অঘিযোগে ফুটাইতে থাকে, এই প্রক্রিয়ায়
• চর্ক্রি ক্রমশং গলিয়া ঝিল্লী হইতে বিযুক্ত হয় এবং ধীরে ধীরে জলের উপরে ভাসিয়া উঠে। তৎপরে গাদ কাটাইবার স্থায় আন্তে আন্তে সেই বসা হাতায় উঠাইয়া পারায়্ররে রাধা হয়। ঝিল্লীসংলিপ্ত হইয়া যে চর্ক্রি তখনও পাত্রত থাকে, তাহাকে উপযুক্ত 'মাড্নযন্ত্র' সাহায়ে উত্তমরূপে পিবিয়া বাহির করিয়া লওয়া হয়। ঝ ঝিল্লীপিণ্ড বা খাঁখ্রী (Graves বা Cracklings) নামে পরিচিত। পুনরায় ঝ খাঁখ্রীগুলি জলে সিদ্ধ করিলে নরম হইয়া আইসে ও ফুলিয়া মোটা হয়। তথন তাহা গৃহপালিত পক্ষী, কুকুর ও অক্যান্ত পশুদিগকে খাওয়ান হইয়া থাকে।

জীবহত্যার পর বসানয়নকার্য্য শীঘ্রই সম্পাদনকরা আব-শুক্, কারণ শবদেহ হইতে অচিরে চর্ম্বি স্থানাস্তবিত না করিলে, তৎসংশ্লিষ্ট তম্ভ ও মাংসম্ব্রগুলির পচাধরার সঙ্গে সঙ্গে চর্মিও শীঘ্র পচিয়া উঠে।

পৃথিবীর মধ্যে একমাত্র ক্ষরাজ্যেই সর্কাপেক্ষা অধিক পরিমাণে বসা উৎপন্ন হয়। তদ্দেশবাসিগণ প্রায় প্রতি বৎসরে ২৫ কোটি পাউও ওজনের বসা বিভিন্ন দেশে রপ্তানী করিয়া থাকে। ইহা ছাড়া তাহারা আপনাদের অদেশবাসীর ব্যবহারার্থ বসা প্রস্তুত করে। ঐ পরিমাণ বসা সাধারণতঃ মুরোপীর ক্ষরাজ্যের দক্ষিণস্থ পোন্টাইন্ টেপী (Pontine steppes) নামক স্থবিত্বত তুণপ্রান্তর মধ্যেই সংগৃহীত হইনা থাকে। তথার যে সকল স্থবৃহৎ বসার কারথানা আছে, তাহাকে Salgans বলে। ঐ কারথানাগুলি কেবলমাত্র গ্রেট-ক্ষরিয়ার অধিবাসির্ক্রের কর্তৃহাধীনে পরিচালিত। তথাকার কর্ম্কর্তারা সহস্র স্থবাদি পশু একসলে ক্রম্ম করে এবং এক বংসর উত্তমরূপে থাওরাইয়া তাহাদের গাত্র চর্ক্বিপূর্ণ করিয়া লয়। বথন ঐ সকল পশুগাত্র হইতে চর্ক্ষি নিদ্ধানন আবিশ্রক ও উপযোগী বলিয়া বিবেচিত হয়, তথন তাহারা সেই গ্রাদিকে সাল্গান্ মধ্যে তাড়াইয়া লইয়া নিহত করে।

এই সকল সালগান বাটিকার মধ্যে সাধারণতঃ একটা বিভ্ত উঠান এবং তাহার চতুস্পার্ছে বসাকরণরূপ ব্যবসায়ের উপবোগী কএকটা খর থাকে। তন্মধোঁ একটা নিহত গোমাংস বিক্রম-স্থান, কএকটীতে মাংসদিদ্ধ করিবার বয়লার প্রভিষ্টিভ ও কোন গৃহে চামড়াগুলি লবণজারিত থাকে। অপর কএকটাতে দপ্তর-ধানা ও কর্মচারিবুলের বাসভবন। গ্রীম্মকালে কেইই সালগানে পাকে না, কেবল কুকুর ও শিকারী পক্ষিগণ এখানে মাংসের পৃতিগন্ধের আখাসে বাস করে। গ্রীম অতীত হইরা আসিলে তাহারা প্রথমে সামান্ত সংখ্যক মাত্র পৃষ্টকার বুব এখানে আনিয়া বিনাশ করে। তৎপরে বর্ষা ঋতর প্রারম্ভে ভাচারা প্রক্রভ প্রস্তাবে কার্য্যারম্ভ করিয়া থাকে। তথন দলে দলে সালগান মধ্যে পশু আনিয়া অতি নৃশংসভাবে নিহত করিয়া থাকে। পশুহত্যার পর, ঐ পশুর গাত্রের ছাল ছাড়ান হয়; তৎপরে পাছা ও পৃঠের যে স্থানের মাংদে চর্কি নাই, দেই সেই স্থানের তিন চার টুকরা মাংস কাটেয়া লইয়া ভাহারা বাঞ্চারে বিক্রম্ব করিতে পাঠার। নির্ভূররূপে মারা হেতু ঐ মাংস এরূপ খারাপ হয় যে. কোন ভদ্ৰাজিই তাহা ক্ৰয় করে না। একমাত্র দরিদ্রেরাই ভাহা ক্রয় করিয়া থাকে।

অবশিষ্ট শবদেহ তাহারা নাডিভড়ি বাদে কাটিয়া টকরাটকরা করে এবং তারপর বয়লার (Boiler) মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া চর্মির বাহির করে। এক একটা বরলারে ১০ হইতে ১৫টা বুৰমাংস ধরিতে পারে। প্রতি সাল্গানে এইরূপ ৫।৬টা বয়লার আছে। পাছে কটাহের গাত্রে মাংদ লাগিয়া পুড়িয়া উঠে, তাই ব্রলার মধ্যে ভাহারা সামাত্র মাত্রার জল দের। কটাহন্তিত মাংসান্তি মজ্জা "Soup" নামে খ্যাত। কটাহের উপরে চর্ব্বি গলিয়া উঠিলে হাতা দিয়া কাটাইয়া তাহাকে পিপায় রাখে. পরে ভারাই আটিয়া বৈদেশিক বণিকের হত্তে ভিন্ন ভিন্ন দেশে প্রেরিড হর। প্রথম যে বসা উৎলাইতে থাকে, ভাষা সর্বাপেকা সাদা ও উৎকৃষ্ট। তৎপরে যে বসা পাওয়া যায় তাহা ঈষৎ ভবিলাবর্। পিপা না থাকিলে চামড়ার সেলাই করিয়া এক একটা কুপা বা থলি প্রস্তুত করিয়া তাহাতে বসা রাপা হর। এট দ্বিতীয় শ্রেণীর বসা উথিত হইলে পর, বয়লার পাত্রন্থ অবশিষ্ট মাংস ও অস্থি কলের ভয়ানক চাপে নিস্পেবিত করিয়া ভালা হইতে নিজ্ঠতর এক প্রকার বদা, বাহির করা হয়। हेहा मत्रनायुक्त कृष्णवर्ग वना नाधात्रगण्डः करनत्र हाकात अन्त বাবজত হয়।

একটা পৃষ্টদেহ বৃষকে এইরপে আলে দিলে সাধারণতঃ
২৫০ হইতে ২৯০ পাউও বসা পাওরা বার। উহার দার
১৫০ রুবুলের কম নর।

• উপরে যে গ্রাদির পরিত্যক্ত অগ্রাদির কথা লিখিত হইল, জীহাও একবারে নৃষ্ট হয় না। বসাব্যবসায়ীরা ব্যবসা বৃদ্ধির জন্ত শুকরও রাথে। সেই শুকরগুলি ঐ আর ধায়। তাহাতে শৃকরের পাল চর্কিন মাত্রা বাড়ে। পরে ঐ শৃকরগুলিও বসা-নির্যাসকলে কটাই মধ্যে নিক্ষিপ্ত, আলোড়িড ও নিপিট इहेग्रा थीएक ।

বদাব্যবসায়ীরা খেত ও ছবিজাবর্ণ বসার মধ্যে যে পিপাগুলি বাতির উপবোণী এবং যেগুলি সাবানের উপযোগী তাহা স্বতন্ত্র রাথিয়া বিক্রম করে।

জীবশরীরের স্থানবিশেষজাত চর্কি কঠিন ও কোৰল হইরা থাকে। বৃহত্তের পার্যস্থ চর্কি স্বভাবতঃই কঠিন, কিন্তু অফি-গহবর মধ্যে বে যে স্থানে চর্কি জন্মে, তাহা উহা অপেকা অনেক কোমল। ভঙ্কি মাংসপেশা ও অভাত কমনীয় দেহাংশে ্য সক্ষ চৰ্কি থাকে, ভাহা সৰ্বাপেকা কোমল ও অৰ্ছ তৈলাক মক্ষা বলিলে চলে। এইরূপ জীবদেহেরও তারতম্যাতুসারে বস। কঠিন ও কোমল হয়। বৃষ বা আংশার চর্কির আংপেক্ষাছাগ, হরিণ প্রভৃতি কোমলকার পশুর চর্কি কোমল এবং স্মতি অৱতাপেই গলিয়া উঠে। ৭২° হইতে ৯২° ডিগ্রী-তাপে সকল **हिसिंडे शिनम्रा फेट**र्र ।

ভৌত্তিক কার্য্য-সম্পাদন করিতেও বিভিন্ন জাতীয় পশু পক্ষী প্রভৃতির বদার আবশ্বক হয়।

মমুষ্য, নানা জাতীয় পশু এবং জলচর মৎস্থনক্রাদির শ্রীরে বিভিন্ন প্রকার বসা জন্মে। ঐ সকল বসার গুণ ও স্বাতস্থা বৈশ্বক শাস্ত্রে বিবৃত আছে। [জীবজন্তদিগের পৃথক্ নামে এবং यि भरम हर्क्सित्र बिरमध विवत्तन छहेवा।]

বদাকেতু (পুং) ধ্মকেতুবিশেষ। যে সকল কেতৃ পশ্চিমে উपिত अथठ উত্তর দিকে आयुष्ठ, उहर ও सिधमूर्वि, তাহাকে বসাকেতু বলে। এই কেতু উদিত হইলে মড়ক ও উত্তম स्डिक इहेबा शास्त्र । (वृ° म° >>।२२)

বসাঢ্য (পু:) বসরা আঢ়ঃ প্রচুরবসাবরাদক্ত তথাছ:। শিওমার, চলিত গুণ্ডক। (ত্রিকা•) [গুণ্ডক দেখ]

বসাঢ্যক (পুং) শিশুমার (Dolphinus Gangeticus) বসাতি (পুংরী) ১ জনপদ। ২ উত্তর জনপদবাসী জাতি। ৩ জনমেজনের পুত্রভেদ। (ভারত জাদিপ•) ৪ ইক্লাকুর প্রভেষ। (इतिवरम)

বদাতিক ুপুং) বদাভি নামক উত্তর জনপদবাসী। (রু° স°১৪।২৫) বসাতীয় (অ) ২ বসাভিজাভিসম্বীয়। ২ বসাভিরাজ। वमामनी (जी) शिक्षिश्मभा। (देवचकनि॰) বসাপায়িন্ (পুং) বসাং পিবতীতি পা-ণিণি। কুৰুর। (শব্দমালা)

বসাপাবন্ (তি) বসাপানকারী দেবতা। (গুরু বছু: ৬।১৯) বসাময় (ি) বদা বরূপে, মরট্। বদাবরূপ। জিরাং ভীপ্। वना माधान।

বসামুর (পুং) প্রাচীন জনপদভেদ।

বসামেহ (পুং) বাত শশু প্রমেহরোগ। বায়ু কুপিড হইয়া মেহরোগ উৎপন্ন হয়। বসামেহে বসাতৃল্য অথবা বসা মিশ্রিত মুত্র বারংবার নিঃস্ত হইয়া থাকে। কেহ কেহ এই বদা-মেহকে সর্পিমেহ বলিয়া থাকেন। (স্কুশ্রুত নি॰)

বসামেছিন্ (ত্রি) বসামেহবিশিষ্ট ব্যক্তি। যাহার বসামেহরোগ হইরাছে। (স্থশ্রত)

বসার (ক্লী) ইচ্ছা, অভিপ্রায়।

বসারোহ (পুং) ছত্রিকা, কোঁড়কছাতা। (হারাবলী)

বসিত্রা (অব্য) পরিবান করিরা।

বদাবশেষমলিন (ত্রি) বদাশেষ দারা মলিনতা প্রাপ্ত।

বুদাবি (স্ত্রী) বস্থসমূহ। "বদাব্যামিক্স ধারম" (ঋক্ ২০।৭৩।১) 'বদাব্যাং বস্থসমূহং' (দায়ণ)

বিদি (পুং) বত্তে আচ্ছাদয়ত্যনেন বহুতে আচ্ছাদনপূৰ্বক **ঞ্জিয়তে ইতি বা বদ আচ্ছাদনে (খনিক্যঞ্জীতি। উণ্**৪।১৩৯ 🖯 ইভিই। বসন। (উচ্ছেশ)

বিসিক (ত্রি) শৃহ্য। [বশিক দেখ।]

বসিতব্য (ত্রি) পরিধানযোগ্য।

বসিতৃ (a) আজ্ঞাদয়িত। বন্ধ দারা আবরণকারী।

विमन् (श्रः) वमा ।

विमन्ता (भारती) व्यक्तिमी। বসির (ক্লী) বস-কিরচ্। > সামূদ্ লবণ। ২ গজপিপ্ললী।

(সুশ্রু) (পুং) ৩ রক্তাপামার্গ। (ভাবঞা ।) ৪ বারিনিম।

বিদিষ্ঠ, একজন অংসিছ মন্ত্রতা ধবি। ঋথেদের ৭ম মণ্ডলের অধিকাংশ ঋক্ই বসিষ্ঠ বা বসিষ্ঠগণের দৃষ্ট। বসিষ্ঠের জন্মসম্বন্ধ

বৃহদ্দেবতা নামক বৈদ্বিক্তগ্ৰেছে লিখিত আছে— "তয়োরাদিতায়োঃ সত্তে দৃষ্ট্বাপ্সরমূর্বলীম্। রেতশ্চকন্দ তৎকুম্বে স্থপতব্দতীবরে ॥ তেনৈব তু মুহুর্ছেন বীর্ঘ্যবন্তো তপম্বিনৌ। অগন্ত্যণ্ড বসিষ্ঠণ্ড ভত্ৰৰী সংবভূবভু:॥ বছধা পতিতঃ রেড: কলসে চ বলে ছলে। হলে বসিষ্ঠন্ধ মুনিঃ সংবভূববিসভ্তমঃ ॥ কুন্তে দ্বগন্তা: সমূতো কলে মংকো মহাছাভি:।… ভভোহপা গৃহমাণাম বিসর্চঃ পুরুরে হিড:। नर्कछः भूकरत छः वि विस्थापना व्यशंत्रकन् ॥"

মিত্র ও বরুণ এই ছই আদিতা যক্তর্লে উর্কাশিকে দেখিরা তাঁহাদের রেড: খালিত হয় এবং তাহা বসতীবর নামক ষজীর কুন্তে পতিত হইয়াছিল; তাহাতে মুহূর্ত্ত মধ্যে আগত্তা ও বসিষ্ঠ নামে ছই বীর্যাবান্ তপ্বী ঋষি আবিভূতি হইলেন। ঐ রেড: কলদে এবং জলে হলে বহুধা পতিত হইয়াছিল। ঋষি-সক্তম বসিষ্ঠমুনি হলে, অগতা কুন্তে এবং মহাছাতি মংশু জলে উৎপত্ত হইয়াছিলেন। জল ঢালিয়া লওয়া হইলে বসিষ্ঠ পুরুরে (জলে) ছিলেন, তথন দেবগণ সকল দিক্ হইতে সেই জলে তাঁহাকে ধারণ করিয়াছিলেন। ঋক্সংহিতায় বসিষ্ঠের উৎপত্তি সম্বন্ধে ঐরপ আভাস পাওয়া যাম—

"উত্তাসি সৈত্রাবকণো বসিঠোব আ বন্ধন্মনসোহধি জাতঃ।
দ্রপ্যা ক্লঃ ব্রহ্মণা দৈব্যেন বিশ্বেদেবা পুকরে খাদদংত ॥
স প্রকেত উভয়ল প্রবিগান্ত্র সহম্রদান উত বা সদানঃ।
যমেন ততঃ পরিধিং বয়িয়য়পরসং পরি লজে বসিষ্ঠঃ॥
সত্রে হ জাতাবিধিতা নমোজিঃ কুন্তে সিধিচতুঃ সমানং।
ততো হ মান উদিয়ায় মধ্যাত্ততো জাতম্বিমাহর্বসিষ্ঠং॥"

(शरधम १।००।३५ ५०)

অর্থাং হে বসিষ্ঠ ! তুমি মিত্র ও বক্রণের পূত্র। হে ব্রহ্মন্ !
উর্ব্বশীর মন হইতে তুমি জাত। তথন (মিত্র ও বক্রণের)
রেতঃ অলন হইয়াছিল, বিশ্বেদেবগণ দৈবা তোত্র দ্বারা পুদর
মধ্যে তোমায় ধারণ করিয়াছিলেন। প্রকৃষ্ট জানসম্পন্ন বসিষ্ঠ
উভয় (লোক) অবগত হইয়া সহস্র দান করিয়াছিলেন।
যম কর্তুক বিস্তীণ্রস্বব্যনকরণেছায় বসিষ্ঠ উর্ব্বশী হইতে
জন্মিয়া ছিলেন। সত্রে প্রাণিত হইয়া (মিত্র ও বরুণ) কুম্ভ
মধ্যে যুগপং রেতঃসেক করিয়াছিলেন। অনস্তর মধ্য হইতে
মান প্রাকৃষ্ঠ হইলেন। লোকে বলে বসিষ্ঠ ঋষিও তাহা
হইতেই জন্মিয়া ছিলেন।

বসিষ্ঠ কি রূপে ঋষি হইলেন ? এ সম্বন্ধে ঋষেদ হইতে এইরূপ বর্ণনা পাই—

"আ যদ্কহাব বকণত নাবং প্রথং সমুদ্ধ সর্বাব মধ্য।
অধি যদপাংসভিতরাব প্রপ্রেথ ইংধ্যাবহৈ ভতে কং ॥
বিসিঠং হ বক্লণো নাব্যাধাদ্বিং চকার স্বপা মহোভিঃ।
ভোতারং বিপ্রঃ স্থানতে অহাং যানু ভাবততনতাত্বাসং॥"
(ব্যায়েদ ৭।১৮।৩-৪)

বধন আমি (বিসিষ্ঠ) ও বরুণ উভরে নৌকার চড়িরাছিলাম, সমুদ্রের মধ্যে নৌকা স্থলররপে প্রেরণ করিয়াছিলাম, এবং জলের উপর গমনশীল নৌকার ছিলাম, তধন শোভার্থ দোলার স্থথে থেলা করিয়াছিলাম। বরুণ বসিষ্ঠকে নৌকার লইরাছিলেন, ভাহার মহাতেকে তিনি নিজ স্থক্য হারা বসিষ্ঠকে কবি করিয়া

ছিলেন। তাঁহার দিন ও উবা বর্দিত হউক, এইরূপ স্তব করিবেন বলিয়াই স্থাদনে তাঁহাকে তোজা,করিয়াছিলান। °

বংশধরগণ ক্লাস্ রাজের প্রোহিত ছিলেন। ক্লাস্ পিজারনের বংশধরগণ ক্লাস্ রাজের প্রোহিত ছিলেন। ক্লাস্ পিজারনের প্র, দেববতের পৌত এবং দিবোদানের বংশধর। বসিচ পৈজাবন ক্লানের পৌরোহিত্যকালে রাজার নিকট হইতে বহুতর ধনরত্ব পাইরাছিলেন। ব্যেদে ক্লাস্ পৈজাবনের দান-ভতিবিষয়ক ক্ষেত্র দেখা বার, বসিচই ঐ প্রেক্তর ক্ষি।

(बारपारम १ मखन ३৮ न्यूकः।)

ঋথেদের ৭ম মগুলের ৩০ হকে লিখিত আছে—
"উভামিবেকৃষ্ণ জো নাখিতাসোহনীধর্দাপরাজে বৃতাস:।
বসিষ্ঠপ্ত স্তবত ইজো অপ্রোহকং তৃৎস্থভ্যো অন্তলাহ লোকং ॥৫
দণ্ডা ইবেলো অজনাস আসন্ পরিচ্ছিরা ভরতা অর্জকাস:।
অভবক্ত পুর এতা বসিষ্ঠ আদিত্ৎ হনাং বিশো অপ্রথংত ॥৬"

তৃষ্ণাত্ম রাজগণ কর্ত্ব পরিবৃত বৃষ্টিপ্রার্থী বসিষ্ঠগণ দশ রাজার সহিত সংগ্রামে আদিত্যের ছার ইল্লফে উর্চ্চে উথাপিত করিয়াছিলেন। ইক্স স্থাতিকারী বসিষ্ঠের ভোত্র প্রথণ করিয়া-ছিলেন এবং রাজগণের জন্ম বিস্তীণ লোক প্রদান করিয়াছিলেন, গোত্রের দণ্ডের স্থায় ভবতগণ (শত্রুগণ) পরিচ্ছির ও অর-সংথ্যক ছিল। অনন্তর বসিষ্ঠ ভাহাদিগেরই পুরোহিত হইলেন এবং তৃৎস্থানিগের প্রজাবৃদ্ধি হইতে লাগিল। এখানে বসিষ্ঠ ভরতগণেরও প্রোহিত হইতেছেন।

ঐতরেয় ত্রাহ্মণে বর্ণিত আছে —

"এতেন হ বৈ ঐত্রেণ মহাজিবেকেণ বসিষ্ঠ: প্রদাসং পৈজবনম-ভিষিষেচ। তামাত্র স্থা: পৈজবন: সমস্ত: স্প্রিটা: জয়ন্ পরীযার অধ্যেন চ মেধ্যেন জকো।" (৮২১)

এইরপে বসিষ্ঠ ঐক্র মহাভিষেক মারা ক্রদান পৈঞ্বনকে অভিবিক্ত করিয়াছিলেন। তাহাতেই ক্রদান্ পৈঞ্বন সমস্ত পুথিবী জয় করিয়া অখনেধ যজ্ঞ করিয়াছিলেন।

বসিষ্ঠ ফ্লানের পুরোহিত হইলেও সৌদাস বা ফ্লানের পুত্রগণ তাঁহার শতপুত্রের প্রাণসংহাককরিয়াছিলেন। এ সম্বন্ধে রহদেবতায় লিখিত আছে—

"শ্বিদ দিশ রক্ষোথং প্রশোকপরিপ্রত:।
হতে প্রশতে ক্র: সৌদানৈত্ 'থিতজন ॥"
সামণ বৃহদ্দেবতার বচন উদ্ভ করিরা দেখাইরাছেন,—
"হত্বা প্রশতং পূর্কাং বসিষ্ঠত মহান্তন:।
বসিষ্ঠং রাক্ষসোহিত:॥
অহং বসিষ্ঠ ইত্যেবং জিঘাংক্স রাক্ষসোহত্বীং।
অব্যোভরা গুটো বসিষ্ঠেনেতি ন: ক্রুতম্ ॥"

• অর্থাৎ মহাত্মা বসিচের শতপুত্র নিধন করিরা এক জিবাং স্বাক্ষদ বসিচের রূপ ধারণ করিরা ভাঁহাকে বলিরাছিল, তুমি রাফস, আমি বসিষ্ঠ। এই উপলক্ষে বসিষ্ঠ কতকগুলি অক্ দেখিরাছিলেন। তাহাই অক্সংহিতার ৭ম মণ্ডলে ১০৪ ফুকে ১২ হইতে ১৬ সংখ্যক মন্ত্র, তক্মধ্যে ১৬শ অকে ম্পষ্ট আছে—

"বো মান্নাজুং বাজুধানেত্যাৰ যো বা রক্ষা: ওচিরন্মীত্যাহ। ইক্স তং হন্ত মহতা বধেন বিশ্বত সম্বোরকস্পনীই ॥"

বে আমাকে "যাতুধান" (রাক্ষস) এই সংখাধন করিতেছে এবং যে রাক্ষস, 'আমি শুচি' এই কথা বলিতেছে, ইক্স মহা-আর্থ থারা তাহাকে বিনাশ করুন, সে সকল জন্তুর অধম হইয়া পতিত হউক।

বসিষ্ঠ সম্বন্ধে বেদে ঐক্লপ উল্লেখ দেখিয়া অধ্যাপক মূইর সাহেব লিখিয়াছেন—"যদিও বসিষ্ঠ পরবর্তী বৈদিক এছে আহ্নণ বিলয়াই গণ্য হইরাছেন, কিন্তু প্রকৃত প্রভাবে তিনি আহ্নণ ছিলেন না, তাঁহার অন্ম সম্বন্ধে গোল ছিল, এই কারণেই কোন হলে তিনি অহ্নার মানস প্র, কোথাও মিত্রাবন্ধণ ও উর্কাণীর পুত্র বলিয়া অভিহিত হইরাছেন।"

অধ্যাপক মোক্ষমূলর বেদের প্রমাণ উক্ত করিয়া তাঁহাকে আর্য্য ব্রাহ্মণ বলিয়াই এহণ করিয়াছেন। তাঁহার মতে বেদে বসিষ্ঠ মিত্রাবহুণের পুত্ররূপে বর্ণিত হইলেও তাঁহাকে মিত্র বা কর্যা বলিয়াই মনে হয়।

কৃষ্ণযক্ষ্ কাৰ তৈতি বীয়সংহিতা হইতে জানা যায় বে, সৌলাস কাৰ্ব বসিষ্টের পুত্র হত হইলে, তিনি তাঁহার প্রতিশোধ লইবার জন্ম চেষ্টা করেন—

"বসিঠো হতপুত্রোহকামরত বিলের প্রজামভি সৌদাসান্ ভবেরমিতি। স এতমেকমার পঞ্চাশমপশুং তমাহরৎ তেনায়জত। ভতাে বৈ সোহবিক্ষত প্রজামভি সৌদাসমভবং।"

অর্থাৎ বসিঠের প্রগণ হত হইলে তিনি কামনা করিয়া-ছিলেন, আমার সস্তান হউক, যেন আমি সৌদাসদিগকে পরা-ভব করিতে পারি। তিনি 'একমারাপঞ্চাল' মন্ত্র পাইয়াছেন, তাহা লইলেন, তাহাতে যক্ত করিলেন। তাহাতে প্রকা হইল এবং সৌদাসগণ পরাভূত হইল।

কোরীভকী ব্রাহ্মণে (৪র্থ অধ্যারে)ও এইরূপ বসিঠের পুত্র লাভ ও সৌলাসপরাভবের কথা আছে।

মন্ত্ৰংহিতার দেখা বার—
"মহবিভিন্চ দেবৈন্চ কার্যার্থং শপথাঃ কৃতাঃ।
বলিষ্ঠন্টালি শপথং সেপে পৈকবনে নৃপে " (৮।১১০)
মহবিগণ ও দেবগণ কার্যসম্পাদনের কক্ত শপথ করিরা

থাকেন। এইরূপে বসিষ্ঠ ঋষিও পৈজবন নৃপতির জন্ম শপথ করিরাছিলেন। কেন শপথ করেন ? মহাটীকার কুলুক লিথিরাছেন, "বসিষ্ঠোহপ্যনেন পুত্রশতং ভক্ষিতমিতি বিখামিত্রেণ আকৃষ্টো অপরিশুদ্ধরে পিজবনাপত্যে স্থদায়ি রাজনি শপথং চকার।'

অর্থাৎ বিধামিত্র কর্তৃক বসিষ্টের শতপুত্র ভক্ষিত হইলে তিনি কুদ্ধ হইয়া নিজ পরিগুদ্ধির জন্ম পিজবনের পুত্র স্থলামন্ রাজার নিকট শপথ করিয়াছিলেন।

এখানে কুলুক বিশামিত্রকে রাক্ষস বানাইরাছেন এবং সুদামন্ রাজার নাম করিতেছেন, বাস্তবিক বেদে এরূপ কথা নাই। বিশামিত্র শতপুত্র ভক্ষণ করেন নাই, এক রাক্ষস ভক্ষণ্ণ করের। সেই আপনাকে বসিষ্ঠ বিলিয়া পরিচয় দিবার চেষ্ঠা করিয়াছিল। ৭০০ ৪০০২ ঋকের ভারে সায়ণাচার্য্য বৃহদ্দেবতার মত উদ্ভ করিয়া দেখাইয়াছেন, পূর্ব্বে সে কথা বলা হইয়াছে। আর পিজবনের পুত্রের নাম স্থামন্নহে, তাঁহার নাম স্থাম্য। শাট্রায়ন ব্রাহ্মণে আছে—"সোদাসৈরছো প্রক্ষিপ্যমাণঃ শক্তিরস্তাং প্রগাথমালেভে সোহর্দ্ধর্চে উক্তেইজছ্ত। তং পুত্রোক্রং বিসিষ্ঠঃ সমাপয়ত ইতি।"

(বসিঠের পুত্র) শক্তি সৌদাস কর্তৃক অগ্নিতে নিক্লিপ্ত হইবার কালে প্রগাথের শেষাংশ পাইয়াছিলেন। অর্দ্ধ ঋক্ বলার শেষকালে তিনি দগ্ধ হইলেন এবং বসিঠ পুত্রোক্ত ঋক্ সম্পূর্ণ উচ্চারণ করিয়াছিলেন।—এইরূপে বসিঠ আপনার শপথ রক্ষা করিয়াছিলেন।

কাঠকে (৩৭৷১৭) লিখিত আছে---

শ্ববারা বৈ ইক্সং প্রত্যক্ষং ন অপখ্যান্তং বলিষ্ঠ: এব প্রত্যক্ষমপখ্যং। সোহবিভেদিতরেভ্যো মা ঋষিতা প্রবক্ষাতীতি।
সোহববীদ্ ব্রাহ্মণং তে বক্ষামি বধা দ্বং পুরোহিতাঃ প্রক্রাঃ
প্রান্ধবারে।

অথ মা ইতরেভা: ঋষিভাো মা প্রবোচ: ইতি তলৈ এতান্ ভোমভাগান্ অববীৎ। ততো বর্লিষ্ঠ পুরোহিত: প্রজা প্রজারস্ক:।"

ঋষিগণ ইক্সকে প্রত্যক্ষ দেখিতে পান নাই। একমাত্র বলিটই তাঁহাকে দেখিতে পাইয়াছিলেন। পাছে বলিট ঋষি সমক্ষে তাঁহার (ইক্সের) বিষয় বর্ণন করেন এই ভরে তিনি বলিট সাক্ষাতে আসিয়া গোপনে বলিলেন, আমি তোমাকে ত্রাহ্মণ বলিয়া স্বীকার করিতেছি। তুমি আমার বিষয় এই ঋষিগণের সাক্ষাতে বলিও না। পরে যাহায়া হল্ম গ্রহণ করিবে, ভাহায়াই ভোমায় পৌরোহিত্যে বরণ করিবেন।' সেইহেতু ইক্স বলিটকে ভোমভাগ বলিয়াছিলেন। ষড় বিংশ ব্রাহ্মণ (১০৯) দিখিত আছে,—"ইক্রো হ বিশ্বা
মিত্রায় উক্থ মুবাচ বসিষ্ঠায় ব্রহ্ম বাগুক্থমিত্যের বিশ্বামিত্রায়
মনো ব্রহ্ম বসিষ্ঠায়। তহৈ এতদাসিষ্ঠং ব্রহ্ম। অপি হ এবংবিধম্বা ব্রহ্মণং বা কুক্রিত।" ইক্র বিশ্বামিত্রকে উক্থ ও
বসিষ্ঠকে ব্রহ্ম বলেন। উক্থই বাক্ তাহাই বিশ্বামিত্রকে এবং
ব্রহ্মই মন তাহাই বসিষ্ঠকে। তাই এই মননই বসিষ্ঠের নিজন্ম।
পুলাণে বসিষ্ঠা

বেদে বিখামিত্র ও বসিষ্ঠের প্রসঙ্গ থাকিলেও কোথাও বসিষ্ঠের আশ্রমে নূপতি বিখামিত্রের সমন ও উভয়ের বিবাদের শপ্ত উল্লেখ পাওয়া যার না।

, বৃহদ্দেৰতায় (৪।২২) লিপিত আছে বটে,—

"পরশ্চতস্রো যাস্তত্র বিসিঠ্ছেষিণীবিঁত:।

বিশামিত্রেণ তা: প্রোক্তা অভিশাপা ইতি স্মৃতা:॥

দেষদেষাস্ত্র তা: প্রোক্তা: বিভাঠিডবাভিচারিকা:।

বিসিঠাস্ত্র ন শুরম্ভি ভদাচার্য্যকসন্মৃতম্।"

পরবর্ত্তী বিশ্বামিত্রপ্রোক্ত চারিটা ঋক্, বসিষ্টেরা ঐ মন্ত্র-চতুষ্টয় শুনিবেন না, ইচাই ঠাহাদের আচার্যোর মত।

এইরূপে বিশ্বামিত্র ও বসিষ্টের মধ্যে প্রশাসর বিজ্ঞের আভাস থাকিলেও বসিষ্টের ঐপ্যাদর্শনে বিশ্বামিত্রের ঈশা এবং তাহা হইতে তাঁহার আন্ধাদ্ধলাভের কথাও বেদসংহিতায় পাওয়া যায় না। রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণাদিতে এ সম্বন্ধে বিস্তৃত বিবরণ বর্ণিত হইয়াছে।

[বিশ্বামিত্র শব্দে বিশ্বত বিবরণ দ্রপ্টবা]

বিষ্ণুপ্রাণে লিখিত আছে, দক্ষকতা উর্জ্নর গর্ভে রকঃ, গাত্র, উর্জ্নবাহ, দবন, অনন, স্বতপা ও শুক্র এই সাত জন সপুর্বি জন্মে। ভাগবতপুরাণ মতে বসিঠের অপর পত্নীর গর্ভে শকুনামে এক পত্রের জন্ম হয়। মনুসংহিতার বসিঠের অক্ষনানা নামী আব এক পত্নীর উল্লেখ পাওলা যায়। অক্ষনালা নিম্কুল্কাতা হইলেও ভত্তার গুণে উন্নতা হইয়াছিলেন।

"যানুগ্ গুণেন ভর্রা স্বী সংযুক্তাতে যথাবিধি।
তানুগ্ গুণা সা ভবতি সমুদ্রেণেব নিয়গা।
অক্ষমালা বসিষ্ঠেন সংযুক্তাংশমযোনিজা ॥" (মহু ৯।২২-২৩)
মহাভারতে বসিষ্ঠের প্রধানা পরীব নাম অক্ষতী। রামারণে
লিখিত আছে, বসিষ্ঠের হুজারে বিশ্বামিত্রের শত পুর দ্র্র হুইরাছিল। রামারণ ও মহাভারত হইতে জানা যার, ইক্ষুকুপুত্র নিমি
হুইতে স্থাবংশীয় রাজগণের বংশপরশ্বার বসিষ্ঠ পুরোহিত
ছিলেন। বিষ্ণু ও ব্রক্তাগুপুরাণ মতে ৮ম ছাপরে বসিষ্ঠ ব্যাস
রপে অবতীর্ণ হইমাছিলেন। ঐ পুরাণেই দেবা যায় যে
বৃদ্ধিছ আষাঢ় মাসে স্থোর রথে অবস্থান করেন।

ভয়ে বসিষ্ঠ।

মহাচীনাচারক্রমতরে এইরূপ বর্ণিত আছে---

পূर्वकारन उक्काद मानन न्यूज विद्रमः यभी विमिष्ठ मूनि नीना-চলে ভারাদেবীর আরাধনা করিয়াছিলেনণ ভিনি অবুতবর্ষ পর্যান্ত তারিণীর আরাধনায় কালাতিপাত করিলেও তারা তাঁহার প্রতি কোন অন্তগ্যহ করিলেন না। ভাহাতে মুনিবর অত্যন্ত কুদ্ধ হইরা একার নিকট গমন করিলেন ও তাঁহাকে कानाहरनन, आमि नीनश्कां हित्रानी धवः मःवसी इहेम দেবী তারিণীর স্থারাধনা করিলাম, তাহাতে বখন দেবীর ক্রণা हहेन नां, उथन मात्र धक शक्ष्य जनशान कतिहा कर्छात छारव অযুত্বর্ব পর্যান্ত পুনরায় দেবীর আরাধনা করিলাম, কিন্তু যুখন ভাহাতেও আমার প্রতি দেবীর করুণা চইল না.তখন আমি নীল পর্বতোপরি একপদে দ্ভায়মান হইয়া প্রমসমাধি অবলম্বনপূর্ণ্ধক নিরাহারে দেবীর ধ্যানে সহজ্র বৎসর অভিবাহিত করিলাম এবং পুনরায় ঐরপ কঠোরভাবে দল সহস্র বংসর কামাথাার অভীত করিয়াছি: কিন্তু আৰু পর্যান্তও তাঁহার কোন অনুগ্রহ দেখিতে পাইতেছি না। অতএব হঃসাধ্যা এই বিভাকে আমি অভি চঃগের সহিত ত্যাগ করিতেছি। ব্রহ্মা বশিষ্ঠকে সাম্বনা করিবার *জগ্*য ৰলিলেন, বলিষ্ঠ ! তুমি পুনরায় নীলাচলে যাও, সেণানে থাকিয়া কামাধ্যা যোনিতে দেই পরমেশ্বরীর আরাধনা কর। অভি শীখুই তোমার দেবতাসিদ্ধি হইবে। মুনিবর ৰশিষ্ঠ পিতার এইরূপ বাক্য শুনিয়া সহস্রবর্ষ পর্যান্ত ভারার আরাধনা করিলেও যুবন মহেশ্বীতারা তাহার প্রতি কোনরূপে শ্রীতা চইলেন না. তথন মুনিবর কোপাবিষ্ট হইয়া দেবীকে অভিশাপ দিবার ক্রন্ত জল গ্রহণ করিলেন। এই সময় মনিবরের ক্রোধ অবলোকন করিয়া বন কানন পর্বতাদি দহ সমগ্র পৃথিবী ঘন ঘন কাঁপিতে লাগিল, সমস্ত দেব এবং দেবীগণের মধ্যে মহান হাহাকার ধ্বনি উথিত হইল। তথন সংসারতারিণী তারাদেবী বশিষ্ঠ মনির পুরোভাগে আবিভূতা হইলেন। মুনিবর বশিষ্ঠ তাঁচাকে দর্শন করিয়া অতি কঠোর অভিশাপ দিলেন। অনস্তর কটুদিদ্ধি-দাত্রী তারিণী বশিষ্ঠ মূনিকে বলিংকন, মূনিবর ৷ তুমি রোহবলে কেন আমাকে অভিশাপ দিতেছ। আমার আরাধনাপ্রক্রম একমাত্র বন্ধরূপী জনার্দন ভিন্ন অস্ত কেছ জানে না, তুমি বিক্লব্য-চার আশ্রয় করিয়া বুণাই বহু বংসর অভিক্রম করিয়াছ, বাস্তবিক তত্ব কিছুই জানিতে পার নাই। অভএব সম্প্রতি উদবোধক্ষপী বিষ্ণুর নিকট গুমন কর এবং ভাহার নিকট হইভে আমার আরাধনাক্রম সকল আবার অবগত হুট্রা আমার আরাধনার রত হও, তবে আমি নিশ্চয়ই তোমার প্রতি সম্ভই হইব।

उथन विनर्छ (पवीदक अवाम कतिया महाठीन (पटन छनित्मन,

र्श्यामात्रत्र भार्यत्वरम् लाटकवत्रत्मविक अवर महत्व महत्व কামিনীগগ্ল-পরিবেটিত মদিরাপানে মদমভ্রলোচন বৃহদেবকে দর্শন করিরাই বিষয়বিষ্ট ক্টলেন। ভিনি মনে মনে সংসার-ভারিণী ভাষাকে পরণ করিরা ভাবিলেন, একি বৃদ্ধাণী বিষ্ণু এ কোন্ আচার অবলবন করিলেন ? ইহাভ দেব ও দেবাচার-বিরুক। এই সময় দৈববাণী হইল, "হে মুনে। ভারিণীর পরমার্থিত এই আচার,ইহার বিক্ষাচারে তিনি প্রসন্না হন না ; অভএব বদি তুমি তাহার অনুগ্রহ চাও, তবে এই আচারে তাঁহাকে ভলনা কর।" মুনিবর বর্লিচ এই আকাশবাণী গুনিরা মগুৰৎ ভূমিতে পতিত হইলেন, পরে উঠিয়া কুডাঞ্জিপুটে বৃদ্ধপী বিশুর নিকট গমন করিলেন। মদমত্ত প্রসন্ধান্তা বৃদ্ধ তাঁহাকে দেখিয়া জিজাসা করিলেন, তুমি কি জঞ্চ এখানে আসিয়াছ়৷ মুনিও ভক্তি সহকারে প্রণাম করিয়া ভারিণীর আদেশবাণী বলিলেন। ভগবান বৃদ্ধ বলিলেন, মুনিবর ৷ যদিও এ আচার অপ্রকাশ্র, তণাপি আমি ভোমাকে বলিতেছি প্রবণ কর,—ভারাদেবীর আচারাছঠান করিলে আর সংসারে আসিতে হর মা, এই আচারে স্বানাদি সকলই মানসিক, এবং সকল কালই ওভ, কোনই অন্তভ কাল নাই এবং এই আচারে ভ্রমাদির অপেকা এবং মন্তাদির দোষ নাই। সর্বাদা কি লাভ কি অলাভ, কি ভুক্ত कि अञ्च नर्समारे (मवीत शृष्ण कतित्व,--रेजामि क्रांस वहजत মহাটীনাচারক্রম তাঁহাকে উপদেশ করিলে মহামুনি বলিষ্ঠ বৃষ্ণরূপী হরির বাক্য প্রবণ করিয়া পুনরার তাঁহাকে জিজ্ঞানা করিলেন প্রভা! তুমি তত্ত্তানমর, এই মহাচীনাচারক্রমে স্ত্রী ও মদ উভয় সন্মত; কিন্তু এই উভয়ের মধ্যে কোনটা প্রধান। বৃদ্ধ विनातन, मूतन ! এই आंচारत छेखन जूना हरेरन अ श्रीत मंत्रीरत অনেক দেবতার বাসহেতু স্ত্রীই প্রধান, তব্জ ভগবান এতগুভরের বছ গুণকীর্ত্তন এবং কৌলিকদিগের মাংস ও কুলাচার জব্যের লক্ষণ ও মাহাত্ম্য এবং সমগ্র মহাচীনাচারক্রম বর্ণনা ক্রিলেন। •

স্থানিবর বশিষ্ঠ সে সম্পার জ্ঞাত হইরা ঐ আচার অবলখন করিলেন এবং সংযতচিত্তে দেবীর আরাধনার নিরক্ত হইলেন। কিছুদিন পরে নীলাচলে দেবী মহামারা তারা প্রভাক্ষ দেখা দিয়া

> व्यानात्रभावमार्थाश्याः जात्रिमेनाथस्य मृत्य । এতপ্ৰিক্সাচারদ্য মতে নামে প্রসীদতি। বদি ত্র্যাঃ প্রসাদক্ষ্টিরেণাভিবাঞ্জন। এতেন চীনাচারেণ উদা তাং ভল্ল ফুব্রত 🛭 আকাশবাণীমাকণ্য রোমাঞ্চিতকলেবর:। বলিঠে। দওবদ্ভুমৌ প্পাভাতীৰ হৰিভ: । ভ্ৰোপার প্রণব্যাসো কুডাঞ্জলিপুটো মুনি:। क्रमाम विका: ममीनाः तुष्क्रसनम् भाकाष्टि । व्यथात्रो ७: नवात्नाका विश्वास्त्राप्तिक्वतः। আহ বৃদ্ধ: প্রসরাস্থা কিমর্বং ছবিছাপত: ঃ व्यथ द्वाः अनुमाह चिक्तित्वा महामूनिः। বছক্তং তারিশীদেব্যা নিজারাধনছেতবে। তচ্ছ। ভগবান বৃদ্ধক্ত জানময়ে। ছবি:। विष्ठेः व्याह क्ष्मानन्त्रीमातावाधिकाववान् । व्यकारणार्वमातात्रणात्रिगाः मर्का मृत्य । তৰ ভজিৰণাদলি প্ৰকাঞামীৰ ভংগৱা 🛭

বৃদ্ধ উৰাচ।

व्यवाहात्रविधिः वत्का छात्रात्मवाः ममुक्किमः। ত্যামুঠানখাৰেণ ভ্ৰাকো ন নিম্ভাতি : ममञ्जाकनमनामनारम्य विक्रिक्तः। তত্তান্মরং সাকাবিমুক্তিকলগ্রকর্ ৷ व्यानामि माननः (नोहर माननक क्याः वृतः। शुक्रमः मानगः निवार मानगः **ভर्गनाविकः** । नाज एक्यान्यरभक्तांख न ह नन्यानियूवनः। সৰ্বাধা পূজারেন্দেরীয়ন্নাত: কুডভোজন: । जीष्या देनव कर्जरवा विश्ववाद शूक्रमः जिन्नः। তাসাং প্রহারনিকাক কৌটলামপ্রিয়ন্তবা । नक्षण न ह कर्डवाम्डमा निकित्नाम्डर । षित्रा श्रयाः क्रियः आशाः क्रियं अयं विकृत्यः । जीर्गाजन। रामा कान्। मक्कमा क्षितारह । नवामनाविकक्तः मठात्मस्यायनमः । जनामानवमात्रका मुख्यस्याना विश्वपत्रः। महाठीनक्षमग्जारविद्यां मुक्तिमाध्र हार ह ক্সন্ধিবেতলৌহিত্যকুতুনৈয়র্চনেঞ্ছিবং। विदेवन सबकारिक कुमगीवर्किरेकः छरेकः । अक्निक क्रमात्म वा निर्वारण वा उक्रमात्व ।

ভটছ: সাৰদ্ৰেৎ বোগী ভারাং ভূষনভারিশীং 🛊

[&]quot;ততঃ প্রশম্য তাং বেবীং খলিটোংগৌ মহামুদিঃ।
কর্পাযাতায়বিজ্ঞানবাঞ্চঃ। বৃদ্ধনিশিব ঃ
ততে। সখা মহাটানে বেলে জ্ঞানবয়ে। মুদিঃ।
দর্গ হিনবৎপার্থে লোকেখরলুস্বিতন্ ঃ
ক্যাবিনীবাং সহত্রেণ পরিবাজিকনীখরন্।
মধিনীবাং সহত্রেণ পরিবাজিকনীখরন্।
মধিনীবাং সহত্রেণ পরিবাজিকনীখরন্।
হবিরাজন সহাবিটঃ অরন্ সংসারতারিশীন্ ঃ
কিবিরং ক্রিরতে করা বিশুল্য বৃদ্ধনিশা।
বেবদেব বিরুদ্ধেহবাচায়: সম্বত্যে দয়া ঃ
ইতি চিক্তর্জন্য বলিক্রন্য মহাঘ্নে:।
আহ্যাশ্রাপ্র প্রাহাত এবং চিক্তর মুক্তর ।

বলিলেন, বংস বলিঠ ! বর লও। বলিগ বলিলেন, মহামারে !
বস্থপি আপনি আমার প্রতি সব্দুই হইরা থাকেন, তবে আরাকে
এই বর দিন "যে এই আচার আত্রর করিয়া তোমার আরাধনা
করিবে, তুমি অবস্থ তাহার প্রতি মুপ্রসর হইবে।" দেবী তথান্ত
বলিয়া বর দিলেন। দেবী তারাও বলিলেন, বংস ! আণিমাদি
দিছিসমূহ তোমাকে নিরন্তর সেবা করিবে। মুনিবর বলিঠ মহামায়ার নিকট এইরূপ বরলাভ করিয়া নক্ষত্র লোকে আশ্রমপূর্কক
অস্তাবধি তথায় দীপ্রি পাইতেছেন।

বসিষ্ঠ (পুং) বশিষ্ঠ প্ৰোদরাদিয়াৎ শস্ত সঃ। বশিষ্ঠমূন।(বিরপকো•) বসিষ্ঠ, এক জন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত। ইতিহাস, গণ্ডায়াদি খোব-, বিচার, গ্রহশান্তিপদ্ধতি ও শান্তিবিধি নামক গ্রন্থরতা। এই শেবোক্ত গ্রন্থধানি বাশিষ্ঠীশান্তি নামে পরিচিত।

বসিষ্ঠক (পুং) বশিষ্ঠ ঋষি বা তৎসম্বনীয়। বসিষ্ঠতন্ত্ৰ (ফ্লী) তম্মভেদ।

বসিষ্ঠত্ব (क्री) বশিষ্ঠের ভাব বা ধর্ম।

বসিন্ঠনিহ্ব (পুং ফ্লী) সামভেদ। (লাট্যা॰ অন্তা২)

বসিষ্ঠপুত্র (পুং) বসিষ্টের পুত্র বা বংশধরগণ, ইঁহারা ঋথেদের ৭।৩৩।১০-১৪ মন্ত্রন্তী বনিদ্ধা কণিত। গক্ষণপুরাণের ৫ম অধ্যাদের বসিষ্ঠপুত্রগণের এইরূপ বিবরণ পাওয়া যায়।

"উৰ্জ্ঞয়ান্ত বসিষ্ঠশু সপ্তা জায়ন্ত বৈ স্থতা:।

রজোগাতোর্দ্ধবাহশ্চ শরণশ্চানঘশুণা।

স্থতপা: শুক্রইডোতে সর্ব্ধে সপ্তর্ধয়ো মতা: ॥" (গরুড় ধা:৬)
বিসিষ্ঠ প্রমুখ (ত্রি) বসিষ্ঠপুরত:। বশিষ্ঠপুরি যে কার্য্যে অগ্রনী।
নির্দ্ধে প্রমী) জনপদভেদ।

বসিষ্ঠ প্রাচী (ত্রী) জনপদভেদ। বসিষ্ঠশৃষ্ণ (পুংক্লী) সামভেদ। (লাট্যা• ১।৬।০১)

বিস্পৃত্ৰপূৰ্ণ (গ্ৰং) সন্মাসীভেদ। (আৰ' শ্ৰেণ ১০।২।২৫)

বসিষ্ঠসংছিত। (ত্রী) ধর্মধান্তবিশেষ। উনবিংশসংছিতার
নধ্যে একথানি সংহিতা, বসিঠ মুনি এই সংহিতা প্রণায়ন করেন,
এইকড ইংার নাম বসিঠনীক্রিতা হুইরাছে। এই সংহিতা
২০ অধ্যারে সমাস্ত। ইহাতে প্রথমে ধর্ম ও ধর্মের লক্ষণ,
বর্ণাশ্রমধর্ম, স্বাচার প্রভৃতি নানাবিধ বিষর বর্ণিত আছে।

"অথাতঃ পুৰুষনিঃশ্ৰেষসাৰ্থ ধৰ্মজিক্কাসা। ক্ৰাছা-চাছতিৰ্চন্ ধাৰ্মিকঃ প্ৰশক্তমো ভবতি।" (বসিৰ্চসংহিতা ১١১)

ং বোগৰাসিষ্ঠ। যোগৰাসিষ্ঠও বসিষ্ঠসংহিতা মামে . বৰ্ণিত হইরা থাকে। বসিষ্ঠসিদ্ধাস্ত (পুং) জ্যোভিবোক্ত সিদ্ধান্ত গ্রছবিশেষ।

বসিষ্ঠান্ত্ৰপ (পুং) সামভেদ। বসিষ্ঠান্তপদ (পুং) সামভেদ।

বাসভাসুসদ (মং) সর্বভীনদী ভীরবর্তী একটা হান।

বাবাজাবিবাছ (২০) বসংখ্যান্য ভাষ্ট্র একটা আবস্তা হান । বিশ্বামিত্রের ক্রোধ হইতে বশিষ্ট্রের রক্ষা করিবার মানসে সরস্বতী এখান হইতে বশিষ্ট্রকে ভাসাইয়া গইয়া গিয়াছিলেন।

বসিচ্ছোপপুরাণ (রী) একথানি উপপ্রাণ। দেবীভাগবতে এই প্রাণের উল্লেখ আছে। কেহ কেছ ইহাকে বালিঠ লৈলপ্রাণ বলিয়া থাকেন।

বসীয়স্ (এ) ধনবান্। (কাঠক ২৪।৯) বস্ত্ৰ (ক্ষী) বসভানেনেভি বস (শু-স্থ্ সিহীভি। উপ্১।১১) ইভিউ। ১ বন্ধ। ২ ধন।

"বৰমাৰ্জভয়োপশাস্তয়ে বিচ্বাং সংকৃতত্বে ৰহুঞ্ভম্। বস্তু তম্ভ বিভোন ক্ৰেৰদং গুণবন্ধাপি পর্যারোজনম্॥"

(ব্যু ৮০০১)

ত বুছোবধ। ৪ স্থাম। (মেদিনী) ৫ ছাটক। (বিশ্ব)
৬ জল। (উজ্জল)(খ্রী) ৭ দীরি। ৮ বুছোবধ। (শক্ষরত্বা)
৯ দক্ষের ক্যাবিশেব। দক্ষকত্বা বস্তু ধর্মপন্তীদিগের মধ্যে
জন্তকম। (বিক্তুপ্- ১৷১৫৷১٠৫)(জি) ১٠ মধুর। ১১ গুছ।
বস্তু (পুং) বসতীতি বস-উ। ১ বক্ষুক্ষ। ২ জনল। ০ মদ্মি।
৪ গণদেবতাবিশেব। এই গণদেবতার সংখ্যা আটটী। য্যা—ধর, ধ্বব, সোম, বিকু, জনিল, জনল, প্রত্যুব ও প্রভাদ। এই
আটজনই প্রসিদ্ধ জাইবস্তু।

"ধরো এবন্চ সোমন্চ বিস্কৃতিবানিলোহনলঃ।
প্রত্যুবন্ত প্রভাসন্ত বসবোহতী ক্রমাৎ দ্বভাঃ ॥" (করত)
অ্যাবসংহিতার বস্থগণের উল্লেখ দেখা যার। পুরাণাদি
লাল্ল প্রছেও তাঁহারা আই সংখ্যক বলিয়া কীর্ষিত। এই দেবগণের প্রভাব ও কার্যাকারিতা স্বদ্ধে মহাভারতে তীল্লোপাধ্যামে
বথেই বর্ণিত হইরাছে, ক্তি বৈদিক বিবরণ অস্থসর্থ ক্রিলে
ভাহাদিগকে এক একটা প্রকৃতিভব্যের নিবাসভূত-দ্বেভা

নহাটানক্ষমটোরেডা। রখ্য বং নধা তল্প । এন্তানিন্ প্রথাটারে ডুলাবেৰ বলং নুনে। প্রাধান্য বোষিতাং কিন্তু ক্ষেবাবেৰ ন সংগলঃ । বতো হি বোষিতো মেহে স্বব্দিব্দা সংছিতিঃ। অতঃ পুরাফু স্বব্দাহ তাসাং প্রাধান্তন্ত ।

ত্ব সর্জেবাবের গীঠানাং প্রধান্য বোনিগীঠকম্। ভত্ত সম্পুঞ্জিতা বেখী বটিতের প্রদীবতি ।" (চীনাচারকম)

ৰলিরাই বোধ হয়। আমরা অক্সংহিতায় স্থাৰিশেবে বস্থাগকে আপু, জবু, সোম, ধর, অনিল, অনল, প্রভান ও প্রত্যুব প্রভৃতি প্রকৃতিপুঞ্জের নিরামক কর্ত্বলপে দেখিতে পাই। রামায়ণে এই বস্থাণ অদিতির পুত্র বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। স্ক্সংহিতার হাবপা>>, পাৰবা>-ব, চাসচা>e ছলে **জা**হারা আদিত্য বলিয়াই পরিগণিত। ভাবার কোথাও তিনি অগ্নি এ।৬।১, ব।২৪।২, elesiso; কোবাও মক্ল্গণ elecib, ভাতে।৪, ণাওভা>৭; কোষাও ইল ১১১০।৭, ৪।০২১১৪, ৭৷৩১৷৩; কোথাও উবা ৬।৬৪।১, কোথাও অবিষয় ১৷১৫৮৷১ ; কোথাও রুদ্র ১৷৪৩৷৫ এবং কোথাও বা বাৰু ৪।৪-।৫ রূপে উক্ত হইরাছেন। উক্ত সংহিতার ১০১৬এ২ মত্রে দেখা বার যে, বস্থাণ সূর্যা হইতে অখকে নির্মাণ করিয়াছিলেন। ২।৩।৪ মল্লে তাঁহাদিগকে গুতাক্ত বহিতে (স্বরূপ অলি) উপবেশন করিবার জন্ম আবাহন করা হইয়াছে। বালসনেয়সংহিতার ৫।১১ মন্তে তাঁহারা অষ্ট সংখ্যক গণদেবতা; ২।৫ ও ১১।৫৫ মন্ত্রে আদিতা ও রুদ্র ; ৮।১৮ মল্লে নিবাসপ্রাদ দেবগণ এবং অথব্যবেদের "অস্মিন্ বস্থ বসবো ধারয়স্থিতঃ পুষা বক্লণো নিত্রো অগ্নিঃ। ইমমাদিত্যা উত বিশ্বেচ দেবা উত্তরমিন্জোতিষি ধারয়স্ত্র॥" (১।৯।১) ম্মু পাঠ করিলে জানা যায় যে, উক্ত গণদেবভারা ধ্রার নিয়ন্তা ছিলেন। তাঁহারা ধনরক্ষক এবং ইক্স ও অগ্নি প্রভৃতির অফুগত সহকারী। সায়ণাচার্য্য উক্ত মন্ত্রের ভাষ্যে বস্থগণের এইরূপ ব্যুৎপত্তি করিয়াছেন :--

"অস্মিন্ জনে সর্কাসপদাদি ফলকামে বসবঃ নিবাসহেতুত্তা এতৎসংক্ষা দেবা। বস্থ অভিলয়িতং ধনং ধারমন্ত স্থাপমন্ত। ধূঞ্ ধারণে অস্মাৎ ণিচ্ ৰসব ইতি। বস নিবাসে। শব্দ মিহি-মুপাসিবসিহনিফ্রিনির্ফানিজ্যান (উণ্ ১০১১) ইতি উপ্রতায়ঃ। তত্র ধানো ণিৎ (উণ্ ১০১০) ইতাহ্বরেওং ঞিলুতানির্নিতাম্ ইতি আত্যানার্তম্)"। বস্তুগণের এই ধনাধিগতা হেতু তাহারা প্রবৃত্তিকালে বিষ্ণু ও কুবের রূপে করিত ইইয়াছেন।

এই বস্তুগণ পিঞ্চিশেষ। মন্ত্ৰংহিতায় শিখিত আছে, শ্ৰাৰকালে পিভূগণের বস্তাদিরূপে ধ্যান করিতে হয়।

"বস্ন্ বদায় বৈ পিতন জন্তাংশৈচৰ পিতামহান্। প্ৰপিতামহাংখাদিত্যান্ শ্ৰতিৱেষ সনাতনী ॥"(মৃত্ ০৷ ৮৫)

উত্ত লোকের টাকায় কুলুক বিধিয়াছেন, 'বলাং পিতাদয়ো ধলাদয় ইতি এবা অনাদিভূত। শ্রুতিরতি অত: পিতৃন্ বস্বাধা-দেবান্ পিতামহান্ কুলান্ প্রপিতামহানাদিত্যান্ মহাদয়ো বদন্তি ৬৬-৮ সিক্লোধনবৈদ্ধগাৎ প্রাক্ষে পিতাদরো বলাদিরপেণ ধোয়া ইয়াত বিধিঃ ক্রাতে। অতএব পৈঠীনসিঃ—য এবং বিহান্ বিভান্যগ্রে ব্যবহা করা আদিত্যাশ্চাভ প্রীতা ভবত্তি।

শ্ৰীমন্ত্ৰাগৰতে লিখিত আছে,—দক্ষ প্ৰজাপতি বৰ্চমন্বস্তৱে ছিতীয় ক্রেম অসিক্লীর গর্জে ষষ্টি ক্তা উৎপাদন করেন। এই সমস্ত ক্যাই প্রজাপতিগণকে প্রদন্ত হইরাছিল। ভদ্মধ্যে ধর্মকে দশ্টী কল্যা দান করা হয়। উক্ত দশ কল্যার দাম যথা,—ভামু, লৰা, ককুৎ, ধামি, বিশ্বা, সাধ্যা, মকস্বতী, বহু, মুহুৰ্ত্তা ও সম্বল্লা। ইহাদিগের মধ্যে বস্থ নামী কন্সার গর্ভে আটপুত্র উৎপন্ন হয়। এই আট পুত্রই অষ্টবস্থ। এই অষ্টবস্থর নাম যণা,—ড্রোণ, প্রাণ ধ্রুব, অর্ক, অগ্নি, দোষ, বাস্ত্র ও বিভাবস্থ। দ্রোণের • অভিমতী নামী পত্নীর গর্ডে হর্ব, শোক ও ভয় প্রভৃতি পুত্র জন্মে। উৰ্জ্যুতীর গর্ভে প্রাণের চুই পুত্র উৎপন্ন হয়। তাহাদের নাম— প্লায় ও পুরোজ্ব। ধারণী পত্নীতে গ্রুবের পূর নামে একটি পুত্র হয়। বাসনা নামী পদ্মীতে অর্কের তর্বাদি পুত্র জন্ম। অগ্নি হইতে বস্থারার গর্ভে দ্রবিণক প্রভৃতি পুত্র উৎপন্ন হয়। শর্বরীর গর্ভে দোষ হইতে এক পুত্র জন্মে, এই পুত্র হরির জংশ-স্বরূপ, উহার নাম শিশুমার। বাস্ত হইতে আঙ্গিরসী নামী পত্নীতে বিশ্বকর্মার উদ্ভব। বিশ্বকর্মা চাকুষ নামধের মত্ন হইতে উৎপন্ন। মন্ত্র পুত্র বিশ্বদেবগণ ও সাধাগণ। বিভাবস্থ হইতে উষা নামী পদ্মীর গর্ভে তিন পুত্র জন্মে, তাহাদিগের নাম,—ব্যুষ্ট, রোচিষ ও তপ।

মহাভারতের দানধর্মে অষ্ট-বস্থর এইরূপ নাম নির্দিষ্ট হইয়াছে, যথা—ধর, ধ্বব, সোম, সাবিত্র, অনিল, অনল, প্রত্যুষ ও প্রভাষ।

অগ্নিপুরাণে আই বহার নামনিক্ষক্তি ও বংশবির্তি এইরপ দেখিতে পাই। নাম যথা,—আপ, এব, সোম, ধর, অনিল, অনল, প্রত্যাধ ও অভাস। ইহার মধ্যে আপের পুত্র বৈত্তা, শ্রম, শাস্ত ও মুনি। এবের পুত্র লোকাস্তকারী কাল। সোমের পুত্র বর্জা:। ধরের পুত্র প্রবিণ, হত, হব্যবহ, শিশির, প্রাণ ও রমণ। অনিলের পুত্র পুরোরব ও অবিজ্ঞাত। অগ্নির বা অনলের তনয় কুমার। ইনি শরস্তক্তে জন্মগ্রহণ করেন। শাখ, বিশাখ, ও নৈগমেয় এই তিনজন কুমারের পুঠজ। উক্ত কার্ত্তিকেয় ও যতি সনৎকুমার রক্তিকা হইতে উৎপন্ন। প্রত্যুষ হইতে দেবল এবং প্রভাস হইতে বিশ্বকশ্যার জন্ম। এই বিশ্বকশ্যাই দেবশিরী। ইহাঁ হইতেই বিবিধ শিলের আবিহার।

দেবীভাগবতে অষ্টবস্থর এইরূপ বিবরণ নিপিবন্ধ হইরাছে।
এক সময় অষ্টবস্থ স্থান্থ পদ্মীসহ স্বেভাবিহারে বাহির হইরা

। নাক্রমে বশিষ্ঠা শ্রমে আগমন করেন। পৃথু প্রভৃতি বন্ধগণের

মধ্যে ভৌ নামধের প্রধান বস্থর পদ্মী বশিষ্ঠধেম্ব নিন্দনীকে

দেখিয়া স্বামীর কাছে ভাহার পরিচর ক্ষিক্তাসা করেন। স্বামী
ভৌ প্রভ্যান্তরে বন্দেন, প্রিয়ে । এই প্রধানা ধেমুর প্রভূমহর্বি

বশিষ্ঠ। নারী হউক, পুরুষই হউক, এই দেগুর গুগ্ধ পান করিলে, অব্তুত বর্ষ পরমাগ্ধ লাভে সমর্থ হয়। তাহার যৌবন কথন নই হয় না, গুগ্ধপানের গুণে যৌবন চিব্রিনিই সমান থাকে।

বস্থার কথা শুনিয়া বস্থপত্নী বলিল, মহাভাগ । এই ধেছছয়্কের যদি এমনি গুণ, তবে মর্তালোকে আমার একটী স্থলরী
সধী আছে; সধী আমার রাজ্যি উনীনরের তনরা; তাহারই
অস্ত এই কামছ্বা নদিনী ধেছকে নইয়া চল। ইহার ছয় পান
করিয়া মর্তাধামে একমাত্র আমার সেই স্থীই জ্বারোগহীন
হইয়া স্থে স্বছ্লেন কাল কাটাইনে। পত্নীর অন্থরোধে অস্তাস্ত বস্থাবের সাহায়ে বস্থা গৌ, বশিষ্ঠের অক্লাভসারে তাহার
ধেমুহরণ করিল।

এদিকে তপোধন বশিষ্ঠ বন হইতে ফলাহরণ করিয়া আশ্রম আদিলোন। আসিয়া দেখিলোন নান্দিনী নাই, নান্দিনীর বংসটীও নাই। কে তাহাদিগকে হবণ করিয়া লইয়া গিয়াছে। বশিষ্ঠ তথন কাননে কন্দরে নান্দিনীর অবেষণ করিতে লাগিলোন। বহু অনুসন্ধানেও নান্দিনী মিলিল না, তখন দেই শাস্ত দাস্ত জিতেজির মহর্ষির মনে কোধের উদ্রেক হইল। তিনি ধ্যানে জানিলোন, বসুগণ তাহার আশ্রমধেয় নান্দিনীকে অভার ভাবে হরিয়া লইয়াছে। আর কি বালা আছে। অমনি মুনির মুখ হইতে অমোঘ অভিশাপ নির্গত হইল। ঋষি বলিলোন, আমায় অবজ্ঞা করিয়া বসুগণ যথন আমার আশ্রমধেয় অপহরণ করিয়াছে, তখন ভাহাদিগকে অচিবাং মনুষাবোনিতে জন্ম লইতে হইবে।

বনিষ্ঠ এইরপ অভিশাপ দিলেন। তপন সেই শাপ-বিবরণ জানিতে পারিয়া অভিশপ্ত বস্তুগণ হংথিতমনে সেই শ্বিষ পদ-প্রান্তে উপনীত হইলেন এবং ধ্বির শর্পাপ্ত হইয়া অনেক অমুন্য-বিনয়ে তাঁহাকে প্রদানিত করিতে চেষ্টা করিতে লাগি-লেন। তথন শ্ববি তাঁহানিগকে বলিলেন, আচ্ছা, আমার প্রসাদে সন্থংসর মধ্যেই তোমরা শাপ্যক্ত হইতে পারিবে। তবে তোমাদিগের মধ্যে যে বস্থ আমার নন্দিনীকে হরণ করিয়া লইয়াছিল, মাত্র তাহাকেই দীর্ঘকাল মন্থ্য-লোকে বাস করিতে হইবে।

শ্ববির কথার বঙ্গুগণ আর আপত্তি তুলিলেন না, তাহার।
বিনিবাকা অলীকার করিয়া সকলেই বলিটাশ্রম হইতে বাহির
হইলেন। যাইতে বাইতে পথি মধ্যে সরিং-প্রবরা গলার সহিত
তাহাদিগের সাক্ষাং হইল। অভিলাপ বলে এই সময় বহুগণের
মহিমা বিলুগু, হবুর চিত্তাআরে অর্জারিত। তাহারা পাবনী
গলাকে দেখিহাই প্রণাম করিলেন এবং প্রণামান্তে বলিলেন,
দেবি! আমরা অবির লালে হত্যাহাল্যা হইরাছি। হার!
সামরা স্থাভোলী দেব হইরা কি করিয়া প্রকাৰে বে মলুবা-

বোনিতে জন্ম লইব, তাহাই আমাদের মহাচিত্তা হইবাছে।
তাই বনি, হে সনিৎপ্রেটে! মাপ্রবী হইয়া আপনিই আমাদিগকে
উৎপাদন করুন। হে নিন্দাপুপ! রাজরি, লাস্তর্য এখন এ
ভূমগুলের নারক। আপনি গিয়া ভাহারই ভাষা। হউন।
আপনার এঠরে আমরা এক এক করিয়া জায়িব। জাভমাত্র
আপনি আমাদিগকে এক একটা করিয়া জলে কেলিয়া লিবেন।
এইরূপ করিলেই ব্রহ্মলাল মণো আমাদিগের লাপম্কে হইবে।
সঙ্গাকে এইরূপ অলুরোধ করিয়া ব্রুগণ স্ব স্ব স্থানে প্রান্থান
করিলেন। গলাদেবীও ঐ সম্বন্ধে বার বার চিন্ধা করিতে
করিতে তথা হইতে চলিয়া গেলেন। (পেবীছাগ্রত হাএ২৪-৪৪)

৫ যোক্ত্র । ও রাজা। ৭ ধনাধিপ, কুরের। (বিশ্ব)
 ৮ সাধু, দক্ষন (শন্তরভ্রা) ১ পীতমূলা। ১০ বৃক্ষ (ছেমচক্রা)
 ১০ পৃক্রিনী । (সিকাকৌণ উণাধিবৃত্তি) ১২ পিব। ১০ ক্রা
(অনেকার্থকোর) ১৪ বিফু।

"বস্থাদো বাস্থদেখে বস্থব্যনা হরি: ।" (মহাভা" ১৩।১৪৯৮৩)

'বসন্ধি ভূতান্তাত্র অভেবু স্বয়মপীতি বস্থ: ।' (শাস্করভাব্য)

১৫ কুলীন কামন্ত্রে পদ্ধতিবিশেব।

>७ चडे मरसा। यशा,---

শুমান্ত্ৰিকৃতভূতানি ধৰ্ম জোৰ্বসংক্ৰো:।" (তিথানিতৰ) ১৭ বকুণ, চলিত বৃহদ্ বোল বা সরী। ইহার পর্যায়,— শনিবমল্লী পাশুপত একাষ্টানো বৃকো বস্ক:॥"

(ভাবপ্র' পুর্বা ১ ভাগ)

বস্ত্রক (ক্লী) বস্ত্রবং কায়তীতি কৈ-ক। স্বাস্থ্যস্থান (অমর) ২ পাংগু লবণ। ৩ বাত্ত্ব। ৪ ক্লঞাগুরু। ৫ কারলবণ। (ভাবপ্রণ) (পুং) বস্ত্রং স্থান্তরামা কায়তীতি কৈ আন্তোহমূপেতি ক:। ৫ আর্ক্রন। ৬ শিবমন্ত্র।। (মেদিনী) ৭ পুলবিশের। এই পুল্প খেত ও রক্তান্তেনে ছই প্রকার। পর্যায়—বস্থা, লৈব, বক, শিবমন্ত্রিকা, পাণ্ডপত, শিবমত, স্বরেষ্ট্র, শিবশেশর। গুণ—কটু, তিক্র, উন্ধ্য, পান্তে শীত্রন, নীপন, অলীপ, বাত ও গুলনালক। খেত পুল্প—রসায়ন। (রাজনি) ৮ রক্তার্ক। ৯ মন্দারার্ক। ১০ পীতমূলন। (বৈত্রকনিও) বস্ত্রক (প্রং) বস্ত্রক পোরসম্ভব শ্বিভেদ। ইনি শ্বন্যংহিতার ১০ মন্তরের ৬৫-৬৬ স্ক্রের মন্ত্রমন্ত্রীয় প্রহি। ক্রমন্তর্ভার প্রকার প্রক্রের প্রক্রির প্রহে কেল্ট, বাঞ্চ

বস্তুকল্প, এক জন প্রাচীন কবি। ইনি বীয় গ্রাছে কেপট, বাঞ্চ যোগেৰর ও রাজশেশন কবির উল্লেখ করিয়াছেন।

বসুকল্পান্ত, এক জন প্রাচীন কবি।

বস্তুকীট (পুং) বস্থানি ধনে কীট ইব প্রার্থকদ্বাৎ। ঘাচক। (হারা°) বস্তুকুৎ (পুং) বস্তুক্ত গোত্রসমূত শ্ববিভেগ। ইনি প্রশ্নের ১০ম মণ্ডলের ২০-২৬ প্রক্তের মন্ত্রন্থী শ্ববি। কংসের আদেশে ছম্বটী প্রস্তুত বাসক্ষে শিলাতলে নিঃক্ষেপ করিরা নিহত করা হইল। সপ্তমগর্জ বোগমারা কর্তৃত রোহিণীর গর্জে সঞ্চারিত • ইইরাছিল এ দেবকীর অষ্ট্রম গর্জে ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ করা পরিগ্রহ করেন। ঐ সমরে গোকুলে নন্দপরী থশোদার গর্জে বিকুশরীরসম্ভবা বোগনিত্রা আবির্কৃত হন।

্বস্থানৰ রাত্রিজাত খীর আইন পুত্রকে জীবৎসলাছিত ও দিবালন্দশসন্দার দেখিরা কংসভরে ভীত হইরা বলিলেন, হে আধাক্ষয়! এ রূপ সংহার কর। তোমার অপ্রজাত আমার জ্যেষ্ট পুত্রগুলিকে হুর্জৃত্ত কংস নিহত করিরাছে। বস্থানে বাজ্যে নারারণ খীর রূপ সংহার করিরা বলিলেন, পিড: গুর্গোপপতি নক্ষকে আমার পিতৃত্বে অন্থানান করিরা আমাকে আই ওাঁহার গৃহে লইরা চনুন। তদহুসারে পুত্রবংসল বস্থানে শীরক্ষকে ক্রোড়ে লইরা বমুনা অতিক্রমপূর্ক্ক ক্রভপদে গোকুলাভিমুখে প্রস্থান করিলেন এবং ঘশোদার অক্রাভসারে সেই গৃহে খীর পুত্রকে রাখিরা ভাঁহার ক্রাকে গ্রহণপূর্ক্ক বীর আলারে প্রভ্যাবৃত্ত হইলেন। অনস্তর কংস সমীপে উপস্থিত চইরা খীয় ক্রারড্প্রস্বের বার্ডা ক্রাপন করিলেন।

[करम ७ क्रक (मथ।]

শ্রীকৃষ্ণ যথন বারকার রাজা হন, তথনও বহুদেব ও দেবকী
জীবিত ছিলেন। বিষ্ণুপুরাণ মতে, বহুদেবের মৃত্যু হইলে
দেবকী ও রোহিণী একত চিতার শরন করিয়াছিলেন।

বন্ধদেবত (ক্লী) ১ ধনিষ্ঠানক্ষত্র। (বৃহৎস॰ ৮।২২)(পুং) ২ বন্ধদেব।

वस्तिविक् (जी) वनता (नवं विकास । धिनकिन्यः।

"स्वनका जोश्वाना। स्वान् वस्तिवे ।" (हितवे । २२२।०६)

वस्तिविक्षाना, निक्तिन्तिक्षाक्षिकाक्ष्यः।

वस्तिविक्षानाम, निक्तिनिक्षाक्ष्यः।

वस्तिविक्षाक्ष्यमान (भूर) अस्तिविक्षाक्ष्यः।

वस्तिविक्ष्यः (भूर) वस्तिवार खवडीष्ठ स्-किन्।

वस्तिविक्षः (भूर) वस्तिवमास्तिः। क्षेत्रकः।

वस्ट्रस्वरा (जी) > धनिष्ठानकः ।

वस्रोत्रव (क्री) धनिकानकव। (वृह९म॰ १।३५)

বস্থাদৈবত (ক্লী) ধনিষ্ঠানক্ষত্র। (র্° ন° ১৫।৩٠)

বস্ত্তম (পুং) উচ্বরবৃদ্ধ, বজ্জুর গাছ। (বৈছকনি°)

বস্থর, এক জন প্রাচীন কবি।

বসুধর। (খ্রী) বৌদ্ধ ভিত্রকভেন।

বহুধর্মান্ (পুং) রাজভেদ। (ভারত কর্ণপর্ক)

वस्थिका (डी) किन।

বস্ত্রা (জী) বহনে রক্সনি দ্বাভি ধার্মতীতি ধা-ক। ক্বর্ণা-দীনামাকরক্সাৎ তথাকং। পৃথিবী। "রাজ্যে সারং বহুধা বহুধারাং পুরং পুরে সৌধং।
সৌধে তরং তরে বরাঙ্গনালসর্বাহ্য ।" (সাহিত্যদ ১০পরি ।
বহু ধনং দধাতি ধতে ইতি ধা-কিপ্। (এ) ২ ধনদাতা।
"বহুশেতিটো বহুধাতমশ্চ।" (শুকুষক্ত্ ২৭।১৫) বহুধাতমং
বহুনাং ধনানাং দাতৃতমং (মহীধর)

বস্তধাথজ্জু রিকা (গ্রী) বহুধাজাতা ধর্জ্বিকা। ভূধর্জ্বিকা, ধর্জ্বীরুক, ছোট থেজুর গাছ। (রাজনি°)

বস্থাধর (জি) > পর্বত। ২ বিষ্ণুর সহত্র নামের অন্তর্গত নামভেদ।

বন্ধাধিপ (পু:) বন্ধায়া: অধিপ:। রাজা, পৃথিবীপতি, বন্ধাধিপতি।

বস্থাধিপত্য (ক্লী) বস্থাদ্যা আধিপত্যং। বস্থার আর্থি-পত্য, রাজত।

বস্থান (জি) ধনরকা। (শুক্লমক্: ২১।৪৮ ভাষ্যে মহীধর)
বস্থাপতি (পুং) বস্থারা: পতি:। পৃথিবীপতি।
বস্থাপরিপালক (পুং) বস্থারা: পরিপালক:। বস্থ

भागनकात्री, ताका। यिनि वस्रश भतिभागन करतन।

वञ्चानाम (प्रः) वञ्चभागामनकाती।

বহুধার (ত্রি) পর্বতভেদ। (মার্কপু° ৫৫।৭)

বহুধারা (ন্ত্রী) বহুবৎ রক্ততৈ ধারা বশো বস্তা: । ১ জিনশক্তিবিশেষ। পর্যার—তারা, মহাঞ্রী,ওন্ধার, স্বাহা, শ্রী,মনোরমা,
তারিণী, জয়া, অনস্তা, শিষা, লোকেশ্বরী, আয়য়া, থদ্রবাসিনী,
তদ্রা, বৈশ্রা, নীলসরস্বতী, শক্ষিনী, মহাতারা, ধনংদাতা, ত্রিলোচনা। (হেম) বস্থনাং রক্তানাং ধারা সম্ভতির্যত্র। ২ কুবেরপুরী। (শক্ষমালা) ৩ তীর্থবিশেষ।

"ততো গচ্ছেত ধর্মজ বস্থধারামভিষ্টুতাং।

গমনাদেব তন্তাং হি হয়মেধমবাগুরাং ॥" (ভারত ০৮২।৭২)
বলোশ্চেদিরাজত প্রিরা ধারা,বহুনো হুতত বা ধারা। ৪ চেদিরাজ বন্ধর উদ্দেশে হুতের বে ধারা দেওরা হয়, ভাহাকে বহুধারা
কহে। নান্দীমুধ প্রাছে বহুধারা দিতে হয়। এই ধারা চেদিরাজ বন্ধর অভিশন্ন প্রিরা, এই জল্প ইহাকে বন্ধধারা কহে।
কেওয়ালের ভিত্তিতে এই ধারা দিতে হয়। নান্দীমুধ প্রাছে
প্রথমে বহুমার্কতেরাদির পূজা করিরা বন্ধধারা দিবে। বন্ধধারার পর প্রাছ করিতে হয়।

"বহু জবাং বৃতমাজ্যমমূতং হবিকামিকন্।
তক্ত ধারা সদা দেয়া বসোধারা হি সা মতা ॥
ইতি দেবীপুরাণোক্তবচনাৎ বহুনো বৃতত্ত ধারা।
বৃত্তিভাতপুর্কক্তব্যচেদিয়াজবস্ক্তে কুডালগ্রহুড্যালা ধ্বা
ছলোগপরিশিষ্টে কাজালমঃ—

বস্থুকোদর (রী) ভালীশগত। (রাজনি°) বস্তু 🔐 (গং) ঐক্র গোত্রসম্ভব ধবিভেন। ইনি ধক্সংহিতার ১০ মগুলের ২৭, ২৯ ও ২৮ হজের কির্দংশের মন্ত্রস্তী ঋবি। ২ বাসিষ্ঠ গোত্ৰৰ ব্যৱভেদ। ইনি ব্ৰক্সংহিভার ৯ মণ্ডলের ৯৭ হজের ২৮-৩• মন্ত্রন্তী। বস্কু 📵), এক জন বৈরাকরণ। গণরত্বমহোদণিতে ইহাঁর উল্লেখ আছে। বস্থপ্ত, সিদ্ধান্তচন্ত্রিকা, ম্পন্স্ত্ত্রী ও ম্পন্সকারিকা-রচ্ছিতা। ইনি ভট কলট ও রাজানক প্রীরামের গুরু। সর্কদর্শনসংগ্রহে ইহার উল্লেখ দেখা যার। ইনি বস্ক গুপ্তাচার্য্য নামে প্রসিদ্ধ। বস্কৃতন্ত্র (পুং) মহাভারভোক্ত ব্যক্তিভেদ। (ভারত দ্রোণপ•) বস্থচারুক (क्री) খর্ণ। (বৈষ্ণকনি°) বস্থছিদ্রে! (জী) মহামেদা। (রাজনি) বস্থজিৎ (ত্রি) বস্তুজয়কারী। (অথর্ব্ধ ৻ৄৄা১৯) বস্তুত। (ত্ৰী) বস্থসৰা। ধনবন্তা। (ঋক্ ভাগা>০) বস্থতাতি (স্ত্রী) ধনবিস্তার। 'বস্নতাতি বস্ননাং ধনানাং তাতিঃ বিস্তারঃ তনোতেঃ ক্রিনি।' (ঋক্ ১।১২২।১২ সারণ) বস্তুত্তি (স্ত্রী)ধনলাভ। "সনো অভ বস্তুত্বে ক্রতুবিদ্" (ঋক্ ৯।৪৪।৬) 'বস্থতয়ে ধনলাভায়' (সায়ণ) বস্তুত্ব (ক্লী) বসোর্ডাবঃ দ্ব। বস্তুর ভাব বা ধর্ম। (ঋক্ ১০।৬১।১২) বস্তুত্বন (क्री) বাদক, বস্তুত্বযুক্ত। "প্রবরুস্রিভাো অমৃতং বস্থ-দ্বনং" (ধক্ ৭৮৮) ৬) 'বস্তুমনং বাসকং বস্তুমুক্তং' (সারণ) বস্তুদ (পুং) বহুনি দদাতীতি দা ক। কুবের। "সনন্দর্গেপিত গৃহং বাসায় বস্থুদোপমঃ। অবতীৰ্য্য ততো যানাৎ প্ৰবিবেশ মহাবল:॥* (হরিবংশ ৮১।১৫) বস্থ ধনং দদাতীতি দা-ক। ২ বিষ্ণু। (ভারত ১৩)৪৯।৪২) (🗖) ৩ ধনদাতা মাত্র। "आयोपत्काधर्वण चन्नः कृणावत्विक्ः। আত্মপ্রতারকোবস্ত বস্থানের বন্ধনরা 🛭 (ভারত ১২।১২০।৩০)

জাত্ম থেতারকোবস্ত বস্থদৈব বন্ধন্ধরা।" (ভারত ১২।১২০।৩০)
বস্থদন্ত (পুং) কথাসরিৎসাগরোক্ত ব্যক্তিছেদ। (কথাস⁶ ২১।৫৩)
বস্থদন্ত পুর (ক্লী) নগরভেদ। (কথাসরিৎসা⁶ ২৯।১৩৪)
বস্থদা (ত্রি) ১ ধনদারিনী। ২ ক্ষমাভূভেদ। ৩ মালি নামক গন্ধর্কের পন্ধী। (কথাসরিৎসা⁶ ৭।৫।3১)
বস্থদান (ত্রি) ১ ধনদান। (পুং) ২ বিবেহরাকভেদ। (ভারত ২।৪।২৬) ৩ বৃহত্তথের পুরভেদ। ৪ হিরণ্যরেভার পুরভেদ।

বস্তলামন্ (পুং) বৃহত্তধের পুত্রভের। বস্তলামা (ত্রী) ফুনমাড্ডের। (ভারত শ্লাপর্ক) বহুদাবন্ (তি) বহুবা । ধনদানকারী ।
বহুদের (রী) অভিমত ধনপ্রদান । "মনো বহুদেরার কুব"
(ধর্ক্ ১০৫০৯) "বহুদেরার অনুভারতিমত প্রদানার" (সারণ)
বহুদের (পুং) বহুনা ধনেন বীবাতীতি বিব - অচ্ । প্রিক্রকের
পিতা । পর্যার—আনকচ্নুতি, পুর, কুফাপিতা । (শক্ররাণ)
বহুদের পূর্বপূণ্যক্রে প্রক্রককে পুত্ররূপে প্রাপ্ত
হুইরাছিলেন ।

শ্বভাগেন।

শ্বভাগেন বস্থানেরত দেবমাতা চ দেবকী।

প্রপ্রাক্তেনেরত দেবমাতা চ দেবকী।

প্রপ্রাক্তেনের সংগ্রাপ শ্রীহরিং ক্রডম্॥"

(ব্রজনৈরর্জপ্র শ্রীক্রজনার্থ প অ ০) [ক্রক দেব]

২ অনামধ্যাত কলিবুগরাকবিশেরের অমাতা। ইনি দেবভূতিকে হনন করিরা অয়ং রাজর করিরাছিলেন।

"ওলং হলা দেবভূতিং কংগাংমাতার কামিনম্।

বয়ং করিবাতে রাজাং বয়্লেবো মহামতিঃ॥" (ভাগ° ১২।১।১৮)

(রী) ও বসবো দেবতা যত। ও ধনিটা নক্ষতা।

"ঘোরা শ্রবগন্ধাইং বয়্লেবং বারুপকৈষ।" (বৃহৎসংহিতা ৭।১১)

বয়্লেনের, মলমাসনির্গন্ধত্রসারপ্রাণেতা।

বয়্লেনের চক্রবংশীর যতুক্লোহর দেবমীচ্য-তনর শ্রের প্রভেদ।

তিনি বর্তুলপতি ভগবান্ শ্রীক্লকের পিতা এবং পাওবমাতা
কুরীদেবীর ল্লাতা। ক্রম্বালে অর্গে কুল্ভিগ্রনি হওরার তাহার

অপর নাম আনক্রপুতি রাধা হর। ইহার মাতার নাম

মাহবী। বস্লেনের পিতার জোটপ্রে, শ্র, স্কলর ও চক্রমার

গ্রার সমূজ্জন কান্তিশালী।
বহুদেব পৌরবী, রোহিনী, মদিরা, ধরা, বৈশাধী, ভদ্রা,
হুলামী, সহদেবা, শান্তিদেবা, হুদেবা, দেবর্রজ্জি, বৃহুদেবী, ও
দেবকী নামে বরবর্ণিনী চতুর্দশপারী এবং সতম্ ও বড়বা নামে
ঘুইজন পরিচারিকা বেশধারিনী ছিলেন। তাঁহার প্রথমা ও
জ্যেচাগন্ত্রী রোহিনী বাহলীকের কল্পা। উপরিউক্ত পারীগণের
মধ্যে শেব সাজ্জন আহকপ্ত দেবকের কল্পা বিশেষ সৌজাগ্যবজী ছিলেন। তত্মধ্যে সর্ব্ব কনিচা দেবকীই মহাবশা ক্রীক্তকের
মাতা। দেবকের প্রাতা উগ্রাসেনজনর কংস মধ্রার রাজা।
এই স্ত্রে বন্ধ্রেবে তাঁহার ভগিনীপতি।

একলা মহবি নারদ কংস সমীপে আদিরা বলিল, মহারাক।
আমি ব্রথাদি দেবগণের মন্ত্রণার আমিতে পারিলার বে এই
মথ্যাপুরীতে বেবকী নামে ভোষার বে পিকুবনা আহেন,
ভাহারই অটমগর্ভনাত পুত্র ভোষার মৃত্যুস্তরপ হইবেন।
মার্বের মূবে আত্মবিলাল বুডার অবগত হইরা অভ্যুর কংস
দেবকীর গর্ভজ্বনে ভৃতসংকর হইলেন। তলভুসারে ভিনি
দেবকী ও বস্থানেবেক ভারাবিক রাবিলেন,

কুওলগাং বসোধ বিং সপ্তবারান্ রতেন তু।
কাররেৎ পক্ষবারান্ বা নাতিনীচাং নচোচ্ছি তাম্॥
কার্থানিতি শাস্তার্থং কপ্ত ভতত সমাহিত:।
বড্ভাঃ পিতৃভাতদশ্র প্রাহদানমূপক্রমেৎ॥" (প্রাহতব)

বন্ধ শব্দে মৃত, চেদিরাজ বন্ধর প্রীতিকামনার মতের বারা পাচ বা সাতটা ধারা দিতে হয়। এই ধারা অনতিদীর্থ ও নাতিক্রম হইবে। তিত্তি দেশে নাভি পরিমিত মান হইতে এই ধারা দিতে হয়। এই বন্ধধারা সাম, ঋক্ ও বজুর্কোদীদিগের ভিন্ন ভিন্ন হয়।

প্রথমে দেওয়ালে নাভিপরিমিত স্থানে ৭টী নিন্দ্রের এবং তাহার নীচে ৭টা চন্দনের ফোটা দিরা স্থতের ধারা দিতে হইবে। সামধেদিগণ প্রথমে কোশী করিরা স্বত শইয়া নিয়োক্ত মন্ত্র পাঠ পূর্বাক বস্থধারা দিবেন। মন্ত্র যথা—

"ঘৰচেচা ছিরণাক্ত ঘৰা বচেচা গবামূত। সত্যক্ত ব্ৰহ্মণো বর্চচক্তন মাংস সংক্ষামসি॥" ঘ**ৰ্**কেদিগণ নিম্নোক্ত মদ্যে বহুধারা দিবেন—

"বদো: পবিত্রমসি শভধারং বদো: পবিত্রমসি সহস্রধারং দেবজা সবিতা পুনাতু বদো: পবিত্রেণ শভধারেণ হস্বা কামধূকু।" এই মন্ত্র পাঠ করিয়া এক একটা ধারা দিবেন। প্রত্যেক ধারা দিবার সময় এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়। কিন্তু ঋগ্বেদী-দিগের পৃথক্ ৭টা মন্ত্র জারা ৭টা ধারা দিতে হইবে। ঋগ্বেদী-দিগের মন্ত্র।

- ১। অপ সঞ্চর আগচ্ছন্তী ভ্রিধারে পদস্বতী। ত্তপ্রথাতে প্রক্রতে স্থতিরতে। রাজ্পম যস্ত হস্ত ভ্রনস্ত রোদসী আলু রৈত বিশিক্তং যন্মানুক্তম্।
- । অক্সাইব বন্ধরনে তবাহয়না অভিচাকসীমি। যত্র সোম: আরতে যত্র যক্কো পঠতে শ্বতভাগারা মধুমপুরণক্তে।
- ত। ছতবতী ভূবনানামভিশ্রিরোব্বী পৃথী মধুত্বে স্থপেশসা ছাবা পৃথিবী বহুণক্ত ধর্মণা বিছভিতে অঞ্জরে ভূরি রেতসা।
- ৪। শতধারমুৎসমীক্ষমাণং বিপশ্চিতং পিতরং রুক্থানা
 অভিমন্ত পিত্রোরুপক্ষেতং রোলসী পিপৃতং সত্যবাচম্।
- । শতধারং বায়ুমর্কবর্জিবং নৃচক্ষুবেল্ডেংভিচক্ষতে হবি:।
 যে চ প্রণান্তি প্রবছ্তি সক্ষমেতি ছচ্ছে সপ্রধারম্।
- । বলোঃ পবিত্রমসি শভধারং বলোঃ পবিত্রমসি সহল্রধারং দেবলা সবিতা পুনাত্। বলোঃ পবিত্রেণ শভধারেণ স্থা কামধুক্।

এই সাতটা মন্ত্র দারা ৭টা ধারা দিতে হয়। পরে এই ছত ধারার চেদিরাজ বহুর পূজা করিয়া 'আয়ুর্বিধায়ুর্বিধাং' ইত্যাদি
মন্ত্র জপ করিতে হয়। দেবীপুরাণে ৩৫ অধ্যায়ে বহুধারার
বিষয় দিখিত আছে, বাহুলাভয়ে তাহা এই হুলে উল্লেখ করা
ইইল না।

(বৌদ্ধ ভিকুণীভেদ। ৬ নদীভেদ। (হরিবংশ) ৭ জৈনশক্তিভেদ।
 বস্থারিন্ (ি) > বস্থারাযুক্ত। ২ সম্পত্তিশালী।

বম্ধামত (পং) নরকামর।

বস্থাধিত (পুং) স্থাধিতবস্থাধিতনেমধিতেতি। পা ৭।৪।৪৫। * ইতি বেদে নিপাত্যতে। বস্থাহিত।

'বস্থহিতমগ্নৌ জুহোতি' (পা ৭।৪।৪৫)

বস্থাবিত (এ) > যজমানের অংভীষ্ট ফলরূপ ধনদান। "সহি দেবা বস্থাবিতং" (ঝক্ ৪।৮।২) 'বস্থাবিতং যজমানাভীষ্টফলরূপ-ধনতা দানম্' (সায়ণ) ২ ধনদাতা। (ঝক্ ১।১৮১।১)

বস্থার (ङ्गी) ধনরকা। (নিকক্ত না৪২।৪৩)

"বস্থানে বস্থাধয়স্তা বেতৃ যজা" (শুক্ল যজু: ২৮ ১২)

'বস্থবনে বস্থবননায় ধনদানায়, বস্থধেয়ায় বস্থনো ধানায় নিধানায় যজমানগৃহে নিধননায় বেডু আজাং পিবতু। বস্থবনে বস্থধেয়ভোতি সপ্তমীষটো চতুর্থার্থে।' (মহীধর)

বস্থনন্দ (পুং) রাজপুরভেদ। (রাজভর ১।৩০১)

ব প্রনন্দ, এক জন গ্রন্থকার। ইনি স্মরশাস্ত্রকৎ বলিয়া প্রসিদ্ধ। ক্ষিতিনন্দের পুত্র। (রাজতর° ১।৩৩৯)

বস্তুনন্দক (পুং) থেটক। (হারাবলী)

বস্থনাগ, এক জন প্রাচীন কবি।

বস্ত্রনাতি (পুং) বন্ধা। (অথব্য ১২।২।৬)

বস্থনীথ (জি) অগ্নি। 'হে বস্থনীথ ! বস্থনং তরিমিত্তা নীথা স্ততিশস্ত মন্বা বস্থনি নম্বতীতি বস্থনীথ: তৎসম্বন্ধে হৈ ধনমেত।' (গুরুষজ্ব: ১:188 মহীধর)

বহুনেত্র (পুং)বৌদ্ধভেদ। (ভারনাথ ৫।৯৩)

বস্তুনেমি (পুং) নাগাস্থরভেদ। (কথাসরিৎসা° ৯।৮৯)

বস্ধার (পং) প্রক্ষীপের বর্ষপুরুষভেদ। "তহ্বপুরুষা: শ্রুতিধর-বার্যাধর-বস্থুরের্মুরুরসংজ্ঞা ভগবস্তং বেদময়ং সোমমান্মানং বেদেন যত্তম্ভে" (ভাগবত ৫।২০।১১)

বস্থার, এক জন কবি।

বহুদ্ধরা (ত্রা) বহনি ধাররতীতি ধ (সংজ্ঞারাং ভূতবৃদ্ধিধারি-সহিতপিদম: । পা ০। ২। ৪৬) ইতি বচ্ (ধচি হুম্ব: । পা ৬। ৪। ৯৪) ইতি হুম্ম: (ক্ষক্ষিমন্ত্র মুম্। পা ৬। ৩, ৬৭) ইতি মুম্। পৃথিবী। "নিরীক্ষা তং সদা দেবী পাতালতলমাগতম্।

ज्होत अन्ज ज्वा जिन्नमा वस्का ॥" (विकृत् 1815)

ং খকতের কন্তা ও শাধের পদ্ধী।

"বিশ্রুতা শাধমহিনী কন্তা চাত বস্তুদ্ধরা।
ক্রপবৌবনসম্পন্না সর্ক্রসন্তমনোহরা।" (হরিবংশ ক্রারত)
বস্তুদ্ধরাধর (প্রং) ধরতীতি ধৃ-অচ্ধর: বস্তুদ্ধরায়া: ধর:।
ভূধর, পর্কত।

বস্ধার্ধব (পুং) ক্ষ্মনায়া: ধব:। পৃথিবীপতি। বস্ধারেশ (ত্রি) বস্মনায়া: ঈশ:। বস্মনাপতি, পৃথিবীপতি। বস্ধারেশা (ত্রী) শ্রীরাধা।

বস্থপতি (পুং) বস্থনাং পতি:। ধনপালক। "খং বৃত্তহা বস্থপতে সরস্বতী" (ঋক্ ১/১/১১) 'বস্থপতে ধনপালক' (সারণ) বস্থপত্ত্বী (স্ত্রী) ক্ষীরদধি আজ্যাদি বহুবিধ ধনের সর্ব্বদ্ধা পালন-কারিনী। "বস্তপত্ত্বী বস্থনাং বৎসমিছস্তেনী" (ঋক্ ১/১৬৪/২৭) 'বস্থপত্ত্বী ক্ষীরদধ্যাজ্যাদি বহুধনানাং সর্ব্বদা পাল্যিত্রী' (সারণ) বস্থনাং পত্ত্বী। ২ বস্থদিগের পত্ত্বী।

বস্তপাতৃ (পুং) > গ্রীকৃষ্ণ। ২ ধনরক্ষক কুবের। বস্তপাল (পুং)পৃথিবীপতি, রাজা।

"তরাকপালবস্থপালকিরীট্যুষ্টপাদামুজং রঘুপতিং শরণং প্রপতে।" (ভাগ ৯০১১।২১) 'নাকপালা দেবা বস্থপালাঃ বস্থাপালাশ্চ তেষাং কিরীটেযুঁ ছং' (স্বামী)

বম্পালিত (পুং) ব্যক্তিভেদ। (দশকুমারচবিত ৬৭।১০)
বম্পুজ্যুরাজ (পুং) জৈন অবসপিণীর দ্বাদশ অর্হতের ভ্রাতা।
বম্পুজ্যুর (ত্রি) > ধনদ। ২ শিব। ৩ কন্দাম্বচরভেদ।
বম্পুজ্য (ত্রী) অগ্নির সপ্ত জিহবার একটা।

বস্ত্রপ্রাণ (পূং) বস্তু দীপ্তিঃ প্রাণা ইবাস্ত। অয়ি। (শনররাণ)
বস্তব্যু, মহাযানমতবিস্তারকারী একজন প্রদিদ্ধ বৌদ্ধর্গরে।
ইনি পুক্ষপুর জনপদের কৌশিকগোত্রীয় জনক রাজণ সামস্তরাজের পুত্ররূপে আবিভূতি হন। কথিত আছে, এই রাদ্ধণের তিন পুত্র ছিল, তিনি তিন জনেরই নাম বস্তবদ্ধ রাপিয়া ছিলেন।
তৃতীয় পুত্র সর্ব্বান্তিবাদ-শাথাধাায়ী হইয়া অর্হদ্ধর্ম আচরণ করিয়া জ্ঞানমার্গায়্পারী হইয়াছিলেন। তিনি স্বীয় মাতার নামে বিলিঞ্চীবৎস নামে থাতে হইলেন। জ্ঞান্ত বস্তবন্ধ কনিষ্টের ক্রায় সমমার্গায়্পারী হইয়াও প্রকৃত জ্ঞান বা মোক্ষলাতে বঞ্চিত হইয়া আত্মহত্যার হেয়া পান। পরে তিনি মৈত্রেরর নিকট মহাঘান-মতবির্তি লাভ করিয়া সে সংক্রাত্যাগপুর্বক জন্ম্বীপে ক্রিয়া আসেন এবং একাস্তমনে জ্ঞানালোচনায় প্রবৃত্ত হন।
এই কারণে তিনি অসঙ্গ বস্তবন্ধ বলিয়া প্রাসন্ধি লাভ করেন।
জন্মীপে অবস্থানকালে তিনি মহাযানস্ত্র অবলম্বন করিয়া
উপ্রেশ রচনা করিয়া বান।

ষিতীয় ল্রাতা সর্পাতিবাদ-শাধাধ্যায়ী হইয়া অপর ল্রান্ড্রের

ভাব আৰ্জ্ঞান লাভ করিরাছিলেন। তাঁহার ভাব বহদলী ও জ্ঞানবান তৎকাদে কেহই ছিল না। ভিনি কেবল হাঁত বস্বৰু নামে বিদিত হইবাছিলেন।

বৃদ্ধনির্কাণের ৯ম শতাক্ষ পরে, বিদ্ধাপর্কতপার্থবাসী বিদ্ধানক তীর্থক নামক একজন পশুত জালাখা নগরে জাসিরা একদা রাজা বিক্রমাদিত্যের রাজ্যরবারে উপন্থিত হুইলেন। তিনি রাজ্যসভার বিসিয়া তথাকার বৌদ্ধ পুরোহিতগণের সহিত শালীয় বিচারের প্রার্থনা জানাইলেন। তথন মণিরাত, বস্তবন্ধ প্রভৃতি বৌদ্ধ মনীবিগণের কেহই নগরে উপন্থিত ছিলেন না। তাহারা কার্য্যোপলক্ষে রাজ্যান্তরে বাস করিতেছিলেন। তথকালে কেবলমাত্র বস্তবন্ধ শুক্ত শতিবৃদ্ধ ও চ্বর্কণ বৃদ্ধানত্র তথার উপন্থিত ছিলেন। রাজাদেশে তিনি সভার শালবিচারার্থ আগত হুইলেন বটে, কিন্তু বান্ধকা নিবন্ধন তিনি বিশেব কোন তকের অবতারণা করিতে পারেন নাই। কান্ধে কান্তেই তাহাকে পরাত্র শ্লীকার করিতে হুইল। রাজা তীর্থককে পুরস্কত করিলে তিনি বীয় বাসভূমি বিদ্যাপর্কতে প্রশান করিলেন।

বস্থবন্ধ প্রভাগত হইরা যখন শুনিলেন, তাঁহার ঋন বৃদ্ধ-মিত্র একজন তীর্থকের বিচারে পরাভূত হইরাছেন, তখন তিনি সেই তীর্থকের সহিত পুনব্বিচারের জক্ত তাঁহার আনেক অবেবণ ক্রিয়াছিলেন। হুর্ভাগ্যবশতঃ উভরের সাক্ষাৎ হয় নাই।

বস্তবন্ধ উপায়ান্তর না দেখিয়া, সেই তীর্থকের মত নিরাশার্থ একথানি বৃহৎ গ্রন্থ রচনায় প্রবৃত্ত হইলেন। ঐ গ্রন্থখানি সমাপ্ত হটলে রাজা তাঁহাকে তিন লক স্বর্ণমূলা পারি-তোবিক দিয়াছিলেন। ঐ অর্থে বস্তবন্ধ তিনটা বৃদ্ধপূর্ণি ভাপন করেন। তন্মধ্যে একটা ভিক্লীদিগের ক্ষন্ত এবং অপর ভাইটা সর্ব্বান্তিবাদ শাথাধ্যায়ী ও মহাযান সাম্প্রদায়িকদিগের ক্ষন্ত নির্দিষ্ট হইরাছিল।

অতঃপর বহুবন্ধ্ন প্রিত্র বুদ্ধর্ম প্রাংশংশাপনার্থ বিশেষ
যারের সহিত বৈভাষিক তব অভ্যাস করেন। পরে তিনি, সেই
মন্তপ্রচাবে রুতসংকর হন। এইরপে তিনি মূলের অর্থসঙ্গতি
রক্ষা করিয়া তাঁহার দৈনিক বস্কুতা বা উপদেশের বিষয়ীতৃত অংশগুলির সার গাণার রচনা করিয়া একথানি তাশ্রফলকে উৎকীর্ণ করিয়া রাণিতেন এবং তাহাই মন্তমাভঙ্গপতি
জড়াইয়া নগরের পথে পথে চকাবাছ সহকারে ঘ্রাইয়া লইয়া
বেড়াইতেন। তাঁহার গাণার অর্থবিকাশ ও অপূর্ক মীমাংসা
লেখিয়া কেহই তাঁহার বিক্লন্তে মত প্রকাশ করিতে সাহসী হন
নাই। এইরপে ছরশতাধিক গাণা রচিত হইয়া সম্য বৈভাষের
ব্যাব্যা নিশার হয়। উহা কোব বা কোবকার নামে প্রথিত।

ব্যাখ্যাগ্রছ সমাণ্ড হইলে বহুবন্ধ পুরশ্বাসকল ৫০০ স্বর্ণমূত্র।
গাইশ্বা সেই গ্রহখানি কাবুলরাজ্যের অভিধর্ত্মমতান্থবর্ত্তী মহাপণ্ডিতগণের সমীপে পাস্টাইয়া দেন এবং বলিয়া পাঠান যিনি জাহার
মত গণ্ডন করিবেন, তিনিই উক্ত পারিতোবিক পাইবেন। সেই
গ্রহণাঠে বৌদ্ধ যতিগণ পরম পরিতৃষ্ট হন এবং তাহাতে সেই
পণ্ডিতসমান্ত বৌদ্ধধর্মের এবংবিধ বিভার দেখিয়া বিশেষ আপ্যায়িত
হন। উহার গাথাংশে কতকগুলি হুর্কোধ অংশ থাকায় জাহার।
বস্তবন্ধকে তৎসমুদারের গল্প সম্কাম করিবার জন্ম প্রার্থনা জানান
ও পারিতোবিক্ষর্কপ পুনরার ৫০০ স্বর্ণ মুদ্রা পাঠাইরা দেন।

অতঃপর বস্থবদ্ধ অভিধর্মকোষ লিখিতে আরম্ভ করেন।
এই গ্রন্থে তিনি সর্বান্তিবাদমতের বিশেষরূপ পোষকতা করিয়া
ছিলেন এবং যে সকল মত শুত্রপথন্রই তাহাদিগের নিন্দা
করেন। তাহাতে কাবুলের বৌদপভিতমগুলীর সহিত তাঁহার
যোর বিরোধ উপস্থিত হয়।

পূর্দ্ধ থিত অ্যাধ্যারাল্প বিক্রমাণিত্যের পূত্র প্রাদিতা ও তাঁহার মাতা বহুবন্ধর নিকট হইতে বৌদ্ধর্ম্মে দীক্ষাগ্রহণ করেন। পিতার মৃত্যুর পর প্রাদিত্য পিতৃসিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইয়া সৃদ্ধা মাতার অন্ধরেধে শীয় গুরুকে অ্যাধ্যায় মানাইয়া বাস করান। এপানে ভীর্থক-সম্প্রদায়ভূক ও প্রাদিত্যের ভগিনীপতি ব্রাহ্মণতন্ম বহুরাত ব্যাকরণের মতাত্ম্সারে বহুবন্ধুকত কোষগ্রন্থের প্রতিবাদ প্রচার করেন। বহুবন্ধুও সপক্ষসমর্থনার্থ সেই প্রতিবাদের থণ্ডন করিয়া একথানি গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন। তাহাতে বৌদ্ধর্ম্মে আস্থাবান রাজা পণ্ডিতবরকে লক্ষ এবং দেশ্বনালা রাজমাতা ছই লক্ষ বর্ণমূলা পারিতোম্বিক দিয়াছিলেন। এই অর্থ লইয়া বহুবন্ধু কাবুলে, পুরুষপুরে এবং অ্যাধ্যায় তিনটা বৃদ্ধুমৃত্তি স্থাপন করিয়াছিলেন।

বস্থবন্ধর এইরূপ প্রতিপত্তিবিস্তারে তীর্থকগণ অপ্রতিভ হইয়া পড়িলেন। তাঁহার গর্ক ধর্ক করিবার জন্ম তাঁহারা সিংহভদ্র নামে একজন মহাপণ্ডিভকে অযোগাায় আনিলেন। উক্ত পণ্ডিভবর বস্থবন্ধ্রুত কোষের মত খণ্ডন করিবার জন্ম হুইখানি গ্রন্থ রচনা করেন। ভন্মধ্যে ১০ সহল গাথাযুক্ত এক-থানি গ্রন্থে বৈভাষিকের ব্যাখ্যা প্রতিপাদিত হইয়ছিল। অপর থানি ১২ হাজার গাথার লিখিত, উহাতে তীর্থকরাজ স্বীয় পক্ষ সমর্থন করিয়া অভিধর্মকোষের বিপরীত অর্থ প্রতিপাদনে চেটা পান।

এই গ্রন্থন্ধর সমাপনের পর, সিংহতদ্র বস্থবন্ধকে তর্কযুদ্ধে আহ্বান করিলেন, কিন্তু বস্থবন্ধ্ আর রুথা বাদাস্থবাদে প্রসূত্ত হইলেন না। তিনি পশুতমগুলীর নিকট উভরের বিশ্বসতের মীমাংসাভার অর্পণ করিলেন।

ক্থিত আছে, বস্থবন্ধ প্রথমে অষ্টান্দ শাখার ধর্মমত আলোচনায় প্রবৃত্ত হইয়া হীন্যান্মতেরই পক্ষপাতী হইয়া-ছিলেন। তিনি প্রথমে মহাবানমতে বিশ্বাস স্থাপন করেন নাই। তিনি বলিতেন, প্রকৃত প্রস্তাবে ইহাতে বৌদ্ধমতের কিছুই নাই। পাছে তিনি মহাযানমত থঙান করিয়া কোন গ্রন্থ প্রণয়ন করেন, এই ভব্নে অসঙ্গ স্বীয় ভ্রাতা বস্থবন্ধকে পুরুষপুরে আনয়নপূর্বক তাঁহাকে মহাযান মতে দীক্ষিত তথন তাঁলীর মনে মহাযানমতের অয়োক্তিক সমালোচনার জ্বন্ত পরিতাপ উপস্থিত হইল, তিনি নিজ জিহ্বা $^{\circ}$ কাটিয়া ফেলিতে উন্মত হইলেন। তাঁহার ভ্রাতা এই সময়ে বিশেষ অমুরোধপুর্বক তাঁহাকে এই ছর্বিষহ কার্য্য হইতে বিরত করেন এবং বলেন যে, ইহার পরিবর্তে তুমি বরং মহাযান মভের প্রতিপোষক কএকথানি গ্রন্থ লিখিয়া সাম্প্রদায়িক উন্নতির চেষ্টা কর। ভ্রাতা কণ্ডক এইরূপে অনুক্রন্ধ হইয়া বসুবন্ধ অবস্তুসক. নিৰ্বাণ, সন্ধৰ্মপুণ্ডনীক, প্ৰজ্ঞাপারমিতা,বিমলকীঠি ও অক্সান্ত সূত্ৰ-গ্রন্থের টীকা রচনা করেন। ইহা ব্যতীত তিনি মহাযান মতের বিস্তারাথ কএকথানি শাস্ত গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন।

শ্ববোধ্যা নগরে শ্বনীতি বর্ষ বর:ক্রমকালে বস্তবন্ধ্ ভবলীলা সধরণ করেন। তিব্বতের তারানাথকত মগধরাজবংশেতিবৃত্ত ^{*} পাঠে জানা যায় যে, পূর্বজনপদাধীশ্বর (বঙ্গরাজ্যেশ্বর) শ্রীচন্দ্রের পুত্র রাজা ধর্মচন্দ্রের সভায় বস্তবন্ধু বিভ্যমান ছিলেন। বস্তুভ (ক্লী)ধনিষ্ঠা নক্ষত্র। (বৃ° স°১০।১৬)

ব্রভরিত (গ্রি । ধনপূর্ণ।

বস্থভাগ, এক জন প্রাচীন কবি।

বস্তুত্ত (পুং)গন্ধভেদ।

বস্কুস্ত্তি (পুং)> বৈশ্তভেদ। (মন্থ্যতিং টীকায় কুল্লুক) ২ ব্রাহ্মণভেদ। (কথাসরিৎসা° ৭৩)২১৬)

বৈস্ভূতান (পুং) > সপ্তৰ্ষির মধ্যে একজন ঋষি। ২ বসিচের পুত্রভেদ।

"উন্নংগা বস্তুভানো হামান্ শক্তাদরোহপরে ॥"(ভাগ° ৪।১।৩৭) বস্ত্মত (ত্রি) ধনযুক্ত, অর্থবান্।

বস্ত্রমতী (স্ত্রী) বহনে ধনরন্ধানি সম্ভাক্তাঃ ইভি কম্থ-মতুপ্-ভীপ্। পৃথিবী।

> "তদলং তদপায়চিস্তর। বিপত্নৎপত্তিমতামুপস্থিতা। বস্তুধেয়মবেক্ষ্যতাং দ্বরা বস্তুমত্যা হি নুপা: কল্ফিণ: ॥°

> > (রপু ৮/৮৩)

বস্থমতীপতি (পুং) বস্থমতাঃ পতিঃ। পৃথিবীপতি, রাজা। বস্থমন্তা (ত্রী) বস্থ জন্তার্থে মন্তুপ, বস্থমতো ভাবঃ তল-টাপ্। বস্থমতের ভাব বা ধর্ম, ধনবস্তা। বহুখনস্ (পুং) রৌহিদখ ধবিভেদ। ইনি ধ্বেদের ১০১১ ৭৯।৩ মন্ত্রন্ত্রী।

বস্ত্রত্ (জি) বস্থ জন্তার্থে মতুপ্। ধনযুক্ত, ধনবিশিষ্ট।

"বস্ত্মতা রথেন গিরো জ্বাণা" (ঋক্ ১১১১৯১১০)

'বস্ত্মতা ধনযুক্তেন রথেন' (সায়ণ)

বস্থময় (তি) বস্থ স্থলপে ময়ট্। বস্থস্কপ। সিয়াং ভীষ্।
বস্থমিত্র, এক জন প্রসিদ্ধ বৌদ্ধতি। ইনি বৈভাষিক মতের
এক জন প্রধান ধর্মাচার্য ছিলেন। ইনি মরুবংশীয় এবং
কাশীরজনপদের পশ্চিমস্থ অশ্মাপরাস্তবাদী।

বস্থমিত্র, শুক্ষমিরবংশীয় এক জন অতি প্রবল পরাক্রাম্ব নুপতি, কালিদাদের মালবিকাগ্নিমিত্র নাটক হইতে জানা যায় যে . ইনি স্থপ্রসিদ্ধ বৈদিকমার্গপ্রবর্তন ও অখনেধ্যাগকারী অগ্নি-মিত্রের পৌত্র। ইনিই যজীয় অপ্রবল্গায় নিযুক্ত ছিলেন। শিদ্ধ তীরে যবনদিগকে পরাজয় করিয়া জয়শ্রী অর্জন করিয়াছিলেন। ইহারই বীরজে পাটলিপত্রে অখনেধ যক্ত সুসম্পন্ন হইয়াছিল। থু: পু: ২য় শতাক্ষীতে এই মহাবারের অস্থাম্য।

বায়পুরাণীয় রাজগৃহ-মাহাত্মো বর্ণিত হইয়াছে—'পরাকালে বস্থ নামে একজন রাজা ছিলেন, তিনি ব্রাহ্মণবংশীয় ও মহাবীর ; তাঁহার পৌরুষ ত্রিভূবনে বিখ্যাত, রাজগৃহবনে তিনি অখ্যেধ যক্ত করিয়াছিলেন। তিনি দ্রাবিড়, মহারাষ্ট্র, কণাট, কোষণ, তৈলক প্রভৃতি নানা দেশ হইতে শ্রেষ্ঠ গুণসম্পন্ন, স্থনীল ও বেদবেদাঙ্গপারগ দাক্ষিণাত্য বিপ্রগণকে আনাইয়া ছিলেন। তাঁহাদের গোত্রনাম যণায়ণ বলিতেছি--> বৎস, ২ উপময়া, ৩ কৌপ্তিনা, ৩ গর্গ, ৫ হারিত, ৬ গৌতম, ৭ শাণ্ডিলা, ৮ ভর-দ্বাৰ্যা, ৯ কৌশিক, ২০ কাশ্ৰুপ, ১১ বশিষ্ঠ, ১২ বাংগু, ২৩ সাবৰ্ণি ১৪ প্রাশ্র; এই ১৪টা গোত। উক্ত মহাঝা দকলেই ঋঘেদী আশ্বলায়ন-শাথাধ্যায়ী। রাজা যজ্ঞাবসানে তাঁহাদিগকে রাজগৃত-পুর শাসন দিয়াছিলেন। এ ছাড়া নরপতি তাঁহাদিগের মধ্যে অত্তিগোত্রদিগকে গিরিত্রত্বে ও তাঁহাদিগের মধ্যে অধিকাংশকে বৈকুপণ্ডের নিকট প্রাহ্মণ-শাসন দান করেন। এ ছাড়া নর-পতি তীহাদিগকে পৃথক্ পৃথক্ দক্ষিণাও দিয়াছিলেন। সেই পৰ্যাম উক্ত বিপ্ৰগণ এই তীৰ্থে পৃঞ্জিত হইয়া আসিতেছেন।

শবক্ষনামা পুরা দেবী বকুব বুপসভয়:।

ক্রানোমির্ম হাসছা ক্রোলোকে। ব্যাক্তপালয়: । ২০
তেনেটা বাজিমেধেন সমাপ্রালপুতে বনে।
তেনানীতা গুণাল্রা বাজিশাতা। বিজ্ঞান্তমা: । ২০
নানাদেশাৎ স্পালাল বেনেদোলপারগা:।
শতং পকোত্রা: বিজ্ঞা: সপ্তসাহস্পারগা:।
বিজ্ঞাক মহারাদ্রাৎ কর্ণাটাৎ কোক্সালি।
তৈলস্কাক মহারাদ্রালাত চ্ছুলগগোরিব: । ২০
তিলস্কাক মহারাদ্রালাত চ্ছুলগগোরিব: । ২০

এখন বিজ্ঞান, উক্ত ব্ৰাহ্মণক শীৰ বহুৱাল কে ? ভারতে ও পুরাণে ব্যাসাধ্যে পিভাষহ গিরিব্রক্সপ্রতিষ্ঠাতা বে বন্ধুলালের উল্লেখ আছে, তিনি লাভিতে কবির, ব্রাহ্মণ নহেন্ত। এরশ-হলে ব্রাহ্মণ বহুৱাল যে স্বতন্ত্র ব্যক্তি, তাহাতে সন্দেহ নাই।

भूटर्सारे विनिशाहि त्व थुः भूक्तं २व मछात्व ' कनवरत्नेत चाका-ৰয় ঘটে। বিষ্ণু ও ভাগবতপুৱাণ মভে-মোর্য্যবৰংশীর শেষ নুণতি বৃহদ্রথকে নিহত করিয়া পুশামিত ওলবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। পুলামিত্র দারুণ বৌদ্ধবিধেবী ছিলেন। দিব্যাবদান नामक व्यक्तिन त्वीकश्रह स्ट्रेटिंड जाना वाद त्व, त्रांजा श्वामिक অশোকপ্রতিষ্ঠিত ৮৪০০০ ধর্মরান্ধিকা ধ্বংস করিবার অনুমতি ক্রিয়াছিলেন। তাঁছার পুত্রই কালিলাদের "মালবিকামিমিত্র" নাটকের নায়ক অধিমিতা। অধিমিতাও অধ্যমেধ-ব্যক্ত এবং বৈদিক ক্রিয়াকাও উদ্ধার ক্রিয়া প্রাসিদ্ধ হইয়াছিলেন। এই এট অগ্নিমিত্রের পৌত্র বস্থমিত। বোধগন্ধা হইতে তাঁহার শিলা-লিপি এবং নানা স্থান হইতে তাঁহার মুদ্রা আবিষ্কৃত ধ্ইয়াছে। এই বস্নামত্তই রাজগৃহমাহাত্মাবণিত বস্থরাজ। ব্রাহ্মণভক্ত বন্ধ-মিত্র দাক্ষিণাত্য-বিপ্রকে রাজগৃহনগরী দান করিয়া পূর্বভারতে ব্রাহ্মণাধর্মপ্রচার করিবার জন্ম তাঁহাদিগকে প্রতিষ্ঠিত করিয়া-ছিলেন। বস্থমিত্রের পর আরও ৫ জন ওলবংশীয় নুপতি বাজত ক্রিলে পর ক্রগোত্র বাস্থদেব নামে গুল-সেনাপতি নিজ প্রভুকে বিনাশ ও গুলসাম্রাজ্য অধিকার করেন। [বলদেশ শব্দ দেখ] वस्त्रत (श्रः) वस्त्रन, (नव। (बि) छ्रहे, नहे। বস্থরক্ষিত (পু:) বৌদ্ধাচার্য্যভেদ। বস্থরথ, এক জন কবি।

বস্ত্রথ, এক সন্ধ্যা বস্ত্রাত (পুং) ঋষিভেদ। (মার্কপু* ১১৪।১৩) বস্ত্রুচ্(ত্রি) দেবতাভেদ। "ন্সাপাং বস্তুক্চা দিবা। স্বস্তুন্ধ্ত"

নাম তেবাং প্রবক্ষামি গোত্রাণার ব্যান্তবন্ধ।
বংসোপদস্থা-কোজিন্য-সর্গ-হারিজ-সোঠমাঃ ৪ ২৭
লাতিল্যোব ভরবাল: কৌলিকঃ কাজপত্রথা।
বলিঠক পুনর্বাংকঃ নামর্শিক পরালরঃ ৪২৮
চকুর্মলৈতে ক্যিতা গোত্রান্তবাং মহান্ধনান্ধ।
বংবাবীতিনঃ সর্ক্ষে আবলায়নলাথিনঃ ৪২৯
বজ্ঞান্তে লাসনং দত্তং তেল্যো রাজপূবং পুরন্ধ।
ব্যান্তবাং পাসনং দেবং গোত্রান্তবাং বিমিন্তকে ৪৩০
বিজ্ঞানাং লাসনং দেবি দত্তবান্ মুক্ত্রাধিপাঃ।
তৎসংখ্যাত্যাহিধিকানাং বৈ বৈক্তপদসার্থী ৪০১
ব্যান্তবাং ক্যান্তবাং পুনন্ পুনন্ধ।
তহা প্রস্থাত তে বিম্যা জাভান্তবৈ প্রপুলিতাঃ ৪৬২শ

(प्रामगृहगाराष्ट्रा ५ णः)

(ৰক্ ৯০১০১৮) 'দিব্যা বস্তক্ত: দিবিভবা বস্তক্চোনাম **-(क**िशांशार' (शांत्र) বহুরুচি •(গুং) গদুর্ক। (অধর্ক ৮।১০।২৭) বস্তুর্মপ (পুং) শিবের নামজেন। (ভারত ১৪ প॰) বহুরেতস্ (क्री) > भवि। ২ শিব। বস্থােচিস্ (ক্লী) ৰসৰং ক্লোচন্তে অন্নিন্ধিতি রুচ-দীর্থ্যে (ৰংসা क्रां नरकाताः। छन् २।>>२) हेकि हेनिन्। वक्र। (फेक्स्न) (पूर) २ व्यवसम्ब ४।०३।>७ बद्धप्रही व्यवस्थित । বস্ত্ৰল (পুং) বহং দীন্তিং লাভি গৃহাতীভি লা-ক। দেবতা। वस्यि (जि) > धनराभाव, धनराभाव। । २ यक्षमान । "न स्वर्का **बल्लवनिः मधाफि" (बक् १।)।२७) 'वल्ल्व**निः धनरशायः मर्गाफि, ৰহা স দেবতা অগ্নির্যস্থবণিং বল্লমানং' (সায়ণ) বস্থমৎ (ত্রি) ধনবান্। বস্ত্রন্ (পুং) বস্থান। (क्री) ২ ঈশানকোণছিত দেশভেদ। বস্থবাহ (পুং) ১ ধনী। ২ ঋষিভেদ। বস্থবাহন (a) কোষযুক্ত। বস্তুবিদ (बि) বহনি নিবাসন্থানানি বিন্তুতে বিদ্-ক্লিপ্। নিবাস-স্থানের লম্ভয়িতা, নিবাসন্থানের প্রাপক। "ধিয়া দেবা বস্ত্বিদা" (ঋক্ ১।৪৯৭২) 'বস্থবিদা নিবাসন্থানত লম্ভয়িতারৌ' (সায়ণ) २ व्यक्ति। বহুর্ষ্টি (ত্রী) ধনদান। বহুশক্তি (গ্রী) বৌদ ভিঙ্গুণীভেদ। বস্তাবস্ (তি) ২ ধনের জন্ত প্রসিদ্ধ, ধনবান্। ২ ব্যাপ্তার। বস্থা (প্রী) স্বন্দামুচর মাতৃভেদ। (ভারত ১ প**০**) ব্স্প্রাড্ড (ত্রি) > ধনের জন্ম বিখ্যাত, মহাধনী। > জাত্রি-গোত্ৰসম্ভূত ঋষিভেদ। বস্তুভার্ন্ত (क्री) বহুনা দীখ্যা শ্রেষ্ঠং। রূপ্য। (রাঞ্চনি৽) বস্থাবেণ (পুং) বহুসেন, কর্ণরাজ। (ত্রিকা•) ব্রুসার (পুং) ঋষিজ্ঞেদ। জিয়াং টাপ্। বহুসার।— कूरवत्रभूती । वस्टम्न, धक बन कवि। বস্থাসন (পুং) কর্ণরাজ। (ত্রিকা•) 'বস্থাবেণ' পাঠান্তর। ব্যুন্থলী (স্ত্রী) বহুনাং ধনানাং হুলী। কুবেরপুরী। (শঙ্কমা•) বস্ত্র (পুং) বস্থনাং দীপ্তীনাং হট্ট ইব। বকরক্ষ। (রন্ধমালা) ব্সুহৃট্টক (পুং) বস্থহট্ট স্বার্থে কন্। বকর্ক্ষ। (শন্দ্যালা) বস্থারের (পুং) > বস্থর উদ্দেশে (হাম। ২ অঙ্গরাঞ্জেদ। বসুক (क्री) সাম্ভরলবণ। (হেম) ২ বকপুশা। (ছিরপকো•) বসূজ্ (ত্রি) > ধনাতিলারী। (পুং) করেরের ৮।২৫ স্কন্দ্রপ্তা अधिवः नीम्र अविष्ठम ।

বসূত্তম (পুং) महाधनवान्। বসুমতী (স্ত্রী) বস্ত্রমতী, পৃথিবী। বসূয়া (জী) ধনেচছা। "হংগাতুরা বহরা চ যক্তামহে" (ঋক্ ১।৯৮।২) 'ৰস্থা ধনেচ্ছয়া' (সামণ) বসূয়ু (ত্রি) ধনেচ্ছু। বস্ব্যু, গতি। ভাদি আমানে সক সেট্। কট্বস্তে। নিট্ বৰম্বে। লুঙ্অবস্থিট। বস্ক (পুং বস্ক-ভাবে ঘঞ্। অধ্যবসায়। (ভূরিপ্র৹) বস্ক্রথ (পুং নম্বতে ইতি বস্ক-গতৌ বাছলকাৎ অথন্। একহায়ন বংস, এক বংসরের বাছুর। (অমরটীকা রায়মূকুট) বস্কয়নী (জী) বন্ধথ একহান্তনো বৎস:, তেন নীয়তে ইতি নী-কিপ্ ভীষ্। চির প্রস্তা গাভী। ইহার হগ্নগুণ-- ত্রিদোষ-নাশক, তর্পণ ও বলকর। 'বঙ্করিন্তান্ত্রিদোষত্বং ভর্পণং বলক্রৎপয়ঃ।' (ভাবপ্রকাশ) वक्रतां हिंका (जी) वृन्छिक। (शवावनी) বস্ত, বধ। চুরাদি আত্মনে সক দেট্। লট্ ৰন্তয়তে। লুঙ্অববস্ত। ২ (পুং) বস্তাতে যজার্থং বধ্যতে ইতি বস্ত কর্মণি ঘঞ্। ছাগু। "যন্ত বন্তসমো গন্ধো গাত্রে শবসমোহপি বা। 'গ্রন্থার্নমাসিকং জ্ঞেরং যোগিনো নূপ জীবিতম্ ॥''(মার্কপু° ৪৩।১২) বস্তক (ক্লী) ক্তিম লবণ। (হেম) বস্তকর্ণ (পুং) বন্তম্ম ছাগম্ম কর্ণাক্ষতিঃ পত্রাবচ্ছেদে অন্তাঞ্জেতি वञ्चकर्ग व्यानिषाम्ह्। भागवृक्षः। (त्राखनि ०) বস্তগন্ধা (জী) বন্তভ গৰা ইব গৰো যভাঃ। ছাগের ভার গৰু-বিশিষ্ট। (রাজনি৽) বস্তমোদা (ত্রী) বন্তং ছাগং মোদরভীতি মৃদ-পিচ্ অচ্। व्यक्रमाना। (त्राक्रनि॰) व्सुतु (वि) वन-छवा । वामाई, वात्मद्र वाना । "পরাজিতৈইি বন্তব্যং **ভৈশ্চ দানশ বৎসরান্।" (ভারত আদি**প॰) ব্স্তব্যক্তা (ব্ৰী) বন্ধবান্ত ভাব: তল্-টাপ্। বন্ধবাের ভাব বা भन्त्रं, वान। বস্তান্ত্রী (ব্রী) বস্তুপ্তেব অন্ত্রমন্তা:, গৌরাদিছাৎ ভীষ্। ছাগলাক্ষি-কুপ, পর্য্যায়—বৃবগদ্ধাখ্যা, মেবাল্লী, বৃষপত্রিকা, অজাল্লী, বোরকী । গুণ-কটু, কাসদোষনাশক, গর্জনক ও শুক্রবর্দ্ধক। (রাজনি॰) ব্স্তি (পুং জী) ৰদতি মূত্রাদিক্ষত্র, বদ (বদেন্তি। উণ্ ৪।১৭৯) ইতি তি। ১ নাভির অধোভাগ। তলপেট্। ২ মূত্রাশন্ত্রপুটের নাম বন্তি, মুত্রাশর, প্রস্রাবের থলে। ৩ বন্তিসদৃশ বন্ত্র, চলিড পিচকারী। বৈশ্বকে ৰজিবিধির বিষয় অর্থাৎ পিচকারী দিবার প্রণালী এইরূপ লিখিড আছে—

''বন্তি বিধান্থবাসাথো নিরহণ্ট ততঃ পর:।

য: মেইন্ট্রিতে স ভাদন্থবাসননামক:

ক্ষারক্ষারতৈলৈথো নিরহং স নিগন্ধতে।

বন্তিভিলীরতে যক্ষাং তত্মাবন্তিরিতি ক্ষতঃ ॥'' (ভাবপ্র॰)

বন্তি ছই প্রকার, অন্থবাসন বন্তি ও নিরহবন্তি। এই

ছই প্রকার বন্তির মধ্যে মেই দারা যে বন্তিপ্রয়োগ করা হর,

তাহাকে অন্থবাসন বন্তি এবং কাথ, হন্ধ ও তৈল দারা যে বন্তিপ্রয়োগ করা হর, তাহাকে নির্হবন্তি কহে। বন্তি দারা
(মৃগাদির ম্রাশ্র দারা) প্রযোগ করিতে হর বলিয়া ইহাকে
বন্তিকহে।

মাত্রাবন্তি অন্ধবাসনবন্তির ভেদমাত্র। ইহার মাত্রা ভূই বা একপল। রক্ষবান্তি, তাঁজাগ্নিসম্পন্ন বান্তি এবং যাহা-দের কেবল বায়্প্রবল তাহারা অন্ধবাসন বন্তির উপযুক্ত। কুষ্ঠরোগী, মেহরোগী, স্থূলকায় ও উদররোগীর পক্ষে অন্ধবাসন-বন্তি উপকাবক নহে।

অজীপরোগী, উন্মাদরোগী, তৃঞ্চারোগী এবং শোথ, মুর্জা, অরুচি, ভয়, খাস, কাস ও ক্ষয়রোগাক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে অনুবাসন ও আহাপন এই উভয়বিধ বস্তিই প্রশস্ত।

স্থবর্গাদি ধাতু, বৃক্ষ, বাঁশ, নল, দস্ত, শৃক্ষাগ্র বা মণি প্রভৃতি দ্বারা নল প্রস্তুত করিতে হইবে। বন্তিপ্রয়োগে এক হইতে দ্বার ব্যক্ষ রোপীর নিমিত্ত ৮ অকুলি প্রমাণ, ৬ বৎদরের উর্দ্ধ ১২ বৎদরে পর্যান্ত রোপীর নিমিত্ত ৮ অকুলি প্রমাণ, ১২ বৎদরের উর্দ্ধবয়ক্ষ রোপীদিগের নিমিত্ত ১২ অকুলি প্রমাণ, নির্দ্ধ বংলার করিতে হইবে। ঐ নগের ছিল্ল যথাক্রমে মুলাপ্রমাণ, কলায়প্রমাণ ও বদরী বীজের প্রমাণ হইবে। উহা দ্বাক্ষ এবং গোপ্তেছর আক্রতিবিশিষ্ট হওয়া আবেশ্বক। নলের মুল্ভাগ গোপ্তেছর তায় করিয়া মুণের দিকে ক্রমান্ত্র ক্রিতে হইবে।

বস্তিক্রিরার নলের পরিমাণ বোণীর বৃদ্ধান্থলির তুলা ব্যাস নলিকার মূলে স্থির রাথিয়া কনিষ্ঠান্থলীর ভুলা বাদে অগ্রভাগ প্রস্তুত করিবে এবং মূপ অভ্যন্ত মন্থণ অগত বটিকার স্থার গোলাকার করিবে। নলিকার চতুর্থ ভাগে এরপ ভাবে কর্ণিকা (গোক্ণাদিবং) প্রস্তুত করিতে হটবে, যে বস্তির ধমকে নলিকার অপ্রমাণ ভাগ অভ্যন্তরে প্রবিষ্ঠ না হয় এবং মূলের দিকে ও চতুর্থ ভাগে বস্তিবন্ধনের নিমিত্ত ভুইটী কর্ণিকা প্রস্তুত করিরা দিবে।

মৃগ, ছাগ, শৃকর, গো অথবা মহিবের মৃত্রকোষবৃত্তি ধারা বস্তিকার্যা করিতে হইবে। সকল প্রকার বস্তিই ক্যারাদি প্রারারঞ্জিত করিরা লইতে হইবে এবং উহা মৃছ, সিগ্ধ, অবচ ল্চ হওরা আবশুক। এণে বে বর্তিপ্ররোগ করা বার, ভাহার নল, লক্ষ ও অটালূল পরিমিত, পরিণাহে গুএ পঞ্চীর নলিকার ভার এবং মুদ্যাকৃতি ছিন্তবিশিষ্ট প্রস্তুত্ত করিবে।

সমাক্ প্রকারে বন্তি প্রযুক্ত, হইলে শরীরের উপচর, বর্ণের উৎকর্বতা, বল ও আরোগ্য এক পরমার্ রুদ্ধি হইরা থাকে।
পীত ও বসন্ত কালে দিবাভাগে লেহবন্তি এবং গ্রীষ্ম, বলা ও পরৎকালে অনুবাসনবৃত্তি প্ররোগ করিবে। অভ্যন্ত বিদ্ধ প্রবাত ভোজন করাইরা অনুবাসনবৃত্তি প্ররোগ করিবে না। কারণ এক সমরে সেহভোজন ও অনুবাসন এই উভয় প্রকার জেহ সেবিত হইলে মন্ততা ও মৃদ্ধা জন্মে এবং অভ্যন্ত কক্ষ প্রবাত ভাজন করিরাও অনুবাসন বিধের নহে, এইরূপ করিলে বল ও বর্ণের হাস হইয়া থাকে। অভ্যন্ত বিদ্ধাণ করিবেন না।

বতি প্ররোগ করিতে হইলে প্রথমে মাত্রার উপর বিশেষ লক্ষা রাণিতে হইবে। কারণ হীনমাত্রার বতি প্রয়োগ করিলে তাহাতে কোন কল হর না এবং মাত্রা অধিক হইলে আনাহ, কান্তি ও অভীসার জবাে।

অনুবাসনবত্তির শ্রেষ্ঠমাত্রা ৬ পল, মধ্যম মাত্রা ৩ পল এবং
হীনমাত্রা ২ পল। যে ক্ষেত্ থারা বন্ধি প্রহোগ ক্ষরিতে হইবে,
সেই বেহের সহিত শলুফা ও লৈছৰ চুর্গ মিশ্রিভ ক্রিরা দিতে
হইবে। ঐ চূর্ণের পূর্ণ মাত্রা ৬ মাবা, মধ্যম মাত্রা ৪ মাবা এবং
হীনমাত্রা ২ মাবা।

বিরেচনের পর বস্তি প্রয়োগ করিতে ছইলে ৭ দিন গত এবং শরীরে বলোপচর হইলে আহার করাইরা সায়ংকালে অন্থ-বাসন বস্তি প্রয়োগ করিতে হইবে। অন্থবাসনক্রিরা করিতে হইলে রোণীর শরীরে তৈল মাথাইয়া অন্ধ অন্ধ উক্ষলন বারা ন্নান ও পরে ভোজনাত্তে শতপদ গমন করাইবে। তৎপরে বারু, মৃত্র ও মলত্যাগ হইলে ন্নেচবন্তি প্রয়োগ করিবে।

যৎকালে স্নেহবন্তি প্ররোগ করিতে হটবে, তথন রোগীকে বামপার্যে শরন করাইরা বামজক্যা প্রসারণ ও দক্ষিণকক্ষা কুঞ্চিত করিরা গুঞ্চলেশে সেহ রক্ষণ করিবে; তৎপরে চিকিৎসক বন্তির মূথ পরিয়া দক্ষিণ হত হারা গুঞ্চলেশে বোজনা করিরা মধ্যবেগে পীড়ন করিতে হটবে। ত্রিশ মাত্রাকাল এটরপে পীড়ন করিতে হয়। ইহার অতিরিক্ত সময় কথন পীড়ন করা বিধের নহে। ব্যক্তিপ্রান্ধালে কুন্তুগ, কাস ও হাঁচি প্রান্থতি বর্জন করিবে।

এই প্রকারে স্নেছ আন্তঃপ্রবিষ্ট চইলে একশত বাক্য উচ্চারণ করিতে যত সমর লাগে, ততক্ষণ রোণী উদ্ভানতাবে শরন করিরা থাকিবে। পূর্বেব যাত্রা ও কালের বিবর বলিরাছি, ভাহার বিষয় এইরূপে দ্বির করিতি হয়। বাকীর জান্তর উপরি জার্কার দুলি
মুট্ কাইরা হাত পুরাইরা জানিতে যত সমরের আবশুক,
দুসই পরিমাণ সমরকে একমাত্রা করে। জ্ববা চকুর একবার
নিমীলন ও উলীলনে বৈ সমরের আবশুক বা জার্কুলিহারা তুড়ি
দিতে বা একটি গুলুবর্ণ উচ্চারণ করিতে বে সময় লাগে, সেই
পরিমিত সমরের নাম মাত্রা।

সুমাক্রণে বন্ধিপ্ররোগ করা হইলে বন্ধিবীয় সমন্ত শরীরে শীল প্রসারিত হইবার ক্ষম্ভ চিকিৎসক রোগীর ক্ষমবাহর ও বাহুছর তিনবার আকুক্ষন ও তিনবার প্রসারণ করিবে। তৎপরে রোগীর করজন, পদতন ও কটিদেশ এই সকল স্থানে হত্ত হারা আঘাত এবং কটিদেশ ধরিরা শন্যাতে তিনবার নিক্ষেপ করিবে। পার্কিছর ছারাও পূর্কবৎ শন্যার আঘাত করিবে। এইরূপে নিরহণ কার্যা সম্পার হইলে রোগীকে স্থান্যাতে শল্পন করাইরা নির্দ্রা আক্রণের ক্ষম্ভ বন্ধ করিতে হইবে।

অন্ধ্রাদন ক্রিয়ার পর যতপি বিনা উপদ্রবে বার্ ও মলের সহিত দ্রেহ সম্বর নির্গত হর, তাহা হইলে ঐ ব্যক্তির অন্ধ্রাসন-ক্রিয়া সমাক্রপে হইরাছে জানিতে হইবে। ঐরপে দ্রেহ নির্গত হলে বনি ক্ল্থার উদ্রেক হর, তাহা হইলে সারংকালে স্থাসির জর বা লঘু দ্রবা ভোজন করিতে বিতে হইবে। প্রদিন রোগীকে উক্তজন বা ধ'লে ও ওজীর কাথ করিয়া পান করাইবে। এই নিয়ম অন্থ্যারে ৬ বার, ৭ বার, ৮ বার বা ৯ বার স্লেহবন্তি প্রয়োগ করিয়া তৎপরে নির্দ্ধক্তি প্রয়োগ করিবে।

প্রথম যে বৃত্তি প্রয়োগ ক্রা যায়, তদ্বারা মৃত্যাশন্ন ও বৃত্তকণ দ্বির হয়। বিতীয় বারে শিরোগত বায়ু বিনষ্ট হয়, তৃতীয় বারে বল ও বর্ণের উৎকর্ষতা জ্বায়ে এবং চতুর্থ বারে রস, পঞ্চমবারে রক্ত, বছরারে মাংস, সপ্রমবারে মেল, আইমবারে অন্ধি এবং নবমবারে বৃত্তি প্রয়োগ বারা মজ্জা দ্বির হারা থাকে। অইদেশ দিবস পর্যান্ত বথাবিধি বৃত্তি প্রয়োগ ক্রিলে শুক্তগত দোব প্রশাসত হয়। প্রতি অইমেগ দিবস অন্তর যে ব্যক্তিবধানির্থম বৃত্তিক্রো করে, সেই ব্যক্তি ইন্তীর ভার বলবান, অব্দ্র তুল্য বেগবান এবং দেবতুল্য প্রভাবশালী হয়।

ক্ষতা ও বার্ম প্রকোপ থাকিলে প্রতিদিন দ্বেহ্বত্তি প্রয়োগ করিবে, কিন্তু অস্তান্ত হলে অগ্নিমান্দ্য হওয়ার আশকা থাকার তিনদিন অস্তর বতিপ্রয়োগ কর্ত্তবা। কৃষ্ণ ব্যক্তিদিগের অন্ন-মাত্রাম দীর্থকাল ক্ষেহ প্রদান করিলে যেমন কোন অনিষ্ট হম্ম না, তক্রপ দ্বিশ্ব ব্যক্তিদিগকে অন্নমাত্রান নিরহ বত্তি প্রয়োগ করিলেও কোন অপকার না হইলা বিশেব উপকার হইলা থাকে।

ব্স্তিপ্ররোগ করিলে বছলি উহা সমাক্রণে অভ্যন্তরে

আবেশ না করিরা আয়োগমাজই বহির্নত ইইরা বার, ছবে পুনর্কার পূর্কমাতা ইইতে জনমাজার প্রয়োগ করিবে।

বমন বিরেচনাদি বারা যদি দেহ শোধন না করিয়া অন্থবাসন বজিপ্ররোগ করা হয়, ভাহা হইলে ঐ সেহ মলের সহিত সংযুক্ত হইয়া বহির্গত না হইলে শরীরের অবসরতা, উদরাগ্মান, শূল, বাস এবং পকাশরের শুরুত্ব উপস্থিত হয়, এইরূপ অবস্থায় নিরহবন্তি কিংবা তীক্ষ ঔবধ সহযোগে তীক্ষ ফলবর্ত্তি প্রয়োগ করিবে। বায়ুর অন্থলোমকারক, মলশোধক, অথচ সিম্মকারক এরূপ বিরেচন এবং ভীক্ষ নতাও এই অবস্থায় প্রাশন্ত।

সেহবন্তি নির্গত না হইলে যদি কোন প্রকার উপদ্রব না ঘটে, তাহা হইলে ক্ষমতা প্রযুক্ত উহা নির্গত হর নাই, ব্ঝিতে হইবে। অতএব তৎকালে কোনক্রপ প্রতীকারের চেটা করিবেনা। এক মহোরাত্র কাল অপেক্ষা করিয়া দেখিবে, যদি তর্মধ্যে সেই নির্গত না হর, তবে সংশোধক ঔবধ ছারা দোবের শান্তি করিবে। কিন্তু মেহ নির্গত করাইবার জন্ম পুনর্জার মেহ প্রয়োগ করিবেনা। এইরূপ মেহপ্রয়োগে বিশেষ অনিষ্ট ঘটিয়া থাকে। গুলক, এরও, পৃতিকরক্ত, বামনহাটী, বাসক, কতুণ, শৃতমূলী, ঝিন্টাও কাকজন্তা এই সকল প্রত্যেকে একপল; যব, মাষকলার, মসিনা, বদরীও কুলখ কলার এই সকল প্রত্যেকে ২ পল, এই সকল প্রব্যা একত্র করিয়া চারি দ্রোণ জণছারা সিদ্ধ করিয়া এক দ্রোণ (৬৪ সের) অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া তন্ত্রারা ১৬ সের তিল পাক করিবে। ক্রমণ্ড জীবনীয়গণের ঔবধ প্রত্যেক ২ পল করিয়া গ্রহণ করিবে। এই তৈল ছারা অম্বাসনবন্তিপ্রয়োগ করিলে সকল প্রকার বাতজ রোগ বিনষ্ট হয়।

পদ্পব্যুক্ত নলাদি জব্যদার। বন্ধি জিয়ার দোষে বছবিধ রোগ জন্মে, এইজন্থ বিশেষ সাবধান হইয়া বন্ধি জিয়া করিবে। স্নেহ পানে আহারাদির যে ব্যবস্থা আছে, ইহাতেও সেই ব্যবস্থামু-সারে চলিবে।

নিরংবন্তি—নিরংবৃত্তি কারণভেদে বছ প্রকার। ইছ।
দোষ ও ধাতুসমূহকে যথাখানে স্থাপন করে বলিরা উহার এক
নাম আশ্বাপন। নিরহবৃত্তির শ্রেষ্ঠ মাত্রা ১।• প্রেন্থ (আড়াই
সের) মধ্যমমাত্রা > প্রন্থ (তুই সের) হীনমাত্রা দেড় সের।

বে ব্যক্তি অত্যম্ভ লিড, উৎক্লিষ্ট দোবসম্পন, উরঃক্ষত-রোগাক্রাম্ভ, রুশ এবং উদরামান, বমি, হিকা, অর্শ, কাস, মাস, গুরুরোগ, শোথ, অতীসার, বিহুচিকা, কুঠ, মধুমেহ ও অলোদরাদি রোগাভিত্ত ব্যক্তি ও গর্ডবতী স্ত্রীকে আস্থাপন প্রবােগ করিবে না।

বে ব্যক্তি বাতব্যাধি, উদাবর্ত্ত, বাতরক্ত, বিষমজ্ঞর, মুদ্ধ্যি, ডুকা, উদর, আনাহ, মুহুরুজু, অস্থরী, বৃদ্ধি, অস্ত্রুদর, মন্দায়ি,

औरमर, मृन, भन्ने शिख ध्याः स्नृत्त्रांशाक्राय, धरे नकन राश्नित्क यथाविधारन निक्रवरिष्ठ ध्यायान क्रित्र ।

বায়ু, মল ও মূত্র পরিত্যাগের পর ক্রেহাভাঙ্গ ও উক্ত জলে স্থান করাইরা কুথিত অবস্থার (আহার না করাইরা) মধ্যাক্ষণালে গৃহ মধ্যে রাখিরা বখাযোগ্য নির্নহণ প্রারোগ করিবে।
নির্নহয়তি সম্যক্ প্ররোজিত হইলে উহার বহিনিঃসরণ প্রতীক্ষার মূহুর্ত্তকাল উৎকট ভাবে উপবেশন করিবে। যদি মূহুর্ত্তকাল অস্ত্রেও বহির্গত না হয়, তাহা হইক্লে শোষক ঔষধ বা ক্ষার, সূত্র, অম্ন ও সৈদ্ধব হারা পুনরার নিরহবতি প্ররোগ করিবে।

কক, পিন্ত, বার্ ও মল ক্রমাণ্য বহির্গত হইয়া শরীর লঘু হইলে তাহাকে প্রনিরহ বলা যায় এবং যাহার বিভিন্নেগর আয়তাহেতু মল নিঃসারণ না হইয়া মুত্রগোগ জড়তা ও অকচি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ছমিরহ কহে। আহাপন ও মেহ বজি সমাক্ প্রযোজিত হইলে বজিবারা প্রক্রিয় ঔষধ নিঃসরণ, মনজন্টি, দেহের মিগ্রতা ও বাাধি প্রশমিত হইয়া থাকে। এই নিরমে ছইবার, তিনবার বা চারিবার যথোপযুক্ত বিবেচনা করিয়া পণ্ডিতগণ নিরহবন্তি প্রয়োগ করিবেন।

নিরহবন্তি বায়ুরোগে উষ্ণ রেহের সহিত একবার, পৈতিক ব্যাধিতে উষ্ণ হয়ের সহিত ছইবার এবং লৈমিকবোগে উষ্ণ ক্ষায়, কটু ও মুরাদির সহিত তিনবার প্রয়োগ করিবে। উক্ত প্রকারে নিরহ বন্তি প্রদান করিয়া পৈতিক ব্যাধি সম্পন্নকে হুগ্ধ, লৈমিক ব্যাধিসম্পন্নকে ধূব ও বায়ুরোগসম্পান্নকে মাংস-রমের সহিত ভোজন ক্রাইয়া পরে অন্থ্বাসন প্রয়োগ করিবে।

স্থকুমার, বৃদ্ধ এবং বালকদিগের পক্ষে মৃত্বত্তি হিতকারক, ইহাদিগকে তীক্ষ বন্তি প্রয়োগ করিলে উহাদিগের বল ও প্রমান্ত্র হ্রাস হয়। প্রথমে উৎক্লেশন বন্তি, মধ্যে দোবহর বন্তি এবং পশ্চাৎ সংশমনীয় বন্তি প্রয়োগ করা বিধেয়।

উৎক্রেশন বন্তি—এরগুরীল, ঘটিবধু, পির্রালী, সৈদ্ধর, বচ, এবং হর্বান্ধলের কন্ধ নারা যে বন্তি প্রারোগ করা বার, তাহাকে উৎক্রেশন বন্তি কহে। দোষহর বন্তি—শতমূলী, বন্তিমধু, বিশ্ব এবং ইন্দ্রবন, এই সকল দ্রব্য কাঁজি ও গোস্ত্রের সহিত সংস্ক করিরা বে বন্তি প্ররোগ করা বার, তাহাকে দোষহর বন্তি কহে। সংশমনীরবন্তি—প্রিরুল্প, বৃষ্টিমধু, মৃক্তক ও রসাঞ্জন; এই সকল দ্রব্য ক্রেরের সহিত মিলিত করিরা যে বন্তি প্রয়োগ করা নার, তাহাকে সংশমনীর বন্তি কহে। লেখনবন্তি—ত্রিক্রণার কাখ, গোস্ত্র, মধু এবং য্বক্রারের সহিত উবণাদিগণের চূর্ণ প্রক্রেশ দিয়া তন্থারা বে বন্তি প্ররোগ করা বার, তাহাকে লেখন-বন্তি কহে।

वुःहनविष्य-वुःहनप्रस्तात्र काथ ७ कीवनीवर्गानत करस्त्र

সহিত স্বন্ধ ও মাংসরস মিলিভ করিয়া **ভত্মারা যে বন্ধি এরে**য়াগ করা বার, ভাহার নাম রুংগবন্ধি।

পিছিলবতি ভূমিকুয়াও, নারজী, বহবারক এবং শার্জনী প্লোর অন্তর এই সকল এবঃ হুদ্ধের সহিত সিদ্ধ করিবা বধু ও রক্ত মিশাইরা যে বতি প্রেরোগ করা বার, তাহাকে পিছিল বতি কহে। ছাগ, মেব ও ক্ষুণার ইহাদের স্বক্ত প্রহণ করিতে হর। ইহার নাথা বালশপল অর্থাৎ দেড় সের।

নিরহবন্তির থেক প্রস্তুত বিধান—প্রথমে ২ তোলা সৈদ্ধর ও চারিপল মধু একত্র আলোড়ন করিয়া পরে ৬ পল ক্ষেত্র, ছুইপল কল্প ক্রবা, আটপল কাথ এবং চারি পল প্রক্রেপর ক্রবা এই সকল একত্র মন্থন করিয়া তন্থারা নিরহবন্তি প্রদান করিবে, উক্ত প্রধানীতে প্রস্তুত সামগ্রীর পরিমাণ সর্কানমত ২৪ পল হইবে।

বাতজভ রোগে চারিপল মধু ও ছর পল ছেহ, পিছলরোগে চারিপল মধু ও তিনপণ ছেহ এবং কফলরোগে ৬ পল মধু ও চারিপল ছেহ বারা নিরহবত্তি প্ররোগ করিবে।

মধুতিলকবত্তি—এরও কাথ ৮ পল, মধু ও তৈল উভয় মিলিত ৮ পল, শলুকা অর্জপল এবং লৈছব অর্জপল এই সকল দ্রব্য একতা করিয়া একটা কাঠ থও বারা সমাক্ আলোড়ল করিয়া বে বল্তি প্রায়োগ করা যায়,ভাহাকে মধুতৈলকবত্তি করে। এই বন্তি বারা মেদ, গুলা, কুমি, মীধা, মল ও উদাবর্ত্ত নত এবং শরীর উপচিত, বল, বর্ণ, গুক্র ও অধি, ভি ইইয়া থাকে।

বাপনবত্তি—মধু, দ্বত ও গ্রন্ধ প্রতোকে গুইপল এবং হবুবা ও দৈশ্বব প্রত্যেকে গ্রন্থ তোলা পরিমাণ গ্রহণ করিয়া সমস্ত এক এ উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া বত্তি প্রয়োগ করিবে, ইহাকে যাপন-বন্ধি করে।

ব্করখোবত্তি — এর ওম্লের কাব, মধু, তৈল, লৈছব, বচ এবং শিল্পনী এই সকল একত্র করিরা তত্থারা যে বতিপ্রেরোগ করা যার, তাহাকে স্করখোবত্তি কছে।

সিদ্ধবিত্ত — পঞ্চমুলের কাথ, তৈল, শিল্পলী, মধু, সৈদ্ধব এবং যষ্টি মধু, এই সকল একত্র কলিয়া বে বতিপ্রায়োগ করা নায়, ভাহাকে সিদ্ধবিত্ত করে।

নির্বেশ্তি প্ররোগের পর উক্তজলে স্থান করিবে, দিবানিক্রা, ও অন্তীর্ণজনক দ্রব্য পরিত্যাগ বিধের।

উত্তরবন্তি - উত্তরবন্তিনল ১২ আঙ্গুল দীর্ঘ হইবে এবং ঐ নলের মধ্যদেশে একটা কর্ণিকা (গোকর্ণাদিবং) প্রান্তত করিবে। নলের অপ্রতাগ মালতীপুশের বৃদ্ধের স্তার এবং ছিন্তটী এরপ হওরা আবস্ত্রক বে, তাহার মধ্যদিরা একটা সর্বপ নির্গত হুইতে পারে।

পচিল বৎসরের ন্নী বয়য় ব্যক্তির পক্ষে মোতা ৪
তোলা এবং তদ্র্র্জ ব্যক্তির পক্ষে মাত্রা ৮ তোলা মির্দিষ্ট হইরাছে।
ব্রোণীকে প্রথমে আছাপন বারা শোধন করিরা লান করাইবে,
তৎপরে তৃত্তির সহিত তোলন কুরীইরা আসনোপরি লালু পাতিরা
বসাইবে, তৎপরে দেহসিক্ত শলাকা বারা প্রথমে অবেষণ করিরা
পশ্চাৎ স্বতম্রন্ধিত নল লিলমধ্যে ধীরে ধীরে প্রবেশ করাইবে।
৬ আবৃল পরিমাণ প্রবিষ্ট হইলে বত্তিশীড়ন হইবে, পরে ধীরে
ধীরে নল বাহির করিয়া লইবে। তৎপরে লেহ প্রত্যাগত
হইলে দেহবন্তির বিধানামুসারে ক্রিয়া করিবে।

ত্রীলোকদিগের অস্ত হল অসুলি দীর্ঘ এবং কনিষ্ঠাসুলির ভার ছুল করিয়া নল প্রান্তত করিবে, উহার ছিন্দ্রটী একটী মূলগ প্রাবেশের উপায়ক করা কর্ত্তবা। ইহা অপথা পথে চারি অসুল প্রমাণ এবং মূত্রকচ্ছের জন্তা তদমুরূপ করা নল প্রস্তুত করিয়া

 অসুলি প্রমাণ প্রবেশ করাইয়া বস্তিপ্রয়োগ করিবে। বালকদিগের মৃত্রকচ্ছুরোগে এক অসুলি প্রমাণ নল প্রয়োগ করিবে। চিকিৎসক স্থীদিগের ঘোনি মধ্যে আন্তে আন্তে ক্র নল প্রবেশ করাইবেন যেন উহা কম্পিত না হয়। নলের আক্রতি মালতী প্রস্তুবৎ হওয়া আরশ্রক। গর্ডাশের শোধনের নিমিত মেহ ভূইপল এবং মৃত্রকচ্ছে এক পল পরিমাণে প্রয়োগ করিবে।

দ্রীদিগকে উত্তরবন্তি প্রয়োগ কবিংক হইলে প্রথমত: উত্তান-ভাবে শব্দন করাইরা স্বান্থ্যয় ওওে।বন করিয়া বন্তিপ্রয়োগ করিবে। ঐ উত্তরবন্তির যন্তাপি বহিনিঃসরণ না হয়, তাহা হইলে পুনর্কার সংশোধক দ্রব্য সহযোগে বন্তি প্রদান করিবে। অথবা বোনিমার্গে মৃত্রনিঃসারক অথচ প্রিশ্ধ সংশোধক দ্রব্য-সংযুক্ত দৃঢ় কলবন্তি প্রয়োগ করিবে।

বঞ্জির। বার। কোন স্থানে দাহ উপস্থিত হইলে ক্লীর-রুক্ষের কাথ ও শীতল জল বারা পুনবার বস্তি প্রয়োগ করিবে। বঞ্জিপ্রয়োগ বারা পুরুষের শুক্রদোয এবং ব্রীদিগের আর্ত্তব দোধ বিনট হয়, কিন্তু প্রমেহরোগাক্রান্ত ব্যক্তিকে কথনও উত্তর বস্তি প্রয়োগ করিবে না। (ভারপ্র- পূর্ক্ধি)

[স্ক্রুতোক্ত নির্মাহবন্তির বিষয় নির্মাহবন্তি শব্দে দেখ।] বস্তিক (পুং) বন্তি শোধনে দওভেদ।

'বস্তিক: শল্যনওসজৌ শিথিলস্তক্ষোদ্ধরণে শল্যং বস্তিমধ্যে সক্ষতি দণ্ডমাত্রং নি:সরতি। অস্তে বস্তক ইতি পঠিছা শূলঘটিত ইতি ব্যাচ্থ্যুঃ। (ভারত দ্রোণপর্ক টীকায় নীলকণ্ঠ)

विश्वकन्त्रम् (क्री) विषयानकार्या।

বস্তিকশ্মাত্য (প্ং) বন্ধিকশ্বণা ডচ্ছোধনব্যাপারেণ আতঃ। বন্তিশোধনে এবান্ত প্রচুরকার্যকরম্বাৎ তথামং। সমিষ্ট বৃক্ষ, চলিত ভূরিটা।

'অরিতৌ বস্তিকর্দাতো বেণীরঃ কেনিলয়ঃ সুশঃ।' (শক্ষচন্তিকা) বস্তিকুগুলিক। (গ্রী) মূত্রাঘাত রোগভেদ। ইহার লকণ ক্রতবেগে পথগমন, পরিশ্রম, অভিবাত ও পীড়ন বারা মূত্রাশয় অহান হইতে উৰ্জগত হইয়া গৰ্ভের স্থায় স্থূলাকৃতি হইলে শূল, ম্পান্দন ও দাহের সহিত অর অর মূত্র নির্গত হর। নাভির অধো-**एनएम भीएन क्**त्रिएम धात्रावाहिकक्राएभ मृत्र निर्माख हरेएड थाएक এবং রোগী তবতা ও উদ্বেষ্টন কর্ত্ব পীড়িত হয়, মুত্রাঘাত-রোগে এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইলে ভাহাকে বন্তিকুগুলিকা কংহ। এই রোগে প্রারহ বার্র আধিকা থাকে। ইহা শক্ত ও বিষের ভাষে ভয়ন্বর। এই রোগ উৎপন্ন হইবামাত্রই বিশেষ স্থাচিকিৎসক দ্বারা চিকিৎসা করা কর্ত্তব্য। এই রোগে পিন্তাধিক্য হইলে দাহ, শূল ও বিবর্ণ হয়। কফাধিক্য হুইলে দেহের গুরুতা ও শোণ, স্লিগ্ধ, শ্বেতবর্ণ অথচ গাঢ়মূত্র নির্গত হইয়া থাকে।

বত্তিকুণ্ডলিকা রোগে যদি বস্তির মুথর্ক্ষু কফ কর্তৃক আবৃত কিংবা বস্তিতে পিত্ত সঞ্চিত হয়, তাহা হইলে অসাধ্য হয়। যদি এই রোগে বস্তির মুথর্ক্ষু কফ কর্তৃক আবৃত ও বস্তি মধ্যে বায়্ কুণ্ডলীভূত হইয়া অবস্থিতি না করে, তাহা হইলে সাধ্য হয়। বস্তি মধ্যে বায়্ কুণ্ডলীভূত হইয়া অবস্থিতি করিলে রোগীর পিপাসা,মোহ ও খাস উপস্থিত হয়।

(ভাবপ্র° মূত্রাঘাত রোগাধিক°)

বস্তিবিল (ক্লী) বস্তিষার, মূত্রষার। (অব্ধ° ১।৩৮)

वि**छिगल** (क्री) मूब। (हम)

বস্তিবাত (পুং) স্থনামখ্যাত বাতবাধি রোগভেদ। লক্ষণ—
"মান্ধতেহমুগুণে বস্তৌ মূত্রং সমান্ধ প্রবর্ততে।

বিকার। বিবিধাশ্চাপি প্রতিলোমে ভবন্তি হি ॥" (মাধবনি°) বে বাতব্যাধি রোগে বায়ু বিশুণ হইরা বন্তিদেশে মূত্র সমাক্রণে প্রবিভিত করে এবং প্রতি লোমকুপে বিবিধ প্রকার বিকার উপস্থিত হয়, তাহাকে বন্তিবাত কহে।

বস্তিশীর্ষ (क्री) প্রতাঙ্গ বিশেষ, বন্তির উপরিভাগ।

(চরক শারীরহা° ৭ 🗬°)

বস্তিশূল (ক্লী) বস্তিবেদনা, বস্তিদেশে অভিশন্ন বেদনা হইলে তাহাকে বন্ধিশূল কহে। (মাধ্বনি°)

বস্তিশোধন (রী) > মদনফল। ২ বস্তিশোধক দ্রব্যমান্ত্র,
যে দ্রব্য হারা বস্তিদোব প্রশমিত হয়, তাহাকে বস্তিশোধন কছে।
ত মদনকুক্ষ।

বস্তু (ক্রী) বসতীতি বস (বসেন্তন্। উণ্ ১) ৭৬) ইতি তুন্। ১ দ্রবা।
"গৃহেবু লারেম্ব স্থতেমু বন্ধুরু
হিজ্ঞোত্তমক্ষনবাজিবস্তুর্।

অক্ব্যরত্বাভরণাধরাদি

আনস্তকোবেৰকরোদসন্মতিম্ ॥'' (ভাগবত ৯।৪।২৭) ২ পাঞ্জুত।

"অবন্ধাবদ্ধাশ্চ বস্তুব্রত্ত জেরা হি বস্তুপহিতা প্রসীদতি। (রত্ব ৩২৭)

ত পদার্থ, পদার্থমাত্রকেই বন্ধ কছে।
'ভাব: পদার্থে ধর্ম: ভাৎ সরং তন্ধ্ধ বন্ধ চ।' (ত্রিকা°)
''সতাং হি সন্দেহপদেষু বন্ধবু প্রমাণমন্তঃকরণপ্রবৃত্তর: ।''
(শকুরা > আ °)

নৈরান্নিকদিগের মতে—পরিদৃশুমান জগতে ছই প্রকার বস্ত আছে, ভাব ও অভাব।

"জগতি বস্তবয়ং ভাবোহভাবন্দ" (স্থায়শাস্ত্র)

বেলাস্তদর্শনের মতে জগতে বস্ত এক, সচিচদানন্দ অধর ব্রহ্মই বস্ত, ব্রহ্ম ভিন্ন আর বস্তু নাই। অজ্ঞানাদি জড়সমূহ অবস্তু।" (বেলাস্তসার) ৫ কার্যা।

"বস্তমশকোষু সমুত্তমশেচৎ শকোষু মোহাদসমুত্তমশচ। শকোষু কালেন সমুত্তমশচ ত্রিধৈব কার্যাবাসনং বদক্তি॥"

(কামন্দকীয় নীতিসার ১৫।২৫) ৬ অর্থ। (কুমার ৫।৬৫ মলিনাথ) ৬ ইতির্ভ। "আংচ-

মস্তাং কালিদাসগ্রথিতবস্ত্রনা নবেন গ্রোটকেনোপস্থাক্তে" (বিক্রমোর্কশী) ৬ বৃত্তাস্ত। ৭ সংপাত্র। ৮ সত্য। বস্তুক (ক্লী) বস্তু সংজ্ঞারাং কন্। বাজুক শাক, চলিত বেভোশাক।

বস্তুকী (ক্নী) বস্তুক গৌরাদিখাৎ ঙীষ্। ষেত চিল্লীশাক। (রাঞ্চনি°) বস্তুতস্ (অবা) বস্তু-ভসিন্। ফলতঃ, বান্তবিক, বগার্থতঃ। বস্তুতা (ত্রী) বস্তু ভাবে তল্টাপ্। বস্তুর ভাব বা ধর্ম,

বন্ধত্ব ৷

वञ्चक्षण्म (भूः) वश्चत्र धर्मा, वश्चष । ^१

বস্তুপাল (গুং) স্থাট্রের একজন প্রসিদ্ধ জৈনকবি।

বস্তুবল (शै) বস্তুর গুণ।

বস্তুভাব (পুং) বস্তুর ধর্ম বা রূপ

বস্তুভেদ (গং) বন্ধর প্রকার।

বস্তাবিচার (পুং) বছর গুণ নির্দারণ।

বস্তুবিবর্ত্ত (🔊) বেদাস্তমতে বাথার্থ্যের বিবর্ত্ত ।

বস্তুপক্তি (ত্রী) বন্ধর শক্তি, দ্রব্যের শক্তি, 'নহি বন্ধশক্তি-র্জ্ববন্ধশমপেকতে' (ভাগবত ১০ম হন্ধে স্বামী)

वखनामन (है) वजनवंत्र।

वञ्चनृत्र (बि) जवाहीम।

বস্ত্রপাপন (क्री) ভোজবাজীতে বস্তর রুগান্তরকরণ।

वस्तुन्या (बी) छनमानकात्राज्य ।

XVII

"রাজীবমিব তে ৰজুং নেত্রে নীলোৎপলে ইব।"

(कावानर्न) [डनमा (पूर्व]

বস্ত্য (নী) বস-জিন্ ৰভিবাদজভাং সাধু ৰভি ইভি বং। (তত্ৰ সাধু:। পা ৪।৪।৯৭) গৃহ। জমর।

বস্ত্র (রী) বহুতে আছোছতে জনেমেতি বস আছোদনে ট্রন্
(সর্বাধাতুতা: ট্রন্। উণ্ ৪।১৫৮) পরিধানাদির, উপযুক্ত
কার্ণাসহরাদি প্রস্তুত বস্তু, চলিত কাপড়। পর্যার—আছোবন,
বাসন্, চেল, বসন, অংগুক, (অমর) সিচর, প্রোত্ত, লুক্তক,
কর্পট, পাটক, কলিপু, (কটাধর) বাসন, হিচর, হাদ,
বাস। (পলর্ত্রা) ধর্মানাজকার তৃপ্ত বল্লের পরিধানবিধি
সবদ্ধে বলেন, বিকক্ষ অর্থাৎ একেবারে যুক্তকছে ও কডকটা
বুক্তকছে, উত্তরীয়হীন, অর্থ উল্লেখ্য একেবারে উল্লেখ্য হটর।
কোন প্রোত্ত কিংবা দ্বার্থকর্ষে লিপ্ত হইবে না।

"বিককোহমুদ্ধরীয়ত নগ্নতাবন্ত এব চ।

শ্রোতং স্মার্ক্ত তথা কর্ম ন নগাশ্চিত্তদেদপি 🖫 (ভৃগু)

পরিধানের বাহির দিরা বদি কছে নিবছ থাকে, তবে তাহা আরুরী প্রথা হইরা পড়ে, তাই সম্পূর্ণ সংবৃতকচ্ছ হওরাই উচিত। "পরীধানাছহি: কক্ষা নিবছা ছারুরী ভবেৎ।" (স্বৃতি) বৌধারন মতে, বামদিক্, পৃষ্ঠ এবং নাভি, এই তিনটী স্থানে তিনটী কক্ষ, এই কক্ষ তিনটী বথাবথ ঠিক করিরা দিরা বে ব্রাহ্মণ বন্ত্র পরিধান করেন, তিনি শুচি হইরা থাকেন।

"বামে পৃঠে তথা নাভৌ কক্তরমূলাক্তম্।

এতিঃ ককৈ: পরীধতে বো বিপ্রা: স শুটি: শৃতঃ ॥"(বৌধারন)
প্রচেতা বলেন, যে বন্ত নাতিদেশে পরিলে ছই দিকের
জান্ত্রর পর্যান্ত আচ্ছাদিত হয়, তাহার নাম অন্তরীর (ইজের)
এই বন্ত প্রশান্ত বন্ত । ইহা অদ্ধির হওরা আবশুক।

"नार्को **४७**क यदब्रमाम्हामद्रिष्ठ बाङ्गनी ।

অন্তরীয়ং প্রদন্তং তদক্ষিরমূভরোরপি॥" (প্রচেডা:)

দ্বতিশালে আছে, "দশা নাভৌ প্ররোজনেং। নতাং কর্মণি কঞুকীতি। উত্তরীরধারণং চোপনীতবং।" অর্থাৎ দশা বা বন্ত্র-প্রান্ত-ভাগ নাভিদেশে শুজিয়া দিবে। কঞুকী হইয়া অর্থাৎ কোনরূপ পিয়ান বা জামা গায়ে দিয়া কোন বিহিত কর্ম করিবে না, কর্মকালীন উপবীতবং পরিত্র উত্তরীর ধারণ করিবে। (১)

পূর্কোক্ত ভৃগুর বর্ণনাত্মসারে বৃদ্ধিতে হইবে, সকলেরই চুই চুই বন্ধ অর্থাৎ পরিধেয় ও উত্তরীয় ধারণ কর্তব্য। পারন্ধর বলেন,

⁽১) "বৰা বজোপৰীতক ধাৰ্ব্যতে চ বিজোক্তনৈ:।
তৰা সৰাব্যতে বস্থাগুজনাক্তালনং গুজনু হ" (বৃতি)

বাদ একথানি বৈ কাপড় না থাকে, গুৱে ডাহার একদিক্ পরিধান এবং অপর দিক উত্তরীয় করিরা লইবে।

वक्रधार्माणव ७१, - मिर्चन अवत्र धार्म कारमाजीलन, अनःमा-লাভ, দীর্বায়, অলন্ধীনাপ এবং আব্দুপ্রসাদ হয়। দেহের সৌন্দর্যা ও সভাসমাজ-গমনের বোগ্যভা জন্ম।

"কামাং বশক্তমাযুৱ্যমলন্ধীরং প্রাহর্ষণম ॥

13

এমৎ পরিবদং শক্তং নির্শালরধারণভূম" (রাজবন্ধ) ্লানের পর উত্তমরূপে বল্লের সাহায্যে গাত্র মার্জন করিতে হয়। তাহাতে দেহকাতি আকাশ পান্ধ এবং দেহের নানা কণু-দোব দুরীভুত হইরা যার। সকল রকম কৌবের বস্ত্র অর্থাৎ পটুবত্র বা ভসন্ন বত্র, অথবা বিবিধ চিত্রবন্ধ ও রক্ষবন্ধ, শীভকালে ব্যবহার করা উচিত, কারণ উহাতে বাত ও মেলকোপ প্রশমিত হর। পবিত্র স্থশীতকাৰার বন্ধ পিত্তহর, স্কুভরাং উহা গ্রীয়-কালে ব্যবহার করাই কর্মব্য। এই বন্ধ বন্ধ লগু হয়, ভতই উত্তম। শীভাতপ্ৰিবাৰণে গুৰুবন্ত গুভৰ এবং উষ্ণও নর, শীতও নর এইরূপ বন্ধ বর্ষার ব্যবহার্য। মাতুর মলিন বসন কথনই ধারণ করিবে না, উহাতে কণ্ড, ও ভূমি লগ্নে এবং উহা মানিকর ও শনীভাগ্যহর।

বর্মযোগে বস্তাদি দর্শন একার ওভগ্রদ। কল্পা, ওক্লবস্ত পদ্মধারী গৌরবর্ণ তেজঃফুর্ন্তিযুত ছোট ছোট বালক, ছত্র, দর্শণ, বিষ ও আমিষ এবং শুক্লবর্ণ পুশারাশি, বন্ধ ও অপবিত্র আলেপন খপ্তে এই সকল বন্ধ দৰ্শনে আয়ু, আরোগ্য এবং বছবিত্ত লাভ हरेन्रा शास्त्र ।

"ক্সাং কুমারকান্ গৌরান্ ওক্রবন্তান্ স্তেজস:। য: পশ্রেলভতে যো বা ছত্রাদর্শবিবামিবম্ । **७क्राः ज्यमत्मा वज्रमत्मशात्मभनः कन्म ॥** যক্ত ভাৰার্বারোগ্যং বিভং বহু চ সোহলুতে #"

(বাভট শারীরত্বান ৬ আ:)

নববন্ত্র পরিধান করিডে হইলে শাল্রাস্থ্যারে দিন দেখিয়া লইতে হয়। অলান্ত্রীয় দিনে বস্তব্যবহারে প্রভাবায় আছে। জ্যোতিক্তবে দেখিতে পাই, নিজের জন্ম নক্ষত্রে ও অমুরাধা বিশাখা, হঞা, চিত্ৰা প্ৰভৃতি কভিপন্ন ৰিহিত নক্ষয়ে এবং ইহা ভিন্ন বৃহস্পতি, শুক্র ও বুধদিনে বা কোন উৎসব ব্যাপারে নব वमन धात्रण विस्थत्र।

> "একামুরাধবমুভিব্যবিশাপহত্ত-চিত্রোন্তরান্বিপর্বনাদিভিরেৰভীৰ। नगर्क जीववृशक्षकपिरना एनवारमे ধার্যাং নবং বসনমীশরদেবভূষ্টে ॥" (জ্যোতিস্তত্ত্ব)

দিন না দেখিয়া যে কোন দিনে নৰবস্ত্ৰ ধাৰণে নানা অমঞ্জ ঘটে, আর বিহিত দিনে নব বসন পরিধানে উহার বিপরীওঁ कन व्यर्थार मनननाच व्यवश्रायो। क्यानाहरन निविष्ठ व्याह्य. রবিবারে নববসন ধারণে অর ধন, সোমে ত্রণ এবং মঙ্গলে সভত नाना क्रम इत्र । अञ्चिष्टिक विश्वि षितन अर्थाए वृक्ष, बुहम्लिक ও অক্ৰাৱে নবৰত্ৰ ধাৰণে যথাক্ৰমে প্ৰভূত বন্ত্ৰলাভ, বিভা ও বিভ্তসমাগম এবং নানা ভোগ হুখ, প্রমোদ শ্যা ও বরাঙ্গী সঙ্গ ঘটে। এডজি শনিবারে নববন্ত্র কিছুতেই ব্যবহার করিবে না. কারণ, ঐ বিনে নববসন পরিধানের ফল রোগ, লোক ও কলছ মিতা সহচর।

"रुर्र्या ठाइथनः खनः मनिनित्न क्रमः नना कृत्रित्न। ৰক্ষাণাং বছত। বুধে স্থান্ধরৌ বিদ্যাগমঃ সম্পদঃ। নানাজ্যেগবুড: প্রমোদশরনং দিব্যালনা ভার্গবে শৌরে স্থাঃ ধলু রোগশোককলহা বন্তে গ্রুতে নৃতনে ॥'' (কর্মলোচন)

মণিন বদন পরিষার করিতে হইলে উহাতে কার সংযোগ আবশুক। এই ক্লার সংযোগ করিবারও আবার দিনাদিন দেখিরা ক্ষতে হয়। কারণ নিষিত্ত কিনে কারসংযোগে বক্তবামীর সপ্তকুল দথ হইরা থাকে। বজ্ঞে ক্ষারসংযোগের নিষিত্ব দিন ষ্ণা,—শনি ও মঙ্গল, ষ্টা ও ছাদ্শী এবং ভট্টির বে কোন आह पिन।

"মন্দ-মদল-বটীবু বাদভাং প্রাহ্বাসরে। ব্যাপাং কার্সংযোগে দহত্যাসপ্তমং কুলম্ 🗥

(আহিকাচারডৰ)

বরাহমিহিরের বৃহৎসংহিতার লিখিত আছে, বস্ত্রের কোণ नम्ट (प्रवादन वादः উহার द्यास ও পাশাस मध्य नद्रशत्न वात । व्यवनिष्ठे किन व्यारम निमाठवर्गन वात्र करत । सब वजन वा পুরাজন বসন यदि मंत्री, গোমর বা কর্মদে লিপ্ত হয়, কিংবা ছিন প্ৰাৰণ বা স্কৃতিত ব্ইবা বান, তবে স্থপুঠ ওড বা অওভ ফল

 [&]quot;সাতস্যালন্তরং সন্বাধ্যেন ভতুমার্ক্রনন্। কাভিজনং শরীয়ত কওুয়াদোৰনাশনৰ্। (क्रेड्रवर क्रियव्यक् अक्टब्डर क्रेट्रवर ह । বাতলেম্বর তত**ু**শীতকালে বিধাররেৎ a" 'কৌবের প্রাত্তর: তসরবস্ত্রক।' (यथाः स्वीतः निखन्नः कार्यातः वश्चमुङार्छ । ভদ্মানমেছকৰালে ভচ্চাপি লবু শহুতে i" 'काबाबर क्लाक्डीकि लाक्ष्य । काबाबबाशबक्त का।' शक्र अकर पक्ष मेठाजगनिवात्रन्य । म क्रांकर म ह यां शिक्ट कक्ष्यू यशेक्ट शासकार । क्शांनि न बरेनः महिर्याद्याः विकासकान् । **च्छ**्रच्यान्त्रविकतः प्रा**क्ष्याची**कतः शतन् ६" (चाव अकाम)

আর, অরতের বা অধিক হওরার সন্তাবনা। উত্তর বন্ধ ঐরপ হইলেও উত্তরূপ শুভাতত ফল ঘটিরা থাকে। বরের যে ভাগ রাক্ষসাধিকত ভাহা ঐরণ হইলে রোগ বা মৃত্যু ঘটে। মমুষা-ভাগ ঐরপ হইলে পুত্র জন্মেও তেলোর্ছি হর এবং দেবভাগ ঐরপ ঘটিলে ভোগ বৃদ্ধি হইরা থাকে। কিন্তু প্রান্তভাগ যদি ঐরপ হয়, তবে অনিষ্ট ঘটবারই বিশক্ষণ সম্ভাবনা। বল্লের উক্ত চিক্তগুলি এইরপই ফলাকল প্রকাশ করিয়া পাকে।

বক্সের দেবাধিকত ছিন্ন আংশে বদি কৰা, প্লব, উলুক, কপোত, কাক, ক্রবাদ, গোমান্ব, ধর, উট্ট বা সর্প তুলা আকার দেখা বায়, তবে পুরুষদিগের মৃত্যুসম ভর জন্মাইয়া থাকে। বল্লের রাক্ষসাধিকত ছিন্ন আংশে ছত্র, ধ্বজ, স্বস্তিক, বর্জমান, শ্রীরক্ষ, কুন্দ, অপুর ও ভোরণ প্রভৃতির আকার বাক্ত হইলে অচিরাৎ পুরুষগণের লক্ষীলাভ ঘটে।

নর যখন নববত্র পরিধান করে, তথন চক্র অধিনীনক্ষত্রগত হইলে প্রভূত বন্ধলান্ত, ভরণী গত হইলে অপহরণভন্ত, কৃত্তিকাগত হইলে বিশেষরূপে অগ্নিভয় এবং রোহিনীগত হইলে অর্থসিদ্ধি হইয়া থাকে, তাজির মৃগলিরায় মৃবিক্তর, আরো নক্ষত্রে প্রাণহানি, পুনর্কস্থতে গুভাগমন এবং পুরানক্ষত্রে ধনলাত ৰটে। অপ্রেয়ার বিলোপ, মঘায় মৃত্যু, পূর্কক্ষনীতে রাজভর এবং উত্তর ক্ষত্তনীতে ধনাগম ঘটে। হতার কর্মসিদ্ধি, চিত্রায় গুভাগম, ঘাতীনক্ষত্রে গুভাজা প্রাপ্তি, এবং বিশাখায় কনপ্রিয়তা হয়। অসুরাগায় স্থক্ৎস্মাগম, জোষ্ঠায় বল্লক্ষর, মৃলায় জলপ্লাবন, এবং পূর্কাষালার মহৎস্মাগম, জোষ্ঠায় বল্লক্ষর, মৃলায় জলপ্লাবন, এবং পূর্কাষালার নানা রোগ হইয়া থাকে, উত্তরাষালা নক্ষ্যে মিট জন্ম, প্রবণায় নেত্ররোগ, ধনিষ্ঠায় ধান্তলাভ ও শতভিষায় বিষক্ত মহাতর উপস্থিত হয়। পূর্কভারেপদে স্বিল জন্ত ভর, উত্তর ভারেপদে পূত্রলাভ ও বেবতীতে রঙ্কলাতের সন্তাবনা।

ি যিনি উলিখিত নক্ষত্রে নগবরভোগে অভিগাবী হন, তাঁহার সম্বন্ধে ফলাফল ঐরপই হইয়া থাকে। কিন্তু নক্ষত্রগুলি গুণ-বর্জিত বা অমললকর হইলেও, রান্ধণের আক্সায় ঐ সকল নক্ষত্রে নববর ভোগ ইষ্টফলপ্রদ হয়। তদ্বিদ ভূপতি-প্রদন্ত বা বিবাহবিধিলন্ধ বর্ত্তাগও ফুফলপ্রদ হইরা থাকে। দুল কথা—বিবাহে রাজসন্মানে এবং ব্রাহ্মণগণের সম্মতিক্রমে গুণ-বর্জিত অপ্রশন্ত নক্ষত্রেও নবৰদন ভোগ করিতে পারা যায়। (বৃহৎদেণ্ণ) আ:)

বন্ধ দান করিলে অশেষ ফল হয়। শাল্পে ইহার অনেক কথা আছে। শুদ্ধিগতে পাই, ৰন্ধদানকর্তা চক্র-লোকে উপনীত হইয়া থাকেন।

"বাসোখ"চক্ৰসালোক্যমৰিদালোক্যমৰদঃ।" (ওছিতৰ) যাহারা আন্দর্গদিগকে সতত উত্তম বন্ধ দান করে, চরমে ভাছাদিসের পথ জনদিদ-দীতদ এবং বক্সও গদ্ধ-পদ্মিপূর্ণ হইরা থাকে।

"বিজ্ঞানাং বে ডু সভতং উভবন্ধ প্রদা নিরা:।
বন্ধানমূত: পছাডেবাং স্থলপন্ধিতল:॥" ু(অগ্নিস্ত)
অন্নিস্বাধের হম ও পদিগোপাখ্যানে এই বন্ধদানের স্ণ্যমাহান্ম্য বার্ডা বিবৃত হইরাছে। বাহুলাভরে উক্ক ত হইল না।

সর্পদেবদেবী পূজার ব্রহণান আবশুক। কিছ কোন্
পূজার কোন্ বন্ধ বিহিত বা নিবিছ, ভাষা খাল্লাছসারে জানিয়া
লাইরা দেবোলেশে লান করিলে বা পরিধানপূর্বক পূজা করিলেই
প্রকৃত পূজা-কললাভ ঘটে।

অনিপুরাণের ক্রিরাবোগ নামক অধ্যাত্তে লিখিত আছে, গুকুল, পট্ট, কৌবের, বাকল ও কার্পাস প্রাকৃতি নিজের প্রির ও ক্রথকর স্থলর স্থলর ব্যার বিক্লর পূলা অবিতে হর।

"छक्नभग्रेटकोरयदयादकानीनकानिकः। वारमाकिः भृषद्वदिक्तः ऋष्टेखद्वाद्यनः ज्ञिरेतः ॥"

(অধিপু জিয়াযো)

কিন্ত এই বিষ্ণু পুৰার নীল রক্ত ও অভাগ্র বা অপবিত্র বসন পরিধান নিবিছ। পুঞ্জ বদি নীল, রক্ত কি অভাগ্র অপবিত্র বস্ত্র পরিয়া বিষ্ণুপুরার ব্রতী হন, তবে লাম্ন-লাসনে তাহাকে অপরাধী হইতে হয়। সেই অপরাধের বিশেব বিশেব প্রায়-লিন্ত উক্ত আছে। সেই সেই প্রায়ন্তিত করিয়া তবে তিনি নিরপ্রাধ বা নিশাপ হইতে পারিবেন।

বরাংপুরাণে ভগবান স্বরং বলিরাছেন, বে জান নীল বসন পরিরা আমার কর্মে লিপ্ত হর, চরমে ভাষাকে পাঁচ শভ বর্ষ পর্যান্ত কৃষি হইরা কাল কাটাইতে হইবে। কিন্ত এই অপরাধ-শোধনের প্রারশিত আছে। লে প্রারশিত—বিধিমত একটা মাত্র চাপ্রারণ। চাপ্রারণ করিলেই সে বাক্তি উক্ত পাপ বা অপরাধ হইতে মুক্ত হইতে পারিবে।

এইরপ রক্ত বত্র পরিবাধ বিশ্বুপ্রাদি ইকরা নিবিছ। উক্ত বরাহপুরাণের অভ্যত্ত আছে, রক্ত বত্র পরিয়া বিশ্বুপুরা করিলে, রজম্বা রমণীদিগের বে রক্তমোক্ষণ হয়, সেই রক্তে বিপ্তার হইরা উক্ত পুজককে পঞ্চ দশ বর্ণকাল নরকে বাল করিছে হটবে। এই অপরাধশোধনের প্রার্শ্তিত—সপ্তর্মণ দিন একাহার, তিন দিন বাযুভক্ষণ এবং একদিন মাত্র জলাহার। •

মারাহ উবাচ—"ভূমিডো নীলবল্লেণ বেং বি মানুপদর্শতি। বর্ষাবাক শতং পঞ্চ কুমির্ভুর্বা দ তিউতি । ভক্ত ক্ল্যামি ক্লোবি অপরাধনিশোধনন্। প্রারন্ডিতং বিশালাব্দি বেন দুচ্যেত কিবিবাং ।"

কৃষ্ণবর্গ বল্প পরিয়াও বিষ্ণু পূজাদি করিছে নাই। তাহাতে পূক্রকের অপরাধ হইবে। সেই অপরাধীর পরিপানে উক্ত পূক্রকের প্রথমে পঞ্চ বর্ধকাল বুল হইরা জন্মিতে হইবে, তাহার পর অক্ত কোন, কাঠতক্ষক কীট, তৎপরে ভিন্ন বর্ধ মলক, অনস্তর আট বর্ধ কক্ষণ এবং ইহার পর চৌদবর্ধকাল পারাবত বোনি ভোগ করিতে হইবে। এই জন্মে উক্ত ব্যক্তি সিত পারাবত হইরা কোন প্রতিষ্ঠিত বিষ্ণুবিগ্রহের কাছেই বাস করিতে পারিবে। এই অপরাধের প্রার্গিন্ত—সপ্তাহকাল মাত্র বাবক ভক্ষণ এবং ভিনরাত্র বাত্র তিনটা শক্ত্রপিও ভোজন। এইরূপ প্রারশিতন্তই তাহার অপরাধনোক্ষণ হইবে।

चार्थाक वच्च गतिथानभूक्तक विकृश्कामि निविक। हेरारकेश অপরাধ আছে। সেই অপরাধের ফলে পূজাকর্তাকে চরমে এক-রুদ্ম উন্মত্ত গল, একলম উট্ট, একলম গর্মড, একলম পুগাল, একলম অখ, একজন সারক এবং একজন মৃগ হইতে হয়। এইরূপ সপ্তজ্ঞার পর শেষে মামুষবোনি লাভ হইলে মদীর ভক্ত গুণজ্ঞ ও মৎকর্মাতৎপর হইবে। তাহাতেই তাহার অপরাধ মৃক্তি ঘটিবে। কিন্তু ইহজনোই এইরূপ অপরাধ মোচনের প্রারশ্ভিত্ত আছে। ভক্তিযুক্ত হইয়া তাহার অমুষ্ঠান করিতে হইবে। প্রারশ্চিত যথা—যাবক ভোজনে তিন দিন এবং পিণ্যাক ভোজনে তিন দিন অতিবাহিত করিবে। এতদ্ভির ভিন দিন কণ্ডক ছইয়া এবং তিন দিন মাত্র পায়স আহার क्त्रिया काठाइटन। এইक्रम क्त्रिटनई व्यटशेख वा डेव्हिष्टे वज्र-পরিধায়ী বিষ্ণুপুত্তকের অপরাধশোধনের প্রারশ্চিত হইবে। প্রার-শ্চিত্তে পাপক্ষর হইলেই চরমে মৃক্তির পথ উন্মুক্ত হইয়া রহিবে।» পরকীয় বন্ধ পরিধান করিয়াও বিষ্ণুপৃঞ্চাদি করিতে নাই। এইরূপে বিষ্ণুপূঞ্জাদি করিলে অপরাধী হইতে হয়। সেই অপ-

বাংং চাজানগং কৃষা বিধিনৃটেন কর্মণা।
মূচাতে কিবিবাং জুমে এবনেতর সংশক্ষঃ ।
রক্তবন্তেশ সংবৃক্তো যো হি মামুশসপতি।
তল্ঞাশি শুণু সংখ্যানি কর্ম সংসারমান্তপণ ।
বেলাসো রক্ষা শণ্ডা কর্মানোবেশ কামতঃ ।
বেলাসো রক্ষা শণ্ডা কর্মানোবেশ কামতঃ ।
বানিভাং এবন্যামি ভল্ল কার্মিলোবনন্।
যেন ভ্রামি বৈ ভূমে শুক্তবাং শাল্পবর্জ্জভাঃ ।
বাল্ভকো দিনত্রীণি দিনমেকং ক্লাশনঃ ।
ব্যাহ্বকো দিনত্রীণি দিনমেকং ক্লাশনঃ ।
ব্যাহ্বকো দিনত্রীণি দিনমেকং ক্লাশনঃ ।

"বা পুনা কৃষ্ণবল্লেশ সম কর্মপরায়ণা: ৷
 বেদি কর্মানি কৃষ্টিত ভক্ত বৈ পতনা: পূর্ ৷

রাধের ফলে, একবিংশ বর্ষ মৃগবোনি ভোগ করিতে হয়। তৎপরে একজন্ম থঞ্জ অবস্থার মূর্থ ও ক্রোধন হইয়া কাল কাটাইতে হইবে। কিন্তু এ অপরাধ হইতেও মুক্তি পাইবার প্রায়শিচত আছে।† বথা— শ্রীবিকুর প্রতি ভক্তিবৃক্ত হইবে। অক্স আহার করিয়া রহিবে। মাঘ মাসের শুক্রপক্ষীয় ঘাদশীর দিন কান্ত, দান্ত ও জিতেক্রিয় ভাবে অনক্রমনে বিক্র্ণানে ময় হইয়া জলাশরে অবস্থান করিবে। পরে যথন নিশাবসানে দিনমণি উদিত হইবেন, তথন পঞ্চগব্য পান করিয়া অচিরাৎ সর্ক্ষ কিবিষ হইতে মুক্তি পাইবেন।

‡

খুশা যৈ পঞ্চৰ্বাণি কাঠভক্ষক জায়তে।

मभक्दीनि वर्गनि कष्ट्दीनि ह शक ह । পারাবতক জারতে মববর্বাণি পঞ্চ। জাতো মমাপরাধেন সিত: পারাবডো ভৃষি। তিটেত মম পার্বে তু বত্রৈবাহং প্রতিষ্টিত: । প্রারশ্চিত্তং প্রবন্ধ্যামি তপ্ত সংসারমোক্ষণম। সন্তাহং বাবকং ভূক্তা ত্রিরাত্তং শক্ত পিওকান্। জীণি পিণ্ডাদ্ জিরাজন্ত এবং মুচ্চোত কিম্বিবাৎ ৪ বাসস্য ন চ থৌডেন যে। যে কর্মাণি কারয়েৎ। শুচির্জাগবড়ে। জুলা মম মার্গানুসারক: । ভক্ত দোবং প্রবক্ষ্যাসি অপরাধং বস্তব্যর । দেবি ভূতা গজো মন্তবিষ্ঠভ্যেকং নরোভূবি। উट्टेटेन्टकः खरवष्क्रम सम्म टेटकः धत्रश्रमा लामाइरत्रक्षका देव क्या टिकः इराज्या । भावम्योग्डक्षमा रेव मृत्या कवित हेडकाः। সপ্তজনান্তরং পশ্চাৎ ততো ভৰতি মানুব: 🛭 मञ्चलक श्वनकाक यम कर्पालहारा । निवनवार्या एकण अवकावविवर्षितः ॥ वाष्ट्रक्त मिनः जीनि भिनादिक भूनव्यः। क्षका मिनजीति भावरमन मिमज्यस् । এবং কৃষা মহাভাগে বাসসোচ্ছিট্ৰারিণ:। व्यभन्नोशः न वित्नाज সংসায়ण न नक्छि ॥" (वज्राहभूज्ञान) † "यः शाहरकान चरजन नायम्राक व माननि ! প্রায়শিতী পুমান্ মূর্বো মম কন্মপরায়ণ:। भुत्भा देव बाबट्ड प्रवि वर्षानि जीनि मश्च ह। हीनभारत्व कारबंख किक्कम पश्चात ! ৰূপ'ল্ড জোধনলৈত্ব মন্তক্তলৈত্ব জারতে । তক্ত বন্ধ্যামি হলোবি প্রায়শ্চিত্তং মহে।জসম্। 🕽 "অট্টডজ: তড: কুড়া মন কর্মসরারণ:। মাবজৈব ভূ মানভ শুকু পক্ত বাহনী। ভিটেম্ফলাশরে ভন্ন ক্লাছে। লাছে। জিতেন্দ্রির: । व्यवस्थानस्य कृषा यथ विस्तानदाहरः। প্রভাভায়াত শর্কার্যা মুদিতে চ দিবাকরে। गक्गवाः छ**छ: गीवां पैजः वृद्धाछ किषिवां ।**" (वज्राह्**भू** -)

নশাধিত বন্ধ পরিধান করাই বিধেয়। দশাহীন বন্ধ আবৈধ, তাহা ধর্মকর্মে অমূপযুক্ত।
করিবিশেষ প্রতিগ্রহ করিবে হয়। হারীত বলিয়াছেন, "মণিবাদোপবাদীনাং প্রতিগ্রহ সাবিত্রাইশভং লপেও।" 'অইসহলং মান্টান্তর-সহস্রমিতি' (ভাজিতর)

কালিকাপুরাণে উক্ত হইয়াছে, কাপাস, কামল, বারুল ও কৌষেরজ ভেদে বন্ধ বছবিধ। এই সকল বন্ধ দেবাদেশে সময়ক পুলা কবিয়া উৎসর্গ করিবে। • কিন্তু যাহা দশাহীন মলিন, জীর্ন, ছিন্ন, প্রকীয়, মৃষিকদই, স্চীবিদ্ধ, বাবহুত, কেশযুত, অধোত কিংবা শ্লেমা ও মুরাদি দারা দৃষিত, তাশুল বন্ধ দেবো-দেশে কিংবা দৈব বা পৈয়া কথা উপলক্ষে দান করা অকন্তবা। •প্রভাত ঐ সকল বন্ধ এ ক্ষেয়ে বক্ষন করাই উচিত।

'কোপাস' কাস্বল বান্ধং কৌষজং বন্ধায়াতে। তৎ পূৰ্ব্বং পূজ্জিটিয়ৰ মন্ত্ৰৈদে বান্ধ চোৎস্কেও ॥ নিশ্ৰণ মলিনং জীৰ্ণং ছিন্নং গাত্ৰাবলিক্স্তিম্। প্ৰকীয়ং বাধুদন্তং স্চিবিন্ধং তথোষিতং ॥ উপ্ৰকেশং বিধৌতক শ্ৰেমমূত্ৰাদিদ্যিতম্॥ প্ৰদানে দেবভাভাশ্চ দৈবে পৈত্ৰে চ কৰ্মাণি।

বর্জন্মেৎ শাপ্যোগেন ষজ্ঞাদাবুপ্যোজনে ॥" কালিকাপু ৬৮ অ)
উক্ত পুরাণে অন্থ স্থলে আছে, উত্তরীয়, উত্তরাদল, নিচোল,
মোদচেলক এবং পরিধান নামক পঞ্চবিধ বস্ত্ব অন্থাত অর্থাং
শোলাইহীন অবস্থায় ব্যবহার বা দান করার বিধি আছে; কিন্তু
শুপুত্রনির্দ্মিত বস্ত্র, নীশার (মুশারি), আতপত্র, চপ্তান্তক,
অর্থাৎ স্ত্রীলোকের উরুর অর্ফ লখিত বস্ত্ব এবং দ্যা অর্থাৎ ব্যুগুই
(ত্তাব্) এ সকল স্থাত অর্থাৎ সেলাই করা অবস্থায় দৃষিত হয়না।

"উত্তবীয়োরাসকো চ নিচোলো মোদচেলকঃ।
পরিধানঞ্চ পরিকাতাত্ত্বতানি প্রযোজ্ঞরেও।
শাগবন্তং নীশারক্ষ তথৈবাতপবারণম্।
চণ্ডাতকং তথা দ্যাং পঞ্চ স্থাভান্তত্ত্তীরে।"(কালিকার্য ৭৮)
এতদ্বির পতাকা ও ধ্যক্ষ গুলিতে সেলাই করা বন্ধ গ্রাযোজা।
দেবতাতেদে বন্ধবিশেষ দারা অর্চনা করিছে যে। কোন্
দেবতাকে কি কি বন্ধ দিতে হয়, তৎসহত্তে কালিকাপুরাণে
এইরূপ লিখিত আছে—

"পতাকা ধ্বজদণ্ডাদৌ স্ভেবক্ক প্রবোজরেং। অন্তর্বরগাদৌ চ তছিনা শততোহপি চ ॥" কালিকাপ") রক্তবর্গ কৌষের বন্ধ মহাদেবীকে দেওরা গ্রন্ত;এইরূপ পীত-বর্গ কৌষের বসন বাহ্নদেবকে, রক্তক্ষল দিবকৈ এবং বিচিত্র চিত্রস্কুক বন্ধ সকল অপরাপর দেব ও দেবীকে নিবেদন করা বাইতে পারে। ভত্তি কার্পান বন্ধ সর্ক্রদেবভার উদ্দেশ্তেই
নিবেছ। যে বন্ধ একার রক্তবর্গ, তাহা ক্লুদেবকে ও শিবকে
দেওরা নিবিছ। নীল ও রক্তবর্গনিপ্রিভ বে বন্ধ, তাহা সর্ক্রট
আবৈধ। দৈন ও পৈত্রা কর্নাদিতে বিক্র ব্যক্তি উহা একেবারেই
ব্যবহারে অনিবেন না। বে বিক্র হইরাও প্রসাদবলে নীল ক্রন্তবর্গ বন্ধ বিষ্ণুপুলার বের, তাহার লে পূজার কোন ফলই
হন্ধ না। বিচিত্র বন্ধ নীলবর্গে রক্তিত হইলে, তাহা এক্সমাত্র
মহাদেবীকে নিবেদন করা বাইতে পারে, তত্তির অঞ্চ লেবোকেশে
ভাহা দেওরা নিবিছ। হিপদের মধ্যে বেমন ব্যক্তন এবং দেব
মধ্যে বেমন বাসব, সেইরূপ ভূষণসমূহ মধ্যে বন্ধই প্রধান। বন্ধ
বারা ক্র্যানিবির্দিণ হন্ধ, বন্ধ পাশ নালে সমর্থ, বন্ধ হইতে
সর্বাসিহি ঘটে এবং বন্ধ চতুর্জার্গ ফল বিভরণ করে।»

আসন, বসন, পৰাা, জায়া, অপতা ও কমওলু, এই ক্রেকটা ।গনিষ অকীর হইলেই শুচি হয়। আর ঐ গুলি পরকীর হহলেই অপবিত্র হইয়া থাকে। বসন যদি ঈবং থোত, স্ত্রীজন কর্তৃক ধোত, কিংবা রজকধোত হয়, জথবা উহা যদি শুকাইবার জন্ত দক্ষিণ বা পশ্চিমাগ্র প্রসারিত থাকে, তবে সে বসন অধোত বলিরাই জানিবে অর্থাৎ ঐ প্রকার বসন অপবিত্র হইতা থাকে।

"ঈবজোতং প্রিরা ধোতং যদ্বোতং রক্সকেন তু। আধোতং ত্রিজানীরাদশা দক্ষিণপশ্চিমে ॥ আত্মনঃ গুচিরেতানি ন পরেবাং কদাচন। আসনং বসনং শ্যা। জারাপত্যং কমণ্ডশৃঃ॥" (কন্মলোচন)

"त्रकः (कोरभग्नवश्चक महार्गिदेश अभक्राट्य ॥ शीलः उरेषम क्योतमाः बाम्यतमात्र (ठा९म्यावर । রক্তস্ক কৰলং নদাবে শিবার পরমায়নে । चिक्तिकः मन्त्रस्यद्याः स्वीत्काकः मध्यस्य । কার্ণাসং সক্ষতোভন্তং बबाद সক্ষেত্য এব চ। र्मकाश्वतकः वकान्ति योद्यस्य विकासक्। ख्वा देवकाळ*३क*ळ निवात विमित्त्वस्यव ह मोनावक्षक ग्रद्धाः ठर मस्त्रक विवर्षक्रिका । रमरव रेनध्य स्थानस्वारन वर्ष्क्रस्यख्यिहरूनः । नोतीतकशमानाक्ष्यां मनग्रिकस्य वृधः। নিক্লা ডক্ত ডংপুছা ভদা ভৰ্তি ভৈরব। বিচিত্রে বাসসি পুনল'গ্রং নীলীবিশ্বঞ্জিতম্। यञ्चर मन्त्रानाद्यारमध्या माख्यदेश कु स्पर्शतम ब ष्ट्रिया: आकारमा यथर (प्रयोगार गामरमा यथा । তথা ভ্ৰণৰৰ্গেৰু বস্ত্ৰসৃত্তমন্চাতে 🛭 राज्ञन जावराज मन्द्राः याज्ञन जावराज प्रयम् । ৰত্বাৎ সাধি সৰ্বান্ত: সিদ্ধিকভুৰ্বাৰ্গপ্ৰদৰ্শ তৎ ।" (ফালিকাপুলাৰ ৬৮ আ:) ধৌত বন্ধ প্রাগত্র বা উদগ্র করিয়া প্রাণারিত করিবে।
কন্ধার প্রকাশন তি করিয়া লইতে হয়।
পনর্বার প্রকাশন তি করিয়া লইতে হয়।
'প্রাগগ্রম্পলগ্রং বা ধৌতং বল্ধং প্রসারয়েও।
পশ্চিমাতাং দক্ষিণাতাং পুনং প্রকাশনাও গুচি।
প্রতেতা বলিয়াছেন, বিজ্ঞ ব্যক্তি বল্ধ নিজ হতে ধৌত করিয়া লইয়া সেই বল্ধে ধর্মাকার্যা করিবেন। কিন্তু রক্ষক পৌত কিংবা একেবারে অধৌত বল্ধে কপন ধর্মা ক্রিয়া করিবেন না। তবে, পুত্র, মিত্র, কলত্র, অভান্ত স্বজাতি, বল্ধবাছব বা ভৃত্যাবৌত বল্পের পবিত্রতার হানি হয় না।

শ্বানের পর মন্তকের জলাপনয়নের জন্ম শ্লথ ভাবে উন্ধীববন্ধ ধারণ করিতে হয়। স্থাত, দয়, মৃষিকোৎকীর্ণ, বা জীর্ণ,
বিশেষতঃ পরকীয় বন্ধ পরিয়া ধর্ম কায়্য করিতে নাই।
"রাজহংসনিতঃ প্রোপা উন্ধীবং শিথিলার্পিতম্।
জলকর্মমিতঃ বৈ বেইয়ামাস মৃদ্ধনি ॥"
'ন স্থাতেন ন দঝেন পারকোণ বিশেষতঃ।
মৃষিকোৎকীর্ণ জীর্ণেন কর্মকুর্যান্থিচক্ষণঃ।" (মহাভারত)
কিঞ্চিৎ রক্তবর্ণ, আতান্ত রক্তবর্ণ, নীলবর্ণ, মলপূর্ণ বা দশাহীন
বন্ধ প্রশক্তবর্ণ, অতান্ত রক্তবর্ণ, নীলবর্ণ, মলপূর্ণ বা দশাহীন

'ন রক্তম্বণং বাসো ন নীলঞ্চ প্রশন্ততে।

মলাক্তঞ্চ দশাহীনং বর্জয়েদ্বরং বৃধঃ ।'' (নারসিংহপুং)

কিন্তু আচাররতে লিখিত আছে, দশাহীন বল্লেও অভাব
পক্ষে ধর্মকর্ম ক্রিবে।

"দশাহীনেন বস্ত্রেণ কুর্যাৎ কর্মাণান্তাবতঃ ॥" (আচাররত্ব°)
অন্তব্ধ এবং রক্ত, মলিন, বা দশাহীন বসন ব্যবহার
নিষিদ্ধ; কেবল খেত বস্তুই যদ্যের সহিত ধারণীয়। সামর্থ্যে
কুলাইলে শীণ বা মলিন বাস ব্যবহার করিতে নাই।

°বার নাজ্জবৃতং ধার্যাং ন রক্ষণ মলিনং তথা। জার্বং বালদশকৈব খেতং ধার্যাং প্রবন্ধতা।।

শ্বয়ং ধৌতেন কর্মবা। ক্রিয়া ধর্মা। বিপ'ক্তাং।

ন চ রক্ষকথৌতেন না ধৌতেন কবেং কচিং :
পুত্রমিত্রকলক্রেণ ক্রাভিবাক্তবন চ।

রাগ্রপেণ ব্র্যোভিং তংপনিক্রমিতি বিভিন্ন ভিন্নেক্রং

উপানহং নাস্তথ্যতং ব্রহ্মস্ত্রঞ্চ ধার্মেং।
ন জীর্ণমান্তবাদা ভবেদ্ধ বিভবে সতি ॥" (বিষ্ণুধর্মোন্তর)
সানগন্তে ধৌত অক্লির বাস পরিধের। ধৌতবল্লের অভাব
পক্ষে শণ, কোন, আবিক, নেপালদেশীর কম্বল, কিংবা যোগপট্ট
দারণ করিবে। সূল কথা, ঐক্লপ বল্লের যে কোন একথানি
বসন দারা দ্বিতীয় বস্ত্রধারী হইতে ছইবে। অধৌত-বসন পরিরা
নিভানৈটিত্তিক ক্রিয়া করিলে কোনই ফল হয় না এবং অধৌত
বস্ত্রপরিধানপূর্কক দান করিলেও তাহা নিম্মল হইয়া থাকে।*

সানান্তে তপণ না করিয়া বস্ত্রনিষ্পীড়ন করিবে না। জাবালি বলিয়াছেন, তপণের পূর্ব্বে যে স্থানবস্ত্র নিষ্পীড়ন করে, তাহার পিতৃগণ সহ দেবগণ নিরাশ হইয়া চলিয়া যা'ন।

"নিজ্পীড়য়তি যং পূর্বং স্নানবস্তম্ভ তর্পণাং।

নিরাশান্তম্য গচ্ছান্ত দেবাং পিতৃগগৈং সহ॥" (জাবালি)

স্নান করিয়া আর্দ্র বসন সব্ত্বেও যে ব্যক্তি বিষ্ঠা বা মৃত্র পরিত্যাগ করে, তাহাকে তিন বার প্রাণায়াম করিয়া পুনরায়
স্থানাক্তে শুদ্ধ চুইতে হয়। আরু একমাত্র আর্দ্রবসনই সর্ব্বদা

ন্নানান্তে শুদ্ধ হুইতে হয়। আর একমাত্র আর্ত্রসনই সর্বাদা পরিধান করিয়া থাকিবে না। আর্ত্রি বসনও সপ্তবার বাতাহত হুইলে শুদ্ধ হুইয়া থাকে।

१९८० उन्न १२४। था८**०**।

"মানং রুথার্রবাসাস্থ বিশ্বু কুরুতে যদি। প্রাণায়ামত্রয়ং রুখা পুনঃ মানেন শুধাতি॥ নার্রমেকঞ্বসনং পরিদধ্যাৎ ক্পঞ্চন।" (হারীত) 'আর্থ্রু সপ্তবাতাহতম্পি শুদ্ধমিতি' (মদনপারিকাত)

ষট্রিংশমতে ও নিগমে সংক্রান্তি প্রভৃতিতে বস্ত্রনিশীড়ন নিধিক। সংক্রান্তি, পূর্ণিমা, অমাবতা, বাদশী এবং প্রাঞ্জ দিনে বস্ত্রনিশীড়ন বা কার সহ বস্ত্র যোগ করিতে নাই।

"সংক্রান্ত্যাং পঞ্চনশ্রাঞ্চ বানশ্রাং প্রাক্তবাসরে। বস্ত্রং ন পীড়রেন্তত্র ন চ ক্ষারেণ বোলয়েং ॥" (তিথ্যাদিতক)

'ছাকৈবং বাসনী ধৌতে অক্লিকে পরিবার চ।
ক্রকাল্যার সুদ্ধিত হত্তে প্রকালরেকতঃ
ক্রকাবে গৌতবল্লাগং শাপকৌনাধিকানি চ।
কুপ্তপো বোংপটাং বা বির্কান। বেন বা ভবেব।
ক্রেণাকেন চ বল্লেন নিত্যনৈবিত্তিকী ক্রিমাং।
কুর্কান ক্রাং ন বাংগাতি দ্বাং ভবতি নিজ্ঞান ।